





13-11-19

Capo D'Orre
G.



D. D. EMANVELIS
GONZALEZ
T E L L E Z,

IN INCLYTA SALMANTICENSI ACADEMIA

Collegij Maioris Conchenfis Alumni, & antiquioris vespertinæ sacrorum
Canonum Cathedralis proprietarij Interpretis; in Pinciano Sanctæ Inquisitionis
Tribunali Inquisitoris Apostolici, & in supremo S. Inquisitionis Senatu Consiliarij;

COMMENTARIA PERPETVA

In singulos Textus quinque Librorum

DECRETALIVM

GREGORII IX.

TOMVS QVINTVS.

COMPLECTENS LIBRVM QVINTVM.

Additis Notis vberioribus ab Historia, & Chorographia.

NUNC PRIMVM IN LVCEM PRODIT.



L V G D V N I,

Sumptibus LAURENTII ARNAVD, & PETRI BORDE.

M. DC. LXXIII.

CVM APPROBATIONE, ET PERMISSV.

T E L L N

Inaugural Address of
 JAMES M. SMITH

CHICAGO, ILL.
 1892



Published by the
 CHICAGO PUBLISHING CO.



TABELLA

TITVLOS OMNES

Libri quinti Decretalium Gregorij IX.
ordine Alphabetico indicans.

*Prior numerus Titulum, postremus verò paginam
Libri indicat.*

A.

| | |
|--|--------|
| C ensurationibus, inquisitionibus, & denuntiationibus. | 1.1 |
| Adulteris & stupro. | 16.399 |
| Apostatis & reiterantibus baptisma. | 9. |
| | 226. |

C.

| | |
|---|--------|
| C alumniatoribus. | 2.61 |
| Clerico per saltum promotio. | 39. |
| | 446. |
| Clericis pugnantis in duello. | 14.292 |
| Clerico venatore. | 24.404 |
| Clerico percussore. | 25.409 |
| Clericis maledicis. | 26.411 |
| Clerico excommunicato, deposito, vel interdicto ministrante. | 27.415 |
| Clerico non ordinato ministrante. | 28. |
| | 438. |
| Collusione detegenda. | 22.392 |
| Crimine falsi. | 20.369 |

D.

| | |
|----------------------------|--------|
| D elictis puerorum. | 23.397 |
|----------------------------|--------|

E.

| | |
|---|--------|
| E o qui furtivè ordinem suscepit. | 30. |
| | 449. |
| Excessibus Prælatorum in subditos, vel contra. | 31.451 |

F.

| | |
|-----------------|--------|
| F urtis. | 18.333 |
|-----------------|--------|

H.

| | |
|------------------------------------|--------|
| H ereticis. | 7.164 |
| His qui filios occiderunt. | 10.239 |
| Homicidio voluntario, vel casuali. | 12. |
| | 248. |

I.

| | |
|---|--------|
| I nfantibus & languidis expositis. | 11. |
| | 243. |
| Iniuriis, & damno dato. | 36.549 |
| Iudeis & Saracenis, & eorum servis. | 6.136 |

M.

| | |
|---|-------|
| M agistris, & ne aliquid exigatur pro licentia docendi. | 5.130 |
|---|-------|

N.

| | |
|---|---------|
| N e Prælati vices suas, vel Ecclesias aliis sub annuo pretio concedant. | |
| | 4.127. |
| Noui operis nunciatione. | 31.470. |

P.

| | |
|--|---------|
| P oenis. | 37.548 |
| Pœnitentis & remissionibus. | 38.555 |
| Privilegiis, & excessibus privilegiorum. | 33.480. |
| Purgatione canonica. | 34.521 |
| Purgatione vulgari. | 35.534 |

R.

| | |
|---|---------|
| R aptoribus, prædonibus, incendiariis, & violatoribus Ecclesiarum. | |
| | 17.515. |
| Regulis iuris. | 41.643 |

Index Titulorum, &c.

S.

T.

| | |
|--|--------|
| S Agitariis. | 15.297 |
| Schismaticis, & ordinatis ab eis, & alienationibus factis. | 8.220 |
| Sententia excommunicationis. | 39.513 |
| Simonia, & ne aliquid pro spirituali exi- gatur, vel promittatur. | 3.69 |
| Sortilegiis. | 21.382 |

| | |
|----------------|--------|
| T Orneamentis. | 13.288 |
|----------------|--------|

V.

| | |
|---------------------------|--------|
| V Erborum significatione. | 40.617 |
| Vfuris. | 19.345 |





I N D E X

CAPITVLORVM OMNIVM, Quæ in quinto Libro Decretalium Gregorij IX. continentur.

*Prior numerus titulo adiunctus ordinem capituli, secundus titulum,
tertius tandem paginam designat.*

A.

| | |
|--|--------|
| A bate, <i>de verber. signif.</i> 25. 40. 634. | |
| Ablolutos, <i>de heretic.</i> 16. 7. 217. | |
| Accedens, <i>de accus.</i> 13. | 1.53 |
| Accedens, <i>de rapto.</i> 7. | 17.330 |
| Accedens, <i>de crimin. falsi.</i> 8. 10. 380. | |
| Accedens, <i>de purgat. canonic.</i> 14. 34. 528. | |
| Accedentibus, <i>de excess. Pralat.</i> 11. 31. 464. | |
| Accedentibus, <i>de prinil.</i> 15. | 33.503 |
| Accusasti, <i>de accus.</i> 8. | 1.120 |
| Ad abolendam, <i>de hereticis.</i> 9. 7. 184. | |
| Ad Apostolicam, <i>de simon.</i> 41. 3. 121. | |
| Ad audientiam, <i>de homicid. vol. vel enf.</i> 12. 12.270. | |
| Ad audientiam, <i>de torneament.</i> 1. 13. 288. | |
| Ad audientiam, <i>de crimin. falsi.</i> 3. 10. 371. | |
| Ad aures, <i>de simon.</i> 23. | 3.103 |
| Ad aures, <i>de excessib. Pralator.</i> 3. 31. 452. | |
| Ad aures, <i>de par.</i> 10. | 37.553 |
| Ad eminentiam, <i>de sent. excom.</i> 20. 39. 587. | |
| Ad explendum, <i>de verb. signif.</i> 8. 40. 619. | |
| Ad falsariorum, <i>de crimin. falsi.</i> 7. 10. 380. | |
| Ad hæc, <i>de excessib. Pral.</i> 2. | 31.452 |
| Ad hæc, <i>de sent. excom.</i> 12. | 39.579 |

D.D. Gonzal. in Decretal. Tom. V.

| | |
|--|--------|
| Ad hoc præsentium, <i>de iudeis.</i> 8. 6. 147. | |
| Ad hoc, <i>de prinil.</i> 5. | 31.487 |
| Ad liberandam, <i>de iud.</i> 17. | 6.162 |
| Ad nostram, <i>de simon.</i> 10. | 3.101 |
| Ad penitionem, <i>de accus.</i> 22. | 1.49 |
| A vobis, <i>de apostat.</i> 5. | 9.235 |
| A nobis, <i>de sentent. excommun.</i> 21. 39. 587. | |
| A nobis, <i>de sentent. excommun.</i> 28. 39. 591. | |
| Antiqua, <i>de prinil.</i> 23. | 33.509 |
| Antiquam, <i>de simon.</i> 1. | 3.69 |
| Apostolicæ, <i>de cleric. excommun.</i> 9. 27. 428. | |
| Artemillam, <i>de sagitt.</i> 1. | 15.497 |
| Audiuimus, <i>de simon.</i> 49. | 3.120 |
| Audiuimus, <i>de colluf. de reg.</i> 3. | 22.393 |

C.

| | |
|--|--------|
| C alumoniæ, <i>de par.</i> 4. | 37.548 |
| Canonica, <i>de sentent. excom.</i> 50. 39. 613. | |
| Causa Carpenfis, <i>de verb. signif.</i> 13. 40. 621. | |
| Clericis autem, <i>de cleric. excommun.</i> 3. 27. 421. | |
| Clerici, <i>de excessib. Pralator.</i> 4. | 31.452 |
| Conquesti, <i>de sentent. excommun.</i> 21. 39. 588. | |
| Conquestus, <i>de usur.</i> 8. | 19.357 |
| Constitutus, <i>de purgat. canonic.</i> 9. 34. 524. | |
| Constitutus, <i>de par.</i> 7. | 37.550 |
| Consultationi, <i>de apost.</i> 6. | 9.236 |
| Consultationi, <i>de prinil.</i> 33. | 33.520 |
| Consultare, <i>de simon.</i> 37. | 3.118 |

8 3

Consultat

Index Capitulorum

| | | | |
|--|--------|--|--------|
| Consuluit, <i>de iud.</i> 7. | 6.147 | Cum olim, <i>de priuil.</i> 12. | 33.498 |
| Consuluit, <i>de usur.</i> 10. | 19.358 | Cum olim, <i>de priuil.</i> 14. | 33.500 |
| Continebatur, <i>de homicid. vol. vel cas.</i> 8. | | Cum olim, <i>de verb. significat.</i> 14. | 40. |
| 32.261. | | 634. | |
| Continentia, <i>de cleric. percussor.</i> 4. | 25. | Cum opponat, <i>de accus.</i> 19. | 143 |
| 410. | | Cum P. Manconella, <i>de accus.</i> 10. | 1. |
| Contingit, <i>de sentent. excomm.</i> 36. | 39. | 25. | |
| 59. | | Cum P. Manconella, <i>de purg. can.</i> 7. | 34. |
| Contingit, <i>de sentent. excomm.</i> 45. | 39. | 514. | |
| 607. | | Cum pro causa, <i>de sentent. excomm.</i> 27. | 39. |
| Crimina, <i>de collusion. detegend.</i> 2. | 22. | 591. | |
| 393. | | Cum sit nimis, <i>de iud.</i> 16. | 6.157 |
| Cum ad quorundam, <i>de excessib. Pralat.</i> 7. | | Cum sit Romana, <i>de simonia.</i> 9. | 3. |
| 31.457. | | 82. | |
| Cum Capella, <i>de privileg.</i> 16. | 33. | Cum tibi, <i>de verb. significat.</i> 18. | 40. |
| 504. | | 630. | |
| Cum causam, <i>de raptor.</i> 6. | 17.329 | Cum tu, <i>de usur.</i> 5. | 19.352 |
| Cum clerici, <i>de verb. significat.</i> 19. | 40. | Cum voluntate, <i>de sententia excomm.</i> 54. | |
| 630. | | 59.615. | |
| Cum de iniuncto, <i>de non. oper. nunc.</i> 2. | 32. | Cura suscepti, <i>de purgat. vulgar.</i> 1. | 35. |
| 470. | | 534. | |
| Cum desideres, <i>de sentent. excomm.</i> 15. | 39. | | |
| 581. | | | |
| Cum dilectus, <i>de accus.</i> 18. | 1.42 | | |
| Cum dilectus, <i>de accus.</i> 20. | 1.44 | | |
| Cum dilectus, <i>de calumniatorib.</i> 2. | 2. | | |
| 68. | | | |
| Cum dilectus, <i>de purgat. canonic.</i> 11. | 34. | | |
| 516. | | | |
| Cum dilectus, <i>de purgat. canonic.</i> 15. | 34. | | |
| 528. | | | |
| Cum essent, <i>de simon.</i> 11. | 3.86 | | |
| Cum & plantare, <i>de privileg.</i> 3. | 33. | | |
| 485. | | | |
| Cum ex eo, <i>de penis.</i> 14. | 38.569 | | |
| Cum ex iniuncto, <i>de hereticis.</i> 12. | 7. | | |
| 201. | | | |
| Cum fortius, <i>de calumniatorib.</i> 1. | 2. | | |
| 61. | | | |
| Cum H. de eo qui fuit. ordin. fufe. | 2.30. | | |
| 450. | | | |
| Cum illorum, <i>de sent. excomm.</i> 32. | 39. | | |
| 595. | | | |
| Cum in dioecesi, <i>de usur.</i> 15. | 19.363 | | |
| Cum in Ecclesie, <i>de simonia.</i> 8. | 3. | | |
| 79. | | | |
| Cum infirmitas, <i>de penitent. & rem.</i> 13. | | | |
| 38.568. | | | |
| Cum in iuventute, <i>de purgat. can.</i> 12. | 34. | | |
| 527. | | | |
| Cum in partibus, <i>de verb. signif.</i> 17. | 40. | | |
| 629. | | | |
| Cum inter, <i>de verb. signif.</i> 19. | 40.640 | | |
| Cum iuramento, <i>de homicid. vol. vel cas.</i> 4. | | | |
| 12.254. | | | |
| Cum non ab homine, <i>de sent. excomm.</i> 14. | | | |
| 39.580. | | | |

D.

| | |
|--|---------|
| De extero, <i>de homicid. vol. vel cas.</i> 11. | 12.263. |
| De extero, <i>de sentent. excomm.</i> 11. | 39. |
| 579. | |
| Deficat, <i>de reg. iur.</i> 9. | 41.646 |
| De his, <i>de purg. can.</i> 4. | 34.523 |
| De hoc autem, <i>de simon.</i> 10. | 3.83 |
| De iis, <i>de accus.</i> 6. | 1.16 |
| De illis, <i>de raptor.</i> 1. | 17.315 |
| De infantibus, <i>de his qui fil. occid.</i> 3. | 10. |
| 240. | |
| De monialibus, <i>de sent. excomm.</i> 33. | 39. |
| 597. | |
| De quare, <i>de heret.</i> 2. | 7.168 |
| De regularibus, <i>de simonia.</i> 14. | 3. |
| 103. | |
| Desiderij nostri, <i>de collus. detegend.</i> 1. | 22. |
| 392. | |
| De simoniace, <i>de simon.</i> 21. | 3.101 |
| De testibus, <i>de purgat. canonic.</i> 13. | 34. |
| 517. | |
| Deus qui Ecclesiam, <i>de penitent.</i> 8. | 38. |
| 562. | |
| Dilecta, <i>de excessibus, Pralat.</i> 14. | 31. |
| 465. | |
| Dilecti filij, <i>de priuil.</i> 4. | 33.486 |
| Dilecti filij, <i>de purgat. vulgar.</i> 3. | 35. |
| 535. | |
| Dilecto, <i>de verb. signif.</i> 18. | 40.640 |
| Dilectus, <i>de simon.</i> 27. | 3.105 |
| Dilectus, <i>de simon.</i> 29. | 3.110 |
| Dilectus, <i>de homicid. vol. vel cas.</i> 13. | 12. |
| 272. | |

Dilectus,

Libri V. Decretalium.

Dilectus, *de excessib. pralat.* 13. 31.
465.
Dilectus, *de pen.* 13. 37. 553
Dubius, *de hares.* 1. 7. 164
Dudum, *de privil.* 31. 33. 510
Dum contemplationis, *de reg. iur.* 6. 41.
645.
Duobus, *de sentent. excomm.* 56. 39.
615.
Dura saxe, *de crimin. fals.* 4. 10.
375.

E.

EA noscitur, *de sent. excom.* 13. 39.
580.
Ea quæ, *de simon.* 15. 3. 93
Ea quæ, *de pen.* 1. 37. 543
Ecclesia vestra, *de forstlegi.* 3. 21.
388.
Episcopum, *de cleric. venust.* 1. 24.
404.
Estote, *de reg. iur.* 2. 41. 644
Et cum Christus, *de haresic.* 7. 7.
180.
Et licet, *de iud.* 1. 6. 136
Etsi ludæos, *de iud.* 13. 6. 155
Etsi quæstiones, *de simon.* 17. 3. 96.
Evidentia, *de accus.* 9. 1. 23
Excommunicamus, *de haresic.* 13. 7.
207.
Excommunicamus, *de haresic.* 15. 7.
215.
Excommunicationi, *de raptorib.* 3. 17.
310.
Ex continetia, *de crimin. fals.* 9. 10.
381.
Ex diligenti, *de simon.* 16. 3. 94
Exhibita, *de homicid. vol. vel cas.* 22. 12.
182.
Ex insinuatione, *de simon.* 25. 3. 104
Ex literarum, *de apostat.* 2. 9. 230
Ex literis, *de homicid. vol. vel cas.* 14. 12.
273.
Ex literis, *de homicid. vol. vel cas.* 15. 12.
273.
Ex literis, *de fort.* 5. 58. 343
Ex literis, *de cleric. non ordinat.* 2. 18.
444.
Ex literis, *de excessib. pralat.* 10. 31.
461.
Ex ore, *de privil.* 17. 33. 505
Ex parte, *de accus.* 11. 1. 17
Ex parte, *de privil.* 13. 33. 500
Ex parte tua, *de privilegi.* 18. 33.
506.
Ex parte, *de privil.* 27. 33. 516

Ex parte, *de verbor. signific.* 13. 40.
633.
Ex parte, *de verbor. signific.* 30. 40.
641.
Ex parte, *de verbor. signific.* 31. 40.
642.
Expectabamus, *de adulter. & sup.* 2. 16.
500.
Ex speciali, *de iud.* 18. 6. 163
Ex tenore, *de sentent. excomm.* 10. 39.
578.
Extoræ, *de simon.* 19. 3. 100
Ex tuarum, *de forstleg.* 2. 21. 387
Ex tuarum, *de purgation. canon.* 8. 34.
524.

F.

Falsidicus testis, *de crimin. fals.* 1. 20.
369.
Feliçi, *de torneum.* 1. 13. 288
Firmissimè, *de hares.* 3. 7. 170
Fors, *de verbor. signific.* 10. 40.
610.
Fraternitati, *de schism.* 2. 8. 227
Fraternitati, *de cleric. excomm.* 6. 27.
425.
Fures, *de fort.* 2. 18. 333

G.

Grauem, *de excessib. pralat.* 13. 31.
466.
Grauem, *de pen.* 13. 37. 554
Grauem, *de sentent. excomm.* 53. 39.
614.

H.

Hec sunt, *de accus.* 1. 1. 7
Henricus, *de cleric. pugn. in duell.* 2.
14. 173.

I.

Iacobus, *de simon.* 43. 3. 113
Illa præpositorum, *de accus.* 9. 1.
10.
Illud Dominus, *de cleric. excom.* 5. 27.
424.
Illud etiam, *de excessib. pralat.* 6. 31.
457.
Illud sanè, *de privil.* 1. 33. 480
In Archiepiscopatu, *de raptor.* 4. 17.
327.
In audientia, *de sent. excom.* 25. 39.
590.

Index Capitulorum

| | |
|---|---------|
| In ciuitate, <i>de usur.</i> 6. | 19.354 |
| In eos, <i>de hares.</i> 6. | 7.180 |
| In his, <i>de pruil.</i> 30. | 33.518 |
| In iis, <i>de verbor. significat.</i> 15. | 40.626. |
| In literis, <i>de raptor.</i> 5. | 17.327 |
| In nonnullis, <i>de iud.</i> 15. | 6.156 |
| In nostra, <i>de iur.</i> 8. | 36.544 |
| Innotuit, <i>de cler. maled.</i> 1. | 26.411 |
| Innouate, <i>de verbor. significat.</i> 2. | 40.617. |
| In presentia, <i>de sentent. excom.</i> 46. | 39.607. |
| In quibusdam, <i>de penitent.</i> 12. | 37.554. |
| Inquisitionis, <i>de accus.</i> 21. | 1.44 |
| Inquisitioni, <i>de sentent. excommun.</i> 44. | 39.606. |
| Insinuarum, <i>de simon.</i> 12. | 3.87 |
| In tabulis, <i>de sortileg.</i> 1. | 21.382 |
| In tantum, <i>de simon.</i> 35. | 3.117 |
| In tantum, <i>de collusion. detegend.</i> 4. | 21.395. |
| Intelleximus, <i>de his qui fil. occider.</i> 2. | 10.240. |
| Intelleximus, <i>de adult.</i> 6. | 16.312 |
| Intelleximus, <i>de nou. oper. nunc.</i> 1. | 32.470. |
| Intelligentia, <i>de verbor. significat.</i> 6. | 40.619. |
| Inter alia, <i>de sentent. excommun.</i> 31. | 39.594. |
| Inter dilectos, <i>de excess. Pralat.</i> 11. | 31.463. |
| Interfecisti, <i>de homicid. vol. vel cas.</i> 2. | 12.249. |
| Inter sollicitudines, <i>de purgat. cau.</i> 10. | 34.525. |
| Inannes, <i>de homicid. vol. vel cas.</i> 23. | 12.284. |
| Ioseph non cognouit, <i>de verb. sign.</i> 5. | 40.619. |
| Is cui opus, <i>de nou. oper. nunciat.</i> 4. | 32.476. |
| Ita quorundam, <i>de iud.</i> 6. | 6.145 |
| Item constitutum, <i>de hereticis.</i> 5. | 7.174. |
| Iudxi, <i>de iud.</i> 3. | 6.139 |
| Iudxi, <i>de iud.</i> 5. | 6.145 |
| Ius dictum, <i>de verbor. significat.</i> 12. | 40.621. |

L.

| | |
|---|--------|
| L ator presentium, <i>de homicid. vol. vel cas.</i> 9. | 12.262 |
| Latores, <i>de cler. excom.</i> 4. | 27.421 |

| | |
|--|---------|
| Licet ad regimen, <i>de crim. fals.</i> 5. | 10.376. |
| Licet Heli, <i>de simon.</i> 30. | 3.111 |
| Licet in Beam, <i>de accusationib.</i> 14. | 1.29. |
| Licet iuxta, <i>de pen.</i> 3. | 37.547 |
| Licet tam veteris, <i>de penitent.</i> 6. | 38.560. |

M.

| | |
|--|---------|
| M andato, <i>de simon.</i> 45. | 3.124 |
| Manifesta, <i>de penitent. & rem.</i> 1. | 38.555. |
| Maritis, <i>de adult.</i> 4. | 16.310 |
| Matheus, <i>de simon.</i> 22. | 3.103 |
| Meminimus, <i>de accus.</i> 13. | 1.28 |
| Michaël, <i>de usur.</i> 17. | 19.365 |
| Monachi, <i>de sentent. excommun.</i> 2. | 39.574. |
| Mulieres, <i>de sentent. excommun.</i> 6. | 39.577. |
| Mulorum, <i>de iud.</i> 2. | 6.137 |

N.

| | |
|---|---------|
| N am & ego, <i>de verbor. signif.</i> 3. | 40.618. |
| Nam & Rex, <i>de verbor. significat.</i> 2. | 40.617. |
| Nauiganti, <i>de usur.</i> 19. | 19.366 |
| Ne Dei, <i>de simon.</i> 41. | 5.121 |
| Ne pro dilatione, <i>de penitent.</i> 16. | 38.573. |
| Nihil obstat, <i>de verbor. significat.</i> 7. | 40.619. |
| Nimis iniqua, <i>de excessib. Pralat.</i> 16. | 31.467. |
| Nimis praua, <i>de excessib. Pralat.</i> 27. | 31.468. |
| Nobilis, <i>de purgatione canonica.</i> 1. | 34.521. |
| Nobis fuit, <i>de simon.</i> 26. | 3.105 |
| Non dubium, <i>de sentent. excommun.</i> 5. | 39.576. |
| Nostra poplasi, <i>de penitent.</i> 15. | 38.570. |
| Noua quidam, <i>de penitent. & rem.</i> 10. | 38.563. |
| Nouerit, <i>de sentent. excommun.</i> 49. | 39.612. |
| Nouimus, <i>de verbor. significat.</i> 27. | 40.638. |
| Nos inter, <i>de purgat. canonis.</i> 6. | 34.523. |
| Nulli Episcoporum, <i>de accusat.</i> 5. | 1.15. |

Nulli

Libri V. Decretalium.

Nulli Iudæo, *de Iud.* 19. 6. 164
 Nulli se possunt, *de sentent. excomm.* 8. 39 578.
 Nuper à nobis, *de sentent. excomm.* 29. 39 593.

O.

Officij, *de penit. & remissionib.* 9. 38. 563.
 Officij, *de sentent. excomm.* 42. 39. 605.
 Olim I. V. & P. *de accusationib.* 26. 1. 60.
 Olim scribentibus, *de iur.* 7. 36. 543
 Olim tibi, *de verbor. significat.* 16. 40. 618.
 Omnibus, *de cleric. venat.* 2. 24. 408
 Omnipotens, *de accusationib. inquisitionib.* 4. 1. 11.
 Omnis viriſque, *de penitent.* 12. 38. 566.
 Omnes res, *de regul. iur.* 1. 41 643

P.

Pactum, *de verbor. significat.* 11. 40. 621.
 Parochianos, *de sentent. excomm.* 9. 39. 578.
 Pastoralis, *de priuil. & excess. privileg.* 19. 33. 506.
 Patentibus, *de priuil. & excess. privileg.* 10. 33. 495
 Permittimus, *de sentent. excomm.* 57. 39. 616.
 Perpendimus, *de sentent. excomm.* 23. 39. 589.
 Per iuas, *de simon.* 31. 3. 113
 Per iuas, *de simon.* 34. 3. 116
 Per tuas, *de simon.* 36. 3. 118
 Per tuas, *de sentent. excomm.* 40. 39. 601.
 Peruenit, *de excessib. Prælator. &c.* 1. 31. 451.
 Peruenit, *de sentent. excomm.* 17. 39. 583.
 Petiſtis, *de priuil. & excessib. privileg.* 10. 33. 507.
 Peticio, *de homicid. vol. vel cas.* 24. 12. 185.
 Petrus diaconus, *de homicid. vol. vel cas.* 17. 12. 274.
 Plures clericorum, *de vsur.* 1. 19. 345.
 Porro quidam, *de priuil. &c.* 7. 33. 490.

Porro, *de cleric. pugnans. in duell.* 1. 13 292.
 Porro si aliqui, *de sentent. excomm.* 7. 39. 577.
 Post miserabile, *de vsur.* 12. 19. 359
 Postulasti, *de Iud.* 14. 6. 156
 Postulasti, *de homicid. vol. vel cas.* 21. 13 282.
 Postulasti, *de cleric. excomm.* 7. 27 426.
 Prælatorum, *de accus.* 27. 1. 61
 Præſentium, *de cleric. percussor.* 3. 25. 410.
 Præterea, *ne Præl. vires suas, &c.* 4. 127
 Præterea, *de bares.* 4. 7. 171
 Præterea, *de apostas.* 1. 9. 226
 Præterea, *de vsur.* 7. 19. 356
 Presbyterum, *de homicid. vol. vel cas.* 7. 12. 261.
 Prohibes, *de magistr. & ne aliquid, &c.* 2. 5. 131.
 Proposuit, *de cleric. excomm.* 8. 27. 426.
 Pueris, *de delictis puer.* 1. 23. 397
 Pueris, *de sentent. excomm.* 60. 39. 617.

Q.

Quærenti, *de verbor. significat.* 10. 40. 631.
 Quæſitum est, *de penis.* 7. 38. 571
 Quæſiuit, *de verbor. significat.* 14. 40. 623.
 Qualiter & quando, *de accus.* 17. 1. 39.
 Qualiter & quando, *de accusat.* 24. 1. 54.
 Quàm graui, *de crimin. falsi.* 6. 10. 378.
 Quàm perniciosum, *de vsur.* 11. 19. 359.
 Quàm sit graue, *de excessib. Præl.* 9. 31. 460.
 Quàm sit laudabile, *de Iudæis.* 10. 6. 153.
 Quamuis, *de sentent. excomm.* 58. 39. 616.
 Quamuis causæ, *de regul. iur.* 10. 41. 647.
 Quamuis omnes, *de verb. signif.* 9. 40. 620.
 Quamvis, *de sentent. excomm.* 47. 39. 608.
 Quamto ampliùs, *de vsur.* 18. 19. 366
 Quamto ampliùs, *de priuil. leg.* 26. 33. 515.

Quantò

Index Capitulorum,

Quandò Gallicana , de magistr. 3. 5.
131.
Querelam , de simon. 14. 3.91
Querelam , ne Pralat. vic. suas , 4. 4.
129.
Quia circa , de princ. 22. 33.508
Quia frustra , de usur. 14. 19.363
Quia in omnibus , de usur. 3. 19.
346.
Quia intentionis , de princ. 29. 33.
518.
Quia nonnullis , de magistr. & c. 4. 5.
131.
Quia non satis , de simon. 7. 3.78
Quia super , de iud. 4. 6.144
Qui cum fure , de furti. 4. 18.341
Quicumque , de simon. 2. 3.75
Quidam sicut , de apostat. & reiser. 4. 9.
232.
Quidam , de princ. & excessib. princ. 32.
33.520.
Qui ex timore , de regul. iur. 8. 41.
646.
Qui furatur , de furti. 1. 18.333
Quid per noualis , de verb. signif. 21. 40.
632.
Qui presbyterum , de penitens. 1. 38.
558.
Qui scandalizauerit , de regul. iur. 3. 41.
644.
Quod à prædecessore , de schismatic. 1. 8.
220.
Quod autem , de penitentiis , & rem. 4. 38.
559.
Quod de his , de sentent. excom. 26. 39.
590.
Quod dicitur , de verbor. significat. 4. 40.
618.
Quod indubiis , de pen. 5. 37.549
Quod in dubiis , de sentent. excom. 30. 39.
594.
Quod in te , de penitentiis , & rem. 11. 38.
565.
Quod latenter , de regul. iur. 5. 41.645
Quod non est , de regul. iur. 4. 41.
644.
Quod nonnullis , de privilegiis. 25. 33.
514.
Quod olim , de iud. 12. 6.154
Quod quidam , de penitens. & rem. 5. 38.
560.
Quoniam , ne Pralat. vic. suas , 2. 4.
127.
Quoniam , ne Pralat. vic. suas , 3. 4.
127.
Quoniam , de magistr. & ut aliquid , & c. 12.
5.130.

Quoniam simoniaca , de simon. 39. 3.
120.
Quoniam , de princ. & excessib. princ. 21.
33.507.
Quoniam , de usur. 2. 19.345
Quoties , de accus. 1. 1.1
Quotiens , de simon. 4. 3.76
Quotiens , de purgat. canonie. 5. 34.
523.

R.

R. Ecepimus , de princ. 8. 33.491
Recepimus , de purgat. canonie. 16.
34.529.
Referente , de delict. puerorum. 2. 23.
398.
Relatum , de sentent. excomm. 37. 39.
600.
Repellantur , de accus. 7. 1.19
Responso , de sentent. excomm. 43. 39.
605.
Retulit nobis , de regul. iur. 11. 41.647

S.

S. Acris est , de sentent. excomm. 38. 39.
600.
Sacro approbante , de sentent. excom. 48.
39.609.
Salubriter , de usur. 16. 19.364
Sanè si Episcopi , de excess. Pralat. 5. 31.
457.
Sanè , de princ. 9. 33.491
Si aduersus , de hæret. 1. 7.200
Si aliquando , de sentent. excom. 41. 39.
604.
Si aliquis , de homicid. vol. vel cas. 5. 12.
254.
Si à parte , de infant. & languid. 4. 11.
243.
Si blos alienus , de iniur. 3. 36.541
Si celebrat , de cleric. excomm. 10. 27.
434.
Si concubinx , de sentent. excom. 55. 39.
615.
Si confiteris , de accus. 12. 1.17
Si enipa , de iniur. 7. 36.544
Sicut ait , de hæret. 8. 7.181
Sicut dignum , de homicid. vol. vel cas. 6.
12.259.
Si dominus , de simon. 3. 3.76
Sicut enim , de simon. 5. 3.77
Sicut ex literarum , de homicid. vol. vel cas. 10.
12.281.
Sicut in iudiciis , de princ. 2. 33.484
Sicut

Libri V. Decretalium.

Sicut in vno, *de hereticis*. 14. 7. 114
 Sicut iudex, *de iud.* 9. 6. 148
 Si laeserit, *de iniur.* 4. 36. 542
 Sicut nobis, *de simon.* 32. 3. 114
 Sicut nobis, *de sentent. excomm.* 39. 39. 601.
 Sicut olim, *de accus.* 25. 1. 56
 Sicut pro certo, *de simonia.* 38. 3. 119.
 Sicut venire, *de excessib. Pralat.* 8. 34. 458.
 Si de terra, *de pruil.* 6. 33. 487
 Sigressus ignis comprehenderit, *de iniur.* 5. 36. 542
 Significantibus, *de nou. oper. nunc.* 3. 32. 476.
 Significantibus, *de purgat. vulg.* 2. 35. 534.
 Significasti, *de homicid. vol. vel cas.* 16. 12. 274.
 Significasti, *de homicid. vol. vel cas.* 18. 12. 276.
 Significasti, *de adult.* 5. 16. 312
 Significauit, *de iud.* 11. 6. 154
 Significauit, *de penit.* 3. 38. 559
 Significauit, *de sentent. excom.* 18. 39. 583.
 Si perfodiens, *de homicid. vol. vel cas.* 3. 12. 250.
 Si quem, *de sentent. excomm.* 59. 39. 616.
 Si quis, *de simon.* 44. 3. 124
 Si quis, *de homicid. volunt. vel cas.* 2. 12. 248.
 Si quis, *de furt.* 3. 18. 338
 Si quis, *de clerico percussor.* 1. 25. 409.
 Si quis, *de cleric. non ordinat. min.* 1. 28. 438.
 Si quis aperuerit, *de iniuriis*, 2. 36. 541.
 Si quis domum, *de iniuriis*, 6. 36. 542.
 Si quis Episcopus, *de cleric. excom.* 1. 27. 413.
 Si quis presbyter, *de cleric. excom.* 2. 27. 418.
 Si quis presbyter, *de purgat. can.* 2. 34. 521.
 Si quis presbyter, *de penitent.* 2. 37. 546.
 Si rixati, *de iniur.* 1. 36. 540
 Si seduxerit, *de adult.* 1. 16. 299
 Si verò vos, *de sentent. excomm.* 34. 39. 597.
 Si verò aliquis, *de sentent. excom.* 3. 39. 575.

Si verò aliquis, *de sentent. excom.* 4. 39. 576.
 Si vir sciens, *de adult.* 3. 16. 304
 Statuimus, *de cleric. maledic.* 2. 26. 413.
 Stephanus, *de reg. iur.* 7. 41. 646
 Suam ad nos, *de pen.* 9. 37. 551
 Suam nobis, *de simon.* 28. 3. 106
 Super eo, *de raptor.* 2. 17. 315
 Super eo, *de usur.* 4. 19. 351
 Super eo, *de crimin. fals.* 2. 20. 371
 Super eo, *de sentent. excomm.* 2. 39. 573.
 Super eo, *de sentent. excomm.* 51. 39. 613.
 Super his, *de accus.* 16. 1. 35
 Super his, *de pen.* 8. 37. 550
 Super quibuldam, *de verb. sign.* 26. 40. 636.
 Super specula, *de macul.* 5. 5. 135
 Super specula, *de pruil.* 28. 33. 517
 Suscepimus, *de homicid. vol. vel cas.* 10. 12. 262.

T.

Tanta est labes huius, *de simon.* 6. 3. 78.
 Tanta est, *de excessib. Pralat.* 18. 31. 469.
 Transmisit, *de verbor. significat.* 33. 40. 643.
 Tribunal, *de cleric. percussorib.* 2. 25. 409.
 Tux discretionis, *de penitent.* 6. 37. 549.
 Tux fraternitati, *de apostatis*, 3. 9. 232.
 Tux nobis, *de cleric. per salt. prom.* 1. 29. 446.
 Tua fraternitas, *de adulterio.* 7. 16. 313.
 Tua nobis, *de verbor. significat.* 32. 40. 642.
 Tua nos, *de simon.* 33. 3. 115
 Tua nos, *de usur.* 9. 19. 357
 Tua nos, *de homicid. vol. vel cas.* 19. 12. 280.
 Tua nos, *de sentent. excomm.* 19. 39. 586.
 Tuarum, *de pruil.* 11. 33. 493
 Tuas dudum, *de usur.* 13. 19. 367

V.

Venerabili, *de sentent. excomm.* 52. 39. 614.

Venerabili,

Index Capitulorum, &c.

| | | |
|--|--|--------|
| Venerabili, de verb. signific. 22. 40. | Vergentis, de hares. 10. | 7. 192 |
| 632. | Vniuersitatis, de sentent. excomm. 24. 39. | |
| Veniens, de accus. 15. | 589. | |
| Veniens, de simon. 18. | Vt famz, de sentent. excomm. 35. 39. | |
| Veniens, de his qui fil. occiderunt. 1. 10. | 599. | |
| 239. | Vt illz, de purgatione canonis. 3. 34. | |
| Veniens, de eo qui fuit. ordin. fufe. 1. 30. | 522. | |
| 449. | Vt nemo, de simon. 13. | 3. 91 |
| Veniens, de sentent. excomm. 16. 39. | Vt priuilegia, de priuilegiis, 24. 33. | |
| 582. | 514. | |





D. D. EMANVELIS
GONZALEZ
TELLEZ
COMMENTARIA
 IN LIBRVM QVINTVM
DECRETALIVM
GREGORII IX.

© 1700 1701 1702 1703 1704 1705 1706 1707 1708 1709 1710 1711 1712 1713 1714 1715 1716 1717 1718 1719 1720 1721 1722 1723 1724 1725 1726 1727 1728 1729 1730 1731 1732 1733 1734 1735 1736 1737 1738 1739 1740 1741 1742 1743 1744 1745 1746 1747 1748 1749 1750 1751 1752 1753 1754 1755 1756 1757 1758 1759 1760 1761 1762 1763 1764 1765 1766 1767 1768 1769 1770 1771 1772 1773 1774 1775 1776 1777 1778 1779 1780 1781 1782 1783 1784 1785 1786 1787 1788 1789 1790 1791 1792 1793 1794 1795 1796 1797 1798 1799 1800

TITVLVS PRIMVS.

De accusationibus, inquisitionibus, & denunciationibus.

CAPVT PRIMVM.

* Felix Papa.

VOTIES Episcopus super certis accusatur criminibus, si tales fuerint accusatores, qui iuste, & canonicè recipi debeant, legitima in¹ Synodo suo in tempore congregatà, ab omnibus canonicè audiat, qui sunt in provinciis Episcopis. Quod si² legitimi non fuerint accusatores, non fatigetur Episcopus, quia sacerdotes ad sacrificandum vacare debent, non ad litigandum. Nec illi, qui chroni Dei vocantur, prauorum hominum insidiis turbari debent, sed liberè Christo Domino famulari.

NOTÆ.

1. **F**elix.] Ita etiam legitur in prima collectione, no, sub hac titul. cap. 1. & ex ipsa epistola Felicii II. ad Episcopos in Alexandrina Synodo congregatos, citatur textus hic à Carnotensi p. 5. *Decreti, cap. 279. Buchardus lib. 1. Decreti, cap. 163. D.D. Gonzal. in Decretal. Tom. V.*

De verba in presenti textu relata, extant in eadem epistola 1. Felicii Papæ II. cap. 17. tom. 1. *Concilior. Biny.*, & apud Luitprandum in eius vita: ex qua restituo litterarum huius textus, ut etiam fecit Antonius August. in *notis ad hunc textum*. Sed licet tunc in collectionibus tribuatur textus hic Felicii II. non tamen immerito de eius fide dubitauit Bato-

nus anno 357. *num. 53.* liquidem temporibus Felicii II. Athanasio in exilio latitante nullus plane locus, vel vltimum tempus opportunitatem congregandi Synodum potuit esse : vnde quomodo poterat Felix ad Episcopos in Synodo congregatos referre? Sed vt ad Felicem II. teneretur, sciendum est, Liberio Summo Pontifice in exilium misso à Constantino Imperatore, quia Arianis subscribere, vte communicare volebat, Romanum Clerum iurururum promississe, nullum se alium Pontificem administrum superstitere Liberio : sed postea operta Ariariorum, ac pexeipue Acacii Cæsarensis Episcopi Felix Diaconus Romanus Pontifex creatus fuit. Rufinus lib. 10. *hissor. cap. 12.* Theodoretus lib. 1. *hissor. cap. 17.* Sozomenus lib. 4. *hissor. cap. 10.* Hieronymus *catol. in Acacio* : qui licet Arius non esset, liberè tamen cum Arianis communicabat, ideoque eo tempore nullus Catholicorum eum eo communicabat : sed post biennium cum Liberius per vim & minas Concilio Sminenti subscripsisset, cum Arianisque communicalet, atque Athanasium condemnasset, Romanus Clerus abrogatà Liberio, Pontifici dignitate, ad Felicem se contulit, quem Catholicum esse sciebat, & ex eo tempore cepit Felix vt legitimus Pontifex Ecclesiam regere, cum Liberius tanquam hæreticus decessisset : sed Felix iam vetus Papa agnoscent Ecclesie, & fidelitatem, non solum recessit ab Arianorum communione, verum etiam eodẽ Concilio declarauit, Imperatorem Constantium, & Episcopos Vrsacium, & Valentem, eum quibus Liberius pacem fecerat, verè hæreticos esse, & propter hanc damnationem Constantij, Ceteri in Latio obtruncatione capitis martyrio cotorsus est, vt habetur in *Martyrol. Romano, die 19. Iulij.* Sed cum eius ingressus iniquus eroditus esset, & de ipsius obitu pugnantia scriptorum testimonia expectarentur, temporibus Gregorij XIII. cum de emendatione Martyrologij Romani ageretur, non leuis disceptatio fuit, an ex eo expungendus esset Felix, nec-ne? Et tunc accidit planè veluti diuino miraculo, vt cum in Diaconia Sanctorum Martyrum Cosmæ & Damiani in foro ad templum Paetis posita, quidam homines malè consulit, sed non sine diuina providentia, clam altare vnum à dextris positum suffoderent, vt thesaurum quærent, quum audierant ibi esse reconditum, in marmoream arcam incidissent, in cuius altero latere lapideæ tabulæ interstitio ab altero distinctio repositæ inuentæ fuerunt reliquæ Sanctorum Martyrum Marci, atque Marcelini, & Tranquilliani : in altero verò atre latere corpus Sancti Felicis, de quo agimus, vni cum lapide laterculo intus posito hæc litteris exarato : *Corpus Sancti Felicis Papa, & Martyris, qui dampnauit Constantium.* Refert Baruchius *dicto anno 357.* qui hunc prætorio Pontifici rescripsisse Constantium Imper. in l. 14. *Cod. Theodos. de Episc. & Cleric.* refert, in cuius epigraphæ legitur, *Constantium Imperat. August. & Iulianus Cesar Felici Episcopo* : quo tempore adhuc Liberium testium non fuisse doctè probat Gothofredus, & Sanctum hunc ab iniustis calumniis defendunt Bellarminus lib. 4. *de Romano Pontifice, cap. 9.* Theophilus Raynaud. *de calomnia cap. 25. fol. 445.* Severinus Rinas in *notis ad eius vitam.* fr. Anton. Petex in *Penult. fidei, de R. P. cap. 3.*

b. Synoda] Provinciali videlicet, iuxta tradita in cap. 1. de iudiciis.

c. Legitimi.] Legitimum in iure generaliter dicitur quicquid est iustum, & legi consonum, quasi secundum legem, aut per legem receptum, l. legitima 6. ff. de patris, cap. legitima, de appella. lib. 6. l. lege obmutet, ff. de P. S. vbi Gedius, Genilis, & Foinet. Vnde accusatores legitimi in præsentia deantur omnes illi, qui iuste, & secundum leges ad accusandum idonei proponuntur, vt satis deducitur ex illis verbis huius textus, ibi : *Si tales fuerint accusatores, qui iuste, & canonice recipi debent.*

COMMENTARIUM.

EX hoc textu sequens communiter deducitur assertio. Ad præsentem illegitimè accusatoris reus in iudicio fatigandus non est. Probat eam textus in cap. 2. cap. cum P. cap. repellunt, cap. meminimus 23. cap. cum oportet 29. cap. cum dilectus 20. cap. accedens, hoc tit. cap. nihil 21. q. 1. cap. in primis, §. sed 3. quæst. 9. cap. dignum 6. quæst. 6. cap. si qui sum 27. cum sequenti 2. quæst. 1. cap. qui sub 3. cap. postulasti 6. 3. quæst. 6. cap. prohibetur 1. quæst. 1. cap. consilium 3. quæst. 5. cap. qui crimina 1. quæst. 1. cap. canonica, cap. similiter, cum sequenti 3. quæst. 5. cap. cum in tua, de sponsal. cum aliis congestis ab Anton. August. in cap. lib. 30. tit. 4. in quibus docetur, illegitimum accusatorem admittendum in iudicio non esse, l. qui accusare, l. de accusat. l. criminali, l. ignorat, Cod. qui accusare, l. 1. tit. 1. part. 7. illustant vitra congestos à Barb. hic, Petrus Gregor. lib. 5. parit tit. 9. cap. 3. & lib. 4. Synagm. cap. 12. Socus lib. 5. de iustis, quæst. 4. art. 3. Vighel. in method. iuris Part. fol. 33. Simanca de Catholicis lib. 1. cap. 9. num. 49. Fragoso de regina. Christ. Reip. part. 1. lib. 5. dispus. 12. §. 2. Decianus lib. 3. tract. crimin. cap. 3. Anton. Matthæus de crimin. ad tit. de accusat. cap. 3. plures congesti à Carleuallo de iudiciis tom. 2. dispus. 4. num. 16. Foxortius lib. 1. rer. quod. cap. 24. & 35.

Sed in hanc assertionem pro dubitandi ratione ita insurgo : Reus licet ab illegitimo accusatore impetitus, omnino iudicio compatre cogitur, saltem ad proponendum, & allegandum privilegium suum, immò est non comparcat, tanquam contrariæ puncti valet, cap. veniens 15. hoc tit. l. si crimini, §. final. ff. ne quis cum qui in ius vocatus, l. si reus, ff. indicium solui, l. ex quacunque 32. ff. si quis in ius vocatus, l. si quis ex alio 5. ff. de iudiciis : & interim dum exceptio accusatoris discentur, debet etiam queri de vita accusati, cap. querendum 2. quæst. 7. Igitur propter illegitimum accusatorem fatigatur accusatus. Accedit, nam est illegitimus sit accusator, tamen tot accusator in iudiciis est purgatio canonica, vt docetur in cap. veniens, cap. cum P. hoc tit. cap. cum P. de purgatione. Igitur quia fatigatur accusatus, etiam eum illegitimus est accusator. Auguet etiam, nam plerumque quis ponitur sine accusatore à Magistratu qui reos inquirat, l. 1. §. quies, ff. de offi. Praefecti. verb. l. 4. ff. ad leg. Jul. pecul. l. congruis, ff. de offi. Praefecti. l. 1. C. de custod. rerum. Igitur facilius sine accusatore legitimo.

Quà dubitandi ratione non obstante vera est præteris decisio, pro cuius oppositione sciendum est, accusare dici quasi causari à causa, cap. forum, §. accusator, de P. S. post Holtienem notat Ant. Marthæus ad tit. de accusat. cap. 1. & licet accusare variè accipitur, vt notat in cap. 1. qui man-

2.

3.

CONCLUSIO TRADITA IN ROMANA.

4.

TRADITA IN ROMANA.

5.

ACCVSATOR QVISQVE

crimina accusare; tamen in hoc titulo Digestorum, & Codicis de accusa, accipitur pro delatione, quâ quis apud iudicem reus criminis postulat. Dicitur criminatio in l. 1. Cod. Theodof. hoc tit. actio criminis in l. 3. eod. Cod. & in criminalis causa in l. 1. eod. Cod. & in contestatio in l. 8. Cod. Theodof. de sum. libell. quemadmodum defensionis accusationis contraria importat criminis obiecti dissolutionem, ut ex Aristotele Rhetoricorum cap. 4. notat Decian. lib. 3. tract. crimin. cap. 1. num. 1. iuxta quam acceptioem accusatio variè diffinitur, ut post Azoanum ad tit. Cod. de accusa. Hostienfem ad hunc tit. Greg. Lopez in l. 1. tit. 1. par. 7. fol. Clatum cap. final. §. 12. numer. 2. Duarenium lib. 1. disp. cap. 38. & ad tit. ff. de accusa, tradit Cuiac. ad evanum tit. Decian. ubi supra, num. 2. & commentor ita diffinitur, ut sit: Delatio criminis in iudicium ad publicam vindictam, cum legitima subscriptione. Ita lul. Clarus, Decianus, & Ant. Matthæus ubi supra. Sed hæc definitio difficillis redditur ex frequentibus principiis; nam in hac diffinitione videtur definiti accusatio, prout est quid facti, & ita actio illa, seu factum, dum quis accusatur; non verò prout est quid iuris, in quo sensu definiti debuit prout definitur actio à Iustiniano in princip. Insti. de ad. vt sit: Ius persequendi in iudicio, &c. vt docuerunt Marianus, & Betinius in present. rubric. num. 21. & 26. Decianus dist. cap. 1. numer. 3. & 4. Deinde quia ex proprietate verbi, quod attendi debet, Lex alter, ff. de legat. 3. crimen simpliciter prolatum verificatur tantum in peccatis quibusdam grauissimis, non verò in leuibus, cap. 1. §. 1. dist. 1. Glossa in cap. precatum, de paenit. dist. 1. ubi post D. Thomam docet Nauarrus, & Bertrius in present. num. 24. Decian. supra, cap. 2. num. 2. & cap. 7. in princip. Et tamen constat, accusationem in leuibus delictis etiam admitti, l. 1. §. 1. dist. 1. Terriò quia per accusationem non excusatur, sed magis criminofus, & rei criminum deferuntur, & delatio criminis per se non videtur importare accusationem, ut patet in testibus Synodaliibus, qui dum crimina, & non criminum reos deferunt, non accusant, nec accusationem instituit dicuntur. Quare quia multoties in iure crimen accipitur pro ipsa accusatione, l. 1. tit. 7. l. 1. §. 1. ff. de hoc tit. l. 1. l. 1. §. 1. ff. de R. l. 1. Cod. de his qui ad Eccles. confug. docent Glossa in l. 1. Cod. de general. abolit. & ex Cicerone tradit Decian. supra, cap. 9. num. 6. & lib. 3. cap. 2. num. 16. Igitur accusatio non debet definiti per delationem criminis, siquidem diffinitur idem per idem. Tandem, quod licet inscriptio, seu subscriptio ad penam talionis regulatè exigitur, vt dicemus infra in cap. super his; non tamen requiritur ad substantiam, seu essentiam accusationis, quod in definitione exprimitur; quia accusatio ex se, & ex sua natura, vel essentia, non includit, seu includit subscriptionem huiusmodi, licet ea spectet ad accidentalitatem, & solennitates in accusatione necessarias; & dantur plures casus, in quibus subscriptio non est necessaria. Gloss. 2. in d. 1. super his; in quibus nemo negat dari veram accusationem, vt contingit hodie, cum generali consuetudine talis subscriptio non adhibetur.

Aliter accusationem definiunt Marianus Socius, & Bertrius in present. rubric. & Duarenus super, videlicet, vt sit ius defendendi, vel vlticendi, seu persequendi in iudicio delictum; sed ex eorum & aliorum mente dicendum est, accusationem

aliquando considerari, & accipi prout denotat factum, & actionem illam quâ reus criminis ad iudicem deferitur, & in causam criminalem trahitur; iuxtaque hunc sensum potest procedere communis definitio, patens mutari, iuxta quod accusatio sit Delatio rei criminis in iudicium, ad publicam vindictam solenniter facta. Et verbum delatio, ponatur loco generis, cætera verò constituant differentiam inter hanc, & alias delationes, quæ accusationem non continent. Aliquando verò consideratur, & accipitur accusatio non pro facto, sed quatenus continet quid iuris; & tunc ad similitudinem actionis civilis definitur potest, quod sit ius deferendi reum criminis solenniter in iudicio ad publicam vindictam. Ponitur ius loco generis, cætera verò loco differentie. Dicitur, reum criminis, ad vitandam vnam, & alteram difficultatem, quem superiori nometo adfluxit, Dixi, in iudicio, tum ad explicandam naturam accusationis, per quam reus in iudicio, & causam trahitur; tum etiam ad excludendam delationem, seu ius quod non in iudicio, vel ad causam, sed ad supplicium pro sententie executione deductus, l. 1. tit. 6. ibi: Ad supplicium ductus, ff. de appellat. addit. 7. Cod. de Episc. audiens. Dixi etiam, ad publicam vindictam; quia propriè loquendo in hac tantum consistit, & ad hanc solam pertinet accusatio, de qua agitur in hoc titulo; non verò ad satisfactionem lesionis, vel vtilitatem priuam, quæ potius parti applicandam, quæ magis per actionem, quam per accusationem petuntur princip. Insti. de public. indic. Quare accusatio dicitur a ius. Lex ex uno, ff. de O. & A. l. 3. §. 14. C. Theodof. cod. si, l. si maritus ff. ad leg. Jul. de adul. Tandem accipitur solenniter, cum ad explicandam solennitatem prescriptam in Libellorum, ff. de accusa, cum etiam ad constituendam differentiam inter accusationem, & denunciationem, & inquisitionem, in quibus nulla desideratur solennitas, cap. super his, hoc tit. l. 1. §. 1. eod. Cod. Nec tunc obstant iuris principia contra communem definitionem supra expensa. Non primum, nam responderetur, in comuni definitione considerari accusationem, prout significat actionem ipsam, per quam reus deferitur in iudicium; & propterea non definitur accusatio per ius, sicut in simili vlticilio, vel præscriptio non definitur, quod sit ius, sed potius additio domini, &c. l. 3. ff. de vlt. cap. Quod verò Bertrius ubi supra, &c. l. 3. ff. de vlt. cap. Quod verò Bertrius ubi supra, &c. l. 3. ff. de vlt. cap. Quod verò Bertrius ubi supra, &c. l. 3. ff. de vlt. cap. Quod verò Bertrius ubi supra, & adoptio in specie, & sententia in specie definiti potest, quod sit rescriptum, &c. adoptio, &c. sententia, &c. accipiendo rescriptum, adoptionem, & sententiam pro genere proximo, adiectis deinde aliis verbis differentiam constituentibus. Etiam dici potest verbum delatio, in comuni definitione non accipi pro accusatione, sed pro adductione, seu deductione in iudicium, quæ est propria acceptio verbi deferre, quod per translationem significat accusare; & hæc acceptio magis consonat etymologia Dicitur adductus in d. cap. super, vers. Accusatur, dum docetur

A 2 accusatio

accusantem dici, quia ad causam vocat, id est re-
hilit, seu deservit. Accedit lex qui de crimine 9. C. hoc rit-
ual. ibi: In accusationem deducitur est, l. penult. Capi
accusare, ibi: Delator, etque accusator & l. indicasse
197. ff. de V.S. ubi Iuriconsultus constituit dis-
crimen inter detestile & accusasse, ut sub verbo in-
dicasse, primum gradum constituit, qui detulit, se-
cundum, qui arguit, tertium, qui accusavit, vlti-
mum, qui conuict, ut explicat Decianus d. lib. 3.
c. 2. num. 4. Nec etiam obstat difficultas expensa
ex verbo criminis, iuncto d. l. 1. & l. diffinitio, nam differ-
rentia inter crimen, & peccatum, non procedit at-
tento communi uso loquendi, ut ex pluribus iuri-
bus probat Nanarus, & Beroina ubi supra, iuxta
quem loquendi usum, qui verborum proprietati
praefertur, c. x. litteris 7. ibi: Ad communem verba-
rum intelligentiam, de transalio, & Librorum, §. quod
autem, versum & c. ff. de leg. 3. intelligi potest par-
ticula criminis in dicta definitione: tum etiam quia
in d. l. lenia, dicuntur crimina levia per comparationem
ad alia grauiora, seu grauius, verumtamen ad-
huc illa leuia, eo ipso, quod crimina sunt, secun-
dum sermoneis proprietatem sunt in se grauius pec-
cata. Nec tandem vltima difficultas obstat, quia
respondetur faciendo inscriptionem, vel subscriptio-
nem non esse de essentia, aut substantia accen-
sationis, & in aliquibus casibus non requirit, & pro-
pterea in dicta definitione, quam probamus, non
habet mentionem inscriptionis, aut subscriptionis, & loco
illius apponitur particula solenniter, quae refertur
ad omnia sollemnia in accusantibus necessaria,
quae licet non pertineant ad essentiam accusatio-
nis, pertinent tamen ad eius formam, & ordinem,
ad constituendam differentiam, per quam accusatio
ab inquisitione, & denunciatione distinguitur.

De hac igitur accusatione hoc modo accepta, &
definita agitur in praesenti titulo, sed cum in qua-
libet materia prius de personis agendum sit, ideo
in hoc textu, & sequentibus, de accusatoribus, &
quinam legitimi sint, tractatur: circa quos scien-
dum est, omnes regulatiter legitimos crediti accu-
satores, nisi specialiter acculare prohibeantur le-
gibus. Hincernus episc. 7. c. 4. Si quis autem scire de-
sideret, quales accusatores ad testes ad accusationem
sacerdotum recipi debeant, & quid de accusatore fa-
ciendum sit, plenius in canonibus & legibus, quibus
una cum sacris canonibus sancta moderatur Ecclesia,
poteris reperire. Et Hadrianus Papa in c. planis 2. q. 7.
ait: Placeat eorum accusandi sacerdotes, & testifican-
di in eos vocem obsequere, quos non humane, sed diui-
ni vocibus mortuos esse scimus, quae vocem suam
interdici potius, quam audiri oportet. Vocem suam
criminosorum dixit Hadrianus, ut etiam Melechi-
das Papa, & Pelagius II. transcripsi ad Gratianum in
c. 2. q. 5. c. 54. 2. q. 7. explicat & illustrat Ant. Au-
gustinus in notis ad c. 29. Hadriani Pape. Quare si
cognouerimus, quae istae personae sunt, simul ag-
noscemus ceteras personas, quibus accusandi fa-
cultas competit, ut aiebat Marcellus in l. qui ac-
cusare 8. ff. hoc ritual. Facient textus in l. qui accusare,
C. hoc ritual. c. prohibetur 2. q. 1. & ita edictum hoc est
prohibitum, ut docetur Iul. Clarus lib. 5. sen-
tent. q. 14. §. final. n. 1. Decianus lib. 3. tract. crim. c. 6.
Duerens ad lib. de accusat. c. 3. Ant. Gomez lib. 3.
sermon. cap. 1. §. 1. Et primum propter seculum acculare
prohibetur femine, c. prohibetur 2. q. 1. c. de crimine
1. §. q. 3. d. 3. d. l. qui accusare, l. 5. ad leg. Fab. C. nisi
suam, iuxta morem iurium subsequantur, id est eorum,
in quos ex lege testimonium inuitre non di-
cunt, l. 1. ad 2. ff. hoc ritual. §. 5. 9. & 14. C. qui ac-
cu-

sare, l. 1. §. 1. C. ad leg. Corn. de falsis, l. 1. §. 1. 2. vers.
nisi certis, C. qui accusare. Audientur etiam in crimi-
ne laice Maestran, l. in quibuslibet 8. ff. ad leg. Iul.
Maest. ubi pro iudicium, legendum esse indicium,
probat Gothofredus in l. 3. Cod. Theod. hoc ritual.
cap. sancti, §. unde 1. §. 9. 3. annone fraudate, Lami-
rem 1. §. ff. hoc ritual. l. final. §. final. ff. ad leg. Iul. de an-
non. suspecti ratoris, l. 1. §. consequens, ff. de suspecti
rator. haresis, sacellie, & simoniz, quia hae de-
licta in pluribus equiparantur laice maestran, l. 4.
C. de heret. l. si quis in hoc 10. l. si quis quinquaginta §. 1. C.
Episc. & cleric. Et licet ad erimen falsi hoc exten-
dat Decianus lib. 3. tract. crim. cap. 7. n. 1. 8. rectius
tamen contrarium probat Ant. Mathaeus ad tit. de
accusat. cap. 1. num. 2. Secundo propter aetatem ab
accusatione atque pupilli, adeo ut nec popula-
tem actionem intendere possint, d. l. qui accusare,
l. mulieri, & pupilli, ff. de pupill. alien. nisi suum, vel
suorum initium persequantur, l. 1. §. 1. 8. l. 1. §. 1. C.
de iur. cam 6. Synodi CP. ibi: Sed tamen omnibus, qui-
bus accusatio denegatur, in causis propriis accusandi
licentia non neganda. Poterunt lib. 4. ver. quid est §. 5.
Vnde apud Apuleium in Apolo. Licius Venerius
Apuleium capituli iudicio accusant, id est magica-
rum artium, & maliciorum, propter maiestatem
suam quam Apuleius magis artibus ad sui male-
ficia pellexisse asserbat, ut exponit Genril. ad ip-
sam Apolog. num. 39. Etiam possunt pupilli de testa-
mento patris adulterato, & de virginitate infirmo
accusationem instituere, l. 2. §. 1. 8. ff. hoc ritual. l. 5. C.
qui accusare. Io laice etiam Maestran divinae, &
humanae accusatione pupillo admitti, non male
docet Anton. Mathaeus, siquidem alij, quibus ac-
cusandi non habent, eo casu audiuntur, l. semper 7.
l. in quibuslibet, ff. ad leg. Iul. Maest. Et licet his
casibus, quibus permittitur etiam pupillis accusare,
consilium tamen iutoris interpetre debere inui-
videatur in l. ibi tamen 11. ff. hoc ritual. apud Paulum
lib. 5. sentent. tit. 12. verius tamen et eo verbo auctori-
tatem summi intelligi, ex l. 4. C. de auctor. praesent.
Quoad probet, minores videlicet 17. annos, atque
inter, lex Iulia de adultis specialiter istae vetas
Iulius delicti accusationem, unde a contrario deducit,
in aliis admittendos esse, l. si minoris 15. §. 1. 2.
Iulia, ff. ad leg. Iul. de adult. immo & minores ac-
cusare posse, si 17. annos habeat, & coratorem in iu-
dicio, probatur ex l. 1. §. de possit. l. 4. C. de auctor.
praesent. Et licet in accusatore eisdem 10. annos,
qui in teste desiderantur ad testimonium petitiu-
dum in causa criminali, ex l. in testimonium 10. ff. de
testib. petant Decianus lib. 3. tract. crim. c. 2. Iul.
Clarus lib. 5. sentent. §. final. quod 1. 4. num. 7. Fari-
nac. in praxi, quod 1. 2. num. 15. merito tamen con-
trarium tenet Ant. Mathaeus ubi supra, quia
non ut ex lege tellis, ita ex fide accusatoris salus
rei pendet.

Ob conditionem suam acculare non possunt
serui, c. canonica, vers. Aut libertus, cap. accusatores,
§. final. cap. nullus 3. quod 1. §. 1. 6. Cod. ad leg. Iul. de
adult. nisi in criminibus laice Maestran divinae,
aut humanae, fraudatae annonae, falsae monetae,
fraudati census, in quibus serui etiam contra Do-
minos audiuntur, l. 1. c. 1. §. 1. de iudiciis, l. 7.
§. serui, ff. ad leg. Iul. Maest. Licet etiam seruo de-
ferre interfectorem domini sui, l. 1. Cod. de pro-
hibitis Imper. & dominum accusare de suppellectis
tabulis, in quibus liber esse iustus erat, d. l. 1.
vix 3. l. 7. ff. ad leg. Corn. de falsis. Sed hoc enu-
datum credit Ant. Mathaeus d. lib. 3. tract. crim. c. 2.
in l. penult. Cod. qui accusare, ubi tantum in crimi-

8.
RERUM
ET ALIS
QUI AC-
CUSANT
NEQUE
VNT.

mine laeſe Maieſtatis ſervos audiri contra domi-
nos, Atrendis, & Honorarios ſanſerunt, licet in
L. unic. Cod. Theodof. ne propter crimina ſerui, ubi
ea contritio reperitur, deſit taxatio tamen, citra
filios exiſtentes in laetis paternis; licet enim
legitimam poſſionem habeant ſtandi in iudicio,
L. unic. 4. §. 1. l. licet 56. §. de iudicio, l. 6. & 7. Cod.
ead. titul. verius tamen eſt, niſi conſentiente parte
accuſare non poſſe, ſed unius 17. §. filio, ff. de in iuri-
ris, excepto aditum crimine propter vindictam
proprij doloris, L. unic. 6. §. penult. l. filium 37. ff. ad
l. ſol. de adol. Etiam propter ſacramentum in in-
greſſu militum praefectis accuſare non poſſunt mi-
lites, ne occaſione hac deſcendant ad caſtris, niſi
ſuum, vel ſuorum in iuriis perſequantur, ſed in
criminibus legis Iuliae Maieſtatis, fraudate anno-
no, l. 3. §. ſi tamen 11. ff. de titulis, l. & ſi crimini, Cod.
qui accuſare, l. famoſi 7. §. 1. ff. ad leg. l. Maieſt.
Ad veteranos extra caſtra degentes hae perhibito
non extenditur, quia non militant, eſſi dela-
tores eſſe perhibeantur, l. diſſerit 18. §. veteranos,
ff. de in re ſiti. Decianus lib. 3. traſt. crimin. cap. 16.
Etiam Magiſtratus illi, qui impetium exercet,
accuſare non poſſunt, quia & ipſi ratione officij
accuſare nequeunt, diſt. cap. prohibetur, diſt. l. 8.
ff. hoc titul. niſi Magiſtratus minor ſit, qui im-
petium non obtinet, qui & accuſare, & accuſari va-
let, l. nec Magiſtratus 32. ff. de in iuriis. Propter
crimen plures accuſare nequeunt, veluti Hæreti-
ci, Pagani, cap. alium, cum ſequentibus, cap. 1.
& 2. cap. ſuſpecti, cap. crimina, cap. milium 4.
quaſt. 1. locuſtoſi, cap. conſanguinitas 3. quaſt. 4.
iuridici, ſeu magi, cap. final. 2. quaſt. 8. cap. con-
ſtitutio 3. quaſt. 5. nec ſimili grauiori crimine im-
plicari, cap. cum dilecti, hoc tit. cap. ſuperſus, cap.
querendum 2. quaſt. 7. quia iniquum eſt rationem
vitz ab alio reſecare, qui non poſſit ſue reddere.
Eleganter Cicero de diuinatione, ibi: Nulla ſalutis
Reipublicae maior eſt, quam eoſ, qui alterum accuſant,
non minus de laude, de honore, de ſana ſua, quam
illos qui accuſantur, de capite, ac ſortum perimeſce-
re. Itaque ſemper illi diligentiffimè, laborioſiſ-
ſimeque accuſantur, qui ſe ipſos in diſcrimen exi-
ſtimariſonis veniſſe arbitrantur ſunt: ideo accuſare
nequeant, qui in ream ſunt, donec abſoluti
ſacrine, vel condemnati; ſalutem tamen ciuitate,
& exiſtimatione, l. 4. §. ff. hoc titul. l. neganda, Cod.
qui accuſare, l. 5. ff. de public. iudic. nam infames
infamia iuris omnino ab accuſando arcentur,
l. 4. & 8. ff. hoc titul. l. criminis 15. Cod. qui accu-
ſare, l. 1. §. quorum, ff. ad Traipil. l. hoc tit. 20. ff. de
his qui nocent, infamia. Decianus lib. 2. traſt. crimin.
cap. 17. & 24. Ob paupertatem accuſate ne-
queant, qui minis, quam q. atrocis in bonis
habent, L. unic. 10. §. hoc titul. qui exiſt in cap.
prohibetur, §. nullius 2. quaſt. 1. cap. in primis, §. ſed
de perſonis, ead. quaſt. Decianus diſt. lib. 1. cap. 12.
num. 19. l. l. Clarus diſt. §. final. quaſt. 14. num. 10.
Farinae, quaſt. 14. num. 48. & marid. eòdem cre-
dantur pæſtiti diuinatione cauſa ad accuſationem
accedere, eandemque ad diuicias aſſequendas
viam affecturos, quò Hilpo graſſatus eſt, de quo
Tacitus lib. 1. annal. ibi: Formam vix inſit, quam
poſtea celeberrima miſeria temporum, & audacia ho-
minum fuerunt, non egens, ignotas, inquit, dum
occulis libellis ſancta Principis adrepi, mox cla-
riſſimo cuique perſentum ſacceſſi, poterim apud
tuum, odium apud omnes adrepi, deſit extra-
plum, quod ſequitur, ex paupertate diuites, ex con-
tempſu metumendi, peruenim alii, & poſtremo ſibi

inuenire. Denique licet pauper, eſſi probus
videatur, ad accuſandum non admittitur, quo-
niam talio eſt calumniae poena, l. non prius 7.
l. ult. ff. de calumn. & cum pauper pau non poteſt,
qui bona non habet, eſſi infami literis deſerteri
poſſit, vt aiebat Plinius in Pauper. relatus ab
Ant. Matthæo diſt. cap. 1. m. 10. Inde quia quæſtus
gratia accuſat, non audiat, cap. ſignificante 5.
qui in crimine accuſare. Etiam non admittitur ad
accuſandum, qui in duos reos eodem tempore
iam inſcripſit, eſſi diuerſorum criminum; nam
quo minus ſuccediunt plures reos quia faciat, ſed
eiuſdem criminis plures quia eodem tempore ac-
cuſet, hu non impedit, diſt. l. 8. ff. hoc titul. l. item
rationibus 16. Cod. qui accuſare, l. 2. Cod. ſecus.
Nec contrarium probant in l. hoc accuſare 1. §. le-
ge 3. ff. hoc titul. nam ibi pro duobus, legendum
eſſe tribus, iam notaui Cuiſe. lib. 6. abſ. cap. 12.
Item accuſare non poſſunt inimici, vt dicimus
infrà in cap. neminiſus. Tandem ſunt alij, qui ac-
cuſare poſſunt, ſed non omnes; nam liberi,
alioſ, & familiares preſunt non poſſunt ac-
cuſare parentes, patronoſve ſuos, quia ciuiliſter
de eis tantum queri debent ſui patrimoniij de-
ſendendi cauſa, l. 8. §. ult. l. 11. §. 1. ff. hoc titul.
liniquum 17. §. penult. Cod. qui accuſare, l. 9. Cod.
ad leg. Corneli. de falſi. l. 2. & 5. Cod. ad leg. Cor-
neli. de falſi. Inde inferior ſuperiorem, vel minor
maiorem accuſare non poteſt, cap. quæſti, §. final.
cap. ſequens. cap. maiorem, cap. querendum, cap.
in ſancta 2. quaſt. 7. exponit Vgheſi. in meſid. iur-
is can. lib. 1. cap. 6. fol 35. etiam ob cognatio-
nem frater aduerſas fratrem non aodit in crimi-
nibus grauioribus, l. ſi magnum 13. l. ſi ſeruum 18.
Cod. qui accuſare: reliquorum cognatorum nulla
habetur ratio, Nec contrarium probat reatus in
Lentor 9. ff. de falſiſ. iuror. oon enim ibi prohibe-
tur cognatos, & affines accuſare, ſi aliquid
grauis delictum admittit; ſed veratur cum no-
tis, & infamia eos remouere, ſi quid lenius ad-
miſerint, ut vt ſuſpicionem magis, & mores, quam
crimina ſuſpectos fecerint. Proſequuntur alia per-
ſonas, quæ accuſare nequeunt, Lancellorus, &
Conradus in praxi crimin. tit. de accuſat. num. 9. l. l.
Clarus diſt. 5. final. quaſt. 14. per totum, l. l. l. l.
Balardus, Farin. & Decianus ubi ſupra.

Hic ſuppoſitis apparat ratio præſentis textus;
oam eòdem illegitimè accuſatoris in iudicio ad ac-
cuſandum non admittantur, ad eorum petiti-
onem non debet ſanari, ſed moleſtari accuſatus,
imend potius accuſator repellitur ad iudicio, & ip-
ſe accuſatus abſolutus ad indicij inſtantia; ſicut
enim Reipublica intereſt delicta deſeri, in iudi-
ciumque deduci ad publicam vindictam, ne ipſa
maneant impunita, cap. ſi omnia 6. quaſt. 1. l. iſtud,
ff. ad leg. Aquil. ita etiam illi expedit ne ab omni-
bus propoſitis accuſatione ſangetur accuſatus,
alioquin eueniet ſæpe ſæpius priuſo odio inno-
centes iniquè accuſatione fatigari, & aligando
nocentes poenam eundem prauaricatione, ſeu ter-
giverſatione aduerſarij, lucta texum in cap. ſi
quid 2. quaſt. 4. conſideretque criminis reum accu-
ſare criminofum, virum alienum atquendo, qui
proprium emendare nolebat, eòdem ille qui tra-
hebam geſtit in oculo, feſtucam de oculo fratris
ertere non poſſit, vt Chriſtiſ Dominus aie-
bat apud Lucam cap. 6. relatus in cap. ſi crimini 6.
quaſt. 1. Vnde in criminali iudicio prius agendum
eſſe de legitimatone accuſatoris, docetur in cap.
in primis 2. quaſt. 1. l. ſi quæſtoris, ff. de teſtibus. Meriti

9.
TRADIT
TIT. DEIN
TANTO
RATIO.

ergo Felix II. in presenti docet, fatigandam non esse accusatam, si legitimus non sit accusator. Et licet Felix tantum agat de Episcopo accusato, accipiendus tamen est iuxta generalem litteram, quae reperitur in hac sexta collectione, de quocunque accusato, & quocunque accusatore, in iudicio publico, sive privato; quia in quocunque iudicio criminali legitimus esse debet accusator. Quo vero tempore legitimari debet persona accusatoris, exponit Castejal. *com. 2. de iudic. tit. 1. distinctione 4.*

Nec obstat dubitandi ratio supra adducta, proculs solutione discernendum est inter eum casum, in quo notorium est, seu iudici constat, vel ex libello, seu forma accusationis, accusatorem illegitimum esse; & inter eum casum, in quo illegitimitas accusatoris ante citationem iudici notoria non erat, sed postea apparet. Primo casu ad petitionem illegitimi accusatoris fatigari reus minime debet, nec in iudicio cogitur comparere, *cap. placuit, §. liberti 4. quæst. 3. cap. si Episcopus 3. §. quæst. 1. cap. bone 36. in fin. de electi. quoniam tunc iudex ex officio suo illegitimum accusatorem à iudicio repellere debet, licet reus de eius illegitimitate non excipiat; quia etsi iudex officium suum impartiri non debeat propter priuatum commodum, *cap. ad nostrum, de iur. iur. l. 4. §. hoc autem, de decimis infest.* tamen hoc in casu ex officio propterea accusatorem à iudicio repellit, quia hæc illegitimitas exceptio non solum respicit priuatum commodum, sed honorem iudicij, & publicam utilitatem, argumento textus in *cap. si qui sunt, cap. quando 4. quæst. 7. cap. t. cap. exceptionem, de excep. l. ult. ff. de petit. heredit.* notat Glossa verbo *Repellere*, in *cap. nulli, hoc iud.* Socinus *hic, num. 15.* Batrius *num. 13.* qui hoc casu accipiunt præsentem Felicis sententiam. Secundo vero casu, quando iudici accusatorem illegitimum esse constat, reus ab eo impetrans comparere tenetur; & si non comparat, ut contumax punitur potest; & si postea appareat accusatorem illegitimum esse in prosecutione iudicij, reus absoluitur, nec fatigatur. Quo casu procedit textus in *dist. cap. veniens, num. 11.* in cuius specie Episcopus accusatus comparere iubetur ad purgandum contumeliam; quia licet illegitimus esset accusator, hoc tamen Pontifici non constabat ante citationem, sed postea apparuit, ideoque comparere debebat Episcopus, saltem exceptionem illegitimitatis allegaturus, ne Pontificis auctoritas illud videretur, contra textum in *l. ex quocunque, ff. de ius vocand. l. 5. ff. de iudicij*: quo modo exponit textus in *cap. si duobus, cap. cum parati, de appell. Socinus in *dist. cap. veniens, num. 11.* Ex qua doctrina deducitur, quod si reus fuerit citatus ad petitionem illegitimi accusatoris, de cuius illegitimitate iudici ante actionem non constiterat, & ipse exceptionem illegitimitatis non opposuit, iudicium valet, *l. qui accusare, l. hoc accusare, ff. hoc iud.* Docent Burius *hic, num. 3.* Bartol. in *l. 1. §. accusatoris ff. de accus. Turpil.* Et similiter si eadem accusationem instituit, legitimus, & idoneus erat, sed post causam inchoatam, in ipsius prosecutione illegitimus reddatur, propter superuenientem illegitimitatem à iudicio repelli non debet, quia licet accusationem de nono proponere non possit, tamen prosequi eam rectè valet, *l. si quis reus, ff. de public. iudic. ubi condemnatus, & etiam deportatus, prosequitur iudicium inchoatum, quod propter bonum publicum, & iudicialiam autoriza-***

tem procedit, *l. si quis, ff. ad leg. Jul. de adult.* Nec obstat augmentum ipsius dubitandi rationis, deducendum ex *dist. cap. cum P. cui respondendum est*, non posse reum ad petitionem illegitimi accusatoris fatigari, adeo ut reo accusato purgatio canonica indicenda non sit, propter infamiam ingentem ex calumniosa, & minus solenni accusatione, ut probat textus in *cap. qualiter, el. 2. hoc iud. cap. cum infamante, de presumpt. cap. cum in iuuentute, de purg. canon. cap. audiam 2. quæst. 6. cap. in causis 1. et 3.* in quibus purgare se reus non debet ab infamia criminis, quæ originem habeat ab inimicis, & illegitimis accusatoribus, ut docent Hostiensis in *dist. cap. veniens, num. 5.* Morta in *emp. tit. de iurisd. num. 121.* quia quando infamia non nascitur ex probabilibus coniecturis, quod iuris effectum infamia non dicitur, sed tantum siue vanæ populi voces, de quibus curandum non est, *cap. Offici 2. de electi. Decretum, Cod. de par. Nec contrarium probat textus in *dist. cap. cum P. cap. veniens, quia in eorum specie ad instantiam illegitimi accusatoris non iniungitur purgatio propter infamiam à tali accusatione prouenientem, sed propter publicam infamiam, quæ reus notatus erat ante accusationem, ob quam iudici fuit purgatio, ut docet Morta ubi supra, num. 121.**

Nec obstat vltimum augmentum difficultatis, pro cuius solutione sciendum est, dubium esse apud Interpretes, an aliquis sine accusatore damnari possit. In qua questione communem opinionem sequutus negat Cortalius *lib. singul. apud iudic. pro qua sententia faciunt textus in l. 6. §. rescripta, & §. si quis accusatorem, ff. de maner. & honor.* ubi docetur eum, qui non habet accusatorem, honoribus interitus non esse prohibendum. Matheus *lib. in oratione pro Rascio Alerino*, ubi ait, necesse, nisi fuerit accusatus, damnari non posse. Et *lib. 2. de officiis*, omne iudicium accusatione, & defensione constare fecit. Suffragatur DD. qui in omni iudicio has personas, necessarias esse tradiderunt, accusatorem, reum, & iudicem, *cap. sunt 10. de V.S. cap. 1. 4. quæst. 4.* & accusatorem in primis requiri, constat ex D. Ambrosii *epist. ad Syagrium*, ibi: *Si leges publicas interregimus, accusatorem exigimus.* Ex Marci rescripto de Audio Cassio apud Vulcanium Gallianum, ibi: *Adde quod non possessionem remu facere, quem nullus accusat.* Hinc Christus Dominus, cuius omnis actio est iudicialis, iudam, etsi furem esse compertum haberet, non abiecit, eo quod à nullo esset accusatus, ut expendebat D. Ambrosius in *cap. si quis potestatem, 23. quæst. 4.* & cum adultæram mulierem deprehensam nemo accusaret, dixit: *Nec ego te condemnem*, apud Ioannem *cap. 8.* Eoque pertinet quod in actis Apostolorum legitur, Romanis motem non esse hominem vilius ad necem condemnare prius quam reus præfentes habuisset accusatores. Contrarium tamen sententiam tenuit Diuigenus *lib. 1. dispun. cap. 38.* Sed placet in hac Doctrina variare media sententia, quam sequitur Fornerius *lib. 1. rer. quæst. cap. 24.* qui ait, neminem sine accusatore esse damnandum, vel eo qui accusatoris vice fungatur, veluti denunciatio, delatio, publica fama: quandoque enim priuati, quandoque ex officio, ut rationarij, curiosi, vel similes, crimina notoria deserunt, ut post eiusmodi denunciationem iudex contra reum delatum in crimen inquirat, *ad. 6. §. nunciatores, ff. ad Turpil. l. ea quidem, C. de accusat. l. 1. C. de curiosis, lib. 12.* Quo casu non iuratur loco accusatoris est, ut de publica fama probabimus infra in *cap. evidentiæ*:

II.
DISOLVITUR
ULTIMUM
AUGMENTUM
DIFFICULTATIS.

videtur : & hoc sensu legitur Claudium Goe-
gum lenocinij absque accusatore damnatum, l. 1.
§. unde queri, ff. de leg. Jul. de adult. & Iulium Cae-
sarem capitali supplicio accessisse liberum, alio-
qui sibi gratissimum (quamvis nullo accusante) eo
quod Equitis Romani vxorem adulterasset, apud
Suetonium in Jul. cap. 48. Vnde intelligitur lex 1.
C. de custod. rer. in illis verbis: *Sine accusatore exi-
stat, sine enim publica sollicitudinis cura produeris.*
Vbi per publicae sollicitudinis curam intelliguntur
officiales, stationarii, milites, seu hienarchae, de
quibus Tertul. in apolog. ait: *Latronibus inuesti-
gandis per universas provincias militaris statio for-
tur.* Daurenus lib. 3. disp. cap. 38. Reuarius lib. 4.
variar. cap. 11. Fornetius ubi supra.

Sed super traditae assertioni primò obstat tex-
tus in cap. nulli 4. hoc titul. vbi cum quidam fami-
liaritas cuiusdam Episcopi ipsum de quodam crimine
accusarent, ipse exceptionem illegimitatis op-
posuit, asserens eos criminosos esse, malae famae,
& vilis opinionis: cumque quaereretur, an accu-
satores essent audiendi, respondit Paschalis, non
licere Episcopo à sua accusatione repellere, quos à
sua communi familiaritate neglexit separare ante-
quam ipsum accusarent. Ex quo textu deducitur,
criminosos ad accusandum Episcopum admitti,
nec etiam oppositi criminis exceptione eos repelli:
igitur etiam illegitimos si accusator, reus
vexatur. Agnovit difficultatem Glossa in eo textu,
& eam solvere intendit duplici modo. Primò asse-
rit, criminosos accusatores in huius textus specie
admissos fuisse, quia Episcopus de exceptis crimi-
nibus publicè infamatus erat, in quibus illegitimi
etiam, & minus idonei accusatores admittuntur,
cap. per tuas, de simonia, supra probatur. Quam
Glossa sententiam plures tenuisse asserit Hostiensis

ibi, notum §. Sed quia hae solutio verbis textus
non congruit, siquidem in eo non agitur de cri-
minibus exceptis, ideo ab ea recedit Glossa, &
verius docet, quod licet criminosis legitimi accu-
satores non sint, iuxta supra traditum, tamen cum
Episcopus accusatur à suis familiaribus, non po-
test eos ut criminosos repellere, cum prius debe-
ret eos à sua familiaritate abicere, alius non exi-
ditur homines malae famae, & vilis opinionis in
sua familiaritate retinuisse, ut in eo texto dicemus.

Secundò super traditis obstat textus in l. 3. §. prae-
terea, ff. de suspens. tutor. in illis verbis: *Praeterea
videndum est, an & sine accusatore possit suspensus
reperi? Ex magis est, ut reperi debeat.* Ex quibus
appetere constat, posse quem sine accusatore dam-
nari: ergo multò facilius cum illegitimo accu-
satore. Nec dici potest, in eo textu iudicem per
inquisitionem processisse, quod si Praetori li-
ceat officio suo iudex crimine inquirere non
possit, ut ibi notant Gorhofordus. Pro cuius
difficultatis solutione dicendum est, quod licet re-
gulariter nemo damnatur sine accusatore, tamen
iure singulari receptum est, quod si Praetori li-
ceat argumentis evidentialibus titorem suspen-
sum esse, & male versari in iure, vel contra, eum
temonere possit, quod specialiter inductum fuit
populorum fauore, & ob publicam villitatem,
quoniam negotia pupillaria pertinent ad publicam
curam, l. 10. §. ult. ff. de testam. iur. l. 1. §. de excep-
t. l. 2. §. qui perant tutor. l. 1. §. tradituri, ff. ad Ter-
tyl. l. 19. C. Theod. de curat. ut expressè docent in d. §.
praeterea, & notavit Cuiac. ad tit. C. de suspens. tutor.

Etiàm praesentis assertioni opponi potest textus
in c. quam gravi, de excessibus Praet. cuius interpreta-
tionem dedi in c. 2. de confess. c. Porro, de diuini-
& eius interpretationem in eius notis adduxi.

13.
EXPO-
TVE 1. §. 5.
PR. 4. TR.
2. 1. §. 5.
1. §. 5.
1. §. 5.
1. §. 5.

12.
EXPO-
TVE 1. §. 5.
PR. 4. TR.
2. 1. §. 5.
1. §. 5.
1. §. 5.

CAPVT II.

* Felix.

Hae sunt quae deinceps propter malorum hominum insidias, qui in Ecclesiam &
in ecclesiasticos faciunt viros indifferenter, conservari firmissimè volumus in
saecula. Si quis Episcopus ab illis^b accusatoribus, qui^c recipiendi sunt, fuerit accusa-
tus, postquam ipse ab eis^d charitativè conuentus fuerit, ut ipsam causam emendare
debeat, & eam corrigere noluerit, non olim, sed tunc ad Summos^e Primates causa
eius canonicè deferatur, qui in congruo loco intra ipsam provinciam, tempore con-
gruo, idest, autumnali, vel aestivo, Concilium regulariter convocare debebunt, ita-
ut ab omnibus eiusdem provinciae Episcopis inibi audiat. Quò & ipse regulariter
convocatus, si eum aut infirmitas, aut alia gravis necessitas non deconvenerit, adesse
debebit, quia ultra provinciae terminos accusandi autè licentia non est, quam au-
dientia^f rogetur.

NOTÆ.

1. a **Felix.** Ita legitur in prima collectione, sub
hoc titul. cap. 8. in hac omem sexta collectio-
ne legitur idem, quasi idem auctor sit huius tex-
tus, & antecedentis: sed Felicem II. auctorem esse
illius textus, iam probavi: praesentem verò tex-
tum esse Felicis I. constat ex eius epistola 2. quae
extat tom. 2. Concilior. ex qua transcripsi litteram
huius textus, etiam neglecta temporum serie. Con-
citos virumque caput eiusdem Felicis esse arbitra-
tur. Bouthardus lib. 1. Decret. cap. 169. & 174.
Carnotensis lib. 5. Decret. cap. 271. & 292. ex Fe-
lice illum citant. Etiam reperitur textus hic in col-
lectione canonum Hadriani notis illustrata ab Ant.

Augustino tom. 1. Concilior. Bini, & 18. Regis edi-
tionis, can. 5. Huius thematica sententia refer-
tur tam ab Athanasio, & Alex. Synodo, tam ab
eodem Felice minore cap. 2. & 3. epist. 2. ad ean-
dem Athanasium, qui testis est, hoc etiam fuisse
sumptum ex Nicæna Synodo: sed ante eam Syno-
dum eadem fuit sententia tum primi Felicis,
quam Stephani epist. 2. & postea reperitur in ad-
dis. capit. lib. 7. cap. 143. Felix primus electus
fuit ultimo die anni 172. & martyrio coronatus
die 30. Maij, anno 275. ut post Baronium in eo an-
no, & in Martyrol. die 30. referunt Binius d. tom. 1.
Concil. Ciacconius tom. 2. de vit. Pontific. Carolus
A 4

sancti

sancto Paulo in *Biblioth. Pontific. littera E.*

2.

in *accusantibus*. Glossa, Abbas, & repetentes in presentem anxie quatuor, quomodo plures accusatores admittantur in hoc casu, cum non possint plures vnum simul accusare, quando agitur ad publicam vindictam, *ubi plures 16. ff. hoc in. l. 1. in fine, l. 29. §. penult. ff. ad leg. fud. de adul. l. 4. C. hoc titul. 3. in princip. & §. si ad plures ff. de sepulch. violat. l. 13. tit. 1. part. 7. late docent Ant. Matthæus ad tit. de accusat. cap. 2. Ant. Gomez lib. 3. *variar. c. 1. n. 35. Iul. Clarus §. 4. tit. 3. num. 1. Decianus lib. 3. tract. criminis. §. 4. in princip. ex quibus sunt qui asserunt, principium hoc procedere tantum in accusatioe, non vero in denunciatione, de qua in presentem agitur. Sed hanc solutionem reiciunt Abbas hic, n. 2. Felinus n. 1. quia ratio, quâ nititur Consilius in *d. si plures*, quæ viget in denunciatione, se in accusatione, nec in hac parte inter eas vllum datur discrimen. Quare cæ solutione omittâ, communiter placuit Felicem in presentem agere de pluribus accusatoribus; non quia plures simul admitti debeant, iuxta textum proximè adductos; sed quia si fuerint admitti, & accusatus non opponat, processus sustineatur. Ita docuerunt Glossa 1. per textum ibi, in *d. 1. 4. C. hoc titul. Abbas, & alij repetentes in presentem*, Ant. Gomez, & Iul. Clarus ubi supra. Verum hæc interpretatio admitti nequit, quia credi non potest, sanctum Felicem agere de pluribus accusatoribus, qui attempto iure communi admitti non possunt, etiam si iisdem admitti processus sustineatur parte non opponente. Alij discrimen constituent inter casum, in quo plures aliquem accusare volunt ad vindictam tantum publicam, oullum interesse ex accusatione capientes, nec suam, suorumve iniuriam, prosequentes; & inter eam casum, in quo pro suo interesse ad accusandum procedunt; quando enim nullius accusantium interesse versatur, ex accusatoribus vnos eligitur, qui sit magis idoneus, *d. si plures*, eam similibus. Secundo vero casu quando omnium accusantium interesse versatur, omnes admitti debent, *cap. 1. tit. 1. l. 3. §. si plures, ff. de sepulchro violat.* docent Salicetus in *d. 1. 4. C. hoc titul. Anania in cap. 1. n. 3. de calof. deteg. Iul. Clarus d. §. final. Otieg. Lopez in *d. 1. 3. part. 1.* quo casu accipiunt presentem textum; nam cum subditi Episcopum suum de criminibus deferunt, post admonitionem causam suam prosequuntur, & pro suo interesse Episcopi crimina eorum legitimo iudice deferunt; nam cuiuslibet eorum iure est bonum habere Prælatum bonis moribus præditum; unde meritis omnes accusatores admitti fuerant. Sed verius dicendum est, in presentem textum Pontificem non agere de vno, vel pluribus accusatoribus vnius delicti, vel Episcopi; sed tantum regulam generalem tradere ferendam in accusatoribus Episcoporum; unde supponit Pontifex, eos tantum admittendos esse, qui de iure possint admitti; siquidem signanter ait, *qui recipiendi sunt*. Per quæ posteriora verba non tantum explicauit, verum etiam restituerunt præcedenti, quæ de pluribus agunt, ita vt non comprehendant omnes culpeuque qualitates, sed illos, qui recipiendi sunt, & ita legitimos, iuxta tradita superiori commentario; & deinde non semper, nec indistinctè admittantur omnes in quibuscunque casibus, sed illi, qui in iisdem recipiendi sunt, id est in casibus, in quibus iure possint recipi, prout contingit ubi plures non de vno, sed de pluribus criminibus aliquem accusant, vt loquitur Pontifex in illis verbis:***

causa cum ad Primum canonice deferatur; significans non vnum, sed plures causas criminum contra Episcopum proponi, veluti plures ratione vnius officij, veluti tutoris; vel vnum representantes, *cap. licet, cap. penult. hoc eodem titulo*; pro suo commodo, & to causam propriam, veluti coheredes, aut consortes eiusdem liti: vel talione iustitie communiis plures vniu de vnicò crimine accusantes, iuxta tradita per Bartolum in *dist. 1. si plures*, vel cum plures inter se ita conueniunt, quo casu etiam in iudicij publicis plures admittendos esse docuerunt Duarenus lib. 1. *disp. cap. 39.* Ant. Matthæus ad tit. de accusat. c. 1. unde Felix in presentem generalem tradit doctrinam ferendam in accusatione Episcoporum, iuxta principia iuris, non quia specialiter consultus fuisse de Episcopo à pluribus accusato.

3.

c. Qui recipiendi sunt. Idem non criminosi, & infames, vt postea expoluit in eadem epistola Pontifex in *c. infames persone 3. q. 7. cap. si accusatum 3. q. 10.* & alij similes. Nec obstat textus in *cap. ones 2. q. 7.* ubi docetur, quod subditi Prælatum suum accusare non possunt, nisi à rectoris fide deuiuetint: ergo in presentem textum non rectè supponit Felix, Episcopum à proprijs subditijs fuisse accusatum. Augetur hæc difficultas ex *cap. clericus, ead. q. ubi aperte docetur, sacerdotes aduersus Episcopum oec accusationem proponere, nec testimonium profere posse*; quod latius probant Bertonius anno 112. n. 10. & 199. n. 6. Turtianus lib. 1. *pro canon. c. 12. & 13.* Pro culis difficultatibus solutione discrimen est constituendum inter subditos bonos, & criminolos; & inter accusationem ex affectu fraternæ charitatis propositam, & inter eam, quam prauo, & maligno animo proponunt. Primo casu prohibentur criminosi, & etiam illi, qui malo affectu, non ex charitate, sed ex transtite viam sapientiorum infamare, & reprehendere intendunt. Vnde Eustatius in *c. si qui sunt 17. q. 7.* prohibet ne opinione infiducia audiantur accusatores Episcoporum. Illustrat Ant. Angustinus in *notis ad can. Hadriani P. Concilij. fol. 569.* secundo vero casu Episcopi ab honestis, & probis subditijs ex affectu charitatis accusari valent, unde D. Angustinus ait in *c. presamunt 2. q. 7.* *Presamunt Prælati non debere se reprehendi, vel accusari pro eo, quod canonice passim non constituerunt eos accusandos, quod tantum negatur solis criminosis, cum de se reprehendendo veritas ipsa reuertitur: Si male locutus sum, perhibe testimonium me malo.* Facit Damianus P. in quadam epistola ad Alex. Pap. *Quis est hic arrogantia rumor, quis elationis fignis, ut quod insolenter excessum est, a facis subditijs designetur audire? Nec h' allegantibus verum tam est, ut dicant, se non debere ab his accusari, ne videantur suis ex officijs velamentis obducere. Et in c. quod dicitur, p. 1. l. 7. dicitur quod qui non sunt recti fidei, & conue. sationis, & quotum vita est accusabilis, non possunt malotes natu accusare; & hoc casu intelligendi sunt textus in *d. s. oves, c. qualis, c. miorum, c. feneratoris 2. q. 7.* in quibus prohiberi videtur talis accusatio: at vero subditi probi, & alius ac accusandum idonei, possunt suos Prælatos accusare, vt probat textus sic intelligendus in *c. si cum 46. 2. q. 7.* & hoc casu procedit presentis textus, ubi statuit Felix Episcopum non à quibuscunque posse accusari, sed ab illis tantum, qui recipiendi sunt; hoc est, à subditijs probis, & honestis, & at affectu charitatis accusationem proponentibus. Nec hinc solutioni obstat textus in *dicto cap. ones*, in illis verbis: *Nisi à fide exheredaueris*. Ex quibus deducitur, sacre canonibus*

nonibus esse definitam, & prescriptam casum in quo subditi possunt accusare suos Praelatos: igitur in nullo alio casu Praelato accusatio subditi est permittenda: nam hodie difficultati facili ex supra dictis respondetur; ea enim verba sic intelligi debent, quod subditi, criminoli, & infames Palmentem sumus accusare non possunt, nisi a fide exorbitaverint: exterum si a fide discesserint, tanta est huius criminis labe, ut etiam criminolus ad eius accusationem admittatur, *cap. in fidei sanctorum, de haer. in 6. docuit Turresemata in dict. cap. auer, non. 2. & 3. nec etiam obstat textus in d. cap. clericus, cui omnia Glossae duplici solutione ibi, verbo Latine, respondendum est, textum illam procedere in minori gradu constitutis, qui maiorum crimina deservunt, non gratia correctionis, sed ex pravo animo: qui merito ad accusationem repelluntur, eum non ex affectu charitatis proliant, ut ibi notavit Turresemata.*

4. d. *Charitatis communitas.* Idem monitus, ut post Glossam exponunt omnes repetentes in praesentia. Sed tunc obstat, quod Felix in praesentia agit de accusatione, ut constat ex illis verbis, *accusationibus, & accusari*: at in accusatione nulla requiritur monitio ebaritatis, *c. penult. c. licet, hoc tit. in d.* quia monitio tantum desideratur ad denunciationem evangelicam, quae ad poenitentiam, & emendationem dirigitur, iuxta etiam novum, *de iudiciis*: probatur in *c. qualiter 24. in fine*, ibi: *Denunciationem charitatis monitio, hoc tit. in d.* In accusatione vero, per quam ad vindictam publicam agitur, à qua teus per poenitentiam, & emendationem non liberatur, *legis ea 67. vers. nemo, ff. de fidei, c. monitio non est necessaria, nec effectum habere potest, ut satis colligitur ex c. qualiter, ad finem*, ubi constituitur differentia inter denunciationem, in qua monitio charitatis desideratur, & accusationem, in qua non monitio, sed inscriptio requiritur. Quam difficultatem ut effugiant omnes repetentes hic, praesentem textum accipiunt non de accusatione, sed de denunciatione; & verba illa, *accusationibus, & accusari*, pro denuntiationibus & denunciatione accipit Glossa 1. in praesentia, & in c. licet *Idem, hoc tit. cum communiter sequuntur omnes*, ut testis Felix in *h. prae. 2.* Sed haec communis interpretatio sustinet non potest, siquidem expressè repugnat verbis textus. Deinde quia ex illis verbis, *causam emendat, & eam corrigere naleris*, satis deducitur, Pontificem agere de accusatione, per quam Episcopos impetebatur; quia damnum datum accusatoe non emendatur, partique laeae non satisfaciebat: unde alij putant, praesentem textum specialiter procedere in Episcopo, qui accusari nequit, nisi praemissa monitione à quem intellectum teneat Abbas *h. prae. penult. ex d. veniens, d. cap. licet*, quibus frustra satisfacere intendit Betoius *h. prae. n. d. vers. Circa secundum*. Quibus omittis dicendum est, sanctum Felicem tunc praesentia agere de subditi accusantibus Episcopum eiuiliter de crimine aliquo ad propriam utilitatem, & emendationem duntaxat eo dati, ut innovat verba proximè expensa: quo casu necessaria est praecedens monitio, idest interpellatio extrajudicialis, *c. ap. si quis erga 2. q. 7.* cuius textus verba mirè conveniunt cum verbis praesentis textus; de qua etiam accusatione ad primum commodum, seu propter damnum privato illatum emendandum, loquuntur textus in *c. accusatio 15. in fine 2. q. 7.* Alexander *epist. 1. post principibus*: *De his clericis, & laicis, qui Episcopos, vel reliquos Sacerdotes prius non ad Primates eorum, quam*

ad reliquos accusant iudices, quam auctoribus eorum, à quibus se laesos existimant, incitant, ut ab eis, aut ius sumant, aut iustitiam recipiant apologum, &c. Stephanus *epist. 3. ibi: Nec aliquis eorum (Episcoporum) non Ecclesiarum alterum, vel defensionem ad aliquos prius accusari debet, quam ipse charitatis hic, aut ter ab eis, qui se laesos existimant, vel eos propter aliquos irrationibus corrumpere cupiunt, conveniant, ut ab eis, aut familiaritatem emendationem, aut iustitiam recipiant accusationem.* Athanasius ex Synodo Nicena relatus ab An. August. in *epist. lib. 30. tit. 2. ubi: Si Erga Episcopum, vel alios Ecclesia quicquam causam habuerit, eos cum charitate manifestè conveniat, ut ab eis volutus recte sanctorum, aut ipse, si secus egerit, accusator excommunicetur.* Unde rectè iuxta antiquum PP. sententiam Felix in praesentia statuit in accusatione Episcopum procedi debere ad emendationem, quia agebatur de iniuria privato illata. Fecit textus in *l. quidam Hiberni 12. ff. de servit. rebanor.* tanquam Oualdo *lib. 17. Demetrii, cap. 5. littera B. Menl. lib. 1. abf. cap. 8.*

5. c. *Primates.* Quamvis inspecto iure civili, & apud bonae notae auctores Primates passim dicantur, qui alios auctoritate, dignitate, vel officio antecellant, & primum locum obtinentes, à reliquis distinguuntur, *l. sciendum 4. vers. Sed & si, ibi: Primatus, ff. de legationibus, l. de. C. de offic. divers. iudic. l. t. innot. rubrica, l. de. Alexandria Primatus, lib. 1. c. 1. de pace firmam. in vob. fruden. Titaguel. de nobilit. c. 37. n. 36.* In iure tamen canonico Primas dicitur is, qui apud ecclesiasticos in provincia, regno, vel natione aliqua primam sedis dignitatem habet, in quo sensu Primates appellantur Patriarchae, quasi Principes Patrum; qui Patriarchae à Primatibus positum nomine, quam re, dignitate, aut officio differre, dicuntur in *cap. duo simul, de officio ordinarii, c. antipapae, de privileg. docent privilegia laudati à Cencio ad Decret. collect. 58. n. 1.* Ceterum de ecclesiis *hierarch. disp. 4. §. 1.* Iuxta hanc ergo acceptionem probat textus hic, causam, in qua Episcopus accusatur, deferendam esse ad Primates, seu Patriarchas: quod etiam probatur in *c. Primates 2. q. 1. cap. 1. in princip. 4. q. 1. ibi: Ad Primates provinciae.* Sed obstat quod huiusmodi causae Episcoporum non ad Primates, seu Patriarchas, sed ad Archiepiscopos, vel Metropolitanos deferri debent, *auctor. de sanctissimis Episcop. §. si quis verò, vers. Si autem: seu ad Concilium provinciale, seu nationale, cap. 2. c. accusatus, cum sequenti 3. q. 6. c. si clericus, vers. & si 1. q. 1. Trident. sess. 24. de reformatione. c. 1. vel tandem ad Summum Pontificem, qui in gravioribus Episcoporum causis ascendens est, d. c. accusatus.* Cui difficultati ut satisficiat Abbas *h. prae. 3. Barb. de potestate Episcopii allegat. 1. 12.* accipiunt Primates in hoc textu pro Archiepiscopis & Metropolitans, qui etiam Primates dicuntur, *c. fari, de foro competent. Illustrant Bosque us in notis ad Innoc. III. lib. 1. epist. 5.* sed eum in praesentia de Primatibus maioribus agatur, necessarium per eos intelligendi sunt Patriarchae, iuxta tradita per Celsatem de *Ecclesiis hierarch. disp. 4. §. 2.* Quare hac solutione omittis distinguendum est cum Duareno *lib. 1. de sacris Eccles. ministris*, inter ius antiquum Pontificum, & novum; nam veteri iure canonico inspecto non solum discussio equitatis criminalium Episcoporum, verum & sententia ad Synodum provincialem, vel Primates spectabat, ut probant textus ita accipienti in *capit. 3. q. 6. c. 1. & 2. 6. q. 4. c. Epist. 65. 1. q. 3.* Noviori tamen iure etiam causas graves Episcoporum aliter cautam fuit,

ita ut in illis sola discussio Concilio Provinciali, seu Primatibus permitteretur, Pontifici sententia referretur, iuxta tenent in d. cap. accusatus, cap. dissentire, cap. quatuor, cap. multis 3. q. 6. Nec contrarium probatur in hoc textu; nam ut rectè notavit Felinus hic, num. 2. notab. 1. Felix in hoc texto non docet causas criminales Episcoporum ad Primates esse deferendas, ut ab eis sententia terminentur, sed ut de eis iudicialiter cognoscatur, & si causa laica est, quia Episcopus civiliter accu-

satur, eam decidat; si laica etiam discussa Romani Pontificis sententia expectetur. Prosequitur Iustitia Marcha in concordia Sacerdotum, & Imperij, lib. 3. cap. 16. cum sequens, Vbi disputat tam ex veteri, quam novo iure, Episcoporum casus à quo sint terminandæ.

[*Referitur.*] Sequuntur in ipsa epistola alia verba, quæ extant in cap. si Episcopus 3. q. 1. cap. si agnatus 3. q. 3. cap. infamis 3. q. 7. cap. peregrinus 3. q. 6. cap. absente 3. q. 9. cap. si accusatum 3. q. 10.

6.

CAPVT III.

Gregorius^a Guidifcalco Duci Campanie.

Illa^b præpositorum sollicitudo vilis, illa est cautela laudabilis, in qua totum ratio agit, & furor sibi nihil vendicat. Restringenda ergo sub ratione potestas est, nec quidquam agendum prius quam concitata ad tranquillitatem mens redeat. Nam commotionis tempore iustum omne putat ira quod fecerit. Peruenit itaque ad nos, magnitudinem tuam usque ad hoc esse impetu furoris impulsam, ut non solum frangi ianuas monasterij sancti Archangeli, verum etiam diripi exinde, quod ibi inuentum est, feceris. Insuper autem sic contra Abbatem eiusdem monasterij diceris exarsisse, ut nisi occultans se, iracundie tue tempore latuisset, non leue discrimen incurtisset: denique ut metu tuo perterritus, de domo, in qua se olim receperat, exire nunciusque non audeat. Quod ne frustra fecisse forsitan videris, fugam monachi ipsius, qui ad hostes^c abiit, ad eius, quantum ad nos perlatum est, crimen impingis, asserens quod cum ipsius voluntate fugerit. Quod si ita est, contristamur, & valde vestram sapientiam miramur. Nam si licitum putatis, ut aliorum culpa aliis sit nocua, multi huic possunt crimini subiacere. Diuersorum enim nobilium serui, multorum Ecclesiarum clerici, diuersorum monasteriorum monachi, multorum iudicum homines sæpe se hostibus tradiderunt. Ergo si hoc creditur, seruorum utique Domini, clericorum Episcopi, monachorum Abbates, diuersorum fugitiuorum iudices, omnes fere culpa sunt & crimine constitui. Nunquid & diebus magnitudinis tue multi de ciuitate, in qua consistis, & ad^d Longobardos milites fugà non lapsi sunt? Et quis tantæ indifferentionis, tantæque possit stultitiæ reperiri, ut eorum iniquitatem tibi æstimet applicandam? Hæc itaque sollicitè pensa, atque ex te aliorum causas æstima, ut in quorundam aduersitate falsis suspicionibus non ducaris. Si verò est aliquis, qui de prædicti monasterij Abbate possit aliquid dicere, quod ad^e culpam, reatumque eius pertineat, nos hoc non negligi, sed magis vnà quidem cum eis, quorum interest, causam omnino districte & sollicitè volumus perferuari, ut aut feriat vindicta culpabilem, aut absoluat veritas innocentem. Si autem nullus inueniri potuerit, qui contra eum hoc, quod solus ipse perhibet, asserat: hortamur magnifice fili, ut à memorati monasterij, Abbatisque ipsius te aduersitate contineas, & potius tuitionem illis, & propter Deum charitatem impendas. Et si quid est vnde animi vestri fortassis offensus sunt, pro nostra eis interventione remittere: & ita vos, sicut Christianos conuenit & prudentes, in eorum magis iuuantine commodare: quatenus & nos vobis gratias referamus, & ante omnipotentem Dominum mercedem pro impenis seruis eius beneficiis, ac solatiis, acquiratis. Dat. mense Februarij, ind. iij.

NOTÆ.

1. ^a *Gregorius.*] Ita etiam legunt in primis collectione, sub hoc titulo. 1. & repetitur textus hic in ipsius epistolæ D. Gregorij lib. 8. ind. 3. epist. 12. ea quoque testitudo integra huius textus. Campaniæ ab urbe Romana usque ad Siler Lucanæ flumini perducitur, in qua opulentissimæ vires Capus, Neapolis, & Salernus constitutæ sunt: quæ ideo Campaniæ appellata est, propter vberissimam Capus planitiem, ut referunt Italici scriptores. Guidifcalco huius provincie Duci

rescribit Gregorius in presenti.

^b *Illa.*] Verba quæ sequuntur usque ad verbum fecerit, extant in cap. illa 11. quest. 1.

^c *Abiit.*] Forsan ut transfuga, ut hostibus fasset.

^d *Longobardos.*] Abbas in presenti, num. 3.

^e *Felinus num. 1. Berolus num. 4.* docent duo hæc differre in eo, quod per culpam intelligitur delictum ex negligentia proueniens; per reatum verò peccatum ex malitia, seu dolo procedens: quo sensu culpa in specie, & dolo diffinitur, & ut diuersa proponuntur in *Conuentionibus*, ff. de R. l. de atate, §. qui iussu, ibi: *Sine dolo malo, culpa tamen; ff. de interrogat. n. l.*

Reatus

2.

3.

Reatus etiam plerumque accipitur pro delicto, *cap. testimonium 44. de testibus, cap. 150. quest. 2. l. 1. C. de iudiciis*; tamen frequentius accipitur pro obligatione ad poenam propter peccatum contrariam: lo quo sensu peccatum actu transire, & reatum manere, docet D. Thomas in 4. art. 5. & 6. & 1. 2. q. 86. artic. 1. & q. 87. artic. 6. Illustrant Bodæus in l. vestem, ff. de iniuriis, Costalius lib. 2. miscel. cap. 20. Reduissus in l. indicasse, column. 4. ff. de P. S. Const. lib. 2. variæ. cap. 9. num. 2. Gomez in l. 76. Tauri, num. 6. Titaquel. de pen. tempor. caus. 29. à princip. qui exponunt textus in l. si dominus 25. ff. de parat. l. 1. vlt. ff. ad leg. Jul. maiest. l. 1. vlt. vers. Fraudis, ff. de bon. damn. Potest ergo in

presenti per culpam accipi generaliter peccatum adhuc manens, seu persequentis, de cuius poenitentia non constat; per reatum verò poena, seu obligatio ad poenam ex peccato culpa proveniens: quæ poena, seu obligatio per poenitentiam, seu emendationem non editur, præsertim quoad vindictam in foro exteriori, l. qui ea mem. te, ff. de furtis.

Vatæ ex hoc texto deducunt repetentes de accusatione contra superiorem ab inferiori proponenda, vel non; & de personis, quibus presentibus iudicium criminale agendum est. Sed quia aliena à mente Gregorij, facile agnosceret, qui præsertim epistolam sedulo legent, perlegeritque.

CAPVT IV.

Gregorius * Constantina Augusta.

Omnipotens. Et infra: ^b Salonitanæ verò ciuitatis Episcopus me, ac responsali meo nesciente ^c ordinatus est, & facta res est, quæ sub nullis anterioribus Principibus euenit. Quod ego audiens, ad eundem præuaricatore, qui inordinate ordinatus est, proxinus misi, ut omnino Missarum solennia celebrare nullo modo præsumeret, nisi prius à Serenissimis Dominis cognoscerem, si hoc fieri ipsi iussissent, quod ei sub excommunicationis interpositione mandaui. Et contempto me, atque despecto, in audaciam quorundam secularium hominum, quibus denudatâ suâ Ecclesiæ præmia multa præbere dicitur, nunciusque Missas facere præsumit, atque ad me venire secundum iussuionem Dominorum noluit. Ego autem præcepioni pietatis eorum obediens, eidem Maximo, qui me nesciente ordinatus est, hoc quod in ordinatione sua me, vel responsalem meum prætermittere præsumpsit, ita ex corde laxaui, ac si me auctore fuisset ordinatus. Alia verò peruersa illius, scilicet mala corporalia, quæ cognoui, vel quia cum pecuniis ^d est electus, vel quia excommunicatus Missas facere ^e præsumpsit, propter Deum irrequisita prætereire non possum. Sed opto, & Dominum deprecor, quatenus nihil in eo de his quæ dicta sunt, valeat inueniri, & sine periculo animæ meæ causa ipsius terminetur. Prius tamen quam hæc cognoscantur, Serenissimus Dominus discurrente iussione præcepit, ut eum venientem cum honore suscipiam. Et valde graue est, ut vir, de quo tanta, & talia nuntiantur, cum antè requiri & discuti debeat, honoretur. Et si Episcoporum causæ mihi commissorum apud piissimos Dominos aliorum patrociniis disponuntur, infelix ego in Ecclesia ista quid facio? Sed ut Episcopi mei me despiciant, & contra me refugium ad seculares iudices habeant, omnipotenti Deo gratias ago, peccatis meis deputo. Hoc tamen breuiter suggero, quia aliquantulum expecto: & si ad me diu venire distulerit, in eo exercere distictionem canonicam nullo modo cessabo. In omnipotenti autem Domino confido, quia longam piissimis Dominis vitam tribuet, & nobis sub manu vestra, non secundum peccata nostra, sed secundum gratiæ suæ dona disponet. Hæc ergo tranquillissimæ Dominæ suggero: quia integerrima Serenitatis eius conscientia quanto moueatur zelo rectitudinis, atque iustitiæ, non ignoro.

NOTÆ.

1. * *Constantina.*] Ita etiam legitur in prima collectione. sub hoc tit. cap. 6. & lib. 4. epistolar. D. Gregorij epist. 34. & in cap. Salernitane, 63. dist. cap. vlt. 23. quest. 5. in quibus omnibus pro *Constantina*, legendum est *Constantia*: Constantia enim vxor fuit Mauricij Imperatoris, cui etiam referribat idem Gregorius lib. 3. epist. 30. & 23. In priori patre huius epistolæ agit Pontifex de superba elatione Ioannis Archiepiscopi CP. qui successit tempore Pelagij prædecessoris nostri Gre-

gorij in Synodo CP. ad causam Gregorij Episcopi Antiocheni celebrata nomen Patriarchæ Occidentis sibi arrogare; quod cum Pelagius sciret, eandem Synodi gesta præter sententiam pro Gregorio lazam irritauit, ut ex ipsius Pelagij epistola refert Baronius anno 587. Sed cum posita anno 6. Pontificatus Gregorij Magni eo arrogantiâ, & insolentiâ prosequutus esset, ut in litteris Romanis missis be Occumenicum Patriarcham nominaret, ideo Pontifex, qui Ioannem aberrantem summâ patientiâ tolerauerat, anno Christi 595. illum litteris suis corripuit lib. 4. epist. 48. Sabinianumque Apocristatum Constantinopoli agentem admonuit,

de illo modo cum illo communicaret, ne eius videretur superbia favere, lib. 4. epist. 19. Etiam contra ipsum scripsit Maurilio Imperatori, & eius uxori, & Episcopo Alexandrino, & Antiocheno, lib. 4. epist. 32. 36. & 38. quibus omnibus cum plura inculcet in detestatione superbi illius nominis, tandem addit, ei consentiens nihil aliud esse, quam fidem perdere, quia cum & Christo Domino vni Petro praefectura fuerit gregis vniuersalis credita, si quis eiusmodi statum violenter hueret huius, aliter sentire videretur, quam ipse Dominus sentiendum praecepit, idcirco lib. 6. epist. 30. Gregorius Maurilio Imperatori ostendit esse praesentem Antichristum, qui superbum illud sibi nomen usurpat. De nomine vniuersalis Patriarchae, seu Oecumenici Episcopi tantum Summo Pontifici competenti, plura congesseunt Brissonius d. anno 595. Machia de iurisdic. p. 1. cap. 10. Barb. de potest. Episc. p. 1. tit. 1. cap. 6. & de iure Eccles. lib. 1. cap. 1. num. 27. Sarrasat ad Sidenium lib. 4. epist. 25. Mendoza 4.4. scholast. num. 3. Turrianus lib. 3. pro canonibus Apoll. cap. 2. Coriolan. de iuris ad can. 36. Concil. Carthag. 3. & in Breuiario anno 132. Iuliel. in nota ad can. 39. Eccles. Africae. Quaeque contra Morneum p. 1. fol. 210. Hanc praeiorem epistolae partem omisimus, quia passim facit ad praesentis textus expositionem: in secundae partae ipsius epistolae agit Gregorius de Maximiano, qui Salonitanam Ecclesiam inuasis ope Maurici imperatoris, inconsulto ipso Pontifice, & pce simoniacam habem Cathedram illam occupasse credebatur: quare ipsam acriter increpauit Gregorius, verum anno Christi 595. Maximianus Imperator Maximum in Ecclesiam Salonitanam intrusum, à Gregorio censuram electum per suos ministros, in Ecclesia illa Episcopum reuocauit: & cum Gregorius insisteret, ut causam dicitur Romam accederet, Imperator rescripsit Gregorio, ut ipsum honorifice reciperet: quia de Pontifice in praesenti Imperatrici Angulae testibus, multaque insuper Imperatori insinuanda Sabatiano Apocrisario suo scribens lib. 7. epist. 1. contestans est, se periculosum esse mori, quin B. Petri Ecclesiam suis diebus degenerare. Tandem concessit, ut idem Maximianus Rationem se conferret, ubi delegatum à Sede Apostolica iudicem haberet Marinianum Episcopum, apud quem cum Maximianus iuramento praestito super corpus S. Apollinaris se purgasset de simoniacae labe, ipsi imposuit penitentiam de inobedientia erga Sedem Apostolicam, Saloniam permissis est redire, cui exspectant pallium Gregorius misit, ut constat ex lib. 7. epist. 79. cum duobus sequentibus.

2. b. *Salonitanus*.] Salona est vrbs, Metropolitique Dalmatiae, olim Colonia Romanorum, teste Protopope lib. 2. cap. 16. hodie dicitur Saldon. Habuit Ecclesiam Cathedralem iam à primis Ecclesiis seculis: eius Episcopi Glicerij memore extat apud Eusebium lib. 2. cap. 16.
3. c. *Nisiente*.] Cum confirmatio Episcoporum, etiam cum eorum praesentia ad Reges, Imperatores Monarchas spectat, Romano Pontifici competat, vt probat in cap. 3. de elect. d. *Pecunia esset electus*.] Vnde deponendus erat, cap. de hoc, ubi dicitur, de simonia. e. *Presumptus*.] Vnde suspensus, seu vt alij volunt, irregularis manebat, cap. si celebras, de cleric. excommunic.

EX fragmento huius epistolae à Raymundo in praesenti transcripto sequens communiter venit assertio: *Accusatus*, vel *denunciatus de crimine, pendente accusacione*, vel *denunciacione aui dignitatis decernendus non est*. Probant tam textus in cap. *omnis*, b. 1. dist. cap. *accusatus* 14. 2. quest. 3. cap. *final. de testibus, cap. accedens*, hoc tunc. l. *libertati* 17. g. in questionibus, l. *Lucius*, g. *idem*, ff. ad municip. l. *rescripsit*, g. *accusacionis*, ff. de materiis, l. *qui statim*, l. *qui meti*, ff. de re milit. l. *remm*, Cod. de precibus, Leonis. Cod. de rebus postulat. l. *qui de libertate*, ff. de liberal. causa, l. *si va propositis*, Cod. quando pronunciat, l. *si interuenientis*, l. *penult.* ff. ad Turpil. l. 10. ff. de iurepuren. l. *si ditione*, ff. de penis, l. *ex iudicium*, ff. de accusat. l. *idem*, ff. ad leg. Jul. maiest. l. 5. g. *prescripserunt*, ff. ad leg. Jul. de adul. Illustrant vtra coniectura à Barb. in praesenti, Petrus Greg. de elect. cap. 9. num. 2. Durandus lib. 4. de sacris Ecclesiis, cap. 1. Horthomagus lib. 3. obsequ. cap. 7. num. 4. Cubillo rescri. crimin. cap. 221. Tamburinus de iure abbat. tom. 1. dist. 4. num. final.

Sed pro dubitandi ratione in praesentem assertionem ita insisto. Omnis praesumptus bonus, nisi probetur malus, caput. *omni de seruicio in ordine*, cap. *id. de praesumpt.* l. *testante*, ff. de manumiss. testam. Sed per accusationem in iudicio propositam non probatur quis malus: ergo non est atendus ab honoribus donec talis probetur. Accedit, nam lite pendente nihil est innouandum, vt probat in cap. 1. *vt lite pendente*, nec intertem prius quis inibus antis sibi competantibus, cap. 1. & 2. *vt lite pendente*, cap. 1. *ead. tit. lib. 6.* ergo non debet quis prius iure adipiscendi novos honores, praecipue cum saepe accusationes ex calumnia, & prauo animo opponantur: vnde absurdum est, per accusationem tantum in iudicio propositam prius accusatum fore adipiscendi nouam dignitatem. Quare Panormitanus in praesenti, num. 5. probat, quod accusatus quando non praecessit infamia, quamvis non possit promoueri, potest tamen eligi et ratione, quia aliis facile posset impediri quilibet electio, eum agnoscentes electionem celebratam esse, posset in continenti aliquem accusare, & ita illum pto ea vice in habilem reddere ad eam electionem.

Qua dubitandi ratione non obstantis vera est praesens decisio, cuius rationem communiter Doctores ex eo assignant, quia videlicet per huiusmodi accusationem, seu denunciacionem criminis lesa est fama, seu existimatio accusati, vel denuncianti apud probos, & honestos viros; ac proinde incurrit ille in infamiam facti, ex l. 2. ibi: *Re tamen ipsa, & opinione hominum non effugiet infamia notam*, ff. de obsequiis praesent. l. *ea qua*, C. ex quibus causis infam. & per consequens tanquam infamis infamia facti, non potest ad nouos honores, vel dignitates ascendere, ex vulgari regula, infamibus potestas dignitatum non patere, l. *infamia*, C. de decur. lib. 10. l. *infamem*, C. de infamibus, ead. lib. ubi plura Anaya, l. 3. C. de dignitat. lib. 12. l. 1. g. *ut Prator*, ff. de postul. l. *cum Prator*, g. *non autem*, ff. de iudiciis. Ita docuerunt Glossa & communiter repetentes in praesenti; & hanc esse communem rationem, dixerunt Conar. d. lib. 1. cor. cap. 16. Nauar. ad hanc titul. consil. 2. qui inde deducunt, praesentem decisionem non procedere

4.
CONCLU-
SIO TUA
DITUA ET
PROBA-
TIVA.

5.
IMPECNA-
TUM TRAN-
DATA AP-
PESITIO.

6.
RESER-
TUM COM-
MUNIS
RATIO
NIVIS P2-
CITIONE.

cedere, quando per accusationem, seu denunciationem non est lesa existimatio seculari apud probos, & honestos viros, nec ulla facti infamia orta est, veluti si à malevolis quis accusatus, vel denunciatus sit. Verum hæc communis ratio defendi non potest: tum quia Gregorius in præfenti nullam requirit infamiam, nec eius mentionem facit, quia verbum *monstratur*, referri debet ad accusationem, denunciationem, vel inquisitionem, idest ad aliquem modum procedendi ex tribus, de quibus in præfenti rubrica; cui, nisi ita accipiat, non convenit: tum quia in d. l. *remm*, l. 1. C. de reus postulat, lib. 10. simpliciter, & absolute expenditur in la delatio, seu accusatio rei, qui de crimine postulat, & ob eam prohibent Imperatores ipsum ad novos honores admitti; nec ullam mentionem faciunt notæ, aut infamie ex accusatione insurgentis apud probos, & graves viros; præsertim quia attentis circumstantiis accusati, & accusatoris, non semper ex accusatione insurgit talis nota, seu infamia, ut agnouerunt Innocentius, & alij in cap. *actusatum*, de finibus, Bernius hic, mon. 2. Pacianus de prob. lib. 2. cap. 21. num. 139. qui differentiam constituent inter accusatum, & inter inquisitum, quia in isto semper supponitur infamia, quæ inquisitionem præcedere debet, cap. *qualiter*, et a. hoc tunc, qui tamen non supponitur, nec requiritur, nec semper imminetur in accusatione, vel denunciatione; & tamen Imperatores in dictis legibus semper, & indistincte prohibent, ne accusatus accusatore pendente ad novos honores admittatur. Accedit quia si textus hic, & similes supponerent infamiam, seu potius illam requirerent, vetique ea per se sufficiens erat, iuxta regulam *infamibus*, de R. l. lib. 6. l. 2. Cod. de dignit. lib. 12. & ita fuisse desideratur accusatio à Gregorio in præfenti, & Imperatoribus in dictis iuribus, cum in infamia absque accusatione, seu denunciatione sufficere.

Vnde vetius credo in hac parte distinguendum esse accusationem; seu denunciationem, aut inquisitionem criminalem, ab infamia etiam facti; ita quod reus accusatus, vel denunciatus, accusatione, vel denunciatione pendente, ad novos honores non admittatur, licet nulla ex accusatione, vel denunciatione proponatur orta infamia, & per contrarium sola facti infamia sufficiat, ut eiusmodi reus ad novos honores non ascendat, quantumcumque nulla accusatio, vel denunciatio præcedat. De priori casu in præfenti agitur, & docetur, ne reus de crimine accusatus, vel denunciatus, ad novos honores admittatur. Cuius prohibitionis ratio est, quia licet lex definitiue non præsumat eiusmodi reum delatum esse nocentem, & criminem illud, de quo accusatur, perpetrasse, cap. *nonne* 1. §. *quasi*. 4. cap. *final*. 15. *quasi*. vlt. ibi: *Non statim qui accusatur reus est; sed qui committitur, criminofus*; & deducitur ex dicta lege res, ff. de solus. nihilominus tamen, qui per litteras dubie efficitur, dubisque est illius euentus, l. *quod debetur* 32. ff. de peculio, l. *nemo* 10. in fine, ff. de acquir. possess. dubitat, & potest possibile crimen admissum esse; vnde ne contingat eundem reum criminofum existere, & talem per sententiam declarari, & consequenter indignum admitti ad honores, & dignitates, quæ velut virtutis præmia non nisi probis, & ido-

D.D. Gonzalez, in Decretal. Tom. V.

neis deferti debent, satis prudenter agens presumptione quidam supponit, fieri & contingere posse, quod accusatus, seu denunciatus, verus reus, & criminofus appareat per sententiam, ac proinde vetet, ne sit accusatio, vel denunciatio pendente ad eiusmodi honores novos, vel dignitates ascendat; & ed pertinere videntur illa verba huius textus, *valde græve*, idest periculofum, & præiudiciale est: & licet eiusmodi ratio per se non sufficeret ad arcendos reos postulatatos à novis honoribus. absque lege id disponente, sufficere tamen ut in ea fundetur, & pro ea iustificetur præfens prohibitio, ut docuit Acuña in cap. *tantis*, §. 1. *distin.* mon. 1. Ideoque Castilianam pecuniarum repetendam reum à Consulari petitione amotum fuisse, refert Salustius in *emior. Canilene*, & ex eo Forner. lib. 3. *rer. quæd.* cap. 1. & Paulus Manucius in *epist. ad Arrianum*, scribit legem fuisse, ut ne in comitiis, & petitione Magistratum, eorum ratin haberetur, qui rei postulati essent.

Ex qua ratione provenit, ut præfens prohibitio procedat in quibuscumque honoribus, vel dignitatibus, quæ iure vel consuetudine in republica tales creduntur, & ut tales deferantur, ut satis colligitur ex generalibus verbis dictæ legis *reus*, dictæ legis 1. & ex hoc textu, ibi, *honoretur*. Vnde non poterit reus criminis accusatione pendente ad Ordines promoveri, *dist.* cap. *tamis*, §. 1. *dist.* nec nomen militiæ dare, l. *qui statim* §. 1. vlt. ff. de re milit. & quia testimonium ferre in causa criminali honorem præfere, & ad fidem, & integritatem personæ testificantis spectat, cap. *preceptum* 32. *quasi*. 5. notant Glossa 2. & DD. in cap. *testimonium* 34. de *test.* ideo non potest reus de crimine delatus in causa criminali, præterquam in exceptis, testimonium ferre, l. in *testimonium* an. ff. de *testibus*, cap. *final* *cod. tit.* docuerunt Campanegius de *testibus*, reg. 105. Rebuffius de *reprob. testimon.*, a num. 27. Procedit etiam præfens assertio, tam in reo accusato; vel denunciato ad vindictam, vel inquisito specialiter, quia in quocumque ex eis viget ratio suprà tractata, & probatur ex illo verbo *Nunciatur*, huius textus; & ex dicta lege 1. Cod. de reus postulatatis. Probantur Abbas, & Felinus in *dist.* cap. *final.* de *testibus*, Nauarvus ad *hunc tit. consil.* 3. num. 4. Etiam procedit præfens assertio pendente appellatione à definitiva sententia prolata, etiam absolutotia; adhuc enim reus ad novos honores ascendere non potest. Glossa finalis, & DD. in *dist.* cap. *vlt.* *Nuquid*. *dist.* *confil.* 3. num. 1. *Comar.* lib. 1. *var. cap.* 16. num. 11. & *fundetur*, quia cum per appellationem suspendatur pronuntiatio, l. 1. §. vlt. ff. ad *Turpil.* interit dum ea pendet, dicitur lis, & accusatio pendere, nec adhuc censetur reus absolutus per eam sententiam, sicut nec condemnatus quoad iuris effectus per condemnationem, *dist.* l. 1. §. vlt. l. 5. *final.* ff. de *pensis*: ac proinde pendente iuriter accusatione locum habet præfens assertio. Et dum iurisdictionis in leg. 1. *vers. Interger*, ff. *nihil innovari*, docet pendente appellatione integrum esse statum appellantis, seu litigantis, intelligitur de integritate, quam habebat ante sententiam, dum accusatio pendebat; nam in eo statu, quocumque is facit ante sententiam, licet, vel accusatione pendente, in

8.
AMPLIA
TUS PR
SINI DO
TAINA.

eodem quoad iuris effectus existit post sententiam definitam, quomodo appellatio pendet, & ita sententia appellatione pendente non operatur plures effectus, quàm accusatio, vel ita ante prolata sententiam. Sed nihilominus per eandem sententiam, & appellationem interpositam non tolluntur effectus illi, quos lis, vel accusatio pendens ante sententiam operatur *d. l. 1. §. ult. ff. ad Turpil.* Nec obstat quod pendente appellatione potest reus postulator honoribus fungi, *d. l. 1. vers. Ergo, ff. nihil inuolari*; id enim procedit in honoribus obtinentis ante litem, vel accusationem criminis, quibus licet lite, & accusatione pendente frui poterat, *l. liberius 17. §. ult. ff. ad municip. d. l. 1. C. de reus postulat.* ita etiam post sententiam appellatione pendente, eisdem fungi non prohibetur. Contrarium verò procedit in nouis honoribus, quos sicut accusatione pendente ante sententiam, ita post sententiam, dum appellatio pender, assequi non potest. Aliqui etiam protrahunt presentem textum ad reum conuentum in causa eluili, in qua agitur de omnibus bonis, vel maiori eorum parte; quia eiusmodi causa æquiparatur cause criminali, *l. propter litem 24. ff. de excusat. iur.* & ita sicut reus postulator in causa criminali accedit ad nouos honoribus, ita etiam conuentus iudicio ciuili, in quo de omnibus eius bonis agitur, ita tenentur Glossa in *d. l. 1. C. de reus postulat.* Titaequel. *de nobilit. cap. 3. §. 1. num. 370.* Sed hæc sententia iuris principis in seipso nullatenus sufficit non potest, nam tam Gregorius in presenti, quàm textus in *d. l. 1. l. rem, d. l. 1.* specialiter agunt de reus crimine postulatori; vnde eorum prohibitio non debet extendi ad reos conuentos in causis ciuilibus, iuxta regulam *Odia, de R. l. lib. 6.* Tum quia in eis cessat ratio super adducta; quantumque enim lis vertatur super omnibus, vel maiori parte bonorum, & reus focumbat, non ex eo efficitur indignus, aut appetat malus, seu non idoneus ad honores illos, à quibus lre pauperes, quæ tales sunt, absoluit tanquam inhabiles non repellit, quomodo diuites regulariter pauperibus præferantur, *lud. subeunda 46. C. de Decernendis, lib. 10.* Tiraquel. *de nobilit. cap. 3. §. 1. num. 19.*

Amplius etiam, & explicatur præfens assertio, vt promotio, collatio, vel assequitio noui honoris, seu dignitatis in proposito vim non habeat, nec conualecat, quantumcumque postea per definitam sententiam absoluitur, & innocens appareat is, qui reus postulator, ac accusatione pendente promotus, & nouos honores fuerat assequutus, *l. qui de libertate 29. vers. & licet, ff. de liber. caus. Prescriptis, & Acuña in d. cap. tantis 1. & foudetur, quia huiusmodi promotio, seu collatio, accusatione pendente fit directè, & principaliter, contra textum in *d. l. reus, ibi: Principalia consuetudinem*; & *l. 1. C. de reus postulatori*; ac proinde non valet ipso iure, ex *l. non dubium, C. de legibus, cap. que contra, de R. l. lib. 6.* Vnde cum talis promotio, seu collatio noui honoris nolla fuerit à principio, postea conualecere negoti, etiam si tollatur impedimentum, spæciatque reus postulator innocens esse; quia superueniens habilitas non sufficit, nec confirmat collationem inualem; fuita textum in *cap. si eo tempore, de rescriptis lib. 6. l. 1. §. si filius, ff. de leg. 3.* docet Acuña ubi supra, *num. 3.* Hæc tamen amplior non procedit in honoribus, & dignitatibus, quæ per legem humanam annullari nequeant, vt est promouio ad factos ordines; quia licet eius exercitium*

impediri posset lege humana, quo sensu, & aliquando licet dicitur, *cap. 1. & 2. de schismat. cap. Sanctorum, 70. dist.* tamen effectus characteris impediri nequit lege humana, quidem est effectus inseparabilis ipsius ordinationis.

Hæcque tradita nonnullas præsumunt limitationes. Prima eam est, quæ procedat tantum in eo, qui de grau crimine reus postulator est, vt facile probatur ex præfenti textu, ibi: *De quæ tanta, & talia*; quin immodè & desiderat deuotionem criminis capitalis, colligitur ex *d. l. liberius 17. ad finem, ibi: Capitalium criminum reus*; & *l. Lucius 22. §. penult. ibi: Accusatorum criminum capitalium, ff. ad municip. docet Acuña ubi supra, num. 5.* Secundo limitatur præfens assertio, vt tantummodo procedat intra annum à die propolite accusationis: nam eo elapso, si adhuc lis per sententiam definita non sit, potest reus nouos assequi honores, nisi per eum fuerit, quominus intra annum finitur causa, *d. l. reus*; docet Glossa 2. in *d. cap. tantis*, Aut. Mathæus ubi supra; nam criminalis causa super crimine muta olim anno terminabatur; quo elapso statim reus absoluebatur, nisi per eum stetit, *l. 1. & 2. C. Thodof. vt intra certum tempus*; Idque obsecramus fore vique ad Iustin. vt patet ex *l. ult. C. Iustin. ead. iud. vnde quia post annum non pendebat, sed extincta, & finita et debatur accusatio, cessabat etiam prohibitio loris, quia iam non erat reus de crimine delatus, ac proinde poterat nouos assequi honores, quemadmodum potest accusator aliis desistente, & ab accusatione cessante, *l. rescripto 6. §. si quis, in princip. ff. de nouer. & boner.* aut non petente per temporis legitimum spatium, *l. Lucius, §. item respondit, l. in Senatus consulte, §. qui post, ff. ad Turpil.* vel abolitionem priuatum petente, *l. aut priuatum 10. ff. ad Turpil.* An vero hodie post dictam legem vltimam, per quam lis, & accusatio criminalis non terminatur anno, sed biennio, procedat textus in *d. l. reus*, & accusatus anno elapso nouos honores assequi possit, vel expectari debeat biennium, disputat Cuiac. *lib. 1. obs. cap. 87.* ubi non sine ratione contra alios resoluit, biennium expectandum esse; assenti tamen generali consuetudine, tam in foro lceali, quàm ecclesiastico, non seruatur huiusmodi præfinitio biennij in criminalibus, sicut nec tricenij in ciuilibus, ex *l. propter litem, C. de iudiciis*, vt notauit in *cap. 4. de officio delegat.* Vnde iuxta hodiernam præxim præfens limitatio locum non habet: illud tamen certum est, hanc prohibitionem locum non habere, cum ex coniecturis constat, accusationem proponi, & reum deferri per fraudem, & calumniam, vt ia honores, aut dignitates assequi non valeat; tunc enim perinde ac si nulla pendat accusatio, admittendus est, *l. qui de libertate 29. vers. Qui vero, ff. de liber. caus. Prescriptis in d. cap. tantis, num. 3.* Nanctus *d. vers. 3. num. 7.* Acuña supra, *num. 4.* Faciant textus in *cap. fides 15. ibi: Eorum malis obuiare, de rescriptis, l. mictura 8. §. 1. vers. Amplius, ff. de excusat. cap. 2. ubi DD. de reuoc. lib. 6. l. 1. §. penult. ff. de quasi, l. in summa 65. vers. fin autem, ff. de iudiciis, in d. l. per quam receptum est, quod quando per fraudem, & calumniam mouetur lis, ea non attenditur quoad loris effectus, & sic non efficit rem, de qua agitur, lilegiosam.**

Nec obstat dubitandi ratio super adducta; pro cuius solamine dicendum est, regulam illam, *litæ pendente nihil inuolari*, procedere respecta-

IO.
IMITA-
TIONES
IN REUS
TAR.
155.

II.
DISTIN-
CTA
VIA
DIA-
TUTIS

TARDI BA-
210.

ius quæsti, & exercitij illius; non verò quoad honores nouiter acquirendos, quos accusatus in iudicio assequi non potest: honoribus verò iam obtentis vti non prohibetur, d. l. libertus, §. vlt. ff. ad municip. ibi: Dignitatem pristinam interim reuertit; & l. i. C. de rei publicæ, ibi: Nouns honores; & cap. nonne, vbi Glossa 8. q. 4. Couarr. lib. 2. var. cap. 8. num. 4. Menchaca illuſtr. controu. cap. 84. num. 26, quia in amittendis honoribus, sen dignitatibus autem obtentis, & illarum vſu viget diuerſa ratio, & longè maior vertitur præiudiciũ, quàm in his, quæ de nouo deferuntur assequendis; vnde merito plus requiritur vt dignitates autem obtentæ amittantur, quàm vt nouiter obtinendæ impediantur; ſiquidem in illis de damno, & poenâ; in his verò de lucto agitur, argumento legis vltimæ, C. de eudi- ciliis, ſuntia lege Titulo 70. §. 2. ff. de condit. & demonſtr. Vnde licet alias in poenam criminis commiſſi repellatur quia ab honoribus assequendis, niſi ex verbis legis, aut aliis coniecturis contrarium appareat, non ideo priuatur, aut repellitur ab obtentis, ſen illarum vſu, & adminiſtratione, cap. poſtulaſſi, de cleric. excommunicatione, reſoluit Couarr. vbi ſuprà: ita etiam, triſi reus accusatus poſt latam ſententiam condemnatoriam, à qua appellatur, nequeat nouos assequi honores; tamen obtentis ita accusationem non priuatur, nec illorum vſu, ſeu exercitio: Nec huic ſolutioni obſtat textus in cap. accusa- tum 4. de ſimonia, dum in eo probatur, ſimonia- cum accusatione pendente non poſſe Miſſarum ſolenis celebrare: igitur quia accusatus de crimi- ne, non ſolum repellitur à nouis honoribus assequendis, verum etiam & vſu, ac exercitio dignitatis obtentæ priuatur. Nam huic difficultati communiter reſpondetur, textum illum procedere in reo accusato, & inſuper inſamato, qui per delationem criminis inſamiam facti contraxit, & eius exiſtimatio apud bonos, & graues viros læſa eſt; ſiquidem bi ſuſpenduntur interim à Miſſarum celebratione, cap. preſbyter ſi à plebe 2. q. 4. Verum hæc ſolutio non ſatisfacit: imò quia diſi- natioria eſt, ſiquidem nullum extat verbum in d. cap. accusatum, vnde inſamia colligi poſſit; imò tanum expeditur acnſatio, quæ inſamiam omnino non ſupponit: tum quia etiã inſamia ſupponeretur, adhuc in hærentis in eadem diffi- cultate, quare videlicet propter inſamiam accuſa- tionem tantum pendente reſu vſu, & exercitio di- gnitatis tam obtentæ priuatur: contra huicſque tradita. Quare hæc, & aliis ſolutionibus omiſſis, traditis ab Archidiacono in cap. quia res 11. q. 1.

Menochio remed. 1. recuperand. poſſeſſ. num. 134. & 336. & remed. vlt. num. 42. dicendum eſt, textum in d. cap. accusatum, cum ſequenti, ſpeciali- ter procedere in reo accusato de crimine ſimonie in ordinum ſuſceptione commiſſo; nam ita ordi- nato inſigiliter ſuſpenſio ipſo iure, cap. iama, verſi- hem, de ſimonia, ceterum 2. poſt princip. cod. titul. docent Nauarr. in manual. cap. 23. num. 112. Bernar- diaz in praxi, cap. 91. Henſiq. a. p. ſumma, tit. de excommunicatione, cap. 37. num. 35. & in eo reſeru probibimus. Nec obſtat, quod per hanc prohibi- tionem ad nouos honores datur ocaſio improbis hominibus excludendi ab honoribus homines probos, & dignos. Nam reſpondetur, hanc oca- ſionem tolli per inſcriptionem, per quam ad poenam talionis obligatur accuſator, cap. ſuper his, vbi dicemus, hoc titul. Deinde quia ſi ex con- iecturis probabiliter appareat reum per calum- niam, & fraudem deſecti ad effectum vt delatus à nouis honoribus arcatur, non tamen procedit, nec locum habet præſens prohibitio, l. qui de li- bertate 29. verſi, qui verò, ff. de liberali conſaſ, l. 2. §. penult. ff. de quaſt. & ita nou facile ob calum- nioſam accuſationem eueniet, reum accuſatum à nouis honoribus arceri.

Sed ſuprà traditis obſtat textus in cap. memini- mus 13. hoc titul. vbi cum Abbatiſſa eſſet de graui- ſimo ſimoniz crimine accuſata, nihilominus ſub- ber Pontifex, vt ab Epifcopo benedicatur adhuc accusatione pendente: Igitur quia reus criminis poſtulat non impeditur nouos honores assequi. Pro cuius textus expofitione varia adduxerunt ſe- pterentes ibi, Hoſtienſ. in eo textu, Felinus num. 2. Menchaca illuſtr. cap. 87. n. 25. qui accipiunt præ- ſentem aſſertionem, quando ex accuſatione læſa eſt exiſtimatio accuſati; at verò textum in d. cap. meminimus, caſu quo nulla ex accuſatione Abba- tiſſæ inſamia orta fuit. Alij textum accipiunt il- lum ſpecialiter in caſu proptio, quia in eius ſpeeſe nulla contra Abbatiſſam pendebat accuſatio, vel denunciatio; quia licet Henricus proponeret ſa accuſare velle eandem Abbatiſſam, non tamen eam de facto accuſauit. Ita doceant Abbas ibi, num. 9. Anania num. 2. Nauarr. d. conſil. 3. num. 7. verum his ſolutionibus omiſſis dicendum eſt, tex- tum in diſto c. meminimus, procedere in ea accuſa- tionem, quæ ſaltem vltis præſumptione ſiebat malo animo; & ſic per fraudem, & calumniam, attentiſſa qualitate accuſatoris, qui erat inimicus Abbatiſſæ, contra quam teſtimonium dixerat. Vnde non ob- ſtante accuſatione de ſimoniz labe ab ipſo Hen- rico propoſita, rectè iubet Pontifex benedictio- nem illi impendi.

72.
EXPOSITIO
CAP. MEMI-
NIMUS, NON
TIT.

CAPVT V.

• Paſchalis Papa.

Nvlli Epifcoporum ab accuſatione ſua repellere liceat, quos antequam ab eis ſe impetendos cognofcerent, à ſua communi familiaritate neglexerint ſeparare.

NOTA.

1. a Paſchalis Papa.] Ita etiam legitur in prima collectione, ſub hoc titul. cap. 3. & apud Gratianum in cap. nulli 24. 3. quaſt. 5. nullibi tamen exprimitur, cuius Paſchalis hic textus ſit, nec inter epiftoſas, tam primi, quàm ſecondi, repetitur verba huius textus.

D. D. Guezal. in Decretis. Tom. V.

b Separare.] Conſonant textus in l. ſi vixit 13. §. final. ff. ad leg. lul. de adult. cap. in præſentia 46. de ſententia excommunicationis. & regulariter, quem quis ſemel approbavit, poſtea reprobare non poter, cap. accipiunt 13. de elec. & quali. l. vt gradum, §. ſed reprobari, ff. de numer. & honor. l. Pom- pinus, ff. de negot. geſt. non tamen in præſen- ti caſu potuit Epifcopus retinendo familiaritatem
B. a crimino

2.

criminosum reddere habilem ad accusationem contra alios in iudicio proponendam; quia cum huc inhabilitas à iure proveniat, prius à approbatione tolli non poterat, ut probat Balbus in cap. 2. de except. num. 118. Contra ipsum tamen

Episcopum talis familiaria criminosus auditus in pernam ipsius Episcopi, quia in sua familiaritate retinuit hominem criminosum, quem repellere debebas, ut probant in cap. 1. hoc tit. ubi textum hunc exposui.

CAPVT VI.

Ex Concilio^a Magoc.

DE iis criminibus, de quibus absolutus est accusatus, non potest accusatio replicari.

NOTÆ.

1. ^a *Magoc.* Ita legitur in prima collectione, sub hoc titulo, cap. 4. in hac festa, & apud Butchardum lib. 16. *Decreti*, cap. 9. legitur *Maguntin.* Carnoensis p. 16. *Decreti*, cap. 319. citat textum hunc ex capitulis Caroli, lib. 7. capit. 291. Et licet in eo non reperiatur verba huius textus, extat tamen sententia capite 351. In hac verba: *Flagitari iudicium non debet de causa, que definita, vel indicata est.* Vnde credo in præfati reſcripti canonem alicuius Concilii Moguntini nondum excuſi, de quo idem notati in c. 2. de empt. & vendit.

COMMENTARIUM.

2. **E**X hoc textu communiter talis deducitur assertio: Accusatus de uno crimine, iterum de eodem accusari nequit. Probant eum textus in cap. si illi 23. q. 4. cap. veniens 35. q. 9. cap. si quem 3. cap. notandum 2. q. 3. s. divina de penis. dist. 3. Heraldus Episcopus Tiron. in suis capit. cont. 19. *Ita definita crimina nullus reficere audeat.* Et si cui, §. si idem, l. Senatus 14. ff. de accusat. l. accusationem 6. l. si quis homicidium 11. l. qui de crimine, C. end. tit. l. 4. §. final. ff. ad leg. Jul. de adult. l. sepulchri, ff. de sepulchro violat. l. in delictis, §. si de causa, ff. de noxal. act. l. final. C. de custod. rer. l. 2. C. de except. rei indic. l. 1. C. quando promittere l. penult. §. final. ff. nouæ, compen. l. 3. §. si plures 12. ff. de homine libero exhib. l. 3. ff. de popular. action. l. 12. tit. 2. part. 7. Illustrant ultra congestos à Barb. in præfati, Couarr. lib. 2. var. cap. 10. P. Gregor. lib. 5. parit. tit. 9. cap. 6. Peregrinus de fidelit. omni. art. 3. num. 41. Caballo resal. crimin. casu 93. plures quos congerit Aylon ad Ant. Gomez lib. 3. var. cap. 1. num. 27. Fortner. lib. 5. var. quæst. cap. 18. Cuiac. in l. 9. C. de accusat. Barbosa in l. 1. art. 14. ff. de iudiciis, Aug. Barb. in cap. filicia, de pen. in 6. Desider. Herald. lib. 1. de accusat. rei indic. cap. 1. num. 11. Vighel. in method. iuris can. fol. 32. Valenzuela consil. 145. ex num. 1. Tiber. Decianus lib. 3. tract. crimin. cap. 30. Salgado de preterit. reg. 4. p. cap. 8. ex num. 322. & cap. 12. num. 79. Ant. Matthæus de crimin. ad tit. de accusat. cap. 3. mon. 4. Bobadilla lib. 3. poli. cap. 15. mon. 99. & cap. 21. mon. 34.

Sed pro dubitandâ ratione in præfentem assertionem ita infurgit: Res indicata tantommodo locum habet inter eos, inter quos actum, vel indicatum est, alij verò, sicut nec illa prodest, nec nocet res indicata, iterum eandem actionem intendere possunt, l. 1. l. & au eodem, in princip. ff. de except. rei indic. l. 1. per totum. C. rei inter alios, l. 1. C. quibus res indicata, & ne quis dicat hoc procedere in causis civilibus, apertius in crimina-

libus idem statutum est in l. 3. C. quibus rei indic. quæ est pars legis 9. C. de accusat. ut ex inscriptio- ne apparet, & in ea Imperatoris Dioclet. & Maxim. alunt, iuris manifestissimi esse in accusationibus, his, qui congressi in iudicio non sunt, officere non posse, si quis fortè præiudicij videatur oblatum. Igitur etiam quis de aliquo delicto sit à Titio accusatus, & absolutus euaserit, vel condemnatus fuerit, poterit iterum à Semptronio de eodem crimine accusari.

Quia dubitandi ratione non obstante vera est præfata assertio, pro cuius expositione sciendum est, tam apud Consulos, quàm apud Rhetores veritatem questionem esse, an qui alicuius criminis accusatus, & absolutus contradictorio iudicio fuerat, ab alio repeti, siue de nouo accusari possit, ut constat ex Quintiliano lib. 7. insti. cap. 6. libi: *Solus & illud queri, quod referatur quod scripserim isti, his de eadem re ne sit alio; id est hoc bis, an ad rem, an ad actionem: id est, an excludatur tantum qui eger, & superatus est, an verò quilibet eandem accusationem repetere volens, siue, ut ita dicam, an absolutio personalis sit, an realis.* Et placuit rei iudicate exceptione omnes submoueri, & eum, qui ab alio ex vno delicto in iudicium delatus est, ab alio super eodem defecti non posse, l. in tamen 11. §. ult. ff. hoc titulo. & apud Græcos legem fuisse bis de eadem re aduersus eundem iudicium non dari, aut rationes bis exigi, aut suffragia ferri, constat ex Andocide de vſu ſori Attici in oratione contra Alcibiadem, quem ita latine verit Desid. Heraldus d. lib. 1. cap. 1. *De odio autem aduersus populum, quous me insimulant, deque satisfactione studio, non est quod multis verbis agam; si enim hoc criminis nondum esset in iudicium delata, & indicata, sanè & accusatores bis de criminibus dicentes audire diſſens, & ego necesse haberem ad diluere. Quoniam agam quæ accusatus, reus absolutus sum, de his rebus nihil amplius dicendum existimo. Siquidem atqueam de aliquo iudicio ferri, criminatorem, qui et obicitur, vera sint, nec ne, non est facile iudicare. Eo autem absolute, aut damnato, contrarium finita est; & quid auctorem verum sit, aut falsum, constituit. Quare doctores existimo, cetera contra quæ sententia datur, esse suffragia morti adici, & eorum bona publicari; rei autem qui liber rei sum, & absolutus, siſtem accusatorem exponere esse; & iudicium perdendum, atque exterminandum hominem postulat datur, non etiam seruandum; maxime cum leges vultint ne bis eadem de re eum eodem in iudicio agatur, nec eum ex præscripto legum ius dilatoris habuerit. Eadem legem ex Cicetone Sopatro, Rhetore Græco, & Quintiliano declamatur. 406. probat Rodolph. Fortner. lib. 5. var. quæst. l. 18. Cuiusmodi si non de eodem crimine agatur, veluti si plura crimina quis ad-*

4. SIMIL. ACCUSATVS, AN ITERUM ACCUSATVS.

CONCLUSIO
TRADITVS,
ET PROBATA.

3. INVENI-
TUS TRA-
DITA AB-
SOLVTIO.

misericordia, singulorum nomine accusari poterit; adeo ut si ex eodem facto plura crimina nascentur, & unus nomine fuerit delatus, possit & alterius ab alio reus accusari, l. qui de crimine 9. C. hoc rursus. Quo casu procedunt textus in l. qui ceteri, & qui tunc autem, ff. ad leg. Jul. de vi, l. 3. ff. si mater, ff. de Carbon. veluti consuetudine causâ feruunt Titij occidisti, & iniuria est, & carceres: vitiosi forentem alij inperat, & innotuit est, & adulterium; virtuosque igitur criminis reus à diversis accusatoribus fieri potest, l. a. ff. de primis delictis. Diversa enim crimina, non tam numerum factorum, quàm ratione & qualitate æstimantur: itaque & ex eodem facto plura nascuntur crimina; & contra, licet plura sint facta, vnum tamen intelligitur crimen, vnaque accusatio; ut si plura conposita eidem eodem tempore dixeris, si plures plagas, si varia vulnera inflixeris: quo casu, si de singulis separatim agatur, exceptio obstat, l. 7. §. si plures, ff. de iniuriis, l. illud 32. §. 1. ff. ad leg. Aquili. & si vnum crimen pluribus legibus vindicaretur, non nisi ex vna reum fieri Senatus permittit, l. Senatus 14. ff. hoc sit. quod Accusatus & repetentes ibi accipit, ita ut idem crimen pluribus vindictæ legibus, & actum fuerit ex leuiori, possit ex duriore agi in id, quod in ea plus est, argumento legis 1. ff. de vi honor. rapt. l. qui seruus 34. l. quoniam 4. §. 1. ff. de V. & A. Verum ea interpretatur menti Senatus aduersatur; nam Senatus voluit succurrere reis aduersus delatorum improbitatem; ideoque non nisi ex vna lege reum fieri voluit, siue leuiori, siue duriore esset, ut liquet ex Suetonio in vita Titij, ibi: Inter aduersa temporum, & delatores, mandatorumque erant ex licentia veteri: hoc assidue in eis furo singulis, ac suspensibus casus, ac nonnullis traditis per ampliatores arena, partem subiecti in seruis, ac venire imperantibus; porum in aduersis insularum auehi: reque etiam similia quodamque ausuros perpetuo coerceret, vetuit inter cetera de eadem re pluribus legibus agi.

Hic suppositis, ratio, ob quam semel legitimè accusatus, & definitiò absolutus, non possit amplius de eodem crimine reus fieri, procedit ex eo, quia sententia cum legitimè accusatore lata omnibus aliis de populo obstat, quia in qualibet te respiciet publicum interesse, quilibet de populo est legitimus accusator, unde sententia cum in prolata omnibus aliis præiudicat, ut ait Donel. in l. sapienter, ff. de re iudic. posterioribus nulla speret actio, postquam primus victus fuit, quia competit accusatio omnibus collectiue, non ut singulis: quare qui præoccupat, totum in populi in iudicium deducit, quo superato, nihil ceteris manet ut experiantur. Exemplum affert Alexander in dist. l. sapienter, mem. 33. veluti si Dominus vnus suis plures constituit procuratores in solidum, quorum vno defendente victus sit, non est dubium, quin sententia noceat Dominum petende ac si omnes succubissent, l. plures 31. ff. de procurat. cap. si duo 6. eod. tituli. lib. 6. Pichardus ad tit. Instit. de hoc, per quos agere. Similitudinem enim in popularibus actionibus quilibet agendo, seu accusando consumit ius aliorum, & facultatem accusandi, quia eam in fauorem publicum, & ad publicam vindictam quilibet de populo admittitur accusator, sententia criminalis absolutio lata cum priore, sicut Reipublicæ præ-

iudicat, ita etiam omnibus per eadem, & ad publicam vindictam accusantibus, qui in his terminis non attenduntur, nec alij censentur, sed tanquam iidem cum prioribus Rempubliam, seu populum representantem. Faciunt textus in l. cum qui 30. §. in popularibus, ff. de iur. iur. l. 3. ff. de populi actio. cum traditis per Glossam penultimam in cap. cum dilectus 32. de elect.

Hocque tradita ampliantur, ut procedunt, non solum ubi semel accusatus ab eodem accusatore, verum etiam ubi ab alio iterum accusatur, siquidem nec is non admittitur, ex ratione proxime adducta, & probat præsens textus, qui prout habetur in hac sexta collectione, absolutus, & indistinctus sit, accusationem non possit replicari, licet apud Carnotensem in prima collectione, legatur ab eodem. Faciunt textus in d. l. si quis homicidium, l. 12. partem, ibi: Non la potria accusar otra vnguna. Ergo generaliter, tam in eodem, quàm in alio quocunque accusatore locum habet præsens assertio. Nec obstat textus in cap. cum P. hoc rursus. quem in contrarium expendit Glossa 2. in cap. habet 2. quæst. 3. quia procedit in terminis longè diuersis, nec agitur de reo semel absoluto, & iterum de eodem crimine accusato. Ampliatur deinde præsens assertio, ut locum habeat non tantum ubi reus criminis fuit absolutus in iudicio, & per viam accusationis, verum & per viam inquisitionis; tunc enim post absolutionem non potest de eodem crimine accusari, ut docuerunt in presenti Abbas num. 7. Betoinus num. 20. Couart. supra, num. 5. Iul. Clarus d. §. final. quæst. 97. mem. 7. Licet autem nonnulli, à quorum sententiam immerito commoneant dicit Couart. d. num. 5. hanc ampliationem admittant attento iure ciuili, non vero canonico, quia ex iure ciuili eadem pena imponitur quomodocumque delictum apparuerit, l. 4. C. de sepulchris violatis. l. 2. §. si publico, ff. ad leg. Jul. de adult. Ex iure vero canonico mitiori pena imponitur, cum per inquisitionem proceditur, cap. inquisitionis 17. vbi dicemus, hoc rursus. & ita adhuc hoc iure attem cum effa accusationis, ut per eam pena integra, & ordinaria imponatur, arguementis capituli scilicet, vers. Per hoc de pena in 6. rursus traditis à Couart. ubi supra, num. 6. Verius nihilominus est, hanc ampliationem procedere etiam iuxta sacros Canones, etiam in casibus, in quibus minor pena per inquisitionem imponitur, ut probat Abbas hic, mem. 7. quia quauis dum reus condemnatur mitiori penæ per Inquisitionem, possit dubitari, an postea ad integrandam penam ordinariam agi possit; tamen eam in presenti agamus de reo absoluto, nihil interest, an per viam inquisitionis, an accusationis fuerit absolutus, cum utraque casu eadem militet ratio, & de accusatio innocentia consistit; eodemque modo rationandam est de reo per viam denunciationis absoluto. Rursus ampliatur præsens assertio, ut procedat siue reus absolutus sit per viam inquisitionis, siue per modum grauiæ, ex indulgentia Principis, ut docent Iul. Clarus supra, Couart. n. 2. & Iuditor ex l. licet ff. de accusat. capones: & ex eo, quia aliter indulgentia, & gratia esset inuisilis, cum non esset perpetua, contra regulam Decret. de R. lib. 6. quæ doctrina procedit quando absolutio ex indulgentia fit indistincta, non vero si ad tempus, vel cum aliqua modificatione, quia tunc ex vulgari regula, Limitata causa, &c. l. in agria 16. ff. de acqui-

6.
AMPLIAT-
TIB, ET
EXPLICAT-
TIB, PRAE-
SENTIB, TEX-
TIB,

5.
TRADITVE
RATIO DE-
CERNENDI.

acquir. *ver. domin.* limitatum producit effectum. Deinde amplius præfata assertio, ut procedat non solum ubi reus absolutus est, verum & condemnatus; nam contra illud de eodem crimine agi nequit, iuxta mentem præfatis textus, & eia rationem super illustratam. Quæ amplior adeo vera est, ut semel condemnatus ex aliquo crimine, & iterum de eodem accusatus, si in limine iudicii exceptionem rei iudicis opponat, non audiat accusator antequam eadem exceptio discutatur. Bartolus per textum ibi, in l. *Sennatus*, ff. *hoc titul.* quia iuxta super traditam rationem, eo casu nullam actionem habet novus accusator: quare non tenetur reus respondere, aut liam super accusatione contestari.

Deinde sciendum est, præfentem affectionem nonnullas præ limitationes. Prima, cum reus definitus non fuerit absolutus, sed interlocutorie, sicut ab observatione iudicii, propter defectum accusantis, qui legitimos non est, propter libellive defectum, aut similem causam, quia tunc reus potius excimatur potius, quam crimine; & ita eo casu reus repeti potest ab alio, vel ab eodem accusatore. Eximitur etiam nomen ex reis intervenientibus publicæ abolitione, & indulgentia criminis, quæ nonquam esse perpetuas, sed temporales, propter seriem aliquam, aut publicam lætitiarum. Ceterum finitissimis scitis potest reus repeti ab eodem, vel ab alio, l. *aut primas*, ff. *ad Turpil.* Paulus lib. 5. *sent. tit. de abol.* intra 30. dies; alias tempore elapso, ab eo repeti non potest, ab alio repeti valet, l. 3. §. *ult.* ff. *eodem*: nisi ea speciall Principis permisso, l. 1. c. *de abol.* Etiam hoc casu, cum absolutus est reus ab observatione iudicii, accusari potest ab alio, non verò ab ipso, qui semel ipsum accusavit; nam post primam accusationem superest inter utrumque inimicitia, quæ novam accusationem impedit, iuxta caput cum *P. infra hoc titul.* Etiam limitatur præfens assertio, ubi reus ritè, & legitime absolutus non est, veluti si per collusionem, pervaricationem, seu fraudem; nam tunc accusari iterari potest, l. 3. ff. *de prævaricat.* l. cum qui §. *in popularibus*, ibi: *Si non per collusionem actum sit*, ff. *de iur. iur.* Docet Coust. ubi supra, num. 1. *Garnita decis. 53. ad finem.* Quo casu accipio Herpogenem relaxatum ab Heraldo d. cap. 1. in hæc verba: *Veluti his de eadem re ut sit actio. Quidam cadis accusatus absolutus est, postea cum Apollinem consuleret, respondit: Homicidii oraculum non edo. Et hic rursus accusatus est.* Et quod de Domitiano refert Sueronius in eo his verbis: *Corneliam virginem Maximam absolutam olim, & hinc longo intervallo repetitam, aqua constrictam defuncti imperatoris.* Et quod de Thiberto tradit Dio Cassius lib. 58. his verbis: *Permultis quoque coram, qui superius temporibus cæcæ dictæ absoluti fuerant, tunc in iudicio retrahiti sunt, tanquam qui antea Saniæ gratia condemnationem effugissent.* Etiam limitatur præfens assertio ut locum non habeat, ubi reus primò absolutus est in iudicio, in quo claustr super crimine actio intenditur; adhuc enim potest de eodem criminaliter accusari, ex regula legis vñicæ, c. *Quando claustr actio*, cum traditis per Barbofium in l. 2. in princip. num. 138. ff. *solus, marit.* docuerunt in præfenti Abbas num. 6. Felinus num. 8. Berolus num. 21. Barbof. ubi proximi, Iul. Clarus in *praxi*, §. *ult. quest. 2.* qui rectè docent, hoc non procedere ubi utraq; poena, civilis scilicet, & criminalis, tendit ad

vindictam publicam; quia tunc absolutus in vno iudicio, non potest vltiùs accusari, leg. *quod Senatus* 6. cum sequenti, §. 1. ff. *de iur. iur.* Etiam limitatur præfens assertio, ut procedat quando reus semel absolutus iterum de eodem crimine accusatur ad vindictam publicam, scilicet verò si per eum, qui sciam, vel suorum iniuriam persequitur, ignorans priorum accusationem, & causam in iudicio agitantem, l. *finis*, §. 1. l. 4. §. *maritus*, ff. *ad leg. Jul. de adult.* Paulus lib. 2. *sentent.* tit. 6. §. *ult.* ut in l. *cogendum* 45. §. *qui ita*, ff. *de procurat.* Veluti si actum sit ab vno de populo, ea lege Iulius de vi publica contra aliquem, quia homines armatos coëgit, & vim alij intulit, posteaque superseniat ille ipse, cui vis illata fuit, & hoc casu permittitur et priusquam iniuriarum in iudicium deducere. Facit textus in *dist. l. 12. tit. 7. part. 7.* Item limitatur eum adversus eundem proceditur per viam accusationis, aut inquisitionis pro alio delicto: quo casu procedit textus in *cap. finali, de celebratione Adissarum.*

Nec obstat dubitandi ratio super expensa, deducta ex illo principio, *Res inter alios acta, &c.* Nam omniis sententiæ Glossa verbo *Item in publicis*, in l. 2. c. *res inter alios*, quæ assertit regulam illam limitari in casibus criminalibus, cum reus per sententiam est absolutus, dicendum est in præfenti casu, ut supra in ratione decidendi probavi, de eadem re iterum agi, eandemque causam disceptari, & inter easdem personas; siquidem accusatio eadem omnibus de populo competit, illis non competit ut singulis, & ita unus ius omnium consumit agendo. Nec obstat textus in *dist. l. 3. Cod. quando res inter alios*; nam eius textus sententiæ accipienda est iuxta casus proximè relatos, videlicet si de prioris accusatoris petitiõ, seu collusionem, aut pervaricationem confiteretur, tunc enim alius accusator admittitur, ut causam fide lege Iulia de iudic. public. l. 7. ff. *de prævaricat.* l. 3. §. *si tamen*, ff. *de libero homine*, l. 1. c. *qui accusare.* Vel si constet iudicem pecuniâ corruptum sententiam dixisse, Cironius in *parat.* ad hunc tit. quo casu & ab ipso accusatore accusatio repeti potest, argumento legis 1. *Cod. de par. iudic. qui male iudic.* docuit Cuiac. in l. 9. c. *de accusantibus.*

Sed adhuc super traditis obstat textus in *cap. felicitis*, §. *per hoc*, de penis in 6. in illis verbis: *Per hoc quoque secularibus Potestatibus non adimus facultatem verendi legibus contra tales, quæ adversus sacrilleges Catholicos Principes ediderunt.* Ex quibus deducitur, condemnatum in vno iudicio posse accusari, & condemnari in alio, seculari videlicet: ergo quia accusatus, & condemnatus ex eodem delicto iterum accusari potest. Pro cuius textus expositione sciendum est, facis controversiam esse inter DD. utrum in delictis miari forti accusatus, & condemnatus eorum iudice ecclesiastico possit denud puniri a iudice ecclesiastico, vel è contrariè & puniri non posse, probantur Abbas, Felinus, Barthia, Alelatus, Coarruaz, Gomez & Gutierrez congesti à Barbofa in *collec.* ad *dist. cap. felicitis*, num. 37. plures congesti à Valenzuela consil. 131. num. 11. Agia de *exhib. auxilii*, fundam. 25. Canterius lib. 4. *var. cap. 19.* d. non. 61. Pereyra de *manu Regia*, part. 2. cap. 10. num. 12. D. Ioseph de *cap. 1. part. 2. de offic. ordin.* num. 135. qui mo-

7.
RESERV-
TIVE PAR-
LIMITATIO-
NIS IURIS
TAXATÆ.

8.
DISOLVIT-
UR OBI-
TANDI RA-
TIO.

9.
EXPOSITIO
CAP. FELI-
CITAS, DE
PENIS IN 6.

venitur ex eo textu, & ex cap. 1. de maledictis, l. placet. 4. Cod. de sacros. Eccles. & ex eo, quia si ob delictum mixti fori poena capitalis imponenda est, iudex ecclesiasticus non potest talem sententiam ferre, cap. sententiam, ne clericis, vel monachi. Unde ut debite, & condigne puniatur talis reus, debet adiri iudex secularis, ex l. si quidem 13. ff. de officio Proconsul. l. 3. ff. de officio Praefecti. Vigil. l. 2. Cod. de sponsal. ubi docetur, quod quando ex defectu iurisdictionis non potest unus iudex certam poenam imponere, recurritur ad alium, qui eam imponere valeat. Contrarium tamen, immo praesentem assertionem procedere etiam in delictis mixti fori, docent Glossa in dist. vers. ex hoc, Beronius hic, num. 23. Bobadilla lib. 2. polit. cap. 17. num. 98. Suarez de Paz, & alij apud Barboz. in dist. cap. felicit, num. 18. Pro qua sententia faciunt generalia verba praesentis textus, & in dist. l. licet, ff. de nunciis, caupones. Deinde quia in criminibus mixti fori vterque iudex, tam ecclesiasticus, quam secularis, competens est, itaque locus sit praenotioni, ut probat D. Ioseph. Vela in cap. de officio ordinis. Igitur sententia prolata a quolibet ex eis, efficax est. Sed placet media sententia, quam sequitur D. Ioan. Vela ubi supra, ut videlicet in delictis atrocioribus, in quibus sanguinis poena imposita est, laicus condemnatus a iudice ecclesiastico, & seculari puniri possit: de quo delicto exaudientia est textus in dist. cap. felicit: & si ad delictum etiam graue referre nollis textus in dist. cap. de maledictis, dici potest, textum illum non agere ab-

solute de poena ad publicam criminis vindictam, sed magis de poenitentia ad satisfactionem diuinam Malefactoris imponendam, quae ibi nunc poena, nunc poenitentia dicitur. Et si textus accipitur de poena publica fori exterioris, responderetur, in vers. ex temporalem, agi de temporali potestate, cuius auxilium iudex ecclesiasticus implorare valet, non ut iudicet, aut cognoscat de ipsa causa, sed ut exequatur sententiam a Iudice ecclesiastico prolatam, iuxta traditum in cap. 1. de officio ordinis. Minus obstat textus in dist. l. placet; nam si iuxta communem sententiam accipias verbum illud, Acrimonia, pro excommunicatione, responderetur excommunicationem non esse poenam ordinariam criminis ad publicam vindictam, sed magis censuram medicinalem ad correctionem & emendationem, cap. 1. de sententia, accomm. in 6. ac proinde per eam nec tollitur, nec impeditur accusatio criminis ad vindictam publicam. Deinde (quod & probabilis videtur,) in eo textu per acrimoniam non intelligitur excommunicatio, sed poena quae cumque imposita a seculari iudice, ut post alios notauit Titusque. de retractis, tit. 1. §. 1. gloss. 8. numer. 128. & ita sensus est, quod reus, de quo illie agitur, ultra aliam poenam, quam sacrolegia imponitur, subiciatur etiam exilio perpetuo; sed in quo iudicio, non exprimitur, & coningeret intelligi debet in iudicio competenti, in quo sacrolegia ille iudicari, & condemnari potest, ut docuerunt relati a Cenedo in collect. 113. ad Decretal.

C A P V T VII.

Stephanus Papa.

Repellantur ab accusatione cohabitantes inimicis, quia infestationes blasphemiarum affectio amicitiae incitare solet.

NOTÆ.

1. **Stephanus.** Ita etiam legitur in prima collectione, sub hoc tit. cap. 7. & ex epistolis Stephani citantur haec verba à Carnotensi p. 6. Diuersi, & reperitur in secunda epistola ipsius Pontificis omnibus Episcopis missa: & quia diffusum est, & pro maiori parte reperitur apud Gratianum transcripta in cap. accusatores, 3. q. 5. cap. nullus anathema, 3. q. 4. cap. scripta 3. q. 8. cap. etiam, 80. dist. cap. ultra 3. q. 6. cap. neganda 3. q. 11. cap. clericum 3. q. 4. cap. querendum 2. q. 7. cap. accusatum 1. q. 4. eam non transcribo: exiat cum aliis ipsius Pontificis tom. 2. Concil. Bini. Stephanus hic electus fuit in Summam Pontificem die 7. April. anno 137. & martyrio coronatus Romae die 2. Augusti, anno 160. de quo plura Baronius tam in Martyrol. quam tom. 2. annual. Pamelius in notis ad D. Cyprianum, qui de questione habita fuit ipsam & Cyprianum laudant.

COMMENTARIUM.

2. **I**ve civilis, etsi inimici capitales à testimonio dicendo repellantur, l. 1. ff. de testibus, autem dicatur, alia si res sit, C. eod. tit. non tamen ab accusando reperitur prohibitus in l. qui accusare, ff. de accusat. §. qui iudicio, C. qui accusare, ubi

alio personae, quae ab accusando arcentur, refoventur. Nec valet argumentum à teste ad accusatorem, quoniam non vi ex fide testis, ita ex fide accusatoris salua res pendet; immò plerumque eodem iure attentio, infensissimus accusator erat, ut ex Tullio de diuinatione probat Ant. Mathaeus de crimin. ad tit. de accusat. cap. 1. num. 11. attentis verò sacris cautionibus inimicus repellitur ab accusando, cap. 2. 3. & 4. 3. q. 5. cap. cum P. cap. cum oportet, cap. minimum, hoc rical. quia crederent Ecclesiae Patres, inimicos malo animo, & porro propter vindictae causam, quum lucri fratri gratia, aut eius emendationis causam, ad iudicium venire, ut laud probantur Decianus lib. 5. tract. crimin. cap. 25. per totum, Farinac. in praxi, q. 12. num. 18. fol. Clarus recept. sentent. §. final. q. 14. num. 17. quae prohibitio extenditur etiam ad habitantes cum inimicis, cap. 3. 3. q. 5. ibi: Vel de inimici domo producantur, vel qui cum inimicis morantur. Et cap. 5. 3. q. 1. & lib. 7. capitul. Caroli, cap. 131. ibi: Nem sunt illi testes recipiendi, nec accusatores, qui cum inimicis morantur, vel quos ipsi de domo producantur. Et in addit. tit. 3. cap. 7. ibi: Accusatoribus de inimici domo producantur non est credendum. Synodus Nicena can. 23. & can. 45. ibi: Nec accusatoribus suspectis, & de inimicorum domo producantur est credendum. Quia facile ipsi infestis creduntur, & eiusdem animi, & voluntatis, ac inimici,

cum quibus habitant. Faciant textus in *l. liberi*, *C. de iurifictis*, *testam. l. 1. §. cum parum*, ff. de officio *Profructu*. verb. Ob quam etiam rationem si aduocatus paria adfectu sit familiaris iudicis,

reclē recusat, *cap. s. vbi latē probauit*, de offic. iudic. Qui autem dicantur inimici, vt ab accosando repelli possint, latē prosequuntur Decian. Farin. & lal. Clarus *vbi supra*.

CAPVT VIII.

* Ex Brochardico lib. XLIII.

Accusasti aliquem, & per tuam accusationem occisus est, nisi pro pace hoc feceris, xl. dies in pane & aqua (quod^b carena vocatur) cum sepiem^c frequentibus annis peniteas. Si autem per tuam delaturam debilitatus est, per^d tres debes quadragesimas^e penitere.

NOTÆ.

1. ^a *Brochardico*.] Ita etiam legitur in prima collectione, *sub hoc tit. cap. 9.* sed legendum est, ex *Brochardico lib. 59.* vbi textus ita legitur. Accusasti aliquem, & per tuam accusationem occisus est, nisi pro pace, quadragesima dies in pane & aqua, quod carenam vocatur, cum sepiem sequentibus annis penitere debes. Si autem per tuam delaturam debilitatus est, tres quadragesimas per legitimas ferias penitere debes. Quem textum cum aliis illius libri transcripserit Brochardus ex Penit. Romano, *cap. 5.* vbi ita habetur: Accusasti aliquem, & per tuam accusationem occisus est, nisi pro pace, quadragesima dies in pane & aqua, cum sepiem sequentibus annis penitere debes. Si autem per tuam delaturam debilitatus est, tres quadragesimas penitere debes per legitimas ferias. Quæ verba si rectè conseruantur cum suprà telata à Raymundo, facillè constabit, ea verba, *hoc feceris*, deesse in aliis codicibus, & etiam deesse vicinè illa verba, *per legitimas ferias*. De hoc decreto Brochardus, & eius auctoritate nonnulla adduxi in apparatu ad hæc commentaria, & de Penit. Romano & eius utilitate iam nonnulla notui in *cap. 3. de furtis*. Et licet hodie non sint in vfu canones illi penitentiales, adhuc tamen eorum notitia non est inutilis, aut otiosa, vt docuerunt Ioannes Andrea in *cap. 2. de empti. & vendit.* Ant. August. in *hoc textu*, qui asseruit præfend capite siue magno dispendio nos carere potuisse: à quo accepit Gentilis de *libris iur. canonici*, fol. 40. nam confessariis valde vtilis est notitia horum canonum, vt agnoscant peccatorum gravitatem, & pro arbitrio sibi relicto penitentiam salutiferam illis imponent, vt obseruauerunt Praeormitatus in *fine*, de penit. Nauarrus in *manuali*, *cap. 26. num. 19.* Et in Concilio Colonienfi & Mediolanensi sub D. Carolo, p. 1. tit. 9. valde confessariis commendatur istorum canonum notitia.

- b *Carena*.] Huius vocis etymon, & significatio nem adduxi in *cap. 1. de spons. duram.*
c *Sequentibus annis*.] Non intelligas annos continuos, vt per singulos dies penitentiæ agi debeas, sed per quosdam dies in vnaquaque hebdomada, qui vulgò legitimæ feriæ dicebantur, vt feria 3. 4. & 6. iuxta caput de illis 11. q. 5. vbi Glossa *cap. 1.* iuncta Glossa verbo *Legitimæ*, 22. q. 3. Covarrus. lib. 4. var. *cap. 20. num. 8.* Soto, & alij congeſti à Cenedo *colleſt. 9. ad Decretales*, *num. 4.* iuxta quorum sententiam canones omnes, qui agunt de penitentia per annos, aut dies peragenda, nec modum exprimentur, quo

adimpleri debeas, intelligendi sunt de penitentia per ieiunia, aut similia opera certis hebdomadæ diebus confessoris arbitrio adimplenda.

d *Tres quadragesimæ*.] Non intelligas quadragesimas trium annorum, quasi singulæ ad singulos annos referantur, vt hodie in vfu sunt, ex *cap. quadragesima*, de consecr. dist. 5. sed accipiantur pro tribus quadragesimis in singulis annis, prout olim obseruabantur, scilicet vna ante Natiuitatem Domini, alia ante Resurrectionem, tertia ante festum D. Ioannis Baptiste, vt notauit post Iul. Lauorum Barb. in *presenti*: de quibus quadragesimis egi in *cap. conuictus*, de feriis.

e *Penitere*.] Licet penitentia pro foro interiori non sint hodie in iure pro singulis peccatis præscriptæ, sed omnes relinquuntur arbitrio prudentis confessorii, iuxta eorum gravitatem, personarum qualitates, & alia circumstantias, *cap. Deus*, *cap. omnis*, de penit. & remiss. vi post D. Thomam dicit Nauarr. in *manuali*, *cap. 26. n. 17.* pluribus telata Cenedo *d. colleſt. 9. num. 5.* & colligitur ex Trident. *sess. 14. cap. 7.* primis tamen Ecclesie temporibus per canones penitentiales quibusdam criminibus cetæ & præscriptæ etiam penitentia, vt constat ex penitentialibus Rom. Bedæ, & aliis compilatis, & notia illastratis ab Ant. Augustin. ad calcem epitomes Iuris Pontificii. Et licet vulgò itadi solet, per canones illos pro quouis peccato mortali imposuit fuisse penitentiam septem annorum, vt docuit Glossa penultima in *cap. tñ. 22. q. 1.* quam communiter receptam esse constat ex Nauarr. *vbi supra*, *num. 17.* Cenedo *d. colleſt. 9. num. 4.* pro quibus expenditur id, quod habetur lib. 2. *Regum*, *cap. 12.* & refertur in *cap. hoc ipsum*, 33. q. 3. & quod habetur *cap. 4. Danielis*: id tamen non satis probatur aliquo canone, nec verum esse, post D. Thomam probat Nauarr. *vbi præfati*, pro quo expendi potest præfens textus, qui vt suprà notui, deducit ex dicto Penitente Romano, agitur de peccato mortali; & tamen non imponi penitentiam septem annorum, fed maiorem, vt io priori casu; vel minorem, vt in posteriori. Nec tunc obstat textus in *d. cap. hoc ipsum*, *vers. hinc etiam*; quia in eo agitur non de quocumque peccato mortali, sed de virilis aut criminibus grauioribus, vt sunt perurium, adulterium, & similia, in iuxta caput Apostoli, 81. dist. pro aliis enim tñ mortalia sunt, non imponitur septennij penitentia, vt aduertunt Soto & alij congeſti à Cenedo *vbi præfati*.

COMMENTARIUM.

5. OMnes de accusationibus scribentes, & alij plures Moralistas disputant, licitum-ne, an honestum sit accusatorum officium? Et an in vtroque foro imponi liceat reum criminis accusare? Et licitum an honestum esse reum criminis in iudicium deferre ad vindictam publicam, probatur ex eo, quia dum ita criminosi accusati coërentur, virtutis alius exerceatur, quies, & bonum Reipublice intenditur, & conseruatur, dum crimina vitantur; & eum criminosis poenis afficiuntur, reliqui cives meliores redduntur, vt latè probauit in cap. inter alia, de immunit. Eccles. cap. sententiam, ne cleric. vel monachi: faciant textus diffusi in l. si quis in hoc genus 10. ibi: Si quis contra laudabile: & l. multi 38. ibi: Tam laude, quam honestate, ac pariter pietate non caret; C. de Episc. & cleric. cap. Et qui emenda, 43. dist. cap. quæpropter 2. q. 7. cap. si quis per capillum, 22. q. 1. cap. si in qui Prælatum 23. q. 4. cap. si quis contristatus, 30. dist. l. 1. C. de famosis libello, l. eum qui 18. vers. peccata, ff. de iniuriis: docet D. Thomas 2. 2. q. 68. art. 1. & communem dicit Soto de regendo secreto membro 2. q. 5. & lib. 5. de iniust. q. 5. art. 1. Paz in praxi, tom. 1. p. 4. cap. 3. n. 1. vsque ad 6. Ghalinus de negotiatione tom. 2. lib. 6. cap. 3. art. 5. Gomez de delict. lib. 3. cap. 1. num. 6. Couarr. lib. 1. v. ar. cap. 10. num. ult. & lib. 2. cap. 15. n. 7. Decianus tract. crimin. lib. 3. cap. 4. & constat, quia plerumque in iure præmia accusatoribus præstantur, l. 1. §. accusatoribus, C. de falsa moneta, l. non omnes, in fine, ff. de re milit. l. edicto, §. heredes, ff. de iure fisci, & alit. Contraria tamen sententia, videlicet accusatorum munus iniuriolum, ne exitiosum esse, maxime fidelibus Christianis, suadet ex cap. si quis Episcopus 2. quæst. 7. ubi accusatio dicitur genus inlaudabilis intentionis. Et quod accusans plus inuidiat quàm charitatis stimulis incitetur, testatur in cap. si omnia 6. quæst. 1. Deinde quia accusator per accusationem fit inimicus, cap. accusatores 3. quæst. 5. §. item propter, Injst. de accus. tur. & insuper accusator exponit se periculo sustinendi poenam talionis, cuius ratione accusatio nisi subscritibit, c. super his, hoc titul. Deinde passim in iure clerici, & alie personæ repelluntur ab accusatione, cap. 1. cum sequitur, 2. quæst. 7. & si accusatio licita, honestaque esset, nullus ab ea repelleretur. Tandem quia alienum videtur à perfectione christiana, aliua forte iam emendatum de crimine accusare, contra illud Marthæi cap. 5. Ego autem dico vobis, non resistere, &c. & cap. 6. ibi: Si non dimiseritis, &c. & Pauli ad Romanos cap. 12. ibi: Non vos defendentes, alias vindictam ei charissimè; sed date locum ira. Tandem facit præsentis textus, ubi grauis penitentia imponitur accusatoribus, si poena capitalis sequuta sit; modò leuior, si poena non ita grauis sequuta sit. Faciunt alia, quæ adduxi in can. 70. Concil. Illiber, quæ hic consulti non repeti.

6. Sed adhuc prior sententia retinenda est, pro cuius apositione notari oportet, quod licet accusatio ex parte accusatoris censetur periculosa, eo quod non facili sit ubi & quando, & vt oportet; tum quia, vt aduertit Soto d. conclus. 2. accusator rard habet animi rectitudinem ad zelum iustitiæ, & plerumque mouetur odio; tum etiam quia in multis aliis diuisione est seruare omnes de-

bitas circumstantias, tam ratione personarum, quæ accusant, & accusantur, quàm respectu temporis, loci, & similibus: quàm ob causam cautè procedere debent accusatores, ne ad iudicium probant nisi bono animo, & seruatim seruandis, vt quancumque effugiant finitram suspensionem. Tamen hac sententia retenti, non obstant fundamenta contraria. Non primum deducum ex d. cap. si quis Episcopus, cap. finitima. Nam reus illi procedit in accusatione absque debitis circumstantiis propolita. Quæ casu accusatio iniusta est, non quia illicitum est accusare, sed propter malitiam accusantis, & eius improbum animum. Nec obstat, accusatorem inimicum manere; nam id non prouenit ex eo, quia accusator inimicus verè sit, sed quia plerumque, & attentè hominum opinione solent ex accusatione præferri graui, inimicitia & discordia orti inter accusatorem, & accusatum, quemadmodum ex eadem ratione quoad plures alia effectus censentur inimici, qui super omnibus bonis, vel maior eorum parte ciuilius litigant, dist. 5. item propter. Quam æqualitatem probat differtè textus in auctem, si testis, vers. si veris, C. de testibus cap. t. de restit. spol. lib. 6. in fine princip. Et tamen nemo negat, iustum, & licitum esse ciuilius litigare, & litigare super omnibus bonis, vel maiori eorum parte, dummodo iustis fias, Nec obstat, quod clericis, & aliis personis prohibetur accusare; nam id non prouenit ex eo, quia iniustum sit, sed quia similibus personis indecens est, vt etiam alia illis prohibentur in cap. 1. de fidelibus, cap. 1. & per totum, ne cleric. vel monachi: quæ ab aliis personis non iniuste exerceantur.

Nec tandem obstat præsentis textus, quem accipimus Glossa, & communiter repentes de accusatione non vera, sed calumniosa, & de accusatore, qui falsò accusauit. Quæ interpretatio conueniunt, tum quia ex textu non constat de tali calumnia, qui in dubio præsumenda non est, præsertim in eo, qui crimen, de quo accusauit, adeo plenè in iudicio probauit, vt reus capitali sententiæ damnari meruisset, vt considerat Mascardus de probat. conclus. 234. num. 12. tum etiam, quia in illis verbis, nisi pro pace, excusatur talis accusator, si pro pace, & publico bono fecit; & tamen si per calumniam accusasset innocentem, etiam pro pace, & bono publico, grauiter peccasset, vt probat D. Thomas 2. 2. quæst. 64. artic. 6. Soto lib. 5. de iustis. quæst. 1. art. 7. Alij autem, qui referunt, & sequuntur Couarr. in Clemens. si furiosus, part. 2. §. 5. num. 4. accipiunt textum hunc tantum in clericis accusantibus. Verùm hæc interpretatio eodem diuinationis vitio laborat, cum generaliter agatur in hoc textu de quolibet accusatore, nulli clerici, vel laici facti mentione. Accedit, quia clericus præmissis protestatione, de qua in cap. 2. de homicid. lib. 6. titè reum criminalis in iudicium deferret: vnde textus hic ad clericos tantum referri non potest. Quare his ommissis placeat communis interpretatio eorum, qui canonem hunc accipiunt de eo accusatore, qui iure reum criminis accusat, & per veras probationes conuincit, sed primo animo, ex amore, & odio, vt se videret ex priuata vindicta, & dam non inferat, accusato, quem interfici, vel debilitari ex odio procurat; & ita accusat, non vt Reipublicæ, & eius paci consulat per publicam vindictam, qui propter finem

inhalitese

7.
PIAUSTRIUS
TEXTUS
VARI-
A IN-
TERPRETA-
TIONE.

LIBRERIA
ROMA
VITTORE EMANUELE

lethaliter malum graviter peccat, *cap. ea vindicta*, 23. *quæst. 4. cap. cum minister* 23. *quæst. 5. D. Thomas 1. 2. quæst. 68. art. 1. docet Decianus lib. 3. *mal. crimin. cap. 4. num. 5.* expendens illa verba Platonis in Euthyphro: *Solitum est in iudiciis errare eum, qui iniecit aliquid egli, vel circa eades, vel sacrilegia, sine patre, sine matre, seu quibus deliquit, modo id facias, ut pariam quis velut peste quendam liberet.* Merito igitur in presenti sic ex odio, & pravo animo accusans, ad mortem, seu membri debilitationem, ut graviter deliquens, panitur.*

8.

DEFENDI-
TIA VERBA
INTERPRE-
TATIO.

Nec obstabit si dicas, interpretationem hanc in idem vitium incidere, ac superior Glossæ intellectus; tum quia sicut calumnia non presumitur, ita nec pravi animi, odium aut privata vindictæ zelus presumi debet: tum etiam quia similiter verba illa *pro pace*, innuunt accusationem, de quo in presenti, pro bono pacis accusantem nullâ penâ esse afficiendum; & tamen si pravo animo, & odio, quavis pro pace accusaverit, graviter peccat; quia malum, seu malè facit dum pravo animo, & odio, & ad finem privata vindictæ pacem, & bonum reipublice intendens accusat, ut ex D. Thoma & aliis probat Covarrus, *lib. 2. var. cap. 10. mon. 7.* Licet enim non sufficiat, quod finis sit bonus, ut ipse quoque actus bonus dicatur, *cap. foris, cap. denique* 14. *quæst. 5.* sufficit tamen finem esse malum, ut etiam actus, quavis aliis bonus, malus sit, ut probant Boërius in *presenti*. Nauarr. in *dist. cap. denique*. Nam adhuc defendenda est communis interpretatio, pro cuius expositione sciendum est, pacem in presenti non accipi pro ea, quæ opponitur bello, de qua egit in *cap. 1. de reing. & pace*: sed pro tranquillitate, seu quiete communi, & ita pro bono publico, iuxta Aretinum & omnes repetentes in *presenti*. Deinde notandum est, dictionem *nisi*, non tam accipi in presenti exceptioni ad denotandam exceptionem pro *præteritam*; verum etiam pro *si non*, ut in *l. femina 8.* ubi Glossa a. ff. de *Senat. l. 2. C. si municipium*. Tradunt Alberticus in *distinctione*. verbo *Nisi*, Barbosa de *dist. eod. verbo*. Et in ipso penitentiali Romano accipitur pro *& non*, dum in *cap. 5. de contemptu ieiunij*, ita legitur: *Solus ieiunium in quadagesima, antequam respectum celebraretur officium, nisi propter infirmitatem, si fecisti, pro quoquoque die, &c.* His præmissis dum textus hic ait: *Accusasti hominem, & per tuam accusationem occisus est, nisi pro pace, id est pro quiete, & bono communi; vel si non pro quiete, & bono communi;* & non pro quiete, & bono communi; perinde est ac si dicat, accusasti hominem, & per tuam accusationem occisus est, si malo animo, & ex odio accusasti, &c. nam quando principaliter accusat ad mortem, vel debilitationem, & sic ad penam publicam, non pro pace, & bono communi. nec ad publicam utilitatem, eum nequeat ad suum commodum propriè accusare, quoniam civiliter agere valeat; necessitas accusat ex odio, & pravo animo, ad privatam vindictam; non verò ad utilitatem publicam: & ita verba illa, *nisi pro pace*, non limitant decisionem huius textus, sed qualificat verbum *Accusasti*, & accusatio-

nem de qua hic, ac proinde continent requisitum, & qualificationem omnino: & in hunc sensum verba illa, *nisi pro pace*, non ponuntur in fine textus post præscriptam penitentiam, sed in principio, ut ita significetur, per canonem hunc imponi penitentiam accusanti non pro pace, aut animo pacis, sed pro odio; & consequenter textum hunc non limitari in eo, qui pro pace, & bono animo accusat, sed in eo tantum procedente, qui non pro pace, & bono zelo, sed è conserio accusat: & ita defenditur communis interpretatio, & cessat vitæque difficultas supra expensa; siquidem ex prædictis verbis, *nisi pro pace*, rectè intellectis, colligitur textum hunc agere tantum de eo, qui pravo animo accusat; & per ea verba non limitari eius sanctionem, sed concludi, illam in eo casu procedere. Esti Vincencius Abbas *num. 1. Aretinus num. 2.* aliter accipiant verba illa, *pro pace*, referendo non ad verbum *accusasti*, sed ad sequentia ibi, *panitere debet*, quasi in hoc textu non agatur de eo qui pro pace accusavit, sed de illo, qui pro pace penitere non debet, & ita sensus sit: penitere debes, nisi pro pace, id est pro componendis pace, vel sedando scandalo penitentiam omittas; inde inferentes penitentiam aliis necessariam omitti posse pro pace componenda, & scandalo sedando: quemadmodum ex eadem causa plura alia omittuntur, *cap. nisi, vers. pro gravi, de renunciat. cap. 2.* ubi notatur, de *prescript. cap. 2. de dispens. impub.* Sed intellectus hic facillè refellitur ex verbis illis, *nisi pro pace hoc feceris*; quæ necessariò referenda sunt ad accusationem, nec referri possunt ad penitentiam omittam, quia si adhuc referrentur, diceret textus, *nisi pro pace non feceris*. Unde infertur, textum hunc non procedere ubi quia principaliter pro pace & bono communi accusat, & tamen secundariò, & minus principaliter, per humanam fragilitatem habet qualemque pravi animi nocendi accusator ex vindictâ privata; nam is animos, qui non mortale, sed veniale tantummodo peccatum gignit, ut resoluunt Covarr. ubi *suprà*, Nauarr. in *manuali, cap. 25. num. 31.* non meretur gravissimam penitentiam, de qua hic, imponendam tantummodo ei, qui principaliter, non pro pace, & bono communi, sed per contrarium accusat; idque satis significatur verba illa, *nisi pro pace*, quæ sunt intelligenda principaliter, argumento legis 1. §. 1. iunctâ Glossâ *per Singularum ff. de inst. & iur. l. de quoquoque 37. iunctâ Glossâ a. ff. de re iudicata*. Nec obstat, quod iuxta hanc communem intellectum, si textus hic agit de eo, qui odio, & pravo animo accusavit, frustra expenditur, quod per huiusmodi accusationem reus capite damnatur, vel debilitatur sit: quia licet neutrum ex his duobus contingat, immò et si reus absolutus sit, adhuc accusator, vitæ mortaliter peccans, penitentiam subire debet. Nam responderet fatendo, penitentiam esse imponendam accusanti ex pravo animo, et si reus absoluteus sit; non tamen eam, quam præsens textus præscribit accusanti ex pravo animo, cum sententia capitalis sequatur est.

CAPVT IX.

Augustinus ^a super Genesim de morte Abel.

Evidentia perpetrati sceleris non indiget clamore accusatoris.

NOTÆ.

1. ^a *Vnguis*. Ita etiam legitur in prima collectione, sub hoc tit. cap. 11. Et licet verba huius textus non repentantur inter opera D. Augustini, exiant tamen in Glossa interlineari in cap. 4. Genesim, ad illa verba: *Vox sanguinis clamavit ad me de terra*. In quorum verbosum scholio leguntur verba in præsentis telata, fortan quia Glossa interlinearis deprompta est ex operibus D. Augusti, ut iam notati in cap. 3. de consilii. Inde constat ex indicibus ad evidentiam perveniri posse; nam cum in præsentis casu tantum adesset indicia, quia videlicet ambo fratres coniuncti foris exierunt, & Cain arma defetebat maiorque erat, quam Abel, evidens fuit illum fratrem occidisse ex indicibus indubitalis, de quibus in l. final. C. de probat. & notatur in l. Clarus §. final. q. 4. num. 3. Regens Sanclieus t. p. decis. 18. n. 2.

COMMENTARIUM.

2. CONCLUSIO
TERTIA
DE PROBATIONE.

EX hoc textu sequens communiter deducitur assertio: *Super notorio procedit iudex nemine accusante*. Probant eam textus in cap. manifesta, cap. qua Latharius, cap. de manifesta, cap. pitali. §. final. cum cap. sequenti. 4. quasi. 1. cap. nullus, §. aliquando. 4. quasi. 4. cap. bona 12. §. porro, de elect. cap. ad quædam §. 1. de iuribus, cap. tua, de cohabit. cleric. cap. 3. de eo qui cognovit consanguine. cap. penult. de purgat. vulgar. cap. 1. de offic. deleg. in 6. Clement. Pastoralis, de re iudic. cap. Deus 2. quasi. 1. cap. de illicitis 24. quasi. 1. cap. totie, de ecclesiastica beneficia. Illustant vitra congestos à Barbosa in præsentem Antonius Gomez lib. 3. var. capit. 1. numer. 41. vbi plures Ayllon. Bilbao in cap. 1. de caus. poss. num. 87. & in cap. cum speciali §. 1. de appellat. numer. 35. Vighel. in method. iur. can. fol. 84. Frances in pastoralis, quasi. 2. n. 14. Coize. ad tit. de testibus cogendi. Leon contra Vvarramundum cap. vii. Hunnius in encyclop. part. 2. tit. 45. plures, quos congerit Salgado de Regia præcell. part. 3. cap. 14. num. 47.

Sed pro dubitanti ratione ita in præsentem assertionem insinuo. Sine legitimo accusatore non est aliquis puniendus, cap. 1. vbi latè probatur, hoc rati, ergo etiam dicitur evidens criminis, nemine secusante, non est reos puniendus. Augetur hæc dubitanti ratio ex eo, nam in notoriis adhuc citatio desideratur, cap. Deus omnipotens 2. quasi. 1. cap. de illicitis 24. quasi. 4. Gomez dist. capit. 1. numer. 46. Bilbao in dist. cap. 1. de caus. poss. & propriet. num. 87. & sententia est proferenda, dist. cap. de manifesta, cap. cum si Romana, de appellat. cap. penult. de purgat. canon. Ergo etiam si per evidentiam facti conlter de crimine, adhuc ordo iudiciorum firmatus est, & per consequens accusatio desideratur.

Quà dubitanti ratione non obstantè vera est præfata Augustini sententia: pro cuius expositione sciendum est, quod licet manifestum ali-

quando accipiat pro eo, quod opponitur tam publico, quam occulto, & sic pro manifestabili, nototum l. cines 11. in 2. Glossa 2. C. de appellat. l. inobtemus 19 in princip. C. de testam. frequenter tamen accipitur pro eo, quod est publicum, evidens, seu nototum, l. manifesta, ff. de iuribus, cap. manifesta 2. quasi. 1. cap. vestra, de cohabit. cleric. cap. Romana, §. fin. autem, de appellat. lib. 6. probant Abbas, & Ioannes Quintinus in cap. cum olim, de V. S. & ita nototum, manifestum, publicum, evidens, patens, & indubitatum synonyma sunt, idemque important, ut constat ex d. cap. manifesta, d. sup. ad nostram, de iuribus, cap. cum olim 13. cap. super eo 31. de V. S. cap. si forte 11. de elect. lib. 6. in ult. cap. 2. de V. S. eod. lib. docent Mascardus de probat. conclus. 1109. Farinæus in praxi crimin. quasi. 21. Violdiego in l. 3. num. 9 tit. 1. lib. 6. furi, Moneta de confertat. cap. 7. num. 109. Nec contrarium probat textus in l. quantum, C. de iure delib. ibi: *Manifestum ac evidens est antiquum*, &c. per quam piers esse evidens, quàm manifestum, notavit Rebutius in l. natura, verbo Evidens, ff. de V. S. Quia respondetur manifestum in eo textu accipi pro manifestabili, & quod probari potest; non verò pro publico, seu nototio: licet iuxta etymologiam verbi, & stricte loquendo evidens dicatur, quod oculis videri potest, & vi sui patet. Nam evidens percipitur per sensum visus, quia ut aiebat Pœtan

Sensus irritant sensus demissa per aures;

Quam quæ sunt oculis subiecta fidelibus.

Et subiacet sensui nostro, ut cum dicitur esse media, evidens est esse diem. Nototium autem adhuc subiacet iudicio intellectus; nam tam in nototio iuris, veluti post rem iudicatum; quàm in nototio facti, veluti cum clericus habet domi concubinam, & ex ea filius suscipitur, adhuc aliquis dubitare potest de facto, & ita nototies à reipsa separari valet, quod in evidenti non procedit: de ita valde differt evidens à nototio; in quo sensu id quod evidens est, multo certius, & elarior habetur, & probatio per evidentiam ceteris præfertur, l. si interruptione 8. in fine ff. finium Regund. l. periculum 34. §. Nervius, ff. de auro & argent. Illustrat Caldas in l. si contrarium, verbo Minutibus, num. 8. Mascardus de probat. in princip. q. 8. num. 3. Inde inferentes legem excludentem probationem in aliquo casu, nunquam excludere eam, quæ sit per evidentiam, & per aspectrum nihilominus tamen isto modo etiam evidens dicitur, quod clarum, & certum est, ac si oculis cerneretur: sic evidens Ecclesie vitiosus dicitur in cap. 2. de cleric. non resid. lib. 6. & in cap. 1. de rebus Eccles. eod. lib. 1. §. ff. de constat. Principium: evidens calliditas in l. & eleganter, §. vlt. ff. de dolo: evidens excerptio in l. 3. §. ibidem, ff. ad exhibendum. Sicut etiam ea quæ apparent ex contrariis admodum perspicuis, & late probatis, de quibus moraliter dubitari nequit, evidenter dicuntur in l. pluribus 13. l. licet 74. §. si non sit, ff. de legatis 1. Vulticus eod. 4. consil. 25. n. 116. Menochius

4. MANIFESTUM
DE PROBATIONE

Menochius lib. 2. de *pres. quest.* 45. cum aliis coniectis à Tirac. in *l. si unquam, verbo Donatione, num.* 158. C. de reus. Molin. de *primog. lib.* 3. cap. 4. num. 19. P. Barb. in *l. si conlata* 24. n. 64. §. *solus, matrim.*

5.

MANIFESTA,
SIBI NOTO-
RIE DIVI-
SIO.

Deinde *seleodum* est, notorium, publicum, seu evidens, aut manifestum, prope unum est, & unum importat, frequentius dividi in notorium facti, quod subdividi solet In notorium probationis, & fidel vel dispositionis, & presumptionis, seu fictionis, & in notorium facti, quod rursus subdividitur in notorium facti permanentis, seu existentis, & facti transeuntis, seu momentanei, & denique facti interpolati, quod non est permanentis, nec continuum, nec absolute transiens, sed interpolatum, & proinde inter duo priora velut medium: quas species, seu membra explicant Mascardus, & Farinac. ubi *supra*. Illud tamen summè notandum est, quod ut aliquod notorium, publicum, seu evidens dicatur, necessarium requiritur certitudo, & sic scientia, per quam illud omnibus, vel pluribus certum sit: nec sufficit existere famam publicam ea de re apud omnes, vel plures; quidem talis fama non facit rem, de qua agitur, publicam, aut notoriam. Desideratur, ergo ut aliquod notorium, seu evidens dicatur quod omnibus, vel pluribus notum sit, ita ut populus, vicini, vel maior eius pars testis existat, d. cap. qua *Lutherus*, ibi: *Oculis omnium: & cap. si qui*, ibi: *Omnis enim: & cap. ubi ibi: Omnibus*, 2. *quest.* 1. Dubium tamen est, quotnam personarum desideratur, ut multitudinem constituant ad notorium, seu publicum efficiendum? Et communiter placuit, quod cum id à inter praesentium non sit, succedit regula legis primae, *si de iure delicti, cap. de causis* 4. §. 1. de *offic. delegat.* iuxta quam totum relinquatur arbitrio iudicis, qui perpenis circumstantiis loci magni, vel exigui, & personarum, numerum necessariam declarabit, ut pluribus relatis resoluunt Menochius de *arbitr.* casu 166. n. 7. Mascard. *conclus.* 1101. Farinac. in *praxi* 4. q. 18. et num. 104. Aylton ad *A. Gomez*, d. cap. 1. num. 42. Illud tamen summè notandum est, quod cum multa dicantur notoria, quae non sunt, cap. *confutis* 14. de *appel.* ubi propter dubium, seu negationem necessaria fuerit probatio, per quam appareat aliquid factum esse publicum, seu notorium, quamvis fama non sufficiat, sufficit tamen testimonium duorum legitimè deponentium, qui affirmant factum esse notorium, reddentes rationem concludentem, quia eorum omnibus, maiore parte factum sit. Nec desideratur, quod testificentur omnes illi, qui ad notorium efficiendum requiruntur. Glossa penultima in d. cap. *Deu* 3. *quest.* 1. lul. Clarus *dist.* 4. *ultim. quest.* 9. num. 6. Mascard. *conclus.* 1109. ut etiam ad probandum famam publicam sufficit testimonium duorum, qui deponent ab omnibus, vel maiori parte famam constituentibus se audivisse. Glossa *verbo fama*, in cap. *ubi*, l. q. 3. & in leg. 3. §. *eiufdem*, verbo *Confirma*, de *testib.*

6.

TRADITVS
RATIO DE-
SIDERANDI.

His animadvertendis ratio praesentis assertionis proceunt ex eo, nam ideo in iudicio criminali legitimus accusator desideratur, ut delictum commissum probetur, & tandem pro merita reus puniatur, omnique occasio fraudis puniendi innocentem, aut absolute innocentem amoveatur, iuxta tradita *supra* in cap. 1. et verò ubi res evidens est, nullum datur periculum calumniae, aut

terguerlationis; nec opus est diligentia, aut induitria accusatoris: igitur tunc frustra desideraretur. Deinde quia delicti evidentià longè magis res publica offenditur; unde non oportet vel dissimulare dultis, vel exspectare moram accusatoris; sed statim ad iustam vindictam procedendum est; praecipue cum ideo in notoriis iuris ordo lex ordinem non servare, cap. *perennis*, de *restitu.*, cap. *confutis*, de *appel.*, cap. *alim*, et l. de *restitu.*, §. *sol.*, cap. *super* 10. de *restitu.*, cap. *varis ampliationibus*, & limitationibus illustrat Salgado d. §. p. *capis*. 14. faciunt Appius apud *Lianum lib.* 39. lbi 1. *Rem evidenti pro dubia non esse querendum*, M. Tallius in *Academ.* ibi: *Nihil clarum, aut illu-*

strum ipsa evidentià esse possit. Unde rectè in praesenti docetur, evidentiū patris sceleris non indigere clamore accusatoris. Nec obstat dubiandi ratio super expensis, cui facile respondetur asserendo, neminem dampnari sine accusatore, vel aliquo, qui loco accusatoris habeatur à iure, qualis est hoc casu infamia publica, seu evidentià patris sceleris. D. Thomas 2. 2. q. 67. art. 3. Vnde rectè per aliquipollens adimpletur necessitas accusatoris. Nec obstat augmentum ipsius difficultatis, nam licet in notoriis iuris ordo non sit observandus; tamen adhuc in eis aliqua iuris requisita desiderantur, veluti citatio, quae requiritur, ex traditis in cap. 1. de *caus. posses.* & intercessisse supponitur in cap. *duodum* 22. de *elect.* & in facto Apostolici relato in cap. *cum sit Romana*, §. *final.* de *appel.* ut docuit Balboa in d. cap. 1. de *caus. posses.* num. 88. Etiam desideratur aliqua probatio notorietatis, ex *supra* traditis. Et tandem sententia, iuxta textum in cap. *nos* in *quemquam* 2. *quest.* 1. cap. 15. de *purg. canon.* Docent Tuerlertem. in d. cap. de *manifesta*, Ant. Gomez d. cap. 1. num. 43. ubi plures Aylton: non tamen desiderantur litis comestatio, probatio ordioria, & similia: nec index potest reculari, aut à tali sententia appellari valet, ut probat Salgado d. cap. 14. *ferè per totum*.

Sed super traditis obstat textus in cap. de hoc 11. de *simonia*, in illis verbis: *Si vero manifestum est, nec tamen inde comitti, vel confessi fuerint, & tamen publicè à laboranti infamia, ex canonica purgatio debet indic.* Et quibus expresse deducitur, quod etsi crimen manifestum sit, adhuc poena ordinaria iussu non potest, sed tantum purgatio canonica, quae ob infamiam tantum indicitur. Pro cuius difficultatis solutione sciendum est, eam differentiam versari inter notorium & manifestum, quod aduersus notorium, maxime facti permanentis, non admittitur ulla probatio, ut late illustrat Mascard. *conclus.* 1108. Ripol. *varis. resol.* cap. 1. num. 66. Gratianus *discept. forens.* cap. 313. num. 18. Carleal. tom. 2. de *iudiciis*, lib. 1. tit. 2. *disp.* 2. num. 46. at in manifestis contrarium procedit, quia ad hoc probationes aduersus eas admittuntur, & his deficientibus, concluditur, & indicia semprobant. Mascard. *conclus.* 1017. Vnde in d. cap. de hoc 11. cum crimen simoniae manifestum tantum esset, non verò notorium, ideo purgatio tantum canonica indicitur. Nec obstat si iustes, in verbis antecedentibus decrevisse Alex. III. quod si manifestum esset delictum simoniae, aut ipsi simoniaci conuicti, aut confessi fuissent, deponerentur; quo in casu necessarium manifestum accipiendum est pro notorio, quidem vult Pontifex disiunctum *aut*, inter casum, in quo manifestum est crimen, & cum

7.

DISIUNCTVS
DVVS
TANDI
RATIO.

8.

EXPOSITVS
CAP. DE NOC,
DE SIMO-
NIA.

cū ipsi sunt in iure confessi, vel conuicti: ergo in eodem sensu Alexander manifestum dixit in sequenti clausula suprà transcripta. Pro cuius diffinitivis solutōne varia adduxit quidam Neotheticus in noua interpretatōne ipsius textus: sed nisi fallat vera mens Alexander III. est, vt si delictum esset manifestum, non noteretur, quia tantū fama, & rumore manifestum erat: & exinde, vt legitur in prima collectiōne, ipsi confessi fuerint, vel

conuicti, deponentur qui confessi, aut conuicti fuerant; si autem tantū manifestum erat, quia publicè laborabant infamia, sed conuicti, aut confessi non fuerant, purgatio canonica illis indicatur: & ita tam in prius, quā secundo casu ipsius textus nunquam manifestum accipitur pro notorio, sed tantū pro publico ex fama, aut rumore, quod adhuc probabilibus indiget, vt suprà dixi.

CAPVT X.

Alex. III. * Gaetano electo.

Cū P. Manconella, & Bonus Cocci presbyteri, & Ioannes Bonus Cocci laicus in nostra essent præsentiā constiti, eundem I. quoniam laicus erat, in iamdudū P. accusatōnem nequaquam admisisimus. Cumque præsatus B. eundem P. super crimen simoniz constantiū accusaret, nos eum, quoniam ad b. testimonium illius causæ fuit adductus, & quia frater eius, I. scilicet, iamdudū P. coram te accusauerat, repulimus ab accusatōne; præsertim cū frater P. Bonum Cocci antea de causā consimili accusaret. Vnde quoniam vnus post alterum prædictum instanti viciissitudine accensabat, neutrum ad eius accusatōnem admittimus, sed verisque de obiectis criminibus purgatōnem duximus inducendam. Inde siquidem est, quod d. per A. sm. p. m. quat. vtrumque illorum se cum tribus sacerdotibus facias infrā xxx. dies post harum suscepiōnem litterarum purgare. Purgatores verò illius honestatis, & opinionis esse volumus, quod verisimile sit eos nolle amore, vel odio, seu obtentu pecuniæ decerare. Vt autem idonei appareant, necesse est, vt eius, quam purgare debent, vitam & conuersatōnem agnoscant: quod si vterque illorum, vel alter in purgatōne defecerint, tu deficientem omni officio & beneficio ecclesiastico priues, tibi modis omnibus præcaueas, quod si qui memorato P. in sua voluerint purgatōne assistere, nullam eis maleuolentiam, vel indignatōnem ostendas, nec eos aliquo modo impedis, vel ab aliis, quantum in te est, impediri permittas.

NOTÆ.

COMMENTARIUM.

1. ^a *Gaetano.*] Ita legitur in prima collectiōne, sub hoc titul. cap. 10. in hac verò sexta legitur, *Gages*: post Concil. verò Lateran. part. 59. cap. 14. habetur *Gaiacensi electo*, quā lectiōne testiandam esse credit Annon. August. in notis ad hunc textum, quia hodie est vrbis parua in Campania huius nominis: sed cū nulla Galetia, sed potius Calacia, vniū *Calacio* dicta, reperiat, & quæ Cathedrali Episcopali decorata est iam à septimo Ecclesiæ seculo, vt refert Carolus à Sancto Paulo lib. 1. *Geograph. sacra*, fol. 55. credo legendum esse *Calaciensi*, in præfati, & in cap. cum P. de purgat. canonic.

2. ^b *Ad testimonium illius.*] Vnde deducitur DD. inimicium contrahi tecum, si contra me testimonium dicas in causa capitali. Pro qua sententia expendi potest textus in l. *prodici* 23. ff. de testib. vbi ait Venulcius: Prodici testis in non potest, qui ante in eam tecum testimonium dixit. Quam doctrinam exponemus infrā in cap. meminimus.

^c *Inde siquidem.*] Verba quæ sequuntur extant in cap. P. de purgat. canonic.

EX hoc textu sequens deducitur assertio: ^{3.} *Inimici, vel laici clericos accusare non possunt.* Probant primum partem de inimicis repellendis ab accusatōne textus in cap. *supra*. *illos*, cap. canonica, cap. nullus, vers. Nullus, qui inimicitias: cap. accusatores, cap. accusatoribus, cap. nulli, §. quod verò, cap. vlt. §. final. 3. quæst. 5. cap. ea vindicta, §. sed huius vindicta, cap. vlt. 23. quæst. 4. cap. 5. de hereticis, in integra, quæm ibi dabimus, cap. 3. quæst. 3. *Petrus episcopus* 1. in princip. ibi: *Accusandi non sunt sacerdotes Domini ab infamibus, aut seleratis, vel inimicis.* Ioannes Papa episcopus 1. circa med. apud Annon. August. lib. 30. episcopus 10. ibi: *Inimici accusatores, vel de inimicis domo prodentibus, seu qui cum inimicis morantur, non credantur, ne ita necesse cupiant, ac laici se velint elici.* Syluester episcopus 1. ad medium, ibi: *SS. PP. robustantes decreta flammis, licet sapientissimi iam statum fuerit, nec falsis, nec inimicos, suspectos accusatores, vel testes aliquam super Episcopos suscipi.* Secundam partem de laicis non admittendis contra clericos, probant textus in cap. *beatus*, cap. *sacerdotes*, cap. *sunt plurimi*, cap. *quiescite* 6. quæst. 1. cap. *nullus*, cap. *laico*, cap. *in sancta*, cap. *laicos*, cap. *sicut*, cap. *laici* 2. quæst. 7. cap. *de casu* 14. de testib. Vtramque partem probat Marcell. Papa episcopus 2. ad medium,

CONCL. NO TRA. DITTA, EX PROBATA.

ibi: *Quod laici, aut suspecti Episcopi non debeant accusare, nec accusantibus de inimici damno procedentibus credendum sit, & a Beato Clemente ipse cum infrascriptibus Apostolicis legimus definitum, & nos eadem firmamus.* Illustant vltra congeitos ad Barb. in *presenti*, & infra in *cap. meminum*, Ant. Auguſt. in *epi. iuris lib. 30. tit. 1. Vighel. in method. iuris Pontif. lib. 1. cap. 6. Petrus Greg. lib. 5. parit. tit. 9. cap. 3. Fragoso cap. 1. de regimine, lib. 5. dispot. c. 2. §. Ant. Auguſt. in *notis ad can. 68. Hadriani*, tam. 5. Concil.*

4. Sed pro dubitandi ratione in presentem assertionem ita insurgo: Omnes admittuntur ad accusandum, qui non prohibentur, quia edictum hoc est prohibitorium, ut probat in *cap. 1. hoc tituli*, & sacri canones eos remouent ab accusandi munere, quos leges teiciunt, *cap. accusatores 7. & 8. 3. quæst. 5. Synodus Romana sub Symmacho ante medium, ibi: Cum Patrum statuta sancissent, quoad accusantem leges sacri non admittunt, his dicendi in cognitione, vel accusanti aliquem denegandum esse licentiam.* Sed non reperitur in legibus civilibus inimicus exclusus ab accusando, ut constat ex *l. qui accusat, ff. de accusat. tit. titulo Cod. qui accusare non possunt.* Vbi cum referantur omnes, qui accusare non possunt, inimici inter eos non referantur; Immo ex Cicerone constat, accusatorum quammaximè infensum reo desiderari, ut ex fide accusci, nec perueniatur. Ideo Q. Cælius Quæstor C. Verri, cum in accusando Ciceroni præfati vellet, inimicum se Verri simulat. Flaccus autem inimicitias exagitat Tullius in diuinis, viis verbis: *Deinde accusatorem tuum, firmumque esse oportet. Eum ego si te putem cupere esse, facili intelligi esse non posse. Nec ea dico, quæ si dicam, tamen informari non possit, te amicum de Sicilia decesseris in gratiam rediisse cum Verre. Potammonem scribam, & familiariter tuum retemum esse a Verre in provincia, cum tu decederes: Ad. Cælium fratrem tuum letissimum, aque ornatisimum adulescentem, non modo non adesse, neque tecum tuas iniurias persequi, sed esse cum Verre, cum illo familiarissimè, aque amicissimè vivere.* Sunt hæc, & alia in te facti accusatoris signa permixta, quibus ego nunc non ceter. Igitur inimici non repelluntur ab accusatione. Accedit, nam vnicoque de populo licet Reipublicæ bonum procurare: at accusare est crimen deferre ob publicum bonum ad vindictam publicam, l. illud, ff. ad leg. Aquil. Igitur etiam inimici licet reos criminum deferre. In secundam partem etiam assertionis sic insurgo. Licet laici non admittantur ad accusandum clericos, tamen in crimine simonie reos illos audiri posse, probatur ex *cap. causa, de simonia*: sed in presenti casu agebatur de simoniae crimine: igitur etiam laici, ut accusatores contra clericum admitti poterant.

5. Quibus difficultatibus minimè obstantibus, verum est, inimicos ad accusandum admitti non posse, ut vatilis ampliationibus, & limitationibus exornant Iul. Clarus lib. 5. *sentent. §. final. quæst. 14. num. 17. Farinac. in præxi, quæst. 12. numer. 38. Declanius lib. 3. tract. crimin. cap. 25. per totum.* Nam licet iure civilis attentio admittentur, tamen per sacros canones arcentur ab accusando. Quod discrimen vtriusque iuris agnouerunt Patrum, & Felinus hic. Berolus in c. t. hoc tit. *num. 47. Turrescimus in cap. primi, num. 8. 2. quæst. 1. Ant. Mattheus de criminibus ad tit. de accusat. cap. 1. num. 1. Ratio huius prohibitionis Pontificæ ex in proue-*

nit, quia cum accusatio sit delatio criminis ad publicam vindictam, ut probat supra in *cap. 1. præsuntur non amore iustitiæ, ac zelo, sed odio id efficere ad priuam vindictam: & similiter tus præsumit propter odium accusantis aduersus accusatum inimicum mentiri, ob quam causam inimicus non admittitur ad ferendum testimonium contra inimicum, l. 3. ff. de testibus, l. si quis testibus, Caus. ant. tituli. & quia laici clericorum inimici creduntur, cum eis valde sint infecti, *cap. laici 2. quæst. 7. cap. clericis, de censuris lib. 6.* propterea dispositum professionem, ideo ab accusatione clericorum laici arcentur. Accedit quia laici eos ve partes reuereri debent, *cap. eorum 2. quæst. 7.* unde non decet clericis ad laicos accusari. Quod primum tantum circa Episcopos causam fuisse, non ceteros clericos, ab Anastasio constat ex *cap. laici 2. q. 7.* & deinde traditum fuit ad omnes sacerdotes, & omnes clericos, ut indicat Fabianus *epistol. 2. ad Orientales Episcopos*, telatis in *cap. simi 2. quæst. 7.* Et licet hoc apud Græcos non inualuisset, ut liquet ex *can. 75. Apostol. can. 6. Synodi Constantiæ. not. Concil. Chalcedon. can. 21. & hæc prohibitio regulariter procedat, nisi laici suam, vel suorum iniuriam prosequantur, *dist. cap. laici 2. quæst. 7.* & etiam in criminibus exceptis admittantur, veluti in crimine læsæ Maiestatis diuini, aut huiusmodi, vel simonice, *cap. sacerdotis 2. quæst. 7. cap. causa, de simonia*: tamen in his casibus, & similibus admittuntur laici si bono zelo, & non ex odio procedant, quia tunc nec in dictis criminibus ad accusandum, vel testificandum admittuntur, *cap. licet feli, cap. per tuas, de simonia*, et si bonæ famæ sint; nam si improbæ famæ, seu viles persone reperiuntur, distinguendum est, an clericus sit infamatus de o delicto, & tunc laici etiam male opinionis admittuntur; si verd clerici existimatio laici non est, laici vili opinionis non arcentur, *dist. cap. causa, cap. per tuas, de simon. cap. in primis 2. quæst. 1. iuxta quam distinctionem accipiendus est canon 24. Concilii Epiani. vbi ita alunt Patres: Laici contra cuiuslibet gradus clericum, si quod criminale parant obicere, dummodo vera fuerint, proponendi permittimus persequi.* Quare cum in presenti specie Petrus duo fratres iunctis temporibus vicissim accusarent, inimici credebantur ipsius Petri, quia ex hie præfatum criminale oculumur inimicitie inter linguotes, & eorum consanguinitas, ut probat Decian. *dist. cap. 25. & iam notat in cap. 1. verbo Adversarius, de iudiciis*: & ideo amori, & repulsi fuerunt ab accusatione, licet propter scandalum, & infamiam ortum purgatio canonica Petri iungeretur.**

6. Nec obstat dubitandi ratio supra adducta; nam verum est, quod licet legibus Romanorum inimici non reperiuntur prohibiti ab accusatione, ut iam notat in *cap. repelluntur, hoc tituli*, tamen per sacros canones reperiuntur exclusi. Nec interest, quod sacri canones eos ab accusatione repellunt, quos leges iam remouerunt: nam non solum ipsos, verum & alios, quos supra in *cap. 1. reuolui, & Ecclesie PP. prohibebant accusari: unde textus pro dubitandi ratione adducti non sunt ita accipiendi, ut tantum remouerent ab accusatione illos, quos ius civile ab accusando reiecit; verum ut omnes illi arcerentur, & insuper alij per antiquos canones ab accusatione remori. Nec obstat alia difficultas adducta ex *cap. causa, de simon.**

6. DECRETALIA
VITAE
RATIO
DUBITANDI
DE

nam licet verum sit, laicos etiam villis existimationis admitti in criminibus exceptis ad clericos accusandos; tamen cum ipsi reperiantur inimici, nec in criminibus exceptis contra clericum au-

diantur, cap. si testes 4. quæst. 1. Vnde cum in præfenti textu agatur de inimicis clericum accusantibus; ideo etiam in crimine simoniæ non audiuntur.

CAPVT XI.

Idem ^a Vigor. Episcopo.

EX parte tua nobis huiusmodi quæstio fuit proposita, vtrum monachi in accusatione Abbatum suorum sine aliquatenus audiendi? Super quo vique prudentiæ tuæ respondemus, quod nisi alia rationalis causa præpediat, eo quod monachi de obedientia, & subiectione Abbatis esse nesciunt, ab eius accusatione non sunt vllatenus repellendi, licet alios accusare non possint: quibus siquidem, cum proprium non habeant, de rebus monasterij expensæ debent necessariæ, donec causa debitum finem accipiat, ministrari.

NOTÆ.

1. ^a Vigor. *Episcopo*. Ita etiam legitur in prima collectione, sub hoc tit. cap. final. & in cap. de confirmationibus 2. de confirm. vbi, ubi extat secunda pars huius textus. De Vigor. diocesi nonnulla notari in cap. 9. de elect.

COMMENTARIUM.

2. **L**icet monachi regulariter ad accusandum in iudicio non admittantur, cap. monachi 16. q. 1. cap. quæpropter 2. quæst. 7. quia motui sæculo sunt, cap. pignus 16. quæst. 1. l. Deo nobis, Cod. de Episc. & clericis, tamen propriam Abbatem accusare possunt, cap. Euphemius 2. quæst. 4. cap. illa 16. quæst. 7. quia ad talem accusationem quilibet admittitur, cuius interesse veritas, dist. cap. illa, cap. filius 16. quæst. 7. quare eum interit monasterij non habere lupum pro pastore, cap. nos 2. quæst. 7. ideo quilibet de monasterio admittitur ad accusandum Abbatem. Nec obstat subditum Præ-

latum, vel Magistratum suum accusare non posse, cap. 1. cap. sacerdotes, cap. qualis, cap. sententia, cap. ones, cap. sunt nonnulli, cap. si hereticus, & item quod dicitur, 2. quæst. 7. cap. hi qui 3. quæst. 4. cap. ones, cap. diversus 6. quæst. 1. cap. vbi, in fine 8. quæst. 1. nam cum Prælati criminosus est, accusator autem vir probus, Prælatos nomine tantum, non re est, cap. verum 8. quæst. 1. nec obedientia Abbati promissa monachum à denunciatione repellit, aut prohibet, dist. cap. illa, cap. non semper, cap. Iulianus 11. quæst. 3. cap. dilecti, in fine, de maiorib. & obed. cap. quæpropter 2. quæst. 7. quia dispensatio conceditur obedientie ipso iure, cap. olim 26. hoc tit. & quis eum monachus accusat Abbatem, vilitatem proeuit monasterij, ideo expensæ à monasterio illi præstandæ sunt, argumento legis finalis, Cod. de ordin. cognis. & similiter Abbati vsque ad finem litis sunt expensæ præstandæ, argumento legis si infirmus, ff. de iusticiis, testam. docent Petrus Gregor. lib. 5. parit. tit. 9. cap. 3. Genueus præfationib. quæst. 576.

CAPVT XII.

^a Cælestinus III.

Si constitit, quod sæpedito D. præscripta Ecclesia non fuerit perpetuo concessa, sed ad tempus ^b commendata, &c. Et infra: De violentia, & quod in ^c taberna pernoctauerit, ita quod altera die nullâ ^d præmissâ dormitione Missam cantasset, &c. Et infra: Sed etiam si de hoc rationabiliter fuerit conuictus in iudicio ante Episcopum, vel Archiepiscopum, siue accusatus, vel ad rationem positus, sine coactione coram pluribus fuerit confessus, ei nullius appellatione obstantæ super eadem Ecclesia perpetuam ^e silentium imponatis, & ipsum ab impetitione Gdesistere compellatis. Ceterum si eidem D fuit Ecclesia ipsa canonicè concessa, & tradita, & postea de crimine aliquo non fuit conuictus, propter quod debuit de iure ^f spoliari, vel post appellationem, sicut aliquando allegauit, Ecclesiâ illâ fuerit spoliatus, ipsam facias ei restitui, & in pace dimitti.

NOTÆ.

1. ^a Cælestinus III. Ita legitur in secunda collectione, sub hoc tit. cap. 1. alibi legitur Clemens III. alibi Alex. III. quam inscriptionem retinendam eredo, eum tam textus antecessoris D. D. Gual. in Decretal. Tom. V.

dens, quàm sequens sunt ipsius Pontificis; vnde in hac sexta collectione tantum habetur, Idem, idest Alex. III. Theophilus tam. 16. in Heteroclin. spirital. fol. 1. fol. 14. dum huius casus meminit, supponit epistolam hanc esse Alex. III. & in ea scribit Ambianensi Episcopo, & Abbati

Sancti Remigij, in eoque agere de Davide presbytero oppidi Gandavi depositum a suo Episcopo Tornacensi, Inegriti epistolâ carenus, & magno cum dispendio; siquidem ex hoc fragmenio non constat, quo iudicij ordine contra Danielem sacerdotem procedetur: unde in hac parte tot sunt ferè sententiæ, quot Expositores.

b *Commendata.*] De commendatione Ecclesiasticâ, & an talia commendatio habeatur pro beneficio, cõgi in cap. de multa, de prob.

c *Violentia.*] Credo legendum, *violencia*, ut habeatur in hac sexta collectione, & ita conveniat verbis sequentibus.

d *Taverna pernoctasset.*] Quando ingredi tantum in ea clerici prohibuitur est, ut probatur in cap. clericij officia, de vita & honest. cleric.

2. e *Premissa dormitione.*] Glossa in cap. nihil, verbo minimus 7. quæst. 1. licet huius textus immemor, docuit non ieiunium quoad celebrandum, seu communicandum cum iudicandum, qui post duodecimam horam noctis præteritæ cibi indigestione laborat, & ipsius eructationes patitur, quasi eo die tractatus cibus credatur, quo indigestus in stomacho durat. Quam sententiam, & alios tenuisse refert Bernardus Diaz in præf. cap. 34. Leander part. 2. de Sacram. tract. 7. dist. 3. Sed contrarium, immò eum, qui post eorum, nulla interiectâ dormitione pernoctavit, rectè sequenti die Missæ sacrificium offerre, aut Eucharistiam sumere, tenuerunt post D. Thomam

3. part. quæst. 80. art. 8. ad 5. Nazaret, in manual. cap. 21. num. 53. Suarez de sacram. dist. 68. sect. 4. Bonac. tom. 1. dist. 4. part. 6. punct. 3. numer. 12. Fagundes in præf. 3. Decalogi, lib. 3. cap. 5. Leander ubi supra. Narhon. in horograph. hora 12. num. 74. de suadetur; nam aliis plures, qui stomachi debilitate patiuntur, & huiusmodi cruditates sequenti die reinunt, prohiberentur Missam celebrare: cuius contrarium receptum videmus. Nec tunc obstat præfatus textus, ubi necessariò videtur requiri dormitio ad digestionem, ut clericus possit Missam celebrare. Nam responderetur in præfenti casu, D. Sacerdotem puniri, quia pernoctavit in taverna; quod significat per totam noctem in ea fuisse, l. urbana, §. pernoctare, ff. de V. S. & illius ingestionis horis dedicam ipsa die Missam celebrasse, & per consequens non ieiunium; non quia in somno cibum, & de vium non decoqueret; nam ut probat Laurentius Iouhetus de ead. t. paradox. 8. vigilans plus ciborum concoquit sex horis, quam dormiens horis duodecim. Docuit Theophilus sect. 26. fol. 15. Sed quis non ieiunans celebravit contra tot canonæ congestos suprà in cap. ex parte, de celebr. Miss.

f *Perpetuum silentium.*] Hæc verba exposui in cap. à crapula, de vita & honest. clericorum.

g *Spoliari.*] Hanc ultimam textus partem exposui in cap. 4. de restit. spol.

CAPVT XIII.

* Alexander III.

Meminimus iam pridem tibi præcipiendo mandasse, ut dilectæ filiz N. Cassioz Abbatisz monasterij sancti Zachariæ, cuius electionem confirmavimus, munus benedictionis impenderes: sed quia Henricus pro altera parte ad nostram præsentiam accessit, & à te exinde ad nostram audientiam appellavit, proponens, quod eam accusaret de simonia; ideo mandatum nostrum distulisti effectui mancipare; quia verò non decet te in hac parte appellationi eiusdem H. deferre, cum non liceat laicis contra clericos, & monachos testimonium ferre, & cum idem H. fuerit memoratæ Cassioz manifestus inimicus, & contra eam testimonium tulerit; nos, si bene meminimus, eandem Abbatissam benedici mandavimus, & adhuc ap. cess. mandamus, quatenus, eòdem inde fueris requisitus, præfatæ Abbatissæ contradictione, & appellatione cessante, munus benedictionis non differas impartiri.

NOTÆ

1. a *Lex. III.*] Ita etiam legitur in secundâ collectione, sub hoc tit. cap. 2. nobilibi tamen exprimitur, qui refertur Alexanderz unde cognosci non potest, de quo monasterio monialium in præfenti agatur, aut ubi monasterium S. Zachariæ fuerit.
2. b *Confirmavimus.*] Inde cognoscitur, monasterium hoc esse immediatè subiectum Romanæ Sedis; nam ad Apostolicam Sedem spectat confirmatio Abbatissarum, quæ illi immediatè subsunt, cap. si Abbatem, de elect. in 6. Tamburini. de iure Abbatiss. dist. 29. quæst. 1.
3. c *Munus benedictionis.*] Quæ benedictio solet dici ordinatio, & consecratio. D. Gregor.

lib. 6. epist. 12. ubi: *Constituimus, ut obnoxiæ antedicti monasterij Abbatissa, non excoarctetur, sed quam congregatio sibi de suis elegerit, ordinetur; quam tamen si digna huius monasterio iudicata fuerit, eiusdem loci Episcopus ordinet.* S. Radegunda Patribus Concilij Turon. 2. tom. 6. Concil. Gallia festivit, Agnetem sui monasterij Abbatissam Beatisimi Germani, præsentibus fratribus, benedictione consecratam; de qua benedictione agit in Clemens. attendentes, §. statimur, de statu monach. & tractant Tamburini de iure Abbat. dist. 29. per totam. Celloetus de Eccles. Hierarch. cap. 11. in fine.

d *Mancipare.*] Quia videbatur, pendente accusatione ipsam non esse honorandam, iuxta textum in cap. 3. hoc tit. ubi hæc verba exposui.

4. *Et contra eam testimonium auferit.*] Cuiusmodi simul Alexander, quod ipse inimicus fuerat, & quod contra ipsam testimonium dixerat, nam ex depositione tantum suspectus fiebat, non verò inimicus, ut probat Donel. lib. 15. comment. cap. 2. Manducius lib. 1. genial. cap. 42. Qui autem

testimonium dixit contra me in causa etimialis, iterum quasi inimicus contra me non audiret, *Interpretari, ff. de testibus* : quoniam Contra Cuiacium explicat Fritet. lib. 2. select. cap. 10.

Commentarium huius textus dedi supra in cap. cum P.

CAPVT XIV.

• Bisuntino Archiepiscopo.

Licet io Beato Petro Apostolorum principe ligandi, atque soluendi nobis à Domino sit attributa facultas, quam in subiectos, iuxta suorum exigentiam meritorum exercere liberè debeamus; exemplo tamen illius, qui omnes saluat, & neminem vult perire, libentius intendimus ad soluendum, quam ligandum, etsi nonnullæ sunt culpe, in quibus est culpa relaxare vindictam. Sanè cum olim ex litteris B. Decani sancti Stephani, & G. Cantoris, I. T. I. O. & N. Canonicorum Ecclesiæ Bisuntinæ ad Ap. Sedis audientiam peruenisset, te varia crimina commississe, ac ab eis fuisses per easdem litteras super perituro, crimine simoniæ, & incestu delatus, fel. rec. Cæcl. Pp. prædec. n. seruata iudiciali grauitate, tibi certum terminum assignauit, quo responsurus obiectis, Apostolico te conspectui præsentares. Cum autem tu iuxta tenorem factæ tibi citationis ad Sedem Apostolicam accessisses, te, & dil. fil. I. & O. Archid. apud Sed. Apostolicam constitutus, expectauimus aliquandiu, si qui forsitan contra te procederent, & quæ de te litteris iotimantur, proponerent inscribendo. Cæterum cum oec vnus appareret, qui te impeteret de prædictis, ne ali- quid de contingentibus præterminare videremur, à prædictis I. & O. Archid. in nostra, & fratrum nostrorum præsentia constitutus quæsumus diligenter, si quid super præmissis aduersus te pro te vel aliis proponere vellent, & quod scripserant, legitime demonstrare. Ipsi autem, quod non proposito accusandi hæc scripserant, responderunt; sed quia tu super quibusdam incorrigibilis videbaris, quædam de te Sed. Ap. duxerant iniunda: sed nuntius, qui pro litteris imperandis accessit, mandati formam præsumpsit excedere. Nos igitur famæ tuæ consulere cupientes, dictis Canonicis contra te super prædictis silentium duximus imponendum, ne te de cætero his super ipsis accusare liceat, vel infamare, illius sequentes exemplum, qui cum mulieri dixisset: Quis te condemnauit mulier? Et illa: Nemo Domine. Nec ego, inquit, te condemnabo: vade, iam amplius noli peccare. Quia verò prædicti Canonici circa vinculum inscriptionis desistere voluerunt, eis de iuris permissione id non duximus imputandum. Ne autem in absolutione tua minùs canonicè procedere videamur, quamuis potius in odore bonæ opiniois nostrorum Cœpiscoporum, quam eorum infamia delectemur, ven. f. n. Cabiloo. Episcopo, & dil. fil. Abbati de Firmitate inquisitionem famæ tuæ duximus committendam. Datum Romæ, &c. 14. Idus Iunii.

NOTÆ.

1. *a Bisuntino.*] Ita etiam legitur in tercia col-
lectione, *sub hoc tit. cap. 1.* & in epistolis
ipsis Pontificis editis Colniz. fol. 121. Bisun-
tium, seu Bisuntium, vulgò *Bezançon*, am-
plissima est vrbs Gallie in Comitatu Burgun-
diæ, cuius meminerunt Cæsar lib. 1. de bello Gal-
lico, cap. 9. Matcellinus lib. 15. Tacitus lib. 20. an-
nal. quos referunt fratres Sacmath. tom. 1. Gallia
Christ. folio 118. Aliquando Imperialia in ea no-
uit, teste Crotzin lib. 11. Saxo. cap. 15. Dicitur
& Chrysostolus iussuque Metropolitæ maxima Se-
quanorum, quæ quinta Londinensis dicitur,
ut probat Idumay in notis ad Innoc. III. epist. 164.
De Amaden eius Præfule in præfenti agitur. Cùm
enim Amadeus delatus esset coram Cælestino III.
à Canonicis & Archidiaconis suis de perituro,
D. D. General. in Decretal. Tm. V.

simonia, & incestu, in Curia Romana ad diem
dictum stetit: sed defuncto Cælestino, nullo ac-
cusatore se inscribente, Innocentius III. eius fa-
mæ inquisitionem emmisit Cabilornensi Episcopo
& Abbati de Firmitate. Dum pendebat hæc
inquisitio, Humbertus, Stephanus, & Petrus
Bisuntinæ diocesis Amadenn verum Innocentio
deferant, qui causam commisit Bernardi Geben-
nensi Episcopo lib. 2. registr. 14. epist. 124. & tan-
dem inquisitione peractâ, purgati canonicæ
inuncta fuit ipsi Archiepiscopo ab Innocen-
tino III. In epistola missa Episcopo Lingoniensi
& Abbati Motimundi, lib. 4. registr. 16. epist. 63.
in hæc verba: *Audiui & intellexi, quæ super in-
quisitione facta contra venerabilem F. N. Archiepiscopum
Bisuntin. fuisse proposita coram nobis: quia
per depositiones testium constitit evidenter, ipsum cle-
ricum, cum eis promouebat ad ordines, fuisse pro-*
miserit

uinitur datâ fide, quod cum per Sedem Apostolicam, vel per alium super obituenda beneficia non uocarent: re ponantur in quo deliquit, eundem à collatione ordinum duximus suspendendum, & quando nobis placuerit, volumus manere suspensum. Interim autem per aliquem de suffraganeis Ecclesia Bisuntina, cum necessitas postulauerit, clericis Bisuntina Diocesis ordines conferri mandauimus. Ceterum quoniam idem Archiepiscopus super uisio simonia, ac lapsu carnis, nec non conditione iustitia dignoscitur offensatus, super his et purgationem cum tercia manu Episcoporum sua provincia, vel etiam uicinarum, & trium Abbatum Bisuntina diocesis bona opinionis, & uita, quod de conuersatione eius cognouerint, indicantes, discernimus cetera per Apostolicam mandauimus, quatenus ab eo infra tres menses praeparati à nobis huiusmodi purgatione recepta, ipsum super illis articulis boni testimonij publicè nuntiari. Quod si forte in purgatione defecerit, ipsum à pastoralis regimini amouemus, faciat Ecclesia Bisuntina de persona idonea prouideri. Vos denique Frater Episcopus, & Fili Abbat, &c. Datum Laterani. ix. Cal. Iuny, Pont. N. anno xxi. Et cum circa formam ipsius purgationis Amadeus ad Innocentium III. appellasset, eisdem iudicibus formam in purgatione seruandam praescripsit in cap. final. de purgat. canon. An uero in ea defecisset, non constat. Frater Sazmath, ubi supra, referunt eum peccatum Episcopatu decessisse.

b. *Nona se condemnauit.*] Verba sunt Christi Domini apud Ioannem cap. 8.

c. *Inscriptum.*] De qua agemus infra, in cap. super his.

2. d. N. Abbat.] Odoni uidelicet, ut refert Marquise tom. 1. anal. Cister. in serie Abbatum de Firmis, num. 8. De quo monasterio nouaulla notata in cap. ex litteris, de consuetu.

COMMENTARIUM.

3. **CONCERNIO TRADITAE ET PROBATA.**
EX hoc textu sequens communiter deducitur assertio: Dicens si aliquem accusatum sine pena, potest desistere ab accusatione ante inscriptionem, & sic desistens sitentium perpetuum impunitus. Priorem partem, uidelicet ante inscriptionem licet accusatori desistere, probant textus in *hugulatum* 5. ff. ad Turpil. l. 17. Cod. ad leg. l. ad adult. & argumeto legis quamuis 11. legis libertus 15. ff. de in ius uocanda. Secundam partem, scilicet desistendi ab accusatione impostumum esse perpetuum silecium, probant textus in l. 1. ff. ad Turpil. l. 3. ff. de praenot. l. 2. §. 1. l. si mortuus 15. §. si uergetur, ff. ad leg. l. ad adult. l. accusatio nem, Cod. qui accusare, l. querunt 14. §. si uoluerit 9. ff. de adu. edit. Paulus lib. 1. sent. tit. 5. §. 2. Illustrat Baidus, & Salicet, in dicit. l. accusatio nem, Padilla in l. transire, à mem. 91. Tiracquel. de retrat. tit. 1. ad fin. Petrus Greg. lib. 32. synag. cap. 22.

4. **TRADITIONE OBSTATI.**
Sed pro dobitandi ratione sic argumentor: Accusator desistens ab accusatione, punitur ex Senatusconsulto Turpilliano variis penis, ut statim dicemus; & principaliter ex l. 1. vers. Si quis autem. Quae extat in cap. ult. vers. si quis 2. quist. 3. Sed to praesenti casu iam accusator Episcopum Bisuntinum de incestu, & simonia, ipsoque citatus Romam uenerat: igitur imponere non poterat desistere ab accusatione, praecipue quia per citationem pendet accusatio, seu lis, quae incipit ab ipsa citatione, argumento §. uictimi,

Instit. de penis, temer. litigant. Clement. 2. ut lit. pend. Accedie, quia ratio boni publici, qui ostenditur Senatusconsultum, ut statim uidebimus, uiget etiam in hoc casu cum primum facta est citatio. Deinde difficilis est secunda pars assertionis, ubi docetur in praesenti specie canonis desistentibus ab accusatione impostumum fuisse silecium perpetuum; nam ubi accusator imponere, licetque desistat ab accusatione, non prohibetur iterum accusare, si postea penitentia ductus, uelle accusationem repetere, dummodo res integra sit, & nulli iocetur praedictum, l. 3. ad finem, vers. Si is cui, ff. de sepulch. uolent. argumeto h. §. inuicem 6. ff. de apene legat. Sed in praesenti casu canonico iure, & impane omisit accusationem, refert Innoc. III. Igitur non erat illis silecium impostumum.

Qui dubitandi ratione non obstatte uera est praesens assertio, cuius desistam rationem ut agnoscamus, sciendum est, quod licet uero accusationem proponere, & exordiri cogatur, immo cuiuslibet libetum sit reum criminis desistere, uel non, l. unic. in l. 1. uoluit. Cod. ut nemo iniustus accusare, uel agere cogatur, tamen ubi quis iam accusauit, & accusationem in iudicio legitime proposuit cum subscriptione, necessarium cogit persequi, nec libetum est ei impune desistere, l. ab accusatore 15. l. res que 22. §. ult. ff. de iure iusti: quia publice interest accusationem non intermitteri: quae uera sit, ut delicta puniantur, l. si ita 52. ff. ad leg. Aquil. l. conuenit, ff. de offic. Praesid. siue falsa, ne calumniae impune discedant.

Quare desistens ab accusatione, cum tergiversator, publico iudicio iustitiae, in rempublicam peccat, cuius interest crimina publica uere in iudicium delata coerceri, illorum publicam uindictam temere, & sine causa non impediri, l. 3. dicit. l. conuenit, ff. de offic. Praesid. cap. ut fama, de sent. excom. & insuper ne quis innocens temere accusetur sub fiducia, & fide desistendi postea ad libitum. Nec nouum est eos, qui aliquid incipere, aut facere non coguntur, postquam ceperint negotium facere, cogi ad illud persequendum, l. 3. §. 1. ff. de arbit. l. salarium 7. ff. mandati, l. sicut, Cod. de O. & A. cap. licet, de uera. Ergo qui ab accusatione publici iudicii per se, uoluit praecedente abolitione, omnino desistunt antiquam lis finita sit, uariis poenis plectuntur, ex Senatusconsulto Turpilliano Neronis tempore celebrato anno Christi 62. ubi 813. ut probat Panetrola lib. 2. var. cap. 136. In primis puniuntur extraordinarie poenis quoque libitum aui hico applicanda, l. 3. ff. de praenot. Deinde repletur omnino ab huiusmodi accusatione, Ita ut licet uelint eam persequi, non uoluerint, l. 3. & 3. ff. ad Turpil. l. 3. & 4. Cod. eod. tit. Insuper infamiam incurrunt, l. si uis 6. §. qui iudicij, ff. de accusat. l. 2. in fin. Cod. ad Turpil. & in expensis, & damnis puniuntur, l. 3. Cod. qui accusare, l. saltem 5. vers. In accusatore, ff. de poenis. Consonat lex 7. tit. 1. part. 7. docet D. Thomas 2. 2. quist. 68. art. 3. in corpore, & ad 3. Sotus lib. 5. de iust. quist. 5. art. 3. Bonifac. de malefic. tit. de poenis desistentis, Durandus ad tit. ff. ad Turpil. ad quam Turpilliani partem spectant textus in l. notum 22. §. 1. ff. de his que se indign. l. miles 11. §. 3. ff. ad leg. l. ad adult. l. uere 63. crimen 11. l. abolitionem 16. C. eod. tit. l. 14. §. 2. ff. de huius lib. l. uel iudicij 20. l. qui ergo, §. penult. ff. de his qui notum infam. l. un-

5. DE DESISTENDI AB ACCUSATIONE.

Donello lib. 18. comment. cap. 18. vers. *Nondum*: & l. 12. c. 2. non sequens. ff. de iure dot. l. 8. Cod. de his qua ut indigni. l. si quis 7. §. 1. ff. ad Turpil. iuncta Salmatio ad nos *Arrian* c. 10. Marcel. Donat. in notis ad *Lauprid.* Ideo licet reus possit transigere de delicto si se commisso omni tempore, *l. transigere*, *C. de transact.* tamen ab illi tantum ante propositam accusationem id licet, vi docet Ant. Mathaeus de *crimine*, ad lib. 48. *Pandect. tit. 19. cap. 7. num. 6.* Excipiuntur tamen ab illi penis femina, & minor, l. 1. §. *accusationem* 10. ff. ad Turpil. nam mulier si delectat accusationem, ad quam nimio feruore processit, excusatur, quia dum suorum iniuriam prosequitur, ignoscendum est illius dolori, ad quem sexus ratione facilius mouetur, nisi pacto, aut pretio accepto desistat, l. 5. §. *ead. tit.* Item excusantur illi, qui doli proptus expertes solā iuris, aut casus necessitate circumuenti accusationis peragendae animum abiciunt, vel deponunt; & illi, quos sine vlla calumnie suspitione iustus dolor creditas, aut falsa opinio in accusationem induxit.

Abolitione factā licet accusatorem accusationem deferere supra dixi. Est autem abolitio, finis accusationis, quā tunc ad teorum numero calimniant, & aboletur accusationis memoria, *l. si interueniente* 1. ff. ad Turpil. Ea triplici modo contingit, licet duplicem tantum agnoscat Cuiacius ad *Paulum lib. 5. sent. tit. 17.* & ad *tit. C. de abolis.* Prima publica, cum statim temporibus feriarum, vel ob celebritatem Paschalem, vel extra ordinem, ob diem insignem, publicamve letitiam, reorum nomina abolentur, & ipsi si carceribus in locum prodeunt, l. 3. C. de *Episc. audient.* l. 8. §. 12. ff. ad Turp. l. 1. 2. §. 3. C. de *gener. abolis.* l. final. C. *Theodosius de iudul. crimin.* ibi: *Liberata Republica tyrannidis iniuriā omnium non relaxare precipimus.* Plura de hac abolitione congestit Aithellera de *iudicibus lib. 1. cap. 6.* Secundō priuam abolitio contingit, cum accusator ad iudice impetrat accusationis omittendae licentiam ex iusta, & probabili causa, veluti propter errorem, militiam, cognationem, & similes, l. 10. ff. ad Turpil. l. 2. Cod. de *abolis.* l. *abdicatorem* 16. *l. 1. num. 10. ff. ad leg. iul. de adul. l. 1. Senatus* 15. §. *de iudic. iustis.* Tertiā abolitio contingit cum accusatore mortuo, aut iusta causa impedito, quo minus prosequi possit accusationem, reus perit nomen eius aboleti. Planē abolitionis huiusmodi, licet in aliquibus conueniant, in aliis tamen differunt valde. Conueniunt quidem in eo, quod quæcunque ex eis sufficit, vt accusator imponē desistere possit ad accusationem, l. 1. §. *si quis autem*, l. si interueniente, ff. ad Turpil. l. 1. iuncta *Glossa* 1. C. *ead. tit.* in eo etiam conueniunt, tam prima, quam secunda abolitio, quod utraque locum habet cum teiora crimina obiecta sunt, Grauiorū verō criminum rei abolitio non potest, l. *Demitimus* 16. cum lege sequenti, ff. ad Turpil. *l. ult. C. de abolis.* l. 3. C. de *Episc. aud. l. 1. p. 1. Cod. de calum. l. 29. tit. 1. part. 7.* quia in his grauioribus delictis, si abolitio concederetur, potius consulari gaudium, letitiaeque publica, quam offendi videretur, vt alius Imperatoris in l. 4. C. *Theodosius de iudul. crimin.* quae extat in *dist. 1. l. 3. C. de Episcop. aud. & apud Iacob.* Simundum in *append. C. Theodosius* ibi: *Quis enim sacrilega diuina frivolis indulget? quis stupri, incestive rei tempore cassatis ignoscit? quis non raptorem virginis in summa quære, criminisque gaudis non prosequatur instantis? Nuliam sententiam vinculorum requirit is, qui*

quiserere defunctis quadam sceleris immunitate non sinant. Nec obstat lex 1. C. de *general. abolis.* vbi ad vim illam abolitio quoque produci videretur. Nam accipiendus est de vi leuiori, non publica, & graui. Differunt tamen in eo præsertim, quod prima abolitio non nisi a Principe, vel Magistratu eiusdem auctoritatem habente conceditur, l. 2. ibi: *Indulgentia nostra*, C. de *gener. abolis.* l. *interueniente* 12. ff. ad Turpil. Secunda verō à Præfide, seu iudice competente, apud quem agitur ex iusta causa, & de qua cognitio præcedere debet, l. 1. vers. *Abolitio*: licet Plinius lib. 7. *epist. 6. & 20.* hanc rem Cæsaris cognitioni reservatam memoret. Differunt deinde in eo, quod prima regulariter non est ita perpetua, quin post triginta dies viles finitis festis, non solum alius, verum & ipse non possit repetere accusationem, *l. si quis* 7. §. 12. ff. ad Turp. l. 1. C. de *gener. abolis.* cum post alias abolitiones non possit accusator etiam post 30. dies accusationem repetere, nisi à Principe impetraret, l. 1. C. de *abolis.* l. 4. ff. ad Turpil. l. 3. Cod. l. 11. §. *ult. ff. de accusat.* Decianus *supra*, num. 4. & 38. Cuiacius de *prescriptis & termin.* cap. 10. Ant. Mathaeus ad *tit. de accusat.* cap. 6. quæuis alius inter eiusmodi 30. dies possit eandem repetere accusationem, *dist. 1. l. 3. ult. ff. ad Turpil. dist. 1. l. 3. ult. ff. de accusat.* Dixi regulariter, quia abolitio, quæ ob natalem Principis conceditur, perpetua est, de qua in l. 1. Cod. *Theodosius de iudul. crimin.* Coptissus Africanus lib. 2. de *laudibus Iustini minoris.*

— Precibusque dolentium

Annis, & solui cunctas à crimine iussit.

Et quasi Deus esset, cui verbo campetis terra

Insistere males, mediæque à morte lenaret.

D. Chrysothomus in *Monachum homil. 3.* Solent Reges nisi sibi filio indulgentiam rege suo donare. Philo contra Flaccum, d. ibi: *Breuis, & restit, non insolent admistrantibus nos est in neminem demeritarum animaduertere, donec solentis celebrari, naturalique Augustarum festa praterant.* Greg. Turon. lib. 6. *Hystor. Francor.* cap. 25. ibi: *Deinde post multas funera filiorum Chilperici Regi filius nascitur, ex hoc inbet Rex omnes custodias relaxari, vinolas absolui.* Apud nos talis abolitio statuta reperitur in l. 1. tit. 32. part. 7. de qua plura Matritius de *iudul. Regis Sicilia*, Inl. *Clarus quest. 59.* vbi plura Bazarides, Boet. de *prescriptis.* Reg. cap. 38. num. 85. *Plaza de delict.* lib. 1. c. 38. D. Ioannes Latreia *decis. 25. Gravet.* Zypert lib. 2. de *iurisd.* cap. 8.

Deinde sciendam est, valde controuersum esse apud Interpretes, quando, seu quo tempore dicatur quis accusasse, seu accusationem instituisse ad effectum vt imponē de delerere non possit. Et obtinuit communis sententia, videlicet secundum verba & mentem Senausconsulti Turpiliani non licet imponē desistere post iuris connotationem, itari ante tam etiam libello dato licet accusatori discedere: quomodo accipiunt legem 1. Cod. ad Turpil. ibi: *Causa criminis ordinata: legem quasquam*, ff. *ead. titul.* Verum hæc sententia sustineri non potest: cum quia Consulatus in *dist. 1. quasquam*, dum ait eum, de quo ibi, Senausconsulti verbis non contineri, nunquam senit de verbis quodam superficiali, sed verbis re ad, & iuxta proprium sensum acceptis; ac proinde iuxta mentem, & sententiam legislatoris, iuxta textum in l. *num. 6. ff. de P. S.* Tum etiam quia Pontifex in præfenti, nullā factā monitione liris connotationis, apertè docuit Canoniceos ante inscriptionem fa-

6.
DE ABOLITIONIBUS.

7.
QVO
TEMPORE
LICET
ACCUSAT
TORI DE
SISTERE.

Etiam in ipsa accusatione desistere potuisse. Quare verius est, liti contestationem nullatenus esse necessariam; desiderat tamen libellum solennem, quo reus criminalis in iudicium refertur, & contra illum accusatio instituitur, ita quod ante eiusmodi libellum possit, post eundem verò nequeat accusator impunè desistere, vt docuerunt Glossa, Cino, & Salicetus in l. i. c. ad Turpil. quæ sententia suadet ex d. l. quasitum, ibi: Si non obiecerit, & per argumentum a contrario, ex cap. ult. ibi: Insuper priorem fecit, iuncta Glossa, 2. quasit. 3. l. i. C. vt intra certum tempus, ibi: Accusator reum in iudicium sub inscriptione delinquit: & ex præfati textu, ibi: Circa vinculum accusationis. Nam inscriptio, de qua in his liti bus, fiebat insimul cum libello accusatoris, l. 3. in princip. ff. hoc tit. quæ extat in cap. final. vrf. libellorum, a. quasit. ult. In eo accusator continebat se persuetorum in accusatione vsque ad sententiam, & talionis poenæ se subscribebat, aut inscribebat, l. qui crimen 7. in princip. ff. hoc tit. l. 3. Cuius accusare. Dicemus infra in cap. super his. Post hunc ergo libellum, qui inscriptionis dicebatur, dicitur l. 3. hoc tit. non licebat desistere ab accusatione; antea verò licebat, cum adhuc accusator ad persuetendum non se obstringeret; & hoc innuit dum docetur ante inscriptionem posse accusatorem impunè desistere in dicitur l. i. Cod. ad Turpil. ibi: Insuper priorem fecit, & fideliter de exercenda lite: & l. 3. C. qui accusare; & in præfati textu. Et quia in libello continebatur inscriptio huiusmodi ad persuetendum, paria sunt dicere accusatorem ante inscriptionem desistere posse, post illam verò non ita; ac dicere, posse, vel non posse eundem desistere ante, vel post libellum accusatorum solennem editum, quo accusatio instituitur in iudicio: vt defendit Abbas in præfati, num. 6. & ita conciliandi sunt DD. qui assunt post libellum non posse accusatorem desistere, cum iis, qui docuerunt post inscriptionem tantum non posse desistere.

Nec pro communi sententia super adducta facti textus in dicitur l. i. C. ad Turpil. in illis verbis: Causa criminalis ordinata. Quæ accipienda sunt, non de ordinatione per liti contestationem, sed per libellum solennem editum cum prædicta inscriptione; quia tunc dicitur causa criminalis ordinata ex parte accusatoris, dicitur l. 3. ff. hoc tit. l. 3. C. qui accusare: licet ex parte accusati non sit causa ordinata vsque dum ille accusationi respondeat. Idque satis expresse Imperator in dicitur l. i. vbi post illa verba, Causa criminalis ordinata, se ipsam explicans sobdit, idest, in super priorem fecit, & fideliter de lite proseguenda præfuit. Quæ verba satis ostendunt ordinationem, de qua ibi agitur, non consistere in contestatione, sed in inscriptione, & aliis, de quibus ibi: Quod verò Imperator annedit in illis verbis, Et qui accusatur, sub officij custodia fuit, non refertur ad requisita necessaria, vt accusator impunè possit desistere ab accusatione; sed ad hoc, vt abolitio, de qua statim agitur, impetrari possit per accusatorem absque accusati consensu; etenim vbi accusatus carcerem sustinuit, non conceditur abolitio accusati tam petenti absque eiusdem accusati consensu, l. final. vrf. seu autem, Cod. de abolit. cap. ult. in princip. a. quasit. 1. Quod si carceri non fuit mancipatus, sed sub officio, idest officiali custodia traditus, vt exponit Cuias. lib. 8. obser. cap. 30. potest accusator impetrare abolitionem ex iusta causa absque consensu accusati intra dies triginta ab eo, quo sic

sub officij custodia est, dicitur l. vlt. Probat igitur Imperator in dicitur l. i. in Turpillianum incidere eum, qui crimen publicum detulit, & ordinari causam, idest inscriptionibus depositis, & fideliter de causa proseguenda præfuit, & non impetrari abolitionem, vbi reus sub officiali custodia traditus est, accusationem deseruit. Nec etiam fauere communi sententia textus in dicitur l. quasitum, ff. ad Turpil. l. miles, §. 1. ff. ad leg. Jul. de adult. quia in vtroque textu, licet accusator libellum obtulerit iudicatorium, seu comminatorium fuit accusatoris, in quo assertit se accusatum; non tamen accusat, nec libellum cum inscriptione solenniter proposuit, vt colligitur ex dicitur l. quasitum, ibi: Obiulit minimum est; & ibi, si non obiecit. Quæ verba satis innunt, aliud assertendum esse, si accusator iam obiecit, & accusat. Similiter constat ex dicitur l. miles, §. 1. ibi: Accusatum, & testatus fuisse; iuncta Glossa verbo Fuisse, dum dicit, focerum illic non obtulit libellum; intelligi accusatorum de præfati, licet iudicatorium, seu comminatorium obtulisset. Et eum Consulus ait, focerum decessisse ab accusatione, accipit Glossa de accusatione comminata in futurum, non verò instituta, aut propolita de præfati. Glossam sequitur Dinus, Bartol. & de Angel. ibi. Abbas in præfati, num. 4. Anan. num. 7. Felinus num. 2. iuxta quem sensum in dicitur l. 3. est textus singularis, quo probatur, non solum repelli ab accusatione eos qui desistunt ab ea, quam de præfati proposuerunt; verum etiam desistentes ab ea, quam comminati sunt in futurum, vt in præfati textu etiam docet Innocentius. Inde deducitur, ad effectum vt accusator desistens incidat in Turpil. non sufficere quod accusatus sit, quia ante libellum cum subscriptione prædicta, etiam citatio præmissa sit, verum est dicere accusatorem desistere ante inscriptionem, & ante libellum solennem editum, & antequam accusator obtulit accusatorem prosecui accusationem vsque ad finem. Quod & aperte probatur ex præfati textu in princip. ibi, Cuius iuris: in quibus refertur, Archiepiscopum post Canonicorum delationem fuisse citatum: & adhuc sic Pontifex, post eam citationem adhuc accusatorem posse desistere.

Consequens est alia questio, quando, & quo tempore desistere possit accusator impune ab accusatione Turpilliani in illis criminibus, in quibus attentio iure in scriptio locum habet: quos referemus supra in cap. super his. Et videtur, quod in illis possit in quacunque parte liti impunè desistere; quia semper verum est dicere, quod desistit ante inscriptionem. Sed verè dicendum est, in his casibus, in quibus inscriptio non desideratur, desiderari liti contestationem, seu adum proximam liti contestationem. Vnde hodie in praxi, cum prædicta inscriptio vix recepta non sit, ideo impunè ante liti contestationem desistit, vt dicemus in dicitur cap. super his.

Tandem sciendum est, accusatorem quouis modo desistente ante causæ exitum, siue licitè, & impunè, veluti ante inscriptionem; siue post illam, interueniente abolitione, siue illicitè, vt potest post inscriptionem, nullà abolitione præcedente, causam criminalem non extinguere omnino, nec reum absolutum à crimine, immò adhuc contra ipsum procedi posse, non solum alio accusante, verum etiam iudice ex officio proseguente, l. 3. §. ult. vbi Bartol. ff. hoc tit. l. penult. ff. de public. iudiciis, l. 1. ibi: Sed aduersus necentem, Cod. de aboli.

8.
EXPO-
NITUR
L. 1.
C. AD
TURPIL.
DIL. CYM
ALII.

9.
QUID DE
ACCUSA-
TIONIBUS
VBI IN-
SCRIPTIO
NON RE-
QUIRITUR.

10.
DE HIS
TENET AB
ACCUSA-
TIONE SE-
LENTIUM
IMPOSITUM.

lit. cap. 2. de collat. deteg. & satis expresse Innocentius in presenti, in fine, dum ne minus canonici eò procedere videantur, docet, quod licet accusatores desisterent, adhuc inquirendum esse contra Archiepiscopum, probantur Iul. Clarus d. 6. vlt. quæst. 1. t. 1. nom. 9. Padilla in *laramfigere*, nom. 46. C. de transact. ut sciam iudex ex officio procedere possit, si accusator desisteret, desideratur ut causa criminalis eius nature sit, ut aliis iudex ad eius inquisitionem procedere possit, alias sicut nec à principio, ita nec desistente accusatore iudex inquirere valet.

Quibus ita animadvertitis apparet vera ratio præsentis decisionis, nam eum Canonici Bistuntini in eius specie adhuc accusationem legitimè cum inscriptione non proposuissent coram Innocentio III. poterunt impunè desistere, ab Episcopi accusatione absque eo, quod tanquam tergiversatores puniri possent: & quia interrogati à Pontifice, an vellent accusationem proponere, aut haberent quid vendi conquirerentur de prædicto Archiepiscopo, responderunt, nec causam habere, nec velle accusationem instituere, ideo, illis perpetuum silentium imposuit: sed quia desistente accusatore, aut regulariter abolitione impetrata, crimen non extinguitur, sed tantum accusatio perimitur, ideo etiam Pontifex perpetuum silentium imponeret Canonici, ne amplius Archiepiscopum accusare possent super eisdem criminibus, non propterea ab hisdem delictis ipsum Archiepiscopum absoluit, nec prohibet de his per alios accusare, sicut Dominus noster, cuius exemplum Pontifex adducit, & habetur *Innoce. cap. 8. adulteram absoluit à crimine, vel accusatione, si postea legitimè accusaretur*, quoniam tunc nullo existente accusatore, aut iudicio iudicio, meritiò abire permiserit. Vnde illa verba finalia huius textus, *nec tamen in abolitione tua*, non sunt intelligenda de absolute à criminibus, vel simpliciter, & absolute ab accusatione, vel inquisitione super eisdem criminibus, sed tantum de absolute ab accusatione proposita per Canonicos. Illud summè notandum est, Innocentium III. non committere inquisitionem contra Archiepiscopum Cabilonensem Episcopò, & Abbati de Firmatate super criminibus, ad quam necessarid præcedere debet infamia, cap. *qualiter 24. in princip. & in fine*, ubi: *Inquisitionem clausa infamatis: hoc tunc, sed tantummodo committere inquisitionem super fama Archiepiscopi, ut constet ex illis verbis: Inquisitionem fama tua*. Ad hanc enim inquisitionem sufficit modica diffamatio, nec desideratur infamia, cum in ipsa inquisitio fiat ad famam, vel infamiam investigandam; ita quod si infamia appareat, inquisitio fiat super crimine contra infamatum, iuxta textum in *dist. cap. qualiter*: quem ex hoc textu exponunt, & limitant ibi *Innoce. in fine*, Abbas *nom. 4. Felinus nom. 3. vers. Opponitur ultimus*, Mariani *nom. 16. Duchas regul. 298. l. 1. m. 8. Maranta de ordin. iudic. cap. 6. nom. 26. Iul. Clarus dist. 9. vlt. quæst. 6. nom. 4.*

Nec obstat dubitanti ratio suprà adducta, cui ut satisfaciat Aretinus in presenti, *nom. 12. assensit* Canonicos, de quibus in presenti, non fuisse accusatores, nec tales ab Innocentio iudicari; sed tantummodo denuntiatores: & quia inscriptio attentò iure canonico, locum non habet in denunciatione, cap. *qualiter 24. ad fin. hoc est*, verba illa huius textus, *extra vinculum inscriptionis*, que vulgò exponuntur, idest ante vinculum, ipse ac-

cepit præter, sen extra vinculum, quasi hoc casu inscriptioni locus non esset. Verùm intellectus hic non solum repugnat propolamz verborum, verùm & menti ipsius Innocentij, qui intendit, & supponit Canonicos fuisse accusatores, aliter enim si essent tantum denuntiatores, frustra se excusarent, eo quod nuntius mandatum excecisset accusando; & frustra Pontifex diceret eisdem destitisse ab accusatione, quod necessariò supponit eos accusare, *l. desistisse 10. ff. de iur. l. non potest 209. de R. J. & speranda refellunt Aretini sententia, si scribè perpendatur integra huius terminis in presenti transscripta*. Quare hac omnia solutione dicendum est, accusationem in presenti casu legitimè cum inscriptione propositam non fuisse, & ita iuxta suprà tradita licite, & impunè potuisse Canonicos desistere ab accusatione. Nec interest, quod citatio præcessisset. Vnde videtur, Canonicos accusationem deseruisse. Nam responderetur in hac materia non attendi, nec considerari tantummodo quod accusatio pendat, sed quod instituta sit per libellum in forma iuris, cum prædicta inscriptio ne; & consequenter si citatio non requiritur, ita nec sufficit per se, nisi præcedat sollemnitas inscriptio. Nec obstat quod si accusator desistere possit post citationem, iam daretur eidem occasio vezandi adversarium per citationem, & insuper infamandi eum de crimine. Quia responderetur, quod licet si post citationem desissent non incidat in peccatum Turpilliani, que autem inscriptionem non habet locum; nihilominus in expensis, & damnis ex citatione sequentis condemnandus est, iuxta dictam legem 3. C. *qui accusare*, legem *enim quæ 79. in princip. ff. de iudiciis, cap. calumniarum, de penis*: docet Glossa a. in presenti, verbo *Sed videtur*. Et etiam additio in iustitiam convenit valet, iuxta textum in *Licet apud a. f. 4. vers. Si quis libello, ff. de iniuriis*. Quod si insites, in presenti casu Canonicos post citationem desistentes nullatenus condemnari, immò Innocentium asserere ex iuris permissione non esse illis imputandum, quod desistere voluerint, ut habetur in *dist. vers. Quia verò*: Respondet Glossa, Canonicos excusari ab eiusmodi condemnatione, quia nuntius ab eis missus crimen deserendo excecisset mandatum, cum ipi nunquam accusare intenderent. Quæ Glossæ solutio communiter refellitur ab Abbate in presenti, *nom. 5. Auzania nom. 7. ex quorum mente dicendum est, Canonicos non fuisse condemnatos in expensis, quia Archiepiscopos ad eorum petitionem citatus non fuit; sed tantum à Coelestino III. Innocentij prædecessore ex officio citatus: quia sententià admittit, cessat alia difficultas, cur videlicet Coelestinus contra legem 2. vers. ex longinquo, Cod. de exhib. reu. Archiepiscopum citatum antequam accusaretur accusationi inferberet. Cui difficultati non satisfaciunt Abbas *nom. 2. Aretinus nom. 2. qui asserunt, dictum versiculum ex longinquo, non sequari in Curia Romanæ. Verius dicendum est, textum illum agere de citatione ad instantiam, & petitionem accusatoris, ut notat Glossa ibi, verbo Assensus, non verò de citatione facta officio iudicis. Nec tamen obstat textus in *Antib. qui tenet, Cod. quomodo & quando*, ubi post citationem non licet auctori desistere. Nam respondetur textum illum tantum procedere in causis civilibus, non verò in criminalibus, ut docuerunt Innocentius & Cardinalis in presenti, quos sequitur Anania *nom. 3. Videndus Donel. lib. 22. cap. 5.***

13.
Dissolvit
vtr. ab-
soluta
748.

Nec obstat secunda difficultas suprà expensis, pro cuius solutione distinguendum est. Aut enim agitur de eo, qui accensare omittit, & non vult accusationem inchoare, qui poenitentia ductus, re integrà potest accusare, *dist. 1. 3. vers. si u, cum.* Idemque dicendum videtur in eo, qui post propositum accusationem, ante inscriptionem licetè desistit. Aut agitur de illo, qui post accusationem desistit eo tempore, quo desistere non potest, & tunc io Turpillianum incidens amplius accusare nequit, *dist. 1. a. l. quæsitum, in fine, l. ablatum t. 6. Cod. ad leg. Jul. de adul.* Si autem desistat licetè, idest post inscriptionem, sed præcedente abolitione publica, vel legali, poterit accusationem repetere, iuxta terminos legis 3. §. ult. in fine, ff. hoc tit. l. si cui 7. l. si interveniens, ff. ad Turpil. secus verò si prius præcedat abolitio, l. mulier, §. ult. ubi Glossa, ff. ad Turpil. l. t. C. de abolit. Vbi autem quis ante inscriptionem licetè desistit, & insuper legitime interrogatus, an velit prosequi accusationem, noluit, vel dixit se vitiosus non accensurum, licet postea etiam re integrà accusare velit, non est audiendus. Quo casu procedit hic textus in *vers. Nos igitur*, si qui-

dem in eius specie Canonici per Pontificem interrogati responderunt, accusare nolle. Sic etiam procedit textus in *dist. 1. accusatione*, si expensas verba illa *A. qua discedere te pressimus es.* Consonat regula legis quaritur 14. vers. *Remissionis, ff. de adilit. edit.* Sic planè non excluduntur in præsentì Canonici ab accusatione, nec silentium eisdem perpetuum imponitur ex eo tantum, quod desisterunt; quia cum ante inscriptionem, & per consequens illicetè fecerint, nihil erat eis impetandum, ac proinde nec excludendi erant. Attenditur ergo ab accusatione, quia interrogari per Pontificem dixerunt se accusare nolle: in quo sensu Innocentius dum in *vers. Nos igitur*, eos excludit, non expendit præcipue desistentiam, de qua in *vers. sequenti*: sed interrogationem, & responsum eorum; & sic non satis probat textus hic eam conclusionem, ad quam expenditur, & commendatur per Abbatem *sum. 4.* & similiter dum Pontifex in *dist. vers. Nos igitur*, Canonicos repellit, & perpetuum eisdem silentium imponit, non procedit specialiter in Romano Pontifice, vt existimabat Felius hic.

CAPVT XV.

Idem Salesburgen. Archiepiscopo.

Veniens ad Apostolicam Sedem venerabilis f. n. b. Pragen. ^a Episcopus inter alia proposuit coram nobis, quod cum esset filius ^a sacerdotis, in Ecclesiam Pragen. fuerat intrusus, & contra eiusdem Ecclesie ^a privilegium Imperiali ei liberalitate concessum, & per Sed. Ap. confirmatum, homagium dil. f. n. Duci ^a Bohemix præstitit, ac regalia ^a recepit ab eo, sic subiciens Pragen. Ecclesiam servituti. *Et infra*: Vnde nos prædictum Episcopum ad festum Resurrectionis Dominice proximè præteritum peremptorie meminimus citavisse. Idem verò Episcopus per nuncios, & litteras ad suam excusationem viarum discrimina, ^b consecrationem christiatis imminentes allegavit. Licet autem excusationes huiusmodi, sicut erant, friuolas existimantes, ipsum reputaverimus contumacem, nec ^a procuratores eius in causa possemus recipere criminali: eis tamen dil. fil. n. G. sancti Angeli, & H. sancti Eustachij Diae. Card. concessimus auditores, vt si possent, illum aliquatenus excusarent. Cùmque prædictus A. coram eis repetisset obiecta, ei fuit ex adverso responsum, quod cum olim super hoc ad ven. f. n. Margdeburgen. Archiepiscopum litteræ fuerint impetratæ, idem A. qui contra Episcopum solus agebat, in obiectorum se videns probatione deficere, depositis vestibus, & pedibus nudis, ad pedes eius humiliter se prosternens veniam postulavit, & quod adversus eum calumpniosè processerat, est confessus. Cæterum cum super hoc mandato stare eiusdem Archiepiscopi iuravisset, ipse præcepit eidem sub debito præstiti iuramenti, vt contra eundem Episcopum de cætero talia proponere non auderet. Nos igitur intellectis per Card. eosdem, quæ fuerunt hinc inde proposita, cum nobis expressè ipsius A. confessione constaret, ipsum iuramentum præstituisse, ac tale recepisse mandatum, super impetitione dicti Episcopi silentium ei duximus imponendum: propter contumaciam tamen Episcopo citationem, & purgationem propter infamiam indicentes.

NOTÆ.

1.

^a Salesburgen.] Ita etiam legitur in tercia collectione, sub hoc tit. cap. 1. & præfatus Decretalis missa est Adalberto Regi Bohemix, cuius tempore introiti fuerunt in eadem Ecclesia Henricus Præpositus, & Conradus 3. vt refert Bucellinus tom. 1. Germania, fol. 43. De hac Metropoli

nonnullis notati in cap. 1. de coning. servor.

^b Pragensi.] Pragensis civitas est Regni Bohemix, in qua primus Boleslaus II. cognomato Pins, Dux Bohemix, & Moravia, facultatem instituendi proprium Episcopum à Pontifice Ioanne IX. & Orhone I. Imperatore impetravit anno Christi 967. qui Metropolitano Mogontino subiectus, ab eo consecrationem acciperet,

2.

ab

ab Imperatore verò regalia, vt refertur Agecius in *chron. Bohemia*, ibi: Anno 966. in Quadragesima militum solennis legatio à Boleslao Duce, & vniuerso Bohemorum Clero ad Ottonem Imperatorem, vt Maiestatem eius nominis Ducis, & totius populi sapientem pro licentia Episcopi constituendi, & vt Adaloesium eius velis confirmare, vt Praga fuit residentia Episcopalis. Quo voto Boleslaus positus elegit Dethmarum in Episcopum natione Saxone, vt testatur Dubravius Olomocensis Episcopus, ibi: *Iohannes IX. Romanus Pontifex nominandi Praga Praefatus Boleslaus potestatem faciebat, atque is Dethmarum quendam à Saxonia oriundum, de sententia vniuersi Sacerdotum primum in Bohemia Antistitem nominavit, curaque habuit vt solenniter, & more aliorum in Germania Pontificum à Moguntino Praefatus, tanquam sanctae Metropolitae, inauguraretur, atque regalia ab Otone Casare acciperet. Refertur Aubertus Mireus de rebus Bohemiae cap. 7. Goldastus de Regibus Bohemiae lib. 5. cap. 4. nouit in cap. 9. de exceptionibus.*

3. c. Episcopum.] Daniele videlicet, qui prius fuerat Vladislai Regis Capellanus.

d. Filium sacerdotis.] Et ita irregularis, & vt illegitimus, in capax erat Episcopatus, iuxta tradita in cap. cum in causis, de elect.

4. e. Priuilegium.] Episcopi enim Pragenses, Olomocensis, Vastislauensis Regi Bohemiz non praestant homagium, sed tantum fidelitatem promittunt, ex pacto Callisti Papae & Henrici V.

Imperatoris, vt ex aliis narrat Goldastus de Regibus Bohemiae lib. 5. cap. 3.

f. Duci Bohemiae.] In aliis libris legitur Regis & relict, nam ab anno 1088. seu 1061. Vastislai Dux Bohemiz, ab Henrico IV. Imperatore Rex creatus fuit, licet regis deinceps honor ad annum 60. interceptus fuerit: & postea Vladislai II. à Friderico Barbarossa Imperatore Rex Bohemiz creatus fuerit: sed post ipsum denud interregnum fuit vique dum anno 1197. Primislai, dictus Orthoceras, Vladislai Regis filius, à Philippo Imperatore manu propterea coronatus Moguntiae in conuentu Principum, tertius Rex Bohemiz fuit, de quo agitur in praesenti; ex quo tempore regia dignitas in ea prouincia continuata est, vt refert Aubertus Mireus cap. 2. de rebus Bohemiae.

g. Regalia recepit.] Iuxta morem, quem tenuit, & illustrat in cap. de elect.

h. Consecratione chrismatia.] Quae necessitas facienda est ab Episcopo in feta quinta maiotis hebdomadae, vt probant in cap. quanto, de consuetud.

i. Procurare eius.] Ad excusationem delicti, nam ad proponendas causas absentiae etiam in iudicio criminali procurator admittitur, l. forum 33. ff. de procurat. l. res, C. de accusat. Salcedo in praxi, cap. 51. quod licet expulsi in cap. non, de procurat. & textum hunc illustrat in cap. minus, de iuricor.

CAPVT XVI.

Idem Sancti^s Fridiani Priori, & Magistro B. Canonico Pisan.

Sper his, de quibus nos consulere voluistis, inquisitioni vestrae breuiter respondemus, quod tribus modis valet crimen opponi, denunciando, excipiendo, & accusando. Quando crimen in modum denunciationis opponitur, ad denunciationem non est inscriptio necessaria: sed cum in modum accusationis obicitur, oportet inscribi, quoniam ad depositionem instituitur accusatio, sed ad correctionem est denuntiatio facienda. Cum autem excipiendo fuerit crimen obiectum, distinguendum est, quare opponatur, & quando: si autem obicitur vt ab accusatione, vel testificatione aliquis repellatur, non est inscribi necesse: sed cum opponitur, vt quis à promotione officij, vel beneficij excludatur, si ante confirmationem obicitur, non cogitur quisquam inscribere, quia crimen hoc modo probatum impedit promouendum, sed non deicit iam promotum. Post confirmationem verò, cum scilicet promouendus fuerit aliquis, aut consecrandus, quia ab obtinendo repellit, & deicit ab obtento, ad extraordinariam quidem poenam secundum arbitrium discreti Iudicis, citra vinculum tamen inscriptionis est excipiens astringendus, si defecerit in probando: pro eo, quod crimine sic probato, perdit quod per electionem, & confirmationem ei fuerat acquisitum, sed ob hoc prius habitum non amittit: licet enim agatur de crimine, non est tamen huiusmodi questio criminalis. Vnde per procuratorem potest rite tractari. Clericus autem, qui pro eo, quod variauerat, & vacillauerat, coram nobis, de mandato nostro captus est, & detentus, infamiam non incurrit. Ceterum volumus, & praesentium vobis auctoritate mandamus, vt super inquisitionis articulis, tam de fama electi, quam litteris contra eum sub nomine longè maioris, & sanioris partis Capituli destinatis, cogatis testes, qui nominati fuerint, perhibere testimonium veritatis.

NOTÆ.

Antili Fridiani.] Ita etiam legitur in tertia collectione, sub hoc tit. cap. 3. & in cap. super his, de penis, cap. super his, de test. cogend. ubi extant aliz partes huius textus. Eius historiam etiam in cap. cum litteris, de testibus.

1. **b** Ad correctionem ejus decurcanti.] Nam cum per viam exceptionis crimen obicitur in iudicio civilis, ut cap. si consilium 12. cap. ad petitionem 22. hoc tit. l. Papinianus, §. finis, ff. de iustitie, testam. non agitur principaliter, ut quis puniatur, sed ut à iudicio excludatur; quia exceptio est actionis exclusio, l. 2. ff. de except. cap. 2. de ordin. cognit. Nec tunc obstat textus in cap. cum quis 4. de res. lit. §. sol. ubi opponens exceptionem criminis contra agentem de spoliatione, non auditur, quia hoc modo criminaliter agi dicitur. Quia dicendum est, in eo textu crimen oppositum non fuisse per modum exceptionis, sed principaliter agendo per viam reconventionis, & accusationis, ut constat ex illis verbis, obiciendo crimen agere non potest, ut docuit Berolus in cap. 1. de iudicio, num. 73. Aliquando tamen & qui etiam appositus per modum exceptionis, si in eius probatione defecerit, puniatur, ut in cap. 1. §. adiacentibus, de stell. in 6.

c Procurator.] Quia aliis si iudicium esset criminale, non admittetur, iuxta tradita in cap. sua, de procurator.

COMMENTARIUM.

2. **CONCLU-**
SIO TRAN-
SDITUR, ET
PROBA-
TUR.

EX hoc textu sequens communiter deducitur assertio: Accusanti criminaliter ad vindictam, inscribere debet denunciatum veri non item. Probant eam textus in cap. non probaverit, cap. mandasti 10. 2. quæst. 5. cap. quisquis, cap. qui crimen 2. quæst. 8. cap. 8. 3. quæst. 9. cap. nullus, §. inscripsi 4. quæst. 4. cap. qui calumniatus 5. quæst. 6. Synodus Constantinopol. can. 6. ibi: Quam finitima pena accusatores inscribant, subiiciunt eam, §. quid per calumniam intendat. Et l. 3. l. si cui 7. ff. de accusat. l. si quis 8. Cod. end. tit. l. 2. §. penult. ff. ad leg. l. de adult. l. vlt. ff. de iuriis, l. si quis obrepserit 99. ff. ad leg. Cornel. de falsis, l. 1. Cod. ad Turpil. l. vlt. Cod. de iniuriis, l. 2. Cod. de exhib. rei, l. 3. Cod. de his qui accusare, l. 4. Cod. Theodof. de custod. reor. l. 1. Cod. Theodof. de accus. ibi: Nullus secundum iuris præscriptum crimen, quod intendere proposuerit, exequatur, nisi subeant inscriptionis rationem. Et l. 8. 9. 14. & final. end. tit. l. 3. Cod. de famulatu libellis. Illustrat vltis congeßus à Barbosa in præfati, Ant. Augusti, in epist. iuris lib. 30. tit. 15. Fomerius in notis ad Cassiodorum lib. 6. epistol. 15. Ant. Mathæus de crimin. ad titul. de accusat. cap. 6. per totum, Petrus Herod. lib. 1. Pandect. tit. 3. §. 1. Bignonius in not. ad veteres format. cap. 19. Paulus Idumay in notis ad Innoc. III. lib. 2. epistol. 101. Scipio Gent. ad Apulei. apolog. cap. 2. fol. 14. Vultetius de iudic. lib. 2. cap. 4. & 5. num. 233. Anton. Augustin. in notis ad con. Hadriani, can. 7. tom. 9. Concil. Bini, Richardus ad leges 32. Tabul. cap. 25. in princip. Cuius in l. 6. Cod. de accusat. Hunnius ad Treut. volum. 1. distict. 22. quæst. 56. D. Ioannes Vela de modo procedendi, cap. 5. num. 26. P. Gregorius lib. 32. synag. cap. 7. num. 6. & lib. 5. partit. tit. 9. cap. 4. num. 3. Olusid. lib. 18. Donel. cap. 10. libro 4. D. D. Ioannes Suarez ad leg. Aquil. lib. 1.

cap. 2. num. 20. Brillonius lib. 1. sectel. cap. 1. Titul. differt. 43. in iud.

Sed pro dubitatio ratione in præsentem assertionem ita insurgo. Valde Reipublicæ interest, ut delicta non remaneant impunita, & sint qui crimina deferant, etque in iudicio accusent, l. inde Nervatium, cum vulgaris, ff. ad leg. Aquil. Sed si accusator cogitur inscribere, & ita perne rationis se subicere, nemo audebit accensere, cum facile absque propria calumnia possit in accusatione deficere, aut quia non plene probavit, propter repulsionem testium, aut impetitionem advocati; vel quia testes à potentiore aduersario sobornati verum taceant: igitur ne delicta maneat impunita, cogi non debent accusatores ad inscribendum accusationi cum sui capitis aperto periculo. Deinde ex pars assertionis, ubi doceror, denuciatores inscribere non debere, difficiilia redditur; nam delictorum criminum, si quos per calumniam denunciarentur, poniuntur, l. 2. in princip. §. D. Pius, l. Senatus 15. §. 1. & 2. l. res que 22. §. vlt. cum duabus legibus sequentibus, ff. de iure fisci: late probat Amaya in l. 1. Cod. de delat. num. 19. igitur in hac parte nulla est differentia inter delatorem, & accusatorem.

Adhuc tamen defendenda est præfata assertio, pro cuius expositione sciendum est, iure civili Romanorum certum fuisse formam cartæ tendorum iudiciorum publicorum, quam recenset eruditus Brillonius lib. 2. sectel. cap. 1. licet postea extra ordinatè quædam de criminibus capisset, ut restatutur Consuli in l. ordo, ff. de public. indic. l. in Senatusconsultum, §. 2. ff. ad Turpil. l. 1. §. vlt. l. hodie, ff. de penis. Et primò, qui alium accusare volebat, deferrebat ad Prætozem, vel eum qui iurisdictioni criminali præerat, nomen rei, petens, ut inter eos recipere: & si præfens erat reus, vocabat, docebatque eum ad Prætozem: si verò abesset, delato nomine, atque inscriptione factâ, reus citabatur, exhibebaturve. Tacitus lib. 2. annal. ibi: Marcus Vinus mittens Plinî, ut Romam ad dicendum causam veniret: ille eludens respondit adfutorum, ubi Prætor, qui de beneficiis quæretur, res, atque accusatoribus diem prædixisset. Seneca in apulei. col. Ducit illam ad tribunal Amy: ut lege Cornelia, quæ de sicariis lata est, quæretur: postulat nomen eius recipi, edis subscriptionem, occisos Senatores 30. Equites Romanos 315. Cicero 4. in Verrem. Hic tum repente Pacilius quidam homo egratus, & levis accessit: ait, si liceret, nomen abjectis deferre se vellet. Ille vero, & licere, & fieri solum, & se recipere. Sequatur inscriptioni, quæ nihil aliud est, quàm professio accusantis, quâ profuturæ exempli gratiâ Titium deferre ex lege Aquilia; eumque reum à se peractum iri. Et licet inter inscriptionem, & subscriptionem accusationis nihil interesse existimet Vultetius de iudicio lib. 2. cap. 4. num. 119. quia subscriptio post inscriptionem ponitur in l. si cui 7. ff. de accus. l. si obrepserit 29. ff. ad l. Cornel. de falsis, l. si quis sermo, Cod. de accusat. & promissæ accipiuntur in l. vlt. ff. de primat. delict. l. final. ff. de foris, l. Aitales 24. ff. ad leg. Cornel. de falsis, l. 2. Cod. ad Turpil. Tamen vetus ius, multum intercedit inter scribere, & subscribere. Inscribere dicitur accusator, cum reum se aliquem facere alius criminis profuturæ libello: quæ inscriptio libelli appellatur, & eius forma extat in l. libellorum

3. **TRAN-**
SDITUR
PROBA-
TUR.

4. **DE IN-**
SCRIPTIONE,
ET
PROBA-
TIONE.

lorum 3. ff. de accusat. in Glossa Basilic. lib. 60. tit. 42. Inter veteres formulas Marculi cap. 29. apud Apuleium in apolog. cap. 1. & ex eandem monachi fehedu ita transferibit Brisson. lib. 5. formul. Ego ipse adversum te in rationibus publicis adfisso: si te inuisti interpellare, & ceteris exinde apparere, eadem poena, quam in te vindicare pulsavi, me infringere, atque conscribere paribus tuis esse damnamdam, & pro rei totius firmitate manu propria firmo, & bonorum virorum iudicio roborandam dabo. Subscribere est confirmare inscriptionem, eam is, qui libellum dedit, vel alius pro eo, si literas nesciat, subscribit se professum esse, vt in dist. l. 3. & hzc subscriptio est quasi vinculum, quo se accusator ad poenam talionis obligat, si temere, & falsè accusauerit, aut ream non peregerit, l. si cui crimen, ff. de accusat. l. 11. C. Theod. de accusat. l. 8. C. Theod. de iurisd. ostendit Bassamon in caa. 131. Synod. Carthag. Ideo libellum hunc, vinculum talionis dixit Catinar. epist. 51. & 138. & ita idem est qui inscribit, & subscribit, licet alim alius esset, qui ream deferret, & inscribebat, alius qui subscribebat, quales erant causidici, qui se accusaturi longebant, vel iurandi, vel obseruandi gratia, vt Aferrius notat 1. in Verrem: Subscriptores dicuntur, inquit, qui adiuvare accusatorem causidici solum, quos oportet summis agere, quam dicat ille, quem sequuntur. Nec solum chartarum causa, atque iuandi accusatorie adhiberi solem, sed etiam vt ne facile corrumperetur. De hac subscriptio Cicero loquitur in epistola ad Q. Fratrem Gabinium: De ambigua reum fecit P. Sylla, subscribente primigeno Memmio. Tacitus lib. 1. annal. Nec malio post Grannium Marcellum Praetorem Bithynia Quæstor ipsas Cepio Christipinus Maiesian postulat, subscribente Romano. Hispano. Idem Cicerone 1. Ver. ibi: Ipse nihil est, ac venis poenam cum subscriptioibus exercitatis, & discretis: est tamen hoc aliquid, tamen non est satis: omnia enim in rebus is, qui princeps in agendo est, omniissimus & paratissimus esse debet. Et max: Castodem, inquit Cælius Tullio, me apponit. Quid tibi quomodo custodibus opus erit, si te senat ad meas captas admiserit? qui non solum, ac quid emoret, sed etiam, ne quid asserat, castridius sit. Eleganter Symmachus lib. 1. epist. ibi: Quid sit conditio is inscriptionis, nescio pro ceteris, pronisum est enim, ac quia temere in alieni capite discrimen irrueret, nisi se idem prius poena sponte vinceret. Ad quod respicit textus in l. penult. C. de accusat. in illis verbis: In causis criminalibus dignum est, vt inscriptiones proponant, que videlicet magnitudinem sceleris, tempusque designent, vt alteram partem digna seculo temere possit auctoritas. Alteram partem, inquit Imperatores, hoc est accusatorem, vel reum, accusatorem, si se fecerit: reum verd si accusator vera detulerit, l. an prius, C. de calumniar. Cuius etiam inscriptionis singularis locus erat in l. causat, C. Theodof. de iurisd. Et quia accusator sese inscribebat ad eandem poenam, sese ad poenam talionis adstringere dicebatur: Eleganter Festus Pompeius ibi: Talionis meminerunt fieri ait Verrius hoc modo: Si membrum rupsit, in eum eo poena, talis esse. Nec id quid significet, indicat: puto quia unam est, permittit.

D.D. Gomez. in Decretal. Tom. V.

tis enim lex parem vindictam. Iudorus lib. 5. etymol. cap. 27. Gellius lib. 2. noct. cap. 1. quod respiciunt Damiani Papa epist. 3. ad Stephanum Archiepisc. Adrianus Papa can. 48. ibi: Qui crimen obicit, scribat se probaturum reuera, & se ibi causam agat, ubi crimen admittit: vt qui non probauerit quod obicit, poenam, quam iudicabit, ipse patiar. Ex quo emendandum est Gratianus, qui falsè retulit canonem hunc in cap. final. 3. quæst. 6. per hzc verba: Qui crimen obicit, si sit se probaturum: reuera ibi causa agatur, ubi crimen admittit. Cùm transcribere deberet pro verbo fiat, verbum scribat, vt notauit Ant. Augustin. in notis ad canonem 98. Hadriani Papa, & lib. 2. de emendatione Gratiani, dial. 14. de quæ talionis poena accipere possumus celebre decretum Damiani Pontificis telatum inter eius decreta, tom. 2. Concilior. part. 1. pag. 172. in illis verbis: Si quis Episcopum, aut presbyterum, aut diaconum falsis criminibus impulerit, vel accusauerit, & probare non poterit, nec in fine datus ei esse communionem. Quæ verba de adulterij crimine esse accipienda existimamus id, quia poena hæc primis illis Ecclesiæ temporibus pro adulterio imponebatur, can. 7. Concil. Antiochen. D. Cyprianus in epist. ad Antemium Episcopum, can. 64. & 65. Concil. Hilarij, ubi probatur: notauit Scipio Gentil. ad Apolog. Apulei in dist. cap. 2. Etiam sciendum est accusantem in alia inscriptionis parte cauere debere se persecutorum in iudicio vique ad sententiam. Quæ cautio non per simplicem repromissionem datur, sed fideiussoribus prestat. l. 7. §. 1. ff. de accusat. l. 9. ibi: Fideiussor de lite excedenda adhibitus fuerit; C. de accusat. l. 1. & l. 1. C. ad Turpil. atque huiusmodi fideiussori meminit Paulus in l. post legatum §. 6. sunt qui putant, ff. quod legat. & hanc cautionem olim ante vocationem in ius, vni cum inscriptione prestatam fuisse, constat ex dist. l. 1. C. ad Turpil. Et licet hæc cautio iam exsoluerit, optimam tamen rationem alim indanda fuit, vt temeritas accusatoris etiam damno pecuniario coeteretur. Habebat enim hæc cautio aliam partem, de custodia videlicet rei accusate, seu eius modò, quam prosequitur Vultius de iudiciis lib. 2. cap. 5. num. 342.

Sunt tamen certi casus, in quibus inscribere accusator non cogitur. Et primò in leuioribus delictis, quia audiuntur, & discutuntur de piano, absolutius videbunt reis, seu iustis castigari: seruus verd flagellus verberatur, l. l. l. 6. ff. de accusat. l. vltim. 18. §. vltim. ff. de quæstion. l. nequaquam §. 5. de piano, ff. de officio Proconsul. in grauioribus verd, quia de vita, & fortunis hominem agitur, ideo maior obseruatio fulcrum decidit: in leuiora autem, quæ non ita magni periculis sunt, de piano discreti debent. Deinde cessat inscriptio cum mulier soam, suorumve iniuriam persequitur, l. de crimine 11. C. qui accusare: quod & in delictibus obseruatur, qui suam, suorumve iniuriam persequuntur, l. de re 18. §. sed si communionem, l. filius 38. §. final. l. delictum 44. ff. de iure fisci, l. ex libertate 26. ff. de liberal. causa. Vel si patrem mortem liberorum, aut contra liberi necem parentum exequuntur, eum enim eo casu cessat calumnia, Senarufconsulti que Turpiliani poena §. 1. & 4. C. de calumniar. l. vlt. ff. de public. iudic. l. in Senarufconsulo 25. §.

D

007

Excipit
non p
tentia
vlt.

ees, ff. ad Turpil. ad quid inscriptio? De marito accusante adulterum, dicimus in cap. maritus, de adulteriis. Item cessat inscriptio, cum quis crimen in aduersarium retorquet, quia quamuis eo ipso actoris partes sustinere videatur, inscriptione tamen non oneratur, arguendo legis 1. §. si publice, & sequent. ff. ad leg. Jul. de adul. l. qui cuius maior 14. §. libertus, ff. de hunc libere, & expressit in hoc textu ab Innocentio doctore, quia non verè accusat, qui retorquet crimen, cum innocentie dumtaxat defendendæ gratia faciat. Quintilianus lib. 7. instil. cap. 3. ibi: Sed si quando in partibus laborabimus, universitate pugnandum est, sine inimico accusari, sine crimine reus ultra accusationem in aduersarium resistit, ut Roscius in accusatore suos, quamvis reus, non fecisset; non enim tunc est accusari, sed defensio. Quare cum ex Senatoconsulto Sylliano præmium præstetur ei, qui ex familia seruorum eandem domini indicauerit, vel accusauerit, l. in lege 35. ff. ad Syllan. non videtur accusare ut præmium consequatur, qui in alium, cum argueretur, crimen detorset, l. 3. §. verum 14. ff. ad Syllan. ubi pro vindicasse, legendum esse indicasse, notant Ant. Augustinus lib. 2. emend. caput. 19. Cuius lib. 18. obf. cap. 22. cuius textus argumento docet ex aliis Amaya ad titulum de delat. numer. 32. quod si præmium ex statuto proponatur occidenti banoitum, & aliquis eum occiderit, non vitio, sed defendendo, non assequitur præmium, quia lex non considerat, quod casu euenit, sed quod principaliter sit, l. si qui nec causam, ff. si certum pretor, l. qui iniuria 55. ff. de furis: nec lex voluit præmio afficere illum, qui non ut illi pareret, sed potius ob propriam defensionem id efficit, l. vnum 67. §. si de Falcidia, ff. de legat. 2. l. 1. §. ff. de censu. & demum. Alias quoque exceptiones aliqui deducunt ex l. ne quis 6. C. de Iudiciis, l. 4. C. de apostasia, l. 4. C. de hereticis, l. ea quidem 7. C. de accusat. sed non recte, ut probat Anton. Matthæus ad tit. de accusat. cap. 6. in fin. Illud tamen notandum est, tantum hanc inscriptionem locum habere in iudiciis criminalibus, siue ordinariis, siue extraordinariis: in iudicio autem ciuili, quamuis de crimine agatur, non cogitur accusator in crimen subscribere, quoniam in eo pecuniariter agitur, l. vltim. ff. de priuat. delictis, l. final. de furis, l. si cui 4. §. si verò, C. de speriali, quoniam Bignonius innotat ad veter. formul. caput. 20. ex eo probat, etiam in causis ciuilibus pro expensis subscriptionem desiderari.

6.

TRADITVS
DECIMVS
RATIO.

Ratio autem cur ita diligenter hæc inscriptio in accusatione desideretur, ex eo prouenit; nam cum græue sit aliquem in iudicio criminari, in quo plerumque de vita agitur, accusari, compescenda erat accusatorum iniuria, siue, ut loquitur Vlpianus in l. final. ff. de furis, temeritas apertius coercenda, ut ita non facile quis prolixius ad accusationem, cum sciat insultum sibi accusationem non futuram, l. si cui 7. ff. de accusat. Siquidem per hanc inscriptionem obligat se fideiussoribus datis ad prosequendum iudicium, qui crimen, C. qui accusant, l. 1. §. ex inique, C. de exhibend. reis. Et etiam proficietur se probaturum crimen delatum, aliis poenam eandem, quam metetur crimen

illud, subitorem, cap. quisque, cap. qui crimen 2. quest. 3. cap. nullus, §. inscriptio 4. quest. 4. dist. l. 2. C. de exb. reis. Ad quam Theodosii constitutionem texepit Symmachus lib. 10. epist. 63. ad Theodos. ibi: Quid habere conditum inscriptio, nullus pro ceteris: prouisum est enim, ne quis temere in alium capitis discrimen irrueret, nisi se idem prius pæna sponsione vinceret. Quod autem scripsit Theodosius in dist. l. 2. accusatorem videlicet subscriptione facta, se vincere recipere pæna, ita accipiendum est, quod subiciat letaliori, & simili supplicio, ut idem Theodosius expressit in l. vltim. C. de calumniis, l. vltim. C. de accusat. notant D. Ioan. Suarez ad l. Aguil. in apparat. cap. 2. numer. 22. Gothofr. in l. 1. §. C. Theodos. de accusat. Sic ergo cum hoc periculo capitis sui accusator facile à falsa accusatione retrahetur, & ea quæ probare non poterit, in aliter non conuictus, postquam in periculis delictis eligeret agere ciuilliter (in quo iudicio non exigitur inscriptio,) quàm criminaliter: vnde merito Innocentius in præfati docet, accusatorem debere in accusatione inscribere, quia agit ad poenam, & vindictam; denuntiatorem verò non tenet subscribere, quia tantum correctionem intendit: nec eum, qui retorquet crimen, quia potius excipiendo, vix se defendat, quàm ut accuset, facit.

Nec obstat dubitatio super adducta, quæ adeo efficax est, ut ab hac inscriptiois solennitate, atque pæna talionis recessum sit hodie generaliter consuetudine, ut probant Scaccia de iudicio cap. 15. numer. 14. Angulano lib. 2. de legibus, caput. 7. numer. 24. quod ea possitimum ratione factum ait Gaillus lib. 1. de pace publ. caput. 9. numer. 3. ne metu propinxi saluis quibus ab executione criminis, id est ab accusatione, desisteret, & sic etiam sceleratissimi impuniti remaneret. Sed licet iure prætorio poenam talionis abrogatam fuisse censent Gallos dist. cap. 9. numer. 3. Menoch. de arbit. lib. 1. questio. 79. numer. 5. per textum in §. parte, Instil. de iniuriis; merito eos refellit Vultius de indic. lib. 2. cap. 4. Constat tamen huius inscriptionis necessitatem aliquando remissam fuisse ex l. §. C. Theodos. de accusat. idque Antonini Imperatoris rescripto eamdem fuisse testantur Valens, Gracianus, & Valentin. in l. final. C. Theodos. ad leg. Corneli. de falsis; tamen si Iustin. eo ipso quod hæc rescripta in suum Codicem non traxit, necessitatem pristinam huius inscriptionis restituisse videatur. Et licet generali consuetudine hodie hæc inscriptio ab vñu fortis desisset, non tamen ideo impunitus remanet, qui per calunniam accusauit, immò extra eod. nem arbitrio iudicis puniunt usque ad poenam talionis in causis grauioribus, ut dicemus in caput. 1. de calumniis. Nec obstat quod de delatoribus dicebamus; nam denuntiatores, de quibus agit Innocentius in præfati, ideo non inscribunt, quia ad correctionem tantum reum criminis defertunt: delatores verò spe præmij, & lucri id faciunt, l. 2. in princip. ff. de iure fisci. Vnde valde exoti semper delatores fuerunt. Apud probos Imperatores, humani generis inimici dicebantur in l. 2. C. Theodos. de delatoribus; immò & variis poenis afflictiuntur, ut probauit in cam. 75. Concil. Alibi, & illustrat Demsterus ad Responsum lib. 9. fol. 937.

Sed adhuc præfati assertioni obstat textus in EXPOSITVS
cap.

7.
DISIOLVTVS
TYR DVRE-
TANVS RATIO.

8-

CAP. I. DE
CALUM-
NIAT.

cap. 2. *de calumnia*. ubi denunciator per calum-
niam poenā suspensionis puniatur: ergo quia
non tantum accusator, verum & denunciator
subscribere debet, cum desitens in probatione
criminis illati equali poenā puniatur. Cui dif-
ficultati ut satisfiat Cardinalis ibi, docet de-
nunciatorem in ea specie non ad correctionem,
sed ad vindictam egisse: ideoque quia per ca-
lumniam delatatur, à beneficio suspendi. Sed hæc
solutio quia nimis restringit textum illum, com-
muniter à Doctores refellitur: quare ea omis-
sā veridicū dicendum est, denunciatorem non te-
neri inscribere, si ad correctionem tantum
agant, ex presenti texto, & cap. *licet*, infra
hoc tit. Si autem se offendant probationi deli-
ctorum, ad eorumque instantiam procedatur ad
inquisitionem, quia tunc quodammodo accu-
satorum partes sustinent, puniantur propter ca-
lumniam. Accedit quia in *dist. capit. 2. agitur*
de calumnia commissa à subdito erga Prælatum,
que omnino puniendi est, eum aliā facile sub-
diti Prælatos suos, à quibus passim inscriban-
tur, obviaturque, dissimulantur falsis illa-
tis criminibus. Nec interest, quod delator non
inscribitur, quia non valet argumentum: Er-
go, non puniatur; nam qui contra electum,
& non confirmatum crimen excipit, non inscri-
bitur; quia ad poenam non agit, ex presenti tex-

tu: & tamen si in probatione deficiat, puniatur,
cap. 1. *de elect.* in 6.

Deinde presenti assertioni obstat textus in
cap. 41. *Concil. Alsford.* in illis verbis: *Non*
licet presbytero, nec diacono quemquam inscribere,
sed in vice sua si causam habuerit, aut fratrem,
aut quemcumque facinorose roget. Ex quibus de-
ducitur, non solum accusatorem non teneri
inscribere, verum nec licere illi inscribere. Pro-
culus canonis expositione sciendum est, non li-
cere sacerdotibus laicos accusare, cap. *sicut* 6.
ibi: *Sicut sacerdotes, vel reliqui clerici à sacra-*
rium laicorum excluduntur accusatione, &c. nisi
prostitutione facta se poenam sanguinis non in-
tendere, cap. 1. *de homicid.* in 6. illustrent. Co-
miser. in *Clement. si furiosus*, part. 2. §. 5. Gomez.
lib. 3. *variar.* cap. 1. num. 35. *Itanço de presb.*
fol. 268. Unde in *dist. can. 41.* dum PP. silentio
non licere presbytero, vel diacono quemquam
inscribere, accipitur vel, idest quemquam ac-
cusare, & inter eos criminum deferre: sed si pro-
priam presbyter prosequatur iniuriam, vice sua,
idest pro eo alius secularis inscribat, ut ita pre-
byter ab accusatoris munere accuset, & emenda-
tionem iniuncti sibi illati assequatur: non ergo
in eo canone improbari solennitas inscriptionis,
sed tantum iuxta veteres canones prohiberi PP.
presbytero, aut diacono laicos accusare.

9.
EXIOMITT
CAN. 41.
CONCIE.
ALSTAFORD.

CAPVT XVII.

Idem Vercellen. Episcopo, & Abbati de³ Cilioto.

Valiter, & quando debeat Prælatus procedere, ad inquirendum, & pu-
niendum subditorum excessus, ex auctoritate noui, & veteris Testamenti
colligitur evidenter, ex quibus postea super hoc processerunt canonicæ sanctio-
nes. Legitur enim in ^b Euangelio, quod ille villicus, qui diffamatus erat apud
Dominum suum, quasi dissipasset bona ipsius, audiuit ab illo: Quid est hoc, quod
audio de te? Redde rationem villicationis tuæ, iam non poteris villicare. Et in
^c Genesi Dominus ait: Descendam, & videbo, utrum clamorem, qui venit ad me,
opere compleuerint. Ex quibus auctoritatibus manifestè probatur, quod non so-
lum cum subditis, verum etiam cum Prælatus excedit, si per clamorem, &
^d famam eius excessus ad aures superioris peruenierit, non quidem à malevolis,
& maledicis, sed à prouidis & honestis, nec semel tantum, sed sæpe, quod
clamor innuit, & diffamatio manifestat, debet coram Ecclesiæ senioribus veri-
tatem diligentius perferutari, veli rei poposcere qualitas, canonica districtio cul-
pam feriat delinquentis, non tanquam sit actor, & iudex, sed quasi deferente
fama, vel nuntiante clamore, officij sui debitum exequatur. Licet autem hoc sit
obseruandum in subditis, diligentius tamen est obseruandum in Prælatis, qui
quasi signum sunt positi ad sagittam: & quia non possunt omnibus complacere,
cum ex officio teneantur non solum arguere, sed etiam increpare, quin etiam
interdum suspendere, nonnunquam verò ligare: frequenter odium multorum
incurrunt, & insidias pariuntur: & ideo sancti ^e Patres prouidè statuerunt, ut ac-
cusatio Prælatorum non faciliè admitteretur, ne concussis columbis corruat ædifi-
cium, nisi diligens adhibeatur cautela, per quam non solum falsæ, sed & ma-
lignæ criminationis ianua præcludatur. Verum ita voluerunt providere Prælatis,
ne criminarentur iniuste, ut tamen canerent, ne delinquerent insolenter, con-
tra vtrumque morbum inuenientes congruam medicinam, ut videlicet accusatio
criminalis, quæ ad diminutionem capitis, idest ad degradationem intenditur, nisi
legitima præcedat inquisitio, nullatenus admittatur: sed cum super excessibus suis
quisquam fuerit infamatus, ut interim iam clamor ascenderit, quod diutius sine
scandalo dissimulari non possit, nec sine periculo tolerari, absque dubitatione scrup-

pulo ad inquirendum, & puniendum eius excessus, non ex odij fomite, sed ex charitatis procedatur affectu. Quod si grauis fuerit excessus, etsi non degra-deretur ab ordine, ab administratione tamen amoueat omnino: quod est secundum Euangelicam veritatem, à villicatione villicum amoueri, qui non potest villicationis suæ dignam reddere rationem. ^f Hunc igitur ordinem si circa ven. f. n. ^g Nouarien. Episcopum obseruastis, inuentionem & discretionem vestram in Domino commendamus: si verò qualibet causâ prætermisistis eundem, ne per leue compendium, ad graue dispendium veniat, adhuc ipsum ordinem tempore congruo volumus obseruari, ne inde nascantur iniuriæ unde iura nascuntur: & ideo disc. vestram rogamus attentius, & monemus, obsecrantes in Christo Iesu, qui venturus est iudicare viuos, ^h & mortuos, quatenus ad conscientiam vestram indicium recurrentes, si fortè contra præscriptum ordinem, tanquam homines excessistis, non pudeat vosⁱ errorem vestrum corrigere, qui positi estis, vt aliorum corrigatis errores: quoniam apud districtissimum iudicem, in qua mensura mensi fueritis, remittetur vobis: ita videlicet, vt inueniatis occasionem aliquam congruentem, per quam ne vestra vilescat auctoritas, quanto cautius, vel prudentius poteritis, supersedeatis ad præsens: quoniam ex iis, quæ inordinatè sunt acta, non potest ordinabiliter agi. Si verò præscriptum ordinem custodistis, volumus, & mandamus, quatenus omni gratiâ, & timore postpositis, Deum solum habentes præ oculis, viâ Regiâ incedentes, sine personarum acceptione in hoc negotio procedatis iuxta formam, quam vobis in altis litteris duximus exprimendam: nec timeatis aliquem hominem contra Deum, sed Deum potius contra omnem hominem metuaris. Formam verò iuramenti, quàm à clericis Nouarien. super inquisitione facienda in hoc negotio receperitis, in similibus volumus obseruari, vt videlicet iurent clerici, quod super iis, quæ sciunt, vel credunt in sua Ecclesia reformanda, tam in capite, quàm in membris, exceptis locis criminibus, meram & plenam dicent veritatem inquisitionis. *Et infra:* Constitutiones verò quas ad correctionem excessuum, & reformationem morum vos non tam fecisse, quàm innouasse cognouimus, approbamus, volentes vt eas faciatis à clericis laudabiliter exerceri, præcipientes ex parte nostra Prælati, vt laici conquerentibus plenam faciant iustitiam exhiberi, non obstantibus appellationibus frustratoriis, quas in eorum grauamem clerici frequenter opponunt, ne pro defectu iustitiæ clerici trahantur à laicis ad iudicium seculare, quod omnino fieri prohibemus: & vos ne fiat, prohibere omnibus modis sagatis. Ceterum aduersus hæreticorum fallacias sollicitudinem vestram vigilare oportet, monentes, & obsecrantes in Domino, quatenus ad extirpandum de agro Dominico lolium hæreticæ prauitatis, prudenter, & efficaciter intendantis.

NOTÆ.

1. ^a *Clilla.* Ita legitur in tertiâ collectione, *sub hoc titul. cap. 4.* sed legendum est, *Tileto*, quod monasterium est Ordinis Cisterciensis, dictum S. Mariz de Tilletis, in diocesi Aquensi, prouinciæ Mediolanensis, vres Manrique retuli in capite, qualiter 27. de iudiciis. Abbas hic electus fuit in locum Episcopi Nouariensis, de quo in præfenti agitur, & illi electo tantum rescribit Innocentius in cap. ex litteris, de excess. Prælat. non tamen constat, an sufficiens esset in eius locum, quia decessisset, an verò quia depositus fuisset virtute præsentis inquisitionis: & Vercellensis Episcopus, cui rescribit Innocentius in præfenti, postea translatus fuit ad Pisanam Ecclesiam, vt constat ex eodem capite ex litteris. De Vercellensi diocesi egi in cap. licet, de foro competenti.
- b. *Euangelis.* Luca cap. 16.
- c. *Genesius.* Cap. 18.
2. d. *Et famem.* Quæ plerumque à maleuolis procedit. D. Bernardus de consilior. Mala fama patrum obesse debet, cum ex humana suspitione

nascatur, quæ prona ad malum est, & crebrius fallitur. D. Hieronymus in epist. ad Rusticum: Multum in vitamque partem fama mentitur, & tam de bonis mala, quàm de malis bona falso rumor conclebrat. Tertul. in Apolog. caput. 2. V. Ildor. lib. 3. cymal. cap. 27. Quirilian. lib. 3. infirmis. caput. 3. & declarat. 12. & 18.

e. *Sancti Patres.* Relat. supra in cap. 4.

f. *Rationem.* Verba hoc locum relat. vident ad vers. Debet, etiam repetuntur in cap. qualiter, infra hoc titul.

g. *Nouariensem.* Nouariensis Ecclesia est in Italia, suffraganea Archiepiscopi Mediolani. de qua egi in cap. 2. de relig. dom.

h. *Vires, & mortuos.* Quibus verbis moti nonnulli PP. existimant, non omnes homines mortuos esse. Sed licet de fide non sit omnes homines mortuos fore, vt notat sanctus Thomas in epist. 2. Pauli ad Chelimb. caput. 15. lect. 8. & in 4. distinct. 43. quæstion. 1. artic. 4. Ecclesia tamen contrarium sententiam tenet, quem probat & defendit P. Karter, tom. 1. Digest. fid. test. 1. de carnis resurrectione.

Errorum

4.

[*Errorem testium corrigere.*] Sed certum est, eam differentiam verari inter iudicem delegatum, & ordinarium, quod delegatus prolati sententia, de eius nullitate cognoscere non potest: ordinarius vero de eius nullitate pronuciare valet, *l. si de propositis. 4. C. quando & quando, l. si Praef. cod. titul. leg. 1. C. de sentent. & interdict. leg. 4. C. de accusat.* Bellonus lib. 1. supputat, cap. 18. numer. 1. Tiraquel, in leg. hanc, §. hoc sermone limitat. 1. numer. 4. de V. S. ergo iudices delegati in praesenti non poterant de nullitate sententiae cognoscere, aut eam retractare. Cui difficultati respondendum est dicendo in hoc textu, iudices non protulisse sententiam definitivam, ut patet ex verbis sequentibus, *in negotio procedat*; sed tantum per inquisitionis formam contra Episcopum Novariensem protulisse: unde iubet Innocent. ut si ipsi inquisitionis formam per sacros canones praescriptam non observant, errorem iudicij corrigant, non autem sententiam, quam adhuc non protulerant, ut docuit Doctor Gabriel Henriquez in leg. 4. de Pie, numer. 12. de re iudic. An iudex teneatur retractare sententiam, cuius errorem postea agnovit, laudat & doctè disputat Theophilus Reynaud, tom. 14. tractat. 1. per totum. Ut quoniam exponamus quando iudex possit mutare sententiam iam prolatam, notanda est differentia, quae versatur inter sententiam interlocutoriam, & definitivam; nam primam potest iudex ipse mutare, *l. quod iussit, ff. de re iudic. etiam pluries*. Gratianus disputat. 147. numer. 10. Seaccia de appellatione, questio. 19. rem. 1. contras. 6. Secundam vero mutare non valet, postquam illam protulit; quia sine bene, sine malè iudicavit, functus est officio suo, *l. iudex 55. ff. de re iudic. potest tamen eam declarare, dum nihil detrahatur ex his quae decrevit, l. Paulus 42. ff. de re iudic. ubi Cuiac, lib. 6. respons. Pauli, Donellus lib. 19. comment. cap. 3. veluti si iudex condemnavit reum ut servum Stichum restitueret, cum plures huius nominis haberet, nec de quo senserit, liquidò possit ex actis constare; tunc enim declaratio nihil de novo docet, sed iam decretum manifestat, argumento ex *l. heredes 21. §. 1. ff. qui testam. facere poss. iuncta lege adeo 7. vers. Videtur, ff. de acquir. rer. dom. notantur Bobadilla lib. 3. polie, cap. 8. numer. 163. Valenzuela consil. 110. ex numer. 16. non autem est propria declaratio sententiae, quando iudex, ut quotidie contingit, lo se restituat taxationem expensarum, vel liquidationem fructuum, in quibus reum condemnavit; tunc enim definitivè super eis pronuciare potest, ut supponitur in *l. final. §. Lucius 4. ff. de condit. iudic. & docuerunt Baldus, & Salicetus in l. 3. C. de fructibus & litium expensis, Solorzano tom. 2. de iur. Indiar. lib. 2. capit. 19. numer. 41. quod facilius procedit quando fructus debentur aequè***

principaliter ac res petita, quia tunc de eis ferri potest nova sententia: textus differtus in *l. marite 31 §. ultim. ff. solut. matrim. quem explicat Noguerol. alleg. 17. ex num. 33.*

Deinde notandum est, sententiam definitivè prolatam tunc dici, quando prolata est, & nos dicimus, despecta de pronucianda ante scriptura: nam antea nondum est sententia, & ea suppleri, emendari, & immutari & corrigi valet, *l. 41. titul. 5. lib. 2. recapit. qui textus licet loquatur in auditoribus Cancellarium, viget in omnibus iudiciis, si suprema Concilium excipias, quod ex gratia potest emendare iudicatum, si viderit expedire. Textus expressus in *l. 3. titul. 21. part. 3. prosequuntur Bobadilla dist. lib. 3. cap. 8. ex numer. 163. usque ad numer. 169. Mieres de maiori. 1. part. questio. 44. numer. 3. in qua tota questione vberim agit de his, qui potestatem habent declarandi suam sententiam, Gamens decis. 110. ubi numer. 38. agit de potestate Principis; cui non solum interceptari, verum & mutare suam sententiam licet. Gratianus regni. 421. qui loquitur quando in eorum iudex vult suam sententiam reformare sine ullo intervallo, & sine petitione paria: docetque posse, quia quæ illam sunt, in ipso actus gesta videntur. Richardus in mandatis. 1. part. §. 3. ex numer. 1. t. ac tenuissimè Carleu. tom. 1. de iudic. disput. 16.**

[*Oculus criminibus.*] Quia quando per inquisitionem generalem proceditur, non possunt testes interrogati de oculis, sed de notitiis criminibus; testesque, si de oculis interrogentur, possunt ut restrictione mentali, respondendo se nescire, eo sensu iura se teneant, scilicet ut aliis detegant, ut in hoc textu docetur, iuncto capite *erubescant*, 31. distincti docuerunt Soto de ratione legend. secret. membr. 3. D. Iohannes Vela de modo procedendi, cap. 34 numer. 4. Nec obstat, quod iuramentum accipit debet secundum mentem, & intentionem eius, cui iuratur; non eius, qui iurat cap. in quocumque 21. questio. 5. quia hoc intelligendum est quando quis iurat, & servato ordine iuris interrogatur; tunc enim polam, & sine equivocatione, aut restrictione respondere rogetur; secus autem si iniuste & tyrannicè interrogaretur, non servato iuris ordine, quia sufficeret responsum verum esse ex verbis equivoce ad sensum interrogati, quoniam ad sensum interrogantis falsum esset, ut ex Navarrete & Soto probant D. Iohannes Vela ubi supra, D. Ioseph. de Retes lib. 7. opuscul. cap. 3. numer. 19.

Textus hic spectat ad secundam partem huius rubricæ, & secundum modum procedendi in causis criminalibus, videlicet per inquisitionem, de quo ageamus in cap. inquisitionis, infra hoc titulum.

5.

6.

CAPVT XVIII.

* Idem Arelatenſi Archiepiſcopo, & Valli^b Magnæ Abbati.

Cum dil. fil. Ciftercien. Abbas, & P. & R. fontis Frigidi, Sed. Ap.^e L. ad⁴ Agathen. Eccleſiam acceſſiſſent, vt in ea legationis officium exercerent, quia de ven. ſn. Agathen. Epifcopo per frequentem clamorem multa ſibi fuerant inſinuata ſiniſtra, voluerunt deſcendere, ac videre, ſi clamorem opere compleuiſſet. Ideoque tam Epifcopum, quàm Canonicos iuramenti vinculo aſtrinxerunt, vt ſuper ſtatu Eccleſiæ ſibi dicerent veritatem. *Et infra* : Quia verò non conſtitit ſub qua forma coram prædictis Legatis præſtitit^a iuramentum, virum videlicet ita iurauerit vt ſuper ſtatu Eccleſiæ plenam, & meram diceret veritatem; an ita, vt ad inquiſita veraciter reſponderet: diſc. v. per A. ſ. m. quat. eiſdem Legatis ex parte noſtra, in virtute obedientiæ diſtrictè mandetis, vt ſub qua forma iuramentum præſtiterit, ſtudeant fideliter intimare: & ſi ſecundum reſponſionem eorum ſub ſecunda forma iurauerit, aut ipſe coram nobis ſufficienter probauerit, ſe ſub illa forma iuraſſe, per depoſitiones teſtorum, quos produxerit apud Sedem Apoſtolicam conſtitutus, quas vobis ſub bulla noſtra mittimus intercluſas, aut etiam aliorum, cum nondum depoſitiones illz fuerint publicatz, nec ipſe productioni teſtium renunciare curauerit: quoniam ſecundum eandem non tenetur ex debito iuramenti, niſi ad inquiſita ſolummodo reſpondere, vos excuſationes illas, quas vobis ſub bulla noſtra mittimus intercluſas, diligenter audire curetis, & ſi eas probauerit diligenter, cum excuſationes huiuſmodi confeſſiones illas non exprimant, quæ tales ſunt, vt ad bonum, & malum valeant retorqueri, & ideo iudicari debent ex cauſa, cum ſub. ap. ob. penitus abſoluatis: cum etſi repertus fuerit culpabilis in quibuſdam, ex labore tamen, & pudore punitus, quos propter hanc cauſam incurrit, huiuſmodi levis culpa leniter ei valeat indulgeri. Quod ſi excuſationes illas ſuper dilapidatione, naufragio, & ſimonia probare nequiverit, aut ſi ſub prima forma iurauit: cum ſecundum eandem veritatem ſtacere, nec admifcere debuerit falſitatem, vos non obſtantibus excuſationibus illis, quas denuò propoſuit coram nobis, cum in confeſſionibus ſuis nullam omnino de illis fecerit mentionem, quamuis firmiter aſſeruerit, quod exceptiones plures ex illis prædictis Legatis expoſuit, quas ipſi ſcribere non curauerunt, cum hoc per ſe probare non poſſet, tanquam qui ſolus examinabatur ab illis, eum ſublato cuiuſque contradictionis & appellationis obſtaculo ab adminiſtratione Agathenſis Eccleſiæ remoueat.

NOTE.

^a *Arelatenſi.* Ita etiam legitur in tertia collectione, ſub hac ritual. cap. 5. Michaëli videlicet Archiepiſcopo Arelatenſi: de qua Metropolit nonnulla adduxi in cap. 16. de iſſu. de leg.

^b *Valli magna.* Vallis magna Ciftercienſis Ordinis duplex eſt: altera Burgenſis diœceſis, alia in diœceſi Agathenſi, de qua in libris Camere ita legitur: *Sexta filia Burgenſis Viennenſis, Vallisbena in lingua Occitana, diœceſis Agathenſis.* Reſert Martique tom. 2. annal. Ciftercienſ. anno 1150. cap. final. num. 9.

^c *Ap. Sed. Legati.* Videlicet S. Arnaldus, 17. Abbas Ciftercienſis, & B. Petrus, & Radulphus, monachi monaſterij Fontisfrigidi, Legati miſſi contra Albigenſes ab Innocentio III. & vt Albicaſum provinciam viſitaret: & poſtea

Sanctus Aroaldus creatus fuit Archiepiſcopus Narbonenſis, vt reſert Martique tom. 1. in ſerie Abbatum Cifterc. num. 17. De Ciftercienſi Ordine, & Fontis Frigidi monaſterio egi in cap. cum ordinem 6. de reſcrip. cap. ad poſitionem, de elec. cap. licet, de ſupplenda.

^d *Agathenſem.* Provinciæ Narbonenſis, de qua egi in cap. 6. de his que vi.

^e *Præſtitit iuramentum.* Epifcopus videlicet Agathenſis.

^f *Tacere.* Dubium eſt inter Doctores, an quotieſcumque reos interrogatur à iudice inſidice de proprio delicto, teneatur ipſe proprium crimen facere: Et exploſis variis ſententiis teneri ipſum, eſt poena capitali plethendos venia, veritatem dicere, probant innumeri, quos reſerunt, & ſequuntur Sanchez lib. 6. ſumma, cap. 3. dub. 19. per totum. Gutierrez lib. 1. de delictis, cap. 9. cum ſequent.

3.

CAPVT XIX.

Idem Archiepiscopo^a Tarraconensi, & Abbati Sancta Maria de
^b Populeto, & Archidiacono^c Barchinonensi.

Cum oporteat Episcopum. Et infra: Sanè venientibus ad Ap. Sed. fil. G. Grossi, & G. de^d Monte Regali, multa graua, & enormia contra ven. f. n. Vicen. Episcopum proponantibus coram nobis, quia illa non debebamus sub dissimulatione transire, vobis, frater Episcopo, ac fili Archid. inquisitionem eorum duximus committendam, illius imitantes vestigia, qui eum haberet villicum, & ille diffamatus fuisset apud eundem, quia dissipasset bona ipsius, cum eo posuit rationem. Verum dictus Episcopus antequam ad ipsum nostra citatio peruenisset, ad praesentiam nostram accedens, proposuit coram nobis, quod illi, qui enormia illa de ipso nobis fuggererant, typho malitiae potius, quam iustitiae zelo ducti nobis huiusmodi nuntiauerint, cum ipsi eius sint manifestissimi inimici, & cum eius hostibus conuerserentur, consanguineosque suos, ac complices intendant ad^e testificandum producere contra ipsum, qui ad denunciandum, seu ad testificandum admitti non debent aliquà ratione, utpote iuramenti praestitum transgressores, & aliis criminibus irreuiri. Ne verò per leue compendium ad graue dispendium veniatur, disc. v. per A. f. m. quat. nisi super iis, quae nobis sunt proposita contra ipsum, ^f famam ipsius laesam esse noueritis, vos ad inquisitionem illorum non subito procedatis. Quod si fuerit ad inquisitionem procedendum, praedictos, vel alios, quos ipsius esse constiterit inimicos, nec ad prosequendam inquisitionem, nec ad perhibendum testimonium contra ipsum Episcopum admittatis, sed per viros idoneos super iis, quae suggesta sunt, inquiratis sollicitè veritatem: & si nihil graue probatum fuerit contra ipsum, vos ei purgationem canonicam indicatis.

NOTAE.

^a Tarraconensi.] Ita etiam legitur in tertia collectione, sub hac titul. cap. 6. de Tarraconensi Metropoli egi in cap. 1. de his quae ibi.

1.
POPULETUM
VII.

^b Populeto.] Populetum monasterium est peteclebre ordinis Cisterciensis, Tarraconensis dioecesis in Catalonia, ad radices montis Pradensis. Nomen loci ab arborum frequentia sunt qui deducant: alij à crescentis domus magnitudine, quasi oppidulum dictum, quod vernacula lingua Caraluni *Pobles* vocant. Sed rectius qui à sancto Eremita eiusdem nominis deriuant, qui locum illum ab aliquot annis inhabitabat, ut referunt latius prosequentes ipsos monasterij originem, & magnitudinem *Ypes in ebron. D. Benedicti, anno 1153. Mantique tom. 2. annal. Cisterci. eod. anno, fol. 250. Petto IV. huius nominis Abbati ipsius monasterij missa est praesens decretalis, ut occurrit idem Mantique d. tom. 2. in serie Abbatum Populet.*

^c Barchinensi.] Barchino, seu Barchinona ciuitas est in agro Laetano sita, multis hinc inde oppidis conspicua, ideoque aeterna à Ruffo Festo appellatur.

*Et Barchinonem amantem sedes
 Nam paulis illis tua pertus brachia,
 Vixitque semper dulcibus tellus aquis.*

Circa cuius originem variae sunt Historicorum opiniones: ptimam refert Rodericus Tolet. lib. 1. hystor. Generalis, cap. 3. his verbis: *Verum Hercules ex radice matris Caeti, ex his, qui secum, & suis postsequis (causis ad Galiciam applicatis) vena ad hunc applicatis Celtiberia, ubi ciuitatem ad-*

ficanis, & ex una barca Barchinonem appellauit. Consentunt Gerundensis in *Paralip. Hispanie, lib. 2. tit. de archibus ab Hercule conditis*: Florianus de Ocampo lib. 1. cap. 17. & lib. 4. cap. 11. Valer. p. 2. hystor. cap. 2. Miedes hyst. lucchi, lib. 18. cap. 1. Hieronymus Paulus in sua Barchin. in principj Pujad. hyst. Catal. lib. 1. cap. 23. Diagon. hyst. comitum Barchin. lib. 3. cap. 2. Alij asserunt, quod Annib. car Dux Carthag. cogommento Barchino urbem illam condidit, & à suo nomine Barchinonem appellauit: ita Tarrasà de rebus Hispan. anno ante aduent. Christi 234. Nonius in Hispan. cap. 88. Sed has, & alias sententias, quas refert Tamayo tom. 1. Martyrol. die 6. & 29. Ianuarij, 12. Februarij, & 6. Martij, refellit Coronel in notis ad Gengenam tom. 3. fol. 423. & verè de huius urbis initijs nihil haecenus certè liquet, nisi eam Carthaginensibus debere primordia sua, ut testatur Aufonius ad Paulinum his verbis.

*Quid quorū, Eisque infestor criminum osti
 Occidit me vixitque Tagi, me Punicis latet
 Barchin, me bimari inga ninguida Pjrenaei.*

Eandem coloniam fuisse Romanorum, testis est Plinius lib. 3. libi: *In ora autem Colonia est Barchino cognominata.* Ex probat Ant. August. dialog. 7. Item à primis Ecclesiae saeculis habuit Ecclesiam Cathedralē Tarraconensis suffraganeam, ut refert Bosquetus in notis ad Donc. III. lib. 1. epist. 77. eius Archidiacono refertur Innocentius in praesentia.

^d De monte regali.] Canonici Vicen. legunt in hac sexta collectione, & rectius, eam Ecclesiam Cathedralē Vicenensē & etiam suffraganeam Archiepiscopi Tarracon. ut refert Bosquetus ubi supra: Ecclesiam autem montis regalis sit in

D 4 Sicilia,

Siella, de qua plura D. Roehus Pirro tom. 1. Si-
cilia sacra.
e Testificandum.] Iuxta tradita in c. 17. de testibz.

f Famam.] Quæ necessaria est ad inquisitionem,
ut dicemus infra in cap. inquisitionis, ubi
commentarium huius textus dabimus.

CAPVT XX.

^a Idem.

Cum dil. fil. Et infra: Inquiratis super præmissis diligentius veritatem, & si vobis constiterit, prædictos, quorum nomine sunt huiusmodi de prædicto Episcopo nunciata, publicè concubinariorum tunc fuisse, propter quod in eos fuerit excommunicationis sententia^b promulgata, vel præfatum Episcopum de iam dictis excessibus non fuisse præmonitum ab eisdem, vel ipsos conspirasse in eum, eos à denunciatione ipsa repellatis: alioquin auditis diligenter, quæ fuerint, &c. eidem Episcopo auctoritate nostra nihilominus prohibentes, ne super iis, pro quibus ad audientiam nostram fuerit legitimè appellatum, præfatos clericos indebitè grauare præsumat, donec causa prædicta iuxta formam mandati nostri fuerit terminata.

NOTÆ.

1. ^a Idem.] Ita etiam legitur in quarta collectio-
ne, sub hoc tit. cap. 1. nullibi tamen exprimi-
tur, cui P. Latino scribat Pontifex, nec de
quo Episcopo in præfati agatur.

2. ^b Promulgata.] Et ita etiam criminosis, & ini-
mici, qui omnino prohibentur accedere, ut pro-
bat suprà in cap. meminimus. Consonat idem In-
nocentius lib. 3. regestr. 15. epist. 101. in hæc ver-
ba: Dilectus filius I. Decanus Christianitatis Diui-
mensis in nostra proposuit presentia constitutus, quod
cum olim L. I. & H. Canonicis Capella Ducis Di-
uiniensis, Lingonien. Diocesis non ad correctionem, sed
potius ad infamationem ipsius, nobis quatuor denun-
tiationibus contra ipsum, venerab. f. N. Mariscum.
Episcopo, & suis conuictibus dedimus in manda-
tis, ut vocatis qui essent propter hoc euocandi, quod
inuenirent super obiectis, per sua nobis litteras inti-
marent: paribus in ipsorum presentia constitutis, &
eodem infamato Decano, quod denunciationem ip-
sam monitis charitativa precesserit, & firmiter affe-

rente prædictis: Canonicos falsa denunciationis tempore
inimicos eius, & amicos extitisse: tandem facti ad
ad Sedem Apostolicam appellatum, cuius appella-
tioni memorati indices detulerant. Idem vero Vi-
carius quendam religiosorum litteras representans,
qui de vita & conversione ipsius laudabile testimo-
nium perhibebat, nobis humiliter supplicans, ut
occidere aduersarium suorum malitia, ac labori-
bus eius finem imponere dignemur. Nolentes autem
ipsum indebitè fatigare, discretionis vestra per Apo-
stolica scripta mandamus, quatenus si denuncia-
tores præfati mentionem charitativam præmissis super
obiectis præbere nequiverint, aut Decanus ipse do-
cuerit illos suos extitisse denunciationis tempore in-
imicos, eundem ab illorum denunciatione, subleto ap-
pellationis obstaculo absoluti: alioquin in eodem
negotio iuxta priorem contententiam litterarum, appella-
tione remota, ratione præiudicij procedatis. Quod si
non omnes, &c. duo vestrum, &c. Tu denique fili
Abbas super teipso, &c. Datum Laterani ioh. Ian-
nary Pao. N. anno XV.

CAPVT XXI.

Episcopo^a Genuensi, &^b Viennensi Sacrista.

Inquisitionis negotium, quam de venerabili fratre nostro Episcopo, & Canonicis
Valentin. vobis commissum faciendum, sine conscientie scrupulo exequi eu-
pientes, Apostolico petistis oraculo edoceri, verum eorum procedenda sint dicta, &
nomina, quos interrogari contingit, proinde de testibus in publicis causis fieri con-
suevit: an sola dicta eorundem publicari sufficiat, cum idem Episcopus & Canonici
manifeste sciunt, qui fuerint inquisiti: & verum contra dicta eadem debeant ex-
ceptiones, seu replicationes admitti, cum contra personas dicentium admittantur.
Ad quod breuiter respondemus, non solum dicta, sed etiam ipsa nomina, ut quid à
quo sit dictum, appareat, publicanda: & exceptiones, seu replicationes legitimas
admittendas: ne per suppressionem nominum, infamandi; per exceptionum verbò
exclusionem, deponendi falsum audacia præbeatur. Secundo quæstis, quid vobis
sit statuendum, si contra quempiam per inquisitionem probatum fuerit tale crimen,
quod deponeret accusatum criminaliter, & conuictum. In quo quidem duximus
distinguendum, verum videlicet tale crimen contingat aduersus aliquem inueniri,
quod ordinis executionem suscepti, aut retentionem beneficii etiam post peractam
pœnitentiam impediret, puta si homicidium commisisset, vel adeptus esset ordi-
nem,

nem, aut beneficium vitio simonia: quo casu erit sicut in accusationis iudicio procedendum. Alioquin secundum personarum merita, & qualitatem excessus poenam poterit iudicantis discretio moderari. Tertie dubitationis articulus continebat, verum cum duo, vel tres iurati affirmant alium crimen aliquod eisdem videntibus commississe, de quo tamen aliqua infamia non laborat, aliquam illi poenam infligere debeatis: & verum ad petitionem quorundam quasdam schedulas vobis occulte tradentium infamationem Episcopi continentes, sit ad inquisitionem eorum, quæ in ipsis continentur schedulis procedendum: & an fides eorum dictis debeat adhiberi, qui post iuramentum interrogati secretò, verum sint eorum, de quibus inquiritur, inimicis respondent, quod non diligunt illos, vel directe inimicos se asserunt eorumdem, aut etiam ante iuramentum id publicè confitentur, nullas tamen inimicitiarum causas probabiles ostendentes. Ad hæc autem pariter respondemus, nullum esse pro crimine, super quo aliqua non laborat infamia, sed clamorosa insinuatio sola præcessit, propter dicta huiusmodi puniendum: quin imò super hoc depositiones contra eum recipi non debere, cum inquisitio fieri debeat solummodo super illis, de quibus clamores aliqui præcesserunt: nec ad petitionem eorum, qui libellum infamationis porrigunt in occulto, procedendum esse ad inquisitionem super contentis ibidem criminibus faciendam, aut etiam aduersus eos, contra quos sit inquisitio, fidem dictis adhibendam illorum, qui post iuramentum, vel ante, tacite, vel expresse inimicos se asserunt eorumdem, nisi forsitan ante iuramentum in fraudem id facere præsumantur. Quæstionibus præterea, quid statui debeat, si nihil per certam scientiam, sed tantum per famam, & eorum qui fuerint inquisiti, credulitatem iurata conuergerit inueniri: verum-ne aliquis super eo crimine reputari debeat infamatus, de quo ipsum duo, vel tres, aut plures dixerint infamatum, licet de ipso nihil sinistrum in publico audiantur. Ad quod est nostra responsio, quod propter famam & deponendum credulitatem dumtaxat, non erit ad depositionis sententiam procedendum, sed infamatio canonica poenitendi iudici purgatio secundum arbitrium iudicantis, qui propter dicta paucorum eum infamatum reputare non debet, cuius apud bonos, & graues læsa opinio non existit. Tu denique, frater Episcopo super te ipso, & credito tibi grege taliter vigilare procures, extirpando vitia, & plantando virtutes, vt in nouissimo districti examinis die coram tunc iudice, qui reddet vnicuique iuxta opera sua, dignam possis reddere rationem. Datum Lateran. xiiii. Kal. Ianv. Pont. N. anno quinto-decimo.

NOTE.

1. ^a *Genues.*] Ita etiam legitur in quarta collectione, *sub hoc titulo cap. 2.* & in epistolis Innoc. editis à Bulqueto lib. 3. *regeſſe. 15. epist. 189.* Sed legendum est *Genueſis*: Genue enim est vibs Galliz, in Metropoli Vienneſi: inter oppida Allobrogum recensetur à Papirio Maſonio in deſcriptione Galliz, fol. 357. De ea plura Fratres Sacrat. lib. 2. *Gallia Chriſt. fol. 595.* iam olim habuit Eccleſiam Cathedralē: ſed eum occupata eſſet ea vibs ab hæreticis, Sedes Episcopalis Anneſſum Sabaudiz oppidum tranſſata fuit. Alia dedimus de Eccleſia ipſa in cap. 10. de voto.
2. ^b *Vienneſis.*] Vienna olim ita dicta, quia à Vienſo conſtructa fuit: celeberr. Metropolis eſt Allobrogum, Romæorum coloſia teſte Paulo in *leg. ſinal. ff. de cenſuſu*: ad Rhodanum poſita eſt, & eius meminero tot Cæſar lib. 7. cap. 2. Plinius lib. 3. cap. 4. Ptolemeus lib. 2. cap. 10. quos & alios reſerunt Fratres Sacrat. tom. 1. *Gallia Chriſt. fol. 789.* eius Archiepiſcopus Primatis nomen aliquando ſibi vindicauit, vt reſert Chenu in ſerie *Præſul. ipſius Eccleſia.*
3. ^c *Valenia.*] Valenia Romanorum Colonia, prænomine Italia, teſte Proſperico lib. 2.

cap. 8. cinites eſt Segalaunorum in Gallia, cuius mentio erit in leg. 22. *Cod. Theodoſ. de ann. & tribus. leg. 113. cod. C. de Decur. ſua eſt ſupra Rhodanum*: habet Eccleſiam Cathedralē dicatam D. Apollinari, de qua agit Chenu in ſerie *Præſul. ipſius Eccleſia.*

^d *Et nomina.*] In cauſis fidei reo edi nequeunt nomina, vel cognomina teſtium, vnde ipſe poſſit venire in cognitionem eorum, cap. ſinal. §. *inuenimus*, de hæretic. in 6. vbi ratio assignatur, non ſolum quia periculum teſtibus imminet: verum etiam vi facilis in negotiis fidei ipſi deponant: quam praxim in Tribunalibus ſancti Officii receptam deſcendunt & probant Farinae. de hæreſ. *quaſt. 188. §. 1. num. 7.* Peſſa ad Eymericum in *Dirict. comment. 124.* Souſa in *aphoriſm. Inquiſit. lib. 2. cap. 6. num. 74.* Caſtopalao in *opere moral. p. 1. tract. 4. diſput. 8. punct. 15. §. 3. numer. 7.* Carena de offici. *Inquiſit. p. 3. titul. 7. §. 9.* Vnde eum non adiu eadem ratio in aliis delictis, & cauſis criminalibus, nomina teſtium eduntur, vt latè probat Guſtierre de *delictis lib. 1. quaſt. 8.* Pareta de *inſtrument. editum. tit. 7. reſoluit. 6.* Hæc contrariam ſentent Cuiac. lib. 22. *obſeruat. cap. 25.*

^e *Quasdam schedulas.*] Sine auctore, & ratione, iuxta illud Imperatoris Traiani apud Plinium lib. 1,

4.

5.

lib. 2. epist. 102. ibi: *Sine auctore verò propositi libelli nulla crimina locum habere debent; nam & pessimi exempli, nec nostri saculi est.* Et per huiusmodi schedas, quæ dantur in oculo, non debent indices ad inquisitionem procedere, docuerunt in presenti Ioannes Andreas num. 6. Butrios num. 22. Abbas nreabil. 2. num. 4. Ananias num. 62. quos sequuntur Cevallos lib. 3. practice. quæst. 821. num. 20. Solotranus de iure Indiar. lib. 4. cap. 8. numer. 37. & lib. 4. polit. cap. 10. Salcedo ad leg. 64. tit. 4. lib. 2. recopil. num. 2. & 17. quod & in causis nobilitatis, & puritatis procedere probant Valenzuela & consil. 110. num. 5. Escobar de puris. 2. p. quæst. 2. per totam. Sed eum contrarium piaz receptum videtur in Collegiis, Regio Consilio Ordinum, & Tribunalibus Inquisitionis, aliisque communitalibus, quæ sanguinis puritatem exigant, distinguendum credo inter schedam datam sine auctore, ubi tantum infectio alienius exprimitur, simpliciter referendo descendere ex sanguine infecto; vel cum in ipsa schedula ratio, & fundamentum ipsius infectionis exprimitur: primo casu existimo virtute talis schedula non posse ad exactiorem inquisitionem procedere, ex presenti textu. Secundo verò, cum ratio, seu fundamentum assignatur, posse exactiorem inquisitionem fieri ad cognoscendum, an verum sit fundamentum infectionis in schedula expressum. Idem credo observandum esse à Iudicibus, Inquisitoribus, seu Visitationibus, ut videlicet vel simpliciter schedula, vel absque auctore narratur aliquod visitati delictum, non possit Iudex ad inquisitionem illius delicti procedere, ex hoc textu, & traditis in cap. 2. de consanguin. Sed cum fundamenta, & rationes præbentur, ac argumenta, quibus probetur delatio illa, posse Iudicem de illo crimine inquirere ad evocandum veritatem, quia si verè sunt fundamenta relata in ipsa schedula, iam visitatus laborat infamia, quæ nullam reddit ipsam inquisitionem.

[*f. inimicus.*] Quia inimici ab accusatione, & denunciatione accutur, iuxta tradita supra in cap. memoriamus.

COMMENTARIUM.

6.
CONCLUSIO
TRADITUR
ST. PROBA-
TIV.

Ex hoc textu sequens communiter deducitur assertio: *Crimen probatum per inquisitionem regulariter pena ordinaria punitur; sed si impeditur ordinis executionem, sit depositio, sicut per accusationem.* Probat eam textus in cap. dilectum 30. cap. licet Heli, de financia, cap. 2. hoc tit. in 6. Illustrant Suarez de relig. tom. 2. lib. 4. cap. 58. de de censuris diffus. 40. sect. 2. Bercana in cap. qualiter, num. 33. supra hoc tit. Angolanus de legibus lib. 2. controuers. 6. Arellanus lib. 5. singul. antimus. 1. Barb. in sectell. ad textum in cap. 2. de consensu sym. 4. Alestera hic.

7.
INDICA-
TUR TRA-
DITA AS-
SERTIO.

Sed pro dubitandi ratione in presentem assertionem ira insurgo: Penas pro delictis impositas, & incusatis index angere, minime non valet, cap. de causis 4. §. de illis, de offic. delegat. ubi illustratur, & late probat Angolanus lib. 2. de legibus, cap. 5. Igitur siue crimen probatum sit in iudicio formato per viam accusationis, aut per viam inquisitionis, pena à iure statuta minuenda, mutandæve non sunt. Angetur hæc difficultas primò ex nonnullis iuris

testimoniis, in quibus eadem extraordinariè, & per inquisitionem procederet. pena ordinaria intelligitur, leg. 2. Cod. de abol. ibi: *Inquisitione factâ competens pena impositur.* & leg. 2. §. si publico, ff. ad leg. Jul. de adul. ubi extra ordinem, & sine accusatore fuit in causa processum; & tamen ordinaria lenocinii pena imposita fuit. Id etiam probatur ex leg. 4. Cod. de sepulchro violato, ibi: *Vel ad officium munieris;* & leg. ordo 8. ff. de public. iudic. ubi etiam maxime extra ordinem crimina probentur, semper imponitur pena ordinaria: igitur quia nihil interest, an per inquisitionem, an per accusationem crimina in iudicio clauerint. Angetur secundò hæc dubitandi ratio ex presenti textu in vers. In quo, ubi Innocentius III. homicidas, & simoniacos aequat per ordinariam puniendos esse docet, siue per inquisitionem, siue per accusationem procedatur: ergo quia nullum veritatem discernit inter iudicium formatum per accusationem, aut per inquisitionem.

Quà dubitandi ratione ita fuscis non obstantia, vera est præfata assertio: pro cuius expositione sciendum est, inquisitionem dictam esse à verbo *inquiri*, id est intus quæro, seu valde quæro, quasi particula in, auget, ut in leg. Gallus, §. in illo, ibi: *In difficulte, ff. de liberis & posthum. cap. 2. ibi: Inferrent;* iuxta communem intellectum, de falsiss. Et generaliter significat quærentemque, vel cuiuscunque rei investigationem, vel inuigationem, cap. inquisitionem 26. de electis cap. ult. §. 1. de officio delegat. Clement. 2. ibi: *Per inquisitionem, eod. tit.* In præfata tamen potest ad criminalia referatur inquisitio, denotat modum, quo de criminibus agitur, ab accusatione distinctum, vulgè *perquisita*; in quo sensu variè definitur per Barrolium in leg. transigere, num. 15. Cod. de transact. Folli. in præfata rubric. num. 3. Præpositum n. 39. Dildaco Perez in leg. 24. tit. 1. lib. 4. ordin. Giganteum de crimine lesa Maiest. p. 1. quæst. 8. Sotum de legend. secretis, membr. 2. quæst. 6. Christoph. à Piz in leg. 50. ff. de iust. Guierrez de delictis quæst. 1. num. 1. à quibus ea definitio adducitur, ut inquisitio sit criminis, vel criminis per iudicem legitime facta indagatio. Quæ definitio colligitur ex leg. congruat, ff. de offic. Profrid. leg. 4. vers. In mandatis, ff. ad leg. Jul. pecunia. cap. qualiter 12. cap. cum opuscat, hoc tit. cap. 1. cap. Deus 20. quæst. 1. illis verbis: *Criminus, vel criminis*, quibus includuntur omnes inquisitiones, tam generales, quam speciales, quoad delicta & personas simul, vel quoad alterum illorum; & per eadem verba excluduntur inquisitiones alie, quæ non respiciunt crimina, & illorum punitionem, sed res diuersas, ut in leg. si vacantis, Cod. de bonis vacant. lib. 10. cap. per inquisitionem, de electis. Sic etiam per illa verba, facta indagatio, agnoscitur differentia inter inquisitionem, & accusationem, quæ est delatio criminis, et probatur in cap. 2. hoc tit. inquisitio autem est inuestigatio; & sicut delatio differt ab investigatione, quæ crimen, vel persona non defertur, sed inquiritur; ita accusatio differt ab inquisitione. Deinde accusatio, seu delatio, quamvis fiat in iudicio, non tamen fit per iudicem, quippe qui non defert, nec ei competit ius deferendi, sed accusatori. Contrà verò inuestigatio, quæ in inquisitione continetur,

8.

INQUI-
SITIO
TRADITUR
MOD. ET DE-
JURIS 10.

continetur, per iudicem fit, ita ut ei competat inuestigare, seu nos inquirendi, *dist. leg. con- gruis*, ibi: *Eos conquirat* & cap. cum dilecti 18, in princip. cap. qualiter 24. ibi: *Præstare proce- dere ad inquirendum, hoc titul.* Aliis differen- tiis prosequitur Beroius in *dist. cap. qualiter*, num. 5.

9. Sed antequam divisionis inquisitionis refe- rantes, examinanda est iustitia inquisitionis, & probandum vñs procedendi per inquisiti- onem; nam videtur iniustus hic procedendi mo- dus, cum in hoc iudicio nullus actor appareat, & ita formale iudicium dici non posset, iuxta D. Iudicium relatum in cap. formæ, de P. S. ibi: *In omni quoque negotio ha persona queratur, iudex, reus, & res testes.* Et sine accusatore neminem esse demandandum, vulgo probatur ex l. rescipio 6. §. si quis accusatorem, ff. de munere, & honor. leg. ult. Cod. de accusat. cap. de mani- fessa 17. vers. iudicis 2. quæst. 1. cap. 2. vers. Pra- terea, & ecclesiæ benefice, quod & diuino inter facis expressum legimus in Euangelio Ioannis, cap. 8. vers. 10. in illis verbis: *Mulier, ubi sum, qui te accusant: si nemo te accusat, nec ego te con- demno.* Et Actuum Apostolorum, cap. 25. ubi Festus provincie Præfex ad Agrippam Regem, cum ad- uersus Apostolum Paulum tota se effudisset In- dorum tabies, ait: *Ad quæ respondi, quia non est Romanis consuetudo damnare aliquem hominem prius quam sit, qui accusator, præfentes habeat ac- cusantes, locumque defendendi accipias ad obtinen- da crimina.* Facit D. Ambrosius relatus in *dist. cap. de manifesta*, ibi: *Quia & Dominus Iudas, quem scire esse sciebatur, sed cum non esset accusatus, minime abiicit.* Et ideo non esse inquirendum in facinorosos, quia medicus nisi accersitus mor- bos non inquit, docet Canonerus in *aphorism. polit. tom. 1. pag. 379.* Sed adhuc dicendum est, omni iuri consonum esse modum procedendi per inquisitionem; quia cum adeit diffamatio, clamor ipse vicem accusatoris gerit. Vnde legi- mus in sacris literis, ob clamorem hunc in- quisita crimina, velini fratricidij, *Genes. cap. 4. ibi: Vax sanguinis clamor ad me de terra, quid fecisti?* Sodomorum, *Genes. cap. 19.* ibi: *Clamor Sodomorum.* Oppressionis, *Exodi cap. 2. Ascendite clamor.* Et cap. 3. ibi: *Clamorem audiuim framatia mercedis.* Iure etiam ciuili inquisita le- gitimus delicta Ænocij in leg. 2. §. si publica, ff. ad leg. Jul. de adult. Suspecti instrum- menti in leg. in heremus, Cod. de probat. suspecti tutoris in leg. 3. §. præterea, ff. de suspect. tutor. fraudulenti, aut falsi testis in leg. nullum, Cod. de testib. calumniosus in leg. 1. Cod. de calum. & generaliter Præfibus delicta iniquitate iubeant in leg. congruis, ff. de offic. Præf. leg. 4. §. manda- tis, ff. ad leg. Jul. de adul. leg. 1. §. quies, ff. de offic. Præf. vñs leg. 3. §. vñs, ff. ad leg. Jul. de adul. Ordo autem inquisitionis apud Romanos talis erat. Irenarchæ, curiosi, seu stationarij, latrones, sacrilegos, & alios criminum reos in Provinciis conquirebant, de sociis & recep- toribus interrogabant, in interrogationeque litem inclusas & obsignatas, ad cognitionem Magistratus mittebant, reique missi cum elo- gio ex integro audiebantur, non tantum si quis accusator esset, verum etiam accusator non apparet, leg. ea quidem 7. Cod. de accusat. leg. Diuus 6. ff. de custod. rer. leg. 1. Cod. eod. leg. 1. Cod. de curiosis, & stat. leg. 6. §. num.

curiosos, ff. ad Tulp. de quibus Irenarchia agi- tur in leg. 6. §. Irenarcha, leg. numerum, ff. de numeris, leg. 1. & per totum Cod. de Irenarchis, Nouel. 8. Justin. D. August. epist. 159. Irenar- chorum, ad quos tunc publica pacis vigiliantia pro- tinet. Et epist. 160. Plura de eis Alois ad vñs tam S. Polycarpi, Simanchas de reph. lib. 8. cap. 25. P. Gregor. lib. 31. synagoga, cap. 4. num. 1. Lipsius epist. 99. cap. 18. Gutierrez de offic. do- mus lib. 3. cap. 13. Cuiac. lib. 8. obsen. cap. 29. Fornerius lib. 1. rer. quod. cap. 4. Ramirez de Prado in thesura legum, ad leg. super creandis, Solozanum tom. 2. de iure Ind. lib. 1. cap. 26. num. 7. Gibalin. tom. 2. de negot. lib. 6. cap. 3. art. 4. num. 7. notat in cap. 2. supra, num. final. ubi probat in hoc iudicio diffamationem ip- sam vicem accusatoris gerere. In iure etiam no- stro canonico variæ sunt compilatæ decretales de hac inquisitione sub præfenti titulo de accu- sat. & inquisitionibus: vt textus in cap. qualiter 17. cap. qualiter 24. & alij. Iure etiam regio talis inquisitio commendatur in leg. 2. & 6. tit. 1. lib. 8. recapit. & probant latè bene proceden- di modum Bobadilla lib. 2. polit. cap. 13. per totum, Zyppeus de magistr. lib. 3. cap. 9. plures congesti à Solotzano 2. tom. de iure Indiar. lib. 4. cap. 5. num. 6. & emblemata 70.

Deinde sciendum est, inquisitionem hanc altam dici generalissimam, per textum in cap. Inquiri- tiones 21. tit. 1. lib. 8. Romanæ, de censibus in 6. quando fit ex mero officio Pontificis, in generali Concilio Primatis, seu Metropolitanis, in Concilio nationali, seu provinciali: alis di- citur generalis quoad delicta, & quoad perso- nas, vt cum Præfex inquit in sua provincia reos duerforum delictorum, leg. congruis, ff. de officio Præf. vel generalis, quoad personas crimi- nosas, & quoad delicta, & quoad perso- nas, vt cum de certo, & speciali delicto Præfex inquit contra limitatam, & certam personam, iuxta textum in leg. ea quidem, Cod. de accusat. leg. 2. §. publico, ff. ad leg. Jul. de adul. pro- sequuntur Amadeus in tract. de Syndicatu, ex numer. 6. Maranta de ordine iudic. 6. p. tit. 2. de inquisit. Gregor. Lopez in præmio, tit. 17. part. 3. Pax in practi, p. 1. num. 7. & 5. p. cap. 1. num. 1. D. Ioannes Vela de modo proced. cap. 3. num. 2. Farinac. tom. 1. praxi crimin. tit. de inquisit. quæst. 2. numer. 4. Morla in empir. tit. 2. quæst. 3. numer. 45. Petreys de maris Regia, p. 1. cap. 10. a. num. 20. & 2. p. cap. 56. a. num. 9. Gutierrez de delictis lib. 1. cap. 1. Fragoli, p. 2. de regim. lib. 5. disput. 12. §. 6. Omnes tam- que supra inquisitiones ad duas frequenter re- ducuntur species, generalem scilicet, & specialem: generalis est in qua ad inuestiganda de- licta, & eorum reos, in genere agitur; de qua in *dist. leg. congruis*, cap. placuit 22. 30. quæst. 1. cap. 1. cap. irrefragabili, de offic. ordin. cap. sicut olim 25. hoc titul. cap. 2. §. sicut, & de censib. lib. 6. Trident. sess. 14. de reform. cap. 4. quæ apud nos lege Regi prohibita est, l. 2. 2. & 4. tit. 2. lib. 8. recapit. lib. 2. tit. 2. rod. libro: siue etiam

ad inquirendas criminofas, eum de delicto con-
stat, *Idem* 4. §. *ult. ff. de condit. ob turp. caus.*
l. *civile* 5. *Cod. de foris*. Specialis vero est qua-
si contra aliquem, vel aliquos specialiter no-
minatos super certo crimine, quod commif-
fum fuiffe constat. Docuerunt D. Ioseph. Ve-
la in cap. 1. de offic. Ordin. p. 2. num. 163. San-
chez lib. 6. cap. 3. dub. 16. Landmeter.
lib. 2. de veteri monach. cap. 108. Richardus in
monach. ad prax. p. 3. §. 2. Inter inquisito-
riam autem generalem, & specialem magnam
verfatur diftinctio; nam in generali non est
necelfaria infamia præcedens, fed potest iudex
ex officio abfque accusatore, vel denunciato-
re inquirere, an feiant de aliquibus delictis,
& criminum reis, de quibus poffint fecun-
dum ius denunciare, aut teftificari: in inqui-
fitione vero speciali omnino delideratur in-
famia, vel vt vehemens aliqua fufpicio præ-
cedat, quâlis ex generali inquisitione oriri fo-
let, cap. qualiter 17. & 24. hoc tit. cap. licet
Heli. de fignoria, late probat Valenzuela. *Popu-
li*. tit. ex num. 30. quia cum in hoc iudicio non
adit verus accusator, necelfe est vt intercedat ali-
quid, faltem quod in ius locum fubrogetur,
nempe fama, quæ loco accusatoris habetur, *dist.*
cap. qualiter 17. ibi: Non tanquam idem fit accu-
fator, & iudex; fed quafi denunciatio fama, vel
difformis clamore, iudicium peragatur. Mancinus
lib. 2. genial. cap. 103. propter fcondalum enim
ex tali diffamatione refultans totus populus vido-
tur accusare, argumeto capitis *Presbyter*, cap.
fi a piebe 13. cap. fi mala fama 16. 2. q. 4. D. Tho-
mas 2. 2. quæst. 68. art. 3. Sopas de legendi. fecer.
mem. 2. cap. 6. Acuña in cap. de Petro, 47. *dist.*
Guarinos in *defenf. reor. defenf.* 9. cap. 1. Certos
tamen cafus, in quibus nec hæc diffamatio nec-
elfaria eft, refert Sanchez d. cap. 3. dub. 19. *per
totum*; & quædam argumenta fufficiant ad hanc
diffamationem, explicat Fachinus lib. 9. *con-
trouers.* cap. 15. *Pax in d. l. 50. filii*, Gutier. de de-
lictis, *dist. quæst. 10*.

II.
TRADITUR
RATIO DE-
GIRANDI.

His fuppofitis apparet ratio præfentis afser-
tionis; nam cum in hoc inquisitionis iudicio
procedat iudex ex officio proprio virtute diffa-
mationis, non verò ad petitionem partis, po-
terit pro arbitrio augere, vel minuire penam
impositam pro tali delicto: & cum hoc iudi-
cium fit extraordinarium, cap. quoniam, de pro-
bat. Berolius in rubric. de iudiciis, numer. 54.
Decius ibi, numer. 7. Boffius in praxi, tit. de
inquisit. num. 56. vt pote in quo non adit accu-
fator proprius, qui agat, teftetque ante litis con-
teftationem recipiantur, contra dicta in cap. 1.
vt *læte non conuicti*, & alia extra ordinem iudicio-
rum adhibeantur, merito & extraordinaria
pena imponenda eft pro arbitrio iudicis. Ho-
die tamen cum adeo iudicium hoc per inqui-
fitionem vfitatum fit, vt penè ordinarium ratio-
ne confuetudinis dici poffit, imponitur pena
ordinaria etiam iudice procedente per viam in-
quisitionis, ac fi procedat interpellatus ab accu-
fatore, vt notat Anguianus de legibus lib. 2. cap. 6.
num. final.

II.
DE SOLU-
TIO DEBE-
TAMEN RA-
TIO.

Nec obstat dubitandi ratio fuprà adducta,
nam verum eft, iudicem in caufa criminali, ubi
adit accusator, & ordinario modo procedite,
non habere arbitrium, fed facultatem augendi,
minuendive penam delicto impositam; at ve-
rò in præfenti agimus de iudicio extraordinario,

in quo iudex extra ordinem procedit; quo caufa
non ordinaria pena, fed extraordinaria impo-
nenda eft, iuxta fuprà tradita. Nec obftat aug-
mentum primum ipfius difficultatis deductum
ex *dist. leg. 1. ff. ad leg. Int. de adult. leg. 2. Cod.
de adult.* cum aliis: pro cuius folutione Abbas
hic num. 8. Felinus num. 3. quos refert & fequitur
Titacq. de pen. tempor. caus. 53. num. 2. dif-
ctimen assignant inter ius canonicum, & ci-
uile, vt hoc cum fit gratiâ, & mifericordia ple-
num, finemque tantum fupernaturalem stuen-
dat, mitiores & leuiores penas femper iniun-
gat, quoties fine accusatore proceditur; & ne-
gotium criminale per viam inquisitionis agita-
tur; ius verò ciuile, vt pote ftrictius, & pro-
phanum, eandem ordinariam infligendam pec-
nam effe decreuit, ficut procedatur per inqui-
fitionem, ficut per accusationem. Sed merito eos
refellit Anguianus lib. 2. de legibus, cap. 6. num. 8.
nam atque hoc iudicium inquisitionis extraordi-
narium eft iure canonico, ac iure ciuili; vnde
fi iure Pontificio attemo, quia in eo iudicio
extraordinarie proceditur fine accusatore, pec-
na extraordinaria imponitur, etiam iure ciuili,
quia extraordinarie per inquisitionem iudex co-
gnofcit, extraordinarie penæ locus effe debet.
Quare hæc fententiâ omnia dicendum eft, nul-
lum in hac parte verum diftinctum inter ius ca-
nonicum, & ciuile; & vt difficultati fatisfacia-
mus texus in ea adducti fignilatum explicandi
sunt; non enim obftat textus in *dist. l. 2. §. ex
publico*, nam in en Vlpianus tantum refert Im-
peratorem Severum damnaffe Claudium Equi-
tem Illoftrem penâ lenocinii, quia vxorem in
adulterio deprehensam teftimentum; non tamen
exprimitur, an penâ ordinariâ, vel extraordi-
nariâ, immò facile ex ipfa facti ferie deducitur,
penâ extraordinariâ ipfum affictum fuiffe, vt no-
tauit Anguianus fuprà, num. 24. Similiter dum
in l. 2. *Cod. de adult.* in iudicio extraordinario
competens pena injungi præcipitur, per pec-
nam competentem fatis innuitur, non ordina-
riam, fed extraordinariam imponendam effe. Nec
etiam obftat dicta lex 4. C. de fepulchro viol. nam
facile ex illis verbis, *que pœni præfixæ fuerint
accedit*, aperte deducitur, penam ibi impo-
fitam, non effe ordinariam & propriam criminis
fepulchri violati, fed potius illi accedere. Nec
etiam obftat textus in *dist. l. 1. ord. 8.* nam in eo
Paulus non agit de iudicio inquisitionis, fed
tantum affert delicta effe puniunda, cufi extra-
ordinarie probentur, hæc eft abrogatis fcrupu-
lofis formulis iudicium, quæ eo tempore iam
omnia iudicia extraordinaria erant. Nec obftat
aliquid augmentum dubitandi ratiomis, deductum
ex præfenti textu, cui vt fatisficiat Anguianus
dist. cap. 6. num. permitt. ex Abbate, & Innoc.
in præfenti, affert ea verba, *ficut in accu-
fationis iudicio*, effe accipienda de modo proce-
dendi in illis cafibus, videlicet vt processus fore-
mentur, ficut cum proceditur per viam accu-
fationis; non verò quia ibi affertur Pontifex pec-
nam effe infligendam cum proceditur per inqui-
fitionem, ac fi per inquisitionem procederet.
Verum hæc folutio fatis refellitur ex ipfo dubio,
cui fatisfacere immedebat Pontifex; confultus
enim Innocentius fuerat, an in delictis, quæ
per inquisitionem elatantur, imponenda effet
pena extraordinaria; & tunc refponderet fub ea
difftinctione, vt in cafibus homicidij, & fimoniae
eandem

eandem poena imponitur, ac infligitur, cum per accusationem proceditur; in aliis vero delictis potest indidem poenas pro arbitrio moderari; quare et sententia omnia veritas dicendum est, quod licet cum proceditur per inquisitionem, imponenda sit poena extraordinaria; tamen cum delictum commissum fuit homicidium, vel simonia, ordinaria imponenda est. Ratio huius discriminationis ex eo provenit, nam in his duobus delictis poena suspensionis ipso iure incurritur, ita ut necessaria sit sententia declaratoria ut beneficium pro vacante habeatur, ut probat Suarez ubi supra; tamen ipso iure reus suspenditur ab officio, & potius in utroque delicto incurrit, adeo ut si postea poenitet, nihilominus Missam celebrare non possit, ut de homicidio probatur in cap. final. de tempor. ordin. cap. si quis dignum, de homicidio, cap. in quibusdam, de penis, cap. miror, 50. distict. de simonia in cap. accusatum 4. cap. quoniam 3. de simon. Vnde cum in eis casibus, tunc procedatur per accusationem, sine per inquisitionem, vel sententia tantum sit declaratoria poene incurse ob homicidium, vel ob simoniam; ideo iudex nullam habet facultatem moderandi, minueudive poenam iam incursum, ut docuit Lina, & Arelanus lib. 5. singul. animum. 1. Nec tunc obstat caput distict. 30. de simon. ubi delictum simoniz diversis modo puniunt, si per inquisitionem, ac si per accusationem in iudicium deducatur; nam eius veram interpretationem dabimus in eius commentario.

Secundo opponi solet praefata assertioni textus in cap. final. de celebratione Missae. ubi cum per inquisitionem ageretur contra clericum, & confisset ipsum in pane fermentato, & scypho ligneo, sine igne, & aqua celebrasse, deponitur ab officio, & beneficio: quia poena efficiendus erat, si per accusationem in iudicium deferretur: igitur quia cum proceditur per modum inquisitionis, mitior poena imponenda est. Cui difficultati communiter responderetur, in eo textu presbyterum ipsum crimen illud confessum fuisse in iudicio, & ita ob propriam confessionem in iudicio factam poenam ordinariam officii: ita Beronius in dist. cap. qualiter 24. num. 54. Sed hoc solutio facile conuincitur ex eo, nam cum clericus in ea specie fateretur delictum, tamen per modum inquisitionis procedebatur; unde iuxta praesentem textum poena ordinaria imponenda non erat. Quare et solutio omittitur, & alia Beronius, qui depositionem illam accipit pro depositione non ab ordine facto, sed ab officio ecclesiastico, dicendum est, pro criminibus à presbytero in ea specie admissis, non vnam poenam, sed varias à iure constitutas esse, ut ex canonibus in eius commentario congestis apparet: vnde Summus Pontifex, ut eam debite puniret pro tanti excessibus ex malitia, vel nimia ignorantia admissis, eam deponendum esse ab officio, & beneficio iussit, quia Pontifex potest illam, vel aliam maiorem poenam imponere, cap. 1. 81. distict.

Ex supra traditis accipit hanc textus in cap. ex inuicem, de excess. Praet. ubi cum per viam inquisitionis procederetur contra Episcopum, eo quod furem suspendere iussisset, indicari illi prius purgatione vulgari ferri cuodentis, ait Pontifex, quod cum ita graviter deliquerit, officio illum esse privandum; & quis sine officio beneficium retinere non potest, ipsum ab officio esse remouendum. Ex quo textu deducitur, quod etiam cum proceditur per inquisitionem, poena ordinaria imponenda est; siquidem eo casu ob suspensionem fuis eadem poena erat efficiendus Episcopus, ex traditis in cap. semetipsum, ne cleric. vel monach. sed eius textus vera ratio ex praesenti textu & supra traditis provenit; nam cum in eo textu agatur de poena homicidij ob defectum lenitatis admissi, propter quod etiam poenitentia facta, Episcopus non poterat retinere officium, ideo docet Pontifex poenam ordinariam locum habere, & ipsum Episcopum ab officio suspensum, etiam ab Episcopum esse amovendum, cum eo casu etiam poenitentia facta semper Episcopus maneret irregularis, & per consequens cum celebrare non posset, nec Episcopatum retinere valebat.

CAPVT XXII.

1. Siluanectensi Episcopo, & Abbati^b Latiniacensi, Parisiensis Diocesis, & Decano Siluanectensi.

Ad petitionem Walteri quondam monasterij^c Corbeienfis Abbatis, dilecto filio Magistro Scholarum, & Magistris Rⁱ de^d Corzon, & P. Canonici^e Nouio-
meosibus eiusdem loci, à nobis dudum correctione commissi, ipsi bis ad idem monasterium
D. D. Gonzal. in Decretal. Tom. V. E nasterium

13. Exponitur cap. de confessione, qui contra praesentem assertionem communiter expenditur. In eius specie Canonice Bertheleminenses, qui simoniam perpetrauerat, absque accusatore, & extraordinarie detectus, passus poenam ordinariam simoniaci: igitur quia in iudicio extraordinario inquisitionis poena ordinaria imponenda est. Pro cuius textus expositione varia adhibuit Anguianus dist. lib. 2. de legibus, cap. 6. num. 22. quibus omisso dicendum est, quod cum delictum, quod in eo textu incidenter claturus, esset simonia, & in hoc delicto, cum per inquisitionem procedatur, imponenda sit poena ordinaria, iuxta supra tradita, & docent Hallier. de sacris elect. sect. 7. art. 3. 54. Beronius in cap. qualiter 24. num. 53. hoc ritul. ideo in ea specie poena ordinaria imponitur, seu potius declaratur, poenam suspensionis ab officio, & depositionis à beneficio ipsum Canonice contraxisse. Accedit quod in eo textu processum fuit per viam notorij mediante confessione in iure facta, unde necessarii imponenda erat poena ordinaria, ut in cap. tunc, de penis, cap. cum non ab homine, de iudiciis.

14. Explicatur cap. final. de celebratione Missae, ubi cum per inquisitionem ageretur contra clericum, & confisset ipsum in pane fermentato, & scypho ligneo, sine igne, & aqua celebrasse, deponitur ab officio, & beneficio: quia poena efficiendus erat, si per accusationem in iudicium deferretur: igitur quia cum proceditur per modum inquisitionis, mitior poena imponenda est. Cui difficultati communiter responderetur, in eo textu presbyterum ipsum crimen illud confessum fuisse in iudicio, & ita ob propriam confessionem in iudicio factam poenam ordinariam officii: ita Beronius in dist. cap. qualiter 24. num. 54. Sed hoc solutio facile conuincitur ex eo, nam cum clericus in ea specie fateretur delictum, tamen per modum inquisitionis procedebatur; unde iuxta praesentem textum poena ordinaria imponenda non erat. Quare et solutio omittitur, & alia Beronius, qui depositionem illam accipit pro depositione non ab ordine facto, sed ab officio ecclesiastico, dicendum est, pro criminibus à presbytero in ea specie admissis, non vnam poenam, sed varias à iure constitutas esse, ut ex canonibus in eius commentario congestis apparet: vnde Summus Pontifex, ut eam debite puniret pro tanti excessibus ex malitia, vel nimia ignorantia admissis, eam deponendum esse ab officio, & beneficio iussit, quia Pontifex potest illam, vel aliam maiorem poenam imponere, cap. 1. 81. distict.

nafterium accedentes, quibufdam correctis, ibidem nonnulla, quæ ftatuenda fuerant, ftatuere, inquisitionis instantiam quorundam impediende malitiâ retar- dando. Ad quorum contumaciam reprimendam, fæculare intendebant brachium ¹ inuocare. Verùm dilectus filius nofter G. ² fanctæ Mariæ in Porticu Diaconus Cardinalis, tunc Apoftolicæ Sedis Legatus, interim ad idem veniens monafterium, fupradicto Vualtero præfente, nec reclamante, fuper ftatu monafterij memorati cepit inquirere diligenter: & cùm inquisitione finitâ prædictum Vv. Parifios euocaffet, propofiturum contra inquisitionem eandem, fi quid rationabiliter duceret proponendum, idem Vv. præfentiam eius adiens allegauit, quod in monafterij correctione procedere non valebat, quæ prædictis iudicibus prius fuerat auctoritate noftâ commiffa: & Cardinalem ipfum ex iuftis caufis fe afferens habere fufpectum, vocem ad nos appellationis emiffæ. Porro Cardinalis in fpectis his, quæ probatâ fuerant contra eum, de confilio peritorum ipfum amonit à regimine Abbatiæ, dando ³ fratribus eiuſdem loci liberam facultatem alium eligendi. Qui dilectum filium Ioannem abbatem Corbeienſem, tunc Priorem de ⁴ Argentolio, virum prouidum, & honeftum elegerunt concorditer in Abbatem. Cùm autem dictus Vv. poſtmodum ad Sedem Apoftolicam acceſſiſſet, afferens fe per Cardinalem ipſum quorundam falſis ſuggeſtionibus circumuentum, ab Abbatiâ ſine ratiuabili cauſa remorum: Nos eiufdem cenobij tranquillitati paternâ ſollicitudine providere volentes, venerabilibus fratribus noſtris ⁵ Archiepiſcopo Rheimenſi & ⁶ Arelatenſi Epifcopo dedimus in mandatis, vt ad ⁷ compoſitionem inter eundem Vv. & ſubſtitutum ei, darent ſtudio & operam efficacem. Alioquin tam per iamdiſtum Legatum, quàm per alios inquirerent diligentius veritatem, & eam nobis vſque ad Feſtum S. Remigij proximò tunc venturum, fideliter intimarent, vt per eorum relationem certiores effecti, procederemus in eodem negotio prout procedendum vilius videremus. Qui cùm ſuper reformatione pacis proficere nequiuiffent, ſicut ex litteris eorum accepimus, proceſſerunt ad inquirendum ſuper præmiſſis omnibus veritatem, teſtibus ab utraque parte receptis; & ea quod tam per ſe, quàm per Cardinalem inquisitionem inuenerant, nobis ſub ſigillis propriis tranſmiſerunt. Nuper autem præfati Vv. atque I. in noſtra propter hoc præſentia conſtituti, idem Vv. quod à Legato poſt appellationem ad nos interpoſitum factum fuerat, petiit reuocari: allegans quod cùm correctio monafterij fuerit iudicibus memoratis iniuncta, & ipſi quibufdam correctis, & nonnullis ſtatutis ibidem, aliorum correctionem ex cauſa duxerint rationabili differendam, Cardinalis interim de iure non potuit procedere ad eandem, cùm generale mandatum non ⁸ deroget ſpeciali. Ad quod fuit ex aduerſo reſponſum, quod cùm Vv. præſente, nec reclamante, ad inquisitionem proceſſerit Cardinalis, idem Vv. viderent in hoc tacite conſenſiſſe; vt inquisitione factâ corrigeret Cardinalis, quæ corrigenda videret. Contra quod idem Vv. taliter proponebat, quod licet ſtatim vt cepit inquirere Cardinalis, non duxerit reclamandum, eredens eum nolle procedere contra ipſum, ſed abſque ſui gravamine aliquid in Eccleſia vtiliter ordinare, poſtquam tamen euocatus ab ipſo cognouit, quod aduerſus eum procedere intendebat, eius declinavit examen, ad noſtram audienciam appellando. Propoſuit inſuper pars aduerſa, quod cùm prædicti iudices omiſſent in monafterij correctione procedere, & periculum traheret ad ſemora, Cardinalis ipſe, ad quem ſpectabat ex iniuncto ſibi legationis officio cura eius, ad reformationem ipſius loci interponere potuit partes ſuas. Cùm enim ſecundum iuris civilis auctoritatem, in illis etiam caſibus, in quibus ſolennis ordo iudiciarius obſervatur, in criminali cauſa ⁹ ultra biennium à conteſtatione litis non fit eius inſtantia prorahenda, & nos ¹⁰ quoque conſulti, quamdîu delegatus à nobis, qui ſententiam tulerat, iuriſdictionem ſuam interponere valeat, vt ſententiæ pareatur, reſponſiſſe noſcamur, quod vſque ad annum integrum inſiſdictionem ſibi commiſſam ad exequendum ſententiam valeat exercere: dictis iudicibus differentiis in correctione procedere, cùm iam decem & ſeptem eſſent meſes elapſi, ex quo noſcuntur mandatum Apoftolicum recepiſſe, ac de criminibus inquirere, licet non criminaliter ageretur, correctioni nun immeritò Cardin. inſiſtere potuiſſe memoratæ. Sed ad hoc altera pars reſpondit, quod hoc colorem excuſationis haberet, ſi prædicti iudices à Legato commoniti ad correctionem procedere neglexiſſent. In quo caſu eorum fortè defectus per diligentiam potuiſſet

potuisset Legati suppleri, sicut de Metropolitano in canonibus legitur, quod tunc demum ea potest facere, quæ ad Suffraganeos pertinent, cum illa Suffraganei ² negligunt adimplere. His igitur, & aliis, quæ vtraque pars proponere curauit, auditis, & inquisitione vtraque, Cardinalis videlicet, & Archiepiscopi, & Episcopi prædictorum diligenter inspectâ, intelleximus ex depositionibus iuratorum, quod cum tempore promotionis ipsius Vv. octo millium librarum monasterium grauaretur, & non multo tempore post idem debitum vsque ad duo millia librarum fuerit diminutum, nunc tamen vsque ad sex millium librarum summam excreuit; cum sicut prius contigerat, de prouentibus monasterij debitum potius diminui debuisset, quam augeri, nisi Rectoris incuria obstidisset. Et quamuis ad excussionem suam proposuerit idem Vv. quod propter expensas factas in causa, quam contra Cluniacense monasterium habuit, in qua quendam Prioratum euitit, idem fuerat debitum augmentatum; fuit tamen ei ex aduerso responsum, quod propter expensas illas debitum interim augmentari non debuit, cum propter hoc possessiones quasdam eiusdem obligauerit Prioratus, maxime cum in eisdem prosecutione negotij vix expensæ fuerint mille libræ. Adiecit etiam dictus Vv. quod occasione cuiusdam domus, quam in villa Corbeiz de nouo construxerat, debitum supradictum excreuit. Ad quod pars aduersa respondit, quod ex prouentibus monasterij expensas huiusmodi facere potuit absque onere debitorum; præsertim cum propter hoc non modicum auxilium à ³ Burgensibus fuerit eidem impensum. Præterea cum ex confessione ipsius constiterit, quod in Capitulo præstiterat iuramentum, ne debitum de nouo contraberet: ac postea contraxerit debitum, contra iuramentum proprium veniendo, sicut testes deponunt, argui de periurio videbatur. Ad quod idem Vv. hoc modo respondit, quod etsi primò huiusmodi præstiterit iuramentum, postea tamen quoddam factum fuit in Capitulo constitutum, per quod iuramentum ipsum exitit relaxatum. Sed contra hoc pars altera replicauit, quia cum non constiterit, quod per tale statutum reuocatum fuerit iuramentum, & appareat eundem Vv. non solummodo iuramentum de debito non contrahendo præstasse, sed venisse postea contra illud; manifestè liquebat, ipsum reatum periurij incurrisse: sed & ipsius insufficiencia & negligentia dissoluta videbantur manifestè probari. Et quamquam aliqui testium eum, quantum in se, dixerint esse bonum, nulli tamen deposuerunt expressè, quod utilis esset eius prouisio monasterio sepe dicto. Cum ergo nobis de talibus fuerit sufficiens in tali negotio facta fides, propter quæ præfatus Vv. erat meritò amouendus: etsi restituendus foret propter iudicialium ordinem non seruatum, ob causas tamen prædictas ipsum prouidimus manere priuatum regimine Abbatiz: Ioannem nihilominus supradictum, quem pro eo, quod præfatus Vv. propter iuris ordinem non seruatum quodammodo inordinate remouit, intelleximus ob eandem causam per consequentiam minus legitimè substitutum, per sententiam amouentes: quem quia non propter personæ viciū, vel defectum, sed propter iuris ⁴ solennitatem, sicut præmissum est, prætermisam amouimus, ipsum postmodum restituimus in Abbatem: & memorato Vv. in loco, qui dicitur Guidoc, cum pertinentiis suis in Imperio constitutis, iustissimè prouideri. Ita videlicet, quod ibi cum vno Corbeiensis monacho commoretur, & censum quinque marcharum ad pondus Colonienſe, in festo Purificationis Beate Virginis, Abbati & successoribus suis annuatim persoluat: & personatibus, ac Ecclesiis eiusdem Balliuz, iamdicti Abbatis & successorum suorum donationi liberæ reservatis, eisdem fidelitates, & homagia liberorum hominum eorundem locorum debeant exhiberi. Ac in iuramento fidelitatis, quod eisdem fuerit præstitum, exprimitur, quod iidem humines supradictum Vv. super saxe prouisionis prouentibus nullatenus damnificare præsumant, ita videlicet, quod & ipse Vv. super indemnitate prædictæ Balliuz, ne ipsam dilapidet, corporale præbeat iuramentum. Si quid autem post sententiam nostram super vtriusque amouitione prolata, circa electionem Abbatis, quam in prolacione ipsius sententiarum nostrarum diximus prouidentiz referendam, à Corbeiensibus monachis, vel quolibet alio, in eisdem Abbatis præiudicium fuerit attentatum, id decernimus non valere. Quocirca discretionem vestram per Apostolica scripta mandamus, quatenus quod à nobis est pro ipsius Monasterij utilitate prouisum, faciatis appellacione remotâ inuiolabiliter obseruari, corrigentes

circa Priorem, & Monachos, & Prioratus Monasterij memorati cum consilio Abbatis ipsius, quæ secundum Deum, & B. Benedicti regulam fuerint corrigenda: & statucentes ibidem, quod regulate fuerint, & honestum: contradictores, si qui fuerint, vel rebelles, per censuram ecclesiasticam appellatione postpositâ compellendo. Quod si non omnes, &c. duo vestrum ea nihilominus exequantur. Datum Lateran. vii. Kal. Martij, Pontificatus nostri anno tertio decimo.

NOTÆ

1. **a Sylvanens[is].** Ita testituo inscriptionem, & Sinigram epistolam ex epistolis Innocentij III. editis à Boschetto lib. 1. regestr. 13. epist. 1. Sylvanens[is] evitiss Gallæ, ita dicta à Sylva Regia, quæ illam olim circumdabat, habet Ecclesiam Cathedralē suffraganeam Archiepiscopi Rhenensis, cui sanctus Dionysius Atropagita sanctum Regulum eius discipulum primum Episcopum designavit: notatur in cap. ex parte, de rescriptis. In presenti testitib[us] Innocentius Gaufrido eius Praefuli scilicet de quo hæc Rigordus ad annum 1213. *Gaufridus Sylvanens[is] Episcopus sentiens se iam aetate, quem corpulentia ponderosa infirmitatem oreri, quod iam per triginta annos portaverat, impetravit a summo Pontifice, sicut in iure canonum est, licentia, renuntiavit Episcopatu, & transiit ad monachos Carolici Cister. Ordinis.*
2. **b Latinien[sis].** Latinicam petebat monasterium est Ordinis D. Benedicti, in diocesi Patiensis, constitutum à sancto Fusco eius primo Abbate anno Christi 648. exemptum ab omni iurisdictione, immediatus patet Romano Pontifici, & eius Abbas Dynasta dicitur, ut referunt Ypes tom. 2. Chron. D. Benedicti, anno 648. cap. 2. Chopinus lib. 1. de sac. Pol. tit. 4. num. 17. Catham funditionis referunt Samath. tom. 4. Gallia Christi. verbo Latinicam.
3. **c Corbeien[sis].** Duplex est monasterium Corbeien[se] Ordinis D. Benedicti: aliud novum, in Saxonia, de quo egi in cap. cum venerabilis, de consil. aliud vetus, in Francia, in diocesi Ambianensi, fundatum à sancta Batilde vidua Clodovei II. Christianissimi Regis, sub titulo Sanctorum Apostolorum Petri, & Pauli, dictum Corbeien[se] à pago, in quo ædificatum fuit: olim opulentissimum fuerat, & ab omni iurisdictione exemptum per nostrum Innocentium III. cuius exemptionis litteras refert Ypes tom. 2. Chron. D. Benedicti, in appendice, qui plura de eodem monasterio adducit anno 662.
- d R. de Corzon.** Robertus videlicet, qui Canonici Parisiensis, creatus fuit Cardinalis tituli sancti Stephani in Cælio monte, ut constat ex epistola 150. Innoc. III. lib. 1. regestr. 13.
- e Nouionens[is].** De Nouionensi Belgarum diocesi egi in cap. 1. de delictis p[re]s.
- f Innocare.** Iuxta tradita in cap. 1. de offic. iudic.
4. **g. G. sancta Maria in Porren.** Hic est Guallus, de quo Rigordus in vita Philippi Augusti, anno 1208. ait: Innocentius Papa III. misit Legatum in Franciam Guallum sancta Maria in Porren Diacorum Cardinalem, iuris peritum, bonis moribus ornatum, omnium Ecclesiarum visitatorem diligentiissimum. Postea fuit creatus presbyter Cardinalis tituli sancti Marini, ut notant Bosquetus in presenti.

h Fratres eiusdem loci. Quibus compete-
bat electio Abbatis ipsius monasterij, ut constat
ex epistola Nicolai Pontificis, quam refert Ypes
tom. 2. Chron. D. Benedicti, in appendice.

i Argemoli. De quo Prioratu egi in cap. 1. de
exceptionibus.

j Archiepiscopo. Guidoni videlicet. De Rhe-
men[si] Metropoli nonnulla notui in cap. 2. de
appellat.

k Atrebatens[is]. Rodulfo videlicet, de quo,
& ea diocesi egi in cap. 13. de arbitris.

l Compotitionem. Ad quam non solum iudi-
ces ecclesiastici partes debent inducere, verum &
aliquando cogere, ut in cap. 16. de electione, ubi
probaui.

m Non derogat speciali. Cap. studij 2. de
offic. delegat. Immo & contra speciale derogat ge-
nerali, ut probavi in cap. 1. de rescriptis.

n Ultra biennium. Ut probavi in cap. de cau-
sis 4. de offic. deleg.

o Nos quoque consulti. In cap. querenti 26. de
offic. deleg.

p Negligunt adimplere. Iuxta tradita in cap.
Pastoralis, de offic. Ordinis.

q Burgensium. Burgenses qui dicantur, ex-
cepti in cap. Abbas, de his qua vi, metus cau-
sa sunt.

r Propter iuris solemnitatem. Ex ita recte po-
terat iterum eligi, iuxta tradita in cap. super eis,
de electis.

COMMENTARIUM.

Cum de huius textus integra parum curas-
sent repetentes, varia, & prolix aliena ab
Innocentij mente in presenti docuerunt, illud
que eis præcipue in hac Decretali difficile vi-
sum est, quomodo videlicet Pontifex, qui te-
netur ordinem iudiciorum servare, cap. in cau-
sis 19. de re iudic. confirmari sententiam pri-
vationis Abbatis Corbeien[sis], imposere à Cardi-
nali Legato, iudicario ordine non servato: &
etiam confirmari electionem Ioannis, qui non
potuit in locum Vv. substitui, si ille deicus
fuit iuris ordine prætermisso. Quod autem iura
ordo servatus non fuit, patet, nam Cardinalis
Legatus, de quo in hoc textu, non erat iudex
competens ad depositionem Abbatis. Primum, quia
inquisitio fuerat specialiter commissa Canonici
Nouiodon. unde Legatus in ea procedere non po-
tuit, ex cap. studij 2. de offic. deleg. Secundum quia
fuerat inquam suspectus recusatus, & simul ap-
pellatio ab eodem interposita, ob quas causas sus-
penditur iudicis potestas, cap. si quis 4. de foro
compet. cap. cum speciali 6. in princip. de appellat. Ex
actis vero coram iudice incompetenti non potest
ferri sententia per alium iudicem, ad quem causæ
cognitio pertinet, cap. ut si clerici, de iudiciis.
Cui difficultas ut satisfaciat Glossa in presen-
ti, verbo Prævidimus, Anania numer. 2. Pe-
regra de manu reg. par. 1. cap. 4. num. 7. do-
cet Pontificem de plenitudine potestatis posse
iudicare

indicare solā veritatē attentā, & omisso iudicio-
rum ordine. Sed hæc sententia conuincitur tum
ex dict. cap. in causa, tum quia Princeps non debet
iudiciorum ordinem præiudicare, & eorum so-
lennitatem relaxare, nisi ex iusta & necessaria
causa. Hæc in præfati, num. 14. docet senten-
tiam Innocentij iō præfati iustificari ex acta
gestis ante recusatorem, & appellationem. Sed
hæc sententia præterquam quod diuinaria est,
conuincitur, quia per præuentionem factam à
iudicibus delegari incompetens effectus fuit
Cardinalis Legatus; & ideo de causa ap-
prensus iuris ordinem prætermittit, l. iuris ordinem,
Cod. de iurisdic. Quare bis omitti sententis di-
cendum est, Innocentium in præfati casu iu-
diciorum ordinem seruasse, & per legitimos
trinites approbasse sententiam priuationis, quam
tulerat Cardinalis Legatus, quia io tpla in-
stantia appellationis curam ipso fides facta fuit

criminoſum, & excessum, quæ coram Cardinali
obiecta, & probata fuerant contra Abbatem
ſpoliatum, vt conſtat ex verſiculo cum igitur,
huius textus. Vnde non imponitur poena priua-
tionis, nec confirmatur electio ſecondi Abba-
tis, propter acta geſta prætermiſſo iudiciorum
ordine, ſed propter acta legitime ordinata in
iſtantiâ appellationis: quum præxim agnosc-
runt, & probatur Barol. in l. i. num. 12. Cod.
quando prouocare, Alex. lib. 6. conſil. 181. nu-
mer. 14. Valſcius de partit. cap. 39. num. 74. &
eadem ratione, ſicut conſtituitur ab Inno-
centio de poſſitio prioris Abbatis, ita etiam ap-
probatur noua electio ſecondi; quia licet in
principio ordinatè facta fuiſſet, prætermiſſo le-
gitimo iudiciorum ordine; tamen io plenario
appellationis iudicio ſortitæ ex nouis actis de-
poſitionis vnus, & electioem alterius con-
firmant.

CAPVT XXIII.

* Innoc. III. in regiſtro.

Accedens ad præſentiam noſtram G. nepos quondam Subd. n. H. ſua nobis que-
ſtione monſtrauit, quod cum dil. fil. noſter H. Subd. apud Sed. Ap. viam vni-
uerſæ carnis ingreſſus fuiſſet, præbendam, quam decedens habuerat in Eccleſia
Crem. ei duximus conferendam, ven. f. n. H. Epifcopo & dilectis f. Capitulo Ec-
cleſiæ Cremon. iuuigentes vt eum in frautem reciperent, & tam ſtallum in Cho-
ro, quàm locum in Capitulo, & præbendam eandem ipſi ſine difficultate aliqua af-
ſignarent: tibi etiam, fili Archid. & dil. fil. Præpoſito ſanctæ Agathæ dedimus in
mandatis, vt ſi Epifcopus, & Canonici mandatum Ap. non impleverint, vos illud
ſublatu appellationis obſtaculo exequi curaretis, contradictores per cenſuras eccle-
ſiaſticas appellatione remotâ compellentes. Cumque tu, & idem Præpoſitus, ſicut ex
litteris veltis acceperimus, monuiſſetis Epifcopum, & Canonicos Cremon. ad manda-
tum Ap. exequendum, ipſi aſſeruerunt noſtras litteras per veri ſuppreſſionem obten-
tas, cum viuente adhuc Subd. prædicto, filium cuiuſdam nobilis ciuis Crem. in Ca-
nonicum recepiſſent, & promiſiſſent proximam præbendam vacaturam. Adiece-
runt etiam, quod ante receptionem litterarum noſtrarum nuntium ſuum ad Sed. Ap.
deſtinarent; & ideo ne procederetis ulterius, ad audientiam noſtram appellarentur.
Iuuenis etiam, cui per Epifcopum, & Canonicos eadem fuerat præbenda conceſſa,
duxit ad audientiam noſtram proclamandum, vnde vos non proceſſiſtis ulterius, ſed
quæ acta fuerant, per veſtras nobis litteras intimaviſtis. Igitur petebat memoratuſ G.
vt ex eo, quod Canonici contra Later. Concil. fecerant, impediri non poteretur
noſtræ conceſſionis effectum, ſed præbendam ipſam faceremus eum pacificè poſſi-
dere, quæ ſi fuiſſet etiam iuueni memorato conceſſa, debebat tamen noſtra con-
ceſſio, quæ præceſſerat, præualere. Verùm dil. fil. Bonus Ioannes prædictorum Ca-
nonicorum & Epifcopi nuntius, propoſuit, quod priùs quàm ad eos mandatum Ap.
emanaviſſet, præbendam ipſam iuueni conceſſerant memorato: & ſubiunxit, quod di-
ctus G. ſuper homicidio, & periurio infamiâ publicâ laborabat: vnde non ſolum
admittendus non erat ad Crem. Eccleſiam, ſed eiſcendus potius, etiam dum fuiſſet
admiſſus. Epifcopus quoque per ſuas nobis litteras intimauit, quod cum pro eodem
G. litteras Ap. recepiſſet, ei conſuluit, vt etſi conſcientiâ ſaluâ poſſet, tamen ſaltem
de periurio & homicidio ſe purgaret, niſi contra eum appareat legitimus accuſatori
ſed ipſe purgationem præſtare noluit, nec offerre. Nos igitur attendentes, quod ſi fi-
lius nobilis memorati, ſicut Epifcopi, & Canonicorum Crem. & executorum noſtro-
rum litteræ aſſetabatur, fuit contra Later. Concilium ad proximam vacaturam ad-
miſſus, vt poſtmodum acceperunt, non vacantem, cum priùs quàm de morte Subd. ad
Crem. certus nuntius peruenire potuiſſet, prædictam præbendam conceſſerimus præ-
dicto G. d.v. per. Ap. ſc. mandamus quatenus quod de præmiſſo iuvene factum eſt, de-
nunciatis irritum & inane, ac niſi præfatus clericus ſuper prædictis criminibus publicè

fuert infamatus, concessionem nostram sibi factam per cens. eccl. ap. rem. executioni mandetis. Demum si legitimus accusator apparuerit, auditis quæ fuerint hinc inde¹ proposita, etsi prædicta crimina, vel eorum aliquod, legitime fuerint probata, ipsis super eadem præbenda perpetuum silentium ap. postposita imponatis. Quod si probare nequiverint, eam sibi auctoritate Ap. confirmetis: si verò contra eum legitimus non apparuerit accusator, si ipse super prædictis criminibus dignoscitur tamã resperfus, purgationem ei canonicam indicatis, in qua si fortè defecerit, perpetuum silentium ei imponere curetis: si autem præstiterit ipsam, contradictores ab eius molestia compellatis, & eos, qui nisi sunt eum impedire, in expensis ipsi legitimis condemnatis.

NOTÆ

1. ^a *Dem.*] In quarta collectione, *sub tit. de cens. prefend. cap. 3.* repetitur textus hic, pro-
vi in præsentis transcribitur, sub hac inscriptione: *Innoc. III. in regestis.* Sed etsi sedulè legas regestrum epistolarum ipsius Pontificis editum Colonia, & correctum à Cardinali Sierlo, & edium à Bosquero, non repenes præsentem epistolam, quia spectat ad libros regestri, qui adhuc non prodierunt: quare cognosci non potest cui Archiepiscopo retribuit Pontifex, licet ex textus serie facile deducatur, retribuisse Archiepiscopo.
2. ^b *Nepos.*] Idem filius fratris, qui non prohibetur in beni facti patris virtute novæ electionis succedere, *cap. 2. de arbitrio, cap. ex parte, de offic. deleg. ubi notauit.*
^c *Cremen.*] De Cremonensi Ecclesia egi in *cap. 2. de presb. non bap.*

^d *Conferendum.*] Quia omnia beneficia vacantia in Curia, iam olim conferbantur à Romano Pontifice, ut hodie conferuntur virtute regulæ Cancellariæ, quam exposuit Gonzalez Gioss. 51. ad Regul. 8.

^e *Stallo.*] De stallo egi in *cap. 2. de renunciant.*

^f *Lateran. Concilium.*] Relatum in *cap. 2. de concess. prefend.*

^g *Admissus.*] Quia iam homicida, quædam per-
iurus privantur beneficiis iam obtentis, ut proba-
ui in *cap. 2. de rescriptis.*

^h *Legitimus accusator.*] Quinam ille sit, ex-
positi in *cap. 1. hoc tit.*

ⁱ *Proposita.*] Quia in præsentis G. agebat reme-
dio adspiciendæ possessionis, unde huiusmodi
exceptiones adhibentur, quia infamatus de eis
delictis dicebatur, *cap. consuetum, de appel.*

CAPVT XXIV.

Idem in Concilio^a Generali.

Qualiter, & quando debeat Prælatus procedere ad inquirendum, & puniendum subditorum excessus, ex auctoritatibus veteris, & novi Testamenti colligitur evidenter, ex quibus postea processerunt canonicæ sanctiones, sicut olim aperte bdistinximus, & nunc sacri approbatione Concilij confirmamus. Legitur enim in Evangelio, quod villicus ille, qui diffamatus erat apud dominum suum, quasi dissipasset bona ipsius, audivit ab illo: Quid hoc audio de te? Redde rationem villicationis suæ, iam enim non poteris amplius villicare. Et in Genesi Dominus ait: Descendam & videbo, verum clamorem, qui venit ad me, opere compleverint. Ex quibus auctoritatibus manifestè probatur, quod non solum cum subditis, verum etiam cum Prælatus excedit, si per clamorem, & famam ad aures superioris pervenerit, non quidem à malevolis, & maledicis, sed à providis & honestis, non semel tantum, sed sæpe, quod clamor innotuit, & diffamatio manifestat, debet coram Ecclesiæ^a senioribus veritatem diligentius perscrutari, ut (si rei poposcerit qualitas) canonica distinctio culpam feriat delinquentis, non tanquam idem sit accusator & iudex, sed quasi denunciante famâ, vel deferente clamore officij sui debitum exequatur. Licet autem hoc sit observandum in subditis; diligentius tamen est observandum in Prælatis, qui quasi signum sunt positi ad sagittam: & quia non possunt omnibus complacere, cum ex officio suo teneantur non solum arguere, sed etiam increpare; quin etiam interdum suspendere, nonnunquam verò ligare, frequenter odium multorum incur-
runt, & invidias patiuntur. Et ideo sancti Patres providè statuerunt, ut accusatio Prælatorum non facile admittatur, ne concussis columnis, corruat ædificium, nisi diligens adhibeatur cautela, per quam non solum falsæ, sed etiam malignæ criminacioni janua præcludatur. Verum ita voluerunt providere Prælatis, ne crimina-
rentur iniuste, ut tamen cauerent, ne delinquerent insolenter, contra morbum utrumque inveniunt medicinam congruam, videlicet ut criminalis accusatio, quæ ad diminutionem capitis, idest degradationem, intenditur, nisi legitima præcedat inscriptio,

inſcriptio, nullatenus admittatur. Sed cum ſuperexceſſibus ſuis quiſquam fuerit inſamatus, vt iam clamor aſcendat, qui diuſus ſine ſcandalo diſſimulari non poſſit, vel ſine periculo tolerari, abſque dubitationis ſcrupulo ad inquirendum, & puniendum eius exceſſus, non ex odij ſomite, ſed charitatis procedatur affectu: quatenus ſi fuerit grauis exceſſus, etſi non degradetur ab ordine, ab adminiſtratione tamen amoueatur omnino: quod eſt ſecundum ſententiam euangelicam à villicatione villicum amoueri, qui non poteſt villicationis ſuz dignam reddere rationem. Debet igitur eſſe præſens, * contra quem facienda eſt inquiſitio, niſi ſe per contumaciam abſtineat: & exponenda ſunt ei illa capitula, de quibus fuerit inquirendum, vt facultatem habeat defendendi ſeipſum: & non ſolum dicta, ſed etiam nomina ipſa teſtium ſunt ei (vt quid, & à quo ſit dictum, appareat) * publicanda, nec non exceptiones & replicationes legitimæ admittendæ, ne per ſuppreſſionem nominum, inſamandi; per exceptionum verò excluſionem, deponendi falſum audacia præbeat. Ad corrigendos itaque ſubditorum exceſſus, tantò diligentius debet Præſatus aſſurgere, quantò damnabilius eorum offenſas defereret incorrectas. Contra quos, vt de notorijs exceſſibus taceatur, etſi tribus modis poſſit procedi, per accusationem videlicet, denunciationem, & inquiſitionem ipſorum: vt tamen in omnibus diligens adhibeatur cautela, ne fortè per leue compendium ad grane diſpendium veniatur, ſicut accusationem legitima debet præcedere ^a inſcriptio, ſic & denunciationem ^b charitativa monitio, & inquiſitionem ^c clamor inſinuatio præuenire: illo ſemper adhibito moderamine, vt iuxta formam iudicii ſententiæ quoque forma dictetur. Hunc tamen ordinem circa regulares perſonas non credimus viſquequaque ſeruandum; quæ (cum cauſa requirit) facilius, & liberius à ſuis poſſunt adminiſtrationibus amoueri.

NOTÆ.

1. ^a **Generali.** ^a Lateranenſiſ videlicet celebrato ſub Innocentio III. cap. 8. vbi reperitur textus hic, & in quarta collectione, ſub hoc titulo. cap. 4. De hoc Concilio nonnulla notaui in cap. 1. de Summa Trinit.
- ^b **Diſtinximus.** In cap. qualiter, hoc titulo. vbi extant priora verba breuis textus viſque ad §. Debet.
2. ^c **Maleuolus.** ^c Que diſſimatio debet eſſe apud probos & honeſtos viros, cap. cum inter 12. de purgat. canonic. Nec tunc obſtat textus in cap. cum in inuentus 15. de præſumpt. vbi etſi conſtat diſſimulationem Episcoporum à maleuolis, & improbis hominibus inſinuiſſe, adhuc ad inquiſitionem contra ipſum proceſſum fuit; quia diſtinguendum eſt com Henrico Boic. libi, & Abbatia num 2. Inter inſinuationem, quæ fit ad ponitionem delicti, ad quam procedi non poteſt, ſi diſſimatio ab improbia hominibus originem duxit; & inter eam, quæ fit vt conſtat, an ipſa diſſimatio à maleuolis orta fuerit: hæc ſecunda omni caſu fieri poteſt; prima verò non niſi præcedente diſſimulatione apud probos viros.
3. ^d **Senioribus.** ^d quauis poteſtas inquirendi, corrigendi, & puniendi ſubditorum exceſſus primò & principaliter ad Episcopos ſpectet, illam tamen de iure antiquo ſoli per ſe exercere non poterant, ſed inſimul ſeniorum, ſive clericorum ſuorum debent conſenſum, ſeu conſilium adhibere: quod plerumque ſtatutum legitur in Concil. Carth. 4. can. 13. ibi: *¶ Episcopos noſtros cauſam audiat abſque præſentia clericorum ſuorum, & aliquam irrita erit ſententia Episcopati, niſi clericorum præſentia, conſentirent.* Quem etſiſtle Gratianus in cap. Episcopos 15. quaſt. 7. quod rectè ſtatuierant PP. ne quis fortè dum ab vno iudicaretur, non auctoritate canonica, ſed potius tyrannice poteſtate in diſceſſus opprimeretur: quam rationem expreſſit Concil. Hiſpal. 2. can. 6. in illis verbis: *¶ Si inſin-*

præſentiam PP. Synodalem ſententiam noſtris noſtrum ſine Concilio examinaſſet. Preſbyterum, vel Diaconum delictis audeat; nemini multo ſunt, qui in diſceſſus poteſtates tyrannice, non auctoritate canonica damnant. Extat in cap. 1. 15. quaſt. 7. Quid autem per illa verba, abſque præſentia ſuorum clericorum, in Concil. ſignificetur, exponendum eſt. Duarenſis lib. 1. de ſacr. cap. 12. exiſtimauit, clericorum nomine Episcopos comprehendi, qui Synodi cauſa quotannis conuocabantur, iuxta tradita ſuprà in cap. ſicut olim. Sed verius credo, per illa verba Capitulum, ſeu Canonici ipſius Eccleſiæ ſignificari: quod mihi probat D. Hieronymus ad Roſicum, cuius fragmentum extat in cap. Eccleſia 16. quaſt. 1. vbi de Capitulo, ſeu Canonici agens; preſbyteros ſuos vocat, quomodo & Concilium Carthaginienſe clericos ſuos. Verba Hieronymi ſunt: *Eccleſia habet ſenatum, eorum preſbyterorum, ſine quorum conſilio nihil memorabile agere licet.* Roboſum filium Salomonis idem perdidit Regnum, quia noluit audire preſbyteros ſuos. Senatus quoque Romani habebat, cuius conſilio cuncta agebatur: & nos habemus ſenatum noſtrum, eorum preſbyterorum. Hoc etiam Concilij Carthag. ſtatutum ſignificat ſubſequentes Pontifices. D. Gregorius ſcribens Ioanni Episcopo Panormit. lib. 11. epiſt. 49. cuius fragmentum extat in cap. ſi quis verò, 86. diſt. de poſtea repetitur in cap. ſi quis verò 15. quaſt. 7. ibi: *Si quis verò de quocunque clerico ad aures tuas peruenierit, quod te inſultu poſſit offendere, ſimile non credas, nec ad vindictam totas accendas incognitas, ſed præſentibus ſenioribus Eccleſiæ ſuæ eſt veritas perſeueranda; & tunc ſi qualitas rei poſſuerit, canonica diſtinctione culpam ſerius delinquenſis.* Vbi quid ſignificent illa verba, præſentibus ſenioribus, non conſtat apud Interpretes, Gloſſa verbo Eccleſiæ, in diſt. cap. ſi quis d. exiſtimauit, ſeniorum nomine in eo textu Episcopos ſuffraganeos ſignificari, ideo quia epitoſa illa miſſa eſt Ioanni Panormit. Præſuli, qui Archiepiſcopus erat Corinthiorum, & ita ſuffraganeos

luc se habebat. Glossum sequitur Torrisfermata ibi, §. 3. dicitur. Aliiter ea verba accipit Duarous lib. 1. de sacris Ecclesiis, cap. 7. scilicet de presbyteris proprie Ecclesie, seu de Capitulo. Quasi dicat Gregorius, non posse Episcopum sine capituli consensu procedere ad inquisitionem, sine vindictam criminis in clerico. Quam explicationem magis probasse videtur Innocentius III. io presenti, & in cap. Licet, de simonia, in illis verbis: Sed carum Ecclesie senioribus diligenter est veritas perscrutanda. Vbi dum istidem verbis Gregorij vitas Innocentius, verba illa senioribus, de presbyteris intelligit, non de Episcopis. Ego vitamque expositionem admitto pro temporum varietate, & iuxta seculum Gregorij primam vetiorem credo, namque seniorum nomine non tantum Episcopi, verum, & presbyteri significantur, quia ut inquit D. Ildorus relaxus in cap. clerici, §. presbyter, Græcè πρεσβύτερος, Latine senior interpretatur: vnde D. Gregorius non tam de capitulo accipiendus est, quam de Concilio, quod quonianis Episcopi celebrabant, nam cum loquatur de clerico damnando, ut constat ex illis verbis, de quocunque clerico, necessarii accipiendus est de Concilio, siquidem eo tempore clerici non à propriis Episcopis, & Capitulo damnabantur, sed potius in Concilio Episcoporum, ut constat ex Concilio Hispalensi a. 600. l. ibi: Sexta aitione corporum, Fragrantum Cordubensis Ecclesie presbyterum in iussu alim à Patre suo deiection. Et infra: Dixeruntque, ut iuxta presertim Patrum Synodalem sententiam nullus nostrum sine Concilio examine quælibet presbyterum, vel diaconum deiection audeat. Concil. Canthag. a. 600. c. 10. Carthag. 3. c. 8. & si

corrigendus erat Abbas, ceterum Abbatum numerum Episcopus adhibere debebat, cap. si quis Abbas 13. quæst. 2. cap. in ordinatione 61. dist. sed postquam modus ille cognoscendi de clericis in Concilio usualit, presentis verba, de senioribus Ecclesie, accipienda sunt de Canonici ipsius Capituli, ut in dist. cap. Heli, de simonia.

e. 11, contra quem.] Consonat textus in cap. absente 8. 3. quæst. 9. cap. 2. 8. quæst. 9. cap. 4. 3. quæst. 9. & alij congesti ab Aut. Augustino l. 3. epist. iur. tit. 17. Consonat lex 1. a. tit. 15. part. 3. illustrat Patexa de infirmis. eda. tit. 2. fol. 90.

f. Communionem.] Quia tunc etiam absens damnari potest, c. 74. Apostol. cap. 4. de praesumpt. Felix Papa II. in Synodo Romana epist. 2. cap. 8. ibi: Nec à communionem prohibetur accusatus, nisi ad electionem iudicium canonicè conuocatus, infra tres, aut sex, vel plures menses pro sui rationem redditurus venire distulerit. Refert Aut. Augustino, in epist. lib. 30. tit. 18.

g. Publicanda.] Cap. inquisitionis officium, hoc tituli, nec est eor hanc verba tantum exaudiamus de Episcopo, de cuius vita inquitur, ut voluit Cuias. lib. 2. obs. cap. 25. nam in quolibet priuato, contra quem proceditur per inquisitionem, idem obseruatur, dist. cap. inquisitionis, hoc tituli, vbi notui, verbo Nomina.

g. Inscriptis.] Inata tradita in cap. super his hoc tituli.

i. Charitatis monitio.] Ut probat in cap. 4. hoc tituli.

k. Clamata inforuato.] Idem diffamatio, iuxta tradita in cap. inquisitionis, hoc tituli.

CAPVT XXV.

Idem in Concil. Later.

Sicut olim à sanctis Patribus noscitur institutum, Metropolitanis singulis annis cum suis suffraganeis prouincialia non omitant Concilia celebrare, in quibus de corrigendis excessibus, ac moribus reformandis, praesertim in Clero, diligenter habeant cum Dei timore tractatum, canonicas regulas, maxime quæ statutz sunt in hoc generali Concilio, relegendes, ut eas faciant obseruari, debitam poenam transgressoribus infigendo. Vt autem id valeat efficacius adimpleri, per singulas dioceses statuunt personas idoneas, prouidas videlicet, & honestas, quæ per totum annum simpliciter, & de plano, absque vlla iurisdictione sollicitè in vestigent quæ correctione, vel reformatione sunt digna, & ea fideliter perferant ad Metropolitanum, & Suffraganeos, & alios in Concilio subsequenti, ut super his, & aliis (provt vtilitati, & honestati congruerit) prouidà deliberatione procedant, & quæ stauerint, faciant obseruari, publicaturi ea in Episcopalibus Synodis annuatim per singulas dioceses celebrandis. Quisquis autem hoc salutare statutum neglexerit adimplere, à sui executione officij suspendatur.

NOTÆ.

a. [Dem.] Concil. videlicet Generali Lateranensi, celebrato sub Innocentio III. vbi reperiuntur verba huius textus in cap. 6. & etiam extant in quarta collectione, sub hoc tit. cap. 5.

b. Reformandi.] In his etiam Conciliis prouincialibus olim de causis Episcoporum, & eorum excessibus agebatur, ut latè probat Petrus Marcha in concord. Sacra d. & Imperij, lib. 7. ferè per totum, & notui in cap. 1. de iudicio: & quærelæ,

atque accusationes contra ecclesiasticos ludices, ac posteriores laicos audiebantur. Leo I. epist. 82. ad Anastasium, relaxus in cap. de Concilio 18. dist. 11. Cooeil. Tolet. 4. can. 3. ibi: Omnes autem, qui causas aduersus Episcopos, ac potentes, aut contra quoslibet alios habere noscuntur, ad idem Concilium conuocant, ut quæcumque examine synodali à quibuslibet prauè usurpata inueniantur, Regis executione infiant, infirmitatibus his, quibus iura sunt, reformetur. Gruioribus autem quæstiones, veluti de fide, Sacramentis, & similes, in eis Cooeiliis traditi

Bequaer

nequeunt absque Romani Pontificis auctoritate, vel eius Legati presentia, cap. Concilia 9. 17. diff. probant latè Thomafius de Concil. promiss. P. Macha lib. 6. concord. Sacror. & Imp. cap. 13.

2. c. Relegentes.] Consonant Concil. Toler. 4. in Decret. de reform. Concil. ibi: Dilectus abbas induens codicem canonum in medium profertur, capitulum de agendis Conciliis promouitur. Brachar. 1. Rele-cti canones veterum, qui ad institutionem clericalis disciplinæ pertinent. Mugod. sub Rabano: In una turra residerunt Episcopi cum quibusdam monachis, legentes, acque perscrutantes sanctum Evangelium, nec non epistolæ, & alias Apostolorum, canonis quoque, ac diversa sanctorum Patrum epistola. Ut ita facilius obferrentur, & contraria confutaretur, seu præscriptio contra eos intendi non possit. Et quia per iteratam lectionem legem facilius ipse percipiunt, & memoria retinentur. Vnde in Concilio Maflicon. 1. can. 9. excoitur, vt durante ieiunio S. Martini legantur canones, quibus leges de disciplina sancuntur: & in Concil. Cabilon. sub Leone III. cap. 37. ita statuitur: Cum omnia Concilia canonum, que recipiuntur, sint à sacerdotibus legenda, & intelligenda, ac per ea sit eis viuendum, & prædicandum, necessarium duximus, vt ea qua ad fidem pertinent, & ubi de extirpandis vitiis, a. plenan- - dandis virtutibus scribitur, hoc ab eis ratio legatur, ac bene intelligatur. Inde in monasteriis sæpe sæpius legitur regula, sub qua monachi degunt, iuxta Concil. Aquisgran. can. 123. Quoties ad collationem veniant, vnde & hanc institutionem, & aliorum scripturarum sanctorum prælegant. Ac Sacerdos Angustinus in sua regula, cap. ult. iussit, ne quod per obliuionem negligatur, semel in septimanam legatur. Faciunt textus in cap. 1. de locat. cap. quoniam, 40. de finem.

3. d. Personæ.] Testes synodales exponit Glossa in præfenti, nec male, de quibus, & eorum officio etj. in cap. præterea, de testib. cog. Etiam pro his personis intelligi possunt visitatores, de quibus D. Gregorius lib. 3. epist. 1. ad Macsimian. Syntef. Episcopum agit his verbis: Visitatores Ecclesiarum, clericique eorum, qui cum ipsis per non sua ciuitates parociales fariuntur, aliquod laboris sui capiam, & de reformatione subsidium. Ioannes II. R. Pontifex epist. 3. ad Episcopos Gallia. In Ecclesia Orientali dicuntur Periodoctor, seu circulator. Synod. Laodic. relata in cap. non de his, Bo. diff. in euen. schollis ait Balsamon: Præfens canon habet fieri Periodoctor, & non Episcopos, ne dignitas Episcopati viliis, & contemptu cadat. Sunt autem Periodoctor qui hodie ab Episcopis promouentur exarchi. Hi enim circulatorum, & delicta spiritalia obseruant, & fideles perficiunt. Illi subferipterunt Zonaras, & Iustel. in eo canone, Heraldas lib. 2. de auctor. rei indic. cap. 15.

COMMENTARIUM.

4. CONCILIO TRADITUR, ET PROBATUR.

EX hoc canone sequens comuniter deducitur assertio: Singulis annis est celebrandum Concilium Provinciale pro moribus, & excessibus corrigendis. Probant eam textus in can. 38. Apostol. cap. habetur, & seruetur, & beate per totam 18. diff. per totam 18. diff. placuit de consec. diff. 3. Anaclel. I. epist. 1. Concil. Nicen. 1. can. 5. ibi: Placuit autem annis singulis per totamque provinciam bis anno Concilium celebrari, ut communiter simul omnibus Episcopis congregatis provincia, discutiantur huiusmodi quaestiones. Autocheu. 1. sub Iul. can. 10. Carthag. 3.

can. 2. Hippohenfe can. 8. Rhegenfe can. 7. Agathenfe can. 1. & 75. Aurel. 3. can. 1. ibi: Vnusquisque Metropolitani in provincia sua cum provincialibus suis singulis annis synodale debent apparere tempore habere Concilium. Aurel. 4. can. 37. Aurel. 5. can. 18. & 21. Turon. 2. can. 10. Tolet. 3. can. 18. Tolet. 4. can. 3. Tolet. 11. can. 15. Tolet. 12. can. 12. Synodus 6. Cunitanin. can. 8. Synodus 8. can. 4. Patif. 3. lib. 1. cap. 26. Latran. sub Leone X. sess. 10. Raribon. can. 26. Autocheu. 1. can. 19. Diuus Gregorius lib. 2. epist. 110. ibi: Et quidem, quia de habenda bis in anno Concilio Patrum vi regulis statutum, non latet: sed ne aliqua impleri hoc necessitas non permitit, simul saltem sine excusatione aliqua decernimus congregari, ut expectatione Concilij nihil prauum, nihil profanum ibidem. Melidenfe anno 841. can. 3. Vt Principes iuxta decreta canonum per singulas provincias saltem bis, annis simul in anno à Metropolitani, & diocesani Episcopis synodice conuenire concedant. Synodus Trull. can. 8. Nicena 2. can. 6. Teid. sess. 24. de reform. can. 2. Valen. anno 1322. can. 1. Vt Metropolitani cum suffraganeis suis annis singulis proximis talia celebrare Concilia non emittant. Tol. t. anni 1473. can. 1. Canonum institutionis sanctorum nominum ab antiquo per Metropolitanos Antistites cum suis suffraganeis provinciali Concilio debere celebrari. Tolentse parte vii. cap. 7. Succionense sub Pipino: Nonel. 123. Iustin. alia multis testimoniis congruenter Crespetrus in summa, verbo Concilium. Illustrant Ant. Augustin. lib. 5. tit. 30. Petrus Mateba in concord. Sacror. & Imper. lib. 6. cap. 13. Vighel. in method. inris Pontif. fol. 497. I. homafius de Concil. Prouinc. fol. 79. Paulus Idumay ad notis ad Iunio. III. lib. 2. epist. 45. Coriolan. in can. 38. Apostol. Landmeter. lib. 2. de veteri cler. cap. 104. Balsamon in can. 71. Synod. Carthag. Iustellus in can. 8. Ecclesia Afric. Viuar. in Marc. Max. anno 531. Coiaz. in cap. graue, de prob. Cresolus lib. 3. mythog. cap. 40. Duarenus lib. 1. de sacris Eccles. cap. 11. Moneta de canonis. cap. 5. num. 18. Cironius ad tit. de his qua sunt à Prælat. I. Dantis ad Decret. diff. 5. Celsioius de hierarch. lib. 5. cap. 11. §. vnic. Halliæus eod. trull. fol. 484. Balsamon. tom. 2. controu. lib. 1. cap. 4. Azot. 1. tom. infirm. lib. 5. cap. 18. Turrianus lib. 1. pre. controu. cap. 10. Besoldius tom. 1. pelis. de maiest. cap. 5. Ant. Petz in Pentat. fidei, cap. 6. de Conciliis, Solorzano tom. 2. de iure Indiar. lib. 3. cap. 7. num. 39. Altesterra hic.

Sed pro dubitandi ratione in præsentem assertionem ita insurge. Non solum iniusta, verum & superflua videtur præfens constitutio. Inusta ex eo, nam Metropolitani non potest de causis subditorum suffraganeorum primo & in prima instantia cognoscere, aut in eos propter excessus commissos animaduertere, cap. pastoralis, vbi probant, de offi. Ordin. ergo nec in Concil. Prouinciali singulis annis celebrando potest de eisdem causis cognoscere. Superflua etiam apparet præfens constitutio ex eo, quia Episcopi teneantur quotannis diocesim propriam visitare, cap. cum Apostolu, vbi probant, de consensu, & Archiepiscopus etiam quoniamvis, vel quoties poterit, cap. cum Romana, eod. tit. lib. 6. Igitur cum tunc possint tam Episcopi, quam Metropolitani excessus corrigere, & mores reformati, frustra desideratur, vt quotannis omnes Episcopi vnios Prouinciæ cum suo Metropolitano conueniant ad eisdem excessus corrigendos cum magno omnium dispendio, propter Pastorum absentiam, nec-

IMP-
PRO-
MATR-
TRADITA
ASSERITUR.

non ipsorum Prelatorum incommodo & expensis.

6.

CONCIL.
SYNODI
DE DEVI-
TIO.

Quā dabitur ratione non obstante, vera est preterea assertio, pro cuius expositione scire oportet, Concilium præter crymologium D. Induri in *cap. canones*, §. *Synodus*, 15. *diff.* dici à concalando, idest conuocando, ut loquitur Felicius Pompeius illud Virgilij.

Conciliumque vocat Divini Patris atque hominum Rex.

Illustrat Potlerus lib. 5. *hist.* cap. 13. Beyerlinch. in *theat. vita hom.* tom. 2. verbo *Concilium*. Non est quævis populi, aut Patrum congregatio, sed ea duntaxat, quæ à magistratu, vel sacerdote pet publicum ministrum legitime fit. Sant qui morem indicendi & celebrandi Concilia reperiunt à Romanis, qui tam Romæ, quàm in Provinciis hyemis tempore, quo militiam exercere nequebant, iuri dicendo vacabant, locum, & tempore designantes ad lites decidendas, & causas peragendas: hoc erat apud illos conuocatus agere, ut probant Festus Pompeius, & Theophil. in §. *eadem*, *Instit.* ex quib. *caus.* maior. ibi: *Concilium est confectus certorum veterum, statim amicus, & diebus evocatum*. Hinc dicitur Concilium in l. 1. *Cod. de vind. liberi*. Illustrat. Ger. t. g. Amb. ad Tertul. de *monachis*, c. 13. *abs* §. Hæ Conciliorum origo placuit nonnullis: sed certe Concilia nostra alio more originem præfereunt; siquidem totum sacrum vñum legitimum obnostratum *Deuteronom.* cap. 17. in illis verbis: *Si difficile, & ambiguum*, &c. à Christo Domino indicatum in calo telato *Matthæi* cap. 6. *Matth.* 3. *Lucæ* 9. ibi: *Perit Iesus in partes*, &c. ut notantur Batoniis tom. 1. anno 35. num. 14. & commendatum apud Matthæum cap. 18. ibi: *Si duo, vel tres congregati fuerint in nomine meo*, &c. quæ verba de Conciliis esse accipienda decrevit Synodus Chalced. in *epist.* ad *Joannem*, & docuit Innoc. Papa in *cap. de quibus*, 20. *diff.* Illustrant Fe. Ant. Perez in *Pem. fidei*, *tratt. de Concil.* cap. 1. *Cartier*, tom. 2. *diff.* *fidei* §. 13. 6. de *Concil.* Comand. Kling. lib. 3. *diff.* cap. 23. Caballus in *not. Concil.* Chm. Lupus ad *can. Concil. Nicen.* Deinde secundum est, quod est Concilium generis. Primum est Concilium generalium, cùm Concilium totius orbis, ex omnibus videlicet provinciis, & diocesis, tam Orientis, quàm Occidentis celebratur, quod ideo dicitur græcè œcumenicum ab œcumenico est, quod significat universum terrarum orbem; quo etiam nomine Romanum Imperium apud Græcos, Latinosque scriptores significari plannum est. Sic Sanctus Lucas de descriptione Imperij Romani à Augusto impetrata loquens ait: *Prodiit edictum à Casare Augusto, ut describeretur universus orbis*. Illustrat. Iustel. in *notis ad canones Eccles. Afric.* c. an. 89. Occumenicæ autem Synodi, non nisi ex gravissimis hæresibus, quæ maximam partem perturbarent, conuocantur, & tantum auctoritate Romani Pontificis. Roussel. lib. 3. *hist.* *lursi*, *Pom.* cap. 2. & 3. pluribus reclusis Valenxuela contra *Veneris* part. 6. ex num. 1. de quorum auctoritate, necessitate, & infallibilitate, lare agens Coriolanus in *summa Concil.* in *prælatiis*, Iacobatus de *Concil.* Bellarmionis lib. 1. *curios.* *integ.* *tratt.* de *Concil.* Joannes Datis in 15. *diff.* vbi refert, omnia Concilia generalia hucusque in Ecclesia celebrata. Et an Concilium generale sit supra Pontificem, exponi in cap. 4. de *elect.* Secundum genus est Concilium, quæ vel Primates, vel Patres archiepi conuocant ex Metropolitanis, quod or-

donale dici potest, ex omnibus provinciis vniuersæ nationis, seu regni. Illud Concilium maiorum Synodum Episcoporum dixerunt Patres Synodi Antioch. *can.* 91. ibi: *Maiorem Synodum Episcoporum*. Constantinop. 1. *can.* 169. ibi: *Maiorem Synodum Episcoporum vniuersiusque dioceseos*. Constantinensis celebrata anno 567. In Maritico, in *can.* 9. & 20. dicitur generale Concilium, & vniuersale. Dicitur & Synodus plenaria in Concil. Carth. 3. *can.* 38. & Possidinius in *vita sancti Angulini*, cap. 8. Hipponenſe Concilium, plenarium totius Africæ appellat. Huius generis plurima reperiuntur Concilia in totis Conciliorum, ex d. œclesiis, seu nationibus celebrata, veluti Antiochenſia ex d. œccl. Orientis; Romana ex diocesi vrbis Romæ; Aquilensis ex diocesi Italiz; Gallicana ex diocesi Galliarum; Toletana ex diocesi Hispaniarum; Africana; seu Carthagenensis ex diocesi Africæ. Ex notione Concilium vniuersale pro Synodo dioceseos Galliarum accipiunt in canone 20. Concil. Maritico. 1. sub Patriarcha Lugdunensi celebrati, P. Marcha lib. 6. *concord.* cap. 21. Simili loquutione Concilia Toletana vniuersalia, & generalia vocantur. Concil. Tolet. 3. *can.* 18. ibi: *Præcipit hæc sancta, & vniuersalis Synodus*. Tolet. 4. in exordio: *Quoniam Concilium generale agimus*; & *can.* 3. *Si fidei causa est*, nos quolibet alia Ecclesie committimus, generalis totius Hispaniæ, & Galiciæ Synodus conuocetur: si tamen nec de fide, nec de communis Ecclesie utilitate tractabitur, speciale erit Concilium vniuersiusque provincie, ubi Metropolitanus elegerit, peragendum. Et Tolet. 5. *can.* 23. & 6. Tolet. 4. Vniuersalis Synodus nominatur in *can.* 7. ibi: *Si in omni Concilio Episcoporum Hispania vniuersalis Concilij decretum*, quod propter Principum nostrorum salutem esse consilium, in Synodo publicè voce debet pronunciari. Leo I. R. P. *epist.* 93. ad Theodorum Episcopum Aſiaticensem, cap. 17. *Habebat ergo apud vos Episcopale Concilium*, ad eum locum, quo omnibus opportunum sit, vniuersum provinciarum sacerdotum. Et paulo post: *Destinamus litteras ad fratres & Cœpiscopos nostros Tarraconenses, Carthagenenses, Lusitanos, & alios Galicos, eisque Concilium Synodi generalis indicimus*. Si autem aliquid obſtiterit, quominus possit celebrari Generale Concilium Galliciæ, saltem in vniuersum conueniant Sacerdotes, quo cuius vel provinciali conuentu remedium tanti videretur afferatur. Notatur Filiolus in *cap. irrefragabili* 13. §. 1. de *effice. ordin.* Iustel. in *cap.* 89. *Eccles. Afric.*

Tertium Concilium provinciale est, quod à Metropolitanis ex Episcopis sive provincie congregantur ad utilitatem provincie, ad causas Episcoporum dirimendas: & dicitur petrida Synodus in Concil. Antioch. *can.* 16. & 17. ibi: *Si autem illa perfecta Synodus, cui quoque vniuersi Metropolitanis*. Integrum Concilium vocatur in eadem Synodo, *can.* 16. apud Butchartum lib. 1. cap. 39. Synodus plenaria dicitur ab Innoc. I. Pontificale Concilium à Sidonio lib. 4. *epist.* 24. vbi notatur Saurius. Quæ Concilia provincialia dicuntur celebrari cum Episcopo à Hinemaro Rhenenſi in *communis*. ad Ludovicum Germaniæ Regem, cap. 7. ibi: *Si temporibus à sacris regulis consensum provinciales Synodos cum Episcopis, & specialiter cum presbyteris*. Concilij provincialis origo reperenda est à temporibus Apostolorum, nam in ipsorum actis legitur Paulum Miletem conuocasse omnes Ephesiæ provincie maiores nati; ubi Vvaldens lib. 2. *deſcriptio fidei*, *art.* 2. *quæſt.* 27. formam Concilij

7.
DE ALIIS
CONCILIIS.

Concilij provincialis inesse arbitrat, & maiore nato fuisse Episcopos, ex Trident. *sess. 23. cap. 4.* probat Cellotius *lib. 4. de Ecclesijs hierarch. cap. 17.* Vltima Synodus est diocesana, idest proprij Episcopi, quæ appellatur Synodus Episcopalis in *cap. 2. 18. dist. Episcopi Concilium*, in Concilio Vernenſi *can. 8.* Diocesis Synodus in *l. 13. Cod. Theodof. de Episc. & Cleric. ibi: Qui mas est causarum civilium, idem in uerbalibus ecclesiasticis obseruandum est, ut si quæ sint, ex quibusdam dissensionibus, leuissimæ delictis ad religionis obseruantiam pertinencia, locus suus & suis diocesani Synodus adiungunt. Ad quod venire tenentur Abbates, Concell. Aliiſſiod. *can. 7.* & monachi, qui Ecclesias Patochiales regunt. Synodus Mogunt. sub Rabano *cap. 14.* Dicitur etiam specialis synodus cum pſchyteris habita ab Hincmaro *dist. cap. 7.* Appellatur & ciuile Concilium ab Hadriano Papa *epist. 13.* quam nomenclaturam illustrat Datis in *dist. 15. dist. pag. 52.* originem Synodi diocesane repetit a Sancto Iacobo Cellotius *dist. lib. 4. cap. 6.* Celebrabatur olim singulis annis snie dies Quadragesimæ, *cap. habetur 3. dist. 18.* Illustrat Iuretus in notis ad *epist. 6. t. Iunij.**

Sed vt ad Concilium provinciale, & quo in present agitur, dispositionem contrahamus, sciendum est, his in anno celebrandum esse, ex precepto Apostolorum relato in *can. 18. ibi: Si in anno Episcoporum Concilia celebrentur, & inter se iniunctum dogmata pietatis explorent, & emergentes ecclesiasticas contentionis amouant, semel quidem septimana quarta Pentecostes: secundo uero 12. die mensis Hyperbetei, quem Octobrem dicimus. A Dionysio uero, Burcardo, & luone dum refertur canon hic, dicitur Idibus Octobris, vt notant Romani correctores in *can. 4. dist. 18.* ubi monent, non conuenire Latinorum menses cum Græcis, nam Idus Octobris sunt die 15. non 12. Alciatus *lib. 1. Pæneg. cap. 47.* Eandem functionem firmare Synodus Antioch. *can. 10.* ubi ait: *Reliqui habent, quod in singulis provinciis his quoque anno Concilia habeantur.* Nicæns *can. 5.* *Vsum est bene habere, ut his, per vnamquamque provinciam singulis annis concilia habeantur.* Vbi refertur, & approbatur, vltus hic celebrandi Conciliis; non autem nouiter statuitur, cum ex traditione Apostolorum ism vltus hic inualuisset. Facit Tertull. *lib. de iunio*, ibi: *Aguntur precepta per Græcia illis certis in locis Concilia.* Quem contra Magdeburgenses reſcè expendit Turrianus *lib. 1. pro canonibus Apost. cap. 10.* Leo Magnus in *cap. de Conciliis, 18. dist.* Patres Concilij Antioch. in *cap. 14. 18. dist.* Chalcedon. *can. 19.* in *cap. 6. ead. dist.* Regiens *can. 8.* Vernenſis *can. 4.* Sed postea id mutari cepit ex iustis causis in diuersis provinciis: in Ecclesia Orientali, esnone 8. Synodi Trullianæ ita cautum fuit: *Quoniam autem propter aliquos barbarorum incursiones, & quasdam alias incidentes causas non possunt, qui Ecclesijs præstant, Synodos bis in anno facere, visum est ut annuo semel in anno fiant.* Quod firmatum fuit in septima Synodo reſcè in *can. 7. dist. 18.* & Hilarius Papa Episcopis Galliarum scribens, *epistol. 8.* ait: *Per annos singulos ex provinciis, quibus potueris congregari, habeatur Episcopale Concilium.* Firmatum etiam D. Gregorius *lib. 7. epist. 112.* Hormisdas *l. epist. 4. ad Episcopos Hispania.* ubi *cap. 3.* ita scribit: *Si uero temporum necessitates, aut emergentes causa hoc non patiuntur impleri, semel saltem, quantum non liberis sine ulla excusatione precipuum conuenire.* Idem eandem fuit in*

Concilio Sueſſion. *can. 2.* Tolet. *3. can. 18.* Turon. *2. can. 1.* Postquam autem præscriptum fuit, vt semel in anno celebrarentur Concilia provincialia, tempus eorum definitum fuit a Paschalis festo vsque ad finem Octobris, vt legitur in *dist. can. 8. Synodi Trul. Tapdem Concilij Madicon. 2. can. 20.* Later. sub Leone *sess. 10.* & Trident. *sess. 24. de reformatione, cap. 1.* tempus hoc ad triennium protrahum fuit: & quia iam a tempore Concilij Chalcedonenſis Concilia provincialia celebrari deſerunt, ex causis, quas refert P. Marcha *dist. cap. 1.* ideo presenti canone Concilij Lateran. eorum vltus reſtituitur. Conuocabantur autem ad has Synodos Episcopi per epistolam Metropolitani. Concil. Agathenſe *cap. 35. cap. 1. & per iur. dist. 18. t. 1. Episcopum, 27. dist.* Quanta in Summa, verbo *Episcopis, & Concil. Provinciale.* Vnde dicitur vocari in Concilio Laodic. *can. 40.* & refertur *can. 5. dist. 18.* & communiter *can. 14. ead. dist. 18.* & *can. 20. Concilij Antiocheni: & refertur dist. can. 4. dist. 18.* minuebantur autem per epistolam, quæ dicebantur traſcoria. D. Augustinus *epist. 15.* Traſcoria ad me domi Ilibus Nouembri venit. Ecce deinceps, ubi vocat epistolam traſcoriam: & in libro post collationem contra Donatist. *cap. 24.* *A Primæ suo per traſcoriam sunt euocati.* Et Constantinij epistola, quæ scribit, vt Cæcilianus, & accusatores eius ad Concilium Arelatenſe primò perſeant, & conueniant, mandat Ablatio, vt singulis Episcopis singulas traſcorias tribuat, vt ipſi ad prædictum locum intra diem Klendarum Augustarum possint peruenire: & traſcoria erant sigillo roborata, & dabant auctoritatem conueniendi minores Republicæ, vel Ecclesiæ, vt ab eis auxilium, vel victum peterent, quod colligitur ex Synodo Meldensi *cap. 71.* *Ut auctoritatem sigillo Regio roborata morte traſcoria Christianissimus Princeps singulis daret Episcopis, quous quisque Episcoporum preſes se haberet, ut quando eis necesse fuerit, per eandem auctoritatem Republica ministris conueniat, ut ipſi in quibuscumque ciuitatibus audierint, Republica Ministris concurreribus, suum, immo possim diuinitus riteperagere ministerium.* De quibus traſcoriis egit in *cap. 1. de officio Ordinis.* Ex Episcopi ita vocati venire tenentur, aut Legatum mittere, *cap. 9. 18. dist.* Concil. Arelatenſe *2. can. 19.* Agathenſe *can. 35.* Tarracon. *can. 13.* Aurelian. *can. 2.* Valion. *can. 29.* quæ & alia congeſſit Hallier, de hierarch. *lib. 4. art. 1. in fines* & hoc est, quod in *cap. 10. dist. 18.* dicitur excusationes suas literarum conſcribere. Its enim legendum est, non traſcoria, vt notat Datis in *l. 15. dist.* alias excommunicantur, *cap. 22. 23. & 14. dist. 18.* Vocantur etiam Patrochi, & Abbates, *cap. Hadrianus, et 2. 63. dist. cap. ex ore, de priuilegiis Concil.* Aliiſſiod. *dist. cap. 7.* & priuati laici, vt retuli in Concil. Ilib. *lib. 1. cap. 8.* ubi de forma celebrandi Concilij, & ordine ſubſcribendi in eo epi. Tandem sciendum est, Concilia provincialia in Ecclesia celebrari, primò ad extirpandas hereses pullulantes; secundo ad ecclesiasticorum canonum conſuetudinem. Vnde Concilia hæc de Concilium tyrannide triumphauerunt ecclesiasticam disciplinam ſtabilendo, vt conſtat ex Conciliis Iliberiti. Neocæſar. Laodic. & ſimilibus. Olim etiam de Episcoporum electione & conſecratione, si qua erat Ecclesia vacans, agebatur: & de excelsibus Episcoporum cognoscebatur, quia vetitum erat ab Hadriano *cap. 5.* ne vltus Metropolitani Episcopi abſque exterorum omnium

omnium comprouincialium Episcoporum presentia eorum causas audiet: notat in c. 1. de iudiciis: & ea Concilia confirmabantur per Pontificem, vel tacite, vel expresse, cap. de libellis, 15. dist. ut variis exemplis probat Cellerius dist. cap. 12. ad finem.

9.
TRADI-
TUR DECI-
DENDI
RATIO.

His suppositis apparet ratio presentis affectionis; nam cum Conciliis prouincialibus iam à temporibus Apostolorum in Ecclesia vltima negligenter, & tardè, aut nunquam Metropolitanis in vltima Concilium prouinciale celebraretur; ideo veteres Ecclesie sanctiones Patres Concilij Laterani, in presentem renouantes rectè sinxerunt, quod annis esse Concilium prouinciale à Metropolitana celebrandum iuxta veteres canones. Accedunt rationes, ob quas Conciliis hæc ita frequenter celebrari debent, quas refert Bazpinus anno 157. num. 12. Prima, ut agnoscat, quomodo Episcopi in suo munere exercendo se gerant, & suæ villicationis rationem reddant, ut exprimitur in Concil. Trident. sess. 23. de reform. cap. 5. & defectus emendentur, prout innotuit in cap. quapropter, dist. 18. & sess. 24. de reform. cap. 18. vbi precipitur, ut defectus in Conciliis prouincialibus proponantur. Secundò ut decreta Pontificia releuantur, & obliuione transgredi possint, ut notat in supra, verbo relegendis. Tertiò quia hæreses facillè pullulant in Conciliis non celebrantur: præcipua enim causa, quare in Anglia, Scotia, Belgio, & aliis nationibus hæc maxime pestis serpsit, fuit quia Metropolitanis ab his Conciliis iocundis cessauere, prout deplorat Anastasius Constantinop. epist. 2. his verbis: Si assidue ea celebrantur, reformationem Ecclesia causabunt, & hæreses extirpabunt; ipsa autem concinè celebrata nascuntur hæreses statim, & breuiter extirpantur: quæ si per aliquod tempus diffunduntur, sumptis vitiis difficile destruantur. Concilia ergo prouincialia sunt sæpe congreganda, ut necessitatibus Ecclesie subueniantur, necnon mores præui corri-

gantur: nam vt ait Vistoria in relict. de Perisite Pape, ab eo tempore, quo propter nouas opiniones DD. Pontifices ceperunt timere Concilia, Ecclesia manet, & manebit cum magis calamitate, & religionis perniciæ. Vtilitatem, & necessitatem Concilij Prouincialis satis expræstunt PP. Concilij Parisi, 1. can. 26. his verbis: *Quoniam si hæc Concilia semel in anno per omnemque prouinciam celebrata fuerint, & bonis ecclesiasticis ritibus ordinis sui continerentur, & impudenter querendum superbarum clericorum, qui possunt auctoritate canonica calcata, auribus Imperialis molestationum ingerunt, cessabit, & impunitas diversorum flagitiorum, quæ locum delictiscenti nunc habet, non habebit, & alia multa, quæ habemus secus quam ecclesiastica disciplina docet, inceserunt, ordinem suum Domino auxiliante seruantur.* Prosequitur alias rationes Coriolanus in notis ad can. 38. Apost.

Nec obstat dubitandi ratio supra adducta; cum ex huiusque traditis facillè appareat, inusitam non esse presentem Concilij Laterani constitutionem; nam si Archiepiscopus dum visitat prouinciam suam, potest cognoscere de subditis suffraganeorum suorum, & eorum excelsus emendare, quod magis in Conciliis cum Episcopis suffraganeis ad audiendas similes causas conuocatis. Nec obstat quod dicebamus, posse Episcopos, vel Archiepiscopos, dum visitant dioceses proprias, eas causas decidere, ac terminare; nam sunt plura negotia, quæ ob eorum grauitatem debent tractari, & decidi in conuentu Episcoporum comprouincialium, præcipue quia leges pro seruanda Ecclesie disciplina collapsæ, ipsi per se facere non possunt; & in Concilio prouinciali viles, & salubres canones ad ididuntur, & aliqua statuuntur, quæ in minori conuentu definiti non valent, ut supra retuli; & ita valde necessaria, viliæque in Ecclesia esse Concilia hæc læne probat Coriolanus in præfati, ad summum in Concil.

10.

DEBOLV-
TUR DVI-
TANDI
RATIO.

CAPVT XXVI.

Gregorius IX. *Archiepiscopo, & Priori S. Maria Rothomagensis.*

Olim I. V. & P. Ordinis Tironensis. Et infra: Ne igitur reformatio monasterij valeat retardari, mandamus quatenus relaxatis excommunicationum, seu suspensionum sententiis, si quas idem Abbas protulerit, vel per quoscunque iudices promulgari fecit, post inceptum negotium in eos, & adherentes eisdem, ac eis relictis, quos idem Abbas negotio pendente contra iustitiam spoliavit, in negotio de plano, & absque iudiciorum strepitu procedentes (cum talibus maxime in hoc casu non deceat Dei seruos involui) inquiratis, quæ circa personas, & obseruantias regulares videritis inquirenda: corrigentes, & reformantes, tam in capite, quam in membris, quæ correctionis & reformationis officio noueritis indigere: iuramentis, si qua de tacenda veritate Abbas extorserit, relaxatis, prouiso, ut negotio ipso pendente præfati monachi eidem Abbati obediant, & intendant; ita tamen, quod per hoc prosequutio negotij non valeat impediri. Si verò testes contra eundem Abbatem producti fuerint, dictorum ipsorum ei copiam dari faciatis. Prædictis autem monachis expensas factas propter hoc, & tribus, vel quatuor ex istis, vel aliis, quos idoneos ad dictum negotium prosequendum duxeritis assumendos, faciatis de bonis eiusdem monasterij; & faciendas expensas ad prosecutionem ipsius negotij necessarias, computatis, si qua propter hoc receperunt de bonis monasterij, eum proprium non habeant, & ministrari: contraditores, &c.

NOTE.

NOTÆ.

1. ^a *Archiepiscopo.*] Mauricio videlicet, qui antea fuerat Saisensis Episcopus, & postea Cenomanensis, & tandem decessit Rothomagensis anno 1132. vt refert Chenu in serie Prefatum ipsum Ecclesiam.
2. ^b *Priore sanctæ Mariæ.*] In ipsa urbe Rothomagi est monasterium canonicorum regularium Sanctæ Mariæ, Ordinis D. Augustini, de quo Pennortus lib. 2. canonic. regul. cap. 34. num. 18. cuius Priori in præfenti rescibit Gregorius.

^c *Tiron.*] Alibi legitur *Tiron*, alibi *Cisterc.* vt emendat Glossa marginalis: & legendum esedo *Tironensis*. Tironense enim monasterium est Ordinis Cisterciensis, de cuius reformatione scripsit epistolam 31. Gregorius IX. in hæc verba: *Quatenus aduocatus vniuersis Albaribus, & Primibus suis subiectis, iussu festum amonim Sanctorum proxime venturum corrigere, & reformare, tam in monasterio Tironensi, quam in membris ipsius, & ceteris ei subiectis.* De eo Mantique tom. 4. anal. Cisterc. anno 1231. cap. 6. num. 9.

^d *Ministriari.*] Iuxta tradita supra in c. ex parte 11

CAPVT XXVII.

Idem Episcopo ^a *Cisterc.* & de Alde, & de ^b *Salen. Abbatibus.*

PRælatorum excessus. Et infra: Saue dilecti filij C. & quatuor alij Canonici 'Frisigien. denunciando monstrarunt, quod Frisigien. Episcopus bona sui Episcopatus (quem, vt dicunt, fuit minus canonicè assequutus) adeo grauiter dilapidat, & consumit, quod (nisi celeriter adhibeatur remedium) Episcopatus idem per eum ad irreparabile dissolutionis opprobrium deducetur: nec solummodo rerum, verum etiam famæ suæ prodigus, & salutis, vitam ducit enormiter dissolutam. Et infra: Difer. v. mandamus, quatenus personaliter accedentes ad locum, inquiratis sollicitè veritatem, & eam fideliter conscribentes, sub sigillis vestris nobis transmittatis inclusam. Eidem Episcopo terminum assignantes, quo nostro se conspectui repræsentent pro meritis recepturus: potestate ⁴ vendendi, dandi, in scudandi, seu quomodo libet alienandi bona ipsius Ecclesiæ, interim eidem penitus interdicta.

NOTÆ.

1. ^a *Cisterc.*] Rescibit in margine emendatur *Cisterc.* *scilicet in præfenti scribat Gregorius Cisterciensi Episcopo, de qua diocesi egi in c. 2. de corpore vici.*
2. ^b *Salen.*] *Salen*, seu *Salo Salomonia*, vulgò *Salernus-Feiler*, celeberrimum Cisterciensis Ordinis cenobium est in Alemania, Constantiensis dioceseos: primum à Guintramo Barone constructum anno 1134. deinde à Conrado, & Friderico primo Imperatoribus, & à Buzebardo Archiepiscopo Sa-

lisburg. liberalissimè ditatum, vt refert Bocelinus Germania sacra pars. 2. fol. 78.

^c *Frisigien.*] Geraldus videlicet, qui præfuit ipsi Ecclesiæ per vndecim annos, vt refert Bucelinus tom. 1. Germania in serie Episcop. ipsius Ecclesiæ.

^d *Vendendi.*] Etiam cum solennitate præscripta in cap. nulli, de rebus Ecclesiæ: nam hoc speciale est in crimine dilapidationis, vt licet adhuc pendente, Prælati suspectus de dilapidatione ab Ecclesiâ amoveatur, cap. licet Heli, de simon. probat Bernardus Diaz in praxi, cap. 71.



TITVLVS II.

De calumniatoribus.

CAPVT PRIMVM.

Gregorius ^a *Anthemio Subdiacono Campaniæ.*



GVM fortius punienda sint crimina, quæ infonibus, & magis sacratis hominibus ingeruntur, quàm suis culpabiles omnes, qui in causa loannis resedistis, attendite, vt Hilariū criminatorem ipsius nulla ex diffinitione vestra poena conueniens castigaret. Nec illud ad excusationem vestram credatis esse idoneum, quod vobis quasi iudicare volentibus, solus frater, & Coepiscopus noster Paschasius dicitur distulisse. Nam si zelus in vobis rectitudinis viguisset, facilius vni à multis rationabiliter suaderi, quàm multi ab vno poterant sine causa deferri. Quia ergo tantæ nequitie malum sine digna non debet vlusione transire, superscriptum fratrem nostrum Paschasium volumus admoneri, vt

D.D. Gonzal. in Decretal. Tom. V.

F

eodem

eundem Hilarium prius Subdiaconatus, quo indignus fungitur, priuet officio, atque verberibus publicè castigatum, faciat in^c exilium deportari, vt vnus poena multorum possit esse correctio. Cuius si forè lenitatem Diaconi sui adhuc opinio lacerata non commouet, & in hoc, quod non credimus, torpens exiterit, experientia tua hæc quæ diximus, faciat, & de illius nobis neglectu reuocet. Hortandus præterea idem frater ex nostro mandato est, vt se in omnibus vigilantem exhibeat, & Ecclesiæ suæ amplius disciplinam non negligat, ne & peccatum de his, qui ei commissi sunt, sustineat, & nos coacta se vehementer stimulet, si in officij sui cura, quod non operamus, incautus, vel lentus exiterit. ^d Volumus autem vt memoratus frater noster Paschasius, & vicedominum sibi ordinet, & maiorem domus: quatenus possit vel hospitibus superueoientibus, vel causis, quæ eueniunt, idoneus, & paratus existere: si verò & negligenter eum prospicias, & ea, quæ diximus, implere differentem, omnis Clerus eius adhiberi debet, vt communi consilio ipsi eligant, quorum personæ ad ea, quæ prædiximus, valeant ordinari.

NOTÆ.

1. ^a *Nibemia.*] Ita etiam legitur in prima collectione, sub titulo, de accusationibus, cap. 2. & habent textus hic in ipso registro Gregorij, lib. 9. epist. 66. ex quo integrum huius textus transcribo, & ex ipso D. Gregorio citantur textum hunc Burchardus lib. 2. Decreti, cap. 101. Carnotensis part. 2. Decreti, cap. 274. De hoc Anthemio nonnulla notati in cap. 1. de testamentis.

2. ^b *Hominihus inferuntur.*] Facit idem Gregorius lib. 15. Moral. cap. 15. ibi: *Gravius est, si quis iussis patrii, quam peccatoribus nocet; unde & per Prophetam dicitur: Sanguis eius in medio eius est, super limpidissimam petram effudit illum: non effudit illum super terram, vt possit operiri pulvere: per terram ridentur, & pulverem peccatores; per petram vero limpidissimam iustum signum, qui gravibus peccatorum conatibus non exasperatur. Sanguis ergo super limpidissimam petram effunditur, quando malicia cruciatu mentis in afflictione iuste animæ gressatur. Unde quo qola est iustior, ac proinde dignior veneratione, ideo indignius est illum impetii falsis probris, & calumniis.*

3. ^c *Exilium deportari.*] Quæ phrasia apud scriptores inferioris sæculi recepta, & vstata fuit, in specie à Sixto III. P. M. epistola vnicâ, ante medium, ibi: *Si quis circa eiusmodi personam non probanda detuleris, intelligas se iacturam infamie sustinere, & sub magna excommunicationis exilio deportari.* Ita in constitutione Honorij, & Theodosij, quæ est ordi. 15. in appendice Codicis Theodosij, edita à Sirmondo: & de Manichæis Anastasius epist. 1. cap. 3. ita scribit: *Subditi legibus secundum Christianorum Principum constituta, ne sanctam gregem suam contagione polluerent, per publicos indices perpetuo sine exilio relegant.* Et cap. 13. 17. quæst. 1. illustrant D. Nicolaus Anton. de exilio lib. 2. cap. 1. numer. 8. D. Ioseph. de Retes lib. 1. de interditi. cap. 1. in notis.

4. ^d *Volumus.*] Verba quæ sequuntur, extant in cap. volumus, 89. dist. in qua distinctione intendit Gratianus exponere, quod sit officium vicedomini? Et sciendum est, vicedominum in sacris canonibus accipi pro eo, qui ab Episcopo administrationi rerum suarum prepositus est, & pro hospitibus recipiendis, & elemosynis elargiendis, & vt absolute provideat rebus omnibus, quæ domi providende sunt; ideo dicitur maior domus in cap. Saluator 1. quæst. 3. cap. discipulum 89. dist. & cum vice Episcopi causas iudicasse constat

ex præsentis epistola, & ex libro 3. capital. cap. 26. Adantes Comes vel Abbat, vel Vicedominus, vel illi, quicunque locum Episcopi, vel Abbatis tenuerit, vt reddat ei reos. Et lib. 5. cap. 120. Concil. Mogunt. sub Carolo cap. 50. tria velut hominum genera memorat, quibus omnis ecclesiastica res qualifigata est commissa est: omnibus Episcopis, Abbatibus, eundemque Clero; & ait: *Omnino precipimus vicedominis, & præpositis, advocatis, sine defensoribus non habere, non ualios, non crudelēs, non cupidos, non peruersos, non falsitatem amatores, sed Deum timentes, & in omnibus iustitiam diligentes.* Et cap. consilium 38. de simon. Alia de vicedominis adducunt Iohannes Vossius lib. 3. de vitijis sermon. cap. 55. I. Filescus in cap. 4. de offic. Ordin. P. Gregor. lib. 2. part. 1. tit. 9. cap. 5. num. 11. & lib. 15. synod. cap. 40. num. 3. Sebast. Cæsar de Ecclesiæ Hierarch. quæst. 2. præmi. 55. num. 13. Mantique tom. 1. ann. Cysler, anno 1134. cap. 1. in fine. Datus ad Darter, in dist. 89. Vnde D. Gregorius in præsentis prædictæ vicedomini munia completendū iubet, vt Paschasius Episcopus eligat Vicedominum pro hospitibus recipiendis, & simul causis, quæ emergunt, decidendis.

COMMENTARIUM.

EX fragmento huius epistolæ à Raymundo in episcopo transscripto, talis communiter deducitur assertio: *Subdiaconus calumniis accusans, gradu ipso priuatur, & verberibus afficitur, ac in exilium mittitur.* Quæ assertio probari potest ex cap. Deni 7. 2. quæst. 1. cap. qui crimen 2. quæstion. 8. cap. 1. & tit. 3. quæst. 6. cap. quiforsus 3. 2. quæst. 8. cap. si quis Episcopum 50. 2. quæst. 7. cap. Episcopum 4. 3. quæst. 6. cap. 4. 2. quæst. 3. cap. final. 1. quæst. 6. cap. 1. 5. ad. iur. de elect. in 6. cap. 1. 2. quæst. 4. Sixtus III. supra relat. Hadrianus Papa ad Episcopos Medietatis, cap. 58. In quibus omnibus variè potest contra calumniatores statueretur: referunt ea, & alia iuris testimonia Ant. August. in epist. lib. 30. tit. 11. & lib. 39. tit. 57. Ctesiprius in summa, verbo *Accusator falsus*, illustrant vltra congestos à Barbosa in præsentis, Guazinus de defensor. reor. cap. 13. defensor. 3. Aliatus de offic. Fiscal. gloss. 27. Giurba consil. 47. Valenzola consil. 170. ex numer. 1. & consil. 171. num. 47. Petrus Greg. lib. 4. parit. tit. 15. cap. 4. Mendoza lib. 2. Concil. liber. cap. 12. de Bellis de delictis, quæstion. 8. Mancinus genal. cent. 2. cap. 45. & sacri foris contron. tit. 7. & de triplici iuri collat. cap. 129.

5. CONCLUSIO TRADITA ET PROBATVA.

Et 217. Saleedo in praxi, cap. 69. Mattha de iurisd. dist. part. 1. c. 48. num. 11. Rouffels lib. 4. hist. iurisd. Penus cap. 5. num. 12. Corvini lib. 4. apb. iur. iuris comen. lib. 30. Turtucrius in Paral. cap. 43. Ant. Matthæus de crimin. ad lib. 48. Pothell. iur. 17. c. 3. fol. 813. Theophilus Raynaud. in apb. iur. de calum. sect. 1. cap. 4. Turresemana in c. calumnia 2. quest. 3. Ca. lillo tom. 3. contr. lib. 3. cap. 21.

6.

INVEN-
TIO REA-
TIA AB-
INATIO.

Sed hæc officio difficilis redditur sequentibus iuris considerationibus. Prima nascitur ex eo; nam ipso principio cuiusque licti, civilis, seu criminalis, furat actio, se calumnie causâ accusationem actionem ne non proponere, *primip. Infit. de pena temeræ*: sed postquam iuratum est, non calumnie causâ iudicium intendi, amplius queri non potest, an fuerit calumnia actoris, l. 3. q. unde, ff. de iur. iur. quia post iuramentum tantum queri potest, an iuratum sit, §. item si quis 44. de alim. ubi plura Piebardus. Igitur nunquam calumniator in iudicio propter calumnia damari potest. Secunda nascitur ex eo, nam calumniatorum pena talio est, idest vi eandem subeat penam accusator, quam accusatus pati intendebat, cap. qui crimen 2. quest. 8. ibi: Et qui non probaverit quod obicit, penam quam intulerit, ipse patietur. Et cap. 3. 2. quest. 8. ibi: Cum calumniatores ad vindictam possent, similitudo supplex, &c. cap. calumniator 2. quest. 3. de 4. quest. 4. ibi: Calumniator calumnia recipiat. Heraldus Episcopus Tutor. can. 80. Quid eandem penam passurus sit accusator, si convincere non possit, quam reus, si vitetur fuerit. Probatur in cap. in super 16. de accusat. Igitur si in presenti casu Subdiaconum Diaconum per calumnia accusatoris, eadem penâ afficiendus erit, non verò diversis à Gregorio statuta. Tertia oritur ex eo, nam pena verberum, quam imponi Gregorius, non convenit nec ipsi Subdiacono, cui imponitur, nec iudici ecclesiastico, à quo infligitur. Non ipsi Subdiacono, quia liberi homines, & cives Romani verberibus non affliguntur, sed tantum servi, & viles personæ, ut probatur in can. 3. Concil. Illibet. qui inde infames manebant, l. iur. 22. ff. de his qui notant. infra. l. in servum 10. §. final. l. capitalium 28. §. penult. ff. de penis, l. iudicium, Cod. ex quibus caus. infra. l. 12. Cod. de decur. l. penult. §. infimiorum, ff. de variis & extrard. l. final. de iniuriis, l. 6. §. quid, de iniuriis, l. 1. Et, ff. quando appellat. l. 4. ff. de incendiis, l. Lucius, ff. de accusat. Ofualdus lib. 18. Denel. cap. 8. litura I. Titus. de nobilit. cap. 10. Amaya in l. 66. Cod. de decur. lib. 10. Et sacri Canonici penarum delectum, & distinctionem semper obtulerunt, ita ut licet ob gravata crimina laicos penitentiae solenni manciparent, tamen Clericos, & Ecclesie miostros nunquam ad statum illum redegerunt, propter infamiae notam, quâ solenniter penitentes invertebantur, cap. penitentes, capitulum, 50. dist. Concil. Carthag. 3. can. 11. probatur latè in cap. t. de bigam. non ordin. Ergo propter eandem rationem, infamiae videlicet notam, quæ ex verberibus, & flagris provenit, non potuit Subdiaconus lo presenti specie verberibus castigari. Nec iudici ecclesiastico consona est hæc pena, cum iudices ecclesiastici præsum singulari profectio non possint, cap. sententiam, ne clerici, vel monachi: sed verbera sanguinem efflicunt, & ideo à iudice ecclesiastico imponi non posse, docetur in cap. qui in Archiepiscopum, de rapuer. Ergo non rectè lo presenti talis pena in Subdiaconum calumniatorem statuitur. Eodem

D. D. Gueval, in Decretal. Tom. V.

modo atgendum est de pena exilij, seu deportationis in presenti statuta; nam exilij pena capitalis est, l. capitalium, ff. de penis, l. 4. ff. si quis calumniator, l. hoc maxime 12. §. nunc, ff. de accusat. latè probat D. Nicolas Antonius de exilio lib. 2. cap. 3. per totum, Salgado de protectione Regia, part. 2. cap. 4. num. 164. Carleval de iudic. lib. 1. dist. 2. quest. 7. §. 1. num. 757. D. Ioseph. de Reies de interditi, in l. cum 17. piamus, de lib. 3. cacerus 2. Vide Ecclesia eam non imponit, sed iudex secularis ad requisitionem iudicis ecclesiastici, cap. 2. de cleric. excom. ibi: Et Episcopus minime emendare poterit, Regis iudicio ad requisitionem Ecclesie exilio damnetur. Probat Cironius lib. 1. observat. c. 1. Igitur minòs congrua in presentitextu pena à Gregorio Subdiacono calumniatori imponitur.

Adhuc tamen defendenda est præsens assertio, pro cuius expositione sciendum est, calumnie varias esse acceptiones: in bonam partem nonnuquam sumi, constat ex Carnot. epist. 17. vbi de Philippi Regis nuptiis cum Beatræ, cui ipse iure contraxerat, sic loquitur: *Quin nuptiis eius dicto & scripto calumniis, quem debui, fecit. Quo sensu dixit deinde epist. 45. coniugium calumniosum*. Aliis calumnia sumitur pto largio facien. vel lise, ut sapias apud eundem luonem epist. 66. 179. 219. 229. & 268. Et Arnulfus Episc. Lexou. epist. 32. ait: *Nunciatur verò nobis, te in Anglia nihil nisi lices, & calumnias secuisse*. Quare calumniatorum pro adte, & petitor usurpat lo epist. 212. & 241. Notatur fortius in dist. epist. 17. Giballinus de negot. tom. 2. lib. 6. cap. 7. art. 2. Beyerlinch, in theat. tom. 2. verbo Calumnia. Sed plerumque malè calumnia sonat, pro calidæ & malitiosa iurij interpretatione acceptur in Lad exhibendum 19. ff. ad exhibendum, ibi: *Non oportere iur civile calumniari, nec verba capiri, sed quâ mente quid dicitur, animaduertere conuenit*. Probat Laurentius Valla lib. 6. elegant. cap. 50. Pro dolo malo usurpatur in titulo ff. si mulier excurrit nomine in possessionem calumnia causâ, l. 2. C. de iur. iur. propter calumnia: quam acceptionem latè illustrat Bargalies lib. 5. de dele. c. 15. lo presenti titulo pro falsa criminis accusatione sumitur, & definitur iuxta Marciannum in l. 1. ff. ad Turpil. vt calomniari sit falsa crimina intendere; ac proinde nihil aliud est, quàm falsi criminis impatiò. Quam definitionem explicat Theophilus Raynaud. de caluma. quest. 2. & Nonius Marcel. cap. 4. num. 74. ait: *Calumnia est malitiosa, & mendax insinuat. Et Beda lib. de orthographia. Calumnia, inquit, est crimen falsum, cum nobis aduersarius, aut malum, quod non fecimus, obicit; aut bonum, quod fecisse probatur, in contrarium vertit*. Gassiodorus in Psalms 117. Calumnia (ait) est commentum aliqum periculosi facinoris oblitum. Inde calumniatores dicti seu calumnioli, iuxta Paulum in l. 3. ff. ad Turpil. Qui improbè, & ex impostata accusatoris officio vinotur, Græcè dicuntur scyphaoze, eo quod furta scienam apud Athenienses capitalia essent, teste Festo Pompeio. Probat Franciscus Polletius lib. 4. histor. fori Romani, c. 5. Aletius lib. 2. Parerg. 4. & expr. l. l. Saydas Verbo Scyphaoze, quem lausit verit. Hieronymus Bollius in hæc verba: *Si sicu arbore primum inventa, vetuisse tradunt Athenienses, ut sicu exportaretur, qui autem deferbant, qui exportabant, scyphaoze quasi ficum dicebantur, inde translatum nomen ad quosvis calumniat. Nec sunt aliena à proposito, quæ in Paulo Festi Epitomaste leguntur lib. 17. ibi: Scyphaoze*

7.
CALUM-
NIA
QVIBD

F 2 apellatur

appellatos hac de causa dicuntur Atticos, quosdam inuenies salutes in hortis irruere, scilicetque deliquere: quam ob causam eis constitutum est, ut qui id fecerint, capite trucidarentur: quem patrem qui persequerentur ob parua delicta, sycophantas appellatos. Profectionem Botreus ad Pandell. Rhodiginus lib. 18. antiquar. lib. 1. cap. 9. Demetrius ad Reginum lib. 9. licet aliam huius vocis originem adducat Athenaeus lib. 3. hypsoph. cap. 3. P. Faber lib. 1. semestr. pag. 25. et 163. Lilius in orat. de Calumnia, Couit. lib. 2. var. cap. 9. num. 1. Petrus Greg. lib. 32. synag. cap. 4. Alfaro de offi. sise. gloss. 17. Calumnia ergo proprie consistit in impossura: quare non sufficit ad calumniam, ut aliqui quomodocumque tribuant falsum probum, sed necesse est interuenire malitiam tribuentis. Vnde si per errorem, aut hallucinationem contingat falsum crimen tribui noxio, non inde vera dabitur calumnia, vt probat Raynaud. dist. 1. sect. 1. cap. 1. qui in sequentibus malignitatem huius sceleris late probat: quod argumentum luculentius tractant C. I. V. huius Lilius cent. 5. epistol. ad finem, in oratione de calumnia: & Lencio Tyrannus Ponticus apud Athenaeum lib. 6. cap. 6. cum hominem quendam calumniatorem vidisset: Iuueniensem te (inquit) per Deos, nisi tyranni indus hominibus indigerem.

Deinde sciendum est, calumniatores variis poenis, tam iure ciuili diuersimodum gentium, quam sacris Ecclesiae canonibus puniri. Charondas apud Diodorum lib. 12. calumniatores myricæ coronatum per vibem circumdare iubet. Vide Lucianum dialogo de non temere credendo calumnie. Iure ciuili Romanorum ex elidit Praetoris infamiam inueniunt, l. non prius 7. l. de Cod. de calum. l. 1. ff. de his qui notant, infam. non tamen ipso iure notatur calumniator, sed ita si calumnie causâ damnatus sit, l. 4. §. calumniator, ff. de his qui notant, infam. idcirco verba iudicis diligenter attendenda sunt: si dixerit *Esycophanta*, id est calumniatus est, intelligitur notasse: quod si dixerit, *non probasti*, non notatur. Nec enim qui non probat quod intendit, illico calumniator intelligitur, sed qui dolo malo falsum crimen obicit, l. 1. §. sed non tamen, & §. sequenti, ff. ad Turpil. l. fustibus 16. ff. ex quibus causis infam. irreg. l. 3. Cod. de calum. Cicero pro Roscio: *Immensus est quissimus, suspitione tamen non caret: ei qui hunc accuset, possum aliquammodo ignoscere.* Cum enim aliquid habeas, quod possit criminari, ac suspitione dicere, aperte iudificari, & calumniari sciens non videtur. Et mox: *Vos autem maxime debetis in hoc impetum facere, qui merentur.* Deinde si volueritis iam tam, cum verisimile erit, aliquem commisisse, in suspitione latrante: id quoque coartari potest. Sin autem sic agitis, ut arguatis quidem aliquem potius occidisse, possitis, aut quare, aut quomodo, ac remanendo posse suspitione latrante: erit quidem vobis nomen suffragari, &c. Hactenus Cicero. Idem iudicandum de hac formula: *Lucium Titium iurare accusasse videtur.* Temeritas enim facilitatis veniam continet, & ob id nullam penam Titius subiit, l. 1. §. quare, ff. ad SC. Turpil. Quid autem si iudex ita pronuntiauerit: *Culpa commissa videtur accusantis insigniter fuisse.* An tanquam calumniatorem notasse videtur? Papinianus in l. ob hoc verba 10. ff. de his qui notant, infam. respondit ob hæc verba pudorem potius onerari, quam ignominiam interrogari; nec enim mandatore esse eum, qui exhortatur, An contra Marcianum in l. 1. §. indicit, ff. ad SC. Turpil. docet hunc quoque, qui

inligant ad accusandum, calumnia poenâ teneri. Pro huius antiquitatis solutione Antonius Mathaeus de criminibus ad lib. 48. Pandect. tit. 18. cap. 3. ait, verbis quidem SC. non teneri eum, qui inligant, sed ex mente & sententia teneri, quia SC. de mandatore loquitur, & qui inligant, non est proprie mandator, sed quia non iouet à mandatore abest, cum sententia SC. teneri. Sed aliter ex iura componit Oualdes lib. 18. Danel. cap. 8. litter. X. discrimen constituendo inter sententiam definitiuam, & interrogatoriâ. Etiam ante SC. Turpillianum fuit constituta poena Talionis, quam ad leges 12. Tabularum refert Polletus lib. 4. histor. feri. cap. 5. & postea idem cautum fuit lege Rhemia, seu vi alij volunt, Memia: quæ poena exsoluente temporibus Imperatoris Augusti; quare inter alia ipsius Principis præclara gesta recensetur à Suetonio quod diuturnorum reorum nomina aboleret cum ditione propostâ, vt si quis quem repeteret veller, par periculum poenæ subiret: & postea per SC. Turpillianum instaurata ex poena fuit, & tandem Imperatores Honorius, & Theodosius in l. vlt. Cod. hoc iudic. ita sanxerunt: *Qui quis crimen intendit, non in poenam fore nouerit lucianum mentendi, cum calumniatus posset ad vindictam similitudo supplicii.* Erat ita cap. quissimus 1. quest. 8. Quæ poena talionis diuino iure positio statuta fuerat, cap. 19. Dener. ibi: *Si sterneris testis mendax contra hominem, accusans eum præuentionis, statue ambo, quorum causa est ante Dominum in conspectu sacerdotum, & iudicum, qui fuerint in diebus illis: cumque diligenter perscrutantes intenerint falsum testem dixisse contra fratrem suum mendacium, reddent ei sicut fratri suo facere cogitauit; & auferet malum de medio tui, vt audieris ceteri, timorem habeat, & nequaquam talia audeat facere: non misereberis eius, sed animam pro anima, oculum pro oculo, dentem pro dente, membrum pro manu, pedem pro pede exiget.* Hæc est poena talionis, quæ scilicet late tenditur, quæ illam est, vel inferendum fuit calumniam passo, Aristot. lib. 5. Ethicorum, cap. 5. appellat poenam hanc *Contrapassum*. Probant poenæ huius iustitiam Sotus lib. 5. de iustitia, quest. 5. art. 4. Lelins Mancinus de triplici iuris cellat. lib. 1. cap. 129. & centur. 2. cap. 143. Demetrius ad Reginum lib. 9. fol. 940. Hodie tamen, attentâ generali consuetudine poenam hanc talionis exsoluisse ex ratione per nos adducta in cap. super his, de accusat. resstant Farinac. in praxi, quest. 16. num. 3. Iul. Clarus §. final. quest. 81. n. 3. Theophilus de calum. sect. 1. cap. 4.

In eadem etiam lege Rhemia statuta fuit poena inultionis frontis inscriptâ litterâ K. quæ ast pima calumniatoris. Cicero pro Roscio: *Ite tamen Erucy quæstio te capidem esse oportet, ut bonum existimationem, & legem Mennium potius aliquid valere oportet.* Et mox: *Crua quidem vobis nomen suffragari; sed si ego hoc bene noui, litteram istam, cui vos obsequi o iuuenis essis, ut etiam ea omnes oderitis, ita vehementer ad caput affigam, vt postea neminem alium, nisi fortunas vestras, accusare possitis.* Eoque spectat Papinianus in l. quissimus 13. ff. de testibus, dum hominem calumnie damnatum, opponit homini integre frontis. Illustrant Theoph. Raynaud. in tract. de symmarismo, sect. 3. cap. 3. Coice, ad Digesta, in l. i. c. si testamini, Petrus Vithius in coll. legum Mosaicar. tit. 4. §. sine calumnia, Forner. lib. 6. rer. quod id. 19. Et licet Cassiodorus in Psalmum 71. hoc accipit de nuda condem

8.

DE POENIS CALUMNIARUM.

9.

DE POENIS CALUMNIARUM.

condemnatione, quia apud antiquos litteram K. indices apponere solebant in signum condemnationis: hæc tamen sententia fulciri non potest, quia ex damnanis oota communis erat omnibus condemnationibus, ut videtur apud Polum, Sigonum, & alios de iudiciis agentes. Ea quibus Hermannus Hugo lib. De prima scribendi origine, cap. 1. 2. quod est de notis iudicialibus, ad Kait: Calumniatorum frontis affixum, erat peculiariter eorum suspicium, quo fractis eorum ferro candens forma littera K. innotabat. Duplex KK. eo fito impressum voluit Petrus Diaconus de notis, & Aldus Maucius libello eiusdem argumenti, ita exponentes illud K.K. vel K. C. ut sonet, calumnia cauid. Olim quippe vox calumnia exarabatur per K. ut probatur Lipsius lib. 1. de illorum, cap. 15. Puteus ibi supra, fol. 145. Primarius noster Magister Cortes in orthographo Casilei. Etiam aliquando apud Romanos calumniator dicebatur è laxo Tarpelo, ut refert Gellius lib. 10. noctium, cap. 1. & in exilium mittebatur, ut consiliis ex Tacito lib. 5. annal. l. 3. 5. idem Dinnus, ff. de rebus litiis innot. 6. cum qui electum Episcopum cuiuslibet criminis infamavit, pelli iubet à fornicare fidelium: & in not. l. 13. c. 2. & 137. cap. 3. iubet eum, qui falsi criminis Episcopum reum egit, à provincia exalare, in qua commotabatur. Etiam extra ordinatim poena puniunt in l. 17. §. 1. lib. 5. ff. ad leg. Jul. de adult. Apud Græcos vixitum fuisse talionis poenam constat ex Diodoro lib. 4. & apud Visigothos eandem talionis poenam statutam fuisse, apparet ex l. 5. tit. de iudicio furti, lib. 7. legum Visigoth. notavit Gregor. Lopez in l. 1. tit. 1. part. 7. l. 17. & final. tit. 17. part. 3. Alias differtum gentium poenas circa calumniatores deserit Theoph. Raynaud. de calumn. fol. 1. cap. 4. Hæc autem procedunt in calumnia in delictis publicis admitti; nam in privatis aliud observatur, quia qui in illis calumniatur, violat iurandum, quod conceptus est calumnia, soluitque impensas litis, & nonnunquam infamis fit, cum olim veteri de calumnia actiune in partem decimon litis actor mulieretur, §. hoc autem, Instit. de poena temeri: notati in tit. de iuram. calum.

Ve ad Ecclesie leges pertinemias sciendum est, Ecclesie Patres non nuntius in calumniatores infurrexisse, nam eos infamia notatos declarant, beneficio, officioque, si quod habebant priuatum; exilio, verberibusque efficiendos esse statuerunt in cap. qui in alterum, c. quidem maligni, 23. quæst. 4. cap. deteriora 6. quæst. 1. c. Episcopum, ead. quæst. Poenam talionis statuunt in cap. qui crimen, 2. q. 8. c. calumniator 1. quæst. 3. c. 1. quæst. 8. Communionem etiam priuauerunt: & si Episcopos, aut clericos falsò accusauerint, nec in sine illis conceditur communioni. Concil. 11. lib. 1. can. 75. ibi Si quis Episcopum, Presbyterum, vel Diaconum falsis criminibus appellerit, & probare non poterit, nec in sine dandi ei esse communionem. Licet postea minus eum eis adsum sit, communionem in sine concessa. Concil. Arelat. 1. can. 14. ibi: Qui falsis accusant fratres suos, usque ad exitum non communicent. Arelat. 2. can. 24. Eos qui falsis fratribus capitalia obicisse consiliis fuerint, placuit usque ad exitum non communicare, sicut magna Synodus antea consensit. Notati in cap. 75. Concil. 11. lib. 1. Hadrrianus Pontifex in cap. de laici 5. quæst. 6. linguam capolandam esse calumniatori sanxit: quæ constitutio etiam refertur lib. 7. capitul. tit. 177. & ab Hincmaro Rheimsensi lib. contra Hincmarum London. de sententia Engeltrani Metensium Episcopo dicit, his verbis: Quam diversa à sacris

D. D. Goual. in Decretal. Tom. V.

canonicis, & quàm discrepantes in quibusdam ab ecclesiasticis iudiciis habebantur, ut hic quidem de pluribus poni, euidenter manifestatur. Delatari, inquit, aut lingua capuletur, aut consilio caput ampuetur. Capulare vetò truncare est, vel excindere, ut in lege Salica, tit. 31. §. 2. Si quis pedem alterius capuletur, Et ibi: Ad hoc autem remanet: ex veteri glossa Petri Pitheli notauit Bignon, ad Marculf. fol. 623. Similiter fuit lex Constantini, quæ strangulat eos, & linguam ipsi radicibus amputari iubet, ita. Cod. Theodos. de peti. Apud Longobardos non lingua, sed nasus præcidebatur, ut refert Lindembrog. in glossariis, verbo Capulare. Diale Hadrianus capulare, quod est truncare, ut probant Lindembrog. supra: Vollos de vitiis form. lib. 4. cap. 3. Pius V. sua constitutio innotauit in calumnia poenam talionis, ut refert Farinac. in praxi, quæst. 16. num. 5. & iam à primo Ecclesie sæculo lib. 2. consilii, cap. 42. & 43. in calumnia tota ita constituit: Vos Pastores cum Diaconis cognoscitis eum, qui proximum suum per calumniam mendacis testimoniis accusauit, & ostenderit eum esse calumniatorem in iudicio, interficiendum, suis reprobantibus perturbatum in malisiam, seruare inconstantem, dictis suis contrarium, & eis sui verba capium. Fuerunt enim illi laquei furti labia sua, quem tu postquam falsas testimonia eius commissa fueris, indicia rigide, & gladio igni trado, usque ei quod ipse proximo suo scelere machinatus est. Quoniam eum in eo fuit, stratem accidis, auri iudicii occupando, &c. Itaque tunc cum ex Ecclesia tanquam fratri interficerem. Deinde interuallo temporis, si aliter pariter se præmitte eum ieiunio, ac postea per manus impositionem recipit, cæcetes tamen illi, non quem iterum turbet. Quod si rursus ingressus similiter seditionem, & discordiam concitauerit, nequa desistat turbare, & conuicia facere fratri, transperatoremque & emenemibus aquis erudent, eum cum tanquam pestiferum, ne Ecclesiam Dei vitiet, & fardet. Qui enim huiusmodi est, turbis confusio ciuitatibus: idemque, tametsi in ea Ecclesiam est, tamen quia Ecclesiam delectat, & spernaculus, & inanis est, qui quidem quatuor in eo est, corporis Christi farditas.

Deinde testium est, indicem reum absoluentem improbè accusatum, statim cognoscere, ac pronuntiare de calumnia, l. 1. C. de iud. linter 10. ff. de public. iudic. statim, idest eadem die, vel sequenti, si eadem non poterit: argumentum est locus Alconij in oratione pro Marco Scauro, ibi: Cui Preter cum vellet de accusantibus in consilium mittere, multique à populo minus in accusatores inuenerem, cessis inperito multitudine, ac postero die in consilium de calumnia de accusantibus misit. Etiam notandum est, non omnes accusatores in probatione deficientes, poenis calumnie puniri; nam tutores, curatoresque non facile illis afficiuntur, nisi euideo eorum calumnia sit, l. 2. Cod. de his quibus re indign. l. 8. C. de calumniator. explicat Gortofredus in l. 2. Cod. Theodos. eod. tit. 14. §. 1. lib. 1. de bonis lib. 1. 2. de his, quæ re indign. Similiter eos, qui prosequuntur necem liberorum, & parentum, poenâ calumnie non tenent, statuitur in l. 1. & 4. C. hoc in l. 2. ff. de public. iudic. & in l. 2. C. hoc tit. docetur, non teneri extantem heredem, quia aliquem iustus testatoris venchij accusauit: & feminis suam, suorumve iniuriam persequentibus, & omnibus illis, quibus inscripitionia necessitas remittitur, quos reculi in super his, de accusat. calumnie poena remittitur. Etiam maritus, qui intra dies 60. iure mariti uxorem accusat de adulterio, nisi ob euidentem

F 3 calum

IO. -
De po-
nili ex 17-
21 Pon-
218.

II.
De iur
qui in
calum-
niam non
tenetur
218.

calumniam, non tenetur calumniæ poenis, l. in cunctis 14 § ult. ff. ad leg. Jul. de adult. l. 6. & 30. Cod. de Lascivium 37. §. 1. de minoribus. Patet autem accusando adulterium esse ex calumnia damnatum, l. pater 30 ff. cod. tit. quia talis accusatio odiosa est, cum per eam matrimonium fundari videatur, l. quædam 30. Cod. de titul. de adult. Item fides à calumniæ poena immunis est, cum ex quodam necessitate acceperit, nisi cum evidenti calumnia agat, l. pater. Cod. de accusat. fisci, l. 5. h. unius § 9. Cod. ubi causa fideles. Suetonius in Domitiano, ibi: *Fiduciam calumnias magna calumniam poena repressit*. Similiter etiam delatores ex officio, ut curiales, & stationarii, non puniuntur, nisi ob evidenti calumniam, l. in quidam, Cod. de accusat. l. 1. Cod. de curiosis, l. 10. l. 6. & 30. notatiora, ff. ad Tarpil. l. Diuus 6. ff. de custod. rerum. Probat Amyra ad tit. de delatoribus, lib. 10. & plura de coriolis congerant Petrus Gregor. lib. 47. §. 102. cap. 38. num. 9. Caiac. ad titul. Cod. de inveniendis, & titul. Cod. quæ res pignori: & in l. 9. Cod. de iure fisci, & lib. 1. obs. cap. 33. Renardus lib. 4. var. cap. 11. Panciola in notis Imper. Orient. cap. 47. & Occid. cap. 18. & lib. 2. var. cap. 26. Bulenger. lib. 7. de Imper. Roman. cap. 22. Bobadilla lib. 2. par. cap. 13. num. 61. & cap. 21. num. 10. alias causas, ob quas calumniator exsolatur à calumniæ poenis, refert Menochius lib. 2. de arbitrio. cent. 4.

Huius suppositi iam apparet ratio præsentis declarationis; nam cum calumnia adeo sit grave scelus, ut peccatum diaboli cum appellent sanctus Athanasius in apolog. ad Constantium, ibi: *Calumniari est rei diaboli moribus*. Origenes homil. 3. in Exodum, quia ait, falsis detractionibus, & testimoniis, ac calumniis grauantes proximum, ut aptum à diabolo habere: Cyrillus monachus in altis sanctæ Sabæ, D. Chrysostomus homil. 79. in Mattheum, cuius nomenclaturæ rationem assignat & illorum Theophil. Raynaud. de calumnia quæst. 2. & D. Athanas. in dicta apolog. de fratre, quem infert calumniator, ait: *Qui lapide ferit, quare medicum; illius autem calumnia grauans quem lapides ferit*. Est enim calumnia clausa, & gladius, & aculeum inextinguibile, ut dixit Salomon, & si in personam Deo sacratam inferatur, grauior calumnia est, ut supra probauit: Inde cum in præsentem Hilarius falsò, & ex calumnia accusasset Ioannem Diaconum, iussit Gregorius decreuit, ut ipse officio Subdiaconi, quo fungebatur, à proprio Episcopo suspenderet, verberibusque afficeretur, ac in exilium mitteretur, ut ita alijs à simili calumnia terrentur, ne fratres Ecclesiæ equè ministros falsò accusent; nam ut aiebat Actiostol. lib. 6. Polit. cap. 5. In bene instituta Republica grauior calumniatores lene puniendi, quoniam non populus in iudicium vocare consuevit, sed nobiles.

Nec obstat dubitandi ratio supra adducta ex dicta l. 1. ff. de iuram. nam quod ex expendebamus, procedit in iuramento decitorio parti à parte delato; nam tunc postquam delatum est, nihil queritur, nisi an iuratum sit: ac verò in iuramento ab actore, vel reo prolatò, sine ulla delatione adhuc superest cognitio causæ principalis, dicta l. 1. in princip. & propter calumniam, tam in ciuili, quàm criminali iudicio, poena, ut probant in cap. 1. de iuram. calum. & ita hac poenà calumnie non liberati accusantem, etiam tempore accusationis proposuit Inrer de calumnia, docuerunt Iul. Clarus dict. §. final. quæst. 61. Saleado in praxi,

cap. 65. Martha de iuris. part. 1. quæst. 58. Nec obstat, quod de poena talionis adducebamus, cui difficultati ut satisfaciatur Antonius, & Abbas in præsentem, quos sequitur Bernard. Diaz in praxi, cap. 65. affirmant, quod in præsentem casu poena imponenda Ioanni Diacono, si erimen probatum esset, non erat proportionaria Hilario Subdiacono, ideoque diuersim poenam à sancto Gregor. imposuit fides: sed cum non constet, quænam poena in præsentem casu imponenda esset Ioanni, ceritè deduci non potest, in eadem poena imponi possit Ioanni Subdiacono in quæ reus erit, quod licet poena talionis in calumniatore utroque iure imposita reperiatur, ea locum habet in delictis ordinariè puniendis, non verò extraordinariè; unde cum in præsentem non fuisset certa poena imposita pro delicto, quo accusabatur Ioannes Diaconus, & ipse esset in sacris ordinibus constitutus, ideo tam acerbis poenis plebatur calumniator. Nec obstat primum augmentum ipsius difficultatis, pro cuius partis solutione dicendum est, quod licet illa fustum, & verberum differentia iure ciuili Romanorum agnosceretur, vltimaque esset, ut probant in ead. Concilio flid. in iure tamen canonico nullum disceum versatur inter flagella. Iste verbera: quare promittit in sacris canonibus rei iubentur fustibus cedi, & verberibus affici in cap. cum beatus, 45. dist. cap. nullus clerici 11. quæst. 3. cap. quidam 5. quæst. 1. cap. quia in 5. quæst. 6. cap. hoc à quibus 21. quæst. ult. cap. in archiepiscopum, de repon. & Gennadius Patriarcha CP. delatum ei ob scelera Chastium permittit erian paternæ, & ecclesiasticæ censuræ flagellati. Nicephorus lib. 15. hist. Eccles. cap. 13. Sophron. in praxi §. 10. cap. 145. Similia de Pechamo Cantuariensi Archiepiscopo refert Nicolaus Asperfel. historia Anglica ad sacculum. decimumtercium, c. 29. & ita in præsentem casu Subdiaconum verberibus affici iubet Gregorius iuxta mentem sacrorum canonum, secundum quam nullum datur discrimen inter flagella, verbera, loras, & fustium cæsum. Nec obstat, quod ex hac poena infamia incurritur; nam cum ex ipso calumnie delicto infamia contrahatur, ut probant, non inludet Gregorius Subdiaconum in hoc casu ut infamem verberibus afficiendum esse decreuit. Nec obstat alia pars ipsius augmenti, videlicet poenam hanc sanguinem effundere, ut constat ex lib. 4. fructu. 27. §. si quis aliquem: quare Horatius horribile flagellum vocauit, iniquis:

Nec semis à lignum horribile sellæ flagellum.

Et Virgilius sanguineum dixit lib. 8. Aeneid.

Quam cum sanguine sequitur Bellona flagellum.

Item Iuuenalis satyr. 6.

Hinc frangit ferulas, enbet ille flagellum.

Er in sacra pagina Ecclesiastici cap. 8. ibi: *Flagelli plaga inuenerit sciri*. Nam licet Ecclesiæ olim veteretur flagit, flagellifere pro emendandis peccatoribus, ut constat ex libris proximè adductis, & ex Concilio Matifcon. 2. cap. 1. ubi iubetur rusticum, vel scitum, qui diem Dominicum violaret, grauioribus fustibus idibus verberari, Concil. Aquilgran. can. 134. cap. super eo, de sentent. excom. cap. vniuersis, eodem titul. in 6. Concil. Narbon. sub Recardo, can. 12. ibi: *Propter inireptum, ut redeant, Diaconos & clericos, & stipendia priuandos; reliquis flagris cæcandos*. Concil. Agath. Paphide Cæsario, can. 38. ibi: *Clericum, aut monachum sine commendatitij vngum, si verberum increpatione non emendetur, etiam verberibus*

12.
TRADITIONE
DE
CICERO.

13.
DIRECTIONE
DE
RATIO.

ribus flammis calceturi. Turon. 2. can. 20. ibi: Qui ex septem Diocesis, lectioribus, una laici ad Archiepiscopatum obsequium concessi, si septimum cum eo sacra distulerit, suffragetur. Synodus Franca sub Bonifacio V. Clerici, vel monachi in fornicationis lapsu, post tertiam correctionem in carcerem misit, ibi penitentiam agat. Carnetensis part. 14. Decret. cap. 13. Tamen semper curantur Ecclesie Partes, ne flagellatio ad sanguinis effusionem perueniat; quare pro una vice triginta novem idem tantum praeceptum est. Concil. Matifcon 1. can. 8. ubi iubetur, ut clericus laicusque qui alterum clericum ad iudicem seculari traxerit, vno minus de quadraginta idem accipiat. Referunt in cap. nullus 6. 11. quod 1. & in 1. collect. sub titul. de foro compet. cap. 4. D. Cyprinus in vita sancti Casary, apud Surium die 27. Augusti ait, illum nunquam hunc numerum excedisse, sed poeius ut iterum rursus vapularetur, permittebat, ibi: Solebat vis sanctus id accurate observare, ut verus ex illis, qui ipsi parebant, si pro culpa sua flagellandi essent, amplius triginta novem ictibus ferirentur; ita tamen, ut si quis in gravi culpa esset deprehensus, permitteret ut post duas paucas vapularet iterum. In regula sancti Aureliani cap. 4. pro quolibet culpa, si necesse esset flagelli accipere disciplinam, nunquam numerus legitimus excedit, id est triginta & novem. Quo sensu accipiunt aliqui, quod habetur in Periculis S. Columbanii, ubi quinquaginta centum, immo & ducentae plagae impetantur; non enim simul, & semel infligebantur, sed iteratis vicibus, quem numerum ictuum acceptum Patres à lege veteri, in qua exercebatur Deuter. cap. 25. ita: Pro mensura peccati erit & plagarum modus, ita duntaxat, ut quadragenarius numerus non excedat, ne furore lacrimas ante oculos tui obici frater tuus. Et D. Paulus 2. ad Corinth. cap. 11. inquit: A ludis quinquies quadragenarius una minus accipi. Illustrat Novatius lib. 1. scholasticus cap. 21. Memorandum ad concordiam cap. 30. §. 4. Iudei enim veteri, ne si quadragenarius numerus complerent, obliuione foras, vel impetu animi quandoque excederent, io more habebant non nisi triginta novem ictus infligere, teste Iosepho lib. 4. antiquit. cap. 8. Oleastro in dist. cap. 25. Deuter. ibi: Solent etiam infligat ex ratione triginta novem verbera inungere, ne forte excederent uno. Vnde Apostolus se accepisse gloriatur quinquies quadragenarius una minus. Rationem huius legis expresserunt S. Chrysostomus berni. 25. in epist. 2. ad Corinth. per haec verba: Quare una minus postea lege sancitum erat, ut si quis plus quam quadraginta verberum ictus accepisset, infans ante ipsos esset; itaque ne verberum impetu hunc numerum in infligenda pena excedens, ignominia non tam reo iaceret, praescriptum est ab illis, ut illi qui vapularet, totum quadraginta tantum plagae inueneretur. Theodoretus quod 30. in cap. 25. Deuter. Quare cum Deus praecepit delinquentem vapulare quadraginta plagis, Iudei autem minus inferunt, quia maior numerus capitalium infamaret: si excederent eum pluribus, de formis abbas frater tuus in conspectu tuo. In eo transgressi legem permittunt, ut ex illius observantia numerum, etiam nudent vapulantem infamant pluribus plagis ictibus. Quare Ecclesia illius morem retinuit, ne ad sanguinis effusionem petenteletur. Vnde iuxta hoc morem accipienda est poena verberum imposita à Gregorio in praefato. Eodem idem Gregorius lib. 1. epist. 52. succensuit Episcopo Constantinopolitano ob monachum in

Ecclesia CP. fustibus caesum. Et epist. 83. Andream Tarent. Episcopum ab administratione laicorum, per duos menses suspendendi, quod multum eade fustibus tullisset crudeliter. Illud tamen observandum est, etiam in casibus à iure permittis clericos non esse verberandos propria manu ab Episcopo, ut cautum fuit in cap. 27. Apostol. Synodo Nicena 2. can. 3. Concil. Agath. telato in cap. nullus est, 86. dist. à D. Gregorio in cap. quid autem, cum sequenti, 45. dist. Iuliano Novel. 123. ibi: Proprie aliquem monachi verberare Episcopo non licet; hoc enim à sacerdotibus alienum est. Iulianus Patricius novel. 125. cap. 2. Phoebe in numerat. in 6. cap. 26. Saustus ad Sidem lib. 3. epist. 12.

Nec obstat vltima difficultas, pro cuius solutione sciendum est, Ecclesie, ecclesiasticisque indicibus competere facultatem relegandi, ita ut cum per excommunicationem, ac alias penas ecclesiasticas rei criminosi emendari nequeunt, in exilium mittantur, ut diserte probatur in cap. in Synodo 23. dist. 63. cap. arandum 13. 17. quod 4. ibi: An exilio perpetua deportationis feriantur: Et cap. accedens, 50. dist. cap. hi qui 3. quod 4. ibi: Et exilio digni iudicantur finitimo: Et cum beatus 45. dist. ibi: Et exilio sententiam sustinentur: Et cap. ad audientiam, de crimine falsi, cap. ponit, de panis. Concil. Tolet. 12. can. 11. ibi: Quod si ingenuarum persona his criminibus fuerint implicatae, & perpetua excommunicationis sententia feriantur, & actiori exilio vincantur. Concil. Aurel. 4. can. 19. ibi: Si qua mulieres fuerint in adulterio cum clericis deprehensa, de clericis distinctione habita, mulieres ipsae, prout sacerdoti visum fuerit, districtiori subiacant, & a ciuitatibus, ut sacerdos precepit, repellantur. Gregorius in Periculis, cap. 21. Docuerunt plures congesti à Bathola de praefato Episc. part. 1. in. 4. etiam negent Rosellius lib. 4. h. 5. Panis. cap. 7. num. 5. Petrus Gregor. lib. 4. part. 1. tit. 15. cap. 4. quia poena capitalis duplex est, una sanguinis, quae mortem ingerit, l. 3. §. de panis; altera suo sanguine, ut est deportatio; & ita cum non fit capitalis haec poena, ut expresse docetur in cap. ad audientiam, de crimine falsi, & probat D. Nicol. Antonius lib. 2. de exilio, cap. 3. num. 7. potest à iudice ecclesiastico infligi. Baronius anno 163. num. 29. Chopinus lib. 3. de sacra pal. titul. 2. num. 11. Circa effectus vero ipsius poenae notandum est, Pontificem posse à tota sua ditione relegare, & in terris Ecclesie subiectis quoad temporalia, omnibus iuribus regni, & ciuitatis exiles privare. Similiter Archiepiscopi à tota sua provincia, & subditos Suffraganeorum suorum punire valent, iuxta tradita in cap. pastoralis, de officio ordin. Episcopi à sua diocesi, ex dist. cap. 29. Concilii Aurel. non autem regno integro possunt relegare, nec iuxta ciuitatis, seu natalium regni illis adimere, quia secularia sunt, nisi impiorum auxilio brachij secularis, quia tunc ipse iudex secularis videtur sententiam proferre, ipsamque totum in exilium mittere, cap. de Ligariis 24. 25. quod 5. cap. si quis 17. cum sequenti, 18. quod 1. cap. ne licet 37. dist. Ideoque ut exilium perfectum sit in dist. cap. 2. de clericis excomm. iubetur ut ad requisitionem Ecclesie iudex secularis decernat exilium: & in Concilio Trident. sess. 24. de reform. cap. 8. de concubinaris contumaciis cautus, ut ita grauetur pro modo culpe puniatur, & extra oppidum, vel diocesim, si eisdem Ordinariis videbitur, inuocato, si opus fuerit, brachio seculari eliciantur.

14.
De poena
exilij

eur. Latius prosequitur D. Nicolaus Antonius *diff. lib. 2. cap. 31.* Vnde exilium, de quo in presenti, perfectum quoad omnes effectus fuit, siquidem per Anthemium iudicem Ecclesie Romanæ in Campaniam, ubi temporalem Pontifex exercebat iurisdictionem, per Gregorium Magnum inflictum fuit: quare Hilarius omnino quoad iura regni, seu statuum Provincie Campanie exul haberi debebat.

Sed suprà traditis obstat canon 9. Concil. Constantinop. 1. in illis verbis: *Cum Apostolicis canon sacerdotibus, qui verberati, & gredimur, vel fideles, qui peccant, vel infideles, qui iniuriam fecerunt, depositioni subiacent, y, qui sua ira moderi molantur, & Apostolicas constitutiones detorqueant, eos inuenerunt, qui sua manu verberent, nec canone tale quid significante, nec retractione hoc intelligere permittente: est enim reuera inceptum, & valde lubricum, ut qui sua quidem manu ter, vel quater percuferint, deponantur: data autem facultate iussu verberandi, cum qui immantius, & usque ad mortem supplicium inflicti sunt, imponi id ferre negligit, quoniam canon ipsum verberari absolute puniente, nos quoque simul cum eo in decretalium. Oportet enim Dei sacerdotem doctrinis, & admonitionibus, non quomodo autem & parca canonicis dum, qui se immodeste, & insolenter gerit, influere, sed non flagellari, & verberibus in hominum corpora insulare. Si qui autem sunt morum omnino non gerentes, & penam correctionis non cedentes, eos per vocacionem ad eius loci Magistrum urmo castigari probabit, Antiochena enim Synodi canon quatuor eos, qui tumultu exstant, & seditiones in Ecclesia introducunt, per monitionem extenuam conuerti oportere statuit. Ex quibus expresse deducitur, non licere iudici ecclesiastico manu propria, nec per alium quemquam verberare: et quod non rectè in presenti iobert Gregorius calumniarum verberibus affici. Pro cuius canonis expositione sciendum est, debium esse, an Sacerdotes, ceterique ministri sacra ordinibus initiati propter grauiora delicta verberibus affici possint publice, ad vocem, sustiniamque perconis, inuata veterem, hodiernumque titum, de quo in l. *falsus casum, Cod. ex quibus causis infam. l. si duo 13. §. si quis, ff. de inuicior. Notatum Epod. ed. 4. ibi:**

*Sacris flagellis hic criminis viridibus
Præconi ad subsidium.*

Iunctis congeitis à Cuias. *lib. 8. obs. cap. 7.* Gothofredo in *diff. l. falsus*, Langio *lib. 1. semest. cap. 1.* Et dicendum est, sacerdotes, sacrosque

Ecclesie ministros priuatis verberibus poenas delictorum suorum luisse, præcipue in Ecclesia Canonicoorum Regularium, vi hodie in moralibus obstat, & probat Gihalinus *de clausur. regul. disquisit. 2. cap. 4. num. 48.* tamen sacra ordinibus fulgentes, quemadmodum propter honores fastigium quocunque demum seelere adstringerentur, publice, & solenni poenitentia mancipari non quibant; ita nisi degradati publice flagellis, aut verberibus cardi non poterant: quis enim sciret, ut qui Apostolico gradus succedentes, Christi corpus facto ore coniection, per quas & nos Chrititau sumus (ut aitbat D. Hieronymus in Heliodorum) qui clauis Regni celorum habentes, quodam modo ante dicti iudicii iudicant, qui ipsam Domini sobria calitate conferant, fustium ictus publice subirent, quibus humiliores personas, extemque noie homines tantummodo affici debere, disciplina Romanorum iudicant. Viebantur ergo Episcopi olim verberibus in laicos, clericos, & monachos male fugis sed cum delectu: ob leuiora crimina priuatis fustibus cedebant, ob grauiora verò publicis, præmitti degradatione: quemadmodum & Pontifices Summi apud Romanos virgatum supplicio in Vestales virgines criminofas viebantur, ut probat Roussel, ubi *suprà*, quantumvis factans, & sacro-litio fungentes, ut constat ex Dionysio *lib. 9. Liliu lib. 18.* Nec imò obstat textus in *diff. cap. 9.* qui ex verbis relatis constat, intelligendus est de verberatione immoderata per sacros canones improbat; non verò de illa, quæ festato iuris ordine, & discipline ecclesiastice normâ imponitur: de qua etiam iniuriola fustigatione accipiendi sunt textus in Synodo Nicæna 2. *ed. 3.* ubi Patres qualemcunque Episcopum verbera, aut plagas Deum præsertim timentibus, & perfectionem patientibus inferentem, quasi persequentem flagellationibus grauiorem, Episcopatu indignum censuerunt. Et D. Gregorius *lib. 2. epist. 83. & 84.* qui Andream Tarenti Episcopum, quod mulierem de maniculis contra sacerdoti & propositi sui ordinem crudeliter fustibus cardi deperat, ab officio suspendit. Potest ergo Episcopus in subdolum nequam poenam verberum exercere: at verò verbera iniuriola ad mortem tendentia, vel ad sanguinis enormem effusionem, neque per se, neque per alium Episcopus, aut Iudex Ecclesiasticus infligere valet, ut probat Bobadilla *lib. 2. polit. cap. 1. num. 29.* Roussel. *lib. 4.*

CAPVT II.

^a Innoc. III. ^b Zamorensi, ^c Segouienfi, & ^d Abulenfi Episcopis.

Cum dil. fil. Magister Schol. Palentinus ad Sed. Ap. accessisset, & nobis de ven. f.n. quondam Episcopo Legionen. nunc Archiepiscopo Compostellano, excessus varios nunciallet, dil. fil. de Vallebona, & de Maipiana Abbatibus Placentin. dioc. examinationem commissimus excessuum obiectorum. Et infra: Cum autem processum negotij, & dicta testium examinauerimus diligenter, nec intelligere pauerimus, probatum esse sufficienter aliquid de prædictis, eundem Episcopum de consilio fratrum n. absolucndum decreuimus ab obiectis, per A. f. m. quat memoratum Magistrum Schol. donec canonicè suam purgauerit innocentiam, scilicet quod non calumniandi animo ad huiusmodi crimina proponenda processit, ab officio & beneficio suspendatis, ut ceteri simili poenâ percerenti, ad infamiam suorum faciliè non prosiliant Prælatorum.

NOTÆ.

NOTÆ.

1. ^a **I** Innocent.] Ita legitur in tertia collectione, sub tit. de accusat. cap. 7. ex quo textum transferri- bo, sed legendum est, ut habetur in hac sexta colle- ctione Zamorensi, Segensensi, & Abulensi Episco- pis: nec est cur textus hic tribuatur Honorio III. ut aliqui voluerunt, cum non reperitur in eius quorundam compilatione, & extit in tertia collectio- ne epistolaram Innocentij III.
2. ^b Zamorensi.] D. Petro videlicet, qui his prioribus annis Innocentij III. floruit: de qua dicecxi egi in cap. 5. de supplenda negli-.
3. ^c Segensensi.] D. Petro Michæi, qui etiam à suis clericis fuit falso accusatus, ut refert Agidius Gonzalez in theatro ipsius Ecclesiæ, in eius vita. De hac Ecclesiâ egi in cap. 6. de in integrum restit.
4. ^d Abulensi.] Benedicto I. huius nominis. De hac dicecxi egi in dicto cap. 5. de supplenda negli-.
5. ^e Palmensi.] D. Alderico videlicet, qui flo- ruit in Ecclesiâ eximilis virutibus præditus usque ad annum 1208. adeoque sanctimoniam elatuit, ut in ipsa Ecclesiâ reuerenter seruentur sandalia ip- sius, cum hoc titulo: Sandalia S. Alderici, ut re- fert Agidius Gonzalez in theatro ipsius Ecclesiæ. De ea Ecclesiâ egi in cap. 6. de in integrum restit.
6. ^f Legien.] D. Petro Muñiz, qui postea fuit Compositellanus Præsul, ut in histor. ipsius Ec- clesiæ Composit. refert Agidius Gonzalez fol. 93. De ea Ecclesiâ egi in cap. 6. de in integrum restit.
7. ^g Vallisbona.] Vallisbona, vulgò Vallnerna, monasterium est Ordinis Cisterciensis in dicecxi Palencia, sexto lapide ab urbe Vallis-Oleti, quam fundauit Comitissa Stephanía, sub cura Episcopi Palentij: eius originem & progressum refert Marique tom. 2. annal. Cisterc. anno 1151. cap. 11.
8. ^h Matiplana.] Legendum est Mateplana, quod monasterium vulgò dictum Marallana, est Ordinis Cisterciensis in dicecxi Palencia, quin- to lapide à Vallis-Oleto, tertio ab Emerita Augu-

sta; vulgò Medina de Rioseca, constructum an- no 1171. cuius historiam itæ refert Marique tom. 3. annal. anno 1174. cap. 6.

ⁱ **Purgauerit.**] Conuincitur quis de calumnia secundum quosdam eo ipso, quod non probat, quod intendit, ut doceri videtur in cap. calumnia- tor, cap. qui non probat 2. quest. 3. l. 1. Cod. de aduoca- tis. divers. indic. l. 3. §. idem Divus, de testibus, l. 1. in fine, Cod. de famosis libet. Ibi quis ad se. Cod. ad leg. Jul. de vi, l. non igneret, Cod. de fratribus & li. expensi. Sed non est ita, quia non potius calumniari videtur, qui non probat quod intens- dit, vnde eius rei inquisitio fieri debet, quæ me- te ductus ad accusationem processit, & tunc con- demnabit eum iudex, vel absoluet, ex tradiis proximo commentario. Quatenus autem in præ- senti denunciator ob calumniam puniatur, cum regulariter ipse subscribere non teneatur, exposui in cap. super his, de accusat.

^k **Prælatum.**] Ideoque licet tantomodo delator esset, puniatur ob calumniam. Facit Theo- doricus Rex apud Cassiodor. lib. 1. varior. epist. 9. ibi: Tota est conditio subditorum, ubi cuius sub- agitate regnantium: nec dubia decet rumore trahi, à quo debent non mutanda consisti: si tamen signiderem verum à ratione colligimus (qua nunquam de fide- rantibus absconditur, si suis vestigiis perquiratur,) æque ideo, quod Beuandini vestra grauissimum esse confidimus, presentem tenore declaramus, Augusti- na ciuitatis Episcopum preditoris parua falsis cri- minationibus accusatum: qui a nobis bonis pristinis res- titutus, ius habet Episcopatum omne quod habuit, nihil enim in tali breuere temeraria cognitione præ- sumendum est, ubi si prepositio creditur, etiam ca- cius ab excessibus excusatur. Manifesta proinde cri- mina in talibus vix capiunt fidem (quicquid autem ex invidia dicitur, veritas non putatur.) Volentes enim impugnatores eius legitimam penam percipere: sed quoniam ipsi clericatus nomine frangebantur, ad San- ctissimi vestra iudicium cuncta transmissimus ordi- nanda, cuius est & agnoscere moribus talibus imponere, quam nominis traditionem ecclesiasticam custodire.



TITVLVS III.

De simonia, & ne aliquid pro spirituali exigatur, vel promittatur.

CAPVT PRIMVM.

^a Gregorius Generali Synodo præficiens.



Nuquam Patrum regulam sequens, nihil vnquam de ordinationibus accipiendum esse constituo, neque ex ^b datione pallij, neque ^c ex tradi- tione chartarum, nec ex ea, quam nona per ambitionem simulatio in- uenit, appellatione ^d pastelli. Quia enim ordinando Episcopo ^e Panti- fex manum imponit, Euangelicam verò lectionem minister legit, can- firmationis autem eius epistolam ^f notarius scribit, sicut Pontificem non decet, ma- num quam imponit, vendere: ita minister, vel notarius non debet in ordinatione eius vocem suam, vel calamus venundare. Pro ordinatione verò; vel pallio, seu chartis,

etque

acque pallio, eundem qui ordinandus, vel ordinatus est, omnino aliquid dare prohibeo. Ex quibus prædictis rebus, si quis hinc aliquid commodi appellatione exigere, vel deferre forte præsumpserit, in districto Dei omnipotentis examine reatu subiacet. Is autem qui ordinatus fuerit, si non ex placito, neque exactus, neque petitus post acceptas chartas, & ⁶ pallium aliquid cuiuslibet ex Clero gratis tantummodo causâ dare voluerit, hoc accipi ⁷ nullo modo prohibemus; quia eius oblatio nullam culpæ maculam in gerit, quæ ex accipientis ambitu non processit.

NOTÆ.

1. a **G**regorius.] Ita etiam legitur in primæ collectione, *sub hoc titulo, cap. 1.* Gratianus in *cap. 3. 1. quæst. 2.* tribuit textum hunc Urbano. Hallier. *de sacris elect. sect. 7. art. 7. §. 5.* ait deducendum esse ex Synodo Romane celebrata à Gregorio VII. sed verus est huius textus est Gregorius Magnus in Synodo Romana anno 5. Pontificatus ipsius celebrata, tempore Mauricii, Tiberij, & Theodosij Imperatorum, ubi *can. 5.* reperitur textus hic ptoxit cum transcribo ex ipso Concilio. Etiam reperitur inter opere ipsius Gregorij *lib. 4. epist. 44.* occasioneque huius canonis ne periret Ioannes Diaconus in *vita sancti Gregorij lib. 3. cap. 5.* Cum vero quasdam cognosceret ex omniâ sinuaria heresis crimine præstare negotiationis munera palliaticum collidit vocasse, ac huiusmodi novæ nomine sua cupiditatis avariciæ velle convergere, prudensissimus Doctor Gregorius sententiam, quam in primordio sui Pontificatus coram Synodo promulgaverat, iterato præmit, dicens: *Antiquam, &c.* Hæc prior Gregorij constitutio extat *lib. 4. Regestr. epist. 55. & in cap. 3. 100. dist. &* hinc eam variis Patribus scriptis idem Gregorius *lib. 4. epist. 51. 53. 55. & 56. lib. 5. epist. 1. lib. 7. cap. 5. 113. 114. lib. 9. epist. 40. 51. 53. 54. lib. 11. epist. 46.*
2. b **D**iane pallij.] Idem Gregorius *lib. 4. epist. 55. ad Ioannem Episcopum Cusubitorum,* retulatus in *cap. 100. dist. 100.* dist. expressè prohibet, aliquid accipere pro pallio: notavit Coqueus in *antiquæ part. 1. ad pag. 31. fol. 114.* Vnde eum sanctus Bonifacius in Concilio Lepintensi celebrato anno 743. falso nuncio accepisset, quod pro palliis concedendis duobus Archiepiscopis Germaniæ pecuniâ Zacharias Pontifex accepisset, istum litteris suis ipsum Pontificem tedarguit simoniace lebis: sed ei mitissimè respondens Zacharias *epist. 8.* asserit, nihil tale se cogitasse, cum nec etiam pro ipsius resecptis, ac diplomaturis, quæ ab eius serinio procederent, consuevisset aliquid exigi, quâ potius anachronismum se omnes, quicunque audiissent donum Spiritus sancti vendideret. Baronius *dist. anno 743.* Leo II. sedens anno 681. constitutionem edidit, quam Anastasius scribit Archiepo inclusam esse, ut qui ordinatus esset Archiepiscopus, nihil pro viâ pallij persolveret, Alistradic Roussellius *lib. 5. hist. Pont. iuris d. 3.*
3. c **T**raditione chartarum.] Idem pro expeditione litterarum ordinationis, quas Presbyteri à suis ordinaturis accipiebant, laxe Concil. Afric. c. 89. *Dirige plus sit, ut quicunque deinceps ab Episcopis ordinatur per provincias Africanas litteras accipiant ab ordinantibus suis manu eorum subscriptas, committentes Consulens, & dicens, ut nulla alteratio de posteritatis, vel anterioribus oritur.*
4. d **P**allij.] Temporibus Gregorij Magni, eum tot Ecclesiæ legibus, & ab ipso Pontifice specialiter prohibuit effect pro ordinibus conferendis eliquid ministerium ordinantem ab ordinatis recipere, cœpit introduci consuetudo, ut nomine pallus,

seu pallij ordinatores eb ordinandis aliquid exigent: quam consuetudinem simoniacum labem continentem, & ex radice enatitæ ortam damnauit Gregorius in præfenti canone, & postea eandem morem improbarunt Paschalis in *cap. si quis obsecravit 10. q. 3. ibi: Ne quis pallium, vel pallium ante, vel post ordinationem, beneficium ecclesiasticum possessionem soluat.* Innocentius II. in *cap. final. 1. q. 3. ibi: Nec pro pallij, nec sub obtentu alienius consuetudinis ante, vel post à quocumque aliquid exigatur, vel ipse ordinatus dare presumat, quatenus simoniacum est.* Ex ita pallij appellatione in præfenti comprehendente omne, quod prætextu pallus ordinator eb ordinato exigit, ut exponunt Hallier. *de sacris elect. sect. 7. art. 6.* Vossius *de vitis sermonum lib. 3. cap. 33.*

e **P**ontifex manu imponit.] Reymundus posuit prohibitionem eb omnem ordinationem; cum Gregorius ageret tenent de consecratione Episcoporum, in qua Pontifex, vel Episcopus consecrator minimum imponit super caput consecrandi, ut probant Hallier. *de sacris elect. cap. 9. §. 3. n. 6.* Diane *part. 1. 2. de consecr. Episcoporum. resol. 18.* qui veritas rationis huius manus impositionis adducit, & in eo consistere materiam consecrationis Episcopalis, pluribus relatis post Hilarium defendit Diacon ubi *suprà, resol. 18.*

f **V**el notarius.] Consonant Zecharias suprà citatus *epist. 8. ibi: Cum nec pro prescriptis, nec pro diplomaturis, quæ ab eius serinio procederent, aliquid exigere consuevisset.* Concil. Bituricense *can. 3.* apud Lemou. *alioque 2. ibi: Episcopi de sacris ordinibus manus non accipiant, nec aliqui loco eorum, nec aliqui de subiectis eorum, sicut prescribentibus nominibus ordinandorum solent scriptores pretium accipere.* Sed citæ notatios litteras dissimulatas, & testimonies testibentes, iam communiter placere distinguendum esse, an salarium habeant publicè constitutum ab Ecclesiâ, seu ab Episcopo, vel nullam salarium habent, ut primo casu nihil recipere possint pro huiusmodi chartis, secundo vero casu saltem per modum stipendij, non peritij (nam actiones istæ, utpote spirituelibus penitus, vendi non possunt) moderatam quandem pecuniâ summam exigere valeant, quem taxantur Concilium Ravennat. 1. temporibus Clement. V. rubric. 32. *ibi: Item cum in debita exactiones à notariis, & sigilliferis Dominum Episcoporum taxentur, & moderentur in omnibus præfatis in ordinationibus, ut ultra duas venetas non possint accipere pro scriptura, charta, schedula, cera, & sigillo: & si querela super hoc in medium prodierit, ipse notarius officialis suspendatur in dicta Curia Episcopali usque ad aliud provinciale ab officio suo. Reconat. 4. sub Innoc. XXII. rubric. 24. In Concil. Palentino à Guillelmo A. S. Legato celebrato temporibus Ioannis XXII. *ibi: Ordinarij post receptionem ordinis pro scriptura, labore, charta, & cera aliquid offerre solentur, hoc accipi minime prohibetur, ita tamen, quod præstata oblatio summam quinque maravediorum vsusdij materia aliquatenus non excedat, à pauperibus autem, aut nihil, aut minus recipiat pro pallij.**

prodidit. Et pauld post: *Nec notarius, seu scriptor quicquam, nisi moderatum, exeat pro collationis littera, & sigillo.* Tolerauo sub Clemente VI. tit. de simonia. Tolerauo sub Sixto IV. ibi: *Notary vero pro litteris ordinum decem tantum recipere debent, & si contra fecerint, quod recipiant, duplicatum restituant, sequenti Ecclesie applicandum.* Trident. sess. 1. de reform. c. 1. Etia eum tot Conciliis concedunt notariis salarium non habentibus aliquid recipere pro proditis litteris, vllam simoniam tu tali receptione non committunt. Docuerunt Suarez lib. 4. de simonia, tom. 1. de relig. cap. 10. Binsfeldius in praesent. q. 1. Gubal. de simonia, q. 14. confessor. 12. qui etiam resoluunt, non tenet Episcopum constituit salarium suo notario, sed posse iuxta consuetudinem receptam in ea dioecesi illi differre pretium sumpendi: & etiam docent, quod quando notarius accepit plus pro testimonialibus Presbyteratus, quam Diaconatus, simoniam committit. Ratio est, quia iure casator, & venditor dignitas ordinum, quae vendi aarare non potest, notario vero nihil competit, nisi ratione laboris, qui aequalis est respectu omnium ordinum.

g. *Pallu.* Archiepiscopus tradendo a Pontifice, iuxta adducta in c. 1. de auctor. & vñ pallu, vnde deducitur, Romanum Pontificem simoniam in committere, si rem spiritualem, vel ea sua natura, vel ea diuina, aut ecclesiastica institutione sacra vendat, licet pennis simoniaci non teneatur, ut probat Gubal. de simonia, q. 4. confessor. 5. & distinctione adducta inter easum, in quo simonia committitur a iure diuino, & eum tantum a iure ecclesiastico, exponit Binsfeldius in praesent. q. 1.

h. *Nullo modo prohibemus.* Consonat textus in c. eius quoniam, hoc tit. c. qui quid 1. q. 1. de calig. 1. q. 1. dist. 1. Idem D. Gregorius lib. 4. regestr. epist. 44. Concil. Brachar. 2. can. 7. vbi PP. permittunt, quod parentes infantium baptizandum voluntate offerant pro suo voto, & illud 2. de simonia, ibi: *Illud gratias recipi poterit, quod fuerit sine tactione gratis oblatum.* Et cap. tua nos, hoc titulo. Hinc D. Hieron. relatus in c. iudices, 1. q. 1. Samuelen, quomodo obacceptum prophetium oraculum Saul illi quaram patrem suum docuerit, a simonia labem excusat, eo quod illi modici valoris esset illa pecunia, in grati animi significationem dati, & in memoriam gratitudinis accipi solum videtur, & quae enim post ordinationem dantur, nullo praetextu pacto, nulla turpi conuentione praemissa, iudicium eligentis, seu ordinantis, nullatenus contumpe puerunt, ideoque gratitudinis, & honoratj videntur esse testimonium, non pretij pro ordinatione dargumenta. Si autem munus quodecumque ante ordinationem perfolatur, facile simonia praesumitur, quia ut ait Innoc. III. in c. in rationem, hoc tit. expressissimè exprimit venditionis speciem, qui prius recipit pretium, quam rem conferat pretiosam: quae suspicio excitat eum post ordinationem modicum munus accipitur. Quam doctrinam confirmat Cyrillus Alexandrin. lib. 1. de aduers. in spiritum, qui asserit sacerdotibus nihil accipere debere nisi post sacramentali collationem. Quod Moyses legis praepro relatio *Leuit. 6. 7.* signifiari docet, vtpote quo sacerdotes non nisi ea reliquis sacrificij epulari iubeantur, ideoque filij Heli, ut habetur lib. 1. Regum. 2. c. 1. grauitur peccasse dicuntur, quod etiam caperent antequam Domino offerrentur. Nec contrarium docuit D. Basil. in epistola canonica ad Episcopos sibi subditos, apud Basilam. & habetur tom. 2. operum eius, ibi: *Quod est eorum officium, dicam, existimamus enim se non peccare, quod neque simul*

accipiant, sed post ordinationem capiam. Capere autem quandocumque, est capere. Eadem istdem fide verbis habentur in epistola Tharsaji Constantianopolitani ad Hadrianum Summum Pontificem, quodam quidem sententiae de muneribus alioquin momenti videntur mihi intelligenda. Certum enim est, in praxi valde diffidere, ut probauimus, aliquid modici valoris accipere post ordinationem, & aliquid ante ordinationem, quod sit alieuius momenti, accipere; in hoc siquidem simoniae suspitionem iure fundari, semper, quae mali speciem delitefecit, in illa secus appareat: magni tamen valoris munera, etsi post ordinationem sponte oblata sint, non tamen sponte oblata prae sumi, sed suspitionem inducere, quae antea oblata fuerint, experientia docet. Vnde in ista, siue ante, siue post ordinationem dentur, licet quoad rem sit differentia, tamen quoad suspitionem vix aliquam repenti, verisimile est. Vel etiam diei post, quod eum aliquid modicum datur gratulatio, attendenda est intentio, an principaliter refectatur ad ordinis collationem, itavt tanquam pretium ipsius detur, an vero nulla habitarelatoe ad ordinationem: nam primo casu simonia committitur, & protelut Basilus, & Tharsaji supra relati. Quae Tharsaji auctoritas etiam in c. 1. q. 1. Quae in hac ambiguitate, & ut omnis penitus simoniae species vitaretur, prohibuit fuit etiam post ordinationem aliquid ab ordinis recipi, c. si quis obierit, 1. q. 3. Innoc. II. in Synodo Romana can. 1. Concil. Tol. sub Sixto IV. celebratum anno 1473. ibi: *Ordinationum collatione gratias a Sanctis Episcopis esse concedenda, cum praecipue ordo sit sacramentum spirituale. Praecipimus igitur universis Episcopis nostris a provincia, ut pro conferendis ordinibus quibusque nihil pretium ante, vel post, seu cura illam ordines calidum exigant, seu recipiant. Trideotinum sess. 2. de reform. c. 1. prolequentur Hallierius de sacris electis, sess. 7. art. 5. Binsfeldius in c. eius quoniam, hoc tit. Gubal. de simonia q. 18. confessor. 1.*

COMMENTARIUM.

Licet in praesent epistola agat B. Gregorius de consecratione Episcoporum, tamen ex ea, potius iacet in hac sexta collectione, DD. deducunt Episcopum nihil pro ordinatione recipere posse, nec ministris aliquid temporale exigere. Sed iuxta Gregorij nentem conclusionem ita deducimus: *Pro ordine conferendo minister, vel eius notary nihil temporale exigere possunt.* Probant eum textum can. 2. alius 28. *Apost. cap. qui dicit, & ceperunt, cum alius quam plurimis compiliis a Gratiano in conf. 1. q. 1. c. 1. q. 5. Synodus Niceana 2. can. 5. Qui donatione auri ordinantur, in Ecclesia vltimum gradum habent, & sui minister, si persequantur, poena corrigantur.* Et can. 19. *Episcopi, Praepositi, Clerici vel cessant a simonia in datione ordinum, vel suspensione munerum; vel deponantur.* Autel. 2. can. 3. *Ne quis Episcopus pro quouislibet casu, vel Episcoporum ordinantibus, eorumque praesummas clericorum aliquid accipere, quia sacerdotem nescit esse cupiditatis venustatem contempi.* Turon. 2. can. 1. *Nolius Episcoporum de ordinationibus clericorum non promissa praesummas.* Cabil. sub Carolo, can. 16. *Secundum, ut sine pro datione minister, & claudis ordinibus nihil accipiendum est, &c.* Aquiligran. 2. sub Ludauico Pio, p. 1. c. 5. ibi: *Nolius Episcoporum, vel ministrorum ipsorum deinceps pro distributione sacramentorum ordinum, &c. aliquid exigere praesummas.* Biturica apud Lemoine. ad. 3. *Episcopi de sacris ordinibus munus non accipiunt.* Pictaueute can. 4. *Nolius Episcopos pro sacris ordinibus, vel pro Ecclesiarum breuialibus munus accipiant.* Brachar. 2. can. 3. *De ordinatione clericorum Episcopi*

9.
CONCILIUM
SIO TRADITUM
DE PROBA-
TIO.

Pater Suarez ubi supra, & quia ipse adhuc neophytus, statim ac baptizatus fuit à Philippo Diacono in Samaria, donum Spiritus sancti emete proposuit, ideo & simoniaci neophyti dicuntur, cap. quinquagesima, §. 1. prosequuntur laide simoniae eynologiam Binsfeldius in *presenti rubric.* & Suarez ubi supra, Lotharius *de re benef.* lib. 3. §. 29. & lib. 4. §. 1. num. 3.

Deinde sciendum est, simoniam ob eius gravitatem variis nominibus à Sanctis Patribus appellari: dicitur absolutè labe, cap. *simon.* canon. 1. *hoc titul.* cuius vocis rationem illustrat Petrus Andreas Gamaro in *extravag.* July V. l. numer. 177. tom. 5. repetit. lepta in cap. *cum ordinem* 11. *quasi.* 1. pecuniare flagitium in cap. *quinguis*, ead. §. vulnus cancerosum in cap. *reperitur* 1. *quasi.* 1. sacrilegium in cap. 1. §. 3. eum recitat sit prophetaio rei factæ per voluntariam commutationem, ut explicat Gubalin. *de simon.* §. 4. *confess.* 1. rabies in cap. 3. *hoc titul.* horribile crimen in cap. in Ecclesia, *hoc titul.* & hæresis, ac simoniaci hæretici dicuntur in cap. *Presbyter* 1. *quasi.* 1. quod malè ex regestio Sancti Gregorij citat Gratianus, eum in eo non repetitur, sed apud Gregorium VII. lib. 6. *regest.* in indice: Conclij tuus habiti, in cap. *signat* 13. cap. 21. & 107. 1. §. 1. cap. 3. & final. 1. §. 7. Concil. Meld. can. 42. Turonensis sub Carolo, can. 15. Rhemensis can. 21. Mogunt. sub Rabano can. 12. Mogunt. sub Arnulfo can. 6. non ut ducet Gerson *trakt.* *de simon.* *confider.* 7. quia simoniaci labe pet se sit hæresis; nam constat aliquem esse simoniacum ex sola depravatione affectus per avaritiam, remanente iudicio recto intellectus; sed presumptione iuris, vel operis, quia eum putent spiritualia esse venalia, in fide suspecti habentur, ut explicat Hallier. *d. scilicet.* 7. art. 2. §. 2. Menochius lib. 5. *de presumptis*, *presumpti.* 7. num. 30. Simanethas de *Catholico*, *titul.* 31. Sonar lib. 5. *de iustis* *quasi.* 9. art. 1. quia petinde se gerunt, ac si de fide malè sentiant, ut animadverit D. Gregorius lib. 9. *epist.* 53. ad *Theodoric. Regem.* Nec solum hæresim simoniam esse, verum & damnablem hæresim quàm hæresim Macedonianam, dixit Tharastus relatus in cap. *eos* 1. §. 1. explicat D. Thomas *dist.* *quasi.* 100. art. 1. ad 1. & hæresim, terribilissimam esse docet Gostidus Vindobonensis in *opuscul.* *de simonia*, & omnium hæresion prodromum esse, docet Gregorius VII. lib. 1. *epist.* 34. ibi: *Hanc hæresim ante omnes alias, radice perficeret in Ecclesiam irrepsisse, atque in ipsa porta Apostolica, maledictionis velo esse damnatam.* Et idololatriam simoniam esse docuit Gregorius noster lib. 9. *epist.* 53. rationem reddens his verbis: *Cum enim omnis avaritia idolatrum sit servitus, quisquis hanc, & maxime in donis ecclesiasticis honoribus, viliter non præcans, infidelitatis prodromi subicitur, etiam si tenere fidem, quam negligit, videatur.* Tandem simoniam timen esse omnibus mains, dixerunt Paschalis I. in cap. *final.* 1. §. 10. ibi: *Simoniaci primi, & precipui sunt hæretici, omnia enim crimina ad comparationem simoniaci hæresis, quasi pro nihilo reputantur.* Lucius III. in cap. *simoniaci.* Innoc. III. in cap. *per tuas*, *hoc titul.* cuius dicti ratio peti potest ex D. Ambrosio relato in cap. *cito* 1. §. 1. & explicat Hallier. *dist.* *scilicet.* 7. art. 2. & quia peccatum hoc propriè est contra Spiritum sanctum, hinc refert Petrus Damianus *epist.* 1. cap. 7. simoniacum quendam sceus suum parvipendentem, iustum pronunciat

D.D. Gmelz, in *Decretal.* Tom. V.

derologiam Sanctæ Trinitatis; *Gloria Patri, & Filio, & Spiritui sancto*, nequaquid dicere, & *Spiritus sancto*, sed tantum, *Gloria Patri & Filio*, etiam si secundo, & tertio idem iterando conatus fuisset addere, & *Spiritus sancto*, sed frustra. Nam ut subiecit Damianus: *Mentis Spiritum sanctum dum evocis, amittis, et qui exclusus erat ab anima, procul citius consequenter effert à lingua.* Hinc notum Hentle. II. Imperator anno Domini 1047. ob simoniam labem ab Spiritu sancto desertus, professus est se toto reiduo damnationes inferos visisse, flammam in se per fistulam lacalantes adeo pertinacem, ut noster ignis in comparatione illius locus putetur, & nihil calere; sed liberatum fuisse à iuvene semisulphurato, scilicet à Sancto Laurentio, cuius Ecclesiam testamenterat. Ita ex Vvillelmo Malmeburienfi, & Mathæo Vvestmonasteriensi refert Baronius tom. 11. anno Christi 1047. & 1063. quæ & alia horribilia exempla refert Villaroel. p. 1. *regim. Eccles.* *quallion.* 1. art. 13. Beynelinck in *thysure*, verbo *Simonia*, & latè gravitatem simoniaci expendit Theophilus tom. 12. *trakt.* mala à bonis Eccles. lib. 2. *scilicet.* 1. cap. 3. *per totum.*

Deinceps sciendum est, simoniam variè definiti ab Interpretibus: ea tamen receptis, communiorque definitio est, ut simonia sit *stidiosa voluntas emendi, vel vendendi aliquid spirituale, vel spirituali amovendum.* Quam sequuntur Theologi scholastici cum D. Thomas in 4. *dist.* 25. Deestitit in *causa* 1. pluribus relatis Binsfeldius in *presenti rubric.* notabilis 7. Gubalinus *de simon.* §. 1. Conradus Cling. lib. 3. *dist.* cap. 49. Redoanus *ead. tract.* 1. p. cap. 2. & probat videtur ex l. 1. *tit. 7. part. 1.* ubi Gregorius verbo *voluntas*, cap. *quicunque stidens*, cap. *qui stidens* 1. §. 1. sed adnotat eum nonnulla præciter Mattheus Socinus, illud præcipuè, quod in ea solum mentalis simonia videatur definiti, quæ penalis Ecclesie non puniatur, ut dicemus infra in cap. *final.* *hoc titul.* Nec etiam voluntas emendi spirituale dicitur simonia, sed voluntas simoniaci: & tandem quia cetera crimina non desinunt per verba *stidiosa voluntas*: quare Glossa in *dist.* cap. *quicunque*, cap. *qui stidens*, prædictæ definitioni addebat, *eum effectum*, ut hic actualem simoniam comprehenderet. Alij addunt, *opere subsequente*, ut Abbas in cap. *verbo*, *hoc titul.* Hofferius in cap. *tuas nos*, *hoc titul.* Hentrics in cap. *final.* *hoc titul.* Richardus in 4. *dist.* 35. §. 1. Sed huic sententia repugnant illa verba *stidiosa voluntas*, & unde Palacios lib. 2. *de contrah.* cap. 7. simoniam definit, ut sit commutatio rei spiritualis pro temporalis. Sed adhuc defendenda est communis definitio, nec per illa verba, *stidiosa voluntas*, simonia mentalis definitur, ut vulgo receptum est, sed actualis etiam, quæ per dationem rei temporalis pro spirituali, vel econtrà committitur: quia ut docet D. Thomas 4. §. 100. art. 1. quem sequitur Sotus lib. 9. *de iustitia*, §. 3. art. 2. tribus rationibus spiritualis emol, nec vendi possunt. Prima, quia nullo pretio estimari valent: secunda, quia nemo etiam Pontifex est illorum Dominus, sed tantum dispensator, iuxta D. Paulum ad *Corinth.* cap. 4. tertia, quia talis venditio spiritualium naturæ repugnat, iuxta illud D. Matthæi capite 10. *Gratu accepistis, grati dote.* Vnde late etiam similia rerum nulla est emptio, ex leg. *fid.* & *Celsus*, leg. *hanc legem,*

I 2.
SIMONIA
GRAVITAS

13.
SIMONIA
CAUSAE

col inlustia inferretur, cum pecuniâ eius gradus æstimatur: nam quis non vile putet esse quod venditur? inquit Hormisdas in *epist. ad Episcopos Hispania*, cap. 8. Iustitiam etiam ordinatio simoniae opponitur; tum, quod turpi istâ sacratum ordinatio omnium mundatione doctores, ac sanctiores, in quâ dignitatum minus cupidi esse solent, in doctioribus, ac minus probis ad eas conuolantibus, ecclesiasticarum sanctionum, officiorumque distributione, quæ secundum iustitiam distributio leges sapientioribus, ac melioribus debentur, soleant prætermitti; tum quod iniquum sit, & contra iustitiam commutari regulas, et proxime dicebam, pretio commutari quod pretio commutari non potest; & vendere, quod gratis acceptum est, contra illud Christi Domini præceptum, *gratis accepistis, gratis date*. Quod ita ad rem expendit Genoadius in *epist. encyclicâ*, ita latine versâ: *A me, inquit, accepistis dispensationem sacerdotii, si mihi pro ipso parum quid, vel magnum soluissetis, & hoc à me venditum est, hoc quoque ipsum alius vendit, si autem gratis accepistis, vos quoque gratis date*. Tandem simonia in ordinatione ministrorum Ecclesiæ expugnat pietatē, quia talis ordinatio offenderet pium animos, & pauperes à sacramentorum perceptione terreretur, quod obtestatur Gelasius in *epist. t. ad Episcopos Lucania*, cap. 7. adeoque abhorret Ecclesiæ ordinationes simoniacas, ut cantē eius constitutiones legi debeant, cum in eis videatur doceri, similes ordinationes nullas esse. D. Gregorius lib. 7. *epist. t. r. t. ibi: Quicumque studeat per pretium ordinationem sacrum ordinem suscipere, sacerdos non est, sed inanis tantummodo dici concepsit*. Paschasius I. *epist. ad Mediolan*, cuius verba perpetram Gratianus tribuit in *cap. quicumque* t. q. t. D. Ambrosio in *cap. cum ordinaretur*, ead. *caus. & quæst.* qui omnes PP. acclipiendi sunt de ordinatione nulla quoad exercitium, non verò quoad effectum characteris. Apud Genesios verò vsum in oleuisse dandi aliquid pro facerdotio, constat ex l. t. §. sed an id, ff. de collat. *honor. l. t. ff. de publicis l. i. r. r. ff. Non tamen, de extrordin. cognit. l. t. §. i. ff. ad leg. Jul. de ambig.*

Nec obstat dubitandi ratio supra adducta, nam pecuniā illam Pontifex Imperatori soluebat coactus, non verò voluntariē, donec sexto sæculo Ecclesiæ, postulante Agathone Ecclesiæ Romani

ab hac pensatione per Constantinum Pogonatum exempta est, quamvis nec tunc quidem ius confirmandi Romanum Pontificem Imperator remiserit; sed postea Benedicto II. omnino cessit, & illam exemptionem in simoniacam accusavit Gregorius Magnus in *psalm. 4. penult.* & ita iam ipse, quàm eius prædecessores reuenter persoluebant, iniustam vexationem redimenes, nec emebant dignitatem, sed moram suæ consecrationis Ecclesiæ nociuam datâ pecuniâ redimebant, ut ita Imperatoriam gratiam sibi conciliarent, Sic etiam alij Episcopi, qui propriis Principibus aliquam pecuniæ summam tempore suæ consecrationis persoluebant, costli, & iniusti tam pendebant, ut ita confirmationem iuxta eorum temporum corruptelam impetrarent; & illam improbam consuetudinem damnari in præfati docet P. Matcha cap. 10. Nec obstat, quod de filio Curia Romanæ expendebamus; nam omnibus Redoano de *simonia t. p. cap. 20. n. 2. Gatañi eodem tract.* qui asserunt præsentem prohibitionem non exigendi aliquid à notariis pro charis, litterisve dimissoriis, seu testimonialibus, tantum à iure positio provenire, & ideo locum non habere in Curia Romana, cum R. Pontifex sit supra ius posuimus, sicut receptum est, legem Iuliam de ambitu locum non habere in Curia Principis, quo modo ipsi accipiunt legem t. ff. ad leg. Jul. de ambitu: dicendum est, notarios, abbates, & plumbatores pro stipendio proprii laboris pecuniā exigere, non pro pretio ipsius confirmationis, ut laici prosequitur Roasellius d. cap. 5. per totum, ubi de annatarum, & similium præstationum origine agit.

Sed superius assertioni opponi potest textus in *cap. constitutum, de relig. domib.* ubi certa pensio annuatim persoluitur promissa fuisse à quibusdam monachis pro ordinibus recipiendis: ergo quia in Sacramento Ordinis interuenire potest nummaria præstatio, pro cuius difficultatis solutione dicendum est, in eo textum pensionem non fuisse promissam à monachis proprio Episcopo pro ordinibus recipiendis, sed in recognitionem subiectionis, ut licet à quocunque Antistite catholico ordines recipere, quæ conuenio auctoritate Sedis Apostolicæ fuit confirmata, alia nulla esset, ut probat in *cap. final. de pallis*, ubi alia, quæ ad eius textum expositionem spectant, adduxi.

18.

EXPOSITIO
CAP. CON-
STITUTUM,
DE RELIG.
DOM.

CAPVT III.

Ex Concilio * Magunt.

Quicumque Presbyter per pretium Ecclesiam fuerit adeptus, omni modo deponatur, quod contra ecclesiasticæ regulæ disciplinam agere dignoscitur, qui alium Presbyterum legitiē ad Ecclesiam ordinatum, per pecuniā expulerit, eamque sibi taliter vindicauerit: quod vitium latē diffusum, summò studio emendandum est. Itaque interdiciendum videtur clericis, siue laicis, ne qui cuiuslibet Presbytero præsumat dare Ecclesiam sine licentia & b. consensu Episcopi sui.

NOTÆ.

Magunt. Ex Concilio Maguntino, seu Magontensi citatur canon hic à Burchardo lib. 3. *Decretis*, cap. t. t. o. Iuone p. 3. cap. 86. Papiensi in t. *collet.* sub hoc tit. cap. 2. & extat fere eisdem verbis in Concilio Mogunt. sub Rabano can. 13. Magunt. sub Arnolfo can. 5. sub Catolo can. 15. ex quibus illum transcribo. Ita autem reperta fuit eadem sanctio in tribus Conciliis, D. D. Gouzel. in *Decretal.* Tom. V.

quia his temporibus inoleuerat in Gallia magna corruptela circa beneficia ecclesiastica, quæ laici, præcipuè parentibus, ut Duces, Comesque, propriâ auctoritate conferrebant, & plerumque auferrebant, ut alia confiterent, ut constat ex Concilio Maguntino sub Arnolfo, cap. 29. ibi: *Præ laici Presbyteros non cunctis de Ecclesiis, nec consueverunt sine consensu Episcoporum suorum.* Concil. Cabilon. can. 42. ibi: *Inuenimus est, quod multi*

G 2 arbitry

17.
Dissolutio
vix duxit
tandem rati-
one.

1.
De Conc.
Magunt.

abstergit sui temeritate, & quod est gravissimum, delicti cupiditate, Presbyteris quibuslibet absque consensu Episcoporum Ecclesiam danti, vel auferenti: unde aperte, ut canonica regulâ servatâ, nullus absque consensu Episcopi cubile Presbytero Ecclesiam det, quam si iniuste adeptus fuerit, hanc nisi culpâ gravi, & coram Episcopo canonica severitate amittat. Concil. Mogunt. can. 30. Si nullus omnino munera exigat a Presbyteris propter commendationem Ecclesie. Rhotomag. can. 5. ibi: Sacrum est, atque omnimodis prohibitum, ut si quis Presbyter inventus fuerit alieni clerico, aut laico monera dare, aut dedisse,

aut aliquem pecuniam tribuere, ut alterius Presbyteri Ecclesiam surripia, eam Ecclesiam vacantem pretio redimat, pro hac cupiditate, seu rapina, seu presumptione turpi lucri gratia, delictum a Clero, & ab aliis existat a Clero. De qua contumelia accipiendi sunt PP. in presenti, dum aiunt, vitium hoc late diffusum summo studio emendandum esse, & ita repetitis legibus huiusmodi abusum improbarunt, damnantque. Commemoratum huius textus dabimus infra in cap. 13.

b Consensu Episcopi.] Iuxta realita superâ in cap. 4. de inepatron.

CAPVT III.

* Deodatus Papa.

SI Dominus, & Magister omnium, qui sine peccato fuit, accusandi licentiam b vni dederit, quanto magis vnius assertione convincendus est, qui simoniz labe dignoscitur esse pollutus: non igitur & in tali negotio quilibet catholicus est respondendus, sed ut veritatem asserat, ad pellendam simoniacam rabiem magnis precibus exorandus est.

NOTÆ.

1. a **D**edatus.] Ita etiam legitur in prima collectione, sub hoc titulo, cap. 3. Glossa marginalis legit *Adenatus*; in nullis tamen epistolarum repetitur textus hic; nam Adeodatus Monachus D. Neodiditi electus Summus Pontifex die 9. Aprilis anno 669. vnam tantum epistolam pro privilegiis Abbatiz S. Martini Turonensis scripsit, quam referunt Baronius tom. 8. d. anno 669. Binius tom. 4. Concil. pag. 813. in quibus epistolis iam vacuâ non exant verba huius textus: quare existimabam textum hunc, & teatros in cap. sequenti, & in cap. tanta, hoc titulo, transcripsisse fuisse ex Decreto, quod ex diversis canonibus, & SS. PP. sententiis edidit Cardinalis Deusdedit tituli Apostolatus in Eudogia: in quo librum contra inuadentes, & simoniacos compilavit, ut referunt Baronius tom. 1. anno 187. Antonius Aug. tom. 2. epistol. iuris Pont. in tract. de collectionibus canonum. Vnde credo ex eo decreto Cardinalis Deusdedit transcripsisse textum hunc; & cum ipso decreto carissimus, cognoscit nequit, ex quo Concilio, aut Ecclesie Patre verba hæc compilasset ipse Cardinalis.

2. b *Vni dedit.*] Vni dedit legit Antonius Aug. quod contigit dum Dominus dixit ad ludæos: *Quis ex vobis arguet me de peccato?* Et dum post aliam patientissimè acceptam dixit: *Si mali loquuntur sum, testimonium perhibe de malo, ut testetur cap. 15. Matthæi, cap. 18. Ioannis, vers. 18.* quo argumento ad idem probandum usus fuit Gratianus in cap. 102. §. ecce, 2. q. 7.

COMMENTARIUM.

3. Cvm quæsitum esset à Romano Pontifice, an quilibet Catholicus admittendus esset ad ac-

colationem simoniaci, respondit, quemlibet admittendum esse. Cuius responsi ratio præuenit ex grauitate huius delicti, ob eius enim atrocitatem non procedit in eius punitione iustitiam ordinem in aliis delictis seruatum; quia in hoc procedit ad instar publici delicti, & læsæ maiestatis, ex constitutione Leonis, & Anthemij in l. si quemadmodum, C. de Episc. & cler. cap. sancti 25. §. 5. Fuit textus in cap. per tuas, hoc titulo. Vnde cum ex legibus civilibus in ordinario crimine persequendo letui aduersus Dominum non audiantur, nec ut accusatores, nec ut testes, l. 20. l. ult. C. de his quæ accusare, l. 9. §. 12 ff. de testibus; tamen quia in crimine læsæ maiestatis ad accusandum & testificandum contra Dominos admittuntur, d. l. 20. l. 2 ff. ad leg. Jul. maiest. etiam in crimine simoniz simoniz detegendo admittuntur, c. tanta, hoc titulo. Carnotensis episc. 17. vbi de simoniacis agens ait: *Ad insinuationem saltem etiam infames persone admittuntur.* Similiter licet molietes, & infames ab accusatione accedant, l. 4. §. ff. de accusat. l. 8. l. 15. C. qui accusare; tamen quia in crimine læsæ maiestatis admittuntur, l. 7. §. 1. l. 8 ff. ad leg. Jul. maiest. l. 4. C. eod. etiam in crimine simoniz admittuntur, d. cap. tanta, cap. si Dominus, cap. licet Heli, hoc titulo. probat Hallier. de sacris elect. sect. 7. cap. 1. §. 4. fol. 271. & ita recte in presenti docetur, quemlibet Catholicum admitti ad detegendum simoniz crimen. Iodæi autem, & hæretici non admittuntur nisi simonia habeat adiunctam hæresim; ita quod simoniacus crederet eum pertinacis spiritualis, aut spiritualibus annexa posse comparari, aut petio acquiri; nam tunc etiam qui catholici non sunt, admittuntur ut accusatores, vel ut testes, argumentum capituli contra hæresim, in 6. docet Binsfeldius in præfati, num. 2.

CAPVT IV.

* Gregorius Max. b Presumptori Ecclesie Salonis.

QVociens contra ecclesiasticam quid gestum dicitur disciplinam, ne nos ante Deum culpa ex dissimulatione redarguat; irrequisitum hoc relinquere non audeamus. Peruenit itaque ad nos, quod per simoniacam hæresim fueris c ordinatus sed & alia de te multa hic dicta sunt, de quibus vnum quamaximè fuit, propter quod
necesse

neceſſe habuimus te ſummopere per ſcripta noſtra prohibere, ne Miſſatum ſolemnia celebrare debuiffes, donec quid eſſet verus, poniſſemus addiſcere. Ne ergo, fili, Eccleſiæ diu videantur non habere Paſtorem, & ne per hæc quæ dicuntur, ſi indiſcuſſa remanſerint, huiuſmodi ſe vitium tendat in plurimos, hortamur vt ad nos venire omni poſtpoſita excuſatione ſeſtines, quatenus ſeruata iuſtitia, hæc & cognoscere, & finire ſecundum canonica inſtituta, Chriſto reuelante poſſimus. Ita aurem fac, vt ad veniendum amplius iam moras non ingeras, ne ipſa te magis abſentia obnoxium his, quæ dicuntur, aſſignet: & nos in te hæc res, non ſolum propter dicta crimina, quæ purgare ſubterfugis; ſed etiam propter inobedientiz culpam, durius, ſcilicet vt in contumacem, cogat ex concilio terre iudicium.

NOTÆ.

COMMENTARIUM.

1. ^a *Gregorius.*] Textus hic tribuitur Deodato in prima collectione, ſub hoc ſunt. cap. 4. Gratianus autem in cap. accuſatum 2. q. 4. cum citat ex Sylueſtro; ſed inter epistoſas Sylueſtri, aut Pontificis Deuſſedit non reperiuntur: xus hic; extat tamen in epistoſa tertia, ſub 3. *Regiſtr. D. Gregorius;* quam integram hic tranſcribo, vt cognoscatur, Cardinalem Deuſſedit in ſuo Decreto compilaſſe textum hunc, & tranſcripſiſſe ex dicta epistoſa 3. ac ſine cauſa eam diuiſiſſe.

2. ^b *Maximo præſumptum.*] Ideſt intruſo, inuſtæque ordinato in Episcopatu, vt conſtat ex epistoſis ipſius Pontificis lib. 3. epistoſ. 70. & lib. 4. epistoſ. 34. Sed quia Maximus forſan ſe purgauerit ab hoc delicto ſimoniz, & aliis illi illaris, poſtea lib. 11. epistoſ. 13. illi ſcribit ſub titulo Episcopii Salonitani. De Eccleſia Salootitana egi in cap. 4. de accuſat. vbi de hoc Maximo agitur.

^c *Ordinans.*] Et pecuniã dant electus, vt habetur in diſt. epistoſ. 34. cuius partem retuli in cap. omnipotens, de accuſat.

3. ¹ *C*ertum eſt, ordinatum per ſimoniam, ſuſpenſum eſſe ipſo iure ab ordine ſuſcepto, cap. tanta, cap. ex tua, hoc ſunt. nam dum aliqui ſacri canonis ordinationem per ſimoniam factam nullam, irritamque eſſe docent, vt Gregorius noſter lib. 7. epistoſ. 113. & alij Eccleſiæ PP. in cap. quicumque, cap. cum ordinatur, 1. q. 1. accipiendi ſunt quoad excoꝛetum, vt exponit Hallier. de ſacris elec. ſect. 7. art. 2. ad ſum. & Gibalinus de ſimon. q. 27. Et licet reus accuſatus de crimine, dum cauſa diſcutitur, non priuatur ſacris ſibi competentibus, vt probatur in cap. 4. de accuſat. tamen in hoc crimine ſimoniz cùm aliquis eſt inſamatus publicè de eo, etiam hadiclo pendente ſuſpenditur à Miſſatum celebratione, vt poſt Gloſſam hic, docuit Hallierius ſuprà, ſect. 264. Vnde eam Maximus, de quo in præſenti, publicè inſamatus eſſet de crimine ſimoniz, vt patet ex alijs epistoſis eiufdem Gregorii; ideo Pontifex lite pendente, nec cauſa adhuc decisa, illi inhiuit ne Miſſam celebraret, vſquedum accederet ad Romanam Sedem, ibique legitime ab hac diffamatione purgaretur.

CAPVT V.

* Lucius Papa.

*S*icut enim ſimoniaca peſtis ſui magnitudine alios morbos vincit, ita ſine dilatione, ſimox vt eius ^b ſigna per aliquam perſonam claruerint, de Eccleſia Dei debet eliminari, atque propelli. ^a Petrus enim primus Paſtor Eccleſiæ, non alicuius hominis atteſtatione, ſed S. Spiritus inſpiratione Simonis interiora recognoſcens, ſine aliqua audientia, terribili eum, & repentinã morte multauit.

NOTÆ.

1. ^a *Petrus.*] Ita etiam legitur in prima collectione, ſub hoc ſunt. cap. 6. nullibi tamen exprimitur, an petra, ſecundũ, vel tertij Lucij ſit textus hic, nec cui Prelato in eo Pontifex reſcribat. Ex dicta autem prima collectione ita eum tranſcribo.

2. ^b *Signa.*] Licet regulariter in criminibus probationes debeant eſſe lucẽ meridianã elatiores, cap. 1. cum ſequent. 2. q. 1. l. vlt. C. de probat. l. qui ſententiam 16. C. de parnis; nec ex ſuſpicionẽ ſola, vltus accuſationis ſit, cap. multi 2. q. 1. D. Thomas 2. 2. q. 60. art. 3. Interdum tamen eo ſolum ſuſpicionem proceditur, vt in cauſa hæreſis, ex l. 2. C. de hæreſis: in cauſa adulterij, l. quomodo 30. C. ad leg. lul. de adul. l. vlt. 7. C. de repulſis. Quintil. declam. 264. ibi: Sed ſinge me ex ſuſpicionẽ egiſſe D. D. Gmzal, in Decretal. Tom. V.

cum illo adulterij. Probat Fornerius lib. 1. rer. quorid. cap. 26. & in crimine ſimoniz, ex præſenti textu, Quibus autem modis probati debeat ſimonia, & quatenus in eius probatione locus ſit iudicis & præſumptioibus, explicat Gibalinus de ſimon. cap. 30. per totam.

^c *Petrus.*] Verba quæ ſequuntur omiſit Raymondus; & rectè ea omiſiſſe notauit Ant. Auguſtin. vt pote difficillima; ſiquidem D. Petrus, dum interiora Simonis recognoſcens dixit ei: Pecunia tua tecum ſit in perditionem; non illud eum inuenerit: quare ipſe perdoctus vitæ credidit potius per hæc verba Lucium reſpoſiſſe ad cauſam Ananiz, & Sapphiræ, qui ad vocem D. Petri ſubiſſo mortui ceciderunt, vt reſertur cap. 5. Actuum Apoſtol. Sed cùm cauſus hic non ob ſimoniam ab ipſis commiſſam, ſed ob mendaciam in retentione partis patrimonij contin-

gest; quid ad simoniaci detestationem, quam intendebat probare Lucius in presenti? Cre- do ergo Pontificem sensisse de Simone Mago, cui dixit D. Petrus, *cor tuum non est rectum coram Deo*. Actum Apost. cap. 6. Et cum postea ipse de miraculis facienda cum B. Petro discerneret, asseruit se in cœlum conscensurum: sed cum sub- latus à demonibus volaret sublimis, cuncto spectante populo, D. Petri precibus in terram posstratus, crucibus perfectis iacuit, & decessit, ut referunt D. Clemens lib. 6. confus. cap. 9. Arno- bius adversus Gentes lib. 2. Cyrillus Hierosol. Catechesi 6. Epiphan. heresi 21. & alij SS. Patres, ex quibus idem narrat Baronius anno 68. de qua repentina morte sensit, ni fallor, Lucius in pro- senti.

Inter alias penas, quibus notorij simoniaci affi- ciuntur, præcipua est depositio à gradu clerica- li, cap. qui sinder, cap. Presbyter, cap. Sacerdotum, cap. erga simoniacos, 1. q. 1. Concil. Tolet. 6. can. 4. cap. cum super, de confissis, lib. 1. Capitul. t. q. 3. quam penam etiam in ordinatores sanctissime Apostoli in can. 20. alijs 21. Ambros. & Gelasius in cap. baptizandus, cap. reperiuntur, 1. q. 1. PP. Con- ciliij Chalcedon. in cap. si quis Episcopus t. q. 3. in 6. Synodo can. 22. in 7. can. 50. Alexander II. in Synodo Romana can. 3. Gregorius VII. in Syno- do Romana can. 6. que decreta luxa hodiernam praxim debere intelligi de depositione à iudice in- stigenda, non de ea, quæ ipso facto incurritur. Docuerunt Hallier, de sacril. elect. feli. 7. art. 3. §. 1. Gibalinus de simonia, q. 29.

CAPVT VI.

Deusdedit.

Tanta est labe huius criminis, quod etiam serui b aduersus dominos, & quilibet criminosi adiunguntur ad accusationem. Item omnis peccator Missam cantare potest præter simoniacum, quem etiam quilibet vt ab ordine malè accepto remouea- tur, accusare potest, etiam d meretrix.

NOTÆ.

1. a **D** *Ensdedit.*] Ita etiam legitur in prima compilatione, *sub hoc tituli. cap. 15.* Sed textum hunc transcriptum esse ex Decreto Cardi- nalis Deusdedit, iam notati in cap. 3. *hoc tituli.* Ex quo autem Concilio, aut sancti Patris decreto eum compilasset Cardinalis, non constat.
- b *Serui aduersus Dominos.*] Quia in hoc de- licto proceditur ad instar criminis læsæ Maje- statis, vt probatur supra in cap. 3.
2. c *Missam cantare.*] Quidam Præceptor nostræ Academiæ existimabat, in his verbis non agi de Presbytero celebrante Missæ sacrificium, sed de psalmodia psallente in ipso sacrificio, iuxta mo- tem receptum iam à tempore, in quo pars data fuit Ecclesiæ, cum in vso esse cepit schola cantorum, qui in eo gradu etiam cooptati, vt psallerent in Ecclesia. Micrologus in obs. eccl. cap. 2. ibi: *In- terim cantatur antiphona ad introitum, quæ ab intro- itu sacerdotis ad altare hoc nomen meruit habere.* Quem morem cantandi Missam illustrarant Lant- meret. lib. 2. de veteri monach. cap. 17. Vicecomes volum. 1. de ritibus Missæ, lib. 3. cap. 7. & nos in cap. 1. de celebrat. Missæ. Si accipiat textus hic in hac secunda parte de Presbytero celebrante, difficilis valde est; siquidem nullus peccator in peccato persistens potest Missam celebrare, cum

luterum dum non agit poenitentiam, sit suspensus quoad se, cap. sacerdotes, cap. Sacramenta, cap. necesse, 1. q. 1. & publici concubinarii quoad alios, cap. nullus, 32. dist. Sed adhuc potest, & debet accipi textus hic de sacerdote Missam celebrante, ita vt sensus sit, quod licet alij peccatores non præfisi ab Ecclesiâ, post peractam poenitentiam possint Missam celebrare; & si in maioribus gra- dibus non sint, ad eos ascendere, vt probatur in cap. final. de temporibus ordinis. tamen simoniaci, quia etiam post poenitentiam non restituntur ad gra- dum, à quo depositi fuerunt, non possunt vt cæ- teri peccatores poenitentes Missam cantare, vt contingit in homicida ob irregularitatem contra- ctam. Vnde notat Gratianus post cap. erga, cap. eamem, 1. q. 1. ex epistola Innocentij ad Episco- pum Macedon. quod etsi olim cum reuertentibus ab hæresi dispensatum fuerit, vt in suscepi- diuibus ministrarent, vix tamen dispensatum le- gitur cum his, qui vel scientes à simoniaci ordi- nati fuerint, vel si ignorantes, eis postea libere, ac libenter adhaeserint: & ita rectè in presenti degetur, vt atrocitas, & grauitas simoniaci cog- noscatur, eam tantum esse, vt omnis peccator ab Ecclesiâ non præfiscus, vt homicida, post poenit- tentiam Missam celebrare possit, præter simonia- cum.

d *Meretrix.*] Iuxta tradita in cap. 3. *hoc tituli.*

CAPVT VII.

Alexander III. in Concilio^a Turon.

Quia non satis vtiliter auaritia in populo redarguitur, si ab iis, qui in Clero con- stituti videntur, & præcipuè contempto sæculo, religiosorum nomen profiten- tur, regula modis omnibus non cauetur: Prohibemus, ne ab eis, qui ad religionem transi- unt

transire voluerint, aliqua pecunia ^b requiratur; néve Prioratus, vel capellania quolibet monachorum, vel clericorum annuâ distractione ^c vendatur; neque ab eo, cui regimen ipsarum committitur, ex earum omissione pretium exigatur. Hoc simoniacum esse sanctorum Patrum auctoritas manifestè declarat. Vnde quisquis hoc de cætero attentare præsumpserit, tam qui dederit, quàm qui receperit, partem se eum Simone non dubitet habiturum. ^d Pro sepultura quidem, & chrismais, ^e & olei perceptione, nulla alienius pretij exactio intendatur, nec sub obtentu cuiusquam consuetudinis reatum suum aliquis tueatur, quia diuturnitas temporis non minuit peccatum, sed auget.

NOTÆ.

1. ^a *Tramens.*] Ita etiam legitur in prima collectione, sub hoc titulo. cap. 7. & post Concil. Later. part. 2. cap. 10. Et licet hæc verba nō reperiantur in ipso Concilio Tutoo. sub Alex. III. celebrato, sententia tamen extat in Canone 5. ipsius Concilij, propterea illud edidit Coriolanus; & omnia verba reperuntur apud Guillelmum Neubrig. lib. 2. *hystor. Angliæ*, cap. 14. De hoc Concilio nonnulla adduxi in cap. notabili 27. de *rescriptis*.
2. ^b *Requiratur.*] De simonia in ingressu Reli-

giosis oco committenda, agemus in cap. veniens 19. hoc titulo.

^c *Vendatur.*] De simonia fugienda in beneficiis ecclesiasticis, agemus infra in cap. 23.

^d *Pro sepultura, & exequiis defunctorum.*] Ut probauit in cap. ad abolendam, de sepulch. & diemina infra in cap. suum.

^e *Chrismais, & olei.*] Ut exponemus infra in cap. ea qua.

^f *Consuetudini.*] Quatenus consuetudine introducta possit, ut aliquid recipi valeat pro Sacramentorum collatione, dicam proximo commentario.

CAPVT VIII.

Idem ^a in Concilio Later.

Cum in Ecclesiæ corpore omnia debeant ex charitate tractari, & quod gratis acceptum est, gratis impendi, horribile nimis est, quod in quibusdam Ecclesiis locum venalitas perhibetur habere, itavt pro Episcopis, vel Abbatibus, seu quibuscumque personis ecclesiasticis ponendis in sede, seu introducendis presbyteris in Ecclesiam, necnon pro sepulturis, ^b & exequiis mortuorum, & ^c benedictionibus nubentium, seu aliis ^d Sacramentis aliquid exigatur; & ille, qui indiget, non possit ista percipere, nisi mahum implere curauerit largitoris. Putant autem plures ex hoc sibi licere, quia legem mortis de longa inualuisse consuetudine arbitrantur; non satis, quia cupiditate cæcati sunt, attendentes, quod tantò ^e grauiora sunt crimina, quantò diutius animam infelicem tenuerint alligatam. Ne igitur hoc de cætero fiat, vel pro personis ecclesiasticis deducendis ad Sedem, vel Sacerdotibus instituendis, aut sepeliendis mortuis, seu etiam nubentibus benedicendis, seu etiam aliis Sacramentis aliquid exigatur, districtius inhibemus. Si quis autem contra hoc venire præsumpserit, portionem cum Giezi se nouerit habiturum, cuius factum exactione turpis muneris imitatur. ^f Prohibemus insuper, ne noui census ab Episcopis, vel Abbatibus, aliisque Prælatibus imponantur Ecclesiis, nec veteres augeantur, nec partem reddituum suis vîsibus appropriare præsumant: sed libertates, quas sibi maiores desiderant conseruari, minoribus quoque suis bonâ voluntate conferunt. Si quis autem aliter egerit, irritum quod fecerit, habeatur.

NOTÆ.

1. ^a *Asteron.*] Ita etiam legitur in prima collectione, sub hoc titulo. cap. 8. & extat textus hic in ipso Concilio. *Lutetian.* can. 7. ex quo canonem hunc transcribo.
2. ^b *Sepultura, & exequiis.*] Ut probauit in cap. abolenda, de sepulch. & dicam infra in cap. suum.
3. ^c *Benedictionibus.*] De quibus iure egit in cap. 2. de secundis nuptiis.
4. ^d *Aliis Sacramentis.*] Non inde inferas, benedictionem nubentium esse sacramenta, cum eorum sit otantes Ecclesiæ, ut probauit in cap. 2. de secundis nuptiis. quia dictio aliis, nō est

semper repetitua eiusdem casus, & qualitatis, ut probauit in cap. 2. de claref. de spons.

^e *Gratiæ.*] Cap. nullus Episcoporum 1. q. 1. cap. flagitia 34. quæst. 7. cap. final. de consuet.

^f *Imitatur.*] Vnde colligitur, Giezi, qui à Naamo pro reddita sibi sanitate ab Eliseo, ommioe eiusdem Elisei munera petiit, ut referunt lib. 4. *Regum*, cap. 5. simoniacum fuisse; quod & similiter suppoerit videntur omnibus Ecclesiæ Patres, dum peccatorem simoniacum cum eo cooferunt, ut D. Ambrosius lib. 4. in *Lucam*, Cyrillus *catechisi* 26. Tarsusius in *epist. ad Hadrianum*, Quibus adhaerent plures Theologi cum D. Thoma 2. 2. quæst. 200. art. 1. ad 4. Abulensis in

dist. cap. 5. Regum, quest. 29. licet iuxta animum ipsius Giezi in petitione manerem, hoc eximandum esse noviter docuerit Gihalius de *simon. quest. 6. c. confel. 16.*

COMMENTARIUM.

3.
CONCILIO
TRADITUM
ET PROB-
ATUM.

EX hoc textu sequens communiter deducitur a Tertio. *Consuetudo ex pro Episcopo, Abbatibus, & aliis Prelatis ecclesiasticis pendenda in Sede, seu exequiis mortuorum aliquid exigatur, obfructuanda non est.* Probant eam textus in *cap. non satis, cap. in sacrum 36. cap. sent 39. cap. Jacobus, hoc tunc, cap. si quis obierit, 1. quest. 3. cap. quest 13. quest. 2. cap. 2. de consuet. in 5. compil. ibi: Ad audientiam nostram nuntiis pervenisse, quod praxem cuiusdam consuetudinis, ut dicitur, iuramento firmata, a singulis, quos in Ecclesia vestra canonici contingit, vnum scilicet argenteum exigatur, & etiam exorantur, eis fructus prabendarum facerem, nisi consuetudinem laudabilem adimplerent, denegando. Quia igitur consuetudo huiusmodi habere videtur speciem praeiudicii, & continet turpitudinem manifestam, universis vestra districtius iubemus, ut praedictam consuetudinem irritari faciat de cetero, ne eius occasione aliquid exigatur, aut subtrahatur aliquibus suorum reddituum prabendarum. Concil. Londinense apud Matthaeum Patif. ad annum 1237. Innoc. III. in Synodo Romana, cap. 2. Ioannes XXII. in extraneis. *Suscepit, de elect. Concil. Mogunt. celebratum anno 1349. cap. 42. Mediolan. sub Carolo Borrom. part. 2. cap. 1. Latetio. sub Innoc. III. cap. 3. cap. pante. de sepulch. Gallo Cardinal. in suis constitutionibus quae extant tom. 26. Concil. cau. 2. Prohibemus etiam sub eadem excommunicatione, ne sacerdotes, vel clerici occasione alicuius consuetudinis pro baptismo, sepultura, benedictione, aliisque Sacramentis Ecclesiasticis aliquid exigere, vel exquirere praesumant, sed ea liberaliter, & sine difficultate student canonice ministrare; monentur tamen hanc diligenter, ne qua pro reverentia Sacramentorum devota fidelium introducta, ex avaritia velint aliquatenus revocare. Illustrati vltra congellos à Barbosa in presenti, Binsfeldius ad hunc textum, Hallier. de sacris elect. st. 7. art. 4. per totum. Suarez de finem. tom. 1. lib. 4. cap. 60. Maucinus sacre iuris contron. cap. 29. Roussellus lib. 5. hystor. Pontif. iurisd. cap. 4. Sahagun in cap. final. de consuet. num 32. Petrus Gregor. lib. 3. parit. tit. 20. cap. 5. Citonius in notis ad textum in dist. cap. 2. de consuet. Germonius de sacror. immunit. lib. 1. cap. 3. num. final.**

4.
IMPROB-
ATA TRADI-
TA ABSEN-
TIO.

Sed pro dubitandi ratione in praesentem assertionem ita infergo. Consuetudinis non vili auctoritas est, immò usque adeo fuit valuita momenti, ut legitime praescripta iuri scripto deatget, *cap. quemadmodum, dist. 8. cap. contra iur. cap. placuit, dist. 32. cap. cum venisset, de eo qui ministrat in possess. cap. super eo, de cognat. spirit. cap. ad hac consuetudo, de testibus, cap. an constituit, de his qui sunt à Prelatis.* Igitur etsi per sacros canones prohibitum sit aliquid recipere pro hancificationis, seu institutionis titulo, tamen si consuetudo legitime sit praescripta contra eosdem sacros canones, observari debet. Et talem consuetudinem legitimam, iustamque esse, probatur ex eo; nam quemadmodum apud Gentiles, quorum Respublice bene ordinatae, moresque erant, Magistratum ventalis omni mo-

do prohibebatur; tamen inthronificandi nomine pecunia vltro pendi solebat ab his, qui Migratus inibat: cuius moris testis omni exceptione maior est Plinius in *Panegyricis ad Traianum*, ibi: *Superest ut ipse discipulis, an in omnibus civitatibus aliquid emere, qui Balenta leguntur, debeant pro introitu dare.* Et *epist. 116. & 121. Symmachus lib. 4. epist. 14. & lib. 9. epist. 96. & lib. 10. epist. final.* Et Claudius, qui postea Imperator, sceleratos octoginta pro introitu novi Sacerdotij coactus fuit impendere. Suetonius in *ee, cap. 9. Apuleius lib. 7. Metamor. Germanicus decl. lib. 1. cap. 3. numer. final.* quod & Scanzola responso confirmatur in *l. bi, §. alienus, & §. idem restator*, ibi: *Pro introitu ff. de legat. 3. quio & à Tullio in oratione pro Murena laudata est Candidatorum liberalitas, suffragatorum populo munus edentium.* Eundem Marcellus togae gentis morem observavit in *l. Publicis ff. de comit. & damnum.* immò & apud Romanos moris fuit, ut aliquid pro introitu Sacerdotij erogaretur, ut refert Suetonius supra cap. 9. & ex eo notavit Kocher & face hist. tom. 2. cap. 7. Accedit Ecclesiae canones, in quibus iuribus cooordinandis iubentur observari. Stephanus Papa relatus in *cap. qua sancta, 63. dist. In electionibus palli, politionibus, & instrumentis de aliquo praesentio ita irritaret, ut tamen consuetudines antiquae ab his existeret. Innoc. III. in cap. ad Apostolicam, hoc tunc. in conferendis Sacramentis praeiudicia exactio- nes fieri prohibet, & prae consuetudines praecepti observari. Gallo Cardinalis, qui tempore Paschalis II. ab Episcopo Bellovacensi ad Faciensensem transiit, ait, statuisse dicitur in eius statuta, num. 1. ne sacerdotes, vel clerici occasione alicuius consuetudinis pro Sacramentis quippiam extorqueant; monetur tamen laici, ut quod pro reverentia Sacramentorum devotio fidelium introductum, velint aliquatenus revocare. Odo (vi ai Blesensis epist. 127. & 128.) Henrici II. Anglorum Regis, & Regis Francorum consanguineus, qui Alexandro III. tempore Parisiensis rexit Ecclesiam, in *commun. praecip. Synod. cap. 2.* consuetudines laudabiles pro sepultura exigi permittit. Tandem Synodus Lingon. & aliae relatae ab Hallierio de sacris elect. d. st. 7. art. 4. prae & laudabiles consuetudines in Sacramentorum receptione petolai solitas, exigi posse concedunt. Igitur & consuetudines observant pro Episcopis, & Abbatibus pendenda in Sede, recipi valent, & observari debent.*

Qua dubitandi ratione non obstante, vera est praesens assertio, pro cuius expositione praemittendum est, valde controversum esse apud DD. coi legi simonia opponatur, an videlicet diuine, vel tantum ecclesiasticae? Quam questionem late dispositor Victoria in *elect. de simonia, 1. part. à num. 9. Sotus lib. 9. de iust. quest. 5. Valquez in 1. 2. D. Thoma, diffus. 98. numer. 3. Lessius lib. 2. de iuribus, cap. 15. Sayrus lib. 2. clan. cap. 5. num. 19. Caietanum tom. 2. apud. tract. 9. q. 1. Aragou in 2.2. quest. 100. art. 2. Gregorius de Valent. in 2.2. quest. panti. 5. Durandus in 4. dist. 25. quest. 1. Summilae Verbo Simonia, Binsfeldius in praesenti rubric. notab. 11. Gihalius de finem. quest. 4. & communiter placuit, omnem simoniam spirituum bonorum repugare iuri diuino, & naturali. Hadrianus quodlibet. 9. Sotus ubi supra: quod aperte probatur ex precepto Domini nostri apud Matthaeum cap. 10. Gratia accepit*

5.
SIMONIA
QVO VIRES
DAMNETUR.

acceptis gratis dant. Quæ verba ad hoc probandum communiter PP. expendunt, ut Gennadius Patriarcha, & PP. Synodi Constantinop. in *epist. in totum artem missa*, his verbis: Dominus noster, & Deus, & Saluator, Iesus cum discipulis suis, quos per uniuersum orbem hominum Doctores misit, Evangelij prædicationem præcepit manifeste, & manifestum, quod ab eis gratis accepissent, illud ipsi ceteris quoque mortalibus largirentur, proque illa neque æs, neque argentum, acque aurum, nec ullas alias facultates, aut materiale possiderent. Cælestibus enim, & spiritalibus gratis terrena & caduca commutabilia non sunt. Et statim: Simples, & manifestus huius mandati sermo est: nihil hic ambigunt, nihil falsæ caput nostrum: nihil hic opus sapientie narramine. A me, inquit, acceptis sacerdotij dignitatem, pro qua, sine parum, vel magnum quid dependit, si hæc vendita est a me, vendente & vos eam alius: quod si gratis acceptus, dante & vos gratis. Facit exemplum Christi Domini dum eieci de templo vendentes & ementes columbas: quod f. cum Saluatoris nostri in præsentem materiam expendunt D. Augustinus *tract. 19. in Ioannem*, ubi: Simili ille ideo volebat emere spiritum sanctum, quia vendere volebat spiritum sanctum. & putabat Apostolos mercatores esse, quales Dominus fregit eieci: talis enim ipse erat, & quod venderet, emere volebat: de illis erat qui columbas vendebam, etiam in columba apparuit spiritus sanctus. D. Gregorius *homil. 39. in Euang.* Urbanus II. in cap. Saluator, Alex. II. in cap. ex multis 1. *quest. 3.* Leo IV. in cap. *requiritur* 1. *quest. 7.* Gregorius Nazianz. seu Tarasius, in cap. qui studet 1. *quest. 1.* Unde simonia, quæ committitur in venditione beneficiorum ecclesiasticorum, est iure diuino prohibita, ut docuerunt Caietanus in *dist. quest. 1. tract. 9.* Victoria *suprà*, Sotus *dist. lib. 9. quest. 7. cap. 1.* & explicat Binsfeldius in *præfati rubric.* Vendere verò officia merè temporalia pertinentia tantum ad ministerium Ecclesiæ, ut officium Sacristæ, Procuratoris, & Advocati, non est simonia à iure diuino prohibita, nec est propè simonia; imò quoddam isreligionis, ut latè probat Gibalinus de *simon. quest. 4. consell. 4. non. 1.* Theophilus Raymond. *tom. 12. tract. mala à bonis*, &c. *lib. 2. sect. 1. cap. 1.* etiam simonia est à iure diuino prohibita emere, aut vendere ea, quæ habent ex dispositione iuris humani, quod sunt spiritualia, ut vendere calicem, ornamenta Ecclesiæ, & aquam benedictam, quantum ad id, quod est spirituale in eis, ut explicat Binsfeldius in *præfati rubric. metab. 12. quest. 4.*

Deinde sciendum est, quod cùm simonia iam à temporibus Apostolorum prohibita esset acceptum nonnullæ consuetudines, seu potius corruptelæ in Ecclesiâ introductæ, per quas simonia palliata committebatur, sub eisque latebat ambitus, & mercimoniũ quoddam sacre dignitatis sub nomine receptæ consuetudinis: ea quibus nonnullas testam in præsentem, & in cap. *scire*, cap. *Iacobus*, cap. *ita nati*, hoc titulo. Et primò olim Episcopi in consecratione sua pauperibus populi aliqui largiebantur: cuius moris testimonium extat apud Callistorum *lib. 9. epist. 15.* in edicto Athalarici, in quo ad postulationem Ioannis II. pecunia illius distribuenda summa definitur his verbis: *Et quia omnia decem sub ratione moderari, nec possunt dici iusta, quæ nimia sunt, cum de Apostolici consecratione Pontificis intentis fur-*

*tasse peruenit, & ad palatium nostrum produlta fuerit altercentia popolorum, suggerentes nobis intra tria milia solidorum, cum collectione thesaurum consensum accipere: a quibus tamen omnes idoneos (idest diuites) rei ipsius consideratione remouimus, quia de Ecclesiastico munere pauperibus est potius consulendum: alius verò Patriarchas (idest Archiepiscopos) ut notauit Baronius anno 535.) quando in comitatu nostro de eorum ordinatione tractatur, in supradictis conditionibus, neque personis ultra duo milia solidorum indemus expendere. In chinitaribus autem suis tenuissima plebi non amplius quam quingentas solidas se distributuras esse cognoscant. Reliquos accipientes, & edicti præfatis, & Senatusconsulti super habiti iura infringant, sed & dantes canonice sententias persequantur. Vides sub ea electuina latuisse ambitum, & mercimoniũ quoddam sacre dignitatis: ideoque grauiter in ipsam inuehitur D. Gregorius *lib. 7. indict. 2. epist. 112. ubi*: Peruenit ergo aduersariis animarum, dum non potest in his, quæ ad faciem sunt præna, succipere, calidè specie quæ pietatis inuoluntatiui supplantare: suadeoque, iustitiam debere ab habentibus accipi, ut si quod possit non habentibus erogari, dummodo vel sic venia misericordia eterna celatæ obumbratione transfundat, &c. Omnia ergo metuenda, & cauenda isti hostis officina, ne quæ aperte, neque tentatione subvertitur, latente telis hominis valeat trucidare. Etiam receptum fuit, ut Episcopi, Archidiaconi, Decani, vel alij, à quibus ius possessionem metuebantur, munera quoddam inuoluntaria, seu pro inuestitura periculoletur: de qua praua consuetudine, tanquam de simoniacis hæreticis, reprobatus fuit Iuuo Carroienensis à Riehardo Albanensi S. A. L. ut ipse refert *epist. 33.* eo quod pro consuetudine antiqua aliqua publicè exigerent Decanus, Cantor, & alij ministri ab his, quæ Canonici fiebant: quam consuetudinem & suis temporibus vigere in Senonensi Metropoli testatur Hallier. *ubi supra*, Choptius *lib. 1. sacra pol. tit. 8.* quam improbatum Alex. III. in præfati, & inuoc. III. in cap. in tantum, infra hoc titulum.*

Hic ita animaduertit ratio præfatis assertionibus ea eo provenit, nam eùm per sacros canones non solum improbatum sit consuetudo, quæ iuri diuino, vel naturali opponitur, verum etiam quæ Sedis Apostolicæ auctoritati obstat, vel canonicis obstat institutis, cap. *sacrosancti*, 12. *diff. cap. consequens*, *diff. 8. cap. finali. de consuet.* & mala consuetudo, tanquam corruptela improbanda sit, cap. *qua contra*, cap. *à veritate*, cap. *si consuetudine*, 8. *diffinit.* & inuitum, atque illicitum sit pro qualibet re spirituali, ut est inuestitura, seu institutio corporalis in eam, pecuniâ accipere, ut probat *suprà* in cap. 1. Idem in præfati Alexander quancumque consuetudinem, per quam pecunia exigitur pro Episcopis, Abbatibus, vel aliis Prælatibus ponendis in Sede, ut corruptelam improbat, ac condemnat.

Nec obstat dubitandi ratio, cui facillè respondetur ex *suprà* traditis; nam cùm simonia prohibita sit à iure diuino, vel ecclesiastico, iusta distinctionem *suprà* adductam, & nulla possit legitima, & rationabilis præfati consuetudo contra ius diuinum, vel contra prædictam Ecclesiæ prohibitionem; ideo consuetudo, seu potius corruptela in præfati ab Alexandro improbat. Nec obstant iuris testimonia. Sanctorumque PP. sententia, in quibus consuetudo aliquid exagendi pro-

7.
TRADITVA
RATIO D2-
C108NDI,

8.
D12206V2P
V28 D232-
TAN2122-
T70.

6.
DE PARITIA
CONTRITIA
SIS CIRCA
SIMONIAM.

rebus spiritualibus laudabilis dicitur, & obsema-
ri iubetur: pro quorum solatione, omnis vtilis
distinctionibus traditis à Luna, & Arellano
lib. 5. animam. 3. discrimen constituendum est
inter consuetudinem, quæ initium habuit à gra-
tuitis fidelium oblationibus, ex mera eorum libe-
ralitate; & inter eam, quæ ex potestate, & ex-
actione originem trahit: primi casu consuetudo
laudabilis observanda est, cum non possit in ea
confiscari aliquo modo pretium rei spiritualis,
& per consequens simonia: quo casu exaudiendus
est canon 29. Concilij. Exoniensis tempore
Monacorum III. ibi: *Firmiter iubebimus, ne pro ali-*
qua pecunia decematur sepultura, vel hospitium, vel
aliquid ecclesiasticum sacramentum, vel etiam ma-
trimonium contrahendum impediat, quoniam si
quid pia devotione fidelium consueverit erogari, sem-
per hoc postmodum volumus per ordinem loci Ec-
clesie in custodiam exhiberi. Secundo vero casu
consuetudo ut corruptela damnatur, cum turpe
luctum continet, siue ex obiecto suo, siue ex
circumstantiis: & ita nec eius diuinitas excusa-
bitur danem à culpa, nec sufficit ut iuri ipsam
reprobanti derogetur, cap. non satis, hoc titul. Tri-

dent. *sess. 24. de reform. cap. 24.* Etiam distin-
guendum est inter consuetudinem, quæ etiam habuit
principium ab exactione, non tamen ut pretium
rei spiritualis, sed in sustentationem ministrorum
Ecclesie intrinsecum fuit; & inter eam, quæ ut
pretium ipsius officij, seu beneficij penditur. Pri-
mo casu consuetudo seruanda est, immò & co-
gendi erunt parochiani ad similes præstationes
virtute consuetudinis præscriptæ, tam per iudices
ecclesiasticos, quam seculares, si per viam vio-
lentia similis questio ad Regales Cancellarias de-
feratur, ut docuerunt Chopinus ubi supra, Re-
bassus in concord. tit. de public. concubin. 5. quia
verò. Secundo vero casu ut corruptela talis con-
suetudo omnino improbat: in qua quæ distin-
ctiones accipiunt iura, tam pro confirmatione
presentis assertionis, quam pro dubitandi ratio-
ne allata, Gibalinus de simon. quæst. 18. consil. 13.
& sequenti, Hallierus dist. sess. 7. art. 4. quon-
iam tamen talis consuetudo ex actu facultatis
præscribi possit, & parochiani ad eam obseman-
dam teneantur, exponit Binsfeldius in cap. ad
Apostolicum 41. hoc titul.

CAPVT IX.

Alexander III. ^a *Vigilien. Episcopo.*

Cum sit Romana Ecclesia, cui licet immeriti præsidemus, mater Ecclesiarum
Communium, & ^b magistra, cogimur ex debito suscepti regimiois, prout nobis Do-
minus misit, traheant, respondere consulationibus singulorum, ut dubia quæstiones
Apostolicæ Sedis provideat, ac peccatis enodentur. Quæsiuisti autem, frater Episcopo,
tux fraternitati referri, verum pro Ecclesiarum ^c consecratione quidquam præter
procuratorem habere debeat. Et nos consult. tux taliter respondemus, quod nihil
pro Ecclesiarum consecratione potes, vel debes præter ^d procuratorem exigere: sed
procuratorem moderatam, cum ^e Apostolus dicat: Nemo cogitur suis stipendiis mi-
litaré, ab eadem Ecclesia exigere potes.

NOTÆ.

1. ^a *Vigilien.]* Ita etiam legitur in prima col-
lectione, *sub hoc titul. cap. 9. & post Con-*
cil. Later. part. 2. cap. 4. De Vigilien. Ecclesia
nonnulla adduxi in cap. 8. de acce. & qualis.

^b *Magistra.]* Ut probauit in cap. 2. de summa
Trinitate.

^c *Consecratione.]* De qua, & eius extem-
poraliis egit in cap. 3. de consecr. Eccles.

^d *Procuratore.]* Procuratio quid sit & cui
debeat, expostui in cap. cum Apostolus, de cen-
sibus.

^e *Apostolus.]* ad Corin. cap. 9.

COMMENTARIUM.

2. ^a *Episcopis ratione characteris Episcopalis com-*
petere facultatem consecrandi Ecclesias, pro-
bati in cap. 1. cap. aquam, de consecr. Eccles. Cir-
cita expensas vero, & sumptus consecrationis, le-
gimus in eius solennitate pauperibus annonam
erogatum fuisse. D. Gregorius epist. 54. ibi: Quia
cella tenuitas exigit debere nos in ipso die festiuitate
concurrere: propterea volumus, ut ad celebrandum
dedicationem dare debeas ad erogandum pauperibus
in anno solidos decem, vini amphoras triginta, an-

nona modius dactylis, olei arcas duas, verucces duo-
decim, gallinas centum, quæ tuis possint rationibus
impugnari. Immo Reges, ac Principes, Episcopis,
ac Sacerdotibus, quando ædes sacra ab eis con-
struuntur, donaria impendebantur, ut de Ci-
nulphe Rege Mercuriorum refert Mathæus Vvest-
monasteriens. ad annum 798. ibi: *In comento tro-*
decim Episcoporum nullus largitus passus est repul-
sam, dum singulis recessibus mansupus hinc atabant.
Et statim: *Nam præter illa xvin, quæ optimas*
susciperam inestimabili pretij, & numeris in ex-
cellis, vestibus, equis lectissimis, omnibus, qui nigris,
non habebam, libram argenti, presbyterum marcan-
auri, monachis solidum eorum, & postremo multum
universa populo erogavi. Quæ donaria, si non
exigenda, oblata tamen respondenda non esse do-
cuerunt PP. Concilij Beschar. 2. & Cabilon. re-
lati in cap. cunctissimus 1. quæst. 1. cap. placuit 1.
quæst. 2. unde ex his oblationibus pro consecra-
tione Ecclesiarum factis Episcopus omnibus bonis,
ac facultatibus exutum viduatis legimus
apud Hermoldum in chron. Sclunorum, lib. 3.
cap. 21. ibi: *Harticus Bremensis Episcopus, ne-*
cessitate compulsus ministerialium redditus Episco-
pales per tricenarium abstinuit, ut infra tempus illud
omnia ex integro saluarentur: Episcopus vero ex his,
quæ de cathedralico, vel consecrationis altarium con-
sequi

sequi poteras, viliſſimas. Vnde in præſenti textu prohibet Alexander, ne Episcopus pro consecratione Ecclesiarum aliquid exigat, nisi pecuniarionem, quæ stipendij, & sustentationis ratio-

ne penditur: de iuribus autem, quæ consequuntur Episcopus in Ecclesia consecrata, etiam agitur Lemaſtre lib. 2. de iuribus Episc. cap. 4.

CAPUT X.

Idem ² Toletano Archiepiscopo.

DE hoc autem, quod Rex, & Principes ſibi à ^b Bernardo Exon. Episcopo pecuniam recepiſſe dicuntur, ut eius electioni præſtarent aſſenſum; & quod idem Episcopus Archidiaconum Exonem. beneficium certi redditus, & cuidam clerico ante electionem ſuam Prioratum dicitur promiſiſſe, ut verique illotum, Archidiaconum videlicet, & clericus ei ^c conſentirent: hoc tux prudenter duximus reſpondendum, quod ſi maniſeſtum eſt, eundem ^d Archidiaconum, & clericum ob cauſam illam, tam iniquam, & deteſtabilem promiſſam rem recepiſſe; & ſi oxinde conſeſſi fuerint in iure, vel legitime conuinci poterunt, ab altaris miniſterio perpetuo ſunt ^e deponendi. Si verò id ^f maniſeſtum eſt, nec tamen conuicti, vel conſeſſi fuerint; & tamen publicè laborant infamià, eis canonica purgatio debet indi-ci, in qua ſi defecerint, tanquam auctores tanti ſcleris ſunt ^g puniendi. Regem autem, & Principes ſuos ſolicite monere debes, & diligenter inducere, ut ſi qua receperint à præſato Episcopo, ut eius electioni præſtarent ^h aſſenſum, Eccleſiæ ſine diminutione reſtituant, cum ea ſine graui ſux ſalutis ⁱ periculo retinere non poſſint.

NOTÆ.

1. ^a *Toletano.* Ita etiam legitur in prima collectione, *ſub hoc titulo.* cap. 10. idem D. Cerebruno, qui natione Gallus, patriâ Biterrenſis, Archidiaconus Toletanus, Magiſter Regis Iſdeſonſi VII. Episcopus creatus fuit Seguntinus, à qua Eccleſia in Toletanam tranſlatus fuit. Huic & Gundifaluo Episcopo Segobienſi, & D. Iſocelino Episcopo Seguntino delegauit Alexander III. cognitionem præſentis ſimonie commiſſe ab Episcopo Oxoniienſi, ut reſerunt Colmenares in hiſtor. Segobienſi, cap. 17. §. 13. his verbis: *Año de mil ciento y ſeſenta y ſeu à acabo el ſiguiente: el Papa Alexander III. eſcriuió la epiſtola decretal, que es en eſe en el título de ſimonia de las Decretales, al Arcebiſpo de Toledo D. Cerebruno, y à nueſtro Obiſpo D. Gonzalo, y al Obiſpo de Sigüenza, nombrado D. Iſocelmo, à (como algunos quieren, D. Iſocelino) para que los tres Prelados iendo à Oſma aueriguieſſe Bernardo ſi Obiſpo auia comprado aquella Prelacia con medios ſimoniacos, como ſe havia denunciado, prometiéndoles dignidades, y prebendas à los que votarieſſen por el, y dieraſſen à los tutores de el Rey, porque auia ſucceſſido en tiempo de ſus tutorias, para que conſintieſſen en la elección, obedieſſen los Prelados, y aueriguando el ecclia conforme à la fama, le depoſieran.* Agidius Gonzalez 10 theatrum Eccleſiæ Seguntinæ in vita D. Cerebruni: & in theatro Eccleſiæ Segobienſi in vita D. Gundifalui, ibi: *A eſte Prelado, y al Arcebiſpo de Toledo D. Cerebruno, y à Iſocelino Obiſpo de Sigüenza, el Sanctiſſimo Pontifice Alexander III. les cometiò como à iueces Apoſtolicos, que aueriguaffe la cauſa de Bernardo Obiſpo de Oſma, que ſe le imputaua auia comprado el Obiſpado conſeſſo de la ſimonia, y fue primado de la dignidad, que inſtaſtamente tenia, y eſta ſemencia ſe pronunciò el año de 1176.* Huius delegationis litteras non habemus, ſed faciliè ex hoc colligitur, quod cum conſtare de ſimonia, Episcopus depoſitus fuit à dignitate, & ad antiquam Prioris ipſius Eccleſiæ reſtitutus: cuius depoſitionis ſen-

tentia referebatur in prima parte huius epiſtolæ, quam compilatores omiſerunt, ut patet ex illis prioribus verbis huius textus, *de hoc verò*; quæ ſatis innouat, in præſenti deſſe priorem partem epiſtolæ, in qua de prima parte huius ſimonie agebatur; ſiquidem ſtatim deſcendit Alexander ad Regem, Principes, Priorem, & Clericum, qui in hac ſimoniacæ electionis interſuerunt: & ita conſtat, quod licet cognitio huius cauſæ commiſſa fuiſſet illis tribus iudicibus; tamen eſcurio ſententiæ ab Alexandro lura mandata fuit tantum Archiepiſcopo Toletano.

^b *Bernardo Exon.* Certamenſi legitur poſt Concil. Later. part. 2. cap. 13. Sed ut rectè notant Ant. Auguſtinus in præſenti, legendum eſt *Oxonienſi*, Oxonia, ſe Vsuma, eſt petanica Hiſpaniæ vici in antiquis Celtiberiæ partibus, in Atebaciſ ſita, vulgò Oſma dicta, cuius meminerunt Plinius lib. 3. hiſtor. cap. 3. Ptolomeus lib. 2. cap. 6. Gerardus Mercator in fabrica mundi. Ex quibus, & aliis eius originem, ac elades tenuerunt Hieronymus Zozira in notis ad Itinerarium Antonini, fol. 395. D. Garſi. Luyſia in notis ad Concil. apud Lucum, fol. 157. num. 7. Tamayo à Salazar in Martyrol. Hiſpan. die VI. February, XI. Aprilis, & XX. Decembris, Ambroſ. Morales in antiqu. Hiſpan. cap. 13. fol. 12. column. 2. Ab exordio naſcentis Eccleſiæ Cathedrâ Episcopali decorata fuit, cuius Præſules viſque ad excidium Hiſpanicum honorificè perſeuerarunt gloria doctri-næ, & ſanctitatis: poſt Sarraenicum ſtragem ipſam Pelagiacy Rex anno 718. recuperauit; inde Alphonſus Catholicus anno 757. Eccleſiam reſtituit Cathedralẽ, ſed deinde occupata ab Almanzore Rege, iacuit donec Odonius I. illam reſtitiſſet anno 851. & variis ineuſionibus dituram ac deſertam, tandem reſtituit Albatmodex, ut legitur in chron. Cidii, cap. 147. ſeu Gundifalvus Tellex, ut reſert Salazar à Mendoza in origin. dignit. Hiſpan. cap. 14. & Sedem Episcopalem reſtituit Bernardo Archiepiſcopo Tolet. qui ei præfecit ſanctum Petrum, patriâ Biterrenſem; vnde dum in chron. Cidii, cap. 128. legitur

E de Burgos trajo à San Pedro, que fue primero Arceobispo de Toledo, è despues Obispo de Oſma; legendum est, de Burdeci. In hac perantiqua Ecclesia contigit casus in presentia ab Alexandro III. decus; contigit enim per annum 1174. ut quidam Prior ipsius Ecclesie dictus Bernardus Tellez, ambiciens Sedem Episcopalem ipsius Ecclesie, Prioratum suum cuidam clerico, beneficium verò Archidiacono promiserit, ut pro ipso suffragium prestant; & quinque millia maraspinorum aureorum tutoribus Regis Alfonso dedit, ut assensum electioni prestant; & ita electus ac confirmatus à Rege & Principibus fuit, per bienniumque Cathedram Episcopalem occupavit. Sed cum tantum facinus ad aures Alexandri III. pervenisset, inquisitionem ipsius criminis commisit predictis tribus Prelatis, & iuxta acta ipsius processus Alex. III. in presentia epistola iussit ipsum Episcopum deponi, & similiter predictum Priorem, & clericum ab altaris ministerio perpetuo deponi, si confessi fuissent in iudicio, aut convincti, aut purgatione canonica illis in dictis, in ea defecissent. Depositus fuit Bernardus ab Episcopatu, & ex misericordia ad Prioratum restitutus, ne in opprobrium Episcopalis dignitatis, quam per biennium obtinuerat, mendicare cogerent. Ille tamen nec depositus ambibus fuit depositus, nec penitentiam de tanto crimine egit; & ita post aliquot annos decessit, sepulchusque fuit in eodem loco. In quo sanctus Petrus, & ceteri Episcopi requiescebant; sed eius miserabilem exitum suis ostendit perantiqua pictura, quæ hodie in ipsa Ecclesia existit, & ex libro MS. ipsius Ecclesie retulit D. Manuel de Villafuso in nova interpretatione huius textus.

3. *e* *Et consenserunt.* Quia his temporibus ad Capitulum Ecclesie spectabat electio proprii Episcopi, iuxta tradita in cap. 2. de elect. beneficium Archidiacono promittit, quia id compatibile erat cum dignitate, & similiter clerico, hoc est Canonico ipsius Ecclesie Prioratus dignitatem compatibilem cum ipse habenda promittit.

4. *d* *Eundem Archidiaconum.* Sed si Episcopus fuit particeps seeleris, immò auctor simoniac, quomodo etiam Alexander III. non iubet ipsum deponi; nam si idem fuit horum trium crimen, per omnium debuit esse poena, *l. si quemquam, c. de Episcop. & Cleric. ibi: Vi quis per facinus coinquas, & aques, utroque similis poena committetur.* Et verè, ac cum effectu ipsum Bernardum depositum fuisse ab Archiepiscopo Tolitano, constat ex quodam codice MS. anonymi auctoris de vitis Episcoporum ipsius Ecclesie, ubi dum agitur de hoc misero Bernardo, ita legitur: *Tanto lo bice el de Toledo, que precediendo iuridicamente la priua de la sua Episcopal, tradunt Colmenares, & Agildios Gonzalez ubi supra.* Et licet in alio Codice MS. ipsius Ecclesie, in quo eius Episcopi recensentur, ita habeatur: *Post hunc fuit Bernardus Prior Oxoniensis, tempore Regis Aldefonsi, & consecratus à Domino Celebrano Archiepiscopo Tolitano, Iacobo Seguntino, Gonfalo Segobienfi; ipse fuit simoniacus, & ideo fuit depositus per Alexandrum Papam, & factus fuit Prior Oxoniensis.* Hæc contraria non sunt; nam cum post acta cognitionem Alexandri III. commisisset Archiepiscopo Tolitano ipsam depositionem, bene consuevit, Archiepiscopum cum deposuisse virtute delegationis, & simul Alexandrum III. deposuisse depositionem delegando, quia delegatus, & delegatus pro vna per-

sona habentur, *l. 1. ff. quis, & à quo appellatur.* Vt hanc difficultatem dissoluat Villafuso in nova interpretatione huius textus, existimat verba suprà relata non esse coniunctim legenda, sed còma adiecto post verbum *eundem*, ita: *Eundem Archidiaconum, & clericum: ut scilicet sit, quod si manifestum esset, eundem Episcopum, Archidiaconum, & clericum simoniam commisisse, ipse omnes ab altaris ministerio deponeret, ut ita illa verba, sunt perpetui deponendi, referantur ad Episcopum, Archidiaconum, & clericum.* Sed hæc subtilis interpretatio sustineri nequit. Primò quia repugnat illis verbis, quæ sequuntur: *Ob causam istam, tenu iniquam, & desolabilem promissam rem accepisse.* Ex quibus expresse constat, Pontificem tantum agere de Archidiacono, & clerico beneficia promissa recipientibus, quæ non conveniunt Episcopo, qui ea promittit. Secundò quia Alexander III. ex actis confectis ab Archiepiscopo Tolitano, & Prelatis Seguntino, & Segobienfi, quibus huius causæ cognitio commissa erat, sententiam depositionis contra Episcopum promittit, cuius executionem tantum Archiepiscopo Tolitano in presentia mandavit. Vnde cum ex actis confectis contra Episcopum pronuntiasset, non poterat dicere, ut si manifestum esset, eundem beneficia promissis, quia id confectis esset, aut legitime convinctus, cum iam ex ipso processu appareret Episcopum convictum esse de simonia: sed quia ex ipso etiam processu constabat eum Archidiacono beneficiis, & clerico Prioratum promissis, non tamen apparebat receptis; ideo iubet Pontifex quoad eos conditionaliter, quod si confessi, aut convincti fuerint, ab altaris ministerio deponantur. Deinde nam Episcopum, cū fuit depositus ab Episcopatu, non tamen ab altaris ministerio, immò in ipso Prioratu permansit: igitur verba illa, *ab altaris ministerio sunt perpetui deponendi*, referri non possunt ad Episcopum. Quare hæc omnis interpretatio verius credo, in præfati epistola etiam depositionem Episcopi fuisse commissam; sed cum eius prima parte carcamus, ut suprà notavi, in ea parte dormitebatur Episcopo depositio, siquidem postea descendit Alexander ad locos eiusdem criminis, videlicet Archidiaconum, & clericum.

e *Deponendi.* Sed cum collatio sacramentorum, & beneficiorum cum simoniaca labe facta ipso iure nulla sit, cap. *Maribonem, cap. si quis, hoc tit. cap. ea qua 1. q. 3. extragagante deestabile, hoc tit. ad quid necessaria est depositio; cum ad hoc, quod quis deponatur, debet habere aliquem dignitatis gradum, l. aut damnum, ff. de pænis, in notis traditis à Quintino cap. *minimo q. 7. de V. S. Fatinationis praxi crimin. p. 1. q. 1. n. 49.* A quo enim dignitatis gradu deponendi erant, qui nullum fuerant adepti, *l. 5. vers. & post de iur. iur. ff. de iniuriis rapte, sancto Daureno lib. 8. de sacris Eccles. cap. 6.* Agnovit difficultatem villafuso in præfati n. 32. & docet, tam Episcopi electionem, quam collationem beneficiorum factam Archidiacono, & clerico nullam fuisse, atque ita depositionem hanc tantum continere sententiam declarationis, quæ declaratur, ipso iure nullam fuisse dictam collationem, ut in l. *licet 8. §. sed si queratur, ff. si servus vindicetur, l. adeo 7. vers. Cum enim, ff. de acquir. rer. dom. quia novum non est, ut quod nullum fuit, rescindi dicatur, *l. quod videtur 19. ff. de bonor. posses. contra tab. l. 5. ff. qui, & à quibus;* scilicet quoad ipsam factum, argumento legis *inter cetera, ff. de liber. & posses.* Sed licet hæc iuris principia vera sint, tamen**

tamen prædicta solutio minime necessaria est; nam in præfenti non agitur de depositione ab ipsis beneficiis, sed de depositione Archidiaconi, & clerici ab officio, ibi: *Ab altaria ministeria*. Quam depositionem ab officio simoniaci incurrunt, *cap. ergo 10. 1. quæst. 1. cap. 2. cap. sicut, hoc titulus. cap. 2. de consensu*. Vnde iubet Alexander III. vt si constaret Archidiaconum, & clericum beneficia sibi promissa receptisse, ab altaria ministerio perpetuo Archiepiscopos eos deponat, idest officio in perpetuum privet.

6. *¶ Manifestum est.*] Manifestum non est, alibi legi notavit Ant. Augustin. ad hunc textum in præfenti: sed cū litteræ negotiis admittant, nullus esset sensus sequentium verborum, ibi: *Rege tamen inde consilio, vel consensu fuerint*; cū dictio tamen, semper casum designat, ipsi tamen, fidei rest. mel. Illustant Barb. de dist. cap. 3. 47. Retenti ergo hanc lectione affirmariā, difficile est quomodo in casu manifesti criminis non imponitur poena ordinaria, sed tantum purgatio canonica inducitur. Verum hanc difficultatem exposui in cap. evidentiā, de accessu.

7. *¶ Sane puniendi.*] Poena ordinaria, exponit Morla in *empiris*, tit. 1. 2. g. 1. n. 1. 3. & discernit constituit inter casum, in quo proceditur per accusationem, & quia crimen non legitime probatum fuit, purgatio canonica indicitur; & inter casum, in quo proceditur per inquisitionem, & similiter purgatio iniungitur. Primo casu affirmat, deficientem in purgatione poenam ordinariam esse intelligendam; secundo verò casu extraordinarie tantum poenæ locum esse: iuxta primum casum accipit præfentem textum, iuxta secundum verò textum in *infirmis*, hoc titulus. c. inter, de purgat. canonice. Sed cū in præfenti specie non procederet per accusationem contra Priorem & clericum, sed potius per inquisitionem, siquidem incidenter apparuit eorum simonia, cū de simonia ab Episcopo commissā principaliter ageretur, admitti non potest sententia Morlae, nec iuxta eius sententiam poena ordinaria in præfenti casu non poterat imponi. Ex alio tamen capite poena ordinaria hoc casu locum habet, quia crimen simoniæ, quomodoque apparuerit, siue per accusationem, siue per inquisitionem, poena ordinaria imponitur, vt probatur in *infirmis*, hoc titulus.

8. *¶ Præfente assensum.*] Sed cū tempore Alexandri III. Reges Hispaniæ electioni Episcoporum fidei Capitulis Ecclesiarum præstarent assensum, vtque ad tempora Bonifacii VIII. quo Reges ipsi ceperunt præfentare Episcopos in Ecclesiis sui Regni, vt referunt, & probant Bobadilla lib. 2. Politicæ, n. 216. Barboia de poss. Episc. 3. p. 3. n. 27. quomodo poterant Principes in præfenti casu pecuniam accipere, vt ipsi etiam consensum præstarent electioni Episcopi Oxoniensis? Agnovit difficultatem Villafra in *præfenti*. Et primò in ea fuit sententia, vt existimaret, legendum esse, *præfente*, vt in vetustissimis libris legi notavit Ant. Augustin. in *præfenti*. Sed per æternum quod tam in principio huius textus, quàm in verbis relictis tam in prima, quàm in hac sexta collectione legitur *præfente*, mendum hoc repugnat menti Pontificis; siquidem Alexander affirmat, Principes pecuniam recepisse, camque ipsos retinere non posse; vnde semper in plurali loquitur Pontifex. Quare ad singularem lem vitio contrahi non potest: quare rectius perspicit, ipse Villafra existimat, hanc electioni Bernardi consensum præstasse Principes.

D. D. Gouzel. in Decretal. Tom. V.

quia olim omnibus privilegiis, & donationibus à Rege factis subseribebant Principes, hoc est Magnates, hodie dicimus *Grandes*, olim *ricos homes*, vt constat ex antiquis privilegiorum & donationum chartis relatis à Yepes ad *calceum chronici D. Brundili*: quem antiquum Hispaniæ morem referunt Zurita in *emulibus Aragoniæ*, lib. 2. cap. 3. Garibay lib. 10. *hister. 2. 4*. Argote Molina de *nobilitate* lib. 1. c. 62. Colmenares in *hister. Segobiensi* lib. 1. c. 17. g. 8. in fine, Moreno de Bargas de *Hisp. nobilit. dñi. cons.* 13. Guardiola in *Hisp. nobilit. 2. 4*. foliis 112. Salazar à Mendoza de *orig. dignitat.* lib. 1. c. 9. in fine, & lib. 2. cap. 11. Sed hæc interpretatio admitti non potest, primò quia nullibi legitur, Magnates Hispaniæ subseripsisse, confirmationibus Regis Episcoporum. Secundo, quia non solum Magnates, verum & Praelati Ecclesiastici subseribebant privilegia illis; & donationibus, vt ex ipsis patet constat. Sed credi non potest, Bernardum omnibus Principibus, & Praelatis Hispaniæ pecuniam dedisse, vt subseriberent, & consensum præstarent ipsi electioni; ergo prædicta solutio sustinetur, quia. Quare cū omnia verba interpretatio huius textus petenda est ex historia Regis Alfonso IX. cuius tempore præfata casus conigit. Ildefonsus enim mortuo patre suo Sanctio quatuor tantum annos habebat, vnde pater illi testamentum tutorem designavit D. Guierrem Fernandez à Castro, iussitque, vt Principes, & Magnates Hispaniæ, castra, & oppida in sua ditione haberent, viquidem ad quindecim annos pervenisset, quā ætate omnia illi restituerent; sed cum Castellæ Proceres, præcipuè D. Petrus, & D. Nonius de Lara, iniquum putarent, vnius tantum hominis, D. Gutierrez videlicet, arbitrio omnia Regni negotia disponi, ac gubernari, ideo fratres D. Petrus, D. Nonius, & Mantique à Lara tunciam, ac educationem Ildefonsi suscepserunt, vt testatur Mariana lib. 11. *hister. cap. 8*. vnde ipsi dedit Bernardus quinquæ millia marapedinorum antecuram, vt referunt Colmenares suprà relatas, & Anonymus, qui vitam ipsius Bernardi scripsit, cuius libris MS. servatur in archivio Ecclesiæ Oxoemensis; & ipse Rex Ildefonsus suo testamento quod condidit in villa vulgò dicta Fuentidueña, die 8. mensis Decembris, etā 12. 42. testatur D. Nonium, & D. Petrum tutores suos recepisse quinquæ millia marapedinorum pro electione Episcopi Oxoemensis, & inbet vt restituantur. Tradit Mariana lib. 11. *hister. Hispan. c. 10*. vnde aperte constat, Principes D. Nonium, & D. Petrum, non vt Regni Magnates, sed vt tutores Regis consensum præstasse electioni Oxoemensis Episcopi, Præfentis Lambertinus de *inseparrat. part. 3. lib. 2. g. 6*. Nec obstat si dicat, præfentem casum contrigiisse anno 1174. vt refert Garibay lib. 12. *hister. ead. ann.* in quo Alfonso iam puer erat. Nam respondet, quod licet Alfonso anno 15. fuit ætatis iuxta dispositionem Sancti Patris sui, regni curam, regimèntque habuisset, tamen adhuc tototum suorum consilio, & auctoritate omnia disponebat vnde ipsi poterant accipere eam quantitatem, vt electioni Bernardi simul cum Rege assensum præstarent; nisi dicamus etiam eo tempore tunciam Regis non finiri pubertate, vt postea cautum fuit in 4. 3. tit. 15. *part. 2. quoniam* laudat illustrat D. Ioseph. Vela *differt. 3. Hispan.*

9. *¶ Ecclesiæ.*] Sed cur Ecclesiæ restituitur pretium simoniacæ acceptum? Pater Layman, lib. 4. *moral. tract. 10. c. 6. §. 9. n. 84*. Gibalini de *simonia*, q. 22. in fine, existimant, in præfenti Bernardum dedisse

dedisse Regi, & Principibus bona ipsius Ecclesie Oxoniensis, & ita illi restituentia esse sine ulla diminutione, quia ea ex profecto erant. Sed hæc solutio conuincitur ex eo, quia nulla Ecclesie bona dedit Bernardus, sed tantum ex patrimonio suo quinque nullia marapetorum auroreum (de quorum valore videndi sunt Couart. *de veterum numismat. collat. cap. 5.* Cartanea *de monet. p. 1. c. 3.*) Villafuso in presenti textu, ad finem ait, Bernardum quanticarem hanc dedisse ex fructibus perceptis ex Prioratu ipsius Ecclesie, quam ipse obtinebat, unde cum male eos expendisset, ad restitutionem tenebatur, iuxta opinionem eorum, qui docuerunt, beneficiarum fructus sui beneficii male consumente teneri ad restitutionem, quam retuli in *c. cum in officio, de testam.* Sed hæc solutio peccat in pluribus. Primo quia non agitur in presenti de restitutione facienda ab ipso Priore fructus dissipante, sed à Principibus illud recipientibus ex causa simonie. Secundò quia ea sententia ut beneficiarii male absumentes fructus sui beneficii, teneantur ad restitutionem, vera non est, ut probauit in *d. cum in officio*: & etiam admissa restitutio non erat facienda Ecclesie, sed pauperibus, qui fraudati fuerant in his fructibus male consumptis, cum jo eos erogandi essent. Vnde his omittis sententiis dicen dum est, quod ille, qui pretium accepit pro spiritali, atque ita simoniam commisit, tenetur pretium restituere illi, cui iudex, qui de crimine cognouit, iussit. Vnde aliquando restituitur Ecclesie, aliquando pauperibus, *c. audiuimus, hoc titul. extrans.* Gregory XIII. *de simonia* docuerunt Sotus lib. 9. *de iust. q. 8. art. 1.* Victoria in *relect. de simon. 2. p. n. 6.* Nauarra *de restit. lib. 4. cap. 2. n. 147.* Aragon. 2. 2. *quest. 100. art. 6.* Binsfeldius in *cap. 46. hoc titul. q. 1.* Gibalinus *de simonia, q. 2. n. 9.* Alexander autem in presenti iussit, pecuniam à Principibus acceptam ipsi Ecclesie Oxoniensi, cui quodammodo iniuria illata fuerat, restitui, ut etiam Iustinianus constituit in *Novel. 6.*

k *Sine salutis periculo.*] Anceps questio est,

an accipiens pretium simoniace, teneatur illud restituere in foro conscientie, etiam ante iudicis sententiam? Et affirmatiuum patrem cum D. Thoma 2. 2. q. 32. *art. 7.* tenuerunt ex Iulio Covarrua. in *regul. peccatum, p. 2. §. 2. n. 6.* Nauarra. *ad hunc titul. consil. 15.* Didacus Perez in *L. 3. gloss. 3. tit. 3. lib. 1. Ordin.* Petrus Gregor. lib. 33. *synag. c. 13. num. 38.* Azor. 3. p. *instit. moral. lib. 12. q. 11.* Lessius *de iustit. lib. 2. c. 35. dub. 31.* Suarez tom. 1. *de relig. lib. 4. de simon. c. 60.* Scoria in *seleci. Panis. consil. ep. 3. libro 1. c. 86.* plunbus relatis Balleus in *floribus, verbo Simonia 7.* Vincentius Candidus tom. 1. *disquisit. moral. disquisit. 18. art. 43. §. 3.* Gibalinus *de simon. quest. 2. n. 8.* Contrarium verò sententiam tuerent Sotus lib. 9. *de iustit. q. 8. art. 7.* Gutierrez lib. 2. *canonic. c. 23. n. 19.* Molina *de iustit. tract. 1. disp. 92.* Diana p. 4. *tract. 4. resol. 167.* Thom. Sanchez lib. 2. *summa, cap. 3. dub. 1.* Villafuso in *presenti, n. 43.* Sed placeat prior sententia, videlicet ante nullam iudicis sententiam teneri simoniacum pretium restituere, nam eum Ecclesia huiusmodi conuentionem, & pretii acceptionem omnino irritat, sequitur necessarid, ex lege naturalis non posse retineri pretium illud, siquidem per inualidam pactionem, & iure relicto eius dominium transferri non potuit, ex *1. si non surtem, in prinip. ff. de condit. indeb. l. cum lex 47. ff. de fideiuss. contra 18. ff. de palli. Ilustrant Vela *differt. 6. n. 43.* Afín. in *l. 2. n. 7. C. de precepto.* Atque ita nec obligatio restituendi pretium proximè oritur ex iure naturali, quod supponit lex ecclesiastica irritans omnem pactionem simoniacam circa beneficia, adeo vt ex tali conuentione nec obligatio naturalis nascatur, ex *simon. gentium 7. §. sed cum nulla, ff. de palli.* nec dominium transferatur: quare rectè asserimus in presenti casu, necessariam non esse iudicis sententiam ad hanc obligationem incurtendam; quæ enim obligat ex natura rei omnem condemnationem præcedunt. In presenti autem specie, non tenebantur Principes pretium restituere Ecclesie, quia adhuc illi adjudicatum non erat.*

CAPVT XI.

Alexand. III. a Eborac. Archiepiscopo.

Cum essent in presentia nostra constitui R. clericus de Pontefracto, & nobilis vir Vv. quia moram diutius facere non poterat in recessu suo. filium nostrum Milonem, nuntium tuum pro se in causa illa sufficientem responsalem constituit. Cumque causæ cognitionem d. f. nostris M. presbytero tit. S. Lucie, & V. S. Nicolai in Carcere Tulliano Diaconis Cardinalibus commississemus, ipsi veramque partem ante suam presentiam conuocauerunt, & ab ore præfati R. intellexerunt, quod memoratus miles promiserat ei præscriptam Ecclesiam, si quoddam negotium eiusdem militis posset in nostra Curia promouere. Vnde cum id nobis per eosdem Cardinales innotuisset, nos intelligentes promissionem ipsam simoniacam prauitatem continere, eidem R. super eadem Ecclesia silentium imposuimus. Ideoque fraternitati tuæ per A. sp. m. quæ memoratum militem occasione predictæ controverfiæ à prænominato R. vel aliis super præscripta Ecclesia grauari nullâ ratione permittas.

NOTE.

i. a *Eboracensi.*] Ita etiam legitur in prima collatione, *sub hoc titul. cap. 11.* & post Concil. Latet. *part. 2. cap. 14.* Ex quo Codice transcribo litteram huius textus. De Eboracensi Angliæ Metropoli nonnulla adduxi in *cap. 4. de scriptis.*

b *Pontefracta.*] Pontifracum est oppidum extra Eboracum circiter 18. millia passuum, loco magis ameno, quàm à natura munito, ubi extat Castellum, & in eo aliqua vestigia templi, quod ibidem Claudio Cæsari dicatum fuerat, ut refert Polydot. Vergil. lib. 2. *hister. Angliæ, fol. 32.*

c *Ecclesiam.*

3. c. *Ecclesiam*.] Idem beneficium, ut in cap. final. de magistr. Quare in Concilio Magunt. sub Arnulfo, cap. 5. & sub Rabano cap. 11. acquirere Ecclesiam, & beneficium idem fuit: & in Concil. Turon. sub Carolo, cap. 15. & c. presbyter 1. q. 1.
4. d. *Quoddam negotium*.] Et ita pro obsequio temporali promissum fuit beneficium, & per consequens simonis commissum, quia oon minù obsequium temporale improbatum in traditione rel spiritualis, quod pretium. Binsfeldius in presen- ri, quæst. 4. Gibalinus de simonia, quæst. 16. cons- feller. 1. 3. per totum.

- e. *Militie*.] Quem prius nobilem dixerat, non quia de sui natura miles nobilis sit, sed quia miles, de quo in presenti, sanguine nobilis erat, ut docuit Carballo in cap. Regumensis, part. 1. num. 336. de testam.
- f. *Promerere*.] Clericus etiam non possit esse procurator laici, potest tamen eius negotia promo- uere, & curare, c. per venerabilem, qui filij sine legiti- mi: notati in c. 1. ne clerici, vel monachi.
- g. *Solenius impositum*.] Quia ipse R. petebat à milite presentiarum ad illam Ecclesiam vitæ prædictæ conventionis.

C A P V T XII.

Idem * Cistren. Episcopo.

INnuatum est auribus nostris, quod dum Episcopatus tibi commissus vacaret, in Ecclesiis eius plurimi sunt clerici ^b constituti, qui per simoniam dicuntur habere ingressum, & inde infamiâ respergi. Vnde quoniam indignum est, ut in tali crimine, vel tam turpi suspitione remaneant, f. 1. per A. f. p. m. quat. si qui fuerint in prædictis clericis, quos publicum sit, & ^c notorium simoniacè intrasse, eos ab Ecclesiis taliter acquisitis ap. cess. amoveas: illis autem, quorum crimen non est publicum, & notorium, si publicâ infamiâ laborant, cum quinta mano, vel sexta sui Ordinis, infra quadraginta dies post harum suscepcionem literarum, purgationem indicas, in qua si defecerint, beneficiis Ecclesiarum sibi commissarum perpetuò priues, prout iuris attentum, ut tales personas ad eorum purgationem recipias, de quibus verisimile sit, quod non debeant alicuius obtentu deicere.

NOTÆ.

- a. *Cistrensi*.] Ita etiam legitur in prima collectione, sub hoc titul. cap. 1. & post Concil. Later. part. 2. c. 15. De Cistrensi, scilicet Cistrensi dierecti Angliz egi in cap. 14. de offic. deleg.
- b. *Insulmi*.] Per capitulum, iuxta distinctionem adductam in cap. 10. ne Sede vacante.
- c. *Notorium*.] Quid dicatur notorium, & de eius effectibus, egi in cap. evidentia, de accusas.

COMMENTARIUM.

EX hoc textu sequens deducitur communiter assertio: Obtinens beneficium simoniacè, pretio interueniente, ab eo remoueri debet. Probat eam textus in cap. 1. 2. 3. & 5. cap. si quis obierit, c. Saluator, c. ex multis, c. final. 1. q. 1. c. 1. 2. & 3. c. dilectissimi 8. q. 1. c. non satis, c. cum Ecclesia, c. 1. c. 2. c. 3. c. 4. c. 5. c. 6. c. 7. c. 8. c. 9. c. 10. c. 11. c. 12. c. 13. c. 14. c. 15. c. 16. c. 17. c. 18. c. 19. c. 20. c. 21. c. 22. c. 23. c. 24. c. 25. c. 26. c. 27. c. 28. c. 29. c. 30. c. 31. c. 32. c. 33. c. 34. c. 35. c. 36. c. 37. c. 38. c. 39. c. 40. c. 41. c. 42. c. 43. c. 44. c. 45. c. 46. c. 47. c. 48. c. 49. c. 50. c. 51. c. 52. c. 53. c. 54. c. 55. c. 56. c. 57. c. 58. c. 59. c. 60. c. 61. c. 62. c. 63. c. 64. c. 65. c. 66. c. 67. c. 68. c. 69. c. 70. c. 71. c. 72. c. 73. c. 74. c. 75. c. 76. c. 77. c. 78. c. 79. c. 80. c. 81. c. 82. c. 83. c. 84. c. 85. c. 86. c. 87. c. 88. c. 89. c. 90. c. 91. c. 92. c. 93. c. 94. c. 95. c. 96. c. 97. c. 98. c. 99. c. 100. c. 101. c. 102. c. 103. c. 104. c. 105. c. 106. c. 107. c. 108. c. 109. c. 110. c. 111. c. 112. c. 113. c. 114. c. 115. c. 116. c. 117. c. 118. c. 119. c. 120. c. 121. c. 122. c. 123. c. 124. c. 125. c. 126. c. 127. c. 128. c. 129. c. 130. c. 131. c. 132. c. 133. c. 134. c. 135. c. 136. c. 137. c. 138. c. 139. c. 140. c. 141. c. 142. c. 143. c. 144. c. 145. c. 146. c. 147. c. 148. c. 149. c. 150. c. 151. c. 152. c. 153. c. 154. c. 155. c. 156. c. 157. c. 158. c. 159. c. 160. c. 161. c. 162. c. 163. c. 164. c. 165. c. 166. c. 167. c. 168. c. 169. c. 170. c. 171. c. 172. c. 173. c. 174. c. 175. c. 176. c. 177. c. 178. c. 179. c. 180. c. 181. c. 182. c. 183. c. 184. c. 185. c. 186. c. 187. c. 188. c. 189. c. 190. c. 191. c. 192. c. 193. c. 194. c. 195. c. 196. c. 197. c. 198. c. 199. c. 200. c. 201. c. 202. c. 203. c. 204. c. 205. c. 206. c. 207. c. 208. c. 209. c. 210. c. 211. c. 212. c. 213. c. 214. c. 215. c. 216. c. 217. c. 218. c. 219. c. 220. c. 221. c. 222. c. 223. c. 224. c. 225. c. 226. c. 227. c. 228. c. 229. c. 230. c. 231. c. 232. c. 233. c. 234. c. 235. c. 236. c. 237. c. 238. c. 239. c. 240. c. 241. c. 242. c. 243. c. 244. c. 245. c. 246. c. 247. c. 248. c. 249. c. 250. c. 251. c. 252. c. 253. c. 254. c. 255. c. 256. c. 257. c. 258. c. 259. c. 260. c. 261. c. 262. c. 263. c. 264. c. 265. c. 266. c. 267. c. 268. c. 269. c. 270. c. 271. c. 272. c. 273. c. 274. c. 275. c. 276. c. 277. c. 278. c. 279. c. 280. c. 281. c. 282. c. 283. c. 284. c. 285. c. 286. c. 287. c. 288. c. 289. c. 290. c. 291. c. 292. c. 293. c. 294. c. 295. c. 296. c. 297. c. 298. c. 299. c. 300. c. 301. c. 302. c. 303. c. 304. c. 305. c. 306. c. 307. c. 308. c. 309. c. 310. c. 311. c. 312. c. 313. c. 314. c. 315. c. 316. c. 317. c. 318. c. 319. c. 320. c. 321. c. 322. c. 323. c. 324. c. 325. c. 326. c. 327. c. 328. c. 329. c. 330. c. 331. c. 332. c. 333. c. 334. c. 335. c. 336. c. 337. c. 338. c. 339. c. 340. c. 341. c. 342. c. 343. c. 344. c. 345. c. 346. c. 347. c. 348. c. 349. c. 350. c. 351. c. 352. c. 353. c. 354. c. 355. c. 356. c. 357. c. 358. c. 359. c. 360. c. 361. c. 362. c. 363. c. 364. c. 365. c. 366. c. 367. c. 368. c. 369. c. 370. c. 371. c. 372. c. 373. c. 374. c. 375. c. 376. c. 377. c. 378. c. 379. c. 380. c. 381. c. 382. c. 383. c. 384. c. 385. c. 386. c. 387. c. 388. c. 389. c. 390. c. 391. c. 392. c. 393. c. 394. c. 395. c. 396. c. 397. c. 398. c. 399. c. 400. c. 401. c. 402. c. 403. c. 404. c. 405. c. 406. c. 407. c. 408. c. 409. c. 410. c. 411. c. 412. c. 413. c. 414. c. 415. c. 416. c. 417. c. 418. c. 419. c. 420. c. 421. c. 422. c. 423. c. 424. c. 425. c. 426. c. 427. c. 428. c. 429. c. 430. c. 431. c. 432. c. 433. c. 434. c. 435. c. 436. c. 437. c. 438. c. 439. c. 440. c. 441. c. 442. c. 443. c. 444. c. 445. c. 446. c. 447. c. 448. c. 449. c. 450. c. 451. c. 452. c. 453. c. 454. c. 455. c. 456. c. 457. c. 458. c. 459. c. 460. c. 461. c. 462. c. 463. c. 464. c. 465. c. 466. c. 467. c. 468. c. 469. c. 470. c. 471. c. 472. c. 473. c. 474. c. 475. c. 476. c. 477. c. 478. c. 479. c. 480. c. 481. c. 482. c. 483. c. 484. c. 485. c. 486. c. 487. c. 488. c. 489. c. 490. c. 491. c. 492. c. 493. c. 494. c. 495. c. 496. c. 497. c. 498. c. 499. c. 500. c. 501. c. 502. c. 503. c. 504. c. 505. c. 506. c. 507. c. 508. c. 509. c. 510. c. 511. c. 512. c. 513. c. 514. c. 515. c. 516. c. 517. c. 518. c. 519. c. 520. c. 521. c. 522. c. 523. c. 524. c. 525. c. 526. c. 527. c. 528. c. 529. c. 530. c. 531. c. 532. c. 533. c. 534. c. 535. c. 536. c. 537. c. 538. c. 539. c. 540. c. 541. c. 542. c. 543. c. 544. c. 545. c. 546. c. 547. c. 548. c. 549. c. 550. c. 551. c. 552. c. 553. c. 554. c. 555. c. 556. c. 557. c. 558. c. 559. c. 560. c. 561. c. 562. c. 563. c. 564. c. 565. c. 566. c. 567. c. 568. c. 569. c. 570. c. 571. c. 572. c. 573. c. 574. c. 575. c. 576. c. 577. c. 578. c. 579. c. 580. c. 581. c. 582. c. 583. c. 584. c. 585. c. 586. c. 587. c. 588. c. 589. c. 590. c. 591. c. 592. c. 593. c. 594. c. 595. c. 596. c. 597. c. 598. c. 599. c. 600. c. 601. c. 602. c. 603. c. 604. c. 605. c. 606. c. 607. c. 608. c. 609. c. 610. c. 611. c. 612. c. 613. c. 614. c. 615. c. 616. c. 617. c. 618. c. 619. c. 620. c. 621. c. 622. c. 623. c. 624. c. 625. c. 626. c. 627. c. 628. c. 629. c. 630. c. 631. c. 632. c. 633. c. 634. c. 635. c. 636. c. 637. c. 638. c. 639. c. 640. c. 641. c. 642. c. 643. c. 644. c. 645. c. 646. c. 647. c. 648. c. 649. c. 650. c. 651. c. 652. c. 653. c. 654. c. 655. c. 656. c. 657. c. 658. c. 659. c. 660. c. 661. c. 662. c. 663. c. 664. c. 665. c. 666. c. 667. c. 668. c. 669. c. 670. c. 671. c. 672. c. 673. c. 674. c. 675. c. 676. c. 677. c. 678. c. 679. c. 680. c. 681. c. 682. c. 683. c. 684. c. 685. c. 686. c. 687. c. 688. c. 689. c. 690. c. 691. c. 692. c. 693. c. 694. c. 695. c. 696. c. 697. c. 698. c. 699. c. 700. c. 701. c. 702. c. 703. c. 704. c. 705. c. 706. c. 707. c. 708. c. 709. c. 710. c. 711. c. 712. c. 713. c. 714. c. 715. c. 716. c. 717. c. 718. c. 719. c. 720. c. 721. c. 722. c. 723. c. 724. c. 725. c. 726. c. 727. c. 728. c. 729. c. 730. c. 731. c. 732. c. 733. c. 734. c. 735. c. 736. c. 737. c. 738. c. 739. c. 740. c. 741. c. 742. c. 743. c. 744. c. 745. c. 746. c. 747. c. 748. c. 749. c. 750. c. 751. c. 752. c. 753. c. 754. c. 755. c. 756. c. 757. c. 758. c. 759. c. 760. c. 761. c. 762. c. 763. c. 764. c. 765. c. 766. c. 767. c. 768. c. 769. c. 770. c. 771. c. 772. c. 773. c. 774. c. 775. c. 776. c. 777. c. 778. c. 779. c. 780. c. 781. c. 782. c. 783. c. 784. c. 785. c. 786. c. 787. c. 788. c. 789. c. 790. c. 791. c. 792. c. 793. c. 794. c. 795. c. 796. c. 797. c. 798. c. 799. c. 800. c. 801. c. 802. c. 803. c. 804. c. 805. c. 806. c. 807. c. 808. c. 809. c. 810. c. 811. c. 812. c. 813. c. 814. c. 815. c. 816. c. 817. c. 818. c. 819. c. 820. c. 821. c. 822. c. 823. c. 824. c. 825. c. 826. c. 827. c. 828. c. 829. c. 830. c. 831. c. 832. c. 833. c. 834. c. 835. c. 836. c. 837. c. 838. c. 839. c. 840. c. 841. c. 842. c. 843. c. 844. c. 845. c. 846. c. 847. c. 848. c. 849. c. 850. c. 851. c. 852. c. 853. c. 854. c. 855. c. 856. c. 857. c. 858. c. 859. c. 860. c. 861. c. 862. c. 863. c. 864. c. 865. c. 866. c. 867. c. 868. c. 869. c. 870. c. 871. c. 872. c. 873. c. 874. c. 875. c. 876. c. 877. c. 878. c. 879. c. 880. c. 881. c. 882. c. 883. c. 884. c. 885. c. 886. c. 887. c. 888. c. 889. c. 890. c. 891. c. 892. c. 893. c. 894. c. 895. c. 896. c. 897. c. 898. c. 899. c. 900. c. 901. c. 902. c. 903. c. 904. c. 905. c. 906. c. 907. c. 908. c. 909. c. 910. c. 911. c. 912. c. 913. c. 914. c. 915. c. 916. c. 917. c. 918. c. 919. c. 920. c. 921. c. 922. c. 923. c. 924. c. 925. c. 926. c. 927. c. 928. c. 929. c. 930. c. 931. c. 932. c. 933. c. 934. c. 935. c. 936. c. 937. c. 938. c. 939. c. 940. c. 941. c. 942. c. 943. c. 944. c. 945. c. 946. c. 947. c. 948. c. 949. c. 950. c. 951. c. 952. c. 953. c. 954. c. 955. c. 956. c. 957. c. 958. c. 959. c. 960. c. 961. c. 962. c. 963. c. 964. c. 965. c. 966. c. 967. c. 968. c. 969. c. 970. c. 971. c. 972. c. 973. c. 974. c. 975. c. 976. c. 977. c. 978. c. 979. c. 980. c. 981. c. 982. c. 983. c. 984. c. 985. c. 986. c. 987. c. 988. c. 989. c. 990. c. 991. c. 992. c. 993. c. 994. c. 995. c. 996. c. 997. c. 998. c. 999. c. 1000. c. 1001. c. 1002. c. 1003. c. 1004. c. 1005. c. 1006. c. 1007. c. 1008. c. 1009. c. 1010. c. 1011. c. 1012. c. 1013. c. 1014. c. 1015. c. 1016. c. 1017. c. 1018. c. 1019. c. 1020. c. 1021. c. 1022. c. 1023. c. 1024. c. 1025. c. 1026. c. 1027. c. 1028. c. 1029. c. 1030. c. 1031. c. 1032. c. 1033. c. 1034. c. 1035. c. 1036. c. 1037. c. 1038. c. 1039. c. 1040. c. 1041. c. 1042. c. 1043. c. 1044. c. 1045. c. 1046. c. 1047. c. 1048. c. 1049. c. 1050. c. 1051. c. 1052. c. 1053. c. 1054. c. 1055. c. 1056. c. 1057. c. 1058. c. 1059. c. 1060. c. 1061. c. 1062. c. 1063. c. 1064. c. 1065. c. 1066. c. 1067. c. 1068. c. 1069. c. 1070. c. 1071. c. 1072. c. 1073. c. 1074. c. 1075. c. 1076. c. 1077. c. 1078. c. 1079. c. 1080. c. 1081. c. 1082. c. 1083. c. 1084. c. 1085. c. 1086. c. 1087. c. 1088. c. 1089. c. 1090. c. 1091. c. 1092. c. 1093. c. 1094. c. 1095. c. 1096. c. 1097. c. 1098. c. 1099. c. 1100. c. 1101. c. 1102. c. 1103. c. 1104. c. 1105. c. 1106. c. 1107. c. 1108. c. 1109. c. 1110. c. 1111. c. 1112. c. 1113. c. 1114. c. 1115. c. 1116. c. 1117. c. 1118. c. 1119. c. 1120. c. 1121. c. 1122. c. 1123. c. 1124. c. 1125. c. 1126. c. 1127. c. 1128. c. 1129. c. 1130. c. 1131. c. 1132. c. 1133. c. 1134. c. 1135. c. 1136. c. 1137. c. 1138. c. 1139. c. 1140. c. 1141. c. 1142. c. 1143. c. 1144. c. 1145. c. 1146. c. 1147. c. 1148. c. 1149. c. 1150. c. 1151. c. 1152. c. 1153. c. 1154. c. 1155. c. 1156. c. 1157. c. 1158. c. 1159. c. 1160. c. 1161. c. 1162. c. 1163. c. 1164. c. 1165. c. 1166. c. 1167. c. 1168. c. 1169. c. 1170. c. 1171. c. 1172. c. 1173. c. 1174. c. 1175. c. 1176. c. 1177. c. 1178. c. 1179. c. 1180. c. 1181. c. 1182. c. 1183. c. 1184. c. 1185. c. 1186. c. 1187. c. 1188. c. 1189. c. 1190. c. 1191. c. 1192. c. 1193. c. 1194. c. 1195. c. 1196. c. 1197. c. 1198. c. 1199. c. 1200. c. 1201. c. 1202. c. 1203. c. 1204. c. 1205. c. 1206. c. 1207. c. 1208. c. 1209. c. 1210. c. 1211. c. 1212. c. 1213. c. 1214. c. 1215. c. 1216. c. 1217. c. 1218. c. 1219. c. 1220. c. 1221. c. 1222. c. 1223. c. 1224. c. 1225. c. 1226. c. 1227. c. 1228. c. 1229. c. 1230. c. 1231. c. 1232. c. 1233. c. 1234. c. 1235. c. 1236. c. 1237. c. 1238. c. 1239. c. 1240. c. 1241. c. 1242. c. 1243. c. 1244. c. 1245. c. 1246. c. 1247. c. 1248. c. 1249. c. 1250. c. 1251. c. 1252. c. 1253. c. 1254. c. 1255. c. 1256. c. 1257. c. 1258. c. 1259. c. 1260. c. 1261. c. 1262. c. 1263. c. 1264. c. 1265. c. 1266. c. 1267. c. 1268. c. 1269. c. 1270. c. 1271. c. 1272. c. 1273. c. 1274. c. 1275. c. 1276. c. 1277. c. 1278. c. 1279. c. 1280. c. 1281. c. 1282. c. 1283. c. 1284. c. 1285. c. 1286. c. 1287. c. 1288. c. 1289. c. 1290. c. 1291. c. 1292. c. 1293. c. 1294. c. 1295. c. 1296. c. 1297. c. 1298. c. 1299. c. 1300. c. 1301. c. 1302. c. 1303. c. 1304. c. 1305. c. 1306. c. 1307. c. 1308. c. 1309. c. 1310. c. 1311. c. 1312. c. 1313. c. 1314. c. 1315. c. 1316. c. 1317. c. 1318. c. 1319. c. 1320. c. 1321. c. 1322. c. 1323. c. 1324. c. 1325. c. 1326. c. 1327. c. 1328. c. 1329. c. 1330. c. 1331. c. 1332. c. 1333. c. 1334. c. 1335. c. 1336. c. 1337. c. 1338. c. 1339. c. 1340. c. 1341. c. 1342. c. 1343. c. 1344. c. 1345. c. 1346. c. 1347. c. 1348. c. 1349. c. 1350. c. 1351. c. 1352. c. 1353. c. 1354. c. 1355. c. 1356. c. 1357. c. 1358. c. 1359. c. 1360. c. 1361. c. 1362. c. 1363. c. 1364. c. 1365. c. 1366. c. 1367. c. 1368. c. 1369. c. 1370. c. 1371. c. 1372. c. 1373. c. 1374. c. 1375. c. 1376. c. 1377. c. 1378. c. 1379. c. 1380. c. 1381. c. 1382. c. 1383. c. 1384. c. 1385. c. 1386. c. 1387. c. 1388. c. 1389. c. 1390. c. 1391. c. 1392. c. 1393. c. 1394. c. 1395. c. 1396. c. 1397. c. 1398. c. 1399. c. 1400. c. 1401. c. 1402. c. 1403. c. 1404. c. 1405. c. 1406. c. 1407. c. 1408. c. 1409. c. 1410. c. 1411. c. 1412. c. 1413. c. 1414. c. 1415. c. 1416. c. 1417. c. 1418. c. 1419. c. 1420. c. 1421. c. 1422. c. 1423. c. 1424. c. 1425. c. 1426. c. 1427. c. 1428. c. 1429. c. 1430. c. 1431. c. 1432. c. 1433. c. 1434. c. 1435. c. 1436. c. 1437. c. 1438. c. 1439. c. 1440. c. 1441. c. 1442. c. 1443. c. 1444. c. 1445. c. 1446. c. 1447. c. 1448. c. 1449. c. 1450. c. 1451. c. 1452. c. 1453. c. 1454. c. 1455. c. 1456. c. 1457. c. 1458. c. 1459. c. 1460. c. 1461. c. 1462. c. 1463. c. 1464. c. 1465. c. 1466. c. 1467. c. 1468. c. 1469. c. 1470. c. 1471. c. 1472. c. 1473. c. 1474. c. 1475. c. 1476. c. 1477. c. 1478. c. 1479. c. 1480. c. 1481. c. 1482. c. 1483. c. 1484. c. 1485. c. 1486. c. 1487. c. 1488. c. 1489. c. 1490. c. 1491. c. 1492. c. 1493. c. 1494. c. 1495. c. 1496. c. 1497. c. 1498. c. 1499. c. 1500. c. 1501. c. 1502. c. 1503. c. 1504. c.

tione simonia, si pretium, seu munus à manu, vel à lingua pro ea praestetur, vt fuit docent Lotherius, Gibalinus, & Valefco *supra*: quæ simonia tripliciter contingit, & consideratur, videlicet realis, conuentionalis, & mentalis. D. Ioannes Vela de delictis cap. 32. vers. *Est autem*. Tiberius Decianus lib. 3. *trakt. crimin.* 82. Rellis est cum traditio intercedat ex vtraque parte, falsum quod partem promissorum. Conuentionalis est, quæ tantum in conuentionem deducta fuit, aut quæ propter conuentionem committitur, de qua egi in cap. 4. de pallis. Mentalis est, quæ tantum mente cooelipitur, vt cum quis aliquid spirituale, vel illi anoxum animo recipendi aliquid temporale, vel econtrâ, dat; de qua agemus in c. final. hoc tit. Vnde in praesenti tantum est agendum de simonia reali circa beneficia commissa & eius penam; & certum est, eam committi, quando praestatur pro beneficio ecclesiastico pretium, seu munus à manu, vel à lingua. c. Saluator t. 9. 3. latè explicans Lotherius, & Gibalinus *supra*, fuit proloquitur modos, quibus simonia committitur in beneficiis, Theophilus tom. 12. *trakt. mala à bonis*, c. 17. lib. 3. *secl.* 1. cap. 2. & qui beneficium mediante hac simonia acquirit, ipso iure malici excommunicatione ligatur, extrauag. *Execrabile de simonia*: quoniam poenam latè explicat Hallerius de sacris *elect.* *secl.* 7. cap. 7. art. 2. Gibalinus de simonia, q. 25. per totam: & insuper ptoisio, seu collatio ipsius beneficii nulla est, c. 2. *qua* cum aliis, 1. q. 5. cap. cum clericis, de pall. *dist.* *curam cum deestabile*; etiam si ab aliis fuerit commissa simonia sciente, & non contradicente ptoisio, c. *anuis*, & *sicut ius*, hoc tit. immò et si ipso iugitante, vt docuerunt Abbas in c. *penalis de elec.* 11. Lellius de infirmitate lib. 2. c. 35. n. 142. & patet ex c. *infirmis*, c. *nobis*, ibi, *penitus reprehenda*, hoc tit. nam dictio *penitus*, significat oultitate ipso iure: & ex dicta extrauaganti Cum deestabile, ubi statuitur absque dispensatione non posse illi pro ea vice beneficium coofert, idque in poenam eorum, qui simoniaci illum promouere voluerunt, d. c. *nobis*, c. *sicut*, hoc tit. ubi dicemus. Si autem aduersarius occulte per fraudem pecuniam dedit eo animo, vt talis collatio beneficii nulla sit, subsistit, & valet, d. c. *nobis*, c. *sicut*: vel si eo expressè contradicente, alius pro eo pecuniam det, d. c. *sicut*, nisi postea consentiat approbando dictum dantis, vt ex D. Thoma, Panormit. & Nauarro probat Scoria in *secl.* *Pemific. consil.* *epiome* 32. *liberem*. 86. Quod si non consentiat approbando factum, sed tantum saluati, quod eius gratia amicus dedit, ne illius causâ damnus sentiat, non peccat, quia soluit ex gratitudine, ne amicus grauetur, non est approbate eius factum, nec per se malam, vt resoluat Scoria ubi *supra*: obligantem autem se pacto aliquid temporale pro spirituali conferre ex gratitudine, & pretium dantem alieui, vt ipse intercedat apud tertium, qui intercedat pro beneficio sibi conferendo, simoniaci committere resoluat P. Mendo in *fluera*, *dissert.* t. *quasi* 22. & 23.

4. Illud valde difficile est, an post dictam extrauagantem, non solum priuati simoniaci beneficiis, in quibus simoniaci admittit, verum & aliis iam obtentis. Et ipso iure, absque vlla iudicis sententia, beneficiis etiam obtentis cum priuari docuerunt Bernard, Dix in *praxi*, c. 91. Dourenus de sacris *elect.* *manijb.* lib. 8. cap. 6. Garcia de benefi. p. 8. *cap.* 1. n. 40. plures referens Diana p. 4. *trakt.* 4. *secl.* 15. 7. Baldus in *secl.* *verbo* *Simonia* 7. n. 633. Sed meritò contrariam sententiam vt verietem

docuerunt P. Suarez d. lib. 4. de *simon.* c. 58. Bonacin. de *simon.* *dissert.* t. 9. 7. *punct.* 2. *difficili*. 1. Lotherius lib. 3. de re *benefi.* q. 29. n. 161. Candidus tom. 2. *dissert.* *moral.* *dissert.* 18. art. 44. *dub.* 4. Gibalinus de *simon.* q. 25. *num.* 3. & probat ex vulgari sententia, quod docetur, neminem se sus priuati ante iudicis sententiam, etiam si lex ipso iure poenam priuatiois imponat, dummodo speciale decretum irritans oon habeat: quod probant Alexander in l. si qui maior, C. de *transf.* Mylinger, *etm.* 6. *obferm.* 77. Gaillus lib. 2. *obferm.* 5. *num.* 6. Quare cum priuatio beneficii ante obtenti contra simoniacum non continet decretum irritans, ideo non contingit ipso iure: ex quo principio prouenit, suspensionis, & depositionis poenas in dicta extrauaganti statutas, non irrogari ipso iure ante iudicis sententiam, vt docuerunt Suarez d. lib. 4. c. 58. *num.* 19. Indeq. qui specialiter in Concilio Lateranensi celebrato sub Leone X. *sess.* 5. exauit, vt Cardinales simoniaci in electione. Summi Pontificis beneficiis priuentur, ibi: *Et ipso absque alia declaratione priuatio existat*; ipso iure absque vlla iudicis sententia beneficiis priuantur, vt docent Lellius de *infirmit.* lib. 2. c. 35. *dub.* 5. Scoria in *secl.* *epi.* *Pemific.* *cap.* 50. *theorem.* 135. idem de examinatisibus simoniaci cauetur in Concilio Trident. *sess.* 24. *cap.* 18. & docuerunt Suarez d. lib. 5. *cap.* 9. *num.* 17. Garcia de *benef.* *part.* 9. *cap.* 2. *num.* 368.

Non minùs controversum est apud Doctores, an noua constitutio Pauli II. in dicta extrauag. procedat in quaeuque simonia, cum reali, quàm conuentionali; an verò in reali tantum. Et solum in simonia reali locum habere, constat in illis verbis ipsius extrauag. ibi, *dando, vel recipiendo*; precipuè cum in poenis benignitatem per interpretatio facienda, *Interpretari, ff. de penis*, *scilicet* *quidem, ff. de liber. & posth.* Deinde qui in dubio verba accipi debet cum effectu, c. *relatum*, de *cleric. non resid.* Facit etiam, quia minùs peccare videtur promittens, quàm dans, cum facilius promittitur quàm donetur, l. *Titia* 134. ff. de *O. l. sciendum* 19. *ff. de adliti. edict.* Et ideo minùs puniendus videbatur, ex l. *anctimus*, C. de *penis*. Tandem facit Coria Romanæ filius, qui ius facit, c. *quodam* *grati*, de *crimine falsi*, c. ex *litteris*, de *confil.* iuxta quem tantum simoniacus realis priuatur beneficiis iam obtentis, vt testantur sententiam hanc docentes Nauarr. ad hanc *titul.* *confil.* 35. *et sequent.* Zerola in *praxi*, p. 1. *verbo* *Simonia*, §. 9. Valens de *benefi.* lib. 2. *tit.* 2. n. 19. Gibalinus de *simon.* q. 24. n. 1. Verùm contraria sententia suadet ex sequentibus principiis. Primo quia Paul. in *destruendo*, statuit, poenas generaliter contra simoniacos, vt constat ex eius principio, ex quo ratio finalis colligitur, l. *final.* *ff. de heredit. infundend.* 1. 2. *ad Materd.* *Titia* 134. §. 2. *ff. de V. O.* Illustrat D. Ioseph. de Retes lib. 7. *opuscul.* c. 4. Sed per promissionem pretij, non minùs quàm per dationem, simonia committitur, argumento legis & generaliter, §. 1. *ff. de calum.* quia promissio, & datio participant, l. *final.* C. ad l. *Falcid.* & in terminis probant textus in c. *super hoc*, de *remot.* c. 2. de *confil.* c. *nobis*, hoc *titul.* Secundò quia inter communem contra omnes simoniacos, vix realis, siue conuentionales, procedebat ad priuationem beneficiorum per sententiam, d. c. 2. de *confil.* *per inquisitionem*, de *elect.* c. *infirmis*, hoc *tit.* Sed omnes penes iura communia statuta innouat sunt per dictam extrauagantem. Igitur eam Paulus in ea, non distinguat inter realem, & conuentionalem simoniacum, de viroque accipiendus est, argumento legis

legis i. q. generaliter, ff. de legat. prapand. Tertiò quia collatio beneficii per simoniam facta non potest esse in pendenti, cùm sit actus legitimus; sed statim debet subsistere, aut infirmari, ex latius, ff. de h. l. cap. 2. de elect. in 6. Pendet autem collatio purè facta cum pacto recipiendi pretium; nam si pecunia solvatur, postea collatio erit nulla, & collator excommunicatus manebit; si verò non solvatur, valida erit, nec manebit collator excommunicatus. Deinde quia emptio, & venditio contrahitur, etiam pretium promissum sit, non verò solutum, princip. Infit. de emptio. & vendit. & per consequens simonia committitur tantùm per promissionem pretij, ut expresse docetur in c. ead. q. 1. quæst. 1. & hanc opinionem sequuntur Caletanus in summa, verbo Simonia. Santos lib. 2. de inst. quæst. 8. art. 3. Navarra de resit. lib. 1. cap. 2. num. 412. Palacios de contract. lib. 2. cap. 7. pag. 143. Aragon. 2. 1. quæst. 100. art. 6. Rebuffus in praxi, tit. de simonia. 1. part. cap. 10. num. 35. & 4. part. cap. 11. num. 32. In quo Interpretum dissidio credo discrimen esse constitutendum inter penas statutas in dicta extrahenti, ita ut quoad nullitatem collationis beneficii per simoniam factæ sufficiat simonia merè conventionalis, nec desideretur realis ex altera parte, sicut impleta; quoad excommunicacionem verò incurrendam Sedi Apostolicæ referenda desideretur omnino simonia realis, iuxta Curie Romanæ stilum, de quo testatur Cassadorus decis. 5. de consit. Gomez in regula de trienniali, quæst. 12. Soria d. epist. 32. ibidem. 85. & ita quoad nullitatem collationis, & obligationem dimittendi beneficium per simoniam adeptum, & restituendi pretium, nulla datur differentia inter simoniacos reales, & conventionalios, ut facillè deducitur ex constitutione Pij IV. relata à Redoano de simonia. 4. part. c. 9. num. 8. & ex constitutione Pij V. relata à Flaminio lib. 4. de resign. quæst. 2. num. 12. iuxta quam distinctionem facillè conciliantur, & explicantur fundamenta utriusque sententiæ super adducta.

6.

AMPILIA
TIT. PR.
LIB. 1.
ARTIO.

Adeo autem verum est, collationem factam per simoniam, nullam esse, ut possessor talis beneficii etiam per vim spoliatus minimè restituatur; quia ad illud nollom ius acquisit, cùm nec habeat titulum saltem coloratum, qui desideratur ad restitutionem in beneficiis, iuxta regulam capitis 1. de eo qui mittitur: & notatur in cap. in litteris, de resit. spoli. docuerunt Flaminio de resign. lib. 4. quæst. 2. num. 20. Cassadorus decis. 1. de simonia. Nec etiam defenditur regula de trienniali possessore, cùm in eadem expresse exceptus sit, illis verbis, absque simoniæ ingressu, cum adductis ibi à Gomezio q. 12. Rebus, in praxi, tit. de pacif. posses. num. 198. nisi eo ignorante simonia ab alio commissæ sit, quia tunc licet teneatur dimittere beneficium, & perempti de elect. nobis, hoc tit. tamen intem habet titulum coloratum, ideo spoliatus restituatur, & gaudet beneficium regulæ de trienniali, ut resoluunt Flaminio de consuet. benef. quæst. 21. num. 37. Redoanus de simonia, part. 4. cap. 12. Ampliatur etiam præfens assertio, ut simoniacus non solum teneatur dimittere beneficium per simoniam acquisitum, verum etiam ad restitutionem omnium fructuum, ut docuerunt D. Thomas 2. 2. quæst. 100. art. 6. ad 3. Consar. Sonus, & Sylvest. relati à Guerret lib. 2. canon. cap. 3. num. 12. Nec solum fructus stantes, verum & consumptos restituere tenetur; imò & eos, qui percipi potuerunt à quolibet possidente: nam cum prædiximus loco habetur, D. D. General. in Decretal. Tom. V.

cap. ordinationes 1. quæst. 1. semper dicitur esse in mora, & ad omnia damna teneatur, l. 1. Cod. de his, que vi, l. final. C. de condit. furin. l. subrepto, Cod. de furis, tanquam violentus iniurior, cap. gravis, de resit. spoli. cap. si res 12. quæst. 6. & cùm à principio nullum titulum acquireret, teneatur ad omnes fructus, & ad omne lucrum perceptum, & percipiendum, l. si navi; 62. 4. generaliter, ff. de R. J. l. sed & partus, ff. quod metus causa, l. quædammodum, Cod. de agricolis, lib. 12. probant latè Hænslenius in summa hulus tituli, num. 6. Redoanus de simonia. 4. part. num. 42. Tiberius Decianus tract. crimin. lib. 5. c. 37. num. 5. Ille verò qui per simoniam ab alio commissam beneficium obtinuit, illud cum suis fructibus à tempore sententiæ perceptis restituere tenetur, cap. de regularibus, cap. ex infirmatione, cap. nobis, hoc tit. perceptus verò ante sententiam restituere tenetur, si extant, consumptos minimè, quia bonus fidei possessor extantes tantum fructus restituit, licetrum, ff. de R. J. Teneatur etiam simoniacus beneficium dimittere, & fructus restituere in foro conscientie, ante illam iudicis condemnationem, quia licet pena ipso iure imposita pro aliquo delicto non debeat in foro conscientie ante iudicis declarationem, ex Glossa committere accepta in cap. fraternitas, 12. quæst. 2. Cenedo ad Decretum, collect. 2. num. 3. Moela in empir. tit. 1. quæst. 2. tamen ubi à principio impeditur prima dominij, vel tituli translatio, ut in præfenti casu, non est necessaria iudicis declaratio, quia non est percepta pena, sed effectus iniustæ acquisitionis. Aragon. in 2. 2. quæst. 110. art. 6. Hi tamen fructus restitui debent futuro successori, ad quem fructus vacantis beneficii spectant, cap. cum vos, de offic. Ordin. cap. præfens, eod. tit. in 6. Cap. ius de electione, eod. lib. & ideo si simoniacus Summus Pontifex conferat idem beneficium, poterit retinere eosdem fructus, quia sibi tanquam non successori debentur, ut probat Navarra ad hunc titulum, consil. 34. num. 31. & consil. 70. num. 5.

Ratio cor tot Ecclesiæ canonibus damnata sit collatio beneficiorum, pretio accedente, ex eo provenit; nam cùm per beneficium ecclesiasticum concedatur ius percipiendi fructus propter ministerium spirituale, & ita res ecclesiastica sit, non potest vendi absque labe simoniæ, aut distrahi pretio accedente. Accedit, nam ad beneficia ecclesiastica illi admittendi sunt, qui litteris, & virtutibus pollent, & gravis, de præbend. sed si propter pretium beneficia conferantur; indigni, & quibus merita non suffragantur, tantùm ad ea admittentur, ut docet D. Gregorius lib. 7. epist. 110. agens de beneficio obrento per simoniam, ibi: Quid per hoc aliud agitur, nisi ut nulla de alio probatio, nulla sit debita discussio; sed iste solummodo dignus, qui pretium seorsum fecerit, assumatur. Vnde in omnibus bene concordatis Republicis improbatum fuit præcipue, officia publica pretio acquiri, Plato lib. 8. de Republica, aiebat, absurdum esse Republicæ constitutionem, in qua Principatus venduntur. Valerius Maximus lib. 4. de pauperibus, aiebat, nihil corum, quæ virtuti debentur, emere pecuniâ licere. Aristotel. lib. 2. Polit. c. 9. ibi: Turpe est ministeria publica venalia facere, Et de Nerone refert Tacitus lib. 13. annal. quod cùm optimæ spei iuvenis esset, curiam ingressus egregia multa fiduciam ei esse promissit, & inter alia nihil in penatibus suis venale, aut ambulosum esse petmisiatur. Nam si similia officia venalia fiant, ingens mala Republicæ sequuntur. D. Chrysostomus in epist. Pauli ad Ephesios, cap. 6. ibi: Dignitatis

7.
TABULA
TIT. PR.
LIB. 1.
ARTIO.
DIME.

mentes facta sunt venales, mille hinc mala nascuntur. Eleganter Lampadius in vita Alex. Severi, ibi: *Homines iuris, gladijque nunquam vendi passus est, dicens: Necesse est, ut qui emat, vendat. Ego non patior mercatores potestatem; quod si patior, dominare non possem. Erubescit enim patire eum hominem, qui emat, & vendit.* Venuste Seneca de beneficiis cap. 9. *Provinciae stollar, & numerarius tribunal, audiat utrinque licitationem, alteri addidit, non mirum, quando qua emeris, vendere gentium ius est.* Senecam imitatus est Salustianus lib. 4. de gubernat. Dei. Quid enim omnium aliud dignitas sublimium, quam proscriptio civitatum. Ad hoc enim bonus à paucis emitur, ut cunctarum vestigatione solvatur. Quo quid esse indignum, quid iniquum potest? Reddunt miseri dignitatem pretia, quas non emunt. Commercium neficium, & solvuntur sciam. Principes enim virtus, & scientia negligunt. D. Gregor. lib. 7. epist. 114. ibi: *Vbi non merita, sed pecunie suffragantur, restat ut nihil sibi gravitas, nihil sibi defendat indignitas, sed totum auri prophanus amor obtineat.* Et licet ipse, qui pretio beneficium, aut officium obsequit, bonis moribus prædictis sitiamen semper perniciosus sit est. Leo Magnus epist. 87. ibi: *Principatus, quem aut solatio extenit, aut ambulo occupavit, citius moribus, atque altibus non offendat, ipsius tamen initia sui est perniciosus exemplo, & difficile est, ut bene peragatur exim, qua mala sunt inchoata principio. Latè illustant Solimanus de iure Iddiarum tom. 2. lib. 5. cap. 5. num. 101. Ofualdus ad Domet. lib. 17. cap. 7. Petrus Gregorius de Republic. lib. 4. cap. 5. num. 27. & lib. 7. cap. 23. & lib. 13. cap. 16. Simanchas eod. tract. lib. 6. cap. 16. & 17. Lucius 99. Policar. quest. 12. Bobadilla lib. 1. Polit. cap. 14. num. 15. Fagol. de Regim. Christ. Reipub. part. 1. dispnt. 2. lib. 2. §. 2. Anonymus contra Adambiel. lib. 1. fol. 17. Arango in 99. moral. tit. de statu civilis, dispnt. 8. Merito ergo tot Ecclesie canonibus collatio beneficij pretio facta irritatur, & tam acerbis poenis puniuntur, qui pretin, seu munere beneficium ecclesiasticum adepti fuerunt.*

8.

DECOL-
LUTIV
DVOTAM-
DI 20.
TIO.

Nec obstat dubitandi ratio supra adducta; nam licet per beneficium ecclesiasticum adquiratur ius ad fructus temporales sequendos, non potest hoc ius separari à ministerio spirituali, à quo nascitur, & propter quod conficitur: quare in eius venditione necessario committitur simonia: vnde Pontifex, qui potest promovere ipsos, vitore eorum Dominus, ab officio spirituali separare, poterit ipsos sine beneficio retinere, aut cui voluerit, vendere, seu donare, ut pinbat Gibalinus de simonia quest. 20. consil. 1. qui inde inferit, in capellanis, hospitalibus, pensionibus, que non habentur pro beneficiis ecclesiasticis, quia nec per institutionem conferuntur, nec pro ministerio ecclesiastico dantur, simoniam non committi, quod etiam docuerunt Castrópolis in opere Moral. tract. 17. dispnt. 3. punt. 13. num. 14. Gonzalez ad regul. 8. Cancell. glossa 5. num. 25. Idem resluit Gibalinus de commendis Ordin. militum, quod & pluribus relatis probat P. Mend. de ordinibus militibus dispnt. 1. num. 233. et si contrarium teneat Arango in 99. moral. tract. 1. quest. 7. num. 30. Hinc etiam sensu vasa sacra vendi possunt absque labe simonie, quia non ita videntur coniungi sanctitas per consecrationem, ut separari nunquam possit, quia hæc omnia sunt antecedenter connexa spiritualibus, & ille connexiones non admittunt estimabilitatem, quam prius habebant, nec ex ipsorum venditione sequitur necessarid simul vendi

consecrationem, aut aliquid factum, ut factum est reduplicatim, sicut contingit in his, que sunt vel connemittanter, vel consequenter spiritualibus connexa. Nec obstat textus in dist. cap. per laicos; nam licet ibi specialiter prohibeatur recipi beneficium à laico, non ideo infertur, ut ecclesiasticis licere; sed quis lo eo de laicis tantum agebatur, ideo ulla mentio sit collatoris ecclesiastici. Nec obstat augmentum deductum ex dist. cap. consilium, cap. in singulis; nam discrimen constitutum est inter servitium temporale, & spirituale; nam ob servitium spirituale Ecclesie impensum à clericali minoribus licet illis beneficium ecclesiasticum conceditur, dist. cap. consilium, cap. in singulis; ob servitium temporale Episcopo collato, vel alij simili impensum, non ita beneficium ecclesiasticum conceditur, cap. sunt qui 8. quest. 18. Quia distinctione accipienda sunt textus in eadem proderit, cap. bene. 61. dist. 1. cap. si officia, & hoc ad nos, 69. dist. 1. Nec obstat augmentum deductum ex dist. cap. de Syracusano, cui obstat videtur textus in cap. talis 8. quest. 3. vbi aliterur simoniam committi exigendo ab electo talem emtionem de indemnitate eorum. Pro cuius difficultatis solutione discrimen constituendum est inter eam emtionem, ad quam præstandam tenetur eligendus; & inter illam, ad quam non tenetur. Primo namque casu etiam cum iureiurando præstati cautionem illam, non committitur simonia, quia talis cautio annexa est ipsi electioni, & quotiens auctor per se bonus est, non efficitur malus ex modo effectus: at verò si cautio præstari solita non est, nec ipsi electioni annexa iam reperitur, præstari non potest pro beneficio assequendo, dist. cap. talis 8. quest. 1. quo modo etiam respondendum est illis, quæ expendebamus de beneficio alicui collaro cum onere docendi Grammaticam, sui curandi infirmos: nam quoties tale obsequium temporale annexum est beneficio, non autem tempore collationis in passionem deductum, nulla committitur simonia, quia tale onus, nisi temporale, annexum est beneficio: at verò si non est annexum, sed tempore electionis pactum initium est, ut accipiat beneficium, & teneatur Grammaticam docere, aut curare infirmos, simonia committitur, ut docet Viñcia in releat. de simon. num. 6. Gibalinus eod. tract. quest. 26. consilium 13.

Sed supra traditis obstat textus in cap. ad audientiam, et 2. de rescriptis. In illis verbis: *Litteras venditas*; vbi cum proponeretur Honorio III. Petrum litteras imperiales ad præbendam in Ecclesia Bituricensi assequendum, & ex venditis pro pensionem, ac demum ad Sedem Apostolicam accederet, ut novum rescriptum impetraret, non facta mentione prius pro alia præbenda in alia Ecclesia obtinenda, Pontifex improbat tale factum; non quis vendidit litteras pro pensionem, sed potius quia mentionem non fecit prioris rescripti: igitur quia licitum est vendere beneficium, seu ius ad illud assequendum. Pro cuius expositione dicendum est cum Panormitano ibi, quem sequitur Gibalinus de simonia quest. 14. consilium 7. primo non constitisse Pontifici, quomodo fuisset illa pensio impensura, an ex pacto rennuciandi litteris Apostolicis, an verò gratuita ab Ecclesia, & Episcopo post renunciationem litterarum. Secundò satis improbare negotiationem illam Pontificem, dum eam venditionem litterarum dicit omnino improbandam; & sic parum interest, quod non expressio, simoniacam labem eo casu admissam esse.

9.

EXPON-
TIV CAP.
AD AV-
DIEN-
TIAM, DE
RESCRIPT.

CAPVT

CAPVT XIII.

* Idem.

VT nemo presbyterorum ^b xenium, vel emolumentum quodlibet temporale, immo detrimentum spirituale à quocunque publicè peccante, vel incestuoso accipiat, vt Episcopo, vel ministris eius peccatum illius celet, nec pro respectu cuiusque personæ, aut consanguinitatis, vel familiaritatis, alienis communicans peccatis, hoc Episcopo innotescere detrahet, nec à quoquam penitente, aut gratia, aut favore, vel minus dignè ^c penitentem ad reconciliationem adducat, & ei testimonium reconciliationis ferat, vel quocunque liuore dignè penitentem à reconciliatione remoueat; quia verumque simoniacum est.

NOTÆ.

COMMENTARIUM.

Idem.] Ita etiam legitur in prima collectione, sub hoc tit. cap. 13. nec amplius in inscriptione exprimitur, sed in presenti refertur capitulum 13. Hincmarus Rhemensis Archiepiscopi, quod extat inter eius capitula tom. 2. c. Concil. in hæc verba: *Ut nemo Presbyterorum xenium, vel quodcumque emolumentum temporale, immo detrimentum spirituale à quocunque publicè peccante, vel incestuoso accipiat, ve nobis, vel ministris nostris peccatum illius reuelet: nec pro respectu cuiusque personæ, aut consanguinitatis, vel familiaritatis alienis peccatis communicans hoc nobis, vel ministris nostris hoc inuiscere detrahet, nec à quocunque penitente, vel gratiam, vel fauorem, aut munus suscipere presumat, sed minus dignè penitentem ad reconciliationem adducat, & ei testimonium reconciliationis ferat, & quocunque liuore alium quemlibet dignè penitentem à reconciliatione remoueat, quia hoc simoniacum, & Deo, & hominibus abominabile est.* Et idem Hincmarus in capitulis Aebidionensis datis anno 874. can. 3. exult, *Ut à Presbyteris xenium accipiat, quatenus eorum male fama cooperiatur.* Ex can. 9. *Soliciis prouidete, ne vos, vel Presbyteri negligenter penitentes pro aliquo munere ad reconciliationem adducatis, vel post reconciliationem eos negligatis, quod simonia non est.* Idem repetitur in Concil. Fritlingen. celebrato anno 1440. can. 20.

^b Xenium.] Idem donum, vt exposui in cap. 1. de consue.

^c Penitentem.] A penitentia quælibet pretij acceptio aliens debet esse: tum quia sacramentum est, tum quis ad instar iudicij habeat, & sacerdotis manus puras esse oportet, ne eleuentiam, ac impunitatem scelerum vendere, & libertatem peccandi videatur subtrahere: legitimus tamen aliquando impunit ab aliquibus redemptum penitentem, & interdictæ communionis spatium, vt apud Gregorium Turonensem lib. 5. cap. 36. *Nauisimus Comes communiione pulsus, ad eandem iterum restit, fauensque Episcopis, quos premit, atque adulatione corripuit.* Et lib. 2. Capit. tit. 38. legitur, *quosdam Episcopos sacerdotum reus solitos fuisse penitentium exactione vinctos, quod Imperator eo loci fieri prohibet.* Et in veteri canone falsè Concil. Illiberit. assignano à Burchardo lib. 1. g. Decret. cap. 75. & ab Iuone part. 1. cap. 88. ita legitur: *Qui in quadragesima ante Pascha cognouerit uxorem suam, & ualuerit obstinere ab ea, unum annum penitet, aut pretium, videlicet 25. solidorum, ad Ecclesiam tribuat, aut pauperibus diuidat.*

Citra actum spirituales omisum pro temporalis pretij non consentiunt Interpretes, an simonia sit, vel non? Et eo casu simoniam committi, probati videntur in hoc textu, cuius auctoritate docuerunt, in pura omissione actus spiritualis, pretio, aut favore, simoniam committi, Glossa, Panormit. & Felinus, Paludanus in 4. dist. 25. quest. 5. Contrariam verò sententiam, videlicet non committi verè, sed improprie simoniam, secundum quandam similitudinem, existimant Innocentius, Hostiensis & Ioannes Andreas, Victorius relect. 2. de simon. Atagon. 2. 2. quest. 100. art. 1. Binsfeldius in presenti, qui textum hunc accipiunt de simonia similitudinaria, & impropria. Sed hanc questionem variis distinctionibus adductis explicat Barbosa hic, Gibalinus de simon. quest. 6. confessor. 12. iuxta quorum doctrinam sciendum est, Alexandrum in presenti duas suas decisionis partes proponere. In priori parte duas decidit casus. Primus videlicet, est quando presbyter, idest parochus, aliquod emolumentum temporale recipit à publico peccatore, vt Episcopo, vel eius Vicario celet peccatum illius. Secundus, cum ipse propter consanguinitatem, vel familiaritatem alicuius peccatum celat, ne innotescat. Quibus casibus certum est, presbyterum peccare contra officium, iustitiam, & charitatem. Vnde suspicit accipi pretium pro fute non reuelando, aut serui fugitivo non indicando, docetur in l. 4. §. 1. ff. de condit. ob impem. Attamen his duobus casibus nulla proprie committitur simonia, nisi in tali occultatione utatur parochus aliquà potestate spirituali. In secunda parte deciduntur ab Alexandro alij duo casus. Primus est eum presbyter peccatorem non verè penitentem propter gratiam, & fauorem ad reconciliationem admittit, vt ita testimonium reconciliationis ferat. Secundus cum ipse parochus propter fauorem, aut odium remouet à reconciliatione penitentem. Quibus duobus casibus verè simonia committitur, cum potestas spiritualis exerceatur, aut omittatur ob pretium, aut fauorem. Vnde illa verba Alexandri, *quia simoniacum ad verumque, ad hos duos casus in secunda parte relatos referunt Sanez lib. 4. de simonia, cap. 22. num. 14. Barbosa hic, num. 2. Et si adhuc instes, ad totam constitutionem referenda est prædicta verba, supponendum est, prioribus casibus vltra omissionem intercessisse exercitum aliquod spiritualis potestatis, vt dicit Gibalinus supra, confessor. 3. qui inde infert resolutionem ad varios casus, in quibus propter omissionem actus spiritualis simonia committitur.*

CAPVT XIV.

Idem *Venerabili fratri nostro Vigoren Episcopo, & dilecto filio, de Pateiar, Priori.*

Q Verelam monachorum de ^b Alcia nobis transmissam accepimus, quod cum ipsi quoddam ^a manerium, quoddamque Vella, cum ^c pertineciis suis, & Ecclesiam de Ganooum à monachis de ^c Cadonio sub annuo censu xv. librarum fuissent adepti, & iode chartam ab ipsis monachis habuissent: quidam Prior eorum Capitulo inconsulto præscriptum manerium, Ecclesiam, & chartam de Cadonio accepta pecunia resignauit. Unde quia præfati monachi de Acra se conquerunt iniuste grauatos, & oobis immoet corrigendum, si quid minus rationabiliter attentatur, causam ipsam experientie vestre commitimus, præsentium vobis auctoritate mandantes quatenus partibus ante vestram præsentiam conuocatis, quæ hinc iode proposita fuerint, diligentiùs audiat, & præscriptam causam sub lato appellacionis remedio, concordia, vel iudicio terminetis, prouturi, quod sicut emi nunc potuerit, ita etiam nec redimi. Si verò monachi de Cadonio legitime citati ad præsentiam vestram accedere, & iudicio vestro stare contempserint, vos prædictos monachos de Acra in possessionem eorum, de quibus controversia vertitur, contradicione, & ap. cess. inducere minime differatis, nec ipsos exinde permittatis absque ordine ^f iudiciario molestari. Si verò uterque vestrum his exequendis interesse non poterit, alter ea nihilominus exequatur.

NOTÆ.

^a *Vigorensi.* Ita etiam legitur in prima collectione, *sub hoc tituli. cap. 14. post Concil. autem Later. part. 2. cap. 12. habetur Fratri R. & Vigorensi Episcopo.* Sed retinenda est præfata inscriptio. De Vigorensi Ecclesia egi in cap. 7. de electione.

^b *Alcia.* In hac sexta collectione legitur de Acra, sed male; eadem causa hæc discipulatus cum monachis de Acra. Unde non poterat eorum Priori causa hæc committi: post concilium Lateran. legitur de Pantan, & alibi legi de Panteria, notauit Ant. August. in præfati. Sed cum nullibi reperissem monasterium huius nominis, credebam legendum esse de Pratiela. Pratielense enim monasterium est in Neultra optimo loco situm, prope portum maris, & pontem Adimarij: de quo Ordericus Vitalis lib. 8. lib. sue Ecclesie, pag. 709. Iuretos in notis ad epist. 143. Inuic. Propter vicinitatem enim huius monasterij cum Cadomeni præfati cause cognitio potuit committi Priori illius monasterij.

^c *Manerium.* Maneria, seu manerium, est habitatio cum certa agri portione: quo modo accipitur apud Innocentium III. lib. 3. epist. 5. ibi: *Ciuitates, villas, castra, maneria, quoad dotatilium præfata Regina spectare nesciunt.* Apud Rogerium tom. 1. annal. in vita Guillelmi Seniotis. Et per easdem diuisas, quibus ipse, sine autem cum Testius, vel Siuardus ipsum manerium tenuerunt. Apud alios Anglie scriptores, quos refert Vossius de uicili sermonum lib. 3. cap. 14.

^d *Pertineciis.* Quatenus Ecclesia, seu iospa-trocinus possit alienari cum vniuersitate bonorum, exposui in cap. cum Beriboldus, de ineparen.

^e *Cadonio.* Cadoniuu monasterium est ordinis Cisterciensis in Sarlatensi diocesi, de quo in præfati agi nonnullos credidisse refert Mantique tom. 1. annal. Cister. ann. 1120. cap. 1. num. 2.

à quibus reat ipse discedit; nam quomodo Vigorensi Prelato Angliæ potest delegari cognitio causæ, quæ in Gallia venebatur? Quare dicendum est, in præfati agi demooasterio Cadomeni Normannia; cuius originem, & fundacionis causam referunt Polydore Vergil. in hist. Anglia, Vuillelmus Gemeticen. monachos lib. 7. hist. Norman. cap. 26. his verbis: *Vuillelmus Dux, dum à quibusdam religiosis sapiri redargueretur, eo quod cognatam suam sibi in matrimonio copulasset, missis legatis ad Romanum Papam super hoc re consuluit. At ille sagaciter considerans, quod si diuini fieri iuberet, forte inter Flandenses, & Normannos graue bellum exurgeret, marium, & coniugem à reatu absoluens, eisque panitentiam iniunxit. Mandauit enim, ut ab eis duo cenobia cederentur, in quibus præ ipsi ab utroque sexu Deo sedula prece offerrentur: quod illi grauiter opere compleuerunt, nam apud Cadomum una constructa est Abbatia in honorem sanctæ Trinitatis; altera verò in honorem sancti Stephani Protomartyris.*

^f *Redimi.* De alia redemptione Ecclesiarum olim à monachis suscitata, egi in cap. 2. de statu monach.

^g *Ordinario.* Iuxta distinctionem, an tractatio anno, vel non, comparat, quam adduxi in cap. quoniam, ut libe non concess. Præfati decisionis consonat textus in cap. final. hoc tit. in 5. compil. vbi Honorius III. ita Pistoriensis Episcopo scribit: *Ad nostram noueris audientiam peruenisse, quod cum olim inter conuentum monasterij sancti Bartholomæi Pistoriensis, ex parte una; & Abbatem sancti Ioannis Parmensis ex altera, super eo, quod dictus Abbas præfatum monasterium sibi subesse dicebat, coram Archiepiscopo, & conuincibus suis, auctoritate Apostolica quæstio vertebatur, nominatus Abbas pendente lite coram iudicibus memoratis, emens ius, quod offerbat in prædicto monasterio se habere; ac idem monasterium tibi de fuisse, cum de iure non posses, sicut communis, non attendens, quod ecclesiastica, ac monasteria*

MAN-
RIUM
QVOD.

3.

4.

beria distrabi nequeant sine vizio simonia, tanquam vile aliqd., pro certa vendidit pecunia quantitate, in ipsum, & eius monasterium prauitium non modicum, & gravamen. Postmodum vero in, unde miramur plurimum, & monuitur, non considerans cum quanta severitate Dominus de templo expulserit venditores pariter & omnes, occasione huiusmodi venditionis à promissa convantum incontinentem, & fideiusorium cautionem per violentiam extorsisti, ut venditionem rationem haberes eandem, & contra eam de cetero non venires, in eos, qui contra venditionem ipsam venerint, seu consilium, vel auxilium super hoc conferrent eisdem, excommunicationis sententiam temeritate pro-

pria promulgando. Quare suis nobis humiliter supplicamus, ut sic venditionem sancti Thomae Pistoriensis, sic & ipsam irritare misericorditer dignemur. Nos ergo fraternitati tuae deferre quantum cum Deo, & bonitate possumus, cupientes, deuotioni tuae mandamus, quatenus his, qui per te minus prouide facta sunt, in hac parte reuocatis, prouide per te ipsam sapientiam conueniam à iuramentis, & fideiussoribus eorum à fideiussoribus, quas ab ipsis propter hoc diceris extorsisse, absolues penitus, & prorsus excommunicationis sententiam sine qualibet dilatione, ac difficultate relaxari, ipsos occasione huiusmodi de cetero non molestes.

CAPVT XV.

• Idem.

EA, quæ de bauaritz, & cupiditatis radice proueniunt, & in speciem simoniacæ prauitatis erumpunt, sunt penitus extirpanda : & quæ de spinis & tribulis procedunt, falce Apostolici moderaminis sunt rescanda. Audiuimus, quod nummos pro chrismate ab Ecclesiis extorquetis, quos nunc cathedraicum, aliquando paschalem præstationem, interdum Episcopalem consuetudinem appellatis. Quia verò hoc simoniacum esse cognoscitur, mandamus quatenus prætextu alicuius consuetudinis, vel prælationis præscriptis denarios nullatenus exigatis ; pro certo scituri, quod si hoc præsumpseritis, periculum ordinis & dignitatis poteritis non immerito formidare.

NOTÆ.

1. a **Idem.** Ita etiam legitur in prima collectione, sub hoc titul. cap. 15. Sed tam lineata, quam inscriptio restituenda est ex cap. ea nescitur, de censibus, ut iam ibi notauit.

b **Auaritia.** Quæ procul debet esse ab Ecclesiæ ministris, ut probant eruditè Aeneas Roberus lib. 1. rer. indic. cap. 3. Senatus in notis ad Sidor. lib. 1. apud 8. Mornac. in l. 1. & 3. Cod. de sacros. Eccles. l. Lucius d. arrestis, sine placitis Curia, lib. 3. tit. 3. quam & in sacerdotibus Gentilium reprehendit Tertul. in apolog. cap. 13. In hæc verbat Sed enim agri tributa honorabilissimè; hominum capita stipendia censu ignobiliora : nam hoc sunt nota capitularis. Dy vero, qui magis tributary, magis sancti, immo qui magis sancti, magis tributary : maiestas quatuor efficitur, circumspectus compans religio mendicantibus : exigitis mercedem pro solo templo, pro adiutorio sacris non licet Deo nosse gratis, venales sunt. Et cap. 44. Non enim sufficimus, & hominibus, & Diis vestris mendicantibus operi ferre.

c **Cathedraicum.** Alia est pensatio dicta cathedraicum, quæ iussu exigitur à Prælati Ecclesiæ, de qua egit in cap. comparente, de officio ordinis.

d **Paschalem præstationem.** Mutantes omenem, ut similes simoniacæ exactionem ; ut etiam Athenienses tributum exactionem mitiori voce temperantes, voo tributum, sed regimen ciuitatis appellati volebant. Alex. ab Alex. lib. 3. c. 5. & de usuratio aiebat Sanctus Maximus : Erubescit nomen usura, sed peccatum usura non erubescit.

COMMENTARIUM.

3. **Ecclia quies maloris Hebdomadæ chrisma** Consciendum esse per Episcopos in propriis Ecclesiis, probati in cap. quærit, de consecr. & tunc omnes Parochi debent illud recipere à proprio Episcopo, non ab alieno cap. præstari, 95. dist. cap.

præstari, de consecr. dist. 4. Concil. Vornat. can. 60. Concil. Francicum, idest in Francia celebratum sub Carolo Magno Prioclepe, & Bonifacio I. Archiepiscopo Minguotino, & martyre, Legato Zacharie Papæ : In cana, ait, Domini semper nomen chrisma præstari ab Episcopo quærit, ut Episcopus iussu assistat castitatis, & vira, & fidei, & doctrina illius. Idem omnino Concilium Suesionense apud quintum Medardum, sub Duce Francorum Pepino, & Childerico Rege, eiusdem sententia, & Concil. Aquisgran. 1. cap. 8. Capitulum 2. Scatimus, ut semel in anno, idest in quinta feria, qua est in cana Domini, vinctio olei sancti, in quo saluatio infirmorum creditur, per omnes ciuitates ab Episcopo non negligatur, sicut nunc usque negligata est : sed omni deuotione iuxta traditionem Apostolicam, ac statuta Decretalium, in quibus de eadem præcipitur, peragatur ; & illud reuerenter deferri ad proprias parochias. Concil. Valsen. 1. can. 3. ibi Chrisma in media Quadragesima præstari debens potest, & reuerenter cum chrisuario, & lincis, sicut reliquia Sanctorum, deponari debet. Aluissiodor. can. 6. Art. 4. sub Leone, can. 18. Illustrat Vicecomes lib. 2. de ritib. Confirm. cap. 15. nec ab alio contingi potest, quam à Sacerdote. Concil. Art. 4. dist. can. 18. vbi ratio assignatur his verbis Genus enim sacramenti est, quod non ab aliis, nisi à sacerdotibus, coniungi debet : quod si fecerint, honore priuentur. Cum ergo præbiteri ipsi acciperent chrisma ad Episcopos, viderentur caput, ut à singulis sacerdotibus, qui chrismatism recipiendi causa ad Ecclesiam Cathedrali accedebant, remissis exigerentur, seu aliqua quantitas pecunie pro expensis factis in oleo, & balsamo. Quam consuetudinem viguisse in Hispania, constat ex Concilio Brachar. 3. can. 16. ibi i Placuit, ut medicum balsamum, quod benedictum pro baptisimo sacramento per Ecclesiam datur, quia à singulis promissis pro ipso exigi solet, nihil ulterius exigatur, ne forte quod pro salute animarum per invocationem sancti Spiritus consecratur,

et dicitur, sicut Simon Magnus datus est pecunia voluit emere, ita nos vendimus damnablem videtur. In Galliana Ecclesia eandem corruptelam irreptisse constat ex privilegio Landerici concessio presbyteris consistentibus intra territorium monasterii sancti Dionysii Parisi. ubi ita legitur: *Si necessitas eis fuerit, ex nostro, & successorum nostrorum Episcoporum, sine pretio chrismata, & oleum faciant.* Et lib. 1. veter. formul. ita habetur: *Chrismata annis singulis, si voluerim postulare, pro reverentia loci pretio concedas.* In alio privilegio relato à Bignonio in notis ad ipsam caput 1. ita casetur: *Ambianensis Ecclesia Episcopus in Dei nomine benedicens, & chrismata sacra conficiat sine pretio, & annis singulis pro reverentia Sanctorum sine ulla pretio munusculum concedat.* Frustra autem hoc tot privilegium concederetur, nisi mos fuisset persolvendi aliquid pretium pro chrismate, ut considerat Lemaitre lib. 2. de iuribus Episcopis, cap. 5. Unde vacuis canonibus Ecclesie PP. hanc corruptelam damnantur, & aliquid recte pro chrismate quolibet preterito venerunt Concil. Barcinon. sub Recharado can. 2. ibi: *Ut cum chrismata presbyteris diocesanis pro neophytis confirmandis datur, nihil pro liquoris pretio accipiant.* Cabilon. sub Carolo can. 16. *Quidam fratres dixerunt, consuetudinis antiqua esse in eorum Ecclesiis, ut pro balsamo emendo ad chrismata faciendum, sine pro luminibus Ecclesie continuandis, binis, vel quatuor denariis presbyteri darent.* Unde omnes sitamus, sicut pro dedicandis basilicis, & dandis ordinibus nihil accipiendum est, ita etiam pro balsamo, sine luminibus emendis, nihil presbyteri chrismata accipere debent. Meldenic can. 45. *Nemo Episcoporum, vel quilibet minister ecclesiasticus propter sacra chrismata aliquid muneris accipiat, nec denarii, vel quilibet munuscula, que per ministros Episcoporum inordinabiliter exiguntur.* Aquileg. 2. sub Ludovico, part. 1. cap. 5. *Emeritense can. 9. Quisquis ab Episcopo sanctum in potestate presbyteris ad distribuendum tempore opportuno accipere chrismata, nihil ab eis beneficii causa tollere, aut pecunie presumat.* Oxoniense can. 21. *Firmiter inhibemus, ne pro aliqua pecunia denegare sepultura, vel baptismum, vel aliquid ecclesiasticum sacramentum, &c. absurdum esse indicemus, quod de castro pro chrismata,*

et, vel alio aliquid exigatur, cum testes hoc prohibitum esse reperiant. Synodus Romana in cap. formul. 1. quasi 3. cap. non satis, cap. in tantum, cap. ad nostram, de simonia. Illustrant Vicecomes de ricibus baptismi lib. 5. cap. 5. Bignonius in notis ad dist. cap. 1. veterem formul. Hecetera in orig. divini officij, lib. 1. cap. 2. Suarez tom. 1. de relig. lib. 4. cap. 14. Bosquetus in notis ad Innoc. lib. 2. epist. 45. Sed in hac pretij acceptione querit Gibalinus de simonia, quasi 12. consil. 1. an simonia committatur. Et resoluit, proprie simoniam non dari, nec ut talem in presenti improbari, sed tantum ad tollendam avaritiam, & simoniam suspensionem id prohibuisse Alexandrum: & ita concludit, chrismata esse materiam tantum simonie ecclesiasticæ. Sed cum PP. dicti Concilij Brachar. expresse talem exactiorem pretij, ut simoniacam darent; quia lato modo in chrismate contineri sacramentum dixerunt PP. concil. Arelat. 4. can. 18. non audent negare, simoniam proprie in presenti dari, cum vendatur res consecrata ad conferendum Spiritus sancti gratiam principaliter, ut docuerunt PP. dicti Concilij Brachar. 2. Nec obtabis si dicas, vasa consecrata ad divina ministeria posse vendi absque labe simonie, ut notati supra in cap. indicatum; & probat Atauso in 99. moralibus, dist. 14. part. 2. art. 3. ergo similiter & chrismata, cum tantum continet consecrationem ab Episcopo factam. Nam respondeo chrismata annexum esse spiritualibus in primo gradu; nam cum consecratio etiam res inanimatas quodam modo afficit virtute supernaturali, ut docet D. Thomas 3. p. q. 83. art. 3. ad 3. & 4. Transferebantur in ecclesiis, de consecr. dist. 1. mun. 2. Sotus in 4. dist. 13. quasi 2. art. 3. recte fit, ut temporale illud balsamum, & oleum admixtum consecrationi, eo ipso censetur annexum per confusionem, ac proinde nullo modo absque simonia vendi possit; in valibus vero consecratis non est admixta consecratio ipsi argento, seu auro, sed tantum forme vasorum: & inde est, quod sublati formæ evanescit consecratio, Sylvestre in summa, verbo Calix. Quocirca sicut argentum, & aurum est separabile à consecratione, ita eius venditio nullam inducit simoniam.

CAPVT XVI

Alex. III. ^a Breare Ricardo.

EX diligenti tua relatione nobis innotuit, quod G. Cant. Archidiaconus te multis promissionibus illexit, & quorundam Magistrorum virorum commonitione, ac solitudine induxit, ut ei b hominum faceres, & fidelitatem prestares, ita quidem, quod ipse tibi beneficium ecclesiasticum annis singulis exhibere deberet. Unde quoniam huiusmodi obligatio illicita fatiis, & contra salutis tue, necnon & sue profectum existit, sicut tua discretio nequaquam ignorat, à nobis super hoc absolvi instantius, & suppliciter postulasti adiciens, quod ab eo deinceps nihil omnino beneficio constituto acciperes. Quocirca nos tuam in hac parte petitionem honestam, & favorabilem attendentes, te prefati Archiepiscopi hominio, & fidelitate, præsertim cum hæc taliter præstita, & humanis legibus contrariare noscantur, ex beati Petri, & nostra etiam auctoritate absolvimus, ita quod ab aliquo Episcopo, siue e sacerdote discreto poenitentiam inde condignam recipias, & Deo secundum eius consilium studeas reconciliari. Verum ne aliquis propter hæc notā, vel infamiam possis respergi, absolutionis nostre litteras tibi duximus indulgendas, quibus contra latrantium morsus tuus, & premunitus existas, & quas in testimonium indulgentie nostre valeas demonstrare.

NOTÆ

NOTÆ.

a **Rever.**] Italegitur in prima collectioe, *sub hoc titulo, cap. 19.* Sed legendum esse *Be-*
rensi Richardo, tam notavit Ant. Augustio. in pre-
fenti, & parum interest, quodam ex his nomi-
nibus retineatur.

b **Hominium.**] Homagium legitur in hac sex-
ta collectione: quid autem intersit inter hominum,
et homagium, infra dicemus.

c **Archiepiscopi.**] Legendum est, *Archidia-*
coni, ut habetur in hac sexta collectione.

d **Divinus.**] Quatenus simonia sit iure divino
prohibita, & quibus in casibus, exposui super *q*
cap. cum in Ecclesia.

e **Humanis.**] *Ubi quæquam, Cod. de Episcop.*
& cleric. auctor. de sanctiss. Episcopis, circa prin-
cipium, §. sed neque, collat. 9.

f **Infamia.**] Infamiam incurritur, quicumque
sacerilegæ presumptione ad ordines, vel dignitates
ecclesiasticas se promovere procurant: quam in-
famiam penam incutitur impetores in *Ubi quæ-*
quam, Cod. de Episcop. & cleric. quæ extat, in cap.
sanct. 25. quæst. 5. ubi ita scribitur: *Sancti si quis*
hunc sanctum, & venerandum Antistitem Sedem pecu-
nia interueniente subiicit, aut si quis ut alterum ordina-
ret, vel eligeret, aliquid accepisse designat, ad in-
flam publici criminis, & lesa maiestatis accusatione
prosequitur, & gradu sacerdotii retrahatur: nec hoc sa-
lum deinceps honore privari, sed perpetua quoque in-
famia damnari determinamus, ut eos, quos per facinus
iniquitas, & æque, atrocisque similes peccata committunt.
Eandem infamiam notam statuit Innocentius II. re-
latus in *cap. si quis prebendam 1. quæst. 5.* quibus de-
cretis severius videtur Athalarici constitutio apud
Cassiodorum *lib. 9. epist. 15.* quæ insuper addit, ut
noti infamiz superfluit, idem filios, & heredes
torrat.

COMMENTARIUM.

EX hoc textu sequens committere deducitur
assertio: Pro spiritualibus assequendis homa-
gium fieri non debet. Probans eam textus in *cap.*
final. de R. I. cap. 2. cap. nimis 30. de iuriv. Syn-
nod. Claromont. sub Urbano II. can. 17. *Ne*
Episcopos, vel Sacerdotes Regi, vel alicui laico
in manibus laicorum fidelitatem faciant. Referunt
Baronius anno 1095. Iuretus ad *epist. 190. Carno-*
tens. Illustrant vltra congestos à Barboza in *pre-*
fenti, Cronius ad *tit. de feud. & in cap. ex parte, de*
cleric. non resid. in §. compil. Garcia de *beneficiis,*
part. 1. cap. 2. Boëtius *Epist. tom. 1. q. 9. hereticorum,*
tit. de Regalibus, num. 56. Binsfeldius in *prefenti,*
Roussellius *lib. 2. hist. Pontif. iurif. cap. 5. num. 26.*
P. Marcha lib. 8. concord. cap. 21.

Sed pro dubitandi ratione in præsentem asser-
tionem ita insurgo: Vt simonia committatur, de-
bet dari aliquid pretio æstimabile pro re spirituali,
ut pro distinctionis expositione adduxi supra in c. 1.
sed homagium per se non est pretio æstimabile. Ergo
est illud præstetur pro beneficio ecclesiastico
assequendo, simonia non committitur. Probatur mi-
nor ex c. *final. de hereticis*, ubi propter etiam here-
sims homagium factum, seu præstatum illi, qui in
hæresim lapsus est, in silem non cadit, iuxta textum
in *cap. ex parte, de iuriv. igitur* quia non continet
quid pretio æstimabile. Arguet hæc dubitandi
ratio ex eo, nam siue maiores Ecclesie dignitates,
siue minores attendamus, invenimus earum pos-

sessores Principibus, tam secularibus, quàm ec-
clesiasticis homagium facere, *cap. 2. de iuriv. 2. ap.*
final. §. verum, de stat. regul. lib. 6. cap. Romana,
§. debet, de appell. eod. lib. cap. grammam, de excep-
tibus Prælat. variis historicorum auctoritatibus
probatur *dell. cap. 2. cap. nimis 30. de iuriv. & re-*
fert Roussellius lib. 2. cap. 5. num. 26. Ergo non in-
iuste Archidiaconi Camerariis, cui de iure
competebat institutionem corporalem, siue inue-
stinuram in beneficiis ecclesiasticis dare, iuxta tra-
ditum in *cap. canonicum, de iuriv. exagebat* homagium
ab ipsa clerico, cui beneficium conferebat.

Quæ dubitandi ratione non obstante vera est
præsentis assertio, pro cuius expositione scilicet
est, homagium esse adstrictionem servitutis fa-
ctam Domino per passionem, promittente homine
libero fidelitatem, ut variis auctoritatibus probant
Vossius de *usu ferri, lib. 3. cap. 14.* Hotho-
manus, & Verrarius de *verbis feudalibus, verbo*
Homagium, Meursius in Glossario, epist. verbo, Pa-
ter Zecchi ad adnot. cap. 44. Marthe de iuriv. d. p. 1.
cap. 27. Idumay ad Innoc. III. lib. 3. epist. 77. Cu-
ius homagii, seu hominij forma nota est apud
scriptores mediz etatis, videlicet iuramento præ-
stato per manum porrectionem, & osculum Do-
mini: quo ritu Tassilo Dux Bajuvariorum se in fi-
dem dedit Regi Pipino, ut refert Aymoinus *lib. 4.*
cap. 64. ibi: Illuc & Tassilo Dux Bajuvariorum cum
primoribus gentis sue venit, & more Francie in ma-
nu Regis in cassinum manibus suis semetipsum
commendavit. Sic etiam Boamundus Alexio Impera-
tori fidem exhibuit ad morem vasallorum.
Villclmus Titius *lib. 2. de bello sacro, cap. 15.* Fa-
ctus est Dominus Boamundus Imperatoris homo,
fidelitate manualiter exhibitâ, & iuramento præ-
stato corporaliter, quale solent fideles Dominis
suis exhibere. Varias formas confirmandi homi-
nia ligij commemorant Lelius Biffiola *lib. 17. ho-*
rarum sac. c. 11. cap. 12. Gregorius Lopez in *l. 25.*
tit. 16. part. 3. & l. 26. tit. 1. ed. port. Choplus
de *dominio Franc. pag. 240.* Dorsians ad *Tacitum*
lib. 3. pag. 273. num. 3. alij apud Solozanum *tom. 2.*
lib. 2. cap. 23. num. 22. Inde feudatarii homines per
manus, & sacramentum dicuntur à Carnotensibus
epist. 18. ibi: Igitur quantum veli homines esset, &
per manum, & per sacramentum faceret, & clament
sedem meam circumdederunt. Homagium autem,
seu hominij duplex est, ligium, & non ligium
ligium est, quod Regi, aut Imperatori nullo me-
dio debetur, cuius meminerunt Continuator Ay-
moini *lib. 4. cap. 54. ibi: Unde Rex cum magno exer-*
citu Normanniam aggrediens, manu forti eam cepit,
quem Henrico filio Comitis Andegavorum reddidit,
& eum pro eadem terra in hominem ligium accepit,
Quare in Clement. Pustularis, de re iudicata, Rex
Sicilie dicitur homo ligius, & vasallus Ecclesie.
Etiam hominij hoc ligium vocant alij alliga-
tionem, seu ligantiam: Anselmus Cantuar. in
epist. ad Erasmum, lib. 3. epist. 90. ibi: Si quis exi-
git ab aliquo monacho Ecclesia vestra sacramentum,
aut fidei alligantiam. Et *epist. 91. ad Gundulfum:*
Nulla mina, nulla promissio, nulla assensio à religione
vestra extorqueat aut homagium, aut iusurandum,
aut fidei alligantiam. Guillelmus Neubrig. *lib. 2.*
cap. 37. ibi: Occurrit ei Rex Severum cum variis
Regis sui Nobilibus, qui omnes in Ecclesia Benif-
simi Apostolorum Principi Regi Anglorum, tan-
quam principis Domino, hominiorum cum ligantia,
idest solenni cautione standi cum eo, & pro eo con-
tra omnes homines, Rege proprio precipiente fecerunt.

DE HOMI-
NIO

CONCLU-
SIO TRA-
DITA, ET
PROBA-
TUR.

3.
INTEH-
DITA TRA-
DITA, ET
PROBA-
TUR.

rmor. Et Marthæus Paris de Henrico III. Rege Anglorum: *Gestoniam comitis Eduardo primogenito filio suo; tamen sibi retinuit principali dominio, scilicet ligoniam.* Hominium non ligium est quando fidelitas promittitur inferiori Principi seculari, vel ecclesiastico, & excipitur persona Regis, vel alia similis. In utroque tamen sub intellegendum promittuntur fidelitas, obsequium, & seruitium, ut probant Bosquetus *supra*, Alseficus *de feud. cap. 8.* Cironius *ad tit. de feud. ubi & nos, & in cap. 2. cap. nimis, de iurior.* Besoldus *tom. 1. polit. differ. 2. cap. 2.*

Vnde apparet iam ratio præsentis decisionis; nam cum homagium contineat in præstationem obsequij temporalis, & subiectionis quasi secularis, ideo sine simonia labe pro assequendo beneficio ecclesiastico, seu alia et spirituali nullo modo fieri potest. Accedit, nam homagium promittitur, ut supra probauit, in commodum, & utilitatem eius, cui promittitur, cum efficiatur promittens eius vassallus, obligaturque ad fidelitatem, obsequium, & seruitium. Vnde pro spiritualibus rebus acquirendis fieri non potest, quia munus, seu obsequium temporale pro spiritualibus dare, aut accipere, simoniacum est. Quare in præfenti specie ecclesie Archidiacono, Cantuar. non tenetur ratione beneficii homagium præstare, & iniuste Archidiaconus cum adeptus ad tale homagium faciendum pro beneficio assequendo; & ideo Alex III. talem promissionem nullam esse declarat, cum simoniacam prauitatem contineret.

Nec obstat dubitandi ratio *supra* adducta *ex cap. final. de heretic.* nam licet homagium afferat commodum temporale domino, cui fit, aut pro-

mittitur; non tamen commodum hoc ad fideum pertinet, propter crimen hæresis à domino commissum; immò potius ab eius obligatione vassalli liberatur io pœnam tanti sceleris. Si autem ius hoc in fideum eaderet, vassalli fierent deteriores conditionis, cum fideus nunquam mortitur; & ita perpetuū illius vassalli essent. Nec obstat quod expendebamus *ex dist. cap. grauem,* cum similibus. Nam respondetur, quod et si homagium, ac fidelitas promittitur aliquando usurpentur, diuersa tamen sunt; nam homagium est promissio obsequij, & seruitij temporalis, ut *supra* probauit; fidelitas verò præstatur cum quis promittit superiori seruatæ reuerentiam & fidelitatem iure debitam, ut probauit *in cap. ego, de iurior.* Vnde homagium pro spiritualibus rebus assequendis præstari non potest, fidelitatis autem iuramentum rectè exigi valet absque labe simonia, quia per eam promissio non obligatur ad munus, seu ad obsequium temporale præstandum, ad quod de iure non tenetur; & potius dignitati, quam personæ committitur; quod procedit quando hoc iuramentum præstatur pro dignitate, seu beneficio, pro quo talis fidelitas præstari solet; aliàs simonia committeretur, iuxta communem huius textus interpretationem; ut etiam committitur, si Prælati collator beneficii nouas passionis, aut grauamina addiderit, quibus iurantem grauare intendit, aut obligare valeat ad aliquam capitula, ad quæ nec iure, nec consuetudine recepta, approbataque teneretur; tunc enim siue dubio in præstatione fidelitatis simonia committitur. Hæc annexenda sunt quæ de investituris adduxi *in cap. quisquis, de elect.*

VSITAT-
DE SA-
VIOM.

C A P V T XVII.

Idem^a Strigon. Episcopo.

ET si quæstiones tuas de seruire religionis exurgere, & ex intimæ deuotionis affectu, quem circa nos, & Ecclesiam habes, ad nostram cognitionem perferri nullatenus ignoremus; non tamen est tibi in his ultra, quàm oporteat, dubitandum: cum^a leges humanæ dicant, quod quidam tenui religione sacramenta etiam necessaria, & legitima exhibere contemnunt: renuem enim vocant religionem, quæ in talibus hæsit, vbi non est aliquatenus hæsitandum. Vnde^a psalmista dicit: Trepidauerunt vbi non erat timor. In hoc autem, quod dilectus f. noster P. tituli S. Laurentij in Damaso presbyter Cardinalis, tunc verò sancti Eustachij diaconus, & Apostolicæ Sedis Legatus, pro electione tua, & ut pallium tibi deferret, ad partes illas accessit, & dilectus filius noster Alanus frater tuus, eius præfationis necessitatem, eidem Cardinali equum vnum, te penitus ignorante transmisit, quoniam per mare veniens nullas, aut paucas fecum adduxerat equitaturas, te nullo modo timere oportet, cum in accipiendis, vel dandis muneribus tria sint maximè^a attendenda, personæ scilicet dantis, & recipientis, & muneris quantitas; qualitas personarum, & donationis tempus: ut à quo, & cui, videlicet, an à paupere diuiti, vel è contrario, siue à diuite locupleti datum fuerit, sollicitè consideremus. Estimationem muneris, & donationis tempus arrendimus, cum magni, vel minoris pretij res dara existat, & an instante necessitate, seu alio tempore conferatur, diligentius inspiciamus. Quibus siquidem studiosius inquisitis, in præscripta quæstione tua nihil reprehensione dignum inuenimus: quod sollicitudini tuæ in sequendibus manifestum apparebit. Si enim prædictorum Cardinalis, & fratris tui personarum qualitatem certa consideratione pensamus, non fuit magnum ab eodem fratre tuo Cardinali equum vnum transmitti, quem etiam ioculatori non petenti virtutis, & tam abundans donauit. Verum sit temporis necessitatem perpendimus, non aliâ intentione hoc constat factum fuisse, quàm ut Cardinali

5.
TRAN-
TIV. BA-
TIO. PRÆ-
BENDI.

6.
RESPON-
DITUR.

dinali in tali articulo subueniretur. Quare super hoc in conscientia tua nullius vnamquam debet scrupulus dubitationis emergere, cum res data modici pretij, quantum ad personam dantis, vel accipientis existerit, nec alteruter eorum aliquid in mente habuerit, quod tibi possit, vel debeat, quamlibet, vel in modico lationem inferre; etsi ante electionis examinationem, & pallij receptionem, & te nolente, & penitus ignorante sit factum, & equus necessitate instante transmissus fuerit, & collatus: nec etiam res tanti pretij reputetur, quæ accipientis animum multum mouere debeat, aut ab honestatis proposito ad aliud declinare. Quod autem scriptum est: Beatus qui^a excutit manus suas ab omni munere: de illis doois dictum est, quæ accipientis animum allicere, vel intervertere solent, quoniam si ipsa etiam persona electi ordinatori, vel consecratori suo electuarium, medicinas, aut de optimo vino, siue de aliis huiusmodi, quæ modici pretij fuerint, & quæ voluntate recipientis inclinare, vel mouere non debeant, offerat; non tamen Ecclesia Romana accipientem, vel dantem in his delinquere, interpretati consuevit.

NOTÆ.

1. ^a *Trigonensis.*] Ita legitur in prima collectione, *sub hoc titul. cap. 20.* Sed rectius in sexta collectione legitur *Archiepiscopo*, quia his temporibus Trigonenſis Ecclesia Hungariæ Metropolis erat. Integra inscriptio desideratur post Concil. *Lactan. pars. 50. cap. 1.* De Trigonenſi prouinea egi in *cap. 4. de postulat. Prælat.*
2. ^b *Lex humanæ.*] Videlicet lex finalis, *5. fin. autem*, ibi: *Cum forsitan quidam subtili reuerentia senti, nec verum sacramentum præstare possunt; C. de fide. instrum. Et l. qua sub condicione 8. l. pendit. ff. de condit. insti.* Unde à Prætoris remissa fuit condicio iurisperiti adiecta in testamento, quia aliqui ita formidolosi erant, vt nec verum iurarent; alij ita faciles, vt omnia iurarent, *dist. 1. 8. quam illustrat Fotnerius lib. 3. rer. quætid. cap. 12. Domet. lib. 6. comment. cap. 18. Accosta lib. 1. fidei, cap. 10.* in qua patre obseruandi sunt textus in *l. 1. 5. sed ad eos. ff. ad leg. Falcid. l. fulta 63. 5. 3. ff. ad Trebel. l. libertus 20. ff. de bon. libert. l. municipibus, l. non dubitamus 20. ff. de condit. & demonſtr. l. cum pater 77. 5. 13.*

ff. de acquir. hæred. l. cum quis decedens 37. 5. Condita, ff. de legat. 3. l. condicione 19. ff. de condit. insti.

^c *Psalmista.*] Psalmo 119. vbi Septuaginta legunt: *Silicet trepidauerunt timore, ubi non erit timor.*

^d *Attendenda.*] Et rectè, si enim à paupere diuiti, aut à subdito superiori aliquid datur, verumque suspectam est; si autem à diuite pauperi, pium; si à diuite lucupleti, humanum; nisi ex causæ corruptione, aut athenoribus signis aliud iudicium sumatur. Facit etiam, quod quamuis donatio regulariter non præsumatur, *l. Campensius, ff. de operibus liberti.* Fallit si donans diues est, aut nobilis: recipiens vero pauper, vt probat Tiraquel. in *træct. de nobilit. art. vlt. num. 47.* Facit textus in *cap. 1. de donat.* vbi notat: laudis profequimur Binsfeldius in *presenti*, Narbons in *l. 31. gloss. 6. tit. 7. lib. 1. Recopil.*

^e *Beatus qui excutit.*] Verba sunt Isaiæ *cap. 33.* relata à Gratiano in *cap. sum. notabili, 1. quæst. 1. cap. qui rectè 11. quæst. 3.* Commentarij huius textus dedi in *capit. 1. verbo prohibemus, hoc titul.*

C A P V T XVIII.

^a Alexander III.

Veniens ad nos F. presbyter, nobis supplici relatione proposuit, quod Abbas, & Fratres sancti R. noluerunt eum in monachum recipere, quovſque illis pro monachatu triginta libras dare conuenit. Conuentione autem facta, statim eum sequenti die monasticum habitum induerunt. Idem verò monachi triginta ^b sol. Abbas verò 12. & familiæ 11. pro pastu, asserentes hoc esse de ^c consuetudine monasterij, postulauerunt. Quoniam ergo rei veritas nobis non constat, & factum huiusmodi perniciiosum videtur, f. t. per A. f. m. p. quat. rei veritatem inquiras, & si ita inueneris esse, Abbatem, & monachos ad restituendum pecuniam ^d præfato F. tam indignè receptam, instantèr admoneas, & cum omni districtione compellas, & Abbatem, & maiores personas monasterij, pro tantæ prauitatis excessu, ab officio sacerdotali^e suspendas. Prædicto autem F. in alio ^e monasterio præcipias, vt in habitu monastico Domino studeat seruire.

NOTÆ.

- ^a *Alexander III.]* Ita etiam legitur in secunda collectione, *sub hoc titul. cap. 1. D.D. Guezal. in Decretal. Tom. V.*

nullibi tamen exprimitur cui reſcribat Pontifex; unde cognosci non potest, de quo monasterio in præſenti agatur, vbi ſimilis corruptela ioualuta.

b. *Solides.*] De quorum valore sequenti expli-
te agemus.

c. *Conferuendum.*] Quæ ut corruptela merito
improbanda videtur, iuxta tradita sopra in cap.
cum Ecclesia.

1. d. *Præfatus F.*] Quia licet cum simonia vera
committitur, pretium interueniens non debeat
restitui danti, sed potius Ecclesie, pauperibus, vel
cui iudex assignauerit, iuxta tradita sopra in cap.
de hoc 11. tamen quia in præfati casu F. bona fi-
de dedit per exactionem, non quia intendet
pretio illo emere habitum religionis, ideo ei iuste
restituitur, ut docet Couarr. in *regulæ peccatum*, 2.
part. 9. 3. de R. l. lib. 6.

e. *Suspendat.*] Quæ suspensio poena simonia-
ci est, ut probatur in cap. 3. hoc titul.

2. f. *Alia monasterio.*] Elusum ordinis, & pro-
fessionis; quia professio à F. emissâ ualuit, & te-
nuit, quia tantum ingressus respectu illius mo-
nasterii, propter simoniam improbat; nam cum
F. intendere se obligare Deo, præsum Abbatibus
factum non potuit impedire professionis effectum,
ut probat Luna, & Arellano lib. 9. singul. au-
torem. t. ubi exponit textum in cap. dilectus, et 2. hoc
titul. & si in præfati casu F. princeps esset simo-
niæ, in aliud monasterium eiusdem Ordinis, &
professionis, sed aliorum, uisus, esset detrahendus:
quo casu procedit textus in cap. quoniam, infra
hoc titul.

COMMENTARIUM.

1. EX hoc textu sequens communiter deducitur
assertio: Pretium recipere pro habita monastico
simoniacum est, & illud recipientes suspenduntur ab
officio. Probant eam textus in cap. quoniam pio 1.
quest. 2. cap. non satis, cap. cum in Ecclesia, cap.
de regular cap. dilectus, et 2. cap. quoniam, hoc tit.
Concil. Trinitatis cap. 16. Ausonius enim,
quod quidam Abbates cupiditate danti præmia pro
interuenientibus in monasterium requirunt: idcirco placuit
nobis, & sancta Synodo, ut pro suscipiendis in san-
cto ordine fratribus æquagrum pecunie requiratur.
Concilium Melanienum can. 7. Nullus Abbas præ-
mium exigere ab eis, qui ad conversionem ueniunt,
aliqua placui occasione præsumat. Oxoniense tem-
poribus Honorij III. cap. 39. Extraneus. 1. hoc ti-
tul. Trident. sess. 25. de reform. cap. 3. & de regul.
cap. 16. Multitanti uita congestos à Barbosa in
præfati à Binsfeldius in cap. non satis, hoc titul.
Ataui in 99. *Atual.* disp. 14. part. 2. art. 3.
num. 14. Suarez de relig. lib. 4. de simon. cap. 17.
Castropolus in opere moral. tract. 17. disp. 3.
part. 9. num. 4. alius relatis Diana 3. part. tract. 2.
resol. 100. Lessius lib. 2. de iust. cap. 35. dub. 32.
Azoar part. 1. in fin. lib. 23. cap. 9. Tamburini de
iure Abbatis disp. 5. questio 2. & 3. Gibalinus de
simon. questio 18. consilior. 9. Christi. Lup. in
can. 19. Synod. 7.

4. Sed pro dubitandi ratione in hanc assertio-
nem ita insurgo: Et si sanctiora nascentis Eccle-
siae secula repetamus, inueniemus fideles ad mo-
nasticam vitam transuectus, secum omnia bona
sua offerre monasterio, in quo professionem iuxta
tebant, cap. final. de renunc. cap. in præfatis, de
proba. cum aliis ibi adductis. Igitur quia alienum
non est à disciplina ecclesiastica de statu regulari,
ut aliquod temporale offerant, qui uolunt ad mo-
nasticam vitam transire. Sequentiibus seculis vi-

que ad nostra nihil ritatatis est, quàm ut monia-
les vitam religiosam eligentes secum dotem affe-
rant, quam monasterio tradant pro sua sustenta-
tione: quam consuetudinem variis rationibus
probatur D. Thomas 2. 2. quest. 100. art. 3. ubi
Atagon, & Caleranus. Visconti in relect. de simo-
nia, 2. part. num. 14. plures congesti à Barbosa
in cap. non satis, hoc titul. Tamburini, & Gibalinus
ubi supra. Augetur hæc difficultas ex eo, uam
Equites Ordinum Militarium sancti Jacobi, Al-
cantara, & Calatrava, esse ueros religiosos, pro-
fessionemque in religione approbata emittere, re-
pulerunt plates congesti à Ioanne Sanchez in so-
luti. disp. 49. Diana 3. part. tract. 2. resol. 64.
sed habitus huiusmodi Ordinum posse pretio
dato acquiri, probatur laic Villalobos rom.
2. titul. 37. diffinit. 14. numer. 5. Diana resol.
64. Ligandez lib. 2. de contrall. cap. 10. ego
facium est pretium date pro ingressu reli-
gionis.

Qua dubitandi ratio non obstat, uera est
præfata assertio, cuius ratio provenit ex eo; nam
cum status religionis sit res spiritualis, ut dictum
est, non potest pro eo aliquid temporale exigi iux-
ta definitionem traditam in cap. 1. hoc titul. quare
ad euitandam hanc simoniæ speciem Carthusien-
sis Ordo districtum adhibuit statum relictum à
Dionysio Richel. lib. 1. art. 16. in hunc modum:
A nouis nec aliquid exigatur; si Prior exegerit, sit
extra sedem 40. dierum, & eisdem faciat abstinen-
tias sine misericordia infra sex menses. Si Procurator,
vel alius exegerit, sit per 40. dies auisus, &
eisdem in Capitulo recipiat disciplinam. Primum
quoque Prior, & procurator Procurator amittat,
si eis sciendum exallit iam tenerit ad effectum.
Nullus etiam nostrum de rebus auaritiæ aliquid possi-
deat, nec ad præsentiam aliquam faciendam moni-
tius infirmus ab aliquo nostrum. Insuper prohibe-
mus Vicarius, & Prioris, atque conventibus monia-
lium de cetero, non recipiant in foras nisi qui de
bono monasterio poterint sine pecunia sustentari; nec
aliquam sub cuiuscunque commodi uoluntate reci-
piant, donec locum uiderint, nec prout muerit,
vel etiam promissa aliqua præsentem personam reci-
pere, ne uirum committant simonia. Memorabile est
illud D. Hieronymi in sua regula adducta ab eod-
dem Dionysio dicto art. 16. Sic enim ait: Dissol-
ubile heresim simonia, quam communi prauitate dia-
boli moniales assuecunt committunt, etiam in auditis
hereticæ uos faciat. Griez & Simonius uos terreat
prauitas. Vos Pari Vicarij Christi nunquam exeat
de auihus uestris: Pecunia tua totam sit in periti-
onem, existimans enim ducem Dei haberi pecuniâ.
Communis mercatorum usus habet, ut uenditis com-
mutetur in melius; assuecunt namque simoniaci pecu-
niam esse præstantiorem dote Dei, cum illud commu-
tat in ipsam. Ad eos ueniens foras, ad Christi
suscipere nepotias grati: præparatur sanctitas pecu-
nia, exquiratur bonitas rei, non generositas carnis,
non utilitas mundi, nulla omnino passio, nulla opinio,
assuetudo, seu intentio de pecunia danda præueniat,
& receptionem præcedat: quia passio, seu opinio,
peruenit mentis perturbat. Rectè ergo Alexan-
der III. in præfati iuxta Sanchiorum PP. regu-
las in præfati decreuit, ab officio suspendendos
esse eos, qui pro ingressu religionis pretium tem-
porale exigunt.

Nec obstat dubitandi ratio supra adducta ex
dicto cap. final. de renunc. cap. in præfatis, de
proba.

3.
TRADITUR
RATIO DU-
CENDI.

6.

DISCERNITUR
TYR DUBITANDI
TAMEN ET
TIO.

CONCLUSIO
TRADITUR
ET DISCERNITUR

4.
DISCERNITUR
TYR DUBITANDI
TAMEN ET
TIO.

verba: *Quoniam dominus noster, etiam ordinem militarium.* Et in constitutionibus ipsius Ordinis D. Iacobi, tit. 15. cap. 1. ita caetur: *Estabecemos, que el maestro no reciba dineros, ni precio por la encomienda: y si alguno acometiere a dar o le diere, pierda lo que le diere, y la encomienda, y el cavallo, y haga penitencia por un año.* Postea tamen huiusmodi habitus militares beneficiari, ut vulgo dicitur, recte probat Martinez de Prado suprà.

9. Sed suprà traditis obstat textus in cap. 2. de cond. appeti. ubi refertur, quemdam Diaconum duobus servis suis libertatem dedisse eà conditione, ut monachi fierent in ipso monasterio, in quo ipse debebat: quod factum adeo probavit Gregor. Magn. ut iussit vel ex servis illis, qui volebat tantum to clericato manere, ut detruderetur in monasterium, aut iterum servituti subiretur. Ex quo textu aperte constat, pro ingressu monasterii aliquid temporale dari posse. Cui diffi-

cultati varis modis satisfacere intendunt Glossæ, & repetentes ibi, quos referunt Barbosa in collect. ad illum textum, Gibalinus de simonia, quest. 6. confel. 11. Quibus omnibus dicendum est, in eo textu nihil temporale datum fuisse monasterio pro ingressu, sed tantum dominum servorum, ut eos inquitaret, alliceretque ad vitam religiosam, illis libertatem promississe, si in ipso monasterio habitum susceperint, remaneretque, nullà necessitate illis imposita prohibendi vitam monasticam, sed tantum opione illis datà libertatis in præmium professionis religiose, aut permittendi in servitute. Unde sicut licet infideli dare pecuniam, ut baptismum suscipiat, & tunc capitalis criminis impunitatem concedere, ut religiosus fiat, ut probat Gibalinus dict. quest. 6. confel. 10. multo magis licet servo libertatem dare si monasterium ingreditur.

CAPVT XIX.

Alexand. III.

EX tunc fraternitatis litteris, & confessione sacerdotis præsentium latoris accepimus, quod cum ad sacerdotis ordinem non aliter voluisset eum eius Archidiaconus præsentare, vi. fol. eidem Archidiacono soluit, & sic postea ordinem ipsum per eum præsentatus accepit. Unde super eo, de quo nostrum consilium postulasti, tibi sic diximus respondendum, ut si hoc non est publicum, sed secretum, eundem sacerdotem secreto convenias, monens, sine ulla tamen coactione, eum propensius, & inducens, ut ordinem alicuius Religionis assumat, & perpetuo ab officio, quod illicite adquisivit, abstinere. Si vero ad religionis ordinem observandum inducere eum forte non poteris, studeas ei ad sustentationem suam aliquid beneficium ecclesiasticum constituere, ad hoc, ut à sacerdotio debeat in perpetuum abstinere. Alioquin non erit tutum, cum sit secretus excessus, ipsum inuitum ab eodem officio coercere: sed tamen secretam poenitentiam, secundum quod tibi visum fuerit, iniungere non possonas.

NOTÆ.

1. **I**dem. Alex. III. videlicet, ut legitur in secunda collectione, sub hoc titulo, cap. 1. nulli tamen exprimitur cui Prælati referibat Pontifex.

b. **Confessione.**] Secretò facta, tam Episcopo, quam Pontifici; non vero sacramentali, ut notat in cap. 2. de offic. ordin.

c. **Archidiaconus præsentare.**] Iuxta morem illustrium in cap. 1. de struct. in ordin. facienda.

2. **d. Sex solidi.**] An gravis, parvè esset hæc quantitas, petendum est ex valore solidorum; certum est enim, solidum monetam fuisse vsu receptam sub Hadriano Imperatore; eius enim mentio fit in l. si verò Prætor, ff. de his qui effuderant: & sequenti Imperij sæculis visitata fuit, ut constat ex Novel. 123. Justin. princip. Justin. de penæ remission. l. 13. C. Theodof. de suspens. & arcariis, l. vnic. eod. C. de vbiat. votor. Solidorum valor non idem semper fuit; nam antiquissimis temporibus ex vna auri uncia sex solidi habebant, unde solidus sextula dictus est, ut ait D. Iudocus in origin. & liquet ex illo versu Fant.

Sextula, que fertur, nam sex huius uncie constat.

Temporibus Constantini ex vna auri uncia endebantur septem solidi; unde libra auri continebat solidos octoginta, ut patet ex l. 1. C. Theodof. de ponderat. Verum Valentiniani tempore causum fuit, ut ex auri libra 72. solidi fierent. Sequentibus sæculis, tam in Hispania, quam Gallia, varius fuit solidorum valor; modò valebant quatuor denarii, modò quadraginta denarios argenteos, ut constat ex lib. 3. Capitul. cap. 7. & lib. 4. tit. 25. & in Concil. Brachar. 2. can. 2. statuitur, ut Episcopus diocesim suam visitans, nihil ultra duos solidos à qualibet Ecclesia accipiat. Prosequuntur alia de solidorum valore Iacob. Gothofredus in opuscul. de moneta, monetæ, Lemaitre lib. 2. de iuribus Episcop. cap. 2. Halliet. de sacris elect. cap. 7. tit. 6. §. 1. Unde cognoscitur, non levem summam fuisse ab Archidiacono in presenti causa exactam.

e. **Beneficium.**] Simplex videlicet, quod non peteret administrationem sacramentorum, alia frustra daretur illi, cui officium denegabatur, cap. ex litteris, de excess. Prælat. Commentarium huius textus dedi suprà in cap. 1.

CAPVT XX.

Alex. III. * Hereforden. Archidiacono.

AD nostram noueris audientiam peruenisse vnde, si verum est, plurimum admiramur, & aduersus vos iure mouemur, quod in Ecclesiis in vestra iurisdictione constitutis vicarios, nisi ab eis extorta pecunia, nullâ ratione ministrare permittitis, & personas Ecclesiarum, quasi seruos, & censuarios singulis annis indebitis exactionibus grauare presumitis, extorquendo ab eis pecuniam, & procuraciones, eas diuersis nominibus, aliquando auxilium Episcopi, interdum eiusdem Episcopi, & vestras consuetudines nuncupantes: quas si vobis fortè reddere contendunt, vos easdem personas, & Ecclesiarum vicarios ab officio suspenditis, & in eorum Ecclesiis diuina prohibetis officia celebrari, & inter cætera denarium chrismatis pro voluntate vestra ab eis in vestre salutis periculum extorquere presumitis, huiusmodi exactionem, vt eam liberius videamini exigere, quandoque consuetudinem Episcopalem, quandoque synodalia, quandoque paschales denarios appellantes. *Es infra:* Quia verò non decet vos clericos ita viliter, & inhonestè tractare, disc. v. per A. l. m. quat. ab eis pro ministerio ecclesiastico exercendo, siue pro vicariis assignandis, seu pro chrismate nullatenus exigatis pecuniam, & eos indebitis exactionibus, aut procuracionibus de extero grauare, vel personas eorum, aut Ecclesias sine manifesta ratione, & rationabili causa nullatenus interdicto supponere presumatis, &c. Alioquin si ad nos exinde iterata querela peruenierit, &c.

NOTÆ.

Hereford.] Ita legitur in secunda collectione, sub hoc titul. cap. 3. ex qua transcribo textum hunc, nisi mutilum, & truncatum; nam tam ex prioribus, quam medijs, & posterioribus verbis constat, in eo plures esse lacunas. De Herefordensi Ecclesia nouo nulla adduxi in cap. 1. de tempor. ordin.

Vicarios.] Siue perpetuos, siue temporales, de quibus egi in cap. 1. cap. ad hoc, de officio vicary.

Et personas.] Parochos videlicet, & be-

neficiarios, iuxta tradita in cap. 8 & 11. de rescriptis.

Procuraciones indebitas.] Nam tempore visitationis, tam Episcopo, quam Archidiacono procuraciones à iore preteritis sumi solent, vt probant id cap. i. cum Apostol. de consuetud.

Consuetudines.] Facit textus in cap. licet 3. de parus, vbi etiam de diocesi Coouentensi Angliæ agitur.

Denarios chrismatis.] De quibus egi supra in cap. ex 15. vbi huius secunde parus commentarium dedi: prius autem parus commentarium inuenies in cap. 1. ne Prælati.

CAPVT XXI.

Lucius III. * Spalaton. Archiepiscopo.

DE simoniacè verò ordinatis iuxta postulationem tuam certum tibi non possumus dare responsum, nisi plenius nosceremus, qualiter fuerint ordinati; cum quidam, licet secundum quandam speciem, vepote ignorantibus ordinatis, simoniacè ordinentur: in suis tamen possunt ordinibus remanere, quia simoniaci non sunt.

NOTÆ.

Spalaton.] Ita legitur in prima collectione, sub hoc titul. cap. 18. vbi additur pars capituli Super eo, quod: vnde cogenscitur in presentem referri partem textus in cap. super eo, de bigamis, vbi notauit.

COMMENTARIUM.

Varijs modis potest quis simoniacè ad ordines ascendere. Primo cum ipse scienter pretium dedit Episcopo, vel alij ministro pro ipso D. D. Gensal, in Decretal. Tom. V.

grado sacri ordinis assequendo, vt proap in cap. 1. hoc titul. Secundo cum per ignorantiam ordinatur simoniacè, quod duobus modis contingere potest: primo cum ordinatur quis ignoranter ab Episcopo simoniaco, quia in alia ordinum collatione peccauit, ideoque vt simoniacus suspensus erat ab Ordinum collatione, iuxta traditâ supra in cap. 3. Secundo cum ignotaote ordinato, alius tertius eius consanguineus, vel amicus Episcopo, examinatori, vel alij ministro pretium dedit pro ipsâ ordinatione. Primo casu, qui ordines suscepit ignoranter ab Episcopo simoniaco, suspensionem incurrit, & tantum pro temporis, aut Ecclesiæ

delius necessitate in ipso gradu congruati iubetur
 in cap. *Simoniae*, cap. si quis *Simoniaci* 1. quæst. 1.
 Gregor. VII. lib. 6. *regisr. epist.* 19. ibi: *Et tantum*
in Ecclesia ordine recipi permitti, si eorum uita
irreprehensibilis probetur. Alex. II. in Synodo
 Romana can. 3. apud Baronium ann 1065. Bi-
 nien. sm. 3. Concil. part. 2. ibi: *De his autem*
qui non per precationem, sed gratis loci à simo-
niaci ordinati, quia quæstio tam à longo tempore
distulit uenientia huj quæstio, autem modum da-
bilitatis absolutum, hæc super hoc capitulo no-
minem deinceps ambigere permittimus. Quia igitur
 ipse adeo hæc uenientia perniciis hominibus
 inoleuit, ut uix qualibet Ecclesia ualeat reprimi,
 quæ hoc male non sit aliqua ex parte corrupta: eos,
 qui ipsæ mediis gratis sacre à simoniaci ordinati,
 non tam obiter insulsi, quam iurem infirmitate
 in acceptis ordinibus manere permittimus, nisi
 ferè alia culpa ex uia error secundum canones
 sit obfissa. Tanta quippe talium multitudo est, ut
 non rigorem cænamis uigoris super eos feruare non
 possimus, uocasse sit in dispensatione ad pia con-
 scientiam studium nostris animas ad præsen-
 tiorum, iam tam in auctoritate Sanctorum Apo-
 stolorum Petri & Pauli uimmodò interdum, ne
 aliquis successorum nostrorum ex hac nostra per-
 missione regant sibi, uel alieni solum, uel præ-
 ga: quia non hæc aliquis sanctum Patrum iu-
 bendo, aut obediendo promouebat, sed temporis
 nostra necessitas permittendo à nobis extensis. Quod
 rectè ratione procedit, quia cùm regula tuus
 uiriusque sit, oemines possit dare quod non
 habet, I. uero, si de R. I. cap. nemo, cap. profe-
 ctorem 1. quæst. 1. cap. Daubertum 2. quæst. 7.
 cap. soler, de consecr. dist. 4. non immodico is,
 qui à simoniacis, et si non simoniacis, & absque
 sua uila culpa ordinant, eisdem ordinis,
 tanquam ad illegitimum misistis, præter intentionem
 principis agentis, cooperante accepti
 gradus executione priuatur. Circa secundumque

lum non continentur DD. Et ignoraretur ita per
fimoniam ordinatum, eandem suspensionem in-
currere, docuerunt Anguianus lib. 4. controu.
cap. 6. Hallertus de sacro elect. sect. 7. art. 3.
§. 2. Binsfeldus in praefati, vers. Quarta con-
clusio. Quorum sententia proban videtur ex cap.
praefatum 1. quest. 5. cap. per tunc 3. hoc tunc
ex praesenti textu, in quo dispensationem Pon-
tificum continet, docuit Hallertus ubi supra.
Sed contrarium sententiam docuerunt mento P.
Suarez de censur. disp. 37. sect. 4. numer. 41.
Nauarr. in Manuali, cap. 35. numer. 68. eo valide-
fimo fundamento facti, quod hae suspensioni
in poenam delicti imposita sit, & ideo cessante
culpa per ignorantiam, cessat poena, cap. Apstel-
lica, de cleric. excomm. tit. 1. *Per redditu ignorantia
probabilis excusatur.* Et cap. vt animarum a. de
censur. lib. 6. Pro qua sententia facit textus pre-
fatus distincte in illis verbis: *Quia finiamus non
sumus.* Nec vlla indulgentia, aut dispensationis
mentio fit. Nec obstat, quod in primo casu
proxime relato ordinatus per ignorantiam ab
Episcopo fimonico suspensionem incurrit: ergo
& in praesenti casu suspensus manet. Nam
respondetur negando consequentiam, quia in
hoc casu non ordinatur quis ab Episcopo iam
suspensio, vt ob eam causam non recipiat ab illo
ordinis executionem; sed per talem ordinatio-
nem efficitur ordinator suspensus, cum antea
non esset: ergo potius datur executionem ordi-
nis, quam habetur, quoniam simul ipse illam
perdidit sic ordinando. Vnde cum alias ordina-
tus non committit crimen, ob quod priuatur ta-
li executione, non est quare suspensionem in-
currat: at verd in superiori casu suspensionem
incurrit, quia minoris suspensus erat, vt docet
Sotus dist. disp. 37. sect. 4. De illo qui igno-
rante per fimoniam beneficium adeptus fuit, agens
infra in cap. noua.

CAPVT XXII.

* Lucius III.

Mathæus Cardinalis secretâ nobis insinuatione monstravit, quod eum fuisse ad Ecclesiæ tuæ regimen de voluntate maioris ^b partis fratrum electum, quia paucis contradicentibus non valesbas debita pace gaudere, quidam amicus tuus de conscientia tua, & voluntate perturbata, ei, qui magister discordi videbatur, certæ quantitatis munus exsoluit; & sic, quam prius sustinebas, contradictio conquieuit. Nunc autem dubitas, quod non sis à labe simoniæ prorsus immunis, donec in administratione volueris remanere. Quia igitur per iamdictum Cardinalem Apostolicæ Sedis consilium quaesivisti, tibi significatione præsentium mandamus, quod multum tibi consulis, si administrationem prædictam elegeris, ac sponte dimitis, illius verbi ^c Evangelicæ memor existens: Nihil prodest homini, si universum mundum lucretur, animæ verò suæ detrimentum patiatur.

NOTÆ.

a [*Vetus III.*] Ita etiam legimus in prima
collezione, sub hoc titul. cap. final. post
Concil. antien Later. pars. 40. cap. 4. additur,
Turmensi Archidiacono; in editione vero Satrij,
Archiepiscopi &c. restit. si conferantur illa priora
 verba: *Quod cum fuisset ad Ecclesie tua regimen*

de voluntate maioris partis fratrum. Quæ evincunt alloqui Lucium III. in presenti Prælatum ipsum à Canonicis electum.

b *Majoris.*] Vnde electio valebat, nisi minor pars contempta fuisset, aut rationabile aliquod opponeret contra electum, cap. *Ecclēsia*, et 2. cap. *quia propter*, de *elect.*

c Exemplari.] Cap. 16. *Matthai.*

COMMENTARIUM.

2. **R**epetentes in presenti, nec non scribentes de simonia, laicè disputant, an liceat pretio redimere vexationem mihi iuste, vel iniuste factam circa rem spirituales, vel spiritualibus annexam. Quam variis conclusionibus decidunt Soares tom. 1. de relig. lib. 4. de simon. cap. 30. Theologi cum D. Thoma 2. 2. q. 100. art. 2. Valentia tom. 1. controu. dist. 6. q. 16. par. 3. 4. 2. Vasquez in apusculo de scandalo, q. 43. art. 8. dub. ult. Redoanus de simonia, 3. p. cap. 21. num. 6. Gibalinus ord. tract. q. 18. Barbosa in collect. ad hunc textum: quorum resolutiones transcribere, aut examinare longum foret. Pro presentis autem textus expositione sciendum est, illi communiter opponi textum in cap. dilectus 30. hoc uel. ubi in eadem specie vexationis factæ ab Archiepiscopo Eboracensi ducitur, quod si accepta pecuniâ, ut desistat à vexatione, ab ea non cessauit, competeret repetitioem: unde Pontifex non improbat uel eiusmodi pecunie præstationem pro redimenda vexatione; immò tacite approbavit, contra es, quæ in presenti statuuntur. Pro culis anrhomiz conciliatione dicendum est, discretimen consuetudine uel esse inter eum, qui ius perfectum

habet in beneficio, & pretium dat pro redimenda vexatione illi, à quo nullum ius spirituale ad ipsum beneficium assequitur; & inter eum, in quo pretium dedit illi, à quo ius spirituale, quod illi deest, per talem redemptionem assequitur. Primo casu nulla committitur simonia, quia tantum iniusta vexatio redimatur, quod licitum est, cap. de cetero 3. de transact. cap. cum venisset 9. de rescript. fol. D. Thomas 2. 2. q. 100. art. 4. ad 3. ubi ait: Sanctus Iacobus autem non peccauit emendo, quia intelligitur suam vexationem redemisse. Quo casu procedit textus in dict. cap. dilectus 30. Secundo verò casu simonia committitur, quia pretio temporali res spiritualis, seu ius ad eam emitur, ut in presenti casu; nam cum minor pars Capituli suffragium haberet in electione Marthæ, possetque iuste confirmationem impedire ipsas, qui perfectum ius adhuc non habebat, pecuniam dando Magistro, ut ipse cum suis fratribus cessaret à vexatione, & electioni consentiret, nouum ius ad ipsum Ecclesiam ex hac pretij præstatione fuit assequutus; unde dando pecuniam ipsi Magistro auctori discordiæ, simoniam commisit, ut docuerunt Luna & Artillano lib. 3. ar. 1. Gibalinus de simonia, q. 18. cap. sect. 5. Binsfeldius in 4. cap. dilectus, qui exinde singulares casus resoluunt.

CAPVT XXIII.

Lucius III.

Ad aures nostras peruenisse agnoueris, quod cum G. de Seneuilla propter pecuniam, quam debebat, vinculo fuisset excommunicationis astrictus, creditoribus satisfecit, sed excommunicatoribus x. libras pro absolutione querentibus, absolutionis gratiam non valuit obtinere. Quoniam igitur indignum est, & rationi ecclesiasticæ contrarium, ut absolutionis beneficium redimatur, d. v. per A. fm. quat. si præfatus G. debitum soluit, pro quo fuerat per sententiam excommunicatus, ipsum nullius ap. obli. gratis faciat auct. Ap. absolui, et si excommunicatores requisiu id ei noluerint exhibere.

NOTÆ.

1. **a** *Primo III.* Ita etiam legitur in secunda collectione, sub hoc tit. cap. 4. nullibi tamen exprimitur cui rescribat Pontifex, nec ubi præfatus casus contigitur.
2. **b** *Propter pecuniam.* Quia ob debita soluta, & casum ciuilem potest excommunicatio infigi, ut latè probat Gibalinus de censur. distinctione 2. quest. 3.
3. **c** *Satisfecit.* Sed adhuc egebat absolutione, iuxta tradit in cap. 1. de iudicio.

d *Redimatur.* Nam talis absolutio est ministerium ecclesiasticum, & spirituale, cum non ex politico, sed ex spirituali iure proueniat, cap. nullum 1. q. 2. cap. sacro, de sent. excomm. Unde cum recipere temporale pro spirituali, regulariter sit simoniacum, ideo pro tali absolutionis beneficio pretium absque labe simoniæ recipi non potest, cap. non solum 1. quest. 3. docent cum D. Thoma 2. 2. quest. 100. art. 2. Binsfeldius in presenti, Gibalinus de simonia, quest. 8. cons. 12.

4:

CAPVT XXIV.

Clemens III.

DE regularibus canonicis, seu monachis nos uoluisti consulere, qui per simoniam ingressum, ipsis scienciis, & machinantibus habuerunt; unde cum super hoc auctoritates multæ inueniantur expressæ, non aliud quàm statutum est, respondemus, ut locum quem taliter adepti sunt, omnino dimittant, & solitudinem, seu alia monasteria districtiora adeant, in quibus tam execrabilem excessum sine inter-

missione deponent. Si autem ⁴ ignorantibus ipsis pecunia data fuerit, cogas ad renn-
ciandum loco eidem, & postmodum in ipsum reducere, si ibi absque scandalo rema-
nere poterint, aut eos in aliquo, quod sit de ordine ipso, ad seruendum Deo pote-
ris collocare.

NOTÆ.

1. ^a *Clemens III.* Ita etiam legitur in secunda
collectione, *sub hoc titulo*, cap. 7. nullibi ta-
men exprimitur cui tunc scribat Pontifex.

^b *Auctoritates.* Quas concessi supra in cap.
vicensi 19. *hoc titulo*, ubi commentationem huius
textus dedi.

^c *Discretiora.* Eiusdem tamen Ordinis, nam
professio emissã etiam cum simoniaca labe, vali-
da fuit, vt probant in d. cap. 19.

^d *Ignorantibus.* Quomodo simonia dari
possit cum ignorantia in promotis ad sacros
Ordines, exposui in cap. de simoniace 21.
supra.

2.

3.

CAPVT XXV.

^a Clemens III.

EX insinuatione tua nobis innotuit, quod pater tuus interueniente pecuniã olim
tibi prębendę beneficium ^b adquisiuit: cūque ad annos discretionis postmo-
dum peruenisti, Dominicę crucis ^c signum accipiens, super excessu penitentię du-
ctus, dictam prębendam in manu Prępositi, & fratrum liberę ^d resignasti. Sed idem
Prępositus, & fratres tibi complices denuo te in suum Canonicum elegerunt, ita
videlicet, quod secundum electionem istam postremum locum ^e in choro, & in
aliis lucis obtineres. Ceterum quia à nobis humiliter requisuisti, verum iuxta prio-
rem tuam receptionem tuum locum recuperare valeas, tibi duximus respondendum,
vt indulgentię, quam fratres tui misericorditer tibi fecisse noscuntur, contentus
existens, ratione primę receptionis nihil audeas in ipsa Ecclesia ^f vindicare.

NOTÆ.

^a *Clemens III.* Ita etiam legitur in secun-
da collectione, *sub titulo*, de reuoc. cap. 1.
sed nullibi exprimitur cui Pręlato scribat Pon-
tifex.

^b *Acquisiuit.* Et ita per simoniam, iuxta igno-
rita in cap. indicatum, *hoc titulo*.

^c *Crucis signum.* Vt militie nomen daret con-
tra Sarracenos, iuxta tradita in cap. quod 8. de voca.

^d *Liberę resignasti.* Aliis si conditionaliter in-
fuit in alietus, aut simili modo resignatio fieret,
simonica esset, vt laicę probat Gualinus de
simonia, q. 16. *confess.* 9.

2. ^e *Locum in choro.* Vt nouiter electus, cassatã
priori electione; nam si principaliter propter
simoniam fuisset priuatus ipsã prębendã, sed pos-
sibĩ ad eam restitutus, recuperaret priusquam lo-
cum, vt in Deuotionibus, & similibus priuatis,
& restitutus, probant Aulles in capitulis Pręlati,
cap. 44. gloss. 1. num. 3. Azucudo in Curia Pisana,
lib. 1. cap. 2. num. 18. & in l. 2. tit. 14. lib. 4. *recap.*
num. 5. Solorzano tom. 2. de iure Indiar. lib. 2.
cap. 26. num. 101. Salgado de Regia *protell.* p. 4.
cap. 9. num. 178.

3. ^f *Vindicare.* Ex indulgentia, & misericordia
sustinetur hæc secunda collatio; nam cū simo-
nia commissã fuisset à parte in ipsa prima prę-
bendę acquisitione, filius etiam simonie non
consentens tenebatur prębendam dimittere, *cap.*
fiscia tunc, *hoc titulo*. ex dicendis infra in cap. *infra*,
hoc titulo. & per consequens, quia circa eam prę-
bendam simonia commissã fuit, non poterat se-
cundũ ad eam admitti etiam virore nouę ele-

ctionis, cap. 5. *hoc titulo*, in 2. collect. ubi idem Cle-
mens ita scribit: Super ea verę, quod querere vo-
luisti, si aliquis electio cassata fuerit, & idem ad
regimen eiusdem Ecclesię iterum concedatur nomi-
natus, an secunda electio debeat confirmari, hoc
tuum tenere volumus discretiorem, quod si prior
electio non vitiõ p̄sensu, sed modo electionis cassata
fuerit, nisi forte simonia & penitus aliquid intercessisse
constiterit, promotionem eius in eadem Ecclesia non
debeat impediri. Facit Concil. Claromontanum
sub Urbano II. editum à Ballutio: Quicumque
sanctę cupiditate parentum, cum adhuc parvulus esset,
Ecclesiã, vel Ecclesiarum beneficia per pecunias
adepti sunt, & post eas omnino dimiserint, si canonice
in eis viuere voluerint, pro misericordia ibidem eas
esse concedimus, nec pre hoc facte à sacris ordinibus
remouemus, si aliis digni inueniantur. Ibi verę,
qui per seipsum, cum iam maioris essent ætatis, ne-
cessaria cupiditate nulli eas emerunt, si in aliis Eccle-
sijs canonice viuere voluerint, seruatis propriis or-
dinibus, pro magna misericordia ibi eis immittenda
permittimus. Quod si ad alias fortasse transierint non
potuerunt, & in eisdem canonice viuere permiserint,
minoribus ordinibus contenti ad sacros ordines non
accedant, saluam tamen in omnibus Apostolicis Sedis
auctoritate. Si qui tamen ante emptionem carolice
ordinis sui, cum ea, qua emerunt, dimiserint, &
viam canonicam egerint, in suis gradibus permittun-
tur, nisi forte eiusmodi Ecclesiã sit, ubi priuilegi-
um debemus obtinere: primum cum, vel singula-
re, vel Prępositura, vel officij leuonia in scriptis
Ecclesię eis habere non patimur. Refert Billuina
ad P. Marcan. lib. 6. *concord.* cap. 31. fol. 194.
per hæc verba.

CAPVT XXVI.

* Cœlestinus III.

Nobis fuit ex parte tua cum magna diligentia propositum, quod cum quatuor Nescient à Capitulo constituti, qui debebant quandam in b Plebanum eligere, amici eius de electione, cuius spes habebatur, vni eligentium, vel omnibus c promiserunt se pecuniam soluturos, eo tamen ignorante, qui huiusmodi interueniente promissione postmodum est electus. Quia igitur super hoc nos consulere voluisti, sollicitudini tue breuiter respondemus, quod nisi forte constaret illos, qui promissum tale fecerunt, per fraudem in dispendium ipsius, qui eligendus erat, id malitiosè fecisse, quamuis ipse promissionis conscius non fuerit, tamen electio huiusmodi, tanquam simoniaca, per prauitatem huiusmodi adquisita, est penitus d reprobanda, &c. Ad vltimum super hoc, quod in fine tue consultationis inuenimus, hoc dēxi-mus respondendum, quod aliquis in Plebanum, seu in quolibet Ecclesiæ Prælatum electus, & ut dictum est, per prauitatem simoniacam reprobus, ab Episcopo suo dispensationem aliquam obtinere de iure non e potest.

NOTÆ.

a Cœlestinus III.] Ita etiam legitur in secunda collectione, sub hoc titulo. cap. 9. nullibi tamen exprimitur, cui Prælati rescribat Pontifex.

1. b Plebanum.] Idem Pastorem, quem forsitan illi Canonici ut pastori eligebant: & quia nomine collectio illum præsentabant, ideo si respectu vnius interesset simonia, tota electio vitiosa, si autem illis ut singulis talis præsentatio competebat, propter simoniam vnius non vitiosa præsentatio, ut probat Barbosa in præsent.

c Promissum.] Et promissio in hoc simonia vitia habet pro datione, cap. 2. de confissi.

2. d Reprobanda.] Ipseque ita electus debet dimittere Ecclesiam hoc modo acquisitam, cap. ex infirmatione, cap. si cuius, hoc titulo, cap. præsentium 1. q. 5, cap. penult. de elect. docuit pluribus congeitis Barbosa in præsent, tem in collect. quàm tem. 6. in select. Anguinus lib. 4. controu. 6. Licet enim propter ignorantiam, excommunicationem, & sospensionem, in quas alij simoniaci scientes incidunt, non inciderent; tamen ipsa electio simoniace per ignorantem facta est nulli, quia in ea deficit substantiale, videlicet ut gratis fiat: quare etsi extantem dedit cum ignorantia electi, non potest supplet vitium hoc, ideo ea

nulla est, nisi malitiosè, & per calumniam tentius ignorante electo pecuniam dederit; quia cum malitiis hominum non sit indulgendum, cap. Sedes, de re scriptis, l. in fundo, ff. de R. V. nec debet quois alterius odio prægrauari, l. si quis suo, C. de iussu, testam. hoc casu electum sustinetur, alias posset quilibet in præiudicium eius, qui eligendus erat, malitiosè alicui eligentium pecuniam promittere, ut ita electum simoniaca denuntiaretur, ut docuit Anguinus dist. cap. 6. d. non accepit Barbosa tom. 6. in select. ad hunc textum.

e Non potest.] Cum eo enim, qui scienter beneficium simoniace accepit, tantum Summus Pontifex dispensare valet. D. Thomas 2. 2. q. 100. art. 4. & 7. & si simonia commissa est ignorante electo, nec etiam eo tamen habente, etiam si illos Summus Pontifex dispenset, ut docet in præsent Innoc. Hostiens. & Panormit. Naustrus ad hunc titulo, lib. 5. consilior, consil. 35. n. 4. sed si beneficium simplex sit, & qui illud simoniace ignoranter acquisiuit, post scientiam illud renunciet, potest illud licite iterum recipere ex Episcopi dispensatione, cap. penult. de elect. docuerunt Binsfeldius in cap. de simoniaca, hoc titulo. Felietanus Vega in cap. 4. §. de adulteris, ex numero. 159. de iudiciis, Gibalinus de simonia quest. 32. *

3.

CAPVT XXVII.

Cœlestinus III. * Lincon. Episcopo, & Priori de Fratroponte, & Archidiacono de Marin.

Dilectus filius noster R. Præpositus nobis patefecit, quod cum ven. f. n. G. b Eboracen. Archiepiscopus, cum multis grauaminibus, & variis iniuriis afficere non cessaret, promisit ei certam quantitatem pecuniarum se daturum, ut ab ipsius desisteret læsione. Verum Archiepiscopus post receptionem pecuniarum eum, sicut promiserat, in pace non dimisit, nec super dignitatibus, & beneficiis suis ab eius molestatione quieuit. Ideoque dic. v. per A. f. m. quat. si res ita se habet, Archiepiscopum restituere, quod accepit, si eum contra promissionem suam venisse constiterit, auctoritate

rate nostrâ ap. rem. compellatis, & prohibeatis etiam ipsi Archiepiscopo ex parte nostra districtius, ne penderent lite præpositum ipsum, vel suos molestare præsumat: & si fortè fecerit, per vestram sollicitudinem corrigatur.

NOTÆ.

1. ^a *Inconiensis.*] Ita etiam legitur in secunda collectione, *sub hoc titul. cap. 10. de Lincolnensi Ecclesia* egi in cap. 8. *de rescriptis*: & de Pontefractio Angliæ oppido in cap. cum esset, *hoc titul.*
2. ^b *G. Eboracensis Archiepiscopus.*] In hac sexta collectione legitur *Archiepiscopus*; sed credo retinendum esse præsentem litteram: tum quia Pontifex appellat illum fratrem, quod proprium Episcopi, vel Archiepiscopi est, cap. *quoniam grami*,

de crimin. fals. tum quia temporibus Cælestini III. regebat Ecclesiam Eboracensem Gaufridus, ut refert Polyd. Vergil. lib. 14. *hystor. Angliæ*, qui continetur sub littera G.

^c *Parus iniuriis.*] In nulla ex collectionibus exprimitur, quozum illz essent, licet ex verbis sequentibus deduci videatur, super beneficiis ecclesiasticis Archiepiscopus cum molestasset: unde pro redimenda vexatione licitè pretium dari hinc deducant repentes, & probat Barbosa in *presenti*, & in cap. *Mauritius*, ubi & nos huius textus interpretationem adduximus.

CAPVT XXVIII.

Innocentius N. Abbati^a de Iugo-Dei, & N. Priori de Seillin.

Svum nobis dilecti filij parochiani de^b Villafranca querimoniam destinarunt, Quodd Dalmasius capellanus eorum pro exequiis mortuorum, &^c benedictione nubentium minus licitè pecuniam ab eis exigit, & extorquet. Quod si fortè cupiditati eius non fuerit satisfactum, ne possint mortuorum corpora sepeliri, vel nubentium benedictio celebrari, seditia eius impedimenta fraudulentè opponit. Quia igitur exactiones huiusmodi sacrorum canonum obuiant institutis, discretionè vestrà per Apostolica scripta mandamus, quatenus dictum Capellanium, ut à tanta præsumptione desistat, & etiam pro excessu satisfaciatur competenter, monitis attentius, & efficaciter inducatur. Quod si fortè vestris monitionibus noluerit obedire, ipsi appellatione remotà pœnam canonicam infligatis. Datum, &c. ij. Kal. Iunii.

NOTÆ.

1. ^a *I'go-Dei.*] Ita etiam legitur in tertia collectione, *sub hoc titul. cap. 1. & in epistolia Innoc. editis à Sisto, fol. 100.* Monasterium de Iugo Dei est Ordinis Cisterciensis in Anglia, ad partes Hiberniæ, cuius fundacionem refert Jacob. Vearcus in *chron. monast. Hiberniæ*, his verbis: *Leix, aliàs de Iugo-Dei, vulgè Grey Abbey, hoc anno, scilicet 1193. vel secundum annales monasterij B. Mariae Dublinensis, anno 1190. usque Abbatiam de Iugo-Dei in Comitatu Dumanensi insituit Africa vxor Ioannis de Carrey, Viconia expugnatoris: & filia Godardi Regis Maniæ, in qua ipsa postea sepulta est.* Refert Mantique tom. 3. *annal. Cisterc.* anno 1193, num. 7. Monasterium de Seillin, sive de Sillo, est Ordinis D. Basilij, etiam in Anglia, ab oppido Silo ita dictum, de quo Polydor. Vergil. lib. 23. *hystor. Angliæ*, fol. 476.
2. ^b *Villafranca.*] Licet nonnullæ villæ sint in Hispania huius nominis, tamen cum præsentis causæ cognitiõ commissa sit Prælati Angliæ, non potest Innocentius referri ad villam ex eis, sed ad Villamfrancam, quæ extat in Anglia prope Engolismum, de qua Polyd. Vergil. lib. 19. *hyst. Angliæ*, ita ait: *Illicque passim prosiliatis Engolismenses Villamfrancam, item Rionis, & Feni Basilij arces cum oppidis aliquæ minus amplis capit: secundum hoc veni auxilio suis Iuacens Normanniæ Dux, qui nonnullis fatis cum hoste proliis, Engolismum cum Villamfranca, sese oppidanis dedecore recepit.*

^c *Benedictionibus nubentium.*] De quibus egi in cap. 1. *de secund. nupt.*

COMMENTARIUM.

EX hoc textu sequens communiter deducitur assertio: Pro benedictionibus nubentium, seu exequiis mortuorum, parochus aliquid exigere non debet. Probant eam textus in cap. non satis, cap. audimus, cap. *ad Apostolicam*, de *simon.* cap. secundum 23. q. 8. D. Gregor. lib. 7. *epist.* 55. ad *Leonarium*, cuius verba cum aliis dedi in cap. *abolenda, de sepult.* Illustant vltz congestos à Barbosa in *presenti*, Iulius Labor, *ver. lucubr. tit. 2. cap. 10.* Lælius Mancinus *sacri iuris contron. differt.* 3. Solorzano lib. 4. *polæ. cap. 24.* Covarr. lib. 1. *variar. cap. 13.* Petrus Gregor. lib. 13. *de re public. cap. 17. & lib. 3. part. 10. cap. 3.* Suster de *reliq.* lib. 4. *de simon.* cap. 10. Chopinus lib. 1. *de sacra Pol. tit. 7. mem. 19.* Baldus in *ad muel.* 23. *Infin.* Binsfeldius in *presenti*, Githalinus *de simon. quest. 12. consell.* 6. Lemaître *de iuribus Episcop.* lib. 2. cap. 6. Alii essent in *presenti*.

Sed pro dubitandi ratione in præsentem assertionem ita insurgo: Nemo debet proptis stipendiis militare, sed si altari seruit, de altari viuere potest, iuxta Apostolum *relatum in cap. cum secundum*, de *prob.* & 1. ad Corinth. cap. 3. libi *Vnusquisque autem propriam mercedem accipiet secundum laborem suum.* Laborem enim sine mercede esse, nec ita, nec natura patitur. Et cap. *eboracensem* 12. q. 2. cap. *nisi*, 5. quippe, *de reuoc. auctor.* de *iudic.* 9. ne autem, *colat.* 6. Faciant textus

in

3.

3. CONCORDIA TRADIT ET PROBATA.

4. INFORMAT TRADIT ET PROBATA.

in l. 2. c. de offic. Praefect. Prat. l. Seis, in princip. ff. de annis legat. Cassiodor. lib. 2. var. epist. 33. ibi: *Aegrum est, ut unicuique proficiat labor suus; & sicut laborando agimus incommoda, ita perfectius rebus consequatur augmenta.* Latè probatur Velsaeo de primil. pompae. t. p. q. 6. num. 45. & quæst. a8. num. 2. *Silula de salariis simil. quæst. 1. num. 2.* Igitur Parochus non tenetur gratis funus docere, exequias defunctorum celebrare, nuptias, seu sponsos benedicere. Et vt specialius ad exequias defunctorum accedamus, nubentiumque benedictiones, de quibus hic specialiter agitur, constat Ecclesiam non solum approbasse morem recipiendi aliquod à sacerdotibus funeris tempore, verùm & indixisse, exequisque huiusmodi præstationes: vnde tot canones Ecclesie de mortuorum oblationibus non retinendis. Concil. Carthag. 4. can. 95. ibi: *Qui oblationes defunctorum, aut negant Ecclesiam, aut difficulter reddunt, tanquam egenum necatores excommunicentur.* Concil. Agri. can. 4. Valense can. 4. Arelat. 2. can. 46. Autel. 3. can. 22. Matiscon. 1. can. 4. Et si defuncti corpus extra parochiam potiorum tumuletur, quartam partem omnium, quæ occasione funeris obueniunt, parcho deberi docetur in cap. 1. cap. in nostra, cap. certificari, de sepulch. cap. officij, de testam. vbi de hac portione funeris occasione præstanda Parcho, & Episcopo egi. Quoad benedictiones nuptiales licet etiam pro à Presbyteris pretium aciepli probatur ex eo, nsm matrimonium est contractus hominum; & ita quatenus continet officium utatur, licet pecuniam in eo intercedere, docuit D. Thomas 2. 2. q. 100. art. 2. ad 6. & in matrimonio non dari simoniam, tenuerunt Glossa in cap. cum in Ecclesia, hoc sit, cap. quidquid t. q. 1. Durandus in 4. dist. 26. quæst. 3. Alensis 2. p. q. 169. art. 1. dub. 1. Ergo rectè, & licet Capellanus de Villafraza exigat pretium pro benedictionibus nubentium, & exequiis mortuorum.

Qui dubitandi ratione minime obstante, vera est præsens assertio, pro cuius expositione sciendum est, pro sepultura defunctorum pretium aliquod recipi non posse; sepultura autem in hac parte accipitur vel pro loco ipso, vbi corpus tumulatur, de qua egi in cap. abolenda, de sepulch. vel pro exequiis ipsius defuncti, officiisque sepulture, eòdem corpus in ea conditur, de qua agitur in præfati textu, & aliis suprà citatis, in quibus exequi accipiuntur pro funeris pompa, ritibusque, dum corpus defector ad sepulturam; cuius vocis etymon assignat Durandus in ration. lib. 7. cap. 35. Iul. Laur. tit. 1. cap. 3. num. 200. quibus suppositis, ne actum in d. cap. abolenda, agamus, ac fastidiosè repetamus, sciendum est, frustra hæreticos mortalitati solatia invidentes, ecclesiasticam pompam, & ornatum funerum, quasi nuper superstitious commenta, fugillare, cantrum, ceteros, suffragia, & oblationes, que mitigandi defunctorum penis Ecclesia adhibet, irridentes, eòdem similes ritus à primis Ecclesiæ saculis obfermatos legamus: & primò cum psalms, & hymna clericos corpora ipsa cruento ad sepulchrum detulisse, constat ex cap. qui diuina, cap. vbiqumque t. q. 2. ex D. Augustino lib. 9. confess. cap. 12. vbi de funere matris agens ait: *Eundem sumpto psalterio cantum inchoasse.* Et epist. 258. loquens de puero quodam notario inquit Eoodij mortuo, ait: *Solatus est, ergo exequias præbimus sacis honorabiles, & dignas tantæ*

anime; nam per triduum hymnis Deum collaudamus super sepulchrum ipsum, & redemptionis sacramenta tertio die obituimus. Sanctus Ambrosius lib. de viduis, vidue continentes argumenta ista commemorat: *Ipsæ lugubris habitus, pompa funeris, fletus assidui, & morsu frons, in arantibus rugis impressa tristitia peculantiam pramit, oculos restringit, libidines procacis acrius, & affectus.* Et Nyssenus in exequiis Macrine, eantum lamentationis conditum refert; nec tantum sacerdotes psallebant, verùm & aliis psallentibus, ab eis cadastra exportabantur. Vnde de funere sancti Lupicini legitur in vitis SS. PP. *Dispositi in leinere psallentium cunctis, cum crucibus, cereis, atque odoris fragrantis thymianisqum.* D. Hieronymus ad Eustochium de epistoph. Paula, ibi: *Cum alij Penitentes lampadas, cereosque præferrent, alij choros psallentium ducerent.* Corippus lib. 3.

Hinc Læticarum venerabili ordo cantantum, Virgines totas inde choros, vocæ aëthera pulsæ.

Vnde cum Vandall hæretici hymnos in exequiis Catholicorum decantare prohiberent, ita conqueritur Vidor Vticensis lib. 1. *Quis sustineat, atque possit sine lacrymis recordari, dum præcipere nostrorum corpora disantillarum sine solennitate hymnorum cum silentio ad sepulchrum perducit.* Et lib. 2. *Qui nec solennibus cantantibus sepulchri sunt morientes?* Grezæ, & Latine Ecclesiarum consensum in illo exequiarum ritu indicat Ioan. Episcopus lib. 5. in. Graec. Rom. seu lib. 1. respons. Est autem interrogatio apud eum, an liceat Græcos Romanos in Latinorum Ecclesiis sepelire; & viceissim Latinos in Græcorum Ecclesiis, communi quodam psallentium choro ex vtriusque consensu. Respondet Episcopus, id fieri citra noxiam posse. Illudant Filicse. lib. 1. scilicet, cap. 16. Ant. Borzins tom. 1. Rem. subterr. cap. 19. Suardus ad Siden. lib. 2. epist. 8. Batonius anno 34. num. 313. citos sequent. Coise. lib. 2. q. 99. Papin. in l. vti de his quæ notant. Deinde cum cereis, & luminaribus defunctorum essent moris fuisse constat ex Gregorio Nysseno de obitu Marine, ibi: *Ex vtriusque parte procedebat non exiguis Dinorum, ministrorumque numerus, qui cuncti ordine progredientes, accensis cereis manibus gestabant.* Nazianz. in fuere Constantij Imperat. ibi: *Celebri pompa deducunt, religiosisque his etiam nostris officiis, hoc est, nocturnis cantibus, ac ceterorum ignibus, quibus nos Christiani piæm è rita discessum ornandum existimamus.* Corippus d. lib. 3. ibi:

Tota populus processit ab aula.

Maque funeres accendunt agmina ceras, Omnes in exequias sexus convenit, & etas.

Cuius ritus meminerunt Dionysius de Ecclesiæ hierarch. cap. 7. D. Clemens lib. 6. constit. Apost. cap. 10. & 19. & lib. 8. cap. 48. Gregorius Turon. lib. 4. Hist. Franc. cap. 1. & alij congesti à Baronio tom. 2. anno 337. Iul. Laurus, d. tit. 2. cap. 3. num. 32. Rationem assignat D. Chrysostom. homil. 4. in epist. 2. ad Hebræos, ibi: *Dic mihi, quid sibi valent ista fulgences lampades? an non defunctus, tanquam achætas deducimus? Quid etiam hymni? an non Deum glorificamus, & gratias agimus, quod eum, qui excessit, iam coronauerit.* Pius de cereis in funere adhibitis Antonius Bozios lib. 1. Rema subterranea, cap. 18. Spondanus de cæmeteriis lib. 1. part. 3. cap. 7. Mendoza in can. 55. Concil. Hiber. Cum his psalmia, & cereis accensis deferebatur olim defunctus ad locum, in quo sepelirentur

5.
DE RITIB.
EXEQUIORUM
CAP. 11.

tionem esse, ubi plerumque Episcopus funus spectabat. Dionysius de *Ecles. Hierarchy*. cap. 7. qui moris fuisse refert, mortuos ad Episcopum deferre: Summes, inquit, mortuam ad Pontificem ducunt, quasi coronam donandam sacrum. Et postquam alias annequit ceremonias, quibus ipse Episcopi fungebatur inter infa perfoluenda, ait: *Postea venerabilis Presul prorem super eo sacratissimum pregit: sua prece oficalatur Episcopus mortuam, & omnes post illum. Postquam omnes oficalati sunt, in fundis Pontifex mortuus elevat.* Quare forsitan in Concilio Triburienfi *can. 15.* ita cautum fuit: *Pbitione temporum, vel locorum fuentas raleris, apud maiorem Ecclesiam, ubi Sedes est Episcopi, sepultura celebratur.* Tunc dicebatur officium defunctorum. Vbi Vtiensis ubi proximi, ibi: *Qui nos felerunt orationibus sepulture merentes, quibus divinis sacrificiis ritus exhibendas esse confutur.* Petrus Damianus *epist. 1. cap. 6.* Nazianz *omel. 1.* in Jul. ubi de morte Constantie agit: de cuius officij origine plura adduxerunt Durantius in *ration. lib. 1. cap. 33.* Jul. Lator. *d. tit. 2. num. 41.* Sequebatur Missa sacrificium, sine quo olim viz vilis fidelis sepulture tradebatur, ut probant in *cap. 1. de celebratione Missarum.*

6.

De Agape.

Tandem sciendum est, in more positum fuisse veteribus Christianis, ut quo die funebria facta celebrabantur, solenne convivium Clero, pauperibusque exhiberetur: quod quia charitatis erat argumentum, nonnulli agapen vocantur. Eius consuetudinis meminerunt Tertul. de *anima*, *cap. 4.* ibi: *Pecca porro securis, si quando extra portam cum xeno, & matheus ibi parvis parentans ad busta recedis, aut a bustis dilucis redus.* Matheus enim, Athenæo interprete, dicta sunt pretiosius edulis, ut ibi notantur Zetda, & Paveilus. Idem in *apolog. cap. 39.* ibi: *Cena nostra de nomine rationem suam ostendit: vocatur agape id, quod dilectio propter Græcos est. Quamviscumque sumptibus confect, lacrum est pietatis nomine sacre sumptum; siquidem quasque refrigerio isto inuicem, si honesta causa est communi: reliquam ordinem dispositionem de causa estimare quis sive de religioſo officio; nihil scurrilitatis, nihil immodeſtia admittitur, non prius discumbitur, quam oratio ad Deum prægustetur: edam quantum esurientes cupinas, bibunt quantum pudicu vile.* D. Cyprianus *lib. 3. contra Quirinum*, *cap. 3.* agapen dilectionem fictum dixit. Minutius in *Octavio*: *Coram non tamen pudica colimus, sed fœvia. Nec enim indulgentis epulis, aut convivia more ducimus, sed gravitate hilaritatem temperamus.* Origenes *lib. 3. in Jo.* *Atentius Sanctarum factum & parentum nostrorum, vel amicorum in fide morientium denot memoriam agimus, tam illorum refrigerio gaudent, quam etiam nobis ipsam consuetudinem in fide posuantes: celebramus mirum religiosum cum sacerdotibus convocantes, fideles una cum Clero invitantes, adules egros, & pauperes, pupillos, & viduas saturantes, ut fiat fraternitas nostra in memoriam reque defunctis amabatur, quam memoriam celebramus.* Memorantur etiam sanctus Iohannes Chrysost. *homil. 32. in Mattheum*, ibi: *Cum post mortem iurum pauperes vocat.* D. Augustinus *epist. 64.* D. Hieronymus *epist. 22.* quam consuetudinem probavit Ecclesia variis canonibus relatis in *cap. per frumem*, *cap. nemalis*, *41. dist. cap. 1. cap. non oportet 3. 42. dist. Synod. Tollenf. p. 2. cap. 4.* ibi: *Qui agapen pauperem defraudat, apud*

sanctos PP. eorum nocetres vocantur. Concil. Narvenſe *can. 15.* aſert Ant. August. in *apost. lib. 21. tit. 16.* Hæc verò antiquissima in Ecclesia conſuetudo conſuetudo, cum pulatim ambitione diuturnum, partem etiam multitudinis insolentia, in abusum veniret, & in luxum, has inhonestas epulas Ecclesia, & simul conſuetudo damnavit, cum sub nomine religionis corruptele inſualluſſent. Synod. Laodic. *can. 28.* ibi: *Quod non oportet in locis Domitio, vel in Ecclesiis eam, qua dicitur agapæ, facere, & in domo comedere, & in acubant ſternare.* In celebratione Martini Bechar. *can. 69.* ita legitur: *Non licet christianis prandia ad defunctorum sepultura diſſere.* Alter etiam habetur apud Gazarium in *cap. non oportet, 42. diſtinctione*, quibus similia extant in Synodo CP. 6. *can. 74.* Atrissod. *can. 9.* De his conſultis agens D. Augustinus. *lib. de mor. Eccles. Cathol. ait: Nond multos esse, qui luxuriosissime super mortuos bibant.* Et in sermone de virginis, & sobriet: ibi: *Fugite crapulam, qua ſolis lugentibus, à conſolantibus amicis, vel proximis in Ecclesiis ingeritur.* Plura de his agapæ conſueſſent Antonius Boxius *lib. 6. Roma ſubter*, *cap. 27.* Spontaneas de conſuetudinibus *lib. 1. p. 3. cap. 17.* Zetda ad Tertul. in *Apolog. cap. 39. no. 942.* Petrus Gregor. *lib. 3. de republic. cap. 3.* Cæſar Colla *lib. 1. varior. ambigui*, *cap. 17.* Cæſepius in *ſumma*, verbo *agape*, Rosvoedus in *monaſt. eod. verbo*, Meurſius in *Glossario*, *eod. verbo*, Kochier in *ſar. hiſtor. can. 2.* *cap. 3. & 84.* Baronius *anno 57. & 397.* Pancirola *lib. 1. var. cap. 86.* ad finem, Suarez *tom 1. de relig. lib. 3. cap. 6.* Landmetter, de veteri elrico *lib. 2. cap. 46.* Albalſpinus *lib. 1. obſerva. cap. 18.* Zetda in *adversariis*, *cap. 146.* Ambianus ad Tertul. de *exhort. caſſi. cap. 11. obſerv. 2.* & de ieiuniis *cap. 17. obſ. 1. & in apolog. cap. 8. obſerv. 1.* Gæſet ad Caſſianum *collat. 24. cap. 12.* Etia in *1. zmic. Cod. de palatii, fol. 59.* Juſtel. in *not. ad can. Eccles. uniusf. fol. 179.* Vicecomes *lib. 4. de ritibus Miſſæ, cap. 21.*

His ſuppoſitis ratio præſentis affectionis ex eo proſequit, eam cum exequijs deſunctionum, & benedictiones nobentium ſint miniſteria eccleſiaſtica, & ſpiritalia, *cap. cum Eccleſia, beneſit.* quia in his omnibus repetitur exercitium ordinis, ideo pro eis exigere pretium ſimonia eſt, ut etiam idem cimeu committitur in benedictionibus Chriſtianiſ, Eccleſiarum, & ſimilibus ſacramentalibus, ſi pretium pro eis detur, ut probat Gibalinus de *ſimon. quaſt. 6. confeſſ. 6.* Faciunt omnia, que adduximus in *cap. Abolenda, de ſepul.*

Nec obſtat dubitandi ratio ſuprà adducta, cui facile reſponderet, ſi animadvertemus, in præſenti textu agi de parochio, qui beneficium eccleſiaſticum obtinebat in Eccleſia defuncti, unde ratione proprii officij tenebatur exequiſ defunctorum propriæ parochiæ intereſſe. Alij verò clerici, qui ad huiusmodi officia celebranda ratione proprii officij non teneantur, pro ſua ſuſtentione aliquid, non ut pretium ipſius officij recipere poſſunt, ex proximè traditis. Nec obſtat augmentum ipſius difficultatis, ſi procedit enim quod in eo expendebamus, in oblationibus à fidelibus pro defunctis factis, que ſemper in Eccleſia receper, & approbatæ fuerunt, dum pro fidelibus catholicis, & in pace Eccleſiæ, & communionis defunctis offerrebanur, ut probat

7.

TRADITA
DECIDENDI
BATIO.

8.

DISEMUL-
TATE DISEM-
TANDI RA-
TIO.

bas in can. 23. *Concil. Illiber.* Item d. & sublati illis conuictis fueralibus, de quibus proxime egimus, in eorum lucum fuscata fuit pecunia, quæ presbyteris & clericis dari solebat ob fœueris celebrationem. D. Augustinus *epist. 64. ibi*: Oblationes, quas pro spoliis dominionum; quas verè aliquid adiuuare videntur, sed super ipsas memorias non sint sumptuosa, sed si quis aliquid pecunia offerre voluerit, &c. Notauit Victorius *dist. lib. 4. de ritibus Missæ, cap. final.* & ex ipsis oblationibus certa portio Episcopis, & Parocho præstatur, iuxta tradita in *cap. de quarta, de prescript. cap. 1. de sepulch.* Nec obstat, quod expendebamus de contractu matrimonij; nam in matrimonio distinguenda est ratio sacramenti à ratione contractus; ut contractus enim potius adiuuit pacta, & conueniunt super dote, & donationibus propter nuptias, vt probabimus in *cap. 4. de emend. appret.* at verò vt sacramentum est, nullam preij passionem accipit; ideo verò Glossa & alij supra citati id negant, quia existimant, per illud non confecti gratiam, quod saluissimum, & eternum est, cum contrarium in Concilijs Florent. & Trident. declaratum sit: immodò est sacramentum hoc non confecti gratiam, vt falsò supponit Glossa in *dist. cap. cum in Ecclesia, non bene inle* inferret, licetam esse eius venditionem, cum alix benedictiones ab Ecclesia institutæ sint, quæ gratiam non conferunt ex opere operato; & tamen si pretium pro eis datur, committitur simonia. Quare etiam si matrimonium non confecti gratiam ex opere operato, tamen si esset sacramentum, vt fatetur Glossa, in eo simonia committeretur.

Sed supra traditæ assertioni obstat D. Gregorius *lib. 1. in dist. 9. epist. 42. in illis verbis*: Peruenit etiam ad nos, quod de uispiis rusticorum immoderata commoda percipiuntur, quibus præcipimus, vt omne commodum nuptiarum totius solidi summam nullatenus excedat: si qui sunt pauperes, etiam minus dare debeant; si qui autem diuites, præfati solidi summam nullatenus transgrediantur. Ex quibus verbis aperte deducitur, pro nuptijs rusticorum, seu eorum benedictione pretium recipi posse. Ego absque ulla simoniae labe Parochus in præfati pecuniam pro benedictionibus nuptialibus extorquebat. Per cuius textus expositione sciendum est, olim à rusticis, & colonis prædiorum vestigial nuptiarum dominis pendit, quod Galli suo idiotismo appellabant, *foris morticium*, vt refert Plinius ad consuet. *Tractatus, actum. 3.* quod genus indicat à Caligula inuentum refert Suetonius in *not. cap. 40.* & illud acerbissime etiam etiam à colonis prædiorum Ecclesiarum Romanæ, constat ex præfati epistola, & refert Aethiops *lib. 3. de Diuitibus, cap. 3.* donec modus impositus fuit à Gregorio, videlicet, vt vnum tantum solidum à quolibet rustico penderetur: non tamen in præfati casu pecunia illa præstatur Parocho matrimonio assistenti, seu nuptias celebranti; sed à rusticis pendebatur, quatenus erant coloni Ecclesiarum, vt slij coloni pendebant Dominis sæcularibus apud varias gentes. Apud Sæhotos deterior longè, ac fœdior vigili consuetudo, videlicet vt Dominis, & Præfatis sponsum integritatem voo coitu experiri liceret: sed ea tandem à Malconio III. Rege sublata, suadente sanctissima vxore Margara, & pudicitia nummo redempta fuit, vt refert Vergil. *lib. 10. hist. Anglie.* Hechos Bot-D, D. Gmzak, in *Durrak.* Tom. V.

tius *lib. 12. hist. Schol. ibi*: Illud verò inter cetera haud indignum memorari existimus, abrogationem præfatum eam, ac peccilem consuetudinem, olim ab Ereno tyranno ethiops inducendam, vt Dominis Præfatis in suo seruitio sponsum omnino virginem præstarent, dimissam argenti marci vnam nullam à Præfatis vxoribus redimere sponsum, quam etiam non perdere cogunt. Vacant quoque mulierum Marketum. Nec dissimile est, quod haud longè à Lomano in pago sit quondam, ubi sine sponsa stuprum à loci Præfatis sponsum redimit: quæ seruitute nulla iniquitas fando est audita. Cum ergo Gregorius agit de penatatione rusticorum Ecclesiarum ratione minislenj, non verò quia pecunia illa daretur, vt pretium benedictionis nuptiarum, aut rei spiritualis, ideo imponit exigi suppone Gregorius, & eoductioem massarum adquisicuit. Eadem enim ratione Zacharias Pontifex in *epist. 2. prætuit* Bonifacio Magonino Episcopo, vt duodecim denarios annui census exigit pro vooquoque coniugio, his v. b. *De censu verò expendere, eo quod imperare à Francis ad reddendum Ecclesijs, & ministerijs non potuisti aliud, quam te vertente anno ab eo quoque coniugio seruatum duodecim denarij reddantur: & hoc gratias Deo, quia potuisti imperare, & cum Dominis domariis quatenus, angelum & luminaria Sanctorum.* Similiter & apud Græcos eorum constitutum fuit stipendium Episcopo pro nuptijs eorum, qui intra fines dioceseos nuberent; de quo ita Alexius Comnenus apud Leonclatorem *lib. 2. inris Oriem.* Præter secundum solum Imperatorem Moenacchi felici recordationis, missus mea stetit, ut cum aliqui subditis territoria cuiusvisque regionis Episcoporum coniugio ritum legitimum vxoribus impingeret, accipias Episcopus à sponsa quidem genero summam autem vnam, à sponsa verò litteram vnam 12. quoniam admodum & ab antiquo seruitur est.

Deinde oblat textus in *neul. 59. Iustin. cap. 6. in illis verbis*: Hoc itaque omnia definitum super his, qui non per manifestum quatuor duas maiores lictas in veniabili vxorum custodiam possit. Dicitur autem Study gloria memoria, & Serephus inuagustia memoria. Si qui eum ibi voluerit accipere, vxores & plures hominibus egentes, & custodia potiori, & omnimoda caritate egentes, hoc non cuiusvisque his, quæ prius diximus, sed tanquam magnificam exhibens voluntatem, quantumque pro labore Decanis, aut Reverendissimis Assisterijs, vel Canonici dare placuerit, tantum & probent: non tamen valentibus transcendere decem solidorum quantitate in duobus lictis, Study, & Serephus. In decanis autem posito in sanctissima matre Ecclesia, vel uno solido pro eo fœson faciendo, quantum solidorum, Assisterijs autem, & Canonici, & acolythis duplia accipientibus, quam prius de his definitum. Ex quibus constat, pretium pro exequijs defunctorum recipi posse à Canonici, & aliis ministris. Pro cuius textus expositione sciendum est, inter alia de exequijs, & defunctorum funeribus legibus Romanis pudentes tanta, præcipuum fuisse, vt gratuite essent sepulture, & exequiarum tota ratio sine cuiusquam priuati hominis sompni erat aliquò lege constitueretur: quare Constantinus nongentas, & quinquaginta officinas instituit, quæ ab omnibus essent vestigialibus immunes, vt ad tem funebrem suppediunt lecliarior, sine vt tunc vocabatur, Decanos. Hi in collegia, seu decurias distincti,

9.
EXPO-
NIT D.
GREGO-
RIUS.
CAPIT.
10.

10.
EXPO-
NIT D.
VIL. 10.
LITTE.

K
CRANT,

erant, ad eosque tota tota libertate, & exequi-
um procuratio pertinebat. Iustinian. in d. novel. 59.
ait vineas esse copiasas, de quibus in l. 1. C. Theod.
de iustit. collat. l. in Ariminensi 15. eod. Codice
de Episcop. novel. Iustin. 3. vbi Guic. Panciroli
lib. 2. var. cap. 165. Quintanaduena lib. 1. eccles.
cap. 3. num. 3. Deinde Hmoctius, & Theodolus
eandem Constantini legem probant in l. non
plures, Cod. de sacros. Eccles. sed Imperator Ana-
stasius huic leuicariorum collegio addidit cen-
tum, & quinquaginta officinas, vt efficerent
centum & mille. Sed quia hoc preterea multi sese
subdocebant à veteribus solocudis, Iustin. in
novel. 43. numerum contraxit 1 que constituto
conferenda est cum dicta nouella 59. vbi agit
de copiasis canonicis, aliteris, & acolythis, qui
deducendis cadaueribus operam dabant, num
asceterij, & canonici præcebebant 1 acolythi vero
prædocebant, vt referunt Cuiac. & Balduinus in
dist. novel. 43. Spondanus de cameris lib. 1.
part. 2. cap. 9. Germonius lib. 2. de sacros. immunit. cap. 2.
Antoquias Bazium tom. 1. Roma subterranea, lib. 2.
cap. 13. Deinde sciendum est, secretum ad deferen-
da corpora defunctorum triplex in urbe Constan-
tinop. fuisse. Primum, quod Studij dicebatur; se-

cundam paulò illustrius, Stephani appellatum:
tercium suru interitum maioris Ecclesie, quo
opulentiores deferebantur. Erant etiam leuicæ
communes ad funus plebeiorum, illudque discen-
men inter ea leuicatum, & secretorum genera
dabatur; nam commune secretum, gratis, & sine
pretio concedebatur; at Studij, Stephani, &
maioris Ecclesie pecunia conducebantur; Studij
quidem, & Stephani summâ solidorum duode-
cim; maioris Ecclesie solidorum quatuor. Qui-
bus suppeditis apparer de hac pretij præstatione
pro secreto agi in dicta nouella 59. non vero de
villa pecunie exactione per exequis defunctorum.
In ea nouella 59. apud Iulianum Aotectorem 51.
hæc constitutio loquitur de impensis, que in fu-
neribus minorum sunt, & ante omnia mille
centum ergasteria in Constantinop. ciuitate im-
monitatem habere iussit, vt funera ducant. Sed &
credidit funeribus altissimum ab Anastasio Im-
peratore constitutum, & funeribus deputauit, &
edit singulis cadaueribus, sine singulis leuicis mor-
tuorum, vnam asceterium, idest octo sanctimo-
niales pœnentes, & tres acolythos, ita vt nihil
acciperent, sed gratis cum deducerent. Explicat
Filelac. lib. 1. felicit. cap. 16.

CAPVT XXIX.

Idem ² Cantuariensi Archiepiscopo.

Dilectus filius Magister A. nuncius tuus pro parte tua fecit in audientia nostra
proponi, quod cum Cant. diocesim secundum prædecessorum tuorum consue-
tudinem visitas, vtque corrigenda sunt, corrigas, & statuas secundum Deum, quæ
videris statuenda, in ^b monasteriis, & canonicis regularibus, & religiosis locis pullu-
lasse reperis simoniacam prauitatem, itaut in eis multi pretio sint ^c recepti, qui potius
gratis recipi debuissent, immò etiam ad religionis obseruantiam inuitari. Dubitas
igitur, vtrum quia ^d multitudo reperitur in causa, seuertati sit aliquid detrahendum,
an in tales debeas exigere rigorem canonicæ discipline. Nos igitur inquisitioni
tuæ taliter respondemus, quod si aduersus eos, qui labe fuerint huiusmodi maculati,
accusatio eorum te fuerit canonicè instituta: postquam crimen ordine fuerit iudicia-
rio comprobatum, tunc in dantes, quam recipientes, canonicæ seuertatis exerceas
vltionem. Quod si de hoc tibi per solam inquisitionem constiterit, eos, qui per simo-
niacam prauitatem in locis talibus sunt recepti, ab illis amoris ad agendum peni-
tentiam ad monasteria dirigas ^e arctiora. Abbatibus autem, Abbatissis, Prioribus,
Prelatis quibuscumque, & officialibus eorundem iniungas penitentiam competentem,
& donec illam peregerint, eos à sacrorum ordinum executione suspendas. Studere
autem omnibus per Cant. diocesim sub interminatione anathematis, auctoritate
etiam nostra, quam tuâ districtius inhibere, ne talia præsumant vltius atten-
tare: sed illud dumtaxat grante accipiant, quod sine taxatione fuerit grauis ob-
latum, iniungens Episcopis tuis, vt hanc ipsam formam per suas dioceses studeant
obseruare.

NOTÆ.

1. ^a *Cantuariensi.*] Ita etiam legitur in ecclia
Catholica, sub hoc tit. cap. 2. de qua
Metropoli conualla adduxi in cap. 2. de rescriptis.
2. ^b *Monasteria.*] Non exemplis videlicet,
aliis nec visitare, nec delicta inquirere possent,
iuxta tradita in cap. licet, cap. grane, de offic.
Ordin.
- ^c *Sunt recepti.*] Et ita cum vitio simonie, iuxta
tradita supra in cap. vltimus.
- ^d *Multitudo.*] Ob multitudinem peccatorum

aliquid detrahendum esse peccatorum sceleris,
probat in cap...

^e *Arctiora.*] De hac poena detrahendi in ar-
ctiora monasteria, poenitentia petenda causi,
egimus in cap. 1. de regul.

COMMENTARIUM.

IN hoc delicto simonie ob alios grauiter, &
arrogantem aequalem poenam imponi, siue
delictum claretur per accusationem modum, siue per
inquisitionem, probauit in inquisitione de accusa.
Vods

Vnde difficilis est præfatus textus, quæteous in eo Innocentius docet, quod si per accusationem canonicè apparuerit, & constiterit in iudicio de simonia à regularibus commissâ, iuxta severitatem canonice, de qua in *cap. veniens, cap. de regularibus, hoc siml.* compellantur; si verò tantum per inquisitionem constiterit eos simoniam commississe, non depositiois poenâ, sed potius suspensionis, donec poenitentiam petegerint, in actiôta monasteria esse deinceps laudatos; unde cognoscitur diversam poenam, mitioremque impositam, eùm delictum per inquisitionem claruit, ac quando per accusationem probatum fuit. Quare pro huius textus expositione varia adduxerunt Anguianus *lib. 2. de legibus, cap. 6.* Lania, & Arellanus *lib. 5. antinom. 1.* quibus omittis dicendum est, inquisitionem duplicem esse, aliam generalem, specialem aliam, ut probant in *dill. cap. inquisitionis*. Generalia appellatur quando Prælatus viciniam suam diocesim inquirat de vita, & moribus subditorum generaliter, ut in

cap. irrefragabili, de offi. ardi. Specialis quando infamia præcedente contra aliquem, ad inquisitionem certi delicti specialiter proceditur, de quo inquisitionis iudicio agitur in *d. inquisitionis*. Vnde si simoniz vitium appareat, & probetur per iudicium inquisitionis speciale, eadem poenâ est assignandus reus simoniz; ac si iudicio accusatus esset, & probaretur crimen; si verò tantum per inquisitionem generalem, de qua in præfati agitur, crimen simoniz apparuerit, non est irroganda poena ordinaria. Differentia ratio ex eo provenit, quia in inquisitione speciali procedit infamia, quæ vicem accusatoris gerit; unde reus potest puniri poenâ ordinariâ, in inquisitione verò generali, eùm tantum secretò, nulla infamia præcedente constet, reum simoniam commississe, ne publicè infamia noceatur impositâ poena ordinaria, quæ nec accusata, nec iudicata est; mitiori poenâ & extraordinariâ affici debet ex Innocentij sententia in præfati,

CAPVT XXX.

Idem Priori Sancti * Victoris, & Magistris I. Bonon. & L. Modocen. Canonicis.

Licet Heli summus Sacerdos in seipso bonus existeret, quia tamen filiorum excessus efficaciter non corripuit, & in se pariter, & in ipsius animaduersionis diuine vindictam accepit, dum filiis eius in bello premissis, ipse de sella corruens, fractis cervicibus * expirauit. Ad corrigendos igitur subditorum excessus tantò diligentius debet Prælatus assurgere, quantò damnabilius eorum offensas defereret in correctas, contra quos, ut de notoriis excessibus taceatur, etsi tribus modis procedi possit, per accusationem videlicet, * denunciationem, & inquisitionem ipsorum; ut tamen in omnibus diligens adhibeatur cautela, sicut accusationem legitimam debet præcedere * inscriptio, sic & * denunciationem charitatiua correctio, & inquisitionem clamorosa debet insinuatio præuenire. Descendam, inquit * Dominus, & videbo virum clamorem, qui venit ad me, opere compleuerint: tunc enim clamor peruenit ad Prælatum, cùm per publicam famam, aut insinuationem frequentem subditorum sibi referuntur excessus; & tunc debet descendere, & videre, & inquirere, utrum clamorem veritas comitetur. Nam iuxta canonicas sanctiones, si quid de quocumque clerico ad aures Prælati peruenerit, quod eum iuste possit offendere, non faciliè credere debet, nec ad vindictam eum res accendere debet incognita: sed coram Ecclesiæ senioribus diligenter est veritas præferenda, ut si rei poposcerit qualitas, canonica districtio feriat culpam delinquentis, non tanquam ipse sit idem accusator, & iudex; sed quasi famâ deferente, vel denunciante clamore, sui officij debitum exequatur, eo semper adhibito modèramine, ut iuxta formam iudicij, sententiæ quoque * forma dictetur. Cùm igitur de Abbate * Pomposianen. ea nobis frequenter insinuata fuissent, quæ ab honestate regulari nimium dissonabant, inquisitionem eorum viris discretis commissimus faciendam, qui cùm minimè processissent ad iteratum sæpe clamorem, de communi fratrum nostrorum consilio citauimus ad præsentiam nostram Abbatem, & monachos, ut per nos ipsos causâ motui plenius inquisita, plagam ipsam melius curaremus. Cùm igitur ad præsentiam nostram accedentes quidam ex monachis nobis ipsum Abbatem de simonia, periurio, dilapidatione, ac insufficientia detulerint, contra quos idem Abbas excepit, quod denunciationem huiusmodi fraterna correctio, secundum euangelicam * regulam non præcellerat, iidemque constanter assererent, quod correctionem huiusmodi præmississent, licet ad id probandum monachorum iuramenta fuissent prohibita; quia tamen super hoc ipso nondum contendere desistebant, nos, ut prædiximus, frequentibus clamoribus excitati, ex officio nostro volumus inquirere de præmissis, omnes omnino monachos, qui vel eum ipso, vel contra ipsum Abbatem accesserant, iuramenti vinculo astringentes, ut de propositis plenè, quam scirent, exprimerent veritatem: quorum

depositiones in scriptis redactæ, cùm publicatæ fuissent, super illis ceperunt multipliciter disputare. Quia verò tum ex assertione monachorum, tum ex Abbatis confessione cognouimus, quod idem Abbas non modicam summam pecuniæ relictam à prædecessore suo totam expendat, & in alia summa maiori monasterium obligauerat, nos eum iuxta legitimas, & canonicas sanctiones, propter has, & alias præsumptiones, quasi de dilapidatione suspectum ab administratione Abbatis duximus suspendendum: & quia per testes simonia multis modis probata videbatur esse contra ipsum Abbatem, ipse contra testes multas exceptiones opposuit, super quibus verimque fuit multipliciter disputatum, aliis asserentibus, in crimine simoniz, sicut in crimine læsæ maiestatis, omnes indifferenter, tam infames, quàm criminosos, non solum ad accusandum, sed ad testificandum etiam admittendos, cùm ad instar publici criminis, & læsæ maiestatis procedit¹ accusatio simoniz, multis super hoc, & legibus, & canonibus allegatis: aliis è contrario respondentibus, quod licet hæc duo crimina, quantum ad accusationem quasi paria iudicentur, differunt autem in multis: cùm alia poena pro vno, & alia pro altero inferatur, & inter personas accusatorum, & testium sit vtique distinguendum, cùm non per accusatores, vel testes crimina comprobentur, multis nihilominus super hoc & rationibus, & argumentis inductis. Ne verò vel innocentiz puritas consula succumberet, vel simoniz prauitas effugeret impunita: nos æquitare pensata, nec omnes exceptiones contra testes oppositas duximus admittendas, nec repellendas duximus vniuersas: sed illas dumtaxat probandas admisimus, quæ fortè probatæ, non de zelo iustitiæ, sed malignitatis fomite procedere viderentur, conspirationes scilicet, & inimicitias capitales: ceteras autem obiectiones oppositas, vt furti, adulterij, propter immanitatem hæresis² simoniacæ, ad cuius comparationem omnia crimina quasi pro nihilo reputantur, duximus repellendas: quoniam etsi fidem testium debilitarent in aliquo, non tamen euacuerant ex toto, præferim cùm alia conuinceret adminicula suffragari. Ad probandas ergo exceptiones admittas, Abbas quoddam protulit instrumentum, ad quod reprobandum eum testes fuissent ex altera parte producti, facultatem sibi petiti indulgeri, vt in partibus suis instrumentum huiusmodi comprobaret. Cùm ergo iudicantem oporteat cuncta rimari, discretioni vestræ, de qua plenam fiduciam obtinemus, per Apostolica scripta præcipiendo mandamus, quatenus intra sex hebdomadas post suspensionem præsentium probationes, quas Abbas, vel Procurator ipsius ad probandum solummodò instrumentum, cuius rescriptum vobis sub bulla nostra transmittimus, vel reprobandum pars altera duxit exhibendas, diligenti studio recipere procuretis sub testimonio litterarum vestrarum inclusas, eas nobis fideliter destinantes attentius prouisi, vt viâ regiâ procedentes, non ad sinistram, nec ad dexteram declineris. Quod si non omnes, &c. Duo vestrum, &c. Datum Lateran. iv. nonas Decembris.

NOTÆ.

¹ *Antli Victoris.* Ita etiam legitur in tertia collectione à Siseto, fol. 414. ex quo regestor rerum hunc transferibo. De monasterio Sancti Victoris canoniconum Regularium in diocesi Bononiensi egi in cap. cum in Ecclesia, de maiorib. & obed. De Modocensi diocesi egi in cap. 17. de rescriptis.

² *Expirant.* Vt refertur lib. 1. Regum, cap. 4. & eius historiz meminerunt D. Chrysostomus homil. 17 in Mattheum, D. Hieronym. relatus in cap. legant, 37. dist. D. August. lib. 17. de ciuit. Dei, cap. 5. & ad mores christianè instruendos eleganti stilo patrio idiomate dedit Magnus pietate, religione, & litteris vir, tempestatis nostre Ambrosius alter D. Ioannes à Palasfox lib. 1. hist. sacra.

³ *Demenciamurum.* De qua egi in c. 2. hoc tituli. *De Inscriptis.* De qua egi in cap. super his, de accusat.

⁴ *Demenciamurum.* De qua in cap. 2. eod. tituli. *Inquisitionem.* Vt probam in cap. inquisitionis officium, de accusat.

⁵ *Deminus.* Genesij cap. 19.

⁶ *Forma dilectorum.* Nam quando proceditur per accusationem, poena ordinata iurganda est: quando verò per inquisitionem, miltior, & extrordinaria, vt probam in c. inquisitionis, de accusat.

⁷ *Pomposian.* Credo esse nomen proprium Abbatis, nam nullum monasterium legi huius nominis.

⁸ *Regulam Evangelicam.* De qua egi in cap. nouis, de iudiciis.

⁹ *Suspendendum.* Nam Prælati de dilapidatione suspectus debet etiam lite pendente suspendi ab administratione, cap. final. 3. quest. 2. late probant Genuesis prælect. quest. 375. Bernardus Diaz in praxi, cap. 71. Petrus Gregorius lib. 4. partit. tit. 7. cap. 5.

¹⁰ *Accusatio simonia.* Vt probam suprà in cap. 3.

¹¹ *Inimicitias.* Quæ in granioribus etiam delictis attenduntur, vt inimicus, nec vt accusator, nec vt testis admittatur, vt probam in cap. meminimus, de accusat. & docet Menochius lib. 1. de arbit. quest. 12. per totam.

¹² *Hæresis simonia.* Quatenus simonia hæresis sit, exposui suprà in cap. 1.

CAPVT XXXI.

* Idem.

PER tuas nobis literas inimaſti, te plurimùm dubitare ſuper quadam epiſtola decretali, quam nos aſſeris edidiſſe, de teſtibus admittendis contra ſimoniacam prauitatem. Noueris igitur incunſtanter, quod nos illam epiſtolam, quæ ſic incipit: Quamuis ad ^babolendam, nequaquam edidimus, ſed aliam, quæ ſic incipit: Licet Heli, nos edidiſſe fateamur, ad cuius intelligentiam credimus diſtinguendum, verum iſ, contra quem agitur, de ſimoniaca prauitate denunciatur ciuilitèr, an ^ccriminaliter accuſetur; & verum agatur ſecundùm iuris rigorem, an ſecundùm temperantiam æquitatis. Item verum ſit regularis ipſe, qui iam renunciauerit mundo; an ſecularis, qui adhuc in mundo exiſtat: & verum inferioris ſit gradus, an excellentioris ſit dignitatis: ad hæc, verum antè fuiſſet claræ opinionis, & bonæ famæ; an grauiter infamatus, & valde ſuſpectus: & verum de facili poſſit puiui, an ſine ſcandalo nequeat condemnari. Præterea verum teſtes ſint honeſti, an criminoſi: & verum iam ſint emendati de crimine, an adhuc in crimine perſeuerent: rurfus verum crimina ſint eadem, vel minora; an paria, vel maiora: verumve teſtes ex zelo iuſtiitiæ, an ex malignitatis fomite depoſuiſſe credantur: denique verum ad ſimoniacam prauitatem detegendam ſola dicta teſtium inducantur, an alia etiã adminicula ſuffragentur. Hæc omnia ſunt ad intelligentiam illius epiſtolæ diſtinguenda, ſicut ex ſerie ipſius epiſtolæ poſſeſt perpendere diligens indagator. Ille quidem Pompoſianus Abbas, qui iam pridem renunciauit mundo, erat de ſimonia, periurio, dilapidatione, ac inſufficiencia grauiter infamatus; cùmque per monachos, qui iurauerant teſtimonium perhibere veritati, ſimonia multis modis videretur eſſe probata, ipſe contra teſtes multas exceptiones oppoſuit, conſpirationes videlicet, & inimicitias capitales, ſurtum, & adulterium, vt eos à teſtimonio remoueret. Nos verò, ne innocentie puritas conſuſa ſuccumberet, vel ſimoniæ prauitas effugeret impunita, illas duntaxat exceptiones probandas admiſimus, quibus fortè probatis, teſtes non zelo iuſtiitiæ, ſed de malignitatis fomite proceſſiſſe conſtaret, vt conſpirationes, & inimicitias capitales: cæteras autem exceptiones, vt ſurti, adulterij, propter immanitatem hæreſis ſimoniacæ, ad cuius comparationem cætera crimina quaſi pro nihilo reputantur, duximus repellendas; quoniam etſi probationes fidem teſtium ^ddebilitarent in aliquo, non tamen euacuarent ex toto, aliis adminiculis ſuffragantibus, ^e præſerim cùm teſtes de crimine fuerint emendati. Tales igitur contra tales taliter duximus admittendos, ſed non ſecundùm rigorem iuris, ſed ſecundùm temperantiam æquitatis, cùm ageretur non criminaliter, vt deponeretur ab ordine; ſed ciuilitèr, vt ab adminiſtratione ^famoueretur, ranquam immeritis & damnofus. Et vique rales Prælati ex leuioribus cauſis poſſunt ab adminiſtratione amoueri, maximè per Summum Pontificem, qui poteſtatem haber non ſolummodò iudicandi, verùm etiã diſponendi, ſicut quorundam religioſorum approbata conſuetudo poſcoſcit: vnde prædictus Abbas non expectatâ ſententiâ, quaſi malè conſcius ſibi ceſſit.

NOTÆ.

- I.** ^a **[Dem.]** Ita etiã legitur in tertia collectio-
ne, ſub hoc tit. cap. 4. nullibi tamen expri-
mitur cui reſcribat Pontifex: tantùm ex textus ſe-
rie cognofcitur, textum hunc eſſe Gloſſam præ-
cedentis, ſiquidem in eo tantùm interſuit Inno-
centius exponere quod de teſtibus criminoſis ad-
mittendis in cauſa ſimoniæ dixerat in textu præ-
cedenti.
^b **[Quamuis ad abolendam.]** Exat in c. 4. hoc tit.
in 2. coll. l.
^c **[Criminaliter.]** Quando dicatur iudicium
criminalè, quando ciuile, expoſui in cap. iua, de
Procurat.
^d **[Debilitarent.]** Quod in crimine hæreſis,
D. D. Genzal, in Diſcretal. Tom. V.

aliſque fidei cauſis contingit, in quibus etſi alijs
non idonei teſtes admittantur, vt criminoſi, &
ſocij eiuſdem criminis, cap. in fidei ſanctum, de
hæreſic. in 6. tamen totum fides in parte mi-
nuatur, vt probat Cortaf. lib. 5. miſcel. cap. 10.
per ſu.

^e **[Præſerim.]** Non tamen negat Innocen-
tius idem dicendum etſi emendati non ſint, in
crimine ſimoniæ, ob cuius grauitatem, etſi cri-
minoſi non emendati admittuntur, vt docent
Abbas in præſent. num. 9. Felinus non finalitèr ni-
hil ſpecialè dæctur hoc caſu in crimine ſimoniæ.
Inimici tamen ſemper repelluntur. Botellus tom. 2.
deciſionum, ex num. 300.

^f **[Amouetur.]** Per viam denonciationis, alijs
verus eſt iudicium criminalè dici ubi agitur de
K 3 amotione

amotione à beneficio, vel administratione, ut
resoluit D. Ioannes Vela de modo procedendi,
cap. 1. unde inferit, in Ecclesiis, ubi Episcopus
tenebat procedere cum adiunctis in causis crimi-

nalibus Canonicoꝝ, teneri eos recipere, cum
agit de amotione alicuius à præbenda, ex eo,
quod ordinem sacrum præbendæ annexam intra
tempus à iure assignatum non receperit.

CAPVT XXXII.

Idem Abbati Gemblacensi.

Sicut nobis tuis litteris intimasti, cum in Gemblacen. Ecclesia fueris à tenera nu-
stricus ætate, monachus factus ibidem, in ætate matura promotus consequenter
fuisisti ad regimen Ecclesiæ Florin. Verum Abbate Gemblacen. de medio post sub-
lato, Gemblacen. Ecclesia, quæ prius te tanquam filium habuerat, inscium & abi-
sentem, in Patrem, & Pastorem per electionem canonicam te reuocauit. Et quo-
niam Pastore carebat Leodien. Ecclesia Cathedralis, postquam per dies aliquot
moram feceras in Ecclesia Gemblacen. ad Colon. Ecclesiam, quæ tua est Metro-
polis, proficiscens, ipsius auctoritate in Gemblacen. Ecclesia interim ministrasti.
Cæterum postquam in Leodien. Ecclesia fuit Episcopus institutus, is à te requisitus
electionem de te factam noluit confirmare, aliud non prætendens, nisi quod de mi-
nori loco translatus fueras ad maiorem. Verum cum hæc tibi fieri pro extorquenda
pecunia comperisses, sub interminatione anathematis ueruisisti, ne pro facto huius-
modi aliqua pecunia offerrent. Et cum quidam de fratribus timorem Dei præ oculis
non habentes, interuentu munerum ad ipsius Abbatis regimen aspirarent, seniores
in Ecclesia, quod malum imminens non nisi malo posset depimi, præuidentes,
te inconsulto, & penitus ignorante, contra excommunicationis à te factæ sententiam
venientes promiserunt, & pecuniam etiam persoluerunt, sicut tibi postmodum est
relatum, & sic ab Episcopo inuitatus, institutionem ab eo accepisti liberè, quemad-
modum postulabas. Super his ergo nos tua duxit discretio consulendus, si propter
promissionem incognitam, & prohibitam, quemadmodum est prædictum, tibi pec-
cati macula insignatur: vel si de promissione nunc tibi cognita, tu cum fratribus,
qui fecerunt eam, debeas penitere; cum inhærere nolueris simoniacæ prauitati, pa-
ratus pro gæge Domini subire laborem: vel quamuis te conscientia non accuset, à
suscepto regimine, si decreuerimus, abstinere. Quamuis autem secundum sacrorum
canonum instituta, etiam paruuli, qui cupiditate parentum Ecclesias per pecuniam
sunt adepti, eas dimittere teneantur, quia tamen longè diuersum est non præbere
consensum, & expressim aliquid prohibere, taliter duximus respondendum: quo-
niam ex eo quod contra prohibitionem, & voluntatem tuam, à qua postmodum mi-
nimè recessisti, aliquis te penitus ignorante promisit pecuniam, & exsoluit, præ-
sertim cum aliquis ex his nullà sit tibi consanguinitate coniunctus, nihil tibi debet
quoad poenam, & culpam, sicut credimus, imputari, nisi postea fortè consensetis,
pecuniam soluendo promissam, aut etiam reddendo solutam: alioquin contingeret,
quod alieuius factum insidias inimico parantis, et damnosum existeret, cui peni-
tus displiceret: & sic aliquis de fraude sua commodum reportaret. Illos autem, qui
dederunt pecuniam, vel etiam receperunt, in tantum constat esse culpabiles, quod
si excessus eorum esset Ecclesiæ manifestus, quæ non iudicat de occultis, poenā
essent canonicā ferendi.

NOTÆ.

1. ^a Gemblacensi.] Gemblacum veteribus Ge-
mblacum, perpetuum est urbanis in
Germania oppidum, olim Leodienſis, hodie Na-
murcenſis diocesis, intra cuius oppidi mœnia con-
ſtructum eſt monaſterium hoc, quod conſtruxit,
ac dotauit Gilbertus anno 911. ut referunt de eius
origine & amplitudine agentes Aubertus Mireus
in orig. Cambierum Belgicæ, cap. 19. per totum, Ye-
pes tom. 3. chron. D. Benediſti, anno 911. Buceli-
nus tom. 1. Germania ſacra, verbo Gemblacum. Gul-
berto eius Abbati, qui deceſſit anno 1208. miſſa

eſt præſens epiſtola, quæ reperitur inter edias à
Sicſio, fol. 371. & in 3. collect. ſub hoc titul.
cap. 3.

^b Florinen.] Florinenſe monaſterium etiam
eſt in Germania, in finibus agri, cuius fundatio-
nem expreſſit ehtonographus Cameracenſis lib. 3.
his verbis: Gerardi Episcopii patre deſuncto, ipſe
Dominus Episcopus apud Florinas; pro reuerentia ſi-
quidem loci, quo natus fuerat, iunxit & pro ſalua
anima patris, & monaſterium S. Glingiſi, quod pa-
ter imperfectorum reliquerat, ad ſuum perduxit; & ab-
batem S. Ioannis ex rebus ſuis, & fratrum ſuorum,
non tam pulchra adſiderium facie, quam ſortis operosi-
tati

2.

tate fundavit. Sed hoc quidem clericorum, illud verò monachorum; utrumque amantem Valdrico Leodiensium Episcopo, in cuius parochia sunt, consecrans. Denique illa Abbatia Domini Abbatis Richardi regimini commendata, sed & magni Imperatoris (Henrici) auctoritate firmata, capiti florere, ac postea magis, magisque (Deo gratias) tam fluentia rerum, quam sanitas monachorum essent. Refert Albertus Mitras in orig. Canob. Belg. cap. 33.

3. e. *Proficiscens.*] Sed quate confirmationem non postulavit à Capitulo Leodiensi, cum Capitulum Sede vacante possit confirmare electiones eorum, quorum confirmatio ad Episcopum spectabat, cap. cum olim, de maior. & obed. Pro cuius difficultatis solutione varia adduxerunt repetentes in præfati. Hostiensis, & Innocentius assueverunt, consuetudine, aut privilegio introductum fuisse, ut de sancto Episcopo Leodiensi Abbas Gemblacensis à Colonienſi Metropolitano confirmationem peteret. Sed hac sententiâ omiſſa vera solutio petenda est ex historia huius temporis, & ita Ecclesie Leodiensis. Sciendum enim est, tempore huius electionis, Guiberti, Leodiensem Ecclesiam Pastore cæcitate, non tamen fuisse vacantem, quia postea duo ad eam erant electi Episcopi, Albertus videlicet, & Simon, qui ambo Romam profecti fuerant, ubi Simon Cardinalis creatus fuit, ut refertur Ketzepolius in catal. Presul. Leodiensium: & ita licet Pastore cæcetur, quia Romæ erat, non tamen Capitulum tanquam Sede vacante poterat ipsum Abbatem confirmare; & ita Abbas ipse adit proximam superiorem, videlicet Colo-

nienſem Archiepiscopalem, qui illi permisit ministrare in eadem Abbatia, donec Episcopus Leodiensis eum confirmaret.

d. *Inſinuat.*] Hugo II. de Petraponte, de quo ait Ketzepolius ubi proximi, quod cum esset admodum dissolutus moribus, postea se multum correxit, & multa opera bona fecit.

e. *Ad maiorem.*] Quod in Episcopis tantum prohibitum est, ex traditis in cap. 1. de translat. Episcop.

f. *Malo posset deprimi.*] Et sic pro redimenda veratione pecuniam Episcopo dederunt, atque ita simoniam verò non perpetrarunt, iuxta tradita supra in cap. Martham. Unde dum in fine huius textus ait Innocentius, quod si excessus eorum esset Ecclesie manifestus, penam essent canonice ferendi, accipiendus est ita, ut si constaret seniores monasterij dedisse pecuniam ut pretium Episcopo pro confirmatione Abbatis, essent omnino puniendi: & si dicas eos simoniam commisisse, supponendum est verationem alio modo vitare potuisse.

g. *Canonem.*] Cap. quisquis 1. quest. 1. cap. 1. 1. quest. 5.

h. *Ignorante.*] Et contradicente, alius si tantum esset ignorans, confirmatio facta per simoniam esset nullius momenti, ex traditis supra in cap. de regular.

i. *De occultis.*] Cap. 1. 15. quest. 6. cap. evanescent, 31. dist. cap. tua nos, hoc tituli. Probat Gibellinus de consur. part. 1. quest. 8. in fine, Mancinus cent. 2. genial. cap. 167.

CAPUT XXXIII.

Idem Decano Belvacensi.

T Va nos duxit discretio consulendos, si aliquis alicui Ecclesie de bonis suis quædam obtulerit, petens, ut in vita sua sibi liceat eadem bona in ipsa Ecclesia pro præbenda tenere, bona recipi debeant sic oblata, & idem clericus assumi valeat in Canonico eiusdem Ecclesie absque vicio simoniæ. Nos igitur devotioni tuæ taliter respondemus, quod si quis clericus cum conditione, vel pacto largiatur, vel offerat bona sua, ut illa postmodum pro præbenda retineat, & ut in Canonico admittatur, huiusmodi oblatio, vel receptio fieri non poterit sine vicio simoniæ, cum in talibus & omnis pactio, aut conventio cessare debeant iuxta canonicas sanctiones: si verò pure, ac sine pacto & conditione qualibet offerat bona sua, rogans humiliter, ut in Canonico admittatur, & bona ipsa retinere sibi liceat pro præbenda, & clerici eiusdem Ecclesie pure consentiant, huiusmodi receptio procul dubio fieri poterit absque scrupulo simoniæ prauitatis. Licet autem taliter duxerimus respondendum, quia nobis datum est de manifestis tantummodo iudicare; si tamen is, qui talem donationem facit, ea intentione ducatur, ut propter temporalia bona, quæ offert, spiritualia valeat adipisci; & clerici, qui cum in fratrem admittunt, non essent eum, nisi commoda temporalia perciperent, admissuri, sin dubio tam illi, quam iste apud districtum Iudicem, qui scrutator est cordium, & cognitor secretorum, culpabiles iudicantur.

NOTÆ.

COMMENTARIUM.

1. *Belvacensi.*] Ita etiam legimus in tercia collectione, sub hoc tituli. cap. 6. ex qua restituo etas litteram. De Ecclesia Belvacensi nonnulla notati in cap. 18. de fero comp.

b. *Omnis pactio.*] Iuxta tradita in e. fin. de pactis.

c. *Intentione.*] Quia simonia mentalis tunc committitur, ut dicemus infra in cap. final.

2. *Mos olim fuit,* ut in Clerum eligendi, in Ecclesieque ordinandi pecunias Ecclesie offerrent, quibus postea præbidentes, seque de illo instantes, conuictis inſectabantur eos, qui nullâ datâ pecuniâ propter egregia merita cooptati fuerant. Quam consuetudinem improbatum PP. lex-
Ei: igitur, qui gloriatur

riantur se per ditionem auri ordinatos in Ecclesia, & in hac maligna consuetudine, qua alienas à Deo, & omni sacerdotio, sperant, & ex hoc impudenter facit, & non aperta, et propterea, & commutatis verbis, qui ob sanctitatem tota à Spiritu sancto electi, & constituti sine ditione auri sunt, inboverant, primo quidem universum gradum sui ordinis accipere definiunt: quod si permanserint, per episcopiam, id est per meritum, corrigantur. Vbi notatunt Balsamon, & Zonaras: Hallerius de sacris electi, fol. 7. cap. 1. art. 1. Etiam mortis fuit, ut episcopiam, aliiq; Prælati in Ecclesia instituendi bona sua Ecclesiæ ipsi offerrent: quare D. Ambrosius eo tempore, quo Episcopus ordinatus fuit, aurum omne suum, & argentum, nec non prædialiter pauperes, & Ecclesiæ distribuit. Idem de Iovanne Eleemosynario Patriarcha Alexand. refert Leonius in eius vita: & Marelonem ducenta scilicet Ecclesiæ intulisse refert Tertul. de prescrip. cap. 30. quem morem probavit Iustin. in novel. 123. cap. 2. ibi: Si quis Episcopatum, sine ante suam ordinationem, sine post ordinationem voluerit propriis res, aut partem e-

rum Ecclesiæ offerre, enim sacerdotium accepit, non prohibemus, & omni condemnatione, & pena presentis legis liberum esse sancimus: sed etiam antea laude dignum iudicamus, quoniam hoc non est emptio, sed oblatio. Licet ut vitaretur omnia mali suspicio, Alex. II. in cap. ex multis 1. quest. 3. oblationem hanc prohiberet his verbis: Vt nullus cuiusque gradus pro Ecclesiæ beneficio aliquid audet conferre, nisi fabrica Ecclesiæ, seu etiam quod pauperibus su distribuit. Quia itaque ex presenti licentia accepi, nam si Episcopus, vel Canonicus, dum primo veniunt ad Ecclesiæ, bona sua, vel eorum partem putat, & liberaliter obtulerint, nullam simoniam commisisse dicuntur: si vero ex pacto, aut conventionione inita bona illa contulerint, simoniam committunt, ut docet, & probat Hallerius d. cap. 2. art. 1. quare tectè Innocentius in præfati improbat oblationem bonorum à Canonicis factam, quia ex pacto, & conventionione ea tradebat, videlicet ut in Canonicum recipitur, & bona ipsa pro præbenda retineat.

CAPVT XXXIV.

Idem Priori Cartusienſi.

PER tuas nobis litteras incimasti, quod cum G. in quadam domo Cartusien. Ordinis suscepisset habitum monachalem, termino suæ probationis completo, à dicecesano Episcopo fuit in Subdiaconum ordinatus: sed postmodum didicit ex relatione quorundam, quod licet idem Episcopus aliàs vir esset honestus, multo tamen commiserat vitium simoniz, propter quod monachus vehementi dolore turbatus in suscepto formidat ordine ministrare, nolens ab eodem Episcopo ad superiores ordines promoueri: unde cum eidem eremum exire non liceat, nec præfatus Episcopus ipsum, vel quemquam alium fuit dicecesis ab Episcopo alio ordinari permittat, postulat per Sedem Apostolicam edoceri, quid cum præfato monacho in ordine iam suscepto, & suscipiendis superioribus sit agendum. Nos itaque respondemus, quod idem monachus in ordine sic suscepto securè ministret, sed contra conscientiam ad superiores ordines non ascendat, ne forsan ædificet ad gehennam: licet ex eo, quod conscientiam nimis habuit scrupulosam, in difficultatem huiusmodi sit collapsus, quam vitæ non euadet, nisi depingat errorem.

NOTÆ.

1. **Cartusienſi.** Ita etiam legitur in tertis collectione, sub hoc titul. cap. 7. in hac secunda collectione legitur *Cartusienſi*, sed male, cum in præfati agatur de monacho Cathusienſi, & cum Præfato, hoc est Priore Magnæ Cartusiz loquatur Innocentius: sanctus enim Brunus Doctor Parisiensis Cathusianorum Ordinem instituit in Sabaudia, iuxta civitatem Gracionopolis, in loco huicceſſu, rapidus vallis, quem Cathusiam vocant: unde ab eo loco præfatus hic Ordo Cathusianorum dictus fuit, & etiam ab eo eremo, fratres Eremitæ dicti fuerunt. P. Venerabilis Cluſacenſis Monachus, ibi: *Chariſſimis, & magnificè honorandis ſervis Dei in eremo Chriſti ſervantibus.* Innocentius III. lib. 2. reſcript. 24. epistol. 105. ubi Briſquetur. De hoc mentio fit in cap. ſicut, de benedictis. Varia sunt cœnobita, tam in Hispania, Italia, quàm Gallia huius prælatissimi Ordinis, de quibus, & eorum mira ſanctitudo plura conſeſſerunt D. Petrus Dulaudo in c. h. Cathus. Petrus Sutor de vitis Cathus. Baronius tom. 12. annal.

anno 1286. num. 13. & anno 1091. num. 10. & anno 1107. num. 14. Tamaris à Salazar tom. 5. mart. tyrol. die. 6. Othobris, D. Ioseph. de Valles in fund. Cathus. Theophilus Raynaud. tom. 17. tract. de benedictis in Religioſos, fol. 409. Beyerlinch in Theatro vitz huius, verbo Cathusienſis.

COMMENTARIUM.

QUI scientes Episcopum aliquem simoniacum esse, ab eo ordines petunt, vel non iniuri se ordinari patiuntur, suspensionem incurrunt, cap. si quis à simoniacis, cap. de errore, 1. quest. 1. tam quia Episcopi simoniaci, & ita suspensi, ceterorum ordinis dare non possunt, quod non habent: tum ob immanitatem, sceleris simoniz, ut ita iuretur Episcopi, cum sciant neminem posse ab eis Ordines petere. Sed si per ignorantiam quis ab Episcopo simoniaci non simoniacè ordinetur, adhuc eget dispensatione, ut docuit Angelicus Præceptor 2.3. quest. 100. art. 6. ad 2. his verbis: *Nec propter præceptum eius, nec etiam propter excommunicationem, debet aliquem recipere ordinem ab Episcopo, quem* scis

ſic ſimoniaci promotum; & ſi ordinetur, non recipere ordinis executionem, etiamſi ignoretur eum eſſe ſimoniacum; ſed indigere diſpenſatione, quia nullus debet obedire alicui ad communicandum ſibi in ſullo illicito: ille autem, qui eſt ipſo iure ſuſpenſus, & quoad ſe, & quoad alios, illicitè conſert ordinem. Unde nullus debet ipſi communicare recipiendū ab eo quacunque ex cauſa: ſi autem ei non conſtat, non debet peccatum credere alterius; & ita cum bona conſcientia debet ab eo ordinem recipere. Addit tamen: Si autem Episcopus ſit ſimoniacus aliquo alio modo, quam per promotionem ſuam ſimoniacè ſacram, poteſt ab eo ordinem recipere, ſi ſit occultum, quia non eſt ſuſpenſus quoad ſe ipſum. Docent Suarez de conſue. diſp. 3. l. ſect. 4. Hallier. de ſacris elect. ſect. 7. cap. 1. art. 3. §. 3. Illud tamen valde olim dubitatum fuit, an ſubditus à Priſtato ſuo, quem priuatum ſimoniacum fuiſſe ſcit, ordinem recipere poſſit. Et Hugo Cardinalis in cap. uis 9. quaſt. 9. affirmavit, poſſe. Ioannes Andreas, & Bernardus in præſenti textu negant, quorum ſententia probatur ex hoc textu, ubi Innocentius iubet monacho Carthuſienſi, qui

gradum Sobiſconatus receperat ab Episcopo, quem poſtea ſcietat ſimoniacum eſſe, vt in gradu ſuſcepto miniſtraret; ſed contra conſcientiam ad ſuperiores ordines non aſcendat: & ita olim etiam etiam ob priuatum ſcientiam ſimoniæ ab Episcopo eo ſcilicet, non licebat ab eo ordines recipere. Ven. uia plura mala inde contingebant ex eo, quod ita auctoritate liceret ab Episcopo proprio ete, nec ab eo velle ordines recipere proprio diſpicionem, aut tunc priuatum ſimoniz, vt reſcriuit. Aus in vita Sancti Gualberti, die 12. Iul. cap. 6. Petrus Damianus lib. 8. epiſt. 11. ad Cines Florentinus, obtrinit, vt poſt Extrauag. Martini V. Ad cuiſanda, tantum Episcopum nocenti ſimoniacum teneatur ſubditus vitare, vt probat Hallierius ſuprà, diſt. 5. j. nec hodie præſens textus procedit, nec etiam monachus Carthuſianus, qui ex priuata tantum nobilitate audierat fuiſſe Episcopum proprium ſimoniacum, tenebatur illum vitare; immo potius ab eo ordines recipere valebat. Preſequuntur Hallierius, & Suarez ubi ſuprà.

CAPVT XXXV.

Idem • Cantuar. Archiepiſcopo.

IN tantum peccatis exigentibus corda quorundam ſimoniaca prauitas deprauauit, vt in exterminio canonicæ ſanctionis, & in eluſione quodam modo diuini iudicii lucris temporalibus inhiantes, ac dicentes in corde ſuo: Non eſt Deus, ſimoniam ſub honeſto nomine pallient, quaſi mutato nomine culpa transferatur, & poena. Verum nec Deus ſecundum Apoſtolum irridetur, nec tales Simonis ſectatores, eſſi temporale in præſenti forſan poenam euadant, in futuro tamen poenam non effugient ſempiternam, cum nec honeſtas nominis criminis malitiam palliabit, nec vox poterit abolere reatum. Sanè peruenit ad audienciam noſtram, quod cum olim quidam ſuffraganei tui pro chriſmate Eccleſiæ contra canonicas ſanctiones certam accipere conſueuerint poennæ quantitatem, meruentes poenam canonicam, & correctionem tuam eludere cupientes, tempus faciendæ ſolutionis anticipet, recipientes in media Quadrageſima, quod recipere conſueuerunt poſt Paſcha: & vt cauſam accipiendi diſſimulem, nomen denariorum variant, denarios, quos prius chriſmales, ſecundò paſchales dicebant, conſuetudinem mediæ Quadrageſimæ noucumpantes. Quidam verò nec tempus ſolutionis, nec ſoluendorum nummorum in aliquo variatur, veterem per omnia conſuetudinem imitantes. Quia verò expreſſius exprimit venditionis ſpeciem, qui prius recipit pretium, quàm rem conferat pretioſam, quamquam tempus recipiendæ mercedis diſſimulando diſtulerit, & diſſimulauerit differendo: licet vtrumque in talibus periculolum ſit, vel exiſtat, cum gratis gratia conferenda ſit, ne ipſam contingat, & rem, & nomen gratiæ demereri: ſ. e. per A. ſ. m. atque diſtrictè præcipimus, quatenus auctoritate noſtra fretus, & tuâ, taliter exceſſus corrigas ſupradictos, ſuffraganeos tuos, & officiales eorum man. præ. per cen. ccc. & ſub. ap. ob. à tam illicita exactione compedeſcens, quo ad nos de cætero ſuper hoc quæſtione deferri non poſſit, nec aliorum culpa tibi ob tuæ negligentiz meritiſ impuſetur ad poenam: eademque auctoritate ſuffultus, prauam illam conſuetudinem de tua prouincia ſtudeas abolere, per quam pro Eccleſiarum inueſtitura, Archidiaconi marcham argenti, minores verò Decani vaccam albam ſibi dari poſtulant, vel certam ſolui pecuniæ quantitatem. Dat. Lacer. vj. Kal. Iul.

NOTÆ.

A Cantuarienſi.] Ita etiam legitur in tertia collectione, ſub hoc titulo, de exceſſ. Prælat. cap. 1. & in epiſtolis editis à Sirloto, fol. 337. Ex quo reſcripto reſcripto litteram huius textus. De

Cantuarenſi Metropoli egi in cap. 2. de reſcript.

b Culpa transferatur.] Vt de aliis notui in cap. 15. hoc titulo.

c Canonicæ ſanctiones.] Conſeſſas ſuprà in diſt. cap. 6. ubi commentarium huius textus inuenies.

d Recipit

2.

d. *Recipit pretium.*] Vnde secundum leges civiles emptor tenetur pretium offerre pretium, quam venditor rem venditam tradat, l. *Julianus*, §. *offerre*, ff. de actionibus empti; fortiusque ostenditur venditio, quando pretium rei præcedit eius traditionem. Ratio est, quia traditio rei potest referri ad

plures contractus: sed interventio pretij solam emptionem respicit.

e. *Officiales.*] Idem vicarius, ut notavi supra in titulo de officio Vicarii.

f. *Iniunctura.*] Hanc ultimam partem exposui supra in cap. cum Ecclesia.

CAPVT XXXVI.

Idem.

PER tuas nobis litteras intimasti, quod cum D. lator presentium vellet in Subdiaconum ordinari, & certum titulum non haberet, quendam presbyterum exoravit, ut ipsum ad Ecclesiam suam titulum præstaret: quod cum ille facere recusaret, ipse illi firmiter repromisit, quod nunquam, si præstaret eundem, in Ecclesia sua aliquam peteret portionem: & sic ad præsentationem ipsius exitit ordinatus, nec, ut asserit, in hoc se egisse illicitum aliquid intellexit. Vnde cum postmodum vellet in Diaconum promoueri, Episcopo commovente, ne quis interveniente promissione aliquà ordinatus accederet, idem recordatus promissionis istius, à susceptione ordinis Diaconatus cessavit, hoc tibi humiliter confitens, & per te postulans edoceri, utrum ex compromissione huiusmodi reus esset, & an liceret eidem in suscepto Subdiaconatus ordine ministrare, & ad ordines ascendere ulterius: unde fraternitas tua duxit Ap. Sed. oraculum requirendum. Nos igitur inquisitioni tue taliter respondemus, quod nisi cum eo fuerit misericorditer dispensatum, nec ad ordines superiores ascendere, nec in suscepto debet ordine secundum rigorem canonicam ministrare.

NOTÆ.

1.

a. *Idem.*] Ita etiam legitur in quarta collectio-
ne, sub hoc titulo, cap. 1. nulli tamen exprimi-
mus cui referatur Pontifex.

b. *Titulum.*] Idem Ecclesiam, iuxta tradita la-
te in cap. 4. de prob.

c. *Præstaret.*] Iuxta morem antiquum, se-
cundum quem Parochus coadiutorem præstaba-
bat, parte sui beneficii illi assignata, ut probavi in
cap. extirpanda, de Probend.

2.

d. *Administrare.*] Quia suspensus erat, eum si-
moniacè ordinatum esse, non quia absque titulo,
seu cum titulo falso promotus fuisset; nam ex eo
suspensionem non incurreretur, ut probavi in cap. 4.
de prob. sed propter pactum initum ipso cum pre-
sbytero non petendi portionem aliquam fructuum
in ipsa Ecclesia, ut similiter in cap. final. hoc titulus.
eodem suspensio incurratur ab eo, qui pacto con-
venuto promisit se non præstiturum necessaria ab
Episcopo ordinante, qui illi de necessariis providere
cogebatur, iuxta tradita in dict. cap. 4. nam
cum iste remiserit quid temporale, videlicet pat-
rum fructuum, seu sustentationem sibi debitam,
ut spirituale, id est sacrum ordinem, assequeretur,
ideo simoniam commisit; nam remittere idem est

se dare: probant in terminis textus in cap. alia 8.
quasi. 3. cap. veniens, et 2. de testibus. Faciunt textus
in l. si mulier 10 ff. de conditi. caus. dat. l. qui etiam,
ff. de column. Docent Vigolinius de simonia tabul. 4.
num. 3. Quarta in simonia Bul. verbo Ordo, Glo-
balinus de simon. cap. 16. consell. 5. Vnde deducunt
Suzarez tom. 1. de relig. lib. 4. de simon. cap. 38. num. 5.
Azor lib. 12. thesaur. moral. 3. part. cap. 15. quest. 1. hanc
suspensionem etiam incurrit cum, qui extraneo
sibi constituiti patrimonium ad suscipiendos sa-
croz ordines, promittit se nihil unquam petitu-
rum. Sed contrarium, immò in hoc pacto testi-
tuendi patrimonium, aut non petendi ab eo, qui
illud ad ordines suscipiendos constituerat, nullam
committi simoniam, nec per consequens suspen-
sionem incurrere, docuerunt Nanarius ad titulus.
de temporibus ordin. consell. 17. Toletus lib. 1. summa,
cap. 48. num. 6. Calycopais tract. 17. oper. moral.
disp. 3. part. 3. num. 2. Garcia in part. de benefice,
cap. 5. num. 165. Diana part. 2. reall. 2. refal. 5. Barbosa
de potest. Episcopi alleg. 20. num. 29. alij cengelii à
Giballino dict. consell. 5. quia ista constitutio patri-
monij non est aliquid spirituale, nec veta præsen-
tatio ad sacros ordines, ut que in hoc texto præces-
sit; unde non potuit committi simonia, & per con-
sequens nec incurrere suspensio, de qua in hoc textu.

CAPVT XXXVII.

Idem.

CONSULERE. Ex infra: Quicumque vicedominatum, vel aliam ecclesiasticam ad-
ministrationem per pecuniam administrare voluerint, tam ementes, quam ven-
dentes cum Simone mago percelluntur, & ab illa Ecclesia, in cuius contumeliam dare
pecuniam, & accipere voluerint, iuste excluduntur.

NOTÆ.

NOTÆ

1. ^a *Idem.*] Ita etiam legitur in quæst. collectio-
ne, *sub hoc titul. cap. 2.* nullibi tamen exprimi-
tur cui referibat Innocentius, nec inter eius epi-
stolas hucusque excusas textus hic reperitur.
2. ^b *Vicedominum.*] Vicedominus scribitur
in lute canonico pro ea persona, quam constituit
Episcopus pro hospitibus recipiendis, & elemo-
syois distribuendis, aliisque rebus Ecclesie per-
agendis; quem si Episcopus non designabat, olim
Clerus eligebat, *cap. volumus, cap. Diansi, 89.*
dist. & aliquando inutilitatem exercebat, ut
constat ex lib. 3. Capituli Caroli, cap. 26. ibi:
Mandet Comes, vel Abbat, vel Vicedominus, vel illi
quicunque locum Episcopi, vel Abbatis tennerit, re-
reddat ei reum. Notavit Filescus in cap. 4. 6. 5. de
offici. Ordin. & plura congeriunt P. Gregorius
tit. 9. cap. 5. & de ecclesiast. hierarch. quæst. 2. proam.
*§. 5. nam. 13. & nos super in cap. 1. de colum-
nis.*

COMMENTARIUM.

3. ^c Errum est, per sacros eaonnes prohiberi ven-
ditionem, seu quolibet alienationem offi-
ciorum Ecclesie, ut in canone a. Concilij Chal-

cedon. *cap. Saluator, 1. quæst. 3.* & in tali ven-
ditiōe non committi simoniam contra ius diui-
num, aut naturale, omnes etiam fatentur, et
probat Victoria in *relelt. de simon. cap. 16. & 17.*
Cetera huius ecclesiasticæ communis opinio est,
simoniam in tali venditione committi, à lute ca-
nonico prohibitam, *dist. cap. Saluator, extraneus, 2.*
hoc titul. ibi: Officiū ecclesiasticū, & quibuscumque
beneficiū. Ita cum aliis docuerunt Sanchez lib. 4. de
simonia, cap. 19. num. 8. Sed nouit Gibalinus,
qui nullam veterem simoniam agnoscit, ex solo iu-
re positūo allectit in venditione horum officio-
rum committi peccatum turpis lucti, & quæstus,
quod in propriis loquutionibus simonia dicitur. Ita
docet Gibalinus *d. quæst. 20. consil. 1. 3. & quæst. 23.*
consil. 7. Sed cum discretus hæc opinionum tan-
tūm consistat in proprietate, vel in proprietate si-
moniz, parum iō his reffellendis, vel conciliandis,
daxi in hærendum, cum expressit iō hoc textu,
& in dist. cap. Saluator, ut simonicea improba-
tur talis venditiō. Illud omittendum non est,
quod cum hæc prohibitio sit tantūm ioris positi-
ui, potest contrariā consuetudine introdaci hu-
iusmodi venditiō, ut plurius in Ecclesiis inuol-
uit circa venditiōnem officij laxioris, vulgō Per-
signero, & similitum.

CAPVT XXXVIII.

Idem in Concilio Later.

Sicut pro certo didicimus, in plerisque locis à plerisque personis quasi columbas in
stemplo vendentibus siue exactiones, & extorſiones turpes, & prauæ pro^b con-
secrationibus Episcoporum, & benedictionibus Abbatum, & ordinibus clericorum:
estque taxatum, quantum sit isti, vel illi, quantumve alteri, vel alij persoluendum
& ad cumulum damnationis maioris, quidam turpitudinem & prauitatem huiusmo-
di nuncunt defendere per consuetudinem longo tempore obseruatam. Tantum igitur
abolere volentes abusum, & consuetudinem huiusmodi, quæ magis dicenda est
corruptela, penitus reprobamus, firmiter statuantes, ut pro his, siue conferendis, si-
ue^c collatis, nemo aliquid quoquam prætextu exigere, aut extorquere præsumat: alio-
quin & qui receperit, & qui dederit huiusmodi prædium omnino damnatum, cum
Giezi, & Simone condemnatur.

NOTÆ.

1. ^a *Astrucensi.*] Generali videlicet celebrato
sub Innocent. III. vbi *cap. 64.* reperitur
textus hic, & canonem hunc confirmauit Ho-
nor. III. in *cap. 2. hoc titul. in 5. collect.* vbi ita scri-
bit: *Cupiditati quærendam, qui quasi columbas in*
stemplo vendentes, facere solent exactiones, & extor-
siones turpes, & prauas pro consecrationibus Episc-
porum, benedictionibus Abbatum, & ordinamentis
clericorum, prauitatem huiusmodi intendendo defen-
dere per consuetudinem longo tempore obseruatam,
tam in Astrucensi, quam in generali Concilio suis
salubriter obuiam, consuetudine huiusmodi, qua
corruptela magis dicenda est, penitus reprobata, &
statuta, ut nemo pro his, siue conferendis, siue colla-
tis, aliquid quoquam prætextu exigere, aut extorque-
re præsumat. Nos igitur vniuersæ Generali consen-

tionibus inhaerentes, auctoritate presentium firmiter
inhibemus, ne quis pro benedictione, siue installatione
Abbatum, qui ad monasterij vestri regimen fuerint as-
sumendi, presentiam aliquid à vobis exigere, aut præ-
textu cuiusquam consuetudinis extorquere: vobis nubi-
lemus indulgentes, ne quid iniuri ob causam dare co-
memini sapradictam.

^b *Consecrationibus.*] De quibus egi in *cap. c.*
hoc titul.

^c *Benedictionibus.*] De quibus agemus infra in
cap. ne Dei Ecclesia.

^d *Consuetudinem.*] Textum hunc exposui, &
commentarium dedi super in *cap. ad nostram.*

^e *Collatis.*] Dammodo quæ posita dantur,
non gratuitè dantur; nam gratulam donationem
approbavit Gregorius in *cap. 1. hoc titul. vbi*
notauit.

CAPVT XXXIX.

Idem in ^a eodem.

Quoniam simoniaca labes plerasque moniales infecit, ut vix aliquas sine pretio recipiant in sorores, ^a paupertatis prætenu volentes huiusmodi viuum palliare: ne id de cætero fiat, penitus prohibemus, statuentes, ut quicumque de cætero talem commiserit prauitatem, tam recipiens, quam recepta, siue sit subdita, siue prælata, sine spe restitutionis de suo monasterio expellatur, in locum arctioris regulæ ad agendam ^c perpetuam penitentiam retrudenda. De his autem, quæ ante hoc Synodale statutum taliter sunt receptæ, ita duximus providendum, ut remotæ de monasteriis, quæ perperam sunt ingressæ, in aliis locis eiusdem Ordinis collocentur. Quod si fortè propter nimiam multitudinem alibi nequiverint commodè collocari, ne damnablem in sæculo vagentur, recipiantur in eisdem monasteriis dispensatiuè de nouo, muratis prioribus locis, & inferioribus assignatis. Hoc etiam circa monachos, vel alios regulares decernimus obseruandum. Verum ne per simplicitatem, vel ignorantiam se valeant excusare, præcipimus, ut diocesani Episcopi singulis annis hoc faciant per suas dioces publicari.

NOTÆ.

1. ^a *[Odem.]* Luerantensi videlicet Generali, vbi cap. 65. reperitur textus hic, nec non in quarta collectione, *sub hoc titul. cap. 4.*
 2. ^b *[Paupertatis prætenu.]* Et ita paupertas erat affectata, non vera; nam si vera esset, pro su-

stentatione ipsius aliquid monasterium exigeret valebat, ut probatur in cap. veniens, hoc titul. vbi commentarium dedit.

^c *[Perpetuam penitentiam.]* Quæ detrusio propria fuit clericorum, & monachorum, ut probat Gubalinos de clausur. regul. dist. 3. cap. 2. & de ea nonnulla addidit in cap. 1. de regul.

3.

CAPVT XL.

^a Idem in eodem.

Adiuimus de quibusdam Episcopis, quod decedentibus Ecclesiarum Rectoribus ipsas interdito ^b lubiciunt, nec patiuntur alios in eisdem ^c institui, donec ipsæ certa summa pecuniæ ^d persoluantur. Præterea cum miles, aut clericus domum Religionis ^e ingreditur, aut apud Religiosos eligit sepulturam, etiam si nihil religioso loco reliquerit, difficultates ingerunt, & malitias, donec aliquid muneris manus contingat eorum. Cum igitur non solum à malo, sed etiam ab omni specie mali sit secundum ^f Apostolum abstinendum, exactiones huiusmodi penitus inhibemus: quod si quis transgressor extiterit, exacta ^h duplicata restituat, in utilitates locorum, in quorum fuerint pendium soluta, fideliter conuertenda.

NOTÆ.

1. ^a *[Odem.]* Luerantensi videlicet generali sub Innocentio III. vbi cap. 66. reperitur textus hic, & in quarta collectione, *sub hoc titul. cap. 5.*
 2. ^b *[Subiciunt.]* Quod facere non poterant, cum quia pro causa civili non debet Ecclesia interdico subiecta, cap. 3. de penis: tum ne impediatur Sacramentorum administratio.
^c *[Institui.]* Aut per se aut, corporaliter per Atribidiationum, ut in cap. ex frequentibus, de institut. diximus.
^d *[Persoluantur.]* Contra tradita supra in cap. eum in Ecclesia.
 3. ^e *[Miles, aut clericus.]* De milite ideo in præfati specialiter agitur, quia militibus olim prohibitum erat monasterium ingredi, nisi prius probata eorum vita fuisset ab Episcopo, cap. legem, 53. dist. De clerico etiam, quia Episcopo videbatur bona ab eo inuita Ecclesiæ acquisita esse.

se illi relinquenda prius quam vitam monasticam profectetur, cap. 1. & 3. quæst. 1.

^f *[Ingreditur.]* Similem abusum in Paris: hoc improbauit Honorius III. in cap. 2. de regul. in 5. compil.

^g *[Apostolum.]* 1. ad Thim. cap. 5.

^h *[Duplicata.]* Sed tunc obstat textus in cap. de hoc, hoc titul. vbi tantum pretium simoniace acceptum restituitur absque alio simplio: ergo non rectè in præfati duplicatum pretium restitui iubetur. Pro cuius difficultatis solutione dicendum est cum Binsfeldio in præfati, textum in disto cap. de hoc iure, & similes procedere, quando ex mutua conventionione dantis, & accipientis pretium simoniacè intercessit; in præfati vero textu agitur, quando non ex voluntate dantis pretium, sed à superiore per extorsionem, & conuersionem exactum fuit, quis tunc in penam simili extorsionis duplicatum pretium restituat.

4.

CAPVT XLI.

Idem in^a eodem.

AD Ap.n. aud. frequenti relatione peruenit, quod quidam clerici pro^b exequiis mortuorum, & ^b benedictione nubentium, & similibus pecuniam exigunt, & extorquent; & si forte eorum cupiditati non fuerit satisfactum, impedimenta fictitia fraudulenter opponunt: è contra verò, quod laici laudabilem consuetudinem erga sanctam Ecclesiam piâ deuotione fidelium introductam ex fermio hereticæ prauitatis nituntur infringere sub prætextu canonice pietatis. Quapropter has prauas exactiones fieri prohibemus, & piâ consuetudines præcipimus obseruari, statuentes, vt liberè conferantur ecclesiastica^a sacramenta: sed per Episcopum loci, veritate cognitâ, compeſcantur, qui malitiôsè nituntur laudabilem consuetudinem imutare.

NOTÆ.

I. ^a *Odem.*] Lutrensi videlicet, celebratio sub Innocentio III. vbi cap. 67. reperiuntur verba in præsent relata, & io quarta collectione, sub hoc ritual. cap. 6.

^b *Exequiis mortuorum.*] De quibus egi in cap. suam, hoc ritual. vbi commemoratio huius partis dedl.

^c *Benedictionibus.*] De quibus plura adduxi in cap. 1. de secund. nupt.

^d *Plus consuetudines.*] Hæc verba exposui supra in cap. cum in Ecclesia.

L. ^e *Sacramenta.*] Si refertas ad exequias mortuorum, & benedictiones nupiarum, de quibus proximè egerant Patres, dictio sacramenta, po-

nitur pro sacramentalibus, vt iam notauimus in decap. eius in Ecclesia. Si verò accipias pro aliis Sacramentis, verum est pro nullo ex eis pecuniam exigi posse, vt de Baptismo cauetur in can. 48. *Constit. Niber.* ibi: *Emendari placuit, ut qui baptizantur puerum in chancam non mittant, vbi notauimus de confirmat. probauimus in cap. ea 15. hoc ritual. de Pœnitentia in cap. nemo, hoc ritual. de Eucharistia in can. 23. 6. Synodi, relatio in cap. nullus 1. q. 1. ibi: Vt nullus, sine Episcopo, sine Presbyter, sine Diacono, immoſculatam præbens communionem ab eo, qui communicat, eius participationis gratia abolet, vel quamuis aliam speciem exigit. De Ordine in cap. 1. hoc ritual. de Matrimonio in cap. suam, hoc ritual. & ita docet Vgolius, Redossus, & Gibalinus in tract. de simon.*

CAPVT XLII.

Vniuersis Abbatibus, & Fratrib.^a Cisterciens. Ordinis.

NE Dei Ecclesiam, quam lauit proprio sanguine Iesus Christus, macula scditatis coinquinat, ruga dupliciter deformet, cupiditatis spurcitia, omnium malorum radix, & venalitatibus deformitas, quasi ruga sub consuetudinis prætextu contracta, eliminandæ sunt penitus ab eadem, vt dispensatio mysteriorum Dei, & ipsa mysteria gratis accepta, Gieciticâ prauitate prorsus abolitâ, charitate gratuita conferantur, quæ vendere, seu emere, quàm detestabile, quàmve periculolum existat, liquidò perpendi potest ex eo, quod Dominus vendentes, & ementes oues, & boues eiecit de templo, & cathedras vendentium columbas euerit. In eiectione denique vendeorum, & ementium facinoris inquinantis virumque exprimitur detestatio, & in cathedrarum euerſione monstratur, cui pœnæ subiaceant hi, qui præſunt, vendentes Dei dona, & Ecclesiæ sacramenta. Vt igitur huiusmodi facinus, quod quos coinquinat, æquat, Prælatos, & subditos non possit inficere quoquo modo, auctoritate Apostolica districtius inhihemus, ne quis Archiepiscopus, vel Episcopus, Archidiaconi, vel ^b Officiales ipsorum à quoquam in Abbatem electo, pro^b benedictione, seu ^c installatione, vel recipienda professione ab eo, sub consuetudinis prætextu cuiusquam^a paleſtridum, seu aliud quidquam, quocumque nomine censetur, exigere, vel extorquere præſumant, vobisque sub prætextu huiusmodi exacta raliter ne præstetis interdiciamus, cum non solum à malo, sed à mali sit specie abſtinentum. Installationis quoque solennitates fieri prohibentes adiciamus, vt Archiepiscopi, & Episcopi ea sint ^a forma professionis contenti, quæ ab origine vestri Ordinis noscitur instituta, cuius tenorem ad maiorem euidentiam huic nostræ paginæ duximus inferendum: Ego frater Abbas Cisterciensis Ordinis, subiectionem, reuerentiam, & obedientiam à sanctis Patribus constitutam secundum regulam

sancti Benedicti, tibi Domine Episcopo, tuisque successoribus canonicè substituendis, & sanctæ Sedi, salvo ordine meo, perpetuò me exhibitum promitto.

NOTÆ.

I. **C**isterciensiu.] Ita testitur inscriptionem, & litteram huius textus ex quinta collectione Honorij III. edita à Cironio, ubi sub hoc titulo, cap. 1. reperitur textus hic: ex Mantiqueque tom. 4. annal. Cisterc. anno 1214. cap. 5. ubi huius textus historiam, & litteram refert: cum enim temporibus Honorij III. Episcopi, Archidiaconique renuerent Abbates Cisterciensiu Ordinis installari, nisi prius equum sibi darent, nec non in obedientia à predictis Abbatibus prestanda, verbis illa, *salvo Ordine suo*, esse reiicienda intendentes, eum inutilis quodammodo redderetur promissio obedientie, conqueſtus fuit Iacobus Abbas Cisterciensis, de predictis duobus excessibus totius Honorio, qui vt hæc nouis grauamina à monachis Cisterciensibus tolleret, presentem edidit constitutionem, & similem circa ordinem Præmonstratensium edidit Innoc. III. lib. 1. epist. in edit. Colonia, fol. 92. in hæc verba: *Significauerunt nobis dilecti filij N. Abbas, & Fratres Præmonstratensium, quod cum dilectus filius Hego de Petrapontæ Archidiaconus Laudunensis in promotione ipsius Abbatis palefridum ab eo obtinere consuetudinem prauam consuetudinis exegisset, quia super hoc ei acquiescere recusat, conuersum quemdam ipsum de equitura, cui inſederat, deponere, & eum scilicet abducere per violentiam non expauit. Vnde nos eidem Archidiacono per litteras nostras mandauimus, vt similia de cætero non præsumeret, immò de hoc ipso eidem Abbati satisfactionem exhibere competeret. Idcirco discretioni vestre per Apostolicæ scriptæ mandamus, quatenus, si dictus Archidiaconus ea, quæ promissa sunt, adimplere noluerit, tam cum, quam alius, qui pro benedictandis, installandis, vel deducendis ad Sedem, tam Abbatibus, quam aliis ecclesiasticis personis, palefridum, vel aliud exigeret, vel extorqueret præsumpsit in possessionem, vel habentiam præsumpsit, nisi ad communionem vestram à sua præsumptione desisteret, & de perceptis taliter satisfecit competeret, excommunicationis censurâ, appellatione postpositâ percellat: & sicut excommunicatus faciat ab omnibus archiepiscopis, episcopis, & aliis, quos non omnes, duo vestrum, &c. Datum Romæ, &c. I. V. Idus Maij. Et Abbati sancti Maglorij Parisiensis. lib. 3. regest. 14. epist. 143. super eadem re ita referbit: Cum ex iniuncto nobis Apostolicæ officio Ecclesiæ omnium sollicitudinem gerere videretur, ea corrigere nos oportet, quæ interdum contra sacrorum canonum sanctiones in eis per ipsorum ministros imprudens attentantur. Sed ad audientiam nostram vobis referentibus est delatum, quod cum Abbatem vestrum conuigere de nouo in sede, propter moris est, collocari, Archidiaconus Parisiensis pro installatione ipsius centum solidos Parisiensis monete à vobis minor extorqueat: huiusmodi exactionem in hac annuum conuicere. Quia igitur talis exactionis est ratio contraria, & sanctorum Patrum institutibus inimica, ne id de cætero aueretur, auctoritate presentium districte inhibemus. Nulli ergo, &c. vsque nostra inhibitionis infringere, &c. Datum Later. III. Non. Octob. Pont. N. anno XIV. De Ordine Cisterciensis. nonnulla adduximus in cap. 6. de rescriptis.*

b Officiales.] Id est vicarij, vt probatur in cap. 1. de offic. vicar.

c Benedictione.] De qua egi in cap. 1. de supplem.

d Installatione.] Sællus est locus cuiusque clerici, aut religiosi in choro. Cæsar lib. 1. bistor. memorab. cap. 6. ibi: *Intervit chorum flante Priore in stallis suo.* Et lib. 5. cap. 5. In nocte vero sancti Cusiberti, cum flaret in choro Abbas, tunc simplex monachus vidit intra Presbyterium duos demones intrare, & paulatim adscendere ad stallum Abbatis. Et paulò post: *Dominus Eustachius, & Prior Hermannus, qui hæc viderent à stallis suis secesserunt.* Mathæus Parisius in Henrico III. ad annum 1096. ibi: *Clarensis intrantes inquisierunt à quodam ibidem morante, quodnam esset stallum Decani.* Et in vita Ioannis XXIII. Abbatis sancti Albani: *Consecratus namque in duplicibus stibis chorum miratus terrere, & reliquis diebus in stallis suis flans chorum regere, & omnia alacriter canere.* Innoc. III. lib. 4. epist. 5. ibi: *Ipsæ autem confirmationem obtinens stallum Præpositi sibi restituit.* Illustrant Voſsius de vit. ferm. lib. 2. cap. 17. *Verba in aduersar. cap. 44. & notissimas in cap. 10. et 7. de rescriptis.* Vnde installare accipi ut pro ponere in sede, & corporaliter inſistere, si in possessionem mittere, quæ installatio in thronizatio dicitur à Iustiniano in novel. 123. cap. 3.

e Palefridum.] Idem de Præmonstratensibus cauit Innocentius III. lib. 1. epist. 198. & 318. Palefredus, Palefredus, & Palefridus corrupta sunt ex *Paraueredus*, & ita à *Paraueredis* Palefredum deduci docuit Cuias. ad tit. C. de cursu publico. Vctedarij erant equi minores, qui cursui publico destinabantur, & velociores. *Paraueredarij* verd erant equi maiores, & agminales, leg. vlt. Cod. de cursu publico, leg. 50. Cod. Theodos. eod. tit. De his veredis, & vctedariis, qui eis inſidebant, agitur cap. 8. Elther, ibi: *Egreſſi sunt vctedarij celeres munus præferentes.* Cassiodorus lib. 5. epist. 11. ibi: *Si possideretis Paraueredum assidue suggerere esse fugiatis, et equorum tamis cursu atteratur.* Ausonius ad Paulinum.

Vt celerem munus, vel raptum terga veredum Consendas, prope, dummodo iam venias.

Martialis lib. 14. epig. 36.

Stragula succitili venator summe veredi.

Plura de his Salmut. ad Pancirolam lib. 2. memorab. cap. 16. Bulengerus lib. 3. de Imper. cap. 20. & 21. Liphis lib. 2. de militia, dialog. 12. & lib. 3. dialog. 7. ab his *Paraueredis* dictos fuisse equos Palefredos, quos nos vulgò dicimus Palefres, docuit Cironius in præfati, q. 1. voce vsi sunt Vvillermus Tytilus lib. 13. belli sacri, cap. 27. *Miserat predicto nobis viro per quemdam familiarem suum palefredum altissimum, argento firmatum, sponam, & ceteris argenteis faleris radiatum, exornato coopertum altissimum, ut in omnibus caudis micus confunderet.* Radeticus Fringensia lib. 3. cap. 26. *Sed etiam miles pacificè ad castra accessit, sedens in palefrido, sine scuto, & armis, si quis eum laſerit, pacis violator indicabitur.* Cælius lib. 12. miracul. cap. 12. *Hic cum dicit quendam suum, qui optimus erat, prodidisset palefredum, seruum suum ad diversa loca misit ad inuestigandum illum.* Mathæus Parisius anno 1190. ibi: *Cepit de singulis civitatibus Angliæ*

Anglia duos palefidos, & eisdem sumarios. Et alij relati à Vossio de *visis* ferm. lib. 3. cap. 31. Lindembrog. in *Glossario*, verbo *Palefredus*, Bosquetus ad *Innoc.* III. lib. 2. *epist.* 42.

[*Forma professionis.*] Reuerentiam Episcopo debent omnes Abbates ipsius diocesis: & ideo vel ante, vel post benedictionem eam præstare debent. Concil. Emerit. *can.* 11. olim fiebat charta ipsa professionis super altare imposita. *Innoc.* III. lib. 1. *regestr.* 3. *epist.* 57. ibi: *Professione huiusmodi super altari oblata.* Gostidus *Vindocin.* *episc.* 10. ibi: *Est à lingua* (scilicet simonia) *iam publicè recitatur illa promissio:* sit à manu, quando charta, quæ continetur scripta, ponitur super altare. luxia veterem morem, quem illustravi in *cap.* 2. de *confus.* Sed citra modum præstandi ipsam professionem Episcopi varios excessus commitebant, dum maiorem obedientiam cum aliis sibi iure non debitis exigebant, vt conquerebatur Gostidus *Vindocinensis* *episc.* 105. his verbis: *Sunt quidam Episcopi, qui pro benedictionibus Abbatum sub nomine professionis ab eis exigunt, quod est christiana professioni valde contrarium.* Nam cum professio alie in diuina laude sit, alia pro peccatorum depositione: ipsa Dei laudem non facit, sed minuit; nec deponit peccata, sed apponit. Nec sacra fidei professio recto nomine dicitur, sed execranda promissio, quo clares Ecclesia agitare, & vnicuique, ac singulare eius officium violare conatur. Ita neque veritate, neque auctoritate inuenta, sed consuetudine, & hominum cupiditate repleta, triplici genere simonia contra sanctam Ecclesiam inculatur; quoniam simonia à lingua, simonia à manu, simonia ab obsequio ibi committitur: *Est à lingua*, cum publicè recitatur illa promissio: *sit à manu*, quando charta, quæ continetur scripta, ponitur super altare: *sit ab obsequio*, cum ipsum malè promissum subiectionis obsequium seruatur. *Qui sic agit, forsitan dicit: Pro benedictione non quero pecuniam.* Immo suis amplius exigit, quia hominis personam. Sicut anima plus est, quam corpus, ita corpus simul, & anima, tota videlicet hominis persona, multo plus est, quam eius pecunia. Diuina lege & manifestis ratione pro-

batur, quia benedictio minime datur gratis, quam præcedit Abbatis illa proscriptio, vt quod desiderat, assequatur. Non enim faceret illam, si repulsam non pateretur. Illud etiam quod bonum est, sit perniciosum cum promissio; nam bene, vel male suscipitur. Nam pecunia, quam Simon Magnus obtulit Petro, bona quidem erat, sed quia malè obtulit illam, damnum à Petro prædicatur; & ideo nec euangelica, nec canonica, sed nomenclaria est illa, qua dicitur benedictio, quam, qua falso nomine vocatur professio, præcedit, sine subsequitur. *Iti venditur simul, & emitur primum Ecclesia sacramentum.* Christus etenim primus hoc sacramentum per semetipsum fecit, consecrationem scilicet Apostolorum. Et paulo post sequitur: *Canonem igitur Episcopi, & Abbates, qui ideo dicuntur Christi vicarij, quoniam Christi creduntur agere vices, ne contra Christi auctoritatem, qui gratis tribuit, & eius vocem, qui gratis dari monet & præcipit, cupiditatem sibi consuetudinem sequantur, quæ fides, Ecclesia libertas, & castitas simul corrumpitur.* Non mediocriter raque delinquit Episcopus, nisi gratis dederit; & Abbas, nisi gratis acceperit, similiter peccat, quia faciemus, & obsequentem par pena infringit; & facinus, quæ inquinat, aquat. Refert Iuretus in *notis* ad *epist.* 195. *Carnotensi.* Quare Honorius III. in presenti præferibit formam sub qua Abbates Constituentis Ordinis professionem Episcopis suis facere debent. Et Abbates exempti benedictionem quidem ab Episcopo suo recipere debebant, non tamen ei professionem obedientiam facere; nam professio, quem Iuo Carnotensis exegerat à Gostido Abbate *Vindocinensi* inter ordinationis eius solennia, cassata fuit ab Urbano II. vt scribit idem Gostidus lib. 2. *epist.* 27. Vnde constat, præsentem Honorij constitutionem compilatam fuisse sub hoc titulo, non solum quia ex simoniacis præuitate Archidiaconi palefidi ab Abbatibus pro eorum installatione extorquebant; verum & quia Episcopi simoniam commitebant exigendo ab eis maiorem obedientiam, quàm de iure præstare tenebantur: quo casu simoniam committi, notandum suprà in *cap.* ex diligenti.

CAPVT XLIII.

Gregorius IX. *Priori Sancti Thomæ Esculanen.*

Iacobus canonicus Esculan. exposuit, quod cum ipse in Ecclesia Aptutin. sit receptus in Canonicum & in fratrem, Canonici eiusdem Ecclesiæ partem prouentuum, ac præbendam sibi assignare recusant, quandam consuetudinem præterentes, quod prandium habere debeant à Canonico recepto de nouo. Quocirca mandamus, quatenus si est ita, dictos Canonicos, vt tali consuetudine non obstant, sibi sicut vni ex aliis in prouentibus & præbenda prouideant, appellatione remotâ compellas.

NOTÆ.

^a *Esculan.*] Sen Esculan. nam Esculanum, seu Esculm dicitur ciuitas Italæ, de qua, & eius diocesi egimus in *cap.* 8. de *cleric.* vel *monach.* b. *Aperin.*] Interamna ciuitas est Italæ in Picenatis posita, quam hodie vulgò Teramum dicimus, fecas fauces Tordiol fluminis; quæ eam à tribus fluminibus alluat, Interamna nomen D.D. Gual. in *Devernal.* Tom. V.

men Inocent. quos inter tres amnes sita: quod ipsum nomen vulgus etiam, sed corruptè retinuit. Est caput totius Apertinæ prouincie. Quare ipse Præfex non Interamnia, sed Apertinensis denominatur Episcopus, qui nullo Metropolitani reueretur arbitrio, sed tantum Romani Pontificis proximè sacres adorat, vt tradit alia congens de ipsius diocesis origine, & Præfibus Vghellius *tom. 1. Ital. sacra. fol.* 188.

COMMENTARIUM.

2. **I**nter alias consuetudines simoniacam labem credolentes, præcipua fuit olim consuetudo præstandi conuiuium pro electionibus, & consecrationibus Episcoporum, seu similibus Prælatorum; quam redarguit Sidonius lib. 4. *epist.* 25. & grauiter reprehendunt PP. Synodi Carthag. 3. *can.* 48. ubi: *Committit sibi conciliares plebem, et peruersa maligno, & illicito eosdem velint collocare Religiosos.* Extant huius moris vestigia apud Gregor. Turon. *de viis Parrum* cap. 6. dum refert, quod cum Aretini ad Theodoricum Regem mitteret fidentes Episcopum ab eo expectantem venissent, Rex ipsis redire iussit, sanctum Gallum Episcopum futurum eis destinavit, iussitque ut ordinaretur in Presbyterium, & datus de publico expensis, ciues inuitarentur ad epulum, & lætarentur ob honorem Galli Episcopi. Quod cum ita factum esset, is referte solitus erat, se non amplius donasse pro Episcopatu, quàm unum tricentem coquo, qui id prædium parauerat. Et apud Sirtium die 18. *July, in vita sancti Fridelici Treuictensis Episcopi*, refertur de eo, quod die, quo in Antistitem inauguratus fuit, celebre conuiuium omni Clero, Nobilibus, item & ignobilibus à Ludouico Pio datum fuit. Similem morem in nouiter ordinatis Concil. Palentinum improbat *titul. de summa*, his verbis: *Quorundam clericorum, & laicorum absum, qui clericos de*

nono promotos non permittunt in suis ordinibus ministrare prius quam eis adhibeant per unum, aut plures dies prædicia, & conuiuium sumptuosa, vel certam præparatam quantitatem pecunie, extirpare volentes, statimque, ut cum clericis, qui ad titulum alicuius Ecclesie ad Subdiaconatus, Diaconatus, aut Presbyteratus ordines sunt promoti, nouiter celebrari voluerint, ut clerici illius Ecclesie eos libere admittant, & sic ad celebrandum minifrent Ecclesie parauentia, celebrationi ipsorum charitativè, & amicituè affluentes: eosdem etiam secundum quod ordo ipsorum exegerit, portionem integritate conferant, & assignent. Et consuetudinem accipiebdi scyphum a nouo Canonico improbauit Honorius III. cuius verba dedimus supra in *cap. sent.* 39. quæ prædicia simonie noxam, ac criminationem continent, si largitione ista eligentium suffragia ambiuntur, bonum voluntates conciliantur, & suffragia queruntur, cum virtute, non pecuniâ, litteris, non pretio, dignitates ecclesiasticæ promerendæ sint. Sic Caro Vicensis apud Ciceronem in *oratioe pro Mævena*, ex Stoicorum sententia negauit licere Magistrui candidato conuiuiis, aliisque oblectamentis populum inficere. Quare rectè Gregorius IX. in præfati talem consuetudinem, vt simoniacam labem credolentem condemnauit: quam etiam in prædicia præstandis ab ingredientibus monasterium condemnauit Urbanus V. in *extravag. Sani*, hoc *titul. inter communis.* Notauit Halliæus de *factis elect.* *sess.* 7. *cap.* 2. *art.* 26. 2.

CAPVT XLIV.

* Idem.

Si quis ordinauerit, seu ad ordinem præsentauerit aliquem, promissionem, vel iuramentum ab illo recipiens, quod super prouisione sua non inquietet eundem, ordinator à collatione, præsentator verò ab executione ordinum per triennium, & ordinatus ab ordine sic suscepto donec dispensationem super hoc per Sedem Apostolicam obtinere meruerint, nouerint se suspensos.

NOTÆ.

1. **I**dem.] Gregorius videlicet IX. qui in præfati Quon solùm confirmat Innocentij constitutionem relatum in *cap. per tuas*, et 3. hoc *titul.* verum & augeat, ita vt non solùm præsentator, de quo agebatur in *dist. cap. per tuas*; verum & ordinatus, qui cum Episcopo pactum fecit de non petendis ab eo alimentis, quæ ex iuris dispositione Episcopus illi sine titulo ordinato præstare teneatur, ex creditis in *cap. 4. de præbend.* suspensionem incurrat, & similiter ordinatus per triennium ab ordinum collatione suspenditur, à qua suspensione nec ordinatus excusatur ignorantia, nisi fuerit inuincibilis, & inculpabilis, vt docent Suarez de *censur. disp.* 31. *sess.* 1. *num.* 33. Hurtado in *disp. de suspensioe*, *diffinit.* 13. *num.* 37. Coniueh. & Castropalao, quos sequitur Gibalinus de *censur. in synopsi*, *litera O. num.* 11. Rationem huius decisionis assignamus in *decap. per tuas*.

CAPVT XLV.

* Idem.

Mandato nostro recepto, vt cum monachis, qui per simoniam dato aliquo locum in monasteriis sunt adepti, secundum constitutionem Generalis Concilij dispensarent. Et infra: Consult. t. breuiter respondentes dicimus, mandatum Apostolicum, etiam ad Abbates extendi, & resignationes spiritualium, & temporalium, quæ nullo pacto, sed affectu animi præcedente vtriusque taliter acquiruntur (in quo

quo casu delinquentibus sufficit per solam poenitentiam suo satisfacere Creatoris,) eos pro simonia huiusmodi non teneri.

NOTE.

I. Dem.] Gregorius IX. videlicet: cui autem prelati rescribat, non constar; & eum eius epistolis careamus, agnoscere non possumus de quo monasterio in presenti agatur.

b. Censily.] Relati supra in cap. quoniam, ubi de simonia admissa in ingressu Religionis agitur.

I. c. Abbas.] Quia in favorabilibus, & materia proportionabili Abbas comprehenditur appellatione monachorum, nisi aliud ex loquentis mente concitatur, ut probant Sanchez tom. 2. summa, lib. 6. cap. 8. num. 84. Valenzuela consil. 74. num. 79. quia Abbas per promotionem ad Abbatiam non desinit esse monachus, nec per ipsius dignitatis assequutionem debent esse peioris conditionis, quam sunt ceteri monachi, cum dignitatis proprium sit aetate statum, non vero illum in clericali mutare, ut docent Tamburinus tom. 1. de iure Abbatis. diffinit. 16. quest. 3.

COMMENTARIUM.

2. Simonia communiter dividitur à Doctores in mentalem, conventionalem, & realem, ut explicant Nauaricus in manuali, cap. 23. num. 103. Caietanus, Sylvestris, & ceteri Summisque verbo Simonia, Redoanus de simonia, 1. p. Aragon ad D. Thom. 2. 2. q. 100. art. 6. D. Ioannes Vela de peccatis & delictis, cap. 32. vers. Est enim, Tibebius Decianus tom. 1. tract. crimin. lib. 5. cap. 32. Gibalino de simonia q. 1. num. 1. De prima in presenti agendum est. Et quidem simonia mentalis non dicitur ea, quæ solâ voluntate, aut proposito committitur, sed intentionem perficitur, sicut voluntas fornicandi, aut furandi solet dici mentalis fornicatio, aut furum; nam omnis simonia debet continere externum aliquem actum, aliquamque dationem, seu acceptationem per modum peccationis, ut constat ex definitione, quam illustramus supra in cap. 1. Mentalis ergo simonia est dato, vel acceptio spiritualis pro temporali, tanquam pretij, absque villo pacto tacto, vel expresse, sicut ea prævia intentio dantis, vel accipientis, neque ex ipso opere externo, nec ex eius circumstantiis villo modo se prodant, eum opus ipsum sit aliquid indifferens, & possit bono, aut prævio animo fieri, accipiatque totam suam turpitudinem ex intentione simonica, ut contingit in aliis actibus indifferens, qui à sola intentione peculiarem malitiam fornicator, ut contingit in eo, qui accipit stipendium pro dicenda Missa, tanquam ipsius pretium: qui datur spiritali, ut accipiat aliquid temporale in eius compensationem, est simoniacus mentalis. Et hæc simonia nonnunquam datur ex parte dantis tantum, aliquando solum ex parte accipientis, plerumque autem ex parte utriusque, eum videlicet utrique eam prænam intentionem habet nullo pacto laico. Simonia mentalis exemplum erat in c. tua nos, de simonia, ubi clericus, qui dedit bona sua ut reciperet in Canoniceum absque villo pacto, ea tamen intentione, ut per bona temporalia spiritualia officium assequeretur.

D. D. Gonal. in Decretal. Tom. V.

tur, apud districtam iudicem culpabilis iudicatur.

Quibus suppositis, ut ad præsentem textum accedamus, sciendum est, valde controversum esse, an simoniacus hic mentalis teneatur ad restitutionem rei, seu pretij cum intentione simoniaca accepti? Et eo casu teneri ad restitutionem, docuerunt Medina de restit. cap. de usurarium restitutione, Soto lib. 9. de iustitia, quest. 8. art. 2. in solut. ad 6. Hadrianus quodlibet. 9. Ioannes Maior in 4. dist. 23. quest. 1. art. 7. Armachanus lib. 10. cap. 23. Henricus Gandavo quodlibet. 9. quest. 26. moriet rex in cap. consilium, de usur. ubi docetur, usurarium mentalem ad restitutionem teneri. Igitur similiter & simoniacus mentalis. Deinde quia eum iure naturali, & diuino simonia prohibita sit, eodem iure videtur prohibita dominij translatio, ut probant Innocentius, & Hostiensis in cap. tua nos, hoc titul. & quando tam dare, quam accipere aliquid temporale est iniustum, non potest sic acquisitum in foro conscientie retineri. Contrarium tamen sententiam probant Sanctus Thom. 2. 2. q. 100. art. 5. & 6. Caietanus in summa, verbo Simonia, Nauaricus in manuali, cap. 23. num. 103. Palacios de contract. lib. 2. cap. 9. Redoanus de simon. p. 4. cap. 8. num. 28. Binsfeldius in presenti, Gibalino de simon. quest. 23. consellor. 12. per quibus faciunt textus præsens, & in cap. tua nos, hoc titul. ibi: Quia nobis datum est de manifestis tantummodo iudicare. Et l. 5. tit. 17. part. 1. In qua opinionum varietate dicendum est cum Suarez tom. 1. de relig. lib. 4. de simon. cap. 59. num. 43. Bonacina de simon. quest. 7. part. 2. difficult. 1. num. 23. Gibalino de simon. d. consellor. 12. simoniacum mentalem non obligari ex solo iure ecclesiastico ad restitutionem, quia Ecclesia de his actibus oculis non iudicat, dist. cap. tua nos, cap. sicut, hoc titul. Ex diuino autem iure obligatur ad restitutionem pretij simoniace accepti, quoties in eo fuit violata iustitia commutativa, eodem præterius modo, atque obligat simonia realis, quando præter facilligij præiurium iniustitiam malitiam continet. Ratio perspicua est, quia æquè tunc in simonia mentali violatur iustitia, atque in reali. Ergo æqualis est in utraque obligatio restituendi, siquidem unica ratio obligatoria ad restitutionem est iniustitia, & inæquitas quæ reparanda est. Quamvis autem ea iniustitia, occulta, aut manifesta sit, lateat in animo, aut exterius se prodant; si tamen re ipsa committitur, & acta sit alteri iniuria, Interceditque inæquitas, eadem ratione simoniacus mentalis ac expresse tenetur ea iure diuino, & ex natura rei ad restitutionem; non tamen subiacet poenit. à iure positivo statuta.

Sed in inquirendo de discrimine, quare videlicet usurarius mentalis teneatur ad restitutionem, dist. cap. consilium, de usuris, non vero simoniacus, ex presenti textu anxie laborant Doctores. Aliqui eam discriminis rationem esse docent, quia usura bene datur, & malè recipitur, siquidem usuram dare peccatum non est, cap. debitorum, de iur. iur. usuram vero accipere omni iure prohibuitur est, cap. 1. & 2. de usur. & ideo accipere pretium ab usurario ex omni iure restituendum est, quia qui malè accipit ab eo, qui bene datur, tenetur ei restituere, cap. non sari, ubi Glossa 14. quest. 5.

3.

4.

EXPOSITIO
CAP. CONSILII,
DE USURIS.

quasi. §. 1. 2. ff. de cond. ob turp. at verò in simonia veniator turpitudine virtutis; & ideo recipiens non tenetur ad restitutionem, quia in pari causa melior est conditio possidentis, leg. 3. & 4. de cond. ob turp. conf. cap. in pari delicto, de regul. iur. lib. 6. Sed improbat, quia in fura facile succedit, utriusque turpitudinem esse; quando enim quia suadet non parato ad exercendas vsuras, ut sibi mutuet sub vsuris, vicique sane vsurarius est, nec à restitutione exculatur; & in simonia sepe contingit impudiciciam esse ex una tantum parte, quando Prelatus liberaliter beneficium committit simoniaci meotali. Rursus, quia in eo casu ex parte utriusque versatur turpitudine, licet quis non teneatur dari restituere; teneatur tamen pauperibus erogare, iuxta regulam textus in cap. cum tu, de vsur. Florentin. 2. p. tit. 2. cap. 2. §. 5. Covarr. in regul. peccatum, 2. p. §. 2. num. 7. Quare item Navarr. nom. 20. ex D. Thoma aliam rationem assignat, videlicet quod restitutor quodvis per simoniam est poena ecclesiastica, & Ecclesia non potest ob actus iniectores poenas constituere, cap. cognitionis, de de parit. dist. 1. Sequitur Vgolinus de simon. tabul. 2. num. 3. Sed improbat, quia quando actus non remanet in terminis cognitionis, sed qualitercumque prodit fura, est in potestate Ecclesie; docet Glossa verbo Es ipse, Clement. 1. §. verum, de heretic. quam sequuntur plurimi reari à Feliciano de censur. lib. 1. cap. 5. num. 6. Gutierrez lib. 1. canonic. quasi. 13. in princip. Covarr. ubi proximo, in initio num. 7. Nec verum est, institutionem esse poenam Ecclesie, cum à principio impediatur dominij translationem, ut supra diximus, & infra patebit. Secundò quia nec vsurarius mentalis ad restitutionem tenetur, contra textum in dist. cap. consilium. Alter P. Navarra de restit. lib. 3. cap. 2. Aragon 2. 2. q. 100. art. 6. nec non Abbas Antiquus in dist. cap. consilium, quem referunt Panormit. & Anania in present, discrimen assignant, videlicet quod vsura mentalis iure divino prohibetur, Luca cap. 6. Adversum dantes, nihil inde sperantes. In simonia verò non sit prohibita spes aliquid recipiendi, nec talis intentio; quia tantum à naturalis simonia prohibetur; Mathuzi cap. 10. Gravis acceptis, gratis datur. Sed hæc differentie ratio merito reprehenditur à Ioanne Andrea in present, quia cum iure divino, & naturali simonia prohibita sit, etiam mentalis prohibita videtur, cum peccata oris, cordis, & operis eius-

dem speciei sint, & eodem iure prohibeantur, ut post D. Thomam & alios probat Navarra in mentali, cap. 23. num. 101. Nec etiam placeat discriminis ratio assignata à Calesano 2. 2. quasi. 100. art. 6. quem sequuntur Navarra, & alij relati à F. Emmauele Rodriguez in summa, 2. p. cap. 66. dum docet simoniacam mentalem non teneri ad restitutionem, quia quod illi datur, sponte datur, animo videlicet emendandi, vel vendendi, argumento legis nec emere, Cod. de iure delict. Vsurarius autem mentalis tenetur ad restitutionem, quia quod illi datur, non sponte, sed ad redimendam potius liberationem datum coelestis. Quam rationem improbat Sotus lib. 9. de iustit. quasi. 8. art. 1. ad 6. Instruendum confitentis 1. p. cap. 306. pag. 965. quia simoniacus etiam inuitus videtur dare pretium, siquidem mallet gratis beneficium, vel simile spirituale obtinere, & quasi necessitate cogente pretium dar, quia aliter non sperat id obtinere. Præterea cum recipientes pretium non alià causâ recipient, & apud eos fiet, quàm ex causâ emptoris spiritualium, quæ nulla est ipso iure, nullo modo possunt illud retinere, & per consequens tenetur ad restitutionem. Quare his omnibus sententiis reiectis, Panormit. Anania, & Felinus in present, dixerunt Pontificem consulendum esse pro vera huius discriminis ratione. Verùm iuxta sententiam supra adductam ex Suario, & Gibalino, faciliè dissoluitur hæc sedari potest, siquidem tam vsurarius mentalis, quàm simoniacus, tenentur ad restitutionem, si per vsuram, vel simoniam violant essentialiter iustitiam; quod semper contingit in vsura, non verò in simonia; nam simonia in ingressu religionis, de qua in presenti agitur, nullam continet iniustitiam, sed tantum sacrilegium, de quo per penitentiam Cerasori satisfacere sufficit; & Ecclesiæ scelus illud animo retentum non punit, nec eius ratione ad aliquam restitutionem obligat. Si verò simonia mentalis includat iniustitiam, per eamque violetur iustitia commutativa, simoniacus mentalis etiam ad restitutionem tenetur; atque ita illud discrimen versatur inter vsuram, & simoniam mentalem, quod vsura mentalis semper continet iniustitiam, & violat iustitiam commutativam; simonia verò mentalis aliquando sacrilegium continet, non verò iustitiam violat, ut in presenti textu docuit Gibalino ubi supra, cunctis. 12.

TITVLVS IV.

De Prælatis, ne vices suas, vel Ecclesiās
aliis sub annuo pretio concedant.

CAPVT PRIMVM.

• Alexand. III. in Concil. Lat.

PRÆTEREA quoniam quidam in quibusdam partibus sub pretio statuuntur, qui^b Decani vocantur, & pro certa pecuniz quantitate Episcopalem iurisdictionem exercent, præsentī decreto statuimus, vt qui id de cætero præsumpserit, officio suo priuetur, & Episcopus conferendi hoc officium potestatem amittat.

NOTÆ.

1. **A**lexander III.] Ita etiam legitur in prima collectione, sub hoc titul. cap. 1. vbi additur pars capituli Cū in officio, vt agnoscamus in præfati refertur partem textus in cap. cum

in officio, de resism. & integra constitutio extat in Concilio Later. celebrato sub Alexandro III. cap. 15. De quo Concilio egi in cap. noui, de rescriptis.

^b Decani.] De quibus egi in c. ad hac, §. ult. de officio Archid. cap. cum Apostolus, de consensu.

CAPVT II.

Idem^a in Concilio Turon.

Quoniam in quibusdam partibus Decani quidam, vel^b Archipresbyteri ad agendas vices Episcoporum, seu^c Archidiaconorum, & terminandas causas ecclesiasticas sub annuo pretio statuuntur, quod ad sacerdotum grauamen, & ad subuersionem iudiciorum non est dubium redundare, id vterius fieri prohibemus: quod si quis de cætero fecerit, nostrā auctoritate remoueatur à Clero: Episcopus autem, qui in sua diocesi hoc sustinuerit, & ecclesiastica iudicia suā patitur dissimulatione perueri, canonicā distinctione percellatur.

NOTÆ.

1. **T**uron.] Ita etiam legitur in prima collectione, sub hoc titul. cap. 2. & reperitur textus hic post Concil. Later. p. 2. cap. 1. non ta-

men ibi refertur, nec in Concil. Turon. reperitur.

^b Archipresbyteri.] De quibus egi in cap. 1. de offic. Archipresb.

^c Archidiaconorum.] De quorum iurisdictione egi in cap. ad hac de offic. Archid.

CAPVT III.

Idem^a in Turon. Concil.

Quoniam enormis quædam consuetudo in quibusdam locis contra Sanctorum Patrum institutiones inualuit, vt sub annuo pretio sacerdotes ad Ecclesiarum regimen statuuntur, neid fiat, modis omnibus prohibemus, quia dum^b sacerdotium sub huiusmodi mercede venale disponitur, ad æternæ retributionis præmium consideratio non habetur.

NOTÆ.

1. **I**dem.] Alexander videlicet III. in Concilio Turon. vt habetur in cap. 3. hoc tit. io prima collectione, & post Concil. Later. part. 2. cap. 2.

& in ipso Concilio Turon. apud Coriolanum in summa, can. 5. ita legitur: *Vis sacerdotes ad Ecclesiarum regimen sub annuo pretio non constituantur.* De hoc Concil. Turon. conuulla adduxi in cap. maioribus, de prob.

L 4 b Sacerdo

b. *Sacerdotium*. Id est beneficium ecclesiasticum, *cap. 1. de concess. prob.* notat P. Gregorius lib. 1. *cap. 1. tit. 17. cap. 1. ut apud Romanos redditus, seu proventus assignati pro cultu domini dicuntur sacerdotia, l. 1. ff. ad leg. Jul. de ambig. l. 1. §. 1. de donat. inter: apud Liutium lib. 9.*

COMMENTARIUM.

2. **EX** his tribus definitionibus sequens communiter deducitur assertio: Ecclesia, vel iurisdic-tio ecclesiastica, sub annuo censu, seu pretio concedi non debet. Probant eam textus in *cap. si quis Episcopus 8. quest. 1. cap. finali. 21. quest. 2. cap. 3. de consuet. cap. consilium 48. cap. ad nostram, de simonia, cap. 3. de parvis, cap. precipimus 5. 15. quest. 2. Concil. habitum in Germania sub Conrado Cardin. *cap. 1. ibi: Enimvero qualiam consuetudinem innuunt, ut ponantur in Ecclesiis vendituri sacerdotum, vicarii temporales: ne id fiat de cetero modis omnibus inhibetur.* Gregorius VII. in Concil. Roman. Incerti anni, *con. 31. Prophyrii non inrent Ecclesias con-dicti pretij ad totum annum, sicut mercenarii; sed per manus Episcopij, vel Archiepiscopij gratis habeant quondam recte eas regere poterunt.* Refert Ant. August. in *epit. iuris lib. 6. tit. 19.* Facit præsens rubrica, quæ cùm incipiat à dictione negativa, ha-beatque orationem perfectam, vim legis obinet, ut probat ex aliis Olea de *cess. iur. tit. 1. quest. 1. nu-mer. 5.* Illustrant vltra congestos à Barbosa in *praesenti*, Guillelmus Benedic-tus in *cap. Raymundus, verbo Dnas habens filius, non 55. de testam.* Suarez de *reliq. tem. 1. lib. 4. de simon. cap. 20.* Traguez de *nobilit. cap. 25.* Petrus Bollo in *onomim. canonice, class. 2. §. 5.* Coninus lib. 4. *aphorism. iur. Pontific. tit. 3.* Fragoso de *regim. Christi. Reip. part. 1. lib. 1. dispus. 2. §. 2.* Binsfeldius in *dict. cap. ad nostram, de simonia, Gibalini de simon. quest. 8. consi-der. 10.**

3. **Sed** pro dubitanti ratione ita insurgo: In ma-teria simonice contrarietas sunt pro spirituali re-pretium accipere, vel dare, ut in eius definitione probat supra in *cap. 1.* sed pretium accipere pro vicaria, seu iurisdictione ecclesiastica exercenda, prohibuit non est, immò valde frequens *cap. charitatem 12. quest. 1. cap. peruenit 18. de appellat. cap. extirpanda, §. quia vero, de proband. cap. 3. de cleric. aget.* Ergo pretium dare pro vicaria, vel iurisdictione ecclesiastica exercenda, prohibuit non est. Augetur hæc difficultas, nam in Curia Romana quotidie venduntur Clericatus, Came-raz, & Auditoriaras, quibus officiis annexa est iurisdic-tio ecclesiastica. Igitur quia pro iurisdic-tione spirituali exercenda pretium dari potest, Augetur secundò hæc dubitanti ratio ex *cap. qua-sium 1. quest. 3.* vbi refertur Episcopo solui annuum censum à possessore beneficii. Igitur quia sub annuo censu Ecclesia concedi valet.

4. **Quia** dubitandi ratione non obstat vera est præsens assertio, cuius ratio pronenit ex eo, quia in hoc casu, etsi non gratia spiritualis, seu benefi-cium, saltem spiritualis potestas, & beneficii administratio videtur pretio æstimari, ac per con-sequens simonice species quodammodo committitur *cap. Saluator, §. nomine, 1. quest. 3.* Iurisdic-tio enim, specialiter Episcoporum, Sacerdotum, vel Diaconorum, aut est omnino sacra, quæ exercetur in clericis, & continet causis prociis ecclesiasticas; aut mista, spiritualis scilicet & temporalis, veluti quæ circa decimas, matrimonia, & si-

millia exercetur: neutra ex eis absque labe simo-niz vendi, locative potest. Ergo rectè in presenti ducetur, non posse pro iurisdictione ecclesiastica exercenda pretium dari. Accedit, quia si iurisdic-tio ecclesiastica venalis esset, & sic pretio venderetur, locareturque, id in grauamen sacerdotum, subversionemque iudiciorum redundaret, & ita subditi grauentur, cùm tales emptores, seu loca-tores pecuniam præstam cùm quadruplo, & amplius repetere velint in perneciem litigantium. Seneca lib. 1. *de benefi.* ibi: *Provincias spoliari, non mirum; cum qua emerit, vendere ius gentium sit.* Facit quod de Alexandro Severo refert Lam-pidius, quos verba rectè in *cap. indicatum, de simonia.* Idem firmat Iustin. nouella 8. *Vi indices sine quoque suffragio sunt,* vbi suffragium sumit pro penstatione, censu, positione, locatione, quæ sit conuenta mercede. Illustrant Baldinus ibi, Panciroli lib. 2. *varior. cap. 198.* Faciunt alia, quæ de prohibita venditione officiorum congesterunt Politici in *dict. cap. in tantum, re-lati.*

Nec obstat dubitanti ratio supra adducta, nam licet Episcopus possit assignare certum salarium eius vicario pro stipendio, quia nemo debet mili-tare propriis stipendiis, *cap. cum secundum, de proband.* tamen è conuerso si quis non opus sit ad spirituales huiusmodi vicariam locuerit, sed vicarium ipsum, seu ius alienas vires gremio conduxerit, quia spiritualis potestas administratio pretio æstimatur, simonia committitur. Nec obstat quod de Clericatu, & de Auditoriis Came-raz decernimus; nam in his officiis, & simili-bus separanda est iurisdic-tio ecclesiastica, quæ elatice, & Auditori conseruit, ab emolumento temporalis illi coniuncto: iurisdic-tio nec venditur, nec locatur, iuxta supra tradita; ac verò emolumentum ipsius officij per se vendi potest: quare sicut Pontifex etiam in beneficiis ecclesiasticis potest separare proventus ipsos à beneficio, ita etiam & in his officiis distinguit eorum emolu-mentum, quod vendi potest ab ipsa iurisdictione, ut docuerunt Suarez *tem. 1. de reliq. lib. 4. de si-monia, cap. 20. num. 6. & cap. 24. num. 28.* Castro-Palao in *dispu. de simon. puell. 12. num. 7.* Gibalini *con. tract. quest. 20. num. 7.* Nec obstat tex-tus in *dict. cap. quæsimus*; nam cùm omnes Eccle-siæ olim ad Episcopos pertinerent, *cap. sumus 16. quest. 3.* nonnumquam tenebatur certis pen-sione Ecclesiam aliis conferrebat, *cap. pastoralis, de dona.* quod plerumque fieri solebat cùm alicuius Ecclesiæ regimen nouiter statuebatur, & beneficium conferrebat, *cap. scientes, cap. probibemus, de censibus*; non verò posita pensio consti-tui poterat, *cap. probibemus 7. cap. preterea 2. cap. significauit 13. de censibus*, vbi notauimus.

5. **Sed** super traditæ assertioni primò opponi potest textus in *cap. consilium, de reliq. dom.* vbi aperte docetur, Episcopum posse annuam pensionem sibi promissam à monachis, eis remittere iurisdic-tionem diocesanam, quam in eos exercebat. Quem textum ita expendo: Quoad simoniam committendam paria sunt remittere, vel dare, *cap. veniens, de testibus, cap. querelam, cap. per-tinus, de simonia*; sed in eo textu supponitur iurisdic-tionem Episcopalem sub annuo censu remitti posse: igitur quia & concedi sub eadem an-nua pensionatione valet. Pro cuius difficultatis solu-tione dicendum est, in eo textu, & similibus licet Episcopum remittere iurisdictionem pro-

5.
Dissolue-
re pres-
tando sa-
tio.

6.
Expone-
re cap. con-
stitue-
re, de sa-
lio. dom.
cap. simul
hoc titulo

primam,

gratiam, privilegium exemptionis monachia concedendo, poſſe annuum cenſum ſibi ſtipendiſ, quæ ſimilem penſionem non exigit ut premium iuriſdictionis remiſſe, ſed ad probationem ſubiectionis antiquæ, & in argumentum ſubiectionis conceſſe, *cap. recepimus de privilegiis*. Alia pro ipſius textus expoſitione addoxi in *cap. final. de poli.* Secundo opponi poteſt textus in *cap. final. hoc titul.* ubi expreſſe docet Alexander, Eccleſiam

locari poſſe certo pretio, immò & talem locationem factam ad ſeptennium, eo tempore nondum elapſo revocari non poſſe. Pro calas difficultatis ſolutione dicendum eſt cum Gloſſa ibi, quæ ſequuntur omnes repetentes, Alexandrum III. In eo textu non agere de locatione Eccleſiæ prædicti beneficii eccleſiaſtici eſt, ſed de locatione fructuum ipſius Eccleſiæ, ſeu beneficii, qui locari poſſunt, *cap. 2. de locato, cap. 9. de rebus Eccleſiæ.*

CAPVT IV.

Idem * Exon. Epifcopo.

Verulam magiſtri Vv. recepimus, quod cum Eccleſiam de Fereleia à G. b. perſona eiufdem Eccleſiæ ad annuum cenſum per ſeptennium tenendam ſuſcepſiſſet, ipſe ſibi, antequam per ſpatium vnus anni tenuiſſet, auferre præſumpſiſſet, quamquam idem G. præſtitâ fide firmaverit, quod vſque ad conſtitutum terminum nullam ex inde moleſtiam, vel grauamen ei inferret: ideo tibi per A. f. p. m. quæ ſi tibi conſtituerit ita eſſe, ap. rem. diſtrictè compellas, ut præſatam Eccleſiam præſato G. V. reſtituas, & vſque ad terminum conſtitutum inter eos, ſecundum quod inter ſe conueniunt, eandem permittat pacificè poſſidere.

NOTÆ.

1. *a Exoniens.* Ita etiam legitur in prima collectione, *ſub hoc titul. cap. final. & poſt Concil. Later. part. 28. cap. 1. De Exoniens Eccleſia nonnulla addoxi in cap. 6. de filiis præbiterorum.*

2. *b Preſona.* Idem Parochus, ut probauimus in *cap. ad aures, de reſcriptis.*

c Septennium. Quatenus locatio hæc ad longum tempus fieri poteſſet, variè explicant Cenedus ad *Dever. collect. 76. Barthoſa in præſenti*: ſed veram rationem adduximus in *diſt. cap. 9. de reb. Eccleſ.*

d Terminum conſtitutum. Propter leſionem tamen antea tenocari poterat, ut probat D. Ioannes de *Larrea decif. 69. per totum.*

3. *e Poſſidere.* Sed conduſtor rem ipſam non poſſidet, cum vſus tantum ipſius rei voluntate locatoris ei permittatur, *l. ſi ſeruus 61. §. locati, verſ. & ideo, ff. de furtis*. Quare dicitur, rem alij poſſidere, non ſibi, *l. 1. C. de communia de vſucap. l. 2. C. de præſcriptis. 30. vel 40.* Nec circa ipſam rem vilam propriam ius habet, ſed monaſterium à Domino, cui poſſidet, & miniſterium præſtat, *l. officium 9. C. de R. P. l. communis 7. §. nec colonis, ff. de communia diuiſa, l. 3. §. vltim. cum l. ſequenti, ff. ad exhib. l. ſerui 16. ff. de periculo & commendo, l. ſi quis 10. §. 1. l. qui bonæ fide 19. l. interdictum 21. §. vltim. ff. de acquir. poſſeſſ. l. non ſolum 33. §. quod vultus, ff. de vſucap. l. 2. §. 1. ff. pro hærede, l. in præſenti 22. §. ego, ff. quod vlt. aut clam, l. 1. §. denique, ff. de vlt. & vi: l. cerere 6. §. ut qui 2. ff. de præcar. Quare Dominus per colonum ipſum poſſeſſionem retinet, *l. quidem 77. ff. de rei vindicta, l. ſi pignus 37. ff. de pignorat. act. l. ſicut 50. §. vltim. cum leg. frequenti, l. cum in plures 60. §. 1. ff. locati, l. 3. §. ceterum 12. l. ſi id quod 55. §. 1. l. qui vniuerſus 3. §. quod per colonum, ff. de acquir. poſſeſſ. l. manum 31. §. ſi ſeruus, ff. de vſucap. l. 1. §. quod ſeruus, ff. de vi & vi arm. l. 1. §. penult. ff. de iurere, alique. Igitur in præſenti cala con-**

duſtor nullam habebat poſſeſſionem, quam retinere poſſet. Pro cuius difficultatis ſolutione dicendum eſt, non poſſe eſſe caſus, in quibus conduſtor poſſidet. Primus eſt, ſi locatio ad longum tempus celebrata ſit, de qua accipiunt textus in *l. ſciendum 15. §. 1. ff. qui ſuſtinet, cog. l. 1. & final. ff. ſi ager veſtigial. l. cum ſponſus 12. §. in veſtigial. ff. de publiciana, l. 3. §. ego, ff. de noui oper. num. l. 1. l. quod ait Praſor 3. ff. de ſuperf. Celdas de *renouat. emphyſ. lib. 1. quaſt. 11. num. 7. Brito ad rubric. de locat. §. 1. num. 10. Menochius de *recup. remed. 1. num. 68. Valaſcus de iure emphyſ. quaſt. 18. per totum, Valentia tem. 2. Illuſtr. tract. 1. cap. 6. num. 1. Secundo quando in ipſa locatione expreſſe actum eſt inter contrahentes, ut poſſeſſio rei locatæ in conduſtorem tranſferatur, argumento legis ſi abſenti 38. §. 1. ff. de acquir. poſſeſſ. locatio enim ſit diuerſis reſpectibus, vel reſpectu propinquitatis, aut vſufructus, *l. ſi quis denum 9. §. 1. ff. locati, Bartol. in l. ſi quis aliquam, 28. num. 8. ff. de acquir. poſſeſſ. vel reſpectu poſſeſſionis, diſt. l. ſi quis aliquam, quando res ipſa locatur: vſus autem cenſetur permiſſus, *l. qui rem, C. locati*. Immo quando is qui locat, poſſeſſionem ſolam habet, ei qui rei dominus eſt, vſum rei, vel poſſeſſionis præſtat, non ipſam poſſeſſionem, ut probat textus obſeruandus in *l. ſi pignus 37. de pignoratili actio. docet P. Faber in l. ſi pignus 45. de R. l. Cùm retid locatio ſit reſpectu poſſeſſionis ipſius, ſive cum poſſeſſio ipſa locatur, nihil impedit dicere poſſeſſionem per contractum locationis tranſferri, quoniam tranſlatio poſſeſſionis non requiritur titulum perpetuum minori iate contenta eſt, & ſufficit titulus temporarius, qualis eſt locatio, precarium, pignoratili datum, ſi id agatur ut poſſeſſio in accipientem tranſeat, ut docet Bartol. in *l. quod in eo nomine 18. & in l. ſi quis aliquam 28. num. 6. hoc titul.* Villius conduſtor poſſeſſionis maxima eſt, quia quomodo dura conduſtio, poſſeſſio ad conduſtorem pertinet: ergo ſi eam amittat, in rem agere poterit aduerſus quemcumque detentatorem, ut de ſuperficiario dicitur in *l. id******

est 74. cum sequentibus, de rei vindicat. & de creditore in l. si fundus 16. §. in vindicatione, ff. de pign. licet antiquiores cum Bartolo in dist. l. 28. dicant implere contradictionem, ut quis sit conductor, & simul possessor; nam facile non constat hanc contradictionem: si enim potest quis precando cogere ut possideat, cur non poterit

conducere ut possideat, ut considerat D. Ioseph. de Rerum in reposita prelati. ad tit. de acquir. possess. cap. 3. consens. 2. qui ad id probandum expendit textum in l. si quis ante 10. §. ultim. ff. de acquir. possess. & sic patens textus accipiensus est quando locata fuit possessio ipsa.



TITVLVS V.

De Magistris, & ne aliquid exigatur pro licentia docendi.

CAPVT PRIMVM.

* *Ex Concilio Lateran.*



QVONIAM Ecclesia Dei, & in iis, quæ spectant ad subsidium corporis, & in iis, quæ ad profectum proueniunt animarum, indigentibus sicut pia mater providere tenetur, ne pauperibus, qui parentum opibus iuuari non possunt, legendi, & proficiendi opportunitas subtrahatur, per vnamquamque Cathedralium Ecclesiam Magistro, qui clericos eiusdem Ecclesie, & scholares pauperes gratis doceat, competens aliquod beneficium præbeatur, quo docentis necessitas subleuetur, & dicentibus via pateat ad doctrinam. In aliis quoque restituatur Ecclesiis, seu monasteriis, si retroactis temporibus aliquid in eis ex hoc fuerit deputatum. Pro licentia verò docendi nullus omnino pretium exigat, vel sub obtentu alicuius consuetudinis ab eis, qui docent, aliquid querat, nec docere quemquam, qui sit idoneus, expetita licentia interdicit. Qui verò contra hoc venire præsumpserit, ab ecclesiastico fiat beneficio alienus: dignum quippe esse videtur, ut in Ecclesia Dei fructum sui laboris non habeat, qui cupiditate animi dum vendit docendi licentiam, ecclesiasticum profectum nititur impedire.

NOTÆ.

1. *A. Lateran.* Ita etiam legitur in prima collectione, sub hoc titulo. cap. 1. & in ipso Concilio Lateran. cap. 18. repetens textus hic: unde apparet, scholasticum, seu dignitatem magistri scholæ in Ecclesiis Cathedralibus cepisse à temporibus huius Concilii per annos Christi 1180. quod & docuerunt Petrus Gregor. lib. 15. synag. cap. 19. Azor. 2. part. instit. lib. 3. cap. 23. Elcobar de Pemiis. iurisd. cap. 8. n. 41. & cap. 30. §. 2. & in Gallia hoc decretum Concilii renovatum fuit anno 1563. & sanctum ut in singulis Ecclesiis Cathedralibus, & Collegiatis, in quibus plures essent quam decem Canonici, vni præbende studium destinarentur vni, aut pluribus scholarum Magistris ab Episcopis approbandis ad instructionem puerorum, & iuuentutis, tam in literis, quam in præceptis fidei catholicæ, ut referunt Chopinus lib. 1. de sac. pot. tit. 2. numer. 13. & 14. Maynard. in notab. qq. lib. 1. cap. 9. Spondanus in continuat. Barony, anno 1563. num. 69. & similiter in Concil. Colonien. anno 1536. p. 12. cap. 3. idem cautam fuit,

b *Magistro.* Magister à monendo, vel monstrando dictus est, l. cui præcipua 57. ff. de V. S. Cassiodorus lib. 7. variat. ibi: Reuerendum hominem sumis quisquis Magistri nomen accepit, quia hoc vocabulum semper de peritis venit, & in nemine cognoscitur, quid sit de moribus asinandum. Et consiliter disciplinæ præceptores Magistri dicuntur, l. qualem 19. §. final. ff. de recept. Ovidius lib. 1. eleg. 4. illustant Albericus Gentili in l. 2. de iur. Virgil. cap. 4. & ille, cui præcipua cura rerum incumbit, Magister appellatur, dist. l. 57. & in c. 1. de Magistr. sacror. scribitorum, magister, militum, & similibus. Hinc pecoris magistros pro his, ad quos pertinet cura animalium, posuerunt Virg. t. Georgic.

— *Pan curat oves, omnique magistros.*
Varro lib. 1. de re rustica, ibi: Magister pecoris sine literis idoneum esse non potest, quod rationes domesticas pascuarias conficere nequaquam rellè potest. Et magister dicitur qui ex numero creditorum profectus est patrimonio debitoris vendendo, l. ult. ff. de curat. bonis dando, probat Brissonius de V. S. verbo Magistri.

CAPVT II.

Alexander III. * *Vvinton. Episcopo.*

Prohibeas attentius, ne in parochia tua pro licentia docendi ab aliquo aliquid exigatur, aut etiam promittatur. Si quid verò post prohibitionem tuam fuerit solum, vel promissum: promissum remitti, solum facias appellatione cessante restitui, sciens, quod scriptum est: *Gratis accepistis, gratis date.* Sanè si aliquis occasione huius prohibitionis distulerit Magistros in locis congruis instituere, liceat tibi de concessione nostra omni contradictione, & appellatione postposita ibidem viros prouidos, & discretos aliorum instructioni præficere.

NOTA.

lectione, *sub hoc titul. cap. 1.* vbi additur *per caput Nuncios*, vt cognoscamus, in præsentibus scilicet partem textus in *capit. nuncios, de decimis*.

* *Vvinton.*] Ita etiam legitur post Concil. Lateran. *part. 1. cap. 17.* & in prima col-

CAPVT III.

* *Idem.*

Quanto Gallicana Ecclesia malorum personarum scientia, & honestate præfulget, & eo cautius nititur curare, quæ confundere videantur ecclesiasticam honestatem; tanto vehementiori dignos animaduersione eos censemus, qui nomen Magistri scholarum, & dignitatem assumunt in Ecclesiis vestris, & sine certo pretio ecclesiasticis viris docendi alios licentiam non impediunt. Cum autem hæc praua, & enormis consuetudo à cupiditatis radice procedat, & decorem admodum ecclesiasticæ vnitatis confundat, prouidendum vobis est, & summo perè fatigandum, vt consuetudo ipsa de Ecclesiis vestris extirpetur, cum vobis præcipue, & specialiter adscribatur, si quid in Ecclesiis eisdem laude dignum inueniatur, vel reprehensione notandum. Sub anathematis ergo interminatione curetis, ne qui dignitatem, si dignitas dici potest, fingentes, pro præstanda licentia docendi alios, ab aliquo amodò exigere aliquid præsumant, sed eis districtè præcipiatis, vt quicumque viri idonei, & litterati volunt regere studia litterarum, eos sine molestia, & exactione qualicumque scholas regere patiantur: si verò nostræ prohibitionis, vel præcepti extiterint transgressores, eos nostrâ auctoritate, & vestrà, officiis, & dignitatibus spoliatis. Porro si iuxta mandatum nostrum corrigere neglexeritis, negligentiam vestram grauem habebimus, & molestam, & ad eam corrigendam manum extendere compellemur, ita quod si velint in huiusmodi rapacitatis proposito persistere, non valebunt.

NOTA.

ferat Anton. Augustin. in nota ad hunc textum * constitutionem hanc emanasse contra Cancellarium Parisiensem, qui à quolibet publicè docente marcham vnâ argentariam exigebat.

* *Idem.*] Ita etiam legitur in prima collectione, *sub hoc titul. caput. 3.* & post Concil. Later. *part. 2. caput. 18.* Ex Vincentio tamen co-

CAPVT IV.

Idem * *in eodem.*

Quia nonnullis propter inopiam, & legendi studium, opportunitas proficiendi subtrahitur, in Lateran. Concilio piâ fuit constitutione prouisum, vt per vnâquamque Cathedrali Ecclesiam Magistro, qui clericos eiusdem Ecclesiæ, aliosque scholares pauperes gratis instrueret, aliquod competens beneficium præberetur, quo & docentis releuaretur necessitas, & via pateret discipulis ad doctrinam. Verum quoniam in multis Ecclesiis minimè obseruatur, nos prædictum roborantes statutum

statutum adiicimus, ut non solum in qualibet Cathedrali Ecclesia, sed etiam in aliis, quorum sufficere potuerint facultates, constituatur magister idoneus, à Prelato cum Capitulo, seu maiori, & saniori parte Capituli eligendus, qui clericos Ecclesiarum ipsarum, & aliarum gratis in Grammatica facultate, ac aliis instruat iuxta posse. Sanè Metrop. Ecclesia Theologum nihilominus habeat, quæ sacerdotēs, & alios in sacra Pagina doceat, & in his præsertim informet, quæ ad curam animarum spectare noscuntur. Assignetur autem cuilibet magistrorum à Capitulo vnius præbendæ proventus, & à Metropolitano tantumdem; non quodd propter hoc efficiatur Canonicus, sed tandiu redditus illos percipiat, quamdiu perstiterit in docendo. Quod si fortè de duobus Metrop. Ecclesia granetur, Theologo iuxta modum prædictum ipsa provideat; Grammatico verò in alia Ecclesia suæ ciuitatis, siue dioc. quæ sufficere valeat, faciat provideri.

NOTÆ.

a **G**Enrali.] Lateranensi videlicet, sub Innocentio III. celebrato, ubi cap. 51. reperitur textus hic, nec non in quarta collectione, sub hoc titul. cap. vnic.

COMMENTARIUM.

1. **CONCILIUM**
TRADITUM
ET PROBATA

IN his quatuor constitutionibus vns, eademque sententia proponitur, videlicet: *In qualibet Ecclesia Cathedrali prouidendum esse de Magistro, qui clericos scholares pauperes doceat, & ne pro licentia docendi aliquid exigatur.* Quod etiam causum lego in cap. de quibusdam 12. 37. dist. cap. 3. de vita & honest. cleric. Concil. Cabillon. sub Carolo, can. 3. Scholæ Episcopi constituantur, in quibus & lateralis salutaris disciplina, & sacra Scriptura documenta discantur. Valentinum sub Lothar. cap. 18. Tullense pars. 2. cap. 10. Deprecandi sunt pî Principes, magistri, & omnes Fratres, & Episcopi nostri instantissime commendi, ut ubicunque occurrerint: Deum idoneos ad docendum, id est fideliter, & deuotè intelligentes, diuina dignetur, constituuntur antiquæ schola publica, ut vniuersis eruditionis, & diuina videlicet, & humane, in Ecclesia Dei fructus valeat accrescere. Concil. Meldense can. 35. Synodus Romana fusso Lufcolic, & Lothari habitæ, can. 1. ibi: Magistri & Doctores in singulis locis constituantur, qui liberales artes assidue doceant, & si tales non inueniantur, cum diuina Scriptura Magistri, & instantius ecclesiasticis officij nullatenus desint. Alexand. III. Rheuenti Archiepiscopo scribens in cap. vnic. hoc tit. in 2. collect. ibi: Nos autem in Concil. Lateran. super auctoritate Domini celebrato, ac tota Ecclesia, quæ conuenerat, approbante, statimus, ut per omnes Ecclesias Cathedralis ad subsidium magistri, qui scholæ regat, præbenda una debeat deputari. Quæritur ne in vniuersam decreta, quæ recta sunt, perri videantur, si per nostram, & Episcoporum instantiam non fuerint obseruata, una fraternitatis mandamus, quatenus ad Ecclesias supradictas accedat, & ad opus Magistri, qui scholæ regat, aliquod restituit beneficium. Leo X. in concord. cum Francisc. Rege Francia, §. 1. tit. de collatione. Theodulfus ad presbyteros Aurelian. cap. 19. & 20. refert Ant. August. in epis. iuris lib. 14. tit. 9. Trident. sess. 3. de reform. cap. 18. Illustant ultra congeitor in præsentia à Barbofa Crefol. lib. 2. mystag. cap. 14. Suarez tom. 1. de Relig. lib. 4. cap. 18. Coruinus lib. 4. epistol. tit. 4. Lantidemeti. lib. 2. de veteri monacho. cap. 107. Acaña in cap. de eulogio, 18. dist. Dnatenus lib. 2. de sacris Eccles. cap. 15. Bosquetus ad Innoc. III. lib. 3. epis. 114. Ro-

bertus lib. 3. rer. indic. cap. 2. Paret Menbo de re academica lib. 2. cap. 12. Petrus Gregor. lib. 15. syntag. cap. 14. Zypceus in consule. canonic. ad hunc titul. cap. 1. Chopinus de sacra pol. lib. 1. tit. 5. numer. 12. Contadus Kling. lib. 4. loc. commun. cap. 57.

Sed pro dubitanti ratione in præsentem assertionem ita infurgo. Episcopi propterea officium est populum in Ecclesia docere, ut probat Barbofa de potestate Episcopi pars 1. tit. 2. gloss. 10. Ergo non desideratur ut in Ecclesiis Cathedralibus magister eligatur, aut constituatur ad docendum. Accedit, nam etsi magister institui debeat, ut publice doceat sacram Theologiam, vel sacros canones, tamen Grammaticæ doctrinæ non docet Canonici: unde D. Gregorius reclus in cap. surbat, 37. dist. cap. cum multa, 86. dist. obuiat quendam Episcopum pro quod Grammaticam profiteretur; ergo pro Grammatica docenda non debet clericus magister in Ecclesia Cathedrali institui. Secunda etiam pars assertionis diffisile redditur dum in ea docetur, non posse recipi pretium pro concedenda licentia docendi; nam pro docendo, vel non, impant pecunia recipitur, et de sacra Theologia agitur; quia licet leueni sit res spirituales, procedant tamen ab spiritu ercto, laboreque acquiruntur, ut probant Binsfeldius in rubric. de summa. Gibalinus eod. tract. quest. 6. consil. 4. Accedit vsus maiorum Academicarum, in quibus pro gradibus concedendis in omnibus Facultatibus pecunia exigitur, quem vsum probat, & defendit P. Mendo lib. 2. cap. 11. de iure academico, per totum. Igitur quia pro doctrina ipsa, & pro licentia docendi impunè pecunia exigitor.

Quid dubitandi ratione non obstante, veta est præfens assertio, pro cuius expositione sciendum est, litterarum cognitionem, liberaliumque artium disciplinam, quibus iuuentus in publicis Gymnasiis eruditur, magnam Reipublicæ vtilitatem asserere, ut testatur Poratichus de influmendi libris, ibi: Per hanc enim, atque hoc aduicere nosse licet, quid honestum, quid turpe, quid iustum, quid iniustum, breui quid expectandum, quid fugiendum quænam admodum erga Deum, quænam admodum erga parientes, qui erga moierem, qui erga leges, qui aduersus Magistratum, qui aduersus alienos, qui aduersus amicos, qui aduersus coniuges, qui aduersus seruos nos gerere debeamus, Deo ut columus, parentes ut veneremus, maiores nam ut reueremur, legibus parcamus, Magistratibus audientes sumus, amicis diligamus, castis cum coniugibus agamus, pietatem in liberos exercemus, in seruos non sanemus, & quod caput est, rebus secundis ut non exultemus, neque nimium animam contrahamus rebus asperis;

2. **IMPROBATA**
TRADITUM
ET PROBATA

3. **DE UTROQUE**
DE UTROQUE
TITULO

officiis; neque in voluptatibus gestamus, nec in ira exardescimus, vel offensus sumus. Ideo in omnibus Rebus publicis bene motatis prima cura fuit scholarum publicarum, ut essent magistri, qui publice Grammaticam, ceteraque artes profiterentur, & docerent, publico illis stipendio constituto. De Republica Hebraeorum, ubi erant scholae Prophetarum, & Scribarum, latè agit Hallerius de Eccles. hierarch. lib. 1. cap. penult. & de veteribus collegiis puerorum, ubi pueri erudiebantur, plura adducit Viuar. ad Flavianum Dextram anno 385. apud Romanos Hadrianum exsistere magno laudum præconio commendat Lampadius, quod academias instituisse, & eorum studiosius esse, quæ liberales artes profitebantur. Et Alexius Comnenus scholam instituit, quæ pupillis, pauperumque liberi docerentur, vicumque, & alimenta, tam doctores, quam discipulos assignavit, teste Zonara tom. 3. pag. 129. & stipendia non vulgaria esse Professoribus studiorum assignanda, docetur in Lonic. Cod. de studiis liber alibus, l. medicos, §. final. Cod. de Professor. & Auditoriis, lib. 11. l. 1. Cod. Theodos. eodem tit. Plura Theophilus Raynaud. tom. 11. in Thesauria rei literariae, fol. 427. quin & Athalaricus Rex Senaii Romano de stipendiis professoribus solvenda ita scribit apud Cassiodorum lib. 9. epist. 21. Filiorum causas in re ad patrum cognoscimus remissis personas, ut ipsi de illorum promeritis debere cogitare, quorum intercessit studia Romana proficere. Neque enim credendum est, eos inde posse minus esse sollicitos, unde & generi vestro crevit ornatu, & carui promeritis assidue lectio conciliat. Nuper, ut est de vobis cura nostra sollicita, quorundam sustentatione cognovimus, Doctores eloquentia Romana laboris sui confusum præmia non habere, & alioquin non tam ardore fieri, ut scholarum magistris deputata summa videatur imminui. Quapropter cum manifestum sit, præmia artes nutrire, nefas iudicavimus, doctoresque adolescentium aliquid subtrahere, qui sunt potius ad gloriam studia per commendationem impetrata pronuntia. Prima enim Grammaticarum schola est fundamentum pulcherrimum litterarum, mater gloriosa facultatis, qua cogitare novit ad laudem, loqui sine vitio: hoc in cursu orationis sic errorem cognoscit obsonum, quemadmodum boni mores erumem detestantur externum. Nam fuit Musicum consonantibus choris efficit dulcissimum melos, ita dispositis congruenter accentibus, metrum novis decantare Grammaticum. Est Grammatica magistra verborum, genatrix humani generis, qua per exercitationem pulcherrima lectiois, antiquorum nos cognoscitur iuvare consiliis. Hac non veniunt barbari Reges; apud legales Domini monere cognoscitur singulari. Arma enim & reliqua necesse habent: sola reperitur eloquentia, qua Romanorum dominis obsecranda. Hinc orationem pugna civilis iuris classicum canis. Hinc cunctas preces nobilissima diffundit commendat: & ut reliqua tacemus, hoc quod loquimur, inde est. Qua de re P. C. hanc vobis curam, hanc auditorium propitiâ divinitate largimur, ut successor schola litterarum litterarum, tam Grammaticas, quam Orator, nec non & iuris Expofitor, commoda sui decessoris ab eis, quorum intercessit, sine aliqua immutatione percipiat: & semel Primi Ordinis vestri, ac reliqui Senatus amplissimi auctoritate firmatus, donec suscepti operis idoneus reperitur, neque de transferendis, neque de imminuendis annuimus à

D. D. Genzal, in Decretal. Tom. V.

quolibet pascitur improbum quæstionem: sed vobis ordinantibus atque custodiendibus, emolumentum suorum servitute patiamur, Proficillo vobis nobilissimus consilia servemus. Plura congefserunt de Acalematium villitiae Lofius, Oldendorpius, & Pater Mendy in tract. de iure academico, Adam Contzen. lib. 4. polit. cap. 4. Frances de Eccles. Cathol. cap. 28. Befoldus tom. 2. polit. integro tract. de iure academico.

Nec minor cura fuit apud veteres Ecclesias Patres instituendi scholas, in quibus litterarum studia publicè profiterentur, ut constat ex Concilio Aquilegrano, relato lib. 1. Capituli Caroli, cap. 72. ibi: *Ut schola legentium puerorum fiat.* Et lib. 2. capituli, cap. 1. ibi: *Schola fiant ad filios, & ministros Ecclesie instruendos, vel edocendos, sicut nobis præterito tempore apud Antiochiam promissum, & vobis iniunctum, in congruis locis, ubi dum nec perfectum est, ad maiorem utilitatem, & profectum à vobis ordinari non negligamus.* Valense 2. cap. 5. Concilii. Mogunt. sub Carolo can. 45. *Propterea dignum est, ut filius suus domui ad scholam, sine ad monasteria, sine foras.* Et in Concilio Arlati, c. can. 4. Taron. 2. can. 28. & 22. Rhebenis can. 4. & tribus sequentibus, Episcopi præcipiunt, & iniungunt, ut priuatum, publicèque presbyteros, ac clericos suos, tam de Sacramentorum administratione, quam illis sacris functionibus erudiant, atque instruant. Et de publicis scholis instituendis expressius ita censuerunt PP. Concilii Parisi. lib. 3. cap. 12. *Similiter obnox, & suppliciter vestra Celsitudini suggerimus, ut morem puerorum sequentes, solum in urbibus congregatissimis Imperij vestri laici schola publica ex vestra auctoritate fiant, ut labor Patri vestri, & vestri per incuriam (quod obis) labefactando non depercat.* Concil. Valent. 3. can. 18. in Gallia: *De scholis, tam diuina, quam humanae litteraturae, nec non ecclesiasticae cantione iuxta exemplum predecessorum nostrorum aliquid inter nos irruerit, & si postest fieri, statuatur, atque ordinetur.* Concil. Lingon. cuius caoones relecti, & confirmati fuerunt in Synodo apud Saponarias in Gallia, can. 10. Idem in Hispania repetitis canonibus cautum legitur in Concilio Emerit. can. 18. Tollet. 2. can. 1. Tollet. 4. can. 24. quæ, & alia veteris iuris testimonia referunt Ant. Augusti, & Hallerius ubi supra: & varias Ecclesiarum scholas refert Aluisecca hic, & lib. 2. differt. cap. 7. Nec solum in Ecclesiis, & Episcopis olim scholæ habebantur, verum & in monasteriis scholæ erant. Ekkehardus lib. de cap. monast. sancti Galli, cap. 6. ibi: *Erant disciplina loci, ut semper, & tunc ferner, non modo in claustro, sed & in schola extrinseca.* Ex Concilio Mogunt. supra relato & varias monasteriorum scholas refert Gibalinus de clausor. regul. discussit. 1. cap. 2. §. 11. & plura de his scholis in monasteriis olim vitiis congefserunt Landrimeret. lib. 2. de veter. monach. cap. 107. Filicardus in cap. 15. §. 3. de offic. Ordini. Bosquetus in notis ad Innoc. III. lib. 3. Registr. 14. epist. 114. Sberlogus tom. 3. in Camica, sessio. 35. cap. 3. *scilicet, quos Salamantienfem nostram Academiam debitis extollit laudibus.* Nec contrarium probat canon 45. Concilii Aquilegrani. In illis verbis: *Ut schola in monasterio non habeatur, nisi canon, qui oblati sunt.* Nam pro huius canonis expositione sciendum est, præter scholas proximè relatas,

4.
De schol
lib. Ec
cliarum
Rym.

M fuisse

fuisse alias priuatis intra claustra, in quibus, qui clericali, aut monachali officio destinabantur, à monacho sibi preposito erudiebantur. Concil. Tolet. 2. can. 1. Tolet. 4. can. 23. ubi constituitur, ut qui in Clero puberes, aut adulescentes existunt, omnes in vno ecclesiarum atrii commorentur, & in disciplinis ecclesiasticis agant depotatè puratissimo seniori, quem & magistrum disciplinæ, & testem vitæ habeant. Concil. Turon. 2. can. 14. Aquilegen. can. 135. Erant ergo in monasteriis scholæ exteriore, ubi laici etiam erudiebantur; & interiores, ubi monachi, & pueri oblati educabantur: consistit ex Ekkardo dist. cap. 6. & cap. 10. ibi: *Cum apud sanctum Gallum ambobus scholas teneret, nemo præter pastorem quinquam alteri, nisi latini, assensu esset protogui.* Nec in eis scholis alij admittiebantur præterquam oblati, & clerici iuniores probatæ vitæ. Vnde Theodulphus Aurelianensis ad presbyteros cap. 19. nepotibus sacerdotum concessit, ut etiam scholas interiores monasterij possent adire, ibi: *Si quis ex presbyteris voluerit nepotem suum mittere ad scholam in Ecclesia sancta Crucis, aut monasterio sancti Amiani, sancti Benedicte, aut sancti Liferadi, aut in ceteris de his carnobis, quæ nobis ad regendum concessa sunt, ei licentiam faciendi id concedimus.* Vnde textus in dist. can. 45. acceptus est de his scholis priuatis intra monasteria existentibus, ut docuerunt Bosquetus ad Innoc. dist. epist. 114. Hallierius dist. 1. 5. Ypes tom. 3. chron. D. Benedicte ad calcem libri, in notis ad ipsum canonem. Alii cetera lib. 6. differt. cap. 7.

His ita animaduertis, & aliis suppositis, quæ pro studiorum necessitate, & virilitate congregamus in cap. licet, de proband. ratio præsentis asserctionis prouenit ex eo, nam cum Ecclesiæ PP. agnouissent, ita necessariam esse studium litterarum in pueris, & in adultis, statuerunt, ut in Ecclesiis Cathedralibus essent clerici, qui Grammaticam docerent, & in Ecclesiis Metropolitans publicè Theologiam legerent, & magnâ cum ratione, si attendamus personam magistri, & loci, ubi scientiæ doceri iubentur. Persona docentis est clericus, cuius proprium est erudire pueros, & ignaros. Synodus Nicæna celebrata anno 787. can. 10. ibi: *Non licet clericis curas seculari, & ad vultum peritiam suscipere, ut qui sint à canonibus prohibiti hoc facere: potius autem ad docendos pueros, & seruos accedant, legentes eis diuinas scripturas: ad hoc etiam sacerdotum serui sunt.* Concil. Tolet. 2. can. 1. ibi: *Leitores in domo Ecclesiæ sub Episcopali præsentia à Proposito suo erudiri debent.* Tolet. 4. can. 21. Emerit. can. 18. Valense 2. can. 1. Inde acriter controuersum video inter Cellorium, & Hallierium, an officium docendi spectet ad Ecclesiæ hierarchiam. Ratione etiam loci, ubi doceri iubetur in præsentia, etiam valde consona est disciplinæ Ecclesiæ præsentis asserctio: cum, ut supra reuli, scholæ olim frequentius essent in Ecclesiis, monasteriis, aut prope ea: cuius moris ratio traditur in oratione Rhetoris ad V. P. Presidem Gallie sub Constantino Imperatore, his verbis: *Maximi & oportet, & sua esset exercere iuuentutis ingenia, ubi tam propinque sunt summa amica doctrina, ubi ex proximo innot mens diuina sapientia.* Et quondam apud veteres Bibliothecæ, vel in ipsius Deorum templis, vel vicinis xibus collocatæ erant, ut Tertull. in Apolog. cap. 19. refert: quin & Cedrenus in lustino Cuiropole, dum narrat historiam pueri Iudei à

patre in elibanum ardentem coniecti ob sumptus sanctæ Eucharistiæ reliquias vnâ cum sodalibus Christianis, scribit scholam vnde pueri illi redibant, Ecclesiæ vicinam fuisse. Rectè ergo constitutum fuit in Concilio Lateran. in præsentia relato, ut in qualibet Ecclesia esset vnus magister, qui pueros, clericosque doceret. Et licet scholæ hæc, tam puerorum, quam clericorum, omnino exerceri desierint, quia in omnibus sæpè prociolis sunt generalia studia in maioribus verbis; tamen in Ecclesiis remanserunt præbendæ Theologales, quæ Theologo assignantur, & Scholasticæ, quæ Canonico appellatur Scholasticus in cap. quærit, hoc vint. Magister scholæ, seu scholatorum in cap. 4. de postul. Prælat. cap. 5. de regul. in 5. compil. Primitius in cap. constituti 23. de appellat. & in plerisque Ecclesiis nomen hoc Magistri scholæ adhuc manet; in aliis verbò in locum Scholastici successit Cancellarius Vniuersitatis, qui sublati Scholastici nomine, dignitatem retinet, & simul est Cancellarius generalis Studij, cuius Apostolicæ auctoritate competit ius concedendi Grados, ut supponitur in cap. 4. iuncta iustitipone, de arbitrat. cap. simul, de lite non contesti, & observatur in nostra Academia Salamanticensi, ubi Magister Scholæ, qui præbendam cum dignitate in Ecclesia Cathedrali habet, est simul Cancellarius Vniuersitatis. De cuius iurisdictione, & dignitate latè agunt Edeobar, & P. Meno ubi supra. Aliquando Scholasticus, & Cancellarius idem non est, ut in cap. constituti 46. de appellat. Et licet olim inter DD. quæstio excitaretur, an Magister Scholæ dignitatem haberet, ut constat ex traditis à Pæciano de probat. lib. 2. cap. 27. à num. 107. iam tamen hodie ex statutis Ecclesiæ Scholasticæ vna est & principibus dignitatibus, ut probat Petrus Gregor. lib. 5. synag. cap. 19. Azor part. 2. instit. moral. lib. 3. c. 23. Cæsar de Ecclesiæ hierarch. part. 3. diffus. 12. §. 4. Barb. de Canonico, cap. 10.

Nec obstat dubitandi ratio suprà adducta; nam licet Episcopi proprium officium sit populum in Ecclesia docere; tamen etiam alios esse debere in Ecclesia Dei Doctores, constat ex D. Paulo ad Ephesios cap. 4. & ex illis canonibus, ubi docetur Doctotus nomen sibi assumere neminem posse, nisi qui ad illud munus electus est. Concil. Cæsaraugust. can. 7. ibi: *Item lectum est, ut quæ Doctores sibi nomen sumant præter hos personas, quibus concessum est, secundum quod scriptum est, & ab vniuersis Episcopis dictum est, placet.* Et ita licet Episcopos ratione officij teneatur in eam populum docere, tamen speciales magistri constitui debent ad Grammaticam pueros docendam, ut lo præsentia constituitur. Nec obstat augmentum ipsius difficultatis, deductum ex dist. cap. cum multa; nam in eius caso reprehenditur à D. Gregorio Episcopus, qui omnino deditus erat studio Grammaticæ & humanarum litterarum, Theologiam omittendo, & negligendo, ut docuit Ramirez de Prado in scholasticis, num. 53. & notauimus in cap. 6. de arce, & qualis, ubi expostulamus quatenus liceat clericis, & Ecclesiæ ministris lectio liberorum Gentilium. Nec obstat alia difficultas, nam in præsentia non prohibetur exactione pecuniæ per Magistrum à discipulis pro doctrina scientiarum, seu eruditionis ipsius; nam certum est, in huiusmodi pretij exactione nullam committi simoniam, cū Theologia doceatur, aut si Adlocutus consilium vendat in causa spirituali, cap. non licet,

licet, 11. *quæst.* 3. *cap. non sunt* 14. *quæst.* 5. quæ huiusmodi scientiæ procedunt à labore naturali, ut defendunt Gibalinus, & Binsfeldius *vbi supra*, Pater Mendo de iure academico *lib. 1. cap. 10.* Vnde stipendia, & salaria Præceptorum iure eiuss approbata fuerunt. Quare Paulus, & Iulianus docuerunt in *l. cum tuus* 12. §. 3. *ff. de adm. nistr. tit. 1. 4. ff. vbi pupillus educari*, pro dignitate natalium pupilli tutores posse constituere metcedem Præceptoribus : & in *l. duo* 71. *ff. pro socio*, referunt duos societatem coisse, ut Grammaticam docerent certo stipendio & salario constituto. Pro quorum illustratione adici possunt Reuarius *lib. 2. consuet.* cap. 10. & 19. Rodulph. Fornerius in *notis ad Cassiod. lib. 4. epist. 1.* Suetonius de Mendoza *ad legem Aquil. lib. 2. cap. 3. sect. 6. ex mem. 16.* Merillus *lib. 5. prior. obseru. cap. 1.* & 17. Cuicaz *lib. 58. Pauli ad edict. in l. cum tuus* 7. Et salaria hæc plerumque appellabantur mercedes. Marcus Tullius in *Philip. At quanta merces Rhetori est data, audite, audite Patres Conscripsi.* Auctor de Claris Grammaticis, de Lelio Praconino : *Precia Grammaticorum tanta, mercedesque tam magna.* Et *l. 4. §. sed & si, de decretis, ab ordin. faciend.* D. Hieron. *ad Panmachium epist. 102. Qui illam in magna mercede nihil sciens docuerunt, Antonius de Exuperio.*

— Tum parvas grandi mercede docendi. Iuuenal. *satyr. 7.* Macrobius *lib. 1. cap. 12.* Illustrat Suetonius ad Siderium *lib. 5. epist. 7. fol. 334.* Illud notandum, tribulationem professorum Iuris, & Philosophiæ, non appellari mercedem, sed bonorem, *dist. 12. §. an & Philosophiæ, ff. de variis & extraordin.* Rhetores vero, & Grammaticos stipendium, & mercedem accipere, *dist. 1. Aquilium.* Quod stipendium dicebatur Minervale. Notavit Retes de *donationib. cap. 3. num. 12.* Et discipulos Magistros suos munificentia ditare debere, dedecuit ex *l. Aquilium, ff. de donat.* & Sabinum à suis scholaribus fuisse sustentatum, refertur in *l. 2. ad finem, ff. de orig. iuris* : & ideo vilior à negotiorum gestore sunt expensæ pro mercedibus magistrorum, *l. si patrons, Cod.*

de negot. gestis. Itemd Præceptores, quibus promissum stipendium non soluitur, extra ordinem auditi docentur in *l. 1. §. 2. ff. de extraordin. cogniti.* & probantur Cuius in *l. vnic. Cod. de studiis liber. lib. 12.* Giphanius ad *Ethic. Aristot. lib. 3. cap. 1.* Reuarius *lib. 1. consuet. cap. 10.* vbi exponit Iuvenalem *satyr. 10.* in illis verbis :

Eloquium, aut famam Demosthenis, aut Ciceronis.

Incipit aprare, & viciis Quinquaginta optat.
Quisquis adhuc vno partem solis æstæ Ad-
miratur,

Quem sequitur cunctis angusta veruula capsa.

Si verò Magister beneficium, aut publicum stipendium sustinens habeat, pretium aliquod à discipulis exigere non valet, *cap. 1. iuxta veram lectionem, hoc. sigel.* sponte tamen oblata eo casu à discipulis recipere non prohibetur, *cap. prescriptis 10. quæst. 3. cap. de ceteris 18. dist. cap. quidquid, cap. placuit 1. quæst. 1.* Prohibetur ergo in presenti pro licentia concedenda pretium exigere, non quia id simonia sit, ut vulgo creditum est, sed quia ad simoniam crimen accedit, quia astra cupiditate pro licentia docendi aliquid temporale extorquet à doctis viris, qui ad scientiarum, bonorumque litterarum cognitionem aditum patefaciunt, & muniant, quos deest potius precibus, & muneribus ad docendum inuitari. Nec obstat quod expendebamus de usu in academiis recepto exigendi pretium pro gradibus Bachelareatus, Magisterij, & Doctoratus; nam talis pecunia non exigitur pro licentia docendi, sed pro honoribus, & emolumentis temporalibus, quibus similes graduati perficiuntur. Quæ omnia sunt naturalia, & pretio æstimabilia. Vnde quod celeberrimæ Academiæ sunt, & maiora commoda graduati assequuntur, maiora solent stipendia, vulgò propinas, persolui, ut probat P. Mendo de *iure academiæ, lib. 2. quæstion. 12. per totam.* Hinc expouendum erat Elmon 71. Synodi sextæ: *de eius interpretationem dedimus in cap. 8. de viciis & beneficiis clericis.*

C A P V T V L T.

Honorius III.

Super specula. *Et infra :* Cum itaque de singulis prouinciis puellæ speciosæ, ac Virgines pro Rege Alsuerio, qui Beatitude dicitur, per ancillas queri debeant, & adduci ad arcem & mœnia ciuitatis, & per manum Aggei mundum muliebrem accipere, necessariorum videlicet fulcimenta; volumus & mandamus, ut statutum in Concilio generali de Magistris Theologis per singulas Metropoles statuendis inuiolabiliter obseruetur, decernentes insuper de consilio fratrum nostrorum, ac districte præcipiendo mandantes, ut quia super hoc propter raritatem magistrorum se possent forsitan aliqui excusare, ab Ecclesiarum Prælati, & Capitulis ad Theologiæ professionis studium aliqui docibiles destinentur, qui cum docti fuerint, in Dei Ecclesia velut splendor fulgeant firmamenti, ex quibus postmodum copia possit haberi Doctorum, qui velut stellæ in perpetuas æternitates mansuri, ad iustitiam valeant plurimos crude: quibus si proprii pronentus Ecclesiæ non sufficiunt, prædicti necessaria subministrent: docentes verò in Theologica Facultate, dum in scholis docuerint, & studentes in ipsa integre per annos quinque percipiant de licentia Sedis Apostolicæ prouentus præbendam, & beneficiorum suorum, non obstante aliqua contraria consue-

rudine, vel statuto, cūm denario fraudati non debeant in vinea Domini operantes. Hoc autem inconcusse volumus obseruari, firmiter disponentes, quod feriamus poenā debitā transgressores.

NOTÆ.

1. ^a *Honorius III.*] Ita etiam legitur in quinta collectione, *sub hoc titul. cap. vnic. & tam inscriptionem, quā huius textus historiam retulit in cap. super, ne cleric. vel monach.*
^b *Generalis.*] Lateranensi videlicet, relato superà in cap. *quantum.*
^c *Anno quinquagesimo.*] Hoc tempus non refertur ad docentes, sed ad audientes, qui per quadriennium, aut quinquennium solent studiis interesse

pro diversitate scientiarum: de quo temporis spatium agit Mancinus *Genial. cent. 2. cap. 152.* quem transcripsit Barbosa *tom. 6. in fidei. ad hunc textum.*

^d *Feriamus.*] Id est excommunicatione ligemus, ut etiam accipitur ferite in cap. 6. de rebus Ecclesiæ, ibi: *Anathematizamus feriamus: & in can. 5. Synodi Veronensis, can. 7. Concilii Alogum. & aliis vulgaris.*

Commentarium huius textus dedimus in cap. 4. de, de prebend.

TITVLVS VI.

De Iudæis & Sarracenis, & eorum seruis.

CAPVT PRIMVM.

Ex Concilio Maticensi.



T licet quid de Christianis, quod aut captiuitatis incurfu, aut quibuscumque fraudibus Iudæorum seruitio implicantur, debeat obseruari, non solum canonibus, sed & legum beneficio iam pridem fuerit constitutum; tamen quia nunc ita quorundam querela exorta est, quosdam Iudæos per ciuitates, aut municipia quærentes in tantam insolentiam, & proteruiam protulisse, ut nec reclamantibus Christianis liceat vel pretio de eorum posse seruitute absolui: idcirco præsentī Concilio Deo auctore sancimus, ut nullus Christianus Iudæo deinceps debeat seruire; sed datis pro quolibet bono mancipio 12. solidis, ipsum mancipium quicumque Christianum, seu ad ingenuitatem, seu ad seruitum licentiam habeat redimendi: quia nefas est, ut quos Christus Dominus sanguinis sui effusione redemit, persecutorum vinculis mancant irretiti. Quod si acquiescere his, quæ statuimus, quicumque Iudæus noluerit, quamdiu ad pecuniam constitum venite distulerit, liceat mancipium ipsum suum cum Christianis vbicumque voluerit habitare.

NOTÆ.

1. ^a *Maticensi.*] Ita legitur in prima collectione, *sub hoc titul. cap. 1.* sed ita idem, tam in ea, quā in hac sexta: legendum enim est, *Maticensi*, in quo Concilio can. 16. reperitur textus hic prope in præsentī transcribo. Concilium hoc Maticonense 1. celebratum fuit sub Pelagio II. temporibus Gunterami Regis Gallie anno 588. hortatu ipsius Regis, ad motum reformationem, ac præcipuè Iudæorum petulantiam coëscendam, ut refertur Baronius in eodem anno, Coriolanus in *summa Conciliorum*, Binus & Sirmundus in *notis ad ipsam*, tom. 3. *Regia editio*, fol. 65. In eo editos fuisse viginti canones, scripsit Ado Viennensis Episcopus in *chron.* his verbis: *Post Philippum Emancipus vir sanctus Episcopus Viennæ lenatus est. Hic cum sancto Prisco, & Artemio Senonico, &*

Remigio Blaricensi, & cum aliis sanctis Episcopis viginti capitula ecclesiastica perficere viderant. Dictum est à Maticensi ciuitate Gallie, de qua fratres Sarmat. tom. 3.

^b *Fraudibus.*] Venditionibus videlicet iniustis.

^c *Sed & legum.*] L. 1. *Cod. ne mancipium christianum*, l. 57. *C. de Episcopis & clericis, & aliarum*, quas sequenti commentatio dabimus.

^d *XII. solidis.*] Iure ciuili æstimato communis seruus erat viginti solidorum, l. 3. *C. communis de legat. l. inter 26. §. final. ff. mandati, l. 4. ff. de seruus fugi. l. Papinianus d. 4. final. com. duobus legibus sequentibus, ff. de iustici. restan. l. 2. Cod. de fidei-commis. liberi. l. si mulier 31. ff. de minor. l. cum ex falsis 47. ff. de manumiss. testam. l. 1. §. 5. Cod. de communi seruus: vel quindecim, l. vir. ff. de condic. instum. l. 35. Cod. de donationib. nisi aliquē arte, aut scientiā essent præditi, iuxta*

luta distinctionem adductam in *dist. l. 1. §. 5.* vel si eunuchi essent, *dist. l. final. Cod. commun. de legum. l. unica, §. fin. verò, Cod. de Latina libert. l. si servus 27. §. c. 1. §. 2. ff. ad leg. Aquil.* quia pretiosiores erant, *l. 3. §. idem, ff. ad leg. Corn. de sicar. Paulus lib. 5. sentent. tit. 2. §. final. ff. de oper. serv. l. sed 9. §. final. de iniuriis, l. 3. §. 4. ad leg. Jul. de vi: ex rationibus, quas cougerunt, & illustrent Suarez ad leg. Aquil.*

lib. 2. cap. 3. sect. 6. Basilii Legion. quest. 5. scholasti. cap. 8. Salmut. ad Pancrat. lib. 2. tit. 2. p. 9. 93. De pretio solidorum egi in *cap. extra 20. de simonia.*

e Ingerimus.] Idest libertatem, vt in *cap. 1. de seruis non ordin.*

f Seruitium.] Permissum, vt exponit Brodchorst. *miscl. cent. 1. assert. 4.*

CAPVT II.

Gregorius Venantio Episcopo ^a Lunensi.

Multorum ad nos relatione peruenit, à Iudæis in Lunensi ciuitate degentibus, quantò à fraternitatis tuæ patientia operosior. Oportebat quippe te respectu loci tui, atque Christianæ religionis intuitu, nullam relinquere occasionem, vt superstitioni Iudæicæ simplices animæ, non tam suasionibus, quàm potestatis iure quodammodo deferirent. Quamobrem hortamur fraternitatem tuam, vt secundum piissimarum ^b legum tramitem, nulli Iudæo liceat Christianum mancipium in sua retinere domo. Sed si qui penes eos inueniuntur, libertas eis tuitionis auxilio ex legum sanctione seruetur. Hi verò, qui in possessionibus eorum sunt, licet ipsi ex legum restrictione sint ^c liberi, tamen quia colendis eorum terris diutius adhaerent, vt pote conditionem loci debentes, ad colenda quæ consueuerant, rura permaneant, pensionesque prædictis viris præbeant: & cuncta quæ de ^d colonis, vel originariis præcipiunt, peragant, extra quod nihil eis oneris amplius indicatur. Quod si quisquam de his, vel ad alium migrare locum, vel in obsequio suo retinere voluerit, ipse sibi reputet, qui ius colonarium temeritate sua, ius verò dominij sub iuris seueritate damnauit. In his ergo omnibus ita te volumus soletèr impendi, vt nec disrepti gregis pastor reus existas, nec apud nos minor æmulatio fraternitatem tuam reprehensibilem reddat.

NOTÆ.

1. ^a *Veneti.*] *Lunensi*, legitur in hac sextæ collectione, sed malè; legendum enim est, *Lunensi*, vt habetur in *cap. præfati, §. 4. dist. & in prima collectione, sub hoc tit. cap. 3.* & in ipsius epistolæ Gregorij, vbi *lib. 3. epist. 21. indit. 1. 2.* reperitur textus hic: ex quo rectè iura textum hunc restituo. Luna Etruriæ ciuitas in confinio Liguriæ, ad Maestæ fluminis ostia, peruerusta Tuscorum Colonia, inter 21. ciuitates numerata: meminerant Lunæ Liuius *lib. 39.* Silius Italicus *lib. 8.* relati ab Vghellio *tom. 1. Italia sacra, fol. 893.* Cathedra Episcopali decorata fuit iam à primis Ecclesiæ temporibus. Eius Præfuit Sando Venantio, quem nonnulli Laudensem Praefolem faciunt, referet ibi in præfati Gregorius.

^b *Legum.*] *L. 1. Cod. de Christianorum mancipium, l. 37. Cod. de Episcop. & cleric.*

2. ^c *Liberi.*] Scilicet adscriptitij, de quibus egi in *cap. 1. de seruis non ordin. cap. 3. de immunit. Eccles.* Vnde Iudæus potest habere adscriptitium Christianum in consequentiam ruri, quod possidet, vt docuerunt Azor *part. 1. instit. moral. lib. 8. cap. 22.* Thom. Sanchez *lib. 2. summa, cap. 31. num. 11.* ex hoc textu, quem ruri non animaduertent Platea in *l. quomodo modum, numer. 9. verf. Si quid, Cod. de agricol. Suetius de aliment. tit. 8. priuileg. 89. num. 2.* docuerunt, non posse Iudæum emere fundum cui sunt adscripti serui Christiani.

D. D. González, in Decretal. Tom. V.

^d *Colonis, vel originariis.*] De quibus plura D. Nicolus de Casto in *l. unica, Cod. de capitul. c. nupis*, vbi *num. 19.* textum hunc exponit.

COMMENTARIUM.

EX his duabus constitutionibus sequens communiter deducitur assertio: Iudæos Christianorum mancipium retinere non debet, sed cogitur infio pretio Christianis vendere ^{3.} & si renuat, seruus eriditur, & patur in libertatem. Probat eam textus in *cap. mancipia, cap. præfati, §. 4. dist. cap. c. 1. cap. multos, cap. Iudæus 17. quest. 4. cap. cum si nimis, cap. multorum, cap. ad hoc, cap. final. hoc titulo, cap. 1. inter c. 1. integ. de consuet. cap. dilectum 29. de rescriptis, cap. consulti, el 3. de appellat. Zacharias in *cap. 2. hoc tit. in 1. collect. Honorius III. in cap. omne, hoc tit. in 5. compil. Gregorius nonus lib. 7. epist. 11. ad Brunichildem Reginam, ibi: Mitari sinimus, quod in regno vestro Iudæos Christiani mancipia possiderent permittit; quid enim sunt omnes Christiani, nisi membra Christi, &c. Coecil. Meldense can. 73. Christiana mancipia, quæ à Iudæis adducuntur, aut possidentur, aut mandatoribus contrahuntur, aut certis Christianis imperatoribus intra diem quadraginta remittuntur, & transacto hoc diei numero, nec apud eos quolibet modo remanent. Si autem quidam ex istis mancipiis talem agriuitudinem feratiffi incurverint, ut infra flauas illos vendi non valeant, addibenda soliciendo est, ut dum saluti fuerint pristina restituta, similiter modis omnibus distrahantur, &c. nec Christiana mancipia in domo Iudæi habitare si-**

M. J. — Rantus

namur, Aurel. 3. cap. 13. De mancipiis Christianis, qui in Iudaeorum servitio detinentur, si eis quod christianae religio vetat, à dominis imponitur, aut si eos de Ecclesia anathematizati tollant pro culpa, quae remissa est, & effigere, aut cadere fortasse praesumpserint, & ad Ecclesiam iterum confugerint, nullatenus à sacerdotibus reddantur, nisi pretium offerant, ac deus. Aurel. 4. can. 27. Meli. can. 73. Iudaei christianis legibus velut servitii personae, ne occasione domini servitium veneranda religionis immutent. Tolet. 4. can. 65. Ex decreto gloriosissimi Regis hoc sanctum elegit Concilium, ut Iudaei non liceat christianos servos, nec christianae mancipia emere, nec cuiquam cōsequi largiri. Nefas enim est, ut membra Christi servitium Antichristi ministris. Quod si deinceps servos Christianos, vel ancillae Iudaei habere praesumpserint, subiacet eis eorum dominorum libertatem à Principe confiscantur. Tolet. 8. can. 12. Cabilon. can. 9. Basil. sess. 19. quae & alia iuris testimonia referunt Ane. August. in epist. iuris, lib. 12. tit. 5. Celsus in summa, verbo Iudaei servos. Consoens lex 1. 4. & 5. Cod. Theodosius Christi mancipia, lex 5. 12. & 26. Cod. de Iudaeis, lex 22. Cod. Cod. de Paganis, lex 59. Cod. Cod. de haereticis, lex 5. Cod. Cod. de contrahenda emptio, lex 1. Cod. Iustin. ne Christianum mancipium, lex 1. quae 56. Cod. de Episc. & clericis, Novella 144. Iustin. cap. 2. lex 10. tit. 3. lib. 12. legum Poissenge. lex finalis, tit. 21. part. 4. lex 13. tit. 9. part. 6. lex 10. tit. 34. part. 7. Illustrant Theologi cum D. Thomas ad 2.2. quae. 10. art. 10. Tapia tom. 8. carmen mor. lib. 1. cap. 5. art. 5. P. Suarez de fide dignus, 18. tit. 5. 1. Gotthof. in 1.22. Cod. Theod. hoc tit. Thomas Delbene tom. 1. de offic. Inquisitor. dubit. 23. tit. 18. Riccius lib. 1. de iure person. cap. 28. Munnius in encyclop. part. 1. tit. 9. Corinius in aphorism. iuris Poissenge. lib. 4. tit. 4. & 5. Azor 1. part. infus. lib. 8. cap. 12. Gutierrez de delict. lib. 1. quae. 31. Marthea de heres. tit. 1. part. 2. cap. 24. numer. 22. Aconia in cap. mancipia, 54. dist. Lindembrog. in Glossario, verbo Iudaei mancipia, Scotezia in fidei. Poissenge. consil. epist. 27. iberoem. 74. Becanus in opuscula de fide, cap. 13. quae. 7. Manecinas in 1.21. Cod. de Episc. & clericis. Decianus lib. 5. tract. crimin. cap. 10. Cuius, ad tit. ne Christianum mancipium, D. Nicolaus de Castro in 1.21. Cod. de capis. ciuicis, num. 59. Espencus lib. 2. digest. cap. 17. Solorzano de iure Indiar. lib. 2. cap. 11. num. 56. & lib. 3. cap. 5. num. 59. Latreac decis. 9. Gramat, num. 34. Opologius de iure Indiar. cap. 2. numer. 62. Simanchas de catholicis, tit. 51. num. 16.

4. Sed hae assertio difficilis valde redditur loquacibus iuris tutionibus. Prima ex eo, nam enim quis, vel vendere rem propriam non cogitur, nec emere, Cod. de iure delib. Limitum, Cod. de contrahenda emptio, cap. 1. Ergo Iudaei cogi non debent seruis propriis, & legitime acquisitis vendere, praecipue cum Ecclesia in Iudaeos non baptizatos nullam habet iurisdictionem, iuxta illud D. Pauli: De his qui foris sunt, quid ad nos? Ergo Iudaei per Iudices ecclesiasticos cogi nequeunt seruis christianis vendere. Secundò difficilis est praesens assertio, dum in ea docetur, Iudaeum tenuentem vendere christianum mancipium, eius dominio priuari, seruumque liberum fieri, nec proclamare posse ad libertatem, nam receptio, communicatioque sententia est, infideles ob solam infidelitatis causam priuari non posse dominio, quod habent supra fideles, ut post D. Thomam docens Victorius relict. 2. de Iudis, numer. 6. Sotus in 4. dist. 5. quae. 1. art. 10. Bellarmi-

num. 1. eodem. lib. 5. cap. 2. pluribus relictis Solorzano tom. 1. de iure Indiar. lib. 2. cap. 11. num. 58. Igitur Iudaei, eo quod tales sint, non debent priuari dominio servitii, quod ex iure gentium, mediane captiuitate, vel emptione acquiescent. Accedit deinde, nam si ex duobus coniugibus unus ad fidem catholicam conuerteretur, alterque coeuerit remanet, si velit collabierare sine contumelia Creatoris, non potest Catholicus tam desecrare, immò potius cum ea cohabitare debet, cap. gaudemus, de diuoritiis, ubi probauimus. Igitur multò magis serui, et si dominum eorum baptizati renuant, non debent eos desecrare, & ad libertatem proclamare.

Quà dubitandi ratione non obstantem vera est praesens assertio, cuius ratio assignatur in praesenti textu, & in cap. nisi Iudaei, hoc tit. ne vide licet filij liberte famulentur filiis ancillae, sed tanquam serui à dominis reprobari, si siletem per effectum operis recognoscant seruos esse Christianorum. Accedit quia Iudaei quidem, ex quo Christum Dominum nostrum Regem agnouerunt ante faciem Pilati, & Regem Caesarem agnouerunt, Ioannis cap. 19. Altum Apostol. cap. 17. comuni Romano iure adeo viuunt in casibus, tam ad eorum superstitionem, quam ad forum, leges ac iudicia pertinentibus, ut etiam quaedam iuxta legem suam eis licita retinere prohibentur. Nec enim, exempli gratia, possunt in diuersa sub vno tempore consogia conuenire, l. Iudaei, l. nemo, Cod. de Iudaeis, quae sunt Areadi, Honorii, & Augusti. Quibus prior Constantianus legem tulit, ne Christianum mancipium Iudaeus possideret, l. vni, Cod. ne mancipium christianum. Referunt Eusebius in eius vita, cap. 27. ibi: Sane etiam, ne Christianum quisque seruire Iudaei. Sotomennus lib. 3. cap. 17. Sed hanc constitutionem etiam ad Paganos & haereticos porrexit Iustinianus in l. final. Cod. de Episc. & clericis, traxit similes serui liberi fecerit: cuius legis auctoritate Patres Ecclesiae seruos Christianos Iudaeorum, legum distinctione liberos esse, & ad libertatem iuxta legum praeccepta perducendos in praesenti sanauerunt, & in iuribus super relictis. Accedit praecipua ratio timoris subversionis, nam facile Iudaei seruos Christianos subuerterent blanditiis, aut tormentis, & eorum dominatio intolerabilis fieret; non ut ait Cleto Philippica 3. Cum enim seruum suum misera, tunc vero intolerabilis seruire impura. Sic Sofia Amphyrinensis seruus apud Plautum in Amphitruone.

Ergo in seruis expetenda multa iniqua:

Hebentur, & seruenda hoc apud est cum labore.

Merito ergo Ecclesiae PP. statuerunt, Iudaeos mancipium Christianum possidere non posse, sed potius illum vendere XII. solidis Christiano cogi, si illum mercimonij causâ emissent, alia cripendum esse in libertatem. Iure nostro Regio in dist. 1. 2. tit. 2. part. 4. l. 22. tit. 12. part. 5. l. 20. tit. 24. part. 7. potius mortis iniungitur Iudaeis, qui mancipia Christiana detinere praesumpserint: & in l. 13. tit. 9. part. 6. prohibetur mancipium Christianum Iudaeo legari, & instrumentum, quo venditio mancipij Christiani Iudaeo fit, invalidum declaratur in l. 6. tit. 3. part. 3. & iudicium, quo id comprehenditur, contra leges esse, & invalidum, traditur in l. 1. tit. 2. part. 3. quibus addit plura, quae tradit Azaedo in l. 1. tit. 2. lib. 8. Recopil. de num. 19.

5. TRANS-
TRA DE-
CIENDI
RATIO.

4. IMPRO-
BATA AS-
SERTIO.

6. Nec obstat dubitandi ratio suprà adducta; nam licet regulariter verum sit, neminem cogi rem propriam vendere, vt probat *Heraldus lib. unic. emend. cap. 16. vbi exponit legem 9. ff. de actione rer. amotar. legem 65. §. 1. legem 70. ff. de R.P. l. 1. p. tamen contrarium obstat, & tenetur dominus rem propriam distrahere, vt probat *Hermosilla in l. 3. tit. 5. part. 5.* Vnde ob causam ita iustam, vt est periculum subuersionis, mirum non est, vt teneatur Iudæus seruum Christianum vendere. Nec obstat argumētum primum ipsius difficultatis, pro cuius solutione sciendum est, valde controuersum esse inter Doctores, an infideles ex eo tantum, quod infideles sunt, possint priuari dominio quod habent supra Catholicos? Quam questionem disputant *Cozzar. in regula peccatorum, 2. part. §. 11. num. 5. de regul. iuris. Salom. in tract. de domin. quest. 3. art. 1. Sayrus in Clau. Regia lib. 9. cap. 6. num. 12. Lessius de iustit. lib. 2. cap. 5. dub. 4. num. 11. Acuña in dist. cap. mancipia, Bases ad 2. 2. tract. de fide, cap. 13.* In qua questione D. Thomas 2. 2. quest. 10. art. 10. affirmatiuum sententiam tenet ex ea ratione, quia infideles propter suam infidelitatem digni sunt, vt priuentur omni dominio. Alij simpliciter negant, & vtramque sententiam problematice probat perdoctus Solorzanas 2. ibi supra, qui videndus est; nam quoad presentem causam facilis est solutio, siquidem in eo agunt Ecclesie Patres de Iudæis subditi Principibus Christianis, à quibus virtute supremæ potestatis, & dominationis lex lata est, vt nullus Iudæus Christianum mancipium possideat, aut retineat, *dist. l. 1. Cod. de Christ. mancip. & Principes Christianos ponit talem legem in sua ditione promulgare, vt aliud tributum illis indidere valebat.* Vnde notandum est, tam in hoc cap. 1. & 2. quam in aliis canonibus suprà relatis, dum de hac primatiue domini Iudæorum in seruos Christianos PP. agunt, semper referre suas constitutiones ad leges cæculares in dist. cap. 1. ibi: *Legum beneficium.* Concil. Tolet. 4. can. 65. *Ex decreto gloriofissimi Regis.* Notauit *Larrea dist. decis. 9. num. 35.* Accedit, nam Ecclesia potestatem habet cohibendi & puniendi infideles, si non penis spi-*

ritualibus, de quibus accipiendus est D. Paulus suprà laudatus, poenis temporalibus, & corporalibus, *cap. postulasti, cap. consilium, hoc tit. cap. Iudæi, de testibus, cap. post miserabilem, de usuris, l. 1. in Archiepisc. de rupt. probat fuisse Solorzanas tom. 1. lib. 2. cap. 15. num. 4.* Nec tandem obstat, quod expendebamus de matrimonio Catholici cum Gentili, nam eum ambo in ipsa gentilitate valde quoad vinculum matrimonij contraxerint, alio ad fidem conuerso, altero in infidelitate remanente, non dissoluitur matrimonium nisi infideli cohabitare teneat sine contumelia Cæsariorum, vt probauit in can. 10. Concilij Liber. propter vinculum contractus legitime celebrati, quod in presenti causa non datur: & ita ob conuersionem ferui ad fidem Catholicam priuari potest dominus eius dominio.

Sed suprà traditæ assertioni obstat textus in can. 3. Concilij Gangren. in illis verbis: *Si quis docet, seruum pientis præterea dominum contemnere, & à ministerio recedere, & non cum benivolentia ammi bonare dominum suu inferre, sit anathema.* Refert Gratianus in cap. si quis seruum, 37. dist. & ex Martino Bechar. in cap. si quis 17. quest. 4. Igitur non recte in presenti docetur, seruum Christianum proclamare posse ad libertatem, quando dominus eius Iudæus est, tenuique ipsum iusto pretio vendere. Pro cuius canonis expositione dicendum est, quod illa prioribus Ecclesie sæculis, eum celebratum fuit Concilium Gangrense, quando sub Principibus Gentilibus fideles erant, ne cui christiana religio inuida videretur, & vt obsecratores quid in ea reprehenderent, non haberent, sed magis erubescerent, magnâ curâ prædicatum, & obseruatum fuit, vt serui diligenter dominis suis obedirent, honoremque impenderent. D. Paul. ad Timon cap. 1. Pace verò datâ, & libertate cæternâ per Principes Catholicos Ecclesie restituta, Cæsares ipsi, & Ecclesie Patres statuerunt, ne Iudæi Christianum mancipium possiderent, vt docuit Episcopus ad ipsi. Pauli lib. 2. digesti. cap. 17. & ita ad priora illa sæcula referendus est dictus canon Concilij Gangrensis, quod celebratum fuit anno Christi 314.

7.
EXPO-
SITIO
TIT. CAN.
DE QVIA
IUDÆI
SERVOS
CHRISTIANOS
VENDUNT.

CAPVT III.

Gregorius Ianuario Episcopo * Caralitano.

I Vdæi de civitate vestra huc venientes questi nobis sunt, quod Synagogam eorum, quæ Caralis sita est, Petrus, qui ex eorum superstitione ad Christianæ fidei cultum Deo volente perductus est, adhibitis sibi quibusdam indisciplinatis, sequenti die baptisimatis sui, hoc est * Dominico, in ipsa festiuitate Paschali, cum graui scandalo, sine vestra occupauerit voluntate, atque imaginem illic Genitricis Dei, Dominicæ nostræ, & venerandam crucem, & birrum * album, quo de fonte resurgens indutus fuerat, posuisset. De qua re, & filiorum nostrorum Eupaterij gloriosi magistri militum, atque magnifici Pij in Domino Præsidis, aliorumque nobilium ciuitatis vestræ ad nos hæc eadem scripta attestantia cœnerunt. Qui etiam adiecerunt à vobis hoc præsentium, & prædictum Petrum, ne hoc auderet, fuisse prohibitum. Quod cognoscentes, omnino laudauimus, quia sicut reuera bonum decuit sacerdotem, nihil fieri vnde ciuitas esset reprobata, voluistis. Sed quia per hoc, quod minimè vos in his, quæ prauè acta sunt, miscuistis, displicere vobis quod factum est, demonstratis: considerantes hæc de re vestræ voluntatis intentum, ac magis iudicium, his hortamur affatibus, vt sublata exinde, cum ea, quæ dignum est, veneratione, imagine, atque cruce, debeatis quod violenter ablatum est, reformare: quia sicut * legis distinctio Iu-

dzos novas non patitur erigere Synagogas, ita quoque eos sine inquietudine veteres habere permittit. Ne ergo supradictus Petrus, vel alij, qui ei in hac indisciplinacionis prauitate praeuere solatium, sine consensu hoc zelo fidei fecerit esse respondere deant, vt per hoc quasi eis necessitas fieret conuertendi, admonendi sunt, atque scire debent, quia hac circa eos temperantia magis vitendum est, vt trahatur ab eis velle, non reniti, non vt adducantur inuicti, quia scriptum est: Voluntarie sacrificabo tibi: id est, ex voluntate mea confitebor tibi. Sanctitas ergo vestra gratiam inter ciuitatis suae habitatores, adhibitis sibi filiis suis, quibus vnà vobis haec displicent, sacerdotali adhortatione, sicut eam decet, studeat facere, quia in hoc maxime tempore, quando de hoste formido est, diuisum habere populum non debetis. Quia verò non minore de vobis, quam de nobis sollicitudinem gerimus, hoc quoque pariter indicandum curauimus, quod finit hac pax, Agilphus Longobardorum Rex pacem non faciet. Vnde necesse est, vt fraternitas vestra, dum licet, ciuitatem suam, vel alia loca fortius muniri provideat, atque immineat, vt abundanter in eis condita procurentur: quatenus dum hostis illuc Deo sibi irato accesserit, non inueniat quod laedat, sed confusus abscedat. Sed & nos pro vobis quantum possumus cogitamus, & iis, quorum interest, vt se ad obstitendum, Deo adiutore praeparare debeant, imminemus: quia sicut vos nostras tribulationes vestras attenditis, ita quoque nos vestras afflictiones nostras similiter reputamus.

NOTAE.

1. **C**alendaria. Ita legitur in prima collectione, sub hoc tit. cap. 4. & in ipsis epistolis D. Gregorij, vbi lib. 7. indill. 2. epist. 5. repetitur textus hic: ex quo regestur eum transferibo. De Calendaria diocesi nonnulla adduxi in cap. final. de postul. Prelat.

2. **D**ominio in ipso festiuitate Paschali. Paschalis enim Sabbatum ex veteri Ecclesiae instituto baptismi sacramento conferendo destinatum fuisse, probant Victor Papa in epist. 2. ad Theophilum Alexand. Episcopum, ibi: Celebratam sancti Pasche die Dominica agi debere, & praecesseris nostri iam statuerat, & nos illud vobis eadem celebrari solenniter mandamus: à quarta decima vero luna primi mensis, usque ad vigintiannum eiusdem mensis diem eadem celebratur festiuitas: eodem vero baptismum celebrandum est. Catholicus Tertul. de baptismo cap. 19. Diem baptismi solennem Pascha praestat, cum & passio Domini, in qua singitur, adimpleta est. Nec incongruent ad figuram interpretatur, quod cum ultimam Pascha Dominus esset acturus, missis discipulis ad praeparandum, inueniens, inquit, hominem aquam haurientem. Pascha celebranda locum de signo aqua ostendit. D. Basil. de exhort. ad Baptismum: Quod tempus baptismi cognatum est, quam Paschalis dies: quod in lux resurrectionis momentum quoddam existat. Baptismus namque ad resurrectionem facultas, arabice est resurrectio. Ergo gratiam inde resurrectionis excipimus. Et cap. sequitur 90. de consecrat. dist. 4. Plura congerit, rationem huius sacri ritus illustrans Ioseph. Vicecomes lib. 1. de ritibus baptismi, cap. 19. cum sequentibus.

3. **B**irra album. In ipso baptismi vestem candidam dari recentem baptizati, isto à temporibus Apostolorum usque ad nostra saecula, constat ex Dionysio de Eccles. hierarch. cap. de baptismo, ibi: In tribus eius, qui initiatur, demersionibus, emersionibusque, ritum diuina beatitudinis personam vestima appellat, & innocat, acceptumque cum sacerdotibus, & glorij, & diuina permissum, eundemque cum veste eo digna induerunt. B. Cyril. Hierosol. Exuit vestitus auiquis, & iis, qui sunt secundum spiritum alba, indutus, perpetuo iam in albis

incedere oportet. D. Chrysostom. homil. in psalmum 118. Habete tunicam mundam, sicut accepistis in baptismi: nullus enim maculat vestibus suis, nullus prauitate cordis stindat tamam pulchritudinem vestis: solum accepistis vestem in baptismi, qualem habuerunt Angeli, qui seruauerunt Dominum in sepulchro: quia sicut nix iam erat vestis eorum. Fortunatus lib. 4. de lud. ad fid. adducit.

Laetens hinc vestis color est, hinc lampade fulgor Ducitur, & vario lumine picta dicit.

Meminerunt huius sacri ritus quamplures Ecclesiae Patres, nec non Historici congesti à Iosepho Vicecomite lib. 5. de ritibus baptismi, cap. 6. cum quatuor sequentibus. D. F. Ioseph. à Sancta Maria Carthusianus de caeremoniis baptismalibus, cap. 25. & 26.

d. **E**rgali. Relato in l. vlt. Cod. de Iudeis.

e. **S**criptum est, i. Psalms 53.

f. **M**uneri provideat. Quod etiam eidem commendat eodem lib. 7. epist. 2. his verbis: Quid in Sardinia hostes nostri fuerint operati prius quam fraternitatis vestra epistola ad nos perueniret, agnoscimus: & quia hoc futurum dudum metuimus, euenisse quod praediximus, nobiscum nunc gemimus. De hac pax cum Agialfo inita nonnulla adduxi in cap.

COMMENTARIUM.

EX hoc textu sequens communiter deducitur assertio: Iudei inter Christianos commorantes, veteres synagogas reficere, & reparare valent: novas verò erigere nequeunt. Probat eam idem Gregorius lib. 1. epist. 34. ad Ioannem Episcopum Tarantinensem, ibi: Ioseph praefatum tutor Iudeis insinuauit nobis, quod de loco quodam, in quo ad celebrandas festiuitates suas Iudei in Tarantinensi castris conuenerint, conuenire consueuerant, tunc eos fraternitatis expulserit, & in alium locum procolendis similiter festiuitatibus suis, eo quoque nesciente, & consentiente migrauerint, & nunc de eodem loco etiam expulsus se denique conueniunt. Quod si ita est, volumus vt tua fraternitas ab huiusmodi se querela sustineat, & ad locum, quem, sicut praediximus, cum tua consuetudine, qui congregetur, adepti sunt, eis sicut nos fuit, liceat conuenire. Et l. final. §. penult. Cod. de Iudeis. Theodoricus in suo

5. CONCESSIO TRADITAE ET PROBAT.

fuio edicto apud Calliodorum lib. 2. epist. 27. Ibi: Sicut erroris iustum cupimus præbere consensum; ita per nostra beneficia fraudes fieri legibus non amittimus, in ea parte præcipi, in qua divina reverentia credamus interesse. Ne ergo insultare videantur elari, diminuat gratia desistunt. Quapropter regem tantum vetustis parietibus superimponere Synagoga vestra, præfensi vos auctoritate consensum, petitionibus vestris sacras licentiam commoventes, quotiens constituta dinastia permiserunt. Nos aliquid ornatus sui sit adicere, vel in amplandis adibus evagari. Non enim vos sententiam minime diffugere ceteris similis, si rebus non absintenti illucis. In ipsi vero parietibus cooperientis, vel reficiendis tantum licentiam damus, si vobis tricennalis non præfessisset præscriptio. Quid appetitis, qua refugere deberetis? Damus si quidem permittimus, sed errantem vocem laudabimur improbamus. Religionem improbare non possumus, quia nemo cogit ut credat iniuste. Illud erat vltis congestus à Barbosa in præfenti, P. Gregor. lib. 2. parit. tit. 5. cap. 2. Mendoza lib. 3. Concil. lib. 2. cap. 46. & 47. Cuius lib. 16. obsequium. cap. 3. Azot p. 1. insit. cap. 22. Iacob. Gothofred. in opuscul. de templis demolendis, & Thomas Delbecq. part. 1. de offic. Inquisit. dubit. 136.

6. Sed pro dubitanti ratione ita argumentor.

Perduellium, tyrannorumque ædificia solo coquantur in perarum tam grauis sceleris, l. i. cum que 20. ff. de monum. diu. l. 2. §. si quis nemine, l. 2. ff. de quib. in loco publico, l. si quis nemine, l. 11. §. qui illiciti, ff. de legat. 3. l. 24. ff. de panis. Illustrant Vultetus disp. iur. cap. 9. Duxantias Casel. lib. 2. var. cap. 16. Cabreios lib. 2. de metu, cap. 30. num. 6. Sed nulla potest admitti culpa maior, quam Iudæica superstitio, & Iudæorum perfidia. Igitur eorum Synagoga non reficienda, immò diruenda, currendæque omnino sunt. Facit exemplum Paganorum, quorum templa elatodi, & demoliti iuberent in l. 1. l. omnia 5. Cod. de pagani, l. 4. Cod. Theod. de ed. tit. 1. l. 6. ord. iur. & Cod. Si qua in agris templa sunt, seu turbe ac simulacra diruantur, his enim de illis, & aque subitis, omnis superstitionis materia conuenit. D. August. lib. 18. de ciuit. Dei, cap. 20. In ciuitate nostrissima Carthagine Africæ Gaudetia, & Ioniis Comitæ imp. Honorij, xiv. Kal. April. fallorum Deorum templa cuncterunt, & simulacra fregerunt: quæ constitutiones SS. PP. collaudarunt, immò & auctores eorum se præstiterunt, ut constat ex S. Cypriano in exhort. ad martyres, cap. 5. vbi alia citat Pameliu ex Eusebio lib. 2. de uita Constantini, cap. 34. & 44. & lib. 4. cap. 21. Rustico lib. 2. bisp. cap. 19. Nicephoro lib. 7. cap. 46. & lib. 8. cap. 33. Ambrosio lib. 5. epist. 30. Augustino lib. 1. de epistola Parmen. cap. 7. & epist. 48. & 50. nisi exinde publicis vrbis aspectus deformeatur; nam tunc propter ornatum ciuitatis demoliri non debent, sicut, Cod. ord. tit. ad quem ornatum respectuerunt PP. Coccolij Africanus sub Bonifacio can. 5. in illis verbis: Instant enim alia necessitates à Religionis Imperatoribus postulanda, ut reliquias Idolatrorum per omnem Africanam iubeant penitus ampuari, nam plerique in locis maritimis, atque possessibilibus diuersis adhuc erroris istius iniquum viget, ut precipuum & ipsa deleri, & templa eorum, quæ in agris, vel in locis adibus constituta, nullo ornamento sunt, iubeantur omnimodo destrui. Quam demolitionem templorum probant, & illustrant Ioannis Ba-

pista Fikerus in Theolog. Juridic. fol. 307. I. Gothofred. in opuscul. de templ. demol. Solorzanius tem. 2. lib. 1. cap. 24. num. 53. Iuliet. ad can. 58. Eccles. Afric. Igitur similiter synagoga, in quibus Iudæicæ festiuitates, & ceremonie extantur in opprobrium Catholicæ Religionis, omniuo sunt diuenda, currendæque, non verò reficiendæ, aut reparandæ. Augerit hæc dubitandi ratio ex eo, nam si Iudæis simul cum Catholicis commoventibus permitteretur Synagoga habere, easque reficere, & reparare; concederetur illis eorum usus, idest exercitium ceremoniarum sacre religionis, quæ tam exasæ Synagoga edificaret, in easque conuenirent, ut in ista dicemus; sed Iudæis commoventibus inter Catholicos prohibetur usus suorum rituum, ut mortuos cum enim sepelire. Concil. Nationense sub Recharado ibi: Iudæis non licet corpus defuncti deducere psallendo, sed ut eorum habuit mas, & consuetudo antiqua, corpus deducant, & deponant Pascha celebrare. Concil. Tol. 2. can. 9. ibi: Ne Iudæi more suo celebrent Pascha, vel carnis circumsisionem excrucient. Igitur frustra illis permittitur synagoga reficere, & habere. Augerit secundò hæc dubitandi ratio ex eo, nam reficere ædificare est. l. 1. §. 9. ibi: Aedificare autem, non solum quod nouum opus molitur, intelligendus est, verum etiam quod, qui vult reficere. Sed noua Synagoga edificare Iudæis non licet: igitur nec veteres reficere.

Quà dubitandi ratione ita facile non obstant, verò est præfens assertio, pro cuius expositione scite oportet, Synagoga dictam esse à Græco verbo συναγωγη, quod est colligere; unde Synagoga Græcè, Latine dielur collectio: quare loca illa, vbi Iudæi coegregabantur ad legendam, & audiendam legem Mosaicam, Synagoga dicebatur. Nec tantum Synagoga Iudeorum erant in Iudæa, & Galilæa, verum in aliis provinciis, vbi Iudæi debeant, veluti Damasci, Salamiæ, Anthiochie, Pilsidæ, Thessalonicæ, Athenis, Corinthe, Ephesi, ut habetur in actibus Apostolorum cap. 9. vers. 2. cap. 13. vers. 5. cap. 14. vers. 1. cap. 17. vers. 1. & cap. 18. vers. 4. nam in illis ciuitatibus habuabant Iudæi permixti cum Gentilibus, ut patet ex locis citatis. Vnde etiam Synagoga, quæ ibi erat, non appellabatur Synagoga Gentilium, sed Iudeorum. Actum cap. 13. vers. 5. Chorozenis Salaminam, predicantem verbum Dei in Synagoga Iudeorum. Et cap. 14. vers. 1. Factum est autem Ikonny, ut simul intrarent in Synagoga Iudeorum. Et cap. 17. vers. 1. Venerunt Thessalonicam ibi erat Synagoga Iudeorum. Et eorum usum apud Iudæos inualuisse ante constructionem templi, probant Cochier in face bisp. can. 2. cap. 27. Beatus in analog. cap. 12. num. 38. & vltimis temporibus refert Sigonida de Repub. Hebræor. lib. 2. cap. 8. in vrbis Hierosolyma trecentas octoginta Synagoga constructas fuisse, eo quod Iudæi eo ex omnibus regionibus conuenirent. Erant ergo Hierosolymis Synagoga peregrinorum, & templum ciuium: in reliqua verò Iudæa, & Galilæa, & in cæteris provinciis, in quibus Iudæi post dispersionem versabantur, erant etiam Synagoga iocolarum, quibus Hierosolymam adire non erat commodum. De Hierosolymitana vns Synagoga mentio sit præcipue Aethum Apist. cap. 6. Sarraceni quidem de Synagoga, quæ appellatur Liberrima, & Cyrenensium, & Alexandrinorum, et

7. DE SYNA
GOGIS 179
PAG. 179

eorum qui erant in Cilicia, & Asia, dignantes cum Siphane. Hi enim omnes erant Iudæi, verum in prouincias habitantes, qui cum Hierosolymam negotiorum suorum causâ adibat, non ad templum, sed ad synagogam, quam ipsi sibi parauerunt, conuenire instituerant. Item apud Ioannem cap. 8. Ego semper docui in synagoga, & in templo, quo omnes Iudæi conueniunt. De cæteris cap. Actuum 15. Moyses à temporibus antiquis habet in singulis ciuitatibus, qui cum prædicant in synagoga, ubi per omne Sabbatum legitur. Per Moysen autem intelligit libros eius. Hæc verò synagoga aliquando à priuatis hominibus etiam Gentilibus, p. officij causa constructa fuit, ut fuit illa Luca 7. in Capharnaû à Ceotutione Romano; sic enim dixit Iudæi: Dignus est ut sedes illi seruant, diligit enim gentem nostram, & Synagogam adificauit ipse nobis, in singulis synagogis erant euehere, & sedilia, in quibus sedebat tum illi qui legebant, & explicabant legem Moysi; tum illi qui audiebant, ut patet ex cap. 23. Matthæi, vers. 6. vbi de Scribis, & Phariseis dicitur: Amant primas cathedras in synagoga.

Sed ut ad vltim, in quem edicte fuerant synagoge, perueniamus, sciendum est, triplicem causam synagogas à Iudæis constructi. Prima ad docendum; nam solebant DD. populi singulis Sabbatis conuenire ad synagogas, ibique legere, & explicare libros Moysi, ac Prophetarum. Actuum Apost. cap. 15. vers. 21. ibi: Moyses à temporibus antiquis habet in singulis ciuitatibus, qui cum prædicant in synagoga, ubi per omne Sabbatum legitur. Ordinarij autem DD. erant Scribæ, & Pharisei, de quibus cap. 23. Matthæi, vers. 2. Super cathedram Moysi sedent Scribæ & Pharisei. Quod officium saepe exercebat Christus Dominus, ut refertur Mat. cap. 1. vers. 21. ibi: Sabbatis ingressus in synagoga docuit eos. Et cap. 4. Luca, vers. 15. ibi: Et docebat in synagoga eorum. Aliquandoque illic accedentes inuitabantur ad prædicandum, ut de Paulo, & Barnabæ legimus Actuum Apost. c. 13. vers. 14. Ingressus synagogam die Sabbatorum steterunt: post tibiendum autem legis, & Prophetarum, miserunt Principes synagoga ad eos dicentes: Viri fratres, si quis est in vobis sermo exhortationis ad plebem, dicite. Surgens autem Paulus, & manu silentium indicens, ait: Viri Iherosolymite, & qui timetis Deum, audite, &c. Sic etiam & Christus Dominus ab eis inuitatus docuit in synagoga, ut refertur Luca cap. 4. vers. 16. Secundo solebant Iudæi orationis causâ conuenire in synagoga, ut constat ex cap. 6. Iudæi, vers. 11. ibi: Conuocatus est omnis populus, & per totam noctem intra Ecclesiam orauerunt petentes auxilium à Deo Israel. Vbi per Ecclesiam non potest aliud intelligi, quam synagoga, ut etiam recipitur psalms 25. vers. 12. & psalms 67. vers. 27. & constat ex cap. 6. D. Matthæi, vers. 5. ibi: Cum eratis, non eritis sicut hypocritæ, qui amant in synagoga, & in angulis placitum stantes orare. Tandem solebant Iudæi in synagoga punire eos, qui verè deliquerant, vel falso putabantur deliquisse, iuxta illud Matthæi cap. 1. vers. 17. In synagoga sua flagellabunt vos. Et cap. 23. Matthæi, vers. 34. Mitte ad vos Prophetas, & ex illis flagellabitis in synagoga vestris. Et Actuum Apost. cap. 22. vers. 19. Ego etiam conclusus in carcerem, & cadens per Synagogas eos, qui crederent in te. Et cap. 26. vers. 11. Per vias synagogas frequenter puniebat eos, compellens blasphemare. Plura de his synagogis, & eorum religione congeriunt

vltra Theologos positimos in locis sacra pagine supra relatis, Tornellus in annotationibus, anno mundi 1594. Becanus in analogia, cap. 12. Kohiet in face histor. cent. 2. cap. 27. Simon Maiolus de iurum Coniculi, cent. 2. cap. 27. Noustious lib. 5. scheidasm, cap. 10.

His suppositis ratio præsentis assertionis, quare videlicet Iudæi permittunt retinere veteres synagogas, & reuerere, non verò nouas construere, prouenit ex eo, quia etsi Iudæi fouendi non sint, immò potius arguendi, & inrepauidi tamen in suis synagogis inquietandi non sunt: quod & Romani Imperatores, qui illis valde infestis fuerunt, & Ecclesiæ PP. statuerunt. Imperatores in l. fudæorum 15. §. 6. ff. de excusat. tutor. ibi: Iam autem Iudæi, & non Iudæorum tutores erunt, sicut & reliqua administrabunt. Constitutiones enim in iis solam sine molestia esse iubent, per quæ culus inquirari videtur, l. 3. §. final. ff. de decur. l. 2. l. 13. Cod. de Iudæis, l. Christianiani 6. Cod. de paganis, l. 2. 4. Cod. Theodof. eod. tit. Solorzanos tom. 2. de Iure Iudæi. cap. 10. quare etiam eorum collegia improbatæ essent, ut probant Brillonius lib. 1. secl. cap. 4. Obuslud lib. 18. Denelli, cap. 7. littera N. (etiam contrarium tenet Cuiac, lib. 7. obseru. cap. 30.) tamen eorum Synagoge immoies erant ab hospitio, eorumque ritus tolerabantur, veluti circuncisio, & leuiticordere 11. in princip. ff. ad leg. Cornel. de sicariis. Fertæ Neomeniarum, aliarumque Solemnitatum, l. final. Cod. Theodof. de feriis, l. 20. eod. Cod. de Iudæis, l. 8. eod. Cod. de excommunicationibus: ideoque Iudæum in iis vocari non posse die Sabbathi, docet in l. die 13. Cod. de Iudæis. Vnde rectè Fortnerius lib. 2. var. quæst. cap. 4. restituit negotiorum in l. Iudæi 8. Cod. de Iudæis: vbi vulgò legitur: Iudæi conuocati Romani iure vincentes in his causis, qui tam ad superstitionem eorum, quam ad forum & leges: eorum legendum sit, in his causis, qui non tam ad superstitionem eorum, ut habent in l. Iudæi, Cod. Theodof. de Iudæis. Facit Cassiodorus lib. 5. ap. 37. ibi: Libenter auimus, quod fide legum iuriâ postulat, maxime cum per seruanda ciuitate, nec illis sunt neganda beneficia iustitiæ, qui adhuc in fide cognoscunt errare. Atque ideo discant rectum bonarum iustitiarum saporem: ut qui humanam iustitiam minuit querere, sollicitus incipiant diuinam iudiciæ cogitare. Proinde quoniam moderatam eos frequenter causamini præsumptione laceratis, & quæ ad Synagogam vestram pertinet, perhibitis iura rescindi, apud aliorum vobis multitudinē nostrā postulat iuris. Quoniam nullus ecclesiasticus, quæ Synagoga vestra iure competens, violentiā intercedere peruat, nec vestris se causis importunè acerbissime permiscet. Sed ut religiosum cultum, ita & altum sine conuersione discreti: hoc tamen moderatone principalis auxilij beneficiū concedentes, ut nec vos quod ad præfata Ecclesiā, ita & religiosas personas certis legibus pertinere consueuerit, incutitur atterellare tenent. Tricemalis autem huiusmodi generi patrona præscripta, et quod cunctis vobis iure feruatur: nec conuentionalia vos irrationabiliter precipimus sustinere diffundit, ut hac pietatis nostræ defensione nuntii, potius vestra ab illicitis se liberatam grauietur incommodi. Concedimus quidem, clementia nostra consuetudine, quæ rogasti. Sed quid Iudæi supplicans temperatam quærit queris, si æternam requiem inuicere non possis? Et lib. 4. epist. 43. quod constitutum est, ut ita blanditiis, & beneficiis ad fidem nostram Catholicam alliciantur,

9.

TAND-
TYE DEL-
CENDERE
RATIO.

8.

DE VIV
SYNAGO-
GARIUM.

ciantur. Redd' ergo in præfenti inata legitimas functiones statuit Gregorius Iudæos veteres Synagogas reficere posse, novas verd' construere non valere. In ipsarum autem refectioe fideles Catholici calcem, lapides, ligna vendere nequeunt, vt docent Azor *part. 1. lib. 3. instit. cap. 32. quæst. 5.* Rociolus *de iure person. lib. 2. cap. 39. num. 5.* Licet enim Ecclesia finat Iudæos veteres Synagogas reficere; tamen Catholici hoc faciendo peccant, quia non redd' sequuntur Iudæi possunt reficere Synagogas veteres. Ergo ad hanc refectioem possunt cooperari Christiani. Nam hoc dato sequeretur, quod omnia, quæ tolerantur Iudæis, possent fieri per Christianos, contra testus distictos in *can. 63. de presb. ibi: Si clericus, vel laicus ingrediatur synagoga Iudeorum ad mandon, depanatur, & excommunicatur.* Et *can. 70. ibi: Episcopus, Presbyter, Diaconus, Clericus velianus cum Iudæis, vel fissa celebrat, vel xenia fistorum ab eis accipiens, vt azyma, vel aliud quid. depanatur, laicus excommunicatur.* Et *can. 71. ibi: Si Christianus oleum deferat in templo Gentilium, vel in Synagoga Iudeorum in eorum fissa diebus, aut lucernas incendat, excommunicatur.* Synodus Laodic. *can. 29. 37. & 38.* Non autem licet illis ampliores, & peniosiores Synagogas facere, *c. consulti, hoc tit. Vnde conquebatur Clemens IV. episc. ad Episcopos Polonia, ibi: Synagogas Iudei adificant plumbo telas desuper, ianas diuersis coloribus depingunt, in tantum cui altitudinem produnt, vt eorum respectu decorem domus Domini perdidisse in Polonia videatur.* Aliquando tamen inspiratione diuina fuisse a Christianis ditatam Synagogam, legitimè apud Gregor. Torton. *lib. 5. cap. 1. r.*

IO. Nec obstat dubitandi ratio suprà adducta; nam licet perdidit, & similitum teorum domus diruantur, delubraque, & templa Gentilium, tamen Synagogæ Iudeorum tolerantur ex variis rationibus. Prima, quia dum intra eas Iudæi congregantur sine fidelium scandalo, licet peccent in Deum, non agnosendo fidem Catholicam, non tamen peccant in ipsam religionem Christianam, aut proximam. Secunda, oim tolerantur ætatem Iudeorum, non verd' Paganorum, quia in rinbus Iudeorum olim præfiguratum veritas fidei, quam teneris: vnde nobis resulat, quod testimonium fidei nostre habemus ab hostibus, & quasi in figura nobis representatur. Ritus autem Paganorum nihil utilitatis afferunt: quare permitt' oon debent à Principibus Catholicis: mala enim, seu peccata tolerantur, vel propter aliquid bonum, quod ex illis provenit, vel propter aliquid malum, quod evitatur: docet D. Thomas *2. 1. quæst. 10. art. 11.* Quare cum neutrum ex his proveniat templis Gentilium, ideo diruenda sunt, vt demoliri fecerunt Imperatores Catholici variis constitutionibus, quæ extant tam in Codice Theodosiano, quam Iustin. *sub tit. de paganis:* & referunt Sotomemus *lib. 4. cap. 1.* Alciatus *lib. 1. pererg. cap. 13.* Solorzani *rom. t. lib. 2. cap. 20. vbi numer. 13.* refert historiam reatus in *l. 5. Cod. de paganis,* Baronius *anno Domini 326.* Fictas in Theolog. *iurisd.* licet alioquando etiam à Principibus Catholicis templa ipsa permissa legamus, vt in *l. 1. r. Cod. Theodof. de fid. Cathol.* saltem vt negotiorum causa, non verd' sacrificandi, ibi coovenietur, *l. adem 8. Cod. Theodof. de paganis:* aut ne illis dirutis aspectus vrbium deformaretur, *l. sicut 15. l. 28. Cod. Theodof. de Pagan.* Quæ ratio quia cef-

libat in agris, ideo permillum fuit templa in eis posita dicere, *l. si qua 16. Cod. Theodof. eod. tit.* refert Baronius *anno 401. num. 17. & 39.* Aliquando etiam templa ipsa destructis eorum aris vrbibus publicis assignata fuerunt, *l. templorum 19. Cod. Theodof. eod. tit.* quæ lata est anno 408: vbi etiam detestæ fuerunt annonæ, & redditus, vt rem annonariam iuvarent (sic legendum est, non *indemne*), vt præfatis Salmasius in *notis ad Popicum in Aureliam*, idest, vt redditus eorum publice annonæ deservirent, *l. 4. Cod. de divers. prediis, l. final. Cod. de fundo patrim.* Nec obstat augmentum difficultatis deducum ex dictis Conciliis Tolet. & Narbonens. Nam respondendum est, quod licet Iudæis permittatur Synagogas reficere, in eisq; convenire, ad suos ritus peragendos, solemnitatesque celebrandas consuetas; tamen novas instituire, aut antiquas reficere publicè io opprobrium religionis Catholice, & scandalum fidelium illis prohibetur, vt in *dict. can. 70. Concilii Narbon.* vbi prohibetur, ne cum canu differant Iudæi cadauera defunctorum, quia illi noniter tantum adhibere in suis funeribus intendebant: Ideo illis tantum permittitur cadauera sua veteres ritus deserre. In dicto autem Concilio Tolet. 12. prohibentur ætatem illæ Iudæis iam baptizatis, non verd' illis existentibus in ipsa pectida Iudæica: quod facile probatur, nam in eo referuntur leges Reclviti Regis, quæ extant in *stat. 2. lib. 12. fird iudic.* & in eorum prima expresse agitur de Iudæis baptizatis veteribus præfice ætatem: quam prohibitionem firmatur PP. in *dicto Concil. Tolet. 2. can. 9.* Nec obstat vltimum augmentum deducum ex *dict. l. 1. r. 4. final. de mortuo infer.* nam longe aliud est facere, aliud verd' reficere, *l. 3. 4. penult. ff. de iurine, alitque:* licet vrbium faciendi generaliter sumptum etiam refectioem continet: quo modo accipitur in edito de mortuo inferendo: quam doctrinam ad præam in pluribus casibus admittit Martinus *lib. 2. resol. cap. 213.*

Manet ergo Iudæis simul cum Catholicis commorantibus permitti Synagogas habere, easque reficere, ac in eis ætatem suas, & festivitates celebrare, dummodo inde scandalum fidelibus non præstent, aut aliquid in approbrium Christianæ religionis inendant. Vnde exponendus est textus in *l. Iudæis, Cod. de Iudæis,* qui extat in *l. 8. Cod. Theodof. eod. tit.* in hæc verba: *Iudæis quodam fssimilitati sua solenni die Aman ad pena quandam recordationem incendere, & sanctæ crucis adsimulatam speciem in contemptum Christianæ fidei sacrilegè mente exorere, provinciarum Reclvites prohibere, ne locus suis fidei nostra signum immiscerent, sed ritus suos infra contemptum Christianæ legis retineant, amissuri sine dubio permissa hactenus, nisi ab iudicis temperaverint.* Cum enim Aman, Regis Artaxerxis, quem sacre literæ Assuetum appellant, Præfectus, decem millia talentorum Regi pollicitus obtinuisse, vt certo die omnes Iudæi occiderentur, Mardochæi, & Regine Esther opè fraude detestâ, Aman in ligno, cui Mardochæum affigere statuerat, suspensos fuit, Iudæique eadem die quamplures ex hostibus interfecerunt, vt refertur Esther *cap. 3. & traditur Iulæpbus lib. 1. r. antiquis. cap. 6.* Baronius *rem. 5. anno 408. fol. 276.* ob cuius casus memoriam Iudæi quotannis festum celebrant, in quo effugium Aman crueli affum lacredabant, xiv. vel vx. die mensis Adarj, qu-

III
EXPORT
VTE LIV
DAS, C
DE IV
DEIV

qui Februarius, & Martius respondet. Vt enim ista festiuitas celebrior haberetur, crucis, cui aliquando affixus Aman fuerat, simulacrum exutere solebant, ac si de atrocissimo hoste poenam sumerent. Ex variis refert Iacob. Gothof. in eodem textu, in Theodof. Sed cum post Christi passionem ab omnibus Catholicis culta lætæ crux veneretur, cap. si cunctis, §. final. de offic. ordin. lib. 6. l. decernimus, Cod. de Episc. & cleric. l. unic. Cod. nemini licere, l. final. §. fin. autem, Cod. de iura delib. Nouel. §. Iustin. cap. 1. & 15. cap. 1. & 125. cap. 32. plota Crespetius in summa verbo Crucis aduerso, Vazquez in 1. part. quæst. 25. art. 3. disp. p. 112. Bellarminus tom. 1. controu. lib. 2. de Ecclesijs cap. 17. 18. & 19. Azor part. 1. instit. lib. 9. cap. 6. Suarez aduers. Reg. Angl. lib. 2. cap. 14. Pij Imperatores Hooenius & Theodosius prohibuerunt, ne deinceps Iudei in Christianæ religionis contemptum crucem incendentes, aut ne sacro signo in suis locis (ita legendum est, non locis) vterentur, quia exinde opprobrium Christianæ religionis sequebatur. Præferuntur Charciol. lib. 2. cor. cap. 179. Morthacius, & I. Gothof. in eo textu, p. Burgi lib. 1. dell. cap. 15.

Deinde ex huiusque traditionis locum accipit textus in Clement. unica, hoc tit. ubi prohibetur Sarracenis simul & commixtum habitantibus cum Christianis, alta voce clamare, vt conuocentur in Meschitam, illis verbis: *Legalis eli alla*: idest, non alius videt, nisi solus Deus: quæ verba & in suis scriptis Sarraceni possunt ad honorem

Mahometi prostendunt, vt referunt Calcondyllas lib. 3. de reb. Turcicis, Pineda lib. 17. monarch. cap. 15. Lotca in catech. in vita Mahometi: & constat ex ipso Alcoran azora 4. 12. & 13. cum inde apud Christianos scandalum oriretur, & talis vociferatio in opprobrium Christianæ religionis etderet. Ideoque PP. Concalij Vioensis in dedit. Clement. 1. similem cæremoniā Sarracenis prohibuerunt, etiam peioris, & in locis abditis similes ritus tolerentur, vt constat ex Beato Germano Partiatia CP. epist. ad Thomam Episcopum Claudiopoleos, relata in Concilio Nicæno 2. actum. 4. In illis verbis: *Sarracenis sufficit, quod in eremo lapidi inanimato sacrificia faciant, acclamentur hanc vocem, Clabaz: quod a patribus acceptum per paucitia mysteria, & fissa peragunt.* Pro cuius ritus expositione scituendum est, Sarracenos lapidem, quem Bacham vocant, magnâ veneratione colere: tum quia Abraham illic camelum alligasset, cum immolaturus esset Isaac: tum quia Venetis effigies in eo lapide sculpta erat, vt referunt Euthymius presoplia tit. 24. Ioannes Filesc. lib. 1. solle. cap. 13. fol. 109. Cui lapidi sacrificia offerebant in ecclesia, idest in deserto Pharam, vt exponens ea verba refert Zetda in aduers. sacris, cap. 46. numer. 10.

Etiā ex supel^l traditionis exponi potest textus in can. 90. Concilij Liber. Cum adductis in eius notis, & iuncto Solortano tom. 1. de iure Ind. lib. 2. cap. 10. num. 90.

CAPVT IV.

* Alexand. III.

Quia super iis, vnde ad nos in litteris tuis de Iudeis scripsisti, certum canonem non habemus, s. t. significatione præsentium intimamus, quod Clero tuo in vnum pariter conuocato, generaliter tam nostrâ, quam tuâ auctoritate indicas, vt Iudei ostia, vel fenestras in die Parasceues apertas non habeant, sed eas per totum diem claudant: Mancipia quoque Christiana nulla eum eis habitare permittas, sed generaliter eundis edicas, ne aliquis Christianorum in eorum seruitio audeat commorari, ne fortè ex ipsorum conuersatione ad Iudaismi perfidiam conuertantur.

NOTÆ

1. a *Alexander.*] Ita etiam legitur in prima collectione, sub hoc tituli, cap. final. sed addendum est Missiliceni Episcopo, vt in dist. cap. de Iudeis, de decimis, ubi extat secunda pars huius decretalis, vt iam ibi notauimus. Missilia est Gallie Narbonensis vrbs maritima, eademque antiquissima, & potentissima, & moribus cultissima. Phocensium colonia, ab illis condita olympiadis 45. anno 3. ad quem annum hic notatur Eusebius in chron. Missilia ciuitas condita Gallia. Eius meminerunt Cæsar lib. 2. de bello ciuili, Iustinus lib. 43. Tul. in orat. pro Flacco. Herodot. lib. 5. Solin. cap. 8. quos referunt plura de Missilia, Repub. adducunt Aloix ad vitam S. Irenæi, cap. 4. Featres Sarmat. tom. 3. Gallia, fol. 639.

2. b *Couertum.*] Circa ostia, seu fenestras Iudeorum in Parasceue claudendas: nam vt illi eo die vsque ad Pascha non possent quasi insultationis causâ per forum, aut plateas ambu-

lare, prohibitum fuerat can. 29. Concilij Antioch. 3. his verbis: *Iudei à die cana Domini vsque in secundum Sabbatum in Pascha, hoc est ipso quadragesimo, procedere inter Christianos, nec Catholicis populus se villo loco, vel quacunque occasione miscere præsumant.* Vbi notatur Binius, Missiliceni, can. 14. *Iudeis à cana Domini vsque ad primam diem post Pascha secundum edictum bonæ recordationis D. Childberti Regis, per plateas, aut forum, quasi insultationis causâ deambulandi licentia denegatur, & vt reuerentiam cunctis sacerdotibus Domini, vel clericis impendant: nec tantò sacerdotis consensum, nisi ordinari habere præsumant: qui hoc facere fortassis præsumserit, à iudicibus laicorum, prout persona fuerit, distringatur.* Meldense can. 73. *Childbertus Rex Francorum: Iudeis à cana Domini vsque in primam Pascha per plateas, aut forum, quasi insultationis causâ deambulandi licentia denegatur.* Refert Ant. August. in epu. iuris lib. 12. tit. 10. & postea firmavit Innoc. III. in Concil. Lateran. relictis cap. 15.

Christianos arma eis, & necessaria subministrant. Sunt etiam, qui pro sua cupiditate in galeis & piraticis Sarracenorum navibus regimen, & curam gubernationis exercent. Tales igitur ab Ecclesie communione præcisos, & excommunicationi pro sua iniquitate subiectos, & rerum suarum per Principes Catholicos, & Consules civitatum priuatione multari, & capientium servos, si capii fuerint, fore censuimus. Præcipimus autem, ut per Ecclesias maritimarum urbium crebra, & solennis in eos excommunicatio proferatur.

NOTÆ.

1. **A** *E* *ex eodem.* J. Lateranensi videlicet Concilio, ut habetur in prima collectione, *sub hoc tit. cap. 6.* & in ipso Concil. cap. 24. ex quo textum transcribo.

COMMENTARIUM.

EX his duobus Concilij Lateran. canonicibus talis deducitur assertio. *Christiani deferentes ad Sarracenos arma, vel in ipsorum, navibus regimen exercentes, excommunicantur, rebusque propriis priuantur, ac capientium servi fiunt.* Probant eam textus in cap. significavit 11. cap. quod olim, cap. ad litteram, 17. dist. Innoc. III. lib. 1. epist. in edit. Colonia, fol. 258. ibi: *Item etiam Lateran. Concilij constitutum curamque imonere, quod eis, qui Sarracenis arma, ferrum, lignamina galearum ministrare præsumpserint, & in galeis, & piraticis eorum navibus curam gubernatoris, & regimen exercere, ab Ecclesia communione præcidi, & excommunicantur pro sua iniquitate subiecti, rerum suarum per Principes saculi Catholicos, & Consules civitatum priuatione multari, & capientium servos, si capii fuerint, fore decernit.* Extraneæ, ita quorundam, hoc tit. Extraneæ, multa, eod. Nicolaus in bulla edita anno 1450. quæ est quarta huius Pontificis in Bullario Gregor. IX. epist. 9. *Invenimus præterea excommunicationis sententiam in Lateranensi Concilio promulgatam adversus eos, qui Sarracenis arma, ferrum, & lignamina deferunt galearum.* Julius II. in sua constitutione 25. quæ extat tom. 3. Bullarj, Paulus III. in sua constitutione edita anno 1550. quæ est 10. ipsius Pontificis in Bullario. Paulus V. in sua constitutione 63. quæ extat tom. 3. Bullarj. Gregorius XIII. in constitutione, quam refert Naustrus in præfati Martini V. in bulla Cæne Domini, cap. 7. Consonat lex 4. tit. 27. part. 4. Illustrant ultra congestos in præfati Bartholæ. Scortia in select. consil. Pontific. theorum. 102. 103. & 146. Leo Duarum in comment. ad Bull. Cane, lib. 2. cap. 7. Suarez de censur. disp. 21. sect. 2. Fragoles de regim. Christi. Reipub. tom. 2. lib. 1. disp. 3. §. 7. numer. 148. Botellus de præstantia Regis cap. 9. ex numer. 48. Solorzanos lib. 2. tom. 1. cap. final. numer. 70. Hermosilla in l. 1. tit. 1. part. 3. Molina de iustit. disp. 343. Salcedo in tract. de contrabando, cap. 3. Ant. August. in epist. lib. 12. tit. 21. Gutierrez lib. 1. de delict. cap. 27. & 28. Petrus Gregor. lib. 4. part. tit. 16. cap. 31. Solorzanos lib. 2. de iure Indiar. cap. 23. Giballous de censur. disput. 5. quest. 5. confessor. 11. & in synopsi verbor. Arma: & de negotiatione lib. 1. cap. 7. art. 2. Coisc. ad tit. C. qua res exportari Valeozuela tom. 1. consil. 39. F. Raphaël de la Torre in 2. tom. 3. quest. 51. Cabelo 2. part. decis. 62. & 150. Petrus Abanates in repetit. ad tit. de sagittariis, numer. final. Phil. Cametar. cont. 1. horarum successu, cap. 89.

Sed pro dubitandi ratione ita in præfentem assertionem inorgo. Contractus, præcipue emptiois, & venditionis, iuris naturalis secundarij (quod alij ius gentium appellant,) sunt, 1. ex hoc iure, ff. de iust. & iure, ubi Orosius & Bened. dicitur Agidius §. in autem, Iustit. de iure naturali. Probat hanc Bobadilla lib. 2. polit. cap. 1. numer. 4. Morius de contract. tit. de orig. contrahum, Beldos in differt. de iure & iustit. ver. cap. 4. per totum, Petrus Gregor. lib. 4. de reprob. cap. 7. Secchia de commerc. quest. 1. §. 1. per totum. Igitur Ecclesia oco potuit prohibere venditionem armorum, & ceterarum mercium, de quibus in præfenti, Sarracenis, seu Infidelibus neque transitus, aut navigatio contra societates humane, & christiane charitatis regulas prohiberi debet, l. libertas, ff. de opri. libert. l. 7. ff. de servis export. l. in creditores, ff. de edict. l. 2. §. item Verus, ff. de aqua pluvia, Cancet. 3. var. cap. 13. Grocius de iure belli lib. 2. cap. 3. numer. 12. Accedit utilitas commerciorum, præcipue cum exteris nationibus, & cum gentibus finitimis, quam probant, & valde commendant Pisto lib. 2. de reprob. Petrus Gregor. eod. tract. lib. 1. cap. 2. & 3. Bodious eod. tract. lib. 1. cap. 6. Igitur non recte in præfenti commercij usus interdicitur cum Infidelibus & Sarracenis. Etiam difficilis est præfens constitutio io pena, quam imponit Christianis suscipientibus regimen navium, videlicet ut capteorum servi fiant; nam libertas iuris naturalis est, l. summa 3. ff. de statu hominum, §. 1. Iustit. de libertis, ubi plura Insist. Conanus lib. 2. comment. cap. 2. Ergo lege positâ contra ius naturale servitus constituit non potest.

Quæ dubitandi ratione non obstant, vera est præfens assertio, cuius ratio ex eo provenit, nam certum est, posse Principem iustus ex causis prohibere subditis propriis, & vasallis, ne cum mercatoribus exteris commercium exercent, l. Dinus, ff. de servis, rustic. præd. l. sicut, §. Aristot. ff. si servitus vindictetur, l. heres, ff. de usur. l. sed si pupill. 11. §. item si cum plures, ff. de institut. alb. ibi: *Nam & certam personam passim prohibere contrahere, vel certam genus humanum, vel negotiationem, & certis hominibus permittere, & similiter certas res ad exteris nationes deferre, præcipue cum quibus bellum geritur.* Et hoc eodem iure, ff. de publican. l. 2. & per totum, C. de nautico fœnore, l. rem, C. de literibus, lib. 11. l. penult. C. de contrahend. empti. l. 1. C. neq. lic. habet. Metrac. lib. 1. l. 1. C. qua res export. hæc probant Rodericus Suarez allegat. 18. Bobadilla lib. 2. polit. cap. 5. & lib. 4. per totum, Gutierrez præfatus, qq. lib. 4. quest. 37. usque ad 46. Glusba consil. 16. ad numer. 15. Valeozuela consil. 39. & 53. Cancercos tom. 3. varior. cap. 13. numer. 255. Salcedo de contrabando, cap. 3. Thomas Delbene de Parlamento, cap. 2. sectum. 30. Ratio est, ut arma promptius io eos coeuerant, ut obsequantur Cuius. & Gothofredus in dist. l. 1. c. 4.

qua res, Alciatus lib. 1. *dispens. cap. 11.* Ripa de *preste, tit. de remediis ad conuict.* Aliâ ratio additur in *l. Mercator. C. de commerc. & mercat.* ne alieni Regni, quod non consentit, ferrentur æciana. Facit lex 2. *C. quando & quibus quarta pars.* Facit edictum Theodorici apud Cassiodorum lib. 2. *var. cap. 52.* ibi: Si desiderio nostris commercia peregrina famulantes, si prelati auro acquirere æterna deuotio, quanto magis suis hominibus abundare debet Italia, cum nulla in pariendo probetur sentire detrimenta. Et ideo Laridi species nullatenus inueniunt ad peregrina translati, sed in usus nostros propitia diuinitate feruentur, ne quod in nostris paratibus conficitur, noxiâ diligentia deesse videatur. Quod præcipue procerdit cum mercatores deserunt ad hostes, & barbaras gentes, *l. 2. C. qua res exportari,* iuxta quam distinctionem accipiendus est textus in *l. allegari 8. C. de relig. & commiss.* Sæpe enim transiitque vltim armorum, atque fabricandi ea transfulerunt ad Barbaros maximo cum suorum detrimento. Exemplum extat apud Hieronymum lib. 3. Quare eos, qui nauis conficere barbaros docuerunt, capitali supplicio punitos legimus in *l. his qui, C. de panis:* & eodem iure illud cautum est, vt cuiuscunque operâ & dolo malo hostes nostros commeatu armis, telis, equis, pecuniâ, aliâue qualibet re aditus fuerint, tanquam lætæ Mæstis reos puniendos esse, *l. 4. ff. ad leg. Jul. maiest. adde legem 3. C. de seruiciis fugiti.* & Cassiodorum lib. 2. *var. cap. 52.* notauerunt & illustrarunt Stenbechius ad Vegetium lib. 4. *de re milit. cap. 8.* Petrus Faber lib. 1. *semest. cap. 16.* Solozanus lib. 2. *de iure Indiar. cap. 15.* Liphis ad Tacitum lib. 2. *annal. 66.* Salmastius in *notis ad Papiscum, fol. 388.* Mercurialis lib. 1. *variar. cap. 24.* & lib. 6. *cap. 26.* quæ omnia si iustè statuta sunt, & procedunt in desertentibus mercatores ad hostes, exteraleque nationes, quanta maiori cura ratione obseruari debent in desertentibus armis, & similia ad Sarracenos, Turcas Hæreticos, aliosque Christianæ religionis hostes. Quare tot Ecclesiæ constitutionibus sub grauissimis poenis, & censuris id prohibitum fuit, circa quas varios casus examinatis, & exponunt Duardus, Fragofo & alij scriptores in Bullam Cenzæ Domini, Scotia, & Gibalinis ubi supra. Illud omittent-

dum non est, Inquisitores hæreticæ prauitatis in Hispania procedere contra desertentes arma, vel equos ad infideles. Cantera *gg. crimin. cap. 1. num. 68.* Diana *part. 4. tit. 7. refel. 19.* & in inquisitionibus Aragonie etiam proceditur in exportantes equos in Galliam. Bobadilla *tom. 2. polit. c. 14. n. 31.* Carena *de effir. Inquis. 2. p. 17. §. 20.*

Næ oblat dubitandi ratio supra adducta, nam licet contractus emptiois, & venditionis iuris gentium sit, & ideo Principes absolute subditis illum prohibere non possunt, tamen respondet aliquorum personatum, seu etiam ex iustis causis simile commercium interdicere valens, quia talis prohibitio nititur potentiori, naturalique ratione; nam vt inquit Alb. Gentil. lib. 2. *de iure belli, cap. 21.* ius commerciorum æquum est: ut æquius vendendæ saluti est. Illud gentium ius, hoc naturæ est. Illud priuatorum est, hoc regnorum. Cedat igitur regno mercatura, homo naturæ, pecunia vitæ, vt profequitur Anselmus lib. 1. *de repub. cap. 3. sect. 5.* Vnde ex ratione proximè adducta potuit Ecclesiæ prohibere Catholicis venditionem armorum, & similiarum rerum cum Sarracenis, & Infidelibus. Nec oblat augmentum ipsius difficultatis; nam licet libertas foris naturalis sit, tamen aliâ potentiori naturali ratione plerumque feruitus admittitur contra ipsum ius naturale, vt probat in *cap. final. de seruiciis non arden.* & inter eos enumeratur casus, eum qui in poenam delicti admitti libenter amittit, feruitque sit, veluti iure ciuili, si homo liber ad pretium participandum sese vnuerdarii passus sit; & iure canonico filij à clericis procreari ex concubinis ferui nascuntur, vt probauimus in *cap. 1. de filiis presby.* Vnde restât, plèque in præfenti casu, eum poena capitis iure ciuili statuta esset in eos, qui arma & merces prohibitas ad hostes exportarunt, *l. eorum, ff. de publician. l. final. C. quarum rerum, l. 2. & 4. C. de commerc. c. 1. nemo, C. qua res exportari. Nouel. 63. Leonis, l. 22. iur. 5. part. 5.* Cuius in *dist. 1. eorum, & ad iur. Cod. quæ res exportari.* Alb. Gentil. *de aduocat. Hisp. lib. 1. cap. 20.* Bobadilla lib. 4. *polit. cap. 5.* Ecclesiæ potuit imponere feruitus poenam desertentibus arma ad Sarracenos, aut in eorum nauibus regimen accipientibus.

CAPVT VII.

* Alexander III.

CONSULUIT, &c. Iudæos etiam de nouo construere synagogas, ubi eas non habuerunt, pati non debes: verum si antiquæ corruerint, vel ruinam minantur, vt reedificent, poteris æquanimiter tolerare, non autem vt eas exalcent, aut ampliores, aut pretiosiores faciant, quam antea fuisse noscuntur; qui vtique pro magno debent habere, quod in veteribus synagogis, & suis obseruantis tolerantur.

NOTÆ.

Alexander III. Ita etiam legitur in secunda collectione, sub hoc titulo, *cap. 1.*

& in *cap. consuluit 29. de appellat.* ubi extat alia pars huius textus, vt ibi notat, & commentarium dedi super in *cap. 1.*

CAPVT VIII.

* Alexander III.

AD hoc præfentem auctoritate mandamus, atque præcipimus, quatenus omnibus Christianis, qui sunt in iurisdictione vestra, penitus interdicitis, & si necesse fuerit, eos ecclesiastica districtione compellatis, ne ipsi Iudæorum seruitio

D. D. Gual. in Decretal. Tom. V.

N a assidue

assidue pro aliqua mercede se exponant: quod etiam obstetricibus, & nutricibus eorum prohibere curetis, ne infantes Iudæorum in domibus eorum nutrirî præsumant, quoniam Iudæorum mores, & nostri in nullo concordant, & ipsi de facili ob continuam conversationem, & assiduam familiaritatem instigante humani generis inimico, ad suam superstitionem, & perniciem simplicium animos inclinent.

NOTE.

^a **A**lex. III. Ita etiam legitur in secunda collectione, sub hoc tit. cap. 2. ubi additur, *pari capite Licet*. Unde cognoscitur, in præfenti referri partem textus in cap. licet 23. de testibus: & integra decretalis extat post Concil. Later. sub Alex. III. post. 20. cap. 2.

^b **Domibus.** Unde dubitari solet, an saltem extra domum possint Iudæi habere Christianas nutricis pro ablandandis filiis propriis. Et negatiuam sententiam tenent in præfenti Ioan. Andreas Burius in fine, Anania num. 5. Felinus n. 3. & alij, quos referunt & sequuntur Azor tom. 2. in fine, lib. 8. cap. 21. quæst. 9. Sanchez lib. 2. summa, cap. 31. num. 19. Riccius lib. 2. de iure person. cap. 28. num. 17. quæ sententia verior est, et si contrarium veniant Glossa in præfenti, Cardinalis, vers. Oppone, Socinus num. 2. Abbas num. 2. nam cum præfens prohibitio ea nitatur ratione, videlicet, ut communio Iudæi cum Christiana vitetur, & licet ratio æquæ militet cum filij Iudæorum à nutricibus Christianis, etiam extra domum abstantur, idem ius istinuendum est, argumento legis illud, ff. ad leg. Aquil.

COMMENTARIUM.

^{2.} **C**um omnis communio etiam politica Christianis cum Iudæis prohibita sit, cap. omnis 14. 28. quæst. 1. cap. sap. 22. 8. quæst. 1. Concil. Illiber. can. 50. Si clericus, vel fidelis cum Iudæo cibum sumpsit, à communione abstineat, & emendetur. Epau. can. 15. Iudæorum convini etiam laicos consiliis nostra prohibuit, & ne cum illo clericus panem comedit, quisquis in Iudæorum fuerit convinio inquinatus. Venetianum can. 12. Agathense can. 40. Autel. 3. can. 15. Christianis convinia interdictum Iudæorum, in quibus si forte fuisset probatur, annuali excommunicationi pro huiusmodi conviniis subiacebant. Maricon. can. 15. Nullus Christianus Iudæorum conviniis participare præsumat.

Quod si facere quicumque, quod nefas est dicitur, Clericus, aut secularis præsumpsit, ab omnium Christianorum consensu se nactus compescendum. Meldense can. 73. Metense can. 4. Nemo Christianorum cum Iudæis manducat, & bibat, vel quidquid comedit, aut potari possit, a Iudæis accipiat. Paleninum anno 1322. can. 21. Illustrari in dict. can. 50. Concil. Illiber. Ideo sæpe cautum legimus, ne Christianus in famulatu, aut seruitio Iudæi sit, etiam ut nutrit filiosque eius, cap. Iudæi, cap. est Iudæus, hoc tit. cap. unic. hoc tit. in 5. temp. vbi Honorius III. vniuersis Episcopis Ungariæ ita scribit: Nefas est, ut sacri baptismatis, vnde renatur in fideliem ritus, vel consensuane fuerint, aut religio Christiana subleui infidelibus paluatur. Simuliter ob vitandam ipsam communionem in can. 10. Concil. Tral. Episcopi Orientales dissentiant, ne quis, vel clericus, vel laicus, si in morbum incidit, Iudæum medicum quemcumque accersat, aut pharmacum ab eo accipiat, alioquin clericus deponatur, laicus vero excommunicetur. Quod idem in Occidente canit Gregorius XIII. in Bulla relata à Silesico lib. 1. festi, cap. 12. Illustant vltra congestis à Barbosa in præfenti, & à Cenedo in collect. ad Decretum, collect. 15. Maiolus dicit. canonic. tit. de perjury Iudæorum. fol. 656. Sanchez in præcept. Decalog. lib. 2. cap. 31. P. Suarez de fide disp. 18. sect. 6. Azor part. 1. in fine, lib. 8. cap. 22. Didacus Perez in l. 4. tit. 3. lib. 8. Ordin. Riccius lib. 2. de iure person. cap. 28. num. 21. & etiam nouo iure repetita est præfens prohibitio constitutionibus Pauli, quæ incipit: Cum nimis, §. 4. Gregor. XIII. consil. 70. quæ incipit, Antiqua Iudæorum: ubi etiam statuitur, ut eo casu possint Iudæi pariri ab Inquisitoribus hæreticis præuiatis. Nec ad hoc possant habiliari à Principe seculari, cap. consult. 3. de appellat. nec etiam ab Episcopis, cum hæc prohibitio sit Concilij generalis, in qua Episcopus dispensare non valet, ut resoluit Riccius dict. cap. 28. num. 284.

CAPVT IX.

* Clemens III.

Sicut Iudæi non debent sine licentia in synagogis, vltra quàm lege permiffum est, præsumere, ita in iis quæ eis concessa sunt, nullum debent præiudiciu sustinere. Statutum enim, ut nullus Christianus inuitos, vel nolentes ad baptismum eos venire compellat. Si quis autem ad Christianos causâ fidei confugerit, postquam voluntas eius fuerit patefacta, Christianus absque calumnia efficiatur: quippe Christiani fidem habere non credunt, qui ad christianorum baptismum non spontaneus, sed inuitus cognoscitur peruenire. Nullus etiam Christianus eorum quemlibet sine iudicio terrenæ potestatis, vel vulnerare, vel occidere, vel suas illis pecunias auferre præsumat, aut bonas, quas hætenus habuerunt, consuetudines immutare: præsertim in festiuitatibus suarum celebratione, quisquam sustibus, vel lapidibus eos nullatenus perturbet: neque aliquis ab eis coacta seruitia exigar, nisi cui ipsi præterito tempore facere consueuerunt. Ad hæc malorum hominum prauitati, & auaritiæ obuiantes, decernimus, ut nemo cæmererum Iudæorum mulcare, aut inuadere audeat, siue obtentu pecuniarum corpora humata effodere. Si quis autem

huiusmodi

Juiusmodi tenore decreti cognito (quod absit,) contrariè præsumptis, honoris, & officij sui periculum patitur, aut excommunicatione plectatur, nisi præsumptionem suam dignâ satisfactione correxerit.

NOTÆ.

1. **C**lemens III.] Ita etiam legitur in secunda collectione, *sub hoc titul. cap. 3.* nullibi tamen exprimitur, cui testetur Pontifex. Eam constitutionem per eadem verba innovavit Innoc. III. *lib. 2. epist. final. apud Silectum fol. 414.* ibi: *Sicut ergo Iudæis non debet esse licentia in synagoga sua, ultra quam permixtum est lege, præsumere; ita in his, quæ sunt illis concessa, nullam de hinc præiudicium sustinere. Nos ergo licet in sua magis velint duritia perdurare, quam viciniis Prophanorum, & lege arcana cognoscere, neque ad Christianam fidem notitiam pervenire: quia tamen nostra postulat discretio auxilium, & Christianæ pietatis manifestatio sustinere. prædecessorum nostrorum felicitis memoria Calixti, Eugenij, Alexandri, Clementis & Celestini Rom. Pon. sicum exemplis lazarenes, ipsorum periculum admittimus, eisque protectionis nostre clypeum indulgemus. Statimque ergo, ut nullus Christianus iunior, vel volens eos aut baptismum per violentiam venire compellat, sed si eorum quilibet sponte ad Christianam fidem causa confugerit, postquam voluntas eius fuerit parvitas, sine qualibet officio calumniæ Christianus.*

b Synagoga.] De quibus egi supra in cap. 3.

c Lex.] Vide licet l. final. c. de Iudæis.

d Effectus.] Post catechesim, & instructionem in mysteriis fidei. De tempore, & forma catechesis primis Ecclesiæ sæculis in Ecclesiæ visitata plura adduxi in can. 4. & aliis Concil. Illiber.

2. **P**ecunias auferre.] Consonat textus in cap. dispar. 23. *quæst. 8. cap. infideliter, 24. quæst. 4. Alex. III. post Concil. Later. part. 20. cap. 1. l. nullus in d. C. hoc titul. quia eorum, & ceterorum bonorum etiam iure fideles constitutentium rerum dominium Iudæi habent, cap. Iudæi, et 2. cap. multorum, hoc titul. cap. de terris, de decimis, cap. quædam, de v'saric. Probat Riccius lib. 2. de iure person. cap. 50. et si contrarium innuat in l. final. §. 3. C. de pagan. Vnde Iudæi, aut Gentilibus non potest bellum indici à Principibus Christianis eo prætextu, scilicet quod Iudæi, aut infideles sunt, nisi provincias retineant Christianorum, quæ aliquando Catholicorum fuerunt. D. Thomas 2.2. *quæst. 66. art. 2.* Vel quando ipsi Christianos offendunt, *dist. cap. dispar.* Vel si blasphemias, opprobriisquæ Catholicam Religionem infamare intendunt, aut fidei propagationem impediunt, ut latè docent Conar. in regul. peccatorum, 2. part. §. 10. de R. I. Mietha de iurifidelit. part. 1. cap. 24. Grotius de iure belli, lib. 2. cap. 20. Gehl. *ead. tract. cap. 9.* Solorzanius tom. 1. de iure Ind. lib. 2. cap. 16. & 17. Vitro autem Iudæi, vel Infideles Principibus Christianis subiecti, ab eorum regibus possunt expelli, si baptizari teneant, non levis difficultas est, quam latè disputant Botel. de præst. Reg. Cathol. cap. 69. per tot. Cenedus ad Decret. collect. 15. num. 2. Tiberius Decian. lib. 5. *tract. crim. cap. 12.* Maiolus *dier. canonic. tract. de perfid. Iudæor. Ricciolus de iure person. cap. 51.* Solorzanius *dist. lib. 2. cap. 18. num. 52.* Inter quos etiam communiter sententia placuit, videlicet Iudæos quietè, & pacificè inter Christianos degentes tolerari debere, D.D. Grotius in Decretal. Tom. V.*

ut voluntatè à fidem perducantur, ex præsentè textu, & aliis proximè citatis. Si verò ipsi Iudæi protervi si à in Christianos aliquid moliti fuerint, aut pravo exemplo, aut superstitionis ricibus Christianum populum imbare, aut sedare intendant, tunc etiam per Principes Catholicos expelluntur, ac bonis expoliuntur, si baptizari teneant, ut integris tractatibus probant F. Iacobus Bleda in diffinitione fidei præ expulsiōe Adæarum, *tract. 2. cap. 1. §. 2. & in hist. Alaworum lib. 1. cap. 12.* Gibilan. in lib. contra Iudæos: & ita expulsus eos fuisse per Silestem Gothorum Regem, & tulumus in *act. matres de Baptismo* & tandem expulsionem factam per Catholicos Reges Ferdinandum, & Elizabeth, promulgatam in l. 3. §. 4. tit. 2. lib. 8. Recopil. commendant, & debita extollunt laudibus Navarrae in *diffin. polit. cap. 7.* Simancas de Catholicis tit. 35. num. 4. Hlefas in *hist. Pentif. 2. part. lib. 6. cap. 20. §. 2.* Valdes de dignit. Reg. Hispan. cap. 19. num. 68. Madera in *Memorich. Hispan. cap. 6.* F. Iosauus à Ponte in *conuents vniuersæ Alondach. lib. 1. cap. 8.* Aldrete in *antiquit. Hispan. lib. 3. cap. 28.* Botel. Maiolus, & Solorzanius supra laudati. Immo nullam Iudæum, seu infidelem in sua Regnia permittunt Reges Gothorum in ipsi Regni auspiciis futuræ oræ promittunt, iuxta canonem 31 Concilij Tolet. 6. ubi ita tantum legitur: *Inspiratione sanctorum Dei Excellensissimus, & Christianissimus Princeps ardore fidei inflammatus, cum regni sui sacerdotibus præuocatis, & superstitionis Iudæorum eradicatione voluit, nec finit degere in regno suo eam, qui non sit Catholicus, & ut quique succedentium temporum regni seruium fuerit episcopum, non antea ascendat regiam sedem, quam intra reliqua conditionem sacramenta pollicitur fuerit, nullum non Catholicum in regno suo permittitur. Prosequuntur Solorzanius & supra, Frago. lo de Regim. Christi. *Rep. part. 1. lib. 1. disp. 2. §. 7.**

f Celebratione.] Iuxta tractata supra in cap. quia, hoc titul.

g Pecunia in ipsi sepulchris deposita.] Nam mortis fuit apud Iudæos, pecuniam, magnamque auri quantitatem, & thesauros in sepulchris ipsis cum defunctis condere, ob quam præcipue causam Chalægi ossa Regum Iudæ, ac Principum, nec non sacerdotum, cæterorumque vrbis Hierosolymitanæ ciuium in sepulchris effoderunt, ut longè ante Hieronimus prænuñciauerat cap. 8. & iam adimpletum Baruc si. nit cap. 2. ad eruendos nimirum auditate maximâ, diripiendisque thesauros, quos in antiquorum sepulchris munificè recondi manu consuetos experti erant, ut in *dist. cap. 8.* Hieronimus exponit D. Hieronymus, & de sepulchris Dauid testatur Iosephus lib. 1. *antiquit. cap. vltim.* quod cum Hieronimus Pontifex ab Antiocho acriter opugnaretur, oppositio v'sus consilio, vi eum ab vrbis obsidione auerteret, & necessitati præuiceret, referat ipsius Davidis monimento tris talentorum millia inde delatit, quorum partem Antiocho persoluit, ut scribent Pineda lib. 2. de rebus Salomon. cap. 1. in fine, Villalpando tom. 2. in *Ezechiel. disput. 14. cap. 61.* Aliè Vñeda in *suas Antiochia. p. 2. lib. 10. cap. 10. §. 3. & de sepulchro Regine Semiramidis spoliatò à Dario agit Celsus Rhodig. in lib. 23. antiquar. *lection. c. 5.* Etiam*

tam apud Græcos, quàm apud Romanos mortis fuit, ut pecunie, ac multæ diuitiæ inferrentur in sepulchra eum mortuis, ut constat ex l. *ferro* 123. §. *ultimo* ff. de legat. t. l. final. §. *final.* ff. de auro & argenteo: notatur Lippius ad Tacitum lib. 3. *annal.* 102. Marezus lib. 2. *sui Gubernatoris*, cap. vii. pag. 387. Gothofredus ad leg. 12. *Tabul. de iure sacro*, tit. de religiosis, Ant. Clarus Siluius lib. *final.* ad leg. *regius*, cap. 23. pag. 321. Ioannes Kirmanus de *funer.* lib. t. cap. 10. & lib. 3. cap. 24. Gushetus lib. 7. *de iure mortuum*, cap. 32. Lelius Giraldus lib. de *uer.* *sepel.* tit. *sub medium*, Balengius lib. 3. *de Imperat.* cap. 6. alij relati à Solorzano tom. 2. lib. 5. de *inve.* *Indiar.* cap. *omic.* num. 49. Hinc Petrus Diaconus in *trist.* quem de *litterarum Romanorum* nūis inscripfit, has in sepulchris antiquis inscribi solitas refert, I. M. I. S. T. B. A. B. S. C. idest, in monumento isto sunt bona abscondita: & istas, I. N. H. C. M. M. S. P. S. N. F. N. Idem, in hoc monumento sunt pecunie sine fine: & etiam eas, I. N. T. S. S. B. E. Inius sunt bona eius: I. N. H. C. M. M. S. P. S. in hoc monumento sunt pecunie sacre: ceteri de eorum notarum versione dubitet Forner. lib. 3. *rer. grecul.* cap. 3. quod varis rationibus vitatum fuit. Prima ob superstitionem veterum, qui putantes mortuos ad æternam vitam degendam multis indigere diuitiis, illas in sepulchris inferebant, de qua superstitione vltra proximè reclaris multa conueniunt Cerdas ad *Virgil.* lib. 2. *Æneid.* versu 363. Forner. ad *Cassiodor.* lib. 6. *epist.* 8. Solorzani *dist.* cap. *trist.* num. 38. & in *poli.* lib. 6. cap. 5. pag. 954. ubi notat apud Indos Peruanos eodem nomine designari sepulchrum, & thesaurum, hoc videlicet, *guaca*; quia vix erant sepulchra Indorum, in quibus non inuenerunt thesauri. Aliam rationem forsan minus frequentem adduxit Leo Imperator, in *Nemel.* 51. iuxta editionem Gothofredi, nempe quosdam adeo auaros esse, & hominum postulationi obsequi, ut illis diuitias inuiderent, quas secum ferre non possunt, subtrahant illas oculis, & visibus humanis. Item hoc faciebant non vi sepulchra honorificentior esset, tam vi religio tutius tam seruariet, vi referant Sirabo lib. 15. *Quint.* Curtius lib. 10. *Plautus* in *Pseudolo.* act. 1. *Scena* 4.

Ex hoc sepulchro veteri viginti minas

Effodiam ego hodie, quas dicit Herili filio.

Postea mandatu Principum, seu lege decemvitali, ut probat Ramirez de Prado in *theatrum legum*, in l. 4. §. *final.* ad leg. *Jul. pecul.* prohibitum est cum defunctis sepelire pecuniam, d. l. 4. §. *final.* immo nec vestes pretiosas, nec alia ornamenta cum corpore condere liceat: quod simplices homines falsasse dicitur in l. *sed si quis* 14. §. *non autem*, ff. de relig. l. *ferro* 113. §. 1. ff. de legat. t. l. final. §. *mulier.* ff. de auro & argenteo. Sed quia adhuc neglecta est prohibitio pecunie plectumque reponebatur in sepulchris, prohibet Clemens III. in presentia, eius occasione sepulchra referuare, ludæorumque cineres effodere. Quare Cassiodor. lib. 4. *uer. epist.* 18. merito damus Laurentij colossam presbyteri scelus, quod effossis cineribus funestas diuitias inper hominum cadaveria perferretur, ut esset. Et apud Quinil. *declam.* 369. sepulchri vilitati reus ita excipit: *Sed quid suspensum* *Aquinas* *tamen* *licet* *pecunia* *in* *monumentis* *ob-* *trusa* *hiis* *pauis* *perferantur*. Pellimi fores illi appellantur à Sidonio: & in eos extat edictum apud Cassiod. lib. 4. *uer. capit.* 34. atrocitatem

que huius criminis exagitant Pelusiora lib. 4. *epist.* 146. D. Chrysost. *homil.* 18. in 2. ad *Corinth.* Nyssenus in *epist.* *can.* cap. 7. Prosequuntur alia Ant. Bozios *Rom. Subterr.* lib. 1. cap. 27. Chokier in *far. hystor.* cont. 2. *capit.* 77. Theophilus tom. 15. in *heracle.* panth. 9. *sect.* 1. Spontin. de *canes.* part. 1. lib. 5. cap. 9. Sotaz. ad *Sidon.* lib. 3. *epist.* 12. Istanzo de *prelat.* fol. 166.

Vnde exponendus venit textus in l. 4. §. *non sit locus*, ff. ad leg. *Jul. pecul.* quem breuiter exponam, quia varis difficultatibus solet obrui. Verba priora textus sunt: *Non sit locus religiosus ubi thesaurus inuenitur.* Quæritur DD. quæ possit esse ratio dubitanti huius decisionis, quæ omni profus dubio videtur exire. Et omnia varis DD. subtilitatibus credo rationem dubitandi ex eo descendere, quod diuinitate in terra abscondite solebant Ceteri, Plutoni, & aliis Inferorum filiis numinibus consecrari, ut breuiter notauit Ant. Clarus Siluius ad *leges regias* cap. 23. pag. 323. & probatur hic mos ex quadam veteri inscriptione, quam refert D. Ioseph. de *Reis* lib. 8. *epistul.* *capit.* 17. ubi: *Puerum sacrum manus ne auingito furis.* Et ex quodam veteri Anonymo Poëta relato à Kirman *dist.* lib. 3. cap. 24. in hæc verba.

Res ea sacra miser, noli mea tangere sacra,

Sacrilega hisse abstinere manus.

Testatur etiam Lilius lib. 2. cap. 11. ex partitione Iani Gruenij, Patrem Spuri Cassij, ab ætate tyrannidem à filio, eum casu domi cogniti verberasse, ac necasse, pecuniamque filij Cerei consecrassse: signum inde factum esse, & inscriptum, *Ex Cassia familia datum.* Cum vetò diuitie sub terra condite solerent commendari, & consecrari filiis numinibus inferorum, & quod sacrum est, religiofum etiam appelletur, ut testatur Alius Gallus Vetus I. C. apud Festum verbo *Religiosus*; potuit in dubium venire, vitum locus, in quo conditus est thesaurus, religiosus sit propter contactum thesauri, qui forsan sacrus potuit esse Cerei, Diti, Plutoni, Proserpinæ, aut alia numinibus infernalibus, ut Geniales falsè sentiebant. Nihilominus Marcius negat, fieri locum religiosum ubi thesaurus inuenitur, quamuis inuenitur ibi vota soluerit pro inuenio thesauro. Quod facere consueuisse inuenientes, probat veritas inscriptio apud Galbanum de *usufructu.* cap. 30. *numm.* 4. in fine, quæ talis est: *Iam inueniri, Diti pasci, Terra morri, detestis Dacia thesauris, Caesar Nerus Trajanus Augustus sacrum posuit.* Ratio decidendi potuit esse, quia non semper thesauri consecrabantur numinibus: & quamvis consecrati fuissent, sacri non fiebant, quia priuata consecratio non efficit rem sacram, sed publica ritè, & per Pontifices fit, l. *in iuratum* 6. §. *sacra*, l. *sacra* 9. in princip. *cum* 45. *sequen.* ff. de *verborum* *diffinitione*: notatur Donel. & Obsidius lib. 4. cap. 1. Cum ergo consecratio thesauri fieret à priuato abscondente, consecrata est, quod nec thesaurus, nec locus maneret consecratus. Confirmat prædictam decisionem Mareianus in *dist.* §. 6. per ampliationem his verbis: *Nam est in monumento inuentus fuisse thesaurum, non, quasi, religiosus esset.* In primis applicanda est decisio titulo, sub quo hæc: titulus est de prelatu, cuius lege puniuntur, qui pecuniam publicam, sacram, religiosamque auferunt, aut inscripserunt, l. t. in princip. ff. *ord.* Ant. Matthæus

4.
EXPOSITOR
L. 4. §. NON
SIT, AD LIB.
174. SECTA

ad eandem titulum. Quæstio itaque est, an in hoc crimine incidat, qui de sepulchro, id est de loco religioso, tollit pecuniam? Negat Marcianus, quia thesaurus de sepulchro sublatus oon tollitur tanquam religiosus, sed tanquam privatus, prophetausque: igitur si furtum est, non erit saltem furtum rei religiosæ, siue peculatus. Argumentum verò concludit à fortioribus terminis, ita: Theſaurus in loco verè religioso repertus non est religiosus: ergo multò minus efficiet locum purum religiosum thesaurus ipse, cui nulla religio inest. Potest etiam quæri ad hanc postremam partem ratio dubitandi, quæ à nostris iam excogitata est, & adducta ex l. que religiosus 43. ff. de rei vindic. ubi docemur, religiosam esse, quæ adhaereat religiosis: sed thesaurus adhaeret sepulchro: ergo religiosus est. Decidendi verò ratio est prompta; illa enim censetur adhaerere sepulchro, quæ necessarii illi adiaceat, & separari ab eo non possunt sine detrimento integritatis, aut religionis, l. 2. de sepulchro violat. quam partem egregie illustravit Suarez ad legem April. lib. 2. cap. 2. sect. 6. & 7. thesaurus verò in sepulchro est per accidens, nec pertinet ad integritatem, aut religionem: igitur non potest dici adhaerere loco religioso. Ita exponunt Ane. Clarus & Silvius ad legem regiam d. cap. 23. Galbanus de usufructu. cap. 30. num. 4. in fine. Præbuit etiam rationem Matcianus his verbis: Quod enim quis sepulchro prohibetur, id religiosum facere non potest, ut mandatis Principum caveatur. Sensus est, contra tendenda iura publicè expressè vetantis aliquid dedecari, nihil potest fieri sacrum, religiosumque, ut per expositionem legis videmus, ff. de iurispign. notati in cap. final. ut lite pendente: sed recepta Princeps expressè interdicitur condi cum mortuis pecuniam tanquam rem licitam, & superstitionem: ergo contra interdictionem sepulchra non potuit fieri religiosa, quia oon spectat ad religionem.

COMMENTARIUM.

5. EX hoc textu sequens communiter deducitur assertio: Iudæi iniuri, & remotes regendi non sunt Baptismus accipere. Probat eam textus in cap. ad fidem 25. cap. de Iudæis, 45. dist. cap. 3. iuncta integrè, hoc sic. Concil. Tolet. 6. can. 3. Tolet. 8. & Tolet. 12. can. 9. Alexander III. post Concil. Later. p. 20. cap. 1. ibi: Scimus ergo, ut nullum christianum inuitet, vel nolentes Iudæos, eos ad baptismum venire compellat. Concil. Carthag. can. 109. Hoc tempore lex data est, ut libera voluntate transire Christianitatem argumentum suscipiat. Sanctus Gregor. Nazianz. oratione 8. apud Baronium anno 391. num. 34. D. Ambrosius serm. 13. in psalmum 118. D. Thomas 2. 2. q. 100. art. 8. Illustrant ultra congestis à Barbosa in præfatu, Suarez de fide dist. 18. sect. 3. Crespius in summa iuris Pont. verbo Iudæi iniuri, Ani. August. in epit. iuris lib. 12. tit. 2. & lib. 22. tit. 28. Acuña in cap. qui sincera, 45. dist. Petrus Gregorius lib. 2. synag. cap. 2. num. 15. & lib. 1. part. 2. tit. 5. cap. 7. Mendoza lib. 3. Concil. Liber. cap. 27. Cabrerios lib. 2. de mat. cap. 17. num. 50. Narbona de etate ad alius humanitatis, anno 7. q. 10. Maiolus dier. canonic. in colloquio de perfid. Iudæor. fol. 647. Baldonius de edictis pro Christianis, in fin. Fragofo p. 1. de regim. Christi. Reip. lib. 1. disp. 2. §. 7. Barbosa ad Concil. Tridant. sess. 5. num. 3. Grotius

de iure belli lib. 2. cap. 20. Becanus in 2. 2. de fide cap. 13. Suarez de fide dist. 18. sect. 1. cum sequenti. Cabrerios de mat. lib. 2. cap. 17. num. 50. Hallierius de sacris electionib. sect. 5. q. 1. §. 10. Ambianus ad Tertul. ad Scapol. cap. 2. Solorzano tom. 2. de iure Indiar. lib. 2. cap. 17. & 18. Gentil. de iure belli lib. 1. cap. 9. Ricciolus lib. 2. de iure person. cap. 32. & 32. Germonius lib. 3. de sacris, immunit. cap. 13. num. 33. Iustus Lipsius lib. 4. poli. cap. 4. Valdes de dign. Regis Cathol. cap. 19. num. 5. Valenzuela contra Venos p. 4. num. 187. Secoria in select. theorum. 352. epis. 136. Castropalao tom. 1. oper. moral. tract. 4. dist. 2. punct. 6. Thomas Delbene p. 2. de offic. Inquisi. dub. 230. sect. 8.

Sed pro dubiandi ratione in præsentem assertionem ita insurgo: omnes homines, tam Iudæi, quam Gentiles, vi legis diuinæ obligantur ad fidem, & baptismum, ut probant Suarez, & Becanus ubi supra. Ergo Principes, tam ecclesiastici, quam seculares, qui custodes sunt, & vltiores legis diuinæ, eogere possunt Iudæos & infideles sibi subditos ad suscipiendum baptismum: quod docuit Christus Dominus exemplo, & parabolâ: exemplo, dum per terrores compulsi Saulum ad fidem proficiendum, ut refertur Act. Apost. cap. 9. vers. 4. parabolâ, dum apud Locum cap. 14. vers. 23. Paucifamilias præcepit seruo suo, vt exiret in viam, & plateas quousque, vt compelleret intrare ad eam quocumque inuenisset. Ergo omnes Iudæi, & infideles compellendi sunt intrare in Ecclesiam per fidem, & baptismum. Accedit etiam susceptio fidei per baptismum non cedit in prædium Iudæorum, seu infidelium, sed io eorum commodum: ergo nulla fit eis iniuria, si ad baptismum compellantur. Augerur primò hæc dubiandi ratio ex eo, non Iudæi fidem suscipientes eoguntur eam seruire, & retinere, num. 55. Leonis, etiam si per vim, & necessitatem eam susceperint. Concil. Tolet. 4. celebratum in cap. de Iudæis, 45. dist. ibi: Oportere, ut fidem, quam etiam vi, & necessitate susceperunt, tenere cogantur. Ergo & cogi possunt illam suscipere. Augerur secundò hæc dubiandi ratio exemplo clarissimorum Principum, qui Iudæos cogerunt baptismum suscipere, nam Silebius Rex Gothorum in l. 3. tit. 3. lib. 12. legum Visigoth. sinxit ut omnes Iudæi in Hispania commorantes baptizarentur, aliis quilibet transgressores repeteri fuisse, utripet decalantur centum flagella susceperet, & bonis eius fisco applicatis in exilium mitteretur. Vnde quamplures ex eis baptizatos fuisse referunt Lucas Tudensis in chron. mundi, Rodricus Tolet. lib. 2. cap. 17. Alfonso Carthag. in Reg. Hist. anacarp. cap. 31. Ioannes Bassius in chron. anni Christi 616. Sababedra in chron. Goth. cap. 28. Et etiam eorum aliquot millia in Galliam effugerunt, turpe visum fuit Dagoberto Galliarum Regi à Gothis eisdem religionis nostræ hostes indomitos hostibus suis receptos retinere, ac Visigothis religione cedere: quare ipse diem præscriptur, intra quem quisquis mortallum religionem nostram non profiteretur, hostis iudicaretur, comprehensisque capite lucret. Refertur Paulus Amil. de rebus Francor. in Dagobert. Aymonius lib. 4. hist. Francor. cap. 12. Baronius anno 614. n. 41. Et in l. qui post sanctam, §. qui verò, C. de Paganis, iubentur consecrari bona Paganorum nolentium baptizari: & in leg. Calicetiarum, C. de Iudæis, cognouit Calicetiam

6. TRADITIONE DE CAUSIS RATIO.

essent periculis, ac Hæreticis fidem recipere. Ergo quia Iudei cogi possunt baptismum suscipere.

Quia debitorum ratione non obstante, veritas est præiens assertio, quæ magnâ nititur ratione; nam credere est munus animæ, cui nulla vis infertur potest, ut docuit D. Augustinus in lib. de utilit. credendum, & tract. 16. in locum, dum ait: Cætera posse hominem, etiam nolentem; credere non nisi volentem. Faciant Quintus Curtius lib. 8. ibi: Nemo Rex perinde animis potest imperare, ac linguis. Laër. Firmianus lib. 5. diu. Insuper. cap. 14. ibi: Quis enim imponit nulli necessitatem, vel credendi quod nolim, vel quod velim non credendi?

Nihil iam voluntarium, quam religio est, in qua si animus auctus est, iam subleata, iam nulla est. Quod præcipue 10. fide Catholica procedit, quæ sapienter nata, eo quod supernaturalis existit, non est hominibus in hoc sæculo demonstrabilis, ut possit intellectus ad ipsam amplectendam convinci, iuxta illud Ecclesiasticus cap. 3. Aliqua ne quisque; id est ratione naturali ne fidei mysteria perciperetis; atque inde consequitur, non nisi per sponsum voluntatis obsequium divinitus per gratiam acquisibilem esse, iuxta D. Paulum 2. ad Corinth. cap. 10. In captivitatem deducit omniem intellectum, in obsequium fidei.

Quod agnoscetes plures Ecclesie PP. docuerunt religionem imperandam non esse. D. Bernardus sermone, 66. in Cantica. Fides suscipienda est, non imperanda. D. Athanasius in epist. ad solitarium vitam agens: Pia religio propriam est non cogere, sed suadere. D. Ambrosius in epist. 2. ad Corinth. cap. 2. ubi exponens illa verba: Non quia dominamur fidei vestre, ait: Quoniam fides non necessitatur, sed voluntatis rei est. Ideo dicitur, oon quia dominamur fidei vestre; dominum enim necessitatis eodem est. D. Hieron. tract. de 7. ordin. in 6. gradus, sub finem. D. August. epist. 48. 50. 127. 129. 158. 159. 160. Operat. Milesius. lib. 1. lib. 2. lib. 3. & 7. D. Gregor. lib. 1. epist. 45. Adhibendus est sermo Iudeis convertendis, qui errorum in ipsi finem velle debet; & predicando, quod in his tentabitur, illuminet. Tertul. ad Scapula. cap. 2. Sed ne religionis est cogere religionem, quæ sponte suscipi debeat, non est. Theodoretus apud Cassiodorum lib. 2. var. epist. 27. Religionem imperare non possunt, quia nemo cogitur, ut credat in iura. Et lib. 10. epist. 26. Nam cum divinitus patitur multas religiones esse, nos tamen non audent imponere, retinemus enim legisse, voluntariis sacrificandum esse Domino, non cuiquam cogentis imperio. Accedit, nam quomodo placere potest Deo Iudei coacti conversio, cum ipse homines omnes in suo arbitrio relinqui voluerit; ut ita homo, qui ex suo libero arbitrio perit, etiam ex libero arbitrio convertatur, ut docet in d. cap. de Iudeis, cap. 1. de gentibus, cap. 45. diff. Quod etiam de in amicis petunt Aristoteli lib. 8. Ethicor. D. Iulius, lib. 2. de summo bono, cap. 2. ut nemo iniunctis amicus fiat. Facit etiam, nam apud Gentiles victima, quæ aliquo modo se ipsam ad aram, & columinalem significabat, ut si ab ara profingisset, aut nimis esset seludata, aut percussa magnus ederet, & Romanorum & aliarum gentium sacrificiis reichebant, quia putabant ingratia esse Deo, ut tradit Macrobius lib. 3. Saturn. cap. 5. Plinius lib. 8. cap. 45. Plauto lib. 8. sympos. cap. 8. Tirac. in notis ad Alex. lib. 3. genial. cap. 16. Brissotius lib. 1. de formid. pag. 37. iuxta illud Virgil. lib. 2. Georg.

Et similis enim statit sacer licens ad aram.

Vnde tentabitur voluntas victimarum ante imolationem, iuxta illud Virgilij lib. 2. Aeneid.

Dum fruges manibus falsas, & tempora ferro summa notant pendunt.

Immo tantum studium fuit in observandis victimis, ut nisi annuissent sacerdotibus, non offerrentur, ut notavit Rabbi Textorius lib. 2. officina, cap. 2. & latè illustre patet Pinto in spirit. tract. 1. cap. 47. num. 5. Rectè ergo in præsentit Clemens 11. iuxta prædecessorum suorum sententiam decrevit Iudeos cogendos non esse fidem Catholicam proficere, baptismumque suscipere. Idemque dicendum est circa filios Iudeorum, seu Iudæorum, qui non possunt abduci à parentibus, & illis in iura baptizari, etiam si parentibus Catholicis, ut latè probant Solozzaus d. lib. 2. de iure Indiar. cap. 17. Narbona de arce, anno 7. q. 10. Ricciolus d. lib. 2. de iure person. cap. 32. per totum. Fragos de regim. Christi. Resp. p. 1. diff. 2. §. 7. Olana p. 8. tract. 1. resol. 1. Prado de Sacramentis tom. 1. q. 68. dub. 7. videmus Baronius anno 159. num. 8. & 9. qui rectè contrarium resoluunt circa filios hæreticorum, & apostatarum à fide; nam cum Ecclesia possit eos cogere religionem Catholicam retinere, & obsequiare, poterit & illis iniunctis eorum filios baptizare.

Nec obstat dubitandi ratio supra adducta, cui respondendum est negando consequentiam; nam Prælati ecclesiastici non possunt cogere Iudeos Iudæosque fidem Catholicam proficere, cum in eos iurisdictionem non habeant, ut ait D. Thomas dist. 9. 100. art. 4. & colligitur ex illo Pauli 1. ad Corinth. cap. 12. Quid enim mihi de his qui foris sunt, indicare? Nec etiam possunt Principes sæculares, etiam temporalem iurisdictionem in eos exercent; quia potestas, & iurisdictione illorum Principum ordinatur tantum ad finem naturalem, nec extenditur ad finem supernaturalem, sed ad ea, quæ sunt ordinis supernaturalis: ut susceptio fidei per baptismum non pertinet ad finem naturalem, sed supernaturalem. Ergo potestas, & iurisdictione Principum sæcularium ad ea non spectant. Nec obstat quod ex factis Christi cum Saulo, & parabola supra relata expendimus; nam respondeo dupliciter. Primum quod licet Paulus ab initio esset renuens, dum persequabatur Ecclesiam, tamen satis capessit propriam voluntatem, dum dixit: Domine, quid me vis facere? Vnde non potest dici, innotum fidem non suscepisse, ut docent Ricciolus d. lib. 2. cap. 31. num. 15. Turrisemata in d. cap. de Iudeis, 45. diff. Per parabola etiam relaxat d. D. Luca eorum, qui ad carnem intrare compelluntur, non significatur Iudei, de quibus hic agitur sed potius hæretici, & schismatici, qui ratione baptismi pertinent ad iurisdictionem Ecclesie, & compelli possunt, ut redeant ad unitatem corporis Christi, ut exponit locum illum D. August. epist. 50. ad Bonifacium. Et si adhuc accipimus parabola illam de infidelibus, vel Iudeis, tunc compelleri non accipitur pro violenta compulsionem, sed pro vehementia amoris Christi, quod coepit omnes ad fidem converteri, in Ecclesieque gremium ingredi, ut docuit D. Thomas q. 22. de virtutib. art. 9. ad ultimum. Nec etiam obstat, quod baptismus non credit in præiudicium infidelium; nam respondeo, quod licet spontanea fidei professio non cedat in præiudicium eam suscipientis, cogi tamen, & compelli

8.

DISPOSITIO
TVA DVBI
TANDE RAO
1104

compelli ad susceptionem baptismi in magnum gravamen illius, qui cogitur, cedit; & quidem gravamen contra iustitiam, cum cogatur ab eo, qui ralem potestatem compellendi non habet; quod facile explicatur exemplo viti, nam vorum calitatem sponte emissum non cadit in prædicationem vouentis; cogi autem ad vouendam calitatem ab eo, qui potestatem non habet, est iniuriosum ei, qui cogitur. Nec etiam obstat, quod qui fidem semel susceperunt, etiam per vim coguntur eam retinere; nam aliud est cogi ad suscipiendam nouam fidem, aliud ad retinendam eam, quam semel suscepit; illi enim cogi non possunt ad baptismum; isti verò cogi debent omnino, ne fides semel suscepta apud eos vili, & contemptibilis videatur, cap. quidam, de apostolis, cap. contra Christianos, de hereticis. lib. 6. cap. plerique, de consecratis. dist. 3. Item dicemus in cap. ad abolendam, de heret. Nec tandem obstat Sisebuti Regis factum, quod improbatur PP. Concil. Tolet. can. 16. relati in cap. de Iudæis, 45. dist. & D. Ildorun in chron. Goth. era 651. ubi agens de S. Sebastiano ait: *Qui in initio regni sui Iudæos ad fidem Christianam mouens, exultantem quidem Dei habuit, sed non secundum scientiam. Potestate enim compulsi, quos promouere fidei ratione oportuit. Appellauit tamen gloriosus idem Princeps à Patribus in dicto canone, non propter factum, sed propter zelum; dixit in cap. maioris, de baptismo.*

Sed supra traditæ assentioni obstat textus in cap. iam verò 23. q. 8. ubi expressè D. Gregorius iubet Ianuario Calaritano Episcopo, ut per tributum impositionem rusticum cogat ad fidem catholicam suscipiendam: igitur quia Iudæi iniuncti ad Baptismum cogi possunt. In qua difficultate communitur Glossa, Athanasius, & Pseudois, quos sequitur Ricolus lib. 2. de iure personar. cap. 21. num. 23. accipiunt Gregorium de rustico iam baptizato in hæresim lapsa, qui cum pertinax esset, iubet Gregorius, ut cogatur fidem retinere. Sed hæc solutio aperit conuincitur ex ipsa epistola D. Gregorij, ex qua desumptus est textus in d. cap. iam verò, quæ repetitur lib. 4. epist. 26. ibi: *Accidit autem aliud valde lu-*

*gendum, quia ipsos rusticos, quos habet Ecclesia tuas, non esse in infidelitate remanere negligentia fraternitatis vestra permittit. Et quid vos admittitis, si extraneos ad Divinam adducatis, qui vestros ab infidelitate corrigere negligitis? Vnde necesse est, utis per omnia in eorum conversionem vigilare. Nam si consueverit Episcopi in Sardinia insula paganos rusticum inuenire potuerit, in eundem Episcopo quoniam fortiter vindicabit. Et statim sequitur textus in d. cap. iam verò. Ex quibus verbis expressè constat, agere D. Gregorium de rustico pagano, qui nondum fuerat baptizatus. Quare et solutione ommissa dicendum est, quod etiam infideles non possunt cogi vi præcisæ ad suscipiendum baptismum, possunt tamen blanditiis, suasionibus, & premiis inuoluntati, & cogi ad baptismum. Vnde idem D. Gregorius lib. 4. epist. 6. scripsit, ut Iudæis baptizatis aliqua pars tributorum remittatur, ut ita ipsi alligantur ad fidem Catholicam suscipiendam, ibi: *Peruenit ergo ad me, ossa Hebræos in possessionibus nostris, qui conuerti ad Deum nullatenus voluerat. Sed videtur mihi, ut per omnes possessiones, in quibus Hebræi ipsi esse noscuntur, episcopus transmittere debeat, eis ex tunc specialiter promittens, quod quicunque ad verum Dominum Deum nostrum lesus Christum ex eis conuersus fuerit, omni personis eius ex aliquo parte inno nuerit. Quod ita citius volo, ut si quis ex eis conuersus fuerit, si solidi pensum habet, remissi ei relaxari debeat: si res, vel quatuor, vni solidus relaxetur: si quid amplius, iam iuxta eundem modum debet relaxatio fieri, vel certe iuxta quod dilectio tua prouiderit: ut & ei, qui conuersus, omni releatur; & ecclesiastica utilitas non graui dispensatio prematur. Nec hoc inuolunt facimus, sed pro leuiculis personarum meritis eos ad Christi gratiam perducamus: quia etsi ipsi miris fideliter veniant, hi tamen, qui de eis nati sunt, iam solidius baptizantur. Aut ipsos ergo, aut eorum filios lucratur. Et ideo non est grane, quicquid de pensione pro Christo dimittimus. Ideo iubet Gregorius in dict. epist. 26. Episcopo Catalunano, ut Iudæis omnia tributa imponat, seruat tamen eorum iustitiam, ut ita spe patriæ saltem alligantur ad suscipiendum baptismum.**

CAPVT X.

* Clemens III.

Quam sit laudabile, &c. Et infra: Tuis, frater Episcopo, petitionibus annuente, tibi, tuisque sociis, cum ad prædicandam Christi fidem paganis exhibitis, Ap. auctoritate concedimus, ut vobis his eibus cum modestia & gratiarum actione, seruati temporum qualitate, iuxta canonicas sanctiones vti liceat, qui vobis ab ipsius infidelibus apponuntur. Insuper indulgemus, ut quicumque viri, seu monachi sine clerici, idonei ad nuntiandam Gentibus Euangelicam veritatem, requisiti, & habitæ Prælatorum suorum licentiâ, tibi voluerint adhaerere, id absque contradictione ne qualibet exequendi liberam habeant Apostolica auctoritate facultatem.

NOTÆ.

[Dem.] Clemens videlicet III. ut legitur in Iccunda collectione, sub hoc siml. cap. 4. nulli tamen exemplum, cui referatur Pontifex; unde non constat, de qua Paganorum pronuncia in presenti agatur; credo tamen in presenti agi de prouincia Livoniensium, qui his temporibus

Clementis III. fidem Catholicam susceperunt, ut retuli in cap. Deus, de vita & honest. cleric. cap. final. de diuers.

b Pagan.] Pagan, qui dicantur, exposti in cap. 2. de consensu.

c His eibus.] De prohibito conuicio cum Paganis, & Iudæis egi in can. 1. Concil. Iliber.

d Requisiti

2. d. *Requisita et habitus.*] Quia minus predicandi propter ad Episcopos spectat, ut probant in cap. inter cetera, de offic. ordin. vel ad eos, quos ipse elegerit, ut dicemus in cap. excommunicationis, §. qui verò, de heretic. & docent Batbosa de potest. Episc. alleg. 76. Solorzano tom. 1. de iure

Indiar. lib. 1. cap. 18. num. 16. & ex hoc textu docetis fuisse questionem in supremo Iudicio Senatu emergentem de Patribus Societatis Iesu intendentibus tantum predicare verbum Dei apud Iapones, refert idem Solorzano lib. 3. cap. 18. num. 18.

CAPVT XI.

* Idem.

Significauit nobis tua fraternitas, quomodo aliqui ciuium tuorum in ^b Alexandriam valeant proficisci pro recuperandis conuiuius suis, qui illic in captiuitate tenentur: hæc arbitramur posse licite fieri, dummodo nihil in mercibus, vel alio modo secum illic deferant, unde possit Sarracenis, excepto redemptionis articulo, aliquod commodum, vel subsidium prouenire: quod etiam coram te prius iuramento firmabunt. Illi quoque, qui post treugam in transmarinis partibus factam cum commercio Alexandriam adiuerunt, si detulerunt merces prohibitas causa ^c lucrandi, excommunicationis vinculum non euadunt: similiter & illi, qui in personis propriis non cuntes, merces eò per alios destinant. Ad vltimum illos, qui iurauerunt se amplius in terram Sarracenorum cum mercibus non ituros, nisi pax esset inter Christianos, & ipsos, & post ^d treugam factam venerunt illuc, illa conditio de pace, vel de treuga habenda ab excommunicationis vinculo non absoluit.

NOTÆ.

^a Idem.] Clemens III. videlicet, ut exprimitur in secunda collectione, sub hoc tit. cap. 5. etiam non conset, cui Prælati missa sit præfens Decretalis.

^b Alexandriam.] Alexandria Metropolis est non solum Ægypti, verum etiam Thebaidis, & Libyæ, quæ Ægypto adiacent, ut dicemus in cap. antiqua, de priuilegiis temporibus Clementis III. occupata erat à Sarracenis: & quia bellum in his

partibus pro recuperanda Terra sancta tunc gerebatur, ideo plures captiui in his provinciis à Sarracenis habebantur.

^c Lucrandi.] Quia in hac prohibitione non attenditur animus, sed effectus, si videlicet vilius redditur inimicus, l. 4. C. quæ res export. extraneas. Multa, hoc tit. pluribus relatis docet Hermosilla in l. 1. tit. 5. part. 5. num. 3. & 10.

^d Treugam.] Treuga quid sit, & quatenus distet à pace, exposui in cap. 1. de treuga, & pace.

CAPVT XII.

* Clemens III.

Quod olim præceptum fuit, &c. Et infra: Sanè licet hoc fuerit in Lateran. Concilio districtè inhibendum, nos tamen de consilio fratrum nostrorum omnes illos excommunicationi supponimus, qui iam amplius cum Sarracenis mercimonium habuerint, vel per se, vel per alios, nauibus, seu quocumque alio ingenio eis aliqua rerum subsidia, seu consilia impenderint, quandiu inter vos, & illos guerra durauerit. Vestra igitur disc. mandamus, atque districtè præcipimus, quatenus nec per vos, nec per vestras naues, nec alio quocumque modo, aut ingenio eis mercimonia, consilia, seu alia subsidia transmittatis, ne si fortè aliqui in sua malitia indurati, secus agere præsumpserint, non solum ipso iure incidant in excommunicationem illam, verum etiam illi iram Dei viuientis incurrant.

NOTÆ.

^a Idem.] Clemens videlicet III. ut habetur in

cap. 6. hoc tit. in 1. collect. & commentariis docti super in cap. 1.

CAPVT XIII.

Idem Archiepiscopo^a Senon. & Episcopo Parisiensi.

ETſi Iudæos, quos propria culpa ſubmiſit^b perpetuæ ſeruituti, cū Dominum crucifixum, quem ſui Prophetæ ad redemptionem Iſraël prædixerunt in carne venturum, pietas Chriſtiana receperit, & ſuſtineat cohabitationem illorum, quos etiam propter illorum perfidiam Sarraceni, qui fidem Catholicam perſequuntur, nec eredoꝛ in Crucifixum ab illis, ſuſtinere non poſſunt, ſed potiùs à ſuis ſinibus expulerunt, in nos vehementiùs proclamantes, eo quod ſuſtineantur à nobis, qui ab ipſo crucis patibulo condemnant redemptorem noſtrum: ingrati tamen nobis eſſe non debent, vt redderet Chriſtianis pro gratia contumeliam, & de familiaritate contemptum; qui tanquam miſericorditer in noſtram familiaritatem admiſſi, nobis illam retributionem impediunt, quam iuxta vulgare, Muſ in pera, ſerpens in gremio, & ignis in ſinu, ſuis coſueuerunt hoſpitibus exhibere. Accepimus autem, quod Iudæi, quos gratia Principum in ſuis terris admiſit, fecit adeo inſolentes, vt illos committant exceſſus in contumeliam fidei Chriſtianæ, quos non tantum dicere, ſed etiam nefandum eſt cogitare. Faciunt enim Chriſtianas filiorum^c ouerices, & cū in die reſurrectionis Dominicæ illas recipere corpus & ſanguinem Jeſu Chriſti contingit, per triduum aſequam eos lactent, lac effundere faciunt in latinam: alia inſuper contra fidem catholicam deteſtabilia, & inaudita committunt, propter quæ fidelibus eſt verendum, ne diuinam indignationem incurrant, cū eos perpetrare patiuntur indigotē, quæ fidei noſtræ conſuſionem ioducent. Rogamus igitur chariſſimum in Chriſto filium noſtrum Ph. Regem Francorum illuſtrem; maſtauiſmus etiam nobili viro Duci Burgundię, & Comitiffæ Trece. vt tales reprimant Iudæorum exceſſus, ne cernicem perpetuæ ſeruitutis iugo ſubmiſſam præſumant erigere contra reuerentiam fidei Chriſtianæ: inhiſcentes diſtrictiùs, ne de cætero nutrices, vel ſeruientes habeant Chriſtianos, ne filij liberæ filiis famulentur ancillæ; ſed tanquam ſerui à Domino reprobati, in eoius mortem nequiter conſinrarunt, ſe ſaltem per effectum operis recogoaſcant ſervos illorum, quos Chriſti mors liberos, & illos ſervos effecit; quia cū iam cæperit rodere more muris, & pungere ſicut ſerpens, verendum eſt, ne ignis receptatus in ſinu, corroſa conſumat. Quocirca f. v. per. A. ſ. m. quat. prædictum Regem, & alios ad hoc ex parte noſtra ita diligenter moouere, ac efficaciter inducere procuretis, quod Iudæi de cætero ouillatenuſ inſoleſcant, ſed ſub timore ſeruili prætendaot ſemper verecundiam culpæ ſuæ, & reocreatur honorem fidei Chriſtianæ. Si verò Iudæi nutrices, & ſeruientes non dimiſerunt Chriſtianos, vos auctoritate noſtra ſuffulci, ſub excommunicationis pœna inhiſceatis diſtrictè omnibus Chriſtianis, ne cum eis commercium aliquod audeant exercere.

NOTÆ.

1. ^a *Ennonſi.*] Ita etiam legitur in cap. vnic. hoc ſit. in 3. collect. ex qua textum hunc reſtituo. De Senonenſi dioceli egi in cap. 6. de conſtitutionibus.
2. ^b *Perpetua ſeruituti.*] Nam cū grande peccatum admiſiſſent, grauem patiantur poenitentiam, & amiffa priſtina dignitate, ſecui Gentium facti fuerunt. Cui autem Iudæi tolerantur inter Chriſtianos, varias rationes adducunt Sancti Patres, præcipuè eam, vt reſtes ſint ſuæ iniquitatis, & noſtræ veritatis, ac vt ita alliciantur ad ſuſcipiendam fidem Catholicam, vt expreſſit D. Au-

guſt. ad pſalmum 56. ſermon. 77. libi: Per omnes gentes diſperſi ſunt Iudæi reſtes iniquitatis ſuæ, & veritatis noſtræ. Ipſi habent Codices, de quibus prophetatus eſt Chriſtus, & nos tenemus Chriſtum. Et ſi quando ſorè aliquis paganus dubitauerit, cum eis dicemus prophetias de Chriſto, de codicibus Iudæorum probamus. Librarij denique noſtri facti ſunt quando ſolent ſerui poſt dominos codices ſerre. Et lib. de vera relig. cap. 6. Eccleſia Catholica vtrius gentibus ad materiam operationis ſuæ, hæreticis ad probacionem doctriinæ ſuæ, ſchiſmaticis ad documentum ſtabilitatis ſuæ, Iudæis ad comparationem pulchritudinis ſuæ.

^c *Nutrices.*] Iuxta tradita ſuprà in eap. ad hoc.

CAPVT XIV.

^a Idem.

Postulasti qualiter contra Iudzum procedere debeas, qui manus iniecit in quemdam clericum violentas. Ad quod breuiter respondemus, quod si dictus Iudzus tuz^a iurisdictionis existit, ipsum penā^a pecuniaria punias, vel alia (secundum quod conuenit) temporalis, faciens læso satisfactionem congruam exhiberi, alioquin eius^a dominum moneas, & inducas, vt passo iniuriam, & Ecclesie ab eo satisfieri faciat competenter: quod si dominus eius neglexerit adimplere, tu Christianis omnibus per cens. eccles. interdicas, ne cum ipso Iudzo antequam satisfaciatur, præsumat^a commercia exercere.

NOTÆ.

^a **Idem.**] Inscriptiolem Inuegram huius textus dedi in cap. postulasti, de regul. vbi extat alia pars huius textus.

1. ^b **Tua iurisdictionis.**] Temporalis videlicet, quia forsitan Episcopus in ea parte temporalem, & spirituales exercebat iurisdictionem.

2. ^c **Pena pecuniaria.**] Quia spirituali ipsi Iudzi affici non poterant, alii nisi ex graui causa Iudices ecclesiastici non debent imponere penam pecuniariam, cap. licet 3. de penis.

3. ^d **Dominum.**] Temporalem videlicet et unde probat D. Franc. de Amay in l. 1. c. de exalt. tributor. lib. 10. num. 41. Iudicem ecclesiasticum non posse laicum reum criminis misti fori, vel

etiam ecclesiastici propterea auctoritate incarcerationis non innocuo auxilio brachij secularis: quod sepius vidi pronuntiatum in hac Pinciana Cancellaria. Sed quæstionem hanc disputauimus in cap. postulasti, de homicidio, vbi extat alia pars huius Decretalis.

^e **Commercia.**] Eadem pena Christianis imponitur in cap. nisi Iudeos, cap. ad hoc, hoc ritual. cap. de Iudeis, de decimis: unde inferitur, regulariter licitum esse eum Iudeis contrahere: quo probant Masehat 3. de Iudeis p. 1. cap. 5. Heringius de fidei iur. cap. 8. num. 116. quod & ad societatem extendant Tiraquel. de primog. q. 66. num. 14. Riccius lib. 2. de iure person. cap. 42. qui recte monet, nihilominus indignum esse lueri causā Christianum cum Iudzo societatem coire.

CAPVT XV.

Idem in Concilio^a Generali.

In nonnullis provinciis, à Christianis Iudzos, seu Sarracenos habitus distinguit diuersitas, sed in quibusdam sic quædam inoleuit confusio, vt nullā differentiā discernantur. Vnde contingit interdum, quod per errorem Christiani Iudeorum, seu Sarracenorum, Iudæi, vel Sarraceni mulieribus Christianorum^b commisceantur. Ne igitur tam damnatæ commixtionis excessus per velamen erroris huiusmodi excusationis possit habere diffugium, statuimus, vt tales vtriusque sexus in omni Christianorum provincia, & omni tempore, qualitate^c habitus publicè ab aliis populis distinguantur, cum per Moysen hoc ipsum eis legatur iniunctum. In diebus autem lamentationis, & ^d Dominicæ passionis publicè minimè procedant, eo quod nonnulli ex ipsis talibus diebus, sicut accepimus, & ornatiùs non erubescunt incedere, ac Christianis, qui sacratissimæ passionis memoriam exhibentes; lamentationis signa præstendunt, illudere non formidant. Illud tamen districte inhiibemus, ne in contumeliam Redemptoris aliquatenus proflire præsumant. Et quoniam illius dissimulare non debemus opprobrium, qui probra nostra deleuit, præcipimus præsumptores huiusmodi per Principes seculares condignæ animaduersionis adiectione compesci, ne Crucifixum pro nobis aliquatenus blasphemare præsumant.

NOTÆ.

1. ^a **Generali.**] Lateranensis videlicet sub Innocentio III. vbi cap. 68. repetitur textus hic, & in cap. 1. hoc tit. in 4. collect.

^b **Commisceantur.**] Cuius peccati grauitatem probauit in cap. 78. Concilij Nib.

^c **Habitus publici.**] Quod etiam proinde constitutionibus sanxerunt PP. Conellij Rayenat. 2. temporibus Clemens V. Etsi Iudæi de misericordia, & ad testimonium incredulitatis eorum debeant ab Ecclesia, & Fidelibus in suis ritibus tolerari, quia tamen ex ipsorum conuersatione permixta multa mala & scandala prouenisse nescimus, statuimus, & perpetua

perpetua stabilitate firmamus, quod Iudæi possent in panno superioribus cruce signum, scilicet rotundum panno crucis coloris, & mulieres eorum in capite, ut sic à Christianis possint discerni. Saluberr. tempore Martini V. ubi de fœminis Iudæis ita cautur: *¶ Mulieres, vel virgines dictæ superstitioni insudantes, cum se in publicum exhibent Christianorum nostra provincia, nalam sonantem in aliqua sui corporis parte deferant.* Paulus IV. constitutione 3. quæ incipit, *Cum nimis absurdum.* Pius V. in constitutione 7. quæ incipit, *Romani Pontifex:* quibus cautur, ut Iudæi masculinæ biberum, fœminæ verò aliud signum patens, ita

ut nullo modo celari possit, palam deferre teneantur. Unde consuetudines antiquas Ferrariæ & similium civitatum, in quibus promiscuis vestibus Iudæi, ac Catholici videntur, improbatas esse docuerunt, alia pro ipsarum constitutionum expositione addocentes Ricciolus de iure person. lib. 2. cap. 45. per totum, Scottia in scilicet. *Pauisici constituebant.* 54. Fragofo ubi supra. Quæ omnia omitto, ut parum vilia, eadem in his regnis iam à temporibus Ferdinandi, & Elizabeth cuncti, & eliminati fuerint.

d *Dominica passimi.* Juxta tradita suprà in cap. quia 4.

CAPVT XVI.

Idem^a in eodem.

Cum sit nimis absurdum, ut Christi blasphemus aliquis in Christianos iura exerceat potestatis: quod super hoc b Tolet. Concil. providè statuit, propter transgressorum auidiam & hoc generali Concilio innouamus, prohibentes ne Iudæi publicis officiis præferantur, quoniam sub tali prætextu Christianis plurimum sunt infesti. Si quis autem eis officium tale commiserit, per^c provinciale Concilium, quod singulis annis præcipuum celebrari, monitione præmissâ, distinctione, quâ conveniet, compescatur: officiali verò huiusmodi tamdiu Christianorum communio in commerciis, & aliis denegetur, donec in usus pauperum Christianorum secundum providentiam diocesani Episcopi convertatur quidquid fuerit à Christianis ademptum occasione officii sic suscepti: & officium cum pudore dimittat, quod irreverenter assumpsit. Hoc idem extendimus ad paganos.

NOTÆ.

^a *Eodem.* Concil. videlicet Lateran. celebrato sub Innoc. III. ubi cap. 69. reperitur textus hic, & in quarta collectione, sub hoc tit. cap. 1.

1. *b Toletanum.* Tertium videlicet, can. 14. ubi ita Hispaniæ PP. sancierunt: *Sagregente Concilio id gloriosissimus Dominus noster canonibus inferendum præcepit, ut Iudæi non liceat Christianas habere uxores, vel concubinas, nec mancipia Christiana comparare in usus proprios, sed & qui filij ex tali coniugio nati sunt, assumendos esse ad baptismum: nec vlla officia publica eis opus est agere, per quæ eis occasio tribuatur penam Christianis inferre.* Et à Gratiano in cap. multa, 54. dist. hæc verba Concilio Tolet. 4. tribuantur.

^c *Provinciale Concilium.* Juxta tradita suprà in cap. sic ut olim, de accusat.

2. *d Diocesani Episcopi.* Quia cum ipse qui tale officium consulit Iudæo, suspectus esset, non eius auctoritate, sed interuentu Episcopi pecunia eîs distibubenda, ut pro conciliatione huius texture cum capite 6. §. 1. de homicidio, docuit Cozzart, in cap. 3. de testam. num. 11.

COMMENTARIUM.

^{3.} *EX* hac constitutione Concilij Lateran. sequens deducitur assertio: Iudæi, seu Pagani non debent præfici officiis publicis inter Christianos, aut in eis inuisculationem exercere. Probant eam textus in cap. multa 14. 54. dist. cap. confusio 33. 27. quæst. 4. cap. 1. in fine, cap. preul. hoc titul. Concil. Auvernense can. 8. ibi: *Ne Iudæi Christianis populis Iudæis præponantur.* Matifcon. can. 15. *Ne Iudæi*
D. D. Genzsch, in Decretal. Tom. V.

Christianis populis Iudæis depucentur, aut tolerarij esse permittantur, per quod illis (quod Deus auerit) Christiani videantur esse subiecti. Meldense can. 734 Tolet. 12. can. 19. Narbonense sub Ludouico IX. can. 2. Concil. Regiacinum vulgè dictum can. 20. ibi: *Omni ratione caret, & religioni Christiana maxime & conversioni nocitur, ut Iudæi à Christianis regalia exigant, aut vllas ciuitates, aut criminales causas inter Christianos iudicandi locum habeant, &c.* Palentinum anno 1322. can. 21. ibi: *Abfurdum & irrationabilem corruptelam, quæ in Christiana fidei vergit opprobrium, & infamiam, quæ contra canonicas sanctiones Iudæi & Saraceni Christianis in publicis præficiunt officiis, sub quo rum prætextu Christianis plurimum sunt infesti, exstirpare volentes, vniuersis Ecclesiarum Prelatis sub interminatione diuini iudicij præcipimus, & mandauimus, ut Sanctorum Patrum statuta super hoc edita faciam inuicibiliter obseruari.* Gregorius VII. lib. 9. registr. epist. 2. ad Alfonsum Regem Hispaniæ: *Iudæis Christianis dominari, vel supra eos potestatem exercere, vltimus multaturo sumus: quid enim est Iudæis Christianos supponere, atque hos illorum iudicio subicere, nisi Ecclesiam Dei opprimere, & subane synagogam exaltare? & dum inimici Christi velis placere, ipsam Christianam contemnere.* Referunt Crespetius in summa, verbo Iudæi officia. Ant. Aug. in epist. lib. 12. tit. 6. cap. vlt. hoc titul. in 2. compil. Lindemus 17. Cod. de Epist. & cleric. aud. l. penult. Cod. de diuers. offic. appar. indic. l. sublimitatem 29. l. 1. 201 42. l. domus 38. in fine, l. penult. Cod. Theodos. de heret. l. qui propheta 21. Cod. de paganis, l. 165. Cod. Theodos. de decur. Nouel. Iulian. 109. & 144. constitutio Theodosij de Iudæis, Samaritanis, Hæreticis, & Paganis, et quæ sumpta est lex finalis, C. de Iudæis, l. 1. sed

sed paucis immotatis, inter quæ legitur: *Quod de patria honor accipiendi præsumitur*; eum in Theodosij Noetelli deest hæc clausula, Cuius ex Græcis legendum moner, nec patrii honorem accipere: quam lectionem finit Phocins in *nomocan. tit. 22. cap. 1. consonant lex 3. tit. 24. part. 7. les 4. tit. 8. lib. 8. ordin. Carolus lib. 6. capitul. cap. 110. Ne Iudei administratores usu sub ordinis villicorum, atque aliorum christianorum familiam regere audeant, nec eis hoc à quoquam fieri precipiatur. Illustant vltis congeitos in presenti à Barboza, & à Cenedo collecti. 77. ad Decret. Salcedo in *praxi. cap. 23. num. 4. & 10. Petrus Greg. lib. 2. part. tit. 5. cap. 4. Barboza lib. 3. vers. 93. Marquez in Gubernat. Christi. cap. 3. ad finem. Mendoza in *con. 56. Concil. liber. Gutierrez de delict. lib. 11. cap. 22. Aetia in dist. cap. nulla 14. Amaya in l. vnic. Cod. de infamibus, num. 61. Fragolo part. 1. de regim. Christi. Reip. dist. 2. §. 8. Tiberius Decianus tom. 1. tract. crimin. lib. 5. cap. 13. Maiolus *diar. canic. collig. de perfid. Iudeor. fol. 614. Mornacius in l. 6. Cod. de Episcop. aud. & in l. final. Cod. de Iudeis. Hunnius ad Trenel. volum. 1. disput. 7. questione 32. Hoppingius de iure infamium, cap. 2. Carball. in *cap. Reynaldus, num. 224. de testam. Gutierrez de officiis domus Augusti. lib. 2. cap. 4. Mancinus de triplici iuris cellis. cap. 282. Rodericus Caro in *hisp. Hist. palest. lib. 3. cap. 44. fol. 161. Ricciolus lib. 2. de iure person. cap. 28. cum sequent. Fornerius lib. 6. rer. quod. cap. 8. Cuius in dist. Cod. de Episcop. aud. & de Infamis: Ofualdus lib. 18. Demei. cap. 7. littera N. Escobar de Pontif. iur. iust. cap. 23. num. 49. Tapia tom. 2. lib. 1. quest. 5. art. 18.******

Sed pro dubitandi ratione in presentem assertionem ita infargo. Ad officia publica, dignitatesque illi iure admittendi, quibus malora suffragantur merita, quia similibus personis præmia, & honores debentur, l. in nomine, §. hæc ætem, Cod. de offic. Praefect. Africa, l. 1. *fol. De curion. l. cum quis, Cod. ord. tit. lib. 10. cap. grat. de proband. Illustant latè Barboza lib. 3. vers. 93. ex num. 27. igitur siue Iudeus, siue Paganus quis sit, si tamen maioribus pollet meritis, debet ad officia publica eligi. Augetur primò ex eo, nam iuxta præceptum Domini relatum in *cap. 1. de coniug. feruor. acceptio personarum non est habenda, & iniunctum videtur certum genus personarum ad officia, dignitatesque admittere, alios verò ab eis remouere: ergo non debeat iudei omnes absolute, & indistinctè ab officiis publicis remoueri. Augetur secundò hæc dubitandi ratio ex l. Iudei 8. Cod. de Iudeis, ubi docetur, quod si Iudeus litteram habeat cum Christiano, adeatur iudei Christianus. Vnde à contrariis facillè deducitur, quod si habeat litteram cum Iudeo, iudei is est adeundus, qui secundum ius Hebræorum illam decidere possit. igitur saltem pro eo casu Iudei iudices esse possunt.**

Qua dubitandi ratione non obstante vera est præfata assertio, cuius ratio exprimitur in principio huius ætæ, quia videlicet nimis absurdum est, ut Iudei, & Pagani, qui Christum blasphemant, in Christianos vim potestatis exerceant: quemadmodum enim tyrannis Christiani nominis hostibus hoc maxime consilium fuit, ut Christianos ab omnibus honoribus, comitiis, foro, & tribunalibus arceant, ut de Iuliano Apostata narrat Gregorius

Naxianz. *orat. 1. in Iulianum*: sic vice versâ Christiani Imperatores meritis Iudeis, & Paganis in vniuersum ad Magistratus, & honores aditum præseculerunt, ut refert Theodoretus lib. 1. *eccl. hystoria*. Quod absurdum eum cognouissent Patres nascenti Ecclesie, cum adhuc Imperatores Catholici non erant, & ex Gentilibus scetè eligebantur, repetitis legibus cauerunt, ne Christiani alium Christianum coram Iudeis Gentili conuenient, ut ita nullem potestatem exerceant Ethnicis in Catholicos, & ut omnis occasio commanendi cum eis tolleretur. Concil. Carth. 4. *can. 87. relatum in cap. Carbelicus 2. quest. 6. D. Paulus in l. ad Corinthe cap. 6. ibi*: Si quis ex fratribus negotia habent inter se, nec apud cognitos sacculi iudicentur. Vbi per seculi cognatos intelligi Gentiles, probat Mendoza lib. 3. Concil. *liberit. cap. 38. D. Clemens lib. 2. consil. cap. 50. Non cognoscant ergo Gentis controuersias, quæ inter vos inuicem, neque contra vos infidelium testimonium recipiatis, nec ab his vos iudicari velitis. Alexander episc. 1. ad omnes Episcopos. Alex. 1. relatus in *cap. relatum 12. questio 1. Accedit, nam iudei infames sunt, l. 3. tit. 24. part. 7. iunctis congeitis à Couar. in Clement. si foris, part. 1. §. 6. num. 7. Ofualdus lib. 18. Demei. cap. 7. littera N. Lara lib. 2. de quæstionibus, cap. 4. Amaya in *l. vnic. Cod. de infamibus*. Quare Iouenalis *satyr. 3. vers. 3. quasi villibus & intamibus personis vtemora locati consueuissent ostendit, cum moritur*.**

Nunc fieri solet, nemus, & delubra locantur.

Iudei, quorum capiti, summusque superest.

Et gens faciens dicitur ab Ammiano Marellino lib. 22. & obstant à Rutilio lib. 1. *itiner. Quæ à Gentibus maxime exosi sunt, & eorum occurus malè ominatus, ut tradunt Doreans lib. 2. ad Tacitum, pag. 321. Barthius lib. 2. adnot. cap. 12. sed infamibus potius dignitatum non patent, dist. l. vnic. Cod. de infamibus, ubi plura Amaya in l. 2. Cod. de dignit. Bronehosti. *rem. 4. art. 96. Etgo redè in presentem statum Iudeos non esse admittendos ad officia publicæ, & dignitates: quod & ad eorum progeniem, & descendentes extendunt Doctores supra laudati, & citati in cap. eam 17. de rescriptis*.*

Vnde infertur, Iudeos minime posse aduocationis officium exercere, l. nemo 15. Cod. de Episcop. audiens. l. vlt. Cod. de postul. faciunt textus in l. probarius 9. Cod. de diuers. offic. lib. 12. cap. nemo 7. de penis, dist. 1. quia publicum officium est pro alio postulare: & non solum nobile, v. tùm & laudabile est officium Aduocati, l. laudabile 4. Cod. de aduoc. diuers. iudic. l. prohibendum 7. Cod. de postulando, docent Donellus lib. 18. *conuener. cap. 3. ubi Ofualdus litter. E. Gutierrez de officiis domus lib. 3. cap. 2. Bulengerus lib. 6. de Imper. Rom. cap. 61. Martrillus de Magistratibus lib. 2. cap. 12. numer. 6. Amaya in dist. l. vnic. Cod. de infamibus, à numer. 87. notati in cap. 1. de postulando. Vnde eum ab huiusmodi officio infames repellantur, ut probant Faber in *ration. ad l. 1. §. de Prætor. l. de postul. Tiraquellus de nobilit. cap. 29. ex num. 11. Iudei tanquam infames ab aduocationis munere atteri debent, ut probat Ricciolus lib. 2. de iure person. cap. 24. Idem dicendum est de Procuratorio officio, nam præterquam quod publicum est, l. 2. §. de regul. iur. non vile**

6.

DE OFFICIO
ADVOCATI,
PROCURATORIS,
ET TIRACQUILLI

NIL

NIL

NIL

NIL

NIL

NIL

NIL

NIL

NIL

NIL

NIL

NIL

NIL

NIL

NIL

NIL

NIL

NIL

NIL

NIL

NIL

NIL

NIL

NIL

NIL

NIL

NIL

& abiectum, sed honestum, & nobile est, ut probat Ant. Faber in *animal*, ad l. *Padus* 7. ff. de *arbitrariis*, Titacq. de *nobilis*, cap. 30. P. Gregor. lib. 9. *synag.* cap. 4. num. 3. Ofsualdus lib. 18. *Danel*, cap. 3. littera P. Bobadilla lib. 3. *Polit.* cap. 1. num. 53. quapropter infimè ab huiusmodi officio repellitur, cap. 1. & 2. 3. *questione* 7. Paulus lib. 1. *sem.* tit. 2. §. 3. & §. final. de *exceptione*. docent Faber in *dist.* l. *Padus*, & Ofsualdus *dist.* cap. 3. *Littera* P. Couat. Bobadilla & Farinacius, quos refert & sequitur Amaya in *lfi* qua 34. *Cod. de decur.* lib. 10. etfi contrarium teneat *Danel*, *dist.* lib. 18. cap. 3. Nec pro eo facit textus in *dist.* l. *fi quis* 34. *Cod. de decur.* nam vt ibi docuit Amaya in eo textu, non agitur de procuratore in iudicio exercenda, sed de administratione, & procuratore alicuius facultatum, quæ quidem curialibus omnino prohibetur. Vnde Iudei procuratores in iudicio esse nequeunt, ut probat Riccius de *iure person.* lib. 2. cap. 26. etfi contrarium teneat Baldus in *lspadum* 15. §. *iam autem*, ff. de *excusat.* *in re* Idem etiam dicendum est de rabellionis officio: tum quia officium publicum est, & per consequens præfenti constitutione comprehensum: tum etiam quia honorabile est, l. *laudabilem* 4. ff. de *atutac.* *divers.* *iudic.* l. *maximam* 12. *Cod. de excusat.* *muer.* lib. 12. quæ Castiodorus lib. 12. *epist.* 22. honorabile dicitur appellauit. Probatur latè Petrus Gregor. lib. 47. *synag.* cap. 41. Bullenger. lib. 6. de *Imperat. Rom.* cap. 23. Cuiaze, lib. 16. *offic.* cap. 14. Amaya in *dist.* l. *fi quis* 34. num. 6. *Cod. de decur.* lib. 10. & notat in cap. 2. ne clerici, vel *marchi*. Vnde meritò Iudæi à tali officio exercendo arceantur. Riccius *dist.* lib. 3. cap. 27. per totum.

7.
DIGNI-
TATIS
RATIO.

Nec obstat dubitanti ratio suprà expensa; nam vetum est, ad dignitates, & officia publica homines virtute pollescentes, litterisque conspicuos eligendos esse; tamen similes conditiones dari nequeunt in Iudæis, aut Pagula, cum illi non sint orthodoxæ fidei, sed publii peccatores, & quidem immensissimi criminis, videlicet infidelitatis, & idololatricæ: vnde nunquam in cia possunt reperiri qualitates, quæ illos dignos reddant dignitatum, aut publicorum officiorum. Et licet acceptio personarum non sit habenda, hoc tamen procedit inter fideles, & professores orthodoxæ fidei, cuiusdemque virtutis. Vnde meritò Iudæis, & Paganis in omnibus, & quoad omnia præferti debent fideles Catholici. Nec obstat augmentum difficultatis deductum ex *dist.* l. *fi quis* 20. *Cod. de Iudæis*. Nam vetum est, quod si filis, siue civilis, siue criminalis, moueant inter Iudæum, & Christianum adorem, siue reum necessariū Iudæ Christianus adendus est, *dist.* l. *fi quis*: cum Iudæi nullam iurisdictionem in Christianos exercere possint: idemque dependit est, si lis traheatur inter Iudæos. Nec tunc obstat augmentum difficultatis; nam cum augmentum illud deducatur à contrario sensu, & inde sequatur absurdum, nempe vt Iudæi inter Catholicos commemorantes publicis perstentur officiis, ideo tale argumentum non admittitur.

8.
EXPO-
SITIO
372 & 3.
373 FINAL.
374 & 375
376.

Sed suprà traditis aperto Marte opponitur textus in l. *generaliter* 3. §. final. ff. de *decur.* vbi Vispianus ita scribit: *Ei qui Iudæam superstitionem sequuntur, Diui Seruus, & Antoninus honores adipisci permiserunt. Sed & necessitates eis imposuerunt, quæ superstitionem eorum non le-*
D. D. Gonzal. in *Decretal.* Tom. V.

derent. Ex quibus discretissimis verbis constat Iudæos ad honores, atque officia publica admittendos esse, contra hucque tradita, & expressam Theodosij constitutionem in l. final. *Cod. hoc titul.* Pro cuius difficultatis solutione varia adducuntur vtriusque iuris Interpretes collumunt repetentes hic. Couar. in *Clement.* §. *si furiosus*, l. *part.* §. 2. num. 8. de *homicid.* Ioannes de *Placer* in l. *in omni*, *Cod. de decur.* lib. 10. Amaya in l. *enice*, *Cod. de infamibus*, end. lib. 22. num. 72. Ofsualdus lib. 18. *Danel*, cap. 7. littera N. asserunt sententiam textus in *dist.* l. 3. §. final. corruptam esse per editum Imperatoris Theodosij, & valent, in *dist.* l. final. Sed hæc interpretatio facillè conuincitur ex vulgari principio textus in l. *enice*, §. 6. *Cod. de veteri iure emulando*: vbi docetur, nihil contrarium in libris Pandectarum compilatum esse. Nec felicius Abbas Ananias in *praefati*, Azo, Bartolin, & Baldus in *dist.* l. final. docuerunt, Iudæos quoad ritus eorum, & superstitionem posse adire iudices proprios, idest seniores, quorum iudicium subire teneant. Verum hæc interpretatio expressè refellitur ex l. *Iudæi* 8. §. final. *Cod. hoc titul.* in illis verbis: *In his causis, quæ tam ad superstitionem eorum, quam ad forum, & leges, ac iura pertinent, adent solemnia iudicia, & neque Romanis consensum legibus, & exceptionibus alimur.* Ergo quia nec quoad ritus proprios Iudæi preiudicium habere queant: idcirco expressè colligitur ex fado Pauli relato *Alium Apost.* cap. 23. vbi conuocatus coram collegio senatorum ad Cæsarem appellauit: ex quo fado Iudæos nullam habere iurisdictionem probat Gutherus de *officiis domus Augusti*. Nec interest, quod Iudæi synagoga sua, hoc est collegia, iure ciuili etiam approbata teneantur, l. *Iudæorum* 4. l. *fi quis* 15. *Cod. hoc titul.* probat Cuiaze, lib. 7. *et* §. 2. cap. 30. quia nihil in ipsis citra iudicia forensia agebatur, nec seniores in ipsos vllam iurisdictionem exercebant postquam Iudæi per varias gentes dispersi fuerunt sine Rege, & sine Duce. Hæc explosa sententiâ subleuitit Aleiatus lib. 3. *disput.* cap. 8. quem sequuntur Tiraquel, de *primog.* *quest.* 66. num. 42. Dreianus lib. 5. *tratt.* *crim.* cap. 13. num. 6. Dorsleus ad *Tacitum* lib. 2. *annal.* pag. 379. & lib. 23. pag. 686. Lofeus de *iure vniuers.* *Azucro* in l. 3. tit. 3. lib. 8. *Receptil.* Mendoza lib. 3. *Concil.* *liber.* Mancinus de *triplic.* *iuris* *codic.* lib. 2. cap. 182. Aldrete lib. 4. *antiquit.* *Hispan.* *Benitandus* de *Imperio*, in *vita* *Vipiani*, ait corrupta esse verba illius textus, & pro illis verbis DD. *Seruus* & *Antoninus*, respondendum esse D. *Verus*, *Antoninusque*. Quæ emendatione admissa, docet Iudæam superstitionem non intelligi de Iudæis, sed de Christianis, & eorum superstitione, quibus Imperatores Diui *Alis* *Verus*, & *Mareus* *Antoninus*, qui Diui fratres appellabantur, vt probat Bisicola in *epist. annal.* *Baronius*, tom. 1. anno Christi 163. concesserunt, vt honoribus bello possent, eo quod in expeditione Germanicæ bello contra Marcomanos indidit, exercitus ipsorum citi penè defecit, nisi precibus Christianorum imbres de celo diuinitus dimissa sistantur, & ita Imperatores vltoria feliciter potestarent, vt referunt Tertullianus in *apolog.* cap. 5. & ad *Scapulam* cap. 4. in illis verbis: *Si littera Marci Aurelij grauisimè Imperatores requirantur, quibus illam Germanicam sicut Christianorum fuisse militum imbres discussam testantur.* Et Iudæos pro Christianis à

Gentilibus usurpari, patet ex Dione Cassio in *Dionisiano*: qui de Flavio Clemence Consule scribit, relictis Romanorum Diis ad religionem Iudeorum se contulisse. Notatur Zerdia in *aduers.* cap. 72. Verùm hæc solutio in plurius precat. Primum quia notum est, Marcomanicum bellum solùm ab Imperatore Marco Aurelio Antonino gestum fuisse, cum iam Imperator Verus apoplexi occubisset anno 571. vt referunt Tertul. vbi *suprà*, dist. cap. 5. vbi plura notat Pamelius numer. 64. Eusebius Cæsar lib. 5. cap. 5. Paulus Grotius lib. 7. cap. 15. & constat ex epistola ipsius Imperatoris Marci Aurelij, quæ extat apud Iustinum in fine secundæ apologiæ, vbi ait: *Quingue enim diebus aquam non sumpsimus, quod non suppetaret; cruentum enim in Germania conbilio, eorumque finibus: simul autem ac se homini abiecerant, Deum precari sunt, quem ego ignorabam: statim de celo pluuia delapsa est, in nos quidem frigidissima, in Romanorum vero hostes grando ignis specie, & similitudine.* Si ergo Imperator Verus tempore huius Germanicæ expeditionis iam decesserat, minimè miraculi supradicti occasione, vt voluit Aleiatus, potuit concedere Christianis, vt honores adipiscerentur. Quare hæc Aleiati sententia iam displicuit Anton. Augustino lib. singulari ad *Modestum*, Couar. in *Clement. si farietur*; 1. part. 4. 2. vna. 8. Ofwald. lib. 18. *Dionel. cap. 7. littera N.* & notauit in can. 5. 6. Concilij Tiberi. Nec etiam relict Aleiatus & Mendozæ lib. 3. *Concil. lib. 13. annal. Taciti, Camerarius cent. 1. bonar. success. cap. 39.* docuerunt Iudaicam superstitionem in eo textu referri debere ad catholicam religionem, quam ita infensissimus Christianorum Vipsianus appellabat, vt e contra Modestianus religionis vocabulo Iudeorum sectam decorat, in l. circumscribere 11. §. ad leg. Corn. de sicar. Catholici veram religionem edocui, euetorum dogmata superstitionem pleurumque dicunt, *Louens qui 49. Cde Decur. lib. 10. L. curiales 7. C. de heret. Nam vt probat Amaya in dist. Lemic. num. 66.* ea verba necessarîo referenda sunt ad Iudaicam religionem, quæ frequenter supersticio appellatur, ob serapulosas & vanas eorum ceremonias.

Succedit alia interpretatio Mascardi de Susanis in *tratt. de Iudeis*, 2. part. cap. 6. num. 18. qui asserit Imperatores Severum & Antoninum Iudeis honores adipisci permittisse, non omnes, sed eos, qui superstitionem eorum laderent. Quam sententiam vt adstruat, ratum emendat, & ita legit: *Eos qui Iudaicam superstitionem sequuntur, Diui Severus, & Antoninus honores adipisci permittunt, sed & necessitatem eis imponunt, qui superstitionem eorum laderent.* Sed cum Masehardus litterarum textus contempnat, audiendos non est. Quare hæc sententia omittis, vt veram assignemus interpretationem, sciendum est, constitutionem illam Imperatorum *sub tit. de Decur. num. 2.* à Triboniano compilatam fuisse. Vnde ad honorem Decurionatus referenda est, aliis Tribonianus sub eodem titulo eam non, transferripisset. Quare cum in 4. præcedenti actum esset de sortibus ad Decurionatus in defectum aliorum promouendis, statim Vipsianus in lib. de *offic. Proconsul.* scripsit, permittum fuisse Iudeis honores accipere: ergo de honore Decurionatus accipiendus est, vt docuerunt Glossa ibi, *littera L. de Gothofred. littera P. Bartol. in l. omnes 49. Cod. de Decur. num. 10.* Deinde supponendum est, ad

exemplum Senatus Romani in aliis municipiis fuisse etiam Curiam, seu minorem Senatum, *l. exempla 36. Cod. de Decur.* Vnde à Curia, eol adscribebantur, Decuriones, seu Curiales appellati sunt, *l. obseruare, l. Curiales, l. 25. 39. & 47. Cod. eod. tit. l. siue de decem*, quia cum Coloniz adducebantur, decima eorum pars, qui deducebantur, consilio publico manebantur, *l. Capitula 139. 6. Decuriones, ff. de V. S. siue vt tradit Cassiodorus lib. 9. epist. 2.* curiales dicti sunt à cura, quam habere debent maximè sollicitam de rebus patriæ, & ciuitatis: & cum ad exemplum Senatus Urbis, Senatus ille minor infirmus fuisse in municipiis, Decuriones etiam Senatores dicebantur, *l. omnes 33. Cod. de Decur.* Nonnulla Majorant de Curialibus, *in princip.* Enagius lib. 7. Cassiodorus lib. 2. epist. 18. & lib. 3. epist. 21. & lib. 6. epist. 3. lepidissimè notauit Aulonius in *Mesika.*

— Quæ Curia summus

Municipium vidit Proceres, propriumque Senatum.

Docent Pancitola in notis, de *Magistr. municip. c. 1.* Brissonius lib. 4. *antiq. cap. 13.* Bulegetus lib. 7. de *Imperio Roman. cap. 3.* Ofwaldus lib. 2. *Dionel. cap. 21. littera E.* Bobadilla lib. 3. *Polit. cap. 8. numer. 8.* Amaya in *prefat. ad tit. Cod. de Decur. numer. 1.* Tandem supponendum est, quod licet Decuriones hæc nominibus Senatorum, summorumque Primatum decorentur; & licet quampluribus privilegiis poliantur, quæ congeruerunt Pancitola dist. *tratt. de Magistr. municip. cap. 6.* Fornerius lib. 1. *stiles. cap. 12.* Gutbosi. ad *tit. Cod. de Decur.* Bulegetus lib. 7. de *Imper. Roman. cap. 6.* Et licet dignitatem, ac honorem habere dicantur, *l. 2. §. final. ff. de Decur.* in illis traditis à Platæa in l. 1. *Cod. eod. tit. l. num. 1.* Bobadilla lib. 3. *polit. cap. 8. num. 19.* Azuceno in *Curia Pisen. lib. 3.* tamen odiosum, vt pote plenum oneribus, quæ congerit Amaya in *prefat. ad tit. Cod. de Decur. lib. 10. n. 17.* & apud antiquos exosum fuit inuifmodi officium, vsque adeo, vt albo Decurionum non adscriberetur, nisi iniuit, vt constat ex *Synthio epist. 93.* Cassiodoro lib. 9. *varior. epist. 2.* ibi: *Quicquid eis honoris causâ delegabatur, ad iniuriam patris videbatur esse perditum.* Et si laticabant, ad subeundum munus cogebantur, *l. ex omnibus 31. Cod. de Decur.* immo etiam si domus Augusti privilegio sese deferrent, extrahebantur, *l. curiales 38. Cod. eod. tit.* & sic deinceps cogebantur munus implere, vt velut glebe adscripti, & serui Curie mancipati, ipsam minimè deferrent quarent, *l. vnaus 30. l. si quis 35. Cod. eod. ad id vt si se subtraherent, honore priuarentur, l. quoniam 31. Cod. eod. tit. l. unde velut serui censuebantur.* Sic Maioranas eos appellat in *Novel. de curialibus*, ibi: *Curiales seruis esse Reipublicæ.* Licet ex Cassiodoro lib. 7. *epist. 47.* Culacius nomen emendauerit, quem sequitur Fornerius in *notis ad ipsam epistolam 47.* Cassiodorus ideoque passim in titulo de *Decurionib. lib. 10.* eorum ministerium vocat seruitium, officinamque mancipatio Curie, quæ incommotis, atque oneribus fatigabantur Decuriones, vt pene causâ ab Imperatoribus Gentilibus manus hoc Christianis iniungeretur, argne supplicij loco ipsi Curie ad dicebantur. Cassiodorus lib. 6. *epist. 7.* ibi: *Clerici autem omnia principum, honoris, consuetudineque suberant, & leges impetrant pro eis solui, ipsosque Curia tradidit.* Et suis innuitur in l. n. quis 38. *Cod.*

Cod. de Decur. lib. 1. Ne quis officialium pœna specie Curia detur. Vbi Gothofredus littera K. & Cassiodorus lib. 1. hystor. tripert. c. 9. inest illos qui metallis erant damnati, eos qui Curtis erant mancipari commemorat: obtestatur Brissulianus lib. 4. antiquit. cap. 13. & quod maxime mirandum est, quamplures pupillis ablucebant, ne liberos Curie obnoxios relinquerent, vt testis est Imperator Iustinianus in nouel. 58. de Decur. §. 1. ibi: Designe quoniam ipsi corporibus fraudare curam soluerunt, vti omnium impiissimam adinuenerunt, a nepotibus legitimis abstinentes.

10.
PROB.
QUINT.
VISA IN.
VILPES.
TATIO.

His suppositis dicendum est, Imperatores Secutorum, & Antoninum Decurionatum permisisse Iudæis, quia officium illud plus oneris, quàm honoris habebat. Nec credi potest, Imperatores Iudæos honorare voluisse, cum omni xuo eos inuasis fuisse Romanis, & in derisionem habitos fuisse constet; ipse enim Augustus Cæsar in opprobrium gentis illius Aristobulum, & Alexandrum fratres Iacopo suspendit. Tiberius eius successor sic exolos habuit Iudæos, vt eorum facta, ac ceremonias ab Vrbe Senatusconsulto pelleret. Tacitus lib. 2. annal. Consequenter Caius cæsar Philonem Iudæum Legatum post Christi mortem pro patriis legibus retinendis maxime iussit, vt refertur Eusebius, & ipse Phio in libello legationis ad Cæsam. Claudius Cæsar Cui Iudeis reddidit suo pelliex Vrbe iussit Iudæos. Suetonius in eodem, cap. 85. Orosius lib. 7. cap. 61. facit Iuvenalis satyr. 3. vers. 13.

Nunc sacri fontes, nemus, & delubra locantur Iudæis, quoniam copiosius, seruamus supellex. Probant Doriens lib. 2. ad Tacitum, Galpat Barthius lib. 2. aduerser. Et vt ad tempora Septimij Seueri, & Antonini accedamus, certum est, Alium Alexandrum Imperatorem primo sui imperij anno Iudæos subuenisse, ciuitatemque Hierosolymam à suo nomine Aliam vocasse, vt refertur D. Hieronymus in cap. 9. Daniel. Aliud ad eundem S. Ignaty, tom. 1. cap. 2. Eusebius in chron. lib. 4. cap. 5. Gensericus lib. 2. chronograph. pag. 62. Tandem Imperator Seuerus, & Antoninus acriter persequi fuerunt, vt refert Tertul. in apolog. cap. 5. qui miserum eorum statum depinxit: quod & fecit Prudentius contra Iudæos, vers. 608. ibi:

Exitus vagus hoc illic fluctuans errat Iudæus, postquam parua de sede reuulsus Supplicium pro cade luit, Christianique negati Sanguine respersus commisit pincula soluit.

Vnde facillè cognoscitur, Imperatores permisisse Iudæis Decurionatum obtinere, quia onus erat, vt constat ex supra traditis, vt ita potius giagaretur onere, quàm decorarentur honore. Vnde postquam Vlpianus refert in dist. 6. 3. Imperatores permisisse Iudæis honorem obtinere, ea adiecit verba: Sed & necessitatem imposuerunt: quæ sensum illorum habent, non solum onus Decurionatus, sed etiam alia munera, videlicet uero, cis inflixerunt; ideo addita est coniunctio &, quæ cum superioribus sequentia coniungit: testantur similitur & verba illa, quæ superstitionem eorum non laederent; nec enim hæc adiecta forent, nisi experirent voluissent, vt quantumvis in eorum defatigationem onera iniungerent, nolle tamen vt exlude eorum superstitione lædatur, cum illi in suis synagogis & ceremoniis inquietandi non sint, vt probatur in cap. 3. hoc tit. Præfensit hanc solutionem Mela miser. iur. c. 12.

D. D. Gonzalez, in Decretal. Tom. V.

num. 11. Gothofredus in l. 49. Cod. Theodos. de Decur. Manet ergo, Iudæos non admitti ad honores, & dignitates; admitti tamen ad Decurionatum, quia onus potius continet, quàm honorem. Quomodo procedunt textus in dist. 1. ult. Cod. de Iudæis, iunctis lege iussu 5. lege quicunque 10. Cod. eod. tit. & lege omnes 49. Cod. de Decur. lib. 10. Nec contrarium probatur in l. Manichæi 12. Cod. de heretic. vbi Iudæis interdicitur Patres ciuitatum fieri; nam vt rectè animaduertit Guise, in l. 3. Cod. de his qui sponte munus, lib. 10. Patres ciuitatum non sunt Decuriones, sed ciuitatum tantum curatores, vt etiam exponunt Gothofredus in dist. l. 3. & dist. 1. Manichæi 12. vt etiam pecunie publicæ & operatum publicarum discussores d'contur in l. 1. Cod. quibus muneribus excusentur, lib. 10. Nouel. constitutio 27. 35. 128. 160. non verò Decuriones quapropter de illis intelligenda est dicta lex Manichæi 12. Cod. de heretic. & Manichæi; non verò de Decurionibus.

Secundò suprà traditis obstat textus in l. Iudæi 2. vers. si qui verò, Cod. de Iudæis, vbi Imperatores Arcadius, & Honorius docent, Iudæos arbitros esse posse. Ergo & Iudæis; siquidem arbitris redacta sunt ad iurist. iudicium, l. 1. ff. de arbit. & per consequens officium publicum obtinere possunt; siquidem certum est, iudicium officium publicum munus esse, publicaque auctoritate firmari, l. final. §. 14. ff. de muner. & honor. l. quippe 78. ff. de iudiciis, l. 2. ff. de R. I. l. primarium 3. Cod. de iurisdic. l. 1. ff. eod. l. item qui 23. cod. iur. Donel. lib. 27. comment. cap. 6. vbi Oualdos littera A. & B. Goueanus lib. 2. de iurisdic. num. 35. Vultei ad l. 1. Cod. de iurisdic. lib. 2. cap. 14. Faber in ratioc. ad distam legem primam, de arbitrarior. Igitur quia Iudæi ad publica officia admitti valent. Cui difficultati facillè satisfacemus, si supponamus arbitrium propriè non esse iudicium, sed ita appellari adiectâ illâ particulâ, ex compromisso; sicut iudices compromissarii sunt, in quos partes additâ pœnâ compromittunt, l. minorem 34. §. final. de minor. docet eleganter Scipio Gentilis de iurisd. dist. lib. 2. cap. 8. dissentit Guise, in parat. ad tit. Cod. de iudiciis, Petrus Gregor. lib. 47. synagm. cap. 12. num. 2. Et ideo non Iudæis, sed partes iudicis vocantur, l. Penapontius 13. §. recepisse 2. de recept. arbit. l. 14. Cod. de iudiciis: & in quamplurimis Iudæis non habentur, quæ congruit Goueanus lib. 2. de iurisd. a num. 11. & Douetius lib. 12. comment. cap. 26. & ibi Oualdos littera C. Antonius Faber ad dist. l. 1. de recept. arbit. Vnde iure ciuili ex eorum sententia nec exceptio nascebatur vsque ad Iustiniani nostri tempora: quapropter cum propriè iudices non sint, sed tantum partes eorum, nec ullam iurisdictionem exerceant, dist. l. 8. Cod. de iurisdic. non mirum permillum Iudæis arbitrium, vt ita potius, quàm cum strepit iudicij intra ipsos motz controuersie sopientes; & magis si obseruemus, infames ab eiusmodi arbitrio non fuisse depulsos, l. Pedius 7. de recept. arbit. docet Amaya ad tit. de infamis, num. 92. Vnde non aduersator dicta lex Iudæi 8. decisio nî vobis textus, ibi: Ab officio publicis; quia publicum officium minime habet compromissarius, nec aliter Iudex dicitur, quàm qui constituitur auctoritate publica, ex quo, vt suprà dixi, appellatur officium publicum, quæ in arbitris vt priuatis deest, dist. l. 3. Cod. de iurisd. Vnde tandem

11.
EXPONIT
TVA & IV.
PAB 3.
C. de IV.
PAB.

O 3 officium

officium prius est arbitrium ferre, nec dignitatem, iurisdictionemve vllam continet, vt refert noſter Amaya *vbi ſuprà*. Videndus Gothofredus in *l. Iudei* 10. *Cod. Theod. de iuriſſict.*

12.
EXPO-
NIT L.
ASADO-
NEM, 6.
IAM AV-
TEM, 19. DE
EXCUSA-
TIOE.

Etiã ſuprà tradita obſtat textus in *l. ſi ſpoda-*
nem 15. *ſi iam autem, ſi de excuſa, tutor.* Vbi Mo-
deſtinus refert ex conſtitutionibus (intelligo Se-
creti, & Antonini, de quibus in *diſt. l. 3. ſi ſonal,*
ſi de Decr.) Iudeos poſſe tutores eſſe, etiã non
Iudeorum: ſed tutela munus publicum eſt: ergo
Iudei poſſunt habere publicæ officia. Accedit ti-
mor peruerſionis, ſiquidem facile tutor poteſt
conuertere mores populi Chriſtiani, de quo abſ-
que dubio ſenſit Modeſtinus in *eo textu*; quare pu-
pillus educari iubetur penes eas perſonas, apud
quas ipſe cultu veteri, moribusque patriæ edoceri
poſſit, *l. 1. & final. ſi de pupillis, l. 2. Cod. hoc titul.*
Pro cuius difficultatis ſolutione dicendum eſt, in
eo textu doceri Iudeos tutores eſſe poſſe etiã
non Iudeorum, non quoad ipſorum educationem,
ſed quoad bonorum adminiſtrationem tantum.
Quæ ſolutio facile probatur ex illis verbis ſe-
quentibus: *Sicut & reliqua adminiſtrantur.* Ex quibus
facile conſtat, in præcedentibus actum fuiſſe
tantum de bonorum adminiſtratione, quam rectè
Iudei habere poſſunt. Nec obſtat tutela publi-
ci munus eſſe, quia vt ſuprà de officio decurionis
dixi, officium tutoris onus potiùs continet,
quàm honorem, ideoque ab onere tutelæ Iudeos
excuſari non poſſe. Nec etiã obſtat ſi dicatur, tu-
torem principaliter dari perſonæ, non rei, vel
cauſæ, *princip. Inſtit. de tutel.* quia licet id verum
ſit, tamen in præſenti caſu poſtquam Prætor cau-
ſam cognita agnouerit non expedire pupillum mo-
rari, ſed educari penes Iudeum, ipſi onus admini-
ſtrationis bonorum iungetur, alteri verd educa-
tionem pupilli commendabitur. Verùm etſi iure ci-
uili hæc procedunt, tamen attento iure canonico
veritas eſt, nec etiã quod bona Iudeos tutores
eſſe poſſe, quia licet iuxta proximè tradita non
poſſint facile corrumpere mores pupilloſum; ta-
men eùm inſenſiſſimè ſint Chriſtiani, facile eùm
non poſſint in corpore, & animâ ledere, in eorum
bona graſſabuntur, vt docuerunt Petrus
Gregorius *lib. 2. ſynagoga, cap. 4. num. 8. & 9.* Faber
in *Iuriſpund. tit. de excuſa tutor. princip. 1. illas* 9. Gu-
tierrez *lib. 1. de delicti quaſt. 21.* Cuius, *lib. 7. obſc. 30.*
qui etiã iure ciuili attento hoc procedere affirmat,
ſed abſque vllò iuris reſtitutione, eùm con-
trarium expreſſè legamus in *diſt. ſi iam autem.*

Ex ſuprà traditis licet accipit textus in *l. Arch-*
higerontes, Cod. de Episcop. audient. vbi ita ſta-
tuuntur: *Archhigerontes, diaceratque ergaſonorum,*
non niſi Chriſtiani dirigantur: quod officium tam ſu-
licitu obſeruet excentis. Vbi diſtincte eſt, quid per
Archhigerontas, diaceratſque intelligatur; ſiquidem
eorum officium tantum Chriſtiani eummiſſi ſuſtineant
Imperatores, Acutius ibi Archhigerontas exponit,
ideſt Archipreſbyteros, aut Episcopos, vel minores ſacerdotes, qui peccata eorum
qui ad merita dampni erant, audirent. Sed merito
cum reſpiciendū Pancelola *lib. 2. variat. c. 173.* nam ſi
impeſtores ſenſiſſent de preſbyteris ad
confeſſiones dampnatorum audendas deputandis,
frustra ſtarent, vt neceſſariò Chriſtiani eſſent,
ſiquidem non ſolum Chriſtiani, verùm & ſacer-
dotes tales miniſtri eſſe debeant. Nec felicius Al-
ciatus *lib. 3. diſpund. cap. 18.* textum illum accipit
de huius, qui meſum Principis, aut alia eius nego-
tia procurant, eùm nullibi legimus ſimiles diſ-
penſatores Archhigerontas dici. Pancelola *diſt.*
cap. 73. aſſertit per Archhigerontas in eo textu in-
telligi ſeneca, qui gynaecias præterant, vbi veſtes
Principum, & linteas tractabant, de quibus in *titul.*
de Muneribus, Gynaeciaris, & procuratoribus Gy-
nacy, lib. 11. Sed eodem modo reſellitur Pancelo-
la, ac ipſe impugnavit Aleiatum. Quare his omiſ-
ſis, pro vera illius textus interpretatione, qui re-
peritur in *Cod. Theod. ſub tit. de Alexand. plebis*
Primariis, vt iam notauimus in *diſt. 2. cap. 73.*
Cuius, *lib. 2. obſc. cap. 3.* Gothofredus ibi, dicen-
dum eſt, Archhigerontas vocari Principales Curie
Alexandrinæ, ſeu quinque Summanes ordinis Alexan-
drini, quaſi Principes Senacorum municipa-
lium; tutores verd corporum eiuſdem vrbis Alexan-
drinæ vocant Imperatores Diacerat Ergaſio-
tanorum; ideſt curatores corporatorum. Staſiunt
ergo Imperatores in *diſt. l. 6.* Principales
iſtos Curie, & corporatum Alexandriæ, Chriſ-
tianos eligi, vt in ſcitiſſima ciuitate popula-
rium factiones, quibus Chriſtiana ipſa religio of-
fendi, vel Chriſtiani ipſi præmi potuiſſent, Prin-
cipalium auctoritate compellerentur; docuit Pe-
trus Burgius *lib. 1. elector. cap. 3.* quem ſequitur
Mornacius in *diſt. l. 6.* Cùm eùm iniuſum, ne in-
decorum ſit, Iudeos, ſeu Paganos præfici Chriſ-
tiani, ſeu officiis publicis, in quorum exercitio
Ipſos rectare poſſint, ideo Imperatores noluerunt
in ſideles præponi publicis officiis, & præponi ip-
ſis corporatibus.

13.
EXPO-
NIT L.
COD. DE
EPISC. AU-
DIENT.

CAPVT XVII.

Idem^a in eodem.

AD liberandam Terram ſanctam. Et infra: Excommunicamus præterea, & ana-
thematiſamus illos falſos, & impios Chriſtianos, qui contra ipſum Chriſtum
& populum Chriſtianum Sarracenis arma, ferrum, & ligamina deferant galea-
rum: eos etiã, qui galeas eis vendunt, vel naues: quique in piraticis Sarraceno-
rum nauibus curam gubernationis exercent, vel machinis, aut quibuſlibet aliis
aliquod eis impediunt conſilium, vel auxilium in diſpendium Terræ ſanctæ: ip-
ſosque rerum ſuarum priuatione multari, & capientium ſeruos fore cenſemus:
præcipientes, vt per omnes vrbes maritimas diebus Dominicis & feſtiuiſ huius-
modi ſententiã publicè innouetur, & talibus gremium non aperiatur Eccleſiæ,
niſi totum, quod ex commercio tam damnato perceperint, & tantundem de
ſuo in ſubſidium Terræ ſanctæ tranſmiſerint, vt æquo iudicio, in quo deli-
querint,

querint; puniantur. Quod si fortè soluendo non⁴ fuerint, sic alias reatus talium castigetur, quod in pœna ipsorum aliis⁵ interdicator audacia familia præsumendi.

NOTÆ.

1. ^a *Odem.*] Textus hic non reperitur in aliqua ex collectionibus antiquis; statas tamen in Concilio Lateran. sub Innocentio III. celebrato, ubi post canones ipsius Concilij ad alius calcem habetur, ubi legitur, *Expeditio pro reconquerranda Terra sancta*: ubi varia statuuntur, tum circa Crucesignatos, quos circa deferentes arma ad Sarracenos; & ad medium ipsius constitutionis reperiuntur verba in præfenti transcripta. Cùm enim expeditionem Terræ sanctæ sepe tentasset Gregorius VII. Urbanus II. Gelasius II. Calixtus II. Eugenius III. Alex. III. ut referunt Baronius tom. 11. anno 1095. & tom. 12. anno 1145. scriptores in Bullam Cruciam laudati à Patre Mendo diffus. 1. in bullam, cap. 4. ideo vestigiis prædecessorum inherendo Honorius III. varia constituit pro expeditione ipsius Terræ sanctæ, & in gratiam Crucesignatorum; ac contra eos, qui terra, ferrum, & similia ad ipsos Sarracenos deferrent.

2. *Ligamina deferunt galearum.*] Glossa marginalis legit *ligamina*, & rectè; sed debebat etiam reponere *Galearum*, ut refertur apud Matthæum Patrum anno 1234. libi: *Qui Sarracenis arma, ferrum & ligamina deferunt galearum*, hoc est ma-

teriam ad fabricandas naues longas, ut explicat Vossius de vitio sermon. lib. 3. cap. 21. & suadetur hæc expositio ex verbis sequentibus, ubi prohibetur Christianis vendere Sarracenis naues, & galeas; aliis enim supellectilibus, parumque necessaria videbantur præfens constitutio, si retineretur vulgaris lectio *ligamina galearum*, cùm quilibet ligamina faciliè apud ipsos fabricarentur; & galeæ similiter, si acciperentur pro pileo, aut tegumento capitis militum, de quibus plura Turnebus lib. 28. advers. cap. 16. Testis ad illud Virgil. 7. *Æneid.*

Cur triplici crimine inhæ, galea alta chimæram. Steenbeekius ad *Vergilium* lib. 1. cap. 20. Accipienda ergo est præfens constitutio de galeis, videlicet nauibz longis, de quibus, & eorum forma plura Morisonus lib. 7. *orbis maritimi*, cap. 7. Salmastius in *obser. ad ius Atticum*, cap. 28.

c *Deliquerint.*] Iuxta tradita in cap. 3. de temporibus videm.

d *Non furit.*] Ve ita qui non habet in ære, luse in corpore, iuxta adducta in cap. 2. de pignor.

e *Aliis interdicator audacia.*] Q.æ est periculis ratio penarum, ut probavi in cap. 13. §. *ceterum*, de offic. ordin.

Commentarium huius textus dedi supra in cap. 11. *quaerendum*.

C A P V T XVIII.

Gregor. IX. *Astoricen. & Lucen. Episcopis.*

EX speciali, quem erga¹ illustrem Regem Portugalliz gerimus² charitatis affectu. *Et infra*: Mandamus quatenus Regem ipsum sollicitè inducat, ne in⁴ officiis publicis Iudæos Christianis præficiat, sicut in generali Concilio continetur: & si fortè redditus suos Iudæis vendiderint, vel paganis, Christianum tunc deputet⁵ de grauaminibus inferendis clericis & Ecclesiis non suspectum, per quem Iudæi, siue Sarraceni sine Christianorum iniuria iura⁶ regalia consequantur.

NOTÆ.

1. ^a *Astoricen. & Lucen.*] Vtraque diocesis est Hispaniz: de Astoricen. regi in cap. 17. *de re iudicaria*: de Lucen. in cap. 4. qui clericis, vel viciis. Rescribit autem Gregor. in præfenti his Episcopis, ut facilius ipsi inducere possint Regem Lusitaniz: tum quia viciniotes etiam ipsius regni, cùm essent in regno Legionis, & Gallæiz: quia cùm non essent in ipsius diuisione, facilius poterant Regem ipsum monere, arguere, interprecque de tanto excessu. His temporibus Gregorius IX. scptimo Lusitanicum tenebat Sanctius XI. cognomento Capello, maximè deuidiosus, ignauissimusque in cura sal regni, ut apparet ex cap. *grandi*, de *supplend. neglig.* lib. 6. & refertur de eo agentes Duardus Nonius ad *libellum Iosaphi Texeiri*, censur. 29. Matiana lib. 3. *Histor. Hispan.* cap. 4. Gutibatus tom. 4. *compend. historia*, lib. 34. cap. 18. Ant. Vaseoneellos in *unapheles*, in *Santo. Faria de Soula in epistol. Histor. Portug.* 4. part. cap. 5. & 6. Spondanus tom. 1. *post Baronium*, *anno* 1245. *augm.* 30. & 1268. *augm.* 8. & 1272. *augm.* 3.

Et his temporibus Lusitaniz regnum feudatarium Ecclesiæ Romanæ abique dubio agnoscebat, ut testatur *Martha de iurisd.* cap. 26. ex nam. 93. cuius feudi originem tradunt Rodericus Toletanus de rebus *Hisp.* lib. 7. cap. 74. Genebrardus in *sua chron.* Garibay part. 4. lib. 34. cap. 16. & de eo Innoc. III. ipsi Regi Portuliz ita scribit lib. 1. *epistol. fol. 47.* *Severitatem Regiam volumus non latere, nos in regebus bona memoria Lucy II. Rom. Pontific. reperiisse, quod recolenda iura. A. Pater tuus quatuor anni vacans annuatim Romana Ecclesiæ constituit censuales: ad quarum solutionem se, & heredes suos in posterum obligauit. Ceterum cum idem pater tuus usque ad tempora felici memoria A. Papa prædecessoris nostri, Ducis esset nomine appellatus, ab eodem meritis obtinere, ut iam ipse, quoniam eius heredes regio nomine vacarent. Et autem idem pater tuus sanctissimam Rom. Ecclesiam matrem suam honore debito præueniret, & ut deuotionem, quam circa ipsum habebat, ostenderet in efficiis, centum hyzantios annuatim Romana Ecclesiæ constituit censuales, quas post susceptionem regis nominis nec ipse soluit, nec tu postmodum sol-*

uræ curauit. Cumque id felicitis recordationis Clementis Papa prædecessoris nostro relatam fuisset, magistro Michaeli tunc Ecclesia Rom. Notario, quem ad partes Hispania destinaret, per suas dedit litteras in mandatis, ut se ad exfoluendum censum annuum maneris diligentius, & inducere procuraret, & si opus esset, auctoritate fretus Apostolica compellere non differret.

b *Illustrem.*] De titulo Illustris Regibus, supermissisque Principibus à Sede Apostolica assignato, egi in cap. nouis, de officio Legati.

2. c *Choriciensis afflicti.*] Nam Alfonso I. Dux Portugaliæ, qui ab Alexandro III. titulum Regis accepit, totum Regnum Lusitanum veltigale fecit Ecclesie Romanæ, vt constat ex Innocentio III. lib. 1. epist. 144. 151. & 152. & lib. 3. regestr. 15. epist. 14. vbi refert Bosquetus.

d *Officij publicis.*] Quenam illa sint, exposui in cap. cum nimis, hoc iunl. vbi commentarium huius textus dedi.

e *Gramenibus.*] Quæ non leuia inferuntur ab his publicanis, & exactoribus, vt probant Iacobi Etalms Cbochiet lib. 2. Polit. cap. 10. Procopius in hist. arcana, fol. 100. Fornerius lib. 6. rer. quæd. cap. 12. Valefius in notis ad Ammonium Marcellinum fol. 210. Amaya ad tit. Cod. de exaltor. tributi. Solorzani embi. 84. & 2. rem de iura Indiar. lib. 1. cap. 2. ex nom. 48. & lib. 5. cap. 201. Gibalinus tom. 1. de negotiis. lib. 1. cap. 2. art. 15.

f *Regalia.*] Idest Gabelias, tributa, & similia lura, quæ congerunt Alfaro de offic. fiscal. gloss. 20. cum sequunt. Pateta de infrum. edit. tit. 5. resol. 9. Cabedo 2. part. decif. 42.

CAPVT XIX.

Idem.

Nvlli Iudæo baptizatum, vel baptizati volentem emere liceat, vel in suo seruitio retinere. Quod si quem nondum ad fidem conversum causâ mercedimonij emerit, & postmodum factus sit, vel fieri desideret Christianus, datis pro eo XII. solidis ab illius seruitio procius subtrahatur. Si autem intra tres menses ipsum venalem non exposuerit, vel ad sibi seruiendum emerit eundem, nec ipse vendere, nec alius audeat comparare: sed nullo pretio perducatur ad præmia libertatis.

NOTÆ.

1. a *Idem.*] Gregorius videlicet IX. qui præsentem constitutionem edidit, vt confirmaret, & ampliatet decisiones textus in cap. 1. cap. ad hoc, hoc iunl. circa seruos à Sarracenis possessos, circa quos sequentes casus sunt distinguendi; si enim seruus verus sit, idest natus domi, velique fieri Christianus, statim nullo pretio dato eripitur in libertatem, cap. fraternitatem, 54. dist. 1. De nobis, 9. his inique, Cod. de Episc. & clericis. Si autem sit emptus, distinguendum est, quia aut erat Christianus, eum emptus fuit, aut Paganus: si erat Christianus, indistinctè in libertatem eripitur nullo pretio dato, quia Christiani commercium

est Iudæo penitus interdictum, cap. mancipia, 54. dist. Si autem sit emptus dum erat Paganus, aut causâ seruitij, aut mercedimonij gratiâ emptus fuit. Primo casu, si vult Christianus fieri, absque vilo pretio eripitur in libertatem, dist. cap. si fraternitatem. In secundo vero casu, si infra tres menses Iudæus non exposuit eum venalem, si Catholicam fidem præstiterit velit, etiam sine vilo pretio eripitur in libertatem, quia creditur ad seruiendum eum emisse: si vero infra tres menses exposuit eum venalem, & infra eos, vel post velit fieri Christianus, dum tamen non steterit per dominum, quominus eam vendiderit, soluto pretio duodecim solidorum seruus redimitur.

TITVLVS VII.

De Hæreticis.

CAPVT I

Stephanus Papa omnibus Episcopis.

Evbius in fide, infidelis est. Nec eis omnino credendum est, qui fidem veritatis ignorant.

NOTÆ.

1. a *Stephanus.*] Ita etiam legitur in prima collectione, sub hoc iunl. cap. 1. sed verba in

præsenti relecta reperiantur in can. 45. Synodi Nicenæ, & in can. 4. collectionis Hadriani Papæ, & in epist. 1. Sixti I. vbi ait: De cætero placuit propter malorum hominum infestationes, ut in accusatione

sciens demini, ministrorum primæ persona, fides, vita & conversatio blasphemantium enucleatione perferretur; nam fides emens altius hominis procedere debet, quia dubius in fide infidelis est; nec eis omnino est credendum, qui variis fidei dem ignorat, nec recta conversationis vitam ducunt. Et hæc sententia primum fuit Euaristi Papæ epist. 2. ut transmissa à Carotenensi part. 7. Decani, cap. 7. Gratiani in cap. 17. 2. quest. 7. mox Sixti in epist. 1. deinde Pij Papæ, ut refert Gratianus in cap. 3. 3. quest. 4. postea Calixti epist. 2. relata in cap. 18. 2. quest. 7. deinceps Fabiani in Synodo Romana, telata in cap. 3. 3. quest. 4. Stephani in epist. 2. tandem Marcelli epist. 2. relata in cap. final. 96. dist. Nec dissimilis sententia reperitur in Concilio CP. telato à Gratiano in cap. 4. quest. 5. Chalcedon. can. 21. apud Gratianum in cap. 49. 2. quest. 7. Carthag. 4. can. 11. Tolet. 6. can. 11. transscripto à Gratiano in cap. 9. 3. quest. 9. et si perperam elatet ex Concilio Tolet. Tandem in Capitulatibus Caroli lib. 5. Capituli. 183. & lib. 7. cap. 147. & apud alios Ecclesiæ PP. quos coegerit Aot. Augusti in notis ad dictum can. 4. Hadriani.

2. b. Credendum est.] Vnde hæreticus contra Catholicum, vel testis, vel ut accusator oon adhibetur, cap. non potest, cap. si hæreticus, & orthodoxus, cap. testes in princip. vers. Et vera fides 2. quest. 7. cap. Beatus, cap. si quis verò, 3. quest. 4. cap. suspectus 3. quest. 5. cap. qui criminet, vers. Christum 6. quest. 1. can. 74. Apostel. 1. 12. Cod. de heretic. Felix 11. in Synodo Romana, epist. 1. cap. 9. Testificandi, vel accusandi licentia demeretur his, qui Christiana religione, & nominis dignitate, & sua legis, vel sui propostii normam, aut regulariter prohibita neglexerint. Et cap. 11. & 13. Persona accusantium tales esse debent, quarum fides, & conversatio, & vita probabili, & absque reprehensione sit. Et cap. 15. A quibus nimium opprimuntur, excommunicatique nullatenus ad accusationem, vel ad testimonium erui admittendi. Fabianos Papa epist. 1. in medium, & epist. 2. ante medium: Ipsi Apostoli, & successores eorum olim statuerunt, eos ad accusationem non recipi, qui sunt suspecti, aut dubi in recta fide. Idem epist. 3. cap. 1. Materius Pontifex epist. 1. ad medium, Dionysius epist. 2. Quorum, & aliorum auctoritates congerit Antonius Augustinus in epis. iuris lib. 11. tit. 18. & nonnullas adduxi in cap. Iudei, de testibus. Hoc autem non procedit, si hæreticus contra hæreticum testimonium dicat, cap. si hæreticus 2. quest. 7. cap. in fide 5. de heretic. in 6. vel si pro orthodoxo testimonium ferat, dist. cap. si hæreticus, vers. Sin autem. Nouella 45. §. cum verò: notauit Vighel. in method. iur. Pen. lib. 2. cap. 13.

COMMENTARIUM.

3. CONCL. EX hoc textu, prout hæc sub hac rubrica de hæreticis, sequens communiter deducitur assertio: Dubitans in fide hæreticus est. Probatur ex

Clement. 1. §. potest, ibi: in dubium, hoc tit. Concil. Lætan. sub Leone X. sess. 8. D'Angust. in Eschirid. cap. 7. & 19. ubi asserit, salui fide non posse viurpari illam particulam fore, in rebus fidei, quia significat dubitationem. D. Hensonyn. in Abacuch. cap. 2. ibi: Si autem dubitaveris fides tua, & putaveris non venire quod sperdes, habebis pro graviis pena. D. Thomas 1. 2. quest. 10. art. 5. & quest. 11. art. 1. Illustrant ultra congesti à Barbosa in præfati, Petrus Gregor. lib. 2. part. tit. 6. cap. 1. Robertus lib. 1. rer. iudic. cap. 12. in fine, Peña in ducti. Inquisit. in præfati, Suarez de fide disp. 19. sect. 4. Saechez lib. 2. summa, cap. 7. num. 12. Dardus ad Bullam Cana Demini, lib. 2. can. 1. quest. 23. Riccius lib. 5. de iure person. cap. 4. Azuado in l. 1. tit. 3. lib. 8. Recopil. Potel. in dubiis Regul. verbo Hæresis, num. 4. Carena de offi. inquisit. part. 2. tit. 1. §. 3. Diana part. 2. tract. 2. miscel. resol. 53. Torreblanca de iure spiritual. lib. 13. cap. 2. num. 33. Thomas Delbene de immunit. ecclæs. lib. 1. subsect. 31. num. 2. Becanos in 2. 2. Dini Thomæ, tit. de fide, cap. 14. quest. 1. Albertus de heresi cap. 5. Caietan. 1. 2. quest. 11. art. 2. Tutuicem. lib. 4. summa, part. 1. quest. 11. Sæ verbo Hæresis, Azor tom. 1. lib. 8. cap. 9. quest. 5. Castropalao tom. 1. tract. 4. disp. 3. part. 2. num. 9. Canis lib. 12. de locis, cap. 8. vers. Controuersorum. Muga tom. 2. disquisit. mor. tract. 1. de b. 1. Tapia tom. 1. lib. 2. quest. 6. art. 3. Prado tom. 1. Theolog. Moral. cap. 8. quest. 1. §. 2. Thomas Bennis de offi. Inquisit. part. 1. dubi. 5. per totam, Lugo, Bonacina, & Layman, quos sequitur Macedo de claribus Petri, in quaestione præmia, art. 2. Saechez de fide disp. 19. sect. 4. alij apud Barbosam in rem. 6. in secti. ad hunc texum.

Sed produbitandi ratione in præsentem assertionem ita insurgo: hæresis non importat solam priuationem fidei, sed adum positum in contrarium: quare de ratione hæresis est electio pertinax doctrinæ contrariæ veritati fidei, cap. hæreticus 24. quest. 3. D. Thomas in epist. 1. ad Corinth. cap. 11. sect. 4. & 2. 2. quest. 11. art. 2. ad 3. Sed dubians nullum habet assensum fidei coactionem, nec alteratam patem eligit, sed pendulus est; id enim est dubitare: & dubius in fide medium se gerit inter hæreticum & Catholicum, ac neuter est; nec enim dissentit positivè ut hæreticus, nec assentitur ut Catholicus, sed iudicium suspendens iudicat rem esse dubiam. Ergo dubius in fide fidelis est, non verò hæreticus. Deinde nam hæresis essentialiter consistit in iudicio intellectus contra fidem: sed ille, qui dubius est, non habet iudicium contra fidem, quia qui dubitat, in neutram partem terminator ergo hæreticus non est. Facit etiam, nam hæresis, & fides sunt duo extrema: illa assensum æorum fidei importat, hæc autem dissentium: ac dubium est medium inter illa, utpote, quod neque assensum, nec dissentium includit: ergo dubius in fide hæreticus non est. Quare dubitantiæ de mysterio fidei, deliberatæ hæreticum non esse docuerunt Cazo lib. 12. de locis, cap. 9. Sanchez lib. 2. summa, cap. 7. num. 2. Tannucius, & alij, quos refert, & sequitur Diana part. 2. tract. 1. resol. 56.

Quâ dubitandi ratione non obstante vera est præfata assertio, pro cuius expositione sciendum est, hæresim à qua hæreticus appellatur est, distinctio.

DITTE, 12
PROBAC
TYA.

4.
INVERSA
TIVE TRA
DITA AD
BATIO.

5.
HÆRESIS
EST NON
AT DITTE
MITIO.

nam esse à Greca voce *aislum*, id est *eligo*, vel *scilicet*: unde *aislum* idem est ac electio, seu secta, cap. *hæresis* 24. *quæst.* 3. docet D. Isidorus lib. 8. *etym.* cap. 3. D. Hieron. *in epist. ad Galatas*, cap. 1. Clemens Alexand. lib. 7. *stromatum*, ibi *hæresis electio est*. Tertol. lib. *de præscrip.* ex D. Augustino, Cicerone & aliis probant Coar. lib. 3. *variæ*, cap. 1. num. 2. Castro de *iusta heretic.* puni. lib. 1. cap. 1. Cano de *locis theol.* lib. 12. cap. 9. Loayias in *notis ad D. Isidorum* lib. 1. *sent.* 1. Suarez de *fide disp.* 19. *sect.* t. num. 1. Paramas de *orig. Inquisit.* lib. 3. *quæst.* 3. numer. 3. Santarellus de *heresi quæst.* 1. *conclus.* 1. Azavedus in l. 1. tit. 3. lib. 8. *recopil.* Scottia in *select.* epit. 71. *heret.* 182. Fagundes in *præp.* 1. *Decalog.* lib. 1. cap. 10. num. 2. Alberticus de *heresi.* cap. 1. Suarez de *fide disp.* 19. *sect.* t. Facit textus, ubi hæresis hoc sensu accipitur, in l. *si duas* 6. *vers.* *est autem*, ff. de *excusat. iur.* Unde licet dictio hæc ex propria etate sermonis quamcumque doctrinæ electionem, seu sententiam bonam, & laudabilem significet, tamen quia in his, quæ sunt fidei, & religionis christiane, nulla dari potest secta electio ex humano arbitrio, nec secta aliqua discipline particularis: tum quia sunt illa omnia à Deo tradita, & eo reuelante inspirata, iuxta apostolum 1. ad *Corinth.* cap. 2. ibi: *Fides non fit in sapientia hominum, sed in virtute Dei*, in cuius obsequium captiuandus est intellectus noster cum eodem Paulo 2. ad *Corinth.* cap. 10. inde meretur in hoc titulo, & passim apud Doctores hæresis iō Catholicis, quatenus tales sunt, id est in his, quæ sunt fidei Catholicæ, importat grauissimum crimen violatæ religionis, insurgens ex eo, quod fidelis aliquid peculiare eligit, vel sedatur ex suo arbitrio, in his quæ sunt fidei, in ea enim quidquid est humanum iouentum particulare, & non vnum, violat fidem, & religionem ipsam, vnde Tertullianus, & aliis probat Castro *dist.* cap. 1. Facit lex *Caliceolarum*, *Cod. de Iudeis*. Non obstat, quod crimen violatæ religionis eum sit species infidelitatis, vt probat D. Thomas 2. 2. *quæst.* 11. *art.* 1. est operatio intellectus, & iō eo consistit, quod aliquid perperam intelligitur, & iudicatur contra fidem, vt omnes fatentur: electio verò consistit in voluntate, cuius est operatio, & consequenter non potest crimen hoc hæresis, id est electio, nominari, nec per hæresim significari. Quia facilis solutio est: tum quia vitium hoc non est in intellectu absolutè, sed in eo motu à voluntate; moner eolm voluntas ad sic intelligendam, vt ex D. Thomas 2. 2. *quæst.* 10. probat Castro ubi *suprà*, *vers.* *Sed fortasse*. Simanch. de *Cathol.* cap. 30. num. 3. tum quia licet initium huius criminis sit in intellectu errate, consummatio tamen illius est in voluntate, quæ errorem pertinaciter retinet, vt ea mente D. Thomæ adducunt Paulus Gilelandus de *heresi.* *quæst.* 1. num. 6. Brozus *ord. iur.* lib. 1. cap. 2.

Deinde sciendum est, hæresis definitiones varias addidisse repetentes iō præsentis, & scribentes de hæreticis, alioquin quos refert Riccius lib. 5. de *iure person.* cap. 1. Castus de *offic. Inquisit.* part. 2. tit. 1. *quæst.* 1. Petrus Greg. lib. 4. part. 16. cap. 1. Macedo de *clauibus Petri*, in *quæst.* *prævia*. Suarez de *fide*, *disp.* 19. *sect.* t. ea quorum mente ita definiti potest: hæresis est error pertinax in Catholicis contra fidem catholi-

cam. Quæ definitio constat suis requisitis, & simul exprimit causam definiti. Vnde primò infertur, hæresim non tantum insurgere ex verbis, seu asserione, sed etiam ex opere, & factio aliquo contra fidem: est enim error, iuxta verum in cap. 1. de *summa Trinit.* lib. 6. cap. *si Ecclesia* 23. *quæst.* 4. cuius consummatio, vt proliamè dixi, consistit in voluntate, quæ non minus factis, quam verbis ostenditur, cap. *dilecti* 32. de *appellat.* cap. *existimam* 2. *quæst.* 3. cap. *accusantes*, 5. *sent.* hoc *ritual.* lib. 6. probant Simanchas *dist.* cap. 30. num. 14. Castro *dist.* lib. 12. cap. 9. *vers.* *Item*. Hoc autem procedit modò opus esse verificum circa materiam fidei, nec soleat fieri ab aliis, quàm ab his, qui fidei adhaerent, vt suar ritus ludæorum, & Paganorum: aliter si opus tale non sit, sed respiciat mores, id est ea quæ agenda sunt, quæ illicita; vel fugienda, quæ illicita, ob idque principaliter præcipiantur, vel prohibeantur ne fiant, veluti furum, perisurion & similia, quia equè sulent committi à fidelibus, ac à quibuscunque aliis; tunc ex huiusmodi opere per se non insurgit hæresis, nisi constet agentem credere illud esse licitum, quia hoc repugnat fidei, ex factis vitiis, quibus contrarium docent: hæresis autem ex huiusmodi factis insurgit presumptione iuria, quia præsumitur dum aliud non appareret, eum, qui tale opus facit, ita credere, sicut opus ea seipsum aspectu suum, vt coningit in eo, quibinas nuptias contrahit vno, eodemque tempore, aut matrimonium celebrat post votum emissum in fuscipione ordinum, aut professionem religionis, & similibus: oportet tamen Inquisitores hæretice præuicari diligenter examinare huiusmodi opera, vtrum ex interiori infidelitate, & errore intellectus processerint, sicut cæteris appareret: quod si aliquando constare poterit, ea aliqua causa, timore scilicet, cupiditate, aut animi perturbatione processisse, debent in similia perpertantes, non tanquam in hæreticos, sed leuiss animaduertere, vt monet Cano *dist.* cap. 9. Deinde infertur ex dicta definitione, iō hæresim tantum incidere posse Catholicos, qui semel fidem Catholicam professi fuerunt, Vnde infideles, qui non sunt partes huius totius, quod est Ecclesia, nec illius unitatem, aut unitatem professi sunt per baptismum, quomais in pluribus error contra fidem, hæretici dici nequeant, vt probatur ex textu in cap. *qui in Ecclesia* 24. *quæst.* 3. cap. *quidam*, de *heretic.* lib. 6. cap. *heretici* 24. *quæst.* 1. ibi: *A si de catholicis desisterent*. Docent Coar. lib. 3. *variæ*, cap. 1. num. 2. Becanus in 2. 2. cap. 14. *quæst.* 2. Nec solum infideles hæretici dici nequeant, imò nec illorum dogmata hæresis propriè dici possunt, quia omnia, quæ sunt de ratione hæresis, sunt etiam de ratione hæretici, vt probat D. Thomas in 2. ad *Corinth.* cap. 2. *lect.* 4. etiam contrarium tenet Castro *dist.* lib. 1. cap. 1. Simanchas de *Cathol.* cap. 54. num. 10. quatum sententia procedet potest, si accipiat hæresis lato modo, & materialiter, prout significat errorem fidei contrarium; non verò strictè, & formaliter, prout importat crimen violatæ religionis.

Ex dicta definitione infertur, hæresim non dari nisi adit pertinacia in errore: & probatur ex cap. *dictis*, cap. *qui in Ecclesia* 24. *quæst.* 3. cap. 2. de *summa Trinit.* cap. *vois*, *ord.* tit. lib. 6. Clemens 2. de *summa Trinit.* Clement. 1. 5. *cl.* de *refor. error.* Cum inter, Ioannis XXII. de *V. S.* probatur pluribus relictis Ricciulis de *iure person.* lib. 5. cap. 1.

6.
HÆRESIS
DEFINITIO

7.
DE PER-
TINACIA
HÆRESIS
DEFINITIO

cap. 1. *mm. 15. Torreblanca de iure spirit. lib. 3. cap. 8. num. 23. Catena de offic. Inquisit. par. 2. tit. 1. §. 2. Suarez de fide dispn. 19. sect. 3. Si enim deficiat pertinacia, ut quia quis errat contra fidem per simplicitatem, aut ignorantiam, putans ita esse de fide, & Ecclesiam ita tenere, cui in omnibus vult subire, nec dici, nec iudicari, nec puniri potest ut hæreticus, cap. 1. *vers. In nullo, de summa Trinit.* in quo sensu accipiendus est D. Augustinus lib. 1. de Trinit. *Errare potero, sed hæreticus non ero*; quia scilicet non ero pertinax in errore. Nec obstat textus in cap. *super quibusdam, in princip. de P.S.* ubi in descriptione hæretici nulla fit mentio pertinaciæ, siquidem ibi agitur tantum de hæretico manifestò, & ita de eo, quem iam certum est esse hæreticum, & pertinaciter errare; dubitatur tamen, an manifestus sit. Circa dignoscendam autem pertinaciæ in hac parte plura tradunt Castro *dist. lib. 1. cap. 9. Cano dist. lib. 12. de locis, cap. 9. Simone, de Cathol. cap. 42. & in praxi hæres. cap. 30. Nazari. in cap. nuda, notabili 3. num. 42. Ricciolus, & Catena suprà.* Iuxta quorum mentem dicendum est, pertinaciæ iuxta nominis etymologiam denotare nimiam persistentiā in eo, quod quis dimittere debet; vnde pertinax idem est, ac valde tenax. Glossa in Clem. 1. §. *porro, de summa Trinit.* & in l. 3. §. *penult. ff. de suspect. suc.* pertinaciæ autem talis in presenti non solum accipitur pro obstinatione, vel obstinatione duritia, quæ habetur contra consensum transitorium, ut perperam existimatur. Aleazar in l. 2. *Cod. de summa Trinit.* Bronus lib. 1. de hæres. cap. 2. pag. 2. Sylvest. verbo *Hæresis* 1. *num. 4.* sed generalitèr accipitur pro consensu quocumque firmo contra veritatem, & fidem Catholicam, quoniam quia vel cognoscit, vel cognoscere debet, ut probat Simonas de Catholicis, *dist. cap. 48. num. 8.* & ita qui sciens, prudensque errat contra fidem, pertinax est, idest plus debito tenax, quomodo monito non fuerit, nec diutius persistit in errore: & in foro exteriori, quoad Ecclesiam, cui aliud non apparet, pertinax præsumitur errans in hia, quæ cognoscere debet: sed quia circa pertinaciā indicendam, vel non aliud in iure cautum non legimus, ideo arbitrio iudicia relinquitur, qui ex consuetudine deprehendet, an pertinaciā intèruenerit, idest firmus in errore consensus, veluti quia error est manifestè damnatus, & contra veritatem notissimam, seu traditionem Ecclesiæ; vel quia errans doctus est, & sagax, aut quia diu, & clam persistit in errore, vel si legitima admonitio intercessit; sicut e contra pertinaciā non præsumitur quando error est contra veritatem minus notam, nec aperte damnatam, vel errans est indoctus, in reliquis de fide optimè sentiens, vel quia per minus tempus persistit in errore, ut exemplis exponunt Castro, & Cano *ubi suprà.* Pertinaciā ergo non tantum est de ratione hæretici, sed etiam de ratione hæresis, ut docet D. Thomas in 1. ad Corinth. cap. 11. *lect. 4.* quod procedit si hæresis, & hæreticus accipiatur formaliter iuxta traditam definitionem, nam si materialiter accipiatur, vel pro errore, vel pro errante contra fidem, hæresis, & hæreticus rectè dicentur, quamvis pertinaciā deficiat: in quo sensu procedit sententia D. Thomæ *part. 1. quæst. 32. art. 4. ad 1. ubi Catena.**

Tandem ex supra tradita definitione inferatur

ad hæresim, vel hæreticum propriè constituendum necessarium esse quod error sit contra fidem, ut probatur ex cap. *hæretici 24. quæstion. 1. ibi 1. A fide Catholicæ defluerunt. cap. omnes, ibi: Fidem quippe violat 22. dist. cap. super quibusdam, ibi: Contra fidem Catholicam, & P. S. docent D. Thomas 22. quæst. 1. art. 2. Castro *dist. lib. 1. de hæres. punct. cap. 1. & 7.* & alij supracitati. Vnde errores, & crimina, quantumvis gravia, propriè loquendo hæreses dici nequeant, nec enim auctores sunt hæretici, de quibus in presenti titulo, quamvis impropriè, & per similitudinem ad denotandam criminis gravitatem, simoniaci, excommunicati, & alij similes hæretici dicantur, cap. *quicunque, cum sequent. 1. quæstio 1. cap. quod autem, ubi Glossa 4. quæst. 1.* quia scilicet huiusmodi delinquentes ita peccant, ac si essent hæretici de fide male sentientes, ut considerat D. Thomas *quæst. 13. mm. 28. Villadiego de hæres. praxi. quæst. 2. mm. 3.* Appellatione autem fidei Catholicæ veniunt non tantum ea, quæ pertinent ad fidem principaliter, & directè, sed etiam illa, quæ secundariò, & reduciunt, ut explicat D. Thomas 1. *part. quæst. 32. art. 4.* Sylvest. verbo *Hæresis* 1. *num. 3.* iuxta quam explicationem meritò iudicantur hæretici plerique, quæ reserunt Bronus *de hæres. lib. 1. cap. 2.* Repertorium Inquisit. verbo *Hæretici*, Carreiras in *praxi de hæres. 2. num. 6.* Contra fidem autem Catholicam est, quicquid contra Ecclesiæ universalis determinationes de fide sit, cuius auctoritas principaliter testidit penes Summum Pontificem, ad quem pertinet iudicare de fide, & quæ contra eam sunt, hæretica pronuntiare, cap. *quæstio 1. cap. hæres. cap. correat. 24. quæst. 1. cap. maiores, de baptismo: probat latè Castro aduers. hæres. cap. 5. & 8. & lib. 1. de hæres. punct. cap. 5.* Vnde inferitur, magis dari differentiam inter propositionem hæreticam, quæ fidei aduersatur, & inter erroneam malè sonantem, hæresim sapientem, scandalosam, seu temerariam, & similes, quarum descriptiones, & exempla tradunt Castro *dist. lib. 1. cap. 9. Cano de locis lib. 12. cap. 11. Summe, de Cathol. cap. 54. & in praxi hæres. cap. 24.* Soota in *manuali Qualificationum.* Quare ad Theologos pertinet huiusmodi propositiones examinare, ut docetur in *Extraug. 2. hoc ritual.* inter communes; quorum resolutiones, & censuræ apponi debent in ipso processu, ut inde iudex agnoscere possit, an reus ut hæreticus, vel aliter puniendus sit.*

Hic suppositiū apparet ratio presentis definitionis, quæ provenit ex eo, quia eum in fide firma certitudinè, & nulla dubietate, aut hæsitatio esse debeat, cap. 1. ubi Glossa, *de summa Trinit.* D. Iacobus in *epistol. canonice, cap. 1. ibi: In fide nihil habemus; & iuxta illud Athanasij: Fideliter, firmiterque crediderit*; vnam enim ex articulis nostræ fidei est, eam esse firmissimam: *Calum, & terra transivum, verba autem mea non præteribunt*, ait Dominus apud Matthæum cap. 24. *vers. 35.* Sic Paulus ad Hebræos 1.6. *vers. 8.* hortatur, ut per duas res immobilis, quibus impossibile est mentiri Deum, fortissimum solatium habeamus. Merito ergo in presenti ille, qui dubitat nolens captivare intellectum in obsequium fidei, hæreticus iudicatur; errat enim contra fidem catholicam, dum pro incerto habet ea, quæ certissima sunt.

Nec obstat dubitandi ratio suprà adducta,

PROBATA
DEFINITIONE
EXPOSITA
TITULO

9.
TRADITIO
TITULO
PROBATA
DEFINITIONE

10.
quod

DISSOLVITUR
DE
BIBENDI
RATIO.

quà mori Can. lib. 22. de locis, cap. 9. Sà in
sanctis, verbo *Hierosol.* num. 1. & alij citati à
Diana part. 2. tract. 16. res. 51. affirmant,
dubium in fide infidelem non esse. Sed pro
hujus difficultatis solutione sciendum est, præ
sentem textum procedere in dubio, seu dubitan
te voluntariè, & deliberatè; qui enim dubit
et scrupulis involuntariis impetitur, sicut non
peccat, ita nec fidem amittit, quæ sine peccato
non destruitur, ut docent auctores suprà laudati:
& huius rei manifestum argumentum est, quod
scilicet nec ipse errans per errorem involun
tarium, & inculpabilem in fide infidelis fiat, ut
patet in rusticis negantibus plures fidei veritates
ex ignorantia inculpata, qui non ideo infideles
sunt. Si ergo sic errans involuntariè, & mate
rialiter, ut Theologi loquuntur, in fide, infidelis
non est, à fortiori nec dubius, seu dubitans in
culpate, vel quia per motum primò primis, & in
deliberatos dubium occurrat, vel etiam quia non
facis ipsi proposita est ea fidei veritas, de qua du
bitat. Deinde sciendum est, dubium in fide dici
ei, qui citra aliquam veritatem, quæ per fidem
Catholicam credenda est, siue primaria, siue se
cundaria, siue directæ, siue indirectæ illa sit, du
bius fuerit; nec enim requiritur ut de tota fide
dubitet, quemadmodum errans in fide dicitur,
qui vel uni soli fidei veritati dissentit. Qui ergo
circa quamcumque veritatem sufficienter propo
sitam ut credendam per fidem Catholicam dubius
fuerit, is verè dicitur dubius in fide, & iuxta
textum hunc infidelis erit. Deinceps sciendum
est, dubium in significatione propria eum non
dici, qui quomodocumque suspendit assensum fi
dei; nam cum præceptum fidei non obliget pro
sempet ad credendum sine ullo peccato, con
sequenter, quin fides amittatur, homo fidelis po
test assensum cohibere: videris ergo requiritur
ad verum dubium aliquis actus; si enim meta sus
pensis actus non sufficit, iam in hoc dubio actus
ineluditur: quod probatur, nam dubius appo
nitur certo, ut omnibus in conspectu est ex ipsa
vocis notatione: sed omnes fideles certi dicuntur
in fide, etiam quando actum credendi non eli
ciant, siue quia non advertunt, ut in somno,
amnesia, seu animi diversione; siue quia etiam ad
vertentes cum videant se non obligari ad actum
credendum, eum omittunt: ergo per omissionem,
sen suspensionem utcumque actus fidei non dicitur
quis dubius. Quod etiam nobis constat ex fide
humana; non enim quis dicitur dubius de dictis
alterius eo præcià, quod actu ad ipsum non at
tendat, assensumque actualem ipsi non præbet,
volens se ad illa diuertere. His suppositis iam

accedam ad præsentis textus expositionem: Du
bium in fide aliquem actum positivum dicit, siue
directum, siue reflexum: vel ergo per talem
actum dicit expressè mysterium fidei esse dubium,
& sic manifestè opponitur veritati fidei; nam fi
des Catholica docet mysteria revelata non esse
dubia, sed certa, & infallibilia; iam verò si talis
actus positivus dicit mysterium à Deo revelatum
esse dubium, eo ipso asserit, posse non esse ita
ut revelatur à Deo, posseque aliter evenire: ergo
talis actus fide dubitans hæreticus est. Si verò
actus non directè de ipso mysterio revelato, sed
de ipso homine credidario, vel etiam de ipso as
sensu præstando reflexè asserit dubium esse, etiam
hæreticus erit, & resistens veritati fidei; nam fi
des docet, omnem assensum præcedentem ex ea
infallibilem esse, idemque censendum est de actu,
qui quis dubitatur de morio credendi, ita ut pu
taret, quod *serio moriamur fidei asserere præf.* nam
cum motum sit revelatio Dei, hoc esset revelatio
nem Dei fallibilem putare, quod hæreticum
est. Igitur omnis actus, qui necessariò intercedit
in dubio culpabili, & deliberato, contrahit
aliqui veritati fidei, & consequenter est hæreticus,
constituitque hominem infidelem.

Sed instabit eum auctoribus negantibus du
bium in fide esse infidelem, fidem amitti non
posse sine actu positivo opposito: rectè autem
contingere posse dubium culpabile sine ullo actu
nam qui in aliquo casu, in quo ex præcepto fidei
tenetur assentire positivo fidei, & non assentit,
peccat etiam si nihil contrarium ponat, ut patet
in aliis peccatis per omissionem: ergo tunc mo
ra suspensio, seu dubium etiam sine ullo actu in
venitur, quin fidem destruat, seu infidelem con
stituat. Respondetur enim ex suprà traditis, ta
lem suspensionem peccaminis quidem esse,
sed si non oriatur ex actibus positivis dubitanti
bus, non facere hominem dubium; nam bene
stat talis suspensio cum eo quod quis simul apud
se statuat: Si elicerem assensum exempli gratià de
Trinitate, infallibilem elicerem: quemadmo
dum rectè stat, me iudicare alium actum præcep
tum esse iustum, & sanctum, & adhuc à me sus
pendi. Nequit autem quis dici dubius in fide eo
præcià, quod fidem præceptam non eliciat, ut
suprà dixi. Unde inferitur à Auctoribus negantes per
dubium amitti fidem, intelligendos esse de dubio
ipso formali, & suspensivo parè; Auctores verò
affirmantes intelligi de dubio in causa, quando
scilicet quis suspendit assensum, in eo quod po
sitivè dubitet, modo supra explicato. Prosequente
latius Thomas Beus de offic. Inquisit. part. 1.
dubio. 13.

II.
DISSENTI
TUR ALLE
DIFFER
ENTIAL

C A P V T II.

Leo. Papa.

DE qua re quintidécimi capituli sermo conqueritur, & præsumptionem diabo
licam merito destruat; quia & nos illud veracium testium relatione compe
rimus, & multis corruptissimos eorum codices, qui canonici titulantur, Inveni
mus. Quomodo enim decipere simplices possent, nisi venenata pocula quodam
melle prælinderent, ne usquequaque sentirentur in sua via, quæ essent futura morti
fera. Curandum ergo est, & sacerdotali diligentia maximè providendum, ut falsa
ti codices, & à sincera veritate discordes, in nullo usu lectionis habeantur. Apocry
phæ

phæ autem scripturæ, quæ sub nominibus Apostolorum multatum habent seminarium falsitatum, non solum interdiciendæ, sed etiam penitus auferendæ sunt, atque ignibus concremandæ. Quamvis enim sint in illis quedam quæ videantur speciem habere pietatis, nunquam tamen vacuæ sunt venenis, & per fabularum illecebras hoc latentè operantur, vt mirabilium narratione seductos, laqueis cuiuscunque erroris involvant. Vnde si quis Episcoporum, vel apocrypha haberi per domos non prohibuerit, vel sub canonicorum nomine eos codices in Ecclesia permiserit legi, qui b Priscilliani adulterinâ sunt emendatione corrupti, hæreticum se nouerit iudicandum: quoniam qui alium ab errore non reuocat, seipsum errare demonstrat.

NOTÆ.

1. **L**eo.] Ita etiam legitur in prima collectione, *sub hoc tit. cap. 2.* sed inscriptionem, & litteram testitio ex ipsi epistolis Leonis, vbi *epist. 93. cap. 15.* repetuntur verba huius textus, prout ea in præsentî transcribo. In præsentî Leo scribit Turibio Episcopo Asturicensi, seu Asturienti; sed eum tres Turibij viri, & miraculis clari floruisse in Hispania illis quarto, & quinto sæculis Ecclesiæ, videamus de quo Turibio in præsentî agitur, eum omnes hæreticum Priscillianistam æquè damnauerint, vnde facile confunduntur ab scriptoribus. Et vnus fuit notarius nostri Leonis, & postea Episcopus Bracharensis, de quo Iulianus Archiepisc. in *chron.* anno 454. num. 247. ait: *Per hoc tempore Turibius sancti Leonis primi Notarius, paria Brigantium, saluti monachis post longas peregrinationes fecum multas adduxit religionis: ad Galliciam reuersus scribit ad Idacium, & Sponnum; Idacium, inquam, Episcopum Bracharensem, vt ibi consulat miserum Galliciam stanti, repulsaque tunc Priscillianistarum hæresi. Qui quidem Pontifex præfatus in Concilio Toletano, vt Legati Leonis. Cuius Notarij etiam meminit Lueratius Episcopus Bracharensis in exordio Concilij Bracharensis t. apud Loysium fol. 116. ibi: Credo autem vestra beatitudinis firmitatem nosse, quia eo tempore, quo in his regionibus nefandissima Priscilliana secta venena serpente, Beatissimus Papa vobis Roma Leo, qui quadragesimus fere exiit Apostoli Petri successor, per Turibium notarium Sedis sue ad-Synodum Gallicia contra inopiam Priscillianij sectam scripta sua direxit. Secundus fuit Turibius monachus Benedictinus, & Episcopus Palentinus, de quo Iulianus in *chron.* anno 545. num. 248. ait: *Turibius Monachus, cui anno Domini DXXXVI. dederat habitum sancti Benedicti, veniens ad Hispaniam fundat Monasteria: post factus Episcopus Palentinus. Hoc anno maledictio Palentini infestis hæresi Priscillianistarum, & Flaudis Nenis dictus, Cadrian vulgo, ciuitatem ipsam inundauit. Marcus Maximus in chron.* anno 531. fol. 183. ibi: *Turibius monachus, ad quem scripsit Antonius Pontifex Tolentanus, & monachus Benedictino sit Episcopus Palentinus, vel Palentinus. Tandem reuersus fuit Turibius Asturicensis Praefol ad annum vique 454. de quo ita legitur apud Iulianum Archiepisc. anno 454. numero 230. Sanctus Turibius Asturicensis Episcopus hoc anno moritur. In Martyrol. Romano, die xvj. Aprilis ita habetur: Palentie sancti Turibij Episcopi Asturicensis, qui opæ sancti Leonis Papa hæresim Priscillianij ex Hispania penitus prostrauit, clarisque miraculis in pace quiescit. Vbi expungendum esse verbum Palentie, iam notauit Tamayo à Salazar tom. 2. D.D. Gonzalez in Decretal. Tom. V.**

Martyr. Hist. die 16. April. Videndi sunt Sandoual in historia sancti Antonij Palentini, §. 4. fol. 25. D. Antonios Speleta in fundatione Ecclesiæ Asturicæ. numer. 64. Loysis in notis ad Concil. Tol. 2. Marquez in *orig. Herem. cap. 10.* §. 2. Acuña in *Hist. Brachar. lib. 1. cap. 57.* Huius sancti Turibio rescibit Leo in præsentî, vt aperit constat ex C. M. S. Ecclesiæ Asturicensis edito à Tamayo *supra*, vbi ita habetur: *Fuit igitur hic Beatissimus vir, sicut compertum vtraciter habemus, natum Hispanum, Gallicia regionis indigena, Asturicensis ciuitatis Episcopus, cultor verbi Dei, contemptor sui, religionis amator, catholice veritatis assertor, idololatria subuersor, & errorum validus expugnator; præcipuè Priscillianistarum dæmoniacum hæresim, qua tunc temporis in Hispania velut pestifer nubes prelopenda non solum diuersarum urbium populos suffocaret lepra maculauerat, verum etiam (quod magis dolendum est) quendam sacerdotem, qui Ecclesiam Dei regere videbatur, corda inuasit, per quos alterum error tollendus erat, non sequeretur, nisi quo valuit, conderemur, & molerat Leonis Papa, qui eodem tempore Romana Ecclesiæ præerat, totis viribus expugnare curauit. Cum itaque præfatus Leo Papa pastoralis sui regimini curâ ad diuersarum Prouinciarum Episcopos epistolarem suam dirigeret scripta, inter ceteros huius Beatissimo viro Turibio tunc temporis Asturicensi Episcopo quondam epistolam vniuersos errores Priscillianistarum sexdecim capitulis continenter, destinare curauit. Quæ epistola acceptâ, protinus Romani Pontificis mandata ad debitum executionis assiduum perducere distinxit, ex quo aliqua Conclia in totius Hispania finibus indicta, sacilege Priscillianistarum dogmata conderuerunt, & Beatissimi Leonis doctrinam vt catholicam, & ab vniuersalis Ecclesiæ capite dinouatam, totis visceribus amplexi sunt. Quo cunctis, vt per aliquam temporis inuercapitulum flagrantia hæreticorum perfidia deliresceret.*

b Priscillianij.] Priscillianus Hispanus, familiaris nobilis, diues, acer, siccus, eruditus, prauo studio corrupti optimum ingenium: dum ceter laicus, & hæresi infectus, Abulæ Episcopus clam factus est: ex omnium hæreticorum sententia hæresim hausit, vt refert Scouerus Sulpitius lib. 2. *secunda historia, in fine.* De hac hæresi Priscillianistarum extat consultatio Orosij ad Augustinum, & eius ad Orosium excellentissimum responsum, & damnata fuit hæc hæresis in duobus Concilijs Gallicie, & Tarascon. memioeruntque eius Vigilius Papa *epist. 1. cap. 1.* Concil. Bachi. t. in princip. & can. 5. & 6. 7. 13. & 17. quorum verba refert Aot. August. in *epist. iuris lib. 11. tit. 36.* & regula fidel contra ipsum repetita fuit in Concilijs Tol. 1. 2.

let. I. & Biscar. I. quia pullulante iterum harrasi noua exstirpacio adhiberi debuit.

COMMENTARIUM.

3. **G**enerale est axioma, videlicet cum quis potest alios ab errore retrahere, & non reuocat, seipsum erate demonstrat. Probata textus in cap. error. cap. confensio. 83. dist. cap. qui confensit. 51. q. 3. cap. qui potest. 23. q. 3. cap. praterea. 23. q. 8. cap. tam sacerdoti. 24. q. 3. cap. si ea 50. 23. q. 4. cap. quanta. 47. de sentent. excom. cap. 3. eod. tit. lib. 6. cap. fide dignum. 5. illud, de homicid. l. scienciam, ff. ad leg. Aquil. l. 2. §. 1. cum l. 2. & 4. ff. de nozal. l. 6. ff. de re milit. & sane parentale est, & decantatum illud Seneca in Troade: Peccare qui non prohibet cum potest, inbet. Cui congruenter, seiteque consentiunt Plato in suis legibus, lib. 9. ad finem: quia xque puniti vult, qui aliorum iniustias cum prohibere possit, non prohibet, ac is qui facit. Carnotensis epist. 137. Nec caret natio suspitionis acule, qui manifeste facinori desinit obuiare. Cassiodorus lib. 2. var. cap. 36. Atobius lib. 2. aduers. Gen. Cum non prohibenda quod oportuerat prohiberi, celsianus crimen fratris proprium, & reuocacione dissimulatione permiserit prius. Et lib. 4. cap. 28. Quisquis patitur peccare peccantem, in vires subministrat audacia. Saluianus lib. 7. de prouid. ibi: Potestas quippe maxima, & potentissima, que inhibere scelus maximum potest, quasi probat debere fieri, si sciens patitur perpetrari; in cuius enim potestate est prohibere si non prohibet, ea profecto inbet agi, qua non prohibet adimpleri. Seneca in Hercule Furcise: Qui non veras peccare, cum possit, inbet. D. Greg. lib. 32. Moral. cap. 5. Inflammas quippe corda iustorum, cum

non corrupta suspiciunt alla malorum; eorumque culpa se particeps credunt, quod iniquitatis crescere silentio permittunt. Alia in eandem sententiam eumulant Tiraquel. de penia caus. 44. Valenzuela contra Venetis, p. 5. num. 136. Marquez lib. 1. Gubern. Christi. cap. 30. §. 3. M. Magerus de aduocat. armat. cap. 14. num. 153. P. Greg. lib. 2. de republic. cap. 1. Cabretos de Auendano de pana tripli. cap. 1. Solorzano de portu. lib. 1. cap. 1. & tom. 2. de iure Ind. lib. 4. cap. 5. num. 6. & embicm. 70. Amaya in l. 3. num. 16. C. de con. largit. lib. 10. Ill. D. Fraue. Ramos in synag. de Episcopis. Luffi. propos. 3. num. 75. Sed cum in presenti non agatur de quocunque errore, sed de errore fidei, ut ex integra textus constat, de eo tantum dissentendum est, & discrimen est constituendum inter personas, que hereticos non reuocant ab excoisibus, & puniunt, quibus id competit ex officio, ut sunt Episcopi, & Inquisitores, quibus specialiter exstirpacio haresum commissis est, ut si in derelinquendo fidei catholice negligentes fuerint in inquirendis, & puniendis hereticis, adeo seuerè puniendi sunt, ut ab Episcopali dignitate, & officio amoueantur, cap. excommunicamus, c. 1. §. volumus, hoc tit. & inter eas quibus ex officio id non competit, ut sunt ceteri fideles, qui tenemur sub poena excommunicationis hereticos denuntiare, iuxta constitutionem Gregorij IX. quam refert Peña p. 2. Directorij, in presenti. Nec licet prius vi correptione fraterna, seu charitativa monitione, que in aliis delictis precedere debet, iuxta tradita in cap. qualiter, de accusat. docet Peña in presenti, & plura de hac denuntiatione congerunt Santarellus de haresi cap. 9. dub. 5. Suarez de fide cap. 20. sect. 4. num. 11. Casus de offic. Inquisit. p. 2. tit. 9. §. 4.

CAPVT III.

^a Augustinus de fide.

Firmissime tene, & nullatenus dubites, omnem hereticum, vel schismaticum, quamuis multas elemosynas faciat, vel etiam pro Christo sanguinem fundat, cum diabolo, & angelis eius æterni ignis incendio participandum, nisi ante finem huius vitæ Catholicæ fuit incorporatus & redintegratus Ecclesiæ. Et post pauca: Omni enim homini, qui Ecclesiæ Catholicæ non tenet unitatem, nec baptismus, nec elemosyna, quantumlibet copiosa, neque mors pro nomine suscepta Christi, proficere poterit ad salutem.

NOTÆ.

1. **A**ugustinus.] Ex eodem Sancto citantur hæc verba ab Auselmo lib. 8. in fine Decreti, luone p. t. Decreti, cap. 4. & 39. & in t. collect. sub hoc tit. cap. 3. & repetiuntur verba hæc inter opera D. Augustini in lib. de fide ad Petrum Diaconum.

b Et redintegratus.] Nam dum peritux est in ipsa hæresi, extra Ecclesiam est, ut probat Ric-

ciulus lib. 3. de iure person. cap. 2. quare nullo modo ante reconciliationem decedens saluari potest.

c Baptismus.] Autem ab eo susceptus, aliis hereticus non esset, ut probauit supra in cap. 1.

d Pro nomine Christi.] Sed falso, & cum errore suo, ut contingit sæpius Lutheris, & Caluulisti, qui comburi pariterunt non abiurato suo errore, immò pro eius defensione; vnde credunt pro Christi nomine martyrium pati, quod illis nullo modo prodest.

CAPVT IV.

Gregorius Anastasio Antiocheno.

PRætereâ dum de sanctæ Conciliorum custodia tua fraternitas loqueretur, sanctam Epheſinam Synodum primam se custodire profeſſa eſt: ſed quia ex annotatione hæretici codicis, qui ad me ex regia vrbe tranſmiſſus eſt, agnoui per hoc, quod quædam capitula catholica cum hæreticis fuerant reprehenſa, quia quidam illarum Epheſinam primam Synodum in eadem vrbe exiſtimate, quæ quondam ab hæreticis traditur eſſe compoſita, omnino neceſſe eſt, vt charitas veſtra eandem Synodum apud ſanctam Alexandrinam, atque Antiochenam Eccleſiam requirat, & qualiter in veritate habeatur, inueniat. Vel ſi placeat, hinc dirigemus, quæ ab antiquitate ſeruata in ſcripſis habemus: illa enim Synodus, quæ ſub primæ Epheſinæ imagine facta eſt, quædam in ſe oblata capitula aſſerit approbata, quæ ſunt Cœleſtij, atque Pelagij prædicamenta: & cum Cœleſtius, aique Pelagius in ea Synodo ſint damnati, quomodo poterant illa capitula recipi, quorum damnabantur auctores? Quia verò peruenit ad nos in Orientis Eccleſiis nullum ad ſacrum ordinem niſi ex præriorum datione peruenire, ſi ita eſſe veſtra fraternitas agnoſcit, hac primam oblationem omnipotenti Deo offerat, vt à ſubiectis ſibi Eccleſiis errorem ſimoniacæ hæreſeos compeſcat.

NOTÆ.

^a *Gregorius.* Ita etiam legitur in prima collectione, ſub hoc tit. cap. 4. & exiſt textus hic inter epistolâ ipſius Gregorij lib. 7. in dist. 2. epistol. 48. ex qua in poſteriori parte reſtituo litteram huius textus.

^b *Epheſinam Synodum.* Synodus Epheſina Oecumenica celebrata fuit anno Chriſti 431. auctoritate Cœleſtini Pontificis, & fauente Theodoſio Iunioris Imperatore, vbi pluſquam ducenti Episcopos ex Oriente conuenerunt, & præſuit vt Legatus Romanus Pontificis Cyrillus Episcopos Alexandrinus. In hoc Concilio condemnata eſt præcipue hæreſis Neſtorij, ponens in Chriſto duas perſonas, humanam & diuinam; vnde eliciebat, Beatiſſimum Virginem Mariam dei non debere Dei genitricem, ſed Chriſti genitricem. PP. autem illi ſanctiſſimi diuino aſſaſti lumine ſtatuerunt, eam verè dei, & eſſe matrem dei, quæ verè genuit Deum; & ex tunc in ſalutatione Angelicâ addita ſunt illa verba: *Sancta Maria mater dei era pro nobis*, vt reſeruit in ipſis actis, & narrat Baronius, & Corſolanus dicto anno 431. Idem Corſolanus in ſumma Concilii ad ipſum Conciliū Epheſinum.

^c *Hæretici codicis.* Magna enim cura fuit ſemper hæreticorum, Eccleſiæ decreta, ſanctorumque Patrum ſcripta ſuis ſententiis prauis immixtis, aut additis adulterate, & corrumpere. Sanctus Clemens de his mixtis, quibus hæretici ſua ſcripta corrumperant, conqueratur, vt reſert Epiphanius hæreſi 34. & hanc ſortem ſcriptis ſuis obigſſe queritur Dionyſius Corinthius apud Euſebium lib. 4. hiſtor. cap. 22. & corruptum ad hunc modum à Neſtorianis fuiſſe ſancti Athanaſij epistolam ad Epiphaniū, narrat ſanctus Cyrillus: priorē ad Suceſſorē epistolam ab Ieonoclaſtis ſancti Epiphaniij ſcriptam, corruptam multis demonſtrat D. D. Guezal, in *Deſerual.* Tom. V.

alter Epiphanius in Synodo Nicæna 2. *allien.* 6. Flores ſimiles apud Sanctos Patres antiquos, & recetiores, ſuppoſitiones, & adulterationes congeſſerunt Antiochus Auguſtinus in *epi.* inu. lib. 11. tit. 25. Grethæus in *lib. de iur. & mor. prohibendi malos libros*, lib. 2. cap. 5. Theophilus Raynaud. in *tract. de bonis & malis libr.*, part. 1. t. *erubem.* to. num. 183.

^d *Cœleſtij atque Pelagij.* Cœleſtius Pelagij ſectator fuit, vt reſert D. Auguſt. de *hæreſibus* cap. 88. ibi: Pelagianismus eſt hæreſis hoc tempore omnium recetiſſima, à Pelagio monacho exorta, quem Magiſtrum Cœleſtium ſe ſequens eſt, vt ſolamur etiam Cœleſtium etiam nuncupamus. Impia dogmata Cœleſtij, & Pelagij valide conſutauit idem Sanctus in *lib. de graua Chriſti*, & in *lib. de peccato origi.* & damnata fuerunt in Concilio Mileui, ſub Ianoentio I. & in hoc Epheſino cap. 9. can. 1. his verbis: Quia verò oportebat eos, qui ob aliquod eccleſiaſticum, vel corporis impedimentum, in regione, vel ciuitate ſua deſerui, ſacra Synodo interſeſſe nequinerunt, ea non ignorare, quæ de ſchiſmaticis ſunt deſinita, notum facimus veſtra ſanctitudini; quod ſi prouincia cuiuſpiam Aſteropolitani, à ſacra, & Oecumenica Synodo deſciſſent, deſciſſioni conciliabile ſeſe addixerit, vel poſtea quoque cum Cœleſtio ſenſerit, vel etiam non ſenſit, huiusmodi contra prouincia ſua Episcopos nihil omnino decernere poſſe, quod ſacra Synodo ab omni conuentione eccleſiaſtica ſecluſus, nullum deinceps præſtari, & autoritatem exiſtit. Hæc ibi: ex quibus conſequitur, verè dei in hoc capite, quod interpretatur, Cœleſtium & Pelagium in Epheſina Synodo eſſe damnatos; & etiam apparet malè Ananiam, Panoritanum, Socinum in præſenti, ex hoc textu deduxiſſe, Pontificem poſt in Concilio condemnari, eum in Concilio Epheſino non Cœleſtium, ſed Cœleſtium damnare. De erroribus Cœleſtij, & Pelagij agitur in variis Conciliis, quorum verba reſert Antonius Auguſtinus in *epi.*

epist. lib. 11. tit. 39. & 40. & refert post alios
Salettes.

[e Capula.] Vbi continebantur dogmata cer-
lelij, & Pelagij.

[Ad sacrum ordinem.] De simonia in sa-
ceptione Ordinum commissa, egi in cap. 1. de
simonia.

COMMENTARIUM.

4.
CONCLUSIO
TRADITUR,
ET PROBA-
TUR.

EX frugimento huius epistolae compilato sub
hoc titulo de haeticis, communiter deducitur
ab Interpretibus assertio, damno auctore
ex causa haeticis, damnata censeri eius scripta.
Ita repetentes omnes in praesenti, iuxta quoniam
mentem conclusionem deduco: Scripta haeticis
per Ecclesiam damnata, damnata sunt, & ita con-
fignenda, aut comburenda. Probat eam textus in
can. 60. *Appl.* Nicena Synodus 2. can. 9. ibi: *Laicus*, vel monachus excommunicatus, Episcopus,
Presbyter, Diaconus depnatus, qui occu-
tatoris libros haeticorum. Et cap. 3. vbi speciali-
ter de Caelelij, & Pelagij scriptis agitur, 15.
dist. cap. 1. iuxta integrum, hoc titulum. Leo Magnus
epist. 91. cap. 16. ibi: *Diffing tractatus ven-
tatur, licet auctor respuatur.* Innocentius II. epist. 2. ad Sampsonem Archiep. Baurigen. ibi: *Mandamus*
quatenus libros erroris Petri Abolardi fa-
ciatis igni comburi. Concilium Brachar. can. 17.
Adrianus Papa in epist. ad Basilianum Augustum,
in actione 8. Synodi 8. ibi: *Omnia scripturae*
cremari igne contemplationis cunctis, ne unus qui-
dem apex, aut iota inde superfit. Nicolaus I. ad
consensum Bulgarorum, cap. 103. Concil. Lateran.
sub Leone X. sess. 106. Constantiensis sess. 8.
Trident. sess. 18. & 25. leg. damnata 8. leg. qui-
cumque, Cod. de haeticis, leg. 34. Cod. Theod. eod.
tit. leg. quoniam, Res. de Epist. & clericis, leg. 10.
Cod. de Episc. eod. Alia Imperatorum edicta &
Pontificum decreta post illustrationem huius con-
clusionis congeruerunt Ant. August. in epist. iuris lib.
11. tit. 14. Crespetus in summa iuris Pontific.
verbi, *Haeticorum libri*, Calisto de infla haetic.
punit. lib. 2. cap. 15. & 16. Conradus Brunus
lib. 6. de haeticis, cap. 6. Ricciolus de iure per-
son. lib. 1. cap. 21. Gabriel Poterius de tollend.
malis lib. 3. Baptista Cardona lib. de expungendi
haet. Aulorum nominibus, Iacobus Grethfor-
tus in lib. de iure & more prohibendi libros haeticorum.
Theophylus Raynaud. tom. 11. in tract. 1.
de bonis, & malis lib. part. 1. erubescit 3. P. Greg.
lib. 2. part. tit. 6. cap. 7. & in cap. damnatus,
de summa Trinit. Fiesolus in cap. 1. §. 7. de
offic. Ordin. Coriolanus in summa Concil. ad
Concil. Armenica, anno 1433. Diana p. 11. tract. 1.
resol. 1. & tract. 8. resol. 62. Petrus Herodius
lib. 1. Penderel. tit. 2. Bellarminus tom. 1. comur.
lib. 3. de clericis, cap. 10. Simeanas de cathol. 38.
Fiesolus in cap. 1. §. 7. de offic. Ordin. Beyr-
linch. in theatro vitae hom. tom. 4. verbo Libri.
Suarez de fide dist. 20. sess. 2. Basil. de maxim.
in append. cap. 2. num. 6. I. Gothof. in leg. 14.
C. Theod. de maleficis. & in l. 34. de haeticis. Tho-
mas Delbene p. 1. de offic. Inquisit. dubit. 36. P. Mendo
lib. 2. de iure academici, q. 16. D. Ioseph. de Rectis lib. 8. epist. in l. cap. 13. P. Scologus
tom. 3. in Canonica, sess. 34. fol. 421. Decianus
lib. 5. tract. crimina cap. 48. Becanus in 2.2. cap. 15.
de fide. q. 8. Cobelius in not. Cordin. cap. 15.
emerge. 10. Fortunatus lib. 3. rer. quid. cap. 14.

Coriolanus in *brutis*, anno 1545. P. Menochius
lib. 2. pol. cap. 3. num. 5. Calisto Palao tom. 1. *oper.*
moral. tract. 4. disp. 2. post. 10. Bordonus tom. 1.
sacri Tribun. cap. 14. Photius in *nocturnis*. tit. 12.
cap. 3.

Sed pro dubicand ratione in praesenti multa
tionem ita insurgo: In libris haeticorum multa
bona continentur, quibus vi possumus, cum
non modice vitare. Tertullianus enim ipsis
libris, quos aduersus Ecclesiam scriptis, vi de
pudicitia, de fuga in persecutione, de monogamia,
& exhortatione castitatis, quamuis ad
Christianos vsus, & dogmata copia secularis
peropposita suppeditat, Eusebium Caesariensem
Arrianorum significum appellat D. Hier. cuiusque
Epiphanius in *Synodo 2. Nicena*, action. 6. pro-
batque Cano lib. 11. de locis, cap. 6. magno ta-
men Ecclesiae damno scripta eius eripuerunt.
Quid dicemus de Origene, & Nouatian libris?
versantur enim omnium manibus cum fructu;
etiam in eis maculae, & errores non vno in
loco superant, contritque Nouatianum fuisse
aperte haeticum: & eodem nomine appellatur
Origenes io Concil. Lateran. sub sancto Martino,
consul. 5. anathematizatus 18. & eodem modo no-
tatur à multis Patribus, vi refert Cassiodorus de
dinis. inst. cap. 1. & nihilominus D. Hieron.
in epistola ad Paulum Concordientem Nouatianum
librum ad se transmissi postulat, vi cognitis
eius vitis, libentius sancti Cypriani antido-
tum biberet: unde in librorum lectione frequen-
tium est coosulum Theodoret lib. 3. Polymorphia
his verbis: *Imitare ergo apes, & tot bene, & ferra*
Scripturae prava, & sanctorum Patrum pulchra
flores memo circumspiciant, sicut fons in se conuocat
quod sibi herbam immittit, nec dulcem nec asce-
lentem, cuiusmodi est hic Apollinaris, & Eusebius,
habere tamen aliquid inuito ad nos conficiendum: non
est alium, quod bonum est facere, & quod verum
est, relinquere. Etenim apes sapa in venentis fru-
ctibus insidentes, quod est quidem permiscuum, re-
liquunt; quod est vere sibi accommodatum, acci-
punt. Hae tibi quidem, o amico, iure frateris au-
ciaula consula. Plura in hanc rem congegit Clau-
dianus Eusebius post commentarium epistolae ad
Titum in lucubratis de telis lib. 3. sess. 1. Ergo non
omnes libri Auctoris damnati confignendi, &
comburendi sunt. Accedit, nam Ecclesia tolerat
libros Gentilium, & Iudaeorum: ergo & haet-
ricorum scripta tolerare debet, cum deat e-
adem ratio improbationis in aliter, ac in istis.
Augeat haec dubitandi ratio et testimonio
Dionysij, & Hieronymi; nam Dionysius, vi
scribit Eusebius lib. 7. hist. cap. 6. Neophorus
lib. 6. rap. 8. & 9. cum reprehendendat, quod
libros haeticorum legeret, respondit se vili-
oem habuisse, quia libi dicebatur, & lege omnia
qua in manus tuas veniant; valebis enim ad em-
nia reprehendere, & reprobare. Hieron. in epist. 152.
ad Alexandrum Adimantum, inquit se legere libros
Haeticorum, vi bona inde excipiat, etiam si
sciat aliquo propetia de se murmure. De
Theophilus antiquo Doctore idem refert Soctates
lib. 6. hist. cap. 15. Denique in Concil. Car-
thag. 4. can. 16. praecipitur Episcopis, vi libros
Haeticorum legant post necessitate, & tempore.
Hic non quolibet lectione librorum Haetico-
rum prohibenda est.

Hac tamen diligendi ratione minimè obstan-
te, vera est praesens assertio, quae probatur ex
antiquis,

antiqua, perpetuæque consuetudine, non solum Christianorum, verum & diversarum gentium, comburendi libros impotestate lectionis. Protagoræ libros ab Atheniensibus crematos refert Suidas, eo quod aliquando orationem sic esset exortus: *De Diis scire non possunt, neque an sint, neque an non sint*. Et Cicero 1. de natura Deorum, ibi: *Nam Abderitis quidem Protagoras, cuius à te modo memio facta est, Sophistes temperatissimis illis vel maximis, cum in principio libri suspensisset: De Diis neque an sint, neque an non sint; ab eo dicere Atheniensium verba, neque agre est exterminatus, librique eius in concione combusti*. Idem refert Lactantius lib. de ira Dei, cap. 9. quod factum cum natus Sathiaris lib. 5. Polycrati. cap. 4. loco Protagoræ, legit Pythagoram. Similiter & de libris Tullij de natura Deorum, eo quod Atheismus induci per eos aliqui censabant, abolendos iudicabant: refert Arnobius lib. 3. adversus gentes, num. 5. ibi: *Cumque alios audiam mustare indignanter, & dicere, oportere statim per Senatum, ut aboleantur, ne vestigiis opprimatur auctoritas*. Similiter Lilius lib. 5. decad. 3. refert Senatum addidisse libros quosdam cremandos, à traicente aratum ad Numæ sepulchrum repositos; quia equalitati religionem, ac cultum nimium læderent. Idem ex Varone tradunt Lactantius lib. 1. divinus. instit. cap. 22. D. August. lib. 7. de civit. Dei, cap. 34. & 35. hæc probat studium & curam Gentium in damnandis libris, ex quorum lectione lædi poterit, Theophilus in dist. tract. de bonis & malis libris, errorem. 4. num. 32. Lippius ad 4. annal. Taciti, Forner. 3. rer. quæd. 14. inque immensum editum tulit Diocletianus de comburendis libris Christianorum, quod refert Ambrosius lib. 3. adversus gentes, de quibus libris nonnulli accipiunt textum in leg. 4. §. 1. ff. familia eriscenda, ubi Vipianus docet, libros improbatæ lectionis, ut mala medicamenta in iudiciis familie eriscenda non veioit, nec inter hæredes dividi, sed esse corruptenda. Quam lectionem retinet D. Ioseph. de Retis lib. 8. epistol. cap. 13. fuit enim infestissimas Christianorum Religionem Vipianus. Quare ex eius libro 8. de offic. Proconsul. ubi de penis imponendis Christianis agebat, nulla supersunt vestigia in libris Pandectarum; eius tamen odij extant vestigia in leg. si in aliam, ff. de offic. Proconsul. leg. contrarius 13. de officio Prefecti, leg. 2. ff. de extradem. crimin. notavit eruditus Ramirez de Prado in Penecont. cap. 36. Ita textum in dist. leg. 4. §. 1. accipiunt Baldinus de editis pre Christianis, fol. 111. Mornacius in eod. textu, Baronius ante 56. Sed ipse Batonius anno 302. Vipianum refert ad libros magicos, mathematicosque, qui etiam comburendi erant, ex eodem iure. Paulus lib. 5. sentent. titul. 23. leg. mathematicis 10. Cod. de Episcop. aud. leg. damnatus 6. §. nec vero, Cod. de heretic. leg. 34. Cod. Theodof. eod. titul. Novel. 41. Insuper. 31. Phocias in novem. tit. 12. cap. 3. & iussu sæpe fuisse à Senatu Magistratibus, ut huiusmodi libros conquirerent, eosque cremarent, legitur apud Liliam lib. 29. Dion. lib. 34. relaxas à Fornerio lib. 3. rer. quæd. cap. 14. Concretariusque per Adiles, modò per Trienviros, testantur Tacitus lib. 4. annal. & in vita Agricola, Seneca lib. 10. contron. in princip. unde D. Augustin. de scriptoribus ma-

D.D. Gervai. in Decretal. Tom. V.

gicus agens lib. 1. de consensu Evangelist. cap. 9. ait: *Non solum disciplinam Christianam, sed ipsam terræ reipublicam administrationem iure eis condemnare*. Similiter Antiochus potans libros veteris Testamenti suæ religioni noxios, editio pernali eos prohibuit, ut refertur lib. 1. Adachab. cap. 1. Alia diversarum gentium exempla refert Tiberius Decian. lib. 5. tradit. crimin. cap. 48. Beyerlinch. d. tom. 4. verbo Libri, Gerthetius d. lib. de iure prohib. libros, Lippius ad Tacitum lib. 4. annal. 78.

Sed ut ab Ethnicis ad Catholicos perveniamus, constat in Ecclesia Catholicis hunc semper morem fuisse comburendi libros hæreticorum: nam actum Apost. cap. 19. refertur, quod multi credentium veniebant confiteentes, & annunciantes adus suos: multi autem ex eis, qui fuerant curiosi sectati, contulerunt libros, & combussertunt coram omnibus. Vbi curiosa pro magicis artibus ponuntur, quæ etiam artes curiose dicuntur à Palladio historia Lusitana sect. 17. ut divinandum curiositas in leg. 5. Cod. de maleficiis: & D. Clemens lib. 1. consilium. Apost. cap. 7. scribit, à Apostolo prohibuisse fidelibus libros Gentium: & sequentibus sæculis PP. Concl. Nicæn. libros Anij igni tradiderunt, ut refert Nicephorus lib. 8. hist. cap. 18. postea Sanctus Chrysolomus suffragante Theodosio Imperatore præcepit, ut pullis ex vrbibus Montanistis, & Eunomianis, eorum Codices comburentur, & eo Saeculo suggesterit Theodosius edicti constitutionem, quæ extat in leg. 34. Cod. Theodof. de hereticis, ubi notavit I. Gotthof. Faciunt textus in leg. 8. & 16. Cod. de heretic. leg. 3. Cod. de summo Trin. leg. 10. Cod. de Episcop. aud. leg. xli. Cod. Theodof. de malefic. Nec multò post Ephesina Synodus Nestorij libros curavit ubique flammis addici, datis literis ad Theodosium, quæ extant p. t. Concil. Ephesin. cap. 22. & D. Augustin. in psalm. 61. de quodam Christiano, qui fuerat magus, penitentiam aditum ait: *Pecatus fuero: eductus incendendus, quibus fuerat incendendus, ut illis in ignem missis, ipse in refrigerium transiret*. Manichæorum etiam libros à sancto Leone incensos refert Prosper Aquit. in chron. ante 446. & similiter Gelasius non solum edidit constitutionem, quæ extat apud Gratianum in cap. sancta 15. dist. quâ scripta hæreticorum, & apocrypha damnantur; verum & Manichæorum libros ante ædem sanctæ Mariæ concrematis refert Anastasius Bibliothec. Idem Anastasius in Hadrian. I. I. librum actorum Phocij aduersus Nicolaum fuisse combustum narrat, & in 8. Synodo, actione 8. idem Hadrianus decrevit, omnia exemplaria cremari igne, contemptamque censuram, ne unus quidem apex, aut ita inde sumptis. Innoc. 11. epist. 16. annuens petitioni Concilij Rhemensis libros errorum Petri Abalardi incendio damnari; & combustos fuisse à Legato Romane Ecclesiæ testatur Sanctus Bernardus epist. 193. Libros Davidis de Dinanto, tanquam hæreticos sententis, exustos fuisse in Concilio Provinciali Parisiensi celebrato, ex Rigotido, & aliis refert Spondanus in emendat. Barroij anno 1204. numer. 18. & similiter in Concil. Rom. interdictam esse lectionem librorum Viclef, refertur, & confirmatur in Concil. Constantienf. sess. 8. & postea Concil. Later. sub

P 3

Lione

7.
Da tabulæ
tit apud
Catholici
Cof.

Leone X. *sess.* 10. libros hæreticorum omnino proscriptis. Tandem Tridentina Synodus quorumcumque hæreticorum libros, tanquam male missis certam sementem excothinnavit: firmavit eandem prohibitionem suis constitutionibus Jul. III. Paul. V. & Pius IV. Nec reſt Spondanus in d. continui. Baronij, anno 1550. num. 1. scribit primam legem generalem aduersus libros hæreticorum latam esse eo anno à Iulio III. cum iam idem prohiberi fuisset variis constitutionibus, quæ iuxta temporis ſeſiem retractantur Corſolusius in *Breuiario chronol.* anno 1545. Grethæſius d. lib. de iure & more prohibendi libros, Theophilus Raynaud. d. part. 1. c. 10. 11. 3. Hæc autem confilio librorum olim fiebat per Episcopos: & quidem libri Atrij ab Episcopis dampnati fuerunt, vt reſert Nicephorus lib. 8. cap. 18. & poſtea Imperator Conſtantinus editio publico flammis addixit. Similiter Eutycheſis libros damnantur Episcopis in Concilio Chalcedoni. Idem de Origenuſ ſcriptis reſert Severus Sulpicius *dialog.* 4. cap. 2. & in Concil. Tolet. 3. Patres Hiſpanie damnant deſtabilem librum ab Atrianis editum. Probat Fieſeleſius in cap. 1. §. 7. de offic. Ordin. Et licet ante hæreſim damnantur ab Eccleſia non poſſet Princeps ſæcularis editio ſuo libros flammis addicere, tamen poſt damnationem Eccleſie laudabiliter faciant ipſi Principes, dum legibus ſuis huiusmodi librorum abolitionem ſtatuant, vt fecerunt Imperatores in legibus ſupra citatis, & l. 34. *Cod. Theodoſ. de hæreſ. l. penult. C. de mathematicis, l. ult. C. Theodoſ. de malefici. Nouell.* 41. l. 3. §. 3. *C. de ſumma Trinit.* l. 10. *C. de Episcopis.* aud. l. 6. *C. de hæreſi.* & probat Riccius lib. 5. de iure perſon. cap. 22. *per iurum;* præcipua tamen cura conſigendi, dampnandique libros hæreticorum ſemper Pontificis fuit, vt fecerunt Gelaſius I. Leo I. Gregorius IX. Innocentius IV. Alexander IV. vt reſertur Fatimæ de heretiſ. q. 120. §. 1. F. Ferdin. Caſtillo p. 1. *Hiſtor. Ordin. Predicat.* lib. 2. cap. 53. & §. 5. Petrus Gregor. lib. 2. de Repub. cap. 7. n. 4. & tandem Sixtus V. tanto negotio Cardinales alioque præſcit, & congregationem inſtituit pro indice librorum prohibitorum, de qua egit Cohelius in notis Cardin. cap. 25. *congregat.* 10. In his autem tegnis, vbi adſit Inquiſitor Generalis, ad eum quoque ſpectat facultas prohibendi libros, qui ſunt contra religionem Chriſtianam, & bonos mores, vt conſtat ex ipſo indice, in præſatione, §. 1. *verò, regul.* 1. 4. §. 6. 7. 8. & 10. ibi: *Librorum ſic Episcopis, aut Inquiſitoribus Generalibus, ſeu ſimilibus ſignatæ, quem habent eas etiam libros, in hiſ regulis permitti videntur, prohibere, ſi hoc in ſua regni, aut provincie, vel diocęſis expedire iudicauerint.* Proſequuntur alia plura de pœnis tenentium libros damnatæ lectionis, & de illis, qui poſſunt concedere licentiam legendi libros hæreticorum, Mendo, Bordonus, & Caſtophalo ſibi proximi, Peña ad *Exmerium*, in præſenti.

8.

TRADITVS
SATIO DA-
GLENDA.

Ratione etiam probatur, prohibendos, & abolendos eſſe Hæreticorum libros; ſi enim vitus ſermo hæretici, eluſque alloquium deuiandum eſt Chriſtiano, quia ſcripti vt cancer ſermo hæretici, auctore Apoſtolo, & docentibus D. Cyprianuſ *epiſtol.* 40. & §. 55. ad ſinem, S. Leone *ſermon.* 28. quævis magis ſcriptura, quæ non volat, & momento dilabitur, vt verbum ore prolatum, ſed perſiſtit, veluti pœronis quidam ſons nefariæ doctriæ in infinitum ſimul morta-

les, ad quos vitæ otatio nunquam perueniſſet, cum in libro perſiſtat anima ipſius hæretici. Pulchre Themiſtus oratione 13. ibi: *Animum ego ſapienſis hominis illius ſapienſiam eſſe arbitror, ac mentem, atque ſermonem; ſepulchra verò huiusmodi animarum libror, ac ſcripta, in quibus tanquam in monumentis recondita eorum reliquia ſeruantur.* Inde libri hæreticorum ſupprimuntur, non ſolùm propter falſam doctriam quæ in eis docetur, ſed etiam ne remaneant hæreſis præuatiſ veſtigia, ſed flammis combuſta deprecant, *leg. damnatæ, §. nec verò, l. quicunque, §. mores, Cod. de hæreſi.* Et cum hæretici ex librorum editione non niſi impetiti vulgi plauſu expectant, æquum, & iuſtum eſt, vt per librorum ſuppreſſionem hæc inani gloriæ præuentur. Deinde nam libelli ſamoli in iniuriarum priuati hominis ſcriptis ſupprimuntur, & eorum auctores capitali pœna coërcentur, *l. 1. vni. C. de ſenſu libelli, l. lex Cornelia, §. ſi quis librum, ff. de iniuriis, leg. ob carmen, ff. de teſtibus, l. cum leges, §. de cui, leg. final. ff. de teſtamentis: probauit in can. 52. Concil. Liber. Ergo multò magis ſupprimi debent, & comburi libri editi in conuulſam Chriſti, & ſanctæ Mariæ Eccleſie. Alias adducit rationes Theophilus diſt. 11. in tract. de bonis & malis libris, part. 1. c. 10. 3. Reſt ergo in præſenti docet Gregorius, damnatis Cœleſtiis, & Pelagio, eorum falſa dogmata damnata, & improba eſſe.*

Nec obſtat dubitandi ratio ſeptè aduſta, quæ quoad ſubduccendos huiusmodi libros vno tempore nonnullis vſos fuiſſe, teſtatur Thomas Vvaldenſis in doctrinis præmiſſis ad Doctrinale ſicci antiquæ, *diſt.* 16. & poſtea ab alijs in Belgio impuſerit, & dolore iactatum ſcribit Caſtro lib. 2. de iuſta hæreſi. *puni.* cap. 16. Nam parum reſert in libris hæreticorum aliqua vitia reperi, quæ æquiparantur conſiſſoni veritatis demoniorum, vt inquit D. Auguſtinus in cap. ſi quid veri, 37. *diſt.* ſum prætereſſum, quod niſi eſt in libris hæreticorum, ſunt eloquentiam, ſue martium conſideres, quod elegantius à pluribus Catholicis non ſit ſcriptum, vt colligitur ex ſuæcto Irenæo lib. 3. cap. 4. & probat Caſtro lib. 2. de iuſta hæreſi. *puni.* cap. 16. Riccius lib. 5. de iure perſon. cap. 21. num. 16. vera, vel bona ab hæreticis dicta, non ſunt ſimpliciter bona, ſed permixta, vt ita ſub ſpecte boni falſa legentibus valeant propinari.

Impia ſub doli veſte venena latent.

Vt conſiderat D. Chryſoſtomus in *Matthæum* homil. 47. Beda ad D. *Matthæum* cap. 1. & in comment. ad *Matthæum*, in princip. quod aptatur illud *Virgili:* *Qui legitiſ flores, & boni naſcentia ſagra:*

Frigidus (i. pueri fugiat hinc) lætæ æneis in herba.

Quare propter commixtionem lætæ iuſtis ratione huiusmodi ſcripta reprobantur exemplo falſe monetæ, quæ quauis continet aliquid boni, quia tamen continet etiam malum, reprobantur, *l. 1. & 2. C. de falſa moneta, eleganter, §. qui reprobantur, ff. de pignor. 23.* bonum enim commixtum cum malo, non dicitur amplius bonum, argumento legis adu, §. cum quis, *ff. de acquir. danti.* Facit nam non poſſet dici bonum, vel verum, quod eſt ordinatum ad fruendum malum, vel falſum, quia finis eſt ille, qui in rebus auerſitur, *l. cum furioſus ff. de iudiſiis, non intelligitur, §. quando ff. de iure ſiſi.* Vnde prudenter Magnus Carolus V. in editio ſuo *Vormaciens*, ſcripta Lutheri abolere luſit.

luisse, tamen aliqui obtenderent esse in scriptis illis pleraque bona, his verbis: *Non obstat, quod in illis etiam aliquæ bona ad sciendas simplicitatem mentis immixta essent. In quo præter ipsam Sedis Apostolicæ sententiam etiam laudatissimam ceterum PP. infirmam, & consuetudinem emendo exequendum ducimus, qui Arrianorum, Priscillianistarum, Nestorianorum, Eusebianorum, & aliorum hæreticorum libros, & in illis contenta omnia, tam bona, quam mala promiscuè excusserunt, & amibilarunt, nec id immerito. Nam si optimi quoque cibi omnes rationis veneni, qui humanum corpus lederent, infusum suspecti sunt omnino abiciendi, quanto magis ea scripta, quæ tantis & tam noxiis animabus venenis passim infecta sunt, non solum totius caecanda sunt, sed etiam ne aliis noceant, ab omni hominum memoria veniunt obliteranda. Accedit, quod quicquid boni in Martini libro reperitur, id antea a sanctis PP. quæ Ecclesiæ receptis, & approbatis, facile dictum, & sapientius receptum, absque ullius periculo, aut maiori suspitione legi, & haberi potest. Nec obstat quod dicebamus de libris Tetrulliani, Origenis, & similibus, qui tolerantur ab Ecclesiâ, nam hoc procedit, quoniam ex illis magis refutantur eorum errores, siquidem ex eorum antecedentibus scriptis sequentia errata detegantur. Et licet Hieron. & alij supra relati libros hæreticorum legerent, id tamen faciebant ut eos refellerent, ut hodie etiam conceditur perdoctis viris, ut im-*

probatos libros ad corrigendum legant. Nec tandem obstat quod de libris Gentilium, & Iudæorum expendebamus, quia similes libri Catholice veritati non obstant, qui eorum fidem Christi non ementiantur, ut sunt Gentiles, non facile homines ad falsum dogma inducant, nec possunt per umbram sanctitatis decipere homines simplices, imò ex eorum lectione non levis utilitas assequitur ad exponenda, & illustranda tam sacra, quam canonica scripta, ut probavi in cap. final. de arce, & qualis.

Sed supra traditis obstat factum Zachariæ Papæ relatum in ea epistola, quæ est 138. inter epistolâ sancti Bonifacii, ubi refertur Zachariam prohibuisse igni tradi libros Adalberti infanti hæretici, quos Synodus Romana cremari iussit. Igitur quia libri hæreticorum non sunt configendi, nec comburendi. Pro cuius difficultatis solutio dicendum est, Pontificem prohibuisse libros Adalberti flammis subici, non ut eorum incolumitatem consuleret, sed ad perpetuam confusionem ipsius Adalberti, & eius sectarum voluit exemplar vnum in scriptis Romanæ Ecclesiæ servari, quia libri illi pleni erant impietibus crassissimis, & apertissimis, Adalbertusque à pœtibus colebatur ut Sanctus. Vnde Ecclesiæ interfuit eius libros non prorsus aboleri, ut si quando res ferret, ex operibus probarentur impii auctoris, ut docuit Theophilus *diff. tract. de bonis & malis libris, errorem. 3. num. 26.*

IO.

EXPOSITA
ZACHARIÆ
PAPÆ 138
CONCILIO
NAN.

CAPVT V.

Ex Concilio Africano.

Item constitutum est, ut si quis Episcopus hæredes extraneos à consanguinitate sua, vel hæreticos etiam consanguineos, aut paganos, Ecclesiæ prætulit, saltem post mortem anathema ei dicatur, atque eius nomen inter Dei sacerdotes nullo modo recitur: nec excusari possit, si intestatus decesserit, quia viique debuit factus Episcopus, rei suæ ordinationem congruam suæ professioni nequaquam differre.

NOTÆ.

1. ^a *Africano.* Ita etiam legitur in prima collectione, sub hoc titulo. cap. 8. reperiturque textus iste in Codice canonum Ecclesiæ Afric. can. 81. propterea in præsentibus transcribitur, & canon editus fuit in Synodo Carthag. ubi apud Balsamonem, & Zonaram in ordioe 84. canon hic ita legitur: De Episcopis hæreticos, vel Græcos hæredes relinquentibus, similiter definitum est, ut si quis Episcopus hæreticos, aut Græcos, sine sint consanguinei, sine à consanguinitate alij, hæredes Ecclesiæ prætulit, etiam post mortem ei dicatur anathema, & nomen eius inter Dei sacerdotes minime recitatur, nec possit excusari, si intestatus decesserit, quoniam cum factus est Episcopus, infirmam debet facere rem suam dispositionem suam professioni committentem. Pro præsentis autem inscriptionis expositione repetenda sunt quæ adduxi in cap. 1. de arbor.

2. ^b *Recitur.* Inter Missarum solennia, cum ex diptycha nomina Episcoporum defunctorum recitabantur: sciendum enim est, iam à temporibus Apostolorum diptychas in vsum fuisse. Est autem Diptychum Ecclesiasticum tabula, in qua no-

mina Episcoporum Catholicorum, sacerdotum, ac fidelium benefactorum Ecclesiæ scribebantur, quorum nomina solebant recitari inter Missarum solennia, ut constat ex epistola Aegyptiorum Episcoporum ad Anasolium Patriarcham CP. ibi: *Diptychon est, in quo venerabilium pie memoria transiit ad calos habentium Episcoporum tabula habetur, qua tempore sacrarum mysteriorum secundum Sanctorum regulas leguntur.* Ex Aleuino lib. de celebrat. Missar. ibi: *Post ergo illa verba, quibus dicitur, In summo pacis; essus fuit antiquorum, sicut etiam usque hodie Romana agit Ecclesiæ, ut suam recitarentur ex diptychi nominibus defunctorum.* Et tabula hæc duplex erat, quarum vna viuorum, altera mortuorum nomina continebat, ut ex eis in sacrificio Missæ nomina recitarentur. Dionysius de Ecclesiæ hierarch. cap. 3. ibi: *Et cum se memò omnes saluauerint, mystica sacrarum tabularum recitatio fit.* Ex prima recitabantur nomina Episcoporum superstitis, Regis, seu Imperatoris, ut probavi in cap. de celebrat. Missar. & eius qui oblationem faciebat. Concil. Nibet. can. 29. ibi: *Emergentem, qui ab spiritu erratice agitur, huius nomen ad altare cum oblatione non esse recitandum.* Ex cap. sancti 24. quæst. 6. cap. obij. 30. 11.

quasi. 3. cap. vltim. de consecr. dist. 3. Conell. Emetitense can. 19. Proinde salubri deliberatione consensum, ut pro singulis quibusque Ecclesiis, in quibus Presbyter infusus fuerit per sui Episcopi ordinamentum preste, pro singulis dictis Diuinitis sacrificium Deo procurat offerre, & eorum nomina, a quibus eas Ecclesias consue esse constitutas, vel qui aliquid his sanctis Ecclesiis videntur, aut visi sunt conuulso, si viuentes in corpore sunt, ante altare recitauerint tempore Missæ: quod si ab hac discesserint, aut discesserint loco, nomina eorum cum defunctis fidelibus recitauerint sue in ordine. Ioh. cap. 1. ad Decretum. D. Chrysostom. in sua liturg. ibi: Diaconus incensat in circulo sacrum mensam, & diprychas; defunctorum antem, & viuorum rei vite memoriam facit. Vnde colligitur, non ideo diprycham dictam esse, quod gemini essent libri, unus viuientium, alter mortuorum, ut existimauit Meursius in suo Lexico Græco-Barbato, verbo Diprycha, cum unus idemque liber utroqueque nomina continere solet, & duabus tabulis constaret, ut probat Rossevidus in *Onomast.* verbo Diprycha. Viuorum, qui diprychis iis inscribi solebant, meminerunt Conell. Chalcedon. a. 11. Ioannes Diaconus in vita sancti Gregorii, lib. 4. cap. 21. Ad diprycham autem defunctorum spectant 6. Synodus a. 13. libi: Hæc sancta memoria tres viros, id est Thomam, Ioannem, & Constantinum præsidentem in indeterminate manere, atque in sacris diprychis sanctarum Ecclesiarum recitari. Theodoretus lib. 1. Eccles. Hist. cap. 35. Cyprianus epist. 37. ad Clerum. Deique & dies eorum, quibus excedunt, annuat, ut commemorationem eorum inter memorias martyrum celebrare possimus. Iustinianus Imperator, in epist. ad 3. Synodum generalem, quæ est C. P. 3. ibi: Sicut & eos, qui iniuste condemnati sunt, renouerunt post mortem, & in sacris diprychis scripserunt. Pertransit huius ritus commendandi tam viuos, quam defunctos in Missa consuetudo hodie in canone Missæ, cum primò viuientium in priore *Memento*, deinde defunctorum in secundo mentionem facimus; plura de ipsa diprycha, & eorum vsu congesseunt Stephanus Durantius de ritibus Ecclesie cap. 43. Angelus Roca in not. ad Sacram. D. Gregor. column. 64. P. Higuera in notis ad Ludprandum in diprych. Tolet. Rossevid. ad vitas Sanctorum PP. in *Onomast.* verbo Diprycha, Menardus ad concord. regul. capit. 4. Baronius tom. 6. anno 430. & 518. Berterius Pichanon diar. 3. Christophorus Bronchus in notis ad lib. 10. Penanij, Vargas in notis ad Ludprandum, Chron. fol. 11. Altessera de Decibus cap. 17. Castro de iustia heretic. punit. lib. 2. cap. 80. Contradas Brunus lib. 5. de heret. cap. 17. Peña ad Eym. 2. part. comm. 4. pag. 99. Petrus Herodius rer. indic. lib. 1. tit. 6. cap. 22. Andreas Saufay in appar. ad Martyrol. Gallic. cap. 8. & 9. Hallier. de Hæretic. Eccles. lib. 4. art. 6. §. 2. Ant. August. in epist. iur. lib. 18. tit. 1. Albaspin. lib. 1. obseruat. cap. 7. Losyfas in not. ad Concil. Tolet. 11. can. 12. Pamelius in not. ad Cypr. epist. 10. Zetda in aduers. cap. 143. Cironius ad tit. de baptis. Laudimeret. lib. 2. de veteri monach. cap. 81. Lindembrog. in Glossar. leg. antiq. verbo *Nomen* recitatio. Crespetus in summa, verbo *Nomen* Duranti. de Missar. ritibus, lib. 2. capit. 43. Gabriel Albaspinus lib. 1. obseruat. capit. 7.

c. *Nec excusari possit.*] Zonaras in notis ad hanc canonem agnouit difficultatem horum ver-

borum, & ita existimat, posse interpretari, si ab incestu mortuari Episcopus omni defensione priuatus, si non distribuerit competenter bona sua, cum oporteat alium facere inuentarium rerum mutui Episcopi competens, siue debitum eius admonitioni, admonetur etiam, inquit, creatus Episcopus canones seruare, qui iubet, ut panperum, & hospitum amici sint, & liberales. Sed rectius Balsamon in scholia ad hunc canonem ait, testamentum hoc casu quamquam contra leges factum, nullum esse, & hæreticos, seu Paganos hæredes institutos nihil ex eo capere posse, ita ut Episcopus ab incestu decessisse videatur; nec tunc posse coqueri, quod ab incestu decesserit, cum debeat dum superstitis suis, de bonis suis disponere, aut ite de eis testamentum condere, capaces hæredes instituendo, non verò incapaces, ut sunt hæretici.

COMMENTARIUM.

EX hoc canone sequens communiter deducitur assertio: Episcopus hæredem institutum hæreticum, seu paganus, consanguineum, vel extraneum, etiam post mortem anathematizatur, & nomen eius ex diprycha defunctorum temporis Missæ non recitatur. Probat eam textus in cap. in a. 6. hoc tit. Concil. Constantinop. 2. quod 5. Oecumenicum dicitur, collect. 3. libi: Sexilius Rensendissimus Episcopus de Africæ provincia, vires agens Primis religiosissimi Episcopis Carthaginiensibus, & in medio stans hæc dixit: Quendam proposita sunt sancta Euangelia, & oportet transcurrere ea, quæ suis sua scientia ad propositam questionem pertinentia facere manifeste, doceo sanctum vestrum Concilium, quod anterioribus temporibus in nostra provincia multis Episcopis congregati, & quadam de diuersis causis ad ecclesiasticum statum pertinentibus disponentes, statuerunt de Episcopis defunctis, qui hæretici suis facultates reliquerant, ita ut post mortem anathemati subiacerent. Illustrant eam Instel. in notis ad can. 81. codic. Eccles. Afric. Zonaras & Balsamon in schol. ad can. 14. Comil. Carthag. Citonius in parat. edit. de testam. Mendoza lib. 3. Concil. lib. 1. cap. 66. Albaspinus lib. 1. obseruat. cap. 7. Thomas Delbene part. 1. de offic. Inquisit. dubit. 147. coroll. 3. Suarez de fide, disp. 18. sect. 6. numer. 9.

Sed pro dubitandi ratione in præfensent assertionem hæc insurgo: Episcopus Dominus est non solum bonorum proprij patrimonij, verum & fructuum sui Episcopatus, ut probatur in cap. 1. de testam. Igitur potest de eis testamentum eundere, & quos voluerit, hæredes instituere, tam consanguineos, quam extraneos, siue Hæreticos, siue Paganos. Auguet difficultas hæc ex eo, nam et si Episcopus peccaret hæredes instituendo hæreticos, aut paganos, tamen non ideo post mortem excommunicari debebat; nam crimina morte extinguuntur, scilicet cum reus vinculis corporis naturali dissolutione digressus est, cap. quandoque, a. 3. dist. 1. contra, §. bis qui ad malum, ff. de re indic. l. 3. de defuncto 6. ff. de public. indic. l. ex indicium 20. ff. de accusat. l. si parva 20. ff. de pænis, l. 1. c. ff. de primat. delict. l. consuetudine 33. ff. de O. & A. l. 1. c. 3. C. si reus, vel accusatus, cap. admittere 32. quasi. 2. cap. causam, c. 2. quod sit. sunt leges, cap. a nobis, c. 2. de sent. excomm. l. 7. tit. 8. par. 3. l. 7. & 23. tit. 1. par. 7. Probat D. Thomas a. 2. quasi. 104. art. 1. Si manebas

4.
CANCELLUS
TABULETTA
ET PROBA
TVA.

5.
IMPRENA
TYE TRAD
TA ASSEM
TIO.

manchas in enebirid. tit. 62. *in q. 1. de de Catholic.* tit. 18. num. 2. Castena de offic. *Inquisit. part. 2.* tit. 19. § 1. numer. 1. Doel. & Guiz. in l. *unic.* C. ex delict. defunctis. Ant. Gomez lib. 3. *varior.* cap. 2. num. 77. & 85. ubi plures Aylton, Petrus Baud. in l. *silva* 15. ff. de indic. Robertus lib. 1. *ver.* indic. cap. 10. Richardus in §. non autem, *Instit.* de perquis. & temporal. Schifordge. ad Fabrum lib. 1. tract. 10. quest. 10. Amaya in l. *coram*, C. de iure fisci, num. 4. lib. 10. Vnde contra defunctum sententia proferri non potest, l. de qua re 74. §. cum abfentem, ff. de re iudic. l. in summa 49. §. final. ff. de re iudic. ionchis traditū a Mastrillo decis. 137. Cabedo decis. 196. Nam eū qui moriuntur, quasi ad superius tribunal adducuntur, iuxta Glossam in cap. 1. 26. quest. 7. a iudicio humano subtrahi debet, cap. quorundam, cap. epistola, 25. dist. Hadrianus lib. 1. in epistola ad Cæciliū Caluam: *Algo de his, qui ad Dominiū migraverunt nobis facile indicare non licet; cum enim in manu Dei iudicantur, humanis definitiōibus quidquid de his tribuatur, non solum presumptum, sed & damnationis esse pronus iudicium.* Accedit ratio Pauli in l. 3. parva 20. ff. de penis, ibi: *Quia pena constituitur in emendationem hominum, quæ penitus eo, in quem constituitur videtur, desinit.* Quam illustrent Solorzano lib. 1. de particid. cap. 1. & 2. Amaya ubi supra, num. 7. & lib. 2. observ. cap. 4. numer. 1. Guazinus defensioe 35. capis 27. Philippus Cametanus operis success. cap. 4. quod in excommunicatione infligenda precipue procedit, nam excommunicatio prohibet communicatio cum fidelibus ad hoc ut rubore suffusus cinis a peccato respiciat, cap. pia, de sentent. excom. lib. 6. Quæ ratio cum cesset iō mortuo, propterea quod non est amplius capax poenitentiae, cap. qualis, 26. dist. excommunicatio cessare debet, ex l. adigere, §. quatuor, ff. de interdictis.

6.

TALINTE
ANTIS D3-
CUBAL

Quæ dubitanti ratione non obstat vera est præfata assertio, cuius ratio provenit ex eo, nam hæretici prohibentur capere aliquid ex testamento, de quoconque successione modo, in detestationem totius criminis, ex cap. sequenti, l. *Martinecas, Authem. credentes* l. *Arriani*, §. *conillo*, l. *qua de Samaritanis*, C. hoc titulo, l. 76. titulo. 1. partit. 6. l. 4. tit. 26. partit. 7. cap. excommunicatus, §. *credentes*, hoc titulo. Probante Simancas de Cathol. titulo. 46. numero. 56. Rojas de heretic. sing. 79. Tiber. Decianus lib. 5. tract. crimin. cap. 44. Farinac. de heresi quest. 79. numer. 94. Quelada quest. 18. per tot. Richolus de iure person. lib. 5. capis 27. Mieris de maiest. part. 1. quest. 1. numer. 151. Sanchez lib. 2. summa, cap. 14. Atque part. 1. inst. lib. 5. cap. 3. quest. 1. Vasquez in 1. 2. quest. 9. art. 5. Vnde cum Episcopus, qui specialiter ratione officij competit exstirpare hæreses, ut probat supra in cap. 1. hæreticos in suis hæresibus, sine consanguineis, sine extraneis, quia quodammodo eos fovere videtur, excommunicationem incurrit, cuius ratione etiam post mortem anathematizari valet; id enim importat dicto illa *saltem*, quæ innotuit, quod si adhuc Episcopus viveret, excommunicandus erat; sed quia iam decessit, fuit post mortem et anathema dicitur, quia excommunicatus decessit: cui penæ consequentia & illa est, videlicet ut ommnes eius ex dicta defunctorum non recitentur; nam illorum Præfatum, qui in hæreses suspicione, vel pertinacia erat defunctus, nomina ex ha-

lusmodi sacris tabulis eradebantur. Vnde sexta Synodus Patiarcharum, qui Monothelitarum implum dogma propugnauerant, effigies de Ecclesia iussit auferri, eorumque nomina ex sacris diptychis ubiiterari: *Deinde abstergerunt de diptychis (ait Anastasius in Apothone) nomina Patriarcharum, vel de pistoris Ecclesia figuræ eorum idell. Cyri, Sergii, Pauli, Pyri, Perri, per quos error Orthodoxa fidei esset non pullularet.* Iustin. Imperator in confessione testis fidei aduersus tria capitula, seu iō fidei de fide Catholice, quod habetur post §. Synodum, ibi: *Itaque & omnia plenius Adopsumus Ecclesia, in qua Episcopus dicitur fuisse, cum inuenisset quod Paganus, & Indus, & Sodemitanus a sanctis Patribus canonizati essent, delinunt ipsi ex illis temporibus de sacris Ecclesia diptychis eius nomen.* Pluta Baronius tom. 7. anno 518. & 519. Nec modò hæreticorum, sed eorum quæque Præfatum, qui grauius macula laborauerunt iō moribus, nomina de sacris diptychis prosterbebantur. Quomobrem Hinemaps Rhemenfis Archiepiscopus, decessoris sui Ebonia depositi omeo iō diptychis adscriptum secum se tolerare, vel recitare posse non existimauit, nisi Sedis Apostolicæ more recepto sue Ecclesiæ accederet auctoritas: quare consuluit Nicolzum Pontificem iō hæc verba 1. *Denique præfate Ebne defuncti Ecclesia, sed & parochia nostra secundum consuetudinem, quam ex antiquo habuit (scilicet de his, qui in Episcopatu essent ad obitum in eadem Ecclesia non peruenissent) ipsius nomen inter sacrosancta mysteria in Episcoporum catalogum recitari pietatis gratia capis, & hactenus fecit: quod ego ne scandalizarem deuotus, questio inuident saluti fraterne, maxime autem quiescentis in Domino anima, quæ non pro excommunicatione in Catholica fidei sententia, sed sua conscientia stimulantem primum a se ipso, & postea a Synodo, sed & Apostolica Sede damnatum existit, hoc prohibere sine Apostolica Sede auctoritate nequaquam presumpsit: dicente B. Cælestius Papa, quia nesci esset hæc paræ religiosis animas, quarum afflictione (quia cineribus nostris sunt) nos quoque communis macerari. Rescribere mihi digne Apostolica vestra auctoritas, eorum eandem Ebonem inter Episcopos in sacris diptychis in Ecclesia nostra nominare permittam; an de cetero in Episcoporum catalogo nominetur, prohibere debeam.* Refecti Sausy in apparat. ad Mart. Gallic. cap. 8. alia dæ Altelstera dist. cap. 17. Metuū ergo cum in presenti casu Episcopus hæreticos influentia hæreticos, consanguineos, vel extraneos, foueret hæreticos, in excommunicationemque incidet, ideo eius nomen nō recitatur inter Missam solennia.

Nec obstat dubitanti ratio supra adducta, nam præfatus textus accipiendus est de Episcopo, qui testamentum conludit de bonis patrimonialibus, de quibus licet inter extraneos, aut consanguineos disponere licet, & valide possit, iuxta tradita in cap. 1. de testam. tamen hæreticos instigare non potest, non ex defectu dominij, quod verum in ipsis bonis habebat; sed propter incapacitatem hæreticorum, qui testamenti factionem potius non habent, ut supra probauit, & dicam infra in sequenti capite. Nec obstat primam augmentum ipsius difficultatis, omm licet criminosa regulariter morte tringantur, tamen cum delicta grauiora sunt, ut iuxta Maleficia diuinæ vel humanæ, etiam post mortem rei ad inquisi-

7.

Dissolvi-
tus des-
tando ad
710.

inquisitionem, & punctionem proceditur, cap. sane, 24. quest. 2. cap. accusatum, cap. filij, 5. in eo, hoc iudic. l. 6. l. Manicheus, C. de hereticis. Concil. Biterrense can. 18. l. 4. §. in mortem, C. hoc iudic. l. 3. 4. & vlt. C. de apostat. Quod circa Hæreticos non caset exemplis, siquidem Origenes 300. annis post mortem damnatus fuit, Socrates lib. 6. cap. 3. Item Theodorus Mousanen in Synodo 3. generali, vt probat Facundus Heremicus. pro defensione trium capitulorum Concilij Chalcedonensis lib. 8. cap. 5. & lib. 10. cap. 4. Ex quibus locis petenda est vera explicatio capituli 5. & 7. 24. quest. 2. Plura Simanchas de Catholicis insinuat, cap. 4. num. 4. Torrelanca lib. 13. de iure spiriti. cap. 6. Transmissa in simul, fidei, quest. 6. cap. 1. vt similibus memoria reorum damnetur, l. si quis filius 6. §. 8. ff. de iustis rupto, l. cum hic 32. §. 5. ff. de donat. inter l. cum filius 76. ff. de legem. l. 3. final. l. 6. & C. ad leg. Int. maiest. §. interdum, l. asis, de heredit. que ab intestato, Amaya supra, Barthola in l. filius, num. 17. ff. de indic. Vela differt, 11. numer. 39. Carens a potestate, 19. §. 1. Ant. Leoncl. decis. 82. numer. 2. P. Herodius lib. 1. rer. indic. tit. 6. cap. 22. & ex Magisterium albo nomen tradebatur, Tullius in oratione pro Sextio, ibi: Sic appellandi sunt Consules, qui armis est, qui non modo ex memoria, sed etiam ex fastis euellendus non potest. Hoc modo legitur apud Suidam, sub Imperatore Archadio Eutrophum ex Consulibus albo deletum: & apud Nicephorum Calixtum lib. 3. hystor. Eccles. cap. 4. ibi: Lex aeternam opera eius laia, ex publicis monumentis sublata, & nomen eius e catalogo, & nomenclatura Consulium expulsum est. Cassiodorus lib. 10. hystor. tripart. cap. 4. & de ipso Imperatore Arcadius & Honorius in l. 17. C. Theodos. de penus, ita sanxerunt: Vt eiusdem universi alibi antiqui, omnia manifeste tempora, nec eius exaneratione saculi nostri labes appareat. Et sub eisdem Imperatoribus funestorum Consulium nomen aboliri iussum est, vt eorum tempus quasi non fuerit, æstimeret, l. vlt. 9. C. Theodos. de confirm. iis que sub tyrann. Referred Socrates lib. 6. hystor. cap. 5. Marcellinus Comes in chron. Claudianus lib. 2. in Europ.

Illicum Consul parvus te Consule solait e

Annus qui trahat, hic dedit exitium.

Insensum populi in se quoque verteret omni:
Sæuis in aulicis prodigiosis honor.

Abbas penitus respirant nomen sacri.

Vnde fluxit, vt annus ille non nisi nomine Theodori Consulis signaretur, vt testatur Suidas, indicantque Theodosiani Codicis plures constitutiones, quibus Theodori Consulis nomen in temporis annotatione solummodo lucentur, ex plorâ Eutropij Consulis memoriam, vt videtur est in l. 17. C. Theodos. de Pagan. l. 28. de nomenclaturis, l. 1. de nomen non excoisum, l. 11. de ageribus in rebus, l. 1. 19. C. de iudic. l. 35. de hereticis, l. 58. de appellat. l. 34. de Episc. & Cleric. l. 6. de questionibus, l. 161. de Decemviris, & sexcentis aliis. Facit Leo Magnus episc. 38. ad Anatolium, ibi: De nominibus Discipuli, & Iuuenalis, & Eusebii ad sacrum altare non recitandis dilectionem tuam hoc decet custodire, quod nostri ibidem constituti facendum esse dixerint, quodque honoranda S. Flavianus memoria non repugnet, & a gratia sua Christiana plebs animas non auertat. Non iniquum nomen est, atque incongruum, cui qui innocentes & Catholici sua persecutione venerant, Sanctorum

nominibus sine discrimine misceri: sicut est contra equum est, vt Catholici, qui in vita ab hereticis condemnati, ab Ecclesiis suis vitii, & ecclesiasticâ sepultura, vel inter Sanctos memoria honore destituti sunt, resuscitentur. Sic memoria Origenis post ducentos annos damnata fuit opera Theophilij Episcopi Alexandrinij, teste Socrate lib. 7. Eccles. hyst. sicut est contrarium Leonis, Flavianij, Euphemij, Pauli, Ioannis Chrysostomi, aliorumque Sanctorum Patrum nomina, qui ab hereticis damnati honore destituti fuerant, post mortem restituti sunt, vt refertur in hystor. tripart. lib. 10. cap. 18. nam restituti, vel consecrati memoriam post mortem venerabilissimam fuit, sicut & aboleri ob grauiâ delicta: hinc consecrata est memoria Lueano Poëtæ à Nerone, qui eum supplicio affecerat, quæ Romæ ita legitur: M. Aemio Lueano Cordubensi Poëtæ beneficiis Nervis Cæsaribus summa fœderat. Hinc est Senatufconsultum Peggasium dicitur factum Peggasio, & Pussioe Consulibus in 6. sed quia, Insula de fidei commissis, heredit. & Trebellianum Trebellio, Maximo, & Seneca Consulibus, l. 1. ff. ad Trebel. iuxta nomina Peggasij, Pussionis, & Senetæ non repetitur in fastis Consulibus, quia cum eorum memoria damnata esset, nomina ex ipsis fastis crassa fuerant, vt notauit Fostorius lib. 2. rerum quædam, cap. 18. & plura de tyrannorum nominibus deletis est publicis tabulis congestis Baronius ann. 98. n. 4. 206. num. 1. 309. num. 2. 314. num. 2. 394. n. 1. 408. num. 6. 410. num. 1. & 414. num. 1. Nec tantum nomina singulorum reorum ex publicis tabulis etadebantur, verum & ipsorum effigies, & statua deiecebantur, etiamque laia deturbabantur, l. eorum 24. ff. de penus, Tacitus lib. 5. anal. ibi: At Roma principio anni, quasi recens cognitis Livia flagitiis, ac non pridem etiam punitis, avocet sententia dicebantur in effigies quoque, & memoria eius. Idem Lulius lib. 21. ibi: At primum in vestibulo effigiem parvis Sily consilio Senatus aboliri demonstrat. D. Ambrosius de interpell. lib. 3. cap. 10. Vnde quemadmodum in ciuitatibus bonorum Principum imagines perscrutentur, deleantur imagines tyrannorum, Suetonius de Domitiano mortuo: Senatus adeo letatus est, vt repleta certaminis Curia non temperaret, quia mortuum conuulsissimè acclamationum genere lacreret; scalas etiam iussit, cyperosque, & imagines eius coram se trahi, & ibidem solo affigi iuberet, ita ut sine cradiculis ebuque titulis, abeundæque omnem memoriam decerneret, Lampreid. in Elidgabal. Atque qui & in castris statuarum eius titulos hæregerent, vt fieri solet de tyrannis. Capitolinus in Gordiano, ibi: Appellatus igitur Gordiano Imperatore, iuuenes, qui ætates huius facinoris erant, statuas Maximini deiecerunt, imagines perscrutentur, nomen publicis craterum. Illustrant Reuwardus lib. 3. consuet. cap. 16. Alamitanus de filiis official. cap. 17. Thuretorum in paralleliu cap. 27. Desider. Herald. lib. 1. de auctor. rei indic. cap. 15. ad finem. Durant. Castellus lib. 2. var. cap. 16. Lypsius ad Tacitum lib. 6. annalium, pag. 235. Gentilis de coniur. lib. 1. pag. 85. Beroaldus ad Suetonium in Domitiano, cap. 13. & vlt. Opingius de iure insen. cap. 21. num. 260. Spondanus ann. 98. Reuwardus 3. consuet. cap. 16. Redde ergo in præsentem eum Episcopus tanquam suspectus de hæresi excommunicatus decessisse etradatur, ideo post mortem anathematizatur, & nomen eius à diplychis Ecclesiæ eraditur.

8.

DE ANA-
THEMATICA
PACT MOR-
TIS.

Nec obstat vltimam augmentum ipsius difficultatis, pro cuius solutione sciendum est, valde controuersum esse inter Doctores, an defunctus excommunicatus possit? In qua questione ob crimen hæresis, & similia defunctos excommunicati posse tenentur Glossa in *presenti*, verbo *post mortem*, & verbo *permissus*, in cap. *Iudei*, de *Iudeis*. Richardus in 4. dist. 18. art. 5. quest. 4. Gabriel ibidem quest. 2. art. 2. consil. 4. Et ita sæpius hæreticos post mortem anathematizatos legimus in 5. Synodo Constantinopol. art. 5. ad medium, & art. 8. *post principium*. vbi agitur de condemnatione Theodori hæretici iam mortui: & in Nicænâ. in *epist. Synod. ad Constantinensium*, & *Iren.* vbi plures hæretici mortui anathematizantur: apud Cyrtillum lib. 1. de *re*, quod *unus est Christus*, & in *epist. ad Marciannum*. D. August. ad *Bonifacium*, & ad *Cecilianum*: apud Iustin. Imperatorem in *epist. ad Ioannem Papam II.* quæ erat inter acta Synodi 5. cap. 6. 14. quest. 2. vbi refertur, quod Synodus Theodosiam post mortem anathematizauit, nec id nouum esse, sed iam olim vltimum in Valentino, Basilide, Marcione, Celsino, Manichæo, Eunomio, & Bonosio: idem vltus probatur testimonio Synodi Chalcedon. Socrates lib. 6. cap. 10. & 7. cap. 4. Nicephorus lib. 7. *historia*, cap. 27. & 28. Liberat. Cathag. cap. 13. *in breuitate*, qui refertur Originem post mortem anathematizatum fuisse. Ex quibus patrum hanc Ecclesiæ probant Pamellius in *epist. 66. D. Cyprian.* Ant. Augustin. in *epist. iuræ* lib. 11. *titul. 11.* Contrarium vero sententiam, scilicet non posse defunctum excommunicari, tenere communiter tam Theologi, quam Canonistæ, quos refertur Cassio lib. 2. de *iuris hæretic. pun.* cap. 19. & 20. Couat. in cap. *alma*, 1. part. 5. 11. num. 8. Theophilus tom. 14. de *Litter. monitariorum*, lib. 2. cap. 2. fol. 415. Suarez de *confus. dispus. 5. sect. 1. num. 3.* Aud. eod. *tract. 2. part. cap. 4. dispus. vnic. dub. 8.* Bellarminus lib. 1. de *indulg.* cap. 24. quest. 2. Azor part. 2. *instit. lib. 5. cap. 26. quest. 2.* Villalobos *tract. 16. difficult. 14.* Gibalinus de *confus. disputis. 3. quest. 2. vñf. 15.* pro quibus faciente testis in cap. 1. cap. *legatur*, & alij conuicti à Gratiano in *causa 24. quest. 2.* & et ratio, nam mortuus non est amplius sub iurisdictione Ecclesiæ, quæ nec ligare, nec absolueri potest, nisi viatores, non verò iam viâ functos, vt notos probant Leo Magnus *epist. 90.* alijs 92. ad Rusticum Narbonensem: Gellarius Papa *epist. 4. & 11.* Fakundus Hermianensis lib. 8. *pro tribus capitulis*, cap. 2. & lib. 10. cap. 4. Sed in hoc Interpretum dissidio sequentes casus distinguendi sunt. Primus cum agitur de defuncto censuris ecclesiasticis afflicto, post mortemque dammando, ob delictum in vita perpetratum; & talis condemnatio tati repugnat, cum non detur subiectum capax, in quod feratur censura. Secundus est, cum ipse propter crimen in vita admissum, aut in supremo vitæ spiritu consummatum, excommunicationem ab homine, vel à Iure impositam contraxit, & ita decessit; nam talis peccator potest post mortem excommunicatus declarari quoad secundarios effectus, quorum defunctus capax est, veluti ad sepulturam ecclesiasticam, sacrificia pro eo non offerenda, etationem nominis ex tabulis Ecclesiæ, & similia. Ratio verò quare licita sit huiusmodi sententia declaratoria, petenda est ex discrimine quod versatur inter ipsam, & sententiam condem-

natoriam; nam sententia hæc respicit tempus præteritum, & declarat delictum fuisse commissum, atque penam iure ipso fuisse incursum: ac verò sententia condemnatoria respicit tempus præsens, & penam de nouo imponit: quare ferri non potest, nisi in personam, in quam iudex exercet suam iurisdictionem: itaque potest defunctus declarari excommunicatus, licet excommunicari non possit. Nec hæc sententia declaratoria excommunicationis ante mortem incursum restringi debet ad crimen hæresis, vt voluit Glossa in *presenti*; nam eadem ratio militat in ceteris criminibus, quibus annexa est excommunicatio; si enim quis illam incurrit, quatinus occulte, poterit deinde post mortem declarari excommunicatus, vt docuerunt Gibalinus *diffus. censur. 5.* Coriolanus in *notis ad Concil. Afric. 1. anno 1577. fol. 25. summa.* Huicque tradita de excommunicatione defuncti, intelligenda etiam sunt de eius absoluteione à censura, quam viuos contraxit. Et Ecclesiam solitam esse eam absoluteionem mortuis impendere, constat ex cap. 4. nobis 28. cap. *sacra*, de *sentent. excomm.* Concil. Arelat. 2. can. 12. Concil. Valsen. can. 11. Tolet. 11. can. 12. & alijs reatis ob Althapineo lib. 1. *obf. capit. 10.* Exemplis illustat Rouffellus lib. 8. *hist. Pont. iurist.* cap. 1. num. 28. Vnde Constantinus Porphyrogenita, cum Leo pater eius esset excommunicatus, petiit à Patriarcha, & Episcopis, vt patri suo etiam post mortem communi decreto delicti remissionem concederent, vt refertur in Concilio apud Troieiam. Anno 921. Eribaldus Comes excommunicatus post mortem absoluitus fuit, vt refert Flodorus lib. 4. *histor. cap. 16.* ex quibus constat, redditum fuisse defunctis ius communionis, quo priuati decesserant admittendo ad altare oblationem pro eis factam: quæ absoluteio non tam cadit in ipsum mortuum, quam in viuos, quibus permittitur exercere actiones aliquas circa defunctum, quæ ratione excommunicationis, in qua decesserat, licite non erant, eo quod cum mortuis communicamus per huiusmodi actiones, videlicet ecclesiasticam sepultoriam, & communia suffragia, quibus priuatur excommunicatus defunctus æque ac viuis, etiam in istis gratiæ decesserit, vt probat in cap. *sacris*, de *sepulch.* quod facile probatur ex probatissimis historiis, & SS. auctis, de mortuis excommunicatis, qui visi sunt aut tumulto abscedere, aut ex templo exire dum diuina officia celebrarent, donec absolui fuerant rim ecclesiasticis. Quæ exempla conuenerunt Benedictus Hæphænnus in *vita Sancti Benedicti*, cap. 23. Theophilus Raynaud. 2. part. de *Litter. monitariorum*, cap. 3. num. 17. per hanc enim absoluteionem restituebatur memoria defuncti, vt apud Romanos legimus post mortem famam testitum Luciano, & alijs; vt refert Fornerius lib. 2. *rer. quod. capit. 19.* Sed licet iuxta proximè tradita tenus hic accipi possit de declaratione post mortem facta, adhuc tamen verum credo, in *presenti* non agere PP. Concilij Afric. de excommunicatione intelligenda, vel declaranda post mortem, sed de anathematizatione, quæ erat tantum separatio, electioque peccatoris à ceteris fratribus, Episcopis, iustis, qui in pace quiescerent; hoc enim significare anathema probatur in cap. *cum non ab homine*, de *iudicis*. Dum ergo PP. in *presenti* iubent Episcopo Instituenti hæreticos saltem post mortem anathema esse dicendum, &

nomem

nomen eius inter Dei sacerdotes non esse recitandum, sancire videntur, similem Episcopum citandum esse à consistorio, & numerum exteriorum Episcoporum, nec eius nomen esse ex dyptichis

defunctorum cum aliis fideliter, piéque defunctis recitandum, ut cognoscatur cum ob tantam facinorositatem anathema esse, id est separatum, & electum à consistorio, & numero aliorum fratrum, & sacerdotum.

CAPVT VII.

* Ex eodem.

IN eos, qui Catholici non sunt, etiam si consanguinei fuerint, Episcopi, vel Presbyteri nihil conferant. Denique hoc, quod de Episcopis, & Presbyteris dictum est, debet de reliquis clericis exaudiri.

NOTÆ.

I.

EX eodem.] Ita etiam legitur in prima collectione, sub hoc titul. cap. 9. & canon hic est 13. Concilij Carthag. 3. in qua Synodo apud Thendorum Balsimon. ordine 15. ita habetur: *¶ Episcopi, & clerici in orthodoxos Christianos nihil conferant; & si sint adhuc cognati, nihil per suarum rerum donationem, ut dictum est, Episcopi, vel clerici in eos conferant.* Et in can. 28. Concilij Ecclesie Africane, apud Iustitum ita legitur: *Et ut in eos, qui Catholici Christiani non sunt, etiam si consanguinei fuerint, per donationem rerum suarum Episcopi vel clerici nihil conferant.* Cum enim iure citati attentis in hæreticos aliquid donationis, legati, vel institutionis titulo transferri non possint, l. 7. C. Theodof. de hæretic. ubi Theodosius ita statuit: *Si quis Manicheus, Manicheæ ex dō laici studium legis, ac primitiis à nostris parentibus, in quamlibet personam condico testamentis, vel cuiuslibet titulo liberalitatis, atque specie donationis, transmissit proprias facultates, vel quicquam ex his addita per quamlibet successionei formam collationis dictatus est, quoniam iisdem sub perpetua infamia nota iustandi, ac vivendi iure Romano omnem proutem eripimus facultatem, neque eis relinquenda, nisi capiendæ Miciani hereditatis habere finimus potestatem, totumque nostris viribus imminuimus indagacione societur.* Quam legem ad Donatistas protulit voluerunt Patres ipsius Concilij Carthag. in can. 93. Synodi Africane, per hæc verba:

Petendum etiam, ut lex, qua hæretici, vel ex donationibus, vel ex testamentis aliquid capiendi, vel relinquendi denegat facultatem, ab eorum quoque pietate hactenus repetatur, ut eis relinquendi, vel sumendi ius adimat, qui pertinacia furere cecati; in Donatistarum errore perseverare voluerint. Ceterum illis, qui consideratione intuitu, & pietatis se corrigere voluerint, absque interdictio huius legis capiendæ hereditatis adiutus pateat, si adhuc in errore hæretico consistens, aliquid ante donationis, vel hereditatis abrenit: his solum exceptis, qui lito pulsati praeaverint ad Catholicos transfundam, quia de talibus credendum est non metu coëssu inliciti potius quam terrore commodi aviditate errantem catholicam praecepisse. Unde ad petitionem ipsorum Patrum prædicta Theodosij sanctio repetita fuit ab Honorio in l. 4. C. Theodof. ne scilicet baptisma, in hæc verba: Scitis ij, qui iterum baptisma non timeverint, aut qui consentiendo hoc facinus propriæ huius societatis permixtione non damnaverint, non solum iustandi sibi, verum adipiscendi aliquid sub specie donationis, vel agnandorum contractuum in perpetuum copiam denegatam. Quare meritis in præsentis canone idem circa Episcopos & clericos statuerant, aliqua bona donantes, vel relinquentes hæreticis, ac generaliter statuerant Imperatores circa laicos insistentes hæreticis, vel quid illis donantes, & etiam laicos eo casu puniri, ut Episcopos & Presbyteros, notantur Zarabel. hic, Ricciulus de iure person. cap. 44. numer. 12.

CAPVT VII.

Alexand. III. * Rhemen. Archiepiscopo.

ET cum Christus perfectus Deus, & perfectus sit homo, mandamus, quatenus sub anathemate interdicis, ne quis de extero audeat dicere, Christum non esse aliquid secundum quod homo: quia sicut Christus verus est Deus, ita verus est homo, ex anima rationali, & humana carne subsistens.

NOTÆ.

COMMENTARIUM.

Rhemenf.] Ita etiam legitur in prima collectione, sub hoc titul. cap. 5. & post Concil. Lateran. part. 49. cap. 20. De Metropoli Rhemenf. nonnulla adduxi in cap. 17. de officio Ordinis.

Iubetur in præsentis ab Alexandro III. ne quis dicat Christum non esse aliquid, secundum quod hominem; hoc est ne dicatur, ut Eutyches putabat, nihil manere veræ humanitatis, sed solum divinam naturam, in quam conversa substantialiter fuerit natura humana. Hanc errorem Eutychetis sequuti sunt aliqui Magistri scholæ Parisiensis,

Parisiensis, & Rhemenfis, affertentes Christum secundum quod homo, esse nihil, id est, nihil esse hominis, siue humanitatis in Christo. Item ipse Petrus Lombardus eiusdem erroris infamatus fuit, vt notat Coriolan. in *summa Concilior. in Lateran.* 3. celebrato anno 1179. vbi ait, ab Alexandro III. præceptum fuisse Vvillelmo Senonensi Archiepiscopo, vt adscitis suffraganeis suis vnâ cum illis doctrinam hære abrogaret, in hæc verba: Cum in nostra olim esses præsentia constitutus, tibi vix voce innuimus, vt suffraganeis tuis Parisiis tibi adscitis ad abrogationem prauæ doctrinæ Petri quondam Parisiensis Episcopi, quæ dicitur, quod Christus secundum quod est homo, non est aliquid, omnino intenderes, & efficacem operam adhiberes. Inde sequitur est, quod fraternitas tua per Apostolica scripta mandamus, quatenus quod tibi cum presens esses præcepimus, suffraganeis tuis Parisiis commices, & una cum illis & aliis viris religiosis & prudentibus præscriptam doctrinam studiis penitus abrogare, & à Magistris scholaribus ibidem in Theologia studentibus Christum sicut perfectum Deum, sic & perfectum hominem, ac verum hominem ex anima & corpore consistentem præcipias docere: vniuersis firmare, & distribuite innuere, quod doctrinam illam de castro nequamquam docere præsumas, sed ipsam penitus deterjimas. Agunt contra hæc errorem PP. anteq. præfatum in Concilio Chalcedon. vbi ad illud confutandum congregati sunt 630. Episcopi, quibus præfuit

acerrimus propugnator sanctus Leo in *epist. ad Flavianum*; accesseruntque Boëthius, & Gelasius in *operibus de duabus naturis*. Vigilius lib. 3. contra Euzych. Theodorus lib. 1. legat. ad Armenos, Damascenus, ac Rusticus in *operibus contra Acéphalos*; Abocæ *epist.* 2. & 4. ac etiam Leontius Byzantinus variis opusculis, quæ extant tom. 6. Bibliothec. Coem. Theodosius in *tribus dialogis*, & in *speciali opere apud Phocium*, col. 46. videantur apud eundem Theodoretum in *dialogo Inconfusus Inconfusus*, Iustinus, Epiphanius & plures, quos citat. Item Fulgentius lib. 1. ad Trasimundum, Baibosi in *presenti*. Impugnant etiam prædictum errorem Theologi DD. antiqui cum Magistro *disp.* 5. & sequent. Item recentiores cum S. Thoma 3. p. q. 2. art. 1. vbi specialim videndi sunt Suarez *disp.* 7. *sect.* 2. Valquez *disp.* 14. *cap.* 1. Franc. Amicus *disp.* 9. *sect.* 1. Rodericus Ariaga *disp.* 19. *sect.* 1. Cardio de Logo *disp.* 9. *sect.* 1. Beinal. *disp.* 14. *sect.* 1. 5. 3. à num. 18. Hurtado *disp.* 15. *sect.* 1. Valentia *disp.* 1. q. 2. *punct.* 1. F. Iouanes à sancto Thoma *disp.* 4. art. 1. Prudentius *trist.* 3. *disp.* 1. *sub.* 3. *sect.* 1. Vvigers *quæst.* 1. art. 1. num. 2. Gamach. tom. 3. *quæst.* 2. *cap.* 1. Lorea *disp.* 12. à num. 4. Adam Tannerus *disp.* 1. *quæst.* 3. *sub.* 2. Coninch. *disp.* 7. *sect.* 1. Martinon *disp.* 5. *sect.* 3. nota 28. Metacius *disp.* 10. *sect.* 1. Dionysius Peraius latissimè lib. 1. de Incarnat. *cap.* 14. & iterum tom. 1. de Incarnat. lib. 10. *cap.* 1.

CAPVT VIII.

Ex Concilio² Lateran.

Sicut ait Beatus¹ Leo, licet ecclesiastica disciplina sacerdotali contehria iudicio, seruentas effugiat vitiones, Catholicorum tamen Principum constitutionibus adiuvatur, vt sæpe quærant homines salutare remedium, dum corporale super se metuunt supplicium euenire. Ea propter, quia in² Gasconia, ⁴ Allegeio, & paribus Tolosanis, & aliis locis ita hæreticorum, quos alij³ Catharos, alij³ Parrinos, alij³ Publicanos, alij³ aliis nominibus vocant, inualuit damnata peruerfitas, vt iam non in occulto, sicut aliqui, nequitiam suam exerceant, sed suum errorem publicè manifestent, & ad suum consensum simplices attrahant, & infirmos à eos, & defensores eorum, & receptatores anathemati decernimus subiaccere, & sub anathemate prohibemus, ne quis eos in domibus, vel in terra sua tenere, vel fouere, vel negotiationem cum eis exercere præsumat. Si autem in hoc peccato decesserint, non sub nostrorum² privilegiorum cuiuslibet indulgentiarum obtentu, nec sub alia quacunque occasione, aut oblatio fiat pro eis, aut inter Christianos recipiant sepulturam.

NOTÆ.

1. ^a *Lateranensis*.] Generali videlicet sub Alexandro III. celebrato, vbi *cap.* 27. repetitur textus hic, & in prima collectione, sub hoc tit. c. 6. proxi. vt præsentem transcribunt. De hoc Concilio nouissima adduxi in *cap. annuall.* 27. de *re script.*

2. ^b *Leo*.] *Epist.* 93. ibi: Merito PP. nostri, sub quorum temporibus hæresis nefanda præcepit, per totum mundum insisteret egere, vt impius suus ab vniuersa Ecclesia pelleretur, quando etiam Principes mundi in hæc sacrilegam amissionem discessi sunt, vt auctoritas eia, ac plerisque discipulis legum publicarum easse præstiterent: videbant enim omnium curam bene-
ficialis auferri, amara coniugiorum capudm solui, simulque diuinum ius humanumque subuertere, si vniuersi hominibus vsquam vixisse cum tali professione licuisset, & profecti alii ista disciplina Ecclesiastica lenienti, qua
D.D. Gouzal. in Decretal. Tom. V.

sacerdotali contenta iudicio, eruantas refugit vitiones. securitatem Christianorum Principum constitutionibus adiuvatur, dum ad spirituale neungium reuertunt remedium, qui timore corporale supplicium. Facit idem Poirrefx reatus à Gratiano in *cap. res humane* 23. q. 5. Illustrat Chokier lib. 1. *shefuri polit.* c. 5.

3. ^c *Gasconia*.] Gasconia etpropiè dicta, vulgò *Gasconia*, terminatur à Garonna fluuio, & Oceano, complectebaturque Episcopatus Vasconem, Aquensem, Audensem, & Lachorensen: de qua provincia, & Comitibus Gasconie videndus est Arnoldus Oienath in *notis*, Vascon. lib. 2. *cap.* 8.

4. ^d *Allegeio*.] Fossan legendum esse quis dixerit Agines. Aginesium enim provincia est in Gasconia: hinc habet ad Orientem Caduceos, ad Septentrionem Peretorios, ad Occidentem Guenem, ad Meridiem Annanicos. Complectitur duas dioceses, Aginesensem & Condorensen. Sed
Q legem

Lætan. sub Innoc. III. can. 3. & sub Leone X. sess. 9. Plura Pontificum decreta, & Sanctorum Patrum placita congesterunt Ant. Augustin. in epis. Iuris Pœnif. lib. 1. tit. 16. per totum. Basil. de marim. in appendice, cap. 1. num. 4. Spondanus de cœmeteriis lib. 4. part. 1. cap. 3. & probauit in can. 12. Concilij Sliber. adeoque communicatio cum hæreticis fidelibus prohibetur, ut cum eis assiduam communicationem retinens suspectus de hæresi reddatur, ut probat Eymericus in Duct. Inquisit. part. 1. fol. 234. Simaochas de Catholicis tit. 11. immo & clerici cum hæreticis communicantes ab officio, & beneficio suspenduntur, & si purgationem canonicam illis locidiam præstare renuerint, aut in ea defecerint, pro consiliis habentur, cap. inter, de purg. canonis. Unde in Concil. Saluberr. relatio ab Eymerico dist. 1. part. comment. 81. diligenter ita cautum fuit: *Eos quoque obsequere debent parochi, qui ex hæreticorum locis, sine de heresi suspellu veniunt, singulorumque dista, & facta animaduertant, ac de eorum vita consuetudine, & ratione cognoscant. Quare cum eis negotiari prohibetur, cap. ficut Leo, hoc nunt. eoque adire, seu visitare, cap. accusatus, & illæ quoque, hoc nunt. in 6.*

11.

TRADITIO
RATIO
DE
RATIO.

Unde apparet vera ratio præsentis assertionis, cum cum ex præcepto Apostolorum relatio in dist. can. 63. Apostolor. & firmato tot Ecclesiæ canonicis, prohibita sit communicatio Catholicis cum hæreticis, iussu in præfatis docetur, hæreticos excommunicatos esse, id est ab omni Ecclesiæ, & fidelium communione seclusos, quæ excommunicationem in hæreticos laicam, antiquissimam esse omnium excommunicationum, quæ iure canonico sunt statuta, innuitur à Gelasio Lin c. Acacius 1. & 3. 4. quæst. 1. dum ait in Acacium, eo quod non esset innotior toti erroris, fed vetetis imitator, non esse nouum sententiam ferendam, sed antiquam tantummodo renouandam. Siquidem ex quo tempore ceperunt Concilia in Ecclesiæ celebrari ad existipandas hæreses, æque introductum esse consuetudinem excommunicandi, & anathematizandi hæreticos, videre est in canonicis suprà citatis pro illustratione conclusionis: immo & excommunicationem hanc à iure diuino provenire, voluerunt, etsi minus recte, æguas in Enchiridia, Driedo lib. 2. de liber. eccles. c. 8. Quis tamen possit attentis nouis constitutionibus ab hac excommunicatione absolute, latè explicat Bordonus, Castropalao, & Ricciulus suprà, Atzajo in qq. moralibus, q. 12. per totum. Inde etiam provenit ratio, quare ipsi hæretici denegent ecclesiastica sepultura, nam cum communicare non possimus de sanctis, quibus non communicamus viuus, c. sacris, ubi probauit, de sepulch. non potest hæreticus post mortem ad communionem per sepulturam ecclesiasticam admitti, cum illi sepulchri denegaretur communicatio cum fidelibus Catholicis, ut probat Spondanus de cœmeteriis lib. 4. p. 1. 2. 2. per totum. Sed etsi hæc pena consequens esse excommunicationi ab hæreticis contraxit, tamen cum specialiter statuerunt Alexand. III. in præfatis, Alexand. IV. in cap. quicumque, hoc ritual in 6. Gregorius IX. in consil. 4. relatio ab Eymerico ad calcem direct. Inquisitor. fol. 3. & 17. Alfonso in l. 8. tit. 13. part. 1. Probant Rojas de heretic. singul. 181. Memoch. de arbitrio casu 374. num. 8. Farinae. de heresi quæst. 1. & 2. §. 3. num 98. & rectè; nam ipsi sunt rei læsæ Maiestatis, ut probat Spondanus de cœmeteriis lib. 4. p. 1. c. 1. per tot. & dicemus infra in cap. vergeris: sed

D. D. Goucal, in Discret. Tom. V.

reis læsæ maiestatis denegabatur sepultura, tam apud Athenienses, ut ex Xenophonte & Thucide probat Tirazuel, ad Alexandrum lib. 6. diu. Genial. c. 14. quim apud Romanos, teste Suetonio in Vespas. cap. 2. Igitur rectè hæreticis ob criminis immanitatem denegatur ecclesiastica sepultura. Nec hodie hæreticis tantum sepultura non conceditur, verum ossa eorum exhumantur, si discerni possint à Catholicis, & comburantur memoria ipsius hæretici damnata, ut factum fuit in Concilio Constantensi cum Iosane Vviclef, ut liquet ex ipso Concilio, sess. 8. & referant præterea hanc approbantes Peña ad Eymericum, 3. part. direct. comment. 91. Simanc. de Catholicis tit. 17. num. 10. Paramos de origin. Inquisit. lib. 3. quæst. 4. num. 88. Catena de officio Inquisit. a. part. 2. tit. 19. num. 12. Matthea de heresi, part. 1. casu 19. num. 3. Marquez in guben. Christ. lib. 1. cap. 24. Gomez lib. 3. variæ. cap. 1. n. 791 & vastis exemplis similem hæreticorum exhumationem probant Ant. Sabellicus lib. 3. c. 18. Niephotus Calixtus lib. 17. hist. eccl. cap. 17. Beyerioch in theatro via humana, verbo Cadaver, fol. 19. Turriblanca de iure spirit. lib. 3. cap. 13. num. 16. Decianus lib. 5. tract. crimin. cap. 57. num. 5. Farinae. de heresi quæst. 1. 97. num. 94. Pazanius de rig. S. Inquisit. lib. 1. cap. 5. tit. 3.

Nec obstat dubitandi ratio suprà adducta; nam contrarium, videlicet hæreticos adhuc esse in Ecclesiâ, probat Alfonso à Castro lib. 2. de iust. hæretic. puni. ex eo, quia hæretici tinent charactem baptismi, cap. quod quidem 1. quæst. 1. cap. non in vobis, de consecr. dist. 4. & ita adhuc videntur membra Christi, & Ecclesiæ. Quare pro huius difficultatis solutione dicendum est, hæreticos vetè in Ecclesiâ non esse, iuxta tradita suprà pro dubitandatione; ad eam tamen iustificandionis ratione pertinere, & ideo licet hæretici careant prorsus omnibus illis, quæ communionis grati conceduntur existentibus in Ecclesiâ, possunt tamen compesci, & puniri ratione fidei, quam susceperunt, & scturæ promissum in baptismo, ut sequent textu dicemus, ut etiam eodigit in defensione militiæ terrestri, quem dux exercitus compellit ad redeundum ratione sacramenti præstiti eum militiæ nomen dedit, de defensionem, ff. de re milit. & in monacho deferente monasterium, qui ab Abbate repell potest. Sic misitit Christianus in hæresim lapsus subest Ecclesiæ ratione baptismi suscepti, licet in eius gremio, & fidelium communione non persisterat. Docent Ricciulus lib. 5. de iure persun. cap. 12. Nec obstat primum augmentum ipsius dubitandi rationis, deductum ex D. Paulo, & ex dicto c. sacris. Nam verum est, quoscumque hæreticos externos ipso iure excommunicatos esse, ex præfatis textu, & aliis adductis pro eius confirmatione. Quæ anathematizatio repetitur singulis annis à Romano Pontifice in Bulla, quæ Romæ legitur feria 3. cœnæ Domini, ut habetur in capite eiusdem Bullæ. Et licet iuxta D. Paulum ipsius tempore saltem consideraretur monitio, quia tunc primum hæresis oriri ceperant, nec adhuc erant per Ecclesiâ damnata, nec hæreticorum pertinacia ante monitionem facta nota fuerat; tamen postquam hæreses damnata ab Ecclesiâ reperiuntur, in eas incidentes subuersos fe manifestè ostendunt, & ita ipso facto excommunicationem incurant. Nec obstat textus in dist. cap. sacris; nam procedit in excommunicatione ab homine ferenda, quæ prænam monitionem requirit, non verò in illa, quæ fertur à iure, quia ius ipsum, quo statuitur,

12.

DISSENTIT
VITUS
DE
RATIO.

Q 2

quosunque hæreticos esse excommunicatos, in-
fiat præiux monitionis est. Nec obstat secundum
augmentum ipsius difficultatis; nam et si hæreti-
cus per hæresim segregatus ac exclusus ab Ecclesiæ
gremio sit, tamen per excommunicationem for-
tius, & magis separatur; siquidem priuator com-
munionis externa fidelium, vt docuit D. Thomas
2. 2. q. 10. art. 9. Hodie autem etiam post extrusam
Ad exitanda, Martini V. vt hæretici vitentur,
sufficit quod hæretici declarati sint absque denun-
tiatione censuræ, quia secundum ius, & commu-
nem fidellum existimationem, eo ipso quod aliquis
hæreticus est, habet etiam ipso facto pœcissus,
& excommunicatus; quia notissimum est, excom-
municationem iura non separari ab hæresi. Nec
obstat secunda difficultas; nam cum filij in sepul-
chra patrum tantum usum ex beneficio eccle-
siæ, non verò dominium aut possessionem habeant,

*Li sepulchrum, Cod. de religiosis, l. assa, ff. cod. & ca-
lia vlt. consistit tantum in mortis illatione, ex
Ecclesiæ concessione, non possunt, qui per hære-
sim extra Ecclesiam sunt, ratione ipsius vlt. sepe-
liri in sepulchris maiorum, cum ipsi gratia, seu
privilegio Ecclesiæ re idantur indigni, l. 1. Cod.
Theodos. & Iustin. de hærenicis, ibi: Privilegia, qua
contemplatione religionis indulta sunt, Catholica tan-
tum legis obseruationibus prodesse oportere; hæreticos
autem, neque sibiismos, ab his privilegijs alienos
esse debere. Iustinianus in novel. 109. cap. 11. ibi:
Nec iustum esse equalibus cum orthodoxis hæreticos
dignos fieri privilegia. Quare cum hoc ius sepul-
chre totum ex auctoritate Ecclesiæ proveniat, po-
test Ecclesia ab criminibus hæresis hæreticos priuare
vlt. sepulchri familiaria, seu hæreditarij, non ob-
stante dicta lege 9. Cod. hoc iand. vt probat Spon-
danius de cæmentis, supra.*

CAPVT IX.

Lucius tertius.

AD abolendam diuersarum hæresum prauitatem, quæ in plerisque mûdi par-
tibus modernis cœpit temporibus pullulare, vigor debet ecclesiasticus excita-
ri, cui nimirum Imperialis fortitudinis suffragante potentia, & hæreticorum prauitas in ipsis falsitatis suæ conatibus elidatur, & catholicæ simplicitas veritatis in Ec-
clesia sancta resplendens, eam vbique demonstret ab omni execratione falsorum
dogmatum expiatam. Ideoque charissimi filij nostri Federici Illustris Romanorum
Imperatoris semper Augusti * præsentia pariter, & vigore suffulti, de communi con-
silio fratrum nostrorum, nec non aliorum Patriarcharum, Archiepiscoporum, mul-
torumque Principum, qui de diuersis partibus Imperij conuenerunt, contra ipsos
hæreticos, quibus diuersa capitula diuersarum indidit * professio falsitatum, præsen-
tis decreti generali sanctione consurgimus, & omnem hæresim, quocumque nomi-
ne conferatur, per huius constitutionis seriem, auctoritate Apostolica condemnamus. In primis * Catharos, & Paterinos, & eos, qui se Humiliatos, vel * Pauperes
de Lugduno falso nomine mentiuntur: Passaginos, & Iohanninos * Arnaldistas per-
petuò decernimus anathemati subiacere. Et quoniam nonnulli sub specie pietatis
virtutem eius, iuxta quod ait * Apostolus, denegantes, auctoritatem sibi vindicant
prædicandi, cum idem Apostolus dicat: Quomodo prædicabunt, nisi mittantur?
omnes, qui vel prohibiti, vel non missi, præter auctoritatem ab Apostolica Sede,
vel ab Episcopo loci susceptam, publicè, vel priuàtè * prædicare præsumpserint; &
vniuersos, qui de sacramento corporis & sanguinis Domini Iesu Christi, vel de
baptismate, seu peccatorum remissione, aut de matrimonio, vel reliquis ecclesiasti-
cistis sacramentis aliter sentire, aut docere non metuunt, quàm sacrosancta Ro-
mana Ecclesia prædicat, & obseruat; & generaliter quoscumque eadem Romana
Ecclesia, vel singuli Episcopi per dioceses suas cum consilio clericorum; vel clerici
Episcopi fede * vacante cum consilio, si oportuerit, vicinorum Episcoporum hæreti-
cos iudicauerint, pari vinculo perpetui anathematis innodamus. Receptatores, & de-
fensores eorum, cunctosque pariter, qui prædictis hæreticis ad fouendam in eis hæ-
resis prauitatem, patrocinium præstiterint aliquid, vel fauorem, siue consolat, siue
credentes, siue perfecti, seu quibuscumque superstitionis nominibus nuncupentur,
simili decernimus subiacere sententiæ. Quia verò peccatis exigentibus quandoque
contingit, vt ecclesiasticæ seueritas disciplinæ ab iis, qui virtutem eius non intelli-
gunt, condemnentur: præsertim nihilominus ordinatione sancimus, vt qui manifestè
fuerint in supradictis erroribus deprehensi, si clericus est, vel cuiuslibet religionis
obumbratione fucatus, totius ecclesiastici ordinis prærogatiuâ nudetur, & sic omni pa-
riter officio, & beneficio ecclesiastico spoliatus, secularis relinquatur arbitrio potestatis,
animaduersione debetè puniendus, nisi continuò post deprehensionem erroris ad fidei
catholicæ vnitatem sponte recurrere, & errorem suum ad arbitrium Episcopi regionis
publicè

publicè confenserit * abiurare, & satisfactionem congruam exhibere. Laicos autem, quem aliqua prædictarum pestium notoriâ, vel priuata culpâ resperferit, nisi, prout dictum est, abiurata hæresi, & satisfactione exhibitâ, confestim ad fidem confugerit orthodoxam, secularis iudicis arbitrio relinquatur, debitam recepturus pro qualitate facinoris ultionem. Qui verò inuenti fuerint sola Ecclesie suspitione notabiles, nisi ad arbitrium Episcopi iuxta considerationem suspitionis, qualitatemque personæ, propriam innocentiam congrua purgatione monstrauerint, simili sententiæ¹ subiacebunt. Illos autem, qui post abiurationem erroris, vel postquam se, ut diximus, proprii Amicitie examinatione purgauerint, deprehensi fuerint in abiuratam hæresim recidisse, seculari iudicio sine ulla penitus audientia decernimus² relinquendos, bonis damnatorum clericorum Ecclesiis, quibus deseruiebant, secundum sanctiones legitimas applicandis. Sanè prædictam excommunicationis sententiam, cui omnes præcipuus hæreticos subiacere, ab omnibus Patriarchis, & Archiepiscopis, in præcipuis festiuitatibus, & quotiens solennitates habuerint, vel quamlibet occasionem, ad gloriam Dei, & reprehensionem hæreticæ prauitatis, decernimus innouari, auctoritate Apostolica statuente, ut si quis de ordine Episcoporum negligens in his fuerit, vel desidiosus inuentus, per triennale spatium ab Episcopali habeatur dignitate, & administratione suspensus. Ad hæc de Episcopali consilio, & suggestionem culminis Imperialis, & Principum eius adiecimus, ut quilibet Archiepiscopus, & Episcopus per se, vel Archidiaconum suum, aut per alias honestas, idoneasque personas, bis, vel semel³ in anno propriam parochiam, in qua fama fuerit hæreticos habitare, circumueat, & ibi tres, vel plures boni testimonij viros, vel etiam si expedire videbitur, totam viciniam iurare compellat: quod si quis ibidem hæreticos sciuerit, vel aliquos occulta conuenticula celebrantes, seu à communi conuersatione fidelium vita, & moribus dissidentes, eos Episcopo, vel Archidiacono studeat indicare. Episcopus autem, seu Archidiaconus ad præsentiam suam conuocet accusatos, qui nisi se ad eorum arbitrium iuxta patris consuetudinem ab obiecto reatu purgauerint, vel si post purgationem exhibitam, in pristinam fuerint relapsi perfidiam, Episcoporum iudicio puniantur. Si qui verò ex eis iurationem superstitione damnabili respuentes, iurare fortè noluerint, ex hoc ipso hæretici iudicentur, & penis, quæ prænominae sunt, percussantur. Statuimus insuper, ut Comites, Barones, Rectores, Consules ciuitatum, & aliorum locorum, iuxta communionem Archiepiscoporum, & Episcoporum, præstito corporaliter iuramento⁴ promittant, quod in omnibus prædictis fortiter, & efficaciter, cum ab eis fuerint exinde requisiti, Ecclesiam contra hæreticos, & eorum complices adiuuabunt, & studebunt bonâ fide iuxta officium, & posse suum Ecclesiastica simul, & Imperialia statuta, circa ea, quæ diximus, executioni mandari. Si verò id observare noluerint, honore, quem obtinent, spolientur, & ad alios nullatenus assumantur, nihilominus excommunicatione ligandi, & terræ ipsorum interdicti sententiæ supponantur. Ciuitas autem, quæ his decretalibus institutis duxerit resistendum, vel contra communionem Episcopi punire neglexerit resistentes, aliarum carcat commercio ciuitatum, & Episcopali se nouerit dignitate priuandam. Omnes etiam fautores hæreticorum, tanquam perpetuâ infamiâ condemnatos, ab aduocatione, & testimonio, & aliis publicis officiis decernimus repellendos: si qui verò fuerint, qui à lege dicecesanæ iurisdictionis exempti, soli subiaceant Sedis Apostolicæ potestati, nihilominus in iis, quæ superius sunt contra hæreticos statuta, Archiepiscoporum, vel Episcoporum iudicium subeant, & eis in hac parte tanquam à Sede Apostolica⁵ delegatis pareant, non obstantibus libertatis suæ privilegiis.

NOTÆ.

1. **L** *Vinc. III.*] Ita etiam legitur in prima editione, *sic hoc in cap. final.* nullibi tamen exprimitur, an alicui Prælo præsentem duxisset constitutionem: & credo eam pro omnibus regionibus, ubi tunc hæreses vigebant, ac pullabant, edidisse, eamque facillè Veronæ, ubi conueniant anno 1185. ipse Pontifex, Fredericus Imperator, & alij Ecclesiastorum Prælati, non quia ibi Concilium celebrarent, ut aliqui putarant, cum tantum conuentum ibi haberent pro quorundam negotiorum expeditione, ut refert Baronius anno

D. D. Genial. in Decretal. Tom. V.

1185. & si fallor tunc ex consilio dictorum Prælatorum, & fauente Imperatore Lucius edidit præsentem constitutionem, cuius alia pars refertur in c. *præterea*, de inepiscopis. ut iam notauit ibi.

b. *Præsentia.*] Quia ipse Fredericus Imperator anno 31. sui Imperij conuenietur cum ipso Pontifice Veronæ, ut refert Baronius *ibi supra*.

c. *Canones, & Patres.*] De quibus ego superioris textu.

d. *Pauperes de Lugduno.*] Qui conperant temporibus Alexandri III. anno festè 1160. seu 1170. qui etiam dicuntur Vvaldenses, à quodam Vvaldone eius Lugdunensi, qui facultatibus

Q 3 in

in pauperes distributis, arrogantem predicatorem officium usurpant; & cum esset ignarus, ipsa multipliciter erravit, & alios errare fecit, ut referunt Gualterius *facul.* 12, cap. 15. Præcolos *lib.* 15, de hereticis, verbo Pauperes de Lugduno, num. 13. Eneas Silvius *lib.* de origine Bohemorum, cap. 55. Guido Carmelita *anno Domini* 1170. Abbas Vespertinus *in chron.* Trithemius *in chron.* anno 1170. à quo ciue Lugdunensi appellati sunt Pauperes de Lugdono, ut probat Peña ad Emericum 2. *part. Directory, comment.* 39. quorum errores, & perditissima dogmata referunt Genebrardus, & Silvius *supra*, Salelles *tom.* 2. de materiis tribunal. S. Inquisitionis, *lib.* 3, cap. 14. regul. 167. Eorum hæreses damnatæ fuerunt in Synodo Romana, & in Concilio Lateran. sub Alexandro III. celebrato, ut iam notavi in cap. final. de Relig. dom.

2. c. Arnaldus.] Arnaldus genere Brianus, cum aliquot annis in Gallis literaturæ studiis operam dedidisset, anno 1139 Brianus reclusus, & religiosum professus est: cuiusque eloquentiæ non parum valetet, novus, prævalens opinio in Ecclesia seminavit, negans monachos clericosque, aut Episcopos aliquid proprii habere posse, omnisque Principum esse assensum. Quare eum Ecclesia Brianam turbaret, ab eius verbis Episcopo accersitus fuit in Concilio Later. ubi eodemque anno, ex Italia excedi iussus fuit: sed postea in Italiam reversus, Romæ tumultum suscitavit, ut Senatores à Magistratibus creati à Pontifice recederent: quare ab ipse capillus, tandem Romæ combussus fuit, & eius cineres in Tiberim sparsi, ut referunt Ortho Frisingensis *lib.* 2, cap. 20. Batonius *anno* 1155. Salelles *dist.* *lib.* 3, cap. 14. regul. 269. num. 89. Pancirola *lib.* 2. *varior.* cap. 178. De eo D. Bernardus *epistol.* 196. ita scribit: Arnaldus de Brichia, cuius conversatio mala, & doctrina venenosa, cui caput columba, cauda scorpionis est; quem Brizia excomunicavit, Romæ exhorruit, Francia repulsi, Germania abominatur, Italia non vult accipere, fortis esse vocisum: videtur quasi ne vestra auctoritate ipsi nocere. Ab ipso Aroaldo eius sectatores Arnaldistæ dicti sunt, ut probat Theophilus Raynaud.

f. Apostolus.] Ad Romanos cap. 10. Eo sensu Gregorius Turon. *lib.* 2. *histor.* cap. 25. scripsit illud: Sine heresi accipi non potest, ut in Ecclesia non obediatur Sacerdoti Dei, cui ad pascendum oves commissi sumus; & ille se ingerat potestati, cui nec ab hominibus, nec à Deo aliquid est commissum.

g. Predicare.] Ut dicemus infra in cap. 12.

3. h. Sede vacante.] Non quia Episcopi, aut electi Sede vacante facultatem habeant definiendi dubia etica fidem, aut discernendi falsam à vera doctrina: quia hoc tantum ad Pontificem, seu Concilium generale spectat, cap. quoniam, 24. *quæst.* 1. cap. maiores, de Baptismo; sed cum aliqui errant in his, quo iam distincta sunt per Ecclesiam, possunt Episcopi eos hæreticos declarare, se in eos adimaduertere: quo modo verba hæc accipiunt Anania & Peña in præfati, Albertinus de agnoscend. *assert.* *quæst.* 8. num. 5. & facit sensus in cap. super quibuscumque, §. 1. de V.S.

i. Defensores.] De quibus plura addocemus infra in cap. 15. §. credentes.

4. j. Continuo.] Quando tamen dicatur hæreticus continendū penitentem, non constat apud interpretes, ut videre est apud Barbosam in præfati, Caenam de offic. Inquisit. *part.* 2. tit. 2. §. 1. Sebastian. à Salelles *tom.* 3. de materiis Tribunal. S. Inquisit. *lib.* 3, cap. 5. regul. 385. Illud certum est, non solum ad

revertendum esse ad reconciliationem hæreticum, qui primò interrogatus in iudicio confessus fuit errorem suum cum signis veræ penitentiae; verum & eum, qui in quocumque statu processibus errorem fatetur, etiam in ipsa tortura, vel postea, ut docuerunt Carena, & Salelles *supra*, Peña ad Emericum 3. *part. Directory, comment.* 4. Grillandus de hereticis, *quæst.* 5. m. a. Farinac. de heresi, *quæst.* 195. §. 1. a. num. 27. Soula *lib.* 2. *apostol.* Inquisit. cap. 44. num. 7. Diana *part.* 4. *tract.* 7. *resol.* 34. Transmiera de polygam. *lib.* 3. *quæst.* 15. & cauetur capressè in Infrui. 12. *dist.* 1. in modum etiam post sententiam mortis ipsi reo intimatum, priusquam in suo carcere, vel in ipsa bota, dum adducitur ad locum, ubi sententia ipsa publicè recitanda est, peniteat, admittendus est ad reconciliationem, ut docent in præfati, & infra in cap. excommunicationis, Cardinalis, Ioannes Andreas, Abbas, & Anapias, Sylvestri in summa, verbo Hæresis, Peña *dist.* *comment.* 41. num. 175. Farinac. *dist.* *quæst.* 143. §. 2. n. 56. Diana *dist.* *resol.* 24. Salelles, & Carena *supra*, Transmiera *ubi proxime*, qui testatur de hac præfati omnium Tribunalium. Vnde hæc verba continui, & confessio, huius tenus, ipsi accipiunt, hoc est post sententiam, antequam tradatur brachio seculari: quæ præfati ut pia sequenda est, et præfati constitutioni minus consona videatur, cum capressè Lucius in præfati agat de reo penitente continuo, & confessio post apprehensionem erroris, videlicet statim ac apprehensus est in ipsa hæresi, ac carceri mancipatus, ore non ad iudicium adductus: dictio enim confessio, significat eum prius iudicii copia haberi potest, l. 2. §. confessio, ff. ad Trebel. Barbosa de distinctionibus, *dist.* 65. & 68. Sed quæ iuxta benignitatem, & pietatem aliquam moram admittunt dictiones hæc continui, & confessio, ut ea aliis docet ipse Barbosa, ideo in Tribunalibus S. Inquisitionis receptum est, ut continuo dicant penitere etiam qui post sententiam publicè recitatam penitent: pro qua præfati textus in cap. excommunicationis 15. §. 1. hoc ritul. ubi ita generaliter cauetur: Si quis autem de prædictis, postquam fuerint deprehensi, redire volunt ad condignam penitentiam agendum, in perpetuum carcere detineantur. Vbi nulla facta distinctione temporis intra quod hæreticus errorem suum fatetur, ad penitentiam admittitur. Imend & postquam hæreticus iudici seculari relaxatus est, & in ipso loco supplicii reperitur, si errorem suum agnoscent penitentiam petierit, admittendus est ad reconciliationem, ut probant Peña, Farinacius, Transmiera, & Salelles *ubi proxime*: credendum tamen, hanc benignam sententiam sequendam esse, cum ipse reus magna, & vera contritionis signa dedit; alius eum potius metu mortis imminuentis converti credatur, rectius facient Inquisitores, si sententiam eæqui madoerint. Vide ante iustificationes 11. & 44.

k. Abiurare.] Ad quam abiurationem omnes hæretici teneantur, aliis nisi abiuratus propriis exortibus, Ecclesie reconciliari nequeant, cap. si quis 42. cap. in Ecclesia 68. 1. *quæst.* 1. cap. si quis 8. cap. saluberrimum, cap. denotari 1. *quæst.* 7. plura Ant. August. in *epist.* *lib.* 1. tit. 70. & probant in *can.* 22. *Concil.* *lib.* 2. ubi de origine, & forma huius abiurationis egi. De eius differentiis, ac requisitis latè egerunt Emericus in 3. *part. Directory*, ubi Peña *comment.* 37. Soula *lib.* 2. *apostol.* Inquisit. cap. 40. Carena de offic. Inquisit. *part.* 3. *titul.* 12. Salelles de materiis Tribunal. S. Inquisit. *lib.* 3. cap. 3.

cap. 3. per totum, Simancas de Catholicis, tit. 11. & in Enchirid. tit. 53. Illud (non omitam), olim hæreticos post abtutionem suorum errorum vngi consecratis sacro chrismate in fronte, oculis, natibus, ore, & auribus, vtz Concil. Constantinop. 2. probat Menardus in notis ad libr. sacrum. D. Gregory, fol. 113. Hæc ablutatio hæreticis libello oblatio omnibus hæreticis semper iniuncta fuit: aliqui verò, vt Nouatiani, vltra abtutionem, per chrismatis unctionem recipiebant, Synodus Nicæna 1. can. 8. & Nicæna 2. can. 7. quia Nouatiani Episcopi à se baptizatis manus non imponebant, nec chrisma consuebant: vnde eos obiurgant Pacianus episc. 3. ad Symp. his verbis: *Vestra plebi enim spiritus, quam non consignat vinctus sacerdos, Theodoretus lib. 5. hæretic. fabul. cap. 5. ibi: Iis, quos baptizamus, sanctissimum chrisma non præbent: quapropter eos, qui ex hac heresi corpori Ecclesie coniunguntur, laudatissimi PP. inungi præceperunt. Vnde illis hæreticis, & similibus ad Catholicam fidem redeuntibus tribuendum censuit Ecclesia sacramentum, quod ommissum fuerat ob hæresim. Syricus Pontif. in epist. ad Himerium, cap. 1. vbi agens de Arianis ait: *Quos nos cum Nouatianis, aliisque hæreticis, sicut in Synodo constitutum est, per invocationem solum sepiusimus Spiritus, Episcopalis manus impositione Catholicorum consensus facimus, quod etiam tunc Oriens, Occidentique custodit, Concil. Arelat. 1. can. 1. vbi casetur: Ps hæretici, qui in Trinitate baptizati sunt, ab hæresi redeuntibus, manus tantum imponatur, vt accipiant Spiritum sanctum. Idem omnino decreuerunt Innocent. I. de Nouatianis, & Montenibus in epist. ad Valtricum: & Leo I. in epist. ad Rusticum, & in Concil. Arelat. a. habito anno 452. ita exauct in canone 19. *Bonifacius autem ex eodem errore venientes, quos sicut Arianos baptizari in Trinitate manifestum est, si interrogati fidem nostram ex toto corde confessi fuerint, cum chrismate, & manus impositione in Ecclesia recipi sufficit. Et in Synodo Atracis. 1. anni 441. can. 1. ita legitur: Hæreticus in mortis discrimine positus, si Catholicis esse desiderant, si desit Episcopus, a Presbyteris cum chrismate, & benedictione consuegi placuit. Concilium Epau. can. 16. Presbyteris propter salutem animarum, quam in cunctis operibus desperatis, & decumbeantibus hæreticis, si conversionem subitam petant, chrismate permittimus subuenire: quod omnibus conseruatis, si sani sunt, ab Episcopo expectandum. Alij verò hæretici, qui Confirmationis sacramentum agnoscebant, tantum per penitentiam communioni restituebantur. Gregor. Magnus lib. 9. regestr. epist. 161. Illustrant P. Marcha in notis ad can. 2. Concil. Claremont. vbi hæc verba refert ex quadam veteri Græca collectione: *Nestorianus vero, & Eutycheianus oportet conscribere libellos, & hæresim mathematicare, vna cum Nestorio, Eutyche, Dioscore, & Severo & illis, qui similia fecerunt, & ceteris omnes hæretes, & participes fieri similia communionis.****

1 Subiectum.] Cap. excommunicamus 13. q. qui autem, infra hoc titulo, & vbi dicimus.

m Relinquendum.] Consonant expat Accusatus, in princip. & q. cum verò, & q. illo quoque, hoc tit. in 6. qui testis desumptus est ex Bulla Alexand. IV. quæ incipit: *Quid super*, quoniam refert Eymericus ad calcem Director. Inquisit. Conell. Naebon. can. 12. & ita relapsi, quæuis penitentia, nulla abturatione facta sunt omnino tradendi brachio seculari, itaq; recepto sacramento

Penitentia, prout strangulantur, & postea defuncti comburantur: si verò impenitentes, & pertinaces persistant, viol flammis tradantur quam paxim communiter receptam probant Peña ad Eymericum, 3. part. Directorij, comment. 83. Scoria in select. iborem 36. num. 2. Fairnax, de hæresi quest. 195. num. 4. Sanctarellus eod. tract. cap. 42. num. 17. Simancas de catholicis, tit. 57. num. 16. in 1. 1. tit. 3. num. 172. lib. 8. recopil. Decianus lib. 5. tract. crimin. cap. 16. num. 7. Cantera q. crimin. de hæresi, cap. 1. num. 13. Delbene de offic. Inquisit. dubit. 161. cum seq. Suarez de fide disp. 23. sect. 2. Catena de offic. Inquisit. part. 2. tit. 2. §. 6. Castropalao tom. 2. oper. moral. tract. 4. disp. 6. parit. 2. num. 9. Sonfa in apborism. Inquisit. lib. 2. cap. 45. Salellis tom. 3. de mater. Tribunal. Inquisit. lib. 3. cap. 6. regul. 311. Ratio est, tum quia la, qui semel lapsus veniam obtinuit, & hæresim abiurauit, & ad libertatem peccandi quadam confidenti abiurauit, indigna est reconciliacionis beneficio, nec ei patendum est, qui impunitatem veteris delicti non emendacioni, sed consuetudini deputauit, l. 3. Cod. de Episcop. aud. iunctis traditis à Gomezio lib. 3. var. cap. 3. num. 60. Padilla in Laxisigere, num. 47. Cod. de transact. Iulio Clauo in praxi, §. vlt. quest. 59. num. 9. tum etiam quia confessio hæretici relapsi, qui semel inenitans fuit, nec potest illi id quod per abturationem promittitur, & ad Ecclesiam decipit, presumitur simulata, intra regulam Semel malus, de R. lib. 6. & quia Ecclesia, quæ ex præteritis præsumit circa fortia, cap. scribam, de præsumpt. & corda non intuetur, minimè admittendam talem coersioem iudicauit: docent & argumentis hæreticorum satisfaciunt, quibus ipsi probare intendunt relapsi penitentiam esse concedendam, D. Thomas 2.2. quest. 11. ar. 4. Castro lib. 2. de infra hæresi. punit. cap. 2. Simanc. de Catholicis, in 1. tit. 57. num. 10. Licet autem relapsi venia non concedatur, vt mortem, aut relaxationem eantur, petentibus tamen penitentiam quoad saltem spirituale Ecclesia non denegat, quia nemini clauduit gremium, cap. dice 23. quest. 4. final. Cod. de summa Trinit. Conarru. lib. 2. cap. 1. num. final. Catena de sacrament. præstand. quest. 1. num. 9. facient quæ de penitentia lapsi præstanda, non verò communionem, adduxi in can. 1. Concil. Milver. Et licet vltimo supplicio damnatis regulariter Eucharistia concedatur, Clemens. vnic. de penit. & remiss. tamen generali consuetudine Inquisitionum Hispaniæ receptum est, vt his relapsis etiam penitentibus sacramentum Eucharistiæ non ministretur, vt testatur Catena vbi præmit.

Valde autem caute, & attendere debent Inquisitores, an verè relapsus sit reus, vt eius persona iudici seculari relaxetur, nam alius est relapsus verè, qui scilicet deprehenditur in hæresim abiuratam recidisse, de quo agitur in presenti, & in cap. super op. & cap. accusatus, §. cum, hoc titulo in 6. quem explicant Manrique anal. Cister. anno 1214. cap. 3. mon. 9. Becanus de fide cap. 15. quest. 9. Petr. Gregor. lib. 2. part. 1. §. cap. 3. alius est relapsus præsumptus per iuris interpretationem, qui scilicet post abiuratam vehementem hæresim suspitionem, in ipsam hæresim incidit, de quo agitur in d. cap. accusatus, in princip. & in 5. ille quoque; nam eo casu ex hæresi sublequens deducit ius vehementem præsumptionem, scilicet in veritate præcessisse hæresim; sed probationem defecisse, dist. cap. accusatus, iuncta eius integræ, quæ extat in 1. part. direct. Inquisit. Inde deducitur, relapsum verè,

vel præsumptio quoad iuris effectum neminem
esse, nisi præcedat abjuratio solennis, per quam
Ecclesiæ reconciliatus reus, iuxta præsentem tex-
tum, & in *dist. cap. accusatus*, & in *dist. cap. super*
eo, ibi: *si abjuratum*; secundum quos effectus re-

EX hac diffusa constitutione sequens assertio 9.
disputanda est: *Hæretici impenitentes, seu per-* *Conclu-*
tinaces in errore, tradendi sunt Curia seculari; & si *110 tra-*

non sicut legem, quâ homo libertati suæ relicta, & in arbitrio propria consensum, sibi in seipso vel mortem appetit, vel salutem. In Arrianum hæresim a riter invehitur Athanasius ubi proximi, quod p̄tina in contradicentibus vîa esset iudicium potestate, & quos nun potuisset verbis inducere, eos vi, plagis, carceribus ad se pertrahere niteretur: atque iniquis, seipsum, quàm non sit p̄ia, nec Dei culicis, manifestum. Leo Magnus ep̄i. 71. non maiorem poenam de hæreticis poscit, quàm ut sicut dotio, & vrbe excludantur. Socrates adversus Theodosium Episcop. lib. 5. c. 3. de Macedonianis nimium prosequentibus: Hec, inquit, non erat de more veritatis Ecclesia, quæ homines per se quâ non saltem, Et ut ait Leo ubi supra: Quid vero profuit sanguis effusus hæreticorum nisi et ipsi sanguinem Martyres haberent, licet falsus? Quemadmodum Optatus Milevitanus notavit, & pluribus p̄diti sæculi D. Bernardus sermone 66. in Cantica sub finem. Ecclesia enim sanguinem abhorret, longè differens, ut p̄nta, veraque est, ab impuro, falsoque Mahometi Alcoranismo, de quo Richardus Mochois Ordinis Prædicatorum, in consuetis. Alcoranismo, cap. 10. ait: Ille aduersus nos credentes Alcoran clamans: Interimite, interimite: atque Alcoranisi sacerdotes verba pro illo fulciant evadunt esum, nunquam manentem. Nostri verò Evangelium ducunt evadunt pro inimicis, & nostri sacerdotes non esum, sed crucem totam; non tolerantiam, sed manifestum signum ostendentes. D. Bernardus sermone. 64. Hæretici capientes poenam quam effugiant: capientes dico, non armis, sed argumentis, quibus resellunt errores eorum. D. August. ep̄i. 48. Neminem ad unitatem Christi esse cogendum, verbo esse agendum, disputatione pugnam, ratione concedendum, ne fides Catholicis habuerimus, quos apertis hæreticis moueramus. Athan. apol. 2. Cades & vincula aliena sunt à nostra Ecclesia, Et Valentinianus initio vii impensè egiit, ut libera voluntate quisquam eulorum religionis teneret, l. 9. C. Theodos. de malefic. & mathem. ibi: Testes sunt leges à me in exercitio Imperij mei data, quibus unicuique quod ante imbibisset, celando libera facultas tributa est. Refert Am. Marcel. lib. 30. de eo Valentiniano agens, ibi: Hoc moderamine Principatus inclinat, quod inter religionem diuersitas modum exiit, nec quorundam iniquitatis, nec ut hoc celeretur, imperantis, aut illud, Facit Arnob. lib. 2. Quid est tam iniustum, quàm iniustis exorquere in contrarium voluntates, in excois quod nolint, & quod refugium animis; prius nocere, quam profici, & prius detractis, in alienum habitum, sententiamque traducere. Et Socrates lib. 3. historia, cap. 21. iaudat Imperatorem Iovinianum, quod cuique pro arbitrio religionem proficere permissit. Facit tertius in cap. qui secundum, 23. quæst. 4. & Episcopus Gallie intendebat hæreticos ab vrbe repellere per Iudices sæculares, hæc ait Sulpitius Severus: Tam verò iudiciis, atque iusticiis acriter inflare, arbitrium posse inter iniuria malum comprimere: sed parum sancti consilij sæculares iudices adhibere, ut eorum decretis, atque executionibus hæretici vribus pellerentur. Igitur hæretici non sicut poenis p̄cipue temporalibus cogendi, ut fidem nostram Catholicam profitentur. Auguet prius hæc dubitatio ratio ex eo, quia in Republica Ihebreorum diuersæ erant sectæ, videlicet Sadducæorum, & Phariseorum, ut constat ex cap. 23. Actuum Apost. vers. 6. ibi: Sciens quia una pars esset Sadducæorum, & altera Phariseorum. Sed Sadducæi appetere hæretici erant, quippe qui mortuorum resurrectionem negabant, & admitterant

ad concilia, ac synedria. Igitur quia vnicuique liber est opinio, & dogmatum selectus: Angitur secundò hæc difficultas ex parabola Patriarcharum, qui setius zizaniam exstirpare volentibus, & dicentibus apud Mattheum cap. 13. vers. 28. Visimus, & tunc erimus ei ait: Non, ne forte colligentes zizaniam, eradecitis simul cum eis & triticum: sicut vergete auferre vique ad messem. Cùm ergo passim Interpreter zizaniam hæreticos esse doceant, sequi videtur, non esse cum eis vi agendum, sed tempus messis expectandum, extimum scilicet iudicij diem, Christoque Domino Iudici causæ suæ cognitionem integram referendum esse. Deinde difficultas est ea pars assertionis, ubi docetur, clericos hæreticorum degradandum esse, & tradendum Orici seculari: nam clericus nisi incorrigibilis sit, degradari, & iudici seculari tradi nequit, cap. cum non & homine, de Iudiciis. Igitur non statim ac in hæresim lapsus est, degradandus venit.

Adhuc tamen defendenda est præsens assertio, pro cuius expositione scite oportet, hæresim totum ritum etiam esse, & grauius idololatric. Sanctus Irenæus lib. 2. aduersus hæreses, cap. 9. Hæretici Ethnicis priores efficiunt eos, qui ostentant eis, ubi enim creatura potius, quàm creatori seruiunt, & his quæ non sunt Deo, verumtamen primus de hac locum attributum sacrificatoris huius universitatis Deo. Hi quidem hunc quidem labilis fallorem dicunt, ipsi merentibus, omnem malitiam capulantes ei, eum quidem, qui est Deus, blasphemantes: eum autem, qui non est, Deum fingentes, in suam ipsorum condemnationem. Laborant in gravitate, & atrocitate huius peccati derenda vici præstantes Stapletonius oratione in Applicatione controuers. Conradus Brunus lib. 2. de hæresis. Petrus Simon trall. de hæresi, cap. 15. Lactantius lib. 1. 3. de Christi libert. Calisto lib. 1. de iussu hæretic. ponis. cap. 2. Nicol. Romeus in Caluini effigie, in monitione ad lectorem, Theophilus Raynaudus in op̄theus de column. scilicet serie 2. cap. 5. Salles & alij in hoc titulo pallio citati, qui omnes consentiunt, hæresim omnino in se malum complecti, & esse completam quandam malitiam, vel potius malorum quoddam compendium, radicem enim fidem, quæ est primò supernaturalis boni gemine radicis autem aulicæ, unde erisset fructus bonus in iustitia, & sanctitate veritatis? Alia sanè peccata, quamvis immania, gerunt radicem gratiæ fidei, cantis, & gloriæ instaurum relinquunt, quamvis destruant gratiam, & præsentis ias ad gloriam. At hæresis totius iustitiæ principium euellit, sine qua nulla actio libera supernaturalis, nulla apud Deum quomodolibet meritoria actio profunda potest. Merito itaque sanctus August. lib. 3. contra duas epistolas Pelag. cap. 3. censet in scripturis nomine peccati absolute dicti intelligi infidelitatem, quæ in hæreticis eo ceteris est, quod præcedens Dei beneficium in baptismi consecratione totis magis obstringit: ac Deo. Et quamvis odium Dei, & peccata directe opposita bono diuino, ut in se est, sint tota quàm hæresis, & D. Thoma 2. 2. q. 34. art. 3. tamen extrinsecus infidelitas (atque adeo hæresis) potest absolute dici peccatum, quia: it in suo genere grauior, quàm peccata opposita virtutibus moralibus, etiam si, quæ extrinsecus quædam Dei bona resiciunt, euoluntati est religio. Licet insuper hæresis grauitatem eruat ex incredulitate, & malignissimis eius causis, de quibus bene & late Calisto lib. 3. de iussu hæretic. ponis à c. 2. & lib. 1. aduersus hunc est, & c. 11. Stapletonius orat. de causis grauium hæreses. Quam verò hæresis

IO.
Deus
TAV.

hæresis exiolois sit regnis, io quæ pedem infert, huculenter persequitur Ribadeneira lib. 1. de Princ. cap. 17. & 18. addens cap. 19. quæ personas Deus repetat à Principibus, & Rebus publicis hæresi occupatis. Sunt sanè tanta hæreticorum hæresim comitari tradiderint, ut Cretolus lib. 3. mystag. cap. 16. Hanc *Maius adulterium* nominari decernit S. Ambrosius *sermon. 2. de Christi accusat.* Græuius est enim religionis adulterium quàm corporis; & plus est integritatis animæ ledere, quàm integritatem hominis violare. Hanc ob causam Agatho Abbas vir inter monachos olim insignis, cum ad varia probra, etiam turpitudinis, fixus fuisset, audire tamen hæreticos nullo modo sustinuit, & rationem reddidit lib. 5. *quæst. Patrum*, p. 11. his verbis: *Sermonem quem abiciissis de hæresi, non potui sustinere, & valde abominatus sum, quia hæresis separatio est à Deo. Hæreticus enim separatur à Deo vivo, & vero, & coniungitur diabolo, & Angelis eius. Alienatus enim à Christo iam non habet Deum, quem exorat pro peccatis suis, quia ex omni parte perit. Itaque sanctus hic pater hæresim quovis peccato turpiorem, & avertibilisorem statuit. Egregiam tam tunc labis detestationem suppeditavit Guillelmus Paris, lib. 1. de mor. cap. 1.*

Vnde contra crimen ita grave, & teterrimum iuxta leges, tam civiles, quàm ecclesiasticas atque. Circa poenitentiam statuta legibus contra hæreticos, non consentiunt Ant. Gomez lib. 3. *variar. cap. 2. n. 1.* Damouderius in *praxi* cap. 61. Decianus lib. 7. *trall. crimin. l. 1.* Farinus, de *hæres.* q. 112. Ant. Martheus de *criminib. tit. 2. n. 2.* Paramas de *orig. S. Inquisit.* lib. 3. q. 3. n. 114. Contradus Kling lib. 3. *diff. c. 12.* Gudelmus de *iure iurissimo* cap. 6. n. 46. Cætera *q. q. criminal. c. 2. de hæresi, n. 59.* Petrus Gregor. lib. 3. *synag. c. 8.* quomodo sententia omittis dicendum est cum Carolo Augusto Mela p. 3. *instit. cap. 10.* iure civili nullam certam poenitentiam statutam fuisse contra quoscunque hæreticos, sed tantum prius committendos esse vindictæ: deinde arbitraria ultione plecandos esse censuisse Imperatores in l. 2. *C. de summa Trinit.* quare aliquando eodem late attentio, tantum ab Ecclesiæ limine atque, quando videlicet ob eorum multitudinem sollicitudines oriuntur, & vires deficiunt. Quandoque illis testimonium ferre prohibetur, ac viæque testamenti factio denegatur, *Legimus, l. penult. & ult. C. de hæres. & prohibetur alia similia agere, quæ collegimus I. Gothofred. in par. ad tit. C. Theodosius de hæresibus, Vvesembecius in parat. ad tit. C. eodem tit. Petrus Gregor. lib. 3. *synag. cap. 8. n. 9.* Aliquando etiam visum fuit hæreticos cum aliis fidei libris versari, sed hominum carere suffragiis, l. 3. *de Apostatis.* Quandoque ex hæresis circumstantiis, atque atrocitate deportatio inluogebatur, l. 4. §. 8. *C. de hæresi. l. fin. C. de apostat. & consequens erat amissio bonorum, l. de portatorem §. C. de panis, l. Divinus fide bonis damnat, quæ bona pro æterno modò publicabantur, l. 4. *C. de hæres. modò propinquas onodoxis cedebant, l. 4. in fin. l. cognovimus §. C. de hæresibus, observavit Cujae lib. 11. *obs. c. 30.* Sed quia hæreticorum nequitia quodque ita atrox erat, ut eorum scelera publicum crimen inducerent, ultimum supplicium in eo sanctum fuit, l. *Artemi, c. de hæresibus l. quicunque, C. de iur. Vnde concludit Mela ubi supra, nullam certam poenitentiam iure civili in hæreticos fuisse statutam, sed tantum arbitriam, ita ut gravibus punirentur seductores, quàm ipsorum sectatores. Nostri Catholici Reges poenam igois****

io quoscunque hæreticos sanxerunt in l. 4. *str. 26. p. 7.* & iam anno 843. Ramiticus Rex Llanonis tradidit omnes fortilegos, & necromanticos sui temporis, teste Mariana lib. 7. *hystor. c. 13.* & Catholicum Regem D. Ferdinandum honoris proprii ligna detulisse ad comburendos hæreticos, refertur Lucas Tudensis era 1255. ibi: *Quoscunque reperibant hæreticos, et flammas accendit, ipse vice famulorum ignem & ligna in eis comburendis ministrabat.* Mariana lib. 12. *hystor. c. 11.* ibi: *Ferdinandus Rex regni potentis, hæreticis infensus maxime, quos tormentis exagrandas curabat, solitus ipse quasi villimarius ignem arboris mœni, lignaque subicere improbitatis adit.*

Sacri etiam Cæneses hæreticos non solum affecerunt poenis spiritualibus, videlicet anathematice, & sepulture ecclesiasticæ priuatione, cum quibus egi proximo commentario, & in c. hoc tit. vel totum & temporalibus, ut infamia, quæ illi, ac posteris eius notantur, c. quicunque, §. hæretici, c. *flammarum*, et l. hoc tit. in 6. Synodus Nicæna *can. 49.* apud Iulium *epist. 2. c. 13.* ibi: *Infames esse censuimus omnes, qui suam, aut Christianam prædicantur legem. Quod etiam legibus Regis cautum fuit in l. 4. tit. 26. p. 7. l. 3. tit. 3. lib. 8. Recopil. & ad quos gradus protrahatur nota hæc exponunt Couste, lib. 2. *variæ l. 8.* Azor p. 1. *instit. lib. 8. c. 13.* q. 8. Parlatore, in *sequestrator. differ. 108. n. 1.* Barbosa in d. *flammarum.* Etiam puniuntur honorum priuatione, ut sequenti commentario probabimus, & deportatione. Leo *epist. 73. ad Leonem Imperator.* ibi: *Christi hæretici non solum ab ordine clericorum, sed etiam ab orbis habitatione pelluntur.* Gregorius VII. lib. 7. *regulæ p. 1. epist. 27.* ibi: *Inimici ut cum facias perfidia non in aperto signati, & deinde ex toto Archiepiscopatus tuo ipsum expulsus hæresim eius cunctis detegende ubique, quantum potes, ut apostatam, & christianis unitatis inimicum non desinas persequi. Et constat ex Pothif. Rom. in Gelasio, ibi: Gelasii temporibus inveniuntur Manichæi in urbe Roma, quos in exilio deportari præcepit, quorumque codices ante fores Basilicæ a familia Adaria incendio concremavit. Et postea Hermilda inuenit Manichæos, quos etiam discussos eorum examino plagarum exilio deportavit. Et tandem fletici sunt, degradantur, & tudicio seculari traduntur, ut debitis poenis plecantur, videlicet ignis supplicio, ut censuit Episcopus Alexand. in *alim. c. Concil. Chalcedon. contra Euryben*, ibi: *Eurychus qui præter dogmata Ecclesiæ sapit, non solum poena dignus est, sed & igne.* Quæ ignis poena valde propria est hæreticorum, propter Evangelij auctoritatem, *Joan. c. 15.* ibi: *Si quis in me non manserit, mittetur foras, & unquam palmes arefiet, & colligent eum, & in ignem coniciant.* Et ultimo supplicio hæreticos esse afficiendos, probat Patet Menochius lib. 2. *pol. c. 3.* variis sacre paginæ auctoritatibus, præcipue Deuter. 21. 3. *vers. 1.* ubi ita legitur: *Si fuerit in medio tui Propheta, aut qui somnium se vidisse dicat, & prædixerit signum, atque portentum, & tueretur quid loquutus est, & dixerit tibi: Eamus, & sequamur Deum alienum, quos ignem, & sermionem eius, non audies verba propheta illius, aut somniatoris, quia tentat vos Dominus Deus vestrorum, ut palmam fiat, etrum diligatis carnem non, in toto corde, & in tota anima vestra. Dominum Deum vestrum sequimini, & ipsum timeat, & mandata illius custodiat, & audiat vocem eius: ipsi sermionis, & ipsi adhibebitis. Propheta autem, aut filior somniorum interficiantur, quia loquutus est eis vos auerteret à Domino Deo vestro, qui eduxit vos de terra Ægypti, & redemisti vos de manu servituti, ut errare faceret de via, quam tibi præcepit Dominus Deus tuus.***

12.

TIT. DE POENIS HÆRETICORUM, ET DE CANONICO.

fenforibus, receptatoribus, & fautoribus, ac etiam credentibus confundantur: & cum se viderint ab omnibus cuitari, reconciliari desiderent omnium unitati. De communi ergo fratrurn nostrorum consilio, assensu quoque Archiepiscoporum, & Episcoporum apud Sedem Apostolicam existentium districtius inhibemus, ne quis hæreticos receptare quomodolibet, vel defendere, aut ipsis sanere, vel credere quoquo modo præsumat: præfensi decreto firmiter statuentes, vt si quis aliquid horum facere fortè præsumpserit, nisi primò, secundòve commonitus à sua super hoc curauerit præsumptione cessare, ipso iure sit factus infamis: nec ad publica officia, vel consilia ciuitatum, nec ad eligendos aliquos ad huiusmodi, nec ad testimonium admittatur. Sit etiam instabilis, nec ad hæreditatis successionem accedat. Nullus præterea ipsi cogatur super quocumque negotio respondere. Quod si forsan iudex exiterit, eius sententia nullam obtineat firmitatem, nec causæ aliquæ ad eius audientiam perferantur. Si fuerit Aduocatus, eius patrocinium nullatenus admittatur. Si Tabellio, instrumenta confecta per ipsum nullius penitus sine momenti, sed cum auctore damnato damnetur: in similibus etiam idem præcipimus obseruari. Si verò clericus fuerit, ab omni officio, & beneficio deponatur, vt in quo maior est culpa, grauior exerceatur vindicta. Si quis autem tales postquam ab Ecclesia fuerint denotati, contempserit cuitare, anathematis se nouerit sententiam incurrisse. In terris verò temporali nostræ iurisdictioni subiectis, bona eorum statuimus publicari, & in aliis idem fieri præcipimus per potestates, & Principes seculares, quos ad exequendum, si fortè negligentes existerent, per censuram ecclesiasticam, appellatione postpositâ compelli volumus, & mandamus: nec ad eos bona ipsorum vltius reuertantur, nisi eis ad cor redeuntibus, & abnegantibus hæreticorum consortium aliquis voluerit misereri, vt temporalis saltem pœna corripiat, quem spiritalis non corrigit disciplina. Cum enim secundum legitimas sanctiones, reis læsæ Maiestatis punitis capere, bona confiscantur ipsorum, eorum filiis vitâ solummodo ex misericordia conferuata, quamò magis qui aberrantes in fide, Deum, & Dei Filium Iesum Christum offendunt, à Capite nostro, quod est Christus, ecclesiasticâ debent districtione præcidi, & bonis temporalibus spoliari: cum longius sit grauius æternam, quam temporalem lædere Maiestatem. Nec huius seueritatis censuram Orthodoxorum etiam ex hæretatio filiorum, quasi cuiusdam miserationis prætextu debet vllatenus impedire: cum in multis casibus, & secundum diuinum iudicium filij pro patribus temporaliter puniantur, & iuxta canonicas sanctiones quandòque feratur vltio non solum in auctores scelorum, sed & in progeniem damnatorum. Datum Later. viii. Kal. April. Pontificatus nostri anno secundo.

NOTÆ.

a *Viterbiensi.*] Ita etiam legitur in textu collectione, sub hoc titulo, capit. 1. & in ipsa epistolis Innocentij Colonie editis, lib. 2. epist. 1. fol. 278. ex quo integram huius textus restituo. Raynerio II. ipsius Ecclesie Præfati in præfenti referibit Innoc. De Ecclesia Viterbiensi nonnulla addaxi in cap. 3. de seq. poss.

b *Si quis autem.*] Verba quæ sequuntur, vsque ad ea, momenti censuatur, transcripserunt Fridericus Imperator in authentica Credentes, C. hoc tit. PP. Concilij Later. in cap. excommunicatus, §. credentes, hoc tit. vbi ea exponemus.

c *Successionem.*] Legitimum, seu testamentarium, quorum incapaces sunt Hæretici postquam damnati fuerint, l. 4. §. præterea, & §. 3. C. de heret. l. 1. C. de apell. l. 4. tit. 3. part. 6. l. 4. tit. 26. part. 7. l. 4. tit. 4. lib. 8. Ordin. Si verò hæretes instigantur post commissam crimem, sed ante sententiam, hæretes ad fiscum pertinet. Causæ q. crimin. cap. 1. de heret. num. 19. Azueto in l. 10. tit. 9. lib. 3. Recop. et si decesserint delat illis hæreditate, sed nondum dñt. Molina de iustitia tom. 2. disp. 658. numer. 19. Fachin. lib. 2. consil. 16. numer. 5. Cressy de Valsura obseru. 97. numer. 43. Gimb. consil. 55. numer. 15. D.D. Gmel. in Decretal. Tom. V.

Mar. Muta decis. 49. num. 27. Acolta in §. & quid si tantum, 2. part. numer. 177. Masin. de confis. quest. 36. num. 28. Arias à Mesa lib. 3. var. cap. 4. 1. num. 12. & ita iudicatum fuit in hoc supremo Inquisitionis Senatu hoc anno 1671.

d *Damnato damnatur.*] Iuxta textum & eius commune interpretationem in cap. fraternitati, hoc tit.

e *Vindicta.*] Iuxta tradita in cap. cum quidam, de iur. iur.

f *Bona eorum.*] Tam in hac sexta, quam in tertia collectione, legitur hæreticorum, sed minus rectè, iuxta verba præcedentia, in quibus Innocentius semper egit de fautoribus, & receptatoribus hæreticorum; & sequentia ibi: Et abnegantibus hæreticorum consortium. Ex quibus expressè deducitur, in præfenti epistola tantum agi de compescendis fautoribus, defensoribus, & receptatoribus hæreticorum, illisque non respicientibus vb huiusmodi delicto, pœnam amissionis bonorum imponi; sed forsan quia hæc pœna confiscationis bonorum vsu recepta non fuit, ideo licet ad litteram textum hunc transcripserint Patres Concilij Later. in dist. cap. excommunicatus, §. credentes, Fridericus in dist. authent. credentes, omiserunt tamen pœnam hanc priuationis bonorum: & in fautoribus, defensoribus, credentibus, & receptatoribus hæreticorum

R. eam

eum locum non habere, constat ex cap. accusatus, §. si vero, hoc tit. in 6. in illis verbis: Sub obligatione bonorum suorum. Et ibi: Hæretici, ad quos bona hæreticorum. Et ita docetur Farinac. de hæresi q. 182. §. 3. n. 55. Caneja in qq. crim. tit. de hæretic. cap. 1. num. 55. Castropalao tom. 1. oper. moral. tract. 4. disp. 3. punct. 6. n. 4. Diana part. 4. tract. 6. resol. 22. Fernosinus alleg. 42. n. 10. qui allegat non frequentem explicat quod maleficus confisicatio bonorum imponi possit, nisi credentes non sint tantum hæreticorum, sed positi ipsius hæresis, ita ut credant eosdem errores, quia illi ut hæretici damnantur, cap. penult. hoc tit. in 6. Quo casu procedit textus in cap. si adversus, hoc tit. ibi: Ipsum bona debent confiscari. Et ita praxi receptum est, ut fautoribus, receptoribus, & aliis suspectis tantum de hæresi, bona non auferantur: quare & cum carceri mancipantur, ea distinctio in bonorum annotatione servatur, ut hæretici formales cum sequelstratione bonorum capiantur suspecti vero de hæresi, ut fautores, & defensores, polygami, fortilégi, & similes, tantum cum bonorum annotatione carceri mancipantur, vulgo cum embargo de bienes. Sequelstratio enim bonorum differt ab annotatione in eo, quod annotatio est quedam species sequelstrationis in iudicis propriæ, quia in ea manent bona apud ipsum Dominum, vel apud personam ab ipso designatam: sequelstratio vero propriè est cum deponantur res apud aliam personam electam à iudice: quæ sequelstratio tantum locum habet cum bonorum confiscatione imponenda est. Quam differentiam agnoverunt Casual de iudiciis lib. 1. tit. 3. disp. 2. quest. 3. num. 145. Cabedo decis. 86. part. 1. Guido Pappe decis. 340.

g. *Penitentia miferi*. Regulariter enim certum est, hæreticos, cum conversi, & poenitentes reconcilientur, non effugere confiscationem, nec recuperare bona, nisi furtim ex gratia speciali, ut probat Peña 3. p. Director. commentar. 142. Farinac. de hæresi q. 190. n. 144. Carena 2. p. de offic. Inquisit. q. 15. Riccioli lib. 5. de iure person. cap. 42. Diana p. 4. tract. 8. resol. 288. Sanchez lib. 2. summa, cap. 14. n. 12. Fernosinus alleg. 44. & 48. per totam. Ratio est, quia per poenitentiam non eximitur reus à pena criminis, nisi quatenus iure expressum est, l. qui ea mente, ff. de furtis: non autem reperitur in iure casuum, hæreticum per poenitentiam effugere confiscationis penam: igitur per conversionem bona non recuperant, nisi contrarium tamen intulerint Monachus, Archid. & relati per Geminianum in d. cap. cum secundum, n. 5. Patius lib. 4. consil. 2. Iul. Clarius §. hæresis, n. 8. Rolandus consil. 63. n. 34. Zanebini de hæreticis, cap. 25. Nec illi fauet textus in cap. accusatus, §. si vero, vers. parit, hoc tit. in 6. quia reiecta littera, quam retinent Calderinus, Archidiaconus, & Geminianus ibi dicendum est in eo §. non agi de hæreticis, sed de fautoribus, & receptoribus eorumdem, quibus prius bonorum non est imposita, ut supra probavi. Nec etiam illi fauet textus in authent. idem est, C. hoc tit. in illis verbis: Si conversi fuerint, restituenda. Tum quia textus ille procedit iuxta ius antiquum, quo bona ab hæreticis absolute non auferbantur, ut infra dicemus: tum quia continet gratiam specialem Imperatoris deferentis bona filijs hæretici comariti. Nec tandem illi fauet D. Angust. relatus in cap. quod autem 21. q. 7. In illis verbis: Prius amittantur, & possideant, non tantum quia antea possidebant, sed etiam alia. Nam sanctus Doctor accipiens est sequenti superstitis concessione, nam ex

Principis, seu Pontificis indulgentia possunt hæretici conversi recuperare bona sua: & communis praxi receptum est, ut sponte compententes, hæreticosque, in quam incidunt, abiectantes, bona retineant, ex speciali indulgentia Domini inquisitoris Generalis, ut refert Fernosinus dicit. alleg. 48. per totam.

h. *Ad misericordiam confirmata*. Verba sunt textus in l. qui quis, §. filij, C. ad leg. Jul. Maiest. ibi: Paterno enim debemus perire supplicio, in quibus patet, hoc est hereditarij criminis exempla metuantur. Et licet hoc iniquè ab Imperatoribus sanctum putaverint Cuzar. lib. 1. tom. cap. 8. num. 1. Ioannes Stephanus Menochius lib. 2. cap. 12. Castro de iustitia hæretic. punit. lib. 2. cap. 10. Valquez in 1. p. disp. 135. cap. 3. tamen propter immanitatem sceleris læsæ Maiestatis verissime Imperantes dixisse, se filijs humanitate suggerente vitam concessisse, eodem alij eos ultimo supplicio affecissent, refertur Amnianus Marcellinus lib. 2. 8. ibi: Intercepti Imperiali metu interire omnes ad eum, eorumque foebes, peris etiam, tum per ad parentum exemplum subrecesser. Curtius lib. 2. Iulianus lib. 2. 1. Tertius lib. 4. poetic.

Aulæ scelerum (facinus ne crederet ultra)

Exinix, sublimique patrum peccata sequemur. Cicero lib. 1. offi. 12. ubi de filijs Lepidi ait: Nec verò me fugit, quam sit acerbum parentum scelera filiorum panis sui: sed hoc prælati legibus comparatum est, ut christianis liberum amicisque parentis R. i. publica redderet. Docuunt Tortares in parabellis, differt. 31. Petrus Gregorius lib. 35. synagoga. cap. 1. num. 25. & 26. Gemilis lib. 1. de coniuratione, fol. 76. Felozga in l. qui quis, ad iudic. 2. n. 28. Sed cum certum sit, neminem posse penam corporali pro alterius delicto puniri, ut infra dicemus: verities credo in presentem Innocentium, & Imperatores in d. l. qui quis, ea verba adduxisse arguendo de minori ad maius quoad penam confiscationis, non quia iure stricto possit filius pro peccato patris ultimo supplicio, nec penam corporali affici.

i. *Diminui iudicium*. Nam preterquam in sacra pagina iubetur filij corpi, dum pater deliquit, ut constat ex cap. 7. 9. 18. & 19. Genes. cap. 5. & 19. Drusus. Ioseph cap. 6. & 7. lib. 1. Regum, cap. 22. & 28. lib. 2. cap. 12. lib. 3. cap. 21. Numeror. cap. 14. & 17. Ioannis cap. 7. Luca cap. 24. Matthei cap. 24. quorum plures casus referuntur in cap. Ecclesia, cap. homini, §. eorum, 1. q. 4. cap. Archid. de penis, disp. 3. alique exempla adducunt Gigas de crimine læsæ Maiest. lib. 3. Pecubius in cap. non debet, de R. i. lib. 6. Petrus Gregor. lib. 3. synagoga. cap. 4. num. 4. & lib. 35. cap. 1. à num. 23. D. Perez in l. 1. tit. 1. lib. 1. ordin. §. ubi. Gabilinos tom. 2. de negot. lib. 6. cap. 2. art. 5. Menochius de præsumpt. lib. 5. præsumpt. 35. Valquez in prima secunda, disp. 135. cap. 1. Castro de iustitia hæretic. punit. lib. 2. cap. 11. Elfricus Hunnius ad Trinit. disp. 32. thes. 1. q. 21. Barnius anno 33. Maiolus dier. canon. fol. 837. Marqwez in gub. lib. 1. cap. 32. Mendinza lib. 2. Concil. lib. 2. cap. 22. Petrus Faber lib. 3. fœmest. cap. 20. Basil. Legion. q. 5. expostiva, cap. 2. Acuña in cap. scis, §. 6. diff. 2. Quatenus hic facit paginæ auctoritates procedant, dicemus infra in solutione dubitandi canonis.

COMMENTARIUM.

EX hoc textu prope transcribitur in presenti à Raymundo, pensens deducitur assertio: Hæretici prius amittunt bonum proprium, et si filius catholicus habent.

4.

5.

6.

CONCLVTO
TRADITE
ET ID. QUA
TIT.

bonis. Probat eam textus in cap. ad abolendam; hoc tit. cap. cum secundum leges, hoc tit. in 6. cap. super quibusdam, de V. S. l. Manichæus, l. Arriani, Authen. Gazares, C. hoc tit. l. 7. & 9. C. Theodof. eod. tit. l. 1. C. de Apostat. l. final. C. Theodof. eod. tit. Nouel. Valentin. de Manichæis, tit. 2. l. 4. l. 17. tit. 2. lib. 12. fori indicium, l. 7. tit. 2. lib. 4. fori Castell. l. 7. tit. 24. l. 4. & 5. tit. 25. l. 1. & per totum tit. 26. part. 7. l. 3. tit. 4. lib. 8. Ordio, l. 1. tit. 3. lib. 8. Recopil. vbi regnicolæ tepentes. Illustrant vltis congressus ad Barfofa in præfati, Guierrez de delictis. g. 33. & 34. Hermosilla in l. 1. glossa 2. tit. 4. p. 5. Amaya in l. 4. n. 38. C. de iure fisci, Gozzinus de confiscat. conclus. 13. Masinus eod. tract. g. 4. Sanchez lib. 2. sum. cap. 14. Hermosilla ad hunc textum, alleg. 1. cum sequens. Ricciofus de iure person. l. 1. c. 1. cum sequens. Rombertus lib. 1. rer. iudic. cap. 12. Fragofo p. 1. de regim. Christ. Recip. lib. 1. disp. 2. l. 9. Acacius de priuileg. priuileg. 3. cap. 6. Brunchorff. mammoth. em. 2. assert. 72. Gentilis de contrariis, ad leg. quinquies, cap. 7. & 8. Fornerius lib. 3. rer. quid. cap. 17. Mancinus de triplici iuris collat. lib. 1. cap. 7. Calatayud in paraphrasi, cap. 5. Giblinius de negot. rom. 2. lib. 6. cap. 1. Balduinus ad nouel. 17. Antonius de Bellis de criminis lase manifest. cap. 3. Altamirano de filius officialium cap. 7. Sallèles de materia tribunal. S. Inquisit. lib. 6. cap. 4. cum sequens. Murla in imper. tit. de legibus. g. 9. Escobar de viroque foro art. 4. Mantha de iurisdictione. part. 2. cap. 35. Torrelblanca de iure spirit. lib. 13. cap. 2. Murga tom. 2. disp. tract. 1. disquisit. 1. dub. 10. g. 19. & dub. 15. conclus. 3. Suarez de fide tit. 22. sect. 1. Arias à Mesa lib. 3. var. cap. 29. Becanus in l. 2. g. 4. Bordonus de sacro Tribun. cap. 12. num. 109. Thomas Delbene part. 1. de offic. Inquisit. dub. 106. Atiusseus de maiest. capit. 6. numer. 8. & uos latè in iuris allegatione circa hanc confiscationem edita.

7. Sed pro dubitanti ratione in præsentem assertionem ita infurgit. Pena ibi debet esse, vbi noxa est, l. respiciendum, ff. de penis, quia peccata suos tenent auctores, nec vltima progreditur metas, quam reperit delictum, l. si pater 10. ff. de penis, l. facinus, C. eod. Castibor. lib. 1. var. cap. 11. nam facinus auctores solos insequitur, l. tuorum, ff. de his quibus ut indign. l. 74. l. 117. de R. l. §. 1. Infit. de naxal, textus in cap. 12. de R. l. in 6. cap. Romana, §. in vniuersitatem, de sem. extem. eod. lib. Nec immerito, eam vnusquisque delicta sui peccatum suserat, l. si ex duobus 15. l. 1. §. planè, ff. de iur. & rationibus distrahend. l. qui proprio 46. §. item contrà, de procurat. l. si communis 9. de naxalibus, l. inter coheredes 45. §. quod ex sollo, ff. famul. eriscenda, l. res vtrius 24. C. de donat. inter l. 1. 2. C. ne exor. pro maris, cap. quatuor, in fine, de his que sunt à matre. part. capit. l. 9. tit. 3. part. 7. l. 9. tit. 5. lib. 4. fori. Immo & circa filios expressè docuit Consultus in l. crimen, ff. de penis, crimen, vel peccatum paternam, nullam maculam filio infingere. Refertur in cap. crimen 1. quest. 4. Concil. Tolet. 4. can. 60. Consonant lex 1. §. in filius, ff. de Decur. lex nihil, C. de quæstionibus. Faciant Cicero de natura Deorum, ibi: Ferre vltia ciuicis latorem huiusmodi legi, ut condemnaretur filius, aut nepos, si pater, aut avus deliquisset. Quintil. declam. 279. Quid hæc aras committere potuit tanta animaduersione dignum? lex obdicationis aduersus ferociam innocens constituta est. Hac verò infirmitas adeo docent nomen non recipi, ut vix recipiat innocens.

D. D. Gonzal. in Decretal. Tom. V.

tit; quis enim locus innocentia relinquatur, si aliter nam crimen maculas nescientia. Et declamat. 366. Non auctori lex parit, sed consciis, sed participes sceleris. Illi trasitur, qui cum patre peccant, nec enim innocens vlla lex parit. Et ab specie criminis læzè Malestia Dionysius Halicarn. pag. 250. agens de libertis Cassij ait: Cum autem nonnulli ipsos etiam Cassij liberos interficere conententur, hoc atroce & perniciosum exemplum Patribus est visum. Itaque cum in Carion concessissent, factum est Senatusconsultum, quo adolescentibus pena est remissa, illisque nec exilio multatis, nec ignominia affectis, nec alia calamitate accepta, transiit vltimo concessum est: & ab eo tempore usque ad hanc nostram ætatem hoc mos Romæ perpetuè seruatus est, ut nulla parentum delicta liberi suis supplicio inani, siue illi suis tyrannorum filij, siue parricidarum, siue etiam proditorum, quod apud illos est grauissimum. Et ita filium ex dolo, vel delicto patris non teneat, ducatur in l. 2. §. final. ff. de in ius vocato, l. 9. ff. de Senatoribus, l. 34. §. vlt. ff. de ritu nupt. l. 11. C. de quæstionibus, l. 32. §. vlt. C. de inofficiosis, l. 22. C. de penis, l. 24. C. de donat. inter l. 1. §. 9. ff. de muner. & honor. l. 1. & per totum C. ne filius pro patre, l. spuri 6. de Decur. l. 1. c. 7. §. 3. ff. de accus. l. post 5. §. si pater, ff. de his que ut indign. l. 4. l. Dini 27. ff. de inreparat. l. lenones, C. de spectaculis, lib. 1. l. 3. ff. de interdict. & reus, l. 2. §. 2. de Decur. l. 22. C. de penis, l. 2. §. 1. & l. 9. de Senator. l. 2. C. de libertis, l. 12. C. de coheredibus, l. 24. §. h. illud, C. de nuptiis, l. 7. C. de princip. agens, in re, lib. 12. cap. nunquam 4. cum sequentibus, 56. disp. cap. 1. & per totum 1. g. 4. P. Faber lib. 3. femur. cap. 8. Marquez in sua gubern. lib. 1. cap. 32. Amaya lib. 2. abf. cap. 7. num. 48. Igitur filij, præcipue Orthodoxi, non debent ob hæresim parentum eorum successione priuari. Augetur hæc dubitanti ratio ex eo, nam etiam casu, in quo bona parentum confiscantur, filius seruatur sua legitima portio, l. 1. l. cum ratio, ff. de bonis damnat. l. eorum, ff. ad leg. Jul. Maiest. ibi: Dona liberis damnatorum conferantur, & ita denique vindicari fisco, si nemo damnati liberorum exisset. Tacitus lib. 4. annal. de liberto Caij rei Maiestatis ait: Omnia bona patris sui relictæ, excepta quaræ parte, que iudici ex lege deberetur. Et l. 1. C. Theodof. de bonis proscripti, ibi: Si verò filij, vel filia, vel nepotes ex defuncti filij relictis erant, dimidia parte fisco vindicandæ, alia eis reservetur. De qua dimidia parte accipiendam esse legem 38. de penis, legem 40. de hered. insti. & legem 13. de iure fisci, docuit D. N. Ant. de exilio lib. 2. cap. 22. n. 8. & ab specie paria in hæresim lapsi idem censer in l. Manichæi, C. hoc tit. iusta histetam, quam restituit Coia. lib. 12. abf. cap. 3. ex l. 40. C. Theodof. de hæreticis, ibi: Liberos quidem habentes Orthodoxos, in eos, & sales abvntissas transfundant. Et l. cognoscimus, Authen. Idem Negligentis, C. eod. tit. Probat Merlinus de legi. lib. 3. real. 1. quest. 31. num. 1. Guierrez de delictis, quest. 40. numer. 12. Masinus de confiscatione, questio. 28. numer. 79. Igitur si filij exarati, præcipue Orthodoxi, non debent bonis parentum priuari, & ad perpetuam egestatem condemnari ab eorum hæresim.

Quà dubitanti ratione non obstante, vera est præsentis assertio, pro cuius expositione sciendum est, confiscationem, seu publicacionem bonorum non habere locum, nisi in casibus à iure expressis; quia cum importet priuationem, per quam bona priuatorum ab eis auferuntur, & fisco adiudican-

8.

De apud
vni con-
fiscatio-
ne.

R. 3. tuz.

tit, non nisi ex iuris auctoritate insigenda est, *audent, de non eligend. secundum mendum*, §. cum igitur. Et ita ex nullo delicto, quantumvis atrociori, posse priuationem bonorum irrogari, nisi auctoritate Principis, probante iure Alfaro de offic. fiscal. gloss. 20. Castilio de reuic. cap. 41. n. 150. Fernandus alleg. 1. n. 3. Illis tamen casibus recte est confiscatio non fieri, contra Bodinum tenet Marquez in Gubernat. lib. 2. cap. 17. §. 1. in additionem. Suarez de fide disp. 22. sect. 1. varios casus, in quibus publicatio bonorum locum habet, referunt Guaxinus, & Masinus in suis tract. de confiscat. bonorum, Ant. Mathaeus de criminibus, ad tit. de inquisitione, Amaya ad tit. C. de parui fiscalibus: ex quibus de confiscatione bonorum, quae sequitur ex delicto laesae Maiestatis humanae, vel divinae, tantum in praesenti agendum est: & scire oportet, foret alias poenas rei laesae Maiestatis impositas, quas congeruerunt Gigas in tract. de crim. laesa maiest. Ant. Mathaeus de crimin. ad tit. de leg. Int. Maiest. Scipio Gentilis integ. tract. de consur. 12. cob. Gothofredus & Felozza ad l. quisquis, C. ad legem Int. Maiest. Suarez ad Siderum lib. 1. epist. 7. Demetrius ad Rossum lib. 7. cap. 5. Balengerus de Imperator. cap. 10. D. Ioannes Vela de delict. cap. de leg. Int. Maiest. Lartea alleg. 6. cum duabus sequent. Fornetius 3. rer. quodlib. cap. 17. plures congerit à Pichardo de delictis, verbo Lex Italia maiestatis, non leuotem esse bonorum publicationem, ad quam spectant textus in l. final. ff. de legationibus l. 1. C. de bonis damnatis l. quisquis, ff. qui & a quibus l. 3. C. Theodof. de parui syrtorum. l. 2. C. de bonis prescriptis l. Panonius 86. ff. de acquir. heredit. l. cum filius 76. §. final. ff. de legat. 2. l. 14. §. si liberum, ff. de bonis liberis l. 4. ff. de iurepatron. l. 1. §. 3. ff. de suis & leg. heredit. l. cum filius status 32. §. 7. ff. de donat. inter, l. 3. ff. de interdict. & re leg. l. 19. §. transige, ff. de capitiu. l. 15. & 31. §. final. ff. de donat. l. 7. §. de donat. causa mort. Igitur rei laesae Maiestatis humanae ex omni iure, diuino, ciuili, de regio bona confiscantur, ut constat ex lib. 2. Regum, cap. 16. & 19. l. Panonius, §. rei perduellionis, ff. de acquir. heredit. l. eorum, ff. ad leg. Int. maiest. l. quisquis, C. eod. titolo l. si quis, C. de bonis prescriptis. Nivell. 17. Insim. cap. 12. & 134. cap. ult. Nivell. Maiestas, tit. 7. l. unic. tit. 2. lib. 1. fori, l. 2. tit. 2. par. 7. l. 2. tit. 19. lib. 8. ordin. l. 1. & 2. tit. 18. lib. 8. Recopil. P. Greg. lib. 35. synag. cap. 1. Iul. Clarus lib. 5. serm. vbi Belardus n. 25. Chopinus de domini Regis lib. 5. tit. 8. Botrel. de praesentia Regis cap. 71. Clapmarus de mysteriis rerum arcum. lib. 4. cap. 15. Guaxinus de confiscat. bonor. conclus. 13. n. 3. Guierres de delict. q. 33. & 34. Mieres de maiorat. p. 1. q. 1. Masinus de confiscat. q. 3. nom. 1. Antonius Math. de crim. ad tit. de parui, cap. 2. n. 1. Haec tamen confiscatio non fit ipso iure, sed per sententiam, ut facile probatur ex l. final. C. ad leg. Int. maiestatis, & ex cap. cum fructum, hoc titul. in 6. vbi cum Pontifex adduxit varia iuris ciuiliis exempla ad instigendam poenam confiscationis ipso iure, quam contra haereticos statuit, omisit crimen laesae Maiestatis humanae, quod primum lese offerebat tanquam magis simile, iuxta praesentem textum, quia scilicet ius eo confiscatio bonorum non contingit ipso iure, sed post sententiam condemnatoriam: quod etiam suadet ex l. quisquis 15. ff. qui & a quibus, l. ex indicio 20. ff. de accusat. l. 22. in princ. l. 46. §. in rem, ff. de iure fisci, §. interdum, Insim. de hereditatibus qua ab intestato. Peteginus de iure fisci lib. 5. tit. 5. n. 171. Bos-

sius in praxi, tit. de crim. laesa Maiest. n. 93. Martinus decif. 92. & 126. Gigas de crim. laesa Maiest. q. 25. Boetius eod. tract. q. 3. n. 21. Antonius Faber lib. 7. coniect. cap. 20. etli contrarium tenentur Decianus lib. 7. tract. crim. cap. 40. mm. 6. Iulius Clarus vbi supra, n. 9. Coletus de process. excommuni. part. 1. cap. 3. n. 84. etli administratio bonorum illis ipso iure interdicta sit, l. quisquis 15. ff. qui & a quibus, l. post contractum 15. ff. de donat. de quorum expositione videodi sunt Iul. Pacius cem. 6. quest. 64. Alberic. Gentil. lib. 1. l. titulum, cap. 13. Oualdus ad Domel. lib. 2. cap. 9. littera A.

Deinde sciendum est, rei laesae Maiestatis diuinae, videlicet haereticis, bonis confiscari, tam mobilibus, quam immobilibus, iure, & actiones, ex iuribus supra citatis pro illustratione conclusionis: quae quoscunq; procedit in illis bonis, quae tempore etiminis commisit reus habebat, & ad haereticos extantes transmittere poterat. Ratio est, quia iuri consonum est, eius qui se delinquendo penis subiecit, l. Imperatores, ff. de iure fisci, bona in fiscum recidere per casum consensum, quae per exceptum in quem vellet, & ita in extantes haereticos posuit transferre, l. 2. C. ad leg. Int. de rei public. l. 1. iun. 23. Glosa ibi, C. de bonis liberis. Vnde constat, bona aliena apud haereticum reposita, ei demque non obligata, statim domino esse restituenda, argumetio legis in fraudem, l. 1. ff. de iure fisci: testolus Simaocas de Catholici tit. 46. num. 8. Inde deducitur, bona reus, quae reus acquisiuit post reuocationem, & condemnationem, ad fiscum non pertinere, quia non sunt haeretici, sed Catholici, c. statum 2. hoc tit. in 6. cap. felicis, vers. Verum, de parui, eod. lib. docet Fachin. lib. 9. contron. cap. 51. quia publicatio praesentia tantum bona admittit, non etiam futura, l. si mandauero 22. ff. mandati, ibi: Quia publicatio bonis quicquid possit acquirere, non sequitur fiscum. Docent Mieres de maiorat. 1. p. q. 1. a. num. 351. Merlinus contron. cem. 3. cap. 20. & 21. Arias à Mesa lib. 3. var. cap. 11. num. 13. Oles de cess. iur. tit. 3. q. 10. mm. 23. Fernandus alleg. 30. per tot. adeo vt si pater decedat postquam filius reconciliatus est, eius legitima portio ad fiscum non pertineat, vt resoluunt Caeual de iudiciis tit. 3. disp. 20. n. 5. Facinas de heresi q. 24. Giurba ad consuet. Adessan. cap. 4. glossa 5. n. 8. Merlinus de leg. lib. 3. tit. 1. q. 33. Masinus de confiscatione q. 28. n. 114. quare reus ipse poterit bona ipsa redimere, siue per se, siue per alium, l. eodem 11. §. eam rem, ff. de public. & vellig. l. eius qui 8. §. 1. ff. de testam. Nec tunc obstat textus in l. 2. C. de bonis prescriptis. vbi Imperator Alex. docet, de potatium nec in ea bona, quae postea quaerunt, haereticum habere posse. Pro cuius textus confirmatione eum dicta lege si mandauero, §. si cuius, varia adduxerunt Oualdus lib. 17. Domel. cap. 4. littera G. Pacius cem. 4. quest. 87. Amaya lib. 1. obseru. cap. 11. n. 25. & in l. 1. C. de iure fisci, Faber in rationem ad texum in d. §. si cui, Coiac in d. l. 2. & lib. 6. obseru. cap. 23. ex quorum mente dicendum est, Paulum in d. §. si cui, agere de eo, cuius bona publicata sunt citra deportationem, qui cum capite minime non sit, alia bona acquirere, & de his testamentum condere valet: ut verò Imperator in d. l. 2. agit de deperato, cuius bona in consequentiam publicantur, nam cum ille capite minuetur, testamentum facere nequit, quia necessarius fiscum haereticum habet. Aliter antinomiam illam component Olanus lib. 4. Paralip. cap. 13. num. 34. D. Nicol. Ant. de exilio lib. 2. cap. 16. D. Ioseph.

Ioseph de Retes lib. 3. de interditi, & reles. excus. su 5. num. 48. & asseruit verba illa, non *segiuntur* siscum, accipiendo esse dum vivit deportatus, non verò eo mortuo, quia tunc siscus ea bona occupat.

Alia questio est circa bona, seu iura conditionalia, quæ reo læsæ maiestatis competunt, an ad siscum pertineant? Quam latè examinant Riccardus de iure pers. lib. 5. cap. 32. num. 22. Fermo-
linus allegat. 31. & 32. Sed pro eius solutione discrimen est constituendum inter bona debita hæretici sub conditione in testamento, vel codicillis adiecta; & inter ea, quæ debentur sub conditione ratione contractus; nam primo casu, cum adhuc non esset dies, nec hæredes extraneos similia bona transmittantur, l. vñe, §. si autem, C. de caduc. testam. Faber lib. 15. conuict. cap. 6. & 7. Vela tom. 1. differt. 11. num. 5. Solorzano de iure indiar. tom. 2. lib. 2. cap. 11. a num. 46. ita ad siscum non pertinent. Secundo verò casu cum obligatio proveniat ex contractu, vel quasi, cum talis obligatio statim quærat, ideoque ad hære-
tes extraneos transmittatur, l. si quis 57. ff. de P. O. l. nec essario 8. ff. de periculo & commendo, l. quæritur, C. de donat. nisi sit conditio pœnitentia, l. si decem petere, ff. de P. O. Castiljo tom. 3. controu. cap. 14. Olea de cõf. iur. tit. 3. quest. 10. num. 8. tale ius, est conditionale, ad siscum pertinet, l. inter 26. §. vlt. ff. de pact. dotal. Simancas de catholic. cap. 9. num. 62. Gomez lib. 3. variat. cap. final. num. 2. Idem dicendum est de alimentis singulis annis hæretico præstatis; nam si ex contractu debeantur, ad siscum pertinent, argu-
mento legis si Stichum c. 6. in fine, l. Senatus 35. §. final. ff. de dona. caus. nisi. Si verò ea viima dispo-
sitione, quia pro primo anno puta, pro se-
quentibus verò conditionalia sunt, itaque futura, l. si in singulis, ff. de annuat. legat. ad siscum non
pertinent, Iul. Clarus §. hæresis, numer. 23. Tan-
dem notandum est, quod ea bona, quæ deferuntur
hæretico, etiam retento in carceribus, ante
condemnationem, & reconciliationem, ad siscum
pertinent, vt generali consuetudine receptum
esse docent Tellus Fernandez ad 3. l. Tauri, Si-
mancas vbi supra, num. 71.

Deinde vt ad bona restitutioni subiecta, seu
quæ ad hæredes extraneos non transeunt, perue-
niamus, sciendum est, huiusmodi bona alienari
prohibita, & restitutioni subiecta, qualia sunt bo-
na maioratus in Hispania, ad siscum non pertine-
re, ob delictum possessoris, l. Imperator, §. de si-
deicommiss. libert. l. iura, ff. de iurepuren. Molina
lib. vlt. de primogen. cap. final. numer. 5. Tellus Fer-
nandez in l. 27. Tauri, num. 18. Molina lib. 4.
cap. vlt. a princ. alter Molina de iustitia disp. 616.
Sanchez in præcepto Decalog. tom. 1. lib. 2. cap. 16.
Gomez in l. 40. Tauri, num. 92. Mierts de maio-
rat. 4. part. quest. 23. Guiterrez 2. prælic. q. 66.
Castiljo tom. 6. controu. cap. 160. num. 8. Castiljo
lib. 2. de iust. hæretic. puni. cap. 1. Sacramento lib. 3.
f. s. s. cap. 3. plures quos laudat, & sequuntur
Gibalinus de negot. tom. 1. lib. 6. cap. 2. art. 23.
Fermosinus allegat. 15. per totam. Faciunt teneas
in cap. Imperiale, §. illud, & de prohibitione feudis
per Fridericum, cap. si vassallus §. de feudo fuerit
controu. vbi docetur, ob delictum vassalli non
confiscari feuda illa, quæ tantum iure singulis,
aut ordine gignitur deferuntur, non verò ad hæ-
redes extraneos transeunt. Nec obstat si dicas,
propter hæresim ad siscum pertinere omnia bona,
quæ in dominio hæretici erant, ac præsent. rez.

D.D. Genral. in Decretal. Tom. V.

tu, & cap. cum secundum, hoc sit, ac bona maiora-
tus, quantumvis restitutioni subiecta, sunt bona
possessoris, quorum ipse dominum habet, l. non
ideo minus, ff. de rei vindic. l. generaliter, §. sub
condicione, ibi; pleno iure, ff. qui & a quibus; pro-
bat latè Molina de primogen. lib. 1. quest. 15. n. 29.
Nam respondendo sciendum possessorum maioratus
cesseri Dominum dum vivit, sed non simpliciter,
& absolute, vt bona in quoscunque hæredes trans-
ferri possint; sed cum onere eadem relinquendi
itis, qui ab institutione vocantur, prohibita omni
alienatione, & propterea cessat confiscatio. Vnde
respondi potest, argumentum procedere in con-
fiscatione illius dominij, quod durat pœnes ipsum
possessorem, dum vivit, & ita fructus maioratus
dum vivit possessor, ad siscum spectant, iuxta tex-
tum in l. Sinarum §. Cornelio, ff. de iure fisci. Molina
lib. 1. cap. 9. n. 24. & cap. 10. num. 9. & lib. 4. cap.
final. n. 6. Chumaero s. s. disp. 10. Pichardus
in l. Gallus, cap. 7. Nicolaus Antonius lib. 2. cap. 10.
& 16. pro qua sententia expendi possunt lca sa-
cto 17. §. si qui regitur 6. ad Trebel. lex cum pau-
ter 77. §. hæreticorum 4. de legat. 2. lex si posside-
rit 27. §. inbet lex, ff. ad leg. l. de adu. & qui de
eommendis & eorum fructibus agit, Solorzano
tom. 2. lib. 2. cap. 17. n. 22. non verò in confisca-
tione absolute, & in perpetuum possessoris præ-
iudicium. Nec etiam obstat reus in l. 1. C. de bo-
nis libert. vbi docetur, ob immanitatem criminis
læse Maiestatis confiscari etiam iura libertorum,
quæ ad extraneos hæredes non transeunt, l. iura,
ff. de iurepuren. l. 1. §. si autem, C. de Latina libert.
Nam responderetur in d. l. 1. agi de iuribus liber-
torum, quæ seuadmodum iuris communis regulæ
etiam ad hæredes extraneos transire possunt, l. 2.
C. de iura vocando. Alia pro ipsius reus consi-
deratione eum dicta lege iura, adduxerunt D. Ni-
colaus Antonius lib. 2. de exilio, cap. 16. D. Ioseph.
de Retes in l. 3. ff. de interditi, & reles. Pelsoga in
l. quipsum, claud. 2. num. 23. C. ad leg. Iul. Genoa
in conciliat. legum, fol. 215. Manet ergo, bona feu-
dalia, maioratus, & similia propter crimen læsæ
maiestatis, tam diuina, quam humane, ad siscum
non pertinet: quod & latè probant Molina lib. 1.
de primogen. cap. 8. vbi addentes n. 6. pag. 532. la-
eob. Vvender. Graz. in l. non dubio, ff. de capti-
uitat. n. 45. quæ sententia limitatur, vbi maioratus
instituitur ac facultate Regia, adiecta clausula
consuetæ, videlicet, vt bona non deferantur in siscum
ob crimina possessoris, præterquam in crimi-
nibus læsæ Maiestatis, hæresis, & sodomiz, tunc
enim si possessor aliquod liborum criminum per-
petraverit, quoad vitam eius bona sisco acquiritur.
Quod plures sublimant, nisi adiecta sit clau-
sula, quæ apponi solet in institutione maioratus,
videlicet, quod si possessor propoluerit admittere
aliquid crimen confiscatione dignum, statim, vel
hora præambula amittat bona, & ea ad sequentem
possessorem transeant, nam tunc verè, nec per
momentum temporis apud siscum manent. Molli-
na lib. 2. cap. 12. n. 56 & 57. vbi addentes & lib. 4.
cap. vltima. Valencia in testam. ad nuncium de legatum,
tract. 2. cap. vlt. n. 6. de cuius clausula effectu vi-
dendi sunt Tellus Fernandez in l. 17. Tauri, Petalra
in l. 3. §. vlt. num. 127. ff. de hære. insti. Fermosinus
alleg. 15. per totam, Castropalzo tom. 1. oper. moral.
tract. 4. disp. 5. puncto 6. & 7. Sanchez lib. 2. s. s. s.
cap. 18. per totam. Tandem bona, seu iura per-
sonalia, personæ ipsi in hærentia, vt ius reuocandi
libertatem, seu donationem, aut dicendi testamenti

R 3

inofficio

10.

DE BONIS
MAIORA-
TUM DE-
CRETAL.

11.

DE BONIS
MAIORA-
TUM.

inofficium, ubi hæresim non publicati denunciatur plures relati à Ferrosolin allegat. 32. & quid io emphyteusis ecclesiastica, & iurisdictionis obsecratur, disputat latè Lambertinus de iurisdictione lib. 3. quest. 8. Simancas de Cabaloc. tit. 9. num. 95. Azor tom. 1. insit. lib. 8. cap. 12. quest. 9. Suarez de fide disp. 12. sect. 5. num. 6. Valquez 1. 2. disp. 169. mon. 19. Martinus tom. 1. decr. 123. Farinac. de hæresi quest. 198. num. 24. Castinpalao dict. disp. 5. par. 1. Sanchez dict. lib. 2. cap. 19. Gibalinus tom. 2. de negot. lib. 6. articulo 1. cap. 2. Et insuper notandum ecclesiasticum illis amittere, censilæ ex cap. in quibusdam 12. §. sacri, insit. lib. 2. ad aures 12. de penis, Clement. 1. eod. tit. iure verò patronatus libertorum credo ens non priuari, quia iure civili, & Principum constitutionibus, in crimine læsæ Maiestatis illis censuabatur, l. 4. ff. de iurisdictione, l. com. 9. ff. ad leg. Jul. Maiest. etiam si iure illud amitteretur, l. 3. ff. de interd. & releg. quo modo textus illis emponitur Cuiac. 6. obfer. 13. Faber in l. 97. de R. I. Lætra decr. 34. num. 62.

Deinde sciendum est, an hæc publicatio bonorum contingat ipso iure, & iuri tempore patet criminis, id est lapsus in hæresim, amittitur verum dominium rerum suarum, an verò à tempore sententiæ condemnantis bona ipsa confiscantur. Et res ipso iure priuatur domino, probatur Ant. Gomez lib. 3. variat. cap. 2. n. 1. Azor 1. part. insit. lib. 5. cap. 7. quest. 7. Farinac. & alij plures, quos recenit Sanchez lib. 2. in Decalog. cap. 12. num. 2. Contrarium tamen, videlicet dominium adhuc in delinquire teledere, probatur Victricia in relect. de Indis insulans, num. 14. Valquez in 1. 2. disp. 170. cap. 3. Molina de iust. tract. 1. disp. 97. Henriquez lib. 13. summa, cap. 56. num. 2. Peregrinus de iure fisci lib. 5. tit. 2. num. 171. Fachineus lib. 1. conuener. cap. 35. Sanchez d. lib. 2. summa, cap. 21. Faber lib. 7. conel. cap. 20. num. 2. Sotus lib. 1. de iust. q. 6. artic. 6. Valquez in 1. 2. q. 6. art. 4. Carleu. de iud. lib. 1. tit. 2. disp. 1. num. 16. Thm. Delbene de offic. Inquisit. 1. p. dub. 34. sect. 2. Sed pro his difficultatibus solutione supponendum est, verba hæc, ipso iure, variè accipi in utroque iure, vt probant Veruicins, & Briffonius verbo Ipso iure, Tiraquel. in l. si vnaquam verbo Reuocatur, num. 408. Amaya in l. 1. C. de iure fisci, ex num. 37. Petyra de manu regia, 2. p. cap. 64. num. 2. Alfari de offic. fiscal. glossa 20. num. 310. Guzzinus de confiscatione consil. 14. 15. & 18. Pradon tom. 1. Theol. Adv. cap. 3. de legibus, q. 11. Castilla lib. 5. conuener. cap. 137. & de alimentis cap. 57. I. Paulus Melius in additione ad ipsum Cuiac. lib. 1. obs. cap. 27. Frequenter tamen apud Consultos, & frequentius in iure canonico, ipso iure fieri dicitur, quod à lege ipsa absque vilius hominis opera, vel auxilio introduciunt, vt in l. datum 6. ff. de ritu nuptiar. l. quod dicitur, ff. de impensis in rebus dotalibus, Clement. 1. §. praterquam, hoc titul. cap. quoniam, in fine, de vforis in 6. & alibi passim: iuxta quem sensum licet aliis inter se non opponatur, ipso iure, & iure patet, l. 1. §. quibus modis usufructus, princip. Insit. de perpet. & tempor. ipso iure, & per exceptionem, l. 4. ff. de seruicibus, §. in bona. Insit. de alimentis, in casibus tamen ubi de pena criminis, vel nullitate actus agitur, opponuntur ipso iure, & per sententiam iudicis, ita quod pena dicitur inculsa ipso iure, ubi lex ipsa ita-

etiam admissa eximine sententiam per se fert, & per se poenam præscribit, ita quod sententiam iudicis imponentis non exigit. Dicitur autem poenam ipso iure incurri, non tantum ubi verba hæc reperiuntur, vel alia similia, scilicet ipso facto, vt in Clement. attendentes, ubi Glossa vltima, de stat. monach. cap. 2. ubi glossa verbe Si quis, ne cleric. vel monach. lib. 6. & eo ipso, vt in cap. quam sit, ubi Glossa, de elect. hoc libere, cum alius concessit à Tiraquel. ubi supra, num. 142. sed etiam nisi aliud censet, ubi in prætextum; vel præsens tenos verba emponiuntur, vt si dicitur, si priuatus, sine confiscata, amittit, scilicet se incurrisse, vel amississe: aliter si in futurum tempus, ad iudicem, vel factum hominis referantur, veluti si lex dicat, incurrit, iudex priuatus, remouebit, vel quid simile; nam tunc poena imponenda est per iudicis sententiam, non verò ipso iure incurritur, vt variis exemplis explicat Tiraq. ubi proxime, Castin d. cap. 6. num. 6. quibus supponimus licet attentè præsentī Innocentij constitutione hæc confiscatio bonorum fieret per sententiam iudicis, tamen ex textu in cap. cum secundum, hoc titulo in 6. libi, ipso iure decernimus, & iuxta hanc nouam constitutionem bona hærenti in dominio fisci sunt, non verò in dominio rei. Quod etiam probatur ex lege commissæ, ff. de publicanis, nam aliis ante sententiam defuncti ten bona ipsa ad hæreses transierunt, nec egerent prescriptione ad ea acquirenda, iuxta textum in l. cum heres, ff. de acquir. possess. l. sequitur 4. §. lona, ff. de vforis leg. indigent prescriptione, cap. 2. de prescript. lib. 6. Agitur quia aliena sunt, videlicet fisci, vt docentur repetentes in d. cap. cum secundum. Cuius, de fructu, d. p. cap. 6. Iul. Clarus §. hæresis, num. 13. Fit ergo publicatio hæc à die sententiæ, sed restat huius ad diem commissi delicti, ita vt ab hoc die reus in frandem Fisci nihil alienare possit, l. post 15. l. 31. ff. de donat. l. quæsumus, ff. qui & à quibus: acquirere autem potest dum non est reus declaratus, in l. 1. de iust. in cap. 2. de iust. num. 44. Molina de iust. tom. 1. disp. 154. & tom. 3. disp. 678. Teli. Fernandez in l. 4. Tauri, num. 34. Muta decr. 49. num. 21. Fragofo de regim. Cleric. Reip. lib. 3. disp. 5. num. 25. Nec obstant fundamenta, quibus multi censuram sententiam tenentur iure citari, & Bartolos in l. Imperator, ff. de iure fisci, Gligas de crimin. testa. Maiest. tit. de pnuis, q. 25. Sotus lib. 1. de iusticia, q. 6. art. 6. Non primam, scilicet quod tit. ditione dominium transferret, & transiuntibus, C. de patris: nam regula illa non præcedit vt per legem confiscatio inducitur, vt in dictis capie cum secundum, d. l. commissæ; quia tunc dominium transferretur in fiscum minister legi, absque vilo hominis factu: textus elegans apud Vipian. in fragmentis, tit. 19. de dominis, in principio, & §. lege. Nec nobis secundum deducitur ex dicta lege quæsumus 15. ff. qui & à quibus; nam textus ille, & similes, loquuntur de crimine læsæ maiestatis humanæ, in quo confiscatio ipso iure non contingit, vt supra probauit, & docet D. Innocentius de Retes de donat. cap. 8. num. 21. & de donat. inter, cap. 8. num. 8. Verum etiam dominium bonorum hæretici à die perpetrati criminis ad fiscum spectet, vnde in sententia, quibus hæretici ipsi declarantur, adiciuntur tempus ex quo rei effecti sunt, vt ad illud tempus confiscari bonorum restaret, non verò incipiat à tempore sententiæ declarata

declaratoris; tamen possessio ipsorum bonorum manet penes eum quousque sententia fuerit. Vnde non tenetur hæreticus etiam publicus bona sua offere fisco, nec etiam fiscus potest ea occupare ante sententiam declaratoriam per Inquisitores prolatam, ut expressè cautetur in *dist. cap. cum secundum*. Fiscus enim neque occupare bona alicuius, quando ea iure possidet, *cap. in litteris, de reſtit. ſp. docuerunt Couarr. d. cap. 6. §. 8. num. 10. Gomez lib. 3. var. cap. ult. num. 3. Sanchez lib. 2. ſumma, cap. 2.2. num. 7. Suarez de ſide diſt. 22. ſect. 3. Caltopalao tom. 1. tract. 4. diſp. 5. parit. 18. num. 2. Alfonso à Caſtro lib. 2. de lege penal. cap. 20. & 11. Vasquez in l. 2. diſp. 170. cap. 3. Gibalinus tom. 2. de negot. lib. 6. cap. 2. art. 3. qui ex his principiis latè exponunt vulgarem quæſtionem de nullitate alienationis à reo fidei poſt eipſem admiſſam ante ſententiam declaratoriam.*

His ſuppoſitis, ratio præſentis aſſertionis, quate videlicet hæretici bonis priuenter, prouenit ex eo, quia hæreſis plerumque à diſtinctione cupiditate procedit, luxu illud Pauli t. ad Timoth. cap. 6. *Radix enim malorum cupiditas, quam quidam appetentes, errauerunt à fide*. Illuſtrat Caſtro lib. 2. de iuſta hæreſi. parit. cap. 5. Tum etiam quia quod hæretici ſunt cæteri hominibus peiores, eo magis diſtincti ſunt eiſdem auferende, ne cum illis noceant, vt ex Ariſt. lib. 2. moral. & aliis probat Simancas de Catholic. ri. 9. num. 1. Tandem, vt pro innocentie ſceleris fuſſe pœniantur, vt ita viſa ſit illis ſupplicium, & mors ſolatio, vt ſiunt Imperatores in d. l. quiſquis, Claudianus in Ruſinum lib. 1. ibi: *Conceſſaque vita doleri*; Gregorius in cap. quædam, 74. diſt. ibi: *Pœnam ſibi poenam exiſtunt*. Valerius Max. lib. 2. cap. 2. de l. Calpurnia, ibi: *Amarum lucis reſum experientur, mortemque, quam effaminata timuerant, viriliter optarent*. Cæſar apud Saluſtium in Catilina, ibi: *De pœna poſſum equidem dicere id quod res habet in ſeſu, atque inferri, mortem æromoniam requiem, non cruciatum eſſe*: vt ita etiam ipſi fine hæreſe decedant, quod non lenem ignominiam conſtat, & quia 6. ff. de interrogat. adſunt §. 1. Inſtit. quibus ex cauſis manumitt. & ſi filios habent, magis inde tectentur, dum vident eos ad egeſtatem perducī, vt latè illuſtrat Felozia in d. l. quiſquis, §. filij: atque vt ita cum bonis ipſis in victa pœna non ſuccedant, iuxta illud Saluſtiani lib. 1. ad Eutell. Catil. ibi: *Quod penè omnes parentibus ſuis filij non magis in patrimonio, quam in vicia ſuccedunt, nec magis ſingulariter paternis ſumunt, quam præſentibus, ac ſic tranſeunt ſemper in merces patrum, ante eorum incipiens nequitiam, quam ſuſſentiam poſſideri*. Rectè ergo inter alias pœnas, quibus ex utroque iure aſſiſcuntur hæretici, ſtatuta eſt priuatio bonorum, vt ita ipſi proſi ſunt degeneres, & carnales, diſtincti aſſuſcentes, magis terreſtratur per illarum priuationem, quàm aliis pœnis, argumento legis bona fides, §. nam malè, ff. de poſſit. Cui tamen bona ipſa ſunt applicanda, exponens tuſſà in cap. excommunicamus, §. demerſi.

Nec obſtat dubiandi ratio ſuprà adducta, pro cuius expoſitione dicendum eſt, quod quouis nemo abſque cauſa, & culpa puniri poſſit, tamen abſque culpa eam cauſa puniri valet, cap. quamuis, §. ſciſe, vt licet non conſtituta, cap. renouantes, & ibi Gloſſa, verbo priuatum, 22.

*diſtinct. cap. antiqua, de priuati. vnde in cap. 21. Exodi, lubetur pœus occidi, eſt ratione carnis, ob cauſam quam reddidit D. Auguſt. in cap. mulier 15. q. 1. quam illuſtrant Felozia in d. l. quiſquis, diſtinctione 2. num. 21. D. Martinus de Larearegon lib. 8. ſect. cap. 9. num. 3. Narbona de aſte ad alius humanos, anno 10. & diſtinctio, q. 10. Petrus Gregor. lib. 4. parit. tit. 14. cap. final. Fornerius lib. 1. ſect. cap. 10. Albenci. Genil. in leſtationibus Viregil. cap. 12. Solozanus de pœnic. lib. 1. cap. 2. Viſtar. reſponſ. 4. Deinde ſciendum eſt, neminem puniri poſſe pro alio pœni æternæ, aut ſpiritali (intelligo ſpiritualem non quancunque eccleſiaſticam, aut canonicam, vt ſunt interdiction, irregularitas; ſed amiſſionem gratiæ Dei, aut eorum, quæ ad animæ ſalutem neceſſaria ſunt;) de qua accipiendum eſt illud Ezechielis cap. 18. ibi: *Anima que peccauerit, ipſa morietur*. Loquitur enim de morte æternæ, non autem de temporali. Deinde notandum eſt, nouum non eſſe, vt aliquando Deus Opt. Max. ob alterius delictum Innocentes puniat temporali, & corporali pœna, reſati filios propter delictum parentum, vel econt, ex cauſis iudicio humano licentibus, vt docent D. Auguſt. 9.8. in Ieſus, D. Thomas 2.2. q. 108. art. 4. quo modo procedunt auctoritates ſacræ pagine ſuprà congeſte, quas ita exponunt Couarr. lib. 2. var. cap. 8. Felozia in d. l. quiſquis, Gibalinus de negot. lib. 6. cap. 1. art. 5. per totum. Marq. in Cubernat. lib. 1. cap. 31. Robertus lib. 2. rer. iudic. cap. 9. Solozanus lib. 2. polin. cap. 16. pag. 152. Tapia tom. 1. Caren. moral. lib. 3. q. 16. art. 10. Sed legiſlator ciuiliſ in hac parte iudicium diſtinctionis imitari non poſſet, ita vt pro culpis alienis Innocentes puniat; tunc enim licet hominibus diuina iudicia imitari, quando ea ex maniſeſtis cauſis procedunt; at verò ubi ex occultis, & latentibus nobis iudicium inſtituit, ſecus eſt, cum homines ignorent proſus, quid expedit; atque ita nullo pado licet iudici eiſdem ſupremo quempiam pro crimine alieno occidere, ſuſſibus cedere, excommunicare, vel corporali pœna aſſicere: iuxta quam doctrinam accipiendum ſunt textus in cap. 24. Deuener. ibi: *Non occideris patres pro filiis*. Et cap. 22. Exodi, ibi: *Leſum, & inſum non occides*. Et ſimiles ſuprà citati pro dubiandi ratione. Pœna verò temporali, vt eſt infamia, amiſſio bonorum, aut ſimilis, filij pro peccatis parentum puniri valent, cap. Iudai 1. q. 4. cap. 1. & per totum 56. diſt. cap. 70. diſt. cap. minor 17. q. 4. Conſecl. Tolet. 16. cap. 21. latè probant Acacius de priuati. parent. priuati. 3. cap. 6. Gibalinus d. cap. 2. art. 6. per totum, Vasquez l. p. in 2. q. 135. quia licet in eis non deſit culpa, adſt tamen cauſa, & multiplex, vt probat Gothofr. in l. 26. de pœni, Felozia in d. cap. quiſquis, & notat in cap. 1. de filiis Prefbytr. Vnde cum in præſenti agatur de pœna temporali, videlicet priuatione bonorum, ideo Innocentius ſtatuit, vt hæretici bonis omnibus priuenter; etiamſi filios orthodoxos habeant, qui per conſequens ſucceſſione parentum priuenter, latè probat Thomas Deſbene p. 1. de offici. inq. d. d. 173. cum quoad bona plerumque delictum patris noceat filio, l. 3. §. ſi emancipatus, de bono. poſſeſſi. contra tabul. l. 6. §. 1. & 17. ff. de inſeparm. l. 11. C. de bonis liberorum. Nec obſtat vltimum augmenum ipſius dobitodi rationis, deducum ex d. l. Antichriſti, cum ſimilibus;*

libus : pro cuius expositione diuersa tempora distinguenda sunt. Primum nascentis Ecclesiæ, quæ Ecclesiæ, quæ velut nouum germen radices firmas non egerat, Principum auxilio destituta hæreticos seuerè punire non poterat, vt docuit D. August. in cap. *displacet*, vers. *Repetis*, 23. q. 4. & tradit Caisio lib. 2. de *infa hæretic. puni.* cap. 4. Secundum tempus caput ab Imperatoribus Atacadio, & Theodosio, qui circa annum Domini 390. inter alias hæreticorum poenas statuerunt confiscationem honorum, non absoluit, sed in defectum filiorum Catholicorum, quibus stantibus deferebatur successio, vt sic allicerentur ad parentum correctionem, & denunciationem : quod & sequentes Imperatores sumunt. Ad quod tempus referendi sunt textus in d. l. *Manichæos*, l. *cognouimus*, *Ambros.* idem, C. *hoc ius*, cap. *qui iure*, 8. dist. d. cap. *Iudai* 1. q. 4. cap. 1. 23.

9.7. Successit tertium tempus nostri Innocentij, qui in præsentis textu absolute constituit bona hæreticorum esse confiscanda per sententiam, quantumvis filios habeant catholicos : quod & firmavit Bonifacius VIII. in d. cap. *cum secundum*, adiciens vt hæc confiscatio fiat ipso iure. Quam temporum distinctionem notarunt Glossa penultima, & Villalobos in *erario*, littera C. num. 15. Tello Fernandez ad l. 4. *Tauri*, num. 34. qui rectè animaduertunt, textus supra citatos, nec non leges partitæ ab eis adductas hodie locum non habere, cum auentis nouis constitutionibus Innocentij in præsentis, & Bonifacij in d. cap. *cum secundum*, hæreticorum bona confiscant, quantumvis ipsi filios orthodoxos habeant : ad filios tamen ante delictum genitos non potest præsentem textum, docuerunt plures, quos refert & sequitur Marinus tom. 2. *resol. cap. 95*.

CAPVT XI.

Idem Illustri Regi * Aragoniæ.

SI aduersus nos terra consergerit. *Et infra* : Licet autem à^b nobis, & prædec.^c nostris contra hæreticos multa sint constituta, nec habeatis excusationem aliquam in peccatis, quasi antiquorum obliti fueritis mandatorum : & quia plus timeri soles, quod specialiter iniungitur, quam quod generaliter imperatur : aduocatis, & ^d scriuariis firmiter inhiuemus, ne præfatis hæreticis dum fuerint in sua contumacia, & errore paternis, vel credentibus, fautoribus, & defensoribus eorundem illo tempore in aliquo præstetis auxilium, consilium, vel fauorem, nec eis in aliquibus causis, vel factis, vel aliquibus litigantibus sub eorum examine vestrum^e patrocinium præbeatis, & pro ipsi publica instrumenta condere, vel aliqua scripta facere nullatenus attentetis. Quod si contra præsumpseritis, ab officio vestro suspensos, perpetuò vos decernimus infamæ subiacere. Cæterum ne iudices, & scriuarij, qui consenserunt præfatis hæreticis, in huiusmodi præsumptione temeraria sociati, de sua nequitia glorientur, cum privilegium mereatur amittere, qui permissa sibi abutitur potestate, eos ab officio suo iudicamus esse suspensos, decernentes irritum, & inane quicquid per ipsos hæreticos prædictos factum fuerit, vel statutum.

NOTÆ.

1. ^a *Aragoniæ.* Ita etiam legitur in tertia collectione, sub hoc tit. cap. 2. non autem reperitur textus hic inter epistolas ipsius Pontificis editas à Sisleto, & Bolquetto. De hoc Rege Aragoniæ egi in cap. quanto 18. de *interimando*.

^b *Nobis.*] Supra in cap. *vergenis*.

^c *Nostris.*] Supra in cap. 6.7. & 8.

^d *Scriuariis.*] Idem tabellionibus, vt notauit in cap. 19. de *prescriptis*.

2. ^e *Patrocinium.*] Aduocati prohibentur patrocinium præstare hæreticis noticiis, & manifestis, non solum ipsorum errores defendendo, c. 2. *hæretici* cap. 31. officium in principio final. hoc tit. in 6. verum & eis, postquam constat hæreticos esse, in causis civilibus patrocinium præstare, quia vi-

dent eos fovere : non autem prohibentur hæreticos defendere, dum illi suspecti sunt de hæresi, & intendunt probare propriam innocentiam, se se nunquam fecisse, aut dixisse aliquid hæreticum : quo casu agitur de defensione legitima, quæ nemini denegatur, in Tribunalibus etiam sanctæ Inquisitionis. Vnde reus aduocatus conceduntur, cum ipsi aut crimen negant, aut faciunt, sed aliquas exceptiones allegare intendunt. Impenitenti verò etiam aduocatus assignatur, qui postquam cognoscit eius pertinaciam, eum deserit. De his aduocatis, & eorum partibus lætè agunt Simanc. de *Catholiciis* tit. 5. num. 2. Soles in *apb. inq.* Inquisit. cap. 35. Eymeticus 3. p. *dir. l.* num. 117. Salesles tom. 1. de *officiis* tribus. lib. 1. cap. 6. regl. 42. Patamos lib. 3. de *orig.* S. Inquisit. cap. 4. Catena de *offic.* Inquisit. p. 1. tit. 10. §. 2. Thomas Delbene p. 1. de *offic.* Inquisit. dub. 2. 6.

CAPVT XII.

Innoc. III. *Vniuersis Christi fidelibus, tam in vrbe Metensi, quàm eius diœcesi constitutis.*

Cum ex iniuncto nobis Apostolatus officio sumus secundum Apostolum sapientibus, & insipientibus debitores, pro vniuersorum salute nos oportet esse sollicitos, vt & malos retrahamus à vitiiis, & bonos in virtutibus foueamus: tunc autem opus est discretione maiori, cum vitia sub specie virtutum occultè subintrant, & angelus satanz se in angelum lucis simulatè transformat. Sanè significauit nobis venerabilis frater noster Metensis Episcopus per litteras suas, quod tam in diœcesi, quàm vrbe Metensi laicorum, & mulierum multitudo non modica tracta quodammodo desiderio Scripturarum, Evangelia, Epistolas Pauli, Psalterium, Moralia Iob, & plures alios libros sibi fecit in Gallico sermone transferri, translationi huiusmodi adeo libenter, vtinam autem & prudenter intendens, vt secretis conuentionibus talia inter se laici, & mulieres erudare præsumant, & sibi inuicem prædicare: qui etiam aspernantur eorum consortium, qui se similibus non immiscant, & à se reputant alienos, qui aures, & animos talibus non apponunt. Quos cum aliqui parochialium sacerdotum super his corripere voluissent, ipsi eis in faciem restiterunt, conantes rationes inducere de Scripturis, quod ab his non deberent aliquatenus prohiberi. Quidam etiam ex eis simplicitatem sacerdotum suorum fastidiunt: & cum ipsis per eos verbum saluū proponitur, se melius habere in libellis suis, & prudentius se posse id eloqui, submurmurant in occulto. Licet autem desiderium intelligendi diuinas Scripturas, & secundum eas studium adhortandi reprehendendum non sit, sed potius commendandum: in eo tamen apparent meritò arguendi, quod tales oculta conuenticula celebrant, officium sibi prædicationis vsurpant, sacerdotum simplicitatem eludunt, & eorum consortium aspernantur, qui talibus non inbærent. Deus enim lux vera, quæ omnem hominem venientem in hoc mundum illuminat, in tantum odit opera tenebrarum, vt Apostolos suos in mundum vniuersum prædicaturos Evangelium omni creaturæ missurus, eis apertè præcepit dicens: Quod dico vobis in tenebris, dicite in lumine: & quod in aure auditis, prædicare super testa. Per hoc manifestè denuncians, quod euangelica prædication non in oculis conuenticulis, sicut hæretici faciunt, sed in Ecclesiis iuxta morem catholicum est publicè proponenda. Nam iuxta testimonium Veritatis, omnis qui malè agit, odit lucem: & ad lucem non venit, ne eius opera arguantur. Qui autem facit veritatem, venit ad lucem, vt manifestentur opera eius, quæ in Deo sunt facta: propter quod cum Pontifex interrogasset Iesum de discipulis suis, & de doctrina eius, respondit: Ego palam locutus sum mundo: ego semper docui in synagoga, & in templo, quod omnes Iudei conueniunt, & in occulto locutus sum nihil. Porro si quis obiciat, quod iuxta præceptum dominicum non est sanctum dandum canibus, nec margaritæ mixendæ sunt ante porcos, cum & Christus ipse non omnibus quidem, sed solis Apostolis dixerit: Vobis datum est nosse mysterium regni Dei, cæteris autem in parabolis: intelligat canes, & porcos non eos esse, qui sanctum grater accipiunt, & margaritas libenter acceptæ: sed illos, qui sanctum dilacerant, & margaritas contemnunt, quales sunt qui euangelica verba, & ecclesiastica sacramenta, non vt Catholici venerantur, sed abominantur potius vt hæretici, oblatrantes semper, & blasphemantes: quos Paulus Apostolus post primam, & secundam commoitionem docet esse vitandos. Arcana verò fidei sacramenta non sunt passim omnibus exponenda: cum non passim ab omnibus possint intelligi, sed eis tantum, qui ea fidei possunt concipere intellectu: propter quod simplicioribus inquit Apostolus: Quasi paruulis in Christo lac potum dedi vobis, non escam. Maiorum est enim solidus cibus, sicut aliis ipse dicebat: Sapientiam loquimur inter perfectos, inter vos autem nihil iudicauimus scire, nisi Iesum Christum, & hunc crucifixum. Tanta est enim diuinæ Scripturæ profunditas, vt non solum simplices, & illiterati, sed etiam prudentes, & docti non plenè sufficiant ad ipsius intelligentiam indagandam: propter quod dicit Scriptura: Quia multi defecerunt seruantes scrutinium. Vnde rectè fuit olim in lege diuina statutum, vt bestia, quæ montem tetigerit, lapidetur: ne videlicet simplex aliquis, & indoctus præsumat

præsumat ad sublimitatem Scripturæ sacræ pertingere, vel eam aliis prædicare. Scriptum est enim: Altiora te ne quaesieris. Propter quod dicit Apostolus: Non plus sapere, quàm oporteat sapere, sed sapere ab sobrietatem. Sicut enim multa sunt membra corporis, omnia verò membra non eundem actum habent; ita multi sunt ordines in Ecclesia, sed non omnes idem habent officium: quia secundum Apostolum, alios quidem Dominus dedit Apostolos, alios Prophetas, alios autem Doctores, &c. Cum igitur Doctorum ordo sit quasi præcipuus in Ecclesia, non debet sibi quisquam indifferenter prædicationis officium usurpare; nam secundum Apostolum. Quomodo prædicabunt, nisi mittantur? Et veritas ipsa præcepit Apostolis: Rogate dominum messis, ut mittat operarios in messem suam. Quod si forte quis arguat respondens, quia tales inuisibiliter mittuntur à Deo, etsi non visibiliter mittantur ab homine, cum inuisibilis missio multò sit dignior, quàm visibilis: & diuina longè melior, quàm humana. Vnde Ioannes Baptista non legitur missus ab homine, sed à Deo, sicut Euangelista testatur: Quia fuit homo missus à Deo, cui nomen erat Ioannes. Potest, & debet utique ratione præuià responderi, quod cum interior illa missio sit occulta, non sufficit cuiquam nudè tantùm asserere, quod ipse sit missus à Deo, eùm hoc quilibet hæreticus asseueret; sed oportet, ut asstruat illam inuisibilem visionem per rationem miraculi, vel per Scripturæ testimonium speciale. Vnde cum Dominus vellet mittere Moysen in Ægyptum ad filios Israël, ut crederetur ei, quòd mitteretur ab ipso, dedit ei signum, ut conuerteret virgam in colubum, & colubum iterum reformaret in virgam. Ioannes quoque Baptista suæ missionis speciale testimonium protulit de Scriptura, respondens Sacerdotibus, & Leuitis qui missi fuerant ad interrogandum, quis esset, & quare baptizandi sibi officium assumpsisset: Ego vox clamantis in deserto: Dirigite viam Domini, sicut dixit Isaias Propheta. Non ergo credendum ei, qui se dicit missum à Deo, eùm non sit missus ab homine, nisi de se speciale proferat testimonium de Scripturis, vel euidens miraculum: operetur. Nam & de his, qui missi leguntur à Deo, Euangelista testatur: Quod ipsi profecti prædicabant vbique Domino cooperante, & sermonem confirmante sequentibus signis. Licet autem scientia valde sit necessaria sacerdotibus ad doctrinam, quia iuxta verbum propheticum: Labia sacerdotis custodiunt scientiam, & legem exquirunt ex ore eius; non est tamen simplicibus sacerdotibus etiam à scholasticis detrahendum, cum in eis sacerdotale ministerium debeat honorari: propter quod Dominus in lege præcepit: Diis non detrahes; sacerdotes intelligens, qui propter excellentiam ordinis, & officij dignitatem, Deorum nomine nuncupantur. Iuxta quod alibi dicit de seruo volente apud dominum remanere, ut dominus offerat eum Diis. Cum enim iuxta verbum Apostoli, seruus suo domino stet, aut cadat, profectò sacerdos ab Episcopo, cuius est correctioni subiectus, debet in mansuetudinis spiritu castigari, non autem à populo, cuius est correctioni præpositus, in spiritu superbie reprehendi: cum iuxta præceptum dominicum pater, & mater non debeant maledici, sed potius honorari: quod de spirituali patre multò fortius debet intelligi, quàm carnali. Nec quisquam suæ presumptionis audaciam illo defendat exemplo, quòd asina legitur reprehendisse Prophetam, vel quòd Dominus ait: Quis ex vobis arguet me de peccato? Et si malè loquutus sum, testimonium perhibe de malo: cum aliud sit fratrem in se peccantem occultè corrigere: quod utique quisque tenetur efficere, secundum regulam euangelicam; in quo casu sanè potest intelligi, quod Balaam fuit correptus ab asina: & aliud patrem suum etiam delinquentem reprehendere manifestè, ac præcipuè fatuum pro simplici appellare: quod utique nulli licet secundum euangelicam veritatem. Nam qui etiam fratri suo dixerit Fatue, reus erit gebennæ. Rursus aliud est, quod Prælati se spontè de sua confisus innocentia subditorum accusationi supponit: in quo casu præmissum Domini verbum debet intelligi: & aliud est, quod subditus non tam animo corripiendi, quàm detrahendi exurgit temerarius in Prælatum, eùm eum potius maneat necessitas obsequendi. Quod si forte necessitas postularit, ut sacerdos tanquam inutilis, aut indignus, à cura gregis debeat remoueri, agendum est ordinatè apud Episcopum, ad cuius officium tam institutio, quàm destitutio sacerdotum noscitur pertinere. Illud autem tanquam de supercilio Pharisæorum procedens debet ab omnibus aspernari, quod tanquam ipsi soli sint iusti, ceteros aspernantur: cum & hæcenus ab initio nascentis Ecclesiæ multi fuerint viri sancti, qui nec tales fuisse leguntur, nec talibus adhæsisse, eùm de nouo tales surrexisse legantur, qui nisi contenti sint doceri potius, quàm docere, ad illos forsitan pertinebunt,

timebunt, quibus Dominus ait: Nolite fieri plures magistri. Nos ergo filij, quia paterno vos affectu diligimus, ne sub prætextu veritatis in foueam decidatis erroris, & sub specie virtutum, in laqueum vitiorum: vniuersitatem vestram rogamus attentius, monemus, & exhortamur in Domino, in remissionem vobis peccatorum iniungentes, quatenus ab his, quæ superius reprehensibilia denotauimus, & linguam, & animum reuocetis, fidem catholicam, & regulam ecclesiasticam obseruantes, ne vos verbis fallacibus circumueniri, vel etiam circumuenire contingat: quia nisi correctionem nostram, & admonitionem paternam receperitis humiliter, & deuotè, nos post oleum infundemus & vinum, feueritatem ecclesiasticam apponentes, ut qui noluerint obedire spontanei, discant acquiescere vel inuiti. Datum Lateran.

NOTÆ.

1. *Metenſi.* Ita etiam legitur in tertis collectione, sub hoc titulo. cap. 3. & in epistolis Innocentij editis à Sireto lib. 3. fol. 358. De Metenſi diœceſi egi in cap. 14. de cleric. non reſol. Cùm enim Innocentius III. accepſſet ab Episcopo Metenſi, io ea diœceſi occasione ſacræ Scripturæ in vulgatem linguam Gallicanam verſe multos, tam viros, quàm ſceminas, conſcriptis ſacerdotum ſuorum prædicationibus, occultæ conuenticula celebrare, & officium prædicationis ſibi vuſurare: ne hinc grauius malum oriretur, cunctis Metenſis diœceſis in præſenti epistola monet, vt ab his exceſſibus deſiſtant: & Episcopum luſſit diligenter inquirere, quis fuiſſet auctor translationis illius, quæ eius intentio, quæ cauſa docendi, & verum Sedem Apoſtolicam, & Catholicam Eccleſiam veneraretur: & his cognitis, quid ſtatui deberet, maturius deſideraret. Quæ epistola Episcopo & Capitulo Metenſi miſſa reſcribit à Sireto d. lib. 2. fol. 358. in hæc verba: *Sicut Eccleſiarum Prælati incumbit ad accipiendas vulpes parulas, quæ demoliſi viceram Domini moluntur, prudenter, & diligenter intendere; ſic etiam ſummo perè præmeditand, ne ante noſſem ſcizantia colligantur, ne ſuſſan (quod abſt) cum eis etiam iracundia euellatur. Sane ſicut non debet heretica prauitas tolerari, ſic errorari non debet religioſa ſimplicitas, ne vel patientia noſtra hereticis audaciam ſubmiſiſſet, vel ſimplicitas in patientia multa conſunderet, et nobis diuinitus conuertantur in arcem peruerſum, & in hereticos de ſimplicitibus conuertantur. Sane ſignificasti vobis per litteras tuas, frater Episcopo, quod tam in diœceſi, quam vrbe Metenſi, &c. vt ſuprà, vsque ad verbum In deculto. Quia vero in dubio non eſt ſeſſacili ſcietia præferenda, cùm quod vel ſidem errent in fide, vel à doctrina diſcrepent ſalutari, vobis per tuas litteras, frater Episcopo, non duxeris exprimendam: cùm opinionem, & viam eorum potius ignoreris, qui ſaceras Scripturas ſaliter tranſlauerunt; aut errorem, qui docent ſaliter iam tranſſuſas: quorum neutrum poteſt fieri ſine ſcientia litterarum, licet in his arguendi morio videatur, quod occulta conuenticula celebrant, officium ſibi, &c. vsque ad verbum Non in herem. Diſcretioni voſtræ per Apoſtolica ſcripta mandamus, atque precipimus, quatenus eos commoneſcas diligenter ſtudenti, rationibus, & exhortationibus inuincitis, vt ab his, in quibus apparet reprehensionem notabiles, omnino deſiſtant, nec officium ſibi vendicent alienum. Inquiras etiam ſollicitè veritatem, qui fuerit auctor translationis illius, quæ intemè tranſſerentis, quæ fides vtenim, quia cauſa docendi, ſi Sedem Apoſtolicam, & Catholicam Eccleſiam veneretur, vt ſuper his, &*

aliis, quæ neceſſaria ſunt ad indagandam plenius veritatem, per litteras voſtras ſufficienter inſtruiſſi, quid ſtatui debeat, melius intelligere valeamus. Remocandi autem eos, & commoneſcendi ſecundum ſcripturam ſuper his, quæ reprehendiſſima denotauimus, viam vobis in litteris, quæ communiſſer illis dirigimus, aperimus. Dat. Later. 1 V. idus Jul. Et cùm adhuc plures reuaſſent obediæ mandatis ipſius, Abbatibus Citeſtendiſ, Morſimundi, & de Criſta io hæc verba reſcripſit: [Ea eſt in fontibus virtutibus, & vitiis exſurgendis in Prælati Eccleſiarum ſeruanda diſcretio, & circumſpectio adhibenda, ne vel internatſcentium denſitate ſpinarum enormiter frumenta lædantur, vel in ſupereminatorem zizaniorum euulſione triticum euellatur. In abſcindendis etiam, & catandis corporibus infernorum ſic oculi diligentiæ præcedere debet manus officii, & ſeruum digitus præuenire, ne ſi cautetium adhibeatur incautè, oon tam partes infirmas non ſanet, quàm ſanas infirmæ: quod tantò diligentius in mentis languoribus eſt ſciand, quandò animam non minus corpore digniorem, & ſpiritualia carnalibus præponenda. Hoc autem inſia noſſipſos diligentius attendentes, cùm olim venerabilis frater noſter Metenſis Episcopus per ſuas nobis litteras intimauit, quod tam in diœceſi, quàm in vrbe Metenſi laicorum non modica multitudo gallicæ euidam translationi diuinorum librorum intoidens, ſecreſſis conuenticulis etiam inter ſe inuicem emendare præſumerent, aliorum aſpernantes conſortium, & in faciem redarguentibus Præſbiteris reſiſtentes, quorum ſimpliſſitem ſatiſtium cenſebant, In ſua translationis perſita confidentes; non protinus ad vindictam nos tes accendit incognita, ſed vniuerſis tam in vrbe, quàm in Metenſi diœceſi conſtituitis, ſub eo tenore litteras curauimus Apoſtolicas deſtinare, qui vobis ex tranſcripti earum poteſſis inſpectione patere. Eidem ioſupet Episcopo, & Capitulo Metenſi dedimus in mandatis, vt inquirerent ſollicitè veritatem qui fuerit auctor, translationis illius, quæ intentio tranſſerentis, quæ fides vtenim, quæ cauſa docendi: ſi vtenies ipſa veneretur Apoſtolicam Sedem, & Catholicam Eccleſiam honorarent; vt ſuper his, & aliis, quæ neceſſaria ſunt ad indagandam plenius veritatem, per eorum litteras ſufficienter inſtruiſſi, plenius intelligeremus, & planius, quid ſuper his ſuſſi oporteret. Nuper autem idem Episcopus per ſuas nobis litteras intimauit, quod quidam eorum, quos notabiles prioribus litteris denotat, mandatis reſcuiſſis Apoſtolicis obediæ: quibusdam eorum clanculo, quibusdam vero iam publicè obediendum eſſe dicentibus ſoli. Deo.

Ab oculis etiam conuenticulis non cessantes, officium prædicationis occulte, licet à nullo mittentur, prohibiti etiam, sibi non metuunt usurpare à spernantibus sibi dissimiles, & translationi eidem vsque adeo insisterent, vt se neque Episcopo, neque Metropolitano suo, nec nobis ipsi assentire patitur, si eam decreuerimus abolendam. Licet autem tales in eo reprehendi meriti viderentur, quòd occultis conuenticulis celebrant, officium prædicationis usurpant, simplicitatem despiciunt sacerdotum, & eorum confortis, qui dictam translationem non recipiunt, aspiciuntur. Ne quid subditi tamen facere videamur, discretioni vestre (de qua plenè acquiescimus) per Apostolicam scriptam mandamus, atque præcipimus, quatenus ad ciuitatem Metensem pariter accedentes, cum eodem Episcopo consuoretis coram vobis tales sapientes, & ad hærentes translationi prædicet; & si fieri poterit, quæ lo eis repetenda libili fuerint, auctoritate frei Apostolicæ, sublatio appellationis obstaculo corrigant. Quod si correctionem vestram recipere fortè obolescent, loquuntis super capitulis illis, quæ in literis, quas Episcopo misimus, expressa fuisse superius vobis expressimus, & aliis etiam diligentius veritate; & quod inuenietis, per nuntium vestrum, & literas plenius intimetis: vt per vos ceteros effecti, pio- vt procedendum fuerit, procedamus. Cum enim in hoc vniuersalis Ecclesiæ veritatur oegotium, & agitur causa fidei christianæ, ad exequendum Apostolicæ Sedis mandatum cum summa diligentia, & cautela vos studiosos, & promptos esse volumus, & mandamus. Ad hæc M. Crispinum Presbyterum, & R. socium eius, si super his, quæ dictus Episcopus eis duxerit imponenda, inuenietis esse reos, ipsos, appellatione remota, canonicè puniant. Alioquin eundem Episcopum ad remittendam pœnam, si quam eis forsan infirmit, cum nihil contra eum, vel Cletum in nostra proposuerint audientia, monitione premittis, distinctione quæ conuenit, remota appellationis obstaculo cogere non tardetis. Quod si ooo omoes, &c. duo verum, &c.]

2.

b Gallico sermone.] Quod nullo modo permittendum est, vt probat Turrillanus lib. 1. pro cœmibus, cap. 24. & cauere in Indice librorum prohibitorum edito à Concilio Trident. vbi quarta regula sic se habet: Cum experimento manifestum sit, quod sacra Biblia vulgari lingua passim sine discrimine permittantur, & plus inde ob hominum temeritatem decemunt, quam utilitatis erant, hac in parte indicio Episcopis, aut Inquisitoribus. Et in indice postea edito iussu Clementis VIII. citata eadem regulam 4. ita cauium fuit: Animaduertendum est circa supradictam regulam quatuor felices recordationis Py. Pape IV. nullum per hanc impressionem, & editionem de nouo tribui facultatem Episcopis, vel Inquisitoribus, aut Regularium Superioribus concedendi licentiam emendi, legendi, aut retinendi Biblia vulgari lingua edita, non habentis mandata, & vti similia Romæ, & vniuersalis Inquisitionis sublati eis fuerit facultas concedendi huiusmodi licentia. Et in indice pro his Hispaniarum regnis edito auctoritate Cardinalis D. Antonij Zapata, regul. 5. ita cauetur: Biblia vulgari lingua prohibetur. Si enim Scripturæ sacre in vulgari lingua permittentur, vt à viris, & mulieribus,

doctis, & indoctis legeretur, variz hæreses, & errores sequerentur: quare apud Hebræos arcebanatur iuuenes ante annum ætatis trigimum à lectione Canticeorum Salomonis, & quarundam aliarum Scripturæ parium, eo quod posset ea lectio damnosior illis esse, quam fructuosior, si coriel vltimum iuhærentes, verum sensum non percussissent. Refert & probat Nazianzenus apolog. 1. & D. Hieronymus ad Leiam, de institutione filiz ait: Ad vltimum sine periculo discat Canticum Canticeorum, ne si in exordio legerit sub carnalibus verbis, spiritualium nuptiarum epulamentum non intelligens vulneretur. Simili ex causa apud Romanos soli Pontifices legebant libros Sibyllinos, quòd timerent Romani, ne libri illi satidici, tamen boni, attenti lectionum conditione noxi euaderent, vt probat Laetellus in digest. ad Sabinum contra Casaubonem, cap. 6. vnde Nicephorus Gregoras lib. 10. hisseria Romana, probat Scripturam non nisi adhibito delectu esse permittendam, nec esse quorumeunque eam versare, ne in libro viæ mortem inueniant, vt plerisque imptoidis accidisse ferunt. Quis enim non videt quantum damnum accideret, si passim agricola, & opifices facta volumina lætarent in vernacula lingua; cum lo eis multa haberent, quæ prima fronte contraria viderentur. Ecce ad Romanos cap. 14. Apostolus ait: Regnum Dei non est esca, & potus. Cum tamen Christus Dominus dixerit apud D. Lucam cap. 20. Ego dispono vobis, vt edatis, & libatis super mensam meam in regno meo. Item Genesis 1: dicitur: Crescite, & multiplicamini. Et Luca cap. 23. Beati seruiti, quæ nos genuerunt. Et Matth. cap. 19. Beati eunuchi, quæ se castrauerunt propter regnum celorum. Et Moses Genesis cap. 22. ait: Tenentis Deus Abraham. Et B. Iacobus epist. 1. inquit: Deus utrumque tenet. Et Exodi 24. Videruntque Deum, & comederunt. Cum Deus ipsi Moysi dixerit Exodi cap. 32. Non enim videbit me homo, & uiuet. Et David psalmo 2. ait: Non resurgens impij in iudicio. Cum D. Paulos ad Romanos 1. afferat: Omnes quidem resurgemus. Omnia alia in sacris literis, quæ hominem rudem, & imperitum grauer offendunt: eum abiecta, ridicula, aut absurdia ea indicare posset: ex quibus nonnulla exempla refert Azor p. 1. inful. lib. 8. cap. 26. & alia inconmoda huius abusus refert Gerson. in pomerio. sess. 4. fol. 259. Nec obstat si dicas, sacram Scripturam olim maternis lingua fuisse conscriptam: nam Moyses, & alij veteris Testamenti scriptores Hebræica lingua, quæ tunc temporis vrebatur Hebræi, scripserat: & D. Mathæus Euangelicum hebræicè scripsit in gratiam Iodæorum, teste Hieronymo in apolog. ad Mathiam, & probat Micedo de clauis Petri lib. 2. cap. 1. a. & 3. Fr. Antonius Perez in penateucho fidel. volum. 6. de sacra Scriptura, Fr. Ant. à matre Dei praulio 2. de ling. sacr. Scrip. dubio 4. & epistola D. Pauli ad Hebræos fertur hebræicè primùm edita. Cæteri verd libri noui Testamenti græcè sunt conscripti, quia Orientalium gentium, quæ in Romanorum Imperio vivebant, erat propria lingua; & in Ecclesiæ Latine sacri libri latine sunt editi, quia omnes tunc temporis latine loquebantur. Nam respondendo, quod tunc his tribus linguis sacri Scriptores vsi fuerunt, quia scriptorū sanctorū tuoc apud gentes promulgari ceperunt: quare

necessariū

necessariis his linguis editæ fuerunt, ut petel-
pi possent à Gentibus: quæ ratio hodie non mi-
lita. Et si obliuiscas, D. Paulum in epistola s. ad
Corinthios, cap. 14. reprehendentem eos, qui
vâris linguis in Ecclesia loquebantur, ubi ait: Ita
& vos per linguam nisi manifestum sermonem dederi-
tis, quomodo scietur id quod dicitis? eritis enim in
aëre loquentes. Et statim: Si ergo (inquit) nesciero
scripturæ vocis, ero ei, cui loquer, barbarus, & qui
loquitur mihi barbarus. Et ad Romanos cap. 10. Fides
(ait) ex auditu, auditus autem per verbum Christi.
At si ij, quibus annuncietur Dei verbum, non in-
telligant, petinde est et si non audiant. Respon-
deo Paulum in his locis agere de his, qui dono
linguarum præditi erant, quo multi Corinthio-
rum tunc temporis diuinis donabantur, &
qui eos Apostolos vel voluit ad alioquin pro-
fectum, videlicet ne publicè loquerentur lin-
guis in Ecclesia, nisi esset qui interpretaretur, ut
omnes intelligendo ad pietatem influmarentur
ardentius, ut docuit Azor 1. part. inquit. lib. 8. c. 26.
Macerda supra, cap. 3. Redit ergo Ecclesia prohi-
buit factam Scripturam vulgari linguis legi, & pu-
blicè edi, licet olim eum laici Latini sermone
periti essent, vel Graeci, in facta Scriptura assilui
essent, iuxta consilium D. Chrysostomi in homilia
de Lazaro, & homilia 10. in sanctum, & homil. 9.
in epistolam ad Thimotheum. D. Hieron. in epistolam ad Pau-
lum, & Eusebium.

3. c. Commemulatio.] Quæ apud omnes nationes
seculis. & acuatè prohibita legimus, l. commen-
culatio 15. Cod. de Episc. & cleric. l. aduocatus 5.
Cod. de his qui ad Ecclesiam, l. 1. & 2. Cod. de se-
ditiois, l. 1. Cod. ad leg. lat. maiest. 5. commemulatio,
de pace inuicem firmanda in vobis feneratorum, l. 3.
tit. 14. lib. 8. Recipit, plura consueuerunt Petrus
Greg. lib. 13. de reprob. cap. 3. Martha 2. part. de in-
risa. cap. 23. ex nom. 14.

4. d. Operetur.] Quare ut Christus Domini
suam à Paulo missionem confirmaret, & capis ob-
stinatis Iudeis sua obiciebat miracula, dicens: Si
mihi non credidit, operibus credet. Et iterum: Ope-
ra, quæ ego facio, testimonium perhibent de me. Et
cap. ultimo Diui Marci. Illustrant latè Fr. Tho-
mas à S. Ioanne de procuranda omnium gentium
salute lib. 4. cap. 3. Torrebiana de magia cap. 29.
num. 25. Thomas Bozias de signis Ecclesia lib. 5.
cap. 1.

c. Necessaria.] Ut probauit in cap. 4. de arate,
& qualis.

5. f. Teneantur officii.] Nam correctionem fra-
ternam sub præcepto tenemus adhibere. D. Tho-
mas 2. 2. quæst. 33. art. 2. probant Thimotheum in
cap. si peccaueris 19. 2. quæst. 1. Valentia tom. 3.
ad 2. 2. dist. 3. quæst. 10. punct. 2.

COMMENTARIUM.

6. EX hac perdocta Innocentij epistolâ frequens
communiter deducitur assertio: Laici in Eccle-
sia predicare non debent, nec de mysteriis fidei in
conuenticulis disputare. Probant eam textus in
multis, 23. dist. cap. excommunicatus 13. 6. quia
verò, cap. sicut in vno, hoc iurâ, cap. 2. 6. inbe-
mus, eod. tit. lib. 6. Concil. Carthag. 4. can. 98.
ibi: Laici præsentibus clericis, nisi ipse rogau-
erint, docere non audeant. Sexta Synodus can. 64.
ibi: Quod non oportet laicam publicè disputare, vel
docere, docendi auctoritatem ex eis sibi vendicantem:
sed ordini à Domino tradito cedere, & aures illi,
D. D. Gonzal. in Decretal. Tom. V.

qui docendi gratiam acceperunt, aperire, & dicta
ab eis doceri. In vna enim Ecclesia diuersa membra
sunt Dei, ut est vox Apostoli. Leo 1. epist. 62. ad
Maximum Antiochenum, cap. 6. Illud quoque
dilectionem vnam conuenit præconare, ut præter
eos, qui sunt Domini sacerdotes, nullus sibi ius
dicendi, & prædicandi audeat vendicare, sine sit
ille monachus, sine sit laicus, qui alius scien-
tia nomine pleritur, quia est optandum est, ut
omnes Ecclesia filij, qui recti, & sana sunt, sa-
piani; non tamen permittendum est, ut quisquam
extra sacerdotalem ordinem constitutus, gradum sibi
prædicandi assumat, cum in Ecclesia Dei om-
nia ordinata esse conueniat, ut in vno Christi cor-
pore; & excellentiora membra suum officium im-
pleant, & inferiora superioribus non resistant. Na-
zianzenus tom. 2. Quæ Passiones non passio, nec
supra fides vestras assurgit: satis enim vobis est
si rite pascamini. Et tom. 26. Magnam, & præ-
clarum docere, sed discere periculo vacat: quid
passeris munus tibi arrogas, cum quis sit? quid ca-
pui officio, cum per sit? quid exortum docere
aggrederis in nullum ordinem adscriptus. Et l. 1.
& per totum Cod. Theodas. de his qui super religio-
ne contumunt. Illustrant vltra congestos à Bar-
bosa in præsentij, Petrus Gregori, lib. 1. partit.
tit. 22. cap. 4. & lib. 2. tit. 7. cap. 5. Mornacius in
l. 1. uero, Cod. de summo Trin. Sebastianus Cæ-
sar de Eccles. Hierarch. dist. 9. num. 8. Farinæ,
de heresi quæst. 192. 5. 1. Acosta in cap. manda-
tis, 56. dist. Suarez de fide dist. 20. sect. 1.
Castro lib. 1. de iusta heresi. penit. cap. 19. San-
chez lib. 2. summa, cap. 6. Azor part. 1. inquit.
moral. lib. 8. cap. 6. Zonaras & Ballaman in dist.
can. 64. sexta Synodi. Ferrarius de vna sacrum
concilium, lib. 2. cap. 4. 5. & 6. Hallierius de hi-
erarch. iurisd. lib. 1. cap. 7. Cenedus ad 6. collect. 154.
Thomas Delbene part. 1. de offic. inquit, dubi. 134.
Franc. Valeus in concord. l. 1. cum Theolog. r. 1.
fol. 348. Azor tom. 1. inquit. lib. 8. cap. 26. Alsted-
2. hic.

Sed pro dubitandi ratione in præsentem asser-
tionem ita infurgo: A Deo non queritur, quis,
& qualis sit, qui prædiciat, sed quid prædicet, cap.
secundum, 19. dist. Igitur, siue laicus, siue clericus sit,
qui prædicat, si pia, & sancta dogmata prædi-
cat, audiendus est. Augeret hæc dubitandi ratio
ex variis exemplis, quibus probatur, laicos in
Ecclesia prædicasse seimibus, & confitentibus
Episcopis, ut testet Nicephorus Callistus
lib. 5. histor. Eccles. cap. 14. illis verbis: Cum
Cæsarea degeret Origenes Episcopi Palæstini lega-
tione quoque ad eum missa ei permittit, ut de sacri-
cinis literis differeret, & publicè et in Ecclesia
interpretaretur, quomodo nondum presbyteri bina-
rem istet consequuntur. Idque compebatur ex scrip-
tis illi, quæ Demetrius male esse Origenem
affectus Episcopis Palæstinis misit, in quibus
scripsit præter alia illud erat: Nongnum ante
audire, nunquam saltem esse, ut præsentibus
Episcopis laici concinarentur: quapropter illi, &
potissimum Alexander Hierosolymitanus, & Theo-
dostus Cæsarensis Antistes defensionem eius rei ad
eum scripserunt, non verò illum dicere assensum
tibi esse, inquit, reperimus idem homi-
nes, qui doctrinâ suâ prædesse fratribus possunt, si
illi sanctiorum Episcoporum iussu, & permissio-
ne exhortatione ad populum verba faciant, id offen-
dendo non est, sicuti apud Sandanos Episcopis à Ni-
neo Ioni, Paulians à Cæso Synodo, Theodorus à

Artico, omnibus illis bonis fratribus inuicem fecerunt. Et subdit: Proximis autem est, in aliis quoque locis, quas nos ignoramus, iudicem esse saltem. Facit Tertullianus, cuius verba retuli in cap. inter casura, de offic. ordi. Igitur quia laici licet publice in Ecclesia predicare, Deinde in secundam partem assertionis ita argumentor. Si non liceret laicis de mysteriis fidei disputare, & disserere, non vocarentur ad Concilia generalia, ubi præcipua fidei dogmata proponuntur, & differuntur: sed in ipsis Conciliis adiunt, ut probauit lib. 1. Concilij lib. 8. cap. 8. Igitur quia illis licet fidei mysteria disputare.

8.

QVIAM
IN QUAM-
BO LI-
CEAT DE
FIDE DIS-
PUTARE.

Quæ dubitandi ratione non obstante, vera est præsentis assertio, pro cuius expositione, ommissa quæ de predicatione, & prædicatione munere adduxi in cap. inter casura, de offic. ordi. sciendum est, quod disputatio de fide dubitatoria, quæ procedit ex animo improbandi illam, est omnino illicita, & hæretica, si adit pertinencia, iuxta supra tradita in cap. 5. hoc tit. quo casu procedit textus in *l. nemo, Cod. de summa Trinit.* ut cum accepit D. Thomas 1. 2. quæst. 10. art. 7. *Sicut de fide disput. 10. scilicet. 1. Acutus in cap. in mandatu, 56. dist. Mortuarius in dist. huius.* Si verò disputatio de fide tantum sit moralis, qualis habetur inter Catholicos animo quidem concordæ, disputantes gratiæ exercitij ad veritatem magis indagandam, ac errores confutandos, licita est, seruatis debitis circumstantiis, ut patet ex textu in cap. scilicet, 96. dist. ubi glossa: & in cap. cum quibus, 24. dist. Dixi seruatis debitis circumstantiis, quia ille magnopere attendendus sunt quæ respectu audientium, ne decipiantur, vel scandalum pariantur; tum disputantium, ne sint indocti; tandem loci, & temporis, aliter talis disputatio illicita est, cum ut ait Tacitus lib. 4. *anet. cap. 34. sanctum ac reuerentium visum est, de alijs Deorum credere, quam scire.* Faciant Cicero de natura Deorum, ibi: *Mala, & impia est consuetudo contra Deos disputare, sive illi ex animo sibi, sive simulati.* Et præceptum Philicæ.

Deum esse crede, & colere, sed non querere:

Nam nihil habebis aliud hic, quam querere.

Et pñj ac Catholici scriptores Hilarius de Trinitate, ibi: *Deum religione intelligendum, pietate profectum est, sensu verò persequendum non est, sed adorandum.* D. Cyrillus in Symbolo, ibi: *De Deo etiam vera dicere periculosum est.* D. Gregor. Nazianzenus relatus ab Alciato in dist. l. nemo, numer. 2. Alia disputatio est vera, seu formalis, quæ habetur cum hæreticis, vel disputantes non tantum verbis, & argumentis, sed animorum, & sententiarum diuersitate dissidentium pugnant, quæ ut periculosa regulariter prohibetur, licita tamen, & laudabilis est, ubi seruatis circumstantiis nullum imminet periculum, quod timeatur. Cuius propositionis prior pars probatur ex cap. in mandatu, 56. dist. & docent D. Thom. & Acutus ubi supra, l. ut Besoldus *tom. 2. polit. differt. de stud. l. 1. c. 1. a. Patet, siquidem in hac disputatione in primis adest periculum audientium, qui insipientes fathana incipiunt dubitare, putantes hæreticos victoriam reportatores, iuxta illud Diu. Pauli ad Timoth. cap. 2. *Noli verbis contendere, ad nihilum enim prouidit, nisi ad subuersionem audientium.* Nec deest periculum hæreticorum, qui iuxta suam pertinaciam facillè per consilia argumenta effugere nituntur. Adest tandem periculum disputantium, ut constat ex his, quæ refert Rufinus lib. 10. *hist. Eccl. cap. 3.**

Ex causa tamen, & seruatis debitis circumstantiis, non solum licita, verum & necessaria est, cum aliquis fructus spera debeat. Idem fecisse Stephanum cum Iudeis legimus cap. 6. & 7. *Actum Apost. & Paulum cum Iudeis, & Grecis Actum Apost. c. 9.* item ipse Apostolus ad Titum cap. 1. in Episcopo doctrinam necessariam esse dicit, quæ contradicentes, seu fidem nostram oppugnantem arguere possit, & argumentationibus convincere, quos imitati fuerant antiqui Ecclesiæ PP. & DD. ut constat ex gestis, scriptisque Hilarij, Nazianzenij, Hieronymi, Augustini, & aliorum, variisque Conciliis, in quibus non sine magno audientium fructu, si deique nostræ auctoritatis cum hæreticis publicè fuit disputatum, ut videre est in Concilio Nicæno 1. & 2. Constantinopoli 3. Lugdunensi, Florentino & aliis. Vnde D. Ambrosius cum Valentinianus Iun. collationem super religione in consilio suo indixisset, ad populum pronocauit, & in Ecclesia coram populo disputari, seu tractari voluit: *Veniatis plures, si qui sunt ad Ecclesiam, audire cum populo: non ut quicumque index iudicet, sed ut unusquisque de sua officina habeat exempla, eligat quem sequatur. Agitur de istum Ecclesiæ sacerdos: si audierit istum populum, & putauerit inlicitum disputare, sequatur fidem eius, non inuincit. Omittit, quia iam ipse populari iudicauit. Taceo, quia cum, quem habet, de patre tua clementia postulauit. Taceo, quia poterit pietatis tue quietem suam respondit. si electus suspenderit sacerdotium. Et mor: Si tractandum est, tractare in Ecclesia ducit, quod maiores fecerunt mei: si confutandum de fide, sacerdotum debet esse ista cellaria. Et sub finem epistolæ: *Peruenit Imperator ad consilium clementia tua, ut hac coram persequeremur, si mori, vel Episcopi, vel populus permiserint, dicentes de fide in Ecclesia coram populo debere tractari. Et in oratione subiecta aduersus Auxantium, ubi inter alia ait: *Consensum fidei in Ecclesia agendum quis abnuat? Item: Hæc ego fratres coram ipso apud vos plenius disputarem: sed certus non ignarus vos esse fidei, vestrum refugio exornem.* Et Genitiles quosdam quatuor, aut quinque ferme homines elegit cogitantes sibi: *Quis igitur vobis inuicem facit, qui recusat vestram, an qui eligit audientiam? Illud iammet eandem est, ne disceptatio fiat coram simplicitatibus, qui solutionem contrariarum rationum non percipiunt, & turbati potius solent, quam in fide confirmari, ut monebat D. Gregorius 1. parti. Pastor. cap. 4.***

Quibus præmissis ut ad personas de fide disputantes perueniamus, dicendum est circa disputationem dubitariam, & tam quæ materialis, seu ficta dicitur, nullam dari differentiam inter laicos, & clericos: sicut illa epistola noster licet, l. 1. & per totam Cod. Theod. de his qui super relig. contendunt, dist. 1. nemo, Cod. de summa Trinit. cap. 1. *loc. cit.* ita hæc utrobique conceditur, ut possum vidimus laicos Theologos Professores, seu iuris Canonici peritos in scholis disputantes de mysteriis fidei. Versatur tamen magna differentia inter laicos & clericos, quoad disputationem veram, seu formalem, quæ cum hæreticis habetur. Hæc enim licet clericis permittatur, iuxta modum super relatum, laici tamen interdicitur sub pena excommunicationis ferenda in cap. quicumque, §. inhibemus, hoc tit. in 6. & constitutione Innocentij IV. quæ incipit: *Novit universitas*, edita anno 1254. & alia Nicolai III. edita anno 1278, quæ incipit: *Item firmiter*, & relata ad Penā ad calcem Director. Inquisit. Laici enim præsumuntur

9.

DE LAICIS
DISPU-
TANTIBUS.

præsumuntur minis docti, & in rebus fidei pa-
rum instructi, cum ea ad officium illorum non
spectent, & plerumque careant illa morum hone-
stas, quæ præcipue requiritur ad hanc disputationem;
cum tamen utrumque præsumitur, & requi-
ratur in clericis, quod tanquam in sortem Domini
vocati, id exactius præstare debent, iuxta tradita
in *cap. cum in consilio, de electis*. Laici ergo de myste-
riis fidei disputationes, peccant lethaliter, etiam si
non incutiant excommunicationem ipso iure, ut
lucet docet Eymericus p. 1. *Directorii*, q. 6. ubi Pe-
trus, Salesius *part. 1. de mysteriis tribunalis fidei*, lib. 3.
c. 10. regul. 86. & 87. Castropalao *tom. 1. operis mor-
tal. tract. 4. disp. 3. punct. 4. n. 4*. Simancas *de Carol.*
num. 8. & lib. 59. n. 11. Sanchez *lib. 1. summa*, cap. 6.
Decisiones *tr. 1. crim. lib. 5. cap. 18*. Azor *part. 1. in-
finit. lib. 8. cap. 26. q. 1*. Coninch *de infidelis. disp. 18.*
dist. 9. num. 145. Franc. Valens *in concord. iuris*
tr. 1. 3. part. 1. fol. 248.

His suppositis recte præsentis assertionis pro-
curat ex eo, nam docere, & prædicare in Ecclesia
propriè, & peculiariter ad presbyteros, & sacer-
dotes spectat. Sanctus Maximus c. 6. *beatiss. hierarch.*
lib. 1: Presbyteri docere debent, & munus offerre. Quia
in te habemus exemplum Christi Domini, qui
non nisi septuaginta discipulis, & Apostolis do-
cendi munus commendavit, quibus Episcopi, &
Presbyteri, sicut in officio, ita & in ordine successerunt.
Habentis etiam Spiritus sancti testimonium,
quo iubente Sanctus & Barnabas per impositionem
manuum Episcopi ordinati sunt, ut sequebantur à ex-
teris per ordinationem ad annuncian- dum Evan-
gelium proficiscerentur, ut refertur *cap. 13. Actuum*
Apost. Habemus etiam exemplum Apostolorum,
qui ad docendum Evangelium Episcopos, presby-
terosque consecraverunt: & Paulus c. ad *Timoth.*
cap. 3. Episcopos, seu Presbyteros idoneos ad
docendum ordinari præcipit: & ad *Titum c. 1*. pre-
byteros in sermone & doctrina laborare dicit: &
Actuum Apost. cap. 10. idem Sanctus ait: Presbyteros
Episcopos posuit esse ad regendam Ecclesiam Dei.
Vnde laici, non possunt hoc officium usurpare,
præcipue in contemptum sacerdotum. Quare Ter-
tullianus *de prescripte. cap. 41*. hæreticos exprobat,
quod conculecunt ordinem ecclesiasticum gradi-
bus, omnes timeant, omnes scientiam pollicentur;
quod etiam mulieres apud eos docere audent; quod
& laici sacerdotalia munia iniungunt. De quo abusu
laicorum ita suo seculo conqueretur Nicephorus.
Gregoras *lib. 1. hislor. ibi: Ratiocinamini, &
sermonibus syllogisticis, velis herba, & pascuis ar-*

*menta, omnes inhiant; quodque officium etiam ef-
fusa sunt arcanis Theologia: & illi, qui de rebus fidei
ambigunt, sunt, & qui nec quomodo credendum sit,
sciunt; nec quid sit illud quod credere se dicunt, illi
(inquam) & fora, & porticus, & theatra etiam
Theologia complerentur. Rectè ergo in præfati In-
nocentius prohibet, nec cives laici M. rones
iuxta abusu illius diocesis audent prædicare,
aut in suis conuenticulis de mysteriis fidei dis-
putare.*

Nec obstat dubitandi ratio suprà expensa, de-
ducta ex *cap. secundum*, 19. *dist.* nam accipiendus
est textus ille, dummodo ministri prædicans sit
ex deificatione ab Ecclesia, & electis ad docendum,
& prædicandum; nam tunc siue ille sit bonis mo-
ribus præditus, siue malis, id attendendum non
est, sed tantum quid prædicet, ut iam dixi in *cap.*
inter cetera, de officio arch. Nec obstat exempla lai-
corum prædicantium pio augmento difficultatis
adducta; nam duplici modo responderi potest.
Primo, quod cum prioribus Ecclesie sæculis pau-
ci essent presbyteri, & facilem persecutionem con-
tra ita facile repeterentur idonei fideles, qui doctrinam
sua de prædicatione prodelle fratribus possent,
aliquibus laicis per doctos id munus Episcopi com-
mendabant. Secundo responderi potest, laicos illos
nec publicè in Ecclesia docuisse, nec publico
Ecclesie ministerio functos fuisse, sed potius eru-
diti diocesis catechumenis destinatos fuisse, ut eos pri-
uatim erudiret, ut docuit Hallier. *de hierarch.*
iurisd. lib. 1. cap. 7. Sanè quandoque, ut hoc etiam
strictim admonem, iudulsi R. P. iustas ob cau-
sas plerisque religiosis, ut licet ad sacros ordines
nondum promoti, possent tamen publicè concio-
nari, quemadmodum anno Domini 1584. Grego-
rius XIII. statuit, concedens id posse fieri à Su-
blegatis Ico clericis primà dumtaxat tonsurâ insigni-
tis. Nec obstat quod dicebamus, laicos interesse
Conciliis generalibus, ubi de præcipuis fidei arti-
culis agitur; nam et si Principes supremi, seu eo-
rum Legati Conciliis interfuerint, non tamen vocan-
tur, quia in rebus fidei suffragium habent, ut eo-
rum auctoritate, & potestate aliquid decernatur
sed solum inuitantur, conuocanturque, ut siot de-
fensores, exequutoresque Decretorum ipsius Con-
cilij, & ut si quid de Reipublicæ christianæ salute
decerat debeat, consilium præstent, ut probat
Bellarminus *tom. 1. controuers. lib. 1. de Con-
cilio, cap. 15. & 16*. Germonius *lib. 2. de sa-
crorum immunit. cap. 12*. Valdes *de dignit. Regum*
Hisp. cap. 1. P. Marcha part. 1. concord. lib. 2. cap. 6.

11.
Demos-
tratio
RATIO.

CA P V T XIII.

Idem * in Concilio generali.

EXcommunicamus itaque, & anathematizamus omnem hæresim extollemem se
superius hanc sanctam, orthodoxam, & Catholicam fidem, quam superius ex-
posuimus, condemnantes hæreticos vniuersos, quibuscunque nominibus censentur,
facies quidem diuersas habentes, sed caudas ad inuicem colligatas, quia de varietate
conueniunt in id * ipsum.

NOTÆ.

1. a **G**enerali.] Lateranensis videlicet celebrato
sub Innocentio III. ubi *cap. 3. & in c. 2. hoc
etiam*, lo quans compilationem reperitur textus hic,
de quo Concilio nouacula notati in *cap. 1. de sum-
D. D. Gmez. in Decretal. Tom. V.*

ma Trin. & commentarium huius textus dedi su-
per in *cap. 6.*

b In *idipsum*.] Faciunt Imperatores in 160.
Cod. Theod. de hæreticis, ibi: *Diuerſa sunt nomina,
sed una perſidia*. Prudentius *lib. 2. contra Symma-
chum*: *Vna superſtitio est, quamvis non conſolet error.*

3 2 5,

§.

Damnati verò presentibus, secularibus potestatibus, aut eorum * Balliuis ^b relinquantur animadversione ^c debita puniendi, clericis priùs à suis ordinibus degradatis: ita quod bona huiusmodi damnatorum, si laici fuerint, ^d confiscentur: si verò clerici, applicentur Ecclesiis, à quibus stipendia receperunt.

NOTA.

1. ^a **Ballivus.**] Ballivus idem est ac Prætor, seu Receptor plebis secularis, vt in testamento Philippi Augusti apud Rigordem anno 1189. Et in *terris nostris, que propriis nominibus distincta sunt, Balliui nostros posuimus, qui in balliuis suis singulis mensibus potum suum dant, qui dicitur assisia, in quo omnes ibi, qui clauorem faciunt, recipiunt ius suum per eos.* Et in consuetudine D. Ludou. apud Guillelmum Nangium de gestis Ludouic. *Quasi quidem illi, quantum possibile fuerit, in Balliuis, & aliis curialibus nostris reprimere cupiunt, Balliuis, Propositos, Vicecomes, & villanos Maiores, ac quoscumque sub eis in officiis constitutos iuramento subscripto duximus adstringendos.* Iode de Balliuorum territorium, seu districtum balliam dixerunt Innoc. III. lib. 2. epist. 152. *Propositus, quos balliui vulgariter appellatis.* Et alij apud Ioannem Volium lib. 2. de viris serm. cap. 3. Dadrum Aliefferram, de Ducibus lib. 2. cap. final. quo in sensu Balliui, in presenti ponuntur pro Receptoribus iuridicis, seu officialibus Magistratus secularis.

2. ^b *Relinquantur.*] Ita vt ipsi Iudices seculares nullatenus possent examinare adu processus, vel iustitiam sententiarum ab Inquisitionibus prolatæ, vt probant Simone de Catholic. cap. 36. num. 5. *Afflictus in premissis confit. Neap. cap. 1. à num. 56. Iul. Clarus lib. 3. præf. 4. tit. 96. Aules in capitulis Prætor. cap. 20. num. 20. Scotia in select. Penit. cens. lib. 1. tit. 34. Carena de offic. Inquisit. 2. part. tit. 2. §. 6. num. 44. D. Ioseph. Vel. in cap. 1. de offic. ordin. 2. part. num. 58. Patrica de instrum. edit. part. 1. tit. 2. refel. 8. num. 21.* Nam in hac specie Iudex secularis est membris executorij & si de actis processus, vel iustitia sententiæ cognosceret, per consequens de crimine hæresis iudicaret, quod omnino illi prohibitum est, cap. vt Inquisitionis, §. prohibemus, hoc tit. in 6. Nec contrarium deducit ex Authentico de SS. Episcopis, §. si quis contra, vers. Si verò, ibi: *Secundum leges litter examinauit.* Nam in eo textu non agitur de crimine merè ecclesiastico, vt est hæresis; sed de crimine seculari à clerico admisso: & quia ante authenticum statum, Cod. de Episc. & Cleric. Iudex secularis eo casu etiam de clerico criminoso cognoscebat, ideo ibi docetur, posse eum litter examinare. At verò in presenti agitur de crimine merè spirituali, cuius cognitio omnino denegata est Iudici seculari. Quare communis praxis Hispaniæ est, vt cum hæretici relaxandi sunt brachio seculari, in eo loco ubi sententia publicè recitanda, & pronuntianda est, Iudex secularis addit, cui post sententiam recitatum statim vel comburendi traduntur, qui illud eos ad locum supplere adducit, & ita sententiam executioni mandat.

Olen tamen Iudices etiam seculares in hæreticos animaduertisse, constat ex variis constitutionibus Imperatorum Constantini, Constantis, Theodosij, & Iustiniani, ad Præfatum Prætorio missis, quæ extant in vtroque Codice sub tit. de hæretic. & ex D. Augustino epist. 128. 129. 158. & 160. ubi intercedit pro hæreticis Donatistis apud Donatum Proconsulem Africæ, & Olimpium Comitem Marcellinum, vt notantur Balsamon in notacion. Phoc. tit. 9. Michael Rouscil. lib. 6. hist. Penit. cap. 1.

^c *Debita.*] Licet in iure finis expellum non sit, quæ sit huiusmodi debita animaduersio, de poena, quæ hæreticis ab ecclesiasticis Iudicibus damnati, & relaxati, per seculares potestates afflicti debeant; tamen generali consuetudine iam ab antiquis temporibus receptum est, vt ea poena accipiantur pro ultimo supplicio, vt probant in cap. ad abolendam, hoc titulo, ubi etiam notari magis poenæ hæreticis inflicti valde consonam esse iuri diuino, ciuili, & ecclesiastico.

^d *Confiscantur.*] Cui tamen fisco applicentur, non constat apud iuris Interpretes. Fisco Ecclesiæ Romanæ adiudicati, docuerunt Coarr. lib. 2. var. cap. 9. littera B. Bernardus Diaz in praxi, cap. 131. Sed verius est, pro regionum varietate, necnon bonorum diuersitate bona ipsa applicari; nam in prouinciis Imperialibus bona diuiduntur pro æqualibus partibus fisco Imperij, Tribunali Inquisitionis, & Episcopo diocesano, iuxta textum in cap. excommunicatus, §. damnatis, hoc titulo, in 6. In alijs verò prouinciis Ecclesiæ quoad temporalis etiam subiectis, partim adiudicari Cameræ Apostolicæ, partim verò Tribunali S. Inquisitionis, referunt Petregrinus de iure fisci lib. 4. tit. 5. num. 32. Iul. Clarus §. hæresis, num. 21. Decianus lib. 5. tract. crimin. cap. 44. num. 3. Sanchez dist. lib. 2. cap. 20. Castropalao l. 1. oper. moral. tract. 4. dist. 5. par. 1. & 23. Peña ad 3. part. Direct. Inquisit. comment. 158. per totum. Petrus Greg. lib. 2. part. tit. 6. cap. 7. & lib. 4. tit. 15. cap. 14. Salelles de materiis Tribun. lib. 6. cap. 4. v. g. 459. In tribunalibus autem Hispaniæ generaliter, & absolute bona adiudicantur fisco Regis, vt testatur Coarr. lib. 2. var. c. 9. m. 12. Azuero in l. 1. tit. 3. lib. 8. recipiunt. 200. Diana part. 4. coll. 2. refel. 44. Bobadilla lib. 2. polit. c. 17. m. 201. qui docet, posse Iudicem secularem hanc confiscationis pœnam hæreticis imponere, si forsitan omisi fuerit ab Inquisitoribus. Hermosilla in l. 2. tit. 4. par. 5. gloss. 1. & 2. & beneficio Regum Carolicorum huiusmodi bona cedunt pro expensis Tribunalium, & salariis ministrorum, licet pro ipsis adiudicandis, & de litibus eorum occasione motis terminandis, sit in quolibet Tribunali Iudex bonorum Regio titulo creatus, de cuius iurisdictione agit Quemada in questionibus fiscal.

§.

Qui autem inuenti fuerint solâ suspensione notabiles, nisi iuxta considerationem suspicionis, qualitatemque personæ propriam innocentiam congruâ purgatione monstrauerint, anathematis gladio feriuntur, & vsque ad satisfactiōnem condignam ab omnibus euitentur, ita quod si per annum in ea communicatione persistierint, ex tunc velut hæretici condemnentur.

NOTÆ

1. **[Suspensione notabiles.]** Antequam enim, ut locum habeat pœnitens confessorio desideratur, quod reus sit suspectus de hæresi, *cap. cum communicatio, hoc tit. in 6.* & si ob aliud etiam excommunicatus sit, etiam dapslo anno vt hæreticus non condemnatur, sed tantum suspectus de hæresi redditur, qui persistit per annum in excommunicatione, *cap. final de penis, vbi Glossa. Trident. sess. 25. de reform. cap. 3. Couarr. in cap. alius, 2. p. 5. 7. num. 10. Simone. de Catol. cap. 2. 7. num. 4. Albertinus in rubric. de hæretic. q. 13. num. 32. Barb. hic:* tam ad effectum inducendæ purgationis, *cap. ad abolendam, vers. Quia verò, hoc tit.* quàm vt procedi possit per Inquisitores contra ipsum, & vt vocetur de fide suspectus, & sequenti communicatiōe damnetur, iuxta formam reatus in *cap. cum communicatio, hoc tit. in 6.* docent Scaccia de iudiciis lib. 1. quest. 8. n. 36. Castro Palao tom. 1. oper. moral. v. 2. all. 4. disp. 4. par. 2. num. 5. Diana 4. par. 2. all. 7. resol. 17. Sалlesle tom. 3. de materiis Tribunal. lib. 5. cap. 5. regul. 394. quo casu exaudiendi sunt PP. Concilij Ratiennat. a tempore Clementis V. rubrica 28. Qui excommunicatus sententiam maxime contententis, in sua inducit, & perniciem communicatiōe inducunt, nec curam satisfactiōne præstare in commissis absolutiōis beneficium impetrare, volentes talium conuictos morbo succurrere medicamine saluari, statim quod quicumque de cetero excommunicatiōis, vel suspensiois, vel interdicti sententiam auctoritate sustinuerit per annum indurata, nisi in morte beneficium absolutiōis satisfactiōne præstata meruerit obtinere, nihilominus tamen in penam contumaciæ ecclesiasticæ carere sepultura, saluâ eructa penâ, qui pro hæresi, vel ipsius suspitionis auctoris percelluntur iuxta canonicas sanctiones. Nec contrarium docetur in *cap. vt inquisitiōis, in fine, hoc tit. in 6.* vbi nullâ precedentem hæresis suspitione, tantum ob contumaciâ Magistratus secularis vt hæreticus damnatur. Nam respondetur in eo casu Magistratus seculares, eo ipso, quod executioni non mandant sententias ab Inquisitoribus prolatas contra hæreticos, sed soro exteriori hæreticorum fauores eredi, *cap. vt effectum, in fine, hoc tit. ibi:* Hæreticum sanctorum suspectum creditur. Et ita accedente contumaciâ condemnari possunt, iuxta reatum in *cap. cum communicatio, hoc tit. in 6.*

2. **[Purgatione.]** Consonat textus in *cap. ad abolendam, supra:* *cap. accusatus, in princip. eod. tit. lib. 6.* Licet enim in aliis criminibus huiusmodi purgatio, de qua agitur in titulo de purg. Canonie. tam in delictum abiit, tamen in hoc delicto etiam hodie feruatur, *cap. 1. cap. super eo, hoc tit. in 6.* Reportor. Inquis. Verbo Purgatio. Simone. de Catol. lib. 56. Quod si suspectus de hæresi hoc modo se non purgauerit, distinguendum est: aut enim per contumaciâ, & negligentiam recu-

sat purgationem subire, & tunc excommunicat debet, vel alio simili modo coerceri, inata teatum hunc, & in Authentico Gazari, C. hoc tit. aut si post susceptam purgationem defecerit in ea, quia cum purgatores non deponant de illius innocentia, tunc iuris præsumptione censetur conuictus de hæresi, & pœna ordinari punitur, iuxta regulam textus in *ca. de hoc, de simonia, cum P. vbi Glossa 1. de purg. canonica:* docent Fatnac. de hæresi, q. 194. §. 3. Pena ad Excommunicatum, 2 p. Diest. comment. 14. Soula in apert. c. 33. Sалlesle tom. 3. de materiis Tribunal. lib. 5. c. 1. regul. 367. Quo casu procedit textus in *c. 2. hoc tit. in 6.* qui ita censetur debet cum præsent §. qui loquitur de eo, qui purgationem subire noluit. Nec obstat, quod paria sunt recitare purgationem, vel in ea defecere, *cap. tua nos, de cohabit. cleric. siquidem in eo testis non docetur, duo hæu æquiparati quoad eundem omnino penam inuenerunt;* sed quoad effectum, vt vitioque casu animaduertio canonice, id est pœna, iuxta factos canones imponatur; sed alia, diuersaque, feruati distinctione proximè tradita, iuxta quam etiam accipiendus est textus in §. ad iudicium, huius capituli.

c. Condemnatio.] Consonat textus in *c. rursus, cum sequentibus, 11 q. 3. c. cum communicatio, hoc tit. lib. 6. Authent. Gazari, C. ad.* generaliter enim verum est, quocumque delinquentem excommunicatum per annum in excommunicatione persistentem, iuris præsumptione consistit crimen, de quo agitur, & generaliter ob illud posse damari, vt notant Glossa & DD. in *c. cum communicatio, de hæresi, in 6.* & si delictum meretur priuationem beneficii, potest contumax elapsio anno illo priuari aliis non, vt notatur in *c. 1. de iudiciis, Abbas n. 14. Ripa n. 77. Mantica n. 52. Berotus n. 86.* & alij congesti à Couarr. in *ca. alius, 2. p. 5. 7. n. 10. Nauar. in summa. 17. n. 13. Vgolini de censur. lib. 1. cap. 14. §. 2. n. 5. Menochius de arbit. casu 416. n. 11. Couarr. diest. §. 7. n. 10. Gutierrez 1. canon. c. 12. quod maiori ratione procedit in hoc crimine, siquidem credi non potest, Catholicum propriæ innocentie fidentem per annum persistere in eo inupto statu, si ob obiectus se defendi posse credat; vnde præsumitur, id facere propter criminis consensum, & quia maiora mala, & pœnas perimitur. Accedit, quia persistens in excommunicatione per annum arguit præsumptionem hæresis, *c. vlt. de penis, Trident. sess. 25. de reform. c. 32.* quasi de Sacramenti & suffragii Ecclesiæ malè sentiat is, qui per annum patitur se illis priuari; & ita ex hoc magis consistit suspicio hæresis, pro qua purgatio illi indita est, quamvis aliis qui deficiunt in purgatione, quam admittit, statim absque excommunicatione, & a nni termino vt hæreticus edicemtur: In qua specie procedit textus in *ca. ad abolendam, vers. Qui reus, hoc tit. c. inter, vers. vlt. de purg. can.* In præsent ergo casu sufficit ad condemnationem præsumptio proximè tradita, nec alia probatio requiritur, vt in simili casu probatur in *c. cum communicatio, hoc tit. in 6.**

Nec obstat, quod contumax non condemnatur definitivè in causa principali, nisi adsint probationes concludentes, *l. si properandum, §. si autem, C. de iudiis, Authent. qui sentit, C. quando, & quando*: quia in presenti non tantum ad illi contumacia suspecti de hæresi, quæ ex iuris auctoritate in casibus expressis sufficit ad condemnationem, & ut contumax pro confesso habeatur, & iudicetur,

cap. 2. de confessi, lib. 6. cum aliis concessis ab Alexandro in *l. contumacia, ff. de re iudic.* In presenti enim casu aderat suspicio hæresis, ob quam purgatio indicta fuit, quæ coniuncta cum insoficientia in excommunicatione per annum, sufficit, ut talis reus tanquam hæreticus condemnetur, ut latius prosequitur Salselles *dist. lib. 5. regul. 394. Catenæ de offic. Inquisit. 2. p. titul. 17. §. 2.*

§.

Moneantur autem, & Inducantur, & si necesse fuerit, per censuras ecclesiasticas compellantur seculares Potestates, quibuscunque fungantur officiis, ut sicut reputati cupiunt & haberi fideles, ita pro defensione fidei præstent publicè iuramentum, quod de terris suæ iurisdictioni subiectis universos hæreticos ab Ecclesia denotatos bona fide pro viribus exterminare studebunt: ita quod amodò quandoque quis fuerit in potestatem, siue temporalem assumptus, hoc teneatur capitulum iuramento firmare. Si verò Dominus temporalis requisitus, & suaditus ab Ecclesia, suam terram purgare neglexerit ab hæretica seditate, per Metropolitanum, & cæteros comprouinciales Episcopos excommunicationis vinculo innodetur: & si satisfacere contempserit: intra annum, significetur hoc Summo Pontifici, ut ex tunc ipse vassallos ab eius fidelitate denuodet absolutos, & terram exponat catholicis occupandam, qui cum exterminatis hæreticis absque vlla contradictione possideant, & in fidei puritate conseruent, salvo iure Domini principalis, dummodo super hoc ipse nullum præstet obstaculum, nec aliquod impedimentum opponat: eadem nihilominus lege servatà circa eos, qui non habent Dominos principales.

NOTÆ.

1. **P**otestates.] Consonant textus in *cap. ad abolendum, supra hoc tit.* Authentica *Gazeros*, Authentica *si variè, Cod. hoc tit.* ex quibus delumptus est §. hic. Principum enim, & Magistratum secularium est opem ferre Ecclesie contra hæreticos, *cap. invenitur 41. cap. siue 47. 23. quæst. 4.* Leo Magnus in Synodo Romana *epist. 23. ad Theodof. Imperatorem*: *Defendite contra hæreticos inconcussam Ecclesiam suam, ut & vestrum Christi dexterâ defendatur Imperium.* Et *epist. 71. & 73. ad Leonem Imperatorem.* Concil. Tolos. *can. 10.* Principes erunt Catholice fidei assertores, etiamque, & hanc, quæ innuit, Inducuntur perfidium, & cunctarum hæresium iniuriam defendentes. Milcuit. *can. 11.* Adversus hæreticos, vel paganos, vel eorum superstitiones Legati missi de hoc Concilio quicquid utile prouiderint, à

Gloriosissimis Principibus impetrent. Phot. Ant. *Aug. tit. in epist. lib. 11 tit. 11.* Petrus Gregor. *lib. 2. part. tit. 5. cap. 5.* & *lib. 3. de rebus cap. 6.* Kochet *lib. 2. polit. cap. 5.* Quare variis constitutionibus cautum est, ut Principes, & Potestates seculares præstent iuramentum protegendæ fidem, *cap. ad abolendum, §. statim, hoc titul.* Innoc. IV. in constitutione, quæ incipit: *Ad exstirpanda.* Clemens IV. in constitutione, quæ similiter incipit: *Ad exstirpanda.* Fridericus Imper. in *d. Authent. Gazeros, authent. statim, Cod. de Episcop. audiens.* Recte Peña in *prosepi, & 3. part. Direct. comment. 1. 2. & 3.* quod iuramentum prælati solebat tactis sacrosanctis Evangelis, & sacris genibus, ut de eo iuramento agentes referunt, *Farinac. de heresi q. 182. n. 22.* Salselles *tom. 1. lib. 1. de materiis Tribunal. c. 4. regul. 35.* etiam de iustitia huius constitutionis dubitet Rauschel. *lib. 5. his. cap. 3. num. 8.*

§.

Catholici verò, qui crucis assumpto charactere ad hæreticorum exterminium se accinxerint, illi gaudeant indulgentiâ, illoque sancto privilegio sunt muniti, quæ a accedentibus in Terræ sanctæ subsidium conceduntur.

NOTÆ.

2. **A**ccedentibus.] De quibus in *cap. quod 8. de toto*: & ita congregatio Crucesignatorum instituta pro ministerio sancti officij, eisdem gratis, ac indulgentiis gaudet, ac congregatio Crucesignatorum, qui pro expeditione Terræ sanctæ crucem assumpserunt. Peña ad *Exmercium 2. part. comment. 78.* Simancas de *Carol. tit. 4. n.*

mero 15. Paramus de origine *Inquisit. lib. 2. titul. 1. cap. 3. num. 2. & cap. 4. num. 10.* Quare ratione antiquitatis, instituti, & status puritatis sanguinis, omnes alias præcedere debet, ut doctè probat Statutus *sub...* qui docet Inquisitores esse Duces, & Rectores ipsius Congregationis, seu Confraternitatis. Unde causæ eius privatiuè ad iurisdictionem sanctæ Inquisitionis spectant, abique eo, quod Ordinarij locorum de eis cognoscere possint.

§.

Credentes præterea, receptatores, defensores, & fautores hæreticorum excommunicationi decernimus subiaccere, firmiter statuentes, vt postquam quis talium fuerit excommunicatione notatus, si satisfacere contempserit intra annum, ex tunc ipso iure sit factus infamis, nec ad publica officia, seu Consilia, nec ad eligendos aliquos ad huiusmodi, nec ad testimonium admittatur: sit etiam instabilis, vt nec testandi liberam habeat facultatem, nec ad hæreditatis successionem accedat. Nullus præterea ipsi super quocunque negotio, sed ipse aliis respondere cogatur. Quod si fortè iudex extiterit, eius sententia nullam obtineat firmitatem, nec causæ aliquæ ad eius audientiam perferantur. Si fuerit aduocatus, nullatenus eius patrocinium admittatur: si tabellio, instrumenta confecta per ipsum nullius sint momenti, sed cum auctore damnato damnentur, & in similibus idem præcipimus obseruari. Si verò clericus fuerit, ab omni officio, & beneficio deponatur, vt in quo maior est culpa, grauior exerceatur vindicta. Si qui autem tales, postquam ab Ecclesia fuerint denotati, euitare contempserint, excommunicationis sententia vsque ad satisfactionem idoneam percillantur. Sanè clerici non exhibeant huiusmodi pestilentiùs ecclesiastica sacramenta, nec eos Christianæ præsumant tradere sepulture, nec elemosinas, aut oblationes eorum percipiant, alioquin suo prauentur officio, ad quod nunquam restituantur absque indulto Sedis Apostolicæ speciali. Similiter quilibet Regulares, quibus etiam hoc infligatur, vt eorum priuilegia in illa diocesi non seruentur, in qua tales excessus præsumpserint perpetrare.

NOTÆ.

a Infamis.] Elapso anno videlicet, *authen. credentes, Cod. hoc titul. ex qua transcriptus est textus hic: in quo differunt credentes ab hæreticis, qui ipso iure infames fiunt. Authen. Gazaris, Cod. hoc tit. cap. ut inquisitum. Hoc titul. in 6. Et licet textus hic innotatus sit in cap. 2. §. hæretici, hoc tit. in 6. tamen quoad hanc penam infamie nihil innotatum est, siquidem sanctorum eorum innotantes, & similes post annum.*

b Successionem.] Iuxta tradita in cap. 5. & 6. hoc titul. Fernosinos alleg. 36. Castillo lib. 5. controu. cap. 137.

c Negatio.] Et debito ciuili, à quo debitos omnino non liberatur, siquidem talis obligatio in flicum transfunditur, vt dicemus infra in cap. final.

d Vindicta.] Iuxta textum in cap. cum quidem, de iurur.

e Percussatur.] Vt contingit in communicantibus cum aliis excommunicatis, vt dicemus in cap. quod in dubio, de sens. excom.

f Sepultura.] Iuxta tradita supra in cap. 8. & probat Salcedo ad Bernard. Diaz, in praxi cap. 115.

COMMENTARIUM.

EX hoc textu, qui ad verbum transcriptus est ex cap. ad abolendam, hoc titulo, *authen. Gazaris, authen. credentes, C. hoc titulo*, talis deducitur assertio: *Credentes, defensores, receptatores, & fautores hæreticorum excommunicantur, & elapso anno, nec recipiunt sacramenta, infames fiunt.* Probant textus in cap. ad abolendam, cap. si aduersus, c. excommunicamus 16. §. final. in fine, hoc titulo, cap. quicumque 2. §. hæretici, cap. ut officium 11. in princip. cap. accusatus 8. §. facientes, end. tit. lib. 6. cap. in partibus 10. hoc titul. in 1. collecti *authen. Gazaris, auth. credentes, Cod. hoc titulo; cap. noster, de senen. excom. cap. super quibusdam, de P. S. l. 44. C. Theodof. de his qui super re-*

ligione commendus. Eugenius III. in Concil. Rheimsi, canon. 17. Nullus omnino hominum hereticus, & eorum sequaces, qui in partibus Guasconie, aut Provincia, vel alibi commanent, manent, vel defendat, nec aliquis eis in terra sua recipiendum prebeat. Si quis autem vel eos de terra remoue, vel ad alias partes transfugeret, eorum erroris consensum recipere forte præsumptus, qui iratus Deus animas percussit, anathematis feriat: & in terris eorum donec condigne satisfactione, diuina celebrari officia interdictione. Concil. Tolet. 1. can. 12. Epau, can. 15. Autel. 3. can. 30. quorum verba refert Aut. Angust. in epitom. iuris lib. 11. tit. 12. Illudrant vltis congeffos à Barbosa in præsent. Turriserem. lib. 4. summa, cap. 21. Sessio 10m. 4. decis. 473. cum sequenti Petrus Greg. lib. 2. part. tit. 6. cap. 7. Gutierrez de delict. lib. 1. quest. 49. Vighellian in method. iuris can. fol. 119. Azor 10m. 1. instit. lib. 8. cap. 13. Fagoso part. 1. de regim. Christi. Reip. lib. 3. diffus. 2. §. 7. & part. 2. lib. 1. diffus. 3. §. 1. Duarros in Bullam cane Domini, lib. 2. can. 1. quest. 18. Caxena 2. part. de offic. inquisit. tit. 4. num. 38. Castropalao 10m. 1. oper. moral. tract. 4. diffus. 3. parit. 5. Diana part. 4. tract. 17. resol. 21. Salelles lib. 1. de materiis tribum. cap. 12. regul. 103. cum sequenti. Bordon. sacri Tribunal. cap. 10. num. 70. Borchos de præsentia Regis, cap. 26. Pergado quest. 2. Fijfo. Solozano 10m. 1. de iure Indiar. lib. 2. cap. 13. Seoria in select. capit. 9. theorem. 17. Suarez de fide lib. 2. §. 11.

Sed pro dubitandi ratione in præsentem assertionem ita inforgo: qui hæresim exstirpare potest, & non facit, particeps seeleris redditur, cap. qui alterum 24. quest. 3. probati supra in cap. 2. hoc titul. Ergo credentes, fautores, & defensores hæreticorum, qui non solum eos non deffrunt inquisitoribus, verum eos fouent, & defendunt, æstima penitis ac hæretici sunt puniendi. Augetur hæc difficultas ex cap. penult. §. 1. hoc tit. lib. 1. Credentes autem eorum erroribus, hæreticos similiter iudicamus. Ergo eisdem penitis ac hæretici sunt puniendi. Tandem augetur hæc difficultas ex eo,

nam receptatores aliorum reorum eisdem poenis, ac ipsi criminosis plebuntur, l. 1. c. ff. de receptantibus, ubi scriptum est, peiusnam esse genus receptatorum sine quibus nemo diu latere possit; & ideo perinde puniendos esse, atque latrones, quos susceperit: & in l. 1. c. eod. ibi, sancitum est, ut p[ro] p[er]na reos, atque eorum receptatores expediet. Paulus lib. 5. sententiarum, l. 3. ibi: *Eandem poena afficiuntur.* Et in l. 3. §. si quisqueque 12. ff. ad Syllanum, in quo scriptum facinorosi noxiam claustris, in ea causa habetur, ac si lege, quod de sicariis lata est, facinorosis noxiam esset: in l. 3. §. non tantum, ff. de incendio, l. 1. c. eod. ad leg. Jul. de vi, cum dicitur non minus delinquere receptatorem, quam aggressorem, satis innuitur, pari poena utrumque plebendum esse. Et in l. 1. c. de crimine peculato, scriptum est, eadem poena afficiendum peculatorum, & qui scientia peculatori sinum praebeant. Ergo receptatores etiam haereticorum eisdem poenis ac ipsi haeretici puniri debent.

Quia difficultate ista fuleia non obstant, vera est praesens assertio, pro cuius expositione sciendum est, magnam differentiam versari inter credentes, & defensores haereticum; & inter credentes, & defensores haereticorum. Illi enim dicuntur, & sunt omnes, qui licet expresse nullam haereticum credant, aut defendant (quo casu haeretici sunt) implicite tamen, verbis, vel factis etiam erroribus illis, quos scimus esse contra fidem, ut si quis generaliter credat verum esse sectam Lutheri, quam scit fidei esse contrariam; licet in particulari nullum errorem sequatur, dicatur haereticus ex eo, quod implicite sic credit haereticum. Quo casu procedit textus in dist. cap. penult. vers. *Credentes*, hoc tit. quem ita accipit Grillandus de haereticis, quest. 9. Villadiego eod. tract. quest. 16. Castro lib. 1. de iusta haeretic. poena. cap. 17. Thomas Delbene de officio Inquisitorum, part. 1. dub. 14. Murga tom. 2. tract. 1. dub. 2. Sic etiam id hunc casum referendū sunt textus in cap. aliorum 24. quest. 3. & in cap. super quibusdam, de V. S. cap. filij, hoc tit. in 6. Alij sunt credentes, & defensores haereticorum, qui nec etiam implicite credunt, nec defendunt haereticos illorum, sed simpliciter credunt, & sunt personae haereticorum, eosdem, vel res ipsorum defendunt, nulla habita ratione ad haereticos, quas execrantur; unde non sunt haeretici, quia nec implicite habent errorem contra fidem. Textus optimus in cap. accusatus, §. si verum, in princip. ibi: *Non tamen existens haereticus*, hoc tit. in 6. Et de his credentibus, ac defensoribus agitur in praesenti textu, & alijs pro eius illustratione adductis: docentur Scotia in solut. epist. 9. rheorem. 37. Fragoso dist. disput. 3. §. 1. Palao dist. disput. 2. punct. 5. Salles dist. regul. 103. Bordonius dist. cap. 10. num. 86. Unde deducitur ratio, cur Martinus V. & alij Pontifices in prima clausula Bullae censae omiserint verbum *credentes*, quod alij adiecerunt, quia scilicet aut credentes credunt erroribus, & sub nomine haereticorum continentur; aut haeretici, & tunc sub nomine defensorum, vel fautorum includuntur: sed Innocentius III. in praesenti, & Bonifacius VIII. in dist. cap. 2. §. haeretici, hoc tit. in 6. expresserunt credentes, defensores, & fautores, ut maiori claritate sub illis verbis comprehenderent modos non tantum speciales, sed etiam generaliter omnes, quibus foret, defensive possent haeretici.

Deinde sciendum est fautorem haeretici cum dici, qui commissum fauet haeretico, defendendo,

receptando, vel non puniendo illum: & ita triplici modo, omissione videlicet, facto, vel verbo crimen hoc admisit. Omissionem cum haeretici non puniuntur ab illis, qui eos damnare possunt: facto, cum defenditur, aut receptatur; verbo, cum consilium illis datur. Nec desideramus, quod fautor habeat formalem intentionem fauendi haeretico ratione haereticis, sed sufficit illi praestare fauorem ex causa haereticis; sine tali voluntate, cum ex actu tendente in haereticum factis cognoscatur fauore; siquidem ille fauos non praestaret, si non esset haereticus. Sufficit ergo facere illum actum, et quo sequitur fauor; nam in eo virtualiter, & inter pretaliu[m] comprehenditur ea voluntas, & intentio, ut docuerunt Suarez de fide disput. 24. sect. 1. num. 7. Catena part. 2. tit. 4. num. 40. Illud tamen optum est, non posse procedi contra fautores, nisi prius constet, personam, cui fauent, haereticum esse, quia iudicium quod sumitur contra suspectum de haereticis praesens, fundatus super fautoria qualificata in casu haereticis. Ergo prius debet constare de haereticis personis, cui praestatur fauor in causa haereticis, ut resoluunt Farinac. de haereticis quest. 182. num. 11. Catena 2. part. tit. 4. num. 19. Defensores haereticorum illi dicuntur, qui personas eorum amicos de viribus suis, vel officio, ut aduocati, & similes, defendunt; nam si etiam ipsorum defendant, formaliter haeretici dicuntur. Tandem receptatores sunt, qui haereticos recipiunt, aut occultant ratione haereticis, ut late probat Thomas Delbene part. 1. de officio Inquisitorum, dub. 26. Murga tom. 2. disput. tract. 1. dub. 3. & 4. P. Mendo in praesenti, dist. 1. quest. 6, qui resoluunt, huiusmodi fautores & receptatores adhuc absolui posse virtute Bullae Crucis.

Deinde sciendum est, credentes, fautores, defensores, & receptatores haereticorum non puniri poenis haereticorum; nam is, qui haereticos non est, sed leuius deliquit, non punitur poenis haereticis, iuxta regulam capitis poena, de poenis dist. 1. & licet in nonnullis Ecclesiae canonibus exequantur haereticis fautores, & defensores, id intelligendum est quoad modum procedendi, ut in cap. Praesentes, cap. in fidei, cap. de officio, cap. ex commissis, cap. contra Christianos, cap. de inquisitione, hoc tit. lib. 6. & quod nonnullas poenas omnibus communes, veluti quoad aburationem haereticis, de qua sunt suspecti, cap. de officio, vers. *Si verum*, hoc tit. in 6. Dubitari tamen solet, an illi de leui tantum, vel de vehementi suspicionem abutatur debeat. Et probabilis est, credentes, defensores, & similes de vehementi abutari debere: tum quia talis videatur esse suspicio contra illos; nec enim pro leui tot poenas imponerent Innocentius in praesenti, & Bonifacius in dist. cap. 2. §. haeretici, hoc tit. in 6. tum etiam, nisi in eodem cap. 2. §. illi, docetur ex fauore, & defensione haereticorum insurgere vehementem haereticis suspensionem; sed semper attendenda est qualitas personae fauentis, vel receptantis, ut suspicio leui, vel vehemens oriat, ut resoluunt Eymercit 2. part. direct. quest. 56. num. 6. Carena dist. tit. 4. num. 20. Castopalo dist. tract. 4. disput. 7. Salles dist. regul. 101. qui latius de hac aburatione agunt.

His suppositis ratio praesentis assertionis ex eo procedit; nam is, qui crimen commisit, in quo alterius criminis suspicio continetur, ultra poenas illius, potest ut suspectus de alio cohereri: atqui credentes haereticorum, & similes, sunt sus-

DE JAT-
YOBIAH,
DUBIA,
DIST. 17
RECEPTA-
TORIBUS.

8.
DE POENIS
HAETICORUM.

9.
TRADE-
TIO HA-
ETICORUM.

peccati de hæresi: igitur ob eam suspicionem: rectè puniuntur, nisi ex aliqua iusta causa suspensio hæresis cesset, *dist. cap. mensuram*, §. ille, veluti si adsit ignorantia probabilis, argumento capitis scilicet, ibi: *Scienter, de penis in 6. l. 3. vers. Quid enim, ff. de incendio, ruina*. Docent Grillandus de hæreticis, quest. 9. num. 3. Simancas de Cathol. cap. 15. num. 17. qui accipiunt præsentem textum in credentibus, & defensoribus hæreticorum, quos sciebant esse hæreticos. Sic similiter iusta necessitas, seu coactio excusat crimen hoc, ut resoluit Carlierius num. 167. Menoch. de arbit. casu 349. num. 16. Etiam receptus hæreticum ob sanguinis propinquitatem, minori poena afficiendus est, ut resoluit Diana 4 part. tract. 7. resol. 21. Salelles ubi supra, regul. 105. num. 229. Bordonus sacri tribunal. cap. 10. num. 82.

Nec obstat dubitandi ratio supra adducta, nam et si ab Interpretibus dubitetur, an prius scisciens aliquem hæreticum, & eum oon denuncians, fautor, seu defensor, ac de hæresi suspectus creditur, & non desinit, quod affirmare ex tali omissione denunciationis insurgere violentam suspensionem hæresis, seu fautoris, ut resoluit Casto de iusta hærese, punct. lib. 2. c. 15. probabilis tamen est, ex sola omissione denunciationis sine aliis coniecturis non provenire illum hæresis, aut fautoris presumptionem, nec obligationem illo modo abstinendi: sed denunciare hæreticos omittentem esse graviter puniendum, solummodo ut inobedientem præceptis Inquisitionis, resolunt Suarez de fide disput. 10. sect. 4. num. 28. Transmittit in simulo fidei, quest. 3. cap. 7. Salelles tom. 3. lib. 5. de iur. tribunal. regul. 390. Unde licet teneantur quilibet Catholicus denunciare hæreticos, iuxta tradita in cap. 2. hoc tit. non tamen si omittat, ideo ut hæreticus, seu tanquam suspectus de hæresi puniri valet. Nec obstat textus in dist. cap. penult. hoc tit. §. 1. Procedit enim in credentibus hæresim, non hæreticorum, qui verè hæretici sunt, iuxta supra tradita. In præsentem verò textum agitur de credentibus hæreticorum, qui tantum suspecti de hæresi sunt, iuxta supra tradita. Nec obstat tandem quod de receptatoribus expendebamus; nam

omissis quæ de eorum poenis in aliis criminibus concesserunt Am. Matthæus de criminibus ad tit. de receptatoribus, Gailus de pace lib. 2. cap. 10. Plazza de delict. cap. 36. Menoch. de arbit. casu 368. Gratian. dispensat. volum. 4. cap. 368. ex numer. 4. Giurba consil. 8. Cyriacus contron. 345. D. Nicol. Anton. de railio lib. 2. cap. final. dicendum est, discretionem esse constituendam inter eos, qui ante delictum commissum, vel committunt, vel in ipso dum committitur, aliquem recipiunt, vel occultant; & inter eos, qui omnino post illud consummatum recipiunt. Priores eorum tanquam participes delicti pari poena afficiuntur cum ipsis delinquentibus, iuxta sententiam Bartoli communiter receptam in l. forti, §. ope, num. 1. ff. de furis: quo casu procedit textus in dist. l. 1. ff. de recept. ubi agitur de eis, qui latronem cum eo ipsa ablata recipiunt, qui cum durante coactione factum committant, *in faciendo 69. §. insens, ff. de furis*, illi tanquam recipientes delinquentem in ipso delicto, pari poena puniuntur. Bartolus in dist. l. furum, Gomez lib. 3. variat. cap. 3. columni penult. Ceterum ubi quis recipit, vel occultat reum post delictum consummatum, quia levis peccat, & non est causa proxima delicti, eadem poena non puniatur cum eo principali, sed leviore regulariter, *l. final §. final. ff. de atque, l. cum 39. §. mulierem, ff. ad leg. jul. de adul. l. Metrodorum 40. ff. de panis*. Dixi regulariter, quia nonnulli in casibus contrarium reperiunt in iure expressum, *vi in cap. felix, de penis in 6. cap. 1. de homicid. lib. 6. cap. 1. de falsis, cod. lib. clemens, de penis, cap. 1. §. conventuales, de pace in iur. firmam*. Metid ergo receptatores hæreticorum, qui post delictum hæresis commissum eos recipiunt, non puniuntur eisdem poenis ac hæretici, quicquid velint Glossæ, & repentes in cap. 2. hoc tit. in 6. quorum sententia defendi potest in his, qui recipiunt, vel occultant ad hæresim committendam, vel in ipso crimine, aut cum occultant captem, vel capiendum quo casu accipiendus est Pius V. in constitutione relata à Nauaro cap. 27. num. 56. ubi refert, velus hæreticos puniri recipientes, vel occultantes hæreticos.

§.

Quia verò nonnulli sub specie pietatis virtutem eius (iuxta quod Apostolus ait) abnegantes, auctoritatem sibi vindicant prædicandi, cum idem Apostolus dicat: Quomodo prædicabunt, nisi mittantur? omnes qui prohibiti, vel non missi, præter auctoritatem ab Apostolica Sede vel Catholico Episcopo loci susceptam, publicè, vel privatim prædicationis officium usurpare præsumpserint, excommunicationis vinculo innodentur: & nisi quacumque resipuerint, aliàs competentem poenā plecentur.

NOTÆ.

1. **M**ittantur.] Secunda ad Timoth. cap. 3. & ad Roman. cap. 10. Faciunt textus in cap. in nono, 21. dist. Trident. sess. 5. de reform. cap. 1. & sess. 24. cap. 4. Quare istius dicebat ad Dominum: Ecce ego, mihi me. Refertur in cap. in scriptis §. 9. 1.
2. **b** Episcopo loci.] Qui debet licentiam petendi

candi concedere, ut laicè probat Barbosa de preest. Episcop. alleg. 71. & in summa Apostolicæ verbo Prædicare: & illam ex iustis causis potest denegare, aut iam concessam revocare, ita ut in sua diocesi, si, hoc etiam in propriis Ecclesiis Regulares exempti prædicent, quicquid suarum tantum fœtus, auctoritate assererit auctor Brunus Chassigni, de primæ Reg. Regul. tract. 6. cap. 1. per totum.

§.

A Diicimus insuper, vt quilibet Archiepiscopus, vel Episcopus, per se, aut per Archidiaconum suum, aut alias honestas, idoneasque personas bis, aut saltem semel in anno propriam parocciam, in qua fama fuerit hæreticos habitare, circumeat, & ibi tres, aut plures boni testimonij viros, vel etiam (si expedire videbitur) totam viciniam iurare compellat, quod si quos ibidem hæreticos sciverit, vel aliquos occulte conuenticula celebrantes, seu à communi conuersatione fidelium vita & moribus dissidentes, eos Episcopo studeat indicare. Ipse autem Episcopus ad præsentiam suam conuocet accusatos, qui nisi se ab obiecto reatu purgauerint, vel si post purgationem exhibiram in pristinam fuerint relapsi perfidiam, canonicè ^b puniantur. Si qui verò ex eis iuramenti religionem obstinatione damnabili respuentes, iurare forte noluerint, ex hoc ipso tanquam hæretici reputentur. Volumus igitur, & mandamus, & in virtute obedientie districtè præcipimus, vt ad hæc efficaciter exequenda Episcopi per diocesem suam diligenter ^c inuigilent, si canonicam velint effugere violationem. Si quis enim Episcopus super expurgando de sua diocesi hæreticæ prauitatis fermento negligens fuerit, vel remissus, cum id certis indiciis apparuerit, & ab Episcopali officio deponatur, & in locum ipsius alter substituasur idoneus, qui velit, & possit hæreticam confundere prauitatem.

NOTÆ.

3. ^a **E**pisopus.] Cuius præcipuum munus est hæreticos exstirpare, hæreticosque punire, Felix Papa epist. 3. ibi: *Fratres huius dilectionem vestram, & obsecro, & moneo, vt quæ debetis, & potestis sollicitudine vigilatis ad inuigilandas hæreticos.* Sixtus II. epist. 1. ad Gratianum Episcopum ibi: *Tuam maiorem dilectionem, vt cunctos, quos errare cognoueris, ad Catholicam fidem, & ad unitatem recte credendum conuertere studeas.* Leo Mag. epist. 1. ad Episcopos Italiae, & 74. vel 76. ad Anastasium Episcopum: & epist. 80. ad Iulianum Episcopum. Concil. Carthag. can. 124. *Si in marico, vel in Sædo Episcopus negligens fuerit contra hæreticos, admoetur à vicinis Episcopis: & si ab eo die intra sex menses in provincia sua non communiatur vniuersæ Ecclesiæ Catholice alius, non ei communicetur donec id fiat.* Refert Ant. August. in epist. iuris lib. 4. tit. 58. & probatur in cap. 1. hoc tit. l. 1. C. Theodos. de relig. Nouella 3. Valentini, D. Ambrosius epist. 32. l. Guthoft. in d. 2. l. 1. Adhuc enim his temporibus Alexandri, & Innoc. non erat Inquisitorum iurisdiclio statuta, quæ per sequentes Summos Pontifices concessa, & instituta fuit, nam cum Episcopi cepissent variis negotiis implicari, diocesimque non per se, sed per alios

regere; hæreticique non solum latentes, verùm & palam venenum effunderent, oportuit iudices peculiare pe iustissimos, & religionis præstantes instituisse in qualibet provincia, vel Inquiterent, persequerentur hæreticos, & de hæreticis suspectos; non tamen ideo sublata fuit hæc facultas Episcopis, qui vt ordinarij Inquisitores hæresum simul cum ipsis Inquisitoribus possunt procedere, & in ipsis causis fidei decidendis suffragium decusum habent; non autem ad pernam procedere possunt, immò si quam receperint prohibitionem, tamenque eam Inquisitoribus transmittere. Molitor de iustitia disp. 8. n. 13. Carena de offic. Inquisit. l. 1. par. 4. §. 3. n. 20. Villaroel p. 1. Regim. eccl. 9. §. art. 1. De origine autem iurisdiccionis, & officij sanctæ Inquisitionis in genere agunt Paramus de officio sanctæ Inquisitionis lib. 1. per casum. Salelles tom. 1. de mater. Tribum. sanctæ Inquisitionis lib. 1. in prologo. de origine sanctæ Inquisitionis, specialiter in Hispaniarum Regni: etudire, & latè agit Tamayus à Salazar in martyrol. Hispan. tom. 2. die 29. Aprilis, Thomas Delbene part. 2. de offic. Inquisit. dubit. 195. Fragoso tom. 2. de regimine.

^b Puniantur.] Iuxta tradita suprà in cap. excommunicamus, §. illi autem.

^c Inuigilent.] Iuxta suprà tradita in cap. 2. hoc est.

CAPVT XIV.

Gregorius IX. Archiepiscopo^a Mediolan.

Sicut in vno corpore. Et infra: Cum igitur nonnulli laici prædicare præsumant, & verendum nimis existat, ne vitia sub specie virtutum subinrent; nos attendentes, quod Doctorem ordo est in Ecclesia Dei quasi præcipuus: mandamus, quatenus cum alios Dominus Apostolos dederit, alios Prophetas, alios verò Doctores, inrerdicas laicis vniuersis, cuiusvisque ordinis censeantur, vsurpare officium prædicandi.

NOTÆ.

- ^a **M**ediolan.] de Metropoli hac Mediolan-

ensis egi in cap. 17. de rescriptis. Huius textus commentarium dedi suprà in cap. cum ex inuncto.

CAPVT XV.

Idem.

EXcommunicamus, & anathematizamus vniuersos hæreticos, Catharos, Patarenos, panperes de Lugduno, Passaginos, Tossépinos, Arnaldistas, Speronistas, & alios quibuscunque nominibus censeantur, facies quidem habentes diuersas, sed caudas ad inuicem colligatas, quia de varietate conueniunt in id ipsum. Damnati verò per Ecclesiam, sæculari iudicio relinquantur, animaduersione debita puniendi: clericis prius à suis ordinibus degradatis.

NOTÆ.

I. **[Dm.]** Gregorius IX. videlicet, qui præsentem constitutionem edidit proprio motu contra hæreticos hic expressos: & continet variâ capitula, quæ inter epistolâ ipsius Pontificis ordine 8. referuntur; nam licet Cathari iam primis Ecclesiæ sæculis damnati fuissent, vt probauit in cap. 8. hoc titulo; tamen cum temporibus Innocentij III. noui hæretici instaurassent hæresim

Manicheorum, etiam nomen Catharitarum innotuit. In Germania dicebantur Cathari: in Flandria *Pipbles*: in Gallia Tisttrani, vt refert Spondanus post Baronium anno 1198. num. 27. & 1199. num. 11. vbi etiam agit de Patrenis, Humiliatis, & Pauperibus de Lugduno.

b. Debita. Vltimo videlicet supplicio, iuxta tradita supra in cap. ad abolendam, cap. excommunicamus, §. 1. vbi commentarium huius textus inuenies.

§.

Si autem de prædictis postquam fuerint deprehensi, redire voluerint ad agendam condignam poenitentiam, in perpetuo carcere detendantur: credentes autem eorum erroribus, hæreticos similiter iudicamus.

NOTÆ.

I. **[Redire voluerint.]** Redire voluerint, legendum esse voluerunt Glossa in cap. inter, de purgat. canon. Ioannes Igrecus in l. 1. §. cum Dominus, num. 34. ff. ad Syllan. sed perpetam, licet in aliis codicibus ita legi referat Boët. decis. 342. num. 3. Tum quia poenitentes, qui nolunt redire ad Ecclesiam, longè seuerius puniuntur, siquidem traduntur Curie sæculari, cap. ad abolendam, hoc tit. cui admittit lectione negatiua, non rectè conuenit præfatus textus. Tum quia decessio in carcerem ad agendam poenitentiam, de qua in præfenti agitur, tantam refert potest ad eos, qui redeunt ad Ecclesiam, et erroremque confitentur, ac illum abintant, vt patet, & probatur ex cap. de commissis, vers. et illorum, hoc tit. lib. 6. Vnde verior lectio est affirmatiua, quoniam habet voluerint, quam retinent repentes hic. Boëtius vbi supra, Simancas de Carolic. cap. 47. num. 33. Albertinus de hereticis, cap. 1. num. 42. iuxta quoniam, & alios Gregor. IX. in præfenti docet, quod etiam hæretici impenitentes, qui ad Ecclesiam non redeunt, tradi debeant brachio sæculari, iuxta supra adducta in cap. ad abolendam; tamen verè poenitentes, & veniam deprecatores admittuntur ad reconciliationem, vt eorum mortis poenam, & detrudantur in perpetuum carcerem: quod adiecit Gregorius pro declaratione veritatis præcedentis, non quia aliquid contrarium decideret, vt contra Syluestrum notauit Simancas vbi proxime; vnde intelliges alternatiuam textus in cap. 3. hoc titulo, in 6. ibi: Curia relinquenda, aut perpetuo immutanda; ita vt prior pars ad impenitentes referatur, posterior verò ad poenitentes, vt adnotat Aleixius in eod. textu, num. 42. contra alios existimantes poe vobis illa concedi electionis iudici, vt alterutram

poenam eligere possit; parum aduertentes, textum illum non agere de poena præscribenda, id enim relinquatur iuris dispositioni; sed de modo degradationis, quæ hoc, vel illo casu facienda est. De his etiam hæreticis poenitentibus intelligitur textus in cap. accusatus, in fine, hoc tit. in 6. Vnde constat, speciale esse in hoc crimine hæresis, vt per poenitentiam liberetur reus à relaxatione Curie, & poena mortis: & ita limitator regula legis qui in mente, ff. de fortis: & ita notantur in cap. ad abolendam, hoc titulo; Felinus num. 2. Abbas num. 5. Cottasius lib. 3. miscel. cap. 8. num. 5. Simanc. de iur. tit. 47. num. 4. & merito, quia diuina maiestas, in quam potissimum hæreticos deliquit, cap. vergentia, hoc tit. l. 4. C. ord. non vult mortem peccatoris, sed vt conuertatur ad poenitentiam, & viuat, & sic hæretici obducent pietate alliciuntur, vt facillius redeant, & poenitentes, ac de præterito lapsi dolentes plenius satisficiant. Hinc Ioannes Summus Pontifex rogat Imperialem elementarium Iulianum in l. liget, §. sed quia, Cod. de summa Trinit. vt si hæretici proprio deposito errore ad veniantem Ecclesiæ reuertì voluerint, in Christianorum communionem eos recipiat, ea ratione, quod gremium suum omni quæ rediens, ac poenitentibus claudit Ecclesia, cap. super eo, de heretic. in 6. facit etiam reatum in l. credentes, Cod. de summa Trinit. De iure civili non satis diserte constat, an hæreticis poenitentibus venia delicti deret. In lege 4. in fine, Cod. hoc tit. rescriptum est, delicti veniam poenitentibus dari: quam sententiam probat P. Gregorius lib. 3. synag. cap. 8. num. 18. Verum in l. 3. Cod. de apostatis, lapsis, & errantibus subueniri scribitur; perditis verò, hoc est sanctum baptismum profanantibus, nullo remedio poenitentia succurrit; quæ lata vt componat Vvesembrechius

in parat, ad rē. *Cod. de apost.* affirmat in dicta lege 3. non agi de apostatis, sed de Anabaptistis, quos à ceteris hæreticis differe alient, idcoque etia pœnitentibus nihil de pœna temitti: Anabaptistarum enim crimen facti est (inquit,) quod factum non tollitur pœnitentiâ, vt nec homicidium, adulterium, vultus: ideoque nihil de pœna tollitur, quia manente causâ manet effectus. At reliquæ hæreses non consistunt in facto, sed in opinionis errore versantur; qui error cùm per confessionem, & pœnitentiam deponatur, venia conceditur. Sed hæc solutio facili consuevit, cùm nulla sentit sit hæresis, quæ cum opinionis errore coniuncta, facta non habeat ecclesiasticis mysteriis repugnantiâ. Vnde nulla differentia versatur inter Anabaptistas, & ceteros hæreticos. Accedit quia absurdum est dicere pro perditis ibi accipi Anabaptistas, ceteros vero hæreticos pro lapsis; cùm certum sit, peiore Anabaptistas ac maiori digno odio Nestorianos, ac Manicheos vbiq; existimatos esse. Quare hæc omnia solutio neminem eum Cuiacio in parat. *Cod. de apostat.* dictam legem 3. esse non de Anabaptistis, sed de apostatis; est enim ipsa sub titulo de *Apostat.* tam in codice Iustin. quàm in Theodos. Nec ea verba in ea inserta, *Sacrilium baptisma profanantibus*, rei veritatem adumbrant, cùm pars pro toto hic accipiat, sanctum quoque baptisma pto Catholica religione sit intelligeo sum: & ideo, cùm ibi dicitur per hris nullo remedio pœnitentie succurri, est accipiendum de apostatis, quorum longè gravior est peccatum hæreticis superstitione; isti enim adhuc elices Ecclesie sunt, licet eiusdem vocatam doctrinam fædant insidiis deferentes; illi vero omnino à sacris præceptis sunt alieni, vt exponit Fatinae. *quæst.* 183. num. 16. & hinc rectè in *dist.* l. 3. lapsi, & errantibus subueniri dicitur; perditis vero collatremedio pœnitentie succurrit: lapsi, & errantes sunt hæretici, perditis sunt apostate; sicuti enim perditum id dicitur, quod extra terum naturam esse desit, *l. de perditum* 21. *ff. de petit. heredit.* sic eum, qui cùm in vera via salutis sit, errat à semita, & tramite, lapsum dicemus; perditum vero, qui omnino remoritur ab ea est: & hoc sensu Imperator Constantinianus Paganos perditos appellat in l. 1. *Cod. de paganis*: & primis Ecclesie sæculis apostatis pœnitentiam denegari probauit in *can. 1. Concilij Ancyran.*

Hæreticis etgo ius hæresi deprehens, sed pœnitentibus, imponenda est pœnâ perpetui carceris, iuxta constitutionem Frederici relaxatam per Petram ad ealem *Directoy*, & constitutionem Innocentij IV. editam anno 1254. quæ incipit: *Noveris*, quam refert Peña ubi *supra*. Probat Fatinae. *de hæresi quæst.* 193. §. 6. num. 101. Sallesius tom. 3. de materiis *Trinac.* lib. 6. cap. 7. *regul.* 487. Thomas Dribene *part. 1. de offit. Inquisit.* dub. 156. Vnde infertur, & præcipit ex hoc textu, ibi: *deprehensi*, hæretici, qui solum sunt de hæresi suspecti, leuiter, aut reuolentem non esse imponendam pœnam perpetui carceris, quia talia pœna tantum recedentibus formaliter à fide Catholica est iniungenda; poterunt tamen illi temporarij carceris pœnâ pecuniariâ, seu simili puniri. Simancas *de Carolicis*, tit. 47. num. 53. Peña 3. *part. direct.* *comment.* 42. num. 172. Nec etiam perpetuo carceri mancipandi sunt, qui ante testium publicacionem reatum suum fatentur pœnitentiam flagitantes; quia non censetur

tur plenè deprehens in hæresi, seu apostasia formalit: quare illis iuxta tempus, in quo pœnitentiam petierunt, tempus carceris est taxandum, vt si statim ac deprehensi sunt, delictum fateantur, per sex menses in carcerem detrahantur; si vero dum accusatio propinquit, per annum; & si post accusationem, per biennium; si post torum, in perpetuum; ius ipsa autem pœna ceteris perpetui, lute communi aceto ex *cap. de commissi*, vers. *Et iterum*, de *heret.* in 6. Inquisitor poterant dispensare commutandam pœnam ipsam in peregrinationem, ieiunia, & similia exerat sed hodie hoc referunt esse Domino Inquisitori Generali, vt iam notant Simancas *de Carolicis*, tit. 160. num. 10. & tit. 47. num. 12. & solet Inquisitor Generalis cum dampnis simpliciter ad perpetuum exerceat post triennium, cum damnata vero sine remissione, post octo aut decem annos dispensare si apparent signa veræ pœnitentie. Debet autem carcer competens viribus nature esse, sed ita vt, magis ad pœnam, quàm ad custodiam instituat, *Clement. 1. §. propter*, hoc tit. ibi: *Duo ratiocin. tradere carceri, sine ulla, qui magis ad pœnam, quàm ad custodiam videatur.* Et tempus hoc carceris posse commutari ab Inquisitoribus, concedendo hæreticos ad tritones per idem tempus, patet ex constitutione. Alexandri VI. quæ incipit: *Venerabilis*, data die 26. Maij anni 1503.

Tandem sciendum est, pœnitentiam hanc in iure faciendam per tempus ab Inquisitoribus peractam, vt potè solennem, petendam esse cum veste pœnitentiali, iuxta antiquam Ecclesie consuetudinem, vt ita facio illo induci, & signati, magis humiliter, argumento capitis in capite, 50. *dist.* docent Simancas *supra*, num. 9. Peña ad *Eymericum*, 3. *part. direct.* *comment.* 42. num. 175. Sallesius *lib. 6. cap. 7. regul.* 490. qui diligenter inquirunt vsum dicti habitus pœnitentialis. Et iam inualuisse primis temporibus, cùm iustiditio Inquisitorum capis, constat ex Concilio Tartaracensi relato per Eymericum 2. *part. direct.* tit. *de formis pœnitent.* & ex quibusdam literis, seu sententijs sancti Dominici, relatis à Camillo Campegio apud Zanchinum *de hæresi*, cap. 20. ex Concilio Tolosano celebrato anno 1219. vbi ita canetur: *In deprecationem quoque veteris erroris, duas cruces portens de castore alius præminentes, alterius coloris, quam sint vestes omnes, unam a dextris, & alteram à sinistris.* Et cùm adhuc dubitaretur, quoniam modo, & eius coloris huiusmodi cruce essent faciendæ, in Concilio Bicerntensi *can. 26.* ita continentur: *In deprecationem veteris erroris duas cruces portens in superiori veste coloris crucis, longitudinis duorum palmorum, & dimidij, latitudinisque duorum, & in se cruce digitorum habentes latitudinem 3. unam anterius in pectore, & aliam posterius inter scapulas: vestes, in quibus cruces portauerint, colores crucis non appareant, superiori veste intellecta, supra quam in domo, vel extra alia non portent.* Habitus istum vulgò appellamus *Sambitus*, & varias huius nomenclaturæ rationes adduxerunt Yepes in *Chron. D. Benedicti*, anno 682. F. Hieronymus Roman. *lib. 5. Reipub. Christi.* Ant. Petz *form. 2. de sancto Andrea.* Harphtenus *lib. 5. disquisit. monach. tract. 7. disquisit.* 3. Sed placuit ea, quam sequuntur Yepes, & Harphtenus, videlicet quod: cùm olim ob publica, & enormia delicta pœnitentes

DE HABITU PœNITENTIALI.

2.

DE PœNA PERPETUI CARCERIS.

pœnitentes detruderentur in monasteria, & ibi mutarent habitum, non erat alius, nisi ipſius religionis, proſuſque ſimilis veſti monachorum, apud quos recludebantur. Fuit hæc antea forma apud Hiſpanos tam antiqua, vè in Burchinonenſi Concilio anno ſ40. celebrato præſcribunt: *ſi pœnitentes raſo capite, habitu religionis amittit, omne tempus vitæ ſuæ ieiunio, æque obſervationibus impendat.* Et in Concilio Tolerano IV. expreſſè præſcribitur in hæc verba: *Quicunque ex ſacralibus accipientes pœnitentiam tulerunt ſe, & rufus prævaricantes, laici effecti ſunt, comprehenſi ab Epifcopo ſuo ad pœnitentiam, ex qua reſceſſerunt, reuertuntur. Quod ſi aliqui per pœnitentiam irrevocabiles ſunt, nec admoniti reuertuntur, vt veteres apoſtata curam Eccleſiæ anathematis ſententia condemnentur.* Et in 6. Tolet. ſynodo, can. 7. ita ſtatuitur: *ſi hi, qui ſub religioſo habitu pœnitentiæ preſeſſi pro venia peccatorum ad monachum ſacerdotis adducti, ſi poſt hæc, vel aut comam nutrimus, vel veſtimenta ſacralia ſumentes, ad id, quod reliquerant, redeunt, ab Epifcopo civitatis comprehenſi rufus legibus pœnitentiæ in monaſterio ſubdantur inuiti.* Inde conſequentur Y. pes, & Hæzphienus ubi ſuprà, pœnitentes hæzeſi abſoluta detuleros fuiſſe in monaſteria. Divi Benedicte, & deſuiſſe ſcapulare ipſius Ordinis eo modo, quo Equites olim Militarium Ordinum ſub regula D. Benedicte degeneres deſerebant ſcapulare paucum, quod vulgò dicebatur *Sanbenitillo*, vt probat Hæzphienus ubi ſuprà. Vnde licet poſtea rei ipſi detudi coepiſſent in carceribus ſæcæ Inquiſitionis, ad pœnitentiam peragendam, tamen habitus ipſe pœnitentialis vetos nomen retinuit, & ita à poſtina detrufione in monaſterio ſancti Benedicte, vulgò *Sanbenito*, appellatur. Alia de ipſius vocis ratione congeſſit Patrimus de offe. Inquiſit. lib. 2. cap. 5. tit. 2.

Huius facci color varius fuit antiquius, tempore Eymeryli luidus, & ſubniger, & croces crocei coloris erant; hodie autem ſaccus ipſe

crocei coloris eſt, croces autem ante pectus, & in dorſo rubei coloris: cuius coloris rationem ex eo aſſignat Hurtado tom. 2. de reſiſtencia, reſol. 7. ſubſeſt. 3. num. 68. quia croceus color flammæ dicitur, vt ex Cypriano, & Tercol. & Marſiali probat. Vnde habitus iſte crocei coloris eſt cum crucibus rubeis, vt illum deſerentes ſemper præ oculis habeant, per ſanguinem Jeſu Chriſti rubeo colore designatum, à gehennæ incendiis, & flammis inferni crocei colore designatis, liberatos fuiſſe, & quod ſi ad vomitum ſicut canes, & ad volutabra ſœtida hæzeſis, ſicut ſues reuertuntur, igni tradendi ſunt: unde relapſi ipſi cum vltimo ſupplicio traduntur, ſacco induto incedunt, cum flammis in ipſo depictis. Quæ ratio myſtica profeſſo eſt, nam moralis ex alio capite, & faciliùs proteo- nit, videlicet, vt ita faciliùs cognoscantur ita pœnitentes, vt maiori rubore ſuſſi, humiliantur. Quærit adhuc Patrimus, & Hurtado ubi proxime, quare crux in ipſo habitu rubeo colore interta non pontive luxta formam crucis in qua Dominus noſter paſſus, & mortuus eſt, ſed potius eſt crux decuſata, ad modum illius, in qua D. Andreas martyrio coronatus fuit. Et omiſſis rationibus ab ipſis aſſignatis, eſto veteriorem credo, quod cum ipſi pœnitentes aliquando ad triſtitionem vicerunt his crucibus, quas ſemper in ipſo habitu geſtabant, placuit, vt crux decuſata deinceps apponeretur, nec ſine cauſione; nam cum ipſi plerumque negent Chriſti Domini noſtri aduentum, & paſſionem, quem fidei articulare, cum Symbolum fidei ab Apoſtoliſ diſtaretur, pronunciauit S. Andreas, vt conſtat ex l. 1. tit. 4. parti. 2. ubi: *Sanctus Andreas ubi fidei articulum predicavit, ipſius Apoſtoli crocem decuſſam deſeruit.*

Credentes.] Verificatum hunc expoſit ſuprà in cap. excommunicamus, §. credentes.

CAPVT XVI.

Idem.

Absolutos ſe b nouerint à debito fidelitatis, hominij, & totius obſequij, quicunque lapſis manifèſtè in hæzeſim aliquo pacto, quacunque firmitate valla- to, tenebantur adſtricti,

NOTÆ.

Idem.] Gregorius videlicet IX. qui præſentem conſtitutionem contra hæzeſicos motu proprio fecit à nemine conſultus.

Se nouerint.] Ipſo iure videlicet, nam licet ad collendam aliquam obligationem iuramento, vel non firmatum, ſententia abſolutoria requiritur, cap. quæquam, de conſue. lib. 6. Clement. 1. de hæzeſicis, Clem. 2. de hæzeſ. c. cum deſideres 15. c. à nobis 2. cap. quæquam 58. de ſen. excom. c. ad aures 24. de ſimonia, probant Suarez de cenſur. diſput. 7. ſeſt. 2. Balboa in cap. 1. de indiſtis, num. 62. tamen in præſenti caſu vaſſalli hæzeſicosum ipſo iure liberantur à fidelitate illis promiſſa, propter atrocitatem criminis, ob quam ipſo iure à tem-
D.D. Genz. in Decretal. Tom. V.

pore lapſus priuatur omnibus bonis ante obſtentis, vt probauit ſuprà in cap. vergentis; & ita priuatur ipſo iure fidelitate à vaſſallis ſibi promiſſa. Nec contrarium probant textus in cap. vergentis, cap. excommunicamus, et 1. §. mouentur, hoc tit. ubi vt ſolliciti liberentur à fidelitate dominis promiſſa, deſideratur ſententia. Nam omniſa ſolutione repetitum in præſenti, quod aſſeruerunt, textus illos proeſtere de iure antiquo, in præſenti verò Gregorium nouum illos ſtatuere, dicendum eſt, Innocentium in diſtis luſibus procedere in diuerſo caſu, ibi enim Principes ipſi, & Potestates ſeculares non fuerant in hæzeſim lapſi, ſed tantum ignaui, ac negligentes in compedeſcendis hæzeſicis; unde cum non ita grauiùs peccarent ac ipſi hæzeſici, non ita ſeueriùs

feneris ponuntur. Docuerunt Castro lib. 2. de iusta heretic. puni. cap. 6. Simancas de Carolic. tit. 46.

2. *Fidelitatis.*] Promissæ per vassallos etiam Imperatori, Regi, vel supremo Principi; nam Pontificem posse subditos Principum, & supremorum Monarcharum absolueri, illisque iuramentum fidelitatis relaxari, probant in cap. licet, de oia, & exemplis illustri Insuper Stephanus Valentini, in opusculo de potestate condina Romani Pontificis, cap. 12. num. 17. facit Innocentius III. lib. 1. epist. 18. Hinc inferunt antiquiores, depositarium non teneri reddere rem depositam domino in hæresim lapsa: quod verum credo, non quia depositarius possit retinere rem ipsam depositam; sed quia eum ministerio legis eum dominum fisco questum sit, depositarius teneatur fisco rem tradere, ex l. bona fides, ff. de positi, l. 6. tu. 6. p. 4. docent Baldus in rubric. C. de positi, Molina lib. 2. de iustis. disp. 526. Azor p. 1. instit. lib. 7. cap. 8. q. 4. Lessius lib. 2. de iustis. cap. 27. dubit. 4. Esenbar de veritate foro, art. 4. de effectibus mentis legis.

3. *de Heming.*] In aliquibus codicibus legi, dominus, iam notant Hostiensis, Zabarella, Butrlusque in præfati: sed rectius retineo hominij, quia in præfati tantum agit Gregorius de his qui promittunt Dominis suis fidelitatem, vel obsequium; qui plerumque sacre solent hominij, seu hominagium, ut probant in cap. ex diligenti, de simonia: sed retento verbo dominij, inferunt recte ex hinc textu Doctores, filios liberari à vinculis patris potestatis eorum parente in hæresim lapsi: quod & statutum legitimus in cap. qui exigit, §. illorum, hoc tit. in 6. iuxta vulgarem litteram, etsi ea verba non repetantur in ipsa constitutione Alex. IV. quæ exiat apud Penam in calce Directorij Cherub. tom. 2. bullar. fol. 128. Simancas de Carolic. cap. 45. aliis relatis Fernosinus alleg. 38. num. 46. & alleg. 47. num. 11. ex ea ratione, quia prohibenda est cohabitatio cum parentibus hæresim infectis, quia faciliè filij eorum errores sequuntur ob assiduam conversationem, iuxta illud Iuvenalis satyr. 14.

Sic natura iuber, velocius & citius nos

Corruptum viciorum exempla demissa magis.

D. Hieronymus epist. 15. ad Letaniam, ibi: Nihil in te videtur filium, quod si fecerit, peccet: memorare tot parentes virginis, tamque magis exemplis daceri posse, quam te. Plinius in paneg. ad Trajanum, ibi: Non tam imperio illi opus est, quam exemplo. Plura Aeneas Robertus lib. 1. rev. indic. cap. 2. Simane, de primog. lib. 1. cap. 11. unde si in Iudaicam superstitionem parentes violabantur, faciliè filij eandem discerent, ut suis expressit Iuvenalis satyr. 14.

*Quidem serviti memorem sabbata patrem,
Nihil præter nubes, & celi nomen adorant;
Nec distare putant humanæ carne suillum,
Qui pater abstinet: mox & præputia parent.
Romanæ autem soliti contemnere leges,
Iudaicum discunt, & servare ac memorem ius,
Tradidit arcana quodcumque volantes Moyses.*

Ex eodem etiam verbo dominij deducunt Azor p. 1. instit. lib. 8. cap. 12. Peña p. 2. direct. q. 119. commentar. t. 68. Farinac. de heresi q. 197. §. 3. n. 30. Molina tom. 2. de iustis. disp. 40. Decianus lib. 5. tractat. crimin. cap. 44. num. 28. Simancas de Carolic. tit. 47. num. 74. & tit. 61. num. 8. F. Alfonsi. de Castro lib. 2. de iusta heretic. puni. cap. 7. Castropalao tom. 1. oper. moral. alleg. 47.

num. 12. servus ob dominorum hæresim eripi in libertatem: qui etiam moventur auctoritate textus in l. Manichæus, C. hoc. titule, in illis verbis: Servus extra noxam esse volamus, si dominum facitilem existamus, ad Ecclesiam Catholicam servitio fideliter transferimus. Quibus authoritatibus moti docent, servus hæreticorum proclamari posse ad libertatem, quia Domini propter hæresim, in quam lapsi sunt, eorum dominium amiserunt. Sed contrariam sententiam, videlicet servos propter dominorum lapsum in hæresim ad libertatem non pervenire, sed eos ad fiscum spectare cum cæteris bonis, teneantur Ioannes Andreas, Francus, & Geminianus in cap. quicumque, §. final. hoc tit. lib. 6. Ananias, & Marianus Socinius in præfati: quorum sententia probatur ex eo, nam bona hæretici ad fiscum pertinent, ut probant supra in cap. vergentis: sed servi in bonis sunt, l. Paulus, §. penult. ff. de pignor. leg. final. §. final. C. de V. S. l. rem in bonis, §. de acquir. rer. domin. plura Tiraquel. in l. si vinum, vers. donatione largitus, quæst. 17. num. 333. C. de reuoc. donat. Igitur servi illi ad fiscum spectant. Deinde nam confiscatio hæc bonorum hæreticorum flanta est ad instar confiscationis, quæ fit ob crimen læsæ Maiestatis humane, cap. vergentis, vlt. notat, hoc tit. fed in ea confiscatione servi non assequuntur libertatem, sed ad fiscum spectant, l. Imperator 12. ff. de fideicommiss. liberi, elgo similiter in hoc crimine læsæ Maiestatis servi ad fiscum spectant. Tandem quia nulla est sortis dispositio, cuius ratione servi hæreticorum sine manumissione ad libertatem pervenire possunt; non præfens textus, qui iuxta veram eius litteram tantum agit de illis, qui præbant hæreticis ratione fidelitatis, obsequij, seu hominij: quæ iura eum personalia sunt, nec ad extraneam personam transire possunt, idcirco nec ad fiscum spectare valent. Non textus in d. l. 4. C. hoc. titule, qui procedit in casu speciali, cum videlicet servus ad fidem catholicam converteretur, domo remanente in ipsa perfidia hæreticali. Unde cum non adsit vlla iuris confirmatio, quæ libertatem concedatur servis hæreticorum, non est eut asseramus, eos proclamari posse ad libertatem in fisci præiudicium: quare hanc sententiam veriorum credo, etsi iuxta plenitudo, quæ in tribunalibus sanctæ Inquisitionis statuat, sæpe sæpius contrariam decisionem sit in supremo Inquisitionis Senatu, vt refert Fernosinus d. alleg. 47. vidend. sunt Machado lib. 6. summa, cap. 7. tract. 13. docum. 3. Sanchez lib. 2. sum. cap. 24. num. 10. Castropalao tom. 1. oper. moral. tract. 4. disputat. 5. punct. 26. Diana p. 7. tract. 7. res. sol. 17. Bordon. de mater. trib. cap. 17. de pen. num. 106.

e Almissis.] Unde deducitur, præsentem constitutionem non procedere si hæretici occulsi sint, quia expressè exigit Gregorius hæresim manifestam, ut docuerunt Peña 3. p. direct. quæst. 119. comment. 468. Farinacius de heresi, quæstion. 189. numer. 65. Fernosinus allegat. 47. num. 1.

f Aliquo pacto.] Hinc omnes obligationes actiue à die commissi criminis fisco acquiruntur, nec postea hæreticos valet debitorum ipsos convenire. Fernosinus d. alleg. 47.

COMMENTARIUM.

6. **EX** hac Gregorij constitutione sequens communi-
CONCITIO
TRADITIO
ET
IN
TER
EST
 omni obligatio, qui hæretici tenebantur obstricti.
 Probant eam textus in cap. aliud, iuncto pro eius
 historia Horthom. in Franco-Gal. cap. 13. cap. nos
 Sanctorum, cap. innotas cap. 9. q. 6. cap. final. de por-
 tionis, cap. venerabilis, de elect. cap. quicunque, §. 1.
 hoc tit. lib. 6. Faciunt textus in cap. de illa, cap.
 quanto, de diuini, cap. final. de conuers. coning.
 l. 32. tit. 9. part. 1. Illustrant vltra congestos à
 Barbosa in presenti, Bellaminius in apoloq. contra
 Regem Angliæ, fol. 317. Suarez de fide lib. 3. cap. 23.
 num. 22. Solorzanos tom. 1. de iure ind. lib. 3.
 cap. 5. num. 22. Thomas Delbene de offic. Inquisi-
 tor. lib. 2. dubie. 151. cum duabus sequent. Petrus Gre-
 gor. lib. 2. part. tit. 6. cap. 5. Gutierrez de delict.
 cap. 37. §. 38. & lib. 1. conuic. cap. 1. num. 18.
 Sanchez lib. 2. summa. cap. 24. num. 5. Fernandus
 allegat. 47. num. 25. Castropalao tom. 1. oper. moral.
 tract. 4. disp. 5. punct. 16. Simeanas de cathol. th. 49.

7. **SED** pro dubitandi ratione in præsentem asser-
IN
TER
AD
AL
TER
 tionem ita insurgo: si dem promissum omnino
 seruandam esse, omnia iura proclament, & bona
 fides ff. de positi. l. 1. au. Prætor ff. de positi. cap. 1.
 qui fidem, de fœderatibus, cap. 1. de positi. ubi pro-
 bant, etiam hostibus, seu aliis, etiam cum non
 ad implendum, cap. noli 23. §. 1. l. 1. §. non fuit,
 ff. de dolo, cap. 1. ubi illustrati, de regna & pace:
 igitur qui fidem præstiterunt, fidelitatemque, &
 obsequium Principibus promittunt, tenentur
 etiam post eorum lapsum eam adimplere. Accedit,
 nam si fidelis promissio iuramento firmata est,
 seruari debet superiori, etiam tyranno, cap. 17.
 Ezechielis, vers. 16. ibi: *Vino ego, dicit Dominus,*
quoniam in loco Regis, qui consiliu cum Regem,
cuius fecit irritum iuramentum, & soluit pactum,
quod habebat cum eo, in medio Babylonis morietur.
 Et vers. 19. *Quoniam iuramentum, quod spreuit,*
& fœdas, quod prauerat eis, ponam in caput
eius. Conelli. Tolet. 4. com. 75. Sacilegium quippe
 est, si violenter gentibus rerum suarum promissa fides;
 quia non solum in ea fit pacti transgressio, sed & in
 Deum quidem, in cuius nomine pollicetur ipsa pro-
 missio. Tolet. 7. com. 1. Tolet. 8. com. 2. Tolet. 10.
 com. 2. cap. si quis laicus 19. 22. q. 5. probat, &
 eruditè, vt solet, illustrat D. Fraoc. Ramos in
 memor. pro Episcopo. Lusit. in princ. num. 103.
 & 214. Igitur si in præsentem casu fidei promissio
 iuramento firmata fuerat, etiam hæreticis seruanda
 erat. Augetur secundò hæc difficultas ex eo,
 nam sapios legitimos infidelibus, & apostatis,
 eriant pios, & catholicos vtros obsequium, &
 subiectionem præstiterint, vt fecerunt Ioseph Pha-
 raoni; Daniel Nabuchodonosori, Mardochæus
 Assuero, & milites Catholici, qui seruiebant Iu-
 liano Apostatæ, à quo cum iurabantur sciem mouere
 pro defensione Reipublicæ, illi statim parebant;
 cùm sensum illa imperabat utra mouere in
 Christianos, tantum Dei Imperatorem cœli &
 terræ agnoscebant vt reuertit in cap. Iulianus 11.
 q. 3. ex fœderat. Sozomeno, & Nicephoro refert
 Couar. lib. 4. var. cap. 13. per totum. Ergo quia per
 apostasiam, seu hæresim superioris non eximuntur
 eius subditi ab obsequio, & fidelitate illa
 promissa, Secundo difficultior redditur præsentis
 constitutio ex fœderat. eorum, qui existimant,
 summum Pontificem nullum potius habere re-
 rum temporalium dominum, aut potestatem, siue
 D.D. Gual. in Decretal. Tom. V.

directè, siue indirectè, seu absolute, siue respo-
 ditè ad bonum spirituale & quam docuerunt &
 probantur Guillelmus Oceanus, l. Parisiensis,
 Dantes, & alij rebus ad Axtio tom. 2. infir. lib. 4.
 cap. 9. q. 3. Iacob. Salmaius in tract. de suprem. po-
 test. laca, q. 3. l. Minor in 4. dist. 24. q. 3. conclus. 3.
 Albericus in distionar. verbo Eirelio: & fusiè pro-
 bat Rogatus Vvidingus in apoloq. pro iure
 Principum. Igitur in præsentem Gregorius non poterat
 statuere penam promotionis hominij, seu homi-
 ninij temporalis contra Principes, vel nobiles
 laicos, vnde sub hinc esse auctoritatem huius con-
 stitutionis, & cuiuslibet tantum esse credere quod
 velit, docuit Michael Rousfel. lib. 3. his. Pontif.
 iurisd. cap. 3. num. 8.

Quibus difficultatibus in omniè obstantibus, ve-
 ta est præsentis Gregorij constitutio, cuius ratio
 ex eo prouenit, quia si fidem humanam frangen-
 ti fides non est seruanda, l. 4. C. de positi. cap. in-
 fidelis, & fere per totum 28. q. 2. cap. ficut 29. §. iu-
 ramentum, de iurior. probant Meooh. de arbit.
 case 326. num. 26. Fachinetus lib. 9. controu. cap. 48.
 multò maiori ratione violanti fidem catholicam,
 hoc est hæretico, fides seruanda non est. Accedit,
 nam si subditi & Vassalli præterit Principi hære-
 tico, huc vergeret in inagnum fideli eurtupitionem,
 eum faciliè subditos ad suos errores traheret, iuxta
 illud Proverbi. cap. 6. *Homo apostata in corde suo*
machinatur malum, & in ignis seruat, intendens ho-
mines separari à fide. Si quidem peccato, quo Do-
 minus laborat, prout subditi inficiuntur, cap.
 cum quidam, de iurior. cap. ficut, cap. pastoralis 7.
 q. 7. cap. præcipi 11. q. 3. D. Bernardus epistol. 127.
Si quis de populo deus, solus perit; verum Principis
pius error multos inuolat, & totius obest, quoniam pra-
est. Cicero lib. 3. de legibus, ibi: Nec tantum malè
est peccare Principes, quoniam illud, quod permultis
etiam imitatores Principum existunt. Vnde cap. 10.
Ecclésiastici legitur: Secundum indicem populi, sua
& ministri eius, & qualis est Rex civitatis, tales
inhabitantes in ea. Faciunt Claudianus lib. 1. de
laudibus Siliiconis, l. ibi:

Silices in vulgus manent exempla Regumque,
Vique dicuntur vincti, seu sacres castra sequuntur;
 Et alibi:

— Totus componitur orbis
 Regis ad exemplum.
 Et mox apud eum.

— Nec sic infestare sensus.
 Hæreticos edicta valent, quoniam reus Regem;

Mobilitate mutatur semper per Principe vulgus.
 Cicero lib. 3. de legibus, ibi: *Vis enim cupiditas*
Principum, & viuis infici solet tota civitas, sic
emulandi, & corrigi continentis. Latè illustrant Pe-
 trus Gregor. lib. 6. de rebus, cap. 18. Solorzanos
 emb. 23. & qui præstet Christianis, debet esse
 Catholicus, & membrum vile corporis mystici
 fidelium, vt probant Michael Vlezanus in tract.
 de regim. mundi. 2. q. princip. num. 82. Solorza-
 nos. 1. de iure Indiar. lib. 3. cap. 6. num. 19. Rectè
 ergo in præsentem statuit Gregorius, ob hæresim
 maifestum superioris, eius subditos & vassallos
 eximi à fidelitate promissa, ne eorum assidua
 conuersione in similem etiam incidant erro-
 rem; & similiter vt rubore suffusi Principes, &
 superiores teneantur, & ab hoc grauissimo cri-
 mine perpetrando arceantur; vnde serpente in
 Gallia feda Albigenum hæresi, lapso Ray-
 mundo Comite Tolosano, bona damnatorum
 confiscata fuerunt, vassallique à fidelitate
 T 2 abscissi

8.
 TRADITIO
 RATIO DEUS
 DEUS

absoluti, concessi Catholicis facultate occupandi dietiones ipsius Comitum, ut refert Guillelm. Belto lib. 3. Philip.

*Rex & Papa simul expensis omnibus illam,
Et res, & patrimonium totam, quae spectat ad illum,
Præ quo prævaluit armis, & viribus illi
Tollere quid, proprias licet converteret in usus,
Et Dominum sui rerum, quas auferat illi.*

9.

DISOLVITUR
TVA DITTI
STATUTA.

Nec obstat prima difficultas supra adducta, nam in generali promissione fidei, & obsequij facta superiori, excepta creditur religionis causa, argumento legis ultimæ, ff. de in ius vocando c. quia in omni promissione, & iuramentum creditur semper supremi Principis auctoritas restituta, & cultus divini ratio, ut probat Alberic. Gentil. lib. 1. de iure belli, cap. 11. unde licet ob fidei promissionem iuramento firmatus teneatur vassalli pætere Principi etiam tyrannicè dominantem, tamen si ipse in hæresim lapsus sit, non tenentur illi obedire, ex ratione supra adducta, ne videatur illud communicatione facile in ipsius errores prolapsurum. Nec obstat quod expendebamus ex cap. Julianus 1. q. 4. nam cum temporibus illius Imperatoris Ecclesia plenè non frueretur libertate, & pace, non poterat subditos ipsius Imperatoris ab eius obedientia absolovere, & ita Catholici in apostatæ exercita militie nomen dabant, quod toleravit Ecclesia, cum adhuc non haberet plenam potestatem compellendi Principes temporales, ut docuit D. Thomas 2. 2. q. 11. art. 2. qui etiam respondit exemplis Iosephi & Danielis, asserendo ea procedere in Gentilibus, non verò in hæreticis. Quando autem infideles, & Iudei eo tantum, quod tales sint, privari possint dominio, & iuribus, quæ habent in Catholicos, exposui in cap. 1. de Iudeis. Nec obstat secunda difficultas, nam verius est, Pontificem, Vicarium Christi, Pastorem omnium Christianorum, omnes Christianos posse corrigere, & punire, etiam poenis temporalibus, virtute potestatis temporalis, quam indirectè, & respectu ad bonum spirituale habet, ut fecit in casibus relaxis in cap. ubi periculum, de elect. in 6. cap. 1. de homicid. eod. lib. cap. excommunicamus, §. monemus, hoc tit. Clement. 1. de summa Trinit. Concil. Constant. sess. 8. & 15. Lateran. sub Leone X. sess. 11. probat ex variis sanctorum Patrum testimoniis Iosephus Steph. Valent. integro lib. de potestate concilio

us R. P. Unde ob hæresim Principis secularis rectè privatur ipse dominio directo, aut villi rerum sacrum. Facit Nicephor. Calist. lib. 1. q. 11. cap. 10. quem expendit Steph. Valent. ubi supra, ad finem libri, qui etiam pro adstruenda hac potestate adducit textus in cap. 1. de calum. cap. qualiter, de accusat. et alios, & immerito Roussel. de hac potestate Ecclesiæ dubitat, quare hanc illius sodaciam demerari satis non possum, quamquam enim toto opere hic auctor satis prodat quæ mente ad scripserionem animum appulerit, sitque innumeris loca erga Summos Pontifices (ut mitissimè dicam) irreverentissimus, & perpetuus admoesur, nedum auctoritator eorum, quæ à Pontificibus sunt constituta, tamen hoc loco nimiam audaciam suam explicat.

Supra tradite attentioni obstat textus in cap. de illa, de divorciis, ubi agitur de quadam vxore, quæ à viro suo in hæresim ipso discessit, forsan ex intentione, ut matius tardio pariter, & confusio affectus, ad rectam semitam rediret, & dubitatur an eo penitente, & reuerso ad fidem catholicam, cogenda esset illum recipere, vel non? Et sub distinctione respondet Pontifex, videlicet, quod si iudicio Ecclesiæ separata est vxor à consortio viri, non cogatur ipsam etiam penitentem recipere: si verò propria auctoritate discessit, cogatur cum eo habitare. Quem testum ita expendo: En ubi ob hæresim mariti vxor ipso iure non eximitur ab obsequio viro debito. Igitur quia ob hæresim superioris eius subditi non eximuntur à fidelitate, seu obsequio. Pro cuius difficultatis solutione dicendum est, verum esse ob hæresim mariti divorcium fieri, cap. final. de conuers. coniug. cap. 2. cap. quando, de divorci. probavi in d. cap. de illa, eod. tit. Sicut etiam ob adulterium corporale divorcium fit, cap. significasti, de divorci. ubi probavi: non tamen ideo licet propria auctoritate coniugi coniugem hæreticum desistere, cum iudicio Ecclesiæ tantum divorcium quoad thorum fieri possit: & ita si propria auctoritate discedat, quia illegitimè, & non iuxta iuris ordinem coniugem desinit, cogitur ad eum redire, quia ob vinculum sacramenti non licet coniugi propria auctoritate coniugem hæreticum desistere.

Etiam exponendus est textus in cap. inter alia, de sentent. excommunicat. lapso eius commentatio.

10.

EXPOSITIO
CAP. 10. DE
D. 10. DE
VOTIS.

TITVLVS VIII.

De schismaticis, & ordinatis ab eis, & alienationibus factis.

CAPVT I

Ex Concil. Lateran.



VOD à prædecessore nostro felicitis memoriz Papa Innocentio factum est, innovantes, ordinationes ab Octauiano & Guidone hæresiarchis, necnon & Ioanne Strumensis, qui eos sequutus est, factas, & ab ordinatis ab eis, irritas esse censemus, adiicientes etiam, ut qui dignitates ecclesiasticas, seu beneficia per prædictos,

prædictos schismaticos acceperint, careant impetratis. ^d Alienationes quoque, siue inuasiones, quæ per eisdem schismaticos, siue quæ per ^e laicos factæ sunt de rebus ecclesiasticis, omni careant firmitate, & ad Ecclesiam sine omni onere eius reuertantur. Si quis autem ^f contraire præsumpserit, excommunicatione se noverit subiacere. Illos autem, qui sponte ^g iuramentum de tenendo schismate præstiterunt, à facris ordinibus, & dignitatibus decernimus manere suspensos.

NOTÆ.

^a *Asteranensi.*] Generali videlicet sub Alexandro III. celebrato, vbi cap. 2. & in 1. collecti. sub hoc tit. cap. 2. repetitur textus hic, pro-
ut in præsentii transcribitur.

^b *Innocentio.*] Secundo videlicet, qui in Concilio Romano can. 24. ita statuit: *Ordinationes factas à Petro Leono, & schismaticis hæreticis excommunicatis, & irritis esse censuimus.* Refert Ant. August. in epist. iur. lib. 11. tit. 54. cap. 14.

^c *Stramenfi.*] Ita legendum est, non *Stramenfi*, ut habetur in hac sexta collectione; nam in hoc schismate, cum Alexander III. legitimè, & canonice electus esset, fautores Federici Imperatoris Octavianum Cardinalem in Anagninam elegerunt, Victorque appellatur anno 1156, & anno 1164. Ipse phrenesi correptus, nec sui, nec Dei memor, impetrens sine Sacramentis excommunicatus ad inferos migravit. Duo tamen Cardinales ex primariis Octavianii fautoribus, Ioannes videlicet de sancto Martino, & Guido Cremenfis, alique ab ipsis conuocati de successore tractantes conueniunt in ipsum Guidonem Cremensem, eumque sub nomine Pauli III. adorant; & eum anno 1170. ipse Anagninam castrum in paribus vendendis consumptius decedisset, in eius locum schismatici elegerunt quendam Ioannem Abbatem Stramenfem, virum apostatam, qui postea anno 1178. supplex veniam petiit, & benignitatem Sedis Apostolicæ expetens est, ut iam resuli in cap. quia 5. de electi. quare in hoc Concilio Lateranensi Alexand. III. ordinationes factas ab iis Octavianio, Guidone, & Ioanne Stramenfi, irritas esse, idest nullas,

quoad exercitium declarauit, ut etiam in Concilio Turonensi cap. 9. vbi ita statuit: *Præordinationes ab Octauiano facta, & aliis schismaticis, & hæreticis, tanquam vacua, & irrita ab omnibus habeantur.*

^d *Alienationes.*] Consonat caput alienationes 11. q. 2. nam alienationes factæ à Prælati in iustis nullas sunt momenti, cap. nihil, vbi Glossa finalis, de electi. & dum Ecclesia schisma patitur, dictum vacare, cap. 1. cap. cum vobis, de præscript. & ita alienationes, beneficiorum collationes, Ecclesiarum uniones interim celebrari nullo sunt, ut variis ampliationibus, & limitationibus exponit Riccius lib. 9. de iure persom. cap. 4. per totum.

^e *Leoni.*] Alienantes videlicet auctoritate schismaticorum, ut post Hostiensium in præsentii docuit Suarez de censur. diff. 23. selt. 3. num. 4.

^f *Contraire.*] Facto, vel verbo, videlicet impediendo executionem præsentis canonis, approbando, & defendendo. huiusmodi alienationes, seu beneficiorum collationes, ut docuit Suarez de selt. 3. per totum.

^g *Iuramentum.*] Consonat Gregorius VII. in Synodo Romana habita anno 3. sui Pontific. ibi: *Ceteri vero, qui sua sponte eius schismatici consensuendo subscriperant, & in ea iniquitate perdurare voluerant, suauiter ab omni Episcopali officio suspendimus.* Illos vero, qui non sponte consenserant, vsque ad subscriptionem sacri Petri suspendimus, eo quidem respectu, ut si infra istam terminum idoneam, aut per se, aut per nuncios suos satisfactionem præsentia nostra non obdiderint, Episcopali deinceps officio priuentur. Refert Ant. August. lib. 11. epist. iur. tit. 54. cap. 7.

CAPVT II.

Innoc. III. ^a *Bisuntino Archiepiscopo.*

Fraternitati tuæ. Et infra: Priorem, quem à schismatico asserit ordinatum, ab officio poteris repellere incunctanter, nisi legitimè probauerit secum fuisse misericorditer dispensatum, & ab ea persona, quæ super hoc potestatem habuerit dispensandi.

NOTÆ.

^a *Bisuntino.*] Ita etiam legitur in tertia collectione, sub hoc tit. cap. 1. & alie partes huius Decretalis extant in cap. fraternitati, de eo qui duxit in consanguinitate, cap. fraternitati, de clerico excommunicato, vbi notati.

COMMENTARIUM.

Fix his duabus decisionibus sequens communiter deducitur assertio: *Ordinationes facta ab schismaticis, nulla sunt quoad exercitium gradus collati, nisi dispensatum sit cum iis ordinatis.* Probat eam texus in cap. final. 19. distict. cap. D.D. Gomez in Decretal. Tom. V.

proter 6. 32. dist. cap. ordinationes 9. quest. 1. Urbanus II. in Concil. Placentin. cap. 10. 11. & 12. Paschalis II. in Concil. apud Gualdast. can. 2. vbi facit, ordinationes ab schismaticis secundum ecclesiasticas leges de iure à male susceptio gradu deturbari, nisi Ecclesiæ indulgentia faciant. Eugenius III. in Concil. Rheimentis, can. 16. *Quod à prædecessore nostro Innocentio statutum est innovantes, ordinationes factas à filio Petri Leonis, & aliis schismaticis, & hæreticis, excommunicatis, & irritis esse censuimus.* Octaua quoque Synodus generalis sub Hadriano II. can. 4. Phocium schismaticum violentè insumum, de gradu, quem malè acceperat, deiciens, eos quoque, qui in aliquo gradu

gradu sacerdotali ab eo consecrati fuissent, simili-
ter abdicant. Stephanus Tornacensis *epist.* 108.
& 109. quæ de alia iuris testimonia refert Ant.
August. *lib. 11. epist. in. tit. 20. & 54.* Illustrant
ultra congestas à Barbosa in *presenti*, & de po-
testate *Epist.* 2. p. alleg. 48. Etiam Hallierius de
sacris elect. cap. 5. art. 1. per totum. Turrisetum.
lib. 4. summa Ecclesie, cap. 14. Cotelinus *lib. 4.*
apostolicum iuris Positiv. tit. 8. Bozac. de *confer-*
dispon. 1. q. 2. Decianus *lib. 5. tract. crimin.* cap. 58.
Petrus Gregor. *lib. 4. part. tit. 3. cap. 2.* Sanctus
Raymundus in *summa ad hunc tit.* Suarez de *cen-*
sur. disp. 23. *sect. 3.* Salsby in *Paraphr. clericali.*
lib. 6. cap. 3. Sacerdotio in *priori*, cap. 28. & 29.
Bodonius *sacri Tribunal.* cap. 9. Castropalao *tom. 1.*
oper. moral. tract. 6. disp. 4. *punct. 6.* Mutga *tom. 2.*
disposit. tract. 1. *disposit.* 1. *lib. 7.* Morinus de
sac. ordin. exercit. p. cap. 1.

2.

TRADITIO
DUPLICANS
RATIO.

Sed pto dubitandi ratione inteadam probare,
tunc rationibus, tum auctoritatibus, ordinatione-
bus à schismaticis factis irritis, & nullas esse
ipso iure, non tantum quoad exercitum, verum
& quoad effectum characteris: Et primò ita in-
tingo à Sacramenta extra Ecclesiam dari non pos-
sunt, quia extra unitatem Ecclesie non datur
Spiritus Sanctus, cap. loquitur 18. 24. *quæst.* 1.
nec extra eam potest aliquid consecrari, cap. *pu-*
derenda, 23. *quæst.* 1. Sed schismatici sunt extra
Ecclesiam, *dist.* cap. *puerenda*, ibi: *Schismaticus*
ab Ecclesia visceribus diuisus, & ab Apostolicis
sedibus separatus. Et cap. *schisma*, eadem causa
& *quæst.* ibi: *Schismatici se ab universalis Ecclesia*
diuiserunt. Ex Irenæo, Cypriano, Chrysostoma,
Hieronymo, & Augustino probatur Tur-
risetum *lib. 4. summa*, p. 1. cap. 1. Riccioli de
de iure *person.* *lib. 9. cap. 2. per totum.* Bellarm.
controv. *lib. 3. de Eccle.* cap. 5. Franc. Valens in
concord. iur. Pont. p. 1. *quæst.* 4. *sect. 1. fol. 121.* Igi-
tur ordinationes ab eis factæ nullæ sunt ipso
iure. Nec sacramenta ab eis cum effectu confertur
valent, cum ipsi, vt ait D. Basilus ad *Amphi-*
loch. cap. 1. per schisma ab Ecclesia defuerint, &
discissa fuerit consequentia, quæ ab Apostolica,
& Episcopis prioribus in eis quæ de nouo ordi-
nantur, deiciatur. Augurat primò hæc dubitan-
di ratio ex eo, nam sacramentum poenitentiae ab
schismatico collatum omnino nullum est, &
inefficax, vt docet Hallierius *ubi supra*: ergo
potiori ratione sacramentum ordinis ab schi-
matico collatum nullum est, cum nobilior sit.
Augurat secundò hæc dubitandi ratio ex præsen-
ti textu in cap. 1. & in cap. *ordinationis* 9. *quæst.* 1.
vbi ordinationes factæ ab schismaticis, irritæ, &
vacuæ dicuntur: ergo quia nullæ sunt, non so-
lùm quoad exercitum, verum & quoad effectum
characteris, & omnimodam sacramenti essen-
tiam.

3.

SCHISMA-
TIS VARIÆ
ACCEPTIO-
NES.

Quà dubitandi ratione non obstante, vera est
præsens assertio, pro cuius expositione sciendum
est, schisma Græcum verbum esse, & Latine
significare scissuram, seu diuisionem unitatis,
cap. *schisma* 34. 24. *quæst.* 1. Murga *dist.* *lib. 7.*
q. 1. de quo in sacra Scriptura *Ioniam* cap. 9.
vers. 16. *Schisma erat inter eos.* Apokal. 1. ad
Crimin. cap. 1. *vers. 10.* *Non sunt in vobis schis-*
ma. Et cap. 2. *vers. 18.* *Audio scissuram esse inter*
vos. Quare iuxta strictam huius vocis acceptio-
nem, quolibet societas, aut communionis di-
scipula (siue societas ipsa sit bona, siue mala)
schismatis appellatione potest contineri. Vnde

apud Ioan. cap. 9. (Indixit contendemibus ho-
ter se de miraculo Christi factio in persona eius,
qui cæcus natus erat,) dicitur quod *schisma erat*
inter eos, nempe diuersa de miraculo sententia: &
ibi Glossa subdit: *Quod si omnes mali fuissent, schis-*
ma carnaliter. Prindeque fit, vt quandoque homi-
nem mortali peccato ligatum schismatici voca-
bulo significatum reperias, cum hic saltem à
charitate per peccatum separatur, iuxta illud Iu-
an. cap. 59. *Iniquitates vestra diuiserunt inter vos, &*
Deum vestrum. Et legitur apertè in cap. *audius* 11.
q. 3. cap. dixit 24. *q. 3.* Quandoque etiam eodem
vocabulo reperies significatum hominem excom-
municationis sententia damnatum, veluti qui
per excommunicationem à Sacramentorum par-
ticipatione, & hominum communione separatur,
vt in cap. *sacerdotes* 1. *q. 1. cap. Apostolica* 24.
q. 4. cap. cum excommunicatus 11. *q. 3.* propriè ta-
men schismatici vocabulum ad eam diuisionem
refertur, quæ in Ecclesia Dei quandoque con-
tingit, vt in cap. 1. & *imo tit. de schisma.* In
præsentem tamen accipitur pro scissione, vt di-
uisione ab Ecclesia, eiusque capite; cum enim Ec-
clesia vna sit, ac proinde indiuisa, constans ex
fidelibus, tanquam membris, & ex Christo,
etique Vicario, tanquam capite, qui se ab hu-
iusmodi membris, vel capite separas, schismaticus
est. Vnde cognoscitur, omnes hæreticos esse
simil schismaticos, non verò e contra, schisma-
tici inde esse hæreticos; siquidem schisma duci
potest, etsi vna religio colatur, eadem Sacra-
menta tentantur, nec falsum dogma docatur;
quia ab unitate capitis schismatici se separant.
Quam diuisionem odium fraternum dixit D. Au-
gustinus *lib. 1. de baptismo contra Donatistas*, quia
inter Christianos, & eiusdem fidei Catholica
cultores, eiusdemque matris Ecclesie filios nasci-
tur, vt olim conigit inter Apostolorum disci-
pulos, referente D. Paulo 1. ad *Crimin.* cap. 8.
ibi: *Ego sum Pauli, ego Cepha, ego Apollo, ego*
Christi. Quam scissuram causam fuisse creando-
rum Episcoporum, cum antea Ecclesia Presby-
terorum arbitrio regebat, refert D. Hieron. in
epist. 1. *Pauli ad Titum*, cap. 1. ibi: *In meo orbe*
decretum est, vt vnus de Presbyteris electus super-
poneretur cæteris, ad quem omnis Ecclesia cura per-
tineret, et schismatum semina tollerentur. Omnis
ergo hæreticus statim schismaticus est, quia ab
Ecclesia Romana secundum aliquid dogma per-
uersum se diuidit, cap. loquitur, cap. *aliemus* 24.
quæst. 1. Schismatici verò potest dari, si tan-
tùm unitati Ecclesie aduersetur. D. Augustinus
super Martham cap. 11. & sicut hæresis primò
& per se fidei oppositor, sic & schisma unitati
ecclesiasticæ, quam caritas operatur, cap. *schis-*
ma, 24. *quæst.* 1. cap. *Nonatimus*, 7. *quæst.* 1.
Schisma ergo est consensient cum crimine hæ-
reticos, quod vitiumque unitatem, communio-
nemque Ecclesie catholice violet, illud fide
hæret, illud charitate corruptum; tamen origine
magnopere differunt. Etenim hæresis lædit re-
galem fidei, ipsaque christianæ professionis fun-
damenta euerit. Schisma disciplinam ecclesia-
sticam labefactare nititur, & Episcopalem au-
thoritatem concutere, vt sione D. Basilus ad
Amphiloch. cap. 1. D. Hieron. ad *capit.* 3. *epist.* ad
Titum. Est ergo schisma peccatum contra obe-
dientiam, & charitatem, vt ait D. Thomas 1. 2.
quæst. 39. *art. 1.* non contra fidem, ideoque ab
hæresi diuersum, vt probat D. Augustinus. *lib. 2.*
contra

contra Crescen. cap. 3. & de fide cap. 10. contra Faustum lib. 20. cap. 3. Nullum tamen est schisma, præcipue durorum, quod sibi tandem hæresim uou confingat, ut recte ab Ecclesia recessisse videatur, *cap. inter, 24. quæst. 3.* Exemplum extat in schisma Donatistarum, *l. 4. C. Theodof. non sentiam baptisma.* Tales etiam fuerunt Greci, cum primùm ab Ecclesia Romana discesserunt, etsi postea suæ opinioni pertinaciter inhaerentes, inter hæreticos sunt connumerati: quare schisma hæreticis est inchoatum, ut explicat Suarez *lib. 1. in defens. fidei, cap. 28.* quare attento usu testatissimo schisma degenerat in hæresim, si innerserit. Inter hæresum sectatores, schismaticos connumerant D. Clemens *lib. 6. concilii, cap. 4.* D. Angustinus *epistol. 164.* & Patres Concilii Constantinopol. *l. generalis can. 6.* hæreticis adiunguntque schismaticos; postquam enim de hæreticis egerant, hæc verba subiungunt: *Ad hæc autem eos, qui sanctam quidem fidem confiteri præ se ferunt, abscessi sunt autem, & alibi quædam cum communione nostræ Episcopis conventus celebrant, Quem canonem latè explicat Petrus Marcha lib. 4. concord. Sacerd. & Imp. cap. 8.* Prosequuntur utinam hæresis, & schismatis Theophilus Raynaud. *tom. 10. in Corona aurea R. P. fructu 4. fol. 170.* Thomas Hurtadus *de vero martyrio resal. 24. 3.* Thomas Debene de officio. *Inquisit. dubit. 47. part. 1. & part. 2. dubit. 235.* Morinus *lib. 1. exercit. cap. 1. fol. 4.* Et Ant. Perez in *Pentateuch. fidei, cap. 1. dub. 11.* Maerdo de clauis. *Petrus cap. 1. dub. 11. in quæst. prævia, artic. 3.* Eymericus *part. 1. Directorij, quæst. 18.* isti enim, & similes, qui ob durationem in schisma diutius peccant, etsi hæreses palam non professentur, quia tamen recedunt ab obedientia Summi Pontificis Capitis Ecclesie, nec damnati ab Ecclesia redeunt, hæretici indicantur, quis ipsi pertinaciter satis aperte profitentur, Ecclesie capiti non esse obediendum, & extra Ecclesie unitatem salutem dari; quod absque hæresi affirmari nequit, *extranag. titam sanctam, de materia, & obediens. D. Thomas 2. 2. quæstion. 39. art. 1. & 2.*

Schisma diffinitur à D. Thoma 2. 2. *quæst. 39. art. 1.* quem omnes communiter sequuntur, ut sit *diffinitio, per quam quis se ab unitate Ecclesie separat, in quantum Ecclesia est corpus mysticum ex universis fidelibus ut membris, & Romano Pontifice tamquam capite constituitur.* Pro cuius expositione sciendum est, unitatem Ecclesie catholice in eo consistere, ut universi fideles apto quodam ordine inter se ut membra, & cum Pontifice eius capite connectantur, scilicet ut in fidele doctrina, cultu religionis, & in speciali regimine eorum in reliquis membris exerceat principatum, atque ea illi parent, ipsique subdita sint. Hæc autem unitas scinditur, cum schismatici nolunt se gerere tanquam membra huius corporis, ipi aliqui, vel aliquibus actionibus spiritualibus ad hoc Ecclesie corpus pertinentibus; vel dum recusant subiecti Romano Pontifici, ut docuerunt Caietanus 2. 2. *quæst. 1. art. 2.* Valentia 2. 2. *diffus. 3. quæst. 15.* Sanchez *lib. 2. summa, cap. 16. num. 1.* Diximus in diffinitione, schisma esse *diffinitivum*, loco generis, & ut cognoscamus non dari posse schisma, nisi præcedat vitæ, quia diffinitio supponit unitatem, & communionem, *l. 1. ff. si quis ff. de separatione, bonor. l. 1. ff. comm. dissol.* Unde Iudæ, & infideles non possunt in schisma incidere, quia Ecclesie unitatem nunquam habuerunt. Ricciolus

diff. lib. 7. cap. 1. num. 9. Cætera verba adiciuntur loco diffinitivæ, & ut cognoscamus schisma verum committi, quando quis ab unitate Ecclesie, & Romano Pontifice discedit quoad actiones spirituales. Vnde si quis in terris quoad temporalia subiectis Romano Pontifici illi non obediatur, non schismaticus, sed rebellis decedens est; si quidem ratio schismatici non consistit in quacunque Papæ obedientia, sed in ea, quæ respicit officium ipsius Pontificis quoad spiritualia. Inde etiam deducitur, non parentem Romano Pontifici aliquid prophatum, seu feculare lubenti, eius iudicium præstat ad laicum, non disschismaticum. Ricciolus ubi supra, *num. 12.* Nec etiam schismaticus dicitur, qui per ignorantiam dum duo certant de Sede Pontificali, illi adherens, qui postea in causa succubuit; quia eo casu non datur manifesta rebellio in caput Ecclesie, ut docuerunt Azor. *lib. 8. instit. moral. cap. 10. quæst. 4.* Sanchez *lib. 2. summa, cap. 36. in fine.* Vnde excusantur nonnulli pii viri, qui adhaeserunt per ignorantiam illis Antipapis, qui iudicio Ecclesie postea damnati fuerunt, ut probat Theoph. Raynaud. in *epitome, sect. 2. serie 1. cap. 7.*

Huius terribili criminis gravitatem expresse Sanctus Irenæus *lib. 4. cap. 62. vbi de Christi iudicio disputans ait: Inducunt eos, qui schismatici operantur, qui sunt immunes; non habentes Dei dilectionem, suamque sollicitudinem potius considerantes, quam unitatem Ecclesie, & propriam salutem, & quaslibet causas magnæ & gloriosæ corporis Christi considerant, & dividunt, & quantum in ipsis est, interficiunt, pacem loquentes, & bellum operantes, vere lignantes cultum, & carnalem transfigurationem; nulla enim ab eis tanta potest fieri correptio, quanta est pernicietis. Probat immanitatem huius sceleris latè Theophil. Raynaud. in *tract. de Pontifice, in prolegomenis, subnumerat. 3. fructu 4.* Et si cuiuslibet peccati atrocitas æstimanda est à gravitate vindicæ, cap. non offeramus 24. *quæst. 1.* quædam de testabile sit crimen hoc, cognoscitur ex penis, quibus illud Dominus vindicatur in Chore, Dathan, & Abiron, quos vivos terra absoruit, quia se à summo Sacerdote Aaron abalienarunt, ut legitur Numer. cap. 16. in Orta cap. 26. Paralip. in Ieroboam *lib. 3. Regum, cap. 12 & 13.* Quare per factos canones variis penis schismatici affliguntur. Primò excommunicantur, *cap. de Ligvibus, 23. quæst. 5. cap. nulli fas, 19. diff. quæ censuræ licet iure communi non esset latæ sententiæ; hodie tamen ipso iure incurritur, ex canone 1. Bullæ Cæne Domini, vbi ita cauetur: Necnon Schismatici, & eos, qui se à nostra, & Romani Pontificis pro tempore existentis obedientia pertinaciter subtrahunt, & recedunt.* Vbi plura Duardus, & Fragofo. Azor *part. 1. Instit. lib. 4. cap. 20.* Suarez de censur. *diffus. at. sect. 2. num. 12.* Sanchez *lib. 2. summa, cap. 36.* qui animadvertunt hac excommunicatione Bullæ non ligari fautores, defensores, receptatores schismaticorum, quia in supradicta bulla non recipiuntur, & excommunicantur fautores & ligantur tamen excommunicatione non recepti, ex textu in *cap. licet, de elect. cap. vnic. hoc tit. in 6. & nova constitutione Pauli IV. quæ incipit: Cum ex Apostolatus officio, excommunicantur, atqueque penis affliguntur fautores schismaticorum, ut notant Decianus *lib. 1. tract. crimin. cap. 65. n. 6.* & cap. 67. num. 2. Farinac. de hæresi *quæst. 284.***

5.
DA PONTIFICI
SCHISMAT-
TICIS.

4.
SCHISMA
TICIS

num 17. Etiam Schismatici à gradu, & dignitate, quam habebant, deiciuntur, cap. *subdiaconus* 40. cap. *qui contra* 24. *quest.* 1. hodie ipso iure, ex cap. *ut in hoc titulo* in 6. ibi: *Omnia beneficia, officia, honores, dignitates, & prelati per penam priventur.* Docuerunt Bonacina in *Bullam diffin.* 1. *quest.* 2. *punct.* 5. num. 12. Sanchez lib. 2. *summa*, cap. 36. num. 4. & inhábiles reddantur ad alia acquirenda, cap. *quia* 5. de elect. non tamen purus schismaticus, de quo agimus, ideo est irregularis, ut probat Gibalinus de *irregal.* cap. 4. *dist.* 2. Si Schismatici sunt laici, & nobiles, eorum loca publicantur, & nobilitate privantur, & Principibus secularibus puniendi corporaliter traduntur, *dist.* cap. de *Liquibus*, cap. *non vos* 2. *quest.* 1. cap. *denique* 7. *quest.* 1. cap. *didicimus* 24. *quest.* 1. Dubium tamen est, an Schismatici peccantes, & Ecclesie reconciliati, habiles reddantur ad beneficia ecclesiastica? Et habiles reddi docent Decianus lib. 5. *tract.* *crimin.* cap. 54. num. 15. *Tronus de hereticis* lib. 3. cap. 7. *Fatimae de heresi* *quest.* 189. & 193. Sed probabilius, & securius negant schismaticum Ecclesie reconciliatum adhuc habilem esse ad beneficia Ecclesiastica, nisi per Pontificem, aut vicem ipsius habentem fuerit dispensatus, Azor. 1. *part. in specul.* lib. 8. cap. 10. *quest.* 8. *Saechez lib.* 2. cap. 36. num. 18. Bonacina *diffin.* 3. *quest.* 4. de *charitate*, *part.* *utrum* 5. §. *num.* 10. *Puñz.* *part.* *direct.* *quest.* 42. *enunciatur.* 73. *Fatimae de heresi* §. 184. num. 35. Menoch. de *presump.* lib. 5. *presump.* 6. num. 24. licet tantum leuiter suspectos esse de heresi, defendat Duarum lib. 2. *Bulla*, cap. 1. *quest.* 156. *num.* 12. *Sotus in apophor.* lib. 1. *quest.* 10. num. 13. cum aliis, *Diana part.* 4. *tract.* 7. *resol.* 29. & hoc ex diuturnitate temporis estimandum esse, docet Bordonus *ubi supra*; omnes tamen illi fatentur cognitionem huius criminis spectare ad Tribunal Sancte Inquisitionis.

His suppositis ratio presentis assertionis ex eo procehit, nam cum Schismatici amittant gratiam Spiritus Sancti, & omnem potestatem in rebus ecclesiasticis, quia extra Ecclesiam totis sunt, cap. *didicimus* 31. 24. *quest.* 1. quomodo potest possint, quod ipsi non habent? & quid iniquius ab eo Spiritus sancti dona velle recipere, qui Spiritum sanctum non habent? divina ab his suscipere sacramenta, quorum meritum, ut ait sanctus Leo I. *epist.* 37. *so subtrahere mysteria*? Qui nec iuste ex date possunt, nec sine indebita potestatis usurpatione conferre. Facit specialis ratio ordinationis sacre; nam per eam accipimus spirituales, & eminentiorem in Ecclesia Dei gradum, ad quem contra Ecclesie dispositionem ascendere, rebellare est: & ab illeum ordinem accipere, quid aliud est, quam aduersus Ecclesiam militare, & altare contra altare erigere, dignitatem ipsam furari, regiminis gradum fraudulenter ascendere? Unde qui ab hereticis, seu schismaticis ordinantur, recte ab Innocentio I. *epist.* 21. appellantur rei usurpatz dignitatis, qui consuetudinem Sacramentorum libi vindicauerunt auctoritatem, quæ his nullà fuerat ratione concessa: à qua ratione non omnino abhorret D. Cyprianus *epist.* 71. ad Stephanum: *Nec debere eos reuocare ad apud nos ordinandos, & huius arma reuocare, quibus contra nos rebellauerunt.* Recte ergo in presenti Alexander decreuit, ordinationes factas ab schismaticis irritas esse, idest nullas quoad exercitium gradus collati; quia ordinationi ab schismaticis, sus-

peni sunt ab executione ordinis ita suscepti: debent tamen esse schismatici denunciati, & non tolerati ab Ecclesia, alioquin cum teneant facultatem conferendi ordines in functum fidelium, ideo recipientes ordines ab illis suo iure videntur, & nulla suspensione ligantur, ut docuerunt Suarez de *conf.* *diffin.* 31. *sect.* 1. num. 64. Bonacina de *conf.* in *particul.* *diff.* 3. *quest.* 1. *punct.* tot Gibalinus in *synopsi conf.* *littera O. inquir.* 2. qui recte docent, suspensionem hanc incurri etiam ab eis, qui ignoret ab schismaticis ordinati sunt, nec possint in ordinibus suscipere ministrare, nisi eum eis dispensatum fuerit per habentem potestatem, videlicet per Episcopum, si illi ignoranter promoti sunt; si verò scierint, per Pontificem, ut probat Barbosa de *potest.* *Episcopis alleg.* 45. *per totum.* Ut factum fuisse tempore schismatis, testentur, narrat Arnold. Labec. lib. 2. cap. 18. *Fallus est ergo conatus magnus Prælatum, & pergebat illuc multi ordinati a schismaticis, sperantes se gratiam Apostolicam inuenire.* Ex lib. 3. cap. 10.

Nec obstat ibitandi ratio super adducta, pro cuius solutione sciendum est ex D. Thoma 2. 2. *quest.* 39. *art.* 3. duplicem esse in Episcopis potestatem; alteram sacramentalem, aliam verò iurisdictionalem. Sacramentalis est, quæ per aliquam consecrationem adipiscitur, veluti potestas characteris, quæ consistit in consociando corpore Christi, & in ceteris sacramentis confectendis. Iurisdictionalis potestas est, quæ confectur per simplicis hominis iniunctionem, veluti facultas excommunicandi, absoluit, & concedendi indulgentias. Inter has duas potestates illa veritas differtentia, quod potestas sacramentalis confertur à Deo indelebiter per characterem, ut docent in presenti Hostiensis, Butrius, Abbas, & Ananias; ideoque remanet semper immobilis, siue Episcopus labatur in schisma, siue in heresi. Inde etiam proeuit, quod Episcopus etiam degradatus, vel si renouauit Episcopatum, validè, & cum effectu ordines confectat, ut probatur in cap. 1. de *ordinat.* ab *Episcopo qui renouat.* Deinde sciendum est, alia esse sacramenta, quæ nullam executionem desiderant, quia tantum gratia in eis habetur pro executione; qualia sunt Baptismus, Pœnitentia, Vnctio sacra, quæ simul ac conferuntur, secum afferunt executionem: alia sunt quæ vltra gratiam expectant executionem, quia consistunt in agendo, ut sacramentum Ordinis. Quibus suppositis rationi dubitanti satisfaciendum est asserendo, quod licet schismatici, quia extra Ecclesiam sunt, non possint validè ea, quæ sunt iurisdictionis exercere, ut excommunicare, indulgentias concedere, & similia; tamen quæ proeunt à potestate characteris, etiam non licitè, validè tamen conferunt, quia talia potestate nec heretici, nec schismatici ab Ecclesia priuari possunt; sed quia ipsi suspecti sunt, executionem, seu executionis ordinis collati date non possunt, & ita suspensi sunt ordinati ab schismaticis. Nec exinde inferas, dati extra Ecclesiam sacramenta, quæ vera, & licita dari non possunt; sed quia tam heretici, quam schismatici retinent potestatem characteris, ideo validè, etsi illicitè, ea potestate videntes, sacramenta conferre valent. Inde etiam facile responderet augmento ipsius dubitandi rationis, quod expendebamus ex sacramento pœnitentie ab schismaticis administrato; nam dispar ratio versatur in sacramento pœnitentie,

7.
DISCIPULI
TUE PUN-
TANTER
TIO.

6.
TRADITUR
LATIN DECE-
RANDI.

ac in sacramento Ordinis : tum quia sacramentum penitentiae non nisi ab habente iurisdictionem valide confertur potest, qua iurisdictione schismatici ab Ecclesia denunciati priuantur, unde sacramenti penitentiae ministri idonei non sunt, cum tamen sacramentum Ordinis, quod iurisdictionem non requirit, ut valide confertur possit, sed solum eminentiam sacerdotij, seu Episcopalem potestatem, conferre queant : tum quod in sacramento penitentiae nihil datur praeter gratiam, quam tantum abest, ut quis ab his consequatur, qui ab Ecclesia vultate defectuerunt, ut potius qui eis communicat, noui criminis contagione polluantur : at in Sacramento Ordinis praeter gratiam datur character spiritualis, quem nulla peccati fordias impedit, quominus animae suscipienti imprimi possit. Vnde non omnino inania, & irrita est ordinatio ab schismaticis ab Ecclesia praecisus facta, sicut est irrita absolutio penitentis ab iisdem prolata. Nec obstat vltimum augmentum ipsius dubitandi rationis ea praesentiatu, & alia supra telata, ubi ordinationes factae ab schismaticis dicuntur irritae, inanes, & vacuae. Quibus omnibus respondendum est, eas ordinationes vacuas esse quoum ad eacognitionem ordinis, seu gradus collati ; sed reuera validas esse propter Ecclesiae fidem, & sacramenti dignitatem, quae de fide, vel bonitate ministri non dependet : & ita quoad substantiam, & characterem valide Sacramentum Ordinis ab schismaticis administratur, sed quoad caecutionem gradus recepti, vacus, & irrita dicitur talis ordinatio.

Ex qua doctrina, & distinctione explicandae sunt variae auctoritates à Gratiano transcriptae, in quibus doceri videtur, ordinationes ab haereticis, & schismaticis factas, vacuas, & inanes esse, quae accipiendae sunt de nullitate quoad exercitium, siquidem etsi valide, & cum effectu ordinati characterem recipiant, non tamen habent caeretium, quia suspensi sunt : quo modo accipiendi sunt textus in cap. Arriansi 73. cap. vltimum c. 8. t. 1. quast. 1. cap. in Ecclesia 68. cap. qui possessionem, ead. quast. Et licet in cap. per illicitum, cap. Daubertum c. quast. 7. dicatur ordinationes factas ab haereticis iterandas esse, & tamen tamen illi procedunt, quando haeretici non seruant formam ab Ecclesia praescriptam, nam cum tunc ea defectu formae substantialis sacramentum nulliter, & inualide administratur, merito iterandum est, seu de nouo administrandum, non quia ab haereticis collatum est, sed ob defectum verae, & necessariae formae, ut contingit in baptismo dato, & collato rite ab haereticis, ex Concilio Florentino in Decreto de sacramentis, & Trident. sess. 7. can. 4. autamen si collatus sit ab haereticis etiam

tibus in forma baptismi, ut errabant Paulianistae, cap. Paulianista 53. t. quast. 1. iterari debet, iuxta statum in cap. quae de Pagani 32. de consecr. dist. 4. & ita etsi ordinationes factae ab haereticis valide sint, cap. quom quidam 97. 1. quast. 1. tamen si contra debitum Ecclesiae formam datae sint, iterari debent, ex dist. cap. Daubertum, dist. cap. per illicitum.

Sed supra traditis obstat difficultas sententiae Urbani II. Pontificis in epist. 17. Praeposito sancti luuentij missa, quae erat tom. 3. Concil. In illis verbis : *Ceterum schismaticorum, & haereticorum sacramenta, quoniam extra Ecclesiam sunt, iuxta Sanctorum Patrum traditiones, scilicet Pelagij, Gregorij, Cypriani, Augustini, Hieronymi, formam quidem sacramentorum, non auctum virtutis effectum habere profitemur, nisi cum ipsi, vel eorum sacramentis iniuncti, per manus impositionem ad catholicam redierint unitatem.* Ea quibus verbis aperte deducitur, sacramenta ab schismaticis collata omnino nulla esse, & noua manus impositione indigere. Ergo non recte asserimus sacramentum Ordinis ab schismaticis collatum, quoad substantiam, & characterem validum esse, licet quoad exercitium irritum, & vacuum iudicetur. Pro cuius difficultatis solutione dicendum est, verba illa, *formam sacramenti habere, sed non virtutis effectum*, ita accipienda esse, ut quoad substantiam valida sint sacramenta ab schismaticis collata, sed gratiae effectum non conferant, nisi per manus impositionem reconciliatoriam ita ordinati communioni Ecclesiae restituerent, & similiter ordinantes : quo casu, quae ab his conferuntur sacramenta, non solum valida erunt, verum & suscipientibus profutura, cum ante haec reconciliationem tata quidem sit, sed suscipientibus obstat potius, quam profuit, ob communionem scilicet veitiam cum haereticis, & schismaticis, quorum communio praeteritum prohibetur, quia duo haec crimina, haereticis, & schismaticis Ecclesiae Catholicae unitatem praeter ceteris criminibus dissoluit. Itaque censuit Urbanus II. sacramenta ab his collata valere, effectum autem gratiae ab his non obiecti, nisi postquam vel ipsi Ecclesiae communioni redditi sunt : quo casu communis iure iam his licet potestare, quam in haereticis, vel schismate retinuerunt, Ecclesiam in communionem rei, vel postquam ij, qui ab illis sacramenta susceperunt, de communionem temere usurpata penitentiam egere : in quo alio caso recedente huiusmodi sacramentum valide collatum, sed illicitè receptum trahit : ut quod ad condemnationem receptum trahit, incipiat prodesse ad veniam, & ideo requiritur eo casu manus impositio, reconciliatoria videlicet.

9.
EXPOSITUM
29157. 57
VARIA II

8.
EXPOSITUM
774 VARIA
1744.

TITVLVS IX.

De apostatis, & reiterantibus baptisma.

CAPVT PRIMVM.

Alexand. III.

PRÆTEREA clerici, qui relicto ordine clericali, & habitu suo, in apostasia, tanquam laici conuersantur, si in criminibus comprehensi teneantur, per censuras ecclesiasticas non precipimus liberari.

NOTÆ.

1. **A**lexander III. ita etiam legitur in prima collectione, sub hoc titulo, cap. 2. ubi additur, *per capitulum Presbyterium*; unde constat in presenti textu pattem textum in cap. presbyterium, de clericis agere, cap. 2. ne clerici vel monachi: & integra Decretalis extat post Concilium Lateranense, part. 16. cap. 15. & 16. ubi legitur, Eugenius Papa Saresi Episcopo: sed legendum est; Eugenius III. ut iam notum in cap. 2. ne clerici, vel monachi. Andreas Saxius in Panopli. cleric. 2. part. lib. 7. cap. 1. credit legendum esse Saresiensi, quæ Sedes Archiepiscopalis est in Sardinia, dicta Sarsenensis. Sed retinenda est vulgaris littera, quæ habet Saresiensi, ut iam notum in cap. 2. de cleric. agere. nec Sarsenensi legi potest, siquidem Salar ciuitas Sardinie Cathedralis Archiepiscopalis ex Ecclesia Turritana in eam transiit, de decore fuit ab Eugenio IV. anno 1447 ut refert Bonfanti in hislor. Sardinia lib. 13. cap. ult. §. 15. Unde temporibus nostri Eugenij III. nec Cathedralis Episcopalem habebat, & ita præsentis inscriptio restituenda est, Eugenius III. Saresiensi Episcopo.

2. **C**lerici.] Glossa in cap. tunc, verbo Tolerandi, hoc tunc, Bona in 1. 2. quæst. 82. dub. 3. existimant in presenti clericorum nomine intelligi tantum eos, qui sunt in sacris ordinibus constituti, non vero primam tantum tonsuram initiati. Mouentur ex eo, quia in presenti textu agitur de clericis, qui relicto ordine clericali vel laici incedunt: sed prima tonsura initiati, ordinem clericalem non habent: igitur de cis non sensus Alexander III. Sed conatiarius verius est; nam clericorum nomen, etiam cum agitur de clericis habentibus ordinem clericalem, comprehendunt clericum primam tonsuram initiatum, ut probatur expressè ex cap. quoniam, 69. dist. 6. & ex eo, quod illos omnes, qui laici non sunt, sed à vulgo selecti, & in sortem Domini adscripti, ordo clericalis comprehendit, cap. clerici, 21. dist. cap. quoniamdam, 23. dist. cap. 1. cap. Episcopum, de prebendis, cap. ubi periculum, §. præterea, de elect. Facit Concilium Tributense can. 27. ibi: In Synodo Chalcedonensi, capite primo statutum est, ut clericus, qui semel in Clero deputatus fuit, neque ad militiam, neque ad aliquam venientem dignitatem mitteretur: & hoc sentientes, & participantem non agentem, quo minus redeant ad hoc, quod propter Deum primus elegerat, anathematizari. Nos autem eandem

sequentes canonicam auctoritatem, statimus, ut clericus ecclesiasticæ nutritionis in Ecclesia carum populo, vel legens, vel cantans, si postmodum relicto clericatu habito, à castro Dominico, quibus adscriptus est, profugus, & apostata elabatur, & ad sacrum regreditur, ab Episcopo canonici coercetur, ut ad finem maris Ecclesia reuertatur. Quod si in hoc indisciplinatus priuatur, ut comam maris, constringatur, ut iterum detineatur, & postea nec uxorem accipiat, nec sacrum ordinem attingat. Si vero hic bini sancti Concilij relictionis destinationi, secundum præsentiam Chalcedonensi Capituli constitutionem anathematizetur. Sanctius istudum tales hippocentaurus dicti esse similes, qui nec equi, nec homines, atque quasi bruta animalia, libertate, ac desiderio suo feruntur. Unde in cap. cum conuincat, de iure & qualis, dicitur: Ordo clericalis per primam tonsuram confertur. Et in cap. degradatio, de penus, dum agitur de personis, quæ degradari debeant, dicitur degradatioem debere fieri vsque ad primam tonsuram: & in Pontificali Romano, dum recensetur ordo degradationis à prima tonsura, ita legitur: Auctoritate Dei omnipotentis, Patris, & Filij, & Spiritus sancti, ac nostra, tibi asserimus habitum clericalem, & nudamus te Religionis ornam, ac deponimus, degradamus, & spoliamus te omni ordine, beneficio, & privilegio clericali, & velut clericatus professionem indignum, redigimus in seruitutem, & ignominiam habitus secularis, ac status. Et infra: Pronunciamus, ut hunc exutum omni ordine, ac privilegio clericali, Curia sacrorum in suum forum recipiat degradatum. Igitur quia prima tantum tonsura initiatus est in ordine clericali. Nec obstat quod quiescentque in iure recententur clerici, non enumerantur primam tantum tonsuram initiati, ut in cap. illud, 27. dist. cap. à Subdiacono, 93. dist. & expressè videtur docti in cap. clericus 6. de iure & benef. cleric. ibi: Clericus si tonsuram dimissis uxorem acceperit, qui quidem sine gradu est. Igitur si prima tonsura initiatus sine gradu clericali fuit, non possunt comprehendit presenti textu, siquidem in eo agit Eugenius de clericis, qui in clericali ordine erant. Nam omnis quæstione, an videlicet prima tonsura ordo sit, quam fuit disputant D. Thomas in 4. dist. 140. q. 3. art. 1. Bellarminus tom. 1. conuol. lib. 1. de cleric. capit. 13. Sanchez lib. 7. consil. cap. 3. dub. 65. Layman in summa, tit. de ordine, cap. 5. num. 5. Marchionis end. tract. tract. 1. quæst. 1. cap. 7. n. 1. Andreas Saxius p. 1. Panopli. cleric. feri per totam, Hallierius

Hallierius de sacris elect. scil. 2. cap. 1. ex veteri sententia dicendum est, propriè, & strictè primam tonsuram non esse ordinem, sed præviam dispositionem ad ordines, cuius cooptationis ratione ita tonsuratus dicitur habere ordinem clericalem, & per consequens frui privilegio canonis si quis suadens 17. quæst. 4. vt probat Barbosa lib. 1. iuris eccles. cap. 39. §. 2. num. 2. privilegio fuit ex cap. clericum 15. quæst. 2. cap. vnic. de cleric. coniug. lib. 6. vt infra dicemus, & ita rectè comprehenditur præsentis decisione. Nec obstat textus in dist. cap. clericum 6. qui accipiens est de gradu sacro, quem verè non habet primà tonsurâ initiatus, vt in eius textus notis præbui.

COMMENTARIUM.

3.
CONCLUSIO
TRADITUR
ST PROBATA.

EX hoc textu sequens communiter deducitur assertio: Clerici qui dimissi habitum clericalem, vel lascii commensurati, priuamur privilegio fori, & canonis. Probant eam textus in cap. final. 30. dist. cap. si autem 11. quæst. 3. cap. 3. 30. quæst. 3. cap. sine ornatu 1. cap. precipimus 22. quæst. 4. cap. perpendimus, cap. coniugit, cap. cum non ab homine, cap. in audientia 43. de sentent. excom. cap. 1. de vita & honest. cleric. in 6. Clement. 1. cod. in cap. vnic. de cleric. coniug. cod. lib. Concil. Andeg. can. 8. ibi: Clerici, qui relicto Clerice ad secularium militum, & ad laicos conuenerint, non iniussu ab Ecclesia quam reliquerint, amoueantur. Concil. Toleranum sub Sixto IV. anno 1473. can. 14. Vt qui susceperit professionis habitum designauerit, privilegio gaudeant sibi concessi, nec nostri iuris auctoritas, nec ordo exigat rationis; frustra enim auxilium legis inuocat, qui committit in legem. Et infra: Sacro approbante Concilio statumimus, vt de cetero prædicti clerici, tam coniugati, quam non coniugati, tonsuram quantitatis vnus regulo, & vestem superiore non vrigant, nec epartum, ad mediocritatem sibi, vel fore declinationem, conferant congruentem: non autem differentes eiusmodi habitum, si fuerint coniugati, eo ipso; si vero non coniugati, & excessibus, & commensationibus se ingesserint, privilegium omnino amittant clericale. Illustrant vltra conceptos in præsentis à Barbosa, & de iure eccles. lib. 1. cap. 39. num. 73. Ant. August. lib. 8. in epis. tit. 47. Andreas Saulay 2. part. Panopl. cleric. lib. 7. cap. 1. Fernosinus in cap. eam non ab homine, quæst. 25. de iudiciis, Balboa in cap. 2. de iudiciis, num. 122. Pecceya 2. part. de mon. Regia, cap. 16. Layman lib. 2. summa, tract. 1. cap. 13. Farinac. de heres. quæst. 81. Petrus Gregor. lib. 1. part. tit. 5. cap. 7. Riccioli de iure person. lib. 7. cap. 1. cum sequens. Couart. practica. 9. §. 1. Diana part. 1. tract. 2. resol. 51. Germonius lib. 3. de sacram. inmundi: lib. 3. cap. 15. Martha de iurisdic. part. 1. c. 2. c. 1. c. 153. Suarez aduersus Regem Angliæ lib. 4. cap. 28. Acuña dist. cap. final. 50. diff. Eicobas de Pontificia iurisdic. cap. 21. §. 5. Vtriusque in Pastoral. Regulari. r. 3.

Sed pro dubitandi ratione in præsentem affectionem ita insurgo: Exemptio clericorum à iurisdictione seculari provenit à iure diuino, inxta placitum sententiam, quam tenui in cap. clerici 8. de iudiciis: & tale privilegium fori concessum est in fauorem totius status clericalis, quare à clerico renuncianti non potest, ac etiam expressè ipsè consentiat in iudicem secularem, ab eo iudicari; aut puniri non valet, vt probauit in cap. si diligenti, de foro competeri. Igitur nec habitum, seu

tonsuram clericalem dimittendo poterit indea secularis aliàs incipere illum condemnare; nam si expressè in eum consentire non potest, minus valebit eius iurisdictionem prorogare, tacitè factò ipso dimittendo habitum clericalem. Augetur primò hæc dubitandi ratio ea eo, nam inierit modò descendendi statum clericalem, præcipuus est matrimonij contractus, cap. 1. cap. diuersis de cleric. coniug. probat Riccioli ad dist. lib. 7. cap. 1. per totum: sed clericus coniugatus adhuc post matrimonium contractum tenet privilegium fori, cap. vnic. de cleric. coniug. lib. 6. Trident. sess. 23. de reform. capit. 6. latè probat D. Joseph. Vela tom. 2. differt. 45. ergo quia dimittens habitum, & descensum statum clericalem, fori privilegium non priuatur. Augetur secundò, nam clericus, quantumvis enommatibus deditus sit, non amittit privilegium fori, nisi ter monitus non respiciat, cap. coniugit, cap. in audientia, de sentent. excom. probauit in cap. final. de vita & honest. cleric. Igitur etiam dimittat de facto habitum, & tonsuram, dum tamen non sit ter monitus, non amittit privilegium fori, & per consequens defendi debet per Ecclesiam in causis etimialibus.

Quà dubitandi ratione minimè obstante, vera est præsentis assertio, pro cuius expositione sciendum est, apostasiam vocem Græcam esse, & Latinè significare desertionem, & ita apostatam idem esse ac desertorem, L. desertorem, ff. de re milit. & præuicatorum Latinè dicti, qui Græcè apostata appellatur, notauit sanctus Ambrosius sermon. 15. in Psalmum 218. vers. 7. qui rectè docet, apostatam, & apostasiam Græcæ voces esse: & quauis utriusque extrema pars affinitatem habeat cum Latinis vocabulis à fraudè deductis; tamen vtriusque initium purè Græcum est. Itaque vox apostata planè Græca est, idem sonans, quod desertor. Sanctus Augustin. lib. 20. de ciuit. Dei, cap. 19. refugam dicit. Hebræi Apostatam Belial appellant, vt illustrat Theophilus Raynaudus tom. 1. tract. de apostasia, cap. 1. per totum, Beyerlin. tom. 1. in theatro, verbo Apostasia, Suarez de fide disputa. 16. scil. 5. Varias apostasias differentias recensuerunt repetentes in præsentis, D. Thomas 2.2. quæst. 12. art. 1. sed iuxta diuisionem, quam tenui in eam. 46. Concily libror. apostasia, quæ in præsentis titulo improbat, triplex est; alia perdidit, quæ est desertio fidei Catholice, de qua agemus in cap. quidam, hoc titulo, alia à religioso statu semel tñto per professionem, aut substantialia religionis vota, de qua agemus infra in cap. perit, & final. Tertia quæ committitur per defectionem à clericali statu, videlicet per matrimonium, militiam, vel habitum clericalem dimissionem, de qua in præsentis, & in cap. rui, hoc tit. agendum est: & de his tribus modis defendendi habitum clericalem agit Riccioli lib. 7. de iure person. per totum, & nos alibi, videlicet de matrimonio à clericis contracto in cap. 1. de clericis coniug. de clerico militie nomen dant in cap. final. cod. sit. & ita in præsentis causam agendum est de apostasia, quæ coniugit per dimissionem habitus clericalis. Et prius sciendum est, dubium esse, an talis apostasia committatur à clericis in minoribus ordinibus constitutis, vel tantum primà tonsurâ initiatis. Et negant Iñanes in 2.2. quæst. 12. dubitat. 3. Hostiens. & Abbas in cap. 3. loc. citato, Decianus lib. 5. tract. crimin. cap. 73. num. 24. Couart. de spons. 2. part. cap. 9. §. 3. num. 2. Menoch. de arbit. casu 346. num. 32. apostasiam ab ordinis

5.
APOSTASIA
ST APOSTATA
RUE SIT
MON.

4.
CONCLUSIO
TRADITUR
ST PROBATA.

ordine clericali locum habere in clericis primam tonsuram initiatis: mouetur exemplo nonnorum religionis cuiuslibet, qui sunt in statu incipientium respectu status clericalis; siquidem prima tonsura est dispositio ad ordines: sed nouitius ante emissam professionem retrocedens, non apostata, nec desensor religionis creditur: ergo similiter clerici tonsuram dimissa, & abiecto clericali habitu, ut laici incedentes, apostatae diel nequeunt, præcipue cum iure permittente hoc faciant, ut probant in cap. clericus 6. de vita & honestate clericorum. cap. 1. de clericis coniug. Verum contrarium expressè docetur in presenti textu, ibi: *Apostasia*. Et textum hunc procedere etiam in clericis minoribus gradibus initiatis, seu tantum primam tonsuram, probant *Saulay in pampul. clericali, lib. 7. cap. 1.* Dualius de fide quæst. 8. Nec obstat fundamentum contrarie sententiæ; nam par ratio non est in nouitio retrocedente à religione, ac in clerico primam tonsuram initiato desensore status clericalem, quia per tonsuram clericis militiæ ecclesiasticæ, & statui clericali longè sctiori iure adscribitur, quàm religioi monasticæ per habitus susceptionem ordinis deuincitur; siquidem initiatus primam tonsuram in sortem Domini transit, unde clericus dicitur, ut supra probant; nec tonsura ipsa iterari valet, aut ab ea deiici iam initiat; quæ omnia è contrario procedunt in nouitio, qui per habitus susceptionem non efficitur religiosus, & à Prelato expelli potest, & ipse æterni nouitium iterare. Unde cognoscitur, stultitiam mancipari clericum per primam tonsuram statui clericali, quàm nouitium religioni per habitus susceptionem; quare quid mirum si in desertione status clericalis apostasia committatur, non verò in recessu nouitij à religione. Nec obstat clericum primam tonsuram tantum initiatum ex iura promissione habitum deserere posse, etiam matrimonium contrahendo, iuxta tradita in cap. 1. de clericis coniug. nam tamen de tantum euincitur, ipsum non esse cogendum reassumere habitum clericalem, aut potius apostatae teneri, ut contingit clericis in maioribus ordinibus constitutis, ut dicemus infra in cap. 100; non tamen inde deducitur, eum seui posse privilegio fori, quod competit tantum clericis desertentibus tonsuram, & habitum clericalem, ut infra dicemus: peccareque lethaliter ipsum propter apostasiam ioceriorem, si ex contemptu, aut sine causa ab statu clericali discedat, docuerunt Dualius, & Saulay supra. Manet ergo, clericum in minoribus ordinibus constitutum, aut tantum primam tonsuram initiatum, habitum desertentem, apostasiam committere, non tamen cogi habitum reassumere: nec contrarium docetur in cap. clericus, de vita & honestate clericorum, cuius veram interpretationem dedi in eius nota.

6.

DE PRAT-
LACIO FORI
TONTURAM
TIS COM-
MITTA.

Deinde sciendum est, omnes clericos, tam in sacris, quàm in minoribus ordinibus constitutos, in clericali statu perseverantes, plenè, & integre privilegio fori gaudere, oisi per crimina illud amittant, ut probatur ex cap. 1. de foro compet. ibi: *Nec presbyterum, nec diaconum, aut clericum talem, aut iunioris Ecclesiæ*. Et cap. cum non ab homine, de iudiciis, in illis verbis: *Clericus cuiuscumque ordinis*. Et ibi: *Clericus in quocunque ordine constitutus*. Faciunt textus generaliter de omnibus clericis agentes in cap. de persona 21. quæst. 1. autem. *Cassa, C. de sacrosanct. Ecclesiis, autem, item nulla, C. de Episcopis, &*

Clericis. Omnes enim speciali titulo Deo sunt addicti, de cuiusque familia effecti, & diuino cultui consecrati: licet enim inter ipsos clericos existat differentia quoad consecrationem maiorem, vel minorem, seu magis, aut minus sacrum ministerium, hoc non sufficit, ut inde euocatur, quosdam magis exemptos fuisse ea vi facti diuini, quosdam minores, ut ostendit *Naugatus in cap. nouis, de iudic. not. 6. num. 30.* Sin autem privilegium inspiciatur, quareos per las ecclesiasticum imitari potest, quoad personas nulla inuoluit differentia inter clericos in sacris, & in minoribus constitutos, dummodo in statu clericali perseverent: quod non obscure deducitur ex cap. 1. de foro compet. & ex cap. si diligenti, cod. si quis, in illis verbis: *Tui collegii ecclesiastico indultum*. Quibus dubium non est, quin etiam clerici solius primæ tonsuræ comprehensi sint omnes; etenim clerici pertineant ad collegium ecclesiasticum, cum datum non sit privilegium hoc huius, vel illius ordinis initium, sed tantum status clericalis: quam quidem exemptionem plenam, & integram esse debere, manifestè probatur ex supra dictis iuribus, tam quæ exemptionem in criminalibus, & civilibus, quam quæ immunitatem à tributis concedunt. Sed non perperam addidi, clericos in clericali statu perseverantes, ut cognoscatur discrimen statui inter clericos maiorem, vel minorum ordinum; nam et si in omnibus clericis commune sit, ut inelutibilem chartæ æternæ accipiant, nihilominus quoad perseverantiam in statu, & munere clericali ordines sacri maiorem inducant stabilitatem; clerici enim in sacris ordinibus constituti coguntur in eo manere, ita vi fide facto deserant, reassumere habitum constringuntur, ut dicemus infra in cap. 100; clerici verò minoribus ordinibus initiati liberè possunt statui clericali reuertari, oegoniis secularibus se immiscendo, aut matrimonium contrahendo, cap. 1. cap. Ioannes, de clericis coniugatis.

Unde ptouenit, ut clerici in sacris constituti, absolute, & absque ulla conditione, ea vi sacri ordinis privilegio fori porantur; talis enim ordo dicit perseverantiam in statu clericali, & supponit consequenter privilegium fori, iuxta tradita in cap. clericus 8. de iudiciis. Inferiores autem ordines cum per se non obligent, nec inducant perseverantiam in illo statu, non sufficiunt ad inducendum privilegium clericale, sed conditiones alias exposcunt, quæ ostendant in minoribus initiatum in eodem statu permanere, in quo diuino cultui, & Ecclesiæ deservit: quæ fuit possitima ratio huius privilegij, idque planè significauit Trident. sess. 23. de reform. cap. 6. dum decreuit, nullum primam tonsuram initiatum, aut in minoribus ordinibus constitutum, ante decimumquatuor annum beneficium obtinere posse; sed neque fori eum privilegio gaudere, oisi beneficium habeas ecclesiasticum, aut clericalem habitum, & tonsuram deserens, alicui Ecclesiæ ea mandato sui Episcopi inferuiat, vel de eius licentia in Seminario existat, aut clericorum schola, videlicet aliqua uoluerint, quasi in via ad maiores ordines suscipiendos. Ea quo decreto constat, clericos in minoribus ordinibus constitutos, ita demum clericali privilegio gaudere, si ecclesiasticis ministeriis aduocati sint, siue ut proxime dicebamus, si in clericali statu perseverauerint: cuius perseverantie duos modos Concilium

7.
Da esse
causam
non
comitti
tra.

clitum distinctis, singulos per se sufficientes, eum
distinctione apponantur. Primus est si clericus mi-
noribus initiatus beneficium ecclesiasticum ha-
beat; hac enim conditione suppositi Conci-
lium perfectantiam in eo statu, vel saltem ani-
mum necessarium, ut iuste beneficium, eiusque
fructus retineantur, *cap. commissi 33. vers. Ca-
terum, de elect. in 6. cap. beneficium sui naturæ
perpetuitatem debeat, cap. Sanctorum, 70. dist.
cap. unic. de appel. monach. lib. 6.* beneficij verò no-
mine in eo decreto Concilij ad effectum huius
privilegij clericalis pensionem non comprehendit,
certum est, tamen aliis solum pte beneficio ha-
beri, *cap. ad audiendum 31. vbi notat, de re-
scriptis.* & ita congregatio Cardinal. declaravit,
eui declarationi in praxi statum esse docuit Gar-
cia de benef. *et si in puncto iuris de huius sen-
tentie veritate non male dubitet P. Suarez contra
Regem Angliæ cap. 27. num. 11. Iuris prosequan-
tur Pereyra part. 2. de manu Regia, cap. 26. D. Jo-
seph. Vela tom. 2. differt. 45. per totam.* Aliet mo-
dus est, si clericus in minoribus constitutus, ton-
suræ, & habitum clericalem deferat, & ad in-
staurandum alieni Ecclesiæ per Episcopum desti-
natus sit, vel aliis ex eius licentia disponatur ad
clericale obsequium: qui modus eum tres conti-
neat qualitates copulatim possitas, verificari quo-
ad omnes debet, ut privilegium locum habeat,
ex regula legis *si heredi priores 5. ff. de condit. insti-
t. 5. penult. Insti. de hered. insti.* innatq; regula textus in
*cap. cum dilecta 12. iunctis notatis à Felino ibi:
num. 6. de re scriptis:* & ita Cardinalium declaratio
Congregatio, ut refert Suarez *differt. cap. 27. n. 12.*
vbi rectè post Couarruiam, & alios eas duas
prietores declarat qualitates, habitus & tonsuræ,
ut eorum concursus sit in plurimum tantum, non
verò perpetuo, ac permanentes desideretur, & in
casu dubio iudicij ecclesiastici sit declaratio, iuxta
textum in *cap. si index laicus, de sent. excom. lib. 6.*
Prosequuntur Couarr. *præfatic. cap. 31. Pereyra, &
Vela ubi supra.* Tandem addidimus in calce supe-
rioris sententiæ, *nisi per crimina illud amittant.* Ex
quibus deducitur, privilegium clericali gaudere
etiam clericum eum, qui per aliquod tempus illo
caruit, vel per sententiam priuatus est, non utique
ob delictum aliquod, sed ob defectum prædicta-
rum conditionum, seu qualitatum, vel alicuius es-
cia, si postmodum ob eorum concursum ad illud ad-
mitteri desideret. Nec enim ius commune, aut relata
Tridentini dispositio ipsum excludit; nam quod
ad ius commune attinet, constat clericum in malo-
tibus ordinibus constitutum, tantum ob certa gra-
uissima crimina postea referenda eis priuari; mino-
ribus verò tantum initiatum, ob defectum dictarum
qualitatum. Quod ad Concilium attinet, id utique
non prius perpetuo eos, qui qualitates in eo præ-
scriptas non sentiant, pro privilegio; sed pro eo
dimittasat tempore, quo eas non seruauit sunt enim
illæ quædam proprie conditiones, quarum ea est
natura, ut interim dum implentur, tantum actum
suspendant, nec illi locum faciant, postmodum verò
eum perfectiant, *l. priuatis 7. l. actus conditio 9. L. non
omnes 19. l. pecunia 3. l. ad finem 8. ff. de rebus creditis,
L. hac traditio 7. ff. de contrahend. emptio, l. si quis sub
conditioe 8. ff. si quis missis causâ testam. l. legat. 41.
l. qui heredi 44. l. Manius 45. ff. de condit. & de-
monstr. l. eundem diem 113. ff. de P. S.* Nec privile-
gium illud amittitur dici potest ex eo, quod cleri-
cus, qui cum eo fuit potuit, qualitates illas seruauit,
non est eo vius, eisdem fenelare videtur, argu-
D. D. Goucal. in Decretal. Tom. V.

mento legis *sed est suspensio 32. ff. de iudiciis, & cum
inter monasterium 20. de re iudicata:* nec ei post-
modum ad illud regressus dandus videbatur, ex eisdem
iuribus, iuncta lege *regula 14. 5. si veniderit,
ff. de adit. edict. c. quam periculum, in fine 7. q. 1.*
cum quia regula dictæ legis *sed est cum* similibus,
proceat in iuribus, vel remediis, quæ cum eorum
omissione non comparantur, ut quibus certi tem-
poris metâ præfixa est, ut proponantur in iudicio
quorum neutrum accidit in præfati casu, sed so-
lùm adiungunt dictæ conditiones, quibus quomo-
docunque concurrentibus, tamen antea defec-
tint, locus privilegio superfit. Tum etiam quia bu-
iusmodi privilegium non est eius nature, ut te-
nuerit ad clericum possit, cum toti ordini clericali
sit publicè indultum ut tale, quo non possit aliis
clericis priuari, quoniam si ob crimina illo stat indig-
nus, ali pro præterito tempore, quo qualitatibus
à Concilio requisitis destitutus fuit, non pro fu-
turo, quo concurreat simul in eo incipiunt, argu-
mento textus in *Clement. de vita & honest. cleric.
docet Syluester verbo Excommunicatio, num. 23.
Suarez differt. cap. 27. num. 17.*

His suppositis apparet iam ratio præfatis deci-
sionis; nam eum privilegium fori ita demum com-
petat clericis primâ tonsuræ, seu ordinis minori-
bus initiatis, si perseuerent in statu clericali, quæ
perseuerantia præcipuè cognoscitur ex delatione
tonsuræ, & habitus clericali; ideo qui abiectio cle-
ricali statuto, & dimisso habitu, ut laici inter laicos
conuersatur, indignus reddatur prædicti privilegij.
Facit ratio ad huc à Pontifice in *cum audientia, de
sent. excom.* quia videlicet frustra à Ecclesiâ privi-
legium fori petit, qui peccat in ipsam Ecclesiam,
contra sacros canones prohibentes illis deferre ves-
tes laicales: de quibus *egit in c. clericis, de vita &
honest. cleric.* Facit ratio textus in *Litem apud Labren-
tem, 6. si quis virginem, ff. de iniuriis:* quam expendit
Pontifex in *cum audientia:* & quoniam in iure re-
petiunt interdicius clericis usus certarum vestium,
ut probat in *differt. cap. clericus, de vita & honest.*
tamen non repetitur certus, & determinatus ha-
bitus, quem ipsi clerici de necessitate teneantur ha-
buere; ideo eas vestes dicimus esse clericis con-
gruentes, quæ à communi usu, consuetudineque
prohineat, in qua commotantur, repetuntur ad-
mixtæ, ut probat Glossa in *cap. permitt. verbo
Deamatis, de vita honest. cleric. & in Clement. 1.
verbo Sacerdotalis, de elect. Couarr. præfatic. cap. 31.
num. 7. Farinacius in praxi crimin. tom. 1. quasi. 8.
num. 69. Roussel. lib. 4. cap. 3. num. 40. Riccius
de iure person. lib. 7. cap. 5. num. 1. Vnde fit, quod
cum circa vestium vsum regionis consuetudo at-
tendenda sit, sic etiam ex debitis circumspectis
fiat iuterpretatio circa vestium delationem; nam
viator, qui iter facit, licet in habitu clericali non
incedat, excusabitur, ut probabimus infra in *c. nunc
& ita iudicatum fuisse testatur Pereyra de manu Reg.
part. 2. cap. 26. num. 4.* qui idem probat de clerico in
domo sua respectu sine habitu, etiam si dum fugit,
extra domum capiatut sine habitu. Item de clerico
conjugato occidente viderem sine habitu & in
his Hispaniarum tegnis ex Bulla Alexandri VI.
edita anno 1504. clerici minorum ordinum non
aliter fruuntur privilegio fori, quoniam si per qua-
tuor menses ante commissum delictum habitum,
& tonsuram deferant, ut testatur Couarr. *præ-
fatic. quasi. 31. Gutierrez lib. 5. præfatic. cap. 5.*
Idem de Gallis refertur Boetius *deci. 69. Chas-
saneus in consuetud. fol. 49. De Venetiis Gigas**

8.
TRA-
DITIO
DANDI

de pensationibus q. 94. num. 8. & si clericus confutatus dimiserit, clericatusque renunciaverit, sed illam reassumpserit, etiam infans Episcopo, privilegio forei gaudet, ut probat Marius lib. 1. resal. cap. 50.

9.
Dissol-
vitur
Nuptiarum
Ratatio.

Nec obstat dubitanti ratio supra adducta, nam verius est, ut probatur in cap. clericus, de iudiciis, exemptionem clericorum a iurisdictione seculari, quoad causas criminales, & civiles temporales, esse iuris positivi; unde nonnullis in casibus illis privilegium forei per sacros canones denegatur, veluti clerico assassino, cap. 1. de homicid. lib. 6. ioculari post trinam monitionem, cap. 1. de vita & honestate clericorum, lib. 6. carnificis, seu macellarii, aut tabernarii officium exercens, Clement. 1. eod. tit. clerico de gradato, cap. cum non ab homine, de iudiciis; in minoribus ordinibus constituto, & matrimonium contrahenti successu cum duobus, vel femel cum unica, & vidua, cap. unic. de clericis, coniug. lib. 6. & ita recte in presenti textu docetur, electionem primæ Tonfuræ non deferentem habitum, & tonsuram, privari forei privilegio. Nec obstat augmentum primum dubitanti rationi; nam casu, quo clericus deserit habitum clericalem, & ut laicus incedit, non cognoscitur index secularis de eius causis criminalibus virote prorogationis taceat, aut expresse, quæ nulla hoc in casu datur; sed quia in poenam desertionis status clericali privatur privilegio forei, ratione illius status illi competente, ut in aliis casibus supra enumeratis, ob delicta privatur eodem privilegio, nec ab Ecclesia defenditur, quia in his casibus, in quibus ius positivum assistit, sufficit tacite, & immixtus consensus ipsius clerici, argumentum legis si vult 27. q. 2. de pænit. l. si quis d. §. veneram, ff. de procurat. ubi docetur, plura tacite permitti, quæ expresse non permittuntur; ille namque implicitus clerici consensus vult in

consequentiam dimissionis habere, eo est à iure canonico statuta poena; & ideo hæc tantum velut principalis attenditur, non consensus et consequens, ex l. si quis nec causam 4. ff. si certum petatur, l. 1. vers. Prima, l. quod dicimus 7. ff. de auct. rit. tunc. Illustrat D. Ioseph Vela differt. 45. §. 1. num. 32. Nec obstat, quod dicebamus de electione in minoribus constituto matrimonium contrahente; nam ille retinet privilegium forei, si deserat habitum, & tonsuram, ut supra dixi, & probat Vela differt. 45. at verò in presenti agimus de clerico primæ tonsuræ iniratio deferente habitum, & tonsuram; quia dum incedit ut laicus, privatur forei privilegio. Nec obstat verum augmentum deductum ex dicto capite in audientia, Clement. 1. de vita & honestate clericorum, nam facile præsens decisio conciliari potest cum illis nonis decisionibus, si in presenti supponamus, mortificationem præcessisse, aut ita desertuisse statum clericalem, ut enumerationibus publicè dederetur: quo casu ipso iure privari privilegio forei docerunt Conar. c. 32. præf. num. 2. Bobadilla lib. 2. polit. 1. §. num. 95. Borellus ad Bellægum, rubric. 11. §. videndum, Rodin. de Maest. Princip. vers. Non armis solum, num. 174. Riccius in præf. tom. 2. resal. 172. Bossius in præf. tit. de foro compet. ex num. 134. Sed contrarium, videlicet adhuc trinam monitionem, & declarationem iudicis necessariam esse, rectius docuerunt Marius de iurisdic. 1. part. cap. 36. & 4. part. tom. 2. casu 133. Carolus de Grassis de effectib. cleric. effect. 1. num. 891. Bonae de legibus differt. 10. quest. 2. part. 1. §. 4. Ambrosius de immuni. Eccles. cap. 17. num. 16. Barbosa lib. 1. de iure Eccles. cap. 39. à num. 80. & alleg. 12. num. 24. Torriclancæ de iur. spirit. lib. 1. §. cap. 4. & 5. Diana part. 7. tract. 1. resal. 11. Castropalao tom. 2. oper. mor. tract. 12. differt. unic. part. 6. num. 8. Agidius Conioeb de sacram. differt. 4. dub. 15. num. 159.

C A P V T II.

Idem Abbati Sanctæ Genouefa.

EX literarum tuarum tenore perpendimus, quod quidam ægritudine longa confectus, infans b fortilegarum mulierum credens consilio, ut sanaretur, per iterationem fecit iniuriam Baptismatis sacramento. Astitit huic autem sacrilegio adolescens quidam, bonæ (ut videtur) indolis & acolytus, frater carnalis illius, in quo baptismus assuerit iteratus, qui ministerium in respondendo exhibuit presbytero baptizanti, & cooperator extitit rei nefandæ. Quia ergo tua nos duxit prudentia consulendos, qualiter puniri debeat acolytus, quem minor ætas, & intentio fraternæ salutis excusare videtur, discretionis tuæ præsentibus litteris respondemus, quod ad superiores ordines promovendi (si publicum est quod proponitur) non valebit, nisi ad religionem transire voluerit, ut fauore religionis ipsius circa eum valeat dispensari. Si verò occultum est, promoveri poterit, & excessum suum dignis poenitentis fructibus expiare.

N O T A.

a **Genouefa.**] Ita etiam legitur in prima collectione, sub hoc tit. cap. 3. De hoc Abbate, & eius iurisdictione cgi in cap. cum P. & G. de offic. deleg.

b **Sorilegarum.**] Quibus fides non est adhibenda, ut infra dicemus in cap. 1. de sorileg.

c **Acolytus.**] Est autem acolytus molitor Ec-

clesiæ, cuius officium duplex est: vnum deferre cerros accensos ante presbyterum, & cum legitur Evangelium in Missa, ac proinde accendere luminaria Ecclesiæ; alterum est ministrare vinum, & aquam in vtreolis, dare que diacono, ut probatur in c. perlectus, vers. Ad acolytos, 15. dist. c. clericus, vers. Acolyti, 21. dist. c. 1. vers. Deservientes, c. acolyti, 23. dist. Probant de eo grada agentes, ultra superiores de sacramento Ordinis, Valquez 3. p. 3. dist. 263. n. 30. Vicecomes de ritibus Missæ volum. 3. lib. 1. cap. 25.

cap. 15. P. Gregor. lib. 15. *synag. cap. 6.* Zetda in ad-
vers. cap. 94. Menardus in notis ad Sacrament. Divi
Gregory, pag. 271. Espenceus ad *epist. Pauli*, lib. 1.
diress. cap. 8. & uos in cap. 2. de officio Archid.
d. Religionum.] Quatenus per ingressum rell-
giosis irregularitas tollatur, exposui in cap. 1. de
filiis presbyter.

COMMENTARIUM.

1. **T**extus hic spectat ad secundam partem prelen-
tis rubricæ, quæ est de iterantibus baptismum:
& gratitatem huius criminis iam probavi in cap.
de his, de baptismo. Nunc de penis baptismi ite-
rantium agendum est; & quidem variz statutz
sunt, tam in iure civili, quàm canonico, iure civili
Episcopi rebaptizantes deponuntur, & tam hi,
quàm qui scienter rebaptizari se patiuntur, peni-
tantur testamenti sactione, & donandi ius amit-
tunt, exilioque cum multis decem librarum auri,
vel capite puniuntur, l. 1. 2. & 3. *Cod. de sanctum
baptisma*: quas illustrat L. Gothofr. ad *vir. Cod.
Theodof. de sanctum baptismum*. Iure canonico non
tantum qui ex hæretica pravitare id faciunt, illis,
& aliis hæreticorum penis subsumt, verum &
ita baptizatis communicatio denegatur, cap. 101. de
consecr. dist. 4. Sylicius in *Synodo Romana*, *epist. 4.*
cap. 8. ibi: *Venientes à Nouationis, vel Monteni-
sium, per manus impositionem suscipiantur, prater
eos, quos rebaptizant Innocentius epist. 2. cap. 8.*
*Venientes à Nouationis, vel Montensium, per ma-
nus tantum impositionem suscipiantur, quia quum-
vis ab hæretici, tamen in Christi nomine sunt bap-
tizati: prater eos, si qui sunt à nobis ad illas trans-
euntes rebaptizati sunt: hi si resipiscentes, & vi-
nam suam cognovissent redire voluerint, sub longa
penitentia satisfactionis admittendi sunt.* Concil.
Illerdense can. 9. & 14. ibi: *Cum rebaptizatis fi-
deles, religiosi nec in cibo participem.* Refert Ant.
Augustinus tom. 2. in *epistol. iuris*, lib. 2. c. 12. 17.
irregularitque manent, cap. final. 31. dist. cap.
*Afric. 96. dist. cap. qui in quolibet 1. quæ. 7. cap.
confirmandum*, 64. 50. dist. ibi: *Presbyter vel Dia-
conus depositus ob crimen non reueratur ad Clerum, ut
nec rebaptizatur.* Et can. 17. *codicis Ecclesiæ Afric.* ibi:
*Rebaptizati ad clericatum gradum non promovean-
tur.* Felix Pontifex in Synod. Romana anni 487.
enius astra extant in codice canonum Ecclesiæ Ro-
manæ, & tom. 2. *Conciliorum*, ibi: *Communio dei
lor, & generalis est genus, quod intra African re-
baptizatos etiam Episcopos, Presbyteros, Diaconos
que communimus.* Et in epistola synodica ad vniu-
ersos Episcopos: *Nec ex his tanquam, qui in qua-
libet maius alibi, quàm in Ecclesiâ Catholica bap-
tizati sunt, ad Ecclesiasticam militiam profus per-
mittantur accedere.* Probare Iulius in *not. ad
can. 27. Suarez de censur. disp. 31. sect. 3. Sal-
cedo in praxi*, cap. 15. & 18. Gutierrez de *delict.*
quæst. 59. Trocius de ver. & perfest. cleric. lib. 9.
*cap. 2. Maiolus de irregul. lib. 3. cap. 15. Gibalinus
eod. tract. cap. 5. per suum.* Non tamen incurritur
hæc irregularitas, nisi præcedente delicto, adeo
vt excoletur quotiens propter ignorantiam culpa
excusatur. Quod verius censent Suarez *disp. 42.*
de censur. sect. 1. Gibalinus *dist. cap. 5. 2. part.* et si
contrarium tenet Maiolus de *irregul. lib. 3. cap. 14.*
Nec pro eo facit textus in *l. qui bis 117. de consecr.*
dist. 4. nam cum deducitur sit ex Penitentiali
Theodori Episcopi, vim legis canonice non habe-
re iaro docuerunt Couar. in *Clement. Si servius*, 1.
D.D. Genzel. in *Decretal. Tom. V.*

part. in initio, de homicid. Gibalinus de *irregul. cap. 5.*
part. 1. Et si dura videatur hæc interpretatio, pos-
test dici Theodotum loqui eo casu, quo igno-
rantia fuit crassa, aut iuris, cum videlicet rebap-
tizatus ignoravit baptismum iterari posse, Salcedo
in *praxi*, cap. 10. Quod si aliquis permittit se extre-
rius iterum baptizari, ita tamen vt intentionem
suscipiendi baptismum non habeat, uou incurrit
irregularitatem; nam illa non dicitur formalis rei-
teratio baptismi ex parte suscipientis, petus autem
hæc restringenda est ad formalem rebaptizatio-
nem. Sic etiam nec infans rebaptizatus irregulari-
tatem incurrit, c. placuit, cum *seq. 1. 9. 4.* quæ omni
voluntate, & iudicio caret. Nec contrarium do-
cet Felix III. in *epist. 6.* quam integram refert Iuo
Carnot. r. p. *Decret. c. 293.* in illis verbis: *Negum
quem qui in quolibet avari alibi, quàm in Ecclesiâ Ca-
tholica baptizatus, aut rebaptizatus fuit, ad ecclesiasticam
militiam profus permittantur accedere.* Et quibus
deducitur, etiam infante rebaptizatos irregulari-
tatem contrahere. Nam Felix Papa accipiendus est
de illis, qui cum essent doll capaces, baptizati se,
vel rebaptizati permittunt ab hæretici, vt do-
cuerunt Glossæ in: *in quolibet 1. 9. 7.* Gibalinus *dist.*
c. 5. Quæ solutio faciliè fundebitur si obseruemus,
Felicem III. hanc epistolam ad Africanos Episco-
pos scripsisse in causa eorum, qui in persecutione
Huneric Regis lapsi ab Africanis rebaptizati fuer-
ant; & deinde rediit Ecclesiæ pæce à Gundebun-
do, in catholicam communionem recipi postulab-
ant anno 487. eum iam Africani Episcopi circa
similem causam rebaptizatorum à donatistis in
Concilio Carthag. Præside Aetelio elidendi ciui-
tatis Episcopo, disceptassent anno Christi 397. & in
alia synodo Carthag. celebrata ab eodem Aetelio
anno Christi 400. statuerunt, vt paruli apud Do-
natistas baptizati, nondum scite valentes erroris
eorum interitum, minime impedirentur ad sacros
ordines promoueri. Vnde credi non potest, Felicem
ipsis Episcopis constariis scripsisse, præcipue cum
in ea epistola his nouum non concedat, sed tantum
antiquum confirmet, vt rectè considerat, & probat
Gibalinus *dist. 2. p.* Constat ergo, iniustam ite-
rationem baptismi inducere irregularitatem; iam
licet secundus baptismus, ob cuius susceptionem
quis efficitur irregularis, non sit sacramentum;
attamen per eum iniuria fit priori baptismi, &
fidei, atque ita huic crimini talis est annexa ir-
regularitas.

Vnde inferunt, quod si quis sæpe sæpius rebap-
tizetur, etiam sæpe sæpius incurrit hanc irregula-
ritatem; nam quoties multiplicatur culpa, ob
quam imponitur poena, toties similis poena incur-
ritur: exempli gratia si quis post semel iteratum
baptismum penitentiam egerit, & dispensationem
huius irregularitatis meruerit, si postea iterum
baptismum, iterum efficitur irregularis; nam re-
baptizatio non solum dicitur secunda iteratio bap-
tismi, sed tertia, quarta & omnes sequentes post
primam, argumeto legis 1. *si de vulg.* Eccontra-
rio verò, si quis errore doctus rebaptizetur, quia
etudebat se antea baptismum fuisse, cum recedat
prior baptismus nou valuisse, proculdubio ir-
regularis non efficitur, quia nunquam secunda bap-
tizatus est, quousque verus baptismus receptus sit;
nihil enim refert, quod quis habuerit animum se
rebaptizandi, si verè, & realiter non rebaptizetur.
Nec solum irregularis efficitur, qui rebaptizatur,
verum etiam minister, qui baptismum iterum ad-
ministrat, vt ex hoc textu constat, & probant

3.
ALIA DE
EPILA IN-
REGULA-
RITATE.

Santarel. de heres. cap. 45. dub. vnic. Gibalinus dist. cap. 5. 3. part. Maiolus lib. 2. de irregular. cap. 14. num. 6. qui eandem irregularitatem extendunt ad patentes, qui suos liberos rebaptizandos offerunt ad compates, atque alios cooperantes eiusmodi rebaptizationi, contra quos omnes etiam proceditur per Inquisitores in his regnis. Qualls tamen sit hæc irregularitas, tam respectu rebapti-

zantis, quam rebaptizati, exponit Gibalinus dist. cap. 5. part. 4. per totum. Si tamen aliquis solo verbo absque intentione rebaptizaverit, quamvis gravius peccet, non tamen efficitur irregularis, ut docent Henricus lib. 4. summa, cap. 4. 3. Suarez dist. disput. 31. sect. 6. dub. 4. Gibalinus dist. cap. 5. 4. part. qui idem resoluunt de rebaptizato per vim & grauem metum.

CAPVT III.

Innocent. III.

TUx fraternitati. Et infra: Super secundo articulo inquisitionis tux duximus respondendum, quod clerici, qui sunt de apostasie crimine infamati, qui videlicet abiecerunt habitum clericalem, non sunt in seculari habitu tolerandi, sed per distractionem ecclesiasticam coercendi, donec deficiente probatione, ad infamiam abolendam purgationem canonicam curauerint exhibere.

NOTÆ.

1. **I**n *Innocent. III.*] Ita etiam legitur in tertia collectione, sub hoc tit. cap. vnic. nullibi tamen exprimitur cui retribuit Pontifex, sed facile constat, legendum esse *Brixienſi*, ut in cap. iua. de *Procurator*. ubi congeſſi alias partes huius epistolæ.

COMMENTARIUM.

2. **I**n hoc textu agitur de clerico in sacris, & maioribus ordinibus constituto, habitum clericalem deferente, qui cogendus est illum reassumere potius à iure statuti, videlicet excommunicationis, cap. si quis ex clericis, de *vita & benef. cleric.* priuatione fructuum beneficii, *Clement. 3. ad si. in excommunicatione, cap. à nobis, hoc tit.* & iure civilis sanctum à Iustiniano legitur in *novella 5. cap. 6. novel. 6. c. 7. novel. 123. c. 15.* et clerici, qui in ordinibus sacris constituti, iis contemptis ad aliam vitam transiissent, pro ratione facultatem, vel Curie ciuitatis suæ scire cogentur, vel Praefidis provincie cohorti, seu officio addicerentur: quod postea mutauit Leo *novel. 7. §. 8.* ubi similes desertores reuocari ad priorem statum iubet: idque etiam patet in cap. quid interrogasti, 27. dist. cap. quem, 20. quæst. 1. graue enim peccatum est in clerico habitum deferere, ut probat eleganter Sausay dist. lib. 7. cap. 3. per totum. Unde talis clericus apo-

stas appellatur; quo nomine tantum notantur magni peccatores Ecclesie rebelles, ut Iudei, qui negauerunt Christum Regem suum, à Prudentio ibi:

Formidine rursus
Plebs apostolica, Demum qua ceca negasset.
Et hæretici, quos apostatas pronuntiat Tertul. de *prescripte*. ibi t. *Persequatio martyres facit, hæresis apostatas tantum.* Et in eadem prodromum, apostatam dixit Sedulius lib. 4. *carminum*.

Tunc *vix Apostolicum, nunc villis apostata sellum.*
Excusatur tamen clericus non deferens habitum clericalem, veluti si necessitas adit tuendi vitam, honorem, fortunas, aut quiddam aliud simile, ut docent Glossa in cap. nullus 21. quæst. 4. & in dist. cap. si quis ex clericis: unde cum quidam reprehenderetur à Pontifice, respondit.

Tullius et petrem laici sub imagine Romanæ,
Fas fuit ex fœnecem luxuriare comam.
Item excusantur clerici iter longum facientes, cap. 3. 21. quæst. 4. ubi ex Synodo Romana sub Zacharia Papa ita legitur: *Episcopi, Presbyteri, Diaconi secularibus indumentis non videntur, nisi ex necessitate tunicæ sacerdotali, præter si in itinere longo ambulantur.* Sed et si clerici deferentes statum clericalem, apostate dicantur; tamen nisi viciem ducant, non subsunt Inquisitionum iurisdictioni, ut probat Salses rom. 1. de *mater. Tribun.* lib. 1. regul. 107.

CAPVT IV.

Idem in Concilio generali.

Quidam (sicut accepimus) qui ad sacri vndam baptismatis voluntariè accesserunt, veterem hominem omnino non exuunt, ut nouo perfectius induantur: cum prioris ritus reliquias retinentes, christianæ religionis decorem tali commixtione confundant. Cum autem maledictus sit homo, qui terram duabus viis ingreditur, & indui veste non debeat lino, lanaque contexta: statuimus, ut per Prælatos Ecclesiarum talis obseruantia veteris ritus omnimodè compescatur, ut quos christianæ religioni liberæ voluntatis arbitrium obtulit, salutaris coactionis necessitas in eius obseruatione conſuet: cum minus malum existat viam Domini non agnoscere, quam post agnitam terrore.

NOTÆ.

NOTÆ.

a *Generalis.* Lateranensis videlicet, sub Innocentio III. celebrato, ubi c. 70. reperitur textus hic prout in præfati transcribitur. De hoc Concilio vixnulla notati in cap. 2. de summa Trinit.

b *Line, lanque.* Denteren. cap. 22.

c *Prælati Ecclesiarum.* Ad quos tantum, videlicet inquisitores, spectat apostatarum cognitio; cum apostasia sit cuiusdam speciei ac hæresis: unde licet de hæresi, nec de iure, nec de facto cognoscere possit iudex secularis, et inquisitoris 18. §. prohibemus, de hæresi lib. 6. ita nec de apostasia, siue quæstio facti, vel iuris discipetur. Bordonus tom. 1. sac. tribun. cap. 9. sect. 2. num. 21. Carera part. 1. de offic. inquisit. tit. 3. num. 13. Diana part. 4. tract. 1. res. 12. et si contrarium defendat Pereyra part. 2. de manu Reg. cap. 74. per totum.

COMMENTARIUM.

EX hoc canone sequens communiter deducitur assertio: *Capitulari si ad ritum Iudeorum, seu pagani redierint, cognoscitur eos relinquere, & fidem, quam simul professi fuerunt, custodire.* Probant eam textus in cap. si quis 4. de penitent. dist. 5. cap. presbyteri 32. 50. dist. cap. de his 26. quest. 6. c. 2. 3. 9. 4. Gregor. II. epist. 6. ad Samozem, ad medium, ibi: *Qui- cumque in vobis suscepit Christum Dominum nostrum, in ipso ambulat radicatus, & superedificatus, & confirmatus in fide, &c.* Difficile filij ad idolorum cultum, & actibus, & adorate Dominum Deum nostrum, &c. Nicolaus ad consula Balgar. cap. 13. *Qui fidem respici, quam promissus, ab illo, a quo susceptus est, & qui fidei eius interuenit iussu, debet per omnia renouari; ac verò si non audierit eum, quem ipse pro se dederat vadem, descendam ejus Ecclesie, a qua faciente studio maiori, ad suam propriam membra reduci conuenit, quia errant; & ut ad viam veritatis, qua Christus est, redeat, modis omnibus renouari: siquidem ab ea, tanquam a matre, tanquam a magistra fundendum est illi, quatenus valeat, quatenus apostatam spiritum imitatus est, quod in veritate non fieret, &c.* Concil. Aurelian. 2. can. 19. *Catholici, qui ab idolorum cultu se non custodierunt, nec ad integrum accepti baptismi gratiam reuertuntur, vel qui cibum idolorum cultibus immolatis gustu illicita præsumptionis veniunt, ab Ecclesia certibus arceantur.* Aurelian. 4. can. 15. *Si quis post acceptum baptismi sacramentum ad immolata demanibus sumenda, tanquam ad vomitum reuertitur, si communis ad sacerdos se corrigere ex hac præuentione noluerit, à communione catholica præuentione sacrilegi suspendatur.* 6. Synodus in Trul. can. 62. *Clericus depuratur, laici excommunicantur, qui festa Gentilium celebrant.* Et can. 95. *In eos qui inuicem ut pagani, communis panem uinum res & excommunicationem imponimus.* D. Basilii ad Amphibloch. can. 7. 72. & 80. Gregor. Nyssen. epist. 2. canonica: refert Anton. Augul. lib. 11. epist. inuic. 4. Illustrant Albaspinosa lib. 2. obseru. cap. 9. Rieciolus lib. 6. de iure person. per totum, Castro lib. 1. de iust. hæresic. puni. cap. 7. & lib. 1. de hæresic. puni. cap. 4. Suarez de fide disp. 56. sect. 4. Socii in aphorism. cap. 48. num. 14. Peña part. 1. Diu. quest. 9. comment. 24. Salles lib. 1. de materiis tribun. cap. 13. regul. 107. Carera de offic. inquisit. part. 2. tit. 3. Bordonus tom. 1. tribun. cap. 9. sect. 2. Murga tom. 2. dispensit. tract. 1. dub. 6. §. 3. Alteserra hic.

D. D. Gmez. in Decretal. Tom. V.

Ratio dubitandi huius textus proponenda est ex iuris præcipiis, quæ adduxit pro dubitandi ratione in cap. ad abolendam, de hæresi 1. et etiam diffinitis est præsens constitutio, dum in ea Patres Concilij Lateran. tantum statuerunt, apostatis à fide catholicæ cogendos esse ritus alterius religionis desistere, & fidem Catholicam seruare, ac c. si odire, nullâ sanctâ penâ iuxta fideles lapsos in apostasiam, cum certum sit eos viciis penis afficiendos esse; iuxta canones Ecclesiæ suprà relatos, & alios congectos ab Antonio Augustino in epist. inuic. tit. 4. lib. 11. Crespetio in summa, verbo Apostata à fide. Unde minus perfecta, seu integra videtur præsens constitutio; in quidem in omnibus Ecclesiis canonibus, in quibus de his Apostatis à religione agitur, semper adiciuntur penæ, quibus ipsi apostataz affiendi sunt.

Quia dubitandi ratione minime obstat, vera est præsens assertio, pro cuius expositione scire oportet, in præfati agi de apostata vera à religione; nam quoties siue adiuncto apostatis dicitur, intelligitur apostasia à fide. Est autem apostasia à fide, qui omnino à Christiana fide desecit, reuertens seu transiens ad Iudaismum, seu Paganismum, l. 1. 2. & penult. Cod. hoc tit. cap. non potest 2. q. 7. cap. contra, de hæresi lib. 6. qui in ritus Iudeos, seu Gentilium paganorum transiunt, l. 3. Cod. Theod. de apostatis, l. 1. & 7. end. Cod. de Iudeis: unde dicuntur violare religionis rei, l. 3. Cod. Theod. de Apost. docuerunt Deletans lib. 5. ar. crim. c. 7. 1. num. 4. & cap. sequenti, Ferriac. de hæresi q. 183. §. 1. num. 13. D. Thomas 2. 2. quest. 11. per totum. Rieciolus lib. 6. de iure person. cap. 2. Carera de offic. inquisit. 2. part. tit. 3. Salles lib. 1. de mater. tribun. cap. 13. regul. 107. la Gueho. ad tit. de apostatis in Cod. Theod. Thomas Deibene part. 2. de offic. inquisit. dub. 47. Duo ergo copulatiue desiderantur, ut quis propriè fide apostata dicatur. Primum, quod talis recessus à fide sit omnimodus, unde licet Christianus recedat à pluribus fidei articulis, tamen si retineat adhuc fidem in reliquis, hæreticus, non verò apostata est, dist. cap. non potest, cap. beatus 7. §. 4. D. Augustin. lib. 18. de ciuit. Dei, cap. 51. probant Canus de locis cap. 9. Simanc. de cathol. tit. 7. Rojas de hæresi. part. 1. num. 486. Apostata igitur est, qui totus recedit à fide; hæreticus verò, qui in parte. Unde qui apostata est, hæreticus continò est; qui verò in hæresi aliqua est, apostata propterea non est. Hæreticus fuit dicitur, & latro, Innocentius cap. 10. quasi qui è verbo Doctoi aliquid intercepti, & quasi contrædit: apostata plus quam fur, qui totum furripit, quin & se ipsam, veluti fugitiuum Christi seruus efficitur, ut exponit Mancianus lib. 1. de triplici iuris collat. cap. 146. Secundo desideratur, quod recessus ipse sit à fide catholica, unde qui ab improba secta in aliam reprobam se transfert, veluti è paganismo ad Iudæismum perfidiam, vel Mahometismum, apostata non dicitur, ut probant Campesgius de deo quest. 77. Iul. Clarus in praxi crimin. §. final. q. 7. num. 4. cum enim Christianæ militiæ nunquam nomen dedit, non est ratio quare possit eius delictum indicari, argumento legis 4. §. idemque, l. manus missiones, ff. de iust. & iur. l. decem, ff. de P. O. Sed si quis baptizatus sit de nouo verè, nec sub debita forma, distinguendum est, an ipse ignotus defectum baptismi à fide recedat, an post recessum nullitas baptismi detegatur; quo casu apostata dicitur, & ut talis puniendus est. Castro lib. 1. de hæresi. puni. cap. 8. quest. 3. ad finem.

V 3

Rieciolus

Ricciulus *de iure person. lib. 6. cap. 3.* Bordonus *tom. 1. sacri tribus. cap. 9. sect. 2. num. 1.* Ratio est, quia quavis iste baptizatus non esset baptismo fluminis, baptizatus tamen erat baptismo fluminis, & si coingisset ipsum ita decedere, saluari posset, *cap. final. vers. Nullus, de panis. dist. 7. cap. debetum, de baptismo, c. 2. de presbytero non baptizato.* Quare talis ad hoc nihil differt ab eo, qui iuxta Ecclesie ritum baptismum suscepit, vel sciebat se baptizatum non esse, & oon entuit baptizari, & tamen pro tali ab omnibus existimari contendebat: quo casu licet in foro poli apostata indicari non possit, tamen in foro fori iisdem poenis plectendus est, quibus & ceteri apostatae puniuntur; quia cum ipse tanquam Christianus se gesserit, & ut talis velit à ceteris fidelibus haberi, & honorari, utique talis presumitur, ut resoluunt Bordonus *supra.* Ricciulus *dist. lib. 6. cap. 3. n. 5.* quia quilibet debet iudicari iuxta habitum quem deferit, *Litem 15. §. si quis virginem, ff. de iniuriis, cap. in audientia, de sent. excom. cap. si indez, cod. tit. lib. 6.* & tanquam Christianus talis debet Christianorum legibus subiacere, argumento legis *Iudei, C. de Iudeis.* Accedit quia non debet esse in alienius potestate Christiani nomen sic emendat, ut Christianorum inter fideles frustat honoribus, potius autem fidei transgressio-ribus inflictae eundem, cum qui sentit commodum, sentire debeat incommodum, *l. secundum, ff. de R. J. cap. charitatem 12. §. 4. cap. accedens, de primil.* Sicut etiam hæreticus repugnat, oon solum qui verè est Catholicus, sed etiam hi, qui cum verè Catholicus non sit, itaque talis se gerit, argumeto legis *C. si minor se maiorem, C. isto de iusta heretic. p. lib. 1. cap. 8.* Simanc. *de Carol. tit. 3. n. 5.* quia in hac parte plus operatur opinio, quàm veritas, *cap. final. de presby. non baptiz.* Ricciulus *supra, n. 6.* Et hæc apostata committitur per transsum ad ritus Iudaicos, *cap. extra, de heret. in 6.* Simanc. *de Carol. tit. 35. num. 9.* Emericus *p. 2. dist. 9. 44. num. 1.* Fatinac. *de heresi q. 178. num. 136.* quia oon solum verbis, verum & factis Deus negatur, *cap. excommunicatus 84. t. q. 1. immò facta potentiora sunt ad explicandum animum, quàm verba, l. si tamen 48. §. si qui, ff. de adit. edit. l. de quibus, ff. de legibus, cap. dilecti 52. cap. ut nostrum 56. de ap. pelar. Cicerio 3. *Thylenus. Quid verba audiam, cum facta videam?* Castillo *lib. 3. controu. cap. 107. n. 17.* Ideo coniectus, aut confessus de actibus, seu ceremoniis Iudaicis, dampnandus est ut apostata, et si animum, intentionemque negaverit, *cap. filij, cap. contra, de heret. in 6.* Syluicet verbo *heretici 1. q. 7.* Anania in *cap. excommunicatus, §. credentes, de heretico, Repertor. Inquisit. verbo Apostata, Simancas tit. 10. num. 9. & ut. 50. num. 5.* Farin. *de heresi q. 178. n. 139.* Et quavis hoc casu reum subiciendum esse toratur super intentione, docuerunt Simanc. *de Carol. tit. 65. num. 52.* & in Enchirid. *tit. 29. n. 10.* Peña *3. Direct. comment. 110. & alij, hoc tamen procedit quando excommunicatione à reo facta dubie sunt, veluti ieiunia; secus vero si excommunicatione sunt reprobata sua natura, ut circumcisio, eoblatio Pasche Iudæorum, aut similia, quæ ex se hodie mala sunt, unde interpretari nequeunt in bonam partem, quia in quolibet facto attenditur eius natura, l. si verus 27. §. postea, ff. de post. test. cum similibus 76. alius 78. §. hères meus, ff. de legat. 2. c. ab exordio 3. 55. dist. Last. Fitmilan. *lib. 3. diuin. inst. cap. 15. Nihil interest quæ animo faciat, quod fecisse vultis an esse, quia facta cernuntur, animus non videtur.* Vnde si quis coniugatus, vel confessus repociatur sicut qui sua**

natura ad Iudaicam religionem, vel aliam improbatam sectam spectant, tanquam apostata statim damnandus est, nullâ tortura precedente. De eo tamen, qui desert tantum vestes Gentilium, aut Iudeorum proprias, an dicatur apostatus, examinat Socrates *de fide disp. 14. sect. 5.*

Cires illum autem, qui coactè, & per vim fidem catholicam abnequit, vel idolis sacrificauit, corde tamen fidem requirit, dubium est. Et quando coactio est præcisâ, siue absoluta, nempe quia omnino tenentis, ligatus manibus, & pedibus circumciditur, vel eius genna flectuntur eorum idalis, nullo modo apostata indicatur, *c. presbyterus 31. 50. dist. cap. constat 1. q. 1. docent Peña ad Emericum, p. 1. Direct. comment. 124. Simanc. tit. 27. num. 19. Salles supra, regul. 107. Bordonus dist. 9. §. 2. num. 14.* Ratio est, quia eo casu pati potius, quàm agere videntur, *cap. sacri, ubi notat, de his que vii.* Ideoque penam non meretur, *l. si dissimulat, Cod. ad leg. Jul. de adul.* Si verò vis illata non fuit præcisâ, sed consilionalis, quavis grauius, veluti mortis, seu cruciatus, tunc verè apostatus, seu hæreticus dici non potest, eadem corâ credat, & non adit error pertinax, qui ipsum separatè possit à communione fidelium, *cap. non solum 85. 11. q. 5. Sanchez lib. 2. summa, cap. 7. num. 8. Ricciulus dist. lib. 6. cap. final.* Peccat tamen ipse lethaliter, quis potest pati martem deberet, quàm fidem abnegare, iuxta tradita in *dist. c. sacris: tum etiam quia licet coactè neges, negat tamen, quia voluisti coactè, voluisti est, cap. maiores, §. final. de baptismo, l. si pater, ff. de ritu nuptiar.* Quamvis enim nolit Christum abnegare, tamen eligit illum negare potius, quàm pati pernam comminatum, *cap. non solum 11. q. 1. 2. qui meriti 15. q. 1.* Et quia Ecclesia non indicat de occultis, *cap. 1. de clandest. disp. pens.* ipsum in foro exteriori vel suspèctum de hæresi iudat, *can. 2. Apoll. ibi: Si clerici ob metum Iudei, Græci, vel hæretici negauerint nomen Christi, eiciantur; si nomen clerici, depnaretur, sed post penitentiam in laicos suscipiatur.* Concil. Ancyranum *can. 4.* De his, qui per vim immolarunt, & carum semper cum idolis, quicunque habitum meliore professi sunt, & vestes presbyterie accubuerunt, annum audiant, triennium subiciantur, biennio tamen orationis tantum communicent, postea ut in integrum restituantur. Et *can. 6.* De his, qui mini puniti sunt, & ablati sunt bonorum, & exilij sacrificauerunt, & ante hanc diem non eos penitentis, neque conuersi sunt, tempore autem huius Synodi reuerti cogunt: Placuit, ut hinc ad magnam diem Pasche ad audiendum recipiantur, post eam diem triennij poenitentiam subiecti, & post aliud biennium communicent in oratione sine oblatione: & iuxta in integrum restituantur sexennio completa. Si qui verò ante Synodum suscepit facinus ad penitentiam, & eo tempore incitum sexennio faciant. Si quod verò mortis periculum ex morbo, aliaue causa emerit, recipiant. Et *cap. 8.* Qui his, vel ter per votum sacrificauerunt, quadriennio subiecti penitent, biennio autem sine oblatione communicent, septennio integri recipiantur. Concil. Aelæ *2. can. 10.* De his, qui in persecutione præuaricati sunt, si voluntariè fidem peregerint, hoc de eis Nicæna Synodus statuit, ut quinquæ annis inter catechumenes exeat, & dum inter diffamantur, ita ut communionem inter penitentes non præsumant; in postea tamen, vel arbitrio erit Episcopi, ut si eos ex animo errorem desierit, & opera penitentiam viderit, ad communionem pro ecclesiastica humanitate suscipere. Et *c. 11.* Si qui verò dolore cæci, & pendere persecutionis, negare, & sacrificare compulsi sunt, duobus annis inter catechumenes, triennio inter

§.
De ap.
statu
p. 2. n.
art. 10
MILIT.

inter penitentes habentur ad communionem suspensi. D. Basilus ad Amphylach. cap. 80. Qui in barbarorum interfusione fidem in Christum retulerunt, factis sacramentis Gentilibus, & quibusdam nefariis, quæ idolis magicis oblata sunt, ab eis gressus, & secundum leges à Patribus iam editas, & canones dispensent.

6. Deinde ut ad poenam Apostatarum perueniamus, sciendum est, tanta cum execratione tales desertores primis Ecclesiæ saculis habitos fuisse, ut baptizatos ab eis iterum baptizandos esse asseruisset D. Basilus ad Amphylachium can. 4. & illis venis atiam in exitu viæ denegabatur, ut referunt in l. 3. Cod. de apostatis, & late probant in cap. 1. & 26. Concilij Sliber. obsecrantque Albaspinus lib. 1. obsequ. cap. 9. cum duobus sequent. & l. Gothofr. in l. 5. Cod. Theodof. hoc rursus. Sed postea à Concilio Niceno perorientia data fuit: & Syriacus Pontif. epist. 1. ad Himerium Tarracon. Episcopum, cap. 3. apostatis nullum poenitentiam tempus præscriptum, sed toto viæ cursu eos poenitentiam agere, & à sacra communione, præterquam in articulo mortis, arceci voluit. Deinde hæreticorum poenis apostatæ puniuntur, cap. 1. de hæreticis, in 6. Unde eum poena expositus iure civili in hæreticos sancta fuisset, l. 1. Admonitio, l. 1. Ariani, Cod. de hæreticis, eadem in apostatas statuta fuit, l. 5. Cod. de apostatis: itidem bonorum proscriptio, l. 7. Cod. Theodof. de Iudeis: perpetua infamia iniuncta omni dignitate spoliatur, l. 1. Cod. de apostatis, l. 1. Cod. de fidei resiliis, in Theodof. priuatur vitæque testamenti fadhione, l. 1. & 2. Cod. Theodof. eundem. & contra similes desertiores fidei proceditur in Tribunalibus sanctæ Inquisitionis eodem modo ac contra hæreticos, concessa eis poenitentia reuertentibus ad fidem Catholicam, & iniuncta poenitentia per tempus congruum in carcere cum habito, iuxta tradita supra in cap. excommunicantur, §. 1. de hæreticis, & si relapsi sunt in apostasiam, traduntur omnino hæretico sæculari, ut poenâ mortis afficiantur. Immo in his Tribunalibus Hispaniæ maior pars causarum fidei est apostatarum à religione, circa quos versatur eadem praxis, quam circa hæreticos retulimus supra in fine de hæreticis.

7. His suppositis ratio præsentis decisionis est eo proeunt quia qui post professionem fidei Catho-

lice ritus Iudaicos, aut Paganos sectatur, tali commixtione polluit veram religionem, quam profectus est, eum simul utramque religionem colere nequeat. Unde rectè PP. Concilij Lateran. statuerunt in præfenti, ut talis obsequantia veteris ritus omni modo compescatur, ut quos Christianæ Religioni libertæ voluntatis arbitrio obtulit, saltem exactionis necessitas in eius obsequantia ne conferret, ut etiam dicitur in cap. resuscitatus de pœnis, diff. 1. & si lapsi fuerint, per poenitentiam redeant ad fidem, & gratiam, quam amiserant, ut de D. Petro ait Sanctus Ambrosius sermone 47. ibi: Fideliter factus est Petrus, postquam fidem sponte desinuit, atque ideo maiorem gratiam reperit, quam amisit. Relatus in cap. considerandum, §. 0. diff. cap. fideliter, eodem.

Nec obstat dubitandi ratio supra expensa; nam licet Partes Concilij Lateran. in præfenti non imponant poenam desertoribus fidei Catholicæ, & ritus Iudaicos, seu paganos sectantibus; non negantur tamen eos debitis poenis puniendos esse, immo dum sanxerunt, similes apostatas cogendos esse per iudices ecclesiasticos, veteres ritus Gentilium, seu Iudaicos abiurare, aperte supponunt debitis poenis per sacros canones veteres, & novos statim compescendos esse, & cogendos Catholicam religionem, quam semel professi fuerunt, custodire, & retinere. Manet ergo, fidelibus Christianis non licere, postquam à Iudaica perfidia, seu Gentilismo ad fidem Catholicam peruenierunt, veteres ritus colere, aut ad pristinam superstitionem redire. Unde in præfenti exponendi sunt textus in canone 1. §. 3. 4. 6. & 55. Concilij Sliber. quorum interpretationem in coram notis adduxi: & textus in can. 35. Synodi Londin. in illis verbis: Non oportet Christianos relinquere Ecclesiasticis Dei, & abire, atque angelos nominare, & conuentus facere; ad angelos idololatriæ abominanda congregatio- nes facere. Si quis in ea idololatriæ reperitur, anathema sit, quod reliquius Dominum nostrum filium Dei pro idololatriâ. Quem exposui in cap. conuictus de feriis: & textus in can. 9. Concilij Tolet. 2. in illis verbis: Ne Iudei more suos celebrent Pascha, vel carnis circuncisionem exercent. Quem de Iudeis conuictis, & ad veteres ritus redeuntibus, exposui in cap. Iudei, de Iudeis.

8. Debetur
VITAE DV-
RATIO,
ET VARI
CARCERIS
REMIT-
TUNTUR,

CAPVT V.

Archiepiscopo² Tyrensi.

A Nobis expetit tua fraternitas edoceri, quid de apostatis sit agendum, cum in custodia detinentur, eo quod b minis, vel blanditiis nullatenus possunt induci ut abiectum monachalem habitum reassumant. Ad quod tibi breuiter respondemus, quod tales, si volueris, potes sub graui custodia^c carcerare, ita quod solummodo si- bi vita misera referretur, donec à suæ præsumptionis nequitia resipiscant.

NOTÆ.

Transf.] In sexta collectione legitur Tyrensi: sed in quinta compilatione Honorij III. habetur Tyrensi, ex qua inscriptionem, & licentiam transcribo. De Metropoli Tyrensi nouissima addita in cap. 8. de offic. Ordin. in præfenti item rescribit Honorius Archiepiscopo, quia fortè monachi illi, de quorum apostasia agitur, non

erant exempti, immò potius eius iurisdictioni parebant.

b Minis, & blanditiis.] Quia apostatæ tam blanditiis, quam rigora reuocandi sunt ad monasterium, ut docet, & late probat Theophilus Ray- asandus tom. 17. tract. de apostasia à religione ordinibus, cap. 18. per totum.

c Carcerare.] Iuxta Ecclesiæ disciplinam, quem illustrabimus in cap. nouimus, de V. S.

CAPVT VI

Archiepiscopo Lundenfi.

CONSULTATIONI tuæ breuiter respondemus, quod monachus aliquem ordinem in apostasia recipiens, quantumlibet suo fuerit reconciliatus Abbati, & receperit penitentiam, abque penitentia dispensatione Romani Pontificis ministrare non potest in ordine suscepto.

NOTÆ

Lundenfi.] In sexta collectione legitur *Lundenfi* sed ex quinta collectione Honorij III. ita restituo inscriptionem, & litteram. De Lundenfi Ecclesia nonnulla notam in cap. 2. de censuris.

I. **b** Sacrum ordinem.] Non verò si minorem, vt vulgò creditum est, cum præsentis consistorio non sit amplianda contra expressa verba Honorij III. vt notant Theophilus Raynaudus *dist. tract. de apost. cap. 13.* Sanchez *lib. 6. summa, cap. 8. n. 26.* Suarez *de censur. disp. 31. sect. 6. num. 2.* Gibalinus *de clausura Regul. disquis. 2. cap. 3. §. 4.* Agit item Honorius in præfati de solis sacris ordinibus susceptis in apostasia, non autem de susceptis antea: quare in illis ministrare poterit: & quia iuxta textum in cap. *clon illorum, de sent. excom.* maiora intelliguntur illis prohibita, quibus vetita sunt minora, minoresque est vt ordine, quam promoueri ad superiores ordinem: ideo plures, quos adducit, & sequitur Sanchez *supra, num. 22.* Innotat ex hoc Honorij decreto, cum qui aliquem sacrum ordinem durante apostasia suscepit, prohiberi ascendere ad ordinem superiores, nisi interueniat Papæ dispensatio: si autem nullum suscepit ordinem durante apostasia, poterit post reconciliationem, & postquam suæ religioni restitutus est, ad quoscunque ordines ascendere, nulla etiam interueniente dispensatione: docuerunt Theophilus, & Gibalinus *ubi supra*, quia illi tantum sunt prohibiti durante apostasia ad ordines promoueri, *cap. final. 50. dist.* nam decreta contraria Pauli IV. & Pij V. apostatas in perpetuum à quouis gradu ecclesiastico; & cuiusvis ordinis executione excludunt, Emanuel Rodriguez *tom. 2. summa, cap. 6. num. 7.* negat fuisse recepta; præsertimque quod Paulus IV. etiam eos, qui ex Apostolica concessione à monasteriis existant, eodem modo multabat, reuocatum est à Pio IV. vt Onophrius scribit in *addit. ad Platina, in Pio IV.* Videndus Nauarrus *consuet. de apostasia*, de vero sensu bullæ Pauli non parum anepes.

COMMENTARIUM.

In his duobus Decretalibus agitur de tertio apostasie specie, videlicet à religioso ordine: & communiter ex eis talis deductur assertio: *Monachi deferentes habitum, & professionem suam reuocandi, & carceri mandandi, ac aliis penis puniendi donec habitum reassumant.* Probant eam textus in *cap. quidam monachi 16. quæst. 1. cap. propositum, cap. eos qui 20. quæst. 3. Concil. Arelar. 2. can. 25. ibi: Hi qui post sanctam religionis professionem apostati sunt, & ad sacrum redeunt, & postmodum penitentia remedia non requirunt, sine penitentia communionem penitus non accipiunt.* Aquilicau. 2. can. 3. Tolet. 4.

can. 54. *Non aliter & hi, qui à parentibus detinuit fuerunt, aut sponte sua amissi parentibus seipsos religioni dederunt, & postea habitum sacralium sumpserunt, & iidem à sacerdote comprehensi ad cultum religionis ante prius penitentiam reuocentur.* Quod si conuerti non possunt, veluti apostata, membrum sententia subiciuntur. Tributense 1. can. 26. *Sed quis monachus pro lucro anime, vel animarum à suo monasterio exire, & aliud propositum intrare, consensientibus Episcopo, & Abbate, & Fratribus, consentiens, & concordans, quia id scilicet multos sanctos legimus.* Si vero fugâ regularis disciplinam elapsus propositum sanctitati calcet, omnimodis euerendus, & ab hominibus detestandus, atque omni honore est grauandus, vt saltem rabore verecundie confusus, & aere pauperum afflicti redcat, quem relictâ singularitatis professione inimici tenebat. Si autem tam incurrit, & pertinax est, vt ad monasterium redeat, & propositum monachi reuocauerit obseruare, implentur super eum constituta, quæ de eo scripta sunt in sancto canone Concilij Chalcedensis, Sirij Papa, & Leonis, quatenus reuocatus ergastulo, de quo erui tantum possit minimis igne purgatorio. Matiseon. t. can. 19. Lagdun. 2. sub Pelagio can. 3. anno 686. Toletanum 6. can. 5. Tolet. 10. can. 5. & 6. ibi: *Quisquis vel ablatum tonsuræ, vel secularis vestis assumptione detestis fuerit attingisse transgressionem, & excommunicationem, censuram accipit, & religioni semper adheret.* Concil. Vernetense can. 4. *Hi, qui post euidens professionem monasticam etiam habitum reliquerunt, vel qui sua culpa prociuerunt, nisi redeat, & quod Deo responderint, implere consentiant, hoc credimus posse remedia subueniri, si in ergastulo inclusi tandem à communione humanum se abstineant, & pietatis iuvem conuenientibus mactentur operibus, donec sanitatem correctionis adiuuant.* Sicut Pontifex epistolâ ad Hieronymum Tarsacon Episcopum, de monachis apostatis, & coniugium ineuntibus ait: *Vos tantum facimus continua lamentatione desiccat, purgatorio passum penitentiam igne decogere, vt eis vel ad mortem saltem solius misericordiam intueni, per communionis gratiam passis indulgentia subuenire.* Concil. Trecentense sub Ioanne eiusdem vrbs Archiepiscopo, can. 7. Colonienf. 4. can. 1. 2. 3. & 4. Mogunt. 4. can. 78. *De monachis vagantibus, qui ingratum excesserunt, & deserti monasterii, aquo spectat suorum Prælatorum obediencia in sacre versantur, iubemus vt hi diligenter inquirantur, & ad sua monasteria reuocentur, alias per censuram ecclesiasticam punias ad suas regulas, & sub Prælatorum suorum obediencia reuocandi curabimus.* Similia quoque sanxerunt suis legibus Imperatores lib. 4. Basilic. tit. 1. cap. 11. & tit. 9. cap. 4. vt refert Balsamon in *notas an. Phocys. 9. cap. 32.* alia Ant. August. de epis. tit. 31. Illustrane vltra congestos à Barbosa in præfati, Turrianus lib. 1. de vitiis monasticis, column. 1. *Obsequens in summa, verbo Apostata a religione, Abbatidano lib. 1. de*

meru, cap. 10. num. 68. Cironius in notis ad 5. compil. in presens, Gibalinos de clausur. regul. 2. part. cap. 3. per totum, Ricciolus lib. 7. de iure persone. 1. 2. & 3. Gitzo de regimine regul. part. 3. dub. 29. Azot tom. 1. in lib. 1. lib. 1. 2. cap. 17. quest. 6. Fagundes in secundo Eccl'es. praecept. cap. 5. num. 16. Sanchez lib. 6. in Decalog. cap. 8. num. 20. Suarez tom. 4. de relig. tract. 8. lib. 2. cap. 10. num. 3. Theophil. Raynandus tom. 1. tract. de apostasia & relig. ordin. per tot. Thomas Delbene part. 2. de officio Inquisit. dubit. 236. Lertana tom. 1. part. 1. cap. 16. num. 12. Murga tom. 2. disquisit. art. 3. disp. 1. dub. 6.

3. Sed pro dubitandi ratione in praesentem assertionem ita arguuntur. Apostasia ita sunt noxia, & nociva religioni, ut merito omnes religiosi gaudere possint, quod in saeculo separati ab eorum consuetudine degant, ideoque nec requirendi, nec retrahendi sunt, siquidem bonum commune monasterij labefactum, & ideo praeservandum est bono singulari apostatae, quod significavit Sanctus Bonaventura in lib. quest. circa regul. sancti Francisci, quest. 14. ubi loquens de tali religioso inquit: Si Deo permittente talis scriptum euerit, gratia fuit agenda Deo, non quia iste peccauit, sed quia omnes suas in pestifera contagione liberauit: nequam abscedendum qui vos conuertunt, scilicet puritatem vestram, pacem, & finem. Ergo minus recte in praesentia docetur, cogendum esse apostatas in religionem credere ad monasticum, habitumque restitueret. Auguet haec dubitandi ratio ex eo, nam si iure communi populi Praetati regulas monachos apostatas retineant, & carceri mancipare, frustra id concederetur specialibus privilegiis quibusdam religionibus, argumento legis vniuersae, Cod. de thesauro, lib. 10. Sed facultatem excommunicandi, & carcerandi apostatas legimus concessam Praetibus minoribus ab Innocentio VIII. his verbis: Generali, & provinciali minister, & custodes, & ceteri fratres Ordinis Minorum possunt apostatas, & insolentes dicti Ordinis excommunicare, legare, & capere, etiam carceri mancipare, inuocare, si opus fuerit, auxilio fructus secularis. Quod privilegium, & aliud simile Clementis IV. referunt Castroblos in compend. privileg. Mendic. num. 4. Rodriguez tom. 1. qq. regul. quest. 3. art. 6. & simile privilegium concessum fratribus Carmelit. refert Chopinus lib. 2. monast. tit. 1. num. 38. igitur quia iure communi non licet Praetibus Religionum apostatas carceri mancipare.

4. Quia dubitandi ratione non obstante vera est praesens assertio, pro cuius expositione, omittit quae de monachis fugitiuis adduxi in cap. final. de regul. sciendum est, quod licet rideant hi, quibus omnia sacra ludibrio sunt, apostatas dicti monachos, qui monasterio deseruerunt; verum tamen est, quod exemplo eorum qui discedunt a fide Catholica, etiam desertores religionis militie recte apostate dicuntur. Concil. Tolet. 4. can. 34. ibi: De his, qui ex monachis praedicatores laici facti sunt, quod si ad monachum non reuertantur, ut vere apostatae contra Ecclesiam anathematis sententia condemnentur. Arelat. 2. can. 25. Hi, qui post sanctam religionis professionem apostatant, & ad saeculum redeunt. Goffridus Vinoc. lib. 2. epist. 4. De clericis quidem dicimus, quia & religiosi habitum abiecerunt, & in ipsa apostasia dicti morantes, illicitis se coniugiis commiscuerunt. Norauit Bosquetus ad Innoc. III. lib. 2. epist. 54. Apostasia haec committitur per defectionem in statu apostatae per subfalsalia vota inito: quae tamen defectio sufficiens sit, non constat

apud Doctores, ut videre est ex traditis a Ricciolo dicto lib. 7. cap. 1. & 2. Gibalino dict. cap. 3. §. 2. Theophilo dict. tract. de apost. ex quorum veriori doctrina sequentes casus sunt distinguendi. Primus est, cum quis manens in religione, & cum ipso habitu proponit, & profert se amplius nolle manere in religione; adhuc enim apostata non est, ut docet Nauarr. ad hunc tit. consil. vltim. num. 4. Eaigitur enim, ut recessus fiat non proponit tantum, & voluntate sed etiam de facto in Religionis sepius: quo nomine intelligitur totus ambitus domus religiosae, etiam hortu, ut docent Lessius lib. 1. de iustis. cap. 41. num. 109. Fagundes in 2. praecept. lib. 8. cap. 5. num. 1. Secundus casus est, cum quis egressus est de sepius monasterij, teterito tamen habitu. Et negant tantum recessum illum sufficere ad apostasiam, Nauarr. ad hunc consil. 10. Calderin. consil. 1. de apostasia, Graffis p. 1. decis. lib. 3. cap. 26. n. 10. est parum sibi constrictus cap. 27. n. 7. & alij telati a Ricciolo d. cap. 1. sed nonnulli asserunt, similem recessum etiam cum abiectione habitus non sufficere, nisi statim nonnunquam redeundi ad monasterium: ita Ricciolus supra, Caietanus in summa, verbo Apostasia. Et certe qui retento habitu religioso fugit ad saeculum animo ibi haerendi, propterea, & simpliciter est apostata, ut pluribus relatis docuit Suarez d. lib. 3. cap. 8. num. 13. & d. c. 5. a. v. num. 25. Tamburinus de iure Albiat. tom. 3. disp. 8. quest. 1. num. 12. Sanchez d. lib. 6. cap. 8. num. 4. Azot p. 1. in lib. 1. 2. cap. 17. §. 6. Valentia 2. 2. disp. 1. §. 12. p. 1. Theophilus Raynaud. tom. 18. fol. 170. quia nihil testat de declinandam apostasiae labem, quod habitum quis retineat caeteris, si reuera iugum animo excusat eo perfecto modo, qui est apostasiae intrinsecus. Accedit & illa ratio, quia sicut habitus non facit monachum, cap. paritatem, cap. ex parte, de regul. cap. consilium, qui clerici vel uocant. ita habitus conservatio non facit, ut quis censetur intra religionem esse. Nec interest, quod animam habeat redeundi, si per motum notabilem diuagatio extra septa monasterij fiat, ut docuit Tamburinus, d. quest. 1. num. 13. nam retrocessio si statim religioso per aliquod tempus notabile, est vera defectio ab illo statu, aliquoquin religiosus, qui militie nomen daret, reuersurus ad monasterium post aliquot annos non esset apostata; quod nemo affirmavit, ut considerant Theophilus supra, cap. 1. Gibalinus dict. cap. 3. qui aduersus hanc sententiam differentiam assignant inter apostasiam monachi, & fugam, quam & nos agnouimus in cap. final. de regul. Manet ergo, apostasiam in religio ordine, de qua in praesenti agimus, consistere in excussione iugis religiosi perpetua, ane aliquatenus notabiliter diuertit. Unde inferunt, transuentem ad religionem etiam laxiorem, non esse apostatam, ut probat Ricciolus dict. lib. 8. cap. 4. per totum: nec etiam eum qui deserit habitum, sed opertum vestibus aliis, ut contra Ricciolum probat Theophilus d. cap. 1. Gibalinus d. c. 3. §. 2. consil. 1. Similiter religiosus ad tenebras damnatus, si fugiat non animo vagandi, sed ut Pontificem, aliumve superiorem adeat, & quendam rationem inerat liberandi se a tam graui supplicio, non creditur apostata, ut aliis relatis resoluit Gibal. d. cap. 3. §. 2. consil. 5.

Deinde sciendum est, peccatum hoc apostasiae in religioso statu ad eo tertium & horrendum esse, ut viz haeresi excepta, aliud maius sit: praeterquam enim quod fordes labe sacrilegij, & conculcationis primae fidei Christo datur incendio statu

5. DE CRAS
VITAE
HIVIS
APOSTA
SIA.

tum religiosum, variorum etiam peccatorum col-
locum locum continet, ut fusc, & per partes pro-
bat Theophilus d. tract. de apostasia, cap. 7. 8. & 9.
vnde D. Augustinus epist. 137. testatur se, sicut
nomen in Ecclesia agnovit vinibus mican-
tioneis iis, qui in monasteriis degerent piè, &
ex præscripto legum sanctam vitam exigerent;
ita neminem reperisse vitiosorem iis, qui è
monasteriis defecerant, & ad sæculum, cui cal-
ces illuserant, reuertissent. Verè ac sapienter san-
ctus Anselmus lib. 3. epist. 13. ad quendam in suo
instituto labentem monachum dixit: *Nihil sa-
lubrius potest incipere, nihil periculosius potest re-
linquere.* Et Petrus Blesens. epist. 3. ait: *Quid est
claustralem redire ad sæculum, nisi habitaculum corli
cadere in infernum?* Plura de huius peccati atroci-
tate, & infamibus confectis confesserant Tur-
rianus lib. 1. de vitis monach. Theophilus d. tom. 17.
tract. de apostasia, cap. 8. & 9. Vnde cognoscitur,
quam impudenter horrefacta illa verba ætè in-
fando sufficientia protulerit Vilescius, ut co-
ferretur in Concilio Constantensi sess. 8. art. 35.
*Inpredicantes religionem, aut aliquem ordinem, eo
ipso inhabiles sunt ad servandum divina precepta, &
per consequens ad perveniendum ad regna celorum,
nisi apostataverint ab ipsidem.* Et si non per Marcus
Amorion de Dominis religionis apostata, & fidei
defensor eò demerente culpabilis est, ut ex insti-
tuto probare contendit in lib. 1. de Republic.
Eccles. cap. 12. num. 44. apostatam à religioso or-
dine nullà penà dignum esse.

6.

DE POS-
TURA APO-
STATARUM

Deinde quod ad penas apostatarum pertineamus,
sciendum est quod iure civili intento, ut
cavetur d. lib. 4. *Basileus*, monachus, qui monasterium
reliquit, & ad sæculum vitam transiit, mi-
litiæ, & honore, atque omnibus, quæ possidet,
nudatus, ab Episcopo luci & Provincie Præfide
in monasterium traditur, ad quod etiam pertine-
bunt bona, quæ ipsum habere contigerit: quod si
secundum monasterium reliquerit, provincie
Præfides ipsum retinet inter apparitores suos: & eo-
dem titulo cap. 4. sancitur, quod secum factus
monachus, si deinde dimisso monasterio ad sæcu-
lum redierit, propter, & antiquæ conditioni, ac
fortior tradatur. Et cap. 19. si mutuit, ut illi sa-
milis monachi, qui alias exheredati non po-
terant, sed ex testamento, & ab intestato succedere
parentibus poterant, si ad sæculum redierint,
omnia eorum iura ad Ecclesiam, & monasterium
pertineant. Refert Balsamon in *Nomocan. Phoc.*
tit. 9. cap. 12. Iure verò canonico inspecto licet
durante apostasia excommunicandi sint apostatae,
ut ad monasterium redeant, ex variis canonibus
suprà adductis, & interim irregulares sint, cap.
final. 50. dist. atque si ad factos ordines accedant,
suspensionem incurrant, ex prædicti textu; ta-
men purgat apostasia per penitentiam, & recon-
ciliationem nullà penà afficiuntur: & licet non nul-
li excommunicationem laicæ sententia apostata
constitutum esse contendat, ut Azor p. 1.
instit. lib. 12. cap. 17. q. 6. Rebussus in praxi, tit. de
dispens. cum regul. num. 43. Zerola in praxi, verbo
Apostata, num. 2. contrarium tamen veritas do-
cuerunt Gomez de censur. disp. 31. sess. 6. num. 1.
Sanchez d. lib. 6. summa, cap. 8. num. 20. Gibali-
nus d. cap. 3. §. 4. num. 30. Theophilus d. tract. de
apostasia, cap. 13. nam in d. cap. 2. ne clericus vel
monach. lib. 6. non agitur de apostasia, sed de re-
tentiaria habito dimissione facta ad liberè evagan-
dum, etiam absque apostasia: & excommunicatio

statuta in variis canonibus suprà relatis, & in
Concilio Andegavensi, seu Taronenfi celebrato
sub Nicolao II. anno 160. Præfide Stephano
Cardinali A. S. L. can. 10. ibi: *Quicumque mona-
stica religionis desertor invenitur fuerit, à regno
Dei, & a Christianorum consensu sicut apostata ex-
cludatur, & alienus existat donec resipiscens dig-
netur penitentia.* Ea, inquam, excommunicatio est
sententia ferenda, ut per eam cogatur apostata
redire ad religionem; sed dum reuertitur factus,
pristinæ communioni restituitur. Alij etiam vo-
lunt, apostatas ipso facto iuris infamiam notari,
ex cap. alieni 2. q. 7. sed ibi de omni apostasia agi-
tur, etiam quæ est à fide, nec innotuit per ea in-
famiz ante sententiam iudicis. Verum tamen est,
apostatas infamiam facti notari, ut docuit Petrus
Blesens. epist. 86. ibi: *Entrare dispendium tua
opinionis, equanimiter tolerare non possum; scilicet
enim ex fabula in Clero, & in plebe iudicium: pro-
prium defuit in te linguarum proclatias, & qui
te comendat, non deridit: si te lauribus nitro, &
multiplicante sibi herbam barba, non auferatur à
te macula prævaricationis tue: veritatem non re-
putas iniuriam dominum fons. Deinde Rebussus in
praxi, tit. de dispens. cum regul. Oldradus con-
sil. 184. docent apostatas etiam resipiscentes per-
petuò inhabiles manere ad beneficia, & dignita-
tes ecclesiasticas, morti auctoritate textus in
Clement. 2. de elec. & hons. cleric. Sed licet in pena
à Clemente in eo textu non satis expressè statu-
atur, tamen rationi valde consentaneum est, ut
huiusmodi desertores, etiam resipiscunt, à bene-
ficiis, & dignitatibus ecclesiasticis areantur, ut
egregiè expressit sanctus Augustinus. epist. 73. ad
Aurelium, relatus à Gratiano in cap. legi 16. q. 1.
& in Concilio Rauennot. rubric. 22. decrenitur
apostatarum à religiosis ordinibus inhabilitas ad
dignitates quasque ecclesiasticas, & beneficia.
Tandem alij ex eo, quod Co. concil. Trident. sess. 25.
de regul. cap. 29. statuit eos, qui intendentes pro-
fessionem suam nullam esse, recedunt à religione
dimisso habitu, puniendos esse ut apostatas, &
nullò religionis suæ privilegio potiri debere; in-
ferunt nullum à religione apostatam gaudere re-
ligiosis suæ privilegis: sed non rectè id dedu-
cunt ex eo textu, siquidem in penalibus nullis
extensio fit, immò etiam durante apostasia defec-
tor fruitor privilegii religionis, quia per apostasia-
m non desinit esse religiosus: & ita privilegio
forti gaudere, nec à iudice seculari puniri posse,
post longam disputationem docuit Auctario de
metu lib. 1. cap. 10. num. 70. Illis tamen apostatis à
religioso statu peculiares penæ ex indultis, &
privilegiis pontificis religionibus concessis in-
iunguntur, ut refert Rodriguez tom. 1. q. 9. regul.
9. 30. art. 6. & si illi matrimonium contraxerint,
puniantur per Inquisitores hæretice pravitatis.
Ob solum autem apostatam eorum iurisdictioni
non subsumunt, ut resoluunt Sordonus tom. 1. sacri
Tribun. cap. 9. sess. 2. num. 27. Salselles tom. 2. de
mater. Tribun. lib. 1. cap. 12. regul. 108.*

His suppeditis ratio præfatis assertionis, quare
videlicet Prælati possint monachos apostatas
retrahere, & eorum mancipare donec habitum
reassument, provenit ex eo, quis quilibet potest
propria auctoritate rem suam, ubicunque illam re-
perit, vindicare, si quis vi 17. §. differentia,
ff. de acquir. poss. & servum fugitivum domi-
nus capere poterit ubicunque fuerit repertus l. 1.
§. per servum, ff. de iur. iur. quod etiam docetur de
auctilla

7-

Tradit
tva de
tio de
cedunt.

ancilla fugiente, & extra pronitiam reperta, in l. 1. *Cod. ubi de causa statim*: & qui curiz, seu cohorti obligatus fuerit, capi potest auctoritate curiz, & cohortis, cui est obnoxia, l. 1. *Cod. ubi de curialibus*. Unde cum religiosi sint obnoxii religioni, & virtute professionis in eis potestatem transeant, possunt retahi; & recepti per propriam Prælaturam, & carceri mancipari: quam destructionem in exeretem Honorius in præfenti decrevit, quia veteres religionum Fundatores, & Patriarchæ eâ penâ, seu potius medicinâ vti fuerunt. Potho Abbas catæci mancipabat omnes apostasiam molientes, vt refertur in *epist. 72. Hadriani Papa, ad Carolum Adagum*: & ita faciendum esse in-contra-mers apostatas, probavit Christus Dominus apud Sanctam Hildegardam lib. 1. *visi-ne 6. num. 50*. Insigneque est in hac parte exemplum S. Romualdi, qui in patrem suum Sergium factum monachum, cum accepisset meditari apostasiam, eâ penâ vti fuit, vt refert Petrus Damianus in *gestis sancti Romualdi, c. 13*. qui eum præmiis capite antecedenti, missos ad eum Rauennâ numero de patris delitio, & concepta apostasi, ait: *Non equo salus, non vehiculo desperatus, sed solum in manus ferens baculum, nudis plantis, ex inimic Gallicorum finibus*

Rauennam usque peruenit, ibique patrem ad sacellum reuerti valentem reperit, in ligno pedes eius foris strinxit, quibus cum vinculis alligatis, verberibus duris afflixit, & tamdiu corpus eius pia seruitute perdomuit, donec eius mentem ad salutem statum Dei mediantem reduxit.

Nec obstat dubitanti tælo super adducta, nam licet dubitent Doctores, an Prælari regulares teneantur requirere apostatas, & ad religionem reuocare, vt videre est apud Suarez tom. 4. *de relig. lib. 3. tract. 8. cap. 2. num. 17*. Gîtatum *de regim. regular. dubit. 29*. Layman lib. 4. *summa, tract. 5. cap. 13*. veritas tamen est, teneti ex *cap. final. de regul. inôdis* ibi adductis, nisi ita periculosus sit monachus ex-teris fratribus, vt ob eius crimina, & incoer-gibilitatem eliciendus sit à monasterio: qua casu requirendus non est, & iuxta eum accipio auctoritatem sancti Bonauent. Nec obstat aug-mentum ipsius dubitandi rationis; nam licet iure communi ex ratione proximè tradita possint Prælati requirere, & testahere monachos apol-tas, tamen in odium ipsorum delictorum inuol-ferunt Pontifices variis Religionibus, vt possint coisecrari mancipare, & excommunicare, innoce-to, si opus fuerit, auxilio brachij secularis; & ita superflua non sunt dicta priuilegia.

8.

DISCIPULI
VITAE
DUBITAN-
DI RATIO



TITVL VS X.

De his qui filios occiderunt.

CAPVT I.

Alexander III. Tornacensi Episcopo.

Veniens ad nos M. mulier lachrimabili nobis confessione monstrauit, quod cum de quodam filium genuisset, & ille sibi sæpe turgido vultu improperasset, quod filius eius non esset, ipsa iracundix calore docta, eundem filium interfecit. Quo comperto Comes Flan-drensis eam totam terram vsque ad septennium e abiurare coëgit, nisi de nostra licentia remaneret. Cumque se nostro aspectui præsentasset, & quod crucem accepisset Hierosolimam profectura, nobis assertionem sua proposuisset, nos eam quia in partibus illis præsentia sua non posset esse utilis, sed damnoſa, à Hie-rosolymitano itinere reuocantes, ipsam f. t. duximus remittendam, præsentium tibi auctoritate mandantes, quatenus eam labores inducere, vt ad aliquod monasterium^d transcat, ^d in quo peccata sua perpetuâ penitentiâ deploret. Si autem (repugnante carnis fragilitate) ad hoc induci noluerit, ei licentiam in Domino nubendi tribuas quia tutius nobis videtur, vt in Domino^e nubat vni soli, quam inhonestè multos admittat.

NOTÆ.

^a **Tornacensi.**] Ita etiam legitur in prima collectione, *sub hoc tit. cap. 1. post Con-cil. autem Lateran.* sub Alexandro III. p. 50, *cap. 12.* vbi reperitur textus hic, & cita-tur ex lib. 1. *registri Alex.* desideratur inscrip-

tio. De Tornacensi Ecclesia egi in *cap. 2. de rescript.*

^b *Iracundia calere.*] Licet in maleficia ira-cundia non excuset, l. 5. *Cod. de iniuriis, l. per-spicuum* ts. l. *non facta* 16. §. *coram*; s. *de pœnis*; tamen per impetum doloris, seu iustum dolorem delictum admissum quandoque mitius puniatur

21

punitur, l. si adulterium 38. §. Imperator 8. ff. ad leg. Jul. de adul.

c. *Abiurare.*] Idem in exilium temporale missa est per septennium : de qua pœna cgi in cap. 2. de calumniator.

d. *Transat.*] Non ut monialis, sed ut detrusa in monasterium penitentie peragendæ causâ, iuxta tradita in cap. 1. de regul.

e. *In Domino nubar.*] Verba hæc exposita in cap. 2. de secundis nups.

CAPVT II.

Lucius III. ^a *Parisiensi Episcopo.*

Intelleximus ex literis tuis, quod cùm M. mulier latrox præsentium filiam parvam haberet, diabolico furore accensa tandem ipsam suggerente eo, qui de fidelium perditione lætatur, lethali vulnere iugulauit, propter quod Dominus terribiliter matrem eius, & ipsam compulit abiurare. Quia vetò illam habere filios intimasti, unde circa eius exilium debeat dispensari : nos de discretione tua plenam fiduciam obtinentes, eam tuæ duximus prudentiæ remittendam, per A. s. mandantes, quat. ita super hoc provideas, quod sui sceletis pœnam luat, & salutis eius, & filiorum ipsius per tuam providentiam in Domino consulatur : & non obstante iuramento prædicto, quod ab ipsa dictus Dominus proponit extorsisse, eam sicut expedire videris, viro, & rebus suis restituas, ita quod filios suos liberè possit, & pacificè gubernare.

NOTÆ.

1. ^a *Parisiensi.*] Ita etiam legitur in prima collectione, *sub hoc tit. cap. 2.* & post Concil. Lateran. part. 50. cap. 25. De Parisiensi Ecclesia cgi in cap. final. de rescrip.
2. ^b *Martium.*] Quia apud Catholicos exitem coniugem cuius sequi tenetur, ut probat

D. Nicolaus Antonius de exilio lib. 2. cap. 8. num. 22.

c. *Habere filios.*] Liberorum enim ratione mitius agendum est cum delinquentie, *Leuic. 5. si plures, ff. de portio. qua liberis dantur.* Faciunt textus in l. qui in provincia, §. D. Martius, ff. de ritu nups. cap. quia circa, de consanguin. & affin. Illustrat Titiaquel. De panis temper. causa 16.

3.

CAPVT III.

^a Alexander III.

DE infancibus autem, qui mortui reperiuntur cum patre, & matre, & non apparet verum à patre, vel à matre oppressus sit ipse, vel propriâ morte defunctus, non debent inde securi esse parentes, nec sine penitentia ; sed tamen consideratio debet esse pietatis, ubi non voluntas, sed euentus mortis causa fuerit. Si autem eos non latet ipsos interfectores esse, scire debent se grauiter deliquisse : quod ^b Ancyritano Concilio probatur. Quidam autem penitentiam trium annorum iudicant esse debere, quorum vnum peragant in pane, & aqua.

NOTÆ.

1. ^a *Alexander III.*] Ita etiam legitur in secunda collectione, *sub hoc tit. cap. 2.* nullibi tamco exprimitur ut referat Pontifex : & ex prioribus huius textus verbis deduci videtur, in præfati referet partem Decretalis, cuius principium sibi extat : verba autem in præfati transcripta reperiuntur apud Botchardum lib. 17. cap. 59. & citantur ex Concilio Paris. can. 5. & in Penitentiali Romano tit. 1. cap. 30. ita habetur : *Inuenisti infancem tuum in terra te oppressum, ubi tu, & pater tuus simul in lecto iaculis, & non apparuit verum à patre, seu à te suffocatus esse, non debetis securi esse, nec esse sine penitentia : sed tamen in his magna consideratio debet esse pietatis, ubi nulla mala voluntas fuit, sed propria mors : tamen propter negligentiam, qua-*

dragimardes debetis punire. Si autem eos non latet interfectores esse infancem, non voluntas, sed negligentia, tres annos penitere debetis, vnum ex his in pane & aqua, & tempore penitendos ab omni luxuria vos custodire debetis. Idcirco existimo verba in præfati relata Alexandrum accepisse ex dicto can. 5. Concil. Paris.

b. *Ancyritano.*] Apud Botchardum legitur *Ancyranus*, & verè licet Concilium hoc à Gratiano appelletur Ancyritanum, ab aliis Anagninum ; sed verè appellandum est *Ancyranum*. Ancyra enim est ciuitas Orientis, in provincia Gallicie, dioceses modò Asiaticæ, modò Ponticæ, ubi Imperatores Orientis sæpe constitisse apparet ex subscriptionibus legis *quisquis*, Cod. ad leg. Jul. maiest. legis 8. Cod. Theodos. quorum appell. non recip. legis 76. de Decur. cod. Cod. legis finalis de præditi Senator. cod. Cod. legis 1. cod. Cod.

2.

elo lib. 2. *varior. cap. 2. Fortner. lib. 2. rer. quorid. cap. 16. l. Dims 15. ff. de penis, iuncta l. penult. ff. ad leg. Cui. l. liberorum 1. §. final. ff. de his qui notam. infam. Nec defuit exempla parentum, qui hac facultate vti fuerunt. Plura referunt Raulfins Textorius lib. 4. officina, cap. 4. Solorzanos de parricid. cap. 7. D. Ioannes Ramos de parricid. lib. 8. fol. 436. Nec tantum ius hoc concessum fuit patribus in filios naturales, verum & in adoptiuos, ut constat ex epigrammate Petronij supra relato. Vnde cum Aulus Gellius lib. 5. moll. *Attic. cap. 1. tradit formam adrogationis, ait: Adrogatio autem dicta, quia genus hoc in alienam familiam transiit per populi rogationem fit. Eius rogationis verba hæc sunt: Velitis, iubetis, veli L. Valerius Lucio Tizio tam iure, quam lege filius sit, quomodo si ex eo pare, matremque filium natus esset, necesse ei videri, necesseque in eum potestas sit.* Cicero in oratione pro domo sua, ibi: *Credo enim, quoniam in illa adoptione legitimi factum est, nihil tamen te esse interrogatum, an illudne esset, ut in te P. Fonticus videri, necesseque potestatem labores, ut in filio Romulus autem non omnes filios permittit equaliter occidere; nam triconio minores impuot parentes non occidebant, quia in tam temperate ætate nulla iusta occis causa dari poterat, quæ ipsius morte vicifici mereretur, ut volebat Ovidius.**

Quid puer admittit tam paucis edum horis?

Quo lapsi folle vix bene natus auum?

Illustrant Narbona de ætate ad alius humanas, anno 3. quæst. 2. nisi essent monstruosi, aut deformes, quos non solum patet occidere poterat, verum & citò necate cogebatur, ex l. 12. *Tabul. dist. tabul. 4. ibi: Pater insignem ad deformitatem puerum citò necato.* Et similem legem testatur Aristot. lib. 7. *polit. cap. 16. Facit Quintus Curtius lib. 9. ibi: Si quis segnes, aut aliqua parte imiles notauerunt, necare iubem.* Talia enim monstra liberi oio sunt, l. non sunt 14. ff. de statu hominum, l. quod dicitur 12. §. 1. ff. de liber. & postum. l. ostensum §. 8. ff. de P. S. de quarum conciliatiooe cum lege quæret 135. ff. de P. S. videndi sunt Luna, & Arellaeus lib. 3. de ratione Imperio, cap. 5. Baldinus ad 2. *Romuli, cap. 18. Olano lib. 3. Paralip. cap. 3. Hunnius ad Tereut. volum. 1. D. Ioseph. Rites lib. 1. episc. Torrelblanca lib. 5. de iure spirit. cap. 8. Metil. lib. 1. obtem. cap. 33.*

Sed cum patria potestas in pietate debeat, non in atrocitate consistere, teste Marciano in l. *Diuus, ff. ad leg. Pompeianam, l. final. ff. si quis à parente, l. 3. C. de patria potest. adempta fuit Patribus prædicta potestas: & licet emendatio iure patrie potestatis illi permittatur, atrox tamen animaduersio, quæ nec dominis in seruis permittitur, patribus denegatur, l. 5. C. de patria potest. l. vnic. C. de his, qui patres, aut filios occiderunt, l. vnic. C. de emend. propinquorum, l. 8. & 9. *ciuit. 8. part. 6. item si filius proteruus, contumaxque sit, debet eum puniendum iudici**

tradere, ut lege veteri eandem legimus, cap. 29. *Druteron. & iure ciuili receptum, l. milites, §. de ferocem, ff. de re milit. l. nec 9. §. 3. ff. de officio Proconsul. l. 1. in princip. §. 2. ff. de obsequio, l. propter 14. C. de his qui accusare, lib. 10. Basilie, tit. 33. l. 2. ff. ad leg. Cornel. de sicariis, quam expressus in cap. 2. de causa potest. Illustrant latè Solorzanos de parricid. cap. 8. D. Ioannes Ramos dist. lib. 8. per totam. Vnde prædicta facultate patribus adempta ceperunt ob filicidium puniri ordinaria homicidij pena usque ad tempora Constantini, qui extraordinariam equale poenam statuit, itavt parricidij crimen ex lege Pompeia etiam ad ascendentes filios, aut nepotes occidentes protraheretur, l. vnic. C. de his qui patres aut filios occid. l. vnic. C. Theodos. de parricid. quæm Constantini functionem simulavit Iustin. in §. alio, infra, de public. indic. Alfonso nosset in l. 12. *ciuit. 8. part. 7. latè illustrant D. Ioannes Ramos dist. lib. 8. Solorzanos de parricid. cap. 12.**

Circa matrem, & auum matremque certum omni tempore fuit, nunquam illis in vix, ac necis in filios fuisse, l. illud 4. §. 2. ff. de bonor. possess. contra tabul. l. nulla 18. ff. de ius & legis, hared. l. si pater 11. §. 1. l. *Dims 15. §. marri, & §. idem §. ff. ad leg. Cornel. de falsis, ideoque mater filium occidens lege Pompeia de parricid. tenetur, l. 1. ff. ad leg. Pompeianam, ibi: Sed si & mater filium, filiamque occiderit, eius legis pena afficitur: & auus, qui nepotem occiderit, pena eius legis tenetur. Illustrant Solorzanos de parricid. cap. 7. D. Ioannes Ramos de parricid. lib. 8. per totam: & huius delicti mentio fit in his tribus Decretalibus, & variis Conciliorum caonibus, quia frequentius euenire solet, ut matres filios suos interficiant, partim incuria, partim odio, partim ob luxuriam. Tædio enim est iis filios numerosos augere, cum non pro filiis habendis matrimonioium, sed libidinis explendæ causâ contrahunt, ideo cas capitali poenâ plecti voluit Rehbaredus, ut constat ex can. 17. *Concily Tolet. 3. Non solum autem mater, quæ filios suos interfecit gladio, & vi; verum & quæ porcionibus, & venenis, ac alijs prauis artibus necem filijs procurauit, punietur, ut aborsum faciendo, cap. emulsuisti 2. quæst. 5. 6. Synod. Trul. can. 9. D. Basilus ad Amphilocho. can. 2. iuxta distinctionem factus animati, vel inanimati, quam dabimus in cap. siem §. infra, de homicid. quibus in casibus mater poena parricidij tenetur, l. vnic. C. de his qui patrem, vel filios. Quare Minorius Felix in Oltauiano hoc crimine parricidij dixit, ibi: *Sunt quæ in ipsi viderentur iniquum futuri hominis extinguunt, parricidium faciunt antequam pariant.* Reqdè ergo iuxta hucusque tradita matribus, quæ filios occiderant, poenitentia imponitur, oon tamen sacri Canones amplius progrediuntur, cùm inuentum imperium Ecclesia habet, ut ait Gregorius Nazianzenos in epist. quadam ad Africanum.**

7.
DE MATRE
FILIIUM OCCIDITUR.

6.

DE RADIX
PATRIS VO
VESTATE.

TITVLVS XI.

De infantibus, & languidis expositis.

CAPVT PRIMVM.

* Gregorius IX.

SI a patre, siue alio, ^b sciente ipso, aut ratum habente (relegato pietatis officio) infans expositus exiit, hoc ipso a potestate fuit patria liberatus. Nam in hoc casu in ingenuitatem liberus, & seruus^a in libertatem eripitur. Quod & de prædictis cuiuscumque ætatis^c languidis, si expositi fuerint, vel si alicui eorum alimenta impie negari contingeret, est dicendum. Sanè qui hoc suscipiunt, non possunt propter hoc in eorum personis ius aliquod viandare.

NOTÆ.

a Gregorius IX.] Qal vt fuit iura civilis periclitissimus, nonnullas edidit constitutiones ex visceribus iuris civilis depromptas, in hoc volumine transscriptas, inter quas vt præcipua recensetur præfatos, quam deduxit ex nouis constitutionibus Iustiniani relatis in l. penultim. c. de infamibus expositis, eamque edidit.

b Scientie.] Secus verò si ignorantem, vt in l. uxorem 29. ff. de manumiss. testam.

c Pietatis officio.] Et amoris naturalis, de quo egi in cap. 2. de præsumpt. quare iure nature tenentur parentes liberos educare, illisque alimenta præstare, l. 1. §. ius naturale. ff. de iustit. & iure, l. Nescimus 34. ff. de negot. gest. l. alimenta 11. C. eod. l. capite, aliis qui liberos, ff. de ritu nupt. l. si quis ad liberos, §. 1. l. 4. ff. de liber. agnosc. l. 3. & 4. C. de alend. liber. l. vnic. §. iaceat, vers. Silent, C. de rei uxore, assensu, l. final. §. ipsum, & §. filij autem, C. de bonis qua liber. probauit in cap. cum haberet, de eo qui duxit in uxorem, atque ideo contra naturales stimulos facere dicitur, qui tuendi, & educandi filij curam derelinquat, in l. amicitissimos 36. §. 1. in fin. ff. de excusat. tutor. oam cum omni geotri adimantium primò hoc sit à natura tributum, vt se, vitam, corpusque tueatur, vt eleganter prodidit Cicero, cuius sententia comprobata exiat in l. 3. ff. de iustit. & iure. & qui liberos educationi non studet, sospitatemque eorum non curat, prolem propriam necare dicitur in l. necare 4. ff. de liber. agnosc. l. vltim. titul. 20. parit. 4. Illustrant Faber in Papin. titul. 5. princip. 2. illar. 8. & titul. 8. princip. 5. illar. 2. Osualdus lib. 2. Denel. cap. 24. littera B. & lib. 14. cap. 27. littera I. Fornet. lib. 2. rer. quid. cap. 20. Menoch. de arbitrar. casu 396. Petrus Gregor. lib. 11. symtag. cap. 10. & lib. 15. cap. 28. à num. 5. Lara de Capellanis lib. 1. cap. 11. à num. 67. latè & eleganter Gratianus tom. 2. discept. capit. 267. Cæcilia de partu. cap. 4. num. 36. Ideo rectè Gregorius IX. in Decretal. Tom. V.

gorius in præfenti ait, patrem filium exponendo, relegato pietatis officio procedere. Accedit nam vt ait Lactantius lib. 6. diuin. iustit. cap. 20. tam nefarium, inquit, est exponere, quam necare & immò Iustinianus similes patres tanquàm priores homicidiis iudicat in nouel. 153. quorundam miserosiores sunt hi in quos crudelitatem exercent: & certè qui exposit, parum est vt videatur occidere, cum ratò contigat, vt expositi viuant, vt ait Quintilianus declamat. 306. Nec enim per eos sitis, quin morerentur, nisi misericordia diuinà crepi fuissent. Vnde ait Clemens Alexandrinus in religio, patros & infantes expositos, angelis curandos & tractandos committi. Hinc apud Tacitum lib. 5. histor. necare pro exponere dicitur, vbi Lippius pro agnatis, generis legit. Illustrant Brennerus in Tacitum quest. 111. Fofnet. lib. 1. rer. quid. cap. 20. & Patres exponentes filios absque extrema necessitate, peccare lethaliter, probant Fragofo part. 3. de regim. lib. 1. disp. 2. §. 3.

d Seruus libertatem.] Hi pridem ex edicto Claudij Imperatoris Latinam libertatem assequabantur, id est in libertate morabantur, dum viuerent: eorum verò cum mortui essent, bona patrimonium vindicabat. Suetonius in Claudio, can. 25. ibi: Cum quidam ager, & afflata municipia in insulam Æsculapj talia necendi exponerem, omnes qui exponerentur, liberos esse sentia, nec redire in dominationem domini, si comulassent. Et l. 2. ff. qui sine manumissione, l. 2. §. sed scimus, C. de Latina libertati. Vnde credi potest, Tribonianum in l. 2. C. qui sine manumissione ad liberos, Latinæ libertati mentionem sustulisse, quia sublatâ fuerat diuina constitutio legis voce Latina libertati.

e Languidis.] L. 9. §. si ipse seruus, ff. de preulit. Osualdus lib. 2. comment. Denel. cap. 26. littera A. Cabedo decis. 187. num. 6. & 7. immò etiam seruus sanus à domino pro detestatio habebatur, efficitur liber, si prius se occupet gerendo se pro libero. Gloss. 1. & ibi Salicetus in dist. l. vnic. §. sed si scimus, C. de Latina libertati. nam si prior dominus, vel alius prius occupet, occupanti acquiritur, l. vlt. ff. pro de relictis: si autem Do-

X 1 minus

minus seruum pro capitali culpa capium negligat, seu eum non defendat, non ideo detestabile cum videtur, immo si absolutus fuerit, ad eiusdem dominium reuertitur, *l. seruu, ff. de statu hominum, l. sciendum, ff. de public. indic. Carbedo decif. 186. num. 8.* Ut enim per detestabilem amittatur dominium rei mobilis, desideratur factum abiectionis, quod fit contrarium retentioni simul cum animo amittendi dominium, *l. quomodummodum 38. §. 1. ff. de uerbal. l. quod seruus 36. ff. de stipul. seruu. l. 1. & 2. pro detestabile, ubi notat Cuiac. lib. 54. Pauli ad edictum, & lib. 21. obseru. cap. 8. Coornanus lib. 3. comment. cap. 3. Donel. lib. 4. cap. 13. in qua parte obseruandi sunt textus in l. 1. §. ultim. l. qui tenenda 8. ff. ad leg. Rhodiam, l. interdictum 21. §. 1. & sequent. ff. de acquir. possess. l. si seruus 13. de statu hominum, l. ille, §. ff. qui & a quibus, leg. sciendum 9. ff. de public. indic. l. ult. ff. de euict. leg. 2. de seruic. passis, l. sed eisi §. qui in fraudem credit, leg. nemo 24. Cod. de Episc. aud. l. 20. ff. ex quibus causis maiores, l. 43. §. 4. cum sequent. ff. de furt. leg. penult. ff. de rerum diuis. l. 36 ff. de stipul. seruu. l. 45. Iundio Cuiac. ibi. de testac. l. 28. §. fin. autem, Cod. de Episc. & cleric. leg. 7. §. 1. ff. de damno infect. l. si quis decedens, §. qui vero, ff. de solutionibus.*

COMMENTARIUM

4.
CONCLUSIO
TRADITUR
ET PROLA-
TIS.

EX hac Gregorii constitutione talem deduco assertionem: Pater exponens filios amicos sui pariter potestatis, suscipientes vero eos nullum ius in verum personam acquirunt. Probant eam textus in l. 1. §. 4. C. hoc ius, leg. nemo 20. C. de Episc. aud. l. mutuariis, C. communia de success. leg. unic. §. sed scimus, C. de latina libertate. Consonant de iure Regio lex 1. cum sequent. tit. 23. lib. 4. fori, lex 4. tit. 20. parit. 4. Illustrant vltra conceptus à Barbola in praefati, Aetna, Turcistrenata, & Datis in cap. si expostus, 87. dist. Cuiac. ad tit. Cod. de infamibus expostis. & lib. 16. obseru. cap. 36. Forner. lib. 2. verum quid. cap. 20. Baldinus ad leges Romuli, cap. 18. Faber lib. 2. ciuili. cap. 10. Velasco de puil. pauper. 2. p. quafi. 65. per totam, D. Iohannes Vela de delictis cap. 9. quem transcripsit Otto p. 3. diuersarum questionum, quafi. 11. num. 1. Decianus lib. 9. tract. crimin. cap. 8. Petrus Greg. lib. 15. syntag. cap. 28. & lib. 3. de repub. cap. 5. & lib. 4. parit. tit. 13. cap. 3. num. 75. Filescus de orig. parricid. cap. 4. fol. 647. Bignonius in notis ad Adarcus. fol. 613. Nabona de arat. ad actus humanos, anno 7. §. 32. Lindembrog. in Glossario, verbo Expofiti, Cotuinus lib. 4. Aphorism. iur. Pontif. tit. 12. Reuand. lib. 1. ciuili. cap. 17. & lib. 3. cap. 8. Solorzanas de parricid. lib. 2. cap. 5. Moronas respons. 66. Ant. August. lib. 14. epit. iur. tit. 19. Fragofo p. 3. de regim. Chrisi. Rhipul. lib. 1. distat. 2. §. 3. Bernegerus in qq. ad Tacitum, quafi. 111. Barbofa de poss. Episc. alleg. 51. & lib. 2. iuris ecclies. cap. 3. Ant. Matthaeus de crimin. ad lib. 47. tit. ult. cap. 2. D. Iohannes Ramos de parricid. lib. 7. in princip. & lib. 8. pag. 476. I. Gorbhofredus ad tit. Cod. Theodos. de expofitis, eius Pater in leg. 4. Cod. de lib. agnos. Cartaox de parricid. cap. 4. n. 38. Cuiac. lib. 16. obseru. cap. 36. Lura de Capellan. lib. 1. cap. 23. num. 66. Ofwaldus lib. 2. Donel. cap. 26. lit. F.

Sed hæc assertio tam in prima, quam secunda eius parte difficilis redditur sequentibus iuris considerationibus. Prima nascitur ex eo, nam inter præcepta patris potestatis effectus ille recensetur, videlicet ut pater consecratus præter nuptias filiorum, *l. Paulus, ff. de statu hominum, §. 1. Insti. de nupr.* fusc probatur in cap. 1. de despons. impub. Sed in nuptiis filie expofitæ debetur consensus patris exponentis, *l. parum 16. de nupr.* Igitur quia parentes filios exponentes non amittunt patrum potestatem. Faciunt textus in l. uxorem 29. ff. de manum. testam. l. 1. §. si quis 2. ff. de iuris & facti ignor. Accedit, nam Patres iure communi attentu iam ex lege Romuli in 12. Tabulis transacta, ius habent vendendi, seu oppignorandi filios, *l. final. Cod. de paria pasci. l. 1. C. de patribus qui filios dissipauerunt*, immo si eò miseriarum ducti sunt, ut aliter viuere non possint, filiorum carnisbus veli posse, constat ex l. 8. tit. 17. par. 4. Casseus el fuero real de España, siendo el padre cercado en alguna Castille, que coniesse de Señor, si fuisse tan cuidado de sanbre, que no huiesse algue comer, pue de comer al fijo sin mal estanza. Facit textus in cap. 6. lib. 4. Regum. Eleganter D. Hieronym. lib. 3. super Amos, ibi: Nihil enim fasce durius, quæ sepe compellit obsequi humanis uel carnisbus, & in suam sanire naturam; ita ut neque parentes parum libenter parcant, & maritalis affectus uocis dandum amata membra dilateret. Igitur si pater filium vendere, immo & illius ueluti carnisbus imponere potest, multò magis illi licet filium exponere. Secunda etiam pars assertionis, ubi docetur, alicuius filium expofitum nullum ius in eum consequi, difficilis redditur ex eo, nam siue ius ciuile, siue Pontificum attendamus, is qui filium expofitum aluit, potest illum retinere ut filium, vel ut secum, *l. 1. C. Theodof. de expofitis*, ubi Constantinus statuit, ut cuiusque conditionis esset is, qui expofitus fuisset, dominio eius cederet, qui sustulisset, & eiusdem arbitrato, vel tanquam ingenuum, vel tanquam seruum posse retinere. Additur in l. 1. C. cod. iur. Si malis testis Episcopalis subscripfit furis subsequens, id est si de hac re testificatio habita est, ne vlla penitus ad securitatem possit esse cunctatio: nam ex hac contestatione apparebat, eum collegisse expofitum non malo mote, aut mala fide quæsiuisset & captasse (de quo captandi mote inter alia vide Terrelliani locum lib. 1. ad notationes, cap. 16.) Intra quæ legitimæ sanctiones idem inueniunt Patres Synodali Arelat. 1. can. 32. ibi: Si expofitus ante Ecclesiam cuiusque furis miserationes collectas, contestationis potius epistolam, & si is, qui collectus est, intra decem dies quatuor, agnoscitur non furis, securus habent qui collegit. Sane qui post prædictum tempus calumniator existerit, ut homicida ecclesiastica distributione damnabitur, sicut Patrum sanare auctoritas. Refertur lib. 6. Capitul. Carol. cap. 142. & in Concilio Valsensi can. 9. ibi: De expofitis, quia callida ab omnibus querere processu, eos non misericordia iam, sed caribus exponi, quos colligere calumniarum metu, quamuis infelix à præceptis misericordia meat: humanæ detrectet, id obseruandum est, ut secundum finem fidelissimum Augustinum, possint quoque Principum, qui sui expofitum colligit, Ecclesiam conseruare, post contestationem colligit, nihilominus

luminis de altari Dominice dei minister auxonius ab ecclesiastico expofitum effe colligitur, ut intra dies decem ab expofitionis die expofitionem recipiat. Si quis fe probaverit agnoviffe, colligenti pro ipforum decem dicarum mifericordia, prout valuerit, ad praefens revertatur; aut in perpetuum cum Dei gratia, fi voluerit, poffideat. Si quo expofitum hoc ordine colligendum repitum, vel calumniam exiterit, ut homicida habendus effe. Ad quod ius collecti de diftraeti infantis expofiti fpeciat vetus formula, quae temperat inter veteres formulas ad Lindembrogio, & Bignonio ordine 11. in haec verba: Nos quoque in Dei nomine, in matriculari Sancti illius, dum natus in hoc ad offia ipfius Ecclefia obferenda committimus, ibique infantulum fanguinem periculo mortis imminentem, panem involantem invenimus, & ipfum per triduum, fens amplius, apud plures hominum inquisimus, quis fup eo effe diceret, & non invenimus: cui nomen ipfum impofuimus, fed poftea pietate interveniente, & Domini mifericordia optulante, ipfum infantulum homini alicui nomen illi ad nutriendum dedimus, ut fi Deo praefide convalefceret, ipfum in fuis fignis, ac folariis fecundum legum ordinem retineat. Pro qua pretium accepimus, in quod nobis bene exemplum, valens fol. tantis, & ut praefent epiftola firmari fit, manibus propriis cum fubferipturimus, & bonis hominibus rebrandant decrevimus fecundum fententiam illam, qua data eft eis corpore Theodofiani lib. 5. dicentem: Si quis vifum a fanguine emerit, fi nutritum dominus, vel pater eius recipere voluerit, aut eandem meriti accipimus, aut pretium, nuntius quantum valuerit, confequatur. Similem formulam refert Cuias, ad Paulum lib. 5. fentent. titul. 1. Igitur oon redit in praefent alicuius, fufceptum infantem expofitos nollum fias in eorum perfonis acquirere.

6.

DE EXP-
TIS APP-
VARIAS
DINTAL

Qua dicitur ratione non obftante, vera eft praefens alicuius, pro cuius expofitione fcien- dum eft, verofiffimum fuiffe diuerfarum nationum morem exponendi infantes; nam apud Hebraeos vsum illum inuallute, conftat ex fupra pagina Exodus cap. 22. Iofepho lib. 2. antiq. cap. 5. Philone lib. 2. de vite Moysis, ubi de Moysae expofito agitur: & de Ezechiele Prophe- ta refert Clemens Alexandrinus lib. 1. Strom. ibi: Mater quo me peperit, abfcondit me res mifer, ut dixi: cum autem latere non poffem, expofuit. Athenienfibus non tam moribus, quam lege receperunt fuiffe filios exponere, ex Ariftotele lib. 7. polit. cap. 16. tradit Samuel Petit, ad leg. Attic. lib. 2. titul. 4. De Graecis idem conftat ex Diodoro Siculo lib. 5. Biblioth. cap. 6. Seneca in The- bard. ubi de Oedippo ait:

— Teftes domusque parens,

Et in alta nemora pubulum mifti feris
Audis, antequam, quas Cytheram natus
Alis.

Terentio in Menandro, acti 4. fena 1. Aliano lib. 2. varia hiftor. cap. 17. De Romanis, & aliis idem referunt Iulianus lib. 1. & 41. Herodotus in Clio, Valerius Maximus lib. 2. cap. 7. Alianus lib. 2. varia hiftor. cap. 41. Liotus lib. 1. Dionys. Halicarnafensis lib. 1. Plotarchus in Romulo, & de Fortitudine Romana Plinius lib. 14. cap. 18. Mar- o. lib. 4. Aftram. Conftantinus Manafles annal. pag. 42. Strabo lib. 5. geograph. Vatro lib. 2. de re publ. verbo Romulus. Picusque autem expo- nebantur in mari, ut flamine. Ezechiel Tragi- D.D. Gmcal. in Decretal. Tom. V.

cus in Ifaage de precept. Pharaonis, ibi: Deinde fuffit, ut Hebraeorum gens mafculos laeret in pro- fundum fluminis. Ovidius lib. 3. Faftor.

Anno iuberi mergi geminos foetus, inde re- fugit.

In ficca puri defluuntur humo.

Aut in deferta loca: idem Ovidius epif. 11.

Longue iuberi parum caribusque, ambufque
reputem

Iufferas, in folis defluuntur locis.

Exponere autem erant in cupibus, aut sub arbori- bus: & qui relictos imminebant, aut credebant, aut fingebant ex felice excofos, aut sub arborum coctibus conceptos. Allufus illa, quae in Aeneam accensa profatur, precaturque apud Virgilium. lib. 4. Aeneid. ibi.

Nec tibi Diva parens generis, nec Dardanius
auctor,

Perfide: fed duris genuit te cunibus horrens
Caucasus, Hyrcanaque admarum vbera tri-
gret.

Ita Iudum Poete, ita cafum attollunt. Statius 2. Thebaid. de puero regno.

Non tibi digna puer generis cunabula tanti;
Gramineo dedit herba toros, & vixit quattuor
Texta demum, claufa arbuti sub cortice libris
Aeterna tepem.

Et qui liberos exponebant his crepidibus novono- quam appendebant, & annulos inferebant, quibus poftea a fuis agnosceretur. Terentius Heu- tam. ally 4. fen. 1.

— Pl' flula & mifera omnes fumus

Religiofa cum exponendam de ibi, de digito
annulum

Debrae, & oi dico, ut rni cum puella ex-
poveret,
Si moreretur, ne expert partu effet de noftis
homo.

Plautus in Rudene.

Cifellam illis inffe oportet eandem in iffo
vidola,

Vbi fua figna, quae parent niffere hac poffit
fua,

Quidifcum parva perit Athenis, fua dicit
prius.

Notavit Petavius in notis ad orationem 16. Themi- fti. Et expofitis nutriendis locum ampliffimum aedificaffe Trajanum in monte Caelio, refert Sa- bellicus in eius vita, ubi etae columna laetare in foro olitorio ad exponendos infantes, ut teftem fequit Pompeius lib. 10. Alex. ab Alex. lib. 2. dier. genal. cap. 12. Et quibus & aliis notantur Reuatus lib. 1. coniecl. cap. 17. Solortanus de paricid. lib. 2. cap. 5. Eftobaz de raris, cap. 25. num. 46. Gratianus tom. 2. difcept. cap. 167. Beyer- linch tom. 3. theatri, verbo Expofiti. Apud Catho- licos infantes exponuntur ad valus Ecclefiae, Concil. Mailcon. can. 6. apud Barchardum lib. 3. cap. 100. Canonenfem part. 3. cap. 252. ibi: Pl' transfufque praedixit in fua plebe publice annun- tiat, ut fi aliqua femina eleuulo correpta conce- perit, utquoquam filium, aut filiam fuam inter- ficiat, fed quocumque praedixit ingenio, ante in- mas Ecclefiae partum deportari, ibique poni fa- ciant, ut eorum facerdot in crastinum delatus, & aliquo fideli fufcipiatur, & enutriant. Et l. vltim. C. hoc titul. Et apud Graecos infantes re- cecens natos a matribus in Ecclefias aut aitis ca- poni folitos, probat Balfamon in can. 53. epifla D. Bafilij ad Amphilocho. & conftat ex libro 3. lufis

loris Greco-Roman. ad calcem num. 1. ibi: *Ilud queritur, an sint pueri, qui proprios filios in arvis, & adiutorii Ecclesiarum exponunt? Talem synodali sententiâ responsus est, mulieres istas, ut homicidas puniri, et si infantes ab aliquibus educantur. Modos exponendi apud antiquos erat in vasculo ex papiro factu, ac bitumine illito infansem apponere, seu in castris, ut probant Demetrius lib. 1. ad Reginum, cap. 1. Auendano de mena lib. 1. cap. 30. Ne vero periculo evasit, grandiores facti amitterentur à parentibus, solebant veteres notas quasdam eorum corporibus imprimere. Iustinus lib. 44. ibi: *Tunc & lineamentorum similitudine, & notis corporis, que iniuste parvulo fuerant, nepos natus. Immo na privaretur omni modo bonis paternis, in corbe aliquo pretioso exponebantur. Plautus suprà cit. 1. Terentius in Heautont. act. 4. se. 1.**

Cum exponendum de fili, de digito animum Detraho, & ei dico, ut veni cum puella exponeret,

Si moreretur, ne expro parvis esses de nostris bonis.

Verum hanc filiorum expositionem improbat Thebani, lege lata ne liceret cuius cui exponeret infantes, nec in solitudine abicere, penam capitis adiungit, teste Aliano lib. 1. varia histor. cap. 7. quem refert Nouarinius lib. 6. aqua super. cap. 55. Nec minus Romulus laia lege vetuit, Lulius lib. 1. nisi monitrosi essent: quia ut ait Seneca lib. 3. contra, 3. *Nasceretur quidam aliqua parte corporis maculati, infirmi, & in nullam spem laudis. Et expellens rationem reddidit lib. 5. de ira, cap. 15. ibi: Liberos quoque si debiles, monstruosi, que edidi sunt, morgemus: non ira, sed ratio est, a sanis inutilia fecerunt. Illustrat D. Iosephus de Retes lib. 1. apostol. cap. 1. Ex lege etiam Romuli licet filias exponere, quia magis quàm filij familiam gravabant, ut constat ex Halicarnasico lib. 2. cap. 15. ibi: *Hic instans Romulus cinnamur aqua helio, ac pari redditu habilem; magnitudinè verè eum, ac frequentia ita consilii: primò necessarium colonis inopis educandi quidquid esset masculum, & ex filiabus primogenitas. Ergo ceteras permittit necare, vel exponere. Rationem exponit vetus Poëta Menander apud Stobæum in florilegio, tit. 77. versus sunt iuxta vulgarem versionem Latinam.**

Filia masculum, incommode quoque pecuniam

Requeramus inopes filios tollunt omnes, At filias exponunt etiam divites.

Quam Romuli legem illustrant eius politicam rationem reddentes, Petrus Gregor. lib. 15. de republ. cap. 15. ex num. 16. Philippus Beroaldus ad Apuleium lib. 10. de asino auro, latè Catranza de partu cap. 4. de partu exposto, ex num. 18. & Iustitiani in novel. 153. hanc expositionem exoratur asserens, exponendum crudelitatem tantè deteriore homicidio, quantò in calamitosiores exerceatur. Hinc in l. 3. tit. 13. lib. 3. f. 1. 4. tit. 10. part. 4. canetur: *Que inde bonis que de se habere nullo alio, à no bonideri quoniam le come para criar, & a moriere, el que locha, muer ra por ello, ea pueri el bico cosa porque moriisse, tanto es como si lo mataste.*

8.

TRACITUR
RATIO OR-
GIDENDI.

His suppositis apparet ratio presentis constitutionis: nam cum cunctis animantibus à natura insita sit propensio quædam ad educandos fructus, teste Tullio de natura Deorum; quam propensio-

nem stimulum vocat Iustinianus in l. vult. §. fletus, C. de rei uxor. actum. illustrant Plutarchus in lib. de vera Philosophia. Favorinus apud Gellium lib. 12. nocturnum, cap. 1. probat in cap. 1. de comers. infidel. ideo qui contra hanc naturalem propensionem filios exponunt, amittunt patriam potestatem, quia filium suum dicere non possunt eum, quem presentem contempnunt, l. 1. C. hoc tit. Sed nec collectores, & educatores ius vilius domini, aut parentis in eos, velut in filios, aut seruos habere possunt. Non domini, quia et si pro seruo expostum haberint, assertio tamen non derogat ei, qui ex huiusmodi causis in libertatem vindicatur, nec ipsa libertas redimitur pretio alimentorum, ut Trajanus Plinio referent lib. 10. epist. 71. facile lex l. 5. 1. vers. *At si quis, ff. de iuris & facti ignor. iuncto Cuiacio lib. 44. Pauli ad edict. lib. 1. colum. 3. in princ. Non patris, quia talis educatio pro adoptione non credit: & si susceptor filij loco expostum aluerit, alimenta tamen repetere potest, l. 1. C. hoc tit. l. 4. §. si minor, ff. de deli mali excepti. Quinill. de l. 1. 178. ubi de filio exposto, ac tandem à patre naturali agnito discretus ait: *Vix scire quam pater non fuerit? Recipere illum nisi solatis alimentis non potuisti. Quod pro credit nisi educator furis animo sustulerit, l. 1. & 3. C. hoc tit. novel. 153. Iustin. vel si pietatis tantum respectu alimenta præstiterit sine spe restitutionis, quo casu omnem cessare restitutionem, constat ex l. duobus 27. l. Nescimus 14. ff. de negot. gest. l. cum in qui 32. §. penult. ff. de condit. indeb. vel si patre ita pauper sit, ut non habeat unde alimentorum impensam soluat, quia tunc ea perdet, qui expostum sustulit, l. fin. antem 27. §. fin. cum ll. sequentibus, l. in fundo 38. ff. de R. V. Mænet ergo filij exposti liber prius ab omni potestate, & quoad statum habentur pro legitimis, eo quod in maiorem partem præsumendum sit, cum non tantum spiritus, sed & legitimus nati exponi soleant: idque etiam historie summis vicis contristat meminit, veluti Moysi, Cyro, Pandi, Oedippo, atque etiam Regine Babyloniorum Semiramidi. Nec solus pudor, aut infamie metus expositionis causa est, sed & necessaria aliqua, aut infans periculum, aut egestas extrema. Cum igitur quamplures cause sint, aut non tam capientes, quæ fauet conditioni expostorum. Ideo communior & pia sententia fecit, filios expostos censeri legitimis quoad dignitates, & sacros ordines: & ita Gregorius XIV. in Bulla edita anno 1591. Docent Palcott de nobis, & spaur. cap. 61. Maloula de irregul. lib. 1. cap. 11. plures coegit à Barbosa in collect. & 6. tom. in select. in præsentem rubricam, & de poss. Episcop. alleg. §. 1. num. 149. Lata de vita hominis cap. 7. num. 50. Castillo tom. 6. contron. cap. 124. numer. 21. Catranza de partu cap. 4. num. 49. Ricciol. de iure person. de Neophitis cap. 7. Frances de Ecclef. Carbel. cap. 18. à minor. 105. cum contrarium teneant plures, quos sequitur Escobaz. de partu. 1. part. quest. 8. §. 3. num. 38. Sunt tamen exposti incapaces officiorum sancte Institutionis, Ecclesiarum, & Collegiorum, ubi ad sunt statuta requiruntur qualitates parti sanguinis, seu nobilitatis, ut probant Lata de Capellanis lib. 1. cap. 4. num. 37. Gratianus discept. forens. tom. 1. cap. 167. n. 16. Escobaz. de partu. fang. p. 1. §. 5. per totum, Acuña in cap. si capessimus, num. 1.**

non. 2. *diff. 37.* quia licet in dubio expositi boni presumantur, hæc præsumptio nihil operatur, nisi probetur, quando certa qualitas ab statu requiritur, quia non sufficit quod qualitas adfuerit presumptivè, sed debet probari. *Laz. d. cap. 4. non. 39.* Velasco de privileg. pauper. p. 2. *quest. 65. non. 200.* et si contrarium probet Diana p. 10. *tratt. 16. resol. 96. per totum.*

Nec obstat dubitandi ratio suprà adducta, pro cuius expositione sciendum est, olim magnam fuisse quæstionem, ut inquit Plinius lib. 10. *epist. 72.* circa statum eorum, qui expositi fuerant, & ab aliquo suscepti, & educati repetiebantur: & Trajani in rescripto, quod extat apud eundem d. *epist. 72.* ad consultationem ipsius Plinii, qui Consulatum in Bithynia obtinebat, rescribit similes expositos, licet in servitute fuissent educati, in pristinum tamen, quo natal erant, libertatis statum ascendendos, cum æquum non esset, libertatem, quæ inestimabilis est, pretio alimcorum redimi. At hoc rescriptum ad solam Bithyniam pertinuit, & fortè aliæ provinciæ alio iure vivebantur, ex constitutionibus antecessoribus Imperatoris Constantini, qui in l. 1. c. *Therod. hoc tit. l. univ. C. Therod. de his, qui sanguinislimos acceperunt*, constituit, ut cuiuscunque conditionis esset is, qui expositus fuisset, dominio eius cederet, qui sustulisset, & eundem arbitratu, vel tanquam ingenuum, vel tanquam servum posse retineri: quam legem primam intelligendam quidam existimant quoties educator expositum de voluntate domini, vel patris collegerit. Quare illa verba, *quicumque puerum, vel puellam præstatam de domo patris, vel domini voluntate, scientiaque collegerit*, ita interpungenda credit Cironius *in parat. ad hunc tit. ut post verbum, scientiaque*, apponatur virgula, quasi dicat Constantinus, ut quicumque collegerit puerum, vel puellam præstatam de domo patris, vel domini, voluntate, scientiaque, pro filio aut seruo habere possit. Faciunt Firmicus lib. 7. *cap. 1. Expositi mulierum læque similibus implicari. Seneca contr. 33. Expositi in nullo numero servi sunt, hoc legemiatum visum est.* Verùm Iustinianus in d. l. *vit. C. hoc titulo, Novella 133.* ab hoc iure recessit, & constituit eos, qui sic collecti essent, in libertatem vindicandos, etiam si servi nati essent, nec in his ius vllum edgestoribus quærit, ne quasi mercedem contrahendo viderentur pietatis officium gessisse. Præcipue quia plerique infantes excipiebantur, & colligebantur, non tam obtemperanti misericordiam, quàm ut postea ita promeriti ad quæstum meretricium, & ptophanum adhiberentur: quod insensatus Iustinus Martyr in *apolog. 3. ad Antemianum Placum*, ibi: *Primum quidem, quod omnes ferè videmus ad quæstum meretricium educari, atque prodari, non puellæ modò, sed & masculos expositos.* Similiter Gregorius in præfenti abrogavit ius antiquum Concilij Vassensis, & Arelatenis, & statuit ut pater, qui neglecto pietatis officio liberos exposuerit, patria potestate cadat, nec qui eos suscipit, aliquod ius in eis acquirat: & ita iuxta hanc temporariam distinctionem exponendi sunt canones suprà citati, & similiter textus in *dilect. l. patrem 16. C. de nuptiis*, quæ procedit ante novam constitutionem Iustinianam, ut docuit Cuias lib. 16. *observ. cap. 36.* et si ipse aliter textum cum accipiat ad titulum Codicis de nuptiis, & infamibus expositis, & verus formula, quæ extat post formulam

Marculfi, edita à Bignonio, & suprà relata.

Adhuc suprà traditam attentioni opponi potest textus in *can. 6. Concilij Massim.* In illis verbis: *In hoc sancto Concilio decretum est, ut cuiuscunque Presbyter in sua plebe publicè annunciet, ut si aliqua femina elanculo corrupta conceperit, & pepererit, nequaquam diabolo cunctante filium, aut filiam suam interficiat, sed quocunque pravalet ingenio, amantissimè Ecclesiæ potum deponat, utique potus faciat, ut eorum sacerdotum in crastinum delatam, ab aliquo fidei suscipiantur, & maritum, & talis ex causa homicidii reatum, & quod maius est, periciduum evadat. Nam qui filium, aut filiam interficiat, pericida criminatus tenetur.* Referunt Barchardus lib. 3. *Decreti, cap. 10. Carnotensis p. 3. Decreti, cap. 152.* Ex quo textu expresse deducitur, parentes liberos exponentes penis pericidarii teneri. Igitur non rectè Gregorius in præfenti docet, Patres tantum privari patris potestate, nullà factâ mentione penæ corporalis, quâ patres efficiendi sunt exponentes liberos proprios. Pro cuius difficultatis solutione dicendum est, parentes liberos exponentes, atque ita eorum educationem negligentes, regulariter extra ordinem puniri, ut constat ex verbo *Animadversissimi*, quo vivitur Imperatores in l. 2. c. *de infamibus expositis*, & ex l. *penult. C. de patria potest. l. 1. §. pater, ff. de liber. agnos. nam si tutor, qui per mendacium negat pupillo alimenta, deducitur ad Præfectum vrbis puniendus, l. 3. §. sed si non laudat, ff. de suspect. tutor. quænt magis puniendi sunt parentes, qui filios exponendo, omnino illis alimenta denegant. Circa penam autem illis imponendam sequentes casus distinguendi sunt. Primus est, cum infans expositus inde mortuus est; quo casu puniuntur exponentes iegibus Cornelia & Pompeia tanquam scelerius, & pericida. Hic enim verè locum habet sententia Vlpiani in l. 1. §. ff. *ad leg. Cornelianam de sceleris, ibi: Nihil interest occidat quis, an mortui causam probet.* Nec non illud Pauli in l. 4. ff. *de liber. agnos. c. de necro videtur, qui abicit, & alimenta denegat.* Idemque dicendum est, si in solitudine parentes filios exponant, ut fame moriantur, aut serarum laniata pereant, etiam si mors non contingat, quia vitæ quantum in se fuit, nihil desuit opteri, quando auius, & feris iam filium occidendum exposuerant. Vnde Seneca *declam. 10. ait: Curat qui ex solitudine, infantes asserat perierunt, nisi asserantur.* Lactantius lib. 7. *divina, instit. cap. 20.* Non possunt inavocentes existimari, qui viscera sua in prædæ canibus obiciunt, & quantum in ipso est, crudelius necant, quam si stragulascent. Et statim: *Tam nefarium est exponere, quam necare.* Quintilianus *declam. 306. Rurum est, ut expositi vltimè educantur: circa initia animal homines sumus; non serarum, peculatoque factus est statim ingressus, & ad vbera impetus; nobis collatum infans, & adversus frigora nutriendus. Sic quoque inter parentum meriti, gravissimumque meriti sapie labitur; unde nobis tanta felicitas, ut ad infantem mors accessit non veniat: Vos ponat ante vultus puerum suum neglectum, cui mori domi expediret, inde nudum corpus sub celo inter ferat, & volueris. Tertul. in apolog. cap. 9. ibi: Crudelius in aqua spiritum extorquebis, aut frigore, aut fame, & canibus exponis. Minus. Felix in Octavio t. Dux etiam domi natus aliena misericordia frequenter exponitur. Hinc Donatus ad illud Terentij in *Hæmulo. act. 4. scena 1.***

10.
EXPOSITI
CONCILII
MASSIMOLII
CAN. 6.

9.
DIMOLVIT
TIBI DYMI
TANDI BA
TIA.

*Hic profecto est annulus, quem ego suspicor
Hunc, quoniam expofita est uasa.*

Subdit: *Exponere est morti tradere, & obducere.*
Eodem feofo in actibus Apostolorum cap. 7.
vers. 19. dicitur: *Exponere infantes suos, ne chri-
stificarentur.* Atrobis lib. 8. aduers. Gent. ait: *Vos
enim videtis procreatos filios nunc feris, & auihus ex-
ponere, nunc adstrangulatos misero mortis genere
illidere.* Facit Ovidius to epist. Caecias ad Meca-
tium:

*Lanque dare paruum, canibusque, autibusque
nepotem*

Inferas, in solis destituisse locis.

Vagus dedit ille miser, sensisse patres,

Quaque suum poterat voce rogabat auum.

Quid mihi tunc animi credis germane fuisse?

Nam potes ex animo colligere ipse tuo.

Cum mea me ceram solus inimicus in altis

Viscera mortis ferret edenda lapis.

Quid pater admisit tam paucis edibus horis?

Quo lapsu scilicet vix bene notus auum?

Si parui meruisse necem, meruisse putaret:

Ab miser admisso plerumque ipse meo.

Eadem pecos capitis puotuntur pascotes illi, qui
esse non in solitudine, in olla insantes expo-
nunt; nam & facile intercludi posset spiritus re-
bellis, & negligi à præternoctibus in vili testa
conditus, vt testatur Aot. Mathæus de crimini-
bus ad lib. 48. Digest. tit. xli. cap. 1. Secundus ca-
sus contingit cum amotis vi videtæ fœminæ, seu
alterius libidinis obsequiæ, & metu ignominie

adactæ partum exponunt, vt plerumque con-
tingere, aut podotis, aut decoctis seruandi causâ
constat ex Aristophane in nubibus, Calphurnio
Placco delectat. 49. ibi: *Venerit ad nos praua mu-
lier accusatura piamem; infanem adhuc inffis seris
canibus, & diris aliibus exponi.* Ex Plauto de
Cistellario serus 3.

At illa quam compresserat

Decimo post mense ex alto hinc peperit filium.

Pateram seruas sui participat consilij:

*Dat eam puellam et seruo exponendam ad
necem;*

Is nam proicit.

Quo casu outius puoiendæ sunt, cum talis metus
cadat etiam in constantes viros, l. i. §. 8. q. 1. penult.
ff. de eo, quod metus causa: quoad magis in ti-
midas puellas? Docent Iol. Clarus lib. 5. sentent.
§. final. q. 83. Meochois de arbit. casu 396.
num. 7. Tertius casus est, cum pater filium expo-
nunt non in solitudine, sed in loco publico alio-
rum misericordiz; quo caso cum motu sequuta
non est, tantum in eo puniuntur patres, vt ex-
inde priuor patri potestate, quam in filios
habebant, ex præsentit Gregorij constitutione.
Tandem si parentes filios exponunt ob summam
egritatem, quâ laborant, & omoio non desce-
rant, sed ponant in Xenodochio, aut simili lo-
co publice deputato ad exponendos similes in-
faotes, nullâ penâ afficiuntur, vt cum aliis re-
soluit Velasquez de priuileg. pauper. 2. p. quest. 63.
num. 107.



TITVLVS XII.

De homicidio voluntario, vel casuali.

CAPVT I.

In Exodo.

SI quis per industriam occiderit proximum suum, & per insidias, ab altari meo
euclles eum, vt moriatur.

NOTÆ.

1. **E**xodo.] Ita etiam legitur in prima colle-
ctione, sub hoc tit. cap. 1. & repetiuntur
verba hæc in cap. 21. Exodi, vbi legitur volens:
quod verbum cum omiffum fuerit in hac sextâ
collectione, attendi non debet. Quatenus autem
pæceptum hoc legis veteris feruari, sollicitique
possit, capofuit in cap. translati, de consilij. & ca-
pificat Alberic. Geotilis de libris iuris can. cap. 5.

COMMENTARIVM.

2. **V**arias hoios textus foterpretationes addux-
runt repetentes in præfentit, & Ioannes Bru-
nellus ad hunc textum, ex quibus Panoormitanus,
quem fequuntur Gutierrez lib. 1. practic. quest. 2.
num. 4. Visquerus in tract. de immunit. Ecclef.
num. 41. Sarpius de iure asyloium, Sanchez tom. 2.
consilij. lib. 16. cap. 1. dubio 9. & alij, quos refert

Castillo à Bobadilla in sua polit. lib. 2. cap. 14.
num. 33. accipiunt teatum hunc de clericis, qui
ob homicidium voluntarium euellendi fuot ab
altari cut peculiariter ipsi mancipati sunt, vt el-
tino supplicio afficiantur: sed merito eos reful-
tant plures congeffi à Barbofa in præfentit, Mar-
quez in sua gubernat. cap. 32. §. vnic. Delbene de
immunit. Ecclef. cap. 16. dubi. 2. scilicet. 1. & conuin-
ctur ex ipsis textis sacri contextura, vbi gene-
raliter, & indistinctè agitur de homicidijs vo-
luntariis, & per insidias perpetratis. Quare oulla
est ratio accipicodi generalia hæc verba de cle-
ricis tantum. Deinde quia clerici, etfi atrociori-
bus enormitatibus dediti fuot, nisi prius degrada-
ti, non traduntur Curie seculari, immò & in
hoc casu homicidij per insidias perpetrati, cleri-
cum oon possit per iudices seculares ab Ecclesia
extrahi, docuerunt Bernardus Diaz in præf. 3.
cap. 90. & 115. Couart. lib. 2. ver. cap. 20. num. 7.
Aosit. Germonius de fœder. immunit. lib. 3. cap. 16.
num. 91.

num. 91. Aldrete de relig. disp. lib. 2. cap. 16. Omne hac sententia omnia verius dicendum est, in presentia textu agi de homicidio proditoris, sen per insidias admittis, immunitate ecclesiastica non gaudentibus, iuxta tradita in cap. inter alia, de immunit. Eccles. ubi textum hunc exposui. Proditoris autem homicida dicitur, cum nulla praecedente causa rixae, seu discordiae, & secute occidit quis innocentem nihil tale suspicantem, L. propter insidias 14. C. qui accusare, l. final. C. de aliter. cap. si cupit 16. q. 1. autem, de mandatis Principum, per tot. cellat. 3. §. neque: Gregorius XIV. in sua Bulle, ibi: *Aut quis proditoris*: & l. final. tit. 7. lib. 8. ordin. l. 11. tit. 11. eod. lib. docent Connez. d. cap. 20. num. 7. Peguera de off. 54. num. 8. Gutier. lib. 1. pract. q. 2. num. 7. Remigius de immunit. fallent. 14. Thomas Delbene eod. tract. cap. 16. dubit. 20. sol. 1. Germonius lib. 3. de sacer. immunit. cap. 16. num. 59. Fachineus lib. 9. controu. cap. 93. Marquez in suo Gubern. lib. 2. cap. 32. §. 1. Molina de iustit. tract. 3. disp. 23. Sanchez lib. 6. consil. cap. 52. §. 1. Marius Cuesellius de prisca Eccles. lib. 1. q. 1. glossa 7. num. 38. & §. 5. qui contra Dianam quaestione antecedenti intendit textum hunc procedere in eo, qui non consummavit homicidium proditorium, sed tantum attentavit perpetrare. Homicida proditoris etiam dicitur, qui facinoram occidit, quia se defendere nequit, ideo talem homicidam non gaudere immunitate, resoluit Carrasco ad leges receptas, cap. 13. §. 1. Similiter & occidens sacerdotem, Bobadilla lib. 2. cap. 14. num. 43. Item qui institutarium, seu ministrum iustitiae occidit exerceantem alium iustitiae securum, & nihil tale praecauentem. Sesse de iustit. cap. 8. §. 4. Carrasco d. cap. 3. §. 4. num. 11. etiam contrarium tenet Glorba consil. 20. qui circa Alguacellum negativè resolunt, videlicet proditoris homicidium non dari: docent Peregrinus de immunit. cap. 2. num. 5. Ambrosinus eod. tract. cap. 9. num. 7. Farinac. eod. tract. cap. 13. num. 185. Diana p. 1. tract. 1.

resol. 20. Qui autem aliterum occidit in diffinitione, quia non est homicidium per insidias, immunitate gaudet. Glorba consil. 100. num. 11. & 12. Narbona in l. 10. tit. 1. lib. 4. recopil. glossa 12. num. 10. Bobadilla lib. 2. cap. 14. num. 39. Diana 6. p. tract. 1. resol. 13. licet lex 10. tit. 8. lib. 8. res. cap. aliter: Cae è incurre per esse en pena de alon: & contrarium subtili ratione motus defendas Barbosa de iure eccles. lib. 2. cap. 3. num. 101. Circa illum verò, qui seopero occidit, an homicida proditoris indicandus sit, pro parte affirmativa est lex 16. tit. 26. lib. 8. recopil. ibi: *Per ser arma traxera*, 7 que no fuesse de hazer mueres seguras, 7 alouas: & in l. 15. & 17. eiusdem tituli declaratur, quod sit alouus, & quod habeatur pro alouo, in l. 18. tit. 6. lib. 6. recopil. argue ita docuerunt proditorium homicidam esse, Azueodo in l. 3. tit. 2. lib. 1. recopil. num. 10. Maius Correllius de prisca & recent. lib. 1. q. 17. & in C. ad h. Federici, cap. 109. num. 89. Diaconus Perez in l. 39. tit. 19. lib. 8. ordin. Henia in Curia Philip. 3. p. 5. 12. num. 35. Narbona in l. 20. tit. 1. lib. 4. recopil. glossa 1. num. 18. arguendo de familiari, qui reputatur alouus: item in l. 12. glossa 1. tit. 6. lib. 6. recopil. num. 3. Sanchez lib. 6. consilior. cap. 1. dub. 8. num. 16. Pro parte negativa, cui adhaereo, sit mensura iuris ratio, quia instrumentum vulneris, aut homicidij non facit homicidium proditorium, sed animas, & occidentis intentio. Probat Glorba in terminis seoplet consil. 10. num. 32. & in quocunque armorum genere Vincentius Franchich de off. 713. num. 21. At Princeps secularis nihil circa immunitatem ecclesiasticam statuere potest, cum ad eius potestatem non pertineat, nec possit verè, realiterque propriam qualitatè delictis indicare, quamvis possit exacerbare penas. Ergo ex eo, quod Rex alouus esse sternerit, nihil officit, nec proficit immunitati. Ita Diana p. 6. tract. 1. resol. 13. Glorba consil. 50. num. 16. & consil. 90. num. 13. Peguera de off. 40. num. 7.

CAPVT II.

Ex^a Pœnitentiali Romano.

Interfecisti furem, aut latronem, ubi comprehendi poterat absque occasione: quia Iad imaginem Dei creatus est, 40. dies non inres Ecclesiam: & b lanea veste indutus, ab eis, * & potibus, qui interdicti sunt, & à * toro, * gladio, & equitatu illos supradictos dies abstineas. In tertia autem, & quinta feria, & Sabbato aliquo genere leguminum, vel oleribus, pomis & paruis pisculis, cum mediocri ceruisia vtere temperate. Si autem sine odij meditatione, te, * tuaque liberando, huiusmodi diaboli membra interfecisti (secundum indulgentiam dico, propter imaginem Dei,) si aliquid ieiunare volueris, bonum est tibi: & elemosynam fac largiter. Si Presbyter eadem fecerit, non deponatur: tamen quamdiu viuit, * pœnitentiam agat.

NOTÆ.

Pœnitentiali.] Ita etiam legitur in prima collectione, sub hoc tit. cap. 4. & reperitur textus hic in Pœnit. Romano, tit. 1. cap. 14: Sed Burchardus lib. 1. Decret. cap. 60. Carnot. p. 13. Decret. cap. 46. Gratianus in cap. final. 13. q. 2. citant verba hæc ex canone 1. Concilij Aurelian. unde credo præsentem canonem editum fuisse in aliquo ex Conciliis Aurelian. quod non extat; &

ex eo transcriptum fuisse in Pœnitentiali Romano, à quo acceperunt Bernardus Papiensis in d. 1. collect. Raymond. in present.

b Lanea veste.] Pœnitentes olim domo erant in statu pœnitentiae solennis, non solum mutabant vestes, Concil. Agathens. can. 15. Tolet. 3. can. 12. Tolet. 6. can. 7. ibi: *Si qui ingenuorum vtriusque sexus sub nomine pœnitentis in habitu religiosi sunt conuersati, post hæc ætatem conueniunt, vel vestimenta secularia sumentes, ad id, quod*

quod reliquiam, redierunt. Verùm cilicium inducunt. Concil. Tolet. 1. can. 1. ubi dum Patres deserviant publicam poenitentiam agentem, aiant: *Qui sub cilicio divinis fuerit reconciliatus aliorum*. Vbi aliqui malè legunt, *sub concilio*, ut notavit Gibalinus de *clausura regular. disput.* 3. cap. 2. §. 8.

c *Esca, & pusius*.] Alia enim duleia, aliaque potiones prohibentur solennem poenitentiam peragentibus, cap. in capite, §. c. dist. cap. ad monere 33. quest. 2.

d *Thora*.] Nam similes poenitentes non solum matrimonium de novo contrahere, verùm etiam contracto uti prohibebantur, ut probavi in c. 9. Concil. Niborici.

e *Gladius*.] Poenitentes enim solenniter armis cingi vetabatur, cap. ad monere, 33. q. 2. nec vitæ illa ferre licebat, nisi de consilio Episcopo- rum pro defendenda iustitia, cap. falsus poenitens, de poenit. dist. 5. Synodus apud Vormaciam tempore Ludovici Imper. ut refert Hincmarus Rhemorum Episcopus, ibi: *Quicumque propriam vitam derelicta, vel sine culpa interfecit, aliam duxerit uxorem, armis depositis publicam agas poenitentiam; & si communis fuerit, comprehendatur à Comite, & ferre vinciantur*. Sigebertus in *chron. Ludov.*

nicus Imperator à suis desertus, ac proditus, & in perestatem filiorum redactus, Episcoporum indicio arma deposuit, & ad agendam poenitentiam inclusus est.

f *Te, tuoque liberando*.] Hæc verba non sunt accipienda coniunctim, sed disunctim, vel alteroatim, ut post Felinum in præfati docuerunt Caletanos 2. 2. q. 64. artic. 7. Coact. in Clement. si furia fur, 3. p. 5. vnic. num. 6. plures relati à Barbosa in præfati, Gibalinus, de irregul. cap. 4. regul. 3. consell. 3. difficult. 4. ita ut sensus sit, non esse te homicidam, si te, vel tua liberando latro- nem, quem aliter capere, aut impedire non poterat, occidisti; nam si coniunctim capiendis essent hæc verba, nec licita esset occisio furis, nisi ad se, & sua simul liberandum; nec etiam pro defensione suorum bonorum bonorum duntaxat ei liceret occidere iniustum iniustorem absque culpis, sed neque ad defensionem vitæ, nisi illa cum bonorum externorum consecratione coniuncta esset: etsi textum hunc aliter accipiat Petrus Navarra lib. a. de restit. cap. 3. num. 406.

g *Paniculatum ager*.] Quia homicidium non omnino inculpabile fuit, quia etsi pro defensione sua, vel suorum bonorum commissum esset, aliter tamen Clericus sibi consuleret poterat: docet Gibalinus supra, & dicemus in cap. sequenti.

CAPUT III.

* Augustinus super Exodo.

Si persodiens inuentus fuerit fur, & percussus mortuus fuerit, non est illi homicidium imputandum. Si autem oriatur sol super eum, reus erit. Intelligitur ergo non pertinere ad eum homicidium, si fur nocturnus occidatur: si autem diurnus fuerit, ad homicidium pertinere. Hoc est enim, quod ait: Si oriatur super eum sol, &c. quia poterat discernere, quod ad furandum, non ad occidendum venisset; & ideo non debet occidi. Hoc etiam in antiquis legibus sæcularibus (quibus ista est antiquior) invenitur, impunè scilicet occidi nocturnum furem quoquo modo: diurnum autem si se telo defenderit; iam enim plus est quam fur.

NOTÆ.

1. a *Augustinus*.] Ita etiam legitur in pñma collectione, sub hoc tit. cap. 5. & apud Carotenensem p. 10. Decreti, cap. 53. repetiturque textus hie inter opera Dial Augustini in q. 54. in Exodum, ubi exponit legem latam in cap. 22. Exodi, eiusque rationem assignat, & ita priora verba sunt ipsius Exodi, extera verò Magni Doctoris Augustini.

2. b *Fuerit fur*.] Noctè exponit, ac supplet Glossa in præfati, sed superfluo, eum enim deatur fur à furto, hoc est nigro, facile deducitur furem propriè dici, qui ococtus fuit. Varro lib. 14. rerum diuinar. Facit altercatio Hadrani, & Epicteti in illis verbis: *Quid est noc? Laboranti requies, gras- santi iuvenio: per obscuras enim noctes facilius fruentur*.

3. c *Reus erit*.] Hucusque verba Exodi, licet aliter legatur in ipsa sacra pagina, videlicet: Si effringens fur domum, siue iussodius fuerit inuentus, & accepto valdere mortuus fuerit, percussor non erit reus sanguinis.

4. d *Legibus sæcularibus*.] Antiquas leges vocat D. Augustinus 12. Tabul. ubi tabul. 2. de fure nocturno, & diurno ita cauebatur: Si Nox Fura-

rum FAXIT, SEM ALIQUIS OCCIDIT, IVRE CASUS ESTO: Si SE Telo defendit, quiritum, ENDOQUE FLORATO: Post deinde Si CAST ESSENT, se frange esto. Ad quas respectunt Macrobius lib. 1. Saturn. cap. 4. ibi: *Nem esse abs te puto hoc loco id quoque adnotare, quod Decemviri in 12. Tabulis iniustissimè max pro noctu dixerunt. Verba hæc sunt: Si nox furum factum sit, siue aliquis occisus, iure casus esto. In quibus verbis id etiam notandum est, quod ab eo quod est is, non cum, sed sim dixerunt. Cicero pro Milone, non longè à principio, ibi: Tabula nocturnum furem quoquo modo, diurnum autem si se telo defenderit, iniustici imponere voluerunt. Senec. lib. 10. controu. cap. vlt. in fine: Lex, qua nocturnum furem occidi iubet, quoquo modo iubet, non de damnato sententia, sed de fure loquitur. Aulus Gel. lib. 2. noctium Attic. Decemviri nostri, qui post reges exallatis leges quibus populus Romanus vivebat in 12. Tabulis scripserunt, furem, qui manifeste furto prehensus esset, iuxta damam occidi permiserunt, si aut cum sacra sortum uox esset, aut interdum telo se eum prehenderetur defenderet. Quamvis de usu huius legis decemvitalis dubitauerit Pomponius, ut collat ex fragmento Vlpiani in collectione legum Moise, tit. 7. de furto, ibi: Si quis furem nocturnum occiderit, quem lex 12. Tabul.*

enim modo permittit occidere; aut diurnam, quem aqua lex permittit, sed ita demum si se telo defendat, videamus an lege Aquilia teneatur? Et Pomponius dubitat, num hac lex non sit in usu. Et si quis nactus fuisset occideret, non dubitamus quin lege Aquilia non teneatur: fin autem cum possit apprehendere, maluit occidere, magis est ut miseria scisse videatur. Ergo etiam lege Cornelia tenebatur. Idem Soloni, & Platonis placuisse probat Cuiac, lib. 19. observ. cap. 12. Et idem constituerunt Longobardi lib. 1. tit. de homine in curia aliena necesse tempore inueni, ibi: Si mortis tempore homo liber in curia aliena inuentus fuerit, non datus manus ad ligandum, occidatur, & a parentibus non requiratur: quod si manus dederit ad ligandum, & ligatus fuerit, debet pro se saltem octoginta solidos, quia non communis rationi, ut homo nulli tempore in curia aliena silem abfcondit ingrediatur, sed quatenusque utilitatem habuerit, prius quam intret, elatet. Visigothi lib. 6. tit. 2. ibi: Fur nocturnus capus in furto, dum rem furivam secum portare conatur, si fuerit occisus, non vindicatur. Et in l. accedendi, ibi: Fur qui per diem se gladio defendere voluerit, si fuerit occisus, mors eius nullatenus requiratur. Idem eandem fuit in Capitul. Caroli Magni, lib. 5. cap. 291. in legibus Frisionum tit. 5. Neapolit. lib. 1. tit. 13. & de Moscovitis idem tradit Sigismundus de rebus Moscoviticis. De Laccedemoneis legem similem non habemus, quia apud eos furta permittebantur, ut referunt Gel. lib. 11. not. cap. final. Caelius Rhodiginus lib. 3. antiq. lect. cap. 13. notavit Petrus Gregor. lib. 37. synag. cap. 1.

e Quibus ista est antiquior. Nam nulla lex divinis scriptis antiquior, cap. legimus 38. dist. v. potest la Domino data in principio mundi, ut considerat Grosius de iure belli lib. 1. cap. 1. num. 16. f Telo.] Teli appellatione quid in presenti accipitur, exposuit Gaius in l. si pignore 54. §. furem, ff. de furtis, l. si calumnia 233. §. telum, ff. de V. S. & lastin in §. item lex, Instit. de public. iudic. ibi: Telum autem (ut Caius noster ex interpretatione legum 12. Tabularum scriptum reliquit) vulgo quidem id appellatur, quod ab arcu mittitur. Notavit Cuiac, lib. 12. observ. cap. 17. Et licet vulgo telum accipiat pro eo, quod ab arcu mittitur; in presenti tamen accipitur pro eo, quod manu mittitur, siue sit lapide, siue ferrum, siue lancea, & generaliter pro omni, quo iudi homo potest, l. bi qui 12. §. 1. ff. ad leg. Jul. de vi publica, Paulus lib. 5. sent. tit. 3. §. bi qui. Virgil. lib. 9. Aeneid.

Et alius suum telum librabat ab arce. Et lib. 12.

— Fixumque lacrimis
Impendit fragis telum.

COMMENTARIUM.

6. EX hoc textu sequens communiter deducitur assertio: Fur nocturnus impune occiditur, diurnus vero si telo se defendat. Probant eam textus in cap. 1. hoc tit., cap. 3. de sent. excom. cap. dilecto, eodem tit. in 6. cap. §. si fur 13. q. 2. Clement. pastoralis, §. exterius, de re iudic. D. Thom. 2. 2. q. 63. ar. 3. l. sed & §. l. frisionum, §. cum aliter, l. itaque, §. lex, ff. ad leg. Aquil. l. furem, ff. ad leg. Consul. de furtis, l. 4. l. licet, C. eod. tit. l. 1. C. de furtis balnearis, l. 1. C. unde vi, l. si pignore 54. §. furem, ff. de furtis, l. 7. §. vlt. ff. de eo quod metus, l. de pupillo, §. si quis riuas, ff. de nomi oper. num. Con-

sonant de iure Regio lex 3. tit. 8. parit. 7. lex 4. tit. 13. lib. 8. ordin. lex 1. tit. 17. lib. 4. furi, lex 4. tit. 23. lib. 8. recapit. Illustrat vltra congeffos a Barbosa in presenti, & Cenedo collecti. 6. ad Decretal. Cuiac. lib. 15. obs. cap. 19. & lib. 19. cap. 12. Ofuald. lib. 17. Demel. cap. 2. littera O. D. Ioannes Suarez ad leg. Aquil. lib. 1. cap. 1. sect. 1. Fornet. lib. 1. sect. 2. cap. 12. Grosius de iure belli lib. 1. c. 3. §. 2. in notis, Cazena de offic. Inquisit. 2. p. lib. 12. ex nom. 269. Cuiac. lib. 14. obs. cap. 15. Fornetius lib. 1. sect. 2. cap. 12. Solorzanus tom. 1. de iure Indiar. lib. 2. cap. 15. num. 37. Theophilus tom. 4. lib. 3. sect. 3. cap. 6. fol. 393. Carbo lib. de pacif. inimic. lac. Gorhoff. in quatuor finibus, in notis ad tabul. 2. leg. 12. Tabul. Giralpinus de irregul. c. 4. confessor. 3. difficult. 4. Ballamion in notis ad can. 55. Diui Bassily ad Amphilocho. Becanus in audac. cap. 18. Petrus Pithaeus in notis ad tit. 7. colat. legum Adofarc. Cuiac. in l. 7. ff. de eo quod metus caus. Salas in notis ad Petronium, in suoy fol. 36. Petrus Hierodolus lib. 8. Pandell. tit. 3. cap. 33. Diana 4. p. vlt. 4. resal. 7. Ant. Martheus de crimin. ad lib. 48. tit. 5. Pendo tom. 2. Theolog. moral. cap. 20. §. 3. Gibalinius tom. 2. de negot. lib. 6. cap. 7. art. 1. reg. 3. num. 19. Bionch. cent. 4. emendat. assert. 82. Cuiac. lib. 19. observ. cap. 12.

Sed pro dubitanti ratione in presenti assertionem ita insurgit. Nulli licet cuiusvis causae pretexto se vindicare, aut ius in proptia causa dicere, l. nullus 14. C. de iudicio, adeo ut nec tem proptiam liceat proptia auctoritate occupare, l. exco- tat 13. ff. quod metus causa: immo & tam occupans lege Julia de vi venietus, l. 12. §. vlt. ff. eodem tit. eamque amitti, l. 7. C. unde vi, cap. ad hoc 63. l. 6. q. 1. Cassiodor. lib. 4. variat. cap. 10. ibi: Legum repetita est via, & sacra reverentia, ut nihil manus, nihil proprio agatur impulsu. Ergo furem nocturnum nullo modo licet privata auctoritate occidere. Augeret haec dubitanti ratio eo quo, nam si liceret furem nocturnum occidere, liceret etiam & diurnum, eum non minus iste, quam ille auferat bona; & xquale damnum consequatur quis ex omissione bonorum, seu pecuniae, quam ex vitae privatione; siquidem pecunia alta vita dicitur. Siobea in sermone pag. 89. ibi: Argentum, & anima, & sanguis est mortalibus. Martialis lib. 9. epigr. 74. Dixerat Astrologus peritorem te cito, Cimna, Nec, puto, mentitus dixerat ille mihi. Nam tu datus metui, ne quid post fata relinquer, Haussisti patrias luxuriosus opes.

Et quantum decies non tota tabula anno:

Dic mihi, nam hoc est, Cimna perire, cito?

Vnde dicebat Salomon, melius esse mori, quam egere; & maiorem poenam esse privationem bonorum, quam mortem, ex h. vlt. C. ad leg. Iuliam adul. docent Baldus in l. vita, C. de iuri fisci, Titiaq. de nobilit. cap. 25. Ergo si licet occidere furem nocturnum ob defensionem vitae, & diurnum occidere licet ob bonorum defensionem. Deinde difficultis est praesens textus dum in eo sanctus August. affirmat, furem impune occidere furem nocturnum quoquo modo, iuxta Graeculanae leges, cum iuxta leges ipsas desideretur, ut cum clamore testificetur, qui furem tam nocturnum, quam diurnum occidit, l. itaque, ff. ad leg. Aquil. de qua proclamatione laet egerunt Suarez ad leg. Aquil. dist. sessione 1. D. Laurent. Ramitez de Pradi in testera legum, in l. 7. ff. de eo quod metus caus. Igitur non facta proclamatione non licet furem diurnum, vel nocturnum occidere.

Qua

7.
IMPERIA
TYR TRADI
TA ASSER
TIO.

CONCISIO
TRADITAE,
ET PROBA
TAE.

8.

QUOTI-
PLEX SIT
HOMICI-
DIUM.

Qua dabitur ratione non obstante vera est
pretensio assertio, pro cuius expositione sciendum
est, homicidium esse voluntarium, casuale, aut
necessarium. Voluntarium est, quod cum animi
meditatione committitur, quod semper iniurio-
sum est, de quo agitur in cap. 1. hoc titulo, l. 1. &
fieri per totum ff. ad leg. Aquil. ubi D. Ioannes Sua-
rez. Casuale, seu involuntarium est, quod for-
tuito admittitur, de quo agitur in cap. luter, in-
fra, hoc titulo. Necessarium duplex est; aliud
quod lege iubente, seu permissive committitur,
ut cum quis transfugam occidit, l. 3. in fine,
ff. ad leg. Corn. de sicariis; vel cum iussu Prin-
cipia auctoritate, iudicisve committitur, quia po-
testis gladij data est, ut morte nocentium Magi-
stratus pacem ceteris procurent, cap. miles, cum
sequunt, cap. non frustra, cap. si homicidium 23. q. 3.
l. ceterum 13. ff. de offit. Praesid. Aliud, quod ve-
gente necessitate ob vitae, bonorumque conser-
vationem committitur, ut cum in praesenti agen-
dam est; de aliis in cap. de cetero, agitur.

9.

TRADITVS
RATIO ES-
SENTIALIS.

Hic suppositis ratio praesentis assertionis, in
qua docetur, impane licere furem nocturnum
occidere, provenit ex vulgati principio, quo
docetur, cuiuslibet licere vim vi repellere, & se
defendere, etiam si exinde sequatur mors aggres-
soris, l. 1. §. vim vi, ff. de vi & vi armata, leg.
scientiam, §. si cum aliter, ff. ad leg. Aquil. l. 1.
§. cum ardet, ff. si quidam vel pauperem. Facit
Cicero in orat. pro Milone, ibi: Est enim hoc, in-
dices, non scripta, sed nota lex, quam non didici-
mus, accepimus, legimus, verum ex natura ipsa
arripimus, hostium, expressimus: ad quam non
dedit, sed facti; non iussimus, sed imbuti sumus,
ut si in vita nostra in aliquis insidias, si in vim,
in tela aut latrocinio, aut inimicorum incidissimus, omnis
bona ratio esset explenda salutis. Et Apollodo-
rus lib. 1. de Lino agens ait: Ad Theban cum ve-
nisset, cuiusque factus esset, ibi interit ab Hercule
percutus cubare; nec cum Lino scripsit Hercu-
lem, iratus Hercules mortem ei intulit, vixque à
membris factus parata cadis, legis in iudicio legem
Rathementi, qui insus pronuntiatur, si quis no-
cuerit ei, qui vim prae intulerit. Illustrant latè
Mancinus gentilius con. 1. cap. 11. & 12. Mela
miscel. cap. 3. Emmanuel Suarez lib. 1. obs. cap. 2.
Vvsembach. disp. 4. Solorzano lib. 1. de iur. Indi-
car. cap. 14. Connarus lib. 2. comment. cap. 4.
Ricardus lib. 1. var. cap. 1. Hannius ad Trenti,
volunt. 1. diffus. quest. 20. Faber lib. 1. semestr.
cap. 2. D. Ioannes Suarez ad leg. Aquil. fell. 2.
cap. 1. num. 1. Franchet exercit. 12. Auendano
lib. 2. de metu, cap. 45. Cuallos commun. q. 349.
Ergo furem nocturnum ad nos venientem licet
occidere ob defensionem propriæ vitae; furem
autem diurnum non licet occidere, nisi si telo de-
fendat; nam quomodo apud diuinam iustitiam
liberati erunt, qui pro his rebus transieritis, quas
contemni oportet, humana cæde polluti sunt?
Quid enim amplius clarum est, quam vita ho-
minis, cap. suscipimus, hoc tit. l. facimus, de sa-
crof. Eccles. Ouidius in Metamorph.

O fortunatissima, propter hanc animam concede
mibi

Tua cætera sumpta.

Iuuenalis satyr. 10.

Da spavem vita, maledi da Iupiter annos;

Huius ob exemplo discas non perire rebus;

Et vitam te realius iustitiam enodare.

Idque Crispus suo exemplo demonstravit; qui

cum eadem navi sese cum piratis versari cognov-
isset, omnia in mari proiecit, ne vi illum expro-
barent hi, cum quibus navigabat, eum preposi-
tarent. Deinde ex precepto Evangelico tenemus
potius post tunicam relinquere pallium, & re-
rum sustinere luctum, quam pro conferendis vi-
libus, & transitoriis rebus tam acciter exarde-
scere, ut ex D. Paulo referatur in cap. 1. 23. quest. 3.
cap. suscipimus 23. de homicid. Vnde rectè iuxta
legem Moysi datam, & antiquas leges diversarum
gentium Sanctus August. in presenti docuit,
impune occidi posse furem nocturnum,
diurnum verò non aliter, quam si telo se de-
fendat.

Supersit ut rationem differentie assignemus,
quare licet furem nocturnum occidere quoquo
modo; diurnum verò ita demum, si telo se de-
fendat. Et communiter ab antiquioribus in pre-
senti ea assignant, quia videlicet non constat,
an fur nocturnus veniat tantum ad furandum, an
etiam ad occidendum; & quia presumitur ad
utrumque venire, occidi potest; diurnus autem
cum cognoscatur, quod solum ad furandum ve-
nit, non potest occidi. Verum hæc communis
ratio facile refellitur; nam ob similem metum, seu
ambiguitatem non debet quia homicidium per-
petrare. Verè enim dictum est à Cicerone lib. 1.
de officiis: Plurimas iniurias à metu proficisci. Et
Cicero apud Xenophontem aiebat: *Mulius*
ego non, qui calumniæ adducti, aut suspitione, dum
metuent alios, & proavere malum quam perpeti,
avocissimis malis eos affecerunt, qui nihil tale fecerunt
fuerant, aut neque cogitaverant quidem. Cato in
oratione pro Rhodensibus, ibi: Quid illa dicimus
voluisse facere? id nos priores facere occupavimus. In-
signis tatar senrentia apud Gellium his verbis:
Gladiatori compositi ad pugnam, pugna hoc pro-
posita fors est; aut occidere, si occupaverit; aut oc-
cumbere, si cessaverit. Hominum autem vita non tam
iniqui, neque tam indomiti necessitatibus circum-
scripta est, ut idcirco prior iniuriam facere debeant,
quam nisi feceris, pati possis. Cicero apud Quinti-
lianum lib. 5. de relect. ibi: Qui hoc statum tu-
quam, aut cui concedi sine summo omnium periculo
potest, ut cum iure poterit occidere, à quo metuisse
se dicat, ne ipse posterius occideretur. Vnde de his
diebat Livius lib. 3. Cavendo ne metuant homines,
metuendas ultra se efficiunt. Vnde omnia hac
communi ratione, verò dicendum est, legum-
latores supponere leolum rerum causa furem in-
terfici non posse, sed si ipse in periculum vitæ
me adducat, tunc mihi licet à me auertere pe-
riculum, etiam cum diuino vitæ alienæ; nec mi-
hi opponi posse, quod me in differentem addu-
cerim, dum rem propriam cupio retinere, aut oc-
cupatam extorquere, aut furem capere; nam in
his omnibus nihil mihi potest impotari, cui ver-
ter in actu licito; nec cuique iniuriam faciam,
etiam iure meo vito. Differimus ergo diurni, &
nocturni furis ratio in eo consistit, quod nocti
vix sit copia restium adhibendorum; atque ideo si
sue occisus reperitur, facilis creditur ei, qui à
se vitæ tuendæ causâ dicit furem interceptum
reperit, etiam cum aliquo instrumento, quo
docere possit. Vnde presumelo est aduersus fu-
rem defendisse se telo. Quare quod impræ senti di-
citur, furem nocturnum imponè occidi, intelli-
gimus si pateret ei sine periculo suo dominus do-
mus non potius, l. furem 10. ff. ad leg. Corn. de
fur. nimirum rem seruando, ut docuerant Grotius

10.

TRADITVS
DETERMI-
NATA UTIL
PRAEIORE
TRADITVS
DETERMIN.

de iure belli lib. 2. cap. 1. nom. 12. Gibalinus de irregul. cap. 4. nom. 4. Alij autem differentie rationem assignant inter furem nocturnum, & diurnum ex eo, quia delicta noctu admiffa, fugitiosa, ac maiori poenâ digna censentur. Vnde fures nocturnos gressitantes dixerunt Gellius lib. 1. noſt. cap. 1. Horatius ibi:

ſi ingreſſent homines furgenti de nocte latrones.

Facit Salomonis proverbium: *Qui male agit, odit lucem*, repetitum in cap. confuſus de offic. deleg. cap. unic. et ecclef. benef. cap. Anagſtius, 12. diſt. cap. clericus, 81. diſt. in ſummario tit. 3. part. 4. ibi: *E per eſſo dice Salomon, que quien mal ha- ce, aborrece la luz, porque los homes no ſepan las ſus obras: y per eſſa razon poſieron los ſabios que hiziſſen las leyes a las vegadas maior pena a los que pecan en embuelto, que a los que la hazen paladinamente.* Illuſtrat Salmut. ad Paucirel. lib. 1. tit. 44.

11. Nec obſtat dubitanti ratio ſuprà adducta, nam inter alias exceptiones ipſius regulæ, quas reſert, exponitur Vultus in l. 1. Cod. quando liceat quicunque ſine iudicio ſe vindicare, prima, præcipuaque eſt quando agitur de defenſione propria, quia tunc ſeruo moderamine inculpate tutele, licet aggreſſorem occidere, cum eo caſu non tam vindictio, quàm defenſio inveniatur. Nec obſtat augmentum primum ipſius difficultatis, pro cuius expoſitione ſciendum eſt, dubium eſſe apud Doctores, an licet ob vitæ defenſionem furem, ſeu alias aggreſſorem occidere permittitur, ſimiliter ad ſervanda bona propria liceat? Et ſunt plures, qui negant, moti auctoritate textus in cap. 2. hoc tit. in illa verbis: *Teſtisque liberando; & præſentis textus, vbi docetur furem diurnum non aliter occidi poſſe, quàm ſi telo ſe defendat: & textus in cap. ſuſcepimus, hoc tit. In illis verbis: Saniſſi fuiſſe poſt pædium relinquere tunicam, & temporalem iacturam pati, quàm pro vitibus ita exdeſerre. Et eſſe ſignificati, al. 2. hoc tit. vbi præſbyter eo quod latronem res Eccleſie diripiente forſorrio percuffus, declaratur irregularis, ſi vulnus levale fuit. Et Gratius de c. t. n. 13. aſſertit laxatam eſſe in hæc parte legem Evangelicæ diſciplinæ, & iuxta communem Theologorum, & luſitconfultorum ſententiam licere furem occidere rerum defendendam cauſâ, etiam extra eos fines, in quibus læa Moſis, & Romana id permittit. Sed verius dicendum eſt, licere furem occidere, quando omnia bona, vel maiorem eorum partem auferret, ita ut quis inde ad magnam egeſtatem reduceretur; nam bona temporalia quodam modo vitæ comparantur, & ad illam conſervandam ſummè neceſſaria ſunt, ut traditur in Luduacati, in fine, Cod. de aduoc. diuerſ. ind. Facit elegans textus in l. libitici 6. q. Neſennius, ſ. de offici. Preſid. innotis traditis à Tiraque, in l. ſi tuncquam, verbo Roma, à num. 1. Cod. de reuocand. donat. Quam ſententiam tenet Couart. in Clement. ſi furioſus, 3. part. q. unic. nom. 6. hoc tit. Sorus de iuſt. lib. 3. art. 8. Panoromit. in cap. 2. hoc tit. Leſſius lib. 2. de iuſt. cap. 9. dub. 11. Gibalinus diſt. cap. 4. de irregul. conſeſ. 3. diſſicult. 4. Diana 4. part. tract. 4. reſol. 4. Nec fauere conſtatæ ſententiæ textus in cap. 2. hoc tit. cuius veram interpretationem in eius notis adduxi. Nec etiam præſentis textus, in quo expreſſè docetur, furem diurnum occidere licere, ſi telo ſe defendat, nolitque bonâ reſpicere. Vnde deducitur, licere domino furem occidere quando aliter res proprias recuperare non valet. Nec etiam obſtat textus in diſt.*

cap. ſuſcepimus, hoc tit. Nam reſpondendum eſt, homicidium de quo in eius ſpecie, non fuiſſe factum in puram defenſionem, quod probatur primò, quia clerici illi ligauerunt latrones, qui ad furandum venerant; vnde apparet, facilius potuiſſe eos liberos, & vacuos dimittere ſine villo periculo rerum, ac perſonarum. Secundò quia ut Gloſſa ibi notauit, monachos, qui illos occidit, nulla neceſſitate conſuſus id fecit; ſiquidem potuit ipſe fugere priùs quàm illi à vinculis ſoluerentur. Nec etiam obſtat textus in diſt. cap. ſignificati: nam reſpondetur, in eius caſu percuffionem minime neceſſariam fuiſſe; ſufficiebat enim clamor, quando quidem ſtatim adfuerunt parochiani, qui latronem illum cohibuerunt, & occiderunt, ut poſt Sazarium, & alios docuit Gibalinus diſt. cap. 4. conſeſ. 3. diſſicult. 4. alia ſi alio modo ſacerdos ſe defendere nequirit, iuſtè occideret latronem; idemque Hildebertus Cenoman. Episcop. ep. 60. præſatus non excedere ſacerdoti latronem, à quo inuaditur, occidere, ſubdit: *Tamen inuazum fore ſacerdotem, ſi latronem occidat, cum aliter ſe defendere nequirit.* Nec obſtat vltimum augmentum ipſius dubitanti rationis; nam licet Gratius diſt. lib. 2. de iure belli, cap. 1. nom. 2. eſtimate legem 12. Tabul. tam in fure nocturno, quàm diurno cauere, ut occiſor cum clamore id teſtificetur, motu auctoritate Gay in l. 4. tit. 1. ſ. ad leg. Aquil. verius tamen eſt, legem 12. Tabul. furem noctu deprehenſum occidere permiſſe ſimpliciter, ut conſtat ex verbis ſuprà relatis, ſeu omni modo, ut Vlpianus ſuprà in notis tranſcripſit alij; vel quoquo modo, ut D. Auguſt. in præſenti, & Seneca & Cicero ſuprà relati aiunt, qui omnino excludunt neceſſitatem clamoris. Quare I. Gothof. in probationibus diſtæ legi 12. Tabul. eſtimate, Tribunaliſmum manifeſtum addeſſe in diſt. 1. 4. cum lex Decemviriſis tantum in fure nocturno periclit clamorem, ſeu teſtificationem. Vnde rectè D. Auguſtinus in præſenti referendo ſententiam ipſius legis Decemviriſis dicit, iuxta ipſam licere furem nocturnum occidere quoquo modo, id eſt etſi abſque clamore non teſtificetur. Quod etiam voce quoquo modo, vbi fuerunt Cicero, & Seneca ſuprà relati.

Sed adhuc ſuprà traditæ aſſertional obſtat textus in cap. de his 6. 50. diſt. vbi aperte docetur, clericum, qui ſe defendendo paganam occidit, multum ſibi conſulere ſi à ſacerdotali officio ſe abſtineat: ergo quia non licet etiam ob propriam defenſionem furem occidere. Cui difficultati Archid. & Turriſis, ibi, Plouſus de irregul. nom. 11. aſſeruerunt, textum illum eſſe accipendum de conſilio, non verò de præcepto, iuxta illa verba: *Multum ſibi conſulti.* Sed hæc ſolutio ſuſtineri non poteſt, quia aperte repugnat verbis illis euſdem textus, irreprenſibiliter, indebitè, & damnoſiliter, quibus manifeſtè conuoluitur, Nicolauum Papam non conſulendo, ſed potius præcipiendo in eo textu reſpondere. Nec obſtat verbum illud, conſulti; nam ſæpiſſimè conſultatur id, ad cuius obſeruantiam neceſſariò quis tenetur, cap. ſi enim 28. quaſtione 1. Quare hæc ſolutio conſiſt. verius dicendum eſt cum Gloſſa finali in eo textu, quam ſequitur Saxæ de cenſur. diſpo. 46. ſeſt. 1. nom. 3. In eo caſu clericum irregularitatem incurſiſſe, quia defenſio non fuit cum moderamina inculpate tutele, ſiquidem vnus à pharizæis occiſus fuit; & ſimiliter, homicidium, de quo

12.
EXPOSITIO
TVA CAP.
DE HIS
60. DIſt.

ibi, iniuriolosum fuisse, ex illis verbis: *Si postea per penitentiam emendat.* Et ibi: *Damnabiliter.* Quia verba ostendunt, occisorem peccasse, peccatum autem non potuit nisi excedendo defensionis modum. Quo modo etiam accipiendum est Concil. Trident. sess. 14. de reform. cap. 7. in illa verbis: *Si verò homicidium non ex proposito, sed casu, vel vim vi repellendo, ut quis se a morte defendat, fuisse commissum narretur, quare quodam modo dispensatio iure debeat, &c.* Necessarium enim textus hic intelligendus est de homicidio culpabili, quando videlicet defensio non est pura, sed transit in aggressivum; quod facile, & sæpius contingit. Vnde apud Gentiles homicidium necessarium explebatur per manuum ablationem: probat Morinacius ad l. 3. ff. de iust. & iure: ideoque affirmant Patres, in eo canone dispensationem quodammodo iure deberi, quia homicidium non voluntarium simpliciter, sed necessarium, celsi non servato moderamine inculpate turbae, admissum fuit. De eodem etiam homicidio ob defensionem, etsi non puram, perpetrato, accipiendi sunt textus in cap. si quis viduum, 50. dist. in illis verbis: *Similiter si homicidium, aut factio, aut præcepto, aut consilio, aut defensione.* Et cap. a. in fine, de clericis pugnans, in dicit. quo modo autem moderamen inculpate turbae consideretur circa modum, tempus, causam, factum, expo-

nunt P. Caballus de homicid. numer. 23. Capula consil. crimin. 41. Tul. Clarus lib. 5. sentent. 5. homicidium, numer. 34. Guaxinus in defension. reor. cap. 4. oouisset Basilius de iust. 16. criminali.

Ex supra traditis lucem accipit textus in can. 55. epist. D. Basili ad Amphilocho. in illis verbis: *Qui se latronibus adversos obiciunt, si sint quidem extra Ecclesiam, ab omni communione arcantur, si sint autem clerici, à gradu depellantur; quicumque enim, inquit, gladium accipit, gladio peribit.* Cum enim in eo canone esset D. Basilius de illis, qui se latronibus opposuerunt sponte, non verò ab eis in necessitatem adducti, homicidium perpetrarunt; ideo ut veris homicidis penitentia imponitur, aliis si homicidium contingeret iuxta supra tradita, cum fur nocturnus erat, vel dimitteret, & telo se defendebat, penitentia non imponentur. Eodem etiam modo intelligendus est textus in cap. quinquages. 33. 33. quæst. 2. vbi D. Augustinus. Ita ait: *Qui vero fore aliquæ publicæ administratione, maleficium, furtum, sacrilegium, & adulterium, vel quæcumque criminum interfecerit, aut transgesserit, vel membris debilitaverit, vel homicidia indicabitur.* Vbi D. Augustinus agit de eo, qui furem occidit prius auctoritate, non pro defensione propria, sed potius ipsum aggrediens, nulla necessitate condus.

13.
EXPOSITIO
TYA CAM
ST. S. BA-
STI. AD
ANATH.
LOCH.

CAPVT IV.

Hieronymus.

Cum iuramento pollicitus est Herodes salatrici dare quodeunque postularet ab eo: si ob iurandum se fecisse dicit, si patris, matrisve interitum postulasset, facturus esset, an non? Quod ergo in suis repudiaturus fuit, continere debuit in Propheta.

NOTÆ.

Hieronymus.] Ita etiam legitur in prima collectione, sub hoc tit. cap. 6. & apud Burchardum lib. 12. Decreti, cap. 16. Catoenensem part. 12. cap. 73. vbi testè adicitur in cap. 14. Matthæi: nam eum D. Hieronymus exponeret Evangelium ipsum Matthæi cap. 14. vbi refertur iuramentum prælitum ab Herode, & adimpletum in

nec D. Ioannis Baptistæ, verba in presenti transcripta adducit, ex quibus communiter repetentes in præfati deducunt, sub generali promissione, quantumvis iurata, non venire illicitum: quod axioma vatis auctoritatibus firmat Gratianus cons. 12. quæst. 4. per tot. & latè illustravit Præceptor Petrus Bajo Attygo in repetit. ad textum in cap. Quinquages. de iurur. ex quo commentarium huius textus petendum est.

CAPVT V.

Ex Concilio^a Guarmaciensi.

Si aliquis causâ explendæ^b libidinis, vel^c odij meditatione, ut non ex eo soboles nascatur^d homini, aut mulieri aliquid fecerit, vel ad potandum dederit, ut non posset generare, aut concipere, ut homicida teneatur.

NOTÆ.

Guarmaciensi.] Ita etiam legitur in prima collectione, sub hoc tit. cap. final. Burchardus verò lib. 17. Decreti, cap. 57. citat verba hæc ex Concilio Vonnæ. can. 50. de quo Concilio nonnulla adduxi in cap. de consil. cap. 1. de divort. etiam extat textus hic in pœnit. Romano, tit. 1. cap. 3.

b Libidinis.] De poculo à masito explen-

de libidinis causâ dato agemus infra.

c Odij.] Sunt etiam pocula odij, de quibus habes duas declarationes post institutiones Quincilian. 14. & 15.

d Soboles nascatur.] Hæc verba ut diuersum casum continent ac antecedentia, intelligi posse credo de illo maleficij genere, quo parvus ultra legitimum & naturale tempus protendebatur, cuius impie gravitatis à lege peccatae habemus testimonium apud Apuleium lib. 4.

lib. 4. de *afino auro*, illis verbis: *Amatoris sui vocem, quid in eam dicaculè probrum dixit, fragorantem facinram, obsequio vero, & repugnans factu perperam fragorantem damnavit: & cum ei numerum infesta illa allo amorum aura, velut elephorum pariter diffunditur. Extat etiam lepida narratiuncula, quæ hanc rem comprobat, & illustrat apud Paulianum in Boetio, his verbis: *Farmacida Thebani à funere missus auro, ut parerent Alcimena impedimentum esset, sed eas dum Alcimena parum indubitem, à Theoria filia Hiftride tali commento delusus. Ex eo namque loco, unde illa facile audire possem, clamante peripser Alcimena: illas ex voce decipias statim abijit. Alcimena ipse putram emissa est. Eadem industria elusus fuerunt prestigie magicæ, quibus inferebatur dilatio partus uxoris Ildesponi XI. in clyti Castella Regis, Lusitanie Regis filie, à Leonora Guzmanensis, quæ dum Ildesponi amore flagraret, cuiusque iamdudum vacat libidini, vetebratur ne forsan liberis ex vxore editis, communi voto adimplero, quod asperiorum coniugum iurgia sedare solet, frigidesceret erga eam, & eius filios amor veteri consuetudine hincatus. Quod ex historiis nostris constat, & narrat fuerit Comes de la Roa in libro vernaculo idioma scripto, *Rey Don Pedro defenidido*. Si autem quæras, quod vescenti genere magici partum disserter, illud certè narratur, quod ad fores puellæ residetent, & popitem populi imponentent, digitoque manuum pectinatum concenterent. Ideo Ovidius 9. *metamorph.* ipsammet Iononem hoc incantatorio habito infensum Alcimenæ partum defecit sustinuisse his verbis:**

*Vixit mens audit genium, succedit in illum
Ante fores aram, dextroque est popite laeum
Pressa genu, digisq; inuicem se pellunt iuuetis,
Sustinet partum*

De hoc modo connectendi digitos, plura Plinius lib. 28. cap. 6. quod etiam veneficium est impediendis adionibus aliorum. Tunc sic ad rem nostram Plinius prædicto loco: *Item poplites alterius genibus imponit: tantum hac in re in comitiis ducant petestatem fieri, ut veterem maiores, & sacris, cuiusque simili modo interesse. Minus quàm soler sedulus hæc verba Plinii examinavit Alex. Neapol. *dier. gentil.* lib. 4. cap. 11. illustrat P. Pinto in *spicil. tract.* 1. cap. 29. num. 10. Sed vnde homicidium? Ex eo quippe; quod impedito partu, & vltia legitimum tempus detento, accidit casus, ut in vtero moreretur fetus, & ita homicidium consideratur à Partibus in presenti. Et si hæc interpretatio non placeat, scilicet erit, quæ accipit hæc verba de illis incantationibus, & poculis, quibus fetus animati abigebantur, ita ut vitii nasci nequirent.*

e *Homin.* Maleficis enim ligando, ut probati in cap. 4. de *frigid.* & maleficiat.

COMMENTARIUM.

2. **CONCL.** **310** **TRADITUR** **PROBA** **EV.**
EX hoc canone Concilij Vornat. sequens communiter deducitur assertio: *Pe homicidia puniuntur, qui homini, vel mulieri poculum dedit, ut generaret, vel nasci foetiles non posset. Probat eam textus in cap. consensu 2. quæst. 2. cap. aliquando, cap. quod vero 8. cap. Apyes 32. quæst. 2. cap. nasci, 56. dist. Concil. Brachar. 2. can. 77. ibi: Si quæ mulier fornicata fuerit, & infantem, quod exinde fuerit natus, occiderit, & quæ*
D.D. Gonzal. in *Decretal.* Tom. V.

*Inducere abortum facere, & quod conceptum effundere, aut certe si non concipiat, elaborat, sine ex adulterio, sine ex legitimo coniugio, hæc tales mulieres in morte recipere communionem priores canones decreuerunt. Nos tamen pro misericordia, sine tales mulieres, sine confusis scelerum ipsarum, decem annis agere penitentiam iudicamus. Illud enim can. 2. His qui male conceptos ex adulterio fuerunt, vel etiam necare studuerunt, vel in vtero matris priusquam aliquibus existerent, in vteroque sexu post sepe amorum curricula committit tribuitur: Ita tamen, ut anni tempore vicia sua steribus, & humilitati insistant. Concil. Illiber. can. 6. Nec in finem detur communitio ei, quæ absente marito conceperit, & conceptum occiderit. Et can. 68. Carcebatum, si per adulterium conceperit, & conceptum necauerit, placuit eam in fine huiusmodi. Acceptionem can. 21. Quæ fornicauerit, & necare partum, & curare fieri abortum, prius definitionem ad exitum vite, humanitas nunc agnoscit, decem annis per gradus puniatur. Trullan. cap. 92. Eas, quæ sunt abortum facientia medicamenta, & quæ factum nec tantis tunc excipiunt, homicidia pœni subiciunt. Vornat. can. 35. Mulieri, quæ ante tempore plenitudinem conceptos vtero infantes voluntate excutiant, ut homicidia prædictis indicanda sunt. Mougunt. sub Leone IV. can. 21. Sixtus V. in sua constitutione 87. Gregor. XIV. consil. 14. D. August. quæst. 80. super Exodo, & in Enchir. ad Laurentium, can. 86. & contra Iulianum lib. 6. cap. 1. D. Hieronym. in *epist.* ad Pammachium, D. Gregor. Nyssenus de homine cap. 29. & 30. D. Chrysol. homil. 12. & 13. in Genesim, D. Ioannes Daonase, lib. 2. de fide tribodora, cap. 12. Aliæ Conciliorum Decreta, & Sanctorum Patrum responsa congregantur Decretis, Carthagenis part. 8. cap. 314. & part. 10. ex cap. 181. Burchardus lib. 17. Decret. ex cap. 54. Ant. August. lib. 35. *epist.* iur. cit. 2. pars. 3. & Ctespethus in *summa*, verbo *Aborsus*. De iure ciuili probant textus in *l. si quis aliquid, §. abortum, ff. de penis, l. eisdem §. 2. l. si mulierem §. ff. ad leg. Corn. de sicar. l. 3. Cod. eod. tit. l. ff. de extraordin. crimin. l. Dimis §. ff. ad leg. Pompeianam, l. 1. Cod. de malefic. Consonant lex 1. tit. 3. lib. 6. legum *Reisigab.* tit. 7. §. 18. legum *Bairhar.* lib. 7. tit. 8. part. 7. Illustrat vltra congrissos à Raxfora in *presenti*, & lib. 1. vno 12. Solorzano de *paricid.* lib. 1. cap. 12. Petrus Gregor. lib. 4. partit. 13. cap. 1. Petrus Herodiuus lib. 8. Pandect. iur. §. cap. 12. Mendoza lib. 3. Concil. Illiber. cap. 52. Saluut. ad *Pancir.* lib. 1. tit. 46. Lindembrog. in *Glossar.* verbo *Aborsus*. Meril. lib. 1. *aborsus*, cap. 16. Menardus in *notis* ad *Sarram.* D. Gregory, fol. 252. Simon Maiol. *dier. canicul.* verbo *Sapa*, fol. 489. Castellion varia *lullion.* cap. 41. tom. 4. Scortia in *stetit.* *Possit.* consil. *epist.* 146. *theorem.* 376. D. Ioannes Ramoq. de *pœna paricid.* lib. 7. num. 103. Guibertus Collanus 99. iur. quæst. 1. Moralitæ apud Hieronym. Garcia tom. 2. *summa*, tract. 10. *difficult.* 15. *dist.* 2. *pœnit.* 2. Giballin. de *censur.* in *synop.* verbo *Aborsus*, Paulus Zacchias lib. 7. *q. iudic.* legal. tit. 2. 49. & 10. Mornacius in *l. 9. ff. ad leg. Aquil.* Amoy lib. 3. *aborsus*, cap. 1. §. 3. Gothof. in *l. 1. Cod. Throd.* *de sicar.* Broncheorst. *maniph.* *rem.* 4. *affert.* 84. Theophil. Raynaud. tom. 14. *tract.* de *scil.* Casarea, cap. 10. per ut. Byceterlineh. in *theor.* *vicia* *hum.* tom. 1. verbo *Aborsus*.**

Sed in præsertem assertionem ita illustratam pro dubitandi ratione insurgo. Plus est veneno occidere, quàm gladio, l. 3. *Cod. ad leg. Corn. de sicar.* l. 2. *Cod. de malefic.* quia tantò grauiora sunt
Y 2

3.
INSTRON-
TIA TRA-
DITA AB-
INSTRON-

sunt crimina, quædæ difficiliora caventur. Cicero pro Roscia Amerina. Igitur faueris, gratulusque debet puniri, qui poculo aliquem occidit, quam si gladio interficeret. Deinde difficilis est presens textus in ea parte, dum excolparat propinquantem venenum, ut soboles nasci non possit, cum eo qui poculum dedit, ut generari nequirit; ita utambo tantum homicidæ tenentur, nam homicidium à cædæ hominis dicitur, cap. homicidium, de poenis, dist. 7. cap. homicidium, de poenis, dist. 5. quia homo non dicitur sine anima, cap. quædam, de celebrat. Misit. c. cum iuxta, de heredi. Lin Falcidia, §. placuit, ff. ad leg. Falcid. Igitur non potest ut homicidæ puniri, qui poculum dedit, ut generari, aut nasci soboles non possit, ut probat Cæcilius de poenis c. 1. §. 2. & c. 16. §. 1. Et ita simile poculum propinquantem non manere irregularem, docent Theodosius de perfectis clericis c. 14. n. 6. C. 227. in Clement. si furiosus, p. 2. §. 3. Igitur non redit in præsentem aliter, ut homicidam eam puniri. Difficile etiam est, quod in præsentem docetur, videlicet abortum facientem, seu procurantem, ut homicidam teneri nam quæ abortum fecit, aut poculum propinquant ad illud faciendum extra ordinem puniuntur, l. 4. ff. de extraordin. cognit. l. 3. §. 2. l. si mulierem d. ff. ad leg. Cornet. de fideiuss. tibi: Si mulierem visceribus suis tam intulisse, quæ partem abigeret, confiteretur, eam in exilium præsentem puniuntur exigit. Igitur quia non ut homicidæ tenetur, oçe poenitur poenis ordinariæ.

Quæ dubitandi ratione non obstante, vera est præsentis assertio, pro cuius expositioni sciendum est, poculum plerumque dari abortus causæ, de quo Plautus.

*Mentis atque illa ne sibi persuaderet
P' abortum operam daret, peritumque ut noceret.*

Terentius. act. 1. sc. 6.

*Tantum artes hinc, tantum medicamina possum,
Quæ sterilem faciat, atque homines in contræ no-
cenda.*

Ovidius lib. 1. amor. eleg. 4.

*Quæ primis insidit teneris anellere fetus,
Maluit furas digna privæ suæ.*

*Vestra quid effudit sublimi viscera solis,
Et amicum natæ dira venena dedit.*

Et plerumque ab ipsius matribus sumuntur, ut laud probat Theophrastus tom. 1. de arte insensuum, cap. 10. De his poculis ad procurandum abortum agunt Patres Synodi Aneir. c. 1. Dioscorides lib. 2. c. 80. & lib. 3. cap. 19. Plinius lib. 14. cap. 16. ex eis Gibbaltinus de negot. tom. 2. lib. 6. cap. 9. art. 1. num. 4. Cuius. 19. ff. de ap. 9. Deinde poculum amatorum frequenter datur explendæ libidinis, causâ, l. 3. §. 2. ff. ad leg. Cornet. de fideiuss. & nihil adeo frequentius in feminis, quam superstitionibus, ac veneficiis libidinem fovere, ut prægnationis periculo sub-
lato, ad libidinem facilius allicerentur. Seneca in Hercules fur. act. 2. titi: *Magicis artibus ferè con-
tingit utque præcis admittit ligant.* Locutus.

Quæ non concordia nati

*Albigæ vlla thori, blandaque potenzia forma,
Traherunt terri magicæ torrigine fili.*

Et qui vehementer cupit voluptate capi se si-
nunt, ut ætatis intelligent, & indissolubilibus
vinculis consstringantur, solent amori addere ve-
neficia, ut etiam in vitis quibus magicis artibus ad
amorem trahatur. Synodus Regiæ, et in vulgò
appellatur, can. 25. *Quia postquam adhuc stupret,
& reliquis artis magicæ in tantum regere ad nos per-
tinet, ut quædam malefica illorum amorem alio-*

*rum membris, aliis vero odium immittere dicuntur,
quædam etiam ita venenaria sunt, ut quosdam peri-
misse multo populi numero deferantur: huiusmodi dia-
boli ministras diligenti examinatione produm sub
acerrima præsentia radigens statim, & in ipso
cavum enim, si tamen prius præsentia opera fice-
rit, reconciliandas esse permittimus.* Virgil. lib. 4.
Æneid.

*Hæc se carminibus promittit solvere mentes,
Quas velit, & aliis dæmone immittere casus.*

Horatius:

*Candida cogit veneficis Varum ut se amet,
At vos ut reddat, quibus est salubra lena,
Et labor in magicis sacra piæ facit.*

Iuvenalis saty. 6.

*Hic magicæ offert canis, hic Thebala vendit
Phila, quibus valeat mentem vacare mariti,
Potiones istæ amatorum ex illicitis rebas à sceler-
tatis, & veneficiis mulieribus plerumque consu-
muntur, qualen Velum describit Horatius, quæ
immerentem potum interceptit.*

*Exerta vii medulla, & aridum iecur
Amoris effus poculum.*

Idem Candidam veneficam inducit, quæ cum Va-
ro poculum amoris dedisset, eo alterius catinuli-
bus soluto, dixit:

*Maini parabo, maini infundam tibi
Passidienti poculum
Præterque calum fides inferis mari,
Tellus porcella super,
Quam non amore sic meo flagres, vii
Bucinum artibus ignibus.*

Sed & Ovidius lib. 1. amor. Lenam quandam sic
describit.

*Ille magas artes, technas, ac carmina novit,
Iugæ caput liquidas aperit venas aquas.
Scit bene quid gramen, quid torrens cancia rhombo
Licia, quid valeat virus amantis equæ.*

Idem in lib. de medicaminis faciei.

*Sic potius nas tanget amor, quam fortibus herbis,
Quas magis terribilis subsicit arte manus.
Nec vos gramenibus, ac mixta credite succo,
Nec sentate acens virus amantis equæ.*

Monet etenim poculis, ut magis totum, quam ve-
neficiis sibi amatores parent, eorumque animos
delectant. Illud etiam notandum est, virus equi-
orum, Hippomacres nuncupari, quod equinae ca-
pidini similem mortalibus amorem accendit, ut
Collumella lib. 6. scribit. Vnde Virgil. lib. 3.
Georg. ait:

*Hinc demum hippocretes, vero quod nomine di-
citur*

*Passores, lentum dissidet ab inguine virus
Hippomacres, quod sapi male legere nocere,
Attinger nos que herbas, & non innoxia verba.*

Iuvenalis saty. 6.

*Hippomacres, crinæque loquar, cellumque co-
necum.*

Prinipioque datum.

Aristoteles lib. 6. de hist. animal. de equibus lo-
quens ait: Tale aliquid emittunt, quod Hippomacres
appellatur, eodem quo illud, quod nascitur, nomen;
& hoc principium ad amorem veneficiæ poti solent. Ali-
ter Hippomacres pro eo accipitur, quod frosti
pulli nascentis adheret, magitudine carcer,
specie latusculum, orbiculatum, nigrum; quod
si quis præcipiat, equæ excitator, furique cog-
nito illius odore; quare à veneficiis petitur, ut co-
ferunt Aristot. lib. 6. hist. animal. cap. 22. Virg.
lib. 4. Æneid.

Quæritur,

*Quaritur, & nascens equi de fronte renulsus
Est matri præceptus amor.*

Propertius lib. 4. prosequitur Tiraquel. in l. 14. comab.

6.

ALIA DE
POCULO
AMATO-
RIO.

Et si plures crediderint, per artem magicam amorem conciliari, vt Constantin. in l. 1. vtrum, C. de malefic. Iacob Sprenger. in libro quem dicit *Ad alchemiam maleficis*. non desunt tamen qui huic opinioni refragantur, veluti Ouidius lib. de medicam. faciei, & 2. de arte amandi, ibi:

Fallitur Aemilianus, si quis decurrit ad arces,

Datque quod à teneri facere remittit equi.

Non faciens ut vinas amor Nervidii aut herba,

Mixtaque cum magicis Marfa venena facis.

Propertius lib. 2. eleg. 1.

Sex mihi sunt tangenda nouerca pocula Phœdra,

Pocula priuigii non nocere a suo.

Quod etiam facile probari possit illustri exemplo sanctiorum Martyrum Cypriani, & Iustini, vt tradit Castalion *variar. lectum. cap. 1. rem. 4. ibi: sacri critici*. Exemplis prophanis probat Tiraquel. in dist. l. 14. comab. & magicas has vanitates sæpe terdit Plinius, & nugis quorundam dicit Hæmenopol. lib. 6. *promptuar. rit. 10. Albetici. Gentili: ad l. 1. Cod. de maleficis*. existimat, in hac huiusmodi affectus posse per similia pocula ope damoueri, qui humores sic apiare possunt, vel per ipsam medicamentorum vim idem operantur, quod demones in illa humotum aptatione. Illud certum esse experientia docuit, per pocula hæc amatoria plerumque mortem, aut furorē contigisse. Lucilla Luctetij vaor eo poculo maritum suum in tabiem deduxit, qui demum necem sibi ipsi conscio, vt D. Hieronymus, & Eusebius Cæsarensis prodiderunt. Et saepe notissimum est, hæc pocula, quæ etiam Philtia nuncupantur, lethæm, aut furorē inferre. Ouidius lib. 2. de arte amandi.

Nec data profuerunt pulcherrima philtia puelli.

Philtia nocem amantis, vinctque furoris habent.
Iouenalis *saty. 6.*

Hic magicæ affert canum, hic Thessala vendit

Philtia, quibus valeant mentem vexare mariti,

Et sola pulsare nates: quod desipis, inde est;

Inde animi caligo, & magna obliuio rerum,

Quæ mundi gessisti: tamen hoc tolerabile, si non

Et furere incipias, vel auenulus ille Neronis.

Cui totam tremuli frontem Cæsaria pulsi

Infudit.

Quod sic narrat Suetonius: *Credidit, inquit, Caligula primariis à Cæsaria venere amatorio quidem medicamento, sed quod in furorē verteret*. Et plura cæ dege Iosephus lib. 19. *auiguit*. quæ nunc libenter prætereo. Etiam pocula sumi solent ad impediendam generationem, vt probant, & exteropliis illustant Martinus Delrio *disquisit. magic. lib. 3. cap. 4. scilicet 8. Basilii lib. 1. de matrim. cap. 64. & 61. Thomas Sanchez eod. tract. lib. 7. dist. 94. cum duabus sequent. Bruno resol. Medic. scilicet 5. resol. 12.*

His suppositis apparet iam ratio præsentis definitionis: nam cum certum sit tam apud Theologos, quàm Medicos, factum adhuc in veteris matris existentem post animationem perfectè hominem esse, cap. aliquando 7. cap. quod verò 8. cap. *Meyjes 9. 32. quæst. 3. Terul. de anima cap. 37. ibi: Ex eo igitur factus in terro homo, à quo forma completa est*. Vbi Pamelius annotat. 437. Lactantius Firm. de opificio Dei, cap. 17. Hippocrates de puerinatibus, Galenus lib. *Speciali. An quod in terro gestatur, anti-*

D. D. Gonzal. in Decretal. Tom. V.

mal sit, cap. 2. cum sequenti. Philo lib. 5. cap. 15. Plurò apud Platonem lib. 1. de placitis Philosoph. latè & eruditè probant CARTANUS de partu cap. 2. num. 2. Nabona de arate ad alius humanas, arto 2. quæst. 1. Inde placuit etiam, qui per gnamil mulieri poculum dedit, vel quid aliud dolo, & consilio fecit, ex quo abortus sequatur, paratque peccat, verè homicidam esse, & pœnis homicidæ teneri, cap. 21. *Exodi, l. 1. qui necandi, ff. ad leg. Corn. de sicariis*. Eleganter Terul. de anima cap. 37. vbi eum lex Eadhi animam pro anima reddi iubere refert, docet hoc etiam procedere in partu animato. Similiter etiam Ecclesiæ Patres non solum abigenter factum animatum tanquam homicidam damnarunt, verum etiam fœtalicis pocula, & concepti tantum partus dissolutiones, vt proxima homicidio crimina exerceantur, & damnantur, quia vt aiunt Terul. & Minorius Felix, tunc etiam homicidium datur: ille in apoleg. cap. 9. ibi: *Nobis verò homicidium semel interdicto, etiam conceptum terro, dum adhuc fœtus in hominem delibatur, dissolvere non licet. Homicidij festinatio est prohibere nasci; nec refert natum quis eripiat animam, an nescientem distorbet: homo est & qui futurus: & fœtus enris iam in semine est*. Ille in Odasio, ibi: *Sunt qui in ipsi videribus, medicaminibus & poris originem futuri hominis extinguunt, & perniciem faciunt antequam pariant*. Quare rectè comuni distinctione factus animatus, vel non, huiusmodi sceleris prohibetur. D. Basil. in epist. ad Amphylach. cap. 2. ibi: *Qua de industria fœtus corrupti, cadit parui laci, formati, vel informis subtilitatis à nobis non attenditur. Hic enim non salum quod nasciturum fuit, vindicatur, sed etiam ipsa, qua sibi insidias parauit, quoniam repleturum eiusmodi conceptu, non quæque mulieres intereunt*. Vbi sanctus Basilus non solum expedit homicidium, quod fœpida accidere solet, viri, vel femine, cui poculum propinatur, vt etiam docetur in l. si quis, §. abortiens, ff. de pœnis. Nec interit, quod quod poculum dedit, minimum non habuit occidendi nam cum tunc pessimi exempli fecisset, periculum prænotare debebat, & idem plecti debet, c. final. hoc tit. Lex enim vt præclat Demosthenes ait in l. 8. ff. de legibus, voluntariorum est, & hoc nefaria crimina vatis pœnis noissimè damnarunt suis constitutionibus Sixtus V. in Bulla 87. quæ incipit *Effrenam*, edita anno 1586. Gregorius IV. in sua constitutione 14. quæ refertur, & exponitur Douzas in Bulla eænz Domini, lib. 1. cap. 3. §. 5. num. 3. Quaranta in summa Auloy, verbo *Abortus*, num. 3. Barbosa de pœnitate Episcopi, allegat. 51. num. 136. & allegat. 110. num. 20. Gibalini in *Synopsi consular. verbo Abusus*, Scortis, & Hieron. Garcia *vbi supra*. Rectè ergo in præsentì canone, vt homicidam damnari debere statuit Patres Conuelli Vvormag. cum qui poculum dedit ne fœboles nasci, aut generari possit: licet non vitæ casu qui dedit, pœnis homicidæ teneatur, vt statim dicemus.

Nec obstat dubitandi ratio suprà adducta, nam in præsentì casu non agitur de occidende hominem iam natum veneno, vel gladio, sed de abigendo partum poculo propinato, qui vt homicidæ tenetur, idest pœna capitali afficitur, vt expressè canetur in l. 1. tit. 3. lib. 6. legum Visigoth. ibi: *Qui mulieri pragnanti poculum dedit ad necandum infan-*

8.
DEBET
VITAE
DEBITUM
DE RATIONE

Y 3

meum primum ipfos discesserat, nam licet propter homicidium non deat eum poculum sterilitatis tantum propinatur, ut concepit, aut generari foebos non possit; tamen iuxta rationes superius adductas tale foetus tanquam homicidium vindicatur, quia late homicidium dicitur à Tertulliano, & Minuto supra; & D. Hieronymus ait *epist. 22. ibi: Aliquam sterilitatem prohibere, & necdum facti hominis homicidium facere. Nec obstat, quod qui simile poculum dedit, ut sterilitas non maneat, ut probant Suarez de *confess. dist. 44. sect. 2. numer. 13. Gibalinus de irregul. cap. 4. part. 4. conf. 12. 12.* Nam licet qui tale poculum sterilitatis dedit, ut homicida in presenti textu damnetur, non tamen eisdem poenis ac homicida plectitur, ut constat ex diversis canonibus supra pro illustratione conclusionis adductis: & ita irregularitas non manet, quia talis poena nullo canone expressa est. Et licet Sixtus V. eam statueret, tamen novâ constitutione Gregorii XIII. eum poenis tantum lustris communis poculum propinantes puniuntur, & inter poenas iure communi statutas non reputatur irregularitas, ideo neque ex nouo iure irregularitas contrahitur ac propinatione poculi sterilitatis: unde audiendus est Gibalinus, qui *dist. 12. conf. 12.* a. asseruit, presentem canonem esse Concilij Provincialis, & ideo in eo Patres legem universalem concedere non posse; nam cum textus hic, nisi Concilij Provincialis, compilatus reperitur in hoc volumine Decretalium à Gregorio IX. approbato, basitanti occurrit quin pro lege universalis habebatur.*

Difficilius est quod ultimo loco pro augmento dubitandi rationis quædebamus, propter Consultorum responsa sibi contraria, siquidem Marcinus in l. 4. ff. de *extrordin. crimin.* abactionem partus extraordinarium crimen esse dicit, & exilio temporali vindicandum: eum Vipianus in l. si mulierem 8. ff. ad leg. Corn. de *fiscariis*, inter publica delicta acriter, talique perpetuo puniendum censuerit; quæ poena olim fuit legis Cornelia de *fiscariis*, l. 1. §. penult. ff. *de iur. iur.* Pro cuius difficultatis solutione communiter discrimen constitui fecit inter casum, in quo abortus contingit circa foetum iam animatum, ut circa non animatum; ita ut primo casu crimen capitale sit, & lege Cornelia vindicetur; secundo vero casu extraordinarium, & ita extra ordinem puniatur. Ita docuerunt Gomez lib. 3. *variar. cap. 3. numer. 32. Fatinae. in prati. quæst. 122. numer. 134. Conarr. lib. 2. var. cap. 10. numer. 10. & in Clement. si furiosus, 2. part. 3. Duranensis ad tit. de *extrordin. crimin.* cap. 1. Cuius lib. 19. *obf. cap. 9.* Art. Martineza de *crimin. ad tit. de extrordin. crimin.* cap. 1. pluribus relictis D. Melebro de Valentia tom. 3. *illustr. tit. de liber. & posthum. cap. 1. numer. 9.* pro quorum sententia faciunt textus in *cap. 27. Extradi. vers. 22. ibi: Si rixati fuerint viri, & perculserint mulierem pregnantem, exierique fetus cum, si quidem infans, nulla malitiam percussor, si vero iam firmatus, dubia animam pro anima. Quem textum ita accepit D. Augustin. relictus in *cap. Moyses 32. quæst. 2.* & textum in l. si quis 38. §. qui abortivis, ff. de *pauis*, ubi ait Consultus: Qui abortivis, aut abortivum poculum dedit, nisi dele non faciat; tamen quia meli exempli rei est, humiliores in metatibus, honestiores in insulam anxia parte bonorum relegantur: quod si eo mulier, aut homo perierit, summa supplicio afficiantur. In quo responso tenent verbum bono, plerique referant ad eum,**

eum poculum præbitum est, ut fecit Valentia *dist. cap. 1. numer. 7.* alij tamen referunt id non tantum ad eos, quibus pocula amotis, aut abortivis præbentur, sed & ad factum, qui iam homo erat, cum abigeretur. Ita Ant. Martineza *dist. cap. 1. numer. 2.* Sed licet hæc communis distinctio molis, magnæque Auctoribus placuerit, & commodissima videatur ad conciliandum textum in d. l. 4. ff. de *extrordin. crimin.* cum dicta lege 8. ff. ad leg. Corn. de *fiscariis*, tamen subtiliter, & eruditè D. Ioannes Ramos de *paua parricidij lib. 7. numer. 46.* ut dissidentia Consultorum responsa circa factum exponat, discrimen constituit inter Stoicos, & Peripateticos Philosophos, Consultosque eosdem diversam scholam sectantes. Stoicorum enim opinio fuit factum, dum in vitro est, non esse homicidium, aut animal, sed partem matris, & portionem viscerum eius, sicut fructus pendens, pars arboris est. Seneca *epist. 121.* appellavit factum *maternorum viscerum latens ovum.* Quintilianus *de clama. 338.* dixit partem viscerum matris. Faciunt Plutarchus lib. 5. de *placitis Philosoph.* cap. 15. Alexander Aphrodisius lib. de *anima*, cap. 20. Galenus lib. de *hyst. Philosoph.* Laetantius de *mundi opificio cap. 16.* Unde Vipianus, Paulus, Papinianus, Marcellus, qui Stoicorum scholam sectati fuerint, fecerunt, factum non esse hominem, animal: quare Papinianus in l. sine lege 9. ff. ad leg. Falcid. dicit, partum nondum editum hominem non recte fuisse: & Marcellus in l. 2. ff. de *mortuo inferendo*, factum esse autem speciem animantis, nec qui eum intemuit, propter homicidium occidisse. Et Pomponius in l. de *si de assignand. libert.* non esse in terum naturam asseruit. Et Vipianus in l. 1. §. 1. ff. de *ventre inficiendo*, scripsit factum partem matris esse, nec antea credi cognatum, quam nasceretur. Et in l. 1. §. si quis proximis, ff. de *cognat.*, factum in rebus humanis non esse supponit: & in l. sed si plures 10. §. 1. ff. de *voluntariis*, l. ubi quis 7. ff. de *ventre in possess. mittend.* l. generaliter 24. §. sermo 4. ff. de *fideicommiss. libert.* l. unum 164. ff. de *P. S. l. penult. ff. de his, qui pro non scripi. l. si quis 7. §. de fructibus 3. ff. de *except. rei indic.* iuxta quem sententiam idem Vipianus censuit, posthumo totorem non recte dari, si nemo 9. §. ult. ff. de *test. int.* & partem hominis à die natali computari docuit in l. denique 3. §. minorem, ff. de *minor. l. quâ etate*, ff. qui testamento facere, & muliere pregnantem in nave accepta, si postea peperit, pro filio rectorum non debet respondere in l. sed adu 19. §. si quis mulierem 7. ff. *locati*; ideoque ancilla fortuitæ partum viciari non posse, contra Scævolum docuit in l. qui vas 48. *ancilla*, ff. de *furtis*, *in illa l. non solum 33. l. iusto 44. §. 2. ff. de *suppl. l. ancilla 90. ff. de *fortis*, l. qui in vitro 16. ff. de *statu homin. l. si ancilla 4. ff. pro suo*, l. qui ob partum 9. l. seruo 10. ff. pro *emptore*, l. 3. Cod. *ead.* & iuxta eandem scholam Paulus docuit, petiti ancilla petitiu censeri partum, in l. Paulus 14. l. partum, ff. de *test.* & ancilla pregnantem pignoratâ, pignori datum censeri partum, ideo docuit in l. si concubitus 78. §. si fundus 2. ff. de *pignoratitia*, *in illa l. & quemadmodum, l. si de iustis 26. §. ult. l. Paulus 19. §. 1. ff. de *pigno. l. 1. Cod. de *paua pigno.* & ita seruo in vitro existenti libertatem relinqui non posse, docuit lib. 4. *seruo. tit. 14. l. cum inter, Cod. de *fideicommiss. libert.* & partum in potestate patris morientis non fuisse innot ipse in l. ult. ff. de *collat. bonor. l. ult. ff. de *assignand. libert.* & ita factus*******

factus patri ad excusationem tuele non prodest, l. 1. §. qui autem 6. ff. de excusat. tutor. Et licet plerumque in iore factus comparatur filius iam natus, l. 2. §. qui autem, ff. de excusat. tutor. l. intelligendus 53. ff. de V. S. l. qui in terra 7. & 26. ff. de statu hominum, l. si quis 187. ff. de R. I. tamen id iuris fictione, vel Prætoris æquitate effici satis innuunt illa verba: *Intelligitur, videri quemadmodum* 3. qui bus videntur Consulti in l. si cui 18. ff. quando dicit legari, l. intelligendus 153. ff. de V. S. l. vel si vno 7. ff. de suis & legiti. l. si quis 187. ff. de R. I. Iusta hanc ergo Stoicorum sententiam matrem partum abingentem non penam ordinariâ homicidij, sed extraordinariâ puniendam esse, Consulti ipsi docuerunt in dist. l. 4. l. 3. §. 4. ff. ad leg. Corn. de sicar. l. Diuus 4. ff. de extradi. cognis. l. si quis 38. §. qui abortiuus, ff. de penis. Philosophi verò qui contrâ sentiebant, consequenter existimant, in eo verum homicidium dari, vt probant Galenus ubi supra, Aristotel. lib. 3. de hist. animal. Plato apud Plotarchum lib. de placit. Philosoph. 5. cap. 25. & qui iuxta eorum scholam crediderunt partum adhuc in vtero latentem animal esse, docuerunt abortum procurantem penâ ordinariâ homicidij puniri. Philo de specialibus legibus, Iosephus lib. 4. antiquit. cap. 8. Athenagoras in Apologet. prope finem, Tertul. & Minus. Felia supra relati. Vnde cum Ecclesia semper crediderit factum animatum verè hominem esse, cap. nasci, 56. dist. cap. si ad matrem 114. de consecr. dist. 4. quia ad essentiam hominis duo principaliter exiguntur, corpus videlicet, & anima, cap. in quadam, de celebrat. Missar. Clemens. 1. de summa Trinit. ideo in præfenti, & in aliis canonibus supra congestis, abortus vt verum homicidium vindicatur. Nec pro Stoicorum sententia facit textus in cap. qui in matris, de consecr. dist. 4. in illis verbis: *Qui in matris utero est, baptizari non potest, quia qui non est natus secundum Adam, non potest secundum Christum renasci.* Ex quibus deduci videtur, factum adhuc post animationem hominem non esse, cuius interpretationem dedi in cap. maiores 3. de baptismo. Videntur post Lipsium, & notetores Reies in selectio- ne ad l. Atinianam, sect. 4.

Ex supra traditis exponendus est textus in l. Ci-

cero 39. ff. de penis, ubi Triphoninus, qui Stoicorum sectator fuit, vt probat D. Ioannes Ramos dist. lib. 7. num. 130. refert Mileciam quandam mulierem cum esset in Asia, eo quod ab hæredibus secundis acceptâ pecuniâ partum sibi medicamentis ipsa abegisset, rei capitalis esse damnatam: ex quo textu deduci videtur, etiam iuxta Stoicorum sententiam abortum penâ ordinariâ homicidij puniri. Ant. Marthæus dist. cap. 1. num. 2. docet quod cum legibus, non verò exemplis iudicandum sit, parum attendi debet casus ille à Triphonino relatus, qui in Asia contigit: verum iuxta traditam distinctionem rectius teatum illam acceperit D. Ioan. Ramos dist. lib. 7. num. 205. Iuxta sententiam Philosophorum, nam cum casus ille contigisset Mileti apud Athenienses, vt refert Cicero in oratione pro Cluentio, & probat Panci- tpla lib. 2. variat. cap. 51. & Mileti non Stoicorum sententia obuiuisset, vt Romæ, sed potius iuxta communem scholam sapientum receptum esset, factum in vtero existentem, hominem, animalque esse; ita verum homicidium dari rectè pronunciatum fuit Mileti, quod etiam Colonia Atheniensium, Ammianus Marcell. lib. 22, ibi: *Atheniensium coloni Mileti inter Iones alios in Asia per Nilerum multi ante locati. Terentius in Adel.*

M. Penit vt secum anebat;
Nam habitat Mileti. E. Herm
Virginem vt secum anebat!

M. Sic est. E. Miletiunque obsecro.

Strabo lib. 14. geograph. Ouidius lib. 9. Metamorph. rectè ait mulierem abortum facientem capitali penâ puniri, quia verè homicidium perpetravit. Nec interest, quod in eius textus specie mollior pecuniâ accepit, vt partum abigeret, vt nouit D. Ioannes Ramos ubi supra, num. 194. contra eos, qui existimant, eo illius pecuniâ interuentio- nem mulierem penâ Capitali affictam fuisse. Quidam etiam existimant, in prima parte ipsius textus ideo matrem penâ capitali poni, quia pecuniâ accepit vt partum abigeret, & ita assassinarum committeret: in secunda verò non ita puniri, quia non quæstus eius abortum procura- uit.

CAPVT IV.

Alexand. III. Bartholomeo* Exon. Episcopo.

Sicut dignum, & omni rationi consentaneum est, graues, & difficiles quæstiones ad examē Apostolicæ Sedis deferri, ita etiam nobis ex ministerio suscepæ solitudinis imminet, easdem quæstiones, prout nobis Dominus dederit, soluere, & singulis à nobis consilium postulancibus respondere, vt prouidentia Romanæ Ecclesiæ, quæ vbique terrarum obinet, disponente Domino, principatum, quæstiones solu- uant, & remoueat in his ambiguitas singulorum de cordibus. Licet autem super quæstionibus, quas nobis discretio tua soluendas direxit, te non dubitamus prouidum, & circumspæctum existere; cogimur tamen ex suscepto seruitutis ministerio iuxta discre- tionem, & prouidentiam nostram tibi exinde respondere. Sanè cum vir literatus sis, & sapiens, & discretus in his, ac plurimum exercitatus, plenius nosti, quia in excessibus singulorum non solum qualitas delicti, & quantitas, sed ætas, & scientia, & sexus, atque conditio sunt attendenda. Quia non solum secundum qualitatem, & quantitatem facinoris, sed secundum ea, quæ prædicimus, & secundum locum, & tempus, quo delictum committitur, unicuique debet penitentia indici: cum sicut tu ipse non ignoras, idem excessus magis in vno, quam in alio sit puniendus. Illi autem

qui animo occidendi illum sanctum, & reuerendum virum Cantuariensem quondam Archiepiscopum, aut feriendi, aut capiendi, si de illa captione mors illi subsecuta fuisset, & circa manuum iniectionem se fatentur venisse, pari poenâ, vel ferè pari puniendi sunt: & illi etiam, qui non ut ferirent, sed ut percussoribus⁴ opem ferrent, si fortè per violentiam, quam quidam moliri volebant, impedirentur, paulò minori debent poenâ mulctari: quia eùm scriptum sit: Qui potuit hominem liberare à morte, & non ita liberauit, eum occidit: constat àb homicidij reatu immunes non esse, qui occisoribus opem contra alios præstare venerunt: nec caret scrupulo societatis occultæ, qui manifesto facinori desinit obuiare. Illi verò, qui se asserunt animum Regis inflammasse ad odium, vnde fortè homicidium fuerit subsequutum, durè, & asperè, sed non ita seuerè sunt puniendi, nisi fortè Regem ipsum ad illud homicidium suis suggestionibus prouocassent. Illi quoque non fuerunt à culpa liberi, nec à poena debent esse immunes, qui licet fuerint illius iniquæ machinationis ignari, tamen eis, quos scitaros esse sciebant, in sarcinis custodiendis ministerium præbuerunt. Eos verò, qui dicunt illius sancti viri, & suorum post mortem eius occupasse spolia, si nihil aliud in tanto facinore commiserunt, à poena mortis eius arbitramur esse immunes. Sed quæ occupauerunt, eis, quorum fuerunt, tenentur in integrum restituere, si habent in facultatibus vnde ea possint reddere: & ipsis ex hac poenitentia, moderata tamen est indicenda, quia licet quidam ex his ea, quæ occupauerunt, fateantur se pauperibus erogasse, non tamen alienas res, eùm ipsas potuissent eis, quorum fuerunt, restituere, debuerunt pauperibus erogare. Illis verò, qui sola excommunicatorum¹ participatione se reos esse cognoscunt, considerata temporis morâ, in quo in eadem nequitia perdurarunt, & inquisitum etiam si eis timore, vel afflictione communicauerint scienter, vel ignoranter, secundum hoc poenitentia est indicenda. Clericos autem, quos constat armatos interfuisse tanto facinori, & illos etiam clericos, qui consilium illud dederunt, ut sanctus vir caperetur, perperuò non solum ab altaris ministerio deponendos esse censemus, sed ita etiam, quod in Ecclesiis nullo vnquam tempore² lectiones legant, vel responsoria in choro cantent: sed in psalmis apud Deum de commisso fatagant veniam implorare. Insuper autem clerici ipsi in districto claustro³ monachorum, vel canonicorum regularium, si fieri potest, sunt recludendi: ita quidem, quod vsque ad septennium, vel quinquennium debeant ab introitu Ecclesiarum coëcceri.

NOTÆ.

I. **a** *Xenienſi.*] Ita etiam legitur in prima collectione, sub hoc tit. cap. 7. & post Concilium Lateran. part. 35. cap. 1. Scribit autem Alexander Exoniensis Episcopo, quia Antiquus Eboraensis, Lun donienſis, & Saresburiensis fauebant Henrico Regi Angliæ, immò & pacem initam inter ipsum Regem, & Beatum Thomam rescindere curabant, ut testis Batonijs anno 1170. In præfenti autem textu agitur de nece, & martyrio B. Thomæ Cantuariensis Archiepiscopi, qui post varias elades, & peregrinationes, tandem ad Ecclesiam suam reuersus, dum in ipsa Ecclesia cum suis clericis, & monachis vespertinum officium persolveret, varij milites districtis gladiis irumpentes eundem fustibus clamoribus appellare ceperunt; qui primum aditus arguens, eo quod milites exultare tentarent, dicens non esse Ecclesiam castorum more custodiendam; mox seipsum ingenti animo militibus mortem minantibus offerens, seque paratum esse dicens pro Deo mori, & pro liberare Ecclesiam, atque illum sub anathemate prohibens ne cuiquam omnino ex suis, siue monacho, siue clerico nocerent; denum in modum orantis inclinato capite, mirâ constantiâ feralem expectauit ferientium idus, & ita martyrij palmam assumptus fuit die 29. Decembris anno 1170. cuius martyrium, & gesta cum Henrico II. Rege Angliæ referunt scriptores ipsius vitæ Geruasijs anno 1174. Vergil lib. 3. *hystor. Angliæ*, Richardus

Smithens in floribus Ecclesiæ Angliæ, lib. 7. de Archiepiscopo. *Commur.* cap. 7. Nauclerus 2. tom. gener. 42. fol. 205. Paulus Semillus in vita Ludouici, fol. 110. Ioannes Maiot de Schæuer. *gestis*, cap. 16. Sanders lib. 1. *schism. Angliæ*, Ribadeneira in *hyst. Angliæ* lib. 1. cap. 38. *Pineda* lib. 20. *Morer.* cap. 27. §. 30. & lib. 28. cap. 22. §. 2. Vnde quis in hac sancti Thomæ nec fuerunt plures tam clerici, quàm laici, qui Henrico fauentes, mediati, vel immediatè martyrio, & persecutionibus sancti operam dederunt, ideo in præfenti epistola Alexander III. præferebat Exoniensis Episcopo formam, quam obseruare debet in imponendis poenitentis his sceleratis hominibus: quare post Concil. Lateran. *dist.* cap. 35. textus hic compilatur sub tit. de poenitentia.

b *Sed etas.*] Ut dicemus infra in cap. 1. de delict. pueror.

c *Condicio.*] An videlicet nobiles, vel ignobiles sint, ut ita scietur, vel leuidi, iuxta conditionem puniantur, cap. cum quidam, de iuricor. vbi probatur.

d *Opem ferrent.*] Et ita eùm pluribus insidiantibus homicidium perpetratum esset, omnes tenentur, ut probat Sessè *sem. 1. decr.* 103.

e *Non liberauit.*] Ut probant ultra relatos à Barboſa in præfenti, Gibalini. de Irregul. cap. 4. *can. 13.* fol. 141.

f *Participations.*] Ob quam communicantes cum excommunicatis maiori excommunicatione ligatis minorum excommunicationem incurrant,

2.

3.

4.

cunctum, dicimus in cap. significavit, de sent. excom.
 5 *Lectiones.* } De quibus ego, & de responsio-
 nis in cap. 1. de celebrat. *Adissar.*

h *Clauſtro monacherum.* } Penitentia per-
 gende causâ, de qua detractione ego in cap. 1. de ir.
regul.

CAPVT VII.

* Idem.

Presbyterum, qui quendam puerum intuitu^a disciplinæ percussit in capite, cùm post paucos dies exspirasset, tam ab omni altaris ministerio debes perpetuò remonere, quàm ab officio sacerdotali deponere, si ex ipsa percussione interiit, vel aliam infirmitatem incurrit, de qua noscitur exspirasse.

NOTÆ.

1. ^a *Idem.* Ita etiam legitur in prima collectio-
 ne, sub hoc tit. cap. 2. & post Concil. Later.
 part. 26. cap. 4. ubi additur pars capituli *Licet.* Unde
 cognoscitur in presenti referri partem textus in
 cap. licet, de sponsa dnor. cap. 1. de corpore. vtrius.
 cap. 6. de iudic. cap. 10. de accusat. cap. 1. & 2. de
 cleric. pugnans.

2. ^b *Disciplina.* Quæ modica, & levis præcep-
 toribus, ac mag. itus permittitur, l. sed et si, §. vlti-
 mo, cum l. sequenti, ff. ad leg. Aquil. l. item queritur,
 §. si magister, ff. locat. cap. si quis non iuratus 13. q. 1.
 cap. cur noncelliones 23. quæst. 5. cap. aut scilicet 19. de
 penit. dist. 1. Concil. Arelas. 2. c. 34. facit lex 9. tit. 2.
 part. 7. qui modus correctionis inquit D. Augu-
 stin. relatus in cap. 1. 23. quæst. 5. à Magistris artium
 liberalium, & ab ipsa parentibus adhibetur. Con-
 trā verò in emendandis, corrigendisq. discipulis
 nimium præceptorum acerbiter, siue scilicet
 damnamus Quirilianus lib. 1. in lit. cap. 4.
 & lib. 2. cap. 2. Martialis lib. 2. epigr. 62. & iure hoc
 Pontificio Præceptor clericum immoderatè casti-

gms, & disciplinæ causâ percutiens in excommu-
 nicationem canonis, si quis fundente, incidit: leui-
 ter verò correctionis, & disciplinæ causâ percu-
 tiens, non item, cap. 1. cap. cum voluerit 54. §. fi-
 nal. de sent. excom. & minis, ac scilicet non de-
 bere Præceptorem nisi percutat vti, multi bonæ
 notæ Auctores monent; immò blanditis pueros
 ad studia alliciendos esse, docet D. Aug. lib. 21. de
 ciuit. Dei, cap. 14. ibi: Per paruas dolentibus plenas
 pueri non cogantur quæque artifices, vel literas discere,
 ipsum namque discere, ad quod parui adiguntur, tam
 penale est eis, ut auctoritatem ipsas paruas, per quas
 compelluntur discere, malus ferre, quàm discere. Alia
 congeserunt Claudius Espenceus lib. 2. digress.
 cap. 3. Fornerius lib. 3. rer. quæst. 2. 3. Cur autem ex
 tali scilicet non deat æditi iniuriarum in Ma-
 gistrum, sed tantum actio legis Aquiliæ, exponit
 D. Ioan. Suarez ad leg. Aquil. lib. 3. cap. 6. §. 2. 3.
 Cùm ergo in præfensi casu clericus præcessit le-
 thaliter nimia scilicet discipulum castigando, ideo
 efficitur irregularis, ut docent Couart. in Clement.
 si scilicet, 2. part. 5. 4. num. 5. Giballinus de irregul.
 cap. 4. part. 1. c. 1. c. 2. regul. 2.

CAPVT VIII.

Idem^a Consentin. Archiepiscopo.

Continebatur in literis, quas nobis tua deuotio destinauit, quod diaconus
 præsentium lator, iste, & quidam clerici, qui rogati ad vineas Ecclesiæ
 putandas perrexerant, circa vespas^b opere consummario, cùm redirent, leuandi
 laboris gratiā quendam ludum imitati sunt viatorum, proicientes baculos suos
 in longum. Studebant enim in directum iacere, & alter alterius fustem ferire.
 Huius autem ludi, sicut asserunt, solet esse conditio, ut qui alterius baculum per-
 cuteret, quasi victor, eo, cuius baculum percussus est, vteretur pro equo: sed præ-
 fati clerici equitanti licentiā non videntes, sola iactatione erant contenti, ut dum ala-
 crius ad baculos suos concurrerent, laborem itineris non sentirent. Quidam autem
 laicus, sicut prædictus diaconus asseruit, dum baculum eiusdem diaconi percussisset,
 incautus in eum equitaturus insiluit, & sic à falce ipsius diaconi, quæ erat accinctus,
 mortale vulnus accepit, de quo post dies octo exspirauit. Inde est, quod commune
 f. t. atque mandamus, quatenus eundem diaconum sine licentiā Romani Pon-
 tificis superiorem gradum suscipere, vel in diaconatus officio nullo vnquam tem-
 pore ministrare permittas; sed eum dispensatiuè ministrare in subdiaconatus of-
 ficio^c patiari.

NOTÆ.

1. ^a *Consensum.* Ita legitur in prima collectione, *sub hoc tit. cap. 9.* Consentia, vel Coſſeotia, bodie *Cassena* dicta, est ciuitas Italie in provincia Brutie: habuit Cathedram Episcopalem iam à primis Ecclesijs sacculis, & D. Greg. lib. 7. *apost.* 47. refcribit Palumbo Episcopo Consenti: refert Catoles à sancto Paulo lib. 1. *Geograph. sacre* fol. 60.

^b *Opere consummato.* Nam clericis etiam presbyteris opus tale exercere sacri canones permittunt, ut probauit in *cap. 1 de celebrat. Missar.*

2. ^c *Paterne.* Duplici ratione præsentem Alexandri III. decisionem nisi Glossa castissima in præfati, quam sequitur Nauarrus in *manuali, cap. 27. num. 135.* Prima, quia diaconus dabat operam rei illicitæ, quia ludus clericis cum laicis prohibitus est. Belletus *disquisit. cleric. part. 1. tit. de disciplin. cleric. §. 4. num. 17.* Altera, quia Diaconus non adhibuit diligentiam in damno præueniendo, amouendo falcem, non ignarus conditionis ladij que ratio magis placet Couar. in *dist. Clement. si furisus, 2. part. §. 4. num. 3.* Gutierrez lib. 2. *canonic. quest. 6.* Pantojz *de altaribus, ad l. 2. num. 46.* Gubolino *dict. consuet. 1.* Nec tunc obstat textus in *cap. later.* sequenti, ubi in simili specie, cum

duo clerici in collatione decertarent, alter clericum deiecit, & deiecit gladio, quem deiecit ad latus portabat, vulneratus occubuit; & nihilominus assensit Pontifex, ad sacros ordines clericum ascendere posse. Pro cuius textus solutione Glossa in præfati, Gutierrez *suprà, num. 154.* Syluester in *summa, verbo Homicidium, Sotus de inslitia lib. 5. art. 9.* docent in specie textus in *dist. cap. later.* clericum deiecit omnem adhibuisse diligentiam, nullamque culpam admisisse; immò clericus percussus in culpa fuit alterum prosteruendo. Sed hæc solutio fidei conuincitur ex eo, nam castiores diligentiam adhibere poterat electus ille amouendo falcem. Igitur si tam non adhibuit, manet irregularis. Quare placuit solutio Pantojz ubi *suprà*, qui rectè obferuit, in eo textu non agi de collatione in qua sperari posset, ut alter alterum deieceret, sed potius dedudo: unde extra, vortem, & ladi usum lasciuiores alter alterum vi deiecit: & ita cum inusta condilioem ladi non teneretur latus falcem amouere; ideo omnino inculpate processit clericus deiectus, & per consequens nullam irregularitatem contraxit. Quia etiam doctrinâ exponendas est textus in *cap. exhibita, c. 2. l. 2. titulu.*

CAPVT IX.

Idem ^a B. Exon. Episcopo.

Lator præsentium nobis viua voce proposuit, quod quamdam die, cum casu cum quodam clerico luderet, conigit, quod ille proiecit istum ad terram, & ^b cultellus, quem ad latus suum habebat, in alterum incidit, & fortuito vulneratus occubuit. Eundem itaque ad vos duximus remittendum, d. v. p. A. fm. quat. rei veritate compertâ, & si ita res se habuerit, & alia iusta causa non impedit, prædictum D. liberè permittatis ad sacros ordines promoueri.

NOTÆ.

1. ^a *Exoniensi.* Ita etiam legitur in prima collectione, *sub hoc tit. cap. 10.* idest Batholomæo, de quo ego *suprà* in *cap. 7.* Post Concil. Lateran. *part. 16. cap. 14.* legitur etiam *Exoniensi Episcopo*; & in margine additur *part.*

capitulu Tanta: unde cognoscitur in præfati teſſeri partem textus in *cap. tanta, qui filij sint le. gitiui.*

^b *Cultellus.* Quem defatire potest clericus, quis armorum appellatione non continetur, ut probat Bobadilla lib. 1. *polit. cap. 13. num. 73.* & dicitur in *cap. clerici arma, de vita & honest. cleric.*

CAPVT X.

Idem Abbati ^a S. Benedicti de Nebia.

VScepimus literas tuas, & cognouimus ex eam tenore, quod dum lator præsentium in custodiam cuiusdam domus cum altero fratre maneret, ingredienti de nocte quidam latrones ad eos, turpiter ipsos in personis affligere, & denudare vestimentis propriis præsumperunt. In quos isti resumptis viribus insurgentes ligauerunt illos, & decinere vsque ad notitiam Capituli voluerunt. Cum autem iste rem ad tuam audientiam perlaturus, ligatos eos in fratris sui custodia dimisisset, & fures se soluere niterentur, frater illos, ne ipse ab eis interimeretur, occidit. Unde quoniam expediebat potius post tunicam relinquere pallium, & rerum sustinere laturam, quam pro seruandis vilibus rebus, & transitoriis, tam acriter in aliquos exardescere, abstineat iste humiliter ab altaris ^b obsequio, & peccatum suum, quibus modis ad arbitrium tuum potuerit uterque studeat expiare. Constat siquidem eos contra rationem, & mansuetudinem, & ecclesiasticam disciplinam ex vtriusque opere interemptos.

NOTÆ.

NOTA.

I. **A** *Sancti Benedicti de Nova.* Ita etiam legitur in prima collectione, *sub hoc tit. cap. 1. et post Sancti. verò Later. part. 5. cap. 17.* legitur tantum *Sancti Benedicti.* Illud tamen constat, in presenti alioqui Pontificem cum Abbate monasterij Sancti Benedicti, sed non exprimitur, eu-

ius diocesis, vel provincie.

b. *Ab alteris obsequio.* Varie pro huius textus expositione adducuntur Anguianus lib. 4. de legibus, cap. 4. num. 36. Sotarez de consuetudinibus, 46. fol. 2. num. 10. Geuenicis practice, quass. 660. Vivesbachii, disp. 4. Franciscus Valens tom. 2. concord. iur. fol. 321. Sed veram eius interpretationem addunt in cap. 2. supra hoc tit.

CAPVT XI.

Idem ^a Lucensi Episcopo.

DE cetero noueris, quod diaconus, quem literarum honestate prædium asseris, qui homicidium causam dedisse videtur, sicut ex tenore tuarum literarum perpendimus, non videtur ad sacerdotium promouendus.

NOTA.

a. **L** *Verens.* Ita etiam legitur in prima collectione, *sub hoc tit. cap. 12.* vbi additur *part. capituli Consilium.* Vnde cognoscitur in presenti textu partem textus in cap. consilium 4. qui clericis vel vniuersis, vbi notauit.

COMMENTARIUM.

I. **C** *Concely.* **I** *310 TRA-*
MITTE, ET
19 ORA.
711.
I **N** his quinque decisionibus præcedentibus, & in sequentibus usque ad finem iudicij præcipue agitur de homicidio casuali, & varij casus deciduntur circa illud culpabiliter, vel non admittitur, ita vt illud committens maneat irregularis, vel non. Et communiter repetentes, & antiquiores, tam Theologi, quàm Iurisperiti sub sequenti distinctione ea iura accipiebant, & exponabant, videlicet, vt dans operam rei illicitæ, homicidium sequatur, etiam inuoluntario, irregularis maneat; dans verò operam rei licitæ, immunitas sit ab omni irregularitatis nota, si adhibeat diligentiam, quam debebat adhibere. Sed veriorum, & magis iuribus sub hoc titulo compilatis consensum eredo distinctionem nouiter explicatam à Gubelino c. 4. g. 2. per totam, iuxta quam sequentem assertionem disputandum propono: Qui letaliter peccat ob non adhibitam diligentiam in homicidio procurando, irregularis manet, siue rei illicitæ, siue licitæ operam dederit. Qui verò nullam letalem culpam aduersus, esse sequatur homicidium omnino casuale, & inuoluntarium, irregularis non manet, siue rei licitæ, siue illicitæ operam dederit. Quam conclusionem firmant, seu iuxta eam procedunt textus in cap. presbyterum 7. cap. conuincitur 8. cap. laur 9. cap. suscepimus 10. cap. de hoc 11. cap. dilectum 13. cap. exhibita, et 1. 7. et 2. cap. significasti 6. c. 2. nos 19. cap. leuantes 23. cap. quidem 25. hoc tit. c. quæstionem 17. de penis, & remissis, cap. noster, cap. si quis videmus, & ferè per totam 50. dist. Innocent. III. lib. 1. epist. apud Sotireum fol. 90. ibi: *Exposui nobis dilectus filius M. presbyter de stabulis, quod eum olim imitatus à quibusdam pueris de manu vniuersi eorum arcum receperis, & sagittam, & eum dirigere volueris in arberem que obstitat, manus errante sagitta eadem discurrens per artem, puerum quendam talis distatem modicum vulnerauit in capite: propter quod idem puer credidit postmodum exspirasse. Quod cum idem presbyter bene memoria & præcipue in 120, frater Archiepiscopo, hunc curasset*

humiliari confiteri, ipse penitentiam & contritionem ipsius attendens, super beneficio Ecclesie de Stabulis, quem in Archiepiscopatu, filii Archiepiscopi, adeptus fuerat, misericorditer dispensauit, et ipsum, quoad vinctus, possederet: mandans eidem, vt ad Sedem Apostolicam accederet, mandans super officio Apostolice pariter. Quia verò in hoc, non ex voluntate (sicut asserit) sed casu deliquit, discretionem vestra per Apostolicam scriptam mandamus, quatenus si verum esset quod asserit, nullam cum eo misericordiam attendentes, & quod a dilecto Archiepiscopo nullum esse ratum habentes, & firmum, eum super beneficio prædicto propter hoc nullatenus molestari, aut patiuntur ab alijs molestari. Datum Roma apud S. Petrum, illustrant vltra congestos à Barbosa in præfati, Pantoja de alen. ad l. 2. num. 45. Vigliol. in methodo iur. can. fol. 168. Petrus Greg. lib. 4. part. 1. r. 73. cap. fin. Guierrez lib. 2. canon. quest. 6. Claudio Elpencens ad epist. D. Pauli, lib. 2. digest. cap. 3. Sotarez de consuetudinibus, 45. fol. 5. Franc. Valens in concord. iuris, fol. 321. Diana part. 11. tra. 6. re. fol. 15. Maiolus de irregul. lib. 5. c. 48. §. 3. Vgolin. eod. tra. cap. 18 §. 1. Sayrus lib. 9. de consuetudinibus, 32. Borneina eod. tra. disp. 7. quass. 14. pondus 7. Hurtado de irregul. disp. 2. num. 28. Auila, Layman, Lessius & alij, quos refert Gubalinus de irregul. cap. 4. regul. 2.

Sed in hanc assertionem, quæ duplicem continet partem, duplici etiam insurgo dubitandi ratione; & primò in eam partem vbi asseritur, ob homicidium casu admissum, non adhibita diligentia, etiam tunc inuoluntario, irregularitatem contrahi, sic argumentor. In delictis coercendis animus magis quam exitus; & affectus potius quam effectus attenditur. Paulus lib. 5. sententiarum, 23. Quintil. declamator. 281. Vnde interdum qui hominem occidit, absoluitur; & qui non occidit, pro homicida damnatur, l. 1. §. Diuus, ff. ad leg. Corn. de sicis. Lis qui eum telo, Col. ad. tit. ff. quod deinde legum penis obnoxius est, qui consensit, non ignoranter delictum admittit. Terol. de de penit. lib. 1. Quid quod volens tolli origo est? viderem enim si qua casus, aut necessitas, aut ignorantia impuaret: quibus exceptis non nisi voluntas delinquitur. Huc spectat defensio illa, quam attigit Cicero lib. 3. de Oratore, & in topicis ad Trebatium, Iocare telum, voluntatis est; ferire quem molitur, fortune: ex quo aris ille subicitur in testibus altitudinis, si telum manu fugit potius quam iicit. Vbi Boetius ita explicat: Siquis ceciderit in usum, optima seles esse defensio fugisse manu telum, & magis quam voluisse,

2.
IMPUG-
TRA TOA-
DITA AB-
ERTIO.

voluisset, ieiis. Faciant textus in cap. si homicida 23. quod 5. l. si ex plagis 2. 5. in claus. ff. ad leg. Aquil. Paulus lib. 5. sententiarum 23. 5. qui homicem. Seneca lib. 4. de beneficiis cap. 34. Illostrat Cuias. lib. 19. observ. cap. 10. & lib. 6. differens. Modest. in l. si servum 27. ff. de accusat. notum in can. 5. Concil. Liber. Igitur ob homicidium casuale, & involuntarium commissum non debet tam gravis poena, irregularitatis videlicet, imponi. Secundum in secundam partem assertionis, ubi docetur ex homicidio casuali adhiberi omni diligentia commissio, irregularitatem non nasci, arguuntur ita. Omni iure ob homicidium casu admissum, etiam involuntarium, aliqua poena statuta est, nam apud Graecos homicidium casu admissum exilio plebatur, J. ante fall. 16. §. enenem, ff. de panis. Demosthenes in oratione contra Timonem, & contra Midiam, quam transferuntur Christianis sub digestis. 1. de panis. Harmeopolus in premissis. lib. 6. tit. 6. §. 12. & pro iure Graeco-Romano proposuit Axtalis in Synopsi Basilic. tit. 78. his verbis: Involuntaria cades exilium irrogat, ex Platone, & Pausania ita legem accepit Samuel Petrus ad ius Atrium lib. 7. tit. 1. Qui alium casu fortuito necasset, extra fines annum patria erat esse. Apud Romanos etiam exilium quinquennale poenam fuisse patet ex edictis imprudentes, prodiu Quinil. lib. 7. instit. cap. 4. & de clamat. 96. & 305. ad quam poenam respicienda videtur Vipianus in l. 4. §. 1. ff. ad leg. Corn. de sicar. quae restituenda est ex perjurio legum Moysar. & Romanar. tit. 1. Illostrat Rodolph. Forner. lib. 3. rer. quodid. cap. 17. & lib. 6. cap. 24. Guillel. Forner. lib. 1. select. cap. 10. Scipio Gentil. lib. 1. peregr. cap. 31. Solozano lib. 2. de poena parricid. cap. 17. D. Nicol. Anton. lib. 2. de exil. cap. 6. D. Ioannes Suarez lib. 2. ad leg. Aquil. cap. 2. sect. 9. Gregorius in floribus ad textum in l. ante fall. 16. ff. de panis: plenius notum in d. can. 5. Concil. Liber. & iuxta sacros canones pro homicidio facto, & imprudenter admissio quinquennalis poenitentia inlongitur in Concilio Ancyrano can. 22. edito in cap. 42. tit. 1. diff. Concil. Epum. can. 51. D. Basil. ad Amphiloche. can. 11. ibi: Qui aeternam involuntariam causam fecit, in viderem auctore obitu iudicio satisfecit. Et can. 51. 56. & 57. quorum verba refert Anton. Augustin. in epit. in lib. 35. tit. 1. Igitur si in homicidio casuali, & per imprudenciam admissio culpa datur poenitentia expianda, debet talis homicida irregularitatem manere, praecipue 9. cum ad irregularitatem contrahendam propter homicidium obo desiderata culpa, ut coniungit in Iudice tam iuste ad mortem coadunante, qui ob lenitatem defectum irregularis manet.

Adhuc tamen defendenda est praesens assertio, pro cuius expositione scire oportet, irregularitatem, de qua in praesenti titulo agitur, commoventur debet, ut sit Communionis impedimentum ex homicidio proveniens, quia qui prohibetur ad ordinem ecclesiasticum promoveri, & in eisdem ministrare. Quam adduxerunt Villadiego, Maiolus, Gibalinus, & alij commoventur sententiae de irregularitate. Dixi canonice impedimentum, quia hae irregularitas omnino est iuris ecclesiastici, non vero iuris divini; nam in lege veteri homicida poterat in sacerdotio ministrare, ut referunt in cap. nos incompetentes, 6. dist. 2. 2. quod 7. & in cap. non inferenda 23. quod 3. ubi D. Ambrosius refert Moysen Aegyptum quendam interfecisset, quod etiam habetur Exodi cap. 2. & tamen is Domino altare aerebat, & consecravit, ut testatur Exodi

cap. 31. & in cap. 1. de consecr. dist. 1. & probatur ex cap. in qui, de sens. excom. lib. 6. ubi docet Bonifacius VIII. irregularitatem non contrahi nisi in casibus & iure Pontificis expressis. Fecit textus in cap. 2. de clericis, pugnans, docuerunt Villadiego, & Maiolus supra, Couarrus, in Clement. si furiosus, 2. part. in initio, num. 3. & 2. part. §. 3. num. 3. qui inde recte inferunt, quod cum Pontifex sit supra omne ius positum, in quacunque irregularitate ex homicidio etiam voluntario proveniente dispensare potest. Nec contrarium probat textus in cap. minor, 50. dist. ubi doceri videtur, non posse Romanum Pontificem cum clerico homicida dispensare; nam omnis vatis interpretacionibus adductis per Atchid. & Praepositum, respondendum est, Episcopum, de quo lib. meo sit, non petisse Pontificem, ut cum clerico homicida dispensaret, sed tantum ut approbaret factum ipsius Episcopi, qui dispensaverat, ut videretur homicida post peccatum poenitentem celebrare: quod asperit reprehendit Pontifex, & agere fecit, ut cum sacerdote prius prius debuit lachrymarum fonte tam immane flagitium diluere, ut talibus remediis curatos, salutis possit invenire suffragium. Tum etiam, quia voluit ostendere Ioannes Pontifex, illius textus auctor, non esse Episcopos concedendam licentiam ad dispensandum cum clerico homicida, ut post perpetratum homicidium possit in sacerdotio ministrare: quod adeo utrum est, quod prohibetur etiam Episcopis dispensare citra irregularitatem ex homicidio occulto provenientem. Concil. Trident. sess. 24. de reform. c. 6. Couarr. in d. Clement. parte 2. §. 3. me. Sylvest. verbo Homicidium 3. quod 8. Navarr. in Adminal. cap. 27. num. 240. quomodo Summus Pontifex in ea irregularitate facilius dispense, quia cessat scandalum, iuxta textum in cap. nisi cum pridem, de remiss. Poterit Episcopus dispensare in homicidio iusto occulto, ex dist. cap. 6. Concilii Trident. ut probabile dicit Martinus lib. 1. resol. cap. 105. quomodo ipse contrariae sententiae adhaeret. Et cum homicida voluntario dispensari posse quod beneficii simplex obtineat, ex textu in d. cap. 2. de clericis, pugnans, docuerunt Socius & Felinus in cap. ad audiendum, hoc titulo.

Nec supra tradit sententia obstat, quod Apostolus ad Timoth. cap. 3. prohibuit homicidam ministrare in sacerdotio, unde videbatur impedimentum hoc esse iuris divini, unde Pontificem in eo posse dispensare, iuxta textum in cap. sum quidam 25. quod 1. Nam respondendum est, quod licet in his, quae pertinent ad articulos fidei, non possit Pontifex dispensare contra Apostolorum decreta, in his tamen potest, ut docet Glossa verbo Apostoli, in d. cap. sum quidam: quam sequuntur Turriseremus in Summa, lib. 3. cap. 5. 4. & 57. Dominic. Sotus lib. 5. de instit. quod 1. art. 4. & notuimus iam in cap. 3. de bigam. non ordin. Nec etiam obstat textus in cap. 22. & 28. Paralip. lib. 1. ibi: Non adificabis mihi templum, quia non sanctum est. Quae auctoritas etiam habetur lib. 2. Regum, c. 7. & in cap. 1. de consecr. dist. 1. & in cap. qui omnes, iuncta Glossa verbo Et quod dixerit, 1. quod 7. Vnde videtur impedimentum hoc provenire à iure divino. Nam responsionem est, auctoritatem illam esse intelligendam figuratam, illud enim templum designat ecclesiam Catholicam, quae fundanda erat in pace, & charitate, iuxta illud Pauli ad Ephes. 2. 4. Solliciti servare unitatem spiritus in vinculo pacis. Ecclesiae enim, & eius ministri servare debent lenitatem, & mansuetudinem

divino Christi, cap. parva, cap. vñon solum, 23. q. 5. tradant D. Thomas 2. 2. q. 40. art. 2. & q. 64. art. 4. ad 3. Preposit. in cap. minor, 50. dist. Sotus d. lib. 5. de iustit. q. 1. art. 4. unde ut figura responderet figurato, oportebat templum illud figuratum in pace, & mansuetudine fundari. Et quoniam David Rex bellator erat, & sanguinem fuderat, prohibuit esse illud edificare, ut explicat Glossa verbo Prohibuit, in cap. 1. de consecr. dist. 1. Couart. d. 2. p. 5. 3. num. 3. Pineda de robur Salomonis lib. 5. cap. 5. sect. 2. Theophilus Raynaud. tom. 17. tract. de ritib. toris, fol. 248.

Dixi in definitione, ex homicidio proveniens, ut comprehenderet quodlibet homicidium, videlicet tam voluntarium, quàm casuale, vel etiam insulam. Et licet voluntarium homicidium Theologi appellent omne, quod culpam continet, & delicti expers non est; tamen ex inspectio horum sententia tantum voluntarium homicidium dicitur, quod est voluntate directè commissum ab habente animum occidendi, vel causam dante actioni voluntariæ, l. 1. l. 7. l. Diana 14. ff. ad leg. Corn. de sicar. l. cum autem, vers. Capitealem, ff. de adulter. edict. cap. sicu dignum, hoc sit, cap. 1. 5. si quis homicidium, de pace tenenda in typis funder. Quia ex voluntate, & proposito delicta distinguuntur, cap. cum voluntate, de sent. excom. l. qui iniuria, l. verum, ff. de furs. Requiritur ergo quod dolo malo, animoque occidendi perpetraretur, & sequatur actus occisionis; semper tamen desideratur ut hominis cadere contingat, à quo dictum est homicidium, cap. homicidium 23. q. 5. cap. homicidium, de parit. dist. 1. l. 1. ff. ad leg. Corn. de sicar. notant Cironius ad hunc titul. Vide inferius, licentiam in ead. inimici, aut illud truncantem, etiam eo animo, ut si vivum reperisset, occideret, nullo modo irregularem manere. Gibalinus de irregul. q. p. cap. 4. consell. 1. Similiter ille, qui odio concepto telo armatus exit animo occidendi, non tamen occidit, irregularem non est, licet quoad legem diuinam homicida censetur. D. Hieron. lib. 1. epist. 39. ad Celsinum, ubi: Cum homicidium ex odio sepe nascitur, quicumque edit, etiam si nudum gladio percussit, animo tamen homicida est. Item d. si quis plium vulneraret, sanguine effundatur absque exede, aut mutilatione, irregulatis non manet. Maiolus de irregul. lib. 5. cap. 48. num. 3. Similiter nec qui sul ipsius mortem attentavit, irregulatis fit. Diana p. 4. tract. 2. resol. 76. licet contrarium teneat Cornejo in 3. part. tract. 5. diffus. 1. dub. 2. Inde etiam infertur, non contrahi irregularem hanc ex rati habitatione eius homicidij, quod iam commissum ab alio est sine proprio mandato, aut consilio. Couart. in Clementina si furiosus, 2. p. 5. ti. num. 4. Maiolus de irregul. lib. 5. cap. 48. §. 6. plures quos refert, & sequitur Gibalinus eod. tract. cap. 4. consell. 15. non enim homicidium perpetravit ille, qui nec mandatum, ut fieret, dedit; & ita irregularem non est, etsi peccet lethaliter. Nec obstat rati habitationem mandato comparari, regulari Rati habitationem, de R. l. lib. 6. l. 20. sit. 3. p. 3. Sed qui mandavit aliquem occidere, irregulatis est, cap. final. de homicidio lib. 6. Etgo & qui ratum habuit. Augetur, nam patet puniuntur delinquentes, ac ratum habentes, cap. cum quis, de sent. excom. lib. 6. cap. final. de iniuria, eodem lib. cap. felicit. de parit. eod. lib. Clement. 1. de parit. leg. licet, ff. de iudiciis. Ergo ratum habens homicidium irregulatis fit. Nam respondendo

tur, tunc rati habitationem mandato comparari, cum quid nomine meo absque mandato gestum est; quia tunc rati habito sapienterius mandato comparatur; ac quod nomine meo non est gestum, ratum habere non possum, cap. rati, de de R. l. lib. 6. leg. si pupili, §. sed si ego, ff. eod. tit. Nec obstat textus in dist. cap. quicunque, cum illis proxime adductis; nam in his iunctis delictum ratum habentes idco excommunicatione ligantur, quia ipsa sententia lata fuit non solum contra delictum perpetrantes, verum & contra ratum habentes, quia cum talis sententia profertur ob iniuriam clericis, & statui ecclesiastico illatam, & etiam per rati habitationem ea infertur, inde ipsa excommunicatione ratum habentes ligantur. Couart. dist. 5. l. num. 17. Nec tantum irregulatis manet, qui homicidium voluntarium perpetravit, verum & qui illud fecit iussu, cap. si quis viduum, 50. dist. cap. significasti, cap. si quis dignum, §. clericis, hoc situla, l. iudex & si quis tantum fuisse aliquem verberari, homicidium tamen sequatur, irregulatis manet, cap. final. hoc sit, in 6. Maiol. lib. 5. de irregul. cap. 48. §. 2. Petrus Gregor. lib. 5. parit. tit. 18. cap. 6. Mendoza lib. 2. Comil. lib. 1. cap. 6. Diana p. 4. tract. 2. resol. 9. Quod procedit sine homicidio statim sequatur, siue postea, siue occidatur ille, qui mandatum accepit, amplius etiam renovaverit mandatum, inscius tamen mandataris illud exequatur, irregulatis fit. Maiolus ubi supra, Diana dist. tract. 2. resol. 14. etiam irregularis manet qui alioquin neci causam dedit, cap. Presbyterum, cap. ad audientiam, hoc sit, cap. si deus, §. 50. dist. cap. 2. de clericis percussore, veluti qui furem detinuit donec alij superuenissent, qui cum occiderent, cap. significasti, el. 2. hoc sit, qui infirmum in aliud laus velle, ut clericus moriatur. Maiolus d. cap. 48. §. 1.

Nec solum hic irregularitas contrahitur ex homicidio, verum & ex membri mutilatione, truncatione, seu abscissione. Clement. eod. hoc sit. Gibalinus de irregul. cap. 4. in secunda parte propositionis. An vero tantum ex debilitatione incutatur, quærent Interpreter 2. Affirmat Abbas in cap. cum illorum, de sent. excom. Sed communis est contraria sententia, quam post Couart. & alios defendit Gibal. dist. cap. 4. notat. 2. desideratur tamen, ut mutilatio sit membri, quod habeat proprium, & destinatum operationem per se distinctam à reliquis corporis partibus, non si tantum lucent in sua operatione, ut volebat ex Theologis Caietanus ad 2. 2. quest. 65. art. 2. & ibidem Atagon, Sotus in 4. dist. 75. quest. 1. art. 3. & ex Moralibus Layman lib. 5. summa, tract. 3. cap. 11. Villalobos in summa, tract. 21. diffinit. 19. num. 4. veluti oculus, auris, natus, lingua, manus, aut pes, quorum propriæ operationes sunt videre, audire, odorari, loqui, tangere, & ambulare, ut plagues relatæ probat Barbosa de ap. vel. Digiti, & verba de membris. Vide abscidens digitum non fit irregulatis, cap. 1. de corpore variat, quia licet habeat officium adiuvandi membrum, per se tamen membrum non est, l. idem Offitio, l. queritur 14. §. si quis 6. ff. de adul. edict. Nec obstat earentem digito ordinari non posse, cap. qui partem, §. 6. dist. nam plerumque mortuus ob corporis virum manet irregulatis, qui vero mutilatur, quia membrum non amputatur, irregulatis non fit, ut probat Vgol. de irregul. c. 4. §. 7. Nec etiam obstat textus in can. 77. Concil. Lateran. generalis

6.

DE MUTILATIONE MEMBRIS

neralia celebrant sub Alex. III. in illis verbis: *Presbyterum, cui duo digiti cum medietate palmae in padoce abfister significasti, Abstem celebrare non permittimus, quia non secus, propter debilitatem, nec sine scandalo, propter membris deformitatem, nec fieri confidimus.* Vbi cum Patres de digno egissent, illum membrum appellavit. Nam respondetur, verbum illud membri non refert ad digitos, alias dicerent PP. membrum; sed ad medietatem palmae; fuisse enim, ut quis ob corporis vitium ordinari nequeat, quod exacerbat membris. Cuoell. *Tartacon. can. 4* ibi: *Aut carnis aliqua parte membrum.* Ex proximo tria dicitur inferius, excusantem oculos, excusantem dentem, rubeantem auriculam, mordentem labra, euellentem capillos, non fuit irregularitatem, quia partes hae membris non sunt, *l. quidam, ff. de adulter. edit.* Barbosa ubi supra, Gibalinus *d. cap. 4. confell. 16.* Diana *tom. 2. tract. 15. resol. 20.* & *tom. 4. tract. 16.*

Etiam inter homicidas voluntarios recensentur cooperantes homicidio: quod variis modis eum pte pte, circa quos ea regula communiter traditur, eam cooperationem inducere irregularitatem, quae contra quimum Decalogi preceptum culpam mortalem producit: veluti consulens homicidium; consiliarius enim ratione ut homicida tenetur, quia consulens delictum, ipsius poena afficitur, *l. si qui vivit, §. cum Titus, ff. de falsis, l. non solum, §. si mandari, de off. Auditoris, ff. de iniuriis, Petrus. Faber & Gothofr. in l. consiliarius 47. ff. de R. L. vel si quis alioque ipsum homicidam causis defendit, si opus esset, licet nihil operetur quoad homicidium, ipsa associatio, ubi quam homicida reddat auctor, inducit irregularitatem, *cap. sicut dignum, §. illi, hoc tit. vel qui venenum paravit, ligna ad comburendum aliquem congelavit, aut arma praebebat illi, quem sciebat homicidium perpeturum fore.* Quod verò dicendum sit de illo, qui arma tradidit illi, quem suspensabat ea petere ad homicidium perpetrandum, dubium est: Irregularitatem eum esse docent Vgolinus *de irregul. cap. 1. n. 3.* Suarez *de confis. dist. 45. sect. 3. num. 5.* Diana *dist. 2. tract. 2. resol. 11.* Negat Hurtado *de irregul. dist. 2. diffinit. 8. num. 32.* Sed in hoc dubio distinguendum est inter vendentem arma ex officio, seu dantem tempore subauctoris eius: dum quis est in profectu, aut tempore pacis. Primo casu, est qui vendat cum suspitione futuri homicidii, irregularis non fit, quia facile ab alio arma obtinere poterat: secundo verò casu, si illa vendat dum quis est in profectu, irregularitatem contrahit. Idem dicendum est de eo, qui arma dedit ad occidendum Titium, si non Titius, sed Sempronius occiderunt. Gibal. *d. cap. 4. confell. 30.* Similiter irregularitatem manet, qui aliquem lenius percussit, si inde ab alio occideretur, vel in flumine mergatur, *cap. siudem, §. 1. dist. 50.* non tamen irregularis fit, contra plurimum sententiam, qui aliquem inebriavit, licet ipse ibi postea aliquem occiderit, nisi prius praevidit illud periculum adesse. Nec etiam irregularis manet, qui inimicem fugientem persequitur, & ipse fugiens puernum oppresserit. Gibalinus ubi supra, *confell. 10.* etiam inter homicidas voluntarios recensentur illi, qui eum possent homicidium prohibere, illud committi permiserunt: nam eisdem culpa reos est qui occidit, & qui occisum dum potuit, non defendit, *cap. non est defendenda, cap. final. 23. q. 3.**

cap. sicut, §. 2. hoc tit. cap. periculosus, de punit. dist. 1. cap. quanta, de sent. excom. D. Ambrosius lib. 1. de officiis, cap. 36. Ambros. lib. 4. advers. Gentes; quae enim peccat, qui delictum commisit, ut qui illud non prohibuit, *l. 3. §. 4. ff. de nexal. alien. l. scientiam, ff. ad leg. Aquil.* Quod non proelidit eum datur pura, & simplex omissio, sed eum ipsa omissio consuetudo est cum aliqua dolosa subrehtione, & eum qui tenebatur proximam ex iustitia defendere; tunc enim omittens defensionem irregularis manet, ut post Nauarrum in *dist. cap. non est defendenda*, docent Gibalinus *d. cap. 4. confell. 13.* Diana *dist. 2. tract. 2. resol. 7. & 1. 7. dist. 10. resol. 3.* unde inferitur, laudices non obstantes homicidio irregulares esse, *d. cap. non est defendenda.* Similiter & negantem electum non fuisse percuti, *cap. pater, §. 6. dist. 5.* Similiter & qui se obligavit aliquem defendere, si eum non defendat, *l. meum, §. sed licet, ff. de eo qui metus causa.* Similiter filij, & vassalli qui tenentur defendere patrem, & dominum, *l. 1. §. necisum, ff. ad Syllan. Item aduocatus, & procurator, qui dolose defensionem omittunt, ut reus ad mortem damnaretur. Item ille, qui tamum abscedit illi, qui eum in flumine mergetur, illum apprehenderat. Deinde Medicus, qui publico stipendio conditum agrotum dederat, & sic decellit. Item dicendum est de gubernatore navi, qui post fiscopeum regimen, illud dereliquit, & impetio commisit, unde naufragium sequitur est. D. Thomas 2. 2. *quest. 6. rursus in l. pater filio, Dominus seruo, maxime vixit alimenta negantur, & fume decedunt, irregulares sunt, cum eis de re iure teneantur, l. 1. ff. de quass. libris.**

Hec de homicidio voluntario. Sequitur casuale, quod casu, & prae intentionem agentis committitur, quia ut Aristoteles ait *lib. 7. physiconum:* *Casu est causa agens prae intentionem.* De quo agitur in *l. 1. §. 3. dist. 5. ad leg. Cornel. de falsis, l. si putator, ff. ad leg. Aquil. & passim in hoc titulo: circa quod homicidium communiter distinctio adhibetur inter homicidam dantem operam rei licitae, & inter eum, qui datur operam rei illicitae, ita ut primo casu legitur homicidium irregularitatem non contrahatur; secundo verò casu etiam adhibita diligentia homicidium irregularis maneat. Ita docuerunt Conart. in *Clementi. si finisus, 2. p. §. 4. num. 2.* Vgolinus *de irregul. cap. 18.* Anila *cod. tract. 7. p. dist. 6. sect. 1. op. 5.* iuxta quam distinctionem accipiuntur textus in *cap. presbyterum* & *cap. exhibita* 2. *cap. significasti 18.* hoc tit. *cap. de his 36. cap. clerici 37. cap. eo verò 42. cap. si quis voluntarius 44. cap. si qui artore 49. cap. super 50. dist. 50. cap. consilium 20. 2. quest. 5. cap. si quis non iratus 15. quest. 1. cap. quoniam, de punit. & remiss.* Sed illis recte perpenis octiditum praedicta opinio probatur, quare rectius dicendum est, ex homicidio casuali, sine praesentia ex actu licito, sine illicio, non nasci irregularitatem, nisi ob culpam latam, leuem, aut leuissimam peccatum lethale deit. Quae sententia probatur ex *dist. cap. quoniam, cap. quoniam, §. 1. dist. cap. later, cap. ex litteris, cap. significasti 16. cap. exhibita, hoc titale, cap. final. de his qui filios occiderunt.* Concl. Tribn. *can. 35.* fuste probant Gibalinus *de irregul. cap. 4. per totum.* Diana *dist. 2. tract. 2. resol. 21. & p. 2. tract. 16. resol. 18.* Latam culpam appellamus eam quae fecit quod faceret*

facere non debuit cum ignorantis crassa, leg. lege 7. ff. ad leg. Corn. de sicariis, leg. magna, ff. de R. I. Leuiter cum quis non prauidit quod frugi homines prauiderent solent: quem Cuiuslibet culpam appellant in leg. si seruus 1. 10. §. cum quidam, ff. de legat. 1. Leuissimum dicimus cum quis non prauidit quod diligentissimus paterfamilias prauideret sulet, l. 4. ff. ad leg. Aquil. Extra hos culpe gradus quis casu fortuito homicidium perpetraverit, non fit irregularis, si qua sicut casus fortuiti à nomine prauidentur, l. quia fortuito 6. ff. de pign. act. l. procuratore 13. C. mandati, l. in iudicio, C. locati, l. contrallus, ff. de R. I. Ita ex homicidio casu admissio nemo tenetur, l. respiciendum 11. §. delinquitur, ff. de pign. l. ex plagiis, §. final. ff. ad leg. Aquil. docent D. Iuan. Suarez ad leg. Aquil. lib. 1. cap. 2. sect. 7. Rudolph. Forner. lib. 6. ver. quoniam cap. 24. licet olim ex utraque iure certa esset statuta expulsi homicidij casualis, vt late probauit in cap. 5. Conclij Ietter. Ex qua doctrina inferitur, non esse irregularem clericum adulterum, ex eo, quod maritus ob simile adulterium occidit uxorem suam, vt probant Castro de lege parricidii lib. 2. cap. 14. Diana 4. p. tract. 2. resol. 1. nisi clericus suspicaretur tale homicidium futurum ubi nioiam zelotypiam ipsius mariti. Gutierrez lib. 2. canonice, cap. 6. Maius de irregul. cap. 48. §. 3. qui casu intelligendam esse declarationem Pij V. io hoc casu editam, resiliuit Gibalio, dist. cap. 4. confect. 3. Deinde inferitur, consensum alteri fuerit, aut adulterium, et si homicidium contingit, irregularem non manere. Vgulin. de irregul. cap. 16. num. 6. Item iubentem feminam ad se venire per loca periculosa, unde eueniat homicidium ipsius, aut abortus, non manere irregularem. Gibalinus d. cap. 4. confect. 8. Nec etiam irregulares sunt, qui aduocarent amicos in sui defensionem, et si aggressus homicidium sequeretur: nec ille qui consuluit reo, ne appellaret, unde mori cunctingit: nec confessarius, qui reo consuluit, vt crimen fateatur, unde vitima supplicio damnatus fuit: non enim isti consuluerunt proxime homicidium. Diana 4. p. tract. 7. resol. 99. Deinde irregularis non manet clericus venariorum insiliens, licet huminem occidat cretens feram esse, adhibita omni diligentia, et si venatio illi prohibita sit. Sayrus de consil. cap. 6. num. 19. Gibalin. supra d. cap. 4. confect. 12. Sicut nec ille, qui lapidem ludendi causam in alium proiecit, quem dum fugiens vitare tentauit, vulneratus euasit, cap. exihibit, hoc tit. Sayrus dist. cap. 6. num. 31. nec qui glitiumem taurorum procurauit, et si inde homicidium sequatur fuerit. Gibalin. dist. cap. 4. confect. 13. Nec etiam irregularitatem contrahit, qui fenestram edificauit, ex qua quis se precipitauit: nec qui mandauit ligna cadere, et si putator arbore opprimatur: vel aquam haurire, et si inde suffocetur: vel fabro rectum reficere, & inde cadat: nec qui aliquem misit ad furandum, et si homicidium sequatur, si nullo modo precauere potuit: nec parentes, qui inculpabiliter filios in lecto collocarunt, et si inde eorum oppressi sequatur: secus verò si culpabiliter, cap. 1. de his qui filios occiderunt: nec qui puerum equitandu oppressit, cap. dilectus, hoc tit. Deinde deducitur, irregularitatem hanc contrahere qui refert tegulas, si non monuit transientes, & aliquem occidit: & qui benedixi aquam fermentem, aut fecrum candens, ad pat. D. D. Gomez. in Decretal. Tum. V.

gationem vulgarem, si homicidium inde sequatur. Tabiena in summa, verbo Irregularitas, num. 18. & qui aliquem loco de ponte precipitem agit ad inuoluendum motum, & casu interit, argumenta legis quæ occasione, §. sed si quis de ponte, ff. ad leg. Aquil. qui canem fetocem in alium etiam loci causâ concitauit, argumentum legis item Metela, §. item, ff. ad leg. Aquil. & qui torneamentis exerceat, si homicidium inde sequatur. Cuius. §. 4. num. 6. qui ad pilam ludens in loco frequenti, si non adhibuit diligentiam, & homicidium sequatur, argumento dicte legis Metela, ff. ad leg. Aquil. Prosequitur alios casus Gibalinus d. cap. 4. ff. de irregul. per tot.

Sequitur aliud homicidium, non casu, aut voluntate admissum, sed necessitate, & iussu perpetratum. Quod duplici casu contingit, necessitate, aut voluntate. Necessitate, cum quis defensusque defendendo adhibito moderamine inculpate totale alium occidit, quo casu nullam notam irregularitatis incoerit, cap. 2. cum sequent. cap. significasti 18. §. si verò, hoc tit. Clement. si furiosus, hoc tit. Trident. sess. 14. de reform. cap. 7. Diana tom. 5. tract. 2. per tot. Maiolos de irregul. cap. 48. Gibalinus end. tract. cap. 1. quest. 3. cum vnicuique naturaliter liceat ubi sui defensionem inuasum occidere, cap. olim 12. de rescriptis, spet. cap. significasti 3. de penit. & remiss. leg. 3. ff. de iussu, & iure, leg. inque 4. leg. si ueniam 45. §. qui cum aliter, ff. ad leg. Aquil. leg. 1. §. vim, l. possessionem 17. ff. de re & vi armata, l. iniuriam, ff. de iniuriis: late illustrati in dist. cap. 2. hoc titulo. Si verò non adhibeatur inculpate tutelæ moderamen, irregularitas contrahitur, quis homicidium voluntarium est: quo casu accipiendi sunt textus in cap. alius, cap. qui de te, cap. in qui viduam, §. 10. dist. cap. 2. de clericis, pugnans, in dual. cap. olim 12. de rescriptis, spet. cap. perpendimus 23. de sent. excom. Concil. Tribur. cap. 11. D. Cyprinus lib. 1. epist. 1. D. Augustinus epist. 1. §. 4. & libro 2. de libero arbitrio, cap. 5. Inde inferitur, irregularem non esse eum, qui alium occidit in sui defensionem, etiam si sua culpa se iniecit in necessitatem occidendi inuasum, si tale homicidium prauideret non potuit, veluti si adulter inuasus à marito ipsum occidat, cum hac periculum prauideret non potuisset. Econtrario verò irregularitatem contrahunt se defendentes, si prius ipsum aggressum verbis cuminelloso lacessierint, quia tunc potius aggressores, quam defensores iudicantur. Similiter, qui potest periculum euadere vulnere inflicto, & maluit vsque ad necem procedere; vel si fugientem inuasorem occiderit, cum iam liber maneret à periculo inuasoris, nisi magnam laqueam bonoris inde praretet; tunc enim ex sententia plurium interpretum legit etiam fugientem persequi, vt docent Layman. Nauar. Lessius, & Moure, quos refert, & sequuntur Gibalinus de irregul. cap. 4. diffinita. 14. Diana 4. p. tract. 2. per totum, qui plures alios casus ex supra tradita doctrina resoluunt.

Voluntarie perpetratur homicidium, sed impune quoad Deum, primò cum iudex competentis causæ criminalis aliquem reum ultimo supplicio afficit, quo casu et si nulla lege tenetur, tamen irregularis manet ex defectu lenitatis, vt probauit in cap. sententiam, ne clerici, vel monach. nec solum iudex, qui sententiam

9.
DE HOMICIDIO
IRREGULARI,
ET VITIATO

10.
DE HOMICIDIO
IRREGULARI,
ET VITIATO

sententiam protulit, verum & qui eam scripsit, aut dictavit ut assessor. *Suarez de censur. disp. 47. sect. 1.* & iudex qui reum in ardorem carcerem coniecit, unde alimentorum subtractione, aut loci intemperie decessit: non autem sit irregularis iudex, qui reum ad infames damnauit, licet ibi decessat, quia talis sententia nec mortem, nec membri mutilationem conuenit, vt probat D. Nicol. Antonius *de exilio lib. 2. cap. 31.* nec etiam clericus irregularis erit, qui iurisdictionem temporalem obtinens causas criminales, vel aliquam specialiter delegauerit laico, qui exinde ultimo supplicio afficiat, *cap. final. ne clerici vel monach. lib. 6.* nec etiam iudex ecclesiasticus tradendo reum brachio seculari, vt ultimo supplicio afficiatur, non enim intendit directe illius necem, vt probauit in *d. cap. sententiam*; sicut nec ille, qui legem mortis protulit in perpetrantes tale delictum, vel qui consultus generaliter de aliquo crimine, cum non imminet easus specialis, respondit reum illius delicti poena mortis dignum esse. Nec etiam irregularitatem contrahit confessarius, qui absolutionem negat iudici nolenti punire reum, cum ipse nullo modo loquat, aut consulat poenam mortis imponere. Gibalinus *d. cap. 4. confect. 7. difficult. 9.* & *ro.* Proximi sunt iudici accusatores, & testes in causa criminali. Et circa accusatores sciendum est, cum qui reum de aliquo delicto criminaliter accusat eorum iudice seculari, unde sequitur mortis sententia, irregulare esse: si vero civiliter tantum accuset ad satisfactionem damni illati cum protestatione, ne iudex ad sanguinis sententiam procedat, etsi sequatur vltimum supplicium, irregularis non manet, *cap. 2. hoc rursus lib. 6.* quia accusator non conuenit villo modo ad ipsam mortis sententiam; quod enim iudex pronuntiat exigente iustitia, imponari non debet accusatori, qui tantum emendand fieri postulat, *d. cap. 2.* & nouiter exigit Bonifac. VIII. praedictam protestationem, quae antea in usu non erat, vt constat ex *cap. postulatisti, cap. tua nos, hoc tit.* notatur Maiolus, Vgolinus. Bonacina, & Suarez relati à Barbosa in *collect. d. cap. 2.* Gibalinus *d. cap. 4. confect. 7. difficult. 11.* Diana *p. 4. tract. 2. resol. 74.* quae Bonifacii constitutio procedit in accusatore, qui satisfactionem intendit damni illati sibi, aut conuictis personis, non vero si pro extaneis in iudicio compareat; quia tunc etiam cum protestatione sequuta morte irregularis manet. Gibalinus *d. confect. 7. difficult. 11.* Nihil tamen interest, an vetè, vel fidei protestatio fiat, videlicet animo sumendi vindictam, quia de hac ocella animi intentione non indiget Ecclesia. Diana *d. tract. 2. resol. 75.* plures congesti à Barb. & Gibalino *supra.* Si autem quis accusationem criminalem non instituat, sed tantum futuri detineat, vt ablata restituat, vel iudicia exhibeat, vt furti aliquis conuinci possit, si faciat tantum ad res proprias recuperandas, irregularitatem non contrahit *cap. tua nos, hoc tit.* unde excusatur D. Chrysostomus, qui publicè Eutropium Consulem praesente Arcadio Imperatore obiurgauit, unde Imperator illi caput amputari iussit, teste Cassiodoro *lib. 1. o. hislor. cap. 4.* Tandem asserendum est, accusatorem etiam cum protestatione pendente accusatione ad faetos ordines ascendere non posse, cum interim poenae rationis subiciatur, & si deferat in ipsa accusatione, vt calumniator puniendus sit, ex traditis in *cap. 1. de calumniar.* Circa testes causae criminalis sciendum est, cum qui testimonium perhibet

in causa capitali, vnde mortis sententia sequatur, irregularitatem contrahere, ex traditis in *cap. sententiam, ne clerici vel monachi*, siue ad delictum probandum testis produeatur, siue ad ipsam tantum sententiam proferendam simul cum notario, etiam si inuitus testimonium dicas. Diana *diff. tract. 2. resol. 31.* & *32.* nec vlla protestatione similis testis exsolvatur. Gibal. *diff. confect. 7. difficult. 15.* Eadem procedunt in advocato accusatorio, qui etiam irregularis manet; sicut vero in advocato rei, nisi eius culpa, aut imperitia mora sequatur, *cap. hi qui 13. quest. 8.* Diana *supra, resol. 34.* talis enim defensor etiam clericis permittitur, *cap. reus, 23. quest. 5. cap. inter alia, de immunit. Eccles. cap. 1. de postul.* Gibalinus *difficult. 16.* Maiolus *de irregul. cap. 9.* Alij etiam homicidio iuxta irregulares manent, veluti procurator, tabellio, licetor, illi qui fusum suspendunt, scalas apponunt, aut alio modo immediatè concurrunt in necem rei, non vero si remouet, vt qui funes, aut scalas fabricantur, qui reo fudent, vt altiotem scalas gradum ascendant, qui pulsant campanam ad populum conuocandum. Diana *p. 3. tract. 5. resol. 29.* & *46.* nec etiam irregularitatem contrahant spectantes reum ad supplicium, si sua praesentia auctoritatem non praebant, alijs irregularitas contrahitur, *cap. ex litteris, de excessib. Pralat.* vbi notatur etiam ex homicidio in bello iusto commissio irregularitatem nasci, vt laicè dicemus infra in *cap. peritio.*

His suppositis ratio praesentis impeditur, quare videlicet homicidium non possit promoueri ad ordines, nec in eisdem ministrare, duplex est. Prima, quia clerici, qui consecrati altaris ministerio, vbi ingis sit memoria passionis Christi, qui eum in ara crucis occideretur, percussus non precebat, eius imitacione non debent esse percussores; nam vt *Ecclesiast. cap. 10.* dicitur: *Secundum iudicium populi, sit & minister eius.* Secunda, quia iuxta illud Pauli *s. ad Timoth. Oporet Episcopum sine crimine esse, non violentum, non percussorem, &c.* vt habetur in *cap. vnum orationum, §. nunc autem, 25. dist. & iuxta illud Lem. cap. 21.* vbi dicitur, *superna voce ad Moysen dictum fuisse: Loquere ad Aar: Homo de femine tuo, qui habuerit maculam, non offerat panes Domino Deo suo, nec accedat ad ministerium eius.* Quod etiam habetur in *cap. 1. 49. dist. & facit Hormisdas Papa relatus in cap. sacerdotis, 61. dist.* vbi ait: *Irregulariter esse conuenire eis, quos praesente necessitate corrigendū. Ecclesia in ministris suis pulchra esse debet, sine ruga, & macula, luxia illud Cantic. cap. 4.* & *textum in cap. 2. de immunit. Eccles. in 6.* quam rationem adducunt D. Thomas *2. 2. quest. 40. articulo 2.* Prapostuina in *dist. cap. miror, 50. dist.* Soto *lib. 3. de iustitia, quest. 1. art. 4.* unde Ecclesia noluit sanguinolentos viros ad ordines admitti. Faciente quoque adduxi in *cap. sententiam, ne Clerici vel monach.* & apud Gentiles adeo funelli à sanctificis offerendis areebantur, vt Pontifex funere, aut morte contaminatus sacra tractare prohiberetur. Probat elegans, & ignotus ad tem textus in *leg. purgus, 5. vers. Quid quidem, C. Theodof. de sepulchro violato: & ex alijs probat Brissonius de formul. pag. 7.* ideoque Pontificem Maximum funeri adfuisse, velamine interiecto, quod Pontificis oculos à funere arceat, docent ex Seneca

II.
TRANSITVS
DECISIONIS
RATIO.

ad Marcion. cap. 15. Kitmanns de funeribus lib. 1. cap. 21. Dorleian in Tacitum lib. 1. annal. pag. 191. sumptio ad vitamque rem exemplo ex sacris Hebræorum legibus, de quibus Numer. cap. 19. Leviticus cap. 21. Ezechiel. cap. 44. & lib. 4. Regum, cap. 23. nec mortuos intra urbem sepelire licebat, ex legibus 82. Tabular. Ne funestarentur sacra civitatis, vt ait Paulus lib. 1. sentent. tit. 21. §. corpus, inquit, mortuorum 12. C. de relig. l. 3. §. Dicitur §. ff. de sepulchro violato, leg. omnia 6. C. Thorod, eod. tit. immo nec familia defuncti necesse admitti poterat ad sacrificia donec expiaretur, vel Intra minneret: quod referenda est lex directi §. 5. C. ex quibus causis infamia: quam Illustrat Revardus lib. 1. var. cap. ultimo. Facit Origenes de Toren, lib. 8. ubi alloquens Celsum ait: Ecce vestram quoque munitionem sacerdotum, & delibationem istos dextris servatis prois in sanguine causi sacrum, vt incensum, impoluiturque cada manibus vestris offerunt solennes ibi, quis habetis pro Diva. Kitmanns supra, & lib. 1. cap. 11. Carroza de partu cap. 13. num. 32. & sequent. Inde etiam, tamen apud Iudeos, quum Gentiles de bello redemptos ante non admittentur ad sacrificia, quum prius se expiassent, cap. 31. Numerorum. Philo Iudeus de vita Moysi, ibi: Pontifici autem mandavit, vt lustraret reclusos a recentis cada hostium. Quamvis enim per leges liceat hominem occidere, tamen qui necant hominem, etiam si coacti & propulsati iniuriam, obnoxii videntur, propter antiquam generis cognationem orlundi ab vno capite: hæc tunc fuit lustrandi causa, vt ne species quidem sceleris in eos competere. Redd. ergo Ecclesia, que in eius ministris petit lenitatem, & macrodunem, cap. parva, cap. omni salum 23. g. 5. repellit à sacerdotio homicidas. Et quia in homicidio casuali ooo adhibita diligentia in eo præcauendo quodammodo voluntas datur, quia etsi opus sit in culpam, non tamen fit adhibita cautela, ne ad homicidium perveniat, ideo cum ex tali homicidio culpa lethalis contrahatur, eo casu irregularitas per factos canones iniungitur. Cùm verò homicidium involuntariè contingit adhibita omni diligentia in eo præcauendo, nulla irregularitas incurritur, quia profus involuntarium est, nec in eo culpa lethalis adest, quæ irregularitatis poenâ plebenda fit: nec eo casu iure civili attentio ex tali homicidio quia puniendus erat, licet primo casu puniri posset.

Iuxta quam distinctionem homicidij casualis, quodam modo voluntarij, & omni involuntarij. accipiendi sunt textus in l. cum, §. iniuria, ff. de iniurijs, ubi asseritur, quod si quis intendens Seium inimicum suum occidere, erravit in persona, & occiderit Gaium, credens esse Seium, poenâ capitali teneatur. Qui textus difficilis videbatur ex eo, quia dicendum videbatur eum puniri non debere, quia respectu ipsius Gaij nullus intercessit dolus, atque delinquendi animus, qui in maleficia necessitatè desidebantur, l. 1. §. Dicitur, l. in lege, l. Dicitur, ff. ad leg. Cornet. de sicar. sed Consilius contrarium respondet, quia in eo casu licet delinquens non consenserit in specie erga Gaium, consensit tamen in genere, volens iniuriam irrogare, quod idem in alijs terminis, & facti speciebus docet Consilius in l. si pugnaueris, §. si liber homo, ff. ad leg. Jul. de adult. l. qui aut aliter, §. si quis dum puer, ff. quod ex, etiam clam, l. si quis, §. qui alienum, ff. de servis, l. auli, §. 1. ff. de servis corrupto, cum alijs adductis per Gomezium tom. 1. var. D.D. General. in Decretal. Tom. V.

var. cap. 3. num. 34. Nec tunc obstat textus in l. illud §. §. final. cum l. sequenti, ff. de iniur. ubi docetur, quod si quis intendens percutere servum propterea, errore, vel casu percussit servum alienum, vel libertum hominem, iniuriatum adione non tenetur. Nam respondendum est, redd. Vlpianum, & Paulum eo casu adionem denegare, quia nullus intercessit dolus, siquidem dominis licet in servos suos animadvertere, eoque modicè punire, l. qui servum, ff. de P. O. l. quid ergo, §. si heres, ff. de legat. l. 1. eleganter, §. si vendideris, vers. Plani, ff. de pignor. act. ac per consequens consensus, tam in genere, quàm in specie defuerat, qui necessarius est in punitione delictorum. Vnde cum nullus dolus eo in casu adest, ideo dominus iniuriarum adione non tenetur. Nec etiam bulæ solutioni obstat textus in l. scientiam, §. qui cum aliter, ff. ad leg. Aquil. ubi docetur, quod si quis se defendendo tetrum præteritum, vel in iactantem percussit, tenetur in lege Aquilia in interesse, & tamen certum est, aduim in eo casu abfuisse, nec consensum adfuisse in genere, vel in specie damnum dandi, sed tantum se defendendi. Quia respondendum est, ad legem Aquilam non deducit rati dolum, sed tantum attendi, ad damnum datum sit; & ideo Paulus in d. l. scientiam §. 5. quod cum aliter, docuit adionem legis Aquilæ eo casu competere, vt docuit Gomezius lib. 3. var. cap. 3. num. 34. & ipsum §. docet exponit D. Ioannis Suarez ad leg. Aquil. lib. 1. cap. 2. ff. 8. per totum.

Nec obstat dubitanti tanto supra adducta; nam verum est, in delictis afflictum, & animam attendi; sed in homicidio casuali, cum adhibita non fuit omnia diligentia, quæ adhiberi debebat præcauendo homicidium, voluntas quodammodo ad est sufficiens ad peccatum lethale; vnde tale homicidium non omnino involuntarium creditur. Et sufficiens est ad irregularitatem inducendam. Nec obstat secunda dubitanti ratio; nam etsi cum homicidium casuale omnino involuntarium est, aliqua poenitentia iniungatur, ea impositur propter causam, non propter culpam, sed propter exemplum, vt qui factio suo alios quodammodo ad malos mores præocænerat, poenitentia, & emendationis reformatione ad rectam viam renocet; vnde infamia, quod magis mittere, delinquentibus poenitentia imponitur in Concilio Vornac. can. 18. ibi: Si quis infans aliquem occiderit, si ad sanam mentem pervenerit, lenior ei poenitentia imponenda est, quam ei, qui sana mente tale quid commiserit: cui quomodo poenitentia sit imponenda, quia ipsa infirmitas causa peccati fuisse creditur, tantum tamen lenior, quam ei qui sanus aliquem occiderit, quoniam inter infanum, & sanum, irrationabile, & rationabile constat esse discrimen. Eos etiam, qui in bello publico homicidium perpetrant, poenitentiam agere debere, constat ex Beda in Parva tentiali, cap. 3. ibi: Qui casu homicidium fecerit, unum annum, qui in bello publico, dies quadraginta poeniteant. D. Bilio ad Amphitheat. can. 13. ibi: Cades in bellis fides Patres pro cadibus non imponunt poenibz videtur, ignoscunt eis, qui pro pudicitia, & pietate decernit: relii autem fuisse habent consules, vt qui sunt manibus non puris, sola trima annorum communiare abstinent. Licet ergo pro homicidio casuali imponatur poenitentia, non tamen irregularis manet; nam ea irregularitas non provenit ex delicto, sed ex defectu lenitatis. Ex hocufque traditis interpretari possunt textus fide omnes huius tituli, tantis adductis iuris eorum notis.

CAPUT XII.

a Clemens III.

AD audientiam Apostolatus nostri peruenit, quod cum quidam Presbyter volens corrigere quendam de b familia sua, eo cingulo, quo cingi solebat, illum verberare tentaret, contigit, quod c cultellus de vagina, quæ cingulo adhaerebat, elapsus, eum in dorso suo aliquantulum vulnerauit; postmodum verò cum ille vulneratus aliquandiu vixisset, & conualuisset à vulnere, grauiore, vt dicitur, infirmitate percussus, sana mente, ac deuotione debitam viam est vniuersæ carnis ingressus. Quia verò vtrum occasione vulneris decessisset, dubium habebatur, eodem Presbytero ab omni officio, beneficioque suspensio, quid super hoc vobis esset agendum, Ap. Sedem consuluistis. Nunc itaque vestræ discretionis industria duximus respondendum, quod cum in dubiis semitam debeamus eligere d tutiorem, vos conuenit iniungere Presbytero memorato, vt de cætero in sacris ordinibus ministrare non presumat: iniuncta tamen ei pœnitentiâ congruenti, poteris ei concedere, vt sit contentus in minoribus ordinibus ministrare. Si verò vobis legitimè constiterit, quod ex alia infirmitate obierit, de nostra licentia poterit (sicut erat solitus) diuina officia celebrare.

NOTÆ.

1. **Clemens III.** Ita etiam legitur in secunda collectione, sub hoc tit. cap. 1.
 b De familia. Illud autem certum est iure civili attentio, quod si domestici scelus aliquod gratiore coercitione dignum admiserint, iudicibus tradebantur duriori pœnâ plectendi: si verò in medioctre delictum incidissent, moderatori in eos castigatione pastafamilias utebatur, l. vnic. C. de emendat. propinquorum. Item de notionibus constitutionibus modica tantum castigatio domoiois permittitur, l. ff. de his qui sunt sui, l. vnic. C. de emendat. seruor. probat Fornet. lib. 1. rer. quonid. cap. 3. & late probat in can. 5. Concil. Nîker.
 c Cultellus. Quem deferre Presbyter licet poterat, quia armorum appellatione non continetur, vt probat Bobadilla lib. 1. polit. cap. 13. n. 73. & notat in cap. clerici, de vita & honestate clericorum.
 d Tutiorem. Quod principium variis exemplis illustrant Gratius de iure belli lib. 2. cap. 23. Nathan. de iniuria vulnerat. cap. 10. & explicat P. Mendo in flamma, differt. 10. q. 2. §. 4.

COMMENTARIUM.

2. **D**ifficilia admodum visa est Interpretibus præfens Clementis decisio, dum in ea docet, in dubio irregularitatem contrariam iudicari. Primum quia irregularitas nisi in casibus à iure expressis non incurritur, cap. in qui, de sent. excom. lib. 6. Igitur in dubio indocenda non est. Deinde quia in dubiis melior est conditio possidentis, vt probant, & explicat Ioannes Sanchez in select. diffus. 42. Tspia tom. 1. causa moral. lib. 1. q. 8. art. 9. Prado tom. 1. Theolog. moral. cap. 1. de conscientia dubia, q. 8. Igitur in dubio quilibet præsumendus est habilis ad ordines, non verò irregularis iudicandus. Quare pro huius textus expositione Ioannes Andreas, Cardinalis, Adrianus, & alij repentes in præfenti, & plures congesti à Ioanne Sanchez in select. diffus. 42. num. 5. Frac. Valens qm. 2. concord. fol. 321. Gibaltius

de irregul. cap. 4. t. p. afferunt distinguere eodem esse inter forum interius con scientiæ, & exterius iudiciale: vt in priori casu teneatur quis ab ordinibus se abstinere, irregularemque se credere, argumeto textus in cap. illud, de cleric. excom. quo modo accipiunt præfentem textum, & textum in cap. significasti, hoc tit. In posteriori verò non posse iudicem ipsum irregularem per sententiam declarari: & ita accipiunt textum in d. cap. in quod. Sed hæc distinctio sufficere minimè potest: nam quia decisio textus in d. cap. in qui, procedit etiam in foro interio: tum etiam quia dispositio præfentis textus in d. cap. significasti, ad forum exterius, & iudiciale pertinet, vt ex ipsius decisioibus facile constat. Quibus fundamentis eam communem distinctionem imptobant Nauarrius in cap. si quis autem, de pœnis, diff. 7. num. 55. Couat. in d. Clement. si furiosus, t. p. in initio, num. 3. Idcirco verius dicendum est, quod si sumus in dubio, an in aliquo casu indocenda, seu statuta sit irregularitas iure Pontificio, tunc respondendum esse, non esse irregularitatem constitutendam in eo casu, nisi expressum id fuerit in iure canonico, ex d. cap. in qui. At ubi certi sumus iure Pontificio irregularitatem induci certo in casu, & tamen ambiguum est, an aliquis id viuam propter eam causam contraxerit, vt plane non de iure, sed de facto dubitemus: dicendum est primum, in casu dubio homicidij nullam incurri irregularitatem ante iudicis sententiam; sed post sententiam condemnationis, vt in præfenti texto. Loquitur solum de dubio vitæque æquali, non de illo, cuius vni parti fuerit præsumptio probabilis, alteri verò nihil: de quo casu agitur in cap. significasti 18. hoc titulo, ubi non loquitur Pontifex de dubio vitæque æquali, sed de illo dubio, cuius vni parti fuerit præsumptio. Secundo in casu homicidij dubio, ita scilicet, vt nec præsumptio, nec illa ratio verè probabilis faueat alteri parti, etiam post secentiam iudicis non incurritur irregularitas, sed suspensio ab vfu ordinum maiorum; unde nec licet debent ex dispositione iuris priuari ordinibus suscipiendis, nec clerici vfu ordinum minorum: quod probatur ex præfenti texto, ubi Clemens III.

non

non impedit suspensionem ordinum, nec laici imponit determinatè ullam poenam, sed præcisè sacerdotibus poenam suspensionis ab ordinibus maioribus. Igitur quia non incurritur in hoc casu plena irregularitas. Confirmant etiam, quia textus in *dist. cap. significasti* 18. non loquitur in hoc casu, ut proximè dixi: & quomodo in hoc loqueretur, adhuc nihil obstat, quia etiam de presbyteris, & de abstinencia à ministerio sacerdotali præcisè loquitur. Vnde nisi shuande constet, eum presbyterum esse irregularem, ut verè constaret ex præsumptione homicidij, eo casu præcisè ex decisione illius capitis nullatenus constare posset. Ut autem privatio hæc ministrandi in sacris ordinibus locum habeat, & iudex debeat per sententiam imponere hoc genus poenæ, constare sine dubio debet de homicidio, saltem per legitimam, & verè probabilem præsumptionem; nam si homicidium ipsum sit dubium, quia scilicet non constet, vitrum factus fuerit animatus, an inanimatus; vel vitrum homo confossus lethaliter ab alio, quem latentem in postea confodisti, fuerit iam mortuus, cum tunc vulnus superuenit; tunc prædicta poena locum non habet. Rursus etiam debet constare sine dubio talem occisionem fuisse capi lethaliter culpabilem, contra quintum Decalogi præceptum, non præcisè ratione alicuius omissionis, sed ratione positivi vulneris à te illati; quia præceterè debuisti, ne homicidium alterius sequeretur. Et ratio est manifesta, quia si de culpa tua dubitaretur, locum haberent inconcussa illa iuris principia, in dubio absolvendum esse eum, dubia in meliorem partem esse interpretanda. Vbi autem delictum vulnerationis lethaliter culpabilis certum est, iam datur materia sufficiens punitionis: iubet autem Pontifex, ut poena prædicta suspensionis imponatur, cum delictum simul cum cæde supponitur, & dubium est, an occasione illius cædes ipsa fuerit subsequuta: unde qui dubius est de occisione licita à se facta, hanc poenam non incurrit.

3. Deinde assero, quod cum aliquis debeat, vitrum alium occiderit, nec-ne, si parti affirmanti fuerit præsumptio aliqua probabilis, debet se gerere ut irregularem in foro interno, si præsumptio in eodem foro locum habeat; aut solum in foro externo, si præsumptio falsa sit. & solum in eo foro subsistat, ut decidit in *dist. cap. significasti* 18. Et quomodo non esset decissum, ita deberet affirmari ex ea ratione, quia in rebus moralibus illud pro certo habetur, cuius vni parti faveat ratio aliqua probabilis, alteri verò nihil: atque idem est fovere præsumptionem, ac fovere rationem aliquam probabilem; quia non loquimur de præsumptione temeraria, & levi, sed de præsumptione fundata, & sufficienti ad ferendum prudens iudicium pro ea parte. Deinde quia cæteris paribus minor obligatio est gerendi se ut irregularem vel excommunicationem in deblo iuris, quam in dubio facti; ideoque quamplures Doctores congesti à Ioanne Sanchez *dist. diffin.* 43. communiter docent, neminem in dubio iuris se debere credere irregularem, aut alius ligatum censuræ. Atque etiam in dubio iuris debet quis se gerere ut irregularem, cum præsumptio faveat illi parti, quæ affirmat legem esse laicam; quia tunc,

ut aiunt relati à Ioanne Sanchez, stat pro lege possessio, & hoc est privilegium præsumptionis, quod onus probandi oppositum in aduersarium relinquit, & si aduersarius eum non probet, causâ cadat. Deinde ut homicidio faveat præsumptio, quantum satis est ad irregularitatem incurrendam, non solum debet præsumi cædes, nec solum vulnus, nec solum peccatum graue contra quintum Decalogi præceptum in vulneratione commissum, nec sola etiam infucentia vulneris in mortem; sed hæc omnia simul, ita scilicet ut præsumatur, hunc hominem vulnerasse alium, & vulnerando deliquisse contra præceptum non occidendi, & mortem ex eo vulnere euenisse: quare si de aliquo istorum non sit certitudo, nec præsumptio, sed omnibus inspectis adhuc dubitetur de omnibus, aut de aliquo ex istis, ita scilicet ut pro illis omnibus collectiue non sit iudicium probabile, cui pro parte oppositi nihil etiam sit, tunc irregularitas non incurritur.

Hinc patet etiam in dubio iuris, aut facti, si præsumptio faveat parti afferenti tale ius dari, aut tale factum existere, reuèrè incurrit alias censuras, & pro aliis factis distinctis ab homicidio. Ratio est, quia licet lex dubia non obliget ad sui observationem, nec delictum verè dubium ad subeundam poenam; tamen lex dubia, cuius existentia faveat præsumptio probabilis, quando nulla exceptio occurrat pro parte opposita, non minus obligat, quam certa. Hinc lex quam constat esse laicam, si dubitetur an sit abrogata, obligat, ac si certò constaret, non fuisse abrogatam, scilicet quia perseverare præsumitur, & pars illa dubij in iure pro cæna habetur, cui faveat præsumptio. Hinc etiam iure optimo decidit Pontifex in *cap. illud, de cleric. excom.* illam, ad quem perlatæ est fama suæ excommunicationis, debere se abstinere à sacramentis, nimirum quia fama illa creditur esse probabilis, & quæ onus probandi oppositum in eum, qui subdi volebat excommunicationi, teneret. Hinc etiam patet contra Gibalinum, & alios communiter affirmantes, in foro interno, aut etiam externo minime contentioso, nullum penitus esse discrimen inter dubium homicidij, & cætera dubia facti, quoad effectum incurrendi irregularitatem, aut alias censuras. Nam si parti afferenti faveat præsumptio, illa pars pro cæna habetur dum contentiosum non putatur, & tam excommunicationi, quam reliquæ censuræ incurritur. Si verò parti afferenti onus faveat præsumptio in prædicto foro, nunquam aliquis, etiam si dubiet an sit homicida, debet se gerere ut irregularem, aut suspensum. Ergo in prædicto foro nullum est discrimen inter dubium homicidij, & cætera dubia facti. Exinde etiam patet, in foro contentioso laicum versari discrimen inter dubium homicidij, & reliqua dubia facti; quia quando certò cunctis de occasione, ac vulnere lethaliter peccaminoso contra præceptum non occidendi, etiam si non præsumatur homicidium, sed præcisè de illo dubitetur, debet tude x imponere irregularitatem partialem loco poenæ, aut suspensionem ab vni ordinum maiorum: at verò in dubio simul aliorum factorum non debet hoc facere iudex, nec est ei taxata præscripta poena à iure, sicut in dicto casu in dubio facti homicidij est præscripta in præsentis textu.

CAPVT XIII.

Idem ^a Episcopo Lingon.

Dilectus filius A. capellanus in nostra presentia constitutus suâ nobis confessione monstrauit, quod cum quadam corporis molestiâ grauaretur, ita quod cibi, & somni desiderium raptum vidcretur ab eo, vt comedendi appetitum aliquid tantum excitaret, equum, quem nutruerat, ascendit: qui cum plenè non parceret habenis, sed præter fessoris arbitrium suis salubus lasciuires, ipse, vt eius refrænaret impetum, & fræno vim intulit, equumque calcaribus stimulauit. Cumque fracto fræno equus quasi proprio arbitrio relictus eurreret festinanter, quædam mulier veniens ex obliquo, & infantulum baiulans obuiauit, in quam equus irruens procul abiecto fessore, puerum prædictum oppressit, & capellanus ipse ex repentino casu vix mortis periculum euitauit, sed ad vltimum conualecens, diuina postmodum celebrare ^a non præsumpsit. Quia verò nobis non consistit de præmissis, f. t. per A. f. m. quæ super his inquiras diligentius veritatem, & si rem inuenieris taliter processisse, cum idem capellanus nec voluntate, nec actu homicidium perpetrauerit, nec dederit operam illicitæ rei, non impediâs quominus diuina possit officia celebrare.

NOTÆ.

^a *Lingon.*] Iterum legitur in tertia collectione, *sub hoc titulo*. cap. 1. ex qua transscriptum est bonæ. De Lingonensi Ecclesia egit in cap. 8. de *rescriptis*.

1. *b* *Extrænem.*] Scilicet vt crudelitatem decoqueret, famemque cibis separatim excitaret; nam etiam veteres morandi corporis gratiâ spatiabantur, & equitabant. Sidonius lib. 2. *epist.* 9. ibi: *Excussis impore meridiano paulisper equitabamus, quæ facillius postera marcidæ cibis curatiora fame exaceruimus.* Et famem ita gestationibus exonerabant. Plinius lib. 5. *cap.* 36. Vnde inter gestationis species, equitationem numerat Aëtius Medicus lib. 3. *cap.* 6. Cælius Aurelius lib. 5. *chronica*, *cap.* 9. Vnde in l. *acquiescentum*, aliis si cuius, & *fructuarius*, ff. de *usufructu*, existimat Bodeus ad l. qui *sesto*, ff. de *seruit. rustice*, gestationem locum esse, in quo sella gestabantur, vel equo vecti caetercebantur: quæ corporis solubritatem vocat Plinius lib. 1. *epist.* 3. & lib. 2. *epist.* 17. Hinc gestare, est se equo, aut curru vectum caeterere, l. non est 7. ff. de *morumiss. vindictæ*. Hinc Iustinianus in 6. *furtum*, *Instit.* de *obligat. qua ex delicti. nasc.* ait: Si quis equum gestandi causa commodatum sibi longius aliquis duxerit, furtum commisit. Et sanctus Paulinus loquens de duobus ebieolaris Gratiani Imperatoris, ait: *Confidentes in equis, quasi gratia gestandi, ciuitatem ingressi sunt, & subitâ principis miseras animas emiserunt.* Illustrat Pancirolo lib. 2. *var. cap.* 55. & 70.

^c *Equum.*] Proprium, & priuatum, non ciuicentem, seu ludis publicis destinatum, in quem equitare clericis prohibetur, *can.* 24. 6. *Synodi Trul.* ibi: *Ne cui liceat eorum, qui in sacerdotali ordine enumerantur, vel monachorum, in equorum curricula subsistere, vel scemici ludos sustinere.*

3. *d* *Celebrare.*] Sed videbatur hoc in casu Dia-

conum irregularem esse, quia vel propter imperitiam, vel propter infirmitatem equi ferocitatem detinere non poterat, quod saltem ea eo constaret, quod in specie huius textus refertur, clericum quadam corporis molestiâ grauati. At sic est, quod secundum iuris regulas quotiens quis propter impetum, & propter infirmitatem damnum dedit, à culpa immunis non est, vt probat textus in l. idem iuris 8. §. *mulierem*, & §. *idem iuris est*, ff. ad leg. *Aquil.* §. *impetu*, *Instit.* *exd. rit.* Ergo hoc casu irregularis manebat. Sed verius est, in presenti casu irregularitatem non contrahi, quia nullâ fessoris culpâ equus peritum oppressit, quia omnem diligentiam adhibuit, cum ipse nescisset equum esse durius oris, aliâ si id conuerat, aliquod periculum homicidij contraxisset, vt docuerunt Maiolus lib. 3. de *irregul. cap.* 48. §. 3. *num.* 13. Farinacius in *praxi crimin. part.* 5. q. 126. *num.* 15. Molina de *iustitia disp.* 77. *num.* 7. Gualinus de *irregul. cap.* 4. *regul.* 2. *consuet.* 2. Sed cum in presenti casu in modo equitanti non peccasset, nec nouisset duriorem oris equi, nullam irregularitatem contraxit. Nec tunc obstat textus in *cap. significasti* 16. *hoc titulo*, ubi in eadem specie, cum præter voluntatem fessoris equus mulierem obuam obueneret, iubet Pontifici clerico penitentiam iniungi, etsi ipse ignorasset duriem ipsius equi: igitur quia adhuc eo casu aliqua culpa committitur, & per consequens irregularitas contrahitur. Pro cuius reatus conciliatione cum presenti reatu varia adducentur repetenda in presenti, quibus omisiss, verius dicendum est iuxta superâ tradita in *cap. de castra*, in eo casu iuxta antiquam Ecclesiæ disciplinam penitentiam iniungi, non pro culpa, quæ nulla præcesserat, sed pro ipso facto, & homicidio secuto: vnde cum nulla culpa moralis præcessisset in presenti casu, & in alio simili relato in *dicto cap. significasti*; ideo irregularitas non contrahitur.

CAPVT IV.

Idem ^a Metensi Episcopo.

EX literis tuæ fraternitatis accepimus, quod cum lator præsentium A. presbyter vellet fœnum de curru deponere, pericam superius alligaram, cum neminem circa currum videret, proiecit in terram: & cum fœno insisteret deponendo, quidam prope ipsum accedens, puerum quendam iuxta currum reperit lenivium, in quo præter modicum lioris in fronte nihil inuenire potuit læsionis. Nos autem ab eodem quaesivimus sacerdote, si prius quam deiceret pericam, circumspexit sollicitè, an esset aliquis circa currum? qui quod diligenter circumspexit, asseruit: sed quod vidisset aliquem, denegavit. Ad te igitur remittentes eundem, f. r. per A. f. m. quat. si res ita se habet, nisi contra eundem presbyterum graue scandalum sit exortum, vel tanta laboraret infamiâ, quod deficiente accusatore oporteat ei purgationem canonicam indici, ipsum liberè permittas exequi officium sacerdotis.

NOTÆ.

^{2.} ^a **M**etensi.] Ita etiam legitur in tertia collectione, sub hoc titulo cap. 2. De Metensi diocesi egi in cap. 14. de clericis, non resid. Hinc decisioni omnino consonat textus in cap. 3. hoc titulo, in 2. collect. vbi Clemens III. in hæc verba similem casum decidit: Scripsisti nobis, fili Decane, & Capitulum, quod cum B. Sacerdos præfatum lator ad pericam communitate indultus, Ecclesia adificationi diligenter interderet, cum compagem eiusdem laquearii vetustate acris dissolvere voluisset, quidam femulus sibi laboranti in auxilium deputatus, licet prauitimus esset, ut ab ipso laqueari secederet, neglectu tamen, & id aure furda præteriens, cum laqueari ruit in terram, & hac occasione postea duobus mensibus, & tribus diebus agrotans, rebus est humane exemptus. Cumque super hoc valde tristatus, Antilegy tunc Episcopi vestri mandatum, & consilium requisisset, ipse cum

ad tempus ex abundanti suspendens cautelam, deinde habito prudenter consilio verum duxit restitutum. Tu verò, frater Episcopo, qui nunc Metensi Ecclesia præsidet, ipsum voluisti munere suspensam, donec super hoc recepturus consilium, præfatum nostram adires. Nos quoque cōsultantes, quod idem B. cum daret operam rei licitæ, secundum quod in iure casum est, omne studium adhibuit, dicens: Cane frater, et damnum quodlibet cūctaret: attendentes etiam, quod suspensus ad maiorem cautelam aliquandiu fuit, & nunc propter hoc specialiter ad Sed. Ap. veniendo, in persona, & sumptibus propriis laboravit: Consultationi tue taliter respondimus, per auctoritatem Ap. mandantes, ut prædictum B. ob hanc causam non impediatur, quinimmo integrè suo restituatur effluo, & cum omni pace permittatur appellatione remota cum integritate beneficii ministrare. Præterea volumus, ut quia prædictum B. proprietatem non habens, pro expensis itineris coalitus est pecuniam mutare, facias ei recompensationem congruam expensarum.

CAPVT XV.

Idem ^a Bisuntino.

EX literis tuæ fraternitatis accepimus, quod quidam monachus puer tuæ dioc. ead deponendum de campanili campanam subseruiens, quia fortè lignum corruit, ipso momento in Ecclesia sub campanili quendam oppressit puerum, & occidit. Vnde à nobis humiliter postulabas, quid tibi super hoc esset faciendum, petens vt cum ipso misericorditer dispenseretur. Quocirca fraternitati tuæ per A. f. m. quat. si monachus ipse rem necessariam agebat, & vtilem, & in loco, per quem aliquem transire ^b non crederet, vel ibidem existere, vel etiam illuc de consuetudine venire, quando lignum mouisse dignoscitur, satis poterit, præsertim in monasterio, ad altiores ordines promoueri.

NOTÆ.

^a **[Idem Bisuntino.]** In tertia collectione, sub hoc titulo cap. 3. tantum legitur Idem. De Bisuntina diocesi nonnulla adduxi in cap. 39. de testibus, & in cap. 14. de accusat.

^b **[Transire non crederet.]** Vnde omni culpa caret, et si non proclamauit, iuxta textum in l. si putator 31. ff. ad leg. Aquil. §. item si §. Insti. de lege Aquil. l. lege 7. ff. ad leg. Cornel. de sicariis, lunctis traditis à D. Ioanne Suarez lib. 3. ad leg. Aquil. cap. 6.

CAPVT XVI.

Idem * *Episcopo Paduano.*

Significasti nobis per litteras tuas, quod cum F. clericus cum Archipresbyt. Sancti Fiduncij equitaret, equus, cui insidebat, tam se, quam ipsum proiecit in aquam. Inde clericus ipsum grauius calcaribus stimulauit: equus verò, vt literarum tuarum tenor innotauit, cum existeret bucca durus, præter voluntatem sessoris raptus in cursum, & malè parens habentis, quandam mulierem, quam obuiam habuit, ex improviso pedibus interfecit. Cùmque nos ab eodem clerico fecissemus inquiri, verum equi vitium priùs scinisset, illud se asseruit ignorasse. Ideoque f. r. per A. f. m. quat. inquiras super his diligentius veritatem; & si rem inueneris taliter processisse, ad maiorem cautelam iniungas eidem clerico b penitentiam competentem, quā peractā, nequaquam impediās, quominus in susceptis ministret ordinibus, & ad maiores valeat promoueri.

NOTÆ.

Paduano.] Ita etiam legitur in tertia collectione, sub hoc titulo cap. 4. De Paduana Metropoli regi in cap. 7. de iudiciis.

b *Penitentiam.*] Quæ pro homicidio casuallī, & omnino involuntario imponi solet, iuxta tradita suprà in cap. de casu.

Textum hunc exposui suprà in cap. dilectus, & commentarium eius dedi suprà in cap. de casu.

CAPVT XVII.

Innoc. III. * *Offen. & N. Tirassonen. Episcopis.*

Petrus Diaconus, & monachus sancti Ioannis^b de Pinna, suā nobis insinuatione monstrauit, quod cum ipsum in seculari adhuc habitu constitutum, in Ecclesia de Rigulo quoddam beneficium obtinentem N. Abbas ipsius Ecclesiæ illam eodem beneficio spoliasset, cognati, & amici eius Abbati sæpius supplicauerunt, vt beneficium sibi restitueret memoratum: quo nolente ipsorum precibus acquiescere, irati plurimum, & commoti, nocte quadam in domo Diaconi conuenere: & cenā factā dixerunt, quod vindictam volebant sumere de Abbate. Inhibiti autem expressè ab eodem Diacono, ne Abbatem occiderent, vel aliquid ei facerent, vnde ordinis sui discrimen incurreret, & animæ detrimentum, in eum nihilominus irruerunt, & plagis impositis abierunt, semiviuo relicto, vnde post dies^c aliquot spiritum exhalauit. Ab illo autem tempore vsque hodie prædictus Diaconus de eo, quod contigerat, tristis effectus, ab administratione cessauit: & nondum expleto biennio, habitum induit monachalem. Vnde à nobis suppliciter petiit edoceri, verum posset in officio Diaconi ministrare, & si hoc ei liceret, an posset ad maiorem ordinem promoueri. Licet autem (si præmissis veritas suffragatur) præfatus diaconus super Abbatis interitu non videatur fuisse culpabilis, quia tamen bonarum mentium est ibi culpam agnoscere, vbi culpa non est, quod ab administratione officij se propria voluntate suspenderit, vel habitum induit regularem, sibi non ad peccatum adscribimus, sed ad meritum reputamus. Quocirca fraternitati vestræ per Apostolica scripta mandamus, quatenus si præmissa noueritis veritate subnixā, læpeditum Diaconum non solum in diaconatus officio ministrare, sed etiam ad ordinem presbyteratus ascendere, si aliud canonicum non obstituerit, liberam concedatis auctoritate Apostolica facultatem: præsertim si super hoc non fuerit respersus infamia, cum ei non debeat imputari, quod contra prohibitionem eius expressam, eo causam, vel occasionem non dante, ausu sacrilego proponitur à consanguineis attentatum, diuinā Scripturā testante, quod anima quæ peccauerit, ipsa morietur: & filius non portabit iniquitatem patris, neque pater iniquitatem filij: quamuis hoc ipsum verius ad æternam, quam ad temporalem referatur vindictam. Datum Reat. 2. nonas Augusti, Pont. nostri anno 1.

NOTÆ.

I Den.] In quarta collectione. *sub hoc titul.*
cap. 2. tantum legitur idem sed litteram, &
in superiorem textum ea ipsa regestio Innocen-
tius III. correcto à Siculo, ubi lib. 1. fol. 152. re-
peritur textus hic. De Offens. & Traffouensi Ec-
clesia regi in cap. 1. de his que ad.

b Joannis de Pina.] Ita legendum est, de Pi-
na, non de Puna, ut legitur in hac sexta colle-
ctione, quod perrelebat monasterium est in Re-
gno Aragonie, ut resolu in cap. cum olim, de cens.

c Post dies aliquot.] Vnde credebatur ea in
peticione obfiste, iuxta ea que adduxi in cap. 5.
Causa illius.

COMMENTARIUM.

I Regularitatem hanc ex homicidio contrahunt,
non solum qui illud propria manu perpetrarunt,
verum & qui consilium homicidio, aut mutila-
tioni dedit, cap. perniciem, de punit. dist. 1. ubi
præbent consilium, ut homicidium fiat, dicitur
homicida. Probant textus in cap. si quis viduam 30.
dist. cap. 2. de cleric. pignori, cap. si quis dignum,
§. qui verò, & §. ultimo, hoc tit. Quæ sententia ac-
cipienda est, dummodo homicidium, vel mutila-
tio ipsa sequatur, & dum si, qui consilium
accepit, tunc moveatur ex tali consilio, argu-
mento legis non solum, §. si mandata, ff. de iniuriis:
vel saltem roboratur eius voluntas, & animus au-
geatur, ut docent Abbas in cap. ad audiendam,
hoc titulo, & in cap. 1. de offi. deleg. Suarez de
censur. disp. 44. sect. 1. Auzias eod. tract. 7. part.
sect. 2. dub. 3. Sanchez lib. 2. in Decalog. cap. 10.
num. 44. Gibalinus de irreg. cap. 4. censet. 11.
sect. 140. Illud tamen dubium solet, an si ille qui
consuluit homicidium, tetrahit consilium, & con-
uenit homicide fuisse, ut à tali homicidio re-
cedat, & cum id assequi non possit, homicidium
sequatur, maneat irregularis? Et irregularitatem
non maneat, communiter docetur, dummodo
post prædictam retractionem, si eam non suffi-
cienter agnouerit, admoveat ipsum occidendum, in
cuius perniciem consilium datum fuit, in genere,
ne peccatum consensitens debeat, ut post Na-
nartum cap. 27. num. 135. docet Suarez ubi supra,
Gibalinus dist. cap. 4. censet. 12. Limitat au-
tem supra tradita doctrina, ut non procedat in
Principibus, vel eorum Consiliariis legem con-
dentibus, vel eam rogantibus, in qui transgre-
ssibus peccati mortis, vel mutilationis membri
imponitur, nam tunc non erunt irregulares iudi-
candi, quia non imminet casus, propter quem si-
milis lex conditur, etsi postea tenent, ut trans-
gressores capitali pena afficiantur. Ratio est, quia
in tali casu similis Consiliarij non animaduertunt
in cetiam personam, sed tantum provident ut homi-
nes se abstinant à delictis. Pro qua sententia
faciunt textus in cap. eis, in clericis vel monachi,
cap. fin. 3. de dist. ubi docetur Dominicus, Ger-
min. Diaz in praxi crim. cap. 61. num. 1. Archid.
in cap. officia, 25. quest. 3. prædictatores Principum
& eorum consiliarios hortantes illos generaliter,
& indistinctè, ut iustitiam faciant, in malfacto-
resque puniant, si exinde moveantur, & aliquem
pena capitali afficiant, irregulares non fieri.

Etiam mandata homicidium fieri per alium, eo
sequuto, irregularis manet, cap. si quis dignum, §.
aliterque, hoc tit. & aperte probatur ex cap. ultimo,

hoc tit. lib. 6. ubi iubens aliquem verberari, etsi
expressè caueat, ne occidatur, tamen homicidio
sequuto manet irregularis, propter homicidium
saltem indirectè voluntarium. Ergo qui directè
mandat homicidium fieri, sine dubio incurrit in-
regularitatem homicidij voluntarij, quia ille cau-
sa est homicidij: & qui per alium facit, perinde
habetur, ac si per seipsum faciat. Docet Suarez
dist. disp. 44. sect. 3. Petrus Gregor. lib. 3. partit.
tit. 18. cap. 6. Bionchorst. cent. 2. assert. 75. Man-
rique de differem. variisque feri, quest. 98. Gibali-
nus de censur. disp. 5. quest. 3. per totam. Quæ
doctrina procedit etiam si fuerit mandatum tacit-
um de occidendo, veluti si iniuriam passus dixe-
rit alicui ex filijs, vel familiaribus: Non venias in
domum meam donec aliquid noui audiam de te 3
ut docent Bartolus, Baldus, & Angelus in l. si
quis mihi bona, §. sed quid si mandauero, ff. de ac-
quis. heredit. Maiolus lib. 3. de irregul. cap. 48. n. 8.
Covarruv. in præfati. 2. part. §. 1. num. 13. Dubi-
tatur tamen merito solet, an iubens homicidium
esset irregularitatem reuocando mandatum in te-
quum homicidium fiat. Et dicendum est, irregu-
larem eo casu non manere, etiam si non moueat
ipsum occidendum. Ratio est, quia si iudiciali reuo-
catione, qui dedit mandatum, non potest dici
causa homicidij, nam qui illud commisit, ex sua
voluntate potius, quam ex mandato alterius illud
perpetrauit, ut docent Suarez dist. sect. 3. Nauar-
rus dist. cap. 27. num. 133. Ioannes Brucellus in
cap. 1. hoc tit. num. 41. Canalebrum autem 1. p.
de irregul. §. 2. Suarez dist. sect. 3. Similiter nec
irregularis manet, qui homicidium ratum habuit,
si consilium, aut mandatum non dedit, ut docent
Suarez dist. sect. 3. Hurtado de irregul. diffinit. 7.
n. 15. Maiolus dist. lib. 5. cap. 48. §. 5. quæ sen-
tentia aperte probatur primò ex eo, quia irregu-
laritas non contrahitur nisi in casibus à iure expres-
sis, dist. cap. si quis, de sent. excom. lib. 6. & in
iure Pontificio nunquam talis irregularitas statuta
legitur: Ergo inepti non potest. Secundo, quia
vemo irregularitatem ob homicidium contrahit,
nisi illius causa fuerit aliquo modo: sed qui ho-
micidium ratum habuit, non potest dici eius cau-
sa: ergo irregularitatem non contrahit. Tandem
facit, quia lex aliquem actum prohibens, non-
numquam comprehendit illum ratum habentem, nisi
specialiter id in ea caueatur, ut in cap. cum quis, de
sent. excom. lib. 6. cap. si filius, eod. lib. Clement. 1.
eod. tit. Ergo cum nulla canonica sanctione cau-
tum legamus, ratum habentem homicidium irre-
gularem manere, non possunt alix sanctiones de
homicida agentes ad ratum habentem homici-
dium extendi. Nec obstat, rati habentium manda-
to comparari, cap. rati habuit, de R. I. lib. 6. Nam
respondendum est, eam regulam procedere in vni-
uersum quoties specifica decisio minime deside-
ratur, ut in presenti casu contingit, tunc enim
non valet argumentum à rati habentibus, quæ man-
dato per æquipoles, non to specie comparatur,
nec idem est cum mandato, argumento legis me-
line, & legis qui herede, ff. de iudi. & de iur. iur.
§. 24. Vnde licet irregularitas ex mandato con-
trahatur, non idem erit dicendum in rati habito-
ne. Deinde etiam quæritur fuit, ad hoc, quod
mandatum incurrit irregularitatem, necessarium sit
quod mandatus accepit mandatum, quia con-
tingere potest, quod eo tempore, quo illi manda-
tur, dicat se nolle illud munus assumere, postea
verò mutata voluntate homicidium exequatur
sine

sine nouo iussu, immò potius contra voluntatem ipsius mandantis, si iam itam mutauit. In qua questione dicendum est, non esse necessariam acceptationem, & ita eo in casu mandantem manere irregularem, etiamsi nihil denuo iusserit, vel si retractauerit voluntatem suam, dum sufficienter non reuocauerit mandatum. Et ratio est, quia etiam, quod mandando commiserat, adhuc persequeretur, & sic semper manet ex vi prioris mandati non reuocata exhortatio in mandatarium; unde licet à principio non consenserit, potest tamen ex vi prioris mandati moueri, & induci ad homicidium; & ita illud imputatur mandanti, dum mandatum non reuocauit, vt docuerunt Innocent. in dist. cap. ad audientiam, hoc tit. Suarez dist. sect. 3. Maiolus lib. 5. de irregulari. cap. 48.

His præmissis, eum in presenti casu Petrus, nec consilio, nec exhortatione homicidium fieri iussisset, aut illud fieri mandasset, immò potius inhibuisset ne Abbas lederetur, irregularitatem non contraxit, etsi eius causâ homicidium perpetratum fuisset, vt de simonia in non dissimili casu probatur in cap. per tuas, de simonia: quare illa verba huius textus, *Concedas auctoritate apostolica*, potius referenda sunt ad declarationem, quàm ad dispensationem. Si autem in presenti casu, dum de occidendo Abbate, seu vulnerando in presentia Petri agebatur, ipse taceret, sequuto homicidio, eum regularem manere docuerunt Gibalini. de irregul. cap. 4. consell. 14. fol. 155. Felinus in presentia: qui alia dubia de suscitibus, vel non homicidium, proponit, & exponit.

CAPVT XVIII.

Idem * *Abbati sanctæ Trinitatis de Maleleon.*

Significasti nobis per literas tuas, quod eum quidam maleficus ingressus Ecclesiam de Brucio, Dei timore postposito, ^b Eucharistiam cum altarium ornamentis & libris ecclesiasticis extra Ecclesiam asportasset, dilectum filium Laurentium presbyterum Ecclesiæ lator præsentium, regularis canonicus, quem in prædicta Ecclesia de Brucio institueras capellanium, præfatum iniquitatis filium sordido arrepto percussit: sed si ad mortem fuit ictus huiusmodi, tu, & ipse penitus ignoratis. Cum autem parochiani Ecclesiæ memoratæ audirent prædictum maleficum ornamenta Ecclesiæ asportantem, ipsum arrepsit gladiis, & fustibus in eodem loco proinus occiderunt. Prædictus verò Laurentius de sua salute præcogitans, euoluto anno, sub titulo confessionis rei ordinem tibi ^d reuolauit, pro quo nobis humiliter supplicasti, vt cum eo misericorditer agere dignaremur. Licet autem contineatur in canone, quod si quatuor homines, aut quinque, vel plures contra hominem vnum fixati fuerint, & ab his mortuus fuerit vulneratus, quicumque illorum ei plagam imposuerit, homicida, secundum statuta canonum, iudicetur. Quia tamen in alio canone ^d dicitur de presbytero, qui Diaconum equitantem percussit, & ipse cadens ex eo, ceruice fractâ interit, quod si non ad mortem percussus est, incaute agenti presbytero competens poenitentia est indicenda, ita quod aliquanto tempore à Missarum suspensus solennis, denuò ad sacerdotale officium reuertatur. Quod si veraciter qualicumque percussione presbyteri mortuus est Diaconus, nullâ ratione more sacerdotis permitendus est ministrare, etiamsi voluntatem ^e non habuerit occidendi. Nos in præmissis casu credimus distinguendum, verum constare possit, quod præfatus sacerdos non inflixit percussionem lethalem, dō quâ videlicet, si aliorum vulnera non fuissent subsecuta, percussus minime interiret: & si percussor voluntatem non habuerit occidendi, nec ipsius studio, vel ^b consilio, vel mandato processerint alij contra illum. Et quidem si hoc ita se habet (quod forsan ex eo posset ostendi, si certa apparuisset percussio ab eodem inflicta, tam modica, & tam levis, in ea corporis parte, in qua quis de leui percussus non solet ^d ad mortem, vt peritorum iudiciū medicorum talis percussio assereretur non fuisse lethalis) cum de cæteris credendum sit ipsi sacerdoti, qui non accusatur, vel denuntiatur ab aliquo, sed per se ipsum de sua salute sollicitus consilium appetit salutare; post poenitentiam eidem ad cautelam iniunctam, in sacerdotali poterit officio ministrare, religionis accedente fauore, cum sit canonicus regularis, & sine omni scandalo possit sacerdotale officium exercere. Quod si discerni non possit, ex cuius ictu percussus interit, in hoc dubio tanquam homicida debet haberi tunc sacerdos: & si forsan homicida non sit, à sacerdotali officio abstinere debet, cum in hoc casu cessare ^b sit tutius, quàm temerè celebrare, pro eo, quod in altero nullum, in reliquo verò magnum periculum timeatur. Virum autem de illis sit simile sciendum, quorum vnus, sed quis, omnino nescitur, ^d homicidium perpetravit, si forsan ad sacros ordines recipiendos præsententur, verum omnes sint patiter repellendi, cum discerni non possit, qui debeant inculpabiles iudicari.

Iudicari, diligens investigator aduertat, quamuis hic casus sit ab illo valde diuersus. Si verò quemadmodum perhibetur, sacerdos iste prius ab illo percussus sacrilego, mox cum cum ligone in capite percussit, quamuis vim vi repellere omnes leges, & omnia iura permittant, quia tamen id debet fieri cum moderamine inculpate tutelæ, non ad sumendam vindictam, sed ad iniuriam propulsandam, non videtur idem sacerdos à pena homicidij penitus excusatus: tum ratione instrumenti, cum quo ipse percussit, quod eum graue sit, non solet leuem plagam inferre; tum ratione partis, in qua fuit ille percussus, in qua de modico ictu quis solet lethali ter lædi; maximè eum secundum vulgare prouerbiū asseratur, quod qui ferit primò, ferit tangendo; qui ferit secundò, ferit dolendo: vnde pensatis omnibus id credidit expedire, vt cum humillitate abstineat à sacerdotali officio exequendo.

NOTÆ.

M *Alecion.*] Ita legitur in quarta collectio-
ne, sub hoc titulo cap. 1. in hac autem sex-
ta legitur *Adelberg.* Sed adhuc non inueni-
rem, seu locum, vbi monasterium hoc sanctæ
Trinitatis esset.

b *Eucharistiam.*] Quæ seruari debet in Ec-
clesia, iuxta tradita in cap. 1. de eysod, Eu-
charist.

c *Percussit.*] Cùm forem diuinum non possit
occidere, præcipue quia proclamatio hoc casu
sufficiebat, eum parochiani propè essent, vt no-
taui in cap. 3. de iur.

d *Remissio.*] Concessa videlicet facultate pa-
terfacendi casum Romano Pontifici, vel aliis, iux-
ta tradita in cap. 2. de officio iudicis.

e *Canone.*] Videlicet cap. ult. 2. 3. quest. final. qui
elatur ex Concilio Vromæ. ab Ioue Carno-
tensi par. 10. Decreti, cap. 779. Burchardo lib. 6.
Decreti, cap. 42. & in Penitentiali Romano tit. 1.
cap. 15.

f *In alio canone.*] Relato in cap. student, 50.
dist. 11.

g *Voluntatem non habuerit.*] Non quia volun-
tas tantum occidendi possit irregularitatem indu-
cere, nisi sequatur occisione, seu membri muri-
lacio; siquidem certum est ex deliberata volun-
tate occidendi hominem, etiam ad actum ex-
ternum deducta, si modò nec homicidium, nec
membris amputatio sequuta fuerit, non incurri
irregularitatem, vt constat ex cap. final. 1. 5. quest. 1.
cap. sic dignum, § illi autem, hoc tit. ibi: Si de illa
captiue mors eius sequuta fuerit; vt docent Maiolus
lib. 5. cap. 48. num. 4. Suarez de sensu. dist. 44.
sect. 2. Couar. in Clement. si foris sit, 2. par. in iuris,
num. 2. Nec contrarium probant testis in cap. si
præterea ag. cap. si quis 30. de peniti. dist. 1. & præ-
ceptum illud diuinum, Non concupisces, quo io-
rdinatus solius mentis appetitus, damnatur. Et
in l. si quis cum telo, Cod. ad leg. Corn. de sicariis
vbi sola voluntas occidendi ad actum exteriorem
de ducta puniatur. Ergo irregularitas incurrunt
potest ex deliberata voluntate. Nam respon-
dendum est, animum delinquendi in mente retinendum,
& opere non declaratum, non puniri in foro ex-
teriori, sed tantum in interiori, vt constat ex dict.
cap. præterea, dict. cap. si quis, vbi dicitur furti ten-
neri, qui solo timore non furatur; & non natus
delinquere eum, cui sola est voluntas peccandi,
quàm si in ipso facto deprehenderetur: quod est
intelligendum quoad Deum, non quoad homines,
iuxta textum in Legationibus, ff. de pami, telatum in
cap. cogitatis, de peniti. dist. 1. Deus enim, cui actus
internos comprehendere, & peccatorum resecutorum
est, lib. 1. Regum cap. 16. D. Paulus 1. ad Corinthe. 4.

D.D. General. in Decretal. Tom. V.

non ex opere, & effectibus iudicat, sed ex corde,
cui potius 22. quest. 5. & ex corde procedit adul-
teria, & cetera peccata, traditur in c. 15. Matthei,
cap. 2. 15. quest. 6. in quem sensum accipiendi sunt
textus in cap. si quis inueniunt 1. 4. q. 5. c. Christiane 32.
q. 5. cap. erubescant, 34. dist. enim alia adducta per
Felinum in c. 1. de præsumpt. Itaque in foro exteriori
voluntas in mente retenta, non deducta ad actum
externum, poeniri non debet, dist. 1. cogitationis, l. 1.
§ hoc autem, in fine, ff. quod quisque iuris. Vnde cum
irregularitas sit impedimentum inductum lege ca-
nonica, vt probauit supra in cap. de cetero, ideo
propter actum internum incurri non potest irre-
gularitas. Nec etiam obstat quod in nonnullis pri-
uilegijs Romani Pontificis conceditur facultas dis-
penlandi in irregularitate purè mentali, vt constat
ex Concilio Basiliensi sess. 14. & in Bulla Cruci-
ata concessa à Pio IV. anno 1561. Non potest an-
tem irregularitas vocari purè mentalis, nisi ex actu
purè mentali. Ergo supponit Pontifex dari ali-
quam irregularitatem mentalem, aliàs illusoria es-
set illa priuilegia. Nam hæc difficultati vt suis-
fuerant Doctores varia adducunt. Henriquez lib. 6.
summa, cap. 14. § 4. iter. X. affirmat illam clas-
sam positam esse ad cautelam, propter conscien-
tiam seculorum. Ledesma in 2. 2. § 26. art. 2.
asserit clasulam illam non esse summi Pontifi-
cis, sed à quæstoribus impositam fuisse. Sed re-
ctius Suarez vbi supra, num. 9. Corduba lib. 5.
quest. 43. dub. 1. asserunt irregularitatem men-
talem vocari eam, quæ licet per actum externum
contrahatur, pendet tamen ex aliqua conditione
purè mentali, veluti quod sit ex certa scientia,
contemptu, odio, præsumptione, aut pertinacia,
vt quando quis excommunicatus est, quia egit,
vel omisit aliquid scienter, dolose, & præsum-
tuose, iuxta speciem textus in cap. penult. vers.
ceterum, de cleric. excom. vel si Ecclesia imponat
irregularitatem ecclesiastici baptismum sine inten-
tione; nam talis irregularitas dicitur mentalis,
quia originaliter prouenit ex illo animo culpa-
bili.

h *Consilio, vel mandato.*] Iuxta tradita co-
mmunitario antecedenti.

i *Ad mortem.*] Non tamen omnis, qui letha-
liter vulneratus est, moritur, l. 1. c. § ult. ff. ad
Syllam sicut nec omnis moritur, cui lethalis mor-
bus est, auctor Galeo lib. 6. aphorism. Hippo-
crat. aphorism. 18. quia in vulneribus alia sunt, in
quibus plus medicamentis, alia in quibus manus
plus proficit, ex Cornel. Cello lib. 5. cap. 26. itaque
euentus expectandus est; nisi enim mors sequuta
sit, existimari non poterit antea volnus fuisse mor-
tale: & ideo si lectus mortificè vulneratus, pos-
set ruinâ, vel naufragio perierit, de occiso,
nec de vulnerato agendum esse docuit Vlpianus

A a in

in *libro scripturae* 1. 5. 1. ff. ad leg. Aguil. Eam rationem assignans, quia post ruinam, vel naufragium non potest apparere, an ferus sit occisus. Inde etiam Cellus in *litem* 1. 1. 5. Cellus, ff. ad leg. Aguil. docet, quod si alios lethale vulnus inflixerit, alius postea occiderit, priorem non teneri de occiso, sed de vulnerato; posteriorem teneri de occiso, quia occidit, & merito, quia propter posterioris homicidium non apparet fuisse vulnus lethale. Nec contrarium docet Iulianus in *litem vulneratus* 51. ff. ad leg. Aguil. ubi docet, letum vulneratum esse ab uno, ex cuius ictu certum est morturum esse; & postea ab alio exanimatum: & existimat, verumque de occiso teneri. Quia facile procedi Iuliani sententia, si obsequens verba illa: *Certum est morturum esse*. Quibus non tantum significatur vulnus esse mortale, sed omnino morturum esse, ut in simili casu docuit Papinianus in *litem ratione* 11. 5. si ferus, ff. ad leg. Falciol. ibi: *Qui mortem domino ex voluntate afflavit fuerat, ut eos non posse vivere certum esset*. Sunt enim quaedam vulnera insanabilia, veluti cordis percussio, quae omnino hominem perimit, iulus Solinus Polyb. cap. 3. ibi: *Conuenit inter omnes gentes primum ex universa formari carne, eoque in diem quinquem & sexagesimum crescere, deinde minui, ad ex ossibus spinas: ea propter capitale esse, si pars altera necetur*. Similiter percussio cerebri, medullae spinae, item pulmonis percussio insanabilis est, necnon si diaphragma ruptum sit; nam diaphragma est musculus, qui diuidit cor, & pulmones a liene, & iecore. Aequè etiam mortalia sunt vulnera, si arteriae ruptae sint, veluti arteria venosa, arteria vocalis, & arteria aspera. De quibus, & aliis vulneribus agunt Hippocrat. aphorism. 18. sent. 6. ibi: *Cui vena perforata fuerit, aut cerebrum, aut cor, aut septum transversum, aut tenuis quoddam intestinum, aut ventriculus, aut iecur, lethale est*. Cornel. Cellus lib. 5. cap. 26. ibi: *Servari non potest, cui basia cerebri, cui cor, cui stomachus, cui iecur porta, cui in spina medulla percussa est, cuique aut primo medulla, aut iecur, aut tenuis intestinum, aut ventriculus, aut renes vulnerati sunt, curae circa fontes grandes vena, vel arteria praefixa sunt*. Alia autem vulnera sunt, quae quamvis ad sanitatem vix perveniunt, non tamen de eorum incolemitate desperatur. Idem Cellus *dist. cap. 26*. Quae in illis non expectantur euentus, in his verò euentus expectantur est. Unde fit, quod si quis alteri vulnus in corde, vel in pulmone inflixerit, illud nullo expectato euentu occidisse creditur, ac proinde quamvis postea ex plaga, quam alius imposuit, celeritè mortuus sit, verique de occiso tenetur, *dist. litem vulneratus*. Si autem vulnus non ita lethale sit, primus de vulnerato, secundus de occiso tenetur, ut docuerunt Cuiac. lib. 86. *Digestor*. in *dist. litem vulneratus*, Antonius Matthaeus de *crimin. ad tit. de lege Cornel. de sicariis*, cap. 3. D. Ioannes Suarez ad leg. Aguil. lib. 1. cap. 3. *señ. 3*. Quoad irregularitatem autem, de qua in praesent textu agitur, certum est, non solum eum, qui occidit, verum etiam qui morti ferè vulneravit, irregularitatem contrahere, ut ex hoc textu communiter resolvunt repetentes hic Villadiego in *crad. de irregul. cap. de clerico percussore*, num. 3. Valentia *sem. 2. illust. crad. 4. cap. 4. num. 33*.

3. *Judicio medicorum.* Qui adhibendi sunt ut periti in arte, iuxta tradita in cap. 3. de probat. quia

in his questionibus medici indicant, non luteo consulti: creditor autem illis, si cum iuramento deponant, absque eo tamen non faciliè fides habetur, sicut nec vni, nisi fortasse plures haberi non possint, quo casu necessariò vnius indicio standum est, argumento legis 6. *Cod. de re milit. l. 1. in princip. & 5. de iudiciando, ff. de ventre inspic. l. 1. 5. idem*, l. 60. ff. de quasi. novella 7. *Iustin. cap. 3*.

k. *Cessare sit timus.* Verba hae expolui supra in cap. ad audiendam.

l. *Homicidium perpetravit.* Si propter hominem occisum criminaliter agatur, & plures praemeditato consilio in eum iturunt, siue omnes percusserint, siue aliqui, siue vnus, omnes tamen vltimo supplicio inquam homicidae puniuntur, quia omnium idem dolus, & facinus aequale est, l. 1. 5. si quis non homines, ff. de vi bonor. rap. l. 3. ff. ad leg. Iul. de vi privat. cap. ult. 23. quasi. ult. l. 57. *stili*: & ita omnes manent irregulares. Docent Paz in *dist. l. 57. Anton. Gomez lib. 3. variis. cap. 3. num. 36*. Contr. in *Clement. si furiosus*, 2. part. 5. 2. num. 1. *vers. Primum casus*, *Sessio tom. 1. decisio 103*. Sed si non praemeditato consilio, sed casu tixa orta fuerit, & constet, quod vulnus lethale sit, & quis illud intulerit, ille tantum, qui hominem morti ferè vulneravit, tenebitur de occiso, ceteri si non vulneraverint, non tenebuntur; si autem vulneraverint, propter vulnera, solummodo, non propter mortem puniendi erunt, cum singulorum dispar culpa, & inaequale fuerit delictum, l. 1. 5. *Dinus*, l. ult. ff. ad leg. Cornel. de sicariis: quo casu ille solus, qui lethale vulnus intulerit, irregularis fit. *Gomez*, & *Covar.* ubi supra, nisi hoc ex vno ponis, quàm ex altero, sed ex omnibus pariter vulneribus mors fuerit illata; tunc enim omnes homicidae censentur, & irregulares ex hoc textu, & ex cap. *final. 23. quasi. 5*. Quod si omnes vulnera intulerint, & vnus tantum lethale vulnus fuit, nec apparet, a quo illatum fuerit, licet iure civili poenà pecuniaria omnes teneantur, *litem Metu* 11. 5. si plures, ff. ad leg. Aguil. l. 1. 5. *ult. ff. de his qui deiecerunt*: criminali tamen ordinari poenà mortis puniri non debent, ex ratione legis *absentem* 5. ff. de penis: sed poenà extraordinarià coercerentur, ut defendunt *Gomez*, & *Valentia ubi supra*, *Faber in ration. ad textum in d. litem vulneratus*. Similiterque si vnus tantum lethale vulnus intulerit, ceteri autem non vulneraverint, & quis eorum fuerit, non apparet, omnes à poenà mortis erunt immunes, sed arbitrio iudicis coerceri debent, d. l. 57. *stili*. Iul. *Clarus lib. 5. sent. 4. homicidium*, n. 3. sed eo casu omnes irregulares esse resolvunt *Covar. ubi supra*, n. 5. *Valentia d. c. 4. num. 31*.

m. *Admodum inculpata.* Occident enim aliquem se defendendo, quando aliter mortem vitare non valet, irregularis non est, *Clement. vbi sic titul. Ratio* est, quia ad irregularitatem coarctandam propter homicidium priusquam necessaria est culpa homicidij, saltem aliqua: is verò, qui ad defensionem aliquem occidit, nullam culpam homicidij contrahit: ergo non erit irregularis. Minor probatur, nam vniuique naturali ratione permittum est se ab aggressore defendere, *Lex vñ. ff. de inst. & iur. l. 1. 5. cum arietes*, ff. si quadrupes pauperiem fecit, *die. l. sed est*, l. si scimus, 5. qui cum aliter, ff. ad leg. Aguil. l. 1. 5. *num. 21*, l. 3. 5. *num. 19*, ff. de vi & vi armata, l. si quem vulneratum, ff. de se. car. 2. & 3. *Cod. cod. tit. l. 1. Cod. unde vi*, l. 1. *Cod. quando*

4.

5.

quando licet se vindicare, cap. 2. cap. suscipimus, 6. significat i. & de homicidio, 3. de sensu cap. 6. de cella, cod. in 6. & Clement. posterioris, 5. interium, de re indicata: quibus consonant lex 3. 4. & 8. par. 7. lex 4. r. 3. lib. 8. Ordin. lex 4. r. 3. lib. 8. recapit. quibus suffragatur, quod Cicerio in oratione pro Milone sic scribit: *Est enim hoc, iudices, non scripta, sed nata lex, quem non ducimus, accipimus, legimus, verum ex natura ipsa accipimus, banamus, expellimus: ad quam non doli, sed facti, non insulti, sed imbuti sumus, ut si vicia vestra in aliquam infidiam, si in vim, in tela aut laqueum, aut inimicorum incidisset, honesta omnis ratio esset expedienda salutis. Est enim à natura concessum, ut vim repellere possimus, ut omne animal natura duce ad conservandum se, & speciem suam impelleret, ut ait Aristoteles lib. 1. polit. & probatur supra in cap. 3. hoc ius. Amplius præfens doctrina, ut procedat etiam casu, quo occidens se defendendo animum, & intentionem occidendi habet: cuius resolutionis ratio duplex est. Prima, quia in quolibet actu inseparabilitate inest voluntas posita, argumento textus in *homicidium interfecti*, Cod. si quis alteri, vel sibi. Ergo dum lex permittit potestatem occidendi aggressorem, permittit etiam videtur intentionem, & voluntatem occidendi. Secunda, quia defensio à iure permilla est: ergo iure debet etiam permitti voluntas occidendi, quia occidit et medium necessarium defensionis, tanquam præsumptum necessarium ipsius, argumentum legis ibi, *sic de accipit, ibi dicitur*, docuerunt Nat. iur. in manuali, cap. 15. item 2. Sotus de iustitia, quest. 1. art. 1. Nec obstat textus in cap. de occidendi 13. quest. 5. ubi permittitur iudici, & iurati occidere se defendendo animum occidendi, quasi secus sit in aliis: cuius textus, & aliorum iurum, & tantummodo argumentum contrarium, sententiam defendunt D. Thomas 2. 1. quest. 64. art. 7. & Castetanus ibi. Taberna verbo *Homicidium*, quest. 7. & Abulenſis super *Mattheum* cap. 5. par. 26. nam tenendo priorem opinionem respondendum est, textum in dist. cap. occidendi, loqui quando non occidit quis se defendendo, sed occidit per vim ad ad evadendum iniuriam, vel iniuriam futuram: quo casu dicitur homicidium, quia non occidit se defendendo, sed verò est, quando aliquis occidit in ipso ad aggressorem, quia tunc occidere permittitur, quomodo habuerit animum occidendi. Hoc tamen homicidium defensionis eorum commissum debet fieri segre moderamine inculpate turbe, ex præfati textu, & aliis voluntarium dicitur, h. Cod. de vi: docet Acuña in cap. iur. 90. dist. Bartholomæus Sanchez, in repet. ad eundem textum.*

COMMENTARIUM.

6. Dubium enim, & non levis, cum apud Canonistas, quibus Theologos est, an in casu dubio debeat quis irregularis indicari, vel non? Et in dubio neminem irregularem censendum esse, docuerunt Innocentius in cap. ad audientiam, supra hoc titulum. Cocas in Clement. si furiosus, 1. par. in iuris. Nauarrius in c. si quis autem, de penis, dist. 7. Garcia de beneficiis, par. cap. 1. num. 21. Ioannes Sanchez in select. disp. 42. num. 14. Harrodo de irregul. lib. 1. diff. 4. Torricinus de consil. lib. 8. disp. 7. dub. 3. affirmant verò irregularem esse indicandum Sanchez tom. 1. summa, lib. 1. cap. 10. Aulla de consil. par. 7. disp. 2. dub. 5. Villalob. in summa, tom. 1. D.D. Gozzalio Decretal. Tom. P.

trast. 1. diff. 12. num. 2. Flores de Mena verior, quest. 9. Sayrus de consil. lib. 2. cap. 1. num. 16. Vgolinus eod. trast. cap. 4. §. 2. num. 3. Azor 1. par. lib. 2. cap. 19. quest. 301. A si docent in foro exteriori neminem in casu dubio irregularem trahi, secus verò in foro interiori, quia probi hominis est ibi culpam invenire, ubi culpa minimè reperitur, & final. 3. dist. cap. 2. de obf. iur. Ita docuerunt Abbas, Hostiensis, & Iohannes Andreas in dist. cap. ad audientiam, Armilla verbo *Irregularis*, num. 8. Taberna eod. verbo, num. 3. Ercelina, Maiolus, Philatenus, & Facinas, quos refert Escobar de veritate foro, art. 1. §. 5. Alij dissentient constituentes inter irregulares, propterea quod in casu homicidii, & inter proponentem ex alia causa. In irregularitate proponentem ex homicidio etiam in dubio præsumi quoniam irregularem asserunt, quia id expressum est in præfati, & supra in cap. ad audientiam, & secus verò in aliis casibus, quia id expressum non est. Ita Layman par. 2. moral. lib. 1. cap. 5. §. 4. num. 39. Bonae de consil. disp. 7. quest. 1. par. 5. Alij veluti à Barbosa in dist. cap. ad audientiam, num. 3. Diana par. 4. trast. 4. ref. 73. Tandem alij existimant aliter distinguendum esse, videlicet aut dubium est iuris, an fuerit irregularis pro certo delicto inflicta sit, & eo casu nullo modo quoniam irregularem etiam, aut dubium erat facti, an videlicet factum propter quod irregularem imposita est, commissum fuerit, & in hoc casu præsumi quoniam irregularem, quia in dubiis tutius est pariter sequi de benignis, 3. de consil. cap. 1. de consil. argum. cap. vici de finem. Ita docuerunt Cocas. ibi supra, Sayrus dist. 40. dist. 6. Gibalin. de irregul. cap. 2. consil. 6. Sed placet opinio negativa, scilicet quocumque casu dubium veniat, excludi irregularitatem in utroque foro, dum ita res dubia est, ut nullo modo veritas probari valeat, etiam præsumptionibus. Et quidem si dubium iuris est, constat irregularitatem tantum contrahi in casibus à iure expressis; & si dubium facti sit, etiam probatur hæc sententia, quia nemo puniatur ob peccatum dubium, cap. 1. cap. iudex 2. quest. 1. l. 3. §. 1. ff. de minor. l. 5. de penis, l. final. Cod. de probat. l. 1. dubium enim sciendum est, 100. cap. 1. num. 1. de R. l. in 6. quia conclusiones sumas ad habendum, quoniam ad ligandum, l. Arriano, ff. de O. & A. Nec hoc solum procedit in foro exteriori, sed etiam in interno; si enim quis dubitet, an votum fecerit, necne, non tenetur ipsum adimplere, ut vigilat auctoritas relaxas probat Diana 4. par. trast. 3. ref. 11. & dubians an damnatum ioculerit, ad restitutionem non tenetur. Diana ibidem, ref. 27. & in dubio an casus sit clericalis, necne, non creditur referendus. Porcel. in dubiis regularibus, verbo *Casus referendus*, numer. 7. Diana supra, ref. 4. & si dubitetur, an aliquis legitimus filius sit, etc. ne, præsumitur legitimus et ipse Diana pluribus relaxat. ref. 6. Ergo similiter in dubio facti, an quis ex homicidio, vel alia causa irregularis sit, dicendum est, irregularem non esse, tunc vi posse possessione sua, in qua antequam dubium cõterget, erat, ita tenet Escobar de veritate foro art. 1. §. 5. Gibalinus ibi supra. Unde inferitur, proteritatem abortum, & dubiantem an fecerit esse animatus, necne, non minime irregularem. Sanchez lib. 1. in Dical. cap. 1. num. 43. Barbosa de penis, Episcop. alleg. 51. num. 141. Cazanxa. Diana, aliquæ apud Escobar supra & numer. 89. Sotus, Sayrus, & Secoria apud Gibalinum

A a 2 dist.

d. 4. *confessio*. 7. Idem circa militem dubitantem an aliquem occiderit, resoluit Diana p. 4. *trall.* 2. *refol.* 3. & 5. Escobar, & Gibalin. *ubi supra*. Idem dicendum est de consulente homicidium, & dubi-

tante an eius consilium sit : quem casum explicat Petrus Cornejo in 3. *part. tractatu irregular. distat.* 1. *dub.* 2. Diana *part.* 4. *trall.* 2. *refol.* 25. Escobar *supra*, *num.* 45.

CAPUT XIX.

* Idem.

T Va nos duxit fraternitas consulendos. Et *infra* : Tertio quaesivisti Apost. Sed, responso explicari, quid sit de quodam monacho sentiendum, qui credens se quandam mulierem à gutturis tumore curare, ut chirurgicus cum ferro tumorem illum aperuit : & cum tumor ille aliquantulum resedisset, monachus ipse mulctri præcepit, ne se vento exponeret villo modo, ne forte ventus gutturis apertionem intraret, sibi causam mortis inderet. Sed mulier eius mandato contempto, dum menses colligeret, vento se exposuit incaute, & sic per apertionem gutturis sanguis multus effluxit, & mulier diem finivit extremum : quæ tamen confessa est, quod quia vento exposuit semetipsam, sibi dederat causam mortis. Vtrum videlicet, cum prædictus monachus sit sacerdos, liceat ei sacerdotali officium exercere. Nos igitur f. t. taliter respondemus, quod licet ipse monachus deliquerit alienum officium usurpando, quod sibi minimè congruebat, si tamen causâ pietatis, & non cupiditatis id egit, & peritus erat in exercitio chirurgiæ, omnemque studuit diligentiâ, quam debuit, adhibere, non est ex eo, quod per culpam mulctris contra consilium eius accidit, adeo reprobatus, quod non post satisfactionem condignam cum eo misericorditer agi possit, ut divina valeat celebrare : alioquin interdicta est ei sacerdotalis ordinis executio de rigore.

NOTA.

1. *Idem.* Ita etiam legitur in quarta collectio-
ne, *sub hac b. cap. 3.* sed inscriptio restituenda est ex *cap. r. no. de consal.* ubi integram epistolam Innocentij transcripsi.

2. *De rigore.* Quia dabat operam rei illicitæ atque chirurgicam monachis prohibentem exercendo. Docentur Covarr. in *Clement. si fortis fuit*, 2. *part.* §. 4. *num.* 2. & omnes illi, qui communem distinctionem agnoscunt inter eum qui dedit operam rei licitæ, vel illicitæ. Ita hunc textum acceperunt Molina de *institis dist.* 77. Aulæ de *consal.* 7. *part. dist.* 6. *sect.* 1. *dub.* 2. Villalobos in *summa*, *trall.* 2. *tom.* 1. *difficult.* 24. Sed rectius Socus, Præpositus, & Hurtado, quos refert, & sequitur Gibalinus de *irregul. cap. regul.* 2. *confess.* docuerunt in præsentî monachum non declarari irregularem, sed tantum Innocentium asserere monachum graviter deliquisse alienum officium usurpando, ut constat ex illis verbis : *Adulterium deliquit.* Unde docet Innocentius iuxta iuris

rigorem suspendendum esse à sacerdotalis ordinis executione. Ex quibus verbis apparet, monachum istum non esse irregularem, quia eius culpâ non contingit homicidium, quavis peccaret alienum officium usurpando : si autem vel imperitiâ, vel negligentia ipsius contigisset mors mulctis, certum est irregularem fœnitiu fuisse. In præsentî ergo casu suspensio inest ; & ita docet Innoc. post condignam satisfactionem posse ex interdictis divinis celebrare. Nec verba illa, *potest misericorditer cum ipso agi*, important irregularitatem ; nam idem dicitur de eo, qui in duello partem digiti amiserat, in *cap. 1. de corpor. viciis*, cum tamen ille minimè sit irregularis, sed deponendus, *cap. 3. de clericis pugnans*. Etiam in *cap. e. de bigamis*, dicitur dispensare Episcopum cum sacerdote, qui plures habuit concubinas, sicuti cum fornicatore simpliciter, ut sacerdos illa monia obeat, & tamen constat ex ibi traditis, sacerdotem in ea specie nec esse bigamum, nec per consequens irregularem : igitur ex simili loquendi formula non rectè deducitur, irregularitatem contrariam esse.

§.

AD ultimum fuit ex parte tua propositum, quod quidam scholaris metuens, ne latrones in domo sua essent, parvo assumpto gladio, viginem quaereret, destrato forrexit ; & cum venisset ad ostium, ignarus reperit ibi furem, qui cum scholaris luctari incipiens, non solum ipsum scholarem posttravit ad terram, sed etiam pendè ad mortem vulneravit eundem. Scholaris verò provocatus ab illo, vim vi incontinenti repellens, extracto, vel extorto, laronis gladio, eundem servato iuris moderamine percussit, qui perterritus fugam, quam citius potuit, curavit. Mane itaque lucescente, scholares laronem quaesierunt eundem, qui vulceratum inuentum Potestati Vicentiæ tradiderunt, coram quo constanter negavit, quod præmissa minimè perpetravit. Unde præfata

præfata Potestas ad eundem scholarem suos nuncios destinavit, ut exponeret, si qua sciret de fure prædicto, vel traderet interfigna: qui eultrum, quod ipse latroni abstulerat, & foveles ab eodem in ipsius domo dimissos, quos abstraxerat sibi, ne pedum strepitus audiretur, nuntiis tradidit memoratis, inper eodem facto se nihil amplius inromitens. Potestas igitur recepris talibus interfignis, latronem ipsum apparitoribus suis tradidit puniendum, qui illi amputaverunt * virilia, & oculos eruerunt: latro verò se ad quoddam cœnobium transtulit, & ibi per triduum ira, & dolore commotus, nec potum sumpsit, neque cibum; & sic de medio est subtractus. Vnde per nostrum postulas oraculum edoceri, verum præfatus scholaris ad sacros ordines valeat promoveri? Nos igitur inquisitioni ruz taliter respondemus, quod si præfatus scholaris dignis meritis adiuatur, propter præscriptum euentum à susceptione sacrorum ordinum nullatenus est arcendus.

NOTÆ.

1. a **[Nromitens.]** Id est nec accusans, nec testis. In omni perhibens, alia esset irregularitas, nisi præmissa protestatione, de qua in cap. 2. hoc tit. in 6. ubi plures congesti Cenedus collect. 12. Gibalinus de irregul. cap. 4. diffinit. 13. & sequenti, Itango de præst. consuetud. 46. Ratio est, quia quando clericus, vel laici aliquem accusant absque protestatione, eorum voluntas per talem accusationem manifestè fertur ad homicidium, vel membri mutilationem; unde in præfati scholaris non iudicatur irregularis, etiam si signa dedisset, ut cognoscere fur, qui postea ea punctione iudicis decessit; quia signa illa nullo modo ad mortem, vel membri mutilationem referri poterant, sed tantum aliquod leve indicium præbebat: quæ quidem causa remota fuit homicidij, & ita irregularitas contracta non fuit.
2. b **[Virilia.]** Foris iuxta morem ipsius Prouincie; nam in aliis prouincijs foribus aures amputantur, ut probat, & illustrat Langheus lib. 10. f. m. str. cap. 2. & in ipsa Gallia lex Salica iubet fur-

uum, qui quadraginta denarios fuerit perat, castrati, tit. 3. de furto, §. 2. Apud alios in aure signum innotebat. Sanctus Vincentius Ferrerius form. 4. Dominica 2. Epiphaniæ, ubi: Sicut latroni datur cauterium ignem, vel scinditur in aure signum fortis, ut cognoscatur: sic Deus in signum illius fortis, quod Adam faciebat, homines circumcidi in illa parte veterum dusa iussit. Et de Petris refert Thom. Moius in sua Virginiæ. Apud Baibazianos manus foribus lætis amputari iubentur, cap. 6. legum Baibaz. in hæc verba: Si quis in exercitu aliquid fuerit posterum, capillum, frenum, scilicet, vel quatuorque inuoluerit, & probatum fuerit, si seruus est, perdat manum suam. Castratio de qua in præfati, dicitur extrema poena ab Apulico lib. 7. in fine, & potius supplicium à Martialis lib. 2. epigram. 60. ubi notauit Ramerius: & plura de hac poena enuoluunt Theophilus Raynaud. tom. 1. 4. str. de triplici emendatione. An verò talis abscissio hodie in poenam delicti à iudice imponi possit? querunt DD. Negar Guill. Benedic. in cap. Remanens, c. 1. Qui non alia, non. 16. de testam. Affirmat Gibul. tom. 1. de reg. lib. 1. cap. 4. art. 3. consil. 9. num. 6.

CAPVT XX.

Idem Priori, & fratribus a Cartusien.

Sicut ex literarum vestrarum tenore accepimus, cùm quidam presbyter vestri Ordinis, qui prius fuerat niger monachus, quandam mulierem prægnantem, cum qua contraxerat consuetudinem inhonestam, & quæ assererat se concepit ab eo, per zonam arripuerit quasi ludens, ipsa postmodum mulier sic ex eo se asserit fore læsam, quod occasione huiusmodi abortiuit: propter quod idem presbyter proborum virorum vsus consilio seipsum duxit ab altaris ministerio sequestrandum. Quare nobis humiliter supplicastis, ut eum eo misericorditer agere dignaremur. Nos verò deuotioni vestræ insinuatione præsentium respondemus, quod si nondum erat viuificatus conceptus, poterit ministrare, alioquin ab altaris debet officio abstinere. Datum Later. IV. Non. Oct. Pont. nostri anno XIV.

NOTÆ.

1. a **[Arripuerit.]** Ita etiam legitur in quarta compilatione, sub hoc tit. cap. 4. & in ipsi epistolæ Innoc. III. lib. 2. regest. 14. epist. 107. ea quo regestio textum hunc transcribit. De hoc præclaro Cartusienium Ordine nouissima adduxi in cap. per tuas, de simonia.
2. b **[Niger monachus.]** Id est Benedictinus, ut probant in cap. 10. de temp. ord. Possunt enim omnes

Religiosi cuiuscunque Ordinis ad Cartusienium Ordinem, tanquam Arripuerit se transire, ut probant in cap. licet, de regular.

c **[Zonam.]** Zona est genus cinguli, quo modo accipitur tam apud prophetas, quàm sacros scriptores. De prophanis Zonis plura congesti Salmasius in notis ad Spertianum, fol. 153. De sacris fusi agunt Sausay in Pamphylia, 2. p. lib. 3. cap. 6. d **[Viuificatus.]** Iuxta tradita in cap. si quis, supra hoc tituli.

CAPVT XXI.

Idem S. ^a Episcopo.

Postulasti. *Et infra* : Quæsiuisti præterea, utrum contra quosdam contemptæ excommunicationis sententiâ debitas Ecclesiæ decimas subtrahentes, tibi Regiam implorare liceat b potestatem, cum ad solutionem earum vix absque sanguinis effusione valeant coartari c. Ad quod respondemus, quod si te huiusmodi querimoniam simpliciter deponente, Rex cui ad bonorum laudem, vindictam verò malorum, gladius est commissus, in eorundem rebelles tradidit sibi excruevit potestatem, eorum erit duritiæ, aut malitiæ imputandum.

NOTÆ.

S ^a Episcopo.] Ita habetur in hac sexta collectione: sed iussit propterea, & litteras restituit ex capitis postulatione, de foro comper. ubi integram epistolam dedi.

b Potestatem.] Auxilium brachij secularis, cum opus fuerit, inuocandum esse à iudicibus ecclesiasticis, statuit Ioannes VIII. in Synodo Trecenti, illis verbis: *Et cum opus fuerit, publicum commouent auxilium, non ad prauisandum, sed potius ad ea, quæ placita sunt Deo, consequendum.* Cum eodem ultra anathema ecclesiasticæ potestatis non extendatur, hi qui Episcoporum modis patere, vel fulmine ecclesiastico percussis ad curam reuerti noluerint, seculari imperio necessitate coarctandi sunt. Synodus Turon. 3. can. 41. ibi: *Quos oportet per secularis penitentia disciplinam à iam praua consuetudine coerceri, qui per salutiferam sacerdotum monita noluerint reuocari.* Probauit latè in 2. part. textus in cap. 1. de offic. ordin. Sed cum in his canonibus, & nouis in Tridentino, dum de implorando hoc auxilio agitur, semper adiciantur ea verba, *si opus fuerit*, vidi sæpius in Regia Cancellaria pronuntiazum, teneri omnino iudicem ecclesiasticum ad expurcam laci, etiam co-cubinz clerici, auxilium brachij secularis petere, nec propria auctoritate posse laicum etiam in delictis ecclesiasticis carceri mancipare: sed an rectè, & secundum factorum emonum mentem procedat, non est nostrum disceptare in præsentis videodum sunt Palacios Rubios in cap. per vestras,

notat. 2. num. 30. & 31. Auendaño 1. part. de exequend. monita. cap. 1. ex num. 22. Barbosa lib. 3. to. 10. 92. Coust. in pract. cap. 10. num. 2. Iul. Clarus lib. 5. sem. quest. 37. Germon. lib. 3. de sac. immunit. cap. 12. num. 77. Cenedo quest. 39. canon. Paz in praxi, 2. tom. prelat. 2. Bobadilla lib. 2. pellic. cap. 17. num. 170. Angoisius lib. 1. de leg. cap. 30. Larrea decis. 1. Granat. Menchaca de success. creat. §. 22. num. 23. Bel. in cap. 1. de offic. ordin. part. 1. num. 55. Amaya in l. 2. Cod. de exalt. tribus num. 35. Gutierrez lib. 1. pract. quest. 45. & lib. 3. quest. 32. Salgado de Regia protelt. 2. part. cap. 4. num. 36. Carleual de iudic. tom. 1. disp. 2. a num. 773. Francos de competentiis quest. 73. Et semper placuit communior sententiæ, videlicet iudicem ecclesiasticum in illis casibus, in quibus contra laicos procedere potest, etiam carceri eoa mancipare valere: tum quia concessa iurisdictione, omnia ea concessa videntur, sine quibus exerceri non valet, l. 2. cum vulgaris, de iurisdic. tum quia quo iure finis inductus est, iuducantur etiam media necessaria ad finem tendentia. D. Thomas 1. part. quest. 39. art. 3. & quest. 82. art. 1. & quest. 119. art. 4. Faciunt textus scilicet discreti in cap. fraternitatis 7. dist. 34. cap. attendendum 23. 17. quest. 4. cap. contra 10. 26. quest. 5. cap. 2. de adult. cap. 2. de maleficiis, l. sum. dist. 44. §. 1. no. ignot. Cod. de Episc. & clerice, & alij congeßi ab Agia de exhib. auxiliiis, Vela in cap. 1. de offic. ordin. 2. part. numer. 1. quod facilius procedit accedente consuetudine, vt præscripta est in Episcopatibus Salmant. & Placet.

CAPVT XXII.

Episcopo ^a Ebroidensi.

Exhibita nobis humilis Ioannis b clerici confessio patefecit, quod cum in ^a puerili constitutus esset ætate, cum quibusdam coætaneis suis ludens, & insequens vnum ex illis, lapidem post eum, non animo quidem c lædendi, sed timorem incutendi proiecit: qui licet ex proiecto lapide percussus non fuerit, nec tactus, ad alium tamen lapidem corruens, & caput offensus, tum propter e imperitiam medicantis, tum propter patris incuriam, qui ex tunc campestribus laboribus, & sudoribus ipsum exposuit, post quadraginta dierum spatium expirauit. Quia verò dictus clericus ut mitigaretur dolor patris defuncti, tanquam puer infans ab amicis inductus, veniam super hoc ^a postulauit ab ipso, tu eum hac occasione à factorum ordinum susceptione repellis, quamquam idem defuncti pater in extremis laborans tibi, & Archidiacono tuo, necnon presbytero, cui suam aperuit conscientiam, confessus fuerit, & præstito firmauerit iuramento, nihil ipsum in morte filij sui, proxi sibi plenè confiterat,

stiterat, commississe. Quare idem clericus tam suppliciter, quam humiliter postulat ut à nobis, ut eum de scientia, & vita laudabili commendetur. nec de illius obitu læsam habeat conscientiam, dignemur agere misericordiam cum eodem. Quocirca f. r. p. A. f. m. quat inquisitū super his sollicitū veritate, si constiterit ita esse, ipsum propter hoc à receptione sacrorum ordinum non repellas.

NOTÆ.

E Breuiculus. Ita legitur in cap. 1. hoc tit. in 5. compil. Sed in hac sexta legitur Ebrauensis: sic d. quamlibet litteram retineas, parum interest. De Ebrauensi diocesi regi in cap. 6. de testibus.

C Clerici. In maioribus videlicet ordinibus constituti, ut constat ex finalibus verbis, ubi prohibetur illis ad sacros ordines, quos adhuc non habebant, ascendere; licet enim nomine clericali veniant proprie ministri in maioribus ordinibus constituti, ut sæpius in hoc opere notatur; tamen minoribus ordinibus initiati plerumque comprehenduntur, ut pluribus relatis probat Barbosa de iure eccles. lib. 1. cap. 39. Vnde intelligitur textus in can. 1. Concilio Aransie, in illis verbis: *Punituriam desiderantibus etiam clericis non negamus*. Quæ verba referri nequeunt ad clericos in maioribus ordinibus constitutos, ut iam notauit Albaspinus obseruat. 7. in Opusculo Milenæ.

Puerilis ætatis, siue puerorum appellatio intelligitur filij famulæ oculi, tota illud Hieremia cap. 10. vers. 44. ibi: *Qui nunciatis pueri meo, puer natus est tibi*. Etiam puerorum appellatio continetur serui, siue seruientes, l. eorum 4. r. §. testamento, ff. de leg. 3. l. pueri 204. ff. de V. S. cap. cum postori 58. l. 1. quest. 7. cap. si quilibet, §. Abraham 22. quest. 2. Virgil. ecloga 1. ibi:

Pascite ut ante boves, pueri submitte tauris.

Pueritia ergo, siue puerilis ætas incipit à septennio, & durat vsque ad decimum quartum annum; quo in sensu accipiuntur pueri in cap. pueri 15. 22. quest. 5. r. de delictis pueri. Concil. Mediolan. 37. §. hoc temporibus, l. i. cuncta 14. ff. de aliment. legat. l. item tabula 36. ff. de standis, cap. in ceteris, 77. dist. cap. pueri 1. quest. 1. cap. pueri, cap. desponsatas 20. quest. 2. cap. super 35. de proband. cap. una 25. de sponsal. occurrunt plures relati à Narbona in anal. anno 14. quest. 4. licet aliquando puer accipitur pro existente in septimo anno, l. eorum 41. §. 4. ff. de leg. 3. cap. duo 12. de despons. impub. cap. non est, de tempus. ordin. In presenti textu accipitur pro illo, qui habet quatuordecim annos, aut illis proximus est, qui ex delictis tenetur, cum sit doli capax, ut de lege Aquilia docetur in l. sed & si §. & idem, ff. ad leg. Aquil. de iniuria in l. §. 4. §. 1. ff. de iniur. de facto in l. imputatam 23. ff. de furtis: de sepulchro violato in l. §. 1. ff. de sepulchro violato. de poena Syllaniani in l. expositum 14. ff. ad Syllan. & generaliter de capitali delicto in l. cum autem 23. §. 2. ff. de adul. editio. Probatur Fatinae, in praxi, crimina. rem. 3. quest. 91. Ioannes Robertus lib. 3. animadu. cap. 23. Schofordeg. ad Fabrum tract. 9. cap. 5. licet ex delictis, quæ omni modo perpetrantur, mitiores pueri puniantur, l. a. C. si aduersus delicta, l. 6. Cod. de his quibus res indige. auctori si captiuus, Cod. de Episc. & cleric. l. 1. Cod. de falsâ muner. discernimus iocum in cap. 1. de delictis puer. Vnde cum in presenti specie puer fuisset doli capax, ut constat ex verbis illis, non animo, rectè poenatur panem ex homicidio, si illo tempore imprudentiam non admisisset.

Ludendi. Licet Geotillium ludos exercere, & adire clericis prohibitum sit, cap. clericis 13. de

vita & honest. cleric. cap. inter, de excessib. Prelator. tamen ludos honestos, & statui clericali non in a congruos exercere non prohibetur, ut probatur supra in cap. lator. Vnde cum in presenti specie ludus ille proiciendi lapides inter puctos licitus esset, præcipue eum non offendendi animo exerceretur, de quo lodo Martini lib. 4. epigram.

Splendidi cum volentem Spartani pondera discis.

Esse proci pueri, sit strepit ille natus.

Ex Homero & aliis probat Couart. in Clemens. si furiosus, 2. part. §. 4. Pantoja de alioribus, ad leg. 2. Inde merito in presenti textu oon sit irregularis, quia adhibuit omnem diligentiam in præcauendo homicidio. His tamen casibus, cum ex ludo homicidium originem trahit, solet suspensio quodam maiores ordines imponi, concessio via minorum, & tunc beneficio, ut in cap. hoc tit. in 2. ad h. ubi Clemens III. ita scribit: *la spolia literis, quæ bona memoria Urbani prædecessoris nostri misisti, plenè cognouimus, quod presertim Lator C. Subd. dum olim in minori ætate posuisti cum quodam puero ludum exercere, in illis lapidis puerum, ipsum puerum non studiorum, sed casualiter volueram, de quo vulnere tunc fuit cura medicorum agente in breui temporis spatio, sicut credebatur, plenè curatus; tamen elapsi anno vulnus fecit postmodum aperturam: sed quia tu medicus, qui fuit adhibitus ad curandum, circa ipsam negligentia, seu ignorantiâ, vel etiam aliâ culpa, minus necessariam sollicitudinem credidit habuisset puer occasione ipsius vulneris expirauit. Respondentes igitur ad hoc, f. r. m. quatenus cum res ita præcesserit, eundem in minoribus ordinibus ministrare permittas, altius circa eundem de beneficio, quod per te illi postula conferendum, sicut eius meritis possumus, & tuo melius insisteri volumus; ad alterum vero officium non accedas, qui occasione mortis ipsiusdem pueri dedisse videtur. Et in cap. a. hoc tit. in 5. compil. Significauit nobis R. canonicus Virdunensis, quod cum olim cum quibusdam aliis canonicis vestris intrasset Primicerij vestri domum, & ipso Primicerio in carne una cum bona memoria H. Virdunensi canonico residente, distulit R. & alij, qui cum eo intrauerant, ludendo capissens alternari inter se iacere nucleos persficorum, tandem ludo crescente, aquem, & canonos iacere inciperent. Idem igitur R. paruum proiectis lapillam contra eos, non credens, quod illo aliquis laedi posset; nec etiam tunc audire aliquem esse laesum. Porro presertim Archidiaconus ille fuit iuxta oculum, prore videbatur, leuiter vulneratus, qui vulnus huiusmodi tollens, comitatus sequenti die, ac tertio equitauit, & sic per inuolucrum eius capite tumescere, non post multum temporis diem clausit extremum. Vnde distulit R. ab his humiliter supplicauit, ut secum, qui præter dolorem, quem concepit de morte Archidiaconi memorati, de cuius speciali amicitia letabatur, iam per quatuor annos, & amplius in amaritudine penitentia vitam duxit, misericordiam facere dignarentur. Eius igitur supplicationibus inclinat, distulit m. quatenus de misericordia, quæ superueniat indicium, fructus præbens sua vrbis etiam, & sacris sibi ordinationibus interdictis, ipsum permittas in psalmis, & canticis spiritualibus Domus famulari, dummodo prauiter scandalum non conturbet.*

4. *c. Imperitium medicamentis.*] Vt plerumque con-
tingit, vt supponitur in *libellus* 6. §. *scitis*, ff. de
offic. Presid. l. 2. d. 1. si *seruus* 27. §. si *ex plausu*, ff.
ad leg. Aquil. plura de simili imperitia, & quo-
modo culpe annuometur, congregentur Murnac.
in *diff. libellus*, §. *scitis*, D. Joannes Suarez ad leg.
Aquil. lib. 3. cap. 2. §. 1. d. & nos in cap. ad aures,
de acat. & qualis.

5. *E Dolor parvis.*] Qui maximus est, Iuam est
parentibus, ff. de ineffic. linc in ea, ff. ad leg. Jul. de
adult. l. 1. Cod. de curat. furios. probat latē Petrus
de Lara de vita hominis cap. 36. plus enim parentes
amant filiorum vitam, quam suam, iuxta ingenu-
tem & inuentum amorem paternum, quo nullus est
maior. Latinius Paetus in *panegy.* ad Theodosi. ibi:
Quid ita infirmum nunc pueri filius nostras, quam
nosmetipsos diligamus. Tertul. lib. 2. aduers. Marcion.
ibi: Duritia populi talia remedia compulerat, vt vel
posterioribus suis proficientes legi diuina obedirent,
quae enim non magis filiorum suorum salutem, quam
suam curat? Idque confirmant Aristot. lib. 8. Ethic.
cor. cap. 12. Sabellicus lib. 3. cap. 4. & eleganti icon-
e expressit Alezius emblem. 193. & latē illustant
Tiraquel. in *prosaione ad leg. si tanquam*, num. 7.
Africanus Clementius de *purio pnesti*, cap. 4. Petrus
Gregor. in *prolud. optimi Iurisconsulti*, lib. 5. cap. 7.
Petrus Faber lib. 3. *seuiss.* cap. 8. Robertus lib. 2.
rer. indic. cap. 13. Vnde maxime legent parentes
filiorum obitum; Iacob enim scissis vestibus in-

duros est cilicio lugens filium suum; congregatis-
que liberis suis dicebat: *Defendamus ad filium*
nostrum lugens in inferna; vt refertur Genes. cap. 42.
vers. 36. & David lib. 2. *Regum*, cap. 8. dicebat: *Fi-*
lii mei Absalon, qui mihi triuimus, et ego moriar pro
te. Et quidam patris apud Ouidium *epist.* 1. ita
Deos precabatur.

Dij, precor, hoc inbeant, vt eorum ordine fatis,
ille meos oculos comprimat, ille tuos.
Probatur in cap. 2. de *presumptionibus*.

6. *g. Postulat ab ipso.*] Non tamen exinde ex-
tremum ipsum facti videtur; siquidem qui ex-
tremum iudicialiter petit veniam ad cautelam, non
celesit facti delictum, vt probant latē Farinae. in
praxi, tom. 1. tit. de *inquisit.* quest. 5. num. 24. Az-
ueto in l. r. tit. 23. lib. 5. *recapit.* Declanum tom. 1.
tract. crimin. lib. 3. cap. 35. num. 87. Couarr. in cap.
alma, part. 1. §. 12. num. 1. nisi veniam petat in iu-
dicio, & non ad cautelam, quia tunc eo ipso fac-
tus reus; quo modo intelligitur textus in cap.
Venerabilem, de elect.

7. *h. Confessus fuerit.*] Cui sedet hoc casu ad-
hibeoda erat, l. ult. Cod. ad leg. Jul. *repundat.*
Secus si dixisset filium suum ab eo occisum fuisse,
quia tunc talis depositio neminem onerat, l. si quis 3. §. 1. l. Gabu 22. ff. ad Syllan. l. 4. ff.
de *inquisit.* l. 23. in fine, & ad *Venerabilem*, l. 39. ff.
de *pignus*. notantur Gortoff. in l. 6. Cod. de *re-*
ssam.

CAPVT XXIII.

Episcopo, & Capitulo Venetensi.

Ioannes sacerdos humili nobis insinuatione monstrauit, quod cum die quadam
impulset campanas, vt signo dato conueniret populus fidelium ad diuina, cadens
inopinabilem percussit quendam manentem puerum coram eo, qui licet vulneratus
in capite per mensem curam recepit medicorum; post mensem tamen, quia vulnus
erat mortale, decessit. Vnde nobis humiliter supplicauit, vt misericorditer agentes
eum ipso, permitteremus sibi exequi officium sacerdotis. Nos igitur auerentes, quod
dicto sacerdoti, qui dabat operam rei licite, nihil potuit imputari, si casus omnes
fortuitos non praeiudit: disce. v. m. quatenus, si vobis constiterit rem ita esse, dictum
sacerdotem, si aliud canonicum non obstiterit, sacerdotale officium sublatum cuiuslibet
appellationis obstaculo, exequi permittatis.

NOTÆ.

1. *Venerensi.*] Ita etiam legitur in quinta
collectione, sub hoc tit. cap. 3. De dic-
cessi Venetensi nonnulla notati in cap. 22. de *re-*
gular.

2. *b. Signo dato.*] Plerumque pulsatio campanæ
ad fideles congregandos lo Ecclesia dicitur sig-
num datum, cap. solent, 50. de *consecr.* dist. 2.
ibi: *Solem pulsare, qui si ieiunare putat in qua-*
dragesima, mox in signum audierint, ad horam no-
nam comedere. Greg. Turon. de *visis Patrum* in
Gregor. *Lingen. Episcopo*, ibi: *Communione signa,*
sanctus Dei, sicut reliqui, parat ad officium Do-

minicum conseruebat. Et inde campana ipsa sig-
num dicitur. Idem Turon. in *Niceis Episcopo*
Lugdun. ibi: *Quod presbyter audiens, gemitus insu-*
sit signum ad vigilas conuocari. Einarus de *trans-*
lat. sancti Marcellini, & Petri, lib. 3. cap. 15.
ibi: *Toricula, que signa basilica conuocabat, ab eis*
confici possunt. Et lib. 6. *capitulum*, tit. 163. ibi:
Vi sacerdotes signa tangunt horis canonicis. Alia ad-
ducit Rosveidus in *Onomast.* tom. 2. de *re-*
ssam, verbo *Signum* percutere. Nouat. lib. 1.
scholasticus, cap. 27. De origine conuocandi
populum ad Ecclesiam per sonum campanæ, egi
in cap. 1. de *offic. custod.* & textum hunc exposui su-
perius in cap. de *castra*.

CAPVT XXIV.

*Pelagio dicto * Serofino Presbytero.*

Peritio tua nobis exhibita continebat, quod cum inimici crucis Dominicæ, ac blasphemii nominis Christiani, castrum quoddam, in quo morabaris, grauiter inuasissent, ex euntibus inde habitatoribus, tam clericis, quam laicis contra eos, & inuicem configentibus, hinc inde occisi quamplurimi existerunt. Vnde cum eo, quod aliquos percussisti, irregularitatem meruis incurrisse, nobis humiliter supplicasti, vt quid agere debeas, tibi scribere dignarer: quocirca disc. t. m. quatenus si de interfectione cuiusquam in illo confictu tua conscientia te remordet, à ministerio altaris abstinere reuerenter, cum sit consultius in huiusmodi dubio abstinere, quam temere celebrare.

NOTE.

Serofino.] Ita legitur in quinta compilatione Honorij III. sub hoc tit. cap. final. ex qua textum hunc transcribo.

COMMENTARIUM.

EX hoc textu sequens communiter deducitur assertio: Clericus pugnando in bello, etiam contra iniustos fidei, si quemquam percussit, irregularis manet. Quam conclusionem probant textus omnes in quibus prohibetur clericis in bello dimicare, militetque nomen date, cap. clericorum, cap. de his, cap. eos qui, 10. quæst. 3. cap. clericis, cap. qui cumque, cap. ex munda, de voto, cap. 16. 4. 1. quæst. 12. quæst. 4. c. in audientia, de sententia canon. 83. Apostol. Concil. Chalcedon. can. 17. ibi: Eos quæsimus in Clero cooperari sicut, & mansuetam vitam expetierunt, statimque nec ad militiam, nec ad facultatem dignitatem venire; aut hoc audientes, nec penitentiam agentes, et ad id reuertantur, quod propter Deum prius elegerant, anathematizari. Heralius in suis Capit. can. 50. ibi: Vt presbyteri, & diaconi, si in bello cum armis processerint, ita dependantur, nec laicam communionem habeant. Concil. Aologau. 4. celebratum anno 453, can. 5. ibi: Si quis clericorum tradendis, vel capiendis ciuitatibus ferrum interfuisse detest, non solum à communione habeatur alieni, sed etiam conuincitur quidem admittantur esse participes. Toton. 1. can. 5. Si quis clericum relicto officio sui ordine laicam voluerit agere vitam, vel se militia tradiderit, excommunicacionis pena feriat. Tolcap. 4. can. 44. Tolcap. anno 1473. celebratum temporibus Sixti IV. can. 15. Matisc. 63. Concil. Francicum, seu Germanicum celebratum sub sancto Bonifacio Moguntino, ibi: Seruus Dei per omnia omnibus armariis perire, vel pugnare, vel in exercitum, vel hostem pergere prohibuit omnino. Mogunt. 1. sub Leone III. can. 17. ibi: Nos qui reliquimus sacrum, id omnibus modis obseruare volumus, et arma spiritualia habemus, secularia dimittamus. Meldense sub Sergio II. anno 845. Quicumque ex Clero esse videntur, arma militaria non sumant, nec arma incendant. Concil. Sussionense can. 3. Abbatibus brigiunt hostem non faciant, nisi tantum homines eorum transmittant. Meldense tempore Arnulphi Regis anno 890. can. 3. Tributienfe can. 17. Andegauense celebratum anno 1060. Præfide Stephano Cardinali Legato. Nicolai II. can. 7. Quicumque clericorum deinceps in armis militariis militauerint, & beneficium, & consuetudinem clericorum amittant. Sanctus Iunor. I. epist. ad S. Vricum,

cap. 1. D. Gregorius lib. 7. epist. 1. Zacharias Papa epist. 3. ad Francos, Hadrianus I. epist. ad Carolum Magnum, quæ est 77. in collectione Gretheltri. Nicolaus I. in epist. ad Michaelem Imperat. Ioan. VIII. epist. ad Angelbergam Imperatricem, D. Thomas 2. 2. quæst. 4. art. 2. extraneus. 1. de iuribus. & obedi. Fitmaor plures sancti Patres, quorum verba de facta refert Theoph. Raynaud. tom. 17. in tract. de religioe loricato, apud. 3. & 4. Illustrant Chopinus lib. 3. de sac. potest. 2. num. 3. Landmeyer. lib. 2. de veteri clerico, cap. 19. Dicit ad 25. quæst. 1. de bello, cap. 4. Montanus in tract. de armis clericis. Coarct. in Clement. de furiosis, part. 2. § 3. num. 2. Gutierrez lib. 1. 99. canonic. cap. 6. Petrus Gregor. lib. 3. de repub. cap. 3. num. 23. & lib. 31. synag. cap. 24. num. 4. Petrus Bellinus de re milit. in 8. num. 5. Taciturn. de iure Abbat. tom. 3. disp. 12. quæst. 5. Aulla de casus. part. 7. disp. 6. sect. 3. ad 2. Suarez cod. tract. disp. 47. sect. 6. num. 2. Molina de iust. tract. 2. disp. 111. canel. 2. Barbosa lib. 3. iuris Ecclæ. cap. 4. Rosellius lib. 7. host. Pontif. iurisd. cap. 6. num. 5. Diana part. 10. tract. 1. per totum Gibalinus de irregul. cap. 4. diffinit. 4. fusc & doct. Theophilus Raynaudus dict. tom. 17. de religioe loricato. Grotius lib. 1. de iure belli, cap. 5. Etpencus lib. 2. digest. cap. 5. Acaña in principio 11. diff. Amaya in l. 1. Cod. de Decret. Balsamon in can. 43. S. Rufus Suarez de charitate disp. 13. sect. 3. Burgenus cen. 1. obseru. 19.

Sed pro dubitandi ratione in præsentem assertionem ita insurgit: clericis, & religiosis licet in bello deservio, iustis, & necessario dimicare possit, constat, siquidem bellum defensiuum supponit iocerti vim, quanto quilibet repellere valet, iustis moderamine, inculpate tutelæ, vt probauit supra in cap. 1. & in cap. significasti 18. & licet firmant Robertus Arbroghensis com. 2. de troquo gladio, iherosol. 9. pag. 278. quo casu etiam clericos cogi ad vigilias faciendas in muris, probatur in cap. 1. de immuni. Ecclæ. Et licet iuxta factos canonicos Ecclesiam non possit incutellari, id est conueni in propugnaculum, vel aciem contra hostes, cap. sanctum 10. quæst. 1. vt communiter docetur in cap. cum Ecclesia, de immuni. ecclæ. tamen in bello defensiuo fas esse Ecclesiæ vi pro arte, docuerunt Suarez tom. 2. de relig. lib. 3. cap. 4. num. 17. Layman lib. 4. summa, cap. 7. tract. 10. n. 8. & ita clericis licet, & impioe posse in bello defensiuo pugnare, probant Andreas Gailus lib. 1. de pace, cap. 8. num. 23. Azor tom. 3. iustit. lib. 2. cap. 16. quæst. 8. Molanus lib. de iuramentis, synam. cap. 9. Cælius Mancinus lib. 6. de iuribus Princip. cap. 11. & variis exemplis sanctorum victorum probat

2.
IMPUGNA
TUM TRA
DITA ALO
SSERTIO

bat Theophilus *dist. tract. de relig. licitate*, pag. 216. cum sequens. Sed in presenti casu agebatur de bello defensivo, contra inimicos Ecclesie, qui innascerunt castrum, in quo morabatur Serotinus presbyter. Igitur potuit ipsa licite, & impune se defendere: & si in tali bello aliquos percussisset, non ideo peccavit; & per consequens nullam irregularitatem contraxit. Augustinus hac dubitandi ratio ex eo, nam & in bello aggressivo plerique in regionibus ecclesiasticis, plerique viros operam dedisse legimus apud Gregor. Turon. lib. 4. *hystor.* apud Aymonium lib. 5. cap. 40. & 41. Godofredum monachum anno 1167. & 1237. Rodericum Toler. lib. 8. cap. 3. 9. & 10. Gónczium lib. 4. *de gestis Francisci Ximeni* ex quibus varia exempla referunt Diana *tr. part. 10. tract. 2. res. 4.* Castillo de *veris. tom. 7. cap. p. num. 95.* Theoph. Raynaud. *ubi supra*, apud. 7. Ignor quia generaliter, & indistincte prohibetur non est clericis, & Ecclesiarum Prelatis bellis adire, ac contra hostes, præcipue Saracenos, & hæreticos pugnare.

Quæ dubitandi ratione ita fuscata non obstante, vera est prædicti assertio: pro cuius expositione omisit his, quæ de bello adduxit in cap. *scilicet* 29. de *inter. scilicet* non est, bellum aliud esse aggressivum, aliud defensivum: bellum aggressivum, seu offensivum vocatur illud, quo alius impetrat; defensivum autem quousque se ab impetente tuerat, vim vi repellens; & ita hæc insurrectio ad tutelam, & defensionem, non ad aggressionem pertinet. Item bellum aliud est iustum, aliud iniustum, iustum est, quod à legitima potestate, & iusto titulo, necessitate quodam suscipitur, iniustum vero, quod defensionibus his conditionibus geritur: de qua iniusta in bello offensiva lase episcopi Victoris *revel. 6.* Molina de *ius. tract. 1. disp. 98.* Ayala, Alberic. Genil. & Hugo Grotius de *iure belli*.

Deinde sciendum est, in bello considerari variâ opera: primo actionem ipsam bellandi, quæ clericis omnino prohibetur; secundò functiones alias, quæ per clericos, & religiosos personas ubique possunt, veluti comitari exercitum ad causas militares de iure tractandas, ad annonam ministrandam, sumptusque bellicos suppeditandos, necnon ad consiliū cetera bellica negotia pro Ecclesie utilitate præbendum: quod facile probatur ex cap. *ex multa*, de *voto*; cap. *quod baron* 13. *quæst. 8.* Item comitari possunt exercitum ad Missarum solemnitas celebrandas, & sacramenta administranda. Concil. Francicum celebratum sub Carolo Magno Principe, præfente sancto Bonifacio anno 741. Unde eum vitium esset ne seculi Dei adhaerent exercitui, excipiantur illi tantum, qui propter diuinum ministerium, & functionum patrocina ad hoc electi sunt. Facit Decretum Caroli Magni apud Aymonium lib. 1. *anal. Baronum*, ibi: *Nemo sacris initiatus, diuinique ministerii participans arma omnia ferat, aut in bellum, aut in bellum pergit: quia, que ad summum duo Episcopi delecti sustinent, cum suis sacerdotibus Principem committunt ad bella sacrificanda, & emperantique causa.* Etiam possunt exercitui adesse ad gestandas reliquias Sanctorum, inter quas solenne erat Francis gestare capam D. Martini. Vulfredus Scraho de *rebus Eccles.* cap. *ubi*. ibi: *Disti sunt primus capellani à capto B. Martini, quoniam Reges Francorum ob adiutorium villaria in prelio saepe fecerunt habere: quam ferentes, & custodientes cum castris Sanctorum reliquias, clerici Capellani caperunt*

vocari. Monachus Sangallensis lib. 1. de *vita Caroli Magni*, cap. 4. ibi: *Capella nomine Francorum Reges propter cappam sancti Martini, quam secum ubi sui incurrebant, & bellum appropinquatum ad bella peribant, sancta sua appellare solebant.* Item possunt etiam præfere, quem morem vatis exemplis illustrat Grechlerus lib. 1. de *cruce*, cap. 90. Mariana lib. 1. *hystor. Hispanie*, cap. 14. Theophil. Raynaud. de *religiosis licitate*, pag. 211. qui idem probat de prælatione sacre lanceæ. Item clericis, & religiosis licet assistere bello aggressivis absque pignora. Unde innumeri Episcopi accepti cruce militum nomina dederunt in varias expeditiones etiam aduersus Saracenos, & hæreticos, ut illustrat Grechlerus *tem. 1. de cruce*, & lib. 2. in *apolog. pro v. p. ditionibus cruciatis*, cap. 7. Nec ita assentes, hominesque milites ad strenuè pugnandum, absque specifica sanguinis intentione, ut fecerant D. Gregor. *epist. 21. & 22.* sanctus Leo IX. *cap. anni tunc*, 23. *quæst. 4.* illam irregularitatem contrahere constat ex cap. *Martianus*, 23. *quæst. 3.* & probant S. Thom. 2. 2. *quæst. 40. art. 2.* Suarez de *crucis. disp. 47. sect. 6. n. 8.* Molina *tract. 2. de iustis. disp. 108.* Valentia 2. 2. *disp. 3. quæst. 16. part. 4.* Gonet *li. 1. de novis. cap. 6. num. 51.* Nauarros in *manubi. cap. 17. num. 215.* Couette. in *Clement. si singulis. part. 5. 3. num. 1.* Nec contrarium docet Impletius in cap. *quod in dubio*, de *pauis*, dum ait: *enimvero peccare, ac deponere hunc esse clericum, qui liquis incitat ad pugnam; id enim intelligendum est de incitatione ad pugnam iniustam, vel cum sanguinis specifica intentione, aut etiam determinatione vnius singularis personæ hostilis, quæ confusio, aut amulatio defiggerit, ut docent Suarez *dist. disp. 47. sect. 6. num. 8.* Lorea *disp. 3. de crimine. num. 21.* talis enim adhortatio ad vim aliquem de terminat occidendum, vel mutilandum inducit irregularitatem, quod non facit confusa adhortatio ad strenuè pugnandum, & hostes (si adferuntur) generose obtinendos; quia hoc, perinde est, atque homini ad strenuè incumbendum in ademptione victorie, & eius obice repellendo; quod non est specificè intendere sanguinis effusionem. Latius prosequitur Theophilus *dist. tom. 17. de relig. licitate*, *propterea*.*

His suppositis ratio prædictæ prohibitionis, quare videlicet clericis non liceat in bello aggressivo dimicare, provenit ex auctoritate, quam Ecclesia habet à sanguinis effusione, ita ut nulli Ecclesie ministro licet humanum sanguinem fundere, ut probatur in cap. *sententiam*, *ni clerici vel monachi*. Unde nec diti à deferte possunt. *capellari arma*, ubi probatur, de *vita & honest. cleric.* Quare Ecclesia iam à primis eius sæculis prohibuit clericis militie nomen dare, *can. 83. Apost.* ibi: *Episcopus, vel Presbyter, vel Diaconus, qui militia vacauerit, & simulacrumque retinere voluerit, iam officium Romanum, quàm functionem sacerdotalem depouit; quæ enim Cæsaris sunt, Cæsar, & quæ Dei, Deo.* Et hæc Basilianum ibi refert canonem illum ad ambitum eulogice præfaturæ secularis, & iuxta fundamentum, quod vox Latina militis, quod comprehendit dignitates Patritius, quoniam Castrenses, ut consilii ex l. 1. Cod. de *rebus militis*, l. 7. & l. 2. Cod. de *proximis sacer. scrip.* & ex Luciano in *Panegyrico Calpurnio Pisonis*.

— Tamen est bellum quæritur,

Non perit virtus, illi exercere togas

Alonza

3.
DE VA-
RIIS STELLI
DISPO-
SITIONIBUS.

4.
DE DI-
VERSIS
ACTIONIBUS
IN BELLO
STANDIS.

5.
TRA-
DITIO
DIVERSA
RENDI.

*Armata militum: licet & sine sanguine hostium
Militia legitima sub iudice bella mouere.
Hinc quoque seruati consurgit gloria civis,
Atque videri interant limina palma.*

Probat Bisciola lib. 11. *borer. succos. cap. 3.* Latus ad Symmachum, *epist. 15.* tamen militiam in eo canone proprie pro armata militia, non pro togata accipit Theoph. Raynaud. *diff. trall. de religio loricato, apud. 1.* Facit etiam exemplum Gentilium, qui suos qualitercumque faceret dotes à bellis omnino separarunt. Liphius lib. 1. *de militia Romana, dialog. 4.* Valerius *de re militari, cap. 5.* Immo iure civili Flamini Diali classem proximam extra pomerium, id est exercitum armatum, ne videtur quidem fas fuit, ut refert Gellius lib. 10. *nocturnum, cap. 15.* addens idcirco Flamini rursus Consulem creati, quia bella Consultibus mandabantur; immò è bello redeuntes non aliter facta contingere poterant, quam premissa purificatione. Seneca in *Hercula Furto, ibi:*

— Monantes prius

Manus cruenta cade, & hostili expia.

Et Virgilius lib. 2. *Æneid.* digressum è iusto bello Æneam, non ausum facta contingere ante purificationem ita debet.

*Tu genitor cape sacra manu, patriasque penates,
At bello tanto digressum, & cade recenti,
Atrociora nefas, donec me fluminis vitiis
Abluo.*

Quem morem Gentilium eleganter pro confirmatione presentis assertionis expendit Origenes lib. 8. *contra Celsum*, his verbis: *Quod cuique si iure id fieri apud ipsos videtur, quanto magis vel aliis militibus, & nostri homines, ut Dei sacerdotes, preces, & vota submittrando pro his, hand dubi fieri erant putati, quam belligerando militaturis, qui bella iusta gesserint, & relictis dimittuntur, ut hostilia cuncta, & his adversantia, qui infiores suos, tollant à medio? Nos vero precando, supplicando longè magis damus omnes, qui vel praelia exercitanti, vel insuperandum confidunt, vel pacem perturbant, dum perdimus, Regibus ipsis, praesidio sumus, quam si bella gerere videremus. Retra preterea publicis cum ceteris vna & nos insulamur, quia aequitas seruati, cum operibus & vota offerimus, & multa medicando conficimus, quæ ad voluptates contemptum instituantur, ut ab his duci se nihil homines sinant. Nos, inquam, & pro Imperatore longè acutius bella suscipimus; & si cum eo non militemus, priuatiorem tamen interea eius ob gratiam militia mouere sanguinem. Hoc est pietatis, & cultus, cum Deum precando, & votis licet enim iunamus. Quod si velis insuper Celsus pro patria nos depugnare, intelligat id ipsam nos sedula sacro, non ostentationis, & gloria cupiditate ab omnibus vendicanda; siquidem de nostra memis recemdit preces fundantur, ut per sacerdotem pro patria intenda emissæ. Vnde bella sacris Ecclesiæ minis istis infelicitate cedere pluribus exemplis probat Theoph. *ubi supra, apud. 8. per totam.* Facit etiam, quem perpendit D. Thomas 2. 2. *quest. 40. art. 2.* nam clerici, ceterique Ecclesiæ ministri ratione sui status adducunt cultui diuino, qui magnam petiti animi quietem, & separationem à tumultu; atqui bellum suapte natura est quid inquietum, & tumultuosissimum, ut graphicè exhibet sanctus Chrysost. lib. 6. *de sacerdotio, ad finem.* Ergo bellum abhorret ab statu clericali, & clericus, qui illi implicatur, peccat contra statum proprium. Prosequitur alias rationes presentis prohibitionis Theophilus *ubi supra apud. 9. per totam.**

Assine argumentum est, quod deduci potest ex sanctitate templi Christiani, quæ tanta est, ut in eo homicidium quantumvis iustum perpetraret, vel noxiæ sanguinem effundere sacrilegum sit, & templi pollutionem inducat, etiam tale homicidium ex parte oculi Deo sit acceptissimum, ut conigit in necesse S. Thomæ Cantuariensis, ut probat in *cap. propo. 1. de consec. Eccles.* Atqui longè inimicior est verus personæ ad sacrificium quomodo modo interuenientis, quàm templi; nam templum est mera circumstantia extrinseca inanimata, nihil influens in sacrificium; persona verò est eius causa efficiens, vel cooperans: quare maius piaculum erit polliceri personam eade humanam, quàm locum. Accedit, nam si in diebus sanctitatis festis non licet bellare, etiam si bellum ipsum sit, ne effusione humani sanguinis diel sanctitatis quodammodo polluiatur, ut probat in *cap. 1. de irreg. 4. & pace*, quod magis abhorret à persona facta quocumque tempore ea effusio? Videtur enim per se evidens intimius iungi cum ea effusionem sanguinis, quæ ipsa causat, quàm cum tempore, quod merè extrinsecè adiacet actioni, ut rectè perspicit Nyssenus *humilis 7. in Eccles.* Significat actio multò magis contaminabit personam sacram, quàm forum diuinæ, ac proinde est à clericis omnino cuitanda. Quorum rationum beuolentem conficit Petrus Ioannes Oliu. *Ordinis Minorum, qualliter. 1. quest. 19.* Si ergo clerici sui status immemores, contra tot Ecclesiæ leges militis nomen dederint, ac bellum gerere, seu in eo pagante præsumpserint, variis penis afficiuntur. Primo lethalius; peccant, ut probat Valentia 2. 2. *diffut. 3. q. 16. p. 1. 4.* Lælius Zecchius de *Repub. Eccles.* *cap. 30. vers. 3.* num. 35. Ioannes Capistran. in *trall. de pœss. Pa. pa. part. 2. secunda parit princip. num. 196.* quod & ad quosvis clericos beneficiarios in minoribus ordinibus constitutos extendunt Grassis *de effectibus cleric.* num. 28. Suarez in 2. 2. *diffut. 13. de charitate, sect. 3.* num. 5. Azor tom. 3. *missi, lib. 2. cap. 6. quest. 3.* Diana *part. 6. trall. 4. resal. 33.* Deinde irregulares mantent quantumvis bellum iustum sit item priuilegio canonis priuantur, ita ut eoa percutientes excommunicationem non incurrant, *cap. centig. cap. in audientia, de sent. excom. Sylvest. in summa, verbo Bellum 3.* num. 1. Sayrus lib. 3. *thesauri; cap. 27. num. 8.* & si in bello decesserint, suffragiis Ecclesiæ non inuuantur, nec oblatio pro eis admittitur. Concil. Trident. relaxum in *cap. quicunque 23. quest. 8.* ibi: *Quicunque clericus, aut in bello, aut in rixa, aut in Gentilium ludis mortuus fuerit, nec in oblatione, neque in oratione pro eo postuletur, sed in manus iudicis indicis, sepultura tamen non priuatur.* Quam sepulture concessionem merito admittit Molina *trall. 2. de iustu. di. 1. 108.* sub finem; si ante obitum eos penituerit, & piè obuisse videri possint.

Nec obstat debet ratio suprà adducta; nam licet vetum sit iuxta proximè tradita, clericum in bello defensiuo pagantem irregularem non contrahere, tamen ultra defensionem iudiciam eo casu ut clericus pugnet, vel regat bellum, debet intueretur necessitas, nec qualiscumque sufficit, sed summa desideratur; quia nec in defensiuo quidem bello probandus est vitronatus, & lubens clericorum ad bellandum occurus, quippe abhorrens ab eorum statu, & grauius malus, nisi necessitate inuitabili exaceruet, & sit etiam inuitabilis necessitas, si non suppetant alij, qui possint, aut velint exercitum ducere, aut mi-

6.
TAVI
TRAVER
PRÆCIPUE
TA 244
TIO.

7.
DIOLOP
TVE DYM
TANDI
RATIO.

litaria munia obire, itare ceterò, vel admodum probabiliter defutura sit iusta defensio, nisi Religiosus ad bellum defensivum regendum, aut gerendum accingatur: & extra huiusmodi necessitatem peccant lethalius, & irregulares sunt clerici bellicis negotiis se implicantes, quia canones, qui clericos arcent à bello, non minùs viget hoc casu, quàm in bello aggressivo. Et ratio ducta ex natura status clericalis abhorrentis ab effusione humani sanguinis idem culineit. Quæ omnia defuerant in præsentis textus specie, eùm essent alij laici, qui possent castrum defendere, unde clericus, etsi in bello defensivo pugnet, tamen erat absque necessitate, & per consequens irregularis manebat. Nec obstat augmentum ipsius difficultatis ex variis exemplis plurium virorum, qui bella interfuerunt; nam vel referenda sunt exempla illa ad priuos mores illius sæculi, vel ad necessitatem belli defensivi, aut supponenda est licentia Romani Pontificis; nam ex eius voluntate, & dispensatione rectè possunt Prælati cùm maiores Ecclesiastici bellum ducere, ac tegere, ut pluribus telatis probat Theophilus *dicto tract. de religioso heretico, apud. 10. §. 3. Diana part. 10. tract. 2. resol. 3.*

8.

EXPON-
TVA CAP.
DE HIS
CLERICIS
50. PIST.

Sed suprà traditis adhuc obstat Concil. Illerdense telatum à Gratiano *in cap. de his 36. 50. dist. 1.* ubi clerici, qui iura ciuitatem obfessi sanguinem hostilem fuderant, à communione per biconium arcentur, penitentiâ illis iniunctâ. Igitur quia nec in bello defensivo licet clericis propriâ manu

pugnare. Pro cuius canonis expositione dicendum est, quod etsi in bello defensivo liceat cuiqueque, etiam clericis, arma sumere, tamen si homicidium perpetretur non seruatò moderamine inculpate tutelæ, vel quia absque necessitate clericus bello se immiscuit, aut eùm posset iouatorem absque eade declinare, maluit eum confodere, irregularitatem homicidæ contrahit, & peccat lethalius; quia tunc supergreditur iustam defensionem, & potius intendit ultionem, quàm necessariam defensionem; de quo homicidio, non seruatò iusto moderamine commissio, accipieodi sunt D. Basilium *in epist. ad Amphilocho, can. 43. ibi: Qui mortis illud dedit proximo, est homicida, sine prius percussit, sine vltus est.* Concil. Tribur. sub Formoso *can. 11. ibi: Si quis clericus, quamvis nimium coactus, homicidium fecerit, sine sui presbyter, sine diacono, depunatur.* Et *cap. presensium, de cleric. percussore.* Et exemplum, quod refert Balthamon *in dist. can. 43. sancti Basilij, de quodam Episcopo, qui depositus fuit tanquam irregularis, eo quod in bello interfecisset quendam Agarenum, qui ense ipsum appetierat.* Illi enim textus procedunt iuxta præsentem casum, videlicet eùm homicidium ob defensionem perpetratum fuit, sed absque necessitate, nec seruatò moderamine inculpate tutelæ: & ita rectè pro eo penitentia iniungitur, & irregularitas statuitur.

Hinc etiam exponendus est textus *in cap. final. de cleric. coing.* iunctis per me adductis in eius commentario.

TITVLVS XIII.

De torneamentis.

CAPVT I.

Ex Concilio Lateran.

FELICIS memoriz PAPÆ b Innocentij, & Eugenj prædecessorum nostrorum vestigiis inherentes, derestabiles illas nundinas, vel ferias, quas vulgò torneamenta vocant, in quibus milites ex^a condicio conuenire solent, & ad offensionem virum suarum, & audaciz temerè congregiuntur, unde mortes hominum, & animarum pericula sæpe proueniunt, fieri prohibemus. Quod si quis eorum ibidem mortuus fuerit, quamuis ei poscenti^e penitentia non negetur, Ecclesiasticâ tamen careat sepulturâ.

NOTÆ.

^a *Lateran.*] Ita etiam legitur in prima collectione, *sub hoc tit. cap. 1.* & repetitur textus hic *in cap. 10. Concilij Later. Generalis*, celebrati sub Alexandro III. de quo Concilio nonnulla adduxi *in cap. 27. de rescriptis.*

^b *Innocentij.*] Secundi videlicet, qui in Synodo Romana *can. 16.* prohibebat omnino torneamenta, quæ fiebant ad virum offensionem.

^c *Eugenij.*] Terti] videlicet, qui in Concilio Rhemenſi *can. 12.* prædictam constitutionem Innocentij minùs exactè seruata restituit per hæc verba: *Temerariam similiter audaciam querendum,*

qui ad derestabiles nundinas, vel ferias ex condicio solent ad conuentionem virum suarum conuenire, unde hominum sæpe pericula proueniunt, animis fieri interdiciamus: quod si quis ibidem mortuus fuerit, viuicium ei non negetur, ecclesiasticâ tamen careat sepultura. Refertur *in cap. 2. hoc tit. in 1. collect.* & ab Illustrissimo Matique *can. 2. aual. C. 1. anno 1148. cap. 4.*

^d *Condicio.*] Alij legunt *conditio*, alij *ex condicio*, ut notauit Salmutius *ad Pincelam lib. 2. memorab. tit. 20.* Sed retinenda est vulgaria lectio, ut etiam habetur in Concilio Rhemenſi, à quo accepit Alexander III. nam conditum, ut Festus eodem verbo interpretatur, est simul dictum,

2.

ut Festus eodem verbo interpretatur est, simul dictum; & consuevit nihil aliud, est quam diem, locumque communi consensu constituere: & quia accedentes ad torneamenta tempus, locumque communi consensu constituunt, ideo ab Ale-

xandro III. eos ex conditio consuevit dictum e Penitentia.] In dicto canone 12. Concilij Rhemensis legitur *viaticum*; quod pro penitentia plerumque admittitur, ut dicemus infra, 12. cap. 2. de rapor.

CAPVT II.

Alexand. III. ^a Albarien. Episcopo.

AD audientiam nostram noueris peruenisse, quod cum accessisset quidam ad locum deputatum torneamenti causâ requirendi ^b debita sua à quibusdam militibus, quos eò venturos putabat, accidit quod violenter, & inconsideratè ab equo, in quo sedebat, super eum cadente compressus, & mortuus est; sed prius dominicum corpus suscepit, & sacri olei vunctione perunctus est. Vnde pro eo, quod in torneamento mortem accepit, ei sepultura fidelium prohibetur, licet ibi fortuito casu obierit, corpus eius dispensatiuè facias ecclesiasticæ tradi sepulture, maximè si dominicum corpus suscepit, & sacri olei fuerit vunctione perunctus.

NOTÆ.

1. ^a *Albarien.*] Ita legitur in secunda collectione, sub hoc titul. cap. 1. in hac anem sexia collectioe legitur *Anatensi*; sed legendum est *Ambrunensi*, ut in margine dictæ collectionis notatur, de qua Ecclesia egi in capit. 10. de regul.
2. ^b *Requirendi debita.*] Non per singulare certamen, monomachiam videlicet, seu duellum, de quo agemus infra titulo sequenti; sed ut à militibus, qui ibi torneamentorum causâ conveniebant, debita exigeret, ut ex sequentibus verbis appetè constat.

COMMENTARIUM.

3. ^c EX his duabus constitutionibus sequens communiter deducitur assertio: *Qui pugnandi animo ad torneamenta accedit, in eisque occiditur, sepeliri non debet in Ecclesiastica sepultura, nisi penitentia illi non denegetur.* Probant eam textus in capit. quicunque, et l. 1. 23. quæst. 8. Synodus Romano sub Innoc. II. cap. 10. ibi: *Discubiles illas mundanas, vel frivolas, in quibus milites ex conditio venire solent, & ad ostentationem virium fuerunt, & audacia temerè congregantur, unde morietur hominum, & animarum pericula saepe promerent, omnino fieri interdicimus. Quod si quis eorum ibidem mortuus fuerit, quomodo ei postea penitentia, & viaticum non negetur, ecclesiastica tamen careat sepultura.* Concil. Rhemensis in can. 10. supra relato. Lateran. Generale sub Innoc. III. in fine, ibi: *Locis torneamenta sunt in diversis Conciliis, sed circa parva generaliter interdicta, quia tamen hoc tempore crucis negotium per ea plurimum impeditur, nisi illa sub parva excommunicationis firmiter prohibemus, ut non alium exerceri.* Refert Anton. Augustin. in epist. iuris, lib. 35. titul. 51. part. 8. illustrare vltus D. D. Gonzal. in Decretal. Tom. V.

congestos à Barbosa in *presenti*, Corvinus lib. 4. apertis in titul. 14. Scortia in *selest. Pontific. consilii. epis. 99. ibem. 244.* Petrus Gregor. lib. 39. *synag. cap. 5. Coust. lib. 2. variat. cap. 12. num. 11.* Sanctus Raymundus in *summa. lib. 6. titul. 29.* Lona & Arellanus *de iur. variat. lib. 2. capit. 29. num. 14.* Azot *rem. 3. insit. lib. 2. capit. 15.* Pantoja in l. final. C. de *aleatoribus. num. 84.* Pascirola lib. 2. *memorab. titul. 22. vbi Salmerius. P. Gregor. lib. 1. part. titul. 17. cap. 7.* Mariana de *spectacul. lib. 4. cap. 16.* Guzman. de *el onño irabayo. discurs. 6. §. 3.* Alceget de *ludo cap. 33.* Murga *tom. 2. tract. 1. disquisit. 9. per tot.*

Sed pro dubitatio ratione in presentem assertionem ita infuso: Esti certamina gladiatoria lere prohibita sint, l. *amic. C. de gladiat. l. 12.* vbi plura D. Nicolaus de Castro; tamen certamina, quæ virtutis causâ sunt, veluti hæstæ, pilæve, iactus, cursus, saltus, ludæ, pugillatus, permittuntur, l. *solent. ff. de aleatoribus. l. 1. C. eod. titul.* Tum quia populus in otio ferocis, effrenis in pace, permixtis voluptatibus delinendus, derinendusque est, ne ruit ad illicita. Bene apud Tacitum Iulius Agricola: *Bello faciles, quieti, & otio per voluptates assuefacti.* Hanc habere perpetuam eius rei curam boni Principes, & amatores pacis, provellunt ex totundem constitutionibus in l. 1. C. de *spectaculis. l. 1. C. de expensæ ludum. l. 1. C. Theodof. de spectaculis. l. 3. eod. C. de senici. l. 2. C. Theodof. de maium. ibi: Ne ex nimia reviviscence tristitia generetur. Rectè Theodorici apud Cassiodorum lib. 1. *variis. cap. 20.* de istem spectaculis ait: *Vnde cumque prestare possimus, dignum nostris sensibus asserimus, præsertim cum Beatitudo sit temporum latius popularum, tum gratia ostendenda virtutis, tum causâ expendendam virum.* Et l. 1. §. item *Senatus. ff. de postul. nec interest*, quod aliquando mors contingat, siquidem non iniuste causâ, sui gratiâ dæmnum dandi, sed virtutis ostendendæ gratiâ contingit, & ideo legi Aquilæ*

4. ^d *TEADITV SATIO DEACIDENDI.*

locus non est, l. qua altione, §. Si quis in collu-
batione, ff. ad leg. Aquil. Suarez ad leg. Aquil.
lib. 1. cap. 1. §. 3. Igitur non tectē in presen-
ti prohibentur torneamenta, quæ inter milites,
ut aptiores ad pugnam, & magis expediri repe-
riantur, fiunt. Accedit quod quando finis, ad
quem actus dirigitur, bonus est, actus quoque
bonus indicatur, l. si ita stipulatus 14. l. in insu-
larem 124. §. de P. O. l. cum aurum 19. §. pene-
nissimum, ff. de auro & argenteo, l. rem non no-
nam 14. C. de iudiciis. Euetard. in Topicis, lo-
co 131. à virtute finis. Sed torneamenta facta ad
virtutum ostentationem respiciunt finem exercitij
militaris, dist. l. qua altione 7. §. si quis in col-
lurbatione, l. 9. §. final. ff. ad leg. Aquil. textus
elegans in l. in nomine, §. pro lustratu, C. de
offic. Praefecti. Afflic. quia ut ait Vegetius lib. 1. de
re milit. cap. 1. in omni praelio non tam multu-
modo, & virtus indocta, quam ars, & exerci-
tium solent præstare victoriam: ergo non tectē
in presenti prohibentur torneamenta, cum ad
virtutum exercitium fiat cum magna Reipublicæ
utilitate, cuius publicum bonum attendi, &
præferri debet, l. vnic. in fin. C. de catue, tol-
lerat. l. 1. §. vtrum, in fine, ff. ad Syllan. l. altio-
ne 65. §. Lebo, pro facie. Etiam difficultis est
pæna pteuatiōis sepulchre concessā peniten-
tiā; nam quibus communis carnis vinis, commu-
nitate debemus defunctis, & eorum, ut proba-
ui in cap. sacre, de sepulch. Facit textus in cap.
quæstion 13. quæst. 2. Igitur si decedentibus in tor-
neamentis concessis penitentia, inuolūtē dene-
gat sepultura ecclesiastica.

Quā dubitandi ratione non obstante, vera est
pensans altitio, pro cuius expositione sciendum
est, torneamenta esse hastiludia, siue ludicram
pugnam equestrem, & præparationem ad bel-
lum: de illis agunt Cælius lib. 2. miraculor.
cap. 32. ibi: Causā ludis humana torneamenti
totus dedimus. Et lib. 7. cap. 39. Cum properares
ad quoddam torneamentum. Candenus in sua Bri-
tannia, pag. 191. pro isidem habet torneamentum,
& mensum totandum; sed aperte separat Mas-
theus Parisius in Henrico III. ad annum 1252.
ibi: Militis ut exercitio militari peritiam suam,
& strenuitatem experirentur, consueuerunt vniuer-
siter, non ut in hastiludio illo, quod communiter,
& vulgus torneamentum dicitur, sed prius in
suo ludo militari, qui mensa recunda dicitur, vires
suas attentarent. Dicuntur torneamenta, ut aliqui
volunt, à Græco verbo τρηνω, quod est eicuire.
Conart, in desuero, verbo Torneo. Alij à Troiano
ludo ducere malunt torneamentum, quasi Tro-
ianum ludum agunt Tacitus lib. 6. annal. Virgilius
lib. 5. Aeneid.

Hanc morem, hos usus, atque hac certamina
primus
Aconius longum moris cum cingens Alham
Remit, & prius decus celebrare Latius:
Qua puer ipse modo, secum quo Troia pubes.
Albani ducere suos: hinc maxima portū
Accipit Roma, & patrium seruauit bo-
norem.

Troique nunc, pueri, Troianum dicitur agmen.
Ideo Troiani ludi dicebantur, & à pueris tan-
tū maioribus, & minoribus in circo celebra-
bantur. Tacitus lib. 13. ibi: Sedem Claudio cir-

tenfibus ludis, cum pueri nobiles equis ludicram
Troia inirent. Suetonius in Jul. cap. 39. ibi: Troia-
nus lusus tanta duplex maiorem, minorumque pue-
rorum. Et in Augusto, cap. 43. Sed & Troia ludum
edidit frequentissimē magnorum, minorumque pue-
rorum & delecti passim decoris minores existimant,
& clara stirpis indelem sic inuenero. Diochius
lib. 43. ibi: Et iam Troiam antiquo more Patri-
clarum filij luserunt, iuuenes, qui dignitate æqua-
les erant, curribus certauerunt. Troianum ludum
appellant torneamenta, Robin lib. 5. antiquis.
capit. 15. P. Raderus in comment. ad Martialem,
lib. 7. capit. 11. Nanat, in Manuali, capit. 15.
nota 9. Vnde cognoscitur, torneamentum non
solam significare prælum solum, verum &
eruentum, l. 27. titul. 11. part. 2. ubi referent
Magnus Alfonso bellotum differentias, alit:
Otra monera ay de lidiar, laqual llamam torneo.
Et l. 18. titul. 2. cap. part. Torneo que se volcisse
de des guesles, que estuasse una cabo ara. Sed
corruptā voce torneamenta tandem dicta esse à
Teutonicis primū antior est Volsfangus La-
zarus lib. 10. Rer. Romanæ, cap. 2. Sed in hoc dis-
ferunt à veteri Troiano iudicio, quod non so-
lūm pueri, verum etiam viri hodie certant, nec
aperto capite, coronatoque, sed casside tecto
certamen inueniunt, & hunc torneamenta in com-
muni lætitia, ut victoria, nuptiis, aduentuque
Principis.

Deinde sciendum est, hæc quidem torneamen-
ta, seu hastiludia dupliciter exerceri, aut fieri pos-
se: primum si ad ostentationem virtutum vana au-
dacia temet lanceis acutis cuspidis habentibus
congrédiantur; qualis fuerunt olim ea, de quibus
D. Ildos. lib. 18. orig. cap. 53. ait: Græcia gla-
diatorum plura, quorum priores ludum equestrem;
duo enim equites præcedentibus prius lignis militari-
bus, tunc a paria Orientis, alter ab Occidentis pro-
cedebant in equis albis, cum auris galcis, nimbri-
bus, & vilioribus armis; sicque arcei perseverantia
pro virtute sua inibat pugnam, dimicantes usque
alter in alterius mortem pressiliret, ut haberet qui
caderet casum, gloriamque perirentur. Quorum tor-
neamentorum descriptionem elegantissimē in an-
nalibus suis meritis representauit Iacos Douza
lib. 2. fol. 33. & de eorum usu & incommoda
plura Douza eius filius anal. Hollandia lib. 9.
fol. 457. Sed hæc spectacula gladiatoria sublara
fuerunt nouā constitutione Imperat. Constant.
in l. vnic. C. de gladiatorib. lib. 12. licet iam Di-
gestorum tempore fideles ludos prohibitos fuisse
rentat Pantoja in l. final. C. de aleat. numer. 85.
Secundū cum in his hastiludiis, seu torneamen-
tis, mortis periculum non timeat, qui virtutis
causā tantum sunt hastis sine cuspidē, ut sunt ea,
quæ vulgo dicuntur, torneo 7 jussu reales; & ho-
stis lanceis, hebetibusque ensibus exercentur,
& sæpe vallo in medio curculi in dilectum duc-
to, vulgō tela, ita ut equi vtriusque ad aduerso
positi currentes oblati sibi nequeant: & hæc has-
tiludia clericis prohibita, laicis vero omni iure
permissa constat ex Concil. Hieripol. tempore
Honorij IV. celebrato, can. 4. ibi: Hastiludia,
& torneamenta clericis qui sunt in dignitate, per-
sonaribus, seu in sacris ordinibus constitutis, hoc
edicto perpetuū sibi nominatim interdita. Er probant
Syluester in summa, verbo Ludus, & Torneamen-
tum. Inl. Clarus lib. 5. sentent. §. ludus, num. 4.
Tufchius verbo Ludus, conclus. 456. Alciator de
ludo cap. 51. & 52. & de his edicti constitutionem
Cælesti

Cœlestinus III. in epist. ad Episcopos Angliæ, quam refert Rogerius in *analsib.*, prohibuit, ne in Terra sancta, ubi steterunt pedes Domini, torneamenta tytonum exercende virtutis causâ inuenta fiant: ubi torneaments intelliguntur, non hastiludia, & cruenta prelia, sed prædicta torneamenta, quæ licita sunt, de quibus etiam accipiendo cū Innoc. III. in *Concl. Lateran.* supra relato, dum in eo ob crucis expeditionem vique ad triennium torneaments prohibet exerceri: ea enim hastiludia Christianis permittébantur, ut ita expeditores contra Christi hostes essent, ut in Richardo Rege Angliæ refert Mathæus Paris. ad annum 1194.

7. **TRADITVS**
RATIO DO-
CTRINÆ.
Huius suppositis apparet ratio præsentis constitutionis; nam ludus cū omnino inculpatus esse debeat, & innoxius, l. nam 10. ff. ad leg. Aquil. l. in furi 50. §. final. ff. de furiis, nec quis recte ludos appellauerit, ex quibus crimina oriuntur, ut inquit Iustinianus in §. illud vtrū, in oratione ad Antecessores, quæ extat in præfatione Pandectarum; & ex his torneamentis plerumque hominum neces sequantur, ut contigit insuauis Henrico II. Gallie Regi, is enim in torneamentis, quæ ad pacem cum Philippo II. Hispaniarum Rege terrens initium, nuptialque huius, & Elizabethæ filiz cognomento Pacificæ celebrandas edidit, postquam plures hastas feliciter ruperat, dum ad vicissimam manum nitteretur, cum Comite de Montgomery satellitum suorum Duce congrederis, lanceâ adversarij lorica percussâ ita vehemēti, fragmen scissum cassidis prospectum intrauit, & oculo dextro sucius, intra 10. dies occubuit, non sine magno vitulique Regni, totiusque Republicæ Christiænæ morte, ut refert Illicæus lib. 6. *hister. Pontific.* cap. 30. §. 2. Itaque Gones Selmæ Turcarum Regia frater Romæ à Pontifice Alexandro interrogatus post multos ictus, quid ipsi placerent ludicia hæc belli similia: Sancte Pater, respondit, si ferid hoc sit, patum mihi videret esse; sin loco, posset etiam id omnino esse. Refert Pancelola lib. 2. *memorab. titul.* 10. Ideo tam repetitis legibus Ecclesia prohibuit huiusmodi torneamenta sub pena priuationis sepulture: & quia adhuc peterebatur in Italia consuetudo, ut non solum privati priuati, verum etiam populi populos ad conuersiones dirimendas torneamentis vterentur, Innoc. III. scripsit ad Austriacos Lombardiz, ut huiusmodi torneamenta existerent per sacrorum interdictionem, ut refert Spondanus post Baronium anno 1198. *numer.* 12. & cū alio quoque colore, videlicet quia ab ordinario Tertæ sanctæ subsidio, & crucis assumptione fideles abstinerebantur, Clementis V. in Concil. Viennoensi omnia torneamenta, & hastiludia etiam iuniora prohibuit sub excommunicatione Sedi Apostolicæ reseruatæ, & sub interminatione generalis interdicti: quas censuras Ioannes X. XII. instantibus Rege Franciæ, & Nauaræ, nec non Germaniæ Magnarum, reuocauit Extratrag. vnica de *veniam.* Ad instar torneamentorum prohibita etiam est tauorum agitato intra circum constitutionibus Pij V. anno 1567. Gregorij XIII. anno 1575. Sixti V. anno 1586. Clementis VIII. anno 1597. quas exposuerunt præcipue pro vna nostræ Hispaniæ, Matiau. de *speculanti.* cap. penultim. & vltim. Gutierrez lib. 1. *canonic.* cap. 70. D.D. Gomez. in *Decretal.* Tom. V.

Azor *part.* 3. *instit.* moral. lib. 2. cap. 15. Scotria in *selecl. epist.* 99. *thomem.* 244. Prado tom. 1. *Theolog.* Moral. caput. 25. quest. 9. Baronius *anno* 120 *numer.* 30. & anno 179. *numer.* 47.

Nec obstat dubitandi ratio supra adducta; nam licet varia ludorum genera iure ciuili permittentur ex rationibus supra adductis, de quibus peculiares tractatus ediderunt Petrus Faber de *agoniis.* Mercurialis de *re gymnasii.* Pantoja de *aleatoribus.* Zerde in *Virgil.* lib. 3. Anred. Franc. Modius lib. 3. tom. 2. Pandect. *Triumphal.* Marian. in *epusc.* de *speculanti.* Bulengerus in *epusc.* de *circis*: tamen torneamenta, etiam strenuata, ac virtutis argumentum præbent, tamen non tunc ingenti periculo, ut in præsentis textu docetur; vnde tanquam ludus noxius iussu prohibetur ab Ecclesiæ Patribus. Nec obstat alia difficultas pars, quia licet regulariter verum sit, concessâ poenitentia, quod nouius est, concedi etiam sepulcrum ecclesiasticum, tamen aliquando ad retrorotem, & correctionis exemplum concessio sepulcrum ecclesiasticum denegatur, ut in *cap. super eo.* de *rapinosis*, in Concilio Rauennat. 2. rubric. 28. ubi de prestantibus per annum in excommunicatione ita cauetur: *Et si in morte beneficium abstinentis satisfactum præstita meruerit obire, nihilominus tamen in penam cœnæ ecclesiasticæ careat sepulcrum.* Et de adulteriis rubric. 29. *Et si in morte de prædictis satisfactum non esset, nihilominus tamen in ipsorum contemptum, & penam ecclesiasticæ careat sepulcrum.* Leuiter autem interdicti sepulcrum ecclesiasticum aliquando, quia sicut in *pio* non prodest sepulcrum pretiosum, ita non obest pio sepulcrum vilis, aut nulla, *cap. anima* 11. *gnat.* 2. plura de hac pena priuationis sepulcræ concessi in *capit. sacris.* de *sepulcris.*

Et supra traditis exponendis est textus in *can. 4. Concilij Arclat.* in illis verbis: *De agitatibus, qui fideles sunt, placuit eos quædam agere, & communionem separari.* In quo canone agitur de Christianis, qui in circensibus ludis autzge, & agitatibus erant, qui per tempos, in quo in circis agitabant, à communionem pellebantur, quia in his spectaculis autzge, & agitatibus erant diuersarum factionum, faciliq; eorum, quibus insensiebant, factionibus sese implicabant, ac in leges ecclesiasticas peccantes, & crimina diuersa committabant: quare similia spectacula Ecclesiæ Patres fideibus Christianis prohibuerant; communionem illis, dum equos agitare, denegauit, ut post Baronium notat Coriolanus in *dist. can. 4. Concilij Arclat.* Ex eadem etiam ratione, quia in ludis faciens, & theatralibus facili contingit ipsos fabularum actores lethalius peccare, idem in canone §. ipsius Concilij Arclat. ipis, dum in theatris agunt, communio denegatur his verbis: *De theatricis, & ipsos placuit, quædam agere, & communionem separari.* Ex simili etiam ratione, quia apud Gentiles Magistrams Duumvir tentoria suo anno populo ludos edere, ubi homicidia contingebant, & plerumque idololatria, Ideo in canone §. 6. Concilij Illiber. Magistrambus eo anno, quo Duumviratum gerunt, permittitur, ut ab Ecclesiâ se cōbibeant, illis verbis: *Magistrambus verò anno quæ agit Duumviratum, prohibere placuit, ut se ab Ecclesiâ cōbibeant.* In cuius cōcomentariis iam notauit.

8.

D. SOLVIT
TVE DVAT
TANDI RA
TIO.

9.

EXPOSITA
CAN. 4. CON
CIL. ARCL
LAT.

10.
EXPLICA-
TIO CAN.
64 THEODI
CASTRAS.

Sed super traditis primò obstat textus in can. 64. Concilij Carthag. in illis verbis: *Ne in Dominico, & reliquis Sanctorum festis spectacula ulli modo peragantur, illud quoque praveretur, ut theatralium iudiciorum spectacula in Dominico, & reliquis festis dictis à fide Christianorum arceantur: maxime quia in sancti Pasche illana turba magis in hippodromia, quam in Ecclesiis conveniant, debent proximis ipsorum dies transferri, quando eueniant, nec debet idem Christianus cogi ad hac spectanda, Vbi tantum prohibetur spectacula edj diebus Dominicis, & Paschalibus: ergo quia absolute spectacula, quotum appellatione veniunt torneamenta, non censentur prohiberi. Pro cuius canonis expositione dicendum est, discrimen esse constituendum inter ludos vetitos, ac inter permisos. Vetiti omni tempore, & inter omnes personas prohiberi censentur, vt torneamenta, de quibus in presenti. Alij verò ludi liciti sunt, etsi non omnibus, nec omni tempore; laicis enim plerumque permittuntur, qui clericis prohibentur, can. 24. Synodi 6. Trul. ibi: *Ne cui liceat venari, qui in sacerdotali ordine enumeratur, vel monachorum, ut equorum curricula subsistere, vel fecinas ludos sustinere, sed & si quis clericus ad nuptias vocetur, quando ad deceptionem comparata ludicia ingressa fuerint, surgat, & discedat.* Sic ergo hæc proderomis, curricula, & venationes, & similia, licet laicis permittantur, tamen diebus Dominicis, aut tempore paschali edi non debent, ex rationibus quas concessit Bassamon in di-*

Et can. 64. Bassonius in l. die Dominico, C. de spectac.

Secundò obstat textus in cap. quicunque 4. 23. quæst. 4. ibi: *Quicunque clericus, aut in bello, aut in rixa, aut in Gentium ludis murus fuerit, nec in oblatione, nec in oratione pro eo passus sit, sed in manu incidat iudici, sepeliatur tamen non prius.* In quibus conceditur sepultura decedentibus tu torneamentis. Igiter non eadem in presenti aliter illis, qui in torneamentis decedunt, concessa penitentia denegari sepulturam. Pro cuius difficultatis solutione dicendum est, in eo textu agi de clericis tantum, quibus laici cum pace minus coherentes, & veluti belli preludia prohibentur, vt probat Abul. in cap. 6. Admirationis, quæst. 52. qui inter ludos refert saltationem, & torneamenta. Et quoad hæc hastiludia Concil. Salisburg. sub Martino I V. anathemate damnauit clericos, aut ecclesiastica dignitate fulgentes, qui vel armis adhibitis, vel absque eis vacauerint tali exercitio. Tamen enim remotis armis nullum imminet profigande vitæ periculum; tamen vel ipsa species bellicæ exercitationis à paco abhorrens dedecet clericos. Preterim quia à torneamentis absque armis facili progressi poterat ad torneamenta cum armis, vbi frequenter homicidia eueniebant, vt videtur apud Cantipratanum lib. 2. apum, cap. 49. numer. 3. apud Cæsarum lib. 12. miracul. cap. 16. & 17. In presenti verò agitur de laicis in torneamentis decedentibus, quibus diuersa poena imponitur, quia sunt professione diuersi.

11.
EXPOSITIO
CAP. QUI-
CUNQUE 4.
QUÆST. 4.



TITVLVS XIV.

De clericis pugnantibus in duello.

CAPVT PRIMVM.

à Alexand. III.

PRO si clericus alicui sponte duellum obtulerit, vel si oblatum susceperit, & subierit, siue victor, siue victus fuerit, de rigore iuris est deponendus. Sed quantumcunque eius in hac parte grauis sit, & enormis excessus, eundem potest depositionis sententiam, si cum ipso suus Episcopus duxerit misericorditer dispensandum, dummodo ex ipso duello homicidium, vel membrorum diminutio non sit subsequuta.

NOTÆ.

- I. à **A**lexander III.] Ita etiam legitur in prima collectione, sub hoc titulo capit. 1. & post Concilium Lateran. pars. 16. cap. 4. & 5. legitur *Salernitans Archiepiscopus*: & in dicta prima collectione additur pars capituli *Licet prater.*

Vnde cognoscitur in presenti refertur partem textus in cap. licet, de sponsa dnor. cap. 1. de corpore viriatis, vbi iam notui.

b *Membrorum diminutio.*] Vnde dispensat Episcopus in specie textus in cap. 1. de corpore viriatis, quia amissio partis digiti propriè non est membri diminutio, vt notat Vascoucellos in harmonia rubric. ad tit. de corpore viriatis.

2.

C A P V T II.

• Coelestinus III.

Henricus presbyter lator præsentium ad nos cum litteris tuis humiliter accedens intimavit, quod cum laicum quendam super b furto in seculari placito conuenisset, ipsi, quia testes sui defecerunt, pugilem secundum prauam tertæ consuetudinem iudixit, qui reum usque adeo ictibus gladij vulnerauit, quod coactus est nocte proxima expirare. Quia ergo super hoc nos consulere voluisti, ambiguitatem tuam responsione huiusmodi remouemus, quod tales pugiles homicidæ veri existunt, nec prædictus sacerdos, licet non ipse, sed aliquis pro eo in duello pugnauerit, debet in sacris ordinibus ministrare: sicut enim tradunt sacrorum canonum in scriptura, homicidium tam facto, quam præcepto, siue consilio, aut defensione non est dubium perpetrari: poteris tamen cum eo citra habendum beneficium misericorditer dispensare.

NOTÆ.

1. **C**oelestinus III. Ita legitur in secunda collectione, sub hoc tit. cap. 1. & in hac sexta collectione legitur Clement III. nullibi tamen exprimitur cui t. scribas Pontifex, seu in qua provincia præfens casus contigit.

2. **Super furto.** Clauititer agendo: non criminaliter ad vindictam, alius ex ipsa accusatione sequitur morte naturali. Henricus irregularis maneret, iuxta tradita supra in cap. si quis in 13. de homicid.

3. **Sancti placito.** De placito, & eius acceptationibus c. in cap. 1. de feris.

4. **Pugilem.** Qui apud Longobardos dicitur Campio: plerumque enim clerici duellum subibant olim per se, aut per alium, ut infra dicemus.

5. **Instructa.** In cap. 1. hoc titulo, & aliis supra pro illustratione conclusionis adducendis.

6. **Præcepto, consilio.** Iuxta tradita supra in cap. 11. de homicid.

7. **Dispensare.** Nam cum prius esset officio, non poterat sacrodotio iura rigore tenere: beneficium, cap. ex litteris, de excessibus Prelati. sed ex dispensatione illud retinet, vt in specie textus in cap. de homicid. Non tamen inde inferas beneficium irregulari ipso iure vacare, aut collationem beneficii factam irregulari ipso iure nullam esse: nam contrarium verius est, vt præbet Gibalini de irregul. cap. 2. quest. 4.

COMMENTARIUM.

5. **CONCLUSIO**
TRADITUR,
UT PROBATA

EX his duobus Decretalibus sequens communiter deducitur assertio: Clericum uidentem duellum, sine obiectis, sine susceptis, deponendum esse: sed non sequens homicidium Episcopum ex eo dispensare uult. Probant eam textus in cap. Alchemat. c. 12. 2. quest. 5. cap. sententiam, ad finem, ne clerici vel monachi, cap. 1. de corpore uitæ, cap. 1. de purg. uirg. Concil. Valent. Galliar. can. 11. Et quæ ex huiusmodi iuramentorum, immo periuuriorum continentia etiam usque ad armorum, ceramina sunt, promissi, & crudelitatis speculaculo offunditur etiam bellum in pace, statimque iuxta antiquam ecclesiasticam observationem morem, & ceteraque, tam iniqua & Christianæ paci inimica pugna alterum occidit, seu uulneribus debilem reddit.

D. D. Gonzal. in Decretal. Tom. V.

didit, uoluit homicida nequissimus, & læte cruciatus, ad Ecclesiam, & animam fidelium eam separatum, ad agendam legitimam penitentiam uoluit omnibus compellatur: idæ vero, qui occisus fuerit, tanquam sui homicida, & propria mortis spontaneus apparet, a Dominica oblatione communione ratione bibentur alienum, nec cadaver eius iuxta sacrorum canonum decretum, cum psalmis, & orationibus ad sepulchrum deducatur. Super quibus duobus titulis, propter tam fœcile, & horrenda animarum, & uel etiam corporum exitia, Christianissimi Imperatoris pietas sacerdotum omnium nostrum supplicatione imploranda est, ut iuxta maiorem à populo fidelium suis publicis sanctimonialibus remoueat, & nostrum super hoc tam necessarium ecclesiasticum decretum propria auctoritate confirmet. Et capit. 1. hoc tituli. in 5. compil. Honorius III. Potestati, & Populo Florentino in hæc uerba scribit: Rem audiuimus bullam inauditam, & tam inui scripto, quam equis contrariam, quod uidelicet Ecclesiam sanctiorum Apostolorum Florent. cogere nimirum ad duellum pro causa, quam super cantueria, & rebus alijs habet cum filiis Longobardi civitatis Florentinis. Cum igitur tam manifestam in eadem Ecclesia, ac ipsum iuramentum nec possumus, nec debemus sub dissimulatione transire, cunctis uero vestram rogamus, & obsecramus in Domino, per Apostolicam uobis scripta mandauerit, quatenus à re tam infelici, & tamque detestabili penitus desistitis, causam ipsam morte sua, uidelicet utriusque iudicario, procedere faciamus: scimus nos venerabili f. n. Pistoriensis Episcopo, & dilecto filio Archiepiscopo Florent. per nostram dedisse litteras in mandatum, ut si sepius presumpserint assensum, ipsi presumptionem uestram per censuras ecclesiasticas appellatione remota compellant, irritum nullatenus, si quod occasione huiusmodi factum, uel statum inueniant contra Ecclesiam memoratam. Toletanum anno 1473. temporibus Synodi IV. celebratum, can. 20. Trident. sess. 25. de reformatione, cap. 11. Coelestinus III. l. 11. l. 11. Innoc. IV. in constitutionibus relictis: Quaranta in summa Bullar. verbo Durham. Rualdus in act. in duell. pag. 54. 55. & 56. Clement VII. consil. 1. Pius IV. consil. 13. Gregorius XIII. consil. 8. Clement VIII. consilium. 19. vt refert Coriolan. in breuario, anno 1503. faciat textus in l. uic. C. de gladiis. lib. 11. l. 10.

Bb 3

ie. 2. lib. 8. *Recopil.* Illustrant vltia congestos à Barboſa in præſenti, & de poſſ. *Episcop.* al- leg. 50. numer. 120. & ad Conſil. Trident. diſſ. cap. 12. Salmatius ad *Pancipium* lib. 2. memorab. titul. 20. Martinus lib. 1. reſol. cap. 170. Pantoxa in l. final. C. de aleator. num. 27. Coruinus lib. 4. apertum. titul. 13. Iuretus in nota ad epistolam. 168. Corder. Rouſſellius lib. 6. hiſſer. Pontific. inſol. cap. 3. Ioan. Tabot. in *Armenius*. fol. 169. Lucas Floronius in traſſ. de prohibitione duelli. Becanus in opuscul. de bello. cap. 16. Roſa de iurib. Prin- cip. quaſt. 3. Glibalvus de cenſur. in ſynopſi. verbo *Duclum*. Petrus Gregor. 3. part. ſynag. lib. 48. cap. 15. & lib. 4. part. titul. 8. cap. 10. Gutierrez de delict. quaſt. 105. Azor. tom. 3. inſtit. lib. 2. cap. 5. Hothomani lib. 3. obſerv. capit. 4. & de ſenſ. cap. 45. Fragoſo de regim. Chriſt. Reip. part. 1. lib. 1. diſp. 3. 5. 10. Scortia in ſeſſat. Pontific. conſil. epistolam. 155. theorem. 390. Grotius de iure belli lib. 3. cap. 20. Diana part. 11. traſſ. 6. reſol. 26. & traſſ. 8. reſol. 21. Chôpinus de priuileg. reſtit. lib. 3. cap. 13. D. Ioannes Suarez ad leg. Aquil. lib. 2. cap. 2. titl. 2. Oſwaldus lib. 17. Daniel. cap. 2. littera Ad. Boecius in traſſ. de duello. Philippa Camer. tom. 2. honor. ſuſcepſit. cap. 19. 20. & 21. fuſe Nungia tom. 2. diſquiſit. moral. traſſ. 1. diſquiſit. 11. per ſonam; Martinez à Prado tom. 2. Theolog. Mor. cap. 15. quaſt. 8. 3. Ayala de iure belli cap. 5. lib. 1. Theodorus Reinekingk de regim. Eccleſie. lib. 2. claſſ. 5. cap. 2. num. 41. Theoph. Raynaud. tom. 4. lib. 3. de iurim. ſeſſ. 3. cap. 3. Burgenſis tom. 2. ſeſſ. 79.

6.

IMPRONA-
TUR TRA-
DITA AS-
SERTIO.

Sed pro dubitandi ratione in præſentem aſſer- tionem ita inſurgo; Duellum ad decidendas con- trouerſias, iam ciuiles, quàm criminales, de quibus in præſenti textu agitur, honeſtum ſanè & religioſum videtur, ſiquidem in eo pugnantis Deum Optimum Maximum veluti veritatis, & æqui iudicem ſibi conſtituit, & in cauſa, quæ per teſtes, ſeu alias probationes non liquet, ſinceriorum, certiorumque iudicem eligere nequeunt, & ita ipſum, qui duello vincit, Deo auctore viciſſe nemo proſus eſt qui non fateatur; & quemadmodum Imperatores Dioleſt. & Maxim. ſtatue- runt iudicem, ſi inopia probationum laborat, in- reſutando cauſa cognita decidere debet, quia iuriſſuandi contemptu religioſus Deus vltor eſt, l. 2. C. 3. C. de rebus creditis; ita & Deum vltorem, & iudicem duello ſtatueri, ſi res aliter non poſſit per homines, deficientibus probatio- nibus iudicari, ſanè & religioſum videtur. Ac- cedat rursus duellum gentium, apud quas dubie controuerſæ duello deciderant. Germani in cauſis ambigis, maximè criminibus, quæ nullo humani teſtimonio comprobari poterant, ad ſumman Dei Miſericordiam, quæ falli non poſſet, tanquam ad iudicem omnium iuſtiſſimum con- fugiebant; Senatus, Populus, atque Sacerdotes, qui ſingulare certamen, ac aliam huiusmodi proba- tionem ſpectabant, in interiu, vt eſt in lege Salica, diuinam opem Implorabant, beneficia memoriter commemorabant, quæ in ſimili ne- gtorio Deus ipſis conſuliſſet, compromittantur vt ipſe in præſenti innocenti aſſeſſet, victoriamque ceſſitus concederet; verba ſunt Ioannis Quenini lib. 4. annal. Boier. Longobardi etiam in Italia ambiguius de poſſeſſionibus, & ob- ſeſſat. crimina grauiora, quæ vel ſalutari vel ſan- cto obſeſſet, ſic decidebant, cauſam huius moris ad- ducentes legum deſectum, quibus ambigui cauſus

teſoluerentur, & tritum illud proponentes; *Sed non ſufficiens iura, veniamus ad omnia.* Et lib. 11. titul. 54. *legum iſtorum*, caueat vt in crimina- libus cauſis accuſator & deſenſor in tempo cum ſuſſibus pariter contendat, nec eorum interu- rando tes committatur. Lege etiam Imperatoris Othonis IV. in Romanola de Principum Ita- lorum ſententia promulgante, & non con- tralieſce Ioanne Papa III. vt conſtat ex l. anti- quis, eiusdem tituli 54. ſtatuitur, ne deinceps tota Italia, etiam ſus in locis, in quibus iure Romano, idell iuſſinantiſ legibus vtebantur, con- trouerſias iuriſtando diſcepſet propter perſonam malitiam; ſed duello, & certamine ſi- las diſcrimant. Quod Imperator obſeruiri luſſit in ſ. titum, eiusdem tituli, non ſolum in priuatum laicoſi cauſis, veràm etiam in Eccleſiarum li- tibus. Et Federicus Imperator inſtitul. de pace- randa in eſſibus final. 5. ſi qui hominem, duellum inter legitimos modos probationum reſert. Et Fronto, III. Rex Daporum legem tollit, vt om- nes controuerſæ, quæſcumque eſſent, duello definirentur, vt reſert Saxo lib. 5. ſpecioſus vi- ribus, quàm verbis conſigendum exiſtimans: quod adhuc in Moſcouia viſitatum eſſe teſtatur Ioannes Bodinus lib. 4. de Republica, cap. finali; & de aliis gentibus idem reſert Broneh. cent. 2. aſſert. 76. Hinc leges latæ apud varias nationes, in quibus ſumma, & conditiones obſeruandæ in ipſis duellis præſcribuntur. Apud Hiſpanos in l. 1. titul. 21. lib. 4. fori, l. 1. C. 2. titul. 3. h. 4. tit. 4. part. 7. l. 8. titul. 14. ead. part. Apud Longo- bardos l. 59. titul. 9. l. 2. ibi: *Duelli liberi, ſeruiſſi aqua ſerui inuicem ſuam probant.* Apud Neapoli- titul. 2. lib. 3. C. 35. Apud Francos in appendice leg. Salica, & lib. 4. C. 33. Apud Angloſ. l. 14. apud Perſones titul. etiam 14. quæ & alias congeſſit Lindembrog. verbo *Duclum*, *Pugna*, & *Menachia*. Omiſſo innumera exempla duellorum di- uerſarum gentium, quæ reſertur Rualdus ubi ſu- pra, pag. 102. D. Ioannes de Larrea alleg. 17. Igi- quia duella omni iuri, & moribus gentium con- ſopra ſunt, & per conſequentes vt inuſſa prohiberi non debent.

Sed hæc dubitandi ratione non obſtante, veta eſt præſens aſſertio, pro cuius expoſitione ſorte oportet, duellum laicè ſumptum omne bellum ſig- nificante, vt apud Horatium lib. 2. epistolam. 1. qui Græciam dicit: *Barbari lento colliſam duello*. Clæ- ceonem de Oratore, ibi: *Antiqui nomina contra- bebant, quo eſſent aptiora, vt duellum, bellum*. Liniuſ lib. 6. belli *Atacedan*. ibi: *Populus Romanus cum eo tempore duellum inſiſſet cum Regi Antiocho*. Varro in lib. 6. de ling. Latina, ibi: *Perduellum, duellum, id poſtea bellum*. Ex eoque per- duelles dicti, quos hoſtes vocamus, l. quæ 234. ff. de P. S. Illuſtrat Petrus Gregor. lib. 48. ſynag. cap. 16. num. 2. Duellum ergo non quaſi duorum bellum, ſed quaſi duorum parium bellum dicitur; nam ſi duo tantum manus conferant, dicitur ſingulare certamen, vt probant Cuias. in cap. 2. titul. de pace tenenda in eſſibus ſenda- rum, Menchats lib. 1. illuſtr. cap. 11. num. 16. & cap. 48. numer. 16. Aleſius in traſſatu de ſin- gulari certamine. Varias duelli deſinitiones ad- duxerunt Ioan. Lignanus, Antonius Maſa, Fer- ræus, Aleſius, Vieherus, Boërus, & alij communiter ſcribentes de duello. Communi- ter autem ita deſinitur, ſeu deſcribitur; *Duel- lum eſt ſingulare certamen, quod homines qui-*

7.

DUALUM
QUID SIT.

dem legem contempnere, specie, ac nomine conferendi, recuperandi honoris, & ignominia propulsanda, ut autem vera pecuniarum, aut falsa gloria, seu officia vindicta, vel emulacionis causa, missis utroque, circūque libellis, ad locum, & diem certum conuencientes, armis à provocato electis committunt. Quam definitionem probat D. Ioannes de Latreā d. alleg. 117. num. 4. et si Medices de desinitio, 2. p. diffini. 13. duellum definitur ut sit, pugna corporalis deliberata hinc inde duorum, plerumque, ad erodendam veritatem, purgationem gloriæ, & odij exaggerationem.

Deinde sciendum est, duellum duplex esse, extraludiciale videlicet, & iudiciale. Extraludiciale dicitur, quod partes citra iudicium auctoritatem capellum, idque committitur vel publice utilitatis, aut virtutis honeste gloriæ causâ, vel ostentationis, aut defensionis gratia, de quo fasè agit Boetius de duello cap. 3. cum sequent. & de duello utilitatis publice causâ commissum, cum propter patris publicum solum decessit ad bellum vitandum, docet igit D. Ioannes de Latreā d. alleg. 117. Theophilus d. l. 4. fol. 699. Et de duello ob defensionem honoris videndum est Aucupiano de iura lib. 2. cap. 47. per tot. Iudiciale, de quo in presenti textu agitur, est quod auctoritate iudicis in causis contumaciis, delincentibus plenis probationibus, litigatores ad indagandam veritatem ineunt, ut qui cedat, vel succumbat, eius causâ inferior sit. Visu enim receptum fuit in aliquibus provinciis, ut si accusator, vel actor intentionem suam contra reum plenè in iudicio non probasset, unus alium provocare ad duellum posset, ut qui viceret in eo duello, eâ ipsâ victoriæ suam intentionem, vel defensionem probare diceretur. Huius duelli mentio fit in cap. 2. v. 1. et si autem omnibus, de pace tenenda, & lib. 2. f. 1. d. 27. v. 1. qui hominem, & §. si iussus. Apud Danos fecerunt omnes iures, & contentiones duello committentur, Kratizius lib. 2. Danie. quem morem sublatum ab Harald Rege restituit, & revocavit Canutus eorum Princeps, ut idem scribit lib. 5. Ab his populis ad Saxones usus transit, tum deinde à Saxonibus ad Francos, & Gallos, atque Longobardos, ut suprà ex eorum legibus probatur. Siquidem Longobardi ex Scania, siue Scandia Danie regione in Italiam, & alias deinde provincias exundarunt, sed inter omnes nulli huic duelli sese magis implicarunt, quàm Galli, & Hispani, ut ex eorum legibus suprà relatis patet, in quibus forma, & conditiones servanda in his duellis præscribuntur. Nec tantum moris fuit laicis omnes controversias dubias duello definire, ut constat ex cap. 1. de pargat. 2. l. 1. & ex presentis 2. ex S. Agobardo in opusculo tum de hoc argumento, tum in epistola ad Eudocium Imperatorem: ex Anonymo de milicis sancti Benedicti c. 1. ex Gofrido Vindocinensi in epist. ad Petrum Savonensem Episcopum lib. 1. Audimus dicitur Episcopus, Reginaldum Cheshillium clericum vestrum, cum Domino Guillelmo marchio nostro duellum cepisse, nullum tamen ex sua patre, vel ex parte monachi habuisse: quod quia sancti leges nulla ratione fieri permittunt, & sacri canones omnino ut fiat, interdum, humiliter nos rogamus, ut quod in Episcopatu vestro ab ecclesiasticis viris contra ecclesiasticam regulam presumptum dignificetur, vestra auctoritate irritum fiat, & corrigatur, ne forte pericula consuetudine prævalere hominum iniquitas canonica æquatur, & sic, quod absit, subdatur veri-

tati falsitati. Si verò Reginaldus vestri clauis sancta Ecclesia agitare, & Romanorum decreta Pontificum, quæ inter ecclesiasticos virum monachatum penitus prohibent, annulare conatus, contra eius iussus conatus humilitatem Romanæ Ecclesiæ, quæ iussu crepare, & superba prætere nauti, appellamus. Ex veteri historia Canonici Laudouensis de quodam Anselmo religioso, cui thesaurus Ecclesiæ servandus tradebatur, relata à Iorio in notis ad epist. 168. Corin. in illis verbis: Non equum partem foris disceperis, aurifici eundem vendendi causâ tradidisti, prius ab eo acceptâ fidei sponsione, quod nulli se huius rei fuisse auctorem preparare: sed cum item aurifici aurum illud, sine lapides sufficiens vendideris, cum Dei Canonici Laudouenses superuenientes auri sculpturas recognoverunt, & statim querimoniam felle præfatum aurificum à iudice comprehendere fecerant. Ille comprehensus, atque perterritus, ab Anselmo sibi in tradita fuisse emissus est. Vide Laurentium redolens, & contra Anselmum in negantem duelli contemne congressus, priusquam superatus, & elatus est, forsitan, ut multi putarunt, pro fide violata reatu, quia promiserat eidem Anselmo, quod cum non derogeret. Pro hac ergo callosa Anselmus nimis elatus, quia sibi conficere erat & si furum fecisse, & tamen adversariam superasse, multatque tandem ab hominibus, qui se inuicem esse clamabant, acquiescere, ad maiora seculum perpetranda provocatur. Et cum duellorum concessio apex esset supremæ potestatis, quæ tale suorum Dominis iura ditionum suarum terminis concedebat, ut notat Chopsius lib. 1. de iure Antiquo, clerici qui exempti sunt à iurisdictione seculari, non poterant huic legi satisfacere; ad eam tamen inuicem vocabantur, ut refert Mathæus Pasit. in Henrico 111. lib. 1. Clerici scilicet, & taliter affliguntur, non solum tractantur ad iudicium seculare, sed et assertus, coguntur in iudicium subire. Exempla huius duelli refert Dicitur lib. 4. diffinitio. mag. cap. 4. f. 1. 2.

Deinceps sciendum est, duellum hoc omni-
tari contrarium esse, diuino scilicet, gentium, & ciuili, ut probatur Ayala de iure belli lib. 1. cap. 3. Bronchoff. tom. 2. miscel. affri. 76. Beyerlinch verbo Duellum, tom. 2. aliis relatis Boetius de duello, cap. 2. per totum. D. Ioannes de Latreā d. alleg. 117. ex non. 35. Iuxta diuino opponitur, pemsd quia ille actor iuxta diuino contrarius est, per quem Deus tentatur, contra præceptum illud relatum cap. 4. Matthei: Non tentabis Dominum Deum tuum. Sed per tale duellum Deus tentatur, cap. monachibus 2. g. 4. D. Thom. 2. 2. q. 95. art. 8. Nec obstat factum Davidis relatum 1. Samuel. cap. 17. nam S. Rex duellum cum Goliath iniuit ex inspiratione diuina, & insinuat prophetico, & ita hoc singulare factum Davidis in exemplum tractandum non est; siquidem per illud iudicator, ut Deus eâ pugna manifestum reddat per victoriam, utra pars foueat iustam causam, cap. 1. de final. de pargat. vngar. Secundo, quia cum aliquid prohibetur, quodam iure videtur etiam prohibendum omne id, per quod petuntur ad illud, l. oratio 16. §. de sponsat. cap. cum quid vna, de R. l. lib. 6. sed iure diuino prohibetur homicidium, cap. 9. Deuterom. Igitur, & duellum, per quod petuntur ad illud. Iuxta etiam gentium hoc duelli genus contrarium esse, ita probatur potest. Ille actus iniustus est iure gentium, qui repugnat æquitati naturali, quâ ius gentium nititur. Sed hoc duellum tepugnat naturali æquitati,

9.
DUELLUM
OMNI- IURE
CONTRA-
RIUM.

nam æquitas naturalis funder, ut facinorosi puniantur, & innocentes absolvantur; quod in duello non contingit, cum in duello succumbat sæpe iustus, & in innocens; violat autem iniustus, & qui malam causam fover: ergo duellum contrarium est iuri gentium. Etiam iuri civili duellum aduersari constat, siquidem in criminalibus ius civile requirit probationes licet meridiana clarior, *l. vlt. C. de probat.* sed tales probationes in duello non admiit: ergo ius civile duellum ad probationem delictum non admittit. Deinde quia eo iure attentio reus absoluitur auctore non probante, *l. qui accusare 4. C. de eisdem.* Unde absurdum est, ut reus quando probationes deficiunt auctori, eius arbitrio armis decertare compellatur. Accedit quia Magistratus subditos suos ad arma proficere pati non debet, *l. si cuius 13. §. sed si inter duos, ff. de testificat. l. quidam 21. §. de rebus credit.* Igitur deficientibus probationibus, aut iurejurando, iudex causam decidere debet, *l. ad mandatum §. de iureiur. l. generaliter 12. C. de rebus credit.* aut reum absoluit, *l. negantes, C. de O. & A.* Facit textus in *l. vlt. C. de gladiis, lib. 11.* ubi Constantinus ita statuit: *Crimen spectantia in otio civili, & domesticis quærit non placent; quapropter unius gladiatores esse prohibemus.* Et licet Imperator ibi agat de his, qui vel lo ludo gladiatores gladiabantur, de quibus in *l. eius qui, §. final. ff. qui testantur, l. si quis mihi, §. si quis plane, ff. de acquir. heredit. l. si quis filio, §. sed & si quis, ff. de iniuria rapto;* vel qui operas suas locabant, ut cum bestiis pugnarent, *l. 1. §. sed & si quis operas, ff. de palliando;* tamen eius dispositio sua generalitate rectè quoque de huiusmodi duello accipi potest, ut post Barolum, Iasonem, & alios probat Bocerus de duello cap. 2.

His premisiis apparet vera ratio præfatos prohibitionis, quare videlicet clericis inhibeat duellum iniure illud offerendo, vel acceptando. Nam eodem omnis effusio humani sanguinis illis prohibetur, ut probati supra in cap. penult. de homicid. & in duello plerumque homicidium, vel saltem sanguinis effusio contingit, ut ait Carnotensis episcopus, 241. ibi: *Autemachia vix, aut nunquam sine sanguinis effusione transigi solet;* mortali clericis prohibetur. Si ergo dimicatio in bello agitur, quantumvis iusto, clericis prohibetur, ut probati in cap. penult. de homicid. quando magis pugna in duello illis interdici videtur. Inste ergo Alexand. III. in præfatis statuit clericis sponte duellum offerentem, vel acceptantem, & depoñendum esse; non tamen hanc depositionem incurant ipso iure, ut voluerunt Sylvesterus, Azmilla, Angelus, & Tabiena relati à Gibalino in Synopsi censur. verbo Duellum. Nam dumtaxat sententia deponendi sunt, ut probatur sententia de censur. diffinit. 31. sect. 4. num. 4. Sanchez lib. 2. summa, cap. 39. num. 18. Giballina ubi supra. Omnes etiam alij duellum incurantes variis poenis, ut temporalibus, quàm spiritualibus ex oculis constitutionibus plectuntur. Poenis spiritualibus primò excommunicantur, absolutione Pontifici reservata, ex constitutione Clementis VIII. Trident. sess. 15. cap. 19. Secundò priuantur ecclesiastica sepultura, ut probat Diana p. 11. tract. 6. resol. 26. lañe Morga tom. 2. diffinitio. mor. tract. 2. diffinitio. 11. etiam si signa præsentantia dederit. Martinus lib. 1. §. fol. cap. 110. Tertio clerici sunt priuantur beneficiis obiectis, & inhabiles redduntur ad alia obiectanda. Poenæ

temporales sunt, primò priuatio dominiorum, quam patiuntur Principes subiecti Romanæ Ecclesiæ. Secunda infamia perpetua. Tertia poenæ lætæ Majestatis. Ex quibus omnibus tantum poenæ excommunicationis est lætæ sententiæ; ceteræ vero sententiæ secundæ. Pertinet autem, quæ huius poenæ afficiuntur, sunt primò pugnantes, ceterumque patiens, qui excommunicatur, & priuantur ecclesiastica sepultura, si in duello decesserint, & perpetuò infames existunt. Secundò excommunicantur Principes, qui locum ad morum machinam inter Christianos concesserint, qui etiam priuantur dominio loci. Tertio excommunicantur qui consilium dederint, aut quæcumque ratione fauerint duello. Tandem simili censurâ foris spectantes, disidentes, comitantes, & spectantes duellum, etiam, & alias poenæ referunt & exponunt Sanchez lib. 1. summa, cap. 39. num. 27. Bonac. de censur. diffinit. 2. q. 6. punct. 2. num. 15. Castropala tract. 6. oper. mor. diffinit. 2. punct. 7. num. 19. Giballinus, & Socerius supra. Et ad hodie præteritum innocentem appendere possit duellum offerri, vel acceptari honoris tuendi causâ, examinat latè P. Meudus in flor. de err. 1. quest. 21.

Nec obstat dahinandi ratio, supra adducta, nam duellum potius iniustum est ex causa, quia continet quendam speciem falsitatis, & mendaciæ, propter impatiarum, & defectum causæ, & obiecti; & pluries euenit victum fuisse, & mortuum in palestra illum, qui in se pugnat; victorem verò evadere eum, qui mendacium sustinebat; quia ut inquit Lilius lib. 30. cap. 30. *Mors belli communis; nec est quædam ratio, quam in prælio, utriusque respondent.* Permittit enim Deus plerumque in istis duellis innocentes ab eo, à quo accusantur, crimini succumbere, & necari propter alia eorum peccata. Unde Rhotarius Rex lib. 1. legum Longobard. tit. de mansuetudine, inquit: *Quia incerti sumus de iudicio Dei, & multis audimus, per pugnam sine iusta causa suam causam perdere.* Sed propter confusum genus nostræ Longobardorum legem impiam veteres non possimus. Ex l. 8. tit. 34 p. 7. ibi: *Que in totis casis, se pueris la verdad, & velle la monstra.* Facit illud Thucydides lib. 4. pag. 293. *Quod si quis, sine iure suos suos viribus hinc, certo aliquid conficiunt sibi publicetur, ne si, si sua spe frustretur, agri ferat, cum videat complures iam amica, & qui iniuria aliorum iusticiæ velint, & qui viribus suis, ac potentia aliquid acquirere posse sperant, illos non modo vincunt, repente potestatem non habuisse, sed ut ipsos quidem insolentem evulsit.* Nos verò ut aliena acquiruntur tantum abstinere, ut sua quoque amiserint; non enim idcirco vltio semper est felix, quia iniuria expressa; nec robur, & potentia, quantum cum libris spe comitantia, firma existunt: expiationem autem fieri, & fortuna in rebus damnantur. Vltis excoipilis probant Ferretus de duello. Lancellopus Contradus cod. tract. p. 1. cenchy. 5. Ioannes Baptista Vitruvius in tract. de iustitia belli, Hieronymus Ficus in libello de iustitia de duello. Bernegerus ad Tacitum, q. 51. D. Ioannes de Lartes allegat. 127. num. 38. Unde duellum iniustum vocat ceterum Horthomannus de feudis cap. 45. & elegantissimè inquiritur in duella Carolus Sebastianus in polit. Christi. 1. p. cap. 41. Quare nec deficientibus probationibus lus ambigua per duellum decidenda est. Nec obstat augmentum deductum ex veteris legibus diversarum nationum, apud quas duella

IO.
TRADITUR
RATIO DE
GEMINI.

11.
DICTUM
VIRI
TAMEN
710.

duella permittiebantur; nam quamvis inter eas duellum susceptum fuisse reperitur, tamen id nunquam iure factum fuit: quare in Hispania Reges nostri Catholici Ferdinandus, & Elizabeth anno 1480. omnino duella prohibuerunt, adiunctis poenis pugnatoribus, mediatoribus pugnae, & paritis, ut incurrant notam proditorum, & bonorum amissione plectantur sisco applicandorum; & pugnantes poenis corporalibus afficiuntur, ut si provocatos ad pugnam aduersationem occiderit, seu vulnerauit, capitali supplicio puniatur, l. 10. tit. 8. lib. 8. *Recopil.* In Gallia etiam Regis edictis duella prohibita fuisse, probat Ruadus *al.* in duella, pag. 63. usque ad 81. quibus prohibitionibus addenda sunt elegantissima Theodorici Regis verba apud Cassiodorum lib. 3. *var. cap.* 24. ibi: *stud prateren vos credimus adiuuantes, ut non in vos, sed in hostem sentire cupiat: res parua non vos ducit ad extrema discrimina, acqiescite iniuria, qua mundus latetur: cur ad monachiam recurritis, qui venalem*

iudicem non habetis? Deponeite ferrum, qui non habetis inimicum, pessime contra parentes erigit brachium, pro quibus constas plerique merentium. Quid prodessit homini lingua, si causam agas manu armata? aut unde pax esse credatur, si sub ciuitate pugnamus? Quare cum inter improbos homines duella nec hodie tadicito extitit, tam ecclesiastici, quam saeculares Principes, nec ecclesie quiescent, non ideo tamen ea iusta, & honesta credi debent.

Supra traditae assertioni opponi possunt textus in cap. 3. de *troug. & pace*, iussu Cironij interpretatione ad eundem titulum, quam retuli, & relecti in eius commentario: & textus in *can. 17. Concilij apud P'erm.* in illis verbis: *Si qua mulier se proclamauerit, quod vir suus nunquam existit cum ea, exeat inde ad crucem; & si verum fuerit, separetur, & illa faciat quod vult.* Cuius veram interpretationem dedi in cap. 3. de *frigidiis & maleficiis*.




TITVLVS XV.

De sagittariis.

CAPVT I.

Innocent. III.

 Item illam mortiferam, & odibilem ballistariorum, & b sagittariorum aduersus Christianos, & Catholicos exerceri de cetero sub anathemate prohibemus.

NOTÆ.

COMMENTARIVM.

1. *Innocent. III.* In prima collectione, sub hoc *tit. cap. vni.* legitur Innoc. II. & recte; addendumque est in *Concil. Lateran. generali, can. 19.* ubi ita patiens canon habetur: *Artem autem illam mortiferam, Deo odibilem, ballistariorum, & sagittariorum, aduersus Christianos, & Catholicos exerceri de cetero sub anathemate prohibemus.* De hoc Concilio nonnulla adduxi in cap. 1. de *troug. & pace*.

2. *Sagittariorum.* Sagitta dicitur isacolum, quod atcu mittitur, cap. 2. de *delict. pueror. l. final. ff. de iure iurantis, l. 2. C. quae res exportari.* Hinc sagittarius, qui sagitta torquet. Suetonius in *Vespasiano*, ibi: *Syracusae praemis exercitum, hic quodraginta milia sagittariorum.* Omnium optima sagittarii sunt qui fugientes, & avertis isculantur, & irdunt perinde ac aduersi. Lucanus.

Orion, & missa Parthi post terga sagitta.
Plura de sagittaria & sagittariis D. Petrus de Abonza ad hunc titulum, ubi recenset nationes apud quas bella cum sagittis aguntur.

c. Christianos, & Catholicos. Non enim omnes Christiani sunt Catholicos; nam qui in haerem prolapsi sunt, Christiani dicuntur, non veros Catholicos, ut fuisse probauit in *can. 22. Concilij Illiber.*

Leet in primo hominum statu arma tantum.

*— Mors, vngues, dentesque fuerunt,
Et lapides, item silvarum fragmina rami.*

Lucretius lib. 5. de rerum natura, l. 1. *armum 41. ff. de V. S. l. 3. §. 2. ff. de vi & vi armat. §. recuperandi, in fine.* Insist. de *luerdill.* proinde Horatius *satyr. 3. canebat.*

*Fugibus, & pugnis, dehinc fustibus, atque
ita porro*

Pugnabant armis, quae max fabricauerat usus.

Tamen effecente hominum malitia, & dominandi cupiditate, cum bella crebrescissent, arma seculora inuenta fuerant, quibus oculum seculis, crudelitique fuit genus armorum, quibus sagittariorum, & ballistarum: tum quia sagitte veneno essent illius, ut referunt *Alanus lib. 9. hislor. animal. cap. 15. Dioecorides lib. 6. cap. 20. R. rhodiginus lib. 23. lection. cap. 10. Ouidius 1. de Penia, elegia 2. & lib. 5. Tristium, eleg. 8. Lucanus lib. 3. ibi:*

Tinxere sagittas errantes Sythia populi.

Sidonius in *panegyrico*, Quare aliquando Reges legitimis armis ecclesiae sanus duxerunt, quam sagittis, aut ballistis vit. Quare Gislelmus Beito lib. 2. *Philippides*, refert Philippi Augusti temporibus incognitos fuisse arcus, & ballistas: *Francigenis nostris illis ignota diebus*

*Res erat omnino, quid ballistarius arcus,
Quid ballista foret.*

Ballistæ autem sunt catapultæ, siue machine quædam, quibus in hostes vibrantur, & emittuntur grauioris ponderis lapides ad eos conuertendos. De his Synasius *epist.* 133. *ibi: Non mihi otium aliena arti mentem applicandi; accinger enim, ex horribus lacula emittentes valida lapidibus, graues machine petras mitentes, instrumenta ad iacendum lapides.* Cicero *11. Tusculan.* *ibi: Vi ballista lapidum, & reliqua tormenta eo grauiora emissiones habent, quo sunt comenta, atque abutula uolumentis.* Iosephus *lib. exidid. Hierosol. Talem pondus erant lapides, qui mittebantur.* Agellippus *lib. 3. cap. 2.* Alij telis. Alij ballistis hostem uigebant. Illustat Lipsius *lib. 9. polyorcticen. dialog. 3.* Sed & ferè trabes eiusmodi tormentis maximo impetu in medium hostium aciem contorquebantur. Siluius Italicus *lib. 1. de bello Punic.*

Adulteris stridula uocis

Phocæis effudit uassus ballistæ molaris,

Atque eadem ingentis motu ponderis steli.

Ferratam excutens ortum, media agmina rumpit.

Hoc nomine veniunt tamen torrèntia bellica ad muros diruendos, aut contutendos, ut refert Liuius *lib. 27.* dum Saguntii oppugnationem describit. Ouidius *lib. 1. tristium, eleg. 2.*

Nec lenius laterum tabula fringitur ab undis,

Quam graue ballista mænia pulsas omis.

Seneca in *Hippolyto:*

Non arma solum miles aptabat manu,

Nec tota clausa frigera saxo graui

Ballista portas.

Eiusdem generis fuerunt arbetes. Cicero *lib. 1. offici. 1. ibi: Qui positis armis ad Imperatorem suum confugerint, quamuis arbes motum percusserint, sunt recipiendi.* Vithaprox uero ballistarij, & sagittarij vario genere telorum, carbess, & fallacis, & sagittis. Differentiam tradit D. Vidorus *lib. 18. orig. cap. 7. & 8.* quædam erant in modum sphaeræ, aut cylindri, quæ propter grauitatem longè non ferebantur. Illis pennas addiderunt Creteotes, ut velociores facerent. Forerunt etiam quadrelli ideo dicti, non ut quidam putauerunt, sed quia arctius quadrarent arcibus, & ballistis; quod quædam quadratam habebant. Eorum meminit Guillelmus Brito *lib. 2. Philippidos, ibi:*

Nec tamen interea cessat ballista, nec arcus,

Quæbellis hic multiplicat, pluit ille sagittas.

Sed hæc tandem desierunt, non tam vi præsentis constitutionis, quàm quia grauiora, & feruientiora instrumenta reperta fuerunt, tormenta videlicet ignea, vulgò *ruis*, & *alcabuces*, quibus pilæ plumbeæ ceperunt mitri.

His soppositis ut ad veram præsentis textus interpretationem perueniamus, Glossa & comen-

niter repetentes existimarunt in præsentis prohiberi artem ballistariorum, & sagittariorum, id est sagittis, & ballistis uti in bello iniuncto contra Christianos, non uero in bello iusto, in quo utrum apertè pogni, an insidiis vincatur, nihil ad iustitiam interest, ut ait D. Augustinus in *cap. Dominus* 2. 23. *quasi. 2.* & ut Poëta cecinit:

Delus, an virtus, quisquis in hoste requirat.

Homerus:

Conscie sine dolo, sine strilla cominus eris.

Vnde docent artem hanc ballistariorum, & sagittariorum non prohiberi ab Innocent. II. in bellis iustis, quia tunc ut alijs armis, ita & his moniferis uti licet. Verùm hæc communis interpretatio sustineri nequit: tum quia absolute Innocent. II. improbat artem istam in bellis contra Christianos motis: tum etiam, quia si bellum iniustum erat, alia potiori ratione, videlicet iniustitie, nec his armis, nec alijs contra Christianos, immò nec contra Paganos uti potest. Hæc omisâ solutione Torrellana de magna *lib. 2. cap. 39. ex num. 24.* Martinus Delrius *disquisit. magic. lib. 3. cap. 1. quæst. 4. sect. 4.* quos sequitur Barbosa in *præfati.* num. 2. asseruerunt, sagittarios, seu ballistas esse homines fœderatos cum demone, qui illis vicissim pollicetur, se adfuturum, ut quem longissimè diuisum uolent, infallibili idu traiciatur; & ita artem hanc nefariam improbare Innoc. II. in præsent. Sed nec hæc sententia sustineri potest ex rationis proximè adducta; nam si ars hæc malefica esset, & ex pacto cum demone iniro procederet, nec eâ etiam contra Paganos, aut hæreticos uti liceret. Tandem Cirouius in *parat. ad hunc titulum*, docet in præsent. ballistas, & sagittas prohibitæ non fuisse, sed potius quoddam militem genus his utentium, qui semp, & erudes admodum erant, Ruptarique dicebantur, de quibus egi in *cap. sententiam, nec clerici vel monachi.* Sed cum expressè agat Innocentius II. de ballistariis, & sagittariis, non est ratio, cur de Ruptariis eum accipiamus. Quare his omisâ, uerius dicendum credo, in præsent. textu non damnari omnino artem ballistariorum, & sagittariorum, sed tantum caueri, ne cuiquam liceat artem eam exercere aduersus Christianos, & Catholicos; ut enim in *cap. ita. 6. cap. quod olim 12. de Iudæis*, prohibetur est sub excommunicatione arma, ferrum, lignamina ad infideles contra Christianos deferre; ita etiam in præsent. sub eadem pena prohibetur artem ballistariorum, seu sagittariorum contra Catholicos exercere, eas fabricando, & ad inimicos fidei deferendo, ut eas ad externos exportari vetant Imperatores in *l. 2. C. quæ res export.* vel eas sciendo contra Christianos, ut ita validiores barbari reddantur.

TITVLVS XVI.

De adulteriis, & stupro.

CAPVT I.

In ² Exodo.

E I^b seduxerit quis^c virginem necdum^d desponsatam, dormieritque cum ea,^e dotabit eam, & habebit eam uxorem. Si pater^f virginis dare^g noluerit, reddet pecuniam iuxta^h modum dotis, quam virgines accipere consueverunt.

NOTÆ.

1. **E** *Exodo.*] Ita etiam legitur in prima collectione, *sub hoc tit. cap. 1.* & ex Exodi libro citatur textum hunc Ivo Carnot. *part. 16. Decreti. cap. 191.* repetiunturque hæc verba in *cap. 22. Exodi*, proxi in præfenti referuntur. Unde constat textum hunc deductum fuisse ex præcepto veteris legis Moysi datæ, & ab Ecclesia fuisse suscitatum & renouatum præceptum illud; nam licet præcepta legis veteris iudicialia post Christi passionem sine motu, ceremonialia autem mortuifera, ut probatur in *cap. translatæ, de consuet.* tamen possunt per Ecclesiam aut iopremos Principes suscitari, & leges ferri eius sensus, cuius sunt leges per Moysen datæ, nisi si quæ sunt leges, quarum tota substantia ad tempus Christi venturi, & Evangelij nondum reuelatæ pertineat; aut nisi Christus ipse contrarium in genere, aut in specie constituerit: nam his, causibus demptis, nulla potest ratio excogitari, cur quod olim fuit Moysi lege constitutum, hodie non possit suscitari, & pro lege caeteri; nam ut aiebat Tertul. *de pudicitia*, libertas in Christo non fecit innocentie iniuriam: manet lex tota pietatis, veritatis, constantiæ, castitatis, iustitiæ, misericordiæ, benivolentiæ, pudicitie. Unde varia præcepta legis veteris in noua legimus in *cap. 1. supra de homicidio, cap. 1. & sequentibus, de iniuriæ, & damno dato*; notante Gratius lib. 2. *de iure belli, cap. 1. & nos in d. cap. translatæ.*

2. **b** *Seduxerit.*] Hinc octo Doctores, seductionem esse causam huius constitutionis; & latè disputant, an seductio hæc sit necessaria sit, ut sine ea non detur obligatio in stupratore dotandi, aut contrahendi matrimonium cum virgine à se corrupta; nam seductore iò præfati accipitur pro blanditijs, factis, aut verbis, aut precibus importunis virginis voluntatem allicere, ut apud Terentium ibi:

Etiæm nunc pro seducere ista uultus postulas

Et ita seductionem necessariam esse, ut virgine consentiente non detur obligatio in stupratore ducendi, aut dotandi eam, docuerunt Sotus lib. 4. *de iust. quest. 2. art. 1.* Bañez, Salo, & alij, quos refert & sequitur Sanchez lib. 2. *de matrim. dispus. 14.* Suarez, Azor & alij, quos laudat & sequitur Barbosa in *præfati*, Fagnandez in *G. de alioq. præcepto, lib. 6. cap. 8.* Quod verum credo, si tam procax puella fuerit, ut abiectio om-

ni pudore, meretricij morte iuuentem ultro appellaret; nam si non aperto iocetpellaret ornatum, tamen vultu, & blanditijs effecerit, ut ipsa appellator, nihilominus adesse obligationem ducendi, seu dotandi eam putauerim; alioquin ferè semper emulari possent stupratores, capios se modicis, & illecebris poclarum; quo casu accipienda sunt Ant. Mathæus de crimin. ad lib. 48. Pandect. tit. 3. cap. 7. Caneet. lib. 3. variis. cap. 21. num. 47. & eo casu, quo sponte virgo ducatur, nō datur obligatioem eoi ferendi hanc circumstantiam, probabile dicit P. Mendo in *statuta, disert. 5. q. 8.* licet contrarium probabilis dicat. Et virginē iuranti se ab aliquo cognitam, credendum esse docet Faber in *suo cod. lib. 4. tit. 14. diffin. 18.*

c *Virginem.*] Licet alijs pro virgine etiam accipiat virgo honestè viuens, *L. inter 10. §. de V. S. l. 3. §. 1. ff. de concubin. l. 41. ff. de ritu nupt. l. 6. §. 1. ff. ad leg. Jul. de adult.* tamen in præfenti strictè pro virgine accipitur, cum qua committitur stuprum.

d *Nondum desponsatam.*] Alijs adulterium, non stuprum cum ea daretur: unde constat præfentem textum spectare non ad priorem partem huius Rubricæ de adulteriis, sed ad secundam, videlicet de stupro.

e *Dotabit.*] Glossa hinc interpretatur, idest donationem propter nuptias faciet, quæ donatio appellatur dos uxoris, seu dotalitium, *cap. ex parte, de foro compet. cap. plerumque, de dona. inter: & obsequantur Cuiac. lib. 3. obsen. cap. 4. & vetè, nam apud Hebræos non solum uxores vitis suis dotem assignabant, ut constat ex lib. 2. *Abraham, cap. 1. vers. 14.* ibi: *Et accipere pecunias multas dotis nomine.* Et ex historia Regum, ubi dicitur: *Pharao Rex Aegypti ascendit, & cepit Gazer, accenditque eam igni, & Cananem, qui habitabat in ciuitate, interfecit: & dedit eam in dotem filio suo uxori Salomonis.* Expectatus ex Tobia *cap. 8. vers. 24.* ibi: *De omnibus autem, quæ possidebat Raguel, dimidiam partem dedit Tobie, & secus scripturam, ut pars dimidia quæ supererat, post obitum Tobie domino duceretur.* Verum & mariti aliquid de suo dotis augende causâ largiebantur, ut constat ex *cap. 34. Genes. vers. 12.* ubi cum Sichem Dinam requireret, et iuxta optas ambiret, aiebat: *Quæcumque statueritis, dabo: augete dotem, & mœnem postulas, & libenter tribuam.**

buam quod petieritis : tamen dote militi puellam habere norem. Et lib. 1. Regum, cap. 28. vers. 25. ubi David datus Michol centum præputiis Philistinorum. Probat Menochius de Repub. Hebræor. cap. 21. & ita verbum hoc, *2. mibi*, accipitur pro dote uxori à marito assignanda : sequentia autem verba ea, iuxta modum dotis, sunt accipienda de vera dote, quam virginis accipere consueverunt à parentibus suis, vt exponit Menochius supra, cap. 21.

6. f. Si verò pater virginis.] Quibus verbis supponitur magna potestas parentum in matrimonio filiarum apud Hebræos, quam variis sacre pagine auctoritatibus probat P. Menochius d. cap. 21. & apud Romanos, aliasque nationes eandem potestatem Patres habuisse in nuptiis filiorum, fuisse probatum in cap. 1. de despons. pupub.

7. g. Noliurrit.] Sed queritur, an quod lege distincti patri conceditur, idem filie concedendum sit, videlicet vt si ipsa, quæ violata est, nubere stupratori nolit, tamen sit dotanda. Et placuit dotandam esse : tum quia si patre dissentiente, de cuius coniunctione principaliter non agitur, manet obligatio dotandi, quatenus magis dissentiente ea, de cuius coniunctione agitur. Tum quia cum dos pena iniuriæ itrogare sit, sequeretur ipsâ puellâ dissentiente, nullâ penâ affici stupratorem ; quod absurdum est, vt docuerunt Iul. Clarus §. siuprum, num. 3. P. Menochius de arbit. casu 288. num. 18. Farinæ. in præxi, q. 147. num. 105. Aor. Matchæus d. cap. 7. num. 17.

8. h. Iuxta modum dotis.] Modus enim in dotibus præscriptus fuit secundum statum, & dignitatem virorum, tam apud Hebræos, vt probat Pineda de rebus Salomonis lib. 5. cap. 2. num. 4. quàm apud Romanos, ex lege Iulia de maritandis ordinibus, cuius vestigia extant in l. si filia 41. de legat. 3. l. cum de in rem verso 6. ff. de usuriis, l. quæ 59. l. sine 60. de iure dotium, l. non tantum, de iur. & iur. l. Atulius, de pati. dicit. l. Scia 10. de dote prælegat. l. Mania 49. ff. solut. matrim. l. 68. §. gener, ff. de iure dotium. Ex qua totor dabatur ad dote dandam, promittendamve, Vlpianus lib. singul. regul. tit. 11. cõque pertinet lex sine generali 61. ff. de iure dotium, siue ex lege Papia, vt nonnulli probant ex l. 2. C. Theodof. de inofficijs dationis, ibi : Dote ab

uxore marito data, filiis ex prioris matrimonio, si neque ultra dotationem, nec in fraudem legis Papia constituantur, de hoc repudiata nullum constare esse actionem. Sed malè, vt obicitur Merillos lib. 3. obsor. cap. 6. Maxima dos apud Romanos fuit quadraginta millia æris, posita ereui ad decies flosterium, idest quinq; & viginti millia aureorum, l. ania 77. §. vlt. ff. de condit. & demõstr. l. cum de in rem verso, §. 4. ff. de usuriis. Horatius lib. 1. satyr. 3.

— Decies centena dedisset

Huic parvo paucis contentis quinq; diebus.

Iuvenal. satyr. 10. in fin.

— Tyrusque palam gentilis in horis

Sremitur, & ritu decies centena dabuntur :

Non nisi legitime vult nubere.

Martialis lib. 2. epigr. 65.

Centena decies, quæ tibi dedit dotis.

Illustrat Gothofredus in d. l. cum de in rem, §. 1. Scipio Gentil. ad Apulei. in apolog. pag. 434. latè Henellius de dotalitio p. 1. §. 3. Gothofr. in l. 6. §. 1. ff. de usur. Calae. lib. 11. qq. Papin. in l. 39. ff. solut. matrim. & lib. 29. qq. Papin. in d. l. 6. §. 1. & in nouella 22. colum. 2. q. 7. qq. Pauli in l. 43. tit. de administr. iur. Ant. Augustin. lib. 2. comend. cap. 6. Soarez ad leg. Aquil. lib. 1. cap. 2. feil. 3. Liphus ad lib. 2. annal. Taciti, annot. 177. Samuel Petit. ad ins. Anticem lib. 6. tit. 2. pag. 453. Philip. Camer. cent. 2. veror. success. cap. 43. Lindenbrogus in glossar. verbo Dos, Ramirez ad Marial. lib. 2. epigr. 64. Bignon. ad veter. formul. cap. 52. Merillos lib. 3. obsor. cap. 6. & apud alias nationes modum dotibus præscriptum fuisse, probant Alexandr. ab Alex. lib. 4. dier. genial. cap. 8. D. Iosephus de Reies in l. quæro, ff. de iure dot. In præfenti casu dos æstimanda est iuxta morem regionis, in qua stuprum coniungit, & iuxta qualitatem tam virginis viciatæ, quàm viciantis, argumento textus in l. cum poss. 64. §. gener, ff. de iure dotium, l. si filia 43. ff. de leg. 3. l. cum de menciis 28. C. de Episcop. aud. l. si furiosus 25. C. de nup. l. si curatorem 9. C. de administr. iur. Ita vt attendatur omnino qualitates, quàm dotis nomine pater eius assignare valebat, vt considerant Salcedo in præxi, cap. 83. Didacus Perez in princip. tit. 5. lib. 8. ordm. Ansaldo de iurisdic. p. 4. tit. 7. cap. 1. n. 8. Gomez in l. 8. Tauri, Castillo de alimentis. l. 6. q. 7.

CAPVT II.

^a Gregorius Felici Episcopo Sipontino.

EXPECTABAMUS fraternitatem tuam suâ aliquos ad Deum prædicatione conuertere, & malè agentes ad rectitudinem reuocare. Quæ de re nimis contristatur, quia è diuerso in nepotis tui Felicis prauitate, tua euidenter, qui talem nutriti, culpa monstrata est. Peruenit itaque ad nos, quod superscriptus Felix Euangelii tui Diaconi filiam, quod nefas est dici, stupro deceperit. Quod si verum est, quamuis graui esset de lege penâ placendus, nos tamen aliquatenus legis duritiam mollientes, huiusmodi disponendo præcipimus, vt aut quam stuprauit, uxorem habeat ; aut centè si renuendum putauerit, districtius, ac corporaliter castigatus, excommunicatusque, in monasterium, vbi penitentiam peragat, ^b retrudatur : de quo ei nulla sit egrediendi sine nostra præceptione licentia. Ita ergo fraternitas tua, vt hæc compleantur, studeat, quatenus nihil de his aliquo modo possit omitti. Nam si quid, quod non credimus, lentatum fuerit, & illi graue postea periculum imminet, & te non leuis incipiet culpa respicere.

NOTA.

NOTA.

A Regimus.] Textus hic tribuitur in prima collectione, sub hoc tit. cap. 2. S. Augustino, sed male, cum sit sancti Gregorii Magni, & reperitur in regesto epistolarum ipsius lib. 1. epist. 42. ex quo illum transferibo, & ex eo citatur à Catenotensi part. 8. Decret. cap. 29. & ad eundem casum spectat epistola 40. ipsius Gregorii in eodem libro 2. ubi Pantaleoni notario in hæc verba scribit: *Questus, est nobis Evangelium Sipontina Ecclesia Diaconus, filium suum à Felice fuisse, quod dici nefas est, stupratum. Pro qua re se huius præcepti auctoritate fuisse ad Sipontinam civitatem profectus necesse est. & adhibitis tibi sapientibus iudicis tuis, cum omni subtilitate veritatem coram addiscere: & si ita reperies, cum quam stuprasti, aut uxorem falsis impialibus instrumentis accipias, aut corporaliter castigatum in monasterium cum priuatum committas, ubi penitentiam peragas, tradere sustinabis, ita ut nulla exinde ei sit quoquo modo egrediendi licentia, nisi hoc nostra permissio fuerit præscripta. Præterea quia supradictus Diaconus de hostibus se redemptum, ac propterea debitum haberi commemorat, ideo si talem eius substantiam non esse cognoueris, qua ad reddendum debitum ipsi possit sufficere, Felici fratri, & Coepiscopo nostro te iuvare precipimus, ut eius precum de Ecclesia tua non differas: quatenus supradictus Evangelus Diaconus sine tarditate aliqua à debiti possit necessitate, cui est suppeditus, liberari. De Metropoli Sipontina egi in cap. 12. de celebrat. Missar.*

b Retraditur.] Iuxta morem Ecclesie antiquum, quem probavi, & illustravi in cap. 1. de regni. Ex hoc tamen textu, nescio quo ducti fundamentum Ant. Gomez, Menochius, Farinacius, Iul. Clarus, & cæteri Criminalistæ deduxerunt, stupratorem virginis cogi tam ducere, aut dote: cum in hoc textu talis alternatio non statuitur, sed tantum iubeat Gregorius, ut qui vitiavit virginem, eam ducat, aut corporaliter castigatus, detradatur in monasterium penitentiae peragende causa; nec sit aliqua lea civilis, canonica, vel Regia, vel talis electio stupratori concedatur.

COMMENTARIUM.

EX his duobus textibus communiter DD. sequentem deducunt assertionem: Stuprum virginem tenetur eam in uxorem ducere, aut dote. Quæ assertio probari potest ex canone 66. Apostol. ibi: Si quis virginem sibi non desponsatam adnupta vel detinet, à communione suspenditur: non licitum autem esse eam ducere, sed eam detinetor, quam sollicitus, quamvis perperam sit. Illustrant eam vltra congeles à Barbosa in præsent, Petrus Gregor. lib. 4. part. 1. tit. 14. cap. 13. Amaya in l. final. num. 66. Cod. de iure fisci, Delbene de immunit. Eccles. tom. 1. quest. 8. dubit. 29. Balsamon in notacion. tit. de liciis, cap. 5. Bermondus de concubinis cap. de stupro, Agidius in l. Titio, fol. 98. ff. de eund. & demum. Diana part. 1. tract. 6. resol. 34. Caneccius tom. 3. variar. cap. 1. tit. num. 10. Gliballius de oficiis lib. 3. cap. 2. art. 6. confessor. l. Pichardus in manuali. ad præxim crimin. verbo Stuprum, Sanchez, Fagandez, exterique Moralistæ in 6. Decalogi præcepti. Anselmus de iurisd. part. 4. tit. 6. cap. 3. Thesaurus de D.D. Goua. in Decretal. Tom. V.

cl. 3. per totam, Mathæus de crimin. tit. de adulter. & stupro, cap. 7. Gutierrez lib. 2. canonie, cap. 37. Fontan. de pactis nups. glossa 6. Basilicus decis. 15. crimin.

Sed pro debitandi ratione præsentem assertionem ita insurgo. Matrimonia omnino libera esse debent, nec quis compelli debet ad matrimonium contrahendum, cap. cum locum, cap. veniens, cap. ad id, cap. gemma, de sponsal. ubi late probatur: ergo non debet cogi stuprator ad matrimonium contrahendum cum ipsa virgine vitata: immò etsi cogatur, matrimonium nullum erit, ex radiis in eo contentariis. Augetur hæc difficultas primò ex eo, nam qui damnus dar, tenetur illud resarcire, cap. finis, de iniuriis: sed qui virginem corruptit, damnatus dedit, non solum illi, verum & parentibus eius; quia ut aiebat Catullus in carmine nuptiali:

Virginitas non tota tua est, ex parte parentum est.

Tertia pars matri data: pars data tertia patri:

Tertia sola tui est: noli pugnare doctus,

Qui genero sua intra simul cum dote dederunt.

Igitur non solum debet virginem vitatam ducere, verum & parentibus damnum resarcire. Augetur secundò hæc difficultas ex eo, nam ex lege divina relata in cap. t. hoc tit. venebatur stuprator virginem à lege corruptum ducere, & dote: ut constat ex illis verbis, *dotabis eam; & uxorem habebis*: igitur nec Doctores poterunt dissimulandi statuere, ut ducere, aut dote retineatur.

Quæ dubitandi ratio ita fuleti non obstat, vera est præfens assertio, pro cuius expositione seire oportet, antiquos stuprum pro turpitudine accepisse, ut in castime Nelic:

Fædi, stuprumque sustinere quovide.

Et apud Nealium: *Sesque per me maluit, quam cum stupro redire ad suos populares*; ut notavit Festus Pompeius verbo Stuprum: postea tamen ad certam criminis speciem usus restringitur eam vocem, videlicet ad illicitum virginis deflorationem, licet etiam stuprum ad corruptionem pueri & viduæ honeste extendatur, l. inter 6. §. 1. ff. ad leg. Jul. de adul. l. hoc stuprum 101. ff. de V. S. §. item lex, Instit. de public. iudic. can. 65. Concil. Alieri: Unde stuprum distinguebat Anton. Mathæus de crimin. Stuprum est corruptio virginis, vel viduæ honestæ: licet à Consulibus ea differentia agnosceatur inter adulterium, & stuprum, quod adulterium committitur tantum in nuptum, stuprum in virginem, vel viduam, l. & stuprum, ff. ad leg. Jul. de adul. licet sepe in iure enim pro alio sumatur, l. inter, ff. de V. S. cap. verno 32. quest. 4. sicut etiam verumque, nempe adulterium, & stuprum, pro incestu posuit Tullius in orat. pro Scælio, ubi: *Adulterium fornicatio*. Ex pro Milone: *Clodium enim fornicatione nefarium stuprum fecit*. Dixi stuprum esse corruptionem virginis, vel viduæ honestæ, ut agnosceatur non esse reos stupri, qui cum feminis inhonestis congressi fuerint; excluduntur enim aetate, quæ etsi vitata sint, non publicum, sed priuatum iudicium competit, l. & si hodie 25. Cod. ad leg. Jul. de adul. l. inter 6. l. si quis fornicum 9. §. 1. ff. de adul. tit. l. si stuprum 25. ff. de iniuriis. Excluduntur etiam incestuæ, quarum consuetudo

extra legis penam est, quoniam licentiam stupri apud Aediles prohibebatur, *l. verum est 39. ff. de foris, l. si ea quæ 22. Cod. de adulteris*. Excluduntur etiam persone viles, veluti in capponis, & tabernis fruentibus, cum quibus congressus stupri nomine accusari nequit, *l. que adulterium 29. Cod. de adul. l. 1. § 1. ff. de concubin.* Quæ omnia eleganter complexus est Plautus in *Cureul.*

PAL. *Ita tuum amorem confesso semper si sapias, Ne id quod amas, populus si scias, tibi se probeat.*

Semper curato ne sis infestabilis:

Quod amas, non resistis profectibus.

PHÆD. *Quin leno hic habitas. PAL.* *Nemo hic prohibet, nec vetat.*

Quin quid palam est venale, si argenti non est, eras.

Nemo in quocumque publicâ prohibet viâ,

Divm ne per fœdum facias fœdum,

Divm te d'fines rapta, vidua, virgine,

Invenit & pueri liberi, amâ quâd libet.

Non tamen talis congressus cum his feminis impunetur manet: nam si illis vis illata sit, publica animadversio re vindicanda est, quemadmodum si tapeæ forent, *l. tunic. Cod. de rapta virgin. l. 3. §. præterea, l. 5. §. qui vocantem, ff. ad leg. l. ult. de vi public.*

6.

DE FORNIS
STUPRI.

Ut ad stupri poenas, tam ex iure canonico, quàm civili, & Regio perveniamus, sciendum est ex iure Cæsareo poenam huius criminis, esse publicationem dimidiæ partis bonorum, si stuprator honestus sit; sin verò humilis, coercetur in corpore cum relegatione, *§. item lex, Iustit. de publicis iudiciis*. Nec aduersus Paulus in *l. 4. ult. ff. de extradem. crimin.* ubi docetur non solum eum, qui puero, verum & qui mulieri, poellæque stuprum fecerit, perfectio flagitio capite puniendum; Imperitio, in insulam deportandum. Nam omisso Bartolo ibi, Catellano Cotta in *memoria, verbo Stuprum*, dicendum est cum Alciato *lib. 5. paradox.* Antonio Mattheo *dist. 12. de stupro, cap. 5.* regulariter stupri poenam capitalem non esse, sed cum maior eius improbitas fuit, veluti si valde honestas, & pudica feminas pravis persuasioneum illecebris circumvenierit, ut probat Duarenus *ad tit. ff. de adul. cap. 5.* vel si virginem immaturam corrupti, si honestior est, in insulam relegatur stuprator; si humilior, in mortallum damnatur, *l. si quis aliquid 38. §. qui nundum, ff. de paria. Xamar. part. 1. ver. iudic. de finis. 16.* & eo casu poena abscissionis nationum, & amissio dimidiæ partis bonorum reperitur statuta *lib. 60. Bassile. tit. 37. de adulter. cap. qui vult 81.* Alia de stuprante immaturam virginem coegerant Balsamus ad *nomenc. Phocij, tit. 13. cap. 15.* Iul. Clarus *§. stuprum, num. 9.* Grammaticus *decis. 22.* Gomez in *l. 80. Tituli, Menochius de arbit. causa 294.* Salcedo ad *B. Diaz, in praxi cap. 83.* Farinac. de *delict. iarnis, question. 147. ex num. 17.* Suarez *ad leg. Aquil. lib. 2. cap. 3. sect. 5.* Harpeus in *§. item lex, Iustit. de publicis iudiciis, num. 19.* Fontanella de *pall. nupt. tom. 1. clausula 5. glossa 1. part. 2. num. 73.* Elixius Danza *decis. 107. in addit. ad decis. 22. Carrobinus part. 2. rerum crim. quæst. 79. à numero. 29.* vel si ad concepitandum eam inceptam reddiderit. Exasperatur etiam poena cum tutor pupillam corrupti, *l. vnic. Cod. si quis eam, cuius*

tuor fuerit, Botellus tom. 3. decis. tit. 5. ad B. nem: si servus corrupti dominum, corruptor enim flammis subicitur, l. vnic. Cod. de mulier. que se propriis servis. Tandem poena augetur, si vis adhibeatur, siquidem stuprator lege Iulia de vi publica tenetur, *l. 3. §. præterea, ff. ad leg. Jul. de vi public. l. mariti 29. §. final. ff. ad leg. Jul. de adul.* Etiam ob stuprum damnati infamem sapient, quemadmodum & alius iudicis publicis damnati, *l. infames 7. ff. de public. iudic. proutantur reformationi ditione, l. 3. §. lege, l. ex eo 18. ff. de testibus.* Nec possunt sibi invicem aliquid testamentis relinquere, immo relicta auferuntur tanquam indignis, *l. mulierem 14. Item tabulis 16. §. 1. ff. de his que vi indign. l. miles 41. §. 1. ff. de testem. mili.* Videtur etiam intra annum luctus stupro cognita priuantur omnibus illis rebus, quas amittunt transientes ad secundas nuptias, *num. 39. Iust. tit. 2. §. ult. explicat Menochius de arbit. causa 288. num. 13.* Quæ poenæ locum habent, si stuprator accusatus intra quinque annos ex die admittit criminis, *dist. 1. mariti 29. §. hoc quinquagium;* & si cum vidua admittit sit, intra sex menses viles, *dist. l. 29. §. sex mensium.* Stuprum verò violentum intra annum vicissim accusari potest, *dist. l. 21. §. ult. l. querela 12. Cod. ad leg. Corn. de falsis.* Iure Pontificio stupratori clerico in foro interno imponitur penitentia decem annorum, *cap. præterea, 83. dist. latus* in iungitur penitentia septem annorum, *cap. decemum 12. question. 1. cap. hoc ipsum 33. quæst. 2.* In foro externo clericus depouitur, aut poenâ pecuniaria damnetur, *cap. si quis clericus, 81. dist. cap. later 2. quæst. 7.* Latus cogitur corruptam ducere, & si pater noluerit ducere, eam ducere; & si renuat eam ducere, corporaliter castigatur in monasterium deordinatur penitentia septaginta causâ, ex præfatis textu. Iure nostro Regio approbata est poena iure civili statuta in *l. 2. tit. 19. part. 7.* Sed generali consuetudine huius Regni poena præfentis textus à iudicibus secularibus etiam imponitur, ut referunt Gomez in *dist. l. 80. Tituli, num. 5.* Iul. Clarus *§. stuprum. Vela de delict. cap. 33. num. 7.* & condemnatur stuprator poenis corporalibus in defectum non contracti matrimonij; tum si illud celebret, ab omnibus poenis sententiâ comprehensis liberatur; & ita rectè pronunciar iudex secularis, videlicet condemnando in poenis corporalibus stupratorem in casum matrimonij non contracti: quod facere possit, etsi iudex ecclesiasticus cognoscit de hie data matrimonij contrahendi, quia crimen hoc est mixti fori, ut probant Ansidus de *iuriss. part. 2. tit. 6. cap. 3.* D. Iosephus Vela in *cap. 1. de officio ordin. verbo Stuprum.* An verò iudex secularis competens sit ad compellendum per eacertum vel alias poenas, eum qui fidem dedit matrimonij contrahendi, examinant Saechez *lib. 1. de marit. disput. 29. num. 9.* Bobadilla *lib. 2. polit. cap. 18. num. 236.* Bayo *lib. 2. praxis, question. 3.* Fontanel. de *pall. nupt. claus. 5. gloss. 5. part. 1.*

His suppositis apparet ratio præfentis assertionis; nam cum ob amissionem virginittat per corruptionem non ita facile possit corrupta invenire maritum, debet stuprator, qui illi damnum intulit, iniuriamque irrogavit,

7.

TRAD-
TUS PG.
CIBARUM
RATIO.

CLII

eam in vxorem ducere, aut legitimè dotare, vt pecunia suppleat defectum virginis, vt ita maritum æqualem invenire possit. Et licet hæc ecclesiæ ductudi, qd dotandi, nullo expresso iuris testimonio firmetur; tamen rectè deducitur ex cap. 1. hoc tit. vbi statuitur, vt stuprator casu quo pater virginis eam dare nolerit, teneatur tantum eam dotare; & in hoc cap. 2. iubetur stupratori, vt virginem ducat; aut si eam ducere renuat, corporaliter castigatus detradatur in monasterium penitentis peragendæ causâ; vnde loco huius pater corporalis vsu receptum fuit, vt stuprator dotem constituat. Quomodo autem stuprum probetur, & aliis, quæ ad hoc delictum spectant, latius prosequitur Ansalvus vbi supra.

Nec obstat doctus ratio suprà adducta, pro cuius solutione Innocent. in præfati docet, propter viti delictum virtute consensu iactè præstiti tempore stupri, in ipsa delicti perpetratoe virtutem libertatem amisisse, & quodammodo in hoc matrimonium coconsensisse. Aliiter Ananias in præfati, num. 3. ait coactionem, de qua hic, non esse præcisum, seu causantem; & ita libertatem matrimonij non impedit. Sed facilis responderi potest ex traditis in dist. cap. cum locum, discrimen esse constituendum inter metum iustum, & iniustum; nam licet metus iniustus illatus tollat voluntatem, & viciat matrimonium; tamen metus iustus, vt in præfati adfuit, eius valorem non impedit. Nec interit, quod in hoc cap. 2. corporali pœnâ afficitur, qui virginem, quam stupro decepit, vxorem habere renuit; quod non statuitur in pœnam noui contracti matrimonij, sed potius in pœnam illius stupri, ne alias cum tanto seductæ mulieris incommodo maueret imponitur, atque ita non quia non duxit, sed quia seduxit, imponitur pœna. Nec obstat quod dicimus, per deflorationem virginis iniuriæ inferri non solum illi, verum & eius parentibus, & ita omnibus satisfaciendum esse. Nam responderet, quod cum principaliter iniuria inferatur virgini, illi satisfaciendum est tam ducendo, aut dotando. Nec obstat secunda difficultas deducta ex dist. cap. 1. hoc tit. cui variè satisfactum. Interpretes, dum docent, sepe coactionem pro dissensu apponi, l. sepe § 3. ff. de V. S. Sed verius credo ex lege vetiti stupratoris virginem seductam ducere, & dotare teneri eo modo, quo viti dorem constituunt vxoribus, hoc est in dotis augmentum aliquid assignando, non verò dotem omnino constituendo. Cum tamen hæc dos vxoribus à marito assignanda hodie non ita necessaria sit, ideo vsu receptum est, vt stuprator tantum virginem seductam ducere teneatur, non verò dotationem propter nuptias in eam conferre; & rectè potuit vsus dissonare, quæ lex diuina coniunxerat. Non enim simpliciter dena inbet verum, quæ fieri, sed ita iubet, si non dissentiat pater. Si igitur patri permittitur coniuncta separare, innot magis vsu talis dissensio admitti potuit. Quid enim si virginis fiducia legis diuinæ licentia peccet? vt Hollaudius corrigisse narrat Grotius lib. 3. mandator. cap. 35. Nonne hæc iusta dissensionis causa erit? Reddè ergo vsu fortis receptum est, vt tamen ducere, aut dotare teneatur; & si cum stupro coniuncti rapus, tenebatur rapto ducere, & dotare, iuxta Concilium Tridentinum sess. 24. cap. 6. de reformatione.

Sed suprà traditis obstat textus in can. 14. Concilij Albi. In illis verbis: Virgines, quæ virginis suam non custodierint, si easdem qui eas vio-

lauerint, acceptas, & inuenerint maritos, eo quod solas nuptias violauerint, post omni anni penitentiam reconciliari debebunt. Ex quibus verbis apparet, penitentiam iniungi virginibus corruptis, etiam nobilibus stupratoribus. Igitur quia licitum non est matrimonium iniet seductorem, & puellam seductam. Pro cuius difficultatis expositione sciendum est, prima Ecclesiæ sacula omnino permittas nuptias non fuisse inter stupratorem, & virginem seductam, sed tantum penitentiam prius iniunctâ ad communionem recipi. D. Basilus ad Amphiboliam cap. 40. ibi: Puella, quæ prater patris sententiam fornicatorem sequuta sunt, reconciliata parentibus videtur eis remedium accipere: sed non proximo ad communionem restituantur, sed triennio penitent. Quo modo canonem inuicem quodammodo dissimiles Carnotensis composuit in epist. 6. missa à Valtero Melandri Episcopo, in hæc verba: Dilectis vestris per penitentiam presertim nuper ad me directis, humiliter meam consiliis vestra fraternitas, verum quia habere possit cum muliere in coniugium, quam prius habuit pellicem: quod idcirco vobis videtur illicitum, quia apud vos balneus fuit insoluitum. Nunc verò dicitur hoc ipsum idcirco venisse in dubium, quod Rogerus Romanus Ecclesiæ Legatus Roma bene consuetudinem Sibundellus asseruit, & hoc posse fieri Beati Augustini sententiâ confirmatum, cum quæ re vobis respondemus, quia super hoc diuersas habemus sententias, alias prohibentes, alias remittentes; dicit enim beatus Gregorius in epistola ad Felitem Sicilia Episcopum: Eam quam aliquis aliquâ illicitâ pollutione maculauit, in coniugium ducere nulli Christianorum vel licet, vel liceat. Legitur quoque in Concilio Cabilensi, cap. 24. quia in hac nomenclaturâ auctoritatem raptores ad coniugia legitimæ raptae sibi iure vendicare non possunt. Habemus enim in decreto Hermisila Pape, nuptias occultè factas non esse legitimas. Et Papa Eusebius censuerunt, non coniugia diuina esse illarum mulierum, quæ non sunt à parentibus traditæ, & legitimè dotatæ, & à sacerdotibus solemniter benedictæ. Habetur & in Concilio Aquileensi habitis: Qui mulierem rapuerit, vel foras furit, aut seduxerit, nunquam eam vxorem habet. Et in hac notum plurima reperiri possunt. E diuerso verò legitimis in decretis Euseij Papa, cap. 5. Virgines, quæ virginis non custodierint, si easdem qui eas violauerint, maritos acceptas, eo quod solas nuptias violauerint, post penitentiam totius anni reconciliari. Dicit quoque B. Augustinus in libro de bono coniugali: Posse sancti fieri legitimas nuptias ex malè coniunctis, bonis postea placito consensu, manifestum est. Quoniam ergo mihi videtur, quod quidam Patres concubinas vxores fieri voluerint, benevolentiam coniugij commendantes, & sedem concubinarum consuetudinem contrarie expientes, rigorem iustitiae teneri decuerant. Quod verò alij aliter stripsimus, hoc intelligi, quia inueni miseris illa quorundam interdictum occurrentes, rigorem canonem temperare moluerunt. In quibus sententiis non alia mihi videtur esse distantia, nisi ea, quam inter se habent iudicium, & misericordia, quæ quies in totum negotium emendat, in discretionem. Restat ita consilium, vt huiusmodi considerationes salutis animarum, pro qualitate personarum, pro opportunitate locorum, & temporum, nec sanctorum canonem possit excutere, nunc indulgentia, quibus aperte, impendi. De

8.
DISOL-
VITA
DEBETAM-
UR RATIO.

9.
EXPOS-
ITA CAN.
14. CON-
CILII AL-
BI.

lis habemus. De eo, quod meritis, et pro pace
viri imperantia Domini Regem suo tempore
commenit, secundum Comiti sententiam vobis re-
spondet: Quia opus est huic patris, quem defen-
derem parat. Hoc vobis consulo, et coniugium eius,
quod ante factum ratione resistente non laudastis,
post factum nec disto, nec factu inconsulto appro-
betis: sed commone confitemur, et iudicium compo-
nuntialium Episcoporum, et ceterorum studiosi ex-
pectamus, et lenigimur expellitis: et si quid ad-
versus pro amore iniuria vobis acciderit, equanimi-
ter supportetis: hoc attendendo, quia non sunt con-
digna passionis huius temporis ad futuram gloriam,
qua reuelabitur in vobis, fideles. Vnde PP. Con-
cilij Illiber. accipiendi sunt iuxta perfectionem
illius seculi, et antiquam Ecclesie disciplinam
sed cum indistincte matrimonium inter stupra-
torem, et virginem viciatam permitti coe-
ssisset, nulla poenitentia facta mentione, illud stupratori
imungit Gregorius in presenti cap. 1. octauum
in dist. can. 14.

Deinde super traditæ assertioni obstat textus
in cap. placuit tit. 16. quest. 1. ubi ex canone 3.
Concilij Aquiganensis ita legitur: Placuit ve-
hi, qui rapina feminas, vel fuerint, aut sedu-
cant, eas in laqueum ducant, quamvis cum eis
postmodum coeuerint, aut eas duxerint, vel in-
taliter cum consensu parentum suorum acceperint.
Ex quibus expressè deducitur, seducentem vir-
ginem, non solum tam ducere non teneri, ver-
um nec eam in vxorem accipere posse. Pro cuius
difficultatis solutione dicendum est, erro-
nem illum procedere in rapto virginis, iuxta
questionem sub qua compilatus est à Gratia-

no; cum enim secundum antiquos Ecclesie ca-
nones raptum non possit in vxorem accipere vir-
ginem raptam, ut probabimus infra in cap.
final. de raptibus, ideo PP. Concilij Aquig-
nen. in dist. cap. placuit, statuerunt raptum-
tem, seu seducentem virginem, non posse, etiam
patronibus consentientibus, eam in vxorem ac-
cipere.

Tertio super traditæ assertioni opponi potest
textus in can. 6. Concilij Illerdensis, in illis ver-
bis: Qui penitentiam vult, vel virginis religiosæ
tam stupri inuoluit, si se ab eo sequestrari volue-
rit, pariter à communionem, et à Christianorum
consortio sequestratur: si vero illa, qua vim passa
est, ad sanctam religionem redierit, in illa solam
sententia excommunicationis tenetur, quæque
publicè panitur. Vbi cum agitur de virgine cor-
rupta, et seducta, nulla imponitur necessitas
contrahendi matrimonium cum virgine à se vi-
ciata. Igitur non rectè in presenti assicimus, stu-
pratorem teneri virginem à se corruptam ducere,
aut dotare. Pro cuius difficultatis solutione di-
cendum est, in eo canone agi de femina reli-
giosa, aut in statu poenitentis solenniter existen-
te, cum qua connubium non datur, et de vir-
ginibus Deo deuotus probatur in cap. 6. qui clerici,
vel vovunt, de panit. in can. 13. Concilij Illi-
ber. Vnde cum ratiose status religiosi in casu dis-
sili canonis matrimonium celebrari non possent,
ideo stupratori non imungitur necessitas ducen-
di vxorem, aut eam dotandi. Accedit nam in eo
texto non igitur de pœna, aut poenitentia inun-
genda stupratori: sed de poenitentia imponenda
virgini religiosæ, aut poenitentis lapsæ.

11.
EXPON-
TIVE CON-
CIL. IL-
LERDENIS
CAN. 6.

10.
EXPON-
TIVE CON-
CIL. IL-
LERDENIS
CAN. 6.

C A P V T III.

Ex Concilio^a Arelatenfi.

SI vir sciens vxorem suam deliquisse, quæ non egerit poenitentiam, sed perma-
nuerit in fornicatione, vixerit cum illa, reus erit, & eius peccati particeps. Quod si
mulier dimissa egerit poenitentiam, & voluerit ad virum suum reueri, debet, sed
non semper, recipere peccatricem.

N O T Æ.

A Relatenfi. In prima collectione, sub hoc
tit. cap. 3. legitur Arelatium, sed in nullo
ex Conciliis Aurelianensibus, siue Arelat. vici-
que editis reperitur textus hic. Carnot. part. 8.
Decret. cap. 243. Gratianus in cap. ep. 7. 34.
quest. 1. citant illum ex Hermite in lib. Pastoris,
mandat. 4. quod veritas credo. Hermes, siue Her-
mas, scripsit librum, quem incipit Pastor, apud
veteres celeberrim; in lib. 1. quomodo à Sancto
Hieronymo in lib. 1. de scripturis Ecclesie,
vixisse esse dicatur, & nomine scriptoræ à Sancto
Irenæo lib. 4. cap. 17. citetur, & ab aliis antiquis
scriptoribus, ut Clemente Alexandrino, &
Origene, in testimonium adducatur; tamen
illum inter apocrypha scripta reiecit Gelasius in
Synodo Romana relata in can. de libellis, 13.
dist. & sanctus Hieronymus in Prologo Galeati,
& sanctus Athanasius in lib. de decret. Nicæne Syn-
odi, Eusebius lib. 3. hyst. cap. 3. Tertul. in lib.
de pudicitia, dicunt librum hunc non esse in ca-
none. Quis autem ille Hermes fuerit, non levis

questio est: nam Origenes in cap. 16. ad Roma-
nos, Eusebius lib. 3. hyst. cap. 3. D. Hieronymus
in lib. de scriptor. Eccles. asserunt, hunc ef-
se illum Hermam, quem salutaribus Aposto-
lus in epist. ad Romanos, cap. 16. cum ait: Salu-
tare Asynclum, Phlegonem, Hermam, Anastas.
Bibliobecarius de vitis Pontificum, scribit Her-
mam, siue Hermetem sodocem libri Pastoris,
fuisse fratrem sancti Pij Romani Pontificis, &
librum appellatum esse Pastorem, quoniam An-
gelus in habitu Pastoris Hermeti apparerat, &
ut ea scriberet, quæ illi reuelarentur, iussit.
Bellarminus de Scriptor. Eccles. facit. 1. fol. 48. exi-
stimat duos fuisse Hermetes, scripsisseque libros
sub nomine Pastoris, sed librum Hermæ fratri-
s Pij eius interisse; Nbrum verò Priori Her-
metis diuina donasse: & ita credo transcriptum
fuisse canonem hunc à Carnotensi, & Grati-
ano ex illo priori libro Hermæ, quem habuit
Apololus.

2.
CONCLU
SIO TRA
DITUR
POMPE
TUL

EX hoc textu sequens communiter deducitur assertio: *Vir scilicet uxorem suam adulterium commississe, & in eo persistenter, tenetur eam deserere, post peractam vero penitentiam debet eam recipere.* Quæ assertio quod primam partem probatur ex D. Augustino lib. 2. de adulter. in cap. non solum 28. quæst. 1. D. Hieron. relato in cap. dixit Dominus. D. Chrysostomo relato in cap. si quis uxorem, cap. sicut crudelis 32. quæst. 1. cap. 4. de eo qui duxit in matrimonium prius pollutum, c. quoniam si 9. de excess. Prælat. Concil. Naoner. can. 12. ibi: Si cuius uxorem perpetravit, & hoc a viro deprehensum fuerit, & publicatum, dimittat uxorem si voluerit propter fornicationem illa verò septem annis publicè peniteat; vir vero eius illa vivente nullam aliam accipiat: quod si voluerit adulteram reconciliari, licentiam habeat; hec tamen ita pariter cum illa penitentiam agat, & extat illa penitentia post septem annos ad communionem usque accedat. Similis forma & in multis servabitur, si eam vir eius adulteraverit. D. Isidorus lib. 2. de officiis Eccl. cap. 19. Theodorus in his Penitent. ibi: Si quis uxorem suam fecit adulteram, & non vult dimittere eam, sed in matrimonio habere, tribus annis penitet, & quando pariter, absintet se ad ea. D. Clemente lib. 6. constit. cap. 14. ibi: Qui reitine adulteram, qua legem naturæ violavit, legem violavit est: qui adulteram reitine, fluitus, & impius est. Abscinde eam à carnis tui, quia non est auxiliatrix, sed infidelitrix, qua mentem ad alium declinavit. Et l. 2. tit. 9. parit. 4. D. Thomas in 4. dist. 35. quæst. vnic. art. 2. D. Bonaventura in eadem dist. art. 2. quæst. 3. Secundam partem probant textus in cap. quod autem, cum sequentibus, 32. quæst. 1. Hermes noster in f. s. cap. ego 34. quæst. 1. Illos tamen vitæ congestos à Barboza in presenti, Mendoza lib. 3. Concilii lib. 2. cap. 54. Cuiusvis in cap. ex parte, de sponsal. Vighellius in method. iuris can. fol. 101. Basilios de matrim. lib. 5. cap. 17. num. 1. Hurtado de res. tom. 2. res. 1. fol. 101. Caieranus tom. 1. opus. trall. 29. Mancinus de triplici iuris colat. cap. 12. num. 5. Angalaus de legibus lib. 3. cap. 21. Petrus Herodius lib. 4. Pand. tit. 17. cap. 32. I. Dartis in 32. quæst. 1. & nos in cap. 65. Concilii lib. 2.

3.
IMPTCHA
TUS TRA
DITA AL
BERTO

Sed pro dubitandæ ratione in præsentem assertionem ita infurgo; nam si solum adulterij rationem atque diuinitatem, nullum extat præceptum diuini iuris diuerdendi ab uxore adultera in reatu præmatrimonie, siquidem Christus Domini tantum ob adulterium diuinitatem permisit, non verò iussit. Igitur vir non tenetur præcisè dimittere uxorem adulteram. Augetur primò hæc difficultas, nam quilibet fauori pro se introducto renunciat valere, l. si quis in consensuendo, Cod. de p. d. l. 1. penult. Cod. de Episc. & cleric. l. final. Cod. de non numer. pecunia, l. si quis iniquitatis 112. §. 1. ff. de legem. 1. Sed diuinitatem ob adulterium inducendum est in fauorem innocentis, & in pernam nocentis, ubi inferiori illi interrogatum, cap. idololatris 28. quæst. 1. Igitur vir cogendus non est dimittere uxorem adulteram. Augetur secundò hæc difficultas ex eo, nam sine culpa non est aliquis puniendus. Regula Sine culpa, in 6. Sed si maritus cogatur dimittere uxorem ob eius adulterium, puniatur sine culpa, siquidem prius iura cohabitatione cum periculo incontinentie; igitur non est cogendus dimittere uxorem propterea.

Quæ dubitandi ratione non obstantæ vera est D. D. General. in Decretal. Tom. V.

præsentem assertio, pro cuius expositione sciendum est, adulterium significare improbam, & illicitam cum uxore aliena comitionem, vel coniunctionem, vt ait Consultus in dist. l. 1. l. 1. §. 1. Hinc dicitur adulterare rationes, vel moneres, adulterare testamentum, adulterari literas in l. diem, ff. ad leg. Pompeianæ de parit. l. 1. §. 1. §. final. de sermo corruptio, l. 1. au. fallu 16. §. 1. §. de panis, l. amonem 8. ff. de extraordin. crimin. l. si quis 6. ff. ad leg. Cornelia de falsis. Nam adulterare est nomen, quod sincerum est, contumpe, vt tradunt Btillonius, Verrucius, Ludouicus Carrius lib. 2. emendat cap. 10. tom. 3. obfervari criticis, & Hothomani de verbis iuris, verbo Adulterium, Dicitur autem adulterium in nostra significatione alterius thori accessio, à proposuioe ad, & nomen alteri, alterum: quasi ad alteram uxorem accessio, vt placuit Festo Pompeio, Brilloni, & Rebusio ubi supra: & hæc est vera etymologia, reiectis quas adducit Laurentius Valla lib. 6. elegant. cap. 45. Bermondus de public. concubin. in rubric. de adul. Antonius Mattheus de crimin. ad tit. de adulter. cap. 1.

5.
ADULT
ERII

Deinde sciendum est vix definit adulterium per repententiam in præsentem, Contrarium de matrim. part. 1. cap. 1. num. 8. Iul. Clarus §. adulterium, & alios de adulterio scribentes. Boerius de adulter. cap. 1. illud definit. Adulterium est crimen publicum, quo per concubinam viri cum aliena femina fœdus coniugale violatur. Quam definitionem ipse explicat numeris sequentibus. Sed breuiter definit potest, vt adulterium sit: *Coniugium mentalis, vel realis, per quem alterius thori violatur.* Quæ definitio constare genere, & differentia. Dicitur enim coitus mentalis, vel realis loco georis, in quo cum simpliciter fornicatione, stupro, incestuque consentit: mentalis verò, quia quod forum internum mentalis coitus cum alterius coniuge adulterium est, vt probatur auctoritate Exodi cap. 20. Matthæi cap. 8. & Pauli ad Romanos cap. 7. Adicitur, per quem alterius thori violatur, loco differentie, in simpliciter enim fornicatione, stupro, & incestu alterius thori violatur, indeque tantum cum coniugis committitur adulterium, vt docetur in Linter liberum 6. §. lex, ff. ad leg. de adul. & in dist. l. inter stuprum 121. ff. de P. S. & hanc definitionem probauit lex 1. tit. 17. parit. 7. & illustrant Conart. in 4. 1. part. cap. 1. num. 8. Bermondus ubi supra, Rebusius in dist. Linter stuprum, num. 1. Syluester in summa, verbo Adulterium, Azueto in rubric. tit. 20. lib. 8. Recopil. Caneza lib. 2. q. 99. crimin. cap. 14. num. 24. alij relati à D. Ioanne Vela de delictis, cap. 1. Ex qua definitione colligitur, coniugium cognoscens mulierem solum, adulterium non committit iure ciuili ateno; cum non vilet alterius thori; ac proinde non posse de adulterio accusari ab uxore, tam emittit, quam criminaliter, l. 1. Cod. de adul. l. 1. Cod. Theod. de repud. docent Tiraquell, ad legem commun. in l. 7. num. 42. Paleotus de verbis & officiis, cap. 41. Conart. in 4. part. 2. cap. 7. §. 6. iure autem diuino, & canonico verè adulter est, nam Domineus creauit matrem, & feminam, non feminas, Genes. cap. 1. vers. 27. disumpit enim, atque violat fidem coniugalem, qui adhæret meretrici, 1. ad Corinth. cap. 6. vers. 15. & 16. Iure canonico id expressè docetur in cap. dixit, c. 1. num. 32. q. 4. cap. non mar. haberi, 32. q. 6. cap. illud 14. 12. quæst. 5. cap. transmissa, de eo qui cognuit conjugem, cap. 3. in clemens.

intelligimus, hoc sit. Et licet vit non possit criminaliter ab vxore accusari, cap. apud misericordiam, 32. quaff. 1. poterit tamen ad thori separationem, vt docet Couart. ubi supra: quo modo accipiendi sunt textus in cap. praecepti, cap. christiana 32. q. 5. cap. quomodo, 5. illud, de interu. dicemus infra in cap. final. hoc sit.

Deinde sciendum est, nullum deestabilis probum adulterio patiri, aut aliquod facinus contra ius gentium facinus committi. Gensf. cap. 26. Patuit eire quicquam de populo cum vxore tua, & induceras super nos grande peccatum. Et Lentic. cap. 20. Deuter. cap. 22. Ioannes cap. 8. Daniel cap. 13. l. probum 41. ff. de ritu nupt. cap. quid in emobu, 32. quaff. 7. D. Ambrosius lib. de Abraham, 2. 2. & 7. l. auxilium, §. is delicti, ff. de minor. Vlpianus in fragm. de delib. §. inter aruaria. Stobaeus sermo num. cap. 6. Non est adulterio maius vltim malum. Dicitur facilegium nupiarum in l. quomodo, §. hoc sit. Faciunt Nicoftratus in lib. de nupt. Quanta carpitudo, nequicia, & iniustitia fit in adulterio, quantum vtrique fecit ignominia inuicem, &c. Clemens Alex. lib. 1. Pedag. cap. 2. Pelusiotia lib. 3. epist. 76. Inter atrociora & immensa scelera recensetur in l. 1. Cod. Theodof. quorum appell. Vnde adulteri non gaudent indulgentia Paschali, l. 4. 6. 7. 8. cod. de indulg. crim. vbi Gothofr. illustrent Palatios Rubios in repetit. rubric. de donat. inter, §. 77. num. 3. Vega in cap. 4. §. de adulter. de iudic. qui asserunt, adulterium esse homicidio grauius: & probare intendunt ex l. aduolunt 88. §. nam, ff. de leg. 2. Quod admittere non est; nam reuera adulterio grauius est homicidium, vt constat ex cap. si quis vxora, 33. quaff. 2. Nec contrarium probat Consulens in dict. §. morte. Nam omnis interpretatione asserendum, leuius in ea specie fuisse homicidium, quia necessarium fuit ad defensionem propriae substantiae, cum occisus rapinam fecerit proprio occiso, argumento legis 2. ff. ad leg. Aquila. 2. de homicid. quia illa verba, dum ei rapinam facit, potius ponuntur ad testatorem ad augendam malitiam fratris homicidiae: filius enim rapinam faciebat, id est locum parabat ad rapas ferendas; id enim significat interdum rapinam facere, vt docent Columella lib. 2. cap. 2. Cato de re rust. cap. 31. & Pulbeus in libro de rer. alienarum. Verius respondendum est, illa verba non esse accipienda comparatiue, nec significare fratrem adulterium vxoris commisisse, cum testator vxorem appellauerit Charissimam in principio testamenti; sed accipienda esse positue: Sed & alia mihi deteriora fecit. Hoc est, sed & alia mala mihi fecit: sic enim Cicero in oratione pro Balbo, dixit: Hoc illi deterius corrigi; vt explicat D. Ioannes Vela de delicti. cap. 1. Nec tunc obstat textus in cap. 4. §. de adulterio, de iudicis cuius interpretationem in eius commentario dedimus. Denique satis offendit huius criminis grauitatem Vlpianus in l. probum 42. ff. de V. S. vbi appellat adulterium probum naturae, quia per illud inuolabilis iura matrimonij confunduntur, ac deturbato parentis sanguine, ordineque naturae, incerti auctores vitae redduntur. Quod ex ea causa adeo abortiuorum bruta animalia, naturae communi nexu illigata, vt adulteri sanguine sparso propij thori vindicant iniuriam, vt de leone refert Plinius lib. 8. cap. 16. de elephante Elianus lib. 2. hist. anim. cap. 15. de tetrice Cassiodorus lib. 3. var. cap. 33. de aliis idem probant Tiracuellus in l. 13. consub. Beyerlinch. in theatro vitae dom. tom. 1. verb. adulterium, Theophilus Ray-

naud. tom. 4. lib. 3. fol. 3. cap. 6. fol. 397. Corinus in cap. 20. Lentic. Broseus ad Callidort. dict. epist. 13. Ferrandus Ederius in Linter libere, ff. ad leg. Jul. de adult. Inde etiam prociuit, nec fecinam, nec militem excusat in hoc crimine, l. 2. §. si simul 8. l. maris 29. in princip. l. um 39. ff. hoc sit. cum agatur de crimine inspirante natura damnato, ac huius primae scditatis inspektione. Nec releuatur rusticitas, l. 2. de iure iuri, l. 2. §. vbi 12. ad Syllan. l. quicunque 8. Cod. qui aduerti: nec etiam minor aetas, quia in executionibus poenarum cessat legis auxilium, l. auxilium 17. ff. de minor. Seldenus lib. 2. de iur. Hebr. cap. 12.

Inde etiam fundente ipsa natura adulterium vindictam fuit variis poenis, et si inuolam legamus apud aliquas barbaras gentes, quas refert Roman. 2. part. Rhiph. Gensf. cap. 11. Prociopius in hystor. arcan. fol. 77. Apud Hebraeos enim adultera comburebatur, Gensf. cap. 38. vers. 24. lege vero Moysis ita cabebatur: Quicunque maritum suum vxore proximi sui, morte variatur. Vnde apud eos adulteri lapidari ceperunt, Lentic. cap. 21. Exodi cap. 22. Deuter. cap. 22. Danielis cap. 13. Ioannis cap. 8. Marci cap. 10. D. Paulus 1. ad Corin. cap. 6. Apud Aegyptios in adulterio deprehensus virgine cedebatur ad mille plagas: mulier oaso maritabatur. Diodorus Siculus lib. 2. Bibliothec. cap. 3. De Vandalis ita Saluianus lib. 7. de providentia. Adulterum quoque ad libidinem compunctum seueris pudicitiae functionibus, gladio impudicitiae coarctatus, vt puritatem scilicet variisque sexus, & domi communis reuerentiae affectibus, & in publico metu legum; ac si in duplii presidio castimonia uideretur, cum & intus esset quod amaretur, & foris quod timeretur. Parthos refert luctuosos lib. 41. uolla delicta adulterio grauius, aut seuerius vindicasse. Lydij adulteram sine venia & misericordia puniebant. Elianus lib. 17. hist. cap. 12. Apud Danos parte corporis spolij adulteri necabatur. Saxo lib. 5. de rebus Dan. Apud Loerenses adulteri damnatos utroque oculo priuabatur, vt refert Valerius Max. lib. 6. cap. 5. Germani adulteram abscissis criminibus nudatam coram propinquis expellebant, vt tradit Tacitus de moribus German. quorum ius nouum refert Henelius de cond. vbi supra. Omittio poenas apud alias nationes statutas, quas referunt Petrus Gregne. lib. 36. Symag. 6. Tiraquel. in l. 13. consub. Bocerus de adulterio c. final. Ant. Matthaeus de crimin. tit. ad leg. Jul. de adult. Vt ad ius civile Romanorum petuissimus, apud eos primus Romulus ita sinxit: Adulteri conuictum vitae, & copulati vti volens necare. Plutarchus in vita Romuli, Halicarn. lib. 1. Luitius lib. 39. cap. 28. Valer. Max. lib. 6. cap. 3. Gellius lib. 10. melium, cap. 23. Sed haec sanctio seuera vixit statim Romani; ideo Numa Pompilius leuiores legem tulit sic verbis: Perlex sedem Iuoniam ne tangas; si uirgine, criminibus demissis, agnam ferinam cadito. Gellius lib. 4. noel. cap. 3. Festus Pompeius lib. 1. de V. S. Postea vero crescente matronarum luxu, variis poenis vindictam fuit adulterum; aliando poena expulsi. Luitius lib. 7. Valerius Maximus lib. 8. cap. 2. Scipius molit. Suetonius in Iulio, cap. 1. & 48. Tacitus lib. 2. hystor. Plerumque relegatio extra ducentissem lapidem interrogata fuit, donec Augustus legem Iuliam rogauit, quae ab eius latore Iulia dicta fuit; quia Augustus Iulij nomen adoptione sortitus fuerat, de qua agunt Consulens in l. 1. ff. ad leg. Jul. de adulte. Suetonius in August. cap. 34. Horatius lib. 4. carminum, odo 5. quod

7.
De poe-
nis adu-
terij.

qua lege stabilita fuit poena tantum relegationis, si quis 3. ff. de quæst. l. miles 11. ff. hoc tit. non autem poena capitalis statuta fuit: unde D. Augustinus lib. 10. de civit. Dei, cap. 5. aiebat, adulterio Romæ morte ooo fuisse punita conquisitus: & Apuleius lib. 9. ait: *Ac ne iuris quidem severitate, lege de adulteriis ad discrimen vocabo capitæ.* Faciunt lex 4. §. adulterii, si de vir militis. l. 15. ff. de his quibus ut videtur. l. 4. ff. de testib. Paulus lib. 2. senectut. tit. 16. §. adulterii. Nunc tamen eâ lege abrogata fuit facultas imponendi poenam capitalem exacerbata viliore cænis calibus, veluti adulterio commissio cum incestu, l. si quis viduam 5. ff. de quæst. & in casu textus in l. miles 11. ff. hoc tit. Vnde poenam capitalem lege lula de adulteriis perpetratotibus impositam fuisse supponitur in *Transfere* 17. Cod. de transf. l. de crimine 9. Cod. hoc tit. l. si vir, C. Theod. eod. tit. l. 2. Cod. de indulg. apud Arnobium lib. 4. contra Gentes, ibi: *Adulteria legibus vindicamus, & capitalibus eos ad officium parvis, quos in aliorum comprehenderimus federa genitalis se lellali expugnatione iesset.* Salustianum lib. 7. de provid. Iuvenal. *satyr.* 2. vers. 39. Virgilium 6. *Æneid.* Armanian. Martell. lib. 18. Apuleium lib. 9. *Metamorph.* *Ac ne iuris quidem severitate, lege de adulteriis ad discrimen vocabo capitæ.* Et ita capitalem poenam lege Iulia impositam esse docuerunt Cuiac. lib. 21. *observ.* cap. 17. Godeus in l. inter 101. ff. de P. S. Mart. Lyellam lib. 1. *membran.* eclog. 3. & 10. Hennell. de dotal. vbi *supra*, fol. 183. Deinde lex hæc Iulia de adulteris, ut vocatur in l. 5. ff. hoc tit. l. 3. & 17. Cod. eod. l. auxilium 38. §. 10. ff. de minor. apud Salustianum lib. 7. de provid. vel de pudicitia, ut dicitur in l. 8. & 9. Cod. hoc tit. apud Suetonium in *Augusto*, cap. 34. inter publica iudicia recensita fuit, l. 2. §. si in publico, ff. hoc tit. l. 2. Cod. Theod. eodem, §. item 7. *Instit.* de public. indic. Iode damnatus lege Iulia infamiam oortabatur, l. mortuus 24. ff. hoc tit. & ita privilegium hominis integre frontis privabatur, l. infamem 7. ff. de public. indic. l. 1. ff. de his qui notantur infam. l. 3. ff. de calumniar. Ideoque testis in iustamento adhiberi oon poterat, l. 13. l. 4. & 18. ff. de testib. Etiam eadem lege ius occidendi adulterum patri & marito datum fuit, l. patri 20. cum sequente. *Instit.* 31. in princip. ff. hoc tit. l. Græchus, Cod. hoc tit. l. 4. §. 2. ff. de his qui notantur infam. Paulus lib. 2. *senectut.* tit. 17. §. 1. & 2. & lib. *singul.* de adul. plura de ipsa lege Iulia congesterunt Cuiac. lib. 6. *observ.* cap. 14. Gothofr. ad leg. 4. Cod. Theodof. quorum appell. Henel. de detestatis cap. 10. Arnificus de iure conub. cap. 5. Botellus tom. 3. *decis.* tit. 6. Brissonius ad leg. Iul. de adul. Ant. Mattheus de crimin. ad eundem titulum. Fortner. lib. 3. *rer. quæst.* cap. 9. & lib. 4. cap. 16. & lib. 6. cap. 9. Anst. Geronimus lib. 3. *animadu.* cap. 4. Demoftricus ad *Responsum* lib. 3. cap. 24. Mancinus lib. 1. de triplici iuris cultus, cap. 46.

Manet ergo, lege Iulia impositam ooo fuisse poenam capiti, etsi ea lege abrogata oon fuisset potestas imponendi poenam capitalem in atrocioribus adulteriis: quo modo conciliari possunt varæ Doctotum opinioes circa oonsequens huius poenæ capitalis ood adulterium. Nam Constantinum aotorem fuisse huius poenæ mortis in *Liquamnis* 30. C. hoc tit. in illis verbis: *Sacredotes autem nuptiarum gladio puniti oportet, existimantur Brisson. lib. singulari de hac lege, pag. 105. P. Faber lib. 1. senectut. cap. 4. Ant. Faber lib. 2. *conciell.* cap. 20. Pirheus in *ordib. legum Atofas.* tit. 4. de adulterio, Martell. & Ritherusius in *§. item lex, Instit.* de public. indic.*

Ant. Mattheus de crimin. ad lib. 48. *Pondet.* tit. 31. de adul. cap. 2. num. 1. Vnde docuerunt Brissonius vbi *supra*, Balduinus de legibus *Constant.* pag. 192. verba quæ erant in l. *castitatis* 9. Cod. hoc tit. (quæ auctorem habet Alexandrum Imperatorem) ibi: *Qui autem adulterii damnatus, si quocunque casu poenam capitalem evaserit, siens duxerit, vel reduxerit eundem, ex casu innocent punitus, esse Triboniano, non autem Imperatoris, cuius etiam esse verba illa, excepto adulterio, in lege transfere, Cod. de transf. docuit A. Faber lib. 2. *conciell.* cap. 20. Sed tediùs Cuiac. lib. 20. *observ.* cap. 18. affirmat iusta *supra* tradita, quod quomodo lege Iulia de adulteriis poena capitis statuta non esset in adulteros, nihilominus quandoque extra ordinem adulteros capite damnatos fuisse, ut fecit Augustus cum Iulio Anruino. Vnde Alexander Imperator in *dist. Scaphis* 1, quia ius tempore inceperant obsolescere adulterii poenæ, & lex Iulia dormire, ut aiebat Iuvenalis *satyr.* 2. vers. 27. Ipse ait, castitati & disciplinæ suorum temporum conuorire, ut lege Iulâ damnât, in legitimis poenis perseveret; huc est, ut illi imponatur poenæ, non solum quas lex Iulia statuit, verum & capitalia, si grauius sceleris exigit: & ideo subiunxit ea verba: *Eum qui scire non damnatum capite, quocase quidam evaserit poenam capitalem, duxerit, vel reduxerit, tanquam lenem relinquimus poenis legi Iulia.* Quo modo etiam iocelliquum textus in *dist. transfere*, l. 4. Cod. Theodof. quorum appellat. l. 2. Cod. de iudic. reliquerunt. Itaque Constantinus in *dist. l. quomodo* 30. capitalem poenam in hoc delicto minime de nouo introduxit, sed iam velut obsoletam, æ sepius postliminio quasi reduxit. Etiam ex nouella 32. Leonis adulteri troneatione narium, ante aurium plectebantur: hinc lepidè Martialis lib. 3. *epig.* 85. ait:*

Quis tibi persuasit naves abscondere macthor?

Nam hoc peccatum est parte, moris, ibi.

Sunt quid egessit?

Iustinianus verò in nouella 134. gladij poenam in viros quidem retinuit; adultera verò remisit verbera, eamque in monasterium detrudi voluit: in de est authentica *Sed bodie*, Cod. hoc tit. à qua nunc admodum dissimile est ius nostrum semipartitum; nam in l. 15. tit. 17. *partit.* statuitur ut adulter ad mortem damnetur, adultera verò vulpulari in monasterium destrydatur: & oculoribus legibus, videlicet l. 2. tit. 15. lib. 2. *ordin.* l. 80. *Tauri*, l. 4. tit. 10. lib. 8. *recapit.* adulteri traduntur poenâ puniendi, yñâ cum omniabus bonis suis, instauratâ lege 1. tit. 7. lib. 5. *firi Indicum.* Explicant Villadiego, Ant. Gomez. Didacus Perez in *essetio legis*, Iul. Clarus, & Bayardus ibi, verbo *Adulterium*. Boscius in *tit. de rapin.* Et quomodo adulterium prubetur, ut poenâ hia locus sit, explicant *Quæstus* 99. *iuris quæst.* l. 6. Pax in leg. 12. *§. 11.* Boscellos tom. 3. *decis.* tit. 6.

Vt ad poenas adulterij ex iose canonico pertineamus, prifet Ecclesiarum canonicus publicæ penitentia adulteris imponebatur, cap. si quid 23. *quæst.* 2. Immo & aliquando communio etiam sine denegata fuit, ut probuit in cap. 1. *Cencil. N. lib.* Etiam iure canonico approbata fuit poenâ per Iustinianum statuta in nouella 134. cap. 10. videlicet detrudio in monasterium, cap. *interdictum*, hoc tit. cap. *gaudentes*, de *conuers.* *coning.* cap. *consuluit*, de *appell.* Salcedo in *praxi*, cap. 85. Facultas autem occidendi adulterum omnino denegata fuit, cap. *admonere*, cap. *quicunque*, cap. si

9.

DE POSTERIS
CAPITULIS

quid 33. *quasi. 2.* docent Basil. *lib. 9. de matrim. cap. 3.* Elcobas de varoque foro, §. 7. Diana *part. 3. tit. 4. res. 223.* Mendo in *statera, differt. 3. quasi. 2.* Prado *tem. 2. Theolog. Moral. cap. 20. quasi. 1. §. 4.* latè Giralduus *tom. 2. de negociis, lib. 6. cap. 6. art. 1. regni. 2.* Theoph. *tem. 4. lib. 3. sect. 3. cap. 6. fol. 389.* Couart. *2. part. de matrim. cap. 7. §. 7.* Fournetius 3. *rer. quid. cap. 10.* Licet si maritus clericum cum vxore inuenit, & percussit, non debeat pro absolutionis beneficio Sedem Apostolicam adire, *cap. 3. de sens. extem. Couart. 2. part. de matrim. cap. 2. §. 7.* quia inconsiderat, & iusto dolore motus hoc fecit, vt ait Consultus in *l. nec in ea, ff. hoc it.* Etiam propter adulterium vxor priuatur dote, & maritus adulter amittit dotalitium, seu donationem propter nuptias, vt latè probatur in *cap. plerumque, de dona. inter.* Tandem propter adulterium alterutrum ex coniugibus matrimonium dissoluitur quoad rhotum, & mutuum cohabitationem, *cap. interueniente, cap. Apostolus 32. quasi. 7.* nisi utroque adulterium commiserit, *cap. significasti, cum sequenti, hoc it.* vel maritus vxorem prostituat, *cap. discretionem, de eo qui cognouit consanguin.* nisi animum committendi adulterium non habuerit, scilicet cum per errorem ab eo, quem maritum esse credebat, fuit cognita, *cap. in solium 34. quasi. 1.* vel per vim oppellat, *cap. proposita 32. quasi. 5.* vel si maritum credens esse mortuum, alij nupsit, *cap. cum per belicam 34. quasi. 1.* vel si vxor tempore infidelitatis à viro repudiata cum alio consummauerit matrimonium; nam si ambo ad fidem Catholicam conuertantur, non poterit repudiatus oblicere coniugi repudiato consummationem illius secundi matrimonij, *cap. gaudentes, de diuor. 16.* Ius tamen casibus exceptis licet ob adulterium diuortium fit quoad rhotum, iuxta legem diuinam, de qua D. Marthus *cap. 19.* Quod prouenit ex natura ipsius matrimonij, quia cum coniuges teneantur mutuum sibi seruare fidem, vt probatur in *cap. final. de condit. apposit.* iustè coniux innocens separatur à cohabitatione cum nocenti, nec tenetur cum eo iuxta promissam cohabitare, argumento textus in *cap. peruenit 3. de inuic. l. fidem, ff. de transact.* Iuncta traditis à Barthola. *azim. 98.* Vt autem adulterium hoc fieri possit, debet precedere adulterium, copulà habita cum tertia pectone, ob quam caro diuidatur. Vnde inferitur, non sufficere ad diuortium adulterandi animus, nisi opere subsequendo. Leander 2. *part. de sacram. dignis. 26. quasi. 7.* nec etiam oscula, aut similes amplexus prestare causam diuortij, etiamsi adulterandi animo habeantur, *cap. lex 27. quasi. 2. Salmon. ad Panor. lram lib. 2. tit. 46.* Nec etiam sufficere ad hoc diuortium peccata contra naturam perpetrata ab altero ex coniugibus, quia diuisionem carnis, quæ ad adulterium desideratur, accipimus pro ea, quæ iuxta usum naturalem habetur, vt pluribus relatis docet Leander *dist. dignis. 26. quasi. 1. & licet contrarium sententiam in praxi tenendam esse dicit Trullench. de matrim. c. 12.* Hæc autem facultas deferendi adulterum reciproca est, tunc non solum maritus diuortere possit ab vxore ob eius adulterium, verum & vxor ob adulterium viri, *c. final. 32. quasi. 5. c. placuit 32. quasi. 7.* Cum enim utroque qualiter sibi ad inuicem ad fidem ex iustitia seruandam obligentur, sicut vir innocens potest dimittere vxorem adulteram, ita & vxor discedere valet à viro adultero, vt contra Caietanum probat Leander *dist. dignis. 26. quasi. 3.* Nec vllum tempus præsumitur

est, intra quod coniux innocens possit desistere nocentem, sed licitum est innocenti quouocumque elapso tempore diuortium petere, *cap. aduenire 33. quasi. 2.* Licet enim ius accusandi adulterem legitimo tempore præstetur, *l. adulter, Cod. hoc tit.* tamen quoad petendum diuortium nulla temporis præscriptio admittitur. Basil. Legion. *lib. 9. de matrim. cap. 16. num. 4.* An autem propriâ auctoritate liceat dimittere adulteram, & alia de hoc diuortio, exposui in *cap. significasti, de diuor. tit.*

His suppositis tacito præsentis assertionis, quare videlicet teneatur maritus dimittere vxorem adulteram, prouenit ex eo, quia cum retinendo præstat animam suspensam suo consensu adulterium commissum fuisse, & qui recipit adulteram, particeps, credatur ipsius criminis, & patens est turpitudinis censetur, *cap. quemadmodum, §. 1. de inuic. & ideo Domitianus Imperator Equitem Romanum ob reductam in matrimonium vxorem, cui dimisit adulterij crimen intulerat, etiam si iudicem albo, vt refert Suetonius in Domitiano, cap. 8. Vlpianus in l. 2. §. unde queri, ff. hoc tit.* Claudius Gorgum vicum clarissimum, cum deprehensam in adulterio vxorem retinuisse detectum esset, sine accusatore lenocinij damnatum fuisse à Seneto refert Leonius. Chalcondillus *lib. 3. de rebus Turcis*, ait apud gentes quoddam dicam esse, & infamem imprecationem illam, vt quis repudiatam vxorem iterum recipiat. D. Paulus, qui iuxta præfatos monachos vitam sanctitatem, & mutuum auctoritatem clauis, non aliam instituit sui, & solitarij voti occasionem habuisse fertur, quàm quod vxorem in adulterio deprehensum retinere nolens, in solitudine, & desertis locis monasticam vitam professus obire, vt refert Nicephorus Calixtus *lib. 8. histor. cap. 40.* Solonis lex maritum adulteram retinentem infamij noxam. Demosthenes in *orat. contra Nicetam*, iure ciuili lex Iulia eoecet eum, qui non statim post adulterium vxorem dimittit; siue enim, qui in adulterio deprehensum retinet, *l. mariti 29. ff. ad leg. Jul. de adul.* quis hoc lenocinij loco habet, l. 2. *Cod. eod. tit.* eademque, quæ & adulterium, penâ persequitur, *l. auxilium, in fine, ff. de minor. l. 3. §. csi, ff. de accusat.* & hoc Paulus *lib. 2. sent. tit. 27.* in hæc verba scribit: *Eum, qui deprehensum in adulterio vxorem non statim dimisit, etiam lenocinij pessumari placuit.* Tantam enim mariti leniorem, qui vxor matrimonium violanti non ita secat, adulterumque in ipsa turpitudine deprehensum non ececeat, non esse ferendam lex existimauit; & ita in lenocinij crimine iure optimo ponit, quandoquidem, aut lenonem esse, aut plant ferreum necesse est, cui sciunt, prudentie sine dolore tanta iniurijs infestare. Atque ita Claudium Gorgum clarissimum vicum, cum deprehensam in adulterio vxorem retinuisse detectus esset, sine accusatore damnatum lenocinij Vlpianus refert in l. 2. §. unde, *ff. ad leg. Jul. de adul.* Nec reprehensione casu illam Tiboni militem patientiam, qui post delatum adulterium vxorem retinuerat, quasi contentus amulum remouisse, narrat Plinius *lib. 6. epist. ad Cornel.* docuerunt Reuerdis *lib. 4. varior. cap. 6.* Basilionius *ad leg. Jul. de adul. pag. 183.* Vnde rectè in præfenti docetur, maritum teneri dimittere vxorem adulteram, vt ita vitetur scandalum, quod eo sciente, & patiente adulterium perpetratur. Inde inferitur, maritum non teneri vxorem dimittere, quando adulterium ita occultum esset, vt probatur, nequit,

IO.
TRADE-
TIO SA-
TIO DAST-
DAST.

nequeat, cum in hoc casu cesset ratio scandali, vt docuerunt Glossa verbo *Parvum*, in cap. 1. 32. q. 1. Alberic. in *distinctione*. verbo *Matrimonium* 8. *post. Quod si aliquis*, Turtissem. in cap. *Apostolus* 12. *quasi* 7. art. 1. Inde etiam deducitur, vxorem non teneri dimittere maritum adulterum, pertinacem, & publicum; nam cum scandalum potius cesset in vxore non dimittente virum adulterum, cum vxores xpc ferant, vt viri aliis commiscantur, non tenentur dimittere virum adulterum, vt docent Sanchez lib. 10. de *matrim. disp.* 14. num. 29. nec tunc obstat textus in cap. *si quis vxorem*, el. 1. 32. *quasi* 1. vbi docetur, virum & vxorem xquales iudicari quoad obligationem dicitendi propter adulterium vtriusque; nam intelligendus est quoad facultatem diuortij celebrandi ratione adulterij, non autem quoad obligationem dimittendi. Tandem inferitur non teneri maritum diuorare ab vxore eo casu, quo scandalum inde confurgens aliis remedijs auctis valeat, vt docet Sanchez *dist. digest.* 1. 3. num. 13.

Ve rationem secundæ partis presentis assertionis assignemus, sciendum est, quod licet iure ciuili aucto maritus vxorem adulteram, & dimissum iterum recipere nequit, *Leuiticus*, *Ced. ad leg. Jul. de adul.*, tamen ad eam redire valebit post abolitionem criminis, *leg. generalis* 34. §. *rem. ff. de ritu nupt.* aut si maritus ab accusatore destitueret, *l. sine* 27. de *adult.* quam exponit Darts in 32. q. 1. ad fin. & cum per penitentiam delicta abolerantur, rectè potest maritus vxorem adulteram, sed penitentem recipere. Et licet non teneatur ex iustitia eam penitentem recipere, tamen tenetur ex charitate, de qua charitatis obligatione accipiendi sunt textus in cap. *quod autem* 32. *quasi* 1. cap. de *benefic.* cap. *ego dixi* 35. *quasi* 1. & presens textus in verbo *Debet*. D. Bonavent. in 4. *dist.* 34. art. 1. *quasi* 5. docuit Basilus lib. 9. de *matrim.* cap. 19. Germonius 1. *animal.* cap. 8. esse contrarium defendat Arnetius de *iure connub.* cap. 5. *sect.* 9. Intendens probare in his verbis tantum consilium contineri, & nunquam debere innocentem recipere nocentem. Si autem velit innocentem nocentem recipere, tenetur nocens eum sequi, quia sententia diuortij tantum prolata est in fauorem innocentis. Sunt etiam casus, in quibus innocens omnino cogitur recipere peccatorem emendatum. Primus est, si suspectus sit de proptia Incontinentia. Secundus si innocens etiam adulterium commisit ante, vel post sententiam diuortij, quia tunc eum etiam innocens inferat iniuriam coniugi dimisso, & patia delicta mutua compensatione tollantur, *l. viro, ff. soluto matrim.* Ideo innocens post adulterium tenetur recipere coniugem dimissum, *ex verbis de diuortio, c. penult. & final. hoc tit.* Nec interit quod sententia diuortij iam prolata sit, quia cum talis sententia respiciat statum presentem, iuxta quem prolata est, non tollit ius compensationis, si innocens adulterium commiserit.

Nec obstat dubitandi ratio suprà adducta, pro cuius solutione ex amolandum est, an maritus statim ac agnouit vxorem adulteram esse, tenetur eam dimittere, ac deserre? Et distinguendum est inter adulterium occultum, & publicum. Primo casu potest maritus vxorem retinere, & cum ea cohabitare, cap. de *benefic.* cap. *quod autem*, cap. *non eris*, cap. *apud misericordem*, 32. *quasi* 1. nisi animam habeat ascendendi ad factos ordines, quia cum irregularitatem contrahat, si eam postea

cognoſcat, cap. *si laici*, 34. *dist.* tenetur eam abijcere. Secundo vero casu, cum adulterium notorium est, propter seculum, quod inde nascitur, & quia eam retinendo patronus turpitudinis videtur, Ideo iuxta suprà tradita tenetur ipsam adulteram dimittere, immò & si cum ipso scandalo eam retineat, per triennium penitere debet, cap. *si quis vxorem* 6. 32. *quasi* 1. Basil. Legiones lib. 9. de *matrim.* cap. 18.

A Jure suprà traditæ assertioni obstat textus in cap. *quomodo*, §. *und.* de *in iur.* vbi proponitur quendam maritum iurasse, nunquam se deservitum vxorem suam pro nullo crimine. Consultus fuit Innocent. III. an tale iuramentum seruandum esset, necne. Et respondit summus Pontifex, sim. le iuramentum temerarium esse, quia si mulier infidels sit, & nolit cohabitare sine contumelia Crestoni, debet illam deserre, & accensare, & nisi se corrigat, dimitteat. Consequitur alter casus, quid si iurauerit, non se accusatum, aut desertotum propter crimen adulterij? Et quatenus virum tale iuramentum sit obseruandum, necne? Et respondit Innocent. III. iuratus esse iuramentum obseruare, & vxorem peccatorem ad penitentiam trahere. Quem textum ita expendo. Si maritus teneatur vxorem publicè adulteram adhuc non peccat penitentia deserre, non valeret iuramentum in contrarium factum, tanquam illicitum, ex cap. in *malis*, cap. *in iur.* cap. *Innocent.* 22. *quasi* 1. cap. *Quintus*, cum aliis, de *in iur.* Ergo maritus non tenetur vxorem adulteram dimittere. Quam difficultatem vi aliqui dissoluant, asserunt maritum eo casu posse deserre vxorem, turtius tamen facit, si eam non deseruerit, ita verbum *in iur.* in contextu consilium, non preceptum indicat, vt in cap. *communis*, de *spontal.* Sed hæc solutio nullatenus non potest, quia veritas est, io eo textu, verbum *in iur.* inducere necessitatem, quia in his rebus, quæ ad salutem anime spectant, multò vetius est, teneri nos ex precepto turtius eligere cap. ad *audientiam*, de *benefic.* Deinde quia iuramentum seruari debet semper ac quando nullum datur dispensum salutis æternæ, cap. *debetis*, cum aliis ibi adductis, de *in iur.* Ergo in specie illius textus debet omnino iuramentum seruari. Quare Anguianus de *legibus* lib. 3. cap. 1. docet in specie illius textus non teneri maritum vxorem deserre, quia cum iuramentum illud emittendo renunciasset iuri vbi, quod eius salute introductum erat, ideo tale iuramentum validum fuit, & cum ratione illius iuramenti maritus non desereret vxorem, vlt lenocinij suspicio dari non poterat, oec præsumitur eius voluntas adulterium committi.

Etiam suprà traditæ assertioni opponi potest textus in canone 63. Concilij Illiber. ibi: *Si cuius clerici vxor fuerit mactata, & fiat eam maritus suos mactari, & eam non statim prolecerit, nec in sine accipiat communionem, ne ab his, qui exemplum bona conuersationis esse debent, videantur, magisterium scelerum procedere.* Igitur laici, io quibus bona conuersatio ad exemplum aliorum non desideratur, non tenentur vxores adulteras statim dimittere. Augetur difficultas ipsius canonis ex Concilio Tolos. 1. can. 7. relato in cap. *placuit* 33. *quasi* 1. vbi in eadem specie docetur, clericos non debere cohabitare vxores peccantes, ne fuerit illis maiorum peccandi licentiam præbent; sed potius in domo retinere, seculisque, & aliis periculis eas cohercere. Pro cuius difficultatis solutione sciendum est in d. cap. 63.

11.
TRADI-
TIO 10.
CIVILIS
ADUL-
TERII.

12.
DIVERSI-
TAS SYM-
TOMATI-
CÆ.

13.
RESPON-
SIO CAP.
QUOMODO
MORIAM,
§. 11. VBI
TRADITUR.

14.
EXPOSITIO
TVA CAN.
63. ST. 70.
CONCILII
ILLIBER.

cap. 63. *Concil. Nibet.* totum iubet clericis uxorem peccantem dimittere, quia de laicis idem distictio cauebatur in *can. 70. eiusdem Concilii*, ibi: *Si consilio moris, & ipso consentiente fuerit uxor maritatus, planis nec in fine via dandam esse communionem: si uero eam reliquerit, & separati fuerint, & digni penitentia, post decem annos accipiant communionem.* Vbi de lenocinij turpitudine nonnulla notatur: & licet desit hanc constitutio, adhuc argu-

mentum à contrario sensu deductum non obstat, cum sequeretur absurdum. Nec obstat textus in *d. 6. placuit*. Nam in eo canone expressè iubetur, ut clericus mulierem peccatricem à cohabitatione abiciat, nec cum ea cibum sumat: iubetur tamen, ut in domo propria, tanquam in carcere priuato, ut exponit *Forner. lib. 3. rer. quasit. cap. 10.* cum setiuat, ut ieiunio, & aliis pilis operibus mactetur; non tamen quia cum ea cohabitare possit.

CAPVT IV.

Ex Concilio² Parisiensi.

Maritis etiam ex^b suspitione uxores accusare permixtum est: & ipsi plus cæteris de adulterio & accusare possunt, & defendere.

NOTÆ.

7. ^a *Parisiensi.*] Etiam ex Concilio Patisiensi elata testis hic à *Boetardo lib. 16. Decretis. tit. 3. cap. ult.* in prima autem collectione, sub hoc titulo cap. 5. legitur *Alexander III. Parisiensi Episcopo*. Quam inscriptionem vetiorem credo, cum in oculo ex Conciliis Patisiensiibus huiusque editis reperiantur verba in præfati scripta: & furtim hic referunt fragmentum alicuius epistolæ missæ ab *Alexandro III. Patisiensi Episcopo*. De Parisiensi diocesi nonnulla adduxi in cap. final. de *rescriptis*.

2. ^b *Ex suspitione.*] Licet regulariter ex sola suspitione oculus accusandus, damnandusque sit, cap. multi 2. *quæst. 1. D. Thomas 2. 2. quæst. 60. art. 3.* quia nemo nisi legitimis probationibus, & luce meridiana clarioribus conuictus fuerit, damnari valet, cap. 1. cum sequent. 2. *quæst. 1. l. qui sententiam* t. 6. *Cod. de pænis*: quare secundum *Tullium Cassiodorus lib. 3. variat. epist. 3.* Siculæ gentis naturam damnat, ut quæ facilius ad querelas, etiam de suspitionibus accusare solent, proinde maritus lenocinij crimine teneri dicitur, si uxorem in ipso scelere deprehensum, non verò si suspitum de adulterio retinuerit, *l. 2. Cod. ad leg. Jul. de adult.* Tamen interdum ex suspitionibus proceditur, & quis damnatur. Vnde *Imperatores in l. 2. C. de heretic. eos etiam*, qui vel leui argumento detecti fuerint ab orthodoxæ religionis tramite deflexisse, ut hæreticos damnant, & quandoque criminum suspitionem pariter ac ipsa crimina vitari, iura præscribunt, *l. 2. l. civile 5. Cod. de furis, l. 2. Cod. Theodos. de famulis lib. 1.* ubi pro abdicacionem, reponit vindicationem, *Fomertus lib. 1. rer. quasit. cap. 16.* Quare ob solam suspitionem accusari posse mulierem adulterij, docetur: in præfati, & in *Legemini 30. Cod. ad leg. Jul. de adult. l. 2. 7. Cod. de repudiis*: & refert *Quintilianus declam. 24. de adulterio sacerdote*, ibi: *Sed finge me ex suspitione esse cum illo adulterij, nempe damnatus carnis sacerdotis, &c.* Hoc enim siogolater admissum est in crimine adulterij, quo magis in officio contineretur pulchritudo mulierum, quas non ab adulterio tantum, sed ab eia etiam suspitione alienas esse oportet: ideo iure ciuili coocceditur marito post trimam denunciationem occidere eam, quem de adulterio suspectum habet, *novels 17. 6. his quæque*. Legimus etiam *Crispum Constantino Magni filium iam Cæsaris dignitate prædictum*, ob suspitionem consuetudinis cum *Faula*

nouerca à patre occisum in diuina causâ, apud *Suidam verbo Crispus*, *Zonaram lib. 3. anal.* Et uxorem non tantum ob fornicationem, verum & ob fornicationis suspitionem, ut accusari à viro, sic & dimitti posse testatur *D. Hieronymus in cap. dixit 32. quæst. 1.* idque *Cæsar* concigisse memorat *Plutarchus in eius vita*. Hic enim cum fortè Pompeiam uxorem repudiasset ob suspitionem stupri noctu cum *Clodio* in sacris Bonæ Dææ commissi, eumque testis in ream ipse citatus, nihil se eorum, quæ obiecta fuerant, oisse respondisset, interrogauit accusator, cor ergo uxorem tuam respicisti? At ille: *Quoniam, inquit, meam nec suspitionibus quidem obnoxiam esse oportere censui*.

c *De defendere.*] Verba hæc exposui in cap. tua 5. de *procurat.*

COMMENTARIUM.

IN præfati tantum agitur de accusatione uxoris adulteræ, citra quam variâ singulari iure recepta sunt, quæ in aliis publicis iudiciis non procedunt. Et primò licet ad accusationem publicorum criminum omnes admittantur, ipsorum accusatorum personis, dignitate, ætate, moribus, aliisque causis, si plures t. 6. *si de accusat. l. 2. l. 5. 1. si de populari accusat. l. 3. 4. si ad plures 9. ff. de sepulchre violat. l. 5. 5. lege Julia de mariti 29. 4. penult. ff. hoc tit. at in accusatione adulterij proprium, præcipuumque ius fuit mariti, parentisque, atque in primis mariti, cui merito ob violatam adulterio thorum, iniuriarumque præcipuè illatarum, dedit lex Julia primam in accusando locum, utpote ioluitur propriæ vindicte, ideoque idoniori accusatori, l. 2. 4. si final. 8. l. si maritus 25. in princip. ff. ad leg. Jul. de adult. Terrilius de culis femin. Maritus est castissimus exaltat: mulieribus (seruè) raris castitatis persuadet, parva legibus imponit, terror maritalis exorquet, Quintilianus declamatur, 339. Mariti moris excusatio, mulieris ueritatem desiderat. Post maritum, eloque deficienti, aut non accusanti, succedit parens, suæ itidem iniuriæ vindex, ob natale permanens, etiam in matrimonio, padoris, & amoris vinculum, *dist. l. 2. 4. 8. l. 4. 1. dist. l. si maritus 25.* Quod adeo procedit, ut si maritus præueniens à patre, vel vis. patrisve ab extraneo accusatore, adhuc semoto eo, ut minus idoneo, debitus culque ex lege Julia accusandi locus seruetur. Deinde post maritum admittuntur cæteri necessarij, excludis extraneis, l. quanto 30. in princip. *Cod. hoc tit.**

cit. Nec contrarium probat textus in l. 4. §. *extraneum*, ff. *hoc titulo*, ubi Vlpianus post maritum, & patrem accusandi facultatem extraneis concedi tradit. Nam respondendum est, Pandectarum iure hæc in materia extraneos omnes censeri præter matrem, & patrem; ut cõstat ex l. 2. §. *maritus*, §. *si simul* §. 2. ff. *hoc tit.* Nova vero Constantini constitutione relatâ in d. l. 1. 30. eõdem extranei accedunt ab accusatione adulterij, ibi: *Extraneos præter matrem*; ab hac lege extraneorum eximuntur pater adulteræ, eius frater, & proximus, immo & filij quoque, & consobriini, ex l. 2. *Cod. Theodof. de adul.* Aliud singulare huius accusationis versatur circa tempus præscriptum ad eam proponendam; nam licet aliis criminibus accusandi viginti anni definiti sint, l. *querela* 21. *Cod. ad leg. Corn. de falsis*, l. 2. & 3. *Cod. de requirendis reis*, adulterij tamen accusatio quinquennio perimitur, etenim adultero accusando quinquennium computatur ex die admissi criminis; adulteræ sex menses viles à die diuortij: qui tamen ita sunt computandi, ne excedant quinquennium continuum ex die admissi criminis numerandum, l. *mariti* 29. §. *sex menses*, & sequenti. l. *quinquennium* 31. ff. *hoc tit.* l. 5. & 28. *Cod. eod.* l. 1. §. *accusationem*, ff. *ad Turpil.* Ex his sex mensibus vilibus, quos adulteræ accusandæ definitis diximus, primi duo, idest sexaginta dies viles, dantur marito, partique ad accusandum iure mariti, vel partij; reliqui vero quatuor menses cedunt extraneis ad accusandum, maritoque & parti, sed iure extranei, l. 2. §. *penult.* & vlt. l. 3. l. 4. §. 1. l. 1. §. *sexaginta*, l. 14. §. *penult.* l. 30. §. 1. ff. *hoc tit.* l. 6. *Cod. eod.* Enimvero sexaginta hi dies diuertiè numerantur in mari, ac in femina accusandis. Etenim quoad adulterum à die commissi criminis computantur, l. *mariti* 29. §. *sex menses*, l. *pater* 30. §. 1. ff. *hoc titulo*, l. iure 3. *Cod. eod.* l. 2. §. *accusationem* 10. ff. *ad Turpil.* quia & statim accusare adulterum licuit. At quoad vxorem non à die criminis admissi, sed diuortij dinumerati dies obtinuit, quia nec ante diuortium matritus, parentis instituebant accusationem, l. *prospexis* 12. §. 1. & 2. ff. *qui*, & à, *quibus*, l. *crimen* 11. *Cod. hoc tit.* et si nouo iure id facere permittitur, nouel. 127. cap. 8. *ambros.* sed nouo, *Cod. hoc tit.* Nec extraneus vxoratum feciminam ouptam, eam adulterij pollulare poterat, ne liceret cuius extraneo bene concordans matrimonium subnectere, nisi simul de marito lenocinio conquereretur, l. 1. §. 2. *leno* 10. l. *lenocinio* 26. ff. *hoc tit.* Aliud singulare etiam procedit in ipsâ accusatione; nam eum in alijs publicis iudiciis instituendi actor engator in libello accusantis subsciberet, ex traditis in cap. *super his* 16. de *accusat.* in hac tamen accusatione remittitur marito hæc necessitas cessante presumptione calumniæ, l. *crimine* 14. §. *penult.* & vlt. ff. *hoc tit.* l. *auxilium* 37. §. 1. ff. de *minor.* l. 3. C. de *calumni.* l. 5. *quasi*, ff. *ad Turpil.* l. iure 6. *Cod. hoc tit.* Et ita ex calumnia non tenetur, nisi euidentissimis probationibus liquet eum habuisse animum calumniandi, l. *si maritus* 19. §. *final.* ff. *hoc tit.* In illis verbis: *Iure mariti qui accusat*, calumnia periculum non quirit. Docent Cuiac. de *prescript. cap.* 1. Ant. Matthæus de *crimine*, ad tit. de *adult.* cap. 4.

Hactenus egimus de accusatione adulterij iure mariti; nunc videamus de accusatione iure extranei ex iudicio publico de adulterio instituendo.

Et quidem elapso prædicto tempore marito, & patri a accusandum concessio, vel si intra id tempus confiteretur eos accusare uolle, l. 3. §. 4. *si negauerint*, ff. *hoc titulo*, succedebat ex iudicio publico accusatio, & collibet extraneo ex populo concedebatur, l. 2. §. vlt. l. 4. §. *extraneum* 4. ff. *hoc tit.* & marito etiam intra id tempus iure extranei accusare vxorem licebat, modo subsciberetur in accusatione, l. 3. C. de *calumni.* non tamen cohera elapsum tempus accusationis iure mariti testitur matritus minor, quoniam ut eleganter Papiasmus ait, restrictionis aduiliu executiononibus pernam paratum non est, l. *auxilium* 37. §. 1. ff. de *minor.* l. 3. cum 10. §. 1. ff. *quis capium*, l. 1. §. *qui lege* 2. ff. *ad leg. Jul. de ambros.* l. qui 35. l. *pater* 42. ff. de *condict. unde.* Acceptum tamen ab hac accusatione iure extranei seui, libertive comita paratum, qui de adulterio accusare nequeunt, l. 7. ff. *ad leg. Jul. Marii* 1. §. 6. ff. de *accusat.* l. 26. §. vlt. C. *qui accusat*, l. *legumiam*, C. de *test.* sicut & lenocinio, vel infamâ notatus, cuius enim Augustus interdones accusatores in criminibus publicis admitti non debere eos, quos vel status, vel natura indignos facit, l. *qui accusare*, ff. de *accusat.* l. vlt. C. *qui accusat*, l. 38. §. vlt. ff. de *adult.* Vnde quamvis generet, & propter statum excludatur à quocunque criminali iudicio (si inuianissimum Malesbaris seculis excipias) scemina, pupilluue; tamen specialij iure in adulterio, in quo robustæ ætatis accusatorem exigimus, ab accusando atqueum minorem, l. *si quis* 19. §. 4. *lex Julia* 6. ff. *hoc tit.* l. *iam* *Prætor*, ff. de *iudic.* Vltieris accusatio hæc iure extranei petiunt, sicut & illa iure mariti tempore suo circumscribitur, finiturque, quia post sexaginta dies nulli to datus, de quibus supra, cedunt statim alij quatuor menses cuiusque extraneo. Cohera ætati autem adulterij potiturur accusatio vsque ad quinquennium, l. 4. §. *extraneum*, l. *mariti* 29. §. *sex menses*, l. *quinquennium* 31. ff. *hoc tit.* l. 5. §. *final.* ff. *ad leg. Jul. de vi*, l. 1. §. *accusatio*, ff. *ad Turpil.* l. 5. & 28. *Cod. hoc tit.* Eo quinquennio elapso accusandi simplices ius non est; idque peculiariter est in adulterio, quia in alijs, ut in cæteris publicis iudicijs, non nisi viennio præscribitur accusandi ius, l. *querela* 12. *Cod. ad leg. Corn. de falsis*, l. 5. C. *hoc tit.* l. 2. C. l. *Theodof.* & intra annum crimen, l. *submersis* 6. C. *Theodof.* de *usufructu*. Alia etiam differentia versatur circa hoc tempus præscriptum ad accusationem adulterij, quia videlicet in adultero accusando tempus continuum est, l. 1. §. 4. *ad mariti* 29. §. 7. ff. *hoc tit.* idemque computatur in eo etiam dies feriari, & in quibus accusator experiri non potuit. Econtrariò in adultera à die diuortij, & in adultero à die commissi criminis tempus comptatur, dieque viles sunt, d. l. 1. §. 29. §. *sex menses*. Aded autem quinquennio præscribitur facultas accusandi, ut nec eo elapso dices ius mariti, parentisve tempore non consumptum, si forte tardius quàm debuit, accusauit, d. l. 1. §. *mariti* 29. §. *sex menses*, ff. *hoc tit.* & de consensu etiam motu adulter à vxore ante elapsum quinquennium, permittit accusatio contra adulterum postulatam adulterij, l. *qui dicitur* 8. l. *maritus* 19. §. *quinquennium*, ff. *hoc titulo*, iuxta quæ iuris principia hocuque præstata vult Alexander III. in præfati docuit matris specialiter competere ius accusandi vxores; immò hodiè extraneis non datur facultas accusandi adulterum, d. l. 1. §. 80. *Tauri*, l. 2. §. 2. l. 3. §. *recipit*.

CAPVT V.

Idem ^a Carnotensi Episcopo.

Significasti nobis quendam presbyterum cum alterius coniuge diabolice instinctu in Ecclesia frequenter, sicut asseris, dormiuisse: quæ utique se, & illum sacerdoti cuidam huiusmodi delictum ^b confessos fuisse, publicè tibi detexit. Et hoc ipsum idem sacerdos nomen adulterij celans in præsentia tua dixit. Super quo quid fieri debeat, cum negante adulterum mulier in confessione persistat, ab Apostolica Sede consilium requisisti. Nos ergo iuxta Sanctorum Patrum decreta volumus, ut condignam penitentiam adulteræ præfatæ imponens, Ecclesiam prælibatam per adspersionem aquæ sanctificando ^c reconciliet. Prædicto autem sacerdote, ne contra ^d Apostolum, infirmorum corda malâ famâ ipsius percutiantur, & ne nostrum vituperetur ministerium, ne securiores presbyteri existentes, prolabantur licentibus in peccatum, cum vicinis quinque presbyteris, quos nolle peccare cognoueris, iuxta arbitrium tuum ^e purgationem indicas. Quod si se purgare poterit, in officio suo permittas ipsum ministrare: si verò non poterit, ipsum ab officio suo suspendere nullâ ratione postponas.

NOTÆ.

^a *Carnotensi.* Tantum Alexander III. habetur in hac sacra collectione, & in prima, sub hoc tit. cap. 6. Sed tam inscriptionem, quam litteram restituit ex Concilio Lateran. ubi post. 30. cap. 17. repetitur textus hic. De decreto Carnotensi egi in cap. 3. de translat. cap. 10. de officio delegati.

^b *Confessos fuisse.* Verba hæc exposui in cap. 2. de officio ord.

^c *Reconciliet.* Iuxta tractat. in cap. 3. de consecr. Eccles.

^d *Apostolum.* Prima ad Corinthios, cap. 8. & ad Corinth. cap. 9.

^e *Purgationem.* Esti regulariter res inuit alios acta, vel iudicata, aliis neque nocet, neque prodest, *l. sapi. ff. de re iudic. late probat. in cap. penult. eod. titulo.* tamen si Titius accusatus sit de adulterio perpetrato cum Seia, & Titius absoluitur, potest Seia, si postea accusetur, se defendere exceptione rei iudicatæ pro Titio lata: quod si condemnatus sit, sententia non nocet Seiz, *l. 15. tit. 12. par. 3. l. 9. tit. 17. par. 7.* ubi redditur ratio huius discriminationis, & hæc doctrina limitatur, nisi Seia accusetur de adulterio commissio post sententiam pro Titio latam, quia ad delicta de nudi commissio iudicium non extenditur: & nota utrobique Gregorius, desumi sententiam hanc ex lege *derogantiss.* 17. §. *ut ff. ad leg. Jul. de adul.* ubi extat eadem decisio. Verùm designior fuit lex patris, quam ius commune, quoniam hæc regula iuxta illud non est perpetua, sed tantum locum habet fanore nupcialium, si durat matrimonium, quando adultera accusatur. Cæterum si dissolutum sit,

velut est nec prodest, nec nocere sententiam, *l. adulter 19. §. 1. eo tempore 2. cum sequenti ff. ad leg. Jul. de adul.* Quamvis autem sententia contra vxorem lata, non nocet alieri, præsumptionem tamen aliquam facit, & ita illi indicenda est purgatio canonica, ut in præsent. textu, & in *interrogat.* 24. 2. *quæst. 2.* & hoc præiudicium quod generatur socio, est tantum præiudicium exemplaris, id est præsumptio delicti, quæ vix iudex summi ex sententia alterius: si enim iudex pronunciat Seium comensisse adulterium, de quo cum Titia fuerat accusatus, non potest non moueri alter iudex, qui de causâ Titiz cognoscet ex sententia contra Seium lata: quamvis enim exemplis non sit iudi condempnatio, quod alter iudex iudicauerit, sed legibus, & iuris ratione, *l. sed licet 12. ff. de offic. præf. l. nemo, C. de sent. & iur.* hoc intelligendum est, ut nullus iudex indicatæ partium iustitiâ, & iuris ratione non liberatæ existimet acquiescendum esse illi iudicio, quod iure simili alter iudex fecit. Tuschus *practicar. litter. E. conclus. 543.* Barbosa *axiomat. 86. num. 3.* Valenzuela *consil. 121. num. 160.* Sed licet hæc quæstio olim controversetur apud nos, nullius utilitatis est, quia ex *l. 20. Tauri*, quæ est lex 2. tit. 20. lib. 8. *recopil.* non potest scorum ab altero alter accusari, sed simul omnes in iudicio trahendi sunt, & vna sententiâ causâ terminatur. Notatur Gregor. in *dist. 1. 9. gloss. 1.* Didacus Perez in *l. 1. prope finem, tit. 15. lib. 8. ordin.* & apud alias nationes idem receptum esse dicit Bayardus ad *sol. Clarum, §. adulterium, & num. 30.* Vnde in præsent. casu etsi femina damnata esset adulterij, non ideo condemnatio clerico obest, propter infamiam tamen imponitur illi purgatio canonica, de qua agemus in cap. 1. de purg. canon.

CAPVT VI.

Idem : Turonensi Archiepiscopo.

Intelleximus per literas, tam ven. f. n. ^b Pistacien. Episcopi, quam per ea, quæ coram dil. fil. A. Subdiacono ^c & Capellano nostro, super hoc audire concesso, proposita pro partibus extiterunt, quod cum S. Jansen Elizabeth vxorem suam à mari ali

consortio

confortin sine causa rationabili depulisset; & item Episc. dicecesanus eorum audiens mulierem eandem cum quodam adultero fornicari, eam, & illum vinculo excommunicationis adstrinxit. Quæ tandem cum, qui dicebatur eius adulter, abiurans, absolutione receptâ, coram Episcopo memorato prædictum virum sibi restitui postulavit: at ille huiusmodi ei obiciens adulterum, de quo prolem genuisse dicebat, & quod ab ipso non expulsa, sed spontanea recessisset, restitutionem sui proposuit minime faciendam. Quod mulier memorata prorsus inficians, replicabat id ipsum, quod fuerat fornicatus, & per fornicationem sobolem procrearat, propter quod tali exceptione vi non poterat contra ipsam. Cum autem virique parti probandi hoc facultate fuisset, adulterij etiam, quod vir dicitur commississe, probatione cessante, ipsum recipere compellas eandem. Quod si prædicto modo de mulieris fornicatione constiterit, nisi testes, per quos viri adulterium est probatum, fuerint reprobat, cum matrimonij ius in utroque consistat, & paria delicta mutua^a compensatione tollantur, nihilominus cum cogas ut eam recipiat, & maritali affectione pertractet; alioquin mulieri prædictæ silentium imponere non postponas.

NOTÆ.

^a *Trentensi.* Ita etiam legitur in tertia collectione, sub hoc tit. cap. 1. De Metropoli Turonensi egi in cap. 5. de tempor. ordin.

^b *Pillaniensi.* Mauritius videlicet, antea Episcopus Nannetensis. De Pillaniensi diocesi egi in cap. 20. de rescript.

^c *Compensatione.* De qua agemus proximo commentatini.

CAPUT VII.

Idem Episcopo^a Ambianensi.

Tva fraternitas requisivit à nobis, utrum aliquo denegante vxori suæ in adulterio deprehensæ debitum coniugale, si postmodum ipse cum alia perpetraret adulterium manifestè, & vxore agente penitentiam de commissio, & veniam humiliter postulante, vir cogi debeat, ut eandem maritali affectione pertractet. Super quo tibi taliter respondemus, quod cum paria crimina compensatione mutua deleantur, vir huiusmodi fornicationis obtentu suæ vxoris consortium nequit declinare.

NOTÆ.

^a *Ambian.* Ita etiam legitur in tertia collectione, sub hoc tit. cap. 2. De Ambianensi diocesi egi in cap. 10. de regul.

COMMENTARIUM.

I. **L**ectè iure civili attento vxor non haberet facultatem postulandi maritum reum adulterij criminali iudicari, l. 1. C. de adul. l. 8. C. de accusat. l. 5. C. qui accusare, l. 6. ff. de popul. action. l. 3. §. si filius mulier, ff. de liber. hom. exhib. Quintilianus lib. 6. instit. cap. 23. Gellius lib. 10. nocturn. cap. 23. ibi: In adulterio si uxorem tuam deprehenderes, sine iudicio imponere neceres; illa te si adulterares, digito non auderet attingere, neque ius est. Quia non pariter iniuriam violati lecti, cuius dominus mulier non est. Quas Romanas leges incusant D. Ambrosius lib. 2. de Abraham, cap. 4. ibi: Nemo sibi blandiatur de legibus humanarum, emere supram adulterium est, nec viro licet quod mulieri non licet. Affectus hominis 5. Continentia lex non sumit tantum, sed etiam viris à Deo lata est; qui tamen legislatoribus adhaerentes humanis, per quas libidinis ipsi licet, &c. Sanctus Chrysostomus

D. D. Gonzal. in Decretal. Tom. V.

homil. 5. in primo ad Thersal. Quomodo mulier nos perimus quando nobis nupta, alii scripsit coniugum; ita perimus & nos, & si non Romanis legibus, certe a Deo. Sanctus Zeno sermone de pudic. Quid hic responderi possum lubrici mariti, non video, qui humanarum legum iniqua impunitate decepti, infestum terram nec ex sua ipsa voluntate noscentes, quod pari nolunt, libenter efficiunt. D. Hieronymus in initio epistolæ ad Oceanum: Alia sunt leges Cesarum, aliud Papianus, aliud Paulus noster precipit: apud illos viris impudicitia frona laxatur, & solo supposito, aque adulterio condemnato, passim per lapidarios, & ancillales libidine permittitur, quasi eripiam dignitas faciat, non voluntas. Apud nos, quod non licet feminis, aequè nec licet viris. Nazianzenus erat. 31. num. 2. immò & apud Hebræos filii viri ius erat repudiij mittendi, quemvis Salome Herodis Asealoniz foror id sibi contra leges patris usurparet, ut testè Iosephus lib. 15. antiqu. cap. 11. Tamen iure civili vxor iudicio de motibus contra maritum experti valebat, quia accusatrix priuata, & ciuili erat, etiam quando non graves mores institueratur, leg. viro 39. leg. 47. ff. solut. matrim. leg. viii. §. 5. vers. Quid enim, Cod. de rei vxor. aff. leg. 4. Cod. Theodos. de incest. nuptiis, leg. 3. D. D. Cod.

Cod. Theodof. viſtum ciuili aſſion. Vlpianus in fragm. tit. 6. §. 9. 12. & 13. & ita in hoc ciuili iudicio patia delicta mura compensatio tolluntur, d. l. vtro 39. d. l. vna mulier 47. ff. ſalut. matrim. quia æquum eſt vt ea lege, quam ambo contempletur, neuter vindictetur, l. ſi duo 36. ff. de dolo, l. ſi ambo 10. ff. de compenſ. Lex ſuſta 30. ff. de negot. geſt. l. 2. §. idem ait, ff. ne quid in loco public. l. qui bona 13. §. ſi quis, ff. de donno inſtit. l. quoniam, C. de heretic. l. in arenam 11. C. de inſſic. teſtam. l. ſi filium 3. C. de liber. cauſ. aliter atque in lenocinio replicatio, in qua etiam ceſſabat compenſatio, l. 2. §. ſi publico, l. ſi vxor 13. §. ſi index, ff. hoc tit. Similiter iure canonico marito petenti diſortium ob adulterium opponi poteſt exceptio alterius adulterij à ſe commiſſi: & ita in hoc iudicio ciuili patia delicta mura compenſatione tolluntur, cap. ſignificati, cap. ex litteris, de diuerſis: quia periniquum videtur, vt ab vxore pudicitiam vir exigit, quam ipſe ſeruate recuſat, cap. nihil iniquius 32. q. 4. cap. apud 23. q. 5. d. l. ſi vxor 13. §. ſi index, ibi: Periniquum eſt, vt pudicitiam vir ab vxore exigit, quam ipſe non exhibet. Quod ſumptum eſt ex quadam conſtitutione Imperatoris Antonini, quæ relata eſt in fragmenta Codicis Gregorij, l. 6. ex titulo incerto, cuius partem reſert D. Anguſtinus lib. 2. de adulter. coniugiu, cap. 8. in hac verba: Sane iura litera multa ex parte cauſa præiudicant. Nec enim ſi pones te culpa fui, vt maritimum ſalueretur, & ſecundum legem ſaluum vxor tua Eſpafia mberet, propter hoc reſcriptum meum adulterij damnata non erit, niſi conſeſſet eſſe commiſſum. Hærentes autem ante oculos hoc inquirere, an cum in pudicæ vxorem, illi quoque bonos mores colendi auctor fuiſſi. Periniquum mihi videtur eſſe, vt pudicitiam ab vxore exigit, quam ipſe non exhibet. Quæ res poteſt & vxorem damnare, nunc ob compenſationem mariti criminis rem inter vtrouque componere, vel cauſam ſcili ſollere. Idem D. Anguſtinus ſermone 46. de verb. Domini, ibi: Si dulturi eſſis vxores, ſeruate vos vxoribus veſtris; quales vultis eas inuenire, tales & ipſæ inueniant vos. Quis inueniet eſſi, qui non cauſam velli docere vxorem? Et ſi accepturus eſſi virginem, quis non inuallam deſideret? Inuallam quærit? inuallam eſſe. Puram quærit? nam enim illa poteſt, & tu non poteſt? Tu exigit ab vxore videlicet ne maritum? & non vis reddere hoc vxori? Et vis vxorem tuam viſtricem eſſe libidinis, in viſtricem iacet? Egredie quoque in hoc argumento exultant idem D. Auguſt. lib. de decem chordis, cap. 4. & 9. & de hemil. 49. & 50. Similiterque Auſonius apud Stobæum ſermone 6. Seneca episto 95. & 96. Gregorius Nazianzenos relatus à Coſtaico in nouell. 22. Inſiniani, Landantius Firmianus lib. 6. diuinar. inſtit. ibi: Exemplo continentia docenda eſt vxor, vt ſe caſi gerat; iniquum enim eſt, vt id exigit quod ipſe proſtare vel nolle, vel non poſſit. Seneca episto 34. Improbis eſt qui ab vxore pudicitiam exigit, eſſi alienarum corruptor eam non. Plautus quoque iuris ciuilis hæc de re conſtituti iniquitatem arguit, eum in Mercat. ſub perſona Syraz ita queſturi aſſu. ſtem. 7.

Ecaſſet lege dura viuunt mulieres, Mulierique iniquiore miſera, quam viri. Nam ſi vir ſeruum duxit clam vxorem ſuam, Id ſi reſtituit vxor, impune eſt vxor. Vxor vxor ſi clam domo egreſſa eſt foras, Vir ſu cauſa, exigitur maritima. Vnam lex eſſet eadem, qua vxori eſt vxor. Nam vxor contenta eſt, qua bona eſt, vxo vxor. Qui minus vir una vxore contentus fuit?

Alia dedi in canone 69. Concilij Illeber. Ratio autem, eum in actione criminali ciuilitet intentata compenſatio admittatur, non verò in criminaliter inſtituta, prouenit ex eo, quia expedit Reipublicæ, ne delicta maneant impunita, cap. vt ſama, de ſem. excom. l. item, ff. ad leg. Aquil. l. locato 9. §. quod illicitè, ff. de publicano: & ideo in delictis non datur compenſatio, l. 2. §. qui hoc dicit, ff. hoc tit. l. 1. C. de crimina. expil. heredit. nec in præiudicium Reipublicæ paſſiſci licet, aut compenſatio admitti poteſt, l. iura gentium, §. ſi paſſiſci, ff. de paſſi. ideo compenſatio admittitur, quando agitur de adulterio ad exactionem dotis, vel ad diuorciu, vt in d. l. vtro 39. d. l. cum mulier 47. ff. ſol. matrim. quia cum principaliter agatur de priuata vilitate, nihil impedit, vt compenſatio admittatur, eum penam ad inualem ſoluant, argumeto legis ſi debetur, ff. qui paiores. Nec tunc obdat textus in l. apud 4. §. item queritur, ff. de doli excepti. quia ibi non admittitur compenſatio doli, eſſi ciuilitet ageretur, ne excluſo tunc adit eſſi malicia ſua commodum repotiatur. Quæ etiam ratione procedunt textus in l. ſi duo, ff. de dolo malo, cap. dilecti, de excepti. vbi ſi admittitur replicatio alterius excommunicationis, admittetur etiam excommunicationis ad agendum; & in præſenti textu etiam admittitur replicatio adulterij, quia aliis maritus ex delicto ſuo luctum faceret. Sed adhuc ſuprà tradiis obſtat textus in l. cum mulier 47. ff. ſol. matrim. vbi compenſatur adulterium cum lenocinio, eſſi criminaliter agatur. Quia reſpondetur cum Gloſſa ibi, & in d. l. ſi ex publice, diſcrimen conſtituendo luter caſum, in quo mulier recepta erat inter reos; & inter com, in quo nomen eius inter reos telatum non erat, iuxta ſolemnitatem, quam reſerunt Carolus Sigonius lib. 2. de adult. cap. 10. Briſſonius de V. S. verbo recipere, Corraſſius lib. 2. miſcel. cap. 10. Primo caſu eum iam vxor recepta eſt inter reos, excipere de lenocinio viro non poteſt; ſecundo verò caſu marito æcuſanti lenocinium obſistere valet. Cum ergo in præſenti textu, & antecedenti agatur de iudicio ciuili, videlicet diuortio ex cauſa adulterij ciuilitet intentato, ideo rectè ait Pontifex, mutus delicta pari compenſatione tolli, & ita marito agenti de adulterio ad diuorciu faciendum iure opponi poſſe exceptionem ſimilis adulterij, docuerunt poſt alios Balboz in cap. 2. ex num. 23. de excepti. Baſil. lib. 9. de matrim. cap. 18. Doctoz Bajo-Arroyo in cap. Quintavallis, num. 70. de iur. iur. Henellius de dotalis, cap. 10. §. 8. Et poſſe vxorem ob adulterium mariti petere diuortium, probauit Valenzuela conſil. 45.

TITVLVS XVII.

De raptoribus, prædonibus, incendiariis, & violatoribus Ecclesiarum.

CAPVT I.

Ex Concilio^a Meldensi.

DE illis autem, qui infra parochiam beneficium, aut hereditatem habent, & alterius Episcopi parochiaei sunt, & de loco ad locum iter faciunt, & rapinas, & depredationes peragunt, placuit ut excommunicentur, oec aote ex parochia exeant, quamque perpetrarunt, dignè emendant: quorum excommunicatio seniori eorum, & proprio Episcopo^b significanda est, ne eos recipiant antequam illuc redeant, ubi rapinam fecerunt, & omnia pleniter emendant.

NOTÆ.

1. ^a **M**eldensi.] Ex quo Concilio in cón. 2. citatur textus hic à Burchardo lib. 11. *De rectoribus*, cap. 45. Carnot. p. 14. cap. 109. Gratiano in cap. final. 6. q. 3. Bernard. Papien. in cap. 1. hoc tit. in 1. collect. de quo Concilio Meldensi nonnulla adduxi in cap. 1. de consiliis.

^b *Significanda.*] Iuxta morem Ecclesiæ, quem probavi in cap. ad reprinendam 8. de officio ordinis.

2. Ex hoc textu communiter deducitur, ratione delicti reum sortiri forum in loco ipso, ubi deliquit. Quam conclusionem latè exposui in cap. postulasti, de foro compet. Ex quo commentatio præfens petendam est.

CAPVT II.

^a Eugenius III. *uniuerso Clero.*

Super eo, quod de raptoribus, & Ecclesiarum violatoribus, atque Presbyteris, qui penitentiam eis iniungere, vel eorum oblationes contra^b statutum nostrum suscipere attentauerint, à nobis communi deliberatio constitutum est in Concilio cum fratribus nostris: Statuimus, in constitutioe ipsa Sanctorum Patrum vestigia subsequentes, & auctoritate Dei, & Beatorum Apostolorum Petri, & Pauli patiter confirmamus statuantes, ut quicunque ex iis raptoribus, qui in viue suggerente diabolo violenter surrexerint in rapinam, siue Ecclesiarum violatioes, qui manifestè deprehensos est, vel amodò fuerit, nisi prius ablata restituat, si poterit; vel emendandi firmam, & plenam securitatem fecerit, pœnitentiæ beneficium eis^c penitus deogetur. Si verò usque ad obitum, quod abest, in sua contumacia durauerit, & in extremis positus remedium^d pœnitentiæ humiliter postulauerit, si emendatioem, vel emendandi securitatem præstiterit, ac fideiussores, qui oblata restituere debeant, idoneos dederit, ei penitentia, & sepultura ecclesiastica cooedatur. Qui autem in sanitate obstinatus mente non penituerit, vel emendauerit, & in morte securitatem, ac fideiussores, sicut diximus, præstare nequiverit, pœnitentia quidem parum prodesse videtur, sicut credimus: sed^e viaticum non negetur. Ita tamen, ut nullus clericorum^f sepulture illius interfit, nec eius^g elemosynam præsumat accipere. Quod si quis^h Presbyterorum, vel clericorum contra statuta nostra in vita, vel in morte pœnitentiam dare, aut sepulture illorum interesse, vel eorum elemosynas accipereⁱ attentauerit, si huiusmodi rapinæ participes iouenti fuerint, & ordinis sui damnum irrecuperabiliter patiantur, & ecclesiastico beneficio careant.

Eugenius I. I.] Ita etiam legitur in prima collectione, *sub hoc tit. cap. 5.* & post Concil. Lateran. p. 34. cap. 1. ex quo inscriptionem, & litteram huius textus restituo.

b Statutum.] Forſan in aliquo Concilio ex celebratis ab Eugenio II. quorum meminerunt Severinus. Reginus tom. 7. Concil. Constantin. in ſumma Concil. licet in hoc ueluti editis non repetatur conſtitutio, cuius meminit Eugenius III. in præſenti.

- 1.** *Penitus denegatur.]* Hæc prima pars præſentis textus diſcretis reddidit ex eo, nam poenitentiam denegare alienum videtur à doctrina Evangelica, & diſciplina Eccleſiæ; cùm quacunq; horum ingemuerit peccator, debeat auditus, *cap. agnitionis 26. q. 6. cap. ſunt plures, de penis, diſt. 3. cap. quod quidem, de penis, & remiſſi, probant Ambrosius ad Terent. de pudic. ſer. per totum. Lirin. aduerſus hæreſes, Baronius tom. 2. anno 116. num. 3. & 253. num. 77. & 254. ex num. 38. & 98. & anno 255. ex num. 2. Mendoza lib. 2. Concil. Niber. cap. 6. num. 46.* Ergo malè in præſenti denegatur poenitentia. Pro cuius difficultatis ſolutione Gloſſa in præſenti, quæ ſequuntur antiquiores, aſſertit hæc verba ad tertiorum tantum poſita fuiſſe. Alij etiam aſſerunt, poenitentiam denegari raptori reſpectu illius peccati, ita ut de alio poſſit poenitentiam concedi. Sed hæc ſolutio facile conuincitur ex eo, nam poenitentia nequit eſſe ſuſcepta, niſi omnia peccata remittantur, ut docet D. Thomas q. 86. art. 2. Sotus in 4. diſt. 15. q. 1. art. 3. Quare uetus diſcretus eſt, poenitentiam in præſenti non denegari, ſed tantum donec ablata non reſtituantur; quia cùm non dimittatur peccatum, niſi reſtitutor abſolutum, *regul. peccatorum, de R. I. lib. 6.* iuſte nolenti reſtituere bona vi ablata, poenitentia denegatur, cùm non credatur in eo verum adeſſe dolorem peccati, cum adhuc contrectet aliena ſine animo reſtituendi, quæ poena inſulſa non eſt in noſtro iure canonico; nam uſuario etiam deoratur poenitentia, niſi reſtituat uſuras, *cap. final. §. finali, de uſur. lib. 6.* Hoc tamen intelligendum eſt, ſi raptor poſſit reſtituere, alia ad poenitentiam admittitur, cùm ob paupertatem eſculetur à reſtitutione, *cap. olim, de reſtit. ſp. cap. ſeres 14. q. 6. cap. ſicut dignum, de homicid. cap. cum tu, de uſur. Couar. in regula peccatorum, 1. p. §. 4. & poſſit interim ſatisfacere fideiuſſoribus præſtitis, vel ſimili dat, id eſt ſolentate de re reſtituenda, licet aliter firma accipiat in cap. 2. de lo. au. cap. ex litteris, de inuocatum. cap. ſequentem 6. ne clerici, vel monach. Clemens 1. de exceſſib. Prælat.*

- 2.** *d Poenitentia, & ſepulchrum.]* Idem probatur ex cap. ſeres 14. q. 6. cap. ſi quis clericus 12. q. 4. cap. ſi quis membrorum 23. q. ult. cap. falſa, cum aliis, de penis, diſt. 5. nec tunc oblat textus in cap. ſi quis poſuit, de penis, diſt. 7. in illis uerbis: Si quis poſuit in ultima neceſſitate agnitionis ſue uoluerit accipere poenitentiam, & accipit, & mox reconciliatur, & ualid, ſacer uobis, non illi negotium quod petit, ſed non præſumimus, quod bene exiit: poenitentiam dare poſſumus, ſecuritatem dare non poſſumus. Et cap. idcirco, eod. diſt. ubi D. Cyprianus ait: Idcirco frater chariſſime poenitentiam non agentes, nec dolorem delicti, quoniam ſummam tota corde reſtaueris, prohibemus omnino conſueſimus ab ipſe communicatione, & pacis, ſi in infirmitate, atque in periculo corporis depræuari; quia rogare illos non delicti

poenitentia, ſed moris urgentis admoſitione compellit; nec dignum eſt in morte accipere ſolacium, qui ſe non capitiſſe eſſe moriturum. In quibus doceri uidetur, in ultimo uitæ poenitentes nullo modo eſſe audiendos. Nam potius uerum eſt, in ultimo uitæ ſpiritu de peccatis præteritis poenitentiam peti poſſe, & iuxta dolorem poenitentis peccata remitti, ut docent Leo in cap. nemo, D. Auguſtinus in cap. nullus, de penis, diſt. 7. Et idem ſanctus Doctor in d. cap. ſi quis, non docet, deſperandum eſſe de ſalute eorum, qui in ultimo uitæ ſpiritu poenitentiam petunt, ſed ſolum non audere promittere illis ſecuritatē; & merito, cùm timeſi poſſit, ut Deus illis ſuam denegeret gratiam, qui in uitæ poenitentiam contempſerunt, iuxta illud Proverb. cap. 1. ibi: Quia uacat, & remiſſi, ego quoque in interitum reſtre ridebo: tunc imaculatus me, & non exaudiam. Dantem Cyprianus in d. ad delictum accipiendus eſt de illis, quos conſtat in ipſius articulo non uerum, ſed ſciam agere poenitentiam, ut conſtat ex illis uerbis, poenitentiam non agere; & docet Barboſa in cap. nullus, de penis, diſt. 7.

e Viaticum non negetur.] Sed ſi poenitentia non prodeſt, quare viaticum præſtatur, cùm ad hoc ut quis admittatur ad Euchariſtiæ ſacramentum, debeat habere priuam gratiam per ſacramentum poenitentia: quomodo ergo ſi ille non accipit poenitentiam proficiam, admittitur ad Euchariſtiā? Cui difficultas ut ſolueretur, diſcendum eſt, raptorem hunc in morte poenitentiam eſſaſſe, ac de peccato commiſſo contritionem habuiſſe, ſed ſatisfacere nequiſſe, id eſt non poſuiſſe; unde licet ratione contritionis liberetur à poena æternæ, non tamen à temporalis, quæ pro peccato debetur, ſoluendaque eſt in hac uitā, vel in alia, *cap. quid ergo 25. q. 2.* docent Theologi ſchoolaſtici, in 4. diſt. 15. unde ad eam reſpicens Eugenius in præſenti ait, poenitentiam parum prodeſſe debere, ſed pro peccato commiſſo viaticum dari, hoc eſt reconciliatio, nem concedi; viaticum enim accipitur variis modis, pro ſacramentis illis uidelicet, quæ motibus prodeſſe poterant; unde baptiſmus in more collatus appellatur viaticum à ſancto Baſilio in homilia de Baptiſmo; notauit Baſilium in can. 18. Concil. Carthag. Sepe ſæpius accipitur pro Euchariſtia, ut in can. 29. Concilij. Niceni: Concil. Tolet. 1. can. 18. In præſenti tamen textu, ni fallor, accipitur pro minori reconciliatio. Scendum enim eſt, quod olim cùm quis excommunicatus, vel alius notorius peccator, qui ob criminis grauitatem debebat poenitentia ſolenni caput ſubdere, ſi in morbum, & uix diſcrimine iocidēbat, illuc aduocato, Presbytero poenitentiam humiliter eſſaſſabat, quam Presbyter non temere, & ſtatim, inconfulto Epifcopo concedebat, ſed cùm deſperat ſalutē diem ſupremum ſibi inſilire peccator præuidens, pacem eccleſiaſticam, ac reconciliationem petebat; & tunc Presbyter ipſum reconciliabat, eaque reconciliatione minor erat, quæ etiam ſolenniter poenitentibus, & in tercio, aut quarto gradu caſtibus dabatur, per quam ſidelium orationum, communionisque eccleſiaſticæ participes ſubant. Et hæc reconciliatio uianem neceſſarium appellatur à Patribus Concilij Niceni can. 76. Dicitur uero minor reconciliatio ad diſſimilantem maioris, quæ ſolennis erat, de qua accipiendi ſunt textus in cap. qui recedant, 26. q. 6. ibi: Qui recedunt de corpore poenitentia accepta, placuit ſine reconciliatoria

membris impudicis et ceteris, ac ut et quod, inueniunt
 sufficit consiliorum fecerunt. Patrum de his, inueniunt,
 qui et alij in his et ceteris, inueniunt, inueniunt, inueniunt,
 inueniunt. Concilium Ancyranum cap. 7. Carth.
 ag. 4. de 9. Gerundense cap. 13. Epau. cap. 24.
 Nicenum cap. 29. Sicut in epist. ad Timotheum
 Tolet. 1. can. 12. docuerunt Albasimus lib. 1. de
 1. Bolognensis in notis ad Iam. 1. lib. 1. cap. 1. 1.
 Loosy in not. ad Concil. Tolet. 1. can. 1. 1. Con-
 siderationem in notis ad can. 1. Concil. Ancyran. Tolet. in
 notis. cap. 13. de 9. 7. Menardus in notis ad lib.
 1. de 9. 7. Gerund. fol. 21. D. Iohannes de Orato-
 ribus de irreg. et puri. p. 2. accepto t. Sed licet
 per viaticum poenitentia reconuenerit, non con-
 siliatur plene absolutus, nisi accepta soluitur re-
 conuenerit. Concil. Carth. 4. can. 74. ibi 2.
 Poen. ceteri qui in infirmitate dimittunt Eucharis-
 tiam, non se credunt absoluitur sine noua im-
 positione, si superueniant. Videt facile intellegi, quod
 poenitentia restus in verbis scripta relaxari. Nam cum
 laetior honorum hic excommunicatus, cap. in legi-
 tis, hoc it. Et qui publicus et notorius rap-
 tor erat, debeat solenniter poenitentiam perage-
 re, cap. 1. de poen. et remiss. inde aut Eugenius lib.
 1. in cap. 1. in eiusdem conditionem poenitentia
 poenitentia poenitentia, viaticum non esse erigendum, et po-
 te se necesse necessitas, in soluta aeternam, dep-
 pendentia, 38. dist. cap. qui recedunt, cap. si
 qui de corpore 12. quod. de cap. quod in te. 38.
 poenit. et remiss. Sed qui solenniter reconuenerit
 noua poenitentia poenitentem non accepti, patrum
 illi poenisse solennitatem poenitentia dixit Eue-
 genius.

[*Sepultura illius*,] Hoc diffinitè admodum videtur ex eo principio, quod dixerunt, continenti-
entem etiam illi vicino vice scripta, qui dicitur re-
conciliis Ecclesie & fidelium communioni,
non potest privati ecclesiasticis sepulchris, cap. qua-
situm 23. q. 2. in his traditis in cap. secundis de se-
pulturis, de quod dixerunt Iacob. Duntaxat lib.
v. art. cap. 4. & lib. 2. cap. 3. Gamma potest deservire
quasi-3. Episcopus dicitur dicitur in Episcopus
lib. 2. cap. 2. Sol. Labor. videretur. Lucius. lib. 2.
cap. 12. num. 35. Ergo si in pignori conceditur
vileium rapti, in illis sepultura ecclesiasticæ ca-
denegatur. Cum difficultatè sit satisfaciendum antiquis
reperentes lib. assidue in præsentem, non de-
negari rapti sepulture ecclesiasticam, sed tan-
tùm ne sacerdotes illi interirent, qui cum pla-
cium cadaver 24 Ecclesiam deferant. Sed hæc so-
lutio non consentit disciplinæ canonice, & co-
muni legimus, sepulchrum ecclesiasticum
concedi, prohibentem sacerdotibus illi in-
terire. Quare verius dicendum est, quod licet
lib. 2. cui conceditur Eucharistiæ communicatio, re-
gulariter non privetur sepulture, ex his plura,
que ob gratiam se hant, & videri remanent,
concessio communicandi non denegatur sepul-
chris ecclesiasticis, ut cap. 1. de ordine cur. machab.
de statu monach. cap. quod in omni, de v. r. v.
Vnde hæc in præsentem causa rapti et conceditur re-
concilio, tamen illis denegatur ecclesiastica
sepultura. Facti tamen diserto in Concilio To-
litanis, anno 1473. tempore Sixti IV. cap. 23.
Raptus, quæ dicitur finem a male non penam,
temporaliter solum paria merita sunt puniendi, idcirco
sanctis approbante Concilio flammis, et saltem
fidelis augendo ad hæc luce interuentum, ecclesiasticis
cerævis sepulture, si videri rapti sepulchris, excom-
municari, etiam si huiusmodi raptus non obdumt (sacra-

D. D. Gonzal, in *Doctrinal Tom. V.*

mentum pariterque recipiunt, nec pro eis divina
sola agitur, sed oblationes admittuntur.

g. *Flavianus primum accipere. I* Quod enim
quodque est supra traditum, nam si denegare cele-
stiaque, lepulit, per consequens nec nobis nobis,
nec electi nullus debent admitti, vi etiam statuitur
et cap. 2. de virg. 13. g. 2. cap. minor 17. g. 4. cap.
et 1. de sanctis. dicitur, cap. 2. in omnia, de 2. s. s.
cap. oblationes, v. dicitur, cap. non est primum. 1. g. 1.
& alius congressus ab Antonio Augustino lib. 15.
cap. 1. s. s. 2. 3. Rationes alligantur. Cate-
chizans epist. 186. g. de oblationibus, his verba: *Ne*
simpliciter ex his inferius conueniant, cum sa-
labus sanctioribus exhibitis omni enim singulari
placere. D. Thomas 2. 2. q. 86. m. 3. Propter hanc
causam per. de anno. *Ecce hanc causam, Plura ad*
altem Philo Iudeus, de numeris, lib. 2. & integro
lib. de numeris meritis non admittit ad sacra-
mentum. Augustinus, in cap. 23. De genens, q. 32. Hecro-
tymus ad rati. 1. s. s. cap. 66. Qui malis pene, Na-
zianzus, et alii. Lactantius de cap. 23. Denique et alii
docent Suarez de relig. 1. 2. 3. de epist. 1. s. s. lib. 1.
cap. 6. Lautredius, de veteri manach cap. 40. Me-
doxius lib. 2. Cont. Iulio, cap. 55. Rolius, in no-
ta ad epist. 3. Dila Paulinus, Albas, incens lib. 1. ob-
latione, cap. 5. Sed adhuc hanc causam pene conu-
lationis, ubi prohibet eum oblatione, cum & tem-
erum recipere pro epistole, dicitur lib. 1. de re-
ligentibus iure principii. Patristicus dicitur ex
o. nam electorum, & meritis fidem recipere
posse, docent Glorius in d. 1. v. oblationis, Tetr-
tymus & alij in d. cap. non est primum. Ergo etiam
rationis, elemosina sufficit debet, primum etiam
restitutionem. Secundum quia oblationes pro
solum de peccatoribus, verum & ad latus peti, &
exigi debent, cap. quanto, de 2. s. s. Ergo malis
magis ratiorem oblationes, elemosinaque &
sacerdotibus recipi possunt. Tuum facit status in
cor. 1. 2. cap. 2. de Ar. 1. 2. v. oblatione, h. 1. s. s.
in cor. 1. in fine videri, recipient, & alius Patres,
quod pro eo, quod hunc erat penitentem, & obla-
tionem recipere. Igitur similes in praeiudicium
non recipi, videri eum condecet, eius etiam
oblatione, & elemosina adiuuant debet, Sed
adhuc attendendum est, Augustinus in 1. 1. in prae-
sentia asserere, non debet oblatione, nam elemosina
ratiore esse adjuvandum, quia Deus hominibus
est de substantia propria ratione de aliena. Pro-
inde cap. 5. Quia hanc impiorum oblationibus
sunt curam Deo. Proinde, cap. 21. Nec dona in-
quoniam probat Augustinus. Et electis cap. 34.
Nec est elemosina facienda de illis, acquirere &
cap. non est primum 2. 2. 1. Nec oblatio, quod
de elemosina & meritis facit dicendum, nam
adjuvandum est: & iuxta Bibi oolomum istam
meritis Veneti mercedem obtinuit, constat
ex cap. 1. Albas, lib. 1. Quia idola eius pene in
perditionem, quia de meritis in meritis in con-
gregat. Quod, lege videri prohibuit fuisse constat
ex cap. 13. Deinde, ibi. Non est meritis
probatum, ubi gratiam ante in dono Deum
Dei, oblationis est elemosina apud Dominum Deum
enim. Illatit. P. Roz. lib. 3. singul. cap. 12. apud
Romanos iam meritis tempore Caligula in-
imperatoris in quibus meritis rebus pende-
bas, id est quoniam meritis non concubuit
meritis meritis, sicut in lib. 1. refert Suetonius
in Caligula, 2. 40. de quo tribus aliqui accipere
textum in Lexico quidem 1. 2. 3. s. s. s. s. de 2. s. s. s.
meritis ad eum dicitur. D. Nicol. de Castro in leg.

uic. C. de captiuitate ciuim, num. 17. qui videntur esse pro eius interpretatione: & vi ad difficultatem accedimus, dicendum est, discernimen esse eorum inter, elemosynam factam à metetrica, & factam à rapitore; nam metetricis elemosyna recipitur, quia quæstus metetricæ dominum tranfit in ipsam pado vt conditio danti oio competat, l. 2. ff. de condit. ob rempem: vnde cum dominum eius pecunie habeat, recte potest de ea elemosynam facere: at verò rapitor dominum rerum vsq; ablatum non assequitur, sed peces dominum remanet, l. 30. ff. de condit. furina. Nec obstat textus in d. cap. quæstio, de vfor, loquitur enim Pontifex ibi de oblationibus realibus necessariis, quæ à Christianis fidelibus fieri solebant ex propriis domibz ratione possessionum ad sustentationem parochi; quo casu iudicium ad omnia hoc reale tenetur, vt docuit Lemaître lib. 2. de iuribus Ecclesiæ, cap. 13. Nec tandem obstat dictus canon 12. Concilij Arelan. qui accipiendus est de eo, qui in vita effugauit penitentiam, atque in Ecclesiâ solenni penitentia caput subdidit: pro quo, si ante expleam penitentiam, & solennem reconciliationem decesserit, oblationes admittuntur, immò Ecclesiâ similis oblationes recipiendæ, cum restituitur communioni, à qua furtat segregatus, vt docetur in Concilio Valsini can. 1. Tol. 1. 1. can. 12. obferunt Alphapineus lib. 2. obfer. cap. 12. At in præfenti casu rapitor nec penitentiam perierat in vita, nec suspensus; vnde cum non huiusmodi penitentiam in vita, meritis oblatio pro eo non admittitur, iuxta dictum canonem 11.

6. h. Presbyterum, vel clericum? Sed quoniam differentia adhiberi potest in præfenti casu inter Presbyteros & clericos, præcipue cum penitentiam inungere, oblationes recipere, & sepulture corpora defunctorum tradere, sint actus Presbyterorum, non verò inferiorum clericorum? Sed adhuc dicendum est, testè Eugenio appoissit non solum Presbyteros, verum & clericos; nam Presbyter propter accipit pro eo, qui beneficium parochiale cum cura animarum obtinet, Concil. Chalcedon. can. 6. probat Cironius ad tit. de officio Archiepiscopi. Clericus vero dicitur, qui capellani, aut beneficiam obtinet, sacramenta in ea conferre valens, cap. Capellanus, de feriis, cap. 1. de secundis nupt. Et si adhuc instet, penitentiam dare tantum ad Episcopum spectare, ceteros verò Presbyteros, seu clericos penitentiam concedere non posse, cap. si tuus, cap. si Presbyter 26. q. 6. plura Ant. Augustini in epist. iur. lib. 4. tit. 89. & lib. 6. tit. 42. Alphapineus lib. 1. obf. cap. 33. C. 14. Morinus lib. 2. exercit. cap. 7. Mendoza lib. 2. Cancel. lib. 6. cap. 65. Cretat de ecclesiastica iurisdic. dist. 8. §. 2. & §. Filicenus in cap. 15. de officio vtrius. Ergo non rectè in præfenti supponitur Presbyteros, vel clericos penitentiam rapitori bonorum, seu violatori Ecclesiæ dare posse. Ad id respondendo, magnam differentiam videri inter penitentiam solennem, & priuam, seu auxilium, solennis enim non nisi ab Episcopo pro grauioribus peccatis, & semel in vita dari potest, vt probant de agendis Cironius ad tit. de penit. & remiss. & lib. 1. obf. cap. 6. Loays in cau. 8. concil. Tol. Touchetas in noue ad epist. 218. Cernicenf. Lantimeter lib. 2. de vtriusq; monach. cap. 98. Gibalin. de clauis, regul. diffusi, 3. cap. 2. §. 3. at verò priuata, vt sacramentum est, de qua in præfenti

agitur, à quolibet parrocho, seu Presbytero per Episcopum approbato admittit potest.

7. Amentia. Licet conatus regulariter in delictis non ponatur, nec affectus delinquend, nisi segnatim effectus, l. cogitationis, ff. de penit. l. 1. ff. quid quisque iuris plura Barbosa in arizone, verbo affectus, Robertus lib. 1. ver. indic. cap. 6. tamen in atrocissimis delictis conatus puniuntur, l. generaliter, ff. de calumniis, l. ff. de seruis, ff. de condit. ob rempem l. 1. quisquis, C. ad leg. sol. Atque ibi, l. 1. in qui cum relo, ff. ad leg. Corn. de sicar. l. 1. ff. quis non dicam, C. de Episcopo & Clerico. probant Farinae, in pract. p. 5. q. 12. num. 14. Couet. lib. 8. obf. cap. 21. Hothomarius lib. 11. obf. cap. 18. Amaya lib. 1. obf. cap. 7. Forner. lib. 3. ver. quid. cap. 17. vnde cum delictum, de quo in præfenti agitur, esset, idco Presbyteri illud agentem deponuntur, & beneficio priuantur.

COMMENTARIUM.

EX hoc textu sequens communiter deducitur. 8. Afferio: Raptor manifestus, vel Ecclesiæ violator, si ablatam restituat, vel de restituendo cauet in vita, vel in morte, ad penitentiam, & sepulchrum ecclesiasticum admittitur: si vero noluit cum restituere, penitentia concessa, denegatur ecclesiastica sepultura. Quæ afferio per prætes probari potest ex cap. immolatus, cap. nemo, & per tenam 14. q. 5. cap. si res, cap. conueniens 14. quæst. 6. ex Concilio Matifcen. cau. 7. Althod. cau. 15. Cabilon. cau. 6. & aliis concessis ab Ant. Augustini lib. 3. tit. 9. in quibus variis precibus plebuntur raptores, & Ecclesiæ violatores. Coplanant lex 10. tit. 3. par. 1. lex finalis, tit. 10. ead. par. Illustrant Ioannes Caldeirius in repetit. ad hunc textum, Couet. in cap. alme, p. 1. §. 4. num. 12. Salcedo in pract. cap. 109. Sum. 12. de censur. dist. 42. sect. 5. num. 6. & tom. 1. de relig. tract. 2. lib. 1. cap. 6. num. 6. Sanctus Raymanthus lib. 2. summe, tit. 3. Cironius lib. 4. epistol. iur. par. tit. 20. Musga tom. 1. diffusi, mon. vel. diffusi, 21.

Sed pro dubitandi ratione in præfentem assertionem ita insurgo. Peccata manifesta publicè commissa per tolerantiam penitentiam debent expiri, cap. placuit 68. §. final. 50. dist. cap. ad monere 8. cap. latorem 15. 33. q. 2. cap. falsa 6. de penit. dist. 5. cap. 1. de penit. & remiss. sed in præfenti peccata fuerunt publicè commissa. Ergo solenni penitentia debebant expiri. Arguet hæc dubitandi ratio ex cap. de viro mendo, 12. q. 2. ubi cum agitur de quodam rapitore, & violatore Ecclesiæ, qui vasa fidei, chrisma, & alia Ecclesiæ bona furtiuit, quantum fuit à Nicolao, an si peccatentiam petere, recipiendus esset? Et asserti iura admittendum esse, vt vno anno consistat extra Ecclesiam violatum, alio ante fores Ecclesiæ sine communionem maneat; tertio Ecclesiæ ingreditur, & inter iudicatos stet, non comedens carnem, nec bibens vinum sine oblatione: quarto denique si fructuosior fuerit penitentia labor, communioni fidelium restituitur. Ergo non rectè in præfenti affirmi Pontifex rapitorem penitentiam effugientem statim ad penitentiam admittendum esse.

Quæ dubitandi ratione non obstante vera est præfens assertio, pro cuius expostione sciendum est, rapinam esse violentam ablatiorem rei mobilis factam dolo malo, animo lucri faciendi. Et licet vis generalis

7.

CONCILIUM
TRIDENTINUM
ET PONTIFICIUM

9.

INSTRUMENTA
TRA-
DITA
AS-
SERTIO

10.

DE RAPTORE
N.

gentiliter dolum includat, l. 1. §. doli, ff. de ed. bonor. raptor. l. 14. §. eum qui metum, ff. de eo quod metus, tamen quia aliquando datur vis sine dolo, ut contingit in vi iussu illata à Magistratu, l. 3. §. 1. ff. de eo quod metus, l. 4. §. ff. de statu hominum: ideo in praesenti definitione vis vim adiunctae doli male, & ligantur ponitur doli malus, quia plerumque res auferretur vi, & oblique dolo malo, ut contingit in domino, qui repetit rem propriam, sibi haec exsilium eius propria auctoritate occupare: quia enim dolo malo non facit, nec licet facienda causa, sed iuramentum ignorantia recuperandi animum habet, raptor dici non potest, l. 2. §. hac ratio 12. ff. de rei bonor. rapt. Sed ne homines prius ius sibi dicant, eorum fuit constitutione Theodosij & Arcadij, ut si dominus id fecerit, dominium rei amittat, si non dominus, non solum rem, verum & eius amissionem restituere compellatur, l. si quis in causam 7. C. unde res. Similiterque Imperator Marcus constituitur, ut si creditor debitori vim fecerit debiti extorquendi gratia, amitteret ius crediti, l. penult. ff. ad leg. Jul. de rei pri. nat. l. extor. 23. ff. de eo quod non. caus. Dixi etiam rei mobilis, quia res mobilis debet esse, ut rapina dicatur, immobilis autem rei quemadmodum nec furto, res nec rapina si qua nec fecit, auferri non potest, l. 1. C. de rei bonor. rapt. circa eam ergo tantum datur in iussu, cuius causa vel interdictionum competit, vel condictioni trahitur, vel iudicium publicum legis Iuliae, l. 1. §. de vi & ob. armat. l. 7. C. de ed. l. 2. ff. de conditi. trahit. l. 3. §. finit. ff. ad leg. Jul. de rei public. Omnis ergo vis, siue publica, siue privata, consistere potest ad priuam à furto contradiiunctam, nec aliter se ad furto simplex habentem, quum includens ad inclusionem. Totam enim furto quiddam reperitur in rapina, nam furto essentialiter constituitur per ablationem in iussu rei alienae. Quod autem ea ablatio sit occulta, spectat diuinitatem ad modum auferendi accidentalium: unde accidentaria aliqua distinctio, non autem specificatio furto aduenit, itaque tota furto substantia rapine innititur, ad iuncta insuper noua iniuncta in personam, propter vim ei illatam: quae iniuncta est distinctio rapinae intima, & essentialis, ut proinde furto & rapina asseruntur specie differre. Ex his constat, quum grauius simpliciter furto sit crimen rapinae, quod licet confirmat Gabriel in 4. dist. 15. q. 3. adductis textum de cap. penult. 14. q. 5. per spicuum autem est multo acerbius delictum esse, quidem ex parte rapinae inferentis iniuriam maiore audacia, & iniquitatis se proinde, propterea secundum Chrysostr. humil. ap. in 2. ad Thimotheum. asserit raporem propter vim, & violentiam maximam iniuriam inferre, his verbis: *Etiam sic est & violentia, et facilius quia multa talia sunt dabo, et nihil se passum esse putabo, quam se esse oblatum praeter animi sententiam abripere manifestum fore.* Genera raptorum varia sunt. Alij effractores sunt, qui domos, aut hortes furcibus causâ effringunt, aut parietes perfringunt, l. 1. §. simili modo 5. l. 1. ff. de effract. quos describit Lucanellus inter incommoda velis cap. 3. Alij sunt latrones, & grassatores, qui ferro obditi latere viarum, spolianteque obuios. Praedones illj, qui praedas agunt, luer quos, & latrones nihil intellexit existimauit Accoribus in hostes 110. ff. de V. S. Sed contrarium rebus docet Cuiac. lib. 15. obs. cap. 31. Galli praedones appellant Burgandos à Burgando

Insigni praedone, qui in paribus Aquitanicis tempore Nicolai I. violentas depredationes etiam in Ecclesiis exercebat, ut scribitur in dist. cap. de viis 12. q. 2. Vel Burgandos à Burganibus populis Libetinis laucinio, & praede deditis, de quibus Tacitus lib. 12. annal.

Deinde sciendum est contra raptores varias esse prodias actiones, tam criminales, quam ciuiles. Et primo datur publicum iudicium legis Iuliae de vi: si vis facta sit armis, & vi publica, si sine armis, & de vi priuata, l. 1. C. 3. ff. ad leg. Jul. de rei priuata, l. 3. l. penult. ff. ad leg. Jul. de rei public. §. item lex, Insit de public. iudic. Secundo actio legis Corneliae de sicariis, si raptus exdes mixtae sint, aut furu sciendi causa cum telo quis ambulauerit, l. 1. §. ad leg. Corn. de sicari. l. 2. §. C. de ed. ut. Datur etiam iudicium publicum legis Iuliae de collegiis, & peculato, si quis aedes sacras, aut aedium emigraret, l. 4. §. mensurae, l. 6. §. 2. l. 1. ff. ad leg. Jul. p. n. etiam extra ordinem raptorem accusari posse, sonitat ex l. final. ff. de priuata delict. l. 1. §. 1. ff. de iurisdic. & iuris. Cuius quoque actiones in raptorem dantur: prima intra annum utilem in quadruplum; post annum in simplicem. Quadruplum autem venit tui p. n. non tamen quod interest: nec quadruplum totum poena est, sed inale quadruplo rei persequitur, l. 2. §. in hoc 13. ff. de rei bonor. rapt. princip. Insit. cod. tit. §. item lex, Insit de Alien. Sed nec in omnes bonorum raptores patitur animaduersionis, nam distinctio adhibenda est inter manifestos, & nec manifestos. Raptor manifestus is dicitur, quem domus agnoscit, & deprehendit fur sapientem, & apertentem: nec manifestus, qui cautè vim inferit, ut si absente domino fores ipsius effringat, & intus grassetur, l. si quis uenit, 9. ult. ff. de furto. Raptor autem, siue manifestus, siue non manifestus, is intelligitur, qui vi, dolo malo, & oblatum hominibus armatis depreddatur, l. 2. ff. de rei bonor. rapt. Velutque eadem poena imponitur, l. 1. §. 1. ff. de ed. cap. in amicus 13. q. 7. Sed quia haec poena procedens ex publico iudicio, scilicet ex lege Iuliae de vi priuata, leuior erat, quam poena furti: Priuati visum fuit dare electiorem, utrum aduersus manifestum raporem quia actio furti priuata agere velis, an verò actio vi bonorum raptorum ex lege Iuliae, d. l. 2. §. 2. ne minorem poenam exigeret, quum si cogreter agere publico iudicio vi bonorum raptorum. Contra nec manifestum raporem idem non procedit, cum poena pro manifesti furti sit in duplum, latius enim erit tunc agere vi bonorum raptorum ut tripulum, ut docuit Papinianus in l. franditico, §. cum raptor, ff. de furto. Raptor ergo manifestus existimandus est, qui conueniri potest ex lege Iuliae, & p. n. in quadruplum actioe priuata manifesti furti: si vero collectus hominibus armis ita callide, & dolose uolans sit, ut non fuerit deprehensus, tunc furti nec manifesti poena, quia leuis est, non patitur, sed poena vi bonorum raptorum. Quam utrius cuius ordinem sequutus est Eugenius in praesenti, innoens grauius agendum esse cum rapto manifeste deprehensio: de quibus iudicia, & eorum casu videndi sunt Reaighi lib. 3. sect. cap. 5. Danel, lib. 15. comment. cap. 50. Cuiac. lib. 17. q. 7. Papin. in d. l. 80. §. cum raptor, ff. de furto, & lib. 15. q. 10. Pauli in l. 10. ff. de dolo, & oblatum furti textum in l. 5. C. de uincular. d. d. 4. lib. 11.

II.
De raptibus
RAPTORIBUS.

diam. Circa quam contributionem obsequandi sunt textus in l. qui servandorum ff. de praescript. verb. l. 3. §. air, ff. de nautis, l. raptus, l. Porpo. minis 44. §. 1. ff. de acquir. domin. l. 2. §. 1. ff. de negot. gestis, l. si ex legati 23. ff. de V. O. l. in conditum, C. si servum petimus, l. 55. ff. de condit. & demonstr. l. 4. §. 9. ff. de adliti. edict. l. final. C. de naut. ag. lib. 11. l. 3. §. 9. et §. 45. ff. quod vi aut clam. cum lege 3. §. si quis 45. ff. ad leg. Aquil. Et pro illustratione difficultatis textus in l. de preceptis, ff. ad leg. Rhodiam, videntur sunt Auzia lib. 1. observ. capit. 1. numer. 70. D. Ioannes Ramosus in analeth. ad ipsum textum, l. Gothofr. in apusul, ad eundem textum, Mancinus lib. 3. de triplici iuris collat. cap. 214. Salcedo ad D. Thomam doregim. Princip. lib. 3. cap. 13. differt. 39. D. Iosephus de Reies lib. 8. opusc. cap. 19.

Deinde sciendum est apud varias gentes, præcepta barbaras, in usu fuisse, esseque, vel ex eorum constitutionibus, vel ex veteri consuetudine, vel naufragantium bona, quæ ad eorum litora appellerent, vel in eorum portus colliderentur, fierent sibi, siue quod idem est, publicarentur. Curios Fortunatus lib. 3. art. Rhodica, ibi: Nulla certior definitio est, quam naufragantium bona esse publicandum, id est eorum, qui publica utilitatis, aut potius conditio habent. Sopater in Aphrodisia, pag. 107. Alluist. Iuvenalis Satyra 4. Res sibi est obnoxioque nautæ. Quam legem apud varias Septentrionales gentes in usu fuisse probant Grotius lib. 5. de iure belli, cap. 7. §. 1. & in nova Salmuti, ad Pamirelam, lib. 2. memorab. ritul. 11. Guillelmus Benedictus in cap. Regumius, de testamentis, Verba xorem nomine Adclafam, numer. 935. Rebuffus ad leges regias, glossa 5. numer. 74. Hinc querela in naufragis raptorum inter ipsos sanctorem, Paulinus ad Macharium epist. 36. Ne putamus invidia diaboli per bonorum improbum Scanduniano eripi, vel iam crepant negari, quod illi de naufragio redonavit Deus: precor ut Christiani viri, fratris nostri Posthumiani esse dicant, qui cum navem in Bructorum litore, qui possessio Senatoris alienus, adlapsam, auariter mari, & sine compere piraticam in terra agere occupavit, & capiam manifestis, nam etiam nunc in ipsa litore inanis manet, et damnum auctus frustra in pelago servat, & in terra perdit contestetur: deposta iam saepe apud iudicem provincielem super hoc parvulo querela, sed Pharus noster indignant cor suum, immo de Græcis & aliis positionibus populis indicet notat Furnerius ad Cassiodor. lib. 4. epist. 7. Immo & hoc ius ad territorij quoque dominus translatum fuisse probat Dadinus. Altessera de Ducibus lib. 2. cap. 13. Nec his naufragia parcebat Agathensis Episcopus in ora maritima Occidentis: quare reus postulat fuit apud Innoc. III. in cap. cum dilecti, de accusa, & crudele hoc latrocinium solere ad Rupellam exerceri, refert l. Bielius lib. 1. observ. favor. cap. 6. Nimirum si pravit tempestas in navem aliquam inciderit, & magna ex parte fructum in litus eiecerit, miseris naufragis eo tantum nomine, quod nudum plene miseri sunt, terribili tempore in litore subiacere, omnibus qui statum ipsi reliqua fecerant, occurrentium direptioni paratibus. Quam immanitatem Honorius Papa in rescripto ad Hildebertum Cenomanensem (est inter eius epistolas 67.) acerrime corripuit, & quotannis fulmine Apostolico damnari iussit;

hancque censet Theophilus Raynaud. tom. 4. de iuris lib. 3. sess. 3. cap. 6. fuisse primam originem percellendi annuuario anathemate dispendentes naufragorum bona; fortassis quod non ad Rupellam duntaxat, sed alibi quoque eadem barbaries locum haberet. Certè iam olim apud Britannos idem in usu fuisse constat ex Hildeberto Cenoman. epist. 93. In Stadeni alia idem viguisse scribit Albertus Stadenius: sed & in Bructorum litore idem obsecratorum fuisse constat ex dicta epistola sancti Paulini, ubi Fronto, & Ducens hanc immanitatem pavels, sed lenocenter exagitant. Et quidem adeo inusitata lex hæc, ut non tantum res, verum & homines quoque ipsi ex naufragio servati sibi commodis adscripti in servitutem abducerentur. Cuius rei exemplum habemus apud Abbatem Stadenensem pag. 153. ibi: *Friderici aia, & mater de Anglia nauigantes in Comitatu Stadeni naufragium passa sunt, & secundum prædicti iuris rigorem, tam homines, quam res regia ditioni sunt mancipati.* Et statim: *Quoniam in fementia, ad licitè possit vindicare sibi mancipium suum ubiqueque reperire: & cum lata esset fementia, quod posses, dedit magnam alamp clerici.* Et tandem ait: *Ania & mater sub paxem naufragij servituti sunt addicta.*

Apud Romanos in pmo lege Cornelia de sicariis poena statuta fuit aduersus eam, qui naufragium suppleret, l. 3. §. item in 4. ff. ad leg. Corn. de sicariis. & ex rescripto Antonini, testante Vlpiano in l. ult. ff. de incendio & ruina, vnicuique licite naufragium suum colligere: quod rescriptum extat in l. 1. C. de naufrag. lib. 11. Dudum enim viris doctis placuit, non Constantini, sed Antonini esse illam constitutionem. Quam causam breuiter, leuonque velo esse decidendas Imperatores Honorius, & Theodosius sanantur in l. de subreptis 5. C. eod. titul. quoniam in Theodosiano est 6. Inter legem Corneliam, edictumque Antonini Senatorisconsulium intercessit factum Claudiani temporibus, ne naufragus opprimeretur, néve clausus vnus ex naufragio suppleretur, l. 1. §. ultimus, l. 3. §. final. cum l. sequenti, ff. de incendio & ruina; in cuius legis 4. §. 1. Antonini aliud rescriptum proponitur, quo grauius poenæ statuta sunt in naufragij, naufragorumque direptores: de cuius legis sensu, & lectione agit cum iudicio Petrus Faber lib. 2. semest. cap. 3. pagina mihi 59. Anterior alia constitutio Hadriani refertur à Callistrato contra possessores prædiorum iuxta litus maris, in l. nec 7. eod. titul. quod tanquam litronnes puniuntur, qui aliquid ex naufragio subriperint, aut supplerint, edictumque Pextoris, de quo in l. 1. ff. eod. titul. & in l. 18. C. de furto, pot. punit in quadruplum tanquam raptores, qui ex hoc infonorio, vel ex hac calamitate aliquid rapuerint, vel receperint, vel retineant: quoniam quadrupli poenam repleto etiam sanctata inter leges Rhodiorum, cap. 48. & in l. 18. titul. de furtis, lib. 7. legum Visigothicorum, notatis Petrus Gregorius lib. 37. symag. cap. 3. quod edictum Pextoris imitatus postea fuit Imperator Leo Philosophus, more solito prudentiam Romanoorum taxans, sed inmensitatem, quasi ex æquo non puerint eos, qui naufragos exspoliarent, ac eos qui res ex naufragio supplerint, sed hoc falsum est, ut patet ex constitutionibus super laudatis, maxime ex lege Cornelia de

4.
DE ARVVS
NAVIGAN-
TIBUS.

5.
DE 1758
ROMANORUM
BYM.

de ficiatis. Sanks ergo Leo nouellâ sâ 64. vt in quadropium suppellet tenetur; sed & quod ait, olim capitulari, siue penâ mortis puniri fuisse qui res ex naufragio dissipasset, non videri vnde colligeret, quippe legis Cornelie de ficiatis, nec edicti Antonini tam grauis pœna non fuit. Sed ad tem nullus asperius in disceptores naufragij animaduertit, quàm Andronicus Comnenus Imperator, qui Imperium arripuit ad annum Christi M. C. 1118. occubuitque malè à populo molâti, tamò malatus anno M. C. 1119. vt compertit Baronius, Gualterus, & alij Chronologi. Hic prout iracundus, asper & inexorabilis erat, sed iustitiæ tenax, vt ex gestis ab eo constat: & videns iam in prauam consuetudinem abiisse apud Romanos, etque solos, vt naues tempestate in litus eiecît, non modò à nemine adiuuarentur, sed ab accolis quouis turbine leuicioribus diriperentur; iniquissimæ isti rationi tam aceret est aduersatus, & ita piraticam illam rapacitatem compescuit, vt hæc vna res amplissima eius laudes complectatur, orationeque in Senatu, & coram Proceribus habita ita fœxit: Si qui vestrum nostra auctoritate *Magistratum* aliquem gerit, si qui fundos maximos possidet, si primum seipsum, deinde subditos quoque ad iniquitatem, & imperij nostri obseruationem, ac reuerentiam conseruit: ut autem parca quoque modum mercedis, quam edicti mei compertor luct, in malo natus pendet: si malum marinus fluitus derubauerit, in alto litore, editaque specula altissima abire affuerit. Hæc ex Niceta Coniacte lib. 2. de rebus Andronici Comneni, vbi prout est floridus, & amœnus, amplificationibusque, & figuris gaudet, multa in derelictionem huius crudelitatis, & in commendationem huius edicti Imperialis scribit omnino legenda. Sub idem tempus Fredericus Ortoharbus, qui imperauit ex anno 1140. vsque ad annum 1190. vt constat ex iisdem Chronologis, legum non multò dissimilem in occidente tulit, quæ in corpus iuris redacta est, *authenticam*, C. de furtis, cap. 4. de consuetudine, in 3. compil. illaque sancit, vt qui res ex naufragio dissipet, suppresserit, retinuerit, publicatione bonorum puniatur, & excommunicatione subiaceat pœnæ, prout audacia efflagauerit, idest arbitrate, vt sensu Menochii de iuris, casu 297. quem, aliosque sequitur Fazius. vtiliter videndus 3. part. prax. crimin. tit. de furtis, quæst. 168. cap. 4.

Ex quo facile suspicor, tam in Oriente, quàm in Occidente prauum morem viguisse illis temporibus occupandi res naufragio deperditas, licet dominus cognoscere, & quæ forsitan in litora, vel portus petuenebant, siue nauigia ipsi essent, siue merces, vt supra probauimus, & consili ex Sarnio Soputo in *Hermog.* & dea luenali *satyra* 4. qui tamen potius laxa tempora, moreque sæculi Domitiani totâ illi *satyra*, & frequentissimas delationes, quàm propriè loquatur de naufragio.

Si quid Palpario, si credimus Armillare,
Quidquid conspicuum, pulchrumque est aequo-
re iure,

Res fisci est vbiuicinas naues: donabunt ergo,
Ne pereat, &c.

Ergo teterrimus ille mos à Græcis, Barbarisque iam olim viciatus, nouissimis temporibus in ceteris viciosis Imperij serpente cepit, donec prædictis duabus constitutionibus aerruncatus

fuit. Non ita tamen apud Rhodios receptum erat, ex quorum lege quidquid leuandæ nauius causâ eiecîtum erat à naufragia, aut timentibus naufragium, veteribus dominis restituebatur, l. 1. & a. l. qui leuanda 8. ff. ad leg. Rhodiam, l. falsus 43. §. si iactum, ff. de furtis. Cum qua Rhodiorum lege conuenit receptum DD. fizarum in l. si nali, §. si propter 8. ff. de publican. & vellig. qui telicipserunt, ad publicanos non pertinere, quod in mari iactatum fuit naui leuandæ causâ: ergo pristino domino restitui debent, vt iam supra probauimus. Inde etiam publicani habitantes insulis Cycladas maris Ægei, voluerunt diripere Endemonem, & socios Nicomedenses naufragium facientes circa leuatum, quæ est vna ex Cycladibus, in l. deprecatio ff. ad leg. Rhodiam de iactu: quibus Antoninus consuluit precipiens, vt eorum causâ lege Rhodiorum deciderent, in quantum Romanis iniuriis contraria non esset; quod fuit iubete, vt sua quoque propria restituerent, secundum quod ipse Antoninus teliciperat in l. 1. C. de naufrag. iuncta l. final. de incendio, & ruina.

Sed quod Fornetius, & alij existimant ex l. 2. & per totum seri C. de naufrag. & ex eodem titulo in Theodof. lib. 13. tit. 18. post biennium, & ex nouioribus constitutionibus, post annum non fuisse ius rependi res suas illis, qui naufragium passi fuerant, sed apud occupatores remanere, adeo incertum est, vt nihil à vero sensu illorum textuum magis distet, loquuntur enim de periculo corporis, collegij, ceteris nauiculariorum publicas spectis transportantium, à quo liberantur, si probent ex fado naufragij, vel naui, vel merces iactatas perisse, nisi præcedens culpa sit ipsorum, qui postea sustinent naufragium, vel ex leui causâ merces iactatum: quo in casu adhuc post naufragium subsistent periculum, l. vlt. sic intelligenda, C. eod. tit. vel si in tempore navigationis præstitum non naufragium, l. quies 3. C. Theodof. eod. tit. ibi: Placuit seni, vt Novembri mense navigatione subtrahit, Aprilis, qui æstas est proximis, suspitionibus applicetur, cuius suspitionis necessitas ex Kalendis Aprilis in diem Kalendarum Octobris mensura seruabitur, & in diem Iduum verendum naufragio pergitur. Quod alludunt verba textus in l. vltique 16. §. 1. ff. de rei vindic. ibi: Sin autem prædictam tempore navigationis trans mare misit. Et in l. qui petitorio 36. in fine, eod. tit. ibi: Et qui nauiem à se petitiuam aduerso tempore naufragium misit, si ea naufragio perempta est, & peritum, quo Callimachus promissa intra idus Septembris nauigare in Syriam, mercesque reparari. Apud Scæzoniæ in l. qui Roma 122. §. 1. de verb. oblig. quod ad hunc textum obtulimus Aletius lib. 10. par. cap. 19. ne mare ante clauderetur: de quo ritu expectatus quam alij Flauian Vegetius lib. 4. de re milit. cap. 39. verba sunt: Phœnicæ de consuetudine, idest ab æra Pleiadum, à diu 6. Kalend. Iun. vsque ad Arturi ortum, idest in diem 18. Kalend. Octobris, secuta nauis eroditur, quia æstas beneficio ceterum acerbitas nulligatur: post hoc tempus vsque in 3. Idus Novembri incerta navigatio est, & discrimini præcipit: propterea quia post Septembri Idus ortus Arturus, vobrematissimum sydus, VIII. Kalend. Octobris æquinoctialis euenit acerba tempestas, circa vnaus verò Octobris ludi pluviales, VIII. cinsleris Taurus: à Novembri autem mense crebris tempestatibus nauis cotinuat Vergiliarum hyemalis æque.

7-
ANSELMI DE
SOPHIA EV-
ANG.

6.
DE JORDAN
AV22.

casus. Ex die igitur III. Id. Novembris usque in diem 8. Id. Martij maria clauduntur; non lux minima, neque prolixa, nubium densitas, aeris obscuritas, ventorum, imbrium, vel nimium geminata familia non solum classes à periculo, sed etiam commanentes à terræstris itinere detragit: post natalem verò (ut ita dicam) navigationis, qui solenni certamine, publicoque spectacula multarum gentium celebratur, plurimarum siderum, ipsiusque temporis ratione usque in Id. Martij periculi mari tentantur. Secutus ad illud Virgilij primo Georg. verso 137.

*Navita, immo flentis memores, & nomina fecit,
Pleidas, Hyadas, claramque Licamio Arcton.*

Sic ita: Pleidas signum est ante genita Tauri, quod ortu suo primum navigationis tempus ostendat; illa ab eo, quod est pleo naugo, latini Vergilia dicuntur à vetri temporis significatione, Hyades sunt in fronte Tauri, quod ortu suo concitant pluvias, latine succula dicuntur. Alia testimonia ibidem adducit eximius Zerdà numer. 23. Lunaque, huc Diana sic alloquitur Apuleium lib. 12. suorum transfum. non procul à principio: Diem, qui dies ex ista nocte nascetur, aeterna mihi concupabit religio, qui sedatis hybernis tempestatibus, & lenius maris procellosis fluctibus, navigabili iam pelago radem dedicantes carinam primitus commensum libam mihi facerentes. Et paulò inferius: Inter hac, & sistorum villorum simulium paulatim progressam proximam ripam maris, atque ad ipsum istum locum, qui pridie vocis stabularum agnus, pertransimus: ibidem simulacris ritè dispositis, navem faberrimè fastam, pilluris miris & Egyptianum circum seipsum variegatam, summis sacerdoti talia lucida, & uno, & sulphure sacerrimis precibus de casto praestans ore, quam purissimè purificatam Dea nuncupavit, dedicavique: huius alius felices mittens Carbasus libere votum in assensu progerbat, &c. Cicero lib. 2. epist. ad Q. frat. epist. 5. illie: Erat autem iuvra, aiebat, ad III. Eid. April. ut ante Laborem, aut Pisci censeretur: tu mi frater simul ac ille venris, primam navigationem, dummodo idem tempestas sis, ne omiseris. Et prope finem: Tuas mirifice literas expello, atque adhuc clausum mare scio fuisse, sed quasdam venisse Ostia dicebant, qui te, &c. Alia videas apud Fretorum de re navali lib. 11. §. 2. & 3. Ianssonem Seldenum in prefat. ad libros maris clausi, Henricum Salmut. ad memorab. Pencircel, lib. 2. titul. 11. pag. 239. Castanzam in introd. de la redaccion de las monedas, 1. part. cap. 2. §. 1. pag. 45. & 46.

Nulla tamen constitutio expressius quàm novissima Fidelitè de naufragiis cautè; ita enim naufragis prospexit, eisque bona testitui iussit, si non essent ex his, qui piamiam exercent, vel Imperij, nominisque Christiani hostes sint, huc ut textus loquitur, inimici, id est qui diversas partes sequuntur, quamvis inter utrumque populum bellum actualiter non sit, quibus bona non imbeatur testitui, si piamant naufragium. Videamus tamen quibus ex veteri iure Romano hæc bona adiudicantur? Piacet mihi ita distinguere sub eruditiorum censura: Si hostes populi Romani naufragium faciebant, publicanis hæc bona adiudicari, qui publica fisci conducebant, probat non malè textus iam

allegatus in dist. 1. ultim. §. si propter 8. ff. de publicanis; alioquin nullus erit locus dubitationi, si nulla essent omnino naufragia, quæ ad publicanos pertinerent: quò etiam tendit commodius intellectus Fortunaziani locus supra citatus, in quo nullam esse certiorè definitiorem tradit, quàm naufragium ad fiscoem pertinere: si clues, & subditi, & socij, qui eisdem partes in bello sequebantur, naufragabant, ipsis restituenda esse naufragia, compertum est ex legibus, & constitutionibus supra relatis. Quod si gens naufragium passa sit, cum qua nec bellum erat Romanis, nec fœdus pacis inierant, sed omnino existerent, quamvis homines capti ab eis ferui capientium herent, ut constat ex l. postliminium, §. in pace, ff. de captivis, notavit D. Iosephus de Rees lib. 6. apud eum, cap. 4. numer. 1. post Desidietum Heraldum lib. 1. animadu. ad Salmutem, capit. 3. numer. 9. contra Grotium lib. 3. de iure belli, capit. 9. numer. 123. tamen miseris, & naufragantium misericordiam pato datum fuisse, ne res ipsorum opprimerentur, subtraherentur, publicarentur: quod ita probat. Olim lege Cornelia de sicariis vindictam fuit delictum eorum, qui naufragium supprefferint: mox pœna repetita iuxta Senatuseonsultis factis temporibus Imperatoris Claudij, deinde Hadriani constitutione; item quadrupli pœna ex auctoritate perpetui editi, tandem Antoninus actus pœnas imposuit aduersus eosdem direptores, vel occultatores. vi supra notatum manet: & post hæc omnia laudem simpliciter eiusdem Antonini rescriptum, quod naufragium facientibus res suas restitui iussit, nulla in contrariam pœnâ imposuit. Ergo ut hoc rescriptum dignum sit laudibus, quibus solet extolli, inensò ut alienius momenti sit, debet de naufragiis petegimus exterarum nationum accipit, etiam quos misericordiores fuerunt Romani, quàm si naufragium non fecissent, ne genus crudelitatis ipsis reputaretur, vitra naufragium velle scire, ut videretur Cassiodori verba lib. 4. epist. 7. quod furtè sensit Hugo Grotius magni iudicij auctor lib. 2. de iure belli, cap. 7. §. 1. ubi docet à ratione naturali abhorrete leges ciuiles, quæ naufragorum bona fisco addicunt, quia lus suum alicui auferre sine causa, mea iniuria est; addeique locum Euripidis in Helena: *Sonm*, inquit, *naufragas spoliare*, quod genus est nefas? Dionis etiam Pausanensis erat. 7. *Abis, & Inpiter*, ut lucrum captem tale ex hominum infirmitate. Quibus testimoniis annectit dictam legem 1. C. de naufrag. quæ solam inter homines naturalem cognationem redolent, nec peculiarem iustitiam inter conclusus respiciunt. Ergo denotat, esse contra fas, & contra iustitiam omnibus hominibus naturaliter debent bona naufragi exteri discepte, subripete, occultare: & ita, ut censio, etiam de iure Romanorum ex Antonini constitutionibus à naufragorum præda fisco, & priuati repulsi fuerint, ne ex aliena calamitate compendium facerent, l. 1. C. de naufragiis, ibi: *Nihil iuris habere solum in aliena calamitate, ut ex re tam luctuosa compendium quærat*. Et pœnæ generaliter propositæ fuerunt in direptores eorum mercedem, eorumque vfucupio, aut collectio omnibus vetita fuit, l. 1. l. 4. §. ultim. ff. de incendio, l. ultim. C. de naufrag. l. 2. §. 1. ff. de acquie,

acquir. possit. l. 9. §. ultim. l. 44. ff. de acquir. domin. ita ut nonquam in commissum, sive fiscum cadant. l. 16. §. si propter. ff. de publican. l. 7. ff. pro derelict. l. 2. ff. ad leg. Rhodian. de iact. Unde in scriptis, quod extat in synopsi Basilic. lib. 5. tit. 8. ita legitur: Si quando naufragio nave expulsa fuerit ad litem, vel si aliquando aliquam terram arigeris, ad domosque pertinet, & fiscum meum sibi non interponat, quod enim ius habet fiscus in aliena calamitate, ut de re tam iustissima compendiosum sectetur? Quia ut aiebat Calliodor. lib. 4. epist. 7. Ferina inhumanitatis genus est ultra naufragium velle desinere. Qua mente Insulanus Euboicus naufragorum depredationis erimen sibi obiectum, ut nimis inhumanum, & à se longè alienum detestatur apud Dionem Chrysostomum in *Ehoic. orat. 7. libi*: Numquam enim mihi obtingat, o Jupiter, accipere, & facere tale lacrum ex hominum infirmitate. Sed vix fiscus, nedum privati, manus adhibere à captura, & detractione naufragorum: quare commoti Fredericus III. in atheni. navigia, C. de fortis, & Leo Imperator in novel. 64. legem de naufragis non antingens reperierunt, & praeuam consuetudinem legibus aduersantem damnarunt. Humilioris quoque Principes ditae humanissimi consuetudines paulatim edictis seuioribus abolere conati sunt. In Oriente etiam naufragorum spoliatores acriter repressit Andronicus Comnenus proposita poenâ (suspendij) è malo navis, vel in litore maris è procreta arbore. Nicetas in *Andron. lib. 2. libi*: Cum autem apud Romanos, eosque solos (ut opinor) iniquissima consuetudo valeret, ut navis tempestatibus in litus electa, non modo à nemine adiuuaretur, sed ab accitis quanta turbe fautoribus diriperetur, si qua fuit reliqua fecerant, iniquissimi isti rationi tam acriter effi aduersum, ita piraticam illam rapacitatem compescuit, ut hac una res aius amplissimae laudes completatur. De Henrico Rege Anglie hæc refert Guillelmus Neuburg. lib. 4. hist. Anglia, cap. 26. pag. 372. Antiquam inhumanam circa naufragos consuetudinem in ipsi regi sui initio eximia pietate correxit, atque humanissimi hominibus ab avaro discrimine liberatis humanitatis officium exhiberi precipiens, graves in eos pœnas sanxit, qui forte illis in aliquo molesti esset, vel de rebus eorum quippiam usurpare praesumerent. Quid verò Scythis contigisset, qui futururorum expilatione, & exde naufragorum opes emulabatur, refert Ioan. Cantacuzenus apolo. 2. libi: Scythis mos erat Deo suo eos, qui ex naufragio saluati erant, immolare, quoque saltem deprehendere possent. Sic quæ propria seruauerit solertia, liberos iracundias crudelitatis.

9.

DE SACRI
CAMERARII
CIRCA BAN-
DEM ROMA.

Necnon Romani Pontifices, ut huic labi mederentur, partes suas interposuere, & naufragorum res religionis præsidio tutas præstare omnium studio contenderunt. Gregorius 7. lib. 5. epist. 14. & in Concil. Roman. can. 5. ait: Quamvis Dei iudicio nonnullis naufragio perire coactissimus, & res quasi legati tam iure, immò diabolice insinatis ab his, à quibus misericorditer subleuari, & consolari debent, deprivari conspiciuntur: statim, & sub anathematis vinculo, ut à predecessibus nostris statutum est, iubemus, ut qui naufragum quolibet, & bona illius inuenierit, secuti tam eum, quam omnia sua dimittat. Paschalis II. in Concilio tucceto, can. 9. libi:

Quicumque res naufragorum diripiunt, ut raperent, & fructum necatorum à Ecclesiæ luminibus excludant. Hildebertus Episcopus Cenomani. in epist. 65. ad Honorium II. libi: Siquidem usque in diem præfati conventus Synodi Nannetensis humanissimi consuetudo in terra Comitis extiterat, ne decedendo marito, vel uxore, vniuersa decedentis mobilia in proprietatem Possitatis transiret; præterea quicquid exadebat ex naufragio, totum sibi fiscus lege vindicabat patria, passioque naufragiorum miserabilibus violentia Principum spoliabatur, quam maris rapina, quam procela. Viranque autem exaltationem sub oculis totius Concilij Comes in nostra manu deposuit, postulans in eos excommunicationis gladium extendi. Quod decretum plenius confirmavit Honorius II. epist. 67. apud eundem Hildebertum, libi: Isquum censuras esse, ut quæ diuina clementia magnitudo à scientis perlagi voracitate exemit, hominum sana rapacitas audere spoliare. Prius namque Imperatorum emanauit auctoritas, ut etiam eorum rerum, quæ in tempestate maris leuanda nauis causa elinuerent, non amittatur dominium; non enim eas quas eo animo abiecit, quod habere noluisset, sed quod periculum effugere posset: & qui res ipsas lucrandi animo abiecerit, factum commisit. Tandem Alexander III. in Concilio Lateran. canone in præfenti testato, & in cap. ita quorundem, de Indultis, statuit, ne Christiani Saracenis arma vendant, ne ipsi nauigio vectores quicquam spoliare præsumant: & ut etiam illi, qui Christianos naufragium patientes damnata cupiditate spoliant rebus suis, nisi ablata reddiderint, excommunicationis subiacent. Cui constitutioni assensum dederunt pater, larrunculi nequissimi, qui nauigantes Christianos, & in ipsorum litora appellentes, uon minùs, liberaliusque tractantes, quàm Turcæ, aut Saraceni, aduersus quos ut armis decerent, Principes Christianos mouuit, ipse verò pro Pontificia iurisdictione excommunicauit. Appellæ enim larrunculos istos, vel à patria, vel ab feceribus, his nominibus, Brabamiones, Aragoncos, Naustrors, Basculos, Corcellos: & Mathurs Paris. in epist. huius Concilij, ad annum 1179. ita titulum fecit: de Ruperiis, & Brabantis, & Pradambis, qui fideles effligunt. Eepulò post: Ne Christiani Saracenis arma vendant: nec patientes naufragium quicquam spoliare præsumant. Itaque quod Petrus Abbas Cisterciensis enixè efflagitauerat ab Euer. elo Magistro Templariorum, & à Summo Ecclesiæ Præsule Eugenio III. lib. 6. epist. 27. & 28. qui fedit ex anno 1145. usque ad annum 1153. nec fuerat exequutus, ad effectum perduxit Alexander in præfenti: obsecrans Baronius anno 1179. Et licet huius excommunicationis absolutio in præfenti non sit reuerata à Romano Pontifice, nec tamen reuerata in §. 4. Bullæ Cum Domini, in qua quotannis excommunicatio profertur in eos, qui subiciunt Christianorum naufragorum bona, siue in manibus existentia, siue ex eisdem cielis, siue in litore inuentia, cuiuscunque generis bona sint, & in quocumque mari inuenta, non obstante quouis privilegio, aut consuetudine. Docem Duar. in expostione Bullæ, lib. 2. cap. 4. Fragofo de regim. Christi. Reipub. in dicto §. 4. Bullæ Cum Domini, Castro Palao operis moral. disputat. 3. punct. 5.

puncti. §. num. 5. Scortia in fidei. Pontific. conf. epist. 4. thesaur. 7. Gualbertus de censur. in synopsi, verbo Naufragium. Ex quo primo apparet, non posse iustificari leges Principum, vel Rerumpublicarum, quæ naufragorum bona, si de domino facti possint, sisco addicunt; quia sunt contra iustitiam naturalem, vt docent post Azonem in summa, C. de naufragiis, Nauarvus in manuali, c. 27. n. 60, ex n. 118. & alij rexi ad Barbosam in praesentia, final. Rebusus ad leges Regias, gloss. §. m. 74. Coar. in regul. peccatorum, §. per. §. m. 5. Ioannes Gutierrez, lib. 1. canonice, cap. 9. ex num. 20. Grotius lib. 2. de iure belli, cap. 7. §. 1. Solutanus lib. 6. pol. Ind. cap. 6. pag. 963. Hæc excommunicatio non incurritur, nisi eo animo res naufragi occupata sit, vt inuito domino reuineat, secundum quod accipienda est poena, quæ propter naufragium opculum imponitur Agatheus Episcopo in ap. cum dilecti 18. de accusat. Vnde in predictam excommunicacionem non incidunt, qui ea occupant, vt reslinant; vel qui ignorant propterea dominos, vel existimantes res pro derelicto haberi, illas sibi desinent; quippe iniusta accepto, & solos malos animos puniunt. Alosua Riccius in praxi tom. resol. 191. & totidem fecit verba Z-tola in praxi, verbo Naufragium, Barbosa in praesentia, numer. 7. Cessit etiam aduersus eos, qui res occupant Christianorum fidelium naufragium faciendum, si hosles tamen sint illi populo, & genti, quæ occupat; quia tunc occupatio ea iure belli iustificatur. Syluester in summa, verbo Excommunicatio 7. mon. 55. vers. Vigesima 28. Es quo non inuenio Auctores, qui bona ignorantium naufragantium; quæ omniuo incerti domini sunt, suadeant, vt pauperibus distribuantur; sed stando in terminis legis naturalis ea addicunt occupanti absque villo restitutionis onere faciendæ pro anima naufragi; quod Doctores supra citati potius supponunt, quam exponunt. Mihi tamen hæc sententia probatur ex eo, quia hæc bona vt possunt esse, vel sisse coniectio amici Christiani, ita possunt esse hostis publici, infideli Turce, aut piræ, quæ iure belli cedunt occupanti. Ergo in hoc dubio iaris, & facti melior est condicio occupantis, vt nulli, nec nullo modo restitutor teneatur, nec pro anima naufragium facientis.

Sed vt ad ius nostri Regni circa bona naufragorum perueniamus, Glossa incerti Auctoris in cap. dispensacionis 16. i. quest. 7. verbo Despicimus, quæ Reges Hispanie taxat, qui naues fradatas occupabant, de naufragi rebus nihil loquuntur; & tamen de toto naufragio illam accipit Ioannes de Platia in dict. l. 1. Cod. de naufrag. lib. 11. Guillelmus Benedictus in cap. Reynos, verbo Votum nuntius Alafium, num. 374. Hæud difficile id credo, si motes illorum temporum spectent, ita etiam apud nos inerebuisse, cum iudem, & detestabilliores vigerent in alijs prouincijs. Verum legem nullam inuenio, quæ ita iusserit: potius referam contrarias. In primis habemus legem 1. ric. ult. lib. 4. firi legum, quæ ante prelatum opus iuris Septempartiti edita fuit, vel ab Alphonso X. vel à Ferdinandò III. eius patre, non tamto post Concilium III. generale Lateranense. Ita in ea sancitur: Si nunc, à galera, à otro nauis peligrare, à quebrare, mandamus, quæ et nauis, y todas las cosas que en el andaban, sean de aquellos cuyas eran antes que el nauis quebrasse, à peligrasse; y ninguno no sea ofado

de tomar ninguna cosa de ellas sin mandado de los dueños. suera sillas tomare para guardar, y darlas à sus dueños. Y antes que las tome en esta guisa, Rame a el Alcalde del lugar, si lo hauer podiere, y otros hombres buenos; y escribientas, y guardien las todas por escrito, y por quenta, y de otra guisa no sean ofados de las tomar: y quien de otra manera las tomare, peche las como de furto. Esso mismo sea de las cosas que fueren echadas del nauis, para alenirio, à cazeren, o se perdieren por alguna guisa. Idem, abrogatus tamen, sancitur in l. 7. tit. 9. part. 5. caprogna priolegij, moribus quo, vel inmemorabilibus etiam consuetudinibus in contrarium obseruatis, vel vigentibus, vt pote contra ius naturale, & iustitiam: Enna (indo inquit) si tales cosas fueren de los enemigos do el Rey, o de el Reyno; y en ofensa quinquier que las fallasse, deuen ser sigas. Quod iure communi dectum non inuenio; in multis enim leges septempartite ius commune ampliant, suppleuerunt, & explicant, lex fuit, quæ totidem verbis repetita erat in l. 3. tit. 12. lib. 6. ardin. & in lego 9. tit. 10. lib. 7. Recopil. Sed prout prout mores eius subreptum, aliquod cepit etorqueri peritiosis, subleuaminis, aut hospiti nomloe ab illis, qui naufragium facientes nauis fr. aut conuulsi in portum appelabant, en nombre de Pizio, vt dicit les 1. tit. 12. lib. 6. ardin. aut Picio, vt legitur in summario legis septempartite, vel Precio, vt hodie erat in l. 1. tit. 10. lib. 7. compilar. Prestito tamen priorem lequonem in Picio etiam significat petitiu etiam hodie apud aliquos rusticos, qui veterem linguam teneasus retinent. Hanc consuetudinem aueruoearunt sub graosimor penis Catholicos Reges Ferdinandus, & Elizabeth in dict. l. 10. & 11. vnde difficile est credere aliam gentem, quæ tam exadè, benigneque naufragio prouiderit, vt nostra: si quid vetò contrà sit, contra leges, & contra Principum voluntatem fit.

Ex quibus legibus patet possunt decidi quæstiones, quæ in praxi folent apud nos esse frequentes, præsertim in his, quæ naufragium patiuntur in nauigatione ad Indos, solent enim alij peripetito luto naufragij argentum, & alia pretiosiora inde post aliquos annos extrahere per vltiores, non sine maximo opere, periculo, & expensis. In primis si ea signis, sigillisque, quibus vectores vtuntur, potest certè, vel mortali probabilitate sciri de vero domino rerum, qui non sit hostis, vel pirata, illi, hæreditas eius esse restituerda sunt, ad quos natura pertinet, tam ex iure communi, aut Regio; quàm ex ipso iure nature; nam propter naufragij casum aliquem rebus suis spoliare meta iniustitia est, vt dicit: & ita supremum Iudicium Consilium decreuit in auro, argentoque extrahido per Franciscum Mexicanum ea naufragio, quod fecit classis Indica anno 1626. omne enim aurum, argentumque, cuius domini potuerunt agnosci, dominis restitutum fuit, soluti extrahicionis expensis, vt refert iudicium Solorzanas lib. 6. polir. cap. 6. pag. 963. cerò enim sciebatur, non hostium esse, sed Hispanorum, qui vebabantur in nauis, cui nomen la Margarita, in cuius submergia carina inuentum fuit. Secundo, supposito quod Princeps noster habet ius prohibendi nauigationem per mare Indicum, vt prohibendi D. Iosephus de Retes lib. 7. apud. cap. 1. num. 6. potest queri, si non imperatæ Regis nostri facultate, vel semper sciunt aliqui, per vltiores extrahant

II.

RESOL.
VNTER
VARIAS
QUESTIO-
NES.

10.
DATA
MORTUO
REGIO.

divitias naufragio deperditas, vel ab antiquo, vel de quantum dominis sciri moraliter non possit factis omnibus diligentibus, verum illas licite retineant, & secuti sint quoad forum interius, tanquam de rebus parvis (secundum ius naturale) in qua questione, quam nondum excoGITATAM, ne dicam disputatam ab alta inventi, ita philosophandum censio. Verum est annulorum, lapidum, & aliarum rerum pretiosarum, quae naufragio in flumine decidunt, possessionem statim amitti, quia deficiunt scilicet, & facillitas eas retinendi, aut repetendi pro libito: dominium vero non amitti, quia eius retentio non pendet a facultate retinendi tem, sed a iure, *h. Pomponius l. 3. in prin. p. de acquir. poss. in l. 3. §. Nerva, eod. tit. quod valet, ut quando dominus inveniri possit, nemo eas sibi possit retinere sine etiam eo furti: quando vero de domino procul ignoratur, non puto hanc bona esse compensanda bonis idestotis, quae dominos amiserunt, sed illas, quae communia sunt per naturam, quia tanquam dominos habuerunt, & per consequens cedunt occupanti, iuxta superius dicta. Ratio est, quia summa, & multo magis multa censuram vice funguntur, & quae occupant, faclant publica, quae defecerunt, privata. In summa omnis res illam iudat qualitatem, quam habet flumen, vel mare, quod illam occupavit, *l. Aijlo, penult. de rer. div. l. ergo 30. §. alius 3. de acquir. rer. dom. l. 1. §. si in insula 6. cum sequent. de fluminibus* : explicant, ne immutentur, *Guillelmus Pomerius lib. 3. sect. cap. 5.* alique apud *Oswardum ad Donel. lib. 4. cap. 27. littera C.* ego cum mare naturae commune sit, etiam quicquid mare occupaverit, postquam prius dominum amittit, Deinde a posteriori, quia si procul ignoratur cuius sit, potest esse hostis, & piratae. Cum ergo hae iure belli cedant occupanti ex iure gentium, consequens est, ut etiam licite retineantur, secundum hoc ius: nec Principis prohibitio impedit dominij acquisitionem ex re naturae communis, quamvis prohibitum subiacet aliis poenis, quas in prohibitionem imponit. Quod mihi probat textus in *l. Dime Pius 16. de feniit. rube. pred. ubi* Callistratus refert constitutionem Imperatoris Antonini Pij ad Aucupes emissam, quae sancit, ne quis aucupandi, vel venandi causâ fundum alienum ingrederetur iniurio domino. Pone de facto, & prohibente domino ingressum fuisse venatorem, vel aucupem, & in alieno fundo aucupem, vel fecum cepisse: quare cuius sit, capientis, an domini fundi? Et sane cessante prohibitione ipsam est, aces, vel feras captas in alieno fundo proprias fieri capientis, quia non sunt eius, in cuius arbore insederint, sed in libertate, & laxitate naturae permanent, & per hoc nullius sunt, & capienti acquiritur, *leg. 3. §. 1. ff. de acquir. dom. l. si apud 26. de foris*: docet expressis *Culac. lib. 4. observ. cap. 2.* Accedente vero prohibitione non adeo expressè decisa est questio, ut habeamus alienum Iuriscofultis responsum, quod eam in propriis terminis determinet. Accutus tamen in *dist. l. Dime 16. de foris*, prohibito teneri domino fundi actione in factum ad instar propter damnum datum glebae, frugibus, aut arboribus, *l. in laqueum §. ff. de acquir. dom. & actione iniuriarum propter contumeliam, aut concumaciam insti percepti contempti, l. iniuria-**

rum 13. §. ult. ff. de iniur. facere tamen proptis nihilominus animalia capta, quia cum per prohibitionem propria non fiant dominij fundi, sed in libertate adhuc naturali permancant, consequitur, ut capienti adquirantur, nec illa domino fundi restitueret teneatur, tam in foro interiori, quam exteriori. Docent idem cum Accursio, *Vvesembchius post veteres Legistas in comment. tit. de acquir. dom. num. 7.* Forcatulus in *aluvio interis, cap. 4. num. 3.* multisque aliis laudatis *Lessius lib. 2. de iust. & iur. cap. 5. dub. 8. cum duobus sequent.* cum nuperis *italicus Eligius Balizus in floribus, verbo Venatio, ex num. 4.* *Tapia 2. tom. castra mor. lib. 3. quest. 26. art. 5.* Ignot, si prohibito venandi in fundo proprio in foro impedit acquisitionem dominij, multo minus impedit in mari, quod natura omnibus patet, acquisitionem dominij rerum extraxarum.

Tertio frequentissime solet quæri, an bona ex naufragio electa, vel extracta ad priuatis, quorum proflua domini non apparent, fiant Principis, tanquam regalia? Et sane non dubito, quin hae possint fieri regalia, ut piscatio, vñones, & similia, quæ ex parte extrahuntur: nec dubito, quin apud multas nationes, & regna inter regalia connumerentur, ut ex fide historica memorat *Grotius lib. 2. de iure belli, cap. 7. §. 1.* De Regno Neapolitano, in quo dicitur esse expressam constitutionem, tradunt *Pontius decis. 21. num. 3.* *Mastrillus de Magistratibus lib. 3. cap. 10. num. 391.* & de Regno Francie *Guillel. Benedictus in cap. Raynariis, verbo Fuxem, num. 374.* apud quas nationes leges istæ servandæ erunt, quia supposito totali defectu dominij, non sunt inusu: immò & longi temporis consuetudines hoc regale inducentes ex eadem ratione debent obsequari, quas ferè apud vñicosum orbem inoleuisse testantur *Chopinus de dominio Francie lib. 1. tit. 16. §. 2. num. 3.* *Petrus Rebuffus ad leges Gallicæ, in promissa, gl. 5. ex num. 4.* *Mastrillus ubi proxime, num. 393.* *Regnetus Siciens de regalibus lib. 2. cap. 3. ex num. 91.* *Solorzani in pol. Indiam, lib. 6. cap. 6. pag. 964.* Idcirco tales leges, & consuetudines iustas, observandæ esse, censent *Conar. in regni. periculum, 3. part. §. 1. num. 5.* *Suarez de censur. disp. 21. sect. 2. num. 34.* *Diaz ad Bullam circa Domini, can. 4. quest. 17.* *Petrus Gregor. lib. 3. synag. cap. 14. num. ult.* In nostro tamen Regno non vident legem, quæ bona naufragorum hîco applicet, ut liquidè apparet ex supra adductis. Ego ex iure naturæ cedent occupanti, & hoc iure cedent etiam Principi, si naues, tritones, vel alia tempestate maris in litus electa, per milites, nauarchos, aut per ministris suos occupet, vel etiam extrahat, quæ in profundo maris latent, dum proflua domino careant. Ex quo inferat, schedulas, & diplomata Regia, quorum meminit *Solorzani ubi proxime*, emissâ ad eos, qui perquirunt naufragia, quæ occidunt in navigatione India, tantum in suo casu esse intelligenda ad extractionem eorum, quæ amissa sunt a nostris nauigantibus, quæ Princeps sibi reservat, & de quibus pactum fuit cum extractoribus, ut partem retineant, partem hîco inferant: nec videntur mihi posse applicari aliis casibus naufragiorum, nisi in praesens, in quibus hoc Regale legitimâ consuetudine receptum sit, quam hîco Regij Adunatus, aut Praecurator probare tenebitur.

12.
RESOLV-
ERE ALIA
ARTICULO.

CAPVT IV.

Alexand. III. ^a *Panormit. Archiepiscopo.*

IN Archiepiscopatu tuo dicitur contingere quandoque, quod Sarraceni mulieres ^a Christianas, & pneros rapiunt, & eis ^b abusi prælumunt, & quosdam etiam interdum occidunt. Cùm autem excessus huiusmodi charissimus in Christo filius noster Illustris ^c Rex Siciliæ Vv. tibi, & aliis personis ecclesiasticis, quæ Pontificalli sunt prædix dignitate, commiserit ^d puniendos, quid de Sarracenis agendum sit, qui fuerint in tam nefario scelere intercepti, tuâ nos duxit prudentia consulendus. Super quo consultationi tuæ taliter respondemus, quod si tales in iurisdictione tua sunt, vel in posterum fuerint intercepti, eos ^e pecuniariâ poteris poenâ multare, & etiam ^f flagellis afficere, cā ^g moderatione adhibita, quod flagella in vindictam sanguinis transire minimè videantur. Si verò ita fuerit super hoc grauis Sarracenorum excessus quod mortem, vel detractionem membrorum debeant sustinere, vindictam ipsam exercendam referes Regi potestati.

NOTÆ.

^{1.} ^a *Panormit.* Ita etiam legitur in prima collectione, *sub hoc titulo cap. 3.* & post Concilium Lateran. *part. 34. cap. 2.* In præsentis referibit Alexander Hingoni Archiepiscopo Panormit. & in *cap. super eo, de ofur. cap. de ius, de condit. appofit.* De Metropoli Panormitæ *eg. in cap. 4. de elect.*

^b *Christianas.* Vnde poenam mortis incurrerant, *hæc quis Christianam, Cæd. de Indis: & notauit in cap. supra, de Indis.*

^c *Arum.* Ad præposteram libidinem, de qua agemus in *cap. clericis, de excessibus Prælat.*

^{2.} ^d *Rex Siciliæ.* Vvilelmus videlicet secundus, à moribus cognomento Bonus, qui regnum suscepit diadema anno 1166. à prædicto Hugone Panormit. Archiep. vt refert D. Roehus Pirro *tom. 1. Sicilia sacra, fol. 32.*

^{3.} ^e *Puniendos.* Princeps enim potest mandare merum imperium, præcipuè cùm in præsentia extra ordinem non vult, aut alteri, sed omnibus

Episcopis crimen prope ecclesiastici fori delegasset. Quintinaductus de *iurifict. lib. 2. cap. de iurifict. mand. num. 12.*

^f *Pecuniaria.* Quia poena pecuniaria ex iustis causis, præcipuè cùm magis timetur, imponi potest à iudicibus ecclesiasticis, dum vxorum vilicitatibus non applicetur, vt dicemus in *cap. 3. de poenis.*

^g *Flagellis.* De poena fustium, seu flagellorum, & quando in poenam sanguinis transire dicant, *eg. in cap. 1. de calumniis.*

^h *Et moderatione.* Sed quomodo sodes infertior potest minuire, aut moderari poenâ à iure statuta, contra tradita in *cap. 4. §. de ius, de offic. deleg.* Sed respondetur ideo in præsentis Archiepiscopum imponere poenam mitiorem, quia ipse poenam sanguinis infligere non valebat, *cap. sententiam, ne clerici, vel monachi.* Et ideo in calce huius textus ait Alexander, quod si poena sanguinis infligenda sit, regis cognitioni sententia referatur. Docuit Anguianus *lib. 2. de legibus, com. treuf. §. num. 44.*

CAPVT V.

Alexand. III. ^a *Claramontensi Episcopo.*

IN literis tuis, quas I. lator præsentium detulit, continebatur, quod cùm pater eius imulus fuisset criminibus irreuerus, qui per appositionem ignis Ecclesiarum excidium, diabolo instigante, commiserat, tandem in vltima ægitudine constitutus, confessus est se peccantem, & acceptâ poenitentia de commissis, per manum ^b capellani sui fuit à sententia absolutus anathematis sed moriens sepulturam ecclesiasticam habere ^c nequiuit. Quapropter si ita res se habet, f. t. p. A. f. p. m. quat. corpus eiusdem patris I. supradicti ap. cell. facias in cæmeterio ^d sepeliri, & hæredes eius moneas, & compellas, vt iis, quibus per incendium, vel alio modo damna contra iustitiam irrogauerit, iuxta facultates suas condigne satisfaciant, vt sic ^e peccato valeat liberari.

NOTÆ.

^{1.} ^a *Claramontensi.* Ita etiam legitur in prima collectione, *sub hoc tit. cap. 6.* & post Concil. Lateran. *part. 34. cap. 2.* De diocesi Claramont. *eg. in cap. 38. de rescrip.*

^b *Capellani sui.* Clerici videlicet, qui ex of. D.D. General. in Decretis, Tom. V.

sicio sacramenta administrabant, de quo *eg. in cap. capellani, de feris, cap. 1. de secund. nup.*

^c *Nequiuit.* Quia cùm non satisfecisset pro damnis illatis, existimabat capellanus poenitentiam illi parum prodesse, & ideo indignum esse sepulture ecclesiasticæ, iuxta textum in *cap. 3. supra hoc tit.*

Ec a d Sep

2. d. *Sepeliri*.] Quia licet ipse per se non satisfecisset pro damnis illatis, tamen hæredibus suis iussit ut satisfacerent, & ita potuit sepeliri in sepultura ecclesiastica, ut in *cap. final. hoc tit. in 1. collat.* testificat Alexander III. Lucensis Episcopus in hæc verba: *Da secunda vero questione hoc etiam volumus discretionem tenere, quod propinquus eius, quomodo per manifestum excessum, videlicet homicidium, incendium, violentiam iniectionem manuum in clericos, violationem multarum Ecclesiarum, & incestu, vinculo excommunicationis adstringit, monendi sunt, ut pro eo ex eo satisfactionem exhibeant: quod si fecerint, quia laborant in extremis, pressio inramente per presbyterum fuerit ab excommunicationis sententia relaxatus, in cameris poterit sepeliri. Si autem propinquus tuis acquiescere monitus contraxerint, quia iam non est purgatum peccatum, defuncto neganda est ecclesiastica sepultura.*

3. c. *Valeret librari.*] *Valeret librari*, legit Nauarrus in *manuali Latin.* cap. 17. numer. 68. à quo discedit Barbosa in *collat. ad hunc textum.* Alter Azuajo in *decof. moral. tract. 3. quest. 25.* retinet aliam interpretationem ipsius Nauarrus, qui retenta litera, *valeret librari*, accipit ea verba de ope, quæ obviat animæ defuncti accidentaliter per orationes creditorum, siue pauperum bene satisfactorum; nam teste D. Thomas in 4. *dist. 45. art. 1. questione, 2. ad 4.* solutio debiti aliquantulum prodest defuncto, in quantum creditoris orationibus adiuvatur. Sed adhuc crederem mentem Alexandri III. fuisse, hæredem debere satisfacere pro damnis illatis à defuncto, quia edus ipse valde negligens fuisset in satisfaciendo, si eius onus hæredibus iniunctum, ipsi debent ex bootis eius satisfacere: quod si prætermittant, incurunt in peccatum; à quo non liberantur nisi restituendo. Non igitur fuit mens Alexandri incendiarium in gratia ante restitutionem defunctum, ut liberetur à purgatorio, egere restitutione per hæredes facta; sed mens eius fuit hæredibus eam restitutionem esse necessariam, ut liberentur à culpa, id est non esse incurrit: nam ob neglectam, aut dilatam restitutionem ab hæredibus faciebam, non destinet animas in purgatorio, docent D. Thomas *quodlibet. 8. art. 13.* Nauarrus *supra*, Hadrianus *quodlibet. 8. Syluester in summa, verbo Testamentum, quest. 9.* Petrus Sotus *test. 3. de purg.* Dominicus Sotus in 4. *dist. 45. art. 3. quest. 1. de lib. 6. de iussu. quest. 1. art. 1.* Molina *tract. 2. de iussu. dist. 851.* Suarez *tom. 4. lib. 3. part. dist. 48. sect. 8. num. 10.* Valerius in 2. 3. *dist. 5. quest. 6. post. 3.* Belarum. *lib. 4. de purgato. cap. 16.* Peltanus *lib. de purgato. cap. 16.* Nauarrus de *restit. lib. 4. cap. 4. num. 75.* Cenedo in 99. *proli. quest. 32. num. 6.* Theoph. *tom. 15. in Hieroch. part. 2. sect. 1. cap. 3. fol. 404.* Quatenus verò hæres teneatur satisfacere pro damnis illatis à defuncto, exposui in *cap. fin. de sepul.*

lo incendium fecit, siue ipse manu sua stupram, tædæve innulerit, siue per alium id fieri causaerit: & si certa, turba, aut seditione incendium fecerit, etiam legi iuliz de vi publica subicitur, l. 1. & 10. ff. ad leg. Corn. de ficer. l. 5. ff. ad leg. Iul. de vi public. l. 11. Cod. qui accusare. Sed eum non omnia incendia æquæ graua sunt, non semper eisdem penis incendiarij sunt plendendi; qui enim intra oppidum incendium fecerint, prædæ, aut inimicitiarum causa, plerumque viui exaruntur: qui verò casam, aut villam incendierit, aliquo leuius puniuntur: qui acrum frumenti iuxta ædes positum combusserit, vinchi, verberatque igne necantur, l. qui ades 9. ff. de incendio & ruina, l. aut fallæ 16. §. penult. l. capitalium 28. §. incendiary, ff. de penis, l. 10. ff. ad leg. Corn. de ficer. Farinae, in *praxi* q. 97. §. 110. num. 257. D. Ioannes Vela, & Anton. Matthæus ubi *supra*, Iul. Pacius ad tit. de incendio. Ad quod delictum, & eius penas spectant textus in l. in eum, Cod. de furtis, l. Pompeius 44. §. idem, ff. de acquir. rer. dom. l. 7. §. si & alius, ff. quod vi aut clam, l. si quis furtis, §. qui dicitur, ff. ad leg. Aquil. l. 1. §. final. l. 3. ff. ad leg. Rhodiam, l. 3. §. Sonatus, l. si quis, §. si qui, ff. ad Syl. l. 21. §. sed rsi, ad leg. l. 3. §. item si, ff. ad leg. Corn. de ficer. l. 3. §. in seruum, ff. de vi bonor. raptor. l. 4. Cod. de sepulchro violat. l. 5. ff. de aqua piuma, l. Pompeius 15. ff. de negot. gestis, l. 1. Cod. de naufragis, l. 1. §. final. ff. ad leg. Iul. de vi public. l. presbyteri, Cod. de Episcop. & cleric. l. 44. §. si iustum, ff. de furtis, l. 27. §. si furnarius, ff. ad leg. Aquil. l. 29. §. idem, cod. tit. l. hoc amplius, §. Nenatus, ff. de domo infecto, l. 2. Cod. de nauibus, l. interdum 58. §. si quis forem, ff. de furtis, intro. princ. leg. fin. Cod. quando ciuili, l. 4. §. final. de rebus credit. l. 1. l. 11. Cod. qui accusare, l. 12. §. nam incendiary, ff. de penis, l. in arborem, cod. tit. l. 5. ff. ad leg. Iul. de vi public. l. inuor, §. penult. ff. de furtis, l. 28. §. si Domus, ff. de dolo, l. 7. §. si pacificor, ff. de pælis, l. si vendita, ff. de periculo & commodo, l. 24. §. præterea, ff. de domo infecto, l. 1. §. si suspicio, l. 3. §. item, ff. de incendio & ruina, l. quæuis, Cod. ad leg. Iul. de adult. l. interdum 58. §. qui forem, ff. de furt. cum l. 1. Cod. quando ciuili actio, l. final. ff. de offic. Praef. vigil. cum l. qui ades, ff. de incendio, l. 5. Cod. de nauicular. lib. 11. l. 11. l. 30. §. final. ff. locari.

Lure nostro Regio ultra dampni satisfactoria incendiarij comburi iubentur, l. 11. tit. 15. lib. 4. *fieri* quæ pœna quoad nobiles par iterum iure mutata est in exilium perpetuum, lib. 9. tit. 10. *paris*. 7. hodie verò contra nobiles mortis pœna imposita est, in l. 6. tit. 12. lib. 8. *Recopil.* & si hominis occideodi causâ sit incendium, etiamsi mortis non sequatur, dimidia pars bonorum incendiarij publicatur, l. 36. tit. 19. lib. 8. *Ordin.* l. 8. tit. 26. lib. 8. *Recopil.* & 100. deni immunitate Ecclesiarum non gaudent, l. final. tit. 5. lib. 2. *fieri*, l. 3. tit. 2. lib. 1. *Recopil.* Basilic. *decis.* 18. *crim.* lure Saanonum pœna incendiarij omnino capitalis fuit, etiamsi incendiaria noctu; vel diu factum fuisset, tit. 5. §. 2. *legum Saanon.* Salicis verò, & Longobardis oculus compositio ficebat, quæ sequuti sunt Frisones *titul.* 7. & de illis intelligendus est textus in *cap. cum de iussu* 72. *quest. 2.*

COMMENTARIUM.

4. Incendium committitur ex dolo, culpa, aut casu, vt explicant D. Ioan. Vela de *delict.* cap. 18. per totum, Petrus Gregorius *lib. 36. Synag.* cap. 19. Martha de *iurisdic. a. part. cap. 45.* Antonius Matthæus de *crimine.* lib. 45. tit. 5. cap. 6. In præfenti agitur de incendio ex dolo admisso, cuius rationes tenet incendiarij qui dolo ma-

quæst. 2. Et hæc compositio, scilicet pena appellatur Vvete, seu Vvirgildum, in *cap. omnes* 17. *quæst.* 4. idest pretium, quo damnum appetitum fuerit, ut exprimitur *lib. 4. capitul. capit. 23. 25. & 18.* Iure Canonico in incensiores statuta est excommunicatio; cā tamen differentia adiecta inter incendiarios rerum Ecclesiarum, & aliarum rerum, quod illorum absolutio referenda est Romano Pontifici, ex præsentis textu, & *cap. tua nos, de sent. excom.* istorum verò tantum Episcopo, *cap. si quis membrum, cōm sequenti, 23. quæst. 2. cap. nuper, de sent. excom.* Et licet nonnulli assueverint, sententiam hanc excommunicationis incurrī ipso iure, in *cap. si quis membrum, cap. pressumam 23. quæst. 3. cap. tua nos, de sent. excom.* tamen constat, immo incendiarios non esse ipso iure excommunicatum, sed excommunicandum, docuerunt et Innocent. III. apud Sirlennm fol. 175. ibi: *Sicut ex parte tua nostro fuit Apostolatus reservatum, præ-*

decessores nostri solitis recordationis Clemens & Celestinus, & deationem tuam, & genti tibi subiecta duritiam attendentes, ut absolueret, ac iudicaret passus incendiarios in tua diocesi consueveris fraternitati tue de benignitate Sedis Apostolice indulgentiam. Nos igitur tibi, quem inter fratres, & Collepiscopos nostros sincera diligimus in Domino charitas, abundantius deferre volentes bonorem, & illud nihilominus attendentes, quod ex hoc vita hominum facilius corrigatur, ad exemplum coramend predecessorum nostrorum potestatem incendiarios tua diocesi absolvendi denotari tua auctoritate presentium indulgentiam, nisi foris tantum sit aliquorum excessus, ut eos oporteat ad Sedem Apostolicam destinari. Nulli ergo, &c. Datum Laterani. XI. Kal. Martii. Suarez de censur. disp. 22. sess. 2. num. 19. Barb. de potest. Episcop. alleg. 5. num. 89. Castropalao disp. 3. pont. 24. num. 5. Gibalvus in synopsi censur. verbo Incendiarius, Murga tom. 2. dispensation. dispensat. 20. dub. 19.

CAPVT VI.

Lucius III. * Nonhebergensi Episcopo.

Cum causam, quæ inter E. militem latorem præsentium, & uxorem eius vertitur, tux commississemus experientia terminandam: E. miles^b repetens, mulierem legitime sibi nupsisse, per probationes canonicas se constanter asserit probaturum. Femina quoque proposuit, quod dominorum, & parentum suorum suggestione alteri viro tradita, ab illo militis amore diuerit, qui à parentibus prius rapuit eam: illa tamen volente, ut dicitur, & postmodum prius quam eam cognosceret, desponsauit: demum inclusit in monasterio monialium, ubi etiam detineatur. Vnde quoniam super his prudentia tua Sedem duxit Apostolicam consulendam, significatione tibi præsentium respondemus, quod cum ibi raptus dicitur admitti, ubi nihil antè de nuptiis agitur, iste raptor dici non debet, cum habuerit mulieris assensum, & prius eam desponsauerit, quam cognouerit, licet parentes forsitan^c reclamarent. Præterea cum post matrimonium carnis commixtione perfectum, teste Apostolo, uxor sui corporis potestatem non habeat, sed maritus, & econuerso: si præcessisse matrimonium, vel ex probationibus viri canonicis, vel ex mulieris confessione clauerit, postmodum sine^d assensu viri non potuit femina monasterium ingredi, aut aliter continentiam profiteri. Nec ergo pro eo, quod post matrimonium consummatum rapta per vim de monasterio fuerit, eius poterit consortium declinare, dummodo probari nequeat virum, ut mulier profitetur, continentiam^e assensisse.

NOT.Æ.

1. ^a *Nonhebergensi.*] Ita legitur in prima collectione, sub hoc tit. cap. 4. Post Concil. verò Lateran. part. 5. cap. 24. Nobhebergensi legitur: in hac sexta collectione habetur *Dargensi*; sed credo legendum esse *Neubergensi*, qui Episcopatus est in Germania. & eius Ecclesiam his temporibus regerat Vtho secundus, ut refert Buccelinus tom. 1. Germania, part. 2. fol. 41.

^b *Repetens.*] Et vindicans, iuxta tradita in

cap. 1. de ordin. cognit.

^c *Reclamarent.*] Quorum consensus desideratur de iure Canonico, non tamen adeo præcisè, ut absque eo matrimonium non consistat, ut probatur in cap. 1. de dispens. impub. & pro huius textus expositione notauit Basilinus lib. 1. & 2. de matrim. cap. 1. num. 1.

^d *Sine assensu viri.*] Intra tradita in cap. coniugans, de conuers. coniug.

^e *Assensisse.*] Quia tunc cum ea motus consensu habitum teligimus suscepisset, non poterat eam repetere.

CAPVT VII.

Innocent. III. *Episcopo Glasconienſi.*

Accedens ad Ap. Sed. dilectus filius B. frater Hierosolymit. Hospital. à nobis ex parte tua quaesuit, virum clericum b. absens gratia studiorum de ecclesiastico beneficio possit inuestiri; & verum si rapta puella, & in alienam delata diocesim, in Ecclesie facie consensit in raptore, matrimonium huiusmodi legitimum sit habendum. Nos igitur inquisitioni tuae taliter respondemus, quod & clericus absens per alium, vel alius magis per ipsum pro eo potest de beneficio inuestiri: & rapta puella legitimè contrahet cum raptoe, si prior dissenſio transeat postmodum in consensum; & quod antè displicuerit, tandem incipiat complacere, dummodo ad contrahendum sint legitimæ persone.

NOTÆ.

a *Glasconienſi.* Ita legitur in tertia collectione, *sub hoc tit. cap. 1.* in hac sexta legitur *Saromienſi*, sed rectè Antoninus Augustinus in dicta tertia collectione ad marginem citandus *Craconienſi*, de qua diocesi egi in cap.

b *Absens per alium.* Hæc verba extant in cap. *accedens, de præbendis*, ubi iam notauit.

COMMENTARIUM.

EX his duabus deſinitionibus ſequens communi-ter deducitur aſſertio: *Rapta puellæ contrahere matrimonium cum raptoe, ubi datur libera facultas in contrahendo.* Probant eam textus in canone 66. Ap. Concil. Meldenſis can. 64. ibi: *Raptores virginum, & viduarum, qui etiam poſtea inuoluntate parentum eorum quæſi deſponſationes ſub detulit nomine in coniugium duxerunt, publice penitentia ſubiacent.* & poſt publicam penitentiam, prout præciderit Episcopuſ percellam, ne in peius corrumpe, ſacramentum conueniant, de cætera elemoſynis, & cæteris quibuſque religioſa, & ſubdiſſra conſuetudinibus obſtinuibus inferniſis procurare uſqueque ab opere coniugali ex conſenſu ſe valent abſtinere. Concil. Romanum ſub Zachearia can. 4. ubi excommunicatur raptor, niſi raptam deſponſationem habeat. Nicolaus I. ep. 30. Trident. ſeſſ. 24. *de reform. cap. 6.* Illuſtrant vltæ congeſſos in præſenti de Burdoſa Baſilius Legion. lib. 7. *de matrim. cap. ſenal.* Didſeus Petre in l. 2. tit. 15. lib. 8. ordin. Grotius in ſter. ſpoſ. ad tit. Cod. de rapt. virginum. Baſſamon in can. 30. ſancti Baſſij ad Amphiloch. Bagrel. tom. 3. deſiſ. tit. 1. num. 67. Bignonius in notis ad Marſal. lib. 2. cap. 16. Petrus Gregor. lib. 3. part. tit. 2. cap. 14. & lib. 4. tit. 14. cap. 6. & in cap. 1. de ſponſal. num. 79. Sauatus in notis ad Sidenium lib. 5. ep. 19. Acosta in 4. ſi arbitrat, num. 4. fol. 145. Chriſti-nos tom. 1. deſiſ. 334. Datis in 27. quaſt. 2. Azor t. part. inſtit. lib. 5. cap. 20. Trolench. de matrim. cap. 9. dub. 17. Leonard. ord. tractatuſ, diſp. 22. quaſt. 3. Hugrudo ord. tract. diſp. 33. Zypreus in reſponſ. ad tit. de ſponſal. Tondutus reſol. canon. cap. 117. Forner. lib. 1. rerum quæſit. cap. 5. Anſal-dus de iuriſd. part. 4. tit. 4. cap. 1. & 2. Seſſe tom. 1. deſiſ. 94. cum quatuor ſequunt. Moralitæ de impe-dimentis matrimonijs ſcribentes, Villaroël. part. 2. regim. eccleſ. quaſt. 9. art. 4.

Sed pro dubitandi ratione in præſentem aſſer-tionem ita inſurgit. Si matrimonium inter rap-

torem, & raptam permittatur, exempli impo-nitæ publicis motibus officiatur; nec niſi pluri-est apud nos pudor priuati raiſo, quàm diſcipli-na mœrum, eiſmodi concubiniſi matrimonij huncorem deſecorari patiemur, argumento legis poſſimi-nium 19. 4. filius, 4. 3. Cod. de prinſip. lib. 1. 2. quia nec ſequens conſenſus copuladum antea inue-lam ſic delere poſſet, quin licura mœnent; ideo-que Imperator in l. 1. Cod. Theodoſ. de rapt. ſen-ſimon. inbet neminem lib. ex poſteriore conſenſu raptæ blandiri, l. 1. cod. Cod. de rapt. virginum, ubi Gothoſt. & Iuſtinianus eiſmodi coniugia, nec inſeruentem quidem parentum, patrimonque conſenſu valere uoluit, l. 1. tit. 1. in l. 14. tit. 4. lib. 3. Poſſignib. Lege etiam Caroli Magni lib. 7. cap. 311. veritatem ſerminam duere, qui tam rap-tuic, vel ſeduxit, ne præcetera multam ſolueret, tenetur, Eiſdem Caroli Magni temporibus raptor, qui ſub lege Romana uiuere, mœnte ponebatur, & variis Eccleſiæ canonibus matrimonium inter raptorem & raptam celebratum nullum eſſe cau-rum legitur in cap. de puellæ, cap. placuit, cap. ſi mœum 10. 36. quaſt. 2. Conell. Meldenſis can. 66. 67. & 68. Trolleian. can. 8. & reſtaur. Carnot. ep. 16. Igitur non rectè in præſenti textu aſſertum, mœ-timonium inter raptam, & raptorem conſiſtere poſſe, coarctæ ius ita receptum. Vnde Treutlerus volum. 2. diſp. 6. de nupt. ad ſum. auſus fuit hæc uerba præſerre: *Cernidis loco ſit, poſſimo exemplo de poſterioribus canonicis permitti, ut raptor cum rapta liberè poſſit contrahere matrimonium; quod enim in l. 1. cod. de rapt. virgin. cap. placuit, cap. de puellæ 36. quaſt. 2. contra ſtatuitur, id inſiſſimum rati-onem habuit iure dictio, & humanæ ſuſſultate, con-tra quam non potuit, nec debuit aliud ius induci in cap. ſenal. de rapt.*

Quæ dubitandi ratione non obſtante uera eſt præſens aſſertio, pen cuius expoſitione ſcripſandum eſt, uerbum raptæ commune eſſe de ad res, & ad perſonas; nam qui perſonam rapit, raptor dicitur, *Eſt qui ex dano, ſi de ſuria: & qui perſonam abducit, propriè raptum committit, iſi qui non di-cam, Cod. de Episcop. & clericis.* Iſ enim committit raptum, qui de loco ad locum per vim mulierem amouet libidinis euſa; *ex illa, verſ. Rapina, 33. q. 1. ad ſi qui non dicam;* idèque in præſenti ſubſcri-

TRA TRA
DITA AG-
REGIO.

3.
DE RAP-
TU PER-
SONARUM.

DOO

CON-
CILIUM
DITUM
ET PRO-
BATA.

2.
IN PRO-
BATA.

non solum agitur de prædonibus, & latronibus, sed etiam de impuris hominibus vim feminis inferentibus, qui prædonibus similes sunt, unde & furtum facere dicuntur in cap. placuit 36. quest. 1. in Synodo Romana sub Gregorio II. can. 1. t. ibi: Si quis virginem, nisi desponsatam, furatus fuerit in uxorem, vel confecerit ei, anathema sit. Synodus Romana sub Zacharia can. 7. ibi: Si quis temerario ausu præsumptus virginem, aut viduam furari in uxorem, præter si desponsatam habuerit, anathema sit. Et hoc crimen furtum dicitur à Virgilio lib. 6. *Aeneid.*

— Supposita sunt
Pæphæ.

Furtum enim sit pudoris & castitatis in virginibus, quæ ideo depudori dicebantur à Sabæto apud Gellium lib. 6. *noctium*, cap. 7. & nulla atrocior iniuria feminis potest inferri, quoniam quæ pudicitiam aggredietur, eo quod pudicitia illa nunquam recuperetur, ut ait D. Hieronymus in *epist.* 32. ad *Eustachium*: & Ovidius *epist.* 5.

— Nulla reparabilis arte
Læsa pudicitia.

Hinc exponenda est questio satis vexata apud Interpretes, an mulier rapta dicatur, quæ non est abducta de loco ad locum, sed in cubiculo, vel alio loco sola deprehensa, oppressa, & violata fuit. Et tunc raptum non committit, immò etiam puella per passus aliquot abducta, & rursum contra potestatem fuerit, pœnis raptus oppressorem non tenet, docuerunt Theobaldus Decianus lib. 8. *trist. crimin.* cap. 7. num. 34. Fasine. in *praxi*, quest. 145. num. 69. Iul. Clarus *de raptu*, in princip. Badius in *praxi*, tit. de raptu mulier, num. 1. Petrus Gregor. lib. 36. *synagoga*, cap. 33. num. 1. Quæ sententia firmatur sequentibus iuris principis. Primum, quia quemadmodum vi bonorum raptorum non tenetur, nisi qui violenter res eripuit, & abduxit, l. 2. §. si publicanus, cum sequetur, ff. de vi bonorum raptor. l. 4. ff. ne quis enim, qui in ius vocatus; ita nec raptus accusari poterit, nisi qui personam violenter abduxit, & sicut abduxit non dicitur, qui in eodem loco hominem retinuit, dist. 14. l. 3. Cod. ad leg. Jul. de vi: ita nec rapuisse mulierem dici poterit, qui in loco solum deprehensus vi compescit. Secundò quia in iure semper separatur Raptum per vim factum à raptu, l. 1. §. 5. ff. ad leg. Jul. de vi priuata, & in legibus Visigoticis lib. 3. tit. 5. §. 4. Igitur quis ad raptum desideratur abductio, seu amotio de loco in locum. Contrarium sententiam tenuerunt Retiosus in l. Marcellus, verbo Raptus, ff. de V. S. Anton. Mathæus de crimin. ad lib. 48. *Pæphæ*, tit. 4. c. 4. Pro quo sententia facit certum in cap. final. 36. g. 1. ubi appellatur raptus, qui per vim virginem stuprauit, & in c. de raptoribus, eadem questione, traditur raptum dupliciter fieri, vel cum ipsa mulier raptetur, vel cum illa virginitate violente eripitur: quare licet mulier de loco in locum non amoveatur, sed retineatur ubi deprehensa est; raptus tamen committitur, quoniam pudicitia ei eripitur. Tandem quia quicquid vi eripitur, rapti dicitur, l. si armamenti, ff. ne quis enim qui in ius vocatus, l. 3. §. non solum, ff. de interd. rui. ex Seneca, & Quintilianus probat Ant. Mathæus ubi proximo. In quo Interpretum dissidio verum erodit, hoc casu raptum virginis non verò virginis committi; & ita oppressorem puellæ non tenet pœnis raptus, præcipue si virgo non erat in potestate parentum, sed sui iuris.

Deinde sciendum est, ad raptum committen-

dum vim desiderari, cap. les illa, *curf. Raptus*, 36. quest. 1. idque ipsius verbi proprietas postulat, cum rapti solum dicatur, quod vi eripitur, dist. 1. si eximendi, l. 3. §. non solum, ff. ad leg. Jul. de vi. Unde si femina consentiens abducta, quia nulla vis committitur, raptus non datur, cap. cum causa, hoc tit. Quod procedit quando inter eos præcessit tractatus matrimonij, etiam si eisdem adhuc hoc casu raptum committi certum sit, & probat Ant. Mathæus ubi supra. Quæ etiam consentiente filiafamilia, cum raptus pœnis pœni mortis, ut contra Decianum tenent Cevallos quest. 936. num. 33. Pegneta decis. 40. & 43. Fasine. 9145. a num. 34. Daucher de mortis. disp. 13. lib. 7. num. 23. Giampa consil. 2. num. 30. Salgado de regia precl. p. 1. §. cap. 14. num. 38. Inde etiam inferitur, multò fortius raptum committi ubi functionibus, donis, aut aliis amatoriis artibus mulier viro consensit, habent enim vim peruersoria verba, l. 1. §. si nuda, ff. de seruo corrupto, l. 3. §. si quis volentem, ff. de libero homine exhib. l. penult. Cod. de apost. probat Balthemon in can. 30. Sancti Basilij ad Amphiboliam: & quia in debito mulier semper penitus seducta blanditiis & fusionibus viri lenit, Cod. de raptu virgin. Baldus in l. raptus, Cod. de Episc. & cler. Decianus lib. 8. cap. 13. num. 3. & part. 7. num. 7. Gomez in l. 80. Tauri, num. 5. Pæ in l. 74. Syll. Gutierrez in canonic. cap. 37. a num. 21. Accordus in l. 1. tit. 13. lib. 8. num. 38. Vela de delictis cap. 37. Ideo hoc casu raptus probare debet ipsam vitam consensisse, quod difficile est, nisi ipsa fateatur, ut post Mascardum, & Boliuot probat Vela de delictis cap. 29. num. 9. Inde etiam deducitur feminam raptientem virum, raptum committere, pœnisque raptus teneri, ut probant Gomez in l. 80. Tauri, num. 37. Vela dist. cap. 29. num. 9. Ant. Mathæus dist. cap. 2. num. 1. Et sanè si mulier raptori opem ferens capite puniatur, l. unic. §. pœna, Cod. de raptu virgin. utique multò magis capite punienda erit si, ipsa vitam rapuerit. Nec obstat in pœnalibus, & ollosis verbum masculini generis feminam non comprehendere, nam si crimen tale sit, quod in feminam cadat, femine quoque continentur, ut contingit in edicto de albo corrupto, l. si quis id quod 7. §. ff. de iurisdic. in lege Aquilia, l. si idem si obstrictus §. ff. ad leg. Aquilia in Syllano, l. 1. §. ius, & §. impuber, ff. ad Syllan. facit Cicero in orat. pro Cluentio, ubi: Pbi omnes morales lex obligat, ita loquitur: Qui uxorem vel bonum facit, omnes civi, mulieres, liberi in iudiciis vocantur. Eius contrarium sententiam tenuerunt Menochius, Iul. Clarus, & Fasine. Et pœna feminas hoc commississe crimen effert Tiesquel. in l. comit. in l. 9. num. 112.

Delictum hoc raptus virginis seuerissime puniatur, tam per leges, quam per sacros canones. Iure civili si raptorem in ipso raptu deprehendantur, possunt impune occidi propria auctoritate à propinquis, vel cognatis ipsius raptæ, l. unic. *curf. Ne igitur*, Cod. de rapt. virgin. quæ pœna imponitur etiam illis, qui auxilium raptori præbuerunt, & raptore accusant, aut conuictus ultimo supplicio afficiendus est, nulla habita distinctione eius conditionis, seu qualitatis, ex dist. 1. unic. l. si quis non dicam, l. raptores, Cod. de Episcop. & clericis, qui curi, §. qui vocantem, ff. ad leg. Jul. de vi, & item lex Julia de vi, Iulius de public. indic. l. 3. 4. 6. & 7. c. Theodof. de indulg. crim. Pholius in nouacra, tit. 9. cap. 30. Saur. ad Sid. 5. ap. 10. Bona quoque eius, licet regulariter aliis damnati ad mortem scilicet applicantur,

De raptu
virginis

De raptu
mulieris

placitor, *autem. bona, Cod. de bonis praescrip. & olim applicarentur in hoc casu, l. si quis dicant, Cod. de apen virgin. in Theodof. Martinus lib. 1. resol. cap. 301. ad ipsam tamen raptorem spectant, si ingenuus est, dist. 1. univ. vers. & si quidem, §. 5. Papinianus tit. 10. respons. l. ore nostro Hispano antiquo raptorem si captum cognovissent, vitimo supposito pledebantur; si autem copula non sequeretur, nullam pecuniariam puniebantur pro equalibus applicato fisco, & raptae, l. 1. a. & 3. tit. 10. lib. 4. fori. Lege pariter contra raptores, & eorum fautores statuta est poena mortis, & bona applicantur raptae, nisi contrahat eum raptorem; quia tunc applicatur fisco, l. 3. tit. 20. part. 7. quae poena in solo contactu ad alius externos deducit locum habet, licet non periculator raptae, l. 2. tit. 31. part. 7. Quod si raptus committatur in crimine, est casus vulgi de la honestas; & ideo puniunt poenā fugitivae, l. 2. tit. 13. lib. 4. recopil. l. ore Canonico raptus puniunt poena depositionis in clericis, excommunicatio in laicis, qui & sequeute iubentur patri puellae, cap. de raptoru, cum aliis, 36. quest. 1. Concl. Melchior can. 66. ibi *Qui deinceps raptorem virginis, vel viduae praesumpserit, secundum Synodalem B. Gregorii definitionem, ipsi & complices eorum anathematizantur, & raptorem sine spe coniugii perpetui maneat.* Chalcedon an. 11. can. 17. Aurelian 4. can. 12. Rogatus, 1. sub Gregorio II. can. 10. & 11. Sexta Synodus Trul. can. 91. Vno can. 77. Metensis can. 7. Ipsi raptorem, ac eorum filij manent infames, ac inhabiles ad dignitates ecclesiasticas. Concil. Aurel. 1. can. 4. Alexander III. post Concil. Lateran. part. 6. cap. 4. Tridentin. sess. 14. de reform. cap. 6.*

6.

TRADI-
TUS DE
CAPENDI
RATIO, ET
DINOLVIT
TUS DIS-
SICULAT

Hic suppositio ut ad matrimonium permittendum, vel non, inter raptorem & raptae denegamus, sciendum est, tum apud iuris conditores, quam oratores coartatores fuisse, utrum puella rapta volentibus illa parentibus, raptore contubernium sequi possit, ut constat ex Quintiliano de declam. 361. 362. 370. 376. 380. 386. Seneca lib. 1. declam. 5. & lib. 7. declam. 8. Et raptam raptori nobere posse, vel ex legē Dei relata Exodi cap. 22. & in ceteris legem Moysaie, tit. 4. de adul. & ex can. 67. Apost. D. Hieronymus, relato in cap. 11. legimus 36. quest. 1. D. Ambrosius in apolog. David, cum sequens. Catenot. epist. 16. docuerunt Bassam in dist. can. 67. Sicut ad Sidon. lib. 5. epist. 19. ad fin. Ethire Actio non solum matrimonium inter eos permittitur, verum & iniungebatur lege ita expressa: *Raptor virginem, quam violavit, duciat. Quam laudant Syriani, & Marcellinus in Hieronymum, Plautus in Aulular.*

Si quid erga te imprudens peccavi, aut natam tuam,

Vi mihi ignoscas, eamque uxorem mihi des, ut leges iubent.

Terentius in Adelphis, act. 4. sc. 7.

D. O stultus, in de psalteria tua formicas

Agere: hoc peccatum in virginem est ciuim.

M. Scis,

D. Obs scis, & patere? M. Quidni patier?

D. Dic mihi,

Non clamas? Non infans? M. Non D. Malum quidem:

Puer natus est. M. Dy bene vortant. D. Virga nihil habet.

M. Audis D. Et ducenda indocata est? M. Si licet.

Ut autem duceret raptam, qui raptorem, exorato

neceste habebat patrem virginis, ut sibi responderet, daretque. Hinc apud eundem Plautum Lycopoides adolescens de nuptiis Phedriae Eochionem illos patrem appellat his verbis:

Si quid erga te imprudens peccavi, aut natam tuam,

Vi mihi ignoscas, eamque uxorem mihi des, ut leges iubent.

Esotandus quoque à raptore pater, ut nuptiis auctor sit: quare Mitio ex hoc more apud Terentium, ne Aleschium metu amittenda puella exeniet diuitius, non appellatus ab eo de nuptiis, vixit exoratorum se ostendit.

In qua civitate tandem te abieris vivere?

Virginem violasti, quam te inu non fuerat cognoscere,

At postquam id ameni, codo,

Namquid circumspicere, aut namquid tur?

Quid fieret? Si te ipsum mihi putula dicere,

Bona animo es: ducas uxorem bonae.

Verum si pretium accepisset, siue virgo, siue mater illius ab adulterio qui compescerit, legem non cogebant eam in uxorem docere, ut colligitur ex his Terentianae sollicitate verbis in Eumacho.

Peiore res loco non potest esse, quam in hoc, quae nunc sita est.

Primum indocata est: tum praeterea, quae secunda ei dei erat

Perit: pra virginem dant nuptiis non potest: hoc reliquum est,

Si inficilis sis, restis mecum est amicus, quem amifras,

Postrema quando ego conscia missam à me culpam hanc prociui esse, nec

Primum, neque rem videri interesse illam, aut me indignam exspectare Gra.

Et lib. 60. Basilicam, tit. 37. ibi: *Si quis cum virgine consentiente rem habuerit in suis paroculis, re contempta nuptiis iure contrahatur, modo raptoris ac parentum consensus accedat.* Byzantinorum quoque statuta referat Achilles Statius lib. 2. de Cleophor & Lincip. amoribus; quod nullam aliam raptori poenam infligebat praeter virginis raptae in uxorem ducendi necessitatem: sed iure civilis notio omnino matrimonium inter raptorem, & raptam prohibitum fuit, ut probat suprà in dubitanti exilio. Iure autem Pontificio nullā lege Ecclesiastica generali, aut vniuersali prohibitum fuit matrimonium inter raptorem, & raptam, nisi consensus voluntarius defuisset, propterea quod consensus sequens iurisdictionem omtem, & damnum videatur reparare, cap. 11. 36. quest. 2. & eorum qui iniuriam acceperunt adhibito eoconsensu lenitur dolor, & quā dissimulatione aboleri iniuria, l. non solum 11. §. 1. de iniuriis: Sidorius Apollin. lib. 5. apud 19. ibi: *Nam meum hoc fuit, seu compositum, seu satisfactum, vel non mediocriter emendandum erat, qui tui votis, ac amicis hoc acquiesce, si laus libertas maritum, ne cōspicias poena raptorem.* Et ita nec raptae quidem omnes habere posse, quae nupta est, alii Quintilianus declam. 280. & D. Augustin. de bono coniugali, nuptias ait posse fieri et male coconiundis honesto placito consequente. Unde recte in praesenti docetur, inter raptorem & raptam legitimum accedente consensu matrimonium licitū contrahi, et si aliquibus legibus specialium provinciarum tale matrimonium damnetur, ut in Synodo Regiaticis. ut volgo citatur, eum sic Tinenens in vbe regis Ticino celebrata sub Leone IV. can. 10. ibi: *Qua verā vel viduae, vel viduae sponsa*

housa non fuerunt, & absque ipsarum, & parentum voluntate raptorum, nihilominus vel parentibus, vel propinquis resistunt, & alii, si voluerint, nubant nam ipsarum, à quibus rapta sunt, legitime demum uxores nolascent esse possunt. Concil. Meldense can. 67. Qui sancti immortales, virgines, vel viduas rapiant, & progressu etiam crimini in coniugium sumunt, publica penitentia iuxta modum, quem praedixit Episcopus, subigantur: ipsa vero loci congruis penitentia retrudantur, & ad habitum religionis redire cogantur: uterque autem sine ulla spe contraria copulationis perempto monetur. Quibus Patribus placuit constitutio Iustitiani relata in l. ult. Cod. de rapt. virg. iuxta quam iuris civilis, & euuonici distinctionem, necnon canonum generalium, & provincialium differentiam accipiendi sunt textus suprà pro dubitandi ratione adducti. Nouissimè in Concilio Trid. dist. sess. 24. cap. 6. decernitur, non consistere matrimonium inter raptorem,

& captam nisi ea ponatur in loco tuto extra potestatem raptoris. Quod decretum non procedit in foemina rapiente virum quia lex Synodalia solùm loquitur de raptore, & capta. Ita docent Sanchez lib. 7. de matrim. dispus. 12. num. 25. Farin. in pract. quest. 145. num. 45. Bonac. quest. 4. de matrim. punct. 18. et si contrarium teneat Hentiques lib. 12. summa, cap. 14. num. 4. Guierrez de matrim. cap. 88. Similiter si quis rapiat foeminam volentem & consentientem raptui, et si postea renuat, Lessius lib. 4. de inst. cap. 3. dub. 9. num. 70. Martinus Perez de matrim. dispus. 38. sect. 4. et si contrarium teneant Sà verbo Matrimonium, num. 9. Toletus lib. 7. summa, cap. 18. Cantibus disquis. 28. art. 14. dub. 2. Similiter decretum illud locum non habet, si quis rapiat sponsam suam de futuro. Sanchez suprà, num. 5. alia plura de hoc crimine enumerant Steller, & Ansfeldus ubi suprà.



TITVLVS XVIII.

De furtis.

CAPVT I.

In Exodo.



Vi furatur b hominem, & vendiderit eum, conuictus noxæ morte moriatur.

NOTÆ.

a Exodo. I Ita etiam legitur in prima collectio-
ne, sub hoc tit. cap. 1. & verba huc repetuntur
in cap. 22. Exod. Ad huius inscriptionis illu-
strationem repetenda sunt quæ adduxi in cap. 6. su-
prà, de adulteriis.

b Hominem. I Liberum videlicet; nam seruus
in iure homo non dicitur, siquidem quadrupedi-
bus æquiparatur. L. Ediles 38. §. 1. & 2. ff. de adilit.
edit. l. illud 40. ff. de penit. heredit. Ascomidorus
lib. 1. Onirocriticon, cap. 39. Canis, aut equus, aut
asini, aut alius aliorum quadrupedum, aut volu-
crum capta pro suo habere sibi videri, si quidem qua-
drupedis fuerit, seruilem, & armentum significat.
Illustrat D. Ioannes Suarez ad leg. Aquil. lib. 1.
cap. 3.

COMMENTARIVM.

EX hoc textu sequens communiter venit dispu-
tanda assertio: Qui furatur hominem, & vendit,
vitio supplicio afficiendus est. Probant eam textus
in cap. 24. Deuter. ibi: Si deprensus fuerit homo
solicitus fratrem suum de filiis Israël, & ven-
ditus non acceperit pretium, interficietur, ut auferas malum
de medio tui. Concil. Valesio. anno 1322.
Execrabilem querendam Christianorum abusum, quo
mundi Christiani rapientes, vel fuerant, & eos Sur-
rensis vendunt, aut alià quomodocunque trahunt, ab-
horrentes, flammam, vel nallum Christianum predicta
enarrare audent. Ex lege, l. fregimus, l. final. ff. ad leg.

Flamini de leg. l. final. Cod. cod. titulo, §. antepenult.
Infus. de public. indic. Faciunt de inter Regio textus
in l. 1. & 2. tit. 14. lib. 4. l. 1. & 2. tit. 3. lib. 7. fori
l. 22. tit. 14. part. 7. l. 80. sibi. Illustrat Counan-
nus lib. 1. comment. cap. 9. num. 10. Corralus in l.
congruit, num. 9. ff. de officiis Praefid. Balduinus, Pi-
chardus & alij Inlustrarii in dist. §. antepenult. Pl-
theus in collat. legem Mosae. tit. 14. Petrus Greg.
lib. 4. part. tit. 10. cap. 8. & lib. 36. synag. cap. 32.
Mancinus de triplici iur. collat. Quatenus lib. 2. dist.
cap. 20. Solozanus tom. 2. de iure Indiarum lib. 2. cap. 7.
Salmut. ad Pancerol. lib. 1. tit. 3. D. Nicolaus de Ca-
stro in lonic. Cod. de gladiis num. 7. Antonius Mat-
thæus de crimin. ad lib. 48. Pandect. tit. 12.

Sed pro dubitandi ratione in præsentem asser-
tionem ita infurgo. Homo liber naturali ratione,
& iure à commercio exemptus est, l. m. exemptio-
ne 36. §. omnium 1. de contrahend. emptim. ut rectè
docuit Cuiac. in l. 4. ad tit. Abhorret enim à natu-
rali hominum dignitate. ut sit homo mere alterius
hominis, permisceturque aliis meribus, aut com-
paretur pecuniæ 12, cuius gratiæ pecunia inuenta
fuit, cæteraque fuerunt comparata, quæ huma-
nis vitiis possunt deferre, ut in simili casu
Consultri loquuntur in l. 68. de usufructu, l. in pecu-
dum 28. de usufructu, l. instigimus 44. de adilit. editis,
§. in pectus. Infus. de rer. diuis. Cetero enim ex
sententia Chrysippi Stoici Sapientis Principis
agnoscit hominem causi omnia nata fuisse, lib. 3.
de finibus: & Quindius ingeniosus lib. 1. Metamorph.
versu 76. cecinit, natum hominem fuisse ut pos-
set inter cætera dominari: & Diuinus Vates psal-
mo 8.

IMPRES-
SUS TRA-
DITA AB
MATRO.

Conci-
lio VBA-
DITVS, ET
PROBA-
TVR.

tandum et. *Cod. de ingen. manumiss. l. 1. C. ubi de er-
min. Leg. Flaviae* meminit Cicero *pro Roscio Ame-
rino*, ibi: *De servis alienis contra legem Flavianam re-
tentis plura dicenda sunt.* Esti in eadem lege alia de
servotum manumissione statuta essent, ut constat
ex l. 1. & per tot. D. & *Cod. ad leg. Flavianam*: de qua
lege accipiendus est Marcell. in l. si a milite 29 §. 1.
ff. de testam. milit. poena huius delicti apud Athe-
nieneses capitalis fuit, ut constat ex Xenophone:
probat Petrus *ad ius Africanum lib. 5. tit. 5.* Iste ci-
vili poena pecuniaria olim fuit, sed ea exolescente
pro delicti modo animadversum cepit, & plerun-
que quidem in metallum plagiarum dabatur, l. ult.
ff. ad leg. Flavianam. Ex constitutione vero Diocle-
tiani, necnon Constantini ultimo supplicio affi-
ciuntur, l. 7. & *ult. Cod. de edic.* in qua Constantini
constitutione pro tenetur, legendum esse conha-
re, ut habetur in *l. unic. Cod. Theod. ad leg. Flavianam*
de plag. docuerunt Duxenus *lib. 2. dist. cap. 20.*
Solopzanius de *Iure Indiar. lib. 2. cap. 7.* Petrus Gre-
gor. *lib. 36. synag. cap. 31.* Castro in *l. unic. Cod. de*
gladiis. mon. 7. Gothofr. in *dist. l. unic.* Iure nostro
regio specialis poenae statuta sunt in l. 1. & 2. tit. 14.
l. 1. tit. 15. lib. 4. *fori*, l. 22. tit. 14. *parit. 7.* nec solum
procedit, & committitur quando quis furripuit
hominem, & vendit, verum & quando donavit,
& permittit, vel in dorem dedit, l. 4. §. *ad leg.*
Flavianam: & in presenti textu verbo *Venerabili*, om-
nia contritus comprehendit, argumeto legis
statu libere, §. *Quimus* & *ff. de statu lib.* Et cum hac
actione concutitur interdictum *de libero hom. exhib.*
Nec alterum iudicium alterum consumit, quod
regulare est, *l. unic. C. quando civil. act.* Paulus *lib. 5.*
sent. §. aduersus 14. ubi Cuiusius.

His suppositis ratio praesentis assertionis proue-
nit ex gravitate huius delicti, nam res ipsa fur-
repta graue furtum constituit, veluti si res sacra,
aut religiosa interceptetur, l. 5. & 9. §. *ad leg. Jul. pec-
cul.* cum quis pecudes abegit, l. 1. & *ult. ff. de abi-
genda*, cum quis ex arboribus furatus est voraces, aut
quid aliud ad agticulturam pertinet, ex consti-
tutione Fidei. 11. de *statu & consuet.* §. *agricultores.*
Et generaliter quocumque res ablata magni fuit pre-
tiji, l. *facile* §. 6. in princip. §. *ad leg. Jul. pecul. l. 4. §. 1.*
ff. de incend. & ruina, l. si quis 3. §. *ult. ff. de excusat.*
inter. l. aut facta 16. §. *quantitas*, §. *de paria*, l. 1.

§. *sed* & qui per eam ff. de abigendis, quare & qui libe-
ros homines intercepti, aut suppressi, plagium
committit, & ob tanti fecleris atrocitatem vltimo
supplicio afficitur: sed si qui hominem liberum
subduxit, non laeri faciendi animo fecit, nec il-
lum alienavit, sed penes se detinuit, ex plagio non
tenetur, ut in exlibus relatis & decis in cap. 2. de
presumpt. cap. *delicti*, de ordine *agnit. cap. vlt. de in-
iuriis*, lib. 6.

Nec obstat dubitandi ratio supra expensa, nam
licet verum sit, rem alienam esse oportere, ut fur-
tum committatur, *dist. l. 1. & rem alienam pro-
pria esse*, ut furripitur, *l. reile 25 ff. de V. S.* ta-
men cum de furto agimus, rem alienam longiori
modo accipimus, & rem, quae in commercio non
est, ut est homo liber; non enim tam significans
rem subreptam esse alienam, quam subrepticiam
non esse propriam, ut ait Osualdus *lib. 5. comment.*
cap. 29. littera S. Vel ut voluit Donel. *lib. 1. c. 5. com-
ment.* cap. 30. in princip. alienam rem dicimus, cu-
ius modò potestas aliena est: unde si quis filium-
familias, filiumve subreptum, furti actione tene-
tur, *l. cum quis, §. cum filius*, l. *filius* 37. *l. inter* 38.
ff. de furtis, §. *interdum*, *l. infia*, de obligat. quae ex deli-
cto nascuntur. Nec obstat secunda difficultas, pro
cuius solutione aliqui asserunt, verba illa *mo-
riatur*, non de morte naturali, sed de morte ci-
uili, hoc est excommunicatione, esse accipiendas
nam in iste nostro canonico per mortem excom-
municationem accipimus, cap. *venerabile*, qui *fi-
ly sine legumini*: ubi Innocentius refert legem an-
tiquam quodam corporalem inferrent, intelli-
git, motum iudicium ecclesiasticum de excommu-
nicationis sententia, & sic intelligunt DD. tex-
tus in cap. 10. de *usur. cap. 2. de minor. & obed.* secun-
dam Abbatem, & Ananiam ibi. Sed verius est in
praesenti legem ecclesiasticam non condi, sed tan-
tum transcribi verba legis antiquae: unde et re-
ferenda sunt ad iudices saeculares, non vero ad ec-
clesiasticos, ut contingebat in lege antiqua. Com-
pilata autem fuerunt haec verba in iste Canonico,
ut significant iudices ecclesiastici, quibus acriter
ponere debent eos, qui plagium admittunt, sed
poenis ecclesiasticis, ita ut ad effusionem sanguinis
non perueniant, ut notat in cap. *semetiam*, *ut*
clerici vel monachi.

8.
Dispositi-
vix etiam
tamen
ratio

CAPVT II.

Ex Concilio^a Triburiensi.

Fures, & latrones, si in furando, & depradando occiduntur, visum est pro eis
non orandum: si comprehensi, aut vulnerati^a presbytero, vel diacono confessi
fuerint, communionem eis non negamus.

NOTAE.

1.

Triburiensi.] Ita etiam legitur in prima col-
lectione, sub hoc tit. 4. & ex ipso Conci-
lio citant textum hunc Bithardus *lib. 11. Decreti*,
cap. 59. Carnot. *part. 14. Decreti*, cap. 223. Gratia-
nus in *cap. fures* 23. *quest. 2.* & in ipso Concilio Tri-
but. anni 845. can. 31. ita legitur: Si inuenus fue-
rit quis furtum, aut rapinam exercere, & in ipso dia-
bolico actu mortem meritis incurere, nullus pro eo
presumens orare, aut elemosynam dare, & elemo-
syna pro eo data in memoriam nec clericorum, nec
pauperum veniat, sed execrabilis fudeat. B. An-

gustinus de talibus horribilem profert sententiam
dicens. Nemo te possit mortem tuam fideliter redi-
misse, quia tu eo redimere noluisti. Refert Ant. Augu-
stin. in *epist. lib. 27. tit. 3. cap. 6.* apud Carnotensem
autem *dist. cap. 123.* ita plenior constituto refertur:
Tranquillitatem sanctae Dei Ecclesiae inquietant,
& pacem fraternam infestari testantur fures, & laro-
nes, qui ambulantes inter nos omnia pelle obumbrant, sed
lupina mente rasedunt alienari, sana mente res Eccle-
siae addunt rapientes, & gregem Dominicum spo-
liando lacerantes. De quibus Saluator in Euangelio
commemorat: Qui non inuit pro officium in omni
omino, ille fure est, & laro. Aqua subuenit: Fur
non

non venis nisi ut furem, & mulierem, & perdas. Vbi
quoniam hereticus, qui fidem fornicum Ecclesia, de-
figit, tamen inquisitionem furum & latronum iuraba-
tam monstrat pacem Ecclesie. De talibus Apo-
stolus ad Philip. Videte canes, videte malos ope-
rarios. Canes vocantis, qui non habent veterum; ma-
los operarios, qui nulla faciunt, quia pietati conue-
niant. Et Dominus per Iulianum Prophetam: Ego Do-
minus diligens iudicium, & odio habens rapinam.
Vnde nos, qui Dominum diligunt diligentes, & qua
odio odio habentes, statimque, & indicamus, ut si
quis post hac Evangelia, & Apostolica, atque Pro-
phetica verba, & distinctionem pacatissima Synodi
innocentii fuerit furum, aut rapinam exercere, & in
ipso diabolico alio mactem meretur incutere, nullum
pro eo praesumit orare, aut elemosinam dare; &
elemosina pro eo data, in memoriam clericorum,
nec pauperum veniat, sed execrabili fudeat. B.
Augustinus de talibus horribilem praefert sententiam
dicens: Nemo te post mortem tuam fideliter redimit,
quia tu te redimere noluisse. Si autem ille fur, vel la-
tro vulnere elabatur, & expellatur mortis dispo-
natus putatur, atque reconciliari se iussit sacra-
mentis habuit corpus, & voluit pia mente depre-
catur, Deoque & sacerdoti vultu emendationem,
& aliam confectur, communionis gratiam non nega-
mus ministrandam.

2.

b. *Fures & latrones.* Verba haec ut diversimodum
ponuntur, alias superfluo iterantur, si idem,
Codice codicil. Num dictio, & inter diversa po-
ni consuevit, iuxta rubricam, & Glossam ibi,
fide iur. & facti igno. quo modo etiam accipi debet
textus in cap. 2. de homicid. ibi: Interfecisti furem,
& latronem. Sed quod sit differentia inter furem,
& latronem, & latrocinium DD. hic, quibus com-
munitur placuit, furem dici, qui nocte; latro-
nem, qui die futrum committit. Consonant Soc-
cinnus in dict. cap. 2. de homicid. Bartolus in meth.
sed non, Cod. de furis fugis. Sed verior ratio est,
quod fur dicatur ille, qui domum aggreditur cum
armis, & sine eis, ut docent Abbas & Ananias
hic; suadeturque ex dicta authentica sed non iure,
vbi notat Castrensis num. 10. latro vero, qui
aggreditur cum armis in domibus degentes, aut
viatores. Farinse in praxi, quod t. 6. qui recte in-
de docent, quod latro per vim furatur; fur sine
vi: vnde in illis verbis nostri textus, comprehen-
sus, aut vulneratus, primum ad fures, secundum
ad latrones referri debet.

c. *Psion est.* Formulam hanc Concilij expo-
sit in apparatu ad haec commentaria.

3.

d. *Presbytero, vel Diacono.* Sed potestas inun-
gredi poenitentiam, & audiendi confessiones tan-
tum competit Sacerdotibus, & eorum 51. de poenit.
dist. 2. cap. omnia, de poenit. & remiss. Trident. sess. 14.
de poenit. c. 10. non vero Diacono, qui potestatem
clauis Ecclesie non habet, cap. bene quidem, vbi
Glossa verbo Propter, 95. dist. Ergo non poterat
in presenti casu fur, aut latro confiteri peccata Dia-
cono. Cui difficultati ut aliqui faciant, asse-
rent verbum illud Diacono, non esse authenticum,
siquidem non reperitur apud Gratianum in dict.
cap. fures: immo nec in ipso Concilio, nec apud
Carnot. & ideo vocem illam delendam esse puta-
rit Ant. Augustin. in notis ad c. collecti. Decret. in pre-
senti. Sed omnia hac solutio, & alia traditis
Glossa & Abbate in presenti, Sotus in 4. dist. 84. q. 4.
art. 1. & Basilios de impedimentis, cap. 55. in poenit.
existimant praefatos textum accipiendum esse de
eo, qui erat in poenitentia solenni, cuius secon-

cillatio, absente Sacerdote ad Diaconum specta-
bat, & sic de solenni reconciliatione, non de sa-
cramentali absolutione, textum hunc esse acci-
piendum: quam solutionem sequitur etiam Barbo-
sa in cap. verbum, 51. de poenit. dist. 1. ut iuxta tam
accipiendo sit D. Cyprinus episc. 15. vbi Sanctus
reconciliationem argitis commisit Diacono: &
notui isem in can. 77. Concilio Illiber. Sed haec do-
ctrina licet vera sit, tamen praesenti canonis mini-
mè adaptatur: quare ea omnia verius etio. 10. illa
verba: Presbytero, vel Diacono confessi fuerim; signi-
ficare quod si fures, & latrones antequam decer-
dant, comprehensi, vel vulnerati dederint signa
poenitentiae coram Presbytero, vel Diacono, ad
communione admittantur, ita ut Presbyter, vel
Diacono, non tanquam absolutionem impendentes,
& confessionem audientes, sed tanquam tes-
tes signorum poenitentiae adfuerint: & tunc vo-
tum est illis non denegari communionem, quam
non accipio de Eucharistia, sed de communio-
ne ecclesiastica, iuxta quam & oritur pro mortuis,
& offertur sacrificium, iuxta illud: Cui communi-
catus vino, & communicum fuisse: ut in c. fa-
cris, vbi probatur, de sepulch. Quare interpretatio
suadet ex priori huius textus parte relata à Car-
notenfi supra, vbi proponunt PP. duo illa ho-
minum genera, videlicet eos, qui in discipline
comprehensi occiduntur, nullis poenitentiae signis
datis; & eos, qui signis exhibitis decedunt, & ora-
tione. Ergo eandem concedunt illis per illa
verba: Communionem eis non negamus. Sed antequam
hinc abeamus, exponendi sunt textus in
cap. 1. de poenit. dist. 6. in illis verbis: Tota est
poenitentia, ut si deest sacerdos, confiteatur laico. Et
in c. sanctum, de conscri. dist. 4. in quibus doceri vi-
detur, deficientem sacerdotem posse peccata confiteri
laico; nam textus illi non sunt accipiendo de con-
fessione sacramentali, sed de confessione peccatorum
facta coram laico, non ad assequendum sacra-
mentum, sed ad promerendum alia utilitates, vi-
delicet ad malotem veterandam, humilitatem, &
ruborem, ad contritionem perfectam eliciendam,
ut docetur Mattheo de iur. dist. 1. par. 2. cap. 14.
Cout. in cap. alius, 1. par. 5. 1. c. num. 9. de sent. ex-
com. in 6. Hæzphemus in vita S. Bened. prol. 18.
§. 10. Balboa in cap. omnia, num. 69. de poenit. & re-
miss. nisi textus illos accipiamus loata veterem
viam, secundum quem laici in extrema necessitate
ingruente videlicet morte, nec suppetente con-
fessario sacerdote, excipiebant confessionem, &
absolutionem impendebant: cuius usus memine-
runt Gerson in compend. Theolog. tit. de confessione
speciali, Naustrus in Enchir. cap. 11. num. 41. & in
cap. 1. de poenit. dist. 6. num. 76. Theoph. tom. 16. in
Hæretic. spirit. punct. 9. in princip. Ex qua doctrina
Nebilenus in vita S. Ludovici, cap. 45. fatetur Grol-
donem de Bellon, Regni Equitum Magist-
rum, in extremo vitæ discrimine ipse Iomillæ
fecisse hexomologem, & peccata sua confes-
sum, absolutionem eorum donatum esse. Idem fe-
cerunt in summi piceilla quidam patres, de quibus
Ganfrid. Gros. in vita S. Bernardi Tyren. cap. 16.
Nihilominus tempore praesente sententia sentit, timore
vehementis exagitant, peccata sua, quæ impier
gerant, turpius in audientia confitentium confitendo
propalare incepisse, sacerdotes sibi officium respuen-
tes, dum poenitentiam alternatim & dant, & accipiunt.
Idem de latrone Tridentino refert Casarius lib. 7.
cap. 59.

COMMENTARIUM.

4.
CONCLUSIO
TRADITVA,
ET PAGINA
TIA.

EX hoc canone sequens communiter deductio assertio: *Pro furibus, & latronibus in fragrantis criminis occisus non erat Ecclesia: si vero in morte peccata confiterentur, communione illis non denegat.* Probant eam regius in cap. pro obsecratis 13. q. 2. cap. placuit 23. q. 5. cap. si quis, de penit. dist. 4. cap. quicunque 23. q. 8. cap. 1. de reliquiis & venerat. Scilicet cap. 1. de tornam. cap. quia in omnibus, de visur. cap. super eo, de captor. Promerit. cap. 11. ibi: *Mortuo impio nulla erit ultra spes.* Illustrant Sotus in 4. dist. 45. q. 2. art. 2. Bellarminus de Purg. lib. 2. cap. 18. Azor 1. p. moral. tit. 10. cap. 23. q. 60. & lib. 9. cap. 31. q. 2. plures Barbosa de offic. parochi cap. 26. num. 49. Petrus Gregor. lib. 4. parit. tit. 10. cap. 8. Marga. tom. 2. dist. 95. q. 2. art. 2.

5.
INPROBA-
TRADITVA
ET PAGINA
TIA.

Sed hæc assertio difficilis valde redditur ex sequenti consideratione, nam fures, & latrones, etiam in ipso deprecandi actu decedant, possunt habere perfectam contritionem, ita ut remissionem illius peccati, & aliorum à Deo consequantur. Ergo interit dum contritum non apparet, pro eis orari debet, præcipue cum Ecclesia non iudicat de oculis, cap. si quis tunc 33. in fin. & sequent. de simonia, cap. erubescant. 32. dist. Auger hanc difficultatem ex eo, quia orare pro peccatoribus etiam damnatis prohibuit omnino non videtur; siquidem legimus D. Gregorium orasse pro imperatore Trajano, Gentili, & sine baptismo decedente, ut constet ex Trajanæ historia, quam receperunt, & probantur D. Thomas in tract. de veris, q. 6. art. 6. ad 4. Nauar. in tract. de oratione, cap. 12. F. Alphonsus Carrera in tract. de obsequiis Trajanæ, plures congesti à Barbosa in cap. cum Martha, de celebrat. Missar. Accedit usus Ecclesiarum, quæ orare videtur pro damnatis, dum in Missa Defunctorum ait: *Libera animas omnium fidelium defunctorum de penis inferni, de ore leonis, ne absorbeat eos tartarus, &c.* quia precandi formula pro damnatis orat Ecclesia; nam ipsi sunt quibus imminet illa mala profundæ læci, tartari, & leonis tartarei. Et quid est quod Ecclesia passim orat, *A porta inferi, æne Domine animas eorum?* Sanè iste portæ nihil aliud sunt, quam Infernæ, & diabolicæ potestates, de quibus dicitur cap. 16. Matthæi: *E porta inferum non prevalebunt adversus eam.* Ergo non rectè in præsentî docetur, pro furibus, & latronibus decedentibus in ipsa deprecatione orandum non esse.

6.
TRADITVA
RATIO
PENDINGI.

Quà dubitandi ratione non obstante vera est præsentis assertio, cuius ratio provenit ex eo, nam pro eis, quos in peccato mortali decedisse constat, non orat Ecclesia, nec permittit pro eis preces effundi, cap. placuit 23. q. 5. cap. pro obsecratis 13. q. 2. cap. Cypriani 22. q. 3. cap. pro delictis, 95. de penit. dist. 2. Sed fures, & latrones in ipso actu deprecandi oculis in peccato decedente notum est. Ergo rectè in præsentî docetur, pro eis tanquam in statu damnationis decedentibus orandum non esse, præcipue cum dicit Paulus 2. ad Corinthios, *fures non possidebunt regnum Dei.* Consequens etiam est, ut pro eis elemosynæ, aut oblationes non recipiantur, nec nomina eorum ad altare possint offerri, seu recitari, iuxta tradita in canone 19. Concilii Illiber. Sed si tales fures, & latrones in ipso ultimo vitæ splicitu signa contritionis dederint, quæ non D.D. Genc. in Decretal. Tom. V.

præsumuntur ex quo manifestè constat de peccato præcedenti, & ideo oportet, quod per aliqua signa exteriora de ipsa contritione constet; tunc non denegat Ecclesia eis communionem, nec suffragia, aut ecclesiasticam sepulchram, cap. 2. nobis 26. de sint. excom. cap. si quis 2. & 4. de penit. dist. 4. quia Ecclesia nulli etiam in extrema positio claudere gremium, cap. super eo, de heretic. in 6. Unde rectè in præsentî assertum, furibus, aut latronibus signa penitentiae exhibentibus, etiam Presbytero, aut Diacono penitentiam non esse denegandam, cum redierint ad Ecclesiam per penitentiam.

Nec obstat dubitandi ratio supra adducta; nam in præsentî casu Ecclesia iudicium non profert contra furem de oculis, sed de apertis, & quæ ad sensum externum patent, veluti de furis, & prædationibus; quin immò de contritione furi iudicaret; tunc de oculis sententiam diceret, cum furis peccatum videat, contritionem non videat. Nec obstat augmentum ipsius difficultatis, nam omittit questione, an prædicta Trajanæ historia vera sit, quam post Batonium, & alios historicos disputant relati à Barbosa in d. cap. cum Martha, sciendum est, pro damnatis orandum non esse, cum vivorum preces, & suffragia nihil profus emolumentum, solari, aut exstingui damnatis asserere possent, ut pluribus sanctæ paginæ auctoritatibus, & Sanctorum Patrum testimoniis probat Alphonsus à Mendoza q. 5. scholasticæ, per tot. tamen quoties iure speciali contrarium à Deo conceditur, orare pro eis potest; nam licet generalis illa lex nullam dispensationem admittat, ut docet Suarez p. 3. in 3. part. dispn. 44. sect. 5. nihilominus potest Deus gratiam particularem, quibus sibi placeat, facere; & ideo frequenter aliquibus concessit, ut liceret pro eis moriis, & damnatis orare, ut ad vitam hanc miraculose reverterentur, & salvarentur, ut ex mente sanctorum Augustini, Thomæ, & aliorum notavit Nauar. de orat. p. 12. num. 44. & defendunt Bellarminus lib. 2. de Purgat. cap. 8. Castro aduersus hereses, verbo Infernum, num. 2. Nec obstat quod de usu Ecclesiarum exprobandum; nam Ecclesia in his precationibus non orat nisi pro in purgatorio existentibus, qui Infernum dicitur, & tartarus non improprie appellatur, ut expleant Hentiquez in summa, lib. 9. cap. 16. §. 2. Sotus in 4. dist. 45. q. 2. art. 2. Azor 1. p. in 3. dist. cap. 12. q. 8. Fagundes in Eccles. præp. lib. 3. cap. 8. num. 6. Bellarm. dist. lib. 2. de Purgat. cap. 1. Mendoza d. q. 6. scholasticæ, cap. 3. quo modo etiam stygis, tartari, flagni, carceris insubolubili nomine, non infernum damnatorum, sed locum purgatorij designavit Pendens in hymno de lumine Paschali, dum refert in nocte resurrectionis Domini, quam totam olim fideles in orationibus petagebant, animas damnatorum vi suffragiorum quiescere à tormentis, ibi:

Sunt & spiritibus sape nocentibus
Pentum celebres sub styge furiæ;
Ili nocte facer, quæ redit Deus
Sanguis ad superos ex Abierantibus,
Mareis supplicis tartara mûibus,
Exultatque sui carceris atro
Vimbarum populus liber ab ignibus.
Nec fœtens solis sulphure flamma.

Quem locum de existentibus in purgatorio accipit Mendoza dist. quest. 6. & similiter exponit sanctum Iohannem Damascenum, qui in sermone

7.
D-TRADITVA
TRADITVA
TAMPA AD
TIO.

sermone de mortuis adimmandis, refert quod eundem sanctus Pater Macharius effudit pro mortuis deprecaretur, & aliquando per viam incederet, ex-
put cuiusdam mortui, qui fuerat Gentilis, locum
tum et fuerat dicens: *Quando tu, & Machari, pro*
meritis. Offert procces, nos interim aliquid lenimenti
seruimus. Et D. Chrysost. homil. 3. in epist. ad Phil-
lipenses, dicit alit: tu, qui in diuitiis mortui sunt,
ne peccata sua diligerent, prodeste oratione viuorum.

8.

EXPOSITIO
CAP. 13.
P. 13. 13.
Q. 2.

Sed supra traditis obstat textus in cap. 13. 13. 13. ubi dum agit Augustinus de suffragiis, & orationibus pro defunctis factis, concludit: *Qui-*
bus necem profuit, ut si plena remissio, aut certe ut
tolerabilior fiat ipsa damnatio. Ex quibus verbis de-
duci videtur, etiam pro damnatis, sacrificium
Missæ offerri posse. Igitur etiam pro furibus, &
latronibus in ipsa depuratione decedentibus orari
licet. Pro cuius difficultatis solutione dicendum
est, Augustinum ibi non agere de damnatis in in-
ferno, sed potius de existentibus in purgatorio,
quibus sacrificia oblata prodesse affirmat, ut sit
plena remissio, vel tolerabilior ipsa damnatio,
hoc est poenitentia. Nec obstat si dicas, verba illa,
et tolerabilior fiat, ad valde malos referri debere,
de quibus promittit D. August. locutus fuerat.
Nam verius est referenda esse ad non valde malos,
quos constat esse in purgatorio detentos: nec
Augustinus in eis verbis probat sacrificia valde
malis prodesse, ut aliqui suo tempore exstima-
bant; sed potius docet, illis quibus sacrificia pro-
sunt, aut ad hoc prodesse, ut plena fiat remissio,
aut ut tolerabilior fiat damnatio: & cum valde
malis sacrificia non prosint, nec ad vitium, nec
ad alterum prodesse valent. Eadem interpretatione
accipiendus est textus in cap. cum Maribus, de ce-

lebrat. *Adissar.* in illis verbis, pro mediocriter ma-
lis. In quibus doceri videtur, sacrificia pro malis
offerri posse. Nam ea verba referenda sunt ad fide-
les in purgatorio existentes. Distinguitur autem
in eo textu mediocriter mali à mediocriter bonis,
qui nullum habent mortaliū, vel venialium
reatum, sed solum peccata temporalia: et verò
mediocriter mali sunt, qui non solum habent
reatum illum, sed etiam veniales culpas expur-
gandas, ut explicant Durandus de viuis eccles.
lib. 2. cap. 23. Bellarminus ubi supra, Azor 1. p.
instit. mor. lib. 9. cap. 31. & lib. 10. cap. 22. q. 6.

Etiam supra traditis obstat textus in
canone 15. Concilij Antel. 2. in illis verbis: *Oblato-*
nes defunctorum, qui in aliquo crimine fuerint
interempti, recipi debere censuimus: si tamen non ip-
si ibi mortem protulerint propriis manibus intulisse. Ex
quibus deducitur recipi posse oblationes etiam
pro illis defunctis, qui in ipso crimine fuerint
interempti. Igitur et pro furiis, & latronibus,
qui in furto, aut depredatione fuerint occisi,
orari valet. Pro cuius textus expositione dicen-
dum est, defunctos, de quibus in eo canone,
poenitentiam petisse, & accepisse, & ita oblatio-
nem pro eis admitti; alias si poenitentiam non
petissent, etiam in ipso delicto, vel pro eo pec-
catum luendo occiderentur, oblationes pro eis non
admitterentur: quo causa procedit textus in cap.
placuit 23. q. 1. ibi: *Similiter & eis placuit fieri,*
qui pro suis sceleribus puniuntur. Unde cognos-
centur, quomodo iniussit olim in Gallia negaren-
tur Poenitentia, & Euchariſtia vltimo supplicio
destinatis, ut referunt Spondanus post Gratianum
anno 1397. num. 2. Theoph. tom. 16. in Heterocl.
spirit. punct. 8.

9.

EXPOSITIO
CAP. 15.
CONCIL.
ANTALIAN.

CAPUT III.

Ex poenitentiali^a Theodori.

Si quis pro necessitate furatus fuerit cibaria, vel vestem, vel pecus per famem,
saut per nuditatem, poeniteat^b hebdomadas tres. Si reddiderit, non cogatur ie-
iunare.

NOTA.

1. **T**heodori. Ita etiam legitur in prima collo-
catione, sub hoc tit. cap. 5. & in poenitentiali
Romano tit. 4. cap. 4. Theodorus hic fuit Archi-
episcopus Cantuariensis, qui Poenitentialia, seu
peccantium iudicia compilauit, ut referunt Regi-
um in chron. anno Domini 676. his verbis: *Per id*
tempus Theodorus Archiepiscopus, & Hadrianus
Abbas de Britannia à Pipiliano Papa missi sunt in
Britanniam, plurimasque Ecclesias Anglorum
destruam Apostolica frange seruandare, & quibus Theo-
dorus Archiepiscopus peccantium iudicia, quatuor
scilicet annis pro vniuersaque peccata quia permittere de-
beat, mirabili, & discreta consideratione describit.
Sigisbertus in chronica, anno DC. LXVIII.
Theodorus Archiepiscopus, & Hadrianus Abbas à
Pipiliano Papa in Angliam diriguntur anno DC.
LXXIV. Theodorus in Anglia Synodo habita consi-
tulit multa Ecclesie vitia. Hic Theodorus scripsit po-
nitentialia librum, mirabili, & causa discretionis di-
stinguens modum singularum culparum. Anno DCXC.
Theodorus Archiepiscopus Anglorum obiit. Ioan.
Trithemius de Scriptor. Eccles. ibi: Theodorus

Septimus Archiepiscopus Cantuariensis à Pipiliano Papa
consecratus, natione Græcus, ex Tarsis Cilicia, mo-
nachus Ordinis nostri in urbe Romana, vir in diuinis
scripturis eruditissimus, & in secularibus literis non
suo tempore secundus, in Græco, & Latine sermone
peritissimus, Carmine quoque excellens, & prosa, &
non minus sanctitate, quam scientia clerus, habuit
Synodo in Anglia, multa ad Anglicanæ Ecclesie re-
formationem consilium. Scripsit autem inter cetera ingenij
sui monumenta egeratum opus de qualitate poenitentia
iniungenda, & de his, qui in multis criminibus deli-
quissent, & cuius operis titulus est, Poenitentialia Theodo-
ri: & epistolas ad diuersos. Adversus non sine opinione
sanctitatis sub Institutione minoris Imperatoris DCXC.
ind. 3. etatis 78 Episcopus ann. 22. Idem lib. 2. c. 18.
de vitis illustribus Ordinis sancti Bened. Theodo-
rus monachus Romanus, natione Græcus à Pipiliano
Papa Septimus Archiepiscopus Cantuariensis in An-
glia destinatus, vir in diuinis scripturis valde erudi-
tus, & in obseruantia Catholice traditionis studiosissi-
mus, habuit Synodo in Anglia multa ad utilitatem Ec-
clesie consilia, de cuius laude, sanctissimi quoque Labri-
bus Beda in 4. & 5. Ecclesiastice plures loci mentio-
nem.

mem. Scriptum autem librum de penitentia qualitate metabilis, quem Gratianus Decreti compilator saepe allegat. Moritur ante Domini DCXC. ind. 3. aetate sua 88. Pontif. 22. Hic Theodorus primus videtur apud Latinos de penitentia scriptisse, quem sequutus est Beda, eius fortasse discipulus. Sumpsit penitentiam Theodorus Graecus ex Basilio, & aliis Graecis Patribus: ita videtur eorum acerbitatem, ac severitatem sequi, quae res effecit, ut paulatim haec ratio puniendi delicta abulica sit. Sed inale in contraria lapsi sumus, et dum acerbitatem fugimus, faucamus morbis, vel foueamus potius haec crimina impunitate data.

b. *Hebdomadae.*] Et quot diebus in qualibet hebdomada debeat quia ieiunare, exposui in cap. accufaci, de censur.

COMMENTARIUM.

EX hoc textu sequens communiter deducitur assertio: *Committenti furtum ex necessitate leuata penitentia est iniungenda.* Probant eam textus in cap. 3. hoc tit. in 1. collect. ubi ex cap. 6. *Præuerti* ita legitur: *Non grandis est culpa cum quis furatus fuerit: furatur enim, ut efficiendum impleret animam.* Et cap. siue in 47. dist. cap. pascit, cap. non furia, 86. dist. cap. discipulus de consecr. dist. 5. Venerit. Romanum in 4. cap. 16. ibi: *Si fisci furtum necessitati causa, sui dico, ut non habere unde uenerit, & propter famam penitentiam, & tantum furtum ex necessitate extra Ecclesiam, nec propter consuetudinem fisci, reddere tulle, & sex seras in pane & aqua pariterat.* Si autem reddere non poterit, decem dies in pane & aqua pariterat. D. Thomas 2. 2. q. 66. art. 7. Illustrant uita congestos à Babola in praesenti, & à Cenedo ad Decretal. collect. 92. Faunae, de furtis q. 174. num. 68. Thauquel. de penit. semper, caus. 33. Petrus Gergor. lib. 4. partit. tit. 10. cap. 58 & 80. Mendoza lib. 2. Concil. lib. 1. cap. 15. Mancinus lib. 1. de triplu. iur. collect. 106. num. 3. Bobadilla tom. 1. polit. lib. 3. cap. 3. num. 23. Gutierrez lib. 1. canonic. cap. 23. num. 19. Aetona in cap. siue 47. & in cap. 1. 48. dist. Diana p. 11. tract. 1. resol. 32. Forcatulos in penit. cap. 13. & siue. Vvesembach. dist. 41. num. 4. Veleseus de prin. p. caus. p. 1. q. 27. & p. 2. q. 65. Castillo de alimentis cap. 6.

Sed pro dubitandi ratione in praesentem assertionem ita insurgo: Furtum probum est à naturalis, l. probum, ff. de P. S. iuri naturali contrarium, l. 2. §. final. ff. de furtis, §. furtum. In iur. de obligat. quae ex delictis. Iego diuina prohibitionem, Exodi, cap. 20. Leuit. cap. 18. D. Paulus ad Ephesios cap. 4. Sed quae iure naturali, aut diuino prohibita sunt, non possunt vili alia lege permitti, cap. si quidem 25. quæst. 1. cap. final. de consecr. l. ead. ff. de capis. minus, l. abdicatio, Cod. de patria potest. Ergo non recte in praesenti permittitur furtum propter necessitatem. Augetur difficultas ex eo, quoniam nullatenus innocentem est ei, qui obicitur pauperis iurpissimam vitam agit, leg. palam, §. non est, ff. de ritu nupt. & nulla ratione, nec etiam viue conferenda, sis est peccare, potiusque famem, mortem, ac mala omnia debet quae pati, quàm peccato consentire, cap. Letharium 31. quæst. 3. cap. sacris 5. de his quae vi, metatate, l. isti 8. §. penult. ff. de eo quod iuratus causa. Plura Seneca de commerciis 2. p. q. 7. §. 1. Faciunt Seneca epist. 77. ibi: *Omnia pro bono paranda sunt.* Et lib. 6. declam. 7. ibi: *Ad mi potius debuit frater, quoniam* f. D. D. Gonzal. in Decretal. Tom. V.

nari turpiter. Et lib. 2. de ira: *Abominandum remedium genus est, fomicari debere morbo.* Seneca Trageticus in Aedea, altu 3.

Remedia potius inueni nobis Deus

Periculis peiora.

E in Oedippo altu 3.

Vbi corpus est medicina, sanari pigri.

Fuitque Zenonis sententia, pro vita tuenda ab honesto non esse recedendum: casus meminit Iuuenal. satyr. 15.

— Melius nos

Zenonis praecepta mouent, nec enim omnia, quodcumque

Pro vita facienda putat.

Quintilianus declam. 8. ait: *Non interest, an suspensum remedium, quod sentire non debeat, & ubi tantumdem periculi speret, quantum differantia habet: melius exitum est, qui facit miseret innocentes.* Ergo nec pro subiectione necessitate licet furtum committere. Deinde difficultas est secunda para buius textus, ubi assertum restituenti rem ablata ob necessitatem non esse vllam penitentiam iniungendam: nam furi etiam post restitutionem rei ablatae penitentia imponitur, cap. final. hoc tit. cap. si quis domum, de iuriat. cap. siue dignum, §. ead. de homicid. & ab specie probatur ex d. cap. 16. parit. Rursum, Ergo non recte in praesenti docetur post restitutionem furtum eogendum esse ieiunare.

Sed hac dubitandi ratione non obstante, vera est praesens assertio, cuius ratio prouenit ex illo vulgari principio, necessitas facit licitum quod aliter erat illicitum, cap. quod non est, de R. l. lib. 6. cap. 2. de observ. iurim. cap. quanto, de consecr. cap. siue, de consecr. dist. 5. l. 2. C. de patriis, qui filios, l. 2. ff. de iur. Accedit quod necessitas extrema omnes res communes facit, dist. cap. discipulus: & ideo qui tali necessitate premittitur, potest illis iure suo citra crimen furti, lahemque peccati vti, quia is, qui recommoni vitur, potius facere videtur fure suo, quàm furtum animo, l. marie 52. ff. pro socio. Nec hanc communionem impedit possessoris contraria voluntas, seu prohibitio: nam eum ea inuallu sit, & iori naturali contraria, ideo non attenditur diuilio enim rerum, quae iure gentium facta fuit, §. 1. In iur. de iure natur. non derogat iuri naturali, quod disponit, ex rebus temporalibus subueniendum esse extreme hominum necessitati, ut sensite videtur Couart. in regula peccatum, 2. p. §. 2. num. 3. Tum quia per eam diuisionem non derogatur alia lex, quae dicit, ut quis non possit alteri homini facere, quod sibi fieri nolit, cap. cum omnes, de consil. l. 1. ff. quod quisque iur. docuerunt Sayrus in clari Regia, cap. 4. num. 18. Illius lib. 2. de iur. cap. 12. dub. 11. Bonacina in tract. de resit. q. 8. puncto 8. num. 4. Et ideo dominus rei non potest agere ferre, quod extrema egestate laborans rem propriam occupet: quod intelligendum est dummodo dominus ipse non sit in pari necessitate constitutus: tunc enim non licet illum re sua priuare, cum in pati periculo, & necessitate melior sit conditio possidentis. Accedit nam necessitas moderamen non diligit, ut Cassiodorus ait lib. 4. epist. 13. quia ut loquitur Horatius, omnia capit

— Aequa lege necessitas;

Sorsum iniungit, & iura.

Omne capax mouet vna mensura.

In iustis tamen necessitate nulla legum ratio habetur.

2.
CONCLUSIO
TRIGESIMA.

3.
INPRIMA-
TIA TRIGESIMA
DE
TIA ASSE-
TIO.

4.
TRIGESIMA
DECIDENDUM
TRIGESIMA.

betur. Plazo de legibus, ibi: *Imo habet suae necessitatis leges tam duras, ut nulla eis resistere possint, nec Deus easque violare.* Dialog. Lætic. lib. 1. de vit. Philosoph. cap. 5. dicitur ait Pitagoram, tantum esse necessitatem vim, ut nec Deus ipsi resistere possit. Ergo qui extrema necessitate laborans propter famem aut nuditatem rem alienam occupavit, factum non committit. Necessitatem hanc necessitatem necessitatem dixit Tertul. de coron. milit. obsecrissimam famem appellavit Imp. Valer. nomet. r. 1. in illis verbis: *Nihil est ad quod non desperationis saluti impellat. Nihil turpe, nihil vitiosum creditur essens. Sola cura est, ut quodcumque forte visatur. Facit Cassiod. lib. 9. epist. 13. Sub quali excusatione peccare creditur, cui necessitas non praebetur.* Seneca lib. 4. contra. 4. *Necessitas est lex temporis.* Chrylog. serm. 35. *In arduis languentibus est erubescere consilium dei doleri: in desperatis consilium dei sepe magistra necessitas, invenit ipsa sibi posuisse medicinam.* Alia de necessitate congesti Felleas, lib. 3. sect. fol. 221.

Vide necesse difficultas videtur praesens textus, dum in eo docetur, ob famem, aut nuditatem rem alienam occupanti imponendam esse poenitentiam ieiunij per tres hebdomadas; nam si coactus fame huc fecit, nullum delictum admisit: quare pro huiusmodi expositione varia adduxerunt Interpretes. Plurique existimant, praesentem textum esse accipiendum de necessitate extrema, per quam is qui sititit, non omnino liberatur à culpa, quoniam ex quadam hypererogatione tenetur tribus hebdomadis poenitere, eo quod illa occupatio imaginem futuram habeat, à qua per poenitentiam liber, & immunitus rediatur, vi docetur Couart. in regul. peccatorum, 2. p. cap. 1. num. 3. Alij docent, ideo in praesenti poenitentiam iniungi, quia qui egreditur laborans extrema, rem occupavit, ad pinguiorem fortunam rediens, eam non restituit, vi facere tenebatur, argumento capituli Odoardus de solut. h. Neseimius, ff. de negot. gestis. Sed utraque solutio dupliciter: tum quia cum res ita occupata tempore necessitatis extremae communis esset, cuiusque est, eam ut propriam ab inope occupari, ultra alicuius peccati reatum: & ita nulli debet affici poena, tam in foro externo, quam interno, ut docent Abbas hic, num. 6. Archid. num. 10. tum etiam, quia qui extrema necessitate coactus rem furatur, non tenetur illam restituere, etsi ad pinguiorem fortunam perveniret, vi docent Richardus in 4. sem. dist. 15. Angelus Sylvestris in summa, verbo *Fortis*, q. 5. Couart. ubi supra, Causillas continuationem q. 729. num. 15. Alij exponunt textum hunc Glossa t. hic, Hostiensis, & Cardin. in princip. Abbas num. 2. & 5. q. qui assensit in praesenti dimittat agi de necessitate gravi, seu modica; quia cum extrema non sit, minimè excusatur à peccato. Sylvestris ubi supra, q. 3. unde cum peccatum eo casu committatur, meritò imponitur poenitentia per tres hebdomadas: quo modo etiam accipitur textum in cap. fraternitatis 12. q. 2. Verum haec interpretatio, praeterquam quod dinoscitur esse, siquidem ex textu scilicet non constat, de qua necessitate in eo agitur, si de gravi, aut modica tantum accipitur, etiam post restitutionem poenitentia erat iniungenda. Quare hic, & alijs omnis verus dicendum credo cum Mendocia lib. 2. Concil. lib. cap. 15. in praesenti poenitentiam imponi non propter culpam, sed propter causam, ut de homicidio ob viam defensio-

nem admissa, probatur in cap. 2. de homicid. Veteres enim Ecclesiae Patres non tantum pro malis, verum & pro his omnibus, quae mali speciem prae se ferbant, poenitentiam iniungere consueverunt, ut poenae merito in officio, & equitate fideles continerent, dum videbant non solum pro culpa, verum & pro illis casibus, in quibus suspicio mali dabatur, poenitentiam imponi. Unde cum in praesenti casu, est ob necessitatem res auferretur ab inope, suspicari possit furum committi, ideo Patres poenitentiam, etsi leviem, iniungebant. Sed hunc solutorem obstat videtur, quod in eodem textu asseritur, post restitutionem rei ablatae non cogi tunc, qui eam furripuit, ieiunare: ergo quia propter furti suspicionem ieiunandi obligatio iniuncta non facit. Nam dicendum est, potius in le deduci, poenitentiam iniunctam fuisse, non propter culpam, sed propter culpae suspicionem; nam cum & ea cesset post restitutionem, non cogitur qui rem alienam tempore necessitatis abstulit, post restitutionem ieiunare.

Nec obstat dubitandi ratio super expensa; nam licet furum, quatenus furum est, sit probum à natura; tempore tamen extremae necessitatis propter furum non committitur, quia cum veget extrema necessitas, res illae, quae alienae videbantur, communes efficiuntur quoad eos, qui extremae necessitatem patiuntur. Unde talis ablatio non videtur contraria iuri naturali, cum potius innaturum permissione ipsius iuris naturalis. Nec obstat eiusdem difficultas augmentum deductum ex d. leg. palam, q. non est: cui omnis solutioe Glossa in praesenti, dicendum est, discrimen provenire ex diversitate malitiae utriusque delicti; nam peccata adulterij, perjurij, fornicationis, & similia, sunt simpliciter, & intrinsece mala, adeo ut eorum malitia non possit tolli consensu, aut voluntate humana, aut alia quolibet circumstantia; & ideo nec mutui consensu, nec ipsius facinorae voluntas sufficit ad tollendam adulterij, aut simplicis fornicationis malitiam: unde extrema necessitas, veluti vitae conservandae non potest reddere fornicationem licitam; nec propriam uxorem, quae vxor non est; at verò furum non est simpliciter, & intrinsece malum, sed tamen ex eo, quod proximo iniuriosum, & iniquum est; ideoque eius malitia, & proximi iniuria cessat ex nonnullis circumstantiis, veluti ex consensu Domini expressè praestito, vel praesumpto, aut alias debito, qualis contingit tempore extremae necessitatis. Unde haec circumstantia remouet furti malitiam, facitque, ut licitè quis in extrema necessitate possit rem ab alio possessam auferre. Quam circumstantiam rationem praesentem Papam in cap. quoniam, de summa, q. 50. Couart. d. 5. 1. num. 7. quae etiam ratio facit, ut licitè quis servat moderatim inculpate tutele, possit in sui defensionem alium occidere, non autem pro vita conservanda possit aliqua fornicationis specie uti; nam cum peccatum hoc sit intrinsece, & simpliciter malum, nulla circumstantia etiam vitae conservandae potest tollere eius malitiam: at verò homicidium est malum, quatenus est iniuriosum proximo; unde necessitas vitae conservandae potest illud licitum reddere.

Sed super traditis obstat textus in cap. sine 33. q. 1. in illis verbis: *Sicut sanus est mori sanus, quem idolatriam rescit.* Ex quibus expressè deducitur, nec etiam ob extremam famis necessitatem licere idolatriam, id est caribus idolo immo-

6.

DISOLVITUR
TUM QUIT
TANDI RA
TIO.

7.

EXPOSITUM
CAP. SEC
SACRVS, 11.

5.
EXPOSITUM
PR. 11. 11.
11. 11.

lati vefei: igitur nec etiam aliena rapere propter extremam necessitatem licet. Pro cuius difficultatis solutione dicendum est, verum esse, non licere idolothytis vefei, cap. si quis carnem 13. 30. diff. docent Petrus Gregor. lib. 9. synag. cap. 1. Dorleaus ad Tacitum lib. 2. fol. 191. Mantinus de trip. iur. collat. cap. 95. ne ita sacrificiis Gentilium Christianos assentire videatur: tamen vigente famis necessitate licet illis vefei, quia cum preceptum vitæ confuetudo sit iuris naturalis, prohibitio autem illa tantum fit iuris positivi, ideo quando duo precepta simul concurrunt, quorum

unum est iuris naturalis, aliud vero iuris positivi, iuri naturali, quod prævalet, est standum, ut tradunt in specie Molina de infamia trall. 5. diff. par. 62. Aegid. Cominch trall. de fide, diff. 15. numer. 54. Valquez in 1. 2. disputat. 162. cap. 1. & 5. Si autem engatur quis idolothytis vefei in idolomam cultum, tunc procedit reatus in diff. cap. si quis saltem quia potius debet pati mortem, quam idololatricæ consentire, ut docuerunt Victoris in relict. de usu cibor. numer. 3. Acuña in capit. presbyter 33. numer. final. 50. diff.

CAPVT IV.

Hieronymus ^a super Parabolas.

Qui cum fure paritur, odit animam suam. Non fur solam, sed ille reus tenetur, qui furti concius, querente possessore non indicat.

NOTÆ.

1. ^a **D** Hieronymus. Ita etiam legitur in prima collectione, sub hoc tit. cap. 6. plura versunt capitulis 29. Prohibitionibus posteriora verba D. Hieronymi, seu alterius Interpretis ea exponunt. In d. cap. 29. ita legitur: Qui cum fure paritur, odit animam suam, aliam rem suam, & non indicat. Quæ exponit Salazar tom. 2. in Prouerb. cap. 29. vers. 24. Illa res dicitur furti solam, &c. sunt D. Hieronymi, ut leguatur in ipsa Glossa ordinaria.

COMMENTARIUM.

2. **E**X hoc textu sequens deducitur assertio: Non saltem fur est, qui rem furatur, verum & qui Dominum requirunt rem furtivam non indicat. Quæ assertio probari potest ex d. cap. dilectum, de excessib. Prælat. l. 1. & 2. ff. de receptariis, l. 2. C. eod. tit. l. congruis 13. ff. de offi. Prælat. l. sed si quis, 5. si duo, l. saltem, 5. qui aliam l. qui vix 48. 5. qui cum fure, ff. de furtis, l. incivile 2. l. civile 15. l. si mancipium 13. C. eod. l. idem, 5. ff. tibi, ff. de condit. ob imp. l. solus, ff. de prescript. verb. l. ex quibus, 5. Dominus, ff. de iur. fisci, l. si Baeslerem, C. de fideiuss. l. rationem, C. ad leg. Cornet. de falsis, l. penult. C. ad leg. Jul. de vi public. l. præsenti, C. de his qui ad Ecclesiam, l. 1. ff. ad leg. Jul. de vi public. Ex D. Gregorio in cap. 2. l. infam, qui affirmat propterea talem populum propter vnius Aeliam furum, qui contra preceptum Domini periculosum quidam supplicetilla ex anathemate verbi serlio susceperat, seuerè puniunt, quia discredabant manifestatio criminis: & ideo populus in peccati consortio esse videbatur, quando erimen suppressum erat, ex legibus Ripuar. tit. 4. l. 1. Quid si in domo furis, & ei fratellum, cuius est domus, conuiderit, fur habeat. Illustrant ultra repentes in Barbosa telatos in presenti, Petrus Gregor. lib. 1. partit. tit. 10. cap. 7. Coarct. in regul. peccatum 2. part. 5. 3. num. 4. Oualdus lib. 14. Daniel caput 25. Iuvenal. l. Cuias. lib. 11. obfer. cap. 48. Gattieret lib. 1. canonic. caput. 11. Flores de Mens lib. 1. var. cap. 18. Fufin. in praxi, 9. 125. numer. 306. Molina de infamia tom. 4. trall. 3. diff. 4. num. 2. Suetet de censur. diff. par. 17. feil. 3. num. 4. Mancinus sacri iuris comment. cap. 11. Saytus in clau. Regie lib. 9. cap. 14. D. D. Gomcal. in Decretal. Tom. V.

Gibalinus de censur. diff. 1. 2. quest. 6. consell. 4. Sed hæc assertio diffingit redditur sequenti ioris consideratione: nam vel in presenti fur iudicatur, qui furtum non indicat, vel qui rem furtivam oia exhibet: si tamen casu, qui elat furtum, aut rem furtivam, ut fur tenetur iterum malè iuri præsentiafferunt, tam participem furti iudicatur. Prior pars minoris propositionis probatur ex eo, nam nemo tenetur, immò nec potest infamæ proximum, qui adhuc latet, nisi in crimine hæretis, ut latè probat Gibalinus de censur. diff. diff. 1. 2. 6. consell. 4. per totum. Igitur non tenetur quis Domino inhiere furtum occultum. Secunda pars propositionis probatur ea eo, nam si tenetur ut furti princeps, proptèr tenetur ut fur non manifestus: sed tenetur pœna furis manifesti ex l. 11. Tabulæ. ita concepta: Si furtum loca, licetque conceptum exiit, atque vi manifestum vindicatur. Facit Aul. Gel. lib. 11. notitium, cap. vltim. l. 1. Decembris in 12. Tabulæ ea furis, quæ per locum, licetque concepta essent, proinde ac si manifesta essent, vindicantur. Igitur non rectè in presenti dicitur, cum qui elatit rem furtivam, nec domino requirunt, & repolcenti iudicatur, ut participem furti teneat.

Quæ dubitan in ratione ita soluta non obstant, vera est per se assertio, cuius ratio provenit ex eo, quia non eorum correctione non nascitur furti obligatio: & ideo furtum committi, qui rem alienam scienter receperat, l. 1. l. 1. C. de furtis, l. 1. ff. pro compere, l. 5. 5. quoniam ff. conuictus, nam non diffingit crimen elat tapere, quam tapam rem colare, l. 1. ff. de recepti. congruis 13. ff. de offi. Prælat. l. 1. C. de his, qui latrones: quia agentes & consentientes parti præiudicant, l. 1. qui apem 34. cum duob. sequent. ff. de furtis l. si seruus 27. 5. si quis, ff. ad leg. Aquil. l. hoc lege, 5. 1. ff. ad leg. Jul. penult. Interdum, l. si quis ex obligat. quæ ex diff. docent Oualdus lib. 15. comment. Daniel cap. 29. Iuvenal. D. Fecine. de furtis quest. 166. ex n. 36. Quare is, penes quem res furtiva inuenitur, eam restituit Domino potest tenetur, etiam si rem præiudicet, l. 2. l. 5. C. de furtis, l. 2. & 3. C. de R. ff. propter sospitionem participat furti: quæ ab ignotis res emere incivile est, l. 5. l. 1. Ab ignotis & transactis re emisse ducere non conuenit: C. de furtis. Carolus Pipinus lib. 5. caput 29. 17. Si malus compere causat om.

horem, vel aliam rem, nisi illam hominem cognoscas, qui ei vendideris, aut de quo pago es, vel ubi manes. Et l. 8. tit. 1. lib. 7. leg. *Prohibet*. notavit Salsarum ad *Sidonium* lib. 6. epistola 4. Hæc tamen doctrina procedit eo casu, quo is, qui à fure rem subreptam, vel eius partem accepit, sciens & dolo malo fecit, non si ignorans accepit, quia tunc participes criminis non est, nec actione furti tenebitur. Cætera *qq. crimin.* cap. 8. *Farinac. de furt. quasi*, 133. num. 99. nam ad hoc, ut furem recipias, vel rem furtivam celans teneatur ex furtio, necessarium omnino est, ut sciens id faciat, *dilect.* l. 1. c. 1. *C. de furtis*, l. 1. & 2. *ff. de recept.* l. 1. §. *quoniam*, *ff. de furtis corruptis*, l. 1. *sa. crilegy* 6. §. *vlt. ff. ad leg. fult. pecul.* Et ideo sciens, si receperit, tenebatur, quoniam non habet animam sibi luti aut, *l. si qui præstendum*, *ff. eodem*. Vnde rectè D. Heteronymus in præfenti ait participem furti credi eum, qui Domino querenti, & respicienti rem furtivam celat, & non restituit. Dubium tamen est, an ex eo, quod res furtiva apud aliquem reperitur, præsumatur ipsam subtraxisse, nisi doceat à quo haberet? Et dicendum est, simpliciter, & absolute præsumendum non esse contra eum, qui talem rem furtivam habet; sed ita dumtaxat, si propter qualitatem personæ, & frequentiam huiusmodi actuum censetur suspensus de furtis, & participatio cum fure; vel si minori perito, vel elandelline quis emerit: nam ex his indicia, & aliis similibus præsumitur scientia, doli, & malitia, *l. de dolo*, *C. de dolo*: notant Bartolus, & Baldus in l. *invenit*, *C. de furtis*: qui docent ex his, & aliis circumstantiis posse iudicem descendere ad roturam, argumento legis de minore, §. *invenit*, *ff. de quest.* Vnde si persona apud quam res furtiva invenitur, sit gravis, & honesta, tunc nec contra eum præsumitur, nec debet torqueri, *l. non tenet*, §. *à Barbaris*, *ff. de re milit.* Nec constatarum probas textus in l. *invenit*, *C. ad leg. Corn. de fals.* ubi docetur, quod qui vitium falso instrumenti, præsumitur indubitanter illud falsificasse. Nam respondet, illum textum procedere eo casu dumtaxat, in quo loquitur, nempe quando quis falso instrumenti vitium: nam tunc præsumitur illud falsificasse, nisi exprimat personam, quæ fecit; non verò quando instrumentum falsum reperitur penes eum. Docuit Angelus ibi.

Nec obstat dubitandi ratio supra expensa, pro cuius prioris partis solutione queritur UD. an iudex possit imperare manifestationem, non modò furti, verum & auctoris ipsius & Gutierrez lib. 1. *canon.* cap. 11. num. 11. Neuzimius lib. 1. *filium nepotum*, num. 30. docent iudicem ex officio posse habere, sibi prodit furem, non verò si ad instantiam partis procedat. Sed committere tepentes in præfenti docent, ex mandato iudicis furem indicandum esse ex præfenti textu, & ex cap. 1. *de offic. ordin.* cap. *dilectus*, & *extensib. Prelat.* Quod verum credo præcipit ubi necessitas adeo cognoscendi furem, quia etiam notum sit vbi eam habere res furtiva; recipere tamen nequit, nisi manifestato fure, ut docet Gibalinus *de censur. discussa*, a. 9. 6. *consil.* 4. Hoc tamen non procedit, quando iudicio fure timere possit eum vltimum supplicium; tunc enim melius est tacere, ut D. Augustinus affirmat in cap. *ne quis arbitretur*, cap. 14. a. 2. q. 2. ubi scribit, quod licet perfectus, & spiritualis homo pro alterius vita non possit memiri, potest tamen, & debet verum occultare,

quoniam illud est mentis, hoc tantum verum celare: sicut aliud est falsum dicere, aliud verum tacere. Et sic ex sententia D. Augustini merito teneatur furem prodere, quando periculum vitæ timetur. Generaliter ergo iudex potest subditos compellere ad indicandum furem, argumento legis 1. *ff. de offic. Prelat.* l. 1. cum duob. sequent. *ff. de servis fugitivis*. Vnde deducitur, iure optimo Episcopos literas monitionis decernere, non solum pro rebus subreptis, verum & pro iure indicando, iuxta Concilij Tridentini decretum *sess.* 1. §. *de reform.* cap. 3. *vers. Quapropter*: cuius dispositio non solum fulcitur decisione textus in cap. *ad nostram* 20. *de iuratin.* verum & ea ratione, nam ad officium iudicis spectat fures inquirere, & punire, *d. l. 3. cap. 1. de offic. ordin.* Et cum Episcopus ratione peccati iudex sit compens, etiam inter laicos, cap. *navit*, ubi probatur, *de iudicio*; ideo potest per dictas literas monitionis cogere laicos fures indicare iuxta dictum canonem Concilij Tridentini, quem late explicat Theophilus Raynaud. *tom.* 1. 4. in *trall. de litis, moris*. Nec obstat alia pars ipsius dubitandi canonis, quæ propriis ad præfentem textum spectat; siquidem in eo non agitur de obligatione indicandi furem, sed ex hibendi rem furtivam. Pro cuius solutione sciendum est, olim furtum conceptum dici, quando res furtiva per laicem, & licitum inquisita requireretur, iuxta formam, quam ex Gellio, & aliis illustrat Petrus Pithæus lib. 1. *adversus*, cap. 1. & est apud quem res inventa erat, tanquam furti manifestus testatur vsquedum Iustinianus eam furti speciem cum aliis abrogavit in §. *furtivum*, *Instit.* de obligat. quæ ex *dilect.* Et ita nunc iure penâ tantum furti non manifesti teneatur. Vnde præfens textus dum ait, eum qui rem furtivam querenti domino non indicet, furti teneri, intelligendus est de futo non manifesto iuxta novam Iustiniani constitutionem; non verò de futo manifesto, secundum antiquam legem decemviralem supra relatam.

Verum supra tradite attentioni obstat textus in l. *idem* 4. *ff. de consil.* ubi incipit cap. ubi inquit Consulatus, quod si Titio indicium dederit (indicium est præmium, quod iudici præstat, l. qui *vix* 48. §. 3. *ff. de furtis*.) ut fugitivum serum meum iudicet, vel furem reum meum, non potero quod dedi repetere, quia turpiter Titius non accipit. Igitur quia ad rem furtivam indicandam nemo teneretur, aliis non liceret pecuniam pro tali indicatione accipere: & etiam deducitur, licitum esse accipere pecuniam, si quis rem furtivam non indicet; si enim rem furtivam iudicare mihi liberum est, non indicare eadem sit ratio, & doctrina, l. 1. & 2. *ff. de his qui sunt sui vel alieni*, l. *est contra* 31. *ff. de vulgar.* l. qui *filium* 6. 4. *ff. de legat.* 1. l. *ubi*, *C. de indic.* *videtur*. Vnde cognitio vno de contrariis, cognoscitur & aliud, *d. l. est contra*, l. *permitt.* & ibi Baldus, *C. de solut.* & posito vno contrarium in eo, tenetur reliquum, *l. inter me* 15. *ff. de excep.* ubi *inducit*, l. *Pomponius* 40. §. *sed* & 11. *ff. de procurat.* l. *hæc verba* 12. 4. *ff. de V. S.* Hinc quod operatur propositum in proposito, idem operatur oppositum in opposito, l. *solus*, *de salummat.* l. *final.* *C. de fruct.* & *litium expost.* Ergo si licet præmium accipere pro indicando, vel non re furtiva, ex eo maxime est quia ipsi indicationis nulla necessitas à iure competit. Pro primæ difficultatis expositione dicendum est, in specie textus in *dilect.* l. 4. & in l. *solem*, *ff.*

6.

EAPONTIVR
TERTIO IN
L. 4. 37. 80.
CONSTITUTIO
TVAR.

5.
D. ANGLV-
TVR DVBR-
TANVS RE-
TIO.

de *prescripti. verb. pecuniam acceptam*, vel pro-
missam in premium non fuisse pro simplici ma-
nifestatione furti fugitivum, vel furti, quia pro ea
pretium recipi non poterat, ut post alios docet
Lellius de *inst. lib. 3, cap. 14, num. 66*, sed tantum
pro labore, & industria requirendi feroem fugi-
torem, aut aliam eam furtivam, eiusque furem.
Quæ interpretatio colligitur ex d. l. *salent* ubi i
Salent etiam merces hominis rei accipere. Vbi Con-
sultus appellat mercedem, quod datum est cau-
sæ indicandi furem: sed merces proprie dicitur, quod
dant respectu proprii laboris; unde constat, in
eo reatu non tam pro indicatione, quam pro ip-
so labore mercedem accepti. Iuxta quam solutio-
nem accipiendus est Vipianus in l. *falsus* 44:
§. *qui alienam*, ff. de *furtis*, ubi scribit, cum qui
rem alienam tenent, non posse petere inveni-
onis premium pro restitutione rei inveniæ: quod
non procedit, ut excludatur iusta compensatio
laboris, & expensarum factarum in inveni-
tionem eiusdem rei, nam pro labore habito in requiren-
do re iuste merces recipitur, ut ostendunt Alberi-
cus, & Iaso in d. l. 4. §. *si ibi*, ff. de *condict. ob-
tort.* Felinus in *cap. dilecti*, num. 3. de *accusat.*
sed eo casu procedit Consultus, quando nihil
invenitum est; tunc enim gratis alienam rem in-
venitam domino restitute tenetor inveniæ, *cap.*
si quid invenisti 14. §. 5. Molinæ de *inst. tract. 2.*
disput. 83, num. 6. Lellius d. *cap. 14, num. 66*. Go-
mæz lib. 3. *var. cap. 5, num. 2*. Azavedus in *leg. 6.*
tit. 15, lib. 4, recopil. Barbosa l. c. num. *final.* Nec
obstat secunda difficultas, quia in præsentī casu
reus diversa est, quæ diversum ius inducit; nam
indicare furem respicit publicam villianam, ut
sceleris puniatur; & proprietate permissum est,
pecuniam accipere, ut furti indicetur, nec turpiter
accepta dicitur: at non indicare furem, est
contra publicam villianam, & proprietatem pecu-
niam turpiter datam, & acceptam esse traditur in
d. l. *idem si*, *vers. Item si dederit*. Per hoc eodem
lucrum, quod quis percipit, infertur damnum
Reipublicæ, entis interest ne crimina contem-
nantur, sed maleficiores poenis subiciantur, d. *leg.*
congruis, ff. de *offic. Præsidis*: docuit Andreas
Clodius ad *titul. ff. de condict. obtort.* *cap. 3.*
num. 70.

Secundò suprà traditis obstat textus in l. qui

ver. 48. §. *qui furem*, ff. de *furtis*; in illis verbis:
Qui furem nunci, sine indicet eum, sine non indicet,
fur non est. Ex quibus expresse deducitur, cum
qui furem non indicat, furem non esse. Ergo
non rectè in præsentī assertimus, furti participem
esse eum, qui domino requiritur rem furtivam
illam non indicat. Pro eibus difficultatibus solutio-
ne Ananias l. c. num. 3. Barbosa num. 1. Covarr.
d. 5. §. num. 5. Suarez de *cenfur. disput. 17, sect. 3.*
num. 2. Menz d. q. 18. num. 8. assunt Hierony-
mum in præsentī agere de furti culpa, non quoad
obligationem restituendi, ita ut conscius furti
illud querenti domino non indicans lethaliter
peccet, quod probari videtur ex illis verbis: *O-
cidit animam suam*, quæ de Interiori reatu mor-
tali accipienda sunt: non verò adterere sanctum
Doctorem, cum actione furti tenet, iuxta dictam
legem qui *ver. §. qui furem*. Sed hæc interpretatio
facile refellitur ex verbis præsentis textus, ex
quibus constat, reum furti esse, qui Domino
non indicat rem furtivam: quare veritas dicen-
dum est in d. §. *qui furem*, non agere de indicante,
vel noo rem furtivam, quam etiam iure civili
quis exhibere cogebatur, aliàs furti concepti, vel
non exhibui actione tenebatur, sed de indicante
furem, vel non, quem erit celator furti teneatur,
tamen non indicans, vel furti non prouit, ut ex-
presse docetur in fine eiusdem §. *qui furem*, &
notavit Gothofr. in d. l. 4. §. *de condict. obtort.*

Ex suprà traditis incem accipit textus in l. *fer-
mus* 36. §. *de condict. indebit.* ubi refert Paulus, set
tunc cuiusdam magidem (id est vas, quo fassina
subigitur) insciente domino commodasse, &
eum cui commodauerat, pignori tradidisse, &
ait Consultus, quod si is, qui pignori accepit,
alienam esse sciebat, furti cum tenet, quia sciens
rem alienam pignori accepit; scius verò si ne-
scisset alienam rem esse, non furtus, qui non
habebat pecunie administrationem, distrahens
magidem nesciente domino, furtum commisit,
l. *interdum*, §. *cum autem*, ff. de *furtis*, l. *si liber*,
C. quod cum re, l. *qui à servo* 16. §. de *O. & A.*
docuit Covarr. lib. 15. *observ. cap. 18*. Unde qui
sciens magidem ipsam pignori accepit, furtum
commisit, quia quomodo non haberet animum
lucrandi, tamen rem furtivam scienter do-
nebat, nec domino iniquitatem indicabat.

EXPOSITIO
L. QUI VAS
DE §. QUI
FURTIVUS
EST.

8.

EXPOSITIO
L. FER-
MUS 36.
§. DE CON-
DICT. IN-
DEBIT.

CAPUT V.

Alexander III. ^a Cremonensi Episcopo.

EX literis tuis, si bene meminimus, auribus nostris innotuit, & dil. fil. I. ^b subdia-
coni nostri diligens relatio patefecit, quod B. lator præfentium ^c calicem quen-
dam in Ecclesia minus cautè dimissum inuenit: quem licet avaritiæ cupiditate ra-
puerit, & insipienter longo tempore deinuerit, postea tamen penitentia ductus
Presbytero in confessione excessum suum humiliter, & reuerenter aperuit, & Eccle-
siaz iuxta eundem Presbyteri consilium, proit dignum fuit, exinde satisfecit. Unde
quomiam propter hoc ipsum tuæ fraternitatis discretio dubitat ordinare, prudentiæ
tuæ per A. f. p. m. quæ si prædictus B. spontanea voluntate sui animi confessus fuerit
huiusmodi præsumptionis excessum, & exinde Ecclesiaz, cuius talis fuerit, satisfecit,
nec est super hoc notà, vel infamiam manifestà reserpsit, post peractam penitentiam,
aut congruam partem penitentiez, dummodo alias ipsum idoneum esse cognoscas,
ad factos ordines non dubites ^d promovere.

1. ^a *Cremonesi.*] Ita etiam legitur in prima collectione, *sub hoc tit. cap. final.* Cremona est urbs Italice in Liguria, non procul à Mantua, quæ etiam hodie nomen retinet; cuius civis cum contra Augustum Antonio adhærescent, Cæsar victor veteratis suis eorum agros assignavit; qui cum non sufficerent, adiecit etiam Mantuanorum agros, nullam aliam ob culpam, nisi quod Cremonensibus vicini essent. Hinc Virgil. *eclog. 9.* Mantua sua misera vicinia Cremona.

Habuit Ecclesiam Cathedralen tam à primis Ecclesiis seculis; siquidem Eustathius eius Presul subsepsit Conclui Romanis 3. & 6. Sub Symmacho.

b *Sobditani presbi.*] De officio subdiaconi Romanæ Ecclesiæ egi in cap. 1. de *testam.* cap. 1. de *translat.*

c *Calice.*] De Calice, & eius materia egi in cap. 1. de *pignoriis*, cap. final. de *celebrat. Missæ.*

2. ^d *Promovere.*] Absque vlla absolutione; unde deducitur, eum qui futatur rem sacram de loco facto, non esse excommunicatum ipso iure, cum ita præfati iubeat Alexander, forem eadeis promovere ad sacros ordines: si autem esset excommunicatus, non permitteret Pontifex absque absolutione eum promovere. Facit etiam, nam si excommunicatus esset ipso iure, indigeret absolutione, etiam post satisfactionem, ut probavi in c. t. de *iudiciis.* Verum tamen est, eum graviter peccare, & excommunicandum esse, cap. *consequi*, de *spre. temp.* vbi licet probavi. Nec contrarium probat textus in cap. *consequi* 22. de *sent. excom.* vbi Pontifex declarat fratrelegos, & ipso iure excommunicatos esse eos, qui quidam Ecclesias spoliaverunt. Nam respondetur, textum illum procedere quando quis rem Ecclesiæ rapuit per violentiam, vel Ecclesiæ fracturam, vi expressè cunctat ex illis verbis, *violenter confectam*; locus verò quando quis absque violentia surripuit rem Ecclesiæ, iure enim non est ipso iure excommunicatus, vi docuerunt Abbas, & Cardinalis in *presenti*, Caietanus in *summa verbo Excommunicatio* 21. Nauarrus in *manua*, cap. 27. num. 44. Molina de *infl. nom.* 3. *trall. 2. diffus.* 94. *num. 2.* Azor p. t. *mor. lib. 9. cap. 27. q. 13.* vbi ex prædicta distinctione exponit textus in cap. *quisquis*, cap. *omnes Ecclesiæ* 17. q. 4. cap. *Communis* 1. q. 3. Et hæc est vera sententia, licet alij contrarium teneant. Videndi sunt Suarez de *reusis*, *disp.* 22. *sect. 5.* Gualubius in *synopsi consuecr. littera 1. num. 6.* Inde etiam inferitur, quod si quis furando criminosis effectus fuit, præstata satisfactione post penitentiam non creditur criminofus quoad effectum primordialis ad ordines, non autem quoad peccatum ubi ligendum ex tali delicto, l. *qui ex morte*, ff. de *furt.* Quia licet per penitentiam liberetur quis à reatu quoad forum internum, non tamen à poenis impostis simili delicto quoad forum externum.

COMMENTARIUM.

3. ^e *Ex hoc tractu committere deducitur, furem* Eoecuriam post penitentiam, & satisfactionem posse ad sacros ordines promovere. Quam conclusionem generaliter in omnibus delictis occultis examinauit, & probavit in cap. ex *un-*

rum, de *temp. ordin.* sed præfens dectio de fure tamum agens diffidit reddidit ex eo quod non is qui furtum perpetravit, eo ipso iuris infamia notatur; nam quocunque genere furti damnatus infamis est. Paulus lib. 2. *sent. tit. 31. q. 14.* Infamia notatus, ab officiis, & dignitatibus ecclesiasticis remouetur, cap. *inter* 11. de *extor.* *Prælat.* cap. *quærela*, de *interd.* regula *Infamias*, de *R. l. lib. 6.* ex principio textus in l. 1. *de infamibus*, lib. 21. l. *infamia*, C. de *Decret. cod. lib. 1. c. de dignit.* lib. 12. Ergo qui furtum commisit etiam post penitentiam, & satisfactionem ad ordines sacros promoveri nequit. Pro cuius diffidit solutione sciendum est, infamem infamiam iuris irregularem esse, ita ut neque possit promoveri ad sacros ordines, nec in susceptis ministrare, cap. *qui in aliquo*, cap. *final.* q. 1. *diff. cap. Euphemius*, §. *linea* 2. q. 3. cap. *ipso Apostoli*, 2. q. 7. quod procedit etiam infamia statuta sit à iura civilis; nam qui secundum ius illud infamis est, etiam secundum sacros canones infamis iudicatur, cap. 1. 6. q. 1. ubi Pontifex generaliter ait: *Omnes eos infames esse dicimus, quos leges sacre infames appellent.* Infamis vero infamia facti, qualis est alie, cuius opinio ex facto, vel delicto apud probos, & graves viros onerata est, cap. *omnipotens*, de *accusat.* cap. *infames* 3. q. 7. *leg. 2. ff. de obsequiis*, l. *cogni*, ff. de *cur. & excom.* *cogni*, l. *ea que*, C. *ex quibus causis*, *hijum.* Irregularis censetur quantum ad suscipiendos sacros ordines, ut probatur ex hoc textu, ibi: *Nec est super hoc nota*, vel *infamia*; ubi notavit Ananiam *num. 10.* & probatur ex cap. *non detur*, de *testib.* Vbi nebulatores, qui pendente accusatione infamiam facti noverunt, repelluntur à susceptione ordinum: plura congruit Gibalinis de *irregul.* cap. 5. *per totum.* Inter infamiam autem iuris, & facti duplex differentia versatur. Prima quod in infamia tantum Summus Pontifex dispensare valet, argumento textus in cap. *cum in*, de *sent.* & *re iudic.* In infamia vero facti dispensare potest Episcopus, nimirum vi illa notata possit in susceptis ordinibus ministrare. Secunda differentia est, quod irregularitas ex infamia iuris proveniens non tollitur per penitentiam, cap. *Euphemius* 2. *quest.* 3. vbi dicitur, quod quicunque animas per penitentiam salutare possimus, infamiam abolere non possumus: illa verò que provenit ex infamia facti, tollitur per penitentiam, & per emendationem vite purgatur. Glossa in cap. *ille qui* 6. q. 1. docet Abbas in cap. *ex di. gentis*, de *summa*: ubi huius discriminis rationem reddit; nam tunc infamia facti tollitur per actum emendationis, id est emendationem vite, quia per quascunque causas res nascitur, per easdem dissolvitur, cap. *testimonium*, de *testib.* cap. 2. de *R. l.* Nec contrarium probat textus in cap. *si clerici*, §. *de adulteriis*, de *iudiciis*: ubi deciditur, post peccatum penitentiam adhuc desiderari dispensationem, ut infamiam facti tollatur. Quia omnis varis solutionibus dicendum est, textum illum procedere in infamia iuris, veluti præcedente indicio sententiæ, ut docuerunt ibi Molina *num. 6.* Abbas *num. 14.* Felinus *num. 16.* Decius *num. 18.* & colligitur ex generalitate eiusdem §. in quo versulo *Si vero*, in quo probatur clericum convictum, vel confessum deponendum esse ab Episcopo, æque ita quod Alexander III. subiungit in §. *de adulteriis*; intelligi debet post sententiam; unde sentos illius textus erit, quod clericus convictus de crimine, suspenden

suspendendus est, vel deponendus perpetuo, nisi Episcopus cum eo dispenseret, quod facere potest in adulteriis, & aliis minoribus criminibus. Nec hoc repugnat doctrinæ, quam nuper tradidimus, videlicet in irregularitate ex infamia iuris proveniente tantum Romanum Pontificem dispensare posse. Nam id intelligitur de immediata irregularitatis dispensatione, non verò de indirecta, quam potest facere Episcopus dispensando directè in delicto: quo facto accessorie tollitur infamia proveniens ex delicto tali, & per consequens irregularitas. Docuerunt Villadiego *de irregul. cap. 10.* Hentiquez *in summa lib. 1. cap. 3. num. 3.*

4. Videamus apparet vera ratio præsentis textus, quare in præsentī specie is, qui callem in Ecclesia minus cautè dimissum furripuit, possit ad sacros ordines promoveri: quæ in eo consistit, nam furtum hoc fuit occultum, & ita fur non

fuit infamia iuris notatus, & ipse penitentiam de crimine egit, ac pro ealice subrepto scrupulavit: quibus existentibus et constantibus, si alia idoneus est, cessat irregularitas, ut docuerunt in præsentī Anania num. 1. Abbas num. 5. Socius num. 5. Nec contrarium probant illa verba præsentis textus, *sponte confessus*, ex quibus deducitur, per confessionem ipsius furis furtum hoc notorium factum fuisse: propter furtum autem notorium iuris infamia incurritur, d. l. poteris: quæ per penitentiam tolli non potest, iuxta supra tradita. Nam respondendum est, confessionem, de qua in præsentī, non fuisse factam in iudicio, sed in foro penitentiarum: ideoque peccatum furtum notorium factum fuisse, & per consequens furis infamiam non irrogari, ut docuerunt hic Anselmanus num. 4. Abbas num. 3.



TITVLVS XIX.

De vsuris.

CAPVT PRIMVM.

Alexand. III. in Concilio^a Turonensi.

PLVRES clericorum, & quod merentes dicimus, eorum quoque, qui præsensæculum professione vocis, & habitu reliquerunt, à canonibus vsuras quasi manifestius damnatas exercentes, commodatâ pecuniâ indigentibus, possessiones eorum in pignus accipiunt, & provenientes fructus percipiunt ultra sortem. Idcirco generalis Concilij decrevit auctoritas, ut nullus amodò constitutus in Clero, vel hoc, vel aliud genus vsuræ exercere præsumat: & si aliquis alicuius possessionem datâ pecuniâ sub hac specie in pignus accepit, si sortem suam deductis expensis, de fructibus iam perceperit, absolute possessionem restituat debitori: si autem aliquid minus habet, eo recepto possessio liberè ad Dominum reuertatur. Quod si post huiusmodi constituta in clero quisquam extiterit, qui detestandis vsurarum lucris insistat, ecclesiasticis officij periculum^a patiatur, nisi forè beneficium Ecclesiæ fuerit, quod^a redimendum ei hoc modo de manu laici videatur.

NOTÆ.

1. **T**uronensi. Ita etiam legitur in prima collectione, sub hoc tit. cap. 5. & post Concil. Lateran. p. 16. cap. 2. addendumque est can. 2. iuxta Coriolanum in summa Concil. fol. 124. De hoc Concilio iam nonnulla notavi in c. maiorib. 8. de prob.

- b. Et habita.] Monachi videlicet.
c. Patiatur.] De pena clerici vsutarii agemus infra in cap. præterea.
d. Redimendum.] De hac altarinem redemptione egi in cap. quisquis, de elect. & commentarium huius textus dedi in cap. cum contra, de pignoribus.

2.

CAPVT II.

Idem^a Cantuar. Archiepiscopo, & eius suffraganeis.

QVONIAM non solum viris ecclesiasticis, sed etiam quibuscumque aliis periculosum est vsurarum lucris intendere, auctoritate tibi presentium duximus iniungendum, ut liceat tibi clericos tuos, qui de possessionibus, vel arboribus, quas tenere in pignus noscuntur, sortem suam, deductis expensis, inde iam receperunt, ad eadem pignora restituenda sine exactione, ecclesiasticâ districtione compellere.

NOTÆ.

NOTÆ.

^a *Antuanensi.*] Ita etiam legitur in prima collectione, *sub hoc tit. cap. 4. & post*

Concil. Latet. p. 16. cap. 3. De Cantuariensi Metropoli egi in cap. 2. de reſcript. & textum hunc expulſi in cap. cum contra, de pignor.

CAPVT III.

Ex Concilio * Lateran.

QVia in omnibus ſerè locis ita crimen vſurarum invaluit, vꝫ multis aliis negotiis prætermiſſis, quaſi licitè vſuras exerceant, & qualiter vtriuſque Teſtamenti pagina condemnentur, non attendant: Ideo conſtituimus, vt vſurarij b maniſeſti, nec ad c communionem admittantur altaris, nec chriſtianam, ſi in hoc peccato deceſſerint, accipiant d ſepulturam: ſed nec e oblationes eorum quiſpiam accipiat. Qui autem acceperit, aut chriſtianæ tradiderit ſepulturæ: & ea quæ accepit, reddere compellatur; & donec ad arbitrium ſui Epifcopi ſatisfaciat, ab officij ſui maneat executione ſuſpenſus.

NOTÆ.

^a *Lateranſi.*] Ita etiam legitur in prima collectione, *ſub hoc tit. cap. 2. & extat textus hic in ipſo Concilio generali Lateranenſi celebrato ſub Alexandro III. cap. 25. De quo Concilio nonnulla à ſibi in cap. nonnulli, de reſcript.*

^{1.} *b Maniſeſti.*] Maniſeſti vſurarij dicuntur primò, qui ita palam vſuras exercent, vt ipſa operis iniquitas eos vſurarios publicè demonſtret, & nullà tergiverſatione poſſit celari eos vſurariam autem exercere, iuxta textum in cap. euidentia, & ibi tradita, de accuſat. Secundò etiam dicuntur maniſeſti, qui in iudicio confeſſi ſunt crimen vſuræ: talis enim confeſſio in iure facta rem facit maniſeſtam, & notoriam, cap. coſtra, cap. final. vbi probat de cohabit. cleric. immò ob delicti deſtructionem, ſi vſuratio coram pluribus teſtibus fide dignis fateatur ſe vſurarium eſſe, præcipuè ſi expirat perſonas à quibus vſuras accepit, maniſeſtus vſurarius dicitur, vt pluribus congeſtis probat Caballos tom. 1. q. 11. & q. 537. num. 5. Dicuntur etiam vſurarij maniſeſti, qui ſententiâ iudicis ita declarati ſunt. Gloſſa verbo maniſeſtor, cap. 1. hoc tit. in 6. quia iudicis ſententia rem facit notoriam, cap. final. de cohabit. cleric. Vnde non dicitur maniſeſtus vſurarius ille, contra quem extat legitimum teſtium probatio aſſerentium, vſurarium eſſe, vt vltra repetentes in præſenti docent Couar. lib. 3. var. cap. 3. num. 4. Iul. Clatus §. vſurarij, Gbitalinus lib. 1. de vſurio, cap. 11. art. 1. Menochius de arbit. caſu 235. Villaguth, de vſur. q. 35. Gutierrez lib. 2. canonice. cap. 19. Molina de iuſti. 2. tom. diſput. 33 §. Leſſius de iuſt. lib. 2. cap. 20. diſput. 12. Caniſius de vſur. cap. 7. num. 2. Ex quibus illud notandum eſt, non eſſe neceſſarium, vt quis maniſeſtus vſurarius dicatur, quod extiterit maniſeſtus vſuras, vel clartus; ſed ſatis eſſe, quod palliatus, vel maniſeſtus, quaſcumque ſcilicet, vel cuiuſvis generis vſuras vno ex dictis modis exercuit.

^{2.} *c Communione.*] Hanc poenam Innocentius in præſenti num. 1. ita exponit: *Ab vſurarij non admittantur ad communionem Euchariſtica.* Quem ſequitur Couar. lib. 3. var. cap. 3. num. 5. quæ eſt vera interpretatio. Nec audiendi ſunt Abbas antiquus, & Panormit. in præſenti, num. 2. qui ea verba explicant, vt non admittantur in Eccle-

ſia, quandiu diuina officia celebrantur. Nam ſi de hac excommunicatione ſenſiſſent Patres Concilij, fruſtra adderent verba illa, *accipiant ſepulturam ſed nec oblationes*; cum iam in præſenti poena hæc comprehenderetur.

d Sepulturam.] Conſonans textus in cap. cum tu §. cap. cum in diſcreto, hoc tit. cap. quoniam, eod. tit. in 6. Clement. 1. rod. tit. 1. §. tit. 13. p. 1. & metri d hæc poena imponitur vſurariis maniſeſtis, quia decedentibus in peccato notorio denegatur eccleſiaſtica ſepultura, cap. final. §. q. 2. c. final. 88. diſt. cap. placuit 23. q. 5. cap. 1. de ſuſtineam, cap. 2. de raptor. cap. ſuper quodam, cap. cum ad monaſterium, de ſtatu monach. D. Ioan. Vela de delict. cap. final. num. 20. Ab hac autem poena, & reliquis excuſabitur vſurarius, quem poenituit, & propter notam omnibus pauperum reſtituit non valet; tunc enim præſtitiſſi latorum c auſione excuſatur §. d. cap. cum tu, hoc tit. d. cap. quoniam, ibi: *Pro ſuorum viribus ſacramentum.* Pluribus reſatis docet Villaguth d. q. 35. de vſur. cap. 6.

e Oblationes.] Conſonans D. Clement. lib. 4. caſus, cap. 5. nam cum oblationes in propoſitionem pro peccatis offerantur, vt conſtat in cap. 5. & 13. Deuter. cap. quia ſacerdotes, cap. Sanctorum 10. q. 1. ab vſurario maniſeſto, & à peccato non recedente, ſed in eo permanente non debent admitti, cap. oblationes, 96. diſt. Accedit quia per huiusmodi oblationes proſtitentur quædam communio inter viros, & deſectos, pro quibus offerbantur. Concil. Arelat. 2. can. 12. Concil. Vaſenſe 1. can. 2. Altiſſidor. can. 17. Aurel. 2. can. 15. Toler. 11. can. 12. Quare generaliter eorum, qui non communicant, oblationes reſciuntur, cap. 28. Concil. Liber. vbi nota: *ni: & eorum qui in peccata graviora lapſi ſunt, velari ſibi morrem conſciuerunt, d. can. 17. Concilij Altiſſid. Aurelian. 2. can. 15. qui filios ſuos hæreticiſ baptizandis tradiderunt.* Concil. Illerdenſe can. 13. oppreſſores pauperum. Concil. Carthag. 4. can. 93. & 94. & alij, de quibus Sanez de relig. tom. 1. lib. 1. cap. 6. num. 4. Albalpineus lib. 1. obſer. cap. 5. & 6. Lemaître de bonis Eccleſ. 2. p. lib. 1. de decimis, cap. 15. Theoph. Raynaud. de liter. moni. p. 2. cap. 2. num. 22. Spondanus de cæmeter. p. 1. lib. 4. cap. 4. ex min. 3. quia iuxta Eccleſiaſticum cap. 34. verſ. 23. *Dona iniquorum non probat Altiſſimus, nec reſpicit in oblationes iniquorum.*

COMMENTARIUM.

5. **CONCLUSIO**
TRADITUR
ET PROBA-
TUR.

EX hoc canone sequens communiter deducitur assertio: *Manifesti vsuarij, sine clerici, sine laici, à communione Ecclesie repelluntur.* Probant eam textus in cap. final. 46. dist. cap. 1. & per totam 47. dist. cap. 1. & per totam 14. q. 4. cap. vnic. 15. q. 2. cap. 1. & per totum, hoc tit. cap. 1. cap. quamquam, eod. tit. lib. 6. Clement. 1. & 2. hoc tit. cap. 2. de vita & honest. cleric. cap. inter, de excessibus Prælat. can. 44. Apostol. Gregorius VII. in Synodo Romana, can. 16. *Vsuarj, & qui tenent pignus, postquam inde habent, quod præstauerunt, excommunicantur.* Innocentius III. in Synodo Romana can. 13. *Infamabilem feneratorum rapacitatem demonstrans, & ab omni ecclesiastica consolatione sequstramus.* Meldense can. 55. *Vi Episcopi seipsos, acque ministros suos, & maxime ecclesiasticos, contraque Christianos in sua parochia, pendentes ex hoc statuta Nicani Concilij, & ceterorum Conciliorum, ab vsurio sine excusatione compescant; & qui compescere aliter non poterint, canonicam in eos sententiam proferant.* Valentinus sub Lothario can. 10. *Vsuarum turpia iura canonica severitate inhibemus.* Illiberit. can. 20. Arelat. 1. can. 12. Arelat. 2. can. 14. Agathengr. can. 61. Agathense can. 69. Arel. 3. can. 23. Cathag. 1. can. 13. Carthag. 4. can. 67. Laodic. can. 4. Mogunt. sub Carolo can. 10. Rhemensis can. 3. Tarraco. can. 10. Troasico. can. 15. Turon. can. 10. alia iuris testimonis concesserant Ant. Augustino. in epis. iur. lib. 3. tit. 6. Ceterpiscus in summa, verbo *Vsura*. Illustrant vltra congestis à Barbosa in presenti, Petrus Gregot. lib. 3. parit. tit. 5. cap. 5. & in tract. de vsur. Titia tom. 2. lib. 5. cap. 17. ex art. 3. Prado tom. 2. Theolog. moral. cap. 28. Acuña in cap. Presbyter, 50. dist. Footnel. decis. 210. Pineda de rebus Salemanis lib. 6. cap. 10. num. 14. Fergoso de regim. Christi. Reipub. p. 1. lib. 2. dist. 4. §. 21. Mendoza lib. 2. Concil. librer. cap. 39. & 40. Balsamoo in can. 17. Concilij Niceni. Coriolanus in can. 44. Apost. Binsfeld. in presenti, Scribeotes de vsuris, & nouissimè Lothardus, & Gibaliouis, Hurtado de vero marry. resol. 70. §. 3. Roussel. lib. 6. Hyster. Panif. iurist. lib. 3. Mancinus lib. 1. de tripli iur. collat. cap. 153. & 226. Murga tom. 2. dispensa. 14. per totum. Seldeo. lib. 6. de iure natur. Hebr. cap. 10.

6. **IMPROMPTA**
TRADITUR
ET PROBA-
TUR.

Sed hæc assertio difficilis redditoe sequenti consideratione. Omni fore, tam naturali, diuino, quam positio, vsuræ permissæ sunt: igitur eas accipientes puniti ooo debent. Iure naturali vsuras permissi, constat; nam ius hoc dicitur hominum commercia, & societates confectuari, sine quibus Respublica vix seruari potest: auctor est Cicero lib. 7. de legibus. Sed maior pars hūmāni commercij consistit in vicijs exigendis, leg. 40. ff. de rebus creditis. Ergo vsuræ iuri naturali consensue sunt. Accedit, nam quid naturali rationi magis congruum est, quam vt qui mercedem recipit, gratificetur, l. sed si 25. §. consuetud. ff. de pet. heredit. l. 6. ff. de seru. exportand. Ofualdus lib. 17. Deuelli. cap. 2. Ergo qui pecuniam mutuat, iustè ob remunerationem vsuras exigit. Iure diuino, tam legē veteris, quàm nouæ vsuras indistinctè improbatas non esse, constat ex cap. 23. Deuter. ibi: *Non feneratoris fratri tuo ad vsuram pecuniam, nec fruges, nec quælibet aliam rem; sed alieno: fratri autem tuo absque vsura id quod indigeret, commodabis.* Et io eodem libro, cap. 15. ibi: *Fu-*

neraberis gentibus malis, & ipse à multo factus accipies. Ea quibus, & aliis locis congestis à Villaguth. de vsur. q. 4. ipse probat vsuras non fuisse iudicialitè prohibitas in lege veteri, sed tantum prohiberi fuisse Hebræis, vt inter se à inuicem vsuras exercerent, non autem vt Gentilibus, & exteris occasionibus mutarent sub vsuris: quod probatur ex cap. final. 14. q. 4. Lege gratie vsuras approbatas fuisse, constat ex cap. 19. Luca, ibi: *Et quare non distulisti pecuniam meam ad mensam, & ego veniens cum vsuris trique exegissim istam.* Et cap. 25. Mathæi, ibi: *Operis ergo te committere pecuniam meam munerariis, & veniens reciperem trique quod meum est cum vsura.* In quibus locis capitelis Domosæ lectum inceptat, qui pecuniam sibi commissam non dedit ad vsuram; qui sine non reprehenderetur, si vsura illicita, aut damnata esset. Iure etiam positio vsuras permissi facile probatur ex l. facium 60. ff. pro socio, l. 3. leg. Insulani, C. de allionib. empti, & ea quampluribus legibus compilatis in tit. ff. C. de vsuris, cap. conquisit, cap. salubriter, hoc tit. Ergo non rectè io presenti statuitur, vsurarios manifestos puniendos esse. Deinde aduersus pœoram priuationis communionis Ecclesie, quam PP. Concilij Laterano. imponunt manifestis vsurariis, sic Insulgo: In eo quis puniri debet, in quo peccauit, cap. nemo, de tempor. ordin. vt ita pœna respondeat delicto, l. respiciendum 11. l. aut salla 16. ff. de penis, l. facimus, C. eod. tit. Sed vsurarius peccat auaritie peccato, inuisitque pecunie, vel alieni lucri desiderio, vt patet ex cap. vtrum, cap. bonorum, cap. sius, 47. dist. ergo penis pecuniariis, non vetò priuatione communionis puniendus erat.

7. **VTRA**
ATQUE
ATQUE
ATQUE

Quod dubitandi ratione oon obstante vera est præiens assertio, pro cuius expositione sciendum est, vsuram ab vsu, seu vtendo dictam fuisse, & ita quod ex vsu cuiusque tel alieni accedit, vsuram nuncupari. Cicero lib. 1. Tusculan. ibi: *Natura dedit vsuram, vix tamquam pecunia, multa profusa à die.* Idem in Verrem 7. vsutam lotis dixit: & lib. 3. epist. ad Appian. vsuram temporis posuit pro vsu. Plautus etiam in Triuommo ait: *Nec adeo hæc est mihi, nec vsura mea; idest ad vsuram meam.* Et hac significatione credidit ipse vsuram dari, nullumque numerum esse sine vsura, idest sine vsu. Vsura verò, quam debitor pro vsu pecunie soluit, longè aliam rationem habet; sicut enim vectura vocatur merces, quæ pro vectione datur, mercatura locum de merce; similiter & vsura est merces, quæ pro vsu pecunie datur, vt notatur Salmasius de vsur. cap. 4. Arnoldus Vinsius lib. 2. select. cap. 9. Et licet in stricta significatione vsura accipiat pro ea quantitate, quæ proditor pro vsu tenentis pecunie, lato tamen modo accipitur pro ea, quæ ex alia causa, quàm motui, vt ex conuentione, aut mora debetur, l. inter 41. §. 2. ff. de vsur. l. acceptum 19. C. eod. l. 4. C. de compens. Et in hoc præcipue differt vsura à fœnore; nam fœnus significat pecuniam ipsam creditam sub vsuris, idest ut alienum sub vsura contractum. Tacito de moribus German. ibi: *Fœnus agere, & in vsuras extendere ignominiam.* Ideoque magis auersatur, quam si venium offer. Prosequuntur Salmasius, & Vinsius supra; & Solodius in delubris. inris ad lib. 22. ff. q. 1. Pasladorius lib. 2. rer. quod cap. 2. per totum, Gaspar Rodriguez de annis reddit. lib. 2. c. 1. num. 18. Peguera in qua. crim. cap. 30. num. 1. Deinde sciendum est, varias vsuræ defensionibus adduxisse

adduxisse Coar. lib. 3. var. cap. 1. P. Gregorius lib. 2. 3. 4. cap. 3. Gualp. Rodriguez supra, Felicianum de censib. lib. 1. cap. 1. Borcholten, Hothom. Canisium in suis tract. de usur. Buisfeldium in presenti rubric. Quibus omnis dicendum est cum Leonhardo de usur. q. 1. num. 2. usuram esse accessum sortis debere ex suo tempore tunc solutionis; quam ipse doctè explicat per totam questionem illam.

8.

VIRI & MA-
RITIMA.

Deinde sciendum est, usuram in honestum lucrum esse docuisse Philosophos, & sanctos viros. Aristot. lib. 4. Ethicor. cap. 1. fructuatores eodem loco ponit, quos Leonica. Seneca 7. de beneficiis, inquit: Quid sumus, & calendarum, & usura? nisi humana cupiditatis extra naturam quædam nimis. D. Gregorius Nyllenus, usuram partum esse ait, quem paritur avaritia, obsteritator inhumanitas. Philo de charitate, fecus vocat secularis, & illiberalis animæ studium degenerantis in immanitatem. D. Ambrosius lib. 1. officior. rapinam & latrocinium appellat. D. Basilus ad Amphilocho. cont. 14. innotum lucrum. Plutarchus in Lucullo vestrem, ac intolerabilem pestem, ac tandem Petarcha de veniendi variisq. fortun. fecus obsecrans rapinam esse ait, & studium, quo fœditus vllum inueniri non potest. D. Ambrosius de Tobia cap. 5. sic mari comparat: Pecunia feccatoris est fluctus quidam maris, nunquam quiescit, labitur veluti scopulo idisa; ita gremium debitoris percussit, & continuo replebitur tunc precessit, cum murmure vocis, cum gemitu reuoluit: frequenter tanquam placidum exeat tunc mare, semper feccatoris unda instat, mergit naufragos, restitit exiit, & insepultos relinquit. Et cap. 10. inquit, nihil interesse inter funus, & fecus, inter mortem, & sortem. Sanctus Leo sermone 6. de ieiun. spiritum mensis. Multiplicatur quidam facultas iniustis & tristibus incrementis, sed mentis substantia contabescit, quoniam sanus pecunia formis est anima. Quid enim de huiusmodi hominibus sentiat Deus sacratissimus Proph. David manifestat psal. 4. vnde interrogatus Cato, quid de fenore sentiret, respondit eodem esse fenectari, & hominem occidere, ut refert Cicero lib. 2. de officiis. Huc spectat sanctus Ambrosius lib. de Tobia, cap. 14. Usuram perire, suffocare est. Illustrat Novarius lib. 10. scheldis/mari, cap. 23. Hancque nefariam usuram attem ostendunt mala, quæ ex fenorendi licentia pronantur; siquidem passionia ciuiliu euerit, totas familias in summam egestatem redigit, fissique laribus clues, oppida denique ipsi delitui faciunt. Vnde Iustinianus in novel. 32. refert, incolas Thracie ira olim à fenectatoribus vexatos fuisse, ut plerique diffugerint, plerique fame perierint. De clutatis Asia hæc refert Plutarchus in Lucullo: Prius Asia fenectatoribus esse adeo dilacerata, ut priuatis ingenui liberi, filique virgines, publica pittura, domeria, Deorumque statua venderentur.

9.

VIRI & MA-
RITIMA.

Deinceps sciendum est, usuram omni loci prohibitam esse, naturali videlicet, diuino, & positivo. Fusi probat Castillo de alimentis, cap. 48. Paulus Melius in addit. ad ipsum, Beyerloch in theatra, Verba vsura, Kling, lib. 5. loc. communium, cap. 3. & naturali iure probum esse probatur ex eo, nam creditor lucrum ex re aliena percipiens loeupletatur cum alterius iactura; quod per naturam fieri non debet, I. non hoc natura, ff. de condit. instab. l. iure 307. ff. de R. I. Cicero lib. 3. de officiis: ibi: Illud natura non patitur, ut alio-

rum spoliis nostras facultates, copias, & opes augeamus. D. Augustin. lib. 19. de ciuit. Dei, cap. 4. Plura Connans lib. 1. commun. cap. 1. & 2. Prael. in rubric. de rescind. p. 1. cap. 2. num. 26. Iura in leg. si quis à liberis, q. 6. quæ, num. 94. ff. de liber. agnos. Deinde quia pecunia non parit pecuniam; quam ob rem recipere aliquid vitia sumum illam pecuniam, contra naturam est, potiusque capti dicunt ex industria, quam ex pecunia, quæ non germinat, ut tradit Aristot. lib. 1. polit. cap. 6. & lib. 4. Ethic. cap. 1. Quibus & aliis rationibus moti hanc sententiam inueniunt Couar. dist. cap. 1. Molina de iustis, 2. tom. disp. 304. Lessius de iustis, lib. 2. cap. 20. Leonhard. de usur. q. 2. num. 26. Gibalinus cod. tract. lib. 1. cap. 7. art. 1. Est contrarium tenetor Abalenia in cap. 35. Marci, quest. 171. & 173. Molinæ de contract. quest. 74. num. 528. Grotius de iure belli lib. 2. cap. 12. num. 20. Iure etiam diuino, tam legis veteris, quam nouæ usuras improbatas esse, constat ex cap. 25. Levit. ibi: Ne accipias usuras ab eo, nec amplius quam dedisti. Et cap. 28. Ezechielis, ibi: Si ad usuram non commodaueris, & amplius non acceperis, ab iniquitate auerti manum suam, hic iustus vita viuet, & non morietur. Et expressius ibidem: Ad usuram datus, & amplius accipiens, nunquid viuet? Non viuet. Et psalmo 542 Qui pecuniam suam non dedit ad usuram, Et capite 6. Lucæ, ibi: Bene facite, & mutuum date, nihil inde sperantes. In quo textu licet aliqui, ut Sotus lib. 6. de iustis, q. 1. existiment non preceptum, sed tantum consilium contineri, verum tamen est, præceptum exprimi; ideoque Ecclesiæ pæsespids astrictis, usuras vtriusque Testamenti paginâ condemnari, ut in presenti textu, & in c. si quis 14 q. 4. c. super ea, c. consilium, hoc iur. probant Villagorh de usur. q. 4. conclus. vnic. Gibalinus cod. tract. lib. 1. cap. 7. art. 2. Felicianus de censib. tom. 1. lib. 1. cap. 5. m. 16. Lessius de iustis, lib. 2. cap. 20. dubit. 4. Atque ad D. Tismon q. 78. art. 1. & ita à iure diuino usuram prohibitam esse docuit Basl. Imperator apud Harmenopolim lib. 3. premissum, cap. 7. ibi: Est maiorum nostrorum plerisque visum esse iudicandum esse usurarum salutationem propter credicuum sorte molestias, & incommoda; nos tamen à nostra Republica Christiana penâ indignam, auersandam, & exorcendam esse censuimus, tanquam iure diuino interdictionem. Leo Imperator novel. 84. Notarunt Faber de error. de cad. ro. error. 1: Leonhardus de usur. quest. 2. num. 27.

Iure etiam ciuili dhasarum gentium forte improbatas fuerunt; nam Megasthenes non solum usuras viderat, verum & solutas repeti iussurunt. Plutarchus in q. rerum Græcorum. Solon Artheis legem tulit, ne pecuniarum creditarium actio, petitiōne esset. Diogenes Laërtius lib. 1. cap. 7. Samuel Petitus ad ius Atticum lib. 5. tit. 4. Loculum etiam Asia Regem inter cetera illud decreuisse, ne vltia duplum usuræ exigenter, quod ante ab Egyptis constitutum fuerat, refert Diodorus Siculus lib. 2. & ex eo Coicæ, lib. 5. obseru. cap. 38. Romanis etiam maiori odio pestiferebantur fenectatores, quam fures; siquidem fures dupli penâ, fenectatores verò quadupli condemnabant, teste Vatro in initio de re rustica: & usurarum fecus, quod olim ex libidine locupletatum agitabatur, ex iure ciuili, primò lege 12. Tabul. vnciarum fecus permisum fuit, id est vncia singulis mensibus pro centum, Tacitus lib. 6. annal. quod deinde

10.

DE VIRIS
DE VIRIS
DE VIRIS

deinde anno ab rēte condita 396. repetitum fuit lege Dolla Mētenia. Lilius lib. 7. postea anno 422. lege Genutia collatum fuit ad semioncliam, idest dimidium vncie. Tacitus dicit lib. 6. deinde lata fuit alia lex Marci Luculli, quam tulit in Proconſulato Afiz, teſte Plutarcho in eius vita, ut vſura non poſſent excreſcere ultra duplom fortis; acceptamque Romę fuiſſe credo ex Tacito ubi proximi, ubi de Tiberio agens narrat conſuluiſſe egeſtati debitorum, diſpoſitis per menſum nummis, & ſactā copiā mutuan- di ſine vſuris per triennium, ſi debitor populo in duplom prędiis cauifſet: ubi prędiis cauere, eſt hypothecae prędiorum ſupponere in duplum, idest pro forte, & pro altero tantum vſura- rum nomine; quia inde non poterant excede- re vſurae, nouella 121. & 138. Suadetur etiam ex lege ſi non ſortem 26. §. 1. ff. de condiſt. in- deb. & ex Paulo lib. 1. ſem. rit. 14. §. 1. iun- cta interpretatione Aniaoi, quam etiam ſequi- tus fuit Coſtaeus in parat. ad tit. Cod. de vſur. & lib. 4. obſeru. cap. 38. & lib. 5. reſponſ. Pa- pin. in l. 4. §. 1. ff. de nauic. ſenar. Reuocatus in l. non debet 41. §. in re, ff. de R. l. Sautius ad Sidoniuſ lib. 4. epiſt. 24. quatuor aliter idem Cuiac, in notis ad Pankum ſuprà, & lib. 2. 99. Papin. in l. 1. ff. de vſuris: quae lex ita accepta fuit conſtitutione Antonini in l. vſura 10. Cod. de vſur. ut recipietur in illis, quae ex- currunt, & exactae non ſunt, ne excedant alterum tantum fortis; ſed non in exiſtis, quae poſſent in iuſtitiarum excreſcere, quando fors nou ſoluatur; notat Budeus ad tit. de leg. Jul. Maieſt. in ſine. Sed Iuſtinoſianos in nouel. 121. 138. & 160. abrogauit conſtitutionem Anto- ninianam, ſanciens ne vilo modo vſurae excederent duplum, idest alterum tantum fortis. Poſtremo viriata fuit omnis vſura, ut inquit Ta- citus ubi proximi, lege ſcilicet Gabinia, de qua Cicero lib. 5. epiſt. ad Atticum. Quid ſit veru- ſa, nihil mirum ſi Iuſtus Lipſius ad lib. 6. annal. Tiberii, ann. 55. non precepiſſet; eũdem Cuiacius in doli. l. 1. dicat à nemine intelligi poſſe, & expoſit ſumere pecuniam ſub vſuris, ut vſurae debite exſoluantur: ſed nullo probat auctoris teſtimonio viter; quare vetius credo veritatem facere eſſe cambiare, & re- cambiare, indeque reportare quæſtum, atque vſuras ex vſuris exigere, ut ſuadet ex Suetonio in Auguſto, cap. 59. ibi: Notauitque ali- quos colluſionibus vſuris mutare, grauiori ſenore collocare, hoc eſt facere verſuram. Alia de lege Gabinia, & modo vſurorum congeſſit Maſius lib. 1. ſingul. opin. cap. 8. Igitur quia conſultentibus Magiſtratibus ſenſim ſenarario in mores hominum itrepiſſet, cui malo eũdem viz modetati poſſent Reipublicae Princeps, ſenariorum modum præſcriperent: & eũdem Romani ad as, & centenarium numerum referrent, ita vſura- rum præſcriptiones ad eundem numerum refere- bant, & vſuram centeſimam, quae ſumma eſt, l. qui ſine, ff. de negot. geſt. l. quor qui, ff. de adminiſtr. iur. non comparatur ea, quae ex centum nummis duodecim nomemis annuos parit, & centeſimo menſe aequat fortem, vnde eius no- men tractum eſt, quia videlicet centeſimo men- ſe fortem aequaret, vel quod fortis pars cente- ſima ſingulis meſibus præſtaretur. Cicero 1. ad Atticum, epiſt. 9. & lib. 5. epiſt. 21. Seneca epiſt. 128. dicitur vſura legitima in l. 2. Cod.

D.D. Gouzal. io Decretal. Tom. F.

Theodoſ. de vſuris, l. lilla, ff. de rebus credit. 2. Plinio lib. 10. epiſt. 53. Petio Rauenn. ſectm. 25. Vſura mundi centum ad unum, Deum unum acci- piat ad centum. Sautius ad Sidoniuſ lib. 4. epiſt. 24. Veteres enim in ſingulos meſes vſuras ſtipula- ti conſueuerunt, ut liquet ex l. lilla, ff. de re- bus credit. Quare meſes à D. Baſilio ad Amphib. lib. cap. 14. dicuntur PP. ſenariorum: & in comœdiis Ariſtophanis debitor quidam opac luna carere, & ne vinqum ſedirent Kalendæ. Ex Horatius ſatyr. 3. triſtes Kalendas dixit. D. Ambroſius lib. de Tobia, cap. 12. Veniunt Kalendar, parit ſenar centeſimas: veniunt meſes, ſingula generant vſura. Quia in ſingulis Kalendis vſura ſtipulantur, eſt earum ſolutio in Idus differ- retur. Vnde Horatius ad a. 2. aie:

Omnes redegit idibus pecuniam;

Quarit Kalendis potere.

Beſſes vſurae erant, eũdem ex centum nummis octio ſingulis annis debitores penſitabant, l. eos, §. 2. Cod. de vſuris, l. Publia, §. Trium, ff. de papiſi. Senis vſura diebatur, quae ex centum nummis ſenariis annuariis parit, & decennis meſi- bus fortem aequat, & media centeſime vſurae dicitur in l. tit. Cod. de ſiſcal. vſur. Eam cio- lem, & modicam vſuram appellat Pluſius lib. 1. 4. hiſtor. cap. 4. & legitimam eſſe dixit Iuſtin. in l. eos, Cod. de vſur. quoniamque vſurae dieban- tur eũdem ex centenariis annuariis quinquas conſtituit, idest ex centum annis quinqe, l. cum quidam, ff. hoc iurilo, l. alimenta, §. Baſilica, ff. de alimentis. Hucque alluſit Horatius lib. 1. ſerm.

Quinas hic capiti mercedes exigi: atque

Quanto per diuor quique eſt, tanto actius coget.

Et Petrus ſatyr. 5.

Quid petis ex nummi, quos hic quinqeſque modeste

Nutritas, peragam quida ſuſore deuocet?

Trientes vſurae erant, quae in ſingulos centenarios quatuorſum nommis quatuorannis parior, & continent tertiam partem centeſimae, l. cum quidam, §. qd. ff. de vſur. l. eos, §. 1. Cod. eod. tit. Itaque leuior non comparatur in l. ſi legatum, ff. de oper. public. Hue pertinet lex §. vltiſſ. ad leg. Fala- cid. quae auctore Hecmſolao barbaro, cui aſſenſit Budeus de aſſe, ſic accipienda eſt, ut ſi duodecim in annos ſingulos relinquantur, & dubium ſit, quantum hæres legatariis expenſum ferre deberet, ſtatimque quoties priuato fuerit legatum, ad ſem- miſſes vſuras ſummam eſſe reducendam; atque ideo diuena legatariis imputari in iocunda ratio- ne Falcidiz. Quod ſi Reipublicæ in annos ſin- gulos duodecim relinquntur, trecenta Reipubli- cæ impuſibuntur, idest, auctore Marcello, quan- tum ſufficit forti ad vſuras trientes. Tandem vſura vnciaria dicitur, quae ex centum quatuorannis ſin- gulos nummis conſtitit, ut in l. Trium, §. Preſa- ſum, ff. de adminiſtr. iur. Proſequuntur alia de vſu- ris apud Romaſos vſitatis Guibertus Coſſanus lib. 1. 99. in. cap. 1. Molinas, & Hothomanus in tract. de vſur. Ant. Auguſt. lib. 2. emend. cap. 10. Pancirola lib. 2. var. cap. 104. Salmut. ad Iſpon. lib. 1. numerat. tit. 19. Marcellus Donatus in notis ad Capuſianum, fol. 270. tem. 6. Theſauri critici, Leocharidas de vſur. quaſt. 4. Bronchoſi, com. 2. aſſort. 7. Salmuſius de vſur. Gibalinus eod. tract. c. 7. art. 4. qui tamen lus Iuſtinianum etrea vſuras ſtatuerit, latè proſequuntur Gibalinus d. c. 7. art. 5. Leocharidas contra ipſum in diſput. ſpeciali, Quid ius Iuſtinianum circa vſuras ſtatuerit? luce etiam

G g eccleſia

ecclesiastico vltas prohibita semper fuisse, constat ex canonibus supra per illustrationem conclusionis relatis.

Manet ergo, vltatam exactionem omni iure improbatam esse: vnde à Doctores sapienter queritur, an ad iudicem ecclesiasticum, vel secularem cognitum, punitioque huius delicti spectet. Et aliqui asseruerunt, crimen hoc merè ecclesiasticum esse, & ideo ad iudicem ecclesiasticum eius punitioem spectare: pro qua sententia faciunt textus in cap. 1. cap. cum in 3. cap. praeterea 7. hoc tit. cap. 1. & 2. ad. 2. lib. 6. in quibus videmus ecclesiasticos iudices, tam contra seculares, quam contra ecclesiasticos vltatios procedere. Vnde ita docuerunt Glossa, & repetentes in cap. quumquam, hoc tit. in 6. alij congesti à Conart, lib. 3. var. cap. 3. num. 1. alij relati à Cenedo collect. 30. ad Decretal. num. 2. & vltis eos aphylandari à Cevallos tom. 1. comment. opus. quest. 12. num. 7. & Glossa in cap. ex litteris 32. de iur. iur. vltatam causam quasi spirituales esse dixit. Alij discrimen agnouerunt inter questionem facti, & iuris circa vltas, id est vt cum solum dubitaret, an contractus celebratus sit vltatius, necne, iudex secularis possit adiri, quia non cognoscit verum sit peccatum, vel non, sed tantum illud punit: ita verò quando veritate quæstio iuris, vltam contractus tali modo celebratus sit vltatius, vel non, tunc iudicem secularem incompetentem esse, ne cognoscat de peccato, ita docuerunt Bartolus in l. Tria, num. 7. ff. solut. matrim. Alciatus in cap. 1. de offic. ordin. num. 77. Iul. Clarus lib. 5. sent. 6. vltis, num. 8. & 9. fund. quest. 37. num. 1. Guiterrez lib. 2. canonie. cap. 18. num. 21. Spino in specul. testam. gloss. 13. rubric. num. 67. Sed hia omnia vltior sententia docet, crimen hoc esse mixti fori, & posse poni in laici etiam à potestate vltaque, & propriis penis damari, nec questionem iuris, & facti esse hoc loco distinguendum, sicut nec in sacrilegio, aliisque eiusmodi delictis, quæ ab vltaque potestate damari, & poni constet, distinguunt, vt pluribus relatis docet Binsfeld, in præfati rubric. notab. 14. conclus. 6. Rodriguez de annuo redditibus, lib. 3. quest. 3. num. 121. Gibalinus lib. 1. de iur. cap. 7. art. 8. conclus. 9. D. Ioseph. Vela in cap. 1. de offic. ordin. num. 71. Omitto Molinæum de iur. quest. 10. num. 155. Salmas. de iur. & exteros heterodoxos, qui prosequuntur odio Romanis Pontificibus, illisque omnem huius criminis cognitionem adimunt; nec penis etiam ecclesiasticis ab eo plecti posse consentiunt sine iniuria laici potestatis: quod quàm falsum, & temerariè affirmetur, iam noui in can. 26. Concilij Lateran.

Quibus ita constitutis apparet quidem rectè Patres Concilij Lateran. in præfati iuris ius naturale, diuinum, & positum statuerint, vltatios manifestos esse communionem Ecclesie, & sepulturam priuandam; nam cum vltarij manifesti præbent scandalum populo, & manifesta peccata, non oculis, sed publicè correctione puniri debeant, ad vitandum scandalum, cap. 1. de penis. & remiss. cap. si peccauerit a. quest. 1. cap. 42. de consecr. dist. 2. D. Greg. lib. 12. epist. 33. ad Felicem Siciliæ Episcopum, Trident. sess. 14. de reform. cap. 8. Ideo manifesti vltarij priuatione communionis, & sepulture ecclesiasticæ, ac aliis etiam penis afficiuntur, tam laici, quàm clerici, quas dabimus infra in cap. praetera.

Nec obstat dubitanti ratio supra expensis, nam etsi commercia iuri naturali consona sunt, tamen id procedit in commercialibus, & negotiorum licitis, non verò in illicitis, vt sunt contractus vltarij. Nec interest, quod iure naturali teneantur ad remunerationem beneficii accepti, nam alio modo possumus pendere gratias, aut remunerationem, quàm vltis promissis, & solutijs. Nec obstant testimonia sacre paginæ vltiorque Testamenti. Non primum ex dicto cap. 18. Deuterom. in illis verbis: Et famulari genitibus multis, ipso autem à nullo famulo accipiet. Nam respondendum est, famulari in eo loco non significare mutuum dare sub vltis, sed tantum mutuatē: in qua significatio accipitur in cap. 21. Proverbi libi: Dines pauperibus impior: & qui accipit mutuum, seruus est famulari. Et cap. 29. Ecclesiast. libi: Famulari proximo tuo in tempore necessitatis illius. Promisit enim Deus in dicto cap. 18. Iudeis legem suam obseruantibus omnium rerum abundantiam, diuitiasque multas, & to illis obsequantiz præmium dixit, famulari indigentibus multis: quasi diceret, rerum omnium affluentia abundantijs, vt egenis multis mutuum dare possis, à nemine soti indigere accipere, vt exponunt congesti ab Atagon dist. quest. 78. vers. Tertio conclusio. Nec obstat textus in dist. cap. 23. Deuterom. in illis verbis: Non famulari fratri tuo, sed alieno. Nam omittit solutioem Ioannis Paniscedi apud Loium in comment. illius textus, qui existimat illud, sed alieno, esse noiam marginalem, quæ in textum crepuit: & Hieron. de Luca in tract. de cambis, cap. 2. numer. 15. qui ait particulam illam adiectam fuisse à Consilio Sanedini, quos reuocavit Gibalinus dist. cap. 7. art. 2. dicendum est, Iudeis permissum fuisse exigere ab alienigenis vltas ad vitandum maius malum, vt etiam illis petmum fuit repudium, ne scilicet ob suam duritiam, & avaritiam fratres spolarent. D. Thomas 1. 2. questione 108. art. 3. etiamque alienigenas, de quibus loquitur textus ille Chananæ, Amalechitz, & Amorrhæi, qui inuast desinebant terram populo Hebraico commisit, nempe Palaestnam: quo fit, iure optimo Hebræos ab iniurijs possessoribus pecuniam exigere potuisse, argumetio reuertit in cap. 1. in fine, hoc tit. cap. 3. Extra, cap. dixit Dominus 14. questione 5. vbi docetur, populum Hebraicum Dei auctoritate absque furti obligatione vasa aurea, & argentea ab Egyptis abstulisse: iuxta quam interpretationem intelligendus est textus in cap. finali, 14. quest. 4. vbi D. Ambrosius asserit, vltas iuste exigi posse ab iis, quorum bona iure belli capi possunt, nam intelligendus est, quociens accipitur vltas, & retineat in damni compensationem ab hoste iniusto illari, vel vbi bona ab hoste possessa sunt ipsam mutuantis, aut ad tunc pertinent, quemadmodum prædij Terræ Promississæ à Chananæ possessa ad Iudeos diuinā largitione pertinebant: quo modo textum illum, & locum D. Ambrosij in dist. cap. vlt. explicant Cardinales in Clement. 1. de iur. vlt. quest. 13. Contractus de contrah. quest. 42. conclus. 2. Turrissem. in dist. cap. vlt. Sotus lib. 6. de iustis, questione 1. art. 1. alij relati à Coar. dist. lib. 3. cap. 1. num. 7. post Græsem Rouffellus lib. 6. hystor. cap. 1. num. 9. Azor 3. part. insti. lib. 7. cap. 8. P. Gregor. lib. 3. perit. tit. 5. cap. 5. Nec obstant auctoritates D. Marthæ, &

13.
DUBIT-
VITA
DUBITAN-
DI RATIO,

11.
DE SYD-
CA TYP-
RARIUM.

12.
TRADI-
TIO SAC-
RAMENTI.

LUCA,

Lucez, nam intelligi debent metaphorice de vsura spiritualium bonorum, vel virtutum, et la-
tius constat ex eodem cap. 15. quinimo etiam in
sensu naturali, vel rerum naturalium parabola
illa accipietur, facile responderi possit ver-
bum *usura*, non esse accipiendum de vsura te-
proba, & iniusta, sed de lucro iniusto; vnum
enim, & alterum scilicet habere potest vsuræ
nomen, ut textum illum exposuerunt Sotus, Mo-
lina, & Aragon supra laudati. Nec obstant lu-
ris Cæsarei testimonia, ubi vsuræ permittun-
tur; nam vsuræ iure ciuili tolerabantur, non
tamen iniuste, sed itaque tam impositæ, ut su-
perà notauimus. Nec tandem obstant textus in *dist.*
cap. conquestus, *cap. salubriter*, *hoc tit.*, quorum ve-
ram interpretationem dabimus in eorum com-
mentariis. Nec tandem obstat, quod ultimo lo-
co expendebamus, videlicet in presenti casu im-
ponendum esse penam pecuniariam, seu tem-
poralem; nam etiam in presenti vsurarij manifesti
tantum priuenter communionem Ecclesiæ, tamen
non negatur alijs penis ecclesiasticis, & secula-
ribus eos afficiendos esse, ut dicemus infra in
cap. preterea.

14. Sed supra traditis obstat textus in *cap. 3. de fi-*

delius, in illis verbis: *Prosumus quoque auctori-*
tate iniustitiam, et si debemus, vel accessiones illo
negamus, consuetudine, quæ est legi contraria,
non obstante, incrementum calumnia subire cogatur.
Ex quibus expresse deducitur, fideiulorem non
solum teneri in sortem principalem, verum &
in accessiones, idest in vsuras; siquidem vsura
dicitur accessio, *l. frumentum, Cod. de vsur. l. fi-*
nal. in fin. Cod. de iure dot. Ignitur quia vsuræ
non sunt improbate per sacros canones. Cui
difficultati satisfaciendum est asserendo, verum
esse fideiulorem in sortem principalem accep-
tum iure ciuili etiam in vsuras teneri, ut in eo
textu probatur; attamen in eo textu Pontifex
per accessiones non vsuras intellexit, sed pen-
nam obligationi principali adiectam, ut fructus
prediorum; vel arborum, seu pensiones do-
motum. Quæ omnia accessionum nomine con-
tingunt, ut probat Leohard. *de vsuris ques-*
tione 1. num. 1. Etiam opponi possunt textus in
cap. 1. de feudis, iunctis adductis in eius commen-
tario, *cap. per vestras, de donat. inter;* iunctis ibi
notatis; *can. 10. Concil. Liber.* cum ibi adductis,
cap. quoniam 47. dist. eum dicto Leoardo *de*
vsuris quest. 3.

CAPVT IV.

Alexand. III. a Panormit. Archiepiscopo.

Speret eo verò, quod à nobis tua deuotio postulauit, vtrum possit in recipiendâ
Specunia ad vsuram fieri dispensatio, ut pauperes, qui in b Saracenorum capti-
uitate tenentur, per eandem possint pecuniâ liberari; presentibus tibi literis du-
ximus respondendum, quod cum vsuram erimen vniuersque Testamenti pagina de-
testetur, super hoc dispensationem aliquam non videmus adhibendam, quia cum
Scriptura sacra prohibeat vel pro alterius vita c mentiri, multo magis est prohiben-
dus quis, ne pro d redimenda vita captiuû vsutatum erimine inuoluatur.

NOTÆ.

a *Panormitane.*] Ita etiam legitur in prima
collectione, *sub hoc tit. cap. 3. & post Con-*
cil. Later. part. 1.6. cap. 1. De Panormitana Ecclesia
iam nonnulla addux; in *cap. 4. de elect.*

1. b *Saracenorum.*] Nam paulò antè tempore
Alexandri III. tota ferè Sicilia occupata erat à
Saracenis, cum quibus Siculi his temporibus
seuam bellum gerebant, ut post alios esset D. Ro-
chus Picro *tom. 1. Sicilia sacra, in notitia Panor-*
mit. Ecclesia, anno 819.

2. c *Mentiri.*] *Cap. ut autem 4. 22. quest. 1. cap. si*
quis coactus 3. 22. quest. 5. plura Theophilus Ray-
naud. *tom. 1.4. tract. de restrict. mentali, cap. 2. ex*
num. 16. Alb. Gentilis de *abusu iudicary, c. 13.* D. Io-
seph. de Retes *lib. 7. apud fin. cap. 3.* qui late agunt
de mendacio officioso, & quando licet amphi-
bologice clausula vitæ.

3. d *Redimenda.*] Ex ita nec etiam pio pia causa
licet vsuram exercere, quia non sunt faciendi
mala, ut inde emanent bona; licet legamus ali-
quando in belli subsidium pecuniam Ecclesiæ ac-
cipi à Principe seculari sub annuo censu, non
sub specie mutui, sed prestitij, ut in Concilio
Leptinensi sub Zacharia I. Concil. Reimsensi
sub eodem; notauit Cironius ad *tit. de prelatiis*.
Inde apud Antiquos valde dubitatum fuit de
montibus Pietatis. Est autem mons pietatis cumo-
D.D. Gonzalez, in *Decretal. Tom. V.*

latus æris æctua, qui subleuandis per mutuum
miseria pauperum destinatur ex lege, ut moni-
tarius pignoris datis pro securitate, exiguum
aliquid soluat per quantitas acceptæ. Et Cae-
tarius 3. *tom. opusc. de monte Pietatis* Sotus *lib. 6.*
de iustu. quest. 1. art. 6. tenuerunt huiusmodi
montem pietatis licitum esse, quia iam reci-
piunt aliquid ratione mutui ultra sortem pign-
oris. Sed contrariâ sententia, immò licitum
esse, etior; & receptor est, & etiam approba-
ta per Sixtum IV. Innocentium VIII. Iul. II.
Leonem X. in *Concil. Lateran. sess. 20.* & per
Trident. *sess. 22. de reform. cap. 8.* ubi inter alia
per opera monjes isti recensebant. Eorum acqui-
ritatem, & iustitiam defendunt Molina *de iustu.*
tract. 1. disp. 315. Lugo *cod. tract. disp. 15. num.*
188. Cusippalus *cod. tract. disp. 4. num. 14.*
Azor 3. *part. iustu. lib. 5. cap. 3. quest. 1. & cap. 22.*
quest. 4. Sacerdotis de *commercio, §. 1. quest. 1. num. 461.*
Sarmiento *lib. 7. sect. 1. cap. 1. num. 15.* Leochar-
dus de *vsuris quest. 22.* Arguyo in *op. moral. disp. 1. de*
statu ciuili, quest. 6. Lessius, & alij apud Gibal-
dum de *vsuris lib. 4. cap. 7. art. 2.*

COMMENTARIUM.

Cum vsutatum prohibitio à iure naturali, &
diuino proceat, non potest Pontifex, vel
alius supremus Princeps dispensare, permittere
G g 2 vsutatum

vsuratum exercitium, cum iudi naturali, aut diuino refragari vltus legislator non possit, *cap. sum quidam 25. questio 1. cap. non debet, de consanguin. & affin. l. cas. ff. de capite minut. Facit Cicero lib. 2. de natura Deorum, ibi: Vniuersam autem naturam multa res possit impedire. Et lib. 3. de re public. ibi: Hinc legi nec derogari sua est, nec abrogari ex hoc aliquid licet, nec tota abrogari potest, nec terro aut per Senatum, nec per populum solus hac lege possumus: nec erit alia lex Roma, alia Athenis, alia nunc, alia post, sed in omnes gentes, & omni tempore una lex, & sempiterna erit immutabilis. Quae verba maximam cum laude refert Lactantius Firmianus de vero cultu Dei lib. 6. cap. 3. pro qua sententia facit etiam legem à superiore latam inferiorem abrogare non posse, *cap. cum inferior, de maiorib. & obed. Vnde cum Deus huius legis diuinitus, & naturalis auctor sit, cap. 1. de summa Tainis. cap. incommutabilis 22. quest. 4. oportet legem ab eo latam immutabilem esse. Quare recte in praesenti ducetur, non posse Pontificem dispensare, ut pro redimendis Chri-**

stianis capitula à Sarracenis vsu exerceantur, quia etiam praeterea boni malum fieri non debet, *cap. non est putandum 27. quest. 1. cap. nec arbitris 22. quest. 2. docuerunt Couart. lib. 3. var. cap. 1. num. 8. Lupus, Antoninus, & alij, quos laudat, & sequitur Giballinus lib. 1. de vsur. cap. 7. art. 2. consil. 2. Maiolus dicit. canonic. collig. 1. de perjur. Indecorum. Inde etiam infertur, nullam consuetudinem vtrunque immemoriam, induci posse, ut vsuratum exercitium licitum sit. Clemens, vult. in fine princip. hoc tit. argumento capitis finalis, de consuet. docet Couart. ubi supra, Conradus de contrail. quest. 25. Lupus de vsur. comment. 4. §. 4. num. 7. Maiolus ubi praesim: quod intelligendum est quoad forum internum, in quo consuetudo non excusat quoad Deum: in foro vero contentioso respectu penae temporalis longè diuersum erit; nam ab ea procul dubio excusabitur, qui praeterea consuetudinis vsus extorquet, argumento textus in l. qui sit fugitiuus 17. §. apud Laberum, vers. Ego puto, ff. de iudiis, edict. ubi notauit Bartolus.*

CAPVT V.

Idem, Salernitano Archiepiscopo.

Cum tu, sicut asseris, manifestos vsurarios, scilicet qui in illo peccato decesserint, communionem altaris, & ecclesiastica, iuxta decretum nostrum, quod nuper in Concilio promulgatum est, praeciperis sepultura priuandos, donec reddatur, quod tam prauè receperant: quidam eorum dicunt, ad soluendas perceptas vsuras proprias non sufficere facultates; alij verò promittunt partem vsurarum, quas habent prae manibus, reddituros; sed vsuras alias, quas extorserant, cum de his possessionibus comparatae sint, & eorum filiis, vel parentibus traditae, se non posse reddere consentire. Alij verò ad excusandas excusationes in peccatis; imprudenter affirmant, illas dumtaxat vsuras restituendas, quae sunt post interdictum nostrum receptae, nec aliquos ad soluendas vsuras, quas ante interdictum nostrum receperant, debere compelli. Super his diximus t. d. respondendum: quod siue ante, siue post interdictum nostrum vsuras extorserint, cogendi sunt per poenam, quam statuimus in Concilio, eas his, à quibus extorserint, vel eorum haeredibus restituere; vel his non superstitibus, pauperibus erogare, dummodo in facultatibus habeant, unde ipsas restituere possint: cum iuxta verbum Beati Augustini, non remittatur peccatum, nisi restituatur ablatum. Illi autem, qui non habent de facultatibus, de quibus vsuras valeant restituere, non debent illa poena mulctari, cum eos nota paupertas euidenter excuset. Possessiones verò, quae de vsuris sunt comparatae, debent vendi, & ipsarum pretia his, à quibus vsurae extortae sunt, restitui, ut sic non solum à poena illa, sed etiam à peccatis possent, quae per vsuratum extorsionem incurrerant, liberari.

NOTA.

Alexandria. Ita etiam legimus in prima collectione, sub hoc tit. cap. 3. & post Concil. Lateran. part. 16. cap. 1. De Salernitana diocesi egi in cap. 1. de offic. iudic.

B Concilio. Lateranensi, relato superà in cap. 3.

C Interdictum nostrum. Quae excusatio vera esset, si prohibitio haec vsurarum proueniret ab hoc Concilio Lateranensi, ex traditis in cap. ex laeris, de consil. Sed in praesenti casu omnino irrationabilis erat, cum praesens prohibitio sit totius naturalis, & diuini, ut probat superà in cap. 3.

d Augustini. Epist. 54. ad Macedonium: ex qua citant verba haec Carnotensis ppri. 13. Decreti, cap. 4. & part. 15. cap. 25. Gratianus in cap. 1. 24. quest. 6. Bonifacius VIII. in regul. peccatum, de R. l. lib. 6.

e Possessiones. Quorum dominum non ad soluendam vsuras spectat, sed ad vsurarium, quia res empta ex pecunia aliena, veluti Titij, non sit Titij, sed mea, in meoque domino manet, l. si ex ea pecunia 6. l. si ex propriis 8. Cod. de R. V. l. ex pecunia 12. Cod. de iure dot. l. final. Cod. de sermo pign. dato, l. 49. tit. 5. part. 5. notat in cap. inquirendum 4. de perul. cleric. Vnde nec bona vsurarij, etiam ex ipsis vsuris empta, sunt iacite hypothecata pro vsurarum restitutione, l. quomodo 17.

ius 17. *Cod. de pignor. probant* Couarr. *dist. cap. 3. num. 6.* Biosfeldius *in presenti, quest. 4.* Leothardus *de usur. quest. 97. num. 1. & 2.* Salas *cod. tract. dub. 41.* Gibalinus *cod. tract. lib. 1. cap. 10. art. 6. consil. 3.* Tapia 2. *tom. casena, lib. 5. quest. 17. art. 11.* Ratio est, quia racta hypotheca tantum contrahitur in casibus à iure expressis, l. 1. *ff. quibus modis pignus*. Vnde cum talis hypotheca ex iure naturali, civili, vel canonico colligatur, ideo non est ratio cur eam inducamus. Nec obstat quod Alexander in presenti iubet possessoris ex pecunia usuraria compatas vendi debere, nam non iubet Alexander eas possessiones à tertio possessore auferri, sed tantum vendi debere, ut cetera bona ab usurario acquirat; quia possessiones illæ non sunt magis obstrictæ restitutioni usurarum, quàm cetera usurarii bona: nam quilibet alius, ex cuius pecunia prædictum comparatum est, tantum habet actionem ad pecuniam repetendam, l. 1. & 8. *Cod. si quis aliter, vel sibi, l. 6. & 17. Cod. de pignor.* Prosequitur Accajo *in qq. moral. disp. 1. de statu civilis, quest. 7.*

COMMENTARIUM.

3. Pro huius textus expositione sciendum est, usuram implam esse contra Deum, iniquam contra proximum, & periculosam in seipsum; ideoque dare ad usuram pecuniam lethale est, ut probant D. Thomas 2. 2. q. 78. art. 1. omnes Theologi de usuris agentes, & constat ex l. 1. tit. 6. lib. 8. *Recopil. ibi: Es muy gran pecado.* Tum etiam quia ex iure diuino, & humano prohibitum est vltas exercere; quare hæreticum esse affirmare, vltas accipere peccatum non esse, ex Clementina vltica, §. *sanè, hoc tit. defendunt Nauarrus, & alij con-* gressi ab Azcondo *in dist. 1. 1. num. 47.* Vnde quemadmodum tenetur qui ablatum restituere ratione acceptationis iniuste, ut constat ex cap. si rei alienæ 14. *quest. 6. D. Augustino supra relato, D. Thoma. 2. 2. quest. 62. art. 1.* ita etiam tenetur usurarius ad eius restitutionem, quod per vltam extorçit, cap. preterea 7. cap. tua 9. cap. tuas 13. cum seq. *hoc tit. cap. quamquam, eod. tit. in 6. cap. ad nostram, et 1. de iocur. cap. 1. cum seq. 14. quest. 4. l. 1. tit. 5. parit. 6.* Hæsitari tamen solet, an dominium usurarium in accipientem transferatur? Et videtur in eum transferri, nam quæcumque conditio competit pro repetendis vltis, videlicet ob turpem causam, vel voluerant Berolius *in cap. 3. hoc tit. Syllæstet cumbo vltum 6. num. 1.* suæ conditio indebit, ut deducitur ex l. si non forent 26. *in princip. ff. de condit. indeb.* & docuit Couarr. *dist. lib. 3. cap. 3. num. 7.* supponimus domolium translatum fuisse in usurarium, quia conditiones competunt aduersus eum, qui dominium rei acquisiuit, l. dominum 53. *ff. de condit. indeb.* Vnde hæc sententiam tenebant Glossa verbo *Rapinam, in cap. si quis usuram 14. quest. 4.* Nazarr. *in manuali, cap. 17. num. 265.* Sotus, Henricus, & alij relati à Villagur. *de usur. quest. 25.* Sed contraria seorentia, videlicet dominium usuratum accipientem non acquirit, solidissimè probatur rationibus. Prima: quia vltus, fortum, vel rapina dicitur, cap. si quis usuram 14. *quest. 4.* rei autem fortituz dominium in futum non transmittitur, ut constat ex l. fin. *ff. de usufructu, quemadmodum, eadem.* ergo nec in usurarium vltus dominium transferitur. Secundò quia etiam in usuram solutione interuenit redditio, cum tamen non prouocatur ex iusta

D. D. Gmæd. in Decretal. Tom. V.

causa, sed potius ex turpi, & iniusta, talis traditio non est sufficiens ad transfundendum dominium, ex l. nunquam 31. *ff. de acquir. domin.* Vltius quia ex contractu nullo non transferretur dominium, ut ex l. non dubium, *Cod. de legibus, notant Bartolus, & Doctores.* Quare hæc sententiam tennitur pluribus relatis Binsfeld. *hic, Sotus lib. 6. de iniuria, quest. 1. art. 4.* Couarr. *lib. 3. par. cap. 3. num. 6.* Spino *in Specul. testem, gloss. 13. rubrica, num. 27.* Villagur. *de usur. quest. 25.* in quo Interpretum dissidio placuit sententia Bellæmez *in dist. cap. si quis usuram;* quam sequitur Didacus Petrus *in l. 3. tit. 19. lib. 8. ordin. pag. 363. col. 1.* videlicet ut attento iuris rigore, & inspecta iuria ciuilibus subleuare, prior sententia verior sit, posterior vero procedat attento iure naturali, & eius æquitate, quam eum sequatur ius canonicum, et eo eo atreuo dominium usuratum non acquiritur usurarium, & ita restitutionem eorum non in pecunia criminis, nec legis possitudo auctoritate statutam fuisse, sed à iure naturali præceptam, ex ipsiusque rei natura introducam; vnde etiam deducitur, ad eam restitutionem faciendam non esse necessariam iudicis declarationem, sed ante eam ipso iure fieri debere, ut constat ex presenti textu, ibi, *ipse iure.* Quia licet in penalibus expetitur iudicis declaratio, cap. cum secundum, *de hæreticis in 6. l. cum qui, ff. de iure fisci;* notari in cap. vergenti, *de hæretic. item cum hæc restitutio pro pecunia usurario non imponatur, statim, & absque vlla iudicis sententia, vel declaratione fieri debet.*

Nec tantum vltus sunt restituende, verum & fructus, & accessiones, si res fructifera pro vltu data sit, & omne id, quod interest maintainarij sibi vltas non fuisse ablatas, ratione damni ipsi inde emergentis, aut lucri cessantis, ut probant Gaspar Rodrigæz lib. 3. *de annui redditu, quest. 11. num. 14.* Molina *de iust. restit. disp. 327.* Salas *de usur. dub. 39. num. 3.* Binsfeld. *in presenti, quest. 2. conclus. 5.* Leothard. *de usur. quest. 96. num. 19.* nam fortiter ad id, quod interest ex rei fortituz surreptione, ex l. 3. *ff. de condit. fortituz, l. meritis, ff. de el. & vi armat.* sed vltus furti, & raptori comparatur: ergo tenetur etiam ad id, quod interest. Nec obstat si dicas, vltas repeti per conditionem indebitam, vel per conditionem ob turpem causam, ut supra dixi: sed in nostra ex his conditionibus veniunt vltas, ex l. 1. *Cod. de condit. indeb. l. quiesce 4. Cod. de condit. ob turp. l. ed. ff. eod. item nec in conditione fortituz repetuntur vaquam vltas, sed rei dumtaxat fructus, l. 8. ff. de condit. fortituz.* Igitur eum vltus non sit peccet sine, non debet tenci ad interesse. Nam respondeo, magnam versari discrimen inter vltas, & interesse; vltus enim non prouocant naturaliter ex ipsa pecunia, & numerorum corpore, nec sunt illius naturalis accessiones, l. si nauti, *ff. de R. V. l. 121. ff. de P. S.* interesse autem sequitur naturam, aut rei, aut detentiois eius; ideoque deberet ex æquitate naturalis, cum vltus nisi ex aliquo superaddito, pacto videlicet stipulatione, que lege non debeantur; quare in conditionibus, quæ sunt stricti iuris, vltus non veniunt; ut verò quanti interest, siue interesse, in omnibus, & ex quacumque causa debetur, l. 1. *Cod. de fementis, qua pro eo, subus prosequitur Gibalinus lib. 1. de usur. cap. 10. art. 3. per*

5.

Hæc autem obligatio restituendi vltimas limitatus in presenti, si vltimarius ad inopiam peruenit. Faciunt textus in *cap. querelam* 10. *cap. breui* 17. *de iuricor.* l. nam hic 6. ff. *de dolo*. Ratio est, quia nemo ad moraliter impossibile obligatur, nec tenetur ad id, quod proprias vires excedit, vt ex D. Thom. 2. 2. *quæst.* 62. *art.* ult. tradit Couarr. in *regula peccatorum*, in *princip.* num. 2. Si ergo in facultatibus habeat vltimarius vnde restituat, debet restituere, si creditor certus sit, si verò incertus sit, debet restituere, pauperibus pro anima ipsius creditoris, vt in presenti probatur, & in *cap. quia plerique*, de immuni, *Eccles.* *cap. si dignum* 6. §. 1. *de homicid.* *cap. nemo* 14. *quæst.* 5. l. 2. *tit.* 15. *per tit.* 6. *Tapia* tom. 2. lib. 3. *quæst.* 30. *art.* 3. Ita tamen, vt quando inueniatur creditor, vel eius hæres, vlturæ pauperibus non sunt restituendæ: quare si absente sit creditor, saltem sumptibus eius ad eum vlturæ sunt transmittendæ, argumento legis *opere*, ff. *de oper. liberi*. docuerunt Lælius Maucio. *sacris liris controu.* *disput.* 31. *per tot.* Petrus Greg. lib. 3. *parit.* *tit.* 5. *cap.* 6. Quæri tamen solet, an hæc restitutio vlturæ pauperibus faciendâ libera sit, ita vt Episcopi dispensationem non exigeret. Et non esse necessariam Episcopi auctoritatem, immo potius vlturarium per se, vel per alium a se deputatum restituere vlturas debere, defendunt Felisius in *cap. cum sit*, num. 4. de iudiciis, Nauar-

rus in *manuali*, *cap.* 17. num. 81. D. Thomas 2. 2. *quæst.* 62. *art.* 5. Sotus de iustit. lib. 4. *quæst.* 7. Couarr. in *cap.* 3. de *testam.* num. 3. Matienzo in l. 4. *glos.* 1. num. 6. *tit.* 4. lib. 9. *recopil.* Nec contrarium probatur io hoc textu, quatenus in eo docetur, vlturarium ab Episcopo cogendum esse vt restituat domino, vel hæredibus, in eorumque defectu pauperibus: nam Episcopi officium io presentis casu solum consistit io compellendo vlturarium, vt restituat, non tamen io restitutione ipsâ faciendâ. Nec etiam obicit textus in *cap.* 3. *cap. mo nobis* 17. *cap. Iuannes*, de *testam.* vbi probatur in distributione faciendâ ab executoris testamenti debere intervenire auctoritatem Episcopi & quibus iuribus moti contrarius sententiam teneant Hostiensis & Anania in *presenti*, Couarr. & Matienzo *ibi supra*; nam debent intelligi datâ restituentis, vel ipsius testamentarii, aut hæredis negligentis, vel similiter in casu legis nullo, *Cod. de Episcop.* *et clericis*, vbi desideratur Episcopi auctoritas in distributione bonis defuncti, quia defunctus peregrinus erat, & sine hærede defunctus: & etiam in *cap. cum sit*, de *Iudic.*, desideratur Episcopi auctoritas in restitutione faciendâ Christianis, quia Iudeus qui facere eam debbat, suspectus reprobatur. Quæ omnia cum celsus in vlturario restitueret vlturas pauperibus, ideo in ea faciendâ omnino desideratur Episcopi auctoritas.

CAPVT VI.

Idem Idanensis Archiepiscopo.

IN civitate tua dicis sæpe contingere, quod quidam piper, seu cinnamomum, aut alias merces comparant, quæ tunc ultra quinque librâs non valebant, & promittunt per publicum instrumentum se eis, à quibus illas merces accipiunt, sex libras statuto termino soluturos. Licet autem contractus huiusmodi ex forma non possit censeri nomine vlturarium, nihilominus tamen venditores peccatum incurrun, nisi dubium sit, merces illas plus minusve tempore, quo pretium debent recipere, valituras: & ideo ciues tui saluti suæ bene consulere, si à tali contractu cessarent, cum cogitationes hominum omnipotenti Deo nequeant occultari.

NOTÆ.

^a Idanensis. Ita etiam legitur post Concilium Lateran. *part.* 16. *cap.* 2. & in 1. *collect.* sub hoc *tit.* *cap.* 7. vbi additur *pars capituli fraternitas tua*. Vnde cognoscitur in presenti refecti partem textus in *cap.* 7. de *transmissio* dicitur.

^b Civitate. Quæ Ianuensis civitas mater est mercatorum, vt probatur in *cap.* *per castros*, de *donat. inter.*

COMMENTARIUM.

CONCILIUM
LATIO
TRADITIONE
PROBATA
VUL.

EX presenti textu sequens communiter deducitur assertio: *Vendens rem plus quam vales ob dilationem solutionis, peccat, nisi dubium sit an tempore solutionis pretium augeri possit, & venditor antea venditurus non esset.* Quam conclusionem probant textus in *cap. consilium* 10. *vers.* etiam, *cap. final.* hoc *tit.* *cap.* ad *negotium*, de *empti.* & *vend.* *cap.* *illo* *ver.* de *pignor.* Concil. Mediolan. sub *Carolo* *part.* 2. *tit.* ult. Illustant ultra congestos in presenti à Barthol. Biosfeldius, & Canisius in *presenti*, Arango in *qq. moral. disput.* 1. de *sum. ci-*

lli, *quæst.* 6. Fachinus lib. 2. *controu.* *cap.* 33. Galpar Rodriguez de *annis reddit.* lib. 3. *quæst.* 7. *num.* 72. Molino de *iustitia* *tratt.* 2. *disput.* 355. Leo- thardus de *vltur.* *quæst.* 24. *per tot.* Canisius *cod. tratt.* *cap.* 3. Salas *cod. tratt.* *lib.* 41. Cyriacus *controu.* 169. Lælius Zacheus de *vltur.* *cap.* 12. num. 8. Lessus de *iustit.* lib. 2. *cap.* 21. num. 51. Petrus Gregor. lib. 3. *parit.* *tit.* 5. *cap.* 4. *Tapia* tom. 2. lib. 3. *quæst.* 17. *art.* 12.

Secundo dubitandi ratione in presentem assertionem ita insurgo. Qui vendit rem citius ob dilatam solutionem, non violat iustitiam commutariam, idcirco nec vendit carius iusto pretio, nec amplius quam iustam suæ rei estimationem recipit: ergo non peccat. Antecedens probatur, quia in tali venditione inter concitentem, & vendentem feruatur æqualitas iustitiæ commutariæ, quæ possulat, vt sicut emptor fecit vtilitatem & commodum, re empti statim tradit; sic etiam venditor, cum ex tali dilacione solutionis pretij incommodum petatur, aliquid aliud in huiusmodi compensacionem accipit: nam quemadmodum qui ante diem suum, plus solvere dicitur; ita similes mi-

2.
IUSTITIA
TRA
GITA
MATIO.

nōs folioit qui tādē folioit, *l. folidum* § 5. ff. de fo-
b. licet 12. v. s. minis ff. de V. S. Vnde propter
dilatam solutionem habita ratione interduci tem-
poris, vltas debeti, recipique conitat ex
i. curans 5. Cod. de nōtione mpti, *l. solutus* 4. §. ven-
didi, ff. ad leg. Ordo licet ciuitas vendere ob loca-
tionis dilatiōem. Accedit, nam qui legis auctori-
tate aliquid facit, potius non meretur, nec pec-
cat, *l. Gracibus*, Cod. ad leg. Iul. de adul. *l. sine* 11 ff.
de acquir. poss. ff. sed legis auctoritate conceditur,
quod tanti estimetur res, quanti vendi possit,
l. querebatur 81. ff. ad leg. Falci. ibi: *Quanti nomen
dignitas pretii* 1. et *l. si si huerit*, ff. ad Trevel. de quo
plus est, naturaliter licet contrahendus ad ino-
per se decipere *l. in causa*, *l. 2. l. in ordine* 17.
v. s. Idem Pomponius, ff. de minor. litem si pre-
tio 25. final. §. item. Igitur ex istius permisso-
ne recte potest venditor ob dilatam solutionem tem-
pori vendere.

Quā dubitanti tatione nō obſtante, vera eſt præſens aſſertio, pro cuius expoſitione ſciendum eſt, quoddam eſſe mutuum formale expreſſum, vel clarum, tam ſecundū formam, vel figuram contractus, & intentionem contractantis, quā ſecundū iuris regulas, & eius declarationes: in quo mutuo agitur in ſū. *D. & Cod. de rebus credit.* Aliud verò mutuum eſt occultum, palliatum, præſumptivum, quando in verbis, & exteriori figura contractus oſtendunt contractantes celebrare venditionem, vel locationem, ſed in rei veritate attentata latet occultum, & palliatum, vel virtuale mutuum, quod ita iuris interpretatione, rei veritate attendit, & neglecta ſimulatione, mutuum creditur ex *l. 3. & 38. ff. de O. & A. l. & per totum Cod. plus valere quod agitur: in quo palliatum, vel præſumptum maxime ſpecie agitur in cap. ult. vbi de pignoris, cap. ad noſtram, de empt. & vendit. cap. conſultus, cap. nauiganti, &c. in ſū. & in præſenti textu, ubi mutuum facile deducitur ex intentione venditoris, qui tō quod iuſti pretij ſoluitionem differre, ereditur, & præſentem iuſtum pretium, tanquam de præſenti tempore contractus, ementi mutare viſque ad diem, vel terminum dilatare ſoluitionis, vbi accipiat aliquod locum, videlicet ſuperſtrefcentem quantitatē ultra iuſtum pretium: in qua acceptione vſuram palliatam in hoc palliatum mutuo agnouerunt *D. Thom. 2. 2. quæſt. 78. m. 2. & 7.* Molina, Salas, & alij, quos referre, & ſequitur Leothardus *dile. quæſt. 2. per totum.* Vnde illa verba præſentia textus, *nā poſſunt conſeri nomine vſurærum*, intelligenda eſſe de vſura vera, & formali, non verò de vſura palliata, quæ prouenit ex mutuo præſumpto, ipſi docent.*

Deinde sciendum est pro expositione secundæ partis huius conclusionis, quæ docet propter pretij inæquitatem, & diluuium euntem, crescentem rem carius, ab solutionis dilationem sciendum inquam, et pretij incrementum, vel rem venditum diuina modo considerari posse. Primo secundum hæc id est sciendum verum, & infallibilem valorem, neglegi, vel remota industria contrahentium, & variare, vel mutatione temporis non astringi. Secundo modo pretium tunc estimatur habet consideratione indultus parium contrahendum, vel negotiantium, & mutariis, vel variatis temporum, & virtutis, vel sterilitatis. Pretium primo modo acceptum dicitur ab Interpretibus legitimum, vel iustum, vel potest lege iusta taxatum, & in eo pretio res non valere magis in futuro creditas, quam de præ-

sentis valent, & æstimantur, certissimum est: hoc enim habito respectu ad pretium legitimum, perpetua, vel in perpetuum una, & eadem rerum æstimatio est, iuxta legem 1. ff. de contrabend. empt. ibi: Cuius publica, & perpetua æstimatio probatur in cap. 3. de empt. & vendit. hoc cum pretium consistit in indivisibili, & in eo pretio lege iussit taxatio nullus dari potest excessus rationis temporis, vel cuiuslibet alterius respectus, vel circumstantiæ; sed omni tempore vnum, & idem pretium est, ut resoluunt Sorus de iusticia lib. 6. quæst. 1. art. 3. Molina de iust. tem. 2. diffus. 347. Lellius lib. 2. de iusticia, cap. 21. dubi. 2. Morla in imper. tit. 9. quæst. 6. num. 4. Nec contentum probant textus in l. 4. r. 1. in quantitate 73. §. in diem, & 6. magna d. iusticia §. ad leg. Falsid. l. si mandauero 2. §. 6. ff. mandati: ubi docetur ratione, vel respectu temporis res plura, minorique æstimari. Nam accipiendi sunt de pretio secundo modo accepto, quod ab Interpretibus dicitur naturale, cum scilicet ad rei, quæ venditur, valorem æstimandum habetatio, & respectus ad varias circumstantias varietatis temporum, indultitæ negotiationum, diversitatis locorum, vbetatis, vel sterilitatis: propter quæ omnes circumstantiæ, vel respectus pretium hoc naturale crescit, vel decrescit, l. pretia 63. §. final. ff. ad leg. Falsid. cum similib. Fuit etiam, ob quæ pretium hoc appetat, vel minuat, profectumque Pinel. in l. 2. C. de re vind. 3. part. cap. 20. Molin. diff. diffus. 348. Lellius de iust. lib. 3. cap. 1. dub. 2.

3.
DE MY-
TYO P. 2. 6-
S. 1. 1. 1.

4.
DE RITO
ET SUPRE-
MO PATR-
TIO RES
VIRIDIS-
IA.

5.
EXPLO-
TIVE PER-
SONS TAK-
ING

men ad preſens conſtituerit; conſequens eſt, iniuſtum, & iniquum mercedem cenſeri citius ad credendum quam de preſenti vendere, cum res vnius, & euſdem eſſentia, & valoris vno & altero tempore conſideretur, niſi, vt iam diximus, concurrentibus, & expenſis diſcis duabus circumſtantias, vtriuſque dicemus. Hoc autem, quod affirmamus, licere ex diſcis duabus circumſtantias rem carius vendere ob dilatam ſolutionem, non in ipſum ſum accepiendum eſt, ſed vt vendens poſſit recipere quorundam iuſti preij rigoroſi, vel ſuperius; non vero ad liberum, vt reſoluit Molina *diſt. diſp. 355. Leſſius diſt. lib. 2. de iuſt. cap. 27. dub. 6.* Amplius etiam preſens doctrina, vt ex eadem ratione procedat reſpectu emptoris, qui propter anticipatam ſolutionem emit rem viliori pretio; in eo ſiquidem caſu ſimiliter conſideratur virtuale, vel preſumptum mutuum, & ſerè magis expreſſum in emptore, quam venditore; qui eodem ita emit, & anticipatè ſoluit, mutuum creditur vſque in diem, quo res vendita eſt tradenda; vnde ex euſdem regula, quod venditori licet, emptori etiam concedendum eſt: quocirca quod in vno correlatiuorum ſtatuitur, ad alterum trahitur, vt notant communiter Doctores in l. final. C. de indiſſa. reditu. Quotiens igitur incertum eſt res, que anticipatè ſolutione emuntur, plus, vel minus valituras eſſe tempore traditionis, ceſſat vſura, & ſoluiſſa conſtat, dummodo pretium non ſit inſumum omnino, i. deſt minus iuſto pretio iſſimo; ita etenim in emente, & vendente declaranda eſt communis hæc ſententia, quam ad varios caſus in praxi obuiosa exponunt Leoſardus *diſt. quaſt. 24. per tot.* Ataujo *diſt. quaſt. 6. diſp. 1. & Barb. 6. ſum. in ſeſſeſt. ad hunc textum.*

6.

TRAD.
VTR DE
GIURDI
RATIO.

Vnde iam apparet vera ratio præſentis aſſertionis; nam licet hæc caſu, cum carida res venditur ob dilatam ſolutionem, ex forma, & figura talia contractus nullum focus contrahi videatur; quid enim commune habet venditio mercium cum illiſſimo ſenote? tamen quia non figura verborum inſpicienda eſt, ſed contractus, & obligationis ſubſtantia, & id quod verè geſtum eſt, l. 3. in princip. l. 38. ff. de O. & A. l. 1. per tot. Cod. plus valere quod agitur; inde cum certum ſit in hoc negotio ſeruus occultari, & contrahi, atque ex tali mutuo palliato vſure palliato procedunt, ideo in præ-

ſenti improbantur, tanquam ſi ex veto mutuo vſure perciperentur: & cum hæc præſumptio ſenoris vſurarij ceſſet quando dubium eſt pretium rei vendite in futurum, & venditor tempore contractus non eſt venditurus; ideo licet tunc carida rem vendere abſque eo, quod in tali venditione crimen vſurarium liſpiciat.

Nec obſtat dubitandi ratio ſuprà adducta, nam præſena aſſertio procedit quocirca ex ſolo tempore tradite ſolutionis malus pactum conſtituitur; ceterum ſi ratione lucri ceſſantis, vel damni emergentis augmento rei pretium vſque ad ſummam, que intereſt, vſura non committitur, quia hoc caſu licitum eſt aliquid exigere ſuprà luſtum rei pretium ratione eius, quod intereſt: vt enim in aperto mutuo hoc licet, ita & in hoc palliato permittitur, vt probat Molina *diſt. diſp. 355. ſum. 4.* Salas de emption. dub. 41. num. 4. Gaſpar Rodriguez de annua reddit. lib. 3. quaſt. 7. num. 34. Proinde ſi quis rem fructificam vendat, vt ſerè ſunt res immobiliſ; & ſide de preſerto habitū rem tradat, poſteſt pro modo, & portione fruſtum, quas vſque ad tempus cedentia ſolutionis percipiſſet, rei pretium augere, nec committit vſuram, vt docent Couarr. *diſt. lib. 2. cap. 3. num. 7.* Guierrez de iur. an. cap. 2. num. 6. Scaſcia de commerciis, §. 7. quaſt. 7. amplius. 8. nec etiam venditor tenetur rem ſine preſto dimittere, *Lex impia, ff. de aſſenſu impii, l. quod vendidi, ff. de contrahend. emptioni. l. 31. & idem Alarcel. ff. de adila. edict.* Immo licet eſt conſuetudo inira l. principio contractus de certo intereſſe præſtando ob dilatam ſolutionem, ita vt emptor ſe obliget ad ſoluendum venditori quinq; vel ſeptem pro centum; dum integrè pretium non ſoluerit, dummodo hoc intereſſe taxatum ſit veriſſimè, & probabile, conſuequenter iuxta morem regionis, in qua celebratur contractus, vt probat pluſibus Cathol. *ſem. 2. de iudiciis, tit. 3. diſp. 8. ſcil. 5. per tot.* Nec obſtat quod dicuntur, nauaraliter licere contrahentibus ad inuicem ſe decipere; nam hoc procedit, vt dixi in cap. 3. de emption. & venditi, dum intra metas, & leges ipſius contractus decipio contingat, non verò ubi verba celebratur vnius contractus, & alius ſimulatur, vt in præſenti contingit; cum vero dictio extrinſeca ſimulatur, & verè mortuum celebratur, preſto ob dilatam ſolutionem audit.

7.

DISSOL-
VTRA
DE VſURA
DE RATIO.

CAPVT VII.

* Idem. *

PRæterea parochianis veſtris vſuram accipere omnimodis interdicitur, quia vſurarium crimen vtriuſque Teſtamenti paginà deteſtatur. Quod ſi monitis veſtris parere contempſerint, ſi clerici ſunt, eos ab officio & beneficio ſuſpenſos, cum literis rei veritatem continenſibus ad præſentiam noſtram mittere non differatis: ſi laici fuerint, vſque ad dignam ſatisfactionem ipſos excommunicationis vinculo conſtringatis.

NOTÆ

1. a Idem.] Itæ etiam legitur in prima collectio-
ne, ſub hoc tit. cap. 9. ubi additur *pari capitis*
Licet vniuerſis; vnde colligitur in præſenti reſerui
partem textus in cap. licet, 23. de teſt. Integra eius
textus extat in Concil. Lateran. part. 20. cap. 2.

COMMENTARIUM.

Gravitate huius criminis, necnon penas
contra vſurarios ſtatuta in Concilio Lare-
tan. retuli in cap. 3. hoc tit. quare in præſenti mandam
agendum eſt de aliis penis ſtatutis contra ipſos,
tam iure canonico, quam civili, necnon & regio:
& iam primis ſeculis Eccleſiæ ſeveriſſimis penis
hoc

2.

hoc crimen castigauit, tam in clericos, quam in laicos; siquidem Apostoli canone 44. Clerici ministros vsuris deditos deponi, & abdicari iusserunt: quam abdicationem ad omnes clericos protulerunt Patres Concilij Nicenij 1. can. 17 cui abdicationi abstinentiam à communione, seu priuationem communionis Ecclesie adiunxerunt in Concilio Atelati. 1. can. 12. Atelati. 2. can. 14. & gradus ecclesiastici priuationem determinauerunt Concilium Illiberit. can. 10. Tarracon. can. 10. Autel. 3. can. 16. Tral. can. 10. quorum verba refert Ant. Aug. in *epit. mor. lib. 35. tit. 6.* nec possunt vsurarij ad sacros ordines ascendere, nec officia ecclesiastica obtinere, *capitulum dilectos, de excessib. Prelat. Salcedo in praxi, cap. 91. Barb. de presb. Episc. leg. 43. num. 3.* Petrus Greg. lib. 3. de vsur. cap. 1. num. 3. & si tam clerici hi ordinibus iniuncti, aut ad beneficia promoti reperiuntur, tam ab officio, quam à beneficio suspendantur, ex presentis textu; & si sic monui pergant in hoc facere exercebdo, ab officio, & beneficio deiciuntur, *cap. 1. & 2. 47. dist. cap. si quis cap. quoniam 14. quast. 3. cap. 1. hoc tit.* Quem textum cum presentis ita conciliat Pragofo de regimine part. 1. lib. 2. dist. 4 §. 11. Laici autem excommunicantur, & nisi carissimè, ad penitentiam non admittuntur, *cap. final. §. final. hoc tit. in 6.* & si ita indurati decedant, sepelitur ecclesiastica priuantur, *cap. 3. hoc tit. cap. quoniam, eod. tit. in 6. Clementina 1. eod. tit. Petrus Greg. lib. 35. dist. cap. 13. num. 11.* testamenta ab eis condita nulla sunt, ut dicemus in §. 1. in cap. iura. Iure etiam ciuili vsurarij puniuntur poenà infamiz, ex constitutione Diocletiani, & Maximiani in *improbis 1. 2.*

Cod. ex quibus causis infam. lib. 1. Improbis famus excentibus, & vsuras vsurarum exigentibus, infamia macula irroganda est. Quà in poena imitatus sunt Imperator Augustus, qui quosdam vsurarios in famia notauit, vi refert Suetonius in *ea, & ex ipso Petrus Hierodius lib. 3. rerum indic. tit. 1. cap. 4.* eandem poenam approbatur Innoc. II. in Synodo Romana, can. 13. & Innocentius III. in *cap. inter, de excess. Prelat.* Unde eo iure asserito tepellunt vsurarij à dignitatibus, *ex l. 1. & 6. Cod. de dignitat. lib. 12. interstabilis redduntur, ex l. 3. & 5. ff. de testib. Docuerunt Farinac. de testibus quast. 36. n. 33. Salmasius de famore inapet. lib. 2. Etiam extra ordinem puniuntur, l. 1. §. capitaliores, ff. de effractionibus: docent Casit. de vsur. cap. 8. Leostardus eod. tract. quast. 100. quo iure antiquos Romanos vsos fuisse constat ex Liuii lib. 10. ubi refert Ædiles Censuales quibusdam facinorosis diem diuile, & bonis maluisse, & ex illis viam quandam quadralo lapide staulisse: ex Canone & Sigonio refert Herodius lib. 4. Pandect. tit. 10. cap. 1. Tandem iure nostro Regio vsurarius pro prima vice pecuniam mutuo datam sub vsuris amittit, quæ cedit Inero debitoris; & insuper similem quantitatem solvere tenetur, quarum duæ pagæ sileo, tertia pars oculari applicatur: pro secunda vice perdit dimidiam bonorum partem applicandam pro eisdem dictis pagibus: pro tertia verò vice primatur omnibus bonis eodem modo applicandis, & diluendis, l. 1. & 14. tit. 2. lib. 8. ord. l. 4. & 5. tit. 6. lib. 8. Recopil. explicans Comar. lib. 1. var. cap. 3. num. 2. Auendaño de exeg. mandata. part. cap. 19. D. Ioan. Vela de delict. cap. final. num. 12.*

CAPVT VIII.

Idem Abbati, & fratrib. ^a S. Laurentij.

CONQUESTUS EST nobis G. clericus presentium lator, quod licet de quadam terra, quam pater suus vobis obligauit, sortem vestram, dedudis expensis, receperitis terram tamen ipsam non sine derogatione vestre salutis, honestatis, & famæ, nihilominus detineatis. Inde est quod discretionij vestre p. A. f. p. m. quat. si terram ipsam titulo pignoris detineatis, & ex fructibus eius sortem vestram receperitis, prædictam terram memorato clerico, dilatione, & ap. cess. reddatis, & in pace, & quiete dimitratis, nisi forte tertia ipsa de feudo sit monasterij vestri.

NOTÆ.

^a *Antli Laurentij.* Ita etiam legitur in prima collectione, sub hoc tituli. cap. 10. nullibi 12.

men expiuntur cuius ordinis esset monasterium hoc, aut in qua prouincia casus hic contigerit. Textum hunc exposui in cap. 1. de feud. & in cap. si non contra, de pignori.

CAPVT IX.

Alexand. III. Episcopo ^a Placentino.

TVA nos doxit fraternitas consulendos, quid sit de vsurariorum filiis obseruandum, qui ei in crimine vsurarum defunctis succedunt: aut de extraneis, ad quos bona vsurarum asseris ^a de nolyta. Tux igitur questionij literis presentibus respondemus, quod filij ad restituendas vsuras ea sunt distictione cogendi, quæ parentes, si viuerent, coquerentur: id ipsum etiam contra hæredes ^a extraneos credimus exercendum.

NOTÆ.

NOTÆ.

1. ^a **Placentina.**] Ita etiam legitur in prima collectione, *sub hoc tit. cap. 1.* Placentia inter nobiles, vetustatque Insuſubrie olim Toguræ, modo Cispadane civitatis meritis numeratur, sua prope fluvium Trebiam, in smegna pluvie, non longè à Pado: Ideo Placentia dicta, quod ibereatur, & copia rerum, quâ nobilitatur præ cæteris, quæmaximè placere mortaliſibus, ut reſert eius originem repetens Vghel. *rom. 2. Ital. ſacre, fol. 244.* lam à primis Eccleſie ſecula Cathedrâ Episcopali decorata fuit, cuius Præſuli Manricio dicto miſſa eſt præ ſens Decretaliſ.
2. ^b **Deuoluta.**] Sed teſtamentum vſurarij, niſi vſuras reſtituat, aut de illis teſtituendis ſufficienter caſerit, ipſo iure irritum eſt, etſi inter liberos, vel præ cauſe conditum ſit, *cap. quæquam, hoc tit. in 6.* Menchaca lib. 1. *de ſucceſſ. creu. §. 1. num. 179.* Lugo *de inſt. diſp. 35. num. 70.* Molina *cod. tradit. diſpoſ. 334. num. 17.* Gibalin. lib. 1. *de vſur. cap. 1. art. 1. num. 6.* Ergo non poterant bona vſurarij in præſenti caſu deuolui, aut peruenire ad hæredes extraneos. Pro cuius diſcuſſionis ſolutione Oſuald. lib. 6. *Dund. cap. 3. diſt. 8.* aſſerit in præſenti bona delata fuiſſe ab inſtituto conſanguineis, quos appellat Pontifex hæredes extraneos, ad ſuorum diſſentiam. Sed verius dicendum eſt, prædictam pecuniæ priuationis teſtamenti ſactionis aduocari eſſe iuſti noſi à Bonifacio VIII. ſtatutum. Vnde cum iure Decretalium talis pena ſtatuta non eſſet, idem teſtamentum in præſenti caſu ſuſtineri poterit.
3. ^c **Hæredes extranei.**] Conſonant textus in *cap. tua nos, cap. Michoel, hoc tit.* ſed obſtat vulgata principium, quo docetur, hæredem ex delicto de-

functi nullo modo teneri, niſi quatenus ad eum ex delicto peruenit, vel ſi ius eum deſuncto conſtituta eſt, *Lyonic. Cod. ex delict. deſuncti. l. 1. §. de priuati. delicti §. 12. item ſanen. Inſtit. de perper. & rempor.* Cui diſſicultati reſpondendum eſt, principium illud procedere quæmodo agitur contra hæredem actione ex delicto deſcendente, ad pecuniæ: quia cum perſonam delinquentis pena egredi non debeat, *l. ſancimus 12. Cod. de penis:* hæres tali ratione non teneretur, niſi quatenus ad eum peruenit, non ſutem idem procedit in obligationibus, quæ deſcendunt ex contractu, vel quaſi contractu deſuncti, illæ enim etiam in hæredes tranſeunt, *Lex de poſſi 11. §. de O. & A.* quæuis tales obligationes cum delictis miſceantur, *Lex contrahitum, ff. cod. tit.* Menchaca *lllustr. cap. 96. num. 27.* Caniſius *de vſur. cap. 7. num. 4.* Vnde cum vſurarius teneatur ad reſtituendas vſuras conditione indebiti, *l. ſi non fortem 26. ff. de cond. indeb. & hæc conditio ex quaſi contractu deſcendat, §. item si, Inſtit. de legat. quæ ex quaſi contractu, l. 1. §. 1. ſi in æra 33. §. de cond. indeb.* neceſſariò hæres reſtituere teneatur eas. Accedit, nſm reſtitutio vſuratum non ſit ratione pecniæ à iure ſtatuta, ſed eius obligatio à natura ipſa prouenit, ut probauimus ſuprà in *cap. 1.* & ideo hæredes teneantur reſtituere ipſas vſuras. Si autem plures ſint, non teneantur ſinguli niſi pro rata portione hæreditatis, non autem in ſolidum, etiamſi aliqui hæredes nolint reſtituere. *Cõuſ. lib. 3. var. cap. 3. num. 6.* Rebelus 2. *part. de inſt. lib. 8. cap. 16. ſect. 2.* qui rectè docent, cum ad quæ de bonis deſuncti nihil ſubueniſſet, non teneſi ad reſtitutionem. Quatenus autem hæredes teneantur exonerare conſcientiam deſuncti, expoſui in *cap. parochiano, de parochiis.*

CAPVT X.

Vrbani III. ^a *Brixien. preſbytero*

Conſuluit nos deuotio tua, in quo ſacerdotalis officiij ſolicitudinem commendamus, an ille in iudicio animarum quaſi vſurarius debeat iudicari, qui non aliàs mutuò traditurus, eo propoſito mutuam pecuniæ credit, velicet omni conuentione ceſſante, pluſtamen ſorte recipiat: & utrum eodem reatu criminis inuoluatur, qui ut vulgò dicitur, non aliàs parabolam iuramenti concedit, donec, quæuis ſine exactione, emolumentum aliquod inde percipiat. Item & an negotiator penam non abſimili debeat condemnari, qui merces ſuas longè maiori pretio diſtribuit, ſi ad ſolutionem faciendam prolixæ temporis dilatio prorogetur, quàm ſi ei inconuenienti pretium perſoluatur. Verùm quia quid in hiſ caſibus tenendum ſit, ex Eſyangelio Lucæ manifeſtè cognoſcitur, in quo dicitur: Date mutuum, nihil inde ſperantes; huiusmodi homines pro intentione lucri, quam habent, cum omnib vſura & ſuperabundantiæ prohibeatur in lege, iudicandi ſunt malè agere, & ad ea, quæ taliter accepta ſunt reſtituenda, in animarum iudicio efficaciter inducendi.

NOTÆ.

- ^a **Brixienſi.**] Ita legitur in prima collectione, *ſub hoc tit. cap. 12.* De Brixienſi diœceſi egi in *cap. tua, de procurat.*

^b **An negotiator.**] Præſentem textus partem expoſui ſuprà in *cap. in ciuitate.*

^c **Reſtituenda.**] Iuxta tradita in *cap. ſinal. de ſi. mon.* ubi textum huic expoſui.

CAPVT XI.

Innocent. III. *a Archiepiscopis, & aliis Ecclesiarum Prelatis in Regno Francia constitutis.*

QVAM perniciosum sit vitium vsurarum, discretionem vestram non credimus ignorare, cum præter constitutiones canonicas, quæ in earum odium emanarunt, per Prophetam datur intelligi, eos, qui suam dant pecuniam ad vsuram, à tabernaculo Domini ^b repellendos: & tam in ^c nouo, quam in veteri Testamento prohibere sint vsuræ, cum ^d Veritas ipsa præcipiat: Mutuum dare nihil inde sperantes: & per Prophetam dicatur: Vsuram, & omnem superabundantiam non accipies. Inde est, quod vniuersitati vestræ per Apostolica scripta mandamus, quatenus ^e manifestos vsurarios, eos maximè, quos vsuris publicè renunciassè consueverit, cum aliquis eos conuenit de vsuris, nullius permittatis appellationis ^f subterfugio se tueri. Datum Later. v. Kal. Nouemb.

NOTÆ

1:

^a *Archiepiscopi.*] Ita etiam legitur ^{io} tertis collectioe, *sub hoc tit. cap. 1.* & in ipsis epistolis Innocentij editis à Sirleto, *fol. 198* ex quo regresso restituo litteram huius textus.

^b *Repellendos.*] *Psälmo 14.*

^c *Nouo, quàm in veteri.*] *Vt probatur in cap. 3. hoc tit.*

^d *Veritas ipsa.*] Dominus ooster apud Lucam *cap. 6.*

^e *Manifestos.*] Quinam dicantur manifesti vsurarij, exclusi *in cap. 3. hoc titulo.*

^f *Subterfugio.*] Quod procedit in appellatione interposita ab vsurario, dumtaxat ad vitandam sententiæ executionem; quia tales appellationes frustratoriz, seu ludificationis relicturi, nam si appellatio iustam causam haberet, quæ exciperet reus, nullas se ab eo, qui petit, vsuras exegisse; & eum satis probatum non fuisse ab adeste, nihilominus damnatus fuit, aut quid simile opponat; appellationis remedium non est denegandum. Vnde rectè notauit Binsfeldus *in præfati*, in hac parte nihil speciale cautum fuisse circa vsurarium Quod & docuit Gibalinus *lib. 1. de vsur. cap. 11. not. 3.*

2:

CAPVT XII.

Idem ^a *Narbonensi Archiepiscopo & suffraganeis eius: Abbat. quoque, Prioribus, & aliis Eccles. Prelat. Comitibus etiam, & Baron. & vniuerso populo in Narbonensi prouincia constitutis.*

POst miserabile Hierosol. regionis excidium, post lachrymabilem stragem populj Christiani, post deplorandam inuasionem illius terræ, in qua pedes Christi steterunt; & vbi Deus Rex noster ante sæcula salutem in medio terræ dignatus est operari; post ignominiosam nobis vniuersæ Cræis translationem, in qua salus mundi pendit, & delent chirographum mortis antiquæ; Apostolica Sedes super tante calamitatis infortunio contrubata laborauit clamans, & plorans. Itaque præ incessant clamore rancæ factæ sunt fauces eius, & ex vehementi ploratu plene ipsius oculi defecerunt. Verùm ne si secundum Prophetam Hierusalem obliui fuerimus, obliuiscatur nos dextera nostra, adhæreat lingua nostra faucibus nostris; si non M. eius clamar, adhuc Ap. Sedes quasi tuba vocem exaltat, excitare cupiens populos Christianos ad prælium Christi bellandum, & vindicandam iniuriam Crucifixi, vsa ipsius verbo dicentis: O vos omnes qui transitis per viam, attendite, & videte si est dolor similis sicut dolor meus. Ecce enim hæreditas nostra versa est ad alienos, domus nostræ ad extraneos deuenerunt, vix Sion lugent, eo quod non sint qui veniant ad solennitatem, facti sunt inimici eius in capite; sepulchrum Domini, quod Propheeta gloriosum fore prædixit, prophāatum ab impijs, inglorium est effectum. Gloria nostra, de qua dicit Apostolus: Mihi sunt a. g. n. m. e. d. n. i. x. sub manu tenetur hostili, & ipse Dominus Iesus Christus, qui captiuitatem nostram pro nobis moriens captiuaui, quasi captiuatus ab impijs, ab hæreditate sua cogitur exulare. Existente quondam in Castris Acham Domini sabaoth, Vrias domum suam ingredi recusauit, à lieito etiam vxoris se compescens amplexu. Nunc verò Principes nostri, gloria Israel

de

de loco suo in ininriam nostri translatâ, vacante adulterinis amplexibus, deliciis, & diuitiis abeuntes, & dum se inuicem inexorabili odio persequuntur, dum vnus in alium suas nititur iniurias vindicare, non est quem moueat iniuria Crucifixi: non attendentibus ipsis, quia iam insultant nobis inimici nostri dicentes: Vbi est Deus vester? qui nec se potest, nec vos de nostris manibus liberare. Ecce iam prophetauimus sancta vestra: ecce iam ad desiderabilia nostra manum extendimus, & ea loca impetu primo violententer inuasimus, & vobis tenemus inuictis, in quibus superstitionem vestram principium fingitis suscepisse: iam infirmauimus, & confregimus hastas Gallorum, Anglorum conatus elisimus, Teutonicorum vires compressimus, nunc secundo Hispanos domuimus: & cum omnes virtutes vestras in nos duxeritis concitandas, vix adhuc in aliquo profecistis: vbi ergo est Deus vester? Exurgat nunc, & adiuuet vos, & fiat vobis, & sibi protector. Teutonici siquidem, qui se præsumebant inaudium de nobis reportare triumphum, ad nos vehemente spiritu transfretarunt: & cum solum castrum Baruth, nullo defendente cepissent, nisi eos, sicut & alios Principes vestros, fugæ beneficium liberasset, in se potentiam nostrarum grauius fuissent experti, & eorum stragem ipsorum soboles perpetuo deploraret. Reges enim, & Principes vestri, quos dudum de terra fugauimus Orientis, vt timorem suum audendo dissimulant, ad suas latebras (ne dicamus regna) reuersi, malunt se inuicem expugnare, quam denuo vires nostras, & potentiam experiri. Quid igitur superest, nisi vt his, quos fugientes in excusationem vestram ad terræ custodiam dimisistis, gladio vkore peremptis, in terram vestram impetum faciamus, nomen vestrum, & memoriam perdituri? Qualiter ergo fratres, & filij opprobria exprobrantium repellamus? qualiter eis poterimus respondere? cum eos pro parte verum prosequi videamus, sicut nuper ad audientiam nostram certâ significatione peruenit? Recepimus enim literas de paribus transmarinis, quod cum Teutonici Accon nauigio peruenissent, Castrum Baruth obtinuerunt nemine defendente: Sarraceni verò in Ioppen facientes impetum, ex aduerso eum per violentiam occuparunt, & cæcis multis Christianorum millibus, eam funditus destruxerunt. Verum Teutonici rumoribus de morte Imperatoris acceptis, non expectato passagij tempore, naues reduces ascenderunt. Vnde Sarraceni qui ad resistendum eis exercitum parauerant copiosum, in terram Christianorum adeo debacchantur, vt Christianis nec sine periculo ciuitates egredi liceat, nec in ipsis sine formidine remanere; immò eis gladius foris imminet, metus intus. Assumite igitur filij spiritum fortitudinis, scutum fidei, & galeam salutis accipite, non in numero, aut viribus, sed Dei potius, cui non est difficile in multis, vel in paucis saluare, potentiam confidentes: & ei per quem estis, viuistis, & habetis, secundum facultates proprias subuenite. Ipse quidem pro vobis semetipsum exinanivit formam serui accipiens in f. ho. f. & ha. i. vt homo, factus obediens vsque ad mortem, mortem autem crucis; & vos eo paupere abundatis, ipso fugato quiescitis, & nec inopi, nec exuli subuenitis. Quisquis igitur in tantæ necessitatis articulo suum negauerit obsequium Iesu Christo, cum ante tribunal eius altiter iudicandus, quid ad suam excusationem ei poterit respondere? Si Deus subiit mortem pro homine, dubitabit homo mortem subire pro Deo? cum non sint condignæ pasc. h. f. ad f. g. quæ re. in nobis? Negabit etiam seruus domino diuitias temporales, cum dominus seruo diuitias largiatur æternas? quas nec oculus vidit, nec auris audiuit, nec in cor hominis ascenderunt? Theaurizet igitur homo thesauros in cælis, vbi fures non effodiunt, nec furantur; vbi nec ærugo, nec tinea demolitur. Omnes, & singuli accingantur, atque in proximè sequenti Martio, quælibet vrbes per se, similiter & Comites, & Barones iuxta facultates proprias ad defensionem terræ patriæ Dominicæ certum in expensis suis dirigant numerum bellatorum, illic saltem per biennium moraturorum. Licet autem instantia nostra quotidiana sit omnium Ecclesiarum sollicitudo continua, modò tamen hanc quasi præcipuam inter alias sollicitudines reputamus, per quam terræ Orientali totis desideramus affectibus subuenire: ne si fortè fuerit dilata subuentio, residuum locustæ comedit bruceus, & fiant nouissima deteriora prioribus. Verum ne nos aliis onera grauiâ, & importabilia imponere videamur, digito autem nostro ea mouere nolimus, dicentes tantum, & aut nihil, aut minimum facientes, cum qui fecerit, & docerit, magnus vocetur in regno celorum: cuius exemplo, qui cœpit facere, & docere, vt & nos qui (licet immeriti) vicem eius exercemus in terris, bonum aliis præbeamus exemplum, in personis pariter & in rebus Terræ sanctæ decreuimus subuenire, dil. fil. nost. sanctæ Præsed. Presbyt.

& P. S. M. in Via Lata Diacon. Card. viris vtrique timoratis, scientiâ, & honestate præclaris, potentibus in opere & sermone, quos inter alios fratres nostros speciali charitate diligimus, manu propriâ crucis signaculum imponentes: qui exercitum Domini humiliter, & deuotè præcedant, & non mendicatis suffragiis, sed nostris, & fratrum nostrorum sumptibus sustententur: per quos etiam aliud competens subsidium eidem Terræ disponimus destinare. Interim autem dictum sanctæ Mariæ in Via Lata Diacon. Card. ad charissimorum in Christo filiorum Francorum, & Anglorum Regum illustrium præsentiam destinamus, ad reformandam pacem, vel treguas, saltem vsque ad quinquennium ordinandas, & exhorrandos populos ad obsequium Crucifixi. Dictum autem sanctæ Prædix Presbyt. Card. Venetias pro Terræ sanctæ subsidio destinamus. De communi præterea fratrum nostrorum deliberatione statuimus, & vobis fratres Archiepiscopi, & Episcopi, & dilecti. Abbates, Priores, & alij Ecclesiæ Prælau, distictè præcipiendo mandamus, quatenus certum numerum bellatorum, vel pro certo numero certam pecuniæ quantitatem in proximè sequenti Martio, pensata facultate cuiuslibet, ad expugnandum paganorum barbarium, & seruandam hereditatem Domini destinatis, quam ipse proprio sanguine comparauit. Si quis autem (quod non credimus) constitutioni tam piz ac necessariæ præsumpserit obuiare, sicut sacrorum canonum transgressorem decernimus puniendum, & vsque ad satisfactionem condignam, ab officio censum manere suspensum. De Dei ergo misericordia, & beatorum Apostolorum Petri, & Pauli auctoritate confisi, ex illa, quam nobis Deus (licet indignis) ligandi, & soluendi contulit, potestate omnibus, qui labore huius itineris in personis propriis subierint, & expensis, plenam peccatorum suorum, de quibus onus, & cordis egerint poenitentiam, veniam indulgemus, & in retributione iustorum salutis æternæ pollicemur augmentum. Eis autem, qui non in personis propriis illuc accesserint, sed in suis tantum expensis iuxta facultatem, & qualitatem suam viros idoneos destinauerint, illic saltem per biennium moraturos, & illis similiter, qui hæc in alienis expensis, in propriis tamen personis assumptæ peregrinationis laborem impleuerint, plenam suorum concedimus veniam peccatorum. Huius quoque remissionis volumus esse participes, iuxta quantitatem subsidij, ac præcipuè secundum deuotionis affectum, qui ad subuentionem illius terræ de bonis suis congruè ministrauerint. Bona insuper ipsorum, ex quo crucem susceperint, sub beati Petri, & nostra protectione suscipimus, necnon vt sub Archiepiscoporum, & omnium Prælatorum Ecclesiæ Dei defensione consistent, statuimus, vt donec de ipsorum obitu, vel reditu certissimè cognoscat, integra maneant, & quæta consistent. Quod si quisquam contra præsumpserit, per censuram ecclesiasticam appellatione postpositâ compescatur. Si qui verò proficiscens illuc ad præstandas vsuras iuramento tenentur stricti, vos fratres Archiepiscopi, & Episcopi per vestras dioceses creditores eorum, sublato appellationis obstaculo eadem distinctione cogatis, vt eos à sacramento penitus absoluentes, ab vsurarum vltius exactione desistant. Quod si quisquam creditorum eos ad solutionem coegerit vsurarum, eum ad restitutionem earum, sublato appellationis obstaculo, distinctione simili compellatis. Iudex verò ad remittendas ipsis vsuras per vos, filij Principes, & secularem compelli præcipimus Potestatem, & donec eis remiserint, ab vniuersis Christi fidelibus, tam in mercimoniis, quàm aliis per excommunicationis sententiam eis iubemus communionem omnimodam denegari. Ab hoc igitur opere nullus omnino se subtrahat, cum id non à nobis, sed ab ipsis fuerit Apostolis institutum, qui collectas faciebant in gentibus, vt fratribus in Hierusalem laborantibus subuenirent. Nolumus autem vos de diuina misericordia desperare, quantumcunque sit Dominus peccatis nostris iratus, quin in manu vestra perficiat, si (propterea) debitis in humilitate cordis, & corporis iter fueritis peregrinationis aggressi, quod maioribus non concessit. Consenserunt enim maiores fortiter, & dixissent: Manus nostra excelsa, & non Deus fecit hæc omnia; & sibi, non Deo videtur gloriam adscripsissent. Speramus enim, quod non in ira misericordias continebit, qui cum iratus est, non obliuiscitur misereri, nos admonens, & exhortans: Conuertimini ad me, & ego conuertar ad vos. Credimus etiam, quod si ambulaueritis in lege Domini, non eorum sequentes vestigia, qui vani facti sunt, post vanitatem euntes, qui comestationibus, & ebrietatibus voluptuose vacabant, & ea exercebant in paribus transmarinis, quæ in terra natiuitatis propriæ sine multa infamia, & detractione plurima non auderent; sed spem vestram in eo so-

lummodò posueritis, qui non deserit sperantes in se, non tantum ab illicitis, sed quibuscumque etiam licitis abstinentes: is qui curram, & exercitum Pharannis præiecit in mare, arcus fortium infirmabit, & inimicos crucis à facie vestra delebit, ut lutum platearum: non nobis, aut vobis, sed nomini sui dans gloriam, qui est gloriosus in Sanctis, mirabilis in Maiestate, faciens prodigia: & post lachrymatin-nem, & sœtum, gaudium, & exultationem inducens. Ad hæc expeditius autem, & melius exequenda, vos fratres Archiepiscopo Nemaufen. & Auralicen. Episcopo duximus deputandos, qui verbum Domini cæteris proponatis, & ad implendum mandatum Apostolicum Cœpiscopos vestros, & alios inuitantes, taliter exequamini causam Domini, quod & vni huius suis remissionis participes, & in hoc deuotio vestra plenius elucescat: ad quod etiam laudabilis exequendum, vobis vnum de frat. Militie Templi, alterum verò de frat. Hierns. Hospitalis, viros honestos, & prouidens assumatis. Dat. Reat. XVIII. Kal. Septemb. [In eundem modum scriptum est Lugdunensi, & Viennensi Archiepiscopis, Abbatibus quoque, Prioribus, & aliis Ecclesiarum Prælati, Comitibus, & Baronibus, & vniuerso populo in vtraque prouincia constitutis. In eundem modum vniuersis de Regno Francie, Anglie, Vngarie, & Sicilie.

NOTÆ.

1. ^a *Arborey.* [Ita etiam legitur in tertia collectione, *sub hoc titulo cap. 2. & in epistolis Innocentij III. editis à Sileio, fol. 163. ex quo regeſto reſtituo litteram huius textus.*

COMMENTARIUM.

2. *C*um iure naturali, & diuino vsus prohiberi sine, ideo iudex tantum legem Moysi datam obseruantes, non possunt à Christianis vsus exigere; & si egerint, cogendi sunt eas restituere à iudice ecclesiastico per subtractionem communionis Ecclesie, seu à Principibus secularibus per penas corporales, ut in præfati textu statuitur, & in cap. quanto, infra hoc tit. docent Riccius lib. 2. de iure person. cap. 19. Bazthius lib. 5. aduers. cap. 3. Auenarius de censuris cap. 21. num. 11. Petrus Gregorius lib. 2. de vsu. cap. 5. Fachineus lib. 2. controu. cap. 48. Moila in Europ. iur. tit. 8. quest. 15. Simon Maiolus de re. crimin. c. 20. de perfid. Iudæorum, Binasfeld. in præfati: nam licet de animabus eorum curandum non sit, quia de his, qui foris sunt, quid ad nos? ut ait Apostolus 1. ad Corinth. cap. 1. & constat ex cap. multi 2. quest. 1. cap. gaudemus, de diuinijs tamen iudices ecclesiastici, quando Iudæi peccant contra ius naturale, emungendo Christianos vsque ad sanguinem, & occasione substitutionum suarum, per vsurarum voraginem eos in egestatem detrahendo, poterunt ipsos Iudæos debitis penis afficere, ut probant Petrus Gregor. & Mayolus supra, Eymericus 2. part. dist. Inquisit. questione 46. Titus, de primog. quest. 66. num. 20. Et licet in præfati coactionem per iudicem secularem fieri debere doceatur, in his tamen verbis continetur quasi quedam comminatio, & brachij secularis imploratio, alioquin delicta mixti fori (ut est vsus) à Iudæis perpetrata, puniri possunt non solum à Iudice seculari, verum & ab ecclesiastico, ut probant Farinac. in præfati, seu fragment. crimin. verbo Iudæus, num. 663. Riccius de iure person. extra gremium, lib. 2. cap. 32. num. 6. Cætera de officio Inquisit. 2. part. titulo 14 §. 2. qui alios dat. Nec contrarium probat textus in cap. quanto, hoc tit. in illis verbis: *Graves, immoderatæve* in quibus permixti videtur Iudæis vsurarum exercitium, dum tantum illis prohibetur *graves, immoderatæve* exi-

gere. Nam missa solutione Glossæ ibi, dum ait illa verba referenda esse ad vsus, quæ excedunt legitimum modum, cum certum sit, iure canonico aucto, vsus etiam in parua quantitate prohibita esse, vetius respondendum est, in specie illius reus non posse sumi argumentum à contrario sensu, quia reſultat abſonus intellectus, & contrarium iure diuino naturali, & poſſiuo reperitur expreſſum, argumentis legis communiſſima, *Cod. de Episc. & clerici. l. v. ff. de offici. eius*: illa namque verba, *graves, immoderatæve*, referenda sunt ad quascunque vsus, quæ immoderatæ, & graues, atque prauæ censentur, ut probant Hostiens. & Ioannes Andreas ibi. Exemplum est in vsuris apud Romanos probatis, & permissis, quas maximas, & graues appellari Iureconsulti in *l. non existimo §. 4. ff. de administ. rer. l. qui sine §. 8. ff. de negot. gesti. Difficilior professio est lex aa. tit. 12. part. 5. ubi expressè permittitur Iudæis vsus exercere. Cuius textus difficultatem præter Gregorium ibi, Neotheticos iuris nostri Hispani interpretes, eius grauitate deſectit Consilij præſentiffimæ exiſtumo. Gregorius in eius textus glossa f. ait, tempore filius legis ex generali conſuetudine, permiſſione, & diſpenſatione Summi Pontificis, conſeſſione Principum temporalium, ob bonum publicum, vel aliquam iuſtam cauſam permiſſum fuiſſe Iudæis in hoc Regno vsurarum exercitium. Quæ ſolutio non modo valet ſuſtineri, quia nec Summus Pontifex poteſt id permiſſere Iudæis, ita vt ex eius priuilegio tale exercitium vsurarum licitum ſit, vt probat in cap. 4. hoc tit. præſertim cum nec inſideli ocaſio peccandi ſit danda, vt patet ex cap. 12. lib. 2. Regum, & notant Contradicti de contr. quest. 25. cum tribus ſequent. Azuero in l. 1. tit. 6. lib. 8. Recopil. num. 51. Couar. lib. 3. varior. cap. 3. num. 8. Quæ ſolutione omiſſa vetus dicendum credo, Alſonſum in diſt. 1. aa. part. 1, ſequutum fuiſſe opinioem antiquiorum, qui conſueuerunt, Principes ſeculares poſſe concedere Iudæis exercitium vsurarum, negareque creditoribus Chriſtianis ius reperendi vsuras ab eis, vt docuerunt Paulus Caſtrens lib. 2. conſil. 295. Alexander lib. 1. conſil. 57. Sed eodem hæc ſententia iniuſta eſſet, iurique diuino, ac naturali contraria, Ideo prædicta lex aa. nunquam fuit in Hiſpania recepta, immò poſtea priuilegium ibi conſeſſum Iudæis ad exercendas vsuras, penitus reuocatum fuit à Regibus noſtra*

in l. 3. c. 2. lib. 8. ordin. l. 1. tit. 6. lib. 8. recapit. ubi notauit Azuëdo. Nisi mauis dicere, dictæ legis 22. verba esse enunciativa, ab aliâque esse legislatoris intentionem, aduersus quem videlicet debeat dari actio mandati, quando mandatum

celebratur gratiâ mandamis, & mandatorij; & sic principaliter non agi in eo textu de exercicio vsutatum permisso, vel non ludris, argumento textus in l. ex fulto 19. ff. de heredib. instit. Clement. 4. in ca. de prob.

CAPVT XIII.

Idem * *Mutin. Episcopo.*

Tvas dudum ex parte tua recepimus quæstiones, quod quidam vsurarij tuæ dice-
cescos, quibus plene pecuniam ad vsuram, præstare faciunt iuramentum, quod
vsuras non repetant, & super his, quas soluerint, nullam moueant quæstionem. Nos
igitur inquisitioni tuæ taliter respondemus, vt vsurarios ipsos monitione præmissa per
cenfuras ecclesiasticas appellatione remota compellas ante vsurarum solutionem ab
eorum exactione desistere, vel restituere ipsas postquam fuerint persolutæ, ne de
calum, & fraude sua contingat eos commodum reportare, qui ad hoc præstari faciunt
iuramentum, quod super vsuras non valeant molestari.

NOTE.

* *Mutinens.*] Ita etiam legitur in tertia col-

lectione, sub hoc tit. c. 2. De Mutinensi Ecclesia cpi
in cap. 2. de tempor. ordin. & commentarium huius
textus dedi in cap. 1. cap. debitorum, de iurid.

CAPVT XIV.

* Idem.

Quia frustra legis auxilium inuocat, qui committit in legem, statuimus, vt si
quis vsurarius à nobis literas impetrauerit super restituendis vsuris, vel fructi-
bus computandis in sortem, nisi priùs ipse restituerit vsuras, quas ab aliis noscitur re-
cepisse, & auctoritate literarum ipsarum nullatenus audiat.

NOTE.

1.

* *Idem.*] Ita etiam legitur in fertia collectio-
ne, sub hoc tit. cap. 3. Et cum præfens consti-
tutio sit generalis ab Innoc. III. facta motu pro-
prio, non ad alieuius casus decisionem, aut
consiliiatorem, non exprimitur cui dirigatur.
Sciat autem Innocentius in præfenti, quod
vsurarius, qui vsuras accepit, & etiam aliis ipse
persoluit, si intendat repetere quas persoluit,
non priùs audiat, quaten ipse restituat quas ac-
cepit: atque idem etiam obseruatur, si fructus
pignoris accepit; nisi enim eos sibi impu-
tauerit, atque ad repetitionem vsurarum. Quod etiam
obseruandum esse cum filiis, & heredibus vsu-
rarij cautum fuit in cap. Michaeli, hoc tit. Ratio-
nem huius constitutionis assignat Innocentius in
illis verbis: Quia frustra auxilium legis inuocat,
qui committit in legem: Auxilium 37. ff. de minor.
l. isti 3. ff. de eo quod metus causa, l. scimus, 4. si
vero, ff. de iur. delib. cap. consilium, de appella-
tione. Et æquum est, vt quod iuris in alium quis po-

stular, ipse sibi priùs dicat. l. 1. ff. quod quisque
iur. Vnde si vsurarius intendit vsuras à se solutas
repetere à Scio, priùs debet ipse restituere quas
accepit à Titio. Quæ constitutio illustrari potest
ex l. in arenam, Cod. de iniuss. testam. ubi patet
arenarius non potest filium arenarium exhereda-
re, quia alteri non potest opponere vitium, quo
ipse laborat, ex cap. cum Apostolica, de excepti. ubi
cum opponeretur agem ad possessionem præben-
dæ exceptio pluralitatis beneficiorum non ab eo, qui
plura beneficia obtinebat, respondit Pontifex,
non esse talem exceptionem admittendam; si-
quidem opponens simili morbo laborabat: no-
tauit Balbus in cap. 2. de except. num. 125. Si quis
tamen alieno nomine, vt pupilli, aut Ecclesiæ,
sui vniuersitatis, vsuras solutas restitui petat, non
potest hæ exceptionem repelli, quod ipse vsuras
accepisset, nec adhuc restituisset; nam tunc non re-
pelleretur ille à iudicio, sed ille cuius nomine age-
bat, vt docet Panor. in cap. Michaeli, hoc
tit. num. 3. Molina tract. 2. de iust. disp. 334. Gibali-
nus lib. 1. de vsur. cap. 1. art. 3. num. 8.

CAPVT XV.

Idem, *Altiſtiodorensi Episcopo.*

Cum in diceceſi tua ſint quamplurimi vsurarij, de quibus minimè dubitatur quin
ſint vsurarij * maniſeſti, contra quos propter timorem Principum, & Potesta-
tum, qui tuentur eodem, nullus appareat * accuſator, iidem ſunt perſententiam

D.D. Gonzal. in Decretal. Tom. V.

Hh 1

condem

condemnari, qualiter procedere valeas contra ipsos, oraculum duxisti Sedis Ap. requirendum. Nos autem f. t. respondemus, quod licet contra eos non appareat accusator, si tamen aliis argumentis illos constiterit esse usurarios manifestos, in eos penam in ⁶ Lateranensi contra usurarios editam Concilio, liberè poteris exercere.

NOTÆ.

^a *Leisfred.* Ita etiam legitur in tertia collectione, *sub hoc tit. cap. final.* De Altitio dorenfi diecesi regi in *cap. 14. de presump.*

^b *Manifesti.* Quinam illi dicantur, exposui in *cap. 3. hoc tit.*

^c *Accusator.* Iuxta tradita in *evidencia, de accusat.* ubi commentarium huius textus dedi.

^d *Lateran.* Relato in *cap. 3. hoc tit.*

CAPVT XVI.

Idem Electo V. de ^a Oñonen.

S Alubricer. Et infra: Sanè generum ad fructus possessionum, quæ sibi sunt à socero spro numerata dote b pignori obligatæ, computandos in sortem non credimus compellendum, cum frequenter dotis ^c fructus non sufficiant ad onera matrimonij supportanda.

NOTÆ.

^a *Oñonen.* Ita legitur in quarta collectione, *sub hoc tit. cap. 1.* & cum præfata epistola non reperitur inter epistolas editas à Sileto, & Bolqueio, cognosce non potest de quo Episcopo tantum electo in præfenti agatur.

^b *Pignori.* Et si si censitor pro dote dari nequeat, pignus tamen ad eius securitatem consilium valet, ut probavi in *cap. 6. de pignori.*

^c *Dotis fructus.* Quos ex rebus dotalibus perceptos constante matrimonio maritus suos facit ratione domini, quod to dote habet, & pro subleuantis oneribus matrimonij, *l. dotis 7. l. pleniusque 10. §. sed furus 3. l. cum in fundo 78. ff. de iure dot. l. pro oneribus 20. l. final. §. præterea 2. Cod. eod. tit. l. fructus 7. l. si fundus 8. l. in insulam 42. §. fructus, l. usufructus 57. l. final. ff. solus. matrim. l. unica, §. cumque 9. Cod. de rei uxur. actum. l. 26. cum sequent. tit. 11. part. 4.* Desideratur tamen, ut res dotalis marito tradita sit, aliis si tantum promissa fuerit, fructus non luatur, *l. de divisione 5. ff. solus. matrim.* Item requiritur ut matrimonium sequutum sit, nec præcedens dotis traditio sufficit, *dicit. l. dotis 7. §. final. cum l. sequenti, ff. de iure dot. l. si ante 6. ff. solus. matrim. l. 1. c. §. primum secundo, cum §. sequenti. ff. pro dote.* Quare fructus percepti antea non cedunt lucto mariti, sed augent dotem ipsam, *l. videamus 38. §. ante 12. ff. de usufr.* Preterea etiam desideratur, quod maritus sustineat onera matrimonij, & propolis sumptibus aliat uxorem, *l. in insulam, §. usufrus 3. ff. solus. matrim. l. unica l. si quis 21. c. ult. ff. de donat. inter. l. final. in princip. ff. de dol. except. Ideoque si vxoræ datus à socero promissus sint genero quamdiu dux et folator, & mulierem non aluerit vit, sed socer, improbat ab co vltus petit, *l. cum post 69. §. in domum 3. ff. de iure dot. quia fructus & vxoræ, quæ pro fructibus promittuntur, cedunt pro oneribus matrimonij, l. si maritus 46. ff. famil. ercisc. l. dotis 7. d. l. pro oneribus 20. docent Donel. lib. 14. comment. cap. 7. ubi Oñaldus, Treuterus volum. 1. sect. 2. diffin. 7. abf. 9. Cuiac. ad tit. Cod. de iure dot. in princip. & in l. unic. §. cumque, Cod. de rei uxur. Campegius de dote 2. part. qua. 7. 12. Constantini Rogerus cod. ar. l. qua. 16. Franc. Hothom. in diffin. de dotibus, Paul. post medium, Fontanel. de post. nup. clausul. 6. glof. 1. per tot. P. Barbosa de diff. l. de divisione 5. Galbanus de usufruct. cap. 12.**

quomodo autem fructus pendentes soluio matrimonio diuidantur, exponit Oñaldus in *diff. 6. Donell. tit. E. Escobar tom. 2. de ration. comput. 19. Aluatus Valaseus in praxi parit. cap. 19. Benediclus Pinel. lib. 5. sect. 1. cap. 2.*

COMMENTARIUM.

C Vm certum sit, eteddotem teneri impotare iorem principalem fructus perceptos ex re sibi pignori data, ut probavi in *cap. cum contra, de pignori.* diffin. merito visa est Doctotibus tam Iurisperitis, quam Theologis præfens decisio, dum in ea Innocent. III. docet maritum non teneri impotare in dotem fructus perceptos ex pignore pro dotis fecunditate à socero datos: quare varias huic decisioni assignant Interpretationes Gomez in *l. 50. Tauri. num. 30. Castillo 3. comment. cap. 13. Valaseus consil. 8. per tot. Canisius de usufr. cap. 6. m. 6. alij congesti à Barbosa in præfenti: quibus addidi suot Cyriacus lib. 1. controu. 80. Leothard. de usufr. cap. 18. per tot. Fontanel. de post. nup. clausul. 6. glof. 1. part. 6. Hermosilla in l. 1. c. ult. c. p. 5. glof. 1. num. 149. Giurba de ref. 72. Gutierrez de delict. §. 91. Aosta de privileg. credit. regul. 3. limit. 2. per tot. Castcoal. lib. 1. de iudiciis, tit. 3. diffin. 8. num. 20. Gibalinus de usufr. lib. 4. cap. 5. ar. 15. consil. 6. Plutibus placuit præfentem textum procedere favore matrimonij: quæ doctrina nullo modo defendi potest; tum quia contractus, de quo in præfenti, non est usufructus, ut infra dicemus: tum etiam, quia usura propter nullam causam piam, & fauorabilem exerceri potest, *cap. super eo 4. hoc tit. Fortunius Garcia de ultimo fine, l. 1. m. 6. textum hunc sic accipit dum ait, præfentem textum procedere ratione tacite donationis, quam fecit socer genero fructum pignoris pro dotis fecunditate traditi. Quæ præfumptio donationis nascitur ex eo, quod patet tenetur filiz dotem dare, aut alimenta præstare, l. final. C. de dotis promiss. Legi liberos 30. ff. de ritu nup. Verum hæc interpretatio minime sustineri valet: tum quia Innocent. III. eum interrogatus fuisse de iure, nihil respondit de donatione; sed quid iuris ratio in præfenti casu dicebat: tum etiam quia si vera esset dicta sententia, sequeretur inde, fructus pignoris interesse dotis excedentes, ab ipso genito in sortem comparandos esse. Aliis communiter placuit in præfenti casu**

casu generum fructus lucrari vi tacite consentio-
nis in compensationem damni emergentis, ex eo
quia interim dum sibi dos non soluitur, ex proprio
patrimonio sustinet onera matrimonij, quæ ex
dote, vel dotis fructibus sustineere debebat: &
consequenter recipit pignoris fructus in compen-
satione lucri cessantis; quidem si statim eum pro-
missa fuit dos, sibi solueretur, posset maritus cum
ea negotiari, & ex tali negotiatione lucrium suffi-
ciens acquirere ad sustinendam onera matrimonij.
Ita docuerunt Alexander in *lin insulam*, §. *vsuras*,
num. 3. ff. *solut. matrim.* & *consil.* 27. Titusq. de *verbor.*
retract. tit. 1. §. 18. num. 71. Plotus de *in litem iur.*
§. 11. num. 29. alij consensu à Cencio *collell.* 14. ad
Decretal. Coart. 1. var. cap. 5. num. 3. Fontanella
de *poll. nupt. clausul.* 6. gloss. 2. part. 6. Farinac. in *re-*
pert. possib. de *contract.* quæst. 34. Nogueroles. *al-*
leg. 17. Castillo de *alimen.* cap. 49. §. 50. & 51. Sed
hæc interpretatio faciliè conuincitur, quoniam ad
hoc ut debeatur interesse lucri cessantis, vel dam-
ni emergentis, requiritur quod præcedat culpa,
vel mora debitoris, aut pactio inter eum, & cre-
ditorem, ut in l. 2. §. final. ff. de eo quod certo loco,
cap. 2. de offic. ordin. in 6. cap. dilecti, de foro com-
pet. & post alios docent Arango in *q. moral. disput.*
de *statu civil.* quæst. 11. quin immò & requiritur pro-
batio talis damni emergentis, vel lucri cessantis,
ut post antiquiores docuerunt Andreas Gallius
lib. 2. obf. cap. 6. Canisius de *vsur.* cap. 5. quæ om-
nia desunt in præsentis casu, siquidem nullâ pa-
ctione præcedente, aut probatione oblata damni
emergentis, assertit Pontifex generum lucrari fru-
ctus pignoris pro dotei securitate constituti. Tan-
dem alij docuerunt, in præsentis casu maritum fru-
ctus percipiendi vsuras non committere, quia in
hoc casu nullum interuenit mutuum, nec forma-
le, ut expresse, nec fictum, aut palliatum: qui-
bus mutui speciebus non interuenientibus com-
mitti non potest vsura. Verùm hæc interpretatio
etiam conuincitur; nam potius in præsentis casu
presumitur, fide habita de dote mutuum contra-
hit, aliis quo tunc maritus posset percipere fructus
pignoris, nisi presumendo per fictionem breuis
manus dotem marito solutum fuisse, & eam sta-
tim sub pignorisbus mutasse.

Quare his, & aliis sententiis omissis, ut veram
præsentis textus rationem assignemus, præmit-
tendum est, matrum, cui dos promissa non so-
luitur, non teneri sustinere onera matrimonij;
immò patrem, seu extraneum dotem promitten-
tem marito teneri, dum dos non soluitur, onera
matrimonij supportare, *l. si is, quem* 57. §. 1. ff. de *in-*
re dot. l. si filius 10. §. 1. l. si maritus 47. ff. *familier-*
cise. probant Felicianus de *consensu* lib. 2. c. 5. Petr.
Barb. in *rubric. solut. matrim.* par. 1. à n. 68. Arias
de Mesa lib. 3. var. cap. 46. num. 20. Deinde præ-

mittendum est, quod si ab initio, eum de dote
constitutionis agitur, conuentum sit inter mari-
tum & dotem constituentem, ut dos intra men-
sem, vel annum solvatur, pignorisbus datis, et si
interim sustinet onera matrimonij, non tamen
ideo potest fructus pignoris lucrari, aut vsuras
dotis petere, nisi pactum intercesserit, ut inter-
im dum dos non soluitur, aliquod interestis no-
mine solvatur: quod pactum late probant, & de-
fendunt Sesse tom. 1. decif. 68. per tot. Gibal. lib. 4.
de *vsur.* cap. 5. art. 15. consil. 3. per tot. In præsentis
autem textu dos de præsentis constituta fuit nullâ
temporis dilatione datâ patri ad eius solutionem.
Quibus præmissis apparet vera ratio, quare in
præsentis maritus fructus pignoris percipere pos-
sit, nec teneatur eos in dotem imponere, quia vi-
delicet eos percipere non ratione mutui, nec dilate
solutionis, sed ex ea causa, quia scilicet vxorem
aluit, & cetera omnia sustinuit absque dote, quæ
sustinere debebat foet. Quare quid mirum si ge-
get ex tribus foetis, videlicet ex fructibus pigno-
rum, onera matrimonij sustinuit, quæ pater sus-
tinere debebat; ideo non teneatur similes fructus
imponere in sortem principalem. Ita docuerunt Fe-
licianus de *consensu* tom. 1. lib. 2. c. 5. n. 29. Gar-
ar Rodriguez de *annui redditu* lib. 3. quæst. 3. n. 41. Arias
de Mesa *dist.* lib. 3. var. cap. 46. num. 20. Tota ergo
ratio, quare in præsentis casu ritè, & rectè mari-
tus lucratur fructus pignorum, consistit in eo,
quia sustinet onera matrimonij, quæ foet susti-
nere debebat. Vnde dubitatur, an cessionarius
mariti possit etiam fructus ipsos lucrari, nec im-
putare teneatur in sortem principalem. Et etiam
in cessionarium hoc prauilegium transire docue-
runt Rodriguez ubi supra, num. 59. Felicianus *dist.*
lib. 2. cap. 5. Sesse *dist.* decif. 68. num. 23. Amatus
resol. 49. num. 83. Sed rectius contrarium docue-
runt Valasco tom. 1. consil. 8. num. 6. Gutman
de *enit.* quæst. 10. num. 46. Canerius *part. 1. varior.*
cap. 3. num. 61. Gibalin. *dist.* art. 15. consil. 9. Olea
de *cess.* iur. tit. 6. quæst. 2. num. 43. Leonhard.
de *vsur.* quæst. 29. quia eum hoc prauilegium marito
concedatur, quia sustinet onera matrimonij, &
hæc æqualitas desit in eius cessionario, cessare
debet prauilegium, *l. cum patronus* 29. ff. de *legat.* 2.
l. quia tale, ff. *solut. matrim.* plucibus exoritur Lar-
rea decif. 31. à num. 20. Et hæc etiam interpretatio-
ne admissâ varias huius textus ampliationes ad-
ducit citra dotem pro moniali promissam, nec
solutam; & circa viduam, cui dos testatoris non est
debito tempore ab hæredibus mariti: quem casum
amplectitur Nogueroles. *dist.* alleg. 17. sed non audet
admittere Tapia 2. tom. *causa mor.* lib. 5. quæst. 179.
art. 10. quos & alios casus examinant, & expo-
nunt Olsen, Gibalinus & Sesse ubi supra, Leonhard.
dist. quæst. 20.

CAPVT XVII.

Idem Episcopo^a Bononien.

Michaël laicus suam nobis querimoniam destinauit, quod N. & quidam alij
Bon. ciues multa extorserunt ab eodem, & à patre suo, cuius hæres existit, no-
mine vsurarum. Et infra: Attentius prouisurus, ne auctoritate nostra in negotio co-
dem procedas, nisi dictus obquerens restituerit, vel adhuc restituat si quas aliquan-
do ipse, vel pater eius extorsit vsuras.

NOTÆ.

* **B** *Onenienſi.* Ita etiam legitur in quarta col-

lectione, *ſub hoc tit. cap. 1. De Bononiſi Eccleſia* cxi in cap. 17. *de ſuo competem. & tertium hunc expoſui ſuprà in cap. quia fruſtra.*

CAPVT VIII.

Idem in Concilio generali.

Quanto amplius Chriſtiana religio ab exactiōe compellitur uſuratum, tanto grauius ſuper his ludzorum perſidia inſoleſcit, ita quod breui tempore Chriſtiano-
rum exhauriuntur ^b facultates. Volentes igitur in hac parte proſpicere Chriſtiani-
nis, ne tenaciter aggrauentur, ſynodali decreto ſtatuiſmus, vt ſi de cætero quo-
quam prætextu ludzi à Chriſtianiſ ^c graues, & immoderatas uſuras extorſerint,
Chriſtianorum eis participium ſubtrahatur, donec de immoderato grauamine ſatis-
fecerint competentèr. Vnde Chriſtiani, ſi opus fuerit, per cenſuram eccleſiaſticam
appellatione poſtpoſita compellantur ab eorum commerciis abſtinere. Præcipimus
autem, & iniungimus, vt propter hoc non ſint ^d Chriſtianiſ inſeſti, ſed potiùs à tan-
to grauamine ſtudeant prohibere ludzos: ac eadem pœna ludzos decernimus
compellendos ad ſatisfaciendum Eccleſiis ^e pro decimis, & ^f oblationibus debitis, quæ
Chriſtiani de domibus aliis percipere conſueuerint antequam ad ludzos quoquo ti-
tulo deueniſſent, vt ſic Eccleſiæ conferrentur indẽmnes.

NOTÆ.

1. ^a **G** *Generali.* Lateranenſi videlicet celebrato ſub Innoc. III. vbi cap. 67. reperitur tenetur hic, & in quarta collectione, *ſub hoc tit. cap. final. de quo Concilio nonnulla noſuiſ in cap. 1. de ſumma Trinit.*

^b *Facultates.* Vt variis exemplis, & rationibus probat Maiolus *dier. canonic. collat. 1. de perſid. Iudeorum.*

^c *Graves, immoderate uſe.* Hæc verba expoſui in cap. poſt 12. hoc tit.

2. ^d *Abſtinere.* Et ita excommunicatio hæc

non in ipſos ludzos, ſed poſitis in Chriſtianos cum eis communicantes imponitur, iuxta tradita in cap. 2. *de Iudaïs.*

^e *Decimis.* Hanc partem de decimis prædialibus ſolendis à ludæis, expoſui in cap. *de terris, de decimis.*

^f *Oblationibus.* Quia ex præcepto Catholici plerumque facere teneantur, vt probati ſunt in can. 28. *Conſilij liber.* Vnde cum ratione prædij, vel domus Chriſtiani oblationes faciunt pro alimonia parochi, etiam ludzi in eis domibus commorantes, tanquam ad debitum reale teneantur oblationes facere, iuxta tradita in diſt. *cap. de terris.*

CAPVT IX.

Gregorius IX. ^a *Fratri R.*

Nauiganti, vel eunti ad ^b nundinas certam mutuans pecuniæ quantitatem, eo quod ſuſcepit in ſe periculum, recepturus aliquid vltra fortem, uſurarius non eſt cenſendus. Ille quoque qui dat x. ſolidos, vt alio tempore totidem ſibi grani, vini, vel olei menſuræ reddantur, quæ licet tunc plus valeant, verum plus, vel minus ſolutionis tempore fuerint valituræ, verifimiliter dubitatur, non debet ex hoc uſurarius reputari. Ratione ^c huius dubij etiam excuſatur, qui pannos, granum, vinum, oleum, & alias merces vendit, vt amplius, quàm tunc valeant, in certo termino recipiat pro eiſdem: ſi tamen ea tempore contractus non fuerat venditurus.

NOTÆ.

^a **F** *Fratri R.* Ita legitur in hac ſexta collectione; & cum Regiſtro epistolatum Greg. IX. cæceamus, agnoſcere non poſſumus cui fratri R. in præſenti reſcribitur.

1. ^b *Nundinas.* Nundinæ, quaſi Nouendinæ, à non odie dictæ ſunt, eo quod nonis quibuſque diebus plebs in urbem conueniret emendi, vendendi que cauſâ. Columella lib. 1. *de re ruſticæ.* Macrobius lib. 1. *ſaturæ.* cap. 16. Illoſtrat earum originem repetens Gaiſalinus *de negot. rom. 1. lib. 1. cap. 3. art. 1.* Nundinæ ergo ſunt publici mercatus, quo-

rum libertas in eo cernitur, tum ne conſuetudine nundinatores alicuius debiti cauſâ, *l. unie. Cod. de mon.* tam ne vectigalibus onerentur, *l. 1. Cod. de veteranis, nouel. Valentin. & Marc. de filiis, exall.* Nundinas aliquo in loco ponere ſine Principis, vel Senatus auctoritate iure ciuili non licebat, *l. 1. ff. de nundinis:* & à Senatu hoc ius plerumque imperari, teſtis eſt Plinius in *epiſt. ad Valerianum, lib. 5. ep. 4.* Solori vñ Prætorius à Senatu petiit, vt ſibi inſiſtere in agris ſuis nundinas permitteretur. Atque ita Claudium Imperatorem, etſi legibus ſolutum, ius nundinarum in ſua prædia à Conſulibus periſſe, reſert Tranquil. in *Claudio, cap. 11.*

cap. 12. *In nundinarum in prima praelia* à Confili-
bus peti. Probat Alteslerca de Ducibus lib. 2. cap. 14.
de de nundinarum vfo agunt Petrus Gregor. lib. 2. f.
synagm. cap. 3. Aleius lib. 4. difp. cap. 8. Ofual-
dus lib. 17. Daniel. cap. 14. lictura 2. de lib. 2. cap. 7.
littera 2. Aencas Robertas lib. 2. rerum indic. cap. 16.
Nathona in l. 10. tit. 10. lib. 3. recapit. glaf. 1. & 2.
Castillo de tercia cap. 41. num. 96. Scaccia de com-
mercio §. 2. glaf. 4. per tot. Camil. Botelli. de prefentia
Regis cap. 46. Petrus Barbosa in l. lictura. ff. de
indictis. Gaito de credit. tit. 7. cap. 2. num. 2181.
Molfel. de contratt. tract. 12. cap. 7. refponf. 7. alij
congeffti à Barbosa ad tit. Cod. de mandan. Quid au-
tem per ea verba, nundinas, id est epulas, velut Vi-
pianus in l. eam officia 69. ff. pro socio, exponant
Gutheros de offic. domus Augufi lib. 2. cap. 13. For-
ner. lib. 13. rer. quod. cap. 28. Vilfembecchini difp.
par. 4. de V. S. & difp. 36. Defiderius Heraldus lib.
vrie. emend. cap. 4. Salernus ad ius Atticum, cap. 5.
Valeron in animadu. iur. cap. 8.

2.

e Ille quoque.] In hoc versiculo definitur
alius casus diuerfus à priore, & videlicet vtrum vfu-
ram committat qui anticipata folutione emit mer-
ces minori pretio quam futuro tempore sunt valo-
ræ. Circa quod dubium tres casus sunt distin-
guendi. Primus est cum emò à te titulum colli-
gendum mense futuro Augusto, pretio duodecim
regalium propter anticipatam folutionem; quod
pretium est minus iusto, quo tunc æstimatur tri-
ticum. Secundus est cum triticum emitur eo pretio,
quo tunc valeturum est, pretio anticipato pro ne-
cessaria venditione. Tertius est cum emò à te tri-
ticum colligendum mense Augusto pretio 8. dacty-
liarum, cum dubium est, an triticum eo men-
se plus, vel minus valeaturum fit. Et primo casu
certum est, vfuaram committi, eum ob motum
palliatum ex anticipata folutione emptor lucretum
confequitur. Secundo verò casu etiam patet vfu-
sam non committi, cum pretij anticipatio tan-
tùm indicat necessitatem vendendi triticum men-
se Augusto pretio currenti. Tercio casu similiter
vfuara non committitur, ex præfenti textu, & tra-
ditiis fuprà in cap. in ciuitate. Nam etfi taxetur pre-
tium ob anticipatam folutionem, tamen eum du-
bium est, an plus, minusve triticeum valeaturum fit,
æqualis conditio est, nam emptoris, quàm ven-
ditoris, vt dixi in cap. in ciuitate, & probat Atan-
jo in qq. moral. difp. 1. de statu ciuili, quæst. 1.
dub. 2.

d Ratione huius dubij.] Textum hanc partem
præfens textus exposui fuprà in cap. in ciuitate,
hoc tit.

COMMENTARIUM.

3.
CONCL.
SIO TRA-
DITUR,
ET PRO-
BATUR.

EX hoc textu communiter fequens deducitur
æffertio: *Vfuarius confensum est qui à debitoribus*
recipit aliquid ultra fortem principalem, etiam si susci-
piat in se periculum. Non est alia iuris decisio, quâ
probari possit præfens æffertio; eam tamen illu-
strant Lopus, Canifus, & Binsfeldius in com-
mentario ad hunc textum. Atazjo in qq. moral. difp. de
statu ciuili, quæst. 11. Petrus Gregor. lib. 3. par. 21. §.
cap. 3. 2. de vfu. lib. 2. cap. 5. num. 7. Molina tract. 1.
de iust. difp. 318. Lessius lib. 2. end. tract. cap. 20.
num. 156. Canifus de vfu. cap. 4. num. 2. Guibert.
Costan. qq. iur. c. 1. num. 12. plurius relatis Leo-
thardus de vfu. q. 2. 3. per tot. Gibalinus end. tract.
lib. 4. cap. 4. art. 3. per tot. Prado tom. 2. Thori. mor.
cap. 27. quæst. 3. §. 2.

Sed pro dubitandi ratione lo præfens æffertio
tionem ita infurgo. In præfenti casu periculo sus-
ceptio pretium & æffertionem recipit, l. 3. ff. de
nauis fœnore. Vnde quia contra naturam contra-
tus ereditor in pecunia traiecitia periculum sus-
cipit, receptum fuit iure ciuili nauticum fœnus,
vt constat ex l. 1. d. in nautico, l. nautici, l. periculi, end.
tit. l. 1. Cod. de vfu. Harmenopolis lib. 3. promp-
tit. tit. 7. l. qui Roma 122. §. 1. ff. de V. O. notantur Sae-
mientus lib. 7. fclcl. cap. 2. num. 6. Padilla in l. 2.
num. 25. Cod. de refend. Conar. lib. 3. variat. cap. 2.
num. 3. Quâ ratione etiam doctores in l. ea hoc iure,
§. lictura, ff. de donat. & in l. si remanendi, §. ma-
gnus, ff. de iudic. licet fideiussori pretium accipiat
pro periculo, cui se expone, foluendi pro reo
principali. Igitur quia periculum suscipit in pecu-
nia motuo data traiecitia, aliquid recipere valet,
Augur hæc dubitandi ratio ex eo, nam contra-
tus æffertionis, in quo quis suscipit in se pe-
riculum meritis, pecunie, vel aliarum rerum, quæ
de loco ad locum, mari, vel terra vehuntur, &
transportantur, taliter vt pro iusta mercede, si
quælibet res petat, ad eius æffertionem teneat-
ur, ratione suscepti periculi omni iure licitus est,
l. in nautem, ff. locat. quia continet rationem vtili-
tatis, & iustitiae commutatur. Igitur ereditor
qui mutuum pecuniam dedit, & eius periculum in
se suscepit, iustè pro eo pretium accipit.

Quâ dubitandi ratione non obstat vera est
præfens æffertio; pro cuius expositione scire oportet
fœnus nauticum, quod etiam maritimum ap-
pellatur in l. 6. ff. de nautico fœnore, percipi ex
pecunia traiecitia, quæ merè traiecitio datur ea
conditione, vt fœnus nauis appellat, restitutum vnâ
cum grandi fœnore i nauis vel petente naufragio
facto, tum fœus, tum lucretum, & omnis vfu-
ræ ereditori petetur: atque ita eum in communem
fœnore fœus debitoris periculo fit, in maximo
periculo ereditoris caiffis. Pericula hæc traiecitia
dicitur forensi consuetudine, quia quæcunque
pecunia trans mare exportatur, traiecit dicitur in l. 3. ff.
ad leg. fud. pecul. l. quærit 39. §. parum, ff. de admi-
nistr. iur. & fœnus hoc iam olim à Græcis cogni-
tum ab eis ad Romanos derivatum fuisse, ex Poi-
loce, Demosthene, & Lænio probat Gibalin. de
vfu. lib. 2. cap. 4. art. 3. Traiecitia hæc pecunia da-
batur periculo ereditoris duobus modis, nempe
vel in totum nauigationis tempus, vel in certam
tantum diem, quæ elapfâ periculum amplius non
spectabat ad ereditorē, & nautice vfuze cessabant,
ac communes curæ incipiebant, l. 4. & 6. ff. de
nautico fœnore, l. 7. Cod. de iur. Quare in cautione
exprimebatur numerus dierum, quorum periculum
subite vellet ereditor, quibus elapfis, licet nauig-
atio nondum finita fuiffet, ipse amplius peten-
tum non subiebat. Exemplum extat in l. qui Ro-
ma 122. §. Callimachus, ff. de V. O. quam perdidit
explicant Samuel Petrus ad ius Atticum fol. 409.
D. Ioannes Ramos in anal. ff. l. deperi. iur. ff. ad
leg. Rhodiam, Gibalinus ibi fuprà. Periculum autem
hoc, quod contra rationem subibat ereditor,
refpiciebat tantum naufragium: quare firmus hoc
pletaque exercebat ipsi nauticarij, & maxime
exercitiores, vt constat ex diff. l. 6. ff. de nautico fœ-
nore, l. 2. ff. nautæ, & emptor: nam fi à piratæis,
aut hostibus, incendijsve damnum accideret, nisi
exprefit de eo conuenitum fuiffet, ad debentem
periculum pertinebat, vt etiam fi ex iactura com-
muni vctumum confensu facta obueniret, & de-
nique, fi quid damni debitor fua culpa sibi acce-
deret, si quid damni debitor fua culpa sibi acce-

5.
DE NAVI
TICO SIO
BOER.

fuisset, velosi si illi eas merces exportaret, quas filius pro iure suo occuparet, l. 3. ff. de nautico fumnere, l. 1. §. Dominus, ff. de Publicanis. Tandem genus hoc fœnoris nautici suas peculiares leges habebat. Prima, ut navi saluâ appollâ, cessanteque periculo, vltur nautice quiescerent, & communes tantum currerent, l. 6. & final. ff. de nautico fumnere, l. 1. Cod. de iur. iur. Secunda, ut licet debitori mittere letum, qui comiseretur pecuniam, tamque periret eo die, quo debitor se solutum promiserat, dicitur §. Calimachus, l. 1. ff. de O. & A. l. 4. ff. de nautico fumnere, l. 1. Illustrat. Gibal. dicit. art. 3. Tertia, & specialiter lea huius fœnoris erat, ut solo nudo pacto promissum abique stipulatione euoluere deberetur, l. in quibusdam, ff. de nautico fumnere, propter periculi suspensionem, ut probant plures, quos refert, & sequitur Sitacca de affectu. tit. num. 24.

Deinde sciendum est, vltur nautici fœnoris non semper eandem fuisse, immo pro diuersitate navigationum, & magnitudine periculorum, pro temporis tempestate, in qua suscipiebantur, variæ erant, ut probat Salmasius de modo vlturum, cap. 5. & idem ait Paulus lib. 2. sentent. tit. 4. Traiectitia pecunia propter periculum creditura, quamvis nauis non, inspicitur vltur capere possit. Quæ verba ita exponit Anianus, in quatuor tamen, hanc pecuniam dare creditur possit. Probant Duarenum lib. 2. annotat. cap. 3. Lupus comment. 1. de vltur. §. 1. num. 32. Cuiac, in nouel. 106. Insin. Quare Iustinianus ne in infinitum exacercesceret vltur nautica, cum ad centensimum restinxit, in l. 1. et 26. §. penult. Cod. de vltur. In traiectione autem contradiis, vel specierum fœnoris dationibus, vsque ad centensimum tantummodo statuit licere stipulari, neque tam excedere, l. 1. et veteribus legibus hoc effectus concessimus, unde in l. inibi inter, §. 1. ff. de nautico fumnere, ea verba: Ad finem concessimus, non vltur duplam debemus, Triboniani esse respicientis ad dictam Iustinianam constitutionem, voluit Cuiacius in notis ad Paulum vbi supra. Sed hæc emendatio illi postea duplici lib. 3. vltur. cap. 38. Orthomano lib. 3. vltur. cap. 17. de cuius legis interpretatione videndi sunt Molinæ de vltur. quest. 4. Strac. de affectu, num. 17. Gibalinus dicit. art. 3. Postea tamen Iustinianus maiorem vlturam permisit in nouella 106, quæ deinde abrogata fuit in nouel. 126. de quarum constitutionum ipsius œconomia contendit Salmasius cap. 9. de modo vlturum, cum Molinæ in qq. de vltur legalibus, num. 59. Sed peruenimus iam ad soluturiam huius oarici fœnoris. Et quidem eius iniquitatem agnouerunt Pluareh, in Cœnæ Aluere, & Menipus apud Lætiolum in nua vltur. Primò enim insubstria eius apparet, quia suppositæ vlturas communes, vltur quas pro periculo suspensione aliquid addebatur. Secundo quia cum hæc quantitas taxa non esset, in immensum exercebatur. Deinde quia cum periculum rarum esset, tamen fœnoratos pro illo ad librum vlturam exigebat. Deinde quia creditor vltur communibus non contentus obstrigebat ad vlturas has promittendas, & simul portum pro pecunia ratione soluta, l. 1. ff. de nautico fumnere. Tandem quia eum hi fœnoratores nam, & merces illi impostas obligatas pignori pro sorte sua, & vltur haberent, ac proinde sine securitate iam prouiderent, quo iure pro illo periculo tam amplas vlturas exigere poterant?

His suppositis ut ad rationem præsentis constitutionis perueniamus, sciendum est, taxam hunc

variè à Doctores interpretari. Et primò Molinæ de vltur. quest. 3. num. 59. asserit Gregorium in præfati non improbare nauticum fœnus, sed tantum cum vltur promittitur pro periculo dubio, aut oallo, & ita suppositio, cuius prætextu fœnoratores suam iniquitatem tegebant. Verum hæc explicatio non reliction Couar. lib. 3. var. cap. 2. num. 5. Lupus comment. 3. de vltur. num. 1. Stracca de affectu, num. 27. nam Gregorius expressè agit de eo, qui in se suscepit periculum navigationis, & de eo, qui proficiscitur ad nauigas, vbi latronum periculo, & aliorum obuium est. Quare solet Princeps lege sua illuc conuenientibus securitatem præstare, l. 1. ff. de nauis, l. 2. Cod. de iur. iur. Alter Hadrianus in 4. rail. de vltur. cap. Occurrit, caponit Gregorium, & ait, cum loqui de pretio insulto, quod excedit estimationem periculi suscepti. Verum hæc sententia conuincitur à Couar. Lupo, & Strac. vbi supra, facit ex illis verbis: Aliquid extra sortem, in quibus de modis vltur agitur. Alij dixerunt, Gregorium in præfati agere de fœnoratore, qui eogit debitori contrarium illum affectuationis celebrare, quia aliter mutuatorum non erat, nisi suscipiendo periculum sortis, & ita ob illud immodicas vlturas exigendo. Ita Antoninus a part. cap. 7. §. 2. tit. 7. Contradictus de contradi. quest. 59. com. 1. Syluest. verbo vltur l. 3. 35. Caietanus cod. verbo, casu 8. Nauaricus in manuali, cap. 17. num. 21. Lupus de vltur. comment. 3. §. 1. num. 3. Salas cod. rail. dub. 1. num. 7. Binsfeldius in præfati, quest. 1. com. 2. Palacios Rubius in cap. per vltur l. 1. meab. 6. §. 9. num. 12. Verum facile hæc opinio refellitur ex generalitate, quæ vitur Pontifici, nulla facta mentione talis necessitatis contradiis affectuationis. Alij tandem censuerunt, in præfati deesse negationem, legendumque esse, vlturam non est contradiis. Ita docuerunt Gindolius de iure mississio lib. 3. cap. 3. Ioannes Bernacius lib. 2. de vltur. legend. hyl. cap. 15. Natbana in l. 15. gloss. 2. num. 20. et 20. lib. 3. recoll. Layman lib. 4. summa, trail. 4. cap. 16. num. 13. Castropalao trail. 32. dist. 4. punct. 15. Pachineus lib. 2. contradi. cap. 48. Barbosa in præfati, num. 1. quos sequitur Gibalin. lib. 2. de vltur. cap. 4. art. 3. perpena vi dictationis, quæque, quæ vitur Pootifex in secundo casu, vbi docet, vlturam non committi: & ita videtur in primo casu idem asseruisse, cum dictio quæque, sit impliciter prioris casus, l. 3. §. 1. & §. in omittenda, ff. de acquir. possit. l. qui legatorum, §. filium quæque, ff. pro herede. Verum cum hæc sententia tepognet omnium codicum fides, eum in nullo negatur legamus, non ausim ita emendare Gregorium, præcipue cum eius sententia aliter explicari possit.

Hic ergo interpretationibus omisiss, credo eam fuisse Gregorij IX. mentem in præfati, ut cum tempore mutui vltur promittitur ob periculum peccaniz traiectionis suscepiam à fœnoratore, contradiis vlturam censetur, quia eleonstantia illa periculi à credidore sospite non impedit, quin stipulatio maioris quantitas, quam in mutuo numeratum est, fœnoraria sit, & fœnus contineat; quia in contradiis mutui, de quo agimus, vitium vltur non purgatur, licet ea pacto periculum ad creditorem pertineat, ut probant Alberici in l. libremus, Cod. de sacros. Eccl. ff. Decius consil. 123. num. 1. Alexand. lib. 4. consil. 122. Cornuc lib. 4. consil. 1. Leonhardus de vltur. quest. 23. num. 17. Sed si per se, & simpliciter mutuo celebrato, posita sgarur de affectuatione illius pecunie traiectionis,

PRÆSEN-
TIS IN-
TERPRE-
TATIO-
NIS.

DE VLTUR
NAUTICIS
ET BARBIS
INVI-
TIA.

8.

TRA-
DI-
TIONE
PARA-
TIO.

7.
VARI-
A.

etiam, tunc propter periculum quod in se suscipit creditor, recte potest aliquid accipere, dum tamen non obliget ipsum debitorem ad contractum illum asecurationis celebrandum; quia tunc usura committitur, siquidem vsutarius contractus censetur ille, in quo debitor vltra sortem obstringitur aliquid emere, vendere, locare, etiam in solo pretio, quod facere minimè tenebatur. *Covar. lib. 3. pariter. c. 1. num. 5. Leonhardus dist. quest. 23. n. 6.* Unde exilissimo Gregorij in presenti improbare nauticum fœcus propter iure civili receptum erat, quia simul cum ipso mutuo vsutæ promittebantur, et si periculi subeundi facta mentio; non autem improbare Gregorij contra dum asecurationis, eum per se, & separatim celebretur, nullâ ratione habita motui, sed periculi suscipiendi: & ita presentis constitutionis sublatæ sunt vsutæ palliæ, quæ facili committerebantur, eo quod multi non innocentes gravitos mutuatores, qui sine lucro vellente ubi mutare, fingere se velle trahere pecuniam mutuatam in alias provincias loogin-

quas, & petebant à monente asecurationem pro certo pretio: vnde dedacit Gregorij prudentissimè præsumptionem, quod iste sic mutans pecuniam mutuatam per loca periculosa, suscipiendo periculum in se ob aliquod pretium, est censendus vsutarius, quia præsumitur quod vi mutui vult illud pretium extorquere absque necessitate asecurationis, ideoque forsitan Pontifex non dicit, *Est vsutarius; sed, Censendus est vsutarius.* Nec obstat dubitandi ratio super adducta; nam fiteor ob periculum pecunie trahendi aliquid recipi posse, sed eam mutuum, ratione periculi, & alterius contractus sortem celebrati; nam aliâ fœcus nauticum fœcus est, & mutui ratione vsutæ recipi, quod sacris canonibus omnino improbat; quare etiam subdola hæc Gregorij constitutione, potius nauticum fœcus, & matilias vsutæ esse prohibitas, & contineri sub generali illa prohibitione, quâ omnis vsura iure diuino, & Pontificio prohibita est, ut si deest hæc constitutio, adhuc usas esset fœcus nauticum exercere,



TITVLVS XX.

De crimine falsi.

CAPVT I.

^a Augustinus.

Falsidicus testis tribus personis est obnoxius: primùm ^b Deo., cuius præsentiam contemnit: inde ^c iudici, quem mentiendo fallit: postremò innocentem, quem falso testimonio ^d lædit. Vtque ^e reus est, & qui veritatem occultat, & qui mendacium dicat: quia & ille prodesset non vult, & ille nocere desiderat.

NOTÆ.

- ^a *Augustinus.* Ita etiam legitur in prima collectione, sub hoc in cap. 1. & ex eodem Sando textus hic citatur à Burchardo lib. 16. Decret. cap. 12. Gratiano in cap. quisquis 80. 11. quest. 3. Sed inter opera Diui Augustini non reperiuntur verba in presenti telata: extant tamen apud Didacorum lib. 3. sentent. cap. 55. de testibus, vti iam notantur Ant. August. in presenti, Aldrete in antiquis. Hispan. lib. 2. cap. 11. Integram epist. D. Iudori transcribo, vti facillius præsens textus intelligatur: *Es si mendacium gratis dicatur, quomodo magis si venale queratur? neque enim decet multiplex conuentus falsarium, si tanta presentia sit munerum. Testis falsidicus tribus est personis obnoxius. Primùm Deo, quem perjurando contemnit: secundò iudici, quem mentiendo fallit: postremò innocentem, quem falso testimonio lædit. Vtrum prout crimen habens, & qui falsitatem præmit, & qui suppressit veritatem; quia ille obesse vult, & iste prodesset non vult. Peior est testis, qui lædit, quam qui præsens non vult. Nam ille malignus est, iste humilis. Testibus falsis conuictis eandem mendam q. iustitias reperiunt. Quod si separati fuerint, examine indicantis ciuis manifestantur. Nam sicut in variis prouinciarum grandis est fortitudo, ita in separatis maior infirmitas. Fraudulencia ciuis reprehenditur mendacium, falsidicorum enim testimonium*

sibi non conuenit. Iniquis testis, quomodo sua falsitate corpori, rebusque impedit, animo tamen nihil damni confert. Erit autem ille apud Deum condemnatus, qui aduersus innocentem falsum testimonium vel dicit, vel dicentibus credit. Nam non solum ille reus est, qui falsum de alio præstet, sed & is, qui cum auctorem criminibus præbet: qui metu periculi veritatem occultat, eiusdem veritatis truncationi sibi carius pronocat: quia plus perimecit hominem, quam diuinam trepidam indignationem. Reus cuius testimonio innocentem ab scelere obiecto purgatur: impius cuius proditiōne etiam iniquus perimitur. Neque enim decet Christianum morti obnoxium prodere, & ad effundendum sanguinem infeliciū vocem iustificationis præbere. Sermo enim iusti hominis tantum ad iniustitiam debet esse salutaris; ira enim indignationis, & tribulationis, & immisionis per angelos mada. In hoc capite agitur de testibus falsis, de quibus, eorumque peccatis egit in can. 74. Concilij Illiber.

^b *Deo.* qui præfatus est omnibus adibus hominis: quare ob peccatum ita perpetuum illi penitentia iniungitur. Facit lex victima in fac, tit. 1. par. 1.

^c *Iudici.* Vnde ab eo extraordinariè puniri potest lite pendente. *L. iulium, Cod. de testib. c. 2.* sed verò finit ad instantiam accessoris: & si aliis sit incompetens, ex eo, quod testis falsus deliquit coram ipso falsum depouendo, sit competens secus

CAPVT II.

Lucius III. * Vig. Episcopo.

Sper eo autem, quod sententiam auctoritate falsarum literarum latam noluisse executioni^b mandare, tuam plurimum prudentiam commendamus, mandantes, ut quotiens aliqua scripta sub nostro nomine impetrata redarguenda videris falsitatis, nullam eis adhibeas fidem; & quod per ipsa mandatum fuerit, non obserues; sed eum, qui presentauerit, retineri facias diligenter.

NOTÆ.

1. ^a *Vigorniensis.*] Ita etiam legitur in secunda collectione, *sub tit. de re iudic. cap. 4. De Vigornicensi Ecclesia egi in cap. 8. de filiis presby.*
 2. ^b *Executioni mandare.*] Nam si sententia lata ex falsis instrumentis, aut testimoniis, postquam apparuerit de falsitate, infirmatur, l. *Diuus* 33. ff. de re iudic. l. 1. & per tot. *Cod. si ex falsis instrum.* licet interim dum non constet de falsitate, executioni

mandetur, l. 2. *Cod. ad leg. Corn. de falsis*; quamvis magis eum ex falsis literis delegationis prolatam est. Nam eum deficiat precipuum iudicii fundamentum, hoc est iurisdicatio, sententia nulla est. In presentem autem specie debebat Episcopus Vigornienfis supersedere in executione sententie, & cognitionem falsitatis litterarum remittere ad Romanum Pontificem, iuxta tradita in *cap. de carceri, de re iudic.* vbi num. 33. textum huic exponit Balboa.

CAPVT III.

* Urbanus III.

Ad audientiam nostram te significante peruenit, quod cum quosdam peruersos clericos, qui falsauerant^b sigillum charissimi in Christo filij nostri Philippi Regis Illustris Francorum, carcerali custodiæ mancipaueris, quid faciendum tibi sit de ipsis, ab Apostolica Sede duxisti consilium inquirendum. Vnde frater nostrorum consilio respondemus, ut eis nec membrum auferri, nec poenam infligi facias corporalem, per quam periculum possint mortis^d incurrere; sed eis pius a suis propriis ordinibus^e degradatis, in signum maleficii, characterem aliquem imprimi facias, quo inter alios agnoscantur; & prouinciam ipsam eos^f abiurare compellas, & abire permittas.

NOTÆ.

1. ^a *Urbanus III.*] Ita etiam legitur in secunda collectione, *sub hoc tit. cap. 2. nullibi tamen exprimitur cui referat Pontifex, licet facile cognoscatur rescriptisse alicui Prelato Galie, vbi presens excessus contigit; siquidem agitur in presenti textu de clerico falsificante sigillum Philippi Regis Gallie.*
^b *Sigillum.*] Quo utebatur Rex in literis suis signandis, iuxta generalem morem apponendi sigillum in literis publicis, quem illustramus in *cap. 6. de fide instrum.*
 2. ^c *Carcerali custodia.*] Sed si iam clerici falsitatis erat carceri mancipatos, ad quid Episcopus consulebat Pontificem super illa poena illi imponenda, eum carceris detrusio propterea sit poena clerici falsarii, *cap. neminus*, §. *final. de P. S. ibi: Pro illo vero falsario, quem ad mandatum nostrum capi fecisti, hoc tibi duximus consulendum, ut in perpetuum carcerem ad agenda penitentium ipsum includas*; Et merito, nam etiam pro atrocioribus delictis non alia poena iure Canonico imponitur, quam detrusio in carcerem, *cap. si quis clericus*, 81. *dist. cap. penult. de heretic. cap. de lapsis* 42. *cap. commissi*, ord. in 6. *Clement. 1. ord. tit. cap. quamvis*, de penis in 6. *Concil. Tarracon. 1. can. 1. Matiscan. 1.*

can. 5. Aquisgran. can. 134 Petrus Gregor. lib. 4. partit. tit. 15. cap. 4. Salcedo in praxi, cap. 137. Saurus ad Siden. lib. 3. epist. 1. verbo Carcer. Ergo si iam clericus falsarius erat carceri mancipatus, frustra consuluit Episcopus Urbanus super alia poena illi infligenda. Cui difficultati respondendum est, discrimen constituendum inter detractionem factam in carcerem, ut ibi perpetuo reus poeniteat; & inter carceris mancipationem factam tantum ad custodiam, dum eandem ipsa criminalis disceptatur. De prima detractione accipiendus est textus in *dist. cap. neminus*, §. *final.* vbi clerico falsario imposita fuit poena illa perpetui carceris. De secunda vero detractione tantum custodiam causam agitur in presenti; & regulariter carceris mancipatio pro hac accipitur, quia carcer ad custodiendum, non vero coercendum homines inuenitur est, l. *aut damnatus*, §. *solent*, ff. de penis, l. *incredibili*, C. *cod. l. 1. ff. de custod. reor. c. quamvis*, de penis in 6. Illustrant Pollerus lib. 5. *hist. fori*, cap. 14. Pantoza in l. 1. ff. de aleat. c. 11. Panciola lib. 1. *ver. cap. 41.* Petrus Gregor. lib. 31. *synag. cap. 33.* Amaya in l. 2. *C. de exal. vno.*

^d *Atrociter incurrere.*] Quia Ecclesia semper abhorruit poenam sanguinis, *cap. sape*, *cap. bis a quibus*, 23. *quest. ult. cap. sententiam*, vbi notati, non clerici vel monachi.

^e *Degradatis.*] Idem depositis degradatione verbal

verbali à suis ordinibus, non vetò degradatione
reali, de qua egi in cap. cum non ab homine, de
indic.

f. *Cherafterem.*] Iuxta ius commune licet si F. quæ est prima falsarij, sed iuxta consuetudinem & praxim Franciæ inuritur Liliū, vt referunt ex Paponio Petrus Greg. lib. 36. *synag. cap. 5. num. 7.* P. Herodotus lib. 9. *Pandeſt. tit. 5. cap. 1.*

6 *Aurare compellat.*] Et ita clericus falsum committens circa sigillum Principis in exilium mittitur, abinatrā provinciam, id est iuxta mentem praestito ab eo, et nunquam provinciam illam ingressurum; quomodo abinatrā accipitur in cap. Abba, de his qui vi, cap. ex lueria, qui clericus, vel vnicap. cum veniens, de iustis cap. quia diligenti, de elect. cap. accepta, de restit. spol. De hoc pene exilium dicit ab Ecclesia visitata plura adduxi in cap. 1. de calumniat.

COMMENTARIUM.

Demptio capite primo, quod est de tellibus falsis, totus hic titulus est de concinnatoribus facrum literarum, siue rescriptorum, & eorum poenitis quare ex presenti textu, & ex *cap. falsarium*, infra hoc tit., sequens deducitur assertio: *Falsary literarum Apollinaris*, sive *laci* sunt, infamantur, & excommunicantur incertum: sive clerici, depellantur ab officio, & benedic. & si clerici, si glidium Principis falsum adinvenit, hystereat metui in eadum mittitur. Probant eam textus in *cap. Episcopus*, 70. *id. cap. si quis consiliarius* 32. *quest. 3.* *cap. olim* 23. de rescriptis. *etiam ex litteris* 33. de testib. *cap. 6. de excessib. Pralat.* *cap. novimus* 27. in fine, de P.S. Cancell. Salebrag. tempore Martini IV. Item ad falsarium malitiam repræsentandum definitum, ut qui clerici, vel laici sigilla, vel litteras Principum, vel Prælatum falsare, vel falsis sciencis rei prefamant, ipsi falso sententiam excommunicatiuncie incurant, & clerici nubilantur, si de hoc comissi fuerint, cæteri Episcopi, necipendi; laici vero seculari iudicio sunt commendandi. Ex *can. 6 Bullæ can. Domini.* Ab specie consonat textus in l. 60. tit. 6. *part. 1.* Facit *lex 3. tit. 17. lib. 8. recipit.* Illustrant vetera consensu la Barboia in *presum.* Petrus Greguc, *lib. 4. part. tit. 11. cap. penult. & de benefic. cap. 26.* Petrus Bollo *eccon. canon. l. 1. cap. 5. §. 4. Marth. de iuris. part. 1. cap. 28. l. 1. Flagro de regim. Chir. Rcipib. part. 1. *disput. 4. §. 10.* Luoz, & Acellanus *lib. 5. singul. antimon. 5.* Formosius in *cap. cum non ab homine, de iudicis, quest. 10.* Duardus, & alij expostulatores Bullæ cenzæ Domini in *dist. can. 6.* Gibalvus *de censur. in synod. lib. 1. num. 1.**

Sed pro dubitanti ratione in praesentem assertionem ita infurgo: Si Sicut Dominus nocet nunc quam vindicatur bis in idipsum, ita nec Ecclesie unquam pro vno reatu plures poenae impositae, can. 74. *Apostol. cap. praefertur 17. dist. cap. si clerici*, et. 5. *hic, de poenit. dist. 3.* Ergo non recte in praesenti pro vno delicto, videlicet falsitatis, de gradatio, insolito, & exilium impositur. Deinde difficultas est poena insoluita, seu impressio characteris; tum quia poena haec linguinis effusionem continet, vt constat ex *cap. sententiam. ibi: Adhuc non, ne clerici, sed monachi.* Tum quia post Constantini constitutionem in *l. si quis in mortal-*

Stat Forner. lib. 6. rer. quod. cap. 25. Igitur non te-
tè peena inuentionis in facie falsario imponitur.

Qui dubitandi ratione non obstante vera est
pretius assertio, pro cuius expositione scelerandum
est, falsum nihil aliud esse, quam veritatis mu-
tationem. *Novat. 73. l. i. §. 1.* Vnde variis modis
committitur falsitas, nam circa personas, quam
circa res. Circa personas, veluti patrum supponen-
do, *l. qui falsum 19. §. 1. ff. ad leg. Corn. de falsis*,
l. cum suppositis 6. Cod. eod. tit. Et Senat. de aucto-
ritate Plautino cautum fuisse de ea, quae subiecit in *l. 1.*
ff. de liber. agnos. & obstrictum, quae parum alienum
attulit, ut supponi possit, iustum simpliciter
affici placuit Paulo *lib. 3. §. 1. ff. de i. 4. §. 1.* Et po-
na suppositi patris capitalis est, *l. 1. Cod. de falsis*,
arque accensio huius criminis praescriptione ordi-
naria non tollitur, *l. qui falsum 19. §. 1. ff. ad leg.*
Corn. de falsis, nisi vicenarii praecipitio sit. Cuius
lib. 4. ab for. cap. 1. & item falsum committit liberus,
qui pro ingenuo se gestit, cum neque ius auctorum
annulorum imperasset, neque à Principe resti-
tutionis natalibus affici, *l. 1. Cod. ad leg. P. §. 1. ff. ad leg.*
l. 1. Cod. si serv. aut liber. ff. de i. item si quis i. l.
suum nomen assumptis alterius decipiendi gratia,
l. falsi 13. ff. ad leg. Corn. de falsis: aliis exhibet
licetum est nomen mutare. Paulus *lib. 5. §. 1. ff. de i. 1.*
lib. 13. §. 1. ff. ad leg. Corn. de falsis: *l. 1. ff. de i. 1.*
lib. 13. §. 1. ff. ad leg. Corn. de falsis: *l. 1. ff. de i. 1.*
deinde si quis alienis insignia usus fuerit, vel falso
diplomate vias commenerit, *l. 17. §. 1. ff. ad leg.*
Corn. de falsis, ubi per diplomata intelligit Ant.
Marthaeus *ad eundem tit.* litteras tractatorias, de quibus
nonnulla notavi in *cap. 1. de offic. ordin.* Item si
quis de iudicis amicitia, vel familiaritate men-
tus, eventum sententiae eius viderit, quod
veteres dicebant fumum vendere. Paulus *dist. 21. §. 1.*
l. qui explendi 10. Cod. de accusat. Explicat
Dumetius *lib. 8. animat. cap. 3. l. 1.* proximi sunt qui
hostie inobedientiam, militum rogatum, seu ar-
matam menthorum. Circa res falsum committitur,
veluti circa monetas, *l. 1. Cod. de falsis mo-
net.* Probavi in *cap. quante, de iur. jur.* Circa men-
suras etiam; & quidem Trajanus eadum proposu-
it, quod penam legis Corneliae in eos hauriri,
qui mensuras corrumpissent: & Hadelanus cum
qui falsas mensuras habet, in insulam relegantur
Lanman. 6. §. 1. & 2. §. 1. de extra. ordin. crimin. &
talibus falsitatis furtum committit, venditorique te-
nener, qui maiora pondera emptori commodat,
cuius ad pondus emittit, *l. si quis vixit 22. §. 1. mulo-
ra 22. ff. de furt. & simul aditionibus est emptio, &
de dolo tenetur, l. si quis 22. ff. de alicui. empti, l. har-
bitria 18. §. 1. de eo 3. ff. de dolo.* Etiam in Dardanios
propter falsum mensuratum modum ob vitilitatem
popularis annonae pro modo admodum citius inter
ordinem vindicari placuit, *l. si quis 38. ff. de penit.*
Item falsum committitur citra falsitatem: de qua
victima falsitatis praecipue agitur in hoc titulo; & ideo
cum tantum prosequamur. Circa falsitatem ergo
falsitatis admittitur, si raris literis aliter in locum
eius, quod ante scriptum non erat, scribatur, *cap.*
olim 25. de script. cap. liber, §. 6. hoc tit. quia in lo-
co suspensio, *cap. ex confessione §. hoc tit. cap. cum*
olim, de primil. cap. i. de fide infirmum, cap. cum
*venerebilibus, de reliq. dum. chirographum alienum im-
petrat, l. qui sui falsum 25. §. 1. ad leg. Corn. de falsis*, vel
alia modi scripturae forma, vel stylus immen-

DETUNE.

3.
CONCLY-
NOTAR-
DITVE,
ST PEG-
BAYE.

4-
IMPTUA-
TVE TEA.
DIVE AL-
SABITO.

Tunc felix quovis aliquis tortore vocato

Vincit ardenti duo propter linca ferro.

Calumniatorum etiam fronti ex lege Rhemia, seu Merita literam K. inori, probavi in cap. 1. de calumniis. aut qui dominum na offendissent, ut in eigaletis compedii mitterentur, signate in fronte notabantur, iuxta illud Martialis lib. 3. epig. 31.

Prescriptum famulus servavit fronte notatus.

Aulonius epig. 15.

Tam servus scriptor, quam lentus Pergame censor

Fugisti, & primo capiti os in stadio.

Ergo notas scripsit tolerasti Pergame calum,

Et quas neglexit dextera, finis pariter.

Et metus subsecutus epigrammae.

Pergame nam velle punitis fronte subijsti

Supplicium, lenia quod mittere vultus.

At in, qui dominum peccantia membra coercet.

Inimicum falsis extirpare reos.

Aut inscribere istam, qua non vult scribere dex-

tram;

Aut propositi ferri pondere nolle pedes.

D. Angustin. ad D. Paulum cap. 6. ad Galatas, ibi Stygmata dicuntur quaedam panem servitium nota, ut si quis servus in compedibus fuerit, propter noxam, id est propter culpam, vel huiusmodi aliquid passus fuerit, stygmata sui dicantur; & idem in iure, munitio inferioris est ordinis. D. Clemens Alex. lib. 3. paedag. cap. 2. Non secus adulterum floridis coloribus, ac fugitum in iussu corporis notae indicari. Secura epig. 47. Hinc ferri dicuntur literae à Plauto in Casina, & in Olymp.

— Si si literatus me finat.

Martial. epig. 19. lib. 1. Apuleio lib. 9. de Asino, Plinio in paneg. ad Trajanum. Faciunt textus in l. cum de leonibus 18. §. 1. ff. de fundo instrum. iuncto Coniano lib. 2. comment. cap. 6. plura de his notis scripsit Aloysius Nonius, lib. 3. sacrar. elect. excurs. 24. pag. 431. Hietman. Hugo in tract. de prim. scrib. virg. cap. 19. eoque nonnulli referunt textum in l. 1. §. 21. cum sequent. ff. de servis fugit. Nec solum notis ferri illi inurebantur, verum & eiacetribus frontes eorum deformabantur, l. lo. cum, ff. de infam. notatum Cuiac. lib. 7. observ. cap. 13. Ramirez ad Martialis, lib. 2. epig. 29. & fetui, in quorum facie, vel alia corporis parte India ferro impressa fuerant, si manumittebantur, minorem libertatem assequerantur, tantumque dedistis fribant. Cuius lib. 1. insti. tit. 1. Vlpianus in fragm. 1. notantur Cuiac. ibi, Pignoratius de servis, Cneller. ad manumiss. cap. 2. Olanus lib. 4. Paradip. cap. 4. Forner. lib. 6. rer. quid. c. 25. Quio & circa delictum aliquod btechia, & manus aliquotum punctis notata reperio; nam yronibus stygmata inuri solebant, ita tamen, ut manus, aut lura, non videri nota notarentur, ut ex Vegetio lib. 1. de re milit. cap. 8. & lib. 2. cap. 5. notantur Liplius de militia Roman. lib. 1. dialog. fin. Streubehus ibi. Et quoniam Fabricensium eorum ad eorum militum penitenciam, ideo yronum exemplo nota solebat eorum btechis infligi, l. stygmata, Cod. de Fabricens. lib. 11. & eos, qui alieni Deo consecrabantur, his stygmatibus inuri sollos prodi Prudentius hymno 144.

Quid cum sacrandu accipis Spragmida?

Atus minutas ingerunt fonnacibus,

His membra percutit vire, ut igniurint,

Quamvisque partem corporis ferunt nota

Stygmatibus, bene sic consecrantur praesent,

Emulit unde cum reliqui spiritus,

Et ad sepulchrum pompa servus foret,

Partes per ipsas imprimunt brailles,

Insignis auri lamina obducit cutem,

Tegitur metallo quod perstrum est ignibus.

D. Augustinus epig. 1. D. Gregorius lib. 2. epig. 107.

D. Chrysostomus homil. 3. in epig. 8. ad Corinthios.

Nec dissimili ratione Zeno aquariorum maioribus signum imprimi voluit, ut militis quodammodo sociati, excubitis aequae custodiendae incedentes inbaretent, l. promit. Cod. de aquaductu. Exequutoribus quoque, qui circa lites male versati fuerant, corporales maculas imponi iubet Imperator in l. 2. Cod. de sporal. Eo etiam promissi scilicet Geotillum erga Chistitanos, ut servilibus notis frontibus eorum detotarent. Pontius Diaconus in altis sancti Cypriani, ibi: *Quis tos confessoris frontibus notatum secunda inscriptione signavit,* & ad exemplum martyrum specieris referamus incensum sub caelestis animam? Variis exemplis illustrat Theophilus tom. 14. tract. de stygmatis sacra, & prophano, cap. 6. Vnde etiam Imperator Constantinus in Synodo Nicena. agnovisset paxelatos fidei confessores ita deformatos, patercipue Osum Cordubensem Episcopum, ut resecti Nicephorus lib. 8. hist. Eccles. cap. 14. ideo edidit evulsionem, quae erat in dist. l. si quis metatum, l. 1. Cod. Theod. de penis, qui mortem illum sustulit, & manus potius, aut furas, quam faciem notari voluit. Iure etiam nostro Hispano contrahentibus binas notitas litera Q. in facie imprimi iubetur in l. 1. tit. 1. lib. 5. recipi. ubi pro Q. legendum esse P. iam notavi in cap. 1. de sponsa dote. & Antichristum, his stygmatibus vifum fore erga Christianos, late probat Mafuenda de Antichristo lib. 8. cap. 18. Nec dissimili exemplo eacodimones vbi Christianos insidiosos artibus à recto vivendi tramite ad sortilegas artes, & ocellis veneficia traduxerunt, eos quasi capillos nota quibusdam in fecera corporis parte consignavit, ut fuisse probant Paulus Zacchias lib. 7. 99. medicolegal. tit. 4. Theoph. Raynaud. dist. tract. 14. de stygmatis: prosequitur alia de his stygmatibus Panetolia lib. 2. var. cap. 41. Buleng. de Circo, cap. 9. Soloz. tom. 2. de iure Indiar. lib. 1. cap. 14. Torreblanca de iure spirit. lib. 11. cap. 15. Liplius de milit. Romana, dialog. 9. & lib. 2. elect. cap. 15. Salmut. ad Panetol. lib. 2. memorab. tit. 2. Vater Pinto Ramirez in Cenic. cap. 8. vers. 6. Demster. ad Resnum lib. 9. cap. 13. Pelleet. ad Palif. Gogera, sientia 34. fol. 234. Streubehus ad Vegetium lib. 2. de re milit. cap. 5. Basilias Legion. quaff. 7. feb. ff. cap. 2. Burgeus cont. 2. obs. 88. l. Gothofred. in dist. l. 1. Cod. Theod. de penis, Byerlinch in theatro, verbo Nota, D. Nicolaus de Castro ad l. 1. Cod. de gladiis, cap. 26. D. Fiane. de la Espada in presenti, p. Mendez in quodlibet. quaff. 2. postrema, num. 7. Doletus ad Tacitum lib. 1. fol. 74. Cassanet ad Lellam, Form. lib. 7. diuinar. insitut. linea 44. Zetia ad lib. 5. Aeneid. Virg. vers. 543. Turnebus lib. 24. aduers. cap. 12. Lelius Manc. lib. 1. de trip. ior. colat. cap. 70. Bouius lib. 1. Roma saluer. cap. 26. Quibus supplicis dicendum est, quod licet huiusmodi stygmata in facinorosos eandem ferro inurebantur, ac deinde atramentum infundebatur, iuxta illud Iuvenal.

Tunc felix quovis aliquis tortore vocato

Vincit ardenti duo propter linca ferro.

In parientis tamen casu elatact non ita profunde imponebatur, ut sanguinem eliceret, sed co-

tis superficies deformabatur in signum tanti criminis, ut notat Glossa hic, verbo *Charactere*, quam sequuntur omnes repetentes in presenti: & ita ex hac poena sanguinis effusio non sequitur. Nec obstat quod expendebatur ex dictis, *quis in mercedem*; nam licet Urbanus III. in presenti casu iubeat characterem apponi clerico falsum committenti circa sigillum Regis, non inde sequitur innotandum esse in facie, sed in aere, vel alia corporis parte.

Sed presenti assertioni obstat textus in cap. *falsarium* 7. hoc titulo, ubi Innoc. III. statuit, clericos falsum committentes circa litteras Apostolicas, à suis ordinibus esse degradandos, & iudicii seculari tradendos, ut ab eo debitis afficiantur poenis. Ergo non rectè in presenti docetur, clericos falsum committentes circa sigillum Principis tantum deponendos esse, & in exilium mittendos. Fuerunt aliqui, qui asseruerunt, gravibus

pauit falsitatem litterarum Principis, quam diplomatum Regiorum: sed illis omnis veritas dicendum est, Urbanum in presenti poenam statuisse in clericum falsarium Regis sigilli, antequam Innocentius III. ederet prædictam constitutionem, cuius ipse sapiens meminit in c. *hinc*, hoc tit. *et monemus*, de P. S. licet enim iam Carolus Magnus statuisset, ut ex Concilio Tributeni refertur in c. *in memoriam* 19. diff. falsi crimen ad Romanæ legis definitionem ponendum esse, idest deportatione ex lege Cornelia de falsis, tamen usque ad dictam Innocentij constitutionem cautum non erat, ut clericus falsarius degradatus traderetur iudici seculari; quod noviter se constituisse Innocentium satis ipse innuit, dum in dicto cap. *monemus*, ait, in nostro decreto contra falsarios edico. Observe autem Claronius lib. 1. obs. cap. 1. Unde iuxta hanc temporum distinctionem facile conciliari possit prædictus textus cum dicto capite ad falsarium 7.

CAPUT IV.

Innocent. III. *Vv. Rhemensi Archiepiscopo, sancta Sabina Cardinali, & Suffraganeis eius.*

DVra sæpe mandata, & institutiones interdum iniquas à Sede Apostolica emanare multi arguunt, & mirantur, & in hoc ei culpam imponunt, in quo sinceritas eius culpæ prorsus ignara per innocentiam excusatur. Nos enim circa maiora negotia frequentius occupati, & cutam vniuersorum ex officio nostro gerentes, per quod sumus omnibus debitores, cum omnibus apud nos instantibus incontinenti satisfacere non possumus, quidam eo quod à semita iustitiæ oberrantes, aut ultra quàm permittit honestas suæ petitionis, licentiam extendentes, exaudiri non possunt, in motum propriæ voluntatis irrumpunt, & ad sua ingenia falsitatis, & artes perditionis cum animi exquisita malitia recurrentes, per falsæ astutiam speciei candorem puritatis Apostolicæ denigrare, ac deprauare nuntur. Ex cuius falsitatis ingenio quot, & quanta mala proveniant, cum per eum & innocentes quandoque damnentur, & rei ab obiectis criminibus absoluantur, necnon & Apostolicæ Sedis lædatur auctoritas, ipsa rei evidens malitia protestatur. Licet autem huiusmodi falsitas aliquandiu possit cum operibus tenebrarum abscondi; tamen quia per eam beatis Apostolis specialiter inferretur iniuria, ille à quo in persona eorum Romana Ecclesia auctoritatem super Ecclesias vniuersas accepit, unde & bulla nostra, per quam totius negotia Christianitatis aguntur, capitum ipsorum caractere præsignatur, perniciem tanti sceleris non patitur in tantum præiudicium eorum diutius occultari. Accidit enim nuper in Vrbe, quod quidam huiusmodi falsitatis astutiam perniciosius exercentes, in suis fuere iniquitatibus deprehensi: ita quod bullas, tam sub nomine nostro, quàm bonæ memorie Cælestini PP. prædecessoris nostri, quas falsò confinxerant, & quamplures litteras bullis signatas eisdem inuenimus apud eos, ipsosque captos adhuc in carcere detinemus. Nos autem honori Romanæ Ecclesiæ, & utilitati omnium paternæ volentes solitudine providere, de consilio fratrum nostrorum statuimus, & sub excommunicationis poena, & suspensionis ordinis, & beneficii districtius inhibemus, ne quis apud Sedem Apostolicam de cætero litteras nostras, nisi à nobis, vel de manibus illorum recipiat, qui de mandato nostro sunt ad illud officium deputati. Si verò persona tantæ auctoritatis extiterit, ut deceat eum per nuncium litteras nostras recipere, nuncium ad Cancellariam nostram, vel ad nos ipsos mittat idoneum, per quem litteras Apostolicas iuxta formam præscriptam recipiat. Si quis autem iuxta prædicti nostri transgressor extiterit, si laicus fuerit, excommunicationi subiaceat, si clericus, officij, & beneficii sui suspensione damnetur. Verum quia (sicut à falsariis ipsis accepimus,) tam ad partes vestras, quàm ad cæteras regiones per litteras transmissas ab eis fuis iniquitatis falsitas multipliciter est diffusa, fraternitati vestræ per Apostolica scripta mandamus, & districtè precipimus, quatenus provinciale Concilium euocetis, in quo solenniter, & generaliter statuatis, ut per singulas parochias publicè proponatur.

Quod si quis à Sede Apostolica literas impetrauit, quarum renor possit esse suspectus, & eis vii voluerit, vt statutam penam euadat, primò fiat collatio de falsa bulla cum vera; & si eam inuenerit falsitate notandam, Episcopo diocesano, Abbati, vel Archidiacono loci eadem literas non differat præsentare: qui veritate comperit illum, qui tales literas reportauit, si laicus fuerit, excommunicationi subiiciant; si clericus, ab officio, beneficioque suspendant. Ad hæc adiicientes statuimus, vt generale excommunicationis sententiam promulgetis, quam per singulas parochias faciatis frequentius innouari. Quod si quis falsas literas se cognoscit habere, infra quindecim dies literas illas destruat, aut resignet, si penam excommunicationis voluerit euadere, quam nisi forsan in mortis articulo, sine speciali mandato nostro à quocunque nolimus relaxari: nec etiam si præsumpta fuerit contra hoc absolutio, quicquam habeat firmitatis, ne fortè post tempora nostra falsitas interim occurrat cuiquam valeat præiudicium generare. Cæterum ad maiorem illius notitiam falsitatis habendam, vt fieri possit bullæ falsæ cum nostra collatio, præsenibus literis vnam de bullis falsis, cum vera bulla duximus appendendam: districtius iniungentes, vt quascunque literas inueneritis hæc, vel alia falsitate notandas, si quid actum fuerit occasione illarum, appellatione postpositâ irrisctis, ita vt huiusmodi falsitas nullo temporis spatio valeat excusari: & porrores earum tamdiu faciatis sub arcu custodia detineri, donec receperitis super hoc nostræ beneplacitum voluntatis. Datum Romæ apud Sanctum Petrum XIV. Cal. Iunij. Pont. nostri anno primo.

NOTÆ.

1. ^a *V. Rhemensis.*] In hæc sexta collectione, & in tertia, sub hac tit. 2. tantum legitur Innocent. III. sed inscriptionem & litteram restituo ex lib. 1. epistolæ ipsius Innocentij, correctio à Sirleto, vbi fol. 106. repetitur textus hic. Vido 55. Præsul Rhemensis, Cardinalis Episcopus Prænosterinus, Legatus Sedis Apostolicæ, fuit olim Abbas Cisterciensis, floruitque vsque ad annum 1206. vt refertur Chenu in serie Præfultorum Rhemensium, Mantique tom. 1. annal. Cister. in serie Abbatum Cister. Eius mentio fit in cap. de electis, de prob.
2. ^b *Capitulum ipsorum.*] Ex vna parte, nam ex alia solet apponi nomen, seu signum ipsius Pontificis, nisi dum Pontifex tantum creatus est, non consecratus; quia tunc licet tantum Apostolo-

rum Petri, & Pauli vultibus insculptæ expeditur, quod dimidium bullam dixit Innocent. III. lib. 1. regestr. epist. 33. vt obseruauit Cironius lib. 1. obs. cap. 2.

^c *Manibus illorum.*] Ex his verbis rectè probat Cohellus in notis Cardin. cap. 74. iam à temporibus Innoc. III. in vsu fuisse scriptores, seu scribas literarum Apostolicarum; de quorum officio & dignitate licet agit Cohellus ibi supra.

^d *Nuncium.*] Procuratorem videlicet eum speciali mandato, iuxta tradita in cap. notum 27. de rescriptis.

^e *Idoneum.*] Id est non excommunicatum, iuxta tradita in cap. ab excommunicato, de rescriptis.

^f *Excommunicationem.*] Ipso iure, vt docent Suarez de censur. disp. 2. c. sect. 2. num. 49. Gibalinus de censur. in Synopsi, littera F. num. 4.

CAPUT V.

Idem N. ^a Archidiacon. N. Archipresbytero, & Canonici Mediolan.

Licet ad regimen Ap. Sedis, quæ dante Domino, vniuersarum Ecclesiarum mater est, & ^b magistra, insufficientes nos vitæ, & scientiæ reputemus; quantum tamen Dominus nobis suâ miseratione concesserit, ab his propofimus abstinere, per quæ nobis possit meritò derogari: quamquam ex infirmitatibus humanæ defectu non sic formam perfectionis semper, & in omnibus imitari possumus, quin aliquid aliquando in nostris subrepat operibus, quod minùs circumspectæ providentiæ valeat imputari: quod tamen non ex industria, vel conscientia certa, sed interdum ex ignorantia, vel nimia occupatione contingit. Significasti siquidem nobis per literas vestras, quod cum quedam vobis fuissent licetæ præsentatæ, per quas vobis districtè præcipere videbamur, vt l. de Cimilian. clericum Ecclesiæ vestræ in Canonieum reciperetis, & fratrem, nec aliquem alium in Canonieum vocaretis, donec ipse præbendæ beneficium plenariè fuisset adeptus; earum tenore diligenter inspecto, vix eas credidistis de nostra conscientia processisse: vel si etiam processerunt, per nimiam fuisse ^c importunitatem obreptas. Cæterum cum easdem literas, sicut viri prouidi, & discreti, ad nostram remisissetis præsentiam, vt ex earum inspectione plenius nosceremus, verum ex nostra conscientia processissent, plus in eis inuenimus, quàm vestra fuisset discretio suspicata. Nam licet in stilo ^d dicta-

minis,

minis, & forma scripturæ aliquantulum coeperimus dubitare; * bullam tamen veram inuenimus, quod primum nos in vehementem admirationem induxit, cum literas ipsas sciremus de nostra conscientia nullatenus emanasse. Bullam igitur hinc inde diligentius inuenientes, in superiori parte, quâ filo adheret, eam aliquantulum tumentem inuenimus, & cum filum ex parte tumentis, sine violentia qualibet aliquantulum attrahi fecissemus, bulla in filo altero remanente, filum ex parte illa fuit ab ipsa sine qualibet difficultate auulsum, in cuius summitate adhuc etiam incisionis indicium apparebat: per quod liquidò deprehendimus, bullam ipsam ex aliis literis extractam fuisse, ac illis per vitium falsitatis insertam, sicut ex literis ipsius plenius cognoscetis, quas ad maiorem certitudinem vobis diximus remittendas. Cum igitur tantus excessus relinqui non debeat aliquatenus impunitus, discretionis vestræ per Apostolica scripta mandamus, & districte præcipimus, quatenus dictum l. nisi infra viginti dies post harum suspensionem à vobis commonitus ad præsentiam nostram cum testimonio literarum vestrarum satisfactorius accesserit, ex tunc ab omni ecclesiastico beneficio, & clericali officio, sublato cuiuslibet contradictionis & appellationis obstaculo, suspendatis; vel si beneficio caret, anathematis eum sententia innoderis: cum ab hac culpa non de facili sit credendus immunis, cum nec per fratres, nec consanguineos nostros nos (licet sæpius rogatos) potuisset inducere, ut super hoc nostras vobis literas mitteremus: ex quo fraudem auctoris, etsi principalis falsarius ipse non fuerit, sufficienter agnoscere potuisset, præsertim cum eo tempore præsens fuisse dicatur, quo contra falsarios de communi fratrum consilio publicè constitutum. Inter cætera sub pœna excommunicationis firmiter inhibentes, ne quis literas Apostolicas, nisi de manu nostra, vel Bullatoris nostri reciperet, illis dumtaxat exceptis, quibus propter dignitatis excellentiam indulgimus, ut per nuncios fideles, & notos id ipsum possent efficere. Ut autem varietates huius falsitatis, quas hæcenus deprehendimus, vos ipsi de cætero deprehendere valeatis, eas vobis præsentibus literis diximus exprimendas. Prima species falsitatis hæc est, ut falsa bulla literis apponatur: secunda ut filum de bulla verum extrahatur ex toto, & per aliud filum immixtum falsis literis inseratur: tertia, ut filum ab ea parte, quâ charta plicatur, incisum cum vera bulla falsis literis immittatur, sub eadem plicatura similis canabis restauratum: quarta, quod à superiori parte bullæ altera pars fili sub plumbo rescinditur, & per id filum literis falsis inserta reducitur intra plumbum: quinta cum literis bullatis, & redditis, aliquid in eis per * rasuram tenuem immutatur. Eos etiam à crimine falsitatis non reputamus immunes, qui contra constitutionem præmissam scienter literas nostras, non de nostra, vel Bullatoris nostri manu recipiunt. Eos quoque, qui accedentes ad bullam falsas literas cautè proiciunt, ut de vera bulla cum aliis sigillentur. Sed hæc duæ species falsitatis non possunt facili deprehendi, nisi vel in modo distaminis, vel in forma scripturæ, vel qualitate chartæ falsitas cognoscatur. In cæteris aut diligens indagator falsitatem poterit diligentius inueniri, vel in adiunctione filorum, vel in collatione bullæ, vel motione, vel obtusione: præsertim si bulla non sit æqualis, sed alicubi magis sit tumida, alibi magis depressa. Si verò, quod contra ipsum l. vobis præcipimus, neglexeritis adimplere, noueritis nos venerabili fratri nostro N. Vercellen. Episcopo præcipiendo mandasse, ut ipse id auctoritate Apostolica, sublato appellationis obstaculo exequatur. Datum Spolet. 2. Non. Septembris.

NOTÆ.

1. **A**rchidiano] In hac sexta collectione, & in tertia, sub hoc tit. cap. 2. legitur Archiepiscopo. Sed tam inscriptionem, quam literarum testamento exhibet. epistolar. Innocent. III l. 1. recognito à Sirleto, ubi fol. 169. reperitur textus hic. Et licet Bosquerus in notis ad Innocent. III lib. 2. epist. 35. referat epistolam hanc ad casum relatum in c. 6. de fide instrum. tamen doctus vir aperte fallitur, ut constat ex versuque textus contextura: siquidem in dist. cap. 6. agitur de lite mota inter Archiepiscopum Mediolanensem, & Abbatem monasterij de Secuzuela: ac verò in præsentia agitur de literis impetratis ad præbendam. De Menopoli Mediolanensi egi in cap. cum adre. de rescript.

D. D. Gonzalez, in Decretal. Tom. V.

b. Magistra.] Vi probavi in cap. 2. de summa Trin. cap. 1. de rescriptis.

c. Importunitatem.] Vnde tales literæ non valebant, iuxta tradita in c. si quando c. 5. de rescriptis.

d. Distaminis.] Distamina dixerunt mediæ ætatis scriptores formulas ipsas scribendi, ut probat Bosquerus ad Innoc. III. lib. 1. epist. 136. inde distator, qui formulam ipsam composit, de quo forsitan agitur in l. 2. de Leg. & decern. Legum. ibi: Nihil igitur obfiste distator, nemo consiliis obloquatur.

e. Bullam tamen.] Bulla quid sit, & vnde dicta, notavi in cap. 6. de fide instrum.

f. Constitimus.] Extat hæc constitutio infra c. 7. g. Per rasuram.] De hac specie falsitatis egi in cap. olim. de rescriptis. Alia etiam falsitatis indi-

cia congesseſſerunt Seſſe *ſem. 1. deſſ. 1. 18. P. Franc. Valena tom. 1. concord. in. in pœnomia Clement. cap. 5. & ex diuerſitate pœramentis oculi ſuſpicionem*

ſalſitatis, probant latè Valenzuela *conſil. 127. n. 151. Barboſa in cap. inter, de fide inſtrum. n. 3. ex diuerſitate pœpcri, & ſimilibus. Barboſ. voto 68.*

CAPVT VI

Idem a Antibarenſi Epifcopo.

Quam graui pœnæ ſubiaceat. *Et infra:* Ad audientiam ſiquidem noſtram ex literis in Chriſto chariſſimi filij noſtri Vvlean. Diocleiz Regis Illuſtris, necnon & tempore literarum tuarum, quas dil. fil. I. Capellano noſtro apud Durachium direxiſti, noueris perueniſſe, quod cùm Dominicus quondam Suacen. Epifcopus, qui coram eodem capellano, & dil. fil. S. Subdiacono, noſtro, tunc in paribus illis gerentibus legationis officium, fuerat de *b* homicidio *c*uſatus, & in Concilio apud apud Antibaren. Pontificalem reliquaſſerat dignitatem, ad noſtram olim præſentiam acceſſiſſet, à nobis rediens quaſdam tibi literas præſentauit, quibus aſſerebat, ſibi à nobis Pontificale officium reſtitutum. *Et infra:* Tu verò literis illis fidem adhibens, ven. f. n. G. quem in Suacen. Epifcopum electum caononicè diceris conſecraſſe, ab eadem Eccleſia remouifſti, præſato Dominico occasione literarum falſarum in ipſa Eccleſia reſtituto. Præſatus verò R. ſicut ſuis nobis literis intimauit, non credens literas illas de noſtra conſcientia emanafſe, tam ipſum Dominicum, quàm præſatum Epifcopum noſtro præcepit conſpectui præſentari, humiliter petens reſcripto Apoſtolicò edoceri, quid duceremus de ipſo negotio ſtatuendum. Nos verò ſcriptum literarum falſarum diligentiùs inuentes, in eis, tam in continetia, quàm in diſtamine manifeſtè deprehendimus falſitatem: àt in hoc fuimus non modicùm admirati, quia tu tales literas à nobis credideras emanafſe, cùm præſertim ſcire debeas, Apoſt. Sed. conſuetudinem in ſuis literis hanc tenere, vt vniuerſos Patriarchas, Archiepiſcopos, & Epifcopos fratres, cæteros autem, ſive Reges ſint, ſive Principes, vel alios homines, cuiuſcunq; ordinis ſint, filios in noſtris literis appellemus: & cùm vni tantùm perſonæ noſtræ literæ diriguntur, nunquam ei loquimur in plurali, ſive vos, ſive veſter, vel his ſimilia in ipſis literis apponatur. In falſis autem tibi literis præſentatis, in ſalutatione, dil. in Chriſto filius vocabaris; cùm in omnibus literis, quas aliquando tibi traſmiſerimus, te videre poteris à nobis fratrem venerabilem appellatum. Propter quod ſic te eſſe volumus in coſimilibus circumſpectum, vt per falſas literas denno nequeas circumueniri, vel falſi; ſed ſic literas Apoſtolicas ſtudeas diligentiùs inueneri, tam in *c* bulla, ſilo, & charta, quàm ſtilo, quod veras pro falſis, vel falſas pro veris aliquo modo non admittas.

NOTÆ.

1. *a* **A** *Niherenſi.*] Ita etiam legitur in tertis collectioe ſub hoc tit. cap. 3. non autem extat præſens epifkola inter editas à Sirleto, & Boſqueto; & ita corrupta eſt præſens litera, vt nullo modo cognosci poſſit, in qua orbis regione præſens caſus contigitur; nec apud Hometium, Gerardum, Metacatorem vlla mentio extat regni Diocleiz, & ciuitatum Antibarenſis, & Suacenſis, quorum mentio ſit in præſenti texto; nec Carolus à Sancto Paulo in ſua Geograph. ſacra eas recenſet.

b **De homicidio.**] Vnde priuandus erat ipſo beneficio, iuxta tradita in cap. de homicidio.

c **Bulla, ſilo.**] Iuxta textum in cap. lictis, ſup. hoc titulo.

COMMENTARIUM.

2. **P**ro hujus textus illuſtratione ſciendum eſt, iam olim reſcriptis, tam Imperialibus, quàm Pontificis ſalutationem adſcribi conſueuiſſe, ſolebant enim Principes ſalutationem præponere illis, quibus reſcripta diſtegebant, & non ſemper eiſdem

verbis, ſed aliquanulom diuerſis. Interdum ſalutatio adſcribebatur hoc modo, *Aue chariſſime*; vt conſtat ex inſcriptionibus legis 2. *C. de offi. Reſ. Provinc. l. 5. C. de priuile. eorum qui, in Theſſ. l. 1. eod. C. qui petunt tuc. l. final. C. ne quid public. letitia, l. 34. C. de heretic. Aue Denote chariſſime. Et l. 4. C. de apcrib. publicis. Aue Felix chariſſime. Et l. 5. eod. tit. Aue Cariline chariſſime. Et ex aliis congeſtis à Brillonio de formulis lib. 3. fol. 351. Cuius lib. 1. obſerua. cap. 15. Inter, in notis ad Symmachum, lib. 2. epif. 69. Vnde reſtituenda eſt inſcriptio extans in *ſi* qui homicidij, *C. de accuſat.* in hunc modum: *Aue Criſpine chariſſime nobis.* Notum Conſcius lib. 2. diſpoſ. cap. 19. Ponofices etiam hac formula vti ſolitos in reſcriptis, liquet ex cap. aliquando, de ſent. excom. ex procerio Decret. eaſque ſuit communis ſalutandi formula, *Chariſſime nobis*, vt in l. 2. *C. Theodoſ. de offi. Reſ. Provinc. l. 5. eod. C. de priuile. eorum, l. 52. eod. C. de apellat.* idque ſignificant notæ illæ *K. N. B.* in l. 27. *C. de Decret. l. 17. C. Theodoſ. de ſuſcepti. l. 13. C. Theodoſ. de laſtrali collar. l. 2. eod. C. de his qui ex publica collat. l. 5. & 8. eod. C. de falſa mon. Vnde reſtituenda eſt inſcriptio legis primæ, *C. Theodoſ. de argut. mulit. annu. & corrigendum codicis Gregorieni fragmentum***

fragmentum apud Petrum Pirum in collat. legum
Adfate, iuncto Briffonio ubi *ſupra*, fol. 314. Etiam
notandum eſt, tam Imperatores, quàm Pontifices
perſonas illas, quibus reſcripta mittebant, variis
nominibus inſcriptiſſe. Imperatores in reſcriptis
ad Præfectos Prætorio, & Patricios miſſi, eos
patentes appellabant, l. 4. C. de locato, ibi: *Ad*
Domicium Aliphanum Præſectum Prætorio, & parentem
meum. Et l. 6. C. de amonit, in Theod. ibi: *Præ-*
ſecti Prætorio, parentis, amicique noſtri. Plura con-

greſſi Briffonius de formulis fol. 312. Cùm verò Re-

ctoribus Provinciæ, & Comitibus reſcribebant,
eos fratres appellabant. Theodoſius, & Valerius in
Novel. de patrimoniis lib. rei domini, ibi: *Marcelline*
frater amantiffime. Calliſtorus lib. 6. ver. in formula
Reſtor. provincie. ibi: *Quid de te exiſtimatum ſit, da-*
citur aduerti, cui tot videtur nobilis poſſe poſſe
additur quod à Principe frater vocaris. Romanj
etiam Pontifices pro diſtincte perſonarum diuerſis
vtantur nominibus; ſi enim Episcopis, Archiepi-

ſcopis, aut Patriarchis reſcripta mittunt, eos fra-

tres appellant, cap. *perennis*, 84. diſt. cap. *fra-*
tres, 86. diſt. cap. *dilectus*, de offic. *arleg*, cap. *cum*
dilectus, de clerico, non reſc. cap. *uenerabilis*, de ex-

ceptis, cap. *uenerabilis*, de iudiciis, cap. *uenerabilis* de

confirm. uel. nec ſine ratione: nam Episcopos Apo-

ſtolorum ſuccelloribus pari conſortio cum D. Petro,

ac eius ſuccelloribus honorem, & potestatem

accepterunt, cap. in *nemo*, 21. diſt. & participes

ſunt dignitatis Episcopalis cum Pontifice, cap.

prætoris, 51. diſt. quia vocati ſunt in partem ſolli-

citudinis, cap. *fundamentum*, 5. debet, de elect. in 6.

quæ ſocietas iuxta quodammodo fraternitatis ſe

habet, l. *verum* 63. ff. *pro ſocio*: conſiderant P.

Greg. in *proem. Decret.* num. 14. Franc. Valens in

concord. in *cod. proem.* num. 5. Duarenus lib. 2. de

ſacris, cap. 6. alias rationes ex fratris nomine de-

ductas adducunt Sazarus in *notis ad Siden.* lib. 1.

epiſt. 12. verbo *Veri habes*, Claudius Eſpeneus ad

D. Paulum, cap. 4. ad *Timoth.* Dortleus in *not.* ad

Tacitum, fol. 292. Altamir. in l. 1. cap. 7. num. 68. C.

de filiis offic. Si autem Episcopis tantum electis,

non verò confirmatis Pontifex reſcribat, eos filios

appellat, cap. *ſeni*, de *remun.* cap. *noſtri*, de elect. Cardinales etiam Eccleſiæ Romanæ filios appel-

lat, cap. *licet* 49. de teſtibus, cap. *coram*, de offic. *legat.* niſi repeterentur ſimul Episcopis, aut cum eis,

& Episcopis ſimul loquatur. vt in cap. in *Genſi* 49.

de elect. *prope ſinem*, extraneæ. Conſiderem, Ioan-

nis XXII. de verb. ſign. extraneæ. Execrabilis, & nos

inquo, de *probendis*, cap. 1. de *remun.* *cod. lib.* cap. 1.

de offic. *legat.* *cod. lib.* in Concilio Romano ſub

Calixto cap. 12. Illuſtrat Baronius anno 283. n. 27.

Antonius Auguſtinus lib. 2. de *remun.* Gratiani,

dialogo 5. Duarenus diſt. cap. 6. Etiam Episcopos dum

alloquuntur cum Canoniciſ propitis fratres ap-

pellat, vt probat Cironius ad titulum de *his qui*

ſunt à Prælati: & Pontifex cùm ſcribit Capitulo,

hæc formula vii ſolet, *Vobis filiis Capituli*, vt cap.

conſtitutum 12. de *conſecr.* *prob.* cap. 3. de *teſtament.*

in 3. collect. iuxta quem Eccleſiæ vſum paſſim

in hoc volumine Decretalium reperitur in

Epistolis Decretalibus formæ illæ, cùm Pon-

tifex ſcribit Episcopis, *Fraternitati vſtre per*

Apoſtolica ſcripta mandamus; cap. ad *audi-*

entiam, & paſſim de reſcriptis. cùm verò Cardinali-

bus, *Diſtinctioni vſtræ*; cap. ad *decem*, de *inſtit.*

in 3. collect. cap. quia *diſtinctum*, de *conſecr.* *pro-*

bend. cap. *dilectus*, de *exceſſib.* *Prelat.* Cùm autem

Episcopos ſunt tantum conſecrati, eos filios appel-

lat, cap. *noſtri*, de elect. cap. 12. de *accuſis*, in 1. *col-*

lect. Principes autem ſæculares ſemper filios ap-

pellat Illuſtres, vt in cap. *noſtri*, ubi notari, de

offic. legat. chariſſimot, vt in præſenti texto;

gloſioſus in cap. 1. de *arbitris*, in 1. *compil.* & Il-

luſtras *Vizit.* ad *epiſt.* *manuſcript.* *Adarci Maximi*;

Oreodoxos, vt probat Valdes de *dignis*, *Ryemus*,

cap. 13. Immo & Concella etiam provincialia

Principes ſæculares filios appellant. Concil. Bra-

char. 1. in *proemio*. Concil. Tolet. 4. Probant, &

illuſtrant Cironius in *parat.* ad *hunc tit.* & lib. 1. ob-

ſerua. cap. 17. Petrus Gregor. in *proem. Decret.* n. 4.

& lib. 1. de reſcriptis, cap. 48. Duarenus lib. 2. de *ſacris*.

Eccleſ. cap. 6. Franc. Valens cap. 1. *concord.* ibi:

Pont. in *proem. Decretal.* cap. 1. *ſerui per totum*. Ger-

monius in *indulu.* *Cardin.* verbo *Dilecti*, Panzirola

lib. 1. var. cap. 1. *Barboſa de poſſib.* *Episcop.* p. 1.

tit. 1. cap. 1. *Ceſar de Eccleſ.* *hierarch.* diſt. 6. in

princip. *Acuña in cap. 1. 84. diſt.* & in cap. *fra-*

tres, 86. diſt. Nec abſque ratione Pontifex Episcopos,

Archiepiſcoposque fratres appellat; nam illi

Apoſtolorum ſuccelloribus pari conſortio cum Diſco

Petro, & eius ſuccelloribus honorem, & po-

teſtatem accepterunt, cap. in *homo*, 21. diſt. quæ ſo-

cietas iuxta fraternitatis quodammodo in ſe habet,

l. *verum* 63. ff. *pro ſocio*: & ſunt in partem ſolli-

citudinis vocati, & in executionem ſacerdotalis

officij coadiutores Pontificis ſunt, cap. *per uenera-*

bilem, 4. *ſunt autem*, qui *ſilij ſunt legiti.* Sic etiam

Romani Imperatores ſolebant ſalutationem pro-

ponere in ſuis reſcriptis, *Atque illis*, quibus ſcri-

bebant, quos amicos vocabant. hoc modo: *Ant*

chariſſime nobis, vt in l. 1. ff. de offic. *Reſt.* *Provinc.*

l. 4. C. *Theodoſ.* de *oper. public.* l. 5. *cod. C. de priuile-*

corum; & cùm ad Præfectos Prætorio ſcribebant,

parentes vocabant, l. 4. C. *locati*, l. 6. C. *Theodoſ.*

de amonit. & *tribut.* l. 1. *cod. C. de Episcopis, indiſt.*

Reſtores verò provinciarum, & Comitibus fratres.

Maiorianus in *novel.* de *bon. caduc.* ibi: *Enodi frater*

amantiffime. Theodoſius in *novel.* de *tyrannib.*, ibi:

ſiſtare frater: & in *novel.* de *lupandariis*, ibi: *Opi-*

bio frater: & in *novel.* de *ambit.* de *metato*, &

patrimonialibus, Calliſtorus lib. 6. *epiſt.* 21. ibi:

Additur quod à Principe frater vocaris. Illuſtrant

Briffonius lib. 3. de *formulis* fol. 353. Sazarus ad

Sidenium lib. 1. *epiſt.* 12. verbo *Veri habes*. Eſt enim

fratris nomen ſummi affeſtus, charitatis, & be-

neuoletie, l. *nemo* 58. §. 1. ff. de *hered. inſtit.* Apo-

leius lib. 8. de *afino auct.*, ubi notat Betaldus,

Quintillianus *declam.* 31. ibi: *Certe querens blandi-*

ri volumus amicis, nulla adulatio ultra procedere hoc

nomen poſſet, quàm vt fratres vocemus. Quid eſt aliud

fraternitas, quàm diſſiſis ſpiritus? Homil. 4. Apoſto-

lor. que eſt Eucherij, ſub nomine tamen Euſebij

circumſcripta, ibi: *Frater autem, ſeruus, pater,*

& mater, vxor, & filij dicuntur, non naua à ſed

affice, & affectione; quæ enim multum diliguntur,

fratres vocamus. Frater enim, ſi vocis etymologiæ

ſpectes, reſte Petro Nigidio apud Gellium lib. 13.

noſtrum *Arce.* cap. 10. dicitur quaſi ferè alter. Plura

congeſſerunt Hæphæſtus lib. 3. diſquiſit. *monaſt.*

trali. 4. diſquiſit. 2. Claudius Eſpeneus ad D. Paulum

in *epiſt.* ad *Timoth.* cap. 3. num. 16. Altamirano

in l. 1. C. de filiis offic. cap. 7. num. 69. Dortleus ad

Tacitum lib. 2. fol. 92. Valenzuela tom. 1. *croſſi.* 98.

vide rectè Innocent. docet in reſcripto viciam ſa-

lutaris præſumj, ſi in verſo hoc ſtylo in reſcriptis

Pontifex Episcopum ſilium, aut alios Eccleſiæ

Prelatos, ſeu Principes ſæculares fratres appella-

uerit. Aliud etiam indicium falſitatis deducit Teno-

centios ex eo, quod cum vni scriberet, plurali numero utebatur, cum stylus Romanorum Curie sit, ut Pontifex in solis literis, dum ipse loquitur, ob dignitatis reverentiam plurali numero utatur; erga eum verò cum quo loquitur, singulari, ut probant Solorzanos *tom. 2. de iure Indiar. lib. 5. cap. 12.* Germanius *de indult. Cardin. 5. sermo Dei, Restau-*

rus Castald. de Imper. q. 60. Licet princeps Ecclesie temporibus Pontifex singulari de se omine, plurali cum ceteris loqueretur, ut constat ex epistola Gregor. Magni ad Eologium, relata in cap. *exce. dist. 99.* & notatis Exca in *l. vnde. C. de palatii, fol. 20. C. 21.*

CAPUT VII.

• Idem.

AD falsariorum confutandam maliciam iam alia vice recolimus^b literas Apostolicas destinasse, in quibus falsitatis modos, ne quis se posset per ignorantiam excusare, meminimus plenius dixisse. Quia verò nonnunquam evenit, ut falsas literas exhibentes, postquam super his fuerint redarguti, ad excusationem suam se dicant, literas huiusmodi per alios impetrasse, de communi f. n. consilio duximus statuendum, ut qui literis nostris vii voluerint, eas prius examinent; quoniam si falsis literis se vfos dixerint ignoranter, eorum sera poenitentia evitare nequit poenas inferius annotandas. Nos enim omnes falsarios, qui per se, vel alios vitium falsitatis exercent, cum fautoribus, & defensoribus suis anathematis vinculo decernimus innodatos, statuentes, ut clerici, qui falsarij fuerint deprehensi, omnibus officiis, & beneficiis ecclesiasticis perpetuò sint privati. Ita quod qui per se falsitatis vitium exercuerint, postquam per ecclesiasticum iudicem fuerint degradati, sæculari Potestati tradantur secundum constitutiones legiimas puniendi; per quam & laici, qui fuerint de falsitate convicti, legitime puniantur; & si clerici fuerint, officiis & beneficiis ecclesiasticis spoliarentur; si laici, tamdiu maneat excommunicationi subiecti, donec satisfaciant competenter; ita tamen, ut in istis, & in aliis malicia gravius, quam negligentia puniatur. Quod & de iis, qui falsas literas impetrant, statuimus observandum.

NOTÆ.

I. ^a *Idem.* Ita legitur in terris collectione, sub hac tit. cap. 4. nullibi tamen exprimitur cui rescribat Pontifex, & hæc constitutioem dixerit; quia ita eo generalem legem cundere voluit contra

falsarios: & ita ab omnibus generaliter observandam proposuit.

^b *Litterar.* Relatas suprà in cap. licet.

^c *Sæculari Potestati tradantur.* Verba hæc, & textum exposui suprà in cap. ad antiquitatem.

2.

CAPUT VIII.

• Idem.

ACcedens ad præsentiam nostram P. presbyter lator præsentium, suâ nobis insinuatione monstravit, quod cum olim nixus ab Archipresbytero, & Clericis de Casalino pro quibusdam causis, super quibus à te se facebantur indebitè prægravari, ad nostram præsentiam accessisset, nec posset pro eo, quod tunc temporis nos eramus infirmitate gravari, suas literas obtinere, moram apud Sedem Ap. faciendo, post paucos dies contigit ipsum etiam infirmari. Dum autem esset in lecto ægitudinis constitutus, accessit ad eum quidam clericus de Casalino Azo nomine, qui tunc temporis morabatur in Vrbe, & sub spe dilectionis, & gratiæ promisit ei se quas à nobis postulabat literas obtenturum: qui credidit verbo eius, & expensas tribuit, quas pro literis ipsis se expensurum præfatus clericus proponebat. Tandem ad eum quasdam commissionis literas ad ven. f. n. Tranensem Archiep. & dilectum filium Abbatem de Coronata portavit: quas prædictus presbyter credens veras esse, & de nostra conscientia emanasse, ad iudices detulit delegatos: cumque in præsentia ipsorum iudicum tu literas argueres falsitatis, & sacerdos ipse, & alij Clerici de Casalino eas veras esse proponerent, tu easdem literas sub sigillo prædictorum iudicum ad nostram præsentiam direxisti: quas vique falsas esse deprehendimus manifestè. Pro quo tibi per scripta nostra mandavimus, ut illum, qui præfatas literas impetrauit, officio, beneficioque suspensum ad nostram præsentiam dirigeres puniendum. Verùm cum sacerdotem prædictum

prædictum sua redderet conscientia innocentem, postquam tu enim officio, & beneficio suspendisti, ad nostram festinanter accessit præsentiam ad suam innocentiam excusandam. Sed cum apud nos moram faceret longiorem, & à nobis misericordiam postularet, præfatæ falsitatis omnimodam ignorantiam proponendo, ipsum tamen cum literis nostris ad te duximus remittendum, ut misericordiam inueniat, quam precatur. Inde est, quod fraternitati tuæ per A. S. M. quat. si præfatæ literæ, in quibus fuit falsitas deprehensa, formam de simplici iustitia habuerunt, cum præsumi non debeat, quod pro talibus literis, quæ de facili possunt à quibuscumque obtineri, fraudem commiserit falsitatis, ab ipso presbytero canonicâ purgatione receptâ, quod conficius non fuerit falsitatis, nec b. literis illis usus est, postquam eas falsas esse cognouit, tu ei diuinæ pietatis intuitu officium, beneficiumque restituas, & eum super hoc vltius non molestes: quia sicut iustum est excessus corrigere delinquentium, sic iniquum meritis reputatur, si severitas poenæ puniat innocentes.

NOTÆ.

1. ^a *Dem.* Ita etiam legitur in quarta collectio-
ne, sub hoc tit. cap. 1. in epistolâ verò edi-
ta Coloniz lib. 1. fol. 126. ubi reperitur hic tex.

tus prout in presenti transcribitur, additur *Sipon-
tino Archiepiscopo.*

b. *Literis vsus est.* Alias falsi crimen com-
mitteret, iuxta tradita in cap. ad audiendum.

2.

CAPVT IX.

*Idem Episcopo Rossen. Archid. Bathoniæ. & Magistro Vu. de
Sancta Fide, Canonico Vubelen.*

EX continentia literarum dilectorum filiorum N. Abbatis sanctæ Crucis de Vval-
than, & Magistri Simonis de Suelle nobis innotuit, quod cum olim questio, quæ
vertebatur inter dilectos filios M. Phil. de Ludeleuve, ex vna parte; & Robertum,
& Vincentium clericos, ex altera, super Ecclesiâ de Streton, ipsi, & N. quondam
Abbati de Straford, à bonæ memoriæ C. Papa prædecessore nostro commissâ fuisset;
eodem Abbate pariter, & prædicto Vincentio de hac Ince subtractis, prænominati
duo iudices iuxta tenorem rescripti Apostolici procedentes, attestaciones, & allega-
tiones vtriusque partis diligentius audierunt: tandem cum renunciatum eis ab utraque
parte fuisset, & secundum allegata definitiua esset sententia promulganda, contra
Magistram P. aduersa pars literas Apostolicas arguit falsitatis, & eas esse falsas sub
periculo causæ se firmiter asseruit probaturam, sibi legem imponens, ut à causa cade-
ret, nisi probaret evidentiùs falsitatem: & ne vltius iudices in causâ procederent,
Sedem Apostolicam appellauit. Super dicto autem Phil. exhibente illum, per quem
literas impetrauit, & firmiter promittente, quod eas veras esse probaret, memoratus
R. ab eisdem iudicibus requisitus, ut aliquam notam exprimeret falsitatis, propter
quam falsas esse literas proponebat, nihil aliud specificare voluit, nisi quod eas falsas
dixit, & asseruit à Cancellaria nostra nullatenus emanasse. Supradicti verò iudices
ab ipso R. iuratoriâ cautione receptâ, quod accusationem falsitatis prosequeretur,
sicut superius est expressum, sequentem diem post Dominicam, qua canitur, *Latare
Hierusalem*, proximò præteritam, ad prosequendum coram nobis appellationem in-
terpositam, vtrique parti terminum præfixerunt. Ceterum præfatus Rob. in termino
prætaxato, ad præsentiam nostram accedens, super falsitate literarum, ac processu
negotij, veritate suppressâ, ut dicitur, à nobis ad prædictos iudices literas impetra-
uit, & nihil prorsus de falsitatis accusatione proponens, à Sede Apostolica furtiuè re-
cessit. Verum nos literas ipsas, quæ redargutæ fuerant falsitatis, diligentius intuentes,
nullum in eis signum falsitatis, vel suspicionis inuenimus, nisi paucarum literarum ra-
suras, quæ nequaquam sapientis animum in dubitationem vertere debuerunt. Ideoque
discretionis vestræ per Apostolica scripta mandamus, quatenus inquiratis super his di-
ligentiùs veritatem: & si vobis constiterit iamdictas literas à nobis fuisse veritate
taciâ impetratas, & super dictum Rob. sese obligasse sub periculo causæ, quod prio-
res literas falsas esse probaret, cum inter ipsum, & aduersarium suum questio per-
sonalis agatur, & quilibet abrenunciandi iuri suo, liberam habeat facultatem, ipsi
Rob.

Rob. super prædicta Ecclesia silentium imponatis : alioquin partibus conuocatis, audiatis causam, & ap. rem. sine debito terminetis. Datum Lateran. XIII. Kal. Nou.

NOTÆ.

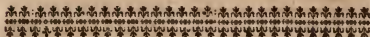
1. a [Dem.] Ita legitur in quarta collectione, *sub hoc titulo cap. 2.* & reperitur textus hic in *lib. 1. epist. Innoc. epist. 400.* ex quo registro litteram huius textus restituo. Casus præfatus textus contigit in Anglia, ubi erat Monasterium S. Crucia de Balcan, constructum ab Haroldo Rege An-

glotum, ut referunt Mathæus Paris. in *Voluismo I.* continuator Bedæ *lib. 3. cap. 13.*

b [Rufus.] Quæ attendi debet, præcipue si extent io loco suspecto, iuxta tradita in *cap. 6. de fide instrum.*

c [Renunciandum.] Ut probauit latè in *cap. si diligenti, de foro compes.*

2.



TITVLVS XXI.

De sortilegis.

CAPVT PRIMVM.

Ex Pœnitentiali a Theodori.

IN b tabulis, vel in codicibus sorte ^a futura non sunt requirenda, aut nullus in Psalterio, vel in Euangelio, vel in aliis rebus sortiri præsumat, nec diuinationes aliquas in aliquibus rebus obseruare. Quod si fecerit, xl. ^d dies pœniteat.

NOTÆ.

1. a [Theodori.] Ita etiam legitur in prima collectione, *sub hoc tit. cap. 1.* & in Pœnitentiali Romano *tit. 6. cap. 7.* ita textus hic habetur : *In tabulis, vel in codicibus sorte futura non sunt requirenda, ut nullus in Psalterio, vel in Euangelio, vel in aliis rebus sortiri præsumat, nec diuinationes aliquas in aliquibus rebus obseruare. Quod si fecerit XL. dies pœniteat.* Et *cap. 20.* ita habetur : *Requisisti sortes in codicibus, vel in tabulis, ut plures sceleris, qui in Psalterio, & in Euangelio, vel in aliis huiusmodi rebus sortiri præsumunt : Si fecisti, decem dies pœniteat.* Quæ verba etiam refert Barchardus *lib. 19. Decreti :* & retineodo illa verba 40. *dies pœniteat, Papiensis in 1. editi. sub hoc tit. cap. 2.* De hoc Pœnitentiali Theodori, & eius antiquitate egi in *cap. 3. de sortis.*

2. b [Tabulis.] In salibus, legitur hac io sexta collectione, sed vtrobique malè ; & legendum esse in *salis*, obseruauit Cironius *lib. 1. obseru. cap. 3.* talæ enim sunt scissiones lignorum, vel prælegmina, testè Varroo *lib. 1. de re rustica.* Vnde Noctius Marcel. *cap. 8.* dicit ait rustico vocabulo *inertaleara*, idest diuidera, vel excidere tamem ex utraque parte æqualiter præcisum. Vnde quia in his fructulis, & ramis sortes inquirebatur, ideo rectius legendum est, in *salis*. Mente huic sortes inquirendi expressit Tacitus de *morib. Germanorum*, his verbis : *Sortium consuetudo*

simplex : Virgam frutiferam arbori decissam in furculos amputant, easque notis quibusdam discretas super candidam vestem tenent, ac fortuito spargunt : mox si publicè consulatur, sacerdos citatus, sit primam, ipse pœnitentiam precatur Deus, calicemque sufficiens, ter singulas tollit, subtilas secundum impressam autè notam interpretatur. Similem Sinarum diuinationem describit Iohannes Mendoza Episcopus Liparensis *lib. 2. Hystor. Sinarum, cap. 4.* & Philippoasogium Ignatius *cap. 8. Itinerary.*

c [Futura.] Fortè legitur in hac sexta collectione, sed malè ; nam per has sortes Sanctorum in codicibus, & libris sacris non sortè inquirebatur, sed futura requirebantur : omne lectura studeat ex verbis sequentibus, ibi : *Nec diuinationes aliquas.* Facit canon 4. Concilij Aquilegræ. celebrati tempore Caroli Magoli, proxi habetur *tom. 17. Concilior. pag. 45.* ibi : *De codicibus, vel tabulis requirendum, & ut nullus in Psalterio, vel in Euangelio, vel in aliis rebus sortiri præsumat, nec diuinationes aliquas obseruare.*

d [Quadragesima dies.] De hac pœnitentia, & eius forma egi in *cap. accusatili, de accus.*

COMMENTARIUM.

EX hoc canone proxi inest in Pœnitentiali, sequens deducitur assertio : *Sortes in libris, vel talis pro futuris sciendis non sunt faciendæ.* Probant textus in *cap. qui diuinationes 2. cap. non liceat*

4+
CANCELLARIO TRA-
DITVS, ET

PRO-
TRA.

locus 3. cap. aliquanti 6. cap. sortes 7. cap. si quis clericus 9. 26. quæst. 5. D. Augustinus episc. 179. Qui de paginis Evangelii sortes legunt, isti operantur esse, ut hoc potius faciant, quam ut ad memoria confidenda concurrant; tamen etiam ipsa mihi difficile confutatio, ad negotia secularia, & ad huius vitæ vanitatem, propter aliam vitam longiora oracula divina velle convertere. Concil. Alusiod. can. 4. ibi: Non licet ad sortes, vel auguria recurrere, nec ad charactres, nec ad sortes, quas Sortium vocant, vel quas de ligno, aut pice faciunt, efficere; sed quicumque homo facere velit, omnia in nomine Domini faciat. Narbon. can. 14. Veneticam sub Leone I. can. 1. Ac ne sortisse id videatur omittam, quod maxime fidem catholicam religiosis infusus, quod aliquanti clerici student auguriis, & sub nomine consilia religiois, quas Sortium sortes vocant, divinationis scientiam proficiunt, nec quæcumque scripturarum interpretatione sua præmittunt, in hoc quicumque clericus derelictus fuerit vel consuler, vel docere, ab Ecclesia habetur extraneus. Concil. Agath. can. 42. & 68. Autellian. 1. can. 32. Brachet. 1. anathematismus 9. & 10. Tolet. 4. can. 29. Nicolaus I. ad consilia Bolgat. can. 77. ibi: Reversus, quod Græcorum quibusdam codicem accipientibus in manibus clausum, unus ex eis accipiens parvissimam particulam ligat, hæc intra ipsum codicem condit; & si viderint aliqua veritas antiquitas, per hoc affirmare se scire posse, quod cupiunt: vos vero consulti, si sit obviandum, an respondendum? Pique respondendum est; scriptum est enim: Beatus vir, cuius est nomen Domini spes eius, & non respectu in vanitatem, & insanas falsas. Veneticam cap. 16. Raphaël de Torre in 2. quæst. 9. scilicet 8. disput. 3. dub. 4. Theophilus tom. 15. in Hæc. spir. p. 2. punct. 4. quæ de illa iuris decreta congesterunt Ant. Augustinus in epist. iur. lib. 34. tit. 5. Basilus Legion. quæst. 2. sibi. in dist. can. 4. Concil. Alusiod. Illustrat vitæ congestos à Batho in præfati, Hinnios in encyclop. iuris, can. tit. 7. Coruinas lib. 4. apbor. tit. 29. Petrus Greg. lib. 4. part. tit. 12. de de electi. cap. 3. & de Republ. lib. 13. cap. 17. cum duobus sequens. Simon Maiolus div. cuticular. verbo Vainicia. Azor lib. 9. institut. cap. 20. cum sequens. Balsamon in can. 61. 6. Synodi, Antonius Sylvius Clarus lib. 2. de legibus, cap. 1. Alois ad titum 5. Alrucci, tom. 2. cap. 13. Mancinus de triplici iur. collat. cap. 122. & 124. Victoria in vult. de arte magica, Thomas Delbene 2. part. de offic. Inquisit. dub. 235. scilicet 5. Novus Notator P. Bedensis episc. 30.

§. Sed hæc assertio difficilis redditur senientia consideratione. Nam quod à sanctis, & piissimis viris factum legitur, improbare non debemus: sed sancti, & pii viri scriptis futuris spectabant, & deducebant ex librorum sortibus, ut de se fateatur D. Augustinus lib. 8. confessionsum, cap. 13. & de Diuo Francisco narrat D. Boussuet. vita illius cap. 13. & quo D. Antonin. 3. part. sermo 118. tit. 24. §. 7. sed carpiunt, & mutilat desumpti; sed ille his verbis: Immissum est rursus menti per divinam oraculum, quod in apertura libri evangelii aperiret ei à Christo, quid Deo in ipso, & de ipso maxime foret accipere. Oratio itaque cum multa devotione præmissa sacrum Evangelium librum de altari sumptum in sancta Tri-

nitas nomine aperiri fecit per socium, vitam vixit que Deo devotum, & sanctum. Sanè cum in trina libri apertura semper passio Domini occurreret, intellexit vir Deo plenus, quod sicut Christum fuerat imitatus in altitudinis sua, sic conformis ei esse deberet in afflictionibus, & delictis passionis, antequam ex hoc mundo transferri, &c. Alia poram veterum exempla dabimus infra. Ergo non recte in præsentem asseritur, sorte inquireret furores in libris, & codicibus illicitum esse. Augetur primò hæc difficultas ex eo, nam sorte consultoria licita est, quando vallatur necessitate, ac debita reverentia, ut infra dicemus in cap. finali. & tamen ordinatur ad cognoscendam quid in futurum agendum sit: ergo sorte divinatoria per librum licita est, quævis ordinatur ad futura prænotanda. Secundo fulcitur eadem difficultas, quia quod non est malum ab intrinseco, & secundum se, aliquando, & cum aliquibus circumstantiis potest reddi licitum: sed sortes divinatorie non secundum se, & ab intrinseco sunt male; ergo cum aliquibus circumstantiis poterunt licite exerceri. Maior patet, minor autem probatur: tom quia in lege vereri fuerunt licite, & ex lege cæmoniali Dei in populo premissa, & approbata, ut in sacerdotibus ionatha, Achotis, & lonæ, quas nedum divinatorias, sed simul consolatorias fuisse, post Litam probat Ribera super Ierem. cap. 1. Inter duos hæc, quorum unus erat immolandus, aliter in desertum allegandus, forte mittebatur, Levit. cap. 16. Tertia Promissio sorte divisa est inter Israëlitæ. Numeri. cap. 33. Sacerdotalia munera sorte obtingebant, lib. 1. Paralip. cap. 24. Ideoque natus D. Locas, forte oblige, ut Zacharias iohannis pater thora Deo inita Sandauctum succendit; & Aaron forte ad sacerdotium aliis prælitus est, & Deus iubente Numeri. cap. 17. Tum denique quia sortitio divinatoria potest aliquando fieri, non divinatoria, idest non usurpando, quod divinum est; sed fulcipiendo quod est divinum, idest cognitionem futurorum ex Dei revelatione inquirendo, & recipiendo. In hoc autem non esse malitiam divinationis, probat D. Thomas 2. 2. quæst. 95. art. 1. alioquin cuncti Prophetæ in visu Prophetie peccassent, siquidem futurorum cognitionem ex Dei revelatione suscepissent. Igitur non semper vi sortibus divinatoria illicitum est. Tandem fulcitur hæc difficultas ex eo, nunc etiam dæmonum divinationem per sortem malam esse, non inde sequitur continere speciem sortilegis, seu superstitionis, sed tantum vii curiositatis, ut docet D. Thomas 2. 2. quæst. 167. art. 1. assertens committi vitium curiositatis ex ipsi inordinatione appetitus sciendi veritatem, in quantum aliquis fundet addiscere ab eo, à quo non licet; sicut illi, qui à dæmonibus aliqua futura perquirunt, quæ est superstitiosa curiositas; quod probat ex D. Augustino in libro de vera & falsa religione, cap. 4. ibi: Nescio an Philosophi impedirentur à fide curiositatis vitio in procurandis dæmonibus. Et dista quæst. 95. art. 2. in solut. ad 1. exponens idem Augustini testimonium, ait quod divinatoria pertinet ad curiositatem, quantum ad finem intentum, qui est præcognitio futurorum; sed pertinet ad superstitionem quantum ad modum operationis. Atqui homines scilicet sumunt speciem

INTEGRA
TRA TRA
BETA AP
MSTO.

à sine, teste eodem Angelico Doctore 1.2. *quest. 1. art. 3.* ergo huiusmodi diuinarum per sortilium, non superstitionis, sed curiositatis species est.

6.

DE SORTILIIIS.

Quia dobitandi ratione non obstante, vera est præfata assertio, pro cuius expositione sciendum est, sortilegium in genere omnem diuinationis, impetrantis, vanitatisque magice speciem comprehendere, *cap. si per seruiarios 33. quest. 1. Petrus Greg. lib. 34. synag. cap. 1. Sanchez lib. 8. moral. cap. 28.* Sed proprie & strictè sortilegi dicti sunt à fortibus, cum sit diuination per sortem; indeque sortilegus dicitur, qui per sortes futura prænuunciat, aut qui per sortem aliquid eligit, vt Horatius inquit *de arte poetica*: Et diuina futuri sortilegi non discrepant sententia Delphi. Fiebat autem olim multis modis sortitio, vt ait Cicero lib. 2. *de diuinis*, ibi: *Quid enim forte sit? idem propendunt quod iurare, quod talis iurare, quod thesseras: quibus in robis temeritas, & casus, non ratio, & causillum valuit.* Ea enim semper fuit hominum insania, vt futurum rerum euentum ex vanissimis superstitionibus præcognoscere frustra conarentur. Demencia sane non alio modo profecta, quàm ex veteri illa, innataque auiditate sciendi bonum, & malum, quæ primum hominem ex supremo felicitatis gradu misere deiecit. Eoque maior, & grauior, quod cum argumenta suppetere, quibus ad vanitas, quàm videns est, conuinceretur, nec numero pauca, nec intellectu difficilia, adeo sese humana mens tenebris involuit, vt eum sepius mendacia deprehenderet, sepius eisdem consolo, non sine miserrata strage illuderetur. Hic quot monstra excoGITANT, aut demonis astu conficta fufcepit, & coluit velut diuina oracula vincta delapsa! cum eamdem coram Poëta dialeci.

Hæc quædam ignota mentes!

Hinc diuination per terram, Geomantia dicta; per aquam, hydromantia; per ætrem, aeromantia; per ignem Pyromantia, *cap. igitur genium 26. quest. 3. cap. nec mirum 26. quest. 5.* tandem clemomantia, quæ est diuination per lones, de quibus fere egerunt Delphici *disquisit. magicæ. 2. p. fert per tot.* Petrus Gregor. lib. 34. *synag. cap. 1. mm. 11.* Torreblanda *de mag. cap. 22.*

Sed vt ad sortes, quas veteres fideles vocabant Sanctiorum, vel Apostolorum, perueniamus, in quibus ex Scripturarum inspectione futura prænoscebant, sciendum est, apud Gentiles fuisse sortes, quas Virgilianas vocabant; nam apud Virgilij, vt Homeri codicæ, vestigia, qui primi viliu occurrunt, in osculi omen assumebantur. Meminit harum sortium Ælius Spartianus in Adriano: Cum scilicet, inquit, de Imperatoris erga se iudicio Virgilianas sortes consulere, incidit in hunc locum.

*Quis precor? Ille autem ramis insignis olivæ
Sacra ferens? Nescio crines; incunæq; mea
Romani Regis, primus qui legibus orbem
Fundavit, curibus parvis, & pauperis terra
Missus in Imperium magnæ.*

Et eum Severus Alexander Virgilianas sortes consulere, incidit in illa verba:

Tu regere imperio populos Romæ memento.

Sic forte mortis suæ diem conceit. Sic Claudius Macrinus, Gordianus Iunior, & alij Imperato-

res tempus Regni, vel vitæ agnouerunt, vt referunt Suetonius in Tiberio, Lampridius in Alex. Lippius lib. 2. *elect. cap. 12.* Hinc vanitati Gentilium successit apud Christianos apertio veteris, aut noui Testamenti, quàm vocabant sortes Apostolorum, vel Sandorum; & ad libri sacri apertionem, vel ad sacre lectionis auditionem ex sententia Inibi occurrente vaticinium capiabant. Hac sortitione vti fuit aut Hecellius Imperator apud Cætenum; & Romanus Diogenes apud Cuspinianum; Andronicus senior apud Gregoriam lib. 8. Chitannus filius Regis Francorum apud Gregorium Turon. lib. 4. *hystor. cap. 16.* ibi: *Positum tribus libris super altare, idest Prophetarum, Apostoli, æque Euangeliorum, trauerunt ad Dominum, et quid eueniret, ostenderet. Aperto igitur primo omnium Prophetarum libro, reperitur ex Isaiæ cap. 1. Ausuram materiam eius, & eris in direptionem.* Omnia exactè adimpleta sunt, & subsequens effectus est comprobatur, non tam fortissimè, quàm diuinitus prouisum. Similis de Ciodoueo refert ipse Gregor. Turon. lib. 2. *cap. 27.* & ex apertione libri Euangeliorum facta ad agnoscendum diuinum voluntatem, priores didicisse à Deo vocari ad perfectiorem viam, constat ex exemplis sancti Danielis Stylitæ apud Metaphræsem; sancti Huberti Leodensis Præfatis apud Satorum *rem. 6.* Theodori Alex. apud eundem Satorum *rem. 6.* & apud Rupertum in *visa sancti Hieronimi*, & interdum non apertio vllio libro ingredientis in Ecclesiæ obseruabant, aut verba, quæ legobantur, essent congruentia eorum cogitationi, vt inde vaticinium, seu omen fument. Plura de his sortibus Sanctiorum conularunt Theoph. Raynaud. *rem. 25. in Heteroc. sacr. penit. 4. ad fin. fol. 277. l. Dicitur in 15. dist. fol. 204. & in 26. quest. 2. Christi. Lup. ad can. 8. Synodi, cap. 4. fol. 1455.*

Vetum quia in hac sortitione Ecclesiæ Patres superstitionem aliquam adesse agnouerunt, sepius talem vanitatem populum resecare curarunt: in Concil. Agath. relato in *cap. aliquanti 26. quest. 5.* Venerileo *cap. 16.* Antiochodot. *can. 4.* & alijs suprà relatis pro illustratione conclusionis; & magna cum ratione desumpta ex ipsa definitione diuinationis, quæ teste D. Thoma 2. 2. *quest. 95. art. 1.* nihil aliud est, quàm vsurpare modo indebito prænuunciationem futurorum eueniunt, quod est proprium Dei, iuxta illud Esaiæ *cap. 42. Annuncians quæ ventura sunt, & sciens quæ Dis agitur res.* Ac proinde est graue peccatum, quia teste D. Hieronymo super *Micheam cap. 3.* diuination semper in malam partem accipitur; & *art. 2.* subdit idem Angelicus Præceptor, huiusmodi peccatum diuinationis esse speciem superstitionis, vtpote per illam assumit homo auxilium demonum ad aliquid cognoscendum, saltem tacitè eos innocendo, quatenus demones ingerent se vanis inquisitionibus futurorum, vt mentes hominum implicent vanitate. Quicquid autem procedit ex pacto, seu societate demonum, superstitionis est, teste Diuo Augustino lib. 2. *de doctrina Christi. cap. 20.* Vnde Diuus Clemens lib. 7. *constant. Apostol. cap. 7.* dum prohibet hoc genus sortium, ait: *Dicit enim hoc finidum ad idolatriam.* Et involuit his scibus idololatriam, testantur Tertullianus lib. *de idololatriæ. cap. 9.* Lañant. Firm. lib. 2. *diuin. institut. cap. 17.*

8.

DECISIONES RATIO.

7.

DE SORTIIS
SANTCTORUM.

cap. 17. Ideo ergo tam acriter Partes Ecclesie interceptant, & improbatum huiusmodi divinatorias artes. Notant enim quàm facile his studiis addictis animus (ea vti infusa est animis nostris, aliquid semper novi faciendi, & cognoscendi) à vera religione abalienetur, & in fallam declinet. Accedit, nam semper supersticiosum est futurum velle prænosce, unde prænosci non potest: sed futurorum prænotio non potest haberi à libris, & codicibus: ergo talis divinatio per sortes supersticiosa est. Vnde rectè in præfati textu penitentia quadraginta dierum imponitur illis, qui istis vanitatibus dediti sorte futura requirere in talis, seu codicibus ausi fuerint.

9. Nec obstat dobandi ratio suprà adducta ex factis sancti Augustini, & Fracisci, necnon aliorum plurimorum virorum, quorum exempla suprà etiam reuli. Nam dicendum est, sanctos illos Spiritus sancti iustitiam, & specialem Dei monitione operatos fuisse, ut reforescerent D. Augustinus, & Bonaventura locis suprà citatis. Dum autem intererent divini monitionis, siue revelatio, hæc sola sufficit ad honestandum usum sortitionis consultoriz; illaque sola præcedente, nihil timendum, accusandumve est. Principes verò, qui hoc sortitionis genere vti fuerunt, à vitio vanitatis non excusamus, nisi eos bona fides, & ignorantia inuincibilis excuset, ut excusant Theodora Alexandrina, eo quod nondum erat satis cathochizata in doctrina catholica fidei. Et generaliter ad hoc ut vsus sortis consultoriz licitus sit, due descendunt conditiones. Prima, ut quis id faciat debita cum reuerentia, precibus ad Deum deuote flexus. Secunda, ut graui necessitate compellus ad consilium capiendum in spirituali negotio id faciat, ut late probat Arazo in op. moral. de statu simili, dist. 3. §. 5. In presenti autem agimus de vsu sortis non consultoriz, sed diuinatoriz, quæ nonquam licita esse potest. Nec tunc obstat primum augmentum ipsius difficultatis, deducum ex vsu sortis consultoriz: oam magnum discrimen versatur inter vsus illius sortitionis, & vsus sortis diuinatoriz: nam sortitio consultoria per se primo non ordinatur ad cognoscendum, quid in futuro contingat, sed solum ad tollendas dubitationes plerumque occurrentes in progressu humanæ vitæ, quæ hominon industria, & consilio decerni non valent, & tunc licet homines implorant diuinum auxilium per sortes consultoriz, ut per eas Deus dignetur indicare, quid sit ante agendum, aut vitandum. Sortis verò diuinatoria per se primo ordinatur ad futura prænoscentia, siue occulta dependentia à libero arbitrio, quorum cognitio solius Dei est propria: & ita meritò improbatum ab Ecclesia. Nec obstat secundum augmentum dubitandi rationis deducum ex eo, quod sortitio diuinatoria non sit intrinsecè mala; siquidem in lege veteri permittitur. Nam respondeo, sortem diuinatoriam dupliciter fieri posse. Primum si fiat diuiniuè, hoc est cum inebria vstipatione diuinæ cognitionis, siue inquirendo prænotionem futuri, unde prænosci non potest, & tunc certum est, talem sortem esse intrinsecè malam, cum contineat sortilegijs, & superstitionis peccatum. Secundò si fiat potest non diuiniuè, sed inquirendo à Deo, & eius reuelatione prænotionem futuri, & tunc verum est, talem sortem non esse intrinsecè malam, ut sciè adnuit Caleranus dist. quæst. 95. art. 3. & hoc modo in lege veteri sortes exercebantur,

D.D. Genzel, in Decretal. Tom. V.

non diuiniuè, sed inquirendo à Deo, & eius reuelatione, quæ futura prænosce opus erat; quod iam in lege gratie non licet. Diferentiam assignat Angelicus Doctor dist. quæst. 95. art. 1. ad 3. dicens, quod in nona lege mentes hominum accensus à temporalium rerum sollicitudine; & ideo non est in noua lege institutum aliquod medium, sur extremonia ad præcognitionem futurorum euentuum de rebus temporalibus. In veteri autem lege, quod inniebat promissionibus bonorum terrenorum, erant instituti quidam modi consulendi Deum de futuris ad religionem pertinentibus. Nec tandem ubi vltimum augmentum, cui responderetur, non esse inconueniens eodem actum humanum, seruati physicè identitate, vestri duobus malis moralibus, scilicet actus hic sortitionis diuinatoriz ex fine erit curiositatis, ex modo autem, hoc est cultus indebiti, exhibiti demoni, ut magistro, vel instructori, explicitè, vel tacitè inuocato, erit superstitionis malis à veltitis, sicut & potest esse simul tentationis Dei, & superstitionis, & curiositatis, ut post D. Thomam docet Arazo dist. dist. 3. §. 6. nam, 8. unde rectè in præfati talis sortitio prohibetur non solum ut curiosa, verum etiam ut supersticiosa.

Ex suprà traditis lucem accipit textus in can. 24. Censura Narbonensis, in illis verbis: Si qui viri, ac mulieres diuinatoris, qui dicunt esse caragios, atque sortilegios, in cuiusque domo Gerbi, Romanis, Syris, Græcis, vel Indis fuerint inuenti, aut qui ausus fuerit amodo in eorum vana crimina interficere, & non hoc voluerit annuere, pro hoc quod presumpsit, non solum ab Ecclesia suspendatur, sed etiam sex anni vinctus Censuræ ciuitatis inferatur. Illi verò, qui tali iniquitate repleti sunt, & sortes, & diuinationes faciunt, & populum præuocant seducunt, ubi inuenti, vel inuenta fuerint, seu liberi, seu serui, vel ancilla sine, grauissimè publicè suspendantur, & venundentur, & peria ipsorum pauperibus erogentur. Vbi difficile est, quod per Catalogos intelligant PP. dum eos consultatos esse adfirmant. Et sciendum est, caraxas idem esse ac sculpeire, seu pingere: Beatos Theophilus in floribus epistolæ sanctorum, lib. 3. cap. 7. Quid eloquar de vetulus summo sanctitatis viri pradiis? quid per tot Phrygiæ rivas sacula? Omni caraxas capite, quarum qualiter flamma, & hostia ab acerbissimo dentium dolore, & leuissima febrium liberare amaritudine, atque carum amplexu simul vtilissimum, dum compendiosa breuitate studeo, quid caraxas possim de singulis specialiter? Flodoardus lib. 3. hist. Rhemensis, cap. 16. Quomodo blando sibilu eos quidam caraxare volebant, Prudentius l. 10.

Caraxas ambus ungulis scribentibus

Genas, crenatis & fecit faciem nris,

Gregorius Tuto. lib. 7. bisser. Francus, cap. 16. Tunc ei piler ille, qui tempore Clabary Regis per materiam parietis, atque cameræ caraxabat. Et lib. 9. cap. 5. Vasa per domos diuersorum signis nescitis quibus caraxat, flexis literarum apicibus in quadam porietis pagina caraxatis. Latè probant Vossius de rarijs sermon. lib. 4. cap. 3. Herman. Hugo lib. de prima scrib. orig. cap. 2. Zecda in aduers. cap. 40. num. 13. Aloix in not. ad vitam sancti Polycepi, cap. 11. Filescus lib. 3. scrib. cap. 14. Vnde in dist. can. 24. domo prohibentur diuinationes per sortes, damnanter sortilegijs caragi, qui sortis pictoria, & sculpsoris sortes diuinatorias

10.
EXOMITTA
CAP. 14.
CENSUR.
NARBON.

K k EXECCO

exercebant iuxta ritus, quos refert Simon Malol. *dic. canonic. verbo Faigimia*, de quibus etiam Augustinus Anglorum Episcopus ita ait: *Nam qui prædictis malis, id est caragis, & diuinis, anpsi in-bus, vel phylacteriis, vel aliis quibuscumque auguriis crediderit, essi iuniet, essi uerit, essi iapier ad Ecclesiam curat, essi hargia clerofynus faciat, essi compesculum suum in omni afflictione cruciauerit, nihil illi proderit, quoniam sacrilegia illa non reliquerit.* De illis etiam Zacharias Pontifex episc. 1. ad sanctum Bonifacium, ait: *Hoc & nobis, & omnibus Christianis detestabile, & perniciosum esse indicamus.* Sanctus Boas. episc. 152. Illustrant Zec-da in aduers. cap. 155. num. finali, Theoph. Ray-naod. tom. 10. tract. de *Aguo ceruo*, cap. 9. num. 16.

11.

EXPOSITIO
L. 4. §. VI.
FF. DE COM-
DICT. 63
TYP.

Ex proximè tradita, ni fallor, exponendus est textus in L. 4. §. ult. ff. de condit. ob turp. ubi ait Consultus, quod si cuiusdam ob indicium aliquid detur (indicium enim noncupatur, quod ob pacto præstatur, ut res mea uinam sit, indicetur, l. solum 16. ff. de præscript. verbis, l. falsus 33. §. er-go, ff. de furtis, l. 1. ff. de proxenet. Paulus lib. 2. sent. tit. de furtis 31. §. ob indicium 20. Ant. Faber in ration. ad dist. leg. solum, & ad l. 5. §. quod si facio, ff. cod. tit. A. Concilius lib. 1. dispus. cap. 14. & 15.) ut fugitum scutum, vel rem furtiuam iudicaret, reperi conditione ob turpem causam non posse. Et huius sententia rationem Vlpianus illis verbis assignat: *Nec enim turpiter accepit.* Non air, nec turpiter fecisti. Indicauit ergo, si mea concludatur non fallitur, illicitam actionem, videlicet astologicam; nam Astrologos fures indicare, idem Vlpianus suppositus in l. item 15. §. si quis Astrologus, ff. de iniuriis: & ita docet, eum turpiter accepisse, non tamen fecisse: & per consequens conditionem non compe-tere. Quæ interpretatio fusa detor ex §. ameceden-ri, ubi Consultus propofuit actum uerè turpem, sed ob quem pecuniam accipere turpe non est. Improbabile ergo non est, Vlpianum eandem traditionem prosequutum fuisse in d. §. final. ac per consequens loqui in eo de actu turpi in facto: quo casu pecunia dita condici non potest, l. qui operas 3. ff. de his qui non. infam.

12.

EXPLICA-
TIO L. 20.
XVI. 4. C. DE
MALEFIC.

Etiam superiori assertioni opponi potest textus in l. canon 4. C. de malefici. ubi Imperator Con-stantinus iam Christianus ita statuit: *Nulle uerò criminationibus implicanda sunt remedia hominibus quæ sita corporibus, aut in agrestibus locis innocenter adhibita suffragia, ne maioris uindictæ maturentur imbres, aut uentis, grandinisque lapidatione quate-riantur, quibus non cuiusquam salus aut affirmatio lade-retur, sed quorum profectus actus ne diuina mouera, & laboris hominum steruerent.* Ex quibus verbis expressè constat, maleficiis uti licitum esse pro obtinenda sanitate, aut avertendis fulmine, gran-dine, seu rubigine ab agris; quia talis ars non in præiudicium tenet, sed in bonum proprium exerceatur. Ergo etiam ad furtum inquirendum licebit sortilegio uti. Pro huius textus expositione sciendum est, in eo per remedia hominis quæ sita corporibus intelligi carmina quædam, quibus anti-quitus & sanguis fisci credebatur, & ægris me-dera præstari. Apuleius in apologia: qui locus ma-ximè hanc lucem facit: *Veteres quippe medici (in-quit) etiam in carmine remedia uulnerum norant, ut omnis uetustissimè certissimæ auctor Hemerus docet, qui facit Vlyssæ de uulnere profectum sanguinem fisci cantamine. Nihil enim quod ferenda salutis gratia fit, criminofum est.* Hinc etiam illud extra uindi-

ciani Comitis Archiatrorum, cuius hæc de ex-amine erat sententia.

*Gramine seu malis agro præstare medelam,
Carminè seu potius; namque est res certa
salutis*

Carminè, ut oculis tribuens miracula uerbis.

Amelianus Marcel. lib. 16. ibi: *Anile incantamen-tum, quod medicina quogue admittit auertit, ad leniendum dolorem adhiberi.* Probat latè Filescus de idololatria magica §. 5. Etiam in agrestibus locis innocenter adhibita suffragia interpretatur Iacobus Durantius lib. 2. uer. cap. 10. quæ spud rusticos recepta sunt avertende grandinis, fulminisque causâ: & ea Palladio refert rusticos contra gran-dinem panno tuffo molam cooprire, & nocturnas aures coofouisse cruci affigere: quod etiam capiteffè Collomela in libello de cura bor. ubi ait l.

*Hæc trivela paucorum manstra salutis,
Ipsa nouas artes varia experientia rerum,
Et labor ostendit miseris, utique magistr
Prodidit agricolis uentos sudare furoris,
Et tempestatem Tomyris auertere sacris.
Hinc mala rubigo uirides ne torreat herbas
Sanguine lactentis catuli placatur, & exis.
Hinc caput Arcadici modum cæce fertur æsteli
Tyrrhenum fixisse Tages in limine ruris:
Vique laui; magni præbueret fulmine Tarchon,
Sape suas sedes præciuiis uisibus albis.*

Huiusmodi superstitionum meminerunt Clemens Alexandrinus Strom. 5. ibi: *Sunt uerò aium magos, qui sunt Cleue obseruantes sublimia nubium, quæ erant grandines, fulgura comitio, & sacrificia de-pebère. Quod si forte iis quandoque defuerit animal suo ornamentum digitis, sacrificium Mœnina quonque Diuina Abtemenstibus. Seneca lib. 4. natural. quest. lib. 1. Rudis adhuc antiquis credebat, & atrati imbres canibus, & repelli: quorum nihil posse fieri tam palam est, ut huius rei causâ nullius Philosophi schola intranda sit. Imperator ergo Constantinus, erû maleficiis uti prohibuit in præiudicium gene-ris humani in d. l. 4. tamen permittit illis artem vsum in beneficium proprium, videlicet salutis recuperandæ causâ, aut tempestatis avertendæ gratiâ, quia nullum dampnum inde tertio sequeba-tur. Sed Ecclesia, quæ pestiferam hanc artem semper abhorruit, ut idololatriam plenam, absolu-tè, & semper huiusmodi phylacteriis, & incan-tationibus, etiam pro pellendis infirmitatibus, & tempestatibus avertendis, sub seueris poenis uti prohibuit. Martinus Bæthar. in sua collect. can. 74. *Nam licet in barbarum collectibus, quæ medicina-les sunt, aliquas obseruauerit, aut incantationes an-tendere, nisi tantum cum symbolo diuino, & oratio-ne Dominica, ut tantum Deus Creator omnium, & Dominus honoretur.* Concil. Arlet. can. 5. *Quicon-que diuinos præcantatores, phylacteria diaboli, vel herbas, vel succos, & alios succos suis, vel sibi impendens tenuerint, &c.* Referunt Burchardus lib. 10. Decreti, cap. 14. Carnot. p. 2. cap. 58. Con-cilium Rhotomag. can. 4. *Perferendum est si ali-quis subulcus, vel bubulcus, sine uentor, vel catæri huiusmodi, dicat diaboli carmina super puerum, aut super herbas, aut super quædam uisaria liga-menta, & hoc aut in arbore ascendat, aut in trinio præiciat, ut sua animalia liberet à peste, & clade, & aliterius perdat: quæ omnia idololatriam esse nullo fidelium dubium est; & ideo summopere sunt exter-minanda.* Concil. Ancyra. ex uerboe Dionysij Ealigoi can. 23. *Qui dissimulationem expectat, & morem Gentilium subsequitur, aut in domos**

huius

huiusmodi homines introducunt, & acquirendi aliquid arte malefica, aut expiandi causa, sub regula quinquemij laceant, secundum gradus poenitentia definiti. Vbi Balsamon notauit, per expiationem significari morborum arte magica propulsionem ab his, qui se ob maleficium vextit praebebant. Proferunt & idem canoo a B. Basilio epist. 3. ad Amphilocho, can. 83. & variet elatur a Burchardo lib. 10. cap. 3. Iuone p. 1. cap. 1. Martino Brachar, can. 17. sua collecti. Rabano in parit. cap. 23. addit. 2. ad capitul. can. 18. Vnde constat, quod licet Consecratiōis adhuc nō plene in rebus religio-

nis ethicis instratus permiserit maleficia vti ad expiationem morbi, vel auerendas tempestates; tamen Ecclesia, quae omnem idololatriam speciem magno odio persequitur, etiam in his casibus maleficis vti omnino prohibet, & per consequens nec futi exequendi causā astrulabūm permittit, cap. non liceat 26. q. 3. cap. ad mortem 26. q. 7. plura adducit Hothomannus consil. 99. num. 3. & correctam esse dictam legem 3. per legem sequentem, docuerunt Balsamon in notu. an. Phocis, tit. 9. cap. 25. Filescus in cap. 1. de offic. ordin. q. 10.

CAPVT II.

Alex. III. ^a Gradenſi Patriarcha.

EX tuarum tenore litterarum accepimus, quod V. Presbyter laicor praesentium iu-
Euenili leuitate vsus cum quodam infami ad priuatum locum immundum spiri-
tum iouocatus accessit. Vnde tu eum, quia propter hoc infamiā laborat, & facinus
publicum, & notorium erat, ab officio, & beneficio ecclesiastico suspendisti. Ipse
autem coram nobis viua voce proposuit, quod non ea iocutione, quod inuocaret
demonium, ierati sed vi inspectione astrulabij furtum cuiusdam Ecclesiae posset re-
cuperare. Vnde licet hoc ex hōo zelo, & ex simplicitate se fecisse proponat; id ta-
men grauissimum fuit, & non modicam maculam peccati inde contraxit. Et quoniam
tutus est in dexteram, quam io sinistram; & in misericordiam, quam io seueritatem
declinare: ipsum f. t. duximus remittendum, monentes, atque mandantes, vt sibi
infra septem dies post harum suscepiōem litterarum Ecclesiam cum vniuersis abla-
tis restituis, & talem ci pro expiatione illius delicti poenitentiam imponis, quod per
anōm; & amplius, si ubi visum fuerit, ita tamen, quod biennio non excedat,
eum ab altaris ministratiōe praecipias abstinere, & ex tuoc liberum sit ei sacerdo-
tale officium exercere.

NOTA.

1. ^a *Gradenſi.*] Ita etiam legitur in primā col-
lezione, sub hoc tit. cap. 3. De hoc Patriar-
cha nonnulla adduxi in c. ex litteris 29. de offic. deleg.

COMMENTARIUM.

2. **C**irca furti inquirenda non minori superstitione
fuisse tum Gentiles, tum Christianos constat:
nam apud Romanos res facilius requirebatur in
domo aliena per lancem, & lictium; vnde furtum
coceptum dictum fuit, de quo in §. furtum, In-
stit. de obligat. qua ex delict. Et quauis Petrus
Pith. lib. 1. aduers. cap. 1. post Festum credat lance
vsum fuisse perquisitiōem furti, ne matronarum
ipsius domos, & virginum vetustudina lederetur,
quia ea testis petuiliōis domum ingrediebatur;
quod merito dubitant Scaliger, quomodo fieri
posset iurare Cuiusius ad l. 6. §. 7. ff. famit. creſt.
reſt. notanti, lancem non opponi oculis solitam
fuisse, sed in ea ferri premium indies; veritas ta-
men est adeo lictis discoloribus lancem tenentibus,
& ad quendam verba prolata se circumagentibus
veteres derisus, vt furti quae ex ratione concipere-
ntur, hoc est detegerentur, inter manifesta
numerant: inerat enim olim tam in lance,
quam licio superſtitio; & vtrumque incantationi-
bos, & sortilegis seruiebat. De licio notum est ex
Ouidio lib. 2. Fastor. vnde Plinius lib. 18. nat. hist.
cap. 2. in illis verbis: *Postulas nostras hodie credimus*
D.D. Gmel. in Dietet. Tom. V.

mundum egressa robe mancipia fugitus retinere in
loco precationis. Emendat Pignoratius in tractatu de
seruis, cap. 16. & legit, Licio precationis. De lance
idem probat Balsam, in can. 61. Synodi 6. nota-
tum Cironias in presenti, Basil. Legnoo. q. 2. sibi-
lasi, in can. 4. Concilio Aulissod. Enim veteres alio
modo furem perquirebani, forte videlicet ex pa-
ne confecta, vt probat Martin. Delrio lib. 4.
disquisit. magicar. cap. 2. q. 2. sect. 1. vbi adducit il-
lud Horatii epist. 1. ad Fuscum.

Atque sacerdotis fugitiuus liba reuſo.

Et ait: *Cum in seruio furti suspicio habetur ad sacer-*
dotem ducuntur, qui crucem patris carmine insectam
duo singulis, qua cum haſerit gutturi, manifesti furti
reum afferat. Notanti etiam Basilios in d. can. 4.
Concilio Aulissod. Vnde etiam in Ecclesia olim
vſus fuit requirendi furti per Eucharistiam, ne
sape 2. q. 5. vbi ex Concilio Vtomacensi ita ca-
uetur: Sepe contingit, vt in mysteriis furti perpe-
trarentur, & qui hoc committant, igneantur: idcirco
statuimus, ut quando ipsi serues de talibus se purgare
deberint, Missa ab Abbate celebretur, vel ab ali-
quo, cui ipse Abbas praeceperit, praesentibus fratribus;
& sic explicet. Missa omnes communicati in hac ver-
ba: Corpus Domini sit mihi ad probationem odij.
Illustrat Theophil. in apstolich. de calum. f. 1. 3.
cap. 2. quest. 3. Grethseus de crim. lib. 2. cap. 21.
Hothomannus de feud. cap. 44. Lindembrog. in
glossar. verbo Iudicium, Martin. Delrio lib. 4. dis-
quisit. magic. cap. 4. q. 3. f. 1. 2. Synchez lib. 2. in
Drealeg. cap. 34. num. 13. It. m. & furti detegebatur
per furtum, vt ex Concilio Hibernensi refert
Kk 2 Egbet

Egbertus Archiep. Eboracen. in *excepis*, can. 73. lib. 1. Si quis fornicatus fuerit penam ab Ecclesia, multatur foris, ut antea minus abscindatur, aut in carcerem mittatur, dum ieiunium, & genus, & residuum integrum quod abstinuit, aut peregrinus abstinuit, & refectus duplum. Vtatur tamen, nec adhuc nostris seculis omnino apud homines celebratos, fide ignavos inuoluta fuit inquisitio furti per inspectionem astrologi, idell. sumi stellarum, & observationem motuum ipsarum, dum forum consilium fuit. Fuerunt enim plures ex Philosophis, & Medicis, qui omnes humanas operationes tribuant stellarum influentiis, immo & eas illo miro ordine collocatas asserunt, ut eorum aspectu omnia futura prodantur, & tanquam in libro legantur, ut docuerunt Cardanus lib. 14. de *uirtute*, cap. 68. Bernardus Batin. de *arte magie*. Nicolaus Tribler. de *fate*, Iacobus Scol. in *applicat. astrolog.* ad medic. Lucius Belancius in *q. de astrolog.* & alij relati à Pellicet. in nota ad *Gongoriam*, in *fabula Pyrami*: qui male pro sua sententia adducit D. Augustinum lib. 2. cap. 21. contra *Manteles*, ubi: In illa perspicuitate corporum caelestium non erant animi nostri manus ita latere, ut non aliquando se quis in facie, & oculis exercat. Verum hæc sententia omnino damnata est, & etiam astrologia iudicialis improbat, tam in sacra pagina, quam in viroque iure, ciuili, & canonico: & in sacra Scriptura cap. 19. *Leui*, *Deuter.* cap. 18. *Ysaia* cap. 47. *Sophonia* cap. 1. *Ieremia* cap. 10. *Sapientia* cap. 9. lib. 1. *Regum* ap. 28. lib. 4. cap. 23. D. Paulus ad *Galatas* cap. 4. lute canonico in cap. illud 6. cap. sed & illud 9. 26. q. 2. cap. consultijs, cap. sciendum, cap. igitur, 26. q. 3. cap. non statim, cap. non licet, 26. q. 3. cap. legitimus, & sed contra, cap. qui de mensa 11. 37. dist. cap. infames 17. 6. q. 1. lute ciuili, l. 4. C. de malef. l. 6.

cod. tit. l. 1. §. medicos, l. sacerdotis, ff. de *exco.* *ordin. crimin.* l. 4. §. 1. ff. *famil. erisic.* l. 15. §. si quis astrologos 14. ff. de *inter.* Paulus lib. 1. *senec.* tit. 2. & tit. 23. *Nauius* 63. *Leuius*, l. nemo, C. de *Episc.* *ord.* lute *Regio leg.* l. 2. 27. parit, §. l. 3. tit. 1. lib. 8. *recopil.* & improbatum Sanctus Cuiuslibet humil. 14. in *Pagena*, Theodoretus q. 15. in *Genesim*, Ambrosius lib. 4. *hexameron*, cap. 4. D. Augustinus lib. 4. de *ciuit. Dei*, ex cap. 1. usque ad 12. & lib. 2. de *doctrin. Christ.* cap. 21. & alij Ecclesie *Patres*, quos congerunt Pellicet. ubi supra, Kocher in *facto hist.* cent. 2. cap. 29. P. Pinto in *speculog. tract.* 1. cap. 14. & 59. Thomas Bradwardine lib. 2. de *conf. Dei*, cap. 3. & lib. 3. cap. 12. Pius Mirandul. de *Bolengeris* lib. 2. de *diuin.* Suarez tract. 3. de *relig.* lib. 2. cap. 11. Sanchez lib. 2. *summa*, cap. 38. a num. 27. Salas in 1. 2. tract. 5. dist. 2. & de *humil.* modi astrologia in perquirendis rebus amissa loquuntur canones 21. Concilij Ancy. Qui diuinationes expellant, & omnes Gentilium subsequentes, vel in domos suas huiusmodi homines introducant exquirendi aliquid arte magica, &c. & 15. Synodi 6. Trul. Et hodie in sanctæ Inquisitionis Tribunalibus proceditur ex Bulla Sixti IV. contra prohibentis astrologium iudicarium. Io. presentij autem rex per annum tantum suspendiatur clericus per astrologium futurum requirens, quia non ex dolo, sed ex simplicitate fidei; aliquando ab omni ordine sacro deponendus erat, beneficio priuandus, & in monasterium penitentiarum peragendæ causæ tradendus erat, cap. si quis Episcopus 26. q. 6. docuerunt Balboa in cap. 3. de *re iudic.* *num. final.* Abbas in *presenti*, num. 4. Grillandus de *seriileg.* q. 11. num. 3. Raphael à Torre 2. 2. q. 96. art. 4. & hodie qui hoc facit, etiam bonæ fidei, penâ arbitrarij puniatur. Abbas in cap. 1. hoc tit. Grillandus de *seriileg.* q. 11.

CAPVT III.

Honorius III. Capitulo^a Lucanensi.

ECclesiâ vestra nuper Episcopo destituta, sicut comperimus, conuenientes in unum, ut de futuri tractaretis^b electione Pontificis, circa modum electionis diuersos incipientes habere tractatus, vnum tandem elegistis ex vobis per sortem, qui tres elegit auctoritate vestra, per^c quos vice omnium Lucanensi provideretur Ecclesie de Pastore, quorum duotercium^d Magistrum Ricardum scilicet elegerunt, quod expressè licebat eiisdem secundum traditam à vobis omnibus potestatem. Procuratoribus igitur vestris super his in nostra presentia constitutis, nos tali examinato processu, licet notâ non careat, quin immo multâ reprehensione sit dignum, quod fors in talibus interuenit: propter prerogatiuam tamen morum, & literas Magistri R. concanonici vestri, in quem vota vestra Ecclesie vestre præficiendum Episcopum concurrerunt, & affectionem, quam ad eandem habemus Ecclesiam, electionem celebratam de ipso ad gratiam^e confirmationis admittimus, foris vsum in talibus perpetuâ prohibitione damnantes.

NOTE.

^a *Lucanensi*.] Ita etiam legitur in quinta collectione, sub hoc tit. cap. vnic. De Ecclesia Lucanensi, seu Lucensi Italice expr. in c. 18. de *prescript. b* *Electio Pontificis*.] Nam his temporibus Honorij III. electio Episcoporum spectabat ad Canonicos Ecclesie vacantis, ut addidit temporum serie, & distinctio probatur in cap. 2. de *elect.*

I.

^c *Per quos vice omnium.*] Triplex est eligendi

modus, per scrutinium videlicet, compromissum, & inspirationem, e. quia propter de elect. late probatur Petrus Greg. de *elect.* cap. 3. Azor p. 2. in *lib. lib.* 6. c. 14. lal. Lauot. de *elect.* in 4. c. 21. Preterea textus spectat ad secundum modum electionis, per compromissum videlicet, quod celebratur cum vni videlicet, vel pluribus eligendi potestas committitur, & sacro c. 14. de *elect.* quorum iudicio standum omnino est, nisi indigam eligant, & canon 6. de *elect.* ubi probatur. Ad hunc electionis modum preuenit maxime cum

eam multitudinem eligentium sibi ipsi negotium facit, iuxta D. Gregorij consilium lib. 2. epist. 15. & in presenti electione per scrutinium faciendam erat a tribus electoribus virtute compromissi nominandis. Nec novum est in iure canonico, ut electio parum fiat per scrutinium, partem per compromissum, ut in cap. si qui 23. de elect. in 6. cap. cum olim 7. de arbit. notant Petrus Gregor. de elect. d. cap. 3. num. 4.

2. d. Duo Adversarius R.] Similis casus refertur in cap. cum in iure, de elect. Sed si ex tribus compromissariis duo Rodericum elegerant, ad quid specialiter Honorius meminit potestatis in compromisso data, cum electus a maiori parte compromissariorum sine electis crederetur, etiam si tertius cum non eligeret, cum in presenti casu adducta non fuisset causa, ut omnes eligerent? Sed dicendum est, in presenti casu elegisse compromissarios vnum ex ipsis compromissum compromissum, quia ita cautum erat in ipso compromisso, nam licet alias verum sit, electores non posse se ipsos eligere, cap. final. de infl. cap. Communi, de elect. tamen in electione per compromissum licitum est vni ex compromissariis electioni a ceteris de se factis consentire. D. dissentit ratio ex eo proposita, nam in electione per compromissum electio incipit ab omnibus electoribus, & tandem perducitur a compromissariis: at electio per scrutinium ab istis incipit, & pergitur. Vnde in ea non potest se eligere. Hoc tamen non procedit quando vnicuique compromissarius, ut docuit Barboza in d. cap. cum in iure, qui recte ampliat hanc doctrinam ad casum, in quo talis facultas non sit expressa ex compromisso; dum tamen non sit adempta, quae tunc communis competi, ex d. cap. cum in iure.

3. e. Confirmatio admittitur.] Sed confirmatio proprie cadit supra actum validum, & ita ratione confirmationis non novum ius, sed antiquum conservatur, cap. quia 5. de concess. prebend. cap. ex parte 13. de V. S. cap. cum dilecto 4. de confirm. etiam cap. licet, de crimin. falsi. Ergo in presenti casu non poterat confirmari electio, quae nulla fuerat, sed potius firmari, & val. dari ab ipso Pontifice. Pro cuius difficultatis solutione dicendum est, quod licet Pannonianus in presenti, num. 5. asseruerit electionem compromissarii in presenti specie nullam fuisse, vixit celebratam contra team dispositionem in cap. quia propter, de elect. verum tamen Sanchez lib. 2. summa, cap. 38. n. 85. Suarez tom. 3. de relig. lib. 2. cap. 12. Gualinus tom. 2. de negat. lib. 4. c. 9. art. 8. asseruerunt electionem compromissarii sorte factam à Capitulo Lotharingensi inuallam, ac reprehensione dignam fuisse; non tamen firmam, quia in d. cap. quia propter, praescripta forma seruanda in ipsa electione Episcoporum, non verò in electione compromissarii; unde etiam electio Episcoporum Lotharingensium per sortem facta nullius momenti esset, vixit celebrata contra formam praescriptam in d. cap. quia propter; tamen electio compromissarii per sortem facta valida fuit, licet iniusta, & illicita; & ideo egebat gratia Romani Pontificis confirmationis.

COMMENTARIUM.

4. EX hac Honorij III. Decretali communiter sequens deducitur assertio: Electio ecclesiastica per sortem fieri non debet. Probant eam textus in cap. aliquanti = cap. forte, cap. si quis clericus 26. q. 1. cap. non solum, cap. non exspecto, cum sequent. 26.

D. D. Gonzal. in Decretal. Tom. V.

q. 2. cap. quia propter, de elect. l. 47. C. de Epist. aud. D. Thomas 2. 2. q. 95. art. 8. Illustrant vltra congestis à Barboza in presenti, Petrus Gregor. de elect. cap. 3. & lib. 34. synag. cap. 5. & de repub. lib. 9. cap. 14. & 15. Batonijs in appanui, num. 69. 71. & 74. & anno 34. n. 238. & anno 44. num. 88. Tuerianus in explanationi ou. D. Clementis lib. 8. cap. 5. Torres de relig. tom. 3. q. 95. art. 8. dubio 2. Delrio disputat. lib. 4. cap. 4. 9. 1. Atitius lib. 2. 6. q. 2. de repub. cap. 2. sect. 4. Azar p. 1. infl. lib. 9. cap. 12. In-Lauone var. iurib. lib. 4. cap. 30. ex nota. 33. Suarez tom. 3. de relig. lib. 2. de superfl. cap. 12. Sanchez lib. 2. in Decal. cap. 38. num. 23. Barboza tom. 6. in secl. ad hunc textum, & in cap. secundum 26. q. 2. Salmatius ad Ponticel. lib. 2. in. 44. Lindembrog. in glossar. verbo Sorti, Torricblanca de magia cap. 2. 2. Cohel. in not. Cardinal. cap. 16. privileg. 1. Mancinus de triplic. iuris cellat. cap. 157. Gibalin. de negot. tom. 2. lib. 4. cap. 9. art. 8. Luna, & Arellanus lib. 5. singul. animo. 6. Cate. ror. de iura lib. 2. cap. 5. Scombottorius lib. 1. polit. cap. 2. Ataygo in q. moral. de statu ciui. diffin. 5. Pantoja in l. final. C. de elec. num. 24.

Verum hac assertio diffusius valde tedditur sequenti iuris consideratione, nam per sortem diuina agnoscitur voluntas; siquidem vi dicitur in cap. 16. Præcuratorum: Sortes videntur in finem, sed a Domino temperantur. Vnde ex D. Augustini definitione in cap. forte 26. q. 1. ait: Sorti non aliquid mouetur, sed rei est in dubitante humana diuina iudicant volumina. Vnde sortium vltus, tam in iure diuino, quam ciuili valde vitatus fuit, ut constat ex cap. 26. Numerorum, cap. 7. Isae, vbi forte detectus fuit Acham. Sic etiam expulsi sunt Ionathas lib. 1. Regum, cap. 14. & deprehensus fuit Ionas, qui fuge facie Dumini, cap. 1. Jon. Sic forte exili Zacharias, ut incensum poneret in altari, cap. 1. Luce. Iure ciuili Romanorum dignitates omnes per sortem dabantur; Consules enim sortiebantur, vter ex eis Diti dedicaret. Litibus lib. 5. decal. 4. Consules inter se sorte comparabant, vter eorum iustitiam condiceret. Varro lib. 5. de ling. Latina. Facimus Cicero ad Quintum fratrem, lib. 2. ibi: Sempronius dixit, ut ipsi iudices per Praetorem urbanum sortirentur. Ex lib. 1. ad Aulianum: Sempronius decreuit, ut Consules Galliam sortirentur. Ex lib. 1. epist. ad Lucillum: Si licitum esset legem curiam sorte, sortitum esse cum collega prouinciam. Et 2. in Ferrem. Virgil. lib. 8. Aeneid.

Quis incideret omnes pariterque labores

Serui,

Et 4. Georg.

Sorti quibus ad portas caecidit custodia forci.

Plinius etiam hominum consuetudinem in Pannegyr. ad Trajanum referens, ait: Sorti, & arma indicem assignant. Similiter in iudiciis, & sententis proferendis sortibus utebantur, ut constat ex l. 12. cum ambo 14. ff. de iudiciis, l. 2. C. commun. de legat. l. iudici, C. de Indus, l. 1. denouisse, & final. ff. ad leg. Jul. de adul. l. si quis sine 5. ff. famul. erise, l. quoniam, C. de priuileg. feodal. lib. 2. l. generaliter 24. q. quid ergo, ff. de fidei iur. miss. lib. 1. l. 2. C. quando, & quibus quæstia pars, l. 19. §. 1. ff. in fraud. crediti. Nouel. 162. cap. 3. §. opusculi, Inflit. de legat. Petrus Gregor. lib. 34. synag. c. 5. & de elect. cap. 3. Scipio Aluini ad Tac. lib. 20. d. iuri. l. 1. Borel. in summa de iur. lib. 33. n. 185. Larrea de iur. 45. a. 1. 26. Buleng. lib. 2. de diuina. cap. 1. Vela tom. 1. decis. de iur. 4. n. 77.

Kk. 3 Et

TRANSCUR
RATIO DE
RITANDI.

Et virgo Vestalis apud ipsos forte ellegebatur. Gellius lib. 1. no. 2. cap. 12. Lippus de Vestis & Vestal. cap. 6. late illustrent Mancinus d. cap. 17. Avendano d. lib. 2. de metu, cap. 5. Ergo & electi nes ecclesiasticæ forte similiter fieri possunt, præcipue cum adeo proprium sit clericis forte eligi, vt inde clerici dicti sint, quasi forte dati. cap. 1. de re, 21. dist. Illustrent Aleazar lib. 4. parerg. cap. 14. Vadingus in notis ad opera D. Fructi cap. 13. Hallier. de sacris elect. lib. 1. cap. 1. Ergo non recte in præfatu doctore, electiones ecclesiasticas per sortem fieri non debere.

6.

Seri quid;

Quia dubitandi ratione non oblatione vera est præfati assertio, pro cuius expositione sciendum est, sortem in iure, & apud bonæ notæ auctores variè accipi. Aliquando pro fortuna, seu stata alea, vt in psalmo 36. ibi. In manibus tuis sortes mea. Et in finali. C. de spectat. Frequenter pro prima, & capitali pecunia, quæ ius societatis, seu contraditionis conferat, i. acceptam, C. de osorio, cap. conquisitum, cod. tit. Sic Tertent, in Adelphi, ait i fci mihi, eiam de sorte moue temo in dubium. Idem de pieto, quo empti fuerat fiducia. Accipitur etiam pro fato. Virgilius lib. 3. Aeneid.

Hic exiit alium forte milis.

Et pro iudicio. Item Virgilius lib. 6. Aeneid. ibi:
Nec vero ha sine forte data, sine iudice fedes.
Accipitur etiamque pro progenie, seu genealogia, vt apud Oum lib. 6. Fustor.

Si genus aspicimus, Saturnum prima parentem
Fecit, Saturni fons ego prima fui.

Veruntamen specialiter, & vltiori modo accipitur pro inquisitione sortium, siue diuinæ providentiæ de aliquo contingit, humanæque eventui, vel pro ligno dato, per quod distinguantur res confusæ ad inueniendos quæ in acceptione sortis definitur à D. Thoma in epist. ad Ephesios: Exquisitis diuinae providentiæ de aliquo contingit, & humano. Et epistol. 25. ori. 8. & 22. q. 95. 3it: Sorti est inquisitio oculis excedentis humanam induriam, per aliquod a nobis factum de rebus humanis ad nos pertinetibus. Facit D. Gregorius in lib. 1. Regum, cap. 14. ibi: Qui sortes mittunt, per visibulum rerum coniciunt latentes sapes deprehendunt. Quam definitionem, & alia explicant plura de his sortibus adducens Summisz verbo Sori, Martio. Delrio disputis. magic. lib. 4. cap. 2. q. 7. sect. 3. Magister Torre tom. 2. de relig. q. 95. ori. 8. A. ujo d. dist. 3. de statu civili per iur. Giballia. d. cap. 9. ori. 8. Beyerlinch. tom. 7. in theatro, verbo Sori.

7.

SORTIUM
DIVISIO.

Deinde sciendum est, sortes ex parte finis, ad quem sortitio ordinatur, diuidi in sortem diuinationis, consultatoriam, & disinfertiam. Diuinationis est, per quam intendimus futura prenosce, de qua, & eius malitia egi suprà in cap. 1. & plura tradit Delrio lib. 4. disputis. magic. cap. 2. q. 7. sect. 3. Bulenger in apst. lib. 2. de feri. cap. 1. Consultatoria est, quæ consulimus, quid agendum sit, in qua sortis succedit loco consilij, & eam vigente necessitate, & cum debita reuerentia, precibus ad Deum deuote solis litamus, esse suprà probatur in cap. 1. & late docuerunt Marinus Delrio d. lib. 4. disputis. cap. 1. q. 7. Arango d. dist. 3. 6. 5. per totum. Origenes homil. 3. in Iesae. Satis disinfertia est, per quam res quæ in confuso est, diuiditur: & hæc licet etiam concurrentibus quatuor circumstantiis. Prima vt euentus sortis expectetur à Deo, non à dæmone, nec ab astris, fato, aut

fortuna: secunda, vt sortis sit simplici animo, & cum debita reuerentia, siue à mixtione alienius superstitionis, vel abusu rerum sacrarum, seu sacre Scripturæ. Tertio est, vt illi, qui sortuntur, æquali iure nitantur, aut æquali sint digni potestate. Quarta est, quod præcipui intentio sortitionis non sit inquirere voluntatem Dei modo extraordinario, sed tantum litem, discordiam, sine inuidiam ablati, & per defectum cuiuslibet conditionis ea his certum est sortitionem illicitam reddi ob iniustitiam periculum, vt late prosequitur Suarez lib. de superstit. cap. 12. Sanchez lib. 2. in Dotal. cap. 38. a. num. 50. Securi in cap. 70. In fine, q. 19. & 20. Sed diuerso malitiae gradu, nam si euentus sortis expectetur à dæmone, est superstitiosa per caputem pactum cum dæmone: si verò ab astris, & fato, est superstitiosa per pactum implicitum. Similiter si à futura expectetur, accipiendos fortunam propter gentiles censent esse quendam Deum, ellet adolulitica sortitio: Intellectu autem fortunæ iuxta Philosophos Chetianos pro collectione causarum secundatum occultarum, & per accidens conuenientium cum subordinatione ad diuinam prouidentiam, aut nullum, aut tantum peccatum veniale est. Deinde per defectum secundæ conditionis est quocumque precaminosa sortitio, siue qualitatē irreuerentiæ, aut moralis, si magna, aut venialis, si paucis fuerit irreuerentiæ. Per defectum etiam tertie conditionis redditur sortitio improbens, siue irrationabilis, & iniusta, quia si cum periculo communis boni, & læsione iustitiæ, siue cum damno terri, vt probat Cæcilius in summa, verbo Sori. Tandem per defectum quartæ conditionis redditur sortitio precaminosa peccato vanitatis, quia caret debito fine. Etenim finis non debet esse inquirere voluntatem Dei modo extraordinario, eo quod ille modus est omnino incertus, viopie nulli Dei promissioni innitens; sed lites, querelas, inuidias, aut discordias auferre, iusta illud Salomonis proverbium Contradiuina compingit Sori. Monet ergo, his finibus conditionibus, licitas esse sortes omnes, & ita res apud varias gentes receptas fuisse, vt de Græcis refert Honorius liad. de Vandalis: Romanis lib. 1. Vandalis, cap. 17. de Germanis Cæsar lib. 1. de bello Gallico: de Venetiis Halicarnasus Barlan, de Duribus Veni. de Siculis & aliis Scythoribus d. lib. 1. cap. 2.

Quibus ita animaduertis, & in meliorem præfatis, apparet iam veni tanto præfati decisionis, & quare Honorius I. I. improbat et electionem ecclesiasticam factam à Capitul. Lincani si. Nam cum iudicium sortis sit valde periculosum, vnde illud iudicium sortis dicit. Ciero lib. 2. de diuinis, quem, & alios refert Beyerlinch in præf. vna huius verbo Sori, perquam ab sortitum est, & à disciplina ecclesiasticæ alium, vt in electionibus ecclesiasticis, & de Præfati Ecclesiæ iudiciis, ubi melius debent perquiri, & sim. sortum virtutes pensari, iudicio fortune hoc totum committatur, quæ sæpe indignos promouet, & dignos premit, vnde eleganti carmine cecinit ille.

O fortuna potens, quam variabilis!

Etenimque lenis, et te improbas

Fortuna committis, inquit, inuicibus.

Deiulb Seneca in Hæc de Fortuna.

Fortuna viris inuicibus sortibus.

Quam non aqua boni, per totum diuisit!

Facit T. citus in 3. anal. ubi inquit: Nam Augustus

8.

TARTAGLIA
RATIO
CIBINDI.

*Augustus primis Senatui deligere Praefectis. Dein
ambus suffraganeis suffectis, forte dicebatur ex
numero Praetorum, qui praesentis, nec id duo mansi,
quia forte deo erat ad parum idoneos. Iode nullum
iudicium, nulla electio iustitia adaequata in talio,
sive in sortis inesse potest. Inde Plautus in Casina,
ait: Nemo si sic nihil impetrare potero, saltem
fortis. Merito ergo Honorius l. l. in electionibus
ecclesiasticis, in quibus sedulo, & sortem pon-
derari debent meritis, & virtutes candidatorum,
omne genus sortitionis improbat, ne fortunae
iudicio negotium ita graue committatur. Unde
inferitur cum Sanchez lib. 2. summa, cap. 38. Gi-
baldino d. cap. 9. art. 8. praeterea Honorij prohi-
bitionem non extendi ad lites ecclesiasticas circa
beneficia, aliasque similes causas, quae potuerunt
distinui sorte, si alia commodior ratio non appa-
ret, quia Honorius de solis electionibus loquitur,
quae non sunt quando his de illa sorte dis-
cimitur. Nec is, cui ille obvenit, capit beneficium
vi sortis, sed prioris electionis, cuius distinctio
impedimentum ad colligendum possum tolli per
sortitionem, & eius antea dubium, & incertum
firmatur, ac declaratur, cum electione aduersarii,
cum iudicis auctoritate. Dubitari solet, an haec
inferatur locum habent eum duo aequalibus sub-
fragia ad praebendam, siue Praeturam electi
sunt, nec facile potest contraria dici, nisi
committatur sortis, praecipue cum utrique con-
sentiat, nec periculum adit eligendi indignum,
cum utrique dignus iudicatus sit; immo non fiat
sortitio ad electionem, sed ad illius demeritum de-
terminationem. Et licet fieri posse censuit Glossa
in summa, verbo Sortis 26. q. 2. negant tamen plu-
res relictis Calupniis tract. 1. d. 1. puncti 6.
num. 6. Sanchez d. cap. 38. num. 74. Gibaldi d. cap. 9.
art. 8. ad rationem moti, quia eum nondum exstat
electio quando eligentium vota aequalia sunt, si
delectatio illius aequalis committatur sortis, reuera
electio fiet per sortem; immo dei nequit, virum-
que hunc candidatum fuisse iudicatum dignum a
Capitulo, sed quemque a media parte Capitali,
quod non censetur, nec dicitur agere, nisi maior
pars agit. Quare rectius eo casu potius superior
cogere Capitulum, ut intra certum tempus con-
sentiant de aliquo eligendo: quod si non fecerint,
electio tempore eo ipse eligat, ut consuevit Glossa
in cap. ult. res. Nec teneatur, de rescriptis, in 6.
licet in aliquibus Ecclesiis consuetudine intro-
ductum sit, ut hoc casu praebenda sortatur.*

Nec obstat dubitandi ratio supra expensa, &
deducta ex veris fieri paginis lictis, in quibus
agitur de sortibus diuinis, quas eisi diuinitus tem-
peratas fuisse dubium non est, tamen monente
D. Hieronymo in cap. 1. Iona, tamen non de-
bent in exemplum trahi, cum privilegia singulo-
rum non possint legem facere communem. In
aliis vero liris elusis fragmentis, & Authorum
testimoniis proponitur alterum sortis genus poli-
tium, quoniam eam litem declinandam, ha-
reditatem, spolia, & alia bona his, ad quae
pertinent, spontane consensu sortium deo se
submittunt distribuantur, vel cum dubia
res quae vis fieri decidenda committitur, vel cum
dignitates, officiaque secularia & civilia sortito-
r: quod apud varias gentes receptum fuit, &
hodie in variis communibus observatur, dum
inter aequaliter dignos sortis officium committi-
tur, eum talis sortis non continet in iustitiam,
eum inter aequaliter dignos fuit ut verum in pra-

fecti agitur de electione ad dignitates ecclesiasti-
cas, in qua maior diligentia adhiberi debet, im-
mo & sortem forma praescripta in cap. quia prop-
ter, de electis, in qua nullae electionis per sortem
facienda ratio sit; & ideo in dignitatibus ec-
clesiasticis electio per sortes prohibita est, non
acem in officiis secularibus. Nec obstat, quod
de eam, electos a sorte dicitur esse; quia forte
illa pro hereditate Domini accipitur, ad quam
peculiariter electi deditur sunt, sortem eandem
D. Hieronymus in dicto cap. Iona.

Sed supra traditis aperte opponitur textus in
Concilio Baremian. can. 3. in illis verbis: *Elec-
tioni mandandum, custodiendum in omni
sancta synodus, ut secundum praefatum cano-
nicum consuetudinem, vel synodalem episcoporum Praefatum
promouentes, nulli deinceps licet ad ec-
clesiasticos ordines, poterimque canoniam praefixo tem-
pore, aut per sacra regalia, aut per consensum
Clerici, vel plebis, vel per electionem, assensionem
que Pontificum, ad summam sacerdotum aspirare,
ac praenhi. Sed cum per canoniam consuetudinem tem-
pora ecclesiasticos per ordinem speciali operi desin-
dando, probata vota admittuntur, inante consen-
derit gratias, ad summam sacerdotum, si dignitas
vota responderit, auctor Domini praevincatur. Ita
tamen, ut duobus, aut tribus, quos ante consensum
Clerici, & plebis elegerit, Metropolitanus iuvet,
cuiusque Coepiscopi praesentia, quem suis praesentia
Episcoporum iuvet, Christo Domino terminante
monstraverit, beneficii consecratione adiuvet.
Auctor deinceps, quod dicit, praesumptum, & re-
dinantes, & ordinarios proprii honoris deposita sub-
sequatur. Ex quibus aperte deducitur, Episcopos
per sortem eligi posse: nec interelli, quod duo,
aut tres eligi iubentur, ut deinde sortitur inter
eos, quos gradu, & dignitate Episcopi fungi de-
beat; quia tunc adhibet reuera electio sorte ele-
batur. Pro colis canonis expositione dicendum
est eum Sababedia in ehm. Gebae, cap. 15.
num. 68. tunc temporis, videlicet anno 399. in
Hispania tam electionis formam rationi con-
gruam, & consuetudinem viam fuisse, licet non-
quam legitimam praeceptum receptum; immo contra-
rium observatum fuisse constat ex Concilio
Tolet. 4. paulo post expresso: & ita nequaquam
in Hispania electio Episcoporum per sortem
recepta fuit.*

Deinde aduersatur textus in cap. non exem-
plo, 26. quaest. 2. ubi refertur electio D. Mahie
Apostoli, quae fuisse narratur cap. 9. *Alia
Apostoli, & conclusio, forte electum fuisse, illis
verbis: Certe si super Mathiam. Igitur si
Chelus Domino, & Apostolis approbatus fuit,
non recte in praesent Honorius improbat ele-
ctionem per sortem factam ad Episcopatum. Pro-
pterea difficultatis solutione iuxta ritum, & mo-
tem veteris legis, sed alterius ordinis, & ratio-
nis, nimirum manifestationem divinae volun-
tatis al quo eade sit signo visibili, scilicet radiis
intraeant, vel similibus. Auctor Origenes bnd. l.
in Isaiam, Hieronymus in cap. 1. Iona, D. Au-
gustinus canone 2. in psalmo 30. exponunt lo-
cum illum: adhaerens nimirum, iudicium
Apostolatus electionem fuisse ex Christi reco-
K k. 4.*

10.
EXPOSITIO
CAP. NON
EXEMPLE
26. QUAEST.

11.
EXPOSITIO
CAP. NON
EXEMPLE
26. QUAEST.

9.
Dissol-
tur Op-
tandi ar-
bitrio.

latione commiffam folutioni confuetæ, & fimol aliquo figno ecclefii vifibili probata, vt fe Chriftus eos certificaret, fe illis in electione adelfe; & ficut præfens Apoftolos elegerat immediate, ita & abfens Iuda fuccelforem eligeret. Idque videtur poffuiffe Apoftoli eûm dixerunt: *Oſtende quem elegeris*; non vt caderet fons fuper vnum de duobus, ficut in cæteris fortibus folet evenire; fed vt fuam manifefaret voluntatem aliquo fpeciali modo, hoc eſt vifibili ecclefii figno: & ita fontem illam fuiſſe confultoriam docuit Theophilus rom. 15. in *heterocl. fpir. part. 2. punct. 4.* Tandem Vera in cap. 1. *Allum*, Laurentius Iulianus in *fermo de S. Mathia*, Abulenſis in cap. 7. *Iſne*, q. 41. afferunt illam fontem fuiſſe communem, ex vlti & more veteris Teſtamenti acceptam ab Apoftolis, quia flet iam lex verus mortua eſſet, non tamen erat mortifera; & ideo Apoftolos licet ea fonte vii poffuiſſe. Eos ſequuntur D. Frane. Fernandez à Corduba in *opuſ. de vita & miraculis S. Mathia*, Pantoja, in *l. final. C. de alexor. num. 24.* Sed omnes hæc ſententias reſellit Atajo d. diſput. 3. de *ſtat. civili*, §. 5. num. 3. Tandem alij docuerunt, D. Mathiam me-

diatè electum fuiſſe ab Apoftolis; immediate verò ab Spiritu ſancto, qui primùm eum vocavit, & poſtea vocatorem declaravit congregatio Apoftolorum; ſe eom Spiritus ſanctus dixit: *Stregate mihi Paulum, & Barnabam in opus, ad quod aſſumpſi eſt.* Et tunc congregatio erupit: *Tu Domine oſtende quem elegeris ex his duobus; & cecidit fons ſuper Mathiam, & aduenerat eſt cum viderim, id eſt ſuffragiis electus*; & ita eo caſu duæ electiones adfuerunt, altera ſonia, ſeu voluntatis Dei; altera ſuffragiorum ipſorum Apoftolorum. Non tamen adhibere Apoftoli ſuffragia, vt rectè conita alios, præcipuè Ribadmeia in *vita S. Mathia*, ſtatuit, & Leſſius de *iſtit.* c. 53. num. 59. Apoftoli enim dederunt fontes orantes Deum, vt fontes diigeret, & oſtenderet eo figno, quem ipſe prælegiſſet: vbi autem cecidit fons ſuper Mathiam, ipſi quoque elegerunt, vt facile ex Graeca verſione patet. Itaque Deus elegit ſanctum Mathiam, & Apoftoli eundem elegerunt, partim conſilio, & iudicio proprio; partim fontem aſſilio, vt docuerunt Cellotius de *hierarch. ecclef.* lib. 7. c. 1. Cironius in *parat. ad lauc. tit. Beblarm. in apolog. contra Reg. Angl.* cap. 13. fol. 102.

TITVLVS XXII.

De colluſione detegenda.

CAPVT PRIMVM.

Gregorius Vniuerſis Episc. ² Corinthi.



Esiderij noſtri eſt ad concordiam redigere diſcordes, & vnitos eſſe in gratia eos, quos diuſus ab alterutra dilectione voluntaris fecit eſſe diuerſitas. Scripta igitur fraternitatis vestræ relegendes agnouimus, quod hi, qui contra b Hadrianum fratrem & Coepiscopum noſtrum aliqua dixerant, modò cum eodem Episcopo in amicitiam conueniſſent, & magoa nobis ad præſens facta eſt de eorum vnitate lætitia. Sed quoniam ea, quæ dicta ſunt, indiſcuſſa remanere non patimur, Sedis noſtræ Diaconum ad ea inueſtiganda dirigimus: quia nuntiat nos facinoris qualitas vehementer impellit, vt ea, quæ audiuiſmus, diſſimulare nullatenus debeamus: præſertim cùm accuſatores, & accuſati inter ſe feciſſe gratiam indicatiſ, hoc nobis necelle eſt ſubtiliſ perſcrutari, ne fortaſſe eorum ſit comparata concordia: quæ ſi, quod abſit, non ex charitate, ſed ex præmio facta conſiſteret, maiori hoc emendatione plectendum eſt. Nam nos, quicquid nomicè, reuelante Deo, mala, ſiquidem vera ſunt, reſecare præcedentia feſtinamus, commiſſam poſtmodum culpam ſine vindicta nulla ratione dimittimus.

NOTÆ.

1. *Corinth.* Ita etiam legitur in prima collectione, ſub hoc tit. cap. 1. & poſt Concil. Lateran. p. 28. cap. 1. & in ipſo tegeſto epistolæ. Diui Gregorij ſib. 2. indic. 11. epistol. 38. ex quo literarum textus tranſcribo. Corinthia vbi inter nobiliſſimas Græcæ numeratur, noſtriſſimæque eſt in ſilbno Peloponneſi; à Corintho Maratona, velut Corinthiſ perſuaſum eſt, nomen accepit, reſte Strabone lib. 8. Ab Horatio & Pra-

dentio Binaris appellata eſt, & ex eo quod ex arce, cuiusque zero duo ſpectantur maria, Corinthus vocatur, hinc Argem, inde Ionium. Priùs dicebatur Ephyræ, Plinius lib. 4. *naturalis hiſt.* cap. 4. *Medio hoc interuallo, quod ſilbnum appellauimus, applicata celli habitator colonia Corinthiſ, ante Ephyræ dilect.* Cetero pro lege Maniſſa orans, hanc urbem totius Græcæ lumen appellat: plura de Corintho noſtrauit Alex. in *notis ad vitam S. Dionyſij Episcopi Corinthiſ*, ap. 1. Eam Metropolim eccleſiaſticam fuiſſe conſtat ex ſubſcriptionibus

Tit. XXII. De collusione detegenda. 393

nibus epistolæ Synodice Episcoporum Achaie ad Leonem Imperatorem, p. 3. Concil. Chalcedon. ubi primo loco eius Episcopus ita subscribit: *Petrus Episcopus Metropolis Corinthe*. Immo & temporibus Divi Gregorij Primatem fuisse, constat ex lib. 4. epistolæ ipsius, epist. 55. ubi percipit Episcopus Helladæ obedire Joanni Episcopo Corinthionum, his verbis: *Pallium Joanni fieri nostro Curinobianum Episcopo non transmississe cognovisse*, cui tui magnopere comacini obedire, præfer-

sim cum sibi hoc & antiqua consuetudinis ordo deferretur, & bona eius, quibus ipsi testimonium perhibent, immittit. Habebat ea provincia olim virginis Episcopus, quos refert Carolus à sancto Paulo in *Geograph. sacra*, lib. 8.

b *Hadrianum*.] Hadrianus hic fuit Thebanæ civitatis Episcopus, cuius meminit ipse D. Gregorius *ead. lib. 2. epist. 6. & 7.* Ex quibus transcripti sunt textus in *cap. siuter 32. 16. q. 1. cap. 2. de re iudic.*

2.

C A P V T II.

Idem.

Crimina semel audita indiffusa Gregorius nullo modo præteribat, etiam accusatus cum accusatore rediisset in gratiam.

NOTÆ.

1. a *Idem*.] Ita etiam legitur in prima collectione, *sub hoc tit. cap. 2.* & Glossa in præfati existimant, esse textum hunc Gregorij II. aut III. sed præteream, cum verba in præfati relata sint Ioan-

nisi Diaconi, qui scripsit vitam sancti Gregorij anno Domini 873. in quatuor libris, in quibus res gestas ab ipso Gregorio accuratissime protulit, quibus est 1 & lib. 4. cap. 32. ubi præfati epistolam refertur, caput illud inchoavit à verbis in præfati telaris.

C A P V T III.

Alexand. III. a *Norwicens. Episcopo.*

Aviduimus in Episcopatu tuo, & in aliis Episcopatibus Angliæ usque adco clerico-
rum malitiam exercuisse, ut interdum inter se collusionem facta super beneficiis, quæ possident, se sustineant ab aliis molestari, & postea ut quæstioni cedatur, & iidem clerici beneficia quietè possideant, quasi nomine transactionis solvant aliis de ipsis beneficiis annuam pensionem, ut post mortem eorum in beneficiis aliis, super quibus est inter eosdem clericos collusionem facta, ius sibi valeant vindicare. Unde quid tibi exinde faciendum sit, nos consulere voluisti: ideo f. c. p. A. f. p. m. quat. si quos clericorum tuæ iurisdictionis per collusionem huiusmodi fraudem legitime tibi constiterit commississe, eos beneficiis, super quibus collusionem fuerit, non differas ap. rem. perpetuò spoliare, quia satis esset indignum, & absolum, si fraus, & dolus, quem in præiudicium tui iuris, & aliorum dicuntur committere, in eorum non redundaret incommodum, & iacturam.

NOTÆ.

1. a *Norwicensi*.] Ita etiam legitur in prima collectione, *sub hoc tit. cap. 3.* & post Concil. Lateran. p. 28. cap. 12. *sub tit. de pactis licitis & illicitis*. De Norwicensi Angliæ diocesi egi in *cap. 9. de rescriptis*.
b *Malitia*.] Malitia, ut inquit Tullius lib. 3. de natura Deorum, est versutia, & fallens nocendi ratio, quæ quidem oritur ex dolo, & calliditate, l. 1. ff. de dolo, l. si quis alius 11. ff. quod metus causa, l. ubi cogitur 8. ff. de edendo, l. servus 67. ff. de legat. 1. cap. ut circa 4. de elec. in 6. Unde cum clerici Angliæ variis fraudibus, & artibus dolosis intenderent beneficia ecclesiastica hereditaria reddere, ut notant in tit. de filiis Presbyter. tandem eo pervenit ipsorum malitia, ut per collusionem aliud successioneis genus circa ea inducerent. In collusionem datur summa malitia, quia est dolus, ut Pontifex in præfati ait. Facit lex 32. de 26. lib. 6. recepit. lbi: *Fraus, ni co-*

lusionem. Adest enim fraus occulta animo circumven-
nendi, l. qui per collusionem 57. ff. de actionib. empti, l. ubi 8. §. sed cum tu, ff. de transact. Namque colludentes aliquo pretiætu præiudicium suum fatagunt palliare, ut inquit Pontifex in *cap. omne in fine*, ut ecclesiastica beneficia: & qui colludit, malignè facit, l. 4. in fine, C. de servis fugitiis.

c *Molestari*.] Fingendo seilicet, & supponendo lites super beneficiis, ubi non sunt; namque molestari, lites respicit, l. Aurelio 10. ff. de libe-
ra. legat. inde molestus aduersarius dicitur, qui litem introdit, l. 4. §. 1. ff. de alienatione iudicij 7. solent enim aliqui spe collusionis lites fingere, l. cum tu 8. §. si cum tu, ff. de transact. Ex his etiam verbis deducitur, collusionem io præfati casu existam fuisse in iudicio, licet aliis etiam extra iudicium committi soleat, ut in l. 7. §. Procurator, ff. pro emptore, l. Iulianus 13. §. si quis colludens, l. qui per collusionem 44. ff. de actionib. empti, l. sed ades 19. ff. locati, cap. præterea 8. cap. clerici 17. de censuris, ubi notavit Hostiensius.

d *Quasiom*.

3. *d. Quasi.*] Quæ etat, vt ait Anania hic, num. 1. de iure tituli, seu beneficii proprietate: idemque affirmari dicendum esse, si lis esset super iure presentandi, vel eligendi. Quæstio enim controuersia, siue item significat, l. 1. §. 1. *C. de statu defuncti.* l. 1. *Scia* 73. ff. de euit. l. 1. c. 2. *C. de ordine iudic.* Verbum autem *cedatur*, significat translationem, siue diminutionem, l. 20. tantum 14. §. ult. ff. de seruo corrupto. Ignor horum verborum sensus est, quod penitentes beneficium postea liti cedunt, seu renuntiant per collusionem sub pacto annue pensionis, vt in l. si de commun. 19. ff. si seruus vindicetur, ibi: *Sed si per collusionem cesset litis aduersaria.* Ita Panormitanus, textum hunc accepit in casus positione. Hostiensis verò loco verbi *cedatur*, legit *cedat*: & ita accipit verba hæc, non vt penitentes, sed vt possidentes cedant; hoc est vt recognoscant, quod penitentes habent ius in ipsis beneficiis; & tamen pro bono pacis conventionem faciant, quod ipsi possidentes teneant beneficia in vita sua, & in signum iuris, quod actor habebat, soluant ei annuam pensionem. Sequitur ipsum Antonium num. 6. Illud certum est, quod ex hac causa, cessionis pro bono pacis, & concordie, cessante collusione ritè pensio imponitur, cap. cum venisset 9. de rescript. ff. probauit in cap. nisi essent, de prebendis.

4. *e. Possident.*] Ant. Augustin. & ex eo Glossa marginalis in presenti affirmat, in vulgatis libris hæc verba ita haberi, *videtur clerici, qui beneficia quicquid possident.* Sed retinenda est præfata littera omnibus MSS. consona.

5. *f. Quasi transactionis.*] Dicitur quasi, impropriam denotat, & fictionem, l. sed si datum 9. §. proterea, l. quotiens 47. §. ult. ff. de peculio. Barbosa de distinctionibus, verbo *Quasi*. Vide cognoscitur, in presenti casu verè, & propriè transactionem non intercessisse, sed per fictionem, videlicet per collusionem. Non tamen inde inferas à eoutario sensu, pensionem ritè constitui posse cum vera transactione, quia tantum verum est, cum iudicis auctoritate, ob bonum pacis, vt à lite discedatur, pensio constituitur, iuxta tradita in cap. nisi essent, de prebendis.

6. *g. Annua pensio.*] Annua pensio etiam mentio fit in cap. ad audientiam 31. de rescript. cap. cum venisset 9. de rescript. ff. cap. proterea 8. de censibus, cap. exstipulanda 30. §. ult. in fine, de prebendis. Pensio autem dicitur à verbo *Pendo*, scilicet quis pendet à beneficio formaliter, à quo extrahitur, sicut vñsfructus à proprietate, cap. final. de pignoris, cap. pensio 16. §. 1. cap. quicunque 12. §. 2. Gargas de pensionibus q. 1. num. 8. Qua ratione etiam mortuus conductus pensio appellatur, l. diuersitas 8. §. non solum, ff. solus maritus. l. Paula 27. §. Julianus, ff. de legat. 3. Et generaliter quicquid per certa tempora penditur, pensio dicitur, l. 3. §. si legatum, ff. de annuis legat. Lotharius de re beneficiis. lib. 1. c. 35. num. 12. annua verò dicitur, quia singulari annis penditur debet. Quod de causa etiam annua in genere vñtro appellari possit, existimat Dourenus lib. 6. de sacris Ecclesiis, cap. 4. exemplo veterem, quos ita crebè loquutos fuisse constat ex l. Scio 10. §. xam, l. si cui 14. l. Titia 19. §. qui nactus, ff. de annuis legat. l. ex annuo 15. l. si stipulata 33. ff. de donat. inter, l. quidam 21. ff. de pact. dotal. l. 6. §. penult. ff. de pecul. legat. plura de his pensionibus, & earum origine agunt vltra Garciam, Ioannem Dartis, An-

dream, Valensem, Lotharium, & alios de beneficiis agentes: prosequuntur Dourenus de sacris Ecclesiis minis. lib. 6. cap. 4. Anez Robertus lib. 1. ver. iudic. cap. 7.

h. *Valens vindicare.*] Hoc enim intendebant clerici ita per collusionem, scilicet vt post mortem possessorum in beneficiis illis, super quibus erat facta collusio, penitentes ius inferentes ius sibi valeret vindicare, non quidem successores modo, quæ in beneficiis reprobata est, cap. 1. de prebendis. sed vindicando similia beneficia tanquam propria, pristino iure sua esse afferentes; hoc enim prædicta verba significant, l. non ideo 66. ff. de R. P. l. Quintus Minus, §. qui legatum, ff. de auro & argenti. l. certum 6. §. sed si fundum, ff. de concess. immo in presenti casu si collusio non intercederet, non solum beneficiorum proprietatem vindicare, verum & eorum possessionem apprehendere poterant, cap. cum venisset 9. de rescript. ff. collusione verò intercedente, non ita, quia tunc per fraudem & dolum via præcludebatur Episcopo, & aliis, ad quos eorum beneficiorum collusio, seu præfatio pertinebat, quominus possent ea conferre, vt confidetur Alexander in presenti, illis verbis: *Et frater & dolum, quoniam in præiudicium tui iuris, & aliorum videntur committere.* Notarunt Glossa in presenti, verbo *Spoliare*; Anania num. 1. Hostiensis num. 2. Gargas de pensionibus, q. 42. num. 1. Aliquando inter alios fit collusio, ob quam Ecclesiæ, quas possident, non legimè faciunt censuales, vt post mortem ipsorum, eorum filij, vel nepotes præsententur. Quæ collusio eodem modo improbat in cap. cum venisset, de censibus, ac ex de qua in presenti agitur.

i. *Tua iurisdictionis.*] Eodem modo inquit Pontifex in cap. clerici 6. de pact. & ea verba adiecit Pontifex, ne Episcopus Norwicensis excederet, quod cum in consultatione discessit, alios clericos Angliæ prædicta collusione vñs fuisse, in eos posset animaduertere viciore huius scripti; siquidem in eo tantum infideliò nēdaria exararet contra huiusmodi clericos.

k. *Fraudem legitimè tibi constituit.*] Delictum enim collusionis non præsumitur, l. merito 3. §. pro socio; & ideo qui asserit collusionem interuenisse, hoc probare debet, vt ex aliis affirmat Menochius lib. 5. de presump. casu 26. num. 3. Eius autem probatio valde difficilis est, ex quo clari omnino, & occultè comitari solet, cap. quoniam 7. de diuiniis. Qua de causa aliquando manet impunita, cap. super eo 5. de eo qui cognouit consanguineum. Vnde si suspicatur collusionem adesse illi, quoniam inter est, vt liti assensum ei permittit, l. si suspectus 29. ff. de iusticiis. testam. l. si probatorio 14. ff. de appella. cap. 1. in fine, de procurat. lib. 6. Clement. 4. vers. Sani, de elect. Etiam hæc de causa collusio probari potest ex suspitionibus, coniecturis, & presumptionibus, argumento legis qui autem 6. §. vñne similiter, ff. si quis vñs causa testam. cap. suscitata 6. de in integrum restitut. cap. 1. de reuoc. lib. 6. probant Anania in presenti, num. 2. Barbosa num. 4. Aliquando ex qualitate personæ, l. 3. §. hoc interdum, ff. de liber. hom. exhib. velut si sit affinis, aut consanguineus, Menochius ubi proxime, num. 21. Aliquando ex eius statu, veluti si in graui infirmitate constitutus transactionem faciat, argumento in cap. 2. de reuoc. lib. 6. l. filio meo 19. ff. solus maritus. Anania hic, num. 2. Item si negligenter se gessit in lito omittens probationem, appellatorem, seu de iure suo

7.

8.

9.

Tit. XXII. De collusione detegenda. 395

sue docere, l. si servus 50. §. 1. & §. si quis ante, ff. de legat. 1. Prosequuntur alias collusiones præsumptiones Anania in præfati rubric. num. 4. Menochius d. præsump. 26. Barbosa hic, num. 4.

10.

1. Spoliare.] Coofonat textus in cap. cum clerici 6. de pall. cap. cum clerici 11. de censibus, idest perpetuè priuare, cap. ad falsariū, de criminis falsi, cap. tua 11. de iurior. Nec contrarium probat textus in cap. prætor, de censibus, si modò verbum *infrare*, in eo accepiat pro deceptione, non pro collusione. Huius poenæ duplex ratio assignari valet: alia generalis, quam reddunt Glossa 1. hic, & Hostiensis num. 1. ne colludium

maneant impositum, cap. si quem 1. q. 3. quâ ratione colludentes aliis poenis afficiuntur, & detegentes collusionem præmium consequuntur, ut in l. 1. & per totum ff. hoc tit. l. 8. §. 1. ff. de iuris vocande, l. 49. ff. de nî, empti, l. sed adfci 19. ff. locati, l. 8. §. 1. ff. mandati, l. 37. tit. 18. lib. 6. recapit. Alia ratio specialis assignatur ab Alexandro in finalibus verbis, in quibus illud notandum est, quod eum clerici succedere deberent, ex collusione præiudicium fiebat Episcopo, ad quem ipsius beneficii collatio spectabat; & etiam patrono, ad quem præsentatio pertinebat. Vnde transactio in eorum præiudicium sustineri nequit.

C A P V T I V.

Gregor. I X. ^a Barenfi Archiepiscopo, & fratri Ioseph monacho Floren.

IN tantum clamor, qui ascendit contra ^b Acherontinum Archiepiscopum, intulescit, quod dissimulare ipsum vlerius sine scandalo non volumus, nec sine periculo tolerare. *Et infra:* Licet autem Sedes Ap. frequentibus clamoribus excitata, inquisitionem quorundam excessuum suorum duxerit committendam; propter ^c tergiversationes tamen ipsius (vi dicitur) eodem cum inquisitoribus, & examinationibus colludente, necnon corruptis testibus, & inquisitoribus, ac examinadoribus supradictis, non solum prædicti excessus remanserunt hætenus incorrepi, verum etiam peiora prioribus committere non expauit. *Et infra:* Discretionis vestre mandamus, quatenus si de huiusmodi collusione, ac corruptione constiterit, ex integro super præmissis & aliis, alioquin super nouis dumtaxat inquiratis, quæ videritis inquirenda.

N O T Æ.

^a Barenfi.] Cùm Regestro epistolaram Gregorij I X. careamus, integram hanc epistolam dare non possumus. De Barenfi diocesi iam nonnulla addui in cap. 16. de temp. ordin. & de Monasterio Florensi egi in cap. 2. de summa Trinit.

^b Acherontinum.] De Acherontina diocesi nonnulla notai in cap...

^c Tergiversantes.] De tergiversatoribus, & eorum poenis egi in cap. licet, de accusat.

C O M M E N T A R I V M.

7.
CONCLUSIO
TRADITUR
ET PROBATUR

EX hoc textu, & ex cap. 1. & 2. hoc tit. sequens deducitur assertio: Absolutio de criminibus illatis per collusionem facta, etiam præcedente partium transactioe, non impedit iudicem punire, & inquirere idem delictum. Probant eam textus in l. 1. C. de iudicat. diuers. indic. l. 7. C. quando pronocare, l. 1. §. præuocauerem, ff. ad Tampil. l. 4. l. Imperatores 24. l. eius qui 29. ff. de iure fisci, l. 3. §. si tamē, ff. de libere homin. §. iud. l. cum qui 30. §. in popularibus, ff. de iurior. l. 1. l. 4. §. vlt. l. adulter 19. §. final. l. quicunque 31. l. quæsum 40. §. final. ff. ad leg. Jul. de adul. l. minor 13. §. 1. ff. de minor. l. 7. §. si dolo, ff. de dolo, l. isa deum 31. ff. de recept. arbit. l. 11. C. de accusat. l. 3. ff. de præuocac. l. 4. §. iisdem, ff. de accusat. l. despiciat 17. §. quæritur, ff. ad leg. Jul. de adul. l. 1. C. si aduersus fiscum, lib. 10. l. seruus 65. §. cum Prætor, ff. ad Trebel. l. si Prætor 65. vers. Marcellus, ff. de iudicis, l. 1. §. de huius eorum, cap. licet, vers. Cùm igitur, de summa. Illustrant vltra congestos à Barbosa in præfati, Gamma decisi. §. 1. Doanenot ad tit. ff. de præuocac. Martinus Deltio in l. transigere, num. 58. C. de transact. Cogat. lib. 2. var. cap. 10. num. 5.

Mortis in imper. tit. de transact. in præiud. num. 47. Mastrillus de Magistrat. lib. 6. cap. 9. Angolanus lib. 2. de legibus, cap. 7. num. 10. Carpouilius q. crim. q. 48. Ant. Matthæus de crimin. ad l. transigere, C. de transact. num. 7.

Sed hæc assertio difficilia redditur sequenti ioris consideratione. Iudicis sententia absolutoria adeo tolit crimen, ut semper obstat quominus alius eundem reum tenere possit, l. ingenuum 25. ff. de statu hominum, l. si cui 7. §. iisdem, ff. de accusat. late probati in cap. de his, de accusat. Igitur etiam per collusionem sententia laia sit, amplius de eo crimine agi non potest. Augeret primò hæc dubitandi ratio ex eo, nam ignoscendum est ei, qui qualiterque sit sanguinem suum redemptum voluit, l. 1. ff. de huius cor. qui ante sem. Igitur compositione facta cum acesatore, secutus, qui hoc modo sanguinem suum redemit, acesari, vel inquiri de eodem delicto non potest. Augeret secundò hæc difficultas ex eo, nam abolitioe posita crimen, l. 1. C. de generali abolit. Igitur molius magis compositione facta cum acesatore crimen extinguitur. Tandem sugetur eadem difficultas ex eo, nam transactio non minorem auctoritatem habet, quàm res iudicata, l. non minorem 20. C. de transact. l. 2. §. de iurior. sed pet sententiam absolutoriam omnino tollit crimen, ut proximè probauit; igitur et transactioe omnino tollitur.

Quâ dubitandi ratione non obstante vera est præfata assertio, pro cuius expositione sciendum est, verbo collusionis frequenter vii vtriusque ioris conditoris, ut constat ex iuris locis suprà adductis, in quibus aliquando appellatur collusum, ut in l. si præuocatores 8. §. 1. ff. mandati: aliquando colludiam, cap. si quem punierit, l. 2. §. Malotanus in nouel. de Episc. indic. Marcellinus lib. 18. tit.

2.
IMPUGNAT
VTR VTRA
DATA AT
PARTIO

3.
COLLUSIO
QUID

tit. 30. Symmachus lib. 1. epist. 86. & lib. 3. epist. 32. & lib. 4. epist. 20. & 50. & lib. 10. epist. 36. in *editio* Theodoricus cap. 114. notavit Savarus ad Sidorium lib. 1. epist. 2. verbo *Calidum*. Et collusio ita communiter definitur, ut sit, *inter alterem, & rem fraudulenter, & laesum consensus*. Sylvestre verbo *Collusio*, Gigas de *penfionibus* q. 42. num. 3. vel ut inquitur Cuiacius, & Gothofredus ad tit. ff. de *collusio*, *derogand*. collusio est sub specie litis lusus, metaphorice sumpta à rebus ludicris, ut eum quidam non iure, ac sique conentunt, sed leuiter, & ludicre. Virgilius ad res inanes, & stultas vocem hanc transtulit lib. 1. *Georgic*.

Ani summa, nantes in qua colludere plumas.

Vide teste Hothomano de *verbo iuris*, colludere dicuntur, qui quod ex animo facere videntur, ad dissimulacè, & fide agunt inter se, aliorum sensibus illudentes. Vnde collusio dicitur fictio in l. 1. §. *accusator*, ff. ad *Syllan*. & colludentes iustitiae agere in l. si *seruus* 50. §. 1. ff. de *legat*. 1. seu prolatio iudicio, l. si *prolatio* 19. ff. de *appellat*. ubi notatur Gothofredus, Alecium lib. 4. *Prærog.* cap. 14. Inde est, quod collusio etiam vocatur illusio, cap. *prætor* 8. de *consensu*, *Clement*. 1. de *renunc*. quomvis in Concilio Laterano, ex quo transcriptus est textus in d. cap. *prætor*, loco verbi *Lusione*, legatur *collusio*, quod misit placeo Antonio Argulino. Sed nihilominus verbum *illusio*, exiit in prima collectione, & illud agnoscunt Innocentius & Hostiensis ibi, num. 1. Ex eadem ratione præiudicatotes, qui translatiue mouere accusandi defunguntur, proprias probationes dissimulando, & falsas rei excusationes admittendo, dicuntur colludere in l. 1. §. *præiudicatotes*, ff. ad *Turpil*. l. 7. §. *penult*. ff. de *dolo*, l. 3. ff. ad *leg. Jul. de adul*.

Deinde sciendum est, per collusionem gesta resecandi, & infirmari, veluti sententia, quæ quia eum esset seruus, vel liberus, per collusionem cum domino, vel patrono factam, fuit ingenuus pronuntiatus, vel constat ex l. 1. & per totum tit. hoc tit. ad quem speciem spectant textus in l. 1. & 2. ff. de *iure auer*. *anul*. l. qui de *libertate* 29. §. *ult*. ff. de *liberali causa*, l. 2. §. *final*. ff. si *libertus ingenuus*, l. *Diui* 27. ff. de *liber. caus*. quo casu petinde inefficax est sententia, ac si nulla res iudicata intervenisset, l. cum *an in glo* 3. ff. hoc tit. l. *Prætor* 5. C. de *pignor*. Covar. *practicar*. cap. 23. num. 3. *Tiraquel* de *nobilit*. cap. 37. num. 4. Faber lib. 19. *enrich*. cap. 4. Item & casu, quo heres ab eo, qui de inofficioso agebat per collusionem in fraudem legatariorum, vel libertatum, videtur fuit, quia tunc licet legatarius, & illis quibus libertas relicta est, causam agere apud iudicem, qui de testamento cognoscit, vel ex scripto Diui Pij appellare, ut sententia resecundatur, l. si *sententia* 5. §. si *heres*, l. si *prolatio* 14. ff. de *appellat*. l. si *suspensa* 27. ff. de *inoffic. testam*. l. si *seruus* 50. §. si *quis ante*, ff. de *legat*. 1. l. si *heres* 19. C. de *testamentar. manumiss*. Et generaliter sententia per collusionem prolata non præiudicat, l. *Arrianius* 27. C. de *liber. caus*. l. *Prætor* 5. C. de *pignor*. ubi Cuiacius exponit legem penultimam, ff. de *re iudic*. l. 4. §. item si *emptor*, ff. de *appellat*. l. 3. ff. de *pignor*. l. *quoniam* 19. C. ad *leg. Jul. de adul*. l. si *pariter* 9. ff. de *liber. caus*. l. si *creditor*, ff. de *primi. credit*. l. *Paulus* 29. ff. de *procurat*. l. si *cum uno* 23. ff. de *except*. rei *iudic*. l. 12. C. de *testam. manumiss*.

in l. 1. C. ad *leg. Jul. de adul*, l. 7. §. *procurator*, ff. de *pro emptor*, l. 1. §. 34. ff. ad *Syllan*. 11. *lustrant* *Coize*. lib. 1. *abs*. cap. 7. & lib. 16. cap. 32. & lib. 20. *gg*. *Papin*. in l. 3. ff. de *pignor*. *Valerian*. tom. 2. *insist*. *trial*. de *re iudic*. Item quando adest collusio in contractu emptionis, resecundatur venditio per in integrum restitutioem, l. si *res* 44. ff. de *minor*. l. *ultim*. C. si *aduersus system*: vel propter dolum, & fraudem datur actio, l. *Julianus* 12. §. si *quis colludente*, l. qui per *collusionem* 49. ff. de *actio*. *empti*. l. sed *adde* 19. ff. *locati*, l. si *præiudicatorem* 8. §. 2. ff. *mandati*, l. & *elegant*. ter, §. *dolo*, ff. de *dolo*, l. qui *fundum* 7. §. *procurator*, ff. de *pro emptor*, l. *final*. ff. si *vendit*. *pignus*. *agatur*, l. 3. C. ad *iura fisci*, l. 7. C. de *disfruct*. *pign*. l. 27. C. de *encl*. l. si *quis* 34. ff. de *procurat*. docent *Coize*. in l. 7. §. si *dolo*, ff. de *dolo*, Faber lib. 12. *enrich*. cap. 10. *Donel*. in l. 2. C. si *propter public*. *præfu*. Similiter iusurandum delatum per collusionem non obstat, l. cum *qui* 30. §. in *popularibus*, ff. de *iurior*.

His suppositis apparet iam ratio præiudicis affectionis; nam cum sententia per collusionem prolata nulla sit, qui mediante collusione obtinuit sententiam absolutiorem à erimine, quod verò perpetrat, denno accusari potest, & super eodem delicto inquiri; quoniam talis absolutio fuit fraudulentè obtenta, cap. si *quon pariter* 2. q. 3. ne ex malis sua commodum reportet, contra legem 1. ff. de *dolo*. Accedit, quod delicta vindicantur elarctiuit, sunt puniendi, cap. *acc* 24. *quæst*. 3. quis interest Reipublicæ delicta nocentium non manere impunita, l. 5. ff. de *pell. dot*. l. *iuri* 7. §. si *procurator*, ff. de *pell*. l. *ita videretur* 51. §. *affirmatio*, ff. ad *leg. Aquil*. l. 9. §. *quod iudic*. ff. de *public*. *iudic*. Mantent autem impunita, si collusione facta inter accusatorem, & accusatum non liceret iudici super eisdem criminibus inquirere. Deinde nam licet iure euili super delictis capitalibus liceret transigere, l. *transigere*, C. de *transact*. tamen eum iure canonico delicta capitalia non sunt, eum Ecclesiæ pecunia singulis non lreget, ut probatur in cap. *sententiam*, ne clericis vel monachis, cap. 1. de *calumni*. transigendi de delictis non potest, ut probat Padilla in d. *leg. transigere*, num. 36. *Didacus Perez* in l. 2. tit. 13. lib. 8. *ordin*. *Valeron* de *transact*. lib. 3. cap. 5. n. 32. Igitur non obstante compositione, sine transactione facta inter accusatorem, & accusatum, iterum iudex inquirere potest super eodem delicto. Deinde, nam licet iure communi sententia, conuentione facta inter accusatorem, & accusatum non possit iudex pro vindicta publicæ penam ordinariam insigere, l. 12. tit. 1. *parit*. 7. potest tamen extraordinariam imponere, ut probat *Valeron* d. q. 5. num. 11. Vnde quod in præfenti docetur, collusione facta inter accusatorem, & accusatum, etiam præcedente transacione posse adiectionem super eodem delicto inquirere. Hæc rationi adiungenda sunt alia, quæ adduxi in cap. de *his*, de *accusat*. ubi de hæc absolute per collusionem facta expofui difficulta loca *Suttoni*, & *Hermogenis*.

Nec obstat dubiandi ratio super expensæ, deductæ ex l. 7. §. *usum*, ff. de *accusat*. Nam principium illud procedit quando sententia citè, & legitime prolata est; non verò per collusionem, simulat compositionem inter accusatorem, & accusatum. Nec obstat augmentum ipsius difficultatis deductum ex leg. 1. ff. de *ben. eorum*; quia

5.
TRADITVA
RATIO DE
CIDIOLI.

4.
TRA COLLA-
TIONEM
OSTA IM-
PUDICIA
TRA

6.
DISOLVITVA
DYS-
TANDI SA-
TIO.

quia verum est, ignoscendum esse et esse, qui sanguinem suum redemptum voluit. Sed hoc procedit, ne ex Senatusconsulto pro convicto habeatur, non verò ut à pena omnino immunis sit. *Id est ff. de praenot. Nec obstat augmentum deductum ex ea equatione sententiae, & transactionis, quia licet verum sit, in pluribus eaequari transactionem rei iudicatae, quia neutra temere rescindi potest; etiam certum est, non in omnibus comparari, cum de criminibus capitalibus iudicari possit, transigi verò non possit. Vnde quid mirum, quod sententia iudicis tollat crimine, non autem transactio, ut docuit Ant. Matthaeus de crimin. ad tit. 48. Digest. tit. 19. cap. 7. mm. 7. Nec obstat, quod de abolitione dicebamus, quia verum est abolitione criminis sopiri, ut probatur in dist. cap. de his, de accusat. non autem periri. Vnde similiter licet transactione sopiatur sit crimen quoad transigentem, tamen quoad alios non permittit, unde formari potest inquisitio à iudice ex officio.*

Sed suprà traditae assertioni aperte opponitur textus in l. adulter 19. §. final. ff. ad leg. Jul. de adul. in illis verbis: *Proinde si per collusionem cum adultero constitueris, furricque absolutus, dedis mulieri*

supra adversus omnes firmitatem. Ex quibus expressè deducitur, post sententiam absolutoriam per collusionem prolatam, non licere super eodem crimine amplius agere. Igitur non rectè in praesenti docetur, post sententiam absolutoriam per collusionem prolatam licere iudici super eodem delicto inquirere. Pro cois difficultatis solutione dicendum est, textum illum specialiter procedere iò adulterio, in quo cum ptopnè, & peculiariter accusatio competat marito, ideo si adulter accusatus per collusionem absolutus sit, non potest adultera, dum nupta est, accusari: quod facilis procedit bodie attento iure nostro Regio, cum adeo ptopnè sit maritus hoc crimen vindicare, ut nulli alij competat ius accusandi, nec iudici ex officio procedenti, l. 3. ait. 7. lib. 4. ferri. Avena dñio respos. 24. mm. 6. P. Barbosa in l. 2. §. solus. contram. mm. 113. Gomez in l. 80. Tauri, mm. 49. Capycius Lento decis. 121. mm. 17. nisi adulterium adeò notorium sit, ut magnum scandalum in populo generetur, quia tunc iudex contra adulterum procedere valet suppressis nominibus adulterae, & eius mariti, ne foederetur connubium, ut praxi receptum se vidisse testatur Valeron dist. 9. §. mm. 10.

7.
EXPON-
TIT L.
ADULTERII,
§. FINAL.
DE ADUL-
TERIO.

TITVLVS XXIII.

De delictis puerorum.

CAPVT I.

Gregorius.

P Veris grandiusculis & peccatum nolunt attribuere quidam, nisi ab annis xvi. cum & pubescere coeperint: quod merito crederemus, si nulla essent peccata, nisi quae membris genitalibus admittuntur. Quis verò audeat affirmare, ⁴ *ut* mendacia, ⁵ *per* iuria non esse peccata? At his plena est ⁶ *ut* puerilis aetas, quamvis non in cisita, ut in maioribus punienda videantur.

NOTÆ.

1. **G**regorius.] Io prima collectione, sub hoc tit. cap. 1. legitur tantum *Augustinus*, nulli tamen expeimitur, cuius Gregorius, vel Augustini sit praesens textus, nec ubi reperitur, ut iam notauit Ant. Augustinus in praesenti. Existimabim aliquando utramque inscriptionem retinendam esse, legique debere *Gregorius Augustinus*, ut in cap. 1. de maioribus et obed. cap. 1. dist. 5. Et ita in praesenti proponi responsum D. Gregorii Magni ad consultationem Augustini Anglorum Episcopi, licet illud non eader ioret responsa ipsius Gregorii, quae tantum ad calcem epistolarum ipsius de quibus iam nonnulla adduxi in dist. cap. 1. de maioribus.

2. **P**eccatum.] Peccatum definitur à Gratiano in fine 15. quest. 1. voluntas reuincendi, vel consequendi quod iustitia verat, & unde liberum est abstinere. Coarctat in cap. alma, c. 1. par. 5. 10. x. 10. de sententia. ait: Est auctio à Deo, & conuersio ad creaturas. Vnde dicitur in c. final. de praescripte. quod omne quod non est ea fide, peccatum est; hoc est ex coarscencia. In praesenti peccatum omne delictum significat, iuxta rubricam ibi, de delictis:

at delictum communiter priuatum tantum noxam significat, scilicet qua priuatum quisque laeditur, veluti per furtum, mendacium, perurionem, inuoluntariam, & cetera similia: in quo differre à crimine, quia criminis appellatione capitalis fraus iotelligitur, quae Respublica laeditur, veluti homicidium, falsitas, adulterium, & similia: quae differrentia indicatur aperte, in l. quis sit fugitiuus, §. non xas, ff. de adul. edict. l. aliud 13. in fine, ff. de P. S. Hac ratione in Pandectis titulus de priuatis delictis secernitur à titulo de extraordinariis criminibus, & à titulo de publicis iudiciis. Aliquando tamen haec duo confunduntur, & crimen significat priuatum delictum, l. 1. §. ult. ff. de pami; & delictum etiam pro crimine ponitur in l. 1. c. ff. de legibus, dist. 4. l. aliud, §. 1. & hoc modo sunt in praesenti textu, in quo agitur de delictis carnis, de furto, & perurio: & in cap. 1. 49. dist. cap. exigunt 18. c. 1. quest. 7. cap. 3. 16. quest. 3. cap. quod quidam 97. §. fin. c. 1. quest. 1. cap. olim 14. vers. Quod si alius, de princ. regul. delictum 76. de R. l. lib. 6. cap. cum 19. a 3. quest. 4.

c Pubescere.] De pubertate, tam vitiorum, quam fornicatarum, egi in cap. 2. de despons. impub.

Li d Furta.]

d. Furta.] De quibus, & eorum malitia egi in cap. 2. de furtis.

3. e. Mendacia.] Mendacium debuit D. Augustinus in libro contra mendacium, *Est falsa significatio vocis cum voluntate fallendi*: prout rehtetur in cap. beatus Paulus 5. 2. 8. quæst. 8. nam qui mentitur, contra id quod animo sentit, loquitur enim voluntate fallendi iuxta eundem Augustinum in eisdem 12. quæst. 4. Vnde mendacium peccatum est contra octavum Decalogi præceptum, ut varita SS. PP. testimonio probat Gratianus in causa 12. q. 2. etiam si quis mentiendo alieni vellet prodesse, dicit, cap. in anem: vel si humilitatis causâ mentitur, cap. cum humilitas 9. cum sequent. 12. quæst. 1. Et mendacium aliquando est gravis peccatum, ut in cap. 1. ead. quæst. cap. litteris 14. de præsumpt. divini iudicii poenâ damnatur, ut rehtetur in cap. iuramenti 12. 2. quæst. 5. differtque à perjurio, quamvis qui falsum iurat, etiam mentitur, cap. 3. §. 1. cap. 3. §. 1. 12. quæst. 1. Merito ergo Gregorius in præsentil docet, quod nemo audebit affirmare mendacium non esse peccatum. Quare & propter illud iure etiam civilis mendax puniunt, l. de alio-

no 1. §. qui tacuit, l. confessio 13. §. de interog. in iure faciend. & in delicta quæ inficiando cresunt.

4. f. Periuria.] Periurium est nequitur decipere credentem, ut ait D. Augustin. in cap. 1. 12. quæst. 2. dicitur magnum peccatum in cap. in novo 3. 12. quæst. 1. grande scelus in cap. vlt. ead. quæst. & ut tale prohibetur cap. 1. Lewis. ibi: *Non periuraveris in nomine meo*. Et cap. habemus 12. cap. si peccatum 14. 12. quæst. 1. periurus namque dupliciter reus fit, quia nomen Domini in vanum assumit, & proximum dolo caput, cap. quicunque 9. 12. q. 5. de gravitate huius criminis egi in cap. cum quidem 12. de iurior.

5. g. Plena est puerilis avar.] Immo & aliis pluribus peccatis, ut rehtetur in Concilio Mediolan. 5. sub Carolo, 3. part. xii. q. ad matrimonium pertinent, §. his temporibus, ibi: *Huius temporibus contra puritatem licentia est, atque adeo effrenata, ut cum peccandi novam afferat, tum disciplina christiana detrimenta imponit non levia*: hinc in sibiis nimia pudentia, in Ecclesiis irreverentia, nobilitas foris concitatio, atque in omni loco sese offerens imprudentia, & plane proiecta audacia.

CAP V T II.

Alexand. III. ^a Hermon. Episcopo.

R Eferente nobis H. intelleximus, quod cum N. filius eius^b decennis cum aliis pueris sagittaret, quidam^c nepos eiusdem H.^d sagittâ percussus interit: quod idem filius eius cum inter alios luderet, fortuito casu dicitur peregrisse: propter quod^e Abbas sancti Remigij à præfato H. secundum consuetudinem illius terræ C. solidos instantius requirebat. Et infra: Vnde quoniam in pueris relinqui solet inultum, quod in aliis provectionis ætatis humanæ leges dicunt severius corrigendum, mandamus quatenus si constiterit, filium prædicti H. intra xiv. ætatis suæ annum eundem excessum commisisse, memoratum Abbatem moncas, & compellas, ut ab eodem H. prædictos C. solidos, propter illam consuetudinem non exigat, nec ab ipso pro^f temporalis^g poenâ requirat.

NOTÆ.

1. ^a Hermon.] Ita etiam legitur in prima collectione, (sub hoc tit. cap. 2. & cum nulla extet diæcesis Hermonensis, vel Hermonensis in tota Geographia sacra edita à Carolo à sancto Paolo, credo legendum esse *Rhemensi*; cum quia Abbatia sancti Remigij, cuius mentio fit in hoc textu, extat in ipsâ vrbe Rheims: cum quia compositor homicidij certa solidorum præstatione frequenter statuitur in lege Salica, ut dicemus infra in cap. 2. de panis. Vnde crede casum hunc in Gallia consigisse in ipsâ diæcesi Rheimsi, & ita legendum esse, *Archiepiscopo Rheimsi*.

b. Decennis.] Et ita non erat adhuc proximus pubertati, ut infra dicemus.

c. Nepos.] Ex fratre videlicet, idest sobrinus, iuxta tractat in cap. per tuas, de probat.

d. Sagitta.] De sagittarile egi supra in cap. unico, proprii tituli de sagittarile.

2. e. Abbas sancti Remigij.] Monasterium hoc sancti Remigij Rheimsensis precelebre est, ubi extat corpus huius sancti Apostoli Galliz, de cuius antiquitate, & magnitudine plura adduxit Ypes tom. 4. chron. D. Benedicti, anno 852. cap. 4. Huius monasterio, & eius Abbatibus concessit Carolus Magnus quasdam villas cum regali iustitia in illis sibi vel Regi competenti, ut constat ex ip-

sa donatione, quam refert Ypes ad calcem disti tom. 4. in illis verbis: *Concedimus, & confirmamus sancto Remigio quasdam res, quas venerabilis Altmannus nepos meus eidem Sancto dedit in pago Remoensi, in Ducatu Flandensi, in loco qui dicitur in nomine Leiberio, cum omnibus rebus ad easdem villas pertinentibus. Concedimus etiam, & Imperiali auctoritate confirmamus, & denamus eidem glorioso Francorum Apostolo, quendam Florestam nostram, quæ Vostra vocatur, quam nobilissimus Comes Angilbertus cognatus meus eidem sancto tradidit: sed quia de camera, & fructu Imperiali erat, nos confirmare rogavit. Eandem itaque Regiam Florestam Vostram cum omnibus villis, quæ in ea sunt, scilicet Astiliza, Alimbria, Raizo, Nera, Alm, cum omnibus mansis, domibus, castis, curibus, adfiscis, locis, campis, pratis, piscibus, aquarum decursibus, & immobilibus, cum omni venatione, &c. Et insuper omnem Regalem iustitiam Ecclesie sancti Remigij Francorum Apostoli integrè transmissimus, & confirmamus cum omnibus, quæ ad Florestam eandem pertinent videntur. Vnde cum Abbas sancti Remigij virtute huius donationis haberet iustitiam regalem; ideo intendebat centum solidos exigere à pecto isto pro homicidio etiam casu celebrato.*

f. Pro temporalis.] Hinc deducit Hostiensis supra in cap. 1. non §. puerum etiam non doli capax peccatus spiritalibus pueris posse; siquidem Alexandr

Alexander in presenti tantum prohibet illi po-
tatem temporalem infringi; & ita affirmat, similem
poteatem irregularem manere, quia quoad hanc
poteatem non attenditur animus, seu voluntas oc-
cidendi: sed tantum homicidium ipsum. *cap. si-
mul. 3. q. 1. 1.* Facit pro ea sententia textus in *cap.
exhibita. de homicid. Verum* hodie certum est, in-
fractum doli non capacem nullam irregularem
contrahere, ex Clementina *si furiosus. de homicid.*
Et generaliter quoad potates spirituales, excommu-
nicationis videlicet, & interdicti, desiderari in
pueris doli capacitatem, *cap. quoniam 38. cap. pue-
ri 60. de sent. excom. probant* late Lara *de quia ho-
minis cap. 3. de ex. num. 111.* Suarez, Micholus, Sayrus,
& alij, quos refert, & sequitur Narbona *de astate ad
alium human. a. 10. 10. & dividit. q. 8. per tot.*

g. Paria.] Pater enim ex alio capite non tene-
batur ex hoc h. misidio ad potatem pecuniariam,
quia videlicet filius non habebat vnde solueret;
& pater non teneatur ex delictis filij, nec ratione
legitimae portionis. *Constat. lib. 2. var. cap. 8. nu-
mer. 7.* Maecius *de legum. quest. 1. 5. num. 10.* Pa-
dilla in l. 3. *Cod. de iur. & facti. ignor. qui disputant
verum statum factum* ut patet pro delictis filij
teneatur, sustineri possit.

COMMENTARIUM.

EX his duabus Decretalibus sequens commo-
niter deducitur assertio: *Pueri grandae, hoc
est proximi pubertati, & doli capaces, ex delictis
(excepit carnii peccata) tenentur, sed minus sunt
puniendo quam maiores.* Priorem partem assertionis
probant textus in l. 1. *h. hoc edicto. ff. de ne rei fiat
ei. l. impubes 23. ff. de iur. l. impubes 7. Cod. de
pauis. l. 1. & per totum Cod. si adversus delictum,
l. 3. q. 1. ff. de iur. 5. penult. iussit. de obligat. quae ex
delicto. l. 4. ff. de dolo 26. ff. de dolo malo. l. 3. q. 1.
ff. de sepulch. violat. l. ex causa 9. q. 1. unde videndum
lauculium 37. ff. de minor. l. facit leg. 6. ff. ad leg. Jul.
pauis. l. 1. de fulta 26. q. persona. l. hoc
lege 10. q. Dinau. ff. de prelatu. l. 3. q. sed &
si iussit, ff. ad leg. Aquil. l. non tantum 17. ff. de
excusat. iur. l. heredes 23. q. ult. ff. de dolo ma-
lo. l. propterandum 23. q. si quisque. Cod. de iudi. iis.
Paulus lib. 1. sen. tit. 3. l. pupillum 111. ff. de
R. l. 1. si quis te reum. Cod. de fisci l. si aliter.
Cod. si minor se maiorem, l. si minor. ff. ad leg. Jul.
de adul. cap. si quis cuiuslibet 21. quest. 3. l. 4. ut. 15.
pauis. 6. Secundam partem assertionis probant textus
in cap. punientes, l. 3. dist. dist. lauculium, q. in
delictis, l. si adulterium, q. 1. iussit iniustum, ff. ad
leg. Jul. de adul. l. Dinau. ff. de termino mono. l. 8.
tit. 31. pauis. 7. Illustant vtra congestos a Bayb.
in presenti Gibalio. de nepot. tom. 2. lib. 6. cap. 2.
ari. 8. Sesse tom. 2. decif. 152. Gomez lib. 3. var. c. 1.
num. 55. vbi plures Ayllon, Gomez in Empor. tit. 12.
quest. 4. per tot. Narbona de astate anno 7. quest. 5. &
anno 10. & dividit. l. 3. q. 8. P. Gregor.
lib. 4. pauis. tit. 15. cap. 6. Vighell. in methode iuris
con. fol. 31. except. 8. Barbosa tom. 6. in seclit. ad
taxum in cap. ad hac. de pauis. dist. 3. Acinus in cap.
punientes, num. 1. dist. 50. Anton. Mathaeus de
crimen. in princip. cap. 1. Fachinas lib. 9. controu.
cap. 47.*

6. Sed hae assertio difficilis reddunt sequentibus
iuris consideracionibus. Prima nascitur ex eo,
nam certum est, proximis pubertati esse doli ca-
paces, l. 4. ff. de dolo 26. vers. Denique, ff. de deli-
ctis except. l. heredes 23. cum l. sequenti, ff. de de-
D. D. Gonzal. in Decretal. Tom. V.

lo: & per consequens delictum committere, *Lex-
cipiantur, ff. ad Syllan. l. impuberes 23. ff. de fort.
5. penult. iussit. de oblig. quae ex quasi delictis.* At hi
sunt qui pubertatem iam sunt ingressi, l. 3. q. 1. vbi
ff. de liber. agnosce. cap. ad nostram 8. de regul. Igitur
ante eam aetatem pueri ex delictis non tenentur.
Augustinus primum hae dubitandi ratio ex eo, nam
quoniam pupilli sine tutoris auctoritate meliorem
suam conditionem facere possint, deteriore tam
tamen obligatione facta tutore non auctore reddere
nequeunt, l. obligari 9. ff. de auct. tutor. princ. iussit.
ead. tit. l. contra 18. ff. de post. Sed si ex delictis te-
nentur, deterior facerent suam conditionem,
non auctoritate tutore. Igitur ex delictis non tenen-
tur, nisi pubes factus, quando iam h. tutela esse
liberatus l. final. Cod. quando iussit esse defuncti,
princip. iussit. quibus modis tutela, ut coniugij in
contrahibus, inter quos, & delicta nulla ratio
differencie assignari potest immo fortius viget
in delictis, ex quibus maius damnum pupillo re-
sultat, Augustinus deinde hae difficultat ex eo, quia
peccatum, ita delictum non nisi a volente com-
mittitur, & ab eo, qui quod agit, intelligit, cap. 1.
& per totam l. 3. quest. 24. Sed hoc iudicium non
cuenire ante decimumquartum annum, probatur
ex eo, quia, ante illam aetatem puer ad testam-
nium non admittitur, cap. 1. q. 4. quest. 2. nec iurare
cogitur, cap. pauis 14. cum duobus sequent. 22.
quest. 5. Faciunt textus in cap. illud 20. quest. 1. cap.
continetur 6. cap. attestaciones 10. cum sequenti, de
testam. impub. Igitur ante eam aetatem non pos-
sunt impuberes ex delictis obligari. Deinde in se-
cundam partem assertionis, vbi exepiantur deli-
ctis carnii, sic arguuntur. Quoniam regulariter
aetas xiv. annum, ut apta, & matura ad copu-
lam sit aetate definita ad contrahendum matrimo-
nium, cap. attestaciones, de dispensat. impub. probat
late in cap. 3. eod. tit. tamen ita illa potest malitia,
vel prodentia suppleri, l. 3. Cod. si minor se mai-
orem, cap. de illis, cap. ult. de dispensat. impub. immo
ex D. Gregorio lib. 4. dialog. cap. 19. refert Glossa
in summa 10. quest. 2. quod puer novem annorum
nutricem suam gravidam tedidit: & de puerio 10.
annorum idem ex D. Gregorio refert Anania in
cap. 1. hoc tit. num. 6. pro quo facit textus in cap. fi-
nal. de eo qui castitatem conservat. Et Salomon cum
esset viderem annorum, genuit filium suum Ro-
boam: & Achaz in vndecimo anno genuit Ec-
zechiam: quae & alia exempla concessit Farinae. in
praxi, 3. part. quest. 92. num. 80. & pupillum ante
14. annos ex stupro procre posse, docet in
l. supram. 34. in fine, ff. ad leg. Jul. de adul. Igitur
non recte in presenti docetur, puerum proximum
pubertati, & doli capacem ex delictis carnis non
teneri.

Quibus difficultatibus minime obstantibus, ve-
ri est praesens assertio, pro cuius expositione sci-
endum est, hominis aetatem variè discerni, & in
partes duobus ab aetate usque ad interitum, ut vi-
detur est apud Glossam verbo *Profectus*, in proemio
libri 6. Decretal. & verbo *Septennarius*, in cap. 1.
de celebrat. Missor. & verbo *Complevit*, in l. 1. ver-
bo *Pueritiam*, ff. de postul. Alecium in l. pueri, ff. de
F. S. Menochium *de arbitrar. lib. 2. casu 57.* ex
num. t. & plures, tunc laus perios, quam Phi-
losophos, quos refertur Lata in compend. vna ho-
minis, Paulus Zeechius 99. medicolegal. tit. 1. q. 4.
Narbona *de astate ad alium human. Communiter*
dividunt in infantiam, pueritiam, pubertatem,
adolefcentiam, seu iuventutem, senectutem, ac
L I 1 aetatem

5.
CONGL-
120. TRA-
DITUR, 27
PROSA-
TIA.

6.
IMPEN-
TIA TRA-
DITA AS-
SERTIO.

7.
DE HO-
MINIS
AETATE.

matem decretauit. Infans incipit à natiuitate, & procedit usque ad septem annos, l. 1. q. qui admittit ad bonor. poss. l. 1. q. sufficit, ff. de adm. iuris. tu. l. in sponsalibus, ff. de sponsal. l. si infans, l. 18. Cod. de iure delib. Cap. 1. de de. iur. impub. lib. 6. D. Iudicatus lib. 11. ep. cap. 2. probat latē Narbona anno 7. quass. 1. Richardus in testam. ad tit. de acquir. heredit. cap. 23. Argaya lib. 1. obs. cap. 9. n. 20. Infans dictus est, quia facti non potest. D. Iudicatus lib. 11. originum, cap. 2. Martia Varto lib. 3. de lingua Latina, ibi: Fatat ita, qui primum homo significabilem est emittit edem: ab eo antequam infans pueri, dicuntur infantes. Sequitur, Varrotem Nannius Marcel. multis testimoniis adducta de compendiosa doctrina, cap. 1. mult. 275. quo ipse lapsu Lucretius Epicureus tenebatur maximus, & in Philologus huius acutissimus infans, de natura rer. agens de secunda mundi ætate, in qua luxa creatioem suam homines coepit loqui, & addidit verba, vocauit primos conatus loquendi, infantiam linguæ, in illis puerosum, ibi:

At quous lingua sonitus natoque subire

Mittere, et uolitus expressit uocibus rerum,

Non alia longe ratione, atque ipsa radente

Prætoribus ad pectus puero infantis lingua,

Cham facit, et digno que sine præsentia moueret.

Pueros appellat infantes pueros. Facit Iulianus in l. 6. ubi ait, Chel. de bonis qua lib. ubi notauit post Glossam Salicetum Scipio Gentili de bonis matrem, cap. 2. ff. de reg. iur. l. 7. Causa ergo naturalis infantie est impotentia facere quia causa omnes, qui facti non possunt, infantes appellantur: in quod hoc fecit de bonis, & infensibilibus hæc vox accipitur, quod natus veteres Grammatici, & hodie Lexicographi. Corpora uero inter primos Iurisperitos conditores dubitari, à quo tempore, & usque ad quod tempus infans computanda esset? Et Stoici eundem præcepit, & ceteris in negotiis consulentes, per hebdomadas annorum, sua à septennio in septennium ex petunt ætates comparant. Quæ Hippocrati dimidio ætatis fuit, ut refert Menochius de arbit. com. 2. casu 57. n. 1. infantiam definitentes usque ad primum septennium, pubertatem usque ad secundum. Peripatetici naturæ regulis magis inuidentes, ab habitu corporis, & facultate spiritus determinabant infantiam, nihil certi statuentes. Proculiani uero in plurimum Stoicos sequebantur. Sabiniani sectatores erant scholæ Peripateticæ: quæ de causâ primæ Iurisperituli in diuersas abierunt sententias: posteriores uero hæc, vel illam sequebantur. Ad septem annos infantia computatur in l. 1. §. si sufficit, ff. de adm. iuris. tu. l. in sponsalibus 14. ff. de spons. ubi septennij expressa extat mentio. Aliquando uero per impotentiam facti, ut in l. pupillus 9. ff. de acquir. heredit. in negotiis, ff. de regul. iur. cum aliis, quæ adducunt Præsius, Bionomus, & Calpurnius in textu, ubi infans. Quæ ideo se ex mente compositum contraria iudicari non debet, eum minus expressum in his, per magis expressum in illis suppleat. Tamen Ateadus in l. 1. c. 8. Cod. Theod. de bonis matrem, quæ expressit est, & in l. si infans, l. 18. Cod. de iure delib. Stoicorum, & Proculianorum sententiam sequens, infantiam usque ad septem annos definit, ut iam notauit Iacob. Gothof. in dista l. c. 8. Ex quo certo iudicio affirmari non potest, Tribonianum in locis Prædictarum supra relatis addidisse uerba, quæ de notant infantiam septennio terminari, quæ posteriores Consulti sic etiam sentiebant, nec se addidisset, ideo

notandum erat, eum aliter compositio Pandectarum consil. re non possit, quibus si priores leges posterius aptarentur, lo quo grauius peccauit Faber in Iurisprud. 12. princip. 6. illas 8. quem reprehendit Luc. Oualdus lib. 7. ad Dom. cap. 9. uera D. Manet ergo secundum uetus definitionem, infantiam in septimo anno, & infra definit: quod de iure canonico receptum est, licet aliquando infans dicitur qui in uero est, cap. 10. Luna, licet non ita proprie, l. cum est pupillus 11. ff. de R. l. & infans octo dicitur, Genesis c. 17. & qui tres menses habet. Exodi cap. 2. & anniculus, l. inter ceterum 26. ff. de pasc. dotal. Narbona anno 7. quass. 1. Infantie uero proximi sunt, qui cum facti intelligant, nullum animi intellectum habent, nec quod agant, intelligunt, l. seruum 6. ff. de reg. iur. pupil. De pueritia, qui supra in cap. accipit, cap. l. serui, de despons. impub. & de pubertate egi in cap. 2. de despons. impub. Proximi autem pubertati sunt qui habent aliquem intellectum, §. pupillus, l. iustit. de iur. iur. §. pupillus, de quod agant intelligunt, l. 1. §. si seruum, ff. de O. & A. l. seruum 6. ff. de reg. iur. pupil. & ideo sunt doli capaces, l. heredes 13. in fine, ff. de dolo, l. 4. §. de dolo 26. ff. de doli except. l. septem 14. ff. ad Syllan. l. impuberem 25. ff. de iur. iur. §. si seruum, l. iustit. de obli. & ex delicto. Sed in qua ætate dicantur proximi pubertati, non est concordi DD. secentia. Aliqui affirmant, coesse proximos pubertati, qui sunt in anno decimo de ætate usque ad decimum quatuor, formæ uero à nono cum dimidio usque ad duodecesimum, uel ita septem anni, qui inter infantiam, & pubertatem interfunt, diuisantur, & tres priores cum dimidio, proximis infans, reliqui uero tres cum dimidio, proximis pubertati tribuantur. Quam sententiam pluribus relatis teneo Narbona de ætate anno 10. & dimidio, quass. 1. pro qua sententia facit textus in §. ad infans, quibus ex causis manentibus, l. c. hoc 41. ff. de heredi. insti. Alii, qui etiam eos esse proximos pubertati affirmant, qui per sex menses tantum distant à pubertate, argumento legis non tenentur in l. princip. ff. de excus. l. septem 14. ff. ad Syllan. l. iustitiam 10. de despons. impub. Alij uero illos, qui distant à pubertate per tres dies, ex l. 3. §. ubi est, ff. de iur. archiep. cap. nostrum 8. de regul. Alij illos, qui per unum annum tantum distant, cap. iunioribus, de despons. impub. Alij eos, qui septimum annum uero compleuerant. Sed rectius Menochius docuit de arbit. lib. 2. casu 57. num. 40. hoc totum iudicij arbitrio relinquendum esse, qui iuxta conditionem, & vires persone, & iuxta morem regionis, hoc æstimare debet: cuius arbitrio apud nos non est, ex traditis in cap. comitatus, de despons. impub. Adolescentes dicuntur viri ab anno 14. formæ ab anno 12. usque ad 15. & communiter illi appellatur minores, l. cum filio 50. ff. de leg. 1. l. 1. & per tot. ff. de minor. & ex ætate etiam dicitur teneri in l. cum tantum 11. ff. de Decret. & usque ad eum quæm pueros vocari, constat ex l. quidam 25. ff. ad Trebel. l. 3. §. idem, ff. de adim. legat. De iunioribus egi in cap. 1. in uenerunt, de presump. Tandem senectus incipit à quinquagesimo anno usque ad 70. l. cum aliter 69. §. 1. ff. de leg. 3. l. 1. Cod. qui ætate, lib. 10. §. iur. iur. insti. de exc. sal. iur. Et inde incipit ætas decreta, quæ ad centum annos, quia hic finis uix hominis est, l. ubi Cod. de sacros. Eccles.

His suppositis deinde sciendum est, infantes, quorum ætas duar usque ad septimum annum, non tenentur ex homicidio, l. infans 1. §. ad leg. Corn. de

de ficiatis, nec ex furto, l. *impuberem* 26. ff. de *furtis*: nec ex lege Aquilia, ff. *dammum* deinde, l. 5. §. *ideo* ff. ad leg. *Aquil.* nec lege Cornelia de falsis, l. *impuberem* 22. ff. ad leg. *Corn. de falsis*, l. qui inoff. 26. in princip. ff. de *inveris*, nec ex infamia, l. 3. ff. de *infamia*, cap. 2. in princip. ex §. 1. in fine, cap. 3. §. 1. ff. *quæst.* nec pœna Syllantian, l. 1. c. *impubes*, lib. Syllan, nec de falsa moneta, l. 1. *Cod. de falsa moneta*, nec expulsa frumenti §. *mittere* poe. l. 2. §. *exscriptor*, ff. de *actioe*, ad qua vi elegantior air D. Augustinus in cap. aliquot 15. *quæst.* 1. quomodo reus constituitur, qui nescit quod facit: Et lib. 22. de *clero*: *Dei* sic 42. rationem spiritum esse in infante ait, ubi: *spiritusque animæ* hactenus rationem debet, ubi ratio, & intellectus ipsa esse quædam dicitur, *quæ nulla sit*, excelsiora scilicet, atque excremētis animæ mixta, qua sit scientia capax, atque doctrinæ. Seneca epist. 121. Quomodo ergo infans de conciliari consuevit rationi pariter, cum rationalis nondum sit? Et Marcellianus in l. *proinde*, ff. de *fideicommissi*, lib. 1. ait in parvulis nullam esse culpam, non quod magis rationales sint, quam bestię, quod voluit in Stoico, & Chrysippos dicere in libro de *Hypocrisis*, & Platon. placuit, ita ut existimarent circa annos decem, quod tardum autem illis infanti, ut ait Ambrosius in *Sabat* periculis: sed quia nondum sita, & ratio prædicta sit, ideo quæ comparatur furioso, liquid infans 60. ff. de *test.* l. 2. ff. ad leg. *Corn. de fidei c.* §. *capillus* & *filii* de infamia, ff. *de*, ut ex prodigis, dicunt non sentiri, l. *divus* 14. ff. de *offic. Presid.* l. §. *libi* 8. §. *si de optio*, nec infans, l. si cum dotem, §. si mortuus, ff. *soluto matri*, & legata nullum esse, ff. cum ait Paulus in l. *quædam* 32. §. *quomodo*, ff. de *acquir. poss.* l. 1. §. *si de iniuriis*: de iudicio carere docetur in l. *peior* 21. *verf.* *Natura*, ff. de *iudic.* l. *de*, ff. de *lar.* & *sol. igno.* *Amore* 8. in fine, cum l. *sequenti*, ff. de *acquir. heredit.* §. *propter* 3. *Infans*, quibus non esse permittitur, & in aetate terrena torpere rationem conspiciunt dixit Eulgentius lib. 1. de *veris*, *prode* *sim*, impuberem propter cœteræ æqualium in puerili corpore. C. *orgius* *Palmas*, *declam.* 1. & *laupient* *Vilpous* ait nondum plenum animi iudicium illi scilicet, sit. 10. *regulas*, §. *impubes*, & nondum stabili mentem adeptum esse, l. *de*, *Cod. de testam. in l.* *animus* *dilectum* *consilio*, §. ratione sitarum dixerunt *Cicero* in *oratione pro Cluentio*, & *Nysiens* in *diogenem* 2. cap. 10. de iocis Hippocratis lib. 1. de *plac.* §. *animata* hominis cum corpore superi, & lib. 6. *epidem.* Quamvis homiois semper nisi vique ad mortem, Quæ verba Galenem, alioque interpretes exeg. docuerunt, conuincit meminit Eustachius lib. 6. *an.* §. *laudante* in eundem rem Herodotum, ut affirmat *pericuri* lib. 1.

Nam velat infirmo patri, teneraque videretur

Corpore, sic animi sequitur sententia lenis.

Inde ubi rediisti adoleuit caribus aetas,

Consilium quoque magis, & acrius est animi vis.

Verum inde nihil habetur, quam facultates, & operationes animae rationalis non perficere extra in infantia, sed crescentem aetate; quod esse annum 14. contingere dixerunt Poddionius apud Gelenum lib. 5. de Hippocraticis, & Plutarci placitis, Diogenem in Censorio, Plutarchum de placitis Philosophi lib. 5. cap. 24. Quia ratione infantes nec ex stipulata acquirere possunt, nec alia per vim dandi obligati, l. in princip. l. mulier 70. ff. de P. O. 5. pupillus, l. fidei de immul. & ideo quia ipso innocencia consilii tutor, nec pater animalium, aut etiam possunt. l. mulier infans 60. ff. de R. P. l. 6. in fine in sum.

§. final. *Coll. de inefficacia l. 9. tit. 7. par. 7. Plaza de delicti lib. 1. cap. 31. num. 1. Gomez lib. 3. par. cap. 1. num. 57. Iul. Clarus §. final. quaff. 60. quod procedit etiam in ardecloribus criminibus, veluti nefandis, et cauent constitutione Imperatoris Constantini relecta ab Harmonopoli lib. 6. tit. 14. titi: Praeter nomen laesumque, tam agens, quam passiens gladio plebatur, nisi forte qui passus est, minor est aetate 12. fuit probat Nabona de aetate, anno decimo & dimidio, quaff. 10. per 18. Unde recte infert Menochios de praesum. quod de infante non potest intelligi alius locus Harmonopuli lib. 6. tit. 6. in illis verbis: Qui eadem inquit, & consilio facit, cuiusmodi etiam, placet plebatur.*

Hæc regulariter procedunt in infante, sed Panor-
mitianus in præfent. *num. 4.* affectu, per acci-
dens posse dari infantes doli capaces, quia quem-
admodum pubertas præsumitur potest, & contingit
ante annum 14. vel probatur, in etiam doli ca-
pices infantes posse dari, præsumitur his respecti-
bus, in quibus naturaliter præsumitur. Quam
Panormitanus sententiam adducit plures, quos
referunt Farinæ. in *pract. 3. par. quæst. 92. num. 47.*
Plaza de delictis lib. 3. cap. 3. *num. 1.* & facit quod
tenet R. C. *capitulum 14. a. n. 19.* videlicet infan-
tem quoniam ætatis immaturum tollit in iure, & blasphemare,
et manibus parentum capere fuisse à diabolo;
cuius casus etiam meminerunt in præfent. An-
ton. *num. 6.* Ananias *num. 1.* Farinæ *de delictis quæst. 92.*
num. 27. Decianus *roma. pract. crimin. lib. 6. cap. 3.*
num. 14. Plaza de delictis *ubi supra.* Vnde idem Pa-
normitanus asserit singulatim limitari posse re-
gulam dictæ Clementine si fictitious, vel quoniam
infantes doli non capaces per homicidium non
fiunt irregulares, irregularem tamen contra-
hant si doli capaces sunt: quod & docuerunt Bo-
nifacius in *dist. Clementine. num. 1.* Villadiego de *irregu-*
laribus cap. de perjurio, et columna 12. Vetus hæc sen-
tentia non placet Joanni Andree Barbario in *dist. Clementi.*
si falsus, Gomezio dist. cap. 1. de delictis.
num. 3. Fusinatio *dist. quæst. 92. num. 10.* quia isti
etrotique iure aperte distinguunt infans à doli ca-
pice, 1. *imphibere 13. ff. de iuriti, l. diffens, ff. ad*
leg. Corn. de sicariis, 4. §. 6. & idem, ff. ad leg. Aquiliæ
heredibus 3. C. de delictis, l. Cæd. de falsa moneta, cap.
litteras 4. cum sequente, de diffens. impub. Nec facile
argumentum adducimus à Panormitæ, ex casu puber-
tatis, quia pubertas pendet à corporis dispositione,
et ex nimio calore, vel ex alia causa potest con-
tingere ante annum 14. ut doli capax pendet
ab animo, & qui habet non potest ab eo, quod
nondum fieri valet, 1. *in sponsalibus 14. ff. de spons.*
1. 6. §. si quis, ff. de admin. iur. l. 1. in princip. L. cum
Nero 70. ff. de P. O. J. Cæd. qui admittit, l. infanti 28.
Cæd. de iur. delicti. Nec fuit sententia Panormitæ,
exemplum relatum à Divo Gregorio, quia vel post
Cardinalalem, Ananiam, & alios vocavit Farinæ.
dist. quæst. 92. num. 10. suppletur hoc potius contige-
re odium patris, non corrigentis filium, quàm in
peccato ipsius infantis, in quo propter defectum
etatis non aderat dolus, & facile colligitur ex
principio ipsius delicti. Accedit, quia ea, quæ ex-
citant Dei agantur, non cadunt sub lege, *cap.*
Deus 19. quæst. 2. Vnde etiam deducitur, infanterum
per homicidium irregularem non contrahere,
quia hæc præsumptio non contrahitur, nisi in casibus
à iure expressis, *cap. penult. de sex, excom.* sed po-
tius eorum est in iure, infantes irregularem non
contrahere, *dist. Clementi si falsus.* Etgo nullo
modo Infantes cum iuventute valent.

afficiuntur, veluti si contra legem bal. de adolteris peccauerint, *dist. 5. in delictis* ; vel si soliti sint delinquere, argumentum legis 3. *in fine*, *Cod. de Episc. aud. l. apud antiquos*, in fin. *Cod. de furs. l. qui sapias*, ff. de obi. & in l. caput 23. §. solent, ff. de panis, l. 4. *Cod. de furtis fugi. l. 3. §. si plures*, ff. de re milis, l. si adolterium, §. si fratres, ff. ad leg. Jul. de adult. alia notantur in can. 12, *Councily libber*. docet Christinus tam 1. *devis* 221.

Nec oblat prima dubitandi ratio, pro cuius solutione dicendum est, aliam esse causam contractuum, aliam vero delictorum. In contractibus namque, quia cum alio celebrantur, receptum fuit, ut in damnum proprium pupillus nec velle, nec nolle habeat, sed hoc tutum auctoritate tutoris fuppletur, *l. pupillus* §. 2. ff. de R. l. non tamen idem procedit in delictis, in quibus quis ex dolo committitur, tutoris auctoritas non deficiatur, sed sufficit potestas esse doli capaces, *l. impubes* 13. ff. de furs. l. 2. §. ad doli, l. 2. §. de nique, ff. de dol. excip. de hanc diffinitionem ibi contractus, & delicta circa pupillos facile percipies, si iungas legem pupillis l. 1. cum lege pupillam l. 1. ff. de R. l. quare pupillus doli capax efficitur tenetur ex delictis, veluti ex furto, ex presentibus capite 1. *Gregor. l. l. in fin. Potentialis*, quod exat tam 3. *Concilii. Bony*, & *can. 6. Biblioth. vaterum PP. cap. de furs. l. 1. si puer amplius decem annorum fecerit furtum*, 40. vel 10. dies pariter, *propter etiam est*, & qualis inofficiosa; pro modico furtio 10. dies pariter. Puer 10. annorum aliquid furti faciens, septem dies pariter. Idem imbutur ex l. 5. §. de ideo, ff. ad leg. Aquil. l. impubes 23. ff. de furs. §. penult. *Instit. de obi. quod ex delictis*. Secus autem si impubes non sint doli capaces, quia tunc nec ex furto, nec ex consilio aut ope tenentur, iuxta dictam legem impubes. Similiter doli capaces tenentur ex periculo, quomodo enim impubes iurare non coguntur in iudicio, l. iustitiam 14. §. pupillo, ff. de iur. iud. de iur. 4. ff. de in litem iur. cap. penult. 14. cum sepe. 12. *quasi* 2. nec ad testamentum administrant, *l. iustitiam* 19. ff. de testibus, cap. 1. §. item 2. *quasi* 2. propter lubricum consilii sui l. 3. §. lege Julia, ff. de testibus: attamen si iurante, ex iuramento obligatur, l. ult. in fine, ff. de liber. caus. in qua illa verba: *Quod & iurare possit*, recte de pueri doli capace accipit. Accutus ibi verbo *Potuit*, ita quod idem est, de proximo pubertati. Gothofredus ibi: *Ergo perauerit, perierit erit* ut in hoc capite 1. docetur, quem sic accipit Hostiensis ibi, num. 9. Anton. num. 8. Anania num. 6. Patinac. in *praxi*, *dist. 3. par. quasi* 92. num. 128. qui etiam num. 141. probat, ipsum ex blasphemia teneri. Non idem procedit in puero doli non capere, hic enim non cogitur ad iurandum, nec ex iuramento obligatur, nec peiorare intelligitur, quamvis si tunc ex delictione patris velius iuramenti non debeat observari, l. qui iuravit 16. ff. de iur. iur. quoniam de puero doli non capace, nec proximo pubertati recte accipiunt Danel. *lib. 11. cap. 13. & lib. 16. cap. 7. Artes à Medi lib. 4. variat. cap. 13. Cuius in l. 2. Cod. de reb. cred. loquitur enim Consilius ibi de iuramento voluntario, quod quis pupillo detulit extra iudicium; namque necessarium, quod in iudicio deferatur in defectum probationis, non recte illi deferretur, *dist. 3. videamus*: voluntarium vero tunc etiam si pupillus doli capax non sit & hoc affirmat Paulus observandum esse aduersus eum, qui cum detulit, libi enim debet imputare, quod is stul-*

tos fuit, vel pupillo defecet, argumentum legis si *fermus* 23. ff. de iur. iur. quamvis, ut inquit Paulus, non videatur peiorare, quia scilicet fallere non videtur: quibus verbis respectu Consilii ad antiquum iurandi formam, quae iuxta Festum ita concipiebatur: *Si sciens fallor, tunc me dussieris verbo salua, atqueque bonis deus*, ut *egz hanc lapidem*. Meminerunt Tal. *epist. 7. Polletus lib. 3. dign. furi*, tamque illustrantur Beilsoniani *de formis*, *Cassae. lib. 1. obf. cap. 11. Donel. lib. 24. comment. cap. 21. vbi plura Quidam, Reuarius lib. 5. variat. cap. 5. Etiam pueri doli capaces tenentur ex aliis delictis, veluti ex lege Aquilia propter damnum iniuria daturum: item ex qualibet alia iniuria, *l. sed et si* 3. §. *Quidam*, ff. ad leg. Aquil. l. 3. §. *si*, ff. de inur. *l. impubes* 23. ff. de furs. probant D. Ioan. Suarez ad leg. Aquil. *lib. 1. cap. 2. Donel. lib. 2. comment. cap. 12. §. 1. & lib. 13. cap. 24. Schloffer ad Falenium* 1701. §. 9. cap. 5. *Richardus in 6. penult. Injuria, ff. de obi. quod ex delictis*. Robertus *lib. 3. amodo. cap. 2. §. si perculsit* clericum, in excommunicationem censuris incidunt, *cap. 1. & final. de sent. exco.* etiam tenentur de sepulchro violato, l. 3. §. 1. ff. de sepulchro violato. Cuius lib. 6. obf. cap. 12. & lib. 8. *pp. Papin. in l. 10. ff. de inur. pœna Syllaniani l. exicipitur*, ff. ad Syllan. & tandem capitalem fraudem admittit, *l. cum autem* 23. §. 2. ff. de adult. *eduli*, non tamen obligantur pueri etiam doli capaces ex delictis, quae in occultum consistunt; siquidem ab eis minores etiam 25. annis excoletur *canon. ex l. 2. Cod. si aduersus delicta, l. in iur. lib. 6. Cod. de his quae re indignae* l. 1. §. 1. *impubes*, *Cod. de falsis monet. num. 15. cap. 3. §. si inueni* 3. *Antib. si capiti* 49. *Cod. de Episc. & Clericis* plurius rebus Farinac. in *praxi delicti* 3. par. *quasi* 92. ex num. 64. quod procedit si modo delictum in nuntio ex dolo non proueniat, quia si doliis iocundat, nec minores, nec impubes excoletur, l. exicipitur, ff. ad Syllan. Ant. Manb. in *praxi*, *de crimin. cap. 1. num. 3.**

Nec oblat alia difficultas in secundum partem conclusionis adducta, cum Gregorius in presenti textu non affirmat, potestatem accendi ante pubertatem enemli non posse, sed illud tantum, quod etiam aetas pubertatis sit legibus, & economis debeat, *l. in spoliis* 24. §. *Pro de sponsi*, *l. ult. Cod. quanda tuores*, cap. 5. de *despons. impub.* ante illam nec pubertas praesumitur, & ita credite agere illam aetatem causis delicta ipsos non perperare: ad quam praesumptionem respicit Gregorius in illis verbis: *Quod merito credendum*. Inde est, quod in eis adulterium non praesumatur, l. si minor 36. l. si adulterium 50. §. *Diutius*, ff. ad leg. Jul. de adult. Ant. *Marthas dist. cap. 1. num. 4. Farinac. dist. quasi* 92. num. 79. qui recte inde infert, potest in velicis carnis foreturi, non ope iustitiam, sed propter defectum naturalis praesidii: sed hae praesumptio cessat, si forte ante pubertatem pueri, vel puella rependantur apud ad coenandum, ut in *l. si exor* 13. §. si minor, ff. ad leg. Jul. de adult. nam asperando suapte natura non monstratur ex habitu corporis putari genitricem iam posse, ut in *cap. puberes* 3. de *despons. impub.* vel malitia aetatem supplente, ut in *cap. de illis* 9. *cap. final. ad sit. cap. inueni* 3. de *transal. cap. final. de eo qui cognoscit carnem*, & ita euemisse in pueris, de quibus D. Hieronym. & Gregorius, affirmant Anania num. 6. Farinacius *dist. quasi* 92. num. 81. Quod verò de Salomone & Achar diximus, qui filios genuerunt in vndecimo anno, mixtulo tribui Anania *lib. 1. num. 5. qui casus, & similes cum raro contingant*,

ideo non sunt attendendi, ex l. iure 13. ff. de legibus. Si ergo impuberes inveniuntur vere potentes ad coëdudum, sicuti ex furto, peritorio, & aliis delictis; ita etiam ex delictis carnis teocentur, etsi mitiori poenâ puniantur, ut probant *Caldas in l. si curatorem, verbo Vel adulteri dolo, Farinac. dist. quæst. 92. num. 93.* Post pubertatem verò etiam dum minores sunt, poenâ ordinaria coëtecentur; unde teneantur lege *Iulius de adult.* *Canonium 37. §. in delictis, ff. de minor. l. si minor 34. l. si adulterium 38. §. fratres, ff. ad leg. lib. & etiam teneantur ex rapto, nefando incestu, & similibus peccatis coneta naturam, l. 42. tit. 19. part. 7. l. 3. tit. 1. part. 7. probent *Azedo in l. 1. in 31. lib. 8. Recopil. num. 48.* *Farinac. in præzi. quæst. 92. à num. 83.* Sola in *aphorism. lib. 3. cap. 32. num. 19.* *Gegorgius Lopez* per textum ibi in l. 8. tit. 1. *cap. 7.* & ita poenâ mortis est eis delictis nuptias afflicti posse; exemplis probat *Marinus de res. 32.**

Sed supra tradidit assertioni obitare videtur D. Augustin. relatus in *cap. adhib. de panis, dist. 3.* in illis verbis: *Nec vltimus cuius dicitur abique peccato sine per se servari esse potest.* Quibus consonat D. Hieronimus in *cap. si enim 40. de panis, dist. 2.* ibi: *Nemo mundus a peccato, nec infans, si vltimus quidem dicitur fuerit vita eius.* Quæ verba si de peccato originali accipiuntur, parum significant; siquidem aote natiuitatem statim post conceptionem peccatum illud contrahitur; quare de peccato actuali verba illa exponit *Barbosa tom. 6. in select. ad ipsam textum.* Quâ sententia tenent deducitur, malè in præfenti affirmari tantum pueros doli capaces, seu proximos pubertati, ex delictis teneri posse; siquidem post primum vitæ diem peccati capaces sunt. Pro cuius difficultatis solutione dicendum est, omisso *Barbosa ubi supra*, verba illa, quæ accipiuntur Sancti ex capite 14. *Iob, vers. 4.* esse accipienda de peccato originali, quod contrahitur à dio animationis; & ita sanctus *Augustinus* & *Hieronimus* non sunt intelligendi de infans ordinata natiuitate, sed de priori secundum Adam, quæ coningit tempore conceptionis, de qua exposuit testam in *cap. qui in matris, de consecr. dist. 4. in cap. de baptismo.* Et ita verum est, nec infantem vltus dici, immò nec vltus horum, dari absque peccato videlicet originali, posse.

14.
EXFON-
TIN CAP.
ADHUC
§. 1. DE
PUBERT.
R. 3.



TITVLVS XXIV.

De clerico venatore.

CAPVT I.

Ex Concilio¹ Aurelianensi.

E piscopum, presbyterum, aut diaconum, canes, aut accipitres, aut hominipodi ad venandum habere non licet. Quod si quis talium personarum in hac voluptate sepius decenter fuerit, si Episcopus est, tribus mensibus à communionem; si presbyter, duobus; si diaconus, ab omni officio suspendatur.

NOTE.

- I. ^a *Aurelianensi.* Ita etiam legitur in prima acollectione, sub hie tit. cap. 1. & ex ipso Concilio citatur textus hie à *Camotensi lib. 3. tit. 1. §. cap. 1.* *Gratiano* sub nomine *Paleæ in c. 2. §. 4. dist. 1.* *Burchardus lib. 2. Decret. cap. 123.* Sed in nullo ex Conciliis hucusque editis *Aurelianensibus* reperitur verba hæc; extant tamen pauca mutatis in Concilio *Meldenensi can. 8.* *Agathæ can. 55.* *Epsam. can. 3.* *Vormac. can. 17.* et testat *Antonius August. in epis. lib. 6. tit. 33.* *Praeceptis canonis* commemorant PP. *Concilij Sion. anno 127. can. 16.* Contra clericos *venatores*, vel nequius faculibus implicatos, si à venandis, negotiisque consuetudine munici non desistant, ad poenam *Aurelianensis Concilij*, & aliorum *Lutranensium* proceditur.

b *Canes.* De canibus venatoriis, & eorum vsu plura congegit *Densierus ad Rosinum lib. 2. cap. 8.*

- c *Accipitres.* Ex hoc textu constat, quàm perperam *Panciola lib. 2. memorab. tit. 23.* existimauit, venationem cum vltibus olim ignotatam fuisse vsque ad tempora *Frederici Barbarossæ*, qui floruit per annos 12 & 4. cum iam tempore huius Con-

cilij, & *Agathensis* celebrati anno 416. mentio reperitur accipitrum (& in capite sequenti, qui transcriptus est ex Synodo *Francica* celebrata anno 742. immò etiam temporibus *Aristotelis* aucupium cum vltibus in vsu fuisse idem refert *lib. 9. bi-stor. cap. 39.* ibi: *Circæ Thraciam, quæ supra Amphipolis est, rem procijs aduocandam, & ab his, qui non videntur, incredibilem fieri aiunt; pueri enim à vicinis, & agris vicinis ad aucupium vultuorum cressi, accipitres sibi socias assumunt. Hoc quidam maxime aliqui merent, quod accipitres, quosque ipsi omes ceperint, pueris aucupibus dicitur, cum pueri ex omnibus capiti parte tantum aliquæ accipitribus reddita discant.* Idem scribit *Ellanus lib. 4. bi-stor. animal. cap. 42.* ibi: *Accipitres in Thracia cum hominibus per pudes facietatem aucupandi ceire.* Necnon *Plinius lib. 10. cap. 8.* ibi: *Hominis, atque accipitres societate quadam aucupantur.* Plura *Demetrius ubi supra*, D. *Ioseph. Pellicæ. ad Polif. Gurgora, lib. 3.* *Lazius Heraldus dialogis. 6. extat tom. 2. thesaur. ciuici, fol. 399.*

in tract. de spiritualibus. Amaya ad l. 6. Cod. de excessus. num. Petrus Faber. lib. 2. semest. cap. 11. & in Agnoscit. D. Laurentius Ramirez ad Amphit. Martini. Liplius de Amphib. cap. 3. Panninus lib. 2. de Circensibus, cap. 2. 4. & 5. de quibus venationibus intelligendus est D. Augustinus relictus à Gratiano in cap. qui venationibus, cap. tidi, 86. dist. dum ait: Qui venationibus dantur, non hominibus dantur, sed artibus inquisitissimis in tract. de venatione, Azevedo ad tit. 8. lib. 7. Recopil. Retherius ad lib. 1. Cyni Oppiani: & illi magnopere dediti sunt Reges, Principes seculares, & alij Nobiles laici, ut probat Alsestera de Ducib. cap. 14. Iam illis valde necessarium esse non solum ad honestam recreationem, verum et inde apti reddantur ad bellum, fuisse probantur Demetrius ad Resionem lib. 2. cap. 8. Pater Mendoza in visidore, lib. 5. problem. 2. Salcedo de regim. Principum lib. 2. cap. 6. dubi. 23. Theophilus sem. 4. lib. 6. scilicet 2. cap. 10. Soloez annus emblem. 33. Alsestera supra, cap. 14. Scipio Almiratus in discept. polie. lib. 2. dist. 1. & doct. expressit Xenophon in lib. de venatione, ibi: Venationis studio dediti magnum ex eo utilitatem capiunt, nam corporibus bonum valetudinem comparant. Hinc videtur, audiuntque magis, sensumque minis. Huc autem beatus principis insinuat: primum quidem si vias difficultas sub armis ambulant, minus lassantur; nam labores sustinent, quibus feram capere consueverunt; in hostem fugam ubique illos propter locorum peritiam relictos, aut iure persequuntur; quod si exercitum suum infestius persequuntur, in sylvas, alijque iniquis locis seipso cum ceteris non turpiter seruire poterant, nam consuetudo venandi eos pervicaciter reddit.

6. Venatio hæc chremosa, seu saluosa omnibus laicis licita, atque honesta est. D. Hilarius in Mattheum, cap. 10. Non est criminis agere aucupium, ut arbitror. Probant Ballamum in cap. 24. & 1. 6. Synod. Saurius ad Sidonium lib. 4. epist. 9. etiam ad eam lucentes apostores; & præstantioresque sint. Vnde Nicolaus Papa in cap. 8. 34. dist. Lanfredum Episcopum iuvenem appellat, qui venationi valde deditus erat. Membris ipsius sententia Nicolai Petrus Blesensis epist. 56. dum ait: Legimus quia Nicolaus Papa suspensionis, & excommunicationis sententiam in Lanfredum Episcopum ferri censuit, quia venationem artem exercebat, licet illa excusabilis esset beneficio immunitatis. Dicebanturque phasianarii illi ferri, quos solum legato contineri negat Consilium in l. ambros 66. ff. de leg. 3. qui erant aucupio mancipii, ut ibi notavit Glossa, & post eam Sebastian. Medice de venat. p. 10. num. 30. Pignoriis de feruis, & de eorum ætate agens, Narbona de avar. anno 18. quest. 3. Sed aliquando ratione temporis venatio etiam laicis prohibetur, veluti tempore quadragesimæ, & leioniorum, cap. an putatis 13. dist. 86. nisi necessitate urgente, cap. si nulla 23. quest. 8. item & diebus festis, si periculum addit amittendi Missam. Concil. Meldense can. 27. alioquin his diebus venatio non prohibetur, cum non sit opus festivæ, immo libertatis. 1. 10. tit. 5. part. 1. a. quod & agnoverunt Colomae lib. 2. de re rustica, Virgil. lib. 1. Georgic. ibi:

Quippe etiam festis quadam exerceere diabus
Fas & iura sinunt: rivos designare nulli
Religio vetat, segeti prætereare sepe,
Insidiis ambus moliri.

Nec contrarium probat textus in cap. 2. hoc tit. ubi generaliter & indistinctè omnibus feris Dei venatio interdicitur. Igitur laicis venatio prohibita est. Nam respondetur in eo textu de clericis tantum agi, qui specialiter ferri Dei vocantur, quia strictius, quam laici eius obsequio, & studio mancipati sunt, cap. Clerici, 21. dist. cap. iure secundum, de prob. textus dicitur in cap. fuit a. quest. 7. Vbi eum Fabianus Pontifex adheret, quod clerici non debent accolare laicos, hæc rationem adiecit: quia seruum Domini non oportet liguere. Docent Germonius de indol. 6. ferri, num. 27. Grassus de offit. cleric. num. 5, quod facilius funderet si in eum illum canonem transferri posset, prout etiam in Concilio Germalesio à S. Bonifacio Ratibone celebrato temporibus Zacharii Papæ anno Domini 741. 11. Kalend. Maij. Seruis Dei per omnia amantem portare, vel pugnare, aut in exercitum, & in hostem pergere amicum prohibemus, nisi illis tentari, qui propter diuinum mysterium, Altissimum scilicet salutem adimplenda, & Sanctorum precum portanda nec hoc electi sunt; idest tantum, vel auct Episcopus cum capellano, & presbyteris eorum Principi serui haberi, & transiitque præfatus nam presbyterum, qui hominibus peccata confitentibus inditavit, & indicare penitentiam possit. Necnon & illas venationes cum canibus feris Dei interdiximus, & re accipere, & falcones non habere.

His suppositis ut ad rationem præsentis prohibitionis denentiamus, varic adduci possunt. Prima, quia venatio est quoddam bellum, vel belli simulacrum, aut prælium, ut tradunt Xenophon lib. 2. de venatione, Tull. lib. 1. de natu. Deorum. Athenæus lib. 1. Dynastophili. Pollux in præfatione lib. 5. Philon lib. 1. de vita Moysi, Plato in Symplicis, & fuisse probat Metcivialis lib. 1. de arte gymnast. cap. 15. siquidem plerumque fit armis. Ovidius de Ponto eleg. 21.

Taurus antiquas & eras qui pascere herbas,
Apraque venantis gratia amica daret.
Lucius Seneca in Hippolyto, act. 1. scena 1.
Th græve dextra, lævaque simul
Robur lato dirige ferre.

Statius lib. 2. Sylvar. de Leone:

Non formidat supra venabula saltu
Incursare

Et inde venabula dicta quasi venatui habilia. Isidorus lib. 18. etymol. cap. 7. Scroliis ut venabula 131. lib. 4. Eneid. Quia ergo Ecclesia pacis amantissima clericos, & Monachos studia pacis delectati avidissimè expetit, venationem, quæ belli species est, & prælium, illis interdicit. Alia ratio potuisset nimio studio, quæ venationi mancipatur venatores; siquidem diu, non tuncque nihil aliud cogitant, vi expressit Thomas Morus ibi:

Venator desistat esse dum membra reponit,

Ment tamen ad silvas, & sua iussa redit.
Quare clerici, qui scientia Ecclesiæ mancipati sunt, valde ab eo et huiusmodi exercitiis diuagantur, præcipue cum venationis tempus sit mane, cum dies incipit, ut tradit Oppianus lib. 1. de venatione Aurely, ibi:

Venerunt dum manus vovum, dum molis præu
Nocturnis calcata feris vestigia formant.

Seneca

Seneca in Hippolyto.

— Venies tempus

Cum lacrima causata sunt:

Nunc dimitti nunc fugaci

Caprem ante, in hunc pressu

Quercum refro, dum lux dubia est,

Dum signa pendens rescida tellus

Impressa tenet.

Sed eo tempore debent clerici pensum seruitutis suae solvere, iuxta tradita in cap. 1. de celebrat. *Miser.* Unde recte illis prohibetur venatio, ne distraherentur a proprio ministerio. Acedit D. Hieronymi sententia in cap. *Esau*, 36. dist. ibi: Quia nunquam legimus sanctum venatorem. Abuleolus in c. 6. *Matthei*, quest. 43. in fine, ibi: Et propter hoc sancti viri non se dederunt huic occupationi, sicut piscatori, quia venatio tunc sine nocumeto proximi exercetur, ideo non legimus sanctos venatores, sed piscatores. Facit Nicolaus Papa epist. 1. ad Aluinium: O miseram vitam hominum, & maxime sacerdotum! Qui dum laudando fidelibus debet insistere, venanda feru incumbunt, & quae capere oportet homines, capiunt aues: qui dum mortibus studere animalium, vitam suam perdam animarum? O infelicem vitam super unam vitam! Nem in quo magis quae carnalis appetit, quam in tali vita. Venatorem enim vita nihil preter carnes capiat, in qua dum quispian permansit, nunquam probare est, ducere Sancti Hieronymus: Nunquam venatores legimus sanctum. Persequitur alias rationes huius prohibitionis O. alle in presenti, § 3. per tot.

8.

DIACOL
VITAE
DEBILITAN-
DE RATIO.

Nec obstat duplici ratio supra adducta: nam licet verum sit, venatorem esse huius naturalis, & ideo omnibus communem; tamen iustus ex causis possunt Principes, tam seculares, quam ecclesiastici, venationem prohibere, aut ratione temporis, veluti dum animalia nutriuntur, l. 2. cum sequent. tit. 8. lib. 7. recipit. quae late explicant Auzandus de metu, dist. lib. 2. cap. 37. Solorzanus de iure Indiar. lib. 3. cap. 3. num. 69. Castillo de tertius tom. 7. cap. 41. num. 18. Bobadilla lib. 2. palat. cap. 18. vel ne talibus instrumentis, aut mensibus exercetur, ne paucorum aviditas animalia, vel pisces exhauriat; constant enim libertatem naturalem venandi, aut piscandi, sed propter magis speciale bonum communis, & singulorumque statuta in quantum obligent, cum multis à se laudatis docent Amara in l. tunc, Cod. de venat. ferar. ex num. 42. Iacob. Vander. Gregorius ad leg. non dubia, de capitiis, cap. 41. Diana 3. part. ar. 6. res. sol. 18. Valsus in flor. Theol. verbi Venatio, Tapia a. tom. catena mor. lib. 5. quest. 26. art. 5. 6. & 7. Arzineus de iurib. maiest. cap. 4. Befoldus de iurib. maiest. cap. 6. num. 5. palat. Aut ratione personarum, veluti clericis, ex rationibus supra adductis; quia cum venatio sit iuris naturalis permixta, non precepti, ideo potest à Principe iustis ex causis mutari. Nec obstat augmentum primum, quo dicebamus, omnia animalia hominum gratia à Deo creata fuisse, & ita usum eorum clericis prohiberi non debere, quia id procedit dummodo licet, & honeste illis utantur, & ad finem, ad quem creata fuerunt, non verò per improbum usum, qualis est venatio in clericis. Nec obstat argumentum deductum à piscatione, Inter quam, & venationem longa ratio differentia, siquidem piscatio exercetur sine clamore, & stridis: secus verò venatio. Fieri tamen aduersus à D. Hieronymo, videlicet quia nunquam legimus sanctos venatores; piscatores autem plures, praecipue Apostolos,

qui etiam postquam Dominum sequi fuerunt, bonellum illud exercitum non reliquerunt, ut ait D. Gregorius Papa humil. 24. in Euangel. Iohannis cap. 21. Quasi etenim posset, cur Petrus, qui piscator ante conversionem fuit, post conversionem ad piscationem rediit? Et cum Veritas dicat: Nemo mittens manum suam ad aratrum, & aspiciens retro, aptus est regno Dei; cur repetitis quod derelinquit? Sed si virius discretionis inspicitur, cuius videtur, quia mirum negotium, quod ante conversionem sine peccato exiit, hoc etiam post conversionem repetere culpa non fuit. Nec obstat secunda difficultas, nam venator est, iuxta dignitatem delinquentis augeri etiam, & per consequens poenam, l. quodam delicta, ff. de penis, l. 2. l. omnes, ff. de re milit. cap. homo, 40. dist. cap. quia sanctitas, 50. dist. late probauit in cap. cum quidam 12. de iurib. Nec contrarium probatur lo utriusque iuris testimoniis adductis pro ratione dubitandi; nam si delictum eius naturae sit, ut augeatur dignitate delinquentis, veluti quando peccator in his, quae ad dignitatem concernant, vel illius administrationem respiciant; seu eum tale crimen cedit in dedecus, & contumeliam ipsius dignitatis, ut in presenti casu, tunc seuerius puniuntur, qui maiori dignitate fulgent: ut verò si dignitas non adaugetur delictum, tunc miode puniuntur, ut dixerunt D. Thomas 1. 2. quest. 73. art. ult. Tirajuel. de pen. temp. casu 37. Unde in presenti caso imposita suspensio trium mensium Episcopo. presbytero autem duorum mensium, diacono verò unius, ut legitur in di. Ho Conellius Epauensis, & Agath. ibi: Si Episcopus est, tribus mensibus se à communione suspendat, duobus presbyter abstinat, uno diacono ab omni officio & communione cessabit. Ex quo canone corrigendus est praesens textus, & illud notandum venit, abstinere in eo canone Concilij Epauensis, impositae suspensionem, ut docuerunt Moginus lib. 2. exercit. cap. 3. Gibal. de class. regul. disquisit. 2. cap. 4. §. 1. & de censur. disquisit. 7. quest. 12. reg. 1.

Sed supra traditis obstat textus in cap. cum venerabilis, de consensu, ubi Innocentius. III. agit de spallis, & friscis, quas Prior sancti Stephani soluebat quotannis Episcopo Fauentino: & et ibi notati, spalla est arum, seu membrum scrotum, quod Abbas persoluebat Episcopo ex feris, veluti apris, aut ceruis; pro licentia venandi, iuxta eundem Innocentium III. lib. 13. registr. in epist. ad Abbatem Sancti Mariae Romanae, ibi: Et quod ad Abbatem, & parum instantiam suam huiusmodi Ravennates, & qui venabantur in ipsa, reddebant eidem singulis annis spallum porci. Illustrat Citronus lib. 1. obs. cap. 5. Unde deducitur, Abbatem, & Monachos sancti Stephani venationem exercuisse in diocesi Fauentina. Igitur quia ecclesiasticis viris venatio prohibita non est. Pro cuius difficultatis solutione dicendum est, discernere esse constituendum inter cum casum, in quo venatio exercetur ab ecclesiasticis viris in nemoribus, & viuis propriis, aut eum venatio exercetur in eisdem locis per extraneam personam, praecipue eum proprii redditus, & proventus lo venatione consistunt. Primo casu venatio monachis prohibita est, ex presenti textu, & rationibus supra expensis. Secundo verò casu venatio permittitur, Clement. 1. §. porci, de statumach. & ita reatus in dist. cap. cum venerabilis, accipiendus est eo casu, quo monachi per extraneam personam venationem exercabant, ex feris in ipsa venatione captis spallum,

9.

EXPOSITIO
CAP. CUM VENERABILIS
LIB. 13.

sea ætatem ipsius feræ, tribuit nomine Episcopo perfolabant. Illud autem non omittam, frequentes fuisse olim Ecclesiæ prohibitiones cibus venationis monachorum Benedictinorum, quia eum Divus Benedictus in sua regula cap. 48. aliis 19. ita cunxit: *Carnium verò quadrupedum omnino ab omnibus abstineatur carnifio, debilibus, ægrotisque exceptis, fuerint quidam castilliones, qui ab eiu quadrupedum se abstinebant, & volatilia comedebant, iuxta mentem Rubani lib. 2. de vita cleric. cap. 17. dum ait: Animæ quoque esum credo inde à Patribus permittum esse, eo quod ex eodem elemento, de quo & pisces, creati sunt. Nam in regula monachorum non invenitur alienum carnium esum eis interdictum esse, nisi quadrupedum. Quam opinionem adeo aliqui monachi amplectebantur, ut suis aucupis in aere sterilitatem induerent, ut refert Lanfrancus lib. 6. de veteri monac. part. 2. cap. 7. quæ in Concilio Aquisgran. celebrato anno 817. ferè pro explanatione ipsius regule canon. 8. ita cautum fuit. Si volatilia omnes, fuisse nisi pro infirmitate nullo tempore comedant, nec Episcopi ea edant, præcipiamus. Ex lib. 1. cap. Lindis. tit. 78. certis diebus tantum monachis eius aulium permittitur his verbis: *Si volatilia in natali Domini, & in Pascha tantum esse diebus, si est unde, comedant. Si verò non fuerit unde, non requiratur per debium. Si autem Abbas, aut monachi abstinerent se volucrinæ, in eorum sit invidia. Facti Rimonius lib. 5. de gest. Francor. cap. 10. Volatilia cum omni de duobus festis, idest Pascha, & Natali Domini. Ia monachos ita finitè accipientes prædictam prohibitionem invehuntur Prosper Aquitanicus lib. 2. de vita contemplativa, cap. 23. Cæterum si à quadrupedibus abstinentes, phasianis, alidibus, vel aliis avibus præstiterit, aut piscibus perfruerentur, non mihi videntur refecere delectationes sui corporis, sed morare, nec pro abstinentia, sed velim pro neficio qua immunditia, vel certe, quod verum est, pro stomachi manifestis amentitudine, delicias illas communes, & viles abluere, quæ possunt aliis non solum carnibus, sed etiam delicatioribus, ac pretiosioribus carnibus suas voluptates expletæ. Sanctus Odo lib. 2. volat. relatus à Petto Cluniacensi lib. 2. epist. 19. qui horrendum refecti exemplum monachi de gallina comedentis eo præteratu, quod volatile & pisces eiusdem essent originis, aut generis. Facit D. Hieronymus in epist. ad Similianum, de servanda viduitate: *Procul sint a con-***

*minis tuis phasides aut, crassi tortores, atagæ fœnices, & omnes aves, quibus amplissima parsimonia amant. Nec ideo se carnibus vesci non pueri, si suum, leporem, atque cervinum, & quadrupedum arimantium essentias reprober, non enim ha pedum numero, sed gustus suavitæ indicantur. Nec ex dicto cap. 48. tegale D. Benedicti infecti poterat, quadrupedum interdictione volatilium esum permittum esse; nam eum vnum prohibetur, non statim alterum permitti, concludendum est, maxime si iam à legislatore prohibitum est. Vnde eum cap. 19. Levitici dicitur: *Non maledices fardo, nec coram caro penez interdictionem*, male quidem deducet aliquis, ex eiusmodi legis permissu, non fardis maledicere, & videntibus ponere offendiculum. Tandem enim D. Benedictus meminit quadrupedum, quia eum quædam, ex eis viliosius sint, quam volatilia, ideo posset quis credere earum esum non esse monachis interdictum. Prosequuntur alia pro ipso abusu detestando Lanfrancus. ubi supra, Hugo Menardus in concordia Regularium in notis ad caput 4. Regule Divi Benedicti, Benedictus Hæzphernus lib. 10. disquisitionum monasticarum, tract. 6. disquisit. 2. & 3. Theophilus Raynaud. tom. 16. in Heterocol. spiritual. 3. part. panis. 2. fol. 406. & veram literam prædicti capitis 48. regule Divi Benedicti restituit Scrogeus Lairer tom. 2. Catholicæ, mem. fol. 9.*

Deinde supra traditæ assertioni obstat textus in Clement. 1. de celebratione Missarum, ubi eum agatur de hntis canonicis, & de modis interessendi canonicos in eorum, specialiter canes cavere, ne ad Ecclesiam secum deferant canes venaticos. Igitur quis cæta Ecclesiæ, præcipue intra domus proprias, possunt eos alere, & tenere. Pro culas difficultatis solutinne dicendum est, in ea Clementina specialiter prohiberi clericis canes deferre ad Ecclesiam, quia agebatur de eorum accidentia, seu interessenda in eorum, non tamen inde deducitur extra eorum licere illis canes venaticos habere quo modo etiam accipiendus est textus in cap. cum Apostolus, de censuris, ubi statuitur, ne Episcopi dum visitant diocesim propriam, canes venaticos, vel aues secum ferant; cum non inde tendit infecti potest, extra comessum ipsum, & extra tempus visitationis, Episcopos posse canes venaticos alere, & tenere.

IO.

EXPONITUR
CLAS-
SAMENT. I.
DE CELE-
STIAT. M3.
128.

CAPVT II. •

In eodem.

Omnibus servis Dei, ut venationes, & sylvas vagationes cum canibus, aut accipitres, aut falcones non habeant, interdicimus.

NOTÆ.

I. ^a **Olem.]** Ita etiam legitur in primis collectione, sub hoc tit. cap. 1. & ex eodem Concilio Aurelian. citant textum hunc Burchardus lib. 2. Decret. cap. 227. Ioo Carnot. part. 6. Decret. cap. 289 & sub nomine Pileæ à Gratiano in c. 34. diff. Sed verba in præfenti transcripsi non rece-

pinorut in aliquo ex Conciliis Aurelian. hucosque edicis, extant tamen in Synodo Francica, seu Germanica temporibus Zachariæ I. & Caroli Magni anno 742. can. 2. ibi: *Necnon & illas venationes, & sylvas vagationes cum canibus servis Dei interdici-*

mus, & ea accipitres, & falcones non habeant. Repetitur tom. 17. regia editionis, & lib. 5. cap. Caroli, cap. 2. & lib. 5. cap. 11. Textum hunc exposui supra in c. 2.

TITVLVS XXV.

De clerico percussore.

CAPVT I.

Ex Concilio^a Agath.

Si quis in aliquo ecclesiastico^b gradu sacratus percussor fuerit, corripatur à crimine; si non emendauerit, deponatur.

NOTÆ.

I. ^a *Gathensi.* Ita etiam legitur in prima collectione, *sub hoc tit. cap. 1.* Sed hæc verba non reperiuntur inter canones editos ipsius

Concilij, nec in aliquo Concilio, quod hucusque legerim.

^b *Gradu sacrum.* De gradibus sacris, & à quo tempore subdiaconatus inter eos relatus sit, egit in *cap. a multis, de asate, & quant.*

CAPVT II.

Gregorius Andrea Episcopo^a Tarentino.

Tribunal iudicis æterni securus aspiciet, quisquis reatus sui conscius dignâ eum modò penitentiâ placare, coartedit. Habuisse te siquidem à concubinam, manifestâ veritate compertimus, & te illius criminis participationem habere, de qua etiam coneraria est quibusdam oâta suspicio. Sed quia io rebus ambiguis absolutum oâo debet esse iudicium, hoc tuæ conscientiz elegimus committendum. Qua de re si in sacro ordioe constitutus eius te permissioe esse recolis maculatum, sacerdotij hoore deposito, ad admioistrandum nullo modo prsumas accedere: sciturus in aoiæ tuæ periculo te ministrare, & Deo oostro siue dubio te reddere ratioem, si huius sceleris conscius, in eo, quo es ordioe, celans veritatem, permanere vuleris. Vnde te iterum adhortamur, vt si te deceptum aotiqui hostis calliditate cognoscis, competens eum, dum licet, penitere oââ superare festines, ne cum eo particeps, quod noo optamus, io die iudicij deputeris. Si verò huius reatus tibi conscius noos es, in eo te necesse est, quo es, ordine permanere. Præterea quoniam mulierem de^c Matriculis contra ordinem sacerdotij cædi crudeliter fustibus^d deputasti, quam licet post^e octo menses exinde mioimè arbitramur fuisse defunctam, tamen quia ordinis tui habere noluit respectum, propterea duobus re meosibus ab administratione Missarum statvimus abstineri, in quibus ab officio tuo suspensum flere te conueoit quod fecisti. Nam valde digoum est, vt postquam re ad vitæ istius traouillam rectitudinem laudabiliu faceretum ex empla non prouocant, saltem correptionis medicina compellar.

NOTÆ.

I. ^a *Gregorius.* Ita etiam legitur in prima collectione, *sub hoc tit. cap. 2.* & apud Butchartum *lib. 1. Decret. cap. 195.* Carnotensem *part. 5. Decret. cap. 310.* apud Gratianum in *cap. habuisse, 33. dist. &* extat textus hic in registro epistolatum D. Gregorij Magni, *lib. 2. indic. 8. r. epist. 44.* Andreas hic primus fuit huius nominis Episcopus Tarentinus, de qua diocesi Tarentina egit in *cap. 12. de rescript.* Horum excessuum correctionem delegauit Gregorius Ioanni Episcopo Gallipolitaneu sequenti epistola, in hæc verba: *Ex gestis, qua ad nos fraternitas tua direxit, inuenimus est, Andream fratrem, & Coepiscopum nostrum D.D. Gual. in Decretal. Tom. 5.*

strum habuisse siue dubio concubinam. Sed quia incertum est, si eam in sacro ordine constitutum contigerit, necesse est ut eum sollicita adhortatione commoneat, ut si possum in sacro ordine eum ea se nouis immutatum, ab eo, in quo est, officio quiescat, & nullatenus admistrare prsumat. Quod si forte conscius sibi huius rei, peccatum suum suppressum, aduocasse prsumptus, animæ suæ periculum diuini iudicij inuolueri cognoscat. Matriculam verò, quam fecit fustibus castigare, quamuis exinde post octo menses obuisse non credimus; quia tamen eam contra propofui sui ordinem huiusmodi scitis affligi, duobus hunc menses à Missarum solennitate suspende, ut vel hæc eum terrorem, qualem se de cætera possit exhibere, instillet. Præterea oblatâ nobis petitione, qua tenetur

M m in

in subditis, clerici predicti Episcopi multa se mala ab eo sustinere commemorant. Ob quam rem fraternitas tua subtiliter cautela curae addidit, & ita rationabili modo emendare, magis disponere, ut nulla eis pro hac re hoc remediandi de castro necessitas imponatur.

b *Concubinam.*] De pernis Episcopi concubinarum egi in cap. 3. de cohabit. cleric.

c *Mulierem de maritatu.*] In dicta epistola 45. legitur maritalem, unde cognosci non potest, an nomen hoc esset proprium ipsius feminæ, an verò femina illa aleret ex matriculis

Ecclesiæ Tarentinæ, iuxta veterem morem, quem illustravi in canone 36. Concilij Illybet. & viderunt Volfius de vitæ sermon. lib. 3. cap. 24. Zecda in aduers. cap. 76. num. 7. & forsan quia vidua hæc alebatur ex matriculis ipsius Ecclesiæ, ideo Gregorius appellat eam mulierem de matricolis.

d *Fulsius depuisti.*] Coorta tradita in cap. 1. de calumn.

e *Osio moner.*] Post quod tempus credat percutsum ex vulnere accepto decessisse, exposui in canone 5. Concilij Illybet.

CAPVT III.

Alexand. III. ^a Lucensi Episcopo.

Præsentium lator in quodam conflictu asserit se fuisse, pro parte tamen illorum, qui violentiam repellebant, in quo lapides ipse proiecit, sed aliquem non percussit: quem nos quia per alios illic aliqui dicuntur occisi, à celebratione Missarum præcipimus abstinere. Mandamus itaque vobis, ut si res ita se habuerit, & alia tamen non impediunt, decurso huiusmodi temporis spatio, ad sui eum executionem officij admittatis.

NOTÆ.

a *Lucensi.*] Ita etiam legitur in prima collectione, sub hoc tit. cap. 3. & post Concil.

Laceran. part. 16. cap. 11. addit, & Capitulo. De Ecclesiâ Lucensi, seu Lucanensi egi in cap. cum causa, de elect. & textum hunc exposui supra in cap. 2. de homicid.

CAPVT IV.

Cælestinus III.

Coniunctâ literarum vestrarum inspectâ, quâ significastis nobis, quod cum P. acolytus præsentium lator cum quibusdam hominibus ad e resistendum prædubius arma sumpserit, in conflictu illo tres fuerunt ab aliis vulnerati ad mortem, ita tamen, quod illa homicidia, neque facto eius, neque consilio perpetrata fuerunt. Quia verò super hoc nostrum requisistis consilium, vobis taliter respondemus, quod cum prædictum acolytum ad frugem melioris vitæ transisse dicatis, & in monachali religione ferè per annos viii. laudabiliter hucusque vixisse, meritis eius aliis non repugnantibus, ad subdiaconatus ordinem valeat promoueri, & meriti aliarum ministerium exercere.

NOTÆ.

a *Cælestinus III.*] Ita etiam legitur in secunda collectione, sub hoc tit. cap. final. nullibi tamen exprimitur cui referatur Pontifex.

b *Acolytus.*] De quo gradu egi in cap. 2. de offic. Archid.

c *Resistendum.*] Et ita arma non sumpserit pro defensione necessaria: quare desiderat ut ad ordines sacros accedere possit, quod ad meliorem vitæ frugem transisset, & ut per octo annos laudabiliter fuisse coeuerantia.

COMMENTARIUM.

1. Cum Ecclesiâ valde abhorreat sanguinis effusionem, & in suis ministeriis omnem mansuetudinem operis, ideo non solum eos militæ nomen dare prohibuit, ut probauit in cap. petio, de homicid. verum & arma deferre, ut probauit in clerici arma, de vita & honor. cleric. & sententiam sanguinis proferre, & sententiam, ne clerici vel monachi;

ac etiam quæcumque percuttionem ab eis fieri omnino prohibuit, can. 64. Apost. ibi: Si quis clericus in pugna pulsatum aliquem uno ictu occiderit, deponatur propter suam præsumptionem, & temeritatem. Et c. de his clericis, 50. dist. Concil. Triburicense can. 11. cap. cum beatus, 45. dist. plura adducunt Espeneus lib. 2. digest. c. 3. Crespetius in summa, verbo Clericus non sui percussor. Et percussor omnium solum dicitur, qui sua mano percussit, verum & qui verberandi, vel occidendi facinoratum dedit, ne fraus fiat canonis Apostolorum, ut statuit in canone 9. Synodi Constantin. ibi: Qui percussit, vel curauit ut cui manus percussoretor. Ut etiam ait Vlpianus in l. non solum, §. 1. ff. de iniuriis, Inuicem tamen disciplinæ licet presbytero licet percussit discipulum, ut probauit in cap. presbyterum, de homicidio: & iudici ecclesiastico penam solum imponere, dum tamen per eam ad sanguinis effusionem non perueniatur, ut probauit in cap. 1. de calumn. Et qui commentario, & præcipiè ad adductis in cap. petio, de homicidio, præsens commentarium percutsum est.

TITVLVS XXVI.

De clericis maledicis.

CAPVT I.

* Clemens III.



Noctuit nobis, &c. *Et infra:* Ad vltimum fa. mandamus, atque precipimus, quatenus quia nobis per literas tuas retulisti, scilicet quod Ioannes clericus sanctæ Trinitatis multis coram astantibus, verba quædam in depressionem, & contumeliam Rôm. Ecclesiæ protulit, ipsum à reuerentia sua per suspensionem officij, & beneficij, sublato appellationis obstaculo, compescas, vt poena illius alijs terrori incurrat, ne de cætero contra Rôm. Eccl. in talia verba prorumpant.

NOTE.

1. * *Clemens III.* Ita etiam legitur in secunda collectione, *sub tit. de clerico maledico, c. 1.* nullus tamen exprimitur cui retribuit Pontifex, nec in cap. *monuit*, de eo qui *fuerint ordin.* ubi extat prius pars huius textus, id explicatur, licet ex illius textus sensu deducatur, in per se sui retribuit Clementem III. alicui Prælato Hispaniæ prope Seguntinam diocesim existenti.

2. *b Romana Ecclesia.* In hac sexta collectione leguntur officij, & beneficij nostri, unde deducebant Doctores, Pontificatum esse beneficium ecclesiasticum, vt probant Galat. de Ecclesiæ Hierarch. *disp. 14. §. 2. n. 1.* *Sedunde beneficij 1. p. q. 2.* Oportet de incomparib. 1. p. q. 3. n. 2. Fabrieus de *monib. benefice*, num. 21. Sed vtilius in hac secunda collectione legitur. *Romana Ecclesia.* Aliud enim est detrahere Pontifici, aliud Ecclesiæ. Et licet verumque crimen sit graue, tamen ex primo vtriusque canonem non adiunxit, *cap. parum 2. §. 1.* ex secundo verò eum Ecclesiæ hinc, & gradus laicis, poenam imponunt vt obsecrant *Clementis lib. 2. obseru. c. 4.*

3. *c Alio tenore em.* Inter alias causas, quæ delictor in pontifici nem inuenit, quas proponunt Platō in *Drege*, Seneca lib. 1. de clementia, D. Augustinus de *uita Dei* lib. 19. cap. 16. & prosequuntur Alex. ab Alex. lib. 2. *dioc. genti*, cap. 5. ubi Tirac. ad *leges canonicas* lib. 9. glossa 1. num. 224. Petrus Gregor. 3. part. *synag. lib. 13. cap. 1.* duplex præcipue consideratur. Prima, vt si quis deliquit, corrigatur, & emendetur, *cap. de his 2. quæ 2.* quum expresse tenet Aul. Gel. lib. 6. *not.* cap. 14. Hierodotus in libro qui scribitur *Opera*, & *cies.*

Tamen sua poena necesse est

Civ. equius, possitque sapientia non denique stultia. Secunda, vt alij, qui tali exemplo delinquere possent, metu simul perire deinceps. Seneca ubi supra, ibi: *Neque prius em punit, quia peccatum est, sed ne peccetur, reus autem enim præterita non possunt futura prohibere, ut quæ malis exemplum nequitia motu cadentis fieri, recedat, non tam re peccat ipsi, quam re alios peruenit deterreat.* Quod ad bruta quoque animantia tam Plinius lib. 19. c. 1. & 4. de lib. 10. c. 2. Videmus, inquit, sepe in Asie a crucifixis leones, à quibus factus verberis aspera, quo ceteri

D. D. Gouzal. in Decretal. Tom. 8.

metu poena similis deterreantur. Nec longè à nobis petenda sunt huius rei testimonia, cum in Hispania nostra quotidie videamus in suppliciis de nocentibus sumendis verba illa à præconibus præconibus, delictumque manifestantibus, ad finem adici, *quoniam talis hæc, quæ talis poena.* Quæ sunt ad admonitionem alioquin potius quàm ad punitionem ipsius delinquentis pronuntiati nemo non videt. Sumpsumque fuit à præfco Romanorum mote; aduocatus enim ad supplicium populum erimen, & poenæ causam ex præcone ipso audire solebat, & nonnunquam id sebat per scripturam, quæ titulus vocabatur, vt in Christi Domini passionis obsecrunt Evangelistæ, & ex bonorum auctorum testimoniis notauit Iustus Lipsius lib. 2. de cruce, c. 11. Sicque verbum *superdici*, accipi debet in *si dicit, & final. ff. de iurim.* & quod de præcone traditur in l. *supplicibus*, Cod. ex quibus causis *in finem*, vt obsecrunt Fomertius lib. 1. *sermon quid.* cap. 13. Baldus de *causis pro Christianis*, fol. 34. Cuius lib. 3. *obseru.* c. 7. de lib. 1. §. 1. Petrus Faber lib. 2. *semest. c. 6. & 7.* quibus addi velim quod de Alexan. Ito Seneca Lampidius in eius vita refert, his verbis: *Clamabatque sapiens, quod à quibusdam, sive Indis, sive Christianis audierat, & senex, idque præconem cum aliquem emendaret, dici iudicat: Quod ubi non eis, alteri non feceris.* Quodque idem Alexandet in supplicio sumendo de Turino sumi venditore per præconem dici iussit: *Fumo puniatur, qui suam relictidit.* Quod refert Daz. ad tit. *Cde suffrag.* & lib. 2. *animad.* c. 13.

COMMENTARIUM.

EX hoc textu sequens communiter deducitur assertio, Clericos maledicos suspendendos esse à officio, & beneficiis. Probant tam textus in *cap. 5. Apost. cap. clericus maledicus*, 46. *diff. communiter* 56. *diff. cap. si clericus* 15. 9. 7. Concil. Aurelian. 5. sub Pelagio 1. can. 14. ibi: *Si quis presbyter, aut diaconus quolibet carnis ordinem Episcopi sui desperarit, sua caliditate sententia ipsam inuolare, aut detrahare præsumserit, tribus annis à communione suspensus, & in monasteriumclusus, apud instantummodo & poenæ dictis singulis sustineatur, nec comam, nec barbam facere præsumat, nec ad aram Domini penitus accedere permittatur.* Toletan. 3.

M m 2 can. 3.

4
CONCILIUM
SIO PRO
SANTA.

non. §. Sed & hoc pro pestilentiosis hominum moribus salubri ordinatione censum, ne quis in Principem maledicta congerat, scriptum est enim à legistatorem Principem populi sui non maledicere. Quod si quis fecerit, excommunicatione ecclesiastica plectatur. Nam si maledicti Regnum Dei non possidebunt, quanto magis talis ab Ecclesia necessariò plectatur, qui divina violenter sententia imminuit. Faciunt textus in cap. 22. Exod. cap. 23. Alium Apost. 1. uolito Anastasio Germonio lib. 3. de sacr. mandatis. cap. 3. item 30. illustant ultra congestis à Barbosa in praesenti, Acuña in cap. clerici. §. 46. dist. Quoties de delict. quæst. 63. & 64. Crespius in summa, verbo clerici maledicti. Salmut. ad Pascire lib. 1. memorab. tit. 57. Cotalius lib. 4. apboris. tit. 34. Ciconius lib. 1. obsequ. 4. Petrus Gregori. lib. 2. part. tit. 92. §. 8. & lib. 4. tit. 9. cap. 1. & in praesenti Decret. mun. §. 8. & lib. 2. de repub. cap. 6. Nicol. Lemaitre in consue. consue. Serben. 1. part. cap. 1. & 3. Don Nicolaus de Castita in discursu contra Don Dierre. Scipio Gentili. lib. 3. de consue. in orat. de maledictis in Principem, Albert. Gentili. in l. vnic. Cod. si quis Imperatori maledixit, Latus Mancinus de scriptis iur. collat. lib. 1. cap. 99.

Sed pro dubitanti ratione intendam probare ratione, & exemplis, maledicos in Principem, vel superiorem non esse aliqui potestati afficiendos, nam licentia ista loquendi concessa populo, cupiditates, consiliaque omnia patefacit, unde Tiberius aiebat in ciuitate libera, liberos linguas esse debere: & cum Senatu loquens, qui intendebat maledicos punire, dixit: Si hanc fenestram aperueritis, nihil aliud eliceretis quam vt hoc colore dignitatis Principem vindicare vniuersique priuatas suas iniurias, velatum, vnumque eat, & concludit: Si quidem loquens aliter fuerit, dabo operam vt rationem factorum meorum, dictorumque reddam, si persequeretur, iniuriam cum otero. Vnde Theodosius, cum Atradio, & Honorio filius constitutionem edidit relictam in l. vlt. C. si quis Imperatori maledixerit, his verbis: Si quis maledicta nescius, & pudoris ignarus, improbo, petulantique maledictio nominis vestra crediderit laesenda, ac temulentia turbulenti obreuerat temporum nostrorum fuerit, cum potius nolimus subire, nec durum aliquid, nec asperum volumus sustinere, quamquam si id ex leuitate processerit, contemnendum est, si ex insania, miseratione dignissimum, si ab iniuria, remittendum. Nec minori vel prudentia, vel magnitudine animi fuit Rex ille Epitrotarum Pyrrhus, qui consensibus amicis, vt quendam, qui de ipso male erat loquutus, relegaret, non se facturum dixit, nec alio profectus pelora de me loquatur, & eorum pluribus. Similia exempla de Philippo Macedonum Rege, & aliis Monarchis, ac Imperatoribus referunt Gentilis in dicta uariis de maledictis in Principem, Hugo Grotius in floribus ad dictum legem vnicam, Salmut. ad Pascire lib. dist. 1. Adam Contzen. lib. 9. polit. cap. 43. P. Velazquez de optim. Princ. lib. 3. adnot. 12. moralis, ex §. 6. Non omittam de hac re Cilij Meczenatis praedicti simulacrum apud Dionem lib. 12. ubi Imperatorem Augustum ita alloquitur: Quod conuincit aliqui tibi fecerit, aut tibi obreuerant, nec deservens aliqui audire, nec iudici debet. Turpe enim fuerit te credere iniuriam, qui te neminem laedentem, tantis beneficiis, tam, & nemini affecerit. Idque soli iuranti mali Prin-

cipes, qui ex conscientia sua veritatem dictorum colligit. Deinde iniquum est ea agere ferre uelle, quae vera sunt, praesens non admitti, sin falsa, dissimulari cum multis hac vindictam pluribus, ac gravioribus de se sermonibus occasione praebatur: nec deest bene opinione de te hominibus salubriter, esse qui in te conuincit, esse ausus. Facit textus in cap. qui in flus 90. 1. r. quæst. 3. in illis verbis: Qui iustus est, & iniuste maledicunt, premium illi redditur. Igitur non recte in praesenti clerico maledico poena suspensionis imponitur.

Qua dubitanti ratione non obstante vera est praesens assertio, pro cuius expositione sciendum est, maledicum dici detractorem, quia sicut bene dicere est bene precari, Ouidius lib. 2. Fastor.

Est bene nos, bene te, patria pater optime, Caesar,

Dicere, suffragi per sacra verba mero.

Contrà maledicere, est male precari, vt apud Plautum in Pseud. act. 3. scena 3.

Si benedixit, vestra ripa vos sequar:

Si maledixit, vestra gradus limat.

Maledictio ergo vitium linguæ, & maximum est. D. Iacobus epist. 3. Quare postquam Quintilianus lib. 1. 2. infus. dixit caninum esse eloquentiam, atque facundiam maledictis vix Apji Claudij testimonio addit, vitium esse animi, quo maledicus à maledico non distat nisi occasione, subdicens conuictatori, & maledico ad male faciendum, & nocendum aduersario promptum esse voluntatem, modo datur tempus, & locus laedendi: & sicut maledictum idem est, quod malefactum in facto, ita & maledictum in verbo. Clerico pro M. Celio distinguit accusationem, conuictum, & maledictum his verbis: Accusatio crimen desiderat, rem se desinat, hominem nocet, argumentum probat, reffe confitetur: maledictio nihil habet propositi praeter contumeliam, quae si perulantius insultat, conuictum, si facinus, verberum appellatur. Et quemadmodum maledictus diuersis aliis, & aliis potest fieri, sic maledictiones aliis aliis grauioribus, & leuiores, & qualem aliis efficacioribus, vel ratione causa maledicendi, vel ratione potestatis eius, cui maledicunt. Plura de his maledictis conueniunt Locas de Peña in l. vnic. vers. Non. C. de delict. lib. 1. 30. Sotus de iust. lib. 5. q. 1. 2. art. 1. Menochius de arbit. casu 367. Didacus Petz in l. 3. tit. 3. in lib. 8. ordin. Breylinch tom. 3. lib. 2. verbo Maledictus.

Deinde sciendum est, maledicos alios esse in Deum, alios in Principem, seu superiorem, atque, nobilitate, motibus, seu scientia praestantem; alios in proximum, seu aequalem. Saleedo in praxi, c. 66. Cenedus ad Decretal. collat. 146. De maledictis in Deum, hoc est blasphemias, agemus infra tracta sequenti. Circa maledictos in aequales dicendum est, quod si priuatus maledico laedatur, actio in iniuriam locus est. l. 1. §. 1. item apud 15. §. conuictum, §. 2. ubi apparet, §. generaliter, §. de iniuriis, §. 1. cum sequent. l. qui liberos. 9. l. penult. C. de iust. Si vero maledici sint in Principem, tempora, aut saeculi mores, vt plenarius contingit, Seneca lib. 3. de ira. c. 22. Cassiodorus lib. 3. c. 5. olim lege Initia Maledictis tenebantur. Tacitus lib. 1. annal. Arnobius apud Grotium ubi supra, ibi: Maledicti apud vos reus, qui de vestris obmurmurant aliquod Regibus. Quo modo & IC. Paulus dixerat, non solum facto, verum & verbis impiis exacerbari crimen Maledictis, lib. 3. tit. 29. §. 1. notantur Valenzuela consil. 163. & 164. Grotius in d. vnic. Ant. Matthysius de crimin. ad l. de lege Ind. Maledicti. c. 2. Snuatus ad Siderium lib. 1. epist. 7. facit Modestius in l. 7. §. ult. ff. ad leg. Ind. Maledicti. in

6. M ALEND-
EVS QUIE.

§.
INTEH-
TRA TRA-
BITA AS-
SERTIO.

in quo textu Tribonianus respiciens ad legem vindi-
cat, *Cod. si quis Imper. maled.* ubi legebatur verbum,
posuit *facto*; quæ interfectio patet, nam si non esset
legenda verbum, ad quid postea diceret Consensus,
vel violatus status; eodem iam in generali significa-
tione facti crimen illud comprehenditur; nota-
rit Coninc. ad Paulum, *dist. 29. §. 1.* quare Arnobius
advers. gent. ait: *Ministris sunt apud vos rei, qui de
vestris fecus obstruuntur autem aliqui Regibus.* Suc-
tonius in Tiberio, cap. 10. et §. 48. Sed Thos hanc
questionem remisit, testibus Diono, & Xiphili-
no; & post eum Imperatores Honorius, & Theo-
dosius in Leone, *Cod. si quis Imperatoris*, ubi verbum
illud requirendum, accepti pro condonandum, do-
cuerunt Alber. Gentil. ibi, Salmatius ad Pincel.
dist. 111. §. 7. & pro ipsius textus expositione videndi
sunt Pileasius lib. 2. *foli. 11. tract. 7. de Regia Maiest.*
§. 3. Petrus ad leg. Anticam, pag. 236. Basilie *deus*, 26.
Sicri etiam canones detractiones, & contumelias
nihil fecerunt, *cap. paratus 23. q. 1. cap. qui iustus 1. q.*
quæst. 3. nisi quando honor Ecclesie, vel ordinis
lædunt, ut si presbyter in suam Episcopum, vel
Pontificem maledicus sit: grauius tamen est deli-
ctum, maiorque poena plectendi sunt maledici,
qui linguam proteream effundere non conueni-
ent, ut etiam manu addicunt per libellos famo-
sos, de quibus agitur lib. 3. *Concil. Nîcher. cap. 30.*

His suppositis apparet ratio præsentis decisionis,
quare videlicet suspendendi sunt clerici maledici
in Ecclesiam, Pontificem, seu Episcopum: nam
nihil ita in bene morata Republica cauendum est,
quam Principia contemptus, atque hæc res quæ
minuere existimationem ipsius possunt: si enim de
Principe male imponit loqui liceat, sit ipsa natu-
ra, ut & in eius, qui loquitur, & in eius, qui eum
audit, animo sensum ingeneretur quædam mala de
Principe opinio, minusque eum reuereri incipiant,
ut latè consideret, & exemplis probat Gen-
tilis lib. 2. *de conuinc.* in dila oratione de *maledictis
in Principem.* Quæ si in quolibet Principe proced-
ant, quanto magis in Pontifice, & Episcopis,
quibus maior debetur, & impendenda est reueren-
tia: proinde ut perniciosisimo hoie malo tempesti-
ue occurratur, prædentes monuit D. Gregorius ho-
m. in Ecclesiam, his verbis: *Est, quorum vita in
exemplo imitandi est posita, debent, si possunt, de-*

trahentium verba compescere. Ecce enim lubricum
linguæ ad poenam facile trahi non debeat, l. *sa-
misi 7. §. hoc tamen, ff. ad leg. Iulianam*, quæ tamen
ex certa animi declinatione profectetur consula-
tioni temeritas, compescenda omnino est, ut po-
na illius aliis terrorem incutiat. Quare redè Cle-
mens III. in præfati rescriptis suspendendos ef-
se clericos maledicos in Ecclesiam Romanam, vel
Pontificem.

Nec obstat dubitandi ratio supra adducta, pro
cuius solutione, dicendum est, quod poenam de-
tractorum, ex persona eorum esse pensandam,
ac verum prætermitteri debeat, estimandum esse, ut
expressit Harmenopolus in *Græca interpretatione ad
taxum in dist. Leone, Cod. si quis Imperatoris.* Quibus
dam enim personis iure etiam debetur hæc licen-
tia. Nec Imperiale, inquit D. Ambrosius in qua-
dam epistola, liberatem dicendi denegare; nec
Sacerdotale, quod sentiat non dicere. Idque adeo
verum est, ut in eodem duobus pariter Principi
maledicentibus, in altero venis, in altero poena sit
adhibenda: quod Dionysium Syracusarum Regem
fecisse memoriz prodium est, refertque Scipio
Gentil. in dila oratione de *maledictis in Principem.*
Cum enim remanclarum ei fuisset, duos quosdam
in eorum plurima aduersus ipsum dixisse, utrumque
ad se inuicem, & consilio comiter excepit, quos
alterum eum multa leuiter, subtiliterque loqui; al-
terum verò reconditum, ac tristiter sedere vidisset,
illum quidem dimisit, hunc verò tanquam insidia-
torem interfecit. Varia igitur pensanda sunt circa
punitiones maledicorum, an videlicet ex dolore ali-
quo, vel temeritate in iudiciis, an verò nulla de causa,
sed libidine tantum detractandi maledicorum. Priori-
bus enim casibus indulgendum, & condonandum
est. Secundo verò casu seuerè vindicandum, ne
abolitione præteritis anis nouè iniuriæ, quia ut
sichat Socrates, maledicta qui non vindicant, vete-
tem remittendo iniuriam, nouam pronocant. Refe-
runt Ghellius lib. 17. *notæ. 14.* Iulius Ferrer. *de re &
discipl. milit. cap. 42. n. 3.* Aneas Robertus lib. 4. *rer.
indie. cap. 11.* I. Christoph. Boëtius *de iniur. disc.
pæ. 2. num. 11.* iuxta quas, & alias distinctiones, quæ
tradunt Alber. Gentil. in dila *Leone.* Scipio Gentil.
dist. lib. 2. de conuinc. ad finem. accipienda sunt exempla
suprà relata pro dubitandi ratione.

9.
DISCERN
VITAE
DUBITAN-
DI RATIO.

8.
TAN-
TUS RA-
TIO DE
CIRCUIT.

CAPVT II.

Gregorius IX.

Statuimus, ut si quis contra Deum, vel aliquem Sanctorum suorum, & maxime
Beatam Virginem, linguam in blasphemiam publicè relaxare præsumpserit, per
Episcopum suum poenæ subdatur inferius adnotatæ, videlicet, quod in septem diebus
Dominicis præ foribus Ecclesie manifestò (dum aguntur Missarum solennia) blas-
phemus existens, ultimo illorum die Dominico pallium, & calceamenta non habeat,
ligatus corrigià circa collum, septemque præcedentibus sextis feris in pane, & aqua
ieiunet, Ecclesiam nullatenus ingressurus: quolibet quoque prædictorum dictum tres,
si poterit, alioquin duos reficiat pauperes, siue vnum: & si nec ad hoc eius suppetant
facultates, id in poenam aliam commutetur, cui etiam, si renuerit recipere, ac per-
agere poenitentiam supradictam, Ecclesie interdictum ingressus, & in obitu ecclesia-
stica careat sepultura. Per temporalem præterea potestatem coactione (si necesse
fuerit) Episcopi decet. adhibita contra eum, blasphemus, si diues fuerit, quadraginta
solidorum, alioquin triginta, siue viginti; & si ad id non sufficiat, quinque solido-
rum vsualis monetæ poenà mulctetur, nullam in hoc misericordiam habiturus: quod
etiam inter alia communitatum statuta ponatur.

1. **a** *Gregorius IX.* Qui presentem edidit constitutionem contra maledictos, idest blasphemos in Deum, Beatam Virginem, & Sanctos. Vnde cum prefatus rubrica in secunda collectione tantum conprepter de clerico maledico, in hac sexta propter prefatum constitutionem generalior proponitur, videlicet de maledictis.

2. **b** *Foribus Ecclesia.* In eo loco videntur olim solenniter penitentes, dum in priori gradu consistebant, videlicet extra ianuas Ecclesie. Terteul. *de pudicitia cap. 4.* ibi: *Religiosi libidinum furias impias, & in corpora, & in sexus ultra iam natura, non modo limine, verum etiam Ecclesia seculo submouemus, quia non sunt delicta, sed monstra.* Illustrant Lantimet. lib. 2. de veteri monach. cap. 60. & huius electionis extra Ecclesiam mentio extat in cap. in capite 64. dist. 50. l. 18. tit. 4. part. 1. ibi: *E debent morari a la porta de la Iglesia tota la quaresma en canchuallos.* Prosequuntur ritum hunc, & alios solennia penitentis Gibal. *de clausura regul. dist. 3. cap. 1. §. 6. num. 32.* Eilesc. *de quadragesima, cap. 6.* Loaylas in Concil. Tol. 6. can. 6. Souchetus in notis ad Iuvenem, epist. 128. Citroius in paratit. ad tit. de penit. de lib. t. ubi cap. 6. Ambian. ad Terteul. de pudicitia, passim. Dloan. Ant. de Otalea de irregularitat. ex penit. part. 1. excursu 1. cum sequens.

3. **c** *Corrigia.* Proprietas enim habitus penitentium semper fuit cilicium vili, & abiecta materia contextum, ut linē probant Lantimet. lib. 2. de veteri monach. cap. 86. Lemaitre lib. 4. de instaurat. Epist. cap. 7. Iohannes Lorinus in psalmo 39. vers. 12. & in psalmo 34. vers. 13. Vitrecombes de viribus baptisim. lib. 3. cap. 12.

4. **d** *Pœnitentia.* Non quia blasphemus damnatus à iudice ecclesiastico, postea puniri possit à seculari; sed potius, quia si opus fuerit, iudex ecclesiasticus debet inuocare auxilium brachij secularis, lorta tradita in cap. t. 2. part. de offic. ordin. quo modo verba hæc exposuerunt Marthe de iurisdict. part. 1. cap. 50. Barboza in cap. felices, de penit. lib. 6.

e *Solidum.* De quorum valore egi in cap. ex tra 1. de summo.

5. **f** *Vsualis moneta.* Idest pro tempore currentis, ut dicitur à Sidorio lib. 4. epist. 20. vsualis festum & Zeno Veronensis agens de sancto Arcadio, vsualis lex, vsualia municipi: & Marcianus in l. 1. §. quoniam, ff. de public. & vetig. Imperat. in l. 3. Cod. de lib. in Theodos. ibi: *Vsualis rancia, vsualis res.* Cassiodor. lib. 9. epist. 18. *Vsualia iura.* Et lib. 6. epist. 7. *Vsualia metaka.* Et lib. 11. epist. 39. *Instrumentum vsuale, vsuales arces.* Et de anim. cap. 4. *vsualis cunctus:* & lib. 2. epist. 39. *Vsualia comica.* Concil. Tol. 8. can. 8. & ita vsualium monetam dixit Gregorius IX. pro quotidianis, & uso recepta.

COMMENTARIUM.

6. **B**lasphemia est conuitium, seu maledictum in aliquem dignitate, & excellentia conspicuum prolatum, ut docent D. Augustinus in lib. de moribus monach. cap. 11. D. Thomas 2. 2. quest. 13. per tot. Ideoque dicitur ab Apostolo ad Titum cap. 3. *Admonere illos neuiquam blasphemarent.* Ex Theologorum tamen, & Canonistarum communis usu blasphemia significat conuitium, seu contumeliam interrogatam Deo, vel Sanctis in celo regnan-

tibus. Probat Couar. in cap. quomodo postum, part. 1. §. 7. num. 8. Simanc. de calobolus, tit. 3. Fortae. in practicum tom. 1. quest. 20. num. 11. Azor tom. 1. insit. lib. 9. cap. 28. Bañez 1. 2. quest. 13. tit. 1. Sanctatellus de hereticis, tit. de blasphemia, cap. 1. Suarez de relig. tom. 1. lib. 1. cap. 4. Bobadilla lib. 2. polit. cap. 17. num. 77. Pichardos in manuali crim. verbo Blasphemia. Sive maledictus de Deo aliquid asserit, quod illi non conuenit, ut si etudelum, vel iniustum cum vocet, vel ei imprecetur malum, ut faciant damnati, quasi malum in Deum cadere possit; vel neget quod illi conuenit; & ita blasphemia proprie est contra virtutem religionis, sicut enim ueracitas, & cultus, quo Deum veneramus, & Sanctos propter Deum, qui eos sanctitate donauit, pertinet ad religionem; ita in Deum, & Sanctos, ut in Deum refertur, conuitium eidem religioni opponitur, non confessioni fidei: quomodo enim S. Thomas 1. 2. quest. 13. & sequens. cum fidei opponat, tamen certum est, eam formaliter & essentialiter loquendo soli religioni opponi, cum possit quis in Deum blasphemus esse, saluū in eum rectā fide, ut docet Castro lib. 1. de iusta heretic. ponit. cap. 12. Valentia 2. 2. disput. t. quest. 13. punct. 2. Sanchez lib. 2. summa, cap. 32. num. 3. Theophilus tom. 4. lib. 4. c. 1. fol. 168. Sed quia vixissimum blasphemie continent verba huiusmodi, ideo communiter distinguuntur in hereticas, & non hereticas. Hereticas blasphemias sunt quæcumque profertur directe contra fidei articulos, ut contra Dei omnipotentiam, puritatem B. Virginis, & similes: & apparet clarius blasphemia heretica, quando per verbum aliquid indirecti modi asseritur aliquid contra fidem; quando autem non asseritur per huiusmodi verbum, sed optendo, vel imprecando, non est heretica. Exemplum hereticum sit: Deus est iniustus, acceptor personarum, non est omnipotens, non credo in Deum, renego Deum, crucem, si sciam, puritatem Desipere. Exemplum non hereticum est: Maledictus sis Deus, per corpus Dei, a despecto de Dios: quia per huiusmodi blasphemias, quæ indicatiui modi non sunt, nihil falsum dicitur de Deo, ut possint hæresim continere, sed tantum malus affectus blasphemantis erga Deum volentis ex modo dicendi quasi ignominiam reddere Deum capicem. Essent tamen hereticas, si blasphemias per modum indicatiui assereret, Deum esse illatum capacem. Prosequuntur alia exempla hereticum, vel non, Maschard. de probat. lib. 2. conclus. 194. Decianus tract. crimin. tom. 3. lib. 6. cap. 2. num. 4. Sanchez dist. lib. 2. summa, cap. 32. Scottia in select. Pœnit. causis. epist. 90. ibi not. 321. Eymericus 1. part. direct. quest. 41. vbi Peña, Suarez tom. 1. de relig. tract. 3. lib. 2. cap. 5. Soula in aporism. Inquisit. lib. 1. cap. 19. Albertinus de heret. agnosc. quest. 6. num. 23. Barboza de pœnit. Episcop. alleg. §. 1. numer. 88. Careñ de offic. Inquisit. part. 2. tit. 7. §. 2. Fegoso de reg. Christi. Reipub. part. 1. lib. 2. disp. 4. §. 5. Thomas Delbene part. 2. de offic. Inquisit. dub. 218. Beyerlinch tom. 1. thesaur. verbo Blasphemia.

Deinde sceleratum est, crimen hoc fecerim, & horrendum asse, quid enim atrocius, quam Deo conuitari? quod fecit blasphemus, Aut D. Hieronymus in cap. 18. *Esaia*, nihil eā esse horribilius, & omne peccatum comparatum blasphemis, leuius esse. Et D. Chrysostomus in psalmo

in p[ar]te 95. blasphem[ia] nihil prius esse affirmat his verbis: *Attentius considera qua dicuntur. Peccata quaedam spectant ad Deum, quaedam ad hominem: veluti impietatem committere, blasphemiam euertere, ac violare templum Dei, aut Ecclesiam Dei persequi, aut sacerdotes officere concussus. Hac omnia referuntur ad Deum: ceterum machinari furari, iniuriam facere, hac intra consuetudinem, qua nobis tam consensu est, confluant. Multiplex autem est differentia eorum, que committuntur in Deum, & qua in homines. Nihil itaque prius iniquitate, neque qui quam magis iniquam, quam aduersus Deum blasphemia. Sanctus Petrus Damianus ep[iscopu]s lib. 36. cap. 3. & homil. 1. ad populum, blasphemos leprosa sibi, & posteris adiecit affirmat. Facit D. Mathaeus cap. 12. & Heli aiebat lib. 1. Regum, cap. 2. Si peremerit quis in v[er]bum, placari illi potest Dominus: si autem in Dominum, quis erabit pro eo? D. Augustinus lib. 2. de ciuitate Dei, cap. 9. ibi: Cum probum dicitur in Principem, patria bonum, atque utilem, nome[n] tanto est indignum, quanto a veritate remotius, & a vita illius alienius? Quae igitur supplicia suffragant, cum Deo fit ista tam nefaria, tam insignis iniuria, facit Theodot. orat. 8. de prauid. iust. Seluianus lib. 4. de prauidencia, ad finem. Quare v[er]is poenis crimen hoc omni iure vindicatum legimus. In Leuit. c. 24. lex erat vt blasphemum lapidibus opprimeret populi multitudo: & Iudael adeo hoc eimen exercebantur, vt dum blasphemias intelligerent, obturarent aures suas, & scinderent vestimenta sua, vt refertur Matthei cap. 26. vt ob res ludibrosas, & maxime tristes soliti erant facere cap. 4. Numer. Iesue cap. 7. Iudicum cap. 11. vers. 4. Hefther cap. 4. & cap. 2. Sophonia, minatur Dominus ob blasphemias Moabiticis interitum Gommerhae & Sodomae, iure ciuili Iustinianus in nouel. 78. Vt non luxur, homines, ita cauit: Si contra homines facta blasphemia inpurita non relinquatur, multo magis qui ipsum Deum blasphemum, digni supplicia sustinere. Additque, ob blasphemos pestem, famem, & terremotus, & alias plagas à Deo hominibus imitari: simulque praecipit Praefecto cinerit, vt quos in hac re deliquisse inueniret, moti tradat: & in l. vlt. Cod. de relig. alearum ludos prohibet capquam nequitiz huius ineituentia.*

Vltimum etiam supplicium blasphemis indixit Carolus Magnus addit. 3. cap. 32. Iure canonico olim poena erat in laicos excommunicatio, in clericos depositio, cap. si quis 22. quest. 1. & in praesenti adiuncta est poenitentia publica, necnon & poena pecuniaria: & quia clericis publica poenitentia remittitur, cap. ex poenitentibus, 50. diff. cap. quicumque, 51. diff. ideo contra eos manet tantum depositio poena. Iure nostro Regio nouissima in l. 6. & 7. tit. 4. lib. 8. recop. pro prima blasphemia deiciatur reus per mensem in carcerem cum compedibus; pro secunda in exilium mittitur per sex menses, multaturque in ille, matrapetinis; pro tertia vero lingua figitur clauo: quae vltima poena consuetudine non est recepta, sed eius loco figellatur, & lingua praemiur ligno, idest mordetur. Tandem ex lege finali tit. 4. lib. 8. recop. ad tritimes damnantur blasphemii: quas poenas si non exequatur iudex, eisdem puniendus est, ca l. 20. tit. 6. lib. 3. recop. docent plura de blasphemis adductis vltis congestus à Barbosa in praesenti, D. Ioannes Vela de delictis cap. 4. D. Ioseph. Vela in cap. 1. de offic. ordin. num. 9. Fragofo de regim. Christi. Recip. part. 1. lib. 2. disp[os]it. 4. §. 3. Scotius in selectis. Penit. constit. cap. 90. ibidem. 292. Ioannes Veritatus in nouis ad Prudentium, fol. 217. Henricus in encyclop. canon. tit. 8. Lælius Manecius de triplici inuiri collat. cap. 128. Basile. decis. criminali 26. Petrus Gregorius lib. 4. partit. tit. 9. cap. 8. & in cap. conueniente, cap. 6. de offic. ordin. & lib. 33. synag. cap. 12. Acuña in cap. 4. diff. 25. Sesse tom. 4. decis. 469. Barbosa 2. lib. v[er]o 126. Suarez tom. 1. de relig. tit. de irrelegiosis, cap. penult. & vlt. Simon Maiolus dier. canonic. fol. 661. Gutierrez de delictis quest. 60. Est tamen hoc crimen mixti fori, vnde puniri potest, tam à iudice ecclesiastico, quam seculari, vt pluribus relatis probat Martha de iuris diff. part. 2. cap. 13. D. Iosephus Vela in diff. cap. 1. num. 92. nisi blasphemia sit haeretica, quia tunc eius poenitentia prauiuat spectat ad Inquisitores haereticae prauiat, vt probant Scorius ubi supra, Eymetico in direll. Inquisit. part. 1. quest. 41. vbi Poña: pluribus relatis Barbosa de potestate Episcopali alleg. 52. num. 86. Carena de offic. Inquisit. part. 1. tit. 7. §. 2.



TITVLVS XXVII.

De clerico excommunicato, deposito, vel interdicto ministrante.

* CAPVT I.

Ex canone * Apostolorum.

I quis Episcopus, Presbyter, vel Diaconus depositus iussu pro certis criminibus, & aulus fuerit accretare ministerium sibi dudum commissum, hic ab Ecclesia abscindatur.

NOTÆ.

1. ^a **A**postolorum.] Ita etiam legitur in prima collectione, *sub hoc tit. cap. 1.* & reperitur textus hic in *can. 28. Apostolor.* iuxta editionem Balsamonis, Tilij, Donyfij Exigoi, & Gentiani Herberti, de quorum canonum origine, & auctoritate egi in apparatu ad hæc commentaria.

2. ^b **Diaconus.**] De aliis clericis ultra Presbyteram, & diaconum, nec agitur in presenti, nec in *cap. si quis Episcopus 11. quest. 3.* ubi hæc eadem prohibitio firmatur, sed tamen de illis idem esse dicendum docuerunt Glossa, Bartius, & Panormit. in presenti, Suarez de censur. disp. 11. sect. 3. num. 1. argumento capitis 2. ibi: *Si quis presbyter, aut alius clericus. Et cap. clericus 3. cap. si avaritiam 1. ibi: Presbyter, aut alius clericus; hoc titulo. cap. placuit 9. 11. cap. 3.* Constat namque, appellatione clericorum etiam clericos inferioris ordinis contineri, *cap. de persona 38. 11. quest. 1.* nam beati deponuntur, ut de subdiacono constat ex *cap. accedens, vers. Subdiaconi, 30. dist. de aliis clericis ex cap. Episcopus 65. 11. quest. 3. cap. cum non ab homine 10. de iudic. Concil. Tolet. 4. cap. 17. can. 32. & 68. cum sequenti. Apostolorum:* notatur volgo in *cap. si quis de gradu, de purgac. canon. item & degradantur, cap. 2. de penis, lib. 6.* sed verius credo, iuxta tempus huius canonis clericos inferioris ordinis etiam dispositione non comprehendendi: quod fassetur ex eisdem canonibus Apostolorum, videlicet ex *canone 25. aliis 24.* quo ita cauetur: *Episcopus, aut Presbyter, aut Diaconus, qui in fornicatione, aut perjurio, aut furto captus est, deponatur, non tamen communione priuatur. Et can. 26. statim subicitur: Similiter & reliqui clerici hunc conditionem subiaceant. Et can. 42. ita statuitur: Episcopus, aut Diaconus alius, atque clericus defensoris, aut defensor, aut certe damnatur. Cui statim subicitur canon 43. ibi: Subdiaconus, lector, aut cantor similia faciens, aut defensor, aut communione priuatur: similiter etiam laici.* Quod non ita expiimeretur, si appellatione Episcopi, presbyteri, & diaconi clerici inferioris ordinis comprehenderetur: intendebant enim Apostoli in presenti canone Episcopos, Presbyteros, & Diaconos, qui eo tempore erant tantum in sacris ordinibus constituti, iuxta tradita in *cap. a multis, de acate & qualis. ponitur, si ab Ecclesia depositi in suo gradu, & officio, sicut antea, ministrarent; clericos autem inferioris ordinis, quia non ita grauiter peccant ministrando in suis gradibus, non ita seuerè punire voluerunt: quo principio confirmari potest sententia Ioannis Andree, quam contra Hostiensium in presenti probauit Bartius in *cap. 2. hoc tit. num. 7.* Anecharius *num. 5.* scilicet clericos in minoribus ordinibus constitutos, degradatos, suspensos, depositos, & excommunicatos ministrantes, quemadmodum non incurrit penam in hoc tracto statutum, ita neque etiam manere irregulares; quia nullibi irregularitas hæc contra clericos in minoribus ordinibus constitutos expressa reperitur; & ideo non est adnotanda, *cap. si quis 8. de sent. excom. lib. 6.* qui etiam verba illa: *vel alius clericus, dist. cap. 2.* ad clericos tantum in sacris restringunt, ex regula *Odia, de regul. iuris in 6.* namque clericos inferiores, licet clerici sint, tamen ad statum laicalem redire possunt, *cap. 1. de cleric. coning.* nec in eorum degradatione solemnitas præcipi in *cap. 2. de penis in 6.* ad degradationem maiorum clericorum adhibetur.*

Si ergo depositi in ministrando delinquant, puniri ipsos conueniunt, non irregularitate, sed sicut puniuntur monachi, & moniales in *cap. postulasti 4. hoc tit.* Sed contrarium veritatem cum Hostiensis renuerunt Hingolinus de censur. tabul. 1. *cap. 14. §. 1.* Marius Alterius eod. tract. lib. 2. *disp. 1. c. 1.* Fragofo *part. 2. de regim. Christi. Reipub. lib. 10. disp. 1. §. 6. num. 19.* Maiolus de irregul. *cap. 21.* Nannetus in *moralis, cap. 27. num. 163. & 244.* Suarez de censur. *disp. 11. sect. 3. num. 1.* nam clerici in minoribus tantum constituti, comprehenduntur generalitate textus in *cap. 2. hoc tit. ibi: Aut alius clericus.* Et quia suspensus, & interdictus impleretur ab officio, non solum Missam celebrando, & exerceendo alius ordinum maiorum, verum etiam utendo aliis minoribus ordinibus quoad actus eis deputatos manent irregulares, Abbas in *cap. 2. hoc tit. num. 4. & 10.* Archidiaconus in *cap. si quis presbyter 11. quest. 3.* ergo excommunicatus vti gradu minor, quem tantum habet, irregularis manet. Requiritur tamen ut hæc irregularitas contrahatur, quod suspensus, depositus, seu excommunicatus exerceat actus ordinum minorum ex officio, itaque minister deputatus, non sicut laicus. Glossa in *dist. cap. 2.* Dicitur autem clericus in minoribus constitutus solenniter actum annexum ordini facere, quando acolythus cum superpellectis in Missa solenni, præsentem populo ministrat descendendo ceteros, & ministrando vtreolos, quamuis laicus eodem modo eundem actum solet administrare ratione consuetudinis. Marius Alterius ubi supra.

3. ^c **Depositus.**] Episcopus quidem à Synodo, vel Concilio, Presbyter verò, vel Diaconus à suo Episcopo, *cap. si quis Episcopus 6. & 7. 11. 9. 3.* depositus namque Episcopus damnatus dicitur in *dist. cap. si quis Episcopus: & depositio, damnatio, in cap. placuit 9. cap. penult. 11. quest. 3. & in can. 11. & 42. Apost. & damnatio Episcopi à Synodo, vel Concilio fieri debet, iuxta tradita in *cap. 3. de accusat. Presbyteri verò, & Diaconi à suo Episcopo, cap. accedens 50. dist. nam cum depositio sit pena, illam tantum imponere potest, qui iurisdictionem habet in eum, cui imponitur. Suarez de censur. *disp. 30. sect. 1. num. 1.***

4. ^d **In iure pro certis criminibus.**] Rabines, & Dionysius Eaiquis legunt super certis criminibus. Haloander verò & Gothofredus habent ob certa crimina: & iuste idem significat, atque rectè, ut interpretatur Aristenus; seu legitime, iuxta Balsamonem; vel canonice, ut in *c. si criminales 6. hoc tit.* Certi autem crimina dicere possumus, vel certis peccatis causis, argumento capitis *num. 51. 11. quest. 3.* hoc est non prius, nec leues, sed eas, pro quibus sacris canonibus depositio imponitur, argumento capitis *num. 11. quest. 3.* quorum plures refert Anton. Aug. in *epist. lib. 39. per tot.* vel certa crimina sunt aperta, & manifesta, *dist. cap. nemo. Quod magis Græca verba significant, quæ ita vertit Gualianus Herbæus, iuste ob manifesta crimina depositus, iuxta Alexium Aristenium.* Certa autem crimina, & manifesta illa esse officine Balsamon, in quibus Episcopus, presbyter, vel diaconus non habent, nec quidem appellationis auxilium; nam si habent interitum dum de re prius iudicata dubitatur, huiusmodi personas non clerici à ministerio conuelli: quod probat ex libro 1. Basilic. *tit. 3. c. 1.* Concil. Antioch. *can. 4. 12. & 14.* & refert pro ea sententia verba constitutionis 14. de Episcopis, & Clericis, cuius sententia eo tantum

quam clericus, sed tanquam laicus confert. Suatez *dist. 3. num. 20.*

9.

h. Ab Ecclesia abscindatur. Dionysius Eri-
gus legit, *paris abscindatur.* Gertran. H. Jo-
sander, & Rabanus, *omnis abscindatur.* Antiscus,
longissimi eticendus: quæ verba sic interpretant
Zonatas, ut abscens membrum ab Ecclesia ab-
scindatur omnino, tum ob summam impude-
ciam, tum quia nunquam reintegrari canonice
potest, quia eum prius fuerit depositus, mox ab
Ecclesia abscinditur. Bassamon legit, *ab Ecclesia
abscindatur ut impudensissimus.* Ecclesia hic signifi-
cat Catholicorum congregationem, *cap. Eccle-
sia 8. de consec. dist. 4.* siquidem omnes credentes
vnum Christi corpus efficiunt, *cap. si quis 38. 11.*

quest. 3. abscindatur verò idem significat in præ-
senti, atque excommunicetur, ut docuerunt Pa-
nornit. & Anton. *in præfati.* Bellarmius de *ec-
cles. cap. 8. Satez disp. 8. sect. 1.* & probatur ex
cap. si quis presbyter 3. cap. si quis Episcopus 6. 11.
quest. 3. per excommunicationem enim quis scin-
ditur, & separatur ab Ecclesia, idest à communi-
one fidelium, & corporis Christi, *cap. audiat 2. 1. cap.
nihil 3. 1. quest. 3.* & extorris sit à regno Dei, &
consortio fidelium, & liminibus Ecclesiæ, *cap.
si autem 1. 1. cap. canonica 107. 11. quest. 3. in can. 30.*
Apost. ibi: *In communiione modis omnibus abscinda-
tur, sicut Simon Magnus à Petra.* Faciunt D. Chryso-
stom. in *homil. de anabaptis.* D. Augul. de *reus.
Eccles. cap. ad. Eusebius lib. 3. hist. cap. 14.*

CAPVT II.

Ex Concilio * Antiochenſi.

Siquis presbyter ab Episcopo suo fuerit degradatus, aut officio pro certis crimini-
bus suspensus, & ipse per contemptum, & superbiam aliquid de ministerio sibi
interdicto agere præsumpserit, & postea ab Episcopo correptus, in cæpta per-
durauerit presumptione, hic omnimodis excommunicetur, & ab Ecclesia expella-
tur; & quicumque cum eo communicauerit, similiter se sciat excommunicatum.
Similiter de clericis, laicis, vel fœminis excommunicatis obseruandum est. * Quod
si aliquis ista omnia contempserit, & Episcopus emendare non potuerit, Regis iudicio
exilio damnetur.

NOTÆ.

1.

Antiochenſi. Ita etiam legitur in prima
collectione, *sub hoc tit.* *cap. 1.* sed aliqui-
bus verbis additis à Raymundo, aliis inuensis, ut
facile lectori constabit, si conferat textum hunc
provi hic transferatur ex dicta prima collectione
cum ipso canone, provi iacet apud Raymundum,
& provi habetur in ipso Concilio Antiocheno, &
in Codice canonum Ecclesiæ vniuersalis, ordi-
ne 83. ubi ita habetur: *Si quis Episcopus à Synodo
depositus, vel Presbyter, aut Diaconus à proprio
Episcopo, aut si fuerit aliquid de ministerio agere, siue
Episcopus secundum præcedentem consuetudinem, siue
Presbyter, siue Diaconus, nullam amplius in alia Syn-
odo spem resurrectionis, nec defensionis locum ei habere
liceat, sed & omnes ei communicantes ab Ecclesia
abiciantur, & maxime si postquam cognoverint sen-
tentiam adversus prædictos fuisse prolatam, eis com-
municare ausi fuerint.* Concilii, hoc Antiochenum
primum celebratum fuit sub Iulio Papa 1. anno
340. in quo Ariani Athanasium deposuerunt,
atque Gregorium Capadocem in eius locum sub-
stituerunt, et elegerunt Binius, & Coriolanus in
historia ipsius Concilii, P. Mareha lib. 3. concord. cap. 3.
Vnde canones in eo editos tanquam ab Arianiis,
& Eusebianis factos auctoritate careo docuerunt
Binius, & Coriolanus ubi supra, & texum in
cap. 1. 11. dist. 16. ubi inter Catholica Concilia hoc
revertitur, accipiunt de alia Synodo Antiochenæ,
cuius sex fuerint in ea ciuitate celebratæ; non verò
de hac prima. Et Bironius *tom. 3. anno 341.
num. 17.* Gratianum pestitit inter, eo quod in eo
textu canones Antiochenos inter editos à Catho-
licis enunnet. Sed licet verum sit, triginta sex
Episcopos Arianos in hac Synodo interfuisse, &
ita maiorem partem partem ex Arianiis fuisse, ta-
men Ecclesiæ canones ab eis editos, rectam disci-

plinam continentes, tanquam ab iniustus posses-
sionibus eripuit, & sæpe eis vis est, appellando Con-
cilium illud sanctum, ut in Concilio Triburenſi
cap. 2. Romano sub Leone IV. apud Baronium
tom. 10. anno 853. num. 39. Primò inserendo eos in
codice canonum Ecclesiæ vniuersalis, ut hodie re-
periuntur, ut refert Ant. Augul. lib. 1. de emend.
Gratiani, *cap. 11.* his verbis: *Canones Concilii An-
tiocheni recepti esse consuevit, & in corpore canonum
posita ante Concil. Chalcedonense, ut in eius Consti-
tut. ad. 12. Gratia, Latini 11. apparet; & ex libro eodem
Latino, quem eodem nomine Cyprianus canonicus dici-
mus. Idem refert Baronius *tom. 3. anno 341. num. 34.*
Etiam eisdem canonibus vis sunt Patres 6. Synodi
in Trul. vt ex secundo eius canone constet, relato
in *cap. placuit 4. 16. dist.* necnon probauit Diony-
sius, teste Eusebio lib. 7. *Justin. Eccles. cap. 24. & 25.*
Nicolai II. in *epist. ad Michaelen Imperat.* &
epist. 10. ad Episcop. & cleric. CP. In 8. Synodo
generali sub Hadriano II. lib. 7. Leo IV. ad *Episc.
cap. Britannia,* apud Baronium anno 853. *num. 28.*
Paschalis II. *epist. 24.* Illud tamen notandum est,
quod licet in Concilio Chalcedonensi, *ad. 4. ar-
que 11.* recitaretur duo canones Concilii Antio-
cheni, videlicet 16. & 17. tamen non vt ex Con-
cilio Antiocheno, sed vt ex dicto Codice canonum
Ecclesiæ vniuersæ citantur *num. 95. & 96.* vt ex-
tant in dicto codice. Cum ergo prædicti canones
Concilii Antiocheni reperirentur collecti, & in-
corporati in ipso codice canonum Ecclesiæ vni-
uersalis, præsentem canonem ex eo transcripserunt
Gratianus in *cap. si Episcopus 11. quest. 3.* Papiensis
in *dist. 1. collect.* à quibus accepit Raymundus, &
huic sextæ collectioni inseruit, & ex capitularibus
Caroli eum citat Cironius lib. 1. *obf. cap. 1.* & For-
san Carolus Magnus inseruit hunc canonem sua
Capitularibus ex Concilio Tolerano, quod illi
transmisit Helipandus Tolet. Archiepiscopus, &
in*

In bibliotheca Fuldensi in membranis litetis Gothice scriptum refert Bargas in fragmentis *Luitprandi*, mon. 77. vbi cap. 6. ita legitur: *Presbyter continuatur excommunicandus est. Si quis presbyter ab Episcopo suo fuerit degradatus, aut officio pro viciis criminibus suspensus, & ipse per contemptum, & superbius aliquid de ministerio: cetera desunt. Etiam textus hic ab aliquibus citatur ex Concil. Vercenſi celebrato sub Stephano III. con. 9.*

b. *Excommunicatum.*] Minor excommunicatione videlicet, iuxta ea, quæ dabimus in cap. significando, de sent. excom.

2. c. *Quod si aliquis.*] Verba quæ sequuntur transcripsit Raymundus ex Concilio Vercenſi con. 9. vbi ita habetur: *Excommunicatus in Ecclesia non debet intrare, nec cum vilo Christiano cibum, vel potum sumere, &c. Quid si aliquis ista omnia contempserit, & Episcopus eundem minime poterit, Regis iudicio exilio condemnare. Unde prior pars huius textus transcripta est ex dicto Concilio Antiocheno; secunda verò ex Concilio Vercenſi. De hac exilij pena, & quare desideretur requisitio Regis ad eam imponendam, egi in cap. 1. de communionariis.*

COMMENTARIUM.

3. **CONCIVSIO PROBAT.**
EX his duobus canonibus sequens deducitur assertio: *Presbyter degradatus, vel depositus celebrans, ab Ecclesia minime absconditur.* Probat eam textus in cap. si Episcopus 6. cum sequenti, cap. si autem 11. cap. alibi autem 14. 11. q. 1. 3. cap. Salernitana 63. dist. cap. accedens 10. 30. dist. ap. 3. cap. laterani 4. cap. fraternitati 6. cap. Apostolica 9. hoc tit. Faciunt textus in cap. de sacra. non inuad. cap. veritatis, de dolo & contum. cap. ut clericorum 15. 4. si quis igitur, de vita & honestate cleric. cap. 1. 9. secundum, de re iudic. lib. 6. cap. 1. 5. final. cap. de sent. excom. lib. 6. Consona lex 17. tit. 9. parit. 1. Illustrant Suarez de censur. disp. 1. 8. sect. 3. Petrus Gregor. lib. 4. parit. tit. 8. cap. 4. & lib. 32. symag. cap. 30. Couat. in cap. aliam remor. 1. par. 4. 6. num. 8. alij congesti à Cenedo ad Decretal. collect. 63. Barbosa in praesentia.

4. **IMPRONATA TRADITA ARRESTIO.**
Sed pro dubitandi ratione ita insurgo. Clericus degradatus omni privilegio clericali, & ecclesiastico foto primatui traditur Curia seculari & v. debijis penis puniatur, cap. nuntius, de P. Scap. in non ab homine, vbi late probatur, de iudiciis. Ergo si in presenti casu clericus erat degradatus, vt constat ex hoc capite 2. ibi, degradatus; non poterat postea ab Episcopo excommunicari, cum iam proleclus esset ab Ecclesia & erat iurisdictione, & maiori pena erat asseruendus ad iudice seculari. Accedit nam non peruenit ad degradationem clericus, nisi prius fuerit excommunicatus, & depositus; & tandem si incoercibilis est, degradatus, cap. cum non ab homine, de iudiciis. Ergo si in presenti casu excommunicatio præcesserat degradationem, ad quid postea excommunicatur, siue ab Ecclesia absconditur, cum iam per priorem excommunicationem esset à communione fidelium priuatus.

5. **EXPOSITVS PRÆSENTI ARRESTIO.**
Quæ dubitandi ratione non obstante vera est præfata assertio, pro cuius expositione scire oportet, præfatum textum generaliter concepi in hac sextæ collectione, quàm in prima, vbi tantum ita habetur: *De clerico excommunicato, vel depositus ministrante. Item de 10. aliquibus codicibus deest verbum depositus; sed Raymundus vt comprehen-*

deret omnes decisiones sub hac titulo compilatâ, adiecit ea verba, *depositus, vel interdictus*, vt notatur Ant. Augustin. in notis ad dictam 1. c. 1. c. 1. Bartolus, Panormit. Anania, & alij relati à Cenedo in collect. 25. ad Decret. & rectè, agitur enim in hoc titulo de penis, quibus afficiendi sunt clerici, qui cum essent ob viciis excelsis modò depositi, modò excommunicati, modò suspensi, modò interdicti, contempsit Ecclesie clausibus se ingentem audaciter fieri. De depositis agit in cap. 1. & 2. hoc tit. de interdictis, & excommunicatis in cap. 3. cap. 4. cap. fraternitati 6. cap. fin. De suspensis in cap. ad Apostolica 9. & idem ita generalis concepi debuit rubrica. Accedit, nam vt notatur Hostiensis, Anon. Panormit. & alij, præfatus titulus superioribus coniungitur, quia in illis actum fuit de viciis delictis, ob quæ excommunicatio, depositio, suspensio, vel interdictum insigniuntur, ideo in præfati titulo agitur de omnibus illis, qui contempsit prædictis censuris in gradibus suis ministrant.

Deinde sciendum est, quod deponere modò significat idem, acque rem alicui custodiendum addere, l. 1. §. depositus; quâ ratione etiam testium dicta depositiones appellantur in l. 3. Cui si minor se maiorem; quia qui testimonium profert, quodammodo veritatem sibi notam fidei iudicis committit: modò significat idem atque auferre, seu derelinquere; qui modo etiam dicimus deponere officium; unde quando quis officio, vel dignitate priuatur, deponi dicitur. Quare hanc penam propriam esse clericorum, docuerunt Bernard. Diaz in praxi, cap. 13. Suarez de censur. disp. 30. sect. 1. num. 2. argumentò capituli 2. 5. o. §. capituli 2. de penis lib. 6. quamvis aliquando extendatur ad religiosos, etiam si clerici non sint, immò & Abbatis, vt docet Suarez supra, quia & hæc sunt personæ ecclesiasticæ. Hæc depositio duplex est, alia verbalis tantum, alia verbalis, & realis: verbalis tantum est, quando clericus in perpetuum deponitur ab omni officio sine spe restitutionis, cap. Irregularium 1. quæ 3. cap. presbyter, 8. dist. cap. si clericus, 4. de adulterio, cap. cum non ab homine, de iudiciis: postquam plerumque clerici dicitur debent olim in nonaletia pœnitentia petagendæ causâ, cap. ius, de pen. cap. fuerit, 81. dist. 10. quia depositione aliqui accipiunt canonem 13. Concilij Arelat. 1. in illis verbis: *De his, qui scripturas sanctas tradidisse dicuntur, vel vasa Domini, ea, vel nomina fratrum furuiss, placuit vobis, vt quacunque eorum ex actu publici fuerit detectus, non verbis nudis, ab ordine Cleri amoveatur.* Sed non rectè, nam in eo canone potius agitur de suspensione, quam noluit Patres deinceps eo calu apponi, sed potius depositiorem, vt docuerunt Mozinus lib. 2. exercit. cap. 11. Bosquetus in notis ad Innoc. III. lib. 1. regeſt. 13. epist. 130. Realis depositio dicitur, quando non solum in verbis tantum, sed realiter, & solenniter clericus deponitur, & illi auferuntur ornamenta, quæ in ipsa ordinatione data fuerunt: de qua in Concilio Tolat. 4. cap. 27. ibi: *Episcopus, Presbyter, aut Diaconus, si a gradu suo iussu detestis in secunda sſione inuacens reperitur, non potest esse quod fuerat, nisi gradus amissos recipiat eorum altero de manu Episcoporum.* Si Episcopus est, aratrum, arulam, & baculum; si Presbyter, aratrum, & platum; si Diaconus, orarium & altum; si Subdiaconus, patenam & calicem; sic & reliquis gradibus ea in reparatione sui restituantur, quæ cum ordinarentur, perceperant. Eadem respect

6.
DEPOSITIO
TIT. 27. 109

repetit ex Concilio Magentino Gratianos in cap. *Episcopus presbyter* 13. *quasi* 3. Synodus 8. *ubi* 7. Cum enim clerici ordinabantur, eiusmodi ornamentis ornabantur, ut constat ex Capitulo Cath. 4. *can.* 5. *can. sequens*. Aequilant. *can.* 9. *Isidoro lib. 2. de offic. eccl.* cap. 6. unde eisdem in dispositione debebant spoliari. Illustrant Langleyus lib. 2. *fomesq.* cap. *prent.* et *ultimo*, Acuña in cap. *secundo*, 43. *dist.* *Lernastire lib. 2. de inflis.* *Episcop.* cap. 5. *Petrus Herodius lib. 1. Pandet. lib. 5. et lib. 3. tit. 4. cap. 5.* *Mortinus lib. 2. exercit.* cap. 11. Et alij, quos laudavi in cap. *quem non ab homine*, de *indulc.* Aliquando Ecclesie clericos non in perpetuum deponit, sed ad tempus, *cap. cum in cunctis*, 5. 2. de *recl.* *cap. ubi literis* 33. de *testib.* cap. 3. de *tempor. ordin. lib. 6.* veluti donec desisterint, & satisfecerint, *Clement. 1. de decimis* & hac pena propter suspensio dicitur, licet aliquando depositio suspensio appellatur, *cap. si quis Episcopus*, 83. *dist.* varia de suspensio, & de depositionis specibus tractat *Mortinus lib. 2. exercit.* cap. 3. *can. sequens*. & hanc suspensio nonnunquam pro levi culpa imponitur, *cap. presbyter* 2. *quasi* 13. *cap. inter*, de *purgat. crim.* innotuit pro maiori crimine, *cap. tam liberis* 33. de *testib.* *cap. in loco* 5. *quasi* 4.

Deinde sciendum est, depositionem modò fieri à beneficio, *cap. si quis episcopus* 23. de simonia, 1. modò ab officio, *cap. si quis Episcopus* 30. *diff. cap. si quis clericus* 10. 87. *diff.* modò ab officio, & beneficio, *cap. verius* 8. de *hila.* & *conum.* quas & alias depositionis differentias dodò illustrant Martinus lib. 3. *exercit.* *cap. 12.* Gibalin. de *confor. diff.* 7. *quest.* 13. Deposito à beneficio prius clericum ipso beneficio, in quo differt à suspensione, quæ tantùm prius perceptione fructuum. Suarez de *confor. diff.* 30. *sect.* 1. num. 3. & 4. Deposito ab officio modò ab his, quæ sunt ordinis tantum, *cap. si clericus* 4. de *iudiis.* veluti cum qui deponitur à sacerdotio officio, *cap. vel quidam* 10. 11. *quest.* 3. *cap. laicos* 4. hoc tit. vel à gradibus ecclesiasticis, *cap. 2. de perm.* lib. 6. modò ab aliis, quæ sunt etiam iurisdictionis, veluti eum qui deponitur ab Episcopali dignitate, *cap. quod ad translatum* de *revenue.* *cap. ut clericum* 13. 5. *quis ita* de *vita & benef.* cleric. aut à dignitate, honore, ordine, officio, ac beneficio, *vt in diff. cap. verius* 10. *cap. 1. ad fecum.* & *beni.* *diff.* 6. Cùm à iurisdictione quis deponitur, non tantùm ipsa iurisdictione priuatur, sed ipso munere iurisdictionis, in quo differt depositio à suspensione, quia suspensus priuatur vsu iurisdictionis, licet conueniant in eo, quod gesta tam per depositum, quam per suspensionem, nullius momenti sunt; quia quemadmodum ille non habet dominium iurisdictionis, ita hic priuatur à vsu. Suarez *diff. diff.* 26. *sect.* 3. num. 1. & *diff.* 30. *sect.* 1. num. 7. Cùm vero ab ordine depositio fit, vique ipso ordine depositus nec priuatur, nec priuari valet, *cap. quod quidem* 97. 1. *quest.* 1. *cap. essendur* 32. de *confor. diff.* 4. *cap. 2. quest.* 7. quia pect. characterem indelebilem gradus confert, qui prout Ecclesie depositione auferri non potest, vt probant Theologi scholastici in 4. *diff.* 23. Suarez de *crism.* *diff.* 30. *sect.* 1. num. 7. nec in hoc plus continet depositio ab ordine, quam suspensio, vt rectè notat Suarez *diff.* num. 7. Vnde puerum, quod adus ordinis (i. modò iurisdictionem non requirit, vt ab ipso sacramento

lis) gesti à depositis, validi sint, si modo depositus debita forma, & materia vtiatur cum legitimis iurisdictione, quia is retinet eandem ordinis potestatem, à qua eius divina institutione adus valorem, & efficaciam assequitur, si cetera necessaria concomitantur: quare rēdē adertit Sicuti vbi supra, *num. 7.* quod Episcopus depositus verē ordines confert; & facit mentum configurationis administrat; & sacerdos depositus validē consecrat, quoadmodum & suspensus, & degradatus; quia clericus depositus clericus maior, & clericus vocatur in presenti titulo, v. notavit Panormit. in c. 1. hoc tū. *num. 2.* & retinet privilegium clericale, *cap. si clericus 4. §. de adult. cap. cum non ab homine 10. de indic. cap. 16. 6. de iuris.*

His premiffis apparet iam ratio præfcriptæ af-
fectionis; nam cum Ecclefia non poffit adhibere
à clerico depofito græfos nullo redde, quemad-
modum reddidit iocundæ æmulationis ab eo
celebratum, ideo propofitis penis cape fapius
ftatuit, ne clericus depofitus attingere audeat mi-
nifterium fidei; Interdum, & ideo tam in *hæc*
*cap. 1. quàm 3. ftatuitur, ut fi Epifcopus, Presby-
ter, aut Diaconus à fuis gradibus pro certis criminibus fuerint depofitus, & nihilominus attentaue-
rint minifterium fibi antea commiffum, ab Eccle-
fia abfoluteantur, hoc eft in perpetuum excommu-
nificentur, & rectè; nam quoniam Ecclefia non
poffit charactèrem per facramentum Ordinis in
anima impreffum abolere, ac proinde nec ordinis
potellare clericum priuare; valet tamen perpetuo-
rum eius clericis interdum, faltem ne poteft, & licet
exerceant huius gradus officium, iuxta pote-
ftatem, quam habet Ecclefia ferendi cenfuras;
quod fin non fetuet clericus fimilem prohibitio-
nem, fed nihilominus pertinaciter contra eam
agat interdum fibi minifterium exercendo, con-
temptus quidem eſt clauum Ecclefie, & eccleſiaſti-
cæque potellatis, & ſuperbis, *cap. final. hæc rit. &*
præſumptio dicitur in hæc cap. 1. ibi: præſumptioſus
& cap. laicæ 4. ibi: præſumptioſus; & in aliis, hæc
rit. ſeu audiam, cap. 3. hæc rit. ibi: auſus furis; &
cap. ſi quis Epifcopus 6. 1. quæſt. 3. cap. ſalernitanæ,
ibi: Attingere audeat, 6. diſp. & temeritas, cap. 3.
hæc rit. ibi: Pro auſu tanta temeritatis. Vnde ob
ealem contemptum iuſſe clericis depofitus mini-
ſtrant abſcindantur ab Eccleſia, & modis omnibus
*excommunicantur.**

Nec obstat dubitatio ratio suprà expensa, nam in presenti non agimus de clerico degradato, Cur- tieque sacrali tradito, sed posuius de clerico de- posito, qui non tradebatur Curie sacrali. Nec interest, quod in cap. 2. hpc titulo, appelletur clericus degradatus, qui in veteribus Ecclesie ca- nonibus sæpiù degradatio ponitur pro depositio- ne, & pro eo delicto, pro quo in vno canone io- lungitur depositio, in alio imponitur degradatio, quasi eadem pena, veluti in canone 44. Apost. circa Episcopum vlturum litem eis cauetur: *Episcopus, &c. penam maiora datam cum finire exigens, vel efficit, vel depouatur.* Et eòdem repetitur canon hic in Synodo Nicæna, can. 17. & Trullana can. 10. ita habetur: *Clericus, si diacenus, & supra penam non commotes ad vltimas, &c. quod si qui ad- uersus hac statuta venire præsumpsit, communione censeat ab ordine degradetur.* Aurelian. 2. can. 26. ibi: *Evangelii sanctorum eius vltimorum possessor, secun- dum Patrum statuta degradetur.* Tarracon. can. 10. Illiberit. can. 20. ibi: *Si quis clericorum detulit sui- vltimas accipere, placuit degradari, & afflictum.*

8.

TRADE-
MARK
REGISTERED
IN THE U.S. PATENT
OFFICE

9.

DISSOL-
UTYL
FIBRAN-
EATION,

Quam poenam explicat Concilium Arelat. 2. can. 14. ibi: Si quis clericus pecuniam dedit ad usuram, depositus à Clero, à communione habeatur alienus. Similiter in can. 5. Apost. ita dicitur: Episcopus, vel Presbyter, vel Diaconus fornicationis, vel foris committens deponatur, & max. segregetur. Quam poenam ita explicant Patres Concilij Aurel. 4. can. 8. Si quis clericus fornicum, aut falsitatem admisit, quia capitalia sunt crimina, communione concessa, ab ordine degradetur. Notavit Morinus lib. 2. excoit. cap. 11. Vnde clericus, qui in cap. 1. hoc ut, dicitur depositus, in cap. 2. dicitur degradatus. Nec obstat augmentum ipsius dubitandi rationis, quia licet iam clericus in presenti casu fuisset depositus pro criminibus, tamen crescente malitia, per contemptum elationis ministrando in gradu interdicti amplius excommunicari valet, cap. cum non ab homine 10. de iudic. lib. 2. cap. capitulum 30. de rescriptis, Clement. 2. de sent. excom. sicut excommunicatus deponitur, cap. clericus, 63. dist. cap. laicos 4. hoc ut. Nec novum est, ut per duplici culpa, duplici quis puniatur poena, cap. ut clericum, vers. Si quis inquit, de vita & honest. cleric. Sane tamen hoc casu, & similibus diversarum rationum confusur, & ideo nihil impedit, quod eidem persone diversa poena imponatur propter diversa delicta, ut in presenti; sed etiam propter idem delictum, si in tantum crescat contumacia, ut nomen hanc poenam mereatur, ut latè docet Suarez de censur. disp. 5. sect. 2. num. 4.

Sed supra traditis obstat textus in cap. 4. si quis

anem, de re iudic. in 6. ubi statuitur, quod si iudex ordinarius, vel delegatus, suspensus, durante suspensione se ingesserit divinis officiis, irregularitatem contrahat, à qua non nisi per Romanum Pontificem possit absolui. Ex quo textu expresse deducitur, suspensionem ab officio ecclesiastico, & adhuc temere se ingentem divinis officiis, irregularitatem contrahere. Ergo non rectè in presenti docetur, tantum abstinendum ab Ecclesia, id est excommunicandum esse. Pro cuius textus solutione, omisso Cardinali in presenti, qui discrimen constituit inter clericos in maioribus ordinibus constitutos, & minoribus gradibus initiatos, ministrantes post suspensionem, ita ut primi irregularitatem contrahant, secundi verò tantum excommunicentur; quæ saluto facili refellitur ex traditis supra in cap. 1. verius dicendum est, ob violationem censuræ irregularitatem contrahere clericum suspensum post suspensionem celebrantem, cap. Apostolica 9. hoc ut. Similiter & clericum interdictum, cap. laicos 4. hoc ut. excommunicatum, ut dicemus in cap. sequenti. Vnde maiori ratione depositus celebrans irregularis fit, quia omnis depositio invaluat in se suspensionem. Nec in presenti negatur clericum depositum celebrantem, irregularitatem contrahere, sed amplius esse excommunicandum eum statuitur: quo modo etiam expendi, & exponi possunt textus in cap. 1. cap. cui 20. de sent. excom. in 6. cap. laicos 4. cap. fraternitatis 6. cap. postulasti 7. §. quævis, hoc ut. lunctis adductis in eorum commentariis.

Exponi
T. II. Cap.
I. DE EX
COMMUNICATA
IN 6.

10.

CAPVT III.

Alexander II. Londonen, Episcopo.

Clerici autem, si qui à suis, aut etiam de mandato Romani Pontificis ab alienis Episcopis interdicti, vel excommunicati ante absolutionem divina officia celebraverint, nisi moniti sine dilatione redierint, perpetuæ depositionis sententiam pro anso tantæ temeritatis incurrant.

NOTE.

11.

Londonen.] In prima collectione, sub hoc tit. cap. 3. legitur Thomeus, post Concil. verò Later. part. 26. c. 9. legitur Lincomiensis, & in quodam Codice Tarraconenfis, Londonensis, ut notavit Ant.

August. in presenti: quam litteram retinet, quia in dicta prima collectione, additur, per capitulum velatum; unde cognoscitur, in presenti textum partem textus in eorum, ne cleric. vel monachi, qui inscriptionem habet, Londonensis Episcopo. De diecepsi Londinensi egi in cap. 6. de censur.

CAPVT IV.

Idem Toletano Archiepiscopo.

Latores presentium cum tuis literis ad nostram accedentes presentiam, suum nobis excessum plenius intimarunt, scilicet quod tam ipsi, quam alij multi, postquam interdicti & excommunicati fuerunt, divina præsumperint officia celebrare. Quoniam verò cum eis magnam multitudinem in hoc peccasse dicebant, nec nobis qui eorum magis, vel minus deliquerint, innoscere potuit, negotium discretionis duximus remittendum, s. p. A. s. m. quæ rei veritate diligentius inquisita, si xl. solummodo, vel pauciores in his deliquisse constiterit, omnes in perpetuum ab officio sacerdotali deponas: si verò multitudinem magnam in hoc peccasse cognoveris, eos quos magis causam delicti esse constiterit, perpetuæ depositione condemnes, & alios, qui non tantum deliquerunt, ab officio ad tempus suspendas, & omnibus peccitentiam secundum discretionem tibi à Deo datam iniungas.

D. D. Gonzal. in Decretal. Tom. V.

Na

NOTE.

a **T**olerant.] Ita etiam legitur in prima collectione, *sub hoc tit. 4. de post. Concil. Later.* part. 50, cap. 51. De Primatiali Ecclesia Tolentana egi in cap. 10. et de in integ. restit.

b **XL. solummodo.**] Potest minusmodum esse ob numerum delinquentium, probatur in cap. 6. de sententia non ordin. cap. 11. de translat.

c **Ab officio.**] Et per consequens à beneficio, voluit Glossa in presentem, sed male, quia verius est suspensum ab officio, non semper suspensum esse à beneficio, ut probat Gibalinus de censur. disp. 7. quest. 12. 3. part. et dicemus infra in cap. ex litteris, de excessib. Pralat.

COMMENTARIUM.

I. **EX** his duobus decretalibus sequens communiter venit interdicta disputanda : Clericus interdictus, & excommunicatus celebrans deponitur, irregularisq; manet. Probant tam textus in cap. si quis presbyter 5. cap. si quis Episcopus 6. & 7. 11. quest. 3. cap. illud, §. ult. cap. ad Apostolicam 9. cap. si celebras, de cleric. excom. cap. veritatem 8. de dolo & contumacia, cap. 1. §. si quis, de re iudic. in 6. cap. 1. cap. si quis 12. de sent. excom. lib. 6. Ioan. VIII. ad Clericum Salernitanum, Zacharias Pontifex episc. 5. ibi : Hoc inquisisti, quid facientium sit de excommunicato Episcopo, & Apostolicam auctoritatem negligere. Hic detestabilis est coram Deo, & hominibus, cui condemnatio interdictum non communicabit. Carthag. can. 108. Placuit, ut quicunque non communicat in provincia propria, & in aliis promissionibus, vel transmissis parvis ad communicandum obsequiis, iustitiam communis, vel clericatus exipiat. Concilium in Germania sub Conrado Cardinali Portuensi L. S. A. anno 1215, can. 6. Multi nomine sacerdotes censuram ecclesiasticam evadentes, excommunicati à Prælati ipsorum, exigentibus culpis suis, & immemores, quod Episcopi & Prælati clerorum regni celestis collata sit potestas, arreolare sibi divina mysteria non gerunt, &c. Statuimus igitur, ut tales sine ipso restitutionis ab officio, & beneficiis deponantur, & rursus, & inestabiles sint, & de cetero ad beneficia ecclesiastica nullo modo admittantur, nisi per penitentiam approbata, & conversionem laudabilem Sedis Apostolica graviori meruerit obtinere. Innocent. III. lib. 1. regest. 15. episc. 57. ubi Episcopo Zamorensi ita scribit : Orate penitus, & indignum, quod cum venerabilis frater noster Portugalis Episcopus, post divinus persecutionis angustias, quæ a christissimo in Christo filio nostro Illustri Rege Portugalia. & eius nostris sustinuisse minister, causis devotum fuga præsidio custodit violentis, beneficiis suis, non solum ecclesiasticis, verum etiam patrimonialibus decessit, compulsi sit pariter tum. Decano suo, & aliis, licet paucis, tribulationis propria participibus, pro commissis sibi Ecclesie libertate ad Sedem Apostolicam confugere quasi nudas : Canonici Portugali. Ecclesia, quæ eius, repositi boni Partis, oppressibus compati decessit, non solum filialis compatiemur dicuntur ei subrexisse solatium, quantum tanto nocentiori aliis, quantum penitus familiaris solat lachrymæ iniunctis, sciendū aduersus ipsam temeritate sua probasse videtur extraneis intentionem : dum tam ipsi, quam Ecclesia immortale Portuensi excommunicationi subiecti, divina non erubuerunt officia celebra-

re, contempto temerè interdicto primo, vel secundo per eandem Episcopum promulgato, super quo non relaxanda ad Sedem fuerat Apostolica appellatio : & peritiora nihilominus vilipens, quod talem Canonici dispensent circa præsentem negotium incurrisse. Nolentes igitur tantam præsumptionis audaciam relinquere incorrellam, discretam vestra per Apostolica scripta mandamus, & districte precipimus, quod inquisita, & cognita veritate, si rem inmentis ita esse, Canonici, & Portuensis memoratos sublimis cuiuslibet contraditionis & appellationis obstaculo, beneficii ecclesiastici, & officii spoliati. Nisi sensum ad interuenientem & consilium præfati Episcopi, temperandum duxeritis huius canonici disciplina rigorem. Volumus insuper, & precipimus, ut circa omnia, quæ præmissa sunt, tam supra principali, quam supra incidenti, aspectu, postposita procedatis. Quod si non omnes, &c. Ita ergo frater Episcopus cum coram altero, &c. Datum Laterani. III. idus May, P. anno tricesimo. Illustrant vltra congellos à Barbosa in presentem, Petrus Gregorius lib. 4. part. 12. cap. 1. Couartua in cap. alius, part. 1. §. 8. numer. 1. Sayrus lib. 2. Theorari, cap. 22. numer. 27. Suarez de censur. disp. 11. sect. 3. Alterius eod. tract. lib. 2. disp. 1. cap. 1. Auila eod. tract. part. 7. disp. 9. sect. 2. Bouacina quest. 3. de irregul. punct. 5. numer. 1. Gibalinus de irregul. cap. 3. quest. 2. consell. 1. Cottojo in 3. part. disp. 6. de irregul. dub. vnic. quest. 1. Leander eod. tract. disp. 21. quest. 2.

Sed pro dubitanda ratione in presentem assertionem argumentor ita. Irregularitas tantum incurritur in casibus à hanc expressis, cap. 12. in 12. de sentent. excom. lib. 6. Sed in nullo iuris testimonio inuenitur expressa irregularitas, seu statuta contra excommunicatum celebrantem divina officia. Ergo excommunicatus celebrans pendente excommunicatione, non manet irregularis. Probant minor, nam suprà laudati Doctores, qui hanc irregularitatis speciem agnouerunt, eam deduxerunt ex cap. si Episcopus 6. non sequenti, 11. quest. 3. & ex iustis complicitis in presentem rimis, ut agnouit Suarez ubi supra. Sed in nullo ex eis tali irregularitatis expressis statuitur. Non in dicto cap. si Episcopus, quia in eo agitur de Episcopo, aut presbytero deposito, non vero de excommunicato, ut probatur suprà in cap. 2. ubi idem canon Concilij Antiocheni reperitur. Non in cap. si quis Episcopus, sequenti, quia in eo tantum Martinus Bracharensis transcripsit dictum canonem §. Concilij Antioch. & suæ collectionis inscripte sub num. 37. & in ea versione ex Græco autographo pio depessum, seu damnatum, posuit excommunicatus, ut constat ex ipsa collectione Martini Brachar. quæ extat inter Concilia Hispanie edita à Loaysa, fol. 185. vnde eadem explicationem habet textus ille de antecedenti, cum continet eandem sententiam. Nec in presentem titulo satis expressa reperitur prædicta irregularitatis poena. Non in cap. 1. & 2. quia in eis agitur de clerico deposito, non vero de excommunicato, ut in eorum notis probatur : & in cap. clerici 3. licet agatur de clericis excommunicatis celebrantibus, non imponitur irregularitas, nec vlla poena, quæ incurritur ipso iure ; sed tantum iubetur ut ita celebrantes, si moniti non desistant, in perpetuum deponantur per sententiam ferendam. Similiter in cap. laudes 4. Alexander III. tantum committit sententiam ferendam. Deinde

2.
INSTRUMENTA
AD
RESTITUTIONEM

in cap. illud §. tantum asserit Innocentius III. se non infringere Episcopo celebranti post excommunicationem poenam hoc casu per sacros canones statutam; non tamen exprimit, quanam poena illa sit. Deinde in cap. fraternitatis 6. tantum inbetur, clericum excommunicatum celebrantem spoliantum esse beneficiis obtentis; & de poena etiam ab homine ferenda agitur in cap. postulasti 7. §. quatinus. Tandem in cap. Apostolica 9. agitur de clericis suspensis celebrantibus, non vero de excommunicatis: unde eum nullo iuris testimonio repetitur expressa hæc irregularitas, non est cur a Doctoribus admittatur.

Quæ dubitandi ratione non obstat, defendenda est præsentis assertio, cuius ratio, præmissis iis, quæ de effectibus excommunicationis maioris dabimus in cap. 8. de sententia excom. vera ratio provenit ex eo; nam cum ligatus maioris excommunicatione priusquam sit percipiente sacramentorum, & facultate ac consentendi, se ingerendo divinis ministeriis, lactaque officii celebrando graviter peccat, argumentum capitis si celebrat, hoc iur. in contemptum eluimus Ecclesiæ temere usurpando ministerium sacrum sibi interdictum; quare meritis in perpetuum deponatur, & irregularis manet, ut ita puniatur, in quo peccavit, cap. nullus, de temporibus ordin. lib. 6. videlicet quia peccavit celebrando sacrum ministerium illi interdictum in perpetuum, irregularis manet, ut illud amplius celebrare nequeat. Et irregularitatem contrahi à clerico excommunicato ministerante, probatur sequentibus iuris fundamentis. Primum deducitur ex dist. cap. si celebrat, hoc iur. ubi deciditur questio satis vexata apud Interpretes, an qui minori excommunicatione tantum ligatus Missam celebravit, maneat irregularis. Quæ dispositio, seu questio procul inutilis, & superflua esset, si maiori excommunicatione ligatus celebrant divini officia nullam irregularitatem incurrit: & ita argumentum, quod deducitur ex dist. cap. si celebrat, non est à contrario sensu, sed à cessante ratione dubitandi. Secundò, nam excommunicatus suspensus est à propriis ordinibus, administratione videlicet sacramentorum, & celebratione divinatorum officiorum pro tempore, quo persistit in excommunicatione: sed suspensus celebrans durante suspensione fit irregularis, cap. Apostolica 9. hoc iur. cap. 1. §. si quis, de re iudic. lib. 6. Igitur multò magis excommunicatus Missam celebrans irregularis efficitur. Quod argumentum de parte ad totum appellat Pater Suarez ubi supra, & meo videri concludens est. Eodem modo arguendum est à clerico interdicto, qui divini officia celebrando irregularis efficitur, cap. in cui 20. de sent. excom. lib. 6. Tandem quia in præsentis textu, & in disto cap. fraternitatis, hoc iur. cap. veritatis 8. de dolo & contum. clerici excommunicati Missam celebrantes in perpetuum deponuntur, & beneficiis iam obtentis privantur: quæ poena parum, aut nihil differt ab irregularitate.

Manet ergo, veram esse communem Doctorum sententiam, videlicet clericum excommunicatum Missam celebrantem, aut divinis officiis se ingentem, irregularem manere. Unde inferitur conclusio ad varios casus: & primò deducitur, excommunicatum iam deum fieri irregularem, si exerceat ministerium ordinis sibi interdictum: quare ipse recipiens ordinem non manet irregularis, sed suspensus, cap. 1. de eo qui fuerit, cap. cum illorum, de sententia excom. quia

in receptione ordinis non exerceat actum sibi interdictum, ut docuerunt Cognatus, in cap. alma, c. part. §. 6. num. 6. Suarez de censur. disp. 31. sect. 2. num. 57. tametsi contrarium teneant Navarrus in manuali; cap. 27. num. 241. Avila de censur. part. 7. disp. 9. sect. 1. dub. 6. Similiter si quis prohibebatur sub censura celebrare, & violet prohibitionem celebrando, incurrit quidem censuram, non tamen fit irregularis, eo quod nunc non violat censuram, sed eam contrahere videtur. Et quamvis post consecrationem iam censuram illam incurrit, & Missam profectur, non fit irregularis, quia moraliter est una actio, Suarez de censur. disp. 31. sect. 1. num. 77. Bonacina de irregul. disp. 7. quest. 3. punct. 5. num. 8. Deinde si actus ordinis, quo violatur censura, fuerit inualidus ratione matris, aut subiecti, nihilominus incurritur hæc irregularitas, veluti si clericus excommunicatus solenniter baptizat infantem non debita materia; vel si sacramentaliter absolvat hominem, qui reverè carebat dolore necessario ad valorem sacramenti. Ratio est, quia reverè violatur censura per exercitium ordinis. Si tamen actus fuerit nullus ex defectu ordinis, vel intentionis, non incurritur hæc irregularitas ob exercitium factum, & dumtaxat vsum apparentem, ut docet Suarez disp. 11. sect. 2. §. 3. num. 16. sed si ordinis exercitium non sit prohibitum quoad substantiam, si duntaxat quoad modum extrinsecum, & accidentalem, non fit irregularis, si quis eo modo exerceat: exempli gratia si Episcopus fuerit suspensus à Pontificali-bus, non incurrit hanc irregularitatem, etsi Missam celebret cum eo apparatu, ut docent Layman lib. 1. tract. 5. part. 5. cap. 3. num. 4. Zerola in præxi Episcopo Irregularis 18. Secus est, si clericus suspensus exerceat actum, qui facit est ratione modi accidentalis, veluti gratia si parochus benedixit solenniter nuptias, vel excomulias sacras baptismi faciat, etsi non conferat baptismum, Suarez dist. disp. 11. sect. 1. num. 19. Giballin. de irregul. cap. 5. quest. 2. confess. 8. Philateus lib. 4. cap. 23. non tamen excommunicatus fit irregularis, etsi violet censuram per exercitium aliquod iurisdictionis: ac proinde poterit ferre censuras, & ab eis absolvere, non tamen cum solennitate Rotali, &c. præcum, ut observat Layman ubi supra. Item parochus poterit assistere matrimonio, eo quod non est propriè actus ordinis, seu iurisdictionis, etsi contrarium tenuerit Maiolus de irregul. lib. 3. cap. 19. Similiter irregulares tunc sunt Subdiaconi, & Diaconi canentes solenniter Epistolam, vel Evangelium, eum vestibus sacris sibi propriis utuntur, secus si Subdiaconus non utatur manipulo, vel Diaconus stola: quod si Subdiaconus ealium & patenam deferat ad altare, & Diacono ministret, probabile est non propterea manere irregularem, eo quod illud non sit munus proprium Subdiaconi: secus erit si Diaconus excommunicatus, suspensus, vel interdictus dispenset Eucharistiam ex licentia, vel sine illa, aut solenniter baptizet. Talem sciendum est, in hæc irregularitatem attendendum esse privatum materiam: ut ita actus benedictionis Episcopalis absque solennitate in iuncte non sufficit ad inducendam irregularitatem, tamen si pertineat ad ordinem Episcopalem, c. Abbas, de privatis lib. 6. ut docent Suarez de censur. disp. 12. sect. 2. num. 21. Bonacina dist. 9. punct. 9. n. 3. Similiter si clericus suspensus priusquam horas recitans dicat, Dominus vobiscum. Suarez

ubi supra, num. 13. vel si quis faciat officium hebdomadarij in eho-
re mote monialium, vi pro-
bat Leander *de irregularitatib.* 2. *disp.* 20. *quest.* 19. &
disp. 21. *quest.* 15. prosequitur alios cuius Giballi-
nus *dist.* cap. 5. per tot. & de celebrante in excom-
municatione minori agemus *infra* in c. si celebrat:
& de excommunicato faciente eotam se celebrare,
infra in cap. illud, dicemos.

§.
Dissol-
vitur
detrac-
tio ratio.

Nec obstat dubiandi ratio *supra* adducta, quā
motus perdoctus Pater Didacos de la Fuente
Hurtado Societatis Iesu, vir acutissimi ingenij, &
omnigenæ eruditionis, quem sub ommoe cuius-
dam neotericæ refert Leander *dist.* *quest.* 2. *fol.* 216.
existimavit clericum excommunicatum ministran-
tem non fieri irregularem, eo ductus vniico funda-
mento, quia talis irregularitas non reperitur in
iure expressa. Verum licet non exet canoo dis-
cretus, in quo clericus excommunicatus, vel diuinis
officiis se ingerere pronuncietur irregularis; satis
tamen hæc pena exprimitur verbis æquo pollenti-
bus, quibus Ecclesia in aliis delictis irregularita-
tem indixit. Supponimus enim oomen hoc *irre-*

gularitas, iure antiquo incognitum fuisse & quæ
ad tempora Innocentij III. & Gregorij IX. vt
pro expositione textus in *dist.* cap. si quis Episcopus
p. 6. & 7. 11. *quest.* 3. notatur in cap. si celebrat,
hoc tit. Antoo. num. 13. & Additionator Panormi-
t. num. 6. *littera E*, columna 4. Vnde tam Innoce-
ntius, quàm Gregorius vt caperuot prædicto
verbo in cap. nisi cum pridem, de renunc. cap. si ce-
lebrat, hoc tit. Quare in Decreto Gratiani nulla
mentio fit irregularitatis; & tamen in canoni-
bus in eo compilatis plerumque imponitur ire-
gularitas variis verborum formula, quæ refe-
runt, explicantque Sotarez *de censur. disp.* 40.
sect. 8. Msiolus *de irregul. lib.* 1. cap. 1. Vnde
rectè commouet omnes, tam Theologi, quàm
Iurisperiti de irregularitate scribentes in hoc
casu irregularitatem agnoscunt, etiamque pro-
bant ex præscriptis capitulis 3. & 4. & non male
deducitur ex *dist.* cap. veritatem 8. de dolo & cen-
surarum: quem textum adhuc à nemine perpen-
sum vidi; faciuntque irresistibilia argumenta su-
pra pro ratione decedendi adducta.

CAP V T V.

Idem Capitulo^a Herbipolensi.

Illud Dominus in beato Petro. *Et infra*: Ven. f. n. quondam Ildefemensis^b Episcopus
Imperialis aulae Cancellarius, non attendens, quod multa sunt, quæ præter specia-
lem auctoritatem Ap. Sed. de iure non possent, nec deberent impunè ab aliquibus at-
tenuari, vtpote^c cessiones, & translationes Episcoporum, & alia, quæ nota sunt vo-
bis; non solum non obtentâ licentiâ, sed nec etiam postulatâ, Ecclesiâ Ildefemensî
relictâ, Herbipolen. Ecclesiam occupauit. *Et infra*: Vnde nos præsumptionem ipsius
debitâ volentes animaduersione punire, v. f. n.^d Magdeburgen. Archiepiscopo, &
aliis quibuscumque in Teutonia constitutis dedimus in mandatis, vt cum factum ipsum
non posset in partibus illis non esse notorium, nisi dictus Episcopus infra xx. dies post
suscceptionem litterarum, quas super hoc ipsi direximus, ab Herbipolen. Ecclesiâ admi-
nistratione cessaret, eum excommunicatum publicè nunciarent, & excommuni-
cationem eius facerent pulsatis^e campanis, & candelis accensis, festis diebus, &
Dominicis innouari: quod idem Magdeburgen. studuit adimplere. *Et infra*: Ipse ve-
rò Episcopus in nostra postmodum præsentia constitutus, etsi suum recognosceret,
& confiteretur excessum, & non iudicium, sed misericordiam postularè; hoc ta-
men inter alia in suam excusationem proposuit, quod cum dictus Magdeburgen.
non esset ordinarius iudex eius, non crediderat, quod admonitione non^f præmissâ,
auctoritate delegatâ posset procedere contra ipsum, aut sententiam in eum aliquam
promulgare. Vnde cum nec ante factum communitorias, nec post factum litteras
ab eo aliquas accepisset, peccare non credidit, si diuina officia, quantumcumque
solemniter, celebrauit, præsertim cum ei non nisi per^g famam de sententia contra
eum prolata constaret. Quod autem postquam se nouit excommunicatum à nobis,
diuina sibi fecerat officia^h celebrare, & communioni fidelium se ingesserat frequen-
ter, id non in contemptum Ap. Sed. vel etiam tanti sacramenti, sed spe veniæ assensu se
fecisse, ne videlicet induresceret amplius, vel diuinius eius animus proteruiret, si nun-
quam diuinis officiis interesset: licet in diebus solennibus nunquam se celebrationi
diuinorum ingesserit, & cum paucis in angulo alicuius Ecclesiæ occultè non festi-
uis diebus diuina sibi fecerit interdum officia celebrari. Licet autem in primo capi-
tulo non videatur omnino culpabilis exiuisse, quia tamen in dubiis via est tutior eli-
genda, etsi de lata in eum sententia dubitaret, debuerat tamen potius abstinere,
quàm sacramenta ecclesiastica pertractare. Illud autem, quod sub spe ve-
niæ diuina sibi fecit, postquam se à nobis excommunicatum nouerat, celebra-
ri, & fidelium orationi se ingessit, potius contra eum facere credimus, quàm
pro

pro eo; cum ex fiducia penitentiae non debuerit deliquisse, & excommunicatos non vitare, multò magis quam non vitari periculosum extat: non vitare siquidem, cum in eo sit, excommunicatus sine delicto non potest; sed cum ex aliis pendeat, sine suo peccato poterit non vitari: & ita eum eo misericordiam facientes, penam, quam canon iis, qui post excommunicationem diuina praeiungissent officia celebrare, vel qui celebrationi se ingesserint diuinorum, ei non duximus, infligendam.

NOTÆ

1. **H**erbipolensi.] Ita etiam legitur in tertia compilatione, sub hoc tit. cap. 1. sed cum non extet præfens epistola Innocentij inter editas à Sarleto, & Bosqueio, ideo integram restituere non possumus: huius tamen translationis Hildesemensis Episcopi mentio extat in cap. quanto, de translat. Episcop. ubi de diocesibus Herbipolensi, & Hildesemensi nonnulla notat in dist. cap. quanto, de translat. Episcop.
2. **Episcopus.**] Conradus videlicet à Rabensperg. Philippi Regis Romanorum Cancellarius, dehinc Lubecensis, demùm Hildesemensis, tandem Episcopus Herbipolensis, ut refert Bucelinus Germaniæ sacræ part. 1. in serie Episcoporum Hildesemensium.
3. **Censures, & translationes.**] De quibus, & eorum prohibitione, legi egi in cap. 1. de renunc. cap. 1. de translat. Episcop.
4. **Magdeburg.**] Litet huius delegationis extant in cap. quanto, de translat. Episcop.
5. **Pulsatio campanarum.**] Iuxta morem pronuntiandi anathema, quem illustravi in cap. cum non ab homine 10. de indic.
6. **Admonitione non promissa.**] Quæ excofatio incoogrua non videbatur, siquidem excommunicatio profertur non potest, nisi præcedente trina monitione, cap. sacro 48. de sent. excom. sed verbum hoc admonitio, non est accipiendum de monitione, quæ præcedere debet quamlibet censuram, sed de admonitione, quam debet facere quilibet iudex delegatus litterarum suæ delegationis, antequam illis vel incipiat, iuxta textum in cap. cum in lura, & ibi tradita, de offi. delegat. unde rectè Conradus ibi præfenti aiebat, quod cum Magdeburgensis Archiepiscopus non esset ipsius iudex ordinarius, sed ut delegatus procederet, debebat prius intimare litteras suæ delegationis; &

ideo Innocent. dixit propter hanc excusationem non extitisse omnino culpabilem.

7. **Famam.**] Similis excusatio opposita, & relecta fuit in cap. 1. de postulat. Prælat.

8. **Celebrare.**] Vnde dubitari poterat de ipso celebrante coram Episcopo excommunicato, necnon de Episcopo iubente coram se celebrare, an irregulares considerent? Et quoad ipsum celebratorem certum est, non maiore irregularem, ex cap. is cui 18. de sent. excom. & docent Soares dist. diffinit. 12. de censur. sect. 1. num. 10. Altrius eodem tract. diffinit. 13. lib. 1. cap. 2. Ratio est, quia hæc irregularitas imponitur violanti propriam censuram, & exerceati ministerium ordinis sibi prohibitum, propter contemptum, qui hoc casu non datur. Ex eadem ratione dicendum est, Episcopum in præfenti specie iubendo coram se diuina officia celebrari, irregularem non contrahere, eum ipse per se non exerceat ministerium sibi interdictum, nec violat censuram ipse celebrando, ut pluribus relatis testabatur Diana part. 4. tract. 2. res. sol. 57.

9. **Multo magis quam non vitari.**] Sed cum correlatiui sint, & quali duo extrema excommunicatus, & alij qui eum vitare debent, quomodo periculosum esse potent communicare, quam communicari? Sed dicendum est, quod etsi pares sint, non adeo pares iudicantur, quominus secundum rectam rationem ex parte materie maior sit obligatio excommunicati vitandi alios fideles, quam fidellum vitandi ipsum excommunicatum, quoniam ratio illius prece, & culpa in ipso est: tum etiam, quia prohibitio hæc commuicandi magis directè in ipsum tendit, ut docuit Balboa in cap. exceptionem 12. de except.

10. **Panam.**] Depositionis videlicet perperoræ, iuxta tradita in cap. 4. hoc tit. ex quo commentatio, & ex adducendis in cap. ad Apostolica, hoc tit. præfens commentarium petendum est.

CAPVT VI.

Idem ² Bisuntino Archiepiscopo.

Fraternalit tuz. Et infra: Presbyteros autem, & alios clericos tuz dicec. qui pro suis excessibus à te nexibus anathematis canonicè innodati præsumperunt, vel præsumunt diuina officia celebrare, rationabiliter potes omnibus beneficiis ecclesiasticis spoliare.

NOTÆ

1. **Bisuntin.**] Ita etiam legitur in tertia collectione, sub hoc tit. cap. 2. & in ca. fraternalitatis, de eo qui cognominis consangu. n. & in cap. fra-

ternitati, de schismatice, ubi extant alie partes huius decretalis. De Bisuntina Metropoli egi in c. 14. de accusat. & commentarium huius textus disti supra in cap. 4.

CAPVT VII.

Idem Maiori Decano & Priori * Colonienſi.

Postulaſtis per Sed. Ap. edoceri. Et infra: Conſequenter quaſiuiſtis, utrum clericis, qui dum eſſent excommunicationis vinculo innodati, eccleſiaſtica beneficia ſuor adepti, eadem, poſtquam abſolutionis beneficium obtinuerunt, licitè valeant retinere: poſtulares nihilominus, quā pœnā corripī debeant Abbates & Abbatieſe, & alij Eccleſiarum Prælati, qui ſcienter clericis excommunicationi ſubſectis eccleſiaſtica beneficia contulerunt. Ad quod vobis taliter reſpondemus, quod cum excommunicatis * communicari non debeat, clericis excommunicationis vinculo innodatis eccleſiaſtica beneficia conferri non poſſunt, nec illi valent ea licitè retinere, niſi forſan cum eis fuerit miſericorditer diſpenſatum, eum ipſa non fuerint canonicè conſecuti. Illi verò, qui ſcienter illa beneficia talibus contulerint, tamdiu debent à beneficiorum collatione ſuſpendi, donec ſuper hoc veniam conſequi mereantur, ut puniantur in hoc, io quo delinquere præſumpſerunt.

NOTÆ.

2. * *Colonienſi.*] Ita etiam legitur in tertia collectiōne, ſub hoc tit. cap. 3. non tamen ex-
at præſens epiſtola inter editas à Silero, & Boſ-

questo: quare integre eius caremus. De Colonienſi Germaniæ diœceſi egi in c. 7. de arce, & qualitate & commentarium dabimus ſequenti textu.

b *Communicari.*] Cap. ſignificatiōis, de ſent. ex-
com. ubi latè dicimus.

§.

Quæſiuiſtis præterea, qualiter puniri debeant clericis, vel monachi, necnon & moniales Eccleſiarum coœuentualium, qui poſt latam ſententiam in locis ſuppoſitis interdictio præſumpſerunt hæteous, & adhuc etiam non verecort diuina officia celebrare, quamvis propter hoc ſint excommunicationis vinculo innodati. Ad hoc breuiter reſpondemus, quod clericis, qui talia præſumpſerunt, ſunt eccleſiaſticis beneficiis * ſpoliandi. Monachi verò, vel moniales in ætioribus monaſteriis ad peragendam ſunt pœnitentiam recludendi.

NOTÆ.

3. * *Spoliandi.*] Et hodie clericis violantes interdictionis localis cenſuram ſcienter, manent irregulares, cap. in qui 18. cap. in cui 20. de ſent. ex-
com. lib. 6. dñcent plures congeſſi à Leandro de irregul. traſſ. 2. diſput. 2. 1. queſt. 10. Sed cum in Eccleſia generaliter interdictione poſſint celebrari licitè diuina officia, ſeruatim conditinnibus præſcriptis in cap. alia, de ſent. excom. lib. 6. inde non erit irregularis, qui eo modo celebrauerit: immod etiam ſi una ex eisdem conditionibus nñſtatur, non ideo incurrit irregularitas, eo quod non videtur gra-

ue peccatum nñiſſum vnius conditionis, ut tenent Tarrus de cenſur. diſput. 49. dub. 5. Giballin. de irregul. cap. 5. queſt. 2. conſeſſ. 9. mon. 22. Diana p. 5. traſſ. 10. reſol. 65. Similiter irregularis non manet, ſi faciat actum non ſpectantem ad exercitium ordinis, veluti ſi pulſet campanas, iannas aperiat, vel præbeat auctoritatem celebrationi diuinorum officiorum, ut cum aliis reſoluit Leandro de irregul. traſſ. 2. diſput. 23. queſt. 6. qui per totam illam diſputationem variis caſus reſoluit circa hanc irregularitatem ex violatione interdictionis prouenientem. De interdictione autem, & eius uſu nonnulla adduxi in cap. 2. de his qua ſunt à Prelati.

CAPVT VIII.

Idem Decano, & Subdecano * Piſtauieſi, & Magiſtro P. Amico de Longouado, canonico * Piſtagoricenſi.

Propoſuit olim dñectus filius Magiſter P. clericus ven. ſ. n. Episcopi Tuſculani, coram dil. fil. P. ſanctæ Lucie ad Septa Sol. Diacono Cardinali, quem ſibi, & Pœnitentiario * Lemouienſi conceſſimus auditorem, quod dil. fil. G. ſanctæ Mariz in Portien Diacōno Cardinali io partibus illis Ap. Sed. legationis officio fuogegore, quidam de Lemouienſibus Canonici ei humiliter ſupplicauerot, ut in eorum Eccleſia, quæ debito fraudabatur ſeruitio clericorum, Canonicos ordinaret, pro ſe, ac Magiſtro eodem ſcriptore noſtro preces ſpecialiter porrigentes. Ipſe verò Lemouienſem ciuitatem ingreſſus

ingressus, Canonicos interpositis precibus monuit, ut illos reciperent in socios, & in fratres, maximè cum quinque præbendæ, vel quatuor ab ultima ipsius Ecclesiæ ordinatione vacassent. Qui monitione ipsâ deuotè susceptâ, deliberationis inducias petierunt, post quas primò, & secundò concessas, non curantibus respondere, de duabus præbendis Lemouicenis. Ecclesiæ Cardinalis prædictus eosdem clericos inuestiuit. *Et infra*: Si verò probaret ipsum excommunicatum tunc temporis extitisse, non postponerent, quod de ipso factum fuerat, reuocare. Qui mandatum Apostolicum exequentes, vtriusque partis receptis testibus, rationibus, & allegationibus intellectis, eandem causam sufficienter instructam ad nostrum remiserunt examen. Cum autem propter hanc tam sæpèdictus Magister, quam Pœnitentiarius in nostra fuissent presentia constituti, & acta ipsa inspicere fecerimus diligenter, & per Pœnitentiarii testes intelleximus factam fidem, quod Vv. fr. noster Lemouicen. Episcopus pluribus annis antequam Magister P. fuerit inuestitus, & clericis, & ⁴ burgen- ses castri Lemouicensis, atque eundem P. nominatim, quem eorum dicebat consilia- rium, & fautorem, vinculo excommunicationis astrinxit. Per testes verò Magistri P. probatur, quod isti dictus Episcopus in burgenfes, & eorum fautores, tam clericos, quam laicos Lemouicen. excommunicationis sententiam protulisset, eos tamen antè per tres annos absoluit, quàm Magister fuerit inuestitus, quibuscumque presbyteris vsque ad certum tempus in excommunicatione retentis, qui contra sententiam interdicti præsumperant celebrare, quodque idem Episcopus dicto Magistro communicauit postea in Ecclesia, & in mensa. His igitur, & aliis, quæ vtraque pars proposuit coram nobis, intellectis, quia iuxta mandati nostri tenorem supralapsi sumus Magistru P. inuestituræ suæ tempore à prædicto Episcopo excommunicatum extitisse dictum Pœnitentiarius sicut obtulerat, non probauit, cum ex aduerso de absolutione, & communicatione dicti Episcopi fides fuerit facta, quod per dictum Legatum de memorato Magistro P. factum est, de statum nostrorum consilio per definitiuam sententiam duximus approbandum.

NOTA.

^a *Pœnitentiarius*.] Ita etiam legitur in quarta collectione, *sub hoc tit. cap. 1.* non autem reperitur hæc epistola inter editas à Sirleto, & Boschetto, quare eius integrâ caremus. De Pictauiensi diocesi nonnulla adduci in cap. 10. de *rescriptis*. Similibus autem missa Petro Canonico Lemouic. reperitur in editione Bosqueti lib. 1. reg. 3. *epistol.* 101. quam ut conferas cum præfati libenter transcribo: [Proposui dudum coram dilecto filio P. S. Lucie ad Sēptā Solis Diacono Card. quem iubi, & Pœnitentiario Lemouic. concessimus auxilium: Quod cum dil. fil. nostro G. sanctæ Mariæ in Porticu Diac. Cardin. tunc in partibus illis Ap. Sed. Legato, quidam de Lemouicenis. Canonici supplicassent, ut in eorum Ecclesia, quæ debito fraudabatur seruitio, clericos ordinaret, pro te ac Magistro A. scriptore nostro preces specialiter porrigentes, ipse Lemouiceni: ciuitatem ingressus, canonicos interpositis precibus monuit, ut vos reciperent in socios, & in fratres, maximè cum quinque præbendæ, vel quatuor ab ultima ipsius Ecclesiæ ordinatione vacassent. Qui monitione ipsius deuotè susceptâ, deliberationis inducias petierunt: post quas primò & secundò concessas, eis non curantibus respondere, de præbendis Lemouic. vos inuestiuit Card. prædictus, statim in choro, & locum in Capitulo vobis præcipiens assignari: quod quotandam impediote malitiâ, non extitit executioni mandatum. Vnde cum instantia postulastis, ut quod à Legato factum fuerat, faceremus firmitatem debuerat obtinere. Verùm Pœnitentiarius proposuit ex aduerso, quod antequam Legatus præbendas contulisset easdem, Lemouicenis Capitulom ab eius grauiamine appellauit, cum Episcopi, quàm multorum Canonicozum Le-

moicenis. qui erant in exercito contra Hæreticos, absentiam allegando. Asseruit insuper facultates Ecclesiæ diminutas, & vos sufficienter in aliis Ecclesiis præbendatos: proponens te fore simoniacum, & ingratum Lemouic. Ecclesiæ, ac eo tempore, quo fueras de præbendis Lemouicenis. Ecclesiæ inuestitus, excommunicatum ab eodem Episcopo extitisse. His autem, & aliis per Cardinalis relationem auditis, cum conuenissemus postmodum eundem Pœnitentiarium per nos ipsos, per responsiones ipsius cetera esse friuola, præter id, quod de sententia excommunicationis contra te proposuerat, intelleximus euidenter. Vnde ven. f. n. Archiepiscopo, & dilectis filiis Magistro M. Canonico Iustinien. & H. Celarulo S. Frontonis Petragoricen. dedimus in mandatis, ut nisi Pœnitentiarius infra mensem post communionem eorum, te legitimè à sæpèfatto Episcopo tempore inuestituræ suæ excommunicatum fuisse probaret, quod per dictum Legatum de te factum extiterat, sublato ap. ob. confirmarent. Si verò probaret te excommunicatum tunc temporis extitisse, non postponerent quod de te factum fuerat, reuocare. Qui mandatum Apostolicum exequentes, vtriusque partis receptis testibus, & confessionibus, ac allegationibus intellectis, eandem causam sufficienter instructam ad nostrum remiserunt examen. Cum autem propter hoc nuper tam tu, quàm dil. fil. G. Lemouic. Capitoli procurator, in nostra fuisset presentia constituti, & acta ipsa inspicere fecerimus diligenter, per Pœnitentiarii testes intelleximus factam fidem, quod Lemouic. Episcopus pluribus annis antequam tu de præbendis iamdictis fueris inuestitus, Clericos, & Burgenfes castri Lemouicenis. & te nominatim, quem eorum dicebat consiliarium, & fautorem, vinculo excommunicationis adstrinxit.

Per testes vero tuos extitit manifestè probatum, quod et si dictus Episcopus in burgeses, & eorum fautores excommunicationis sententiam tulit, & tu apud Sedem Apostolicam adiutor es iuriter eorum: idem tamen Episcopus generaliter universos burgeses, & eorum fautores, tam clericos, quam laicos, ante tres annos absoluit, quibusdam presbyteris vique ad certum tempus retentia, qui contra interdicti sententiam præsumptim celebrare; quodque idem Episcopus tibi communicavit postea in Ecclesia, & in mensa. His igitur, & aliis, quæ fuerunt hinc inde proposita, insuetudine, quæ iuxta mandati nostri tenorem te inuenerunt tunc tempore à præfato excommunicatum Episcopo extitisse dictis Penitentiaris, sicut obolerat, non probatur: cum ex adueto de absolutione, ac communione dicti Episcopi fuerit facta fides: quod per dictam Legatum de te factum est, de fratrum nostrorum consilio per definitum sententiam diuinus approbatum. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostre definitionis infringere, vel ei ausu temerario contraire. Si quis autem, &c. vique incursurum. Datum Lateran. IX. Kal. Februarij. P.N. anno XIII.

b *Petrægricus.*] Petragoricensis vici est in Gallia, ad fines Aquitanie secunde, sita in aspera, molliorque regione, quæ à penis nomen videri accepisse. Huius Ecclesiam Cathedralē iam à primis Ecclesiis fœulis, cuius Præfatum scriam retulit Chenu in *clenol. Gallic.*

c *Lanenien.*] Quæ Ecclesia etiam est in Gallia, vt iam notauit in cap. 17. de maiorib. & aliis.

d *Burgeses.*] De Burgesibus egi in cap. Abbas, de his quæ vi.

COMMENTARIUM.

IN hoc textu, & in cap. postulat, supra hoc titulo, agitur de excommunicatione electis ad beneficia ecclesiastica; & in utroque docetur, excommu-

natum tempore, quo perstitit in ipsa excommunicatione, incapax esse beneficii ecclesiastici, immò collationem ipsi factam ipso iure nullam esse. Ratio in promptu est, quia beneficium præcipue datur propter officium, cap. cum secundum, de prob. cap. final. de rescriptis, in 6. cap. concessa 12. quasi 2. cap. generaliter 16. quæst. 1. cap. ex iuribus, de excessu sibi. Præterea, ideoque cum excommunicatus sit ipso iure suspensus ab officij executione, incapax quoque est beneficii, quod propter officium datur. Accedit, quia communicatio cum excommunicato prohibita est, cap. cum excommunicatus 11. q. 3. dicemus latè in cap. significans, de sent. excom. sed collatio beneficii fieri non potest sine communicatione, dicto cap. postulat. Ergo excommunicatus incapax est collationis beneficii, vt probant præsentem doctrinam variis ampliationibus, & imitationibus exponentes plures congesti à Barbosa in præfati, & lib. 3. huius eccles. cap. 13. num. 136. Riccius lib. 4. de iure person. cap. 6. per totum. Iul. Laur. de elect. canonic. cap. 6. num. 85. Petrus Gregor. lib. 4. part. 1. tit. 6. cap. 7. Suarez de censur. disp. 13. sect. 1. Castalpalo tom. 6. disp. 2. punct. 10. Hieronymus Garcia tom. 2. polit. regul. tract. 9. diff. scilicet 4. dub. 5. Valensius de beneficiis tit. 2. per tot. Ciconius ad tit. de elect. Tapia 2. tom. causa mor. lib. 5. q. 5. art. 9. Tantum potest optare beneficium, quia id in facto consistit, nec mutatur titulus, vt probant Valensius ubi supra, num. 11. Moës in cap. final. de censur. lib. 6. num. 10. Nec obstat, quod excommunicatus non gaudet fructibus beneficii, cap. pastoralis, q. vtrum, de appella. quia optio non spectat proprie ad fructus. Nec etiam contrarium probat textus in cap. reformo, de prob. quia in eia specie absolutio necessaria non fuit ad validitatem optionis; sed quia erat excommunicatus, ob eandem causam, quæ pendebat coram Pontifice, iuxta textum in cap. prudenciam, §. 6. de elec. deleg. cap. venerabili 6. de sent. excom. lib. 6. Videndus est Fr. Hieronymus Garcia ubi supra, qui fasè de hac incapacitate excommunicati ad beneficia agit.

CAPVT IX.

Gregorius I. & I. Canonicis * Pragensibus.

Apostolicæ Sed. Et infra: Verum quia tempore suspensionis * ignari * celebrastis diuina, vos reddidit ignorantia * probabilis excusatos. Ceterum si forte ignorantia * crassa, & supina, aut erronea fuerit, propter quam dispensationis gratia egeatis, eam vobis de benignitate Apostolica indulgemus.

NOTÆ.

a *Pragensibus.*] Ita etiam legitur in cap. ad Apostolicam, de exceptis, ubi erat alia pars huius Decretalis, vt iam ibi notauit pio vetera huius textus inscriptione.

b *Ignari.*] Ignarus est, qui ex toto nescit, quod scire debebat, vt ex cap. ult. 37. diff. docent Anon. & Panorm. in præfati, num. 4. iuxta quos ignorantia differt à nescientia, quod ignorantia proprie est ignorare ea, quæ quis scire debet; nescientia verò est quando quis ignorat, quæ scire non tenetur. Et ignorantia semper sumitur in malam partem pro eo, quod quis scire debet, & igitur, cap. 1. 38. diff. cap. ideo 15. §. 6. t. 37. diff. Sed licet hæc duo vt diuersa proponatur in l. ult. C. per

quas personas; tamen promiscuè ponuntur in l. 1. ff. quis ordo in bono possit, docet Colla de falli scient. & ignar. in præfati 80. num. 10. Etiam error differt ab ignorantia, si me in vocamus 345. §. 1. ff. de acquir. possess. Error enim tantum datur, cum quis aliud pro alio putat, seu credit vnum, quod est aliud, cap. in quibus 6. 22. quæst. 2. cap. quantum 12. 34. diff. l. error, ff. de iur. & falli ignar. ubi Cuias. Gilkenius de præfati. part. 2. membr. 1. cap. 3. num. 4. & 5. Denique dubitatio datur quando quis inter scientem, & ignorantem medius, & dubitans est, l. si quis 4. t. ff. ad leg. Aquil. h. de statu & §. ff. qui testamenta, l. qui in aliena 6. §. si is qui produs, ff. de acquir. heredit. l. final. Cod. de condit. indeb. Colla dicta in præfati 80. num. 50. Ignorantiam variè describit Martilius Fictus ad Plautum, Dupellus lib. 1. comment.

Tit. XXVII. De clerico excommunic. 429

communit. cap. 18. Bajo-Arroyo in reperit. ad textum in cap. 1. de confis. in 6. Giphanius in l. 10. Cod. de iur. & fact. ignor. Btonchot. l. 1. c. 2. affert. 36. Hunnius ad Treul. volum. 1. dispus. 22. quast. 15. Corallus in dist. l. 10. & communiter distincti soles. ut sit simplex priuatio scientie. Etiam variè diuiditur per interpretes ex parte obiecti. seu materia: alia est ignorantia iuris. alia verò facti. prout diuidit. & virtualiter exempla adducit Consolus in l. 1. ff. de iur. & fact. ignor. cap. turbator 12. §. notandum. cap. ult. t. quast. 4. Ignorantia iuris datur eo casu. quo lex. vel prohibitio ad hominis notitiam non peruenit. Ignorantia verò facti. quando ex actione hominis aliquid factum resulat. quod nec prauisum. nec cogitatum fuit. De utraque vera superius laudros agunt Colac. in communi. ad ris. ff. de iur. & fact. ignor. de lib. 44. Pauli ad edict. in l. 1. ff. cod. & lib. 19. pp. Papin. in l. 7. ff. cod. & lib. 1. diffinit. in l. 8. ff. cod. Duxten. ad ris. Cod. de iur. & fact. ignor. Baptista Costa de falli scientia inspect. 81. num. 1. Ex parte subiecti diuiditur ignorantia in eam. quæ quis ignorat. quod non oportet cum scire. & ideo appellatur ignorantia iusta. seu inuincibilis. quia mortaliter vinci & expelli non potest. & in voluntariam. quæ ex voluntate procedit. & quia non est culpa. nec causa culpæ. inculpabilis appellatur in præfenti textu. Alia verò ignorantia est directè voluntaria. quæ affectata vocatur in cap. 2. de tempor. ordin. lib. 6. de qua Glossa verbo *Scientia*. in Clementi unica de consensu sanguinis. & affin. Alia verò est voluntaria indirectè. quæ scilicet procedit ex nimia negligentia. seu ob prauitatem magis desiderij. quando per eum stat. quominus oppositum scientiam habeat. quæ ideo appellatur voluntaria. vincibilis. fimo-lata. iniusta. non probabilis. & dissoluta à Papiniano in l. cum sex 55. ff. de adult. edit. et illa. lupina. & erronea in hoc textu. & in cap. 2. de ordinat. ab Episc. apo. cap. 2. de confis. in 6. l. nec sapientia 6. ff. de iur. & fact. ignor. l. 4. §. quod vi aut clam. Docent Consolus. in cap. alma. 1. par. 1. 10. n. 7. Suarez de consensu disp. 4. affert. 8. n. 4. Costa de inspect. 81. n. 80.

His suppositis in bæ materia. prima regula est. ignorantiam facti excusare tam in iuris. quàm in damnis. l. 4. §. 2. ff. de iur. & fact. ignor. l. 6. & 7. C. de candid. indeb. l. 2. §. 15. ff. pro emptore. nisi in lege ipsa expressè educatur de ignorantibus. ut in l. 1. §. 5. ff. de his qui deiecerunt. l. 1. C. de falsa moneta. vel si quid iniuræ continuum tempus iubeatur. l. 6. ff. de calumnia. l. 5. Cod. ad leg. Jul. de adult. aut si ignorantia etiam sit. l. 6. ff. de iur. & fact. ignor. in l. 1. §. 1. palem 4. ff. de ritu nupt. cap. penult. 37. dist. cap. cum inhibito. §. 1. de clandest. de spons. cap. eos. de tempor. ordin. lib. 6. aut nisi lex exigat. ut fiat scienter. cap. 1. nobis 2. de excepti. cap. Episcopus 1. t. quast. 3. Clementi. unica. de consensu. & affin. cap. 1. de eo qui cognouit consanguin. var. l. final. Cod. de decret. ab ordin. Secunda regula est. ignorantiam iuris regulariter nocere. præcipue in iuribus. l. in bonorum 10. ff. de bonor. poss. l. unquam 31. ff. de usufruct. l. penult. Cod. de his qui sibi adscribunt: non tamen in rebus smittendis. l. 5. ff. si quid in fraudem patris. non autem nocet sciemis. tulsicis. militibus. & minoribus. l. 1. l. 1. t. l. penult. ff. de iur. & fact. ignor. l. final. C. de iure delicti. 2. de integ. res. p. sequeunt exceptiones. & ampliationes harum regularum Donellos dist. l. lib. 2. ex cap. 2. vsque ad fin. & lib. 14. Bajo-Arroyo in dist. cap. 2. de confis. in 6. & in hac parte obiciendi sunt testes in l. cum videret 26. §. 1. ff. de fideicommiss. lib. 1. cum sex 55. ff. de

adult. edit. l. 1. t. C. qui potant inter. l. 5. Titio 48. ff. de fideiuss. l. 1. ff. de diff. pign. fiam. §. dicit. ff. de publican. l. cum poss. 43. §. 1. ff. de admistr. re. l. 2. §. generaliter. §. de deli. except. l. 4. §. si in abbitum. ff. eodem. l. si sitius. in fine. Cod. si certum petatur. l. Papiniano. ff. de public. l. Titius 25. §. ult. ff. de liber. & poss. l. si procuratorem 8. §. si ignorantes. ff. mandatis. l. 2. §. ult. l. 3. ff. de adult. cast. l. miles 11. ff. ad leg. Jul. de adult. l. 14. ff. de publican. iuncto Cuiacio in l. regula. ff. de iur. & fact. ignor. l. 2. §. si si. qui testamento liber. l. cum filius 49. §. in hac. ff. de l. O. l. 3. l. 1. ff. de p. s. iuncto Fabio deced. 25. error. 7. l. 5. §. si quis contra 3. ff. de legat. præst. l. de die. §. s. non. ff. qui satid. cogatur. l. Diuus. ff. ad leg. Corn. de s. s. l. 2. ff. de iur. fisci. l. 5. §. 1. ff. de his. quæ se indaga. l. 1. §. de nouat. iuncto Fabio lib. 1. c. ceniell. cap. 11. l. 3. §. si quis ignorans. & §. si conditio. l. propter 21. §. 1. ff. ad Syllan. l. 5. §. 2. ff. si quis emissit causid. l. 17. C. de his qui se indaga. l. 11. in princip. ff. si quid in fraudem patris. l. 2. §. ff. de neg. gest. l. 87. ff. de legat. 2.

Illud tamen summe notandum est. ignorantiam facti non pizlumi. l. quomodo 7. ff. ad V. l. ian. l. qui se populum 46. ff. de acquir. heredit. l. quisquis 15. C. de rescind. venis. cap. cum illorum 32. de sent. excomm. argumento legis vltimæ. ff. pro suo: de ideo non est probabilis ignorantia. nec excusata. nisi talis probetur. l. si heres 68. §. 1. ff. ad Trebel. Costa ibi supra. inspect. 85. num. 5. imò nec ignorantia facti alium excusat. quando ratione officij. vel alio respectu quis tenetur illud inuestigare. iuxta legem qui cum alio 19. ff. de R. l. cap. turbator. §. notandum 1. quast. 9. hæc enim etiam. & lupina ignorantia iudicatur. ex l. vlt. §. ff. de acquir. heredit. l. qui & diuini 24. l. 1. quast. 2. cap. final. 16. dist. cap. 2. de tempor. ordin. lib. 6. Ignorantia etiam iuris naturalis. & g. nimis omnibus dam-nabilis est. cap. turbator 12. §. item 1. quast. 4. cap. ideo 15. §. ult. cum sequent. 37. dist. cap. quenda-m 10. 38. dist. & ideo non excusat à delicto. nec à pœnis. l. si adulterium 38. quare. §. de leg. lal. de adult. l. 2. Cod. de in iur. & ex ratione testis in cap. si capis 5. 16. quast. 1. Similiter & iuris positiu. ignorantia probabilis non est. quia quilibet paterfamilias potest se. vel penitentes consulendo scire. l. in bonum 10. ff. de bonor. poss. l. 1. §. 5. final. ff. qui ardo in bonor. poss. l. 1. §. 2. reg. 9. §. si de iur. ff. de iur. & fact. ignor. Quod si non faciat. culpabilis eius ignorantia erit. ex cap. si culpa 9. de in iuriis. Vnde non excusat in delictis. l. 1. dist. leg. reg. 9. l. 1. Cod. ad iud. l. 3. ff. ad Macedon. fideiussor 29. §. 1. ff. mandati. l. liberum 21. §. notari. ff. de his qui notant infam. cap. 1. cap. si in laicis. cum sequent. 38. dist. dist. l. cap. notari. §. item.

Celebrabitur dicere. Vebum celebrare. significat solenniter agere. cap. in his 30. de priuileg. cap. de clericis 13. de vita & honest. cleric. Vebum autem diuina. significat diuina officia. cap. 3. cap. 4. cap. vlt. §. cap. Episcopus 6. cap. p. s. l. 7. §. ult. hoc tit. Clementi. 2. de primileg. siue diurnum. siue nocturnum. cap. si quis Episcopus 7. 11. quast. 3. adde l. 9. de celebrat. Missæ. namque irregularis non est. nisi qui suspensione. aut alia censura ligatus diuina celebrat. hoc est actus ordinis. vel aliquid minus filius ex officio. & solenniter obis. cap. 1. §. 3. cum aliis. hoc tit. cap. 1. de re iudic. lib. 6. cap. 1. cap. si qui 18. cap. si cui 20. de sent. excomm. lib. 6. notam superius in cap. 1. hoc tit.

Probabitur. Probabilis ignorantia dicitur. quæ nititur iusta causa. l. Senatus 15. in princ. ff. de iure fisci. saltem probabilis. cap. sacre 48. §. cum. de sent.

sem. excom. quare & probabilis error dicitur in eodem textu, §. *verum*, vt conuincit praesens casus, si Canonici Pragenses ignorauerunt in eis latae fuisse suspensionis sententiam, vt docuit Innocent. in praesenti; vel quia sententia publicè lata non fuit, & ideo ad ipsorum notitiam non pertineret, argumento capituli illud §. *verf. vide, hoc est*, vel si generalis fuit lata sententia, & publicè; atamen eum ea sibi latere, non fuit illis denuntiata, cap. 1. de postul. Pralator. vt affirmat Hostiensis in praesenti, num. 3. Quia ratione etiam probabilis ignorantia iudicatur, quando quis ignorat, quare se non teneat, quia non spectant ad propriam officium illius, cap. turbatur 19. §. notandum 1. quæst. 4. aut si teneatur scire, adhibita diligentia non potuit, nec per ipsum licet quominus sciret. Suarez de censur. disp. 4. §. 3. num. 12. Marius Alterius lib. 1. de censur. disp. 2. cap. 3. Costa de fast. ignor. in post. §. 1. num. 22. Nec requiritur quod quis sit moris curiosus in ferendo, dammodo non sit nimis desoliosus, vt ex lege nec supina §. fide iur. & fast. ignor. docent in praesenti Panormit. num. 2. Ancharanus num. vlt. Quanta autem, & qualis debeat esse huiusmodi diligentia, vt probabilis ignorantia dicatur, facillè diffiniri non valet: quare iudicis arbitrio relinquunt, vt docent Marius Alterius ubi supra, Hugolinus de censur. tabul. 1. cap. 14. §. 1. num. 12.

6. c. *Crasa*, & *supina*.] Idest inuisa, & improbabilis, de qua in cap. 1. & 2. de ordinat. ab Episcopo, cap. 2. de consil. lib. 6. Nec supina §. fide iur. & fast. ignor. l. 4. §. quod vi aut elem. Et dicitur dissoluta ignorantia, quia lex §. §. de adili. adeli. dissoluta negligentia, §. fidei iur. 29. §. mandati: ignorantia deperditi, seu nimium securi in l. 3. §. de iur. & fast. ignor. & versatur circa factum, l. eam 43. §. 1. fide contrahend. empion. veluti quando aliquid publicè fit, & omnes de ciuitate sciunt, ille verò ignorat. Glossa verbo *Cum itaque in summa*, 18. dist. & verbo *Crasa*, dist. cap. 1. de ordinat. ab Episcopo: & hæc ignorantia late culpe equiparatur, l. late 22. §. de P. S. prope dolum est, l. si fidei iur. 29. §. mandati, l. 2. §. generaliter, §. fide dol. excepti. l. 11. §. de incend. & rui. ex ratione capituli excellentissimi 102. 11. quæst. 3. habet enim plurimum voluntatis, quia idem est scire, ac posse scire, l. si duo 38. §. de acqui. heredit. l. 7. §. seruu meus, §. pro empione: ideo non excusat à delicto, nec à poenis ipsius, in cap. 1. in fine de ordinat. ab Episcopo: docet plures relati ab Amaya lib. 1. obferu. cap. 3. num. 9. nec ab excommunicatione, cap. 2. de consil. lib. 6. nec ab irregularitate, vt ex hoc textu constat. Sed quia quamvis hæc ignorantia non excuset à peccato, tamen ita minuit eius malitiam, vt non maneat in eadem specie, quia potius hi Canonici celebrant cum nimia negligentia, quam ex contemptu, & presumptione, vt probant Conar. ubi supra, num. 17. Hugolinus de censur. tabul. 1. cap. 14. §. 1. num. 26. & 27. Suarez de censur. disp. 4. §. 3. num. 17. & §. 10. num. 1. merito ergo illius, si ex hæc ignorantia celebrant, de benignitate Apostolica dispensationis gratiam Pontifex indulget, vt ex eadem ratione conceditur in cap. consuetudo, §. ignari 8. dist. cap. quoniam ruitur l. 1. quæst. 3. Hanc autem nisi Romanus Pontifex concedere non valebat, vt ex hoc textu deduxerunt Glossa finalis, & Hostiensis hic, num. 4. & probatur ex cap. 1. in fine, cap. 1. qui 18. §. 1. de sens. excom. lib. 6.

EX hoc textu sequens communiter deducitur assertio: *Suspensi, vel excommunicati per ignorantiam celebrantes, irregularitatem non incurunt.* Probant eam textus in c. 1. de postul. Pralator. cap. 1. cni 18. vbi Glossa verbo *Sciunt*, de sens. excom. lib. 6. l. 1. §. 1. §. 9. part. 1. Illustant eam Suarez de censur. disp. 1. §. 3. Marius Alterius eod. tract. lib. 2. c. 4. Sayrus in thesaur. sub. 7. §. 9. Costa de fast. scientia disp. 4. §. 1. Grecia de benefic. part. 11. cap. 10. Conar. in cap. alma, l. par. §. 6. Cornejo de irregul. disp. 6. dub. 3. Aelia eod. tract. disp. 2. dub. 7. concluf. 1. Diana p. 4. ar. 2. res. sol. 85. Hurtado de irregul. disp. 1. difficult. 8. Lesodes eod. tract. disp. 4. ar. 1. quæst. 2. & 3.

Sed hæc assertio difficultatē redditur sequenti iuris consideratione: nam ad irregularitatem contrahendam prout delictum non attenditur feitoria, vel ignorantia, sed an factum sequutum sit, vt constat ex cap. 1. & 2. de ordin. ab Episcopo, qui remittit, vbi asseritur, necessarium esse dispensationem ad ordines extendendos, eo casu, quo quis ex probabili ignorantia ordines sacros suscepit ab Episcopo, qui simul renunciavit & loco, & dignitati; vel ab Episcopo excommunicato: quod etiam de ordinatis ex probabili ignorantia à simoniacis probatur ex c. si quis a simoniacis 108. ibi: *Miseri corditer suscipere*, l. 9. §. 1. cap. ab excommunicatione, cap. ab ordinationibus 9. §. 1. Ignitur qui celebravit vterque suspensus, aut excommunicatus, etiam ignorans, irregularitatem incurrat. Augetur hæc dubitanti ratio ex eo, nam excommunicatio, etiam ita grauis censura fit, tamen ab ignorantia incurritur, c. si quis Episcopum 6. & 7. ibi: *Adaximè*, cap. quoniam, cap. multi 103. cum antecederet, l. 1. §. 3. Ergo facilius irregularitas incurratur ab eo, qui vterque suspensus, vel excommunicatus, diuina officia, etiam per ignorantiam, celebravit.

Quæ dubitandi ratione minimè obstat, vera est præsens assertio, pro cuius expositione sciendum est, suspensionem dictam esse à verbo suspendo, quod est sursum pendere, atque incertum, & dubium esse. Hugolinus de censur. tabul. 4. cap. 17. §. vlt. Suarez de censur. disp. 29. in princip. quo verbo licet aliquando interdictionem ab Ecclesiæ ingressum significetur, vt in cap. 1. de sens. excom. lib. 6. aliquando impedimentum vtendi aliquo temporali munere, seu officio, vt in extraneis, vlt. Ioan. XXII. de sens. excom. vulgè tamen accipi solet pro quadam pena ecclesiastica, quæ quis omnino non remouetur ab officio, vel beneficio, sed interim exerceat, vel habere non permittitur: quæ penâ legitimè vsum fuisse Iulianum Apostatam episc. 62. vbi dum de puniendo ebriore sacerdote agit, ait: *Ne quod eorum, quæ ad sacerdotem pertinent scribis tui mensum astingat.* Suspensus namque ab officio, vel beneficio, nec beneficio priuatur, nec munus officii potest obire, nec fructus beneficii percipere, c. 1. de re iudic. lib. 6. c. 2. de solut. extraneis, ambrosius, de rebu. Eccles. & ideo quia interim pendet suspensus ille, & quodammodo in incerto est, penâ hæc suspensio appellatur, quo nomine viuunt Patres, & Concilia, quæ post quintum, & sextum nascentis Ecclesiæ seculum fuerunt. Constat ex Concilio Arelia. §. can. 5. & 17. ibi: *A communione ecclesiastica suspendatur.* Et ex Felice II. episc. 2. ibi: *Nec a communione suspendatur.* Habuit etiam huiusmodi suspensionis nomen suas phrasas, atque periphrasas. Quandoque vocabatur cessatio ab officio, vt in Concilio Arelia. §. can. 15. ibi: *Tandem si sacrificando cessabit.* Quandoque ab officio remotio, vel sequestratio, vt in Concilio

7. CONCLUSIO TRADITA AB INVENTIO.

8. IMPROBATA TRADITA AB INVENTIO.

9. SYNONIMO QUID SIT QUID.

clilio Brachar. 3. can. 1. ibi: *Tanto tempore ab officio remouetur.* Tolitano 13. can. 1. t. ibi: *Tribus mensibus ab officio suo sequestretur.* & Auelant. 3. can. 6. *Sex menses in celebrandis officiis sequestretur.* In aliisque similiter praedicta phrasia occurrunt. Partes tamen, qui memorata secula praecedunt, frequentius suspensionem, abiectionem, seu segregationem appellauerunt; & suspensiones, abiectiones, seu segregationes dixerunt, ut passim ex D. Cyprino constat, & ex Concilio Illiber. can. 5. ibi: *A quo abiectionem.* Meldensi can. 10. *Tribus mensibus a Missarum solemnitate se abiectionem.* Arelat. 1. can. 3. ibi: *Abiectionem.* Et can. 12. ibi: *A communionem abiectionem.* Tolet. 1. can. 1. 5. ibi: *Similiter se clericus abiectionem.* Ex D. Cyrillo in epist. ad Episcopos Libya, & Penopolis, ibi: *Sine autem segregationem aliquis sustineretur.* Et ex Apostolorum canonibus, in quibus crebri obseruandum est verbum *segregari, arceri, abijceri, suspendi.* Iude apud eosdem canones legitur *suspensio.* Verumtamen plures alias, diuersasque rationes, & exceptiones habent apud Graecos, & apud Latinos *abijcere, quam suspendi, & segregari*, ideo & quoniam valde verbum est *abijcere*, ut pluribus post D. Ferdinandum de Mendoza lib. 2. de confirmando Concilio Illiber. cap. 8. pag. 29. littera S. docet Morinus dist. lib. 1. exercit. Eccles. exercit. 3. quem conuincit, ut plura alia de suspensione discas.

Hae etiam communiter diffinitur, ut suspensio sit pena impediens, ne persona ecclesiastica functiones ecclesiasticas exerceat, aliquare potestate ecclesiastica utatur. Ad quam diffinitionem facile reuocantur, quas tradunt Hugolinus tabul. 4. c. 10. Marius Alterius lib. 6. disp. 1. c. 1. Suarez de consensu disp. 2. §. 1. num. 1. Giblinus end. tract. 1. disp. 1. §. 1. Suspensio diuiditur, ut alia sit vniuersalis, alia specialis, alia simplex, ut explicat Morinus d. lib. 2. c. 7. per totum; aliquando enim fit tantum ab officio, & non a beneficio, ut in c. 3. in fin. de rescr. c. 2. de officio deleg. lib. 6. Clement. 1. de rebus Eccles. Clement. 1. §. penult. de hereticis. Aliquando quidem ab omni ecclesiastico officio, quo nomine omnis spiritualis potestas ad aliquem spirituales actum exerceendum comprehenditur, siue sit ordinis, siue iurisdictionis, siue etiam administrationis ecclesiasticae. Suarez de censur. disp. 2. §. 1. num. 11. Vnde talis suspensio non potest aliquem actum ordinis exercere, c. 2. hoc tit. cap. 1. in fine de re iudic. lib. 6. nec iurisdictionis, veluti conferre beneficia, c. 4. de concess. prob. c. 1. vniuers. §. cum verum. Sede vacante, lib. 6. nec etiam eligere, cap. cum dilectus 8. de consensu. c. cum inter 1. 6. de elect. Suarez disp. 2. §. 1. num. 1. aliquando fit tantum a parte officij, veluti quando suspenditur ab ordine, & non a iurisdictione, vel ab aliquo tantum ordine, veluti a sacerdotali, & non ab alio, vel è conuerso a iurisdictione, & non ab ordine, vel aliqua tantum parte iurisdictionis, ut in casibus relatis a Glossa verbo *Suspensio* Clemantina capientes, de penis, Suarez d. §. 1. num. 14. Morinus d. lib. 2. exercit. 7. & 8. Giblinus d. §. 1. Vnde suspensio fit tantum a beneficio, & non ab officio, ut in c. cum in consilio 7. §. final. c. ubi 44. de elect. Clement. 1. de vita & honest. cleric. vel ab officio, & beneficio simul, ut in cap. ex ratione 11. de priuileg. cap. 1. de schismat. Clement. 1. de decimis.

Deinde sciendum est, suspensionem ab officio, vel a beneficio, vel ab utroque simul, non fieri ad tempus, veluti ad mensem, vel annum, vel duos, ut in c. cum in consilio 7. §. final. de elect. c. 1. de re iudic. lib. 6. c. 2. de tempor. ordin. end. lib. 1. de fere. excom. end. lib. 1. Clem. 1. §. 1. de hereticis. Clement. 1. de penis; vel donec

mereatur indulgentiam, ut in c. cum literis 33. de rescriptis. Concil. Aurel. 3. can. 25. ibi: *Tandem a sacrificando cessabit, quatinus plenaria penitentia satisfactio corruerit, ad gradus sui officij redire, quem auferit.* Et tunc ubi est proprie cuncta ecclesiastica, sed delicti perna, quia non respicit teipsum in futurum, sed culpe praeterite punitiorem; & ideo quo maius fuerit culpa, eo diutius suspensio solet imponi. Vera enim, & propria censura non potest profecti ad certum tempus, sed ad reprimendam contumaciam, & ut homo a culpa recedat; quare non potest habere alium terminum, nisi donec recedat a culpa. Vnde ut haec suspensio imponitur, nec requiritur prauius monitio, nec ut tollatur, necessitas est absolutio, sed sufficit lapsus temporis, pro quo imponitur adque alia absolute. Ita Glossa verbo *Per mensem*, in cap. sacro 48. de fere. excom. & verbo *Donec*, in Clement. 1. de decimis. Hugolinus d. tabul. 4. cap. 4. §. 2. Suarez disp. 2. §. 1. num. 3. suspensio verò, quae est vere, & proprie censura, de qua agitur in cap. querens 20. de P. S. non habet temporis praefinitionem, requiritque monitionem, saltem illam, quae includitur in illa conditione, si hoc feceris, vel nisi satisfeceris, ut in cap. presbyter 2. quesi. 5. cap. ex tua 21. §. final. de cleric. non resid. cap. 2. de purg. canonice, cap. quia saepe 40. de elect. in 6. cap. final. de offic. ordin. end. lib. cap. 2. de censur. end. lib. Clement. 1. de decimis; & ut tollatur, necessaria est absolutio. Glossa verbo *Suspensio*, in cap. 2. de schism. Suarez supra, num. 3. quicquid velit Hugolinus dist. cap. 4. §. 2. num. 4.

Tandem ut ad praesentem remum accedamus, sciendum est, suspensionem ab officio actum ordinis exercecentem irregularem manere, siue tanquam censuræ suspensio impolita sit, siue tanquam poena ad certum tempus; utraque enim priuam facit ministerio, & ideo ei, qui ita suspensus diuina officia celebrat, irregularitas imponitur in cap. si quis Episcopus 6. cum sequenti 11. quesi. 3. cap. presbyter 2. quesi. 5. cap. 1. de re iudic. lib. 6. cap. 1. pres. de qui t. §. final. cap. in cui 20. de fere. excom. lib. 6. docent Suarez dist. disp. 2. §. 1. num. 5. & §. 1. ex num. 3. Coart. in cap. alina, p. 2. §. 1. num. 31. Dian. part. 5. tract. 10. resol. 9. Leonard. de irregul. tract. 2. disp. 2. §. 1. Giblin. end. tract. cap. 5. Nec interest, an ab homine suspensio imponatur, an verò a iure; quia utroque casu suspensus celebrando irregularis efficitur, dist. cap. 1. de re iudic. lib. 6. utraque enim suspensio eundem speciem est, & ideo utraque eandem effectum operatur: nec etiam aliquod interest, quod suspensus sit notorniam denunciatus, necne; namque etiam non denunciatus violando suspensionem manet irregularis, ut resoluunt Suarez dist. disp. 2. §. 1. num. 2. Hugolinus tabul. lib. cap. 5. num. 2. quia ita fauorem excommunicanti, vel suspensi nihil est immutatum per extraneam ad euadendam. Etiam fit irregularis suspensus ad tempus, videlicet donec satisfecerit, seu penitent, ut docet Glossa verbo *Suspensio*, in cap. 2. de censur. lib. 6. Suarez dist. disp. 2. §. 1. num. 5. quia sub ea forma vera, & propria suspensio imponitur, & ideo de hoc casu immerito dubitatur in cap. final. hoc tit. Inne. num. 1. Hostiensis num. 4. Anton. num. 12. Etiam irregularis efficitur suspensus ab ordine tantum, si per exercitium ipsius gradus violat censuram. Suarez dist. disp. 2. §. 1. num. 9.

Hae tamen doctrina procedit in vera, & propria suspensione, qualis dicitur suspensio quoad se, & quoad alios; non verò in suspensionis impropria,

IO.
Sed et in
hoc ubi
dicitur.

12.
Suspendi
est censura
quae privatur
potestate
ordinis.

II.
Alia de
suspensionibus
ad
receptionem
officij.

13.
Excommunicatio
est censura
quae privatur
potestate
ordinis.

propria, qualis est suspensio quoad se tantum, non verò quoad alios, que relinquit ex peccato mortali: nam quamvis peccator celebret in eo statu, non fit irregularis, *cap. final. de rebus, clericis*, quia peccatum mortale non est poena, nec censura ecclesiastica; & peccator quamvis quoad Deum non licet celebret, tamen ab Ecclesia non est irregularis in eum status. Docent Sylvestri in *summa, verbo Suspendit*, num. 1. Suarez de censur. disp. 15. sect. 1. num. 2. Item nec suspensio quoad alios tantum, non quoad se, ut sunt clerici peregrini, non habentes literas formatas, aut probationem suæ ordinationis; nam hi non possunt celebrare, propter defectum probationis, nisi scelerò, & secluso scandalo, *cap. de clericis peregrinis*, ubi probatur. Similiter suspensus ab officio si non actum ordinis, sed tantum iurisdictionis, vel administrationis exerceat, non ideo erit irregularis, quia suspensio tantum respicit actum ordinis, non verò iurisdictionis, licet si ita suspensus violat censuram, arbitrio iudicis puniatur forte probatione iurisdictionis in perpetuum, argumentum capituli 1. §. vlt. *cap. capientes 16. §. ceterum, de elect.* in 6. cap. vlt. de excessib. Prelat. cap. si cur. 4. de cohabit. clericis. Idem erit sciendum, si quis non ab officio, sed tantum à iurisdictione, vel ab aliquo actu illius fuerit suspensus, quia nec exercendo talem actum illi interdicitur, irregularis manet. Suarez *diff. disp. 16. sect. 4. num. 19.* Nec etiam erit irregularis si suspensus tantum à beneficio, & non ab officio, fructus percipiat, quia ille officium exercere valet, quamvis violando suspensionem pèpetuet beneficium privetur, iuxta textum in *diff. cap. 1. §. vlt. cap. capientes 16 §. ceterum, de elect.* Similiter non est irregularis, qui in ordinibus suspensionis contrahit suspensionem, & simul consecratur cum Episcopo, Epistolam, vel Evangelium cantando; quia talis actio moraliter est eadem, & non tam violatur, quàm contrahitur consecrata suspensio. Diana *part. 1. tract. 10. resolut. 17.* Leander de irregul. *trakt. 2. disp. 22. quest. 13. & 14.*

14. Ex quibus apparet, verba illa presentis textus, quia *tempore suspensionis*, restituentem accepisse Innocentium in presenti de suspensione ab officio, non verò de suspensione à iurisdictione, vel administratione, que actum ordinis non includunt, ut significant illa verba nostri textus, *celebrasti divina*. Et etiam intelligi possunt hæc verba de suspensione tantum ab ordine, vel ab aliquo actu ordinis, quia in hoc casu suspensus celebrando irregularitatem incurrit: Immo & de suspensione simpliciter prolata ab officio, aut beneficio, vel ab utroque simul, quo modo sæpe sæpius fertur, *cap. sancti 11. de offi. deleg. cap. cum hinc 8. de etate & qualis. cap. vi clericorum 13. de voca & honest. clericis. cap. vlt. de his qui vi, lib. 6. Clement. 1. §. 1. de privileg. extrinsec. 3. eod. tit. inter communes*. Nam siue hæc comprehendat suspensionem tantum ab officio, quæ per antonomasiam suspensio appellatur, ut argumento dicti capitis *ex clericorum*, existimant Glossa verbo *suspensionis*, in *diff. Clement. 1. §. 1. de privileg.* & ibi Ancharanus num. 22. Cardinal. num. 5. siue suspensionem ad officio & beneficio simul, ut argumento dicti capitis penultimi, de *sent. excom. cap. tunc, de his qui vi*, teneant Glossa ibi, verbo *Suspensionis*, Hugolin. de *censur. tabul. 4. cap. 14. §. 1. m. 2.* & probabilis credit Suarez *diff. sect. 2. num. 9.* semper si ita suspensas celebravit, & actus ordinis

prohibiti exerceat, erit irregularis; quod facile probatur ex hoc textu, si illa verba *tempore suspensionis*, de suspensione simpliciter prolata intelligamus, siue de suspensione ab officio, & amotione à beneficio; qualiter latam fuisse sententiam hi hos Canonicos. constat ex *cap. Apostolica 9. de except.* Sed ideo amorio à beneficio in capite hoc omnia est à Gregorio, quia cum de irregularitate tantum ageret, ideo de ea decrevit. Etiam hæc verba, *tempore suspensionis*, intelligi possunt de suspensione, que non imponitur tanquam censura, sed tanquam poena ad certum tempus; quia etiam hoc casu (ut diximus) qui celebrat durante suspensione, irregularis efficitur; aut etiam possunt intelligi de suspensione, que est censura ecclesiastica, nec habet tempus præfixum; & tunc illa verba, *tempore suspensionis*, significant, hoc est dum durat suspensio, seu ante absolutionem à suspensione.

His suppositis apparet ratio presentis decisionis; nam cum hæc irregularitas contrahatur à suspensio propter delictum, quod clericus committit contemnendo ex superbia, & ausu temerario censuram Ecclesie, & per consequens elationis ipsius ecclesiasticam potestatem, *cap. si quis Episcopus 6. & 7. 11. quest. 3. cap. Salom. a. 4. 63. dist. cap. 2. 3. & 4. hoc tit.* & qui operatur ex probabili ignorantia, non procedit ad contemptum, *l. si ignorans 50. ff. locati*; quia non ex voluntate facit, nec ex consensu, ut probat Couart. in *cap. alma, 1. part. §. 10. num. 12. in princip.* & ideo non peccat, nec delictum committit, *cap. 1. cum sequenti, 11. quest. 4. cap. 2. de consil. lib. 6. l. final. ff. de leg. 1. l. illud 7. §. 1. tamen ff. de tributor. mercedi in presenti specie Canonici ex ignorantia celebrantes irregularitatem non incurrit, quia excusantur ob ignorantiam, que & ab aliis poenis excusatur, *l. genero 8. l. liberum 11. §. notatur ff. de his qui non sunt infam. l. Metronem 40. ff. de pœnis 1. 2. de. ff. de decret. ab ordine faciendo, cap. si quid de simulatione 308. 1. quest. 1. cap. si quis 8. cum duobus sequens. 34. quest. 2. cap. propositionis, ad finem 42. dist. cap. 2. de cognat. spiritus, cap. vlt. qui matrimonia accusat, cap. si verò 4. de sent. excom. cap. 2. de consil. lib. 6. cap. si compromissarius 37. de elect. eod. lib. 1. cur. 16. §. contrariam, ff. de pignorat. l. si quis 7. §. doli, l. si familia 9. ff. de iurisd. docent Menoch. lib. 2. de arbit. cent. 6. casu 501. Mareseus lib. 1. variat. cap. 127. plures relati ab Amaya lib. 2. obfer. cap. 2. num. 1. & cap. 3. Costa de iustitia scientia in *quest. 85.* quam rationem presentis assertionis addoxit ut Henricus in *cap. final. num. 1. hoc tit.* Suarez *disp. 4. sect. 8. numer. 6. & sect. 11. num. 9. & sect. 1. disp. 11. num. 2. & disp. 16. sect. 2. num. 3.* Marius Alterius lib. 3. de *censur. disp. 2. cap. 3.* qui idem admittunt eo casu, quo quis tempore excommunicationis, vel interdicti cum probabili ignorantia celebravit unde non tectè Costa *diff. in *quest. 85.* num. 6.* existimavit, quod quamvis ignorantia probabilis excuset à peccato, non tamen excusat ab irregularitate, quia in eam quis incidit etiam ignorans, & præter intentionem, ut in *cap. scientiam, ne clericis, vel monachis*; namque id non procedit in ea irregularitate, que piovenerit ex delicto, qualis est ea, de qua agimus, que non incurritur cum probabili ignorantia.**

15.
TRADE
TUR DI
CIDAMUS
RATIO.

16.
DISPO-
SITIO
TAMEN 24-
TIO.

Nec obstat dubitandi ratio super adducta, pro cuius solutione Glossa in *presenti*, Hostiensis & Henricus existimant, quod ignorantia probabilis aliquando non excusat à suspensione, aliquando excusat, scilicet quando cessat peccatum: sed non explicat, quando vnum, vel quando alium effectum ignorantia probabilis operetur; quare hac sententia omisit, & alius telatus à Patre Suarez de *confus. diffus. 31. sect. 1. ex num. 10.* dicendum est, verum esse ordinatum ab Episcopo, qui renunciavit simul loco, & dignitati, licet characterem ordinis recipiat, non tamen executionem, seu exercitum ipsius gradus assequi, quia quod Episcopus non habet, alij conferre non potest, *cap. Dilectum 14. l. 9. 7. cap. quod tunc 5. de inseparr. & ignorantia probabilis est, qui ordinatur, non potest dare exercitum ordinis ei, qui non habet, ut rectè docet Suarez ubi supra: & quemadmodum Episcopus vt characterem imprimat, indiget characterē; ita vt characterem imprimat cum exercitio, oportet vt ipse illum habeat cum executione; nam quemadmodum ex institutione divina vt character imprimatur in ordinato necessarius est character in Episcopo; ita ex institutione ecclesiastica vt characterem cum executione conferat, oportet vt illum Episcopus habeat cum executione; quem quia non habet qui loco simul, & dignitati renunciavit, visque illum eum exercitio conferre non potest, siue scienter, siue ignoranter ordinatus ordines recipiat, quia hoc provenit ex defectu potestatis in ministro. Quare ordinatus à tali Episcopo vt possit in gradu suscepio ministrare, indiget veta, & propria dispensatione; quare ei, qui scienter à tali Episcopo ordines recipit, denegatur, ex ratione quam adducit Pontifex in *d. cap. 1. de ordin. ab Episcop.* Cum eo autem, qui ignoranter ordines ita recipit, potest Episcopus dispensare, sed cum discretionē, si modò ex circumstantiis intelligat, quod non talis, & supina ignorantia interfuerit, sed iusta, & probabilis, quare qualis sit, eius arbitrio committitur. Eadem ratione procedunt textus in *cap. 1. de iur. de ordin. ab Episcop. cap. ab excommunicatione 9. q. 1.* qui loquuntur de clericis, qui ab Episcopo excommunicato ignoranter ordines receperunt; namque excommunicatus Episcopus, quamvis validè ordines conferat, vt probat Hugolinus de *confus. rubric. l. cap. 13. §. 6. num. 5.* stramen parit ratione, quia dum durat excommunicatio, non habet suorum ordinum executionem, vtque illam ordinatis à se conferre non potest, ideo necessaria est dispensatio, vt ita ordinatus in gradu suscepio ministrare possit. Eodem modo intelligendus est textus in *cap. ordinationes 9. q. 1.* ubi verba illa: *Irrita esse iudicamus*, accipienda sunt quoad executionem, quam qui baptizatus non habet, ordinatis à se conferre non potest; quare dispensatio indiget, & eam assequuntur, si probare voluerint, se necessitate, Episcopos damnatos esse, cum ordines receperunt. Eodem modo accipiendi sunt textus in *cap. statim 106. vers. Hoc autem, cap. statim 107. §. simoniacus, & §. de hoc, cap. à simoniacis 108. l. quib. 1.* Alia causa est eius, qui tempore suspensionis ex probabili ignorantia celebrat, quia hic absque delicto, & peccato non potest effici irregularis, nec privari vfu sui ordinis iam quæsitio; quia vt inquit Suarez *diff. num. 12.* quando irregularitas, seu suspensio habet rationem pene, non potest quis illa puniri, nisi ob culpam, quare cessat in*

D.D. Gmcal. in Decretal. Tom. V.

eo, qui celebrat ex probabili ignorantia, quia in eo non datur contemptus, & cessat dolus, leg. illud 7. §. si tamen, ff. de tributoria, l. miles 6. §. si mulier, ff. ad leg. Tul. de adul. & per consequens delictum, l. si nuptiarum 9. §. 1. ff. de statulib. l. si quis 5. in fine princip. ff. de O. & A. Alexand. requirit scientiam, vt in *cap. Episcopus 11. q. 3. Clement. cum de consang. & affines 1. de eo qui cog. consang. l. finis de decret. ab ord. faciendo*, quia probabiliter ignorans est in bona fide; & ideo non punitur, quasi crimen admisisset, l. si adulterium 38. §. 1. & §. infam. ff. de adulterio, l. qui contra 4. in fine, C. de ini. c. sumpt. nec hoc tantum habet ignorantia antecedens, verum etiam concomitans, vt contra varios, quos ipse refert, probat Menochius de *presumpt. em. 6. casu 95. ex num. 87.*

Nec obstat argumentum ipsius difficultatis, nam verius est, stante probabili ignorantia excommunicationem non incurrere, quia non nisi in consummate propter peccatum mortale imponitur, *cap. nemo 41. l. 1. q. 3.* Sed peccatum cessat quando ad illam probabilem ignorantiam, vt proxime probat: ergo & per consequens excommunicatio, *cap. si verò 4. de sent. excom. cap. 2. de causis lib. 6. in d. Glossa ibi*, verbo *Res ignorantia, cap. cum desideres 13. de sent. excom. Couart. in cap. alma, l. p. §. 10. ex num. 7.* Suarez *diffus. 4. §. 8. ex num. 1. & diff. 15. §. 3. num. 1.* Hugolinus *ed. rubric. lib. 1. cap. 9. §. 8. num. 8.* Marcius Alterius *lib. 3. diffus. 2. cap. 3. per totum*, Costa de *falsi scientia in spirit. 85. num. 12.* Nec contrarium docent in *d. cap. si quis Episcopus 6. & 7. 11. q. 3.* in illis verbis: *Maximè si postquam didicerint*, quare repetit Nicolaus Papa in Synodo Romana. *can. 5.* nam verbum *maximè*, vel *significat tantum*, vt in *cap. peruenit 18. d. cap. 1. 16. q. 3.* vt exponit Glossa ibi: vel si comprehendit ignorantes, non sunt, quos probabilis ignorantia excusat, sed qui commouentur ex causa, supina, vel affectata, iuxta textum in *cap. qui & dominus 24. in fine 12. q. 2. cap. 1. §. quod nec sufficiat, de postul. Prelat. cap. per 37. diff. cap. cum inhibitis 4. 1. de claudess. de postul. cap. eos, de tempor. ordin. in 6. l. 5. ff. de rebus ead. l. 6. §. de iur. & fidei. ignor. l. 44. de ritu nupt. de qua ignorantia, causa videlicet, intelligit Glossa ibi, textum in *cap. quoniam multos 103. 11. q. 3.* iuxta quam ex noua constitutione huius textus causa, & supina ignorantia excusat. Sed Glossam testifici Suarez *diffus. 3. §. 3. num. 12.* quare illa verba accipit de ignorantia probabilis, & inculpabilis. Quo modo etiam accipit Glossa in *d. cap. cum desideres*, verbo *Excommunicatione*, & Alterius *lib. 1. de confus. diffus. 15. cap. 5.* ex quo affirmat Pontificem Gregorium nihil eorum ignorantes nisi concessisse, sed declarasse quod iure ipso naturali locum habebat ad tollendos sectipulos. Sed quia huic explanationi obstant priora verba illius textus, ibi: *Perire quotidie carissimos parum ignorantia*, quare supponunt propter ignorantiam culpabilem, & peccaminosam, gratiam illam Pontificem concessisse, qualis non potest esse ignorantia probabilis, mox redit Suarez ad explanationem Glossæ, affirmans quatenusque ignorantiam fortasse excusare communicationem cum excommunicato à minori excommunicatione, dummodo affectata non sit, quia hæc malitie æquiparatur; alia verò ignorantia non continet veram, & propriam contumaciam in communicante, sed negligentiam, quare quemadmodum fuisse in *presenti* textu, vt propter eam dispensatio concedatur in irregularitate; ita propter animarum*

17.
Dissolu-
tur apo-
stolica
nisi reu-
ocata
fuerit.

O o periculum

periculum efficit, in d. cap. quoniam, in excommunicationem minores non incidunt, qui etiam ex crassa, & supina ignorantia excommunicatis communicant; quare indulgentia hæc ad alios casus non protrahitur, sed in alia, in quibus casibus gratia concessa non fuit, crassa, vel supina ignorantia non excusabit. Nec obstat textus in cap. sicut dignum, §. de illis, de bonis, id. quia verbum *vel ignorantem*, ibi non apponitur, ut etiam eo casu ei, qui cum excommunicatis communicabit, imponatur; sed potius ne imponatur, quemadmodum non imponitur eo casu, quo quis ex timore communicavit, iuxta dictum caput *quoniam mulier*; & hoc duos casus considerandos esse aperte iubet Pontifex. Nec tandem obstat textus in d. cap. excommunicati 112. 11. q. 3. si accipimus verbum *absoluitur*, pro declaratione, hoc est absolute, ut accipitur in cap. audiamus 24. q. 1. iuxta Patrem Suarium de censur. disp. 4. §. 4. m. 2. 2. aut etiam ut textus ille procedat in crassa, & supina ignorantia, quæ etiam vera ignorantia est; non de affectata, quæ est ignorantia simulata; nam cum sententia, de qua ibi, fuisset publicè promulgata, eos ignorantia non excusat, ne incuratur excommunicatio, iuxta textum in d. cap. qui à divina, cap. 1. §. quod nec sufficit, de postul. Prelat. Illa tamen ignorantia facit, ut statim absolute concedatur, quemadmodum dispensatio in præsentis textu.

18.

EXPOSITIO
CAP. CUM
EORUM
DE SENT.
EXCOM.

Sed suprâ traditæ assertioni obstat textus in cap. eorum aliorum 32. de sen. excom. ubi Innocentius III. affirmat, eos qui manus violentas lo clericos iniecerunt, & ita sacris ordinibus initiati fuerunt, ignorantes censuræ, in suspensis gradibus ministrare non posse, nisi obtenta dispensatione. Igitur quia qui cum ignorantia probabiliter censuræ ordine suscepit, irregularitas efficitur. Pro cuius textus expositione dilectum consiliendum est inter ignorantiam facti proprii, & ignorantiam facti alieni; nam ignorantia proprii facti, de qua in eo textu agitur, iusta, & probabilis esse nequit, immò nec præsumitur, argumento legis ultime in fin. ff. pro suo 1. quæquæ 7 ff. ad Velleum. & ideo in eo casu dispensatio necessaria est: ignorantia verò facti alieni, de qua in præsentis agitur, iusta, & probabilis est, l. ultim. in fine, ff. de iur. & fact.

ignor. quia ut inquit Consulatus in l. 2. ff. eod. tit. talis ignorantia etiam prudenter fallit. Illustrat Robertus lib. 4. semer. cap. 15. & ideo ex excusat, non tantum in etulibus, l. 1. l. 3. C. 4. l. regul. 2. ff. eodem tit. l. qui fundum 7. §. 2. ff. pro emptore, l. si res 57. ff. de legat. 1. l. in bonorum 10. ff. de bonor. possess. l. nequom 31. cum l. sequenti, §. 2. ff. de usufruct. l. si à patre 5. cum l. sequenti, ff. de condit. indeb. l. quando 5. cum sequenti. C. qui admittit: sed etiam in criminalibus, l. liberorum 11. §. non tantum, ff. de his qui notant. infam. l. 2. ff. si quis in lras vocatus, l. inter 16. §. contrarium, ff. de pignorat. act. l. si quis 7. §. doli, l. si fundum 7. ff. de iurisd. l. 4. in fin. C. de incest. nupt. l. plerumq. 14. C. ad leg. Flavianæ de plag. cap. si quis cum duobus, sequenti. 34. q. 2. cap. 2. de cognat. spirit. regul. ignorantia, de R. l. lib. 6. late illustrat Amaya lib. 1. obseru. cap. 1. num. 1. unde excusat ab excommunicatione, cap. si verus 4. de sen. excom. Suarez de censur. disput. 4. §. 8. num. 11. Hugolinus cod. tract. ratul. r. cap. 9. §. 8. & ob irregularitatem, cap. significasti 18. de homicid. de qua ignorantia rectè accipiunt præsentem textum Innocentius. Hostiens. & Anchutan. nec contrarium probant textus in l. genero 8. ff. de his qui not. infam. l. 1. ff. de legibus, l. 2. ff. de termino motu 2. l. si fortuito 11. ff. de incend. quos & alios explicat Amaya ubi proxime. Nec etiam obstat textus in l. ultimus 11. §. 1. ff. de all. empti. Cui respondeatur ex ratione textus in l. 1. §. causa, ff. de adit. edict. scilicet quod non interest, scilicet quis ignorans, an eisdem: quæ ratione procedunt textus in l. si adit. 19. §. 1. ff. locati, l. inter 16. §. contrarium, ff. de pign. act. Nec etiam obstat textus in l. si pariter 19. §. 1. ff. quemadmodum servitus; quia cum tempus, de quo ibi, quo servitus amittitur, sit continuum, currit etiam ignorant, iuxta dictam legem genero. Nec tandem obstat textus in l. interdictum 16. §. licet, ff. de publican. quia ut ibi notat Accursius, ignorantia, de qua ibi, non est iusta, & probabilis, quia est eius, quod quis scire tenetur; & ideo non excusat, sed ea stante quis mihiis puniatur: quæ ratione etiam non excusat in l. servus 12. C. de agris, lib. 1. l. 1. C. de calumniis Syriacanis.

CAPUT X.

* Idem.

SI¹ celebrat minori² excommunicatione ligatus, licet graviter³ peccet, nullius stramen notam⁴ irregularitatis incurrit, nec⁵ eligere prohibetur, vel ea, quæ ratione⁶ iurisdictionis sibi competunt, exercere. Si tamen scienter talis electus fuerit, eius electio est⁷ irritanda pro eo, quod ad susceptionem eorum eligitur, à quorum perceptione à sanctis Patribus est priuatus. Peccat autem conferrando ecclesiastica sacramenta: sed ab eo collata, virtutis non carent⁸ effectu, cum non videatur à collatione, sed participatione sacramentorum (quæ in sola consistit perceptione,) remorsus. Dummodo non in contemptum ecclesiasticæ disciplinæ, videlicet contra prohibitionem superioris, communioni excommunicatorum⁹ pertinaciter se ingesserit: in quo casu est anathemate feriendus.

NOTÆ

1. **a** *Deu.]* Gregorius videlicet IX. qui præfentem constitutionem edidit, ut decidet, fopitetque veterem consuetudinem; nam cum aliis canonibus statutum esset clericum excommunicationem celebrantem irregularitatem incurre, quos retuli in cap. 4. hoc tit. quia tamen expressum non erat, an de ligatis tantum maior excommunicatione, an etiam de minori fieri canones loquerentur, cepit de hoc apud interpretes dubitari, & super ea diuersas fuisse opiniones refert Hostiensis in præfenti, num. 1. quare ut eam questionem definiret Gregorius in præfenti, docet clericum minori excommunicatione ligatum, celebrantem, licet grauius peccet, nullius tamen notam irregularitatis incurre, & posse eligere, atque ea, quæ ratione iurisdictionis sibi competunt, exercere, non tamen eligi; additque, peccare conferendo ecclesiastica sacramenta, sed ab eo collata virtutis effectum non care, diuimodo in contemptum ecclesiasticæ disciplinæ communione excommunicationem pertrahat non seingesserit: quo casu affirmat, esse anarhemate feliciorem. Quam Gregorius constitutionem notabilem, & magistralem dixit Butius in præfenti, num. 1. furiosorem aliis appellauit Panormi, num. 1. eleganter dixit Couarr. in cap. alma, t. p. in initio, num. 4. & 5. 6. num. 5.

b *Celebrat.]* Hæc est Missæ sacrificium offerre, iuxta textum in cap. u qui 78. de sent. excomm. lib. 6. Clement. 2. de priuile. Hugolinus de censur. tab. 3. cap. 8. num. 1.

2. **c** *Minori excommunicatione.]* De qua in cap. 2. de except. cap. penult. de sent. excomm. & de illa tantum præfens questio procedit, non de aliis minoribus excommunicationibus, quæ priuabant officio pacis, ut societate Episcoporum, seu sacerdotum, de quibus agit Martinus lib. 2. exercit. cap. 1. cum sequenti. Dicitur enim hæc minor excommunicationis computatione ad maiorem, quia hæc paucis effectibus est contenta; priuatur enim tantum aliqua communione, veluti passiva perceptione sacramentorum, quæ quauis olim in Ecclesia magna pena fuerit, ita vt simpliciter excommunicatio diceretur, vt ex canone 10 alius 11. Apostolorum constat, & facile probatur ex cap. sacerdotis 63. de consecra. dist. 1. 60. in 4. dist. 22. q. 1. art. 1. Martinus Aliet. de censur. disp. 2. cap. 5. excommunicatis, Suarez eod. tract. disp. 8. sect. 3. num. 2. atramen quia longè grauius damnum infert excommunicatio maior, pluresque habet effectus, ideo eius respectu minor excommunicatio dicitur, quemadmodum minor capitis diminutio appellatur respectu maioris, & maxime, §. minor, Instit. de cap. diminut.

3. **d** *Gravius peccet.]* Innocentius in præfenti, n. 1. ait, quod licet grauius peccet; quia celebrat in peccato mortali ex eo contracto, quia cum excommunicatione maiori excommunicatione communicauit, iuxta textum in cap. sacro de his que vi, & ita est suspensus quoad se, cap. sacerdotes 90. 1. q. 1. cap. ult. de cohabit. cleric. Sequuntur Hostiensis num. 1. Anton. num. 3. & 4. & eos refellit Couarr. in cap. alma, t. p. § 8. num. 2. ex eo quia ad minorem excommunicationem non desideratur necessarium mortale crimen, sed sufficit venialis culpa. Grauius ergo peccat, quia dum celebrando precipit sacramenta, facit contra præceptum Ecclesiæ in materia gratiæ & sacra, & violat censuram D.D. Gomez. in Decretis. Tom. V.

Ecclesiæ; & sic quia peccatum mortale committit, grauius peccat, l. 6. i. 9. parit. t. Couarr. ubi supra, num. 2. Suarez de censur. disp. 14. sect. 1. num. 2. Idem procedit in ligato maior excommunicatione, qui grauius peccauit, quia grauius offendit præceptum, & censuram Ecclesiæ, vt ex hoc textu, & ex cap. laues 4. hoc tit. probat Suarez disp. 11. sect. 1. num. 1. Inde etiam prouenit, quod ligatus minori excommunicatione grauius peccat, si alia sacramenta percipiat, veluti Confirmationis, Pœnitentiæ, Ordinis, aut matrimonij, vt probant Sanchez lib. 9. de matrim. disp. 9. num. 5. Hugolinus de censur. tab. 3. cap. 6. §. 1. num. 1. Sacramenta tamen ei collata valida erunt, exceptis absolutione sacramentali. Suarez supra, num. 2. non tamen peccabit ralius excommunicatione, si Missam, & alia diuina officia audiat, seu iisdem intersit simul cum aliis fidelibus, alioquin actus ecclesiasticæ communionis exerceat, siue sacros, siue politicos, dominando non percipiat sacramenta. Couarr. d. §. 8. num. 1. Suarez dist. 2. num. 4. Illi etiam, qui excommunicati minori excommunicationis conferunt sacramenta, etiam grauius peccant, quia veniunt contra præceptum, & censuram Ecclesiæ, cap. 2. de maior. & obed. Suarez d. sect. 2. num. 26.

e *Notam irregularitatis.]* Hoc nomen irregularitatis, in veteribus canonibus incongruum fuit, vt patet expositione textus in cap. si Episcopus 6. 11. q. 3. notantur Antonius hic, num. 13. Addition. Panormi, num. 6. postea vero receptum fuit ad significandos eos, qui non possunt ordinari, vel in ordinibus ministrare. Erat enim olim ab Apostolis; & à sanctis Patribus regula constituta de illis, qui adimplendi erant ad sacra ministeria, & in illis poterant ministrare, vt colligitur ex cap. vtrum orarium, §. vnde autem, 25. dist. cap. 2. 48. dist. cap. si qui sunt 4. 81. dist. quæ qui comprehensum non erant, quia extra regulam reperiebantur, irregulares dicebantur; quo nomine ad eos significandos, qui impedimentum habent, non possunt ordinari, videntur sepius Pontifices. Sicut regularis dicitur, qui iuxta regulam vivit, cap. quod Dei 5. cap. 7. de stat. monach. Concil. Mogunt. can. 13. & 21. Arelat. 6. can. 6. Veronen. can. 11. Carnot. epist. 102. pbat Benedictinus Hæphtenus tom. 1. disp. mon. tract. 1. lib. 3. dist. quæ 6. Quare primis Ecclesiæ temporibus omnes clerici dicebantur regulares, aut canonicæ, & canone, cui inscripti erant, & iuxta quem vivebant. Concil. Landie. can. 24. cap. si qui verò, cum seq. 3. §. dist. notant Cirtonus ad tit. de regul. Ita qui arectur ab ecclesiastico ordine, tanquam à regula alienus, dicitur irregularis, idest deuians à regula. cap. 1. 47. dist. ubi cum agatur de pena vltarij, dicitur quod clericus eliciatur à Clero, & alienus sit à regula, siue ab ecclesiastico gradu, vt in ipso canone 17. Concilij Nixeni legitur. Est enim vox hæc composita ex propositione in, & regula; quæ propositio negatiua priuationem inducit, l. incivile, ff. de legibus. Vnde irregulare dicitur, quod intra regulam non continetur; quo in sensu dicitur irregulariter legens pro eo, qui contra regulam legit, in cap. quousque, 69. dist. irregulare depositum, quod contra regulam depositi sit, l. Lucius 24. cum l. sequenti, §. qui promittit, ff. de posuit. Est autem irregularitas hæc nota quadam, siue impedimentum ex factu, vel defectu proueniens, quo quia prohibetur ut sacros ordines promoueri, & in eisdem ministrare; & aliquando prouenit

ex delicto, aliquando ex defectu, aliquando ex vicio, ut probavi passim in lib. 1. *Decretalium*. Et quia post delictum manet nota, l. ult. C. de generali abolitione, cap. ult. §. indulgentia 2. q. 3. l. 6. §. quia, non l. sequens, ff. de his qui non infamia, siue macula, cap. final. 25. dist. quia cum se habeat ad modum cicatricis, cap. venum 18. 1. q. 1. etiam post penitentiam datur, cap. final. de aene & qualis, & ideo reddi appellatur nota in presenti, & in cap. final. de homicida. & qui minori excommunicatione ligatus celebrat, talem notam non incurrat, quia si postquam celebravit, absoluitur, poterit vtriusque celebrare sine dispensatione; quod illi non liceret, si irregularitatem incurreret qui deponeretur, ut coniungit ligato maiori excommunicatione, & celebranti, cap. 3. & hoc tunc, nec haberet spem restitutionis, cap. si quis Presbyter 5. cum sequenti, 11. q. 3.

5. [Nec eligere prohibetur.] Quia cum tantum sit remotus à perceptione Sacramentorum, cap. 2. de except. & ab omni eo, per quod pervenitur ad illam, ut est electio passiva, de qua infra in vers. Si tamen, non prohibetur eligere, quia hoc extrinsecus se habet ad participationem Sacramentorum, nec ab ea dependet. Docent in presenti Anton. num. 1. Panormit. num. 2. Ancharan. n. 1. Couar. in cap. alius, 1. p. §. 8. num. 3. Suarez de censur. dist. 24. sect. 2. num. 4. Nec interest, an minor excommunicatio iure, an ab homine imponatur, quia in utraque eadem ratio procedit, quamvis contrarium innuitur in l. 6. tit. 9. part. 1. Nec aliud docetur in cap. illa 39. de elect. quia potius id ibi probatur, siquidem docetur minori excommunicatione ligatum posse eligere, quia canonica iudicatur electio, cui ipse interfuerunt eligendo, cap. 3. de cons. poss. & licet in eo texta asserunt Pontifex, se suppete de plenitudine potestatis, si quis in ea ex eo fuisset defectus, hoc non fecit ex necessitate, sed ex abundantia, ut docet Glossa 2. Innocentius num. 2. Suarez dist. sect. 2. num. 13. & ut satisfaceret opponentibus de minori excommunicatione, addidit illa verba: Si quis defunctus, &c. aut forte hæc verba præsentis textus tantum significant, quod propter minorem excommunicationem excommunicatus eligere non prohibetur, etiam si celebraverit, etsi de hoc non tanquam de excommunicatione, sed tanquam de crimine opponitur, ne interfit electioni, quia criminosis à temporalibus actionibus remotetur, cap. super eo 13. de testibus: & per consequens ab spiritualibus, argumento capitis per venerabilem, qui sit, sine legi, si nihilominus interfuerit hoc defectus, potuit electio impugnari, ut quodam existimasse referunt Hostiensis, & Innocentius in eo textu, num. 1. Quomodo defectus de plenitudine potestatis supplet Pontifex in eo capite. Aliud procedit in suspensis, quia hi non possunt eligere, cap. cum dilectus, vers. Quia nobis, de consens. cap. cum inter 16. de elect. cap. quia diversitatem, de concess. prebend. cap. exie. ne sede vacante, lib. 6. siue sint suspensi ab ordine, siue ab officio; nam cum non possint actum ordinis, vel officii exercere, vique nec ea, quæ dependent ab ordine, vel officio, ut ait actus eligendi, Clement. 2. de aene & qualis, quare nihil interest, an à iure, an ab homine suspensus imponatur, quicquid voluit Glossa verbo, & suspensum, in dist. cap. cum dilectus, & in presenti verbo Nec eligere.

6. [Iurisdiccionis.] Siue sit iurisdiccion ecclesiastica,

siue propria, siue delegata, ex eadem ratione, quia non pendet à perceptione Sacramentorum, quæ tantum illi prohibita est; & ideo aliorum humanorum actuum participes erit, ex l. cum Prætor, ff. de iudic. quare poterit excommunicare, & ab excommunicatione absolvere, cap. duobus 76. de sent. excom. quia non tantum iurisdictionem retinet, sed & vsum iurisdictionis: item ea obite, quæ quavis iurisdictionis non sint, tamen aguntur in iudicio. Vnde actor esse poterit, & procurator, aut testis, vel accusator, licet de his duobus dubitet Anton. in presenti, num. 15. non quia excommunicatus sit, sed quia criminosis, arguendo textum in cap. super eo 13. de testibus. item poterit constare, & facere testamentum. Glossa in presenti, quoniam sequitur Innoc. num. 3. Hostiens. num. 3. Panormit. num. 2. Suarez dist. 2. num. 4.

7. [Est irritanda.] Constat lex 6. tit. 9. part. 1. Ratio redditur à Gregorio in illis verbis: Pro eo, quod ad susceptionem eorum eligatur, à quorum perceptione à sanctis Paribus est priuatus. Quæ significat, quod quamvis per minorem excommunicationem priuatur quæ tantum Sacramentorum participatione, cap. 2. de except. quæ in sola perceptione consistit, iuxta præsentem textum, in vers. Peccat; attamen si eligatur ad beneficium, electio est irritanda, quia concomitantes se habet ad susceptionem sacramentorum; ideo enim quis eligitur ad beneficium, ut celebrando percipiat sacramenta, cap. relictum 11. de consecr. dist. 2. à quorum perceptione est priuatus. Vnde etiam eligi prohibetur, ex regula, quæ dicitur, quod quando aliquid prohibetur, omne id censetur prohiberi, per quod pervenitur ad illud, l. oratio 16. ff. de spons. l. 2. ff. de iur. iudic. cap. præterea, de offic. deleg. & ne qui vñ vi à Sacramentorum perceptione arcere, alià admittatur, contra textum in cap. una de procurat. namque si talis electio non irritaretur, acie admittetur electus ad id, à quo expressè prohibetur, contra regulam textum in l. qui testamentum 27. de probat. Sed quia hæc electio directè non celebratur contra censuram, ideo non est irrita ipso iure, sed irritanda à iudice per sententiam, ut constat ex præsentis verbo irritanda, & docuerunt Glossa in presenti, verbo Eligere, Suarez dist. 24. sect. 2. num. 2. Altitius de censur. dist. 4. cap. 3. §. 2. quare audiendi non sunt Hostiensis hic, num. 3. Cardinal. rehm. vbi. Couar. in cap. alius, 1. p. §. 4. num. 5. Hugolinus tabul. 3. cap. 6. §. 3. num. 2. existimantes, hanc electionem ipso iure nullam esse, quia persona minus idonea eligatur: & argumentocapitis postulat 7. hoc rite, accipientes verbum irritanda, iuxta subiectam materiam, hoc est irrita nuncianda; namque persona in hoc casu non prohibetur directè eligi ob minorem excommunicationem, quemadmodum ligatus maiori excommunicatione, de qua agitur in d. cap. postulat; sed indirectè, & immediatè, & ideo quamvis electio facta de excommunicato maiori excommunicatione ligato sit ipso iure nulla, d. cap. postulat; non tamen talis erit electio de ligato minori excommunicatione, sed irritanda.

8. [Sanctis Paribus.] In canone 10. Apostolorum, de quo in cap. super Apostoli 16. cum sequenti 11. q. 3. & aliis, quæ dabitur in c. significavit, de sent. excom. ex quibus verbis etiam deducitur, quod si excommunicatus minori excommunicatione eligatur ad temporalem dignitatem, Regnum, &

& Cathedram, etiam si sacre electionis sit, valebit electio, quia cessat predicta ratio. Suarez d. scilicet 2. num. 14. Alterius d. disp. 4. cap. 2. non ita si eligatur ad beneficium, simplex præsbitonium, vel simile, cuius officium non est ministrare, quia quamvis hæc beneficia non obligent ad Missam celebrandam, vel sacri ordinis suspensionem, sufficit quod ex intentione Ecclesie fuerint ad finem hanc instituta. Aliud procedit in pensione, quæ non est beneficium ecclesiasticum.

9. *j. Sacramenta.*] Consonat lex 6. tit. 9. part. 1. & rectè, quia qui minori excommunicatione ligatus celebrat, grauius peccat, ut inquit Gregorius in *presenti*; at ille, qui in peccato mortali est, non potest sacramenta contingere, c. 1. s. 1. dist. 30. si faciat, grauius peccat, cap. illud, 50. dist. cap. illud, 95. dist. cap. annua 1. q. 1. cap. preter 9. verum, 32. dist. Ergo minori excommunicatione ligatus, contemnendo ecclesiastica sacramenta non peccat, quia violat censuram Ecclesie, quia hæc tantum priuat petitione Sacramentorum; sed quia indignè confect, & in peccato mortali. Ita Innocentius, Hostiensis, & Antonius in *presenti*, quicquid velint Cossar. Suarez, & Host. relati à Barbosa in *presenti*: vel quia celebrat ut confect, quo casu accipit textum hunc Mendo in *statera*, dist. 13. q. 9.

k. *Effectus.*] Quia cum excommunicatis ratione censuræ sacramenta conferre non potest, ab eo collata non tantum valent, sed & conferant executionem.

l. *Poenitentia.*] Quare et si non fiat irregularis, quia grauius deliquit, à iudice tamen anathematizatus est ferendū, iuxta textum in cap. si quis Presbyter 5. cap. si quis laicus 26. 11. q. 3. cap. quod in dubio 50. de sent. excomm. cap. 3. 9. & 13. eod. tit. lib. 6.

COMMENTARIUM.

10. **A** Pad antiquos sacris controuersum fuit, utrum si excommunicatus minor tantum excommunicatione ligatus celebrat Missæ sacrificium, maneret irregularis, ut contingit excommunicato maiori excommunicatione, iuxta statuta in cap. 4. hoc tit. Et Glossa 1. in cap. si quis Presbyter 5. 11. q. 1. existimauit, etiam minori excommunicatione ligatus sacrificium Deo offerentes deponendos esse, & fieri irregulares, insellens ita verba illa ipsius textus, ab Episcopo suo correptus, de excommunicatis minori excommunicatione, quia eum hæc excommunicatio censuræ sit, eâ ligatus dicente correptus, cap. corripiamus 24. q. 3. & si de excommunicato maiori excommunicatione in eo canone ageretur, frustra ei imponderetur anathema, qui iam erat maiori excommunicatione ligatus. Afferunt ergo Glossa, in eo canone agi de excommunicato minori excommunicatione. Quæ Glossa sententia fulcitur ex canone 8. Concilij Carth. 2. ex quo desumptus est textus in d. cap. si quis Presbyter, ubi ita legitur: Si quis Presbyter à Presbitero suo excommunicatus, vel correptus fuerit, &c. Facit etiam, nam minori excommunicatione ligatus, celebrando grauius peccat, ut inquit Gregorius in *presenti*; quia in materia graui, & sacra violat censuram Ecclesie: hoc autem peccatum debet aliquâ poenâ poni: sed nulla poena congruentior est, quam irregularitas; nam ex eadem causa, quia grauius peccat excommunicatus maiori excommunicatione, sus-

pensus, & interdictus, celebrantes irregulares sunt, ut probatur in cap. 4. cap. Apostolica, hoc tit. Ergo similiter ligati maiori excommunicatione celebrantes irregularitatem contrahunt. Deinde quia in minori excommunicatione contrahit ex eo, quod quis communicat cum excommunicato maiori excommunicatione ligato, peccatum mortale incurrunt, cap. facit, de his qua vi: & ratione huius peccati, non tantum est suspensio quoad se, cap. sacerdos 90. 1. q. 1. cap. final. de cohabit. cleric. verum & est suspensio à iure, cap. cum excommunicato 18. cum sequenti 11. q. 3. quæ sic accipiunt Glossa in *presenti*, verbo Nec eligere, vbi Innocentius num. 1. Hostiensis num. 3. 10. & 12. Anton. num. 12. Panormi. num. 4. & 5. quare celebrando non tantum erit irregularis, cap. 1. de re iudic. lib. 6. cap. 1. in fine, cap. si cui 20. de sent. excomm. lib. 6. sed nec eligere poterit, cap. cum inter 16. de elec. cap. cum dilectus 18. de consue. cap. cum bene, de auct. & qual. cap. quia, de concess. prob. Tandem pro sententia Glossæ faciunt canones illi, in quibus damnantur generaliter excommunicati celebrantes, ut canon 108. Synodi Carthag. in illis verbis: Placuit, ut quicumque non communicat in provincia propria, & in alio prouincio, vel transmarinis partibus, ad communicandum obrepserit, iacturam communionis, vel clericatus excipiat. Vbi nulla differentia fit excommunicati maiori, vel minori excommunicatione ligati, cap. placuit 9. 11. q. 3. Ob negligentiam suam excommunicatus Episcopus, vel clericus, si autem audierit, communicauerit, ipse contra se sententiam ferit. Vbi obiter notanda est formula illa, in se sententiam ferre; & sua sententia damnari; quæ etiam reperitur in l. 3. ff. de confessi, l. final. §. sic autem, ff. de ben. eorum, l. impubertibus 7. §. preterea, ff. de suspens. tutor. nouella 53. In fine Tertul. in apolog. ibi: Nonne, inquit, & ipsius Lycurgi leges à Lacedæmoniæ emendata tantum auctori suo doloris incurrunt, ut in successu inedia de senectute inducant, Apulei. lib. 8. Metamorph. de adultero excommo sibi vim inferre cogitante, ait: Inedia flauit eliquæ sua sententia damnatum spiritum. Tacitus lib. 5. Etenim, qui de se flauentibus, humebantur corpora, illustrant Fornicarius lib. 6. ver. quid, cap. 22. Iustel. in can. 18. Eccles. Afflic. vnde Innocent. in *presenti*, num. 2. melius sentire afflicti eos, qui existimant, excommunicatos minori excommunicatione, siue ab homine, siue à canone, si celebrant, esse irregulares, citat etiam sententiam fuisse Archidiaconum in cap. excommunicatus 31 q. 3. & f. en additionator Panormi. in *presenti*, num. 2. littera B. illud intelligens, non ut excludatur irregularitas, sed quod in ea non desideretur dispensatio Pontificis, sed sufficere Episcopi.

Contrarium tamen opinio cum nostro Gregorio affirmandum est, scilicet nullius notam irregularitatem incurrere eum, qui minori excommunicatione ligatus celebrat: quod & probant lex 5. & penultima, tit. 9. part. 1. Illustrant vltra congeitos à Barbosa in *presenti*, 4. Giballina de irregul. cap. 5. q. 2. confect. 1. n. 7. Villabos v. aff. 21. diffcult. 14. n. 1. Cornejo in 3. p. disp. 6. de irregul. dub. 2. v. 4. 1. Leander eod. tit. disp. 2. 1. 9. 1. Ratio in eo consistit, quia irregularitas non incurrunt propter executionem cumlibet actus sacri prohibiti per censuram, nisi actus ille concludat ad ordinem: hoc est non incurrunt propter suspensionem solam sacramenti, sed propter indistinctum ordinis administrationem, à quo per censuram aliquis

prohibitus est, ut probat Suarez *ubi proximi*. Vnde ut quis irregularis efficiatur, oportet quod sit suspensus ab aliquo actu, qui ad aliquem ordinem pertineat, ut ex cap. *in cui* 20, ibi, *In sui agens officio: de fene. accom. lib. 6.* probant Cossart. Hugolinus & Alterius *ubi supra*: atqui minori excommunicatione ligatus celebrans non peccat propter administrationem ordinis, quia minor excommunicatione non suspendit ab aliquo actu ordinis ecclesiastici; sed peccat propter solam suspensionem sacramenti, quae ad aliquem actum ordinis non pertinet, & perinde peccat, atque peccaret laicus sacramenta recipiendo. Igitur celebrando cum minori excommunicatione nullius irregularitatis notam incurrit. Nec interest, quod minor excommunicatione ligatus celebrando grauiter peccet, quia hoc non sufficit, ut fiat irregularis, quia cum irregularitas proueniat à iure canonico, non est aliquis iudicandus irregularis, nisi ubi hoc iouenitur expressum, cap. *in cui*, de fene. *excom. lib. 6.* Suarez *disput. 24. sect. 2. num. 3.* & *disput. 40. sect. 4. num. 12.* Quapropter cum ob peccatum hoc non fit irregularis à iure irregularitas, non est illi qui ita peccauerit, punicodus, sed arbitrio sui Praelati, cum certa poena in iure non statuatur, ut argumento textus in cap. *de causis* 4. §. *final. de offic. deleg. cap. tempora* 16. q. 7. l. 1. ff. *de iure delib.* probat Glossa 1. in *praefati*, quam sequuntur Hostiensis *num. 2.* Hugolin. *de censur. cabul. 3. cap. 8. num. 1.* Alter. *cod. tract. disput. 4. cap. 2. §. quare aliquis.* Suarez *cod. tract. disput. 24. sect. 2. num. 3.* Alia causa est eius, qui cum esset maior excommunicatione ligatus, celebrans; hic namque erit irregularis, quia maior excommunicatione includit suspensionem ordinis; quia quauis fit censura distincta à suspensione, actum quoad effectum suspendendi habet eandem efficaciam cum ea, ut probat Suarez *disput. 11. sect. 3. num. 3.* & ideo quia ligatus maiori excommunicatione celebrando attentat officia sibi interdicta, irregularis efficietur, ut laudè probant in

cap. 4. *hoc tit.* Hinc quia minor excommunicatio priuat tantum passiva suspensione sacramentorum, quae non tendit ad ordinem ecclesiasticum, non est verè, & propriè suspensio, nec taliter excommunicatus dici potest suspensus; quia vera suspensio non consistit in priuatione passiva, sed in actiua; non tantum sacramentorum, sed aliarum functionum ecclesiasticarum, ut probat Suarez *de censur. disput. 23. sect. 1. num. 4.* Etenim censura ecclesiastica, qui minister Ecclesiae impeditur, oe diuina officia celebret, aliquàve ecclesiastica potestate utatur: quare ligatus minori excommunicatione, quia verè & propriè non est suspensus, celebrando non fit irregularis, & eligere potest iuxta hunc textum: non ita verè, & propriè suspensus, quia hic celebrando irregularis efficietur, cap. 1. *de re iudic. lib. 6.* nec eligere valet, d. cap. *cum inter, de elect.* quia non potest ecclesiastica moerore obire. Vnde etiam fit, quod quauis admittamus peccatum mortale committere eum, qui communicat cum excommunicatione ligato, & per consequens suspensum manere quoad se; artamen hae suspensio non est sufficiens ad irregularitatem incurrendam, cap. *final. de cohabit. cleric.* ex quo ita docuerunt Innocentius in *praefati*, num. 2. Hostiensis *num. 3.* Antonius *num. 12.* Panotimitanus *num. 4.* Anchazarus *num. 9.* Nec obstat textus in *dist. cap. Presbyter* 3. c. 1. *quest. 3.* pro contraria sententia adductus, qui loquitur de clerico maiori excommunicatione ligato, & doceret, quod si ipse in contemptum superioris sacrificium Missae celebrasset, ut schismaticus aliud altare exegeret, locum amitteret, id est irregularis maneret, & anathema ei diceretur. Nec nouum est, ut excommunicatus maiori excommunicatione anathematizetur, cap. *Engelardum* 3. *quest. 4. cap. cum non ab homine* 10. ubi probant, de iudicio: & ita textus in *dist. cap. Presbyter*, accipiendus est de clerico excommunicato maiori excommunicatione, de quo etiam accipiendi sunt alij canones super relati.



TITVLVS XXVIII.

De clerico non ordinato ministrante.

CAPVT PRIMVM.

¹ Hormisdà Papa.

S¹ I¹ quis ² baptizauerit, aut aliquod ⁴ diuinum officium exercuerit non ordinatus, propter temeritatem ⁵ abiciatur de Ecclesia, & nunquam ordinetur.

NOTÆ.

1. ¹ **Hormisdà.** Ita etiam legitur in prima collectione, *sub hoc tit. cap. 1.* licet Glossa marginalis legat *Honorius*. Sanctus Hormisdà, maior Campaens, patriâ Frusinus, electus fuit Summus Pontifex die xxv 1. Nouemb. an-

no 514. Scripsit varias epistolas, ex quibus nonnulla fragmenta extant apud Gratianum, & Carotenensem; & ex eis forsitan textus praefatus transcriptus est. Alia de ipso Pontifice referunt Baronius, & Cortolanus *d. anno* 514. Iacob. à sancto Carolo in *Bibliothec. Pontificia*, & nos in cap. 1. *de dispens. impub.*

b Si quis.] Clericus videlicet in minoribus ordinibus constitutus, vt ita conueniat presentis titulo de clericis non ordinato, licet hac rubrica in prima collectione tantum habeatur de non ordinato ministrante: sed Raymundus respiciens auctoritates sub hoc titulo compilatas tantum agere de clericis ministrantibus in gradu, quem non habebant, ideo rectè auctoritate Gregorij IX. adiecit, de clericis: vnde plures deducunt, laicum solenniter baptizantem, aut sacramentaliter absoluentem, non fieri irregularem, vt docuerunt Angelus verbis Irregularium, num. 31. Rosella eod. verbo, num. 2. Arimilla non. 65. Sà n. 5. Henriquez lib. 2. cap. 29. num. 5. Sayrus de censur. lib. 7. cap. 10. num. 6. Layman lib. 1. summa, tract. 3. p. 5. cap. 3. num. 3. Bonacin. de irregul. disp. 3. q. 3. punct. 6. num. 1. plures relati à Barbosa in present. num. 5. quibus adde Gibalinum de irregul. cap. 5. censur. 1. Dianam p. 4. tract. 2. resol. 77. & 91. Corneium in 3. p. tract. de irregul. disp. 7. dub. 291. ea ratione moti, quia nullibi reperitur hac irregularitas statuta contra laicum; siquidem in cap. 2. hoc tit. agitur de Diacono Missam celebrante: in hoc autem textu facillè deducitur, agi de clericis in minoribus ordinibus constitutis solenniter baptizantibus; licet eum integra hac epistola cateamus, id aperit probare non possumus. Contrariam tamen sententiam, videlicet laicum solenniter baptizantem irregularitatem contrahere, satis probabiliter reuerunt Suarez 3. p. in 3. p. disp. 3. sect. 4. Paludanus in 4. disp. 5. sect. 3. conclus. 2. Valencia tom. 4. disp. 4. q. 2. punct. 1. alij, quos refert, & sequitur Leander de irregul. tract. 2. disp. 20. q. 7. Auila de censur. p. 7. disp. 2. sect. 2. dub. 13. utamque opinionem probabilem, sed primam probabiliorē dicit Prado de sacram. tom. 1. q. 67. dub. 1.

c Baptizantem.] Solenniter videlicet; quod tantum facere possunt, vt ordinarij ministri, Episcopi, & Parochi, vt probatur in canone 38. Concilij Mliber. vel ex delegatione, vt Diaconi, vt probati in canone 77. eiusdem Concilij; nam priuatis, & tempore necessitatis, non solum eccl. vel minoribus Ordinibus constituti, verum etiam laici possunt baptizare, vt probati in d. can. 38. Concilij Mliber. & statim dicemus.

d Diuinum officium.] Vnde aliqui asserbant, administrantem sacramenta, etiam non ordinatum, irregularem non fieri, quia appellacione diuinorum officiorum sacramenta non continentur. Sed contrarium verius est; nam qui administrat sacramentum non ordinatus, irregularis fit, vt de baptizante solenniter docetur in presentis textu, & de Missam celebrante in sequenti, & de aliis Sacramentis probat Gibalinus de irregul. cap. 5. p. 2. censur. 2. & non improptie diuinorum officiorum appellacione sacramenta continentur, vt ipse Gibal. probat. Vnde sacerdos administrans confirmationem, irregularis manet. Auila ubi supra: excoentes verò officia minorum Ordinum, etiam solenniter, nullam irregularitatem contrahunt. Vgolinus de irregul. cap. 37.

e Abiciatur.] Hec ab omni proficiis communionē ecclesiastica pellatur, vt in can. 51. Apostolor. Concil. Landic. can. 36. Tolet. 4. can. 58. Meldenhe can. 73. illustrat Motinus lib. 2. exercit. cap. 26.

COMMENTARIUM.

Cum nemo seipsum baptizare possit, cap. de bap. 4. de bapismo, D. Thomas 3. q. 66. art. 5. ad 4. sicut nec absolueret peccatis, cap. de iudic. 24. q. 1. aut ad beneficium presentate, cap. final. de instit. in l. Lauoe. varior. tit. 4. cap. 6. num. 18. quia debet dari distinctio realis inter dantem, & accipientem, i. in dandi & 5. Præter ff. de iur. & censur. ideo bapismum susceptus eget ministro, qui illum sibi confetatur: licet enim sacramentum Eucharistie sibi ipsi quis ministrare possit, vt in sacerdote celebrante contingit, immò & olim non solum viri, verum & femine suis manibus sacram Eucharistiam sumebant, Concilium Alnsid. can. 36. ibi: Non licet mulieri nuda manu: hac tamen differentia seruata, vt viri nudis manibus in forma crucis appositus eam acciperent, mulieres verò non nudis manibus, sed supposito linneo, sexta Synodus Trullana, ibi: Si quis immaculati corporis in synacu tempore esse participi voluerit, etiam antequam eius fiat communio, manus in crucis formam figuras se accedat, & gratie communionem accipiat. Cytillus Hierosolym. cauch. 5. ibi: Accedens autem ad communionem, non expansis manuum vultu accedes, nec cum distinctu digitorum, sed iungitram veluti sedam quendam subiciis dextra, qua Regem suscipere est, & tunc eam manu suscipe corpus Christi. D. Augustinus sermone 25. ibi: Omnes mulieres exhibent nuda lintheamina, ubi corpus Christi accipiant. Rationem expræstis Sanctus Basilus episc. 189. Quoniam per tempora illa persecutionum cogebantur homines necessarij sacerdoti, vel ministro non presente proprijs manibus percipere communionem, non est nisi supernaculum vt demonstrum, illum ipsam rem non esse grauius & iniquè ferendam, eo quod inueterata consuetudo hoc ipsum vt ipsa confirmatio dederas; nam & illi omnes, qui per errorem vitam monasticam instituerunt, ubi corpus non suppetit sacerdoti, eum habentem decem, de suis manibus illum percipiunt. Synodus 6. can. 187. Gregorius Nazianz. apud Nonarium lib. 5. cap. 63. in Agn. Eucharist. & sequenti: notarijs Menandrus in nouo ad Sacram. D. Gregorij, fol. 391. Viacesomes volum. 4. de ritibus Missæ, lib. 7. cap. 11. Bolengerus ad Casaubon. dilatic. 3. pag. 218. Christi. Lupus ad can. 101. Synod. 6. Et inuoluit matrimonium contrahentes, sicut ministri, & susceptores sint illius sacramenti, ita vt vnusquisque minister sit partialis, & ambo faciant vnum ministrum totalem; atque sint cause physice, seu morales gratie, vt probant Basilus lib. 1. de iur. cap. 3. Trullench. eod. tract. cap. 5. dub. 7. Nihilominus in bapismo sacramento distinctus debet esse minister à subiecto; tum propter factum, & præceptum Christi Domini, qui non à se ipso, sed à Ioanne baptizari voluit, cap. 3. Mathiæ, & iussit Apostolus apud eundem: Ne, baptizate omnes gentes; ostendens alium debere esse qui baptizatur, alium qui baptizat: tum quia bapismus fit habet ad instar generationis corporalis, cap. regenerante, cap. regeneramus, de consur. disp. 4. Trident. sess. 24. de reformat. cap. 2. sed in generatione duo concutunt, alius qui gignit, & alius qui generatur: legitur similitus in bapismo, vt arguebat Pontifex in cap. debium, de bapismo; & notauit Turrisicrem. in cap. in necessitat, de consecrat. disp. 4.

6. Circa ministerium sacramenti baptismi duplex inspectio occurrit, alia circa ministrum, qui valide illum conferre valet; alia circa illum, qui ratione officij, aut delegationis potest non solum validè, verùm & solenniter illum administrare. Circa primam, testis sententiæ Calixti eximianensis baptismum collatum ab alijs, quàm à ministris Ecclesiæ, nullum esse, quem feliciter refellit Bellarminus lib. 1. de baptismo, cap. 7. certum est, baptismum sub legitima forma collatum à quocunque, siue baptizato, siue Pagano, Iudæo, vel hæretico, viro, siue femina, ratum esse, ut definitum legitima in cap. 1. §. una però, de summa Trinit. Concil. Florent. in Decreto fidei, §. primum; & sigillatim de his baptizantibus, cap. in necessitate 21. cap. famulum 36. de consecr. dist. 4. cap. diaconos, 95. dist. cap. ad limina 30. q. 1. probant Cæsar de Eccles. Hierarch. disp. 8. §. 2. num. 21. vnde D. Petrus dum adhuc sacris ordinibus iunior non esset, baptizavit suum Andream, & filios Zebedæi: & ipsi dum laici adhuc essent, ceteros Apostolos baptizarent, ut refert Baronius tom. 1. anno 31. & baptismum collatum à D. Athanasio adhuc puero, postea Episcopo Alexandrino, probavit Ecclesia, ut post Rufinum narrat Baronius anno 311. Feminas etiam validè baptizare probat Vibianus Papa in cap. super quibus, ibi: Femina puerum baptizavit, 30. q. 3. De Pagani, & Iudæis idem probant Isidorus in cap. Romanus 23. ibi: Licet Pagani sit qui baptizant, Nicolaus in cap. à quodam Iudæo, Augustinus in cap. sola, de consecr. dist. 4. Idem de hæreticis docetur in cap. ostenditur, cap. aliud, cap. nullus, cap. siue 51. de consecr. dist. 4. Concil. Nicæno can. 19. Trident. sess. 7. de sacram. cap. 4. D. August. lib. 6. de baptismo, cap. 25. & ab alijs Patribus concessis à Baronio anno 217. & 258. Pamelius in notis ad epistol. 73. D. Cyprian. num. 27. & prædictam doctrinam defendunt Suarez, Vasquez, & alij ad D. Thomam 3. p. q. 66. art. 3. Sententiarij cum Magistro in 4. dist. 5. Summis relati à Leandrum tom. 1. de sacram. dist. 4. quest. 14. Trullench de baptisimib. 3. cap. 1.
7. Verùm hæc veritas catholica difficilis redditur sequentibus argumentis. Primum ex eo nascitur, nam in quolibet Sacramento Christus Dominus designavit in sua intentione materiam, formam, & ministrum: sed in baptismi institutione tantum designavit Apostolos, & eorum successores Episcopos ministros huius sacramenti, dum dixit: Euntes baptizate omnes gentes; Ioannis cap. 10. Matthæ cap. ult. Ergo alij quàm Episcopi non possunt conferre hoc sacramentum. Quam considerationem firmat D. Isidorus lib. 2. de officiis, cap. 3. relatus à Carnotensi p. 1. decret. cap. 66. to illis verbis: Illud, quod nec prius, nec clericis baptizare licebat, nisi tantum sacerdotibus, in Evangelio tantum legitime Apostolis permissum. Secunda difficultas oritur ex eo; nam si laici permitteretur baptizare, maxime propter necessitatem huius sacramenti, ut considerant Doctores suprà citati. Sed hæc ratio est insufficiens. Igitur laici nec in necessitate baptizare valent. Probatur minor, nam sacramentum penitentię æquè necessarium est post peccatum æquale, ac baptismus propter peccatum originale: sed etiam necessitate existente laici à peccatis absolvere nequit, cap. verbum, de penit. dist. 1. Glossa in cap. postulari, & in cap. presbiter, de officio ordin. notatus in cap. 2. de iuris: ergo nec baptizare. Tertia difficultas

ex eo provenit, nam iuxta dictam rationem tantum euntes, in extrema necessitate posse laicum baptismum conferre; quod & doceri videtur in Concilio Florentino dist. 6. Primum, in illis verbis: In casu autem necessitatis non solum sacerdos, vel diaconus, verum etiam laicus, vel mulier baptizare potest. Et cap. diaconos, 95. dist. cap. mulier, de consecr. dist. 4. cap. ad limina 30. q. 5. ibi: Non hoc opus baptizandi laicis fidelibus iuxta communem antiquitatem, si necesse fuerit, sacre conceditur. Dico Hieronymo in dialogo contra Iovinianum, ibi: Baptizare si necesse cogat, scimus etiam licere laico. D. Isidoro lib. 2. de officiis, cap. 24. Gelasio epistol. 1. Ergo etiam necessitas casum laici validè conferre nequeunt baptismum. Etiam quod de feminis dicebamus, difficile redditur ex Concilio Carthag. 4. can. 100. ibi: Mulier baptizare non presumat. Refertur à Carnotensi 1. p. Decreti, cap. 65. Etiam quod de Pagani dicebamus, impugnari potest hoc ratione; nam nemo potest dare quod non habet, cap. nulla 62. cap. gratia 2. q. 1. cap. quomodo, de consecr. dist. 4. Sed Pagani adhuc baptismum non susceperunt: ergo non possunt alijs conferre. Baptismus enim est sacramentum fidei: quomodo ergo qui non quidem fidem professus fuit, illum alijs communicare possit? Fulcrum hæc difficultas ex cap. quos à Pagani, de consecr. dist. 4. cap. si quis per ignorantiam 1. q. 1. ubi à Pagani baptizati inbentur rebaptizari: vnde D. Augustinus lib. 2. contra Iulianum Parmen. cap. 13. multum dubitat de baptismi à non baptizatis collato. Tandem quod dicebamus; hæreticos validè baptizare, falsum videtur, siquidem baptismum ab hæreticis collatum repletur, & damnat Ecclesia, ut baptismum Paulianistarum, & Cataphrygum in Synodo Nieznæ 2. can. 7. Laodic. can. 8. extra general. can. 95. septima can. 7. notantur Baronius anno 258. Cæsar disp. 1. §. 4.

Adhuc tamen defendenda est suprà tradita doctrina; i quam post nuper laudatos doct., & eruditè probat Andreas Saulay in Panoplia sacerdotali lib. 5. cap. 8. cum sequenti. Nec obstat, quod de institutione huius sacramenti expendebamus; nam præterquam quod non constet, eo tempore, quo Christus Dominus noster fuisse Apostolis ire in universum mundum, ac baptizare, præsentem tantum fuisse Apostolos, immò facile credi potest alios plurimos adfuisse: dicendum est: Apostolos ipsos declarasse præceptum illud, secum associando alios, ut Stephanum & Philippum, ad idem ministerium prædicandi, & baptizandi; vnde deprimetur, ex præcepto duo non solum Episcopos fuisse designatos ministros huius sacramenti, verum & alios in ecclesiastico gradu constitutos. Nec contrarium probat D. Isidorus, quia accipiendus est sanctus Doctor de baptismi solenniter conferendo, qui tantum à Presbyteria ratione proprii officij à ministrari valet. Nec secundum argumentum refutatur, cui ut satisficiant Doctores suprà relati, antè querant diffinire rationem, quare laici virginem necessitate possint validè, & tunc sacramentum baptismi administrare, ceteraque sacramenta, etiam virginem necessitate non possint conferre: & vera ratio petenda est ex necessitate sacramenti baptismi; eum enim hoc sacramentum simpliciter necessarium sit, ad solentem anime congruè institutura fuit, ut à quolibet viante, & cum materia ita vulgaris, ut est aqua, possit administrari: penitentia autem

8.

EXPENDITUR
TVA QUÆ
DAM DIFFI-
CULTATES.

7.
D2 MINUS-
T20 BAP-
TISME.

autem sacramentum non ita necessarium est, cum per contritionem possit suppleri eius defectus, & cum ea poenitentia se saluat. Quam rationem post alios probat Celsus de ecclesiasticis hierarch. disp. 8. §. 1. num. 11. nec testis obiectio adducatur, vetum enim est, etiam ante tempus necessitatis laicoa valide posse hoc sacramentum administrare, dicit cap. a quodam Iudas, D. Augustin. lib. 2. contra Parmen. cap. 11. & 19. ibi: Sed etsi nulla resurgetur, & a quocumque datur, quod datum fuerit, non potest dici non datum, quoniam dicitur potest illud datur. Testallianus de baptismo, lib. 1. Aliquis & laico in eis baptizandi; quod enim ex aqua accipitur, ex aqua dari potest. Neque textus in contrarium adducti contrarium probant, nam licet loquantur de baptismo collato à laicis in casu necessitatis, idem intelligitur definitum extra necessitatem, quod ariet ad valorem sacramenti; quoniam in sacramentis pro varietate temporum diuersi ministri non dantur, ut late probat Valquez tom. 2. in 3. p. disp. 129. cap. 2. ideo autem Patres casum necessitatis tantum expresserunt, ut simul ostenderent ea vigente non solum quocumque viatore posse valide, & cum effectu conferre hoc sacramentum, verum & tunc, licetque ministrari; quod non procedit extra tempus necessitatis, quia tunc laici baptizantes, etsi valide, non tamen licite hoc sacramentum conferunt. Nec obstat canon 100. Concil. Carthage. procedit enim in baptismo collato eo tempore, quo nulla necessitas adeit, aut ea vigente est copia Presbyteri, aut alterius ministri; tunc enim mulier baptizante nequit; si autem baptismum de facto conferat, non negant Patres, valide, & cum effectu collatum esse: quo modo etiam accipiendi sunt Tertul. & Epiphanius, relati à Bellarmino gl. cap. 7. Nec obstat quod de baptismo à paganis collato capere debemus; nam effectus huius sacramenti, sicut aliorum, non prouenit ex bonitate, seu malitia ministri, nec ille est qui gratiam, aut fidem confert, sed virtute sacramenti ex opere operato sacramenta effectum sortiuntur; unde Pagani, seu Iudei, valide baptismum conferunt, quia nihil de suo largiuntur. Hoc tamen procedit si baptismus ab illis ministratur sub prescripta, & debita forma, non verò si sub alia conferatur; quia tunc baptismus ex defectu forme inualide confertur, cap. Ecclesius, 68. disp. vnde Pontifex in d. cap. quos à pagani, & similibus, obo iubet à pagani baptizatos, iterum baptizari, quia à pagani baptizati sunt, sed quia baptizati non fuerunt sub debita forma; & securus esse, ac totius baptizatos à pagani semper sub conditione iterum baptizari, docuere Andreas Sausay in Panopl. sacerdotali, lib. 5. cap. 11. Diana p. 10. tract. 16. resol. 29. Nec obstat rearus in d. cap. si quis per ignorantiā, qui duas partes continet, quarum prima non reperitur in operibus D. Hieronimi; secunda verò enim refertur in cap. Romanus, de consecrat. disp. 4. & si adhuc admittamus verba prioris partis ipsius textus esse D. Hieronimi, legenda sunt interrogatio, non assertio, usque ad illa verba, non ordinatur: ut tunc sequatur responsum ipsius sancti Doctoris per illa, Romanus Pontifex, &c. Nec dissimili scilicet medietati potest textus in cap. 1. de Presbytero non baptizato, ut in eius commentario iam observauimus. Tandem nec quod dicebamus de baptismo Paulianistarum, obstat; licet enim temporibus Stephani Papæ I. per an-

noa 258. in Ecclesia præcipue Orizontali valde agitata esset hæresis, an reuerti ad hæreticos deberet rebaptizari, si ab ipsis essent baptizati, affirmante D. Cyprino cum aliis Episcopis eamque doctrinæ, & vitoris, ut constat ex Epistolis 71, 72, & 75. eiusdem Sancti; tamen Stephanus definit rebaptizandos baptizatos ad hæreticos non esse. D. Cyprinus epist. 74. D. Augustin. de baptis. cap. 2. refert Batoniū anno 258. quæ doctiora probata sunt à Gregorio Nyseno lib. 9. epist. 61. in Synodo Quinquagesima can. 95. Concil. Moguna. 4. can. 5. Vornacæ, can. 5. Nec textus in contrarium adducti obstant; nam procedunt in baptismo collato à Paulianistis, & Cataphrygis, qui non administrabant baptismum sub debita forma; non enim baptizabant in nomine Trinitatis, quia Christum purum esse hominem credebant, ut refertur Cuiusdam ad tit. C. de Sententia baptismi, lusclos in notis ad can. 19. Concilii Nicaeni; quare Ecclesia eorum baptismum non approbavit, ut iam notauit Pamelius in notis ad epist. 73. D. Cypriani, num. 27. Hinc expendendus erat difficultas canon 18. Concilii Illihet. in illis verbis: Perperè nauiganus, aut si Ecclesia in proximo non fuerit, posse fidelem, qui laxaculum suum integrum habet, nec si bigamus, baptizare in necessitate infirmitatis possum, ita ut si superuenerit, ad Episcopum eum perducatur, ut per motum impositionem percipi possit. Sed eius veritas interpretatiouem iam adducit in illius notis.

Sed licet verum sit, tempore necessitatis quolibet posse etiam, & valide baptismum conferre; seruandus est ordo inter eos, inter quos illum conferre intendunt, ut semper inferior cedat superiori, scilicet non baptizatus baptizato, excommunicatus non excommunicato, mulier viro, laicus clerico, clericus sacerdoti, sacerdos parochus, parochus Episcopo; docent D. Thomas 3. p. q. 64. art. 4. Sotus in 4. disp. 4. quest. 216. art. 2. Suarez, Vasquez, Hurtado, Ledesma, & alij congesti à Leandro tom. 1. de Sacram. tract. de baptis. disp. 4. quest. 6. nisi adit iusta causa, quæ postulet ordinem hunc inuerti, ut si presentibus sacerdote, & laico non possit sacerdos ministrare ob ægritudinem, excommunicationem, aut quia nollit nisi pretio dato baptismum conferre; tunc enim laicus præferendus est. Diana p. 5. tract. 9. resol. 87. aut si infans nondum plenè editus sit, propter decentiam enim femina, non vir debet baptizari. Toletus lib. 2. Summa, cap. 20. num. 9. Difficultas tamen est non omnimoda in hac parte, an qui inuerso ordine se ingerit administratio baptismi, ut si præsentè Presbytero, aut diacono administrat laicus, aut præsentè viro femina, peccent lethaliter? Et in primo casu, etiam præsentè sacerdote laicum baptizantem non peccare scilicet contempnia, docent Henriquez lib. 2. Summa, cap. 29. Valentia tom. 4. controu. disp. 4. q. 2. panis. 1. peccare tantum venialiter docuit Petrus de Ledesma de baptismo cap. 6. Sed verius est, peccare lethaliter, etiam si contempnus non sequatur, & sacerdos præsentis consentiat, ut tenebant Villalobos, Dicañillos, Trullench, & alij, quos refert & sequitur Leandro d. disp. 4. q. 7. alij quos laudat Diana 3. p. tract. 4. resol. 4. Idem in clerico minoribus ordinibus tantum iniuncto ministrante præsentè Diacono resoluit Vasquez, Aegidius, & Nuño laudati à Leandro supra, q. 3. Sed verius est, tantum venialiter peccare, quia Discouia minister

9.
INTER MI-
NISTROS
ORDO RES-
POND.

non est baptismus ex officio, ut ex presenti reatin
constat; & per consequens non erit peccatum
lethale aliud illi praefecti. Ita docent plures, quos
referunt, & sequuntur Quintanadocenas de bap-
tismo singul. 17. num. 5. Diana p. 3. tract. 4. resol. 4.
& part. 5. tract. 3. resol. 18. Idem dicendum est
cum clericus in minoribus constitutus praesente
subdiacono, vel facina praesente vito bap-
tizant ministrant; tunc enim tantum peccant veni-
aliter, ut resoluunt Quintanadocenas ubi supra,
Leander dist. 4. q. 9.

IO.

DE MINIS-
TRO SOLI
MINISTRARE.

Hec de prima parte huius commentarii; sequit-
ur secunda de ministro baptismi solenniter con-
ferendi, videlicet de illo, qui ratione officij, seu
iure ordinario, vel delegationis potest baptismum
non solum valide, verum & solenniter ministra-
re. Et primo de illis, quibus ex officio, seu in re
proprio competit munus baptizandi, videamus. Et
primo ad Episcopum spectat officium baptizandi,
cap. 1. de religiosis domibus, cap. cunctis 43. 16. q. 1.
cap. Diaconus, dist. 95. D. Clemens lib. 3. constit. 1.
cap. 10. & 11. ibi: Sed nec reliquis baptizare per-
mittimus, veluti inferioribus, coteris, obis, mini-
stros, sed solum Episcopos, & Presbyteros. Idem
lib. 6. cap. 15. & lib. 7. cap. 40. & 42. D. Ambro-
sius lib. 3. de sacram. cap. 1. Tertius, de bap-
tismo. Probant Ant. Augustin. in epis. lib. 22. tit. 12.
Mendoza lib. 3. Concil. Hisp. cap. 1. Petrus Bollo
in arum. canonica, class. 2. cap. 24. §. 4. Cefas de
ecclesiast. hierarch. dist. 8. §. 3. num. 13. Sanatus
ad Siderium fol. 432. Aluiz ad vitanam sancti Aburij,
cap. 18. Vnde Patres regeneratiorum appellat
Episcopos Prosper Aquinanus lib. 2. de vita con-
temp. cap. 2. Inde etiam Episcopos primis Eccle-
siae temporibus signabat baptisteria, Concil. Tol-
et. 8. can. 3. & de S. Ambrosio refert D. Paulinus
in eius vita, tanta corporis, animique fortitudine
in Episcopalibus muneribus obeundis ipsum praedi-
ctum fuisse, ut quod ipse solus clera baptizan-
dos commulassimè praecebat, postea quinque
Episcopi post eius obitum viz implere sufficerent:
Episcopos enim reuè, & iure ad corpus
Ecclesiae admittite potest, quia corpori ipsi tan-
quam caput praestit, cap. omnes 16. q. 1. Vasquez
p. 2. in 3. p. dist. 147. num. 21. Nec contrarium
deducit ex Apostolo 1. ad Corinth. cap. 1. vers. 17.
in illis verbis: Non misit me Christus baptizare,
sed euangelizare. Igitur baptizare non est munus
proprium Episcopi, sed aliorum ministrorum in-
ferioris gradus. Nam respondetur D. Paulum ibi
non asserere sibi non licere baptizare; siquidem
In eodem capite, vers. 14. testatur apud Corinth.
se baptizasse Crispum, Caium, & Stephanum do-
mum; unde tantum ait, se missum non esse ad
baptizandum, sed ad praedicandum, iuxta id
quod dicitur Actuum Apost. cap. 9. vers. 15. quia
baptismus per alios administrari poterat, non ven-
dè praedicatio. Docet Salsus in Panop. sacr. p. 2.
lib. 5. cap. 2. Secundarius minister, cui ratione
proptij officij competit baptizare iure ordinario,
est Presbyter, id est parochus proprius. Quod à
primis Ecclesiae communi obferuatum legimus,
siquidem in exordio 50. Apost. ita cauetur: Si
quis Episcopus, vel Presbyter non tria vniuersi bap-
tismi mysteria perfectè, & depomatur. D. Clemens
lib. 3. constit. cap. 20. ibi: Nec Presbyterum, nec
diaconum habemus ordinari ex laicis clericis; sed
Presbyterum tantum docere offerre, & baptizare.
Palschafius Episcopus in epis. ad Leonem Papam,
ibi: Cui Presbyter secundum morem baptizandi ha-

ram requireret, &c. late probat Salsus d. lib. 5. cap. 4.
Sacerdos enim, qui ordinatus est ad administran-
dam Eucharistiam, par est ut possit sacramenta ad-
ministrare, per quos fideles disponuntur ad Eucha-
ristiam ritè suscipiendam, ut post Salsum, Vas-
quez, & alios docet Leander de bapismo dist. 4.
quae. 17.

Sed superiori doctrinae nonnulla obijci possunt.
Et primo insurgi valet ex eo, nam Christus Domi-
nus, dum instituit ministrum baptismi, simul
praecipit praedicare, & baptizare, apud Mat-
thaeum, & Ioannem locis supra citatis. Sed ma-
ius praedicandi tantum Episcopo competit, cap.
inter cetera, ubi probatur, de offic. ordin. Ergo illi
soli competit ex officio munus baptizandi. Accedunt
D. Hieron. in Dialogo contra Luciferianos, num. 20. dum ait: Inde venit, ut sine chrismate, &
Episcopi iussu Presbyteri, nec Diaconi ius habeant
baptizandi. Tertullianus de bapismo cap. 17. ibi:
Superest ad concludendam materiam de obseruatione
quoque dandi, & accipiendi baptismum conuenire
facere: dandi quidem vim habet summus sacerdos,
qui est Episcopus, deinde Presbyteri, & diaconi, non
tamen sine Episcopi auctoritate, propter Ecclesiae ha-
morem. Ergo tantum ex delegatione Episcopi Pres-
byteri possunt solenniter baptismum conferre.
Cui difficultati ut satisficimus dicendum est,
Presbyterum parochum in propria parochia esse
ministrum legitimum ratione officij sacramenti
baptismi, & proinde sine speciali licentia Episco-
pi posse munus proprium adimplere; immò ob-
strictum esse ex ipso parochiali titulo ad conferen-
dum baptismum propriis parochianis: quod mun-
us exequitur independentè ab Episcopo, ut
probant Barbosa de officio parochi c. 18. Trullench.
vid. tract. cap. 3. nec quod de munere praedicandi
dicebamus, obstat; nam licet Christus Dominus
simul iniunxisset Apostolis munus praedicandi, &
baptizandi, tamen non prohibuit per alios etiam
officium praedicandi, & baptizandi exequi, ut
probat in d. cap. inter cetera. Nec obstant auctori-
tates D. Hieronymi, & Tertulliani; nam procedunt
in Presbyteris non parochis, qui alicui Ec-
clesiae parochiali non praesent, illi enim quomvis
vi suae ordinationis habent potestatem confere-
ndi baptismum, tamen ex defectu subordinati
illam potestatem licitè exercere non valent abs-
que delegatione proprii parochi. Trullench. ubi
supra, n. 3. Vnde si sacerdos, qui parochus pro-
prius non est, solenniter baptismum administrat,
peccat lethaliter, irregularitatem autem vltimam
non incurrit, quia in iure expressa non est, ut
docet Barbosa, & Trullench. ubi supra. Nec etiam
parochus alienus potest solenniter alienum paro-
chianum baptizare, quia nemo debet alterius paro-
chiae subditi usurpare, aut propriis terminis
egredi, cap. placuit 7. q. 1. cap. si quis 9. q. 2. cap. 1. cap.
nullus, cum sequenti, 1. 3. q. 1. cap. nullus 3. de parochiis.
Sed adhuc insurgit potest sequenti inris considerat-
tione; nam si munus baptizandi esset aliis in-
fraditionis, baptismus collatus alieno parochiano
nullus esset, sicut nulla est absolutio peccatorum
alieno parochiano facta: ergo aut quilibet Pres-
byter, etsi parochium non habeat, est minister
ordinarius baptismi, aut baptismus ab eo collatus
nullus est. Accedit, nam D. Clemens lib. 3. constit. 1.
cap. 11. asserit non omnibus clericis baptizandi
potestatem esse, sed tantum Episcopis, & Presby-
teris. Et D. Hieron. relatus in cap. constit. de con-
secr. dist. 4. assumat baptismum à solis sacerdotibus
esse

IX.
DE MINIS-
TRO SOLI
MINISTRARE.

esse tractandum. Ergo omnes Presbyteri sunt ministri ordinarii huius sacramenti. Cui difficultati vt satisficiamus assignanda est discriminia ratio, quare videlicet baptismus iniunctus alieno parochiano collatus effectum habeat, abfolutio verò nentiam. Est differentia ratio in eo consistit, nam abfolutio est actus iurisdictionis in peccatorem, cum fit quædam sententia; ac proinde si sacerdos iurisdictionem non habet in ipsum, non erit valida abfolutio. Trident. *sess. 14. cap. 7.* at verò baptizare non est actus iurisdictionis determinatè in baptizandum, siquidem minister baptismi nullam iurisdictionem habet in catechumenum, sed in reliquis fideles baptizatos, de quorum numero fit ipse, qui baptizatur; & sic est actus iurisdictionis, qui validè à non habente eam excuset. Nec ubi sunt D. Clemens, & Dionysius Hieronymus, ira enim accipiendi sunt, non vt doceant omnino Presbyteris ex sola sua ordinatione absque alia delegatione baptizare licere, sed quia ex sua consecratione apti sunt, vt eis minus baptizandi solenniter delegati possint; quam doctrinam probate videtur Concil. Florentinum *sess. 21. c. 1.* dum docet, sacerdos esse ministrum sacramenti baptismi cum hac restrictione, *quibus ex officio temporis baptizare*: quia non cuiusque competit baptizare, sed quilibet sacerdos est capax vt officium baptizandi solenniter illi committatur: quo modo accipiendus est D. Thomas 3. p. q. 67. art. 2. dum docet minus baptizandi sacerdotibus competere, vt docuit Sylvestrius in *summa, verbo Baptismus, num. 9.*

12. Alij etiam possunt solenniter ministrare baptismum, licet non ratione proprii officij, sed virtute delegationis, seu commissionis, vt diaconi: licet enim illi iure proprio baptizare nequeant, D. Clemens *lib. 8. constit. cap. 18.* ibi: *Diaconum non baptizat, non offert.* Et *cap. 46.* *Iu non est diaconus, aut sacrificium offerre, aut baptizare.* Et *cap. diaconus, cap. presbyter, 93. dist. cap. consuetas, de consecr. dist. 4.* docent Layman *tom. 1. mor. tract. 2. de baptismo, cap. 6. num. 1.* plures relati à Leandro de baptismo *disput. 4. q. 11.* tamen ex commissione Episcopali, vel parochi baptizare possunt, Concil. Florent. *ubi proxime*: vnde cognoscitur magnum discrimen, quod versatur inter diaconum, subdiaconum, & ceteros ministros inferioris gradus; nam diaconus potest ex commissione solenniter baptizare, subdiaconus verò, & ceteri tantum possunt in casu necessitatis, vt etiam possunt laici baptismum administrare. Docent Sausay in *Panopli. sacræ. 2. p. lib. 3. cap. 6.* Similiter religiosi possunt solenniter baptizare ex commissione Episcopali, vel parochi, *cap. plenius 16. q. 1.* Leander *d. dist. 4. de baptismo, q. 18.* In partibus totius Indiarum absque ulla commissione, ex concessione Pauli III. & Pij V. solenniter baptismum confecti ab eis probat Valesius in *summa, verbo Baptismus 3. num. 14.*

13. Sed hæc doctrina difficultas redditur ex sequentibus iuris principiis. Primum ex eo, nam diaconi, etsi non consecrati, administrare tamen valent Eucharistiam. D. Clemens *lib. 8. constit. cap. 18. cap. diaconus, cap. presbyter, 93. dist. Concil. Carthage. 4. can. 38. cap. ritibus 23. de consecr. dist. 2.* probat in *cap. sacro, de celebrat. Missæ.* Ergo ratione proprii ordinis possunt baptismum conferre. Secundò quia diaconi penitentiam dare possunt, *cap. fuerit 2. de fornic. ibi: Confessio fuerit Presbyteri, vel diaconi.* Ergo facilius & bap-

tismum. Tertiò refragatur auctoritas Pontificalis D. Gregorij, ubi asseritur, quod quando Episcopus ordinem diaconos, antequam adionem incipiat, sic eos alloquitur: *Proinde fili dilectissimi ad Leviticum ordinem, capitulo magnopere ad quædam gradum Ecclesiæ ascenditis: diaconum enim oportet ministrare ad altare, baptizare, predicare, &c.* Ergo ratione proprii gradus spectat ad Diaconum munus baptizandi. Quod obstat Concil. Ancyran. celebratum anno 314. *can. 12.* in illis verbis: *Si Diaconum, aut Presbyter pro reatu suo se ab altari communionem sub penitentis communionem submoverit, sic quoque si alij defuerint, & causa certa necessitas exierit, possentem baptismum licet eis baptizare.* Ergo si diaconus communis, & penitentis licet baptismum eo facit, multò magis diaconus innocenti. Tandem obstat canon 7. qui existit inter canonos missos ad Episcopos Gallie, vt reperitur *can. 1. Concilior. Galie, pag. 589.* & apud Andream Sausay in *Panopli. sacræ. lib. 2. cap. 6. p. 12.* in hæc verba: *Diaconis baptizare extra tempus Pasche prohibetur: parò in Pascha hoc tantum indulgetur propter afflictum multitudinem, quem solus Episcopus, vel Presbyteri baptizare non possunt.*

14. Sed adhuc defendenda est suprà tradita doctrina, iuxta quam in præsent capite 3. docetur, diaconum baptismum irregularem manere cum illi minus baptizandi non competat; si enim sacerdos, qui ratione proprii gradus habent potestatem in habitu baptizandi non possunt baptismum solenniter conferre, nisi fit parochi, aut de parochi licentia, vt suprà probat: Ergo minus id potestunt diaconi, qui ex vi suæ ordinationis idonei non sunt, vt in pastores eligantur. Nec contrarium probant argumenta suprà expensa. Non primum, nam licet verum sit, primis Ecclesiæ temporibus diaconos Eucharistiam fidelibus laicis ministrasse, id tamen non vi propriæ ordinationis, sed ex delegatione Episcoporum, & parochorum illis absentibus faciebant, & tempore procedente hæc facultas illis abrogata fuit, licet diutius dum in usu erat communio sub utraque specie, retinebant potestatem ministrandi Eucharistiam sub specie sanguinis: qui cum in talie ministraretur, necesse non erat vt à diacono immediatè manibus tangeretur, vt procedebat in corpore Christi Domini, vt docuit Ari. *tem. 1. moral. lib. 10. cap. 23.* Nec secunda difficultas obstat, non enim vniquem in Ecclesiâ diaconi poterunt penitentiam sacramentum administrare, sed tantum eos, qui penitentiam solennis gradus experuerant, ex delegatione Episcopali reconciliare, vt probat Mendosa *lib. 2. Concil. Ancyran. cap. 63.* Albalpines *lib. 2. obscur. cap. 17.* quæ non erat abfolutio sacramentalis, & sic à diacono dari poterat, vt probat in *d. cap. 2. de fornic.* Nec obstat auctoritas libri Pontificalis, nam accipiendus est B. Gregorius de potestate diaconi baptizandi ex commissione, & delegatione Episcopali, iuxta textum in *cap. diaconus, 93. dist.* non tamen vt virtute proprii gradus possint solenniter baptizare. Ita auctoritatem illam exposuit Sotus in *4. dist. 4. q. 216. Ari. 1.* quem sequitur Vasquez *d. 3. p. 3. p. dist. 1. q. 7. cap. 4. n. 22.* & rectè ex relatis Pontificalis verbis inferri Sotus, deduci diaconos ex vi suæ ordinationis aliquid amplius habere, quam laicos, siquidem cum solum tempore necessitatis, verum extra illud virtute delegationis possunt illi baptismum conferre. Nec obstat Concil. Ancyran. loquuntur enim Patres in casu, quo adesset necessitas, tunc enim licet diaconis, sicut aliis inferiori

14.
EXPLICAND
TVA CANO
NIS ADDIT
14.

DE MINIST
TIO EX DE
LEGATIONE.

13.
EXPLICIT
TVA NOM
INILLI TIT
TIT.

inferioribus Ecclesie ministris baptismum propria auctoritate conferre absque ulla delegatione. Nec tandem canon Ecclesie Gallicane aduersatur, nam procedit cum diaconi ex delegatione Episcopi baptismum conferunt, ita ut in subdium, cum deficient Episcopus, & parochus, ex eorum delegatione diaconi baptismum administrare possint: exceptio autem eo casu, non possum sollemniter baptizare; unde post telata verba illius canonis statim ea sequuntur: *Sed quod semel forte coniungit usurpare, per necessitatem dicuntur excusari; nec postea in secunda commissum munus impunit, ut docuit Sausay d. lib. 5. cap. 5.*

15.

INTELLIGITUR
CAN. 77.
CONCIL. ILLIEN.

Sed adhuc supra traditis obstat difficultas, nec vulgaris textus in canone 77. Concilii libet. In illis verbis: *Si quis diaconum regens plebem sine Episcopo, vel Presbytero aliquis baptizauerit, Episcopus per benedictionem eius perscrutari debet: quod si ante de sacra recesserint, sub fide qua quis crediderit, poterit esse iustus.* Ex quibus expresse constat: diaconum absque Episcopo, vel Presbytero posse baptismum conferre. Ergo quia diaconi ratione proprii gradus sunt ministri ordinarii huius sacramenti. Etiam difficultas est canon ille, dum in eo docetur, baptismum à diacono collatum esse perscrutandum ab Episcopo, & ita baptizatum antea decedentem saluari posse virtute fidei quam habuit. Ergo non ratione sacramenti, & per consequens baptismus à diacono collatus inualidus fuit. Pro cuius canonis vera expositione sciendum est, diaconos primis Ecclesie temporibus, non solum præpositos fuisse curæ aliorum pauperum. D. Gregorius lib. 9. epist. 24. verum & ordinatos fuisse, ut legerent in Ecclesia Evangelium, prædicerent, & alii ministrarent. D. Gregor. lib. 4. epist. 44. ibi: *In diaconatu ordine commissi modulationi vocis non inferant, quod ad prædicationis officium, clerosusque studium curare cogebat.* Qui non solum

postmodum parum cum Presbyteris usurparunt auctoritatem, verum illis, immodè & Episcopis antefecti intendebant, cap. diaconus, cap. perennis, cap. numerus, 93. dist. adeo ut Episcopos continentibus alia sibi erigerent, & populum priuatim tegerent. A. A. diaconus. Synodus Antiochen. can. 5. reterunt & probant Claudius Espenceus ad epist. D. Pauli, lib. 1. digest. cap. 5. Pamelius in notis ad D. Cyprianum, epist. 65. Zetla in aduers. cap. 94. Ambian. ad Tertul. de fuga, cap. 11. obferu. 1. Clonius ad tit. de officio Archid. quam auctoritatem ut etiam decessit, reficere neque Ecclesie Patres, diuersis in Conciliis varia statuerunt, ut constat ex integra 93. distinctione, & ex variis canonibus congeitis ab Antonio Aug. in epist. iur. lib. 7. tit. 1. c. 8. & lib. 6. tit. 24. Vnde Patres Hispani in dicto canone 77. statuerunt, quod si diaconus tegeret populum, & sine commissione Episcopi, aut Presbyteri ibi aliquos baptizauerit, Episcopus eos perscrutari per sacramentum confirmationis; nam hoc sacramentum dicitur pete. d. c. christiani, cap. v. de consecr. dist. 5. & quia olim confirmatio statim administrabatur, nec separari debebat baptismus à confirmatione, nisi morte quis fuisset præuentus, Melchisedes Pontifex epist. 1. ad Episcopos Hispan. ubi de his sacramentis ita ait: *Sed ita coniuncta sunt hæc duo sacramenta, ut ad inuicem, nisi morte præuenirent, nullatenus possem segregari: hæc iungebatur, an ita à diacono baptizatus, si sine Confirmatione decessisset, saluaretur. Et respondent Patres, sub fide, id est per fidem, quam in baptismo adeptus fuerat, iustum esse, id est saluari; unde deducitur, baptismum à diacono collatum, licet non tunc, validum fuisse: non tamen asserunt Patres, licet collatum, fuisse à diacono populum regentem. Alia adduci pro ipsius canonis interpretatione in eius notis.*

CAPVT II.

Urbanus III. ^a Legionensi Episcopo.

EX litteris tuæ fraternitatis nobis innotuit, quod I. diaconus præsentium lator volens ante tempus in Presbyterum ordinari, asseruit se propter ordinationem tuam gradum sacerdotalem adeptum: & cum non imposuisses ei^a manum, Missarum celebrationem usurpauit: postmodum verò Domino inspirante rediit ad seipsum, & proprium recognoscens excessum, in tanto sibi periculo consilium humiliter postulauit. Quia igitur super hoc tua nos duxit fraternitas consulendos, litteris præsentibus respondemus, quod ad sacerdotis officium non poteris promoueri: à diaconatu quoque biennio, aut triennio pro tua maneat prouisione^a suspensus. De beneficio autem misericorditer agatur, ne sustentatione priuatus, ad seculi negotium reuertatur: ut autem securius ei possis hanc misericordiam facere, de agenda imposita penitentia diligenter circa eum curam non desinas exhibere. Salubrius autem sibi absque dubio providebit, si ad regularem vitam se duxerit transferendum.

NOTÆ.

L.

^a Legionensi.] Ita etiam legitur in prima electione, sub hoc tit. cap. 1. & post Concil. Lateran. p. 50. cap. 61. De Legionensi diocesi nonnulla notata in cap. 6. de in integr. restit.

^b Ante tempus.] Id est ante auiem ad Presbyteratum necessarium, de qua egi in c. 1. vel non esse, de auiem & qualis, vel antequam tempus interitiorum esset adimpletum, de quo egi in c. 15. de tempore ordin.

c Manum.] Quæ imponitur Presbyteris; nam diaconis non imponuntur manus: quare in præsentibus agitur de manus impositione Presbyteri, ut probatur in cap. de sacramentis non iterandum.

d Suspensus.] Vnde cognoscitur, irregularitatem hanc, quæ incurritur ex celebratione, seu administratione in gradu non suscepto, esse partialem quoad ordines inferiores, non verò quoad ordines iam susceptos, ut docuerunt Suarez de censur. disp. 42. sect. 4. num. 1. Gibalin. ubi supra.

COM



TITVLVS XXIX.

De clerico per saltum promotio.

CAPVT I.

Idem * Olomicensi Episcopo.



Vz nobis literarū præsentalis continebant, quod sicut ex relatione quorundam bonorum virorum receperas, P. presbyter lator præsentialium, diaconatus ordine prætermisso, se fecit ad sacerdotij ordinem promoueri. Cumque super hoc ab ipso quæsissem diligentius veritatem, ipse tibi secretò humiliter est confessus, se pro certo nescire, si res taliter se haberet; sed ex quo hoc boni viri asserabant, inter quos fuerat conuersatus, credebat assertioni eorum, eo quod ipso tempore, quo ordines inferiores susceperat, infra annos discretionis fuerat constitutus. Tu verò ipsum ad Ap. Sed. transmittens, à nobis humiliter supplicasti, vt cum eo misericorditer agere dignemur. Nos igitur eius miserix condolentes, f. ex quo A. f. m. quatenus condignam penitentiam pro huiusmodi negligentia iniungas eidem, & eā peractā, quia non intelligitur iteratum, quod factum esse nescitur, ipsum in diaconum ordinare procures, & sic de misericordia eundem ministrare permittas in ordine sacerdotis.

NOTÆ.

a *Olomicensi.* Ita etiam legitur in textu collectione, *sub hoc tit. cap. xiii.* in hac verò sexta legitur *Bonomiensis*, & Glossa marginalis emendat *Colmicensi*; sed eodem præfata epistola non reperitur iuxta editas à Sileto, & Bosqueto, non possumus veram inscriptionem restituere. De Bononiensi diæcesi egi in cap. 17. de foro compet.

b *Confessus.* Non sacramentaliter, aut si in foro penitentia licentia data sit ipsi Episcopo consulendi Romanum Pontificem, iuxta tradita in cap. 2. de offic. ordi.

c *Annus discretionis.* Quænam dicatur ætas discretionis, exposui in cap. 1. de delict. puer.

d *Diaconum.* Sed quare non repetuntur alij gradus minores, cum intra discretionis annos recepti fuissent; & similiter gradus subdiaconatus, qui omisus fuit? Andreas Sausay in *Pampl. cleric. lib. 6. cap. 1. par. 1. §. 2.* existimauit, minores gradus infanti collatos iterandos esse, quia sine effectu collati fuerunt; & ita ait Sausay Innocentium III. tantum referre Episcopi consulationem, non quoddam ritum, & validè collatos arbitratum, sed quoddam absolutè non requiritur in eo qui iam sacerdos erat, huiusmodi graduum iteratio: diaconatum autem suppleri iussisse, quia tenaciùs longè hæret presbyteratus diaconatus, quam subdiaconatus; & quatuor minores ordines, vt infra dicemus: vnde concludit Sausay, Innocentium III. iubendo gradum diaconatus suppleri, nullā scilicet mentione minorum ordinum, non ideo supposuisse quatuor minores gradus susceptos infra annos discretionis validè collatos fuisse. Sed verius credo, Innocentium III. non iussisse ordines minores suppleri, quia etiam infanti conferantur, validè recipiuntur, nec egent iteratione, vt Hallierius, & Gamacheus relati ab ipso probant; nec ordinem subdiaconatus iterati iussisse Pontificem, quia iam illum suscepit, vt apparet ex ipsa consulatione; siquidem Episcopus tantum proposuit Innocentio, omisso

diaconatus gradu in presbyterum subditum suum fuisse ordinatum; aliis si omisisset etiam subdiaconatum, id exprimeret: vnde supponitur, cum tantum diaconatus gradum omisisset. Quare Innocentius illum tantum gradum suppleri iussit.

COMMENTARIUM.

EX hoc textu sequens communiter deducitur assertio: *Ordinatus per saltum suspenditur, & gradus omisus ibi conferendus est.* Probant eam textus in cap. final. §. 1. dist. 1. ap. sollicitudo, §. 2. dist. cap. si officia, & per tot. §. 9. dist. cap. 1. & per totum 60. dist. cap. 3. 77. dist. cap. 6. §. 3. dist. Synodus Romana sub Syluestro, can. 5. ibi: *Syluester præfatus Synodo confirmans, et multis ex laica persona ab honore acolyti ad Episcopatum subleuaretur, nisi prius fuisset lector diebus 30, deinde una die exercitio postea caperet omnes acolyti, & faceret in eodem ordine annos 10, et acciperet omnes subdiaconi; & in subdiaconatu esset annos quinquæ, deinde ad diaconatum bonorem pertingeret fixus, donec rogatus 30. presbyteris exameret, et esset Diaconus Cardinalis.* Synodus 8. can. 17. *Damasus in vita Caij, ibi: Cuius confirmatio, et omnes ordines in Ecclesia sic ascendendi. Si quis Episcopus fieri mouetur, et esset Hostiaris, Lector, Exorcista, Acolytus, deinde Subdiaconus, Diaconus, Presbyter, exinde Episcopus ordinaretur.* Constitutio ipsa Caij extat in epistola ipsius ad Felicem. Synodus Roman. 1. sub Syluestro, in epologo, ibi: *Si quis desideraret in Ecclesia militare, aut proficere, esset prius hostiaris, deinde lector, & postea exorcista, per tempora, quæ Episcopus consiliarius, deinde acolytus annis quinquæ, subdiaconus quinquæ annis, colector mortuorum annis quinquæ, Diaconus annis quinquæ, Presbyter annis tribus.* Concil. Sardien. can. 30. ubi statuitur, in vnoquoque gradu probatum, ad Episcopatum fastigium ascendere. Brachati. t. can. 38. ibi: *Ex laico ad gradum sacerdotis nemo veniat, nisi prius anno integro in officio lectorum, vel diaconatus disciplinam ecclesiasticam discat, & sic per singulos*

2.
CONCL.
SIO TRA-
DITUR, ET
PROBA-
TUR.

fringit gradus eruditus ad sacerdotium veniat. Synodus Sufconensis in accusatione Hincmari, an. 6. in fine: Qui salu sine gradu Diaconi ad sacerdotium profusus, in degradationem debemus restituere debet. Cælestinus in epist. ad Episcopos Galie, cap. 3. Symmachus P. fratris Casarii, cap. 2. Leo Poot, epist. 69. ad African. Episcopos, Turonensis lib. 6. cap. 23. Habemus scriptum in canonibus, fili, non posse quemquam ad Episcopatum accedere, nisi prius ecclesiasticos gradus regulariter seruiuerit. Et 128. tit. 6. p. t. Illustrant vltra congeſtos à Barboſa in præſen. & de poſſeſſ. Episcopii 2. p. art. alleg. 16. & alleg. 47. & de iure ecclief. lib. 1. cap. 33. num. 88. Hallierius de sacris clief. 2. part. ſect. 1. art. 2. & de hierarch. iurif. ſect. 353. Corvinius lib. 4. apobisus, cap. 37. Cresol. lib. 2. mystag. cap. 12. Gibalinus de irregul. cap. 5. tit. 6. Aitami. ad leg. 3. Cod. de filis offi. cap. 10. P. Gregorius lib. 4. part. 2. tit. 4. cap. 2. Petrus Hierodius lib. 1. Pandet. tit. 4. cap. 20. Boquetus ad Innoc. III. lib. 1. reſep. 13. epist. 192. Suardus ad Sidonium lib. 3. epist. 25. Langreus lib. 7. ſenſer. cap. 1. Solozanus de iurib. honor. num. 33. Vighel. in meſod. iur. can. fol. 49. Suardus de cenſor. diſp. 31. ſect. 1. num. 47. Acuña in c. unic. 52. diſp. Claudi. Eſpenſens lib. 1. diſp. cap. 16. Petrus Faber lib. 3. agonist. cap. 28. Ant. Auguſtin. in epist. lib. 7. tit. 4. Metil. lib. 2. diſp. cap. 6. Filicinus in cap. 1. 6. 3. de offi. ordin. Diana part. 5. tract. 10. reſol. 27. Hier. n. Garzia in ſumma. trail. 1. diſp. 13. diſſicult. t. punct. 4. Ballam. in can. 89. Synod. Carthag. Dattis in 52. diſp. Altiſſera in præſen.

Sed hæc aſſertio diſſiliis redditur auctoritatibus, exemplis, & rationibus. Auctoritatibus Concilij Brachar. ſuprà relati, & Zoſimi relati in cap. ſi offi. in 59. diſp. ubi à leſtoris gradu eccleſiaſtica militia auſpiciatur: & Gelafius Papa in epist. ad Episcop. Lucania, c. 3. conſiſtens aliquem leſtorem legitime ordiorum acolythom. poſtea ſubdiaconum, Diaconum, & Presbyterum ſetibit. Igitur quia non gradatim per omnes eccleſiaſticos gradus necesseſſe eſt ad ſacerdotium perueniendum. Exemplis etiam id ſuſſile probatur: ſiquidem D. Cyrtianus epist. 33. ait: *Placuit ut ab offiſe leſtoris incipiat.* Et epistola ſequenti ſetetur ſe Celorinum primò ad Leſtoratus gradum promouille. Et epistola 24. ait, Optatum à ſe ex Leſtore Hippodiamum ordinasse. D. Martinus primò exorciſta à ſuoſo Hilario Pictauienſi creatus, ex eo gradu ſacerdotium attrigille reſert Seuerus in eius vita. D. Chryſoſtomus à Leſtoratu, quem à Zenone receperat, ad Diaconatum promotus, deinde presbyter, poſtea Episcopum conſecratus fuit. Similiter Eutychieus Patriarcha CP. ex Leſtore Diaconum, ex Diacono Sacerdos, tandem Episcopum conſecratus fuit, reſſe Metaphraſe in eius vita, die ſexte Aprilis. De Ioanne Cabilonenſi Episcopo reſert Sidonium lib. 4. epist. 25. Leſtorem hunc primò, ſe miniſtrum altaris (ideſt Diaconum) proceſſu temporis Aſchidiaconum, poſtea ſecundi ordinis ſacerdotem, ſeu presbyterum creatum, antequam ad Episcopalem Sedem vocaretur. De ſanſto Felice reſert Paalinus natali 4. cum primis in annis Leſtorem, exinde exorciſtam, tum ſacerdotem fuiſſe, ibi:

*Inde gradum cepit, cui munus vocis ſideli
Admirare males, & ſacris reſerre verbis.*

*Quod quia perſpicua meritis virtute regebat,
Iure ſacerdotis veneranda inſignia nactus, &c.*

Alia exempla reſert Hallierius diſp. art. 2. & 2. Rationibus etiam impugnatur præſens aſſertio; nam videtur quædam ludicraſio, ſi ordines inferiores conſentire iis, qui ad maiora officia deſtinantur, D.D. Gmel. in Decretis, Tom. V.

& ordines ſuperiores mox ſunt ſuſſepturi: v. g. ſi acolytho mox ordinando, cui acolythi officium in Eccleſia imponendum ſit, hoſtiam, leſtoris, exorciſta ordines conſentant: quorum munia nunquam obitorus ſit. An non hoc eſt, ut ait Duarenus lib. 1. de ſacris Eccleſia, cap. 16. dicis tandem eam ordines inferiores accipere? quod præcipue procedit in præſenti caſo, cum qui enim in presbyterum ordinatur, nam ad quid ſuppleri debet gradus Diaconi omiſſus, eam conſequuto ſint, iuxta Philoſophum fruſtra agatur de medio.

Quà dubitandi ratione non obſtante, vera eſt præſens aſſertio, pro cuius expoliſione ſciendum eſt, quod licet gradus omnes, tam maiores, quam minores, tendant ad ſacramentum Ordinis à Chriſto Domino inſtitutum; tamen primis Eccleſiaſticis ſaculis, qui in presbyterum ordinandi erant, non ſemper priùs minoribus gradibus initiabatur, ve expreſſi D. Thomas in ſupplement. quaſt. 35. art. 5. in corpore, ibi: *Quod etiam in primitiua Eccleſia aliqui ordinabantur in presbyteres, qui priùs inferiores ordines non ſuſceperant; & tamen poterant omnia, que inferiores ordines poſſunt, quia inferiores poſtea comprehenduntur in ſuperiore virtute, ſicut ſenſus in intellectu, Ducamus in Regno.* Sed poſtea per conſtitutionem Eccleſiaſticam determinatum eſt, quod ad maiores ſe non ingrat, qui priùs in minoribus non ſe humiliauerit; forſan quia eum olim ordinatione nulla oriole fuerat, nec ordines inutilia, ideo ſi quæ ſine ſunctione, ſine munere præſergerentur, inutilis credebantur: tunc motis erat tunc gradus illos omittite, quoniam ſunctiones ordinandi minime obſtent; vel quia eo tempore conſuetum non erat illos gradus recipere, quos non erat neceſſaria exercere: ſed quiliſnam fuiſſet, qui priùs conſtituit, ve nemo per ſaltum promoueretur, ideſt omiſſis inferioribus gradibus ad ſuperiores aſcenderet, hæſitatur à Baronius anno 296. num. 2. Caius huius inſtituti auctorem admittit, quorſe de promouendo aliquem in Episcopum agebatur. Cironius ad hunc titulum, Caium cepit primum huius inſtituti auctorem; & merito, iuxta Damafum ſuprà relatum, & Synodum Nicenam can. 2. textus in cap. 1. & ſeqq. 48. diſp. ubi repetita eſt hæc Cai lex: in canone enim 80. Apoſt. tandem prohibuitum fuerat repente neophytem in Episcopum ordinari, vel ſacerdotem: vnde deductum id, quod in neophyſis prohibebatur, in aliis fuiſſe permiſſum, noſſiſ ſetie ordium minorum inſpecta, donec Caius ſua conſtitutione ſtauit, gradatim per minores ordines ad maiores eſſe perueniendum. A quo tempore ſubordinationem ordinum fuiſſe obſervatam, & promotiones per ſaltum prohibitas, conſtat ex Synodo Romana, & alijs Concilijs ſuprà expenſis, & ex Tertulliano de ſuge, ibi: *Hæc ſemine, & ſacere enim ſeruum Dei oportet, etiam minoris loci, ut maioris fieri poſſit, ſi quidem gradum ex perſecutionis tolerancia aſcenderet.* Ex ſanſto Hieronymo epist. t. ad Heliodorum, de Neſepiano presbytero, ait: *Fili clericus, & per ſaltes gradus Presbyter ordinatur.* Varijs exemplis probat Hallierius de ſacris clief. diſp. art. 2. num. 5.

Magnaque cum ratione huiusmodi ordinationes per ſaltum prohibita ab Eccleſia fuerunt; nam ordo, qui ſeruiatur in hominibus, ut in eccliefiſ hiſtare hæc prouehantur, idem vtique ſeruandus videtur, ut in eccliefiaſticis proficiant: docent B. Clementis lib. 6. ſtromatum, pag. 667. his verbis: *Nam hic quoque progreſſiones Episcoporum, Presbyterorum, Diaconorum ſunt, ut abſint, inſtitutiones*

4.
DE ORDI-
NATIONE
GRADA-
TIM FA-
CIENDA.

5.
T2202
TYS DE
CINOUE
RATIO.

gloria angelica, & illius avaritia, ac dispensatio. Cui consentiunt Damasus in *epist. ad Urbanum*, Gregorius *lib. 4. in di. t. 1. epist. 52. Bernardus lib. 3. de consider. ad Eugenium*. Hoc autem ordine ad cœlestem hierarchiam homines transferuntur, ut prius inferiores ordines attingere debeant quàm superiores, ut probat Hieronymus *di. 2. selt. 1. §. 7.* Igaur similitur ut quis in ecclesiastica hierarchia, & sacro electorum ordine proficere possit, consentaneum est, ut inferiores ordines prius decurrat, quàm ad superiores peruenire possit; nam leges civiles, naturâ duce, quæ solent decursu à minorem semper incipit, & pedicentim progreditur, statuerunt ut gradatim ad dignitates perueniretur, *l. ut gradatim c. 1. l. bonor. 14. §. perueniendum, ff. de muner. & bonor. l. 2. Cod. quemadmodum civil. muner. l. una utiliter 47. in princip. ff. de reg. gest. l. nam & Imperator 41. ibi: Ut ad processum viri vix ei donare possit, ff. de donat. inter v. l. nemini 3. Cod. de Consul. lib. 12. l. 1. Cod. ut omnes iudices, l. 1. Cod. de diuers. offic. l. final. Cod. de symonibus, l. unicuique, Cod. de proxim. sacr. scriu. l. ult. vers. illud, Cod. de primicer. lib. 12. l. 2. Cod. de officio Magistr. cod. lib. 1. §. in fine, tit. 11. part. 2. l. 7. tit. 1. l. 6. tit. 2. cod. par. Quare Romani non solum in militia cæstrensis huic ordinem seruabant, Lipsius de militia Romana lib. 2. dialog. 8. l. contra 14. Cod. de re milit. lib. 12. Pancitoia in notitia Orient. cap. 33. & 36. Rosinus lib. 10. antiquit. cap. 7. recedem & in togata, nam Patricij, & plebei nobiles post exacta stipendia militaria, viam sibi parabant ad Rempublicam gubernandam. Primò peribat Quæsturam, primordium honorum exinde dictam ab Ulpiano in l. 1. de offic. Quæst. triennio clapso Adilitatem, biennio Præturam, eadem quoque Interprespæne Consulatum; sequebantur Censura, & Patriciatu. Titus Lilius lib. 3. 2. ibi: *Item Adilitatem, Præturamque solidioris, nec per honorem gradus documentum sui dantes nobiles homines tendere ad Consulatum, sed transcendendo media, summa iure consuevit. Plinius in panegy. ibi: Nihil magis prodesse candidatis ad sequentes honores, quàm peractis optimè Magistrat. Magistratum Magistrat. honore honor petitur. Quare Cassiodorus lib. 1. epist. 3. inter alias laudes refert, dum Patricius reperiretur, quod non fragili felicitate proventus fortunæ lodo, ad apicem fascium repentinis successibus evoluit. Sed ut crescere virtute soleant, ad fastigium præstanti conferendi gradibus dignitatum. Et Aristot. lib. 3. de repub. cap. 8. ait: In hoc ordine seruando Reipublicæ conseruationem consistit, ibi: Omnis conseruanda Reipublica ratio est neminem ornare, sed exiguius potius, & diuturnos honores tribuere, quàm celeriter magnos. Huius enim talibus decorebus sunt, ut ferre secundam fortunam non possint. Latè illustrant Chassaneus in catal. gloria mundi, l. par. consider. 9. & par. 9. consider. 15. & 33. Petrus Gregorius lib. 47. symagmarum, cap. 15. Botel. lib. 2. de magistr. cap. 16. Alfaro de offic. Fiscal. gloss. 1. per tot. Marquez in gubernat. Christi. lib. 2. cap. 3. Scipio Almiratus in dissert. polit. lib. 3. discept. 1. 3. Belfoldos dissert. de magistr. cap. 1. num. 1. Solerius de iuribus honorariis, ex num. 54. Altamirano in l. 3. Cod. de offic. fiscal. cap. 10. Meril lib. 2. obs. cap. 6. Gratianus rem. t. discept. cap. 154. fust Langlois lib. 7. sineser. cap. 1. per tot. Reddè ergo in præsent. textu, & aliis suprà citatis statuatur, gradatim esse perueniendum ad ordines sacros, aliâ clericali per saltum promotum suspensionem incurtere. Iam enim à primis Eccle-**

siæ seculis nemo ad dignitates maiores promouebatur, nisi prius minoribus functus esset; itaque laicos repente, & media neglectis non eligebantur Episcopus. Concil. Sardie, can. 10. D. Cypri. epist. 32. ad Antonianum: Non ipso ad Episcopatum peruenit, sed per omnia ecclesiastica officia promouit, & in diuinis administrationibus Dominum sape promeruit, ad sacerdotij sublimem fastigium cunctis Religiosis gradibus ascensit, D. Hier. in epist. ad Nepot. Fit clericus, & per salutes gradus Presbyter ordinatur. Eleganter S. Greg. Naz. orat. 1. & fust in orat. 20. Idemque in laudem Anastasij: Cunctisque Ecclesiasticorum graduum muneribus diuiceps perfunctus, ut quæ media sunt, respectem, præstitit. Zolimus epist. 9. Vigil. Papa epist. 4. Itaque Gostidus Abbas Gostido Catonensi Episcopo obicit, quod ante sacros ordines Episcopus electus sit, lib. 2. epist. 27. Idemque exprobat Raynald. Andegau. lib. 3. epist. 2. Omnes postmodum ordines, sed sine ordine, quia in otio diebus, & non certis temporibus acceptis, propter Episcopatus ambitionem. Sed hac non ita semper rigide obseruata legimus; nam ex Diacenis etiam assumebantur Episcopi. Krantz. lib. 7. hist. Brem. Vidimus electum vestrum, placet persona, placet scientia, placet eloquentia, placet etiam quantum nominis mores. Verum modus electionis displicet, præsertim quia est infra sacros ordines, non dico subdiaconatum, sed acolytatum electi. Nicolai epist. 6. Interdum etiam ex causa, & dispensatione summi Pontificis gradatim non ascendunt, ut refert Author historiarum PP. Rom. qui in Gallia sedebat, in Clemente VI. Falla autem huiusmodi ordinatione religiosus effectus est, & habuit Predicatorum assumpti. Dicitur verò Papa demum ipso instanti, & procurante Ioanne Rege Francia memorato, item suo successore effecta, fecit Patriarcham Alexandrinum, & Ecclesiam Rhemensem sibi perpetuo commendauit, & causâ ipsam honorandi magis, non ferre à præmissis in posterum possit resiliere, in propria uelle naturalis Domini ipsam ad omnes sacros ordines suo concessu ordinari.

Sed circa suspensionem hanc discrimen constituendum est inter ordinem ritæ susceptum, ordinem per saltum receptum, ordinem prætermissum, & ordinem, quem nondum talis promotus suscepit; veluti in præsent. causa, in quo qui minores ordines ritæ suscepit, prætermissio subdiaconatu diaconatum receperat, & illi adhuc decet gradus presbyteri: & quoad gradus ritæ susceptos, & gradum per saltum receptum, certum est, eum suspensionem incurtere; an verò ipso iure suspensus maneat, vel veniat suspendendus, non constat apud Interpretes. Suspendendum esse, quia ex nullo iuris testimonio talis suspensio incurritur, docuerunt Turriterem. in cap. sollicitudo, num. 4. 52. diff. Bernard. Dicit in praxi, cap. 24. & alij, quos refertur, & sequuntur Gibalinus de irregular. cap. 5. quest. 1. Leander rod. tract. diffus. 20. quest. 3. Sed contrarium, videlicet suspensionem esse ipso iure, merito docuerunt Hostiensis, & Panormit. in præsent. Suarez de censur. diffus. 31. selt. 1. dub. 2. pluribus telatis Acuña in diff. cap. sollicitudo, num. 8. Barbosa lib. 2. iur. orclef. cap. 1. numer. 139. Marchinus de ordine, tract. 1. par. 3. cap. 7. num. 8. Peyrin. de Præbatur. quest. 3. cap. 7. num. 13. Portel. in respons. moral. par. 2. cas. 101. conclus. 1. & facillè probatur ex Concilio Trident. sess. 25. de reform. ibi: Cum promoti per saltum, si non ministrantur, Episcopus ex legitima causa possit dispensari. Propterea ea verba expendit Hicronymus

6.

DE SUSPENSIONE ORDINATI PER SALTUM.

Garcia

Garcla in summa, tract. 10. diffinit. 5. dab. 5. punit. 3. Quoad gradus verò, quos adhuc non acceptat, certum est eum impediri esse ascendere, non quia irregularitatem contraxerit ex ordinatioe per saltum, quæ nulla in iure imposita legitur, sed potius propter effectum suspensionis extendendi, & ministrandi iò gradu suscepto, ut probatur Suarez *suprà num. 49. Acuña dist. cap. sciendum, num. 10.* Tamen quoad hanc censuram sciendum est, Episcopum in ea posse dispensare, vel pretermittum ordinem suscipiat, & ut in gradu malè suscepto minister, & ad superiores ascendat, quamvis delictum sit publicum; dum tamen in gradu pretermittit, aut malè suscepto ministraverit, ut expresse cauetur in Concil. Trident. *sess. 23. de reform. cap. 14. docent Mayolos lib. 4. de irregul. cap. 1. num. 1. Suarez de censur. disp. 3. t. sect. 1. num. 5. t. Aulla ed. ar. p. 7. disp. 9. sect. 1. dab. 3.* immò et si ministraverit in gradu malè suscepto, aut promotus, adhuc eum eo dispensare potest, si delictum occultum fuerit, *ex cap. 4. sess. 23. de reform.* Concilij Trident. Probatur Acuña *ubi supra.* Barbosa *de potest. Episcopi alleg. 47. num. 5.*

7.
DUBITAN-
DE RATIO.

Nec obstat dubitandi ratio *suprà* adducta ex variis iuris auctoritatibus, & exemplis, in quibus docetur, & refertur, ex vno gradu inferiori, videlicet lectionari, aut simili, ad presbyteratum plures fuisse promotos; nam duplici modo respondet potest. Primò asserendo, consuetudinem eorum temporum fuisse, ut et si singuli gradus ordinis unus post alium conferrentur, illi tantum nominarentur, ad quorum officia aliqui destinabantur, vel qui eodem die vltimo loco fuerant collati, ut hodie vltimo more loquendi, si quis vno die omnes minores recipiat cum Subdiacono, dicitur ea die Subdiaconus creatus, nulla mentione facta minorum ordinum. Vnde ex canonibus, exemplisque *suprà* relatis, tantum deduci potest, licitum fuisse olim nonnullam aliquot ordinari, qui in singulis minoribus ordinibus non fuissent exercitati, immò & eodem aliquando die, vel saltem paucis, ob clericorum penuriam, quosdam etiam ad Episcopale saltigium euectos fuisse; non quòd infe-

rioris ordines non susceperent, sed quòd in eis nequaquam se exercerent. Secundò cognoscendo magnam differentiam versari inter presbyteratum cum Episcopatu collatum, & inter ceteros ordines cum presbyteratu comparatos. Etenim Episcopalis ordinatio nulla est, quam non presbyteralis præcesserit; quia presbyteralis valida est, non susceptis reliquis inferioribus gradibus; Episcopalis verò nulla est, nisi præmissis presbyteratus. Cuius differentia ratio est, quia Episcopus est summus sacerdotum, & presbyteratum essentialiter involuit, & nequa esse Episcopus, qui non fuerit antea presbyter. Presbyteratus autem non est Diaconatus, nec cum essentialiter involuit, nec Diaconatus est Subdiaconatus, aut cum essentialiter includit, & sic de ceteris gradibus: quare potest quis esse presbyter sine inferioribus gradibus, ut probat laïc Halbertus *dist. 1. 4. 5.* unde potuit illis temporibus iustis ex causis ille qui nunquam iò minoribus gradibus erat ministratus, illis omissis in Subdiaconum, vel Diaconum ordinari iuxta quem antiquum Ecclesie more exaudiendo sunt exempla produbitanis ratione adducta. Nec obstat argumentum ipsius difficultatis deductum ex eo, quod frustra in præfati casu, & similibus suppletur gradus Diaconatus omissum, cum est in ordinato per saltum quemlibet gradum omissum supplendum esse, quia licet gradus superior valide susceptus sit, non tamen licet ex defectu gradus omissi: unde supplendum est quod fuerat pretermittum. Quod maiori ratione procedit in gradu Diaconatus omissio, qui omni tempore sacer fuit, ad hietariam divina ordinatione institutus: unde strictius hæret Diaconatus Presbyteratum, quam alij gradus inferiores, ut laïc probat Halbertus *dist. sect. 1. 6. 4. per tot.* qui videndum est pro fusiori huius tituli commentatio.

Ex dictis difficilis videri potest canon 6. Concilij London. celebrati anno 1225. tempore Honorij II. in illis verbis: *Nellus in Diaconum, nullus in Priorem, nisi Presbyter, nullus in Archidiaconum, nisi Diaconus promouatur.* Sed respondendum est pro illo verbo *Diaconum*, legendum esse, *Decanum*, ut in *cap. 1. de atque & qualis.*

8.
EXPON-
TIA LON-
DINENSIS
1. CAN. 6.



TITVLVS XXX.

De eo qui furtiuè ordinem suscepit.

CAPVT I.

Alex. III. ^a *Lingonienfi Episcopo.*



Eniens ad nos P. nobis exposuit, se furtiuè ordinem diacon. suscepisse. Vnde f. t. respondemus, quod si non fuit à te, vel ab aliquo ^b Archidiaconorum, vel ^c Prælatorum tuorum sub anathematis interminatione prohibitus, tu ipse in promotione ipsius ad sacerdotale officium condignâ satisfactione impositâ (nisi alia impediât) pro arbitrio tuo dispenses. Si verò interminatio anathematis super hoc facta est, monetas eum, ut in aliquo monasterio, seu canonica habitum suscipiat regularem: cui ex quo in habitu illo aliquanto tempore fuerit laudabiliter conuersatus, poteris misericorditer prouidere: alioquin nullâ ratione concedimus eum ad sacerdotalem ordinem promoueri.

NOTÆ.

1. ^a *Lingoniensis.*] Ita etiam legitur in prima collectione, *sub hoc tit. cap. 1.* & post Concil. Lateran. *part. 26. cap. 9.* legitur *Lingoniensis*: sed retinenda est vulgaris inscriptio, quæ habet *Lingoniensis*; nam provincia Livoniensis temporibus Alexandri III. adhuc fidem catholicam non suscepit, ut notatur in *cap. Deus qui, de vita & honest. cleric. De Lingoniensi*, seu Linconensi Ecclesia nonnulla notatur in *cap. 8. de rescript.*
2. ^b *Archidiaconorum.*] Ad quos iure communi competere præsentatio ordinandorum, examen, & discussio, an probi sint, vel non, ad ordines, *cap. ad hac, cap. ut Archidiaconus, de offic. Archid. cap. unic.* ubi probatur, de *seruimus ad ordin. faciend.* ubi notatur, & probatur latè Hallierius *de sacris elect.* *part. 1. art. 1. per totum.* Vnde iuxta iurisdictionem propriam poterant Archidiaconi sub anathemate prohibere, ne ad ordines accederent ab ipsis non examinati, & approbati.
3. ^c *Prælatorum.*] Parochorum videlicet, qui Prælati cum facultate excommunicandi appellantur in *cap. 1. & 3. de offic. ordin.* quare Glossa in *cap. in capite, verbo Inungere, 30. dist.* asserit Episcopum non debere renouare sententias excommunicationis prolatis ab eorum Prælati, idest paro-

chis, ut probatur in *dist. cap. 1. de offic. ordin.* & docens Illegiacus in *dist. cap. 3.* Vnde cum iure communi attentio parochi non solum sententur præstare testimonium de propriis parochianis ordinandis, verum & eos Episcopo præsentare, Concil. Valsense 2. *can. 1.* Emerit. *can. 18.* Nammetense *can. 1. ibi: Quando Episcopus ordinationem facere præsumit, amittit, qui ad sacrum ministerium accedere voluerunt, feria IV. ante ipsam ordinationem vocandos esse una cum presbyteris, qui eos repræsentare debent.* Vnde quemadmodum Archidiaconi proprios clericos ciuitatis sibi subditos; ita & Archipresbyteri clericos suorum parochiarum Episcopo ordinanti præsentabant, & in ipso actu ordinationis anathema profertur in omnes, qui furui ad ordines accedunt, ut cauetur in Pontificali Romano, *part. 1. tit. de ordinibus conferendis, prepe finem*: ubi ritus ille præscribitur, videlicet ut antequam ordinationes celebrentur, aliquis nomine Episcopi ordinari præcipiat, & mandet, ne quis non descriptos, examinatos, approbatus, & nominatus illo pacto debeat ad suscipiendos ordines accedere: de quo anathemate agit Alexander III. in præfati: quod anathema profertur poterant parochi, & Archidiaconi, ex propria iurisdictione, iuxta supra tradita: vel nomine Episcopi, iuxta ritum descriptum in Pontificali Romano.

CAPVT II.

^a Cælestinus III.

Cum H. lator præsentium, sicut nobis sua questione monstrauit, ad tuam (ordinationis causâ) præsentiam accessisset, iuxta consuetudinem patris sibi ^b quatuor minores ordines contulisti, quibus non contentus, subdiaconatum temerario ausu recepit. Quia verò idem clericus in hoc facto multum excessit, mandamus, quatenus cum in minoribus dumtaxat ordinibus celebrare permittas. Si verò domum religionis intrauerit, & vita, & mores eius exegerint, Abbas (si voluerit) in aliis poterit ordinibus dispensare.

NOTÆ.

- ^a *Cælestinus III.*] Ita etiam legitur in secunda collectione, *sub hoc tit. cap. 1.* nullibi

tamen exprimitur, cui rescribat Pontifex.

^b *Quatuor minores.*] Ricc. & rectè, iuxta tradita in *cap. cum dilectus, de temporib. ordin.* ubi commentarium huius ritus dedimus.

CAPVT III.

^a Idem.

Innotuit nobis ex tenore tuarum litterarum, quod G. clericus lator præsentium, & alij duo de tua diocesi ad G. quondam ^b Saguntin. Episcopum accedentes, licet ab eodem Episcopo sub excommunicationis sententia fuisset districtè prohibitum, ne quis se ad duos ordines suscipiendos ingereret, prædicti tamen clerici non minus diaconatus, & subdiaconatus ordinem clanculò susceperunt. Quia igitur quid tibi faciendum sit pro his, tua nos duxit fraternitas consulendos, tibi auctoritate Apostolica respondemus, quod ordinati de rigore iuris in susceptis ordinibus ministrare non debent: verumtamen, si se ad religionem aliquam voluerint transferre, & peractâ poenitentia eis pro tuo arbitrio iniunctâ, ibidem laudabiliter fuerint conuersati, processu temporis cum eis poteris de nostra licentia dispensare, ut postmodum susceptorum ordinum executione lætentur. Præterea pro prædicto etiam G. cum in persona propria laborauerit, f. tuam rogamus attentius, & monemus, ut cum facias in canonicum regularem sancti Petri de Scia, vel in alium religiosum locum, ubi deploret excessum, tanquam fratrem assumi, ut si ei ibidem viuenti regulariter sua merita videris suffragari, ministrandi, prout diximus, tribuas ^c facultatem.

NOTÆ.

NOTÆ.

1.

Item.] Ita etiam legitur in secunda collectione, *sub hoc tit. cap. 2. & in cap. immenit. 1. de maledic.* Vbi extat alia pars huius Decretalis; nullibi tamen expellitur, cui Episcopo rescribat Pontifex, licet ex textus litera deducatur, scribere alicui Episcopo prope Saguntinam diocesim.

Sagunt.] Saguntum vetustissima urbs est Hispaniæ anterioris in populis Etracis, cuius meminerunt Ptolomeus lib. 1. *Geograph. tabul. 2.* Pli-
nius lib. 5. cap. 3. Lucanus lib. 3. *Pharsal.*

Nec paruit hic populus pro libertate subire

Obsequium Penæ gessit quod Marte Saguntum.

De cuius origine, & conditoribus agitur Scolanus tom. 2. *hist. Valentiæ*, fol. 35. & 38. Tamayo à Salazar tom. 3. *maritimiæ lib. 25. luy.*

Non debent.] Quia suspensionem incur-
ruor furtiuè ordines recipiendo, & duos sacros ordines vno die suscipiendo, Suarez de censur. *dis-
put. 31. sect. 3.*

Facilem.] Quia eam professi vitam re-
gularem facilius disposant, immò & per ipsam
professionem in religione pmissam nonnullæ irre-
gularitates tolluntur, ut probauit in cap. 1. de *si-
licite presbyter.*

COMMENTARIUM.

2.

Furtiuè ordinatio dicitur, quous sit contra
canonum statuta, cap. *presbyter*, 24. *diff.* eum
vita, genus, patria, ætas, locus, doctrina, fides
non expenduntur, cap. *quando*, ead. *diff.* vel eum
quis sine exa-
mio de ordinari curauit, cap. *extra*

conscientiam, 64. *diff.* vel eum quis elam simul
cum aliis intrusus fuit ignato Episcopo, can. 30.
Councili Alich. ibi: *Subdiaconus eos ordinari non de-
bere, qui in adolescentia sua fuerint morboati, eo
quod postmodum per subreptionem, ad altiorum gra-
dum promouebantur. Si autem aliqui sunt, in prae-
teritum ordinari amoueantur.* Circa hæc ordinator furti-
uè certum est, semper eucharistiam accipere, &
valide ordines recipere, nisi ex defectu intencio-
nis Episcopi sacramentum nullum sit: quod io du-
bio credendum non est, ut docent Theologi eum
D. Thoma 3. part. *quest. 64. art. 4.* Marchinus de or-
dine, *tract. 1. part. 2. cap. 11. num. 17.* Hieron. Garcia
in *summa, tract. 1. difficult. 1. dub. 13. punct. 4.* Lugo de
sacram. in genere, *diffus. 8. sect. 7. num. 129.* Sed circa
pœnas, quas incurrat ira ordinatus furtiuè,
discretem est constitutendum inter eam causam, in
quo prius excommunicatio data fuit contra eos,
qui furtiuè se sogellectant; eam tunc certum est si-
mili excommunicationis vinculo irreueritos non
habere liberam exercendorum ordinum suorum
facultatem. Hallier, de *sacris elect. sect. 2. ad finem*
quam suspensionem aliqui irregularitatem dicunt,
quos referunt Diana *part. 4. tract. 2. resol. 55.* Hier.
Garcia *diff. punct. 4.* Barbulæ de iure *eccles. lib. 1.
cap. 33.* Hurtado de *irregul. diff. 2. difficult. 1. num. 3.*
Bonacin. *ead. tract. diff. 7. quest. 3. punct. 4. num. 6.*
Sed contrarium, immò tantum suspensionem ioe-
eute, docuerunt Gibal. de *irregul. cap. 5. quest. 2.
num. 21 dub. 6.* Leand. *ead. tract. diff. 10. quest. 4.* Si
autem nulla præcessit excommunicatio, suspensio-
nem incurrant, io qua Pontifex dispensare valet,
ut laudis proferuntur Suarez de censur. *diff. 42.
sect. 5.* Hieron. Garcia *diff. punct. 4.*



TITVLVS XXXI.

De excessibus Prælatorum in subditos,
vel contra.

CAPVT I.

• Alexander III.

Pruenit ad audienciam nostram, vnde si verum est, miramur plurimum, &
aduersum vos de iure mouemus, quòd in presbyteros, qui sunt in vestra iuri-
sdictione constituti, singulis annis, quasi in seruos mercenarios & talliam faciatis
quibus, nisi ad voluntatem vestram pecuniam soluerint, diuinum officium interdictis,
& eos vilitet, & inhonestè tractatis in tantum, quod ipsos laicos despiciabiles reddidi-
stis. Ideo verò hæc si vera sunt graui debent vltione puniri, eum eodem presbyteros,
quasi filios, & fratres benignè; ac fraterna charitate fouere debeatis. Discretionis igitur
vestræ per A. f. p. m. quat. in prædictos presbyteros huiusmodi tallias, & indebitas
exactiones exercere nullatenus præsumatis, nec eos de cætero irrationabiliter gra-
uetis, vel inhonestè tractetis, aut sine iudicio Capituli sui suspendere præsumatis, vel
eorum Ecclesias in re dictio subiiciatis; neque duas eos matrices Ecclesias, quarum vnâ
sufficere videbitis, tenere permittat. nec aliquem sine ordine iudiciario excommu-
nicare præsumatis: scituri pro certo, quod si huiusmodi rumores de vobis ad aures
nostras prouenerint, vos pro tantis excessibus, auctore Domino, taliter puniemus, quod
timore pœnæ vestræ ceteri à similibus abstinerebunt.

NOTÆ.

^a *Alexander.*] Ita legitur in prima collectione, *sub hoc tit. cap. 1.* & post Concil. Later. p. 2. cap. 7. multum tamen exprimitur cui rescribat Pontifex, nec ex serie textus facile deducitur.

^b *Tallium.*] Tallis quid, expofuit in *cap. aduersus*, de immunit. Eccles.

^c *Despicibiles.*] Quia laici a clerici infestati sunt, *cap. clericos*, de immunit. Eccles. in 6.

^d *Exalliones.*] Iuxta tradita in *cap. cum Apostolus*, de censuris, ubi commentarium huius textus dedi.

^e *Suspendere.*] Hanc partem expofuit in *cap. quæfisti*, de his quæ fiunt à Prelatis.

CAPVT II.

Idem ^a *Cant. Archiepiscopo.*

AD hæc quoniam prædictus Episcopus, sicut accepimus, plures Ecclesias, & præcipuè Ecclesiam de Nortun. à ^b consuetudine, & obsequio Archidiaconorum liberas constituerit, & immunes, & in hac parte redditus eorum diminuit, & attenuauit: nihilominus tibi significatione præsentium iniungimus, ut si res ita se habet, factum Episcopi super hoc ap. rem. corrigas, & emendes, & ita provideas, quod præfato Archidiacono consuetudines, quas presbyteri in Ecclesiis sui Archidiaconatus debent, plenariè conseruentur, & illi gratam reuerentiam exhibeant, & honorem.

NOTÆ.

^a *Antuariensi.*] Ita etiam legitur in secunda collectione, *sub hoc tit. cap. 2.* & in *cap. ad hac 20. de appellat. ad hac, de priuileg.* ubi extra alie partes huius Decretalis, ut notauit in dicto *cap. 20.*

^b *Consuetudine.*] Præcipua enim ista Archidiaconorum, tam circa iurisdictionem eorum, quàm circa obventiones, consuetudine introducta sunt, *cap. ad hac, de officio Archid.* ubi de his iuribus latè egimus, & docet Cironius *ad tit. de officio Vicarij*, & lib. 2. *obf. cap. 8.*

CAPVT III.

Idem ^a *Exoniensi Episcopo.*

AD aures nostras peruenit, quod quidam Archidiaconi tui se in Ecclesias, quæ in suis Archidiaconatibus ^b vacant, auctoritate propria non verentur intrudere, & sic ipsas Ecclesias detinere non erubescunt. Attendentes itaque, absonum, & omni rationi contrarium esse tantæ præsumptionis excessum, nec volentes in correptum relinquare: f. t. per A. f. p. m. quat. si qui Archidiaconi sunt in Episcopatu tuo, qui tali modo Ecclesias occupant, vel occupatas detinent, ipsos ad eas dimitteudas omni oc. & ap. cess. ecclesiasticâ censurâ ^c compellas, & eandem Ecclesias personis idoneis, & honestis ordines; & præfatos Archidiaconos pro tanta præsumptione debitâ cures animaduersione punire.

NOTÆ.

^a *Exoniensi.*] Ita etiam habetur in prima collectione, *sub hoc tit. cap. 1.* & post Concilium Later. part. 2. cap. 3. De Exoniensi diocesi egi in *cap. 6. de filiis presby.*

^b *Vacant.*] In quibus ius habet substituenti

electos corporaliter, *cap. et nostrum, de officio Archid.*

^c *Compellas.*] Quia nemo seipsum instituere potest, quia interea dum, & accipientem constitui debet discreto, *cap. per nostras, de iur. patronat. cap. final. de iur. iur.* nec collator sibi beneficium conferre potest, *cap. unic. de ecclesiast. beneficiis.* Commentarium huius textus dedi in dicto *cap. final.*

CAPVT IV.

Idem in Concilio ^a *Lateran.*

CLerici. *Et infra:* Quicumque illa incontinentia, quæ contra naturam est, propter quam ira Dei venit in filios dissidentia, & ^a quinque ciuitates igne consumpsit, deprehensi fuerint laborare, si clerici fuerint, ^c deiciantur à Clero, vel ad agendam penitentiam in monasteriis ^d detrudantur: si laici, ^e excommunicationi subdantur, & à cœtu fidelium fiant penitus alieni.

NOTÆ.

NOTÆ.

1. a **Lacerantur.** Ita etiam legitur in prima col-
lectione, *sub tit. de cohabit. cleric. cap. si-
nal.* & extat in ipso textu sic, lo Concilio Latera-
nensi generali celebrato sub Alexandro III. cap. 11.
cuius canonis verba à compilatoribus tripliciter
fuerunt & prima pars, que agit generaliter de
incontinentia clerici, extat in dicto cap. clericis, *fi-
nal. de cohabit. cleric. in 1. cabell.* Secunda pars, in
qua specialiter de illa incontinentia specie, que
contra naturam est, differtur, repetitur in presen-
ti textu. Tertia tandem, que agit de monasteriis
monialium, & ne quisquam ea frequentare pre-
sumat, repetitur in cap. monasteria, *de vita & honest.*
cleric.

2. b **Clerici.** In dicto canone 11. Concilij La-
teran. additur in *scribis ordinibus constituitur*: unde
constat presentem constitutionem quoad poenam
destitutum in monasterium locum non habere in
clericis minoribus tantum gradibus initiatis, qui
excommunicandi sunt, non verò detrahendi in
monasterium.

3. c **In filios diffundit.** Ea quibus verbis ca-
pitulæ constat, in presenti canone non agi de
quolibet lusu nisi peccato contra naturam admi-
sso, sed de postulata venere, & monstruosa, cum
hominibus, aut feminis extra vas naturæ habi-
ta; que commotio contra naturam a-pellatur ab
Apostolo ad Romanos cap. 1. ibi: *Nam summa eorum
monstrum naturalem istum.* Es in cap. flagitia, 32.
quest. 1. l. cum vir, *Coel. ad leg. Jul. de adul.* Huius
monstruosæ venere scissuras appellat D. Paulus ad
Ephes. cap. 4. filios diffundit, id est desperatos, &
filios perditionis, iuxta Hebræicam phrasim, ut
notatur Caiac, in cap. de clericorum, *de vita & honest.*
cleric.

4. d **Quingue civitates.** Videlicet Sodoma, Go-
morrah, Sodom, Segor, & Elele, quantum dicitur
propter peccatum hoc, alie autem propter vicini-
tatem submerse fuerunt. Eorum meminerunt Sa-
ias cap. 13. Ieremias cap. 50. Ezechiel cap. 16. &
Oseas cap. 11. & hæc diuina vltio refertur *Genesis*
cap. 19. *Denerunt.* cap. 39. & eius meminerunt Pa-
tres Concilij Parisiensis sub Ludouico & Lotha-
rio lib. 1. cap. 2. ibi: *Sunt sancti diversorum malorum
parricidae, & lex divina improbat, & condemnat:
pro quorum etiam diversis sceleribus, & flagitiis popu-
lus sancte & pestilentiali flagellatur, & Ecclesia san-
ctus infirmatur, & regnum periclitatur: & sicut sunt
diversorum pollutionum parricidae, quæ cum masculis
& precoribus ventrali diversis modis admittunt,
que incomparabilem dulcedinem piissimi Creatoris ad
amertudinem provocant, tanto gravius delinquent,
quanto contra naturam peccant. Pro quo etiam sceleris
igne celestis conflagrant, infernique bæn quinque ab-
sorptæ sunt civitates, necnon & quadraginta, & eo
amplius multæ stirpes Benjaminis muneris fratrum
confusa sunt. Hæc porro iudicia, & evidentes vindi-
cæ declarant, quam execrabile & desolabile apud di-
vinitatem masculinum hoc vitium extet.*

5. e **Detrahuntur à Clero.** Quia ut clerici detru-
derentur in monasteria poenitentia petagende
causâ, prius deponerantur, ad laicamque com-
munionem redigebantur, cap. tua, *de paroc.* cap.
nullus 8. 11. quest. 1. ibi: *Detrahuntur autem cleri-
cum cingulo honoris, atque ordinis sui excom ali-
quo tempore monasteria relegari convenit.* Illustrat
Bosquetus ad Innocent. lib. 1. regest. 23. *episto-
la 130.*

f **Detrahuntur.** De hac detractionis potestate
in cap. 1. de regularibus.

g **Laceri excommunicantur.** Clerici autem
non excommunicantur, sed tantum deponuntur,
ne his in idem crimen vindicatum videtur quam
talionem assignant Apostoli in can. 25. vbi de cle-
ricis quoniam fornicatoribus statuentes docent,
ut depouantur, & non sequeantur, ne his in
idem crimen vindictæ, contra Scripturam: ad
quem canonem alludit omnino sanctus Leo
episcopus 92. ad Rusticum Norwintonensis Episcopus,
libi: *Ut qui in presbyterali honore, mo Diocani
gradui fuerint consecrati, y pro crimine aliquo suo
per manus impositionem remedium accipiam parocendi*
(quæ non sunt excommunicati) *quod sine auctoritate
Apostolica tradimus defendit.* D. Basilus episcopus
ad Amphileb. can. 3. de Diocani formatione lapsus
agens eandem rationem affert, propter quam de-
positioni non iungatur excommunicatio, ne his
idem crimine puniatur: cum enim in laicis ple-
diatur excommunicatio, siue parricidii com-
munionis, si in clericis depositio, ne excom-
municatio puniatur, & ita duplex cætu pro
vno reus imponetur. Accedit, quia ut ibi ibi-
dem S. Basilus, libi per poenitentiam redeunt
ad fideliem communionem, seu congregacionem
clericus autem depositi tantum reconcilian non re-
deunt ad sacerdotium, à quo excedunt: Idcirco
idem Basilus in eadem epistola ad Amphileb.
can. 32. vbi notatur Basilium, & probat G. balin.
de censur. dispensat. 7. quest. 11. *concl. 5.* Non mo-
laet aliqua crimina, quæ capitalia dixit Patres
in parocia, puniri fuisse in clericis de-positionis
simul & segregacionis, ut in can. 28. 30. & 64.
Apostol.

COMMENTARIUM.

EX hoc actu sequens communiter deducitur
affectio: Clerici contra naturam incontinentes in
monasteriis detrahuntur, laceri verò excommunicantur.
Quæ conclusio probatur potest ex cap. excessus, cap.
aditery, cap. flagitia, cap. vltus 32. quest. 7. cap.
quod aut, 14. dist. cap. si quis 56. dist. cap. de clericis
rum, de vita & honest. cleric. in Archiepiscopo
patet, de rapto cap. sollicitudines, 4. qui verò, de paroc.
dist. 1. Concil. Illiberit. can. 18. Troiletan. can. 15.
Turonensis can. 15. Parisiensis sub Ludouico lib. 1.
cap. 34. Londinensis 2. anni 1109, tempore Pas-
chalis II. Sodomiticum flagitium facientes, & eos in
hæc valent etiam innuere, amebantur damnantur, donec
poenitentiam, & absolutionem mereantur: qui verò in
hoc crimine publicatus fuerit, statum est, ut si quidem
fuerit persona religioſi ordinis, ut ad nullum amplius
gradum pveniat, & si quæsi habet, ab illo depo-
natur. Refert Anselmus episcopus 128. ad Guillelmum
D. Clementis lib. 6. consilii. cap. 14. Iulianus Martyr
apolog. 1. Basilus in epistola ad Amphileb. can. 6 & 61.
Consonant de iure regio lea 1. part. lib. 21. lex 11.
lib. 21. lib. 8. recapit. Illustrant plura in det. statio-
nem huius criminis adducentes. Lyra, Serrarius,
Lorinus, & alij Theologi posuit in cap. 19. Ex-
di, Gomez in l. 80. Teori, Tribollanca de iure
spirit. lib. 13. cap. 2. num. 23. Contradus Kling. lib. 3.
loc. commun. cap. 34. Solozuanus rom. 2. de iure
fudic. lib. 1. cap. 14. num. 47. Basilico de iur. 4. Petrus
Greg. lib. 36. smag. cap. 20. D. Ioannes Soares ad
leg. Aquil. lib. 2. cap. 3. Nardona in l. 20. lib. 1. lib. 4.
recapit. glossa 3. An. Aug. in epist. iur. lib. 36. tit. 4.
Mendoza lib. 1. Concilij lib. cap. 65. Alemanus in no-

7.
Concl.
1. 5. 12. 13.
D. 128. ut
proba-
tur.

vis ad Procepium, fol. 33. linea 22. D. Ioannes Vela de delictis cap. 3. Borell. tom. 5. decis. 1. num. 88. An. Matcheus de crimin. ad m. de adul. & sup. cap. 7. ad finem, Blancinus lib. 3. de triplici iur. col. 1. cap. 13. plures, quos refert D. Ioseph. Vela in cap. 1. de offic. ordi. par. 1. num. 106. Pichardus in 4. item lex, Iustit. de public. iusticiis.

8.

IMPRONA-
TIA TRA-
DITA AS-
SERTIO.

Sed in hanc asseritionem pro dubitandi ratione ita infurgo. Quilibet Domini nostri actio debet esse vitæ nostræ instructio, cap. significasti 4. de elect. Clemens. 1. de iurisdictione. Sed Dominus nosse in peccatores huius tetetismi criminis non tantum poena spirituali, verum & corporali (ignis videlicet) visus fuit, ut supra probavi ex cap. 19. Genesis, & 29. Deuter. Ergo similiter Ecclesia non depositione, aut excommunicatiunc tantum & verum & poena capitali hoc scelus vindicare debebat. Facit etiam, nam poena medicata, & pensata est pro fidelis gravitate, cap. felix, 5. ceterum, de poenit. lib. 6. §. finali. Ced. de modo mult. Sed pro illo, & adulterio poena corporalis inlanguitur in cap. 2. de adul. Ergo & pro hoc nefario crimine imponenda erat, cum eius gravitas superet adulterium, cap. ad ult. §. 3. quæst. 7. Augur hanc dubitandi ratio ex cap. in Archiepiscopatu, de raptis. Vbi cum agatur de raptionibus puero, ut eis absteruerent, decrevit Pontifex, illos poeniti esse multandos, & subitis cadendos. Igitur non recte Patres Concilii Later. in presenti tantum simarent, clericos propter libidine venientes decondendos esse in monasterium, laicos vero tantum excommunicandos.

9.

DE APPO-
SITA RE-
VOCATA
CRIMI-
NIS.

Quæ dubitandi ratio non obstante vera est præfens assertio, pro cuius expositione sciendum est, hoc crimen tritimum esse, & horrendum, quod inuerso, ac præposito naturæ ordine, aduersantibus pudicæ legibus perpetratur. Dicunt peccatum omnium pessimum in cap. 11. 35. quæst. 3. contra naturam à Platone lib. 1. de legibus, impudissimum facinus à Clemente lib. 6. constit. cap. 27. Cuius quanta sit gravitas, quanta acerbitas, ipsi quæque quædam dicunt nefas ac scelus flagitiosum sit, omnes sciunt. Tertul. lib. de pudicitia, inter monstra illud reulit ibi: Reliquas autem libidinum furias impia in corpora, & in facus ultra iura natura, non modo limine, verum omni Ecclesia teste subuenimus, quia non sunt delicta, sed monstra. Philo Iud. lib. de specialib. legib. Hac tetetisma faculentia oblitus vocat probolos, & familie sue ac patris dedecora, atque adeo totius humani generis. D. August. de bono coniugali, cap. 8. hanc esse summam turpitudinem dicit, ibi: Adulæ est fornicatio, peius adulterium, peius est enim alterum matrimonium violare quam meretrici adhaerere, & peius est incestus, quia peius est cum matre, quam cum aliena vxore concubere, & semper de malo ad peius, ducit ad ea perueniant, quæ sunt à Apostolo, super eis etiam dicere. Eleganter Sanctus Petrus Damianus in libro Gomorrhæano, ibi: Hoc sunt sodomiticum vitium nulli prorsus est vitio conferendum, quod omnia immanitates superat vitiorum; hoc liquidum vitium mors est corporum, interitusque est animarum; carum pellis, mentis lumen extinguens, spiritum sanctum de templo humani peccatis cunctis, inuentum luxurie dissolutæ introducit: quisquis in hunc extrema prodigii abusum furia lapsus, à summa parva vni effugit, à Christi corpore separatur, veluti Ecclesia auctoritate confutatur, omnium Sanctorum Patrum indicio condemnatur. Multa ex variis Patribus ad huius infamissimi

probi detestationem congererunt Hlinematus in opus. de diversis Leuburg, ad interreg. 12. Theoph. Raynaud. lib. 6. de vitio. num. 146. Borel. in summa decis. tit. 1. num. 46. Solorzani lib. 2. de iure iudic. tom. 1. cap. 12. num. 31. & tom. 2. lib. 1. cap. 24. num. 47. Declaus lib. 6. tract. crimin. cap. 3. num. 3. Beyerlinch. tom. 7. verbo Sodomia. Quare Salvianus de gubernat. Dei, testè notant Dominum nostrum viotem huius delicti se appellare, licet in aliis delictis nomen vltoris admodum abhorruerit. Legitur enim in dicit. cap. 19. Genesis: De minimis pluis super Sodomam. Et crimine hoc maius, & grauius esse, quam adulterium, contra P. Vazquez testoluit P. Mendo in stat. discursu §. quæst. 23.

Deinde sciendum est, omni iure variis, & ex quilibet poenis vindicatum fuisse hoc delictum. Iure diuino poena mortis statuta fuit. Lami. cap. 18. vers. 22. & cap. 10. ibi: Qui dormierit cum mascula eorum femine, uterque aperians eis nefas, morte morietur, si sanguis eorum super eos. Exodi cap. 22. vers. 19. Deuter. cap. 22. vers. 21. Fuit Apostolus ad Roman. cap. 1. ad Galatas cap. 5. ad Ephes. cap. 5. Apud Orientales eodem poenam vitæ statutam fuisse testet Eusebius Cæsar. lib. 6. de præpar. evangel. cap. 8. ibi: Ab Euphrate usque ad Orientalem oceanum, cui cades, vel sursum abicitur, non magne morte torquetur, qui veri pudorem masculi eripuit, si res in lucem veniet, magnitudine ignominia seipsum interficere cupit. Iure ciuili Romanorum variis poenis pledebatur, ut constet ex l. 1. §. remanet, ff. de postul. l. 1. §. 6. si de extraordin. crimin. hirsindum, §. item, ff. ad leg. Cornelia de sicar. Paulus lib. 3. sent. tit. 8. §. qui bonum. Et in reos huiusmodi scelera lata fuit lra Scatinia, quam tulit Scatinus quidam Aricinus, cuius meminit Cicero philip. 3. Eius legis membrauerunt Sætonius in Domia, cap. 8. Tertul. de monog. cap. 12. Plutarchus in Alcibi. Sextus Philosoph. lib. 1. Iuuenal. Satyr. 2.

Quod si videremus leges, ac iura: citari

Ante omnes debet Scatinia. Rescript. primam.

Aufonius, qui de quodam Iureconsulto adulteram vxorem habente, & huc præpositæ veneti dedito ita lusi:

Iurisse in ipso, cui vixit adultera centus,

Papia lex placuit, Italia displicuit.

Quærit unde hoc sit diffinita? Semivix ipse

Scatinam merens, non meruit Titiam.

Quod elegantissimum epigramma parum scitè expoluerunt Alecius lib. 10. parerg. cap. 16. Gratianus discept. forens. cap. 183. nam. 43. Sed ex sententia Elly Viueti in net. illius, sic exponere potest. Iurisconsulto cuidam, qui vxoris adulterium dissimulans, fauere ci videbatur, Papiam legem, quæ contra coelibes, impotentesque lata est, placuisse, Titiam autem de adulterio displicuisse, quæ lenocina, atque adulterii puniuntur, quia vxore adulteræ tenent, liberisque vel ex marito, vel ex adulterio sublaris, mariti partisque nomen usurpare verabatur: & legi Papie satisfacere nitebatur, dum in Iuliam de adulterio peccabat: idque collatis aliis dactum legum nominibus, lepidissime ostendit aut enim diuinitas huius causam esse, quod Iureconsultus ipse semivix, mollis, mullebricque patientie seortum, ut Petrolius alibi loquitur, metuebat legem Scatiniam, latam adulteris impudicis; ideoque ut hoc vitium tegeret, vxorem adulteram retinebat maritus metu Scatinie, Papia vtens, nec tamen timens Titiam legem, quæ scilicet cauebatur, ne quis ob causam otandam donum, pecuniamque accipiat, ut in Tacito legi-

10.

DE PROBIS
REVO-
CATIS.

mos et. annual. reclamante Lipsio & aliis: quia edm
ci donum, manifeste ob causam ostendam offerret,
& impetrans, ac clientelatum inops esset, non erat
cur inueneret Titum legem de muneribus, quæ
ipse ab adulteris traxit lege capiebat ex lenocinio
suo, sciens, contra legem Iuliam. Sed quia lex
Scatinia eam penam statuebat, ut qui ingenium
stuprasset, sceleris decem milia caluere, ut
ultra modum flagitium hoc exercebat, quia ob
penam hanc pecuniatam, quæ facillè pendeba-
tur, committentibus Iudicibus viti nubebatur in for-
mibus, ut Tertull. differt scilicet de monog. cap. 12.
quare pena capitalis in eo statuta fuit in l. cum
vir, Cod. ad leg. mul. de adul. His elegantissima
verba: Cum vir nobis in summis viris percellitur,
quid captatur tibi sexus perditus locum? ubi scelus est
id, quod non proficit scire? ubi venus mutatur in ad-
terram ferunt? ubi amor queritur, nec videtur in lu-
borem insuper leges, armari iura gladio vltimo, ut
exquisiti puniuntur infames, qui sunt, vel qui
fuerunt rei. Cuius legis veram litteram reitue-
rent curantur Fabritius sram. inc. cap. 14. Reza-
dus lib. 4. cap. 10. Schollasius ad illud Petronij:
Perforam riuu madu pubescensibus amni.

I. Gouho, ad eandem legem in Theodos. & nos in
cap. 71. Concilij libber. Ad illa verba, armari iura,
notandi sunt Prudentius lib. 2. in Symmachum:

— Lex a moria fides.

Maximus Victor lib. 2. in Gensium.

— Tibi crimina phletem

Armata leges gladii, & vincit ferro,
Iunio Philippo Camerario beator. success. cent. 3.
cap. 4. Imperatoris Valentinianus, & Atreidibus
penam ignis statuerunt in l. 6. Cod. Theodos. ad leg.
Iul. de adult. ibi: Omnisque, quibus flagitij usus est,
vixit corpus mulieribus consiliatur aliteri sexui des-
tinare patientia (nihil enim discretem videtur habere
& cum feminis huiusmodi scelus spectante populo
flamma vindicet expulsi). Et sine pena capitalis
reddè statuta est in eos, qui nefaria suis libidinibus
toti homines occidunt, quos impediunt nasci.
Eos enim homines interficere, dam prohibent
nasci, non solum Christianis normis, sed & Eth-
nici. Plato lib. 3. de legibus, ibi: Abstinentium igitur
a malis iubeo; nam qui istis reuocatur, genus homi-
num dedita opera interficiunt, in lapidem seminantes,
ubi radices agere, quod feruor, nunquam poterit.
Martialis lib. 9. epigram. 12. in Ponticum.

Hoc nihil esse putat: scelus est mihi crede, sed
ingens.

Quoniam vix animo concipis ipse iura.

Ipsi crede tibi notam dicere verum.

Istud, quod dignis, Pontice perdit homo est.
Quoniam penam stremat Imperator Iustin. in au-
thent. ut non luxurietur, & in §. item lex Iul. Iustin.
de public. iudic. inella 77. Phocinus in memoran-
tis, 1. de iure, cap. 5. Sed tunc difficilis videtur
textus in l. si ferui 27. §. si peruenit, ad leg. Aquil.
ubi asseritur, castitatem puenam non teneri lege
Aquilæ, quia periculosior eam reddit. Ergo quia
iure elulsi crimen hoc pazzolere libidinis non
vindicebatur. Nam respondendum est, ideo se-
num conueniunt periculosior reddi, quia Roma-
ni inimici vtebantur ad diuersa ministeria. præ-
cipue ad custodiam maritarum, ut aiunt Hecro-
dorus ibi: In maiori pretio, quam integri, sunt eu-
machi, propter fidem Clemens Alexand. lib. 4. pedag.
cap. 4. ibi: Admiratione circa suspitionem. Item ad
docendam priores litteras pueri. Lucianus in Eu-
mucha, ibi: Apiter Eumachus, cui adolescentes cru-

diendi traduntur. Præcipue puellis. Martial. lib. 9.
epigram. 70. l. 4. Cod. de præpositis sacri cubic. vbi
Cuius. Et de eumacho Præceptore accipit tex-
tum in l. qui filius 4. §. si ubi pupillus educari, D.
Ioannes Suarez ad leg. Aquil. lib. 2. cap. 3. tit. 6.
num. 2. plura de his tametsi ad custodiam ma-
tritarum deputatis congregauerunt Arroya lib. 3. ob-
ser. cap. 6. Forerius lib. 2. tit. 2. cap. 29. Salmut. in
not. ad Pausan. lib. 1. rer. mem. tit. 41. Vnde præti-
osus dicitur eumachus in d. l. §. qui pupillum, quia
ista ministeria aptior reddebatur, Iure nostro Re-
gio olim castitatis pena impolita erat, l. 6. tit. 5.
lib. 3. fori iudicum, vbi probat Villadiego, & ex-
ponit quomodo delictum hoc probetur. Postea
pena capitalis sancita fuit in l. 2. tit. 2. part. 3. &
nouissima lege 1. tit. 1. lib. 4. Recopil. pena hæc
ignia est cum confiscatione bonorum: & merito
similes rei combusti iubentur, ut ignem, quem
in concupiscentiis habuerunt, iuxta illud D. Am-
brofij de Abel, & Cain: Sæva criminum stimulus
libido est, qua nunquam manere quietum possit as-
sellum; nolle ferat, die ambulat; ignis humiles ex-
tinguat. Vnde Dominus igne de celo dimisso
vitus est hanc monstruosam Pentapolitaram libi-
dinem, Genesis cap. 18. Similiter cum Iude nati-
ciatum esset, fornicatam fuisse Thamar notum
cui, prodei eam iussit, & combur. Genesis
cap. 38. Similiter Iure elulsi eamdem legimus, se-
cum eum domina propria conueniunt. m. conce-
mari, Leon. Cod. de mulieribus qua se prop. fornic.
vel si mulierem ingentem rapuit, ut simili rap-
tum opem iulerit. Notauit Mancinus lib. 1. de tri-
plici iuris collat. cap. 60.

Nec minori odio Ecclesia prosequitur est hoc
immane scelus; nam primis Ecclesie sæculis nec
in fine venia huiusmodi re concedebatur. Con-
cil. libber. can. 73. ibi: Supra cunctis puenam nec
in fine dandam esse communionem. Vbi notauit,
& probatur Gabriel Albaspinus lib. 2. obs. cap. 13.
Balsaron in can. 17. Concilij Argyr. cuius verba
infra dabimus. Postea poenitentia illis innotuit
sule decem, aut septem annorum. Gregorius III.
in par. tit. de dines. criminis, cap. 21. ibi: Si quis
ordinatus in scelere sedituico conuincatur fuerit,
quod in tantum coram Deo abominabile describitur vi-
tium, & etiam igne, & sulphore conuictus cum aet. le-
gatur submersa, decem annos secundum antiquam
consuetudinem poenitent: quidam humanis septem an-
nos profuerunt; ibi: autem, qui nesciunt cum huius
flagitij, tres annos profuerunt, ut poenitent: pueri
vero, qui illud exercere sciunt, oportet se emendare
sistunt, videlicet quinquaginta dies poenitent, in sa-
per & verbis assilantur, quia meresse est, ut so-
ges, qua male palatas, refectur. Etiam iure cano-
nico laici infamia notantur, cap. 1. in 3. quest. 7.
& excommunicantur; clerici autem olim depositi
deturbabantur in monasteria ad penitentiam per-
agendam: nouissima verò constitutione Pij V.
edita anno 1568. clerici omni privilegio clericali,
officio, dignitate, & beneficio ecclesiastico pri-
uati, & degradati traduntur potestati sæculari, ut
debitis assilantur poenis: quam ad præxim expli-
cat, & exponit Scortia in scilicet. Panis. consil.
epit. 103. theorem. 255. Vnde constat, delictum hoc
à laico commissum esse mixti foci, & arduum à
seculari iudice, verum ab ecclesiastico ex preuen-
tione puniri posse, ut docent Ansaldu de iurisd.
part. 4. cap. 1. tit. 5. ad firm. Bobadilla lib. 2. polu.
cap. 17. num. 67. pluribus relatis probet D. Ioseph.
Vet. in cap. 1. de offic. ordin. num. 109. Etiam hoc

De poenit.
et iura
canoni-
co.

crimen

cimen in Regnis Aragonie, Valentie, & Lusitanie puniri per Inquisitores Apostolicos, ut testatur Simanc. de Carol. Censura 99. crimin. part. 3. cap. 4. Torrelabana de iure spiritali. lib. 13. cap. 2. num. 14. Sousa in aphorism. Inquisit. lib. 1. cap. 59. num. 10. Vela ubi supra, num. 109. Castropalao tom. 1. oper. moral. tract. 4. dist. 8. p. 11. 1. 2. 4. 2. Diana part. 4. tract. 7. resol. 10. Carcra de offic. Inquisit. part. 2. tit. 6. §. 16.

Nec obstat habitandi ratio supra expensa; nam licet ita aros, & horrendum crimen sit hoc monstrare venetis; tamen cum Ecclesia admodum abhorreat sanguinis effusionem, ut probavi in cap. sententiam, ne clericis, vel monachis; ideo pro vindicta hoc crimine tantum statui penas spirituales, non vero poenam capitalem, ut secularis legislatores sanxerunt. Nec obstat augmentum deducum à penis imposita pro aliis delictis, nam eum in delictis puniendis pensetur locus, tempus, occasio, peccandi facilitas, multitudo peccantium, non potest, argumentum deduci à pena imposita uni delicto ad aliud. Nec etiam obstat augmentum deducum ex illis, cap. in Archiepiscopatu, de rapinibus. Nam in eius specie fieri non solum abutabantur pueris, verum & eos rapiebant; inde pro capiti ipso iubei Innocentius penas pecuniarias eos esse multandos, & flagellis afficiendos, dummodo ad effusionem sanguinis non perveniant, ut in eius textu notis observavi.

Sed supra traditis obstat textus in cap. fraternitati 7. de eo qui cognovit consanguinitatem uxoris, ubi cum quidam puellam infantem nondum septennem sibi in uxorem disposuisset, & extraordinaria libidine polluisset, postea matrimonium contraxit cum consanguinea ipsius sponse: quaeritum fuit, an septemque essent coniuges? Et respondit Pontifex, inter eos celebrandum esse diortium quoad totum, nulla poenà imposità viro extraordinarie cognoscenti sponsum, quæ passa est extraordinaria libidine pollui: igitur non rectè in præsentem docetur, licetum contra naturam luxuriose peccantem excommunicandum esse. Augere ipsius textus difficultas ex cap. monachi 7. cap. flagitia 32. quest. 7. ubi docetur, dissolui matrimonium, si vir præpositè cognoverit uxorem propriam, vel alienam. Igitur non rectè in præsentem capite fraternitati, diortium tantum sit quoad totum. Quibus difficultatibus facillè responderetur si observamus, in eo textu non agi de præposita, seu monstrata venere, de qua in præsentem agitur; sed tantum de extraordinaria libidine, id est intempestiva coitione, ex importuno congressu habito cum ea, quæ adhuc viripotens, & puerpera non erat; de qua etiam extraordinaria libidine agitur in cap. iunioris 3. de sponsal. ubi notavit Cuiac & probavi in dist. cap. fraternitati. Unde cum in eo textu nulla suspicio præpositæ venetis daretur, ideo poenà nulla impositur sponso, sive sponse.

Secundò obstat textus in canone 3. Concilij Tolet. 16. in illis verbis: Sicut cordis, corporisque munditia homines Deo proximos facit, ita incontinentia alio à Deo alienis stant: & sicut sodomitici populi horrenda, nimisque detestanda peccata igni castro consumuntur exoritur in præteritis traditis, ita talibus immunditiam homines deditis aeterna damnationis rogi consont, loquente Domino per Prophetam. Vestimentum mixtum sanguine erit in combustionem, & vobis ignis. An nunc quoniam hoc sancta alia, & solemnitas operationis malum mul-

tes sanctissime perpenditur, ideo nos ab huius scdissima causa exspoliandum consuetudinem? Et Domini ardentes omnes in communi sentimus, ut quicumque huius nefaria aliois peccatores existerint, quique in his turpitudinibus sese implicari permiserint, & contra naturam masculi in masculis hanc turpitudinem operaverint, si quidem Episcopum, Presbyterum, aut Diaconum fuerint, de proprii honoris gradu deticiant, perpetui exilio manebit damnatione percussus: si vero cuiuslibet ordinis, gradus, vel persona talibus columinis noxi reperi fuerint applicati, idem legis, quæ de talibus est edita, nihilominus sentiant sententia, atque ab omni Christianorum societate alieni; & insuper cæcenis verberibus correpti, & nuptier decalvati, exilio mancipentur perpetui. Ita ut nisi tam eos, qui religionem calum transisse visi fuerint, quam etiam alios (ut diximus) cuiusmodi ordinis homines digni satisfactionis poenitentia accipere corpus & sanguinem Christi in fine permiserint, aut Christianorum societati reddiderint, nec in exitu sui diem, secundum canonem instituta communione percipiente sententia relevetur, nec Catholicorum cœtu aggregari. Ex quibus verbis expressè deducitur, laicos peccatores huius delicti non excommunicari, sed cæcenis verberibus affici, ac nuptier decalvatos in exilium mitti, & clericos non detrudi in monasterium, sed etiam degradatos perpetuo exilio deputari. Ergo non rectè in præsentem asseritur, laicos excommunicandos esse, clericos vero esse monasterii detinendos. Pro cuius canonis expositione sciendum est, in his Conciliis Tolentis non solum Præsules Ecclesiarum adfuisse, verum & Principes; & non tantum Concilia sacra, verum & communia secularia esse. Unde penas etiam corporales in eisdem Conciliis sæpius contra laicos statutas legimus. Quare in eo canone eadem poenæ statutæ fuerunt, quæ iam in legibus Visigothorum, lib. 3. tit. 5. sancitæ fuerant, & repetitæ leguntur. Quare cum ab Egio Rege Gothorum, cuius tempore, anno videlicet 693. celebratum fuit Concilium illud simul cum patribus in eo congregatis, poenæ illæ statuerentur; quid mirum, ut poenæ etiam corporales contra mascululorum flagitatores statuerentur.

Ex supra traditis lucem accipit textus in canone 16. Concilij Ancy. ubi de his, qui ita rationabiliter vixerunt, id est, qui cum peccudibus, vel masculis polluti fuerunt, ita Patres sanxerunt: De his, qui irrationabiliter versati sunt, siue versantur, quotquot ante tricesimum ætatis sui annum tale crimen commiserint, quinquidem annis exilio in poenitentia communionem singularem mereantur irationum. Deinde quinquaginta in hac communionem durantes, tunc demum oblationis sacramenta contingant. Dissolvatur autem vita eorum, quales tempore poenitentis existerint, & ita misericordiam consequantur. Quod si inextinguibiliter his hærese criminibus, ad agendam poenitentiam prolixius tempus infirmant. Quicquid autem peracta viginti annorum ætate, & vixit habentes, hoc peccato prolapsi sunt, viginti quinque annis poenitentiam gerentes, in communionem suscipiantur orationum. In qua quinquaginta perdurantes, tunc demum oblationis sacramenta percipiant. Quod si qui, & vixit habentes, & transcendentes quinquagesimum annum ætatis ita deliquerint, ad exitum vite communionis gratiam consequantur. In quibus verbis brevitè poenitentia impositur adolescentibus quap maioribus; qui cum masculis se polluerunt, quia semper minores mitiori poenâ, quam maiores ætate afficiantur, & exilium 57. §. 1. ff. de

12.
DIOCH-
TYVA
RATIO
DIRECAM-
DI.

13.
EXPOSIT-
TVA CAP.
STRABEN-
NITATI 7.
DE SO QVO
ODONIVS
COMIAN-
OVIN.

15.
EXPOSIT-
TVA CAP.
16. COM-
ESLAV-
CTR.

14.
EXPOSIT-
TVA COM-
CELIUM
TOAT.
CAN. 3.

ff. de minor. l. si adulterium 38. §. 1. *ff. ad leg. Jul. de adul.* & in terminis postpositæ libidinis constitutum fuisse refert Hæmenopolus lib. 6. *promptuarij*, tit. 4. ibi: *Præter naturam lasciuientes, tam apertè, quam patientes gladio plectantur; nisi forte qui passus est, moueretur.* Vnde rectè poenitentiz tempus imponitur, & taxatur in c. 16. iuxta ætatem ipsius delinquentis, ut etiam poenitentia leuior imponitur, quando peccatum hoc solummodo attentat, non verò consum-

matum fuit, ut ex D. Ildoro refert Carnotensis p. 9. *Decretis*, c. 94. in hæc verba: *Si quis ex iuuenibus, vel aliqua suspiciosa persona cum parulis iocatus fuerit, diuturna poenitentia maceretur.* Licet enim conatus in aliis delictis opere non consummatus non puniatur; tamen in hoc teterrimo crimine propter eius atrocitatem conatus extra ordinem vindicatur, l. 1. §. final. *ff. de extraordin. crimin.* Prosequitur ipsius canonis illustrationem Zorda in *aduers.* l. 146. n. 11.

CAPVT V.

Alexand. III. *Vniuersis* * *Abbatibus.*

ANdè si Episcopi aliqui ab Abbatibus aliquid præter debitam obedientiam contra libertatem ordinis à prædecessoribus nostris, & à nobis indultam exigunt, liberum sit eisdem Abbatibus Ap. auctoritate denegare quod petitur, ne occasione ista, b ordo iste, qui hæcenus liber exiit, perpetuo seruitutis laqueo vinciat.

NOTÆ.

1. a *Abbatibus.* Ita etiam legitur in secunda collectione, sub hoc tit. c. 1. sed in margine pro *Abbatibus*, legitur *Episcopis*, & quilibet littera retineri possit, cum Alexander III. generaliter, tam cum Abbatibus, quam cum Episcopis loquatur.

b *Ordo iste.*] Forsan agebat Alexander de ordine Cisterciensis, quem speciali affectu diligebat; unde variis priuilegiis huic præclaro ordini concessit, ut notat in capitulo in ordinem 6. de *rescript.* cap. nuper, de *decimis.* Commentarium huius textus dedit in cap. 1. de *supplend. neglig.* cap. ne *Dei Ecclesia*, de *simon.*

CAPVT VI.

Alexand. III. * *Norwicensi Episcopo.*

ILLud etiam de Vicariis, qui b personis c fide, & sacramento obligati sunt, duximus statuendum, quod si fidei, & sacramenti religione contempra d personatum sibi falso assumentes, contra personas se erexerint, & super hoc in iure vel c confessi, vel f conuicti fuerint, de cætero in eodem Episcopatu ad officij sui executionem non admittantur.

NOTÆ.

1. a *Norwicensi.*] Ita etiam legitur post Concil. Lateran. p. 38. c. 2. & in secunda collectione, sub tit. de *iurior.* cap. 1. ubi additur, *pars capituli Consulti.* Sed veritas credo, in præsentis refferri partem textus in cap. significauit, de *offic. deleg. cap. clericos*, de *offic. Vicarij.*
2. b *Personis.*] Idem rectoribus proprietariis ipsarum Ecclesiarum, ut probatur in cap. 8. & 12. de *rescript.*

c *Fide & sacramento.*] Idem fidelitate iuramento promissa, iuxta tradit. in c. 1. & 3. de *iurior.* Vnde præfatus textus in secunda collectione compilatus fuit sub tit. de *iurior.*

d *Personatum.*] De personatu egi in cap. ad *aures*, de *rescript.*

e *Confessi.*] Iuxta ea, quæ adduxi in cap. 2. de *confessi.*

f *Conuicti.*] Iuxta tradita in c. si *clericus*, de *iudiciis.* Et de his Vicariis, tam perperis, quam temporalibus, egi in tit. de *offic. Vicarij.*

CAPVT VII.

* Clemens III.

CVm ad quorundam malitiam coercendam in Concilio fuerit b Lateranen. multa deliberatione statutum, ut Archiepiscopi, Episcopi, Archidiaconi, Archiepiscopi etiam, & Decani certum c electionis numerum, & personarum in Ecclesiarum visitationibus non excedant; quia sicut audiuius, quidam ex prædictis personis id in Ecclesiis vestris nequaquam obseruant, super hoc commoditati vestræ duximus salubriter, & attentius providendum: ideoque disc. vestræ presentium auctoritate concedimus, ut si prænominatæ personæ numerum electionis, & personarum in Concilio constitutum, cum Ecclesias visitant, excedere fortè præsumperint, & pro illis procuracionem exegerint, liberum sit vobis auctoritate Apostolica denegare, & si propter hoc in Ecclesias vestras, vel clericos vestros aliquam sententiam promulgauerint, ipsam auctoritate Apostolica decernimus non tenere.

D. D. Gonzal. in *Decretal.* Tom. V.

Q9

NOTÆ.

In Librum V. Decretalium,

NOTÆ.

[Lectus III.] Ita legitur in secunda collectione, sub hoc tit. capite 3. nullibi tamen

exprimitur cui referbat Pontifex.

[Lectus.] Relato in cap. cum Apostolus, de censuris, ubi commentarium huius textus dedit.

CAPVT VIII.

Cælestinus III. a Faustin. Episcopo.

Sicut vnire Episcopatus, atque potestati subiacere alienæ, ad supremum Pont. pertinere dignoscitur: ita Episcoporum est suæ diocesis Ecclesiæ vnio, & subiectio eorumdem. Cùm itaque sicut nobis innotuit, Prior Graden. monasterium suum, quod est in tua diocesi, & de tuo debet ordinari consensu, monasterio de Cerat. tuo assensu minime requisito subieceris, siue vnieris: f. t. per A. l. m. & indulgemus, vt quod fecit super hoc te inconsulto, tibi liceat auctoritate nostra, sicut iustum fuerit, infirmare, non obstante assensu, vel confirmatione, quam Metropolitani interposuisse proponitur: cùm in diocesi sui suffraganei, absque sui Episcopi consensu, non debeat aliquid huiusmodi contra constitutiones canonicas attentare. Nos quoque id decreuimus, prout dictum est, irritandum, statuantes, &c.

NOTÆ

a [Faustin.] Ita etiam legitur in secunda collectione, sub hoc tit. cap. 4. De Faustiniana diocesi nonnulli adduxi in cap. 11. de renoue.

b [Cælestinus.] Relatus in cap. pastoralis, de officio ordin.

COMMENTARIUM.

T.
PROSA.
TIT. IV
TRADI-
TIO COM-
PARATIO.

EX hoc textu sequens communiter deducitur assertio: Pontifex tantum potest vnire Episcopatum: Episcopi vero possunt vnire Ecclesiæ suæ diocesis. Probant eam textus in cap. 10. quæst. 3. cap. postquam 49. cap. & tempus, cap. decimas, §. final. cap. plures, §. cum erga 36. quæst. 1. cap. eamte 4. de aiar. & quæst. cap. ita nos 25. quæst. 2. cap. expostulasti 33. de prebend. cap. cum nostris 6. de censuris prob. cap. pastoralis, de donat. cap. de rebis Ecclesiæ lib. 6. Clement. 1. cod. tit. Clement. 1. §. ad hoc, de stat. monach. cap. 1. ne Sede vacante, cap. quod translatio, de offic. leg. Clement. 1. et lib. pend. Concil. Trid. sess. 21. de reformatione, cap. 5. & sess. 24. cap. 13. Confirmat de iure Regio lex 13. tit. 5. part. 1. lex 2. tit. 10. Illustrati vltis congestos in presentia Barboza, & de iure ecclesiæ lib. 3. cap. 16. per tot. & de potest. Episcopi ad leg. 66. Vighellius in method. iur. can. lib. 3. cap. 1. Unatenus de sac. ecclesiæ. min. lib. 5. cap. 6. Corinius lib. 2. aphorism. iur. Pontif. tit. 23. Rufinacius lib. 3. consilii, Pontific. tit. 7. cap. 7. Velasquez de princ. pauper. part. 1. quæst. 12. per tot. Petrus Gregorius lib. 1. part. 1. tit. 27. cap. fin. & de benefic. cap. 20. & de rescript. cap. 3. num. 25. Fragoso de regimin. Christi. Rispub. part. 2. lib. 9. dist. 20. §. 6. Valenzuela consil. 4. num. 161. Solozarum tom. 2. lib. 5. cap. 4. num. 1. Frances fuse de Ecclesiis Cathedralibus, cap. 8.

2.
IMPERIA-
TIA TRAN-
SITIO AB-
SISTIO.

Sed pro dubitandi ratione in præsentem affectionem ita innotuit. Tam Pontifex in Ecclesiis vniuersi orbis Christiani, quam Episcopi in Ecclesiis suæ diocesis non verum, & perfectum dominium habent, sed ad instar usufructuarij se habent: fructus ex eis percipiendi, vt probatur in c. 1. c. cum in officio, de regram. Sed usufructuarius circa rei for-

mam nihil potest morari, l. c. ff. de usufructu, sed re ipsa tantum vti, salu claus substantia, §. 1. Inst. de usufructu, ergo nec Pontifex Ecclesiæ Cathedralis, nec Episcopus Ecclesiæ suæ diocesis vnire possunt, siquidem per vnionem mutatur forma ipsarum, vt ex l. final. Cod. de vend. rer. ciuit. lib. 10. l. 2. & final. Cod. de prad. Decret. cod. lib. probat. Zypheus contra hanc Cassani cap. 12. Ergo nec Pontifex Ecclesiæ Cathedralis, nec Episcopus Ecclesiæ suæ diocesis vnire valent. Augent hæc dubitandi ratio ex eo, nam quilibet Ecclesiæ debet habere suum Rectorem, cap. quia nonnulli 3. cap. conueniens 6. de elect. non resid. cap. precipuum 53. 16. quæst. 1. cap. sacrorum, 70. dist. Sed per vnionem necessitas vna ex Ecclesiis manet sine Rectore: ergo similis vnio fieri non poterit. Secundo in eandem affectionem, quatenus in ea docetur tantum Pontificem posse vnire Ecclesiæ Cathedralis, Episcopum verò Ecclesiæ diocesanas, hic argumetur. Quilibet res per eandem causam dissoluitur, per quas & creatur, cap. 1. vbi dicimus, de regul. iur. sed oia Episcopatus institutio, seu erectio auctoritate Concilij provincialis, & cum consensu Principis secularis fieri debet, can. 65. Concilij Afric. qui est. 98. Synodi Cathag. apud Balsamone, ibi: Placuit & illud, et plebei, qua nunquam habuerunt proprios Episcopos, nisi ex Concilio plenario & inuicemque pronuntia, & Primatis, atque consensu eorum, ad cuius diuersim eandem Ecclesiæ pertinebat, decretum fuit, nimirum accipiam. Ergo & suppressio, seu vnio fieri debet. Hoc iure S. Medardi tempore Episcopatus Nouiomensis, & Toisanensis in vnum coalescere, consensu Metropolitani, & provincialium, ac Regis, vt refert Fortunatus in eius vita, cap. 16. apud Sicutum die 8. Iunii, ibi: Pontificali denique, Metropolitani scilicet, & compromissarii suorum cultus auctoritate, Regisque, ac Procerum assensu, plebisque coactus incessabili acclamatione, vix consensu, & unanimi, Pontificali videlicet, ac Regali auctoritate duas illas Ecclesiæ vnam fecit. Vtrumque omne postea egregius consilio, & auctoritate compromissarii Episcoporum tempore Formisda Pontifici sub sancto Remigio tunc temporis Romanus Archiepiscopo, assensu Regis, & caritativum, ac carissimum

utrinque plebis acclamatione tandem suscepit, & ut
utrinque Ecclesiæ Cathedralis semper hunc maneres, be-
nigne concessit. Accedit etiam Ecclesiis in fortiores
non leuior difficultas; nam licet patronorum as-
sensu Ecclesiæ ita mutari nequili, cap. superius,
de interpres. cap. dilecti, hoc tit. Innoce. Satisfac-
tiones epist. 1. ad Alexandrum III. ibi: *Præsertim*
cum non assensu, sed potestate fundamur, statum
Ecclesiæ mutari non possit, aut subici fieri. Ergo
nec Pontifex per diocesem, nec Episcopus inferiori
Ecclesiæ vnire valet.

Quibus difficultatibus minime obstantibus vo-
ra est præfata assertio, pro cuius expositione sci-
endum est, vnionem, de qua agitur in præfata, esse
duorum, vel plurium beneficiarum, seu Ecclesi-
arum ab Episcopo, vel alio superiore eadem uni-
onem. Cæcialupus in tract. de vnione, art. 1. Re-
bassius in præf. tit. de vnione benef. Garcia de bene-
fic. part. 12. cap. 2. num. 13. Sanchez tom. 2. in Decalog.
lib. 7. cap. 29. num. 145. Vnionis tamen causæ variæ
sunt, quæ recidunt in vtilitatem, vel necessitatem
Ecclesiæ, cap. superius 16. q. 1. veluti quando tem-
plum vnus beneficij collapsum est, nec reparari fa-
cile valet, cap. consuetudine, de relig. domib. cap. post-
quam 16. quæst. 1. Secundò quando duæ Ecclesiæ ita
tenues sunt, vt ad vtrumque duorum clericorum non
sufficiant, cap. vnice 10. quæst. 1. cap. postquam 16.
q. 1. clement. ne in agro, de stat. monach. Tertiò quan-
do duæ Ecclesiæ vicinæ sunt, in quibus est penuria
populi, quæ ideo possunt ab vno præposito facile
regi, dist. 2. & temporis. Quartò quando præbendis,
pauperibus, vel collegiis vniuntur, cap. postquam 16.
quæst. 1. Tribus autem modis vnio fit. Primò quan-
do Ecclesiæ duæ in vnum veluti corpus confun-
duntur, & coalescunt, ita vt vna Ecclesiæ ex dua-
bus fiat, cap. cum dilectum, de his que vi, c. recedentes,
de stat. monach. quo casu qui canonicus sunt in vna
Ecclesiæ, in alia quoque canonici existunt, & pri-
uilegia data vni Ecclesiæ, competunt etiam alteri,
vt vulgo docetur in c. noua, ne Sede vacante. Secun-
do modis est eum Ecclesiæ ita connectantur, vt
vna sit superior, & principalis; altera inferior, &
accessoria; quo casu inferior Ecclesiæ amittit no-
men suppressum, & extinctum per vnionem, & in-
ducit nomen eius, cui vnita est; & per consequens
casu priuilegijs gaudet, c. recedentes, de stat. monach.
sed non sentit ius a propria, quæ transiunt in Ec-
clesiam, cui vnita est, c. quia monasterium, de relig.
dom. fitque ea subiectio per modum vnionis, alio-
quin sola subiectio non facit vnionem, c. pastoralis,
de decimis. Tertiò vnio Ecclesiarum fit quando vtra-
que manet æquæ Cathedralis, vel Parochialis, &
neutra alij subiecitur: quo casu vnus erit Rector
vtriusque, & qualibet Ecclesiæ habebit iura sua, &
priuilegia, nec vlla alicuius priuilegijs gaudebit.
Glossa in d. cap. & temporis. Porro vniones istæ, aut
sunt perpetuæ, aut temporariæ. Perpetuæ sunt
quando casum est, vt perpetuo durent, d. ex-
positi; vel si contemplatione alicuius Ecclesiæ, seu
dignitatis, vel ad beneficium Sedis Apostolicæ
fiant: quia nec Ecclesiæ, nec dignitas, nec Romana
Ecclesiæ vquam moriunt, c. si grauisa, de rescrip-
tib. 6. c. quoniam 14. de offic. deleg. Temporariæ verò
vniones sunt, quæ in fauorem certæ personæ fiunt;
& ita extincta personæ desinunt esse, cap. 1. ne sede
vacante, cap. relatio, cap. illud 21. quæst. 1.

Deinde sciendum est, vniones Ecclesiarum fa-
cere posse primò Romanum Pontificem, quia tin-
tium Ecclesiæ Cathedralis vnire valet, c. postquam 6.
q. 2. denegata b. e facultate etiam eius Legato à la-
te, D. D. General. in Decretal. Tom. V.

tere, c. quoad transiuntum, de offic. legat. quia Ecce-
lesiæ Romana vnionem Episcopatum, sicut & co-
rum institutionem, vt vnam ex maioribus causis si-
bi reseruauit. Gregorius VII. lib. 2. post epist. 55. ibi:
Quod solus Romanus Pontifex iure dicatur vnionem
facere, &c. quod illi soli licet pro temporis necessitate
nouas leges condere, nouas plebes congregare, de
Canonis Abbatibus facere, & econtra; diuitem
Episcopatum diuidere, & inopes vnire. Carnoten-
sis epist. 237. ad Paschalem II. de non soluenda vni-
one Nouiomenfis, & Tornacensis Episcopatus, ibi:
Nec in hoc resistimus, quin possit Sedes Apostolica pa-
rochiarum amplitudinem minores, aut breuiter di-
latari, si vtilitas populi Dei ita exigit, & nullum inde
substantia emingat. Dñus Bernardus epist. 3. ad Mo-
delan. ibi: *Plenitudo signum potestatis super vniuer-*
sas orbis Ecclesias singulari prerogativa Apostolica
Sedi donata est: qui igitur hanc potestatem resistit, Dei
ordini vniuersi resistit. Potest, si vtile iudicauerit, nouos
ordinate Episcopatus, vbi hæcenus non fuerunt
potest eos qui sunt, alios deprimere, alios sublimare,
propt ratio sibi dicta dicitur, ita vt de Episcopis crea-
te Archiepi copos liceat, & e conuerso, si necesse
visum fuerit: præcedere tamen debere Regium
consensum probat P. Mareha lib. 4. c. 13. Ar-
chiepiscopus verò vnire non potest Ecclesiæ sui
suffraganei sine eius consensu, vt in præfati dicitur,
quia non licet ei nisi in ealibus à iure expressis
iurisdictionem exercere in subditi suffraganeo-
rum, c. 1. in fine, de foro compet. lib. 6. idemque dicen-
dum est de Legato etiam à latere, quoniam dicitur
eum in prouincia sibi commissa maiorem esse or-
dinario, c. 1. de offic. ordin. in 6. Cæterum Ecclesiæ
inferiorum vnio pertinet ad Episcopum in sua
diocesi eum consensu Capituli, c. postquam 16. de
donat. nisi mensz suæ, vel Capituli vnire intendat, quia
tunc vnire non potest eum consensu Capituli, ne
in causa propria actor fiat; nec etiam beneficia
exempta Episcopus vnire valet, quia in Ecclesiis
exemptis integra dispositio spectat ad Romanum
Pontificem, c. final. de consensu, c. vlt. Abbas vniendi
hanc non habet facultatem, sed ipsi consensientibus
Episcopi vniones faciunt. Clement. ne in agro,
& ad hac, de stat. monach. nisi in ipsis Ecclesiis iura
quasi Episcopalia exerceant, plenamque disposi-
tionem habeant. Glossa in Clement. 1. verbo Proprijs,
de reb. Ecclesiæ. Circa Capitulum verò sede
vacante, et si illud succedat in omnibus, quæ iurisdi-
ctionis sunt, c. his que, cap. cum olim, de maior. &
obedi. tamen quoniam non succedit in collatione bene-
ficiorum, cap. 2. ne sede vacante; ideo vniones facere
non potest, si per eam iuribus Episcopalibus quid
decaluit, dist. Clement. 1. & Ad hac.

Solennitas in vnione etiam ad habenda est, vide-
licet vt vocentur omnes, qui vocandi sunt, quo-
rumque interest vnionem talem fieri, vel non, c. si
quis presbyterum 10. de reb. Ecclesiæ, c. vlt. c. su-
per, de re iudic. vt vocetur Decanus Capituli, ipse
que Capitulum congreget, licet talis Capituli con-
sensus post vnionem adhiberi possit, c. circa, vers.
postea, de interpres. cap. cum vno, de his que sunt à
Prælat. cap. si qua de reb. 12. quæst. 2. & si non vo-
centur vocandi, vnio ipso iure nulla est. Zypæus
ad hunc tit. consue. 4. non autem reuocatur consen-
sus Rectoris, vel aliorum, qui possident beneficia
eo tempore, quo vnio fit, quia talis vnio effectum
operatur sine eorum preiudicio, Clement. 2. de reb.
Ecclesiæ. Debent etiam beneficia, quæ vniuntur,
habere eandem qualitatem, non verò diffini-
lem. Tudeor. sess. 24. de reform. cap. 13. & 15.

Tandem sciendum est, uniones titi celebritas reuocari certis ex causis, veluti quando per unionem tollitur hospitalitas, vel fit dissoluitio religionis, *c. nouis, ne Sede vacante*; vel si cessat causa, propter quam unio facta fuit, veluti propter eas Ecclesiarum, *c. cum M. de consue.* si incipiat esse damnoſa Ecclesiis, argumento capitis *suggestio, de decimis*: latè probat Zyprius *ad hunc tit. consue. 8. & 9. & resp. 3.* alique plura de his unionibus conſiderant Barboſa *dist. alleg. 66. Prologo dist. 5. 6. &* quomodo unio probetur, *prosequitur* Rota apud Pefiam *tom. 1. decis. 337. & 441.*

6.
TAD-
TUS BA-
TIO DIS-
CIPULUS

Quibus ita animaduertis ratio presentis assertionis ex eo proſenit, nam cum Pontifex habeat piam dispositionem in Ecclesiis vniuersi orbis, *c. de cimus, ad finem, cap. & tempore 16. q. 1. cap. a. de prob. in 6. Clement. 1. ut lites pendente*; ideo potest diocesanes, & omnes Ecclesias, ac beneficia vnire, vt etiam potest Imperator ex duabus prouinciis vniam facere, aut diocesis officia vnire. *Novella 8. & 24. & que ad 29. &* ciuitatum, ac populorum, qui in vnio conſiſtunt, exempla reperiuntur in antiquis monumentis, veluti Albx, atque Romæ apud Liuinum: & extat elegans descriptio apud Ouidium *lib. 6. Fastor.*

Hæc ubi narrauit, Titulum, sortemque Quir-
nam,

Binaque cum populis regna tuisse suis.
Et lare canuere sacris, generisque receptos.
Hæc nomen inuicem Iunius, inquit, habet.

Probat Genlis *disput. 2. de vnione Regnarum*, Zyprius *contra hanc Cassan. cap. 12. & 13.* Similiter quia Episcopus habet plenam dispositionem Ecclesiarum suarum diocesis, *c. Sanctum 70. dist. 2. & que 9. q. 3. cap. regenda 10. quæst. 1.* ideo etiam potest eas vnire. Non sunt tamen uniones tenetæ

faciendæ, præcipue si per eas minuaturs cultus diuinus, & redditus, qui pluribus Ecclesiis sufficiunt, ad vniam reuocetur, *cap. final. de V. S. quare in Concilio Trident. sess. 7. de reformatione cap. 6. statuitur*, vt uniones perpetuæ à quadraginta annis citra factæ examinentur ab Ordinariis, tanquam à Sede Apostolica delegatis; & quæ per subreptionem, aut obreptionem factæ reperiuntur, irritæ declarantur; & ideo tales uniones semper obſole iudicantur, vt pluribus relatis probat Velasco *de priuilegiis pamp. part. 1. quæst. 12.*

Nec obſtant difficultates suprà adductæ, nam licet iuxta commonem sententiam, respectu prouentuum Ecclesiarum ipsarum vſufructuarij erendantur; tamen Pontifex in vniuerso orbe, & quilibet Episcopus in ſua diocesi plenam dispositionem habent. Vnde ob eam amplam iurisdictionem possunt Ecclesiis ipsas vnire ex iſtis causis; & ita facere, vt vnus Rector præſit duabus Ecclesiis vnitis. Nec obſtat ſecunda difficultas deducta ex dicto canone Concilij African. exemploque sancti Medardi; nam id procedebat antequam Sedes Apostolica ſibi reſeruaret unionem Ecclesiarum, tanquam vniam ex maioribus causis. Nec obſtat augmentum ipsius difficultatis (nam præſens assertio procedit in Ecclesiis, quæ spectant ad liberam collationem Episcopi, non verò in eis, quæ ſunt iurisdictionatos, quia tunc deſideratur conſensus ipsius Patroni, ſive tale ius ſit eccleſiaſticum, ſive ſeculare. *Clement. vnice, & ad hæc, de statu monach. Trident. sess. 24. de reformatione cap. 15.* Licet ſi vnio fiat à Legato à latere, & iurisdictionatos ſit eccleſiaſticum, non deſideretur Patroni conſensus, *cap. cum dilectus, de imprecatione. poſt Gambaram & Lambertinum probat Barboſa de iure eccleſ. lib. 3. cap. 16. num. 30.*

7.
DIA-
TUS BA-
TIO DIS-
CIPULUS

CAPVT IX.

Idem Archipreſbytero ſancti Andrea de Pollian.

Quam ſit grane crimen in clericis b gloriari cum malefecerint, & in rebus peſſimis exultare, nullus ſanæ mentis ignorat. Accepimus ſanè, quod non ſine dolore referimus, quod cum R. de Sertone R. filiam ſuam cuidam I. nomine tradiderit in vxorem, P. diaconus Eccleſiæ ſancti Petri, c filius autem ſacerdotis, non erubuit publicè proſicere, ſe prædictam ſœminam carnaliter cognouiſſe. Vnde factum eſt, quod prædictus vir ad propria cum remitteret, cui fuerat matrimonialiter copulata. Quapropter tibi per Ap. ſ. m. quæ ſi ubi conſiſterit de præmiſſis, ſine omni contradictione, ap. ceſſ præſentium clericum ab officio, & beneficio c ſuſpendere non poſſis, compellens virum vt vxorem ſuam recipiat, eique, ſicut iuſtum eſt, officium exhibeat maritalæ.

NOTÆ.

1. a **Archipreſbytero.**] Ita etiam legitur in tertia collectione, *ſub hoc tit. cap. 2.* in epistolis verò huius Pontificis editis à Sirleto *ſub 67.* legitur Archiepiſcopo: ſed retinenda eſt vulgaris Inſcriptio, quæ habet *Archipreſbytero*; vt etiam legitur in indice ipſius reſcripti correkti à Sirleto; nam ſi Archiepiſcopo ſancti Andrea, qui eſt in Scotia, ſcriberet Innocentius, non addideret ea verba de Pollian. vnde cognoviſcit, in præſenti ſcribere Innocentium Archipreſbytero ville, ſeu loci de Pollian.

2. b **Gloriari.**] Quia vt ait Diſidatus *lib. 2. de ſummo bono, cap. 39.* Ad comparationem mali ſi deterrimus, quando non ſolum flagitia committuntur, ſed

etiam de ipſis flagitijs vanitate laudis perditis exultantur. Plura de inſtantiz vicio Beyerlinch *tom. 4. in theatro, verbo Lallantia.*

c **Filius A. ſacerdotis.**] Ante ſacerdotum genus, nam alius ex defectu natalium irregularis eſſet, iuxta traditum in *cap. 1. de fili. preſbyt.*

d **Suſpendere.**] Sed cum hæc conſeſſio eſſet tantum extradiſciſalis, ſeu potius inſtantia, quomodo ſolùm propter eam ſuſpenſio imponi potuit? Quam difficultatem agnouerunt & variè diſſoluetur curantur Cætera in quæſt. crimin. *cap. 2. de probat. per reſſ. quæſt. 1. num. 11.* Carena de offic. *In quæſt. part. 2. tit. 12. ex num. 159.* Balboa in *cap. 4. num. 36. de iudiſ. liti.* Sed veram huius textus interpretationem dedi in *cap. 2. de conſiſſis.*

CAPVT X.

Idem Episcopo * Hipponen. & Abbati de Toleto, uisitoribus
Lombardia.

EX literis vestris accepimus, quod cum ad * Albiganensem Ecclesiam vnâ cum Pisan-
no * Archiepiscopo Vercellenſi accessissetis uisitationis officium impleretur, Albi-
ganensis Episcopus inter cetera, quæ propoſita fuerant contra ipsum, ore proprio est
confessus, quod cum quidam in villa quadam ad eius iurisdictionem spectante inſa-
maretur de furto, & idem illud iniſciaretur omnino, offerens quod candentis ferri
iudicio se purgaret, & ut ſuſpendio puniretur, si deſiceret in eodem: dictus Episcopus
requiſiuit ad iudicem, quia si super hoc videretur eidem? Et cum iudex reſponſiſſet, ut
fieret ſicut ſur ipſe dixerat, ferrum candens in ipſius præſentia Episcopi eſt allatum:
quod cum accepiſſet ſur ille, combuſtus eſt: unde iudex paucaſtus, quid ſibi ſuper
hoc videretur, conſuluit Episcopum memoratum: qui reſpondit, quod si ſur ſic eua-
deret, malum eſſet: quamquam aſſerit ſe verbis talibus uſum fuiſſe: Audiſtis quan-
tus eſt clamor * populi, omnes dicunt, malum eſt ſi ſic eualeſcit impunitus. Et ſic Epi-
scopus, & iudex villam ipſam cum * multitudine ſunt egreſſi, in quorum præſentia præ-
dictus ſur eſt ſuſpenſus: propter quod ipſum cum literis veſtris ad Sedem Ap. deſtina-
ſtis. Sed idem nihil ſuper his propoſuiſſe eoram nobis, nec literas veſtras vidimus, licet
idem ſe nobis aſſerat illas præſentiaſſe. Quin immo cum dictus Archiepiſcopus ad Sedem
Apoſtolicam acceſſit, qui nobis huiusmodi rei ſeriem plenariè indicauit, idem Epiſco-
pus à noſtra diſceſſit præſentia, & perquiſitus non potuit inueniri. Nos autem, quia idem
Episcopum non ſolum in iudicio * candentis ferri, verum etiam in ſuris ſuſpendio graui-
ter noſcitur deliquiſſe, cum is non tantum auctoritatem præſtiterit, verum etiam * præ-
ſentiam exhibuerit corporalem, ipſum indignum altaribus miniſterio reputamus. Cum
igitur Pontificale * officium ſine altaris miniſterio non valeat adimpleri, mandamus
quaremus ut Episcopum tui cedat, moneatis eundem; alioquin ipſum ab Albigan. Eccle-
ſia amouentes, faciatis eidem per electionem canonicam de perſona idonea provideri.

NOTÆ.

Hipponenſi.] In tertia collectione, ſub hoc
tit. cap. 3. legitur, *Ipſum. & Abbatem de To-
leto*; ſed utrobique malè, eum legendum ſic, *Ypo-
riani Episcopo, & Abbati de Toleto*, ut conſtat ex
epiſtola 134. lib. 1. reſcripti. 13. ipſius Pontificis, quam
tranſcribo ex collectione Bolqueti, quia non mo-
dicam lucem aſſert præſentis deciſioni: Ita enim
Episcopo Nouatiensi Innocentius ſcribit: [Ex li-
teris ven. fratris noſtri Patriarchæ Antiocheni,
tunc Yporien. Episcopi, & tui tunc de Toleto Ab-
batis, meminimus recepiſſe, quod rùm dudum ad
ad Albiganen. Eccleſiam, vna cum ven. fratre no-
ſtro... Piſano Archiepiscopo, tunc Episcopo Ver-
cellenſi accessiſſetis uisitationis officium impletu-
ri... Albiganen. Episcopum inter cetera, quæ pro-
poſita fuerant contra ipſum, hoc vobis ore proprio
eſt confeſſus: quod cum quidam in villa quadam
ad ipſius iurisdictionem ſpectante inſamaretur de
furto, & idem illud iniſciaretur omnino, offerens
quod candentis ferri iudicio ſe purgaret, adſicien-
do, ut ſuſpendio puniretur, si deſiceret in eodem:
dictus Episcopus à iſtius requiſiuit, quid ſuper
hoc videretur eidem: & cum iudex reſponſiſſet, ut
fieret prout ſur ipſe penerat, ferrum candens in
ipſius Episcopi præſentia eſt allatum: quod cum
arripiſſet ſur ille, combuſtus eſt. Unde iudex ex-
paucaſtus, quid ſibi ſuper hoc videretur, Episcopo
conſuluit memoratum, qui reſpondit, quod si
ſur ſic eualeſceret, malum eſſet: quomodo per lre-
ras, quas nobis tunc eidem direxit Episcopum, aſſer-

mar, ſe talibus verbis uſum fuiſſe: Audiſtis quan-
tus eſt clamor populi: omnes dicunt, malum eſt ſi
eualeſcit impunitus. Et ſic Episcopus, & iudex can-
dem villam cum multitudine populi ſunt egreſſi,
in quorum præſentia ſur prædictus, ipſius ſuit
Episcopi auctoritate ſuſpenſus: propter quod eun-
dem cum veſtris literis ad noſtram præſentiam de-
ſtaſtis: ſed ipſe nihil inquam ſuper his propo-
ſuiſſe eoram nobis. Quin immo ſtatim ut dictus Ar-
chiepiſcopus ad Apoſtolicam Sedem acceſſit, qui
nobis rei ſeriem plenariè indicauit, idem Episcopum
à noſtra diſceſſit præſentia, & perquiſitus non po-
tuit inueniri. Unde nos eam ſtatim noſtris de-
liberatione habuſſe diligenti, quia ſuſpectum Epi-
ſcopum non ſolum in candentis ferri iudicio, verum
etiam in ſuris ſuſpendio grauiſſe inſellentionis deli-
quiſſe, cum is non tantum auctoritatem præſtiterit,
ſed etiam præſentiam exhibuit corporalem ipſum
reputauimus miniſterio altaris indignum. Et quia
Pontificale officium ab ipſe altaribus miniſterio non
poterat adimplere, ſupradicto Patriarchæ ac tibi iſe
deſidimus in mandatis, ut ad electionem eundem Epi-
ſcopum moneatis, alioquin auctoritate noſtra ipſum
ab Albigan. Eccleſia, ſubſito appellationis obſta-
culo amouentes, faciatis eidem de perſona idonea
per electionem canonicam provideri. Dicitur vero Epi-
ſcopus poſtmodum ad Sedem Apoſtolicam rediens,
apud quam motam creſſe diſcnoſetur diſtentionem,
& ſe multipliciter ſatagens excuſare, inter cetera
propoſuit eoram nobis, quod aliter rei veritate ha-
buerat, quàm in literis fuerit ſupradictis & exteſſum
quod ſe propoſuiſſe opportuno tempore probauit.

Quocirca devotioni tunc ptefectionum auctoritate mandamus, quatenus auditis quæ super præmissis idem Episcopos duxerit proponenda, & probationibus eius admissis, si de his tibi per probationes legitimas sufficiens fuerit facta fides, per que constet veritatem rei se alter habuisse, quàm in literis fuerit supradictis expressum, & super præmissis iocundem Episcoporum existisse, eum per sententiam ad falsam suggestionem latam eidem præiudicari non debeat, tu cum super præmissis absoles, officium suum exequi libere permittas eundem: alioquin quod à nobis dudum super hoc editum definitum, facias appellations remota executioni mandari, contradictores, si qui fuerint, vel rebelles, censurâ ecclesiasticâ appellatione postpositâ compescendo. Datum Lateran. Kalend. Octobris, anno XIII.] Quam epistolam non tantum cum præfati tractu confundunt, & pro una, eademque habent Mantique tom. 3. annal. Cister. anno 1210. cap. 7. ad finem, Alsestera hic. Yppontensis, seu Hippontensis diocesis est in Italia, cuius Canonici scribit idem Innocentius lib. 1. epistolæ, registr. 1. in Codice Sileti, fol. 166. De Abbate hoc de Tilleto nonnulla addoxi in cap. qualiter 17. de accusat.

2. b. *Albigensium.*] Albiganorum ciuitas est Italia sita ad Alpes Coriz, teste Mela lib. 2. cap. 4. vulgò dicta Albenga: iam à primis Ecclesiæ secularis Cathedrali Episcopatu decorata; siquidem Gaudensius eius Episcopus subscripsit Concilio Romano celebrato sub Hilario, Carolus à Sancto Paulo lib. 1. geograph. sacr. fol. 62.

3. c. *Archiepiscopo.*] Lorchario videlicet, quem ex Ecclesia Vercellensi in Pisanam transtulit Innocentius III. anno 1209, ut refert Vghellius tom. 3. Italia, sacra, in serie Prefatum ipsius Ecclesiæ, num. 48.

4. d. *Clamor populi.*] Qui attendendus non est, quia vane populi voces non sunt audiendæ, ideoque libertatem ad clamorem populi datam non valere referripit Imperator Marcus in l. si priuatus 17. ff. qui & à quibus, l. 3. Cod. qui munimur. Illustrat Cuiacius lib. 2. obs. 22. & ab specie Violentianus in l. 1. 2. Cod. de panis, eam sententiam edidit. Vane populi voces non sunt audiendæ; nec enim vocibus eorum credi oportet, quando aut oxiâ crimine absolui, aut innocentem eodemnari desiderant. Et eum apud Romanos populos infamis plerumque clamaret contra Christianos, ut tanquam hostes publici punirentur, ut refert Tertull. ad Scapulam, ibi: Si Tiberis ascendit ad Mænia, si Nilus non ascendit in Arua, si caput fretu, si terra mouit, si flammæ vapet, statim in Christianos ad Leonem clamantur. Imperator Hadrianus rescriptum dedit Minutio Fundano, quod erat apud Eusebium Cæsar. & illud latine vertit Baldouinus de edict. post Christ. fol. 75. his verbis: Accepi epistolam, quam ad me scripseras Serenius Graminus V. C. cui tu successisset. Digna res est, de qua cognoscatur, ne & magnæ aliqui carba existerent, & calumniam malitia indulgeretur. Si promittentes posse se punit Christianos in iudicio reos peragere, id legitime facimus. Clamores vero, & tumultus loci nullus est. De causa cognoscere in debes: ne si quid aduersus leges facere Christiani viderentur, animaduertas, & nona penna per esto: ista quidem mercede, ut quicquid causa ad accensendum descendit, semper etiam tu animaduersionis frueris. Refert Baron. anno 301. Vnde nec populari acclamatione ad bestias damnosos dimitti licet, l. ad be-

stias 31. ff. de panis: nec Decurionem eligi, l. si constet, ff. de appellat. l. Decurionem 12. Cod. de panis, l. 1. ff. ad leg. Jul. de ambig. nisi aliter tumultus fedari non possit, l. perit, ff. ad leg. Corn. de sicariis. Et quæuis ea lege 3. Cod. de offic. reitor. prouinc. non solum acclamatio hostes, & iusta in Magistratus, sed etiam vociferatio, & querela, quibus eorum publicè malefacta lacefluntur, petitiua videtur Prosocialibus contra Magistratum indignas, diceodum tamen est ut in l. 1. Cod. de accusat. de offic. Reitoris prouinc. ita dicta lege 3. misera Prosocialibus publicè reclamandi copiam heri, non quidem et eorum clamoribus quis damnetur, qui plerumque maligni sunt, cap. cum in iudicio, de purg. canonice, sed ut inquiratur, an vera sint, que clamant, ut in cap. qualiter 25. de accusat. l. 1. & 2. tit. 17. part. 3. Quæ omnia ad vnguem expriment ipsius legis 3. verba illa: Insistimus, & vigilamus: si induci publicis acclamationibus collaudandi damus omnibus facultatem. E contrario missos, & nolescentes, querelam vocibus accensendi, ut censura non sita vigor admetum, si quæ voces sint, nec ad libertatem perclametas, ff. de accusat. diligenter inuestigamus. Itaque inflas acclamationes permittunt Imperatores in dist. l. 3. non verò iniustas, & controuersas, de quibus in dist. 12. Cod. de seditione: docuit Albericus in dist. l. decurionem 12. Cod. de panis.

e. *Cum multitudine.*] Nam supplicium palam, & in omnium conspectu uiui debet, ut eius animaduersionis exemplum ceteri à delinquendo deterreantur, ut aiont Plotarchus in tract. de iis, qui sero à Nemine puniuntur Seneca lib. 3. de ira, cap. 19. Quid tam inuidium, inquit, quàm nocturnum supplicium, eum latrocinium tenebris abscondi solet: animaduersiones, quo notiores sunt, plus ad exemplum, emendationemque proficiunt. Quintilianus declamat. 27. in fine: Quæcunq; noxas crucifigimus, celeberrima dignum re, et plerumque inuerti, plerumque committeri hoc non possunt. Et Imperatores in Lameis 6. Cod. Theod. ad leg. Jul. de adult. masculorum nefandam confurationem spectantem populo flammis vindictibus capiam inferunt, & famulos latrones in lils locis, ubi gestassunt, furæ ligendos esse, docetur in l. capitalium 18. §. penult. ff. de panis: & in l. omne delictum, §. 3. ff. de re militari, cauetur: Qui in acie prius fugam fecit, postea militibus propter exemplum capiti pendendus est. Et in l. 7. th. 4. lib. 7. legum ff. de iur. statu: Index quædam occisus est, rem non in secretis, aut in absens locis, sed in conuentu publicè carceris disciplinam. Facione textus in l. 2. Cod. Theod. de offic. Reitor. prouinc. l. 5. tit. 27. part. 3. Illustrat D. Laurent. Ramirez in Proteocon, cap. 2. Lelius Bisciola tom. 2. horar. success. lib. 1. cap. 9. Petrus Faber lib. 2. semestr. cap. 9. Forner lib. 6. rer. quod, cap. 16. Nauarrete de sensu. 38. post. D. Ioan. de Solorz. emb. 75.

f. *Suspensus.*] Forca videlicet, ut in dist. l. capitalium, §. famulos, l. scilicet leg. ff. ad leg. Jul. perit. l. mors 9. §. iste, ff. de panis. si quis aliquid 38. §. 1. ff. ad l. 5. §. si quis ad hunc 10. ff. de re milit. Seneca epist. 7. Illic: Sed latrocinium fecit, quid ergo meruit? ut suspenderetur. Illustrat Laurentius lib. 8. foliæ, cap. 9. P. Pintor Ramirez in spicilg. tract. t. cap. 32. num. 7.

g. *Iudicio candidis ferri.*] De quo & ciur prohibito agemus infra, in tit. de purgat. vulgar.

b. *Præfensum.*] Cùm sacris canonibus prohibitum sit clericis nodum præfentiam exhibere executioni

5.

6.

7.

entioni capitalis sententiæ, aut effusioni humani sanguinis, Concil. Alaisod. can. 34. ibi: *Non licet Presbytero, nec Diacono ad tropalium, ubi rei torquentur, stare.* Et cau. sequent. Concil. Matiscon. 2. can. 19. Cognovimus etiam, quosdam clericorum infirmitatē ad foreales rerum sententiis frequenter accedere. Propterea prohibitionis oram accessus hunc canonem protulimus, definitives ut ad legem examinationis rerum nullus clericorum accedat, nec interfu- dario saucio, ubi pro reatu sui qualitate quisiā interficiendus est; si tamen nunc aliquis eorum definita contem- nens illuc accesserit, aut interfuerit, defraudans bo- nesti honoris, sicut illis gregibus examinatorum societur, quos divinis prout mysteriis. Illustrat. Theoph. Rayn. tom. 18. in tract. de religioſa loricato, fol. 202.

8.

i Pontificale officium. Nam suspensio hæc perpetua erat, nec Pontificale officium extrinseci poterat sine sacerdotio, aliis suspensus ab officio non eo ipso est suspensus à beneficio, ut probat latē Gibalinus de censur. disquisit. 7. part. 3. quest. 12. Aliquando verò Episcopos prohibetur munia sacerdotalia obire, non verò Pontificalia, & quæ ad Episcopatus ordinem spectant. Concil. An- rel. 1. can. 6. 15. & 25. Aurel. 4. can. 10. Aliquando prius omni iurisdictione, & munere Episco- pali honorem, & locum retinebat. Concil. An- ceytan. can. 1. ibi: *Honorem quidem Sedis eius retine- re, offitē autem illis, & sermonem ad populum fa- cere, aut aliquibus sacerdotalibus officiis fungi non licet.* Et canon 2. Concil. Niern. 1. can. 8. *Qui à Cathedra vocatur Episcopus, presbyteri honorem ha- bebis, nisi forte placuerit Episcopo nomen cum ho- nore censeri.* Concil. Tolit. 1. can. 2. in epistola synodica, quæ extat apud Theodoretum lib. 1. cap. 9. legitur: *Placuit Synodo Meliten in sua ci- vitate manere, potestatem autem nullam habere, vel quomquam ordinandi, vel cuiquam munus imponendi,*

solum verò honoris nomen retinere. Illustrat. Justel. in not. ad can. 131. Ecclesiæ Afric. Gibalinus de cen- sur. disquisit. 7. quest. 12. censet. 4.

COMMENTARIUM.

Non solum prohibitum est ecclesiasticis viris sententiam sanguinis proficere, ut probauit latē in cap. sententiam, ne cleric. vel monach. verum & quolibet modo casus sanguinis se immittere, cap. clericus, eod. tit. cap. his à quibus; 23. quest. 4. Unde nec in ea consilium præstare, nec patroci- nium tanquam aduocati dare possunt, cap. final. ne cler. vel monachi, lib. 6. Molina tract. de iustis disp. 8. num. 2. & si ad ens iurisdictione temporalis ratione alicuius castri, vel loci pertineat, possunt causas sanguinis committere iudicibus laicis, non modò vniuersè, verum & sigillatim hæc, vel illam, ut statuant quod in ea iustum fuerit, dist. cap. final. tamen prohibentur dicto, vel facto mouere iudi- cem ad inferendum reo mortem, aut mutilatio- nem, quod ut enorme inficitur Petrus Riēnsis episc. 42. illis verbis: *Illud caulestem exasperat iram, & plerisque discrimen æternæ damnationis accumulat, quod quidam Principes sacerdotum, & seniores po- puli, licet non dictum indicia sanguinis, eadem tamen tradant, dispensando, & dispensando de illis; sequo ideo immanes à culpa reputant, quod mortis, aut truncationis membrorum iudicium derelictum, à prom- ptitudine damnavit, & exentione paralis senten- tia se abstinere: sed quid hac suauitate pernici- sioſus est? Nonne dicere, & definire licitum est, quod pronuntiare non licet? Unde in præsentia casu Episcopus licet iudici laico committere possit cau- sam ipsius facti, tan en grauitur peccat. non solum præsentia sua auctoritatem præstando capi- talis sententiæ, verum & consilium præstando in eius prolatione.*

91

CAPVT XI.

Idem Archiepiscopo, & maioris monasterij, & Sancti Iuliani Abbatibus * Turon.

Inter dil. fil. B. & P. Choët Canonicos Pictauienses super^b succentoria Pictauiensis Ec- clesiæ quæstione subortā, eorum utrique coram nobis summiter assererebat, succento- riam ipsam per Pictauiensem Cantorem, ad quem eius donatio pertinebat, canonicè assequutum. Et infra: Nosigitur utriusque partis attestationibus diligenter inspectis inuenimus, euidenter esse probatum, eundem P. publicum^c aleatorem esse, vel vsu- rarium^d manifestum, repute qui xi. denarios pro xxi. publicè mutuarat in ludo. Vnde licet ad palliandum tantæ præsumptionis excessum proposuerit idem P. quod hoc fecerat iuxta Gallicorum consuetudinem clericorum, quā clerici ferè vniuersi mutuam sic frequenter, & ludunt: Nos tamen, qui ex officij nostri debito pestes hu- iusmodi exstirpare proponimus, atque ludos voluptuosos, occasione quorum sub qua- dam curialitatis imagine ad dissolutionis etiam materiam deuenit, peccatis impro- bamus, excusatioem prædictā, quæ per prauam consuetudinem, quæ diceo est corruptela^e potius, palliat, frivolum reputantes; cū in illis magis peccabilis sit of- fensa, per quos ad excusandas excusationes in culpis delinquenti auctoritas vsurpa- tur: quod quia circa eundem P. de succentoria prædicta factum esse dignoscitur, propter indignitatem, & inutilitatem ipsius duximus irritandum, cū personis vili- bus, & indignis potè dignitatis^f patere ooo debeant, iuxta legitimas sanctiones. Præterea contra præfatum B. manifestè fuit probatum, quod de conscientia iudicium Prædictorum Bivricen. vltima clausula inserta noo fuerat in literis eorundem, sicut in ipsorum depositionibus exprimitur euidenter. Robertus verò diaconus ad hoc

Qq 4 probandum

probandum testis inductus, illud idem deposuit, & adiecit, quod cum deberet eandem literas sigillare, diligenter inspexit, nec eandem clausulam appositam tunc invenit; unde pars altera proponebat, quod cum prædictus B. scienter falsam fuerit literis sic falsatis, debeat merito tanquam falsarius omnino repelli. Verum nos attendentes, quod etsi constaret evidentissime, quod dicta clausula literis illis fuisset appositæ præter conscientiam iudicum prædictorum; quia tamen fides nobis facta non fuit, quod dictus B. illam clausulam apposuerit, vel procuraverit, ut alio poneretur; vel etiam, quod scienter usus fuerit literis sic falsatis, ab huiusmodi falsitatis obiectu eundem duximus absolvendum, maxime cum postquam hoc sibi obiectum fuerit, prætermisit penitus uti eis. *Et infra*: Cum igitur per depositiones saltem duorum testium, qui nullatenus reprobati fuerunt, nobis constiterit evidenter, quod concessio Petro facta præcesserit, quamquam propter indignitatem eiusdem P. meruit reprobari, concessionem tamen postmodum Boccando factam, irritam decernimus, & inanem. Quia verò scilicet, ad quem ipsius successitoris donatio spectare proponitur, ut de ipsius peritior taceamus, adeo tamen inconstanter se habuit in hoc facto, ut sicut præmissum est, primâ donatione non reprobata, secundam facere attemptaret, & dignum sit, ut in eo quis puniatur, in quo visus est deliquisse, in hoc eius duximus varietatis inconstantiam puniendam, ut concedendi successoriam ipsam hac vice nullam habeat facultatem: præsentium vobis auctoritate mandantes, quatenus eandem auctoritate nostra suffulti, sub ap. ob. personæ idoneæ assignetis.

NOTÆ

1. *a* *Transmissi*.] Itæ etiam legitur in tertia collectione, *sub hoc tit. cap. 4.* vnumque monasterium, tam sancti Martini, quod Galli vocant maius monasterium. *Vetus tom. 1. chron. D. Beardi, anno Christi 552. cap. 14.* quibus *Ad Iulianum*, est Ordinis D. Benedicti, ut iam notavi in cap. 14. de offic. deleg. & de Metropoli Turonensi nonnulla adduxi in cap. 5. de tempor. ordin.

2. *b* *Successoria* *Pillanensis*.] Successoris officium est, absente Cantore, siue Præcentore, de quo in cap. clerici, & Præcentor, 21. dist. incipere cantum in choro: quare in aliquibus Ecclesiis appellatur vicecantor, vulgò *Soächentre*, ut referunt Antonius Fabricius in *præxi beneficii sit. de beneficii cum digni. num. 57.* Petrus Gregor. lib. 15. *synag. cap. 12.* Ferro Manique de *præcedentiæ quæst. 30. in fine*, Barbosa de *consecr. cap. 9. num. 11.* De Partulensi diocesi nonnulla adduxi in c. 20. de rescriptis.

c *Alexandrina*.] De quo crimine quia plura

concessi in can. 79. *Concilio Illiber.* ideo in præfati non repeti.

d *Uxoriam manifestum*.] Quoniam manifestus usurarius dicitur, & eius poenas exposui in cap. 3. de usuris.

e *Potere non debent*.] *L. infamia 8. Cod. de Decret. lib. 20. l. 2. vnic. Cod. de infamia, ed. lib. 1. l. 1. ff. ad leg. Jul. de vi public. l. cum Prætor 12. ff. de iudiciis, l. reus delatus, ff. de iurisdictionibus, l. vnic. Cod. de rebus postulat. lib. 10. l. 6. tit. 7. parit. 7. Faciunt Cicero & Tertullianus relati à Cuiac. lib. 1. qq. Papia. in l. 3. ff. de postulat. plura D. Franc. de Amaya in dicta l. vnic. Cod. de iurisdictionibus.*

f *Falsarius*.] Quia licetis falsis vrens falsarius creditur, ut probavi in cap. 4. de crimin. falsi.

g *Peritior*.] Unde priuandus erat beneficiis iam obtentis, iuxta traditum in cap. 4. de rescriptis.

h *Deliquisse*.] Cap. verno, de tempor. ordin. lib. 6. & ita eligens indignum pro ea vice eligendi facultate priuatus, cap. cum in concilio 7. de elect. ubi commentarium huius textus edidi.

CAPVT XII.

Idem in Concilio *a* Later.

Accedentibus ad nos de diuersis mundi partibus Episcoporum querelis intelleximus grandes, & graves quorundam Abbatum excessus, qui suis finibus non contenti, manus ad ea, quæ sunt Episcopalis dignitatis extendunt, de causis matrimonialibus cognoscendo, iniungendo publicas poenitentias, concedendo indulgentiarum literas, & similia præsumendo: unde contingit interdum, quod vilesceat Episcopalis auctoritas apud multos. Volentes igitur in his & Episcoporum dignitati, & Abbatum providere saluti, præfenti decreto firmiter prohibemus, ne quis Abbatum ad talia præsumat se extendere, si proprium voluerit periculum evitare, nisi fortè quicquam eorum speciali concessione, vel aliâ legitimâ causâ super his valeat se tueri.

NOTÆ.

1. *a* *Alexandrina*.] Itæ etiam legitur in quarta collectione, *sub hoc tit. cap. vnic.* & repetitur textus hic in ipso Concilio Lateran. generali celebrato sub Innocentio III. can. 60. de quo non-

nulla notavi in cap. 1. de summa Trinit.

b *Matrimonialibus*.] Quorum cognoscio spectat iure communi attentio ad Episcopos. Concil. Nicæan. 1. can. 51. ibi: *Episcopus uxorem rixosam cum viro ita gratiam redire cogat.* Concil. Agath. can. 25. ibi: *Decretum fuit, ut si qui cum uxoribus diuorium facere*

fuerit ut lim. ^a prius apud provinciales Episcopos dis-
fidi causis dicant. Concil. Tolet. 12. can. 8. p. xelpit
Episcopis, ut obstant, ne viri eum voribus divo-
tiam faciant. Concil. Aurel. 3. can. 10. ibi: *Ilud etiam*
aditendum credimus, ut in Episcopi discussione con-
stat, de his qui in civitate sua ac territorio consilium, &
tali sunt ordini faciant, incesto minime adulterio po-
nit, quoniam coniugio, sermone ignovant ad illicita con-
jugia tenerint, ac per contumaciam qua sunt interdicta
presumpserint. Et in noella 1. Alciy Comenli, quæ
citat lib. 2. iur. Græco-Rom. sequitur, vniuersa, quæ
ad animam spectant, incesto adco matrimonium tam
diudicari, quàm executioni mandari, tam ab Ar-
chiepiscopis, quàm Episcopis debere, cap. multo-
rum 3. §. 6. cap. auditis, de prescript. l. 7. tit. 10. par. 4.
nam de causis arduis, & magnis magnates quoque,
& magni iudices indicare debent, l. 1. & non distin-
guendum 32. §. de librali, ff. de arbitris, l. 2. C. de pedan-
iudic. l. 1. C. ubi Seniores, Foracius lib. 1. §. 1. f. 1. 2. 3.
Cuius. lib. 9. obferu. cap. 37. Morta in imper. tit. 2.
n. 145. Vnde rectè e contra Anguianum tenet Vale-
ron de translat. iur. 3. §. 2. n. 68. Rectores Academia-
rum Complutensis, & Ptoeianæ non posse de his
causis inire personas studij cognoscere. Citea can-
cellarium nostræ Vniuersitatis Salmandinæ rectum
est, olim de his causis cognouisses sed iam similem
iurisdictionem non exercere, verè tectet Patet Men-

do de iur. acad. lib. 1. cap. 23. n. 496. Iure etgo com-
muni Episcopi sunt proprii iudices causatum ma-
trimonialium, ut doctè probat Filescus in cap. 1.
de offic. ordin. §. 13. Barbosa de potest. Episcopi
alleg. 84. Basilus de marim. lib. 5. cap. 11. Dixi iu-
te communi, quia virtute delegationis etiam infe-
riores Prælati possunt de causis matrimonialibus
cognoscere, ut pto expositione dinerforum iurium
oculus in cap. 1. ut lre non concess.

c. *Publica penitentia.*] Quas date, augere, mi-
nuere, vel condemnare ad Episcopum specialiter
pertinet. Conesl. Aneyran. can. 5. Atel. 1. can. 10.
Mileuit. can. 23. Aurel. 4. can. 8. Carthag. can. 46. vbi
Basilian. Nitephorus Chastophylax in frag. epist.
ad Theodof. quævis priuatum penitentiam im-
ponere proprium sit ptebhyteri pœotentialij, cap.
quæstus 8. cap. sequent. de penit. & remis. cap. men-
suram 36. de penit. dist. 1. cap. tempora 2. 26. quæ. 7.
Synodus Metensis can. 10. D. Basilus in epist. ad
Amphyloch. can. 2. Illustrant Filescus in cap. 1. §. 4.
de offic. ordin. Landmetet. lib. 2. de clerico, cap. 89.
Citonius ad iur. de penit. & remis. De penitentia
publica, & soleoni plura dabimus in cap. 1. de
penit.

d. *Indulgentiarum.*] Ut probaulmas in cap. po-
nunt. de penit. vbi de personis, quibus competit fas
cultas concedendi indulgentias agemus.

CAPVT XIII.

Honorius III. *P. titulo sanctæ * Pudentiana Presb. Cardin. &*
Vicario nostro.

Dilectus filius Ioannes sancti Thomæ de ^a Partitione presbyter exposuit coram no-
bis, quod ^c Rectores fraternitatis vrbis ipsam ad reuelandum fures, & id quod
super quodam furto sibi tanquam ^a sacerdoti fuerat reuelatum, vel ad satisfaciendum
exinde damnum passio aretare nirentes, in eum, nisi alterum præmissorum infra octo
dies efficeret, tulerunt sententiam interdicti. Quia igitur perniciosum esset prædictum
presbyterum sibi taliter credita reuelare, ac iterum iniquum cogi ad id, quod non rap-
puit, exsoluendum, disc. tuz per Apostolica scripta mandamus, quatenus præfatos
Rectores coram te conueniens, iniungas eisdem, v^a memorati presbyteri super hoc
grauamine penitus conualescant.

NOTÆ.

^a *P. titulo Sanctæ Pudentiana.*] Peto videlicet
Saxoni, Anagino Henrico, qui etatus
fuit Cardinalis ab Innocentio III. anno 1206. ut
tectet Ciaconius in eius vita, & fuit Vicarius vrbis
Romæ; oam licet vsque ad tempora Pauli IV. Vi-
carij Pontificis tantum essent Episcopi, ut probat
Cohel. in not. Cardin. §. 55. tamen Petrus hic fuit vi-
arius etatus ab Honorio pro eo tempore, quo ip-
se Reate permansit, ut probat ipse Cohelius; &
ita rectè in præfati appellatur Vicarius Ponti-

fific. Titulus sanctæ Pudencianæ, alijs Pastoris,
est vnus ex antiquis titulis vrbis, ut probat Co-
hel. ubi supra, cap. 6.

b. *De partitione.*] Legendum est de Parione,
nam sexta regio vrbis, vbi est templum D. Thomæ,
appellatur regio Parionis.

c. *Relatus.*] qui tempore Honorij III. habebant
iurisdictionem delegatam supra electum, ut post Ab-
batem Siculum probat Citonius in præfati.

d. *Tanquam Sacerdoti.*] In testamentis pœni-
tentiz, contra sigillum, quod seruare tenebatur,
iuxta tradita in cap. 2. de offic. ordin.

CAPVT XIV.

Præposito R. & I. Archidiacono * Sueffion.

Dilecta in Christo filia Abbatiſſa ^b Iorren. nobis insinuare curauit, quod cum pres-
byteri, & clerici Iorrensis Ecclesiæ, Melden. diocesis non consueuerint proprium
habere sigillum, nec sint vnum corpus, ita quod Capitulum appelletur; nihilominus
tamen contra voluntatem ipsius Abbatiſſæ, quæ ipsorum ^c caput est, & patrona, sigil-
lum

lum habere contendunt in eius præiudicium, & grauamen: quare id eis petiti à nobis inhiberi. Quia verò nobis non constiterit de præmissis, discret. vestræ mandamus, quatenus inquirat super his diligentius veritate, si vobis constiterit rem taliter se habere, dictis presbyteris, & clericis auctoritate nostra inhibeat expressè, ne præsumant, vel de nouo fabricare sigillum, vel uti eo, si fortè nouiter fabricauerint: ipsos, si contra prohibitionem nostram venire præsumpserint, à præsumptione huiusmodi per censuras ecclesiasticas appellacione postposita compellentes.

NOTÆ.

1. *Passionem.* Ita etiam legitur in quarta Conspectatione, sub hoc tit. cap. 1. De Sueffionensi Ecclesia iam nonnulla adduxi in c. 3. re Sede vacante.
 2. *Inter.* Monasterium hoc est Ordinis Diui Benedicti in diocesi Meldensi, vulgo dictum de Louars, cuius meminerunt Albertus Mireus in Galia Christi, Chopinus lib. de sacra pol. tit. 1. fol. 59.
 3. *Capit. est.* Cum iurisdictione, iuxta tradita in cap. dilecta, de maior. & obed.

COMMENTARIUM.

1. Licet quilibet primatus possit vii sigillo priuato; tamen sigillum publicum, seu authenticum, quod sublimè argumentum est imperij, & iurisdictionis, tantum supremi Principis, tam seculares, quam ecclesiastici, necnon Abbates regulares, Capitula, & Collegia approbata habere valent ad fidem publicè faciendam pro tota communitate, cap. 2. & 3. de fide instrum. cap. post. cessum 7. de probat. cap. cum nobis, de testib. Concilium Londin. celebratum anno 1137. Preside Othone Cardinali Legato Sedis Apostolicæ in Anglia, apud Macthem Paris. Quoniam Tabernaculum vsu in Regno Anglia non habetur, propter quod magis ad sigilla authenticam credi est necesse, ut eorum copia facilius habeatur, statuimus ut sigillum habeant non solum Ar-

chiepiscopi, & Episcopi, sed etiam eorum officiales, item Abbates, Priores, Decani, Archidiaconi, & eorum officiales, Decani rurales, necnon Ecclesiarum Cathedralium Capitula, & cetera quoque Collegia, & Conuentus cum suis Rectoribus, non diuisim iuxta eorum consuetudinem, vel statum; pro caritate quoque cuiuslibet predicatorum habeat unusquisque sigillum, nomen patris dignitatis, officij, collegij, & etiam illorum proprium nomen, qui dignitatis, vel officij perpetui gaudent honore, insculptum notis, & characteribus manifestis, siquæ sigillum authenticum habeant. Denique illi, qui temporale officium susceperint, puta Decani rurales, & officiales, sigillum suum, quo à tantum officij nomen habeat insculptum, finito officio ei à quo habebant officium, committit & sine mora restituat. Probat Theodorus Oping. de iure sigil. c. 4. & 5. Cicon. ad tit. de his qui sunt à maiori parte, Altesterra de Ducibus lib. 3. cap. 4. & nos de sigillo Imperatoris, & Episcopi egimus in dist. cap. 2. cap. inter, de fide instrum. cap. post. cessationem, de probat. Unde rector Honorius III. in præfati decreto, clericos Iorculi monasterij non posse vii sigillo autentico, quia vnum corpus, aut collegium non habebant: & simile sigillum est argumentum Capituli, aut communitatis approbatæ, & 47. de appell. Ioan. Suisbat. epist. 291. docent ultra congestos à Barbosa in præfati, Cironius in notis ad hunc texum. Anguianus lib. 2. de legibus, cap. 1. Azeved. in l. 8. tit. 2. lib. 4. recopil. Altesterra dicto cap. 4. ad finem.

CAPVT XV.

Abbati Sancti Alberti, Archidiacono de Annona, & Preposito Camarac.

Græpimus quæstionem, quod quum venerabilis frater noster, Ambianensis Episcopus quoddam beneficium vacans, quod altare dicitur de Villefco, cuidam idoneo, prout ad se spectare credebatur, absente tamen Ambianensi Archidiacono contulisset, idem Archidiaconus si pariter ceterum Manasterij fratris sui, & quorundam aliorum, accedens ad Episcopum memoratum, & proponens, quod ei iniuriatus fuerat super hoc, institit apud eum, ut sine causæ cognitione à beneficio ipso prorsus amoueretur ab Episcopo institutus. Et infra: Discretioni vestræ mandamus, quatenus si vobis constiterit, Archidiaconum sepe dictum semel, & secundò contra fidem homagij præstiti ac debitam reuerentiam Episcopum suum esse Dominum denegasse, vel in foro sæculari super rebus spiritualibus deposuisse contra Episcopum, attendendo quod sibi responderet ibidem, aut inuasioni Episcopi, & sociorum eius, quam M. frater eius cum complicitibus suis fecit, causam, vel consilium præbuisse, ipsum tanquam membrum putridum, ne suâ contaminet alios corruptelâ, ab Ambianensi Ecclesia perpetuò abscindatis, & remoueat omnino, facientes beneficia, quæ idem detinet, personis idoneis per illos, ad quos donatio eorum pertinet, assignari; alioquin quia publicâ famâ laborat, & manifestæ præsumptiones apparent, purgationem ei super præmissis canonicam cum manu decima eiusdem dignitatis, & ordinis eiusdem provincie indicatis: quod si fortè in tali purgatione defecerit infra tempus præfigendum à nobis, ipsum cuiuslibet contradicti & appellacionis impedimento sublatis, ab officio, beneficioque priueis, facientes nihilominus, sicut superius est expressum, beneficia quæ idem Archidiaconus detinet, personis idoneis assignari.

1. ^a *Sancti Alberti.* Ita legitur in quinta compilatione, ubi *sub tit. de purgatione canonica*, cap. 1. reperitur textus hic; sed legendum esse *sancti Alberti*, ut habetur in secula collectione, iam notavit Ciconius in *presenti*, Monasterium hoc sancti Auberti est canonicorum regularium ordinis D. Augustini, ut refertur *Inter de colleg. regul.* cap. 57. *Pennorus lib. 2. hist. canonice. regul. cap. 38. n. 4.* *Fastes Satromathi tom. 4. Gallie, fol. 101.* & extat præclarissimum elogium horum Canonicorum apud Cardinalem Iacobum de Vitriaco in *hist. Occid. cap. 21.* De Cameracensi diocesi nonnulla notavi in cap. 19. de *scriptis*.
- ^b *Ambianensis.* Gerardus videlicet, seu eius prædecessor Arnulfus; nam Chreni, qui in Chronolog. Gallia seriem Præfulum huius Ecclesiæ scripsit, his Episcopis tempus, ac ætatem non præfixit.
- ^c *Altare.* Plerumque altare ponitur pro Ecclesiâ, seu beneficio, *cap. quæstum 11. quæst. 1. cap. 1. de usus.* notavi lætè in cap. 3. de *statu monach.*

^d *Hemaggy.* Idem fidelitatis promissa, quam omnes Prælati inferiores, & presbyteri tenentur præstare Episcopo, iuxta tradita in cap. 2. §. 3. de *investitur.* non verò accipias homagium pro iure vassallagij, quod pro officiis, atque beneficiis ecclesiasticis absque labe simoniz promitti non potest, *cap. ex diligenti, de simonia*, ubi probatur nisi supponatur in præfenti casu, Archidiaconum seu domum accepisse ab Episcopo, quia eius ratione homagium illi plene promittere, seu facere valebat, ut probat *Matthia de iurisd. part. 4. c. 1. §. 43.*

^e *Fors seculari.* In quo grauius deliquit Archidiaconus, *cap. nullus 6. c. per totum 1. c. 3. plura concessit Ant. Augusti. in epist. iur. lib. 3. o. 1. §. 5.* Unde non tantùm ob ingratitudinem, ut voluit Doctor *Gazaña in c. final. de donat.* verùm ob grauiora scelera, videlicet conspirationis in Episcopum, & quia contra eum causam proposuit eorùm iudice seculari, meritis priuatur omnibus beneficiis iam obtentis *f. Canonica.* De qua agemus infra, in tit. de *purgat. canonic.* & propter hæc verba textus hic compilatus fuit in quinta compilatione, *sub tit. de purgat. canonic.*

CAPVT XVI.

Gregorius IX. Vniuersis Ecclesiarum Prælati.

Nimis iniqua. Et infra: Cùm religiosi viri abnegantes salubriter semetipsos, elegerint in paupertate Christo pauperi ad placitum famulari, tanquam nihil habentes, & omnia possidentes: non desunt plerique, tam Ecclesiarum Prælati, quàm alij, qui cæcâ cupiditate seducti, propriæ auiditati subtrahi repugantes quicquid prædicti fidelium pietas elargitur, quietem ipsorum multipliciter inquietant. Volunt namque contra regulam à Sede Apostolica approbatam, & sui ordinis instituta, ipsis iniunctis eorùm confessiones ^a audire, ac eis iniungere pœnitentias, & Eucharistiam exhibere: nec volunt, ut corpus Christi in eorùm oratoriis referuerit: & fratres ipsorum defunctos, apud Ecclesias suas compellunt ^b sepeliri, & eorùm exequias celebrari: & si quis decedentium fratrum alibi, quàm in suis Ecclesiis eligat sepulturam, funus primò ad Ecclesias suas deferri cogunt, ut oblatio suis vîbus cedat. Nec sustinentes eos habere ^c campanam, vel cæmeterium benedictum, ceteris tantùm temporibus permittunt ipsos celebrare diuina. Volunt quoque in domibus eorùm certum numerum fratrum, sacerdotum, clericorum, & laicorum, necnon cererorum, lampadum, & ornamentorum pro voluntate suâ taxare, ac residuum cererorum, quando nouiter apponuntur, exigunt ab eisdem; nec permittunt, quod noui sacerdotes eorùm alibi, quàm in Ecclesiis suis celebrent primas ^d Missas; eos nihilominus compellentes, ut in quotidianis Missis, quas in suis locis, & altaribus celebrant, oblationes ad opus eorùm ^e recipiant; & seruante quicquid etiam eisdem celebrant Missarum solennia inra domorum suorum ambitum piâ fidelium deuotione donatur, & ab ipsis extorquere oblationis nomine contententes, quod eisdem tam in ornamentis alraris, quàm in libris ecclesiasticis absolutè confertur, vindicant perperam iuri suo. Quocirca mandamus, quatenus vniuersi, & singuli à prænotatis grauaminibus desistatis, subditos vestros ab huiusmodi arduis compellendo.

NOTÆ.

1. ^a *Gregorius IX.* Quod præfentem edidit constitutionem in fauorem Religiosorum contra Episcopos intisiditione sua erga eos abutentes in eisdem in præfenti expressis: & cùm registro episcoporum huius Pœnitentis careamus, non possumus integram constitutionem edere.
2. ^b *Confessiones audire.* Ut olim faciebant antequam monachi sacris ordinibus initiarentur, sed ut laici degerent, iuxta tradita in cap. ad au-

ret §. de temp. ordin.

^c *Corpus Christi.* Iuxta morem Ecclesiæ illustratum in cap. 1. de custodia Eucharist.

^d *Sepeliri.* Cùm non solum ipsi monachi, verùm & laici possint apud ipsos eligere sepulturam, ut probatur in cap. in nostra, de sepul.

^e *Campanam.* Easellum hunc examinauimus infra, in cap. pœnitentibus, de primis.

^f *Primas Missarum.* Quia in eis pietomque à cognatis, amicis & priuibus faciant oblationes, ut probatur *Viocom. tom. 2. de rit. Missar. lib. 4. c. 6. per tot.*

g *Recipiant.*

3. *g Recipiam.*] Iuxta veteres canones; nam iure antiquo omne quod Ecclesiis totius diocesis offerbatur, Episcopo cedebat. Concil. Aurelian. 3. can. 5. sub Hildeberto, ibi: *Si qua oblationes in quibuslibet rebus, atque corporibus collatae fuerint Basilicis in civitatibus constitutis, ad potestatem Episcopi redigantur, & in eius sit arbitrio quod ad reparationem Basilicæ, aut obstruendum ibi subsolanum deputetur.* Et cap. decretum 3. 10. *quasi.* 1. Verum cum omnis sibi vindicare Episcopi, demum pronum fuit, ut certa pars ab Episcopis perciperet, reliquum immuno Ecclesiis, seu monasteriis lupetisset. Concil.

Carpentoratenſe sub Cefario Arelatenſi c. 1. *de ſua monach.* ibi: *Aut ſi quid illis pro diuerſorum deuotione acceſſerit, vobis vindicare aſſimetur.* Concil. Illerdenſe can. 3. ibi: *Vi qua in iure monaſterij de facultatibus offeruntur, in nullo diuerſi a lege ab Episcopis conuincuntur.* Quod hodie varia priuilegijs Sedis Apoſtolicæ religioſis conceſſum eſt, & ſæpius declaratum à ſacra Congregatione referunt Barboſa de officiis parochi, c. 24. n. 29. & in ſumma Apoſt. collecti. 302. n. 2. Leander in 5. præcep. Eccleſiaſt. 6. diſp. 10. q. 10. & veteri monumento monaſterij Corbicienſis illuſtrat Bignonius in notis ad Marculf. lib. 1. cap. 1. fol. 430.

CAPVT XVII.

. * Idem *Vniuerſis Eccleſiarum Prælatiſ.*

Nimis praua. Et infra: Cum quidam viri religioſi, vtputa Fratres ^b Prædicatores, & Minores (quorum ordinem, & regulam Sed. Apoſt. noſcitur approbaſſe) in artiſſima paupertate Chriſto pauperi famulantur, plerique Prælati, & alij eos ad ^c ſynodos ſuas cogunt accedere, ac ſuis conſtitutionibus ſubiacere; nec his contenti, capitula, & ſerutinia in locis fratrum pro his ^d corrigendis facturos ſe comminantur, ^e fidelitatem iuramento firmatam ab eorum miniſtris, & cultodibus exigentes; eis quoque, vt tam extra ciuitates, quàm intra cum eis ^f proceſſionaliter veniant, ex leui cauſa mandantes, excommunicationis ſententiam fulminant in benefactores ipſorum, & ipſam fratribus comminantes, eos de locis, in quibus Domino famulantur, ſatagunt amouere, niſi eis obediant in omnibus ſupradictis. Ad hoc, ne fratres ad horatioribiles ciuitates, & villas, vbi religioſe, ac honeſtè valeant commorari, à populi deuotè vocati accedere audeant inhiſcentes, tam in accedentes fratres, quàm in receptatores eorum præſumunt excommunicationis ſententiam promulgare. Ab eis etiam de ^g hororum fructibus decimas, necnon de habitaculis fratrum (ſicut de ludæorum ^h domibus) contendunt redditus extorquere, afferendo, quod niſi fratres morarentur ibidem, ab alijs habitatoribus proventus aliqui ſoluerentur; & vt ipſos ſibi ſubdant totaliter, eiſdem miniſtros, & cultodes volunt præficere pro ſuæ arbitrio voluntatis. Quocirca mandamus, quatenus vniuerſi, & ſinguli à prænotatis grauaminibus deſiſtatis, ſubditos veſtros ab huiusmodi artibus compellendo.

NOTÆ.

1. *a Idem.*] Gregorius IX. videlicet, qui etiam præſentem conſtitutionem edidit in fauorem Fratrum Prædicatorum D. Dominici, & Minorum D. Franciſci, quorum regulæ, & Inſtituta tam approbata fuerant per Sedem Apoſtolicam. Integram hanc conſtitutionem non reddimus, quia Regeſtro epistolatum ipſius caremus.

b Prædicatores.] Quia in comuni poſſunt bona obtinere. Valenzuela conſil. 135. ex num. 55.

c Ad Synodos.] Quando Abbates tentantur ad Synodos diocæſanas, vel prouinciales accedere, expulſi in cap. dilectus, de offici. ordin. cap. quid ſuper his, de maioris & obedi.

d Corrigendis.] Quod facere ante monaſtorum exemptionem Episcopii diocæſani valebant, vt probauit latè in cap. licet, cap. graue, de offici. ordin.

e Fidelitatem.] Quam olim Abbates regulares tempore ſuæ benedictionis Episcopis promittebant, cap. ne Dei Eccleſia, vbi probauit, de ſimonia.

2. *f Proceſſionaliter.*] Quod hodie facere poſſunt, nam poſt Concil. Tridentinum ſeſſ. 25. de regulæ. 1. quoniam regulares, quorum conuentiones ſunt intra ciuitates, vel non diſtantes magis ab eis, quàm per medium milliar, tenentur proceſſionibus publicis

Interceſſe, ſi nonnullos priuilegiatos excipias, vt probant, & explicant Aloyſius Riccius in præſent. ſeſſ. 308. num. 7. Vgolinus de offici. Episcop. cap. 1. num. 6. Atmendatiz ad leges Nauarra lib. 1. tit. 14. & lib. 24. §. 31. Valenzuela tom. 2. conſil. 184. n. 25. & ſæpius id deſiſum fuiſſe per ſacram Congregationem teſtantur Barboſa in remiſ. ad Trid. diſt. cap. 21. Bruno Chaſſang. de priuileg. regul. tract. 8. cap. 4. præpoſ. 7.

g Hororum fructibus.] Et appellatione hortu in præſent. accepit locum ſepibus munitis, etiam non ſit voluptuſis gratiæ, ſed fructuum colligendorum earum comparatus, vt horum generaliter deſignantes docuit Beyerlinch in Theatro vita humana, verbo Hortus, Baillon. lib. 3. ſeſſ. cap. 1. Vnde religioſi, quibus priuilegium conceſſum eſt non ſoluedi decimas ex hortis propriis, non tenentur eas ſoluere ex hortis maritatis, & ſæpius, etiam fructuum colligendorum earum parati ſunt. Gregorius Lopez in 1.4. tit. 20 p. 1. Emanuel Rodríguez tom. 2. q. 99. regul. quæſt. 44. art. 4. Petrus Gregorius lib. 1. part. tit. 25. cap. 3. Barboſa lib. 3. in reſol. cap. 26. §. Parres, Fagoadez in 5. præcep. Eccleſiaſt. lib. 2. cap. 4. num. 3. Pellicarius tom. 2. manual. regul. tract. 8. cap. 1. ſeſſ. 3. Diana ad calcem partis 9. pag. 399.

h Domibus.] Iuxta traditionem in cap. de Indul. de decimis, cap. quanto, de reſur.

CAPVT XVIII.

Idem Archiepiscopo^a Bracar.

Tanta est clavis Petri. *Es infra* : Ad confusionem P. Episcopi quondam^b Colubrien. non potest in memoriam non venire, quantum in nos, & Ecclesiam Romanam deliquerit, despexerit Petri clauē, & ecclesiasticam læserit potestatem, cum non solum interdicti sententiam (quam seruauerat ab initio) temere violauit, verum etiam indoxit alios, immo compulsi non seruare : & quos inducere monitis, & flectere minis, ac terroribus ad violandam interdicti sententiam nullā potuit ratione, post atroces iniurias, amissionem bonorum, spoliationem parentum, dignitatibus, præbendis, & beneficiis spoliatus, coëgit miserabiliter exulare, ea suis in hac parte fauoribus non absque præsumptione temeraria conferendo. Quæ omnia idem Episcopus in nostra, & fratrum nostrorum præsentia publicè recognouit. Licet autem memoratus Episcopus in manibus nostris spontanea cesserit^c voluntate, nolentes tamen, ut hi, qui huiusmodi sententiam interdicti non sunt uenit temeritate propria violare, ac recipere dignitates, præbendas, ac beneficia aliorum, qui absque culpa, & sine causa rationabili eis fuerant spoliati, seueritatem effugiant canonicæ ultionis, ne facti peruersitas transeat præsumptoribus in exemplum, auctoritate Dei omnipotentis omnem institutionem, destitutionem, collationem præbendarum, beneficiorum, ac dignitatum præsumptas per eundem Episcopum; & excommunicationis, seu interdicti sententias in quoscunque hac occasione prolatas ab eo post interdicti violationem eiusdem, decernimus irritas, & inanes. Quia verò ubi magis exceditur, ibi est seuerius vindicandum, mandamus quatenus omnibus, quos prædictus Episcopus in supradicta beneficia, præbendas, & dignitates intrusit, non solum à beneficiis ipsis, præbendis, & dignitatibus, verum etiam ab aliis beneficiis (si qua obtinent) & Ecclesiis prorsus amotis, tam præsumptores eosdem, quam omnes alios, qui præfatum interdictum damnabiliter violauerunt, suspendas (auctoritate ap.) ab officio, &^d beneficio. Illos quoque, quos in personas, & res prædictorum canonicorum, Prælatorum, & clericorum manus temerarias constitit extendisse, ad nostram venire compellas præsentiam, pro meritis sententiam recepturos, inuocato ad hoc (si opus fuerit) auxilio brachij secularis.

NOTÆ.

1. ^a *Bracharenf.*] Stephano uidelicet Siloio, de quo, & de Mettopoli Bracharenf. egi in cap. curam, de in integr. restit.
2. ^b *Colubriensf.*] De diecefi Colubrienf. Lusitanie nonnulla adduxi in cap. cum causa, de...
^c *Voluntate.*] Nam si celebravit violando interdictum, irregularitatem contraxit, iuxta tradita in cap. postulasti, cap. 4. de cleric. excommunicis.
^d *Officio, & beneficio.*] Violans enim interdictum locale, seu personale, variis peccatis puniatur. Primum suspensio ab officio, & beneficio, ex præsentis textu; hanc tamen suspensionem non incurrat ipso iure, sed prolata à iudice sententia, redi ex hoc textu probantur Suarez de censur. diffus. 34. sess. 4. num. 16. Gibalin. de censur. diffus. 8. q. 2. num. 3. Secundò caret privilegio, quod aliquis haberet, ut tamulati posset in loco non interdicto, c. quod in re de penit. & remiss. cap. in cui, de sent. excom. lib. 6. Deinde accusetur ab Ecclesiæ ingressu, donec satisfecerit ad arbitrium eius, cuius interdictum violauit, vel ad arbitrium Episcopi, si interdictum à iure impositum sit, cap. Episcoporum, de primit. lib. 6. sine sit clericus re-

gulatis, sue secularis. Deinde redditur ineligibilis, & impossibilis ad dignitates, & beneficia ecclesiastica, cap. in cui, q. 2. uero, de sent. excom. & si de facto eligatur, electio nulla est, ut probant Suarez de censur. diffus. 34. sess. 4. num. 15. Gibalin. ubi supra, num. 4. & spoliari potest beneficiis, si que habeat, & in monasterium penitentiz peragendæ causâ detrahitur. Tandem qui violant interdictum circa ecclesiasticam sepulchram, excommunicantur, Clemens. 1. de sepulch. & religiosi, qui non seruant interdictum, quod Ecclesiæ Cathedralis, aut que in eo loco martis est, obstat, excommunicationem incurrunt ipso iure, ex Clemens. 1. de sentent. excom. Gibalinus ubi supra, num. 7. qui redi obstat, suspensionem, quam incurrunt violenti interdictum, non extendi ad iurisdictionem; & ita sententias, quas protulit Episcopus Colubrienf. & irritate iussit Pontifex, non irritari, quia prolatae fuerunt ab Episcopo, qui interdictum violauerat; sed quia per summam iniuriam prolatae erant contra eos, qui interdictum violare reuebant; & ita omnia gesta in hac parte ab Episcopo Colubtienf. causa præcipit Gregorius.

TITVLVS XXXII.

De noui operis nunciatione.

CAPVT PRIMVM.

Lucius III. ^a *Paduano Episcopo.*

INTELLEXIMVS ex literis tuis, quod cum causa, quæ inter dilectos filios nostros Priorem sancti Cypriani Deuen. & clericos de Rodigo verititer super Capella, quæ in præiudicium baptisimalis Ecclesie de Costa, ab eisdem clericis est constructa, f. t. delegata fuisset sine canonico terminanda, partibus ad tuam præsentiam conuocatis, per testes tibi sufficienter innotuit, quod præfata Ecclesia de Rodigo eandem Capellam post appellationem ad nos factam, & denunciationem noui operis ædificare cœperat: & ob hoc præfatus Prior in iudicio postulabat, quidquid in prædicta capella post appellationem ad nos factam, & post denunciationem noui operis factam primitus fuerat, demoliri. Super quo discretionis tue dubium videbatur, verum ad hoc canonico procedi posset iudicio: & cum nihil de nunciatione noui operis sit in canonibus definitum, Sedem duxisti Ap. consulendam. Quia verò sicut humanæ leges non b dedignantur sacros canones imitari, ita & sacrorum statuta canonum priorum Principum constitutionibus adiuantur: f. t. præsentibus respondemus, quod diligenter considerans, quod post denunciationem noui operis, siue iure, siue iniuria aliquid constitutur, de legalibus debet constitutionibus demoliri: & quia nulla Ecclesia in præiudicium alterius debet constitui, ascitis tibi viris prudentibus negotium ipsum secundum canonum, & legum statuta, ap. rem. non differas terminare. Nam cum te credamus in vtroque iure peritum, securius duximus causam per tuam sollicitudinem terminari, qui per dicta partium, & terminos, & fines locorum plenius poteris cognoscere veritatem, quam aliquid à nobis ignorantibus qualitatem negotij diffiniri.

NOTÆ.

1. ^a *Paduana.*] Ita etiam legitur in secunda collectione, sub tit. de Eccles. adific. cap. 4. De dilecti Paduana nonnulla adduxi in cap. 7. de iudiciis.
2. ^b *Dedignantur.*] Nouella 83. & 131. Iustiniani, l. sacro 45. C. de Episc. & cler. quod etiam usurpauit Pontifex in cap. clerici 8. de iudiciis, cap. vlt. de secund. nupt. cap. 1. de iur. calumn. cap. Nicæna 12. 31. dist. & sæpe sacri canones prohibentur, se non respuere legum secularium famulatum, cap. super specula 28. de priuileg. & sic statuta canonum constitutionibus Principum adiuantur, atque secundum regulas iuris civilis ce-

clesiasticæ quoque controvertitæ terminantur, si canonibus non opponantur, & ipsi deficient, cap. 1. cap. si in audierim, dist. 20. unde in præfati tractatu de noui operis nunciatione, quia nulli sunt sacri canones, in quibus statutor ius seruandum in hac parte in causis ecclesiasticis: idem tam Lucius III. in præfati, quam Innocentius, Honorius, & Gregorius in decretalibus sub hoc titulo compilatis tantum obseruare iubent leges seculares. Quando verò deficiente canone recurrendum sit ad ius ciuile, vel partium, sen è contra, exponunt congesti à Barbosa in præfati, & Camillus in cap. 1. de consus. & in tract. de differ. variisque iur. in princ. Mancinus sac. iur. dist. 34.

CAPVT II.

Innocent. III. ^a *Cantuariensi Archiepiscopo.*

CVM de iniuncto nobis Apostolatus officio locum eius (licet immeriti) teneamus, qui iuxta verbum propheticum liberauit pauperem à ponte, & inopem, cui non erat adiutor: diligenti studio satagere nos oportet, ne minores à maioribus opprimamur: sed

sed ut Prælati sic exerceant acceptam iurisdictionem in subditos, ut prodesse probentur potius quam præfic. Hæc ergo secundum officij nostri debitum attendentes, districtâ dudum tibi iussione mandauimus, ut in negotio capellæ de Lamech iuxta formam literis Apostolicis comprehensam, ab oppressione monachorum Cantuarien. omnino cessares: super quo venientes ad præsentiam nostram dilecti filij R. de Boxleia, & V. de Ponte Roberti Abbates nuncij tui, fraternitatem tuam niebantur multipliciter excusare. In primis siquidem proponentes, quod cum bonæ memoriæ Theob. Cantuarien. Archiepiscopus, & gloriosus Thomas successor ipsius attendentes, quod nemo militans Deo implicat se negotiis sæculatibus; & nolentes monachos Cantuarien. relictis diuinis officiis ad negotia secularia se transferre, ad honorem Protomartyris Stephani ædificandi Ecclesiam voluntatem, & propositum habuissent, & in ea seculares clericos ordinandi, & de suis prouentibus, & Ecclesiis eis redditus assignandi, per quos tam apud Apostolicam Sedem, quam apud Curias seculares sua possent negotia expedire: laudabile primi propositum obitus festinatus; secundi longum exilium impedivit, sicut in literis ven. fratris nostri L. quondam Lundunen. Archiepiscopi plenius continebatur expressum, quæ in nostra, & fratrum nostrorum fuerunt præsentia recitata. His bonæ memoriæ Bal. Cantuarien. Archiep. ita propositio ut officio, voluntate ut dignitate succedens, prope suburbium ciuitatis Cantuarien. quasi per stadia tria, vel quatuor, ad honorem præsentis Protomartyris, & beati Thomæ construere cepit Ecclesiam, felices record. Urbani Papæ prædecessoris nostri super hoc indulgentiâ primitus impetratâ. Cuius sibi fuit auctoritate concessum, ut in honorem ipsorum Martyrum & ædificare posset Ecclesiam, & de personis idoneis ordinare: quibus in ecclesiasticis beneficiis canonicè prouideret: sic tamen, quod Ecclesiæ debitis obsequiis, & necessariis stipendiis minimè fraudaretur. Et licet idem Urbanus aduersus dictum P. prædecessorem tuum super demolitione operis suas sæpius literas destinasset, quia tamen in eis non faciebat de concessa iam indulgentiâ mentionem, ei dicebant per scripta frequentia nullatenus derogatum, quæ præterea proponebant, & per falsi suggestionem, & veritate tacitâ impetrata, & ad ipsius Archiepiscopi notitiam minimè deuenisse: vnde si eis non paruerat, de iure non poterat reprehendi. Rescriptum quoque sanctæ memoriæ G. Papæ prædecessoris nostri pro se pariter producebant: qui cum per literas indulerit generales, ut rescripta, quæ à tribus mensibus ante obitum prædicti Urbani prædecessoris sui fuerant impetrata, eandem firmitatem haberent, non obstante obitu mandatoris, quam obtinere, si tunc viueret, debuissent: negotia, quæ ipsum Archiepiscopum, & eius clericos contingebant, sub præmissa noluit generalitate concludi: per quod nimirum rescriptum prædecessoris sui dicebant literis derogatum, quas aduersus Archiepiscopum dederat ad instantiam monachorum: quibus siquidem literis, & etiam bonæ memoriæ Clementis successoris sui, qui eius in hac parte fuerat imitator, per factam tunc temporis amicabilem compositionem de partium voluntate inter Archiepiscopum, & monachos memoratos, per charissimum in Christo filium nostrum R. Anglorum Regem Illustrum, & venerabilem fratrem nostrum V. vultum R. R. Archiepiscopum, & quosdam Episcopos, & Abbates, dicebant penitus derogatum. Cum enim tempore Præfati B. Cantuarien. Archiepiscopi, præmissi Rex, Archiepiscopi, & Episcopi, & Abbates Cantuariam accessissent, in eos fuit tam de constructione ipsius Ecclesiæ, quam institutione Prioris, & quibusdam aliis questionibus à paribus compromissum. Ipsi autem diligenti deliberatione præmissa pariter iudicarunt, quod ipse Archiepiscopus rationabiliter ædificauerit Ecclesiam memoratam. Ipse tamen pro bono pacis concessit ad prædicti Regis instantiam, & etiam aliorum, quod Canonicorum collegium ad locum transferret alium, quem eligeret competentem. Per hanc ergo compositionem dicti nuncij tui renunciasse dicebant monachos rescriptis præcedentibus à Sede Apostolica impetratis: cum exinde dictus Archiepiscopus loco priore dimisso, ubi ædificare non potuerat sine scandalo monachorum, ad locum de Lamech per quinquaginta miliaria distantem à ciuitate Cantuarie suum propositum transulisset: ubi & Ecclesiam, sicut prius fecerat, ædificare cepit, ad honorem martyrum prædictorum, ut sic propter nimiam locorum distantiam nulla remaneret monachis materia conque-
rendi. Cui postea tu succedens, quod ab ipso minus factum fuerat, perficere voluisti,

confectam, nec sibi exhibitam postulanti, qui ad causam fuerat à Summo Pontifice destinatus. Vnde vel rem gestam consummare debuerat, si iustitiae concordaret; vel si aliter facta fuerat, infirmare. Sic ergo cognoscens intercessisse illi facto violentiam manifestam, auctoritate, quā fungebatur Apostolica statuit, quod nec concordia sic facta valeret, neque compromisso violententer exorta, neque scriptum ali- quod sic conceptum; & quod ipsis monachis in posterum præiudicium non afferret, cum omnia eo præsentē, ac contradicente fuerint adimpleta, sicut in suis literis patenti- bus continetur, quas coram nobis fecimus recitari. Post hæc cum bonæ memoriæ Coelestinus Papa prædecessor noster omnia, quæ per memoratum B. Archi- episcopum circa monachos vi, vel metu acta fuerant, auctoritate Apostolica in irri- tum reuocaret, nominatim ea, quæ Legato Rom. Ecclesiæ præsentē, & contradi- cente contra mandatum Sedis Apostolicæ facta proponebantur, sicut in authentico eiusdem Legati, P. videlicet Anagnini, quondam Presb. Card. ob causam ipsam in Angliam destinati, continebatur, expressa viribus carere decreuit, & quæcun- que contra ius monachorum, vel tenorem priuilegiolorum Apost. Sedis idem Archi- episcopus impetrarat. Iussit statuens, ut nullus hominum, quæ malè gesserat, ad consequentiam traheret: nec ea, quæ à Sede Apostolica obunuerat, tacitè veritate, iuri monachorum, vel priuilegiis vllò vnquam tempore in aliquo præiudicium gene- rarent: quemadmodum nobis, & fratribus nostris ex ipsarum constitutis continen- tiarum literarum. Ex ipsa quoque maiore loci distantia sibi assererebant monachi maius præ- iudicium generatum, quia cum in eorum defectu, sicut à tuis nunciis dicebatur, sæ- culares clerici fuerint euocati, vix possent per eos vicinis Cantuarien. Ecclesiæ ne- gotia monachis absenti- bus procurari, quæ ipsis procul positis, & capatà eorum ab- sentià siue monachorum conscientia tractarentur, & eis penitus inconsultis: vnde Cantuarien. Ecclesia dispendium incurreret, & iacturam. Sic ergo per hoc nihil eis accessit eadem contradictionis causā manente. Vltimum quoque rescriptum dicti Coelestini Papæ prædecessoris nostri carere assererebant, vtpote per suppressio- nem veritatis subreptum: quoniam in eo nulla fiebat mentio mandatorum, quæ ab Urbano Papa, & Clemente processerant: nec etiam confirmationis illius, quam ip- semet super cassatione compositionis prædictæ concessit; & præsertim cum rescrip- tum illud indulsisse dicatur eo tempore, quo eum infirmitas admodum prægrauabat. Ad fundandam sanè intentionem suam, prædictorum Urbani, Clementis, & Coele- stini Rom. Pontificum rescripta, ac nostrum post illa iidem monachi producebant: quibus vrgenti- simè mandabatur, ut quicquid de præfata capella fuerat attentatum, haberetur irritum, & inane. Cum autem quæ præmissimus, & similia, in nostra, fratrumque nostrorum præsentia prudenter essent à nunciis allegata, nos qui tem- pus accepimus iustitiam iudicandi, volentes illius vestigiis inhzere, apud quem non est acceptio personarum, cuius locum (licet indigni) tenemus in terris, & ita viâ regiâ prudenter incedere, ut non declinemus ad dexteram, vel sinistram: prædecesso- res quoque nostros Urbanum, Clementem, & etiam Coelestinum credentes ampli- us imitandos, in illis maxime, quæ deliberatione præuia statuerunt, de communi con- silio fratrum nostrorum fraternitati tuæ per Apostolica scripta mandamus, & in virtute obedientiæ districtè præcipimus, quatenus omni contradictione, & excu- satione, & appellatione cessantibus, infra triginta dies post receptionem præsen- tium quicquid ædificatum est in Ecclesia memorata, expensis tuis facias penitus demoliri, eo non obstante, si etiam absens exieris: cum cautum sit etiam legiti- mæ sanctionē, ut si is, cui fuerat opus nouum nuntiatur, ante remissionem ædifica- uerit, deinde agere exæperit, ius sibi esse ita ædificatum habere, sibi debeat actio denegari. reducens prorsus in irritum quicquid de instituendis ibidem canonicis, & aliis ad ipsam Ecclesiam pertinentibus, à te, vel à prædecessore tuo cognoscitur ordi- natum: eorum redditibus ad statum pristinum reuocatis, quos ab obligatione præ- stiti iuramenti, pro eo, quod ibidem instituti fuerunt, auctoritate nostra per te de- nunciari præcipimus absolutos. Cum enim amodò non teneat principale, quicquid ex eo, vel ob id secutum est, sub præmissa districtione decernimus irritandum, sicut sanctum est traditione canonica, & ciuili. Clericos præterea, qui in capella ipsa post inhibitiones Apostolicas diuina officia celebrarunt, sicut nos per alia scripta nostra mandauimus, tandiu habcas pro suspensis, quousque super hoc satisfecerint competenter: & vniuersa, quæ in prædictorum monachorum sunt attentata gra- uamen, xeniorum videlicet, & Ecclesiarum, & aliorum inuasionē, quæ

ante appellationem habuerant, non differas dictis monachis resignare, ac de cætero circa statum monasterij contra prohibitionem nostram huius occasione negotij non præsumas aliquid innouare. Si verò (quod non credimus) præceptum nostrum, sicut præmissum est, vel contempseris, vel distuleris adimplere, à Pontificali officio ex tunc noueris te suspensum: & pro contempn. mandati Apost. ad nostram venire te volumus præsentiam responsurum. Venerabilibus quoque fratribus nostris Cantuarien. Ecclesiæ suffraganeis de consilio fratrum nostrorum in virtute obedientie districtè præcipiendo mandamus, quatenus nisi tu infra præmissum tempus mandatum nostrum duxeris ad effectum, ipsi nullam tibi impendant obedientiam, vel reuerentiam; quia iustum est, quod ei non obediatur à subditis, qui suo contemnit obedire Prælato. Quod si fortè nec sic te poterimus ad bonum reuocare, propter quod malum nonquam committitur, bonum autem debet sæpius intermiti, maiorem tibi animaduersionem noueris imminere: cum ferro sint abscindenda vulnera, quæ fomentum non sentiunt medicinam. Sanè super præmissis, in quibus saluà conscientia non poteramus alio modo procedere, fraternitatem tuam rogamus nullatenus contristari: quia (teste Deo) non ex indignatione aliqua processerunt, sed quia cum sumus (licet insufficientes) in Sede iustitiz constituti, vnde iura sua seruare tenemur singulis illibata, fraternitati tuæ, quam sincerius amplectamur, cum te inter fratres, & Coepiscopos nostros honorabile membrum, & in domo Domini columnam immobilem habeamus, non potuimus sine graui offensa Creatoris deferre, nec nobis in hac parte potes aliquid imputare: cum secundum traditionem canonicam, quando non nisi peccando alicui consuli potest, tunc æstimare debet homo, quid faciat, non habere. In ipsis etiam legibus secularibus inuenitur, vt quæ facta lædunt pietatem, æstimationem, veredum nostram, & generaliter quæ bonis moribus aduersantur, nec posse nos facere sit credendum. Super eo quoque non sufficimus admirari, quod cum dicta Ecclesia iamdudum quasi lapsis offensionibus fuerit, & petra scandali, pro qua nos, & prædecessores nostri aduersus te, tuosque prædecessores ita grauiter sumus moi; & viri religiosi pariter, & prudentes monachi Cantuarien. qui omnia dimiserunt pro Christo, tot laboribus, & doloribus, tot mortibus, & periculis personas, & res non dubitauerunt frequenter exponere: quod proculdubio tam illi, quam isti (vt dictum est) non fecissent, nisi cognoscerent præmissa respicere in graue Cantuarien. Ecclesiæ detrimentum, vt de aliis omittamus, tu saltem pro vitando tam graui scandalo proximorum, ab huiusmodi etiam tibi prohibitis non cessasti: cum sacræ Scripturæ testimonio debuisti didicisse, quod licet opera illa, quæ sine mortali peccato dimitti non possunt, non sint pro vitando scandalo dimittenda, nec ea debeant pro vitando scandalo committi, quæ sine mortali peccato committi non possunt: ab his tamen, quæ committi possunt sine mortali peccato, pariter, & dimitti, sit pro scandalo tollendo cessandum: & eis etiam pro vitando scandalo insistendum. Vnde Apostolus dicit: Si scandalizaretur frater, carnem non comederem in æternum. Et Dominus in Euangelio contra eos, qui scandali præsentant materiam: Vx (inquit) homini illi, per quem scandalum venit: melius est ei, vt suspendatur mola aëniaria ad collum eius, & demergatur in profundum. Et licet maiorum scandalum sit vitandum, præcipuè tamen vitandum est scandalum pusillorum iuxta testimonium veritatis: Qui scandalizauerit (inquit) vnum de pusillis istis minimis, qui in me credunt, &c. Finis ergo his, quæ præmissa sunt à te de cætero taliter imponatur, quod præteritæ contradictionis rebellio per virtutem sequentis obedientie valeat non immeritò expiari. Datum Lateran. 1x. Kal. Decembris.

NOTÆ.

- I. ^a *Cantuariensi.* Ita etiam legitur in testis collectione, sub hoc tit. cap. xvi. & in epistolis Innoc. correctis à Silesio, fol. 274. ex quo Registro restituo integram huius textus. Præfens epistola scripta est Verto Vraltro 43. Archiepiscopo Cantuar. de quo ex vasis plura refert Richardus Smithus in floribus Ecclesiæ Angliæ lib. 7. cap. 10. Huius contronectiæ mentio fit in gestis Innocentij III. editis à Boschetto, pag. 29. ibi: [Litem etiam, quæ inter Episcopum, &

Capitulum Cantuariensis Ecclesiæ ceperat agitari super Ecclesia de Lameche, quam idem Archiepiscopus eodem Capitulo contradicente construxerat, & dotauerat multis, & magnis redditibus, insititens in ea canonicos seculares, viros nobiles, potentes, & literatos, non sine multa difficultate sedauit. Nam Rex, & Archiepiscopus in illo facto se mutuò adiuuabant. Capitulum autem non habebat post Deum, nisi Locum Romanum Pontificem adiutorem, asserens pro constanti, quod nisi præfaram Ecclesiam faceret penitus demoliri, Metropolitana dignitas

pro maiori parte transferretur ad illam. Vbi verò Dominus Papa rationes partium sufficienter audire, Apostolicæ Sedis auctoritate decreuit, vt dictus Archiepiscopus eandem Ecclesiam suis sumptibus demoliretur omnino, id irritum reuocans quicquid factum fuerat circa ipsam: quæ cum ipse facere distulisset, præcedens quod Rex illud fieri non sinebat, ipse successus zelo iustitiæ præcepit districte in virtute obedientiæ Archiepiscopo memorato, vt illud exequi vltimus non differret, alioquin sciret, se ab officio Pontificali suspensum, & suffraganeos ab eius obedientia esse subactos. Et sic demum quantumcunque Rex, & Archiepiscopus reniterentur, & murmurent, impletum est penitus quod mandauit.] Quam cautionem retuli in cap. dilecti 32. de appell.

2. b. *Iussione.*] Cuius iussionis literæ extant apud eundem Silexium in eodem Regesto Innocentij, lib. 1. epist. 54. in hæc verba:] Quando personam tuam innocenti charitate diligimus, tantò maiori dolore turbamur, quoniam ea de tua audiuimus operibus, quæ Pontificali derogant honestati. Cum enim Cantuariensis Ecclesia, cui præfæce dignoferis, inter Anglicanas Ecclesias celebris habeatur, & inter alias confuenter Religione floreat, nos, & fratres nostros graue, & molestem gerimus, quòd sicut dilecti filij nostri N. Prior, & Coenobites eiusdem Ecclesiæ humiliter nobis conuersione monstrant, tu ad ipsius desolationem Ecclesiæ satagas multipliciter, & labores in constructione nouæ capellæ de Lameche, eoque prohibitiones felicitis recordationis Urbani, & Clementis Romanorum Pontificum, bonæ memoriæ N. prædecessoris tui factas post appellationem multiplices ad Sædem Apostolicam interpositas, in magnum Cantuariensis Ecclesiæ præiudicium propriâ temeritate procedens, & de bonis eiusdem Ecclesiæ Canonicos instituens: à cuius siquidem constructione capellæ, si eam, quam debes Rom. Ecclesiæ reuerentiam, & obedientiam exhibere, & commissæ tibi Ecclesiæ prouisionem, & sollicitudinem gereres, quam teneris, tibi, & honori tuo melius consulens penitus desistisses, nec super eo procedere studuisses, quod prædecessori tuo sic districte cognosceres à Sede Ap. interdictum. Cum igitur dimissionem Cantuariensis Ecclesiæ, sicut nec debemus, nolimus aliquatenus sustinere, prædictorum prædecessorum nostrorum vestigiis inhaerentes, de fratribus nostrorum consilio (aternitati tue per apostolica scripta mandamus, & districte præcipimus, quatenus omni morâ, & excusatione postposita (si etiam ab Ecclesia tua abfens fueris,) aliquatenus non obstitas, quicquid post appellationes, tam tempore prædecessoris tui, quam tuo, ad Sædem Apostolicam interpositas, vel prohibitiones antecessorum nostrorum in operatum capellæ dignoscitur memoraræ, infra trigesima dies post hæc suspensionem tuis expensis non differas demoliri: in irritum profecto reuocans, & deductus quicquid de instituendis canonicis, & aliis circa capellam ipsam factum est, vel enomiter innouans. Clericos præterea, qui in capella ipsa post inhibitiones Apostolicas diuina officia celebrant, tandiu ab officio, & beneficio teneas pæ suspensis, donec super hoc satisfecerint competenter, vniuersis operibus demolitis, quæ apud eandem capellam facere præsumpseris, & vniuersa quæ post appellationem in

prædictorum fratrum sunt attentata grauamen, in xenitorum videlicet Ecclesiarum, & aliorum inuasionem, quæ ante appellationem habuerant, in statum pristinum appellatione remota reducas: sententias excommunicationis, & interdicti, quos in quosdam ipsorum fratrum temetè dixeris promulgasse, publicè nuntians non tenere, ac de cætero circa statum ipsius monasterij contra prohibitionem nostram, huius occasione negotij non præsumas aliquid innouare: illicitos inuales villarum, possessionum, & reddituum prædictorum fratrum vsque ad satisfactionem idoneam vineulo excommunicationis astringens. Si verò (quod non credimus) mandatum nostrum infra statum terminum neglexeris, vel distulseris adimplere, quia iustum est vt ei obedientia subiacatur, qui Sedi Apostolicæ negligit obedire, venerabilibus fratribus nostris suffraganeis tuis per scripta nostra mandauimus, vt tibi reuerentiam, seu obedientiam non impendant. Quod si forte ab eis, vel eorum aliquo contra prohibitionem nostram tibi feceris aliquam obedientiam, & reuerentiam exhiberi, seias te ex tunc ab Episcopali dignitate suspensum, & tandiu ipsi sententiæ subiacere, donec satisfactorius de contempto te nostro conspectui repræsentes. Non autem distinguimus, vitum in hoc à nostris prædecessoribus interdictum, vel alio in prædictâ constructione capellæ, & canonicorum institutione processit in Ecclesiæ Cantuariensis præiudicium, & grauamen, eadem contradictionis causâ durante; nisi quod ex hoc magis credimus Ecclesiæ derogari, quod in remotiori loco prior fabrica est translata. Datum Romæ, apud S. Petrum.]

c. *Theobald.*] Theobaldus videlicet, qui fuit 37. Archiepiscopus Cantuariensis. de quo agit Smitheus d. lib. 7. cap. 5. per ipsum.

d. *Thomas.*] De quo sancto, & eius martyrio nonnulla adduxi in cap. 2. de scriptis.

e. *Monachos Communiens.*] In Ecclesia enim Metropolitana Cantuariensi post S. Augustini obitum Lantentius illius successores Bonifacio Romano Pontifici permittente, & speciali respectu ad petitionem Ethelberti Anglorum Regis coeodente, monachos posuit, vt referunt Guillelmus Malmesburienfis lib. 1. de Episcop. Anglicanis, pag. 208. & ita simul erant in eadem Ecclesia, vt io illis illis sæculis contingebat, monachi, & canonici regulares: quod facile constat ex his, quæ de Beati Thomæ Cantuariensis Archidiscipulo, & illius martyrio, de clericali fore templi claudere conantibus, qui eadem martyrio aderant, ab omnibus historicis passim traduntur, & facile hoc probatur ex cap. relatum, de prob. vbi agit de Magistro recipiendo in Canonico ipsius Ecclesiæ: quod conuenire nequit monachis in Ecclesia deseruentibus, & ita optimè probat Pennotus lib. 2. hystor. canonic. regul. cap. 37. n. 5. in Ecclesia Cantuar. fuisse simul monachos cum canonicis regulariibus.

f. *Exilium.*] Quod distortum passus fuit Inchyrtus Martyr semel, atque iterum, vt ex variis etiam Protestantibus probat Smitheus d. lib. 7. cap. 6.

g. *Bald.*] Balduinus videlicet, quadagesimus Archiepiscopus Cantuar. de quo Smitheus d. lib. 7. cap. 8.

h. *G. Papa.*] Gregorius videlicet VIII.] R. Anglorum Regem.] Richardum videlicet I. qui dictus fuit Cor Leonis, 38. Rex Angliæ, qui regnauit ex anno 1189. vsque ad annum 1199.

vt probat Smithus in floribus Anglia, lib. 4. cap. 6.

k C.] Cælestini videlicet III.

l In loco publico.] L. 2. §. si Princeps, ff. ne quid in loco publico; quam illustrat Forster.

lib. rer. quotid. cap. 16.

m Sub pretextu.] Vt probatur in cap. 21. de re iudic.

n Scandalo dimittenda.] Vt probatur latè Salgado de recent. Bullar. p. 1. cap. 4.

CAPVT III.

Honor. III. Decano, Præposito maioris Ecclesie, & Magistro Michaëli canonico S. Nicolai Ambian.

Significantibus Canonici^b sanctæ Opportunæ Parisien. nobis innotuit, quod cum super eo, quod Nicolaus Ruffus ciuis Parisien. in quadam platea Ecclesie suæ, infra claustrum ipsorum sita, eis prohibentibus in suum ædificabat præiudicium & grauamen, deposuerunt coram Officiali Parisien. & Archidiacono quæstionem, eis offerentibus in continenti probare præiudicium, & plateam ad suam Ecclesiam pertinere: ac petentibus insuper, non obstante quod dictus N. cautionem de demoliendo opere offerebat, ædificium prohiberi. Et quia idem Officialis interloquendo decreuit, probationes eorum admittendas esse, ac ab opere interim quiescendum, idem N. ad Senon. Curiam prouocauit. Sed cum Senon. Officialis Nicolai prædicti cognatus eadem interlocutoriâ pro suæ dumtaxat voluntatis arbitrio reuocata decreuit ad opus sub cautione de demoliendo ipso, non admissis eorum probationibus, procedendum, prædicti Canonici nostram audientiam^a appellarunt: vnde petebant, vt ipsorum probationes recipi, ac prohiberi ædificium mandaremus. Ideoque disc. v. per Apost. scripta mandamus, quatenus si est ita, reuocato in statum debitum quidquid post appellationem huiusmodi temerè inueneritis attentatum, super hoc, quod iustum fuerit, appellatione postpositâ statuat, facientes, &c.

NOTÆ.

1. ^a Athien.] Ita etiam legitur in quinta compilatione, sub hoc tit. cap. vnic. ex qua transferbo textum hunc. De Ambianensi diocesi nonnulla adduxi in cap. 3. de frigid.

b Sancta Opportuna.] Ecclesia hæc est collegiata in vico sancti Honorati vrbis Parisien. vt refert Cironius in præfenti.

2. ^c Parisien. & Archidiacono.] In sexta collectione legitur Parisiensis Archidiaconi, vt ita

officialis esset vicarius Archidiaconi Parisien. Quâ lectione retentâ, quomodo in præsent appellatione potuisset inserpi ad Archiepiscopum Senonensem, omisso medio, videlicet Episcopo Parisien., exposui in cap. 66. de appellat.

d Appellarunt.] Quando in iudicio noui operis nuntiationis appellatio admittitur, opereturque verumque effectum, suspensum, & deuolutionem, exposuit Lancellotus de alienat. 3. p. cap. 28. à num. 44. Salgado de Regia protect. 2. p. cap. 8. ex num. 32. vbi explicat præsentem textum.

CAPVT IV.

Gregorius IX.

IS cui opus nouum te nuntiasse proponis, non obstante cautione, quæ offertur ab ipso de opere destruendo, si non iure ædificatum existat, tenetur te per trium mensium spatium expectare, iuris tui præiudicium probare volentem.

NOTÆ.

- ^a Gregorius IX.] Qui præsentem constitutionem edidit motu proprio, iuxta principia suis civilis, vt statim dicemus.

COMMENTARIUM.

1. ⁱ IN his omnibus decretalibus vna, eademque docetur sententia, quæ talis est: ædificium constructum post noui operis nuntiationem, demolendum est, nec audiri debet Dominus, si satisfactionem offerat, & de iure suo ducere parauit sit. Probant eam textus in l. 1. §. si iussus, l. Prætor 20.

§. 1. l. stipulatio 21. §. 1. ff. hoc tit. l. 3. §. si quis parauit, ff. quod rei actio clam, l. 8. tit. 32. partit. 3. Illustrant Federicus Scorus, & Duaren. ad tit. ff. de noui oper. Idem Doctores lib. 1. disp. cap. 16. Petrus Gregor. lib. 4. sym. cap. 26. cum sequent. Donel. lib. 15. comment. cap. 45. Fachinus lib. 8. controuers. cap. 44. cum sequent. Renardus lib. 3. consuet. cap. 12. Cuiacius lib. 40. Pauli ad edit. l. non salum 8. ff. hoc tit. Faber lib. 3. consuet. cap. 8. & lib. 39. cap. 5. Schifardeg. ad eundem lib. 2. tract. 7. cap. 1. Robertus lib. 5. sentent. cap. 16. cum sequent. Spanochius in comment. ad hunc tit. ff. Gallus lib. 1. obseru. cap. 16. Forcaul. in Notionane. dialog. 112. Goues in l. 46. Tauri, ex num. 19.

Merillus

Metillus lib. 3. *obseru.* cap. 20. David Argente *folet.* in nouo ad tit. hunc ff. Academia nostrae luminaria magna D. Melchior de Valent. lib. 2. *instr.* tract. 1. cap. ult. & D. Anr. Picardo in 5. *summa.* *Instit.* de interditi. cap. 8. Maius lib. 4. *jur.* cap. 15. & 16.

Sed in praesenti affectionem pro debita ratione ita infirgo. Et primo in eam parrem, in qua asseritur, lute, vel iniustitia denuntiationem factam impedire edificationem, argumentor ita. Iniquum est nuntiationi notoria iniuste parere, quia ius nihil iniustum patitur, l. 1. ff. de iust. & iur. l. quod si Ephebi, ff. de eo quod certo loco, l. meminerunt 6. C. unde ubi ideo iniustam nuntiationem non impedire edificij constructionem, dicitur in l. Papinianus, ff. de publiciana. Itaque cum impune contentum docetur in l. iur. 45. ff. de minor. l. si minor, C. de resind. l. 2. C. de horem venditione pigro. Ergo cum iusta est nunciatio operis, non debet impediri Ecclesiae constructio. Augetur primo hae difficultas, nam publice inuocet Ecclesias constructi, & edificati, ut populus in eis congregetur ad diuina officia celebranda, & Deumque venerandum, ut probatur in tit. de consecr. Ecclesiae. Igitur iniusta nuntiatione non debet prohiberi opus ita pium. Accedit, nam in praesenti casu nuntiantes nouum opus habebant interdictum *ui possiderit*, ut in sua possessione Ecclesiae baptismalis consecrarentur; & si contra adhuc Ecclesia edificaretur, habebant interdictum *quod vi aut clam*. Igitur non indigebant hoc edificio noui operis nuntiationis. Augetur tandem hae dubitandi ratio ex eo; nam si is, cui nouum opus nuntiatum est, paratus sit satisfactionem pro se, & haeredibus suis prestare de eo opere suis sumptibus demolendo, & id quod nuntiantis inuenit soluendo, & appareat edificantem ius edificandi non habuisse, remissa nuntiatione conceditur ei facultas edificandi, l. de pupillo 5. §. si in ead. nuntiatum, l. non solum 8. §. si cum possem, & §. si deinde, l. Praetor 10. §. si quis paratus, §. interdum, §. deinde, §. hoc autem, l. stipulatio 21. §. si quis autem, hoc tit. Ergo non recte in cap. praetor. & final. hoc tit. docetur etiam cautela illa oblati non posse intra tres menses eam eni opus nouum nuntiatum est, edificare.

Qua dubitandi ratione ita facile non obstant, vera est praesens assertio, pro cuius expositione sciendum est, nuntiare periculum accipi pro deferre, & potest: inde delatores criminum nuntiatores appellantur in leg. ab accusatione 6. §. nuntiatores, ff. ad Turpil. Ciac. lib. 1. *obseru.* cap. 38. & lib. 3. cap. 3. & si eo nuntiare est illi aliquid deferre, l. 1. §. final. ff. de iure fisci. Unde tacite fidelicommissum duxi Paulus in l. edicto 13. §. cum ante, ff. de iure fisci; plura Brissolius de P. S. verbo Nuntiatio. In praesenti autem nuntiare idem est, ac prohibere, l. si praetor 17. ff. hoc tit. & nuntiare nouum opus nihil aliud est, quam denuntiare, vel prohibere, refectione adhibita ne opus nouum fiat, l. si quis 6. §. ubi cum, ff. commun. diuid. l. 1. in princip. l. de pupillo 5. §. meminiisse, l. Praetor 20. in princip. & §. deinde, ff. hoc tit. Petrus Gregor. lib. 4. *synag.* cap. 27. Dnareus lib. 1. *disput.* cap. 16. Donel. lib. 15. *commun.* cap. 45. Unde noui operis nuntiatio, testatio, denunciatio appellatur in d. l. de pupillo 5. §. meminiisse, l. 1. §. sed et si, ff. quod vi aut clam. Est autem nuntiatio hae legum pro-

hibitio in se praesens, & immobili vicino facta, ne in opere edificando pergat, quo nobis noceat, donec de iure edificationis consiliteri, aut praestita sit eo nomine facultas. In qua definitio ponitur *legitima prohibitio*, ut consistit, non quomodo nuntiationem sufficere, sed quae sit de bono tempore, & loco, & a personis legitimis, ut infra dicemus. Ponitur etiam in se praesens, ut cognoscatur nuntiationem faciendam esse in loco, ubi opus sit, seu inchoatur, d. l. de pupillo 5. §. nuntiationem, & §. si quis forte 4. l. 1. tit. 32. par. 3. Dicitur etiam, & immobili, ut cognoscatur, non omne opus nuntari posse, sed quod in solo edificatur, l. 1. §. hoc autem 6. ff. hoc tit. d. l. 1. par. 1. & ita si quis metum faciat, arborem succidat, vineam puer, quamvis nouum opus faciat, ad hoc edificum non spectat, d. l. 1. §. 6. Nec contrarium probatur in l. si alius 7. §. notamus, ff. quod vi aut clam. Cuius veram interpretationem tradunt Valentia ubi supra, cap. 1, Picardus cap. 2. num. 106. Dicitur etiam vicino facta, ut sciamus nuntiationem fieri debere personae, aut operi ipso, iuxta legem operis 101. legem finalem, ff. hoc tit. quas explicat Picardus d. cap. 2. num. 107. In illis verbis: *Nec in nouo opere*, &c. comprehendimus causam huius nuntiationis, ne videlicet vicinus operi suo, quod edificat, nobis noceat, d. l. de pupillo 5. §. meminiisse, & §. sed et si in ades: & ita per hanc nuntiationem legitime factam statim nouum opus sistit, & inhihetur, l. 1. in princip. d. l. de pupillo 5. §. si quis forte. An vero hoc faciat Praetor edicto, vel interdicto suo, pro conciliatione dictae legis 1. cum §. legis Praetor 20. §. hoc interdictum, ff. eod. examinat Valentia d. cap. 1. num. 7. Mutetur *obseruat.* iur. cap. 14.

Deinde sciendum est, nuntiationem noui operis tribus modis fieri posse. Primo solo verbo, quando quis extra iudicium aduersario denuntiat, ne quid exinde noui operis faciat. Secundo per Praetorem, iure ordinario, mediante interdicto. Tertio non verbis tantum, sed facto, videlicet per iactum lapilli, cum in opus corpus iactant, l. quantum 50. ff. de acquir. rer. dom. quos modos expresse Vlpianus in d. l. de pupillo, §. meminiisse, ibi: *Attenitio autem operis, quomodo quis in nostro edificare, vel in nostrum immittere, vel praetere vult, nulus esse cum per Praetorem, vel per manum, id est lapilli iactum prohibere, quam operis noui nuntiationem.* Et l. 1. §. sed & si quis, ff. quod vi aut clam, ibi: *Sed & si quis iactum vel iactum lapilli prohibere facere persequeretur facere, hunc quoque rem scisse videri, Pedium, & Pompeianum scribunt, & cap. iura veterum: sed & si contra testationem, denuntiationemque fecerit, idem esse Caelitium, & Trebatium putant; quod verum est.* Paulus in l. vi facit 20. §. prohibens, ff. quod vi aut clam, ibi: *Prohibemus autem intelligitur quolibet prohibemus actum, id est vel dicentis se prohibere, vel manum opponere, lapillumve iactumque prohibendi gratia.* Et l. 1. tit. 32. par. 3. explicam supra congesti pro illustratione conclusionis, & Corraus in rubric. ff. hoc tit. Reuerendus in l. quo testatur 73. §. ubi, ff. de R. l. Picardus ubi supra cap. 3. per totum. Valentia d. lib. 2. cap. 2. num. 10. Rationem autem, quare lapidis iactum nuntiatio fiat, assignat Cuiacius in l. 4. §. est forte, ff. si formis vindicatur. Quia lapilli iactus signum erat belli, ut apud Luuium & Virgilium lib. 9. *Æneid.*

4.
DE MODIS
NUNTIA-
TIONIS.

3.
NUNTIA-
TIO
QUID?

clationis; nam eum per nunciationem iuxta interdium Prætoris cessari debuisset ab opere, qui illud adhuc perficit, in pernam huius contemptoris cogitur illud propriis expensis destruere. Accedit, nam nunciatio hæc habetur ad iustas appellationis extrajudicialis: Lancelotti *de appellatione* 2. p. cap. 20. num. 27. Et ita licet innouata post appellationem extrajudicalem, ut attentata ante omnia reuocantur, ut probatur in cap. 1. de appellatione. ita ædificata post nunciationem, tanquam attentata sunt ante omnia reponenda propriis expensis: quare qui nouum opus nunciat, si quod operis iam tunc factum est, in testationem referre debet, ut postea apparetur possit quid ædificatum sit, l. nam solum 8. §. qui opus, & §. sciendum, ff. de noui oper. nunt. vno autem casu tenetur qui pati destructionem operis, non autem propriæ expensis ad demolitionem cogi: cum videlicet domino abiente, & nunciationem ignorante, ab opificibus nunciatione sprete, opus perfectum est; nam tunc patientiam tantum præstat, non tamen expensas, l. competeri 16. §. final, ff. quod vi aut elam.

8. Nec obstat dubitandi ratio super adducta, nam nunciatio operis, siue iure, siue iniuriâ facta, tunc demum operis progressum impedit, cum de iure nunciationis potest dubitari: nam si competum, exploratumque fuerit, eum qui nouum opus nunciat, nunciandi ius non habere, vel propter incapacitatem personæ, veluti si seruus, vel pupillus sine iustis auctoritatibus, vel usufructuarius domino nunciaret, l. 1. h. de pupillo §. in princip. & §. seruo, hoc tit. talis nunciatio nullam producit effectum, & per consequens opus imponit periculi potest, l. 1. §. final, cum l. sequenti, l. de pupillo §. §. plurimum, ff. hoc tit. Item si notoriè iniusta causa sit, Gaillus lib. 1. obs. cap. 16. vnde Prætor, teste Vlpiano in l. 1. ff. de remiss. missam, siue remissam facti nunciationem eius, cui ius prohibendi nullum esse apparet, ut eleganter subdit Vlpianus §. 1. dixit legis, ea verba Prætoris ostendere, remissionem ibi de quibus factam, ubi nunciatio non tenet Sic enim in Florentinis legitur in d. l. 1. ff. hoc tit. & sic legendum solum Pichardus in §. 1. de interd. num. 340. Valentia tom. 2. in h. v. tract. 1. cap. ult. num. 10. et Roberto, contra Cuiacium lib. 1. obs. cap. 16. & lib. 19. cap. 17. quo modo accipitur dicta lex 1. hoc tit. de illa nunciatione, quæ ut inutilis remittitur à Prætoribus, ut ait Daresius in l. 3. hoc tit. verum tunc si iuris obsecris Vlpian. in d. l. 1. docere nunciationem valere, siue iure, siue iniuriâ: ergo non potest remitti nunciatio illa tanquam siue iure, quæ siue iure valet, ex sententia Vlpiani. Sed dicendum est, dupliciter siue iure opus nunciari: aut nunciatur aperte siue iure, & hoc casu nunciatio inutilis est; aut nunciatur siue iure, sed dubitè, ut nunciatio sine aliquod habere videatur quo casu nunciatio utilis est, ut docent Valentia, & Pichard. supra, Donel. lib. 15. comment. cap. 46. Vnde sensus dictæ legis 1. est, nunciationem, quæ

iniuriâ fit, aiamen à patientia bona tunc remitti, siue hæcenus non remitti, quando prohibendi ius non habuisse nunciatores conficietur. Nec obstat quod dicebamus publicè iure esse Ecclesiæ constructi ad diuina officia celebranda; nam id procedit dummodo inde præiudicium iuribus non sequatur, ut in casu textus in cap. 1. 2. & 3. huius tituli contingebat; nam tunc noua Ecclesia cum tunc præiudicium nullum non debet. Nec obstat, quod dicebamus de interd. vi possid. & quod vi aut elam: nam interd. vi possid. requirit possessionis probationem, l. 1. & 2. vel possid. §. interd. Infit. de interd. nunciatio autem noui operis solum exigit, ut probetur nouum esse, & insolitum opus, quod fit, simulque nunciatis nocere. Deinde interd. vi possid. iudicia sententiam petit, nunciatio verò statim opus sistit, l. 1. §. nunciatio, l. de pupillo §. §. si quis foris, ff. hoc tit. de interd. quod vi aut elam, in eo à nunciatione differt, quod interd. illud ad opus iam perfectum pertinet, nunciatio autem non aliter locum habet, quin si opus ceptum perfectum sit, l. 3. in princip. ff. de mortuo inferendo, l. 1. §. 1. ff. hoc tit. quas & alias differentias persequitur Ant. Gomez in l. 46. Tauri, num. 21. Nec tandem obstat, quod de satisfactionis obligationi dicebamus; nam licet nili satisfactione præstata, vel oblata, reus possit capium ædificium conformare, quia plerumque in proprio solo ædificanti valde iniutuosum, & damnosum erat, si iam paratis, & dispositis lignis, conductisque fabris opus sisteretur; tamen nouo iure legis vnicæ, C. hoc tit. quod sequuti fuerunt Honorius III. & Gregorius IX. in cap. penult. & final. hoc tit. statutum est, ut nuntiator noui operis non compellatur infra tres menses satisfactionem accipere, sed infra illud tempus causam dimittere iudices eant, & opus cesset. Consonat lex 9. tit. 3. part. 3. Sed adhuc iuxta eam constitutionem, & ius antiquum tres casus sunt distinguendi. Præma est cum ædificans offert satisfactionem, & nunciator eum recipit: quo casu iuxta ius antiquum ædificium perfici potest, non expectato trium mensium spatio. Secundus est in quo nuntiator non vult satisfactionem admittere, nec offert se ad probationem alicuius iuris, quod impedire possit opus; & in hoc etiam casu ille, cui nunciatum est, poterit statim ædificare, quia malitiosus, & causâ verandæ aduersarij nunciastè videtur. Tertius est, quando nuntiator eum satisfactionem non admittit, vult tamen probare causam, quam sibi asserit competere ad opus nouum impediendum, in quo locum habet noua decisio textus in d. l. 1. vnic. approbata in cap. penult. & fin. hoc tit. ut trium mensium spatium præbetur, intra quod ab ædificio supersedeatur. Illo autem elapso, si nondum illa decisio fuerit, præstata satisfactione ædificium perfici valeat, etiam contortissima nondum decisio fuit: doceantur Azo in summa, ad tit. C. de ædific. penult. Gomez in l. 36. Tauri, num. 34. Valentia d. lib. 1. cap. ult.



TITVLVS XXXIII.

De priuilegiis, & excessibus priuilegiatorum.

CAPVT I.

* Leo Papa.



Illud sanè, quod ad sacerdotalem pertinet dignitatem, inter omnia volumus canonum statuta seruari: vt non in quibuscumque locis, neque quibuscumque castellis, & vbi antè non fuerunt, Episcopi consecrentur: cum vbi minores sunt plebes, minoresque conuentus, Presbyterorum cura sufficiat: Episcopalia autem gubernacula non nisi maioribus populis, & frequentioribus ciuitatibus oporteat præsidere; ne si, quod Sanctorum Patrum diuinitus inspirata decreta veterant, viculis, & possessionibus, vel abscuris, & solitariis municipiis tribuatur sacerdotale fastigium & honor, cui debent excellentiora committi, ipse sui numerositate vilescat. Quod nunc in sua diocesi Restitutus Episcopus factum esse causatus est, & rationabiliter postulauit, vt si Episcopi eorum locorum, in quibus non debuerant ordinari, humana condiuione decesserint, loca ipsa ad ius eius Anstetis redigantur, cuius fuerant antè priora: quia inutile est, vt sacerdotalis dignitas inconsideratè ordinantis facilitate superflua multiplicatione minuat.

NOTÆ.

- I. a **L**eo.] Ita legitur in prima collectione, sub hoc tit. cap. 1. & textus hic citatur ex ipso Leone à Butchardo lib. 1. decreti, cap. 31. Carnoteoli, p. 3. decreti, cap. 143. Gratiano in cap. illud, 80. dist. & repetitur inter opera ipsius sancti Doctoris epist. 87. ad Episcopos African. per Memoriam Cæsarensium constituta, cap. 2. ex qua textum hunc transcribo. De ipso sancto Pontifice nonnulla addidi in cap. 3. de maioribus. & obed. nescio tamen, quare Compilatores præsentem textum sub titulo de priuilegiis, aut excessibus priuilegiatorum nec verbum repetatur.

COMMENTARIUM.

2. **E**X præsentis textu sequens communiter deducitur assertio: Cathedra Episcopalis non in vicis, aut pagis, sed in ciuitatibus, & maioribus populis poni debet. Probant eam textus in cap. Episcopi, & per totam 80. dist. cap. audiuimus 3. q. 2. c. in illis 890. dist. 8. Felix 164. 1. D. Clemens epist. 11. ibi: Hoc tamen promissum, ne in villis, & castellis, modicis, & ciuitatibus institueretur, ne nomen eorum vile fieret. Synodus Sardien. can. 6. Licentia verò danda non est ordinandi Episcopum, aut in vicis aliquis, aut in modica aliqua ciuitate, cui sufficiat tantus Presbyter; quia non est necesse Episcopum fieri, ne vilescat nomen, & Episcopi auctoritas. Et epist. 3. Concil. Franeofordens. can. 22. Quod non oportet in villis, vicis, nec in vicis Episcopos ordinari. D. Gregor. Nazianz. orat. 20. in laudem D. Basil. Synodus Laodic. can. 57. Quod non oportet in villis, vicis, aut agris Episcopi ordi-

nari, sed visitatores, qui circumueiant, constet. Et in cap. non debere, 80. dist. Carthag. 2. can. 5. Vt dioceses, quæ Episcopus nunquam habuerit, non habeant, nisi accedente tempore, crescentis fide, multiplicatione Dei populus desiderauerit proprium habere Rectorem. Carthag. 3. can. 42. Tolet. 12. can. 4. Vt in locum, villula supradicta Aquis deinceps Sedes Episcopalis non moueatur, nec Episcopus illic ultra constituatur. Gregorius Magnus ad August. Anglorum Episcopum, ibi: Memor quod in sacris canonibus præcipitur, ut minimè in villulis, vel modicis ciuitatibus ordinentur Episcopi. Innoc. III. lib. 14. regestr. epist. 149. Illustrat ultra congestos à Barbois in præfati, Hallierius de Episcoporum necessitate lib. 2. epist. 3. Balfamon in dict. can. 6. Concilij Sardie. Lemaitre lib. 2. de iur. Epist. cap. 12. & de Episcoporum institutione, Solorzanos lib. 4. poli. cap. 5. & tom. 2. lib. 3. cap. 5. lal. Lanos. varior. lucubr. tit. 4. de elect. cap. 1. Petrus Gregor. de benefic. cap. 14. Item Petrus Gregor. lib. 1. de repub. cap. 1. Rodericus Caro in antiquis. Hist. cap. 13. Bulqueius in notis ad Innoc. III. lib. 1. epist. 5. Claudius Espenceus in epist. 1. ad Titum, cap. 1. digress. 1. Turrianus pro comitibus Apostolorum lib. 2. cap. 16. & lib. 3. cap. 8. Cellotius lib. 4. de hierarch. cap. 12. 3. final. Frances de Eccles. Cathed. cap. 4. per tot. Dartin ad dist. 101. Hieronymus Moscon. de Alais. Eccles. 1. p. cap. 15. Desiderius Hetseld. de antichrist. rei indic. lib. 2. cap. 15. Hallier. in vindictis Sardan. lib. 2. cap. 2. fol. 227. Christ. Lupus in can. 6. Concilij Sardie.

Sed in præsentem assertionem pro dubitanti ratione insurgit. Ad commodiorem populorum instructionem, & disciplinam longe congruentius est, vt cuiuslibet Ecclesie ciuias in vico,

3.
TRADITUR
SAYO DE
STANDI.

aut pago constructæ Episcopus præficiatur; eum ita melius, ac facilius fideles instrui, ac mysticis fides imbui possint: & ita quilibet Ecclesiam suo pastori adhaerere debere docuit D. Cyprianus *epist. 69. ibi: Sacerdoti vobis admodum, & patri suo grege adhaerens. Quam Episcoporum necessitatem, & vtilitatem agnoscetes veteres Ecclesie Patres, etiam in pagis, & oppidulis Episcopos constituebant, ut testetur Sozomenus lib. 7. cap. 9. ibi: Per Syriam cum ciuitates sint modice, vnum duntaxat ha omnes Episcopum habent: apud alias vero nationes reperies contrarium, ubi & in pagis Episcopi ordinantur, sicut apud Arabes, & Cyprios ego comperi, & apud Nouariam, ac Memonistam eos, qui degunt in Phrygia. Quare Sozochus *epist. 67.* meminit Episcoporum creaturam in vicis Palæstinae, & Hydruntæ: & ait se ad eos accessisse, ut perscrutaretur quatenus de eligendo Episcopo deliberarent. Et *epist. 76.* testatur Olusianis vicis quiddam incolæ Episcopi creatione opus fuisse. Innumera etiam exempla præstat Episcoporum in vicis ordinatorum: Sabociensis, & Pontensis Episcopi prope Romam, vnum, aut alteram domum sui Episcopatus habent; idque facilius patet peruenti Concilio tum subsecutione. In Concilio Arelatensi 1. subseribit Gregorius Episcopus de loco, qui est in porta Romæ: locum verò istum sine nomine fuisse ciuitatem obuiem nemo cogitauit: ergo quia in pagis, & oppidulis licet Cathedras Episcopales erigeret. Augeret hæc dubitandi ratio ex eo, nam non solum in vicis, & pagis, verum & absque vllis locis consecrati Episcopi legimus, de quibus in Concilio Vemensi *can. 13.* canctum. De Episcopo *organibus, qui parochias non habent, nec scimus de ordinatione eorum qualis fuit, placuit iuxta insinuat Sanderum Patrum, ut in aliorum parochia ministrare, nec illam administrationem facere debeant sine Episcopi (cuius est parochia) insinuat. Idem habetur in Concilio Carthag. 2. *can. 2.* Carthag. 3. *can. 10.* Quare in Concilio Masi-con. 2. subseribunt Episcopi sedes non habentes; & hos Episcopos Scotos appellauit Patres Concilij Cabilon. 2. *can. 43.* cuius nomenclaturæ rationem illustrat Ciron. *lib. 1. obs. cap. 13.* quare in *canon. 6.* Concilij Valent. Hisp. canctum, ne quilibet ordinetur Episcopus, qui prius se localem futurum fore non promittat.**

Quæ dubitandi ratione non obstante vera est præiens assertio, pro cuius expositione secundum est, ex dispositione Anacleti canum fuisse, ut in locis, ubi apud Gentiles erant Primates Flaminum, Patriarchæ constituerentur, ubi Archiepiscopi erant, Archiepiscopi ordinarentur, *cap. 1. 99. dist. cap. in iura 2. 30. dist.* & ita iuxta ciuilem, & politicam gubernationem Metropoles, & dioceses erigebantur: quod & canum fuit in Concilio Chalcedon. *can. 17. ibi: Si ciuitas aliqua à Principe innouata fuerit, ciuilem, & publicam formas ecclesiasticarum quoque parochiarum ordo consequatur.* Synodus 6. Trul. *can. 38.* late probat Francus de Eccles. Cathedral. *cap. 1.* immo & Apostolus ipso obtem ecclesiasticum in prouinciis distribuissit ad exemplum dispositionis ciuiliis, quæ per illas tempestates vigeat in Imperio, docet probat P. Marcha *lib. 6. concord. cap. 1.* Non tamen adeo rigida fuit hæc disciplina Ecclesie, ut nunquam in minoribus pagis Episcopi ponerentur. Plerumque enim legem hanc infringere priuilegia regionum, ac prouinciarum

D. D. Gual. in Decretal. Tom. V.

consuetudo; nam eum ampliores erant Episcopatus, quam ut eis Episcopi vnus in ampla ciuitate degentis cura sufficere posset, nullam verbum dignitatis habebant rationem, satis patentes in oppidis, ac vicis Episcopum constituit, quàm Episcopali solitudine defuit. Necnon auctoritas Principum secularium plurimum in hoc præualuit. Sic Phadimus Amale Metropolitani, Neocesareæ urbi, in qua decem & septem fidelium, non amplius, erat numerus, Gregorium Thaumaturgum primum constituit Episcopum, iussu Gregorio Nysseno in vna Thaumaturgi. Similiter diuisa in duas prouincias Cappadocia Valentis imperio, Basil. Cæsariensis Metropolitani, ut quodam modo damnum faceret, Salsimonum Ecclesiam erexit in Cathedrali, & Gregorium Nazianzenum in ea Episcopum ordinauit, ut testatur ipse Nazianz. *orat. 20.* & seferre Gregorius præfeyerit in eius vna. Quis autem esset Salsimonum locus, Gregorius ipse deseribit carmine de vici sua:

In regia media vix est vicus finis

Qui scindit in vici se vici,ymphis carent.

Quæ plurimos quoque in Africa, & in Ponticis regionibus Episcopos exiguorum oppidorum constitutos olim fuisse antiqua monumenta produunt: & certe Ioannes XXII. in extantissimi *Saluati, extranaganti Nuper, de præbendis & dignis.* ob amplitudinem Tolosani Episcopatus alias Episcopales sedes erexit in vllis Laberenii, sancti Pauli, aliisque exiguis oppidis, ut testentur ipsorum Episcoporum historiam tradunt Fratres Sacram. *tom. 2. & 3. Gal. Clorij.* Etiam Principes seculares sæpius in vicis, & oppidis Episcopos constitui curarunt. Vnde eum Stephanus olim Emeritenis Episcopus iussu Vmbæ Regis Gothorum ibidem in suburbio Toletano in Ecclesia Prætorienis Episcopum præter morem & consuetudinem Ecclesie instituit, penitentia ductus Patres Concilij Tolet. 12. cum lachrymis adonius est, veniamque labefactæ discipline precatus: quod factum Patres improbant, ac subueniendos censuerunt Episcopos non modò ab eo suburbio, verum ab aliis quoque obuiis, ac ignobilibus locis, in quibus per voluntatem Vmbæ Regis factant institui. Et ita Patres sanxerunt. Et ideo, quia indifferente, & facillimo assensu iussu Vmbæ Principis institutus patens nouam, & iniussu illis Pontificis Sedis prædilectionem indaxerit, ubi canonica iussio ad fieri omni ratione reseruit, prædilectum idem vir postquam humo, medicamine nostri præcepti, & sibi dari veniam petiit, & quid possimum oportere fieri de persona eius, qui illic ordinatus fuerat, nostris erit sententiæ decernendum populi. Et quibundam verbis interiectis, quibus proferunt in medium veterem Patrum, ac Conciliorum sententiæ de maiestate & nobilitate Sedis Episcopalis, tandem Patres ita concludunt: Si in locum citula supradicta Aquis deinceps Sedis Episcopalis non mouetur, nec Episcopus illius vicis constituendus existat. Hic tamen Cuiusdam, qui contra maiorem decreta illic videtur institutus fuisse Episcopus, nullis canonum erit ad condemnationem sui sententiis viciandus: quia non auditione, sed Prin. ipsi impulsione illic constitutus ordinatus, & ideo illi hoc remedium humanitatis concedimus, ut in Sede illa decedens cuiuslibet Episcopi transducatur, & prædilectus locus sub mensura deinceps infirmis infirmis, non Episcopi ultra priuilegia

SC

privilegio fructu, sed sub Altitatis regimine, sicut hucusque fuit, et in modis omnibus mancipandus. Similiter cum in Castro Dunensi, qui vicus est in Diocesi Carnotina, Agidius Episcopus Rhenensis ordinaret Episcopum Promotum, conquectus fuit in Concilio Parisiensi 4. Pappolus Episcopus Carnotensis; & Patres ita decreverunt: Dominus Pappolus Episcopus mediocritatis vestra detulit in querelam, in Castro Dunensi, parvitas denique Carnotina, quod castrum nec ad territorium civitatis vestrae, nec ad vestram provinciam manifestum est pertinere, à vobis contra omnem rationem, & contra canonicam disciplinam Episcopum consecratum. Et licet secundum pristinam beatissimorum Patrum, decreta penitus huiusmodi excessus in vestra iurisdicte acerbis coerceri; sed nos charitatis iura servantes, beatitudini vestra indicamus, ut presbyterum ipsum nomine Promotum, qui omnia severitatis cunctis à vobis dicitur tam leniter consecratum, ut iuste debeat de gradus ipsius dignitate deponi, sicut canonum consuetudo sancit, ad vos evocatis, vel vobiscum retineatis, et iniuriam nos Ecclesia, nec sacerdoti suo ulterius debemus irrogare. Refert P. Marcha part. 1. concord. lib. 2. cap. 9. qui lib. 4. cap. 13. probat novam creationem Episcopatus fieri posse à Pontifice ex consensu Principis seculatit; & plura de erectione Ecclesiarum in Cathedralium, aut Metropolitani tradunt Danti. ad dist. ult. Solorzani tom. 2. de iure Ind. lib. 3. cap. 4. num. 1.

5. Ratio autem cur tot sacris canonibus cautum sit, ne in vicis, & pagis Episcopi constituantur, assignatur à B. Leone in presenti, ne videlicet vilescat Episcopalis dignitas propter locorum ignobilitatem, & ut loci malecite infamati docerentur homines, de Episcoporum gradu, ac infusa magnificentie semper cogitare. Accedit, nam in civitatibus frequentes plures sunt presbyteri, qui ut Consilarii adesse possunt Episcopo in negotiis arduis. Item propter celebritatem vrbis facile adiri posset Episcopus, ut si cur ad celeberrimam urbem omnes vicos, villas, oppida iudiciorum, mercatores, & aliorum negotiorum causâ concenire oportet; ita & religionis gratiâ commodè concurrerent. Accedit, nam nemo locetam ponit sub modio, sed super candelabrum: ideo dignitatum ecclesiasticarum culmen, lucem humani generis, faciem religionis, ac pietatis oportuit loco nobili, excelso, & illustri consistere: vnde ne assidue, si passim constituerentur Episcopi, eorum dignitas vilesceret, quæ in summa veneratione apud fideles debet esse; ideo in presenti, & tot canonibus statuitur, ne in vicis, & pagis, sed in civitatibus, & locis populosis Episcopi ordinarerentur.

6. Nec obstat dubitanti ratio super expensa ex epistola 69. D. Cypriani, cuius auctoritate motus Doctor Kellionius existimavit, dari non posse Ecclesiam particularem sine Episcopo: quem doctè refellit Nicolaus Smithus in discussione aliquantum assertionem ipsius Doctoris. Nec illi fauet D. Cyrtianus, quia responderi potest, D. Cyrtianum non definire plebem adunatam esse Ecclesiam, & gregem adhaerentem particulari sacerdoti, ac Pastori; sed indefinitâ sacerdoti, & Pastori quod tamdiu in nos quadrabit, quamdiu Episcopum, & Pastorem nostrum agnoverimus Romanum Pontificem. Quid quod S. Cyrtianus loquatur de ordinariis Pastoribus

potestatem habentibus in loca, & personas, catholicos, & hereticos permanentes, & non solum ad beneplacitum: vnde conficitur, & eius limitationem non competere delegato, sed adhuc necessarium nobis erit immediatum, & ordinarium nostrum Pastorem retinere Summum Pontificem. Ceterum ut quæ Cyrtiani verbis subest sententia, aperiat, prænotandum est, dictam epistolam scriptam fuisse ad quendam Florentinam, siue Florentinam, cognomento Popianum, qui ut addit Pamel. in suis ad illam epistolam annotationibus, hereticos erat à secta Novati, & per incantam, credulamque nimis temeritatem, confictis adversus B. Cyrtianum criminibus, fidem commodaverat, ob quæ merito deferendum à grege suo sanctum, perinde ac si verus eorum non fuisset Episcopus, arotabat. Contra hanc falsam & seditiosam calumniam probat, non ille quidem, Ecclesiam Episcopo destitutam non esse particularem Ecclesiam, sed Ecclesiam, cui verus, & legitimus præsit Episcopus; dividentem se tamen, & per schisma ab illo decedentem, reverâ Ecclesiam omnino non esse, sed schismaticam congregationem. Quod hoc ita se habet, ipsa Cyrtiani verba arguuntur sunt; cum enim ex sacra pagina, Iohannis cap. 6. citasset: Nos credimus, & cognovimus, quia in eis filius Dei vini; addit: Laqueus illic pernos, super quem edificata fuit Ecclesia, Ecclesia nomine ducens, & ostendens, quia estis commixti, ne superba obedire volentium multitudine distendat, Ecclesia tamen à Christo non recedit, & illi sunt Ecclesia, & plebs; tanquam sacerdoti adnotat, & Pastori sue grex adherens. Vnde scire debet Episcopum in Ecclesia esse, & Ecclesiam in Episcopo; & si quis cum Episcopo non sit, in Ecclesia non esse, & frustra sibi blandiri est, qui pacem cum sacerdotibus Dei non habentes obsequium, & latenter apud quosdam communicare se credunt, quando Ecclesia, quæ catholica vera est, scissa non sit, nec divisa, sed sit vixque connexa, & coherentem sibi invicem sacerdotum glumine capulata. Manet ergo D. Cyrtianum non asserere, dari non posse Ecclesiam particularem absque Episcopo, & per consequens in vicis, & minoribus civitatibus eos non esse necessarios, nec constitui debere. Nec obstat augmentum ipsius difficultatis, quia verum est, olim ex causis supra relatis non nunquam Episcopos constitutos fuisse in locis, & pagis minus populosis: quod postea variis canonibus prohibitum fuit, ut probatum manet.

Sed supra traditis obstat textus in canone 10. Concilij Antioch. in illis verbis: Qui in vicis, vel possessionibus Chorepiscopi nominantur, quousque manus impositionem Episcopatum perciperint, & ut Episcopi sint consecrati, tamen sentia Synodo placuit, ut modum proprium retineant, et gubernent subiectis sibi Ecclesiis, eorumque moderamine, curaque contenti sint. Ordinem etiam testantes, & subdistinguentes, atque exorcistas, quibus promissiones ista sufficiant. Ex quibus verbis deducitur, in vicis & pagis Episcopos constitui posse. Ego non rectè in presenti asseritur, tamdiu in civitatibus, & maioribus populis Episcopos ordinari debere. Pro cuius canonis expositione examinandum venit, vtrum Chorepiscopi, qui olim in vicis, & pagis consecrabantur, quorumque mentio fit in Concilio Nicæno, can. 4. Neocesæni. can. 13. Ancy. cap. 12. Rhegensis can. 3. Hisspalensis a. 7. Metensis sub Stephano VI. can. 5. Meldensis can. 44. Parisiensis can. 27. cap. 1.

TRADE
VTR
RATIO
DE
CIVITATIBUS

DISPOS
VITAE
DEBITAM
RATIO.

7.
EXPO
VTR
RATIO
DE
CIVITATIBUS

cap. 1. diff. 68. cap. 1. diff. 69. essent veri Episcopi, an verò tantum presbyteri. Et eos verè Episcopos fuisse, probatur primò ex dicto canone 10. Concilij Antioch. & ex Concilio Ancyran. celebrato anno 314. can. 12. Meldenis can. 44. vbi illis permittitur ordinarè leutores, & subdiaconos, cum hoc proprium sit Episcoporum, ut probatur in cap. 3. de temporibus ordinis. & ex canone 10. Concilij Barchinon. i. sub Recharedo: Felice IV. relato in cap. tabernaculum 2. c. si cui 11. de consuet. diff. 1. vbi etiam refertur, licuisse Chorepiscopis Ecclesias consecrare; quod munus proprium est Episcoporum, cap. agnum, vbi probatur, de consecr. Ecclies. Deinde idem fuisse ex dicto Concilio Antiocheno can. 8. vbi cauetur, ne presbyteri, qui sunt in agris, literas canonicas dare possint, Chorepiscopi verò interpretabiles illas dare valeant. Ex quibus deducitur, discrimen versari inter presbyteros, & Chorepiscopos, quod nullum aliud esse potest, nisi quod Chorepiscopi essent veri Episcopi; unde Episcopi villani appellantur lib. 1. capitul. cap. 9. & lib. 5. cap. 168. & sequenti. Facit tandem pro hac sententia Nicolaus I. in quadam epistola ad Rudolphum Archiepiscopum Bituric. relatus ab Hincmaro Rhenensi ad calcem suorum opuscul. pag. 716. vbi cap. 1. Pontifex ita scribit: Chorepiscopi asserunt multis esse in rebus vestris ordinationes Presbyterorum, & Diaconorum officia, quos quidam Episcoporum deponunt, quidam vero deuotè conseruant. Nos vero diuini, & dei innocentis operante potestati, nec velle debere fieri reordinationes reuocatas conseruationi. Ergo quia Chorepiscopi, ut veri Episcopi ordines conferre valebant.

Contrarium verò, immò Chorepiscopos presbyteros honorabiliores, & primi gradus fuisse, an verò Episcopos, probatur ex epistolis 4. alibi 5. Damasi de Chorepiscopis, & 86. siue 88. Leonis: ex quibus commemorata alia epistola comperta. & Ioanni III. adscripta textu tom. 3. Concil. editionis Senerini Bini; illarumque fragmenta habentur apud Gratianum in cap. quatuor 4. can. sequent. 68. diff. cap. per illicitam 3. 9. quæst. 1. cap. per illicitam 25. 1. quæst. 7. cap. si Petrus 8. quæst. 1. Idem probatur ex Gelasio I. epist. 9. ad Episcopos Lucania, §. nec minus, iunctis Concilio Neocastr. can. 15. Nicæno 1. can. 8. vbi Chorepiscopi presbyteri appellantur ordinati in locum 70. seniorum. Secundo idem probatur ex eo, quia illis prohibetur munia Episcopalia obire in Concilio Regiensi can. 3. Hispani can. 4. can. 7. Pacifici sub Gregorio IV. & Ludouico can. 47. Meldenis sub Sergio a. can. 44. Metensi sub Arnulpho can. 5. epistola Montani Episcopi post Concilium Tolet. 2. in capitulo Caroli lib. 1. cap. 9. & lib. 5. cap. 168. & lib. 6. cap. 119. & 284. & lib. 7. cap. 187. cap. 310. 318. & 328. apud Pacianum serm. de baptismo, & epist. 5. ad Symonem. Quibus auctoritatibus moti hanc sententiam tenebant Ayala de tradit. Ecclies. part. 1. considerat. 4. Turtianus ad can. 54. Concilij Nicæni. Crespetius in summa, verbo Chorepiscopi, Lindembreg. in Glossar. eod. verbo, Vazquez 3. part. in 1. part. diff. 218. cap. 4. num. 67. Hentiquez in summa lib. 10. cap. 23. §. 2. Barboz. in cap. quatuor 4. num. 6. 68. diff. & lib. 1. in reuoc. Ecclies. cap. 15. & 16. & de pænel. Epist. part. 1. tit. 1. cap. 2. num. 21. Cironius ad tit. de offi. Archiepiscopi. Lantmeier, de veteri clerico lib. 2. cap. 97. §. maximum. M. rinos lib. 1. exercit. Ecclies. cap. 11. Ioannes Caballarius in notitia Concilij, in Concil. Ancyran. lib. 51. Vnde in Concilio Augustano sub

D. D. Gual. in Decretal. Tom. V.

Paulo III. cap. 7. in princip. Græcorum Chorepiscopi comparantur nostris Archidiaconis, siue Archiepiscopis, ut apud Siebertum in ibidem, anno 384. & diaconos visitatores dicuntur in Concil. Laodic. can. 57. Vicarij Episcoporum in capitularibus Caroli lib. 7. epist. 310. & 328. & forsitan presbyteri in Concil. Bithynar. a. can. 56. post Caballus, adp. Marin. de sacris ordin. cap. 1. c. 4. cap. 1.

In hac canonum varietate veritatem credo sententiam eorum qui agnoscerunt olim duo fuisse genera Chorepiscoporum; vnum eorum, qui verè erant Episcopi in aliens diocesi commotantes absque iurisdictione Episcopali; aliud verò eorum, qui erant presbyteri tantum, tamen utrique in vicis, & pagis curam gererent animarum, tanquam parochi, seu Vicarij Episcopi constituti, propter pauperum curam, qui in agris, & villis debebant: qui propterea quasi Coepiscopi dicebantur. Concil. Nicæno. 1. can. 54. in collect. Alphonsi Pissani: quippe dictio Chores, à qua nomen Chorepiscoporum derivatur, idem significat quod Latine oppidum, seu pagum, Damasia diff. epist. 5. versic. Ad villam. Inter primos autem, & secundos magnum illud discrimen versatur, quod Chorepiscopi primi à tribus Episcopis consecrabantur. Concil. Antiochen. can. 10. ibi: Adversus impossibilem Chorepiscopis susceperunt. Et cap. quoniam, in fine, 68. diff. ibi: Quoniam consecrationem habent Pontificatus, tamen non habent apicem, Idem quomodo verè sint consecrati Episcopi, non habet diocesana iurisdictionem. Alij autem Chorepiscopi non à tribus, sed tantum ab uno Episcopo, ut presbyteri consecrabantur. Leo Pontifex in diff. epist. 86. ibi: Omnia quaque maxime Concilia sancimus cum non esse Episcopum, qui minus quam à tribus Episcopis auctoritate etiam Metropolitani factus fuerit Episcopus; ideoque illos, quos Chorepiscopi vocatis, quia ab eis (ut audimus) sumus Episcopo, Episcopos non esse, nec aliquid de Pontificali privilegio agere debere prescriptum est, quoniam si nomen non habent, quoniam officium possunt habere, iuxta quam distinctionem faciliè caponantur iura suprà relata, ita ut Concilium Antiochen. & illi canonis relati pro pîna sententia procedant in primis Chorepiscopis, qui verè Episcopi erant, sed quia iurisdictionem, nec diocesam habebant, idem consentiente Episcopo ordinem consecraret, dicta can. 10. Concilij Antioch. vel eo absente, Concil. Hispan. diff. can. 7. ibi: Absente Pontifice, Doceantur Bassilanus, & Zonas in diff. can. 10. Concilij Antioch. Bellarmus lib. 1. de clericis, tom. 1. canon. cap. 17. & tom. 2. lib. 1. de sacram. Ordinis, cap. 7. ad finem, Suarez de consuet. disp. 11. sect. 2. num. 7. Louanea Varris lib. 1. de Episcop. & presbyteris, cap. 7. Balquero in notis ad Innoc. III. lib. 1. epist. 174. pag. 93. & epist. 125. pag. 79. Iuxta in notis ad Carm. epist. 240. Cellotus lib. 4. de hierarch. cap. 17. §. final. Sauracus in not. ad Siden. lib. 7. apud 8. Hallierus de sacris elect. 2. part. sect. 5. cap. 2. §. 2. num. 10. & in vindictis fol. 211. Gibalio, de clausur. regul. dispensat. 3. cap. 2. §. 2. num. 10. Magni Pæcepsotes, patrizque & Academiæ notæ deus, Illustr. D. Franc. Ramos pro Episcopis. Lesit. propos. vol. 6. §. 5. num. 159. D. Martinus Lopez de Montiberos in troil. de sacram. Ordinis, tit. 3. 1. part. num. 21. P. Marcha part. 1. comend. lib. 2. cap. 153. Frances de Ecclies. Cathed. cap. 1. num. 128. P. Bollo in eadem. class. 5. cap. 2. §. 4. Beyestineh.

51 3

9.
TABLE
DES VIES
DES
TIA.

in theatro, verbo Chorepiscopus. Macedo de clan, Perri lib. 1. cap. 3. P. Laura in sua epist. verbo Chorepiscopus, Darius de benef. lib. 1. cap. 2.

10.
EXPO-
SITA QUA-
DAM SUB-
SCRIPTIO
CONCII.
CHALCED.
DONT.

Secundò suprà traditæ assertioni opponi potest quædam subscriptio Concilij Chalcedon. part. 2. alia 2. ubi subscibit quidam Noë Episcopus Cephæ Castellæ: ex qua subscriptione constat, Episcopum illum ordinatum fuisse in castello: ergo quia in vicis, & pagis possunt Episcopi ordinari. Pro cuius difficultatis solutione dicendum est, castellum in ea subscriptione significare celeberrimum castrum aliquod, sub quo plura alia consistebant; cuius generis plura erant in Oriente. Phil. Berterius Pitba de trib. 1. cap. 6.

11.
EXPO-
SITA COM-
CIL. SARD.
DIGNES.

Deinde superiori assertioni obstat textus in Concilio Sardicensi, ubi Gaudentius Episcopus dixit: *Quisquisque nostrum, qui in canali constitutus est, cum progredieremur Episcopum videri, inquit transivimus, causas videmus, quæ tendas agnoscat; & si quidem eum ignorasset ire ad comitatum, requirit & illud, quod superius comprehensum est, nisi foris innotuit, facilius eundi permittitur: si verò properet desideria, & ambicionis ad comitatum pergat, nec in literis eius subscribitur, nec in communione recipitur.* Ex quibus deducitur, Episcopum in canali, & ita in vico, & loco minus populofo ordinatum fuisse, & per consequens non semper in civitatibus, & maioribus locis Episcopos constitutos fuisse. Pro cuius textus expositione sciendum est, canaliam esse publica loca, per quæ cursus publicus peragebatur, *lagentes 2. Cod. Theodof. de curiosis*, ibi: *Nec verò minus esse per singulas provincias iussimus, quippe sufficit duos tantummodo curas gerere, & publicum cursum gubernare, ut licet in canalibus publicis hæc necessitas excuseret, numerus tamen amplius esse non debeat.* Et Innocentius 15. *cod. Cod. de cursu publico*: ne sit cuiusquam tam insignis iudicis, qui parangarias, aut paramedos in ciuitatibus ad canale debeat commovere, quominus marmos priuatum vehiculum provinciarum appellentur. *Apuleius lib. 6. & 9. de Assine aurea*: ootaurunt Gimbet. lib. 3. de officio domus, cap. 15. Cuius lib. 15. *obferu. 18.* Cironius

lib. 2. *obfer. cap. 14.* Vnde Episcopi in canali constituti in dicto canone Concilij Sardic. dicuntur quæ sedes habebant in cursu publico, via videlicet quæ equi publici dispositi erant per stationes singulas ad iter faciendum, de quibus Athanasius apule. 2. postquam enumeravit Episcopos, qui ex Hispania, Gallia, & aliis provinciis Sardicam conueniant, ait: *Isti qui venerunt ex canali Italie, erant Probatus, Viator.* Obferuntur, & ita exposuerunt dictum canonicum Cironius *disto lib. 2. obferu. cap. 14.* Lunsdmet, lib. 2. de veteri clerico & mon. cap. 55. 1. Gothofr. in 1. 2. *Cod. Theodof. de cursu publico.*

Tandem suprà traditæ assertioni obstat textus in canone 45. Concilij Cabilon. ubi agitur de Episcopis vagantibus sine titulo, & sede, quos PP. appellant Schotos: vnde constat non solum in pagis, & modicis oppidis, verum & sine certa sede Episcopos consecrari posse. Igitur non rectè in præfenti dicitur, eorum in maiotibus ciuitatibus Episcopos esse instituendos. Pro cuius canonis expositione iam obseruauit Cironius lib. 1. *obferu. cap. 13.* olim in plerisque regionibus Episcopos ordinatos fuisse, ut adiutores aliorum Episcoporum, ut eum hi poterat varia impedimenta negotiis, & necessitatibus suarum Ecclesiarum superesse non possint, illi Episcoporum officio fungentur: & ita erant Episcopi incertæ sedis, quales aduentij, & conductij, ut fuit sanctus Bonifacius, donec per Zachariam Papam cecus fuit Moguntie Præsul; & ipse sanctus Bonifacius ita ordinauit Episcopum Gambaldum, ut referunt in Metropoli Salisburg. tom. 2. anno 732. & plures ex eis subscipservant in Concilio Matifcon. 2. & de eis, atque eorum paupertate in chronico Archiep. Bremensium ita legitur: *In Concilio Laterani erat à Papa consecrati Episcopi duo Anglie, & duo Scoci 3. unus solo equo veniens, alter pedes.* Et Episcopi, qui tantum vnâ domum habebant, meminit Bolfamon in can. 17. *Synodi Chalced.* Dicebantur autem illi Scoti, qui in Scoria eorum vsus magis inusuerat, ut probat Cironius ubi suprà.

12.
EXPO-
SITA COM-
CIL. CAR-
BILON. 2.
CANAL.

C A P V T II.

Gregorius Petro Subdiacono Campania.

Sicut in iudiciis laicorum priuilegia turbare non cupimus, ita eis præiudicantibus Smoderatè volumus auctoritate resistere. Violentos namque laicos coërcere, non contra leges est agere, sed legi ferre subsidium. Quia igitur Deus dedit generi Felicis de Oricello, præfendum laici violentiam dicitur irrogasse, præfatamque rem illicitè detinere, ita vt viduitatis eius deiectione non misericordiam prouocare, sed eius inueniatur roborare malitiam: præcipimus experientie tue, vt tam contra præfatum virum, quam in cæteris causis, in quibus se asserit præfata femina præiudicium sustinere, nostræ ei solationis tuitionis impendas, nec à quolibet eam prægrauari permittas: ne vel ea, quæ tibi, salutè tamen æquitate mandantur, in aliqua inueniaris parte negligere: vel viduis, aliisque pauperibus, dum illic auxilium non inueniunt, ex huius iuneris profligentur longinquitate dispendia.

NOTÆ

1. a Gregorius. Ita etiam legitur in prima collectione, *sub hoc tit. cap. 2.* & reperitur textus hic in Regesto epistolarum ipsius Pontificis lib. 2. *indict. 1. epist. 5.* ex quo restituo litteram hu-

ius textus: de hoc defensore, & eius officio nonnulla adduxi in cap. 3. de elect.

b Violentiam. In rebus videlicet: vnde eadem ipsa vidua esset, & per consequens miserabilis persona, iudex ecclesiasticus adiri poterat, iuxta tradita in cap. ex literis, de foro compei. Vnde cognoscitur

clius quàm perperam in præfenti repetentes ex hac Gregorij epistola deduxerint, malefactorum laicum, non obstante quocunque priuile-

gio, per iudicem ecclesiasticum puniri possit quam doctrinam disputat in cap. 8. de foro com-
petenti.

CAPVT III.

Ex Concilio² Lateran.

Cum & plantare sacram religionem, & plantatam fouere modis omnibus debeamus, nunquam hoc melius exequemur, quàm si nutrire quæ recta sunt, & corrigere quæ profectum veritatis impediunt, commissâ nobis auctoritate curemus. Fratrum autem, & Cœpiscoporum nostrorum vehementi conqueſtione comperimus, quod Fratres¹ Templi, &² Hospitalis, & alij quoque religiosi professionis, indulta sibi ab Apostolica Sede excedentes priuilegia, contra Episcopalem auctoritatem multa præsumant, quæ & scandalum generant in populo Dei, & graue pariant periculum animarum. Proponunt enim, quod Ecclesias recipiant de manibus laicorum, excommunicatos & interdictos ad ecclesiastica sacramenta, & sepulcrum admittant, in Ecclesiis suis præter eorum conscientiam & instituant, & amoueant sacerdotes: & fratribus eorum ad elemosynas quærendas cunibus, cum indultum sit eis, ut in aduentu eorum semel in anno Ecclesiæ aperiantur, atque in eis diuina celebrentur officia, plures ex eis de vna, siue diuersis domibus ad locum interdictum sæpius accedentes, indulgentia priuilegiorum in celebrandis officiis abutuntur, & tunc mortuos apud prædictas Ecclesias sepelire præsumunt. Occasione quoque fraternitatum, quas in pluribus locis faciunt, robur Episcopalis auctoritatis eneruant, dum contra eorum sententiam sub aliquorum priuilegiorum obtentu munire cunctos intendunt, qui ad eorum fraternitatem volunt accedere, & se conferre. In his quia non tam de maiorum conscientia, vel consilio, quàm de minorum indiscretione quorundam excedit, & remouenda ea, in quibus excedunt, & quæ dubietatem faciunt, declaranda decreuimus. Ecclesias sanè, &³ decimas de manu laicorum sine consensu Episcoporum, tam illos, quàm quoscunque alios religiosos recipere prohibebimus, dimissis etiam quas contra tenorem istum moderno tempore receperunt; excommunicatos, & nominatim⁴ interdictos, tam ab illis, quàm ab omnibus aliis, iuxta Episcoporum sententiam statuimus euicandos. In Ecclesiis verò suis, quæ ad eos pleno iure non pertinent, instituendos presbyteros Episcopis⁵ præsentent, ut eis quidem de plebis cura respondeant, ipsi verò pro rebus temporalibus rationem exhibeant competentem. Institutos autem Episcopis inconsultis non audeant remouere. Si verò Templarij, siue Hospitalarij ad ecclesiasticum interdictum venerint, non nisi semel in anno ad ecclesiasticum admittantur officium, nec tunc ibi corpora sepeliant defundurum. De⁶ confratribus hoc statuimus, ut si non se prædictis fratribus omnino reddiderint, sed in suis proprietatibus duxerint remanendum, propter huc ab Episcoporum sententia nullatenus eximantur: sed potestatem suam in eos, sicut in alios parochianos suos exerceant, cum pro suis excessibus fuerint corrigendi. Quod autem de prædictis fratribus dictum est, de aliis quoque religiosi, qui præsumptione sua Episcoporum iura præripiunt, & contra canonicas eorum sententias, & tenorem priuilegiorum nostrorum venire præsumunt, præcipimus obseruari. Si autem contra hoc institutum venerint, & Ecclesiæ, in quibus ista præsumperint, subiaceant interdicto, & quod egerint irritum habeatur.

NOTÆ.

¹ *Ancanensi.* Ita etiam legitur in prima collectione, sub hac tit. cap. 3. & extat textus hic in ipso Concilio Lateran. cap. 9. pro ut in præfenti transcribitur. De eo Concilio nonnulla adduxi in cap. 27. de reſcriptis.

² *Templi.* De quibus, & eorum misero exitu egi in cap. 16. de iudic.

³ *Hospitalitas.* Qui insidâ dicuntur Hierosolymitanis, de quibus, & eorum periculo ostendit, originem, & progressu plura conſeſſerunt D. Rochus D.D. General. in Decretal. Tom. V.

Pietro tom. 1. Sicilia sacra. in noſſria Ecclesia Melitensis, Guſteterus in chron. ſæculo 10. anno 119 Cartillo in ſuis annalibus, anno 1104. plures conſeſſi à Don Ferdinando de Scaño in propugn. ſacra huius religionis, diſſept. 1. cap. 1. num. 3. & nos nonnulla conſeſſimus in cap. 10. de ſepulc.

⁴ *Ecclesias & decimas.* De Ecclesiis non accipiendis de manu laici egi in cap. 43. de elect. ſimiliter de decimis ab eis non accipiendis inconsulto Episcopo egi in cap. quædam autem, de incorp. terram. ubi commentarium huius prioris partis inuenies.

Sc 3 c Ex

c. *Excommunicatus.*] Cum quibus etiam communicare exempti non possunt, ut dicemus infra in cap. nulli, de fect. excom.

f. *Inereditus.*] Aliis exempti etiam non seruantes interdictionem grauiter peccant, & puniuntur, ut probatur in cap. fin. de excess. Prælati.

g. *Præsentem.*] Iuxta tradita in cap. t. de statu monach. cap. i. de capel. monach.

h. *De causis fratribus.*] Ordo Hierosolymitanus ultra Equites, fratres, & capellanos, habet etiam confratres deferentes mediam crucem albam, quam vocant Tau, quod status ipsius Ordinis densius quoque appellantur: ut admittantur in Ordine, debent probare se naturalibus honestis esse proceratos, & à ludæis, aut Mahometanis non ducere originem, probè, ac non flagitiosè viuasse, nullam per se ipsos exercuisse artem fordadam, vel mechanicam, & præterea tenentur aliquam partem honorum suorum ipsi Ordini offerre, & ita admissi signum donatorum vestibus infutum publice deferre, ut cauetur in statutis ipsius Ordinis, tit. i. num. 30. cum sequunt. de quibus plura Petrus Gregorius lib. 15. synag. cap. 34. n. 8. Mendo de Ordine. Adit. disquisit. 2. quæst. 1. num. 14. D. Ferdinand. de Scaño in propugnac. religionis Hierosolym. discept. 4. cap. 1. Illi verò non sunt religiosi, ideoque testamentum facere possunt, ut probat idem Scaño discept. 9. cap. 5. num. 57. nec amittunt beneficis secularis per ingessum in ipso

Ordine, ut probat idem Scaño discept. 11. cap. 2. num. 31. à collectis immunes non sunt: idem Scaño discept. 12. cap. 2. num. 4. officia secularia habere possunt, idem discept. 13. cap. 5. num. 27. Circa exemptionem autem eorum, & priuilegium fori Aloysius Kiccius tom. 4. resol. 177. num. 3. Thomas Delbene de immuni. Eccles. tom. 1. cap. 1. dub. 11. scilicet. 2. num. 12. existimantur, similes confratres priuilegio fori gaudere, ideoque puniendos esse à Magno Magistro ipsius Ordinis. Sed contrarius sententia communior, & receptior est, quia confratres hi merè seculares sunt, cum non emittant tria vota substantialia religionis, & ita priuilegiis regularia illis non conueniunt. Concil. Trident. sess. 24. de regul. cap. 11. quæ doctrina aperte probatur ex hoc textu, & conformis est constitutioni Pontificis Gregorij XIII. in Bulla quæ incipit, *Circumfusa*, edita die xxv. Nouemb. anno 1580. & docuerunt Castaldi, de iudiciis lib. 1. tit. 1. discept. 2. num. 455. Mendo de Ordine. Adit. disquisit. 2. quæst. 2. num. 84. Naibona in lib. tit. 5. Glossa vni. lib. 1. recipit. Azucedo in l. 1. num. 11. tit. 14. lib. 5. recipit. Bobadilla lib. 2. polit. cap. 18. num. 233. Giurba consil. 22. Diana part. 3. tract. 1. resol. 51. Hieronymus Garcia tom. 1. polit. regul. tract. 1. difficult. 5. dub. 4. punct. 2. Pellizarius tom. 1. manual. regul. tract. 1. cap. 5. num. 27. Scaño in propugnac. discept. 13. cap. 2. num. 24.

CAP V T IV.

Idem Venerabilibus fratribus ^a Archiepiscopis, ad quos litera ista peruenerint.

Dilecti filij nostri fratres Hospitalis Hierosolymitani transmissa nobis conuentione monstrant, quod vos eisdem de ^b malefactoribus suis iustitiam facere non vultis, priuilegia ipsorum inspicere contempnit, nec ipsos elemosynas quærere in vestris parochiis, aut fratres ipsorum ^c sepelire aliquatenus permititis. Quoniam igitur iidem fratres multis sunt libertatibus, & ^d priuilegiis à Romanis Pontificibus præmuniti, quæ ut nostris temporibus infringantur, nolumus sustinere: s. v. per A. s. m. quat. iamdictis fratribus in iis, quæ sibi à Romana Ecclesia noscuntur indulta fuisse, nullam prorsus molestiam faciatis, nec ea sibi contradicere, vel negare aliquatenus audeatis. Si enim de vobis in veritate talia de cætero poterimus comperire, per certo sciatis, quod non concessa priuilegia decurtabimus, cum nostris, & Ecclesie Romanæ scriptis authenticis obuiare minimè timeatis.

NOTÆ.

1. ^a *Archiepiscopis.*] Ita legitur in prima collectione, sub hoc tit. cap. 4. in hac verò textu additæ, & *Episcopis.* Et rectè, quia cum eis occurrunt frequentèr conuentiones, de quibus in præfati agit.

2. ^b *Malefactoribus.*] Quæ conuentione cessauit postquam ipsi Hierosolymitani priuilegium adepti fuerunt nominandi iudicem constructorem, quod concessit Pius IV. Clemens VII. Gre-

gorius XIII. Urbanus VIII. in bullis relatis ab Scaño in propugnac. discept. 15. cap. 1. vbi de iurisdictione Consecratoris late agit, & in quibus causis cognoscere possit.

c. *Sepelire.*] Postea verò priuilegium adepti fuerunt, ut non solum ipsi in propriis Ecclesiis, verum & alij, qui in ipsorum Ecclesiis sepulchram eligant, possint tumulari, cap. in nostra, de sepulch. vbi probatur.

d. *Priuilegiis.*] Quoniam epitomen tradit Scaño in diss. propugnaculo, discept. 16. per tot.

CAPVT V.

Idem^a Cantuar. Archiepiscopo.

AD hoc in Beatorum Apostolorum Principis Cathedra, Domino disponente, quamquam immeriti sumus constituti, vt plantare debeamus, quæ ad diuinum spectent decorem, & euellere, & eradicare eueamus, quæ obuia sunt rationi, & profectum impediunt salutis. Intelleximus sanè, quod Hospitalarij nominati excommunicatos contra prohibitiones Episcoporum ecclesiasticæ præsumunt tradere sepulture, non cogitantes, quàm graue sit eis in morte communicare, quos dum viuerent, Ecclesia à suo sinu pro eorum excessibus segregauit. Verùm quoniam huiusmodi præsumptionem, & temeritatem nolumus, nec debemus aliquatenus tolerare: f. i. per A. s. p. m. quat. prædictos fratres moneas, ac hortaris, & eis ex parte nostra præcipias, vt si quos in excommunicatione defunctos in cæmeteriis Ecclesiarum sepelierint, eos extra cæmeteria ipsa penitus eiciant. Quod si facere noluerint, hoc ipsum de his, quos in excommunicatione defunctos esse tibi confiteris, auctoritate nostra rem. ap. ob. exequaris.

NOTÆ.

^a *Antiquiss.* Ita etiam legitur in prima collectione, sub hoc tit. cap. 6. & post Concil.

Later. part. 31, cap. 5. De hac Metropoli nonnulli adduxi in cap. 2. de scriptis.

^b *Segregauit.*] Iuxta tradita in cap. sacris, de sepulture, ubi commentarius huius textus dedit.

CAPVT VI.

Idem Abbati & monachis^a S. Andrea.

SI de terra, quam habetis in parochia, d. v. iam per xxx. annos decimas Canonice de Plautio persoluistis, eas sibi de cætero integrè, oc. & ap. post. persolutis: licet enim priuilegiolorum Romanæ Ecclesiæ beneficium fratribus de Cister, indulgum sit, quod de laboribus suis nulli decimas, vel primitias persolvere debeant ex priuilegio tamen vobis indulta tanto tempore detrahere voluistis. Cùm liberum sit vnicuique iuri suo abrenunciare, eoque modo potestis vos in hac parte tueri.

NOTÆ.

^a *Ant. Andrea.*] Ita etiam legitur in prima collectione, sub hoc tit. cap. 9. & post Concil. Later. part. 38. c. 4. Monasterium hoc est Ordinis Cister. in diocesi Sagienfi, quod P. Matie de sancto Andrea Ordinis Cisterciensis appellatur in libro Csmere: cuius Ecclesiæ instauratam, aut perfectam à Regulari Abbate dedicauit Gaudfredus Episcopus Sagienfis anno 1151. vt refert Martineq. tom. 3. annal. Cister. anno 1148. cap. 19. num. 5.

Moneas de commun. cap. 8. num. 495. Statet tem. 1. de relig. lib. 1. cap. 20. Gataia de nobilitate, glossa 6. Amysa in l. 1. Cod. qui sponit, num. 18. Guicba consil. 59. Castillo de tertius, cap. 19. Caldas Pereyra de relig. 1.

Sed pro dubitandi ratione in præsentem assertionem ita insurgo. Priuilegium per non vsum non amittitur, unde in l. solutaria 12. Cod. de excusat. muner. lib. 12. docetur, quod si aliquis habet immunitatem à iurisdictione, non ob id, quod sponte eam suscepit, priuilegijs suis derogat: & in l. creditur 7. Cod. de usur. alunt Imperatores: Nec enim si aliquando ex consensu præstata sunt, obligationem constituunt. Ergo non rectè in præsentem assertio, per non vsum priuilegium amitti non soluendi decimas. Auguet hæc difficultas ex eo; nam priuilegium vt possit amitti per non vsum, debebat illud omittente communitas, seu persona, cui concessum est, vt probat Cbissling. dicta præf. 1. cap. 5. Sed priuilegium non soluendi decimas, de quo in præsentem non fuit concessum monasterio sancti Andrea tantum, sed vniuersæ Religionis Cisterciensis, vt probatur in cap. super, de decimis. Igitur omissione, seu negligentia Abbatis, & fratrum monasterij sancti Andrea amitti non poterat. Auguet deinde hæc difficultas ex cap. accedentibus, hoc tit. ubi in eadem specie priuilegijs decimarum assertitur, quod ad hoc vt illud amittatur,

2.
Iuxta vna
vbi tra-
dita ab
BASTIO.

COMMENTARIUM.

EX hoc textu loquens communiter deluctur assertio: Priuilegium amittitur per non vsum, Ecclesia tamen concessum post XXX. annos. Quæ conclusio probatur potest ex cap. cum accessissent, de consil. cap. pro uirorum 22. de prob. cap. ad Apostolicam, de regul. cap. accedentibus, hoc tit. 2. & final. ff. de veteran. l. 1. l. 1. frater 5. §. final. ff. de iure inuocant. l. 2. §. final. ff. de Decur. l. 2. Cod. de tabul. lib. 1. l. 3. Cod. de Decur. lib. 10. l. 1. Cod. de iure inuocant. impetrand. Illustrant vltra congestos à Barbosa in præfati, & de post. Episcopi alleg. 16. num. 11. Balboa in cap. Sententiarum, de præscriptis, num. 54. Bruno Chassling, de priuileg. regul. part. 1. princip. 1. cap. 5.

1.
CONSE-
LIO TRA-
DITUR, ET
PROBA-
TUR.

tut, desideratur perfectio quadragenaria contra habentem simile privilegium. Ergo non tunc in presentem affertur praefectio tricennale sufficere contra monasterium S. Anthonii, ut privilegium non solvendi decimas amittere possit.

Quia dubitanti ratione ita felici non obstant, vera est praesens assertio, pro cuius expositione sciri licet, iuxta librorum in cap. privilegia, 3. diff. privilegia dei prius leges, eo quod in prius fecerant: facit Fungius in eximio, ibi: *Privilegia nihil sunt aliud, quam ius singulare in certa alicuius persona, vel causa favore ac gratiam, propter aliquam naturalis aequitatis rationem indultum*. En quod privilegia in prius fecerant, sunt enim privilegia quodam beneficio à Principe indulta, *licet tale, ff. solus, maritus, l. sunt qui 16 ff. de re iudic. facit textus in l. privilegia 496. ff. de R. l. ubi Iureconsultus appellat beneficia ea, quae verè privilegia dicuntur in l. in omnibus 66. ff. cod. tit. quia Principis beneficio indulgentur propter prius fecerant, & favorem privilegij, cap. in his 30. ibi: *Diximus indulgentum; de prius, notatur P. Faber, & Gothofredus in dist. l. privilegia, Azor sem. 2. diff. lib. 3. cap. 22. & 23. Suarez lib. 6. de legibus, cap. 1. num. 3. Salas rod. tract. diff. 27. sect. 1. Hieronym. Garcia in pala. regul. tract. 8. diff. ult. 2. dub. 1. Prado sem. 1. Theolog. Atrata cap. 5. quest. 1. Belsold. in delictis. iur. lib. 1. Pandell. tit. de prius, quae privilegij, & beneficii voces promiscue usurpantur à Cassiodoro lib. 1. varior. c. 28. quia in genere saltem conueniunt, ut ex indulgentia Principis proficiantur; namque omne privilegium continet gratiam, beneficium, & indulgentiam Principis, & ex eius favore descendit, nec potest debitum dici. Suarez dist. lib. 8. cap. 2. num. 11. Sed non omne beneficium privilegium est, sicut nec dispensatio, nec rescriptum gratia, quia in his desest ratio propterea privilegij, quae in eo consistit, ut ad omnem actum generis privilegij immunitatem habeat is, cui datur est privilegium, quasi legis permissionem obtinuerit: sed beneficia, rescripta gratiae, & dispensationes indultae, ad vnum, vel alterum casum, tantum vires suas producant, nec legis rationem obviunt: quapropter privilegia, & rescripta, tanquam diversa specialibus titulis distinguuntur in hoc volumine libro 6. & in Clementinis; & ex ea differentia colligit Azor lib. 5. infra. cap. 22. quest. 3. quod licet in beneficiis casum sit, ne liceat uti gratia ante imperatus litteras in extraneis indultae, de elect. ad privilegia tamen haec doctrina non extenditur. Quod autem D. Iudorus in disto cap. privilegia, adiecit, privilegia prius leges dici, quia in prius fecerant, videtur sumptis ex Gellio lib. 10. noct. cap. 10. qui communes leges à privilegiis ita distinguit, quod leges sunt generalia iura pertinentia ad vniuersos ciues, privilegia verò sunt prius iura ad singulos homines pertinentia; quia veteres prius dicebant, quae non singulare dicimus, ut notavit Iacob. Gothof. in disto regula Privilegia. Vnde deducitur, non exigi ad privilegia formanda, quod singularibus hominibus concedatur, quia etiam posset vni communitati tribui, vel collegio, ut in dist. cap. his 30. de prius, dist. cap. Abbate 25. de P. S. vel certo generi personarum, veluti minoribus, clericis, religiosis, Ecclesiis, Militibus, eruditioribus, maritis, vel doctis, ut in dist. l. sunt qui, de re iudic. l. ff. veniri, ff. de bonis auctoris, indic. l. Cassiod. Cod. qui prius: nec ideo minus erunt privilegia, quia ipsa eueniunt, vel per-**

sonarum, vel casuum collectio habet se ad instat prius personae, quia ea patet maius communitatis, à cuius legibus eximitur. Lege autem decemviri casum fuit, privilegia ne concederentur, tabula non, his verbis: *Privilegia ne errantur*. Quam laudat Cicero lib. 3. de legibus, ibi: *Leges praefectissimae de 12. tabulis transactae duae, quarum altera privilegia tollit*. Et mox: *In primis homines leges ferre maluerunt; id enim est privilegium, quod quid est iniustum*. Et pro domo sua ibi: *Etiam leges sacrae, vetustae 12. tabulae leges priuatis hominibus irrogari; id est enim privilegium, quod nemo unquam tulit, nihil est crudelius, nihil perniciosius, nihil quod minus hoc ciuiles ferre possit*. Quae lex ab Atheniensibus accepta fuit, apud quos teste Demosthenes contra Aristocratem ita casum erat: *Nec lex de eis fecerat*. Illustrat Samuel Petrus ad ins. Atturn lib. 2. tit. 1. qui, & Iacob. Gothofredus in notis ad d. tabul. obsecratur privilegium in ea lege aliter accipi, quum vulgo hodie accipitur; videlicet pro iure extraordinario, & à communi exorbitante, quando lex specialis pro singulari persona rogatur, in qua obtinebat, & finiebatur, veluti lex de Menando, cuius meminit Consulatus in l. 5. §. ult. ff. de capitis altera de Hostilio Mancinio, cuius mentio fit in l. ult. ff. de leg. auctori. Videndi sunt Petrus, & Gothofredus ubi supra.

Ex hoc etiam principio, quod privilegia prius leges sint, inferitur, ad eo esse concedenda privilegia, qui legem concedendi potestatem habeat, ut probant D. Antoninus 2. part. 1. Thomas, tit. 19. cap. 1. Syluester in summa, verbo privilegium, quest. 2. Hostiensis in summa huius tituli, §. qui possit, Suarez dist. lib. 8. de legibus, cap. 8. Salas rod. tract. diff. 27. sect. 3. Vnde prouenit, competere Romano Pontifici potestatem indulgendi privilegia in vniuerso orbe, ut probatur à Gratiano post caput finale, §. item Hieronymus, 25. quest. 1. & in cap. constitutus 6. ibi: *Chm libertatis privilegium, vel potestatis praesens aliquibus Ecclesiis indultum: de religiosis domibus*. Latè illustrat Bronus Chassaign. de prius. Regul. regul. 1. proposit. 5. & est hoc accipiendum, dammodo hanc potestatem exerceat circa spiritualia, aut ecclesiasticis iura, quae ei subiunguntur, non autem circa temporalia, nisi respiciant spiritualia. Suarez dist. lib. 8. cap. 8. n. 7. vel si ab spiritualibus dependant, ut in specie textus in cap. per venerabilem, qui fely sint legit. Idem circa Reges, & alios dominos temporales dicendum est; nam eum habent superiorem potestatem ferendi leges, possunt etiam privilegia concedere. Dubium autem est, an tantum subditi propriis prius legi concedi possint: Et concedi valeat, suadet ex eo, quia privilegia sunt beneficia: sed beneficia etiam non subditi concedi valent: ergo & privilegia. Accedit quod Principes saeculares multa privilegia Ecclesiis, clericisque concesserunt, i. t. cum multis aliis, C. de sacros. Eccles. & de Episcopis, & clericis, qui ab eorum potestate exempti sunt, constat ex cap. Ecclesia sancta Maria, de consuet. cap. final. de rebus Eccles. Sed adhuc dicendum est, beneficium, quod veri privilegij rationem habet, concedendum esse à Principe subditi, nec ab alio dari, ut docent Azor sem. 1. infra. moral. lib. 5. cap. 22. quest. 4. Suarez dist. lib. 8. de legibus, cap. 9. num. 1. Salas dist. sect. 3. num. 27. qui inde deducunt, non posse à Principibus saecularibus privilegia tribui Ecclesiis, nec ecclesiasticis personis: quae doctrina

4.
DE HIS
QUI DANT
POTESTATEM
PRIVILEGI-
ORUM

ex eo probatur, quia hoc beneficium non est simpliciter beneficium, sed lux priuata: ideoque solis subditis concedi potest, sicut lex solis subditis datur. Sanez de *legibus* dist. 7. sect. 7. num. 23. alias autem frustra dicemus Pontificem in spiritualibus tantum, vel ecclesiasticis eisdem annexis priuilegia concedere, si posset omnibus indefinitè ea concedere: unde in dictis legibus Codicis abouè priuilegia dicunt concessiones factæ à Principe seculari ecclesiasticis personis, nisi forte circa eam materiam uenerunt, quæ personis ecclesiasticis competit tanquam ciuibus, & membris Reipublice politice: nam quoad hanc partem Principi laico subiacentur, & ideo possunt in ea ab ipso priuilegia concedi.

Ex huiusmodi traditis apparet uera ratio presentis decisionis; nam cum priuilegium sit lex priuata, renunciari poterit ab eo, in cuius fauorem concessum est, quia unusquisque potest inri pro se introductione renunciare, cap. ad Apostolicam, de regulis, si quis in conscribendo, C. de Episc. & clericis, probum lare in cap. si diligenti, de foro compet. & cum nihil inietit uoluntas declaratur facta, aut uerbis, l. de quibus 32. ff. de legib. in dno facto plus soler ostendi uoluntas, quam uerbis, l. si tamen 48. §. si quis, ff. de adilit. edict. Adeo renunciari potest priuilegium, aut nun uiendo eo, aut per contrarium usum; adeoque in præfenti specie cum monasterium S. Andree ratione priuilegij posset se excusare à solutione decimarum, & non fecerit, immò per 30. annos eas persoluerit; uidetur tacitè suo priuilegio renuntiauit, ut ex ipsa tacitate eliciatur consensus renunciandi, l. Campanus 47. ff. de oper. libere, l. si quis delegatarius 12. ff. de nouat. l. 4. C. de post. inter capti, & per consequens non potuit monasterium amplius inuadere eius obligationis exemptionem, argumento legis iam dubitari 86. §. final. ff. de heret. inflis. illud tamen summè notandum est, in priuilegio reali duplicem usum dari posse, alium priuatum, contrarium alium. Priuatus est, cum qui priuilegio uoluntarie non utitur: contrarius cum non solum quis non utitur priuilegio, uerum & operatur quod contrarium eidem: & ut præscriptio curat in usu priuatiuo, tres conditiones iuxta communem Doctorum sententiam, quam sequantur Portel. in dubio regul. verbo Priuilegij non usus, Chaffling. dist. cap. 5. propositi. requiruntur. Prima, ut oblata fuerit occasio utendi priuilegio, & priuilegiatus eo non utatur: secunda, ut deat scientia talis priuilegij: tertia ut adit potentia illo uiendi, idest non deat impedimentum.

Nec obstat dubitanti ratio suprà adducta, pro cuius solutione uicia adduxerunt Ioannes de Platena in l. 2. C. qui sponte muner. lib. 8. Garcia de nobilit. gloss. 6. num. 29. Sanez dist. lib. 8. de legibus, cap. 35. num. 10. Gironda de priuileg. credit, num. 107. Ottero de pascuis, cap. 20. num. 31. Castillo de tertis, cap. 19. num. 16. qui committit discrimen constituunt inter actus sua naturæ reiterabiles; & momentaneos, non reiterabiles; ut in his sufficiat uicinis actus ad amittendum priuilegium, in illis autem necessarius sit tempus præscriptionis. Sed hanc sententiam facillè refellunt Garcia ubi suprà, Amaya in l. 1. Cod. de his qui sponte, num. 20. quare eà distinctione omnia uerius dicendum est cum P. Sanez dist. cap. 35. num. 10. Barbosa alleg. 26. n. 15. Pereyra decif. 91. Castillo de tertis cap. 19. num. 16. per actum unicum priuilegio contrarium non induci amissionem priuilegij quoad futuram tem-

pus, sed tantum induci renuntiationem quoad illud actum particularem, vel causam, in qua contra priuilegium egit, ut expressè probatur in dist. 1. volumariis, Cod. de excusat. tot. l. 2. & 3. Cod. de his qui sponte, ueluti si tutor, qui excusari poterat à tutela, illam amiserit, etsi postea excusare se uelit, non audietur, l. Prator 13. §. final. ff. de uacat. muner. Idem in veterino Decretionatum agnoscente probatur in l. 2. & sua l. in fine, ff. de veteranis: facit textus in l. Prator 13. §. final. ff. de uacat. muner. ubi docetur, quod si is, qui poterat priuilegio se excusare, ne iudex fieret, postquam consensit, perennitè ductus uelit se excusare, audiri non debet. Nec contrarium docetur in cap. cum accessissent, de consuet. cui varias assignant interpretationes Doctores suprà relati, quibus omnis dicendum est cum Amaya ubi suprà, num. 27. in eo textu non agi de uilo priuilegio, sed potius de statuto factò à Canonicis Tablensis, qui etiam unum contrarium actum portuerunt ab eo decedere, & recedere ab eo noui dispositione, ut iam in eo textu notati. Ut solum priuilegium quoad tempus futurum amittatur, variis actus contrarij, seu omis, accedente legitimè temporis præscriptione, desiderantur. Quod uero actus necessarii sint, nec lute expressum est, nec apud Interpretes constat. Obtinuit tamen, sufficere eos, qui necessarij uideantur, ut teni pum præscriptionis non interruptur, argumento legis autem 6. ff. de seruic. urban. ibi: Ita denique in memis amico, si super hoc tempus adest tuas alius subleat bobueris: l. si quis 18. in fin. ff. quæmadmodum seruicutes; ex eo enim actus, qui contra priuilegium factum est, decidit à possessione sua priuilegiatum, & incipit quasi possideri ius contra illum. Quod si conuincatur, & non interruptatur, nec priuilegiatus faciat quicquam quod uideatur priuilegium illud actum reuocare, & suam quali possessionem redintegare, mediante præscriptione amittitur. Nec obstat primum augmentum ipsius dubitanti rationis; nam uetum est priuilegium tantum renunciarì posse ab eo, in cuius fauorem illud concessum est, ut in totum amittatur; & ita ut uiuentis Ordo Cisterciensis amitteret priuilegium non soluendi decimas, ueneris ordo cessare debebat in priuilegij usu: at uerò ut unum monasterium pro suo interesse particulari amittat illud beneficium, sufficit eius omisio, & neglectus, quia tunc partialiter pro sua parte amittit priuilegium.

Nec tandem obstat textus in dist. cap. accedentibus: pro cuius conciliatione cum præfenti textu varia adduxerunt Garcia de nobilit. dist. gloss. 6. num. 35. Sanez de legibus lib. 8. cap. 35. num. 2. Barbosa de potest. Episcopi dist. alleg. 26. num. 18. Aliqui docuerunt, presentem textum esse recipiendum iuxta tempus antiquorum canonum, quo admissa fuerat tricennalis præscriptio, ut probant in cap. Sanctorum; textum uerò in dist. cap. accedentibus, procedere iuxta nouos canones, secundum quos præscriptio quadragenaria contra Ecclesiam statuta fuit in cap. de quarta, cap. iund. cap. ad aures, & præscripsi. Sed cum ipsi textus auctorem habeant Alexandrum III. qui auctor est presentis textus, hæc solutio sustineri non potest: quare uerius dicendum est cum Barbosa in præfenti, & dist. alleg. 26. Amaya ubi suprà, num. 30. diuersam speciem proponi in præfenti textu, ac in dist. cap. accedentibus; in præfenti enim sufficit præscriptio tricennalis, quia non agebatur de præscriptione decimarum,

5.
TRADI-
TIO DE-
CENDI.

6.
DESOL-
VITA
DUBITAM-
DE RATIO.

7.
EXPRON-
TIA CAP.
ACCE-
DENTIBUS
DITI,
DITI,
DITI,
DITI,
DITI.

decimarum, sed de renunciatione privilegij, quia canonici petebant decimas in sua parochia iure communi sibi debitas, *cap. cum coniungat, de decimis*. Monachi sancti Andree exceptionem opponebant privilegij Cisterciensibus concessi in *cap. nuper, cap. ex parte, de decimis*: è contra canonici replicabant, privilegium illud cessasse per contrarium usum, quia per 30. annos eo privilegio vti non fuerunt; unde illud renunciale ete- debatur, & per consequens standum esse iuri communi. Et quia facilius quilibet res cedit ad pristinum statum, argumentum legis si vnus 27. *§. nullum ne poterit, ff. de pallio*; ideo minus tempus necessarium erat ad hanc prescriptionem, vsq. solutio decimarum rediret ad ius commune: ut verò in *dist. cap. accedentes*, contrarium contin- gebat; nam monasterium, quod petebat decimas, iure speciali nitebatur, non verò iure communi.

Templarj verò privilegium exemptionis allegab- ant. Et licet illud amitti possit tamen renunciat- tione, hoc est decimarum solutione, tamen ad talem prescriptionem, & vt monachi ab eis pos- sent decimas exigere, desideratur scriptio qua- dragenaria, quia currit contra Ecclesiam, & ille prescribat, qui oio iure communi nitebatur, sed porò iure speciali; unde diutius tempus in ea prescriptione desiderabatur, quàm in presentij specie: Iarjū prosequitur Barboza *dist. alleg. 26*. Illud tamen omittendum non duxi, hucusque tra- dita de tempore necessario ad amittendum pri- vilegium, procedere regularet in privilegio de non faciendo; si verò sit privilegium faciendi aliquid, veluti habendi nundinas, spatio 10. annorum pre- scribitur. *l. 1. ff. de nundinis, l. 42. si. 18. par. 3. Aze- nedo in dist. 1. l. 1. si. 2. Molina lib. 2. de primo cap. 7. num. 70. Amya in dist. 1. l. 1. c. de his qui sunt, n. 35.*

CAPVT VII.

Idem ^a Ambian. Episcopo.

POTRò quoniam Templarij, & Hospitalarij multà sunt libertatis prerogatiuà dona- ti, non dubitamus, quin aliam libertatem habeant in locis, in quibus antequam ad eos peruenissent, fuerant habitatores: quod totum ex ^a inspectione priuilegiorum suorum plenius aduertere poteris, & secundum quod inueneris, ita ^a obserues.

NOTÆ.

^a *Ambianensi.*] Iria etiam legunt post Con- ciliū Lateran. part. 50. cap. 18. & in *l. col- lect. sub hoc tit. cap. final.* vbi additur pars capituli *Quod scdm*, vt cognoscat in presenti referri partem textus in *cap. quoad Sedem, de frigidis*: vbi extat alia pars huius decretalis.

^b *Inspecione.*] Et ita ad privilegij valorem, & probationem necessariam esse scripturam docuerunt Glossa verbo *In scriptis*, in *cap. de censibus lib. 6. Baldus in l. 2. Cod. de mandatis Principum*, Mascardus *de probat. conclus. 328. num. 19.* & sus- tenditur ex sententia ex *cap. contra morem, dist. 10.* ibi: *Scriptis privilegijs, cap. cum olim 12. hoc tit. cap. cum persona 7. cod. tit. lib. 6.* Sed adhuc verius est, non requiri scripturam ad valorem privilegij, nec eius probationem, Suxez *dist. lib. 8. cap. 2. num. 2.* quoniam notat, viue vocis oraculo privilegia in- dulgeri. Salas *de legibus dist. disput. 27. sect. 2. num. 20. Prado tom. 2. Theolog. moral. cap. 5. quest. 1. §. 2.* quia nullà constitutione scriptura exigit ad privilegium probandum; & constitutio extranea- gantis *Inimela, de elect.* quò docetur non licere vinn gratiæ Pontificis ante expeditionem litterarum, solum potest fieri in gratiis beneficiis; & ideo succedit tegula iuris, quod scriptura non de- sideratur pro solennitate, sed gratiæ elationis pro- bationis, *l. contrahitur, ff. de pignor.* & hoc probat ex *cap. inscriptiones 25. quest. 2. Clement. dudum, de sepulch. extraneæ. c. si Domini 3. de pignis* ibi: *Per quasque concessiones, & facultates per suam facilitatem, tam verbo, quam scripto factas.* Quare si in foro interiori dubium contingat, satis est privilegium obtinere, licet ad scripturam rada- ctum non sit: in foro autem exteriori, qui pri- vilegium allegat, illud probare debet, *dist. cap. contra morem*. Et licet soleat frequentius scripto comprobendi, hocque sit vtilius; vt de tenore

illius extò constat, cui semper standum est; at- tamen non est necessaria scriptura, sed per testes etiam probari potest, *cap. cum olim 12. hoc tit.* iux- ta quam doctrinam explicandus est textus in *cap. cum persona 7. hoc tit. lib. 6.* dum ait, exemptos à iurisdictione ordinaria per privilegium exhibere illud debere coram arbitrio ab ordinaria depn- tati. Quibus verbis probati videntur privilegia lite- ris, & scriptis comprobari. Sed sententia illius textus ita accipiendū est, vt qui privilegium alle- gat, & litteras, aut scripturam exemptionis se habere dicat, ea exhibeat; nam frequentius pri- vilegium ad scripturam redigitur: sed si scripturam exempli non habet, sufficit probare privilegium testibus: quod satis constat ex ipso textu, in illis verbis: *Quibus se dicunt fore monites*. Quorum sensus est, vt exempti cogantur ostendere & pro- bare privilegium, ea probationis specie, ad quam se obstrinxerint, vt vel instrumenta exhibeant, vel testes, iuxta modum, quo sibi indulum esse priuilegium allegauerint: quæ est vera ipsius ca- pituli interpretatio ab aliis non perpendi. Si verò privilegia scriptura comprobentur, oportet quod instrumentum authenticum sit, & nullum vitium, aut rursus continet, cum hoc sit generaliter constitutum in omnibus instrumentis, *cap. inter, de fide instrum.* & in privilegijs specialiter canetur in *cap. cum olim, vers. Distinguentes, hoc tit.* adeo vt si testes proferantur ad comprobationem de- perdicti privilegij, deponere debeant de amissionē, & tenore: & quod sine vitio erat, *dist. cap. cum olim*. Quæ praxis ootanda est tam à iudicibus, quàm aduocatis, quando xgiut de comprobando instrumento deperdit.

^c *Obserues.*] Quæri vulgò solet, vitum pri- uilegia largē, an strictè sint interpretanda? Et quatenus sunt beneficia principalia, ampliusmè interpretari debere, constat *ex l. 3. ff. de consilij. Principum, cap. cum dilecti 6. de donat. cap. olim 16.*

2.

de V.S. l. 2. Cod. de bonis vacantiis. probant Gathe-
rus de officiis domus lib. 2. cap. 38. Amaya in l. vnica.
Cod. si liceat. Tapia in dist. l. 3. de consensu. Princip.
Pauimicelli. lib. 2. de iurisd. cap. 4. num. 126. Opingius
de iure inf. cap. 7. num. 208. Hoonius in encyclop.
lib. 2. tit. 6. vt ferat aliquid priuilegiario tribua-
tur. cap. in l. 30. de priuileg. Quarecumq; verò con-
tra iuris rationem strictam interpretationem cape-
re debet. ideo tradi solet. prohibitam esse ex-
tensionem priuilegiorum. etiam in correlatiuis.
sicut coheredibus. nisi aliter priuilegium luitale red-
datur. vt docet Barbosa in l. quia tale. d. num. 12.
ff. solut. matrim. Suarez de lib. 8. de legibus. cap. 1. t.
Ad huc tamen distinguenda sunt priuilegiarum gene-
ra. quia quæ sunt præter ius. & bene se ius
rationem tenent. benigna interpretatione debent
coadiuari: quæ autem à iure communi exorbi-
tant. non sunt trahenda ad consequentiam. &

strictè obseruari debent. *Quod contra 1. ff. de legi-
bus. l. quia contra. de R. l. lib. 6. docuerunt Azor
tom. 1. inf. lib. 5. cap. 24. quæst. 2. Salas de legibus
dist. 17. sect. 6. Suarez end. tract. lib. 8. cap. 17. vbi
cap. 28. ostendit. nec ad restringendum priuilegium.
nec ad illud ampliandum permissum esse ab eius
rectore. aut à proprietate verborum discedere. nec
etiam ita coangustandum. vt inanem gratiam red-
dat interpretatio. Idem in noua ad Innoc. III.
lib. 3. reposit. epist. 52. Nec etiam ad alias personas
extendendum est. cap. fani. hoc tit. Vnde tota su-
perior resolutio obseruanda est. quando verba
priuilegij ambigua sunt. & varias explant linter-
pretationes: nam vbi priuilegium contra ius est.
intelligitur coactum. quod minus est: vbi au-
tem præter ius. amplissimum fit interpretatio. & con-
cessum intelligitur: quod amplius dicimus latius
in cap. 16. de V.S.*

CAPVT VIII.

Alexand. III. I. A. S. * Legato.

Recipimus literas. quas de Ecclesiis consualibus Episcopatus ven. f. n. ^b Nouariensi.
Episcopi direxisti. & ex eis perpendimus. qualiter ad iura nostra seruanda vigil-
existas. Ceterum diligentiam tuam volumus non latere. quod sicut non omnes. qui
specialiter beati Petri iuris existunt. annuatim Ap. Sedi censum exsoluunt: ita nec
omnes oostri censuales ad Episcoporum subiectione habentur immunes. Iospicienda
sunt ergo priuilegia ipsarum Ecclesiarum. & ipsorum tenor diligenter est attenden-
dus: vt si fuerit deprehensum. quod Ecclesia. quæ censum soluit. specialiter beati
Petri iuris existat. & ad iudicium perceptæ libertatis eosus aonius conferatur. non
immerito poteris speciali prærogatiua gaudere. Si verò ad iudicium perceptæ
protectionis eosus persoluitur. non ex hoc iuri directi Episcopi subtrahatur aliquid
videtur. Cum igitur constet. presbyterum sancti Petri præfato Episcopo obedi-
entiam promississe in ^a ordinatione sua. sicut in iure confessus asseruit: nolimus. quod
eum. vel aliquos tuearis. Quia sicut iustitias nostras à fratribus nostris. & Coepiscopis
nostris volumus referuari. ita eorum iura nos conuenit illibata custodire.

NOTÆ.

1. ^a **L**egato.] Ita etiam legitur in secunda colle-
ctione. sub hoc tit. cap. 1. ex qua textum
hunc transferibo.
^b *Nouariensi.*] De Nouatenfi Italiae diocesi
egit in cap. 14. de re iudic.
2. ^c *Præfati.*] Ex hoc texto. & etiam in cap.
ex parte 8. hoc tit. aperte probatur. cum qui sub al-

culis Principis ecclesiastici. vel secularis prote-
ctione recipitur. non ideo liberati à iurisdictione
iudicis ordinari: quod ad varias causas in foro
contingentes exposuerunt Salgado de Regia prell.
part. 1. cap. 1. n. 207. Diana p. 10. et al. 7. resolut. c. 3.
& etiam deducit Solotanus tom. 2. lib. 2. c. 24. n. 21.
aliquid temporale recipi posse pro præstatione.
^d *Ordinatione sua.*] iuxta tradita in cap. 3. de
iur. iur.

CAPVT IX.

* Idem.

Sand. Et infra: Temerarium est. & indignum. aliquem sibi sua auctoritate præsu-
mere. quod Romana Ecclesia alicui certâ ratione inspectâ singularibus voluit be-
neficiis indulgere.

NOTÆ.

1. ^a *Idem.*] Textus hic nouo reperitur in aliqua ex
collectionibus antiquis: vnde non constat.
cuius Pontificis sit. aut de quo priuilegio ita co-
agatur. Credo tamen esse partem textus anteceden-
tis. & Raymundum in partes illum diuisisse.

COMMENTARIUM.

Ex hac Alexandri decisione sequens commu-
niter deducitur assertio: Priuilegia singularibus
personis concessa. ex identitate rationis ad alias non
extenduntur. Probant cum textus in l. 9. per litteras
ff. de aqua quædam. l. maritimus 12. l. quia tale 13.
ff. solut.

T.
Censura
sio tra-
ditur. et
probat.
vbi.

ff. solut. matrim. l. ex pluribus 42. ff. de administr. tut. l. 1. §. privilegium, ff. de Magistratibus consuetudinibus l. 4. §. 1. ff. de priuilegiis l. 1. offi. fideiussor 34. cum l. sequenti, ff. de re iudic. l. non debet, cum duobus sequenti, ff. de dolo, l. cum patris 28. ff. de legat. 2. l. 3. ff. de consensu, l. 1. ff. de iure inuocanti l. in omnibus 68. l. privilegia 196. ff. de regul. iur. l. vnic. Cod. de priuilegiis, l. 1. f. de iudic. l. 1. Cod. de excus. mun. lib. 10. reguli Beneficium, l. de R. l. in 6. Illustrat. Cuius Petrus Faber, & Jacob. Gortioff. in dist. l. in omnibus, Menochius lib. 3. de presump. casu 103. Guillus lib. 2. obscur. cap. 144. Petrus Barbofi in Ligua sale, num. 7. Suarez lib. 8. de legibus, cap. 10. & 11. Sales cod. tract. disp. 17. sect. 6. & 8.

Sed pro dubitanti ratione in presentem assertionem ita infergo. Privilegium restitutionis minoribus concessum, ob lubricum ætatis personæ conceditur, l. 2. l. 3. §. sed verum, ff. de minoribus, l. Scribam 95. §. quod vulgo, ff. de solut. Sed etiam hoc privilegium extenditur ad minores hæredes, l. non solum 6. ff. de in integrum restit. l. minor 8. §. ult. ff. de minor. l. Tutia 62. vers. Item, ff. de iure dot. l. vnic. C. si adversus datem, l. 2. & 4. C. de tempor. in integ. restit. l. vlt. ip. et. l. parit. 6. & etiam fideiussoribus datur, l. minor 51. ff. de procurat. l. si pupillus 89. ff. de acquir. hæredis, l. 2. §. 1. ff. de administr. tut. l. 3. §. 4. vers. Sed an hoc auxilium, ff. de minoribus. Igitur quia privilegia, quantumvis personæ concessa, ad alios etiam extenduntur. Augetur hæc dubitanti ratio, nam privilegium Vellesiani mulieribus concessum est ob seculi fragilitatem, l. 1. ff. ad Vellesianum. Sed hoc privilegium etiam ad eam hæredes extenditur, l. hæredes 20. Cod. ad Vellesianum. Igitur quia privilegium personæ concessum ad alios etiam extenditur.

Quæ dubitanti ratione non obstat, vti est præsens assertio, pro cuius expositione sciendum est, eam differre inter privilegia realia, & personalia, quod realia perpetua sunt, & cum ipsa re transferuntur; personalia vero personæ coherent, & cum ipsa persona extinguuntur. Sed vnde dignosci possit, an privilegium reale sit, vel personale, apud Doctores non constat. Vulgo receptum est, personale illud esse, quod in personam concipitur; reale vero, si in rem. Ita docuerunt Petrus Barbofi, & Suarez ubi supra. Verùm hæc doctrina everti videtur ex l. in omnibus 68. ff. de R. l. vbi ut privilegium sit reale, vel personale, non attenditur verborum conceptio, an in rem, vel in personam sit; sed tantum causa, cuius contemplatione concessum est: unde fit, quod si causa principalis privilegii sit persona, vel concedatur propter causam personæ coherentem, ut in l. 1. ff. de consil. Princip. privilegium est personale, ex diverso vero reale, si præcipua causa concedendi fuit res, vel locus, ut in specie testatur in cap. sed requisitis 15. vers. sed considerandum, de testamentis. Piantè si de causa non appareat, eorum tenor inspectus est, quibus privilegium conceditur; nam si concipitur directè in rem, reale erit; si vero in personam, erit personale, ut notant omnes per textum ibi, in cap. quantum 14. de offic. deleg. cap. mandata, de presump. l. iuris gratiam 7. §. postumum, ff. de pallis. Quare verius dicendum esse credo, tunc personale beneficium appellari, eum est personæ conditio locum facit, inquit licet concedatur ob causam, & rationem, quæ in aliis quoque persona inuenitur, non tamen eisdem sit tribuendum: at vero reale est, quando res seu causa ei locum facit, id est, ut

causæ ipsi tribuantur, & omnibus competat, ad quos eadem causa pertinet; quamvis ratio concedendi fuerit sola persona, ut rectè docet Suarez dist. cap. 3. Et si quæras, vnde colligi possit, an personæ, an vero magis causæ privilegium detur? Respondeo, in primis consideranda esse verba, an in personam, an in rem ipsam concipiantur, dist. §. postumum. Deinde attendendum esse materiam subiectam, ut rectè explicat Suarez dist. cap. 3. num. 10. quibus supposita, ex præfenti decisione inferitur, adeo privilegia personalia cum persona extingui, ut nec ad hæredes ipsius privilegii transirent, l. iuramentum, ff. solut. matrim. l. 1. vers. persona, ff. de iure inuocanti l. 1. §. permittit, ff. de aqua quot. l. 2. & hædi 21. ff. de pallis. Cuius 26. obs. 12. Nec obstat quod vulgo traditur, hæredem eodem iure vti, quod defunctus habebat, l. hæredem 39. l. quibus ius, ff. de regul. iur. l. hæres 39. ff. de acquir. hæredis, autem, de iur. iur. col. 3. vbi exiit, iuramentum defuncti hæredes obstringere. Quia responderetur regulam dictæ legis hæredem, tantum procedere in his, quæ naturæ suæ transmissi possunt, non vero in his, quæ morte defuncti extinguuntur, ut sunt privilegia; iuramenti autem obligatio, an transeat ab hæredes, exposuit in cap. veritas 14. de iur. iur. Igitur non transeat ad hæredes priusmodi privilegium prælationis concessum pro reposita dote, in l. vnic. Cod. de priuilegiis, §. fuerat 39. Infit. de ad. Nec interest, quod privilegium tacite hypothecæ favore dotis indolæ in bonis mariti ad mulieris hæredes transiit, l. vnic. §. proculdubio, l. ius 5. §. plenius, Cod. de rei ux. ad. quia in hæc parte nobilis differentia versatur inter vtrumque privilegium; nam prælatio privilegii adeo hæredibus non datur, quia mulieris personæ indiget, dist. §. fuerat. Cæterum tacite hypothecæ privilegium hæredibus competit, quia consuetum est actioni ea stipulari, & quodammodo ei inest, l. assiduis 12. §. ad hoc, Cod. qui potest, Quam differentiam observant Barbofi in l. 1. par. 3. num. 30. & in l. post datem, num. 57. ff. solut. matrim. Pichard, in dist. §. fuerat, numer. 4.

Aliud exemplum peti potest ex l. ex pluribus 42. ff. de administr. tut. vbi Papinianus ait, prælationis privilegium, quod pupillus habet contra alios creditores in bonis tutoris, de quo loquuntur textus in l. ex falso 32. ff. de pectus, l. vlt. ff. de tutela & rationibus, l. 4. §. 1. ff. de priuilegiis, credit. hæredibus pupilli non dari, ex ratione quam assignat Papinianus; quia videlicet hoc privilegium non causæ, sed personæ daturum est; & explicat Gortioff. de tutel. 2. part. cap. 16. numer. 19. Thibot in Papinianæ, tit. 12. princip. 8. idem, 7. Vnde etiam descendit ratio textus in l. 1. §. viderem Princip. ff. ad leg. Corn. de falsis, l. non solum 67. §. si pupillus, ff. de ritu nupt. Privilegium vero tacite hypothecæ, quod pupillus habet in bonis tutoris, l. pro officio 20. Cod. de administr. tutor. l. penult. in quib. causis pignus, l. vlt. Cod. de legitima tutela, l. 23. tit. 13. part. 5. Maqueda in l. privilegia, num. 88. ff. de priuilegiis, credit. quia magis in rem, quam in personam concipitur, pupilli hæredibus competit, l. vlt. in 16. part. 6. docuerunt Gortioff. dist. cap. 16. num. 19. Molina de instit. tract. 2. dist. 23. num. 8. Aliud etiam exemplum deducitur ex l. hæredibus 13. ff. de dolo, vbi eum in l. non decti 12. ff. eod. tit. scriptum est, privilegium parentibus & patronis competere, ut adus de dolo, & potestate famosa,

2.
IMPRONA-
TVA REA-
DITA AB-
ARTIO.

3.
PRIVILE-
GIA PER-
SONALIA,
AUT REALIA.

4.
PROVA
QUÆ REA-
LIA PER-
VILLOIA
UT AB-
ARTIO
NON AB-
TVA.

famosa, contra eos liberis, & libertis non datur, propter tuerentiam & obsequium, quod eis exhibere tenentur, l. 4. ff. de in ius vocando, l. 2. l. pater 15. ff. de obsequiis. Subsequitur in d. l. liberis 15. actionem de dolo hæredibus contra patronos dari. Aliud etiam exemplum poni potest ex l. 1. vers. pluri, ff. de consil. Princip. ubi docetur ea, quæ ob merita personis conceduntur, ad hæredes non transire, quod & docetur in leg. idem 25. §. 1. ff. de palli, l. 1. fallitur 24. C. eod. tit. Neque proinde transiit oblat textus in l. 1. §. non solum, ff. de successoriis edictis, ubi priuilegium à Patre datum liberis, & parentibus ad petendam bonorum possessionem intra annum, etiam eorum seruo hæredi instituto competit; & tamen in edicto de legatis præstandis, quo Prætor consuetum legatis liberis, & parentibus, si ab emancipato accepta sit bonorum possessio contra tabulas, non conferuntur legata relicta seruis eorum, l. 3. §. hoc autem, ff. de legat. præstandis. In cuius differentie ratione assignanda maxime laborat Costa in cap. si pater, verbo Subrogatur, num. 36. qui ait in edicto de legatis præstandis priuilegium parentum seruo non dari, quia Prætor apertum testatoris iudicium erga liberos, & parentes conferre uoluit, l. 1. ff. de legatis præstandis; & dominus, qui serui nomine admitti desiderat, non ex iudicio testatoris vocatur, sed potius ipse seruis iudicium meruit, l. liberis 8. §. hoc uerba, ff. de vulgar. l. debitor 82. §. seruis, ff. de legat. 2. l. legatum 21. ff. de adiunctis, legat. Casum beneficium temporis bonorum possessionis ideo seruo hæredi datur, quia licet extranei loco sit respectu tutoris, in ea tamen bonorum possessione Prætor tantum personam potest intrinsece, scilicet an is, qui petit, ex liberis, parentibus sit; non uero quo nomine ad bona parentum, uel liberorum admitti se desideret. Quæ ratio non obstat infirmat in d. §. non solum, ibi: Persona enim ea est, quæ meruit hoc beneficium.

Ex præsentis etiam assertionis deducitur, priuilegia parentibus concessa ad filios non transire: quod etiam expresse docetur in l. semper, §. immuniat, ff. de iure immunitatis, l. in hominibus 8. §. uacationem, ff. de uacation. muner. l. filio 6. ff. de legationibus, Probius Titaeque, de primogen. §. 40. num. 45. & §. 59. num. 40. Suarez de legib. lib. 8. cap. 11. Quod ita accipiendum est, si priuilegia simpliciter dantur. Nam si uno simpliciter, sed ampliori forma priuilegium patri datur, ueluti pro eo, & posteris, uel alio simili modo, priuilegia transiunt ad filios, l. 1. §. ultimo, ff. de iure immunitatis, ut in casu textus in l. etiam 18. in princip. ff. solui matrim. Quia priuilegium, de quo ibi, ex iuris dispositione ad filium transit, l. affidens 12. C. qui potest, licet priuilegium illud filiis dandum non esse commendat Faber lib. 8. consuet. cap. 1. Etiam priuilegia ad filios transiunt ex natura rei, aut qualitate materie subiectæ. Exemplum est in nobilitate, quæ ex origine, & maiorum claritate provenit; hoc enim naturalis, & ciuilis ratio exigit ad filios derivari, l. 1. l. Senatus 10. l. de dignit. lib. 2. l. Senatus 6. l. liberis 10. l. Senatus 15. ff. de Senatus. Explicat Tiraque. de nobilit. cap. 15. num. 1. Garcia eod. tract. gloss. 7. num. 17. Chassaneus in catalog. part. 8. consider. 24. Azueus in l. 1. tit. 1. m. 85. lib. 6. recapit. Idem de priuilegiis professoribus, & militibus concessis cauere in l. militis, C. de professoribus, lib. 10. l. 1. & 2. C. qui alio professio-

nem, eod. lib. l. 4. C. de priuileg. scholastic. lib. 12. l. 2. l. 2. illustrant Alenizianus ad tit. de official. filius, Didacus Perez in l. 1. tit. 1. lib. 4. ordin. Petrus Barbosa in l. quia tale, n. 42. ff. solui matrim. & si priuilegium etiam pro liberis concedatur, ad posteris ciuilemque gradum transiit, liberis 10. ff. de Senatus, l. 3. ff. de veteranis: nisi in ipso priuilegio generationes restringantur, ueluti ad principem, ut in l. d. Adreus 55. ff. de quæst. filij 22. §. Senatus ff. ad municip. l. 1. C. de priuileg. eorum qui in sac. palat. lib. 12. Eodem modo ratiocinandum est de priuilegiis mariti concessis, quæ regulariter uxoribus non communicanentur, l. quod Principi 36. l. §. Augusta 57. ff. de legat. 2. l. Principi 31. ff. de legibus, iunctis traditis à Donello lib. 8. comment. c. 28. Amaya lib. 1. obsequi, cap. 1. num. 103. & cap. ult. vers. Nec aliquis, de offic. deleg. in 6. cap. ne aliquis §. vers. Ibi, de priuileg. eod. lib. docent Petrus Barbosa in l. quia tale, num. 22. Sanchez lib. 7. de matrim. disp. 47. num. 1. Suarez lib. 8. de legibus, cap. 12. num. 1. ut etiam consilij marito respectu priuilegij mulier concessi. Molina de iustitia disp. 423. num. 6. Castillo lib. 3. contra, cap. 4. num. 3. Quod si non simpliciter marito priuilegium concedatur, sed ampliori forma, tunc etiam uxori competit, sed cauere de uxoribus nihilum in l. 1. C. de uxoribus, de uxoribus clericorum in l. 2. C. de Episc. & clericis, de uxoribus silentiariorum in l. 4. C. de silentiariis, lib. 2. & de uxoribus Fabricianum in l. 1. res 6. C. de Fabric. & de uxoribus scholarium in l. 3. C. de priuileg. schol. Quod præcipue procedit in nobilitate, & dignitate visorum, quorum radiis mulieres cutescunt, & eorum priuilegiis potius constat ex l. femina 8. l. nupta 12. ff. de Senatus, l. si liberta 28. C. de nuptiis, l. medicis 6. l. Grammatica 11. C. de professor. l. 3. tit. 15. part. 2. l. 7. tit. 7. part. 4. l. 9. tit. 11. lib. 2. recapit. l. 2. illustrant de uxoribus Professorum, Milium, Equitum, & familiarium, Titaeque, de nobilit. cap. 18. num. 1. Piehardus integro tract. de nobilit. communie. Officialium lib. 13. Daniel cap. 21. fons Patre de instrum. edu. tit. 2. res 6. spec. 6. per res. Nec suprà traditis oblat textus in l. 1. C. de in ius vocando, ubi penam infamiam liberto in ius patronum uocanti sine uenia, locum habere in uocante eius uacorem docetur. Nam respondetur id non prouenire ex communicatione priuilegij mariti in uacorem, sed potius ex generali regula telata in l. generaliter, ff. eod. tit. quæ cauere, omnes personas, quibus tuerentia præstanda est, sine uenia in ius uocari non posse; in quæsum numero uacorem haberi appetit docetur in d. l. 1. ubi non rectè Acursius, quem sequuntur Bartolus, Baldus, & Castrensis, docet maritum patroni sine uenia in ius uocari, sed male, nam quæ ferat æquo animo, uel maritum, quem patrona colit, non reneatur de eius libertus uenerari, ut confidetur Cuiac. lib. 10. obsequi, cap. 10. præferim quia daturum uidetur, mactio patroni non debet tuerentiam, quam priuigio, & extraneis hæredibus libertus exhibere cogitur, l. neque 7. C. de obsequi. l. 4. §. aduersus, ff. de doli mali, in d. cap. debitorum, de bigam. professur Alcians in d. l. 1. m. 28. ubi rectè docet, non fauere Acurio legem liberti, C. de oper. liberti, quoniam magna est differentia inter opes, de quibus loquitur textus ille; & obsequium, seu tuerentiam, de qua in d. l. 1. facilis quispote operatum casu denegatur, quàm in ius uocatio sine uenia permittitur. Nec etiam suprà traditis oblat textus in leg. non tamen 20.

§.
De priuilegiis pa-
trium
concepitis.

de re iudic. ubi privilegium, ne quis conveniatur in solidum dotis nomine, vel ex aliis coactibus, porrigitur ad mulierem. Nam omisso Cuiacio lib. 24. obf. cap. 38. & lib. 3. differens. Addeff. ibidem, qui tamen non clausulam illius textus adscribit Triboniano, quem methodo refellit Ofualdus lib. 27. commun. cap. 9. dicendum est cum Petro Barbofa in l. maritum, ff. solus, maritum. Donello d. cap. 9. quod licet privilegium illud marito competat ratione reverentie illi debite, non tamen illa ratio sola privilegium illud excoisit, sed & alia, videlicet societas communis vite, l. ex diverso 17. §. 1. ff. solus, maritum. l. si verum 52. ff. de re iudic. Quare ratio cum pariter locum habeat in viro, ac in vxore, l. deo privilegium, quod marito conceditur, etiam vxori competit, propter equalitatem inter eos servandam.

6.

TRANSITIVUS
RATIO DE
CENDENDI.

Quibus suppositis ratio presentis assertionis provenit ex varietate privilegij, quod cum sit privata lex, quæ particularibus, non verò omnibus ex populo indetta, aut statuta est, ideo ad alios non extenditur, quam ad eos, quibus concessum est, cap. hinc est 39. vers. Quod privilegium, 17. q. 1. cap. non exemplo 26. q. 2. Accedit, quod privilegium essentialiter illud habet, quod contra ius commune aliquid statuat, concedatur in eos quare quatenus à iure communi exorbitat, odiosum censetur, & ut tale dubio potius restringendum est, non ampliandum, cap. 1. de filiis Presby. lib. 6. l. quod verò, l. ius singulare, ff. de legibus, l. si verò 64. §. de iure, ff. solus, maritum. Illustrat pluribus relictis Sanchez de maritum. lib. 8. disp. 1. num. 38. & notat super in cap. 7. unde rectè in presentis decreta Alexand. III. alienum esse à ratione, vi quod speciali beneficio alicui indultum est, ad alios protrahatur, etiam ex identitatis rationis.

7.

DISPOSITIVE
TRANSITIVUS
RATIO DE
CENDENDI.

Nec obstat dubitandi ratio suprà adducta; nam est beneficium restitutionis pro personali habendum sit, ut probat Arnoldus Vinus lib. 1. sect. 1. cap. 1. contra Mauritium de restit. cap. 15. Memorandum de presump. casu 103. num. 18. Myling. cent. 4. obf. 19. qui reale esse docuerunt, tamen ad hæredes transit; cum quia hoc privilegium non solum persone, verum & casus datum est: quippe minor non statim restituitur, eo quod minor est, sed si ab aliis circumscriptus proponatur, vel sua facillitate deceptus proponatur, l. verum 12. §. sciendum, l. quod si minor 24. §. non semper, l. non omnia 44. ff. de minor. l. nam postea 9. §. si minor, ff. de iur. iur. Ex ideo ad hæredes transit: tum quia restitutio in integrum non competit minoribus iure privilegij in specie sic dicti, aut tanquam ius aliquod singulare; sed magis tanquam remedium iuris communis, & quod iustitiam est adhibere ordinariæ; non enim ex mera tribuitur gratia, sed ipsa quoque iustitia, & æquitate dictante. Quam ob causam etiam favorabile censetur. Sfortia de in integrum restit. p. 1. q. 2. art. 14. & q. 50. art. 1. ideoque sicut alia remedia personalia ad hæredes transeunt, §. 1. Instit. de perpet. & tempor. ita & hoc. Sed ita demum beneficium ad hæredes transit, si in vita minor deceptus beneficium hoc impetrante, l. verum 5. ff. de in integrum restit. quia cum hæredes transit ad hæredem, Sfortia p. 1. q. 50. num. 8. Unde signanter in l. Tertia 62. vers. Item §. ff. de iure dotum, l. vnic. C. si aduersus datam, l. 2. C. de tempor. in integr. restit. assumatur hoc beneficium heredi-

bus ita demum dari, si ipsi ex persona minorum impleant. Quo modo etiam procedit textus in l. 3. vers. Sed verum, ff. de minor. Nec tunc obstat textus in l. Pannonio 86. ff. de acquir. heredit. ubi defuncto Pannonio, licet Reipublicæ causâ absentis restitutio in vita sua competere, tamen decessit in ea tempus, quo agere poterat. Et assensit Consultus, restitutionem esse dandam hæredi. Qui textus difficilis etiam est ex l. 1. C. de restitut. milit. ubi in simili specie non aliter hæredi restitutio conceditur, quam si defunctus decessit post exactum tempus petende bonorum possessiois. Pro cuius difficultatis solutione vix adduxit tunc Faber lib. 14. consil. cap. 1. Horthomianus lib. 7. consil. cap. vlt. alij relati à Barbofa in d. l. cum tale: quibus omisissis dicendum est, in specie illius textus discrimen constituendum esse, an hæres infirmus post tempus aditionis decesserit, an antea. Primo casu restitutio, quæ ad hæredem acquiritur competebat ad hæredem transfinitur, l. 1. C. de restit. milit. secundo verò casu, si intra tempus decessit, merito cuius iure eius hæredi beneficium non datur, d. l. Pannonio: cuius iuris stricti rigorem vi laxaret D. Pius, constituit defuncto absente Reipublicæ causâ, antequam sciret delatam sibi esse hæreditatem, restitutionem in dati hæredi, nullâ admittâ distinctione, an intra, vel post diem aditionis decesserit, humanitatis causâ ductus, d. l. Pannonio. Cuius explicationem latius prosequuntur Laretegei lib. 2. sect. 1. D. Joseph. de Rees lib. 7. opusculi de commutationibus, num. 13.

Nec obstat augmentum difficultatis deductum ex d. l. hæredes, C. ad Velleian. pro cuius solutione sciendum est, valde controversum esse, an exceptiones, quæ competunt reo, competant etiam eius fideiussori? Et cum communi Interpretum placito diffidentem esse constituendum inter exceptiones reales, & personales. Exceptio realis dicitur, quæ licet competat ex persona rei principalis, dirigatur ad exstinguendam obligationem ipsam. Personalis dicitur, quæ eximit personam obligatam, vel ad tempus, vel in perpetuum; sed non pecuniam obligationem. Itaque regulariter exceptiones reales profant fideiussionibus, & regulariter exceptiones personales illis non competunt. Quæ distinctio probatur quoad vitamque partem, ex l. exceptiones 7. §. 1. l. minor 19. ff. de excep. l. defensionem 11. C. eod. tit. l. ex persona 32. ff. de fideiuss. latè probant Valentin. Francus de fideiuss. cap. 3. à num. 20. Hering. eod. tit. cap. 27. p. 4. Ateius eod. tit. 2. p. principalis, sect. 9. & 27. Donel. lib. 12. comment. cap. 3. & sequent. ubi Ofualdus, Faber lib. 8. consil. cap. 3. Cnize. lib. 28. q. 99. Papin. in l. 5. ff. de legationum nomine, Valentia lib. 1. illustr. tract. 4. cap. 9. ex num. 7. Salgado in labyrinth. cred. 2. p. cap. 30. ex num. 30. qui exemplis veritate hæui distinctionis latè probant, & iuxta eam accipierint sunt textus in l. in causa, l. 1. ff. de minor. l. 1. §. quod si, ff. quæritur verum alio, l. final. ff. de pact. l. si minor, ff. de procurat. ubi Faber, l. si pupillus 89. ff. de acquir. heredit. leg. March. 25. leg. cum lex 46. ff. de fideiussor. leg. 5. de liber. legem. leg. 37. de oper. liberorum. Unde cum exceptio Velleiana elidat ipsam obligationem, ex æquitate quæ molieri competit, etiam fideiussori datur, alia frustra daretur molieri hoc beneficium, si fideiussori etiam non competere; siquidem aduersus mandatis fideiussor ab eo repetere, quod

8.

DISPOSITIVE
TRANSITIVUS
RATIO DE
CENDENDI.

quod reus ipse aſſeque non poterat. De beneficio in integrum reſtitutionis fideiuloſi competent

ex perſona cultoris , agit Vinias lib. t. ſileſch cap. 11.

CAPVT X.

Cœleſtinus III. Abulen. Epiſcopo.

P Aſcenſibus literis noſtris certificari deſideras, utrum Templariis, Hoſpitalariis, & aliis oratoria habentibus in domibus ſuis liceat campanas in eiſdem ponere, publiceque pulſare. Reſpondemus autem conſultationi tuæ, quam facis, & dicimus, quod non licet eis hoc facere, quin potius per te ap. rem. cõtrẽndi ſup̃ cenſurã eccleſiaſtica, vt ita ſint ſuo iure contenti, quod iuſtitiam non impediãt aliorum.

NOTA.

1. ^a *Abulenſi.* Ita etiam legitur in ſecunda col-
lectione, ſub hoc tit. cap. 2. De Abulenſi
diœceſi nonnulla adduſi in cap. 5. de ſupplenda.
In præſenti conſuluit Epiſcopus Abulenſis Cœ-
leſtinum III. ſup̃ campanis permittendis, vel
non in oratoriis Templariorum, quia his tempo-
ribus Templarij habebant Erenitoria, & Eccleſias
in diœceſi Abulenſi, quarum aliquæ hodie pre-
ſiſtunt, & in ipſi vrb̃e Abulæ extat Eccleſia ſan-
cti Mariz ſub nomine de Balmoneda, quæ fuit Tem-
plariorum.

2. ^b *Oratoria.* Non ſolùm fideles olim habebant
oratoria in domibus priuatis orandi gratiã, de
quibus agitur in cap. oratoria, cum ſequenti, 41.
diſt. cap. clericos 34. de conſecrat. diſt. 1. ibi: Cleri-
cos qui miniſtrant, vel baptizant in oratorijs, quæ in-
tra domos ſunt, cum conſecra Ep̃iſcopi loci hoc fa-
cere præcipimus. Et cap. vnicuique, ead. diſt. Con-
cil. Cithig. 1. can. final. Regiente can. 4. Aurel. 4.
can. 7. & 26. de quibus plura Vicecomes volum. 3.
de Miſſa rubricis, lib. 2. c. 12. & 23. Fornerius lib. 6.
rer. quatiã. cap. 6. Herodius lib. 1. Poulett. tit. 2.
cap. 13. Petrus Greg. lib. 1. c. 1. de R. pub. cap. 4. n. 5.
& lib. 1. parit. tit. 20. cap. 2. Vighel. in merbedo iur-
con. fol. 406. & 409. Panciola lib. 2. variat.
cap. 168. Suarez de ſacram. q. 83. diſt. 81. art. 3.
ſect. 1. Mendo in Bullam diſpoſ. 16. Ciaicius ad Nil-
m. 58. Inſin. Diana p. 9. tract. 1. verùm in agrijs,
& ſuis poſſeſſionibus plerumque oratoria exſtrue-
re cutabant, vt ibi Miſſæ ſacriſcium, diuinaque
officia celebrarentur: de quo oratoriorum genere
agitur in Concilio Auteliana. 4. can. 33. ibi: Si quis
in agro ſuo, aut habet, aut poſſidet habere Preſbyterum,
diaconem primon, & terras ei deputi ſufficiẽtes, &
clericos, qui ibidem ſua officia implent, vt ſacrati-
leis reuerentia condigna tribuatur. Vbi nomine
diœceſis oratoriorum intelligi docuit Lemaître
lib. 2. de iuribus Eccleſiæ cap. 5. & D. Gregorius lib. 2.
epiſt. 9. ita Ariminenſi Epiſcopo ſcribit: Tamen
ſiſtis famula petitoria nobis inſumatione ꝑſeſſiſti,
quod habetur in ſubditis, intra ciuitatem Ariminen-
ſem in loco iuris ſui oratorium pro ſua deuotione
fundatſe, quod in honorem ſancti Crucis deſiderat
conſecrari: & ideo, ſi uis chariſſime, ſi in tua ciui-
tatis iure memoria conſtruitſe conſiſtiſti, & nullum
corpus ibidem conſtat humanum eſſe, percepto pri-
mo donatione legitima, idẽ totius facultatis eius ex-
cepto familia, prius mobilium, vel immobilium,
ſeq̃ue monaſterium tunc illi, reſente ſibi uſuſuſtina-
D. D. Gonzal. in Decretis. Tom. V.

rio diebus vita ſua, ꝑſiſtiſque municipalibus alligatam, præditiſtis oratorium deſque Miſſis publicis ſolemniter conſecrabit. Et in Concil. Agathenſi can. 21. ibi: Si quis extra parochias, in quibus legimus eſſe, ordinariorum conuenas, oratorium in agro habere voluerit, reliquis ſiſtitiſtis, et ibi Miſſas tenens, ꝑꝑter ſuſceptionem familia, inſta ordinatione permittimus: Paſcha verò, & ale Domini, Epiphaniam, Aſcenſionem Domini, Pentecoſten, & natalem ſancti Ioannis Baptiſta, vel ſi qui maximẽ dies in ſiſtitiſtis habentur, non niſi in ciuitatibus, aut in parochijs teneant: clerici verò ſi qui in ſiſtitiſtis, quas ſup̃a diximus, in oratorijs, niſi iubente, aut permittente Epiſcopo Miſſas facere, aut tenere voluerint, & communionem pellantur. Illud tamen ſummẽ excoibet in his oratorijs, vt reliquæ manſuetudo in eis non ponatur, niſi eſſent clerici in eis ordinati, aut ꝑꝑer, vt bymnis quodtidiana inſeruire poſſent. Concil. Epan. can. 25. ibi: Sanctorum reliquia in oratorijs villaribus non ponantur, niſi ſuſcepti clericis ciuitatibus parochijs vicinis eſſe conuenas, qui ſacris ciuitatibus ꝑſallendi frequentia famulantur. Quod ſi illi deſuerint, non aut ꝑꝑer ordinentur, quem eis compenſas villarum & reſtitus ſubſtantia deputatur. Illuſtrati Lemaître lib. 2. de iurib. Epiſcopor. cap. 4. & 5. Sic etiam monachi intra propria monaſteria ceperunt ſibi oratoria conſtrata, vt doctẽ probat Gibalin. de clauſura regul. diſquiſit. 1. cap. 2. §. 2. Et Eccleſia clericorum dicebatur, oratoriorum verò monaſthorum, vt probat Menardus ad concord. reguli cap. 59. §. 1. Etiam in multis ad regul. D. Benedicti cap. 52. & quia ꝑꝑer par monaſterij parte ceperunt monaſteria ipſi oratoria appellari, vt probat in cap. 2.

Conſtruebant etiam monachi oratoria in Pri-
oratis, & minoribus domibus, vt conſtat ex
cap. final. de conſens: de his oratorijs, quæ habebant
Templarij, & Hoſpitalarij in diœceſi Aba-
lenſi, agitur in præſenti.

COMMENTARIUM.

EX hoc textu communiter ſequens deducitur
conſuetudo: In oratorijs religioſorum campanæ poni
non debent. Non eſt illa ſimilis decifio, quã
probat poſſit præſens decifio, cum tamen
expleant, & illuſtrant vitæ congeſtos à Bar-
bolla in præſenti, & lib. 2. vob̃ 102. Giba-
lin. de clauſura regul. diſquiſit. 2. cap. 2. §. 2.
Mayolus diſc. canonic. verbo Metalla, fol. 315.
T t a

3.
Conſuetudo
Piaſtata,

Clonius

Citonius ad *ric. de statu monach.* Tondetur *vesel. canonic.* cap. 35. num. 14. Narbona in *holograph.* in *antiquis*, num. 140. Tambutin. *de iure Abbas.* tom. 2. *disput.* 14. q. 15. Angelus Rocha in *trakt. de campanis*, cap. 16. Frances de *Eccles. Cathedr.* cap. 14. num. 130.

4.

IMPUGH-
TA TRADO-
TA ABIE-
TIO.

Sed pro dubitanti ratione in presentem decisionem ita insurgo : Campanarum usus ab Ecclesia receptus iam, diuque approbatus fuit ad varios effectus spirituales huiusmodi uti videtur in compluribus.

Lauda Deum summum, plebem voca, congrega clemens;

Defunctos plera, symbolum faga, fistulaque benona.

Quos sonitus, & campanarum effectus probant & illustrent Hæretici in *orig. divin. offic.* lib. 1. cap. 8. num. 2. Hieronymus Magius lib. 4. *miscel.* cap. 14. legitur de in orationis monachorum poni debent, præcipue cum ibi celebrantur divina officia. Augerius hæc difficultas ex variis Pontificum decisionibus, in quibus proponitur, monachos in suis monasteriis campanas habere, ut in cap. *numus, de excess.* *Præb.* ubi inter alios Episcoporum excessus in religiosos, & ille refertur, videlicet quod non sinebant monachia campanas in propriis Ecclesiis habere : & in cap. *in causa, de elect.* refertur quod quando Episcopus Castellanus accedebat ad monasterium sancti Gregorii, pulsabant campanas monasterii. Et Innoc. III. lib. 1. *regestr.* epist. 297. ait ruptos fuisse funes campanarum in monasterio Fluminensi, ubi Abbas Fluminensis duceretur ad Ecclesiam, ibi : *Ne possent ad Ecclesiam ducere, fures Ecclesie clausa sunt, raptis funibus campanarum.* Igitur quia in monasteriis, seu eorum Ecclesiis, & orationis campanarum poni possunt.

5.

DE CAMPA-
NARUM VU-
ST Q3101-
NA.

Quia dubitanti ratione non obstante vera est prædicta assertio, pro cuius expositione sciendum est, quædam tyrannorum persecutionibus fideles convocati soliti ad synaxim, & divina officia per cultorem, qui in combebat Christianos ad certam horam, quâ facis operandum erat, convocare; cuius officij mentionem facit sanctus Ignatius, qui obiit anno 93. *epist.* 13. ad *sanctum Polycarpum*, ex qua constat, Diaconum inter alia illud iniunctum fuisse munus, ut attendere diligenter ad sacram communionem, & non omitteret, quin nominatim convocaret Christianos ad Ecclesiam. Nec assensio Amalatio Fortunato de *officiis ecclesiasticis* cap. 21. qui refert tempore persecutionis Christianos vocari solitos ad synaxim sonitu lignorum, ut sit hodie tribus ultimis diebus maioris hebdomadæ; nam nec ratio pariter, ut cum hæc illis sceleratis agenda curarent, tanto lignorum strepitu Gentilium aures, & oculos ipse conerneret. At post reddam Ecclesie pacem tintinnabulorum sonitus, quæ postea à provincula, ubi primò cæperunt grandiora fieri, campanæ sunt appellata, ut refert Vvalfridus Strabo de *rebus Ecclesie* cap. 5. populus ad Ecclesiam vocari confuevit, sicut & Gentilia sonitu tintinnabuli ad thesmas, & operas concociale homines certum est ex Martialis lib. 4. *Epigram.* Iuvenalis, *satur.* 6. Luciano de *mercede condula*, Seneca *epist.* 95. de *brutitate vici.* Vnde Campanarum (quæ sunt vasa ænea, in Nola ciuitate provincie Campanie in Italia primò grandiora fusa) tribuitur sancto Paulino coreo sancti Hieronymi, qui floruit per annos 380. Vnde patet ritum antiquiorem esse Sabiniano Papa, qui floruit per annos 604. cui Clau-

conius, Genebardus, Polydorus Vergilius tribuunt inventionem campanarum : neutri, scilicet nec Episcopo Nolæ, nec illi competit talis usus inducio; nam Gentiles ante Christum iam campanis uti fuerunt, ut probant Angelus Rocha in *trakt. de campanis*, Demisterus ad *Responsum* lib. 2. fol. 134. statuto tamen speciali edixit Sabinianus Pontifex, pulsandas esse campanas ad sacrificium Missæ, & horas canonicas, ideoque harum usus vulgè agnoscitur; quare & post eius seculum mentio campanarum frequentius apud scriptores habetur. Audotius in *vita S. Eligij* lib. 2. cap. 21. anno Christi 630. miraculum refert de campana, quæ ad iussuonem Episcopi siluit, nec sonum aliquem reddidit. Venet. Beda scribens in septimo seculo distinctionem asserti pulsationis campanæ, quæ ad orationes convocari solebant fideles, ubi illa, cum quis eorum decedisset. Alcuinus de *divin. offic.* rationem tradit, cui non pulsenter campanæ in diebus passionis Christi, quæ videlicet prædicatores eo tempore filerunt. Baronius *an.* 616. ostendit usum campanarum in Occidente frequentem fuisse; in Oriente verò usum earum invaluisse tempore Michaelis Imperatoris, cui Dux Venetiæ campanas misit annò 865. Orientales sane feris eum usum admiserunt, nam in 7. *Synod.* 4. *act.* 4. ex libro miraculorum S. Anastasij Martiris refertur, Christianos Casereenses cum defunctis sancti illius reliquiis, obolum illis factum summâ cum læticia sacra ligna pulsisse. At in Occidente longe antetius vsurpate sunt, nam in actis S. Lupi Senonensis, qui anno Christi 600. floruit, mentio extat grandis tintinnabuli, cuius erat usus in Ecclesia Senonensi. In hoc etiam mentio earum fit in cap. *in causis, de elect.* cap. *loannes, de homicidio*, cap. *numus, de excess.* *Prælat.* cap. *final.* *cod. ric.* 6. Concil. Ravennat. tempore Clement. V. rubric. 8. Statuimus, quod de cetero campana, quæ sunt de novo leuatis ante eam salutem, quæ in Pontificis inscribitur in Ecclesiis Cathedralibus, cinctibus singulis, & collegiatis, & plebibus, & conventibus singulis diversis. Plura de campanarum inventione, & benedictione, quam heterodoxi baptismum dixerunt, congestum Caricet. tom. 2. *digest.* *fidei*, fol. 617. Koehne in *face biber.* tom. 2. cap. 26. Simon Maiolus *diar. camul.* verbo *Metalla.* Landimeter. lib. 2. de *veteri clerico*, cap. 63. Suarez *aduersus Regem Angliæ* lib. 2. cap. *penult.* Demisterus ad *Responsum* lib. 2. fol. 134. Narbona in *holographia*, in *antiquis*, num. 140. Nouatius lib. 1. *febradism.* c. 27. Andreas Saulay in *pamph. sacerdot.* p. 2. lib. 2. cap. 6. *arist.* 22. Frances de *Eccles. Cathedr.* cap. 24. per *ut.* Grechierus de *bened.* lib. 2. cap. 45. & 46. Sarrax *tom. 2. pro defunct.* *fidei*, cap. 16. Iodocus Coccius *tom. 2. thesaur.* lib. 3. art. 6. Ductibus de *ritibus Ecclesie* lib. 1. cap. 22. num. 6. M. Delrinus lib. 6. *disquis.* *magis*, cap. 2. *sect.* 3. Cædric. *Offici.* lib. 5. contra *Brerium*, ibi : *Baptizati carpatas mihi inaudium est; benedicuntur quidem iuxta formam in Pontificis Romano præscriptam; ritum de baptismo nec verbum.*

Deinde sciendum est apud monachos moris fuisse per varia signa ad synaxim, & officia divina eos convocare. Et primò tubæ eos congregatos fuisse constat ex sancto Pachomio in *regula*, *mon.* 2. ibi : *Quando ad collectam tuba infonatur per diem, qui tunc oratione tardius veniens, interpretatur.* Similiter apud Climachum *gradu* 18. legitur : *Cum infonatur signum spiritus tubæ, quoniam cornu fuisse, & innotam ad similitudinem carum, quos Dominus fieri iussit*

6.

DE CAMPA-
NARUM VU-
ST Q3101-
NA.

Instit. Numeror. cap. 10. vers. 2. ibi: *Fec tibi duas tubas argenteas dulciles, quibus innocere possis multitudinem*; docuerunt Gizeus in nota ad regulam sancti Pachomij, & B. Happhenus *disquisit. monast.* lib. 7. tract. 3. *disquisit.* 2. Bravo ad regulam D. Benedicti, cap. 37. Deinde vocari ceperunt tabula, malleo, aut lignorum collisione. Casarius lib. 1. *hist.* cap. 40. de S. Virgine Hildegunde, ibi: *Percutiā tabula, cum tam Abbas, quam ceteri fratres ad eius exequias conuallescent, & corpore exhoritate ad laudandum delectum fuisset, sexus famini apparuit.* Et lib. 6. cap. 36. ibi: *Interim percutiā tabellā conueniens accurre, morientem circumsterni, dillaque licentiā sacerdos defunctus laus, & vestitus eque solenni cantu deploratus est in oratorio.* Notauit Zetida in *aduers.* cap. 44. num. 22. quā vltia diu duranti forsan propter cegritatem monachorum, & metalli penuriam. Quia etiam ratione in Ecclesia idem etiam vsus diu inuoluit. Synodus Nicen. ait. 4. ibi: *Cum sancta ciuitati reliquias sanctae appropinquasset, surgentes subitis, lignaque sacra pulsantes, inuicem vniūm saluti sunt in reuerenda Virgini.* Desipera ade, quae appellatur nua: illic cum cruce & supplicatione egressi, laei, & gaudentes cum gratiarum actione sacris reliquiis accurrebant. Amalarium Fortun. lib. 4. de ecclesiasticis officiis, cap. 21. ibi: *Potest & in hoc humiliter vsus Ecclesie Romanae obsequens antiquis temporibus quam nunc sit, & precipue nunc, quando laetabat per cryptas, propter persecutores: nam & adhuc inuener Roma (Constantinopolis,) quā antiquis temporibus sub uno Domino tunc antiqua Roma vegetauit, vltima liquorum cura, non propter arie penuriam, sed propter vltimam. Tandem tinsinnabulis ceperunt congregari, vt refert D. Hieronymus lib. 2. *aduers.* Iovin. ibi: *Cum ingressi domum fuissent, ad sinuinnabulum pulsam preces effundunt: quod ubi fecerunt, sicut videri dicitur inuenerunt, & c.* D. Benedictus cap. 43. sua regula, ibi: *Ad horum diuini officij more vt editum fuerit signum, relictiis omnibus quilibet fuerint in monasterio, summa cum festinatione corruant.* Vbi Petrus Boetius ait, signum campanae in antiquis cenobiis monachorum, vel stratum fuisse, vel perforatum, vt sonum emitteret terribilem, idque vt monachi recordarentur terribili illius vocis: *Penite ad iudicium.* Vel in signum ait, quod somas de ordine B. Benedicti, cuius tinsinnabulum diaboli iactu lapidis fregit.*

7.
TRADITIVA
RATIO D
CIBENDI.

His suppositis ratio praesentis decisionis ex eo pronenit, nam cum oratorio monachorum non alia de causa constricteretur, quam ad laudes Deo persoluedas, vt exprimit Gregorius III. in creatione monasterij sanctorum Martyrum Stephani, Laurentij, & Chrysogoni, ibi: *Ad persoluedas Deo laudes, diurnas, & nocturnas temporibus ordinatas: Ecclesiae vero saeculares tum docendo populo, tum administrandis sacramentis plebi vsui*

erant, quibus ministerijs monachi inferuite non valebant, Concilium Parisiense sub Lodouico cap. 46. Concil. Rauennat. sub Calisto II. can. 27. Gregorius VII. in Synodo Romana, can. 6. cap. illud, cum alius, 16. q. 1. idco licet in Ecclesijs secularibus campanae canoniz ad conuocandum populum, tamen in oratorijs monachorum, quia haec ratio cessat, ideo campanae poni non possunt. Accedit, quia campana iura parochialis signora alit; unde Presbyteri, qui electi Ecclesiae incardinantur, per funem campanae innotuunt. Innoc. III. lib. 1. *regestr. in epist.* ad Nimerum Episcopum. Et eodem Missae publice olim in monasterijs non dicebantur, nec campanam ad populum conuocandum monachi habere debebant. Quare idem Innoc. III. lib. 1. *regestr. in epist.* ad Antipiscopatam Episcopum. prohibet monachis Lerinensibus aqae benedictae asperitionem, processiones, & lianas, baptismum, sepulturam, campanarum pulsationem antequam in Ecclesia parochiali fuerint pulsatae: notantur Canonibus ad tit. de stat. monach. G. b. lib. 1. c. 2. q. 4. Vnde recte Pontifex in praesentis decreuit, Templarius, Hierosolymitanosque non posse in oratorio sua campanam habere, quia eodem constituta sanctorum orationis gratia, non poterant conuocare populum ad sonum campanae.

Nec obstat dubitandi ratio supra adducta, nam cum olim monachi in suis Ecclesijs Missas publicas dicere, aut Sacramenta administrare non possent, cap. iuxta t. 1. 16. q. 1. ideo nec campanam ad congregandum populum vti poterant. Nec obstat textus in d. c. aius, q. 1. vt satisfaciatur communiter repentes in praesentis, afferunt, monachos in suis oratorijs campanam habere posse, ex d. cap. nunc; non vero campanas, vt in praesentis docetur. Quae sultio aperte conueniunt ca dicto capite in causa, de elect. ibi: *Campanae.* Quare haec omnia solutione dicendum est in dicto c. nunc, & alijs iuris locis supra expensis agi de Ecclesijs eorum monachorum, quibus concessum erat publice Missas dicere, ac fidelibus sacramenta Percipientibus, & Eucharistia ministrare: quibus per consequens concessum videtur campanam publice pulsare ad fideles conuocandos: et vero in oratorio priuati peenhariter orationis gratia constitutus, quia fideles vocandi non erant, ideo campanas ipsi ponere nequebant. Tandem Ioannes XXII. in *extremaz. 2. de offic. custod.* permittit mendicantibus Religiosis vnam tantum campanam habere, ibi: *Hoc perpetuo nullo ordinare, quod religiosi dicentur ordinum medicum in nullo communis suo, seu loco plures campanas habere sine Sede Apostolica licentia speciali, sed vna tantummodo pro loco quilibet sine contenti.* Cui constitutioni generali consuetudine derogatum esse iam notarunt Aletius lib. 8. *perreg.* cap. 1. alij apud Barbosa dicto ratio 102. num. 62.

8.
DYSIOCTI
TRA DUBI
TANDI RA
TIO.

C A P V T X I.

Innocent. III. Archiepiscopo^a Lundensi.

Varum nos tenor edocuit literarum, quod Frater Hospitalis sancti Ioannis Iacobi, & illiterati ad partes illas mittuntur pro elemosynis colligendis, quas populus ex deuotione pro sustentatione pauperum praedicto loco mittere consuevit. Quia vero per se non sufficienti loca omnia circuire, sibi clericos, sacerdotes, laicos, & rudes, non religiosos, sed in nequitia exercitatos assumunt, eorum peccatoribus

D.D. Genzel. in Decretal. Tom. V.

T t 3 crucis

crucis characterem imponentes. Cum quo gulæ, & ebrietati deferuiant, se valde inhonestos in aliis ostendentes, clerum, & populum grauius scandalizant, cum ipsi laici b Prioratum fungantur officiis, & tam clericis, quam sacerdotibus præponantur; & non solum Episcopi inobedientes existunt, verum etiam quasdam immunitates, tanquam sibi ab Ap. Sede indultas præsumunt sibi temerè vindicare. Cum enim in quadam Ecclesia baptismali eis à tuo prædecessore collata, quidam nuper percutiens Vicarium sacerdotem, ipsam Ecclesiam defœdasset sanguinis effusione, vsque ad reconciliationem diuinam ibidem interdixisti officia celebrari; sed nihilominus ipsi in ea diuina c celebrarunt: sacerdotes insuper vndecunque venientes, ac eos, de quorum conuersatione, ac ordinatione nulla certitudo prorsus habetur, ad diuinum sibi officium celebrandum d recipiunt. Episcopi assensu minimè requisito. Alios verò Presbyteros ab officio suspensos per Episcopos suos pro suorum exigentia meritorum, iidem, cum sint laici, ad officia e restituiunt exequenda. Quidam præterea cum vxoribus suis in domibus propriis commemorantur; & illos quidem, eo quod eis de suis aliquod conferunt annuatim, ita emancipare contendunt, vt aliis secundum leges terræ de sibi subiectis respondere minimè teneantur. Verum quia priuilegium meretur amittere, qui permissa sibi abutitur potestate, f. t. per A. f. m. quat. si quos clericos, seu sacerdotes, aut laicos à prædictis fratribus pro colligendis elemosynis cruce falsa signatos inuenieris, iis, à quibus ipsos missos esse constiterit, per totam provinciam tuam, nostra fretus auctoritate, exhortationis huiusmodi officium interdicis: laici si fuerint, etiam missos excommunicationis mœrone percellas; si clerici, vel Presbyteri fuerint, ab officio, beneficioque suspendas, nullo prorsus priuilegij beneficio, vel ap. remedio præualente. Eos verò, quos in prædicta Ecclesia lege tibi diocesanea subiectos post interdictum tuum diuina celebrasse cognoueris, eiusdem poena f suspensionis involuens, in ea, donec reconciliata fuerit, quemadmodum sacra præcipiunt instituta, officia non permittas diuina celebrare: Presbyteros etiam suspensos ab Episcopis suis, & per dictos Fratres ad officia sua temerè restitutos, in eandem suspensionis sententiam nostra fretus auctoritate reducas: alios verò, quos ad respondendum aliis secundum legem terræ, præmissa causâ assensu non teneri, nolumus excusari, quin eos ad respondendum, sub, ap. impedimento compellas. Datum vt suprâ.

NOTÆ.

1. a **L** *Vnden.*] In hac sexta collectione legitur *Engdunen*. in textu *sub hoc tit.* cap. 1. legitur *Linden*. sed in ipso Registro epistolatum Innoc. correctio à Sietero, fol. 223. legitur *Lundenf*, ex quo restitui præsentem textum. De Lundenf Ecclesia nonnulla adduxi in cap. 2. de consuet.
2. b *Prioratum.*] De quibus Prioratibus, & eorum Priorum insiditione plura congesserunt Valsæus *consul.* 192. num. 11. Marius Gierba *consul.* 77. num. 17. Carleual. de iudiciis lib. 3. tit. 1. *disp.* 2. num. 451. Meno de Ordinibus Milit. *dis-*

quis. 2. q. 2. num. 68. Sæñio in *propugnacula huius Ordinis*, *disp.* 2. cap. 4. per tot.

c *Celebrarunt.*] Cum esset polluta per violentiam sanguinis effusionem, iuxta tradita in cap. 3. de consuet. Eccles. Eundem casum nateat Guill. Tyr. lib. 18. cap. 3.

d *Recipiunt.*] Contra tradita in cap. 1. de clericis peregrinis.

e *Restitunt.*] Cum suspensus, aut excommunicatus ab vno Prelato, non debeat ab alio recipi, vt probant in cap. ad reprimendam, de offic. Ordin.

f *Suspensio.*] Iuxta tradita in cap. final. de excess. Prelat.

CAPVT XII.

Idem R. Abbati & conuentui S. Petri a Eugubin.

Cum olim essemus apud Perusum constituti, tu fili Abbas ad nostram præsentiam accessisti, priuilegium bone memorie b Lucij Papæ præd. n. nobis humiliter repræsentans, & postulans illud suppliciter innouari, quod propter contradictionem ven. f. n. Marci Eugubini Episcopi, qui tunc temporis superuenit, asserens hoc in suum præiudicium redundare, non fuit effectui mancipatum. Cumque alter vestrum de altero in nostro auditorio quereretur, ven. f. n. Assisinas Episcopo causam sub ea forma commissimus audiendam, vt vos, & iamdictum Episcopum curaret ad concordiam reuocare. Alioquin audiret utrimque proposita, & omnia in scriptis redigens, nobis processum negotij fideliter referaret. Qui cum inducta vobis à Sede Apostolica

Apostolica priuilegia inspexisset, intellecto quod monasterium vestrum ad Romanam Ecclesiam specialiter pertineret, in causa non duxit vterius (sicut accepimus) procedendum. Consequenter verò ad ven. f. n. Callen. Episcopum, & dilectum filium Ar. Abbatem S. Mariæ Vallisfontis, ad postulationem præfati Episcopi Eugubini literæ nostræ fuerunt super mutuis quæstionibus destinatæ. Sed quia pendente iudicio Ioannes monachus priuilegia, chartas alias, & thesaurum monasterij vestri rapuit, te, Abbas, ad nostram oportuit præsentiam iterum laborare, vbi literas impertrasti, quod per excommunicationis sententiam, qui de amissione priuilegij scirent aliquid, cogèrentur dicere veritatem. Sed quoniam nec sic amissa potuisti priuilegia reperire, ad nos denuò es reuersus. Teigitur cum testibus tuis, & præfati Episcopi Eugubini procuratoribus in nostra præsentia constitutis, dilecto filio nostro P. Basilicæ XII. Ap. Presbytero Cardinali dedimus in mandatis, vt super amissione, ac tenore priuilegiorum testes reciperet diligenter, quos duceres producendos. Qui mandati nostri diligens executor præsentibus præfatis procuratoribus fideliter redegit in scriptis depositiones x. testium iuratorum: quorum depositionibus publicatis, iamdicti procuratores ad producendos testes Episcopi, per quos inductos à parte aduersa repellerent, inducias postularunt, quas præfixo termino peremptorio sub eo tenore illis duximus concedendas, vt apud Ap. Sed. probarent quæ vellent, nisi onus probationis pars altera subiisset. Cæterùm quoniam infra datum terminum, & receptum in producendis testibus defecerunt, nos tamen tam per depositiones testium, quàm per assertiones quorundam f. n. liquidò cognoscentes, tale dicti priuilegij fuisse tenorem, quod videlicet ipsum cenobium nullo mediante ad Romanam Ecclesiam pertineret, & quod non liceret alicui Episcopo eidem monasterio, & eius Ecclesiis excommunicationem indicare, vt fratres illic Domino seruientes ab omnium potestate liberi Rom. Eccles. libertatis gratiã potirentur, & quod nulla in eo mentio diocesani Episcopi habebatur: illud etiam nihilominus attendentes, quoniam sicut ex dictis quorundam testium intelleximus euidenter, plurimique de nostris fratribus tempore illo præsentibus recolebant, cùm tu fili Abbas tempore bonæ memoriæ C. Pp. præd. n. ad ipsius præsentiam accessisses, ipse inspectis Ecclesiæ tuæ priuilegiis, te, licet excommunicatus ab Eugubino Episcopo diceretur, tanquam non ligatum admisit ad osculum: quod præsumitur non fecisse, nisi monasterium vestrum cognouisset ad Romanam Ecclesiam specialiter pertinere: de communi fratrum nostrorum consilio pronuntiandum decreuimus priuilegium illud bonæ memoriæ Lucij Papæ, quod sine reprehensione bullæ, chartæ, vel literæ apparebat quando fuit nobis ostensum, illius fuisse tenoris, cuius per depositiones testium, & assertiones f. n. præmisimus extitisse. Decernimus ergo, &c. Datum Lat. II. Kal. Iunii.

NOTÆ.

1. a *Eugubini.* Ita etiam legitur io tertia collectione, sub hoc tit. cap. 1. & in epistolis Coloniz editis lib. 2. fol. 318. Monasterium hoc S. Petri est in diocesi Eugubina Ordinis D. Benedicti, vt refert Tamburinus in serie Abbatiarum, verbo Eugubinus: & de ipsa diocesi nonnulla adduxi in cap. ...
- b *Lucij.* Tertij videlicet.
2. c *Marci.* Qui prius fuit monachus D. Benedicti in monasterio de Auellana; & electus fuit in Episcopum Eugubinum anno 1193. vt refert Vghellius tom. 1. Italia sacra, fol. 685.
3. d *Osculum.* Ad quod oon admitteret Pontifex, nisi prius esset absoluitus, quia aliâ per ipsam admissionem ad osculum censetur absoluitus, vt docuit Hostiensis in cap. venerabilis 34.

verbo Recognovit, de elect. Facit Sidonius lib. 4. epist. 23. ibi: Desu magne! quàm lætu oritur tibi dies, mihi munus, animu illi, cum patris pendit affusus, ex illo ore lafo, ore terribili coniunctum expectans, osculum accepit. Vbi Sotaras. Plora de osculo pedis Pontificis Barbola lib. 1. de iure ecclesiast. cap. 2. num. 90. Ioannes Baptista Calafini de veteribus ritibus Christianorum, cap. 81. Latinus in cap. 10. alium Apost. vers. 25. Landmeier. lib. 3. de veteri clerico, cap. 3. Zedda in aduers. cap. 184. num. 5. Bernardinus Ferrarius lib. 3. de antiq. epist. Ecclesiæ, cap. 2. Roussellus lib. 8. histor. Pouis. iuris, cap. 4. num. 3. Illust. Ramos de Episcopis Lusit. propos. 3. §. 2. num. 90. e Priuilegium. Quatenus priuilegium scripturâ, aut testibus probari debeat, pro huius textus illustratione iam exposui in cap. perro, supra hoc tit.

CAPVT XIII.

Idem ^a Catalaun. electo, & Abbati ^b Trisuntium.

EX parte Abbatissæ, ac Sororum Iorren, Ecclesiæ nostris fuit auribus innotatum, quod ven. f. n. Melden. Episcopus commissionis occasione cuiusdam ad ven. f. n. Parisien. Episcopum, & dil. fil. Abbatem de Lantun. à nobis obtentæ, in qua nulla mentio habetur de ipsarum privilegiis, quæ illas, & earum Ecclesiæ, Clerum, & populum Iorren. ad Ap. Sed. nullo mediante spectare declararent, quorum ipse non erat ^a ignarus, eas inceptit graviter molestare, obedientiam ab ipsis, ac Clero, & populo villæ Iorren. qui secundum privilegia Sedis Apostolicæ gaudent consimili libertate, & subiectionem omnimodam impendendam sibi requirens. Et infra. Verum cum iudices & assessores eorum ipsas valde grauarent, ad appellationis beneficium conuolarunt. Et infra: Sed iudices ipsi appellationi minime deferentes, nec fragilitati sexus compatiens earum, in Abbatissam excommunicationis vinculum, & in populum villæ Iorren. interdicti sententias protulerunt. Sanè cum nuntij Iorren. Ecclesiæ prædictæ, & alia multa in nostra præsentia retulissent, quibus eas, & suos contra libertatem eis concessam grauatos dicebant, privilegium nobis Apostolici ostenderunt, per quod Ecclesiæ Iorren. constabat ad Romanam Ecclesiæ specialiter pertinere. Nos autem eos diuinius dedinantes propter ap. prædictam, quia tamen tandem nullus apparuit idoneus responsalis, qui partem defenderet aduersam, licet postmodum quidam simplex nuntius super hoc prædictorum Parisien. Episcopi, & Lantun. Abbatis literas præsentasset, privilegium Ap. Sed. Ecclesiæ Iorrensi concessum duximus innouandum; ita tamen, vt per innouationem ipsius eidem Ecclesiæ nihil iuris plus accretat, quam per privilegia prædecessorum nostrorum obtinuerit, cum per hoc nouum ei non concedere, sed antiquum ius conseruare ^c velimus.

NOTÆ.

1. ^a *Catalaun.*] In tertia collectione, sub hoc tit. cap. 3. legitur *Cathabunum*, sed malè, nam Catalaunum Campaniæ urbs, ad Matronam fluium sita, in prouincia Rhetensi Galliæ, habet Cathedram Episcopalem, cuius Episcopus est Dominus temporalis urbis, Comes, & Par Franciæ. Fulbertus Carnot. epist. 78. *Ne ciuitati, vel Ecclesiæ Catalaunorum suum denegat honorem, meminisse vos decet, quod in antiquis inscriptionibus Belgica ipsa ciuitas a Rhetensi serapim locum habuit.* Vt referunt *Frates Sarmat. tom. 2. Gallia, fol. 301. Chenu in chronolog. Gallia, fol. 288. Rigorio electo* tandem in Præfulem huius Ecclesiæ rescribit Innocent. in præsent. vt notauit Bosquetus in notis ad Innoc. III. lib. 1. *Registr. 13. epist. 22.*

2. ^b *Trisuntium.*] Monasterium hoc est ordinis Cisterciensis in diocesi Catalaunensi, in Ducatu Barensi, cuius fundacionem refert Guillelmus Abbas lib. 1. *hystor. cap. 13.* his verbis: *Pe-*

*tente, & agente Domino Guillelmo Episcopo, in Episcopatu Catalaunensi, cum, quæ Trisuntium dicitur, damum construxerunt, ad quam cum Abbatem cum monachis euississent, Dominum Rogerium virum nobilem secundum faciem, sed nobilitatem facilitate, & viros quosdam similis forma cum eo, spiritalia pater (Bernardus scilicet) filios, quas emisit, non dimisit, sed paterna sollicitudine, & pia affectum cum eo erat. Alia de ipso monasterio congesserunt Claudius Robertus in sua Gallia christiana, Mantique tom. 1. anal. Cister. anno 1118. cap. 3. num. 4. *Frates Sarmat. tom. 4. Gall. fol. 881.**

^c *Iorrensis Ecclesiæ.*] De quo monasterio nulla adduxi in cap. dilectæ, de excess. Prælat. d. Non erat ignarus. Hæc verba exposui in cap. super 20. de rescriptis.

^e *Velimus.*] Quia innuocatio, seu confirmatio privilegij ius nouum non tribuit, sed antiquam confirmat, cap. quia 29. hoc tit. cap. cum dilectæ, de confirmat. velis; vbi commentarium huius textus dedi.

CAPVT XIV.

Idem ^a Colubriensi Episcopo.

CVm olim ad Ap. Sed. accessisses, & propter quæstiones, quas aduersus dil. fil. Priorem & Canonicos S. b crucis habebas, pro quibus fuerat ad nostram audientiam appellatum, moram feceris longiorem, quia pro parte altera nullus comparuit responsalis, eidem Priori, & fratibus in virtute obedientie districte ^c præcepimus, vt vique ad festum omnium Sanctorum proximò tunc futurum per se, vel per sufficientes responsales,

responsales, & idoneos, ad nostram præsentiam accederent, super priuilegiis omnibus, & libertatibus, quæ à Romanis Pontificibus, vel à bonæ mem. quondam Colubriensi Episcopo se habere dicebant, & super aliis quæstionibus aduersus eos à Colubriensi Ecclesia intentatis diffinitiuam sententiam recepturi. Vt autem veritas facilius appareret, authentica, & originalia cum bullis suis nobis vsque ad eundem terminum sub eadem distinctione præcepimus exhiberi: interim autem utrique parti liceret coram dil. tit. de Alcobatia, & de Seiza Abbatibus, & F. Meuen. monacho^d Alcobatis, quibus sub certa forma causa prius fuerat delegata, & testes vtriusque producti, proponere, ac probare, si quid aliud proponendum ducerent, ac probandum. *Et infra:* Iudices autem sufficienter actum esse de causa credentes, attestacionibus, & rationibus vtriusque partis diligenter inspectis, monasterium sanctæ Crucis in expensis, quas per^e quadriennium occasione huiusmodi negotij iurauerat te fecisse, quæ quinquaginta marcharum auri summam attingerent, ubi de prudentium consilio damnauerunt, infirmantes suâ sententiâ libertatem, quam^h M. Colubrien. Episcopus in enorme detrimentum Colubrien. Ecclesiæ contulerat monasterio sanctæ Crucis, Canonicorum assensu per præconem Episcopi, & portarium Regis^b extorto. Præterea quia idem M. etiam fuerat canonicus regularis, & duo millia marabotinorum, quæ acquisierat in Episcopum iam promotusⁱ monasterio dederat memorato, ipsum ad restitutionem eorum iudices condemnarunt. Insuper tam decimas, quam omnes Ecclesias, quas de manu Regis, vel aliorum laicorum, siue clericorum monasterium præter Colubrien. Episcopi assensum receperat, & quas in^h Lateran. vel in aliis locis in attestacionibus comprehensis propriâ auctoritate fundauit, quia pars sanctæ Crucis nec præscriptione, nec defensione alia probationibus contra se factis obstitit, iudicant in ius Colubrien. Ecclesiæ cum fructibus medij temporis reuocari. *Et infra:* Tandem verò cum tu, & pars altera propter hoc ad Sedem Apostolicam venissetis, procurator monasterij sanctæ Crucis proposuit sententiam non tenere. Quod si aliis etiam sententia memorata teneat, quia tamen monasterium fuit indefensum, sicut ipsi iudices per suas literas protestantur, nec exhibita fuerant coram eis priuilegia libertatis, ne debitum personæ in damnum Ecclesiæ redundaret, debeat ad exhibitionem priuilegiorum suorum admitti, quod sibi concedi de solita benignitate Sedis Ap. postulauit. Nos igitur attendentes, quod eadem priuilegia non solummodo pro libertate monasterij faciebant, sed exprimebant ius nostrum, & Ecclesiæ Romanæ iustitiam tuebantur: ne in nos monasterij læsio redundaret, ad priuilegia exhibenda partem eius de gratia duximus admittendam. Vt autem plenius de processu iudicij possemus intelligere veritatem, gesta omnia, sicut acta fuerant, coram nobis vtriusque iussimus exhiberi. Nos igitur his, & aliis auditis, & intellectis, quæ fuerant hinc inde proposita, distinguentes inter libertatem per prædictum Episcopum Ecclesiæ ipsi concessam, & libertatem, quam ei longè ante tempus ipsius Episcopi Ap. Sedes indulsit, sicut patet ex priuilegiis antedictis, quia nobis constitit euidenter extortum fuisse in Episcopi concessione canonicorum alienum, & concessionis paginam in aliquot lineis habuisse rasuras, & subscriptiones singulas fuisse singulis subscribentium manibus annotatas, scriptum autem, quod nobis exhibitum fuerat, nec rasuram prætere, nec variis subscriptionis manibus variatum, sed à primo ad vltimum eadem potius manu conscriptum, libertatem ab ipso Episcopo concessam irritam decernimus, & inanem, super hoc sententiam delegatorum iudicij confirmantes. Quia verò euidenter agnouimus priuilegiis antedictis prædecessores nostros Ecclesiæ sanctæ Crucis libertatis priuilegium indulsisse, ac quod ea in possessione tamdiu fuerat libertatis, quod aliis etiam cessantibus præscripsisset, libertatem ei à prædecessoribus nostris indultam auctoritate Ap. confirmamus, tibi super hoc silentium imponentes. Per hoc autem in nullo sententiæ delegatorum iudicij derogamus, cum ipsi de hac non cognouerint libertate. *Et infra:* Cum autem libertatem à prædecessore nostro confirmemus indultam monasterio, ad ius processionis, quod est contrarium libertati, monasterium decernimus non teneri, non derogantes iudicibus delegatis, quibus libertatis priuilegia non fuerant præsentata. Cæterum super eo, quod iidem iudices decreuerunt, ut pro domibus Portzenouæ, in quibus parochiale ius Ecclesiæ Colubrien. habuerat, monasterium tantum recompenfaret eidem in loco alio competenti, quantum amiserat in domibus memoratis, omnino corrigimus sententiam, quam tulerunt, ad id consentes monasterium non teneri. In cæteris autem latam à prædictis sententiam, tam pro Colubrien. Ecclesia, quam monasterio sanctæ Crucis auctoritate Ap. confirmamus.

• *Colimbriensi.*] Ita etiam legitur lo tertia collectione, *sub hoc tit. cap. 4. De Colimbriensi* Lofitanie diocesi egi in *cap. 8. de præscriptis.*

1. *b Sancta Crucis.*] Monasterium hoc canonicorum regularium, quod est eorum ipsius Congregationis, extat in Balneo suburbano ciuitatis Colimbrie, fundatum à Tellone Colimbriensis Ecclesie Archidiacono, diatum primùm donatione Alphonsi Lofitanie primùm Ducis, deinde Regis, Ferdinandi Comitiss, & Tarsaz Regine filiz: quod monasterium maximis priuilegijs Summorum Pontificum, & Regum Lofitanie, & aliorum Ptoicupum maium, prædijs, villis, castris, cum iurisdictione spiritali, & temporalis ornamtu est, vt plura de eo referentur tradit Pennotus lib. 2. *hystor. canonic. Regul. cap. 32. num. 4. & cap. 39. num. 1. & cap. 59. per totum.*

2. *c Præcipimus.*] Quæ licet extant in ipso Codice epistolatum correcto à Sirlens, *fol. 399.* in hæc verba [Quod scribamus N. Priori, & Fratribus sanctæ Crucis super controuersijs grauibus, & diuersis, quæ inter ipsos, & Colimbrien. Ecclesiam agitantur, ex literis Apostolicis parentibus eis directis perpendere poteritis euidenter: quæ per sollicitudinem vestram ipsi, omni contradictione, & spollatione cessantibus, exhiberi volumus, & iubemus. Quamuis autem coram vobis, quibus examinationem negotij sub certa forma recolimus commisisse, testes virumque producti fuerint, & recepti: quia tamen de causa noo constitit nobis ad plenum, per Apostolica vobis scripta præcipiendo mandamus, quatenus receptis adhuc alijs testibus parum, si de ipsarum processerit voluntate, si quos super priuilegijs, libertatibus, vel alijs articulis duxerint producidos, vos usque ad definitiuam sententiam, remoto appellationis obstaculo procedentes, gesta omnia nobis sub sigillorum vestrorum testimonio per vestrum fidelem nunciu transmittatis, ad festum omnium Sanctorum proximè futurum diem peremptorium assignantes, quod reputez sententiam per se, vel per procuratores idoneos, nostro se conspectui representent: ad quem si qua eorum venire contempserit, nos nihilominus, quantum de iure poterimus, procedemus. Testes, &c. per censuram ecclesiasticam cogamur. Quod si non omnes, &c. Duo vestrum, &c. Datum vt supra, Kal. Decemb.]

3. *d Alcobacia.*] Huius delegationis literæ extant in ipso regestio epistolatum Innoc. *fol. 102.* in hæc verba: [Insuper oobis venerabilis frater noster Colimbrien. Episcopus, quod cum Illustris Rex Portugalliz Fratribus sanctæ Crucis apud Castrum de Leirena in vna tantum Ecclesia ius concesserit patronatus, inconsulto diocetico Episcopo in eodem loco construere alias noua proprio præsumpserunt, quas & per capellanos conductiuos regunt, & in nullo pro ipsis volunt diocesano Episcopo respondere. Eisdem etiam Ecclesijs priuilegijs suis fecerunt inscribi, cum ab Episcopali iure nunquam fuerint de consensu Episcopali libertas: unde totum ius Episcopale in oppido nominato sibi præsumunt temerè vindicare. Quia igitur vobis constare non potuit de præmissis, discretioo vestre per Apostolica

scripta mandamus, quatenus partibus convocatis, &c. quod iustum videritis super his appellatione postposita statutis, &c. non obstante priuilegio in præiudicium Colimbrien. Ecclesie per subreptionem obtento. Quod si omnes, &c. duo vestrum, &c. Dat. Sec. vi. Kal. Iunij.]

e Indices.] Non ipsi Abbates de Alcobacia, & Seize, quibus cogniti præsentis causæ commissi fuerat; sed Episcopus Zamorensis, & Decanus Auriensis, quibus postea eadem causæ c. gnito commissi sunt, vt integra, quæ hodie seruatur in archiuo monasterij sanctæ Crucis, probat Barbosa in præfati, *num. 10.*

f Per quadriennium.] Nam instantia iudicij iure canonico non fuit triennio, vt finitur iure ciuili attempto. Probauit in *cap. de causis 4. de offic. deleg.*

g M.] Michael videlicet, vt refert Petrus Alvarez à Noguera in lib. de Episcopis Colimbriensibus, in vita Episcopi Michaelis, *fol. 49.* & ipsum priuilegium concessisse in præiudicium Colimbriensis Ecclesie, constat ex alia epistola Innocentij III. lib. 1. in *regest. Sirlens. fol. 102.* vbi Innocentius ita refertur Decano Vilibonensi, Priori de Frofiz, & monacho de Alcobacia: [Innotuit nobis venerab. fratre nostro Colimbrien. Episcopo intimante, quod cum M. quondam canonicus sanctæ Crucis in Episcopum fuisset Colimbrien. assumptus, priuilegium quoddam de consilio quorundam Canonicorum Eccl. Colimbrien. monasterio S. Crucis indulsit, in oon modicum eiusdem Ecclesie præiudicium & grauamen. Quia verò nobis non constar de præmissis, discretioni vestre per Apostolica scripta mandamus, quatenus partibus convocatis, inquiratis de præmissis diligenter veritatem, & si priuilegium ipsum in graue dispendium Colimbriensis Ecclesie videritis redundare, quod illicitè factum est, auctoritate Apostolica appellatione remota legitime reuocatis, nou obstante priuilegio in præiudicium Colimbriensis Ecclesie per subreptionem ab Apostolica Sede obtento. Datum Romæ, &c. III. Non. Iunij.]

h Exorte.] Et ita consensus Canonicorum nulliter præstitus fuit, quia licet potentatus ratio non sit sufficiens, vt adus rescindatur, l. ad inuidiam 6. C. de his qui vi, l. vi. in princip. C. de his quibus vt indigni, tamen in præfati casu retores, & minz accesserunt, vt notat Hostiensis, & Ancharan. *num. 15.* Butrius *num. 30.* Socinus *num. 39.* quia tam per portarium Regis, quam per præconem Episcopi conditi fuerunt ad consensum illum præstandum; quod siellè constat ex his, quæ refert Petrus Alvarez de Noguera in lib. de Episcopis Colimbrien. in vita Episcopi Michaelis, *fol. 49.* vbi ait, tam ipsum Episcopum, quam Regem Alphonsum canonicos consentire reneuer, alios in carcere misisse, alios in exilium; alios bonis maluisse. Vnde cum in præfati causa Canonicorum consensus fuisset per minas, & terrorem extortus, quid mirum si adus cum eo celebratus rescindatur, tanquam per grauem merum elictus: argumento capitis cum diuictis, de his qui vi, l. qui in carcere, ff. de eo quod metus causa: docuit Arias à Mesa lib. 3. *variar. cap. 36. num. 8.*

i Monasterio dedit.] Sed certum est, quod quamuis Episcopus nou possit de bonis intulit Ecclesie acquisitis testamentum facere, vt probauit in *cap. 1. de testamentis;* potest tamen donare inter

4.

5.

6.

inter viuos cui voluerit, etiam immodicè; quia eùm donatus sit fructum sui Episcopatus, & ad eum pertinet plena dispositio, quid mirum ut per donationem, sicut per alios contractus, eos alienare possit? ut probant Dicitur Thomas 2. a. q. 185. per totam. Molina de iustit. tract. 2. diff. 144. Ludovic. & Molina lib. 2. de primog. cap. 10. num. 33. pluribus relatis D. Iosephus de Retes de donat. cap. 12. Igitur donatio marcapetitorum facta in presenti causa à Michaele Episcopo monasterio sanctæ Crucis, valida fuit, & per consequens in iuste iudicem delegati tam infirmarunt suâ sententiâ, quam approbavit Innocentius in calce huius testis. Cui difficultati ut satisfaciatur Ioannes Andreas in presenti, num. 8. Abbatis num. 8. & 18. Buttrius num. 25. Socius num. 18. & 46. Tapia in authentica ingressi, verbo Sui, cap. 6. num. 90. C. de sacros. Eccles. affirmant, ideo donationem in presenti inuenisse fuisse, quia immodicam quantitatem continebat. Quæ sententia firmari potest ex eo, quod marcapetini, de quibus in presenti, auri erant temporibus Regis Alphonsi, & eum valorem habebant, quem hodie habent auri Lusitani, vulgò Cruzados, Hispani Ducados, ut ducunt Matheus Lubianus in dialogo, historia Regum Portugalia, dialogo 2. cap. 9. Eduard. Núñez in chron. Regum Portæ, in vita Regis Dionysij, fol. 134. Plura de valore marcapetitorum congregati Montalvo m. l. 1. verbo Cien maravedis, tit. 5. lib. 2. fori. Gouanus lib. 2. varior. cap. 14. Couar. Gomez, & Paz consensit à Barbosa in presenti, num. 13. alioquin si donatio rei modicæ esset, valeret, iuxta testum in cap. cærens, de donat. Verùm hæc interpretatio conuincitur ex proximè tradita, & ex additis in cap. 1. cap. cum in officio, de testam. ubi probatur Episcopatus, & alios beneficiarios adeo dominos esse suorum fructuum, ut de eis ad libitum disponere possint. Quare hæc interpretatione omisâ, alij discrimen agnoscent inter Episcopum secularem, & regularem, ita secularis rectè possit donare, etiam immodicè, fructus sui Episcopatus, quia habet verum eorum dominium, etiam si in infirmate constitutus donet; dummodo post donationem per quadraginta dies superviuat, ut hodie cautum est constitutione Pij IV. edita anno 1560. Episcopus verò Regularis, eùm adhuc postquam promouit est in Episcopum, verus maneat religiosus in his, quæ non obstant executioni moneti Episcopalis, incapax quoque fit domitorum ipsorum reddituum, ut post D. Thomam 2. a. q. 185. art. 8. pluribus relatis resoluit Sanchez lib. 2. summa, cap. 6. num. 8. & 9. Barbosa de potestate Episcopi allegat. 114. num. 18. & 19. Molina de iustit. tem. 1. diff. 140. Lessius end. tract. lib. 2. cap. 4. ad 5. Castropalso tract. 6. diff. 1. punct. 8. Cuetillia de donat. tract. 1.

diff. 2. p. 3. num. 135. Couar. in cap. 1. num. 18. de testam. Marthæ de success. legal. tom. 2. p. 4. q. 1. Garcia de beneficiis p. 7. cap. 10. num. 89. Maldonado in addit. ad Adolinum lib. 2. cap. 10. quæ de causâ bona 12m Ecclesiæ iuribus, quàm sui industria post Episcopatum acquisita, suæ Ecclesiæ non sibi acquirit, cap. vnic. c8. q. 1. docent Abbatis in cap. in presentia, num. 67. de probat. Nauarrus comment. 4. de regul. num. 6. Azor lib. 12. in iustit. cap. 10. quæst. 6. Emmanuel Rodríguez lib. 1. q. 9. regul. q. 89. art. 4. Molina lib. 2. de primog. cap. 10. num. 18. Ludovic. Molina tract. 2. de iustit. diff. 140. num. 37. Gabriel Perreza de decis. 75. num. 2. Vnde cum in presenti casu Episcopus Michael regularis esset, utpote ex Ecclesiæ regulari sanctæ Crucis in Episcopum electus, ideo non potuit in prædium suæ Ecclesiæ Colimbricensis prædictam donationem facere. Ita docuerunt post Glossam in presenti, verbo Regularium, Cardinus hic, apposi. 9. Berolius num. 55. Perreza de decis. 75. Casat de ecclesiast. beneficiis, diff. 14. §. 11. num. 16. Hermosilla in l. 1. tit. 4. part. 5. glossa 1. num. 10. Sed etiam hæc interpretatio sustinetur non potest? num. verius, in hac parte nullum versari discrimen inter Episcopum regularem, & secularem, siquidem Episcopus regularis non obstante voto paupertatis, etsi non possit acquirere dominium fructuum sui Episcopatus, ut testentur, tamen habet plenam, & absolutam dispositionem, ita ut donare, ac alios contractus celebrare rectè possit, ut docuerunt Abbas in presenti, num. 15. Molina de iustit. tract. 2. diff. 148. num. 5. Basilus lib. 7. de matrim. cap. 13. Azor tom. 2. iustit. moral. lib. 12. cap. 7. quæst. 2. Sanchez in præcept. Decalog. tom. 2. lib. 6. cap. 6. num. 13. Solorzano tom. 2. de iure Indiar. lib. 3. cap. 10. num. 49. D. Iosephus de Retes de donat. cap. 12. num. 32. Marquez in orig. eremit. cap. 6. §. 4. Valquez in t. 2. q. 96. art. 4. diff. 161. cap. 8. Hurtado de Mendoza de fide & spe, diff. 160. sect. 3. Robertus q. rer. iudic. cap. 3. Steph. Durant. q. 10. pro quibus facit testis distictus in cap. flammus 18. q. 1. Noguerol. allegat. 16. num. 193. Cum quibus dicendum est, in presenti infirmati donationem factam ab Episcopo Michaele, quia talis donatio data fuit mortis causâ, seu in ultima dispositione, ut etiam suppositum cum aliis Barbosa tom. 100. ex num. 10. Vnde cum illis modis non possit nec Episcopus secularis disponente de bonis iustis Ecclesiæ acquisitis, ideo donatio in presenti facta infirmata fuit, tam à iudicibus delegatis, quàm à Pontifice.

k. Laceranensi.] Legendum est Lezinensi, ut notauit Barbosa in presenti, num. final. & constat ex alia epistola ipsius Innocentij 11 l. suprà relata.

CAPVT XV.

Idem Episcopo, & Magistro G.² Lemonicensi.

Accedentibus ad præsentiam nostram dil. fil. Magistro Zacharia, & Abbatis, & conuentus Maugracen. ex vna parte; & fratre Petro Templariorum de Torren. procuratoribus ex altera, dil. fil. I. Subd. & Capellanum nostrum dedimus auditorem, coram quo procurator Abbatis, & monachorum proposuit, quod cum decimas

decimas terrarum de Sarcole diu possederint in quiete, antequam ad Templarium potestatem, & dominium peruenissent; & postquam Templarij terras adquisierint, prædictas decimas earundem per quadraginta annos, & amplius pacifice possiderint, nunc eis ipsas decimas subtrahere non verentur, in aliis eisdem gravibus iniurias irrogantes. *Et infra*: His igitur, & aliis, quæ coram prædicto Capellano fuere proposita, plenius intellectis, quia de ipsis non potuit fieri plena fides, discretionem vestram per Apostolica scripta mandamus, quatenus inquisita plenius veritate, si Abbas, & monachi sufficienter ostenderint, quod à Templariis decimas de terris prædictis per quadraginta annos continuò perceperint sine lite, vos ad præstationem decimarum ipsarum Templarios auctoritate Apostolica compellatis. Cum enim tanto tempore contra indulta privilegia decimas soluerunt, eis renuntiassè tacite præsumuntur. Quod si fortè in probatione defecerint, ab ipsorum petitione Templarios absoluat, ipsis super hoc appellatione postposita perpetuum silentium imponentes: super aliis verò, auditis quæ hinc inde duxerint proponenda, quod iustum fuerit, appellatione postposita statuatis: facientes quod decreueritis, &c.

NOTÆ.

1. *a* *Lemonicensi.*] Ita etiam legitur in tertia collectione sub hoc tit. cap. 5. De Lemou-

centi Ecclesia nonnulla adduxi in cap. 17. de moneris. & ibid. & commentarium huius textus dedi supra in cap. si de terra.

CAPVT XVI.

Idem Episcopo ^a Lingoniensi.

Cum capella Ducis b Burgundie gaudere dicatur huiusmodi privilegio, quod nullus Archiepiscopus, vel Episcopus in personas ^c Canoniconum eiusdem capellæ suspensionis, vel excommunicationis, aut interdicti sententias audeat promulgare, ^d Decanus Christianitatis, & quidam capellæ supradictæ Canonici, qui parochiales Ecclesias à te tenent, occasione privilegij prælibati in his etiam, quarum iurisdicção ad te pertinet, ita fe dicunt exemptos, ut quantumcunque graviter interdum excedant, tuæ correctioni recusent, & sententiæ subiacerent. Quocirca mandamus, quatenus in quantum exempti sunt eiusdem ratione capellæ, Apostolicis privilegiis deferat reuerenter: sed in quantum ratione parochialium Ecclesiarum, vel alias iurisdictionem tuam respicere dignoscuntur, officij tui debitum in eisdem liberè prosequaris.

NOTÆ.

1. *a* *Lingoniensi.*] In tertia collectione, ubi sub hoc tit. cap. 6. repetitur textus hic, tantum habetur *Idem*; sed rectius in præsentem legitur *Lingoniensi*, ex *Infra* dicendis. De hac diocesi nonnulla adduxi in cap. 8. de re scriptis.

b *Burgundia.*] In tertia collectione legitur *Bohemia*, sed male; nam si præsentis capella esset in Regno Bohemie, quomodo conqueri poterat de eius capellanis, atque eorum correctionem intendere Lingoniensis Presul, qui est in Gallia? Agitur ergo in præsentem capella Ducis Burgundie, quæ celebris est, & vulgò dicitur *Sancta Capella*: eam Diocione instituit Hngo III. Dux Burgundie anno 1171. ut constat ex præcepto ipsius foundationis edito ab Auberto Mireo, & referunt *Altefferra de Ducibus* cap. 8. *Paulus Ydumay in not. ad Innoc. III. lib. 4. Registr. epist. 101.* *Challanena in catal. p. 12. considerat. 63.*

c *Canoniconum.*] Sæpius enim Principes, & Comites ac Duces Archiepiscopatum habere legimus. In Concilio Aurelian. 4. can. 7. & 16. *Cabilon. 1. cap. 14.* apud *Ordeticum lib. 6. dist. pag. 611.*

& alios mediæ ætatis scriptores, quos congerunt *Dadinus Altefferra de Ducibus lib. 2. cap. 8.* *Filescus in cap. 9. §. 15. per tot. de offic. Ordin.*

d *Decanus Christianitatis.*] Idem sancti Ioannis Baptiste Dioionensis, de qua capella agit *Innoc. lib. 3. registr. 15. in epist. 201.* missa Abbati, & Priori Cisterciensi, & Decano huius capellæ, ibi: [Dilectus filius I. Decanus Christianitatis Dioionen. in nostra proposuit presentem constitutus, quod cum olim L. & H. Canonici Capellæ Ducis Dioionen. Lingonen. dioc. non ad correctionem, sed potius ad infamationem ipsius nobis quædam denuntiatis, contra ipsum ven. f. n. Mattheonen. Episcopo, & suis coniudicibus de ditionem in mandatis, ut vocatis qui essent propter hoc evocandi, quod invenissent super obiectis, per suas nobis literas intimarent, paribus in ipsorum presentia constitutis, & eodem insciente Decano, quod denunciationem ipsam monito charitativè percellisset, & firmiter asseruisset prædictos Canonicos factæ denunciationis tempore inimicos eius, & æmulos excitisse, tandem fuit ad Sedem Apostolicam appellatus, cuius appellationi memorati iudices devenerunt. Idem verò Decanus quorundam religiosorum

religiosorum literas representans, qd de vita, & conseruatione ipsius laudabile testimonium perhibebant, nobis humiliter supplicauit, vt occurrere aduersariorum suorum malitiæ, ac laboribus eius finem imponere dignemur. Nolentes autem ipsam indebitè fatigari, discretionis vestre per Apostolica scripta mandamus, quatenus si denouciatores præfati monitionem charitativam præmisisse super obiectis probare nequiverint, aut Decanus ipse doceat illos suos exiisse denunciationis tempore inimicos, eundem ab illorum denunciatione, sublato appellationis obstaculo absoluat. Alioquin in eodem negotio iuxta priorum contententiam literarum, appellatione remotâ, ratione præuiâ procedatis. Quod si non omnes, &c. duo vultum, &c. Tu denique fili Abbas super re ipso, &c. Datum Lateran. lib. Ianuar. P. N. Anno XV.]

COMMENTARIUM.

4 CUM Dux Burgundie capellam propriam haberet cum capellanis Aulicis, vt plerumque magni Dynastæ habent, vt Magnus noster Monarcha, de cuius sacello librum edidit Tartaricus; & Reges Aragoniz, Exca in l. vnic. Cde palat. fol. 80. Dynastæ Bituricensis, Altferra dila cap. 8. privilegium exemptionis capellani habebant ab omni iurisdictione diocesana, iude intenebant nec ratione parochialium Ecclesiarum, quas à Lingo-

nensi Episcopo acceptant, illis subesse, etiam in earum regimine magna crimina perpetrarent. Sed contrarium decreuit Innocentius III. videlicet eos ratione exemptionis, quam virtute capelle habebant, non posse eximj à iurisdictione Episcopi Lingoniensis, propter Ecclesias parochiales, quas tenebant; & in rüd, nam etiam religiosus exemptus promouit ad beneficium parochiale, ratione illius beneficij subiectioni impeno, & iurisdictioni ordinarij, vt probant pluribus telatis Barbofa in celsi. ad Clement. 1. num. 10. de statu monach. Sanchez in princip. decalog. lib. 6. cap. 6. num. 36. Moniera de consensu. cap. 6. num. 31. & cap. 7. num. 272. Cochet de iurisd. in exemptis, 2. part. quest. 45. Salgado de reu. bul. 2. part. cap. 15. n. 3. quod etiam contingit in quocunque exempto, qui conueniri potest coram ordinario ratione officij, seu publice functionis, ex l. vnic. Cod. in quibus causis milites for. præscripti. l. 1. Cod. ubi Desur. auctent. iudices sine quaque suffrag. 6. n. 1. in fin. Unde in præfati causa etiam capellani Ducis Burgundie exempti essent à iurisdictione ordinarij, tamen propter Ecclesias parochiales, quas tenebant, puterant puniri ab Episcopo Lingoniensi, à quo eas acceptant. Docuerunt Tutuuet, in sacello sacro, cap. 4. Boquet. ad Innoc. III. lib. 1. regeff. 13. ap. 17. l. 1. de capell. c. 16. num. 15. Barbof. de potest. Episc. alleg. 123. quæzinde viles, & in foro quæzidnas quæziones resolunt circa exemptos peccantes in officia propriis.

CAPVT XVII.

Idem Abbati, & Fratribus * Euasinen. cænobyj.

EXORE sedentis in throno procedit gladius bis⁶ acutus, quoniam ex ore Romani Pontificis, qui præsidet Ap. Sedi, rectissima debet exire sententia, quæ conera iustitiam nulli parcat, sed reddat vnicuique quod suum est. Cum igitur inter nos, & ven. f. n. Vvigorien. Episc. super monasterij vestri subiectione, ac libertate controuersia verteretur, & nos eandem terminandam commiserimus iudicij delegatis, causam eandem sufficienter instructam ad nostram præsentiam remiserunt, certum partibus terminum præfigentes, quo cum instrumentis, & attestationibus nostro se conspectui præsentarent sententiam receperunt. Partibus igitur in nostra præsentia constitutis, per procuratores idoneos audientiam præbuimus liberam, & benignam. Et quidam monasterij vestri proposuit procurator, quod idem monasterium ab ipsa sui fundatione liberum exiit, & exemptum, ad hoc probandum privilegia prædecess. nostri inducens duo, videlicet Constant. vnum, & alterum Alexandri; necnon indulgentiam Clementis, & Cælestini: quorum vsum continuum longis retrò temporibus depositiones testium ostendere nititur. Et infra: Porro in privilegio Const. quiddam contineri perspicitur, per quod idem cænobium videtur ad iurisdictionem Episcopalem pertinere, videlicet quod Abbas eiusdem monasterij primum locum post Vvigorien. Præfulem semper obtinebat. Vnde cum locum ipsum obtinere non possit in Concilio generali, neque in provinciali, quoniam absonum esset vt Abbas primus post illum super alios Episcopos⁴ resideret; relinquitur ergo, quod locum illum in Episcopali Synodo intelligatur habere, quasi teneantur ad Synodum Episcopalem accedere, ac per hoc ipsius statuta recipere, ac seruare. In privilegio verò Alexandri Papæ quiddam aliud⁶ continetur, propter quod diocesanus Episcopus in eodem cænobio iurisdictionem, etiam non in omnibus, in quibusdam tamen retinuisse videtur, cum in illo dicatur quod Vvigorienfes Episc. à fratribus eiusdem loci aliquid iniuste non exigant; sed his tantum contenti permaneant, quæ prædecessores eorum antecessoribus suis constat rationabiliter impendisse. Vnde constat, quod Abbates Episcopis aliqua de suis exhibere tenebant. Nos igitur his, & aliis diligenter auditis, & perspicaciter intellectis, cum à neutra parte

per testes præscriptio fit probata, de communi f. n. consilio diffinivimus sententialiter, quod Eneshamen. cœnobium liberum est in capite, tanquam ab Episcopali iurisdictione prorsus exemptum, & soli Rom. Pontif. & Ecclesiæ Rom. subiectum; tutelâ tamen ipsius Cantuar. Archiep. reservatâ: in membris autem, videlicet in his, quæ non probantur exempta, diœcesano Episc. ipsum decernimus subiacere, propter quæ Abbas ad Synodum eius debet accedere, primumque locum post Vvignornien. Episcopum obtinere: pro ipsis quoque membris, ut diximus, non exemptis, idem Abbas tenetur Vvignornien. Episc. exhibere reverentiam, obsequium, & honorem, quibus Vvignornien. Episcop. sibi competenter exhibitis debet manere contentus.

NOTÆ.

1. ^a *Vosnens.*] Ita legitur in tertia collectione, *sub hoc tit. cap. 7.* in hac sexta legitur, *Enesham.* sed utrobique male, quia legendum est *Enesham.* quod monasterium est Dni Benedicti, ut probatur in *cap. 3. de integ. regis.*
^b *Gladius hic acutus.*] Verba sunt capituli 1. Apocalypsis, quæ exponit Barboſa in *presenti.*
^c *Poigurnam.*] De Vvignornien. diœcesi Angliz nonnulla alaxi in *cap. nro 9. de elect.*
^d *Refideret.*] De ordine sedendi Præſtorum in Conciliis latè agit Filicetus in *cap. quod sedem, 5. 1. de officio ordin.* etiam aliqua notat in *princip. Concil. liber.*

COMMENTARIUM.

3. **L**etè monasterium exemptum fit principaliter in capite, non ideo eius membra exempta videntur, ut de monasterio Rotonenſi, & eius Ecclesiis decrevit idem Innoc. III. *lib. 1. regestr. t. 3. epist. 7.* Episcopo Venerenſi ita referens. [Cum mouisset olim adversus Rotonenſe monasterium quæſtione, asserens monasterium ipsum, ac parochiales Ecclesias eius ad te de communi iure spe-

ctare, vrpote in tua diœcesi constitutas, in eisdem iura tibi Episcopalia vindicando: & ex parte monasterij diœcesan. idem monasterium cum parochialibus Ecclesiis suis Romanorum Pontificum privilegiis ab antiquo libertate donatum, super eadem causa frequenter fuerunt litteræ Apostolicæ impetratæ. Denique autem utraque pars in venerabiles fratres nostros Nanneren. & Breioen. Episcopos sub certa pœna, & iuramento interposito compromisit, qui rationibus utriusque partis auditis, & monasterij privilegiis diligenter inspectis, de Concilio peritorum illud in capite liberum sententialiter decreverunt. Verùm quia Ecclesiæ parochiales ipsius exemptæ nullatenus probantur, pronuntiaverunt eisdem ad iurisdictionem tuam, sicut alias tuæ diœcesis Ecclesias, pertinere, & statim de consilio statum nostrorum pronuntiavimus, monasterium sepeditum in capite liberum, & à tua iurisdictione prorsus exemptum, decernentes parochiales Ecclesias eius, quæ minimè probantur exemptæ, tibi diœcesana lege subiectas. Nec enim ex libertate capitis membrorum nascitur libertas: quæ quia iuri communi de tota, nominatim, expresseque dari debet, & nominatim probari.] Ut post congestos à Bath. in *presenti, & alleg. 1. 3.* docet Bosquetus in *notis ad dictam epist. 7.*

CAPUT XVIII.

Idem * *Aufonen. Episcopo.*

Ex parte tua fuit quæsitum, utrum clerici, & laici, qui literas protectionis ostendunt, in quibus personæ suæ ex pronomine, cum omnibus rebus suis sub Apostolica protectione consistere declarantur, à iurisdictione Episcopi diœcesani sint exempti. Nos autem tibi respondemus, quod per literas huiusmodi ab Episcoporum suorum potestate minimè subtrahuntur.

NOTÆ.

1. ^a *Vfonen.*] In tertia collectione, *sub hoc tit. cap. 3.* legitur *Aufon.* sed perperam; nam Aufona civitas antiqua Episcopali Sede condecorata est in Hispania, in prosinea Tarraconenſi, ad montis Pyrenæi radices sita, hodie dicitur *Vieque*, à Barcinone decem millariibus Hispaniâ, à Geronda sex distant. Eius vetustissimum nomen *Aufa*, siue *Aufona* fuit, de quo, & eius conditio agitur Pojadas *lib. 4. hist. Catal. cap. 14. & 34.* Tamayus à Sala-

zar *tom. 3. martyrol. Hisp. die 28. Maij.*

^b *Subtrahuntur.*] Consonant textus in *cap. recapitulas, hoc tit. cap. per tuas, & moiric, & obed.* Ideoque exemptio non probatur per literas protectionis, quas plerumque Pontifex certis personis, aut monasteriis concedit, ut probat Bruno Chafſing. *de privi. regul. tract. 2. cap. 2. propost.* qui resoluit, protectionem hanc illud operari, videlicet ut ita receptus sub protectione non possit excommunicari, interdicti, aut suspendi ab aliis quàm à Pontifice, aut Legato à latere.

CAPUT XIX.

Idem * *Elienſi Episcopo.*

Pastoralis officij. *Et infra:* Interrogasti præterea, utrum viri religiosi, quibus à Sede Apostolica est indultum, ut Ecclesias suas in proprios usus ^b convertere possent, decedenibus personis earum, liceat auctoritate propria possessiones earundem Ecclesiarum

Ecclesiarum intrare, vel per diocesana in ipsam sine potius inducendi. Ad quod utique respondemus, quod nisi forte in indulgentia Summi Pontificis id contingatur expressum, suo Episcopo inconsulto in possessionem ipsarum eis non est licitum intrare, quia per indulgentiam huiusmodi Episcopali iuri non credimus derogari.

NOTÆ.

1. **a** *Heliosfi.* Ita etiam legitur in tertia collectione, *sub hoc tit. cap. final. & in cap. pastoralis, de offic. ordin.* ubi alias partes huius decretalis congliscit.
- b** *Conuocare.* Quod aliis facere non poterant, iuxta tradita in cap. 2. de supplend. neglig. cap. de monachis, de prob.
2. **c** *Personis.* Possessoribus videlicet; nam vnio

facta monasterio tantum operatur effectum defuncto Rectore ipsius Ecclesiæ, ut probatur in capitulo vnico, de excess. Prælat.

d *Possessionem.* Tum quia priuilegium ita interpretandum est, ut quanto minus occurrat iuri communi: tum quia oemo potest apprehendere propriâ auctoritate possessionem beneficii, Ecclesiæ, ut probatur Coartu. lib. 3. var. cap. 6. num. 7. Moneta de commut. cap. 11. num. 91.

CAPVT XX.

Idem Episcopo & Capitulo Tripolitan.

Petiistis per Sedem Apostolicam edoceri, verum cum propter Hospitalarios, vel Templarios ciuitas vestra generali supponitur interdictio, eisdem non seruantiis, vos illud teneamini obseruare. Ad quod sic duximus respondendum, quod illorum excessus vobis non præbet licentiam excedendi: sed si præfati Hospitalarij, vel Templarij priuilegiorum suorum fines excesserint violando temere interdictum, quod pro illis fuerat promulgatum, ne ipsi videantur de aliorum fletu ridere, vos in penam præsumptionis eorum quâmdiu ipsi violauerint interdictum, de nostra licentia celebretis. Datum Signix xi v. Kal. Octob. P. N. anno xv.

NOTÆ.

1. **a** *Tripolitano.* Ita etiam legitur in quarta collectione, *sub hoc tit. cap. 3.* & reperitur textus hic in ipso regesto tonoc. III. edito à Bosqueto lib. 3. regest. 15. epist. 160. ex quo textum hunc

transcribo, De Tripolitana Ecclesia nonnulla adduxi in c. 1. de translat. Episcop.

b *Celebratis.* Speciali gratia, quæ in præfata à Pontifice fit, alijs etiam Hospitalarij non obseruassent interdictum, tamen alij clerici illud obseruare debebant.

CAPVT XXI.

Idem.

Quoniam sicut nobis per tuas literas inuimasti, per confessionem constat partis aduersæ, quod Nepefinus Episcopus Episcopale ius percipit in Ecclesiâ sancti Blasij de Flano, ac per hoc eadem Ecclesiâ non pertinet ad monasterium pleno iure: credimus, quod non obstante illo Capitulo. priuilegij, quo ipsi monasterio est indultum, ut nullus Episcopus Ecclesiâ viroque iure illi subiectas interdictio supponere, vel vicarium, vel clericum eiusdem monasterij synodare, vel excommunicare præsumat, præfatus Episcopus possit interdiciere dictam Ecclesiâ, & excommunicare monachum ad eius regimen deputatum, cum alterutrum de iure faciendum fuerit; quoniam illud caput intelligendum esse videtur de monachis, aut clericis in ipso monasterio permanentibus, vel ad Ecclesiâ destinatis viroque iure sibi subiectas.

NOTÆ.

1. **a** *Idem.* Ita etiam legitur in quarta collectione, *sub hoc tit. cap. 4.* nullibi tamen exprimitur, cui Præfatus referribat Innocentius, nec inter eius epistolas editas à Sislerio, & Bosqueto verba in præfata transcripta reperiuntur.
2. **b** *Nepefinus.* Nevis ciuitas est perantiqua Etruriz, quam Strabo Nevisam vult appellare.

Colonia fuit populi Romani, ut referunt Frontinus, Velleius, & Paterculus relati ab Vghellio tom. 1. Ital. sacra, fol. 1096. qui refert originem, & progressum huius Ecclesiæ, tradique seriem eius Præfatum. His temporibus Innocentij III. eam Ecclesiâ regbat Gerardus.

c *Regimen deputatum.* Ex consensu Episcopali, iuxta tradita in cap. 1. de caput. monach.

CAPVT XXII.

Idem Archiepiscopo^a Londin. Ap. Sed. Legato.

QVia circa. *Et infra:* Subsequenter etiam quæsiuisti, utrum monachi^b Omnium Sanctorum priuilegium bonæ memoriæ B. prædecess. tui super Episcopaliibus^c decimis retinendis indultum extendere valeant ad possessiones adquisitas, & postmodum adquirendas. Super quo tale damus responsum f. t. quod si decimarum illarum remissio facta secundum canonicas sanctiones existit, prædecessor tuus indefinitè decimas Episcopales monasterio remittendo, cum nihil exceperit, & poterat excepisse, ac in beneficiis plenissima sit interpretatio adhibenda, nec debeat vna, eademque substantia diuerso iure censeri; intellexisse videtur de decimis non solum possessionum illius temporis, sed futuræ.

NOTÆ.

1. ^a *Londinensi.* Ita etiam legitur in quarta collectione, *sub hoc tit. cap. 4.* Sed integram huius textus, & eius veram inscriptionem dedi in cap. quia circa, de bigami. non ordin.
^b *Omnium Sanctorum.* Monasterium hoc est Ordinis D. Benedicti, in diocesi Londinensi, ut refert Tamburinus in serie Abbatum, verbo *Londensis.*
^c *Episcopaliibus decimis.* De quibus egi in cap. 4. de prescrip.

COMMENTARIUM.

2. **I**N hoc textu Innocentius III. docet Episcopum priuilegio suo concedente monachis decimas Episcopales, non solum præsentem, verum & futuras, remissile videtur, videlicet soluendas de prædiis postea adquisitis per ipsos monachos: quod difficile valde videtur ex sequentibus iuris principis. Primum nascitur ex eo, quia licet Summus Pontifex possit concedere exemptionem à solutione decimarum, tam monachis, quam laicis, *ex decimis 16. q. 1. c. ubi ut suspendit, c. cum dicit, de Eccl. edific. c. accedemus, c. si de terra, c. admodum 31. h. de tit. cap. ex multiplici, c. ex fuisse, c. ex parte, c. super, de decimis;* tamen Episcopus non potest simile priuilegium concedere, ex vulgari principio, quod docetur, Episcopum non posse priuilegium contra ius commune econdere, *c. cum dilectus, de elec. Clement. ne Romanis, eodem tit.* Docent Munia de communi. *c. 5. q. 2. a. n. 43.* Anguianus de legum lib. 3. *centum. 1.* Igitur in præsentem non poterat Episcopus Londensis exemptionem à decimis monachis Benedictinis concedere. Accedit, nam Episcopi, inconsulto Capitulo, & sine debita solennitate aliquid de bonis Ecclesiæ, aut propriæ dignitatæ alienare non valent, *c. sine exceptione 51. 12. q. 2.* quia non sunt rerum eorum domini, sed economi, *cap. fructus, tit. 2. de donat. cap. 2. de his qui sunt à Prælat.* Igitur etiam ex defectu solennitatis præsentis concessio exemptionis inefficax erat. Secundò difficilis etiam redditur hæc decisio ex eo, quia futura non cadunt sub indefinita dispositione, *l. si ita, l. final. in princip. ff. de auro & argent. vbi* legato relicto per illa verba, *Argentum meum;* tamen intelligitur relictum, quod testator habebat tempore testamenti. Docent Menochius lib. 4. de presump. casu 127. n. 34. Mantica de censu lib. 3. tit. 17. n. 1. Castillo de usufruct. c. 44. n. 4. Perez de Liza lib. 1. de capels. 16. n. 3. Igitur in præsentem casu (ubi generali, & indefinita concessione exemptionis à solutione decimarum non comprehenduntur futuræ. Facit textus in Clement. final. de rescrip. vbi docetur, rescriptum gratiosum ad beneficium vacaturum, non extendi ad benefi-

cium postea creatum: Igitur quia concessio gratuita, et si indefinita, non comprehenduntur futura. Quibus difficultatibus ut suo ordine satisfaciamus, pro primæ solutionis dicendum est, Episcopum Londensem in præsentem casu non concessisse exemptionem à decimis Episcopaliibus per modum priuilegii, sed beneficii, & donationis; unde quauis Innocent. III. præsentem concessionem priuilegium appellasset in principio textus, ibi: *priuilegium prædecessoris tui;* accipiendo illud latè pro concessione superitis, tamen in ipsa decisione expresse agnoscitur concessionem per modum beneficii factam fuisse, in illis verbis: *In beneficiis plenissima sit interpretatio adhibenda.* Unde quia concessio hæc ut beneficium sustinetur; ideo ad futura est extendenda, & laicum recipit interpretationem, iuxta textum in *c. cum dilectus 6. de donat. c. olim, de V. S. l. 3. ff. de consus. Princip. l. 3. ff. de iuro inuocati, & tradita supra in c. si de terra, alias si ut priuilegium sustineretur, præsentem concessio strictam reiperet interpretationem, *c. ex inuocum 11. de auctorit. & vbi pal. c. super eo 15. de offic. deleg. cap. paritè, cap. sine, cap. cum capella, hoc id. aliis relictis doctis Concilio rom. 5. var. cap. 3. a. n. 2.* Nec obstat secunda difficultas, pro cuius solutione varia adduxerunt Interpretes. Ceterò 2. part. decis. 21. a. num. 5. existimant in præsentem casu specialiter exemptionem extendi ad futura, quia facta fuerat monachis, & ita fauore religionis futuræ etiam comprehendit sub eis, ex vulgari principio; quia videlicet summa est ratio, quæ pro religione facit. Verum hæc solutio omittitur, alij etiam ab Arias de Mesa lib. 3. var. cap. 13. discrimen constituunt inter indefinitam dispositionem, cui adiectum est pronomen *meum;* & inter eam, in qua adiectum non est. Primo casu asserunt, indefinitam dispositionem non potari ad futura, quia restricta est per pronomen *meum,* dist. l. si ita 7. l. final. ff. de auro & argent. Secundo verò casu ad futura indefinitam dispositionem extendi, *l. quidam 7. ff. de vine, vitiis, c. licum auro 20. ff. de auro & argent. vbi* in legato auri, vel tituli comprehenditur omne, quod testator habebat tempore mortis: quam distinctionem explicat, & limitat Arias de Mesa lib. 13. var. cap. 13. *enm sequens.* Sed etiam omittit dicendum est in præsentem, ideo concessio nem extendi ad futura decimas, quia agebatur de interpretatione similis exemptionis contra ipsum concedentem, Episcopum videlicet successorem in dignitate. Cum enim ille tempore concessionis clausula indefinita usus fuerit, eum potuisset apertius exprimere, sc. rationem de decimis præsentibus sentisse; ideo contra eum interpretatio lata sit: quæ interpretatio facile colligitur ex illis verbis, *cum nihil exceperit, & potuisse excepisse.**

excepiss. Nec obstat quod dicebamus, ex defectu solennitatis in quacunque alienatione rei ecclesiastice adhibenda, nullam fuisse concessionem ab Episcopo Lugdunensi in presenti casu factam; cum licet non exprimeretur in facti serie, talem solennitatem adhibuisse fuisse; tamen eam præcessisse satis exprimitur in illis verbis: *Remissa solita exiit secundum canonicas sanctiones.* In quibus verbis satis expressit Innocens, exigit, in hac concessione necessarium esse solennitatem à iure præscriptam similis alienationibus. Nec tamen obstat textus in *dist. Clementina prima, de rescrip.* pro cuius conciliatione cum prædicti textu Zabarella ibi, Petrus Barbosa in *Liberio 8. §. quod in anno, n. 17. ff. solennitatem*, existimant discretem esse constituturam

Inter dispositiones indelimitas, vniuersales, & particulares, ita ut priores ad futura eriam extendantur, non verò posteriores. Sed ea solutione omittenda, & alia adducta à Valasco *resol. 58. num. 11.* dicendum est cum B. abbas in *dist. Clem. final.* Castillo de *tercio, c. 14. n. 39.* quos sequitur Arias à Misa *lib. 3. varior. c. 41. n. 25.* ideo in specie dictæ Clementinae rescriptum gratiosum non extendi ad beneficia ecclesiastica, quia in ipsius literis gratiosis expressus fuit certus modus vacationis, beneficii vacaturi scilicet, qui modus non poterat verificari in beneficio postea creato, cum illud erigi, non vetò vacare diceatur. Accedit, quia talis creatio noua beneficii non potest referri inter modos beneficii vacandi, cum nunquam collatum esset tale beneficium.

CAPVT XXIII.

Idem in Concilio Generali Later.

Antiqua Patriarchalium Sedium privilegia renouantes sancta vniuersali Synodo approbatae sancimus, ut post Romanam Ecclesiam (quæ disponente Domino super omnes alias ordinatæ potestatis obtinet principatum, vixit mater vniuersorum Christi fidelium, & magistra,) Constantinopolitana primum, Alexandria secundum, Antiochena tertium, Hierosolymitana quantum locum obtineat: seruatæ cuiuslibet propriæ dignitate: ita quod postquam Antistites eorum à Romano Pontifice receperint pallium (quod est plenitudinis officij Pontificalis insigne) præstino sibi fidelitatis, & obedientiæ iuramento, licenter & ipsi suis suffraganeis pallium largiantur, recipientes pro se professionem canonicam, & pro Romana Ecclesia sponsonem obedientiæ ab eisdem. Dominicæ verò crucis vexillum ante se faciant vbique deferri, nisi in urbe Romana, & ubicunque Summus Pontifex præsens extiterit, aut eius Legatus vrens insigniis Apostolicæ dignitatis. In omnibus autem prouinciis eorum iurisdictioni subiectis ad eos (cum necesse fuerit) prouocetur saluius appellationibus ad Sedem Apostolicam interpositis, quibus est ab omnibus humiliter descendendum.

NOTÆ.

L *Atheniensis.* Ita etiam legitur in quæstione collectione, sub hoc titulo cap. 6. & reperitur verum hic, in cap. 5. Concilij Lateran. generalis, celebrati sub Innocentio III. de quo nonnulla adduxi in cap. 1. de summa Trinit.

b *Privilegia.* Hic deduci videtur, non iure communi, sed privilegio speciali competere Patriarchis ius descendendi erucem ante se: quod Chancel videtur in c. 1. ut *litte pendent.* ubi cum de hac declaratione crucis agitur, ait Alexander III. *Quomodo videtur quod est beneficium privilegiorum Apostolica Sedis indultum.* Et c. *consequens* g. 3. ibi: *Primates autem, vel Patriarche, non privilegium habere præ ceteris Episcopis, nisi quantum sacri canonis continent, vel per se consensum illis antiquitus communi, deservimus.* Sed contrarium verum est, imò quod Patriarche possunt per totam diuisionem suam erucem ante se deferre inter Prouinciæ Metropolitanoarum, ut possint etiam Archiepiscopus eam deferre infra dioccesim (infraganonem), *dist. cap. 1. ut litte pendent.* Clementina 2. hoc tit. Faciant veritas in l. 1. ff. de offic. Proconsul. l. 2. Cod. de Propositis sacri. cubi. lib. 12. *litte facie.* Cod. de proximis sacri. firm. lib. 12. probant Arias in *litte. moral.* cap. 36. quæst. 1. Petrus Gregorius lib. 15. *syn. 42. c. 9. n. 6.* Pencilola lib. 1. *com. c. 20. 4.* habens, Gratianus *c. 6. penult. f. 1067. n. 3.* Acuta de primatu Brachor. c. 6. Nec contrarium probatur in presenti textu, quia in eo speciale continetur pri-

uilegium, ut Patriarche possint vbique erucem ante se deferre; quod facere nequibant iure communi antequam, sed tantum intra proprium Primitum: unde vitiose privilegium huius cum defectu vbique exceptis urbe Romanæ aut ubi Legatus, A. reperitur.

c *Principatum.* Ecclesia enim Romana semper primatum habuit, & Ecclesia vniuersalis est, unde sacerdotalis vnitas eroritur. Irenæus lib. 3. contra Valens. cap. 3. Synodus Nicæna can. 6. *Quod Ecclesia Romana semper habuit primatum.* Pelagius 1. in *epist. ad Saporum*, ibi: *Apoc. Primitum à solis ortu usque ad occasum.* Cuius Episcopus cultus fidelitatis in Concilio Ephesino *dist. 2.* Sanctissimus, & Beatissimus vniuersalis Patriarcha magne Romæ appellatur ab Athanasio in *libello ad Laurent. Papam*: Episcopus vniuersalis à Sixto 1. in *epist. 2.* ibi: *Sic ut vniuersalis Apostolica Ecclesia Episcopus.* Gregorius IX. *epist. ad Conradum*, ait de Vniuersibus, quod illi competit apex Primatus à solis ortu usque ad occasum, Pater Patrum, Episcopus Patriarchatum dicitur ab Athanasio Rege apud Cassiodorum lib. 9. *epist. 15.* Et Valentinianus in *epist. ad Theodosium*, part. 3. *Cetili. Chalced.* ait: *Primitum habens sacerdos, ad quem secundum consuetudinem Synodorum appellant Patriarcha.* Theodosius in *Novel. 24.* quæ existit ad eadem Codicem Theodos. ait: *Cum Status Apostolica Primitum sancti Petri meritis, qui Princeps est Episcopalis cetera, & Romana ciuitatis dignitas, sacra etiam Synodi firmant auctoritas, ne quid præter auctoritatem ipsius Sedis intendantur.*

presumptio attente vitatur; tunc enim demum Ecclesiarum pax obsequi servabitur, si Rectorem suum agnoscat universalis. Et plerumque universalis Episcopus vocatur dicitur, et variis auctoritatibus probat. Ant. Aug. in epis. lib. 1. tit. 1. Eodemque significato nemini ab Universali Concilio repetitur attributus titulus universalis, nisi soli Pontifici Romano Leoni Magno à Concilio Chalcedonensi, non solum in epistolis eidem Pontifici ab Alexandrinis directis, & in Concilia publicè lectis, ut in prima parte eiusdem Concilii; verum etiam in titulo epistolæ ab ipso Concilio per confirmationem gestorum eidem Pontifici transmissæ, et in 3. part. Concilii, num. 1. Et quoniam hodie in ea epistola hic titulus alicuius dolo librarii non legatur, ut observat Baronius tom. 6. anno 451. num. 150. in eius tamen inscriptione, vel sibi hunc titulum fuisse à sacro Concilio Leoni attributum, omni certitudine affirmandum est. Sic enim ait sanctus Gregorius lib. 4. epist. 36. ad Eulogium: *Vestra Sanctitas natus, quod omni per sanctam Chalcedonensem Synodum Pontifici Sedes Apostolica (cui Deus dispensatione deferunt) hoc universalis nomen ablatum est. Quod verò subdit: Sed nullus unquam decesserunt memum hoc tam propheta vocabula tui confectus; obicitur Baronius ubi supra, esse intelligendum ita, ut nemo Romanorum Pontificum eo titulo, ex solenni ritu semper & in omnibus inscriptionibus, vel subscriptionibus usus sit; atque in eundem sensum loquens videtur Leo IX. epist. ad Michaelem Patriarcham, quum refert etiam Baronius tom. 11. anno 1054. num. 22. cuius hæc sunt verba: *Qualis vero, & quoniam deestabilis, aque lamentabilis est ille sacrilega usurpatio, quæ se universalem Patriarcham iactat obique scripsit, & omni Deo amicum huiusmodi hactenus honoris honorari vocabula. Et qui post Christum conveniuntur posset insigniri hoc vocabulo, quem cui dicitur divina voce: Tu es Petrus, & super hanc petram ædificabo Ecclesiam meam? &c. Permutantem quia ille non invenitur universalis Apostolus dictus, quoniam Princeps Apostolorum se constituit; nullus successorem eius tam prodigiosa prenomine confectus appellari potuit, licet Magno Leoni prædecessori nostro, & successoribus ipsius hoc sancta decreverit Chalcedonensis Synodus. Nempe animadvertendum, non esse amicum ipsius, qui pro spem vult amari: quia prius paranyphum, & leonem Antichristi, qui aduersari, & extollit super omne quod dicitur Deus, aut quod celum. Ecce ille leonem reffer, cuius vesane adinventiois adit heredes permutatis (de Ioanne Patriarcha loquitur, qui primus sibi Occidentis prænomine indidit, qui secundum Psalmistam, per eos adit vocat nemina sua in terra suis; cum interit, non sumptis omnia, neque descendis tumore gloria eius ad infernum) quia cum in honore esset, non intellexit: ipse à beatissimis Pontificibus Pelagio, & Gregorio, successoribusque eorum pro hac insensata amandamentis in sua portione irrevocabilis perit, itaque per quadragesimam & quadraginta annos sua continuata sequaces precipiter non cessavit. Hæc Leo IX. sed & Irenæus Papa in epistola ad Coosantinum & Irenæum Augustos, quæ erit tract. 7. Synodi eccl. 2. hæc ait: *Falde mirari sumus, quid in vestris Imperialibus iussu pro Patriarcha Regia verbis (scilicet Tarasio dicitis) universalem ibidem compertimus exaratum: sed verum per imperium, vel heresim iniquum scriptum est, ignoramus: sed denique suadentem vestra clementissima, Imperialique potentia, ut mi-***

nime in suarum exarationum serie universalis describatur, quia contra sanctarum canonum iustitiam, seu sanctarum Patrum traditionem decreta esse videtur. In secundo enim ordine non nisi per sancta nostra Catholica, & Apostolica Ecclesia auctoritatem valuit nomen habere: quid videretur super prælatum sibi sanctam Romanam Ecclesiam, quæ est caput omnium Dei Ecclesiarum, describatur, tanquam sanctarum Synodorum rebellem, aque hereticum manifestum se certum esset. Quod si universalis est, etiam Ecclesia nostra sedes primatum habere dignoscitur; quod ridiculum omnibus fidelibus Christianis apparet, quia in toto orbe terrarum ab ipso Redemptore mundi beato Petro Apostolo principatus, & potestas data est, & per eundem Apostolum, cuius licet innumeris vicis gerimus, Sancta, Catholica, & Apostolica Romana Ecclesia habetur; & in quam tenet principatum, ac potestatis auctoritatem: quatenus (quod non credimus) si quispiam eum universalis nuncupaverit, vel assensum ei dederit, scias se orthodoxam fidem esse alienam, & nostra Catholica, & Apostolica Ecclesia rebellem. Doctræ probant hunc Romanæ Ecclesiæ Primatum supra ceteras Ecclesias, p. Suarez de fide disp. 10. sect. 2. Germanus lib. 3. de sacer. immunit. cap. 4. Datis de benef. sect. 1. cap. 2. Idem in tract. de Ecclesiis sububicatis, cap. 1. 3. cum sequent. Baronius ann. 45. num. 1. & 206. num. 3. & 215. num. 1. Turrianus lib. 1. pro canon. Apost. cap. 16. & lib. 2. pro epist. Pontif. cap. 3. & 4. & lib. 3. c. 10. & 14. Roussellus lib. 8. l. 1. Pontif. iussu, cap. 2. Theophilus Raynaud. in cetera auctor. Rom. Pontif. verba Patriarcha quiversalis; & verbo Primus directos; & verbo Primus Primatum, in digest. Alphabet. Motionis lib. 1. exercit. 5. F. Angelus Petrica de appellat. ad Rom. sancti Petri Cathedralis lib. 1. disp. 2. per tot. Philippus Bæterius Pithanus dicitur 3.

Est nihil appetius fer iis, quæ proximè adduximus pro universalis potestate Summi Pontificis, tum ex Conciliis, tum ex Patribus, tum ex legibus; tamen quia nonnulli, qui nodum in circo quærent, contrarium tenent, moti quibuscum canonibus perpetram expensis, vel in dubium tenent hanc universalem Pontificis auctoritatem, ideo eos, ut breviter, exponere oportet. Duxi. Primus est canon 6. Concilii Afric. relatus à Gratiano, in cap. prima Sedis, 99. disp. in illis verbis: *Primo Sedis Episcopus non appellatur Princeps Sacerdotum, vel Summus Sacerdos, aut aliquid bulumedi. Ex quibus verbis deducitur, Pontificem non rectè appellari universalem Patriarcham, seu Primatem. Per cuius canonis expositionem supponendum est, illum deducum esse ex Concilio Provinciali in Africa celebrato, ubi corruptela ngebatur, ut Episcopi Principis Sacerdotum, & Summi Sacerdotes vocarentur. Optatus Milevis, lib. 5. contra Parmen. Quid commoverem heres, qm tunc in Ecclesia nulla fuerant dignitates suffulti? Quid ministros plurimos? Quid Diaconos in serio? quid presbyteros in secundo sacerdotio constituit? Ipsi episcopi & Principes omnium Episcopi. Tunc lib. de baptismo, ubi: Dandi quidem baptisum ius habet Summus Sacerdos, qui est Episcopus. D. Augustinus lib. 1. quæst. ex terroque usum, mixt. quæst. 100. Quid est Episcopus, nisi primus presbyter, hoc est primus Sacerdos. Quia verò ad fovendum suam ambitionem hæc nomina quidam trahabant, & superbus aliquid voces ille significabant, ab Africanis Patribus damnata sunt, & eautum, ne ptima Sedis Episcopos appellaretur Principes Sacerdotum, ut legitur in canon 17. Concilii Hippon. 39. Codicis canonum*

canonem Ecclesie Africe, apud Fulgentium Ferendum can. 82. Pontifici autem totum tribuitur nomen Vniuersalis, quia vt recte D. Gregorius lib. 4. epist. 38. ait, Pontifex Romanus non ita sibi accipit titulum vniuersalis, & occumenici Patriarche, vt despectis fratribus Episcopus appetat solus vocari; sed vniuersalia dicitur, quia per vniuersum orbem propagare Ecclesie Pastore est. Prosequuntur ipsius textus varias interpretationes. I. Dartis in 99. dist. & de eccl. suburbic. cap. 17. Barbosa de potest. Episcop. part. 1. tit. 1. cap. 6. num. 9. Batonijs anno 397. Marthe de iurisdic. part. 1. cap. 10. Mendoza lib. 2. Concil. Liber. cap. 30. aliter Mendoza Augustinus quest. 4. sublag. num. 3. Turrian. lib. 3. pro canon. Apost. cap. 3. Cornelius in not. ad iussum can. 26. Concilij Carthag. 3. Insuper in not. ad ius. con. 39. Ecclesie Africe, Corneus contra Morum 1. part. fol. 10. Franc. Hallier. de her. iurisd. fol. 81. Secundus canon, qui ab hereticis expellitur solus, est canon 36. Synodi, ubi Patres renouant constitutiones secundam & quartam Synodi Constantin. que Episcopo Constantinopolitano paria tribuuntur in ea cum Romano Episcopo: ergo quia Romana Ecclesie auctoritas vniuersalis non est. Pro cuius difficultatis solutione dicendum est, in canon illo 36. potius alienum a veritate referri; siquidem quoniam Ecclesia Constantinop. aequalibus priuilegijs decorata fuit, ac Romana, vt sequenti numero dicemus. Canon igitur ille fortis est, non Sanctorum Patrum, sed Anacoli Episcopi. Verba canonis exant in canon renouant, 21. dist. & ita iuxta mentem Ananij & ambicionem Gregoriorum canon ille editus fuit, Tertius, & difficultior est canon 6. Concilij Niceni, relatus in cap. nos antiquus, 65. dist. in illis verbis: *Antiquus seruator per Aegyptum, Libyam, & Penapolim; ita Alexandrinus Episcopus hunc omnium locorum potestatem, quia & orbis Roma Episcopo parus non est. Similiter autem & apud Antiochiam, ceterisque prouincijs suis priuilegia seruauerit Ecclesie.* Ea quibus deducunt heretici, equelem esse potestatem Alexandrini Episcopi cum Romano Pontifice. Pro cuius canonis expositione sciendum est in libris vulgatis deesse eius initium, quod tale est, *Ecclesia Romana semper habuit Primatum, nos autem, &c. vt notauit Coriolanus in not. ad eum canonem.* Veta ergo sententia ipsius canonis est. Ecclesiam Romanam semper habuisse Primatum, sed Alexandrinum Episcopum trasse Prouincias illas, quia Romanos Episcopos ita consuevit, id est quia Romanus Episcopus ante omnium Conciliorum definitionem consuevit permittere Episcopo Alexandrino regimen Aegypti, Libye, & Pentapolis: quo modo textum illum accepit Nicolaus I. in epist. ad Michielem. Non ergo in canone illo fines assignantur Romano Pontifici, & alijs Patriarchis, vt falso Caluinus, & Nilus existimant; sed tantum cauetur, vt Alexandrino, & Antiocheno Patriarchis sua priuilegia seruentur, iuxta antiquum consuetudinem; quia cum illud Concilium generale adhuc celebratum non esset, in quo fines cuiusque Patriarche prescripi fuissent; ideo tantum iuxta veterem morem priuilegia sua illis seruari iubetur in eo canone. Alia ipsius textus interpretaciones adducunt Balamon & Zonaras in suis scholijs, Preps Marthe part. 2. concord. Sac. & Imp. cap. 7. Suarez de fide dist. 10. sect. 2. Frances de Eccl. Cathed. cap. 1. num. 64. Ioannes Caballutius in notitia Concil. in Concil. Niceno,

cap. 7. Barbosa in collect. ad illum textum, Conat. lib. 4. cor. cap. 14. num. 18. Bellarminus de Rom. Pontif. cap. 23. & 17. colum. 3. Nabona de appellat. & Vicaria, lib. 2. fundam. 1. num. 20. Tertianus lib. 3. pro canonis. cap. 2. & 3. & pro canonibus 6. Synodi, & de dogmat. fol. 84. Batonijs anno 175. Marthe de iurisdic. 1. part. cap. 5. Celsus de Eccl. hierarch. dist. 4. 5. 2. Mortuus lib. 1. exercit. cap. 29. Leonardus Cusqueus in amonit. fol. 155. Leo contra Vazamundum cap. 7. Simonius in opus. de Eccl. suburbic. Ioannes Dartis eod. tract. cap. 17. Global. tom. 2. friem. can. lib. 5. cap. 5. confel. 2. Christi. Lup. ad can. 6. Concil. Nicen.

[d Constantinopolitana.] Olim Aleandrina primatum lucum obtinebat; sed postea consuevit, & tolerante Romano Pontifice Patriarcha Constantinop. tribus alijs prelatibus fuit, & in Concil. Constantinop. 1. can. 3. ita eorum legitur Constantinopolitana ciuitatis Episcopum habere oportet Primatus honorem post Romanum Episcopum, propter quod sit nona Roma. Nouel. 131. in qua postquam Iustinianus egisset de Concilio Niceno, Ephesino, Constantinopolitano, & Chalcedonensi, in quibus premissis infertur, & approbatum canonem de Archiepiscopo Constantinopolitano, subdit hæc verba: *Ideoque sanctissimum secundum eorum definitionem, sanctissimum seruari vobis Roma Papam primum esse omnium Sacerdotum: Rursum sanctissimum autem Archiepiscopum Constantinopolitano nona Roma secundum habere locum post sanctissimum Apostolicam Senioris Romæ Sedem.* Hæc Imperator, qui quod sciret non esse Imperatoris auctoritatis ordinem præscribere Sedibus, eandem Synodum definitionibus iohere id se facere dicit, & petram. Etenim eum tam et Concilio Constantinop. quam Chalcedonensi id sibi vindicare conati fuerint Episcopi Constantinop. semper aduersatus est Leo, vt superiori numero retuli. Faciunt pro eadem Iustiniani opinione textus in 13. Cod. Theodof. de fide Cathol. l. 6. eod. Cod. de patriarchis, vicar. Canonem autem illum de Primatu Ecclesie Constantinop. post Romanam, a sancto Leone Papa fuisse reprobatum tradit Batonijs tom. 6. anno 451. num. 9. & 453. num. 5. & tom. 12. anno 1191. num. 12. Immo nec Nicolaus I. illum canonem agnoscit in epistola ad Michielem Imperatorem, quæ incipit, *proposuerimus*: sed Patriarchæ Constantinopolitani Imperatorum fecti potentia secundum post Rom. Pontificem locum sibi usurpante; qui locus tandem a Romanis Pontificibus fuit permissus, & primò ab Innocentio in presenti textu: tum vt Græcos hærenes nantes in Ecclesie Romanæ subiectione ad vniuersalem deduceret: tum quia pluribus sæculis reliqui Orientis Patriarche locum Constantinop. sponte cesserunt: notantur P. Marthe lib. 2. concord. cap. 7. Caballutius in notitia Concil. Constantinop. Benius in not. ad can. 5. diffus. Concil. Bellarm. tom. 1. eorum. de Rom. Pontif. lib. 1. cap. 24. Coriolanus in breuiario, anno 692. Christi. Lupus ad hunc canonem. Verùm Græcorum ambitio Patriarcha hic vniuersalem se appellare non erubuit, renouente Romano Pontifice: & si Batonijs tom 9. anno 787. num. 8. in fine, refertur: Titulum Vniuersalis, Patriarchæ Constantinopolitano, licet nunquam approbatum, toleratum tamen à Latinis fuisse, Indalgenzijs loquente: & quidem nimis Acrotis tom. 1. de iustissimis lib. 4. cap. 4. in fine, dum ait: *Post Platium Patriarcham Romanis Pontificibus ammittitur hunc titulum usurpanti a Græcis captum esse.* Cz-

verum Anastasius bibliothecarius in praefatione 7. Synodi alloquens Ioannem VIII. Summum Pontificem, sic ait: *In eo sani, quod frequenter universalem in hac Synodo Graeci Patriarcham suam appellam, Apostolatus: reser Græcorum adulationem veniam dei, Prælati sui non sine reprehensione placere studuerunt. Verum cum apud Constantinensium presbiteri frequenter Graecos super hoc vocabulo reprehenderent, & ipsius arrogantiæ redarguerent, asseruerunt, quod non ideo arriemur dicere Patriarcham, quod universi orbis tenent Præfularem, sed quod eundem parti præsit orbis, quæ à Christianis inhabitatur. Hæc Anastasius. Sed frigidum illum excusationem refellit Batonijs tom. 9. anno 787. m. 7. & hunc titulum Oecumenicæ, idest universalis, sanctus Gregorius Papa adversus Ioannem Patriarcham, qui primus hunc sibi titulum temerè assumpsit, ita est interpretatus, ut ipse sibi illum denegaverit. Interpretatus est enim privativè quoad omnes alios, ita ut qui se inscriberet oecumenicam, idest universalem, omnes alios Patriarchas, & Episcopos censere esse privatos, & se solum Pastorem credere habitabilem terræ. Sic enim ait epist. 38. lib. 4. quæ refert etiam Batonijs tom. 8. anno 595. num. 31. Nullus sibi hoc temerarium nomen arripit, ne cum sibi de Pontificatu gradu gloriam singularitatem arripere, hanc omnibus fratribus denegasse videretur. Et epist. 32. Nullus equum hoc singularitatem vocabulum assumpsit, ne dum privativè aliquid datur tui, honore abusu sacerdotis privaretur universi. Ceterum Innocentius III. Papa istam etiam inellegantiam tribuit titulo oecumenicæ, secundum quem respondendo Ioanni Patriarchæ Constantinensi. docet illum convenire soli Romæ. Pontifici: sic enim ait epist. 198. lib. 2. quæ refert idem Batonijs tom. 9. anno 787. num. 8. Dicitur universalis Ecclesia illa una, quæ ex universis consuetudine Ecclesiæ, quæ Græci vocabulo Catholica nominatur: & secundum hanc acceptationem vocabuli Ecclesia Romana non est universalis Ecclesia; sed pars universalis Ecclesiæ, primo reddidit, & præcipua, veluti caput in corpore, quoniam in ea plenitudo præsentis existit; ad cæteras autem parti aliqua plenitudinis derivatur. Dicitur etiam universalis Ecclesia illa una, quæ sub se continet universam Ecclesiam, & secundum hanc nominis rationem Romana tantum Ecclesia universalis nuncupatur, quoniam ipsa sola singulari privilegio dignitatis cæteris est prælati, sed & Deus universalis Dominus appellatur, non quasi divisus in species, aut specialissimus, aut subalternus; sed quoniam universa sub eius dominio continentur. Prosequuntur alia Sfortia in hist. Concil. Trident. lib. 1. cap. 36. Theophili, Raynaud. tom. 10. in Ceremonia Rom. Pontif. in digestione alphabet. verbo Episcopus universalis. De vrbis Constantinopolitana adduxi in cap. quævis, de consuet.*

5. e Alexandria. Alexandria Egypti illustri civitas, ab Alexandro Macedonia, Iustino teste, condita, & dominata fuit, & cæterarum huius nominis civitatum maxima exstiter, & opulentissima. Antiquus Mætel. lib. 22. Alexandriem vericem omnium civitatum appellat. Herodotus lib. 7. post Romanum primum locum ei tribuit; nam ab Augusto Præfectus Alexandrinæ, à quo Augustalis denominabatur, magnificentissimè præceteris nobilitata fuit; & post illum Præfectus Syriz, cuius Metropolis erat Antiochia, secundum tenebat locum; ideo D. Petrus statim Alexandriam post Romanam primum, & Antiocheiam secundum obtinere locum. Hinc etiam fa-

ctum est, ut idem Ecclesiæ Princeps dilectissimum discipulum Matcum Evangelicam ad prædicandum Christi Evangelium Alexandrinam misisset, ubi velut in quodam orbis theatro, et Asia, Africa, & Europa tot gentes simul coluæ erant, ab eo prima fidei elementa reciperent Alexandrinus Quamobiem Leo I. epist. 81. Diofcoro Alexandrino Episcopo testis bene ait: Cum enim beatissimus Petrus Apostolicum à Domino accepisset Principatum, & Romana Ecclesia in eum permanere consisteret, nefas est credere, quod sanctum discipulum suum Adam, qui Alexandrinam primus Ecclesiam gubernavit, alius regulis traditionum suarum decessore remaneret, cum sine dubio de eodem fonte gratia totius spiritus fuisset, & discipuli, & magistri. Hinc Patriarchæ Alexandrino tota Africa regenda committeretur, ut constat ex dicto cap. nos, 65. dist. 6. alii cogerentur ab Aetio Augustino lib. 2. tom. 3. de explicam Motibus lib. 1. exercit. cap. 1. num. 9. & cap. 3. & cap. 5. per tot. Plura adducunt de Patriarchatu Petri Marcha part. 2. concord. Sacror. & Imp. lib. 1. cap. 5. par. 6. & 7. Batonijs anno 335. num. 10. & 112. num. 3. & 154. num. 79. & 363. num. 30. Tuetian. lib. 3. pro canonib. Apost. cap. 8. num. 136.

f Antiochena. De Patriarcha Antiocheno tam copiosa adduxi in cap. 1. de translat. Episcop. g Hierosolymitana. Cum veteris, & venerabilis Hierosalem subversa, & destructa suppositus esset, ut Saluator noster prædixerat apud Matthæum c. 23. ibi: Ecce relinquitur vobis domus vestra deserta. Et cap. 13. Lucæ: Quia venies dies in te, & circumdabit te inimici tui castris, & circumdabunt te, & angustabunt te undique, & ad terram proferrent te & filios tuos, qui in te sunt, & non relinquent in te lapidem super lapidem. Vbi quæ nunc adest, non est eadem ac illa, quæ olim fuit: quare Nicolaus I. ad consuli. Balgar. cap. 92. ait: Hierosolymitanus autem Præsul, licet & ipse Patriarcha dicatur, & secundum antiquam consuetudinem, ac Nizæenæ Synodum honorandus sit, saltem tamen Metropoli propria dignitate: sed in eadem sancta, & magna Synodo nequaquam Hierosolymitanus, sed Helus Episcopus dicitur: nam vera Hierosalem tantum in celis est, quæ est mater nostra: illa vero Hierusalem terrestris, secundum quod Dominus prædixit, adeo funditus ab Imperatore Romano destructa est, ut in ea nec lapis super lapidem sit relictus, & ab Helio Hadriano in alio est loco constructa, ita ut locus Dominice crucis extra portam, nunc intra conetur, & a prædicto Helio Hadriano ubi illa Helia vocatur. Quare PP. Concilij Niceæ. can. 7. de hoc Patriarcha ita statuerunt: Quoniam nos antiquis etiam, & veteris traditione, et Helia, idest Hierosolyma Episcopus honor deferatur, habere consequenter honorem suum, nominis tantum Metropolitani civitatis propria dignitate.

h Pallium largiunt. In quo continetur aliud privilegium Patriarcharum, videlicet propriis Metropolitani pallium concedere, ut probatur in cap. 1. de antist. & usu pallij.

i Paxillum. Quæ ritum deferendi crucem illustravi in cap. 1. ne lit. pendet.

k Deferendum. Concil. Sardie. can. 4. & 5. cap. 1. & per totum 2. quest. 6. & 3. quest. 6. Nihil est fuscæ Angelus Petrica in trad. de appell. ad Carchedon S. Petri.

COMMENTARIUM.

7. Patriarcha, nomen Græcum est, compositum à voce *πατρις*, id est pater, & à dictione *αρχης*, quod est Princeps, quasi Patrum Princeps, cap. clerici, *vers.* Patriarcha, 21. dist. probant Metutius in glossar. *verbo* Patriarcha, Acuña de Præm. Brachar. cap. 1. & in cap. 1. 99. dist. & in catal. Portugal. Pref. 1. part. cap. 6. Patriarche nomen antiquissimum est, siquidem Episcopus reperitur in sacra pagina, 1. Paralip. cap. 8. Tobia cap. 6. *Alt. Apost.* cap. 2. & in epist. 7. D. Pauli ad Hebræos: & a laudis recentioribus retentum fuit; nam post urbem sanctam eversam ipsi habuerunt Patriarcham, qui quotannis suos Archisynagogos mutare solitus erat, ut inde peniculum ex suis vitiis colligeretur quod refret Theodorus Patriarchæ Constantinop. episc. ad Hadrianum Papam: quod idem habetur lib. 3. in. Græco-Rom. ad finem. Refert Epiphanius hæres. 30. qui meminit Hellen. Patriarchæ Iudæorum, & ante eum Gamalielis alterius, qui & alius fuit à Gamaliel Patriarcha Iudæorum, qui sub Theodosio vixit, ut scribit Diodorus Hieronymus episc. 101. ad Pamachium: & forte et is, de quo in l. 22. Cod. Theodof. de Iudæis, legitur: *Quoniam Gamalielus existimatus se posse imponi delinqueret, quod magis rectius suspicari dignum, ab eo eodem illis demonstratur honoraria profectura, ut in eo sit honor in quo ante profecturam fuerat constitutus, ac deinceps nullas comas facies synagogas.* Nam ille prior Gamaliel Epiphanius ante Constantinum Magnum vixit. Patriarchatum illorum mentio fit in l. 4. I. Iudæorum 17. Cod. Theodof. de Iudæis, expressus in l. 1. eod. tit. ibi: *Iudæi, & maioribus eorum, & Patriarchis velumini iurari.* Et in l. 2. ibi: *Qui de iuramento synagogis Iudæorum, Patriarchis, vel presbyteris se dediderunt.* Et ipsi illustrium nominis decorantur in l. 8. & 11. eod. tit. & Cod. & speciatim in l. 15. eod. tit. & Cod. & Reuerentissimi appellantur à Iuliano Apostata in epistola ad Iudæorum Rempublicam. Plura de his Patriarchis congestum Filasofus in cap. duo 9. & 7. de offic. ordin. Casaubonus in not. ad Vespis. pag. 149. Amaya ad leg. viuc. C. de auro canonico, num. 23. I. Gorhof. in l. 1. & 2. Cod. Theodof. de Iudæis, Beyerlinch. tom. 6. in thes. verbo Patriarcha. Apud Gentiles etiam Patriarchæ fuerunt; nam eos, qui Aegypti in sacris præstant, Patriarchæ dictos esse, & Herodotus docet, & Hadrianus Imperator confirmat in epistola ad Sequium Consulem post Flaurum Vespisum. Illustrant Casaubonus ubi supra. Leo Allaz. de perpet. consens. Græc. lib. 1. cap. 3. & 25.

8. Sed ut à Patriarcha, de quibus in præfenti canone agitur, petuenamus, sciendum est, ites tantum Patriarchales Ecclesias fuisse à D. Petro institutas: Romanam scilicet, Alexandrinam, & Antiochenam; ut quemadmodum dicebant in Episcopo, Episcopi in Metropolitano, Metropolitæ in Patriarcha vniui sunt, ita trinitas Patriarcharum in vniuersitate Pontificis coalesceret: sicque Sedis Principis Apostolorum esset in trinitate vniuers, & in vniuersa trinitas: atque his gradibus ad vniuersitatem ascenderet sacerdotum multiplicitas, ut præclarè docet Symmachus Pontifex episc. 1. ad Eumium Episcopum Arelæ, atque eum sequutus Carolus Rex Francorum scribens ad Hadrianum II. & ad Ioannem VIII. cap. 23. ibi: *Ad Trinitatem insit, cui una est, atque indivisa potestas, cuius est per diuersos Antistites sacerdotum.* D. Gregorius lib. 6. episc. 37. & lib. 1. episc. 48. Hincma-

ras episc. 55. cap. 16. ibi: *Cum multi sint Apostoli, pro ipso tamen Principatu sola Apostolorum Principes sedes in auctoritate committunt, quæ vniuersa est in tribus locis. Ipsa enim sublimis sedes, in qua etiam quiescere, & præsentem vitam finire dignatus est, ipse decessit. Sedem, in quam Euangelistam discipulum misit, ipse firmavit. Sedem, in quam septem annis, quamvis discipulum, sedis, Cum ergo vniuersa, æque una sit fides, cui ex auctoritate divina res nunc Episcopi præfident, quicquid ergo de vobis audis, hoc nobis impone. Ratio autem, cur his in locis Patriarchatum Petrus instituerit, prouenit ex eo, nam dum ipse intenderet prima fundamenta ecclesiasticæ iurisdictionis iacere in futura secula obseruanda à fidelibus, prouide & rectè iudicauit collocandas esse præces, ut Cathedras ubi temporales iurisdictionis potestas Tribunalis erant, idque ab eorum sonantia, & relationem infestum vrbium ad illa. Tunc autem tres Primatus, & Metropolitæ ciuitates nate erant ab vniuersa Imperij Orientalis, id est Mæcedoniæ Alexandriæ & successum eius, cum Occidentis Imperio: vbi Antiochia, quam Iosephus lib. 3. de bello Iudæico, cap. 3. vocat tertiam urbem orbis Romani, quamque Cbrystosolum huius, 3. ad populum, vocat caput, & matrem vrbium Orientalium, quæ caput erat Imperij particulari. Orientis Asiaticæ, post hæc in Syriæ prefecturam, & alias provincias Orientales adiacentes conuerit: vbi Alexandria, quam D. Cbrystosolum orat. 22. vocat secundam sub sole urbem, quæ sedes erat Imperij Aegypti, & adiacentium regionum, exinde in Prefecturam Aegypti commutata: vbi Roma, quæ occidentis Imperij caput erat, ideoque ab Hebræis dicta Impositionem Eodem, respiciendo ad Idumæam, quæ occidentalis erat ad Iudæam iurisdictionalem; unde & Titum, qui Hierosolymam diruit, nuncupabant Titum Idumæum. Tuncque ergo in Imperio tres erant primariæ Metropoles, ciuitates dux subalterne, nimirum Alexandria, & caput Imperij Meridionalis, seu Aegypti, & Antiochia, caput Orientalis, seu Asiaticæ Imperij; & supereminens Roma caput singulari, Occidentis imperij. D. Petrus Sedem Episcopalem sinit Antiochiæ, & ibidem per septennium equumoratus est, & successore designauit Patriarcham iurisdictionis ecclesiasticæ in Asia Orientali: & inde Romam venit, quæ erat caput Imperij Occidentalis, ibique Cathedram sinit, quam tunc usque ad vrbem diem extinguit. Probat Theophilus 1. in. 10. in corona aurea R. P. in. 1. 3. considerantque superest vnam capitalem ciuitatem Imperij, nimirum Alexandriam, quæ caput erat Imperij Aegypti, designauit, & constituit in ea filium suum spirituales prædicatum Marcum Euangelistam, quem suo nomine Episcopatum, & Sedem Patriarchalem ibi fundare præcepit. Vnde ortu sunt res ille Patriarchales sedes respondentes tribus imperialibus, sub quibus generalis vniuersa Imperij facta erat. Nec obstat textus in l. 1. Cod. de summa Trinit. ubi docetur, eam fidem sequendam esse, quam docuerunt Damasus Romæ, & Petrus Episcopus Alexandriæ, nulla mentione facta Patriarchæ Antiochenæ. Ergo quia Ecclesiæ Antiochenæ Patriarchatus non est. Pro cuius textus expositione sciendum est, eius tempore Antiochiæ Iesum fuisse inter Paulinum, & Meletium. Quia de causa Imperator in ea lege omisit Patriarcham Antiochenum. ut etiam D. Hieronymus ea de causa in epistola ad Marcellinum dixit sentire se cum Damaso, & Petro,*

ito, nullā Andoehenſe Eccleſiæ factā mentione. Notant Grotius in *ſtoribus ad diſt.* 1. 1.

9.

Adhuc quarto ſæculo erant tantum hæ tres Sedes Patriarchales à D. Petro inſtitutæ, Hieroſolymitana enim cepit ius illud obtinere in Concilio Chalcedonenſi ſub Leone I. celebrato anno 451. prius enim erat tantum Episcopopus ſubiectus in prima inſtaſia Caſiſæ, & per appellationem Patriarchæ Antiocheno: honoratæ tamen eius Præſul Patriarcha dicebatur ad hoc domtaxat, ut conſeſſum in Conciliis poſt tres veros Patriarchas immediatè haberet, nollatenus verd ad iottiſdictionem in territorio Patriarchali exetendam. Imenalia ergo Episcopopus Hieroſolymitanus habuit pro territorio Patriarchali tres Palæſtinas, & annumeratus eſt adione 7. inter veros Patriarchas, quod adione 16. conſeſſum fuit Anaſtolio Aechiepiſcopo Conſtantiноп. & ſis Antifites Heliz dignitatem Patriarchalem paulatim ſibi uſurpauit, motus ex eo, quia frequentia petegrinorum ad ipſam urbem conſueuientium, ut loca ſacra venerarentur, magna ſuſcit: quare plus honorandus erat Hieroſolymitanus Antifites, quàm Caſareoſis Metropolitæ. Conſtantiнопolitanus verd Antifites Imperatorum præſidio eandem dignitatem uſurpauit: quare Nicolius ad conſulta Bulgæ, cap. 92. ait: *Conſtantiнопolitani autem & Hieroſolymitanus Antifites, ſicci dicuntur Patriarchæ, non tamen tanta auctoritatis, quanta ſuperiores, id eſt Alexandrinus, & Antiochenus) exiſtunt.* Notatum Carolus à ſancto Paulo in *primæ geograph. ſacr. Angelus Petrie de appellat. diſp.* 4. Cæſar de Eccleſ. Hierarch. diſp. 4. §. 3. Germanus lib. 2. *ſacer.* cap. 4. Datis in 99. diſp. Poſtea tamen laxato rigore vocis quiliher Primas Patriarcha dici cepit, ut Aquileſenſis, Seleueſioſis, Turonenſis, Toletanus, & alij, de quibus minoribus Patriarchis plura congeſſerunt Breterius *diſt.* 2. Acuña de *Primatu Bracher.* cap. 4. Cæſar de Eccleſ. hierarch. diſp. 4. §. 3. Aubertus Miteus in *notis. Epiſc.* lib. 1. cap. 14.

Vnde quæſi ſolet, an vna, eademque ſit dignitas Primatus, & Patriarchæ? Et nullam inter eoa dari differentiam ſuadetur ex cap. 1. 99 diſp. ibi: *Iſſus quoque in ciuitatibus, vel locis noſtris Patriarchas, vel Primates, qui vnam formam tenent, licet diuerſa ſint nomina, leges diuina, & eccleſiaſtica ponit, & eſſo inſerunt.* Et cap. conqueſſum, ibi: *Primates enim, vel Patriarchas; 9 quaſi. 3. cap. mox verò, ſuoda inſcriptione eodem.* Et ita docuerunt Gonzales ad *regul.* 8. *Cancellaria,* gloſ. 41. num. 15. Challaſneus in *catalogo,* 4. *part. conſider.* 9. Cæſar de Eccleſ. Hierarch. diſp. 4. §. 1. num. 2. Fileſacus in *diſp.* cap. duo, §. 8. de *offic. ordin.* Villaroël *tom.* 1. *regim. eccl.* part. 1. quaſi. 4. *articulo ſexto.* Sed verius dicendum eſt, in hac parte diſcremen eſſe conſtituendum inter Prouincias Eccleſiæ Orientalis, & Occidentalia; nam in Oriente vbi ſunt ſuprà relati Patriarchæ miores, magna differentia veſtitur inter Patriarchas, & Primates; quia tantum quatuor maiores Patriarchalem iuriſdictionem exetent, cap. *ſacraſancta,* cap. *renouantes,* cap. *diſſiminas,* 22. diſp. *ambent.* de *eccleſiaſticis iuribus, poſt princip. calat.* 9. In Proquinis verd occidentilibus oulis verſatue realis differentia inter Patriarchas, & Primates: quo modo varia loca Concilij Tridentini de his Patriarchis minoribus expoſuit Acuña de *Primatu Bracher.* cap. 3. Et hæc de origine, & progreſſu Patriarcharum ſufficiant: eorum iuriſdictionem, & munia longum foret recenſere. Videndi ſunt Barboſa lib. 1. *iuris ecclæ.* cap. 6. & de *potest. Epiſcop.* 1. part. tit. 1. cap. 7. Cæſar diſp. diſp. 4. de Eccleſ. Hierarch. Franc. Hallier, de *hierarch. iuriſd.* lib. 4. per tot. Carriet. *tom.* 2. diſp. ſolui. fol. 630. Acuña de *Primatu Bracher.* cap. 1. *com ſequens.* Carolus à S. Paulo in *primæ geograph. ſacr.* 1. Datis de *ſacraſancta,* cap. 2. ſol. 1. Azor *part.* 2. *inſp.* lib. 3. cap. 35. quaſi. 1. & 5. Theophilus *tom.* 8. de *primatu Lugdun.* cap. 14. 1. Ant. Auguſt. in *epiſt.* lib. 1. per tot. Samuel Petitus lib. 2. *oſſerm.* cap. 11.

CAPVT XXIV.

Idem ² in eodem.

VT priuilegia, quæ quibuſdam religioſis perſonis Rom. conceſſit Eccleſia, permaneant inconcuſſa, quædam in eis duximus declaranda, ne minùs ſanè intellecta, protrahantur ad abuſum, propter quæ poſſint meritò reuocari: quia priuilegium meretur amittere, qui permiſſa ſibi abutitur poteſtate. Sanè quibuſdam regularibus Apoſtolica Sedes indulſit, ut his, qui fraternitatem eorum aſſumpſerint, ſi forè Eccleſiæ, ad quas pertinent, à diuinis officiis fuerint interdictæ, ipſoque mori contigerit, eccleſiaſtica ſepultura non negetur, niſi excommunicati, vel nominatum fuerint interdicti: ſuoſque confratres, quos Eccleſiarum Prælati apud Eccleſias ſuas non permiſerint ſepeliri, niſi excommunicati, vel interdicti fuerint nominatum, ipſi ad Eccleſias ſuas deferant tumulandos. Hæc autem de illis ⁴ fratribus intelligimus, qui vel adhuc manentes in ſæculo eorum Ordini ſunt oblati, mutato habitu ſæculari: vel eis, qui ſua bona dederunt inter viuos, retento ſibi, quandiu in ſæculo vixerint, uſuſuſu: qui tamen ſepeliantur apud ipſorum regularium, vel aliorum non interdictas Eccleſias, in quibus elegerint ſepulturam: ne ſi de quibuſlibet ipſorum fraternitatem aſſumentibus fuerit intellectum, pro duobus, aut tribus denariis annuatim ſibi collatis diſſoluatur pariter, & vileſceat eccleſiaſtica diſciplina: certam tamen & ipſi obtineant remiſſionem à Sede Apoſtolica ſibi conceſſam. Illud etiam, quod huiusmodi regularibuſ eſt indulgum, ut ſi qui fratrum ſuorum, qui ab eis miſſi fuerint ad recipiendas fraternitates, ſue collectas, in quamlibet ciuitatem, vel caſtel-

lum,

lum, vel vicum aduenerint, si forte locus à diuinis sit officiis interdictus, in eorum iocundo aduentu semel in anno aperiantur Ecclesiæ, vt exclusus excommunicatis, diuina ibi officia celebrentur: sic intelligi volumus, quod in eadem ciuitate, aut castro, vel villa vna tantum Ecclesia eiusdem Ordinis fratribus semel, vt dictum est, aperiat in anno; quia licet pluraliter dictum est, quod in eorum iocundo aduentu Ecclesiæ aperiantur; non tamen ad Ecclesias eiusdem loci, quas visitarent, sed prædictorum coniunctim referendus est intellectus: ne si hoc modo singulas eiusdem loci visitarent Ecclesias, nimium vilipendi contingeret sententiam interdicti. Qui verò contra declarationes prædictas quicquam sibi præsumperint usurpare, graui subiacent disciplinæ.

NOTÆ.

1. ^a *Odem.*] Ita etiam legitur in quarta collectione, *sub hoc tit. cap. 7.* & textus hic reperitur in ipso Concilio Lateran. celebrato sub Innocentio III. *can. 37.*
2. ^b *Amittit.*] *Cap. vbi ista 7. 7. 4. dist. cap. priuilegium 6. 1. 1. quæst. 3. 1. qui sine 3. 8. ff. de neq. gesti.* quia prætextu priuilegiorum aliena usurpare absonum est, *l. 2. Cod. de priuileg. scilicet. Auth. de mandet. Princip. 5. delinquentes, cap. Abbas 25. de V. S. Illostrant Belluga in specul. Princip. rubric. 35. num. 12. Carolus Tapia in final. C. de consil. Princip. cap. 7. part. 2. num. 1. Martinus Magerus in advocat. armata, cap. 16. à num. 637. Altamiran. in rubric. de fidelis offic. cap. 4. num. 45. non tamen ipso iure per*

absum amittitur priuilegium, sed sequor sententiam quo modo textum hunc, & in *cap. cum et plantare, hoc tit. ibi*: Priuilegium amittit meretur amittere, qui permissa sibi abutitur libertate: & D. Augustin. *sermon. 147. de tempore, ibi*: Iudicia legum iure ab obtenta dignitate deriui, qui priuilegio sibi concessio abutitur; exponit Bruno Chassaign. *de priuileg. regul. tract. 2. cap. 5. propos. 3. & Gibal. tom. 2. sicut. can. lib. 7. cap. 9. quæst. 4.*

^c *Excommunicati.*] Qui ætendi sunt à sepultura ecclesiastica, iuxta tradita in *cap. sacris, de sepulch.*

^d *Fratribus.*] De quibus egi in *cap. 3. 6. de consuetudinibus, hoc tit.* & cædo Patres Concilij Lateran. respexisse in præsentem canonem ad eos consuetos Ordinis Hierosolymitan.

3.

CAPVT XXV.

Idem^a in eodem.

QUod nonnullis est religiosis indultum, in fauorem Pontificalis officij ad Episcopos extendendum concedimus, vt cum commune terre fuerit interdictum, excommunicatis, & interdictis exclusis, possint quandoque ianuis clausis, suppressâ voce, non pulsatis campanis, diuina officia celebrare: nisi ipsum hoc illis expressè fuerit interdictum. Verum hoc illis concedimus, qui causam aliquam non præstiterint interdictio, nec quidquam fraudis ingesserint, tale compendium ad iniquum dispensandum protrahentes.

NOTÆ.

1. ^a *Odem.*] Ita etiam legitur in quarta collectione, *sub hoc tit. cap. 8.* & reperitur textus hic in ipso Concilio Laterano, *part. 5. In præsentem*

Id priuilegio conceditur Episcopis, quod hodie iure communis omnibus competit, *ex cap. finali, de sens. extem. in 6. vt dicimus in cap. quod in te, de penit. & remiss.* vbi commentarius de interdicto, & eius effectibus dabimus.

CAPVT XXVI.

Honorius III. *Archiepiscopis, & Episcopis, in quorum diocesis monasteria, & Prioratus Duniacensi monasterio subiecta consistunt.*

QUANTO amplius. *Et infra*: Sanè dilecti filij Abbas, & conuentus Duniacensis grauem nobis querimoniam obtulerunt, quod quidam vestrum, & vestrorum officiales, cum in eos, & sui Ordinis monachos non possint excommunicationis, & interdicti proferre sententias, eo quod super hoc Apostolicæ Sedis priuilegiis sine muniti, in eos qui molunt in molendinis, vel coquunt in furnis eorum, quique vendendo, seu emendo, aut alias eis communicant, sententias proferunt memoratas, & sic Apostolicorum priuilegiorum non vim & potestatem, sed sola verba seruantes, dilecti Ordinis monachos quodam modo excommunicant, dum eis alios communicare non sinunt.

finunt. Ex quo illud etiam cuenit inconueniens, vt ipsi monachi quantum ad hoc iudicentur iudicio ludzorum, & qui eis communicant in predictis maiorem excommunicationem incurrant, quàm etiam excommunicatis communicando fuerant incurfuri. Nolentes igitur hæc crebris ad nos clamoribus iam perlata vltèrius sub dissimulatione transire, vobis vniuersis, & singulis mandamus, quatenus quiuismodi sententias in fraudem priuilegiorum nostrorum de cætero non feratis; quia si super hoc ad nos denuo clamor ascenderit, non poterimus conuiuentibus oculis pertransire, quin promulgatores talium sententiarum seueritate debiti castigemus.

NOTÆ.

1. ^a *D^{Cluniacensi}*. Ita legitur in quinta compilatione Honorij III. *sub hoc tit. cap. 1.* sed rectius in hac sexta legitur *Cluniacensi*; Cluniacense enim monasterium, à quo Congregatio Cluniacensis Ordinis D. Benedicti nomen sumpsit, constituit Guillelmus Dux Aquitanie anno 910. Hæbit priuilegiatus, & monasteria sub sua ditione fecit in omnibus Regnis, quorum catalogum refert Ypes in *chron. D. Benedicti, tent. 5. anno 930.* de cuius progressu, & magnitudine plura congesterunt Chopinus lib. 2. *sacr. pol. tit. 6. Ypes ubi proximi*, & nos in *cap. 5. 1. de electione*. Huius monasterio varia, & ampla priuilegia concesserunt Romani Pontifices, vt constat ex Bulla Pij IV. quæ extat in appendice dictæ cent. 5. inter quæ illud præcipuum fuit, vt monachi Cluniacensis Congregationis excommunicari, aut interdictio subiecti ab Episcopis ordinariis non possint: sed Episcopi, & eorum Vicei in fraudem huius priuilegij sententiam excommunicationis proferebant non directè in ipsos monachos, sed indirectè, ita vt qui cum eis communicant in molendinis, fur-

nis, & aliis locis, ubi pro humana necessitate monachi conuenire solebant, maiori excommunicatione afficerentur, in fraudem ipsius priuilegij: in quo grauius peccabant, non solum quia quod vna via illis prohibebatur, alia alique intendebant. contra textum in *cap. cum*, cum vulgatis, *de procum.* verùm etiam quia cum illis monachis se gerebant tanquam cum laicis: siquidem Iudei, quia excommunicari non possunt directè, quia extra Ecclesiam sunt, tamen vt ipsi puniantur, excommunicantur fideles Catholici cum ipsis communicantes, vt probant in *cap. de Iudeis, cap. quanto, de vsuris*. Etiam seuerius se gerebant cum ipsis monachis, quàm cum aliis laicis excommunicatis; siquidem communicantes cum excommunicatis regulariter minori excommunicatione ligantur, *cap. significauit, ubi dicemus de sem. excom.* Ipsi autem maiori excommunicatione scribant accedentes ad furuos, & molendina ipsorum. Vnde rectè Honorius in præfati lubet Archiepiscopis, & Episcopis, in quorum diocesis monasteria Cluniacensi monasterio subiecta consistunt, ne deinceps simili indirecta excommunicatione in predictos monachos vicerint.

CAPVT XXVII.

Idem B. quondam Anglorum ^a Regina Illustri.

EX parte tua fuit propositum coram nobis, quod nonnulli literati, quos nec habitus, nec tonsura clericis profitentur, in ^b terra tuæ iurisdictioni subiecta degeneres, cum deprehenduntur in aliquibus ^c forisfactis, vt tuam iurisdictionem eludant, & debitam pro delictis vltionem euadant, assument, seu etiam resumptam tonsuram abiectam, seu habitum clericalem, licet antea pro laicis ab omnibus haberentur; & sic eorum delicta maneant impunita. Ne igitur tonsura, vel habitu sic resumpto malitia foueatur, si tuam iurisdictionem exerceas in huiusmodi delinquentes, cum sine tonsura, & habitu in delicto fuerint ^d deprehensi, xquamimenter ducimus tolerandum, cum malitiis hominum indulgeri non debeat, sed potius obuiari.

NOTÆ.

1. ^a *R^{Regina}*. Ita etiam legitur in quinta compilatione, *sub hoc tit. cap. 2. & in cap. ex parte, de clericis*, ubi similis questio de his clericis in minoribus ordinibus constitutis habitum, & tonsuram deserentibus, & reassumentibus agitur.
2. ^b *Terra tua*. Cænonanensis videlicet vrbis, quæ ad dotalitium ipsius Regine spectabat, vt notat in *diut. cap. ex parte*.
3. ^c *Forisfactis*. Forfactum, seu forisfactum, Gallicè sumitur pro graui delicto, ac propriè quidem pro eo, cuius causâ aliquis sit foris, hoc est amittat priuilegium, vel etiam ius aliquid exigendi generatim, vt sumitur apud Bollandum in *relic. Sanctorum, die 4. Ianuarij*, ibi: *Illa verò videns hos patres conuersos in lapides, gemitando vo-*

niem à Deo Pharaide de forisfactis suis petiit. Stricte apud Mattheum Paulinum anno 1514. ibi: *Catala eorum, qui sunt in forisfactis Regis.* Accipitur etiam pro multa pecuniaria pro delicto itrogata, vt in legibus Burgorum, quas talis David primus eius nominis Scotie Rex, *cap. 42. Forisfactum in burgo non excedit octo solidos.* Item *cap. 71. Qui aliter faciendo committit furris, dabit plenarium forisfactum.* Et *cap. 74. Castigetur per Baldinum bo gi pro forisfacto suo primo, secundo, tertio.* Et *cap. 88. Dabit octo solidos ad forisfactum.* Inde forisfacere significat contra leges aliquid admittere, quod amissione viæ, bonorum, vel priuilegij soluat puniri. Carnotensis *epist. 173. ubi: Cum prædictus Ivo Rodocum Dominum suum dissuaduerit, & prædam eius prius cepisset, & homines suos ea die, quæ capta esset, in vinculis haberet, & ad forisfaciendum e-*
dem

dem *arrata manu militum ea die procederet.* Notavit Ioannes Vossius de *uicibus Germanorum lib. 4. cap. 8. & in append.* Vnde in presenti forsata accipiuntur pro delictis.

d *Fuerint deprehensi.* Quo casu clerici in minoribus ordinibus constituti non sunt per Ecclesiam defendendi, ut probatur in *cap. 8.*

CAPVT. XXVIII.

* Idem.

Super specula. *Et infra:* Sanè licet sancta Ecclesia legum secularium non respuat famulatum, quæ satis æquitatis, & iustitiæ vestigia imitantur: quia tamen in Francia, & nonnullis prouincias laici Romanorum Imperatorum legibus non vniuntur, & occurrunt raro ecclesiasticæ causæ tales, quæ non possint statutus canonicos expediti, ut plenius sacre pagine insistatur, & discipuli Elitæ liberius iuxta fluentia plenissima relideant ut columbæ, dum in ianuis scalas non inuenerint, ad quas diuaticare valeant pedes suos: firmiter^d interdiximus, ne Parisiis, & in ciuitatibus, seu aliis locis vicinis quisquam docere, vel audire in ciuile præsumat: & qui contrà fecerit, non solum à causarum patrocinio interim excludatur, verum etiam per Episcopum loci, appellatione postpositâ, excommunicationis vinculo innodetur.

NOTÆ.

1. a **Idem.** Ita etiam legitur in quinta compilatione, *sub hoc tit. cap. 3.* in cuius scholis refertur Cironius in vulgata editione legi, *Capitulo Parisiensis, & ceteris Prælati Parisiensi consensu.* Vnde cognoscitur ita etiam legendum esse in *cap. super specula, ne clerici, vel monachi*, ubi extat alia pars huius constitutionis. Non tamen assensio perdocto viro Innocentio Cironio, qui eo eò textu affirmat, etiam ad hanc constitutionem spectare textum in *cap. super specula, de magistris*; nam constitutio illa missa est Patriarchæ Antiocheno, & eius suffraganeis; unde non potest textus hic referri ad illam constitutionem. Deinde quia hi præfati, & in *dist. cap. super, ne clerici, vel monachi*, specialiter agitur de studio legali in Academia Parisiensis inhibendo, & ne ius Cæsareum in ea proficeretur, ne doctores ratione in presenti textu assignata, & alia, quam adduxi in *dist. cap. super specula.* Vnde etiam deducitur, constitutionem hanc localem esse, videlicet pro Academia Parisiensis: quod nouum non est in iure, ut patet ex *dist. cap. quod clericis, de foro compet. cap. 1. de locato, l. r. §. ult. ff. de censib.* notauit Angustinus lib. 2. de legibus cap. 3. num. 104.

b *Famulatum.* Vi probatur in *cap. 1. de noui oper. noui.*

2. c *Non tenentur.* Ius ciuile Romanorum plerumque prohibitum in iudiciis, tam apud Gallos, quam apud Hispanos legimus: primis enim temporibus certum est, Gallos iure Romanorum vsos fuisse; vnde Agathias de rebus bellicis ait, Francos Romanas leges, & contrariis, & matrimonii seruare; & consilium ex Capitularibus Caroli Calui apud Pisas cap. 34. ibi: *Salua constitutione legis Romana in eis, qui secundum illam viuunt.* Ex Concilio Turon. *can. 20.* ibi: *Quia etiam lex Romana constituit, ut quicumque Deo sacratum virginitatem, vel viduam fortasse rapuerit, si postea eis de coniunctione conuenierit, capiti sententia feriantur.* Quæ est lex 1. Cod. Theod. de rapto virgin. Postea tamen Catolus Magnus itauit lib. 6. cap. 169. ita: *Prohibemus ad negotiorum disquisitionem, vsus legum*

Romanorum, quæ quauis eloquiis polleant, tamen difficultatibus hærent. Idem postea fermanit Lotharius lib. 3. legum Longob. cap. 37. Apud Visigothos etiam idem cautum fuit in l. 9. & l. 10. tit. 1. lib. 2. ibi: *Alienis legibus ad exercitum testium imbuo, & permittimus, & optamus; ad negotiorum verò difficultatem & resultemus, & prohibemus: quauis enim eloquiis polleant, difficultatibus hærent, unde volumus, sine Romanis legibus, sine aliis constitutionibus amodo amplius conueneri.* Prosequitur Iuris Romani naufragium & restitutionem apud Francos, & Gothos Cironius in presenti, & lib. 5. obs. cap. 4. & 5. Apud nos expresse cautum est, ne in iudiciis leges ciuiles ad casuum decisionem expendantur, l. 1. §. tit. 2. part. 1. l. 6. tit. 4. part. 3. ibi: *Per las leyes de este libro, y no por otras.* Et l. 1. Tauri: docuerunt Gregorius Lopez, & Burgo de Paz, & Gomez in eisdem legibus. P. Suarez de legibus lib. 3. c. Ciuilibus ad Donel. lib. 1. cap. 16. litera E. Vnde recte Honorius III. in presenti refert, leges Romanorum apud Francos in vsu non esse.

d *Interdicimus.* Quoniam iuris ciuilis professionem Pontificem in presenti prohibere potuit, ait Cironius hic, quia Academicæ sunt ecclesiasticæ; & ideo in eis plenam dispositionem Pontifex habet. Sed contrarium, inuadit Academia à Principibus secularibus constructas, & à Pontifice confirmatas, pro secularibus haberi, latè probatur D. Alphonsus de Escobar collega nollet in *tract. de Pontifice, inuisit. cap. 21.* Patet Mondo de iure academico, quæst. 8. & ipsam Academiam Parisiensem mixtam esse, seculari, & ecclesiasticam, probat Chopinus de *Dominio Regis Franciæ, lib. 3. tit. 27. num. 3.* Quare aliâ validiori ratione credo Honorium III. potuisse in Academia Parisiensis prohibere studium iuris ciuilis, videlicet, quia eam ob eius professionem negligitur, & omiseretur sacre Theologiæ studium, ut retuli in *cap. 5. ne clerici vel monachi*; ideo iuxta positum, quam habet in temporalibus in ordine ad impernaturalia, ut facilius floretet studium sacre Theologiæ, ita potuit Honorius pro tunc interdiceret iuris Cæsarei professionem.

3.

CAPVT XXIX.

Idem Episcopo ^a Baiocensi.

Quia intentionis nostræ non extitit, vt per innouationem, quam fecimus cuiusdam scripti monasterij sancti Stephani ^b Cadom. quod in Registro bonæ memoriæ Alexandri Papæ prædecessoris nostri reperimus contineri, derogare iuri Ecclesiæ Baiocensis, cum innouatio nec ius ^c nouum conferat, nec etiam tollat vetus: totum in eo statu esse volumus, in quo tempore innouationis impetratæ dignoscitur extitisse. Cæterum per hoc nullum intendimus iuri aliis eidem monasterio competenti præiudicium generari.

NOTÆ.

1. ^a *Baiocensi.*] Ita etiam legitur in quinta compilatione, sub hoc tit. cap. 5. Idem Roberto de Ablagel, qui feliciter cessauit cum hæreticis Albigenſibus. De diocesi Baiocensi nonnulla adduxi in cap. 18. de offi. Ordin.

2. ^b *Cadomensi.*] Cadomense hoc monasterium est Normandiæ, in diocesi Baiocensi, Ordinis Diui Benedicti; quod construxit, & amplè dotauit Guillelmus Rex Angliæ, atque Romani Pontifices magnis privilegijs decorarunt, exemptione illi concessâ à Baiocensi iurisdictione, vt

refert Yepes tom. 6. chron. D. Benedicti, cem. 6. anno 1020. cap. 1. per tot.

3. ^c *Nouum.*] Probatur suprà in cap. 1. & consonat omnino textus in cap. 2. de fide instrum. in 5. compil. vbi idem Honorius ita statuit: Licet olim innouerimus privilegium felici memoria Calixti Papæ prædecessoris nostri Ecclesiæ S. Iohannis Bisan. concessum; præsentem tamen paginam declaramus, quod nostra intentionis non fuit, vt in Ecclesiâ per hoc in aliquo lederetur, cum per innouationem huiusmodi non acquiratur ius nouum, sed antiquum saluammodo conseruetur: unde præsentis literæ super hoc vobis in testimonium duximus concedendas.

CAPVT XXX.

Idem Episcopo ^a Parisiensi.

In his, quæ ad cultum diuinum facere dignoscuntur, non maligna, sed benigna potius esset interpretatio faciendâ: vnde mirari compellimur, quod cum Fratribus ^b Minoribus duxerimus indulgendum, vt vbicunque fuerint, sine parochialis iuris præiudicio cum altari valeant viatico celebrare: quidam, sicut nuper fuit propositum coram nobis, nimis stricte interpretando indulgentiam, nituntur asserere, quod per eam prædicti Fratres præter Episcoporum, Abbatum, & aliorum Prælatorum assensum facere hoc non possint, propter quod eos celebrare iuxta indulgentiam Apostolicam non permittunt. Cùm autem, si res taliter se haberet, nihil eis conferret indulgentiam memorata, sine qua id Episcopi, & alijs Prælatis annuencium liceret eisdem: fraternitati tuæ mandamus, quatenus interpretatione huiusmodi reprobata, dum tamen ab alijs, quæ à iure parochiali proueniunt, se prorsus absteineant, datam eis sic licentiam celebrandi auctoritate nostra non differas publicare, ita quod dicti Fratres aliquam ex indulgentia nostra videantur in hoc gratiam consequuti.

NOTÆ.

1. ^a *Parisiensi.*] Ita legitur in quinta compilatione, sub hoc tit. cap. 6. De Ecclesiâ Parisiensi nonnulli adduxi, in cap. final. de consil.

2. ^b *Minoribus.*] Et Prædicantibus, addit Gregorius IX. in præfati; nam in hoc textu tantum Honorius agere de privilegio concessio Fratribus Minoribus, constat ex c. 7. de celebrat. Adiff. in 5. compil. vbi idem Honorius eidem Episcopo Parisiensi ita scribit: Non debet Ecclesiæ Prælatus, quibus religionem plantare conuenit & fouere, viros religiosos persequi, & eis super his maxime, quæ ad diuinum cultum pertinent, obuiare. Accepimus sancti, conquerentibus dilectis filiis Ministris Ordinis Fratrum Minorum Francia, quod quidam Prælatus regionis illius occasione privilegiorum, quæ se habere præponunt, aliqui meo suo duntaxat arbitrio prædictis Fratribus inhibere præsumunt, ne vbi debeat, valeant

secundum nostram indulgentiam cum altari viatico solennia celebrare. Adiff. in 5. & hostes suos in maiorem Apostolicæ Sedis inuoluit, & contemptum excommunicationis sententiam promulgante. Quare quoniam præfati Fratres ab omni iure parochiali continent manus suas. Quia verò debemus religiosos fouere personæ, & maxime dicti Ordinis Fratres, qui relictis omnibus Christum sequuntur, pro eo esse pauperes, & in paupertate viuere consueuerunt eligentes; ac decet nos Apostolicæ indulgentiæ obseruare; s. i. m. quatenus auctoritate nostra inhibere generaliter Prælatis regionis eiusdem, ne de cætero sic excommunicent dictos Fratres & hospites eorundem, nec aliquo modo impediant, quatenus Fratres ipsi dicta indulgentia possint uti: quia non imponi deinceps talia sacrent, cum non possimus iniurijs pauperum Christi, & seruorum eius inquietudinem aquanimiter sustinere.

Commemoratio huius textus in cap. 1. de consec. Eccles. dedimus.

C A P V T XXXI.

Gregorius IX. *Maioris Ecclesia, & Christianitatis Decano, & Archid. Lincon.*

Dvidum inter Priorem & Conuentum de Butele ex parte vna; & Priorissam, & moniales de Campesse, ex alia, super decimis lite motū. Et infra: De consilio fratrum nostrorum decernimus iuri prædictorum Prioris, & Conuentus super decimis noualium, in quarum erant possessione tempore illo, quo indulgentiæ Apostolicæ impetratæ fuerunt à parte altera de decimis noualium non soluendi, non debere per eas non facientes de hoc aliquam mentionem præiudicium generari.

NOTÆ.

COMMENTARIUM.

A Christianitatis Decano.] De hac Decano Lincon. Ecclesiæ cpi supra in cap. cum capella.

1. **b** Butele.] De Butella, legendum est, vt habetur in cap. distilla 10. de excep. vbi mentio fit huius contiguerit, & ibi notauit ex Pennoto, monasteria, de quibus in præfenti, esse in diocesi Lincolnensi Angliæ: cūm coim Prior, & Canonici de Butella petrent à monialibus de Campesse decimas de prædiis noualibus; illæ autem inrenderent similes decimas se non debere, causā disceptata fuit coram iudicibus delegatis, de quibus in dist. cap. distilla. Sed iosterim moniales nouum impetrarunt priuilegium, vt de prædiis noualibus decimas non persolueret; cuius virtute intendebant, decimas iam solut conseruare monachis de prædiis noualibus tempore huius priuilegij, præstare ipsis non teneri. Consulius Gregorius IX. decreuit, priuilegium hoc nullam faciens mentionem de decimis ex noualibus iam perceptis à monachis, non prodesse monialibus, nec præiudicare Priori & monachis, quominus decimas de noualibus iam possessas exigere possent.

2. **c** Noualium.] Nouale iure ciuili dicitur terra præcisa, quæ anno præterito cessauit, l. silua, §. perinde, ff. de V. s. vel silua, quæ arboribus castisparia ad cultum redigitur, l. vbi, §. per, ff. de termino iure. Faciunt D. Iudorus lib. 15. §. rymal, cap. 13. ibi: Noualis ager est primū præcissus, sine qui alterius annis vocat, non arborum sibi vtrum causā. Varro lib. 4. de lingua Latina, ibi: Ager, restitutus, qui restituitur, ac reueritur quinquennis; contra qui intermissus, & non arborum noualis. In hac decimarum tractatione noualem dicimus agrum nonc primū præcissum, & de vno ad cultum redactum; de quo non extat memoria, quod aliquando cultus fuerit, cap. 1. cap. quid per nouale 2. de V. s. docuerunt Petrus Gregorius lib. 1. §. rymal, cap. 2. mon. 2. & lib. 1. part. tit. 25. cap. 1. Moneta de decimis cap. 4. §. 3. Bosquetus in nota ad l. inc. III. lib. 2. regest. 14. epist. 61. Harum noualium mentio fit in cap. finali, vt lite pendente, cap. ex parte 10. c. ad audiendam 12. cap. quoniam 13. cap. iura 25. §. finali, cap. ex parte 27. cap. cum contingat 29. de decimis, cap. 2. in princip. de §. 1. ord. lib. 6. c. consuetudinis 32. hoc tit. Si enim in præfenti tractatu nouale accipietur ptoxi suenit in iure ciuili, parochia magnum præiudicium sequeretur ex priuilegio concessio regularibus non soluendi decimas de prædiis noualibus: quare nouale semper accipitur pio prædio nouit cultu, & cuius cultus non extat memoria.

D. D. Gmezal, in Decretal. Tom. V.

EX hoc textu communiter deducitur, priuilegium non soluendi decimas ex prædiis noualibus non extendi ad noualia, in quibus iam alter ius percipiendi decimas habebat, nisi eorum expressa mentio fiat. Quod firmari potest ex cap. cum ordinem 6. de rescriptis, cap. finali, vt lite pendente, cap. causam 19. iuncta glossa verbo Nouiter, de rescriptis, cap. cum olim 18. cap. veniens 19. de rescriptis, cap. cum olim 12. de re iudic. cap. cum nostris 6. de concess. præb. cap. ex parte 27. de decimis. Et fulciunt cā maximā ratione; nam priuilegium iuri alterius non eo debet strictè interpretari, vt quod minus præiudicium afferat, cap. cum olim 6. cap. distilla 8. de consuet. dist. cap. iura, §. finali de decim. c. statuto 2. in princip. ord. tit. in 6. & cū tale priuilegium possit intelligi de terris, quæ nondum sunt redactæ ad culturam, ex quibus nullum, vel modicum sequitur præiudicium, dicta cap. quid per nouale, de V. s. non debet extendi ad prædia iam redacta ad culturam tempore impetrati priuilegij, in quibus tertius ius exigendi decimas habebat, ne ipse irrogetur præiudicium præter Pontificis intentionem, qui in concessione priuilegij non censetur voluisse detrahere iuri alterius, cap. super eo, de offic. deleg. cap. ex inuaro 5. de iusticiis, & c. p. p. lib. 1. cap. in bis, hoc tit. l. 2. §. morio, ff. ne quid in loco publico, l. impuberam, ff. de administr. iur. l. nec ausus, Cod. de emancip. lib. 1. quia dum in tali priuilegio non fit mentio præfentium noualium, creditur priuilegium per subreptionem impetratum, cap. cum nostris, de concess. præb. & subreptio vitiat priuilegia, sicut alia rescripta, cap. quod super, de fide instrum. cap. dudum, de præb. lib. 6. cap. 1. & finali, de fil. presby. ord. lib. 1. 2. de monialibus restituendis, l. cisi non cognitis, Cod. si contra ius: quare secundum priuilegium, si primū mentionem non faciat, illud non reuocat, cap. cum ordinem, de rescriptis, cap. cum olim, cap. veniens, de rescriptis, cap. ex parte, de capellis monach. l. Decernimus, Cod. de fidei iuramentis, lib. 1. 2. l. prædia, Cod. de locat. prædior. ciuit. ord. lib. 1. creditur enim circumuentas Princeps, neque eum habere voluntatem illud reuocandi, cap. cum olim, ibi: Sic credimus, de re iudicata, Docet Menochius lib. 6. de præsumpt. præsumpt. 40. a num. 2. Castillo lib. 6. controu. cap. 36. num. 7. Vnde in præfenti casu cūm Prior, & Canonici de Butella ratione priuilegij decimas perciperent etiam de prædiis noualibus à monialibus iam exultis, priuilegium impetratum ab ipsis monialibus non soluendi decimas ex noualibus non affert præiudicium monachis, nec eorum priuilegio detrahit. Accedit nam in præfenti casu lites pende-

X x 2 debet

debat inter ipsos super decimis: sed privilegium impetratum lite pendente, eiusque non facta mentione, nullum est, *cap. final. de lit. pendente. cap. cum semper qua. de testibus. Cenedus ad Decret. collect. 53.* Ergo ex hoc etiam capite privilegium in presenti à monialibus impetratum nullum erat.

4 Nec obstat si dicas privilegium exemptionis à solutione decimarum, extendi etiam ad pradia, in quibus alij percipiebant decimas tempore concessi privilegij, et si vlla mentio non fiat talis possessionis; quia decima semper possidebatur ab aliquo, sive ab Ecclesia parochiali, cui de iure communi debebatur, *cap. questi. cap. statimur. cap. in sacro 16. quasi. 1. cap. ab Apostolica. cap. cum contingas. cap. cum in tua. cap. quoniam. de decimis. ubi probatur. cap. final. de Parochia. cap. penult. de rescriptis. fol. lib. 6.* Et cum Pontifex concedat exemptionem, nullum facit mentionem possessionis parochialis, immò & tale privilegium extenditur ad pradia postea excolta, *cap. ex parte. et c. cap. ad audientiam.*

de decimis, de quibus Pontifex non cogitavit ergo quia privilegium extenditur cum textu prejudicio. Nam respondendum est, in presenti textu agi de privilegio exemptionis à decimis novallium, quod non extenditur ad decimas iam posseditas; quia non censentur novales ex quo pradia redacta fuerant ad culturam; licet pradia ipsa semper novalia dicantur, *cap. consuetudinum 32. hoc tit.* At verò cum privilegium generaliter concedatur non soluendi decimas ex agris iam cultis, ceterum Pontifici satis notam fuisse possessionem, quam parochi iure communi habent; & sic per consequens Pontificem illi velle derogare: quare si ius exigendi similes decimas, non ordinarium, sed extraordinarium virtute privilegij, consuetudinis, aut prescriptionis alicui competat, non censetur derogatum, quia non presumitur in dubio Pontificem revocare ius, quod ignorat, *cap. super eo. de offic. deleg. docet Couar. lib. 1. var. cap. 17. n. 14.* Annectenda sunt huic commentario omnia, quæ adduxi in *cap. final. de lit. pendente.*

CAPVT XXXII.

* Idem.

Q Vidam (sicut asseris) in privilegiatorum fraternitate recepti, nolunt tibi de iuribus Episcopalibus respondere. Verùm quamdiu huiusmodi fratres moram in domibus suis fecerint, eos compellere poteris ad dicta iura tibi integrè persolvenda.

NOTÆ.

* Idem.] Gregorius IX. videlicet, cuius epistolis cum careamus, cognoscere non pos-

sumus cui Prelato in presenti rescribit: quod verò in presenti docet, expressè in *cap. 3. § de consuetudinibus, hoc tit.*

CAPVT XXXIII.

Idem * Arelaten. Capitulo.

Consultationi vestræ breviter respondemus, quod terra, de qua non extat memoria, quod aliquando enca fuisset, redacta per religiosos viros noviter ad culturam, perpetuò debet, quoad immunitatem de non soluendis decimis, novallium iure censeretur. Cum alias nonnunquam contingeret indulgentiam de novallibus plus eis dispendij, quam utilitatis adferre.

NOTÆ.

1.

* Arelaten.] De Arelaten. diocesi epi in *cap. 16. de offic. deleg. &c.* quid novale dicatur, expressè supra proximo commentario. In presenti tantum docet Gregorius, prædium novale semper novale manere, id est, quod si alicui concedatur exemptio à solutione decimarum de prædiis novallibus, & ipse prædia noviter propriis manibus excolat, nunquam de tali prædio decimas solvere teneatur; nam privile-

gium à Principe concessum decet esse mansurum, *cap. privilegia 25. quasi. 1. regula Decret. de regul. iur. lib. 6.* aliis si per primo anno tantum prædium novale diceretur, novale privilegium potius damnum, quam commodum afferret; nam qui prædium novale magnis sumptibus ad culturam redegit, sequentibus annis teneretur ex eo decimas persolvere: unde ut privilegium iuxta naturam suam commodum affret, rectè docet Gregorius in presenti, prædium novale semper novale manere.

TITVLVS XXXIV.

De purgatione canonica.

CAPVT I.

Ex Concilio^a Triburiensi.

Nobilis homo, vel ingenuus, si in Synodo accusatur, & negauerit, si fidelem esse eum sciuerit, cum xii. ingenuis se expurget. Si antea deprehensus fuerit in furto, aut periurio, aut falso testimonio, ad iuramentum non admittatur: sed sicut qui ingenuus non est, feruenti aqua, aut candenti ferro se expurget.

*NOTÆ.

1. ^a *Triburiensi.*] Ita etiam legitur in prima collectione, *sub tit. de purgatione vulgari*, ex qua litteram transcribo: & etiam ex hoc Concilio textus hic citatur à Butchardo lib. 16. decret. cap. 19. & sub nomine Palæ à Gratiano in cap. nobilis 5. 2. quest. 5. Et licet verba ipsa non reperiuntur in Concilio Triburiensi, erat tamen sententia in caoone 22. in hæc verba: *Si quis fidelis libertate nobilis, aliquo crimine, aut infamia deponatur, reuocatur iure iuramento se excusare: si verò tanto, aliquo crimine publicatur, ut criminofus à populo suspiciatur, & propterea superiorem, aut constitutum, & pariter, aut Episcopum, vel sui missi discretionem per ignem candentis ferro caui examinetur.* Illud ex præfati canone liquiddò constat, adhiberi discretionem dignitatis, status & conditionis, perinas delinquentibus imponendas esse, seu cuiusque in seruos, quàm in nobiles animaduersi, l. 13. §. 3. l. capitalium 28. §. final. ff. de parui. Cuius discreti-

onibus vestigia extant apud Paulum lib. 5. senecæ. tit. 8. §. 7. & ibi. 20. §. 2. & vlt. & in 2. §. 11. l. 3. §. penult. ff. ad leg. Cornel. de sicar. in l. 1. §. vlt. ff. de accusat. l. 6. ff. ad leg. Iul. pœn. Vlpianum lib. 7. de offi. Procons. apud Læcinius Rufinum in collat. legum Mosac. tit. 28. de beneficiis, cap. pastoralis 28. de offi. deleg. cap. final. de parui, l. 8. tit. 3. parit. 7. ibi: *Que nos credendum debet fieri ostendit et homine vil, que el fidalgo.* Concil. Narbon. cap. 4. Quod si quisque præsumpserit facere, si ingenuus est, dei Camis ciuitatis saldos sex: si seruus, centum flagella suscipiat. Motis pro lege fuit apud Francos & Sueuos incendiarium, aut prædonem aeternam morte plebeteretur, ignominia eandem circumferre: si plebeius, scellam: si rusticus, rotam aratri. Orho Frising. lib. 2. de gestis Frider. cap. 18. quem refert Dadingus Altestera de Ducibus lib. 2. cap. 8. Prosequuntur Titaquellus de nobilit. cap. 2. Simancas de combolici infra. tit. 45. de nam. 19. Vissembachius dignitat. 1. nom. 14. & oortuius iam in cap. final. de fero compet.

CAPVT II.

Ex Concilio^a Agathensi.

Si quis presbyter vitæ suæ negligens prauis exemplis malè de se suspicari permisit, & populus ab ipso iuramento, seu^a banno christianitatis constrictus infamiam eius patefecerit, & certi accusatores criminis eiusdem defuerint, admoneatur primò seorsum ab Episcopo: deinde sub duobus, vel tribus testibus, si non emendauerit, Episcopus eum publica increpatione & admoneat. Si verò non sic se correxerit, ab officio suspendatur usque ad dignam satisfactionem, ne populus fidelium in eo scandalum patiatur.

NOTÆ.

1. ^a *Agathensi.*] Ita etiam legitur in prima collectione, *sub hoc tit. cap. 1.* & ex ipso Concilio citatur textus hic à Butchardo lib. 2. decret. cap. 181. Carnot. part. 6. decret. cap. 226. ex quibus illum transcribo: & inter fragmenta addita ipsius Concilij reperitur textus hic, & vltima eius pars extat apud Gratianum in c. si legimus 12. 2. quest. 5. Concilium hoc celebratum fuit in Agathensi urbe, in Basilica S. Andrea, 3. Idus Septembris anni 506. Symmachii Papæ 8. Anastasij Imperatoris 16. Theodolci in Italia regnantis 14. Prælide D. D. Gencel. in Decretal. Tom. V.

Cæsario Arelatensi Episcopo. pro disciplina ecclesiastica collapsa restituenda, ut constat ex canone 73. Concilij Meldensis, & restit. Cosiolanus in sum. Concilior. fol. 332. Binius in eius notis, tom. 10. Concil. Regia editio.

b *Banno.*] Bannire apud antiquos Francos idem est ac edicto vocare, lib. 4. cap. 25. ibi: *De ceteris verò causis, vnde quis rationem est redditurus, non bannitur, sed per Comitum bannitur.* In legibus Ripuar. tit. 67. Si quis legibus in utilitatem Regis, siue in hostes, siue in reliquam utilitatem bannitus fuerit, & monitus adimplerit, si agrius eum non detinuerit, solidis lx. mulietur. Gregorius Tinoensis

in appendice, cap. 87. Iussu Sigheberti omnes Landes Austriae in avariciam ad gradiendum bannii sunt. Marculfus lib. 1. formal. cap. 10. Iubemus ut omnes pagenses vestros homines, & loci congruis per civitates, vicus, & castra congregare faciant. Plura Ioannes Voßius de vitiis formis, lib. 2. cap. 22. Bignonius ad Marculf. lib. 1. formal. cap. 40. Sic bannum pro denunciatione, & edicto ponitur lib. 3. cap. 66. & lib. 4. cap. 24. quo modo accipitur in presentis, & in cap. 55. 16. quæst. 1. cap. 13. de prescript. cap. 124. 27. de spons. cap. 6. qui matrimonium accusare, cap. 1. 15. quæst. 4. ubi bannire significat edicto adicere poenâ vocare. Inde etiam poena, seu multa edicto non obtemperantis, bannum dicitur sæpe in Capitularibus concessis à Lindembrogio in glossario legum amicis, verbo Bannum: & etiam pro exilio & eiectione plerumque ponitur, cum quis eiectus à consorcio fidelium: unde bannus Dei dicitur in Synodo Constantina can. 6. & in Concilio Colonienſi part. 14. cap. 21. ibi: Ceteros omnes nobiles, & ignobiles per bannum Christianitatis am-

stringat. Non tamen semper bannus communionis ecclesiasticæ interdictum, sed poenam aliam ingerit, veluti peregrinationis, aut ieiunij. Quare in Concilio Salegust. can. 15. legitur, bannum ieiunium, pro ieiunio magno, & rigido: quasi per eum bannum, siue ieiunium Dei avertamus, ut exponit Landtmeter. lib. 2. de veteri clerico, cap. 87. plura de banno, & eius acceptionibus congesseunt Cironius lib. 1. abſera, cap. 16. & in cap. alim. de iniuriis, in 5. compil. Filicacus de origine paroc. cap. 7. ad finem, & in cap. 1. §. 19. de offic. ordin. Bosquetus in notis ad Innoc. III. lib. 1. epist. 95. Sirmondus ad capitul. Caroli, fol. 59. & 63. P. Picheus lib. 2. aduers. cap. 10. Chopinus lib. 1. de iurisf. Ardegan cap. 4. Stephanus Durantius qq. inr. quæst. 18. D. Nicolaus Anton. de exilio lib. 3. cap. 9. Beyerlinch. in Theatro, tom. 1. verbo Bannum. Unde banno Christianitatis parochianos contineri in presentis est edicto per Episcopum cogi sub interminatione interdictionis communionis Christianæ.

CAPVT III.

Ex Concilio^a Meldensi.

VT illæ, quæ quasi sanctimoniales sub velamine religionis degere cognoscuntur, sed potius iuxta Apostolum in deliciis viuentes, mortuæ in diuinis oculis computantur, libidinibusque, & cæteris carnis voluptatibus inservire accusantur, si manifestè detegi poterint, Episcopali auctoritate, & Regia potestate in talibus locis residere sub testimonio religioso cogantur, ubi poenitentiam si fecerint dignam, adsequantur etiam fructuosam. Si autem manifestè detegi non valuerint, erga Ecclesiam suæ opinionis malam famam legaliter purgare cogantur: j&c vt religiosius de cætero viuant, Episcopali decreto, & Regia potestate coëctæ antur.

NOTÆ.

^a **M**eldensi. Ita etiam legitur in prima collectione, sub hoc tit. cap. 2. & ex ipso Concilio citatur textus hic à Borchardo lib. 9.

Decreti, cap. 50. Carnotensi part. 7. Decreti, cap. 68. & extat in ipso Concilio can. 70. prout in presentis transcribitur. De hoc Concilio Meldensi isem nonnulla adduxi in cap. 1. de consiliis.

CAPVT IV.

Ex^a eodem.

DE his, qui sponsas alienas rapiunt, vel consensu parentum accipiunt, antiqua, & synodalis sententia obſervetur: quod si forè in Ecclesia euenius talis reperiri dignoscitur, vt pro saluïs, & religionis competencia humanius quiddam debeant tractare Pontifices, sicut canonica (vt eisdem verbis utamur) docet auctoritas, quia prior quidem, iniquis, diffinitio durius; posterior autem quiddam tractauit humanius, nullo modo, vt ad maximam indulgentiam descendamus, alterius sponsæ acceptor sine publica transeat poenitentia, & sponso legaliter multam componat. Quod si his obedire renuerit, sine vlla refragatione anathematizetur: fauores verò illius iuxta modum culpæ Episcopali decreto poeniteant. Si verò, quod non optetamur, de gradu proprio repellatur: et si verisimilibus exinde suspicionibus fuerit propulsus, & canonice nequiuert approbari, secundum sanctorum Patrum statuta se purgare cogatur.

NOTÆ.

^a **E**odem. Ita etiam legitur in prima collectione, sub hoc tit. cap. 3. & ex eodem Con-

cilio citatur textus hic à Borchardo lib. 9. Decreti, cap. 32. Carnotensi part. 8. Decreti, cap. 10. extatque in canone 48. ipsius Concilij prout in presentis transcribitur.

CAPVT V.

^a Innocent. Papa ^b Aquileiensi Patriarcha, & ^c Episcopo. ^d Mant.

Quotiens frater noster A. ^a Tridentinus Episcopus in nostra, & vestra de simonia impetitus sit presentia, prudentiam vestram latere non credimus, cuius causam in presentia nostra ventilauimus. Producti sunt apud eum accusatores, sed vna voce scriptum afferentes, nec testes secundum formam canonum producere potuerunt, quod Ecclesiam beati Petri de Paforum presbytero Paulo dederit pro quatuor modis de frumento, quos ab eiusdem Ecclesie laicis acceperit. Vnde quia nec accusatores, nec testes secundum formam canonum, & statuta sanctorum Patrum in causam ipsam procedere potuerunt, communi fratrum nostrorum consilio iudicamus, vt tercia manu sui ordinis, & quatuor Abbatum, & religiosorum sacerdotum de supradicta simonia in vestra presentia se debat expurgare. Porro expurgationis tenor erit huiusmodi. Idem Episcopus super sancta Euangelia primum iurabit, quod pro Ecclesia sancti Petri de Pa. presbytero Paulo danda, nec per submissam personam, nec aliquis pro eo, se sciente pretium receperit: deinde expurgatores super sancta Euangelia iurabunt similiter, quod ipsi credunt, quod verum iurauit.

NOTÆ.

1. ^a *Innocentius.* Ita etiam legitur in prima collectione, *sub hoc tit. cap. 4.* & post Concil. Lateran. p. 506. 57. & sub nomine Palei textum hunc scripsit Gratianus in *cap. quatuor 2. quest. 4.* Vnde cognoscitur quibus perpetam in hac sexta collectione legitur *Innocentius III.* cum declarationes huius Pontificis non reperiantur compilare, nec in prima collectione, nec in Decreto Gratiani. Et ita restat textum hunc tribuit Innocentio II. Antonius Augustinus in *presenti.*

2. ^b *Aquileiensi.* Aquilegia, sine Aquileia, vt legitur apud Eusebium in *scholijs ad Dionysium*, est vrbis maxima Venetie, dicta Aquileia ab aquila, quæ, teste Iuliano Imperatore, vbi eum conderetur, dextra ex parte aduolans, suo nomine vocabulum imposuit. Habuit Ecclesiam Cathedralē iam a primis Ecclesie sæculis. Fortunatiani eius Præfultis meminit D. Hieronymus in *lib. de script. ecclē.* & Leo Magnus epistolam scripsit ad Nicæam, & Iulianum Aquileiense Præfultem postea Patriarcha constitutus fuit eius Episcopus, vt constat ex epistola Stephani Pontificis ad Gualbertum. Sed postea Atrilla Aquileiam obfidente,

Patriarcha ipse Gradum se recepit, vnde Gradensis appellari cepit: sed Grado relicto propter exili inclementiam, occasionem ipse dedit Venetis eam dignitatem ad Episcopum proprium trahendi Nicolai V. Pontificis beneficio: quare Patriarcha hic aliquando dicitur Aquileiensis, aliquando Gradensis, plerumque Vroetus. Aquileiensis appellatur in Synodo Francofort. Gradensis in *cap. 29. de offic. deleg.*

^c *Mantuan.*] Mantua nobilis Gallie Cisalpinæ ciuitas est, circa cuius conditiorem variis adducit Vghellius *tom. 2. Italia sacra, fol. 924.* vbi exponit locum sui Mantuani *lib. 10. Aeneidis.* Habuit a primis Ecclesie sæculis Ecclesiam Cathedralē, quæ parit primò Mediolanensi Archiepiscopo: postea Gregorius I. Patriarchæ Aquileiensis Sedem illam adiecit, sed demùm Pius V. anno 1553. Mantuanam Ecclesiam à Iurisdictione Aquileiensis exemit, atque Romanæ Ecclesie eandem immediatè subiecit, vt refert Vghellius *ubi supra.* Eius Præfultis Vidoni rescribit in presentem Pontifex.

^d *A. Tridentinus.*] Adelpertus videlicet III. huius nominis. De Tridentina diocesi nonnulla adduxi in *cap. 9. de concess. grat.*

CAPVT VI.

Alexand. ^a Euriensi Episcopo.

Nos inter alios præeminemus supernâ, licet immeriti, dignitate, vt quæ dubia sunt, debeamus declarare, & singulorum consultationibus, quantum nobis Dominus ministravit, sollicitè respondere, vt quæstiones sub examine Rom. Ecclesie terminentur, quæ inter alias Ecclesias, disponente Domino, obonet principatum. Vnde quia nos tua duxit fraternitas consulendos, verum Episcopus parochianum suum, publicâ famâ eum accusante, ad purgationem cogere possit: Consultationi tuæ taliter respondemus, quod si de hoc crimine publicè laboras infamiâ, accusatione, & testibus deficientibus, ad purgationem est per diocesana Episcopum compellendus, nisi fortè super ipsa causa ad superiorem iudicem duxerit appellandum. Sanè si appellauerit, eius parebit iudicio, ad cuius examen causam voluit per appellationem transferrere.

NOTÆ.

- I. ^a *Primis.*] Ita legitur in prima collectione, *sub hoc tit. cap. 7.* quamvis in priore eius parte, quæ extat *sub tit. de offic. Ordinarii, cap. 4. in eadem collect.* ex qua restituo integram litteram huius textus, legatur *Gen. Episcopo*: in cuius notis Augustinus asserit legendum esse *Genuensi Episcopo*; sed malè, cum obstat inscriptio ipsa ibi,

Episcopo. Quare credo retinendam esse inscriptionem *Eurymis*, quæ extat in dicta prima collectione: Euria enim, aliquando Euroma dicta, est in provincia Nicopolitana Illyrici Orientalis, cuius Episcopus Theodorus subscripsit Concilio Constantinopolitano temporibus Agathonis, & Mendæ celebrato.

b *Crimine.*] Cuius poenitentia spectat ad iudicium Ecclesiæ, iuxta tradita in *cap. 1. de offic. ordin.*

CAPVT VII.

Idem ^a *Gaietan. electo.*

Cum P. Manconella presbyter. *Et infra*: Purgatores illius honestatis, & opinionis esse volumus, quod verisimile sit eos nolle amore, vel odio, seu obventu pecuniæ deicere. Ut autem idonei appareant, necesse est, ut eius, quem purgare debent, vitam, & conuersationem agnoscat. Deficientem verò in purgatione omni officio, & beneficio ecclesiastico priuare procures: præcauens, quod si qui purgando in sua voluerint purgatione adistere, nullam eis malevolentiam, vel indignationem ostendas, nec eos impediās, vel ab aliis, quantum in te est, impediri permittas.

NOTÆ.

- ^a *Aietan.*] Ita legitur in prima collectione, *sub titulo accusatorum, cap. 12.* post

Concilium verò Lateran. *part. 50. cap. 14.* legitur *Gaiensis*: sed veram eius inscriptionem dedi in *cap. cum P. de accusat.*

CAPVT VIII.

^a *Lucius III.*

Ex tuarum intelleximus continentia litterarum, quod cum H. presbyterum latorem præfentium, quia infamabatur de homicidio, communicato fratrum consilio in Episcopatu tuo à sacerdotali officio suspendisses, bonæ memoriæ prædecessoris tui literas tulit in medium, in quibus apparuit eum iudicio aquæ frigidæ suam innocentiam purgauisse, & Episcopum eum suis literis absoluisse: & scholaris, & qui homicidium instigante diabolo perpetrauerat, immuncm seipsum à crimine tactis sacrosanctis Euangelis affirmauit. Quia verò cum peregrina iudicia sacris canonibus sint inhibenda, purgationem, quam præstiterit, sufficere non putamus: f. t. per A. f. m. quæ si accusatores minimè idonei inuenti fuerint, qui eum de homicidio convincere possint, ut cum VII. aut V. manu sui ordinis, sicut expedire cognoueris, per purgationem canonicam innocentiam suam ostendat, iniungas: quam cum præstiterit, suspensionem sine mora, & difficultate relaxes, & eum testimonij boni adnuntiāns, ab infamia homicidij, nullius cont. vel ap. ob. auctoritate nostra fretus absolvas. Is autem, qui infamatur, sese immuncm à crimine homicidij præstiterit iuramento firmabit, & purgatores, quod eum credant verum iurasse, iurare debebunt.

NOTÆ.

- I. ^a *Primis III.*] Ita etiam legitur in prima collectione, *sub hoc tit. cap. 5.* post Concilium Later. *part. 50. cap. 50.* habetur *Cuen. Episcopo*. Cuen. enim, seu Cuius, est ciuitas Italiae in

provincia Valeriæ, teste Scrabone *lib. 5.* cuius Episcopus Tiberius subscripsit Concilio Romano sub Hilario celebrato, ut refert Carolus à sancto Paulo *lib. 1. geograph. sacr. fol. 57.*

b *Judicia.*] Ut probabimus *infra, tit. proximo.*

CAPVT IX.

Idem ^a *Winton. Episcopo.*

Constitutus in præsentia nostra P. Diatons de Boxha, suâ nobis assertionem monstrauit, &c. *Et infra*: Præterea illud nobis non modicam admirationem inducit, quod purgationem oblatam recipere noluit, nisi prius commendasset nomina singulorum,

singulorum qui iamdictum P. purgare volebant, & de nationibus, & de cæteris supradictis prius inquireret diligenter, tanquam esses ordinationem facturum. Vñam sic discuteret ordinandos. Sanè in purgationibus faciendis, cum satis sit illi, qui purgando exhibet iuramentum, si secundum propriam conscientiam, & opinionem iurat, quod purgandus à crimine sit immunis, & bonum exhibuit iuramentum, si purgatores ab Ecclesia tolerentur, & sunt bonæ famæ, in suis ordinibus ministrantes, nec in iudicio pro crimine condemnati, proculdubio sunt absque vilius indagatione admittendi.

NOTÆ.

V^{Vintoniensis.}] Ita etiam legitur in prima collectione, sub hoc tit. cap. 6. post Concil.

autem Lateran. part. 8. cap. 21. tandem Lucius III. de Vintoniensis Angliæ diocesi egi in cap. cum Ponten. de elect.

CAPVT X.

N.º Senonen. Archiepiscopo.

Inter sollicitudines nostras illa debet esse præcipua, vt capiamus vulpeculas, quæ muliuntur vineam Domini demoliri, species quidem habentes diuerfas, sed eas admodum colligatas, quia de vanitate conueniunt in idipsum. Hi sunt namque caupones, qui aquam vino commiscent, qui virus draconis in aureo calice Babylonis propinant: qui (iuxta verbum Prophetæ,) arcum rem amarum intendunt, vt fugitent innoxios in oculis: quorum error serpit vt cancer, ita quod nisi bovis in flore lædatur, fructum non solum amarum, sed etiam pestiferum germinabit. Hos Apost. egregius prædicat in epistola sua prophetico sermone describit, & docet omnimodis euitandos. Contra quos sacerdotes tubis argenteis clangere debent, vt clamante populo, arca fœderis præcedente, muri corruant Hierico, quæ iam fuerat perpetuo anathemate condemnata: ita quod si quis ex ea vel regulam auream furari præsumpserit, cum Achor filio Charmi lapidibus obruatur. Tu ergo sicut vir providus, & discretus, veri pastoris adimplesofficium, & super grege tibi commissio purè, ac plenè sollicitudinem pastorem exerceas, dom & legem Christi zelaris, & hæreticorum impugnans errorem, in fautores ipsorum exis gladium canonicæ vltionis. Vigilans enim vigilas super grege tuo, ne relicto veri Pastoris ouili, quod est vnum, oues aberrarent, post vestigia gregum, qui non sunt ex eo, temerè abeuntes: vel ne lupus eas rapiat, & dispergat, quas Veritas in eodem ouili sub vno pastore fidei Catholicæ coniunxit. Inter præcipuos quidem vineæ Domini Sabaotz agricolas deputatus, vulpeculas, quas descripsimus, non pateris eius speciem demoliri, sed eas vel capere potius satagis, vel fugare. Sanè sicut ex literis tuæ fraternitatis accepimus, cum ad preces venerab. fratris nostri Aluissiodoren. Episcopi ad villam, quæ caritas dicitur, accessisses, præsentibus eodem, & venerabilibus fratribus nostris Niuern. & Melden. Episcopis, in vnum fecisti eiusdem villæ populum congregari: vbi de hæreticis, & eorum dogmatibus inquisitione diligenti habità, inter alios, quos super hæretica prauitate reperisti publicè infamatos, Decanum Niuern. communi didicisti opinionem grauari, & in eo, & per eum non modicum fuisse scandalum Catholicorum animis declaratum. Vnde propter vehementem infamiam, & graue scandalum ipsum ab officio, & beneficio suspensidisti, apud Aluissidor. diem ei certum assignans, quo tuo se conspectui præsentaret ab obiecto crimine defensurum. Cumque statuto termino ad tuam præsentiam accessisset, præsentibus dictis Aluissiodoren. & Niuern. Episcopis, ac pluribus in vtroque iure peritis, cum certis accusator contra eum minime compareret, tu ex officio tuo testes tam proprio, quam contra ipsum recipi, ac diligenter examinari fecisti, & attestaciones etiam publicari. Cumque postmodum se non ad concessum ei diem tuo se conspectui præstasset, cum facultatem liberam indulsisses in testes ac eorum dicta dicendi, ac proponendi suas in medium rationes, quibusdam propositis probationibus, & allegationibus, tandem renuntians, sententiam postulauit. Tu verò cum venerabilibus fratribus nostris Trecon. ac dictis Aluissiodoren. & Niuern. Episcopis secedens in vnum, inspectis attestacionibus diligenter, & adhibito plurium consilio sapientium, quia crimen contra eum liquidè probatum non erat, ipsum non duxisti de hæresi condemnandum. Verum quoniam ex dictis

dictis testium multa erat præsumptio contra eum, virore cum esset manifestè probatum, eum familiaritatem hæreticorum non solum habuisse, sed etiam capasse scienter, eum publica eum laboraret infamia, & tantum fuscitatum esset scandalum contra ipsum, quod non posset canonica purgatione deleri, nec ipsum absolueret, nec purgationem, quam obtulerat ab initio, & tunc etiam offerebat, recipere voluisti: sed ipsum cum literis tuis ad Sedem duxisti Apostolicam destinandum, intelligens, quod ex concessa nobis plenitudine potestatis, citra penam canonicam dispensare possimus, & ultra eam rigorem severitatis augere. Cæterum ei postmodum in nostra præsencia constituto communem audientiam in nostro consistorio concessimus: ubi se multipliciter nixus est excusare, illud præferim allegans, quod cum non apparente accusatore legitimo purgationem offerret, testes contra eum non fuerant aliquatenus admittendi. Nos igitur literarum scientiam, & honestatem morum in te pariter attendentes, licet ecclesiastica constitutio tales ab officio tantum usque ad purgationem canonicam doceat suspendendos; quod tamen eum eum à beneficio propter immanitatem criminis, ut credimus, suspendisti, nolumus improbare: nec illud etiam propter causam improbamus eandem, quod licet nullus contra eum legitimus accusator compareret; ad detegendam tamen huius mortiferæ pestis, immò pestiferæ mortis radicem, ex officio tuo, famam publicam deferente voluisti plenius inquirere veritatem. Attendentes autem vulgatam infamiam, grave scandalum, & vehementem suspicionem ex testium dictis obortam, quæ contra eundem Decanum facere videbantur, cum propter eorum quodlibet ei esset purgatio iniungenda; & seruantes, & mollientes rigorem, de consilio fratrum nostrorum Archiepiscoporum etiam, & Episcoporum apud Sedem Apostolicam existentium, purgationem quartadecimæ manus sui ordinis ei duximus indicendam. Ipsum igitur ad te eum literis Apostolicis remiuentes, ut ibi purgetur, ubi noscitur infamatus, fraternitati tuæ per Apostolica scripta mandamus, quatenus ascitis tecum dicto Niuernensi, & venerabili fratre nostro Parisiensi. Episcopis, indictam ei à nobis purgationem recipias: ita tamen, ut qui ad eius purgationem processerint comprobendam, sint fide Catholici, & vitæ probati: qui conuersationem, & vitam ipsius non tam moderno tempore nouerint, quam transfacto. Purgatione verò receptâ beneficium ei restituere non postponas, ne cogatur in Cleri opprobrium mendicare. In penam autem familiaritatis illius, quam cum hæreticis scienter habuisse dignoscitur, eum ab officio volumus manere suspensum, donec scandalum sopiatur: ita tamen, ut publicè familiaritatem hæreticorum abiuret. Præcipias insuper ipsi directè, ut in prædicta, & aliis villis circumpositis profiteatur, & prædicet fidem catholicam, ac confundat, & detestetur hæreticam prauitatem, sic deinceps vitam suam bonis adornans operibus, ut infamia conuertatur in famam, & omne scandalum, & suspicio de Catholicorum mentibus deleatur. Quod si forsitan in purgatione defecerit, eum ecclesiasticæ distractionis mucrone perecellas, & ab officio, beneficioque depositum, ad agendam penitentiam in arctum monasterium recludere non omittas. Datum Later. Non. Maij.

NOTÆ.

a *Ennenfi.*] Ita etiam legitur in tertia collectione, sub hoc tit. cap. 1. & reperitur textus hic in epistolis ipsius Pontificis correctis à Sirleto fol. 309. ex quo recte integram epistolam transcribo, ut plenius præsentis textus casus com-

prehendatur. Pontifex rescribit in hac epistola Petro de Cortbolto, de quo iam nonnulla retuli in cap. 1. de postul. Prælar.

b *Officio tantum.*] Ex his verbis rectè probat Gibalinus de censur. disquisit. 7. quest. 12. 3. part. regula, non semper suspensionem ab officio, esse per consequens suspensionem à beneficio.

CAPVT XL.

Idem Abbati sancti Dionysij, & Priori sancti Martini de Campis, & Magistro Scholarum Aurelian.

Cum dil. Es infra: Illud autem nos attendere volumus, & mandamus, ut tales personæ ad purgationem huiusmodi admittantur, quæ vicinæ sunt, & honestæ.

NOTÆ.

NOTÆ.

ⁿ *Sancti Dionysij.*] Ita præfens inscriptio concipitur in tertia collectione, *sub hoc tit. cap. 2.*

non tamen reperire potui textum hunc inter epistolas Innocentij editas à Sicleto, & Bosquetto: ideo cognosce nequit quibus Prælati verè referant Innocent. & de cuius purgatione in eo agat.

CAPVT XII.

Idem.

Cum in iuuentute sua. *Et infra:* Quia verò pater filium, quem diligit, corripit nos eundem Episcopum per literas vobiscum, etiam iniungentes eidem ad maiorem cautelam, ut ab illius familiaritate cessando, apud Deum, & homines taliter se haberet, quod sinistra de ipso suspicio non possit haberi: sed inimicus homo rescriptum literarum illarum subripiens, apud prædictum Regem, & Magnates regni ipsum nequiter publicauit; ut sic idem Episcopus deberet amplius infamari, cum videretur esse vobis incredibilis, & suspectus. Vnde nos tantam æmulatorum nequitiam attendentes, licet pulsati fuimus maledicens contra eum, nunquam tamen aduersus ipsum potuimus commoueri, scientes, quod dictum facillè sequitur multitudo. Vbi verò idem Episcopus ad Antigonien. Metropolim exiit postulatus, quidam qui super ipsa postulatione aduersabantur eidem, ut promotionem ipsius facilius impedirent, illius criminationis carbones reaccendere sunt moliti. Vnde quidam procurator ipsius in nostra præsentia constitutus de consilio quorundam amicorum suorum, qui super hoc quidem bonum zelum habebant, sed non secundum scientiam, excepit à nobis in præsentia fratrum nostrorum eum instantia postulare, quatenus eidem Episcopo purgationem canonicam faceremus iudici, ut suam innocentiam demonstraret. Nos autem postulationem ipsius minus prouidam, immò nimis improuidam reputantes, procuratorem ipsum ab ea sæpe volumus reuocare. Cumque sæpe factus Episcopus non videretur apud bonos, & graues de illo crimine infamatus, cum Coepiscopi super hoc ex mandato Apostolico requisiti laudabile testimonium de ipso nobis curauerint exhibere; tamen quia talis infamatio videbatur ab inimicis, & æmulis processisse, sicut superius est expressum; vnde cum antea facta eius vita commendabilis exstitisset, & huiusmodi facinus incredibile exstitisse crederetur, non credebamus ei purgationem aliquam indicendam. Cæterum quia procurator instabat, compulsi fuimus non iuris necessitate, sed importunitate petentis, ut ei per vos purgationem canonicam cum duobus Abbatibus mandarem iudici, quamuis eidem procuratori fuimus protestati, quod ex alia quoque causa talis petitio minus prouide tunc fiebat, quia videlicet Strigonien. Ecclesie suffraganei vix eo tempore purgarent eundem, quia in facto postulationis contradicebant eidem: & suffraganei Colocen. Ecclesie ipsum minimè tunc purgarent, quia inter eum, & Colocen. Archiepiscopum de Strigonien. Metropoli contentio vertebatur. Vnde cum non sint alij Pontifices in Vngaria, meritò videbatur, quod per Episcopos regni sui non posset in illo articulo se purgare.

NOTÆ.

Idem.] Ita similiter legitur in tertia collectione.

ne, sub hoc tit. cap. 3. sed veram inscriptionem & integram literam dedi in cap. cum in iuuentute 13. de presumpt. vbi etiam alia pars præsentis Decretalis,

CAPVT XIII.

Idem ^a *Tyrensi Archiepiscopo.*

De testibus. *Et infra:* Illi verò, qui ad purgandam huiusmodi infamiam inducuntur, id solum tenentur iuramento firmare, quod veritatem eum credant dicere, qui purgatur.

NOTÆ.

^a *Tyrensi.*] Ita etiam legitur in tertia col-

lectione, *sub hoc tit. cap. 4. & in cap. de testib. 29. de testib. vbi integram hanc epistolam dedimus,*

CAPVT XIV.

Idem, Florent. Episcopo.

Accedens ad præsentiam nostram dil. fil. T. diaconus parochianus tuus humili insinuatione monstrauit, quod cum à suis æmulis diceretur, quod esset filius sacerdotis, tu ipsum nec promouere uoluisti, nec permisisti ab alio promoueri. Quocirca f. r. per A. f. m. quat. si diaconus ipse publicè fuerit huiusmodi notā rescriptus, & de ipsa tibi legitime constare non potuerit, purificatione ab ipso recepta, dummodo aliud canonicum non obstitit, ipsum non differas propter hoc ad sacerdotis officium promouere, quia etsi non sit nota delictū, est tamen nota defectus impediens ad sacros ordines promouendum.

NOTÆ.

1. **Florentino.** Ita etiam legitur in tertia collectione, sub hoc tit. cap. 5. Ioanni uidelicet Velliemenſi. De Florentina Ecclesia egi in cap. 31. de elect.

2. **Æmulis.** Sed cum infamia orta est à maleuolis, & æmulis, non est iniungenda purgatio, siquidem ex tali infamia non resultat grauata opinio, cap. qualiter, et 2. de accusat. Ergo in præsentia

casu non erat indicenda purgatio propter infamiam in æmulis actam. Respondetur in præsentia casu adfuisse scandalum aliunde ortum contra ipsum ordinandum, et si tantum ex eius allegatione constaret notam defectus natalium ab æmulis originem habuisse: quare propter scandalum, quod iam ortum erat, iniungitur purgatio in præsentia casu, ut etiam iniungitur in cap. inter, hoc tit. cap. presbyter si à plebe 2. quæst. 4. docuit Moles in comp. iur. tit. 2. de iurisd. num. 121.

CAPVT XV.

Idem Abbati^a Argentin. & Magistro G. scholastico Cucien.
& de Valle.

Cum dil. f. H. presbytero, & G. procuratore O. clericis constitutis in præsentia nostra dil. fil. T. Subd. & Capellanum nostrum concessimus auditorem, idem procurator proposuit coram eo, quod cum dictus presbyter super incestus crimine fuisset publicè infamatus, bon. memoriæ b Constantien. Episcopus ordinarius iudex, eidem purificationem indixit, qui cum se purgare nequiuisset, ab eodem Episcopo fuit in plena Synodo suis Ecclesiis sententialiter destitutus, quas ipse nihilominus detinuit aliquamdiu per uolentiam occupatas. Cumque postmodum idem presbyter cuiusdam consanguinei sui uxorem adductam in domo publicè destineret, ad petitionem H. Plebani de Henito, & quorundam aliorum clericorum Constantien. dicec. dil. fil. de Scennis, & de Vestronen. Decan. nostras dicimus literas sub hac forma destinasse, ut si dictus presbyter super crimine adulterij, & incestus coram ipsis se purgare non posset, ipsum penā debitā castigarent: qui iuxta mandati nostri tenorem in negotio procedentes, cum constitisset eisdem, quod idem presbyter pro eo, quod in purificatione defecerat, ab Episcopo memorato fuerat in Synodo condemnatus, ipsum vitiope contumacem prædictis Ecclesiis per sententiam priuauerunt, maxime cum de incestu, & adulterij crimine, tanquam de notorio, manifestè liqueret eisdem: dil. fil. Abbati sancti Galli, ad quem illarum Ecclesiarum donatio pertinebat, potestatem liberam concedentes Ecclesias ipsas personis aliis conferendi, qui eas postea prædicto O. clerico assignauit. Et infra: Dictus uero presbyter inter cetera ex aduerso respondit, quod processus iudicum prædictorum debeat merito retrahi: cum lite contestatā, & post apud nos interpositam procedere præsumperint contra eum: addiciens insuper, quod licet idem presbyter ad abolendam omnem infamiam, purificationem indictam ad eodem electo, non tanquam delegato, sed ordinario curauerit exhibere, sed predicti tamen æmuli eum non desinunt infamare. Vnde nobis humiliter supplicauit, ut ab illorum petitionibus absolutum faceremus ipsum prædictarum Ecclesiarum pacifica possessione gaudere. Et infra: His igitur, & aliis, quæ fuerunt coram prædicto Capellano proposita, plenius intellectis, licet literæ illæ, quæ ad prædictos iudices impetratæ dicuntur, uel ipsarum transcriptum ostensum non fuerit coram nobis, quia tamen ex tenore relationis ipsarum, quam dictus procurator exhibuit,

buit, ac si etiam literæ ipsæ ostensæ fuissent, nobis constitit euidenter, iudices ipsos prætermisso iuris ordine processisse, tam processum eorum, quam concessionem Ecclesiæ prædictæ Abbati de mandato ipsorum factam auctoritate Ap. retractamus, præsertim cum relationis ipsius series repugnantia contineat, & aduersa. Dicitur etenim quod crimen eiusdem Presbyteri vsque adeo publicum fuerit, & notorium, quod nullus inficiationis locus penitus existeret, utpote cuius vniuersus vicinior populus testis erat: & tamen illud prætermittitur, quod eidem Presbytero terminum peremptorium præfixerunt, in quo si posset, super infamia prædictorum criminum canonicè se purgaret. Cum nimirum si crimen notorium existeret, non erat vtique illi indicenda purgatio, sed in eum condemnationis sententia promulganda. Et infra: Si verò nullus apparuerit legitimus accusator, & ipsum inueueritis apud bonos, & graues super prædictis criminibus, vel ipsorum altero infamatum, purgationem ei canonicam indicatis, non obstante, quod coram prædicto electo dicitur se purgasse, cum iudicio pendente coram iudicibus delegatis non debuerit ordinarius purgationem indicare infamato.

NOTÆ.

1. ^a *Remis.* Ita etiam legitur in tertia collectione, *sub hoc tit. cap. 6.* De Ecclesia Argentina Germaniæ, quæ olim erat canonicorum regulatio, egi in cap. venerabili, de prob. & dignitate.
2. ^b *Constantiensis Episcopus.* Vniuersus videlicet Baso de Stauffen, vir probatæ viræ. De Con-

stantiensis diocesis Germaniæ egi in cap. 15. de præscript.

^c *Sancti Galli.* Vetusissimum, & potentissimum est hoc monasterium Ordinis Dile Beoedicti in diocesi Constantiensis, vt testatur Bucerius tom. 1. *Germania sacra*, p. 2. fol. 36. His temporibus florebat Abbas Rodulfus, qui postea fuit Episcopus Cuiusensis, vt refert Bucerius ubi supra.

C A P V T XVI.

Idem ^a *Episcopo Lingoniensi, & Abbati Morismundi Cisterciensis Ordinis, Lingoniensis diocesis.*

Ræcepimus literas vestras, quibus nobis intimare curatis, quod Apostolico suscepro mandato super indicenda purgatione venerabili fratri nostro Archiepiscopo Bisuntino, ad diem sibi præfixum comparuit coram vobis iuramentum purgationis offerens sub hac forma: videlicet, quod immunis erat ab illis criminibus, super quibus se purgare debebat. Cumque vos diceretis hanc non esse formam canonicam, & super id fuisset aliquandiu disputatum, ipse tandem ad nos vocem appellationis emisit, cui de prudentium virorum consilio detulistis. Ipse verò ad præsentiam nostram accedens, humiliter supplicauit, vt saltem super purgatione conscientie dignaremur temperare rigorem: quia non audebat asserere, quod à natiuitate sua nunquam esset passus lapsum carnis. Porro cum ab eo non credatur tale exactum fuisse iuramentum, potius præsumitur, quod alia de causa volebat sub præscripta forma iurare: videlicet quod immunis esset ab illis criminibus, de quibus fuerat infamatus: quia quamuis commisisset, tamen etiam iam esset immunis ab illis. Ideoque præscripserunt purgationis formam, secundum quam idem Archiepiscopus coram nobis obtulit se purgare, penitus reprobamus, iniungentes eidem, vt si ponerit, & voluerit, sub hac forma se purget, secundum sanum intellectum, quem ei duximus exprimendum, videlicet simoniam, reuditionem iustitiæ, atque incontinentiam, de quibus infamatus existit, iuret se minimè commisisset, postquam ad Archiepiscopalem promotus est dignitatem: & compurgatores sic iurent, quod credunt eum verum iurasse. Quo facto vos illum dimittatis in pace, alioquin eum, sublato cuiuslibet contradictionis obstaculo, remouendum curetis à regimine Pastoralis: processuri secundum formam in prioribus literis expressam. Hactenus literæ Innocentij Papæ.

I. ^a **Dem.]** Ita tantum legitur in hac sexta collectione, cum in antiquis collectionibus non reperiantur hæc decretalia, sed restituenda est ita inscriptio: *Episcopo Lingoniensi & Abbati Anisimundi Cisterciensis Ordinis, Lingoniensi ductu, ut restituitur in regestio Vaticano Martique tom. 4. consual. Cister. anno 1216. cap. 3.* Et ad hanc causam spectat textus in cap. licet, de accusat. ubi refertur prima delegatio facta ab Innocentio III. pro inquisitione vice Archiepiscopi Bisuntinensis; qui cum in pluribus laborasset, præcipue simonia, incontinentia, & venditis iustitia; & cum de hoc ultimo delicto confessisset, de prioribus vero tantum fama existeret, iussit Innocentius prædicti Episcopo, & Abbati, ut pro culpa probata poenam sternerent, pro reliquis vero purgationem illi iniungerent, in qua si deficeret, pastoralis dignitate privaretur, & pro purgatione formulam vulgarem præscripsit, videlicet ut purgandus iuraret, se non fecisse; deinde compurgatores affirmaret etiam sub iuramento se credere eundem non peccare: cuius commissionis littera dedi in cap. licet, de accusat. Sed cum Archiepiscopum conscientia de admissis criminibus accusaret, & nec fieri tutum, nec peccare licitum existimaret, cum de condicio ad purgationem constitueret, cum compurgatoribus eorum utroque iudice interrogatus sub iuramento, renuere iurare, nisi sub ea forma, videlicet, se immonem esse ab illis delictis. Quam novam iurandi formam cum ipsi iudices notassent, agnoverunt in ea non levem fraudem latere, quia si post poenitentiam, & satisfactionem ita iurabat, verè asseclaret se immonem esse ab illis delictis: quare ut suspectam, & inauditam hanc formam iurandi reiecerunt, exigentes iuramentum iuxta consuetam formam. Quare ipse Archiepiscopus vt ab eis grauatus ad Sedem Apostolicam appellauit: Innocentius autem in præfata epistola eisdem iudicibus rescribit, quomodo purgatio, & sub qua forma iuramenti Archiepiscopo iniungenda esset. Textum hunc transcripti prout ex regestio Vaticano reperitur apud Martique ubi supra.

COMMENTARIUM.

2.
CONCLUSIO
DISTINCTA
DE PROBATIONE.

In his omnibus Decretalibus agitur de purgatione canonica iniungenda tam Episcopis, Presbyteris, quàm laicis infamati laborantibus, cum criminibus ab eis admissis plenè probari nequeunt, & de forma seruanda in ipsa purgatione; quare eia sub unico commentario exponere necessarium duxi. Sit assertio: Infamatus de delicto, quod pleni probari nequit, purgandus est proprio iuramento, & compurgatorum. Probat enim textus in cap. sacerdotis 33. 30. dist. cap. Presbyter 5. cap. habet 6. cap. Memm 7. cap. quatuor, & per totum 2. q. 5. cap. decernimus 3. q. 9. cap. Presbyter, cum sequentibus 2. q. 4. cap. tua 9. de cohabit. cleric. cap. tam litteris, de testibus, cap. tua, de apostatis, cap. laudabilem, de frigidis, cap. Arnaldus 3. q. 3. cap. infirmatum, de simonia, cap. 2. de calum. cap. extenuatus, §. quia autem, de hereticis, cap. qui admissi 15. quæst. 8. cap. ex litteris 19. de homicid. cap. ad nostram, de probat. cap. 5. de adulteriis, cap. 1. de consensu, cap. 1. §. quæst. 1. cap. ex parte, de offic. ordin. cap. litteras, de presump. cap. veniens, cap. cum oportet, cap. inquisitioni, cap. necedens, de accusat. Nicolaus ad consula Bulgar.

cap. 86. Cum liber homo crimine sceleris apprehensus, si imprudens repentinus est alicuius sceleris reus, aut tribus testibus conuictus, parum succumbit, aut si convinci non poterit, ad Evangelium sacrum, quod sibi obicitur, minime commissio iurandi absolvitur, & deinceps huius negotio finis imponitur. Concilium Pictense can. 4. Si quis in exercitum, vel infra regnum sine iussione dominici per vim hostilem aliquid pradari, aut fenum robare, aut gravum, sine peccata maiora, sine minora, domosque infringere, vel incendere ausus fuerit, hac ne fieri omni modo prohibemus: quod si ab aliquo presumpseris factum fuerit, sexaginta solidos, si liber est, si culpabilis, & omnia similia restituit, aut cum duodecim testibus se purget. Aia iuxta testimonia congestum Ciespetius in summa, verbo Purgatio canonica, Antonius Aug. in epis. iur. lib. 32. tit. 8. Illustrant ultra congestus à Barthola in præfati, Poterius lib. 6. rer. quæst. cap. 8. Panchiola lib. 4. var. cap. 84. Lindembrog. in glossar. legum, verbo purgatio, Cuiac. in cap. vestra, de cohabit. cleric. & lib. 1. feud. tit. 1. Landimeter. lib. 2. de veteri cleric. cap. 108. Torreblanca de magia, lib. 5. cap. 20. Delrio end. tract. lib. 4. cap. 4. quæst. 5. Idem Torreblanca de iure spirit. lib. 15. cap. 13. lartius in notis ad epist. 34. 190. & 206. Carnot. Fragor de regum. Christ. Reipub. lib. 12. dist. 25. §. 3. Hiltherus de sacris elect. lib. 2. cap. 2. art. 1. §. 2. Filicatus in cap. 5. de offic. ordin. §. 3. Bignon. ad Martens. lib. 1. cap. 58. Manelius de tripl. iur. collat. cap. 92. Anselmus de iur. cap. 28. Lemaitre de iur. eccl. lib. 3. cap. 7. Durantius Casellius lib. 3. var. cap. 1. Robertus lib. 1. rer. indic. cap. 11. Cresolius lib. 3. mystag. cap. 18. sect. 2. Gibalin. de negot. tom. 2. lib. 6. art. 8. num. 36. Scortia in seclis. Ponsius, consil. episc. 9. theorem. 28. Borell. in summa decif. tit. 53. Bernondus de public. concubin. verbo In Concilio, Bilbos in cap. et clerici 4. num. 26. de iudiciis. Vega in eodem textu, num. 26.

Sed hæc assertio ita illustrata diffidit valde reddunt sequentibus iuris principia. Aut enim purgatio canonica indicitur, quia accusator legitimus non est, & tunc fatigandus non est accusator, cap. accusator 7. q. 1. cap. 1. ubi late probatur, de accusat. aut legitimus est accusator, sed crimina obiecta non probavit: & tunc certum est, accusatore non probante, reum esse absolvendum, L. 1. & 3. C. de exco. Igitur neutro casu purgatio canonica potest iungi: nec interest, quod ipse reus postularum laboret infamia, quia famæ, aut timoris tenet credendum non est, cap. 2. de cohabit. cleric. cap. 5. de eo qui cognov. consanguin. cap. 6. de fide infirm. Alioquin, aiebat Quintillanus, si uide inimicorum falsa vulgantium sape fama nocet etiam innocentibus: fama sape nonne malignis insidit, & cunctas incrementum dat. Quare Pontifex in cap. vestra 8. de cohabit. cleric. ait: Non testimonium, quæ uox spergit, atque circumfert, etiam si dicatur esse quorundam bona existimationis hominum, sed testibus tantum in iudicium productis esse credendum. Quod & docet in l. 3. §. idem Domini, ff. de testibus. Faciunt Cicerio pro Postumo, ubi: Ipsam testibus, inquam, & quidem non productis, sed dictis testium recitatis, quæ prælatum rei ad hoc causas deferatur. Tacius in lib. de Oratoribus, ubi: Testimonium in iudiciis publicis, non abstant, nec per tabellam daret, sed coram, & per presentes. Igitur si adit infamia, seu timor contra ipsum reum postularum, non ideo cogendus

Tit. XXXIV. De purgat. canonica. 531

cogendus est purgatioem canonice subire. Augerit hæc dubitatio ratio ex eo, quia licet in casibus civilibus probationum inopia laborantibus iustitiam deferri possit reo à parte, vel iudice, l. *admonendi*, ff. de iur. i. l. 3. C. de rebus creditis, tamen in casibus criminalibus non licet iuramentum hoc deferre, probat Fortius lib. 5. rer. quot. cap. 19. Augerit secundò hæc dubitandi ratio, quod fallax valde est hoc genus purgationis, si omnium testes computatores deponunt tantùm de credulitate, cum debeant deponere de his, quæ perreperunt sensu corporis, leg. testium, Cod. de testibus. Fachineus lib. 11. contr. cap. 69. & ita testi deponenti de credulitate in facto alieno fidem non adhiberi, post Glossam docens omnes repetentes in dist. leg. testium, Felinos in cap. quoniam, de testibus. Igitur non rectè in præsentî docetur, purgationem canonicam esse inlingendam eis, qui infamiam laborant, si diu probari nequit. Vnde Smaragdus in libro de preiudici ecclesiastici, p. 1. improbat hanc consuetudinem, dicitque adinuentum, ut in sacerdotes Del liberis malevoli seuiant, ibi: Satisfactionem igitur accusati sacerdotis sub iurando minime dicunt valere, nisi plures etiam sacerdotes simul compellant iurare, in quibus hoc affirmant in testimonio, quod falsum se legisse iustitiam in alibus Romanorum Pontificum; non quod de Damaso, & Sixto, & Symmacho venerabilibus Pontificibus inuenitur, sed quod dum à quibusdam peruersis criminibus accusantur, collectum Episcoporum Concilium synodum purgari fecit, hæc se hoc verbis intelligere fatetur, quod omnes presb. Episcopi cum ipsi Pontificibus pro illius inuersione criminibus: quæ non ois purgati tantummodo absoluerit satisfactio, nisi hæc etiam prædictorum Concilium firmaret iuratio. Nobis tamen quod sic intelligendum sit, reuera non patet, plene enim à prædictis Episcopis præfatis Pontifices acceptimur, sed ipsorum suggestionem, propria tantummodo satisfactio, ipsi etiam fauoribus eos alienos à criminibus fuisse firmatum est. Sed si pro aliquo iusti innocentia alicui placuit sacramentum præbere charitatis causâ, ut enim vel sit à persequentibus liberare omnimodò placet, verumtamen licet peruersorum infestatione quasi in primis Ecclesia hoc fieri potuisset, tamen exemplum in posterum relinqui debuit: quo etiam in sancto Concilio, vel cuius Carolici, & Apostolici viri decreto sancitum sit, sacerdotes Dei à criminibus absolui non posse, nisi confassum satisfactio, ignoramus. Cum enim sacramenta omnibus interdicta sint Christianis, valde periculosum est sacerdotes ad hæc etiam alios cogere, unde ita se custodire, quam & illos deberant arguere. Accedit, nam facile colludentibus compurgatoribus cum ipso reo, probabitur hoc modo eius innocentia, ut suo tempore contigisse testis Hieronymus in epistola ad Cœpiscopum Iohannem, his verbis: Qualiter de infamato Presbytero ex auctoritate maiorum tenemus, tua dilectioni mandamus; & sic sanctus Gregorius decreuit, si mala fama ex similitudine per parochiam de Presbytero exierit, & accusatores, ac testes legales defuerint, ne contra Apostolum infirmorum corda de mala fama Presbyteri percutiantur, & ne transiret ministerium nescitis, nec secuti Presbyteri existentes, licet in peccatum laborant, secundum de-

D. D. Gonzal. in Decretal. Tom. V.

creta maiorem cum denuntiatione sibi vicinis Presbyteris septem, qui scimus nobis perire, satisfactio sanctam suam purget. Si autem denuntiationes à nobis sibi Presbyteris ad sanctam suam purgandam habere negari, & alios sciam ad inuentionem conduxerit, quantum expensis sumis, quasdam ad huncmodum conspiciat, ut reputari minus in sua purgatione iurans, sicut & Presbyteri plene iniqua cogitatione aduersus Sacerdotem conspiciantur, Presbyteri qui in purgatione infamati sacerdotum, sua etiam cum eo ad iurandum offerunt, examinationem iudicij per aduocatum infamati Presbyteri recipiant, ut in sacramento se Deo non perdam, sicut quasdam hinc iam trauocare compellimus.

Quâ dubitandi ratione ita fulehâ non obstat, vera est præfatus assertio, pro cuius plena expositione sciendum est, purgationem duplicem esse, canonicam videlicet, iuxta dictam, quia canonicis recepta est, de qua lo præfatus titulus, aliam vulgarem, quæ vulgi moribus inducta est, sæpiusque ab Ecclesia reiecta, de qua infra, titulo sequenti. Purgatio canonica olim variis modis inlingebatur, fiebatque primò per iudicium crucis, cuius purgationis præ crucem mentio fit lib. 1. capitul. Caroli, cap. 108. lib. 3. cap. 46. lib. 2. cap. 126. in appendice 1. ad lib. 4. cap. 33. in legibus Longobard. lib. 26. & 33. & in can. 17. Concilij apud Vermer. eandem verbis dedit in cap. 3. de frigida. Quomodo tamen hæc purgatio fieret, & quodnam esset hoc iudicium crucis, variè exposuit Interpretes, Vitorius Amethachius in noui ad consil. 34. Caroli Magni, Gzelmanus lib. 3. de magis cap. 5. Torrellanca de magia lib. 5. cap. 23. num. 26. existimant fuisse quoddam atomum genus conformatum in speciem crucis. Sed facile eos refellit Theoph. Raynaud. de colonis, feld. 3. cap. 2. quest. 1. & expressè hæc sententia tenetur ex dicto canone 17. Concilij apud Vermer. ubi hæc purgatio æquale indicitur viso, ac vixit; quod absurdum est, si per tam cum armis pugnaretur. Delno lib. 4. diffinit. cap. 4. quest. 6. num. 2. Gethersius lib. 2. de cruce, cap. 25. docent, purgationem hanc per crucem consiliorum fuisse quoddam, quæ inlebantur ad crucem, iuxta formam præscriptam in legibus Frisionum lib. 14. §. 1. Parabantur quidem duæ testes, quarum vna pura, altera crucis signo notata erat; & lineæ super altari involute ponebantur, & post varias preces à Presbytero, vel pueno extrahabantur: & si prima crucis testera extrahabatur, innocentia illius, cuius fuerat, probata manebat: qui iturus ut suspectissimus, etsi diu durauit, tandem esset sublimis. Alio etiam modo purgatioem per crucem fieri constat ex formula 12. iurati auctoritatis, & ex legibus Ripuar. lib. 7. ubi iubetur, ream criminis stare ad crucem per 41. noctes, & si ois posset, & cadere, nocens credebatur; alius innocens maneret. Sed verius est, iudicium crucis esse tantum iuramentum per crucem præstitum, aut contra sanctam crucem, quale sæpe sæpius vñtatum refert Gethersius lib. 2. de cruce, c. 16. referuntque similia iuramenta Nicetas Choniates in Alexia Duca, & Cedrenus in Constantino Leonis filio: quomodo expositi dictum canonem 17. in c. 3. de frigida. Alia etiam purgatio canonica olim in vñ erat per suscepcionem Eucharistiæ,

5.
DE PURGATIONE CANONICA.

Y 1 tam

me exuens, innocens rediit. Et lib. 1. de miraculis, cap. 33. Quidam tempore Felicie Biturigeni Episcopi vicines suis quodam pro crimine impetebat, quos cum plerumque verbum procul ibi locesseret, ac indicie publice prouocaret, decretum est sententia Primatum verbi, ut se ab hac mixta, qui impetebatur, sacramento purgaret. Ingressique in eius memorata adu abire, cum eleuatis manibus sacramenta proferret, &c. Marculf. lib. 1. formul. cap. 38. Se dum inter se contendere, sic eisdem a precibus nostris, in quantum illis viri iste Comes Palatii nostri testimonium, fuit indicatum, ut de quinque denominati, idem ille apud tres, & alios tres, sua manu septima, tunc in Palatio nostro super capellam Domini Martini, ubi reliqua sacramenta percurrant, debere coniurari. Plura congesseunt Zezda in aduers. cap. 122. mon. 14. Batoniis, & Coniugatos anno 412. Festandus lib. 2. disquisit. reliq. cap. 1. a. num. 3. Landimetz. lib. 1. de veteri clerie. cap. 108. & hac purgatio manifestata dicitur lib. 2. feud. tit. 27. §. si iussus, ibi: Et manu propria singula cum sacramento idcirco facere. In Capitularibus Caruli, lib. 1. cap. 161. apud Atulium in Synodo habita. Du-tocotron Rhemotum can. 30. Postquam perorauerat, nota dextera ita est sacramento firmata. D. Bernardus episc. 125. Nisi dixerim, quod obiectum ei fuerat, propria manu iuramentum repelleret. Illustrat luterus in not. ad suonem. Carnet. episc. 106.

Nec tantum in hac purgatione tens ipse iurat, verum & alij res, quonque, duodecim, aut amplius, iuxta qualiter personarum, quor secusatur, sui granitatem delicti; qui appellantur iuramentis sacramentalibus, ut constat ex l. Salica, tit. 50. & 55. auctore vixit sancti Eligij lib. 2. cap. 1. apud Surium ibi: Lata sententia est, ut vir ille cum multis aliis iuraret. Sic enim apud Francos in more positum est. Verum Abbas omnibus aliis remisit iuramentum, ne alterius flagitio implicaretur: solus ille agri vsuque procerum sententia iurare iussus est. Ex legibus Baiuvar. tit. 2. cap. 12. ibi: Cum duodecim sacramentalibus iuret delicta sua, vel duo compones propter hoc puenit. Gregorius Turon. lib. 8. cap. 9. Predegnidus Regine cum sanctis primibus Regni sui, idest tribus Episcopis, & trecentis viris optimis, sacramenta dedere, hunc ex Chilperico Rege generatum esse, & sic suspicio ab omni Regis ablata est. Et lib. 8. cap. 40. Ille electus duodecim viris, ut hoc scelus perpetraret, aduenit. Inde in veteribus legibus reperitur manu quinti, mano sexta, duodecim purgari, tit. 6. legum Alemanorum, legitur: Sexta manu iurare. Et in leg. Ripuar. tit. 35. Septima manu fidem facere. Et tit. 14. legum Frislonum: Duodecima manu obiecta criminis se purificare sacramenta. Et passim in hoc titulo dicitur, quartam, aut quintam manu purgari. Et in cap. quatuor. 2. §. 5. tertia manu sui ordinis, & quartam maior Abbasnis, & religiosorum sacerdotum se expurgare. Et in cap. requisiti 13. §. 1. septima manu propinquorum iureiurando, talia sacrosanctis reliquiis dicere: ut etiam in cap. laudabilem, cap. littera, de fignid. De hoc modo iurandi locus est singularis, ut priscis lege Alemanorum, tit. 6. ibi: Ista vero sacramenta sic fieri debent, ut illi iurantes manus suas supra capsum ponant, & ille solus, cui causa requiritur, verba tantum dicat, & super omnium manus manum suam ponat, ut sic cum Deo adiuret, vel illa reliquiis, & illas manus, quas comprehensas habet, D. D. Gonzal. in Decretal. Tom. V.

ut de illa causa, unde impellatus est, culpabilis non sit. Manum autem symbolum fidei fuisse, veteribus consue: Ideo manus attolleret iuranti solebant. Gregorius Turonensis lib. 1. cap. 32. ibi: Elernisique super altarium manibus iurauit. Lutanus.

Elatique alie premisse manibus.

Ideo in Concilio Triburienfi, eius verba repuntur apud Gratianum in cap. si quis 2. quesi. 5. ubi agitur de Presbyterium iuramento, dicitur: Altaris enim, per quam corpus, & sanguis Christi conficitur, iuramentis polletur? Alis. Itaque in capitularibus Caroli, lib. 3. cap. 4. & 10. & lib. 5. cap. 125. perito habetur manus amputari: & factum refert Hieronymus in historia Setaorum lib. 1. cap. 29. ibi: Rudolphus voluerat in manu dextra fugit Meropium, moriturum proximo dixit ad famulicem suum, videtur manus dexteram meam de volente faciem? Hae ego iuravi Domine Ehmio, ut non nocerem ei, nec insidieris gloria eius: sed infuso Apostolica, Pontificumque petio me ad id deduxit, ut iuramentum transgressus honorem indebitum mihi resparem: qui igitur finis nec exceptis, videtur, quia in manu, unde iuramentum violatum, mortale hoc vulnus accepit? Illustrat Cironius in presentis, & lib. 2. obs. cap. 11. Lemaitre de iurib. ecclie. lib. 3. cap. 7.

Ratio presentis assertionis, quare videlicet illi, qui infamati labores, cuius delictum probati nequi, insungitur purgatio canonica, pro- uenit ex eo; nam cum falsus sit purgatus esse, quom suspensio, ut Alexand. Magnus aiebat apud Quotum Curtium lib. 7. Ideo Ecclesia, quae optat in suis ministris, & fidelibus catho- licis crimina radicibus abolere, nec eorum suspi- cionem in eis sustinet, statuit, ut cum aliquis laborat infamia alieuius delicti, quod probari nequit, teneatur purgari ab ea suspicione pro- prio iuramento, & compurgationem, qui tunc ereditur se, reum vera iurare, ut ita immola- reus ab obiecto crimine reddatur. Sineius episc. 44 ad Ioannem quendam de graui crimine suspectum, ita scribit: Tamen forte apud Deum innocens sis, & sceleris expertus, qui exonerandus hoc facinus nec falsis, nec consiliis admiseris, non- dum te tamen apud nos homines innocentem videris, quando purgatus non fueris. Et qui ita hac pu- gatione deficit, tanquam convictus pena ordi- naria puniatur, cap. de hoc 11. cap. 23. de simonia. Faciunt singularia loca sacre paginæ, Exod. cap. 12. ubi ita legitur: Si quis commenderis amico pecuniam, aut vas in custodiam, & ab eo quis susceperat, ablata fuerit, si inuenierit fur, duplum reddet; si lateri fur, dominus domus applica- bitur ad Deum, & inuabit quod non extenderit manum in rem proximi sui ad perpetrandum fraudem. Et Deuter. cap. 11. ubi patris in agro eade, ignotique adhuc post sedulam inquisitionem inuente, vult Deus, ut populi loci, Præfides, ac Prælati extra vitula, si quaque ecclesie, quæ vibrante supplicium de homicida su- mant; adesse siquidem debent maiores nata elu- uis illius, qui & manus laque suos debent super vitula caesa, & rei sacre interpositione prote- stant, se innocios esse, & auctoritas ignarus. Redd- ergo Ecclesia, iuxta leges, & consuetudines apud tot gentes receptas, & vixit statui, ut infamia obuiat, si delictum probati nequeat, iura- mento practico purgare se teneatur; non tam- en hae purgatio facillè indicienda est, nec

7.
DE COM-
PURGATO-
RIS.

8.
TRANSITUS
RATIO 254
CISDNI.

ex alia frē esula, quā scāndali tollendi gratiā, iuxta Concilium Illerdense in cap. *Presbyter*, 1. g. 4. ibi: *Ne populus fidelium scandalum patiantur*. Quare ubi scandalum, aut infamia non adest, talis purgatio indicenda non est, quia ut ait Cornelius Papa in cap. *sacramentum* 2. g. 4. *Sacramentum à summis sacerdotibus, vel reliquis non nisi pro rella fide exiguntur*.

9.
DISEN-
TIVE DUBI-
TANDI EA-
TIO.

Nec obstat dubitatio ratio suprà adducta, nam licet in causis civilibus regulariter actor non probante, reus absoluitur; tamen in criminalibus Ecclesia exigit, ut reus probet suam innocentiam, aut saltem eū gravis infamia inde orta est, vel scandalum in populo adest, ut etiam iure civilis in gravioribus criminibus, veluti Malefictis, desertis milicis, peculatoris, non tantum accusator ea, quæ obiecit, probare debeat, verum etiam reus, alioquin non absolvetur, et si actor in probatione deficeret, quia purgatio ex parte rei desideratur, l. *salaciter*, in fine, C. de absol. Sicut enim in causis civilibus, si dubie sint, adiunctis coniecturis, actor non probante reus non absolvitur, sed iudex desert iurandum reo, vel actori, l. *admonendi*, ff. de iniuriand. l. 3. C. de rebus creditis, Novella 124. In fin. Ita etiam in criminalibus, actor non probante, si causa dubia est, propter infamiam & scandalum purgatio per iuramentum recte reo

desertat. Nec obstat textus in d. cap. 1. de accusat. quem in eius commentario exposui. Nec obstat augmentum deductum ex eo, quod iurandum deserti non possit à iudice reo in causis criminalibus. Nam licet facta controversium sit, an iurandum deserti possit reo, tam ab actori, quā iudice, in causis criminalibus; placet tamen sententia Fornerij dist. cap. 5. Broneborst. *enuncioph.* c. 2. assert. 17. qui asserunt, iudicem tantum purgationis causā iuramentum deferre posse, actorem verò in causis criminalibus civiliter intentatis, non verò criminaliter, illud deferre posse; qui variis iura exponunt. Nec obstat, quod dicebamus, hoc genus probationis fallax esse: tum quia testes in eo deponunt de credulitate: tum quia facile inter eos collusio dari potest; nam quando testes compurgatores, qui debent esse vicini, iuxta suprà tradita, deponunt se credere reum iurantem verum dicere, rationem depositionis reddunt, videlicet quia ut vicini, si aliis esset scilicet delictum admissum, non ignorarent: & ideo testes deponentes se scire, quia vicini sunt, plenum probationem facere, post Bartolum in l. 1. ff. de rebus creditis, probat Fachineus lib. 11. controu. cap. 69. per totum. Quod autem colludere possint, non est attendendum, cum nemo credatur immemor salutis æternæ, & cum iuramento omnes illi deponent.

TITVLVS XXXV.

De purgatione vulgari.

CAPVT PRIMVM.

Cælestinus III.

C Vra suscepti regiminis nos inducit, ut fratrum nostrorum debeamus respondere consultationibus, & ab eis, quantum humana fragilitas permittit, dubitationis serupulum amputare. Inde est, quod cum tua fraternitas duxerit Sed. Ap. consulendam, verum super Ecclesiarum præsentationibus duella debeant sustineri? rux duximus sollicitudini respondendum, quod in eo casu, vel in aliis etiam hoc non debes aliquatenus tolerare.

NOTÆ.

Cælestinus III. Ita etiam legitur in cap. *amic*, hoc tit. in 2. collect. & in cap. 2. de

cleric. pugn. in dubio, in eadem collect. notabili tamen exprimitur, cui describitur Punitifex.

CAPVT II.

Idem Priori sancti^a Sergij Spoletani.

^a Significanti Vv. laico, & fratribus eius, ad nostram noneris audientiam peruenisse, quod cum quidam eos super furti crimine accusaret, eum eo præter tetra consuetudinem coacti sunt inire duellum, in quo aliis peccatis suis præpedientibus ceciderunt: propter quod post appellationem ad nos^b interpositam, per Consules Spoletanos bonis fuerunt propriis spoliati: nunc verò furtum apud alios est inuentum, &

& quod ipsi fuerint innocentes, est fauente Domino reuelatum. Vnde consilibus ipsis dedimus in mandatis, vt ablata restituant vniuersa. Ideoque disc. i. per A. f. m. quat. si ipsi mandatum nostrum neglexerint adimplere, tu paribus conuocatis, & auditis hinc inde propofitis, quod iustum fuerit ap. rem. decernas, faciens quod decreueris, per censuram ecclesiasticam firmiter obseruari.

NOTÆ.

1. a *Antis Sergij.* Ita etiam legitur in tertia collectione, *sub hoc tit. cap. vnic.* nullam iam legi Ecclesiam sancti Sergij secularem, vel regularem in diocesi Spoletana: quare credebam in præsentem referre Innoc. III. Priorem sancti Petri, quod monasterium est canonicorum regularium extra portam Spoleti, cuius Priori, & clericis referbis idem Innocentius lib. 1. *epistol.* de quo monasterio agit Pennoius lib. 2. *hyst. canonic. regul.* cap. 17.
2. b *Ad nos inuocamus.* Spoletum enim antiquissima Vmbrie vrbs, Longobardorum Principum sedes diu fuit, sed superato Desiderio ultimo Longobardorum Rege, Carolus Magnus Ducatum Spoletanum Pontifici donauit, & postea Pontifex Duxes Spoletanos constituit, & tempore Alexandri III. ab Imperatore Frederico excidium passa est. Tandem restaurata, redactaque ad pristinum statum, suase Pontificum iugum accepit, vt testat Vghellius tom. 1. *Italia sacra*, fol. 161.

COMMENTARIUM.

3. **I**Nter alias purgationis vulgari species præcipua fuit apud antiquos duellum, seu monomachia, vt constat ex *legibus Baiuar.* tit. 5. cap. 15. vbi iubentur antrique controuersie decidi per campiones, idest pugiles, qui alieni dissidij dirimendi causâ operas suas locabant, tit. 2. *legum Longobard.* cap. 77. 82. 91. & 110. quod duellum etiam in causis ecclesiasticis adhibebatur. Adreualdus *Floriensis* lib. 1. *de miraculis sancti Benedicti*, cap. 20. vbi motâ questione de mancipiis B. Benedicti, ait: Tandem ad iudicium est, vt ab utraque parte testes exirent, qui post sacramenti fidem sentie, ac baculis decernentes, finem controuersie imponerent: sed cum illud iustum, restitueret rationem fuisse omnibus, quidam Vastinenfis regionis

legis, &c. iudicium prouidit, non esse bellum, sed bellum propter res ecclesiasticas vestes decernerent. Affertur epistola, quam ex collectione Decretalium MS. quæ Alexandri IV. nomine inscribitur, transcriptus Bolesqueus in notis ad Innoc. III. lib. 1. *regest.* 14. sic: *Corruptela in plerisque locis Franciæ, quæ accepimus, innotuit, quod videlicet quando Ecclesiarum homines de corpore ad alienam dominium se conuertunt, si eos vestrum aliqui, quorum ipsi sunt homines, forte conueniant coram iudice compareri, necesse habeat suam per duellum intentionem fundare, aliquam ab aliis proposita repelluntur, licet per testes, & alia documenta legitima intentionem ipsam velint, vel valeant comprobare. Cum igitur clerici absque sui ordinis periculo duello sustinere nequeant, vel efficere, pro eo quid sine per se, sine per alios in duello pugnantem, ipsos ab executione sacrarum ordinum canonica consuetudinis severitas alienat: Nos huic prauæ consuetudini remedium quo possimus obuiare volentes, & duellum, præsertim cum de rebus ecclesiasticis agitur, penitus interdicens ab usum, quo Deus testatur, & vera sapientia iudicia perueniunt, vt in quibuslibet iudiciis omni probationum genere succumbentibus: propter hoc contra tales sententia, seu executio quacunque præcesserit, eadem, & quicquid ex ea sequutum fuerit, vel ob ipsam, nullius penitus sit momenti. Sed itandem vt doctis generaliter prohibita fuerint, vt probati in cap. 1. de clericis pugnantibus in duello; ha hæc, maxime quæ purgationis causâ suscipiuntur, vt quæ Deum reorare videantur, cum etiam in his sepius & noxiis fortuna perpercerit, & insontes oppræsserit, cap. cum monomachiam 2. q. 5. cap. sententiam, ne clerici vel monachi, illustrent Deltrius lib. 4. *disquisit. magic.* c. 4. q. 5. *sect.* 2. Alezius lib. *de singulari certamine*, Hothomanus de feudis cap. 44. *locutus in morte ad Carnot. epist.* 168. Pichardus ad *epist.* 39. *sancti Bernardi*, Gibalin. *de vniuersa negot.* tom. 2. lib. 6. cap. 2. 18. *num.* 42. *laure illustri in dicto cap. 1. de clericis pugnantibus.**

CAPVT III.

Honorius III.

Dilecti filij nouiter in Liuonia baptizati grauem ad nos querimoniam destinarunt, quod fratres Templariorum ordinem in Liuonia proficentes, & alij quidam aduocati, & iudices, qui temporalem in eos potestatem exercent, si quando de aliquo crimine infamantur, eos ferri candentis iudicium subire compellunt: quibus si qua exinde sequatur adustio, civilem pœnam infligunt: quare conuersis, & conuertendis scandalum incurrunt, & terrorem. Cum igitur huiusmodi iudicium secundum legitimas, & canonicas sanctiones sit penitus interdictum, vtpote in quo Deus tentari videtur, mandamus quatenus fratres dictos, & alios, vt ab huiusmodi conuersorum grauiamine omnino desistant, monitione præmissâ, per censuras ecclesiasticas, appellatione remota compellas.

fontem fuisse, in quem si virgo intraret, aqua pellucida maneret; si verò vitata, turbida continuò redderetur. Similis fons piope Ephelum memoratur, Syggy nomine vocatus, de quo Achilles Tactus lib. 8. de amiribus Clisiope pag. 206. ait: Cum violata aliquo pudicitia argueretur in fontem descendere compellitur, cuius vnda vix mediis tibiis attingit: iudicium autem fieri hoc posito consuevit. Quæ delata est, subito se infirmulari ierat, infirmarumque in tabella descriptum collo sua alligatum sustinent, in fontem descendit; ac si verum infirmarum iocundaret, aqua emano immota manet; si uero, intumescent, atque ad collum usque se extolunt, tabellam contingit. Similis etiam fontis mentionem faciunt Auit. in lib. 2. de admirandis animalibus, Diodorus Siculus lib. 2. Babilonis. Sic aqua stangebant oculos iutores in Sardinia. Plinius lib. 31. cap. 2. & in Germania esse flumen Rheni ubi filij recenter nati exponuntur, ut si supernant, legitimi credantur, si verò submergantur, adulterini iudicantur, referunt Cluverius lib. 1. Germania antiquæ, cap. 2. ibi: Certe Celtæ inuicem nullam fuisse Rheni, qui spurios infantes vultu absorpit, tanquam impuri lecti vindex; quas autem non spurio semine natos agnovit, hos in summa aqua suspendit, matrisque tremens manibus reddit, & quasi verum, incorruptumque casti & laudabili coniugij testimonium, serenas infantes persolvit. Claudianus ibi:

Et quos nascentes explorat gurgite Rhenus, Idem videntur asserere Theophylactus, & Eustathius, & quod magis est, Gregorius Nazianzenus hoc testis.

Quæ quidem explorant prolem, Rhenique fluente
Exponunt.

Quare Nonius dicit, Rhenum esse velox iudicem, vindicemque coniugij. Noustin. lib. 6. aqua nupt. cap. 8. Apud Catholicos non desunt exempla priorum fidelium, qui hoc probationis genere vti sunt. Lactantius lib. 2. cap. 7. ibi: Brigidæ virgo in Scotia, cum lignum altaris in testimonium virginitalis tetigisset, viride saltem fuit. B. Britius Episcopus Tutonenfis, cum falsò criminis accusaretur, ad satisfaciendum populo ardentem pronas in bytrum solum posuit, & ad se stringens, usque ad sepulchrum B. Martini, vna cum populorum turba accedit, protectisque ante sepulchrum pronis, vestimentum eius inuictum apparuit, ut refert Gregorius Tutonenfis lib. 2. histor. cap. 1. quod etiam de Montano Toletano Atehiprezule refert D. Ildefonsus in prefatione de viris Eccles. his verbis: Amonanus Sedis eiusdem Beatissimus Presul, ut à se coniugalibus conuersationis infamiam propulset, tantis adsemper vestis candentes narratur tenuisse carbones, donec Domino consecras oblationem totius, per sanctissimum compleret Missa celebritatem. Quod refertur Mariana hist. Hispan. lib. 3. cap. 6. Sabedra in Corona Galicie, cap. 10. Beata Hildegundis cum fuerit accusaretur, ferro candenti innocentiam suam ostendit, ut ex aliis refert Manrique tom. 3. annal. Cister. anno 1146. cap. 7. mon. 8. Et similia exempla congeruerunt Cæsius lib. 10. de miraculis, cap. 33. Tutonenfis de gloria Consequentiæ, cap. 76. Krantzius lib. 8. Pandalia, cap. 3. Titheonius in chron. cap. 22. Nicephorus Calixtus lib. 15. histor. cap. 28. Ergo non rectè in præsentem docetur, similem probationem per ignem, ut aquam feruentem fieri non posse, cum alio modo plerumque innocentis monstrari nequeat. Carnot. apist. 252. Non negamus tamen, quin ad diuina ali-

quando recurrendum sit testimonio, quando præcedente ordinaria accusazione, humana desum testimonio; non quod lex hoc instanter divina, sed quod exigat incredulitas humana.

Quæ dubitant ratione non obstant, vasa est præsens assensio, pro cuius expositione sciendum est, purgationem vulgarem sic dictam esse, quia superstitione positâ populi, quam sacris canonibus introducta est, cap. monachiam 2. q. 5. quæ purgatio triplici modo apud veteres contingebat: per ignem videlicet, per aquam feruentem, & frigidam. Prima, quæ fiebat per ignem, aut per rogam, per ferrum cadens, aut vomeres fiebat, ut referunt Delius lib. 4. disquisit. magic. cap. 4. sect. 3. Petrus Gregor. lib. 4. synag. cap. 15. & varia exemplis probat Befsoldus tom. 3. polit. dissert. 2. de penis, cap. 5. fuit Beyerlinch. tom. 4. in Theatro, verbo Innocentia. Philippus Camerarius em. 2. bonar. success. cap. 18. Purabant enim etiam Gentiles capiat onem igne faciendam esse. Virgilius lib. 6. Aeneid. ibi:

— S. elus exurit igne.

Et lib. 11.

— Medium freti pietas per ignem

Cultores mediâ primis vestigia pœnâ.

Ita apud Heliodoro lib. 10. apud Aethiopes sacer focus erat, qui dicebatur infallibiliter innocentium experimentum; unde Festus Pompeius hoc genus purgationis suffocationem vocat. Et apud Romanos eum festa Palilia celebrabantur, æceruos foeni, & stipularum ardentem salu traieciabant, & ita pueros, immunesque remanere se credebant, ut referunt Varro lib. 3. de re rustica, Ovidius lib. 4. Fasti. ibi:

Moxque per ardentem stipula crepitantes æcerus

Traiciunt celeri strema membra pede.

Illustrat Tirquel in notis ad Alexandram, cap. 18. D. Ioannes Suarez ad leg. Aquil. lib. 3. cap. 6. sect. 3. Simile est quod de traiectione per ignem legitur à veteribus Christianis seruatum apud Theodoretum relatam à Calaubono, & laudat versum à D. Ioanne Suarez ubi supra, in hæc verba: Fere pro comperto habes, famam, quæ ad nos peruenit, speciem erroris conuere. Vidi in quibusdam ciuitatibus huiusmodi morem, in plateis nempe compositos ignes, & hos transire non solum pueros, sed etiam & viros, moresque infantes per flammam transmittere: sed & hoc quidem ipsi sibi dicebantur purgari, & Dei iram amoueri. Qui quidem mos damnatus fuit in 6. Synodo Trul. can. 65. his verbis: Quia in nouissimis à quibusdam ante suas officinas, & domos concenduntur rogi, supra quos etiam antiqua quadam consuetudine salire incipiunt, ac desualore solent, inhumis deinceps cessare. Quisquis ergo tale quid fecerit, si sit quidem clericus, depouatur; si autem laicus, segregetur. Illustrant Balsamon ibi, Suarez ubi supra, qui n. 8. agit de vso apud Christianos accendendi togo in nocte sancti Ioannis Baptiste. Hæc autem purgatio per ignem maxime inoleuit apud Francos, Longobardos, & Gothos, à quibus Hispani acceperunt, ut constat ex lege Salica in cap. 2. §. 5. lib. 1. tit. 10. legum Longobard. Regino Abbate anno 887. ibi: Illa contra non solum ab eis, sed etiam ab omni virili commixtione se immunem esse prefecit, & de virginitalis integritate gloriatur, laque se probare Dei omnipotentis iudicio, si marito placeret, aut singulari caramine, aut igniturum numerum examine indicialiter affirmat. Herimoldo lib. 1. cap. 84. Inhiberi sunt Solacij de cætero iurati in arboribus, feniibus, & lapidibus;

De purgatione vulgari.

diaboli, sed offerbant criminibus pulsatos sacerdoti, ferro, & veneribus examinandos. Et l. 3. tit. 1. lib. 6. fori indicium, ubi iubetur purificationem fieri iuxta legem Caldaiarum: & in foro Legionis, ac Baëz ita legitur: La mujer que abortire subdramente si mal fecho fuere, sea quemada, è si non salbasse por fierro caliente: è si alguna dicere, que preñada es delgado, y el varon no la creyere, prenda fierro caliente: è si quemada fuere, no sea creida, mas si sana escapare de el fierro, de el hijo al padre. Muger si legare ames, è bostias, è arros cosas qual pueden legarse, sea quemadas, è si negare, salbasse por fierro caliente. Et si varon fuere legader, sea agotado: è si negare, salbasse por lid. Muger que herbolaria fuere, è si bostia, sea quemada, è si fuma por fierro caliente. La mujer que su marido matare, sea quemada, è si fuma por fierro caliente. Toda muger que tales cosas faze, debe prender fierro, mas no por auerarlo que ella faga, si non fuere probada por mala que aya levado con cinco ames. Ritus, quo olim ferream candens præferebatur ad purgationem, testetur in formula S. Dunstani. Incipit adiutatio facti. In simplo unum pondus, in triplo tria ferrum equipari pondera, & in illa adiunctione non adfuit nisi leini, & alius Litanis sacerdos in loco ubi ferrum accenditur, adiunctionem iniciando inchoet. Subdantur tres orationes (quarum vnam ex Aventino refertur Philip. Cauet. cent. 4. bor. succ. in hæc verba: Deus index iustitiæ, qui auctor pacis es, & indicas aequitate: te suppliciter rogamus, te hoc ferrum ordinatum ad iustam examinationem cuiuslibet dubietate faciendam, benedicere, & sanctificare digneris. Ita vt si innocens hoc ignem in manum acciperet, illasus appareat: & si culpabilis, atque reus, iustissime sit ad hoc tortus tua in eo cum virtute de claudenda. Alias huius adiunctionis formulas tradit Nooartius lib. 6. aque nupcialis, capite 8.) Et statim his peractis aqua benedicta cunctis adiutibus detur ad deglutandum, & agnoscatur per totam diuinam, & ferream proferatur, quod a culpato coram omnibus accipitur, & per mensuram novam pedum portetur: manus sigilletur, sub sigillo feruetur, & post tres noctes aperietur, & si mundus est, Deus gratuletur, si autem infans crudeliter in vestigio ferri inueniatur, culpabilis, & inmundus reputetur. Refert Pitheus in glossario, verbo Purgatio, in dicto foro Baëz etiam hæc forma præferebatur: El fierro que por inficia faze, fuere fecho, aya quatro pies assi alios, que la que a saluarse ouiere la mano, pueda meter de fuso, aya en longo vn palmo, y en ancho das dedos, è quando le tomare hiebele ocho pies, è ponga suauemente en tierra: mas ante bendiga el missal, amene, è despiene el y el luez caliente el fierro, è mientra el fierro calentare, ningun ome estè cerca del fuego, que por auentura faga algun mal fecho: è la que el fierro ouiere à tomar, primero confiesse muy bien, è despiene sea escudriñada, que no tenga algun fecho escondido, è de si lane las manos ante todos, è las manos alimpiadas, prenda el fierro: mas ante fagan oracion, que Dios demuestre la verdad, è despiene que el fierro oniesse levado, luego cubra el luez la mano con cera, ponga espasa, è lino, è despiene atenguela con vn paio, è liene, el luez, è su casa, è a casa de tres dias cate la mano, è si fuere quemada quemada. Et hoc iudicium non quolibet tempore admittitur, veluti diebus festiuis, & ieiunij, sed quibus pax, & concordia inter Christianos habebatur, & omnis dissensio componeretur, vt dicitur in cauone r8. Concilij Athesanensis Augliz.

Alia purgatio vulgaris fiebat per aquam feruotem, seu calidam, ita vt in eam infamatus manus, seu brachia mitteret, & si combullus inde euasisset, delictum perpetratu credebatur, quæ apud easdem nationes vñtata fuit, vt constat ex legis 19. 3. tit. 9. lib. 1. Longobard. & lib. 1. cap. 4. & in addit. 6. 13. tit. 3. legum Frison. 5. 4. 5. & 6. Neapolit. lib. 2. tit. 31. Specul. Sax. lib. 1. art. 39. ibi: Ferrum calidum ferant, vel in aquam bullientem brachium vsque ad cubitum mittant. Concil. Rhemense sub Hincmaro cap. 11. pag. 19. ibi: Hæc si quisquam vestrum aliter esse putat, merito indignum, cui credatur, credat igit, firmiter aqua, candens ferro: faciens fidem tormenta, quibus non sufficiens mea verba. Refert Lindembrog. in glossario, verbo Aqua. Exorcismos, & orationes huius purgationis adhibitas referunt Delrio d. lib. 4. cap. 4. 9. sect. 1. & 2. Pitheus in glossario, verbo Aqua iudicium, laetetur in noi. ad Carm. epist. 74. Ex quibus vnam referam, quæ ita habetur apud ipsum sub titulo benedictionis aque calide: Exorcizo te creatura aqua in nomine Dei Patris omnipotentis, & in nomine Iesuchristi Filij eius Domini nostri, vt sis aqua exorcizata ad effugendam omnem possessionem inimici, & omne phantasma diaboli, vt si hic homo manum suam in te misit, est innocens, unde reputatur, pietas Dei omnipotentis liberet eum: & si, quod absit, culpabilis est, & presumptuosus in te manum mittere ausus fuerit, eiusdem omnipotentis virtus super eum hoc declarare dignetur, vt amicus homo timeat, & contritus sit nomen sanctissimi gloriæ Domini nostri, qui vivit, & regnat, &c. Et statim post vnam orationem dicitur: Te Deus omnipotens, nos indigni & peccatores famuli tui suppliciter exoramus, vt sanctum, verum, & rectum iudicium nobis in hoc etiam manifestare dignetur, quatenus hic homo ex hac reputatus causa, si per aliquod maleficium diaboli instigare, seu cupiditate, vel superbia culpabilis est in fælo, vel consensu, & hoc comprobationis iudicium subterire, aut violare volens, sub cunctis ingenij manum suam in hanc aquam presumptuosè mittere ausus fuerit, tua pietas taliter declare dignetur, vt in eius manu dignosci queat quod iniuxit egi, & si ipse deinceps per veram confessionem penitentiam agere ad emendationem perueniat, & iudicium inuam sanctum, & verum in omnibus declaretur gentibus, per te redemptor mundi, qui venturus es, &c. Et missam quæ iudici vulgò dicebatur, refert Nooartius in Agno Eucharist. lib. 5. cap. 90. Succedit terra purgatio apud easdem gentes recepta, quæ fiebat per aquam frigidam. Circa quæ exilluxit Delcius d. lib. 4. cap. 4. sect. 4. cum dupliciter fieri, videlicet per immersionem persone (innocis, & per immersionem manus in aquam frigidam, cui Deus vim adrendi æquè tribueret, atque aque feruenti. Sed rectè em refellit Theophilus dilla sect. 3. de calumnia, cap. 2. quæstione. 3. Quare ea sententia omisit, verius est, in hæc purgatione colligari manus, & pedes, & sic corpus colligatum proli in aquam consecratam certo situ, de quo latè laetetur in noi. ad epist. 74. Carm. Deleto dicit. cap. 4. sect. 4. Pitheus in Gloss. ad capitul. verbo Aqua iudicium. Et si corpus mergitur, credebat reus innoxius, si verò superferretur aqua, censetur conuictus, vt producit Dunstons in suo Ordine, relatus à Nonario lib. 6. aque nup. cap. 8. in hæc verba: Per alius coram sacerdote trium diuersis iuramentis, cum

6.
DE PURGATIONE
AQUE
FRIGIDÆ
TEM.

homines

homines vii mittere ad iudicium aqua frigida comprobationem, ita facere debet. Accipio illos homines quos vii mittere in aquam, & duc eos in Ecclesiam, & coram omnibus illis canes Presbyter Misfam, & faciet eos ad Misfam ipsam offerre. Et expressus in verbis statim referendis Himerios Rhemenis pro Lothario, ibi: Hoc examinandum iudicio collegatus in aquam dimittitur, & aut purgatus statim iudicio arbitratu absolvitur, aut obsequat purgationem collegatus iudicio examinetur. Consecrati autem conuicti, qui aquis superferebantur, eo quod aqua videretur eos respicere, zque ac ferrum de manubrio elapsum, vt dicitur in aduocatione aque sancti Dunstan apud Innetum supra, vbi etiam hae verba leguntur, quibus rogatur Deus aquis infundere eam virtutem, ibi: *Si innocenti a crimine, cuius examinatione ageretur, aqua in se recipere, & in profundum penetrarent, confusis autem criminis a se repellerent, aquae reuerterent, nec poterant recipere corpus, quod ab huius bonitatis euacuante, ventus iniquitatis alienauit, & in hunc consiliu: sed quod cuius pondere curuati, pondere carere propria substantia in aquis. Hanc purgationem vt licitam probat Hieronymus in epist. de diuinit, interrogat. 6. sed male, vt probat Theophilus dicta scilicet. 3. cap. 2. questionibus 3.*

7. TRADITVS
RATIO DE
CORAM.

Hic supposita ratio praesentis assertionis, quate videlicet prohibetur vsus purgationis vulgaris, provenit ex eo, quia modus huius purgationis alienus est ab vsu Patrum Ecclesiae, conueniente tentione Dei, a quo postulat miraculum absque necessitate, cum plura alia media veritatis exquirere, & innocentiae iocunde suppetant, praestitumque, & magis det locum: unde reus, qui adigebatur ab imperatore Michaeli Commeno, vt purgaretur per globum ignitum, id facere recusat dicens, se non esse praestigiosum: & cum adhuc vergeretur a Metropolitano, respondit, vt ipse sacra indutus stola manus illi ignito ferro imponeret. Refert Georgius Logotet, in eodem. Constantin. Quare in hac purgatione contineri impietatem, & Dei tentationem, docent Theologi cum Praeceptore Angelico 1. 2. q. 95. art. 8. ad 3. & 3. q. 80. art. 3. Suarez de irregul. cap. 3. num. 8. Valentia 1. 2. disp. 6. q. 14. punct. 1. Lessius lib. 2. de iustitia, cap. 45. dub. 1. Sanchez lib. 2. in Decalog. cap. 34. num. 12. Sayrus in clau. lib. 4. cap. 7. Auctor Mallei maleficar. p. 3. q. 17. & Deus tentari non debet, nec miraculum ab eo peti. Vnde in Concilio Sallegustira cautum fuit can. 6. Consequens est etiam in sancta Concilio de quibusdam suis iustis Presbyteris, vt quando interdicunt vident, Corpore dominico corpore consecratum ad extinguendum incendium temeraria presumptione in ignem praecant: ideoque decretum est sub anathematis interdictione, ne viterius fiat. Etiam iocundissimum est hoc iudicium (sic enim vocabat sapienter Carnotensis episc. 74.) agens de milite adulteri accusato, qui purgare se volebat contactu ferri candentis, & combustus fuerat: atque, exoterium militis nullum certum praebere argumentum, cum per examinationem ferri candentis oculo Dei iudicio multos videremus nocentes liberatos, multos innocentes saepe damnatos: unde refert auctor Mallei dict. quod. 17. in fine, famosum maleficam praecantem ad purgationem ferri candentis, cum ad iudicium esset ad illud per tres dumtaxat passus gestandum, per sex passus gestasse

indemnem, & ad vltimos gestandum se obtulisse, cum tamen certum esset noxia. Alia similia exempla referunt Caesarus lib. 10. de miraculis, cap. 35. Bzouius anno 1345. num. 19. Godelmirus lib. 3. de magia, cap. 4. num. 35. Dubravius lib. 8. hist. Bohemiae. Accedit, nam hoc iudicium redolet ritus Gentilicos, apud quos similes purgationes in vsu erant. Quare Strabo lib. 5. geograph. refert sacrificiosos Deo Fetoniae nudis pedibus prunas accensas inambalisse, & per aquam & sulphur purgationem ab eis factam ceteris Apulicis lib. 11. de assu amos, Ouidius de arte amandi, ibi:

Et veniant qua lustrat arus, lectumque, lacrimaeque

Refert, & tremula sulphur & oramenu.

Tibullus eleg. 2. Lucanus & alij apud Durandium Casel. lib. 2. cor. cap. 1. Recte ergo tot canonibus Ecclesia prohibuit vsus huius purgationis vulgaris.

Nec obstat dubitandi ratio supra adducta; nam purgatio, de qua agitur in cap. 5. Nom. praecipit ad explorandum adulterium, cum esset i Deo ipso indicta, erat certa, & per stabile, & iuge miraculum in tali euentu: eia vsus autem purgationis, de qua agimus, nulla erat diuina militutis, aut vniuersalis Ecclesiae approbatio, vt constat ex proximis traditis, & fuit persequitur Crescens de immortalitate animae dist. 6. digest. 2. & lex illa fuit ceremonialis lata i Deo, qui illum populum specialibus legibus gubernare voluit: unde talis lex hodie suscitari nequit, ex traditis in cap. transito, & de consuet. Nec obstant exempla piosum virorum supra relata; nam etiam verum sit, Deum aliquando patrocinatum esse innocentiae, tamen tunc ita tulit beneplacitum ad innocentis liberationem, quia speciali instinctu propulerat ad vspurationem huius medij, vt veritas elucet, & calumnia reuolueretur; unde regulariter iudicium hoc illicitum est.

Sed supra traditae assertioni obstat textus in can. 24. Concil. Mogunt. sub Rabano, qui extat apud Borchardum lib. 6. Decret. cap. 7. Carthoconem p. 10. decret. cap. 136. Gratianum in cap. qui Presbyterum 17. quod. 4. in hac collect. in cap. 2. de penis, in Paris. Romano can. 1. in illis verbis: Qui Presbyterum occiderit, duodecim ei annorum penitentia secundum canones imponatur, ac si negauerit, si liber est, cum septuaginta duobus iuret; si seruus autem, super 12. vomeres seruatus se exporet: committens necesse estque ad vltimum rito tempus militis singulis careat, & absque spe coniugij morietur. Ex quibus expresse deducitur, purgationem per ignem sacris canonibus esse premissam. Pro cuius canonis expositione dicendum est, vsus purgationis vulgaris per doctum, aut per ignem olim apud varias nationes receptum, in aliquibus Conciliis Provincialibus fuisse toleratum, vique per Celestinum, Innocentium, & Honorium in praesenti titulo relatos omnino fuit prohibitum iudicium purgationis vulgaris. Vnde textus in d. can. 24. accipieodus est iuxta vsus antiquum Ecclesiae Gallicanae. Vnde Gratianus in d. Presbyterum, & Raymundus in d. 2. de penis, conseruant ea verba: Super duodecim vomeres se exporet, quia iam eo tempore prohibita erat purgatio hae vulgaris: quo modo etiam exponendi sunt textus in cap. 1. de purgat. canonice. propt illam transscriptis ex Concilio Triburien. Concilium Salegast. can. 7. & 14. Concil. Lateran. sub Alexandro III.

8.

DISPOSITVS
D. B. S. TANDI
TIO.

9.

EXPOSITVS
CONCIL.
MOGUNT.
CAN. 24.

xandro III. p. 3. de *summa*, cap. 3. in illis verbis: *Pro excommunicatione ignis, & aqua. Illud tamen notandum duxi, purgationem hanc fieri cadentia plerumque iungi stetit, & monachis; quia illi ob conditionem, isti vero ob statum per duellum purgari non poterant. Nec inficiari potest, olim Ecclesiam, etiam in rebus secularibus ignis iudicio usus fuisse, veluti in reliquiis veris agnoscendis. Concilium Cefareogust. 2. can. 3. ibi: *Statutis sancta Synodus, et reliqua, quae in quibusvisque locis de Arriana haeresi inuenta, fuerint prolata, a sacerdotibus, in quorum Ecclesia reprimuntur, Pontificibus presentata igne probentur.* Quem canonem late exponunt Baronius anno 596. Ferrandus in *disquis. reliq. lib. 2. p. 3. cap. 1. cum sequent.* quo etiam iudicio usus fuit B. Dominicus in *disquis. cum Albigenis*: & Tolleti dum ageretur de recipiendo officio Romano, relicto breuario Mozarum, ut referunt Baronius anno 1080. num. 72. Iulianus Petri in *advers. sub anno 1086. num. 600.* & etiam in Hispania mos erat decidendi lites per iuramentum praestitum in Ecclesia Sanctorum Vincentij, Sabinae, & Christes: in urbe Abulensi, & in ciuitate Burgenfis, in Ecclesia S. Agathae, ut refert Yepes tom. 1.*

chron. Diui Benedicti, cent. 2. anno Christi 555. quod postea prohibitum fuit in l. 67. Tauri, ibi: *Ningun juramento, aunque el Juez lo mende hacer, o la parte lo pida, no se haga en San Vicente de Abila, ni en el berreyo de Santa Gadea, ni sobre algar, ni en cuerpo sancto, ni en otra Iglesia yndadera, se pena de diez mil maravedis para la nuestra camara y fisco, al que lo jurare, y al que lo pidieren, o demandare.* Similis consuetudo invaluerat Mediolani, ut constat ex D. Augusti. tom. 2. epist. 137. *Maleis enim uicissima est sanctitas loci, ubi B. Felice Holoensis caput conditum est, quo solui se pergerunt, quia bene nobis scitimus, fidelissimum sciri potest, quidquid in eorum aliquo diuinitus fuerit prepalatum; uem & nos uisimus Mediolani apud memoriam Sanctiorum, ubi mirabiliter, & terribiliter damnae consueuerunt, fuerunt quendam, qui ad eum locum venerant, ut falsum luanda deciperet, compulsum fuisse confiteri sortem.* Eiusdem usus Romae vigens ad sepulchrum Sanctorum Procefi & Maroniani, testis est D. Gregorius homil. 32. in *Euang.* & de sepulchro S. Pancratij item Romae apud Gregorium Turon. de *gloria Martyrum cap. 38.* Videndus Tamayo à Salazar. tom. 3. *martyr die 27. Octobr.*

TITVLVS XXXVI.

De iniuriis, & damno dato.

CAPVT PRIMVM.

^a In Exodo.

Silixati fuerint homines, & percussit alter proximum suum lapide, vel pugno, & ille mortuus non fuerit, sed iacuerit in lecto: si surrexerit, & ambulauerit foris super baculum suum, innocens erit qui percussit; ita tamen, ut opera eius & impensas in medicos restituat.

NOTÆ.

1. ^a *Exodi.* Ita etiam legitur in prima collectio-
ne, sub tit. de *damno dato*, cap. 1. & verba
hæc repetuntur in cap. 17. *Exodi*, versu 18. & 19.
& pro huius inscriptionis illustatione repetenda
sunt quæ addita in cap. 1. de *adulteris*.

2. ^b *Innocens.* Id est immunitus, & liber à poena
mortis, quia hoc indicio, quod percussus post
acceptam plagam foris ambulauerit, præsumit
mortem eius non ex percussione, sed aliunde ob-
uenisse, ut exponit Cornelius à Lapide in *dist.*
cap. 17. *Exodi*.

COMMENTARIVM.

3. ^Lectum cum homo mortuus est, aut membro
mutilatus, poena talis sit, iam ex lege Moy-
sis relata in d. cap. 17. *Exodi*, *Genesis cap. 9. vers. 6.*
quàm ex lege duodecim Tabularum, ut auctoritati-
bus, & exemplis illustret Beyerlinch verbo *Talis*,
Philippus Cameracina tom. 1. *horæ. success. cap. 99.*
Fornarius lib. 2. *select. cap. 19.* tamen cum vulnera-
tus est, propter damnum acceptum, quia nulla

parte corporis mutilatus est, sed tantum damnum
accepit, & quia in lecto iacuit, operas amittit, ac
truncat in medicos fecit, tenetur qui damnum
dedit iam ad operas, quàm ad impensas in me-
dicos factas præstandas. Vlpianus in l. sed & si,
in *fin.* cum sequenti; & l. quæ aliene, ff. ad leg.
Aquil. ubi proposita quæstione si notis, qui male-
dicenti puerum ingenuum filiosfamilias foto à calcet-
euericem percussit, ut oculus penè perfunderetur,
postquam docuit non alia ratione suum ten-
neri, quàm Aquilæ legis, subiungit: *Quæ aliene
parentem consequutur, quod minus ex operis filij sui
propter sociatum oculum sui habuerunt, & impendia,
quæ proterius curatione fecerit.* Et Gaius in l. finali,
ff. de his qui deiecerunt, ait: *Cum liberi hominis cor-
pus ex eo, quod delictum, effusum erit, lesum fue-
rit, iudex compulsi mercedis iudicis præstare, cetera-
que impendia, quæ in curatione facta sunt, prætere-
operas, quibus carnis, non cariturus est, ob id quod
inutilis est factus.* Iustitiam in §. 1. *Iusti de obligat.*
quæ ex quasi delicto ibi: *Ob hominem liberum occi-
sum quinquaginta aureorum poena constituitur, si
verò solus, notioneque ei esse dicatur, quantum*

ob eam rem aquum iudici videtur, alio datur. Iudex enim computare debet mercedem medicis prestitam, cateraque impendia, quae in curatione facta sunt, praeter operas, quibus curati, aut caritativum est ob id quod iniussu esse solent. Quoad forum iocundum ita in hoc casu cautum lego in Poenitentiali Romano, tit. 4. cap. 13. io haec verba: Qui per rixam istum debilem, vel defensum hominem fecerit, reddat impensas medicis, & medicum

annum pariter: si non habuerit unde reddat, totum annum pariter: & si non habeat, unde reddat, solus opera proximi sui quendam infirmus est, & postea quadraginta dies in pace, & aqua pariter. Illustrati Mancinus de triplici iuris collat. cap. 81. Petrus Pitheus in collat. legum ad Jac. tit. 2. Et quomodo operis estimanda sint, explicant Coar. lib. 3. tit. cap. 1. Petrus Gregorius lib. 4. part. tit. 9. cap. 12. & coogessi à Barbola in presenti.

CAPVT II.

* Item.

Si quis aperuerit cisternam, & foderit, & non operuerit eam, cecideritque bos, vel asinus in ea, dominus cisternae reddet pretium iumentorum. Quod autem mortuus est, ipsius erit.

NOTÆ.

1. a [Tem.] Ita etiam legitur in prima collectione, sub dicto tit. de damno dato, cap. 5. id est io eodem capite Exodi, ubi repetitur textus hic, qui summa ratione nititur; nam ad damnum refarciendum non solum tenetur qui dedit, verum & qui occasionem damni præbuit, l. qui occidit, §. dicitur, ff. ad leg. Aquil. Præterea tamen leontia accipit debet iuxta distinctionem, quam tradit Paulus in l. qui foveat 28. ff. ad leg. Aquil. his verbis: Qui foveat vrsoriam, cernorumque capiendum causa faciant, si in itinere fecerint, et

que aliquid deciderit, sustinque detentis, lege Aquilia obligati sunt: ac si in aliis locis, ubi fieri solent, fecerint, non tenentur. Subiicit etiam Paulus in §. 1. quod si is, qui foveas fecit, præterea deouclaoerit periculum, & adhuc ausus fuerit transire, ex culpa suo tenetur, qui foveas posuit; quia præterea sine remissione impurare debet, ut in non dissimili casu Calpurnius Flaccus dicebat de clamoribus, §. ibi: Quoniam ausus est, quod nec post denunciationem credendum est. Et iterum: Vbi quod futurum est denuncium, culpa patiens est. Explicant D. Ioannes Suarez ad leg. Aquil. lib. 3. cap. 7. sect. 1. num. 9. Mancinus de triplici iuris collat. cap. 84.

CAPVT III.

* Item.

Si bos alienus bovem alterius vulnauerit, & ille mortuus fuerit, vendent bovem vivum, & ducunt pretium; cadauer autem mortuum inter se disperient. Si autem sciebat, quod bos corrupta esset ab heri, & nudaverit, & custodiuit eum dominus suus, reddet bovem, & cadauer integrum accipiet.

NOTÆ.

2. a [Tem.] Ita etiam legitur in prima collectione, sub hoc tit. cap. 4. id est in eodem cap. 21. ubi ita legitur: Si bos alienus bovem alterius vulnauerit, & ille mortuus fuerit, vendent bovem vivum, & ducunt pretium; cadauer autem mortui inter se disperient: si autem sciebat, quod bos corrupta esset ab heri, & nudaverit, & non custodiuit eum dominus suus, reddet bovem pro bove, & cadauer integrum accipiet. Hæc lex Mosaicæ pertinet ad Phœniceos, unde sumpsit Solon, de quo Plutarchus ait: Scripsit & de pauperie à quadrupedi bus data, ubi eorum qui aliquem numeraverit, dedit inter cubitarem quatuor vicinalem aligarum. Ex Solone sumpsit Plato de legibus lib. 11. ubi ait: Vbi innocens, aut equus, aut canis, aut animal domesticum quadrupes pauperiem fecisset, eodem modo damnationem resarcitur, ac si servus dedisset, utper noxam dedendo, vel restituendo quod alteri abesse, nisi intercessisset delus. Et Romani ab eo acceperunt quare Vlpianus in l. 1. ff. si quadrupes pauperiem,

ait: Si quadrupes pauperiem fecisse dicatur, ex lege 12. Tabularum alius descendit. Quæ lex voluit, aut dardid, quod vocatur, id est animal, quod noxam commisit, aut æstimationem noxæ offecit; nam ratio postulat, quod sicut in noxali actione damnato petimur ut illis æstimationem sufficere, aut ipsum huminem noxæ debere, cum videri posset iniquum servorum nequitias ultra ipsorum corpora dominis esse damnosus, §. 1. Insuper de noxalibus; ita pari ratione de quadrupedibus placuit, dist. 1. 1. ff. si quadrupes pauperiem: ad quem titulum spectant textus in l. & eleganter 7. §. 6. ff. de dolo, l. final. ff. de extraordin. crimin. l. Julianus 9. §. glan, ff. ad exhib. l. ait Prætor 7. §. penult. ff. de damno infesto, l. si servus 27. §. si servum, l. final. ff. ad leg. Aquil. l. si heres 26. l. celtis 26. §. si is, ff. de noxalibus, l. Dianus, l. iusans, ff. ad leg. Corn. de sicar. l. Pompeius 44. ff. de acquir. domo. Illustrant Mancinus de triplici iuris collat. Grotius in floribus ad tit. ff. si quadrupes, Gibalin. de negot. lib. 6. cap. 9. art. 3.

CAPVT IV.

Item.

SI laferit quispiam agrum, vel vineam, & dimiserit iumentum suum, vt pascatur aliena, quidquid optimum habuerit in agro suo, vel vinea, pro damni aestimatione restituet.

NOTÆ

1. *a* [Tem.] Ita etiam legitur in prima collectione, sub hoc tit. cap. 3. & testis hic reperitur in ipso cap. 22. Exodi, ubi legitur: Si laferit quispiam agrum, vel vineam, & dimiserit iumentum suum, vt pascatur aliena, quidquid optimum habue-

rit in agro suo, vel vinea, pro damni aestimatione restituet. Raymondus autem vt præsentem textum conformem redderet iuri Cæsario, posuit pro damno, aestimationem restituit, iuxta legem veterem, Cod. ad leg. Aquil. quomodo tamen hoc damnum aestimetur, exposuit Otero de pastu cap. 13. per tot.

CAPVT V.

Item.

SI egressus ignis inuenerit spicas, &prehendit acervos frugum, siue stantes segetes in agris, reddet damnum qui ignem succendit.

NOTÆ.

1. *a* [Tem.] Etiam ita legitur in prima collectione, sub hoc tit. cap. 6. & reperitur hic testis in cap. 22. Exodi, ubi legitur spicas, non spicas, vt in præfati. Quam lectionem probat Cornelius à Lapide ibi, versu 6. & ita iubet lex hæc, vt si quis negligentia sua igni se escitatio malè aduigilaret, nec cauerit, ne prosterperet, itaque factum sit, vt ignis spinas, quæ segetem sepiebant, atque exiit ipsam segetem corripuerit, teneatur de damno.

nant Paulus lib. 5. sent. tit. de incendiariis, ibi: Fortuita incendia, quæ casu veni fuerint, vel incuria ignem supponentis ad vsque vicini agrum eundem, si ex eo segetes, vel vinea, vel olina, vel fructifera arbores concreuerint, datum damnum aestimatione soluitur. Vlpianus lib. 8. de offic. Proconsul. apud Patristotem legum Mosiac. ibi: Sed ei, qui non datè opera incendium fecerit, plerumque ignoscitur, nisi in lata. & incauta negligentia, vel lasciuia fuit. Paulus lib. singulari de penis, apud eundem Patristotem, ibi: Fortuita enim incendia ad forum remittenda sunt, ex damnum vicini soluitur. In legibus Vniuersi. in l. ult. tit. 2. lib. 8. ita legitur: Qui ignem apposerit finis, stipulis, & tribulis, ad coquendum cibum, vel frigus arcentium, si ignis longius diffusus alienam missam, damnum, vineam incendit, non duplam, sed damnum præstare tenetur. Explicat, & illustrat Sessé tom. 2. decis. art. Pirheus in colat. legum Adofs. tit. 12.

COMMENTARIUM.

2. *a* Incendium committitur dolo, culpa, aut casu. De incendio dolo, aut culpa commissio egi in cap. excommunicamus, de raptoribus. De incendio casu admissio agit in præfati, & iubetur, vt damni aestimatio restituitur. Conso-

CAPVT VI.

Ex^a Pœnitentiali Romano.

SI quis domum, vel arcem cuiuscunque incendit voluntariè, subblata, vel insensa omnia restituat, & tres annos pœniteat.

NOTÆ.

1. *a* [Pœnitentiali.] Ita etiam legitur in prima collectione, sub hoc tit. cap. final. & ex eodem libro citatur textus hic à Burchardo lib. 19.

Decret. cap. 36. Carnot. part. 5. Decret. cap. 146. & reperitur in ipso Pœnitentiali, tit. 4. cap. 20. De auctoritate huius libri egi in cap. 3. de fœnitia & de peccatis incendiarij in cap. excommunicamus, de raptor.

CAPVT VII.

Honorius III. ^a Episcopo Bononiensi.

OLim scribentibus nobis venerabili fratri nostro Episcopo Mutinensi, ut accedens personaliter Florentiam, Potestatem, Consiliarios, & populum ciuitatis moneret efficaciter, & induceret ad satisfaciendum de damnis, & iniuriis irrogatis venerabili fratri nostro Episcopo, & Ecclesiis^b Fesulanis, & si necesse foret, censuris ecclesiasticis coardaret: idem Mutinensis mandatum nostrum quoad monitionem diligentius executus, datis induciis, contra testes lite non^c contestata processerat: Quare nos reuocato processu Commune Florentie, quia^d banniuerat eundem Episcopum Fesulanum contra Deum, & Ecclesie libertatem, propter iniuriam banni in expensas, & damna tali occasione secuta, taxatione iuramento premissa^e in mille libris vsualis monetæ prædicto Episcopo Fesulanensi sententialiter duximus condemnandum.

NOTÆ.

I. ^a **H**onorius III.] In hæc sexta collectione, & in quinta, *sub hoc titulo cap. unica*, eandem legitur *Bononiensi Episcopo*: sed inscriptionem & litteram huius reus restituit ea Vghelio tom. 3. *Sicilia sacra*, fol. 321. In Fesulana Ecclesia casus huius textus ita contigit. Illud prandus patriæ Lucensis, concessurus fuit in Episcopatum Fesulanum ab Honorio III. qui Præsul dum suam coardiretur Ecclesie administrationem, à republica Florentina non modò grauibus litibus implicitus, sed propemodum oppressus, Florentinis impellentibus eaul excessit. Sed cum ad Honorium Episcopus prouocasset, primùm eius causæ cognitio Mutinensi Episcopo demandata est, postea nouis difficultatibus emergentibus, in præfati rescripsit idem Honorius; & anno vñdecimo sui Pontificatus alteram scripsit epistolam de hac re Episcopo Florentino, quam ex registro eiusdem Pontificis desumptam refero: [Graue valde gerimus, & indignum, quod ciues Florentini venerab. fratrem nostrum Episcopum Fesulanum in Episcopalis dignitatis iniuriam, & Apostolicæ Sedis contemptum exolare compellant, bonis Episcopij sui, & Ecclesiarum eiusdem, reuerentiā diuinā, & nostrā postpositā occupatis. Et quidem si amor, quem ad ciuitatem habemus, motum nostri animi non cohiberet, iam fecissemus eos, poena docente, cognoscere quantum doleamus de grauaminibus, & iniuriis ab eisdem ipsi Episcopo irrogatis. Sed nec tu in iis exasate negligentiam nam potes, qui ciues ipsius, tum pro salute animarum suarum, quantum tibi est sollicitudo commissa; tum pro compassione ipsius Episcopi deberes ab iniuriis huiusmodi rescindere. Licet igitur causa huiusmodi venerabili fratri nostro Episcopo Faentino, & collegis eius iamdudum fuerit ab Apostolica Sede commissa; quia tamen propter eorum ipsorum diffugia nondum est processus habitus in eadem, ipsam ad examen nostrum duximus reuocandum; ideoque mandamus tibi, quantum Potestati, Consiliariis, & populo eiusdem ciuitatis iniungas, ut in Kalendis februarii proximis, quas eis terminum preceptorium assignamus, per procuratores idoneos, & sufficientes compareant coram D.D. Genrali in Decretis, Tom. V.

nobis, eidem Episcopo super lousatione, destructione, ac detentione bonorum Episcopij sui, & Ecclesiarum eius exhibuit, quid ordo posset rationis; aut compositor, si fieri poterit, cum eodem: denuntiando eidem, quod etsi non sufficiens ad defendendum & ad componendum transpserint ad terminum supradictum, nos nihilominus in negotio ipso quantum suadebit ratio procedemus. Datam Lateran. decimo Kalendas Ianuarij, Pont. n. anno vñdecimo.] Anno verd 1118. inter Florentinos illud prandumque lite composita, Gregorius IX. anno primo sui Pontificatus, ad dilectum suum pacis stabilimentum, Ecclesiam sanctæ Mariæ in Campo Florentie Fesulano Episcopo attribuit, edita sequenti bullâ, quæ tametsi etiam Admiratus Iunior affert ad catalogum Fesulanorum Episcoporum, nos tamen hic festibeamus causas: [Controuersia, quæ inter te, & ciues Florentinos suborta fuerat, nostrâ prouisione sopita, quia vidimus, quod ex cohabitatione Fesulani Episcopi maior inter eum, & Commune Florentinorum poterat concordia provenire, & maior Episcopatus Fesulani securitas, & utilitas procurari, Ecclesiam sanctæ Mariæ de Campo cum pertinentiis suis tibi prouidimus conferendum. Ut igitur hæc nostra prouisio perpetuum obtineat firmitatem, præfatum Ecclesiam cum pertinentiis suis de fratribus nostrorum consilio tibi, & successoribus tuis perpetuo fore concedimus liberam, & exemptam, non obliante quod in litteris venerab. fratris nostri Episcopi Florentini, & publico instrumento, quibus suum super hoc expressit assensum, nihil de Capituli continebatur assensu, cum nos eius supplementum docturimus in hac parte defectum. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc nostrâ concessione paginam infringere, vel ei ausu temerario contraire: si quis autem hoc attentare præsumpserit, indignationem omnipotentis Dei, & beatorum Petri, & Pauli Apostolorum se noverit incursurum. Datam Lateran. 1. id. Iouat. Pontif. nostri anno, 1.]

^b *Fesulan.*] Fesula peruetusta ciuitas Italiz est in Proauincia Etruriz, cuius meminereunt Silii Italici, ibi:

Et sacri interpretis Flaminii Fesula.

Diodorus Siculus lib. 20. caluicinium, & pro-

gressum refert Vghellius tom. 3. Italia sacra, fol. 272. Habere Ecclesiam Cathedralē à primis Ecclesiis seculis à sancto Romano constructam eius primo Episcopo.

c *Lite non concessa.*] Contra dicta suprà in cap. 1. ut lite non concessa.

d *Bannimus.*] Id est exanathematizavit; nam bannus accipitur pro exilio, ut probatur in cap. 2. suprà, de purgac. canon. & in presenti notavit Cironius.

e *Mille libris.*] Iniuriis enim gravis æstimatione cum fori ecclesiasticis præscriptio contemni-

tur, cap. non placuit 16. questione 7. ibi: Non placuit laicum standi in Ecclesia habere aliquam possessionem, cui obsequium maner necessitas, non anthebitus imperandi. Et quoniam modum curialibus iniuria interrogata non ipsos damnavit tangit, sed ad Regis dignitatis offensam spectat, ut loquitur Fridericus lib. 3. consue. Sicul. tit. 33. cap. 1. ita & offensæ clericorum ad Christum pertinet, ut exprimitur lib. 6. Capitul. cap. 98. Ideoque eo casu poenam anathematis statuit Synodus Constantinopolitana relata in cap. accusatio 2. quest. 7.

CAPVT VIII.

Gregorius IX.

IN nostra, & fratrum nostrorum præsentia proposuisti, quod ciues Brixien. protestationibus damnorum illatorum adinvicem, quæ propter multas ciuiles discordias incurrerant, plurimum aggravati, statutum edicum de non petendo, vel recipiendo in posterum restaurationes huiusmodi à Communi generaliter approbarunt, & firmarunt etiam iuramento. Et infra: Cùm igitur aliud sit damnorum restauratio, quàm satisfactio expensarum; & ideo iuramento exhibito super damnorum articulo, intelligi non debeat, quod factum expensarum fuerit comprehendendum: mandamus quatenus (iuramento non obstatæ prædicto) auctoritate nostra provideas, quod dictum Commune pro bono concordie ad expensarum satisfactionem aliquid contribuat, iuxta tux discreuonis arbitrium à te, sicut expedierit, moderandum.

NOTÆ.

a *Gregorius IX.*] Non exprimitur cui Pet-laro Pontifex referatur; credi tamen potest referbere Episcopo Brixienti; de qua diocesi egi in cap. tua, de procurac. Decernit autem Gregorius in presenti, post sedatas dissensiones ciuiles inter ciues Brixienfes, & milites eiusdem ciuitatis, ut referunt Hostiensis, & Innocentius in presenti, populū Brixienfem posse repetere expensas, et si iuramento pro-

miserit damna illata occasione huiusmodi dissensionum non repetitarum; & magna cum tatione, nam cùm iuramentum non extendatur ad ea, de quibus actum, vel cogitatum non fuit, cap. Quintanalis, de iurac. & in propria, & stricta interpretatione appellatione damnorum non veniant expensæ, l. 3. ff. de damnis infectis; ideo et si populū Brixienfem iuramento promississet se non repetitarum damna occasione discordiarum accepta, rectè tamen potest expensas repetere.

CAPVT IX.

Idem.

SI culpā tuā datum est damnum, vel iniuria interrogata, sen aliis irrogantibus Sopem fortè tulisti, aut hæc imperitiā tuā, siue negligentia euenerunt, iure super his satisfacere te oportet, nec ignorantia te excusat, si scire debuisti ex facto tuo iniuriam verisimiliter posse contingere, vel iacturam. Quod si animalia tua nocuisse proponas, nihilominus ad satisfactionem teneris, nisi ea dando passis damnum, velis liberare te ipsum: quod tamen ad liberationem non proficit, si fera animalia, vel quæ consueuerunt nocere, fuissent; & quam debueras, non curasti diligentiam adhibere. Sanè licet qui occasionem damni dat, damnum videatur dedisse: secus est tamen in illo dicendum, qui ut non accideret, de contingentibus nihil omisit.

NOTÆ.

NOTÆ

I. **A** **Denu.]** Gregorius videlicet Nonus, qui præsentem edicti constitutionem motu proprio, ex diuersis iuris cullis principijs. Et in primis docet circa damnum datum, redditi cum qui culpa sua damnum dedit, iussit dari, consensit, imperitè egit, aut neglexit: quod etiam passim docetur in titulo *ff. ad leg. Aquil.* Et licet quodlibet damnum datum peculiari lege vindicari possit, veluti Aquilæ, de vi publica, & de fœciis, tamen extra ordinem damnum datum vindicari posse, colligitur ex l. 1. §. 1. l. 2. l. penult. & vlt. *ff. de incendio, & ruina, l. 3. §. 1. ff. de offic. Pref. vigil. l. 2. ff. de verbor. sign. cas. l. cum solus 16. §. eum, ff. de pœnis.* Vt autem damnum datum vindicetur, iniuriæ factum esse debet, idest vel dolo, vel culpa. Patet etiam cum latè verbum *iniuriæ*, vt & qui culpâ leuissimâ damnum dedit, iniuriâ dedisse dicatur, *leg. in lege 44. ff. ad leg. Aquil.* Igitur culpa in præfenti non solum supinam negligentiam designat, quæ prope dolum est; verum & leuitia, & imperitia, & infirmitas in culpa ponuntur, si quis affectauerit id, in quo intelligit, vel intelligere debet imperitiam, aut infirmitatem suam esse alij periculosa futuram, l. 5. §. 1. & vlt. l. 8. l. 31. *ff. ad leg. Aquil. l. iusticia 6. §. si cui, de offic. Prefid.* Prosequitur Gregorius eam, in quo quis damnum dedit, non exoptore suo, sed per animalis propriæ: & tunc docet, posse dominum ferui, vel quadrupedis, per quem damnum datum est, estimatione damni soluere, vel vocem dare, hoc est feruum, vel animal, quod damnum dedit, iuxta legem 1. & per totum titulum *ff. de animalibus.* In

qua parte obseruandi sunt textus de l. si feruus 27. §. si quis feruus, *ff. ad leg. Aquil. l. si vasa fructus, ff. si ex iniuriæ causa, l. feruus 16. ff. de interrogat. all. l. itaque 12. §. 1. l. ferui 17. §. illud, l. si uisando 61. §. 4. ff. de fœcis, l. inter 26. §. sed & cum feruus, *ff. mandati, l. si heredes 48. l. si liberus 10. ff. de legatis 1. l. 29. §. vlt. ff. de præiud. cum leg. 16. ff. de peculio legato, iunctis Fabio lib. 3. coniect. cap. 3. Cuiacio lib. 12. obser. cap. 9. & vlt. l. 1. ff. de public. iudic. l. 3. §. 4. ff. de iura, conpon. l. Nisennus, §. si noli, ff. de re iudic. l. ex contrahibus 49. ff. de O. & A. l. si feruus 31. ff. de pignorat. l. 17. §. penult. ff. de usufruct. l. 2. ff. de publican. l. si ambo 10. §. quoniam, l. si debet, ff. de compens. litem 20. §. siem veltè ait, l. ibi lnd 40. §. penult. ff. de pœis, heredit. l. 3. ff. de nullit. l. 4. §. illud, ff. de fluminibus, l. 11. ff. locat. iuncto Cuiacio lib. 22. obser. cap. 4. & lib. 21. cap. 40. l. 1. ff. ne quis eum, l. 2. ff. de eo, per quem saluum, l. 1. §. cum feruus, ff. de his qui decederunt, l. 28. §. vlt. ff. de mortis causa donat. l. 1. §. vlt. ff. de publican. l. 4. ff. de aleator. l. 4. §. aucloris, ff. de doli excepte, l. 12. §. vlt. cum l. sequens, ff. de liberali causa, l. si mulier 21. §. 1. ff. rer. amot. l. 17. §. 17. l. 46. & 58. ff. de adilit. editit. l. 3. §. vlt. ff. si mensor falsum modum, l. postliminiam 19. §. si stantibus, ff. de captiuis, l. 1. §. apud feruum, ff. de positi, l. 72. §. 3. ff. de solutio. l. amiquis 6. §. si feruus, ff. quod vi aut clam, l. 64. Celsus, ff. de aqua pluua, l. 1. §. 1. ff. de publican. l. 3. §. 4. ff. de liber. homine, l. 7. ff. quod vi aut clam, l. 8. §. vlt. ff. communi diuidendo, l. si hominem 69. ff. de solutio. l. rem, 21. §. 1. ff. commodati, iuncto Cuiacio tract. 2. ad Africarium, l. 7. §. hoc editum, ff. de damno infecto, l. 11. & 14. ff. de interrogat. l. 1. §. interdam, ff. si quadrupes pauperiem,**

TITVLVS XXXVII.

De pœnis.

CAPVT I.

Ex Concilio Toletano.

EA quæ frequenter præuaricatione iterantur, frequenter sententia condemnantur.

NOTÆ.

I. **A** **Toletano.]** Ita etiam legitur in prima collectione, *sub hoc tit. cap. 1. & apud Burcardum lib. 19. Decreti, cap. 158. Carnotensi part. 15. Decreti, cap. 166. & in fragmentis Concilij Toletani incerti, quæ reperiuntur ad calcem Concilij Toletani 2. apud Loysiam: & licet non reperiatur textus hic in aliquo ex Con-*

cilijs Toletanis huiusque excusis, eius tamen sententia in iure certa est; nam licet de eodem delicto non possit quis iterum accusari, postquam fuit semel absolutus, & condemnatus, vt probauit in cap. de his, de accusat. tamen eum postea nouâ præuaricatione relapsus est in eum delictum, potest iterum puniri; immò & propter iterationem grauius puniatur, vt probauit in cap. ad abolendam, de heret.

CAPVT II.

Et Concilio * Triburiensi.

SI quis presbyter, quod absit, quia sacerdos altissimi Dei est, vulneratus, vel quibuslibet iniuriis, & contumeliis dehonestatus, euaserit, & supervixerit, tota compositio persoluatur presbytero. Si autem in articulo mortis praeuenter obierit, pretium vverigeldi tripartita partiatur diuisione: idest altari, cui ordinatus fuerat, pars vna; Episcopo, in cuius diocesi erat, altera; tertia parentibus, de quibus ortus fuerat. Si vero in atrio Ecclesiae aliquid ex istis presbytero factum fuerit, supra dicto modo presbytero, & pro presbytero soluatur. Sed quia vt Hilarius Papa omnibus Episcopis pro diuersas provincias in epistola sua scribit, iniuria sacerdotum, & Ecclesiarum, sacrilegium est; sacrilegium in atrio factum, altari & Domino eiusdem loci persoluatur. Sacerdotes enim non sunt lacerandi, sed potius coronandi: quia de his Ecclesiasticus liber loquitur, dicens: In tota anima tua time Dominum, & sacerdos illius sanctifica, & ministros eius non derelinquas, & honorifica sacerdotem. Et Isidorus: His enim, sicut & Episcopis, dispensatio mysteriorum Dei commissae est: praesunt enim Ecclesiae Christi, & in consecratione diuini corporis, & sanguinis consortes sunt Episcopis. Similiter & in doctrina populorum, & in officio praedicandi.

NOTÆ.

I.

Triburiensi. Ita etiam legitur in prima collectione, sub hoc tit. cap. 2. & ex eodem Concilio citatur textus hic à Burchardo lib. 6. Decret. cap. 11. Carnorensis part. 10. Decret. c. 40. & sub nomine Palex erat apud Gratianum in cap. omnes 26. 17. quæst. 4. & repetitur in ipso Concilio can. 4. prout in præfenti transcribitur. De hoc Concilio nonnulla notati in cap. clerici, de vita & honest. cleric. Verba autem in præfenti transcripta extant lib. 4. capitul. Cabili, cap. 15. & inter canones Isaac Lingoniensis Episcopi tit. 2. cap. 1.

2.

Vverigeldi. Vverigeldus, seu vvidigildus, sumitur pro pretio, quod pro compositione iudiciali persoluitur pro homicidio, aut alio delicto propinquis, & heredibus; quo modo accipitur in lege Salica cap. 1. §. 7. & lib. 3. capitul. cap. 28. & lib. 6. cap. 98. & 99. Alemanor. tit. 4. 29. 34. Boiotum tit. 7. cap. 1. & tit. 15. cap. 5. Ripuar. tit. 36. §. 1. & tit. 46. §. 1. Frison. tit. 1. §. 9. Longobard. lib. 1. tit. 1. l. 7. Pœnit. Romano tit. 4. cap. 17. ibi: Pretium suum, idest vverigildum suum: & aliis legibus antiquis congeitis à Lindembrogio in glossar. verbo Vverigildum; in Speculo Saxonico lib. 1. art. 8. ibi: Testimonium præconiæ fiat duorum, eius cuius emenda, & vverigildus duplex est, secundum ipsum noiaiem. Et art. 65. ibi: Qui etiam aliquam aliam iniuriam passum iudicio exhibere promiserit, si id facere nequauerit, cum suo absoluitur vverigildo, & per hoc iuri non derogat suo: vverigildus post tres menses à tempore eius acquisitionis persoluitur. Illustrat ex variis Germanicis scriptoribus Ioannes Vossius lib. 2. de vitiis fern. cap. 2. Lindembrog. ubi supra, Ant. Augustin. in variis ad dictum Pœnitens. Rem. tit. 4. cap. 17. Bignonius in not. ad Marculf. lib. 1. cap. 18. Gibalinostem. 2. de negot. lib. 6. cap. 9. art. 3. num. 11.

COMMENTARIUM.

3.

Textus hic exponendus est iuxta consuetudinem Provincia, in qua Concilium hoc celebratum fuit, videlicet Germanie: apud veteres

enim Germanos centi pecunie summa delicta aestimabantur, neque homicidium morte sui lex erat, & facinorosi omnes, nisi læta Malefatis, pecuniarum soluebant penam, quæ dicebatur compositio. Tacitus de moribus Germanorum, ibi: Suscipere tam inimicitias, seu patris, seu propinqui, quam amicitias necesse est, nec implacabiles dunt. Quare enim homicidium certe armentum, ac pecorum numero, recipique satisfactum vniuersæ domus. Et in legibus Baubaz. tit. 1. cap. 11. ita legitur: Si nullus Baubazius alodem, aut vitam sine capitali crimine perdat, idest si in necem Ducis consiliatus fuerit, aut inimici in provinciam inuadant, &c. Cetera vero quæcumque commiseris peccata, quæcumque habes subfessionem, componas secundum legem. Ideoque frequenter in veteribus legibus hæc verba reperies, de vita componas, vt lib. 3. capitul. cap. 10. Si quis comitatus fuerit periturus, perdat manum, aut redimat. Et lib. 4. Capitul. cap. 13. 15. & 18. ibi: Qui hominem publicam penam agens interfecerit, hancum nostram in triple componas, & vverigildus eius proximis persoluitur. In legibus Anglie apud Houedoum in Henrico II. ibi: Pœne suam, idest pretium redemptionis sue soluat. Et pto modo culpe, & dignitate persone compositio fiebat, cap. qui subdacionem occiderit, 17. quæst. 4. probant Fectus Gregorius lib. 4. parit. tit. 13. cap. final. Cæsolius lib. 3. mylag. lib. 1. cap. 22. fcl. 4. Rensfeldus lib. 6. hist. Pontif. in riss. cap. 2. num. 6. & vltæ compositionem in nonnullis delictis, quæ legibus expressa erant, præter compositionem reus fisco fredum soluebat, Gregorius Taron. de miraculis sancti Martini lib. 4. cap. 26. ibi: Affirmatus Rex quosdam ex his, qui absoluti fuerant, ad se remisit, compositionemque fisco debuit, quam ibi fredum vocant, à se indultum. Illustrat Bignonius lib. 1. ad formidat Marculf. cap. 3. Licet cum bestatetr in Concilio Cabilon. 1. cuiusdam persoluentia esset pena patris homicidii in presbyterum, Patres Concilij quædam ad Principem reiecerunt, tanquam supremum arbitrum pœne, & vltæ criminum, can. 24. ibi: De Episcopis vero, Presbyteris, & Diaconibus, & monachis interfecit quærendum

rendam à Domino Imperatore est, cui illius homicidii pretium exsoluendum sit. Unde iuxta hunc morem à Patribus Concilij Triburiensis decretum est, compositionem presbyteri occisi esse diuidentam pro æqualibus portionibus inter Ecclesiam, cui inseruebat, Episcopum diocesana, & eius consanguineos. Sed eodem Raymundus mutat.

set hæc verba aliam dissolutionem faciendo, credo ob auctoritatem Gregorij Noni, qui confirmauit hanc compositionem, illi standum esse. An vero stantibus parentibus aliquis pars illis sit assignanda, disputant Couar. lib. 2. var. cap. 9. num. 10. Genouensis prædictæ quæst. 370. Sed attentâ integrâ huius canonis ouila hæc iustitiam occasio manet.

CAPVT III.

Idem R.^a Cantuariensis Archiepiscopo.

Licet iuxta Apostolum arguere, & increpare debeamus, sic tamen debemus excessus corrigere singulorum, ut probemur, non quæ nostra sunt, sed quæ Iesu Christi querere, & in correctione facienda videamur modestiam, & maturitatem seruare. Accepimus autem, quod b Archidiaconi c Conuentum. Episcopatus pro excessibus, & criminibus puniendis à clericis, & laicis penam pecuniariam exigunt: in d examinatione ignis, & aquæ XXX. denarios à viro, & muliere querere præsumunt: & pro annuæ exactione pecuniæ personas quandoque suspendunt, & Ecclesias e interdiciunt: à vicariis quoque XII. denarios, ut in Ecclesiis cantare permittant, exigere non formidant, & alia agunt, quæ canonum obuiantur stitutis, & de radice cupiditatis, & auaritiæ videntur prodire. Quia igitur sollicitudini nostræ incumbit pastoralis providere diligentia, ne ab ecclesiasticis personis tuæ provincie aliquid agatur, quod reprehensionis subiaceat, vel ecclesiasticam honestatem denigret: f. t. per A. f. p. m. quat. Archidiaconis prædicti Episcopatus ex parte nostra, & tua districtè inhibeas, ne excessibus corrigendis, aut criminibus puniendis à clericis, vel laicis penam pecuniariam, nec pro examine ignis, vel aquæ denarios amplius exigere audeant, vel alia, quæ dicta sunt, quomodolibet exercere. Si autem contra prohibitionem nostram ausu temerario venire præsumperint, eos omni cent. & ap. cess. ecclesiasticâ censurâ per cellas, & sententiam ipsam usque ad digram satisfactionem facias inuolubiliter obseruari.

NOTÆ.

1. **a** *Cantuariensis.* Ita etiam legitur in prima collectione, sub hac in. cap. 3. & ex istis textibus hic post Concil. Lateran. part. 1. de summa, cap. 1. prove hic transeibitur.
- b** *Archidiaconi.* Quibus ex consuetudine competit in omnibus provinciis iurisdicctio contentiosa, iuxta tradita in cap. ad hac, de offic. Archiep. ibid.
- c** *Conuentum.* Anglicani Regni, de qua diocesi egi in cap. 2. de rescriptis.
- d** *Examinatione.* Hæc verba omisit Raymundus, quia iam eius tempore hoc examen purificationis vulgaris prohibebatur erat, ut probavi in cap. final. de propat. talg.
- e** *Ecclesias interdiciunt.* Cùm sententia interdicti ferri non possit regulariter ob causam pecuniariam, ut probavi in cap. 2. de his quæ sunt à Prelatis.
- f** *A vicariis denarios.* Iuxta tradita in cap. 2. ne Prelati vices suas.

COMMENTARIUM.

1. **A**N Episcopi, & cæteri iudices ecclesiastici possint pro criminibus penam pecuniariam imponere, dubitant interpretes ob iuris testimonium in hac parte inuicem contraria. Et non posse eam imponere, videtur probari ex præfati textus, & ex cap. pauper 11. quæst. 1. cap. si lapsus, 50. dist. cap. irrefragabili 13. q. 1. de offic. ordin. cap. ut clericorum,

de vita & honest. cleric. Concil. Aorelian. 2. can. 3. Cabilou. sub Carolo Magno, cap. 18. & ex ea ratione, ne ipsi in pœnis interrogandi turpem aliquem questum consecrari videantur: & quia, ut ait O. Isidorus in dist. cap. pauper, cuncti violator agro iustitia, oculisque reus perimere pœnam, quam seipso posse pecunia redimere. Sed contrarium prorsus verum est, videlicet Episcopum, vel alium iudicem ecclesiasticum posse imponere pœnas pecuniarias. Quæ sententia probatur ex cap. dilectus, de offic. ordin. cap. si vos 23. q. 3. cap. cum sit nimis, §. final. cap. postulasti, de iudiciis, cap. ad audientiam, de prescriptis, cap. olim, de iniur. cap. P. & G. de offic. deleg. cap. venerabilibus, §. denique, de sent. excom. cap. in Archiepiscopatu, de reprobis, cap. si animus 16. quæst. 1. probant Laurentius ter. lib. 2. de veteri clerici. cap. 109. pluribus testibus Barboia part. 3. de prescriptis. Episcop. alleg. 107. Diana part. 10. tract. 8. per tot. Solozan. tom. 2. de iure iudiciorum lib. 3. cap. 7. num. 76. Saigado de prescriptis Regia, part. 2. cap. 4. Cevallos tom. 4. quæst. 893. Vaisius alleg. 34. Cabedo decif. 81. Bobadilla lib. 2. poli. cap. 17. num. 199. Nec obstant textus pro contraria sententia adducti; nam procedunt quando iudices ecclesiastici pœnas pecuniarias imponunt ex auaritia, & radice cupiditatis, animo eas imbutandi, ubique applicandi 1 quo casu non licet pœnas pecuniarias imponere. At verò zelo iustitiæ, quia illa magis timetur, pœnam pecuniariam imponunt locis piis applicandam, quam iuxta Concilium Tridentinum sess. 24. de reform. cap. 3. etiam imponere possunt, ut probant Petrus

Gregor. lib. 4. parit. 23. cap. 1. Scotus in hist. Concil. Trident. in sess. de edic. lib. Chopinus de sac. pol. lib. 1. tit. 3. num. 10. Diana de iur. 8. qui prosequitur expositionem Concilij Trident. & explicat quomodo

possit Episcopus applicare dictas penas pecuniarias locis piis. Et pro exactione ipsius mulctæ oon teneri iudicem ecclesiasticum auxilium trachij secularis Innocent. probat Solozanus suprà, n. 81.

CAPVT IV.

Idem in Concilio * Turonen.

Calumnia & audaciam temetè litigantium condemnando in expensis, & alio multiplici remedio sanctio Imperialis compefcit. Quoniam igitur sacris iustitiis consonare dignoscitur, præcipimus, vt de cætero in causis pecuniariis victus victori in expensis condemnetur, nisi sententia pro^a absente feratur.

NOTÆ.

COMMENTARIUM.

A Turonensi. Ita etiam legitur in prima collectioe sub hoc tit. cap. 5. & post Concil. Lateran. par. 3. cap. 2. non tamen reperitur textus hic in ipso Concilio Turonensi, vt iam notauit Ant. August. in præfati. De Concilio Turonensi nonnulla notauit in cap. moigibus 6. de proband.

b Imperiali. Relata in l. propterandum, §. sine autem, Cod. de iudiciis, l. 4. & §. Cod. de fruct. & litium expensis.

c Pecuniariis. Hic testè deducunt Fachinens lib. 1. controu. cap. 42. Balboa in cap. significauerunt 11. num. 29. de except. in causis criminalibus regulariter victum non esse condemnandum in expensis: pro qua sententia facit disertus textus in l. non ignoret, Cod. de fruct. & litium expensis: vbi Imperator agnoscat discretum, quod versetur inter causas ciuiles, vel criminales, his verbis: Vel delata non probaueris, pro calumnia quidem penam tuam legis constitutum; pro pecuniaria verò causa, post sumptus, considerata quantitate postulatum, vel modis itineris euentibus, condemnationem pro estimatione iudicis sustinebit. Nec contrarium probatur ex generalitate, quâ vitur Imperator in l. propterandum, §. sine alterutra, Cod. de iudiciis: nam licet in principio ipsius textus Imperator ageret tam de causis ciuilibus, quàm criminalibus quoad statuendum tempus, intra quod lis finiri debebat, tamen dum ad expensas soluendas descendit, tantum agit de causis ciuilibus. Nec etiam obstat textus in l. 3. Cui accusare, ibi: Non solum extra ordinem estimatione iudicis puniendi sunt, sed etiam sumptus, quos in eam rem, & circa ipsum iur ad litem vocati fecerunt, pendere sequuntur. Nam ibi agit Imperator de accusatore contumace, oon verò de eo, qui victus fuit in iudicio criminali.

d Pro absente. Consonat textus in dist. l. propterandum, §. sine autem, Cod. de iudiciis. Et rationi consonum est hoc: nam iniquum videtur, vt absens & contumax, qui alioquin non audiret oisiliis rebus expensis, & facinoratus, Cod. de iudic. expensis à præsentè repetat. Deinde quia Imperator in dist. l. propterandum, §. sine autem, vult eum in penam contumacie obligatum esse ad expensas, quæ reus præsentè fecit: ergo implicat, & absurdum est dicere, reum præsentem condemnandum esse in expensis ipsi actori absenti. Quare rectè Alexander III. in præsentè à generali obligatione victi soluendi expensas victori, exceptis casum, in quo sententia pro absente lata est.

Quoad penam temetè litigantis non semper enim, idemque ius obseruatum reperitur: olim enim in ipso ingreffo litis, tam actor, quàm reus pecuniam deponebant in xde facta, vt victus, & qui condemnatus euasisset, illâ pecuniâ multaretur, qui verò obtinuit, pecuniam suam recuperaret: quæ pecunia à loco sacro, vbi deponeretur, & quia proptet xatariationem, & sacrorum publicorum multitudinem in rebus diuinijs consumebatur, dicebatur sacramentum. Vatro lib. 4. de lingua Latina, ibi: Qui perbet, & qui inficiabatur, de alijs rebus uterque quinquages aris ad Pontificem deponere; de alijs rebus item certo die legitimo numero affum: qui iudicio cui erat, sacrum sacramentum à sacro auferbat: vili ad orarium redibat. Festus Pompeius, ibi: Sacramentum a significat, quod pena nomine penitur. De qua pecunia agunt Valer. Max. lib. 7. cap. 8. ibi: Aphetia tamen cum fore sacramento contendere noluit, æstimatorumque matris patientiâ quàm iudicio conuoltere sanctius esse duxit. Cicero in oratione pro Milone, ibi: Eam denique, cui nulla lex erat, nullum ius civile, nulli possiderant remissis, qui non calumnia litium, non iniurijs iudicis, ac sacramentis aternas foudas; sed castis, exercitijs, signis inferendis pæbebat. Quem ita exponit Bodeus ad Pandectas in l. 1. ff. de orig. iur. fol. 24. Quod etiam ipsum expendit in lib. de Oratore. Qui enim contendebant, inuicem se pronocbatur sacramento quadragenario, vel quinquagenario, iuxta diuersitatem casuorum, in hanc modum: Si malè petis, quinquaginta assis dare spondes? Et actor ipso debet. Unde interrogabatur: Si malè te defendis, & sine causa litigas, totidem promittis? Et reus itidem respondebatur. Cicero in oratione pro Roscio, & pro Cæcilio: aliusque eleganter Cera pagina apud nostrum Vulgarum, Sapientia cap. 1. in fine. Dicebantur sacramentum, quia pecunia promissa statim apud xdem Saturni deponeretur. Isidorus lib. 5. orig. cap. 24. in fine, Festus verbo Sacramentum. Unde ita, qui vincebat, suos nummos referebat: nummi verò illius qui sinevictus erat, apud ætatem Saturni manebant. Vatro lib. 4. de lingua Latina. Hæc exponitur Iustinianus in princip. Instit. de pena temetè litigantium, vbi ait penâ pecuniariâ olim deteritis fuisse perpetram litigantes: quæ fuit, quæ promittebatur per dictam sponfionem, vel alia maior, si sub maiori contendere volebant: veluti tertie, quintæ, vel decimæ partis litis, §. 1. vbi Theophilus, eod. tit. Hæc autem maior pena non deponeretur in arca Pontificum, quia solis litigantibus

3.

tribus manebat; ideo victor ex sponsa contra victum agebat ad pœnam. Docent Budæus in *annotat. priorib. ad Pandect. pag. mibi 94. Pollent. lib. 5. hifl. fori Rom. cap. 5. Brillon. lib. 5. de formal. pag. 369. Pithecius lib. 1. aduers. cap. 18. Ofsualdus lib. 24. Donel. cap. 3. littera E. & cap. 13. littera D. Deferius Heraldus ad *Arnobium aduers. Gentis lib. 4. pag. 137. Ioan. Fonger. in exposit. verbo Sacramentum. Ex qua obseruatione explicari potest textus in l. 3. §. idem scribit, ff. de pœnal. vbi docemur, oon minus coacti iō iudicio, quàm per stipulationem, videlicet propter sponfiones istas, quæ initio litis vtrò, et utroque interponebantur. Inde nouationem necessariam per litis contestationem contingere docetur in *Labelegre l. 1. Ladium 29. ff. de nouat. & explicat Briffonius lib. 2. de solut. iū. de nouat. Valentia lib. 2. illustr. tract. 2. cap. 9. Vriembach. diff. 40. num. 13. Illustrat Pithecius lib. 1. aduers. cap. 18. Germonius lib. 3. de sacrosanctissimis. cap. final. num. 26. Panciroli lib. 1. var. cap. 39. Renardus lib. 2. var. cap. 18. Valconcellos ad ritum de sacramenti non iur. Cuius. in l. 69. ff. de legat. 2. de quo sacramento aliqui accipiunt textum in l. 1. §. 5. ff. de exarad. in cognit. Postea statutum fuit, vt actor iō initio litis decima ipsius litis calumnie nomine caueret, hoc est decimam partem litis, si viceret, reo præstaturam. Erat constitutio Dioctetiani, quin ex Codice Hermogeniano restituit Cuiacius lib. 7. obserr. cap. 6. quæ eius reprimissio- nis decimæ partis meminit, ibi: *Quippo si per calumnia huc eum facere confidis, remedio reprimissio-****

*nis initio postulat calumnie decime partis eius, quod compesit, tibi condemnare non desiderare potes. Exat etiam vestigium in l. 4. Cod. de fruct. & in ex- pens. & in formula veteri, cap. 29. & apud Francos non aliis litium expensis cognitæ fuisse, quàm per hanc decimam partem litis, probat Bignonius in notis ad *Marculsum, lib. 1. cap. 20. Hæc tamen pœnam obsoletam sustulit Iustinianus in l. ult. §. antiqua, Cod. de iur. iur. propter calum. §. hac autem. Iussit, de pœna temeræ litig. eandemque postea re- doxit non abolito calumnie iurisdictione, in no- uella 112. vt ita temerè litigantes variis afficeren- tur pœnis. Quam legalem sanctionem etiam in casibus ecclesiasticis procedere statuit Alexand. III. in præfenti, ita vt semper victus victori in expen- sis damneat, si temerè, & calumnie causa litigauit, l. pœnerandum, §. & si quid, vbi Cuias. *Cod. indic. l. 2. ff. si mal. ueneris*: vbi Cuiacius. Quando tamen quis dicatur temerè litigare, & plura de expensis in iudicio soluendis congefserunt Cuiacius lib. 12. obs. cap. 1. Hothomanus in dist. 1. pœneran- dum, §. 6. Parladotus lib. 2. rer. quodid. cap. final. §. 18. Cour. præflic. cap. 27. Gamma decis. 65. Tho- masius decis. 67. Donellus lib. 26. comment. cap. 3. vbi plura Ofsualdus littera H. Pichardus in dist. 1. §. hac, Illustr. de pœna temeræ, Faber de error. de- cad. 19. error. 6. Fachineus lib. 1. contron. cap. 40. & lib. 12. cap. 52. Barbosa lib. 2. vno 18. per tot. Faci- nae, in report. indic. cap. 52. Valentia confil. 1321. ad num. 79. & confil. 143. num. 19. Botel. tom. 2. decis. iū. 39. de expens.**

CAPVT V.

Innocentius III. ^a Nidrosiensis Archiepiscopo.

Quod in dubiis: *Et infra*: Quia verò tam sacerdotes, qui gubernant naues ad pugnam, quàm qui personaliter exercent conflictum, & hi, qui alios incitant ab pugnandum, omnes enormiter peccant, de rigore canonico eos credimus depo- nendos.

NOTÆ.

^a *Nidrosiensis.*] Ita etiam legitur iō tertia col- lectione, sub hoc tit. cap. vni. Integram

decretalem dedi, & inscriptionem expofui in cap. quod in dubiis, de renunc. & commentationis huius textus inuenies in cap. priuile. penult. de bo- micid.

CAPVT V.

Idem ^a London. Episcopo.

Tvx discretionis prudentiam. *Et infra*: Ad illud quod à nobis tertio requisisti, qualiter clericis in blatrociniis, vel aliis magnis sceleribus deprehensis puniri de- bent. Respondemus, quod à suis ordinibus degradati erudi debeant in ^a arcibus mo- nasteriis ad pœnitentiam peragendam.

NOTÆ.

^a *Ondrosiensis.*] Ita etiam legitur in tertia col- lectione, sub tit. de vita & beneficare clerici. cap. 3. & in cap. vna, de consanguin. & affin. in ead- dem collect. vbi extat alia pars huius decretalis: sed quia non reperitur inter editas à Sirleto & Boschetto, ideo eius integram restituere non pos- sum.

^b *Lacrosiniis.*] Secus verò si simplex furum

admisserint; nam tunc tantum deponentes, vt post Hostiensem in præfenti, docuit Balboa in cap. cum non ab homine 10. de iudiciis.

^c *Degradati.*] Clerici enim cum pœnitentiæ peragende causâ in monasteria alium detinebantur, prius deponi debebant, antequam huic carceri manciparentur. Cum enim monachorum conuictus laicorum coetus confisteretur, inter eos agere non poterat clericus integro, suo gradu & statu seruato: quare prius per depositionem ad statum

Barum laicalem redigebatur, ut ita poenitentiae collum subderet. Concilium Neocesariae. can. 1. Tolet. 4. can. 44. ibi: *Operari canonicus in tali sceleris proditum a clericatus ordine submovetur, & poenitentia triennio deputari.* Epian. can. 21. *Si presbyter crimen capitale commiserit, ab officio huius deponitur in monasterium retrudatur.* Cabilon. can. 30. *Vi gradu amisso agenda poenitentia gratia in monasterio, &c.* Agathense can. 10. *Ab officio honore deponitur in monasterium retrudatur, & ibi tantummodo quovis vixerit, lasciviam communionem accipiant.* Notant in capitulo 4. de excess. Prelat. Concil. Tolet. 4. can. 43. Subseruit huius observatione ex arcanis laici civilis venosum militie armatae caemplar; quippe cum milites torqueri ob militie dignitatem non valeret, l. 3. §. 2. ff. de re militi. l. militis, Cod. de question. docetur in l. 7. ff. de re militi. quod proditores milites, aut transgoz ex-

anthorati torquentur. Planè quod Modestianus inquit, cum qui ad hostes confugit, & redit, torqueri, ad bestiasque damari, vel ad furcam, quamvis milites nihil eorum patiantur, l. 3. §. 2. ff. de re militi. nisi exanthoracione precedente, ad ordinem paganorum redactus fuisset. Profunde apud Ammian. Marcell. Lampadius Praefectus salu infirmatus, prius quam torqueretur, dignitate prius fuit. Fallaciarum (ait Ammianus Marcell. lib. 15.) nabe discussa, Imperator datus relatione fidei, abrogata potestas Praefecti, Lampadius statui sub quaestione praecipit.

d. *Ab illis monasteriis.* De qua poena detractionis in monasterium egi in cap. 1. de regl.

CAPVT VII.

Idem Abb. & Fratrib. Crypsia Ferrata.

CONstitutus in praesentia nostra. Et infra: Licet autem in instrumento Episcopi Clauitani expressa fuerit certa poena, quam pars contractum non seruans, solueret obseruanti: cum tamen utraque pars venisse contra illum, ex confessione propria conuincatur, cum & pars vestra subtraxerit Episcopo pensionem, & Episcopus procuracionem exegerit ab eadem Ecclesia, sicut & economus proposuit memoratus, veramque partem ab ea reddimus absolutam.

NOTÆ.

1. a *Bhati & fratribus.* Ita etiam legitur in cap. constitutus, de religiosis domibus; ubi extat alia pars huius textus, & ibi praesentem inscriptionem caposui.

COMMENTARIUM.

2. Cvm praesens rubrica generaliter concepiatur de penis, non solum lib ea agitur de penis delictorum, verum & de penis conventionalibus consensu patrum statutis, de quibus in praesenti textu, & in cap. suam, infra. Est autem poena conventionalis, promissio confirmans precedentem obligationem, aut causam, & ad eius implementum reum impellens, sub comminatione praestandi aliquid certum: & talis obligatio tendit ad confirmandam priorem, ut docent Cuiac. in l. si ita 97. Donellus in l. si homo 69. num. 3. ff. de V. O. nec requirit priorem obligationem, sed causam, veluti si dicat stipulator: Si domum non fabricaueris, centum dabis. Quia fabricatio domus tunc non est in obligatione, eam promissa non sit, sed in causa. Vnde promissio liberat domum fabricando, quia est causa debendi; sed peti ipsa fabricatio non potest, l. si parum 24. ff. quando dies legati cedat, l. obligationem 24. §. ita, ff. de V. O. Vnde cognoscitur, penam, de qua in praesenti tex-

tu, adiectam fuisse ad firmandam transactionem inter Episcopum Lauianum, & monasterium initam, de qua in dist. cap. constitutus. Et ita non easse, sed conventioni poena accessit. Etiam sciendum est, penas conventionales quoque enumerari esse solendas, licet nulla culpa possit imputari promissuribus, quia non tantum promiserunt diligentiam, sed praestationem, seu factum, l. si emulititia 9. ff. de nautico fonnore, l. ad diem 77. l. stipulatio 38. §. ut si quis, ff. de V. O. l. qui interit 14. §. sed si quis, ff. de constit. penam, l. sanctorum 26. C. de fideiuss. docent in dist. l. 38. Alciatus num. 31. Cuiacius, Duarenus, Donellus, & Giphanius Sanchez lib. 1. de marim. dist. 26. num. 6. Picardus in §. si quis alium, num. 31. Inquit de inuit. Grotius de iure belli lib. 2. cap. 15. num. 16. Facinus lib. 3. conuena. cap. 10. & si ambo ex contrahentibus poenam promiserint, & factum promissum non adimpleuerint, uterque ad poenam manet obligatus: sed quia pars delicta quoad poenam priuata mutua compensatione tolluntur, l. vivo, §. si solut. marim. probauit in cap. final. de adul. ideo hoc casu poenae compensationi locum est, l. si ambo, ff. de compens. Vnde rectè in praesenti specie Innocentius decreuit, quod cum tam Episcopus, quam monachi promissum non adimpleverint, poenam ea utraque parte commissam esse, & sic neutrum ex eis poenam petere possit.

CAPVT VIII.

Idem Priori S. Fridiani, & Magistro B. Canonico Pisano.

SUPER his, de quibus nos consulere voluistis. Et infra: Clericus autem, qui pro eo, quod variauerat coram vobis, de mandato nostro captus est, & detentus, infamiam non incurrit.

NOTÆ.

NOTÆ.

1. *Ant. Fridiani.*] Præsentem inscriptionem expofuit, & integram decretalem dedimus cap. *super his, de accusat.* ubi exat principalis pars huius decretalis; in præfenti enim tantum

docetur, talem velleam carceri mancipatum pro eranda veritate, non ideo infamiam incurret; quia cum fententia non præcefferit, quâ falsus ipse declaratur, non potest notari infamia, quia infamiam irrogat fententia, non factum. *Emilem, Cod. quibus ex caus. infamia.*

CAPVT IX.

Idem * Spoleto Episcopo.

SvAM ad nos Rectores clericorum sancti Fortunati querimoniam transmiserunt, quod cum tibi essent in XL. libris per quoddam arbitrium condemnati, elictque pœna xxx. librarum adposita, nisi ea soluerent in termino constituto, tandem xxxiii. libris in termino persolutis, occasione septem residuarum per qualdam nostras literas veritate tacita impetratas obtinuisti eos in præfatis xxx. libris tibi per delegatum iudicem condemnari. Quia igitur te non deceat in tantum Pontificalis modestiæ obliuisci, ut inhonestis quæstibus anhelando desideres cum aliena iactura ditari: mandamus quatenus septem librarum solutione contentus, super pœna xxx. librarum memoratos Rectores de cætero non molestes.

NOTÆ.

- * *Spoleto.*] Ita etiam legitur in tertia collectione, *sub hoc tit. in clerici vel monachi*; id est Benedicito, qui ab ipso Innocentio III. creatus fuit Episcopus Spoletanus anno 1198. De Spolet. diocesi egi in cap. 2. de condit. appof.

COMMENTARIUM.

1. Difficilis valde visa est præfens Innocentij decisio utriusque iuris Interpretibus, ex eo, quia certum est, pœnam conventionalem esse solvendam à teo integre non adimplente promissionem, veluti si quis ita stipuletur: Si fundum Seianum non dederis, centum dare spondes? Quo casu ut pœna curretor, necesse est solidum fundum Seianum dare, neque fuisse partem datam solvere, ut pœna in solidum non committatur. *Liberdes 25. §. idem 13. ff. famil. ercisc. l. stipulationem 5. §. vlt. si pro parte 85. §. si ita 6. ff. de V. O. Coballini, de individ. 3. part. ex num. 25. §. 286. Valentia de dividuis, cap. 6. ex num. 15. Chetius lib. 1. interpret. cap. 5. num. 107. Madeta animad. cap. 30. per totum.* Quæ individuata nō provenit ex natura rei in obligationem deducta, quæ reuera diuida est, cum sit fundus: sed quia aliud sine capione creditoris nō possit introduci, *dist. l. stipulationes, §. vlt.* quia verum est fundum datum ovis esse, cum solidum non sit; ideo quamvis si putes heredes vni successerint, unusquisque in solidum non teneatur, sed pro parte hereditaria tantum ad præstationem fundi in stipulationem deduci; tamen ad hoc ut pœna culetur, non sufficit pro portione hereditaria satisficere, immo quocumque cessante in solutione partis committitur pœna integra contra omnes, *l. in executione 85. §. quod si stipulationem, ff. de V. O. Liberes 25. §. idem in re, ff. famil. ercisc. l. si servus 9. §. si plurium, ff. si quis cautionibus.* Pœnalis enim stipulatio facit obligationem dandi individuam, cum nisi integre res, vel quantitas præstetur, conditio stipulationis non exultat, siue in promissore, siue in heredibus eius id contingat; nec enim ex persona hæredum potest conditio stipulationis immutari, *L. 2. §. 1. ff. hoc tit.* Et cum stipulatio pœnalis per conditionem, ut

conditio formam interponatur, & committatur, individuam causam continet, *l. casus fundus 56. ff. de condit. & demonstr.* Facit etiam quod doctus in *dist. l. pro parte, §. item si ita*, ubi propositor casus pignoratitiæ obligationis, siue eius debitor, quod sub pignore debetur: cuius ex natura est, ut pignus non prius liberetur, quam tota pecunia debita sit soluta; unde si vnus hæredum partem debiti solueret pro hereditaria portione, pignus non potest liberari pro parte, non magis quam si debitor ipse partem debiti voluisset solvere; quia nec si volente creditore solvisset, pignus liberasset, nisi tota quantitas soluta, *l. si necessarias 8. §. si vnus 2. l. solutum 11. §. si creditori 4. ff. de pignorat. act. l. hæredes 25. §. idem obstruunt 14. ff. famil. ercisc. l. hereditate 22. ff. de hereditate vel actione, l. qui pignora 19. ff. de pignorat. act. l. vlt. l. vlt. ff. de dist. pign. l. quantum 6. l. si vnus 16. Cod. de iur. iur. hereditarium 65. ff. de emul. l. 1. C. de iur. iur. pignorat. l. 1. §. 2. Cod. si vnus ex pluribus.* Ratio huius principij provenit ex voluntate contrahentium, quia qui promittit pecuniam certo die dare, & nisi dedit, pœnam, totam summam date promittit. Pœnalisque obligatio conditionalis est, vel iuste conditionalis in casu non dationis. Atqui verum est, totam summam datam non esse, quamvis pars detur: ergo nisi in totam principali obligationi satisfactum sit, non eximitur pœna, argumeto ex lege cui fundus 56. ff. de condit. & demonstr. quod procedit quando pœna ut talis consideratur, id est quando est puniio moræ, & negligentiz debitoris: aliquando tamen pœna non in punitionem promittitur, sed propter maiorem cautionem, & faciliorem expeditionem obligationis quo casu pœna succedit loco interressis, & vt illud taxatur, *Gomez lib. 1. var. cap. 10. num. 23. Donnellus lib. 15. comment. cap. 3. cum aliis, Carleuall. 2. tom. de iudic. tit. 3. §. 2. §. 3. num. 26.* Igitur eum in præfenti casu plene satisfactum non fuisse Spoletano Episcopo, recte pœnam sibi promissam à Piebano, & electis petebat. Cui difficultati ut satisficerent Interpretes, varia adduxerunt. Bartolus in *L. 4. §. Cato, ff. de V. O.* agnovit discrimen in hac parte, inest nisi eiote, & canonicum, ita ut iure canonico attentio partialis solutio pro parte eximat à pœna. Alij docuerunt, iure canonico si-

millem pœnz conventionem non valere, quia præsumitur in fraudem furturum appositâ, iurata communem sententiam, quam videntur probare textus in *l. fallatus* 14. §. *idem* Papinianus, *ff. de act. empti*, *l. cum allegat*, *Cod. de usuris*: ac proinde eundem vitare inter canonicos fuit prohibere, similis poena improbat eodem iure, Ita Aleiatus in *dell.* 1.4. §. *Cum*, Piehardus *lib. 5. §. finem*, *num. 224. de off. iudicis*. Sed hæc interpretatio sustineri non potest. Primum quia Innocentius non vitat ex ratione generali prohibitionis, videlicet furturum, sed alia longè diversa. Secundò, quia in vigore iuris illa communis sententia vera non est, videlicet poenam pecuniariam præsumi adiectam in fraudem furturum, vt alij melius probantur expendentes generalitatem legis *si stipulatio* 38. §. *alteri*, *ff. de V. O. l. verum* 26. §. *de preti. heredit.* *l. si cum duo* 26. §. *vti*, *l. Celsus* 28. in *princip. ff. de receptis*: vbi probatur, absoluit & indultum exigi posse poenam adiectam obligationi, etiam non dandi. Nec ibi distinguitur, an sit obligatio quantitas, vel non. Fachinus *lib. 3. contran. cap. 36. vers.* *Secundus casus*, affert in prædicti specie poenam non deberi, quia poena non committitur quando quis deficit in minimo, *l. Scia*, *ff. de minor.* Alij conijciti à Diabola in *presenti*, communiter docent, Pontificem in hoc casu poenam triginta librarum moderasse pro parte septem librarum, quæ superaret, quia nimis excedens erat, eundem maiorem partem debiti iam Episcopus exegisset. Pro quo sententia illud facit, nam eundem in præfenti casu poena promissa esset habita ratione interestis, videlicet pro eo, quod interest Episcopo quadraginta libris solutus esse, & solutus iam essent 33. libris, poena pro rata tantum respectu septem committi debebat, arguimento legis *si seruus* 9. §. 1. *ff. si quis casum*. Verùm hoc procedit in factis diuiduis, nam eundem diuiduum factum ideo diuisionem admittit, non quia vnicui factum diuidi posset, sed quia plura facta censentur, *l. si procurator* 18. §. *rem ratam haberi*, perinde est ne sit plures faciendi obligationes contraxerint, & vnicuique pro parte stipulatio poenalis esset adiecta illius solummodo quantitatis, quæ pro vna parte ad singulos spectare poterat: at verò in præfenti agitur de obligatione dandi, quæ nunquam dici potest impleta, vbi minima portio deficit, vt docent Piehardus *de diuiduis*, & *induiduis*, *cap. 6. per tot.* Valentia *lib. 2. in diffiniem. præf. 4. cap. 6.* Chelius interpret. *iuris cap. 50.* quia eundem vnica quantitas sit, quæ debetur, & consequenter vnica ad sit obligatio, *l. si re* 29. *l. quod dicitur* 86. §. *de V. O.* non potest nisi in solidum committi poena. Quare si sententia censens, & alia relatis à Sarmiento *lib. 3. secl. cap. 6. num. 4.* Gutierrez *lib. 2. canon. cap. 20.* dicendum est circa præfentem casum duo hæsitari posse. Primum, an in casu, de quo in præfenti, poena rirè, & rectè appositâ fuerit, exigique posset à clericis cessantibus in solentione. Secundum, supposito quod legitime sit adiecta, & licet exigatur, an si debitorum partem debiti solutus, adhuc tota poena exigi possit, an verò solum pro parte debiti non soluti? Et credo Innocentium decreuisse tantam poenam obligationem esse inhonestam, præcipue attenta Episcopali modestia; nam eundem Episcopus debeat esse magister totius perfectionis, ex D. Thoma 2. 2. *quest. 184. art. 2.* & pater pauperum

ab omni profus suscipi debeat esse alienus, *cap. gloria* 12. *quest. 2.* debet abstinere ab iis, quæ licet aliis sint licite, in eo tamen aliquam habent speciem indecentie, ob tanti status perfectionem, *cap. Episcopus* 14. *quest. 1.* Vnde licet poena adiecta obligationi dandi quantitatem, tanquam in diuiduis in totum committatur, et si pars inter terminum soluta sit, nihilominus hoc respectu Episcopi non est honestum, quippe quod arguit cupiditatem lucrandi cum aliena iactura, & sic exponenda sunt verba quibus Pontifex suæ decisionis rationem reddit, inter quæ nullum est, quod concludat inhonestum ex parte Episcopi in huiusmodi poenæ exactione, sed solum omnis tendunt ad ostendendum indecentiam, id est repugnantiam honestatis in personam eiusdem, vt patet ibi: *Non decet*; & ibi: *Pauificalis modestia*; & ibi: *Inhonestia*; consuetudo scilicet honestate & eminentis status Episcopalis. Genuensis *præf. quest. 254. & 688.* Quare præfentem casum, in quo specialiter de Episcopo agitur, cui poena promissa fuit, non debemus ad alios casus protrahere.

Pro complemento huius commentarij examinanda est illa satis vexata questio, vtum attento iure canonico, & moribus Christianis, poena conuentionalis exigi posset citius interesse creditoris in quo affirmatiuum sententiam tenebant Baldus, Castrensis, & Salicetus in *l. cum allegat*, *Code de usur.* Petrus Gregor. *lib. 3. par. tit. 1. cap. 5.* Syluester in *summa*, verbo *usura* 1. num. 28. Couar. *de matrim. 2. par. cap. 6. §. 8. num. 14.* Nauarrus in *manuali*, *cap. 17. num. 215.* Murga *tom. 2. diff. 37. moral. diff. 31. 4. dub. 21. & 22.* Barbosa in *presenti*, *ex num. 3.* Molina *de iustitia tom. 1. tract. 2. diff. 97. per tot.* Sanchez *lib. 1. de matrim. diff. 37.* Valdes in *serib. Theolog. verbo poena*, *num. 8.* & verbo *usura* 4. num. 1. Contrariam sententiam, videlicet poenam non posse exigi, nisi quatenus appareat creditoris impletum non fuisse primam iorationem, vt præli receptam, & supremorum Tribunalium decisionibus approbatam, tam de iure, quam de æquitate, defendunt Gutierrez *de iurament. 1. par. cap. 36. num. 10.* & *cap. 20.* Conineb. *lib. 2. num. 4.* & 5. Auendaño in *diffiniem. verbo Poena conuentionalis*, Piehardus *6. vol. instit. de V. O. num. 5.* Sarmiento *lib. 3. secl. cap. 6. num. 10.* Faber in *suo Codice*, *tit. de V. O. diff. 9. & 14.* García de expensis, *cap. 9. num. 63.* Rodriguez *de annui reddit. lib. 3. quest. 5. ex num. 10.* Carleual. *de iudic. 2. tom. tit. 3. diff. 3. num. 22.* Leonhardus *de usur. quest. 38. ex num. 8.* Quæ sententia facillè componuntur, quis prius procedit, vt ipsius auctores loquuntur, quando non animo iniusti loci poena opponitur, sed in poenam perfidæ, aut tarditatis euitandæ causâ, absque villo profus animo vfusum. Sed quia in re prædicta difficile est præferenti contrahentium animos, meritis obtinere, nullam poenam vltra interesse exigi posse. Turpe enim lucrum reputatur, quod hoc solo prætextu exigitur. Quid & Papinianus ipse agnouit, quæuis parum fermiter, de poena conuentionali agens in *l. si venditor* 6. §. 1. *ff. de seruus export.* vt notant Cuicelius *lib. 27. qq. Papin. ibi.* & Antonius Faber in *eius rationali*: & ideo in hoc casu creditor probare debet huius interesse, ad hoc, vt prima conuentionalis exigi possit, vt docent Leonhardus & Carleual. *tit. præf. proxime.*

CAPVT X.

* Idem *Vicentino Episcopo.*

AD aures Apostolatus nostri peruenit, quod cum quidam parochiani tui ausu diabolico bonæ memoriæ I. quondam Vicentin. Episcopum prædecessorem tuum nequiter peremissent, feuda, & beneficia, quæ à Vicentina Ecclesia obinebant, ipsi per sententiam fuerunt cum multa deliberatione sublata. Quia igitur maiori etiam sunt animaduersione plectendi, nos bonæ memoriæ Cœlestini prædecessoris nostri vestigiis in hærentes, tam tibi, quam successoribus tuis artus inhiibemus, ne alicui ex prædictis malefactoribus, aut eorum hæredibus prædicta beneficia restituantur vterius, seu de nouo alia quælibet conferantur. Si quis autem (quod non credimus) contra hoc aliquid attentauerit, ipsum auctoritate Apostolica decerpimus officij, beneficiique sui dignitate carere. Quod si aliquæ literæ aliquando super hoc apparuerint impetratæ, quæ totius facti non contineant veritatem, illas penitus vacuamus. Volumus etiam ut præfens pagina subscripta in Ecclesiæ Vicentin. custodia deponatur, & Episcopo Vicentin. qui pro tempore fuerit, annis singulis ostendatur. Nulli ergo, &c. Datum Laterani 12. Kal. April.

NOTÆ.

- I. ^a *Idem.* In hac sexta collectione, & in quarta, sub hoc tit. cap. 1. tantum legitur *Idem*: sed inscriptionem & litteram restituo ex epistolis editis à Sierleo, fol. 27. Huius etiam homicidij Vicentini Episcopi mentio extat in cap. incertissimo, de iudiciis, ubi aliqua de Vicentina Ecclesia notatur, & probatur, homicidam Episcopi priuari beneficiis, & feudis obtentis ab eadem Ec-

clesia: quod & docuerunt Petrus Gregorius de beneficiis cap. 16. num. 8. Gonzalez ad regul. 8. Cancelar. glossa 15. num. 24. Alii etiam penam affliguntur ex Clementina 1. de penis, & aliis noscitur constitutionibus relatis per Gibellinum in synopsi censurar. verbo *Cardinalis*. Græuam penitentiam pro nece Contradi Episcopi Herbipolensis Innocentius indixit anno 1204. quam refert Trithemius in chron. anno 1202.

CAPVT XI.

* Idem.

Dilectus filius Iacobus electus sancti Petri ad Montes, ad Ap. Sed. accedens gravem querelam contra dil. fil. G. Decan. Motin. & I. Cath. Archid. exposuit, asserens eos in causa sua, quæ fuit illis commissæ, perperam processisse. Cùmque dil. fil. I. clericus cum literis eorundem continentibus causæ processum ad nostram præsentiam accessisset, & idem Iacobus niteretur ipsum processum multipliciter improbare, relationem ipsorum in quibusdam asserens esse falsam: Nos quia præfatus clericus non habebat nisi ad contradicendum, vel impetrandum mandatum, ad maiorem cautelam processum ipsum, nec confirmandum duximus, nec cassandum. Et infra: Quia verò sæpe contingit, quod contra falsam asserionem iniqui iudicis innocens litigator veram non potest negationem probare, cum negantis factum per rerum naturam nulla sit directæ probatio: ne falsitas veritati præiudicet, aut iniquitas præualeat æquitati, necessarium videtur, & æquum, ut cùm quis legitimam exceptionem proponit, illam probare paratus, vel ad declinandum iudicium, vel ad intentionem alterius elidendam, si forsan verbo, vel facto ab illa recesserit, vel eam non probauerit inera terminum competentem à iudice præfigendum, modestus iudex non ante procedat, quàm super hoc instrumentorum, vel testium cautelam adhibeat opportunam, per quam si necesse fuerit, possit de veritate constare: vel si contra relationem, seu processum ipsius fuerit suborta contentio, huiusmodi probationibus possit ipsius iudicis assertio roborari, quatenus huiusmodi adhibito moderamine sit honestis, & discretis deferatur iudiciis, quod per improbos, & iniquos innocentium iustitia non lædatur: & ne iudicialis euascat auctoritas, cùm de litigatoris improbitate constiterit aduersus asserionem iudicis temerè prorumpentis, iuxta superioris arbitrium digna poterit animaduersione puniri.

7. a [Dem.] Ita tantum legitur in sexta collectione, & in quarta *sub tit. de probantibus, cap. 2.* Sed litteram integram, & inscriptionem restituo ex epistolis ipsius Pontificis *lib. 1. regestr. 13. epist. 196.* Monasterium Vallis Clare est Ordinis Cisterciensis, in diocesi Lugdunensi, constructum à Comite de Rouilly anno 1134. ut referunt Claudius Robertus in *sua Gallia*, Marius *que tom. 1. anal. Cisterc. anno 1134. cap. 8. num. 3.* Frater Sarmach. *tom. 4. Gallia Christi. fol. 894.* De diocesi Lugdunensi nonnulla adduxi in *cap. 25. de rescript.*
2. b [Sancti Petri ad Montes.] Duplex est Abbatia huius nominis in Galia, utraque Ordinis sancti Augustini, una in diocesi Claromontensi, lia in Episcopatu Catalaunensi, à Rogerio Episcopo

anno 1096. fundata, ut referunt Frater Sarmach. *tom. 4. Gallia, fol. 750.* & eius absque dubio electus erat Abbas Iacobus, de quo in hac epistola agitur.

c [Nulla sit probatio.] Iuxta tradita in *cap. quoniam 11. de probat.*

d [Instrumentum, vel testium.] Ob eandem etiam rationem in canone 38. Concilij Laterani. Innocentius III. statuit, ut in quolibet iudicio iudex semper adhibeat publicam personam, vel duos testes idoneos, qui fideliter vniuersa iudicij acta conferbant, ut refertur in *cap. quoniam 11. de probat. vbi notui.*

e [Præsumptio.] Quod grane delictum est, ut probat Narbona in *l. 20. tit. 1. lib. 4. recopil. gloss. 18.* & iudex potest non solum panite offendentes personam propriam, verum & familiam suam, ut probauit in *cap. 1. de offic. deleg.*

CAPVT XII.

Ex Concilio^a generali.

IN quibusdam prouinciis, & Ecclesiarum patroni, & ^b aduocati, & vicedomini se in tantam insolentiam erexerunt, & audaciam, quod non solum cum vacantibus Ecclesiis debet de Pastoribus idoneis provideri, difficultates ingerunt, & malitias verum etiam de possessionibus, & aliis bonis ecclesiasticis pro sua voluntate præsumunt; & quod horrendum est dicere, in necem Prælatorum prorumpere non formidant. Cum igitur quod ad defensionis subsidium est inuentum, ad depressionis dispendium non debeat retorqueri, prohibemus expressè, ne patroni, vel aduocati, seu vicedomini super præmissis de cætero plus vsurpent, quàm reperitur in iure expressum: & si contrà præsumperint, per seueritatem canonicam districtissimè compescantur. Sacri nihilominus Concilij approbatione statuimus, quod si patroni, vel aduocati, aut feudatarii, seu vicedomini, seu alij beneficiati alicuius Ecclesiæ Rectorem, vel clericum alium ipsius Ecclesiæ per se, vel per alios occidere, vel mutilare ausu nefando præsumperint, patroni ius patronatus, aduocati aduocatum, feudatarii feudum, vicedomini vicedominatum, vel beneficiati beneficium prorsus e amittant: & ne minùs vindictæ, quàm excessus memoria prorogetur, non solum de præmissis nihil proueniat ad hæredes, sed etiam vsque ad quartam generationem posteritates talium in clericorum collegium nullatenus admittantur, nec in regulatis domibus alicuius Prælationis assequantur honorem, nisi cum eis fuerit dispensatum.

NOTÆ.

a [Enuelli.] Ita etiam legitur in quarta collectione, *sub hoc tit. cap. 2.* & in ipso Concilio Laterani. *cap. 45.* de quo Concilio nonnulla adduxi in *cap. 1. de summa Trinit.*

b [Patroni, & aduocati.] De quibus; & eorum

abuso circa Ecclesias sibi commendatas, egi in *cap. 13. de inuenerem.* vbi commentarium huius prioris patris inuenies.

c [Amittant.] Illustrant hanc partem Gibellinus de *consuetudinibus in synopsi, verbo Homicidium*, Barbossa de *iure ecclesiastico lib. 3. cap. 14.* Lambertinus de *inuerentem. art. 3. & 7.* Gutierrez *lib. 2. c. anemicorum. 7.*

CAPVT XIII.

Honorius III. *Praposto, Archidiaz. & H. de Parisiis, Canonico*
^a *Suesion.*

GRAuem dilectorum filiorum Capituli ^b Laudunensis recepit quæstionem, Quod eum nobilis vir ^c Comes Registenis pro multis iniuriis, quas irrogare eisdem, per iudices à Sede Apostolica delegatos excommunicationis vinculo fuerit innodatus, idem iam per duos annos & amplius in excommunicatione persistens iuri

iuri parère pertinaciter renuit, clauis Ecclesiæ in suæ salutis dispendium, & plurimorum scandalum contemnendo. Licet igitur huiusmodi pertinacia non careat scrupulo hæreticæ ^a prauitatis, volentes tamen ^a nobilitati parcere Comitibus supradicti, si forsitan ad cor reuertens à suo respiscat errore : d. v. mandamus, quatenus si Comes prædictus à nobis diligenter commonitus infra quindecim dies post commonitionem nostram non paruerit plenè iuri, vos excommunicationis sententiam latam in eum, sicut rationabiliter est prolata, facientes vsque ad dignam satisfactionem inuolabiliter obseruari, & totam terram ipsius, ac loca, in quibus idem Comes fuerit commoratus, supponentes ecclesiastico interdicto, Ecclesias, in quibus aliquid iuris habere dignoscitur ^b ab eius debito, sublato cuiuslibet contradictionis, & appellationis obstaculo ^c absoluentes, fideles ipsius, quamdiu in excommunicatione perstiterit, ab eiusdem fidelitate denunciatis penitus ^d absolutos. Quod si forsitan nec sic tribuat ei vexatio intellectum, poterit non inmerito formidare, ne sua pertinacia obstinata eum in hæresis impingat infamiam, quam eum voluerit, furè de facili non poterit euitare.

NOTÆ.

1. ^a *Sessio.* Ita etiam legitur in quinta collectione, *sub hoc tit. cap. 1.* ex qua restituo integram litterarum textum. De Snessoniensi diocesi nonnulla adduci in *cap. 2. de libelli oblat.*
2. ^b *London.* Ita legendum est, non *Lunden.* *Id.* vulgo legitur : de qua diocesi egi in *cap. 25. de rescriptis.*
3. ^c *Comes Registri.* In sexta collectione legitur *Registri*, sed male, eodem Comitatus Regidentis fuisse olim in Gallia, ut probat Cironius in *præfati*, qui notat Honorium hic agere de Hugone III. qui successit patri suo Manassi anno 1197. & decessit anno 1229.
4. ^d *Hæretica prauitas.* Quis per infosdescen-
tiam in excommunicatione longè per annum reddidit excommunicatus suspectus de hæresi, ut probant in *cap. excommunicatus, §. quia, de hæresi.*
- ^e *Nobilitati.* Facit textus in *l. memo, Cod. de summa Trinit.* quod procedit in penis copotalibus, *cap. 1. de purgat. vulgar.* latè probat Titae-
quellus de *penis temperand. causa 31. num. 25.* nam alibi nobiles eum exemplo facili inferiores ad

peccandum moueant, grauius sunt puniendi, præcipue in casibus fidei, ut probant Simoacus de *Catholico, tit. 46. num. 65.* Eymericus ad *Petm, 2. part. dircti, in præfati.*

^f *Absolutio.* Et ita rectè probat Lotharius de *re beneficiaria lib. 3. quæst. 33.* per infosdescen-
tiam in excommunicatione priuati clerici-
cum beneficio iam obtento, dum talis infosdescen-
tia duret per triennium, tota textum in *cap. cum bene 8. de acate & qualis ubi expofui doctrinam hanc.*

^g *Absolutio.* Quia non solum ob hæresim priuatus quis fidelitate à vassallis sibi promissa, iuxta tradita in *cap. final. de beneficiis*; verum & ob suspicionem hæresis, ut de Philippo I. Rege Gallie, qui ab Urbano II. in Claiomontensi Concilio, & à Ioanne & Bengidino Cardinalibus in Pictuensi Synodo ob hætam Bertradam in vxoem excommunicatus fuit, & à fidelitate subditorum priuatus. Qua de causa Ivo Carnotensis Episcopus nnoquam ei parère voluit, ut constat ex *epist. 27. 35. & 211.* & notant Cironius in *præfati*, Magnus & Illust. D. Ramos pro *Epist. Lufit. præf. 5. §. 2. num. 80.*



TITVLVS XXXVIII.

De pœnitentiis, & remissionibus.

CAPVT I.

Alexander² Papa.

Manifesta peccata non sunt occultâ correctione purganda.

NOTÆ.

- ^a *Alexander.* Ita legitur in sexta compilatione, in prima autem collectione, *sub hoc tit. cap. 1.* legitur, *Celestius Papa*; sed verba huius textus in nulla epistola ipsorum Pontificum reperiuor; extant tamen apud D. Gregorium Magnum *lib. 15. epistolæ, epist. 132.* ubi dum in-
D. D. Gouzel, in *Decretal. Tom. V.*

struit Felicem Episcopum Messanensem super variis articulis ad discipulos ecclesiasticos spectantibus, ait : *Manifesta quoque peccata non sunt occultâ correctione purganda; sed prius sunt arguendi, qui palam nocent, et dum aperta ob-
urgatione sanantur, hi qui se imitando deliquerant, corriguntur. Dicit enim tuus corripitur, plurimi emendantur : & melius est, et pro
A 22 a multorum*

multorum felices tunc condemnatur, quàm per unius licentiam multi perirentur. Nec mirum, si inter homines hac ratio confiderit, cum inter inuenta hoc fieri per sepe cognovimus, ut ea que febribus, aut impetiginem habere videntur, separantur à sanis, ne illorum morbo cetera damnetur, & pereant. Salus est ergo, ut mali aperit corrigatur, quàm pro illis boni pereant. Quæ verba etiam ex D. Isidoro citantur in Concilio Aquifigian. sub Ludovico Imperatore, cap. 26.

COMMENTARIUM.

2.
CONCILIUM
TRIDENTINUM
DE REFORMATIONE
GENERALI

EX hoc textu sequens communiter deducitur assertio: Pro peccatis manifestis publica est imponenda poenitentia. Probant eam textus in cap. si peccaverit 1. quæst. 1. cap. finali 15. quæst. 5. cap. si quis postulat 23. quæst. 4. cap. ego 42. de consecr. dist. 2. Trident. sess. 24. de reformatione cap. 8. Concilium Rhemense 2. can. 31. Concilium Ingolhem. Si quis infra regnum rapinas fecerit, si publicè fuerit actum, publicam agat poenitentiam iuxta canonum sanctorum sanctiones: si verò occultè, sacerdotum consilio ex hoc agat poenitentiam. Atclat. 2. can. 26. Vi qui publico crimine committi sunt rei, publicè inducantur. Cathag. can. 46. apud Basilium Rabanus lib. 2. de instit. cleric. cap. 30. Quorum peccata sunt in publico, in publico debet esse poenitentia. Illustrant vitam congoles à Bisbopis Joannes à Capistram in repet. ad hunc statum, P. Gregor. lib. 1. part. 10. cap. 3. Coarct. lib. 2. par. cap. 10. Bellarm. tom. 2. controu. lib. 1. de poenit. cap. 21. & 22. Cellotius lib. 2. de hierarch. cap. 18. Ioan: Datis in Decret. ad 22. quæst. 6. D. Ioannes de Otalora Pizles Cancell. Granat. de irregul. ex poenitentia publica, excusis 1. num. 6.

3.
IMPRON-
DITA AB-
SISTIO

Sed pro dubitandi ratione in præsentem assertionem hæc insurgit. Peccatorum correctio non ex eorum publicis, seu occultis perpetratione æstimaanda est, sed potius ex eorum gravitate; nam improbatæ Stoicorum severitas, qui existimabant omnia peccata paria esse, ut testet Cyprianus in epist. ad Antonium, ibi: Alia est Philosophorum, & Stoicorum ratio, qui dicunt omnia peccata paria esse, & idem gravem non facile scilicet sperare; inter Christianos, & Philosophos plerumque distat, & Ecclesia semper alia peccata leviora, alia graviora, alia exitiosa pronuntiavit. Tertullianus lib. de pudicitia, cap. 19. ibi: Sunt & vitiorum istius, ut graviora, & exitiosa, que veniam non capiunt, homicidium, idololatria, fraus, negatio, blasphemia, virgine & maritus, & fornicatio, & si qua alia. Unde pro eorum gravitate modò graviores, modò leviores poenitentiam iungi legimus in Poenitentia Romano. Igitur delicti atrocitas, non verò notitias attendi debet ad poenitentiam iniungendam. Quare D. Basilus apud Simeonem Magistrum emendone 8. de poenitentia, hortatur poenitentem, ut quo etiam admittit, palam innotescere profiteatur. Tunc, inquit, vult misereri iudex, si utique te misericordiam facere participem, modo te post peccatum humilem inveniam, dolere contritum, sceleratam mentem deplorantem, que etiam admittit palam innotescere professentem, obnixi a fratribus poenitentem, ut hoc peranda tibi medicina totum simul laborem, imminuat. Et Gennadius Massiliensis de dogmatibus ecclesiasticis cap. 33. Nam quoniam post Baptismum mortalia crimina commissa premum, hinc prius publicè poenitentia satisfacere. Et ante illos Ori-

genes humil. 2. Proba, inquit, prius medicum, cui debeat causam languoris exponere, quò sita infirmari cum infirmitate, ferre cum fletu, & qui condolenti, & compariendi venerit discipulum, ita deum, si quid ille dixerit, facias, & sequaris; si intellexerit, & praverit talem esse languorem, qui in conventu totius Ecclesie debet expiari, & curari, ex quo fortasse & ceteri edificari poterunt, & in ipso facile sanari, multa hæc quidam deliberatione, & suis prius medicis illius consilio præcedendum est. Et generaliter Hieronimus ait in Capitulo loco supra citato, ut qui peccatum criminaliter perpetravit, poenitentiam agat publicam. Et canones Nicæni, Antyciani, Laodice. & D. Basilij, Gregorij Nysseni, & Penitentialia Bedæ & Rabani Mauri de poenitentia publicis spectant ad varia crimina, non libitè ratione quod sunt publica. Et contrariis peccata venialia, etiam palam admittit, nunquam per publicam poenitentiam fuisse expiata, probant Illegotius dist. 1. de poenitent. cap. 8. sess. 4. & sequenti, D. Ioannes Otalora dicto excusis 1. numero. 7. Ergo non rectè in præfatis absolute docetur, peccata manifestis publicè poenitentia esse corrigenda.

Qua dubitandi ratione non obstante vera est præiens assertio, pro cuius expositione sciendum est, quod eum in ipsum genus humanum peccata peccandi profuissent libido, inde omnis ætas ab adolescentia in malum prona est; adauit enim nature vitium hominem prolapso coaditio: nam peccatum, quod commune locum effugere vetustioribus illis sæculis coarctabat, publicis oculis se subicere non timebat. Hinc multiplex delictorum generis, quod à sæculo movebatur, si natura non perficeretur, disciplina persuaderet, eosque non compelleret. Eam hinc adhibuit vindictis peccata Ecclesia medelam, ut publica publicè corripere animadvertens; & que vniuersam commovent ciuitatem, publica, & solennis poenitentia cohereret; ut ita ille, qui propriam conscientiam talem non habebat, humanam siletem notam perimerecetur; obtemperandum ergo, poenitentiam duplicem esse, aliam publicam, aliam priuatam. Publica iterum diuiditur in publicam solennem, & non solennem; priuata item subdividitur, ut alia sit sacramentum, alia virtus tantum. Docuerunt Cellotius lib. 3. de hierarch. cap. 18. Ronfell. lib. 1. dist. 1. Pius. iurisdic. cap. 6. num. 15. ad quas species reducende sunt alie tradite per Turmericum in cap. si quis post remissionem, 50. c. 1. Quoniam in tract. de poenitentia, in prin. ip. & de consecr. dist. 42. sess. 2. num. 3. Martinon de poenit. in prin. Poenitentia publica tantum erat, que publicè fiebat, simplicibusque consistit caeremoniis; veluti peregrinatione cum baculo, & pera vestimentis, aut cilicij aperta declaratione, seu beate mutata, cap. quoniam, 50. dist. cap. secundum 2. de poenitentia dist. 6. ibi: Omnibus diebus vita sua peregrinando pergas. Et l. 20. tit. 3. part. 1. Publica est Romana iura maniera de poenitentia, que se facit tunc etiam. Etsi et quando mandant à aliquo, que tunc in memoria nostra consilio publicè, etiam, & escriptorio, & etiam vestimenta, etiam deinde, & que tunc ferre cebit in el brago, & in el cuello, & que an de desmudo, & in palis menter. Publica hæc poenitentia imponebatur pro peccatis publicis, etiam non ea exitiosa essent, iuxta præsentem

4.
DE TRI-
Plici
Poeni-
tentia.

presentem textum, & alios suprà adductos: de qua pœnitentia agit Caballus in *not. Concil. fol. 91. ad Concil. Nicen.* Publica verò, & solennis pœnitentia fuerit erat, ideoque tantum imponebatur pro criminibus exitiosis, & quæ uniuersum populum in scandalum adduxissent, velut pro homicidio, pro apostasia, & similibus, *cap. placuit 68. vers.* Cum verò, *cap. final. 50. dist. cap. adiuuare 8. cap. laterem 13. 33. quæst. 2. cap. falsa 6. de pœnit. dist. 5.* nec enim sufficiens erat horum criminum reis priuata pœnitentia, sed opus erat huiusmodi delicta iudicio Ecclesiæ publicè sublece, vt notauit Simancas de *calicibus, tit. 46. m. 1.* & per hanc pœnitentiam solennem reum humiliari; quomobrem humillima pœnitentia vocatur hæc à D. Augustino relato in *cap. quatuor, 62. 50. dist. cap. quatuor 22. cap. in tantum 33. de pœnit. dist. 5.* Seueritas huius pœnitentia, & amaritudo consistebat in exercitiis actoris pœnitentia, & transactu graduam, quorum amarissimos gressus tectant Patres Concilij Agathen. in *cap. in capite, 50. dist.* Alфонsus nolet in *l. 8. tit. 3. part. 1.* con enim solum vellem propriam, & amara ponebant, cliciumque induebant, *capite attouso, cap. pœnientes, 63. ibi:* Si autem comu non ampuauerint, aut vestimentum non mutauerint, abiciantur: *50. dist.* Concilium Tolentanum 6. *can. 7.* vtrum in diocesis locis, modò extra Ecclesiam, modò prope Ecclesiam, inter audientes, hie manes, ciuechuenos consistant; quorum graduam, tempus, exercitia, & ritus huius pœnitentia, pro expositione textus in *dist. cap. in capite, 50. dist.* retulerunt Filescus in *opus. de Quadragesima, cap. 12.* Lantemec. *lib. 2. de veteri clerico, cap. 93.* Basilus in *opus. de imp. di. matrim. cap. 65.* Loysius in *can. 6. Concil. Tolent. 6.* Soucherus in *not. ad Canon. epist. 228.* Acuña in *dist. cap. in capite, Bellarm. lib. 1. de pœnit. cap. 22.* Ioannes Bascus de *statu. humanum, 2. part. tit. de pœnitent. stat.* Albalpines *lib. 2. obs. cap. 1. cum sequent.* Dionysius Petaulus in *notis ad Symfium, in diatrib. de pœnit.* Georgius Ambiao, ad *Tertul. in trall. de pudicitia, Corporalis in notis ad Concilium Arianum, in addit. ad summum, fol. 94.* Hugo Menardus in *notis ad librum sacram. D. Gregorij fol. 213. & 231.* Gibalinus de *clausura regul. dist. 2. cap. 3. per tot.* Claronius in *parat. ad hunc tit. & lib. 1. obseru. cap. 16.* Menardus ad *concord. regul. cap. 33. §. 1.* Darius in *trall. de pœnit. & ad 26. quæst. 6.* D. Ioan. de Otalora de *pœnit. & ad in cap. 1. de bigam. Christ. Lupus in can. 11. Concil. Nicen.* Pœnitentia vt virtus, est actus plangendi prauiteria mala, cum proposito iterum non committendi, de qua in *cap. reuoc. 39. de pœnit. dist. 1. & in cap. 1. cap. pœnitentiam 6. de pœnit. dist. 3.* D. Thomas 3. *part. quæstion. 84. art. 10. ad 4.* Pœnitentia vt sacramentum est, cò m signis externis ritè recteque peccata sacerdoti consentiunt, accedente eius absolutione, de qua agunt omnes Moralium scribentes de hoc sacramento, Gazus ad *Cassianum collat. 10. cap. 5.* Petrus Gregor. in *cap. conuenerunt, cap. 12. num. 2.* Filescus in *opusculo de confessione amiculari, & nos infra in cap. quod quidam, & in cap. omnia.*

Deinde sciendum est, inter pœnitentiam solennem publicam, & priuam nonnullas versari differentias. Prima, quod solennis tantum ob grauiora peccata, quæ uniuersum populum turbant, imponebatur, *cap. placuit, 68. 50. D.D. Gomaz. in Decretal. Tom. V.*

dist. publica in iungebatur pro peccatis gtoioribus publicè admissis, ex quibus orta erat scandalum notum fuerat, cap. de pœnitentiis 17. de pœnit. dist. 7. priuata verò tantum pro peccatis cl. m. admissis, quia qui occultè labitur, secrete debet confessione purgari, *cap. quem pœnitent 28. de pœnitent. dist. 1. ibi:* Et si peccatum occultum est, sufficit referre in notitiam sacerdotis. Et *cap. si peccaueris 19. 2. quæst. 1. ibi:* Quia enim secretum fuit quando in te peccasti, secretum quare tuum corrigis quod in te peccasti, nam si solum nesci quia peccasti in te, & omni tui coram omnibus argueris, non es corripitur, sed proditor. Et *cap. si quis 31. 23. quæst. 4. cap. final. 15. quæst. 5.* et si peccatum graue sit, *cap. quæstionem 7. ibi:* Non tamen publica (nisi in publicum id veniat) pœnitentia debet imponi. Faciunt textus in *cap. christiana 23. 32. quæstionem 3. ibi:* Et non habere peccata latencia vendicam. Et B. Benedictus *cap. 46. sua regula, m. 1.* iubet apud patrem tantum spirituales occultum peccatum propagare, illis verbis: Si anime verò peccati causa laeni furui, tantum Abbati, aut spiritibus senioribus patefacias, qui sciam curare, & sua, & aliena vincta, & non degerere, aut publicare. Alia differentia in eo consistit, quod pœnitentiam solennem tantum Episcopus iniungere poterat, vt probauit in *can. eadem, de priuileg. publicam verò etiam simplex sacerdos imponere poterat, cap. ministerium 1. de offic. Archiepiscopi. l. 20. tit. 3. part. 1.* Et esset pœnitentia pœnitentia da qualiter eligi *Alissa cantano.* Alia differentia etiam versatur in eo, quod pœnitentia solennis semel tantum in vita petagi poterat, *cap. si quis post remissionem 61. 50. dist. cap. quatuor 22. cap. in tantum 33. de pœnit. dist. 3.* de qua pœnitentia exaudiendi sunt Cyrillus Alexandrinus *lib. 15. in Leuitic. ibi:* In grauioribus criminibus semel pœnitentia conceditur locus. D. Ambrosius celatus in *cap. reperiuntur 2. de pœnitentia dist. 3. ibi:* Quia sunt enim baptisma, in & unica pœnitentia. Ad publicam verò scriptus quis admittetur, & etiam ad priuam. Cuius differentia rationem assignat Sorus in *4. dist. 19. quæst. 2. art. 3. ad 3.* Etiam alia differentia dabatur in eo, quod sacerdotibus solennis pœnitentia iniungi non poterat, publica verò imponi valebat, vt probauit in *cap. 1. de bigamis non ordin.* Tandem & illud differentiam inter solennem, & publicam pœnitentiam agnoscebat, quod publica omnibus laicis indistincte imponi poterat; solennis verò coniugatis, nisi ex consensu coniugum, imponi non valebat, *cap. final. 33. quæst. 4. Concil. Antelien. 3. can. 19.* latè illustant in canonibus Concilij liber.

His suppositis apparet ratio pœnitentia textus, ideo enim peccata publica publicè debent pœnitentia reparari, vt ex exemplo deterreantur, qui publicè peccata non emendebant: quare D. Augustinus in *enchorid. ad Laurentium, cap. 8.* de his peccatis publicis agens, ait: *Si quis adeo, vt non solum occultanda, verum etiam predicanda, & diffamanda peccata videntur.* Qui est pœnitentia finis peccatum, videlicet vt ipse sit emendatior, & alij exemplo deterreantur, *l. si quis forte 6. §. si quis, l. si pœna 20. l. capitalium 26. §. pœna, ff. de pœna, l. sanctio 41. ff. cod. cap. frater, in fine 17. quæst. 4. cap. prodest 23. quæstione 3.* Faciunt Diuus Augustinus *beni. tit. cap. 3.* *Vi si peccatum eius non solum in gravi eius malo, sed etiam in tanto scandalo est alienum, atque hoc expedit reuocari*

TIAM IGI
LENDAM
DE ASSA

6.
TRADE
TRA 23-
TIO RE
CLOSNDI

5.
DE DIS
SEREN
TIS IN
TER FOR
MIS

Ecclesia videtur Antistiti, in matris mulierum, vel etiam cuius plebis agere penitentiam non valet. D. Chrysostomus *actus de peccata, & confes.* illustrat Rutherfordus *ad Saluianum* fol. 52. Recte ergo in presenti statuitur, manifesta peccata publicè esse correctione emendanda, vt ita populus, qui ob peccatum feudatum patiebat, videat illud impunitum non manere; & in eo, in quo scandalum passus fuit, exemplum penitentiae agnoscatur.

Nec obstat dobicandi ratio super adducta; nam licet atrocitas, seu grauitas delicti attendatur quoad poenam iniungendam; tamen quoad modum penitentiae publicae, seu priuatae tantum inspicitur scandalum, seu notorietas peccati. Vnde primis Ecclesiae seculis non tantum grauiora peccata perpetrantes, verum & minora, si publica erant, penitentiam publicam peragebant. D. Cyprianus *epist.* 47. ibi: *In minoribus delictis, quae non in Deum committuntur, penitentia agitur infra tempus, & exomologesi sit infestata vita eius qui agit penitentiam, cum nec ad communionem vena quis possit, nisi prius illi ab Episcopo, & Clero motus fuerit impositus.* Quam locum late expendit Pamelius *ad Tertullianum lib. de patient.* cap. 9. num. 5. Nec obstat, quod de peccatis venialibus dicebatur; nam ea semper Ecclesiae, vt leuia facile excusabatur, & ita ob ea penitentiam publicam nunquam iudicabat, vt probat Bagotius *ubi supra*.

Ex super traditis nonnulli expouunt textum in *can. 4. Concil. Nicaenae*, in illis verbis: *Si quis mulierem concupiscens prosequutus cum ea dormire, & desiderium eius non penituerit ad essendum, manifestum est, quod per gratiam fuerit liberatus.* Qui textus valde difficultis est, nam si menti pollutus fuit, quomodo gratia Dei liberatus dicitur? Cui difficultati solutionem affert Gibalinus *de clausura re-*

gul. disquisit. 2. cap. 4. §. 3. num. 11. ex super traditis, videlicet, quod licet in hoc casu mortalis culpa adhaeret, tamen quia ea fuit interior, & non publica, penitentia publica non impositur, immò & diuersa poena per sacros canones iudicatur illi, qui peccatum mente concepit; ac illi, qui opere sequuto consummavit. D. Basilus *ad Amphilochem. can. 70.* ibi: *Diocanus, qui pollutus in labris, & se ea resque peccasse confessus est, a ministris prohibebitur: ut autem sit sacramentum cum diaconi particeps, dignus habebitur.* Si quis autem amplius peccasse deprehensus fuerit, in quocunque sit gradu, deponatur. In cuius scholiis Balsamon explicat, quid sit Diaconum in labris pollui. Itaque iuxta Gibalinum ubi supra, textus ille accipendus est de poena minori imponenda illi, qui opere sequuto peccatum non consummavit. Obseruanda tamen sunt verba illa, *gratia Dei liberatus*, quae innunt peccatore illum postius beneficio Dei, quam animi delatione fuisse a peccato seruatum; quod & prophetae scriptores de feto, & vi Numinum usurparunt. Sic *Plato lib. 9. de legibus*, quo loco poenam eius, qui cum hominem vellet occidere, vulneravit tantum, mitigandam hac ratione censet, quod daemonis beneficio potius habenda sit gratia, qui & illum mortis periculo, & hunc immoensitatis supplicij grauitate liberarit. Sic *Consultus in Luitel* §. 2. *ff. ad leg. lal. de adul.* aiit: *Licet interempto adultero mulier superuixerit, post tam graui vulnera quae ei pater inflixerat, magis facta quam voluntate eius seruata est.* Facit Quinilianus *de declam.* 181. ubi agens de filio, qui occurrenti in solitudine patri, stricto gladio coegit cum abdicationem remittere; si dicerem, ait, obstitit tibi vis inimici, & tanta quadam illius solitudinis religio. Obseruatur Fortnerius *lib. 6. rer. antiq.* cap. 9. *Luitel*, in *dist. cap. 4. Concil. Nicaenae*.

CAPVT II.

Ex Concilio Maguntiensis.

Qui presbyterum occidit, xij. annorum penitentia secundum canones imponatur: aut si negauerit, si liber est, cum lxij. iuret: si autem seruus, super duodecim vomeres feruientes se expurget: conuictus noxam vltimam tempus vltz militiz * cingulo careat, & absque spe coniugij maneat.

NOTÆ.

1. *a* *Aguntensis.*] Ita etiam legitur in prima collectione, sub tit. de purgatione vulgari, cap. 2. & ex Synodo Moguntina sub Rabano Archiepiscopo, *can. 24.* cuius textus hic à Butcharto *lib. 6. Decret.* cap. 7. Carnotensis *part. 10. c. 136.* & sub nomine Palae refertur ictus hic à Gratiano in *cap. qui presbyterum* 24. 17. *quest. 4.* referturque in Penitentiali Romano, cap. 1.
2. *b* *Duodecim vomeres.*] Hæc verba omisit Raymundus, quia iudicium hoc purgationis vulgaris iam prohibitum erat variis Ecclesiarum canonicis, vt probatur in *cap. final de purg. vulgari*.
3. *c* *Militia cingula.*] Licet vt arma non deferant dum penitentiam solennem facimus, vt etiam cauetur in Concilio Vormaticensi, *can. 20.* ibi: *Si feudatarii voluntarii occiderint, carnem non mandarent, vinum non bibas, castius diebus vita sua ieiunet quousque usque ad vesperam, exceptis diebus festis, &*

Dominicis; arma non ferat, equum non ascendas, Ecclesiam per quinquaginta non ingrediari. Carnotensis *epist.* 160. *Militi*, qui nomen hoc vultu ademerat, arma detracta, & annorum XIV. penitentia quædã. Idem cauetur *lib. 3. Capitul.* cap. 22. & *lib. 6. cap. 90.* & 97. & ita quia constitutibus in penitentia solenni prohibita erat arma deferre, atque virorem ducere, ideo in presenti occidenti presbyterum iuberi cingulum militiz deponere, & à coniugio se abstinere, docuerunt communiter repetentes hic, & Sanchez *de matrim. lib. 7. disp. 6.* Gibalinus *de censur. in synopsi verbo Homicidium.* Carleual. *de iudiciis tam. ci. 1. disp. 2. §. 4. q. 6.* Sed verius credo, maiorem poenam contineri in illis verbis, *usque ad vltimum vita tempus milita cingula careat*, cum non tantum prohibebatur militiz cingulum occidenti presbyterum per duodecim annos, per quos penitentiam petagere debebat, sed in perpetuum. Eiusdem ergo per illa verba, *militia cingula*, non armorum delationem prohiberi, sed postius munera

munera Reipublicæ, seu sæcularia obire; militare enim sæpe pro negotio, curationeque Reipublicæ vſtatur, & militiæ ciuiculam deponere, ſeu ſuſcipere in ſacris canonibus ſignificat munera, officiaque Reipublicæ ſeu ſæcularia deſerere, ſeu exerce- re, Concilium Nicœnum *can. 12. ibi* Quicumque vocati per gratiam primum quidem erant, ſidemque ſuam oſtenderunt, & ciuiculam militiæ depoſuerunt, poſtea vero ut comes ad ſuum viciuſque reuerſi ſunt, ita ut aliqui & pecuniam darent, & beneficiis militum recepterent. Concil. Martiſcoo. & Syriacus in *epiſt.*

ad Tharſanenſes *Episcopos, can. 5. ibi*: Aut negotiis Reipublicæ oporuerunt militare. Illuſtrat A. bal. la- neus in noui ad *dil. 2. an. 12. Synodi Nicœn.* Itaque in præſenti canone Patres præſbyterum occidenti prohibent in perpetuum militiæ ciuiculæ nomen dare: item prohibetur illi coniugem recipere; ſed hoc impedimentum matrimonij iam conſuetudine abrogatum eſt, ut docuerunt Sánchez *lib. 7. de matrim. diſput. 17. num. 8.* Konich de *Sacramenti diſput. 30. num. 15.* Layman de *imped. matrim. cap. 15.*

CAPVT III.

Alexand. III. ² Mediolan. Archiepiſcopo.

Significauit nobis vir P. quod F. dicto Imperatori, cùm olim rediret ab vrbe, caſtrum Verrucæ negauit, &c. Vnde contingit, quod quatuor caſtris deſtructis pluſquam duo milia domorum deſtructa fuerint, & multi homines interfecti: alia etiam mala ibidem commiſſa dicuntur, quæ per ſingula eſſet longum enarrare. Quoniam igitur præſatus P. Deo exinde reconciliari deſiderat, & pœnitentiam dignam ſuſcipere, ſ. v. per A. f. m. quæ eidem ſuper hoc conſilium deus, & ipſi pœnitentiam, ſecundum quod viſum fuerit, miſericorditer imponatis, attendentes, quod pro libertate ſua, & pro Eccleſiæ deuotione fecit: quia in hiſtalem deberis diſcretionem adhibere, ut alij, & ipſe idem pro aſſeruitate pœnitentiæ à ſeruitio Eccleſiæ nullatenus retardentur, nec aliquod ſalutis periculum merito debeat formidare.

NOTÆ.

- I. ² *Mediolanenſi.*] Itactum legitur in prima collectione, *ſub hoc tit. cap. 1.* ſed additur in hæc ſexta collectione, & *ſuffraganeis*, ſed abſque exemplari. De Mediolanenſi Eccleſia nonnulla notati in *cap. 17. de reſcriptis.* Caſus huius textus ita conſiguit. Fridericus I. ex gente Suecia, ſub Hadriano IV. inauguratus, dum Roma in Galliam Ciſalpinam proficiſcitur, in itinere vidit caſtrum Verrucæ, vel ut alij malunt, Verrucæ, quod parer Epſcopo Vercellenſi; & cùm Impe-

rator ſibi caſtrum illud poſtulaſſet, Petrus nobilis eius cuſtos, ac gubernator illud negauit: quare Imperator ob indignationem quatuor caſtra cum duobus millibus domorum multis occiſis deleuit: cui cladi cauſam ſe diſſe credens prædictus Nobilis, facti veniam petiit ab Alexandro III. qui iubet Archiepiſcopo Mediolanenſi, quatenus illi pœnitentiam cum miſericordiâ imponat; quia cùm in deſeſionem Eccleſiæ, & pro deuotione Eccleſiæ Romanæ id ſeciſſet, magna miſeratione dignus erat: quam hiſtoriam refert Pancirola *lib. 2. an. cap. 293.*

CAPVT IV.

Idem ² Cant. Archiepiſcopo.

Qvod autem conſuluſti, vitrum remiſſiones, quæ ſunt in dedicationibus Eccleſiarum, aur conferentibus ad ædificationem pontium, aliis proſint, quàm iis, qui remiſſentibus ſubſunt: hoc volumus tuam fraternitatem tenere, quòd cùm à non ſuo iudice ligari nullus valeat, vel abſolui, remiſſiones prædictas prodeſſe illis tantummodo arbitramur, quibus ut prodeſſent, proprij iudicis ſpecialiter indulſerunt: & in hoc eam intelligas quæſtionem ſolutam, in qua quæritur, vitrum is, qui excommuni- cato communicat, à ſuo Epſcopo, vel excommunicati abſolutionis gratiam debeat implorare.

NOTÆ.

2. ² *Antuarieſi.*] Ita etiam legitur in prima collectione, *ſub hoc tit. cap. 3.* ubi additur *pari capituli in eminenti*; vnde cognoscitur, in præ-

ſenti reſerui partem textus in *cap. 102 in eminenti 36. de appellat.* in eadem prima collectione. De Can- tuarieſi Metropoli nonnulla adduxi in *cap. 1. de reſcriptis.* Textum hunc exponemus infra in *cap. penult.*

CAPVT V.

Alexand. III. ^a *Belvacensi Episcopo.*

Quod quidam, sicut asseris, ad confessionem de criminibus conueniunt, & quamuis confiteri velint, se tamen asserunt non posse abstinere: consultationi tuæ taliter respondemus, quod eorum confessionem accipere debes, & eis de criminibus consilium exhibere. Et licet non sit vera penitentia, admitenda tamen est eorum confessio, & crebris, & salutaribus monitis penitentia est indicenda.

NOTÆ.

1. ^a *Belvacensi.*] Ita etiam legitur in secunda collectione, *sub hoc tit. cap. 1.* De Ecclesia Belvacensi nonnulla adduxi in *cap. 13. de foro competenti.*

COMMENTARIUM.

2. **D**ifficilis admodum est presens Alexandri decisio, dum in ea docetur, admitendam esse penitentiam eius, qui asserit se à peccato, quod confiteatur, abstinere non posse, etiamsi vera talis penitentia non sit, cum certum omnino sit, ad penitentiam vi sacramentum de fidei etiam dolorem de peccatis admissis, & propositum amplius non peccandi. Vnde in *cap. 116. de panis. dist. 3.* iuxta verum eius licetiam, quam restituit Lozysa in *notis ad D. Iheronim. lib. 1. serm. 111. 13.* ita legitur: *Ille penitentiam digni agit, qui se peccata mala deploret, et futura iterum non committat, nam qui plangit peccatum, & iterum committit peccatum, est quasi si quis laetum lacrem crudum, quem quando magis abluerit, tanto amplius lacum faciet.* Vnde perdifficile est, quomodo admitenda sit penitentia illius, qui fatetur abstinere se ab eo peccato, quod confiteatur, non posse. Pro huius textus expositione variis adduxerunt Theologi Moralium. Gabriel in *4. dist. 17. quest. 1. art. 3.* Balduinus ibidem, *quest. 7.* Syluester verbo *Confesser* 4. *quest. 2. ad finem*, Victoria de *confessione*, num. 163. Carolus in *relectione de penitentia*, part. 5. in fine, Medina de *confessione sine penitentia cordis facta*, Fragoles in *part. de regim. lib. 2. dist. 4.* asserunt, admitti huiusmodi penitentiam, seu confessionem, quia licet

fructuosa non sit quoad gratiam, tamen sufficiens est, ut talis penitentia adimpleat præceptum Ecclesie annuæ confessionis, & ut excusetur à pena impositionis in *cap. 2. de iur.* Verum hæc interpretatio nullatenus nequit, cum presens textus sit Alexandri III. & textus in *dist. 3. cap. 116. missis*, Concilij Laterani celebrati sub Innocentio III. quare affirmari non potest, Alexandrum in præsentis presens esse de obligatione annali confitendi peccata. Ioannes Sanchez in *select. dist. 10. num. 6.* asserit penitentem absolendum esse dum proponat se amplius non peccaturum, etiamsi desistere non possit occasione peccandi: quem transcripsit Barbosa in *presenti*. Sed his omnibus omittis dicendum est cum Iulio Lauoro de *labulis 2. part. cap. 1. 4. num. 76.* Vivaldo in *Candelabro, lib. 6. de astutia*, num. 5. in presenti textu agi de illis, qui cum accedunt ad penitentiam, asserunt ob suam fragilitatem credere se abstinere non posse à peccato; sperare tamen se à Deo impetraturos auxilium, ut liberati valeant; qui licet non habeant perfectum dolorem cum proposito amplius non peccandi ex se, & ideo vera penitentia non videatur; tamen quia ex Dei misericordia confidunt se amplius in peccatum non fore lapsuros, ideo penitentia illis iniungenda est; non enim desistatur in penitente, ut existimet se amplius non peccaturum, sed sufficit propositum non peccandi: nam hoc voluntatis est, illud intellectus. Nisi dicamus, in presenti agi non de penitentia sacramentali, sed de salubri, indicata ab promittendum Dei gratiam; ut ita qui peccata confiteatur, possit se ab occasione peccandi abstinere: vnde ait Alexander in presenti, salubribus consiliis, & monitis esse similes penitentes adiuvandos.

CAPVT VI.

Idem ^a *Triburiensi Archiepiscopo.*

Licet tam veteris, quam noui Testamenti pagina. Et infra: Si autem illi, qui aliquos dies in pane, & aqua ex iniuncta sibi penitentia tenentur petagere, panem quo vescantur, non habent, leguminibus, aut piscibus, aut aliis cibariis reficiantur, si necessitas id exposcat. Discretionem tamen adhibita, quod his non ad delicias, sed ad sustentationem utantur.

NOTÆ.

1. ^a *Triburiensi.*] Ita etiam legitur in secunda collectione, *sub tit. de feris, cap. licet*, sed veram inscriptionem dedi in eodem textu in hac sexta collectione.

2. ^b *Cibaria.*] Huius textus mentio fit in cano-

nibus penitentialibus, *con. auferenda*. ibi: *Insuper notandum est, quod si penitentia in pane, & aqua imponatur non habenti panem, potest loco panis leguminibus, & pisciculis vesti, & etiam aliis, si necessitas illud requirat. Extra de panis. & remiss.* Est autem textus hic intelligendus de cibis ieiunantibus non vetitis, sciendum enim est, pro tempore ipsius

sius ieiunij, hoc est abstinencie, nullum cibum
suumere licere: immo p̃m̃ia florentis Ecclesiæ
temporibus ieiunantes non solum à cibo, & potu
abstinuisse, verum & virginem saluam seruasse
ecceit Tertul. *de ieiunio* cap. 6. ibi: *ipsa natura*
enunciatio, quales nos ante peccatum, & potum in vir-
gine adhibe saluam exhibere consuevit. De poti cele-
bri est locus Prudentij in *alio S. Fructuosi Marty-*
ris: cum enim ei populum frates offerrent, quo
martyr eccretaretur, immo & muniretur, recula-
uit dicens:

Ieiunamus, inquit, recusæ potum:

Nondum noma diem resoluisti bona.

Et cum soluebat ieiunium hosti monâ, pane, aut
oleribus ieiunantes vitabantur. D. Clemens lib. 3.
contra Apostasie, cap. 17. ibi: *Ita ieiunandum, ut*
solum poti vitentur, & oleribus: vini autem potu, &
carnibus abstineant. Quod de agitantibus refert D.
Hieronymus ad *Eustochium*, ibi: *De cibis, & poti*
taceo, cum etiam languentes monachi aqua frigida
utantur. Illustrant Ambian. ad *Tertul.* de ieiunio,
cap. 10. obs. 4. Filescas in *apostole de Quadragesi-*
ma, cap. 18. Illud auxero hodie xpus omnes ob-
seruatur, ut ieiunantes vesici non possint carnibus,
& omnibus iis, quæ ab ea originem trahunt,
cap. de *esse carnis, de confect. diss. 3.* cap. denique 4.
diss. can. 56. Synodi 6. ibi: *Similiter accipimus, &*
in Armeniarum regionem, & in aliis locis, in Sabbatis,
& Dominicis sancta Quadragesima quædam sua, &
causam comedere. Visum est ergo, ut omnis Dei Ec-
clesia, quæ est in uniuersa terrarum orbe, vicinam or-
dinem sequens, ieiunium perficiat, & abstineat, sicut
omni multabitis, & ab omni, & castro, quæ sunt fructus,
& factus uinum, a quibus abstinentur: si autem
hoc non seruauerint, si sunt quidem clerici, deponan-
tur: si autem laici, segregentur. Tolet. 8. can. 9.
Gerundense can. 3. Mediolan. sub Carolo. *pit. de ieiun.*
Trident. sess. 15. cap. 12. Illustrant Bellarminus de
ieiun. cap. 4. Lellius de *inst. lib. 4. cap. 2. dubit. 5.* Vi-
tiog. de *ieiun.* lib. 3. cap. 5. Esquodex in 4. *præcept.*

Ecd. lib. 1. cap. 2. Trullench in bullas lib. 1. g. 4. Ec-
clesia enim cibis ita delicatis, & lauta abstinent
iussit, ut carnis lesuam sterneretur. Concil. Senon.
sub Clement. V. l. *art. 7.* non quis similes cibos
condemnet, ut Saturnus, & alij Hæretici volu-
erunt, quos sequuti fuerant Manichæi, Priscillani-
stæ, Marcionistæ, & alij condemnati in *can. 50.*
Apst. Concil. Ancy. can. 13. Bracharen. 1. *can. 13.*
& 31. Gangres. can. 1. Tolet. 1. in *esset. fidelit*
notatur Turrianus *pro apst. Pontificum* cap. 6.
Batonius anno 57. num. 188. Scutrinus Binus in
eccl. Gangr. Saurus ad Sidonem lib. 4. apst. 9.

Hinc exprocedus venit iuxta in *can. 50. Synodi*

Lacoe, telatus in cap. non oportet 8. de confect. diss. 3.
io illis verbis: *Non oportet in Quadragesima quin-*
ta feria xlvma hebdomada ieiunium dissolui, & totam
Quadragesimam soluere: sed per totos hos dies iei-
unare, & esset abstinentia conuenientibus, idest ar-
dioribus, uti. Vel ut io Coecilus legitur: *Oportet*
totam Quadragesimam ieiunare xerophagiæ vitæ,
Supponendam enim est, Græco tantum siccio ci-
bo, idest pane, & leguminibus siccis, seu coctis
pomis, aut oleribus crodis, ieiunantes uti, ut
probat Basilianus in *can. 69. Apst. & in can. 14.*
Concil. Ancy. quod gnos cibi Xerophagiis appella-
bant. Cassianus lib. 4. *collat. 21.* idest facili cibos,
ut explicat Filescas de *Quadrages. cap. 8.* Im-
mo & in Ecclesiâ Latina ieiunantes etiam siccio
cibos suos fuisse, refert Tertul. de *ieiunio* cap. 9. ibi:
Insuper autem xerophagium nouitatem, aut tan-
tiatatem. Et cap. 1. ibi: *Ieiunantes cibum ab omni car-*
ne, & omni ieiunentia, & vinidioribus quibusqueque
pomis, ut quid consuetas vel edamus, vel potemus. Con-
stat ex vasis autoritatibus congestis à Burchardo
lib. 17. 19. & 20. *Decreti. Caroten. si part. 13. c. 198.*
Vnde etiam Patres in dicto canone 50. iuxta mo-
rem regionis Orientis, & sanctitatem illorum
temporum seruauerunt, ieiunantes xerophagiis, idest
cibis aridioribus uti posse,

3.
EXPO-
SITIO
TYE CO-
PTE CO-
OPORTET
DE CON-
SERVATO
DISE.

CAPVT VII.

Clemens III.

QVæritum est à nobis, verum sacerdotibus Græcis, quibus legimus^b matrimonio
licet uti,^c pœnitentia publica sit imponenda, si eam sibi postulent pœn filijs
oppressis iniungi. Huic igitur consultationi taliter respondemus, quod si ipsi pro-
curantibus, vel studiosè negligentibus, filij in lectis repetitur oppressi, ab officio
alcari debeant perpetuò abstinere; & grauior, quam laici, non tamen publica,
nisi id in publicum venerit, pœnitentia debet imponi: qui tamen non solum à sacro-
rum ordinum executione cessabunt, verum etiam si sine infra ipsos, ad eus minimè af-
sumantur. Verum etiam si ex incuria ipsorum mortui inueniantur in cunis, & illud
fuerit occultum, pœnitentia eis pœn arbitrij Pœnitentiarij imponatur, & in terrorem
aliorum ad tempus abstineant à celebratone Missarum.

NOTÆ.

^a **Clemens III.** Ita legitur io hac sexta colle-
ctione, in secunda auctum legitur, *Alexan-*
der III. Sed verius credo iuxta esse Clemens
III. etsi oullibi exprimitur, cui referat ipse
Pontifex.

^b **Matrimonio.** Iuxta tradita in cap. cum omni,
de clericis *conuig.*

^c **Pœnitentia publica.** Licet enim clericis non
possit solennis pœnitentia iniungi, ut probauit

cap. 1. de *bigam. non ordin.* tamen pœnitentia pub-
blica illis iniungi valet, dummodo prius depo-
nuntur, ut ita ad statum licitalem reddati, vel in
monasterium detrudi, vel pœnitentia mancipari
possint. Concil. Tolet. 4. can. 46. ibi: *Si quis cle-*
ricus in demolendis sepulchris furis deprehensus, quia
facinus hoc pro sacrilegio legibus publicis vinctum
oportet canonibus in tali scelere praedicta clericum or-
dinem suum mitteri, & pœnitentia criminis deputari.
Quem illustrat Suarez à Mendoc. lib. 2. ad leg.
Aquil. cap. 2. sect. 6. num. 22. & lib. 5. capitular. Co-
rolj

relis, cap. 2. Ibi: *Falsus verò presbyterus, vel adulterus, vel fornicator, diaconus, & clericus de peccatis Ecclesiarum abstulimus, & degradamus, & ad penitentiam cogimus.* Probat, & illustrant Hostiensis in *summa huius tituli, num. 55.* Landimæter, lib. 2. de veteri clerico, cap. 93. Maiolus lib. 3. de irregul. cap. 2. num. 6. Cironius ad hunc tit. Mendozia lib. 3. Concil. lib. 1. cap. 76. Nec contrarium probatur in cap. final. 30. dist. cap. final. 80. dist. cap. 1. num. 50. dist. cap. si quis sacerdos 30. quest. 1. cap.

sacerdos 2. de penis, dist. 6. vbi docetur, sacerdotes non debere publice penitere, sicut laici; nam publica penitentia, de qua in illis iustibz agitur, accipitur pro solenni, non verò pro publica, vt post alios docuit D. Ioannes Otalora de irregul. ex penis publicis, exceptis 4. num. 8.

d. *Oppressi.* Quo casu penitentibus penitentiam imponitur in Concil. Toler. 3. can. 17. Vvict-mac, can. 35. Ilterdensi can. 2. De tribut. cuius verba tetuli in cap. 3. de his, qui sibi socii.

CAPVT VIII.

Idem² *Liuron. Episcopo, & eis, qui cum ipso sunt, fratribus.*

DEus, qui Ecclesiam suam. Et infra: Ceterum cum penitentia non tam secundum quantitatem excessus, quam peccatoris contritionem, & discreti, sacerdotis sit arbitrium moderanda, pensata qualitate peccatorum super fornicatione, adulterio, homicidio, & aliis criminibus, consideratis circumspectis omnibus, & praesertim nouitate Liuroioe. Ecclesiae, competerem penitentiam delinquentibus imponatis, pro salute eorum videritis expedire. Apostoli autem vestigiis inherentes, diceatis, vt praedicimus: Lac dedi vobis potum, non escam; paulatim eos instruat in fide, confessionis formam, & Orationem Dominicam, & Symbolom ipsius sollicitè edocentes. Ioterim tamen corporis & sanguinis Domini sacramentum⁴ renatis foute baptismatis, consuecis⁵ festiuitatibus, & io mortis articulo tribuatis.

NOTÆ.

1. **L** *Interditi.* Ita etiam legunt in vertia collectione, sub hoc tit. cap. 1. & in cap. Deus, de vita & honestate clerici. vbi extat prior pars huius titulus, vt iam notauit.

2. **Circumstantia.** Consonant textus in cap. considerat, de penis, dist. 5. cap. omnis, hoc tit. Concil. Trullan. can. 102. Trident. sess. 14. cap. 5. Vvict-mac. sub Hadriano II. can. 25. Et licet circumstantias aliter accipiant Rhetores, eas enumerantes quasi sedes, & causas, quibus argumenta deproponant; aliter tamen eas accipiunt Consulti, qui eas considerant ad dignoscendum ex illis malitiam, aut bonitatem humanorum actuum, *Lam. folia 16.* & per tot. ff. de penis, extat in cap. aut folia 19. de penis, dist. 1. notant Decianus lib. 5. tract. crimin. cap. 34. num. 4. & Theologi cum D. Thomas in 4. dist. 16. & in 1. 2. quest. 7. vbi Vazquez 1. tom. dist. 3. cap. 1. num. 3. docet ex circumstantiis humanorum actuum malitiam, aut bonitatem argeri, vel dimitti: nam circumstantia est actus humanus, qui illum circumstans, quasi extrinsecus contingens extra substantiam actus. Sayrus in clari Regia lib. 2. cap. 3. m. 1. ac per consequens peccati circumstantia erit quoddam accidens ipsius peccati, non autem substantia illius simpliciter considerata. Et quamuis aliquando coenire possit, vt circumstantia in casu augere malitiam actionis, vt hæc non esset mala, nisi propter circumstantiam, qualis est duplicatus usus, sed aliquando moderare, in die leignij, vel acceptus ad fortitudo hominem occidendum, *Fagundes ad 2. Eccles. præcep. lib. 1. cap. 1. num. 1.* aliquando tamen etiam efficere potest circumstantia, vt mutetur species peccati. Trident. sess. 14. cap. 5. quo casu non mutatur essentialiter species peccati; non enim circumstantia mutat physicam substantiam actus in genere naturæ, sed accidentaliter in genere moris. Vazquez ubi supra, num. 1. Layman tom. 1. tract. 2. cap. 8. num. 2. Atsuo in 1. 2.

quest. 18. art. 3. quæ humanorum actuum circumstantia, ex quibus argeri, minuere potest peccatum, vel illi noua species addi adproveniant, & considerari solent, aut respectu ipsius actionis, aut respectu agentis principalis, aut ratione loci, aut ratione instrumenti, hoc est quibus auxiliis quis fecerit, aut ratione cause finalis, id est cur fecerit, aut denique ratione temporis, vt satis colligitur ex cap. accidit 23. quest. 8. quas omnes comprehendunt Theologi Moralitæ sequenti versu.

Quæ, quid, vbi, quibus auxiliis, cur, quando, quando.

Quas dictiones sigillatim explicant Theologi in 4. dist. 16. & 17. & Moralitæ de penitentia scribentes.

c. *Orationem Dominicam.* Vnde olim estechumenis feri 1. hebdomadæ sanctæ oratio Dominica illis exponebatur, vt ipsi tam discerent, & recitarent in Sabbato Pasche. Fortunatus lib. 1. de eccles. offi. 2. cap. 8. ibi: *Eadem die percipiunt Orationem Dominicam, & Symbolum ad reddendum in Sabbato sancto Pasche.* V. Augustinus simil. 42. ibi: *Ad octo autem dies ab hodierno die reddidit offi. hanc orationem, quam hodie accepisti.* Albin. Flaccus lib. 1. de diuin. officiis, cap. de Sabbato sancto Pasche, adiciens hoc à sancto Gregorio institutum fuisse, ait: *Post hæc ponit manus super, caput eorum, & dicit orationem ad catechumenam faciendam: hic inuoca sanctum Gregorium reddentem Symbolon, aut Orationem Dominicam, aut paruos pro ipsi.* Illustrat Vvictcomes lib. 3. de ritibus Baptismi, lib. 3. cap. 16.

d. *Romani.* Olim etiam baptizati, tam adulti, quam infantes, statim post baptismum Eucharistiam accipiebant. D. Clemens lib. 1. constit. Apost. epist. 3. ibi: *Baptizati autem vniuersique in aquis perennis nominis trinus brauudinis super se inuocato, perueniunt primum alio per orationem sanctificatio, et ita demum per hoc consecratus possit percipere de sanctis.* Vbi per sanctum intelligi Eucharistiam, probat

probat Vicecomes lib. 5. de ritibus Baptismi, cap. 34. & expressè D. Dionysius de ecclesiâ hierarch. cap. de baptismo, ibi: Ducunt ad hierarchiam: ut cum virum conseruat, quod maximè diuini officii, insigni, Eucharistiæ vim maximam habet perficienda, sanctitatem participem esse pronunciat. Severus Alexandrinus de baptismo, ibi: Eleuant baptizatos ad altare, eisque dant iuxta ritum, Eucharistiam, & sortis coronam eis sacerdotibus. Hugo Victorinus lib. 2. de sacram. cap. 20. ibi: Exinde datur baptizato ve-

ritu candida; ad ultimam datur eremum ardens: omnibus in nouis bonis in terra maris Ecclesiæ in hærit, promittitur, consummatur, & vniuersis Ecclesiæ aggregatur. Illustrant Vicecomes d. cap. 24. cum duob. sequentibus, Bedonius in Lode Dominica, C. de speltar, & Festiuitatibus. Videlicet in ritibus festiuitatibus Paschaliibus, & festis 5. Cap. Dominiol, cap. si non frequenter, cap. in corona, de consuet. dist. 2. Concil. Aquilensis, can. 22. Illustrat Mendoza lib. 1. Concil. librer. cap. 6. vbi etiam id notatur.

CAPVT IX.

Idem E. tit. sancti Laurent. in Lucina presbytero * Card. Ap. Sed. legato.

Officij: Et infra: Significasti nobis præterea, quandam mulierem in pœnitentia fuisse confessam, quod timens, ne viri possessio deuolueretur ad alios, inducenda cuiusdam consilio veneticæ mulieris, quarundam herbarum quotidie succum potabat, & sic eius uenter intumuit, & inde grauidam se ostendens, tandem sibi partum supposuit alienum; timensque maritum, non vult illud facinus ipsi detegere, qui prolem eredit sine dubitatione qualibet esse suam. Quoniam igitur per nostras postulas literas edoceri, verum ei hæc fraude durante sit pœnitentia iniungenda? inquisitioni tuæ taliter respondemus, quod sicut mulieri, quæ ignorante marito de adulterio prolem suscepit, quamuis id viro suo timeat confiteri, non est pœnitentia deneganda; ita neque illi debet pœnitentia denegari, maximè si per alios, intelligas alienos, ad quos timeat possessionem viri deuolui, sed competens satisfactio per discretum sacerdotem ei debet iniungi.

NOTE.

a Cardinali. Ita etiam legitur in cap. 2. hoc tit. in 3. collect. & in cap. offi. 9. de elect. cap. officij, de restitut. vbi etiam alie partes huius decretalis, vbi iam notauimus.

1. b Alienus. Vt alienus pro alio in l. 3. de rei vindic. & alius pro alieno in l. summi 7. ff. ad leg. Jul. marit. ex D. Aquilio, & Plauto illustrat Cuiacius lib. 22. Digest. l. 1. in l. 5. ff. de noui oper. nunc.

COMMENTARIUM.

2. Cuius nemo teneatur se prodere cum viræ, aut castitatis iactura, & detrimento, ut probant Gualinus de consuet. dist. 5. q. 3. consil. 6. Bionchott. cent. 2. offi. 60. Pendo tom. 2. Theolog. Mor.

cap. 18. quæst. 4. ideo mulier, quæ partum supposuit, aut ex adulterio filium procreauit, non tenetur marito id reuelare cum aperto periculo viræ, & iactura honoris, ut probant Couar. in regula personarum, 2. q. 1. de R. l. in 6. Syluester in summa, verbo Adulterium, quæst. 32. Sorus de iustitia lib. 4. quæst. 7. art. 2. Balboa in cap. 1. de except. num. 41. Fotocrius lib. 6. rer. quæst. cap. 16. Diana part. 1. tract. 2. resol. 33. & tract. 6. resol. 5. qui variis casibus fortenses, & quotidianos resoluunt, etiam dissentiat Mancinus lib. 2. genial. cap. 5. 16. Vnde rectè docet Innocent. III. in præsentia audiendum esse confessionem illius mulieris, quæ partum supposuit, vel adulterium perpetravit, & non vult id detegere marito, etiam agnoscat partum suppositum, vel filium adulterinum ad eius hereditatem vocari.

CAPVT X.

Idem * Palentin. & Burgen. Episcopis, & Abbati de Morismundo Cisterciens. Ordinis.

Noua quædam nuper, de quibus miramur non modicè, nostris sum auribus innotata, quod Abbatibus videlicet in Burgen. & Palentin. diocesis constitutæ moniales proprias benedictum, ipsarumque confessiones criminalium audiant, & legentes Euangelium prædicant publicè prædicare. Cùm igitur id absonum sit pariter, & absurdum, nec à nobis aliquatenus sustinendum: discretioni vestræ per Apostolica scripta mandamus, quatenus ne id de cetero fiat, auctoritate ceteris Apostolica firmiter inhibere. Quia licet Beatissima Virgo * Maria dignior & excellentior fuerit Apostolis vniuersis, non tamen illi, sed istis Dominus clauis regni cælorum commisit. Datum Later. idibus Decembris, anno XIII.

NOTE.

a *Palenin.*] Ius testificandi est Inscriptio cum litera huius textus ex ipsius epistolis Innocentij III. editis à Boschetto *lib. 1. regest. 13. epistol. 187.* cum valde corrupta sit tam in hac lexia, quam in quâ collectione; nec felicius Bosquetas in *notis ad epist. 184.* motus ex eo, quod Abbatia Morismundi est in Lombardia, nec aliqua huius nominis reperitur in diocesis Burgensi, & Palentina, credit legendum esse *Placum, & Brixium. Episcopum, & Abbatem de Arvide Cisterciensis Ordinis.* Nam præterquam quod literæ textus repugnant talis inscriptio, siquidem in eo expressè agitur de monasterijs Burgensi, & Palentina diocesis, in dicta Regestio epistoliarum extat inscriptio ptoitin præsentis instabitur, quam de tuerit, ac defecit Mantique *tom. 1. annal. Cister. anno 1210.* Nec interest, quod Abbatia Morismundensis, de qua regi in *cap. cum veteri, 52. de elect.* non sit in his partibus Castellæ; quare eredit Bosquetus, non posse præsentem epistolam distingi Episcopis Palentino, & Burgensi, simulque Abbati Morismundi. Nam sciendum est, Guidonem Abbatem Morismundi in profectum fuisse in Hispaniam anno 1210, ut re-ferat idem Mantique *tom. 1. annal. Cister. in serie Abbatum Morismundi, num. 17.* Unde cum in Hispania reperiretur, potuit Innocentius III. illi cum aliis Prælati committere præsentis causæ cognitionem. De Palentina, & Burgensi diocesis iam nonnulla adduxi in *capite Coram, de in inter. restit.*

b *Burgensi.*] Textum hunc refert Mantique *dist. anno 1210, cap. 5. num. 10.* ad Regale Monasterium Gildense, quod Alfonso VIII. seu IX. Rex Castellæ cognominatus et Buene, constituit ad Huelgas propè Burgos anno 1187. vulgò dictum, *huius Gildæ de Burgos:* ex structura, dote, maleficio, & imperio percellere, veluti in ostensionem potentie Regis constructum, præest aliis XII. monasterijs sanctimonialium in diocesi Hispaniæ partibus constitutis, de quibus forsitan in præfeto agit Innoc. Nec tantum præest eius Abbatissæ monialibus ipsis, verum & regularibus conuersis, hospitalariis, & capellanis, in quibus supra omnem Ecclesiæ motem iurisdictionem in collatione beneficiorum, approbatione confessoriorum, & similibus iuribus exerceat, ut docti & fuisse probat amicus noster F. Michael de Fuentes Academicæ nostræ perdoctus Cathedre vespertine Moderator, in *discurso Teolog. moralis pro defensione iurisdictionis quæsi Episcopalis Abbatissæ habet monasterij.*

c *Benedictum.*] Quod alienum est à seculo fecimino, & prohibitum ab Ecclesiæ Patribus; nam Eutychianus Pontifex, ut refert Gratianus in *cap. statimmo 3.20. quæst. 1.* Abbatissas viduas, vel virgines velare præsumentes canonico iudicio subicit; quod isdem ferè verbis statuit in Concilio Parisiensi sub Ludouico, & Lorthario *lib. 1. cap. 43. ibi: Inuenimus, quod quædam Abbatissæ, & cetera sanctimoniales, non solum viduas, sed etiam virgines pectus velare solita sūt. Quod quantum femini femine illatum, & a religione Christiana sit alienum, omnis, qui sanum sensu, facile aduerbit. Concil. Aquisgran. cap. 76. Carolus Magnus lib. 1. leg. Franc. cap. 16. ibi: Audiamus, aliquas Abbatissas contra morem sanctæ Dei Ecclesiæ benedictivæ cum manu impudicæ, & signaculo S. Crucis super capite suorum dare, nec non & velare virgines cum be-*

nedictivæ sacerdotali: quod omnis vos sanctissimæ Patres in vestris parochiis interdicendum esse sciatis. Ratio est, quia Ecclesiæ non admittit sexum sequentem ad illam functionem publicam manentem à potestate clauis, cuiusmodi est facultas publice benedicendi. Tamburinus de iure Abbatissæ *dist. 31. quæst. 1.* Quomodo ergo id mulieri concederet Ecclesiæ, quæo publicè ne loqui quidem admittit? Itaque Clemeus Rom. Pont. lib. 8. *cap. 12.* benedictionem, de qua agimus, negat daconissis; benedictionem tamen priuam, nec nisi à bene. precantibus mulieribus orationibus nixam, non est cum negatum velimus Abbatissæ respectu suorum monialium; siue sanctæ crucis alicuiæ femine respectu personarum non sacratum, aut aliam teram, sic enim S. Monogondis apud Gregor. Toton. in *visis Patrum, cap. 19.* oleum, & saltem benedixit ad vsum ægrotum post suum obitum, S. Genouefa oleum benedixit, quo suam, & claudum, & cæcum à nauitute liberos in incommodis præstitit, S. Hildegardis, & S. Lioba, hæc varios ægros, illa epilepticum adhibuit configuratione sanos effecerunt. Refert Theophilus Raynaud. *tom. 16. in Hierarch. spirit. part. 2. fol. 219. par. 1.*

d *Confessiones.*] Hoc potius inauditum est in Ecclesiâ, cum hoc ad officium presbyterorum spectet, immò, ut ait Epiphanius *lib. 3. aduersus hereses, hæresi 79. num. 1.* quoniam ex quo mundus conditus est, mulier sancta fuit sacerdos. *Mulier in administratione gratiæ Dei non habet locum:* scribit credens Ambrosius in *cap. 16. D. Paul. ad Rom. D. Hieronymus lib. 1. de officiis, cap. 17.* ubi *in gradibus, vel officiis ecclesiasticis feminis nulla munia præstuntur; neque non permittitur eis in Ecclesiâ loqui, vel docere, sed nec tingere, nec offerre. Tertul. de velandis virginibus cap. 9.* immò ratione sexus inepax omnino doctæ ordinationis forma est, ut probant latè Hallucius de *sacris elect. 2. par. 1. fol. 4.4. & de hierarch. eccl. fol. 161.* Barboia de potest. Episcopali *alleg. 10.* Cæsar de *Eccl. Hierarch. dist. 8. §. 2.* licet in dissonis pletumque cooptati, & eligi nonnunquam legimus in veteribus Ecclesiæ canonibus, de quibus accipiendus est textus in canone 48. Synodi 6. in illis verbis: *Vxor eius, qui ad Episcopalem dignitatem promouens est, communi sibi viri consensu prius separata, postquam in Episcopum ordinatus est, non consecratus, monasterium ingrediatur præci ab Episcopi habitatione extructum, & Episcopi prouidentia fruatur: si autem digna visa fuerit, etiam ad Diaconatus dignitatem prouehatur.* Licet tiquando error ille in mentes illius lexis irrept. 2. ut Abbatissæ subditarum monialium audiendi confessiones licentiam ab Episcopo petere, ut refert Balsamon in *responsis ad interrog. 34.* ubi respondet, quod eum Abbas non sacratus, id est ordinatus, quantumlibet id iubeat, & petierit Episcopus, audire non possit: multò minus audit Abbatissæ.

e *B. Virgo Maria.*] B. Epiphanius *lib. 3. hæresi 79.* quæ est Collyridianorum, eodem vitæ sigmento, disputans in nouum mulierculum inueniunt, quæ Deiparam Virginem adobant, solenni tunc panem in eius nomen offerentes, nolam inquam mulierem sacerdotale officium exercebat rectè probans, ait: Si mulieribus præcipuum esset sacrificare Deo, aut regulare quicquam operari in Ecclesiâ, oportebat magis Mariam ipsam sacrificium perficere in nouo Testamentum, quæ digna facta est suscipere in propriis sinibus uniuersum Regem Deus

4.

5.

Deum californ filium Dei, cuius uerus templum factum est, ac in domellum ad Dominum in eum ne dissiparetur per Dei benignitatem, & ad maiorem mysterium preparatus est. At non compleretur, sed nec baptizandum conuictum est, ab eis qui potuerunt Christus ab ipsa baptizari potius quam a Iuane. Unde omnia sacra munda, que ordinem sacramentalium supponunt, potius inualide à muliere obiti probat Theophilus tom. 1. de febris frequen. ad. fol. 197. itaque Gnosticos explorat sanctus Irenæus lib. 1. c. 9. quod ad faciem potestatem conficiendæ diuinæ Eucharistie diffunderent. Id quod Popuciani quoque fecerunt, & Lutherus ut erat mollosus, renouare tentauit, referre de reuicente Alphonsu à Calio aduersus hæc uerba Adulter: que incapax non erat alioquin, quæ ex diuina institutione, Quare magis Theophilus ubi supra, repetendit Franciscum Georgium tom. 4. problem. 450. qui inde etiam incapacitatem denotare uult, quod mulier creata ea portione diuinitatis, quæ in uero reperitur, secundum quam portionem uir expressam Deum gerit imaginem, mulier non item.

Que ad præsens commentarium spectant, petentia sunt ex traditi. in c. d. d. d. de m. m. & d. d. d.

CAPVT XI.

. Idem.

Quod in te. *Et infra:* Verum quoniam à quibusdam intelleximus dubitari, utrum clericis, & laicis dandum sit viaticum in extremis, & iniunctio imponenda, & cum aliis sacramentis indulgenda sit decedentibus sepultura? Vtrum etiam in conuentualibus Ecclesiis de missa uoce, ianuus clausis, interdictis exclusis, diuina possint officia celebrari? Similiter an suscipiendis signum Crucis, & sanctorum limina uisitantibus, sit pœnitentia iniungenda? Ambiguitatem huiusmodi de dubitantium cordibus uolumus amputare. In illo enim uerbo, per quod pœnitentiam morientibus non negamus, viaticum etiam, quod uetè pœnitentibus exhibetur, intelligi uolumus, ut nec ipsum etiam decedentibus denegetur. Licet autem per generale interdictum denegetur omnibus tam uinctio, quam ecclesiastica sepultura; concedimus tamen ex gratia, ut clerici decedentes, qui tamen seruauerunt interdictum, in cimiterio Ecclesie sine campanarum pulsatione, cessantibus solennitatibus omnibus, cum silentio tumulentur; & in conuentualibus Ecclesiis bini, & bini, vel si uultes horas canonicas valeant legere potius, quam cantare, ianuus clausis, interdictis exclusis, & uoce ita demissa, quod exterius non possint audiri: cum & regulatibus secundum priuilegium Sedis Apostolicæ sit indultum, ut cum generale interdictum terræ fuerit, liceat eis ianuus clausis, exclusis excommunicatis & interdictis, non pulsatis campanis, suppressa uoce celebrare diuina. Recipientibus autem signum crucis non negamus, quominus cum eis ob reuerentiam Crucifixi pœnitentia, eam postulauerint, iniungatur. Quod & aliis peregrinis potest misericorditer indulgeri.

NOTÆ.

1. *Idem.* Ita etiam legitur in quarta collectio-
ne, sub hoc tit. cap. 5. nullibi tamen exprimitur cui referribat Innocentius, nec inter eius epistolas editas à Sileto, & Bosquetto reperitur textus hic.

COMMENTARIUM.

2. **D**e origine, & progressu interdicti ecclesiastici legit in cap. cum inter, de censur. de diuisione. et ibi, & personis, à quibus proferri potest hæc censura, ac de excois, ob quas imponi potest, egi in cap. quæstus 1. de his que sunt a maiori. Quæ in præfenti tantum de effectibus huius censuræ agendum est, pro expositione præfentis textus, & aliorum, qui nisi seruata temporum serie referantur, prolixius contrarij uidentur. Et sciendum est, olim tempore interdicti omnia sacramenta confecti prohiberi, exceptis baptismo, & morticinium pœnitentia, ut refert Oidericus monachus in Concilio Bituricensi. Quæ prohibitio durauit usque ad Alexand. III. ut constat ex c. non est uobis, de sponsal. Sed sequentibus annis huius censuræ effectus ualde remissi fuerunt, siquidem Innocentius III. huius relictus author permittit sacramentum Confirmationis etiam

D. D. Gm. 24. in Decretal. Tom. V.

tempore interdicti à ministerio, & responsis, de sent. excom. ex quo adducunt Doctores, locum esse potius hinc sacramentum conferri tempore interdicti. Clerici ministrantem uero, & ipsum recipientem communiter distinguunt, ita ut si sint specialiter, & personaliter interdicti, non possint nec conficere, nec illud recipere; secus uero si generaliter, aut localiter interdicti sint. Etiam permittit Episcopis semel in anno in Ecclesia interdicta celebrare, cap. quia nonnulli, de priuileg. quod etiam priuilegio concessum fuerat Templaribus in cap. cum & plantare, §. quod si, de priuileg. Etiam permittit semel in hebdomada prædicare, illis responsis. Præterea concessit in præfenti textu clericis interdictum sequantibus, ut possint sepeliri in cimiterio siue pluri, ac pulsatione campanarum; & etiam, ut in Ecclesiis conuentualibus bini, & bini possint horas canonicas, exclusis excommunicatis ita cantare, ut exterius audiri nequeant. Item concessit viaticum dati decedentibus, quod à DD. protrahunt est ad damnatos uisum supplicio, nauigantes, & mulieres prægnantes, cum in periculo moris sint. Gregorius IX. etiam permittit, ut semel in hebdomada sacrificium Missæ celebrari possit eandem renouandi Eucharistiam, cap. permittimus, de sent. excom. & tunc necessitate uigente potest adduci laicus uel minister. Diana part. 10. traçt. 5. bbb refol. 87.

usol. 87. Idem permittit Templariis, & Hospitalariis, & iis, qui eorum fraternitati fuissent oblatis, ut possent sepeliri in Ecclesia tempore interdicti, *cap. ut privilegia, de priuilegiis.* Innocentius IV. sanxit, Episcopos non teneri obsequare interdictum, nisi specialiter ob ipsos sit appositum, *cap. quia, de sent. excom. lib. 6.* Bonifacius VIII. qui valde interdicti rigorem laxauit, statuit ut tempore interdicti liceret christianis conuicere, *cap. quoniam 19. de sent. excom. in 6.* ubi plura Costa, Barb. de possesse *Episcopi alleg. 31. num. 12.* Nabona de *anat. an. 7. quæst. 4.* Scaccarius in *nois ad epist. 1. Fabiani*: & sacra tantum penitentia omnibus in vniuersum ministrare, exceptis illis, qui dederunt causam interdictio: & *cap. alius mater, ad tit. & lib. statuit ut quousque in omnibus Ecclesiis, & monasteriis, siue monachorum, siue monialium, etiam in hospitalibus, submissa voce, ianuæ clausis, non pulsatis campanis, exclusis excommunicatis sacrosanctum officio possit, dist. cap. alius, ubi DD. docent ex veteri opinione idem dicendum esse de quousque pueris, & de qualibet Missa, siue occurrenti, siue votiva, & notant Bonifacium accipiendum esse de interdictio generali locali, non verò particulari, aut speciali. Tandem statuit, ut in quousque festiuitatibus, natalis Domini, Pasche Resurrectionis, Pentecostes, & assumptionis B. Mariæ suspendatur interdictum, ita ut apertis ianuis, & pulsatis campanis diuina celebrentur officia, & omnes admittantur, exceptis interdictis personaliter, qui dederunt causam interdictio. Martinus V. & Eugenius IV. hoc portarunt ad festiuitatem corporis Christi. Gloſſa *verbo Reuelatione, in Clement. 1. de reliquiis.* Holognius de *conſur. dist. 8. §. 6.* Deinde Leo X. ad festiuitatem Immaculate Conceptionis, ut refert Barbosa in *dist. cap. alius, numer. 18.* Hæc procedunt inspecto iure communi ante priuilegium Bullæ Cenciæ, quo inspecto qui illud habent, eum non dederunt causam interdictio, possunt Missam, & alia diuina officia audire tempore generalis interdicti in quibilibet Ecclesiis, vel monasteriis, etiam oratoris particularibus, exceptis specialiter interdictis, in quibus etiam licebit audire Missam quando dici-*

tur ad renovandum sacramentum Eucharistiæ, vt coeeta Koninck, & Trulienck tenent Diana *part. 5. tract. 10. resol. 60.* P. Mendo in *Bula, dist. 1. §. cap. 3. num. 13.* Prodest etiam priuilegium Bullæ ad hunc effectum, non solum illis, qui eam habent, verum etiam consanguineis vsque ad quartum gradum, & famulis vetis, non verò fraudulose exceptis, nec discipulis, eo quod magister priuilegio Bullæ potest, ut voluit Trulienck in *Bulam, lib. 1. §. 3. dub. 3.* Conceditur etiam prædictis personis virtute Bullæ, ut possint sacramenta recipere, ea videlicet, quæ ab hoc alia consuetudine non permittebantur, videlicet sacramenta Ordinis, Eucharistiæ, Eucharistiæ, & Matrimonij. Circa matrimonium autem notandum est, ubique priuilegio Bullæ valde contrahi, siue de futuro, siue de presenti, tempore interdicti, eum vero neget etiam ab eacomunicatis valide celebrari, *cap. significasti, de eo qui duxit in matrem.* Vnde priuilegio Bullæ tantum conceditur, ut licet possint benedictiones nuptiales à proprio parrocho recipi: conceditur etiam habentibus bullam, ut sicut sacerdotes ex præsentis textu poterant tempore interdicti sepeliri in Ecclesia, ita & ipsi sepulture ecclesiasticæ tradi valeant eom modica pompa, videlicet ianuæ clausis, non pulsatis campanis, & psalmis recitatis submissa voce. Ea hucusque traditis constat, nihil specialiter eorum esse circa pulsationem campanarum tempore interdicti: vnde hodie exceptis prædictis festiuitatibus, non licet tempore interdicti pulsare campanas, siue magnas, siue paruas, item tubas, tabulæ, aut conſore d'reb're clericos ad officia diuina vocari, resoluit Suarez, Auzla, Giblinus, & Leander de hac censura agentes: manet tamen, merdies, ac sero, & ad conuocandam populum ad audiendum verbum Dei possunt pulsari, ut pluribus relatis tradit Barbosa *lib. 3. cap. 101. num. 33.* Nec etiam circa ianuas Ecclesiæ aperendas aliquid specialiter cautum est, vnde nisi in prædictis festiuitatibus non licebit eas aperire, adeo ut qui perforauerint ianuas, aut fenestras in eis fecerint, ut qui non possunt Ecclesiam ingredi, audiant diuina officia, excommunicentur in *Clement. 1. de sent. excom.*

CAPVT XII.

Idem in Concilio generali.

Omnis vtriusque sexus fidelis, postquam ad annos discretionis peruenierit, omnia sua solus peccata confiteatur fideliter, saltem simul in anno, proprio sacerdoti, & iniunctam sibi precipientiam pro virili studeat adimplere, suscipiens reuerenter ad minus in Pascha Eucharistiæ sacramentum, nisi fortè de consilio proprii sacerdotis ob aliquam rationabilem causam ad tempus ab eius perceptione duxerit abstinendum, aliquin & viuens ab ingressu Ecclesiæ arceatur, & motiens careat christiana sepultura. Vnde hoc salutare statutum in Ecclesiis publicetur, no quisquam ex ignorantia cæcitate velamen excusationis assumat. Si quis autem alieno sacerdoti voluerit iusta de causa sua confiteri peccata, licentiam prius postulet, & obtineat à proprio sacerdote, eum aliter ille ipsum non possit solnere, nec ligare. Sacerdos autem sit discretus, & cautos, ut more petiti medici similiter infundat vinum, & oleum vulneribus fauciat: diligenter inquirens & peccatoris circumstantias, & peccati, per quas prudenter intelligat, quale illi debeat consilium præbere, & cuiusmodi remedium adhibere, diuersis experimentis vtrando ad sanandum ægrotum. Caveat autem omni studio, ne verbo, aut signo, aut alio quouis modo procedat aliquatenus in peccatorem: sed si prudentiori consilio indigerit, illud absque vlla expressione caute requiratur.

requirat. Quoniam qui peccatum pœnitentiali iudicio sibi detectum præsumpserit reuelare, non solum à sacerdotali officio deponendum decernimus, verum etiam ad agendam pœnitentiam in arctum monasterium retrudendum.

NOTÆ.

1. a **Generali.** Latetanensis videlicet celebrato sub Innocentio III. et habetur in cap. 2. hoc tit. in 4. coll. et in ipso Concilio Latetanensi. c. 1. r. Cùm enim in ipso Concilio varia circa Sacramenta, & fidem contra Hæreticos statuta essent; præcipuum hoc annuæ confessionis nouiter statuta fuit, ut notauit Caneletus in *trattato de confessione*, quæ exeat ad calem comment. in ius canonicum. Licet ante Vvillelmus Parisien. Episcopus in suis constitutionibus, *cap. 26. Concil. can. 1.* ita statuerit: *Presbyteri parochiani suis mœnibus, & frequenter in Ecclesia suis denuncient, quod orantes saltem paterfamilias, & matres ad confessionem veniant ante Pascha Floridum: & qui in hoc negligenter fuerint, in parochia sua post octavas Pasche ad confessionem non admittantur, sed exsint ad illud tempus a carnisbus ieiunantibus, sicut in Quadragesima*

2. b **Discretoria.** Hanc etiam discretionis vulgò pro sepius accepimus *QD. gelati à Narbona de acate ad qñtus huiusmodi, anno 1197. 7.* Sed vetius est, tempus hoc relinquere arbitrio confessorij, qui inspecta pueri qualitate, & moribusque perpenis alia circumstantiis, an ad interrogata ordinare responsum præbeat, & quod magis malitiam detegit, virum peccata cognoscat, iudicabit an sit doli capax, necne, ut probat Narbona *ubi proxime*; & eodem tempore, videlicet cùm ad annos discretionis puer presenierit, ipsi posse admitti ad communionem corporis Domini, probat Ioannes Sanchez in *selecl. disp. 26. per tot.* contra communem Doctorum sententiam, qui asserunt, saltem usque ad annum decimum & diuini non posse pueros admitti ad communionem Eucharisticam.

3. c **Proprio sacerdoti.** Idem parochio, ut infra probauimus, & latè docet Balboa in *reposit. ad hunc titulum*. Hodie autem post Privilegium Bullæ, & amplæ priuilegia Religionibus concessa, Parochus pro confessionibus ad idem hunc negligit. De hac facultate audendi confessiones religiosi concessa, videndi sunt Goyllanus in *notis ad Concil. Rheimense, in add. summa, A. 7. 1.* Bruno Challa *ut. de priuilegiis, tract. 2. prop. 2. cap. 6. per tot.* Acaujo in *decis. moral. quasi. 8. cum sequenti*. Theophilus tom. 1. fol. 152.

4. d **Ad alium.** Quia olim in ritibus Pasche festiuitatibus, necnon festis c. eorū Domini commemorandam erat, *cap. 2. si frequenter, cum sequenti, de consecrat. disp. 2.* probat de communionem quotidianam, & Paschali apud veteres vitata, Theophilus tom. 16. in *Hæretic. florit. par. 4.* & plota de hoc præcepto animam communicandi in secessione Fagundez, & Tamburinus in *aproposito Eccles. Læander 1. p. de sacram. disp. 3. a. 21. usque ad 61.*

5. e **Ratiocinatione causam.** Veluti quando confessorius dicit absolutionem, ut expectatur an propositum pœnitentis firmum sit, ut eom alius docet Ioannes Sanchez in *selecl. disp. 9. num. 3.* aut quia absolvere ipsum inultum iudicauerit, donec pœnitens occasione proximam peccandi vitaret: quibus in casibus fidelis non communicans in Pasche minime erit reus præcepti cœlestiastici, nec pœnas imposas in præcepti textu patietur, ut probat idem Ioannes Sanchez *disp. 2. 6. num. 9.*

6. f **Mere periti medici.** Consonant textus in D. D. General. in *Decretal. Tom. V.*

e. Deus qui, hoc tit. cap. mensura 86. de parit. disp. 1. D. Basilus in *epist. ad Amphibioch. can. 2.* Synodus Metensis celebrata anno 859. can. 10. cap. tempus pœnitentis 26. quasi. 7. Vnde olim erat in qualibet Ecclesia elencus pœnitentiarum pro pœnitentia iniungendis, cuius memio fit in *cap. quæsumus, hoc tit. de quo ego in c. 2. & 3. de off. ordina.* Est enim in sacerdotis arbitrio, qui pœnitentium confessiones excipit, pœnas satisfactorias mitigare, & benignitas eorū ipsi peccatoribus agere, quos videtis de admittit retribus maiori dolore correptos. Etæ insignis cap. stolis interpres sancti Dionysij ad Demophilum monachum, qui bonum sacerdotem constitutus fuerat, quod miseratus fuisset pœnitentis, ipsiusque delicta sua cum intimo doloris iudicio conscientiam benignè excipere: rectè enim funditus hunc sacerdotem asserit suo ministerio, cuius proprium est plebis ignorantiam tolerare, aliquam infirmitates suæ ex fragilitate meatu, Christi mansuetudinem imitari, qui summa semper benignitate, & misericordia peccatores ad se venientes compulsum est.

g **Cautus autem.** Hanc partem de obligatione ligandi confessionis, & pœnitentia violantium retuli, & expositi in cap. 2. de off. ordina.

COMMENTARIUM.

IN pœnitenti actu agitur de confessione auriculari, quam nimis impruenter negant hæretici, & Nouatores: ut recentior ab Ecclesia institutum testemur, & tantum peccata Deo esse confitenda asserunt, quos reprehendit Aleuius in *epist. Frontius & Patribus in Provincia Guberna, ibi: Dicitur per, nimirum ex his, si suam vellet confessionem sacerdotibus dare, quos à Deo Christo cum sanctis Apostolis ligandi, subindeque pœnitentiam acceptisse credimus, &c.* Deo vid. & bonis, confiteri, quem volumus, nolens latere non poterit. Ecclesia Christi, in qua peccati, satisfactio, & religio. Et antiquitatem huius confessionis repetimus, Simplicius Pontifex ante annos 110. constituit ad S. Petrum, & Paulum Apostolos, & Sanctum Laurentium Martyrem, ut pœnitenti ubi manerent præcipi pœnitentes, & baptismum, rectè Anastasio Biblioth. in Capitulo Tichonij apud Iasubres, cap. 6. ubi ita cauent: *Qui oculis designant, illis confiteantur, quos Episcopi, & plebem Archiepiscopi idem ad secreta voluerat ment. in medi. eos elegerit.* In Synodo Francica sub Catolo Magnò ita legitur: *Ita pœnitenti quæ prædicti eorum presbyterum habent, qui benedixit peccata confitentibus indicere, & indurare pœnitentiam possit. Quod repetitum est lib. 5. Capit. cap. 2. & lib. 7. Capit. 113. ita legitur: Itaque nullus sacerdos in huiusmodi pœnitenti, nisi dum, vel erit quoniam Episcopi electione carerent, propter benedictionem, & prædicationem, populi que reconciliationem; & cum illis sanctis sacerdotibus, qui bene suam populi pœnitentiam dare, Missas celebrare, de infirmis curam habere. Concil. Cabilon. a. sub Catolo. can. 33. postquam grauiter reprehendit eos, qui solim modo Deo confitenda esse peccata contendebant, ait: Confessio itaque, qua Deo fit, purgat peccata; & cor, quæ sacerdos fit, docet qualiter ipsa purgetur peccata; Deus namque saluati, & sanctioris uolunt, & largiar plerumque bene præbet sua potentia inuisibili administratione, plerumque medi. omni operatione. Et sic. 7. capit. cap. 124. ibi: Quædam*

namque est sacerdos, cum accipit cuiuslibet fidelis confessionem peccatorum, qualiter primo peccatum perpetratum, aut si postea iteratum, aut frequenter altum sit. Idem Concil. Cabilon. cap. 45. Qui peccata sua sacerdotibus, in quorum sunt parochiis, confessi sunt, & ab his agenda penitentiarum censuram acceperunt, si orationibus insistendo, et ceteris suis largiendo, vitam emendando, vires componendo, Apostolorum limina, vel quonlibet Sanctorum iuvare desiderans, horum est devotio modis omnibus commendanda. Concilio Patris. lib. 1. cap. 13. reprehenduntur Presbyteri, & Parochi, qui relictis parochiis forensibus negotiis sese implicent, aut paulo libertius vagantur, non attendentes, quod eorum absentia, & loca Deo aliena sibi cultu debito prigravat, & homines sine confessione, & infantia sine baptismatis regeneratione pletumque morantur. Eiusdem Concilij cap. 32. Patres damnant sacerdotes illos, qui partim incurti, partim ignorantia modata penitentiarum rerum suam conscientibus secus quam iura canonica decernant, imponunt quapropter statuant, ut presbyteri impetui solerti studio ab Episcopis suis iustitiant, qualiter & confitentium peccata diserte inquirent, et quae congruum modum secundum canonicam auctoritatem penitentiarum noceat imponere. In penitentiali Romano tit. 7. cap. 12. *Spremitis Altissimam, vel orationem, vel oblationem cuiuslibet presbyteri, ita dico, ut nubes tua peccata sibi confiteri, vel ab eo accipere corpus, & sanguinem Domini, ab hoc, quo peccator tibi esse videtur, uno anno peniteat.* Et titulo 8. cap. 3. *Omnes, quos in penitentia suscipimus ita nostri spirituales sunt filij, ut ipsi, quos vel nobis suscipimus, vel sub trina mersionis vocabula mergimus, vnda sacri baptismi regenerationem.* Concil. Illiber. can. 31. *Circa hanc, can. 133. ibi: Si Episcopus a communione non suspendat eum, quem offerit de peccato aliqui sibi soli fuisse confisum.* Carthag. 4. can. 74. *Si sacerdotes penitentiam implerant abique persona accipiente penitentia leges invigant.* Meminerit huic confessionis, eamque probarent Terullianus *lib. de penitent.* Hieronymus in cap. 10. *Ecclesiast.* Basil. in 99. *compend. explicat.* explicat. 26. Cyrillus lib. 3. in *Levit.* cap. 5. D. Augustinus *lib. de cellis. parit. sine homin.* 50. Theodoretus de *Austiliis haereticis*, Leo Pontifex *epist. 57. & 78.* Dionysius *Arcopag. epist. 8.* & alij coefferi à Parmelio in *manu à D. Cyrillano de lapsis*, n. 98. probant Bellarminus lib. 1. de *sacram.* cap. 1. & lib. 1. de *penit.* cap. 1. Baronius anno 56. *Vindictus in manu ad epist. 2. D. Francisci*, Zypaeus lib. 5. *consul.* *in Penit. consulti.* Crespetius in *summa, verbo Confessio.* Sotus in 4. dist. 18. q. 1. art. 1. *Verba de lapsis* lib. 3. c. 28. Vnde D. Antoninus 3. *part. summa*, cap. 18. tit. 14. dum ait post presentem Decretalem confessionem peccatorum fuisse necessariam, non ita est accipiendum, quasi confessio sacramentalis ab hoc tempore Ignorantia fuerit necessaria, vel tunc penitentia instituta; sed iudicium, quod per hanc clement. decretalem nihil aliud,

quàm tempus, in quo praecipuum confessionis sit adimplendum, pertinet: sicut enim absurdum est dicere communionem sacram in hac ipsa Decretali institutam fuisse, quamvis in ea communicandi tempus statueretur, sic sanè à vero abhorret assentire, tunc fuisse institutam confessionem, quàmvis ibi tempus confitendi fuerit determinatum. Nec fuit Nonnototus D. Chrysostomus *homil. 2. in Psalms 50.* in illis verbis: *Peccata tua dicito, ut deleat illis: si confiteris alius dicere, quia peccasti, dicito ea quoniam in anima tua, non dico te confiteris confesso tuo, sed dicito Deo, qui curat ea.* Et *homil. 4. de Lazaris*: *Cor ipsum patet fieri, & erubescit confiteri peccata tua? Cui enim homini dicaris, ne tibi expretet; nec enim confers confiteri, ut in publicum proferas; sed et, qui Dominus est, qui medicus est, ostendit vulnera tua: nec enim ignoras, etiam si non dicaris. Cassianus *collat. 20. c. 8. ibi: Quid si verendum retrahens utulus coram hominibus erubescit, illi quem Caeter non possunt, confiteri: ea iuge supplicatione non desinas, ac dicere: Iniquitatem meam ego confesso, & peccatum meum contra me est tempus: tibi soli peccavi, & malum cor me feci. Qui se absque ullius recordanda publicatione curat, & sine improprio damnae confitetur.* Nam hanc, & similis, cum Chrysostomi, ipsi Cassiani dicti non sunt intelligenda de secrete, & sacramentali confessione, in qua homo confitetur sacerdoti non ut homini, sed ut Deo, id est Dei vicario; sed de publica penitentia, quae publice fidebat in Ecclesia, iuxta citos relatos super in c. *hac tit.* docent Sixtus Senari. lib. 5. *Biblioth. antiqu.* 165. Baronius tom. 1. anno 56. *Magist. in 4. sem. dist. 17.* ubi postquam dixit, peccata primum Deo, deinde sacerdoti esse confitenda, subdit hanc verba: *Illud Iacobi Chrysostomi superius posuimus, non est ita intelligendum, ut licet alicui, si tempus habeat, sacerdos non confiteri, sed quia sufficit ubi crimen occultum est, soli Deo per sacerdotem dicere, & semel: nec oportet publicari coram multis quod occultum est, quod notat dicens: Nisi tibi dica, ut te prodas in publicum, sicut enim publica publico egeri remedia, ita & occulta secreta confiteri, & occulta satisfactio purgare. Nec necesse est, ut quod sacerdos semel confisus sumus, iterum confiteamur, sed lingua cordis, non coram apud verum iudicem id ingerit confiteri debemus.* Magist. sequitur Gazarius in *notis ad Cassian. d. *collat. 20. c. 8.* Non ergo D. Chrysostomus docere vult, confessionem perfectam sacramentalem soli Deo factam fuisse, sed vult Deo potissimum confitendum esse, qui remittit peccata: vel etiam ut ostendat, quod qui sacerdoti confitetur, Deo confitetur, ita ut nihil debeat timere: vel denique ut ostendat, hoc secretum iudicium non esse simile secularibus, quod in hoc nulli sunt iuramenti testes, nulla poena, nulla infamia: & tantum abest, ut velit nos à sacerdotali confessione renouare, ut magis hortetur ad eam, utpote tanquam Deo factam, tanquam secretam, tutam, & minime periculosam, ut docet Darius de *penitentia* cap. 13.**

CAPVT XIII.

Idem in² eodem.

Cum infirmitas corporalis nonnunquam ex peccato proveniat, dicente Domino languido, quem sanauerat: Vade & amplius noli peccare, ne deterius aliquid tibi contingat: presenti decreto statuimus, & districtè praecipimus medicis corporum, ut eum eos ad infirmos vocari contigerit, ipsos ante omnia moneant, & inducant,

ducant, quod medicos adnocent animarum; ut postquam fuerit de salute animarum in prouisum, ad corporale medicinæ remedium salubrius procedatur; cum essan te causa cesser effectus. Hoc quidem inter alia huc causam dedit edicto, quod quidam in xgritudinis lecto iacentes, cum eis à medicis suaderetur, ut de animarum salute disponant, in desperationis articulum incidunt, unde facilius periculum mortis incurrun. Si quis autem medicorum nostræ constitutionis, postquam per Prælatos fuerit publicata, transgressor exiterit, tamdiu ab ingressu Ecclesiæ arceatur, donec pro transgressione huiusmodi satisfecerit competenter. Ceterum cum anima sit multo pretiosior corpore, sub interminatione anathematis prohibemus, ne quis medicorum pro corporali salute aliquid xgro suadeat, quod in periculum animæ conuertatur.

NOTÆ.

Eodem.] Ita etiam legitur in quarta collectione, sub hoc tit. cap. 5. & extat textus hic in ipso Concilio, can. 21. Consonant Concil. Brachar. 4. tit. 5. cap. 31. ibi: *Præcipit sancta Synodus singulis huius Provinciae medicis sub excommunicationis pena, ut qui primum die agros decumbentes inuisant, illos de saluari saltem confessione faciendâ admovent, alioquin si cum illos reuissus id præmissum fulsis compexerint, deus admovent, additâ comminatione, quæ testatur, se amplius non reuersuros, nec decumbentium curam habituros, si cum tercia redierint, salutem saltem ab agros confessionem non reperierint. Quod nisi vo ipsa medici complerit, prædictam excommunicationis sententiam ipso facto incurrant.* & Ordellâ ab Ordinario modellâ, pui xibus applicandâ puniuntur. Concil. Rauennat. 2. temporibus Clementis V. fu-

bric. 15. Monemus insuper omnes medicos, quod quando vocati fuerint, ad infernos non aliteris redire audeant, nec curam cessent, nisi prius eis consisterit, quod ipsi infirmi prædicti medicum aduocauerint animarum, & de fœtâ de animarum salute prouiserint. Pius V. in constitutione quæ incipit Super pragam, edita die 8. Martij, anno 1566. & cum ad gradus Doctoratus medici admittuntur, iurare debent, se seruaturis paxferiorem constitutionem. Illustrant eam Diana 2. p. tract. 4. resol. 93. Sanchez lib. 3. summa, cap. 16. num. 12. Scortia in stoll. Pont. constit. lib. 2. tit. 15. Gibalin. de censur. in synopsi. verbo Medicus, Barbosa de pesti. Epist. cap. alleg. 91. Diana part. 11. ar. 1. resol. 22. Azucudus in l. 5. tit. 1 lib. 1. recepit.

b Publicata.] Quia lex non obligat ante promulgationem; ut probat Petrus Marcha part. 1. concord. Sacra. & Imp. lib. 2. cap. 16. & illustrat in cap. 4. de postul. Prælat.

CAPVT XIV.

Idem in ^a eodem.

Cum ex eo, &c. Et infra: Eleemosynarum quoque quæstores, quorum se quidam clementiendi alios, abusiones nonnullas in sua prædicatione proponunt, admittunt, nisi Apostolicas, vel diocesanæ Episcopi literas veras exhibeant, prohibemus: & tunc præter id, quod in ipsis continebitur literis, nihil populo proponere permittantur? Formam verò, quam communiter omnibus talibus Apostolica Sedes indulget, duximus exprimentam, vsecundum eam diocesanæ literas moderentur. Ea siquidem talis est: Quoniam, ut ait Apostolus, omnes stabimus ante tribunal Christi recepturi proxi in corpore gestissim, siue bonum fuerit, siue malum, oportet nos diem missio- nis extremæ misericordiæ operibus præuenire, ac æternorum intuitu seminare in terris, quod reddente Domino cum multiplicato fructu colligere debeamus in cælis: firmam spem, fiduciamque tenentes, quoniam qui parçt seminat, parçt & metet; & qui seminat de benedictionibus, de benedictionibus & metet vitam æternam. Cum igitur ad sustentationem fratrum ad tale consuecungium hospitale propriæ non suppetant facultates, vniuersitatem vestram monemus, & exhortamur in Domino, atque in remissionem peccatorum vobis iniungimus, quod de bonis à Deo vobis collatis aliquas eleemosynas, & grata eis subsidia charitatis erogetis, ut per subuentiorem vestram temporum inopix consulatur, & vos per hæc, & alia bona, quæ Domino inspirante feceritis, ad æterna possitis gaudia peruenire. Qui autem ad quærendas eleemosynas destinantur, modesti sint, in tabernis, aut in aliis locis inhonestis non hospitentur, nec inuiles faciant, aut sumptuosas expensas, cauentes ne falsæ religionis habitum gestent. Ad hæc quia per indiscretas, & superfluas indulgentias, quas quidam Ecclesiarum Prælati facere nun verentur, & clauis Ecclesiæ contemnuntur, & penitentialis satisfactio enervatur: decernimus, ut cum confectur basilica, non extendatur indulgentia vltra annum, siue ab vno solo, siue à pluribus Episcopis deducatur: ac demum in anniuersario dedicationis tempore quadraginta dies de iniunctis indulta remissio non excedat. Et infra: Ad hunc

quoque dierum numerum indulgentiarum literas præcipimus moderari, quæ pro quibuscumque casibus aliquoties conceduntur; cum Rom. Pont. qui plenitudinem obinet potestatis, hoc in talibus moderamen consuevit observare.

NOTÆ.

1. * *Eodem.*] Ita etiam legitur in quæst. collectione, *sub hoc tit. cap. 3.* & etiam textus hic in ipso Concilio *can. 62.* æque eius principium reperitur in *cap. 2. de reliquiis, & vener.*
b *Ad hoc.*] Hanc partem de indulgentiis exponemus sequenti commentatio.

COMMENTARIUM.

2. *V*isus quæstorum elemosynarum, seu potius abusus eorum, qui non sibi elemosynas querunt, sed potius conducunt elemosynas pauperum locorum, seu Sanctorum, perantiquus est, ut constat *ex cap. inuam. 11. de priuil.* Quis vero illi quæstiones facultate sibi concessis abutiebantur, præsentis Concilij Lateran. constitutio emanavit prohibens ne huiusmodi quæstus fiant, & ne quæstiones ad elemosynas petendas sine Episcopo, vel Pontificis literis, quibus de eorum moribus, æque elemosynæ causa constat, admittantur. Et quia adhuc abusus dictorum quæstorum exerceretur in maximam Chilianis orbis scandalum, dum in prædicationibus multa de reliquiis, & indulgentiis mendaciis confingebant; ideo Concil. Vienne. reitaram in *Clement. 2. hoc tit.* inbattend præsentis constitutioni addidit, quod literæ Apostolicæ ad elemosynarum quæstus faciendos examini ordinatiorum subderentur, quæstionibus huiusmodi prædicationis officio penitus interdicto, cum sola facultate simpliciter exprimentis illud, quod in literis Apostolicis, aut Episcopi continetur. Faciant *Clement. IV. in cap. 24. officium 11. 5. compendi, de heret. in 6. Concil. Salsburg.* tempore Gregor. X. *can. 6. Toletan. anno 1473.* temporibus Sixti IV. *can. 13. & de eis in Concilio Tridentino sess. 5. de reform. cap. 1. ita cæctur: Quæstiones elemosynarum, qui non quæstus dicuntur, cuiuscunque conditionis existant, nullo modo, nec per se, nec per alium prædicare præsumant. Et contra facientes ab Episcopis, & Ordinariis locorum, privilegij quoscunque non obstantibus, & episcoporum remediis omnino interdicuntur. Et in Concilio Pictaviensi 2. sub Pascale III. *can. 22.* ita cæctur: *Vi Sanctorum reliquiis causâ pecunia, & quæstus circumferrentur, ad prædicationem non admittuntur; Qui abusus & apud Gentiles interceptus, dum Sacerdotes Idolorum suos Deos circumferebant, ut ipsorum nomine mercedem, & stipem exigerent, Apuleius lib. 8. Dram Syriam circumferebant mendi-**

care compellunt. Minutius in Orazio: *Mendicantes vocantur Deos ducunt.* Helicanass. lib. 2. notavit Gibalinus de negot. *tom. 1. lib. 5. cap. 4. art. 1. num. 3.* Quis vero huiusmodi remedia minime profuerant, immo quæstorum huiusmodi malitia exercebente, ac per hoc datâ anti hæreticis in hædem catholicam debacchandi, idem Concil. Trident. *sess. 22. de reform. cap. 9.* statuit, ut illorum quæstorum nomen, æque vilius penitus aboleretur, nec ad huiusmodi officium exercendum illatenus admittentur, non obstantibus quibuscunque privilegiis. Nec minori odio hos improbos quæstos persequuti sunt seculares legislatores; nam præterquam quod in *l. 1. unic. Cod. de mendicant. valid.* iubentur similes mendicantes in exilium mitti, de quibus in Concilio Colonien. anno 1526. *can. 5. ibi: Mendicantibus validis non solum hospitalia clausa, sed & publicè, ac ostiis mendicare penitus interdictum.* Trident. *sess. 5. de reform. c. 1. & sess. 21. cap. 9. & sess. 25. ad fin. plures Philippus Cameracensis *tom. 1. oper. suæcess. c. 1. 6. & eum. 2. 274. eum in l. 2. tit. 28. part. 3.* cauetur, ut causæ licentiæ ad elemosynas petendas quæstoribus debeat. Et apud Laitanæ lib. 5. *ordin. tit. 103.* constitutum est, ne quæstiones alicuius Sancti nomine petere elemosynam permittantur, nisi ab eis Regiæ literæ ostendantur: quod si aliter factum sit, omnes pecuniæ ab illis quæstus, quæstori Redemptionis Captiuorum tradantur. Simile apud nos eorum statum in *l. 1. & 2. tit. 8. lib. 1. ordin.* quæ hodie est *lea 4. tit. 9. lib. 1. noua recopil.* & apud Gallos idem Regij Senatus decretis dispositum refert Choplus de *sacr. pol. tit. 5. num. 238.* Vnde de his quæstionibus elemosynarum cognoscunt tam iudices ecclesiastici, quàm seculares; examinantque licentiis, quas deferant, an sint authenticæ, vel apocryphæ, ut probat *Peteyta part. 2. de manu Regiæ, cap. 76.* nam si mendicantes validi, & similes, qui ut otiosam vitam agant, pauperem vitam affectant, eliciendi sunt à ciuitate, quia penitus admittunt veris pauperibus, *cap. non enim 5. quæst. 5. cap. 1. 82. dist. 1. 4. tit. 10. part. 2. l. 40. tit. 5. part. 2. l. 1. cum sequent. tit. 1. lib. 8. Recopil.* probant latè Bobadilla lib. 2. *pol. cap. 13. num. 31.* Petrus Greg. 3. *part. symag. lib. 39. cap. 6. & de republica lib. 13. cap. 14. num. 3. & lib. 1. part. tit. 22. cap. 3.* Solozanus *tom. 2. de iure Indiarum lib. 3. c. 25.* quando magis qui falsis ingenio elemosynas extorquent falsâ plenumque prædicantes. Licentiis autem petendi elemosynas personis miseria dicit debere iudiciis ecclesiasticis, probat Barbosa ad Trident. *sibi supra.**

CAPUT XV.

Honorius III. * *Abbati & Conuentui sancti Petri de Praxellis
Lexou. diœcesis.*

*N*ostro postulasti certificari responso, vtrum per tuam prouinciâ possis concedere * remissioni literas generales. Nos igitur fraternitati tuæ breuiter respondemus, quod per prouinciâ tuam liberè potes huiusmodi literas concedere; ita tamen quod statutum generalis Concilij non excedas.

NOTA.

1. **A**bbat.] In hac sexta collectione tantum legitur Honorius III. & in MSS. codicibus inscriptionem huius textus desiderari refert Cironius in not. ad 5. compil. ad hunc tit. ubi præfata inscriptio legitur, sed male, tum quia Pontifex Abbatem non faceret, sed filios appellare solet; tum etiam quia Abbatem provinciam non habent, & de Prælatu provinciam habente agit Honorius in præfati.
2. **b** Remissionis.] Idem indulgentie peccatorum, ut etiam sumitur in cap. cum ex eo, hoc tit. de apud Tertul. contra Marcionem cap. 18. ibi: *Dimissio de remissione peccatorum, id est de remissione.* Apud Cyprianum epist. 59. ibi: *Gravissimum, & in Deum multum ante peccantibus, cum postea crediderunt, remissa peccatorum datur.* Notatur Cironius in præfati textu, & in parat. ad hunc tit.

COMMENTARIUM.

3. **CONCERNIT** EX hoc textu sequens communiter deducitur assertio: Intra provinciam suam concedere potest indulgentiam Archiepiscopo, iuxta dispositionem Concilii Later. Generalis. Non est alia frivola decisio, quæ probari possit præfata assertio; extra illud testimonium Suarez tom. 5. in 3. part. de pœnit. disp. 5. §. 1. Barbosa alleg. 88. Petrus Gregorius lib. 1. parit. tit. 17. cap. 3. Cironius ad hunc textum. Iul. Lano. de indulg. 2. part. cap. 11. num. 28. Quæritur in summa Bal. verbo Archiepiscopi multitas. Boetius Epon. in tract. de libel. & Indulg. num. 129. Torreblanca lib. 14. de iure spirit. cap. 1. in princip. Iosueus Darts de pœnit. cap. 61. Bonacina de Sacram. disp. 6. quæst. 1. & 3. Corduba quæst. 14. Fragofo de regim. Christi. Reipub. part. 2. lib. 2. disp. 4. §. 2. per totum.

4. **TRANSITVS** Sed in præfentem assertionem pro dubitandi ratione ita arguuntur. Indulgentia, quæ conceditur à Prælati alienis subditis, nullæ sunt, cap. quod autem 4. hoc tit. ubi testis redditur, quia qui non potest ligare, nec absolvet, sed Archiepiscopus non est ordinarius iuxta subditorum suorum iurisdictionem, cap. pastoralis, de offic. ordin. nec extra suam diocesim habet contentiosam, iurisdictionem, exceptis quibusdam casibus relatis in dict. cap. pastoralis. Igitur per totam suam provinciam non potest Archiepiscopus indulgentias concedere. Etiam difficultis est alia pars ipsius assertionis, ubi docetur, Archiepiscopos servari formam Concilii Lateranensis: Indulgentias concedere debere; nam forma præscripta in dicto Concilio, pro Episcopis fuit, non verò pro Archiepiscopis. Ignor non tectum præfati docetur, Archiepiscopos debere indulgentias concedere, iuxta Concilii Lateranensis formam.

5. **INDULGENTIA** Adhuc tamen defendenda est præfata assertio, pro cuius expositione sciendum est, indulgentiam variè accipi in iote nostro. Aliquando indulgentia dicitur quando aliquid sit ex mera liberalitate, ut de decimis novallium dicitur in cap. ex parte, supra de decimis: vel cum pœnitibus concedatur tempus ad litem prosequendam, ut etiam elapsum non uocetur, cap. dilecto, de V. S. cap. 2. de eo qui militat in possess. ibi: *Quæcumque sit ista, indulgentia huiusmodi non obstante, negotio formæ debemus imponere.* Plerumque tamen pro relaxatione pœnitæ, seu abolitione criminis, ut in dict. Cod. de indulg. crimin. cap. 1. de trangu & pace, & in 5. compil.

ibi: *Si necesse fuerit per indulgentiam servandum quod utilitati Ecclesiæ, & totius terræ, necnon & animarum saluti videretur expedire.* In præfata autem indulgentia accipitur pro remissione pœnitæ temporalis debite pro peccatis. Quolibet iam dimissis, concessa homini existenti in gratia à legitimo Prælato pro applicationem thesauri ecclesiæ. Corduba de indulg. quæst. 1. Torreblanca de iure spirit. dist. lib. 14. cap. 13. num. 3. Fragofo ubi supra, Barbosa dicta alleg. 88. num. 1. Pater Meudus in Bullam, disp. 6. cap. 1. num. 1. Indulgentia ita accepta duplex est, alia plenaria, temporalis alia. Plenaria est illa, quæ remittit tota pœnitæ temporalis simplicitate, quæ nimirum post peccata remissa per sacramentum pœnitentiæ expianda remanet, sive in hac vita, sive in purgatorio: & licet eum talis indulgentia conceditur, communiter addatur, & remissio omnium peccatorum, illis verbis potius effectus indulgentiæ explicatur, quam quid novum continetur. Indulgentia verò temporalis dicitur illa, quæ non remittitur tota pœnitæ, sed eius tantum pars relaxatur, & sub duplici præfata forma tribui solet. Aliquando enim conceduntur indulgentiæ totæ diem, vel annorum, & est remissio tantæ pœnitæ, quanta solui in hac vita debuisse pro pœnitentiâ totæ diem, vel annorum, vel quanta in purgatorio locanda foret, si in hac vita pœnitæ non esset: quandoque autem indulgentiæ conceduntur respectu ad certam partem peccatorum, veluti ad tertiam, sed quartam; & tunc remittitur tanta pœnitæ, quanta persolui debuisse in hac vita, vel in purgatorio pro tertia illa, vel quarta parte peccatorum, ut explicat Suarez de pœnitentiâ disp. 30. §. 1. & 5. Bellarminus tom. 3. controu. lib. 2. de indulg. cap. 9. Iul. Lano. eod. tract. part. 2. cap. 10. Torreblanca dist. cap. 14. in princip. P. Gregorius lib. 1. parit. tit. 17. cap. 2.

6. **ALTA DE** Indulgentias concedere possunt primò Pontifex, qui tantum plenarium dicitur, quia solus ipse in plenitudine potestatis vocatus est, cap. cum ex eo, hoc tit. cap. quæcumque 24. quæst. 1. nam ex iuramento thesauro Ecclesiæ, cuius administrator ipse est, plenarius, & plenissimus indulgentias concedere valet. Laurentius dist. 1. parit. 2. cap. 11. Boetius Epon. de iure in libel. num. 148. In suis diocesis Archiepiscopi, & Episcopi indulgentias largiuntur, dummodo statum generalis Concilii non excedant, nam in cap. amercendi, cap. 1. §. 1. final. hoc tit. in 6. canitur, ne clares Ecclesiæ committuntur per indifferetas Prælatum indulgentias; & ne pœnitentiis satisfactio enervetur, decretum, ut eum dedicat basilica, non extendatur indulgentia extra annum, & in anniversario dedicationis ultra 40. dies: & ita Archiepiscopi, & Episcopi à iure ipso præfati sunt indulgentias concedere; cum eum hanc potestatem concedendi indulgentias habeant à Summo Pontifice, ut fert valde communis sententia, cui subscribitur Medina tract. 5. disp. 4. num. 2. Macedo de clauibus Petri lib. 4. cap. 4. Bellarminus lib. 4. de Pœnit. cap. 24. Suarez tom. 4. in 3. part. §. 1. num. 11. disp. 25. Magellan. in prim. epist. ad Timoth. §. 12. Maldetus 2. tract. de Pœnit. disp. 4. dub. 1. Argudin 3. part. disp. 8. dub. 3. Farquodex in 1. Ecclesiæ præcepta, lib. 7. cap. 1. num. 25. Duallius tract. de Pœnit. part. 1. quæst. 2. ponit eo modo à Pontifice restringi, & limitari. Legati etiam Apostolici in provincia sibi designata indulgentias concedere valent, ut docet Glossa in

præfati, Petrus Gregorius *dicit*, tit. 17. cap. 3. Ab omnibus verbis, & similibus infectionibus Prælati concedere indulgentias non licet, cap. *accidentibus* 13. de *privilegiis*, nisi speciali privilegio, vel consuetudine legitime præscripta fuisse sint. Barbo. *dicit*, alleg. 88. Petrus Gregorius, *dicit*, cap. 5. Fragor ubi præfati: nec absque causa, similes indulgentias conceduntur; illa autem vel est spiritualis, vel corporalis. Spiritualis, veluti ut fideles à peccatis absoluti oreor pro confectione infidelium, & pro pace Christianorum fidei, extraneis, *inter communes*, de celebrat. Missarum, vel ut sanctus celebratur festiuitas alieculis Sancti, Clementi, unic. de relig. & veneris, extraneis, t. v. v. inter communes. Corporalis est: vel in dehestionibus Ecclesiasticis, ut fideles inuigilet ad eleemosynas elargiendas eidem Ecclesie conferuandæ, cap. 1 hoc tit. in 6. ob restitucionem pontium, cap. cum ex eis, hoc tit. extraneis, final. hoc tit. vel ad sustentationem egenorum consuetudinem ad hospitale, *dicit* extraneis, final. vel ad exaltandam deuotionem visitandis certis basilicis, extraneis, t. hoc tit. inter communes.

Indulgentias ut nunc vocamus, quibus remissiones continentur minorum peccatorum, aut satisfactionis debite pro maioribus, impie tridit Luthetianis assertionibus, art. 17. & solè extraneis Clementis VI. ex opinionibus D. Thomæ, ut ille ait, compositi à pœbri, falsè nobis obicit. Sed incipiam à ratione D. Thomæ, quæ grauior est, quàm pœnâ fronte videtur. Ab omnibus, inquit, ponitur Indulgentias valere, & lœmpium esset dicere, quod Ecclesia aliquid vanum facit: ergo sunt indulgentie. Petinde enim est, ac si diceret Sanctus, semper hætemus omni omnibus Ecclesiis prædictas fuisse indulgentias: ergo dati indulgentias Apostolicas est Ecclesia Catholica. Ex eo enim, quod ab omnibus Ecclesiis semper aliquid admissum sit, conuenit traditio; sic enim probat Apostolos, quod in epistola ad Corinthios docebat de ratione docendi Ecclesie, & de subiectione inferiorum Præbiterum ad superiores, & ne mulier doceret in Ecclesia, t. Sicut, inquit, & in omnibus Ecclesiis Sententiam dico, ut in vobis præfati verbum Dei, aut ad dicitur salus peruenit. Usque dicetis, non processit à vobis, sed à vestris antecessoribus. In quo notatur origo, & antiquitas. Sic etiam dogma, Indulgentias esse, non à nobis processit, sed ab illis, qui fuerunt ante nostra secula. Accipimus etiam à primis Ecclesiis temporibus. Quod ut facile constet, ascendamus supra seculum Clementis VI. cui indulgentiarum assum tribuit Luthetanus; extat enim Romæ in Ecclesia sanctæ Sabine inciso in lapide marmoreo Gregorius IX. indulgentia concessa velè pœnitentibus, & confessis vnius anni, & quadraginta dierum: & ante Gregorium IX. extat Alexandri IV. relaxatio de iniuncta pœnitentiis, (sic enim vocat) inciso item in lapide marmoreo, concessa indulgentia omnibus pœnitentibus, & confessis in dedicatione sanctæ Mariæ del Campo. Sed si ascendamus adhuc superius, extat indulgentia Verone in templo Ecclesie Collegiæ sanctæ Helenæ, incisa in tubula lapidea ante annos 430. in solenni dedicatione illius Ecclesie, sub hæc formula: *Annorum denique 30. dierum absolutionem, & tertiam partem minorum peccatorum, & fraudem pœnitentiarum venientibus ad sacri huius templi reuocatum delictatiorem*. Est autem, ut hoc obiter adnotemus, sic exponenda hæc formula, ut quia per indulgentias remittuntur tum pœnæ temporales

debite pro peccatis venialibus, tum debite pro mortalibus, de pœnis quidem debitis pro peccatis mortalibus remissis accipienda sunt illa verba *irrogata dicam absolutionem*; de debitis pro venialibus illa, & tertiam partem minorum peccatorum, idest tertiam partem pœnarum debitam in purgatorio venialium peccatorum. Quod verò dicit, *et fraudem pœnitentiarum*, significat condonari ioculper, ac remitti pœnas debitas pro peccatis maioribus remissis, quæ aliis fuissent solute, & delectæ per pœnitentias canonice iniunctas, si fuissent petioluiz, ut postulat ratio eorum pœnitentiarum, qui iusti & sancti fuerunt à principio secundum iudicium Ecclesie constituti; postea verò propter infirmitatem coactam relaxati. Quod ergo non est solummodo implendo canonicas pœnitentias in iudicio Ecclesie iniunctas, & præscriptas, vocat fraudem pœnitentiarum, & huiusmodi fraudem canonicarum pœnitentiarum condonat Summus Pontifex concedendos infirmitati nostræ, per æconomiam, & pœnitentiam dispensationem indulgentie. Deinde extat Bulla Verban. II. de indulgentia plenissima in Synodo Claromontana, cum erat suscipiendum bellum Hietosolymitanum contra Sarracenos Duce Godisfredo Bullionensi; sed nec ab hoc Pontifice processit vsus indulgentiarum, sed antequam Gregorius VII. idest ante annos 300. multis huiusmodi indulgentias concessit, ut constat ex eius epistola ad Episcopos, & Clericos Bituraniz missa; in eodem & apud Gregorium Magnum legitimus exemplum indulgentie, licet formula sit alia, quàm nunc Patres vident, *lib. 7. in epist. ad Romanos*, ubi ait: *Clauem penitentium à sacrosanctissimo B. Petri corpore pro eius benedictione transmissum, in quo est ferrum de cænis eius inclusum, ut quod clauis eius ad martyrium ligaueris, velutrum ad omnibus peccatis saluat*. Indulgentiarum vocat Sanctus benedictio veteri verbo illo tempore vsitato. Simile exemplum est in eodem libro in epist. ad Romanos: & aliud *lib. 6. in epist. ad Theonem, & Andream*. Est autem obseruandum, in dicto primo exemplo Gregorii Magni, illum misisse clauem parvulam, quæ erat signum, & iodea indulgentie peccatorum per portare clauem concessæ, in qua auctoritate concessit B. Petro, & nunc Pontifices aliis verbis idem significant, & alio modo testantur, cum dicunt: *Auctoritate B. Petri, &c.* instantes non clauem, sed licentiam, quas vocant bullas cum clauibus pœnitentiarum; illud verò, quod ait hic Gregorius de ferro ex cænis Petri incluso in clauem, non temerè factum esse possit enim ferreum mirrore, & non inelodere in clauem, nisi aliquid spiritualiter, & spiritualibus signis legere voluerit, illud scilicet, indulgentias ipsas peccatorum, quæ sunt velut cænenæ, & vincula, nisi in meritis Christi, & passionibus eius, non solum quæ in se passus est, sed quæ in sanctis suis: quod nuncupat Pontifices in huiusmodi bullis dicunt: Beatorum Apostolorum Petri, & Pauli meritis, & auctoritate commissis concedimus. Merita enim Petri fuerunt eius martyrium, quod significat ferrum de cænis eius. Hoc autem exemplum B. Gregorii, non solum imitatus, verum & interpretatus est Gregorius alter VII. sic enim scripsit ad Alphonsum Hispaniæ, ad *lib. 7. Reges eius*, ibi: *Ex more Sanctorum missimus vobis clauiculus auctoritatis, in quo de cænis B. Petri benedictio caminatur, ut omnipotens Deus, qui illum admirabili potentia ne celis ferret liberaret, iustitiam etiam intercessoribus tot ab omnibus peccatorum vestrorum vinculis absoluit, & ad gaudia perducit*, *eterna*.

eterna. Interdū ante tempora Gregorij Magni ab ipsa Apostolorum doctrina processit vltus indulgentiarum; sic enim D. Clemens lib. 3. *compit. cap. 10.* scribit: *Sumo nec laici permittimus facere aliquod opus sacerdotale, vt sacrificium, aut baptisum, aut impositionem manuum, aut benedictionem, sine pœnam, sine magnam.* Et lib. 8. *capit. 44.* *Nec quia sui est Diacon sacrificium offerre, aut baptizare, aut benedictionem, sine pœnam, sine magnam facere.* Non dubium est, quin hic benedictionem magnam vocet Pontifex remissionem peccatorum magnorum, quæ mortalia vocantur; & pœnam inferni, quæ eis debentur; pœnam vtrō benedictionem vocat remissionem reliquorum peccatorum, id est pœnarum, quæ debentur pro peccatis magnis prius remissis; & pœnarum peccatorum, quæ dicuntur venialia. Probant etiam hanc potestatem concedendi indulgentias, non solum vniuersi, verum etiam defunctis. Bellarminus *disto 11. de indulg.* Dicit in *tratt. de pœnis. cap. 63. per tot.*

8.

DEBOL-
VITTE
RUBR AN-
DI BATIO.

Nec obstat prima dubitandi ratio super expensâ, cui vt satisfiant Doctores, varia adducunt. Abbas in præfati quæ sequitur Circoius in

præfati) asserit textum hunc procedere quando Archiepiscopus per provinciam suam visitationis munus exequitur, nam tunc eum & corrigere possit subditos sustinere eorum suorum, meritis & illis indulgentias concedere valet. Alij docent Archiepiscopum semper indulgentias concedere posse, quia actus hic est voluntariæ iurisdictionis. Ita Suarez *dist. 11. de pœnis. dist. 49. sect. 3.* Riccius in *praxi. resol. 306. num. 3.* Barbosa *de pœnitentijs Episcopis, ad cap. 88.* Sed hæc sententia expressè conuenit ea dicto capite *Quid autem, hoc sit.* Quare magis placeat prius solutio. Nec obstat secunda difficultas, hæc vetus est, Concilio Lateranensi relato in *cap. antecedenti*, præscriptam fuisse formam seruandam in concessione indulgentiarum non solum Episcopis, verum & Archiepiscopis, siquidem illis verbis: *Quidam Ecclesiarum Prælati*, comprehendunt etiam Archiepiscopos: unde rectè notatur Barbosa *de pœnitentijs. dist. 11. num. 16.* Fragoso *disto 11. de pœnis. dist. 4. § 2. num. 10.* quod si congregati Archiepiscopi quadraginta dies indulgentiarum in perpetuum, nihil amplius potest eis successor pro eadem causa concedere, quia reputantur vnus Prælati.

CAPVT XL

Gregorius nonus.

NE pro dilatione pœnitentiæ periculum imminet animarum, permitimus Episcopis, & alijs superioribus, nec non minoribus Prælati exemptis, vt etiam præter sui superioris licentiam prouidum & discretum sibi possint eligere confessorum.

NOTÆ.

1.

Gregorius IX. Qui præsentem constitutionem edidit inopi proprio in fauorem Prælatorum, tam regularium, quam secularium. Qui eum non possint facillè adire suos superiores, illis conceditur, vt possint sibi eligere confessorium. Quod privilegium latè illustrant fragantes iniquæ præcepta, *cap. 2. num. 15.* Bruno Challaing, in

præfati. Regulari. 3. cap. 3. præfati. 8. Diana *part. 10. tratt. 16. resol. 76.* Bard. in *Boham, part. 2. tratt. 5. cap. 2. sect. 2.* qui omnes rectè notant, privilegium hoc non esse reuocatum per Tridentinum *sess. 23. de reformatione, cap. 15.* quia eum licet insertum in corpore iuris, & eius mentio specialis non fiat, non censetur derogatum: & varias illationes deducunt de Equitibus militibus, & alijs personis exemptis.



TITVLVS XXXIX.

De sententia excommunicationis.

CAPVT I.

Alexand. III. Senon. Archiepiscopo.

Vper eo verò, quod consilium postulasti, verumtamen Scholares, si se iouerem in plena, vel minore ætate, clerici, vel religiosi viri in claustro, secundum canonem illum, quo statutum est, vt illi, qui in clericos violentas manus iniiciunt, mittantur ad Apostolicam Sedem, pro sua absolutione debeant venire. Inquisitioni taliter respondemus, quod si clerici infra poberes annos, se ad iniuicem, aut vnus alterum percuiderit, non sunt ad Ap. Sedem mittendi: nec clerici, si sunt plenæ ætatis, & non odio, vel inuidia, vel indignatione, sed leuitate iocosa se ad iniuicem percutere contingat: nec Magister si scholarem clericum intuitu disciplinæ, vel correctionis percuiderit; quia non potest in ipsis iniectione manuum violenta notari. Cæterum si ex odio iidem scholares, vel seculares clerici sese percuiderint, pro sua absolutione debent ad Ap. Sedem venire.

NOTÆ.

E

S *Ensenf.*] Ita etiam legitur in prima collectione, sub hoc tit. cap. 1. & post Concil. Lateran. part. 1. cap. 7. legitur *Ensenf.* : & additur in dicto capite 1. pars capitis sicut dignam. Unde cognoscitur, in præfati textu refferri partem textus in capite dignam, de homicidio ; & ita inscriptionem retinendam esse, *Alexander III. Bartholomæus Exonensis Episcopo*. Et ex eadem Decretali sunt textus sequentes : & ideo compilatores hanc epistolam in partes secarunt, & digliserunt, non alia de causa, quàm ut casus in ea decessos separarent, & non ita diffusam decretalem compilarent.

b *Scholares.*] De scholaribus, & eorum vitiis acceptionibus egi in cap. 1. de celebratione Missarum.

2.

c *Canonem illius.*] Innocentij II. videlicet, editum in Synodo Romana, transcriptum à Gratiano in cap. si qui suadente 17. quæst. 4. quem innovavit Eugenius III. in Synodo Rou. can. 3. in hæc verba : *Nihilominus presens scriptura prædecessoris nostri felicitis memoria Papa Innocentij sanctis confirmationes decernimus, ut si quis suadente diabolo tam sacrilegi reatu incurrat, quod in clericum, vel monachum violentas manus inticiat, anathemati subiacet, & nullus Episcopus illam præsumat absolvi, nisi moris ergente periculo, dum Apostolica conspectus præsumitur, & cum mandatum suscipiat. Refert Manigoe tom. 2. anal. Cister. ann. 1148. c. 4. Quæ constitutio firmari potest ex variis Concilio canonibus congestis à Crespetio in summa, verbo Clerici non sunt cadendi, Antonio Augustino in epist. inu. Pont. lib. 35. tit. 1. part. 4. Vighellio in methodo inu. can. fol. 49. & latè exponunt privilegium huius canonis ultra congestis à Cencio ad Decret. collect. 24. & Barbosa in dist. cap. si quis suadente, Petrus Gregorius lib. 4. part. 20. cap. 20. & tit. 16. cap. 11. Fragoso de regim. Christ. Reip. part. 2. lib. 1. dist. 2. De bene de immunit. tom. 1. cap. 3. dub. 4. Securia in stell. Pontif. consil.*

epist. 29. theoren. 69. Saulay in Paraph. cleric. 3. par. exen. 2. Diana part. 9. tract. 4. per tot. Hieronymus Gutta in summa, tract. 1. diffinit. 5. per tot. Gibalinus de censur. in synop. verbo Incurra.

d *Puberes annos.*] De pubertate egi in cap. 1. de despons. impub. Improbere hoc casu ætas excludit, non à censura, si iam etiam docti capices, sed propter teneram ætatem excusantur pro absolutione adite Romanum Pontificem ; & ita pueri qui nondum usu rationis pollent, cum nec peccare mortaliter possint, ideo nec excommunicationem contrahere, ut latè probant Nathana de etate ad usum humanum, anno 10. & dimidio, quæst. 8. Gibalinus de censur. despons. 3. quæst. 4. Si autem iam plenus rationis usu pollent, etiam à pubertatis annos non petuenerint, incidunt in censuram canonis : sed propter ætatem possunt ab Episcopo absolvi, ex præfati statu, immo etiam ob violentam inuentionem insectionem tam potentes absolutionem petierint, possunt per Episcopum absolvi, cap. final. locutus.

e *Idem.*] Quia cum eo casu non deuit peccatum in ipso percutiente, non incurrit hæc censura, Villalobos in summa, tom. 1. tract. 17. diffinit. 23. num. 3. Porcell. in dub. regul. verbo *Matheus videtur*, num. 4. Diana part. 9. tract. 4. resol. 43. per tot.

f *Disciplina.*] Unde Magister, vel Prelatus potest, etiam quæ subditum, vel discipulum etiam in sacris constitutum pro ratione culpe punire, absque eo, quod incidat in censuram huius canonis, cap. ex tenore, cap. ex volumate, hoc tit. docent Gibalinus ubi supra, num. 5. Gualtopalao tom. 6. oper. moral. diffinit. 14. dub. 1. num. 190. Diana dist. tract. 4. resol. 21. dum tamen ipsa correctio modica sit, iuxta tradita in cap. presbyterum, de homicidio ; & etiam superiorum suæ correctione ad singulis effusionem non perueniat, iuxta tradita in cap. 1. de colum. & tradenda infra in cap. vniuersis : & an idem procedat in patre percutiente filium sacra ordinibus initiatione, dicemus infra in capitulo volumate.

CAPVT II.

* Idem.

Monachi verò, & canonici regulares, quocunque modo se in claustris percussere, non sunt ad eandem Sed. mittendi, sed secundum prouidentiam, & discretionem sui Abbatis discipline subdantur : & si discretio Abbatis non sufficit, ad eorum correctionem est diocesani Episcopi prouidentia adhibenda.

NOTÆ.

1.

Idem.] Ita etiam legitur in prima collectione, sub hoc tit. cap. 3. & post Concil. Lateran. part. 1. cap. 8. & reteritur in præfati pars textus antecedentis, Eius meminerunt Innocentius III. in cap. cum illorum 32. Honorius III. in cap. considerata, 30. hoc titulo.

COMMENTARIUM.

2.

Licet Abbates non possint absolvere monachos ab excommunicationibus incurtis, quæ in iure reperiuntur statute, Clement. 1. de privileg. quia etiam Episcopus, ubi Pontifex non recessat

sibi absolutionem, possit absolvere, quia absolutio illi censetur permilla, cap. super 29. hoc tit. non tamen æquè hoc procedit in inferiori Prelato, ut est Abbas ; & sic ipse monachos proprios non potest absolvere ab excommunicatione in iure statuta, ut in præfati casu violentæ manus iniectæ à monacho in monachum ; quia plerumque contingit, ut monachi suggerente humani generis aduersario se inimicem percutiant : quare illis prohibitum est deferre entelios scutos. Atradius Episcopus Lerou. epist. ad Alexand. Papam, ibi : *Ac nisi de castellis eorum pugionem provida sustulisset antiquitas, sapiens esset ad alienos etiam mortes imperpetua defensisset.* Ex ne ita facile daretur monachis materia vagandi, ut rescriptis Bonifacius

Beneficiis VIII. in cap. 21. hoc tit. in 6. ideo conceditur Abbati, ut possit in presenti casu beneficium absolutionis monachis impendere, cap. canonica, hoc tit. cap. quoniam, de vita & benef. cleric. docuerunt Germanus lib. 3. de sacer. immunit. cap. 9. num. 28. Suarez de censur. disp. 22. sect. 1. Tamburini de iure Abbat. tom. 2. disp. 14. quasit. 10. Gibalinus ubi supra. Itaque religiosus percussus religiosum eundem ordinis, potest absolui à Priore, Guardiano, Pteposito, seu ceteris Prelato; dum tamen percussio gravis, & enormis non sit, cap. canonica, hoc tit. ubi restringitur generaliter pri-

sens textus. Si verò Religiosus percussit religiosum alterius Ordinis, poterit absolui à proprio Prelato, sed presente Prelato religiosi officij, arque ita viri quique Prelati consensu imponi debet condigna satisfactio, cap. cum illorum, hoc tit. Religiosus verò, qui clericum secularem percussit, non à suo Prelato presente Episcopo, sed ab Episcopo tantum, si percussio levis fuerit, absolui debet, dist. cap. cum illorum, cap. religiosi, eod. tit. lib. 6. quos, & alios casus prosequuntur Fragoso dist. lib. 1. disp. 2. §. 3. Diana dist. tract. 4. res. 491. etiam quatuor sequenti. Tamburini. dist. disp. 54.

CAPVT III.

* Idem.

Si verò aliquis alicuius potestatis ostiarius sub pretextu officij sui malignatus clericum laeserit, ab Episcopo sub potest absolui, nisi forte eundem clericum vulnerauit grauius. Officialis verò pro iniectione manuum in clericum non potest sine mandato Romani Pontificis absolutionis beneficium promereri, quia nulli laico super clericum tanta datur auctoritas, nisi forte turbam accendo irruentem, non ex deliberatione, sed fortuito casu clericum laedet. Si verò clericum vim sibi inferentem vi repellat, vel laedat, non debet propter hoc à Apostolicam Sedem transmitti, si in conueni vim vi repellat, cum vim vi repellere omnes leges, omniaque iura permittant. Nec illo compellendus est ad Apostolicam Sedem venire, qui in clericum cum vxore, matre, sorore, vel filia sua propria turpius inuentum manus iniecit violentas. Ceterum si in stupro, vel adulterio committitur, ipsum ita proximà consanguinitatis lineâ non contingit, ceperit, aut in cum violentas manus iniecit, non à sententia illius excommunicationis erit immunis.

NOTE.

a [Idem.] Tractum legitur in prima collectione, sub hoc tit. cap. 4. & post Concil. Lateran. part. 2. cap. 9. & etiam textus hic spectat ad eandem Decretalem.

b [Officialis verò.] Et ita Principum ianito rez, ostiarij, & ceteri officiales, si accendo turbam clericum leuiter percusserint, possunt à proprio Episcopo absolui, si autem sibi arrogando iurisdictionem, quasi id sibi permittum fuerit, non possunt ab Episcopo absolui, ut probant Suarez dist. disp. 22. sect. 1. Castropalao tom. 6. disp. 3. puncto 23. §. 4. Diana dist. tract. 4. part. 3. res. 55.

c [Repellat.] Quia cum ille, qui se defendit, nullam culpam admittit, ut probatur in cap. 1. de homicidio, ideo nec presentem canonis excommunicationem incurrit, cap. ex tenore, hoc tit. ex quo principio varias illationes deducunt Castropalao dist. §. 3. Molina de iustitia tract. 2. disp. 55. num. 3. Gibalinus in synop. verbo iniuria, num. 4. & qui in continent, & in rixa honoris descendendi eam clericum percussit, censuram non inuenit, quis percussit per accidens vitalem, non suadente diabolo, sed periculis ira, vel honoris amore. Suarez de censur. disp. 22. sect. 1. ex num. 33. Sayros in clau. Regia, lib. 3. cap. 27. num. 20. Balleus verbo Excommunicatio 2. §. unico, Barbosa in cap. si quis fuerit, num. 36.

d [Vxore.] Quia gravis dolor iniuriæ acceptæ cum excusat, argumento legis Gracchi, Cod. ad leg. Jul. de adul. l. unctis traditis in cap. 1. de his que vi-

quare desideratur, ut maritus excusetur ab hac censurâ, quod in ipso actu turpi clericum apprehendat, ut constat ex hoc textu, ibi, turpius inuentum. Vnde dubitari solet, an maritus, qui non casu, sed datâ operâ, & deliberato animo expectauit clericum adulterum, ut vindictam sumeret, excusetur ab hac excommunicatione? Et istum non excusari, etiam si turpius cum vxore deprehendat, quia hoc non est illum inuenire, sed expectare, docuerunt Layman lib. 1. summa, tract. 52. part. 2. cap. 5. num. 8. Carthusius de iur. Mediolan. de iur. 3. num. 5. Emanuel Rodriguez in summa, tom. 1. cap. 144. num. 18. Sed contrarium tenuerunt plures, quos refert & sequitur Barbosa in presenti, num. 7, & aliis relictis Hieronymus Garcia in summa, tract. 1. difficult. 3. dub. 1. puncto 4. num. 75. Fragoso dist. 2. part. de regim. lib. 1. disp. 2. §. 1. num. 35. Diana part. 9. tract. res. 42. Gibalinus ubi supra. In qua opinionum varietate distinguendum cetero, an ex dolo viri, aut vxoris clericus adulter vocatus fuerit, aut decessus, ut ita vindictam sumere possint; nam eo casu, cum non possit dici clericus inuentus, sed coactus, & dolo attractus, excusari non potest ab excommunicatione; si vero absque dolo, licet proditoriè, fuerit percussus, immunis est ab hac censura. Prosequuntur Belletos part. 1. disquisit. cleric. pag. 181. Castropalao dist. disp. 3. puncto, 23. §. 3. & textum hunc protrahendum esse ad percutientem clericum reperiunt cum sponsa de presenti, non verò de futuro, docuerunt Molina de iustitia tract. 3. disp. 55. num. 5. Diana part. 4. tract. 4. res. 52.

CAPVT IV.

* Idem.

SI verò aliquis in clericum nutriendem comam manus iniecerit violentas, propter hoc non debet Apostolico præsentari conspectui, nec etiam excommunicatione notari, dummodo ipsum esse clericum non nouerit: vel si hoc dubium fuerit, propriâ manu dumeaxat præstabit iuramentum, quod eum esse clericum ignorasset. Ab illo autem (si præstare noluerit iuramentum) quia violentas manus constat eum in clericum iniectisse, sicut ab excommunicato, donec de mandato Summi Pontificis absolueretur, conuenit abstinere.

NOTÆ.

1. **[Dem.]** Ita etiam legitur in prima collectione, *sub hoc tit. cap. 5. & post Concilium Lateran. part. 14. cap. 1.* legitur *Baconiensis*. Unde rectè deducit Amosius Angulimus in notis ad hunc textum, lo præsentari rectè parum textus in *cap. de illis, de decessis, impub.* ubi de Baconiensis diocesi egi, & in *cap. t. de temper. arden.*

COMMENTARIUM.

2. **I**ste ignorantia huius excommunicationis non excuset percussorem clericum ab eius incurso, ut nouissimè probat Arango in *gg. moral. 3. part. quest. 31 per totum*; tamen si qui percussit, probabiliter ignorans, quem percussit, clericum esse,

ecclesiâ iniuria facta ordinis clericali, nec comendatur formaliter sacrilegium; ideo excusatur ab hac excommunicatione. Sanchez *lib. 9. de murtin. disp. 32. num. 41.* Gibalions *dist. verbo iniuria, in synopsi.* Unde cum nutrire comam clerici non sit, *cap. si quis ex clericu, de vita & benef. cleric.* ideo qui clericum nutriendem comam percussit, non inedit in hac excommunicationem, quia iustam causam habuit credendi, cum clericum non esse, cum sine habitu clericali inesset. Facit Concil. Tribur. *cap. 26. ibi: Vi presbyteri non vadant nisi stola, vel orario induti: & si in hincere solentur, vel vulnerantur, aut occiduntur non stola vestiti, simplici emendatione sua saluantur.* Angustinus *lib. 4. de legibus, cap. 4.* De clerico deferente habitum clericalem egi iam in *cap. 1. de apostasi.*

CAPVT V.

* Idem *Abbatibus, priuicibus, & aliis ecclesiasticis uiris per Eboracensem Episcopatum constitutis.*

Non dubium est uobis, sicut credimus, vel incertum, quin ij, qui violentas manus in clericos, canonicos, aut cuiuslibet religionis conuersos iniiciunt, ex institutione Concilij sententiam excommunicationis incurrant: nec nisi in articulo mortis sine Rom. Pont. absolutionis possunt beneficium impetrare.

NOTÆ.

1. **[Dem.]** In hac sexta collectione tantum legitur *Idem*, sed in scripto supplenda est ex prima collectione, ubi *sub hoc tit. cap. 6.* reperitur textus hic.
2. **[Religionis conuersus.]** Consonus textus in *cap. 11. hinc. in 1. collat.* ubi Alexander III. ita scribit: *Si forte post conuersum suum in aliquem de fratribus suis aliquis uoluerit manus iniecturi, licetum sit tibi ut ab excommunicationis sententia absolueris.* Et in *cap. 53.* eiusdem collectionis, ibi: *Graciter oculos diuina Maiestatis offendunt, qui religiofos viros suisque molestis, & uicium sua perturbant quietis. Sanè à sancta memoria predecessoris nostri Papa A. in Concilio Lateranensi constitutum est, ut qui violentas manus in clericos, vel uicinas hospitales, vel templarios, seu in viros alterius religionis iniiciunt, excommunicationis subiaceant. Nos autem statum predecessoris nostri ratum, & firmum tenere uolentes, f. v. m. quatenus si qui paroliano rum uiderent in fratres H. spualis Hierosolymiani manus violentas iniecturi, eis appellatione remota publicè excommunicatos denunciaret, & ab omnibus*

faciatis cautius euitari, donec predictis fratribus de illata iniuria congruis satisfecerint, & cum literis Episcoporum suorum rei ueritatem cominentibus Apostolico conspectui se representent. Gaudent ergo hoc privilegio canonis, primò clerici, non solum sacris ordinibus initiati, uerum etiam qui minores, immò & qui primam tantum tonsuram habent, quia illi clerici dicuntur, *cap. clerici 21. dist. cap. cum conuincit, de exat & qualis.* Et quantum ut gaudeant privilegio forti nouiter post Concil. Trident. *sess. 23. de reform. cap. 6.* desideretur, ut deferant habitum clericalem, & simul deferant alicui Ecclesie; tamen ut gaudeant privilegio canonis tantum desideratur, ut deferant habitum clericalem, ex uetini sententia, quam defendunt Molina de *infortia trall. 3. disp. 54. num. 9.* Anila de *ensur. 2. part. cap. 1. disp. 2. dub. 9.* Barbosa de *possi. Epist. part. 2. alleg. 18. m. 32. & lib. 1. quæst. eccl. cap. 39. §. 1. Dianap. 3. trall. 3. resal. 82.* Hieronymus Garcia in *summa trall. 1. difficile 3. dub. 1. punct. 1.* Gibalions in *synopsi, ubi supra.* Nec interest, quod tales clerici sint excommunicati, si suspensi, irregulares, seu verbaliter depositi, immò et si decesserint, a huc cadaver gaudet hoc privilegio. Item clerici coniugati cum

enim uolca, & uirgine, habitum deferentes gaudent hoc privilegio, ut probat Diana p. 9. *trall. 4. refol. 6. per te.* Si uero clerici depulso habitu, enormitatibus dentur, non gaudent hoc privilegio, *cap. perpendimus, cap. cum non ab homine, hoc tit.* Quod ad alluſiones protrahunt Couarr. lib. 1. *parit. cap. 20. num. 10.* Item ioculatores, & goliardi, de quibus in *cap. uic. de uic & homin. lib. 6.* Item excoſſores, & tabernaculi ter moti, ſi non deſiſſant, priuantur hoc privilegio canonis, *Clement. uolca, eod. tit. de uic & homin. cleric.* Item inconſigibiles ſtatuſque degradati hoc privilegio ſpoliantur, *cap. cum non ab homine, de iudic.*

Secundò hoc privilegio gaudent omnes religioſi utriuſque ſexus conueſſi, etſi aliqui non emittant profeſſionem; immodò de nouitijs, *cap. reliquiſſi, hoc titulo in 6.* an quis appellatone clericorum veniant, an uero tatione privilegij, diſputant Hallerius lib. 4. in *vindictis, cap. 1. §. 2.* Celotius *contra opum de hierarch.* Hoc quoque pri-

uilegio gaudent fratres tertij ordinis ſancti Franciſci in comunione uiuentes, & habitum geſtantes, ſi uerò in domibus proprijs habitent, etſi habitum deferant, & ſe, ac ſua religioni tradant, non gaudent hoc privilegio. Rodriguez *tom. 2. qq. regul. §. 6. §. 1. 5.* Gibalinus in *ſynopſi, d. uerbo ſuauia.* Similiter Ecclie ſub certa regula dependentes, ac proprium Preſbiterum agnoſcentes, gaudent hoc privilegio. Circa Equites militares, & eorum commendatarios dubitant Molina *diſt. diſp. 50.* Sanchez lib. 1. *ſumma, cap. 16. num. 11.* Azor p. 1. *inſtit. lib. 1. §. 3. cap. 4. §. 4.* Sed huius dubij reſolutio pendet ex alia quaſtione, an uidelicet illi ſint ueri religioſi ſi? Quam examinant plures, quos retuli in *cap. 5. de ſtat. monach.* Et res diſcendū eſt, Equites ſancti Ioannis, quia emittunt tria vota ſubſtantialia, gaudent hoc privilegio canonis, ceteros uerò Equites in communione non degentes, non gaudent hac immunitate, etſi contrariam teneat Diana *diſt. trall. 4. refol. 7. per te.*

CAPVT VI.

² Idem.

^b Mulieres, vel alie perſonæ, quæ ſui iuris non ſunt, ab Epifcopo diſc. abſolui non ſunt poſſunt, ſi manus in clericum iniecerint violentas. De his uerò, qui magnæ non ſunt potentie; & ita delicati, quod laborem ueniendi ad Sed. Ap. nequeunt ſuſtinere, reſpondemus, quod ſtatus perſonæ prius, & ueritas negotij eſt intimanda Rom. Pont. & ſecundum conſilium eius tales erunt de commiſſo ſcelere corrigendi, ^e Illi uerò qui non per ſeipſos, ſed eorum auctoritate, vel mandato uioleſter iniiciunt manus in clericos, ad Sedem Apoſt. ſunt mittendi; cum ſi committat uerè, cuius auctoritate, vel mandato delictum committi probatur.

NOTÆ.

^a *Idem B.*] Ita etiam legiſur in prima collectione, *ſub hoc tit. cap. 7.* poſt Concil. autem Later. p. 14. *cap. 12.* legiſur *Bavienſi,* ſed retineo præſentem inſcriptionem, & uerius credo in præſenti reſerri partem textus in *cap. 1. hoc tit.*
^b *Mulieres.*] Conſonant ierpxs in *cap. quantus, cap. ea noſcitur, hoc tit.* Nam eum in mulieribus periculolum ſui uagari, & uitorum coetibus ſe immiſcere, L. 1. C. *uſum, de offi. diuerſ. indic. nouella 124. cap. 1.* (cuius conſtitutionis aſſenſum tradit Baronius anno 316. num. 71.) ut probant Chaffineus in *caſal. p. 2. conſider. 30.* Oſualdus lib. 24. *cap. 22. littera G.* Reuarden 4. *ver. 15.* ideo

non ſunt cogende Romanum Pontificem adire, & ita generali conſuetudine receptum eſt, ut etiam ob grauem percuſſionem poſſint ab Epifcopo abſolui, ut reſtaur, & probat Diana *diſt. cap. 9. trall. 4. refol. 59. per te.*

^c *Illi uerè.*] Etiam hanc conſtitutionem ad conſulentes, & qui auxilium, vel fauorem percuſſioni clericorum præſtauerint, immodò & ad tantam percuſſionem habentes, extendunt Doctores ex textu in *cap. quantus 47. cap. cum quis, hoc tit.* Diana d. *trall. 4. refol. 14.* Suarez *diſput. 22. de cenſur. ſect. 1. num. 55.* Hieronymus Garcia *diſt. diſſimili. 3. pan. 3.* qui varios caſus reſoluunt circa mandantes ſimilem percuſſionem.

CAPVT VII.

² Idem.

Porro ſi aliqui violentas manus in fratres ſuos iniiciunt, & ducti poenitentia, non conuiſi, ſed priuati à re ueniam poſtulant, eos monere debes, & inducere, ut his, quos læſerunt, congruè ſatisfaciant, & Apoſtolico ſe conſpectui repræſentent, cum à te, vel alio ſine ſpeciali mandato Rom. Pont. abſolui non poſſunt.

NOTÆ.

1. **I**dem.] Ita etiam legitur in prima collectione, *sub hoc tit. cap. 9.* nullibi tamen exprimitur, cui referat Alex. sed credo etiam spectare textum hunc ad ipsius Pontificis Decretalem

relatam in *cap. 1. hoc tit.* Illud tantum in presenti deciditur, excommunicationem canonis Si quis *suadente*, etiam incurri ex percussione occultis, & absolutionem ipsius excommunicationis Romano Pontifici referuari, licet hodie, vt videtur talis percussor clerici, debeat esse notorius, post extravagantem *Ad emendam*.

CAPVT VIII.

* Idem.

Nvlli se possunt privilegio Ap. Sed. tueri, quominus b excommunicatos vitare debeant, & pro violenta manuum iniectione in clericos, sicut excommunicati vitari.

NOTÆ.

1. **I**dem.] Ita etiam legitur in *cap. 10. hoc tit. in 1. collect.* ubi additur *per capitulum Significasti*: sed vt notavit Antonius Augustinus, non reperitur integra epistola in aliquo capite *Significasti*: quare credebam legendum esse, *per capitulum Sicut*; & ita textum hunc spectare ad Decretalem Alex. III. relatam in *d. cap. 1. & sequent.*

2. **I**dem.] Non quia Pontifex tale privilegium communicandi impo-
ne excommunicatis concedere nequeat, quia cum hæc prohibitio sit iuris positivi, vt dicimus *infra in cap. significasti*, rectè potest privilegium tolli, vt probat Balboa in *cap. 2. de except.* Averduno *de metu lib. 2. cap. 31. num. 28.*

CAPVT IX.

* Idem Episcopis, & aliis Prælati per Galliam constitutis.

Parochianos vestros, si qui in monachos, vel conuersos præfati Ordinis violentas manus iniecerunt, sublatæ appellationis remedio, secundum tenorem generalis decreti excommunicatos publicè nuntiatis, ipsosque faciatis sicut excommunicatos arctius vitari, donec b lætis congruè satisfaciant, & cum literis vestris Apostolico se conspectui repræsentent.

NOTÆ.

1. **I**dem.] Ita etiam legitur in prima collectione, *sub hoc tit. cap. 14. & post Concil. Lateran. p. 14. cap. 11.* nec amplius exprimitur: credo autem etiam textum hunc spectare ad Decretalem relatam in *cap. 1. hoc tit.*

2. **I**dem.] Corruptum est, ad assequendam absolutionem ob crimen admissum desiderari satisfactionem parti læse factam, *cap. 2. hoc tit. in 6. probant latè Ricciolus de iure person. lib. 4. cap. ult. Gibalin. de censur. disput. 9. q. 4. num. 6. Gutierrez 99. canon. cap. 5. num. 29.* Illud in presenti

difficile videtur, quomodo videlicet in presenti casu ob iniuriam illatam monachis, seu canonicis regulatibus, ipsi conqueri possint, cum certum sit, monachos ob iniuriam sibi illatam agere non posse, sed tantum monasterium, exemplo Patrisfamilias, ob iniuriam filio introgatum, *l. si unus, §. si filiofamilias, ff. de iniuriis.* Sed respondendum est, Alexandrum in presenti dum docet lætis congruam satisfactionem esse præstendam, accipiendum esse de satisfactione præstanda monachis, mediante ipso monasterio, vel eius syndico, vt docuit Balboa in *cap. causam 9. num. 10. de iudiciis.*

CAPVT X.

Idem * Ianuensi Episcopo.

Ex tenore literarum tuarum nobis innotuit, quod B. Canonicus sanctæ Mariz de b vicinis, in quendam subdiaconum manus iniicit violentas, &c. *Et infra*: Mandamus itaque f. t. quat. recepto ab eo Canonico iuramento, quod tno debeat mandato parere, ipsum vice nostrâ a sententia, quâ tenetur, absolvas, sibi que in virtute iuramenti præcipias, quod de cætero in clericum, monachum, hospitalarium, vel alium Religionis conuersum manus non iniicias violentas, nisi se e defendendo, aut de mandato fecerit suorum Prælatorum, vel nisi super eum prælationis ministerium, aut magisterium habeat, aut cum ipso socius fuerit in eadem Ecclesia.

NOTÆ.

NOTÆ.

1. ^a *Anvers.*] Ita etiam legitur in prima collectione, *sub hoc tit. cap. 15.* de lanuensi, seu Genuensi Ecclesia *q̃i in cap. per vestras, de dona. inter.*
2. ^b *Sancta Maria de Viter.*] Monasterium sanctæ Mariæ in Viteris olim erat canonicorum regula-

rum in ipsa diocesi lanuensi membrum Congregationis Montariensis, et h̃ postea Ecclesia canonice regularium effectum sit, ut refert Peonorus lib. 1. *canonic. regul. cap. 27. num. 2.*
^c *Defendenda.*] Iuxta tradita suprà in *cap. si vero 3.*
^d *Magisterium.*] Et ita incultu disciplinæ, iuxta tradita suprà in *cap. 1.*

CAPVT XI.

Idem ^a *Cænomanensi Episcopo.*

DE cætero noueris, quod laicus pro violenta manuum iniectione in clericum vinculo excommunicationis allicitus, si habeat capitales inimicitias, vel alias iniustas excusationes, quibus abstinere rationabiliter excusetur, ita quod sine periculo Apostolico se nequeat conspectui præsentare, licet diocesano Episcopo, recepto iuramento, secundum morem Ecclesiæ absolutionis gratiam imperari; sed est illi sub iuramento debito iniungendum, ut quamcitiùs habuerit opportunitatem Romanum Pontificem adeundi, adeat mandatum Apostolicum suscepiurus.

NOTÆ.

1. ^a *Cænomanensi.*] Ita etiam legitur in prima collectione, *sub hoc tit. cap. 16.* ubi additur *pari capiti Tua nos;* unde cognoscitur in præfati referri partem textus in *cap. de clericis preerin.* In hoc textu tantum testatur eas, in quo ob legitimum impedimentum potest Episcopus ab-

solvere ab excommunicatione incursa ob violentam percussione; & contingit cum ob difficultatem itineris non potest facili adiri Rom. Pont. & ita cum ob gravem necessitatem reddat difficilis accessus ad Sedem Apostolicam, posse Episcopum absolvere ab hac excommunicatione, docuerunt Barboza de *prel. Episc. alleg. 4. num. 6.* Gibalini in *synop. censur. verbo Iniuria, num. 16.*

CAPVT XII.

Vrbanus III. ^a *Cænomanensi Episcopo.*

AD hanc autem, cum inter ^b parochianos tuos, vel inter eos, & alios controneris a coram delegatis iudicibus agitur, sapiùs à iudicibus ipsis, ut asseris, Apostolica auctoritate tibi iniungitur, ut alteram partium fortè iudicio parere contemnerem, vel ob aliam causam rationabilem, ecclesiasticà districtione percèllas, illi verò, qui subiacerè excommunicationi mandantur, ad alios iudices literas ab Apostolica Sede impetraverunt, à quibus nihilominus auctoritate tibi Apostolica mandatur, ut eos, qui de mandato iudicum priorum excommunicati fuerant, habeas absolutos. Super quo tua discretio dobitat, quid tibi in diversitate huiusmodi sit agendum. Ad quod breviter respondemus, quod si literæ ad secundos iudices impetratæ c tacita veritate obrentur non fuerint, eos ad mandatum eorum absolutos habere debes, præcipuè cum Romanà Ecclesia absolutionem sententiam delegatorum iudicum nequaquam consueverit aliis delegare, nisi in literis commissionis expresso de sufficienti cautione præstanda ab iis, qui absolui debent, quod iudicio Ecclesiæ debent obedire.

NOTÆ.

1. ^a *Cænomanensi.*] *Sennensi* legitur in hac sexta collectione, sed inscriptionem, & litteram restituo ex prima collectione, ubi *sub tit. de rescript. cap. 8.* ita habetur, & ex Concilio Lateran. *pari 6. cap. 21.* ubi habetur, *At, Cænomanensi Episcopo;* & additur *pari capiti Cum Apo-*

stolica, ut cognoscatur, in præfati referri partem textus in *cap. cum Apostolica, de sponsalib.*
^b *Parochianos.*] Plerumque enim diocesani appellantur parochiani, & diocesani parochia, ut probatur in *cap. 2. de peni. cleric.*
^c *Tacita veritate.*] Quo casu rescriptum ipso iure nullum est, iuxta tradita in *cap. super 20. de rescript.*

CAPVT XIII.

• Clemens III.

EA noſcitur, &c. Quod vique fraternitas tua diligenter attendens, certificari humiliter poſtulauit de eis, qui violentas manus in clericos aliqua temeritate iniiciunt, nec eis ſuppetunt facultates, vt ad Sedem Apoſtolicam valeant laborare: quomodo his ſcilicet poſſit ſalubriter prouideri? Super quo taliter tibi duximus reſpondendum, vt ^b mulieres, quas ſexus fragilitas non permittit ad Sedem venire Apoſtolicam, ^a ſenes, & ^d valetudinarij, ſeu alij membrorum deſtitutionibus impediti, licet ad Apoſtolicam Sedem non venerint, ab Episcopis valeant ſalutis remedium accipere, & ex eorum officio fidelium communioni reſtitui, ſatisfacto iuxta facultates iis, quibus per eos conſtituerit iniurias irrogatas. Alios autem, ſive pauperes, ſive diuites, Sedi Ap. vel eius Legato, vt beneficium abſolutionis obtineant, neceſſe eſt præſentari. Si verò huiusmodi inſirmitatis tempore timore mortis beneficium fuerit abſolutionis indultum, per iuramentum eis iniungatur, vt poſtquam fuerint ſanitati reſtituti, ad Romanam Eccleſiam, vel eius Legatum accedant, mandatum ſuper talibus recepturi.

NOTÆ.

1. ^a *Clemens III.*] Ita etiam legitur in ſecunda collectione, ſub hoc tit. cap. 1. nullibi tamen exprimitur, cui reſcribit Pontifex.
2. ^b *Mulieres.*] De quibus egi ſuprà in c. mulieres.
3. ^c *Senes.*] Qui autem dicantur ſenes quod

hanc abſolutionem promittendam, exponunt Barboſa de preſſ. Episcopali alleg. 41. num. 27. Diana de iura. 4. p. 9. reſol. 60.

^d *Valetudinarij.*] Idem quacunq; corporis impotentia impediti, etiamſi non immincat periculum mortis: & in hac parte ſtandum eſt iudicio medicorum, vt reſolu. Barb. d. alleg. 41. num. 25.

CAPVT XIV.

• Idem.

CUm non ab homine. Et infra: A nobis itaque fuit ex parte tua quaſiſum, an teneris à communione illius abſtinere, qui pro temeraria manuum iniectione, in ſententiam incidit, antequam excommunicatus publicè nuntiatus: & an incidant in canonem late ſententiæ interfeciores clericorum, aut Presbyterorum illorum, qui abiectione ſuſcepti ordinis miniſterio, in publicis ^b bellis, vel etiam præter bella ſe homicidiis polluere non verentur, cum in comellationibus & ebrietatibus, atque rapinis, & aliis enormitatibus æquè ſunt, vt laici, vel deterius debacchantes. In ſecunda igitur conſultatione taliter reſpondemus, quod à communione eius, qui pro ſacrilega manuum iniectione in clericum antedictum in excommunicationem incidit, licet denunciatus non ſit, ab hoc debeas abſtinere, niſi forè id tibi ſoli pateret, in quo caſu ipſum priuatè tantummodo euitabis, quamdiu ab Eccleſia toleratur: vt ſaltem verecundie rubore ſuffuſus, pro latenti exceſſu taliter ſatisfacere compellatur. In articulo verò quaſtionis terzæ tale præbemus reſponſum, vt oceiſores clericorum, vel Presbyterorum, qui vt dictum eſt, contempto clericali habitu, tyrannidi, & enormitati ſe inuerecundè commiſcunt, in odium clericalis exceſſus, & in terrorem, atque correctionem ſimilium, canone late ſententiæ laici minime coërceantur, iniungatur tamen eis poenitentia compertens aliquantulum aſperior, quàm ſi omnino in laicos talia commiſiſſent. Præterea, quia nemo deſperandus eſt, dum fuerit in mortali corpore conſtitutus, eum id, quod diſfertur, aliquando conſilio poſtmodum maturiore perſeuiatur: ad vltimum quoque, quod conſuluſti nos, ſi de iure communi tibi liceat, ac ſuffraganeis tuis illos, qui pro temeraria manuum iniectione excommunicationis ſententiâ percelluntur, abſolvere: huic manifeſtiùs reſpondemus, quod obſeruata exceptione quorundam quæ in decretalibus Alexandri III. continetur, hoc nemini liceat, niſi Apoſt. Sed. gaudeat privilegio ſpeciali. Verumtamen volentes illis, qui in tam remotis partibus tuæ prouinciæ commorantur, diſpenſatione prouidere paterna: ſ. t. p. literis indulgemus, vt illos, qui taliter excommunicati ſunt, ipſo iure, ſi ^a corporum impotentia, aut ^c paupertas eos impediatur, aut aliqua inueitabilis, & manifeſta neceſſitas, dummodo ſatisfaciant iis, quos offenderint, & aliquam agant poenitentiam, ad correctionem ſui, exterorūque terrorem, à ſententiâ excommunicationis, auctoritate Apoſt. fretus abſoluas: ſi tamen ex perſequeutione huiusmodi læſio corporalis enormis, aut mors non fuerit ſubſequuta: nimirum in his omnibus, ſi quis Sanctorum Patrum

statuta diligenter persecruterur, nihil nouum nos respondiſſe reperiet, ſed quod antiquum eſt, quali quadam manu ſollicitudinis innouaſſe.

NOTÆ.

1. a *Dem.*] Ita etiam legitur in ſeconda collectio-
ne, ſub hoc tit. cap. 1. ſed veram inſcriptionem
huius textus dedi in cap. cum non ab homine,
de iudi-
b. Reſp.] Contra tradita ſuprà in cap. petio,
de homicid.
c. Alex. III.] Relatus in c. 1. 2. & ſeqq. hoc titulo.
d. Corporum impotentia.] Veluti ſi eſt nimia

debilitas, de qua ſuperiori textu, ob infirmitatem,
vel ob ætatem.

e. Pauperes.] Pauperes enim poſſunt abſoluti
ab Epifcopo, cap. quod de his, cap. quamuis, hoc
tit. non ſolùm mendicantes, verùm & non ha-
bentes congruam ſuſtentationem, qui tamen
attento ſtatu perſonæ indigere videantur. Barboſa
de poſſ. Epifc. alleg. 41. n. 24. Et qui dicantur pau-
peres quia hoc beneficium abſolutionis, arbitrio
Epifcopi relinqui, cum alijs reſoluit Barboſa ibi.

CAPVT XV.

Idem.

Cum deſideres, quid tua fraternitas obſeruare debeat ſuper iis, quæ dubietatem
contineat, Apoſtolicæ Sedis reſcripto plenius edoceri; nos qui licet immeriti ex
accepto adminiſtrationis officio conſultaſionibus reſpondere cogimur ſingulorum
dec. Et inſtrà: Fuit autem primæ quæſtionis tenor huiusmodi, vtum alicui excommu-
nicato, qui mandato Eccleſiæ ſtare iurauit, & ante abſolutionem Epifcopus ei com-
munionem reddidit, ſit communicandum ab alijs; & an Epifcopus id facere debeat.
Cui ſiquidem quæſtionis taliter duximus reſpondendum, quod cum cauſo iuratoria,
quàm hodie qui excommunicati ſunt, præſtant, poſitis ad cautelam ex conſuetudine
Eccleſiæ, quàm ex rigore canonum ſit inducta, neque momenti tam validi reputetur,
vt niſi abſolutionis beneficium ſubſequatur, ille, qui excommunicatur, debeat com-
munioni aliorum reſticti, præſerim cum ex eo iuramento abſolutionem conſecutus
non ſit, & conſectum excommunicatum fuiſſe, & verum ſit, abſolutum non eſſe;
non poteſt Epifcopus, nec debet ei communionem dare; neque alij eidem communicare,
niſi fuerit ſecundùm formam eccleſiaſticam poſt iuramentum præſtatum ab-
ſolutus; quia ſecundùm Apoſtolorum canones, & Fabiani ſtatuta Pontificis, qui
cum excommunicato ſcienter communicauerit, eſt communione priuandus; immò
iuxta ſuſdori ſtatuta, cum eo excommunicationis contrahit penam. Secundæ quæ-
ſtionis ſtatuta canonum, & præcipuè piz memoriæ Alex. III. prædeceſſoris noſtri ſe-
quentes, hunc ſinem duximus imponendum, quod ſi publica fama eſt, aliquem
verberaſſe clericum, neque Epifcopus, neque alij ei communicare debeat, niſi ad
arbitrium Epifcopi de hoc ſe purgauerit, vel ad maiorem cautelam beneficium ab-
ſolutionis acceperit. Tertiò loco tua diſcretio requiſiuit, ſi clericus verberatus ab ali-
quo querimoniam apud ſuum Epifcopum depoſuerit, & teſtes producere paratus fue-
rit, ſed Epifcopo mediante, & communicante ei, qui clericum verberauit, amica-
biliter cum eo compoſuerit, & reconciliatus ei fuerit, an ei communicandum ſit ab alijs;
Super quo taliter reſpondimus, quod licet ille qui violentas manus iniecerit, ei, quem
læſit, ſatisfeciffe videatur, Eccleſiæ tamen quam offendit, ex hoc non ſatisfeciffe dig-
noſcitur, & niſi forma eccleſiaſtica, quæ pro abſolutione talium, vt ſuprà dictum eſt, in-
troducenda eſt, obſeruetur, non eſt ei communicandum. Vltimæ præterea quæſtionis
omnes perplexiones reſoluimus, quod cum in pari ſtilo criminis conquadretur, qui cle-
ricum captiuum retinet, licet violentas manus in ipſum non iniecerit; vt is, qui
violentas manus iniecerit, eſt euitandus, nec eſt communioni fraternæ reducendus,
niſi iuxta formam Eccleſiæ fuerit, vt ſuprà dictum eſt, abſolutus.

NOTÆ.

- a *Dem.*] Ita etiam legitur in ſeconda collectio-
ne, ſub hoc tit. cap. 4. nullibi tamen exprimi-
tur qui reſcribat Clementis III.
b. Communicare.] Iuxta tradenda inſtrà in cap.
ſignificauit.
c. Poſſe Epifcopus.] Immo nec ipſe Romanus
Pontifex poteſt cum excommunicatis communi-
care; & ſi ſine iuſta cauſa etiam in humanis com-
municauerit, grauem culpam incurrit, vt docue-
runt Gloſſa verbo *ſuare*, in cap. nulli 3. hoc tit.
D. D. Gonzal. in Decretal. Tom. V.

Conar. in cap. alma, p. 1. §. 1. mon. 2. Suarez de
cenſur. diſpoſ. 2. ſect. 1. num. 11. & diſpoſ. 6. ſect. 4.
num. 3. Sayrus in clauſi Regia lib. 2. cap. 11. num. 23.
Henriques in ſumma, lib. 13 cap. 3. num. 4. Alber-
tus Pignus lib. 4. de Eccleſ. hierarch. cap. 3. Barb. in
cap. 1. n. 2. 93. diſp. Marius Aleſius de cenſur. lib. 1.
diſp. 11. cap. 4. Theoph. tom. 14. de iur. marit. lib. 1.
cap. 2. quia licet præceptum hoc vitandi excommu-
nicatos non ſit inter diuini, vt ex cap. 46. & 18.
Marſi inſtit. c. ſicula 16. c. excommunicatos 17. 11.
9. 3. nonnulli voluerunt relati à Gibalino de cen-
ſur. diſquiſit. 3. q. 1. conſect. 2. & tantum ſit iuſus
C C c 3 poſſit,

postul, cap. nemo 31. 11. 9. 3. ideoque nec in pœnam minoris excommunicationis Pontifex incidat, vt pote humanis legibus solutus, ea regula legis digna non est. *Cod. de legibus, cap. significasti 4. cap. innotuit, de elect. cap. propositi, de concess. prob.* tamen offendit eas leges, quorum iusto discrimine, & vi directius alligatur, l. digna 4. C. de legibus, cap. insum 2. 9. dist. cap. cum omnes 6. de consen. Facit rationis, & honestatis præscriptum in summo Pontifice vñandi excommunicatos, ex Concilio Africano sub Cœlestino, & Bonifacio, can. 105. qui est lo Cōdice canonum Ecclesie Afric. can. 138. vbi sic African PP. ad Cœlestinum: *Nec ad nobis excommunicatos in communionem vltra velis excipere, quia hoc etiam in Nicæna Concilio definitum scilicet aduerit venerationis tua.* Quæ tamen ne laboretur, ad monitio siuplex fuit, non præceptiva, vt obsecratur Baroniis tom. 4. anno 419. Bellarmin. lib. 2. de Rom. Pontifice, cap. 15. vers. Ad 4. Alanus Copius dialog. 1. cap. 10. Facimus tantum traxit in cap. cum olim 13. vers. Unde, ibi: *Quid cum tu fili Abbas, de prinis. cap. multi 8. cap. si aliquando 41. hoc tit. cap. 1. in fine, de excep. lib. 6. Illustrat Præceptor meus D. Franc. Romanos pro Episc. Lugd. propos. 3. §. 1. num. 106.*

d *Apostolorum.*] In can. 11. Apost.

e *Fabiani.*] In cap. si in Apostoli, quæst. 3.

f *Isidori.*] In cap. cum excommunicatus 11. quæst. 3.

g *Causam.*] Absolutio hæc ad causam impenditur quoties dubitatur, an censura iocunda sit, neque; & ita datur sub conditione, si valida sit

censura, aut incursa fuit. Eius mentio fit in cap. ad presentiam, de appellat. cap. conicus, et 2. de testibus, cap. Apostolica, de excep. cap. per tuas, cap. venerabili, hoc tit. cap. presens, cap. venerabilibus, hoc tit. in 6. de qua, & eius effectus plura de censuris scribentes, & nouit Gibalvus de censur. dispus. 9. q. 2. num. 6.

h *Capitulum vñat.*] In qua retentione cum ipsa percussione græue sacrilegium perpetratur, cap. attendendum 13. in fine, cap. si quis deinceps 22. 17. q. 4. cap. constitutum 9. 3. q. 5. cap. nulli 1. 1. 3. q. 4. cap. ita nos 15. 15. q. 2. cap. venerabilem 34. vers. numquid, de elect. cap. ad Apostolica 2. de re iudic. lib. 6. Clemens 1. de pœnis: *facis textus in l. si quis in hoc genus, C. de Episcop. & clericis.* Pontifex enim dicto canone si quis suadente 17. q. 4. quolibet violenta manu iniectione in clericum, siue illa sit in personam eius, siue in eius res ipsi adhaerentes, vnde fit iniuriola illa ipsi personæ violentia; cuiusque violatio huiusmodi est oculis, mutilatio, volucriatio, percussio, quæcumque ratioe, aut instrumento fiat, exempli causâ manu, pede, ense, fuste, loris, immo etiam vento occulte propinato; quia illis omnibus modis illius personæ, ac corpori violentia inferret. Etiam violenta iniectione manuum est deicentio, ne ea aliquo loco exeat, aut ad illum nemo accedat, vt docent alios casus iniuriolæ iniectionis manuum adductes Gibalvus in d. synop. consens. verbo iniuriam, Diana p. 9. tract. 4. resol. 19. 27. 30. 36. 37. Hieronymus Gatcha in summa, tract. 1. difficult. 3. dub. 1. pœnta 2. & 3. Suarez de censur. dispus. 22. sect. 1. Fragoso 2. p. de regim. lib. 3. dispus. 2. cum sequent.

CAP V T XVI.

Clemens III.

Veniens ad Sed. Ap. I. lazar presentium suâ nobis asserione monstrauit, quod cum b matutina officia celebraret, quædam monialis Ecclesiam ingrediens cum alio clerico, ludendo impedimentum præstabat quominus Deo diuinum posset obsequium exhibere. Vnde memoratus sacerdos commotus, vt liberius posset circa diuinorum celebrationem vacare, manibus in eam appoluit, vt extra Ecclesiam poneret, cum nollet exire, in trahendo ipsam coegit eandem extra Ecclesiam residere: sed tum illum propter hoc tanquam excommunicatum euitasti, & facis ab aliis euitari. Ideoque mandamus, quatenus si res ita se habet, eum de extero non euites: cum ex hoc ipsum excommunicatum nullatenus videamus.

NOTE.

a *Clemens III.*] Ita etiam legitur in secunda collectione, ludendo impedimentum præstabat quominus Deo diuinum posset obsequium exhibere. Vnde memoratus sacerdos commotus, vt liberius posset circa diuinorum celebrationem vacare, manibus in eam appoluit, vt extra Ecclesiam poneret, cum nollet exire, in trahendo ipsam coegit eandem extra Ecclesiam residere: sed tum illum propter hoc tanquam excommunicatum euitasti, & facis ab aliis euitari. Ideoque mandamus, quatenus si res ita se habet, eum de extero non euites: cum ex hoc ipsum excommunicatum nullatenus videamus.

b *Matutina officia.*] De quibus egi in cap. 1. de celeb. Missæ.

c *Monialis.*] Quæ etiam gaudet priuilegio

canonis Si quis suadente, vt probauit suprà in cap. non dubium.

d *Ponere.*] Quare hi, qui incumbit turbantes diuina officia ad Ecclesia eiecerit, potest etiam per vim clericos turbantes officia diuina impunè eiecerit, cap. cum voluerit, & 5. fin. hoc tit. quia talis percussio iniuriola non est. Docet Gibalvus in synop. dicto verbo iniuria, a num. 3.

CAPVT XVII.

^a Clemens III.

Pervenit ad nos, &c. Illis autem, qui ægitudine præditi prius absolutiis beneficio ad Sedem Ap. nequeunt laborare, recepti ab eis, sicut tantis est, iuramento, potes absolvi, ita quod sanitati pristinae b restituti Apostolicis se conspectui repræsentent: sexui verò c femineo, ac pueris, & senibus satis super hoc te credimus posse liberè dispensare. De iis etiam, qui clericis non inimicem, sed medicam, vel leuem iniuriam irrogant, tunc fraternitatis abtutio duximus committendum.

NOTÆ.

1. ^a *Clemens III.* In secunda collectione, sub hoc tit. cap. 3. legitur tantum idem, & nullibi exprimitur, cui Prelato rescribat Pontifex, sed verum huius reatus interpretationem dedit, & illustravit in cap. provenit, de iust. cogend. Hinc de cisioni omnino consonat Innocentius III. in epistola missa Archiepiscopo Compostellano lib. 1. epistol. apud Sixtium, fol. 370. ubi ita scribit: [Ad nostram nostris audientiam pervenisse, quod in diocesi tua manus iniicientes in clericos violentas, cum à Sede Apostolica nimium sint remoti, propter ætatem, & infirmitatem illæ nonnunquam vix accedere valent beneficium

absolutionis petitori. Vi autem excommunicatos huiusmodi ad nos non valentes propter impedimenta, quæ præsumimus, proficisci, & mulieres clericos verberantes absolvi tibi licet in diocesi tua, statenarij tuz auctoritate presentium indulgemus, nisi forte ipsorum excessus ita gravis fuerit, & enormis, quod propter hoc censura sit Apostolicæ Sedis requirenda. Nulli ergo, &c. Datum. Lateran.

b *Restitui.* Et ita etiam absoluti cessante impedimento tenentur Romanum Pontificem adire.

c *Femineo, & pueris, ac senibus.* De clem. minis egi supra in cap. mulieri, de senibus, & in cap. ex nescitur 13.

CAPVT XVIII.

^a Idem III.

Significabit nobis. Et infra: Verum electicos, qui scienter, & sponte participaverunt excommunicatis à nobis, & ipsi in officiis receperunt, eadem sententiā cum ipsis non dubitamus inuolui, quos etiam pro beneficio suæ absolutionis habendo, ad nos volumus cum insinuatione literarum tuarum transmitti.

NOTÆ.

- a *Idem.* Ita etiam legitur in secunda collectione, sub hoc tit. cap. 7. sed nullibi exprimitur, quibus Prelatus rescribat Clemens, nec integram huius reatus litteram habemus, etsi sint plures decretales huius Pontificis in hoc volumine compilatæ, cum hoc principio, *Significavit nobis.*

COMMENTARIUM.

1. **I**n presenti textu agitur de effectibus maioris excommunicationis, quæ præcipue consistunt in privatione communionis fidelium, & sacramentorum: quoniam ut plenius exponamus, sciendum est, communionem apud fideles multiplicem repetiri, aliam internam, quæ per charitatem fideles vi Christi membra, & per fidem Christo ut capiti volunt, de qua psalmo 118. dicitur: *Participes ego sum omnium timendum te.* Et Ioannis cap. 4. *Hoc mandatum habemus à Deo, ut qui diligit eum, diligat & patrem suum.* Et Apostolus ad Romanos cap. 12. ait: *Muti unum corpus sumus in Christo.* Et ad Corinth. cap. 12. *Vos omnes estis corpus Christi.* Et ad Ephesios 4. & cap.

in scripturis 18. q. 1. cap. 2. vers. *Quomodo enim, de summa Trin. Cuius voluntas ratione fideles iustitiam participes sunt bonorum omnium, quæ alij iustitiam operantur; non ita ut ea bis aliorum charitatis augerent, aut fructum; sed ut ex ipsius meritis aliteri Deus auxilium speciale conferat.* Explicat D. Augustinus de doctrina Christi. cap. 22. *Magister Sentent. dist. 27. D. Thomas 2. 2. q. 23. art. 2. Alibi: pines lib. 1. obs. cap. 1. Getmon. lib. 3. sac. cap. 14. num. 30.* Alia est communicatio politica, civilis, & externa, quæ consistit in mutua salutatione, mensa, & similibus. Alia est communicatio mixta, & per quam participes sumus sacramentorum, suffragiorum, & orationum generalium Ecclesiæ, cuius membra per baptismum efficiuntur. Dicitur autem mixta, quoniam actibus, & ceremoniis carnis consistit, & ad spiritualia bona ordinatur, nempe ad accipiendam, vel conferendam gratiam: de qua communione intelligitur, quod in Symbolo fidei confitemur de communione Sanctorum æternæ fidelium: quia fideles plerumque sancti appellantur, inquit illud Apostoli ad Romanos cap. 1. ibi: *Omnium, qui Romæ sunt, dilectis Dei vocatis sanctis.* Illustrat Loaysius in can. 34. Concilij Iluber. Coar. in cap.

alma, part. 1. in initio, num. 2. Suarez de censur. diffus. 8. sect. 1. num. 6. Marius Alciurus eod. tract. tom. 1. diffus. 2. cap. 3. §. Tria, Stuerius Blomius in notis ad can. 11. & 12. Apost. Albalpneus diff. lib. 2. obsequ. cap. 8. & 21. & priori quidem communio separata peccatum mortale, quia per illud charitas amittitur, & peccator solum reseditur, cap. audi. 21. 11. q. 3. cap. vtrum orarium, §. crimina, 25. diff. & ideo peccatum mortale, quia hac communione priuatur, cap. quia natus 36. cum sequenti, de parit. diff. 1. etiam excommunicationis appellatur à Gratiano in diff. cap. audi. §. cum ergo. Glossa verbo Tantum, in cap. penult. hoc tit. Gabriele in 4. diff. 18. q. 2. art. 1. sed improprie, & non secundum usum Ecclesie, quia priuatur tantum interna illa communione, quæ non pendet à voluntate Ecclesie; non autem priuatur communione ecclesiastica, d. cap. audi. §. cum ergo, cap. nolite 2. cum sequenti, 11. q. 3. in qua Ecclesie potest ius, & potestatem habere: nec peccatum mortale censura est, quia censura non habet rationem culpe, vt tradunt Couar. in d. cap. alma, 1. p. in initio, num. 5. Suarez de censur. diffus. 8. sect. 1. Marius Alciurus eod. tract. tom. 1. diffus. 2. cap. 3. §. Postremi.

Deinde sciendum est, excommunicationem maiorem non priuare priori communione ioterina, quia iam christianum illa priuatum supponit, d. cap. audi. vers. Cum proditum, 11. q. 3. eo quod non nisi pro mortali crimine infligitur, cap. nemo, cap. nolite 11. q. 3. separat tamen à communione externa, ac politica, siue spiritali, cap. excommunicatus 17. cap. cum excommunicatus 18. cum duob. segg. 11. q. 3. cap. 2. de except. cap. in qui 18. cap. alma, hoc tit. in 6. cap. cum olim 12. de priuileg. D. Paulus 1. ad Corinth. cap. 3. ibi: Cum huiusmodi nec cibum sinit. Et ad Thessalon cap. 4. ibi: Et ne comiscetamini cum illo, vt confundatur. D. Iohannes epist. 2. Nolite cum recipere in domum, nec ane ei dixeritis. Item à communione sacramentorum, & à communal iustitiarum Ecclesie participatione, cap. penult. hoc tit. Tertul. in apolog. cap. 39. ibi: Summusque furui indicij prædictum, & si quis ita deliquit, vt à communione orationis, & cœnæ, & omnis sacelli commercij relegatur. Vbi notauit Pamelius, & in tract. de pudicitia, cap. 14. num. 110. & ad D. Cyprianum epist. 68. Adde insignem excommunicationis formulam apud Synchum epist. 38. ad finem, ibi: Antropon, eiusque socii, Thomæ, & eius socii nullum Dei famulum aperiant, omnes illis religiose ades, ac sepe claudantur: nulla diabolo in paradiso pars est, qui si eam inopertierit, expelletur. At tam priuatur omnibus, & Magistratibus præcipio eodem cum illo neque tello, neque mensa vti, tam sacerdotibus in primis, qui nec viuente, nec mortui funebri pompa deducunt. Est enim excommunicatio maior censura ecclesiastica, quæ separat homo ab Ecclesie communione, & sacramentorum receptione, vt probant Couar. in cap. alma, 1. p. in initio, num. 3. Suarez d. diffus. 8. sect. 2. num. 1. Valquez tom. 2. in 3. part. tract. de excomm. cap. 1. diffus. 1. Bonacina de censur. diffus. 2. q. 1. parit. 1. Giballinus de censur. diff. 2. per illam enim separatur à corpore Christi, quod est Ecclesia, cap. final. 3. q. 4. cap. audi. 21. 11. q. 3. cap. 4. de cleric. excom. & ideo cum non sit eius membrum, non potest eius spiritui vegetari, cap. nihil 33. 11. q. 3. de quibus communionibus accipi debet textus in cap. omne christianum 32. ibi: Ab ecclesiastica communio-

ne, 11. q. 3. cap. 2. de cleric. excom. ibi: Atque omnibus excommunicatur. Et cap. penult. hoc tit. ubi excommunicationis nomine, non tantum minor, quæ à participatione sacramentorum, sed etiam maior, quæ à communione fidelium separatur, intelligitur, nam cum communio omnes supra relaxas comprehendat, vt constat ex d. cap. omnis, vique negatio communionis, quæ per verbum illud Excommunicatur, vel simile exprimitur, omnes absolute excludit, & sic non tantum minor, sed etiam maior, quæ à participatione sacramentorum, sed etiam maior, quæ à communione fidelium separatur, vt verborum comprehendit, & ita vltus, & consuetudo obinonit, ex rationibus relatis à Couar. diff. 1. p. §. 8. num. 5. Suarez d. diffus. 8. num. 3. Bonacina de censur. diffus. 2. q. 1. parit. 2. Theophilus tom. 4. de iur. iur. lib. 1. cap. 2. Et hæc communio priuatur obumbrata fuit apud Iudæos in electione à synagoga eius, qui publicis peccatis delinquebat, cap. 9. Ioannis, ibi: Vt si quis cum confiteretur esse Christum, extra synagoga ferret. Cyrillus Alexandr. lib. 6. in Ioan. cap. 20. ibi: Atque apud Iudæos opprobrium dicebatur, si quidem de synagoga exierat, sicut enim nunc homicida, vel adulter, vel ceteris capitalibus criminibus rei ab Ecclesia pelluntur, ita tunc Confessores Christi à synagoga Iudæorum eliminabantur. Iosephus lib. 2. de bello Iudæo, cap. 7. plera Delicta in cap. 1. Thymon, vers. 17. Deuteros lib. 1. 99. Hebraeor. 9. 9. Nouatius lib. 7. sched. cap. 10. Selden. tom. 2. sinedri lib. 1. cap. 18. & lib. 4. de iure natur. cap. 8. Similit. & apud Gensiles impij, & contumaces à sacrificiis, & omnium aditu, & communione arcebantur, & auis, seu furis infernalibus deuocabantur. Maliciam illis lib. 2. Lilius lib. 6. de cad. 3. ibi: Qui vltius acie excessisset, cum ne quis verbo, tello, mensa, lare recipere, aliam excommunicationem in populos, obsequiaque, quam sanctissimum poterant, idem lib. 10. de cad. 4. Tub lib. 2. de diuin. Lucasius lib. 3. Phasalia.

— Certe violenta potestas
Inueni ista Deo Crassonem in bella sequuta
Sana Tribunia conuenit prælia dora.

Ouidius.

Inueni veniens: præul, à prœul impius esse.
Plato lib. 9. de legibus, Plinius lib. 28. cap. 2. Cæsar de bello Gallico lib. 6. ibi: Si quis aut publicanus, aut priuatus eorum decreto non exiit, sacrificij interdicitur: hæc pena apud eos est grauissima: quibus ita est interdictionis, ut numero impietum, ac sceleratorum habentur, ab iis omnes decedunt, adituque, sermoneque designantur: ut quid ex conagione excommunicati accipiant: nec illi precibus ius reddunt, nec homines villas communicant. Et ita vltimum quidam excommunicationis fuisse ethnicis in usu, confirmant Germanus lib. 1. de sac. immort. cap. 12. Dourensis lib. 1. de sacris Eccles. cap. 3. Venerabilis ad lib. 1. Infil. Tol. cap. 4. Migollanus in Ioseph. vers. 17. annor. 1. Ribadeneira lib. 1. de Principe, cap. 33. Benzonius de interdictione, cap. 1. Et ita quidem, vt non pueret Philip. Malactonem, quem refert Turtianus lib. 2. pro consil. Apost. cap. 42. & lib. 2. ex 7. fabulari, christianum excommunicationem ex hoc Gentilium vltus fuisse deriuatum. Illustrant prædictam Gentilium excommunicationem Ambian. ad Tertul. in apolog. c. 39. obsequ. 2. parit. 2. §. 2. Salmasius in not. ad Capitul. fol. 98. num. 37. Elias Schedius de Diis German. fol. 295. Auerdaño de metu lib. 2. cap. 31. Rouffeldib. 2. hist. Paulic. 1.

blinor

3.
DE MINORI
EXCOMMUNICATIO.

Minor verò excommunicatio priuat tantum facta communiōe, *cap. Presbyterorum 13. 17. q. 4.* hoc est à sacramento participatione, seu perceptione, *cap. 2. de except. cap. penult. hoc tit. cap. si celebrat. de clericis excom.* unde minor excommunicatio communiter ita desinitur, ut sit censura ecclesiastica, quâ baptizatus priuatur passiva participatione sacramentorum, ut probat Glossa verbo non tantum, in *cap. penult. hoc titulu.* Couar. in *cap. alius. 1. p. in nullo. num. 4. & § 8. num. 1.* Suarez *d. dist. 8. sect. 2.* Martinus Alercius *disp. 4. cap. 1.* Vgolinus *tab. 2. cap. 7.* Bonacina *d. dist. 2. q. 1. & q. 3. num. 1.* Illud tamen obseruare oportet ex Cassiano de *instit. monach.* quod olim mos erat in Ecclesia, ut peccator primò priuaretur osculo pacis, postea ingressu Ecclesie, deinde ne oraret cum aliis fidelibus, & iterum ne accederet ad sacramentum Eucharistie sacramentum, cuius perceptio aliorum sacramentorum, tandem fuisset fidelium: quod etiam patet ex *cap. presens 3. q. 2. cap. quisque 21. §. si quis dominus 17. q. 4. cap. nemo 41. 1. q. 3.* qui textus alia difficilis sunt: unde ita aliqui accipiunt textum in *cap. Engeltrudam 3. q. 4.* dum in eo asseritur, mulierem illam non solum excommunicatione, quæ à fratribus societate separat, sed etiam anathemate, quod ab ipso Christi corpore, quod est Ecclesia, credebatur percipiū esse: aīne enim per priuationem à fratribus communionem non intelligi maiorem, aut minorem excommunicationem, sed illam priuationem communionis fraternæ, postquam sequi anathema, id est maior excommunicatio solebat. Sed veram ipsius textus interpretationem iam dedi in *cap. cum non ab homine 10. de indicis.* Erant etiam olim nonnullæ excommunicationes respectiue, seu penales, quibus priuabantur fideles ecclesiastici, seu laici communionem quorundam fidelium, respectu verò aliorum nulla communionem priuabantur, nec vñ, nec participatione sacramentorum, de quibus accipiendū sunt textus in *cap. placuit 18. dist. cap. si quis 9. 18. dist. ibi:* *Sua tantum plures communionem continentis sit, cap. quisque 19. 2. q. 6.* Concil. Meidenſe *can. 10.* de quibus plenè differit Motinus *lib. 2. excois. ser. per tot.* In quibus excois communio priuatio censura ecclesiastica non erat, sed quidam potens separatio, quæ non consistebat diuersam speciem censuræ, ut notatur Acuña in *dist. cap. placuit*, Suarez *de censur. dist. 24. sect. 1. d. n. 2.* Aliquando etiam Ecclesia vnâ tantum ex predictis communionibus priuabat peccatorem, velque sacra communione, *cap. de Presbyterorum 17. q. 4. cap. de illicitis 6. 24. q. 3.* participatione corporis, & sanguinis Domini, *cap. accedens 10. 50. dist. cap. quidam maligni 5. q. 1.* communionem sacerdotali, laica tantummodo concessa, *cap. si quis Episcopus 7. cum sequens. 50. dist. cap. final. 55. dist. de qua egi in cap. 2. de elect. aut pegetina, cap. conuocet 21. eod. dist. cap. clerici 13. q. 2.* aliquando ingressu Ecclesie, *cap. si quis princeps 16. q. 7.* plenius communionem aliquotum fidelium, *cap. 1. 34. dist. cap. placuit 6. q. 2. cap. xli. cap. final. 5. q. 4. cap. Episcopi 8. 11. q. 3. cap. final. 58. dist. cap. placuit 10. 18. dist.* unde apparet, quod olim in Ecclesia priuatio à quolibet ex predictis communionibus scripi imponebatur ex variis causis talaris in dictis foribus, & aliis congestis ab Antonio Augustino in *epist. inu. lib. 37. per tot.* quare in Decreto Gratiani nulla erat mentio maioris, vel minoris excommunicationis.

4.
DE COMMUNICATIO
CUM EXCOMMUNICATO.

Manet ergo communis dialio (insuper habitis illis potius) in maiorem, & minorem excommunicationem, quæ facile probatur ex *cap. 2. de except. cap. penult. hoc tit.* Itaque minor excommunicatio à perceptione tantum sacramentorum tenetur, maior verò non solum à perceptione sacramentorum, verum etiam à communionem fidelium, *cap. penult. hoc tit. cap. 2. de except. ibi:* *A communionem fidelium sit remouet, ubi probatur quæ priuatio communis sit, ut nullus cum excommunicato habere possit colloquium, consultationem, consilium, osculationem, seu orationem; item ut nec ipse excommunicatus se ingerat predictis actibus sacerdotis humanis, & communionis; aliis qui cum excommunicato communicaui, minor excommunicatione ligatur, quam penam imposuerunt Apostoli *can. 10. alius 11.* quem ex Greco exemplari ita verit Genianus Herberius: *Si quis cum excommunicato una prout fuerit, segregetur.* Aloanides verò, & Gophredus ita legunt: *Si quis cum excommunicato, licet in domo, preces commiserit, ipse communione priuatur.* Dionysius verò ita: *Si quis cum excommunicato saltem in domo final orauerit, ipse communionem priuatur.* Communet autem hic ita conceptus credunt: *Si quis autem cum excommunicato, saltem in domo loquutus fuerit, vel final orauerit, ipse communionem priuatur;* ut testet Fabianus in *cap. final. Apostoli 16. 11. q. 3.* Idem postea canon fuit in *cap. excommunicatus, cap. cum excommunicato 18. cap. si quis laicus 26. cap. si quis frater 28. cap. final. 11. q. 3.* Concil. Nicen. *can. 5.* ad quem canonem Apostolorum respectunt Patres Concil. Antioch. in *can. 9. ibi:* *Excommunicatio etiam etiam caræ deprehensio fuerit, & tunc potest communionem priuari, tanquam Ecclesia regulari confidens.* Canones namque Apostolorum etiam regulæ appellatur. Item Concil. Tribur. sub Formoso, *can. 2. ibi:* *In carnisu Sanctorum Apostolorum, quod cum excommunicato non sit orandum.* Pluta Ant. August. *lib. 36. tit. 2.* Crespius in *sum. verbo Excommunicatus non communicandum.* Petrus Greg. *lib. 4. part. 11. 16. cap. 3. & cap. 7.* Bufquetus ad *lucan. lib. 2. epist. 75.* Gaztus in *not. ad Cassian. lib. 2. cap. 15.* latè illustrati in *cap. sacris, de his que vñ, & nouissime probat Illustrissimus Ramos pro Episc. Lusit. ad Alexand. VII. propos. 3. §. final. num. 88.* hæc autem erat minor excommunicatio, quæ olim priuabat tantum à communionem corporis, & sanguinis Domini, *cap. qui verè 38. 11. q. 3.* nunc verò remouet à perceptione sacramentorum, *cap. 2. de except. cap. penult. hoc tit.* Quam excommunicationem communicans cum excommunicato statim incurrit, *d. cap. cum excommunicato, cap. si quis frater 28. 11. q. 3.* ideo excommunicatio à iure dicitur in *cap. nuper 29. §. 2. hoc tit.* Et illa verba, quæ sunt in *d. cap. excommunicatus, 11. q. 3.* Simili excommunicationi subiacet ibi; & in *dist. cap. cum excommunicato: Cum eo communicans excommunicationem contrahet penam;* Concilium Aurel. apud Butchartum *lib. 11. cap. 3. ibi:* *Et si quis ei sociauerit, & communicauerit operibus eius malignis, neuerit se ipsum per ipsum anathematizari;* Intellegant Suarez *de censur. dist. 24. sect. 3. num. 2.* Martinus Alercius *disp. 13. cap. 1.* Couar. in *dist. cap. alius. 1. p. §. 3.* Menardus ad *Concord. regul. cap. 34. §. 1. de simill.* vel communis excommunicationem in genere, non in specie, ita ut accipiantur de minori excommunicatione, quia simile non est idem, *l. 1. §. si ergo, ff. quod iussu, licet**

licet verbum cum simili, maiorem excommunicationem importet in cap. 3. *hoc tit. in 6.* Aliquando tamen communicans eum excommunicato nullam excommunicationem incurrit, veluti in casibus relatis in cap. *quoniam multos* 103. 11. *quasi. 3. cap. quod in dubiis 30. cap. inter alia 31. cap. responsio 43. cap. si eris. cap. cum volumine 54. hoc tit. cap. antecessor 104. cum seqq. 11. quasi. 3. & alia in casibus, de quibus egi in cap. *facris de his qui vel.* Aliquando vero excommunicatio cum excommunicato maior incurritur excommunicatio, veluti in casu deciso in praesenti textu, in quo specialiter constituitur, ut communicans cum excommunicato maiorem excommunicationem incurat, consentientibus scilicet quinq; requisitis, de quibus in praesenti. Primum, quod aliquis sit excommunicatus à Romano Pontifice: secundò, quod communicans cum tali excommunicato sit clericus: tertio, quod ipse communiet in officiis divinis: quarto, quod communicet sciens esse nominatim excommunicatum à R. Pontifice: quinto quod communiet sponte: quorum si aliquod deficit, non incurrit maiorem, sed minorem tantum excommunicationem. Notant Suarez *super disp. 10. sect. 2. num. 4.* Covarruvias *dist. 4. 3. num. 4. & alij plures.* Vnde cavendum est à Glossa finali hic falso asserente simpliciter, & generaliter, eum qui communicat cum excommunicato à Papa, maiorem excommunicationem incurtere; nam eius doctrina ita denum vera est, si praedicta quinque requisita cooccurrant, & sic accipienda est lex 79. tit. 9. *parvi. 1.* Item si communiet quis cum excommunicato in eodem crimine, pro quo fuit maiori excommunicatione ipse li-*

gatus, cap. 3. cap. *qui communicaverit* 19. cap. *vero* 25. 11. *quasi. 3. cap. Anastasius* 19. *dist. cap. super* 29. cap. *inter alia 31. in fine, cap. si concubina 55. de sentent. excom. cap. statimur, hoc tit. in 6.* Covarr. *dist. 4. 3. num. 5.* Suarez de *cenfur. disp. 17. sect. 2. num. 3.* Ratio est, nam communicans cum excommunicato in eodem crimine, damnatus censetur de ipso crimine, d. cap. *super 29. hoc titulo.* Item si quis fuerit cum suis favoribus excommunicatus, cap. *excellensissimus* 102. 11. *quasi. 3. cap. quod in dubiis 30. cap. facris 38. hoc tit.* Item in casibus relatis in cap. *si quis Episcopus 6. & 7. cap. qui meris 29. 11. quasi. 5. Clement. 2. hoc tit. Clement. 2. de sepulc.* Vgolinus *dist. 4. 13. num. 3.* Item maior excommunicatio illis imponitur, qui nominatim excommunicatis praesumptuose participant, oec communiti delictum ob eorum participatione. Hi enim continentur ecclesiasticam disciplinam communioni excommunicatorum pertinaciter se ingerendo, d. cap. *excellensissimus* 11. *quasi. 3. & ita gravibus delinquenti, Covarruvias d. 4. 3. num. 7.* Ideoque maiori excommunicatione feriuntur, cap. *si quis laicus* 26. 11. *quasi. 3. cap. quod in dubiis 30. hoc tit. cap. 2. ionda eius integra, de cleric. excom.* Sed haec excommunicatio non est laica à iure, sed à iudice ferenda, vi constat ex d. cap. *si quis laicus, ibi: Abstinetur; disto cap. quod in dubiis, ibi: Inveniendi, cap. si celebrat, ibi: Ferriculus, de cleric. excom.* & ideo ut imponatur, oportet monitionem praemittere, alia nulla erit, cap. *statimur, cap. constitutione, cap. statimur, hoc tit. lib. 6.* Alia de communicatione cum excommunicatis, & casibus, in quibus imputet cum eis communicatus, adduxi in cap. *facris, de his qui vel.*

CAPVT XIX.

• Clemens III.

T Va nos duxit fraternitas consulendos, an ij soli sint ad Sed. Ap. destinandi, qui in laze sententiae canonem incidentes, manus in clericos iniiciunt violentas, & verum non possint ab eadem sententia, nisi per Romanum Pontificem liberari. Vnde fraternitati tuae breviter respondemus, quod non solum ij, qui in clericos temerarij manus iniiciunt, sed etiam incendiarij, ex quo sunt per ecclesiasticam sententiam publicati, pro absolutionis beneficio ad Sed. sunt Apost. destinandi, & non nisi per Romanum Pontificem absolvendi. Hi verò, qui ecclesiastica beneficia de manibus accipere praesumunt laicorum, non consueverunt pro tali excessu ad Sed. Apost. laborare.

NOTA.

1. **Clemens III.]** Ita etiam legitur in secunda collectione, *sub hoc tit. cap. 3.* est nullibi exprimitur ut referat Pontifex, ut *expus* in In Decretalibus huius Pontificis contingit.
2. **b Canonem.]** Si quis *suadet* 17. *quasi. 4.* culus verba tetuli in cap. 1. *hoc tit.*
3. **c Incendiarij.]** De penis incendiarj egi in cap. *intelliximus, de rapin.* In praesenti illud notandum est, ex hoc textu communiter deduci, incendiarjos ipso iure excommunicandum incurere, siquidem à Pontifice exequantur percutforibus clericorum, qui etiam ipso iure excommunicationem incurrunt. Expendunt etiam pro hac sententia textus in cap. *si quis membrum, cap.*

peffimum, 23. quasi. 8. Sed verè in his liris tantum docetur, incendiarjos excommunicandos esse, non verò ipso iure esse excommunicatos: & praesens equiparatio incendiarj, & percutforis clerici iacitum procedit quoad absolutionis reservationem, post denunciationem ipsius incendiarj: quare nullum incendiarium ipso iure esse excommunicatum, sed excommunicandum, docuerunt Caietan. in *summa verbo Excommunicatio* 22. Navarros in *manuali, cap. 27. num. 94.* Tolet. lib. 1. *summa, cap. 36. num. 5.* Suarez de *cenfur. disp. 22. sect. 2. num. 19.* Sayrus eodem *tract. lib. 3. cap. 29. num. 8.* Giballinus in *synopsi, verbo Incendiarjos, Barbosa de pueris. Episc. alleg. 5. n. 89.* Castropalao *disp. 3. punct. 24. num. 5.* retinentur tamen decretales, & ordinarij incendiarjos excommuni-

care, atque excommunicatos denunciare; & tunc eorum absolutio Romano Pontifici referatur. Latius profequitur expositionem huius excommunicationis Gibalinus verbo *Incedarius*.

d *Laborare*.] Et si grauius peccent beneficia de manu laici accipiendo, vt probatur in *cap. quisquis*, de elec.

CAPVT XX.

• Clemens III.

AD eminentiam Sedis Apostolicæ est recurrendum quotiens articulus dubitationis emergit, vt tunc quis promptiori conscientia recipiat, & obseruet, quod super re dubia sibi fuerit à Sede Apostolica responsum, quantè prerogatiua dignitatis illius certiori noscitur ipsius sententia veritate roborata, quæ in beato Petro Apostolorum Principe præ omnibus aliis amplitudinem prælationis accepit. Sicut autem ex parte fraternitatis tuæ nostris est auribus innotatum, dubium tibi existit, vtum ij sint absolutionis consequuti beneficium, qui cum proiectione manuum in clericos, vel alias religiosas personas, excommunicationem incurrerint, à legatis Cardinalibus, qui à latere Rom. Pont. destinantur pro tempore, fuerint absoluti, cum iidem Legati mandatum sibi super hoc non ostendant expressum. Super quo id à te, ac tuis suffraganeis volumus obseruari, vt eos habeatis absque omni hesitationis scrupulo absolutos, quos constiterit à talibus beneficium fuisse absolutionis adeptos.

NOTÆ.

a *Clemens III.*] Itaciam legitur in secunda collectione, *sub hoc tit. cap. 9.* nisi nullibi exprimitur cui Prælato referatur Pontifex.

b *Religiosi personas.*] Canonicos videlicet regulares, regulos, aut conuersos, vt probatur in *cap. non dubium 5.* hoc tit.

1. **c** *A latere.*] Non tamen temporibus Clementis III. omnes Legati à latere ex Cardinalibus eligebantur, sed ea Episcopis, aut Archiepiscopis, vt probatur Glossa in *cap. excommunicatus*, de offic. leg. Socherus ad epistol. 160. *Iusur. Carrot.* Vnde ex præsentibus verbis, *Legatis Cardinalibus*, non infertur, his temporibus omnes Legatos à latere fuisse Cardinales, licet postea obseruatum sit, vt non nisi Cardinales Legati mittantur à latere, seu de latere.

d *A talibus.*] Legatis videlicet à latere, nam inter eos, & alios Legatos missos, seu nuncios magna versatur differentia; nam Legatus à latere à quacunque preensione potest absolvere, tam eos qui sunt de sua provincia, quam alios omnes, qui ad eum recurrerint toto tempore suæ legationis, hoc est à die, quo à Curia Romana egredietur, vsque ad diem, quo ad ipsam regrederetur. Glossa, & Panormit. in *cap. excommunicatus*, de offic. legat. Legatus verò missus, qui nun est à latere, non potest absolvere nisi eos, qui sunt de provincia sibi commissa, & quando in ea exstitit, vt facile colligitur ex d. *cap. excommunicatus*. Tandem Legatus natus, qui Legati officium simul cum ipsa dignitate habet, non potest absolvere ab hac excommunicatione, nisi in casibus, in quibus alij ordinarij absolvere possunt. Mollina de instit. trac. 3. disp. 58. Gibalin. in synopsi. fol. 466.

CAPVT XXI.

• Clemens III.

ANobis fuit ex parte tua quæsitum, vtum si quis ita pronunciauerit: Qui b furum fecerit, excommunicatus sit; hæc generalis clausula ad ipsius excommunicatoris subditos referatur, an generaliter extendatur ad omnes, qui non sunt de iurisdictione illius. Ad hoc utique dicimus, quod hac sententia non nisi c subditi obligantur, nisi forè postea contulerit maior, & largior auctoritas delegantis.

NOTÆ.

1. **a** *Clemens III.*] Ita etiam legitur in secunda collectione, *sub hoc tit. cap. 10.* nullibi tamen exprimitur cui referatur Pontifex.

2. **b** *Furum fecerit.*] Quatenus pro futuris culpa possit excommunicatio proferri, pro constitutione huius reatus cum *cap. Romana*, §. *cauerit*, hoc tit. in 6. caposui in *cap. praterea* 40. de appellat.

3. **c** *Non nisi subditi.*] Glossa in præsentis capituli

ex, quatenus per mortem Prælati, aut translationem ad aliam Ecclesiam cesset excommunicatio: quam translationem prosequimur ultra latitudinem à Barbosa in præsentis, Suarez de censur. disp. 20. fol. 2. Gibalinus ead. trac. disquis. 1. q. 3. num. 1. Bassus verbo *Excommunicatio* 1. num. 6. Cornejo tom. 3. de censur. trac. 5. disp. 4. dub. 3. q. 3. Diana p. 5. trac. 9. resol. 64.

COMMENTARIUM.

4. QVemadmodum per personas, ita etiam per loca distinctæ sunt iurisdictiones, ne aliquis turbetur, & confundatur; unde admittuntur, & territorio adhibere iurisdictionem Iustinianus affirmat in l. vlt. C. vbi & apud quem, & notatur Petrus Gregor. lib. 47. smag. cap. 21. num. 33. Donellus lib. 17. comment. cap. 9. vbi plures Osualdus littera C. Cuiusvis lib. 1. Pauli ad edit. in l. vlt. ff. de iuris. vbi Faber, & Gouernas: Retardus lib. 3. consuet. cap. 20. Consuet. pract. cap. 10. num. 7. & in cap. alma, l. p. q. 10. Suarez de censur. disp. 5. sect. 4. & 5. & disp. 26. sect. 1. num. 9. Hinc extra territorium ius dicenti impuere non potest, Paulus affirmat in l. final. ff. de iuris. Hinc Præfex provincie in subditis suis provincie tantum imperium habere dum in provincia est, affirmat idem Paulus in l. 3. ff. de offic. Præf. Hinc Proconsulem, etiam ubique proconsulatus insignia habere posse Vlpianus affirmat in l. 1. ff. de offic. Procons. potestatem autem exercere non posse, nisi in ea provincia sola, quæ ei decreta est, idem affirmat in d. l. 1. vers. Potestatem: iacet quem, & Præfide[m] provincie non contemnendam differendam potestatem observant Cuiusvis lib. 20. obsen. cap. 37. Hinc Duumviro non licere extollere potestatem fascium extra metas territorij propriæ civitatis, Honorius, & Theodosius statuunt in l. Duumviri 53. C. de Decur. lib. 10. Hinc extra provincie terminos non esse licentiam accusatori progredi, constituit Imperator in l. vlt. 10. l. extra 16. C. Theodos. de accusat. Faciunt lex cum vnos, q. 1. ff. de bonis auctorit. iudic. l. 1. in fine, ff. de offic. Præf. Vrb. & regulariter certum est, iurisdictionem contentiosam extra territorium exerceri non posse; à qua regula excipitur casus singularis relatus in l. non tantum 51. q. 4. sed & Articulus 1. ff. de fideicommiss. lib. 1. Hinc etiam cum inter Episcopos diocesæ diuise essent, ita ut vnicuique, & proprium territorium, & propria iurisdictionis assignaretur, cap. precipuum 16. q. 1. cap. licet, q. hoc multipliciter, cap. inter memoratos, cap. dilectio 16. q. 3. variis canonibus statutum est in aliena subditens iurisdictionem exerceri non posse, cap. nullus, cap. nullum 9. q. 2. cap. Episcopum, cap. Episcopi, cap. non iniuriat, cap. Episcopus 7. q. 1. cap. si quis Episcopus 11. q. 3. cap. noui, de offic. Legat. cap. Pastoralis, de rescrip. cap. 2. de consil. lib. 6.

cap. vt ligaueris, de offic. Ordin. eod. lib. Probatum iure in cap. nullus, de parochia. Vnde quousque fuit à Clemente III. io presentem, an sententia promulgata à iudice ecclesiastico, ut quisque furtum commisisset, excommunicationem incurreret, ligaret etiam non subditis ibi furtum committentes, & etiam subditis propriis in aliena diocesi furtum perpetrantes: Et videbatur vtiusque excommunicatione ligari. Primum, quia ratione delicti, hoc est furti perpetrati, fortuitum furtum, & subditi sunt illius iudicis, in cuius territorio peccauerunt, ex traditis in cap. final. de foro compet. Secundus, quia subditi vbiunque sint, & vagentur, tenentur legibus propriis. Sed adhuc decreui contrarium Clemens III. asserens non subditis furtum perpetrantes non ligari prædicta excommunicatione: & similiter subditis extra diocesam furtum committentes non incidere in tam excommunicationem, docetur in cap. 2. de consil. lib. 6. quare Doctores variè præsentem textum accipiunt. Panormitanos, & Felinus hic, Ancharanus, & Francus in d. cap. Romana, q. causam, dicunt præsentem textum procedere in excommunicatione lata per modum sententiæ, non verò per modum statuti: sed eos rectè refellit Basilus de marim. lib. 5. cap. 7. Quare eà solutione omisâ, & aliis titulis à Suarez lib. 3. de legibus, cap. 32. Petrus Gregor. lib. 4. part. 1. tit. 16. cap. 5. Covar. in cap. alma, l. p. q. 10. Suarez de relig. tract. de diebus festis, cap. 13. Acuña in cap. que contra 2. dist. 8. Thomas Benn. de immunit. eccles. tom. 2. cap. 11. dubit. 1. Balboa in cap. 40. de appellat. num. 8. dicendum est in præfenti casu, alienos subditos furtum committentes, excommunicationem non contrahere, quia licet ratione furti possent poni à Episcopo, in cuius territorio illud commissum, tamen excommunicationem ab eo statutam non contrahunt, quia cum eius subditi non essent ratione loci, iustam ignorantie causam habebant, cum nescirent talem excommunicationem in fures latam esse. Tapia tom. 1. Causa mor. lib. 4. q. 16. art. 4. Ex eadem etiam ratione subditi proprii in aliena diocesi furtum perpetrantes non ligantur simili excommunicatione, cum etiam eius ignari furtum admisissent, immò & furtum hoc casu perpetrantem in loco exempto intra ipsam diocesam, non incidere in excommunicationem docet Martinus lib. 1. resol. cap. 112. alio prosequitur Theophilus Raynaud. tom. 14. de literar. iuribus, quest. 9.

CAPVT XXII.

a Clemens III.

CONQUESTI sunt nobis dil. fil. b Regin. Canonici, quod I. de Malafrena, & I. filius Caluaca, & eorum sequaces, Ecclesiam de Milaton, & alias quasdam Ecclesias Regin. Episcopatus violenter fregerunt, easque spoliare minimè dubitauerunt, & quosdam homines Reginens. Ecclesiæ deprezdari nullatenus dubitauerunt. Quoniam igitur hæc grauias sunt, nec clausis debent oculis pertransiri, mandamus quatenus si ita est, memoratos sacrilegos publicè accensis candelis, ap. eiss excommunicatos & denunciatis, & faciatis sicut excommunicatos actibus cuitari, donec passis iniuriam congruè satisfaciant, & illata damna data restant, & cum literis veltis rei veritatem continentibus se Sedis Apostolicæ conspectui representent.

NOTÆ.

NOTÆ.

1. ^a *Clemens III.*] Ita legitur in secunda collectione, *sub hoc tit. cap. 11.* nullibi tamen exprimitur cui rescribat Pontifex.

^b *Reginem.*] De Regensi, seu Regensi Ecclesia nonnulla adduxi in *cap. 12. de offi. delegati.*

2. ^c *Demeretur.*] Consonat textus in *cap. canonica 11. quest. 1. cap. mones, cap. quisquis 17. quest. 4.* in quibus omnibus iuribus nun continetur excommunicationem latam, sed à iudice ferendam. docuerunt Azor *part. 1. in fin. lib. 9. cap. 17. quest. 12.* Tolerus *lib. 1. summa, cap. 35. num. 6.* Suarez *de*

cenfur. disput. 12. sect. 2. num. 12. Sayrus *cod. traclat. lib. 3. cap. 29. num. 4.* Barbosa *de pœst. Episc. cap. ult. §. 50. num. 90.* Bonacina *de cenfur. disput. 2. quest. 3. punct. 12.* Castro Palao *disput. 3. punct. 24. num. 10.* Gibalini *de censuris, in synopsi, verbo Immunitas, num. 6.* qui etiam docent in presenti casu ad incurrendam excommunicationem, necessariam esse veramque actionem, videlicet Ecclesie citationem, & spoliatioem, quia Pontifex in presenti copulativè vitius: nec etiam hanc censuram esse relictam nisi post denunciationem specialem ipsius excommunicanti. Et hoc casu specialiter contingit, ut qui aliquem excomunicatum denotavit, non possit eum absolvere.

CAPVT XXIII.

Clemens II.

Perpendimus ex literis tuis, quod quidam sacerdos tue diocesis, pro eo, quod se filium Regis nominare præsumpsit, & armis acceptis seditionem fecit, & guerram, à dilecto filio H. Comite per vicos iussus est fustigare, qui postea eius mandato traditus pœnibulo expiravit. Quia igitur tam ipsum Comitem, quam alios huius facti participes velle super hoc satisfacere intimasti, presenti pagina duximus respondendum, quod si memoratus sacerdos tali modo excessit, & arma ferens, non propulsando iniuriam, sed eam inferendo fuit occisus, non videtur nobis quod interfectores eiusdem propter hoc ad obtinendam absolutionem Ap. Sed. adire cogantur: tu verò, qui merita personarum bene nosti, eis penitentiam competentem iniungas.

NOTÆ.

1. ^a *Clemens III.*] Ita legitur in secunda collectione, *sub hoc tit. cap. 12.* & difficultatem huius textus, quomodo videlicet iudex secularis possit punire clericum sediciosum, nulla præcedente degradatione, variis modis explica-

runt Balbo in *cap. 2 de iudiciis, num. 131.* Anguianus *lib. 2. de legibus, controvers. 15.* Barbosa *tom. 6. in sect. ad hunc textum, Saulay in Pœst. clerici, 1. part. lib. 7. cap. 2.* Fachineus *lib. 9. controu. cap. 23.* Martha *de iurisd. part. 2. casu 13.* sed veram interpretationem huius textus dedi in *cap. clerici, de iudiciis, cap. 1. de apostatis.*

CAPVT XXIV.

Clemens III.

Vniuersitatis vestre consultationem accepimus, quâ à nobis requiritis, utrum ille laicus inciderit in excommunicationis edictum, qui ad iussionem Abbatis, in cuius servitio commoratur, in clericum, aut monachum, aut conuersum manus temerarias præsumit iniicere, maximè ubi causa non subest, propter quam debent verberari. Nobis autem videtur, quod nisi causâ regularis disciplinæ hoc faciat Abbas in propria persona, vel ubi eum necessitas urget, per clericum, aut monachum fieri iubeat; tam qui tales verberare præcipit, quam illi, qui verberant, etiamsi causâ subesset, excommunicatis sententiam, donec ad Ap. Sed. veniant, nequaquam evadant.

NOTÆ.

1. ^a *Clemens III.*] Ita etiam legitur in secunda collectione, *sub hoc tit. cap. 13.* et si nullibi exprimitur, cui Prælati rescribat Pontifex.

2. ^b *Verberari.*] Immo et si iusta causa verbe-

rum subesset, moderatè his utendum erit, *cap. in Archiepiscopatu, de captivitatibus, de qua verberum poena plura adduxi in cap. 1. de calum.*

^c *Discipline.*] Correctionis videlicet, quam Prælati impune in subditos adhibere vident, iuxta tradita in *cap. 1. hoc titulo.*

3.

CAPVT XXV.

* Clemens III.

IN audientia nostra talis fuit ex parte tua consultatio proposita, utrum clerici, qui arma * militaria, etiam relicto habitu clericali gestare nullatenus erubescunt, si ei fuerit iniuria corporalis illata, vel se à captione redemerint, illa clericorum debeant immunitate gaudere, quâ pro temeraria manu iniectione facta in clericum excommunicatus quis ipso iure noxatur. Ad hoc tibi breuiter respondemus, quod cum frustra Ecclesie inuocet * auxilium, qui committit in ipsam, & lex secularium Principum huic responso satis efficax offerat argumentum, quia manifestè * cautum habetur, matronam, cuius pudicitia attentata fuerit, non posse iniuriarum agere, si fuerit in veste meretricali deprehensa, huiusmodi clerici, si fuerint à Prælatiis suis * tertio commoniti, & noluerint arma militaria deponere, de privilegio aliorum clericorum subsidium aliquod habere non debent.

NOTÆ.

1. * *Clemens III.* Ita etiam legitur in secunda collectione, *sub hoc tit. cap. 14.* nullibi tamen exprimitur cui describat Pontifex.
 2. b *Militaria.* Quod clericis valde prohibitum est, ut probatur in *cap. clericus, cap. finali, de vita & honest. cleric.* & in *cap. petrus, de homicidio.*
 3. c *Impleret auxilium.* Hæc verba exposui in *cap. 2. de clericis, vel monachis.*
 d *Caute.* In *litem 15. §. si quis virginem 15.*

ff. de iniuriis: quam illustrent Panciroli lib. 2. var. cap. 117. Heraldis lib. vnic. c. 12.

e *Tertio commoniti.* Hæc verba variè exposuerunt Couar. in *cap. alma, 1. part. §. 11. num. 13.* Petrus Gregor. *lib. 2. parit. tit. 9. cap. final. Vela differt. 45.* Sed veram eorum interpretationem dedi in *cap. final. de vita & honest. cleric.* Ante monitionem tamen, et si non deferat habitum, nec inseruiat Ecclesie, iuxta requisita Concilii Tridensis, non priuatur beneficio canonis *cap. Odoardus, de solut. & similibus;* sed tantum privilegio fori. Martinus *lib. 2. refert. cap. 48.*

CAPVT XXVI.

* Clemens III.

QUOD de his etiam, de quibus non dubitas, & quid de his ipsis seruari debeat, plurimum agnouisti, Ap. Sed. responsa requiris, tantò fraternitatem tuam magis in Domino commendamus, quanto in iis, quæ factorum canonum institutionibus sunt expressa, nostrâ auctoritate procedere desideras, & disponis. Sanè requisitè à nobis tua fraternitas, utrum qui se confiteretur in latæ sententiæ canonem incidisse, nec ad hoc potest induci, ut ad Sed. Ap. veniat absolvendus, ab Episcopo, vel etiam simplici presbytero absolutionis possit, vel debeat beneficium promereri, & utrum presbyteris bigamis, & viduarum maritis, eorum vxoribus viam vniuersæ carnis ingressis, Missarum solennia liceat celebrare. Verùm licet quid de his obseruari debeat, sacris canonibus sit diffinitum, hoc tamen tuæ fraternitati ad præsens duximus respondendum: quod is, qui se asserit in canonem latæ sententiæ incidisse, non nisi per Sed. Ap. vel eius * Legatum absolutionis potest beneficium promereri, nisi fortè in mortis sit articulo constitutus, vel * paupertate, vel infirmitate, vel senectute tanta grauetur, quod ad Ecclesiam Romanam laborem subire non valeat veniendi, vel ab hoc alio impedimento canonico retrahatur. Cæterum ab his in forma sacramenti exigì consuevit, ut resumptis veribus, & opportunitate concessâ, Romanam Ecclesiam in persona propria debeant visitare.

NOTÆ.

- a *Clemens III.* Ita etiam legitur in secunda collectione, *sub hoc tit. cap. 15.* sed nullibi exprimitur Prælati, cui rescribat Pontifex.

b *Legatum.* Iuxta tradita superà in *cap. ad emendatam.*

c *Paupertate.* Ut probatur superà in *cap. cum non ab homine.*

CAPVT XXVII.

Idem * *Archiepiscopo, Decano, & Præcentori Lugdun.*

Cum pro causa, quæ inter G. & F. Cabilonenſis Eccleſiæ Archidiaconus vertebatur, eis conceſſerimus auditorem, procurator G. allegavit, quod cum Archidiaconus in Succentorem in communi dormitorio manus inieciſſet temerè violentas, & cum traxiſſet verberando per clauſtrum, tu frater Archiepiscopo eum ob violentiam manuum iniectionem, & violationem immunitatis Eccleſiæ feciſti excommunicatum publicum nunciari: ipſe verò ad Ap. Sed. accedens confeſſus eſt, quod in clericum manus iniecerat violentas: ſupprimens autem, quod immunitatem violaviſſet Eccleſiæ, ſuper abſolutione ſua literas impetrauit. Nos igitur cauſam ipſam veſtro examini committentes, diſc. v. mandamus, quatenus ſi vobis conſtiterit, dictum F. Archid. ob ^b duplicem cauſam excommunicatum fuiſſe, & expreſſiſſe tantum alteram in literis, quas ſuper abſolutione ſua impetrauit, ipſum tanquam excommunicatum ſatiſfacere Eccleſiæ ſux pro altera, monitione præmiſſa cogatis.

NOTA.

1. ^a *Archiepiscopo* Ita etiam legitur in tertia collectione, *sub hoc tit. cap. 1.* ſed veram inſcriptionem huius textus, & integram abſolvi in *cap. cum pro causa, de Procure.*
2. ^b *Duplicem causam.* Sicut cenſura poteſt iterari ex diſcretis cauſis, vt probat latè Giballinus de *cenſur. cap. 6.* ita & poteſt abſolutio contingere vnius cenſuræ, remanente alia, vt idem

probat *diſquiſit. 9. quaſt. 1. 4.* Vnde rectè in præſenti docet Innocentius, quod qui ex duplici cauſa excommunicationem contraxerat, & impetrauit abſolutionem ex vna, non manet abſolutus, cum adhuc ſuperſit alia cauſa alterius cenſuræ. In præſenti autem duplex fuit cauſa cenſuræ: verberatio, & violatio loci ſacri, ſeu ſacrilegium. Cæterum verberatio, & proſtratio per clauſtrum vnum peccatum, & vnicam cenſuram important. Tapia lib. 3. *cauſa mor. quaſt. 4. art. 1.*

CAPVT XXVIII.

Innocent. III. *Abbati * S. Andrea.*

A nobis eſt ſæpe quaſiſum, vtrum ſi aliquis excommunicatus, in quo indicia fuerint poenitentiz manifeſta, nec per eum ſteterit, quominus reconciliaretur eccleſiaſticae diſciplinæ unitati, non ſuſcepto beneficio abſolutionis deceſſerit, pro abſoluto ab eccleſia ſit habendus; & vtrum pro tali ſit recipienda elemoſyna, & à ſidelibus ſit orandum. Vt autem quod intendimus per ſuppoſitionem exempli apertius exprimamus, quidam presbyter, & canonicus regularis, ſicut per tuas nobis literas iotimaſti, cum publicè laboraret inſamiâ, quòd ad quandam coniugatam accederet, maritus eiufdem mulieris, & conſanguinei eius in eum manus ^b iniecerunt temerè violentas: propter quod per Episcopum denunciati ſunt excommunicationis ſententiæ ſubiacere. Vnde ipſi poſtmodum ad eundem Episcopum accedentes, præſtito in manibus eius, quod parerent iudicio Eccleſiæ corporaliter iuramento, in mandatis receperunt ab ipſo, quod propter hoc Apoſtolico ſe conſpectui præſentarent. Cumque vnus eorum ſe ad iter accingeret veniendi, à quibuſdam ſuis æmulis eſt peremptus, & extra cæmeterium Eccleſiæ cumulat; & licet contra interfectores amici, & conſanguinei interfecti grauiter ſint commoti, promiſerunt eis tamen omnem rancorem remittere, & offenſam, dummodo interfecti cadauer traderetur eccleſiaſticae ſepulturæ. Videretur igitur in hoc caſu forſan quibuſdam, quod cum ^c ſacramentum, non neceſſitatis articulus, ſed contemptus religionis excludat, & iudicium Eccleſiæ diuinum poſſit, & debeat imitari iudicium, cum in interfecto prædicto manifeſta poenitentiz ſigna præceſſerant, propter hoc abſolutus etiam ab Eccleſia ſit habendus; ſed è contrario, cum ex ſola culpa ligetur quis quoad Deum apud triumphantem Eccleſiam, ex ſola verò ſententiâ ligetur quoad hominem apud Eccleſiam militantem, quando vinculum culpæ remittitur, abſolvitur apud Deum, ſed apud homines non abſolvitur, niſi quando vinculum ſententiæ relaxatur, aliquin Eccleſiæ abſolutio nullatenus neceſſaria videretur, ſi in ſola cordis ^d contritione præter ſacerdotale officium rigor relaxetur diſciplinæ eccleſiaſticae. Nos ergo conſult. tux

de consilio fratrum nostrorum breuiter respondemus, quod iudicium Dei veritati, quæ nec fallit, nec fallitur, semper innititur; iudicium autem Ecclesiæ nonnunquam opinionem sequitur, quam & fallere semper contingit, & falli: propter quod contingit interdum, ut qui ligatus est apud Deum, apud Ecclesiam sit solutus; & qui liber est apud Deum, ecclesiasticâ sit sententiâ innodatus. Vinculum ergo, quo peccator ligatus est apud Deum, in culpæ remissionem dissoluitur. Illud autem, quo ligatus est apud Ecclesiam, cum sententiâ remittitur, & relaxatur. Quod in suscitatioe Lazari sermo euangelicus manifestat, quem Dominus pridem suscitauit, & Apostolis præcepit postmodum soluere suscitatum. Vnde quantumcunque se dictus vir iuramento præstito, quod Ecclesiæ mandato pareret, humiliare curauerit quantumcunque penitentiae signa præcesserint: quia tamen morte præuentus absolutionis non potuit beneficium obtinere, quamuis absolutus apud Deum fuisse credatur, nondum tamen habendus est apud Ecclesiam absolutus: potest tamen, & debet beneficium ei Ecclesiæ subueniri, sic ut cum de ipsius viuens penitentia per euidentia signa constiterit, defuncto etiam absolutionis beneficium impendatur. Nec obstat, quod Ecclesiæ legitur attributa potestas ligandi, atque soluendi homines super terram, tanquam non possit soluere, & ligare sub terra sepultos: & quod legitur: Non communicetur mortuo, cui non est communicatum & viuo: cum etsi communicatum non fuerit, communicandum tamen illi fuisset, quem non contemptus religionis, sed necessitatis articulus impediuit: & in certis casibus à canonibus denotatis ligasse legitur Ecclesia mortuos, & soluisse. Ut autem in vno pariter, & in eodem negotio seruemus rigorem, & mansuetudinem ostendamus, statutum, ut illius mortui absolutio à Sede Apostolica requiratur, qui cum viueret, ab Ap. Sed. fuerat absolendus: aliorum autem absolutionem ex præmissa causa cæteris indulgemus, à quibus cum viuerent, fuerant absoluenti. Absolutionis autem forma seruetur, ut fiat cum penitentiali psalmo, & tam oratione Dominicâ, quam aliâ consuetâ. Hæredes tantum ipsius ad satisfaciendum pro ipso, si commonitione præmissa noluerint, per distictionem ecclesiasticam compellantur. Datum later. II. Non. Maij.

NOTÆ.

1. **a** *Anelli Andrea.* Ita etiam legitur in tertia collectione, *sub hoc tit. cap. 1.* & in epistolis Innoc. III. Colonie editis *lib. 5. fol. 308.* nulli tamen exprimitur, nec ex textu constat, ubi sit monasterium sancti Andree, cum plura sint huius nominis, tam monachorum, quam canonicorum regulatum.
2. **b** *Matheu inuenerunt.* Moisi tantum fama, & rumore, aliâ si in ipso actu tuipei sacerdos deprehensus esset, non incidere maritus in hanc excommunicationem canonis, ut probauit in *cap. 3. hoc tit.*
3. **c** *Sacramentum.* Idem iuramentum, ut plerumque accipitur in utroque iure, ut probauit in *cap. 1. de feris.*
3. **d** *Contritio.* Non enim contritio, aut resipiscencia facit, ut excommunicatus, quando manet excommunicatus, idem non sequatur absolutionem, communibus suffragiis, & subsidii Ecclesiæ gaudeat, *cap. sacris, hoc tit.* probant Sorus in *4. dist. 17. quæst. 1. art. 1. Sanez de censur. dist. 9. s. 3. Bonacina de excom. quæst. 1. punct. 1. num. 6. Hottado cod. tract. dist. 2. difficult. 5. Gibalinus de censur. dist. 7. quæst. 4. 1. part. et si contrarium tenet Coust. in *cap. alma, 4. part. § 6. num. 4. Tolerus de summa, lib. 1. cap. 4. num. 4. Auila de censur. 1. part. cap. 6. dist. 4. dub. 1. Vilalobos 1. part. summa, tract. 17. difficult. 4. Per**

contritionem enim excommunicatus in gratiam cum Deo redit, ut communionem internam cum reliquis membris corporis mystici Christi habeat, ut probat Gibalinus *de censur. dist. 1. quæst. 1. num. 3.* At verò in communio longè diuersa est à participatione suffragiorum Ecclesiæ, quæ consistit in eo, ut Ecclesia directè otet pro aliquo, & illi fructum sacrificij, & cætera bona communia applicet. Quare cum durante excommunicatione durent eius effectus, ideo non sequuta absolutione, excommunicatus decedens sepulture ecclesiasticæ tradit non debet.

e *Falser.* In negotiis videlicet priuatis, ubi Ecclesia aliquid non definit. *Roa de iurib. Princ. quæst. 1. num. 3.*

f *Absolutionis beneficium.* Declarando ipsum absolutum decessisse. Coust. in *cap. alma, 1. part. § 11. num. 8. ex traditis in cap. 3. de heret. ubi probant.*

g *Communicatum & viuo.* Cap. sacris, ubi probant, de sepult. ut ita suffragiis, & orationibus Ecclesiæ inuener, *cap. sacris § 6. quæst. 7. lib. 1.* Penitentes verò, qui leges penitentia aueriti exequantur, si casu in itinere, vel in mare fuerint mortui, ubi eis subueniri non possit, memoria eorum & oblationibus, & orationibus commendentur. Itemd & ante hanc absolutionem in priuariis Missis posse otari pro contio in excommunicatione decedente, constat ex *cap. sacris, hoc tit.* & probat Manrique de differet. quæst. 3. num. 5.

CAPVT XXIX.

N.º Vratislauensis Episcopo.

Nuper à nobis tua fraternitas requisit, quid sit de illis laicis sentiendum, qui clericos violenter, sine læsione tamen, in custodia detinent publica, vel privata, vel etiam detruunt in vincula, verum in canonem sententiarum laicis incidunt, ut ipso facto sint vinculo excommunicationis innodati, sicut illi, qui manus in clericis iniiciunt temerè violentas; & verum qui nominatim excommunicatis scienter communicant, absolui ab excommunicatione possint per confessionem à simplici sacerdote; vel Episcopi, seu Archipresbyteri sit ab eis absolutio expendenda: & si post actam penitentiam cum illis valeas dispensare, qui etsi bigami de iure non sunt, de facto saltem bigami nominantur, eo quod in sacris ordinibus constituti more nuptiali secundas in contubernium sibi mulierculas adiunxerunt. Nos igitur inquisitioni tuæ tali duximus ex ordine respondendum, quod in primo consultationis articulo non credimus laicos penam excommunicationis^b euadere, quamvis eorum factum corporalis læsio non fuerit subsequuta, citra quam violentiam sæpius circa clericus nequiter perpetratur. In secunda verò questione credimus distinguendum, an is, qui nominatim excommunicato scienter communicat, in crimine communicet^c criminoso, ei consilium impendendo, auxilium, vel fauorem, aut alius in^d oratione, vel osculo, vel orando secum, aut etiam cumedendo. In primo quidem articulo, cum talis & communicet crimini, & participet criminoso, ac per hoc ratione damnati criminis videatur in eum delinquere, qui damnavit, ab eo, vel eius superiore meritis delicti tunc erit absolutio requirenda, cum iuxta canonicas sanctiones^e facientes, & consentientes per prena constingat. In secundo verò casu à suo Episcopo, vel proprio sacerdote poterit absolutiois beneficium obtinere. Quamvis enim & tunc non iudicis, sed iuris sententiæ excommunicato communicans sit ligatus; quia tamen conditor canonum solutionem eius sibi specialiter non retinuit, eo ipso^f concessisse videtur facultatem aliis relaxandi. Is autem, qui iuxta primum modum excommunicat, cum iuramento debet absolui. Qui vero iuxta secundum modum illi participat, reconciliari poterit sine iuratoria cautione. Verum si difficile sit ex aliqua iusta causa, quod ad ipsum excommunicatorem absoluendus accedat, concedimus indulgendo, ut præfata iuxta formam Ecclesiæ cautione, quod excommunicatoris mandato parebit, à suo absoluat Episcopo, vel proprio sacerdote.^g Tertius, & vltimus inquisitionis articulus videbatur habere non modicum questionis: quoniam cum in matrimoniis contrahendis, nun iuris affectus, sed animi destinatio attendatur, unde illum comitatur infamia, qui duas simul habet uxores, quod parum ad factum conuenit retorqueri, sicut & quod in canone legitur de presbytero, qui non legalibus nuptiis detinetur, eadem censurâ tales inter bigamos videntur reputandi: licet obici possit ex adulterio, quod opinionioni sit veritas præferenda, & quod iuxta præmissa, qui nullam uxorem habuit, torret bigamus reputandus: quod contingeret, si quis de facto contraheret cum diversis, quibus de iure non posset matrimonialiter copulari. Nos autem in hac questione taliter respondemus, quod cum huiusmodi clericis, qui quantum in ipsis fuit, secundas sibi mulieres matrimonialiter coniunxerunt, tanquam cum bigamis non liceat dispensari, licet in veritate bigami non existant, non propter sacramenti defectum, sed propter affectum intentionis cum opere subsequuto. Datum Laterani, XVII. Kal. Iunij.

NOTÆ.

Vratislauensis.] In terda collectione, sub hac tit. cap. j. habetur *Vratislaueriensi*: sed retinenda est præfata inscriptio, quæ etiam habetur in ipso regestio epistolarum Innocentij III. correcto à Silecio, lib. 2. fol. 311. ex quo integram huius textus restituo. Vratislauensis civitas est in Silesia, prope Bohemiam, cuius Ecclesia Cathedralis primum fuit Smogoræ, inde *Dr. D. Gonzalez, in Decretal. Tom. V.*

Leonardus Episcopus Sedem transiit anno 1041. Viciniam; Hieronymus verò Episcopus anno 1062. Cathedrali cum collegio monachorum Vratislauiam transiit, ut refert Aubertus Miræus de rebus Bohemicis, cap. 9. Laroslaus eius Episcopo, qui fuit Silesiæ Principis filius, referribi in præfatus Innocentius, ut iam notavi in cap. nuper, de bigamis.

^b Enalere.] Ut præbui supra in cap. cum desideres, hoc triale.

Ddd 3

c Crimi

2.

c *Criminosa.*] Quo casu communicans cum excommunicato maiori excommunicatione legato, in eandem incidit excommunicationem: exempli gratia si Petrus clericus iussus sit domo expellere concubinam intra sex dies sub poena excommunicationis maioris, & quia non paruit, elapso eo termino, incurrit ipso facto excommunicationem, qui deinde illi communicando auxiliium, aut consilium dat concubinam ut retineat, incidit in eandem excommunicationem, ut probant Coar. in cap. alina, 1. part. 9. §. 3. num. 5. Aulla de censur. dist. 10. dub. 3. Hurtado de excommunic. dist. 9. d. §. ult. 3. num. 11. Villalobos 1. part. 17. d. §. 1. 1. §. num. 6. Riccius de iure person. lib. 4. cap. 45. Giballinus de censur. disp. 7. quest. 9. qui recte docent, hoc in casu desiderari ut communicatio sit in ipso crimine, cuius causâ excommunicatio imposita est; non verò si quis communicaverit cum ipso excommunicato in alio crimine, etiam graviori. Item desideratur, ut talis excommunicatus sit denunciatus, ut probat Giballinus ubi proxime.

d *Oratio, vel osculo.*] Quos communican-

di modos, & alios exposui in cap. sacra, de his quæ vi.

e *Facientes, & consentientes.*] Iuxta tradita in cap. 1. de officio deleg.

f *Canessisse videtur.*] Unde generale regulam DD. proponunt, omnem iuriz, & canoniz excommunicationem non reservatam posse à proprio sacerdote absolvi, quia quoniam ex obligatione prohibitionis nequeat fortassis in materia jurisdictionis colligi semper potius concessio; in hoc tamen peculiari negotio excommunicationis negatio prohibitionis absolvendi insit concessioem potestatis absolvendi, ut indicat aperte Innoc. in præfati, ex antiquo profectò iure, & vñ iam indulto, quem potius asserit, aut interpretari videtur Pontifex, quem novum ius concedit: ex qua regula varias illusiones ad dueros casus deducunt Basilius lib. 6. de marrim. cap. 8. Anguianus de legib. lib. 2. cap. 3. Giballinus de censur. disp. 9. quest. 3.

g *Tenuit.*] Verba quæ sequuntur, exiunt in cap. nuper, de bigam. ubi ea exposui.

CAPVT XXX.

Idem^a Strigoniensi Archiepiscopo.

Qvod in dubiis. Et infra: Respondemus, quod excommunicato, licet quod stet mandato Ecclesie, iuramento firmaverit, communicari non debet, donec per Ecclesiam fuerit absolutus, alioquin post iuramentum non esset absolutio necessaria. Nullus autem sciens nominatim excommunicato communicare tenetur, nisi quædam persone, quæ per illud Gregor. Pap. capitulum, ^b *Quoniam multos*, specialiter excusantur. Illi autem qui nominatim excommunicatis presumptuose participant, præter personas dicto canone adnotatas, nisi ab eorum participatione communiter fore destiterint, ^c excommunicationis vinculo sunt innodandi: secus autem si sciens communicant ei, qui cum participibus suis est vinculo excommunicationis sententialiter innodatus; tunc enim & ipsi sententiam excommunicationis incurrun.

NOTÆ.

a *Strigoniensi.*] Ita etiam legitur in tertia collectione, sub hoc tit. cap. 9. & in cap. quod in dubiis, de parvo, ubi alias partes huius Decretalis congesti.

b *Capit. quoniam.*] 11. quest. 3. Quem textum exposui in cap. sacra, de his quæ vi.

c *Excommunicationis.*] Maioris videlicet, iuxta tradita super in cap. significans, ubi, & in dicto capite sacra, & in c. 2. de exceptione, egi de poena communicantis cum excommunicato.

CAPVT XXXI.

Idem Doctoribus Decretorum^a Bónonia.

Inter alia, quæ ven. f. n. ^b Mendiosien. Archiepiscopus dudum Apostolatu nostro proponi fecit humiliter consulendo, etiam, si bene meminimus, requisivit, verum excommunicato communicare quis, & qui etiam teneatur? Cui super illo recolimus articulo respondiisse, quod nullus omnino nominatim excommunicato sciens communicare tenetur, nisi quædam persone, quæ per illud Gregorij Papæ capitulum, *Quoniam multos*, specialiter excusantur: Verum ex hac nostra responsione magna quidem, sicut accepimus, orta est occasio disputandi, aliis concedentibus, quod excommunicato communicare teneantur persone in prædicto capitulo nominatæ, præsertim quæ prius ex debito ad communicationem eorum tenebantur: aliis asserentibus, eos excommunicatis communicare licet posse, si velint, non tamen ad hoc ex necessitate teneri. Ut igitur vnde ius prodit, interpretatio quoque procedat, ambiguitatem

biguitatem huiusmodi taliter duximus absolucndam, quod eum quedam personæ in præmissis capitulo prius denotatz, illis in quas lata fuerit excommunicationis sententia, subsequenter ante prolationem ipsius obsequio tenerentur familiariter adhzere, neque postmodum ad contraria teneantur, cum adhuc ipsum debitum duret, beneficio canonis id agente, à priori non sine obnoxietate solutz, sed ad familiare teneretur obsequium: & ita per consequentiam ad communicationem quoque tenerentur, sine qua illud nequeunt exhibere. Id autem non ad omnes personas capitulum credimus referendum, ut videlicet obnoxietati huiusmodi sint subiectæ, cum viatores, peregrini, & mercatores à communione talium personarum, nisi articulus necessitatis imminet, debeant abstinere, ut in fine colligitur manifestè; sed ad illas dumtaxat, quæ talibus arctiori tenentur obnoxietate constrictæ, de quibustamen in iis, pro quibus sunt excommunicatione notatz, ut in criminibus, communicare non debent, sed ab eis penitus abstinere. Vnde prudenter in præmissa consultatione respondemus, non omnes personas, sed quasdam, quæ per illud Gregorij Papæ capitulum specialiter excusantur, ad communionem huiusmodi præmissi modo vñeri. Verum autem & illæ personæ propter atrocitatem facinoris seuerius puniendæ, à communione talium per excommunicationis sententiam debeant aliquando prohiberi, quia quæsitum non existit, responsum non fuit.

NOTÆ.

1. **a** *Orig.*] Ita etiam legitur in tertia collectione, *sub hoc tit. cap. 4.* & in præfati scriptis Innocentius Doctoribus Bononiensibus, ut etiam professoribus Patribus in *cap. ex litteris, de causis*. Scholasticis Lyceis in *cap. quia in causis, de procurat.* Bononiensis perantiqua, & celeberrima Academiæ est in Italia, quam Theodulphus Maior Imperator erexit, ubi floruerunt semper omnia licitarum studia. Debilis encomiis illam extollunt Glissæ in præfatio huius voluminis, & in *l. final. Cod. de testam.* Papius Mafionius lib. 5. de *gestis Roman. Pontif. in Honorio V. l.* Midendorpius

de *Academia*, fol. 3. P. Mendo de *iure Academico* lib. 4. *quæst. 2. num. 16.* Iisdem etiam Doctoribus misit Innocentius compilationem suarum epistolarum, ut referretur in principio tertiæ collectionis.

b *Mendiensis.*] Ita legitur in tertia collectione, sed rectius in sexta habetur *Strigoniensis* nam in præfati textu mentio fit textus antecedentis, ubi Strigoniensis Archiepiscopo referbatur.

c *Capitulum.*] Relatæ in *cap. quoniam modum* 11. *quæst. 3.* quem textum latè explicat Glabalinus de *censur. dispensis*, 7. *quæst. 9. c. c. fol. 3.*

CAPVT XXXII.

* Idem.

Cum illorum absolutio, qui pro violenta manuum iniectione in clericos, labem excommunicationis incurrunt, præterquam in quibusdam casibus à prædecessoribus nostris exceptis, Sedi dumtaxat Apostolicæ referretur, nonnulli Ecc. sententiam negligentes, in excommunicatione positi ecclesiasticos ordines accipere non formidant: quid autem fieri debeat de his, Ap. sæpius otaculum imploratur: circa quos credimus, sicut reperitur in subditis, distinguendum, quod tales, vel sciunt excommunicationis se vinculis irretitos, vel non recolunt factum, pro quo inlatæ sententiz canonem inciderunt, vel factum quidem scientes, iuris ignari nesciunt exinde se teneri. Primos, si fuerint sæculares, à subreptis ordinibus censemus in perpetuum deponendos: in reliquis talibus tam Archiepiscopi, quam Episcopi absque mandato Sed. Ap. speciali dispensandi facultatem se nouerint non habere, quibus est etiam absolutio talium interdictione, ut maiora intelligantur illis prohibita, quibus vetita sunt minora. Potuerunt tamen huiusmodi Rom. Pontificis auribus intimari, ut ab eo secundum rigorem, vel æquitatem responsum prodcat, pro cuius discretio videtur faciendum. Quod si claustrales huiusmodi fuerint, licet à bonæ memoriæ Papa prædecess. nostro Alexandro fuerit constitutum, quod monachi, & canonici regulares, quocunque modo se in claustro percussurint, non sunt ad Ap. Sed. mittendi, sed secundum discretionem, & providentiam Abbatis sui disciplinz subdantur: & si Abbatis discretio ad eorum correctionem non sufficit, providentia diocesani Episcopi est adhibenda: & alibi dicat, quod de sæculo fugientes, qui religionis habitum in monasterio receperunt, & inter cætera postmodum consentent se tale commississe delictum, per quod ipso actu excommunicationis sententiam incurrerunt, sine licentia Rom. Pontificis Abbas non potest eos, nec debet absoluerè, quamvis præsumptionem de-

linquentium debita possit animadversione punire. Nos tamen in religionis favorem, ut euagandi materia subtrahatur, maiorem eis gratiam exhibere volentes, quod in talibus absolutionis beneficium valeant imperitari, eorum Abbatibus indulgemus, nisi excessus ipsorum exiuerit adeo difficilis, & enormis, utpote si ad mutilationem membri, vel effusionem sanguinis est processum, aut in Episcopum, aut in Abbatem violenter sit manus iniecta; cum excessus tales, & similes nequeant sine scandalo præteriri: si verò claustralis aliquis in religiosum alterius claustrum manus iniecit violentas, per Abbatem proprium, & eius, qui passus est iniuriari, absoluitur. Quod si clericum percussit secularem, non nisi per Apostolicam Sedem, ut scandalum euitetur, absolutionis gratiam poterit promereri. Si autem & hos ad ordinem promoueri contingat, iuxta præmissam distinctionem, qui scienter in contemptum ecclesiasticæ disciplinæ se fecerint ordinari, ab executione suscepti ordinis, & officij decernimus manere suspensos. Circa reliquos verò facti memoriam, vel iuris peritiam non habentes, monasterij vilitate pensata, post iniunctam, & peractam penitentiam Abbatibus ipsorum perunt dispensare, nisi graue fuerit, & notabile factum: aut is, qui fecit, adulus fuerit, & discretus, ut violenter, & validè contra obligationem, vel ignorantiam præsumatur. Præcipimus autem Abbatibus, ut formam istam diligenter obseruent, ne privilegium mereatur amittere, qui permissa sibi abutitur potestate.

NOTÆ.

1. a [Dem.] Ita etiam legitur de tertia collectio-
ne, *sub hoc in cap. 5.* & cum præfata episto-
la non reperitur inter editas à Sirleto & Bolquet,
ideo non constat, cui Præfato rescribat In-
nocentius.

2. b *Deponendus.* Suscipiens enim ordines, il-
ligatus quæcumque maiori excommunicatione suspen-
ditur ab executione ordinis iam suscepti, &
deponitur; si verò alia censura innodatus, vide-
licet interdictio, aut suspensio, ad ordines ascen-
dat, non punitur eadem poena, ut docet Sanchez
de censur. disp. 31. sect. 1. num. 38. Aulla *de cen-
sur. 7. part. disp. 1. dub. 6.* Bonacina *de censur. disp. 3.
quest. 1. puncta 6.* Gubalini *cod. tract. in synop. verbo
Ordo, num. 3.*

COMMENTARIUM.

3. CVM eorum principum iuris sit, ignorantiam
facti à poenis legibus sanctis excusare, iuris
verò ignorantiam excusationem in delictis non
prestat, *cap. ignorantia, de regul. iuris, lib. 6. l. libe-
rarem 11. ff. de his qui in iur. ausum. l. 20. tit. 1. part. 1.*
quærit solet, an factum committens, cui censura,
aut irregularitas adiuncta est, ignatus constituti-
onis, quæ censuræ statuta fuerit, in eam incidat?
In qua questione aliqui docent, ignorantiam si-
milis constitutionis non excusare eum à censuræ,
morti ex præfati textu, dum in eo docetur, ab ex-
communicatione propter violentiam manuum in-
iunctionem statuta in canone si quis *insolente 17.
quest. 4.* absolute non posse Episcopum eos, qui
ignati canonis in censuram inciderunt. Si enim
absolutio Pontificis necessaria est, iuris ignorantia
ab excommunicatione non excusat. Ita docent
Glossa in *cap. à nobis, et t. verbo Nisi, hoc sit.*
Sorus in *4. disp. 6. quest. 8. in princip.* Couattu, in *cap.
alma, 1. part. 9. 12. à num. 9. vsque ad 12.* & alij,
quos refert Sanchez *lib. 9. de matrim. disp. 32. num. 7.*
Alij distinet constitutum inter excommunicationem
in iure expressam, & inter censuram ab ho-
mine prolatam, ut in illis factis ignorantia non excuset,
quia legem generale nulli licet ignorare;
in illis autem ignorantia prodest, ex *cap. 2. de can-
sit. in 6.* ita Glossa *ibidem*, & alij laudati à San-

chez *ibi supra, num. 8.* Sed illius sententiæ ommissa
veritas docuerunt Salas *de legitim. disp. 15. sect. 9.*
Sanchez *supra num. 9.* iuris ignorantiam ab ex-
communicatione excusare, siue illa latuit à iure,
siue ab homine: quod ex eius natura peculiari
procedit; nam ad eam incurrendum desideratur
specialis contumacia, *cap. nemo contumax, cap. an-
di denique, 11. quest. 3.* Unde qui ignatus canonis in-
cidit in casum censuræ, non potest dici contumax;
nam licet culpabilis existat, quatenus negligit
scire canonis dispositiones, non tamen dicitur
illis contumaciter resistere. Quam sententiam ab-
solute credo accipiendam, non solum cum noua
censuræ fertur eo casu, quo nulla præcæpta prohi-
bitio; sed et etiam, quo fertur in confirmationem
aniquæ prohibitionis; nam & tunc igno-
rantia liberat à censuræ, ut resolutum Sanchez,
quia respectu canonis censuram imponentis non
datur contumacia. Facit textus in *cap. propo-
siti, 82. dist. 2.* dum ait clericos incontinentes, igno-
rantes constitutionem Siciliæ Papæ, quæ suspen-
sionis penâ plebendos decernit, eâ non puniri,
quamvis ante illud decretum continentia clericorum
fuisse præcepta. Ignorantia enim excusat eos
à poena suspensiois, ut ab aliis censuris, licet la-
ta sit propter factum ante legem poenalem inhibi-
tum. Huic sententiæ consequens est, ut qui cen-
sus est de prohibitione iuris, ignorat autem poe-
nam excommunicationis nis eo decreto et impellens-
sam, cum respectu consuetudinis contumax non sit, li-
cet alia peccet, non incidit in excommunicationem
atque, ut probant Sanchez *rem. 5. de censur. disp. 4.
sect. 9. num. 19.* Sanchez *disp. 32. num. 13.* quom-
uis tultit ab eo relati *num. 11.* contrarium teneant.
Quod enim dicitur, consensum accommodantem
ad delictum, videri se subsistere poenæ illius, *l. im-
peratori, ff. de iure fisci*, procedit in poena cogni-
ta, & delicto proportionato; non tamen in poena
extraordinaria, qualis est excommunicatio, quæ
contumaciam poenit. Nec tunc obstat præfatus tex-
tus, qui procedit in eo, qui manus violentas in
clericum iniicit, ac postea ordinatus fuit per ig-
norantiam iuris, quæ iure hæc specie culpabilis fuit.
Sciendum enim est, excommunicationem privati à
sacramentoium receptione, *cap. final. de cleric. ex-
com. Couat. in cap. alma, 1. part. 5. num. 5.* Sanchez
de censur. disp. 10. sect. 11. Unde excommunicatus

si ordinetur, non debet in gradu suscepto ministrare, nisi concessa dispensatione à Pontifice, ut Innocentius in presenti decidit. Rursus sciendum est, irregolaritatis notam affici clericum, qui ignorans censuram, tam ignorantia facti, quam ignorantia iuris ordinatus est, ut idem Innocentius ait: cum autem utriusque ignorantie idem sit effectus in presenti casu, ignorantia autem facti excusare so-

lent à censura, *et si verò 4. hoc sit.* sequitur utramque ignorantiam culpabilem existisse in presenti casu quod evenire potest eo casu, quo nimirum errata fuerit, aut supina, *ex c. 2. de consue. in 6.* Si autem ignorantia probabilis fuisset, excusaretur ab irregularitate, seu potius suspensione, ut docent Suarez, & Bonacina, & proximè Malolus lib. 4. de irregul. cap. 34. Marci Alter. de consue. cap. 6. dubio 2.

CAPVT XXXIII.

Idem Episcopo² Pistoriensis.

DE monialibus tua à nobis f. requisivisti, per quem eis sit absolutionis beneficium impendendum, si vel in se invicem, vel conuersos, vel conuersas suas, aut clericos etiam in suis monasteriis seruientes manus iniecerunt temerè violentias. Super hac igitur tue consultationi taliter respondemus, ut auctoritate nostra per Episcopum, in cuius diocesi monasteria fuerint, absoluantur.

NOTÆ

1. *Pistoriensis.* Ita etiam legitur in tertia collectione, *sub hoc tit. cap. 6. & in presenti tantum deciditur, quis possit absoluerè moniales ab excommunicatione incurfa propter violentiam insecutionem manuum in clericos; nam si mulieres regulariter absolueudæ sunt per proprium Episcopum,* ex traditis in cap. mulieres, hoc sic. molitè

magis moniales, in quibus ultra rationem sexus idem etiam impedimentorum clausuræ. Unde rectè Innocentius in presenti respondit, moniales manus iniecientes in clericos, absolui posse à proprio Episcopo: quod etiam procedit in monachis persequentibus clericum secularem, ut probavi supra in cap. monachi.

CAPVT XXXIV.

Idem Vniuersis¹ Crucesignatis.

SI verè vos pœnitet de commissio, & plenè proponitis satisfacere de peccato, Dominum vobis credimus, immò nouimus iam placatum. Si ergo Veneti potuerint ad satisfactionem induci, & absolutionis beneficium meruerint² obtinere, securè cum eis nauigare poteritis, & prælium Domini præliari. Quod si nec satisfacere fortè voluerint, nec absolui, utpote qui non dolere, sed gaudere velint diu de commissio, permittimus vobis, ut cum ipsis vsque in terram Sarracenorum, vel Hierosolymitanam provinciam, iuxta quod inter vos conuenit, & ipsos, vel honestè conuenerit, nauigio transseatis quantum minus poteritis, cum dolore tamen & amaritudine cordis, & sub spe veniz communicantes eisdem. Cum enim iam à vobis maiorem nauis receperint quantitatē, nec ad eam possint restituendam induci, aut etiam coartari, si aliter fieret, videremini vos damnum ex pœnitentia, ipsi autem præmium ex contumacia reportare: cum ad hoc debitum exsoluendum ipsi vobis maneant obligati, & ab excommunicatis exigi⁴ possit, & recipi quod debetur. Est autem⁵ cauiom in iure, quod si quisquam per terram hæreticorum, aut quorumlibet excommunicatorum transierit, necessaria emere, ac recipere potest ab eisdem. Præterea si paterfamilias domus, excommunicationis sententiā fuerit innodatus, à participatione ipsius familia excusatur. Licet ergo Dux Venetorum, dominus nauium, tanquam paterfamilias domus in excommunicatione persistat: vos tamen tanquam ipsius familia, dum in nauibus eius fueritis, ipsius excommunicatio non continget, & excusabiles eritis apud Deum, si in excommunicatorum nauibus existentes, cum dolore cordis sub spe⁶ pœnitentiz excommunicatis ipsis communicaueritis, in quibus communionem eorum nequiuertis euitare. Verùm cum & in terram Sarracenorum, vel Hierosolymitanam provinciam de nauibus vos descendere contigerit, nisi Veneti ad satisfaciendum, & recipiendum iuxta formam Ecclesiæ absolutionis beneficium inducti fuerint, vel compulsi, cum eis nullatenus præsumatis prælium Domini præliari. Ne si eis habentibus aliquid de anathemate in Crucis infurrexeritis inimicos, non præualcatis in eos, sed tetga verrentes fugiatis potius, & cadatis.

NOTÆ.

NOTÆ.

5. **C**ruceſignatus.] Ita etiam legitur in cetera collectioe, *ſub hoc tit. cap. 13.* & referretur epitola hæc inter geſta ipſius Pontificis apud Boſquetum *ſol. 78.* ut autem eius ſententia preſcripſit, ex ipſis geſtis Innocentij III. & aliis hiſtoriis caſus repetendus eſt, qui ita contigit. Cùm pro recuperatione Terræ ſanctæ, tam in Italia, quam in Gallia ingens exercitus apparuit, Galli cruceſignati miſerunt nuncios ſuos in Italiam ad Durum, & populoso Venetorum, ut ab eis conducerent nauigia opportuna, & ſimul cum eis traherent de ſocietate inuicem: & poſtquam diuerſis paſſionibus in eam conuenerunt, inter eos placuit, ut aliquot in Syriam deſtinatis, ceteri tenderent in Ægyptum, ut caperent Alexandriam, & finitimas regiones; ſequæ Terra ſancta facilius liberaretur de manibus Paganorum. Vbi ergo Franci, & Veneti ſocietatem huiusmodi firmaverunt, utrique ſimul ad Sedem Apoſtolicam nuncios deſtinantes petentes ab Innocentio III. ut paſſiones inter ſe iniunctas auctoritate Apoſtolica confirmaret. Ipſe verò futura præſagiens caſus reſpondit ſe conventiones illas confirmare, ita ut ipſi Chriſtiani non laderent, niſi forſan iter eorum illi nequirer impedirent, aut alia iuſta cauſa, vel neceſſaria forſan occurreret, propter quam aliud agere nequirent. Galli huiusmodi confirmationem à ſuſcepit, Veneti verò confirmatio nem hoc reſore factam recipere reuerunt. Termino igitur conſtitutio Cruceſignatorum exercitus ad partes Venetiarum acceſſit adeo magnos, furtis, & deuotus, ut facile crederetur non ſolum Terram ſanctam eſſe recuperandam, verum & Regnum Babylonice occupandum. Nam & Veneti tam magnificè nauigia præparauerunt, ut à longis reſto temporibus eundem viſus, ſed nec auditus fuerit tantus ſuiusmodi apparatus. Miſit etiam Innocentius Petrum tituli S. Marcelli Presbyterum Cardinalem Apoſtolicæ Sedis Legatum, ut cum ipſo exercitu proficiſcetur nomine Redemptoris ſit Dux, & Conſiliarius Venetorum timentes ne ipſe impediret eorum, propoſitum, quod conceperat de Iaderæ expugnanda, Legato propoſuerunt, ut ſi vellet prædicationis munus obire, illum ſecum ducerent, alia tanquam Legatum illum reſpuebat: quare Cardinalis reuerſus ad Innocentium illi prauam eorum intentionem retulit, quare Pontifex literas ſcripſit vniverſis Cruceſignatis, diſtinctiſ illis prohibens, ne terras Chriſtianorum infeſtaret, nominatim Iaderam, quod Vogaſ Rex poſſidebat, qui ſimiliter erat cruceſignatus, alioquo ſciterunt, ſe anathematis vineglo innodatos; hancque excommunicationem fecit per Abbatem de Loccio certis intimari. Verum tam Galli, quàm Veneti Iaderam expugnarunt, ſpoliaque Iaderitarum inter ſe diſiſere: ſed Principes Francorum exceſſum agnoſcentes, iuſſerunt in manibus Episcoporum ſuorum, quod mandatis Innocentij deinceps parere, & fecerunt ſe ab illis abſolui, mittentes Suerſoonſem Episcopum ad Innocentium. III. ut illum conſulerent qualiter eſſent de cetero proceſſuri. Ipſe verò per literas ſuas præcepit eiſdem quatenus dignè de tanto penitentes exceſſu, & ſarifaſcenes congruè de peccato, redderent vniverſa, quæ ad eos de Iaderitarum ſpoliis perueniunt, & ſi ſimilibus de cetero penitus ſe abſtineant. Quia verò ſententiam Apoſtolicæ Sedis

præter auctoritatem ipſius nullus potuit relaxare, quibſdam vicia diſcretis iniunxit, ut ab eis, qui eundem iurauerant Apoſtolicis ſtare mandatis, reciperent iuramentum, ab eis autem, qui iam iurauerant, expoſcerent, ut in eorum præſentia recognoſcerent taliter ſe iuſtaſſe, ac deinde iuxta formam Eccleſiæ munus abſolutionis impenderent, vniverſis inuocantes Comitiſ, & Baronibus ſub debito iuramento, ut per penitentes literas, tam ſe, quàm ſuccellores ſuos Sedi Apoſtolicæ obligarent, quod ad mandatum etus de tanta præſumptione ſarifaſcitionem exhibere curabunt: omnibus autem præcepit in eommuni, ut ſi ſimilibus de cetero abſtinerent. Potèr Comites, & Barones ſe obligant, ſicut fuit illis iniunctum, & ſic omnes abſoluti fuerunt: & cùm adhuc Veneti nec ad pernitienciam agendam, nec ad indulgentiam implorandam voluiſſet aliquatenus inſiſtere, conſolationi factæ per Suerſoonſem Episcopum citra modum, quem obſeruari erant Cruceſignati in communionem cum Venetiſ neceſſarii habenda in ipſis nauigiis, reſpondit Innocentius in præſenti epitola, quam multis Scripturæ auctoritatibus illuſtræ ut habetur *lib. 6. epiſt. 102.* & inter geſta ipſius Pontificis à Boſchetto edita. Referunt latius prædictam Iaderæ obſidionem, ſpoliisque Sabellis *lib. 9. c. 102.* & *Enſid. 5. p. Inſtitutio, lib. 2. hiſt. Venet.* Gunthetſ monachus Baſileenſis, qui extat apud Caniſium *tom. 5. antiq. leſt. Sanctorum. ſol. lib. 3. part. 11. cap. 1.* Spondanus in *continuat. Batoniſ anno 1201.*

b. *Veneri.*] Veneti enim deuſtaſt Aquileiâ Sede Patriarchali, irruptione, & diſceplione Attiliæ Honnorum Regis obſis prædatoris poſtius quàm bellatoris, in inſulam Gradum conſeuerunt, conſederuntque, & inde ab incendio Attiliæ prarum tuti maſſima loca, quæ Padus mare ſuſpetus ſuble, tenuerunt, ciuitatemque conſtruxerunt, cui codie, & tunc Venetiarum eſt nomen, ut reſeruat Hadrie Sigonius de *Occidentali Imperio, lib. 13. ad annum 452.* & ſequentes Philippus Cluberius *Halicorum antiq. inquit lib. 3. cap. 18.* Turſellinus *3. part. hiſt. lib. 6. ſub eodem anno 452.* Saabedra *cap. 6. c. 102.* & *Gu. 6.* quæ occupatione dominion illius maria, libertatem, & exemptionem ab Imperio deducunt Veneti: quod & probant ex luſtipſia Baldus, & Claſſici *in l. 1. §. quod ſi quis 18. ff. de nouiſſ. oper. num. alique veteres, quos adducunt Toſcheus præſid. libro 8. c. 102. ff. de iure publico. ad l. 1. §. de iure publico. ff. de capta cap. 55. num. 3.* Viſembachius *diſput. 9. num. 3.* Diſſonæ Ramos in *apparatu ad leg. de præſcriptione, ex alia Marſorſ in m. m. lib. 4. cap. 18. & 19.* Beſoldus in *diſſert. indic. polit. de diſſ. verum, num. 7.* Solazat in *notis ad Congreg. in Tabul. Pirami, fol. 181.* & de eorum dominio in mari Adriatico plura Solorzanus *tom. 1. lib. 4. cap. 3. num. 34.*

c. *Obiuerit.*] Ut poſſet obſoluerent Dux Dandulus, & alij Veneti poſt captam Conſtantiopolim per Petrum Cardinalem Capuanum tituli ſancti Marcelli, ut conſtat ex *lib. 7. Regiſtr. ipſius Pontif. epiſt. 101. & 107.* & reſert Spondanus *diſſo anno 1201. num. 8.*

d. *Exigi poſſit.*] Ut probati in *cap. cum inter, de excep.*

e. *Cautum.*] In *cap. quoniam multos, 11. quaſt. 3. & Peniten*

2.

3.

4. ^f *Poenitentia.*] Si aliquando, videlicet voluntate communicaverint, secus vero si ex necessitate, quia tunc ulla poenitentia, aut ab-

solutione indigent, vt docuerunt Suarez. *de censur. dispur. 5. sect. 2. Balboa in cap. 12. num. 27. de except.*

C A P V T XXXV.

Idem ^a *London. Episcopo.*

VT famæ tuæ consulas, & saluti, & sic malorum audaciam comprimas, vt ab eis bonorum innocentium tucaris, super his nos humiliter consulis, quæ officium pastoralis coniungunt, vt de nostra responsione securus iniunctæ tibi sollicitudinis debitum laudabilius exequaris. Sanè postea duxit fraternitas consulendos, utrum clerici graviter excedentes, qui tutè non possent monasteriis ad agendam poenitentiam ^b deputari, quoniam cum non poeniteant de commissis, opportunitate fugiendi captata, carcerem fugerent claustris, & prioribus se sceleribus, celerius immiscerent, à te, vel aliis ^c Prælatiis suis artæ possint custodiæ mancipari; & utrum laici, si clericos in magnis sceleribus deprehendant, in canonem incident sententiæ promulgatæ; cum nec comprehendere, nec ad iudices trahere ipsos possint, nisi in eos manus iniecerint violentas. Ad primum igitur respondemus, quod cum Prælati excessus corrigere debeant subditorum, & publicæ utilitatis intersit, ne crimina maneant impunita, & per impunitas audaciam fiant, qui fuerant nequam, nequiores; non solum possant, sed debent etiam superiores clericos, postquam fuerint de crimine canonicè condemnati, sub ^d artæ custodia detinere, qui cum sint incorrigibiles, nec in monasteriis valeant custodiri, ad similia, vel peiora de facili laberentur. Laici vero circa excommunicationis sententiam capere clericos, & ad iudicium trahere possunt, si oporteat, etiam violentè: dum tamen id de mandato faciant Prælatorum, quorum illi sunt iurisdictioni subiecti, & quorum est corrigere criminosos: cum hoc non ipsi, sed illi, quorum auctoritate id faciunt, facere videantur; dum ramen non ampliùs eorum violentia fe extendat, ^e quàm defensio, vel rebellio exigit clericorum.

NOTÆ.

1. ^a *London.*] Ita etiam legitur in tertia collectione, *sub hoc tit. cap. 8.* De qua Ecclesia egi in *cap. 6. de censur.* Sed legendum est *London.* ^b *ut notauit Paulus Ydumy in not. ad Innoc. III. lib. 16. epist. 118.* de qua Ecclesia egi in *cap. 2. de censur.*
^c *Deputari.*] Vt moris olim erat, *cap. 2na, ubi probat, de pæne.*

- ^e *Prælati.*] Iuxta tradita in *cap. 1. de offic. ordi. d. Sub artæ custodia.*] In carcere videlicet, vt dicemus in *cap. notum, 4. final. de V.S.*
^d *Incorrigibiles.*] Et si tales verè sint, possunt degradari, tradique Coriæ seculari, iuxta adducta in *cap. cum non ab homine, de indic.*
^e *Quam defensio.*] Et tunc laici ritè aditi possunt, vt probat *Salgado de Regia prael. par. 1. cap. 2. num. 285.* Consonat textus in *cap. 1. hoc tit. in 4. collect.*

C A P V T XXXVI.

Idem ^a *Bracharensi Archiepiscopo.*

Contingit interdum in partibus tuis, & de consuetudine regionis habetur, sicut tua nobis f. inimauit, quod clerici, si quem offendant, & satisfacere velint offenso, secundum morem patriæ, quem inter se laici iam obseruant, corpora sua sponte supponunt ^b xxx. vel xl. seu pluribus, aut paucioribus percussionibus fustium, quas frequenter non coacti suscipiunt, sed volentes, non solum de aliorum clericorum manibus, sed etiam laicorum. Vnde nos humiliter consulebas, utrum huiusmodi percussores in canonem incident sententiæ promulgatæ. Nos autem f. t. super hæc e. duximus respondendum, quod huiusmodi manus iniectio, etsi non violenta, tamen iniurirosa videtur, cum ille canon non tam in fauorem clericorum ordinati, quàm in fauorem ordinis clericali fuerit promulgatus: ideo volumus, & mandamus, vt id de cætero prohibeas attentari per provinciam Bracharenssem. Si quis autem clericus post prohibitionem huiusmodi sponte subierit, ^c excommunicetur uterque: prouiso, quod clericus iniuriam passio sine iniuria clericali satisfaciatur competenter, quatenus inter eos pax valeat rationabiliter reformari.

NOTÆ.

NOTÆ.

1. a **B** *Biacharenf.*] Itaciam legitur in tertia collectione, *sub hoc tit. cap. 10.* De Biacharenf. Metropoli nonnulla adduxi in *cap. 7. de integ. resit.*
 b *Trigima.*] Per quem nuncietur non creditur petuente ad effusionem sanguinis, iuxta tradita in *cap. 1. de columenat.*
 c *Ordinis clericali.*] Vnde tenebatur non potest, iuxta tradita in *cap. si diligenti, de foro compet.*
 d *Excommunicetur.*] Clericum, qui percussioni suæ confectus, impune percuti, docuerunt non nulli, quos refert. & sequitur Barbofa in præfenti, quia talis percussio nequit dici violenta, iux-

ta verba canonis *si quis suadente 17. quest. 4.* sed rectius conitatum in præfenti deciditur, nam etiam non sit violenta talis manuorum iniectione, est tamen iniuriola, quia nequit ita offensus privilegio clericali ordinis renunciare, vel eam iniuriæ potestatem à iure expressim remittere, ut docuerunt Sayrus de *cenfur. lib. 3. cap. 16. num. 18.* Soarez *cod. trall. disput. 22. sect. 1. num. 58.* Molina de *inst. trall. 3. disput. 51. num. 3.* Layman, Castropalao, & alij, quos refert & sequitur Giballous in *synopsi. fol. 463.* Quæ sententia fœcilè probatur ex eo, nam si clericus, qui seipsum vulneravit, aut sul eadem, vulneraque alij contulit, aut præcepit, incidit in hanc canonis excommunicationem, luxta communem sententiam, multo magis qui clerico consentienti manus iniicit.

CAPVT XXXVII.

Idem * *London. Episcopo.*

Relatum est nobis, quod cum aliqui servi tux provincie propter iniectionem anuum in clericum violentam in canonem incidunt sententia promulgatæ, allegantibus dominis eorumdem, quod carere mancipiis suis nolunt, venire ad Sedem Apost. absolventi non curant, per occasionem huiusmodi eludentes ecclesiasticam disciplinam. Quocirca disc. v. per Ap. f. m. quat. eos venire compellas ad Sed. Ap. absolventes, cum plus sit Deo, quam homini deferendum, nisi fecerint hoc in fraudem, ut subtrahant se ab obsequio dominorum, aut ipsi propter hoc sine culpa sua incurrerent graue b damnum: & in utroque casu poteris eos ex indulgentia nostræ permissionis absolue, cum nimis sint ab Ap. Sed. remoti: sed in recompensationem laboris, quem in itinere sustinerent, aliam eis satisfactionem iniungas, dummodo non sit tam gravis, & enormis excessus, ut propter vitandum scandalum, & tollendum exemplum huiusmodi servi, ad seruum servorum venire debeant absolventi.

NOTÆ.

1. a **L** *London.*] Ita etiam legitur in tertia collectione, *sub hoc tit. cap. 11.* in hac sexta legitur *London.* sed parum interest quolibet ex eis retineas inscriptionem.

b *Grave damnum.*] Consonat textus in *cap. mulieres, ibi: Qui existunt in potestate alterum, hoc tit. &* docet Bonacina de *cenfur. dist. quest. 4. puncto 5. num. 3.* Molina de *injustia trall. 3. disput. 64. num. 2.* Barbofa de *potest. Episcop. alleg. 41. numer. 29.*

CAPVT XXXVIII.

Idem * *Strigoniensi Archiepiscopo.*

Sacris est canonibus institutum. *Et infra:* Licet autem is, qui voluntarius excommunicatus communicauerat, qui cum omnibus fautoribus suis, & participibus excommunicationis sententiâ sint alii, ad cor postmodum rediens, de mandato Ecclesiæ illos, quos fouerat, expugnaret; non tamen prius, quam absolutionis gratiam pereceperit, habendus est absolutus, nec si occumbat in bello, oblationes sunt recipiendæ pro eo, vel orationes Domino porrigendæ: nisi cum de ipsius viuentis penitentia per euidencia signa constiterit, iuxta cuiusdam b constitutionis nostræ tenorem, defuncto etiam absolutionis beneficium impendatur.

NOTÆ.

1. a **S** *Strigoniensi.*] In tertia collectione, *sub hoc tit. cap. 12.* legitur *Induersensi;* sed ubique talè, verum enim huius textus inscriptionem dedi in *cap. iuris, de his qua 24.* ubi existit prior pars huius Decretalis.
 2. b *Constitutionis.*] Relatæ suprà in *cap. 4. nobis,*

& *lib. 6. registr. 16. epist. 49.* ubi Abbas de Re-
 flois, & Palmi ita Innocentius scribit: [Oblata
 à nobis M. mulieris petito continebat, quod cum
 olim S. frater suus vna cum quibusdam aliis mor-
 ti cuiusdam interfuisset presbyteri, diabolo sua-
 dente, tandem reuersus ad cor, humiliter suum
 regnouit excessum, & parans ut iter acciperet ad
 Sedem Apostolicam veniendi, præueniente nobis

in articulo, exequi non potuit quod intendit: instanti tamen promiserat, quod nolitis stare super excessu sepe dicto mandatis. Vnde nobis dicta mulier supplicavit, ut eum illum oon religionis contemptus, sed necessitatis articulus impediret, quominus ad Sedem accessisset Apostolicam absolvens, super absolutione, ac sepultura ipsius dignarentur misericorditer providere. Quia verò, sicut in eorumacta persistentibus rigidos esse nos convenit, sic humiliari ad poenitentiam negare gratiam Ecclesie non debemus: discretioni vestre per Apostolica scripta manda-

mus, quatenus si predictus S. dum adhuc viveret, satisfactionem condignam promissit, vel satisfactio de satisfactioe mandatum, & alias manifesta in eo poenitentia indicia præferunt, eum Psalmis poenitentibus, oratione Dominica, & aliis confectis, defuncto absolutionis beneficium impendatis, traditi facientes corpus eiusdem ecclesiasticæ sepulture, dummodo contra terræ consuetudinem ex hoc grave non debeat scandalum generari. Quod si non omnes, &c. Duo vestram, &c. Vos denique filij Abbates, &c. Datum Laterani. Idus Maij, Pont. nostri anno xvi.]

CAPVT XXXIX.

Idem^a *Astinati Episcopo.*

Sicut nobis tuis literis intimasti, cum aliquos tuos dicec. clericos, vel laicos culpis suis exigentibus excommunicationi supponis, ipsi postmodum ad te nullâ satisfactione præmissâ sine testimonialibus literis redeunt, dicunt se absolutionis beneficium recepisse, quibus si credi debeat in hac parte, per oos iostri suppliciter postulasti, eum propter causam huiusmodi, sicut dicis, tuas sententia à subditis contemnantur. Noleutes igitur hominum malitiis indulgeri, f. t. respondemus, quod nisi excommunicati à te super absolutione sua literas, vel illius, cui vices nostras in hac parte commissimus, reportarint, aut alio modo legitime de illorum absolutione tibi constiterit, tu de eorum absolutione fide non habita, ipsos pro excommunicatione, ut prius habebas, & facias cuitari. Datum Laterani. idus Aug.

NOTÆ.

^a *Astinati.* Ita legitur in tertia collatione, sub hoc tit. cap. 13, & in epistolis Innoc. III. lib. 2. epist. 117. ex quo regestis textum hunc restituo. In præsentem scribit Innocentius Vi-doni Episcopo Astinensi, de quo & de ipsa Ec-

clesia, agit Vghellius tom. 2. Ital. sacra, fol. 540. Sed legendum est ut in margine emendatur, *Astinati*, seu *Astinensi*, de qua Ecclesia nonnulla adduxi in cap. 16. de offic. Ordin.

^b *Literas.* Vetas, & non per obreptionem impetratas, ut probatur in cap. super eo, de subditis clericis.

CAPVT XL.

Idem^a *Senonensi Archiepiscopo.*

Per tuas nobis literas intimasti, quod cum ven. f. n. b. Altiissiodoren. Episcopus in Altiissiodorensem Archiepiscopum excommunicationis sententiam promulgasset, Archiepiscopus se tuo conspectui præsentavit, & quod staret mandato Ecclesie sufficientem obtulit cautionem, petens humiliter, ut ei absolutionis beneficium exhiberes: tu verò volens Episcopo mem. deferre, ipsum sæpius monuisti, ut absolueret Archiepiscopum memoratum: sed quia moxitis oon parabat, excommunicationem absolvi curavisti, quem Episcopus pro absoluto non habet, utpote qui proponit, quod ad te illius absolutio non spectabat. Vnde quæris, quid in similibus sit ageo-dum: videtur enim aliquibus, quod cum ad Metropolitanum per appellationem questio non deferretur, excommunicatus autem vocem non^c habeat appellandi, utpote ab Ecclesia separatus, siue appellaverit, siue non, Metropolitanus ei non debet absolutionis beneficium exhibere. Verum ex verbis cuiusdam epistolæ, quam dicunt Scholastici^d decretalem, & bonæ memoriæ Alex. Pap. prædecessore equanasse proponunt, habetur, quod si ante appellationem in aliquem excommunicationis sententia fuerit promulgata, Metropolitanus ante litis ingressum, ab eo iuramento recepto, secundum Ecclesie consuetudinem debet ipsum absolvi, nisi voluerit Episcopo dicec. deferre, ipsumque ad eum remittere absolvendum: ubi etiam consequenter inferitur, quid quia excommunicati audiendi non sunt prius, quam fuerint absoluti, nec sunt ad illos, à quibus appellaverant, remittendi. In^e Sardigeni autem Concilio reperitur, ut is, qui ab Episcopo est abiectus, finitimos Episcopos interpellat, & causa eius,

audiat, & diligentius pertractetur. Episcopus autem, qui inest, vel iniuste abiecit, eundem patienter accipiat, ut discutiatur negotium, quatenus vel probetur eius à pluribus sententia, vel etiam emendetur: prius tamen, quam omnia diligenter, ac fideliter examinata fuerint, nullus ante cognitionem communionem cum sociare presumat, qui fuerat communione priuatus. Nos igitur credimus distinguendum, utrum proponat, se post appellationem legitimè interpositam excommunicacione notatum, vel in forma excommunicationis intolerabilem errorem fuisse parentem expressum; in quibus casibus ad probationem eorum, etiam si absolutionem non petat, debet admitti: sed donec de ipsis constiterit, in aliis cuitari, quamquam Ap. Sed. etiam tales consueverit absolueri ad cautelam. Verum in aliis, nisi grauiam absolutionis imploret, non debet audiri, ne sententiam ecclesiasticam contemnere videatur, & propter hoc amplius in suo contemptu ligetur. Quod si beneficium absolutionis humiliter postulauerit, Metropolitanus eum debet absolvere, nisi suo duxerit suffraganeo deferendum. Cui tamen si suffraganeus absolutionis beneficium iuxta formam Ecclesiæ noluerit exhibere, ipse nihilominus ipsum absoluat, cautione recepta, quod suo debeat parere mandato, ac deinde causam audiat; & quod canonicum fuerit, iustitiâ mediante decernat. Quod si forsitan Episcopus subditum suum propter manifestum excommunicasset excoellum, Metropolitanus non debet ipsum absolvere, nisi suffraganeus requisitus maliciose sibi absolutionis beneficium denegaret.

NOTA.

a *Senonensi.*] Ita etiam legitur in tertia collectione; *sub hoc tit. cap. 14. De Senonensi Metropoli tam nonnulla adduxi in cap. 6. de consuet. cap. 1. de postulat. Prælat.*

b *Altridunensi.*] Qui est suffraganeus Archiepiscopus, de cuius diocesi nonnulla adduxi in cap. 14. de præscript.

c *Non habens appellandi.*] Quod diuersum est quando excommunicatus appellare intendit in alia causa, quàm in ea, pro qua fuit excommunicatus, ut probat Balboa in cap. dilecti 10. de excep.

d *Decretalem.*] Relatum in cap. quasim, de offic. ordin.

e *Sardicense.*] Can. 17. relato in cap. si forte 11. quæst. 3.

COMMENTARIUM.

1. **PAGINA**
TE COM-
PLETO, ET
AD
TE.

EX hoc textu sequens communiter venit disputanda assertio: Archiepiscopus potest absolvere subditum suffraganei sui ad eum appellatam, non alias. Probant eam textus in cap. Romana, cap. venerabilibus, hoc tit. in 6. cap. Romana, de penus, eod. lib. cap. 1. de fidei compet. eod. lib. cap. posterali, cap. duo, de offic. ordin. cap. seruetur 11. quæst. 3. Facimus textum in eod. quæstus, cum aliis, 9. quæst. 3. Contil. Sardie. can. 13. Nicæn. can. 8. 11. liberit. can. 53. Cæsariensis can. 5. Frisingen. anno 1440. habitum can. 15. & alij sacri canones, quos refert Ant. August. in epist. lib. 37. tit. 8. Petrus Gregor. lib. 4. part. tit. 16. cap. 7. Cæsar de Ecclesiæ Hierarch. dist. 5. §. 3. Ailectus in cap. ad reprimendam 8. de offic. ordin. Morinus lib. 2. exercit. cap. 28. Barbosa de potest. Episcopi, alleg. 126. per tot. Martha de iuris 3. part. cap. 12. & 14. Balboa in cap. 1. de fidei compet. Aluerti in præfati.

2. **IMPEN-**
TA TE AN-
TE AD
TE.

Sed hæc assertio difficultas redditur sequenti iust consideratione; nam Archiepiscopus totius prouincie suæ moderator est, & iudex ordinarius, cap. in epist. 7. quæst. 1. adeo ut omnes clerici proponere possint omnes quæretas coram ipso, cap. quia cognominus 10. quæst. 3. unde totius Metropolis curam, & sollicitudinem ad Archie-

piscopum pertinere, docetur in cap. per singulas, 9. quæst. 3. Igitur si iudex ordinarius est, poterit absolvere subditos suffraganeorum ab eis excommunicatos. Difficilis est etiam præfati assertio dum in ea docetur, Archiepiscopum, ad quem appellatio interposita est, posse excommunicatos absolvere; nam excommunicatio ab homine prolata ab ipso debet relaxari, cap. super, hoc tit. probauit latè in cap. 8. de offic. ordin. & in eo loco, ubi quia à communione exclusus est, ille reconciliari debet. Concil. Arelat. 1. can. 16. Ergo Archiepiscopus, qui sententiam excommunicationis non promittit, non potest eam relaxare. Accedit, nam iuxta veterem Ecclesiæ disciplinam desideratur, ut in ea Ecclesia, ubi quis ab Episcopo cæcus fuit, ibi reconcilietur, & iterum admittatur. Concil. Sardie. can. 16. ergo cum Episcopus à propria Ecclesia subditum cæcus, non potest Archiepiscopus eum in sua Ecclesia reconciliare, & recipere.

3. **DE** ARRO-
LYT ION
TRCOM-
MERICAN
TE.

Adhuc tamen defendenda est præfata assertio, pro cuius expositione sciendum est, in præfati casu nouum ius statui etiam absolutionem excommunicacionis impediendam à superiore illius, qui excommunicationem protulit; nam iuxta veteres Ecclesiæ canones nulli concedebatur absolutio ante litem in Synodo, vel coram inspectore diuinitatem. Concil. Nicæn. can. 5. ibi: De his qui à communione segregati sunt, sine clericorum, sine laicorum sint ordinis, ab Episcopis, qui sunt in eaqueque prouincia, valeat sententia secundum canonem, qui promittunt eos, qui ab aliis ecclesiis sunt, non esse ab aliis amittendum. Examinetur autem magnam, vel simulam, vel contentione, vel aliqua cõsuetudine Episcopi accubante à congregatione pulsi sint. Antiochenum can. 12. Si quis à proprio Episcopo fuit excommunicatus, ne prius ab aliis suscipiatur, quam fuerit à proprio Episcopo susceptus, vel facta Synodo accedens se defendens, & persuasa Synodo aliam sententiam retulerit. Idem autem decretum aduersus laicos, presbyteros, & diaconos, & eos, qui sunt in Clericali catalogo fuerint, Sardicense can. 17. ubi: Tamen prius quam omnia diligenter, & fideliter examinarentur, eum qui fuerit à communione separatus, ante cognitionem nullum debet præsumere, te communioni societ. Citatur à Ger. in epi Episcopus 11. q. 3. Sed in præ-

fenci Innocentius III. circa hanc absolutionem duplicem considerat excommunicationem; vel enim est manifeste iusta, vel manifeste iniusta, vel dubia, vel pretenditur nulla. Si sententia est manifeste iusta, vt lata propter manifestum excessum, Archiepiscopus per appellationem adieus excommunicatum, nisi scidi illum perierat, & satisfecit, absolvere nequit. Si manifeste iniusta sit, quia post appellationem, vel cum errore irrefragabili sit prolata, mox excommunicatus erit absolendus. Si dubia est, quod accidit, vt pretenditur, plerumque antequam absolutionem reus imploret, defensionis locus ei negatur; quæ absolutio ante causæ cognitionem ad cautelam, & sub conditione ei concedi debet, præstata cautione de patendo mandatis Ecclesiæ. Si tandem sententiam nullam esse excommunicatus conqueratur, licet illi aut absolutionem petere, aut eā non petere causam nullitatis agere; si petat absolutionem ad cautelam, illi concedenda est; si non petat, sed sententiam nullam esse probaturum profiteatur, illi causam hanc prosequi licet, in aliis autem minimè audiatur. Vnde apparet ante cognitionem nouo iure fere semper absolutionem excommunicato appellanti esse concedendam; quod etiam cauetur in cap. sacro, §. cautem, hoc tit. cap. venerabilibus, §. facit, hoc tit. in 6. diligentiùs tamen antiquæ canonis persequantur, hoc absolutionis genus non omnino iustitiam constabit: ab eo enim prope abest absolutio à Domino Anathemato Patriarcha quibuscumque presbyteris concessa, quæ refertur actione 10. Concilij Chalcedon. inter acta Concilij Beric. ibi: *Propter festinatem illas ab excommunicatione absolutis; sub ea tamen definitione, ut Antiechia non excederet, donec sententiam causæ perciperet: si autem exiret, æquegram sententiam perciperet, maiori pena esset damnationis obnoxio.* Facit textus ad idem in can. 3. Concilij Agath. in illis verbis: *Episcopi si sacerdotali moderatione postposita innocentes, aut minimè causis culpabiles excommunicatione præsumpserint, aut ad gratiam festinantem recipere forsasse voluerint, à vicinis Episcopis cuiuslibet provincie literis monentur; si parere voluerint, communicatio illis refertur ad tempus Synodi à reliquis Episcopis non denegatur, ne forte propter excommunicatos peccatores excommunicatos longo tempore morte frangantur.* Et si sententia euidenter iniqua erat, etiam iuxta antiquos canones, nec excommunicatus, nec alij illi deserebant, cap. cuiuslata 11. quest. 3. Concil. Sardic. can. 17. *Si quis Episcopum vim passum iniuste electum sit, vel propter scientiam, vel propter caliditatem Ecclesiæ confessionem, &c. effugias periculum innocens excommunicationis subiectum in aliam urbem venerit, ne prohibetur ibi tamdiu agere, donec reuertatur, vel à folla sibi iniuria possit liberationem invenire.* Durum enim est, atque adeo gravissimum, cum qui iniustus electum passus est, à nobis non suspici.

His suppositis ratio presentis actionis ex eo provenit, nam cum excommunicatus ab vno Prelato, ab alio suspici non debeat, vt late probatur in cap. 8. de offic. ordin. vt ita feruere cuique sua iurisdicção illibata, & ab eo quisque communionem accipiat, à quo priuatus fuerat, cap. seruetur 11. quest. 3. & Archiepiscopus nullam habeat iurisdicçãoem in subditos suffraganeorum, nisi in casibus relatis in cap. pastoralis, de offic. ordin. ideo excommunicatos à propriis suffraganeis Archiepiscopus absoluet, vt quia

excommunicatus absoluti debet à proprio iudice, cap. cum ad Ecclesiaram, de offic. Ordin. Si autem ipse excommunicatus à proprio Episcopo ad Archiepiscopum appellauerit, quia in hac secunda instantia Archiepiscopus iurisdicçãoem in subditos suffraganeorum exerceat, rectè poterit excommunicatum à suffraganeis absolvere causâ cognitâ, iuxta distinctionem supra relatis, etiam si absolutio talis censuræ Pontifici esset reservata. Martinus lib. 1. resal. cap. 17.

Nec obstat dubitandi ratio superius expensa, nam licet Arch-episcopus sit iudex ordinarius in tota sua provincia, id tamen procedit in rebus pertinentibus ad generale prouincie regimen, & vt ad illam appellari valeat, non verò respectu subditorum suffraganeorum, cap. scilicet 6. quest. 3. cap. peregrini 5. quest. 6. Vnde subditos suffraganeos sui in prima instantia iudicare nequit, dist. cap. due: & quia qui potest aliquem ordinari, potest & eum iudicare, cap. nullus, de parochiis; & quia Archiepiscopus non potest subditos suffraganeorum iudicare, ideo nec ad ordines pronouere valet, cap. 1. de offic. ordin. in 6. Nec obstat difficultas alia, nam procedit quando à sententia excommunicationis appellatus non est, quia tunc ab eodem iudice debet quis absolui, à quo excommunicatus fuit, iuxta traditum in dist. cap. 8. de offic. ordin. at verò eum appellatum est, quia per appellationem causâ deuolutâ ad superiorem ipse plenam iurisdicçãoem habet, ideo tunc excommunicatum à suffraganeis absolvere valet.

Sed superius traditis obstat videretur textus in cap. ad reprimendam 8. de offic. Ordin. ubi refertur, Leonientem Episcopum conuictum fuisse coram Innocentio III. eo quod à se excommunicatos Archiepiscopos Rhothomagensis, & alij comprouinciales absoluerant; & decreuit Innocentius, ne deinceps à Leonienti Episcopo excommunicatos exierit Episcopi precipiant ad communionem; Archiepiscopus verò excommunicatos eorum se conuictos de iniusticia excommunicationis absolui, vel absolutos temerari ipsi Episcopo, qui si eos ad communionem recipere temeraret, simili pena afficeretur. Ex quo textu apparet, Archiepiscopum nullâ præmissâ appellatione posse absolvere excommunicatos à suffraganeis. Pro cuius difficultatis solutione Glossa, & antiquiores repetentes in cap. pastoralis, de offic. ordin. asserunt Archiepiscopum posse supplere negligentiam suffraganei in absolutione impetienti excommunicato, & ita procedere textum in dist. cap. 8. Sed licet hæc sententia vera sit, quam laud probat Barboza alleg. 126. perim. tamen non adaptatur decisione textus in dist. cap. ad reprimendam. Quare ea omittitur, pro vera expositione ipsius textus discrimen constituendum est inter cum casum, in quo de iniusticia excommunicationis agitur inter subditum suffraganei, & ipsum suffraganeum Episcopum, qui ex officio, & non ad partia potestatem ipsam excommunicauit, & inter eum casum, in quo causa iniusticie excommunicationis vertitur inter subditos suffraganei, inter quos his agitur, cuius causâ excommunicatio prolata est. Primo casu Archiepiscopus cognoscere potest, etiam per modum querelæ de iniusticia excommunicationis, siue per simplicem querelam, siue per appellationem, cap. per singulos 24. §. c. sacro, hoc tit. quo casu procedit textus in d. c. ad reprimendam. Secundo verò casu illo modo Metropolitanus, vili median- te appellatione, excommunicatum à suffraganeo

Ecc 2 absoluet

8.
DISCIP.
FITE
DEI CAN-
ONIS

6.
EXCOMM-
TVA CAP.
8. DE OF-
FIC. OR-
DIN.

4.
TRADI-
TIO SAE-
TIO DISC-
PANDI

absolvere nequit, quia inter subditos suffraganeorum, nisi per viam appellationis Archiepiscopos cognoscere nequit, *dist. cap. duo sumi, cap. pastoralis, de offic. ordin.* Docent Caelar *de eccles. hierarch. disp. 5. §. 2.* Barthola *dist. alleg. 126. num. 22.* Sed adhuc manet non levis difficultas in eo, quod docetur in eodem textu, Archiepiscopum debere ipsum excommunicatum remittere Episcopo, ut ab eo absolvat, præcipit enim eo casu excommunicatum absolvendum esse ab ipsa Archiepiscopo expressè docetur in *cap. venerabilibus, §. sane, de offic. ordin. lib. 6.* Sed ut hunc etiam scrupulum amoveamus, tres casus distinguendi sunt. Primus est, cum excommunicatio ipsa ex tunc processu iusta apparet; tunc enim Archiepiscopus tenetur ipsum excommunicatum remittere Episcopo excommunicato, ut ab eo absolvat, nec ipsum absolvere valet, cum iniuria fieret excommunicato, si iuste ab eo excommunicatus per alium absolvetur, contra textum in *cap. servetur 11. quest. 3. cap. cum contingat, de offic. deleg.* Secundus casus est, cum excommunicatio iniusta apparet, quo casu Archiepiscopus excommunicatum absolvere valet, quia ulla fit iniuria excommunicato, cum ipsa excommunicatio manifestam contineat iniustitiam. Tertius casus contin-

git, cum adhuc dubitatur, nec apparet, iusta, an iniusta sit excommunicatio: quo casu potest Archiepiscopus eum absolvere, sed ex honestate debet eum remittere proprio Episcopo, ut ab eo absolvat, *dist. §. sane;* quo casu procedit textus in *dist. cap. ad reprimendam;* ubi quia non constabat adhuc de iniustitia excommunicationis, ideo docetur Archiepiscopum Rhotomagensem posse absolvere excommunicatos à Lexoviensi Episcopo, aut eos illi remittere absolvendos. Etiam iuxta prædictum casum, in quo subdita fortaganci coqueritur de iniustitia excommunicationis prolata ab Episcopo ex officio, recipiendus est textus in *cap. 9. Concil. Vernensi,* ibi: *Si quis ab Episcopo suo degradatus fuerit, & ipse per contumaciam posset aliquid de suo officio sine communi facere præsumptus, & postea ab Episcopo suo correptus & excommunicatus fuerit, quicumque eum ipse communicaverit scietur, sciam se esse excommunicatum.* Quod si aliquis reclamaverit, quod iniuste sit excommunicatus, licentiam habet ad Metropolitanum Episcopum venire, & ab eodem secundum canonicam institutionem disiudicari: interius suam excommunicationem custodiat. Quem canonem expolit Filescus in *dist. cap. 8. de offic. ordin.*

CAPUT XLI

Idem * Vniuersis Christi fidelibus per Lombardiam constitutis.

SI aliquando fortè contingat, quod ab eis, qui auctoritate Apostolica sunt excommunicati subiecti, nostræ literæ cum salutationis alloquio obtineantur, non propter hoc excommunicationis credatur sententia relaxata, cum per ignorantiam, vel negligentiam, aut occupationem nimiam, vel etiam per subreptionem contingat huiusmodi literas impetrari: sicut in *b. Placentinis* nuper dicitur contigisse, qui cum sint propter iniquitatem, quam in Deum, & eius Ecclesiam commiserunt, excommunicationis vinculo innodati, se quasi absolutos per huiusmodi literas, quas eis pro Templariis misisse dicimur, gloriantur: quamvis non simus memores tallum literarum, cum et si eis iam excommunicationis exhibitæ fuerint, forsitan tamen prius fuerant impetratæ. Quoties vniuersitatē vestræ per A. s. m. quat. eos sicut excommunicatos atctius euitetis, donec à suo respiciant errore. In similibus, si quando fortè contigerit, simile iudicium obferate.

NOTÆ.

COMMENTARIUM.

7. *a. Vniuersis.* Ita etiam legitur in tertia collectione, *sub eū, de rescript. cap. 2. ex qua literarum huius textus restituo.*

b. Placentin. Item enim per annos 1199. temporibus Innocentii III. Grumerus Episcopus Placentinus factiosos hereticos Placentinos excommunicauerat: & cum aduersus eorum impetrem decretum non potuisset eos ad viam veritatis reducere, cum Clero Placentiæ excohit, Cremonamque profectus est, posteaque Innocentius III. Placentinos sæpe sæpius multis diuis censuris inuoluit, atque Episcopali Cathedra priuauit die 9. Octobris, anno 1206. ut refert Vghel. tom. 3. *lib. sacra fol. 277.* Vnde de his literis monitis ad Placentios scriptis agit Innocent. in *presenti.*

2. Excommunicatos non solum verbis potest absolui solennibus, verum & factis, quibus, & indulgentiam illi facere prælatum, qui eum absolvere valet, cognoscatur: veluti si Episcopus ab eo excommunicatum posset ad diuina officia admittat, ut Innocentius III. rescribit *lib. 2. registr. ibi:* Caterum interrogatus in iudicio coram vobis precorauer Gurcen. Episcopi, verum pro excommunicato idem Episcopum se habere, respondit, quod remittit Salzeburg. Archiepiscopum excommunicatis Episcopum, & Capitulum 4. firia, & post tertiam, vel quartam diem dedit ipsi licentiam audiendi diuina, & ut diuini officii intercesset; quia ipse propter debilitatem manus celebrare non potest, & ex tunc diuina sibi facit officia celebrari, & exercere ea, quæ consueuerat exercere. Nos autem interloquendo respondimus, quod si res taliter se habere, Episcopum idem pro absoluto esse habendum. Tria autem potissima signa sunt indulgentiæ, & reconciliationis erga

erga benemerentes. Primum si à Principe admittantur ad adorationem: secundum, si ad osculum: tertium si cum benedictione, aut salutatione Pontifex illis scribat. De primo Indulgentiæ symbolo extat prophanum testimonium Ammiani Marcel. lib. 15. ubi de Vitiſcino per admiſſionem ad purpuræ adorationem reconciliato ita ſcribit: *Perſtringebatur Viſcini mento, ut conſiliarii bellicæ præſentiſſimi, fruſtraque grani iniuria luceſſiti, & per admiſſionem Adagiſtrum, qui magis eſt honorator, accito eodem ingreſſa, conſiliarium offerret purpurâ multo quam antea placidius, acque ita ante Principis pedes ſupplices ſtuerunt.* Cuius adorationis purpuræ mentio extat in 4. l. 1. Cod. de Comitibus & Tribun. lib. 12. l. 4. Cod. de Conſol. l. 1. Cod. de præpoſ. ſacr. cubic. l. 1. Cod. de domeſtic. & præſell. l. 1. Cod. de ſilent. l. ſi quis ſeruum 7. Cod. qui militare, l. ſinal. Cod. de Palatin. ſacræ largis. l. 2. Cod. de priuileg. ſcholar. l. 1. Cod. de apparitu. Præſell. Prætor. l. 1. Cod. de apparitu. Præſell. Trib. lib. 12. Preſtutenda 6. verſ. Ad hac, Cod. de aduocat. diuerſ. indic. l. 2. Cod. de Fabric. lib. 11. plura de ea conceſſerunt telati à Solortano de honorariis Senator. num. 316. Lipſius lib. 2. elat. cap. 6. Durantiuſ Caſel. lib. 2. var. cap. 16. Salmaſius in notis ad hiſtor. Auguſt. pag. 319. & 440. Demetriuſ ad Reſcriptum lib. 3. antiqui. cap. ult. Salmaſ. ad Pamirol. 1. part. memorab. tit. 46. Geothſerus lib. 1. de cruce, cap. 53. Nouatini 1. tem. elat. ſacr. lib. 2. cap. 70. P. Pintus in ſpicileg. ſacr. tom. 1. cap. 40. Illuſtr. Ramos pro Epiſcop. Luſit. propoſ. 2. ad fin. num. 90. Vnde Legati Principum cum admittendi ſunt ad adorationem pedum

Pontificis, priuileg. abſoluntur pto tempore legationis, ne ex ipſa admiſſione abſoluti in perpetuum mancant, vt teſtetur Panormitanuſ in præſent. man. 5. ibi: *Et ideo Papa ſcriuit, quod cum adſent excommunicati Ambaſſatores, ſicut eos priuileg. abſolui, & explicatâ ambuſſariâ, reduciſ eis in priuilegiâ excommunicationem.* De abſolutione per admiſſionem ad osculum extat textuſ diſertuſ in cap. cum olim 12. de priuileg. ibi: *Te, licet excommunicatuſ nō Eugubienſi Epiſcopo dicar, tanquam non iugum admittiſ ad ſcſulum.* Vbi notauit, & plura de osculo pietatis, & charitatis adduxi in cap. pro illorum, de præbend. Tandem abſolutio contingit per benedictionem cum ſalutatione in litteris excommunicatis miſſis, cuiuſ formulæ initium illoſteſt Ferrariuſ lib. 3. de epiſtol. Eccleſ. cap. 2. Vnde cum Pontifex abſolvere oon uult excommunicatum, adſcribit eam clauſulam, ſine ſalutatione. Innocentiuſ III. lib. 1. epiſt. 28. ibi: *Pontifici, & papuli Taruſiniſ, ſine ſalutatione.* Notauit Cironiuſ lib. 2. obſ. cap. 14. & illuſtrat Domiuſ Ramos ubi ſupra, num. 93. Vnde ſi ſcienter Pontifex in præſentem excommunicato ſcribit ut cum ſalutatione, abſolutuſ crederetur, ſed quia per obreptioem clauſula illa adſcripta creditur, ideo ſit inſcientiuſ, cum abſolutuſ non credi. Sed quia plerumque dubitabat, an ſcienter, vel ignoranter Pontifex cum excommunicato communicans, illum abſolvere intendet, ideo ſtatutuſ fuit in Clement. 1. hoc ſit. vt etiam ſi ſcienter Pontifex cum excommunicato communicauerit, non ideo cum abſoluſſe credatur.

CAPVT XLII.

Idem C. S. ^a Laurentij in Lucina Preſbytero Cardinali, Apoſt.
Sed. Legato.

Officij. Et infra: Poſtremo quæſiuiſti, utrum iſ, qui propter plures exceſſuſ à pluribus Prælatiſ iuſ in ipſum habentibuſ, excommunicationiſ eſt vinculo innodatuſ, & vni Prælatorum de vno tantum ſatiſfacere uult exceſſu, ab eo ſit abſoluentuſ, de quo ſatiſfacere uult eidem; & ſcđm de aliquo non ſatiſfecerit, ab aliis abſolutuſ valeat nunciari. Quia uerò ſuper hoc inter ſcholatiſticiſ diuerſæ ſunt ſententiæ diuerſorum, nōſ ad præſentem nulli præiudicare uolentiſ, id ſolummodo tibi ſuper hoc articulo reſpondemuſ, quod ſupprimentiſ ueritatē abſolutio ſubrepta non prodeſt; & ueritatē intelligentiſ, abſolutionem huiuſmodi exhibere non debet.

NOTÆ.

^a *Ant. Lantini.*] Ita etiam legitur in tertia collectione, ſub hoc tit. cap. 15. & in caſſicy, de elect. ubi aliaſ partes huiuſ Decretaliſ congeſſit.

^b *A pluribus Prælatiſ.*] Poſſe quem iterum, atque licetum excommunicari, & tunc variis egere abſolutionibuſ, probauit ſuprà in eam præcauſa.

^c *Subrepta.*] Probauit ſuprà in cap. cum pro cauſa, & in cap. ſuper eo, de celebrat. cleric.

CAPVT XLIII.

Idem ^a Ferrarienſi Epiſcopo.

Reſponſo noſtro poſtulaſ edoceri, cum Ferrarien. ciueſ excommunicationiſ, & interdiciſ ſententiſ ſine ligati, an liceat tibi viroſ, & muliereſ ſimul in hebdomada, vel in menſe apud aliquam Eccleſiam conuocare, quibuſ prædices uerbuſ Dei, & eodem ad correptionem inducas. Super quo ſtatim reſpondemuſ, quod ſine

scrupulo conscientie hoc facere ^b poteris, cum videris expedire, dummodo contra formam interdicti nullum eis divinum officium celebretur. Præterea quæsiuit; cum Ferrarien. civitas interdicto sit, & ^c excommunicationi supposita, & ideo sint ibidem præter baptismum parvulorum, & penitentiam morientium, vniuersa sacramenta ecclesiastica interdicta, an liceat tibi baptizatos pueros in frontibus consignare. Super quo tibi taliter duximus respondendum, quod sicut baptizari pueri possunt, sic & baptizati ad confirmationem in frontibus à te possunt sacro chrismate ^d deliniri.

NOTÆ

1. ^a **Ferrariensi.**] Ita etiam legitur in tertia collectione, sub hoc tit. cap. 16. Hugoni videlicet, qui floruit in Ecclesia ex anno 1196. vique ad annum 1213. ut refert Vghel. tom. 2. Italia sacra, fol. 176.

2. ^b **Poteris.**] Rtdè, nam & olim nemo submovetur ab Ecclesia tempore cænesionis, immo omnes adhibebantur, tam catechumeni, & hæretici, quàm Gentiles & Iudei: Concil. Carthag. 4. can. 84. ibi: *¶* **¶** *Episcopus nullum prohibeat ingredi Ecclesiam, & audire verbum Dei, sine Gentili, sine hæretico, sine Iudeo, & sine ad Missam catechumenis.* De catechumenis extitit dilectus locus Tertulliani lib. 1. de præscript. advers. hæres. cap. 41. ibi: *¶* **¶** *Quis catechumenus, quis fidelis, incertum est? pariter advenit, pariter audiunt.* D. Augustinus serm. 116. de tempore, ibi: *¶* **¶** *Hodie fratres charissimi specialiter ad competens humilitatis nostræ forme dirigitur: & quoniam omnibus etiam fidelibus baptismus administratio nostra communis, & peculiariter invenit eum, qui nunc baptismi sacramenta desiderant, volumus advenire.* De hæreticis constat ex Possidonio in vita D. Augusti. ibi: *¶* **¶** *Libris eiusdem, sine ulla mirabili Dei gratia procedentes infractis omni rationis copia, &que auctoritate sanctorum Scripturarum, ipsi quique hæretici concurrentes cum Catholicis ingenti ardore audiebant.* De Gentilibus, & Iudeis constat ex dicto canon. 14. Concilij Carthag. & ex Concilio Valentino Hispanie can. 1. ibi: *¶* **¶** *Antiquis canonibus relegentes censuram observandum, et sacrosancta Evangelia ante manuum unctionem in Missa catechumenorum in ordine lectionum post Apostolum legantur, quatenus salutaria præcepta Domini nostri Iesu Christi, vel sermones sacrosancti, non solum fideles, sed etiam catechumeni, & penitentes, & omnes, qui à diversa sunt, audire licentiam habeant.* Gregorius Nyssenus orat. de Sanctis, baptizant. D. Augustin. serm. 49. ibi: *¶* **¶** *Audite charissimi, membra Christi, & Materis Catholica filij: quod dico temper omnibus, audiant fideles, audiant & penitentes, audiant catechumeni, audiant, & omnes*

timeant. Illustrant Ferrar. lib. 2. de rita concion. cap. 13. Landreter. lib. 2. de veteri mon. cap. 67. Albaspineus lib. 2. obs. cap. 29. Morinus lib. 2. exercit. cap. 27. Gibalinus de censur. dissolut. 7. quest. 11. qui rectè docent, quod licet excommunicati possint adesse in Ecclesia, dum prædicatur verbum Dei, tamen ipse excommunicatus per se prædicare non valet, quia tunc daretur communicatio fidelium cum excommunicato. Nec interest, quod in principio concionis recitari solet solatio Angelica, atque ita si excommunicati adessent in Ecclesia, viderent dari cum eis communicio. Nam rectè respondet Avila de censur. 1. part. cap. 6. dissolut. 11. dub. 3. conclus. 6. has preces privatas esse, quæ etiam pro salute excommunicati, & etiam illo recitari possunt, sicut Evangelium, aut Psalmi in eundem finem dici valent. Gibalinus 1. sup. Navarrus in Manuali, cap. 27. n. 16. Ad divina inter officia audienda omnino ingressus Ecclesie excommunicatis denegatur. Tertul. de pudic. cap. 4. Non modo limet, verum omni Ecclesia velle submovetur. D. Isidorus relatus in cap. 1. 1. diff. Concil. Vemense, de quo in cap. 1. vers. hostiary, 21. diff. Clement. 2. vers. Nonnulli, de sent. excom. D. Thomas in 4. diff. 18. quest. 6. art. 1. Illustrant Morinus lib. 2. exercit. cap. 27. Illustrat. Don Franciscus Ramos in synag. præ Episcop. Lusitan. præf. 3. num. 74. & plura de prohibita communione cum excommunicatis in Ecclesia, & divinis officiis, congesti in cap. sacris, de his qua vñ.

3. ^c **Excommunicati.**] Propter bellum civile, quia favebant Othoni Imperatori; nam his temporibus in nocentij anno 1209. Azo Marzio Salinugtrani Ferrarie Prætorum cum valida Ferraricorum exulium manu Ferraria expulsi: sed Otho Imperator Romæ coronatus discedens Ferrarie Hugonem Guaricolum Vescionem constituit, ut refert Bosquetus ad Innocentium lib. 2. regest. 14. epist. 74. Vnde quia Ferraricenses favebant ipsi Othoni Ecclesie hosti, excommunicati fuerunt, & deliniri.] Quæ nam sacramenta tempore interdicti licet administrari possint, iam exposui in cap. quod in te, de penit. & remis.

CAPVT XLIV.

^a Idem.

Inquisitioni tuæ brevitè respondeo. Credimus distinguendum, vtrum alter coniugum pro certo sciat impedimentum coniugij, propter quod sine mortali peccato non possunt carnale commercium exercere, quamvis illud apud Ecclesiam probare non possit; an impedimentum huiusmodi non sciat pro certo, sed credat; in quo utique casu debet potius excommunicationis sententiam humiliter sustinere, quam per carnale commercium peccatum operari mortale. In secundo verò casu distinguimus, vtrum habeat conscientiam huiusmodi ex credulitate levi, & temeraria; an probabili, & discreta; siquidem ad sui Pastoris consilium conscientia levis, & temerarie credulitatis explosa, licetè potest non solum reddere, sed exigere debitum coniugale.

Iugale. Verum cum conscientia pulsat animum ex credulitate probabili, & discreta, quamvis non evidenti, & manifesta, debitum quidem reddere potest, sed postulare non debet, ne in alterutro, vel contra legem coningij, vel contra iudicium conscientie committat offensam. Tu ergo iuxta responsionem præscriptam super illo procedas articulo, de quo nos consulere voluisti.

NOTÆ.

^a *Idem.*] Ita etiam legitur in tertia collectione, *sub hoc tit. cap. 17.* sed nullibi exprimitur cui Prelato referbat Innocentius, nec inter eius

epistolas editas à Sirleto, & Boschetto reperitur textus hic illam tamen exposui in *cap. literar. de rescriptis. dist. 1. cap. Dominus, de secund. imp. & videndus est Thomas Delbene tract. 2. oper. mor. disp. 10. sect. 13.*

CAPVT XLV.

^a *Morinensi Episcopo.*

Contingit interdum, quod dum clericali charactere insigniti ad turpia luca diuertunt, & secularibus negotiis se immiscunt, clericale nomen abominabile redditur cordibus infirmorum. Sanè sicut accepimus insinuantibus nobili viro Comitæ Flandrensi, ac nobili muliere M. relicta quondam Ph. Flandrensis Comitæ, in diocesi tua quidam existunt, qui nec in modo tonsuræ, nec in vestium forma, nec in qualitate negotiorum de clerico quidquam ostendunt, ad poenæ subterfugium se clericos exhibentes. Quia cum super excessibus, quos seculari luxu committunt, ad publica iudicia pertrahuntur, circumcensis criminibus, ut possint circumvenire vindictam, se pro clericis repræsentant, clericali fori privilegium labiis allegantes, qui factis paulò antè negauerant clericatum: dumque repentinà tonsurâ poenas eludunt, quas intonsi perueris actibus meruerunt, per impunitatis fiduciam nutritur in eis audacia delinquendi: & dom impunè delinquunt, quibusdam efficiuntur in scandalum, & aliis in exemplum. Verum quia privilegium meretur amittere, qui permisâ sibi abutitur potestate, ac frustra legis auxilium inuocat, qui committit in legem volumus, & mandamus, ut tales, si tertio à te commoniti, se ipsos contemplerint emendare, illius efficiantur immunitatis expertes, quæ pro clericorum tutela, & laicorum violentia coercenda noscitur instituta. Tu denique frater Episcope, &c. Datum Lateran. v. idus Ianuar. Pontif. N. Anno xv.

NOTÆ.

^a *Morinensi.*] In nulla ex collectionibus antiquis reperitur textus hic; extat tamen inter epistolas editas à Boschetto lib. 3. re-

gest. 1. 5. epist. 200. ex quo Regestis inscriptionem & litteram restituo. De Morinensi diocesi ego in *cap. 1. de solut. & textum hunc exposui in cap. finali, de clericis coniug. cap. 1. de apostasia.*

^b *Vim.*] Balduino videlicet.

CAPVT XLVI.

^a *Idem.*

In præsentia dilecti filij, &c. *Et infra:* Nec Canonici suo Decano excommunicatorem obicere possint, cum super hoc nec monitus, nec requisitus fuerit, nec ipse propter hoc eum duxerit euitandum: sed Episcopus in mensa, & Canonici communicauerint ei etiam in diuinis.

NOTÆ.

^a *Idem.*] Ita etiam legitur in quarta collectio-

ne, *sub hoc tit. cap. 2.* nullibi tamen exprimitur cui referbat Pontifex: Textum hanc exposui in *cap. cum inter cap. dilecti, de exceptis.*

CAPVT XLVII.

** Spiren. Argentin. & Vvarmaciens. Episcopis, pro deliberatione Salernitan. Archiepiscopi.*

Quantæ præsumptionis, & temeritatis existat in Rectores Ecclesiæ manus iniicere violentas, in Euangelio Dominus protestatur, qui se in ministris suis affligi asseruit, & in Apostolorum Principe alibi se prohibuit iterum crucifigi. Hoc etiam penæ qualitas manifestè declarat, cum excommunicationis sententia in ipso actu feriat delinquentes, si non solum in fratres, & Coepiscopos nostros, sed etiam in minoris ordinis clericos violentiam præsumperint operari. Ne autem solos violentiæ huius auctores aliquorum præsumptio crederet esse punitos, & consentientes pari pena plectendos canonica censura condemnat, eos etiam delinquentibus fauere interpretans, qui cum possint, manifesto facinori desinunt obuiare. Quod bonæ memoriæ C. Papa prædecessor noster hæctenus diligenter attendens, auctores, & fautores captiouis, & detentionis ven. f.n. ⁴ Salernitani Archiepiscopi excommunicationis nuntiatis vinculo innodatos, nisi per Imperiales nuncios sepe fuisset ei, ac firmiter repromissum, quod idem Archiepiscopus sine dilatione qualibet libertati pristinae redderetur. Ne autem detentio eius nobis de cætero imputetur, si circa liberationem eius inuenti fuerimus negligentes, fraternitati vestræ per Apostolicam scripta mandamus, & districtè præcipimus, quatenus nobilem virum Vvicel. de Berc. ex parte nostra diligentius moneatis, ut eundem Archiepiscopum à detentionis suæ carcere absolutum ad nos cum honore remittat, nobilitatem eius gratiarum actionibus prosequentes, quòd circa eum spiritum compassionis exhibuit, & quantum licuit, solatium ei humanitatis impendit. Quod si (quod non credimus) ad monitionem vestram, & venerabilis fratris nostri ⁵ Sutini Episcopi, & dilecti filij Abbatis sancti ⁶ Anastasi, quos ad hoc specialiter destinamus, eum dimittere noluerit, excommunicationem ipsum publicè ⁷ nunciatis: & si qua forsitan ab aliquibus Ecclesiis beneficia possidet, ea ipsi per censuram ecclesiasticam auferri mandantes, totam terram eius, immò totam dioccesim, in qua idem Archiepiscopus detinetur, vel ad quam translatus fuerit detinendus, supponatis sententiæ interdicti. Nos enim dilectis filiis Capitulo Maguntin. dedimus in mandatis, ut sententiam vestram faciant inuiolabiliter obseruari. Volumus autem nihilominus, & mandamus, ut vniuersis Alemaniarum Principibus in remissionem suorum criminum iniungatis, ut sollicitudinis suæ studium efficaciter interponant, quod eis mediantibus Archiepiscopus ipse liberè ad nos quantocius reuertatur: significantes eis, quod si id (quod absit) impletum non fuerit, in totam Alemaniā interdicti cogemur sententiam promulgare. Quod si omnibus, &c.

NOTÆ.

1. *a* *Spiren.*] In hac sexta collectione, & in quarta, sub hoc tit. cap. 4. tantum legitur idem: sed inscriptionem, & iteram testium ex ipso Regesto epistolarum Innocentij correcto à Sirleto Cardinali, vbi tit. 1. fol. 10. reperitur textus hic. Spirenſis Cathedralis Ecclesia est in Germania, suffraganea Archiepiscopi Moguntini, cuius Prælati, Orthodoxi videlicet, qui sunt Comes Enemberg. in præsentia reſcribit Innocentius. Argentinensis etiam Ecclesia est in eadem Metropoli, ut probatur in cap. venerabili, de prob. cuius Prælati, Conſeſſado videlicet, missi est præſens Decretalis. Similiter & Vvarmaciensis (ita legendum) est in Germania sub eodem Archiepiscopatu, ut probatur in cap. 1. de consensu. Eius Episcopo Leopoldo lo præſenti ſcribit Innocentius.

2. *b* *Faciētes, & conſentientes.*] Iuxta tradita in cap. 1. de offic. deleg.

c *Obuiare.*] Consonant textus in cap. negligenter 55. a. quæſt. 7. cap. qui poſſet 8. 23. quæſt. 4. cap. 1.

cap. error, cum ſequent. 83. diſt. cap. 1. cap. faciētis 3. 86. diſt. 1. culpa 50. 1. nullum 109. ff. de R. I. l. 2. §. 1. l. 3. & 4. ff. de noxal. Et ſunt patetiale eſt, & decantatum illud Senecæ in Troadē: Peccare quī qui nō prohibet eū potēſt, iubet. Cui conſeſſant Arnobius lib. 2. aduerſ. Gentes, ibi: Cui nō prohibēdo quod oportuerat prohiberi, eſſatione crimē fecerit proprium, & reuocantiſ diſſimulatione permiſerit prius. Saluſtius lib. 7. de prouid. Potēſtis quippe magna, & potēſſima, quā inhibere ſecus maximum poſſet, quāſi probat debere fieri, ſi ſciens poſſit perpetrari: in cuius enim manu eſt, ut prohibeat, iubet agi, ſi nō poſſit admitti. Petrus Bleſenſis epiſt. 146. Ipſa ſatiſſimè eius præſentem ad conſenſum; videtur enim conſenſure, qui cū poſſet, & deberet, nō corripit & diſſimulatrix patientia ſocietatis ſeculæ ſirupule nō carbit. Alii in eandem ſententiā coeſſerunt Rhetorici ad Saluſtium, pag. 323. Deſider. Heraldus, & Bulengerus ad Atrobium ubi ſuprà. Petrus Faber, & Gothofredus in diſt. l. culpa, & diſt. 1. nullum, Amaya in l. 3. Cod. de canone largit. num. 16. Solozano ſubſent.

emblem. ad praxim; notantur Flores de Meua lib. 1. quafi. 18. P. Mendo lib. 3. de iure Academ. quafi. 37. & nos in cap. 3. de hereticis.

d. *Salermitani.*] Nicolai videlicet; nam anno 1194. defuncto Tancredio Rege Siciliæ Henricus Imperator inlurias ultimas, & vt Regnum illud occuparet, copias parauit. Vvillelmus autem Tancredi filius vna cum matre, & fororibus, viribus suis non fidens in præsepe montis Calatibolæ castrum confegit. Imperator Messanā, aliisque viribus Siciliæ blandē allectis, sub pollicitationum simulatione, idest, vt si Vvillelmus regno se abdicaret, ei Tarenti Principatum, ciuique matri Comitatum Lecii ipse chargeret, Vvillelmum Regem, Siuliam matrem, filiasque in potestatem suam redegit. Kal. Ianuarij, anno 1195. vt referant Baronius anno 1194. Facel. in decal. fol. 478. Sed perfidus Imperator eos omnes cum Nicolao Archiepiscopo Salernitano, Richardo Comite Ayelli, Rogelio fratre Mathæi Cancellarij, Episcopo Ostunensi, & Tranensi, aliisque Regni Proceribus in Germaniam veterem

coëgit, ibique supplicis affectos carceri mancipuit. Sed Innocentius III. præfenti epistola, & aliā missā Episcopo Sutrinensi, & Abbati S. Anastasiæ, vt inde educerentur, coramit. Ergo excommunicationis minis per Episcopos intentatis, adnitere etiam Philippo Sueuicæ Duce, ipsius Imperatoris fratre, omnes pristina libertati sunt restituti, excepto Rege, qui Regno exaurobusatus, oculis eturis, atque genitalibus recisis, carceri ad mortem vsque mancipatus fuit, vt testat D. Rochus Pirro in chron. Reg. Sicilia, anno 1194.

s. *Sutrin.*] De Ecclesiā Sutrinensi, seu Sutrina, cgl. in cap. cum Ecclesiæ, de causa possess. & propri. f. Sancti Anastasi.] Legendum est sanctæ Anastasiæ, quod monasterium Ordinis est D. Benedicti in Sicilia, & ipsius Abbatis præsentatio spectat ad nostrum Monasterium, vt refert, & probat Barbosa lib. 3. voto 89. in princip.

g. *Nunciis.*] Quia manus violentas inleceffe creditur, qui clericum in carcere, aut simili loco detinet, cap. 2. hoc tit. in 2. collect. vbi probatur in cap. cum defideres, hoc tit.

CAPUT XLVIII.

Idem in Concilio Generali.

Sacro approbante Concilio prohibemus, ne quis in aliquem excommunicationis sententiam, nisi competenti commotione præmissā, & præsentibus personis idoneis, per quas, si necesse fuerit, possit probari monitio, promulgare præsumat: quia si contrā præsumpserit, etsi iusta fuerit excommunicationis sententia, ingressum Ecclesiæ per mensem vnum sibi nouerit interdictum, aliā nihilominus penā mulctandus, si visum fuerit expedire. Caveat etiā diligenter, ne ad excommunicationem cuiusquam absque manifesta, & rationabili causa procedat: ad quam si fortē taliter processerit, & requisitus humiliter processum huiusmodi non cnuauerit absque grauiamine reuocare, grauatus apud superiorem iudicem deponat de iniusta excommunicatione querelam: quod si absque periculo moræ potest, ad excommunicationem illum cum suo mandato remittat, intra competentem terminum absolucendum, alioquin ipse vel per se, vel per alium, prout viderit expedire, sufficienti cautione receptā, munus eis absolutionis impendat. Quinque aduersus excommunicatorem de iniusta excommunicatione constituerit, excommunicator condemnatur excommunicato ad interesse, aliās nihilominus, si culpæ qualitas postulauerit, superioris arbitrio puniendus, cum non levis sit culpa tantam instigare penam infonti, nisi forsā errauerit ex causā probabili, maxime si laudabilis opinionis existat. Verum si contra excommunicationis sententiam nihil rationabile fuerit à conquirente probatum, idem & super iniusta excommunicationis molestia per penam ad interesse, vel aliam secundum superioris arbitrium, nisi forsā & ipsum probabilis error excuset, & super eo, pro quo iusta fuerit excommunicatione ligatus, per cautionem receptam satisfacere compellatur, vel in pristinam reducat sententiam vsque ad satisfactionem condignam inuolabiliter obseruandam. Si verò iudex suum recognoscens errorem, paratus sit talem reuocare sententiam, & is, pro quo lata fuerat, ne absque satisfactione reuocet illam, appeller, appellationi non deferat in hac parte, nisi talis error sit, de quo merito debeat, vel valeat dubitari: & tunc sufficienti cautione receptā, quod coram eo, ad quem extitit appellatum, vel delegato ab ipso iuri parebit, excommunicatum absoluat, sicque penæ subscriptæ minimē subiacebit: Cautus tamen omnino, ne voluntate peruersa in alterius præiudicium mentiatur errorem, si districti iouis canonicæ vult effugere vltionem.

NOTÆ.

a. *Enrrali.*] Lateranensis videlicet, vt legitur in quarta collectione, sub hoc tit. cap. 1. & repetitur textus hic in ipso Concilio, can. 47.

b. *Insa.*] Ex causa videlicet, nam quoad ordinem iudicalem iniusta est, vt statim dicemus.

c. *Ingressum Ecclesiæ.*] Que pena etiam statuta reperitur ex alijs causis in cap. 15. qui, hoc tit. in 6. cap. Episcoporum 8. de priuileg. ord. lib. cap. præfati,

fenti, de effe ordin. eod. lib. cap. exigit, de censuris, eod. lib. & hac pena vñs fuit D. Ambrosius eum Imperatorem Theodosio in cap. cum apud 69. 11. quæst. 3. Et cum hæc pœna ad tempus imponitur, vt io præsent, & in cap. 1. §. si quis, hoc it. in 6. elapso tempore ab Ecclesiâ ingressu io redditus ipso iure restitutus censetur, cap. si quis amodo 81. dist. cap. non est vñs, de spons. docent P. Gregorius lib. 4. parit. tit. 15. cap. 4.

d. Rationabili.] Et graui videlicet, nam nisi pro peccato mortali excommunicatione impoi oon potest, cap. nemo, cap. Episcopi, cap. nullus, 11. quæst. 3. aut propter notoriam contumaciam in obediendo Ecclesiæ, vt in cap. 3. de maiorib. & obed. cap. faciente, de consecr. dist. 2. cap. si quis ex clericis, de vita & honest. clericis. Theophyl. de litter. man. lib. 2. cap. 9. Nec excommunicationem probatur in cap. duo, 96. dist. in illis verbis: Pro eo ipso, que alius faceretur non alio graui videbatur. Ex quibus videbatur, excommunicationem probatam fuisse. Nam responso letur, illa verba oon esse intelligenda, vt vetè causa leuissimis fuisse, sed quod falso iudicatis talis videbatur. Nec etiam contrarium probat D. Augustinus in cap. si habuit 24. quæst. 3. vbi cum ageret de quodam presbytero, qui ex leui causa fideles anathematizabat, ait se illud non factum, nisi grauius commoueret; nam ea verba, nisi grauius commoueret; ita accipienda sone, idest, si ita commouetur, vt extra se esset. Nec etiam contrarium probat textus in cap. quæ fime 26. de appel. vbi deciditur, posse profecti excommunicationem ob contumaciam, vel aliam causam. Ig tur absque contumacia dari potest causa, ob quam excommunicatio profectatur. Nam in eo textu non docetur, aliam causam præter contumaciam sufficere ad profectendam excommunicationem, sed tantum asseritur, ad profectendam excommunicationem immediate necessariam esse contumaciam, & mediata aliam causam absque coniuncta sufficere ad excommunicationem infingendam.

e. Sapienrem.] Qui absoluerit debet, aut excommunicationem remittere absolueudum ipsi Episcopo, qui excommunicauit, iuxta tradita supra in cap. per tuas.

COMMENTARIUM.

3.
CONCILE-
RIO TRA-
DITVS, ET
PENO-
TIA.

EX hoc canone talis communiter deducitur as-
sertio: Prælati non debent excommunicare sub-
ditum, nisi temperatis monitione promissis. Probat
eam textus in cap. Deu, & ampuentes 3. quæst. 1. cap.
clementia 107. 11. quæst. 3. cap. indignum 21. §. de-
bet 18. quæst. 3. cap. de illicita 24. quæst. 3. cap. consu-
latur, de effe. deleg. cap. cum specialis, de appellat. cap.
conuincit, et 2. hoc it. cap. Romana, cap. statum,
cap. consilium, hoc it. in 6. Illustre vñs
congellos à Barbosa in præsent, & de potest. Episc.
alleg. 126. Petrus Gregorius lib. 4. parit. tit. 16.
cap. 6. de lib. 3. §. 2. cap. 9. non. 9. Guizet 2. lib. 3.
canonic. cap. 16. Petrus in cap. 1. de indic. quæst. 23.
Hurtado de excommunic. dist. 9. difficult. 3. Sane-
rez, Saytus, Alterius, & alij de censuris scriben-
tes relati à Gibalino de censur. dist. 6. per tot.
Altera in præsent.

4.
IMPRE-
TUS TRA-
DITA AB
CANTO.

Sed pro dubiandi ratione in præsentem asser-
tionem ita infurgo. Si monito desideraretur ad ex-
communicationem, non posset ignorans, aut ab-
sena excommunicari: sed tem absens, quam ig-
norans potest excommunicari: igitur quia trina

monito ad excommunicationem non desideratur,
maior patet, minor sitem probatur ex cap. de moni-
tione 17. 2. quæst. 1. cap. cum si Romana 5. §. ult. de
appel. in quibus factum D. Pauli 1. ad Corinthe. 5.
reheret, qui Coriothum quendam absentem, &
inequidum excommunicauit, ibi: Ego præsent
spiritu, absens autem corpore iam iudicauit. Ergo ex-
communicatio nulla præmissis monitione in ab-
sentem, & ignorantem profecti potest. Augerit
hæc dubitandi ratio et eo, nam excommuni-
catio, seu quælibet alia censura statim atque prohi-
tor, ligat, quia secum trahit executionem, cap. po-
tentialis 53. §. 2. verum, de appel. & ideo in absentem
prolata eo animo vt statim liget, habet effectum,
quia excommunicatio pœdet ab oimo, & inten-
tione profectus, qui potest velle, vt statim ef-
fectum habeat, vel eum ad eius notitiam peruen-
sit, vt plerumque fit, cap. videmus 29. §. aduer-
sus 2. quæst. 6. & igitur excommunicatione affec-
tum fuisse, supponitur in cap. Apostolica 9. de cle-
ric. excomm. Ergo quia absque vlla monitione ex-
communicatio profecti potest.

Quia dubitandi ratione non obstante vera est
præsent assertio, pro cuius expositione scire oportet,
esse in Ecclesiâ potestatem ordinariam ad ipsius
regimen in foro exteriori per censuras, & pœnas,
quæ ad bene regendum fidelium Rempublicam
necessariæ sunt: que potestas iurisdictionis appel-
latur, ad quam pertinet non tantum via directiua
ad ferendam legis obligationem, verum etiam via
coëctiua, quæ propterea vocatur potestas fori
coëctiui: quam quidem potestatem à Christo
Domino Ecclesiâ accepit, Matthæ cap. 16. & 18.
ibi: Quicquid ligaueris super terram, &c. Et
cap. solutus, de maiorib. & obed. Ex quibus, & alijs
auctoritatibus congeitis ab Hallierio lib. 4. de iur-
ris. lib. 2. art. 7. §. 5. cognoscitur Ecclesiâ ha-
bere potestatem ferendi censuras; nam verbum li-
gaueris, ecclesiasticam censuram magnopere im-
portat, quæ est vinculum quoddam, seu ligamen,
vt probant Suarez de censur. dist. 2. sect. 2. num. 3.
Gibalinus rod. tract. 2. dist. 3. quæst. 1. & laxe vñs
fuisse D. Petrum & Paulum hæc potestatem censura-
rum, constat ex canonicis 28. alijs 30. Apostolo-
rum, ex epistola 1. ad Corinthe. cap. 5. ibi: Tradidisti
Iacob. Et epist. 16. Si quis non amet Dominum no-
strum Iesum Christum, sit anathema. Et ita hæc
potestatem ex Ecclesiâ institutione agnoscitur
Celestinos Papa epist. 2. Urbanus epist. 1. Fabianus
epist. 1. & a congeitis à Suarior, & alijs de cen-
suris agenzibus.

Vt autem excommunicatio non solum validè,
verum & iuste profectatur, non solum causa
grauis præcedere debet, verum & monito in omni-
bus sententiis ab homine profectenda: quod oon
præcedit in excommunicationibus à iure imposi-
tis, quia lex ipsa quotidie monet, vt in cap. Apo-
stolica, §. finalis de indic. lib. 6. cap. premit. de immu-
nitate Eccles. eod. lib. cap. 2. §. si quis autem, ne clericis
vel monachis, lib. Clement. 1. in princip. de sequess.
possess. Clement. 1. in fine de par. Clera hæc autem
monitionem nonnulla obseruanda sunt. Primum,
vt iustus sit, idest vt reus reus te monetur, cap. con-
uincit 2. hoc it. Idque appellant Domini præcep-
tum Patres Concilij R. Rotomag. in cap. omnes 16.
quæst. 7. & Nicolaos in cap. presbyterorum 16. quæst. 4.
& PP. Concilij Parisiensis in cap. de illicita, 24.
quæst. 3. eandem trinom monitionem repetunt ex
euangelica auctoritate, quia oempe Christus Do-
minus docuit apud Matthæum cap. 18. vt peccan-
tem

5.
DI POT-
ESTATE
EXCOM-
MUNI-
CANDI.

6.
DE TRINA
MONITIONE.

communicatum anathematizasse propter horrendum, & immane scelus capiendi, deindeque ipsum Pontificem, vi explicant Iustianus *pro epist. Clement. lib. 3. cap. 36. Const. in cap. ult. 1. part. 4. 3. num. 6. Balbus in cap. 10. de iudic. num. 42.* Etiam opponi solet textus in *cap. illud, de clerico excom. ibi: Non crediderat quod munitione premissa, &c.* Ex quibus deducitur, excommunicationem

absque monitione esse prolatam fuisse. Ergo etiam monitione non premissa excommunicatio rectè profertur. Pro cuius difficultatis solutione dicendum est, in eo textu non agi de hac monitione premissa ante excommunicationem, sed de monitione, quam facere tenetur quilibet iudex delegatus ante executionem suæ iurisdictionis, de qua *egi in cap. cum in iure peritus, de offic. deleg.*

CAPVT XLIX.

Honorius III. * Bononiensi Episcopo.

Nouerit fraternitas tua, quod nos in Basilica Principis Apostolorum, præsentem Reuerendissimo in Christo filio nostro Illustri Romanorum Imperatore, & semper Augusto, in celebratione Missarum, postquam capiti suo imposuimus Imperij diadema, de consensu fratrum nostrorum, accensis * candelis excommunicauimus ex parte Dei omnipotentis, auctoritate quoque Apostolorum Petri & Pauli, & nostra omnes hæreticos, vtriusque sexus, quocunque nomine censeantur, & fautores, receptatores, & defensores eorum, necnon & qui de cætero seruari fecerint statuta edita, & consuetudines, vel potius abusiones introductas contra Ecclesie libertatem; & nisi ea de * capitularibus infra duos * menses post huius publicationem sententiæ, fecerint amoveri. Item excommunicauimus statuarios, & scriptores statutorum ipsorum, necnon Potestates, Consules, & Rectores, & Consiliarios locorum, ubi de cætero huiusmodi statuta, vel consuetudines editæ fuerint, vel seruatz, necnon & illos, qui secundum ea capitularia præsumpserint iudicare, vel in publicam formam scribere iudicata.

NOTÆ.

1. **Bononiensi.]** Ita etiam legitur in quinta collectione, *sub hoc tit. de consil. cap. 2.* ex qua collectione testis integram teximus. In præsentis scribit Honorius Henrico Episcopo Bononiensi, nam cum eius tempore Bondonienses, Narnienses, Spoletani, & Ferrarienses, assumpto vexillo libertatis contra Ecclesiam Romanam, & libertatem Ecclesiasticam vasa statuta fecissent, vt refert Anonymus in vita Gregorij XI. ideo præsentem edidit constitutionem Honorius III. vt ea cassaret, & Fredericus Imperator statim ac eorundem fuit libertates Ecclesie restituit: quod privilegium refert Vghellius *tom. 2. Italia sacra, in serie Præfatum Ecclesie Bononiensis*: & ipso die inaugurationis suæ anno 1220. constitutionem edidit, quæ extat in *authent. cass. Cod. de sacros. Eccles. & in quinta compilatione, sub tit. de consil. quia* Fredericus irrita esse iubet omnia statuta, & consuetudines introductas contra Ecclesie libertatem. Ex qua constitutione locum accipit præsens textus, vt iam notauit Petros Marchus *lib. 2. concord. cap. 11. num. 7.*

2. **Candelis accensis.]** Iuxta sollemnitatem, quæ adhiberi solet in pronuntiatione anathematis, de qua in *canon debent 1. quæst. 3. & in Concil. Lemovic. 1. quod vti fuerunt Innocentius IV. aduersus Imperatorem Fredericum II. & in Concil. Lugdun. 4. & ante Alexander III. eodem agitur de pace inter ipsum, & Fredericum Ocoobatum, vt*

refertur in *chron. Remualdi Soleriani*, ibi: *Papa excommunicauit eos, qui pacem infringebant; & sic cum ha candelæ extinguntur, sic eorum anime æterna visionis lumine priuentur: cumque candelæ essent præstolæ de manibus, Imperator alta voce cum alijs exclamauit, Plus de hoc ritu adducit Theophilus *tom. 14. de literig. monit. lib. 2.**

c **Statuta.]** Similiter etiam de statutis à Pisana editis scribit Honorius in *cap. grauem, hoc tit. & latè de his statutis egi in cap. Ecclesia, de consil.*

d **Capitularibus.]** Capitularis est collectio capitulorum, qualis illis Anseguisi est; & canones, ac leges appellati solent capitula. Lupus Ferratiensis *epist. 42. Canones eisdem, sine vi et vocatis, capitula.* Hadrianus Pontifex ad *Carolus Magn. epist. 3. Inter quæ cædit nobis capitulare aduersum Synodum, quæ pro seruandis Imaginibus erigimus in Nicæna acta est.* Illustrat Gerstæ. Vossius *lib. 3. de vitis ferm. cap. 3.* Etiam capitulare dicitur liber cimariorum, id quo decreta, statuta, & consuetudines inseruntur, quæ modo in præsentis capitularia accipiuntur, vt notatur Glossa in præsentis, Citoius in *notis ad hunc textum.*

e **Duos menses.]** Nam regulatiue leges non obligant, nisi post promulgationem; & aliquod tempus elapsum, vt omnis ignorantia vitetur, *cap. non magnopere 3. ne clerici vel monachi, cap. cum infirmitas 13. de paroch. & rebus, cap. de concess. prebend. lib. 6. pluribus telatis illustrat Vela *disposit. 45. num. 47.**

CAPVT L.

Idem ^a Magistro, & Fratribus hospitalis Hierosolymitani.

^b Canonica constitutione eauctur, quod monachi, & canonici regulares quocumque modo se in claustris percusserint, non sunt ad Ap. Sedem mittendi, sed secundum providentiam, & discretionem sui Abbatis disciplinz subdantur: quod si Abbatis discretio ad eorum correctionem non sufficit, providentia est diocesani Episcopi adhibenda, nisi excessus difficilis fuerit, & enormis, propter quem metus sit ad Romanam Ecclesiam recursus habendus. Nos ergo vestris supplicationibus inclinati, ad vos statutum huiusmodi duximus extendendum, auctoritate presentium statuantes, ut in tali casu, nisi maioris sit providentia requirenda, per Priorem vestrum, qui sicut audiuius, ^c presbyter esse debet, fratribus vestris absolutionis beneficium impendatur.

NOTÆ.

1. ^a *Magistro.*] Guarino videlicet, vulgò de Montezgudo, qui fuit Magister huius iohannitæ Religionis, vt referunt Vossius in *historia Arelatensi*, cap. 14. Scito in *propugnaculo huius Religionis*, disp. 2. cap. 3. num. 26. Textum hunc scilicet ex quinta collectione, vbi sub hoc tit.

cap. 1. reperitur prout hic transcribitur.

^b *Canonica*] Relata in cap. 2. supra hoc tit. vbi textum hunc exposuit.

^c *Presbyter.*] Qui magis idoneus ex omnibus capellaniis, & clericis eligitur, vt illis præstet, vt referunt P. Gregor. lib. 15. *synag.* cap. 34. num. 3. Scabius in *propugnaculo*, disp. 2. cap. 4. qui ex num. 11. agit de huius Prioris officio, & iurisdictione.

CAPVT LI.

Idem H. tit. S. Praxedis presbyt. ^a Card. Ap. Sed. legato.

Spet co, quod monachi Græci, & Eremite propter inobedientiam suam suspensionis, & excommunicationis vineulo ligati, nolunt ad mandatum Ecclesie, nisi per manualet promissionem redire, hoc tibi duximus respondendum, quod si nullatenus possunt induci ad præstandum iuxta formam Ecclesie iuramentum, ipsos hac vice cum promissione poteris recipere manuali, cùm vndique consideratis locorum, & temporum qualitatibus, seueritati sit aliquid detrahendum.

NOTÆ.

1. ^a *Cardinali.*] Ita etiam legitur in quinta collectione, sub hoc titulo cap. 2. ex qua transcribo textum hunc.

2. ^b *Manuale promissionem.*] Licet quilibet excommunicatus ante absolutionem teneatur iuramentum promittere se paritum Ecclesie mandatis, cap. cum desideras, cap. ad hoc, cap. super, cap. de ceteris, hoc tit. tamen in presenti casu ob duritiam Græcorum Honoris petemur, vt illi ad Ecclesiam redeuntes tantum manualet promissionem facerent, id est simpliciter absque iuramento promittere se stare mandatis Ecclesie: vt etiam obedientia manualis accipitur in cap. de, de maioribus & obed. Vnde optime deduxerunt Hostiensis, & Abbas in presenti, tantum Pontificem dispenso posse, vt absolutionem impendat excommunicato non adhibitis requisitis, & excommunicationis iure præscriptis: & peccatum lethale esset abolere excommunicatum non adhibitis excommunicationis iuramentis Romani statuti, præcipue vbi adest scandalum. Docuerunt Suarez de censur. disp. 19. sess. 2. Reginaldus lib. 9. in praxi feri, cap. 4. sess. 3. Turtianus de censur. lib. 3. disp. 14. Anb. 3. Nauarrus in manual. c. 26.

num. 9. & in cap. 1. de parit. disp. 6. num. 3. Hugolinus de censur. 3. part. 4. 1. num. 4. Coninch de syn. crag. & censur. disp. 14. disp. 116. num. 203. Auzila de censur. lib. 2. disp. 2. dubio 2. Henric. in summa, 2. part. lib. 3. cap. 29. num. 4. Filliuc. in summa, tom. 1. tract. 11. cap. 10. num. 333. Peyrinus in apoc. mar. tract. de formul. Præleg. cap. 1. 2. & 7. Villalobos in summa, tom. 1. tract. 17. difficult. 24. num. 7. Bonac. de censur. disp. 1. de cens. in comuni, punct. ult. propos. 3. Quare caueant iudices ecclesiastici, ne absolutionem facile concedant iudicibus secularibus effraCTORibus, seu violatoribus immunitatis ecclesiastice, nisi adhibitis prædictis excommunicationis, vt exemplo faciendum docuerunt S. Anton. Archiep. Florent. referentis Episcopo Monopol. in histor. S. D. Dominici lib. 1. cap. 146. F. Barthol. à Martyribus Archiep. Brachar. vt natus Minor in eius vita, lib. 3. c. 10. S. Thom. à Villanova, referente Michaele Salom. in eius vita cap. 5. Abulensis dum esset Cancellarius Salmantinus, vt refert Agidius Gonzalez in theaur. ipsius Eccles. Præstol. Tolet. referente Mariana lib. 18. hispan. cap. 18. & hoc anno 1669. D. Gabriel Elpari Episcopus Salmanticensis.

CAPVT LII

Idem ^a *Bituricensi*, & *Carnot. Decano*, & *Subdecano Aur.*

Venerabili fratre nostro Cenomanensi ^b Episcopo, & dil. filio H. canonico Turo-
nensi procuratore venerabilis fratris nostri Turonensis Episcopi in nostra præsenta
tia constitutis, pro quadam suspensionis sententia in præfatum Episcopum ab eodem
e Archiepiscopo promulgata: Nos audiitis, & intellectis quæ super hoc fuerunt ab eis
proposita coram nobis, quia partes dissentiebant in facto, ita quod de illo plenè con-
stare non potuit, sententiam ipsam de gratia relaxauimus ad cautelam, ipso Episcopo
in præsentia dicti procuratoris præstante corporaliter iuramentum, quod parebit
mandatis, quæ idem Archiepiscopus sibi propter hoc fecerit, si constituerit ipsum
Episcopum in eo, pro quo fuit lata suspensio prædicta, culpabilem extitisse.

NOTÆ.

- i. ^a *Bituricensi*.] Ita legitur in quinta collectio-
ne, *sub hoc tit. cap. 4.* ex qua inscriptionem,
& litteram huius textus transcribo. De Ecclesia
Bituricensi, Carnot. & Autel. iam egi in *cap. 3. de*
rescriptis.

2. ^b *Episcopo*.] Mauritio videlicet, qui fuit *xxxix.*
Episcopus Cenomanensis Ecclesie, & ex ea trans-
latus in Archiepiscopum Rhotomæg. anno 1231.

vt refert Chenu in *serie Presulum ipsius Ecclesie*.

^c *Archiepiscopo*.] Iuello videlicet de Marefel-
lon: sed non intelligas Archiepiscopum solum
suspensiois sententiam in Episcopum protulisse,
sed simul cum aliis Episcopis ipsius Prouinciæ;
nam causæ Episcoporum tantum in Consilio Pro-
uinciali discipari poterant, *cap. si quis Episcopum 6.*
quest. 4. probant Citonius in *notis ad hunc textum*,
P. Mathe *lib. 4. concord. cap. 3.* probant in *cap. 1. de*
iudic. & in cap. 3. de accusat.

3.

CAPVT LIII.

Idem Episcopo ^a *Senensi*.

Grauem venerabilis fratris nostri Pisan. Archiepiscopi recepinus questionem,
quod A. B. & quidam alij ciues Pisan. deputati à Potestate, ac populo ad statuta
ciuitatis edenda, tanquam perversè sapiant, in derogationem Apostolicæ Sedis, &
subuersionem Ecclesiasticæ ^b libertatis edere præsumperunt, quod si quis clericus,
vel laicus contra quemcumque laicum Pisan. districtus ad iudicem ecclesiasticum
litteras Apostolicas impetrauerit, in mille solidis, nisi huiusmodi renuntiauerit lite-
ris, condemnatur: nec redditus possessionum suarum reddantur eidem, vel agri ex-
colantur ipsius, sed e banno potius subiaceant Potestatis, quæ nullum ad regimen ci-
uitatis suscipiet, nisi hoc se iurauerit factutum: & hæc, & quælibet alia Potestas,
quæ pro tempore fuerit, successores suos iurate faciet supradicta. Statuerunt illi præ-
terea, vt clerici suis sumptibus castrum Ripxfractæ faciant custodire: quod si renue-
rint, contra eos Potestas procedere teneatur iuxta quod dictauerit consilium ciuita-
tis. Quæ omnia is, qui nunc præest ciuitati prædictæ, obseruaturum se firmiter iurei-
rando firmavit. Cum autem tota ciuitas Pisana, quæ alijs tamdiu Dei ^a timorem ab-
iecit, quod infecta iam errore, vel infectioni proxima præsumatur, & tam statuta-
rios, quàm Potestatem eandem non sit dubium propter hoc excommunicationis sen-
tentiam, præter notam infamix, incurrisse: fraternitati tuæ mandamus, quatenus eos
excommunicatos publicè nuncies, & facias ab omnibus arctius ciuitati, donec abso-
lutionis beneficium per Sedem Apostolicam mereantur: contra Consiliarios, & Offi-
ciales ciuitatis ipsius, nisi statuta ipsa de capitalibus clerici fecerint, & idoneè,
sicut exigit res, caueri, quod similia de cætero non debeant attentare, simili-
ter processurus. Cæterum cum iidem statuarij multa de bonis Ecclesie tenere
dicantur in feudum, ipsos nihilominus fore priuatos feudis huiusmodi nuntiare
procures.

NOTÆ.

- i. ^a *Senensi*.] Ita legitur in quinta collectione,
sub hoc tit. cap. 5. ex qua restituo inscriptio-
nem, & litteram huius textus: in præsentia referi-
bis Honorius Beofilio præclaro viro, de quo plu-

ta refert Vghellius *tom. 1. Italia sacra, fol. 630.*

^b *Ecclesiastica libertatis*.] Quare similia statu-
ta nulla sunt, vt probant in *cap. Ecclesia, de consil.*
vbi commentationem huius textus dedi.

^c *Banno*.] Buoni varias acceptiones addoxi in
cap. 1. de purgat. canonice.

2.

d Timorem

3. d. *Tinorem abieci.*] Pisana ciuitas felix olim fuit, non modò florentie Romano Imperio, verùm & post eius ruinam, siquidem subegit insulam Sardinie: quare Romani Pontifices eius insulæ iurisdictionem Pisana concesserunt. Pisani etiam Carthaginiem, atque Baleares insulas in feruitutem reduxerunt, Panormumque à Sarracenis occupatam recuperant, profugosque Romanos Pontifices hospitio exceperunt. Felicitas rerum fortuna hanc ciuitatem prouexit, donec cum Fridrico II. Imperatore contra ecclesiasticos iusto fo-

deret, capsiſque ad Lomellum duobus Cardinalibus, ac quampluribus Presbiteris, quia Gregorius IX. mandante ad Concilium in eodem praesentibus, diuini Numina non seram prouocauit vindictam; paulò enim post eodem in loco à Gentilibus nauali peritio Pisani suppetati cum 49. uirginibus duodecim milia selesorum militum auferunt, praetereunt uictoriam nullo decore tandemque sub iugo Florentinorum missa in eum statum redacta est, ut penè deserta fuerit, ut refert Vghel. tom. 3. *Italia sacra*, fol. 393.

• C A P V T LIV.

Gregorius nonus.

Cum uoluntate, ac proposito maleficia distinguantur, excommunicationis sententiam non incurrit, qui excommunicato in his, quæ ad absolutionem, vel alias ad salutem animæ pertinent, in loquutione participat, licet etiam alia uerba incidenter (ut apud eum magis proficiat) interponat. Predicatores quoque, qui penes excommunicatos, vel alios alienarum rerum detentiores in praedicationibus, & confessionibus quasi gerunt causam (vel curam) eorum, ad quos respiciè spectare noscuntur, elemosinas licetè possunt ab illis recipere, praeterum si aliis non ualent in illo loco sustentationem habere. Si qui uerò ratione officij, quod in Ecclesia obtinent, aut etiam alij clericici seniores zelo deuotionis pueros, vel adolescentes in minoribus ordinibus constitutos turbantes diuinum officium, & hi qui obtentu praedicationis, vel magisterij subditos, & scholares correctionis causâ leuiter fortè percusserint, excommunicationis sententiam non incurrit. Quod & de his dicendum est, qui aliquos de familia sua, vel propinquos inferiorum graduum simili modo ut cohibeantur à suis insolentis, & scientia, bonisque moribus informantur, duxerint corrigendos.

NOTÆ.

1. a. *Gregorius IX.*] Qui praesentem edidit constitutionem motu proprio, à nemine consultus, pro explicatiooe censuræ, quæ incurritur ob iniectionem manuum in clericos ex canone *si quis suauiter* 17. quæst. 4. de qua egi in cap. 1. & seq. hoc capitulo: & etiam excommunicationis reuocata, quæ incurritur ob commotionem cum excommunicato, de qua egi in *significanti*, hoc tit. b. *Corrèctiois.*] Modicæ tamen, ut probauit in cap. 1. hoc tit.

c. *Familia sua.*] Sed an poter possit filium suum initium impune corrigere, atque castigare absque eo, quod inieciat in excommunicationem canonis, dubitatur. Et id illi licetè deoerunt Syluester in *summa*, verbo *Excommunicatio* 6. *casu* 8. Bonacina de *censur. disp.* 2. quæst. 3. *punct* 6. *sect* 4. Nauartus, Filliulus, & alij congeſti à Gibalino de *censur. in synop.* fol. 464. Sed rectius negant Molina *tract.* 2. de *uſuria*, *disp.* 228. & *tract.* 3. *disp.* 16. Layman *lib.* 1. *summa*. *tract.* 5. *cap.* 50. num. 9. Castropalao *disp.* 3. *punct* 23. §. 3. Gibal. ubi *proxi.*

C A P V T LV.

Idem *Astoricensi Episcopo.*

SI concubinæ publicæ clericorum ecclesiasticæ censuræ distinctione notentur, eodem concubinario non est dubium sententiâ maioris excommunicationis inuolui, qui post latam sententiam communicant in eodem crimine criminosis.

NOTÆ.

- a. *Astoricensi.*] De Ecclesia Astoricensi egi

in cap. 17. de *re iudicat.* & textum hunc exposui supra in cap. *significanti*.

C A P V T LVI.

Idem.

VOBIS collata potestas, ut à minori excommunicatione, si in ipsam incidere, inuicem se absoluant, utroque ligato uinculo excommunicationis, huiusmodi non expirat.

D. D. Genzal, in *Decretal.* Tom. V.

Fff 2 NOTÆ.

2.

Idem.] Gregorius IX. videlicet, qui præsentem constitutionem edidit pro decisione illius casus, quando videlicet duobus concessa est facultas se ad invicem absolviendi à minori excommunicatione, utrum videlicet si ambo in eam incidant, possint ad invicem se absolvere? Et as-

serit Gregorius, posse, quia eodem excommunicatus minori excommunicatione tantum prohibitus sit à susceptione Sacramentorum, non verò ab eorum collatione, ut probavi in cap. si celebras, de clerici, excommunic. cap. significavit, hoc ritusque ideo qui excommunicatione minori ligatus est, potest socium eadem censura ligatum absol-vere.

CAPVT LVII.

Idem.

Permittimus Ecclesiarum ministris semel in hebdomada tempore interdicti, non pulsatis campanis, voce submissa, ianuis clausis, excommunicatis, & interdictis exclusis, Missarum solennia celebrare causâ conficiendi corpus Domini, quod de- cedentibus in penitentia non negatur.

NOTÆ.

Idem.] Gregorius IX. videlicet. Textum hunc exposui in cap. quod in te, de penit. & remiss.

CAPVT LVIII.

Idem.

Quamvis incidens in canonem lætæ sententiæ propter violentam manuum iniectionem, iuxta proprias facultates eis satisfaciatur, quibus iniurias irrogavit: non tamen aliter quàm per Sedem Apostolicam, vel eius ^b Legatum absolutionis potest beneficium obtinere: nisi imminenti moris articulo, infirmitate, ^c inimiciis, aut inopia, ^d puerili, vel senili ætate, fragilitate ^e sexus; seu alia corporis impotentia, siue quolibet impedimento canonico retrahatur, quominus Romanum Pontificem possit adire: vel nisi iuris beneficio à labore huiusmodi excusetur. Cæterum quibusdam prædictorum, videlicet qui temporali impedimento laborant (exceptis pueris) sub debito iuramento (quod secundum Ecclesiæ formam præstare tenentur) consuevit iniungi, ut impedimento cessante ad Apostolicam Sedem accedant, mandatum ipsius humiliter susceperunt.

NOTÆ.

Idem.] Gregorius videlicet IX. qui etiam hanc constitutionem edidit pro explicatio- ne canonis *Si quis suadente*, iuxta suorum præde- cessorum decisiones.

^b Legatum.] A lætæ videlicet, iuxta traditionem supra in cap. ad eminentiam.

^c Inimiciis.] Ut probavi supra in cap...

^d Puerili.] Iuxta traditionem in cap. 1. hoc sit.

^e Sexus.] Consuetudo caput mulieres, ubi pro- batur, hoc sit.

CAPVT LIX.

Idem.

Si quem sub hac forma verborum: Illum excommunico; vel simili, à iudice suo excommunicari contingat, dicendum est, eum non tantum minori, quæ à percep- tione sacramentorum; sed etiam maiori excommunicatione, quæ à communione fidelium separat, esse ligatum.

NOTÆ.

1.

Idem.] Gregorius videlicet IX. qui hanc no- vam edidit constitutionem; nam etiam olim excommunicatio simpliciter prolata tantum de mi- nori acciperetur, cap. Engelardum 3. quæst. 4. cap. cum excommunicatus 1. quæst. 3. tamen ipse noviter ausit, ut si simpliciter excommunicatio proferatur, intelligatur de maiori, quæ fidelium commu- nione priuat, & magis timetur; nam quolibet

dictio in priori eius significatione accipienda est. Glossa in l. 1. ff. de V. O. probant, atque explicavit latè Balboa in cap. 2. de except. à nu- mero 98. Gibalinus de censur. diffinit. 1. quæ- stione 2. Nec tunc obstat textus in cap. 1. de except. lib. 6. ubi statuitur, reum excommunicatum adversus actorem de excommunicatione, exprimentem debe- re speciem ipsius excommunicationis. Igitur quia simpliciter excommunicatio non accipitur pro maiori. Cui difficultati, omittis traditis à

COURT.

Couat. in *cap. alma*, 1. *part. §. 8. num. 8.* dicendum est cum Gibalino, & Balboa ubi *supra*, Fernosino in *cap. cum non ab homine, quest. 31. de iudiciis*, in eo textu non affirmari, nec illarū exstipulandam esse speciem excommunicationis à reo excipientem, siquidem id superfluum esset, tum ex presenti textu, tum ex eo, quia tantū excommunicatio maior repellit a iudicio, ut probavi in *cap. in proximis, de iudiciis, cap. 2. de except.* sed tan-

tū de eerni, allegandam esse causam specialem excommunicationis, quia eū in *§. si verò*, ipsius textus dicitur, probandam esse exceptionem intra octiduum apertis documentis, id nulla ratione fieri poterat, allegatā tantū excommunicatione in genere, nisi illius causā specialem, quæ intra illum terminum probari possit, exprimeretur. Lactius prosequuntur Balboa, & Primarij nostri in *dillo cap. 2. de except.*

CAPVT LX.

Idem.

Peris, qui in canonem inciderunt sententiæ promulgatæ, siue antè, siue post pubertatem postulent se absolui, potest diocesanus Episcopus absolutionis beneficium impertiri: cū propter defectum ætatis, in qua fuit commissus excessus, rigor sit mansuetudine temperandus.

NOTÆ.
 1. *Idem.* Gregorius videlicet IX. Textum hunc exposui *suprà* in *cap. 1.*



TITVLVS XL.

De verborum significatione.

CAPVT PRIMVM.

Hieronymus *super Osee.*

¶ Nouate nouale. Nouale est ager nunc primū præcisus.

NOTÆ.

1. **H**ieronymus.] Ita etiam legitur in prima collectione, *sub hoc tit. cap. final.* sed non reperitur hæc verba in commentariis ipsius S. Do-

goris super Prophetam Oseam: extant tamen in Glossa, quæ vulgò interlineatur dicitur, ubi ad ea verba Prophetæ Osee *cap. 10. Seminate vobis iniquitatem, & metite in ore misericordia: in nouate vobis nouale*, legitur: *Nouale est ager nunc primū præcisus.*

CAPVT II.

Idem *super* ^a *Danielem.*

Nam & Rex Nabuchodonosor pater tuus, idest proauus, more ^b Scripturæ, quæ Nauos, & deinceps patres appellat.

NOTÆ.

1. **D**anielem.] Ita etiam legitur in prima collectione, *sub hoc tit. cap. 1.* & priore illa verba reperiuntur in *cap. 1. Danielis*, videlicet: *Nem Rex Nabuchodonosor pater tuus*, ubi et D. Hieronymus ita exponit: *Quod autem Balbazarie patrem Nabuchodonosor vocat, non facit errorem scientibus sacra Scriptura consuetudinem, quæ patres omnes proci, & maiores vocantur.* Et ad illa verba: *In diebus patris tui*, ait: *Et in diebus patris tui. Patrem vocat Nabuchodonosor, ut supra diximus, pro-*

auum eius; secundum consuetudinem Scripturarum.

^b *Scriptura.*] Et etiam iure civili attentio, iuxta communem interpretationem, patris nomine auus quoque continetur, *l. infra 201. ff. de V.S.* ubi Gentilis, & Fernelius. Nec tantū auus paternus, verū et maternus, *l. vlt. in fine, Cod. de iur. iur.* inquit indic. inquit & omnes ascendentes, ut docent Chassancus in *consuet. Burgundie, rubrica 757.* Atacius Kipol. *de prim. parent. in proleg.* num. 36. qui inde explicat textus in lege Julia, *ff. de ritu nups. l. filium habere, ff. ad Admced.*

C A P V T III.

Idem ^a in Parabolis.

NAm & ego vnigenitus fui coram matre mea. Quare vnigenitum se nominat, quem fratrem veritum præcessisse Scriptura testatur? nisi quia ille mox natus, sine nomine, quasi^b nunquam esset, de vita decessit.

N O T Æ.

1. ^a *In parabolis.* Ita etiam legitur in prima collectione, *sub hoc tit. cap. 2.* & priora illa verba. *Nam & ego vnigenitus fui coram matre mea.* Reperitur in *cap. 4. Proverbia*, sequentia verò sunt D. Hieronymi. Hanc eandem difficultatem, quare videlicet Salomon dicitur vnigenitus filius, cum ex *lib. 1. Paralip. cap. 3. vers. 5.* appareat Davidem tres alios filios suscepisse ex Bethsabee, videlicet Simeon, Sobab, & Nathan? agnoverunt PP. & Theologi exposuerunt. Salzman *tom. 3. anno mundi 1589. num. 3.* Abulensis, Lira, & Vatablus in *dist. cap. 3. Paralip.* Hugo Cardin. in *lib. 2. Regum, Salomonem tom. 3. num. 28.* existimant, tres illos filios à Bethsabee ex Vria, non verò Davide conceptos fuisse, sed postea à Davide adoptatos. Verum eos fuisse Davidis filios naturales expresse constat ex *dist. cap. 3. Paralip.* & probatur Theodoretus, & Procopius *ibi*, Pineda *lib. 1. de rebus Salomonis, cap. 8. num. 3.* & *lib. 7. cap. 26.* Battadius *tom. 1. lib. 5. cap. 9.* Quare ea interpretatione omittenda, verius dicendum est, Salomonem appellari

filium vnigenitum, quia vnus dilectus erat à matre sua: quare non dicitur in *dist. cap. 4.* vnigenitus matris sue, vel patris sui; sed vnigenitus eoram matre sua, idest vt Septuaginta vertunt, *dilectum in facie matris sue*, idest vnus per singularem amorem, cutam, & sollicitudinem, petendo ac si esset solus, & vnigenitus: quare ad eum mater ait *cap. 3. vers. 3.* *Quid dilectus mihi? Quid dilectus veri mei? Quid dilectus votorum meorum.* Probant, & illustant expositionem hanc Pineda *dist. lib. 1. cap. 8.* Cornet. à Lapide in *dist. cap. 4. Prover.*

^b *Nunquam esset.* Hinc aliquando filij, qui iam decesserunt, tanquam si non fuissent, habentur: quare nec patri profum ad excusationem munusculi publicorum, nisi in bello amissi sint, *l. 2. §. oportet, ff. de excus. tut. l. 2. §. qui ad mortem, l. communis, ff. de vocat. mortu.* Quoad alia verò, veluti ad liberationem pactionis operatum, amissi filij etiam profum, *libertinus 37. §. amissi, ff. de oper. liberti. l. nec paratus 6. Cod. cod. tit.* Prosequitur Bettramus Maurus de *ius libertorum cap. 44.*

C A P V T IV.

Idem super ^a Matthæum.

Quod dicitur: Antequam convenirent; non sequitur vt postea convenirent: sed Scriptura quod factum non sit, ostendit.

N O T Æ.

1. ^a *Super Matthæum.* Ita etiam legitur in prima collectione, *sub hoc tit. cap. 5.* & verba hæc repetiuntur apud D. Hieronymum in expositione illorum verborum Matthæi *cap. 1.* Cum esset desponsata mater eius Maria Ioseph, antequam convenirent, inventa est in utero habens de Spiritu sancto. Vbi propositio illa ante, eam continet difficultatem: Ergo postea conveniunt; vt quidam hæretici Antidicomarianistæ apud Epiphanium *heresi 78.* deducunt, asserentes Beatam Mariam post Christi partum à B. Ioseph cognitam fuisse. Sed rectè ea verba Divi Matthæi exponit S. Hieronymus *ibi*, dum ait, quod non quies dicitur aliquid non ante factum esse, significatur postea factum esse; cum enim dicimus hæreticos non acturos penitentiam prius quam moriantur, non significamus eos post mortem penitentiam acturos, sed tacemus quod est certum, dicimus quod est dubium. Certum est, post mortem neminem agere penitentiam, quia in inferno quis confitebitur tibi? Sed dubium est, an ante mortem acturus sit. Certum quoque erat post Christi partum Ioseph

Mariam non cognovisse, cum non alium filium, quam Christum habuisset: an autem Christus ex Ioseph, an verò ex Spiritu sancto conceptus esset, dubitari poterat, & necessarium erat explicandum. Hoc ergo explicavit Evangelista, quod dubium, quodque necessarium erat; illud prætermisit, quod nec quærebatur, nec dictum erat necessarium. Alij docent hæc verba, antequam convenirent, idem importare, vtque in eadem domo habitarent. Ita Simon Cassianus in *comm. lib. 2. c. 16.* Abulensis in *cap. 1. Matthæi*, Baronius *tom. 1. annal. in Apparatu, Caietanus in 3. part. D. Thomæ, quest. 29. art. 2.* quos refert, sed non sequitur Battadius *tom. 1. lib. 8. cap. 5.* *ibi*: *Non de calidatione, sed de coniugali congressu hæc verba cum piersique Interpretibus sunt intelligenda.* Quibus sic intellectis Helvidius Deipatæ perpetuam virginitatem labefactæ conatur: sed stупеus est vires, nec enim vim ullam habet hæc consequutio: Antequam convenirent, conceptus virgo ex Spiritu sancto: ergo postea convenerunt. Quemadmodum nec illas Antequam morbum agnosceret medicus, animam efflavit ægrotus: ergo postea morbum medicum agnovit.

CAPVT V.

* Hieronymus *super Matthæum.*

Ioseph non cognouit Mariam, donec peperit filium suum perimogenitum. Ex hoc quidam loco peruersissimè suspicantur & alios filios habuisse Mariam, dicentes primogenitum: cum primogenitus non debeat dici, nisi qui habeat fratres; cum hic mos diuinarum sit Scripturarum, vt primogenitum non eum vocent, quem fratres sequantur; sed eum, qui primò natus sit.

NOTÆ.

^a **I**n eodem.] Ita etiam legitur in prima collectione, *sub hoc tit. cap. 4.* idest D. Hieronymus

ideodem cap. 1. Matthæi. Priora illa verba, *Ioseph non cognouit donec peperit filium suum primogenitum*, sunt D. Matthæi; cæters verò D. Hieronymi caponensis verbum illud *Primogenitum*.

CAPVT VI.

* Hilarius.

Intelligentia dictorum ex causis est assumenda dicendi, quia non sermoni res, sed rei est sermo subiectus.

NOTÆ.

^a **H**ilarius.] Ita etiam legitur in prima collectione, *sub hoc tit. cap. 5.* Sanctus Hilarius Pictauiensis Episcopus floruit per annos 355. & quamvis iam prope ad ætatis baptizatus fuisset, tamen breui in ecclesiastica doctrina ita profectus, vt Doctor Maximus, & ecclesiæ Catholice columna merito habitus sit. Scripsit varia opera, quæ refert Bellatminus *de Scriptis Ecclesiast.* *l. anno 355.* & scriptis de Trinitate, vbi *lib. 4.* reperiuntur verba in præfenti à Raymundo transcripta, quæ vt facilius intelligantur, alijs rependa sunt. At Hilarius: *Sequitur ergo aduersus irreligiosos, & impijs adeo injurias, ipsas illas diuinarum distorum auctoritates, & vniuersumque eo ipso, de quo queritur, auferremus ab eis, non ad falsandam iudicium imperitiam, & male imbuedam, quædam verborum annunciantes, subactis eorum causis,*

*cooperantes. Intelligentia enim distorum ex causis est assumenda dicendi: quia non sermoni res, sed rei est sermo subiectus. Quæ vltima verba compilant Raymundus in præfenti, quia canones propriam habent verborum significationem, quam ex causis ipsius, & rebus deprimis; ideo non tam proprietas, quàm sensus plerumque attenditur. Exempla extant in cap. secundò 41. de appellat. cap. ex litteris, de sponsal. cap. ad audientiam, de de iuris. Quod de iure civili plerumque admittitur, siquidem iurandæ voluntatis gratiâ, vt captio omnis videretur, verba ipsa contra propriam significationem accipiuntur, vt in l. ex conditio 15. §. Paphnias, ff. locati, l. 15. ff. de excusat. tutor. Plura de ambiguo sermone congessevit Petrus Faber, & Iacobus Gothofredus in l. in ambiguis, ff. de R. L. Doctor Leon in l. Paulus, ff. de rebus adhib. D. Iosephus de Retes *lib. 7. opuscul. cap. 3. numer. 21.**

CAPVT VII.

Augustinus *super* * Matthæum.

Nihil obstat narrandi diuersitas, vbi eadem dicuntur, maximè cum quisque Euangelistarum eo ordine credat se dicere, quo Deus voluit.

NOTÆ.

^a **I**n Matthæum.] Ita etiam legitur in prima

collectione, *sub hoc tit. cap. 6.* vbi notat Anr. Aug. verba hæc forsitan transcripta fuisse ex D. Augustino de consensu Euangelist. *lib. 2. cap. 12. 21. & 28.*

CAPVT VIII.

* Gregorius.

Ad explendum affectum meum, fateor, lingua non sufficit: sed quidquid de vobis seuiui, vester vobis melius affectus dicit. Quibosdam verò vos aduersariis laborare audiui. Sed non hac de re valde constitor, quia plerumque nauis, quæ peruenire ad alias pelagi tempestates per prosperitatem poterat, in ipso nauigationis initio vento aduersante repellitur, sed ad portum repulsa reuocatur. Propterea si proli-

xam epistolam ad interpretandum accipere fortasse contigerit, rogo non verbum ex verbo, sed sensum ex sensu transſerre: quia plerumque dum proprietates verborum attenditur, sensus veritatis amittitur.

NOTÆ.

^a *Gregorius.*] Ita etiam legitur in prima col-

lectione, *sub hoc tit. cap. 7.* & reperitur textus hic in registro epistolarum D. Gregorij, *lib. 1. epist. 28.* ea quo illum transcribo.

CAPVT IX.

^a Isidorus.

Quamuis omnes, qui præſunt, præpoſiti ritè vocentur, vſus tamen obtinuit, eos vocari præpoſitos, qui quandam prioratus curam ſuper alios gerunt.

NOTÆ.

^a *Isidorus.*] Ita etiam legitur in prima collectione, *sub hoc tit. cap. 8.* & reperitur tex-

tus hic *lib. 10. etymolog. D. Isidori*, & hanc etymologiam Præpoſiti, atque eius officium, & dignitatem illuſtrat in *cap. 1. de ante, & quatuor.*

CAPVT X.

^a Isidorus.

Forus exercendarum litium locus, à ^b ſando dictus. Qui locus & Prorostia vocatur ideo, quòd ex bello Punico capſis nauibus Carthaginenſium roſtra ablata ſunt, & in foro Romano præfixa, vt eſſent huius inſigne victoriæ. Conſtat autem forus cauſa, lege, & iudice. Cauſa vocatur à caſu, quo euenit. Eſt enim materia, & origo negotij, necdum diſcuſſionis examine patefacta, quæ dum proponitur, cauſa eſt; dum diſcutitur, iudicium; dum finitur, iuſtitia. Vocatur autem iudicium, quaſi iuriſdictio; & iuſtitia, quaſi iuris ſtatuſ. ^c Iudicium autem priuſ inquiſitio vocabatur. Vnde & actores iudiciorum, præpoſitos, quæſtores, vel quæſitores vocamus. Negotium multa ſignificat, modò actum rei alicuius, cui contrarium eſt otium; modò actionem cauſæ, quod eſt ^d iurgium litis, & dictum eſt negotium, quaſi nec otium, ideſt ſine otio. Negotium autem in cauſis, negotiatum in commerciis dicitur, vbi aliquid datur, vt maiora luerentur. Iurgium dictum, quaſi iuris garrium, eo quod ij, qui cauſam dicunt, iure diſceperent. ^e Lis à contentione limitis priuſ nomen ſumpſit. De quo Virgilius: Limes erat poſituſ, litem vt diſcerneret agri. Cauſa aut argumeto, aut probatione conſtat. Argumentum nunquam teſtibus, nunquam tabulis dat probationem, ſed ſolà inueſtigatione inuenit veritatem: vnde & dictum argumentum, ideſt argutum inuentum. Probatio autem teſtibus, & fide tabularum conſtat. In ^f omni autem iudicio ſex perſonæ quæruntur. Iudex, accuſator, reuſ, & tres teſtes. Iudex dictuſ, quaſi iuſ dicens populo, ſiue quòd iure diſceperet. Iure autem diſceperare eſt iuſtè iudicare. Non eſt autem iudex, ſi non eſt in eo iuſtitia. Accuſator vocatur, quaſi ad cauſator, quia ad cauſam vocat eum, quem appellat. Reuſ à re, quæ petiitur, nuncupatur; quia quamuiſ ſceleris conſciuſ non ſit, reuſ tamen dicitur quamdiu in iudicio pro re aliqua petitur. Teſtes antiquiſſi ſuſteſtites dicebantur, eo quod ſuper ſtatuſ cauſæ proſerebantur. Nunc parte ablata nominis, teſtes vocantur. Teſtiſ ^g autem conſideratur conditione, naturà, & vità. Conditione, ſi liber, non ſeruſ: nam ſæpe ſeruſ metu dominantis teſtimonium ſupprimere veritatis. Naturà, ſi vir, non ſœmina. Nam variuſ & mutabile ſemper ſœmina. Vità, ſi innocens, & integer actu. Nam ſi vita bona defuerit, fide carebit; non enim poteſt iuſtitia cum ſcelerato habere ſocietatem. Duo ſunt autem genera teſtium; aut dicendo id, quod viderunt; aut proſerendo id, quod audierunt. Duobuſ autem modis teſtes delinquant, cum aut falſa promunt, aut vera ſilentio obtegunt.

NOTÆ.

^a *Isidorus.*] Ita legitur in prima collectione, *sub hoc tit. cap. 10.* & extitit reuſ: hic *lib. 8. etymolog. D. Isidori, cap. 15.* ex quo Codice correcto à D. Garcia à Loſyſa tranſcribo textum hunc.

^b *A ſando.*] Hæc etymologia diſplicuit Polleto *lib. 1. hiſt. ſori, cap. 1.* & Alciato *lib. 2. diſp. cap. 24.* qui ſequuntur etymologiam, quam tradiſt Marcus Varro *lib. 4. de lingua Latina*, hiſ verbis: *Quò conſerrent ſuæ controuerſiæ, & que vendere vellet, & quò quæque ferrent, forum appellauerunt; unde à ſervando*

2.

utere

quorū forum dixerit, Lucilius lib. 3. Romanis iudic
forū olim ornatus lucernis. Probat Philip. Bro
deus ad Pol. dist. cap. 1. Galsinus de negot. tom. 1.
lib. 2. cap. 3. art. 1. Inde forenses dicuntur, qui in
foro versantur. Vitruius lib. 6. cap. 3. ibi: Forensibus
autem, & diversis elegantior & spaciosior ad con
veniens excipiendus. Et cootruentia ipsæ, quæ ibi
disceptantur, forenses appellantur. Vvipersus lib. 2.
vita Leonis IX. cap. 4. Nempæ ut primum competi
radibus, decurso artium trivio, non saltem claverunt
præa & metro, verum & forenses controversias acutæ,
& vivaci oculis mentis deperibiles expediebant, seu
remanebant sedulo. Notavit Bosquetus ad Innoc. III.
lib. 1. epist. 105.

3. c. Iudicium.] Varias acceptiones iudicii ad
dixerunt Abbas, Ripa, & alij repentes ad rubi
gam fupta de iudic. Matant. de ordie iudic. 1. pars.
dist. 1. 4. D. Perez in rubric. tit. 1. lib. 3. ordie. Scaccia
de iudic. lib. 1. cap. 1. num. 5. Brisson. Caluinus, & alij
Lexicographi verbo Iudicium. Communiter accipi
tur pro linguarum conflictu & forensium discep
tantium certamine, ut probat Cuicæ. ad tit. suprà
de iudic. Explicant Abbas in presenti, m. 1. Decius
lectura 1. num. 5. Ripa num. 50. Sotus de iustitia lib. 3.
q. 4. num. 1. Scaccia d. lib. 1. cap. 1. a. num. 1. à qua

etymologia non molitū discrepat alia Cuicæj obli
suprà, ut iudicium dicatur quasi iustidicatio, cui fa
vera videtur Marcus Vatro lib. 3. de lingua Lati
dum iudicium à iure & dicendo derivat, ut profe
quantur Ofualdus in not. ad Denet. lib. 17. comment.
cap. 3. lit. A.

d. Iurgium.] Festus ait: Iurgium iuris actio est,
& agere iurgare est. Ammianus Marcell. lib. 18. Cum
iurgando contes a pœtibus se magis magisque iniusticiã
frangi, contemplantur. Verbum vltimum in iure,
hæc. Cod. de dilat. Hinc iurgare pro litigare, l. 6.
Cod. Theodos. de iniust. l. 1. 4. sed. C. de accusat. l. 2. sed.
C. de offic. iudic. mil. notavit Szwars ad Sidonium
lib. 2. epist. 7.

e. Lis.] Vt probavi in cap. 1. de lit. contest.

f. In omni.] Consensit Fabianus in capem em
ni 1. 4. quæst. 4.

g. Testis autem.] Rectius D. Isidorus quàm Ser
vilius ad illud Virgilij 3. Aeneid. Superestis, & ves
citur auræ, inquit: Superestis presentem significat. Et
Festus Pompeius ait: Superestis testes presentes sig
nificat, cuius rei testimonium est quod superestis
presentibus 9, inter quos controversia est, veridici
sumere iubentur. Notavit D. Garcia à Losya in no
tis ad D. Isidorum, in presenti.

CAPVT XI.

* Idem.

Pactum dicitur inter partes ex pace conveniens scriptura legibus aut moribus pro
bata. Dicitur pactum quali ex pace factum.

NOTÆ.

1. a. Idem.] Ita etiam legitur in prima collectione,
sub hoc tit. 12. & repetitur textus hic d. lib. 5.
etymol. a. 1. 4. & præsentem etymologiam exposui in

cap. 1. de pactis; præsentemque diffinitionem con
gruam esse probat Fornecius lib. 5. rer. quæd. c. 1. 4.
h. ab ea expungatur mentio scripturæ, quæ non tam
ad substantiam pacti, quàm ad probationem perti
net, l. pactum 17. l. cum proponas 1. c. de pactis.

CAPVT XII.

* Idem in eodem.

Ius dictum est à iuste possidendo; hoc enim iure possidetur, quod iuste: hoc iuste,
quod bene: quod autem malè possidetur, alienum est: malè autem possidet, qui vel
suis malè vitur, vel aliena præsumit.

NOTÆ.

2. a. Idem.] Ita etiam legitur in prima collectione,
sub hoc tit. cap. 12. & repetitur textus hic d. lib. 5.
etymol. a. 1. 4. videturque sanctum Docto

rum etymologiam hanc desumpsisse ex D. Angu
stino relato à Gratiano in cap. 17. 1. 4. quæst. 4. L. i
iuris etymologiam illustravi in principio Appara
tus ad hæc commentaria.

CAPVT XIII.

* Paschalis Papa II. Canonicis S. Martini.

Causa Carpen. plebis, &c. Et infra: Cæterum b primitivæ, decimæ, & oblationes
in solis Ecclesiarum bonis præcipuè numerantur: oblationes verò decimus quæ
cunque de propriis, & licitis rebus Ecclesiæ à fidelibus offeruntur. Quicunque igitur
tas eas per manum, vel potestatem obtinet sæcularem, proculdubio contra Domini,
& contra Sanctorum Patrum nititur institutiones, quin immò & qui accepit, & qui
tradit, raptor, & sacrilegus iudicatur.

NOTÆ.

NOTÆ.

P *Aphobis*, ita etiam legitur in prima collectione, *lib. hoc tit. c. 13*. Paschalis II. antea Remarus, vel Raynetius dictus, Bledanus patrii, monachus Benedictinus, creatus fuit Pontifex anno 1099. Scripsit varias epistolas, inter quas fortasse extat præfens textus; sed eum illis carceribus, integram reddere non possumus.

b *Primicia, & decima*. De quibus, & earum origine ceteri in cap. 1. de decimis.

c *Oblationes*.] Oblatio est quædam donatio bonorum temporalium facta Deo, vel Ecclesie, cap. qui oblationes, cap. clerici 1. 3. q. 2. & sicut omne, quod hominibus donatur, dicitur donatio. ita quod Deo offeratur, appellatur oblatio. Si initium oblationum repetamus, constat in lege veteri earum præceptum exte esse *Exodi c. 23. vers. 15*. ibi: *Non appropius in conspectu meo vocatus*. Numerorum cap. 6. vers. 1. c. 1. ibi: *Disique Dominus ad Moysen, singuli ducet per singulos dies offerant munera in dedicationem altaris*. Doctores autem Summus de religione lib. 1. cap. 4. Barbosa de iure eccles. lib. 2. c. 23. n. 4. An etiam hoc præceptum repetitum sit in lege gratie, disputant interpretæ, & assensum Azo. 1. p. inf. moral. lib. 7. cap. 17. plures relati à Leandro in præcept. eccles. tract. 6. dist. 10. q. 4. Monentur ex textu in cap. omnis Christianus, de consecr. dist. 1. ubi repetuntur ipsa verba Exodi supra relata. Deinde fuit eis textus in c. prater, 32. dist. ubi eadem formula verborum reſertur præceptum de decimis, primitiis, & oblationibus. Ergo sicut decimæ, & primitiæ sunt sub præcepto Ecclesie, ita & oblationes. Faciunt etiam textus in c. de his, c. antiquis 10. q. 1. c. flammis 16. q. 1. ibi: *Diebus Dominicis, & Sanctorum festis, vigiliis, & orationibus instendum, & ad Missas cultibus Christianis cum orationibus esse curandum*. Sed contraria sententia verior est, videlicet non dari præceptum in Ecclesia de oblationibus; quæ expressè probatur in Concil. Cabillon. sub Catolo, cap. 16. ibi: *Annunus saltem inquirere facerdos, non lacra terram debet, quoniam fideles ad res suas dandas non sunt cogendi, oblatio enim esse debet spontanea, iuxta id quod ait Rex Psalmista: Voluntarie sacrificabo tibi*. Facit Tertullianus in apolo. ubi Medicum cuiusvisque stipem mensura dicit, vel cum velit, etiam si modò velit, & si modò possit, apponit. Docet D. Thom. 2. 2. q. 86. art. 1. Deinde quia de ratione oblationis est, ut fiat sponte, iuxta illud Exodi c. 23. *Ab omni homine, qui offerit ultionem, accipietis eas*. Deinde quia nullum erat præceptum in iure de similibus oblationibus, sed tantum monitio, ut in canonibus pro contraria sententia adductis, & in Concilio Moguntino sub Catolo can. 4. Oblationum, & pacem in Ecclesia facere iugiter admoventur populus Christianus, quia ipsa oblatio sibi, & suis ingratum est remedium animarum. Quæ hæc sententiam probantur D. Thomas 2. 2. q. 86. art. 1. Covar. lib. 1. var. cap. 17. n. 3. alij relati à Leandro d. tract. de oblat. dist. 10. q. 4. Sunt tamen casus, in quibus adhuc fideles tenentur ad oblationes faciendas. Primus est si consuetudo addit, ut adeit in quibodam regionibus, talis enim consuetudo omnino est servanda, c. ad Apostolicam, de simonia: probat latè Leandro ubi proxime, q. 8. Secundus est, quando quis ex voto propelo, aut iussu testatorum facere tenetur, c. clerici 2. q. oblationes 13. q. 2. Concil. Antz. 2. can. 16. & 22. ibi: *Qui oblationes deservierunt legaliter dimissas quolibet ordine assignare tardaverint, vel devotum præsumpserint, à communione ecclesiastica suspendantur*. Matiseon,

can. 4. plura Ant. Augustinus in epist. iuris lib. 15. riv. 22. Trulleneb. lib. 3. in Decretalium, cap. 13. n. 2. Tertius est, si Patrochus illis egerat ad eummodum sustentationem; quo casu quia patrochiani tenentur proprium parochum alere, possunt cogi ad oblationes faciendas, Barbosa lib. 3. iuris eccles. c. 13. n. 3. Olim tamen raro, aut nunquam fideles ad altare diebus Dominicis, & aliis festis accedebant sine oblatione. 6. Synodus Trul. can. 8. ibi: *Denotandum est salubriter de eorum oblationibus ad Altissimum solennia*. Matiseon. can. 4. probant Harpurgensis ad vitam Sancti Benedicti, c. 23. Alasporas lib. 1. dist. cap. 4. Mendoza lib. 2. Concil. lib. 1. cap. 55. Et eum tempore Quadragesimæ in Ecclesia Orientali tantum Sabbato, & Dominico Missæ sacrificium offerre liceret, ideo in canon. 49. Synodi Laodic. prohibentur oblationes fieri aliis diebus, quam sabbato, & Dominico. Oblationes autem panis, vini, aliarumque rerum, quæ in Ecclesia fiebant, non statim alij apponebantur, sed adhibebantur ad locum specialiter deputatum, quem veteres gazophylacion dicebant. Concil. Carthag. 4. can. 922. oblationes, 90. dist. Possidius in vita D. Augustini, c. 14. ubi exquirebat Diaconus, an oblationes dignæ essent, ut ab Ecclesia reciperentur; & tunc in Ecclesia Latina factis altaribus apponebantur; in Græcia vero antequam ad altare deferrentur, in aliamini ponebantur, quam propositionem appellabant. Germanus in hisse, ecclesiast. tom. 2. Biblioth. veterum Patrum: & cum sacerdos offerret, & benedicebat, eas benedictiones simul offerrebat, & recitabat nomina eorum, tam vivorum, quam mortuorum, qui oblationes faciebant, aut pro quibus fiebant, ut probatur in canon. 19. Concilij Illiber. Etiam illis prioribus fœnalis fideles ex oblationibus propriâ panis, & vini communicabant, immò crebrescebant de aliena oblatione communicare. Vnde D. Cyprianus epist. 10. intercepit eulodiam divitiis patrimonium, qui nihil offerens de oblationibus pauperum communicabat, his verbis: *Lacuples, & diem Dominicum celebrare te credis, qui caritatem omnino non respicias, qui in Dominico sine sacrificio venis, qui partem de sacrificio, quod pauper obvoluit, sanis*. D. Augustinus sermo 215. ibi: *Erubescere debet homo idonem, si de aliena oblatione communicaverit*. Plura de his oblationibus congesta in canon. 28. Concilij Illiberit.

d *Propriis & licitis*.] Quædam enim res offerri, aut in altari poni olim propter earum superstitionem prohibebantur, & in canon. 1. Appollorum, dum prohibetur Episcopis, & presbyteris in sacrificio offerre mel, aut lac, statim aliorum Appollis Propterea licita non: po aliud quidpiam adducere ad altare, quam velum in candelabrum, & sacrificium oblationis tempore. Exipiuntur tamen canon. 1. sequenti oblationes novarum spemum, & vix recentur, ut benedicerentur, mos enim vetus fuit Ecclesie vnam maturam, & sabbat benedicere ex institutione Etichiani Pontificis, ut constat ex Pontificali Damasi. Concil. Carthag. 3. can. 3. 6. Synodus Trul. can. 28. ibi: *Primitiæ vna, & frumenti offerantur in altari benedicenda sua pecuniari benedictione*. Consuetudinem hæc Græcorum, & formam ipsius benedictionis referunt, atque illustant Lemaitre de bonis eccles. lib. 1. de decimis, c. 13. Menardus in notis ad libr. sacrum D. Gregorii, fol. 173. Etiam in Ecclesia Orientali mos inolevit, ut diebus, in quibus sacra mysteria pro infantibus offerrebantur, liceret mel, & lac ad altare deferre, & benedicere. Synodus 6. in Trullo can. 57. ad quem morem referuntur Pa-

tres in Concilio Cæthag. sub Honorio, & Theodotio, cap. 40. ibi: *Primus autem melius, & laltis (ut nos est) offerunt vno die confectum ad infan-
tium mysterium. In eadem etiam Synodo can. 99.
dominatur quidam Armenorum confessor, sole-
bant enim Armeni dissectarum pecudum membra
in templum inferre, & eorum facia altaribus par-
tem vnicuique distribuere. Verba hæc sunt: Hæc
quoque in Armenorum regione fieri didicimus, quod
quidam inuicem in factis altaribus carniū membra co-
quentes, fuisse offerunt sacerdotibus, ea iudicis distri-
buentes: quocirca Ecclesiam immaculatam seruantes
statuimus, nullo licere sacerdoti separata carniū
membra ab offerentiis accipere, sed his sicut cœnenti,
qua offerunt vasa fœturi, eiusmodi oblatione saltā ex-
tra Ecclesiam.*

4. c. *Fidelium.* Plures enim sunt Christiani,
quorum oblationes non recipit Ecclesia. Concil.
Lateran. sub Alexandro III. cap. 25. ibi: *Veneran-
tiam manifestum oblationem ne quis accipiat, qui
autem accepit, reddere compellitur. Et c. 3. de vitiis.
Concil. Trofian. can. 7. Generaliter pauperes vo-
cantur, aut opprimuntur oblationes non recipiuntur.
Et cap. oblationes, 90. dist. vbi reiciuntur oblationes
fratrum dissidentium. Etiam non admittuntur
oblationes hæreticorum, & excommunicatorum 13. de
hæreticis, raptorum rerum Ecclesie, cap. 2. de raptori-
bus, vbi notat: nec eorum, qui presbyterum in co-
stibus filius suis tutum interfecerunt. D. Cy-
prius epist. 27. Nec eorum, qui neglecto pleba-
tis officio filios suos exheredarunt, c. final. 17. q. 4.
D. Augustinus epist. 2. ibi: *Profusus me suscipere obla-
tiones filios, oblationes sanctas: si quis autem irascitur
filiis suis, & materiam eum exhereditat, si videret,
non eum placare, non eum reconciliare deberem. Quo-
modo ergo filios suos vult et habere pacem, cuius appeti-
torem hereditatem. Idem D. Augustinus epistola 187. si-
militer faciat se non admittere oblationes eius, qui
contra immunitatem ecclesiasticam aliquem ex Ec-
clesia abtulerit, ibi: *Oblatio domus tua à clericis ne
suscipiatur. Tandem impiorum oblationes ab Ec-
clesia reiciuntur, c. non est putanda 1. q. 1. cap. mi-
ror 17. q. 4. Petrus Damiānus epist. 36. ibi: *Enim
verò dicitur ab iniquis suscipere quid aliud est, quam
proprium animam ex dentis signallare fœdere. Nec
etiam oblatio admittitur eius, qui non communi-
cavit, can. 28. Concil. Liber. ibi: *Episcopum placuit ab
eo, qui non communicat, munera accipere non debere.
Nec illius, qui poenitentiam solennem facit, cap. de
vitiis 12. q. 2. ibi: *Secundo vero anno ante fines Ec-
clesie sine communionis manum: tertio vero anno Ec-
clesiam ne ingreditur, & inter audientes adstet sine
oblatione. Et cap. res quas, de consensu, dist. 4. Con-
cil. Ancyran. can. 5. Illerdense can. 9. plura dodi in******

d. cap. 28. Concil. Liber. Nec etiam excommunica-
ti. D. Clemens lib. 3. constit. cap. 3. & lib. 4. cap. 6. Nec
etiam eos, qui à sacerdote aliqui censurā ligatus
fuerit. Synodus Nicæna can. 27. in editione Pisanæ,
ibi: *Quicunque fuerit à sacerdotis ligatus, quousque
calumniam passus sit, non est ab eo accipienda oblatio.
Item nec eius, qui sibi mortem confecit. Concil.
Altiſſidorensis can. 27. ibi: *Quicunque se propria vo-
luntate in aquam iactauerit, aut eodem ligatus suspen-
derit, aut de arbore præcipitauerit, aut quolibet occasio-
ne voluntatis se morti tradiderit, si oblationem vnam
recipiantur. Concil. Brachar. 1. can. 34. Nec etiam
mulieris, quæ menstrua patitur. Concil. Mogun-
tin. cap. 6. Omnium enim istorum oblationes non
recipiuntur, quis ut ait Cicerō lib. 2. de legibus,
donis impij nec placare audeant Deos.**

f. *Per potestatem.* Oblationes enim fidelium ritē
factas in Ecclesia olim Episcopus recipiebat.
Symmachus Pontifex in 6. Synodo Romana, ibi:
*Oblationes fidelium à nemine percipiuntur absque
consensu, & voluntate Episcopi, in cuius dignitate
esse parochia, & potestate. Et cap. canonicis 57. 16.
q. 1. Concil. Aurelian. 3. can. 3. ibi: *Si qua oblationes
in quiblibet rebus, atque corporibus collata fuerint
Basilicis in civitatibus constitutis, ad potestatem Episcopi
redigantur. Plura Antonius Aug. in epist. lib. 15.
tit. 21. Et post diuisionem parochiarum ad pro-
prium parochiam oblationes spectant. Synodus
Bithuricensis 1. can. 22. Presbyter oblationes, vel lumina-
ria, qua eis ad manus offeruntur, tanquam propria
sua habent. Et cap. quia sacerdotes, c. sanctorum 10.
q. 1. Leander dista dist. de oblationibus, q. 9. Laici
verò eas accipientes grauius puniuntur in Con-
cilio Romano sub Calisto, cap. 14. ibi: *Sanctorum
Patrum canonibus contra sententia, oblationes de sa-
cratissimo, & Reuerendissimo altari Beati Petri, &
Saluatoris, & Sancti Mariæ Remanda, aut de alijs
Ecclesiarum altaribus, sine crucibus alacris asserri
penitus interdictum, & sub pena anathematis prohi-
bitum. Et cap. perueniens 16. quæst. 7. Circa religiosos,
an videlicet oblationes in suis monasterijs factas
recipere possint, non consentiunt Inueterates. Et
tas ad parochos spectare, docuerunt Trulleneb.
lib. 3. in Decal. cap. 3. num. 13. Azor tom. 1. instit. lib. 2.
cap. 17. Sed constantia sententia verior est, proba-
torque expressè in cap. 1. de statu monach. cap. nimis,
de excessibus Prælat. & varijs privilegijs id fœd
omnibus religionibus concessum fuisse probat
Leander vbi supra, quæst. 10. Ex oblationibus ta-
men factis occasione funeris, quartam partem pa-
rocho debeat iam probat in cap. 1. de sepulchris.
Vnde patet rectè in præfati docti oblationes,
in Ecclesia factas non posse per Potestatem sacra-
latem usurpari.***

CAPVT XIV.

* Alexander III.

Qvæsiuit à nobis tua fraternitas, verum sacerdos vno clerico tantum præsentē
infirmum debeat vngere, & quando festum beati Mathie in anno bissextili
debeat obseruari: præsertim cum quidam inter vigiliam, & festum velint diem inter-
ponere. Nos itaque tibi duximus respondendum, quod Sacerdos vno præsentē clerico,
& etiam solus infirmum vngere potest.

1. **A**lexander III. Ita etiam legitur in prima collectione, *sub hoc tit. cap. 9.* & post Concilium Lateran. p. 30. r. 1. nullibi tamen exprimitur cui Prelato referatur Pontifex. Coccus addit *Carnotensi Episcopo*, qui assensit videtur Antonius Augustinus in presenti, qui ex lib. 14. *Registri* ipsius Pontificis curat textum hunc lib. 27. *epist. iuris Pontif. tit. 1. cap. 8.* De diocesi Carnot. nonnulla adduxi in cap. 11. de officio deleg.

2. **b** *Infirmum.* Subiectum enim capax huius sacramenti est tantum fidelis infirmus de vita periclitans, ut constat ex epistola canonica D. Iacobi, c. 5. *Infirmum qui in cubili.* Et epistola Innoc. Papæ ad Decentium, cap. 8. *ut de sacra unctione.* Concil. Mogunt. relatum in *tab. infirmis* 26. q. 7. Aquilgrao. 2. sub Ludov. p. 3. cap. 5. Concil. Cabillon. sub Carolo can. 48. ibi: *Secundum B. Iacobi Apostoli documentum*, cui etiam decreta Patrum confirmant, *infirmi oleo*, quod ab Episcopo benedictus, a presbyteris ungi debent. Florent. in decret. de sacrament. vers. 5. ibi: *Hoc sacramentum nisi infirmis*, de cuius morte timetur, *derivum debet.* Trident. sess. 14. de sacram. c. 3. & can. 2. ubi ideo hoc sacramentum appellatur sacramentum exequuntur. Probant Theologi Scholastici in 4. dist. 23. ubi D. Thomas q. 1. art. 2. Paludanus quest. 4. Richardus art. 2. q. 6. Suarez tom. 4. in 3. p. dist. 42. Summis de hoc sacramento agentes. Vnde cognoscitur quam absurdè nonnulli hæretici sacramentum hoc contulerint defunctis, ut tradidit Serarius in *apostol. de hoc sacramento*, cap. 3. num. 6. & eo constat ex Epiphania barbi 36. qui descripsit Stranam lib. 1. cap. 18. ubi docet, eos oleum aquæ mixturæ capiti defuncti immisisse, ex quo fieri aiebant, ut defunctus à demonum potestate eriperetur: sed esse apertam soliditatem, iam probavit Theophilus tom. 1. in *Heretic. spirit. 2. p. sect. 1. p. 202. 10. in fine.* Nec cuilibet infirmo administrari debet hoc sacramentum, sed grauius periclitanti febrî, vulnere, vel alia infirmitate naturali: non tamen confecti debet alia etiam existentibus in veluti discrimine, veluti ultimo supplicio damnatis, nauigantibus, prægnantibus, & similibus. Vnde improbanda est falsa pietas quorundam Græcorum, qui hoc sacramentum conferunt bene valentibus, si illam flagitauerint in remissionem peccatorum, ut tradit Franc. Richardus lib. de *expedi. ad infirmos* §. 1. item, cap. 1. quam beteroclesin refert, & reprehendit Theophilus Raynaud. tom. 16. in *Heretic. p. 202. 12. fol. 164.* qui etiam reprehendit nimiam tarditatem aliquorum, qui de morte accelerant terrore ægro, illud conferunt penè ante mortem: cum ut sacramentum hoc ritè administretur, debeat esse infirmus in eo statu, ut possint effectum vitæ, si illis expedit, consequi, aliis si ita mori proximi reperitur, ut naturaliter vigere nequeant, erit vix petere thiraculum à Deo.

COMMENTARIUM.

3. CONCILIO TRIDENTINO PROBATUM.

EX prima parte huius textus talis communiter deducitur assertio: *Presbyter etiam vnus potest ministrare sacramentum extreme unctionis.* Probant eam textus in cap. illud, 95. dist. cap. unic. in *principio de sacra unctione* 2. de officio Archiepiscopi cap. presbyteri 4. 95. dist. cap. presbyteri 123. cap. vnus 124. de consecr. dist. 4. cap. ab infirmis, in fine 27. q. 1. Concil. Cabillon. sub Carolo can. 48. cuius verba suprà retuli: Concil. Aquisgran. sub Ludouico part. 1. cap. 8. &

p. 3. cap. 5. Alla iuris testimonia congerit Aot. Augustinus in *epist. iuris Pont. p. 1. lib. 27. tit. 1.* Illuistrant vltra congeſſos à Barbola in presenti, Layman. tom. 2. moral. lib. 5. tract. 8. Bellarm. tom. 3. de extrema vult. cap. 8. Suarez de *sacram. disp. 43. sect. 1.* Bonacina cod. tract. dist. 7. quest. vnic. puncto 4. plures congeſſi à Diana part. 8. tract. 1. resoli. 56. Leander tom. 1. de *sacram. disp. 4. quest. 1.* & 7. Meno de *clauibus Petri* lib. 4. cap. 4. fol. 557. Arcud. lib. 5. de *Sacram. cap. 3.* Casal. de *ritu Eccles. cap. 32.*

Verum hæc assertio difficilis redditur sequenti lura consideratione, nam plures presbyteros debere sacramentum hoc administrare, constat ex epistola B. Iacobi, cap. 5. ibi: *Infirmum qui in cubili*, inducat *presbyteris Ecclesie.* Quare in Ecclesia Orientali consuetudo est, ut septem presbyteri sacramentum hoc extreme unctionis infirmis conferant, ut ex Simeone Thessalonicensi *epist. 3. cap. 3.* & aliis probat Serarius in *apost. de hoc sacramento*, cap. 12. num. 123. Igitur non rectè in presenti assertur, presbyterum tantum vnum posse sacramentum hoc administrare.

Quà dubitandi ratione non obitante vera est præſens assertio, pro cuius expositione sciendum est, præmissis que de hac vocatione extrema adduxi in cap. unic. de *sacra vult.* ministrum proprium huius sacramenti esse presbyterum. Riccius Sano. Episcopus in sua constitutione, que extat tom. 24. Concil. can. 10. ibi: *Item oportet ut presbyter infirmis suis post confessionem, & reconciliationem oleo sancto perungatur, & in hoc communicetur.* Et quomodo nominat presbyteri apud Græcos idem sonet, quod apud Latinos sepius, ut probat Cæſar de *Eccles. hierarch. dist. 8. §. 1. num. 2.* & propterea sit æquiuocæ significationis, cap. 2. de *clauibus cleric. ibi*: *Si quis sacerdotum, id est presbyter, Diaconum, & Subdiaconum, &c.* quia tamen ab Ecclesia determinatur est, ut presbyteri appellatione sacerdos comprehendatur, ideo dicendum est, ministrum ordinarium huius sacramenti esse tantum sacerdotem, ut diffinitum est à Tridentino *vbi supra.* Nihil tamen interſtat, an presbyter sit maior, vel minor Episcopus, vel minor, ut simplex sacerdos: quippe sacerdotum ordo bipartitus est, ut scribit Aocletus Pontifex *epist. 3. cap. 1.* maiorum scilicet, & minorum, cap. *legimus*, 93. dist. cap. presbyter 95. dist. Trident. sess. 23. cap. 7. Sic competit presbyteris maioribus, id est Episcopis, huius sacramenti administratio, cap. illud, 95. dist. Leander de *sacram. vbi supra, quest. 3.* & quomvis Glossa in d. illud, verbo *Christiane*, existimet Episcopos debere infirmos ungere cum chrismate, ad differentiationem aliorum sacerdotum, qui oleo tantum vtuntur, verius tamen est, Episcopos porius ministrare debere hoc sacramentum, vito rantum, ut materia ordinaria. Vaoder, de *sacram. tract. 4. dist. 4. q. 9.* Vnde quamvis magna detur necessitas, si non adsit sacerdos, qui infirmum unget oleo sancto, non poterit alius etiam Diaconus sacramentum hoc administrare, ut post D. Thomam in *supplement. 3. part. q. 33. art. 8. ad 2.* docent Niño ad D. Thomam q. 3. art. 2. quicquid dicat Vvaldensis de *sacram. lib. 2. cap. penult.* Sed licet quilibet sacerdos valide conferat hoc sacramentum, licet tamen solus Patrochus, aut de eius licentia tacita, vel expresse, alius sacerdos illud administrare valeat. Ratio est, nam hoc sacramentum per modum medicine, non per modum iudicii administratur. Trident. sess. 14. de *extrem. vult. c. 1. & 4.* Ergo ad illud valide conferendum non desideratur iurisdictionis in ministro, sed potestas ordinis: ideo autem licet

4. IMPROBATA TRIDENTINA ASSERTIO.

5. DE PRÆSENTI TITULO SACRAMENTUM.

licet tandem illud administrat Parochus, quia administratio sacramentorum ad eum tantum spectat, *Clem. 1. de privi. Clemens, dudum, de sepulch. Barbosa de offic. Parochi, cap. 22. Trullench. eod. tract. cap. 7.* Ergo simpliciter sacerdos peccabit graviter ministrando sacramentum hoc absque praedicti Parochi licentia vera, vel interpretativa. Vrgente autem necessitate, & absente Parocho licet quilibet sacerdos etiam religiosus hoc sacramentum ministrare valeat, quia tunc datur licentia interpretativa Parochi, cum credibile non sit, Ecclesiam velle infirmum prius tanto sacramento. Sotus in 4. dist. 23. q. 2. art. 1. Caicantus in summa, verbo Extrema ulla, Item etiam Parocho praesente, & iniuncte nolente hoc sacramentum conferre, poterit illud quilibet sacerdos etiam religiosus ministrare; nam tunc censetur concessa ab Episcopo licentia. Docet Suarez de sacram. disp. 54. sect. 2. v. 3. Tortablanca de iure spirit. lib. 2. c. 11. n. 28. Nec interest, quod Parochus excommunicatus sit, aut suspensus, ut huiusmodi licentiam concedat. Sylvestre in summa, verbo Extrema ulla, quest. 4. Postulimus de offic. curat. cap. 9. q. 7. n. 17. Suarez de sect. 3. An vero urgente necessitate possit ipse parochus excommunicatus licet sacramentum hoc administrare, querunt Moraliste. Negant Suarez de sect. 3. n. 6. Bonacina de hoc sacramento, quest. unic. par. 4. n. 4. Villalob. in summa, dist. ult. c. 6. num. 6. Tortablanca de sect. 3. art. 2. n. 28. Affirmant Nuño ad D. Thomam de sect. 3. art. 3. diffinit. unic. Zambrana, Possessionis, & alij, quos refert, & sequitur Diana s. par. 2. n. 3. ref. 81. & 89. qui opinantur ex eo, nam in mortis articulo, sacerdos etiam excommunicatus poterit licet à peccatis absolvere: ergo & extremam unctionem ministrare. Accedit, nam tempore interdicti licet administratur hoc sacramentum, cap. quod in te, de penit. & remiss. Ergo facilius urgente necessitate poterit ministrari à Parocho, etiam suspensus, vel excommunicato.

6.

TRADITIONE
DE
RECEPTE

His suppositis ratio praesentis affectionis ex eo procedit, nam cum sacerdos sit verus, & legitimus huius sacramenti minister, non indiget alijs presbyteris de necessitate sacramenti ad eius administrationem: docuit D. Thomas contra Gentes c. 83. in fin. dum scribit: Quia hoc sacramentum perfecta curamque effectum habet, & in eo requiruntur copia gratiae, conuenit hanc sacramentum, ut multi sacerdotes inter sint, & ut orationibus Ecclesiae ad effectum huius sacramenti creduntur: unde D. Iacobus dicit, induci presbyteris Ecclesiae, & oratio saluabit infirmum. Si tamen unus solum presbyter ad sit, intelligitur hoc sacramentum perficere in virtute ipsius Ecclesiae, cuius minister existit, & cuius personam gerit. Hactenus D. Thomas. Accedit & alia ratio ab eodem Angelico Doctore adducta s. p. 67. art. 6. nempe quod sicut principalis auctor sacramenti, qui Christus Dominus est, una persona existit, ita minister, qui ipsum representat, una tantum persona esse debet: non tamen potest ministrare huius sacramenti adhibere feceminam, vi sibi respondent, ut probat contra Quistantadoñes Leander tom. 1. de sacram. q. 2. dist. 4.

7.

DISPOSITIO
DE
RECEPTE

Nec obstat dubitandi ratio supra adducta ex illis verbis D. Iacobi. Inducit presbyter. Nam in sacra pagina frequenter sub plurali numero, non pluralis, sed singularis persona, vel personatum qualitas significatur, ut apud D. Lucam cap. 17. ubi dicit, & ostendit vos sacerdotibus, id est cultibus sacerdotibus. Et D. Paulus ad Hebraeos c. 1. vers. 83. ait: Obsecrauerunt nos leuitem. Et tamen qui obtura-

uit ora leonem, vnus fuit, videlicet Daniel. Sic D. Mattheus cap. 17. & D. Marcus cap. 13. referunt lacrimas cum Christo crucifixos imbecillitatem illius exprobrasse: eum tamen D. Lucas c. 23. vers. 39. dixerit scribas: Vnus autem de his qui pendebat blasphemabat eum. Notantur Caicantus ibi, D. Augustinus de consensu Evangelij, cap. 16. Iohannes de Palua in doctrin. sacr. Script. lib. 3. cap. 2. & lib. 15. cap. 41. & lib. 17. cap. 40. Unde intelligitur locus alius discipulis D. Matthei, cap. 26. ubi: Videmus autem discipulis indignari sunt, dicentes. Vbi pluralis stat pro singulari, siquidem vnus tantum, videlicet Iudas, indignatus fuit. Vnde etiam D. Iacobus de sect. 3. ait: Inducit presbyteres, accipiendum est, ut vocet vnum ex presbyteris. Docetque Serarius in dist. apost. 2. q. 2. num. 71. Suarez de sacram. dist. diffinit. 4. sect. 2. n. 2. Filius red. tract. cap. 5. om. 90. Nec etiam obstat mos Ecclesiae Orientalis, nam ut recte considerant DD. ubi supra, ceteri sacerdotes praeter vnum vrgentem, & formam profertentem superflui sunt, & intentant exequi, conficere, aut iterare sacramentum, quo casu grauius peccabunt. Ceterum si non intendunt simul conficere, aut iterare, sed vnus faciat vnum, pluresque unctiones profertendo formam, alius vero sacerdos complet quod defuerit, poterit tunc valide ministrare sacramentum hoc à pluribus, & quandoque licet, veluti urgente necessitate infirmi, vel deficiente sacerdote, qui priorem fecerat unctionem, ut docent Henricquez lib. 3. summa, cap. 18. q. 4. & c. 13. q. 3. Suarez de sect. 43. sect. 2. Maecio de clauibus Petri lib. 4. cap. 4. Diana par. 5. tract. 3. res. 87. cum sequitur, post D. Thomam in 4. dist. 23. quest. 2. art. 2. quest. 2. ad 3. Quo modo accipi potest Graecorum consuetudo, vel potius, ut plura intersint, vnus quidem vt ministrat, ceteri vero vt respondent.

Sed supra traditio obstat videtur Innocent. I. in epistola c. ad Decentium, c. 8. in illis verbis: Sumus quoniam de hoc, siuis de ceteris, consilium voluit dilectio tua, accipis filius meus Calistinus Diaconus, esse à dilectione tua petium illud, quod in Apostoli Iacobi epistola scriptum est: Infirmitas qui in vobis inducit presbyteres, & orati super eum, unguentis eum oleo in nomine Domini, & oratio filii saluabit infirmum: quod non est dubium de fidelibus agentibus accipit, vel intelligi debere, qui sancte oleo christiano perungit possum, quo ab Episcopo confectis, non solum sacerdotibus, sed omnibus qui Christiani licet in sua, aut suorum necessitate ad unguendum. Hincque verba Pontificis, qui inueniuntur i. tom. Concilior. Seruini, pag. 732. & referuntur à Beda in c. 6. Marci, & in Concilio Vromae, can. 62. Ex quibus deduci videtur, licet etiam posse vngere infirmum: ergo quia presbyter tantum non est minister huius sacramenti. Pro cuius difficultatis solenne dicendum est, Innoc. dum affirmat omnibus Christianis vt licet oleo illo in sua, aut suorum necessitate, accipiendum esse passim, non adiuu; ita vt mens Innocentij sit, Christianos omnes vt possit oleo in sua necessitate, non vt ministrari, ut sacramentum conficiant, sed vt persone, quibus sacramentum à sacerdotibus ministraret. Ita docuerunt lansenis ad cap. 6. D. Marci, Cotnel. à Lapide in disp. D. Iacobi, Bellarm. de extrema vnt. cap. 9. Nuño ad dist. quest. 31. D. Thom. art. 2. ad 4. Serarius in dist. epistol. cap. 4. num. 72. Granados de extrema vnt. dist. 8. num. 2. Becanus red. tract. cap. 27. q. 9. quomodo alij minus recte accipiunt verba illa de unctione extra sacramentum, quos refert Atcu- dius de extrema vnt. cap. 2. & 4.

8.

EXPO-
SITIO
RECEPTE
ILLI

§.

Festum beati Mathie iuxta consuetudinem ecclesiasticam a vigilia catenus præcedat, ut nec pro bisexto, nec quolibet alio modo inter se & solemnitatem aliam diem admittat. In qua vitæque, nisi vigilia venerit in Dominica die, ieiunium celebretur. Ipsum autem festum, siue fiat in præsentem diem, vel in sequenti, qui duo quasi pro vno reputantur, nullus error, sed Ecclesiæ consuetudo teneatur.

NOTÆ.

^a **V**igilia. De qua egi in cap. 1. de obseruatione.
^b **Dominica.** Quot die ieiunari non potest, ut probatur in dist. c. 1. cap. 3. de obseruatione.

COMMENTARIUM.

PRO huius textus expositione sciendum est, annum naturalem iuxta Astronomicam iudagationem diuisum in menses, dies, horas, penitus, momenta, vices, & atomos: constare vero naturalis annus, qui secundum diuersos diuersa principia habuit, ut tradunt Ioannes de Sacrobosco in *computo ecclesiastico*, in *de anno solari*, Comar. lib. 4. var. c. 8. n. 4. (qui & solaris dicitur, eo quod spatium temporis sit) & quo sol circumiens totum Zodiacum mori proprio regressus ad idem punctum, à quo digressus fuit) 365 diebus, & vnius diei quadrante. Ac billes Tacita c. 9. ibi: *Annus solis appellatur ab eodem signo ad idem redeuntis conuersio in 365 diebus, & exigua insuper parte*. Plito in *Timæo*, Censorinus *de die natali* c. 12. Cierro *de natura Deorum*, Plutarchus in *Numa*, Galen. ad lib. 1. *Hippocratis*, id est sex horis, quæ confusionis vitandæ gratiæ integre supponuntur, eum reuera naturalis cursus solis eas integras, & completas non assumat, auctore Sacrobosco ubi *supra*. Ex hoc autem sex horarum spatium quoniam difficile erat eas exiliter anno continere, singulis quadriennis dies integre collectur, & insertus fuit, qui instituitur Imperatorem Calpum Iul. Cæsarem constare Suetonio in *cap. 40*. Solino in *Polihist. c. 3*. Plin. in *Numa*, & in *Cæsare*, Censorino *de die nat. c. 10*. Macrobi. lib. 5. *Satur. c. 13*. & probare Aelianus in *Libro bisexto*, de *V. S. Benet. Argutius in leg. Titia*, 1. p. 3. *ff. de condit. & demonst.* Itaque ubi quadrantes diem faciebant, quod contingit quæto quoque anno, hic dies intercalabatur, id est interferebatur, & cum præcedenti confundebar, ut eius ratio non haberetur. Quia intercalatio hodie seruatur ea ritu Apostolico, & ex constitutione Gregorij XIII. Pont. Max. *de ordinat. tempor.* que est 74. in ordine *tom. 2. Bul. lary. Magni*. Intercalatio autem fiebat ex constitutione Cæsaris circa festum terminalium, nempe die 14. Mensis Februarij, ut prodit Macrobius *dicto c. 13*. quod dies 14. computatione laici denotatur, 6. *Kalendas Martias*. Cum ergo addideris dies cum illo 14. confunderetur, ita computantur veteres, cum annus bissextilis erat, *bisextus Kal. Mart.* ea quo bissextili appellatio fluxit post intercalatio-

nem Iulij Cæsaris, ut colligitur ex Macrobio, & Censorino ubi *proam.* At verò ante Iul. Cæsarem, cum annus constaret ex statuto Numæ 354 diebus, quatuordecim integre dies intercalabantur ad finem mensis Februarij, & ita cœnebat, ut cuncti hi dies cum vltimo pro eodem die supputarentur, nec numerum augerent; tunc verò non dicebatur bissextilis, sed mensis intercalaris, duplici ratione. Prima, quia non fiebat intercalatio in sexto die ante Kalendas Martias, sed in posteriori die Februarij. Secunda, quia non vnus dies cum alio intercalabatur, qui efficiunt bissextilis numerum; sed aliquando 14. aliquando plures, itaque bissextili appellatio fluxit à compositione Iulij Cæsaris, nec ab antiquioribus Consulibus cognita fuit. Quæ latius prosecuntur Budens in *notis primis ad Pandect.* in l. 3. *ff. de minor. Rolinus lib. 4. antiquis. c. 1.* Anton. Clarus Siluius ad l. *Regias. c. 5.* Cuiuslibet in *lin. vscapimib.* *ff. de vscap. Albet. Gentil. de var. tempor. appell. 4.* Catenas *de part. c. 12. §. 5. a princip.* Egidius Boss. *tom. 1. oper. moral. in l. 1. §. 1.* & quo principio explicandi sunt textus in l. *cum heres 4. §. Stichus. ff. de statulib. l. ita §. 1. vscap. affirmatio. ff. ad le g. Aquil. l. iam bisextus §8. Lammicus 134. ff. de v. s. l. 2. ff. de divers. & tempor. l. in vscapimib.* *ff. de vscap.* quos perdoctè illustrat D. Ioseph. de Retes in *præmissis ad rit. de vscap.*

Ex suprà traditis apparet verus sensus presentis textus; nam cum dies S. Mathie diem sit 14. mensis Februarij, quæsiuit Carnouensis Episcopus ab Alexandro, eum in anno bissextili in ea die intercalatio fiat, qua in die esset ieiunandum? Et respondit Alexander III. die 15. ieiunandum esse, non 14. hoc 6. Kalend. Martij, quia illa dies festus est, nec propriè bisextus motatur. De ipso etiam festo celebrando consulit Episcopus Alexandrum, quoniam videlicet die celebrandum esset, sexto an bissexto, an utroque, qui bis duo dies pro vno computantur, & in utroque consistit in vno, eademque littera Kalendarij, & nihil de solemnī computatione temeratur, ut notatur in Martyrologio Romano. Et respondet Alexander, fabulato omni computationis errore, posse celebrari alterutro, & bis duobus diebus, quia pro vno reputantur; sed in hoc pie Ecclesiarum consuetudini standum esse. Ecclesia Hispana semper celebrat festum hoc die 14. forsitan Ecclesia Italica his temporibus illud celebrat, ut bodie celebrat, die 15. quoniam annus est bissextilis. Vnde manant versus, quos adducit Glossa in præsent.

CAPVT XV.

Clemens III.

IN iis, quæ in se ambiguitatem continent, ad Sed. Ap. ex debito recursus habetur, ad quam reuerà, tanquam marrem, & caput omnium Ecclesiarum, maiores, & diffidentiores quæstiones ab antiquis patribus constitutum est, & moribus vrentium rectè approbatum, vsquequaque conferri debere. Innotuit liquidem Apostolus nostro, quod cum de conuersione, quæ inter Magistrum Mathæ & conuersos Hospitalis sancti

sancti Simpliciani super eodem hospitali haberetur in presentia V. fratris nostri O. Archiep. Mediolanen. concertatio verteretur, ipse Archiepiscopus post cognitionem causæ in prolatione sententiæ his verbis non fuit usus, ut secundum ius civile diceret: Talem partem condemno, & talem absolvo; sed pronunciauit ita: Statuo, & præcipio, ne de cætero, & reliqua: & infra, ut expressim continetur in instrumento. Quoniam igitur, sicut ex relatione dilectorum filiorum nostrorum Corinth. vñ. S. Laurentij in Lucina, & Joan. sanctæ Priscæ presbyteror. Cardinalium didicimus, quos ad hoc concessimus auditores, super hoc fuit in prolatione sententiæ dubitatum: Nos attendentes, quod hoc verbum Statuo, secundum legem rem perfectam significat, & cum effectu, non verbo tenus accipitur: item secundum b. Gregorium, quod præcipitur, imperatur; & quod imperatur, necesse est fieri; & aliquando si non fiat, poenam habet: considerantes nihilominus, quod iuxta eundem Gregorium, non debet aliquis verba considerare, sed voluntatem, & intentionem, quia intentio non debet verbis deferuire, sed verba intentioni: interpretamur in presenti articulo, & de fratrurn nostrorum consilio, procuratoribus vtriusque partis presentibus, diffinimus, quod præfati Archiepiscopi verba tali forma prolata perpetuò valituræ sententiæ obtineant firmitatem. Nos itaque sententiam ipsam, licet appellationis obstaculo hucusque fuerit impedita, presenti pagina, cessante appellatione confirmamus, & huius scripti patri Anio communimus, statuentes, & auctoritate Ap. præcipientes, ut ipsius hospitalis præfati fratres Abbati, eiusque successoribus obediant in perpetuum, tanquam Prælati illis, & Dominis, sicut ipse Archiepiscopus præcepit.

NOTÆ.

1. a **C**lemens III. Ita legitur in secunda collectione, sub hoc tit. cap. vñ. & fuisse verbum finale illius collectionis notauit Albericus Gentil. de libris iuris canonici, fol. 8.
b Gregorium. Ita cap. quod præcipitur 14 q. 2.

COMMENTARIUM.

2. **C**ertum est, sententiam non aliter siuem controuersiz imponere, quam si iudex pronouciando absoluerit, vel condemnauerit eum, alioquin sententia diffinitiva nullius momenti est, l. 3. Cod. de sent. & interl. cap. si qui 41. q. 2. diffinitiva 2. quæst. 6. Hac de causa olim non aliter concepiebatur sententia, quam per verbum condemnandi, aut absolueri, eam acceptis tabellis, iudex qui de causa cognoscebat, si absoluerit erat, literarum A, in vñam mittebat, si vero condemnare intendebat, litteram C, ut dñm probauit in cap. de muliere, de sponsal. Sed postquam tabellæ sententiarum in delatationem abierunt, etiam sententiæ concepiti caperent non ex formula, sed libere, prout iudicantibus melius visum fuit, & quibus verba commodius explerent valeret iudicium suum; & ita non sunt necessaria verba absoluo, & condemno, sed sufficiunt æquipollentia, quibus sopiatur lis, & omnino à iurgio discedatur, l. Pomponius 23. §. receptisse, l. quæ 19. §. 1. ff. de recip. lñ. sententiis 59. in princip. & §. 1. ff. de re iudic. unde inferuit, valere sententiam, si iudex dixerit, Scdm numpos debet, licet non dicat, Eumque condemno ut solui, l. si Prætor 75. ff. de iudic. vel si dixerit, quantum ei debes reddere, l. qui tamen 21. §. Pomponius. ff. de arbit. vel seruum in causa reditionis esse, l. quæ 58. ff. de adilit. edil. vel tñm alicuius esse, l. Pomponius 40. §. sed & his, ff. de procu. l. si inter me 15. ff. de excep. rei iudic. l. uis, ff. de hered. insti. vel non probasti, aut calumniatus es, l. 1. §. quoniam. ff. ad Turpil. vel si com. pñcessisset eera pñsentio summe petita, in lex pronouciat: Solue quod debes, l. quod petium, in l. 1. D. D. General. in Decretal. Tom. V.

Liquid tantum 21. §. Pomponius, ff. de arbit. lñ. sententiis 59. §. 1. ff. de re iudic. vel si dixerit. Restituit illi, quod in codicillis, vel in testamento accepit, l. au Prætor 1. §. 1. ff. de re iudic. vel si pronouciatis nullam iniuriam Lucium Titium à Gaiō Selo passum fuisse, l. Lucius 21. ff. de his qui noi. infam. vel iniuriam aliquam fecisse, l. Decurionis, C. ex quibus caus. infam. irrogatur, vel falsum testamentum non esse, l. nec tale 24. ff. ad leg. Corn. de falsis, vel non posse amplius de falso testamento agi, l. cum Titia 28. ff. de accusat. vel si utatur verbo, Statuo, ut in presenti specie, vel verbo videtur, ut in Liquid tamen 21. §. 1. ff. de arbit. l. 3. ff. de his, qui in testam. delent. l. Dini 27. §. vlt. ff. de lib. caus. l. cum quidam 26. ff. de iure fisci, l. 1. §. quæri potest, ff. ad Turpil. cap. de cætero, de re iudic. Probauit in apparatu ad huc commentaria, imò si iudex pronouciat absoluerim aliquem esse, vel condemnandum, licet non adiecerit, illumque condemnare, vel absolue, tamen optimo iure sententia tenet, ut deducit ex lege Amilius 38. ff. de minoribus, ibi: Quia tamen lex commissa foris displicebat ei, pronouciat in integrum restituentem. Et probatur ex validissima ratione; nam illa verba, condemnandum pronouciatio, non significant sequi postea debere condemnationem ab alio iudice faciendam, sed talia esse merita processus, ut reus debeat condemnari: quam opinionem tenebant antiquiores cum Glossa, quos refert Grassus in l. 1. num. 19. ff. de re iudic. Sarmiento lib. 1. fol. 12. in c. 14. num. 3. Usualdos lib. 27. Denel. cap. 2. liura E. quomodo contrariam sententiam defendant plura eluelli ei apud eundem Sarmiento ubi proxime, Marane, in specul. de sent. 6. part. num. 15. & 125. Vantius de malit. ex defectu processus, num. 91. qui adducit ferere, plures sententias nullas declaratas esse ob prædictum defectum; quare forsitan bodierna praxis obseruat, ut in sententiis addatur: Falso que te debo condemnare, & cetera. Quasi non sufficerent priora, nisi posteriora quoque sequerentur. Quæcunque enim verba significatio condemnationem, vel absolutionem, sufficiens ad valorem sententiæ, ut ex præfati textu collat, & ex §. curare, ubi Isid. Insti. de adit. l. 2. §. 1. vbi Greg. gl. 8. in 12. p. 3. Licitia

prosequantur Deum in *lit. sententia* 39. ff. de re iudic. Dotal. & Ofualdus ubi supra, Treul. volum. 2. f. 102. d. 3. ubi 2. lit. A. Pichardus in *manud. in prind.* 4. 2. num. 17. Marcano in *dialog. rel.* 3. part.

ex cap. 36. Azevedo in l. 10. tit. 17. lib. 4. Recopil. unde apparet rectè io presertim Clementem doctus sententiam prolatam per verbum *stano*, validam fuisse.

CAPVT XVI

Idem Patriarcha^a Gradenfi.

OLim tibi scripsisse recolimus, vt si dil. f. Archipresbyter, & Canonici Paduani, quibus super hoc scripta nostra diximus, dil. f. M. G. Canonico Paduano præbendam, quæ tantum residentibus de communi conferretur, sicut vni ex aliis de communibus prouentibus, & * manualia beneficia, omni dilatione postposita non conferrent, tu eos ad id appellatione cessante compelleres. Verum quia, sicut nostro Apostolatu referatur est, quidam mandatum nostrum interpretari aliter, quàm deceat, molimur, cum beneficia principalia sint interpretanda largissimè: volentes à mandato nostro dubietatem auferre, non questionis scrupulum reseruare, vt quæ mandamus, diligenter, & liberius exequaris, nostrum tibi in eo aperitendum duximus intellectum. Videlicet quod præbendam, quæ tantum residentibus in vicu, & vestitu de communi conferretur, ipsi Mag. G. plenè, sicut vni ex aliis residentibus, iniunximus conferendam. Quocirca f. t. per A. f. m. quæ in negotio ipso maliciosam interpretationem aliquam non attendens, sic quod de prefato Magistro tibi præcipimus, sublato cuiuscunque appellationis obstaculo, exequi studeas diligenter.

NOTA.

^a *Gradenfi.* Ita etiam legitur in tertia collectioe sub tit. de *rescriptis*, cap. 7. De Gradenfi Patriarcha cpi in *cap. ex literis*, de *offic. deleg.* cap. antiqua, de *privilegiis*.

^b *Manualia.* Id est distributiones quotidianas, vt in *cap. unic. de clericis non resid.* lib. 6. & probatur in *cap. licet*, de *præbendis*. Sed tunc obitas illa non leuis difficultas; nam quod potest concedi privilegio, potest induci consuetudine, & econtrà, *cap. dicitur*, de *offic. Ordin.* cap. *super quibusdam*, & *præterea*, de *V. S.* In quibus latè tradita à Felino in *cap. accedentes*, à n. 6. de *prescript.* Covar. lib. 1. *variar.* cap. 10. num. 14. Sed consuetudine introducti non potest, vt absenti, & non residenti in propria Ecclesia, locutus distributiones quotidianas, *de cap. unic. de clericis non resid.* igitur nec privilegio concedi potest absenti ius percipiendi distributiones. Cui difficultati succumbens Probus in *de cap. unic.* num. 1. *vers. Ex quibus*, docet Summum Pontificem non posse dispensare cum absente à propria Ecclesia, vt præcipiat distributiones quotidianas, quia talis dispensatio, vt potest contra aurum ipsarum distributionum, tempnantiam includeret iura textum in *cap. cum ad monasterium*, de *statu monach.* Verum hæc sententia facile refellitur, siquidem huiusmodi distributiones non sortiantur prædictam naturam, ex iure diuino, aut naturali; sed tantum ex Ecclesiæ constitutione, vt probatur in *cap. cum omnes*, de *consuet.* quo casu plenissimum habet Pontifex dispensandi facultatem, *cap. proposui*, de *consecr. præbendis*. Unde concessum legitur à Paulo III. & Pio V. Inquisitionibus hæreticæ prauitatis, eorum ministris, & commissariis, vt non solum fructus suarum præbendarum, verum & distributiones quotidianas, dum rebus fidei inferrentur, perciperent, vt erant, & replicant Rojas de *privilegiis* Inquis. n. 420. Spino in *specula*, gloss. 1. princip. n. 78. Barbosa ad *Council Trident.* sess. 24. de *reform.* c. 12. & de *consecr.* & dignis *cap. Sollicitus* rem. 1. de *iur. In litor.* lib. 3. cap. 24. n. 78. Villacell. tom. 1. *regim. Eccles.* q. 3. art. 5. Azevedo, &

stopalzo, Garcia, & Lothar. quos refert Thomas Hurtado p. 1. de *resid. resol.* 3. per *in*. Idemque Auditoribus Sæcæ Rute concessum esse à Clemente VII. refert Barbosa ad *Trident.* d. n. 48. Quare omnia prædicta sententiâ, vt difficultati satisfaciendum dicendum est, principium illud, videlicet parum vim habere privilegii, & consuetudinem, procedere data æqualitate rationis; in presertim verò casu magnam adesse differentiam rationem, quia scilicet quando privilegium conceditur contra naturam alienius actus à lege influit, quædam cognitio solet præcedere, quæ ad id faciendum inducat, *cap. requiritur*, *vers. Nisi rigor*, l. 9. 7. quæ manifestè cessat in consuetudine contra naturam actus, ac proinde non decebat hanc vim consuetudini deferre, propterea in aliis multis denegata est, vt in *cap. Nescimus*, de *elect.* cap. *clerici*, de *iudic.* In quibus tamen casibus licitum est privilegium, exponis glossa communiter recepta in *cap. Imperium* 10. *dijst.* cap. *præter* 26. *verbo* *Dubius*, 32. *dijst.*

COMMENTARIUM.

Cum Innocentius III. mandasset Capitulo Paduano, vt Magistro G. præbendam, & manualia (quæ tantum residentibus dari solebant) conferrent, ipse liberos gratiam ipsam interpretantes, allebant se non teneri mandatum adimplere, quia ipse Magister non residens, & in ipso rescripto expressè cæuebatur, vt illi præbendam conferrent, quæ vni ex residentibus assignari solebat. Et cum consultus fuisset Innocent. pro explanatione ipsius gratiæ referibit, quod cum beneficium Principis latissimè sit interpretandum, dicto Magistro præbendam, quæ tantum residentibus in vicu, & vestitu assignatur, erat conferenda: ex qua decretali sequens communiter deducitur affectio: Beneficium Principis latissimè est interpretandum. Probatur textum in *cap. si quem*, & *præuocatur* 2. q. 3. *cap. si iter* 16. q. 1. c. 1. de *actor. & vsu pal.* *cap. cum dilecti*, de *donat. cap. ex parte*, de *decimis*, *cap. quia cetera*, de *privilegiis*, *cap. si quem*, & *notandum* 2. *quasi* 3. *cap. si quis* 16. *quasi* 2. *cap. postuulati*, de *donat.* Beneficium f. de *consuet.*

2.

CONCERNIT
TRANSDITIONEM
PRÆBENDARUM

confil. Princip. l. 1. ff. de iure inuoc. Illustrant vltra concessus à Barbota in presenti, Duarenus ad tit. de confil. Princip. cap. 3. Donel. lib. 1. comment. cap. 19. Cinnamius lib. 1. comment. cap. 16. num. 6. Rebuffus de priuileg. schol. priuileg. 32. num. 12. Menochius lib. 3. de presumpt. presumpt. 97. num. 19. de presumpt. 103. num. 21. Mantica de concess. lib. 8. tit. 6. num. 11. de sacris tit. 4. num. 37. Valascus consulti. 88. num. 11. Sanchez lib. 2. de matrim. disp. 4. num. 33. Rebellus in infus. 2. part. lib. 1. de contrah. quasi. 2. scilicet. Suarez lib. 8. de legib. cap. 17. num. 9.

3. d. hęc assertio difficultas reddunt sequenti iuris consideratione; nam beneficium, seu priuilegium contra ius concessum, non latè interpretari, immò restringi debet. cap. 1. & 2. de filijs presbyt. lib. 6. cap. quod distictio de consanguin. & affin. Sed beneficium, de quo in presenti, contra ius commune concessum fuit; siquidem secundum ius commune præbende, quæ in vltu, & veltia consistunt, tantò in diuinis officiis interuentibus, n in verò absentibus assignari possunt, cap. vlt. de cleric. non resid. lib. 6. igitur in presenti casu beneficium Pontificis latè interpretari non potest. Ac edit, nam collatio præbendarum ad Capitulum spectat, vt probatur in cap. de Sede vacante. Igitur cum ex amplissime præsentis beneficii magnam præuidiam utrogetur Canonici, non ampliantur immò potius restringuntur beneficium videbatur, iuxta legem quæritur, Cod. de pre. l. Imper. Deinde principium illud ab Innocentio ad huc usque, videlicet beneficium Principis latissime interpretandum, difficile videtur, siquidem variis iuris testimoniis docetur beneficium Principis stricte interpretari debere, vt in l. 2. §. si quis à Principe, & §. mortis, siue quis in loco publico, l. si quis in 35 in princip. Cod. de iustici. cap. final. de prob. l. si sepe, si de officio Presid. Authent. de non alienandis §. qui vera, c. 1. collat. 2. Ergo non rectè in presenti docetur, beneficium Principis latissime esse interpretandum.

4. Quia difficultate oppositi representes in presenti, varias interpretationes adduxerunt præsentis decisioni, Glossa in presenti recurrit ad voluntatem Pontificis, assertens idè in terminis huius textus latissime fuisse factam interpretationem, quia sic Innocentius voluit. Verùm hunc Glossæ intellectum meritis improbat Panormitanus hic, quia Summus Pontifex ferè semper respondet iuxta ius commune, cap. in causis, de re iudic. Vnde in presenti casu, si beneficium ab eo concessum repugnabat iuri communi, ab eo non ampliari, immò restringi debebat: quare ipse Panormit. sequitur alium Glossæ intellectum, videlicet in presenti

casu beneficium non inè contrarium concessum, immò secundum ius fuisse, quia Magister hic absens erat in scrinio Episcopi, vel Pontificis, & sic iuxta ius commune debebat pro presente iudicari, iuxta tradita in cap. 7. de cleric. non resid. & ita cum iuri canonici conforme esset, debebat ampliari potius quàm restringi, ex l. final. si de consensu, Princip. Deinde Glossa, & Abbas fatentur, priuilegium, de quo in presenti, in eo consisti contra ius commune; ideo autem in esse fidei latè simam interpretationem, quia consistat de intentionis Pontificis volentis huic Magistro, etiam non residere, prouidere tanquam residenti, vt aperit colligitur ex illis verbis, ubi Pontifex iubet isti Canonico prouideri sicut vni ex aliis residentibus. Sed isti sententia omittis, verum dicendum est, in presenti specie ideo latissimam fieri interpretationem, quia non agebatur de priuilegio, sed de mandato de prouidendo, quod ex motu proprio Summi Pontificis emanauit, ideo latissime est interpretandum, iuxta textum in cap. si pluribus, de præbend. in 6. Aliet dicendum est, si mandatum illud simpliciter concessum esset, quoniam tunc vt odiosum stricte erat interpretandum, quia textum in cap. quomodo 4. eodem tit. de præbend.

Vnde non obstat dubitatio ratio suprà adducta, inter in presenti non de priuilegio, sed de mandato de prouidendo agitur; in quo interpretatio non est stricte facienda. Nec obstat, quod etiam in hoc mandato præiudicium Canonicoi versatur, quia ipsi de iure communi poterant præbendam conferre, ideoque mandatum esse odiosum; quoniam responderet, hoc non esse considerabile quando Summus Pont. concedit simile mandatum, quia ipsi Pontifici competi suprema beneficiorum dispensatio secundum idem ius commune, cap. 1. de prob. lib. 6. Nec obstat augmentum ipsius difficultatis deductum ex variis vtiuque iuris locis, in quibus docetur, priuilegium Principis stricte esse interpretandum. Pro quorum solutione, & concordia cum aliis, in quibus contrarium docetur, dicendum est, differens esse consuetudinem inter priuilegium, seu beneficium, quod alicui conceditur cum terij præiudicio; & inter illud priuilegium, quod aliquid præter ius continet, ex quo nulli præiudicium sequitur. Primo casu quodlibet beneficium, seu priuilegium stricte interpretandum est, l. penult. cum aliis suprà à Idois, de consensu, Princip. Secundo verb casu amplè, & plenissime interpretandum est in eodem casu, vel persona, de qua loquitur, non verò extra casum, vel personam in beneficio expressum, vt iam notauimus in cap. 7. de priuileg.

8.
DISEL-
TURA
DEUTAN-
DI RATIO.

CAPVT XVII.

Idem à Colubriensi, & aliis Episcopis in Regno Portugallia constitutus.

Cum in partibus vestris, peccatis exigentibus, sepe contingat diuersa loca interdicto supponi, quando generale, vel particulare dici debeat interdictum, apud vos accepimus in dubium reuocari; cum illi, qui ab Ecclesia Romana decorati priuilegio meruerint, videlicet vt cum generale interdictum terræ fuerit, liceat eis clausis sanis, non pulsatis campanis, exclusis excommunicatis, & interdictis, supprella voce diuina officia celebrare, interdicto particulari se afferant non arctati, asserentes illud interdictum generè dumtaxat, quando regnum, vel saltem provincia

tota subiicitur interdicto: propter quod, & iustitia sæpius deperit, & Prælatorum sententiæ contemnuntur, cum in aliis provinciis interdictis diuina celebrent, & suspensio organis aliorum, ipsi pulsatis campanis, & apertis ianuis, quoslibet passim recipiant ad diuina. Ne autem diuersa interpretatio discordiæ causam inter vos vitetur, & odij fontem valeat ministrare, vel quod interdictum dici debeat generale, amodo in dubium reuocetur, significatione vobis præsentium inuimamus, quod cum in privilegiis de regno, vel provincia nihil expresse dicatur, nomine terræ non solum regnum, vel provinciam intelligi volumus, verum etiam ^b villam, & castrum, ut & in his locum habeat, quod de generali dicitur interdicto, videlicet ut cum villa, vel castrum generali subiicitur interdicto, præscripta privilegij forma debeat obseruari.

NOTÆ.

1. ^a *Colubienſi.*] Ita etiam legitur in tertia collectione, *sub hoc tit. cap. 1.* & in ipso regesto epistularum correcto à Sirleto, fol. 266. De Colubienſi Ecclesia *egi in cap. 8. de procurat.*
2. ^b *Villum, & caſtrum.*] Consonant textus in

cap. præfati, cap. si autem, hoc tit. in 6. & probat Gibalinus de censur. diſguſit. 1. quæſt. 2. num. 24. Et hanc, & alias diuisiones interdicti adduxi in *cap. cum inter, de censur. vbi & in cap. 2. de his quæ sunt à Prælati, & in cap. quod in te, de penit. & remiss. plura de interdicto adduxi.*

CAPVT XVIII.

Idem ^a *Altiſſiodorenſi Episcopo.*

Cum tibi de benignitate Sed. Ap. sit indultum, quod ordinatio rerum clericorum ab intestato decedentium liberè in tua potestate, ac dispositione permaneat, volens omnem materiam scandali remouere, quod aliquando inter te, & tuos est subortum, super duobus nos consulere voluisti. Primò, an appellatio vocabuli clericorum, tam ad canonicos, quàm ad non canonicos extendatur. Secundò, an illi, qui in voluntate, & dispositione alterius suam committunt vicinam voluntatem, nihil per se penitus ordinantes, vel determinantes quid cui loco, vel personæ conferri debeat, dicantur decedere intestati. Primæ igitur consultationi tuæ duximus respondendum, quod appellatio clericorum non solum alios, sed & canonicos comprehendat. In secunda verò dicimus, quod qui extremam voluntatem in alterius dispositione committit, non videtur decedere intestatus.

NOTÆ.

- ^a *Altiſſiodorenſi.*] Ita etiam legitur in tertia collectione, *sub hoc tit. cap. 2. & in cap.*

tibi, de testam. vbi extat 'alia pars huius textus, vbi de hac concessione facta Episcopo Altiſſiodorenſi egi in cap. cum tibi, de testamentis.

CAPVT XIX.

Idem *Capitulo, & Prapósito^a Placentino.*

Cum clerici Placentini iuramentum præstant sub hac forma verborum: Ego talis ab hac hora in antea fidelis ^b ero, & obediens sanctæ Placentinæ Ecclesiæ, & Domino nro Placentino Episcopo: per vestras nos literas consulere voluistis, utrum intelligi debeat Clerus totius dioc. an Capitulum tantum Ecclesiæ Cathedralis? Nos igitur disc. v. respondemus, quod per Ecclesiæ Placen. vocabulum in forma iuramenti præscripti non debet intelligi totius diocesis Clerus: & si Capitulum intelligatur Ecclesiæ Cathedralis; is tamen, qui præstat huiusmodi iuramentum, Episcopo tanquam capiti principaliter obligatur.

NOTÆ.

1. ^a *Placentino.*] Ita etiam legitur in tertia collectione, *sub hoc tit. cap. 1.* De Ecclesia Placentina nonnulla adduxi in *final. de iuram. calum.*

^b *Fidelis ero.*] Iuxta formam fidelitatis, & obedienciæ, quam debent clerici proprio Episcopo præstare, de qua *egi in cap. ege, de iuram. cap. ex diligenti, de simonia.*

CAPVT XX.

Idem Priori sancti * Fridiani Lucan.

Quærenti quid per censuram eccl. intelligi debeat, cum huiusmodi clausulam in nostris literis apponimus: respondemus, quod per eam non solummodo interdicitur, sed et suspensio, & excommunicatio sententia valeat intelligi, si iudex discretus, rerum, & personarum circumstantiis indagatis ferat, quam magis videri expedire.

NOTÆ.

1. ^a *Antli Fridiani.* Ita etiam legitur in tertia celsitudine, sub his it. cap. 4. & in cap. quærenti, de effe. deleg. ubi extat alia pars huius Decretalis, ut iam notauit.
2. ^b *Iuridici.* De qua censura egi in cap. cum inter, de consuet. cap. 2. de his que sunt à Prælat. cap. quod in 12, de penis & reuiss.
- ^c *Suspensio.* De qua censura egi in cap. 1. de clericis excom.
- ^d *Excommunicatio.* Tam minoris, quam maioris, de quibus egi in c. significat. aut. de sent. excom.

COMMENTARIUM.

3. **P**RO huius textus expositione sciendum est, irregularitatem generaliter censuram non esse, quia irregularitas in genere suo non est vitium, sententia, nec poena, sed inhabilitas, & canonicum impedimentum contrarium aliquando siue culpæ, si qui videmus, 50. dist. & ex præsentis textu deducitur, probaturque ex eo, quia censura in productione est sententia, & medicina respiciens ut suum vitium finem oblatum sanitatem, & reditum in semitam rectæque, audi 1. q. 3. c. 2. de sent. ex. in lib. 6. Irregularitas verò non dicitur medicina, cum non præsupponat opus peccaminosum, immò aliquando meritum, quo gratia acquiritur, in esse tamen de duâ censura leparat à participatione sacramentorum, & communione si scilicet, c. Engelhardum 3. q. 4. cap. 2. de re iudic. Hæc irregularitas tantum priuat ad Ordinum susceptionem, ex relictione. Differtio remotione, quia censura tollitur absolute irregularitas verò dispensatione. Trid. sess. 14. cap. 7. & sess. 24. de reform. cap. 4. Nec contrarium probat textus in canonibus, de bigamis, ubi eum agitur de irregularitate, quæ prociuit ex bigamia, dicitur clericum de facto contrahens matrimonium eadem censura credi interdictum, nam verbum illud *censura*, accipitur pro rigore sacrorum canonum, vt docent Bottius, & Anania in præfati. Cetera cum verò irregularitatem, quæ ex delicto nascitur, dubium est apud Doctores. Negant omnes repetentes in præfati, Suarez de consuet. disp. 2. sect. 3. Syluest. verbo *Censura*, & alij apud Dianam p. 2. tract. 11. res. 27. Mouentur primò ex præfati textu, ubi cum omnes censuræ species referantur, nulla irregularitatis mentio fit. Deinde quia irregularitas faciem priuat ordinis susceptione, censura verò etiam receptione aliorum sacramentorum, Rursus quia irregularitas non parit aliam, si irregularis celebrat, sed quia alia censura ligatus celebrat, irregularis manet, cap. 1. si celebrat, de clericis excom. Ergo quia irregularitas censura non est. Tandem, cum censura tollitur absolute, irregularitas verò dispensatione: ergo quia censura non est. Contrarium verò, scilicet irregularitatem ex delicto prociuentem esse censuram, tenuerunt

Thomistæ, Bañes, & Aragon. ad 1. 2. D. Thoma 9. q. 64. art. 8. Sotus in 4. dist. 22. q. 3. alij quos laudar, & sequitur Gibalinus de irregul. c. 1. q. 2. Cum enim similis irregularitas sit poena ob delictum iustitiam, & priuat vlti bonorum spiritualium, quid mirum si appellatur censura. Quia sententia tenet, etiam contrarium non improbabilem dicat Oliva supra tract. 1. res. 27. non obstant fundamenta prioris sententia; nam ea omnia tantum probant irregularitatem esse diuersam speciem censuræ, non tamen non esse censuram. Nec etiam obstat præfatus textus, in eo enim tantum assentit, in re et scriptis Pontificis irregularitatem non comprehendit nomen censuræ, quia licet censuræ species sit, tamen nunquam cessat appellatione censuræ venire, nisi specialiter exprimat ob grauiter poenæ, & quia ita ex stylo Cæsar obsecutus fuit. Descepti, oam in præfati textu, in quâ alia eius parte, quæ extat in cap. quærenti, de effe. delegat. agitur de censuris imponendis ab homine, hoc est à iudice delegato. Sed irregularitas ab homine imponi non potest. Igitur Innocentius accipiendus est ita, vt appellatione censuræ, quæ ab homine imponi potest, irregularitas non comprehendatur, quia illa à iudice delegato imponi non valet. Nec obstat quod irregularitas non priuat ab his, quæ aliis censuris interitis denegantur; illud enim tantum probat, non dari eosdem effectus in irregularitate, ac in aliis censuris; non tamen inde inferatur, irregularitatem censuram non esse; nam suspensio hæc non priuat nisi tantum rebus spiritualibus, vt excommunicatio, est tamen censura, vt in præfati textu docetur. Nec obstat quod irregularitas non producat aliam irregularitatem, vt parit censura; nam id non prociuit ex eo, quod irregularitas censura non sit, sed quia ligatus aliâ censurâ priuatus est tantum rebus spiritualibus, & adhuc capax maior recipiendi sacros ordines: qui verò irregularis est, iam non habet amplius, quod amittat, quoniam ex aliis causis possit etiam fieri irregularis, quia hæc tota res moralis est. Vnde ex variis causis proficisci potest hoc impedimentum, vt probat Gibalinus de irregul. dist. 1. cap. 1. q. 2. Nec quod de solutione irregularitatis DD. contrarie sententia adducebant, aliquod facere possit; scitem enim irregularitatem dispensatione superioris tolli, nam tamen concessa responsio alicuius iudicis facultate absolendi à quibuscunque censuris, confessarius potest absolvere ab irregularitate, quia id ex res. in hihiu est à Gregorio XIV. anno 1590. & Clemente VIII. anno 1592. & anno 1597. vt referunt, & probant Tullench in Bullar. lib. 1. c. 2. §. 7. dub. 17. P. Mendo res. tract. disp. 25. c. 19. Cuius differentia ratio ex eo prociuit, quia eadem irregularitas sit maior poenæ, & ita difficilior in solutione, cap. cum illorum, in quâ glof. ubi verbo *Minoris*, de sent. excom. Ideo concessa generalis facultate absolendi à censuris, non censetur concessa potest

resas dispensandi in irregularitate, ut docet Bor-
gallus *de irregul. cap. 6. n. 19*. Regulares verò Priuile-
giati possunt virtute suorum privilegiorum in his ir-
regularitatibus, quæ ex delicto occulto proueniunt,
præcipue in illis, quæ ob violationem celsæ

coadiuantur, dispensate, ut probant Fragoso *de*
regim. Christ. Recip. tom. 2. lib. 1. disp. 24. §. 7. Bal-
licos in *floribus Theolog. verbo casum referentium*, §. 7.
num. 29. Bordenus in *consil. regul. tom. 1. resol. 6. n. 10*.
Duna *part. 9. ar. 8. resol. 50*.

CAPVT XXI.

Idem * *Casaraugustano Episcopo.*

Quid per noualis vocabulum intelligi debeat, à nobis tua fraternitas requisuit. Li-
cet autem quidam dixerint, quod nouale sit terra præcisa, quæ anno cessat, aliis
assentientibus, quod ex silua, quæ arboribus extirpatis ad cultum redigitur, fieri nouale
dicatur, quarum utraque interpretatio ex ciuilibus legibus colligitur: Nos tamen in-
quisitioni tuæ aliter respondemus, quod tam credimus prædecessorum nostrorum in-
tentionem fuisse, cum pijs locis indulgentiam de noualibus concesserunt, ut nouale
intellexerint agrum de nouo ad cultum redactum, de quo non extat memoria, quod
aliquando cultus fuisset: sed nec de quolibet tali nouali credimus eis indulgentiam fo-
re concessam, nisi de illo dumtaxat, cuius decimas religiosus potest conuenitus absque
graui detrimento parochialis Ecclesiæ detinere; cum talis sit sæpe locus incultus, de
quo parochialis Ecclesia magnos percipit decimarum ratione prouentus.

NOTÆ.

^a *Casaraugustano.*] Ita etiam legitur in

tertia collectione, sub hoc tit. cap. 5. de Casar-
augustana Metropoli egi in cap. dudum 31. de
priorit.

CAPVT XXII.

Idem *Abbatibus de Alcobia, S. F. S. P. monachis Alcobia.*

Venerabili fratre nostro N. Colimbriensi Episcopo didicimus conquirente, quod
cum fratres sanctæ Crucis monasterium de Arganil sub protectione sua nuper
recepissent, quod suis prædecessoribus Episcopalia iura consueuerat ab antiquis tem-
poribus exhibere, nunc quodam de Canonicis suis sine suo consensu iubi facto Priore,
occasione cuiusdam privilegij à bonæ memoriæ Clem. Papa prædecessore nostro ve-
ritate tacita impetrati, eidem Episcopo debitam obedientiam denegat exhibere: inde
sumptu occasione, quod per matricem Ecclesiam non Cathedrali intelligunt, sed
Romanam. Quia verò non est nostræ intentionis, ut iura fratrum nostrorum tempor-
ibus nostris indebitè minuantur, causam ipsam vobis duximus committendam, per
scripta Apostolica mandantes, quatenus si vobis aliud non occurrerit, propter quod
dictus Prior non debeat diocesano Episcopo respondere, eum ad præstandam dicto
Episcopo debitam reuerentiam, sicut prædecessoribus Episcopis præstiterunt, appella-
tione remotà per censuram ecclesiasticam compellatis. Nos enim per matricem Eccle-
siam Cathedrali intelligere volumus, non Romanam, non obstante privilegio in
præiudicium Colimbrien. Ecclesiæ per subreptionem obtento. Quod si non omnes,
&c. Duo vestrum, &c. Datum Romæ, &c. III. Kal. Iunii.

NOTÆ.

^{1.} ^a *Alcobia.*] Ita etiam legitur in tertia col-
lectione, sub hoc tit. cap. 6. & in Registro
epistolatum Innocentij edito à Sitrleo, fol. 101.
De hoc monasterio Alcobia egi in cap. de reser.
b *Fratres sanctæ Crucis.*] De quibus Canoni-
cis regularibus, & controuersiis eom Colim-
briensi Episcopo egi in cap. 14. de priuile.

^{2.} ^c *Cathedralis.*] Ecclesia Cathedralis proptèr
appellatur matris, quia mater, magistraque est om-
nium Ecclesiarum diocesarum; unde lato modo Eccle-
siaz, quæ sub se alias habent, dicuntur matricæ,
ut probant Azor p. 2. in *lib. 3. cap. 12. §. 13.* & lib. 9.
cap. 3. Barb. in *cap. ad antiquam*, num. 7. de decimis:
quo modo Ecclesia matris accipitur in *c. ad audien-*

tiam, et de Ecclesiis, & ex transmissa, de p. a script.
cap. præterea, et 2. de translat. Clement. 1. de fœderi. ex-
com. Propriè tamen, & strictè Ecclesia matris
tantum Cathedralis dicitur, nisi Ecclesia matris
aliud exposuisset, ut in presenti docetur, & in cap.
ex transmissa, de præscript. Illustrant Rebollus de
decimis quas. 6. num. 6. Moneta *cod. trall. cap. 7. n. 3.*
Sayrus in *thesaur. lib. 3. cap. 33.* Tondutus *part. 1. re-*
sol. canonic. cap. 46. num. 10. Barbosa in *Clement. 1. de*
fœderi. excom. Francus de Ecclesiis Cathed. cap. 1. §. n. 71.
Et Romana Ecclesia, quæ omnium est mater, pri-
ma matris appellatur, Cathedrales verò respectu
illius secundæ matricæ, respectu verò totius Episcopa-
tus, primæ appellantur. Glossa in *l. de ceterum*,
num. 15. verbo *Matricis*, Cod. de fuer. Ecclesiæ. Pro-
sequitur Francus ubi proximi.

CAPVT XXIII.

Idem Abbati Sanctæ ^a Genouefa, Decano, & Cancellario Parisiensi.

EX parte in Christo dilectæ filiz nobilis mulieris Comitissæ ^b Blesenen. nuntij ad nos tram præsentiam destinati sibi postulauerunt audiendam exhiberi, vt audiremus iniurias, quas ei, & suis infert Ecclesia Carnotensis, quibus & dilecto f. S. Beco Canonico Carnotensi, qui pro ipsa stabat Ecclesia, dil. fil. R. tituli S. Anastasie Presbyt. Cardin. dedimus auditorem, in cuius præsentia proposuerunt nuntij Comitissæ, quod cum ipsius Comitissæ ^c Præpositus de Firmitate de Villanova quendam latronem ceperit, qui furtum commiserat, & iustitia fuerit inde facta, lazzo fuit à Comitissæ ^d Balliuis per Capitulum Carnotense post factam iustitiam requisitus, quia Capitulum in terra sua captum fuisse dicebat, asserentibus Balliuis econtrâ, ipsum fuisse captum in terra, in qua ius capiendi latrones, & alios malefactores habet eadem Comitissa, quoniam vir eiusdem, aniequam signaculum crucis assumeret, erat in possessione iuris illius, vt in illo loco, in quo captus ab ipso Capitulo dicebatur, huiusmodi iurisdictionem haberet: quod erant probare parati. Verum cum super hoc parendi iuri sufficientem cautionem offerrent, caponei Carnotenses nihilominus terram eiusdem Comitissæ fecerunt per Diuen. Archid. interdicto supponi, qui post modum requisiti, vt ab eis sufficienti cautione recepta iuri parendi, terram absoluerent, eam recipere noluerunt, nisi prius solueretur emenda. Consequenter ven. f. n. Carnotensis Episcopus super hoc requisitus, & per literas Metropolitæ sui monitus diligenter, vt terram Comitissæ taliter absolueret, sicut de iure poterat, & debebat, idem à Capitulo iamdicto prohibitus huc facere recusauit: dicebat enim Capitulo, hoc in Carnotensis Ecclesiæ ^e privilegio contineri, quod nemini liceat excommunicatis, vel nominatim interdictis pro Canonici Carnotensibus postulata publica satisfactioe absolutionis beneficium indulgere. Videntes autem nuntij Comitissæ, quod datâ cautione absolui non poterant, vt deberent, tam super hoc, quam aliis causis inter Comitissam, & Capitulum agitis, Metropolitanam audientiam appellauerunt, tam ipsam Comitissam, quam terram, & Balliuos eius sub eius protectione ponentes. *Et infra:* Metropolitanus autem cum partes essent in die præfixa præsentis, privilegio diligenter inspecto, testes hinc inde recepit, quibus ab officiali examinatis ipsius, & die paribus iterum assignato, procurator Comitissæ cum instantia postulabat publicari attestations receptas, ex abundantia de iuri parendo sufficientem offerens cautionem, vt relaxaretur sententia interdicti: sed procurator Capituli è contrario allegabat, quod iamdicti privilegij ratione ab ipso terra non poterat, nec debebat absolui, nisi prius Capitulo facta fuisset emenda, interpretando verbum illud, quod in privilegio continetur, videlicet, satisfactio congrua, pro emenda. Litigato igitur diutius super huiusmodi clausula, interloquutus est Metropolitanus iamdictus, se velle huiusmodi expositionem Ap. examini reservare, & super hoc diem paribus assignauit. *Et infra:* Ad intelligentiam autem clausulæ privilegij memorati credimus distinguendum, virum in aliquem interdicti, excommunicationisque sententia sit prolata ex contumacia tantum, quia scilicet citatus stare noluit iuri; vel etiam pro offensa, quia videlicet iussus noluit maleficium emendare. In primo casu credimus congruè satisfieri, vt huiusmodi sententia relaxetur, si sufficiens standi iuri cautio tribuatur. In secundo verò casu, si offensa est manifesta, non credimus congruè satisfieri, vt huiusmodi relaxetur sententia, nisi sufficiens prius præstetur emenda. Si verò dubia est offensa, sufficere credimus ad relaxandam eandem, si parendi mandato competens satisfactio præbeatur.

NOTÆ.

^a *Sancta Genouefa.* Ita etiam legitur in tertia collectione, sub hoc tit. cap. 7. De hoc monasterio adduci nonnulla in cap. P. & G. de offi. deleg.

^b *Præpositus.* Index videlicet, seu gubernator; nam etiam Militatus seculares Præpositi appellati solent, vt probatur in cap. 1. de ante, & quibus.

^c *Blesensis.* Rediit in hac sexta collectio-

ne legitur *Blesensis*: Carnotensis enim Provincia olim suos habuit Comites; nam Theobaldus Ledgardis Viromandensis matris, eorum stirpem propagauit, ex cuius posteris defuncto sine liberis Theobaldo iuniore Comite Blesensi & Carnotensi, Mahildis Ambasiz Domina in Comitatu successit, de qua lo præsentis agitur; & ea sine prole obuante, Comitatus devenit ad Ioannem Castilionem Comitem Blesensem, ipsius hæredem, vt refertur in Gallia Chrift. tom. 2. fol. 480.

^d *Balliui*

d. *Bailium*.] *Bailium* apud Gallos idem significat ac officialis, & plerumque accipitur pro Prætoro, seu iudice; quare & officium ipsum *bailium* solet appellari. Probant, & illustrent *Liodembrog. in Glossario legum antiq. verbo Bailium*, Ioannis Vossius, *de viuis form. lib. 2. c. 3.* & notui in cap. 8. de confirm. veli.

e. *Prinilegia*.] Carnotensis enim Capitulum eximius est decoratum priuilegiis à Sede Apostolica, inter quæ illud refertur, quod oemini licet anathemate damnatum absolueret, nisi prius damni estimatione pensata, ac damno satisfacto ipsi Capitulo, ut refert Renatus Chopin. *lib. 1. sac. pol. tit. 2. n. 4.* Cuius priuilegij mentio fit in præsentis textu.

CAPVT XXIV.

Idem Comitissa^a Blesensi.

Cum olim pro Canonicis Carnotensibus quoddam Capitulum contra te fuerat allegatum, quod dicebat in Ecclesiæ suæ priuilegiis contineri, ut videlicet nemini liceat excommunicari, vel nominatim interdictis pro Canonicis Carnotensibus, absque congrua satisfactione absolutionis beneficium indulgere. *Et infra*: Quia verò dum ansam soluimus, nodum dicimur ligauisse, propter hoc, quod eisdem Canonicis, velut asseris, proponentibus, illam esse offensam manifestam, non quæ iudici, nec quæ alij, sed quæ sibi tantummodo manifesta videtur, maior ex illa dictione, videlicet Manifesta, scrupulus quæstionis emerfit. Tuis igitur humilibus precibus inclinati, offensam nos rescribimus intelligere manifestam, quæ vel per confessionem, vel probationem legitimam nota fuerit, aut euidentiâ rei, quæ nullâ possit tergiversatione celari.

NOTÆ.

I. ^a *Comitissa Blesensi*.] Ita etiam legitur in tertia collectione, sub hoc tit. cap. 8. Textus hic

spēdat ad casum textus præcedentis.

b. *Tergiversatione*.] Ut probui in cap. euidentiâ, de accusa, ubi exposui quando quid dicatur manifestum, vel octorium.

2.

CAPVT XXV.

Idem Episcopo^b Cantori^a Atrebatensi.

Abbatē Sancti^b Siluani Altiacen. olim viam vniuersæ carnis ingresso, cum eiusdem loci monachi elegerint quendam de ipsius gremio in Abbatem, & eiusdem confirmationem electionis à bon. mem. Morinen. Episcopo nequiuissent aliquatenus obtinere, per procuratorem suum confirmationem ipsius à Sede Apost. petierunt. Ceterum procurator monasterij S. Bertini proposuit ex aduerso, quod cum secundum approbatam consuetudinem, & priuilegia Rom. Pont. Abbates Altiacen. debeant de monasterio S. Bertini semper assumi, huiusmodi electio erat non immerito reprobanda, utpote contra consuetudinem diuturnam, & priuilegia Sed. Ap. attentata; & Altiacen. monachi debeant de iure compelli, ut de monasterio beati Bertini personam idoneam sibi eligant in Abbatem. *Et infra*: Nos igitur depositionibus testium coram delegatis à nobis iudicibus productorum diligenter inspectis, inuenimus sufficienter esse probatum, quod à xl. annis, & infra, monachi Altiacen. Abbatem sibi de S. Bertini monasterio elegerunt, ita quod infra præscripti temporis spatium de præfato Cœnobio vii. fuerunt in Altiacenses Abbates assumpti. *Et infra*: Et cum quadam vice Garmum Altiacen. monachum elegerint, eius electio robur habere non potuit, donec apud monasterium S. Bertini professione facta, post aliquantulum temporis, quando scilicet eiusdem loci Abbati, & conventui placuit, in Altiacen. exiit Abbatem assumptus. Ex priuilegiis quoque Rom. Pont. monasterio S. Bertini concessis argui poterit euidenter, Altiacen. Abbatem fore de S. Bertini collegio eligendum. Nimirum priuilegio fel. rec. Paschalis Pap. præd. n. huiusmodi capitulum apparet insertum: Subrogationem Abbatis penes monasterium S. Siluani apud Altiacen. iuxta præteriti temporis morem, in vestra semper concedimus dispositione persistere. Cuius verbis bon. mem. Innocentius Pap. præd. n. prorsus inhæsit. In priuilegio quoque^a Calixti II. Pap. huiusmodi capitulum inuenitur: Porro iuxta Domini præd. n. sanctæ mem. Paschalis Pap. decretum, Abbatis subrogationem penes Altiacen. non aliunde, quam de vestro monasterio fieri Ap. auctoritate decernimus. Ad hæc autem pars aduersa respondit, quod si euidenter per depositiones testium probaretur, quod infra prædicti temporis

spatium

spatium de monasterio S. Bertini semper fuerit Aliacen. assumptus; ex hoc tamen nullum Aliacen. monachis præiudicium parabatur, cum hoc non necessitate aliqua factum fuerit, sed ex libera voluntate. *Et infra:* Sed nec dici poterat, quod ex eo consuetudo aliqua, quasi contradictio iudicio fuerit introducta, si de prædicto mon. exitit in memorati Guarini electione processum, cum illud pro bono pacis factum extra iudicium dignoscatur. *Et infra:* Præterea cum Pasch. Pap. subrogationem Abbatis S. Siluani monasterio S. Bertini iuxta morem præteriti temporis duxerit concedendam, nec de præteriti temporis more, seu consuetudine fiat fides, per eius priuilegium, & similia, super hoc nullum Aliacen. monasterio poterat præiudicium generari. Contra quod fuit ex aduerso responsum, quod hæc determinatio secundum præteriti temporis morem, & causalis, & conditionalis potest intelligi; & tam ad personale, quam impersonale verbum referri. Si enim impersonale verbum determinet, conditionalis intelligitur, & talis est sensus: Concedimus subrogationem Abbatis sancti Siluani apud Aliac. in vestra semper dispositione consistere, secundum præteriti temporis morem, idest si mos præteriti temporis talis fuit: si verò verbum determinet personale, causaliter debet intelligi, vt sit sensus: Concedimus secundum præteriti temporis morem, idest quia mos præteriti temporis sic obnuuit, subrogationem videlicet Abbatis sancti Siluani apud Aliac. in vestra semper dispositione consistere. Hic autem sensus rector esse videtur, quia cum priuilegium sit lex priuata & lex non debeat esse obscura, vel capiosa, sed certa, & manifesta; nec esset priuata, nisi aliquid specialiter indulgeret: profecto sic intelligenda sunt illa verba, vt res, de qua agitur, valere possit potius, quam perire, maxime cum supradictus Calixtus Papa, qui eidem Paschali è vicino successit, verbis æquioribus vltus, determinationem illam prorsus amouerit, vt ambiguitas tolleretur: & quod dicebatur in concessione Paschalis, videlicet vt subrogatio Abbatis Siluani apud Aliacen. in dispositione Abbatis, & fratrum sancti Bertini semper existeret; ipse mutauerit, decernens, subrogationem illius Abbatis non aliunde, quam de sancti Bertini monasterio faciendam, vt electio ad ius commune posset ex vna quidem parte reduci: eadem quoque verba sic esse interpretanda subsequens consuetudo declarat, quæ perhibetur esse legem interpres. Huiusmodi, & aliis ad eandem causam spectantibus diligenter auditis, & perspicaciter intellectis, de consilio fr. n. monasterio sancti Bertini adiudicauimus huiusmodi dignitatem, vt quoriscunque in Aliacensi monasterio Abbatis electio imminet faciendâ, Aliacen. monachi de cenobio sancti Bertini personam idoneam sibi eligant in Abbatem, ita videlicet, vt tamdiu monasterium ipsum hac honoris debeat prærogatiua gaudere, donec ibidem viguerit obseruantia regularis, vt idoneæ personæ inueniantur in illo, quæ possint in Abbates assumi.

NOTÆ.

^a *Atrebatensi.* Ita etiam legitur in tertia collectione, sub hoc tit. 10. De Atrebatensi diocesi iam nonnulla adduxi in cap. 13. de arbitrio.

^b *S. Siluani.* Monasterium hoc S. Siluani Aliacense est in Germania, in diocesi Morinensi, cuius initium, & erectionem refert Iperius in *chronica suo Bertinensi*, ibi: *Lambertus Abbas noster* [Bertinensis videlicet] *Ordinar. D. Benedicti, duobus primariis Ecclesiis huius diocesis, scilicet Morinensi, & Siluaniensi reformandis ad vicinas Ecclesias reformandas mentem intendit, opportunam nunciatus nunc ex Ecclesiis vacantiis, nunc ex monachorum dissensionibus. Anno itaque 1101. Ecclesia Aliacensis constituta anno 1072. (cui de iure, consuetudine, ac priuilegiis consensum, & debet ex isto monasterio Abbas praesideri.) Lambertus Abbas defunctus, Ordinem Clauicentium monachum, virum exemplarem ad ordinem hunc reformandum pridem missum Abbatem profecit. Unde constat monasterium hoc Ordinis D. Benedicti, olim diocesis Morinensis, nunc Andomercensis fuisse; & simul eius Abbatem eligendam esse ex monasterio sancti Bertini, vt refertur in Gallia Christi. tom. 4. littera A fol. 27. & refert Marcus de cenobiis Belgici c. 40.*

^c *Sancti Bertini.* Etiam monasterium hoc

Ordinis est D. Benedicti, in vrbis Andomacopolitanae Arthesiae, olim Mustensis diocesis, antiquius Siciense monasterium dictum, cuius originem, & progressum referunt Aubertus Mitens de cenobiis, cap. 4. auctores Galliae Christi. tom. 4. littera B fol. 171.

^d *Calixti II. Alexandri III.* Nam cum ab Abbate monasterij S. Bertini fundatum, & reformatum fuisset monasterium sancti Siluani, merito tam consuetudine, quam priuilegiis Romane Ecclesiae introductum fuit, vt ex monasterio sancti Bertini Abbas sancti Siluani eligeretur, cum io vtroque monasterio eadem Regula D. Benedicti obseruaretur, quod & in aliis monasteriis frequentius obseruatur, vt iam notauimus in cap. 3.

^e *Lex priuata.* Probatur in cap. 2. de priuilegiis. *Specialiter indulget.* Consonant textus in cap. in his, de priuilegiis cap. 5. Papa, eod. tit. in 6. aliis esset inutile, & superuacuum, & quasi otiosus alius: quod de Principis beneficio praesumendum non est. Unde fit, debere priuilegiij effectum esse aliquo modo dictum ab effectu legis communis, vt explicat Suarez de legibus lib. 8. cap. 22.

^g *Denec ibidem.* Vnde cessante disciplina regulari in monasterio Berthinensi, cessaret & priuilegium hoc, iuxta tradita à Suarez de legibus lib. 8. cap. 33. per totum.

CAPVT XXVI

Idem Comiti^a Tolosano.

SVper quibusdam mandatorum articulis tibi à bon. mem. Milone notario nostro hunc temporis Ap. S. L. factorum apud quosdam dubitatione subortâ, tua deuotio explicari postulat à nobis, qui sint dicendi hæretici manifesti? Super quo tibi duximus respondendum, illos in hoc casu manifestos hæreticos intelligendos, qui contra fidem catholicam publicè prædicant, aut protestantur, seu defendunt errorem; vel qui coram Prælati suis^b conuicti sunt, aut confessi, vel ab eis sententiariter condemnati super hæretica prauitate: quorum bona propria^c confiscantur, & ipsi iuxta legitimas sanctiones^d puniuntur. Præterea cum pedagia, guidagia, & salinaria tibi Legatus interdixerit memoratus, auctoritate præsentium duximus declarandum, illa esse^e pedagia, & salinaria, & guidagia interdicta, quæ non apparent. Imperatorum, vel Regum, vel Lateranen. Concilij largitione concessa, vel ex antiqua consuetudine, à tempore cuius non extat memoria, introducta. Et infra: Cum autem à Legato receperis in mandatis, vt de te conquerentibus secundum suum, vel alterius Legati, vel iudicis ordinarij, vel delegati arbitrium iustitiam exhiberes: hoc taliter intelligendum esse censemus, vt in omni causa, quæ ratione^f personarum, vel rerum, quæ ad ecclesiasticum forum pertinent, ac super vniuersis capitulis, quæ pro pace seruanda sunt per dictum Legatum statuta, vel auctoritate Apostolicâ statuenda, item^h viduis, pupillis, orphanis, & personis miserabilibus tenearis in iudicio ecclesiastico respondere.

NOTE.

1. **Tolofano.** Ita etiam legitur in cap. 1. hoc tit. in 4. collect. Raymundus videlicet, Tolosæ eorum Comitem dignatus apud Historicos illius Regi celebratæ vique ad annum 1149. quo defunctus est Raymundus vltimus Comes, pariter Ioannem vniex filix ex Sancia Aragonia, hæredi Alfonsi Comitib. Pictauensis, sancti Ludouici fratris uxoris, quibus sine prole defunctis, Tolosæ comitatus Gallicæ coronæ adcreuit, vt refertur in Gallia Christiana tom. 1. fol. 671. De hoc Raymundum in hæresim lapsu egi in cap. final. de hæreticis.
- b. **Comiti, aut confessi.** Vt probatur in cap. de hæreticis.
- c. **Confiscantur.** Iuxta tradita in cap. vergentis, de hæreticis.
- d. **Puniuntur.** Vt probatur in 2. ad abolendam, de hæreticis.
- e. **Pedagia.** Pedagium, quod tributa dicantur, expostui in cap. immunitas, de censibus, vbi huius textus casum retuli.
- f. **Salinaria.** Vt hoc veditalis genus cognoscamus, sciendum est, semotis Regnosum institutis, salinas ex iure communi posse ad priuatos inire dominijs spectare, l. magis pars 5. §. 1. ff. de rebus eorum, ibi: Sed & si salinas habeat pupillus, idem erit dicendum. Loquuntur de oratione Seueri, quæ prohibuit alienationem prædij restitui, vel subuicari, quod proprium est pupilli. Sic in l. generali 32. §. vlt. 1. de usufructu. legat. ex facto proponitur, maritum legasse uxori suæ vsum fructuum domorum, & omnium rerum, quæ in his erant, fundorum, & salinarum: ergo in testatoris iure, & dominio erant salinae, non minus quam fundi, & ædes. Nec minus expressus est textus in l. forma 4. §. salina 7. ff. de censibus, in illa verbis: Salinae si qua sunt in prædijs, & ipsa in censum deferenda sunt. Ergo salinae in prædijs priuatis existentes priuati iuris sunt. Facit et ratio, oam

commoda naturæ, & locus, vbi sal consuevit, impedimento non fuit, quo minus in dominio priuatorum consistat, si in possessione propria crescat. Deinde eum ex aqua plenius efficiatur, quæ communis est, & per ius naturale occupant cedit, consequens est, vt in loco nullius inuentum cedat illi, qui prius occupauit: eorum verò, coctum, aut confectum in loco priuato, priuati sit in loco publico, Principis maneat.

E conuerso in l. inter publica 17. §. 1. ff. de verb. signific. docemur ad publicum pertinere veditgal salis: & in l. sed & y 13. de publicanis, publicanos appellati, qui conductum habent hoc veditgal salis, vel salinas pædo veditgali: & in l. liber homo 59. §. 1. ff. de hered. instit. proponitur ex facto Titius hæres institutus ex qua parte locior erat in veditgali saltorum: videturque institutus ex illa ipsa parte, quam habebat in societate veditgali, velori 46. &c. Igitur negati non potest, etiam inter Digestorum, quando mitus subactum erat ius gentium, salinas publicas fuisse, & publicos redditus inde collectos. Cuiuslibet lib. 3. obs. cap. 3. c. notauit salinas, & publicas, & priuati iuris fuisse: multi Auctores apud Alexandrum in l. diuortio 8. num. 4. ff. solut. matrim. Barbosa ibi, ex n. 27. vers. iuxta hoc, & Georgium Cabedon decif. l. 5. §. 2. num. 2. & decif. 81. num. 2. Graphium de iure publico cap. 36. & cum pluribus Soltz. polii. Ind. lib. 6. cap. 3. pag. 345. distinguunt salinas natas in priuato loco, à natis in publico, vt ille priuati, hæ publici iuris sunt: quæ diffinitionem habet, & ex textibus Digestorum explicandis concinna est, cum perfectè non sciamus, an aliquid specialiter receptum, vel introductum fuisset circa publicandas salinas, vel veditgal imponendum priuatis: sed quatenus inde perpetuum ius deducunt ad omnia tempora, & reges, commentitium est: quare decidenda res erit speciali iure, vbi illud vigeat, vel vbi consuetudine contrarium receptum sit.

Sed

4

Sed vt ab histotia salis, & salinarum ius apud Romanos deducamus, in primis constat, Antum Marcium Regem sex militia modia salis populo in congiarium dedisse, & primū salinas instituisse, vt refert Plinius lib. 31. *natural. histor. cap. 7.* Nihil aliud narrat Plinius, sed ex Dionysio lib. 2. *antiquit. cap. 88. ex parte. Sylvargy*, dicere possimus salinas has fuisse, quas ad officia fluminis Vientes habuere, & qualque vicinis ademit Romulus Pater Genis vna cum agro Tiberti coniugio, quod vocabatur *Septempagui*; cum quibus iterum tebellanibus Aeneas conflixit, & eisdem salinas, & oppida cepit, reitauitque, vt idem est auctor lib. 3. *cap. 134. in fine.* Tributum vero salia fuisse sub Regibus & sub nascente libertate, discretē probatur ex Liuiο lib. 2. *ab V. C. cap. 9. ex partitione Godelebi*, vbi mouente pro Tarchiniis bello Larre Porfena, Rege Cluhno, Romamque infesto exercitu veniente, ex quo terror magnus PP. inuast, ne plebs metu pericula Reges reciperet, multa blandimenta eis Senatus dedit: inter alia placuit portoria, & tributū plebem liberari, vt soli diuites confertent, qui oneri ferendo essent. *Salis quoque vendendi arbitrium, quia impensio pretio remanet, in publicum omni sumptu ademptum priuatis.* Sententia ex loco non facile constat, quia malè habet vitio librariorum. Hadrianus Turcobus lib. 4. *aduers. cap. 2. tentat*, & ita legit: *Omni sumptu adempto concessum priuatis.* Vel ita interponit: *remanet in publicum omni sumptu ademptum priuatis.* Nanius, quem sequi videntur Illustratores Liuij apud Godelebium, addit, *sine omni sumptu.* Ego sine tantorum Criticorum opinionum praiudicio sic sentio: *moro: in publicum omni sumptu*, vt sit sensus, quia propolze salis magno vendebant, arbitrium vendendi salis ademptum omnino fuit priuatis, & sumptum in publicum, vt Respublica que portoria, & vectigalia non pendebat, liberalius vltiori pterio, aut gratis pterumque saltem plebi daret. Non ergo possimus negare vectigal, aut portorium ante solutum fuisse a priuatis ex venditione salis. Notō ex hoc loco, Publico Valerio iterum, & T. Lucretio Coff. monopolium salis primū Rome institutum fuisse, non compendij causā, sed in plebis utilitatem. Postea M. Cornel. & P. Sempromio Coff. exhausto etiam bello Carthagenensi, quo Annibal Italiam pressit & ferè oppressit, alet ex Consulibus Marcus Liuius, cui ob hoc facinus Salinarum Indulium cognomen fuit, vectigal etiam nouum ex salinarum annona statuit: sextante sal, & Romæ, & per totam Italiam erat: Romæ pretio eodem, id est sextante, locauit, pluri locauit in foris, & conciliabulis, & alibi alio pretio maioribus locauit. Quo vectigali valde onerata fuerunt rebus, praesertim rustice. Hæc ex eodem Liuiο lib. 29. *ad finem*, fuisse cap. 37. *Noto* per Censores locatas fuisse salinas mancipibus, siue conductibus publicis, vt praestitū pretio venderent. An monopolium daretur, an hæc salina fuissent natæ in locis publicis, pro certo non animo assequimur. Paulus *Emilius* profugato bello Macedonico, licet Macedonia nondum in formam potuimur reduci, Dardanis commercium salis permittit, Macedonibus vi sale inueto reuit. Idem lib. 45. *cap. 29.* Durauit forsas, ac perseuerauit Liuij Salinaris commercium vsque ad Iulij Cæsaris tempora, qui, vt plebem sibi deuinctet, *D. D. General. in Decretal. Tom. V.*

lege agraria de diuisione agri Campani lata, omnia portoria, omnia tributa toti Italix remittit, præter vectigium terum venalium, vt colligitur ex Cicerone lib. 2. *ad Atticum, epist. 16.* incipit: *Cenare mihi.* Inde apud eundem in oratione de lege Manilia, siue pto Pompeio ad Mithridasium bellum Imperatore deligendo, cum saepe queratur de interceptis à Rege vectigalibus, quæ Respublica opulentissima in Asia habebat, sic ait: *Quo eodem animo, Quirites, esse existimatis, ant eos qui vectigalia vobis persoluant, aut eos, qui exercent, atque exigunt? cum duo Reges cum maximis copiis prope adfuit? cum vna excussa equitatus perturbati tempore totum anni vectigal auferre possit? cum publicani familias maximas, quas in salinis habent, quas in agris, quas in portibus, atque cisternis, magno periculo se habere arbitramur.* Turnebus, & Hurthmaus tentant hunc locum emendare, sed immerito: vulgarem litteram retinet Buleng. de *vetlig. cap. 21.* ex quo loco deducere licet, salinas Asiæ omnes omnino in prouinciis vectigalibus existentibus, ad æratum populi relatas, redactasque fuisse, & per publicanos administratas: quod forsan & in aliis prouinciis præter Italiam viuenerit, siue in agris, siue in portibus id est siue in locis priuatis, siue in publicis, nolasque dominio priuatorum fuisse permittas. Per contrarium in Italia fortè post legem agrariam Iulij Cæsaris in solo priuato natus priuari iuris fuisse non malè probat aliofuo Ciceronis lib. 7. *famil. epist. penult.* omnis enim allusio, siue metaphora de vico venit. Ita ergo scribit: *Quibus in literis omnia mihi pericunda fuerunt, præter illud, quod parum diligenter possessio salinarum meorum à te procuratore defenditur.* Et hæc sunt, quæ possum dicere de iure salis à primordio Urbis vsque ad Gentium Imperatorum secula, & fuscifolusultorum, quotum responsa in Pandectis habemus, vt secundum hæc scire possimus, qualiter sal ad priuatos pertinuisset, vel publici iuris esset.

Succellit Christianorum Principum tempus, sub quo Atcardij, & Honorij AA. relati in *l. si quis 71. Cod. de vectigal. & commissis*, monopolium salis instituere, & sibi reseruare hoc regale, vt nemo priuatus emendi, vendendive salis facultatem haberet, nisi mancipibus salinarum, publicani, & publici salis conductores, pectus pretij, & salis amissionis impoluit, si contrafecerint, vt censui Pancicola lib. 3. *var. cap. 31. tit. de vectig. salin. distinctiōis* quibz Buleng. lib. de *vetlig. cap. 21.* & quā Cuiac. lib. 3. *observ. cap. 31.* Quod etiam in Italia valuisse discretē mihi probat synecrobus Symmachus lib. 10. *epist. 53.* vbi queritur, quod publici salis mancipes ad paucos redacti, necessitati publicæ molem ferre non possent, id consiliario est de Urbis Italique mancipibus. Notemus inde, quā alio animo monopolium hoc salis institutum fuisset, quā primū sub nascente libertate: illud introductum fuit ad leuandam, delinendamque plebem; hoc ad fisci compendia augenda. Atcadij constitutionem comparat Alecius in *litter 175. 1. de P. S. Liuij* Salinaris locustool in censura factæ; nescio tamen an tunc omne commercium salis priuatis fuisset interdictum, an Salinaris prouidentia tantum ad salinas publicas spectauerit, vt vt sit, & antiquissimum esse apud aliquos gentes hoc institutum, & receptum sequentibus sæculis, docent veteres relati à Barbosa in *l. d. diuer-*

5

no 8. §. si vir, num. 29. ff. solus. matrim. Brecheus in dist. l. 17. §. 1. num. 35. In Galliaque sectarii trahunt Prædictus de verb. iuris, verbo Salina publica, Cuiacius dist. lib. 3. obs. cap. 37. ex quo Bernardus Gomez tract. de sale, 2. part. cap. 37. Paulus Cast. lib. 1. consil. 63. in fine, Regnetus Sixtinus de regal. lib. 2. cap. 29. Cabedo a. tem. decis. Luffi. 53. Solorzanas dist. lib. 6. cap. 3. pag. 245. & a. tem. de iure Indiar. lib. 1. cap. omis. ex num. 19. & 34. Larrea cum multis alleg. fiscal. lib. 77. num. 7. merito docent, salinas ad patrimonium Principum pertinere, siue ut ipsi soli monopolium salis exerceant, siue ut priuatis vendere salem, vel efficere permittant impostito tributo, quod secundum consuetudines receptas, vel municipales leges intelligendum est de facto positum, quâo de iure nature; nempe quia in plerisque regionibus, & apud plerasque gentes ita obseruatur, non quia natura salis ea sit, ut præcisè cedat Principibus vicinque efficiatur, vel inueniatur. Nec contrarium probat textus in cap. 1. qui sunt regalia dñi vsibus feudum, ubi ad segalla pertinere dicitur sal: nec Innocentius III. in præfenti, dum refertur, salinas ad Reges, & supremos Principes pertinere, ubi Comes, Barones, & extrinsecus vasalli specialem concessionem non ostendunt: quia veroque textus intelligendus est suppositis consuetudinibus, quæ in partibus vigent; & legibus, per quas salinarum redactæ sunt in patrimonium Principum, etiam quæ non nascuntur in fundis publicis, vel principalibus; nulla enim naturalis ratio est, quæ Principibus attribuat iure proprietatis ea, quæ in priuato fundo nascuntur, vel quæ per naturam communis sunt cunicumque occupant. Idem in nostro Regno obseruatur. Elegans primò erat constitutio Alphonsi Sapientis in l. 1. tit. 28. part. 1. ubi transcribens textum in dist. cap. 1. qui sunt regalia, sanct, vel docet Rex veltigalia ex salinis ad patrimonium regale spectare: ex quo certissimo, textum Frederici eodem modo accipiendum esse, & de eodem veltigali salinis impostito, quia non valde tempore distat constitutio Alphonsi à Frederici constitutione: & Partitum compositores Azonis discipuli non ignorarunt mores reorū antea dī seculi. Ergo non constat ex his duobus locis, monopolium salis inducendum fuisse in Imperio, vel in nostro Regno, nec interdum priuatis fuisse salis commercium. Postea Alphonsus XI. in comitiis Regni apud Complutum, quorum caput hodie extat in l. 8. tit. 1. lib. 6. Ordin. qui est lex 2. tit. 13. lib. 6. Compil. salinas omnes in publicum patrimonium cedit; quæ lex adeo generaliter loquitur, ut intel-

ligi non possit de natis in locis publicis, sed de natis vbis, ut censet cum iudicio Azueus in l. 3. tit. 18. lib. 6. Recopil. ex num. 10. quidquid aliter distinxerint Gregorius, & Didaus Petz in prædictis textibus. Postmodum Philippus Prudentis in l. 1. tit. 8. lib. 8. compil. priuatis commercium salis intulit, & monopolium instituit, ut ex textu ipso liquet. In Gallia non solum per Reges exactum fuit veltigal salis: Continuatur Viripergentis anno 1343. ibi: *Hec tempore Philippus Galliarum Rex intelligens lucrum bonum aduenire ex quantis re esse, tributum salis instans; & regnum inuentum, quo nemo liber à tributo esset: hinc enim Regibus quantum pecunia ingens penditur. Verum & per Comites, in quorum diuisionibus salinas erant, ut de Raymundo Comite Tolosano in præfenti refertur; & constat cum huius veltigalis renouissimum fuisse exactorem, ex privilegio emanatis Castro Blicardi ab eo concessio anno 1217. in quo oppidanis omnia veltigalia remittuntur, dempto pelagio salis. Refert Altiellera de Ducibus cap. 3.*

g. Imperatorum, vel Regum.] Quotum proprium est tributa indidere, ut ultra concessos à Barba in præfenti, probant Suarez de legibus lib. 5. cap. 18. Alfaro de offit. fiscal. gloss. 20. §. 3. num. 48. Solorzanas emb. 83. ubi eruditè probat modum in tributis seruandum, & causas, ex quibus tributa indici valent. Et licet illi tantum olim saluamconductum concederet, Symmachus lib. 10. epist. 36. Cassiodorus lib. 4. var. c. 45. & lib. 7. cap. 39. Duces tamen, ac Comites etiam saluamconductum, quod nomine guidagie in præfenti ponitur, concedere solebant, ut de Comite Engolismensi refert Guillelmus Brito Philip. 6.

Nec saluam præstare vult, pendente querelâ Conductum, iuxtaque postulat ordo, volebat. Et Ildebertus Cemonensis profectus ad Concilium protoinciale, conductum exposcit à quadam Comitissa apud Carnotensem epist. 26. Conductum, siue ferat, prouidisti ad Concilium prefatu: quod si ipsa est, præstata gratia beneficium mihi cemoniensi exoro, iuxta quem morem saluamconductum suis præstabant Comites Tolosani, ut ex præfenti textu probat Altiellera de Ducibus lib. 3. cap. 16. per totum: dum accipit verbum guidagia pro securitate viarum præstanda.

h. Pensionarium.] De quarum immunitate egi in cap. clerici, de iure.

i. Pace seruanda.] Quo casu etiam inter supermos Monarchas Ecclesiæ iurisdictionem exerceat, valet, cap. nouis, ubi probauit, de iudic.

k. Viduis.] Iuxta tradita in cap. ex diligenti, de fore comp.

CAP V T XXVII.

Idem Episcopo^a Parisiensi.

Nouimus expedire, ut verbum illud, quod in antiquis canonibus, & in nostro quoque decreto contra falsarios^b edito continetur, ut videlicet clericus per ecclesiasticum iudicem degradatus seculari tradatur & Curie puniendus, aperiens exponamus: cum & quidam antecessores nostrorum super hoc consulti diuersa responderint, & quorundam sit opinio à pluribus comprobata, ut clericus, qui propter hoc, vel aliud^d flagitium graue, non solum dampnabile, sed damnosum, fuerit degradatus, tanquam exutus privilegio clericali, seculari foro per consequentiam applicetur, cum ab ecclesiastico foro fuerit proiectus: eius enim est degradatio celebranda

celebranda præfente fæculari poteftate, ac prænuntiandum eft ei, eum fuerit celebranda, vt in fuum forum recipiat degradatum; & fic intelligitur Curie tradi fæculari, pro quo tamen debet Ecclefia efficaçiter intercedere, vt citra mortis periculum circa eum fententia moderetur. Pro illo verò falfario clerico fceclerato, quem ad mandatum noftm capì fecifti, hoc tibi duximus confulendum, vt eum in perpetuum carcerem ad agendam penitentiam includas, pane doloris, & aqua anguftiæ fufcitandum, vt commiffa defleat, & fienda viterius non committat.

NOTÆ.

1. **P** *Ariftofl.* Ita etiam legitur in quarta Collocatione, *sub hoc tit. cap. final.* De diacefi Partheni egi in cap. final. de confu.
- b. *Edito.* In cap. ad falfarium, de crimine falſi: cuius ipſe Innocentius meminit in epiftola Rarlem referenda.
2. **T** *Traditor Curie.* De qua traditione Curie fæculari faciendâ egi in cap. cum non ab homine, de indiſt.
- d. *Flagitium.* Oh quod degradandus eſt clericus, etiamſi incorrigibilis non fit, veluti ob crimina hæreſis, ſeu aſſeſſionis, vt expoſuit Fachineus lib. 2. conu. cap. 29.
- e. *Intercedere.* Cuius pij moris intercedendi pro eis hæſchis fæculari reſolendis rationem retuli in cap. ad audiendum, de hæreſi.
3. **P** *Pone dicitur, & aqua.* Conſonat idem Innocentius III. lib. 4. reſp. 16. ep. 10. vbi Londonenſis Archiepiſcopo A. S. L. ita ſcribit: [Petras nobis literas intimâſti, te quendam falſarium in vineolis detinere, qui Sedis Apoſtolice mentiens ſe Legatum, nomine, ac offiçio, Epifcopi vſurpâſſi, in multis Pontificale præſumptiſſe officiũ exercere. Super quo tibi referibi deſideras noſtræ beneplacitum voluntatẽ. Nos igitur ſollicitudinem tuam in Domino commendantes, fraternitati tuæ præ Apoſtolica ſcriptis mandamus, quatenus quiſquid factum eſt taliter ſe eodem, deſerticijs habendum illud pro infecto, ipſum ſicut ebatam habes præſentem diuinam, & noſtram, perpetuo carceri facias mancipari, pane doloris, & aqua anguſtiæ ſuſcitandum. De aliis verò, qui ſicut aſſeris, ſuſpecti habentur de crimine falſitatis, diligenter inquiras, & quos innocentis eſſe tales, panis appellacionis remotâ ſecundum conſtitutionem à nobis editam ad falſariorum malitiam conſutandam.] Quamvis enim carcer ad coſtituendos reos introductus ſit, cap. quatuor, de panis lib. 6. probant plura de carceribus cumulantes Patroia in l. 1. num. 5. & in l. final. num. 2. de alator, Pinciroli lib. 1. con. cap. 41. Araya in l. 2. Cod. de exat. tribu. Pinto inſiſtiteleg. cap. 26. num. 1. Saurat ad Siliendum lib. 7. ep. 1. verbo carceres, Polesat lib. 5. hitor. Tur. Rom. cap. 11. Lira de capel. lib. 1. cap. 12. num. 26. Petrus Gieg. lib. 31. ſynag. cap. 33. & lib. 4. part. ita 5. cap. 4. Torda de viſu. carcer. cap. 3. Bobadilla lib. 3. poli. cap. 15. Silgado de Regia preſſi. 2. part. cap. 4. num. 122. tamen Eccleſia conſuevit aliquando homines ſcecleratos carceri in perpetuum, vel ad tempus mancipare, cap. excommunicatus, 5. 1. de hæreſis, Clement. 1. 5. part. 2. ed. 2. Concilio Matifcon. 1. con. 5. vbi de clericis propbanis veſtes induentibus ita cauetur: A ſenore ita coarceatur, vt 30. dierum incluſione detentus, aqua tantum, & pane modico diebus ſingulariſſime ſuſcitetur. Aquigra, con. 234. Sic locus intra clauſtra

canonicorum, ſicut in multis locis noſtetur eſſe, quod ad tempus reuocantur, & ſecundum modum culpe caſtigentur. Probat Salcedo in praxi, cap. 124. Landroeter. lib. 2. de veteri monaſt. cap. final. Giballin. de clauſtr. regni. diſpoſi. 2. cap. 4. §. 7. eſſe iure ciuili attentio libei homo ad perpetua vincula damnari non poſſit, l. mandari 35. ff. de panis l. incredibile eſt, l. ſeruus 10. Cod. eod. tit. l. ſi quis filio 6. verſ. de Decretione, ſi de inſuſo rupto: vbi ratio aſſignatur, & probant Cuauius lib. 14. obſ. cap. 34. Faber in Iuriſpr. tit. 11. printip. 5. illas 5. Petrus Gregot. lib. 31. ſynag. cap. 33. num. 24. Simane de Catholicis tit. 16. num. 14. Valenzuela contra Venetis part. 3. num. 220. & carceres, quibus clericis includebantur, peculiari nomine Diaconice, vel Decanice appellabantur, l. 2. Cod. Inſtit. de hæreſ. l. 30. Cod. Theodoſ. eod. tit. Nouel. 79. cap. 3. in fine: lib. 5. Capitular. cap. 125. legiunt: In Decanice Eccleſia reſidentur. Notarunt Fiſſele. in cap. 1. de offic. ordi. 5. 16. Cironius lib. 2. obſ. cap. 5. & in rubric. de offic. ordi. Iacob. Goſthor. in dicit. l. 30. Nec tantum illi carceris ſqualore puniebantur, verum & ieiuniis, ac vigilijs aſſigebantur, cap. de his 36. 50. diſt. cap. final. 2. diſt. ibi: Tenent autem diebus Dominicis, & præcipuis feſtis modico vino, & piſciſculi, acque leguminibus recreantur. Concil. Tarracon. 2. can. 1. Si verò rigiſſius, vel monachis in cella monaſtery incluſus panem ſe laetum incumbat, qui ſingulari aſſiſtente pauli & aqua vſitum ex Abbatis ordinatione percipiat. Matifcon. 1. con. 5. Quod ſi poſt hanc definitionem clericus aut cum indecenti veſte, aut cum armis inueniatur furis, à ſenore ita coarceatur, vt triginta dierum incluſione detentus, aqua tantum, & pane modico diebus ſingulariſſime ſuſcitetur. Hic appellatur panis doloris in præſenti, & in e. Gualifortis, 23. quaſt. 4. & panis hic erat horreæceus. Gregorius Turon. lib. 9. cap. 11. ibi: Inſuſi nihil aliud in uſu veſtendi, niſi panem horreæceum cum aqua munda aſſumit. Notant Cironius in cap. 2. de Apoſtati, diſt. ibi: Panis fordidus dicitur in l. 5. Cod. Theodoſ. de amon. ciuili. peſſimus in l. 1. Cod. Theodoſ. de cau. frumene, vilis à Iul. Pollace lib. 6. cap. 1. ibi: Panes, qui dolores ſunt, ſurſuraci. His panibus fordidis opponuntur panes mundi, qui laetiores ſunt, & puriores. Lampadius in Alexam. Medius ab eo uſus Patlarius ſalarium accipit, ceteri qui uſus ab ſex ſurſurunt, qui amonias binas, aut ternas accipiunt, ita quæ mundas ſingulas conſequentes, alias aliter. Quæ uerba non uſi de annonæ panis accipi poſſe notant Salmaſius in obſeruat. ad ins Arinon. De illis etiam panibus agit Theodoretus de Abrahamo: Et panes mundi, ſelectique offeruntur, & cinnam edoſerunt, & piſces, & olia, & quæcumque his adiungi ſoleat. Lampadius in Alex. annonam mundam dixit potam, & laurum. Obſeruaui Cironius lib. 4. obſeruat. cap. 4. Samuel Petrus lib. 3. obſeruat. cap. 3.

CAPVT XXVIII.

Archiepiscopo^a Tyren.

Dilecto filio I. ^b Barbo procuratore Ecclesie sancti Marci de Veneris olim nobis humiliter supplicante, ut cum paratus esset tibi iustitiz plenitudinem exhibere super Ecclesia sancti Marci de Tyro, & rebus aliis, de quibus inter te, & Veneros, ac^c vicarium Venetorum questio mota fuit, possessionem ipsius Ecclesie, quæ per felicis memorie I. Papam prædecessorem nostrum, tibi fuit causa custodiz assignata, sibi restitui faceremus; quia te pro causa necessaria tunc absente, ei assignari non poterat possessio postulata, Nos eidem indulgimus, ut sibi lapsus^d temporis non obstitet, quominus possessionem ipsam recuperare valeret. Quoniam verò tantum temporis ante concessionem ipsius indulgentie dicitur effluxisse, quod tibi sufficere possit ad veræ possessionis effectum secundum statuta Concilij generalis, etsi forte tempus ipsum tantum ante prædictam indulgentiam non effluerit, videtur quod eadem ad veram possessionem viam tibi præcludat, cum simpliciter contineatur in ipsa, quod de cetero ipsi procuratori lapsus temporis non obstat quominus possessionem recuperare valeat memoratam: Nos quorum fuit intentio iuri dicti procuratoris, & ipsi Ecclesie sine tua, & Ecclesie tue iniuria subuenire, auctoritate præsentium declaramus, quod nostræ intentionis non fuit per ipsam indulgentiam ius perimere, quod tibi competeat ex possessione præterita, vel post reditum tuum competierat ex futura; sibi enim imputare poterit pars aduersa, si negligens fuit in sua iustitia prosequenda, cum absentie tue impedimento cessante, te conueniendi habuerit facultatem.

NOTÆ.

^a *Tyrensi.* In hac sexta collectione legitur *Tyrensi*, sed male; quare tam inscriptionem, quam litteram restituo ex quinta compilatione Honorij, ubi sub titulo *de eo qui mittitur in possessionem*, cap. 1. reperitur textus hic, & eius historiam retuli in cap. *accidens*, et 1. *ut lit. non comest.*

^b *I. Barbo.* Illustrum esse hanc familiam apud Venetos iam notauit Ciconius in *præfati.*

^c *Vicarium Venetorum.* Magistratum videlicet, de cuius officio agit Iustinus in *hist. Venet.* lib. 1.

^d *Lapsus temporis.* Videlicet ne tempus elapsum noceat; quod Principis beneficium appellari solet reparatio temporis, l. 11. *Cod. de tempor. appell.* ibi: *A nostro munere reparationem poti præcipimus.* Symmachus lib. 10. *epist.* 31. & 49. ibi: *Cum velles infelicem causâ lapsam reparatione facere.* Et Imperator in l. 1. *Cod. Theodos. de repara. appell.* dixit: *Exhonesti statim redine gratiam.*

CAPVT XXIX.

Idem Priori, & clericis S. Ioannis & Pauli^a Tudertin.

Cum inter vos dudum ex parte vna, & Abbatem sancti Petri de ^b Monte Spolet. cõdice. ex altera, super tertia parte oblationum, & possessionum capellæ sancti Hilarij, & cellarum ipsius, & quibusdam aliis coram bonæ memorie Angelo sancti Andree Diacono^c Cardinali, tunc subdiacono, & Capellano felix recordationis I. Papæ prædecessoris postri, ab eodem prædecessore paribus auditore concessio, questio vteretur, & eidem constiterit auditori à vobis probatum fuisse, per quadraginta annos, & amplius, tertiam partem oblationum eiusdem capellæ vestram Ecclesiam recepisse à clericis inlicitis per Abbatem de Monte, ruisque, filii Prior, eandem tertiam te commississe aliquando colligendam: prædecessor præfatus ipsam terram Ecclesie sanctorum Ioannis & Pauli adiudicans, statuit ut tibi, Prior, liceret per eosdem clericos (sicut fuerat consuetum) partem colligere memoratam, pro ut in eiusdem prædecessoris literis perspicimus contineri. Verum quia postmodum sacerdos prædictæ capellæ asserens obligationum nomine minimè contineri ea, quæ ipsi capellæ in festiuitate omnium Sanctorum mittuntur, vel portantur ad illam, seu ad domum sacerdotis eiusdem intuitu^d defunctorum, necnon quæ in^e cimilini ponuntur, quod de altari suscipit, facit per Ecclesiam in fraudem ab aliquo deportari, & quæ ante Crucem, & in Missa Trinitatis, & ea quæ pro^f desponsatis canitur, & lampades cum oleo, quæ prædictæ capellæ ab aliquibus offeruntur, vel quæ dantur nuntio, qui ad recipienda talia per præfata capellæ parochiam destinatur: & de his omnibus vobis

tertiam

tertiam deoq; exhibere, de aliis nomine tertiz perfoluendis pro rata partis vestram Ecclesiam contingentis retinere nitebatur ad expensas capellæ ipsius necessarias faciendas: dictus prædecessor, ut omnis materia scandali tolleretur, tam de omnibus supradictis, quam oblationibus aliis absque subtractione aliqua integrè perfolui voluit, & mandauit tertiam portionem. At capellani prædictæ capellæ volentes adhuc alterius defensionis fomitem fuscitare, ac dicentes primitias, & decimas, vel ea quæ offeruntur pro Missis mortuorum sacerdotibus, quæ pro septimis, & tricesimis, & anniuersariis, pannos, & alia, quæ infra hebdomadam offeruntur, & mortuorum iudicia, oblationum nomine minimè contineri, de his omnibus partem tertiam soluere vobis nolant. Ut igitur huiusmodi scandalorum materia toties pullulantium radicibus euellatur, volumus, & mandamus, ut per clericum vestrum à vobis in eadem Ecclesia institutum de omnibus supradictis, & de aliis oblationibus, quocunque titulo ad Ecclesiam ipsam peruenerint, sine diminutione aliqua integrè tertia vobis portio perfoluatur.

NOTÆ.

1. a *T. derivat.* Ita legitur in quidam collectione, *sub hoc tit. cap. 1.* ex qua textum transcribo. Ecclesia hæc est parochialis, & eius clerici vitam regularem servant.
2. b *Sancti Petri de Monte.* Quod monasterium est Ordinis D. Benedicti in diocesi Spoletana, ut refert Tambourin *in serie Abbat. verbo Spoletana.*
3. c *Cardinali.* Tituli sancti Adriani portus legendum est, quem creauit Innocent. III. an-

no 1211. ut refert Ciacconius *in eius vita.*
 d *Desimilium.* De quibus egi in *cap. final. de testam.*
 e *Cimelio.* Legendum esse in *cimelio*, iam notauit Ioannes Voßius *de viuis form. lib. 2. cap. 2.*
 De cimelio, & cimeliarcha egi in *cap. 3. de offi. Archid.*
 f *Pro desponsatio.* De qua egi in *cap. ad Apostolicam, de sum.*
 g *Septimi, tricesimi.* De quibus missis, & officiis defunctorum egi in *cap. final. de testamentis.*

CAPVT XXX.

Idem Episcopo F. P. Betrandi Archid. ^a Casaraugust.

EX parte vestra fuit propositum coram nobis, quod dilecti filij Præpositus, & Canonici Aretin. sententiam, quam felici memoriz I. Papa prædecessor noster super Ecclesia sancti Gregorij, quibusdam terris, & parte molendinorum Cupreue, ac Castri Saxi, & molendino posito supra montem de Caliano, ac aliis diuersis articulis in eadem sententiâ comprehensis, inter vos, & eorum canonicam promulgauit, per interpretationem sinistram in reidiuæ quæstionis scrupulum reducere molientes, asserunt illud capitulum eiusdem sententiæ, quo dicitur, ne canonica ipsa impediat, quominus monasterium vestrum præfatum molendinum de Caliano reedificare valeat in eo statu, in quo fuisse dignoscitur tempore mortis litis, esse referendum ad tempus, quo ^a lapillus in denunciationem noui operis iactus fuit: vobis è contrario asserentibus, illud esse intelligendum de tempore, quo lis super hoc inter vos, & præfatum canonicam exitit contestata: quare humiliter supplicastis, ut altercationem huiusmodi per interpretationem capituli supradicti decidere dignaremur. Nos ergo consideratâ eadem sententiâ diligenter, quod in præfato capitulo dicitur de tempore mortis litis, interpretamur esse referendum ad tempus, quo litis ^a contestatio facta fuit.

NOTÆ.

1. a *Casaraugustana.* Ita legitur in quinta collectione, *sub hoc tit. cap. 2.* sed valde corrupta est hæc inscriptio, tam in hac quinta, quam in sexta collectione, cùm in presenti agatur de canonicis Aretinis, qui sunt in Italia; vnde non poterat præsentis causæ cognitio comitari Præpositi Casaraugustani, qui est in Hispania in regno Aragonie. Restituenda ergo est inscriptio ex ipso registo Honorij III. ad hunc modum, *Abbat. & conventus monasterij S. Floræ, ut notauit Cithobius in appendice ad notam huius quinq; com-*
D. D. Gomez. in Decretal. Tom. V.

plationis, in fine. Monasterium hoc S. Floræ est Ordinis D. Benedicti in ipsa vrbis Aretina, ingentibus redditibus, amplissimisque priuilegiis Imperatorum, ac Regum ditatum, ut refert Vghel. *tom. 1. Ital. fol. 450.*
 b *Aretin.* De Aretina Italia diocesi egi in *cap. 2. de ordin. cognit.*
 c *Lapillus.* De hac nunciatione per lapilli iactum egi in *cap. 1. de noui oper. nou.*
 d *Litis contestatio.* Quia licet post ounciationem noui operis per lapilli iactum nihil sit in nouodum, sicut post nunciacionem in iudicio factam, ut probauit in *cap. 1. de noui oper. nou.* tamen
 H h h j. in

in præfati casu in ipsa sententia specialiter cautum fuerat, molestationem readificandum esse in eo statu, ac fuerat tempore mortis litis: unde ad litis contestationem ea verba referri debebant, tum in hoc casu tunc diceretur lis mota, licet in

aliis casibus lis incipiat à citatione, vt docet Felic. Vega in rubric. de iudiciis, num. 44. & in cap. propositis, num. 67. de foro competentis, & probati in cap. vnic. de litis contest.

CAPVT XXXI.

Idem Prælati, & Capitulis vniuersitatis à Constantinopol.

EX parte vestra fuit propositum coram nobis, quod venerabilis frater noster Patriarcha vester, occasione constitutionis cuiusdam, quam venerabilis frater noster^b Albanensis Episcopus tunc Apostolicæ Sedis Legatus in partibus^c Romanæ super legatis edidit defunctorum, & dil. frater l. titulo sanctæ Prædixi Presbyter Cardinalis, dum ibidem legationis fungeretur officio, innotauit, de quibusdam, quæ vobis, & Ecclesiis vestris legantur à decedentibus, tertiam indebitè à vobis exigit portionem. Cum igitur Episcopus, & Cardinales prædicti (sic ex eorum interpretatione accepimus) non intellexerint, quod de his, quæ in ornamentis ecclesiasticis, vel ad fabricam Ecclesiæ reparatione indigentis, aut ad Ecclesiæ luminaria, nec non & de his, quæ pro anniuersario^d septimo, trigésimo, ac vigésimo faciendis, vel de his, quæ personis specialiter, nisi fortè id fiat Ecclesiæ ratione, à quocunque legantur, aliqua deberet solui portio Ecclesiæ Cathedrali: Nos interpretationem eorum ratam habentes, secundum ipsam constitutionem præfatam præcipimus obseruari, firmiter inhibentes, ne in prædictis aliquid fraudulenter in præiudicium Cathedralis Ecclesiæ procuretur.

NOTÆ.

^a Constantinopolitane.] Ita etiam legitur in quinta collectione, sub hoc tit. cap. 3. De hac Imperiali urbe egi in cap. 4. de consuet.

^b Albanensis.] Pelagius videlicet, creatus Episcopus Cardinalis Albanus anno 1211. qui ab Honorio III. in Orientem legatus missus est anno 1218. cum praxualido exercitu, à quo post diuturnam obsidionem Damietta obile Egypti oppidum captum est, vt referunt Iacobus de Vi-

trisco lib. 3. hist. Orient. Vghel. tom. 1. Ital. in Alban. Prefat. fol. 297.

^c Romania.] Idest Thraciæ, cuius caput est Constantinopolis; dux enim fuerunt provincie hoc nomen sortitæ. Prima fuit Flaminia, cuius Metropolis Rauenona erat; alia io Oricote, transito Imperio in Constantinopolio, siem ipsa ciuitas noua Roma dicta fuit, vt probat Bosquetus ad Innoc. III. lib. 1. regest. 13. epist. 33.

^d Septimo, trigésimo.] De omnibus his obuentioulbus egi in cap. finali, de regram.

CAPVT XXXII.

Idem Episcopo^a Tullensi.

TVa nobis fraternitas intimauit, quod cum tibi pro reuocatione oneris debitorum, quo præmeris, duxerimus indulgendum, vt fructus beneficiorum, quæ interim in diocesani tua vacare contigerit, tibi liceat biennio retinere; quidam Apostolicæ gratiæ priuilegium sinistrâ interpretatione restringere molientes, asserunt præbendas, & maiora beneficia nequaquam beneficiorum nomine contineri: super quo interpretationem Apostolicam postulasti. Nos igitur interpretum huiusmodi sententiam reprobantes, auctoritate præsentium declaramus, quod præbendæ, ac alia beneficia generali beneficiorum nomine continentur.

NOTÆ.

^a Tullensi.] Ita etiam legitur in tertia collectione, sub hoc tit. cap. finali. Idest Odoni, qui cum esset cantor ipsius Ecclesiæ, to Prælatum

proprium electus fuit, vt refert Alberic. in chron. ad annum 1218. ibi: Gerardus Muenfis Primicerius, frater Conitui. Hugueni in Episcopum Tullensem electus moritur; Caster ade in Episcopum promouetur.

CAPVT XXXIII.

Gregorius I X. Decano, & Sacrista^a Engo.

TRansmissis nobis literis concinebant, quod significantibus Episcopo, & Capitulo Xanton. quod quadragenarius Canonorum numerus institutus in eorum Ecclesia non poterat obseruari, pro eo, quia non sufficebant Ecclesie facultates, vobis dedimus in mandatis, vt Canonorum, & prabendarum numerum iuxta facultates Ecclesie^b moderantes, statueretis eundem firmiter obseruari: vos vero inuenistis predictae Ecclesie facultates, a tempore statuti numeri adeo excreuisse, quod absque mutilatione prabendarum maior haberi posset numerus in eadem: quare quassistis, an per moderationis verbum literis nostris appositum eundem numerum augmentare, vel minuire deberetis. Quocirca mandamus, quatenus si veteres non sunt minutae prabendae, cum moderatio locum non habeat, ipsarum, & Canonorum numerum dimittat in eodem statu, in quo haecenus dignoscitur extitisse, in utilitatem eiusdem Ecclesie conuercentes augmentum suorum reddituum, donec duxerimus aliter disponendum.

NOTA.

1. ^a **E**ngo.] Engilsmenst videlicet, quae est Ecclesia Cathedralis in Gallia in Comitatu Burdegalensi, ubi etiam est Ecclesia Xantonensis,

de quibus egi in cap. final. de corpore ecclesiae.

^b Moderantes.] De numero Canonorum augendo, vel minuendo iuxta prouentus & redditus Ecclesie, egi in cap. cum ad. de consensu.

2.



TITVLVS XLI.

De regulis iuris.

CAPVT PRIMVM.

Ioannes^a Chrysostomus.

MNIS res per quascunque causas nascitur, per easdem dissoluitur.

NOTA.

1. ^a **C**hrysostomus.] Ita etiam legitur in prima collectione, sub hoc tit. cap. 1. & in Decretis Iuonis p. 8. cap. 233. & sub nomine Palex citatur textus hic a Gratiano in cap. vnus 4. 27. q. 2. & in margine huius textus additur homil. 32. in Mattheum, in opere imperfecto: & extant verba hae volum. 2. eiusdem D. Chrysostomi, ubi alie 27. homiliae extant, vt iam notauit Antonius Augustinus in praefati.

g. penult. Instit. de iure natur. testamentum testamento rumpitur, l. 1. t. 2. ff. de iniuncto rupto: obligatio verbis contracta contrariis verbis tollitur, l. an inuitus 8. q. acceptum, ff. de accept. l. de huius 36. ff. de iure dot. similiter obligatio ex consensu orta contrario consensu dissoluitur, l. si vnus 27. q. pactum, ff. de pactis, l. 1. 2. t. 4. Cod. quando licet ab emptione, l. 72. ff. de contrah. emptum. & sic hypotheca, quae nudo consensu contrahitur, l. si ubi 17. q. de pignore, ff. de pactis, nudo pacto tollitur, l. 2. C. de remiss. pignori. l. 10. C. de pignori. Sic etiam quia seruus manu capitur, unde mancipia appellantur, l. 4. in fine, ff. de stat. hominum, Varro lib. 5. de lingua Latina, vt a potestate liberentur, a manu emittuntur, l. 4. ff. de inst. t. iur. & sicut inter sollemniter testamento testes signatores adhibebantur, ita in eius aperta eosdem testes vocari oportuit, l. 4. l. sed si maior 6. ff. testamentum quemadmodum, Paulus lib. 4. sentent. iur. 6. & sicut clericus cum ordinatur, calicem & cetera ornamenta ecclesiastica accipit, ita & eadem illi auferuntur cum degradatur, cap. Episcopus 11. q. 3. cap. 2. de parit. lib. 6. quod & in exhortatione militis obseruatur, l. 2. q. ignominia.

COMMENTARIUM.

2. **R**egula haec in iure civili expressè traditur in l. nihil tam naturale 35. ff. de R. l. l. proci, ff. de solut. & magna nititur ratione, quoniam generationes, & corruptiones ex contrariis in contraria fiunt. D. Thomas 2. p. q. 7. art. 6. Vnde iura ciuilia ciuili commento solentur, q. minor, Instit. de heredit. quae ab intest. naturalis obligatio naturali ratione soluitur, l. Siueum 95. q. naturalis, de solut. pactum pactu atrogatur, l. si vnus 27. q. pactum, ff. de pactis: lex lege tollitur,

H h h 4

minie, ff. de his qui not. infam. Illustrat Petrus Faber lib. 1. *summus*, cap. 17. Laqueus lib. 13. *semissis*, cap. 1. & 2. immo iure civili attentio hac regula valde vigebar in matrimonii dissolucendis; nam sicut in matrimonio flammis contrahendo confectio iurecedebat, Vlpianus tit. 9. Plinius lib. 18. *hisp.*, cap. 3. Tacitus lib. 4. *annal.* sic in eo dissolucendo diffectio desiderabatur. Festus verbo *Diffarctio*; & sicut in contrahendis nuptiis claus tradere moris erat, ita etiam in dissolucendis eandem solennis fuit ademptio. Tul. philip. 3. D. Ambrosius *epist.* 75. & sicut in contrahendo matrimonio certe verborum formulæ videri consueverant, *Phili in Caius*, & ego *Caius*, Tul. in *oratione pro Murena*, Quintilianus lib. 1. cap. 7. & lib. 5. cap. 10. sic in dissolucendo certe fue-

runt etiam verborum conceptioes vitare, l. 1. ff. de diuortio: probat in cap. 1. *cod. rit.* & de nuptiis testato fiebant, hoc est presentibus testibus, l. 1. *de xer.* C. de repud. Iuvenal. *satyr.* 10.

— Veniet enim signatoribus auspic.

Apuleius lib. 6. de *asino*; ita repudium ratum esse non poterat, nisi septem testibus adhibitis, *leg. nullum*, ff. de diuort. Et tandem sicut mulier cum nubebat, deducebatur in domum viri, l. *mulierem* 5. ff. de ritu nupt. l. *penult.* ff. de donat. inter; ita in casu diuortij mulier de domo expellebatur. Quintilianus *declam.* 161. Illustrat Forner. lib. 1. *rer. quod.* cap. 9. prosequuntur alia exemplis Petrus Faber, Gothof. Bronchorst. & Cnisc. in d. l. *nihil tam naturale* 35. ff. de R. I. Gibal. in *presenti*.

CAPVT II.

^a Beda in homiliis.

ESTOTE misericordes, &c. Hoc loco nobis nihil aliud præcipi existimo, nisi ut ea facta, quæ dubium est, quo animo fiant, in meliorem partem interpretemur. Quod enim est scriptum: Ex fructibus eorum cognoscetis eos; de manifestis dictum est, quæ non possunt bono animo fieri, ut stuprum, blasphemiz, furta, ebrietas, & similia, de quibus nobis permittitur iudicare.

NOTE.

1. ^a Beda.] Ita etiam legitur in prima collectione, *sub hoc tit.* cap. 7. & hæc verba repetuntur inter opera ipsius Venerabilis Bedæ in

Lucam lib. 2. cap. 24. & Raymundus hanc regulam transcriptit ex dicta prima collectione, ubi cap. 1. extat alia D. Augustini ad idem significandum his verbis: *Immo, quod ambigua debemus in ambiguum partem vertere.*

CAPVT III.

^a Idem.

QUI scandalizauerit, &c. Utilius scandalum nasci permittitur, quam veritas relinquitur.

NOTE.

1. ^a Idem.] Sic etiam legitur in prima collectione, *sub hoc tit.* cap. 9. & verba hæc extant apud ipsum Bedam ad caput 9. D. Marti: & hanc eandem regulam in ea expresserat, deduxeratque ex euangelico textu D. Matthæi, cap. 15. D. Gregorius lib. 1. in *Exegeticum*, homil. 7. ibi: Ex qua re nobis considerandum est, quia in quantum sine peccato possimus, vitare proximorum scandalum debemus; si autem de veritate scandalum simitur, vitare permittitur nasci scandalum, quam veritas relinquitur. Idem Gregor. lib. 9. *regulæ*, *epist.* 39. ad Theodisium Patriarcham, à quo acceperat D. Bernard. in *apolog.* ad Guillelmum Abbatem; & iam verò, in suis, ibi: Ipsi itaque illud Gregorianum respondet: *Adulatio est, ut scandalum oriatur, quam*

veritas relinquitur. Et in epistola 34. ad Drogonem, & tract. de præcept. & dispens. cap. 12. D. Thomas 2. 2. q. 43. art. 7. Consonant etiam textus in cap. *visi* 10. *vers.* Pro gravi, de remota, cap. inter verba 55. *vers.* Si autem 11. q. 3. cap. si illa 23. 1. q. 7. cap. 2. de noui oper. nunc. & recte ea iura de scandalo passim, pro quo veritas nunquam deferenda est, acceperant Couat. in *regul.* peccatum, 1. p. num. 4. Mancionis *genial.* cent. 1. cap. 113. Valquez in *episcopo de scandalo*, ad q. 43. D. Thomas, art. 2. 3. *vsque* ad 8. Facit Tertot. de velandis virginibus, cap. 3. ibi: *Bona res neminem scandalizari, nisi malem mentem agnoscat malum suum, quæ de tali bene scandalizantur.* Plura de scandalo viuendo, vel non, concessit Salgado de veteri. Bullar. part. 1. cap. 4. Gibal. in *presenti*.

CAPVT IV.

^a Idem super Marcum.

QVOD non est licitum in lege, ^b necessitas facit licitum; nam & sabbatum custodiri præceptum est: Machabæi tamen sine culpa sua in sabbatho ^c pugnabant. Sic & hodie, si quis ieiunium frerit ^d ægrotus, reus voti non habetur.

NOTE.

NOTÆ.

^a *Dem.*] Ita etiam legitur in primis collectione. *Sub hoc tit. c. 11.* & reperitur hæc verba inter opera ipsius Bedæ *ad cap. d. Marci.*
^b *Necessitas facit.*] Vt probatur in *cap. si*

propter necessitatem, de furtis.

^c *Pugnabant.*] Factum hoc Michabæorum exposui in *cap. 1. de troy. & pact.*
^d *Agimus.*] Lege enim ieiunij non teneantur agroti, & senes, vt probat Narbana *de aetate ad altus homines, anno 60. Gibal. hic.*

CAPVT V.

^a Gregorius VII.

Quod latenter, aut per vim, vel aliâs illicitè introductum est, nulla debet stabilitate subsistere.

NOTÆ.

^a *Gregorius.*] Malè in hac sexta collectione, & in prima *sub hoc tit. c. 4.* legitur *Gregor. VII.* eum sive D. Gregorij Magni, & reperitur in Registro epistoliarum ipsius, *libro 2. indic. 11. epist. 54.* Iohanni Episcopo Rauennati missa, in qua reprehendit ipsum loconem, quia pallio extra Mitharum fulconis utebatur, cum tantum intra, & certis diebus eo vii posset, iuxta traditum in *c. 1. de auferit. & vsu palij:* & quia consuetudinis prætextu excusabatur, ita post alia ait: *Nam & de ipsa consuetu-*

dine tua, quam opponis, Ecclesia, quæ vobis olim, et a patribus vestris probaretur, scriptissimè iam non factis sollicitudinem gessisse cognoscis, impudentes filijs nostris Petrum Diaconum, atque Gandisum Primicerium, necnon & Michaelium defensorem Sedis nostre, vel alias, quæ pro diuersis responsis Romanam a vestris decessoribus sunt transmissi, & hac te in præsentia sua epistole distrahissimè negauerunt. Apparet igitur secretum non potuisse geri, nisi quod usurpabatur illicitè: unde quod latenter subintratum est, nulla debet stabilitate persistere. Gibalinus hic.

CAPVT VI.

^a Idem Gregorius Narfi Patricio.

Dum contemplationis dulcedinem altè descripsistis, ruinæ meæ mihi gemitum renouastis, quia audiui quid intus perdidisti, dum foris ad culmen regiminis immensus ascendi. Tanto autem me percussum mœnore agnoscite, vt vix loqui sufficiam: oculos enim mentis meæ doloris tenebræ obsident. Triste est quicquid aspiciatur, quicquid delectabile creditur, cordi meo lamentabile apparet. Penseo enim, ab alto quietis meæ culmine corruens, ad quantum defectus exterioris prouectus culmen ascendit, & pro culpis meis in occupationis exilium à facie dominantis missus, quasi destitutus viduæ vocabus cum Propheta dico: Qui consolabatur me, longè recessit à me. Quod verò causæ, & nominis similitudinem faciendo, per scripta vestra clausulas, declarationesque formatas, cernè frater charissime, simiam leonem vocas. Quod eo modo vos agere conspiciamus, quo nos scabiosos sæpe catulos, pardos vel rygides vocamus. Ego enim, bone vir, quasi filios perdidisti, quia per terrenas curas recta opera amisi. Nolite ergo me vocare Noëmi, idest pulchrum: sed vocate me Maram, quia amaritudine plenus sum. Quod autem me dicitis scribere non debuisti, vt in agro Dominico cum bubalis non arares, quia in ostenso Beato Petro linto, & bubali, & omnes feræ oblatæ sunt: scis ipse quia subiunctum est: Mastra, & manduca. Tu ergo, qui easdem bestias necdum mastraueras, cur iam manducare per obedientiam nolebas? Aut nescis, quia easdem, quas scripsisti bestias, oris tui gladius occidere recusauit? Quas ergo per compositionem occidere poteris, de illis necesse est, vt in tui desiderij fame satieris. De causâ autem fratrum nostrorum, vt scripsisti, ita futurum, si Deus adiuvet, æstimo: de qua modò serenissimis rerum Dominis scribere omnino non debui, quia in ipso initio non est à ^b quæstibus inchoandum. Sed dilectissimo filio meo Honorato Diacono scripsi, vt opportuno tempore eis congruè suggerat, & mihi responsum sub celeritate indicez. Domnum Alexandrum, domnum Theodorum, filium meum Marinum, domnam Eufiriam, domnam Eudochiam, & domnam Domnicam, meâ pero vice salutari.

NOTÆ.

^a *Dem.*] In hac sexta collectione legitur *Variensis*. Gibalinus hic retinet *Viniariensis*. In prima verò collectione, *sub hoc tit. c. 5.* legitur *Panoni*: sed veram inscriptionem, & integram litteram restituit ex ipso Registro Gregorij Magni, ubi *lib. 1. epist. 6.* reperitur textus hic.

^b *Quæstibus.*] Tam in prima, quam in hac sexta collectione legitur *quæstionibus*, unde communiter repetentes in præsentis docuerunt, non esse à quæstionibus, idest à tormentis in iudiciis incipiendum: sed vera mens Gregorij Magni est, non esse à quæstibus, idest à queris, inchoandum, vt ex ipsa epistola aperè deducitur.

CAPVT VII.

• Stephanus Papa.

Stephanus sanctę Apostolicę, & vniuersalis Romanę Ecclesię Episcopus: omnibus Sper diuersas provincias constitutis Episcopis, in Domino salutem. Plurimum gaudemus in Domino, & in dono gratię ipsius gloriamur, quod fides vestra per bona opera crescit magnificę, & dilatur amplissimę. Sed nimis affligimur, & tribulamur de vestra oppressione, super qua crebrior comœantium vsque ad nos fratrum sermo perlatus est. Non oportuerat quidem ab illis, à quibus sustentari, & portari, atque honorari debuerat, tantis vos oppressionibus concuti. Quapropter necessarium est, vt remediis talium tergiuersationibus, quibus venenosa malicia reuelari, atque obscurari bonitas, & veritas solet, adminiculum non modicum vobis à fidelibus impendatur, atque ab hac Apostolica Sede suffragetur, quos per diuinam gratiam Christi auxilio dignum est adiuvati, ne in totius Ecclesię perturbationem imprudens procedat intentio, & ea, quę à sanctis prædecessoribus nostris, & reliquis sanctis Patribus dudum fuerant prohibita, denuò reuiuiscant. Loci namque nostri consideratione compellimur, ea quę ad notitiam nostram emendanda peruenerunt, propter Dominum non derelinquere, sed digna emendatione corrigere. Et si secularibus officiis ordo suus, & tradita à maioribus disciplina seruanda est, quis ferat ecclesiasticos ordines temeraria præsumptione confundi, audita negligere, & emendanda non opem ferendo postponere? Audiuimus enim, vos à quibusdam accusari, non tam pro vestra culpa, quàm pro eorum libitu, vt vestra rapere possint: & ideo vos nimis affligi, & concui in tantum, vt etiam à sedibus propriis pellamini, & tali occasione Ecclesię, facultateque vestrę vastentur, ac deprædentur. Ista, charissimi, non oportet fieri, nec denuò replicari. Tamen necesse est, vt quę toties vsurpantur, sæpius replicentur, & prohibeantur. Nam quidquid in sacris Deo rebus, & Episcopis iniuste agitur, pro b sacrilegio reputabitur, quia sacra sunt, & violari à quoquam non debent.

NOTÆ

I. ^a *Stephanus.*] In prima collectione, *sub hoc tit.* c. 7. legitur *idem*: sed male, eundem textum hic sic Stephani I. Pontificis, & non Bedę. Verba quę in presenti referuntur, reperiuntur in epistola à ipsius Pontificis omnibus Episcopis missa, ex qua integram clausulam transcripsi. Stephanus hic I. Rom.

Pontifex, creatus fuit die 9. Aprilis anno 357. Martyrioque coronatus fuit die 2. Augusti anno 360. vt testentur Baron. & Cospiolus 50. ann. Scripsit duas epistolas, quę extant tom. 1. *Concilior. Biny.* & apud Baronium. tom. 1. *mon.* ex secunda transcripta fuit presens regula. Similis reperitur in c. mli. t. 2. q. 1. ^b *Sacrilegio.*] Sacrilegium quor. modis committatur, expofui in cap. cum sit 8. de foro compet.

CAPVT VIII.

• Augustinus.

Qui ex timore facit præceptum, aliter quàm debeat, facit; & ideo iam non facit.

NOTÆ.

^a *Augustinus.*] Ita etiam legitur in prima collectione, *sub hoc tit.* cap. 10. vbi notauit

Ant. Augustinus adhuc neminem indicasse, vbi verba huius textus reperiuntur. Gibalinus credit, sententiam esse D. Augustini in lib. de vera & falsa penit. cap. 4.

CAPVT IX.

• Idem in libro de Sapientia.

Desit peccator, quia offendens in vno præcepto, factus est b omnium reus.

NOTÆ.

I. ^a *Idem.*] Ita etiam legitur in prima collectione, *sub hoc tit.* c. 11. & apud Gratianum in c. 1. de penit. dist. 1. & extant verba hęc apud ipsum sanctum in lib. de vera & falsa penit. cap. 14. Facit D. Gregorius relictus à Gibalino in presenti.

^b *Omnium reus.*] Hęc verba sunt D. Iacobi in epist. canonice. 2. vbi ait: Si autem personam accipitis, peccatum operamini pedes gari à lege, quasi transgressores. Quicunque autem totam legem serauerit, of-

fendat autem in vno, factus est omnium reus. Quę sententia, quatenus vera sit, difficile est, liquidum multum vnum præceptum violant, cetera verò seruunt: ergo illius tantum rei sunt. Aliqui apud D. Augustin. de vera & falsa penit. c. 14. aliternt fieri omnium reum, quia omnia peccata dimissa, per ingratitudinem quodammodo redeunt. Glossa, Lyræ, & alij in dicta epistola D. Iacobi affirmant, fieri omnium reum, quia eandem penam damus incurrit, scilicet priuationem gratiæ, charitatis, virtutis moralium, infusarum, ac ipsius glorię, perinde atque

que si omnia precepta violaret. D. August. *epist.* 29. Qui in vno, ait, offendit, factus est omnium reus, quia contra charitatem facit, unde tota lex pendet. Reas itaque sit omnium faciendo contra eam, à qua pendunt omnia. D. Chrysostomus *homil.* 33. ait: Fie omnium reus, quia perdit Detramiciam, gratiam, & vitam spiritualem animæ, atque incurrit mortem spiritualem, & reatum gehennæ, perinde atque qui toto corpore armatus, excepta vna parte, in illa lethalem plagam accipit, quæ illum occidit, æquè se si in cæteris omnibus plagam lethalem accepisset. Cornel. à Lapide in *d. epist.* D. Jacobi, refert ex Burgenfi, & aliis S. Jacobi tempore fuisse hæresim Pharisæorum, qui censabant vnum, aut alterum le-

gis præceptum transgredi non esse græve peccatum, quo Deus offenderetur, nisi omnis præcepta, aut potius eorum pars transgredere: contra quos allicit Apostolus, eum qui in vno offendit, fiet omnium reus, Delique offensam, & iram incurrit, utpote qui tam vnum, quàm alteri præcepit; qui enim vniuersam legem condidit, singula quoque eius præcepta dedit. Etiam textus hic accipi potest de reatu peccati damni, quæ respondet satisfactioni, in qua conueniunt omnia peccata, licet non committuntur inter se, Tapia *tom. 2. causa mor. lib. 3. p. 5. art. 5.* ubi in fine etiam aliter explicat eum D. Augustino *serm. 60. de tempore.* & *epist.* 29. quoad de-
traitionem charitatis, quæ est plenitudo legis.

C A P V T X.

* Gregorius Ioanni Episcopo Constantinop.

Quamuis causæ consideratio me mouet ad scribendum, tamen eo & charitas impellit: quia & semel, & bis sanctissimo fratri meo domino Ioanni scripsi, sed ooo eius epistolæ recepi. Alter enim mihi secularis quidam sub eius nomine loquebatur; quæ si epistolæ eius fuerint, ego vigilans non fui, qui longè de eo aliter credidi, quàm inuocoi. De causa enim Reuerendissimi viri Ioannis presbyteri scripseram, atque de questionibus monachorum Isauriz, quorum vnus & in sacerdotio positus, in Ecclesia vestra subitus cæsus est: & rescripsit mihi, sicut ex nomio epistolæ agnosco, sanctissima fraternitas tua, quia oescierit de quâ causâ scriberem. Ad quæd scriptum vehementer obstupui, necum tacitus voluens; si verum dicit, quid esse deterius potest, quàm vt agantur talia contra seruos Dei, & ipse nesciat qui præsto est? Quæ enim potest esse pastoris excusatio, si lupus oues comedit, & pastor nescit, & c.

N O T Æ.

I. a *Gregorius.*] Ita etiam legunt in prima collectione, *sub hoc tit. c. 14.* & restituitur textus hic in ipso Regesto epistolarum D. Gregorii, *lib. 2. epist. 31.* ex qua restituo præsentem regulam; non tamen integram epistolam transferibo, quia verba, quæ sequuntur, parum, aut nihil faciunt ad præsentem regulam, in qua tantum intendit Gregorius

doctræ, non excusari Prælatus propriam prætextu ignorantiz, si oues peccant, eum regulariter pastores vigilare debent, *c. res. 2. p. 4.* & ideo omnem custodiam præstant, *l. qui mactadem, ff. de locat.* ideoque Prælatus ex negligentia tenet, docetur in *cap. dictum, §. 1. dist. 8.* & in his quæ ad officium spectant, regeri Prælatos, & officiales sese diligenter gerere, ex hoc textu, & multis instantis probat Alber. *Gemil. lib. 1. Hispan. aduocat. cap. 19.*

C A P V T XI.

* Lucius III. Eborac. Archiep. & London. Decan. & Abbati de Filien.

Retulit nobis dil. fil. noster I. Archidiaconus Cistren. quod Episcopus eius pro eo, quod Decanatum, tanquam quem sibi de iure credit competere, viodicare laborat, ipsi prorsus infestus, iura ipsius minuere, & quæ ad Archidiaconatum de consuetudine, & de iure spectare ooscuntur, turbare, & subtrahere post appellationem ad Sedem Apostolicam factam oon desistit. Præterea homagium, & fidelitatem nouam ab eo pro sua requirit voluntate. Volentes itaque patietiz, & iustitiz ipsius Archidiaconi paternam dilectione providere; d. v. per A. f. m. quat. inquisita diligentius veritate, si eum prædecessori Episcopo, & successoribus eius fidelitatem iurasse confiterit, iam dictum Episcopum ex parte oostra moneatis, & ecclesiasticâ censurâ nullius ap. ob auctoritate nostrâ cogaris, vt iura Archidiaconatus integrè possidere sine contradictione, & ap. cess. permittat, & ab exactione homagij, & fidelitatis omnino desistat: indignum siquidem est, & à Romanæ Ecclesiæ consuetudine alienum, vt pro spiritualibus facere homagium quisquam compellatur.

N O T Æ.

I. a *Lucius III.]* Ita legitur in hac sextâ collectione, in prima autem, ubi *sub hoc tit. cap. prout.* reperitur præfatus textus, nulla inscriptio ponitur, tam tamen, & integram litteram restituo

ex *cap. 2. de excessib. Prælat. in 2. collect.*
b *Cistren.]* De Cistrensi, seu Cisterciensi Angliz Ecclesiâ agit in *cap. 2. de corpore viciat.*
c *Facere homagium.]* Testum hunc exposui in *cap. ex diligenti, de finonia, cap. 2. de iur. iur.*



ADDENDA QVÆDAM,

Et suis locis reponenda, prout in sequentibus notatur.

In Apparatu.

IN apparatum istum typis datum, peruenit ad manus meas vetus Bibliotheca Pontificia, nuper edita opéra, & studio Henrici Iusselii, ubi erant veteres canonum collectiones, tam Ecclesie Orientalis, quàm Occidentalis; ex quibus constat, in Oriente primum Ioannem Scholasticum Antiochie Presbyterum, Patriarcham CP. à Iustiniano electum, collectionem canonum Orientalium in quinquaginta titulos edidisse. Deinde Alexium Aristinum Diaconum Ecclesie CP. (de quo Gilbertus Genebrardus lib. de Trinit.) epitomen canonum fecisse iussu Imperatoris Comneni. Item Simeonem Magistrum Logothetam, epitomen etiam ipsorum canonum, sed diverso ordine edidisse. Deinde Arsenium Monachum Patriarcham CP. qui floruit circa annum 1255, synopsim canonum sub nomine Nomocanonis scripsisse; quas collectiones nuper dedit Henr. Iussel. tom. 2. Bibliotheca. Circa Ecclesiam Occidentalem constat Dionysium Exiguum ex Conciliis Latinis & Grecis composuisse suam collectionem, præcipue ex Codice canonum Ecclesie vniuersalis, edito paulo post Concilium CP. primum, sub Theodosio Magno, à Stephano Ephesino Episcopo. Vtrumque Codicem, necnon collectiones Ferrandi, & Cresconij dedit Henr. Iussel. tom. 1. dicta Bibliotheca. Aliam collectionem elaborauit Ferrandus, qui floruit Iusseli, & Iustiniani temporibus in Ecclesia Carthaginiensi, cuius fuit Diaconus, ut ex Chitunico Viatoris Tunnensis constat, & eius meminit Facundus Hermetensis Africe Episcopus. Longè post Ferrandum suam edidit collectionem Cresconius, qui floruit per annos 527. ut in eo notatur Baroulus, eo tempore, quo Ioannes Panticus Victorium de Sarrazenis in Africa reportauit, quam Cedrenus ad annum tertium Imperij Leoonij refert.

Traditiones Ecclesie, de quibus egimus in hoc apparatu, probant, & defendunt S. Basil. de Spiritu, famit. cap. 37. Dogmata, qua in Ecclesia seruauerunt, & predicantur, partim ex scriptis doctrina habemus, partim ex Apostolorum traditione ad nos delata. Irenæus cap. 4. lib. 2. Cyprianus epist. 74. Damascenus lib. 4. orthodox. fidei, cap. 17. D. Aug. relictus in cap. in hier. 7. diff. 11. Imperatores in l. cum rella 5. Lumen, l. cum Saluatorem, C. de summa Trinit. Agunt de eius vltra congestis in præfenti, & in cap. 1. de consuet. Bodoardo tom. 1. de mor. triuui. cap. 7. q. 1. mon. 7. Beccan. in sum. tom. 3. p. 2. tract. 1. cap. 4. num. 1. Christ. sup. in schol. ad Synod. 8. Gener. tom. 2. fol. 1272.

De auctoritate additam Amphilorum legit Jacob. Bonifred. in pagin. ad can. Pent. cap. 5. fol. 9. Ludou. Bail. in summa Concil. tom. 1. pag. 20. Christ.

Lupus in scholis ad can. 2. Syn. Tral. pag. 867. Dominic. Graulina cabet. prescript. p. 2. comen. 8. art. 1. ad 4. Roussel. lib. 1. hist. Pont. iussel. cap. 4. numero 6.

Addenda & reponenda in Libro primo.

Ad cap. 2. de summa Trinitate.

IN hoc textu illud non duxi omitendum, videlicet Trinitatis appellationem vestitiorem esse, quàm credendum est viris eruditissimis, qui scribunt, eam primum receptam fuisse, in Synodo prima Alexandrina celebrata anno 315. nam Iulianus Martyr, Scriptor longè antiquior, in libro de expositione fidei, ait: *Unitas namque in trinitate intelligitur, & trinitas in unitate nascitur.* Et Lucianus, qui eodem fere tempore vixit, in dialogo insecto Philopathesti, &c. aperte & distinctè significat, quæ tunc fides esset Christianorum, & mote suo Religionem eorum irritet, dum ait: *Quænam igitur tibi inuocabo Deum, alii regnantem, magnum, immortalem, celestem, Filium Patris, Spiritum ex Patre procedentem, unum ex tribus, & ex uno tria.*

Ad cap. Ecclesia, de consist.

Originem huius Ecclesie sanctæ Mariæ illustant. Franc. Maria Florent. in Martyr. die 5. Augusti, exercit. 12.

De statuti formam eorum præscriptentibus testamentis & coartatibus agit Sperellus decis. 10. 11. 12. 13. & 139.

Ad tit. De rescriptis, cap. 1.

In verbo *Ad apostola*, addit Conell. Chalced. act. 1. Anaclet. in epist. Concil. Aquilei. in epist. ad Græc. Imperat. totius orbis Romani apud Romanam Ecclesiam. Theodoretus Tyrcolis epist. 116.

In cap. nonnulli 28. num. 3.

Certum est, locum vocem gallicam esse. Iisd. lib. 15. orig. cap. 16. *Admirationem tuam nos millia dicimus; Græci stadia; Galli leucas; Aegyptii synes; Persæ parasangas.* Iordanes de rebus Gallicis cap. 26. *Connentur itaque in campo Catholamici C. linguas, ut Galli vocant.* Ammianus Marcell. lib. 15. *Qui locus exordium est Galliarum, exindeque in milibus passibus, seu leugis; intra metiamur.* Strabo lib. 4. probat Altescena lib. 2. de reb. Aquit. 5.

Ad

Ad cap. 1. de consuet.

Locum Plioj in verbo *Xenit*, relatoe illu-
strat Federie. Brunel. ad leg. Cinciam, cap. 7.

In cap. 4.

Ad solutionem primæ difficultatis: Videndus
est Morious *lib. 1. c. 1. g. cap. 1.*

Ad cap. 2. de elect.

Præsentem canonem illustrent Christi. Lupus
in eius scholiis, Altesiera in capio *Cano inter*,
hoc titulo. Simond. in notis ad Synodos *lib. 4.*
epist. 35.

In cap. 4. num. 4.

Hanc Abbatis Nertini sententiam impro-
bat Franciscus Florens ad *causum de auctorit. &*
usu pal. & credit in præsentem refecti episto-
lam Paschalis II. Milam Colossensem Archie-
piscopo, & ita tam ad Hungariam pertinere.
Mouetur perdoctus vir, primò quia in ea testimen-
tur depositiones, atque translationes Episcoporum,
quæ io ex Provincia nua Regio habant,
quæ Bella Rex Vagaria concessit Alexandro III.
et ubique auctoritate, & consilio eius, vel facies-
serunt suorum depositiones, seu translationes
Episcoporum non faceret, vel fieri permineret.
Diploma Belle extat inter acta Alexand. III. &
Federici I. emendatius quàm apud Bironium ad
annum 1169, num. 40. & 41. Sed pro sententia Ab-
batis Nertini, quam amplexus sum, facit quod
legitur in collecti. *historiarum*, quam Authot in-
scripsit Flores *Historiarum*, his verbis: *Tempore*
Paschalis fuerunt Reges Sicilia Rogerius, & Ber-
nardus Frater, & cum misisset Paschalis Archiepisc-
opo Penemurano pallium, & fideiatis inuicemum
exigeret, ostendit ea rei Archiepiscopo, & Rogeri,
atque opinione Regni: dicebant enim rem esse nam,
& habere speciem tyrannidis.

In cap. 5.

Schlisma in hoc textu relatum Iasè narrat
Nouus Notator Peti Bieffensis in *epist. 17.*

In cap. 7. num. 9.

Ætas triginta annorum dicitur perfecta, l. 3.
ih. 2. lib. 10. *legum Visigoth.* Nozian. *art. 40.*
Quia hæc ætas perfectum virtutis argumentum,
doctendique magnitatem habet. Theoph. in *Lucam*
cap. 3. *Ætas illa perfectissima est.* Et in *Joan. cap. 1.*
Vir autem dicitur dominus, seruasse propter ætatem
perfectam, quoniam triginta annorum erat cum bapti-
zaretur. Gregor. VII. *epist. 5.* Ad Episcopos Britannia:
Non admitti inuicem quendam prætorum genere,
& huiusmodi maribus ad Episcopatum omni portandum.
Hicemarus tamen in vltia sancti Remigij ait, cum
æto 21. Archiepiscopum electum esse. Et ut
cætera exempla mittam, Eleuterios propter exi-
miam virtutem, vigesimum ætatem ægna Episc-
opus Illirici ordinatus est, ut scribit Niceph.
Callistos *lib. 3. hist.*

In eodem commentario, verba illa: *Quia non*
cognoui literaturam, Septuaginta legunt: *Quia non*
D. D. Genzal. in Decretal. Tom. V.

cognoui negotiationes. Quos sequuntur Arnob.
Chrysost. & August. Versio Ethiopica habet
Quia non cognoui numeros. Chaldaica: *Non co-*
gnoui numerum. Quæ literæ recentis verum sensum
huius loci assignat Nouus Notator Peti. Bieff.
in *epist. 17.*

Ad tit. de auctorit. & usu pal.

Originem huius pallij repetunt, & illustrent
Morious de *sacris ordin. vi. nati*, num. 19. Andreas
Sausay de *usu pal. Gallie Scrip. cap. 3.* ubi for-
mam ipsius pallij tradit, & vsque ad cap. 12. de
usu huius pallij agit; necnon titulum hunc illu-
strat, & post eum Franc. Flicens, quibus illud
addendum duxi, nouum oco esse, pet pallij tradi-
tionem, quandam supremæ maiestatis authorita-
tem conferri, ut facillè Imperatores Romanoa
liquet ex Iacris Imperatoris Commodi ad Clo-
dium Albinum, apud Capitolinum in Albino 1
Et tibi insigne aliquod Imperialis dignitatis accedat,
habebis vultu cocine pallij facultatem, me præsentem
& ad me, & cum sacrum fuerit.

Ad cap. 1. de renunc.

Potest etiam præfens textus referri ad renun-
tiationem factam ab Eckillo Lugdunensi Archie-
piscopo, qui ab Alexandro III. petuit licentiam
cedendi, ut ad Cistercienses Monachos se trans-
ferret; quam iteratis precibus impetravit, ut re-
fere Saxo Gram. *lib. 14.* Videnda P. Cellensis
lib. 1. epist. 23. & lib. 7. epist. 17. & lib. 8. epist. 1.

Ad illa verba huius textus, *cum Principe terra*,
nota ex illis facillè constare, Episcopos renuncia-
tionem facere debere cum consensu Principis (so-
colatis: quod etiam probatur exemplis Greg.
Nozian. qui in sua oratione alloquitur Theodo-
sium, & ab eo millicem imperauit, à quo in
Episcopum promotus fuerat. Et Arnolphi Mo-
tensis Episcopi, qui à Cio hario secundo petiit
cedendi facultatem, ut io historia Pasculum Mo-
tensium refertur. Olim atque causas renuncia-
tionem Episcoporum fuisse probatas in Concilio
Provinciali, coollat ex epistola 3. Concilij Ephe-
sini ad reuerendissimam Synodum Paphlagie, relata
ab Harmenopilo in *Brenario Canonum. tit. 8.* &
ex libello renuntiationis Hetracienis Metropoli-
tani, qui extat *lib. 6. Iuris Oris.* & ex notata à
Balsam. in *can. 76. Apost.*

Ad finem commentarij capituli 2. adde.

Lietz eum post renunciationem nullum ius
retineat renouant in beneficium, cap. 3. hoc ut.
Carnot. *epist. 131.* tamen si denuò eligant, ad-
mittendus est ad possessionem, cap. ex infirmitate
26. de *summa. cap. 1. hoc tit. in 2. collecti.* Fiane.
Florens ad hunc titulum.

In cap. 4. ad finem num. 7. adde.

Et ita Imperatores posse liberè Imperio re-
nunciare atque Pontifici licentia, docuit Caiac.
lib. 1. resp. Papin. in l. 20. ff. de effu. Presid.

In cap. 8. adde.

Certum est, clericum beneficio renunciantem in manu laici, illud non amittere, iuxta tradita in cap. *Admones*, hoc sima. Nam sicut in adoptione beneficij, ultra laici patroni consensum desideramus institutionem Episcopi, ut probavimus in cap. 9. de *insepation*, ita in cessione desideratur superioris, hoc est Episcopi instituentis auctoritas. Nec sufficit patroni licentia & laico clerico in manu eius beneficio renunciatis, nihil a se, ut illud amittat, sicut alias nihil agere significat in §. *finis*, de *testamentis*, & apud Vipsianum tit. 1. docuerunt Franc. Florent. & Altesseita ad hunc textum, Ioan. Costa ad hunc tit. Nec contrarium deciditur in presenti textu, nam in eius specie clericus, qui renunciavit beneficio in manu laici, illo priuatur, non quia renunciavit, sed quia ausus fuit iterum illud accipere de ipsius laici manu, contra sacros canones, quos reuult in cap. *quisquis*, de *electis*. Nec etiam contrarium docetur in cap. *Gissaldus* 28. *quasi*. 2. Nam in eius casu renunciatio non fuit facta in manu Patroni laici, sed coram aduocato, seu defensore Ecclesie, qui pro laico non habetur, ut constat ex cap. *Saluator* 1. *quasi*. 3. cap. *Præterea*, cap. *Cum autem*, de *insepation*, ubi de eius officio agimus.

In cap. 9. post verbum Carleoli, adde.

Eius mentionis in cap. cum venisset, de *instit.* apud Houdeo, in *Henrico primo*. Ecclesia verò, que in presenti vocatur de *Malebrus*, sita est in diocesi Haveracensi, & vocatur *Mailros*, ut constat ex D. Bernardo in *vita Malac.* cap. 10. & Beda lib. 3. *hist.* cap. 16. ibi: *Porro fratribus, qui in Lindisfarneensi Ecclesia, stantibus abbatibus, remanere mauerunt, Proposuit est Abbas iura vir reuerendissimus, ac manifestissimus Eata, qui erat Abbas in Monasterio, quod vocatur Mailros. Et idem lib. 4. cap. 27. Inuicem autem primi Monasterium Mailros, quod in ripa Turdi fluminis possum, tunc Abbas Eata, vir omnium manifestissimus regebat.*

Ad finem comm. cap. 11. adde.

Hec veta sunt, & sacris canonibus consensu, nam etiam quæ deotionis causa relicto Episcopatu in monasterio fecerit, ut olim plures fecerunt, quos referunt P. Dam. in *suæ epist.* Leo Ostiens. in *chr. Cassi.* lib. 2. cap. 17. ibi: *Eodem tempore Adelbertus Seleuann Episcopus, relicto Episcopatu ex licentia Romani Pontificis ad hoc monasterium venit: iterum in Episcopom eligi possit, tamen qui ex graui crimine in monasterio detrusi fuerat, siue Episcopi, siue laici, iterum ad honores Ecclesie promoueri non poterant. ut probatur in cap. 1. de *bigam. non ordin.* Tamen pro vera interpretatione dictæ capituli, hoc sciendum est, cum canonem falsò Coeolio CP. tribui à Phocio, seu potius eo propoente, editum fuisse contra Ignarium, quem tunc tunc ipse Phocius compulerat, & in Monasterium quasi penitentis peragendæ eam detulerat. Vnde ut nulla spes restitutionis illi maneret, eumque eo canone statui, ut quicumque de Pontificali dignitate ad monasticam vitam descenderet, non posset iterum ad*

Pontificatum promoueri. Latius persequitur ipsius canonis historiam. Christ. Lupus in *sibol. adidem.* Concil. rom. 2. cap. 13.

Ad cap. 2. de suppl. neglig.

Sordiditatem monachorum in hoc textu improbare, iam notum Arnulphus Lexou. ap. 69. *Est quiddam, quod tam meum, quam alias valenter angit Ecclesiam, quorundam scilicet rapax, & imperatoris audacia monachorum, qui quo liberius effluent, seculari potentia præsidia redimentes, primi Episcopo omnem obedientiam subtrahunt, & Parochiales Ecclesias cum altariis, & decimationibus, caeterisque beneficiis, de manu laici recipere, patiti quilibet, sacrilega temeritate præsumunt. In his erga ab eis, nec canonicus ordo, nec Episcopatus assensus exigitur, sed detrahitur ad proprium eorum viciu, mercedem in tanta paupertate ibi constituta sacerdotes, ut ad exhibitionem suam, & ad onera Ecclesie portanda, non habent, quod episcopi sufficeret, aut curosi. Generale est hoc, sed in Episcopatu meo vehementius hoc est præstita malignitas, nec iam nobis cuiuslibet rationis obtemperat, sed falsis ac inuicibus nobis, præsidioque violentia seculari assensu.*

Ad cap. 1. de Sacram. non iter.

De manus impositione in ordinatione Presbyteri, & Diaconi adhibita, agunt latè Morinus de *sa. cris ordin.* excerpt. 7. & 9. Atque diu in *concord. Sacram.* lib. 6. cap. 6.

In cap. 17. de filiis Presbyteri.

Huius corruptelæ Ecclesie Anglicanæ meminerunt Anselmus lib. 2. *epist.* 33. *Cavanici quidem, & Presbyteri hoc illi (Belvacensi Episcopo) faciunt, quia eis a patris consuetudinibus, & maxime a mulierum reproba conversatione vult prohibere, & filios eorum, sine quibus sub secularium placium habentes eligunt, a probandorum hereditaria successione, atque à sacrorum ordinum promotione conuincunt.* Et Ioannes Saresbar. *epist.* 28. *Inter cetera Ecclesiam de Effigebam, quam eis potestate Dominus fundi, donauit Dominus Viator in iniuriam Apostolica Maiestatis, & consensum sanctorum canonum, contulit eandem publicano serui laico filio sacerdotis, qui in eadem Ecclesia ministrabat.*

Ad cap. 3. de corp. vitiat.

Retinendam esse inscriptionem *Paisiensis Episcopi*, & in hoc textu referre Innocent. Olini, docet Nouus Notator Petri Bles. ad *epist.* 126. ubi eius præclara gesta refert.

In cap. 1. de cleric. pereg.

De fraternitate literis agunt Siermond. in *unitis ad Siden.* lib. 6. *epist.* 8. Fabricius ad *lib. 3. tit. 1. parat. Balsam.*

Ad conclusionem textus in c. fin.

Illustrant Altesseita lib. 5. *differt.* cap. 19. Crespi *com. 1. differt.*

Ad cap. 1. de offic. Archid.

Archidiaconi officium à Principe Leuitarum repetit And. Saulay de mystica Gall. Scriptis fol. 111. Certum tamen est, iam à primis Ecclesie seculis Archidiaconos ordinatos fuisse; siquidem eorum mentio reperitur apud Optatum Mileuit. lib. 1. Cum corruptionem Archidiaconi Cæcilium ferre non posset. Ilidor. lib. 2. de diuina offic. cap. 10. In Concil. Emenit. can. 10. Tolet. 4. can. 4. Aquigran. 2. canon. 4. Cabil. 2. can. 15. Parisi. can. 7. Maricon. 1. can. 8. Aurel. 4. can. 20. Agath. can. 20. & 23. Alitiss. canon. 6. 10. & 43. Bize. 1. can. 5. In initio scilicet Concil. Chalcid. apud Hormisdum episc. 36. Leouem Mag. episc. 92. Iam ab illis temporibus Archidiaconis variis muneribus credita fuerunt, quare dicuntur oculi, & baculi Episcoporum in cap. ad huc, hoc tit. & à Fulberto episc. 34. qui in Archidiaconum non tantum esse Episcopi oculum, sed dispensatorem pauperum, & incipiensium ecclesiasticorum. Arnulf. Sigienfis tract. in Girard. cap. 1. Animorum custodes, Episcopales oculi, Ecclesia saluanda.

Vnde illi publicam reconciliationem petulantibus dabant, cap. 2. de futuris: ordinandos Episcopos representabant, ut probati in capite vniuersi de se sint. Episcopo celebranti, & prædicanti assidebant, ut passim legitur in Pontificali Romano. Imò & solemniter prædicabant: exterius visitabant. Concil. Aurel. 3. canon. 20. Presbyterque in Ecclesia obsequia refert D. Chrysostomus hom. 14. in episc. ad Rom. Quod illis prohibitum reperies in Concilio Arelat. 2. can. 15. Ne deinceps essent Diaconi. Pro cuius expositione videndus est Saulay ubi supra. Viduatum, pupillorum, & peregrinorum cura illis competebar. Concilium Carthaginense 4. Clericorum motes corrigebant. Concil. Aurel. 4. canon. 26. Presbyteria christiana suo tempore tradebant. Concil. Alitiss. can. 6. Alia eorum officia refert S. Idid. in episc. ad Landis. Cordub. Episc. quam refert Loyla ad finem Concilij Tolet. 8. & nonnulla complectitur Raymundus in hoc titulo. Quæ omnia accipienda sunt, si adit consuetudo legitime præscripta: ideo permulta iam vbiq; obsoleverunt; alia quibusdam tantum in loca retinebant. Ob hanc in spiritualibus iurisdictionem, & in temporalibus administrationem, lapsu temporis ceperunt Archidiaconi non solum alia Diaconis, vetum & Archipresbyteris præponi, cap. Archipresbyter. 25. diff. Quare legimus hanc elationem coercitam in canon. 14. Concilij Nixen. Leodic. canon. 24. Carthag. 4. can. 37. Agath. can. 65. Arelat. 2. can. 14. Andeg. can. 2. Vi Diaconi nomen Presbyteris cum omni humilitate deferendum esse. Cabil. 2. canon. 15. Dicitur est, quod in plerisque locis Archidiaconi super Presbyteros parochianos quandam exercere dominationem, & ab eis consensum exigant, quod magis ad tyrannidem, quam ad reuerentiam ordinem peruenit. De qua Diaconorum elatione compellendus ego in cap. statim, de maioribus, & obediens. & videndi sunt Moinius de sacris ordinat. exercit. 1. cap. 3. per tot. Novus Notator Petri Blef. ad episc. fin.

Ad tit. de offic. Archipresbyt.

Archipresbyterorum dignitas valde antiqua D.D. Gencel. in Descript. Tom. V.

In Ecclesia est, siquidem eius mentio fit in Concilio Carthag. 4. canon. 17. Episcopus gubernationem viduatum, & pupillorum, ac peregrinorum, non per seipsum, sed per Archipresbyterum, aut per Archidiaconum agit. Ratio autem instituenti eos, ea fuit; nam aucto fidelium numero per urbes, agros, & vias, necesse fuit ibi plures Presbyteros instituire; & licet primis temporibus, qui præerat omnibus his Presbyteria, tantum primus Presbyter diceretur, postea dictus fuit Archipresbyter, qui curam gerebat Presbyterorum vrbicorum, seu rusticorum, etsi in Ecclesia Orientali tantum primus Presbyter, vel Protopresbyter appellaretur, ut probat Moinius de sacris ordinat. exercit. 16. cap. 1. Iurisdicção Archipresbyteri pro locorum, & temporum varietate varia fuit, modò præscriptione aucta, modò restricta. Quæ fuerit antiquior, constat ex hoc titulo, & ex Concilio Aquigran. 1. can. 4. Epau. can. 8. Archipresbyter domi dicesim tenet, de his qua emerit, aut Ecclesia vniuersi scripturam faciat, aut ab eis, quom tenet, Ecclesia ordinatione discadat. Concilio Alitissid. can. 44. Si quis ex secularibus infirmationem, aut commutationem Archipresbyteri sui, consummari faciente, audire distulerit, tandem à liminibus sanctæ Ecclesie habeatur extraneus, quando iam solarem institutionem adimplere distulerit. Sic cap. 4. 24. diff.

In cap. 3. num. 2. adde.

Benedictionem ergo maiorem, & solennem Archipresbyter dare non potest, sed tantum Episcopus, cap. Denique, 21. diff. vel Abbas, cui ex privilegio competit, cap. Abbas, de primis, lib. 6. Minorem verò Archipresbyter dare potest ex hoc textu, & cap. Ecce ego, 95. diff. cap. cum ad celos brandas, de consecr. diff. 1. Facit D. Hircan. ad Rusticum Narbon. Episcop. de septem gradibus: Si Presbyter Christum consecrat, cum in altario Dei sacramenta benedicit, benedicere populo non debet, qui Christum etiam meritis consecravit? Notatus Altiterra lib. 6. differt. cap. 9.

In cap. 4. num. 1.

Hæc etiam verba reperiuntur in canon. 13 Concilij Reglat celebrati anno 850. ex quo hunc textum transcriptum esse credit Altiterra lib. 6. differt. cap. 8.

Ad tit. de offic. Custodis.

In cap. 1. ad finem numeri primi, adde: Casal. de ritib. Eccles. cap. 41. Fortuo. Schac. tom. 2. Elebricif. cap. 6.

Ad tit. de offic. Deleg.

In cap. consulti, 24. num. fin. adde: Censinus de die natali, cap. 24. Plurimum supra post occasum solis esse existimant, quia est in duodecim tabulis scriptum sic: Sol occasus supra tempus est. Vnde Caius lib. 2. instit. tit. 2. §. 31. scripsit, Margistibus vespertinis temporibus in publicum esse inconueniens fuisse. Et Iustinian. in præfatione Novel. 13. ait: Sole decumbente exurgie cingulum, quiescit soterum sole debilitato. Et in

Nouv. 82. Italiani, cap. 76. iobentur sedere iudices in Basilica à matre usque ad vespertam. *Faciot D. Cyprian. de lapsis. 7. D. August. ad Donat. post collat. capit. 12. Illustrat Filesc. lib. 3. selecti. p. 282.*

Ad tit. De offic. Ordin.

In cap. 5. ad finem n. 5. adde: Hæc etiam sententia probatur ex eo, quod excommunicatio est censura propria soli Ecclesiastico. *Dionys. Ateop. de Eccles. Hierarch. capit. 7. Sic etiam segregandi vim habent Pontifices, ut Interpretes diuina iustitia.* Quare dicitur mocko Episcopalis, in capit. visis 16. quest. 2. Bonnus Episcopalis, in Concil. Tribur. can. 18. *Nemo contemnus, neque transfugatur hancum ab Episcopo superpossum.* Et eodem excommunicatio à SS. PP. comparatur depotationi, quare appellatus bannus Christianitatis, in Concilio Agathensi relato in capit. 2. de purgat. canon. totedictum christianitatis apud Mauch. Parid. in editio Henric. II. Regis Angliz: Si quis inuictus fuerit ferens literas Domini Papa, aut mandatum Thome Archiepiscopi Cantuariensis interdictum christianitatis, arceatur, & retineatur. Sicut ius depotandi tantum fuit penes supremos Magistratus; ita potestas excommunicandi residet penes supremos Antistites. Accedit, nam si Presbyter non potest reconciliare solenniter penitentem, Concil. Carthag. 1. can. 3. Carthag. 3. can. 86. cap. quomodo, 68. dist. capit. ministrare 26. quest. 6. quomodo poterit eum commoione Ecclesie priuare? Priorem tamen sententiam defendit Altesfetta lib. 6. dissert. cap. 8.

Ad tit. de maiorit. & obed.

In capit. fin. adde: Altesfetta lib. 4. de rebus Aquit. cap. 4.

Ad titul. de treuga, & pace, cap. 1.

Petrigrinorum priuilegia refert Gethfetus de peregr. capit. 11. & de Agricolis agit Maolerus 3. part. Monarch. lib. 5. cap. 5. & pro expositione canonis 3. Concil. Arelat. 1. videndus est Samuel Petitus lib. 6. obseru. cap. 15.

Ad tit. de Procurat. cap. 5.

Illustrat conclusionem Ranchinus lib. 3. ver. cap. 11.

Addenda, & suis locis reponenda in Libro secundo.

Ad tit. de iudiciis, cap. 1.

DE potestate deponendi Episcopos agit Maolerus 2. part. Monarch. lib. 3. cap. 3.

In cap. 2.

Imperatores Catholicos retinuisse nomen Pontificis, docet probat Seldenus tom. 1. de iure Syed. lib. 1. cap. 10.

In cap. 3.

Præsentem conclusionem agnouit Ioan. Sarristat. epist. 89. *Vnde, ut asserat, illustrat Mlesfium Comes Theobaldus, Princeps quidem iustitia amator, & iuris Cismontani peritissimus, ad quem Episcopus Pruteniensis liberam causam transferebat, ut quod ad ipsum rei ista iura fendi pertinebat, accitis potioribus Episcopo Gallia, consilio eorum, aliorumque sapientium, causâ cognita, parte desuncta, eos legitimos agnosuit heredes, eisque obesse non debere censuit quicquid in fraudem eorum datus esset procurant.*

In cap. 8.

Immunitatem clericorum probant Gethf. lib. 1. confid. aduersus Venetos, per tot. Sperellus decis. 17. & 18.

In cap. 10.

De anathemate, & eius usu agit Seldenus tom. 1. Syed. lib. 1. cap. 2.

Ad tit. de foro comp. cap. 1.

Historiam huius Concilij Chalced. suæ natas Christianus Lupus in scholis ad Concilia Genæ, tom. 1. cap. 8.

Ad tit. de feriis, cap. fin.

De Paschate videndus est Nicol. Faber in nouis ad epist. 83. lib. 10. D. Ambros. & de Rogationum usu agit Sinmodus ad Sidon. lib. 5. epist. 14.

Ad tit. de restit. spol. cap. 8.

Hanc spoliarum restitutionem inuestiti, seu reuestiti dixerunt Gofridus Vindoc. lib. 2. epist. 11. ad Ioan. Carnot. *Regamus interim, dilectissime Pater, humilitate quâ possumus, ut de his, quæ Ninetus, & sui nobis violenter abstulerunt, & adhuc crudeliter detinent, vestra eorum cogente iustitia, mereamur inuolui;* quia rebus propriis spoliati, sicut ipsi melius nostis, antequam quæ eis ablata sunt, rursus potestati eorum restituatur, ad iudicium minime debent canocari. Suger. in vits Ludouici Trilli: *Voluciter siquidem de Curia exenti, qui Comitum conuentum extraordinario, & statum ordinariæ vestri ore defensoris præcipiam, de iure in Curia eorum ratiocinando, certa die decertem.* Iuo Carnot. epist. 172. *Vnde etiam dicebat, prius se esse reuoluendum, antequam transferri ad alium aliarum causarum.*

Ad tit. de probat. cap. 8.

Illustrant conclusionem hanc Sperell. decis. 155. Cæpsi tom. 2. obseru. 35. cum duabus sequentibus.

Ad

Ad tit. de Iureiurando, cap. 4.

In præfati textu referri formam præstandi iuramentum à Metropolitano tempore, quo pallium accipiunt, probant Franc. Florent de authoritate & usu pallii, Saulsy de mysticis Gallicæ Scripitoribus, cap. 1. & de parte illa legendi canonem agit Spetellus decisio 113. Qui etiam decis. 106. examinat, an per procuratorem fidel professio fieri possit. Et de peregrinatione ad limina Apostolorum agit Grethserus in epist. de peregrinu, cap. 12.

In cap. 9. num. 2.

Obfides plerumque dicuntur fideiussores. Anselmus Lexon. epist. 12. ad Abbatem, S. Eberulf. Propter quod Hugo, & Progenis decambium grani instantia nos instat, super pecunia, quam prædilecto prædecessori vestro, iucique Capitulo credideris: huius solutionem coram ego, ipsam, & vultu vestram nostram, fide per vicarium manus corporaliter interveniente, firmasse: ad maiorem quoque cautelam decem de fidelibus monasterii pari vinculo se nobilissimus adstrinxerunt, quos fideles crediturum presidentia magis idoneos credidit ad solvendum.

In cap. quanto 18.

Conclusionem huius textus illustrat Cæsp. tom. 2. observat. 101. & circa originem monete signatur, videndus est Fortun. Schæf. tom. 2. Eleusis cap. 3.

Ad cap. 26.

De necessitate, & abusu iuramenti plura congerit Ioan. Fitefac. lib. 2. foliis. cap. 1.

Ad cap. Sicut 29.

Conclusionem huius textus illustrant Cæsp. tom. 2. observat. 16. Galeota respons. 13. Fisi.

Ad cap. petitio 31.

Donationem Constantini Magni refert, & probat Maucl. 3. part. Admarch. lib. 1. cap. 9. & de alienat. rer. ad Regiam coronam spectantium, agit Cæsp. tom. 2. observ. 84.

Ad tit. de appellationibus.

In cap. si dubius 7. addit: Quando appellatio ad parvam admitti possit, exponit Ranchinus lib. 1. var. cap. 9. & ad Pontificem ex omnibus Ecclesiæ partibus appellandum esse probat Maucl. tom. 1. Admarch. lib. 3. cap. 9.

D. D. Gual. in Decretal. Tom. V.

*Addenda & reponenda in Libro tertio.**Ad tit. de vii. es. honest. cler. cap. 1.*

Illustrant canonem hunc Alsterra lib. 6. differat. cap. 18. Christ. Lupus in canon. 69. Synod. 6.

Ad finem solutionis difficultatis, vide: 2. Licos nec oblationis causâ ad altare accessisse, constat ex Heraldo Archiepisc. Turon. cap. 7. Ut populum extra cancellos suos, eiusque oblatione extra cancellos recipiatur. Thodulf. Autel. cap. 6. Formine sacerdos Missam celebrante, nequaquam ad altare accedens, sed suis locis stans, & ibi sacerdos eorum oblationes Deo oblaturus accipiat. Quamvis in nonnullis Ecclesiis contrarium obsecutum fuisse credat Christ. Lupus in deam. 69.

Ad cap. 2.

De armis à clericis non deferendis agit Spetell. decis. 122. & 124. cum sequentibus.

Ad cap. 3.

De cantu Ecclesiæ, & eius usu videndus est Fitefac. foliis. pag. 197.

Ad cap. 4.

Antiquitatem consuev. clericalis probant Martinus de sacris ordin. exercit. 15. Cæsal. de ritibus Eccles. cap. 49. Simon. ad Siden. lib. 4. epist. 24.

Ad cap. 5.

Eodem barbe usum pro distinctione Regionum agnoscit Petr. Aurel. contra Simoniam, tom. 3. pag. 609.

Ad cap. 12.

In can. 1. Concil. Alst. legendum esse ceteras, aut ceteras facere, probat Petr. Aurel. contra Simoniam, tom. 3. pag. 615.

Ad cap. 14. in comment. in fine, adde.

Faciit D. Chrysost. homil. 1. ad Antioch. Faciuntur solatia, & classes, & quod in convitiis panes faciant; quoniam non possit quisque solus convitiolum exhibere perfectum, convenientes omnes in unum ex symbolis convivium conferunt; hoc & nos faciemus. Eodem hæc in sensu prohibuit Anselmus Cantuar. lib. 1. epist. 7. clericis in gilda bibete, id est in collegio sodalium: De Dominis Horvico, qui Camerarius fuit, audis quia in multis inordinatè se agit, & maxime in bibendo, ita ut in gilda cum ebriis bibat, & cum eis se inebriet. Et mox: Ne postquam hanc nostram prohibitionem agnovimus,

lii j amplius

amplius in gilda, aut in conventu eorum, qui ad inebriandam solam conveniunt, bibere audeat.

Ad tit. de cohabit. cleric. cap. 1.

Conclusionem huius textus illustrant Alseffera lib. 3. differt. cap. 12. Annibal Fabrotus ad lib. 1. tit. 4. paratit. Balsam.

Ad tit. de clericu coniug. cap. 1.

Illustrat presentem attentionem Nicol. Faber in epist. de capit. sacerdot. Lindan. tract. de voto virgin. Casalino de ritibus Eccles. cap. 34. Novus Notator Petri Blesensis ad epist. 81. Et à quo tempore Subdiaconis matrimonium interdictum sit, exponit Motinus de sacris ordin. exercit. 12. cap. 5.

Quid tamen quoad petitionem beneficii procedat, si nullum sit matrimonium ob impedimentum foris. exponunt Barbosa de potest. Episc. allegat. 57. num. 212. Escobar de purit. 1. p. quest. 4. §. 7. num. 17. Giurba consil. 15. num. 7. Ruiculus de iure person. lib. 7. cap. 2. Olea de cess. iur. tit. 2. quest. 5. num. 9.

Ad cap. 4.

Conclusionem illustrat Alseffera lib. 3. differt. cap. 16. V. rba legis secundum ff. de in ius voc. hoc commentario relata, ita transcribit Theodoius Omopolites in Regio eodice: *Nec eos, qui propter loci religionem inde secedere non possunt, id est inclusos monachos, vel masonianos.* Videndus Fabrotus in notis ad lib. 2. parat. Balsam. titulo de sacerdot.

Ad tit. de prabendis, cap. 4.

De titulo alia congerunt Seldenus tom. 1. Syned. lib. 3. cap. 5. Alseffera lib. 3. differt. cap. 2.

Ad cap. graue 29.

Doctrinam hoc commentario traditam illustrat Filesc. lib. 2. selest. cap. 4.

Ad tit. Ut Eccles. beneficia.

Doctrinam in numero primo traditam, probant D. Bernard. de vita cleric. cap. 3. P. Blesensis epist. 60. ubi illustravit eius Novus Notator.

Ad tit. de emptio. & vendit. capit. 3.

Illustrant conclusionem huius textus Fontan. ex decisio. 60. v. sine ad 68. Cyprius Luto consil. 124. Noguero. alleg. 29. num. 217. Merende lib. 1. consuev. cap. 34. Valenzuela consil. 182. num. 3.

Ad tit. de locato, cap. 3.

Videndus Marchinus de bello diuino, pag. 9. cap. 6. & 7.

Ad cap. Potuit 4.

Videndus Sperellus decis. 71.

Ad tit. de Pignoribus, cap. 1.

Ad finem mem. 1. Etiam hæc verba repetuntur in ordine Romano, tit. de diuin. offic. Sacra vasa, & vestimenta sacerdotalia assite in vadum dare negotiatori, aut tabernario. Et lib. 2. Capitul. Caroli, cap. 24. De sacris vasis Ecclesia, que in pignus à nonnullis in quibusdam locis dari compertimus, inhibemus est, ne deinceps à quoquam sacris profanetur, nisi solennitè necessitate redimendum captiuorum compellente.

Ad tit. de testamentis, cap. 2. num. 8.

De diaconissis videndi sunt Motinus de sacris ordin. exercit. 16. Casal. de ritibus Eccles. cap. 29.

Ad cap. Officiis.

Videndus Sperellus tom. 2. decis. 176.

Ad titul. de success. ab intest. cap. 1.

De successio. n. b. clericorum ab intestato agit Crespi tom. 2. dispens. 51.

Ad titul. De sepulturis, cap. Sacris.

Rationem decidendi probat Goffid. Vindoein. lib. 3. epist. 38. Ambrosianum sapientum canonum firmiter tenemus, & nullatenus dubitamus, quia quibus nec vini communicamus, nec mortui communicare debemus.

Ad tit. de Parochiis.

Parochiarum etymon illustrat Maucerus tom. 1. notari. lib. 5. cap. 7.

Ad titul. de regularibus, cap. Vidua.

De velis virginum, & viduarum, agit Maria Florent. in Martyr. die 19. Novemb. exerc. 15.

Ad cap. Cum verum 12.

Illustrat conclusionem huius textus Novus Notator P. Blesens. ad epist. 54.

Ad titul. de conuers. coniug. cap. 1.

Probat conclusionem huius textus D. August. epist. 45. Nam & venanda talia non sum à coniugatu.

cia, nisi ex consensu, & voluntate communi, illustrat Fabricius in l. 5. c. 1. lib. 2. parat. Balsam.

Ad titul. de relig. domib. cap. 3.

num. 4.

D. August. in Ioannem, tract. 97. Xenodachia, & Monasteria postea sunt appellata a novis nominibus, res tamen ipsa & ante nomen sua erant, & religionis veritate firmantur. Ioan. Cantuar. lib. 4. hist. cap. 50. D. Basil. epist. 371. ad Eloiā. Quid peccamus, alienigenis peregrinis extrinsecus, qui hac forte aduocamus? Ea loca Iulianus exstrui iubet, ut ibi inopes sine discrimine excipiantur, in epist. 49. ad Afrasianum, de quo Theophanes in chron. Christiana beneficentia ille nefarius, & prauaricator, peregrinis, & egenis res necessarias edixit suppeditari. De Nolosomio agunt D. Hieronym. in epist. Fabiola, Dorothe. doct. 4. Nicetas Choniata. in Masacio Angelo: Regias adles in Nolosomium mutauit.

Ad tit. de Iurepatron. cap. Præterea 13.

De his aduocatis Ecclesiarum laud agit Mořin. de sac. el. et. exerc. 18. cap. 8.

Ad tit. de censibus, cap. 6.

Rebtores prouocatas suas visitasse constat ex M. Tull. querr. 5. & probat Alceſtera lib. 5. differt. cap. 8.

Ad cap. Eaqua 12.

De hoc denatio D. Petri agunt P. Blesensis in inuict. contra deprauat. Matth. V. testmonia. in floribus Anglia, ann. 737. & 794. Roger. p. 2. ad annum 1180. Quorum verba refert Neouus Notatur P. Bles. ad d. inuict.

Ad cap. Olim 20.

Explicat præsentem assertionem Crespi 120. 2. obserr. 102. cum seq.

Ad titul. de consecr. Eccles. cap. 9

De hac peregrinatione ad D. Iacob. agit Greth. de peregrin. cap. 16.

Ad tit. de celebr. Miss. cap. 1.

De horis canonicis agunt Casal. de ritib. Eccles. cap. 45. Torre in 1. 2. D. Thomas, quest. 83. art. 17.

Ad cap. 6. num. fin.

Verba illa vixit matris, exponunt Torre ad 1. 2. D. Thomas, quest. 83. art. 4. per tot. Filicet, lib. 2. fol. 409.

Ad cap. Sanè.

Illustrat textum hunc Alceſtera lib. 6. differt. cap. 4.

Ad tit. de Baptismo, cap. 1:

num. 2.

De hac trina metisoc agit Arcudius in concord. lib. 1. cap. 9.

Ad cap. 2:

Baptismum iterari non posse probant Tertull. de pudic. cap. 16. Denus ablati non vices. Et de Baptismo cap. 15. Semel lauacrum, minus semel delicta diluuntur, quia ea iterari non oportet. D. Augustin. epist. 105. Rebaptizare Catholicum inuicissimum seculum est. Autis Viennens. in frag. ex lib. contra Arianos. Vnam baptismi non iteramus. Rich. à S. Vi. Gode de Sacram. part. 15. cap. 13.

Ad tit. de cust. Eucharist.

Morem seruandi Eucharistiam in domibus illustrant Motinus de sacris ordin. exercit. 12. cap. 3. Leo Allat. in append. de templis Græcor. Casal. de rit. Eccles. cap. 13. & de turricula ubi seruabatur, agit Coluſtencios ad Flodoar. fol. 42.

Ad tit. de Reliquiis, cap. 1.

Videndi sunt Casal. de rit. Eccles. cap. 67. & 68. Mauch. 2. p. Monarch. lib. 4. cap. 7.

Ad tit. de obseru. ieiun. cap. 2: ad calcem litera textus, adde.

Datum Roma apud S. Petrum 11. Kal. Martij, Pont. N. Anno 8. ad quem annum refert textum hunc Odoar. Raynaud. eo anno, num. 31. De vigiliis plura congeſſit Franc. Maria in Martij. exerc. 2. fol. 195.

Ad cap. fin.

Anno 5199. à creatione mundi, olymp. 194. ab urbe condita 752. Christum Dominum natum fuisse refertur in Martyr. Rom. & probat Baron. ibi, atque eius vigiliam, de qua in præsent agit, illustrat Franc. Maria Florent. de exercit. 2.

Ad tit. de Eccles. edific. cap. 1.

Concluſionem huius textus illustrat Sperellus de cif. 67.

Ad tit. de immunit. Eccles. cap. 1.

Missus quis dicatur, exponit Coluſtencios ad Flodoar. cap. 18. Concluſionem illustrat Sperell. de cif. 51.

Ad cap. 4.

Conelusionem illustrant Cafal. de rivib. Ecclief. cap. 72. Sperell. decif. 34. cum feq.

Ad cap. Inter 6.

Præfentem assertionem explicant Crefpi tom. 2. obferv. 63. Sperellus decif. 60. cum duob. fequent. & decif. 127. & 148. cum duob. feq. & tom. 2. ad finem. in epif. ad Dilectum Effenfem.

Ad tit. Ne cleric. vel mon. cap. 5.

De clericis accendis ad officiis secularibus agit Galeota refponf. Fife. 12. cap. 8.

Addenda, & fuis locis reponenda in Libro quarto.

Ad tit. de fponfalibus, cap. 1.

De nuptiis per confarreationem celebritatis agit Seldenus in opere Hebraica, lib. 2. cap. 20. cum fequentibus.

Ad cap. 3.

De impedimento publicæ honestatis agit Sperellus decif. 95.

Ad cap. Veniens 15.

Conelusionem illustrat Filefac. lib. 2. feleli. cap. 1. Sperellus decif. 5. 6. & 73.

In numero 5. huius commentitij, poft Quintilianum, addit: D. Ambrof. in epif. 1. ad Corinth. 7. Idelfi, quæ fibi apum putaverit, illi habet, quia in nuptia folem males pronuntius habere. D. Cypr. de habitu virg. Quis illi in nuptiis locus est, cui animus ad nuptias non eff. Illustrat Filefacus lib. 2. feleli. cap. 3.

Ad cap. Inter 20.

Sententia Raynandi vera est, & reperitur textus hic lib. 1. epif. Innoc. III. apud Sirleum fol. 95. & in eo fcribit Pontifex vniuerfis Chrifti fidelibus.

Ad tit. de defpons. impub. cap. 1.

De confensu parentum ex utroque inae agunt Atendius lib. 7. concord. cap. 6. Ranchinus lib. 2. var. cap. 4.

In cap. fin.

De annulo pronubo apud Hebræos vifitatio Seldenus lib. 2. var. Hebraica, cap. 14. De eiusdem vfu apud Gentem, testis difcreti sunt Plinius lib. 33. hiftor. cap. 1. Qui obligationem acciperent, auricæ in publico tantum viderentur; intra domos vero ferris. Quæ argumento etiam fponfa annulus ferreus munitur, ifque fuis gemma. Innocentius fol. 6.

Pelleris; & digito pigram forasse denotat. Quod de annulo pronubo intelligendum probat Scalig. lib. 30. exercit. cap. 10.

Ad tit. de fponfa duorum.

De polygemia ex iure Hebræorum agit Seldenus in var. Hebraica, cap. 20. & lib. 5. de iur. natur. Hebr. cap. 6.

Ad tit. de condit. appofit. cap. fin.

Conelusionem huius textus illustrat Renfnel. de oblig. 2. p. mon. 69. & de triplici bono coniugij iur. & eruditè agit Filefac. lib. 2. feleli. cap. 6. cum fequentibus.

Ad tit. de coning. ferno.

Conelusionem illustrat Arund. lib. 7. concord. cap. 3.

Ad tit. de confanguin. & affin. cap. 3.

Nuptias cum fororibus fas fuiffe apud Perfes celebrare, refert Eufeb. lib. 5. preparat. Euzorg. adeo ut Lucianus lib. 3. de facrif. ludens de Ionis coniugio cum forore fua Iunone dicat, eum feciffe fecundum Perſianam, & Afſyriorum leges. Quintimò Athenienſibus fſtrum, ac ſororum coniugia legibus permiffa fuiſſe refert Oſſualus apud Minutium: & Epiphi, & Athenienſibus cum ſororibus legitima carnubia. Non tamen licebat ſortorem ex eadem matre docere, ſed progeneratæ ex eodem patre. Philo ludæus in 6. præcept. Inde Seneca de morte Claudij, ubi illi obſtiterit ſororis nuptias, ait: Athenis dimidium, licet Alexandria tuam. Amil. Probus in Simone: Habui in matrimonio ſororem germanam ſuam Elpincen, non magis amare, quam patrio more dactyl. Athenienſibus enim licet eandem patre natas uxores docere. Videndi ſunt Vvoubet. in notis ad Minutium, fol. 163. Boët. in Herodian. fol. 71. Muſæus in face critica 15. tab. 5. & 7. cap. 2. Læſius ad Tacit. nota 8. & 80. Caſſal. var. cap. 12. Raderus ad Marialem, fol. 24.

Prohibitionem nuptiarum inter conſobrinorum agnoscunt PP. Eccliefæ, quos refert Notatus Notator P. Bleſ. ad epif. 84.

Ad tit. de Frigid. cap. 5.

Conelusionem huius textus illustrant Sarr. Petrus lib. 6. obſerv. 2. p. 6. Sperellus decif. 140.

Ad tit. Qui filij ſunt legit. cap. 13.

Litteras legitimæſonis Philippi Regis Galliar, ex veteri echarta edidit Nou. Notator P. Bleſenſ. ad calcem eius operum, fol. 794. In hæc verba:

Innocentius Epifcopus ſervus ſervorum Dei. Venerabilibus Fratribus vniuerſis Archiepiſcopis per Regum Francorum

coram constitutis, salutem & Apostolicam benedictionem. Apostolica Sedes, quæ Deo disponente, cunctorum fidelium mater est, & magistra, prædecessorum nostrorum temporibus diversis causis inspectis, cum quibusdam minùs legitimè dispensavit genitibus, etiam ex adulterio procreatis; quos ad actus speciales legitimans, in Pontifices quoque promoueri concessit. Cùm igitur maior idoneitas in spiritualibus quàm in sæcularibus requiratur, dubitari non debet, quin ipsa tales ad actus legitimare valeat sæculares, præsertim ad petitionem eorum, qui præter Romanum Pontificem, alium inter homines superiorem minimè recognoscunt, habentem huius potestatem. Quoniam igitur charissimus in Christo filius noster Philippus Rex Francorum, præter primogenitum suum, quem de coniuge prima suscepit, aliam prolem non habebat, nisi puellum, & puellam, quos ei nobilis mulier quondam filia nobilis viri Ducis Meraniz peperit, nuper defuncta, de sua posteritate providere cogitans, à nobis humiliter postulavit, ut eos legitimare per favorem Sedis Apostolicæ curaremus, vehementer affirmans, quod postquam ven. frat. noster, Guillelmus Senonensis Archiepiscopus. S. Sab. Card. tunc Apostol. Sedis Legatus, inter eum, ac charissimam filiam nostram I. Reginam Francor. illustrem diuortij sententiam promulgavit, licet ipsa sententia per Sedem Apostol. protinus fuerit reuocata, propter iudicarium ordinem non servatum; nulla tamen ad ipsum de alia non ducenda prohibitio facta peruenit. Et propter probationes affinitatis exhibitæ coram eodem Archiepiscopo, quas idem Rex veras esse credebat, inter eum ac præfatam nobilem putabat esse vinculum coniugale: quamquam nostrâ fuerit auctoritate compulsus, ut & ipsum dirimeret, & Reginam reciperet memoratam. Nos igitur attendentes in eode devotionis constantiam & fidei pietatem, quam à progenitoribus ex Romana Ecclesia, quasi quodam hæreditario iure contraxit, ut tam honori Regiæ dignitatis, quàm utilitati, & necessitati Regni Franc. providè consulamus, prædictos puerum, & puellam de speciali gratia legitimætionis titulo de communi fratrum nostrorum consilio decoramus, ut nullus eis in natalibus defectus obstat; ita videlicet, ut per hoc nullum eisdem Regi, & præfatæ Reginæ in matri-

moniali causa præiudicium generetur. Vos ergo quod super hoc à nobis est provida deliberatione statutum, & vos ipsi firmiter observetis, & ab aliis faciatis, et censuram Ecclesiasticam inuolabiliter observari, & cùm ab eodem Rege fueritis requisiti, secundum formam præscriptam solenniter publicetis. Datum Anagninz 4. Non. Nouemb. Pontificatus nostri anno 4. anno Christi 1201.

Ad cap. Ex tenore 14.

De Matrimonio potatis agitur Glorba ad consilium. Messian. cap. 1. gloss. 1. ex num. 27. & cap. 16. Sella decis. 145. Solozano lib. 2. de iure Ind. cap. 21.

Ad tit. Qui matrim. accus. cap. 2.

Præxim hanc Visitatorum explicat Lorea ad leg. 101. numero 20. Vetate de visit. cap. 3. ex num. 61.

Ad tit. De diuortijs, cap. 1.

De diuortio ex iure Hebræorum latè agit Seldenus lib. 3. var. Hebræicar. ex cap. 18. Esque ad 28. & de illis ex utroque iure in capit. sequentiis.

Ad cap. fin.

Præceptum legis Moysi de ducenda reliqua fratribus, illustrat Seldenus lib. 1. var. Hebræicar. cap. 12. cum sequent. Videndus Ioan. Cassal. var. lett. fol. 25.

Ad tit. de secundis nuptiis, cap. fin.

De penis non abolitis præsentis constitutionis agunt Valent. consil. 25. ex num. 12. Glorba ad consilium. Messian. cap. 8. gloss. 1. Paschal. de var. part. potest. part. 3. ex num. 50. cap. 10. Sperellus decis. 52. & 33.

Addenda & reponenda in Libro quinto.

Ad tit. de hæreticis, in cap. 1.

Hæreticum enim facit pertinax offensiois deusio, & obstinata salutaris propugnatio; non humanæ infirmitatis ignorantia, sed peralacia.

Amali

ANGL. u. b. lioth. in epistola ad Iouannem Diaconum: Cum hereticus non ex erroris tantum deceptione, quantum ex elatione non tollit, & contemptuosa pertinacia generatur.

Ad cap. 5. eod. tit. in solutione rationis dubitandi.

Hermianus lib. 10. Dicunt probare se posse, nescio quos hereticos post mortem fuisse damnatos.

Rigord. de gestis Philip. August. de Amalatio: Episcopus post mortem suis excommunicatus, & condemnatus, & à camerario sacre thesaurarie, & ossa, & cinis eius per sterquilonia sunt dispersa. Varia exempla refert Iouannes Cantachuzen. libro 4. caput. 23.

Ad tit. de Magistris.

In cap. 4. ad finem num. 3. addit: Alcega lib. 6. differt. cap. 7.

F I N I S.









